सर्वं सेवा संघ
पत्र
नई दिल्ली, सोमवार
'६२
गांधी कार्य की गांधी को रिपोर्ट

भारत की संसार को सबसे उपयोगी देन

बहुत पहले मनुष्य पत्थरों का आधार बना कर अपनी चीजें गिना करता था धीरे धीरे उसने हाथ की अंगुलियों का सहारा लेकर गिनना शुरू किया, लेकिन इस तरह वह दस से आगे नहीं गिन सकता था

भारत ने ही सबसे पहले दस चिह्नों द्वारा मनुष्य को गिनना सिखाया और इस प्रकार उसे अंगुलियों द्वारा गिनने के बन्धन से मुक्त कर दिया. मानवता को भारत द्वारा दिये गए उपहारों में सबसे सूक्ष्म लेकिन बहुत ही अनमोल उपहार है—शून्य का चिह्न शून्य के प्रयोग ने गिनती के क्षेत्र में एक क्रान्ति पैदा कर दी

1	2	3	4	5
6	7	8	9	0

ये दस अंकों के चिह्न पूजा के काम में लाए जाने वाले यज्ञ-कुण्ड के चौकोर आकार से लिए गए हैं. हर चिह्न का मूल्य अंक में उसके स्थान पर निर्भर करता है इन चिह्नों द्वारा सब कुछ गिना जा सकता था.

ये अंक सम्राट अशोक के युग (२७३-२३२ ई० पू०) में खूब प्रचलित थे. इसके एक हजार साल बाद मोहम्मद इब्न-ए-मूसा अलख्वारज्मी ने बगदाद में इसका प्रचार किया अरबों के यहां प्रयोग में रहने के बाद ये अंक योरोप पहुंचे. गिनती को सादा और आसान बनाकर इन चिह्नों ने अनगिनत को भी गिन डाला

इसके साथ ही मनुष्य अपनी विभिन्न जरूरतों के अनुसार अंकों और गणित की दूसरी समस्याएं सुलझाने के लिए नए-नए साधनों की खोज भी करता रहा

आधुनिक युग के प्रगतिशील साधनों में कम्प्यूटर ने हमको इस योग्य बना दिया है कि हम गिनती और आंकड़ों के कठिन से कठिन प्रश्नों को क्षण भर में हल कर सकते हैं इस तरह जीवन की उन समस्याओं को हल करना संभव हो गया जिनका पहले कोई हल नहीं था

भारत में बने आई बी एम कम्प्यूटर देश की विकास-शक्ति को लाखों-करोड़ों गुना बढ़ाने में सहायक हो रहे हैं

मानव-शक्ति को और अधिक बढ़ाने के लिए आज जीवन के हर क्षेत्र में — प्रगति के हर काम में मनुष्य कंप्यूटर का उपयोग कर रहा है.

IBM

भूदान-यज्ञ　१ अक्टूबर, '७३
सम्पादक : राममूर्ति, भवानी प्रसाद मिश्र ● कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी
वर्ष २०　अंक १

इस विशेषांक में

१९, राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

संपादकीय

गांधी ही एक विकल्प बचा है

इस समय दो राज्य पद्धतियां रूढ़ हैं, और दोनों सोचने-समझने वाले लोगों के निकट ही नहीं उनके द्वारा शासित या अनुशासित सर्वसाधारण के मन में भी प्रतिष्ठित हो चुकी हैं। एक पद्धति पूंजीवादी, प्रजातंत्रीय-राज्य की है और दूसरी पद्धति अधिनायकवादी शासन की है। वैसे जहां अधिनायकवादी शासन-सत्ता रूढ़ है वहां दावा यह किया जाता है कि पूंजीवादी, प्रजातंत्रीय, अनेक-दलीय संसदीय-शासन से अधिनायकवादी एक-दलीय शासन अधिक प्रजातंत्रीय है वे उसे प्रजातंत्र ही नहीं गणतंत्र कहते हैं और यह कहते हुए उनका अभिप्राय यह होता है कि ऐसी व्यवस्था में शासन-तंत्र उसकी इच्छा के अनुसार चलता है जो वास्तव में समाज का सबसे अधिक जरूरत-मंद घटक-वर्ग है, सर्वहारा है। तथापि तथ्य यही है कि इन दोनों प्रकारों की राज्य-पद्धति में प्रजा कहिए, जनता कहिए या सर्वसाधारण व्यक्ति कहिए सर्वथा उपेक्षित है।

इन दोनों ही पद्धतियों का संसार-भर की प्रजा कहीं कम खुलकर तो कहीं ज्यादा खुलकर विरोध कर रही है, और इसका कारण यह है कि ये दोनों ही पद्धतियां किसी भी अर्थ में प्रजातांत्रिक या गणतांत्रिक न होकर अलग अलग ढंग से ही क्यों न हो, पूंजीवादी और उपनिवेशवादी हैं। पृथ्वी के सारे महाद्वीप कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप से इन दो प्रकारों के शासनतंत्रों के शिकंजे की जकड़ में आकर लटे-पटे दिन काट रहे हैं।

सबसे अधिक भयानक और भीषण बात तो इनके द्वारा किया जाने वाला वह नित-नया और आवश्यक उत्पादन है जिसे वे समस्त →

संसार के लोगों पर लादते चले जा रहे हैं और संसार भर के लोग जिसके बोझ से दब-कर नित्य अधिकाधिक सत्वहीन और असमर्थ होकर भी उसे आवश्यक ही नहीं अनिवार्य तक महसूस करने लगे हैं।

आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन समाज-वादी और अ-समाजवादी दोनों प्रकार के देशों को एक-दूसरे से बाजार छिनाने की स्पर्धा में डालता रहता है। समाजवादी देश अनावश्यक वस्तुएं दूसरे देशों में ही बेचना चाहते हैं, अ-समाजवादी देश इस मामले में अपने देश और दूसरे देशों में अन्तर नहीं करते क्योंकि उनकी यह 'अनावश्यक-वस्तु-उत्पादन क्षमता' समाजवादी देशों से कहीं अधिक है। वे बाहर के लोगों के साथ-साथ अपने यहां के लोगों को भी निरर्थक वस्तु-बाहुल्य की चोट लगाकर उनका शोषण करते रहने में सहज समर्थ हो गये हैं। समाजवादी देश अपने यहां के सामान्य लोगों को जहां तक बने नितान्त आवश्यक वस्तुएं ही देना चाहते हैं। जिन चीजों को ऐश आराम के अन्तर्गत लिया जा सकता है, वैसी चीजें वे अपने देशवासियों के लिए नहीं बनाते, उन्हें तो आवश्यक चीजें भी सीमित रूप में ही दी जाती है—जैसे वहां प्रति व्यक्ति कपड़े आदि का प्रमाण तय है, किन्तु वे इस प्रकार की वस्तुओं के निर्माण में बाहर के बाजार हथियाने के विचार से स्पर्धा करते हैं और जब उनके देशवासी पूंजीवादी देशों के निवासियों को अधिक आराम से रहते देखते हैं तो वे उसी रहन-सहन को मन में सजोने लगते हैं, वे उसे आदर्श रहन-सहन मानने लगते हैं।

समाजवादी देश अपने देश में ऐसी रहन-सहन की इच्छा करने वाले व्यक्ति को प्रति-क्रियावादी कहते हैं और इस प्रकार के प्रति-क्रियावाद की मलामत भी भलीप्रकार से की जाती है। फिर भी आज निश्चय ही परि-स्थिति यही है कि कोई देश उद्योगधंधों की दृष्टि से विकसित हो, चाहे अविकसित, राज्य-पद्धति की दृष्टि से पूंजीवादी हो चाहे, समाजवादी उसकी रहन-सहन का आदर्श पूंजीवादी देश और उनमें से भी अमेरिका के द्वारा निश्चित होता है, जो उत्पादन की दृष्टि से सबसे अधिक अनावश्यक वस्तुओं का निर्माण करके उन्हें अपने देश और देश के बाहर के लोगों को बेचता है।

अमेरिका की इस शक्ति को एक ओर अमेरिका और अन्य पूंजीवादी देश अक्षुण्ण रखना चाहते हैं और दूसरी ओर समाजवादी देश उसकी इस शक्ति को तोड़ना चाहते हैं, इसलिए परस्पर शस्त्र-निर्माण में आगे बढ़ने की स्पर्धा भी चलती है और अपने-अपने प्रभाव क्षेत्रों को शस्त्रों से यथासम्भव अधिकाधिक लैस करने के लिए जोड़-तोड़ भी चलती रहती है। समाजवादी देश तर्क पेश करते हैं कि पूंजीवादी और उपनिवेशवादी देशों की शक्ति अबाध और अकाट्य न हो जाये इसलिए अपने उद्‌देश्य की ओर पूरी गति से जाने प्रयत्न करने के बदले शस्त्र-उत्पादन में जुट पड़ना है और पूंजीवादी देश 'साम्यवा प्रभाव क्षेत्र को सीमित' रखने की आवश्यक को प्रस्तुत करके अपनी बेतहाशा शस्त्र-निर्मा स्पर्धा का समर्थन करते हैं। इस तरह विचा की हद तक पूंजीवादी या समाजवादी पद्धति के अनुसार चलने वाले देश चाहे जितने भिन्न क्यों न हों वे जीवन एक ही प्रकार का अप नाये हुए हैं। कुछ दिनों पहले तक लोगों को भुलाने के लिए सहअस्तित्व का नारा लगाय जा रहा था, अब खुल्लमखुल्ला यह कोशिश हो रही है कि अविकसित और विकासशील देशों को ये दोनों प्रकार के शासन मिलजुल कर क्यों न चूसें—रूस और अमेरिका, चीन और अमेरिका ने एक-दूसरे की ओर जो भाई-चारा जाहिर किया है, वह खुद उनके देशों की आम जनता और विशेषतौर पर अपेक्षाकृत पिछड़े देशों की जनता के द्वारा सदेह की दृष्टि से देखा गया है।

सर्वसामान्य आदमी के प्रति दोनों ही प्रकार के शासन-दलों का एक-सा व्यवहार सर्वसामान्य आदमी को बहुत दिनों से गड़ने लगा है—वह कहीं बहुत गहरे में बावजूद वस्तु-बाहुल्य या पर्याप्त वस्तुगत सुविधाओं के दोनों ही जगह बेचैनी का अहसास कर रहा है।

के सोचने-समझने वाले लोग मन की यह
नी अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों, प्रकृति के
पण, नये-नये रोगों के फैलाव, कानून और
स्था के नाम पर दुष्टों-हतजजीरों की
य फैलती व्यापकता को विषय बनाकर
ओं, व्याख्यानों, कहानियों, उपन्यासों,
नेताओं तथा अन्य उपयोगी और केवल
कहे जाने वाले माध्यमों से व्यक्त करते
रहे हैं। औद्योगीकरण और उसके छोटे-
टे परिणामों से लगाकर सबसे बड़े अनि-
ष्ट परिणाम युद्ध के विरोध में पिछले महा-
के बाद से कितना क्या लिखा या कहा
रगा या गाया नहीं गया है। मगर शासक
ने इन विरोध प्रकारों को कभी स्वय
ष्ठा देकर तो कभी 'शांति' आदि का
नभेदी उच्चार करके व्यर्थ कर देने के
बल भी लगभग साथ ही साथ प्रारंभ कर
ये थे। साधारण आदमी और बुद्धिजीवी,
व इसलिए बार-बार सदेह में पड़ जाते हैं।

ऐसे सदेह के अतिरिक्त सभी समाजों में
रहन-सहन की जो पहले से अधिक सुविधा
शहर की जनता को मिल गई है और जब उसे
वह सुविधा किसी अश में कम प्राप्त होती
लगती है तो वह सगठित होने के कारण बिना
किसी कठिनाई के, कम से कम प्रजातत्रीय
देशों में तो हड़ताल प्रदर्शन आदि करके वैसी
सुविधा प्राप्त कर लेती है। मजदूर चाहे जब
वेतन बढ़वा लेता है, छात्र, शिक्षक, डाक्टर,
इन्जीनियर यहां तक कि विमान-चालक
जिनका वेतनमान लगभग किसी भी नौकरपेशा
व्यक्ति की कल्पना की सीमा से बाहर का
होता है, हड़ताल, प्रदर्शन आदि करते हैं, वेतन
बढ़वा लेते हैं और उन चीजों को अधिकाधिक
मात्रा में पाकर प्रसन्न हो जाते हैं जो उन्हें
शांति नहीं करने देतीं, गुलाम बनाकर रखती
हैं। रहन-सहन की आधुनिक सुविधाओं की
जिसे जितनी अधिक आदत पड़ जाती है, वह
शासन का उतना मोहताज हो जाता है।
उसकी स्वतन्त्र रहने, सोचने समझने की शक्ति
घटती जाती है। आज के नागरिक का कुछ
ऐसा ही हाल हो गया है। उसके लेखे प्राप्त
सुविधाओं को छोड़ना जीवन के आनन्द से
अपने को काट लेने की तरह कठिन हो गया है।
सुविधाओं को नकारने की हिम्मत जीवन को
नकारने की हिम्मत का पर्याय हो गया है और
फलस्वरूप हम देखते हैं कि विकासशील और
अविकसित देशों में जहां ये सुविधाएं केवल
नगरों में सुलभ हैं, भीड़ बढ़ती चली जा रही
है। गावों का खेतिहर आज कारखानों का
मजदूर, बाजार और स्टेशन का कुली, पत्थर
तोड़नेवाला, सड़क बनाने वाला, रिक्शा
चलाने वाला या दफ्तर का चपरासी होकर
जीने के लिये बेकरार होकर शहरों में खिचा
चला आ रहा है—उन शहरों में जहां उसके
रहने का ठिकाना नहीं है, खाने का ठिकाना
नहीं है, सोने का ठिकाना नहीं है। यह सब
उसके पास गांव में भी नहीं है और शहर में
भी नहीं है—मगर शहर में रात को बिजली
की रोशनी है दिन में भीड़भाड़ है, हो हल्ला
है, चलते-फिरते सिनेमा के गीत हैं और नहीं
है अपरिचय के कारण चाहे-जैसे दिन काट
लेने की शर्म। इसके सिवा शहर में सगठित
होकर योजना बनाकर या केवल भीड़ में
शामिल होकर किसी प्रकार का विद्रोह कर
पाने की एक गुंजाइश है जो अगर और कुछ
नहीं देती तो एक हरारत, जीवित होने का
अहसास और सफल हो जाने पर बढ़ी हुई मज
दूरी या वेतन दे जा सकती है।

औद्योगीकरण जितना बढ़ता जायेगा
तथाकथित विकासशील और अविकसित देश
भी पश्चिम और पूर्व के विकसित देशों, अमे
रिका, इंग्लैंड, फ्रांस, इटली, रूस जर्मनी या
जापान की तरह अधिकाधिक सुविधावादी होते
चले जायेंगे और फिर स्वतन्त्रता नाम की
चिड़िया न वहां के किसी पेड़ पर दिखेगी न
किसी घर के छज्जे या छत की मुंडेर पर।

गांधी असल में इसी सुविधावाद से बचने
और स्वतन्त्र बने रहने का मार्ग है। यह जगत
में आज जो शासन प्रकार रूढ़ है उनका
विरोधीवाद है। सत्ता उसे बिलकुल नहीं
चाहिए, या कमसे कम चाहिए। वह इसलिए
केन्द्रीकरण के लिए खिलाफ है, बाजार के
खिलाफ है, मुद्रा के खिलाफ है, रेलगाड़ी के
खिलाफ है, बड़े-बड़े कारखानों के खिलाफ है
बड़ी-बड़ी सिंचाई योजनाओं के खिलाफ है,
बड़े-बड़े फार्मों के खिलाफ है, पैट्रोल के
खिलाफ है, मिट्टी के तेल के खिलाफ है और
इस तरह अन्य शब्दों में हिंसा के खिलाफ है,
शोषण के खिलाफ है, शस्त्रों के खिलाफ है
सच्चे अर्थों में स्पर्धा और युद्ध के खिलाफ है
और सच्चे अर्थों में घनिष्ट सहयोग और
व्यापक सद्भावना के पक्ष में है।

यही वह विकल्प है जो आज ससार-भर
में रूढ़ दो प्रकार की शासन पद्धतियों की
नृशसता क्रूरता और दासता से आदमी को
बचा सकता है। प्रश्न है कि यह विकल्प रूढ़
पद्धतियों को हटायेगा किस तरह। गांधी 'हिंद
स्वराज्य' में विनोबा 'स्वराज्य शास्त्र' में,
रस्किन 'अन टु दिस लास्ट' में ईसा 'गिरि
प्रवचन' में और विभिन्न धर्मों के महापुरुष
और सत अपने-अपने ढग से इस विकल्प को
लागू करने के उपाय सुझा चुके हैं। इन उपायों
को ज्यादातर लोग आदर्शवादी और अव्याव-
हारिक कहते आये हैं, किन्तु अब यह रोज-
रोज स्पष्ट होता जा रहा है कि यथार्थ और
आदर्श में ऐसा विरोध नहीं है जैसा झूठ-मूठ
के यथार्थवादी समझाते रहे हैं। बल्कि आदर्श
ही सच्चा यथार्थ है। जिसे चतुर लोग यथार्थ
कह कर मानवजाति को झूठ से समझौता
करते हुए जीने पर बाध्य करते चले आ रहे
हैं, वह एक प्रवचना है, जाल है, फासने और
फांसे रहने के लिए बिछाया गया गोरखधंधा
है। जिसे दुनियादारी और यथार्थवादिता
कहा जाता है, वह आखिरकार कथनी और
करनी के अन्तर के सिवा क्या है। जो व्यक्ति
या समाज या राज कथनी और करनी में
जितना बड़ा अतर साध सकता है वह उतना
कुशल माना जाता है। शासक, राजनीतिज्ञ-
व्यापारी सबकी चतुराई का चरम उनकी
कथनी और करनी के अन्तर में माना जाता
है। इस प्रकार असत्य को यथार्थ और सत्य
को आदर्श कहा जाता है। इन दोनों में चुनाव
सरल है। इस चुनाव को स्वीकारना अगी-
कारना, अपनाना उन देशों के लिए बहुत
कठिन है जो औद्योगीकरण के रास्ते की लग-
भग आखिरी मजिल तक जा पहुचे हैं, जिन्होंने
अपना सब कुछ अणुशस्त्रों, राकेटों, उपग्रहों
और इनसे भी भयानक साधनों को पाने की
धुन में दाव पर लगा दिया है। इसे तो वे ही
अपना सकते हैं जो अभी 'पिछड़े' हुए हैं।
उनके लिए पुरानी दुनिया का अध्यात्म और
आज की दुनिया के विज्ञान का मणिकांचन
सयोग साधना सुलभ है। वे विज्ञान का रच-
नात्मक क्षेत्रों में विकेंद्रीकृत और अध्यात्म का
सार्वभौम उपयोग करके विचार और आचार
की एकता को एकदम सहज ढग से हस्तगत
करके दिखा सकते हैं और सारी दुनिया में इस
सभावना का सबसे अधिक सुयोग भारत के
लिए सुलभ है।

—भवानी प्रसाद मिश्र

भूदान-यज्ञ : सोमवार, १ अक्टूबर, '७२

→

सूचना दी कि रूस में क्रुश्चेव के बाद मार्क्स के कुछ अप्रकाशित ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, जिनसे पता लगता है कि जीवन के आखिरी दिनों के मार्क्स और उससे पहले के मार्क्स में कोई समानता नहीं है। उनका मन्तव्य था कि मार्क्स एक स्कालर था, चिन्तक था और विचार के क्षेत्र में महत्व आखिरी वाली कोरता था है। उन्होंने हाल में प्रकाशित मार्क्स की पुस्तक 'ग्रे न्डरी' का उल्लेख किया, जिसके आधार पर कहा जा सकता है कि जीवन की परिपक्वावस्था में मार्क्स गांधी-तत्व के छोर पर पहुंच गये।

जहां पहली बार इस परिषद के मंच से गांधी-मार्क्स के समान धर्मों (साधन की बात को अलग रखते हुए चिन्तन की दृष्टि से) का तथ्य प्रमाणों द्वारा एक शास्त्रविद् के मुख से प्रकट हुआ वहां गांधी और नेहरू की पारस्परिक वैचारिक दूरी की भी खुलकर चर्चा हुई। इस चर्चा का महत्व कोई शास्त्रीय दृष्टि से ही नहीं है बल्कि गांधी और नेहरू के फर्क को यदि स्पष्ट तौर पर समझ लिया जाये तो स्पष्ट जीवन दृष्टि के अभाव में जो दिग्भ्रान्ति देश में फैली है, वह छिन्न-भिन्न हो सकती है। हम किस तरह का समाज भारत में बनाना चाहते हैं—यही तय नहीं हो पाया है। इस निर्णय को लेने की आवश्यकता पर इण्टक के श्री द्रविड़ और श्री कृष्णकान्त ने ध्यान आकर्षित किया।

गांधी बनाम नेहरू का प्रश्न परिषद की चर्चाओं के प्रारम्भ में आचार्य कृपलानी ने उठाया, उनका मानना रहा कि जवाहरलाल ने महात्मा को कभी ठीक से समझा ही नहीं। उन्होंने स्वराज्य के उपरान्त में गांधी और नेहरू के बीच हुए उस पत्र व्यवहार का भी उल्लेख किया जिसमें गांधी ने नेहरू को अपना दृष्टिकोण समझाने का प्रयत्न किया है। इस तथ्य को और अधिक स्पष्ट रूप से बम्बई के सुप्रसिद्ध वकील श्री पारडीवाला ने, जो १९३५ से सक्रिय राजनीति में रहे हैं, उजागर किया। उनका मानना था कि नेहरू ने गांधी को अपने स्वार्थों के लिए 'एक्सप्लायट' किया उनका दिल रूस की तरफ था। नेहरू का गांधी में विश्वास नहीं था। फिर भी गांधी ने कैसे उनको अपना उत्तराधिकारी माना यह मेरी समझ में नहीं आता। स्वराज्य के बाद गांधी को विदा दे दी गयी और सहकारयोग की तथा कथित प्रगतिशील योजनाएं चलीं। उनका दृढ़ मत था कि गांधी और नेहरू के बीच का फर्क जब तक साफ तौर से नहीं समझ लिया जाता तब तक हमारा देश किसी निश्चित दिशा में आगे नहीं बढ़ सकता है।

सर्वोदय बनाम राजनीतिः—आगरा से आये एक सज्जन का सुझाव था कि सर्वोदय के लोगों को सर्वोदय कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड बना कर चुनाव लड़ना चाहिए और सत्ता पर कब्जा करके देश को गांधी सूचित मार्ग की तरफ मोड़ना चाहिए। उनकी सलाह के विपरीत नागपुर टाईम्स के सम्पादक व सुप्रसिद्ध लेखक श्री लेकड़े का विचार था कि २५ साल तक सर्वोदय के लोगों की पक्षमुक्त भूमिका ही उनकी सबसे बड़ी पूंजी है। श्री कृष्णकान्त का भी मत था कि देश में इस समय ग्यारह पार्टियां हैं एक पार्टी और बना लेने से किस तरह समस्या का हल हो पायेगा? असली बात शक्ति की सैंक्शन की है। गांधी वोट परिवर्तन करने की शक्ति रखता था इस लिए लोग उसकी बात सुनते थे। उनकी राय में इस सैंक्शन को प्राप्त करने का तरीका उन २० करोड़ लोगों को, जो दरिद्रता की रेखा से नीचे जीवन बिता रहे हैं, संगठित करके चुनौती खड़ी कर देना है। श्री कृपलानी की सलाह थी कि विधान सभाओं या संसद में जाना आवश्यक नहीं है, परन्तु सरकार निर्गुण भी नहीं होना चाहिए। यही गांधी मार्ग है। उसे अगर आप छोड़ते हैं तो समझना चाहिए कि आपको कोई दूसरी फिलासफी मिली है।

तात्कालिक समस्यायें और मूलगामी परिवर्तन—जैसा कि प्रारम्भ में ही कहा जा चुका है कि इस परिषद का आयोजन देश की वर्तमान चिन्ताजनक स्थिति के सन्दर्भ में ही हुआ। अब तक सर्वोदय कार्यकर्ता तात्कालिक समस्याओं को यह कह कर टालते रहे हैं कि 'तात्कालिक और दूरगामी' इस तरह का भेद राजनीतिक बुद्धि का लक्षण है। तात्कालिक समस्याएं लम्बे समय से चली आ रही दूषित समाज रचना के लक्षण हैं अतः छोटी-मोटी समस्याओं के समाधान में अपनी शक्ति न लगाकर आमूलाग्र परिवर्तन के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इस परिषद में भी निर्मला देशपाण्डे और डा० दया निधि पटनायक ने इस अवधारणा को तात्विक और जोशीले स्वर में प्रस्तुत किया। उनका मत था कि विनोबा का ग्रामस्वराज्य का कार्यक्रम ही समस्याओं का वास्तव में समाधान है। पुरानी व्यवस्था की जड़ें हिल रही हैं और इस समय एक क्रान्तिकारी चिन्तन की आवश्यकता है।

ध्वस्त, त्रस्त, पस्त और सुस्तः—परिषद का चिंतन अधूरा ही रह जाता यदि उसको विनोबा का स्पर्श नहीं होता, इसलिए १६ की सुबह सभी लोग धाम नदी के किनारे छोटी सी टेकड़ी पर स्थित पवनार आश्रम में गये। पहले दिन की चर्चाओं का सार विनोबा के पास पहले ही पहुंचाया जा चुका था। उसी प्रकाश में उन्होंने अपना विचार प्रस्तुत किया उन्होंने कहा

"शासन शक्ति पर अंकुश रहे यह दादा कृपलानी का कहना है। इस बात को वे पहले भी कई बार हमें कह चुके हैं। बादशाहखान भी यह कहते रहे हैं। इतनी कामनसेंस की बात भी बाबा के ध्यान में अब तक क्यों नहीं आई? आजादी के बाद गांधीजी के कई साथी शासन में व्यस्त हो गये। दूसरे मत्सर से ग्रस्त हो गये, रचनात्मक साथियों की हिम्मत पस्त हो गयी और जनता सुस्त थी। बाबा ने सोचा कि पस्त लोगों की हिम्मत कैसे बढ़े और सुस्त जनता कैसे जगे? इसके लिए भूमि का मामला हाथ में लिया। एशिया की मुख्य समस्या भूमि का सवाल है। १० लाख एकड़ जमीन बगैर मुआवजे के प्रेमपूर्वक बंटी, नैतिक मूल्यों को मानने वाले ४-५ हजार कार्यकर्ता खड़े हो गये, अतः शासन-शक्ति के बजाय हमें खुद की शक्ति संचित करनी चाहिए।"

सत्याग्रह के सम्बन्ध में विनोबा ने महावीर की सप्तभंगी या अनेकांतवाद की याद दिलाते हुए कहा कि, इन्दिरा के पास भी एक सत्य है और मेरे पास भी एक सत्य है। कुल का कुल सत्य किसी एक के पास है यह मानना गलत है। सत्य का बंटवारा हो गया है। सत्य का आग्रह करने हम खड़े हो जाते हैं और दुराग्रह, यहां तक कि हत्याग्रह कर बैठते हैं इसलिए बुद्धि के समत्व की, अक्षोभवृत्ति की नितान्त आवश्यकता है।"

विनोबा के समाधानों से कितने जिज्ञासु चिंतकों को समाधान हुआ होगा कह नहीं सकते।

योगेश चन्द्र बहुगुणा

(देश की वर्तमान परिस्थिति पर विचार करने के लिए सर्व सेवा-संघ ने १८, १९ और २० सितम्बर को सेवाग्राम में एक राष्ट्रीय परिषद बुलाई थी। परिषद में तीन दिनों तक समाजसेवकों, राजनीतिज्ञों, अर्थशास्त्रियों, शिक्षाविदों और पत्रकारों ने विचार-विमर्श किया, परिस्थिति का विश्लेषण किया और उसके हल के लिए सामूहिक कार्यवाही का एक कार्यक्रम बनाया। परिषद ने देश के सामने जो निवेदन रखा है उसे हम अविकल रूप से दे रहे हैं।—सम्पादक)

संगठित लोकशक्ति का आवाहन

देश की वर्तमान परिस्थिति के बारे में कई विचारवान लोग चिंतित हैं। परिषद ने इस विषय पर गंभीरता से विचार किया। परिषद की राय में आज जो परिस्थिति बनी है वह किसी इक्की-दुक्की घटना का नहीं बल्कि वर्षों के इतिहास का परिणाम है।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद के हमारे इतिहास में कई ऐसे तत्व हैं, जिनसे गौरव का अनुभव किया जा सकता है और कई ऐसे हैं जो चिन्ता के विषय हैं।

जमा पक्ष में रियासतों का विलीनीकरण, कई कठिनाइयों के बावजूद देश में लोकतन्त्र की स्थापना तथा कई मर्यादाओं के बावजूद उसका टिके रहना, सत्ता और शस्त्र की होड़ में लगे हुए विश्व में राष्ट्र की तटस्थ व शांति-प्रेमी नीति, संकटकालीन परिस्थितियों में देश की जनता में एकात्मता का दर्शन, बांगला देश की स्थापना के सिलसिले में हमारी दूरदर्शितापूर्ण नीति, और इस उपमहाद्वीप में स्थायी शांति की ओर बढ़ाया गया कदम अभी हाल का भारत-पाक समझौता है। भूदान-ग्रामदान आन्दोलन द्वारा देश की एक मूलभूत समस्या के हल के लिए जनता की अहिंसक शक्ति का अभिक्रम जागृत हुआ है। चम्बल-घाटी में सैकड़ों डाकुओं के आत्मसमर्पण ने यह सिद्ध किया है कि हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया में कितनी महान सम्भावनाएं हैं।

खर्च के खाते में

दूसरी ओर देश की गरीबी अभी ज्यों-की-त्यों बनी हुई है। बेरोजगारी बढ़ी है, वस्तुओं के निरन्तर बढ़ते भावों ने सामान्य लोगों का जीवन करीब-करीब असम्भव कर दिया है। हमारी शिक्षा पद्धति अब भी दकियानूस और जीवन-विमुख रही है। सरकारी कर्मचारी, पूंजीपति, व्यापारी और राजनेताओं में भ्रष्टाचार बढ़ा है तथा जनता भी इस भ्रष्टाचार की लाचार सहभागी हो रही है। जनता अपने प्रश्नों को हल करने के लिए सरकारी में शासन का मुंह ताकती है या तोड़फोड़ हिंसा का आश्रय लेती है, शासन आये दिन पुलिस और सेना का उपयोग करता है, हरिजन, आदिवासी तथा अन्य दलित एवं पीड़ित जनता का शोषण एवं दमन करने वाली समाज व्यवस्था अब भी कायम है जो बीच-बीच में बीभत्स अत्याचारों के रूप में प्रकट होती रहती है, देश के नेता और विद्वज्जन अपने विचार एवं आचरण के द्वारा त्याग और सेवा का नमूना बनने के बजाय स्वार्थ-साधन में लगे नजर आते हैं।

अन्तिम आदमी का अन्त

'गरीबी हटाओ' का नारा यद्यपि एक सही दिशा का संकेत करता है और उसने गरीबी और विषमता के बारे में लोगों को जागृत कर दिया है, पर देश की योजना पर उसका असर हुआ जान नहीं पड़ता। देश के करोड़ों बेकार या अर्द्ध-बेकारों को काम की गारंटी के लिए जरूरी धन्धे देने या उनके उपयोग की आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाने के लिए पांचवी योजना की रूपरेखा में ध्यान नहीं दिया गया है न उसके लिए आवश्यक वित्त नीति बनी है। विज्ञान और टेक्नोलोजी का उपयोग भी गरीबी हटाने के लिए नहीं बल्कि वर्तमान अवस्था को विकृत ही बढ़ाने के लिए ही रहा है। योजना में देश के अन्तिम आदमी की ओर या हमारी विशाल मानव-शक्ति का उपयोग करने की ओर ध्यान नहीं दिया गया है। धनवानों की सम्पत्ति-वृद्धि पर रोक लगाने की कोशिश की जा रही है, लेकिन देश के विशाल निम्न स्तर का इसका लाभ नहीं पहुंचा है, फलत विषमता तीव्रतर हुई है।

देश में सम्प्रदायवाद, जातिवाद और संकुचित राष्ट्रवाद मिटना तो दूर रहा उनमें वृद्धि ही हुई है, हमारी दलगत राजनीति ने देश की समाज रचना को छिन्न-भिन्न करने वाले इन तत्वों को अपना साधन बनाकर इन्हें पुष्ट किया है। देश के सार्वजनिक जीवन में साधन-शुद्धि का ख्याल न रखने से चारों ओर नैतिक गिरावट आई है।

परिषद की राय में इस विषम परिस्थिति का मुकाबला करने का उपाय वही है जो गांधीजी ने अपने जीवन तथा दर्शन द्वारा देश के सामने प्रस्तुत किया था। राजनैतिक आजादी से गांधीजी के जीवन कार्य का एक अंग परिपूर्ण हुआ, लेकिन रूढ़िगत सामन्तशाही, बढ़ते हुए पूंजीवाद तथा पश्चिम के अंधानुकरण के खिलाफ संघर्ष करके देश में आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक स्वतन्त्रता लाने का काम अभी बाकी है।

लोकसेवक संघ की स्थापना के अपने अन्तिम विचार में गांधीजी ने इस ओर इशारा किया था। लोकशक्ति को सुदृढ़ कर के ही इस विषम परिस्थिति का मुकाबला किया जा सकता है। जनता के व्यापक शिक्षण द्वारा, जिसे गांधीजी ने लोकसेवक संघ वाले अपने प्रस्ताव में 'मतदाता-शिक्षण' का नाम दिया था उसमें राजनैतिक चेतना लाना, कोटि-कोटि जनता का संगठन करना तथा अन्याय एव अत्याचार का प्रतिकार करना लोकशक्ति को सुदृढ़ करने के उपाय हैं।

→

न बुझने वाला प्रकाश

देवेन्द्र कुमार गुप्त

सर्व सेवा संघ का अर्द्ध वार्षिक अधिवेशन कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण था। इस के पूर्व तीन दिन की एक राष्ट्रीय परिषद हुई। सर्व सेवा संघ, गांधी स्मारक निधि, तथा गाधी शान्ति प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्वावधान मे दो दिन राष्ट्रीय परिषद की ओर से रखे गये सुझाव विचार के लिए थे।

इस प्रकार से यह बैठक उस ऐतिहासिक सम्मेलन के पच्चीस वर्ष बाद हो रही थी जो गांधीजी के देहावसान के बाद सेवाग्राम में हुई थी और जिस मे देश के सभी गण्यमान्य नेताओं ने भाग लिया था। सन ४८ के उस सम्मेलन मे पहली बार विनोबाजी ने सर्वोदय का उच्चार किया था और तभी सर्वोदय समाज की स्थापना भी हुई थी। उस समय लोक सेवक संघ के उस विचार पर भी, जिसे गांधीजी अपने निधन के पूर्व सामने रख चुके थे, चर्चा हुई थी। वहा गठित सर्वोदय समाज के आगामी सम्मेलन मे सभी रचनात्मक संस्थाओं को एक सूत्र में पिरोने के लिए सर्व सेवा संघ का निर्माण हुआ और वही सर्व सेवा संघ भूदान-ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य आन्दोलनो का वाहक बन कर धीरे-धीरे एक व्यापक क्रान्तिकारी संस्था का स्वरूप लेता गया।

इन दिनो विनोबाजी, तीन वर्ष पहले के निर्णय के अनुसार अपने को पवनार स्थित आश्रम मे ही सीमित रखे हुए हैं। इसलिए उनके साथ सलाह मशविरा लेने के विचार से होने वाली बैठकें अब सेवाग्राम और पवनार मे ही रखी जाती हैं। इस सम्मेलन ने भी पवनार जाकर विनोबाजी की सलाह और उनके मार्गदर्शन का लाभ उठाया। उन्होंने विनोदपूर्वक कहा, "चश्मा नाक पर रखा है लेकिन उसका भान न होने से उसकी तलाश मे इधर उधर हाथ पैर मार रहे हैं। इसी प्रकार सर्व सेवा संघ का जो स्वरूप पिछले बीस बाईस वर्ष मे निखरा है वह स्वय लोकसेवक संघ की गाधीजी की कल्पना का प्रतिरूप है, इसलिए लोकसेवक संघ की अलग से स्थापना अथवा तलाश की आवश्यकता नही है"। उन्होंने बताया कि गाधीजी ने लोकसेवक संघ से जो यह अपेक्षा की थी कि वह व्यापक रूप से जनता की सेवा करे और अपने को दलगत तथा सत्ता की राजनीति से अलग रखे साथ ही देश की प्रजातांत्रिक राजनीति पर निगाह रखते हुए इस पर अन्य प्रभाव डाले, सर्व सेवा संघ ने पूरी की है। उस दिशा मे और बढने के लिए सुझाया कि गाव-गाव मे जहां सेवा कार्य चल रहे हैं अन्य बातो के अतिरिक्त प्रजातन्त्र के विचार के बारे मे भी लोगों को शिक्षित किया जाये तथा सत्ता को नैतिक दिशा देने की ओर बढ़ें। बाबा के विश्लेषण के अनुसार गाधीकार्य का जो स्वरूप ग्रामस्वराज्य आन्दोलन के द्वारा निखरा है, वह इतनी व्यापकता प्राप्त कर चुका है कि उसकी सेवा सत्ता को प्रभावित कर सकती है।

निष्पक्षता, त्याग और सेवा के द्वारा जो साख सर्वोदय ने कमाई है उसका पूरा भान हमे नही है, वह होना चाहिए और लोक-सेवकों को उसका वाहक बनना चाहिए तथा राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी अधिक गहराई से महसूस करके अपने काम को आगे बढाना चाहिए। अधिवेशन मे जिस विषय पर खास बात की जानी थी वह तात्कालिक प्रश्नो से सम्बन्धित कार्यक्रमो पर जोर देना था। ग्रामस्वराज्य के लोकशिक्षण ग्रामदान और शान्ति सेना आदि विषयो के साथ उनको पूरक का रूप देना चाहिए। अतएव अधिवेशन ने विनोबाजी की अनुमति प्राप्त करते हुए यह निर्णय लिया कि जिस-जिस क्षेत्र मे सेवा की शक्ति हमने अर्जित की है अर्थात् जहा व्यापक रूप मे सर्वोदय का कार्य, ग्रामदान अथवा दूसरे कामो द्वारा हुआ, जिनमे सभी रचनात्मक कार्य शामिल हैं-उन क्षेत्रो मे स्थानीय तात्कालिक समस्याओं के सम्बन्ध मे भी हमें सचेत रहना चाहिए और लोकशक्ति द्वारा उन के अहिंसक निराकरण की कोशिश करनी चाहिए। इसका अर्थ यह नही है कि जो दूरगामी व्यापक कार्यक्रम सर्वोदय ने लिये हैं, उनमें किसी तरह की कमी आ जाये।

सर्वोदय क्षेत्र से आये प्रत्येक गाधी विचार से जुड़े हुए रचनात्मक और बौद्धिक जगत के लोगो ने इस बात की भूरि-भूरि प्रशंसा की कि लोकशक्ति का जो आधार और दलगत तटस्थता का जो व्यवहार सर्वोदय के द्वारा प्रतिपादित हुआ है, वह एक बहुत ही उचित और आश्वस्ति देने वाला कदम साबित हुआ है। परन्तु साथ ही साथ तीन चार प्रकार की धाराए दिखी जिनमें निम्न क्षेत्रो मे काम करने वाले लोग थे।

१. जो लोग संस्थाओं के अन्तर्गत खादी ग्रामोद्योग, ग्रामसेवा, हरिजन सेवा, स्त्री विकास, आदिवासी सेवा आदि विशिष्ट कार्य कामो मे लगे हुए हैं।

२ वे जो भूदान, ग्रामदान का सन्देश गाव-गाव मे पदयात्रा तथा अभियानो द्वारा कठिन त्याग और घोर श्रम उठा कर संकल्प पूर्वक पहुचा रहे हैं।

३ नगरो मे कार्य करने वाले वे साथी जिन का बुद्धिवादियों और राजनीतिज्ञो से निकट संबध है और जिनकी चेतना तात्कालिक समस्याओं को लेकर व्यग्र हो उठती है।

४ वे मित्र जो सभी दिशा मे अपनी शक्ति समय-समय पर लगाते रहते हैं और इसलिए एक प्रकार का यह असमाधान महसूस करते हैं कि आन्दोलन कोई समग्र रूप धारण नहीं कर पा रहा है।

सम्मेलन की खूबी रही कि इन सभी मित्रो ने अपने विचार पूरी मुक्तता से रखे और अन्त में एक सर्व सम्मत निर्णय पर आ सके। ४००-५०० भाई बहनो का यह सेवाग्राम अधिवेशन एक ऐतिहासिक मोड़ पर हुआ और यद्यपि उसमे नेतृत्व देने वाले हमारे ज्यादातर बुजुर्ग और प्रमुख साथी उपस्थित नही रह सके परन्तु इसमें से गण-सेवकत्व की दृष्टि निष्पन्न हुई। इसमे कोई शका नही है कि देश की अन्य किसी जमात के पास कर्मठ और विचारशील, पूरे समय एक ही ध्येय से काम करने वाले इतने कार्यकर्ता नही है और न कोई अन्य सम्मेलन ऐसा हो सकता है जो इतनी मुक्तता और विभिन्न विचार सरिणियो को साथ लेकर चले। सेवाग्राम का यही सन्देश है और यही उसका न बुझने वाला प्रकाश है।

अहिंसक शक्ति संचित करना चाहिए

सेवाग्राम में राष्ट्रीय परिषद

परिषद के लिए समाज-जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से १५० लोगों को आमंत्रित किया गया था परन्तु उपस्थिति एक तिहाई से आगे न बढ़ सकी। राजनीति के क्षेत्र से आचार्य जे० बी० कृपलानी, एस०एम० जोशी, कृष्णकान्त के अलावा विश्वविद्यालयों के कुछ शास्त्रज्ञ और सर्वोदय के प्रमुख कार्यकर्ता भाग ले पाये। इतनी कम उपस्थिति क्यों रही इसका कोई एक कारण नहीं हो सकता, लेकिन जयप्रकाश नारायण, जो इस परिषद के आयोजन के प्रेरक रहे, की अनुपस्थिति की सूचना भी एक कारण रहा है और उस अभाव को परिषद में पूरे समय अनुभव किया जाता रहा।

आस्था से पहले देश—परिषद की चर्चाओं का प्रारंभ ८६ वर्षीय आचार्य जे० बी० कृपलानी ने किया। उनकी राय थी कि पिछले २५ वर्षों में देश की राजनैतिक, आर्थिक व नैतिक स्थिति में भारी गिरावट आयी है। इसका कारण गांधी का विस्मरण है। इस कालावधि में रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने बहुत भले काम किये परन्तु जीवन के प्रति गांधी की जो समग्र दृष्टि थी उसको छोड़ देने के कारण देश की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। गांधी का कहना था कि जीवन अलग-अलग भागों में विभक्त नहीं है। वह परस्पर सम्बद्ध है। इसलिए गांधी ने जीवन के सभी क्षेत्रों में काम किया परन्तु गांधी के जाने के बाद हम अपना काम तो करते रहे परन्तु राजनीति की तरफ हमने ध्यान नहीं दिया। इससे न तो लोकशक्ति बनी और और न देश की हालत सुधरी।

आचार्य का मत था कि इस सारी परिस्थिति को बदलने का गांधी सुचित मार्ग सत्याग्रह या अहिंसक प्रतिकार है। कुछ के आगे खड़ा करके ही लोगों को आगे-आगे बढ़ाया जा सकता है। हमने लोगों को 'ना' कहना नहीं सिखाया, हमने जनता को तो कोई रास्ता नहीं दिखाया, कहा जाता है कि डेमोक्रेसी में सत्याग्रह नहीं हो सकता, परन्तु हमारे देश में डेमोक्रेसी है कहां? हमारे देश में लोकतन्त्र नहीं अनुशासनहीनता है।

अहिंसा की व्याख्या करते हुए जे० बी० ने कहा कि अहिंसा के दो प्रकार हैं-व्यक्तिगत अहिंसा और सामाजिक अहिंसा। व्यक्तिगत अहिंसा अपनी आत्मा के उद्धार के लिए है और सामाजिक अहिंसा सामाजिक मुक्ति के लिए है। मैं अपनी आत्मा के बजाय देश के उद्धार को पहले रखूंगा। ८६ वर्ष के वृद्ध शरीर में इस तरह की देशभक्ति के उद्गार देखकर भावुक लोगों की आंखों में आंसू छलछला आये। अहिंसक प्रतिकार के लिए आवश्यक शक्ति हमारे पास है क्या? इसका जवाब देते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा 'भारत छोड़ो के समय कांग्रेस का बहुमत गांधी के साथ नहीं था फिर भी गांधी ने कहा कि मैं अकेला ही लड़ूंगा। इसलिए शक्ति न होने का बहाना ठीक नहीं। हमें अच्छी से अच्छी सरकार का भी मुकाबला करना पड़ेगा, सत्याग्रह आज का धर्म है।'

राजनैतिक दलों में नैतिक मानदण्ड—राजनैतिक क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की अनैतिकता प्रविष्ट हो चुकी है। इस बात कृपलानीजी ने पहले ही तीखे रूप में बयान कर दिया था जिस पर श्री एस० एम० जोशी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने स्वीकार किया कि शासक दल में राजनैतिक भ्रष्टाचार है यह सच है लेकिन हम दूसरे पक्ष वाले भी उससे मुक्त नहीं हैं। दल-बदल हो, चाहे चुनावों में काले धन का उपयोग हो वह सत्ताधारी दल की तरह हम भी उपयोग में लाते हैं। बाद में श्री कृष्णकान्त ने भी यह स्वीकार किया कि हम सभी पक्ष के लोगों में राजनैतिक भ्रष्टाचार फैला हुआ है। श्री जोशी की इस स्वीकारोक्ति का सुनने वालों पर इतना गहरा असर हुआ कि परिषद में भाग लेने वाले और प्रेक्षकों में उनके सन्तुलित भाषण की खूब चर्चा रही।

राजनीति में नैतिकता का स्तर ऊंचा रहे इसके लिए श्री श्रीमन्नारायण का सुझाव था कि चुनावों में उम्मीदवारों के द्वारा जो खर्च होता है उसका हिसाब प्रकाशित किया जाना आवश्यक है। उनकी राय थी कि सन् १९६७ के बाद से चुनाव के लिए कम्पनियों के पैसा देने पर जो प्रतिबन्ध हुआ है उससे काले धन का चुनावों में भारी उपयोग होने लगा है। दूसरी तरफ श्री आर० के० पाटिल इस कानून के प्रशंसक थे, परन्तु उनका मत था कि चुनाव की पद्धति सस्ती और शुद्ध होनी चाहिए। लोकतंत्र में वोटर के वोट का महत्व निर्विवाद रूप से सिद्ध है। चुनाव हर ५ साल बाद होते हैं। अब उनके मत में प्रश्न था कि चुनावों के बीच के काल में सरकार को कैसे नियंत्रित रखा जाये? गांधी ने इस बारे में मतदाता शिक्षण की बात कही थी। हमने वैसा नहीं किया। अब दो ही रास्ते हैं—पहला सत्याग्रह और दूसरा शासन करना असंभव कर देना।

नेहरू, गांधी और मार्क्स:—सबको विदित है कि कार्ल मार्क्स की विचार साधना में से साम्यवाद का जन्म हुआ। गांधी और मार्क्स दो विपरीत ध्रुव समझे जाते रहे हैं। दूसरी ओर यह भी सर्व विदित है कि गांधी ने स्वर्गीय जवाहरलाल नेहरू को अपना राजनैतिक उत्तराधिकारी घोषित किया था। एक आवाज बार-बार उठती रही है, विचारशील लोगों की तरफ से कि भारत में भारतीय ढंग का समाजवाद ही आ सकता है। आना चाहिए। जैसे कि श्री कृष्णकान्त का विचार था कि मार्क्सवाद चीन में माओवाद के रूप में अमल में आया और रूस में लेनिनवाद के रूप में। भारत में हम समाजवाद को क्या रूप देंगे यह अभी तय नहीं हो पाया। परन्तु देश के उन लोगों को, जो समाजवाद के भारतीय संस्करण के लिए चिन्तित व प्रयत्नशील हैं, प्रो० ब्रह्मानन्द के इस रहस्योद्घाटन से काफी आश्वासन मिलेगा कि जीवन के आखिरी दिनों में मार्क्स का चिन्तन उस दिशा में विकसित हुआ जिसे गांधी तत्व का मर्म कहा जाता है। प्रो० ब्रह्मानन्द मार्क्स-दर्शन पर काफी गहरा अन्वेषण करते रहे हैं। उन्होंने

→

कार्यवाही का कार्यक्रम

परिषद इसके लिए नीचे लिखे 'एक्शन प्रोग्राम' सुझाती है :

१. गाव-गाव मे ग्रामसभाओ द्वारा तथा नगरो मे मुहल्ला-सभा द्वारा लोकशक्ति की प्राथमिक इकाइयों के रूप मे जनता को सगठित किया जाए। इन इकाइयो मे हर घर का प्रतिनिधित्व हो। ये इकाइया अपने निर्णय सर्वसम्मति या सर्वानुमति से करें, पहले अपने कर्तव्य, फिर अधिकारो का विचार करें, तथा पूरी इकाई के हित के कार्यक्रमो को हाथ मे लें।

२. भारत के हर नागरिक को काम मिले यह उसका सवैधानिक अधिकार है। इसलिए इकाई के सदस्य अपने यहा के हर प्रौढ़ स्त्री पुरुष को काम देने की योजना बनाए और इन्हें काम दिए जाने की माग करें; अपने लिए आवश्यक अनाज तथा जीवन की अन्य प्राथमिक जरूरतो के वितरण की व्यवस्था करें; तथा गाव के हरिजन आदिवासी तथा अन्य अन्त्यजनों की परिस्थिति सुधारने के लिए सक्रिय बनें। इकाइया अपने क्षेत्र में अनाज की जमाखोरी के खिलाफ कार्रवाई करें।

३. हिंसा का मुकाबला करने तथा असामाजिक तत्त्वो का सामना करने के लिए जगह-जगह शांति सेना के जत्थे खड़े किए जायें।

४. सीलिंग, बासगीत, बेदखली आदि भूमि से सम्बन्धित कानूनों के अमल के लिए समाज-सेवक तथा राजनैतिक कार्यकर्त्ता यथासम्भव सरकारी कर्मचारियो के सहयोग से गाव की ग्रामसभा के सामने तात्कालिक कार्रवाई करें। जहा इस प्रकार के कानून न बनें हों, वहा इन प्रश्नो को हल करने के लिए लोकमत जागृत किया जाए।

५. घूसखोरी के खिलाफ जनमत तैयार किया जाए और इसके प्रतिकार के लिए आन्दोलन किए जाए।

६. दहेज, फिजूलखर्ची तथा विलासपूर्ण उपयोग जैसी सामाजिक कुरीतियो के खिलाफ आन्दोलन खड़े किए जायें। इसमें विशेषतः युवाशक्ति और स्त्रीशक्ति को लगाया जाए।

७. सविधान मे उल्लिखित नशाबन्दी के सिद्धान्त को मान्य कराने के लिए लोकशक्ति जगाई जाए। इसके लिए व्यापक लोक शिक्षण किया जाए तथा जहा लोकल आप्शन के सिद्धान्त की पूर्ति के बावजूद नशाबन्दी न होती हो, वहा सत्याग्रह किए जायें।

८. जहा कहीं भी हरिजनो तथा दलितो पर अत्याचार हो वहा समाज जीवन में दिलचस्पी लेनेवाले हर कार्यकर्त्ता एव सगठन तथा राजनैतिक दलो को मिलकर उसका जाहिर विरोध प्रकट करना चाहिए।

इनमें से एक या अधिक कार्यक्रमो को जगह-जगह लोगो के सगठनो द्वारा उठाया जाए। ग्रामस्वराज्य आन्दोलन के सघन क्षेत्रो तथा रचनात्मक कार्य के अन्य क्षेत्रो मे इन कार्यक्रमो को विशेषरूप से उठाने का प्रयत्न किया जाए।

सिफारिशें

परिषद की शासन तथा जनता से निम्नलिखित सिफारिशें हैं -

१ चुनावो को भ्रष्टाचार रहित तथा कमखर्चीला बनाने के लिए तुरन्त आवश्यक कार्यवाही की जाए।

२. जिन सार्वजनिक कार्यकर्त्ता, विधायक, मत्री आदि के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप सिद्ध हो चुके हो उन्हें कोई राजनैतिक दल चुनाव के लिए टिकट न दें।

३. आज देश के लिए सादगी, मितव्ययिता और स्वदेशी ये युगधर्म हैं। इनके अमल का आरम्भ राष्ट्रीय जीवन के उच्चतम लोगो को अपने उदाहरण से करना चाहिए तथा समाज के हर स्तर पर उसका आग्रह किया जाना चाहिए। खेती तथा उद्योग-धन्धों मे लगे हुए लोग उत्पादन बढ़ाने के अपने कर्तव्य को पूरा करें तथा उत्पादन में बाधा पहुंचे ऐसे काम न करें।

४. वर्तमान शिक्षा पद्धति मे आमूलाग्र परिवर्तन करना आवश्यक है। शिक्षा का जीवन से सम्बन्ध हो, उसका माध्यम समाजोपयोगी उत्पादक श्रम हो। डिग्रियों का सम्बन्ध नौकरियों से न रखा जाए।

५. गरीबी तथा आर्थिक विषमता का निराकरण आर्थिक योजना का सर्वप्रथम ध्येय हो। जिन लोगों को काम चाहिए उन सबको, तथा खास करके सबसे नीचे के वर्ग को, रोजगार देने की तथा सामान्य गरीब जनता के जीवन की प्राथमिक आवश्यकता की चीजो का उत्पादन बढाने की दृष्टि से योजना हो। ये उद्योग पूजी-प्रधान तरीके के बजाय श्रम-प्रधान तरीके से चलाए जायें जिससे बेकारी मिटाना, गरीबो की क्रय-शक्ति बढ़ाना तथा उनका जीवनस्तर ऊंचा उठाने का काम एक साथ हो सकें। विलास की तथा खर्चीली चीजें, जैसे टेलीविजन, एयरकण्डीशनर आदि के उत्पादन तथा आयात पर रोक लगाई जाए।

६ ऊपर बताई हुई दृष्टि से छोटी तथा मध्यम सिंचाई योजनाओ को प्राथमिकता दी जाए तथा गावो में उपलब्ध कच्चे माल को पक्का माल बनाने के उद्योग गावो मे खड़े किए जायें। ऐसे उद्योगो को मारनेवाले बड़े उद्योगो पर प्रतिबन्ध लगाए जायें। आर्थिक रचना का केन्द्रबिन्दु कृषि-औद्योगिक समाज तथा उसका स्वरूप विकेन्द्रित हो।

७ गरीब वर्ग का सबसे बड़ा दुश्मन मुद्रा-स्फीति है, जिसके कारण चीजों के भाव बराबर बढ़ते जाते हैं। इसलिए घाटे की वित्तीय-व्यवस्था 'डेफिसिट फाइनेन्सिंग' को बिलकुल बन्द किया जाय।

परिषद की सिफारिश है कि आज की परिस्थिति से त्राण पाने के लिए देश की जनता ऊपर सुझाए एक्शन प्रोग्राम को तुरन्त उठाये तथा देश के रचनात्मक कार्यकर्त्ता, जनसेवक तथा राजनैतिक दल सब इस काम मे सक्रिय हो जायें। शासन भी परिषद की सिफारिशो को अमल मे लाने पर तुरन्त ध्यान देगा ऐसी आशा है। परिषद का यह मत है कि आज की गभीर परिस्थिति का मुकाबला राष्ट्र का हित चाहनेवाले सब लोग मिलकर ही कर सकते हैं। देश की गरीब जनता, किसान व मजदूर, उसके युवाजन तथा स्त्रीशक्ति से परिषद की विशेष तौर पर अपील है कि वे इन कार्यक्रमो को उठा कर देश को नया नेतृत्व दें तथा देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशा व आत्मविश्वास प्रदान करें।

ट्रस्टीशिप यानी मालिक मजदूर सम्बन्धों में क्रांति

जयप्रकाश नारायण

(जुलाई' ७३ के आखिरी सप्ताह में जयप्रकाश नारायण ट्रस्टीशिप के काम को नया आधार और बल देने के लिए बम्बई गए थे। दो-तीन बैठकें कर पाये थे कि जे० पी० अचानक बीमार हो गये और उन्हें हाथ का काम छोड़ना पड़ा। मजदूरों के बीच उनका भाषण हम यहां दे रहे हैं।)

ट्रस्टीशिप एक बहुत बड़ा विषय है, बहुत महत्व का विषय है। केवल मजदूरों के लिए ही नहीं सारे समाज के लिए महत्व रखता है। जिस प्रकार के समाज की हम रचना करना चाहते हैं, उस समाज की जो बुनियाद होगी, वैचारिक बुनियाद, वह जरूर इस ट्रस्टीशिप की बुनियाद होगी। प्राइवेट सेक्टर, पब्लिक सेक्टर, पूंजीवाद, साम्यवाद, समाजवाद अन्य दूसरे वाद—कोई भी आप ले लें, उनके आधार पर जो समाज बने हैं, वहां जो समस्याएं उठती हैं, मजदूरों से सम्बन्ध रखने वाली और बाकी समाज से सम्बन्ध रखने वाली, छोटी, बड़ी कोई भी समस्या आप ले लें, मुझे नहीं लगता है कि उनमें से किसी भी वाद में, न लोकतांत्रिक समाजवाद में न अधिनायकवादी साम्यवाद में इनका कोई भी हल निकल पाया है। जो समस्याएं उठती हैं, उनके हल के लिए, जो भी कायदे कानून बनाये जाते हैं, जहां तानाशाही है, वहां जो भी जोर जबरदस्ती होती है, वह भी की जाती है लेकिन बावजूद इसके उनको लोगों के दिलों को छूना पड़ता है। वे भी महसूस करते हैं कि लोगों से उस प्रकार की अपील किये बगैर, जिससे उनके हृदय के कुछ भाव उभरें, और मैं केवल मजदूर ▮ और मेरा और यूनियन का इतना ही कर्तव्य है कि अधिक से अधिक हमें हिस्सा मिले, पैदा होने वाले मुनाफे पर या और भी जो सुविधाएं प्राप्त हो सकती हैं—केवल ऐसी ही भावना न रहे।

अभी ये अनेक अमरीका गये थे, उन्होंने वहां आध्यात्मिक मूल्यों की भी बात की। लु, श्चेव के जाने के बाद रूस में एक बहस चली थी कि हमें उपभोक्ता सामग्री की ओर जाना चाहिये, छोटे उद्योगों की ओर जाना चाहिये जिससे जनता की आवश्यकता की चीजों की हम पूर्ति कर सकें, उनका जीवन स्तर हम उठा सकें। या हमें वही पुराने रास्ते—बड़े भारी उद्योगों के रास्ते की ओर ही बढ़ते जाना है? लोग इस विचार के कायल थे, कि नहीं हमें अपने नागरिकों का सहयोग प्राप्त करना है, चाहे वे मजदूर हों, दफ्तर में काम करने वाले हों, स्कूलों में हों—यहां तो सब काम करने वाले लोग हैं—इनका सहयोग प्राप्त करना है तो हमें केवल आर्थिक प्रलोभन ही नहीं देना चाहिये। अगर हम उस दिशा में जायेंगे तो हम साम्यवाद को खो देंगे। हमें मनुष्य की मानसिक भावनाओं को जाग्रत करना होगा।

मजदूर मालिक कैसे हों

कोई भी देश ले लें। चीन ही लें। माओ की लाल किताब में से कई वाक्य आप निकाल सकते हैं और उनके नीचे माओ के नाम के बदले महात्मा गांधी भी लिख दें तो कोई पहचान नहीं सकेगा कि यह माओ का है कि गांधी का। उस भावना के बिना मनुष्य का समाज नहीं बन सकता, न कानून से बन सकता है न भय से बन सकता है। इन ▮ लोगों ने इसे महसूस किया है लेकिन

मजदूरों की सभा में जे. पी.

कोई रास्ता वे निकाल पाये हों ऐसा तो लगता नहीं है। जहां तक साम्यवादी देशों की बात है, मुझे लगता है कि शायद युगोस्लाविया ने किसी हद तक इस समस्या का हल निकाला है। वहां के मजदूरों की साझेदारी की ही बात नहीं करते हैं। वे मजदूरों की, समाज की, मिल्कियत की भी बात करते हैं। केवल मजदूरों की साझेदारी ही नहीं मजदूरों द्वारा संचालन भी मानते हैं। वहां की मजदूर परिषदों को यह अधिकार है कि यदि फैक्टरी में किसी नये व्यवस्थापक की, वैज्ञानिक की जगह खाली हो तो इस मजदूर परिषद की ओर से ही विज्ञापन दिया जायेगा, उसके उत्तर में नौकरी पाने की, दो सौ जो प्रार्थनापत्र आयेंगे, उन लोगों का इन्टरव्यू मजदूर परिषद के लोग करेंगे। उनके साथ उनके सलाहकार, विशेषज्ञ जरूर रहेंगे, मदद देने के लिए ऐसे विशेषज्ञों को राज्य भी भेज सकता है और पार्टी भी। लेकिन व्यवस्थापक को, निदेशक तक को नियुक्त करने का अधिकार इस मजदूर परिषद को ही होगा। याने वहां उद्योग में केवल मजदूरों साझेदारी ही नहीं, पूरा संचालन हाथ में, मिल्कियत उनके हाथ में है।

→ ११

पिछले कई वर्षों से मैं युगोस्लाविया नहीं गया हूं। एक बार जब मेरे मित्र मिलोवान जिलास जेल से छूटे थे तो उनसे मिला था। वे मेरे होटल में आये थे तो मेरे जो साम्यवादी मेजबान थे वे कुछ नाराज से हुए थे कि जिलास से आप क्यों मिले। उन्होंने कुछ कहा नहीं मुझ से, लेकिन उनकी आकृति और व्यवहार से मुझे ऐसा लगा—फिर उस घटना के बाद से मेरी युगोस्लाविया जाने की तबियत नहीं हुई, फिर से जाने का कोई मौका भी नहीं लगा। यहां भारत में जो सहकारी संघ मजदूरों द्वारा चलाये जाते हैं, उनमें मजदूर अपने इन मजदूरों को इतना वेतन नहीं देते जितना वे स्वयं अपने मालिक से मांग करते हैं। बल्कि ये मजदूर अपने मजदूरों को आधा वेतन ही देते हैं। आप देख सकते हैं कि इसमें बुनियादी कारण क्या है? कोई पूंजीपति हो या मजदूरों द्वारा चलाया जा रहा सहकारी संघ हो, जहां भी मालिक-मजदूर का सम्बन्ध होगा वहां यह झगड़ा शुरू हो जाता है। स्वयं मजदूरों द्वारा चलाये जा रहे सहकारी संघो में शोषण हो सकता है, हड़ताल हो सकती है।

युगोस्लाविया आगे है?

युगोस्लाविया में मुझे एक कारखाने में ले गये जहां उन लोगों ने हमें यह बतलाया कि जब पहली बार टीटो ने बहुत हिम्मत के साथ मजदूरों की मिल्कियत के इस कदम को उठा कर इस कारखाने में इसे लागू किया तो पहले साल मुनाफा हुआ। मजदूर परिषद ने फैसला करके मुनाफा आपस में बांट लिया। तब वहां की साम्यवादी पार्टी को बीच में पड़ना पड़ा। उसने मजदूरों को समझाया कि मान लो किसान जो फसल पैदा करता है उसे सारा खा जाये, अगली फसल के बीज के लिए अनाज न रखे तो क्या होगा? तो तुम्हारी मिल है, मालिक समाज है, उसने तुम्हें यह मिल सौंपी है, एक ट्रस्टी के नाते तुम्हे उस समाज के लिए इसे चलाना है, तुम्हें सारे अधिकार हैं। मजदूर परिषद है, मजदूर-निदेशक के बीच जो विवाद होंगे वे कैसे निपटाये जायेंगे—इसके कई तरीके उन्होंने बताये हैं। यदि मजदूर परिषद एक बात कहे और जो मशीनों का जानकार है, टेक्नोक्रेट है, वह कोई दूसरी बात कहे तो विवाद को भी हल करने का उन्होंने रास्ता निकाला है। इस तरह पार्टी ने इन मजदूरों को समझाया कि यदि इस साल मुनाफा हो तो उसे अगले साल के लिए फिर से लगाओ। मिल की उन्नति के लिए तुम्हें संचित कोष एकत्र करना होगा, तब वहीं मिल का विस्तार होगा। और इसके भी आगे—बावजूद इसके कि हम एक साम्यवादी समाज बना रहे हैं, हम उद्योगों के बीच होड़ भी करायेंगे। क्योंकि यदि वह होड़ नहीं रही तो कार्य-क्षमता घटेगी। मोनोपली रह जायेगी राज्य की तो कार्यक्षमता पर कोई प्रतिबंध नहीं रहेगा। इसलिए ट्रस्टीशिप का काम कैसे होगा, कितना होगा—यह सब आप (मजदूरों) को तय करना है।

यह सब मैंने इसलिए कहा कि मुझे लगता है कि जहां लेबर पार्टी की सरकार बनी, समाजवादी सरकार बनी, भले ही मिली-जुली सरकार की तरह आयी (जर्मनी या स्केन्डेनेविया के देशों की तरह) तो वे भी इस प्रश्न को हल नहीं कर पायी।

जहां तक स्वीडन की बात है, मैं जब वहां गया था, तब सर्वोदय आन्दोलन में आ चुका था। फिर भी लोग जानते थे कि भारत का पुराना समाजवादी हूं, और राष्ट्रीय आन्दोलन में कुछ किया है। जो वहां के इस्पात उद्योग के निदेशक थे, उनकी बगल में मुझे बिठाया गया। खाते समय मैंने उनसे पूछा कि मजदूर इस सारे काम में कितना साथ देते हैं? क्योंकि यह पब्लिक सेक्टर है, समाजवादी सरकार है, तो काम की तरफ उनका कितना ध्यान रहता है? हम देश के उत्पादन में कितना भाग ले रहे हैं, देश को क्या योगदान दे रहे हैं? उन्होंने कहा कि आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि हमारे मजदूर सोचते हैं कि हमें अपनी अगली छुट्टी किसी फ्रांसीसी या इतालवी गरम झरने के स्थान पर बितानी है। इन देशों में बर्फ खूब पड़ती है तो ऊंचा वर्ग अक्सर ऐसे गरम पानी के स्रोतों पर ही छुट्टियां बिताना पसंद करता है। उन्हीं की तरह मजदूर भी सोचते हैं। यह पूंजीवादी वर्ग की भावना उनमें आ गई है, समाजवादी सरकार के होते हुए।

हम लोगो ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाई थी। उसमें चौदह कार्यक्रम थे। एक कार्यक्रम यह था कि 'हरएक से उसकी शक्ति के अनुसार और हरएक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।' कार्यक्रम लेकर हम बापू के पास आये। उनसे कहा कि हम लोगों ने पार्टी बनाई है, यह उसका कार्यक्रम है। उन्होंने उस कार्यक्रम के ऊपर अपनी उंगली रखी और कहा कि जयप्रकाश यदि यह कार्यक्रम तुम लोग पूरा कर दो तो मैं तुम लोगो के साथ सौ फीसदी हूं। यह कार्यक्रम असम्भव है, आप समाजीकरण कर दें, कानून बना दें या लोगों का दिमाग बदलने के लिए जेल खोल दें, दण्ड देने लगें तो भी यह नहीं होगा।

भौतिकवाद की विफलता

रूस में यह शुरू हुआ था कि वेतन का फर्क बहुत ज्यादा नहीं होना चाहिये। कम से कम और अधिक से अधिक वेतन में एक और तीन का अनुपात होना चाहिये। फिर वहां एक समस्या आई। जो नौजवान थे वे सोचने लगे कि हम इतना पढ़ेंगे-लिखेंगे, इंजीनियर बनेंगे तो भी हमें पगार तो उतनी ही मिलेगी। फिर यह सब पढ़ने की क्या जरूरत है? फिर उनको सरकार की ओर से प्रलोभन देना पड़ा, साम्यवादी देश में अपने नौजवानों को अच्छी तरह से पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रलोभन देना पड़ा। इसलिए साम्यवादी देशों में अधिक सुविधाएं पाने वाला वर्ग छोटे बच्चों का ही है जिससे वे अच्छी तरह से पढ सकें। स्वीडन के बाद मैंने रूस में बच्चों पर सबसे अधिक ध्यान देते देखा है। वहां अगर कोई वर्ग है तो वह टेक्नोक्रेट का, वैज्ञानिकों का वर्ग है। उनको सब तरह की मदद देती है सरकार क्योंकि वह समझती है कि उनके ऊपर उसका भविष्य निर्भर करता है। आज यह स्थिति है कि इतने सालों के बाद भी रूस का काम बिना अमरीकी, पश्चिमी जर्मन तकनीक के चल नहीं रहा है। आज रूस-अमरीका में जितने भी समझौते हो रहे हैं, उसके पीछे यही कारण है कि उनको तकनीक का लाभ उन्हें मिले।

→

→

यह सब मैं आप से क्यों कह रहा हूं? समाज में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन हो जाने के बाद भी, चाहे वह परिवर्तन कानून से हो, भय से हो, लोकतान्त्रिक पद्धति से हो, या क्रान्ति से हो—यह समस्या ज्यों की त्यों कायम रहती है। यह बात सुन कर भारत के लोगों को आश्चर्य होगा—यह बात खटकेगी कि मैं समझता हूं कि दुनिया के सब साम्यवादी नेताओं में अगर मेरे विचार किसी के सबसे नजदीक हैं तो वह माओ के हैं। क्यों कि मैं देखता हूं कि माओ इस कोशिश में है कि नौकरशाही को दूर रखा जाये, —चाहे वह नौकरशाही पार्टी में हो, मिल में हो, प्रशासन में हो, खेतों में हो, —नौकरशाही का प्रभाव कम किया जाये और ऐसी प्रेरणा लोगों को दी जाये, नैतिक प्रेरणा, मनोवैज्ञानिक प्रेरणा कि वे काम कर सकें। इस तरह की प्रेरणा रूस में भी है। वहां लेनिन पुरस्कार मिला, किसी को वहां की फैक्टरी की सूची में स्थान दिया। जैसे अपने यहां पद्म विभूषण आदि पुरस्कार हैं, उसी तरह वहां भी मनोवैज्ञानिक प्रेरणायें दी गयीं—इन सबके बाद भी काम पूरा नहीं होता है।

गांधी का रास्ता

मैं यह नहीं कहूंगा कि गांधीजी इस मामले में कोई अन्तिम शब्द कह गये हैं। उनके बाद कोई नया विकास हो नहीं सकता। वे स्वयं कह कर गये थे कि मैं आज जो कुछ कह रहा हूं, वह मुझे आज ठीक लगता है लेकिन कल अगर वह गलत लगे तो उसे बदलूंगा। वे कहते थे कि आज जो कहता हूं उसे ठीक मानो, कुछ साल पहले क्या कहा उसे मत देखो। उनका विचार सतत् बढ़ता रहता था। उनकी बुनियादी बात थी कि मनुष्य को कुछ ऐसा हम बनायें, उसके अन्दर की भावनाएं ऐसी बनायें कि समाज के सदस्य की हैसियत से, नागरिक की हैसियत से, एक उद्योग के मजदूर, वैज्ञानिक, मैनेजर किसी भी पद की हैसियत से उसके क्या कर्तव्य हैं, वह उन भावनाओं से उसे समझ सके। उन्होंने इसे ट्रस्टीशिप कहा। राजाओं को भी उन्होंने ट्रस्टी की तरह काम करने को कहा। उन्होंने अंग्रेजों तक से कहा कि तुम लोग यहां आकर एक ट्रस्टी की तरह राज करते तो आज तुमसे कोई नहीं कहता कि तुम यहां से निकल जाओ। तब राज तुम्हारा नहीं होता हमारा ही होता। ट्रस्टी तो अप्रासंगिक होता है। मजदूरों को भी इस बात को मान कर कि उनका श्रम एक ट्रस्ट है, समाज के लिए उसे इस्तेमाल करना है। समाज का अधिकार है कि हमारे भरण-पोषण के लिये जो आवश्यक है वह हम को मिले। जो हम पैदा करते हैं, जो रुपये वाले पूंजी जमा कर करते हैं, या विज्ञान वाले करते हैं, उस सब में से ऐसा वितरण हो आपस में कि वह सब के लिए न्याय हो। गांधी जी तो कहते थे कि जो हजामत करने वाला है और जो इन्जीनियर है उसको भी आवश्यकता के अनुसार ही मिलना चाहिये। मार्क्स का जो वाक्य था 'हरेक से उसकी शक्ति के अनुसार, हरेक को उसकी आवश्यकता के अनुसार,' उसे बापू सोलह आना मानते थे। और यह तब तक नहीं हो सकता जब तक मानस परिवर्तन नहीं होगा।

गांधीजी ने इस ट्रस्टीशिप पर बहुत कुछ लिखा है। कुछ संग्रह भी हुआ है। अब उन चीजों को खोज कर निकालने की ओर उन बातों को लोगों के सामने रखने की जरूरत आ गई है।

भारत की आजादी का नेतृत्व करके उन्होंने आजादी दिलाई, इतिहास ने भी मदद की, उन्होंने ही जो कुछ किया उसी से हुआ, ऐसा मैं नहीं कहता। लेकिन इस देश को यदि कोई उठा सका, एक आन्दोलन बना सका, और अंग्रेज को मालूम हो सका कि सारा देश उसके खिलाफ है, तो वह गांधी ही कर सके। अगर हम उनके बताये मार्ग को भूले नहीं होते और उस पर चलते होते तो आज नक्शा ही दूसरा होता। आज कोई इवान इलीच आ जाता है, कोई विदेशी विचारक आ जाता है तो दिल्ली में खलबली मच जाती है। मैंने सुना कि प्रधानमन्त्री ने इवान इलीच की किताब 'डीस्कूलिंग' और 'रिटूलिंग सोसाइटी' पढ़ी और उनसे बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने उन किताबों को शिक्षा मन्त्रालय को भेजा है।

यह बहुत दुःख की बात है कि इस तरह गांधी को वहां भुला दी गयी। विनोबाजी का जो आन्दोलन चला उसमें उन्होंने गांधीजी के कार्यक्रम में नये कार्यक्रम भी जोड़े। और चूंकि यह कृषिप्रधान देश है, भूमिहीनता की एक बड़ी समस्या है, उन्होंने भूमि की समस्या ली, भूदान का काम शुरू किया। फिर गांधी जी ने कहा था कि स्वराज्य की इमारत बनेगी तो नीचे से बनेगी, जनता का राज्य होगा, जनता की साझेदारी से काम होगा, जैसे आपके यहां मजदूरों की साझेदारी की बात होती है। साझेदारी गांव स्तर से ही शुरू की जा सकती। इसलिये ग्रामस्वराज्य का आन्दोलन शुरू किया, उसमें भी कुछ न कुछ सफलता मिली है। जितनी अपेक्षित थी, उतनी नहीं मिली है अभी। लेकिन बुनियाद बनी है, आगे का एक मार्ग खुला है।

बम्बई में काम

शहरों में काम करने के लिये श्रीकृष्ण दास जाजू जी के साथ मैं बम्बई आया था और वहां कुछ काम किया था ट्रस्टीशिप का। मुझे आज तक याद है कि हमें ऐसा कोई नहीं मिला जिसने कहा हो कि हमारी जो मिल है वह हमारी सम्पत्ति है। सबने स्वीकार किया कि यह सब है समाज का ही, हमारा भी इसमें हक है बस। समाज की मदद से यह उद्योग चल रहा है। उनमें से जो उद्योगपति कुछ प्रगतिशील विचार के थे उनने हमारे मुंह से शब्द छीन कर कहा कि यह समाज का ही है। लेकिन दुर्भाग्य यह रहा कि जाजू जी की मृत्यु हो गई। हम लोग भी संख्या में बहुत थोड़े ही हैं, ज्यादा समय देहातों में गया तो यह काम बीच में रुक गया। उसी समय थोड़े दिनों बाद अम्बेडकर साहब से भी बात हुई कि आप लोग गांधीजी के रास्ते पर चलना चाहते हैं तो कुछ सोचना चाहिये। मुझे ऐसा नहीं लगा कि उन्हें बहुत उत्साह था इस बातचीत से फिर भी विरोध नहीं मिला। कोई करे तो वे प्रयोग करने के लिये तैयार हैं। लेकिन अकेले मजदूर तो कर नहीं सकता यह काम, जब तक उसके पास पूरा एक कारखाना न हो। और अपने देश में मेरे ख्याल से ऐसा कोई कारखाना तो है नहीं। कुछ सोसायटी आदि तो हैं लेकिन उनमें भी सारे काम करने वालों के शेयर तो

→

→

पिछले कई वर्षों से मैं युगोस्लाविया नहीं गया हूं। एक बार जब मेरे मित्र मिलोवान जिलास जेल से छूटे थे तो उनसे मिला था। वे मेरे होटल में आये थे तो मेरे जो साम्यवादी मेजबान थे वे कुछ नाराज से हुए थे कि जिलास से आप क्यों मिले। उन्होंने कुछ कहा नहीं मुझ से, लेकिन उनकी आकृति और व्यवहार से मुझे ऐसा लगा—फिर उस घटना के बाद से मेरी युगोस्लाविया जाने की तबियत नहीं हुई, फिर से जाने का कोई मौका भी नहीं लगा। यहां भारत में जो सहकारी संघ मजदूरों द्वारा चलाये जाते हैं, उनमें मजदूर अपने इन मजदूरों को इतना वेतन नहीं देते जितना वे स्वयं अपने मालिक से मांग करते हैं। बल्कि ये मजदूर अपने मजदूरों को आधा वेतन ही देते हैं। आप देख सकते हैं कि इसमें बुनियादी कारण क्या है? कोई पूंजीपति हो या मजदूरों द्वारा चलाया जा रहा सहकारी संघ हो, जहां भी मालिक-मजदूर का सम्बन्ध होगा वहां यह झगड़ा शुरू हो जाता है। स्वयं मजदूरों द्वारा चलाये जा रहे सहकारी संघों में शोषण हो सकता है, हड़ताल हो सकती है।

युगोस्लाविया आगे है ?

युगोस्लाविया में मुझे एक कारखाने में ले गये जहां उन लोगों ने हमें यह बतलाया कि जब पहली बार टीटो ने बहुत हिम्मत के साथ मजदूरों की मिल्कियत के इस कदम को उठा कर इस कारखाने में इसे लागू किया तो पहले साल मुनाफा हुआ। मजदूर परिषद ने फैसला करके मुनाफा आपस में बांट लिया। तब वहां की साम्यवादी पार्टी को बीच में पड़ना पड़ा। उसने मजदूरों को समझाया कि मान लो किसान जो फसल पैदा करता है उसे सारा खा जाये, अगली फसल के बीज के लिए अनाज न रखे तो क्या होगा? तो तुम्हारी मिल है, मालिक समाज है, उसने तुम्हें यह मिल सौंपी है, एक ट्रस्टी के नाते तुम्हें उस समाज के लिए इसे चलाना है, तुम्हें सारे अधिकार हैं। मजदूर परिषद है, मजदूर-निदेशक के बीच जो विवाद होंगे वे कैसे निपटाये जायेंगे—इसके कई तरीके उन्होंने बताये हैं। यदि मजदूर परिषद एक बात कहे और जो मशीनों का जानकार है, टेक्नोक्रेट है, वह कोई दूसरी बात कहे तो विवाद को भी हल करने का उन्होंने रास्ता निकाला है। इस तरह पार्टी ने इन मजदूरों को समझाया कि यदि इस साल मुनाफा हो तो उसे अगले साल के लिए फिर से लगाओ। मिल की उन्नति के लिए तुम्हें संचित कोष एकत्र करना होगा, तब कहीं मिल का विस्तार होगा। और इसके भी आगे—बावजूद इसके कि हम एक साम्यवादी समाज बना रहे हैं, हम उद्योगों के बीच होड़ भी करायेंगे। क्योंकि यदि वह होड़ नहीं रही तो कार्यक्षमता घटेगी। मोनोपली रह जायेगी राज्य की तो कार्यक्षमता पर कोई प्रतिबंध नहीं रहेगा। इसलिए ट्रस्टीशिप का काम कैसे होगा, कितना होगा—यह सब आप (मजदूरों) को तय करना है।

यह सब मैंने इसलिए कहा कि मुझे लगता है कि जहां लेबर पार्टी की सरकार बनी, समाजवादी सरकार बनी, भले ही मिली-जुली सरकार की तरह आयी (जर्मनी या स्केन्डेनेविया के देशों की तरह) तो वे भी इस प्रश्न को हल नहीं कर पायी।

जहां तक स्वीडन की बात है, मैं जब वहां गया था, तब सर्वोदय आन्दोलन में आ चुका था। फिर भी लोग जानते थे कि भारत का पुराना समाजवादी हूं, और राष्ट्रीय आन्दोलन में कुछ किया है। जो वहां के इस्पात उद्योग के निदेशक थे, उनकी बगल में मुझे बिठाया गया। खाते समय मैंने उनसे पूछा कि मजदूर इस सारे काम में कितना साथ देते हैं? क्योंकि यह पब्लिक सेक्टर है, समाजवादी सरकार है, तो काम की तरफ उनका कितना ध्यान रहता है? हम देश के उत्पादन में कितना भाग ले रहे हैं, देश को क्या योगदान दे रहे हैं? उन्होंने कहा कि आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि हमारे मजदूर सोचते हैं कि हमें अपनी अगली छुट्टी किसी फ्रांसीसी या इतालवी गरम करने के स्थान पर बितानी है। इन देशों में बर्फ खूब पड़ती है तो ऊंचा वर्ग अक्सर ऐसे गरम पानी के स्रोतों पर ही छुट्टियां बिताना पसंद करता है। उन्हीं की तरह मजदूर भी सोचते हैं। यह पूंजीवादी वर्ग की भावना उनमें आ गई है, समाजवादी सरकार के होते हुए।

हम लोगों ने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी बनाई थी। उसमें चौदह कार्यक्रम थे। एक कार्यक्रम यह था कि 'हरएक से उसकी शक्ति के अनुसार और हरएक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।' कार्यक्रम लेकर हम बापू के पास आये। उनसे कहा कि हम लोगों ने पार्टी बनाई है, यह उसका कार्यक्रम है। उन्होंने उस कार्यक्रम के ऊपर अपनी उंगली रखी और कहा कि जयप्रकाश यदि यह कार्यक्रम तुम लोग पूरा कर दो तो मैं तुम लोगों के साथ सौ फीसदी हूं। यह कार्यक्रम असम्भव है, आप समाजीकरण कर दें, कानून बना दें या लोगों का दिमाग बदलने के लिए जेल खोल दें, दण्ड देने लगें तो भी यह नहीं होगा।

भौतिकवाद की विफलता

रूस में यह शुरू हुआ था कि वेतन का फर्क बहुत ज्यादा नहीं होना चाहिये। कम से कम और अधिक से अधिक वेतन में एक और तीन का अनुपात होना चाहिये। फिर वहां एक समस्या आई। जो नौजवान थे वे सोचने लगे कि हम इतना पढ़ेंगे-लिखेंगे, इंजीनियर बनेंगे तो भी हमें पगार तो उतनी ही मिलेगी। फिर यह सब पढ़ने की क्या जरूरत है? फिर उनको सरकार की ओर से प्रलोभन देना पड़ा, साम्यवादी देश में अपने नौजवानों को अच्छी तरह से पढ़ाई जारी रखने के लिए प्रलोभन देना पड़ा। इसलिए साम्यवादी देशों में अधिक सुविधाएं पाने वाला वर्ग छोटे बच्चों का ही है जिससे वे अच्छी तरह से पढ़ सकें। स्वीडन के बाद मैंने रूस में बच्चों पर सबसे अधिक ध्यान देते देखा है। वहां अगर कोई वर्ग है तो वह टेक्नोक्रेट का, वैज्ञानिकों का वर्ग है। उनको सब तरह की मदद देती है सरकार क्योंकि वह समझती है कि उनके ऊपर उसका भविष्य निर्भर करता है। आज यह स्थिति है कि इतने सालों के बाद भी रूस का काम बिना अमरीकी, पश्चिमी जर्मन तकनीक के चल नहीं रहा है। आज रूस-अमरीका में जितने भी समझौते हो रहे हैं, उसके पीछे यही कारण है कि उनको तकनीक का लाभ उन्हें मिले।

→

होने नहीं हैं। वहां भी मालिक-मजदूर संबंध था हो जाते हैं। जितने काम करने वाले लोग हैं वे सब के सब मालिक होंगे तो फिर मालिकों से ही बात हो सकती है। बाद में उनके मजदूरों से बात होगी। मजदूर को स्वाभाविक ही लगता है कि यह कोई चाल है जो गांधी के नाम पर, या किसी बड़े व्यक्ति के नाम पर हमें ठगने के लिये चली जा रही है।

आप देखेंगे कि ब्रिटिश टी० यू० सी०, लेबर पार्टी का प्रमुख स्तम्भ है, यह उसकी जान है, उसी पर पार्टी का खर्च वगैरा निर्भर करता है। लेकिन आज भी ब्रिटिश टी० यू० सी० के सामने यह कोई विचार रखे कि उद्योग का जब राष्ट्रीयकरण हो चुका है तो अब जो आपकी यूनियन है उसके और मैनेजमेंट के सम्बन्ध में फर्क हो जाना चाहिये तो वे मानेंगे नहीं। मेरी उनसे बात हुई तो उन्होंने कहा कि हमारा तो मजदूर यूनियन का काम है, हम कम मजदूरों के हित के लिये लड़ेंगे—मिल्कियत चाहे जिसकी हो। हमें उनकी बातों से बहुत धक्का लगा। इस प्रकार से यह जो द्वन्द्व है समाज में वह मिटने वाला नहीं है। आप देख सकते हैं कि इस देश में जितने भी पब्लिक सेक्टर के उद्योग हैं वे किस तरह से चल रहे हैं। एक तो यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि मजदूर आन्दोलन में एकता नहीं रही। किसी भी उद्योग में वहां कामकर रहा मजदूर एक नहीं हो पाता। एक सही मजदूर आन्दोलन न होकर बहुत से राजनैतिक दलों के भाग हैं यहां। यह मजदूर की दृष्टि से बहुत गलत बात है।

अब मान लीजिये एक फैक्टरी में, जिससे हमारी बात होती है, जे० आर० डी० टाटा हैं, खटाऊ हैं, मफतलाल हैं,—इनमें से किससे हम कहते हैं कि आप अपने पूरे उद्योग को छोड़ दीजिये, केवल एक मिल की बात हम करें। उसमें इस सिद्धान्त को लेकर आप चलें। आप उसमें यह भूल जाईये कि आपका उसमें कितना पैसा लगा है। क्योंकि आपका पैसा कितना लगा है? जनता का पैसा है, पैसा लगाने वाली संस्थाओं का पैसा है, बाजार का, शेयर होल्डर्स का पैसा है। मिल्कियत का सिद्धान्त भी तो यहां पूरा नहीं होता—पूंजीपति मालिक है कहते हैं, लेकिन पूंजी किसकी लगी है? लेकिन मान लीजिये कि वे इस पर तैयार हो जाते हैं, प्रयोग करने के लिए। अब यदि एक ऐसा कारखाना मिल जाये तो वहां सब तरह की जो मजदूर यूनियन हैं उनका सहयोग मिलना चाहिये तब हम यह प्रयोग करके देख सकते हैं। उद्योग में सम्बन्धों की दृष्टि से, उत्पादन की दृष्टि से, आर्थिक विकास की दृष्टि से, राष्ट्रीय हित की दृष्टि से, मजदूर की दृष्टि से—सभी दृष्टियों से, जिनका रुपया उसमें लगा है, इसके क्या नतीजे निकलते हैं यह देखना चाहिये।

हम लोगों ने सोचा था कि गांधीजी की ट्रस्टीशिप को यदि एक कदम में स्वीकार करने को कहेंगे तो कोई भी स्वीकार करने को तैयार नहीं होगा।

ट्रस्टीशिप की ओर पहले कदम के रूप में हम लोगों ने एक विचार दिया। यह विचार पश्चिम में भी फैल रहा है कि हर किसी को अपनी सामाजिक जिम्मेदारी स्वीकार करनी चाहिये। जो ट्रस्टी है वह असल में है क्या? वह किसी की ओर से ट्रस्ट चलाता है। ट्रस्ट को चलाने से उस पर यह जिम्मेदारी आती है। वह उत्तरदायित्व है उस पर। हम लोगों ने जब शास्त्रीजी प्रधानमंत्री थे तब 'उद्योग की सामाजिक जिम्मेदारी' विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार दिल्ली में किया था। उस छः दिन के सेमिनार में बहुत बड़े उद्योगपति स्वयं तो शामिल नहीं हुए थे, उन्होंने अपने प्रतिनिधि जरूर भेजे थे। उद्योग के संचालन के जो स्कूल हैं, उनके लोग भी आये थे। उस सेमिनार का एक घोषणापत्र निकला था। पहली जिम्मेदारी क्या थी उसमें? कंपनी इस तरह चले कि घाटा न हो। फिर मजदूरों से क्या संबंध होंगे, फिर उपभोक्ता की ओर भी कंपनी की क्या जिम्मेदारी है? उसे शुद्ध सामान मिलता रहे। जिस जगह आपका कारखाना है उसकी आप क्या सेवा करेंगे? वहां आपने धुएं की चिमनी लगा दी है, चारों ओर गर्द जाती है लोगों की नाक में। कंपनी से मैला पानी छोड़ा जाता है। इस तरह कंपनी के, कर्तव्य कंपनी, मजदूरों, उपभोक्ताओं तथा समाज के प्रति क्या होंगे—यह उसमें कहा गया था। उस सेमिनार में सभी पार्टी के लोगों को तो नहीं बुलाया गया था, लेकिन जितने मुख्य मजदूर संगठन थे वे उसमें आये थे। उसमें एक वक्तव्य मजदूर यूनियन की जिम्मेदारी पर भी सभी की सलाह से बनाया गया था। पब्लिक सेक्टर की सामाजिक जिम्मेदारी भी तय करने के लिए एक और सेमिनार हम करें यह मेरा ख्याल था। यह मान लेते हैं कि यह प्राईवेट पूंजीपतियों का उद्योग नहीं है, इसमें किसी की निजी मिल्कियत नहीं है, मालिक कोई है तो वह जनता है, राज्य है इसलिए इस उद्योग के कर्तव्य क्या हों? क्या प्राईवेट की तरह पब्लिक सेक्टर में भी मजदूरों के साथ वही सलूक होगा? लेकिन वह सेमिनार हम नहीं कर सके। फिर शास्त्रीजी के जाने के बाद राजनीति का रुख भी काफी बदल गया। सोचता हूं कि इंदिराजी से बात करके इसे करना चाहिये क्योंकि इस विषय का महत्त्व मुझे बहुत दिखता है, पब्लिक सेक्टर देश के प्रति अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पा रहा है।

फॉलोअप की, काम को आगे बढ़ाने की दिक्कत आती है। उस जमाने में मैं यह उम्मीद करता था कि लोग इस विचार को लेंगे और आगे बढ़ायेंगे। लेकिन हमें दुख के साथ कहना पड़ता है कि वह आगे बढ़ा नहीं।

तो मेरा कहना है कि इस विचार को समझें और जिन्हें ठीक लगे वे करें। जो बुनियादी सवाल हैं वे आज भी ज्यों के त्यों सामने खड़े हैं। साम्यवादी देशों में मजदूर को हड़ताल का भी अधिकार नहीं है। आप इस चीज को सोच सकते हैं कि वहां जिन लोगों ने यह लड़ाई लड़ी, लेनिन के साथी स्टालिन के शिकार बने, मारे गये। वह जमाना दूसरा ही था। इसलिए मैंने वह पृष्ठभूमि सामने रखी। आज की हालत जो देश की है वह आप देख ही रहे हैं, आर्थिक हालत देख रहे हैं। इसलिए हमें लगता है कि अब जब तक कुछ नया नहीं काम होगा, कुछ क्रान्तिकारी काम नहीं होगा तब, तक भविष्य हमें अंधकार में दिखता है।

मैं ऐसा मानता हूं कि शायद बम्बई के कुछ मालिक, अभी तो हम उन्हें मालिक ही कहेंगे, जब तक वे मालिक-मजदूर सम्बन्धों को नहीं बदलते, तब तक कोई नया काम होगा नहीं।

●

महाजनों का रास्ता विश्वास का है

(७, ८, और ९ सितम्बर को देश के कुछ प्रमुख उद्योगपति और उनके प्रतिनिधि ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार में ट्रस्टीशिप पर विचार करने आये थे। उनकी बैठक को दो बार विनोबा ने सम्बोधित किया। यहां हम उनके भाषण का एक अंश दे रहे हैं। —सम्पादक)

आपको हिन्दुस्तान में महाजन संज्ञा दी है। जो उद्योगपति हैं, जगह-जगह बड़े इंडस्ट्रियलिस्ट कहलाते हैं वे और छोटे-छोटे कारखानेदार, बड़े और छोटे व्यापारी, इन सबको मिला कर एक 'महाजन' शब्द है। महाजन जिस रास्ते से जायेंगे वह रास्ता दुनिया के लिए है। महाजनो येन गतः स पंथः। जिस रास्ते से महाजन जाते हैं, उसी रास्ते से दुनिया को चलना है। महाजनों को हमारे यहां श्रेष्ठ भी नाम दिया है, और कहा—यद्यद् आचरति श्रेष्ठः —श्रेष्ठ पुरुष जैसा व्यवहार करेंगे, वैसा दूसरे लोग व्यवहार करेंगे। श्रेष्ठ का अपभ्रंश 'सेठ' है। आप सारे महाजन और श्रेष्ठ इकट्ठा हुए, आप सबकी शक्ति बननी चाहिए। उसके लिए आपको सम्मिलित होना पड़ेगा और बहुत कुछ करना पड़ेगा। क्या-क्या करना पड़ेगा उसका एक उत्तम निवेदन आपके सामने पेश किया है श्रीमन्नजी जी ने। बहुत ही सन्तुलित—बेलेन्स्ड् निवेदन है। लेकिन, कम से कम जितना करना चाहिए उतना लिखा है। उससे आपको थोड़ा अधिक ही करना पड़ेगा। उन्होंने मिनिमम लिखा है। मैक्सिमम तो है ही नहीं, ऑप्टिमम भी नहीं है। केवल मिनिमम है। इस पर सोच कर आप अपनी बुद्धि से जितना करना है कर सकते हैं। कम से कम जितना करना है, उतना तो आपको करना ही होगा। क्योंकि यह जमाने की मांग है।

सौ+सौ=सौ

मैं भी अपनी यात्रा में कई दफा बोलता रहा इस पर कि महाजनों की शक्ति अभी खड़ी नहीं हो रही है। पहली तीन शक्तियां जगाने में तो बाबा को कुछ न कुछ थोड़ा लाभ हुआ, परन्तु महाजनों की शक्ति जगाने के लिए क्या किया जाये? मैंने महाजनों के लिए एक समीकरण बनाया है। आज चलती है दुनिया में, एक प्राईवेट सेक्टर और एक पब्लिक सेक्टर। प्राईवेट सेक्टर ५० प्रतिशत है। पब्लिक सेक्टर ५० प्रतिशत है। और ५०+५०=१००। देश की प्रगति ज्यादा होगी तो क्या होगा? प्राईवेट सेक्टर ४० प्रतिशत। पब्लिक सेक्टर ६० प्रतिशत। ४० और ६० मिलकर १०० होगा। इस तरह होते-होते आखिर ०+१०० =१०० होगा। यह आदर्श है। तब प्राईवेट सेक्टर जीरो हो जायेगा बिग जीरो, छोटा जीरो नहीं। और पब्लिक सेक्टर १०० होगा। यह आज की चिन्तन की पद्धति है। बाबा ने कहा, बाबा का अर्थमैटिक दूसरा है। बाबा गणित शास्त्र उत्तम जानता है। बाबा ने गणित किया है १००+१००= १००। प्राईवेट सेक्टर १०० होना चाहिए और पब्लिक सेक्टर १०० होना चाहिए। और दोनों मिलकर १००। अब यह गणित कॉलेजों में सिखाया नहीं जाता। लेकिन यह गणित आप सहज समझ लेंगे। आपको समझने में जरा भी तकलीफ नहीं होगी, देरी नहीं लगेगी। इस वास्ते गांधीजी ने ट्रस्टीशिप की थियरी आपके सामने रखी। गांधीजी आपकी जाति के थे, मेरी जाति के नहीं थे। आप हैं बनिया। मैं हूं ब्राह्मण। और गुजराती में कहावत है, ब्राह्मण की बुद्धि बनिये के पीछे-पीछे जाती है। ब्राह्मण की बुद्धि 'पाछल' होती है, आगे जाती नहीं। 'आगल बुद्धि वाणिया पाछल बुद्धि बामणिया।' गांधीजी थे बनिया। बनिया होने के नाते उन्होंने आपकी इस्टेट खतम करने का नहीं सोचा। आपकी सारी इस्टेट पब्लिक बन जाये और आपके लिए दुनिया में आदर पैदा हो, आपकी प्रतिष्ठा बढ़े, ऐसा वे चाहते थे। आपकी जो निजी शक्ति है, उसे अंग्रेजी में आजकल 'नो हाऊ' कहते हैं। यह 'नो हाऊ' जो है, वह महाजनों की शक्ति है। और 'नो व्हाय' है ब्राह्मणों की शक्ति। ब्राह्मण ने आपके सामने रख दिया कि ये पांच शक्तियां 'क्यों' खड़ी करनी चाहिए—'व्हाय'। अब आप लोगों को 'कैसे, क्या' करना चाहिए इस पर सोचना है।

गांधीजी ने इसका नाम ट्रस्टीशिप रखा। आप भी बने रहें, आपकी प्रतिष्ठा बनी रहे और आपके द्वारा दुनिया की सेवा हो, आपके लिए दुनिया में ट्रस्ट हो ऐसी कल्पना करके ट्रस्टीशिप की कल्पना रखी। कोई भी आदमी अपनी जाति को उखाड़ना नहीं। कितना भी ऊंचा चढ़ जाये जाति को उखाड़ नहीं सकता। वह बनिया था। इस वास्ते बनियों को उखाड़ने का काम वह कर ही नहीं सकता था। गांधीजी से बढ़कर महाजनों का रक्षणकर्त्ता मेरे सामने कोई नहीं है। तो यह चीज श्रीमन्नजी ने रखी है, उस पर आपको सोचना होगा।

विश्वास यानी व्यापक श्वास

लेकिन बाबा ने जो सोचा है, अपनी चीज, वह आपके सामने रखेगा। इंगलिश शब्द है ट्रस्ट। बाबा ने थोड़ी इंग्लिश सीखी थी। अब धीरे-धीरे भूलता जा रहा है। परिणाम यह हुआ कि ट्रस्ट कहते हैं तो बाबा त्रस्त हो जाता है एकदम। मैंने देखा भारत-भर में कई प्रकार के, तरह-तरह के ट्रस्ट हैं, उनके ट्रस्टी होते हैं। ये ट्रस्टी ज्यादातर सन्त्रस्त होते हैं। वित्त को संभालने वाले बहुत थोड़े होते हैं। सन्त्रस्त ही, ज्यादातर होते हैं। इस वास्ते इंग्लिश शब्द को मैं छोड़ देता हूं और संस्कृत शब्द को लेता हूं। संस्कृत शब्द जानदार होते हैं। बहुत सूक्ष्म अर्थ प्रकट करते हैं। ट्रस्ट में क्या-क्या गहरे और व्यापक अर्थ हैं, मैं जानता नहीं। ट्रस्ट के लिए संस्कृत में शब्द है विश्वास। आपके लिए जनता में विश्वास पैदा होना चाहिए, तो आपकी इमेज (चित्र)

→

जीवन के लिए श्वास, समाज के लिए विश्वास

→

सुधरेगी । नहीं तो आपकी इमेज सुधरेगी नहीं। आज हालत यह है कि बड़े-बड़े महाजन, उद्योगपति उत्तम काम करते हैं। मन्दिर बनाते हैं, धर्मशाला बनाते हैं, गरीबों को दान-धर्म करते हैं। जब मैंने एक धनपति को कहा, मैं बहुत ज्यादा मांगता नहीं, आपकी तरफ से मुझे ४० वां हिस्सा मिलेगा तो मैं काफी मानूंगा, तब उन्होंने कहा, हम तो १० वां हिस्सा खर्च करते हैं, आम जनता की सेवा में। पदयात्रा में मैं पहुंच गया जमशेदपुर। बीमार था तो दो महीना वहां रुकना पड़ा। घूम-घूम कर सारा देख लिया। पांच लाख का शहर है। वहां तीस-चालीस हजार सिख हैं। मुसलमान, पारसी, यहूदी, हिंदू सब धर्मों के लोग और सब भाषा वाले लोग वहां रहते हैं। देख कर मैं चकित हो गया। इतना सारा खड़ा किया पचास साल में। करोड़ों रुपयों का खर्च किया होगा और सर्वोत्तम नगर बना दिया। मैं नहीं जानता कि दुनिया के इतिहास में ऐसे कितने जमशेदपुर होंगे। मुझ पर उसका बहुत ही असर पड़ा।

तात्पर्य यह है कि आपके लिए जनता में विश्वास पैदा हो, यह मैं चाहता हूं। विश्वास शब्द जो है, वह श्वास् पर से बना है। व्यक्तिगत जीवन में श्वास की जो स्थिति है वही सामाजिक जीवन में 'विश्वास' की है। व्यक्तिगत जीवन में श्वास अगर नहीं रहा तो व्यक्ति मर जायेगा। वैसे सामाजिक जीवन में जो घटक हैं, उनमें अगर विश्वास न रहा तो समाज मृतप्राय हो गया, ऐसा समझना चाहिए। यह अर्थ विश्वास शब्द में है। विश्वास यानी विस्तृत, व्यापक श्वास। कुल जनता का श्वास। बहुत बड़ा शब्द है। इस शब्द को आपको यथार्थ सिद्ध करना होगा।

एक जमाना था, जब भारत में महाजनों पर विश्वास था। किसी को बदरीकेदार जाना है, उसके पास पांच हजार रुपया है तो वह महाजन के पास रख दिया। वह निरक्षर है, लिखना-पढ़ना जानता नहीं, तो महाजन ने लिख लिया और वह चला गया यात्रा पर। दो साल राह देखी, बाद में वह वापस आया, तो महाजन ने उस रकम के साथ उसका ब्याज भी उसको दिया और उसे प्रणाम कर लिया, इतनी यात्रा कर ली तो प्रणाम। मगर कोई शख्स यात्रा के लिए गया, वापस आया नहीं, मालूम हुआ कि वह मर गया, तो फिर उसके लड़के को बुलाया, पूरी रकम और ब्याज भी उसको दे दिया। ऐसे महाजन भारत में थे। यह भारत की संस्कृति है। इसमें महाजनों के लिए अत्यंत विश्वास है। मेरे प्यारे भाइयो समाज में जितने घटक हैं उन सब घटकों में अन्योन्य विश्वास हो, यही दुनिया के बचाव के लिए साधन है।

पेस्ट कंट्रोल : प्रयोग-ट्रस्टीशिप का

"व्यापार में माना जाता है कि ईमान-दारी से काम चल नहीं सकता, हम लोगों ने इस चुनौती को स्वीकार कर अपना व्यापार शुरू किया था। आज हमारी कम्पनी ने व्यापार के क्षेत्र में जो भी सफलता पाई है, वह हमारे ईमानदारी के प्रयोगों का ही परिणाम है," पेस्ट कंट्रोल ऑफ इण्डिया के श्री एन० एम० राव ट्रस्टीशिप के सन्दर्भ में अपनी कम्पनी का इतिहास दोहरा रहे थे। उनकी ७४ वर्ष की उम्र, उनके आसपास फैला व्यापार का ढेर, उनके सीधे-सादे, सुरुचिपूर्ण कमरे के साथ लगे एक बड़े हॉल में पेस्ट कंट्रोल की देश भर में फैली पैंतीस शाखाओं का कुशलतापूर्वक काम दिखा रहा था।

सन् ५४ में राव परिवार के दो भाइयों ने घरों, दफ्तरों और खेतों को नुकसान पहुँचाने वाले कीड़े-मकोड़ों से उन्हें सुरक्षित रखने की प्रक्रिया विकसित कर पेस्ट कन्ट्रोल की स्थापना केवल तीन हजार की पूंजी से की थी। आज कम्पनी के पास ५ लाख की पूंजी है तथा व्यापार में लगभग एक करोड़ रुपया लगा हुआ है। दीमकों, टिड्डियों आदि से होने वाले नुकसान को एक निश्चित अवधि तक के लिए प्रभावशाली ढंग से टालने की यह विधि इस कम्पनी की स्थापना से पहली बार भारत में शुरू की गई।

राव परिवार के आसपास काम कर रहे कुछ घरेलू नौकरों को प्रशिक्षण देकर कम्पनी की शुरुआत की गई। श्री राव प्रायः अन-पढ़ व अर्धशिक्षित लोगों को कुछ पढ़ाकर, प्रशिक्षित कर उन्हें नये-नये काम सौंपने में रुचि रखते हैं। मकानों, दफ्तरों को दीमकों से सुरक्षित बनाने के लिए दीवारों, नींव, दरवाजों में छेद कर दवाई भीतर पहुँचानी पड़ती है। इस प्रक्रिया में कमरों में रखा सामान इधर-उधर हटाना पड़ता है, तथा दिखने वाले को भीतरी कोने तक भी जाना पड़ता है। श्री राव का कहना है कि "जब हमने काम शुरू किया तब काम करने वालों के सामान का सम्मान उधर-उधर खिसकाने में कुछ चीजों का नुकसान हो जाता था, इसे हमने अपनी गलती स्वीकार कर कम्पनी की ओर से ऐसी चीजों का मूल्य चुकाया।

धीरे-धीरे हमारे कार्यकर्ताओं का अनुभव भी बढ़ा और हमारे ग्राहकों का हम पर विश्वास भी। आज बम्बई में हम लगभग १००० घरों में कीड़े-मकोड़ों से सुरक्षित रखने की प्रक्रिया चला रहे हैं। अविश्वास से घिरे इस शहर में ग्राहक हम पर इतना भरोसा रखते हैं कि वे कार्यकर्ताओं को घर की चाबी सौंपकर अपने काम पर बाहर चले जाते हैं। यह विश्वास की चाबी ही पेस्ट कंट्रोल की सफलता की कुंजी है। कम्पनी के विकास पर ही जनता ने इसमें अपना पैसा लगाया है। आज इस कम्पनी के व्यापार में अधिकांश पैसा जनता द्वारा ९ प्रतिशत ब्याज पर रखा गया है।

यूनियन नहीं बनी

श्री राव के परिवार पर गांधी का असर पड़ा था। ग्यारह वर्ष की उम्र में स्वयं राव आजादी की लड़ाई में शामिल हुए थे। आजादी के बाद जब उन्होंने व्यापार के क्षेत्र में प्रवेश सोचा तब यह भी सावधानी उन्होंने बरती कि व्यापार में घरेलू वातावरण ही कायम रहे। इस घरेलू वातावरण में व्यापार चलाने की उनकी सावधानी से उनके साथियों में एक दूसरे के प्रति विश्वास भरा। अपने काम को किसी बड़े लक्ष्य तक जाने का एक साधन कर मानने से ऐसी भावना का विकास हुआ। नीचे से लेकर ऊपर तक सब एक ही काम को अलग-अलग स्तर पर निर-बाहे साथी हैं—ऐसा समझा जाने लगा। यही कारण था कि इसमें एक दरवाजे को छोड़कर कभी भी मजदूर यूनियन नहीं बनी। बीच में एक बार श्री राव इस प्रक्रिया में की गयी उन्नति का अध्ययन करने यूरोप के कुछ देशों के दौरे पर गये थे। उस अवधि में संचालन करने वाले साथी और काम करने वाले लोगों में कुछ मतभेद उभर आए थे। तब मजदूर नेता बाबू फर्नांडीज ने पेस्ट-कंट्रोल में मजदूर यूनियन शुरू की थी। लेकिन जब श्री राव भारत लौटे तो उन्होंने स्वयं उस विवाद को हल कर दिया। कर्म-चारियों ने अपने यूनियन के नेताओं से कहा कि अब हम यूनियन जरूरत नहीं है, हम

श्री राव : गुनाह कम सकते हैं

अपनी शक्ति उस कम्पनी में लगायें जहां मजदूरों का आदर जरूरत है। तब से आज तक इस कम्पनी में मैनेजमेंट और कर्म-चारियों की केवल एक ही यूनियन है, वह किसी भी राजनैतिक दल से जुड़ी नहीं है।

श्री राव इस तरह धीरे-धीरे व्यापार को आगे बढ़ा रहे थे। इसी बीच सन् ६६ में वे ज० पी० के सम्पर्क में आए। ट्रस्टीशिप की बात चली। बाद में श्री राव ने—सर्व सेवा संघ से बातचीत की। फिर सर्व सेवा संघ की ओर से श्री गोविन्दराव बम्बई आये। अब तक श्री राव अपने ढंग से ही यह सब कर रहे थे लेकिन गांधी शताब्दी वर्ष में उन्होंने ट्रस्टी-शिप की ओर बढ़ना तय कर अपनी कम्पनी के २४ प्रतिशत शेयर कर्मचारियों में वित-रित कर दिये हैं। श्री राव अपने इन कदमों से खुश हों ऐसी बात नहीं, वे कहते हैं कि "जो कुछ भी हुआ है उसे कोई भी कर सकता है, इसमें मैं हर्ज नहीं ■।" वे स्वीकार करते हैं कि अभी कम्पनी में ट्रस्टीशिप का सिद्धांत बहुत दूर है, आज भी कम्पनी के सर्वाधिक शेयर राव परिवार में ही हैं, फिर भी वे मानते हैं कि मालिक और मजदूर दोनों की ओर से विश्वास के एक युग ■■ निर्माण चालू हो गया है। इसका उदाहरण मिला सन् ७१ के भारत-पाक युद्ध के दौरान। "सब लोगों ने मिलकर कम्पनी में जमा अपना पैसा वापस लेना

→

पेस्ट कन्ट्रोल के एक कर्मचारी

→

शुरू कर दिया था । लोग सुबह से शाम तक लम्बी कतार में खड़े रहते थे, हमने किसी को भी पैसा देने से मना नहीं किया,, श्री राव यह बताते हुए उस दृश्य की याद से एक बार फिर सिहर गये थे, "कम्पनी की आर्थिक स्थिति डावाडोल होने लगी थी। ऐसे समय हमे अपनी सभी शाखाओं के कर्मचारियों की ओर से पत्र मिले कि हालत को देखते हुए हम खर्च घटाने में कम्पनी के साथ हैं, हम ओवरटाईम नहीं लेंगे, बाकायदा मिलने वाला बोनस छोड़ देंगे आदि । युद्ध के दौरान कम्पनी के सभी साथियों ने युद्ध स्तर पर ही काम कर भयंकर आर्थिक संकट के दौर से कम्पनी को उबार लिया था।"

श्री राव ट्रस्टीशिप पर बातचीत करने सन् ६६ में विनोबा के पास भी गये थे । तब विनोबा ने उनसे कहा था कि बड़ी मिल, फैक्टरियां ही इसमें पहल करें। लेकिन अब श्री राव का कहना है कि बड़े लोग इसे अपना नहीं रहे तो फिर हम छोटी कम्पनियों को ही पहल करना चाहिये।

श्री राव बम्बई में ट्रस्टीशिप विचार के फैलाव का कारण आर्थिक, राजनैतिक दबाव के साथ-साथ नैतिक दबाव भी मानते हैं। वे स्वयं बम्बई की ट्रस्टीशिप फाउन्डेशन के साथ इस विचार को फैलाने में बहुत उत्साह से काम कर रहे हैं। बम्बई के उपनगर विले-पार्ले के कुछ उद्योगपतियों की एक बैठक में श्री गोविन्दराव द्वारा इस विचार को रखने के बाद कुछ उद्योगपतियों ने इसे असंभव बता दिया तब श्री राव ने बहुत आवेश में आकर कहा था, "लोग स्वीकार कर चुके थे कि बम्बई की जलवायु में गुलाब का पौधा नहीं लगाया जा सकता, मैंने अपने घर में एक साल तक प्रयोग करने के बाद गुलाब का फूल पैदा कर दिखाया। आज बम्बई में १५० सदस्यों का गुलाब उत्पादक संघ है । कोई भी विचार असंभव नहीं होता शर्त इतनी ही है कि हम स्वयं उसे असंभव न मान लें।' उनकी इच्छा है कि पेस्ट-कंट्रोल (इण्डिया) असम्भव बातों को सम्भव बनाने की एक प्रयोगशाला बन जाये।

होता है उतना आपका बाकी जो बचेगा वह बाबा की श्मशान क्रिया के लिए रखा जाये। (हंसी)

इसमें मेरा एक और सुझाव है। सर्व सेवा संघ को हर साल अनेक कामों के लिए जो भारत भर में चलते हैं, कम से कम दस लाख रुपये की जरूरत होती होगी। मैंने सोचा हमारे साथी, कार्यकर्ता, सहयोगी, सर्वोदय विचार में श्रद्धा रखने वाले जितने भी लोग भारत में हैं वे अगर महीने में एक उपवास करेंगे और साल भर का जो खर्च (बचत) होगा उपवास का वह सर्व सेवा संघ को देंगे तो बहुत बड़ा काम होगा। मेरे खाने का तीन रुपया खर्चा होता है, कार्यकर्ताओं का दो रुपया होता होगा। २४ रुपया साल उनके होंगे। परन्तु हिसाब के लिये २५ रुपया मानें तो १० लाख रुपये की रकम पूरी करने के लिए ४० हजार को उपवास करना पड़ेगा। मेरा ख्याल है इस उपवास—प्रेमी भारत में ऐसे लोग तो लाखों मिलने चाहिए। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष—हैं सिद्धराज जी। वे जैन समाज के प्रतिनिधि हैं। मेरा ख्याल है अकेला जैन समाज लाख-लाख उपवास कर देगा। इसके अलावा दूसरे भी करेंगे।

तो मैं आशा करता हूं कि ४० हजार उपवास करने वाले अवश्य मिलेंगे। ज्यादा ही लोग मिलेंगे।

यह जो पैसे मिलेंगे उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह चिंतन, मनन करेगा और एक दिन भगवान के नजदीक रहेगा। उपवास का अर्थ ही है भगवान के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। दूसरा शारीरिक लाभ होता है। महीने में एक उपवास किया तो वालकोबा भी खुश होगा। बालकोबा यानी, प्राकृतिक उपचार वाला। प्राकृतिक उपचार वालों का कहना रहता है कि महीने में कुछ न कुछ उपवास जरूर किया जाये। तो महीने में एक उपवास से कार्यकर्ताओं का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ है कि इसके जरिये जो दान दिया जायेगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा तो उसका खर्च भी अच्छी तरह से होगा। गलत ढंग से खर्चा नहीं होगा। तो यह तीन लाभ उपवास के दान से होंगे।

उसके साथ-साथ सर्वोदय-पात्र, शांति पात्र घर-घर में रखने को जो हमने कहा है, रोज एक नया पैसा उसमें डालना, वह कायम है। वह अच्छा ही है। वह प्रक्रिया जारी रहे। बच्चों के हाथ से पैसा डाला जाता है रोज, उससे दान मिलता है और बच्चों को संस्कार भी मिलते हैं। तो वह प्रक्रिया जारी रखी जाये। उसके साथ-साथ उपवास की प्रक्रिया भी जारी रखी जाये।

मेरा ख्याल है दोनों प्रक्रिया मिलकर सिद्धराज जी का पेट भर जायगा। लेकिन हमने सोचा है भारत में पूरा पेट खाना अच्छा नहीं। हमेशा आधा पेट खाना। पाव पेट पानी से भरना, पाव पेट हवा से।

इसलिए आशा करता हूं कि सर्व सेवा संघ का आधा पेट भर जायगा।

ब्रह्मविद्या मन्दिर पवनार

११ सितम्बर '७३

समाप्त हो गये हैं और इस प्रकार से गांधी विचार मुक्त विचार रह सका है। यहां तक कि विनोबा ने गांधी के मूल विचार सत्याग्रह तक मे तरमीमें की है और सत्याग्रह की अपनी नयी व्याख्या की है। यदि हमें लोकशाही चलानी हो तो इस तरह का मुक्त चिंतन आवश्यक है।

नया परिप्रेक्ष्य

इसका अर्थ यह नहीं है कि विनोबा ने गांधी विचार को अलग कर कोई नया ही विचार रखा है। इसके विपरीत विनोबा ने गांधी को नये परिप्रेक्ष्य मे पेश किया है और खासकर आज तो गांधी को ससार के सामने जिस सफाई और प्रखरता के साथ रखा गया है उसका सारा श्रेय विनोबा को है। 'ग्राम-स्वराज्य' का विचार जो गांधी जी मे एक धुंधला सा विचार था वह आज एक स्पष्ट दर्शन और कार्यक्रम के रूप मे ससार के सामने है। उसके लिए काम करने वाले समर्पित लोगो का एक समूह है और वह समूह अपनी शक्ति भर प्रयास कर रहा है। आज जहा तक गांधी विचार का प्रश्न है देश मे उस तरह का कोई अन्धकार नही जैसा वह गांधी जी की मृत्यु के समय था। यह अलग बात है कि गांधी के निकट रहने और उनके विचारो को समझने का दावा करने वाले बहुत से लोगो को अब तक विनोबा समझ मे नही आ सका है और वे निष्ठावान् विधवा की तरह गांधी के बताये कुछ कामों को, जिन्हे ये लोग रचनात्मक कहते हैं किन्तु जो गांधी के लिए समाज परिवर्तन के काम थे, करते आ रहे हैं। किन्तु गांधी का समाज परिवर्तन करने वाले क्रान्तिकारी के रूप में परिचय देने वाले काम केवल विनोबा ही देश और दुनिया के सामने रख सके हैं। यद्यपि गांधी जी ने विनोबा को अपना उत्तराधिकारी तो नही बनाया था किन्तु जिन्हे इतिहास ने यह सुविधा दी थी वे विनोबा के मुकाबिले गांधी विचार के लिए शतांश भी नहीं कर सके हैं।

विनोबा की सबसे महत्वपूर्ण और उन्ही की भाषा में सर्वोत्कृष्ट देन तो शिक्षा के क्षेत्र में ही है। यहा शिक्षा का तात्पर्य व्यापक अर्थ लेना चाहिए। उनका विशाल साहित्य-निर्माण उसका एक पहलू है और उससे भी अधिक उन्होंने देश को एक नवीन शिक्षा-दर्शन दिया है। इस दर्शन का मूल यह है कि शिक्षा जीवन की परिभाषा ही है। वह मनुष्य को एक तरफ तो उस ससार से तादात्म्य कायम करने मे सहायक होनी चाहिये जिसमे मनुष्य रहता है और दूसरी तरफ उससे मनुष्य की उस असीम सत्ता से भी तादात्म्य साधने मे मदद होनी चाहिये जो समस्त विश्व की स्रोत है। इसके लिये विनोबा आरम्भ से ही बालको को गणित, खगोलशास्त्र और भूगोल पढ़ाने की सलाह देते हैं। गणित से वह निश्चित और तटस्थ चिंतन कर सकेगा, खगोलशास्त्र से उसे इस विश्व की व्यापकता और उसमे अपनी सही स्थिति का ज्ञान होगा जो मनुष्य के अहंकार निरसन मे मदद करेगा और भूगोल से उसे उस दुनिया का ज्ञान होगा जिसमे वह रहता है। जीवन के प्रत्यक्ष काम के साथ शिक्षा को जोड़ देने का विनोबा का आग्रह ससार के सभी शिक्षा शास्त्रियो के समान है। गांधी जी ने जब 'बुनियादी-शिक्षा' का विचार देश के सामने रखा तो विनोबा उसके सबसे पहले समर्थक और भाष्यकार बने।

शिक्षा के उद्देश्य

सेवाग्राम मे गत वर्ष हुए राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन मे विनोबा ने जो प्रवचन किया था वह शिक्षाशास्त्र के भारतीय इतिहास मे महत्व का है। उसमे पहली बार शिक्षा के एक ऐसे दर्शन का प्रादुर्भाव हुआ है जो मनुष्य को विश्व और विश्व निर्माता से तादात्म्य तो करायेगा ही साथ ही जो विज्ञान की नवीनतम आवश्यकताओ की भी पूर्ति करेगा। उसमे विनोबा ने कहा कि 'शिक्षा के तीन उद्देश्य होने चाहिये : योग, उद्योग और सहयोग।' विनोबा के ही शब्दो मे 'योग का अर्थ आसन लगाना, व्यायाम करना, नहीं है। योग यानी चित्त कैसे अंकुश मे रखना, इन्द्रियो पर कैसे सत्ता रखना, मन पर कैसे काबू पाना, जुबान पर कैसे अपनी सत्ता पाना, यह योग का सच्चा अर्थ है। इन दिनों चित्त पर सत्ता रखना, चित्त अंकुश मे रखना, स्थिर रखना, जिसको गीता मे स्थितप्रज्ञता कहा गया है ऐसी स्थितप्रज्ञता की बहुत आवश्यकता है क्योंकि आज रोजमर्रा की सैंकडो घटनाएं कान पर पडती हैं, आख पर पडती हैं। चारो ओर से विचारो का आक्रमण होता है। जितना आक्रमण मनुष्य के दिमाग पर आज होता है उतना पहले कभी नही होता था क्योंकि साइन्स का जमाना आया है। ऐसी हालत मे चित्त को शान्त रखना स्थिर रखना, काबू मे रखना अत्यन्त महत्व का विषय हैं। तो स्थितप्रज्ञता की आज जितनी आवश्यकता है उतनी पहले कभी नही थी। अतः प्रज्ञा स्थिर करना योग का मुख्य विषय है।' यह बात सभी जानते हैं कि पश्चिम मे जबसे अन्तरिक्ष की उडाने आरम्भ हुई है तब से वहा भी लोगों का ध्यान भारतीय योग दर्शन की ओर गया है यद्यपि वहा वह अभी 'प्राचुर्य से पीड़ित, भ्रमित मनुष्य' के लिए फिलहाल एक प्रकार के शरणालय का ही काम कर रहा है और उसके उस पहलू पर लोगो का ध्यान अभी नही है जिसका जिक्र विनोबा कर रहे हैं। किन्तु मनुष्य, स्थिरमति हो यह तो विज्ञान की आरम्भ से ही माग रही है।

उद्योग का स्थान

शिक्षा मे उद्योग हो यह तो आज सर्वमान्य बात हो गई है। किन्तु अभी उसका अर्थ इतना ही लगाया जा रहा है कि स्कूलो मे छात्रो को कुछ धधे का प्रशिक्षण दे दिया जाय ताकि वे बेरोजगारी से बच सकें और शासको के सिर का दर्द न बनें। शिक्षा मे कुछ काम जोड़ने के पीछे अभी सिवाय इसके और कोई हेतु नही है। किन्तु विनोबा ने उद्योग का जो अर्थ किया है वह नितान्त भिन्न है। वे उसका अर्थ 'विश्व और प्रकृति के साथ तादात्म्य' करना करते हैं। उन्होने इस सन्दर्भ मे एक बार पंडित नेहरू जी के द्वारा कही गई बात का उदाहरण देते हुए कहा कि 'जो समाज प्रकृति के साथ सम्पर्क तोड़ देता है उसका क्षय हो जाता है।' समाजशास्त्र के अध्येता जानते हैं कि समाज इतिहास इस बात का साक्षी है कि प्रकृति से जो समाज जितना दूर होता गया वह उतनी जल्दी नष्ट हो गया। शहरी सभ्यता का यह सबसे बड़ा दुर्गुण है कि वह मनुष्य को प्रकृति से दूर कर देती है इसलिए ही समाजशास्त्रियो ने शहरो को 'सभ्यताओ की कब्र' कहा है। तो विनोबा कहते हैं कि शिक्षा के माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ गहरा और सकारात्मक सम्बन्ध होना चाहिए और इसके लिए कृषि सबसे उत्तम

→

माध्यम है। हर विद्यालय के पास कुछ न कुछ खेत होना चाहिए और हर छात्र शिक्षक को ही नहीं हर नागरिक को रोज कुछ न कुछ समय तक चाहे वह कितने ही और बड़े कहे जाने वाले काम में क्यों न लगा हो खेत में काम करना चाहिए। यहां तक कि देश की प्रधानमंत्री तक को भी रोज दो घन्टा खेती करनी चाहिए। शिक्षा में उद्योग जोड़ने का यह भी अर्थ है और यही अर्थ असल है कि हम ग्रामीण कृषि सभ्यता का संरक्षण और पोषण करें और शहरीकरण से बचें यदि हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को रक्षा करना चाहते हैं। क्या शिक्षा में उद्योग दाखिल कराने वाले किसी शिक्षाशास्त्री को पहले से यह अर्थ मालूम था। किसी ने क्या शिक्षा में उद्योग को कभी इस अर्थ में लिया।

केन्द्रवाद

भारत सरकार भी आज कल शिक्षा में उद्योग दाखिल करने पर बहुत जोर दे रही है और पाण्डित्य के भारी पोथे 'कोठारी कमीशन की रिपोर्ट' को तो उसके शिक्षा में 'कार्यानुभव' के सुझाव पर भारी धन्यवाद दिया जा रहा है किन्तु क्या इस कमीशन के किसी भी सदस्य को सचमुच शिक्षा में उद्योग दाखिल करने का तात्विक अर्थ मालूम है? क्या कमीशन यह जानकर कि इसके फलितार्थ यह भी हो सकते हैं कि इससे हमारी यह शहरी सभ्यता ही आमूल बदल सकती है अपनी सिफारिश कर रहा है। इसलिए शिक्षा में उद्योग दाखिल करने का साफ अर्थ है कि फिर देश की राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक रचना में आमूल परिवर्तन करना। यह नहीं हो सकता कि हमारे देश का आर्थिक और राजनीतिक ढांचा तो केन्द्रित व्यवस्था का रहे और देश की अर्थव्यवस्था भारी उद्योग जो हमेशा ही केन्द्रवाद को ही पनपाते हैं पर आधारित रहे और तब हम छात्रों को कहें कि वे विद्यालयों में ऐसे उद्योग सीखें जिनके लिए फिर भारी और केन्द्रित संगठित उद्योगों के मुकाबिले कोई भविष्य नहीं है। यदि छात्र और अभिभावक इस दुरभिसंधि को समझ जायेंगे तो क्या शिक्षा में उद्योग की यह नीति चलने वाली है। अत: विनोबा ने जो कहा उसके सिवा इसका और कुछ अर्थ हो ही नहीं सकता है कि शिक्षा के अनुकूल ही फिर हमें हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रचना भी करनी होगी नहीं तो आगे चलकर फिर लेने के देने पड़ सकते हैं।

हमपन को प्रोत्साहन

शिक्षा में सहयोग का क्या अर्थ है? इस का अर्थ है कि हमारी वृत्ति और वृत्ति निर्माण की पद्धति तथा साधन ऐसे हों ताकि हमें यह अनुभूति होती रहे कि दूसरे के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है अतः हमें दूसरे के साथ ही जीना है। शिक्षा में सहयोग दाखिल करने का अर्थ है 'मैं' के बजाय 'हमपन' को प्रोत्साहन देना। इसका मतलब और यह हुआ कि तब हमारी संगठन प्रणाली बदलनी होगी क्योंकि आज की प्रणाली तो होड़ और निजी लाभ पर आधारित है। साम्यवाद भी इसमें कोई फर्क नहीं कर पाया। इसलिए इसके लिए विद्यालय को पहले स्वयं एक ऐसी 'सामुदायिक इकाई' बनाना होगा जहां रहकर छात्र और शिक्षक सामुदायिक जीवन का प्रशिक्षण ले सकें। मिलकर कैसे रहना यही तो हमारी आज की समस्या है और शिक्षा दुर्भाग्य से इसे हल करने के बजाय और उलझा रही है। इसका विनोबा ने एक और अर्थ भी किया है कि हमें न केवल मानव समाज के साथ रहना है अपितु मानवेतर प्राणियों के साथ भी रहना है यह अनुभूति होनी चाहिए। आज के इकॉलाजिस्ट भी यही कह रहे हैं। तो इसका अर्थ यह है कि हमारे वे सारे व्यवहार और संगठन बदल जाने चाहिए जो मनुष्य को मनुष्य से मिलाने में बाधक हैं। विनोबा ने कहा ही है कि 'सहयोग में भावना होगी कि सारी पृथ्वी एक है। पृथ्वी के सारे मानव एक हैं और केवल मानव ही नहीं, आसपास के पशु पक्षी, प्राणी, वनस्पति सब एक हैं। क्रौंच का वध देखा तो कविता स्फुरित हुई। तो आसपास की सृष्टि के साथ भी एक होना चाहिए। ये चिड़ियां हैं सुन्दर गाती हैं, उनकी रक्षा होनी चाहिए। ये कौवे हैं, उनकी रक्षा होनी चाहिए ये गायें हैं उनकी भी रक्षा होनी चाहिए, वट-वृक्ष की भी रक्षा होनी चाहिये। तुलसी की भी पूजा होनी चाहिए। यह भारत का पागलपन है? यह भारतीय पागलपन अत्यन्त महत्व का है कि कुल के कुल मानव हम एक हैं और इसके अलावा आसपास के जो प्राणी हैं, वनस्पति हैं, हम सब एक ही हैं, सब हम ही हैं, यह एक रूपता हमको आसपास की सृष्टि के साथ होनी चाहिए। यह आज के जमाने की मांग है क्योंकि विज्ञान सबको नजदीक लाता है, इसलिये सबका सहयोग, प्राणियों का, मानव का, अपेक्षित है।'

यह शिक्षा का सम्पूर्ण दर्शन है जो विनोबा से हमें प्राप्त हुआ है। 'कर्मयोगी' के रूप में भी विनोबा का सौन्दर्य भव्य है। हड्डियों का एक ढांचा मात्र है और भारत के कोने-कोने में सालों तक पैदल घूमता रहा है। यह कौन आया है, बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष सब पूछते हैं तो जवाब मिलता है 'यह विनोबा है' और गरीब के लिए उसमें हक के तौर पर जमीन मांगते हैं। इस तरह से विनोबा ने लाखों एकड़ भूमि प्राप्त की जो लाखों भूमिहीनों में बंटी और उन्हें स्वत्व प्राप्त हुआ। गांधी जी ने एक बार विनोबा से पूछा 'इतना कमजोर स्वास्थ्य होने पर भी आप इतना काम कैसे कर लेते हैं' तो विनोबा का जवाब था कि 'अपनी इच्छाशक्ति के बल पर।' विनोबा की जैसी इच्छाशक्ति क्या किसी की होगी। घंटों नहीं दिनों नहीं महीनों और सालों तक एक काम में एकाग्र साधना अद्भुत बात है किन्तु विनोबा का यह सहज गुण है। भूदान और ग्रामदान आन्दोलन के माध्यम से विनोबा ने संसार के सामने एक नई सम्भावना प्रकट की है कि क्रान्ति के लिए इतिहास की कोई निश्चित लकीर नहीं होती जैसे मार्क्स का ख्याल था अपितु वह इस पर निर्भर करती है कि हम मानव के कितने निकट पहुंच सकते हैं। जैसे पहले कहा गया कि आज ग्राम स्वराज्य के रूप में गांधी संसार के सामने चुनौती बनकर खड़ा है तो इसका श्रेय विनोबा को है।

कब समझेंगे?

क्या विनोबा को हमने सही समझा है क्या उसे हम कभी समझ सकेंगे? यह दुख की बात है कि विनोबा के निकट रहने और उनके साथ काम करने वाले भी यह नहीं कर सके। सर्व सेवा संघ तो इसमें एकदम ही असफल रहा है यद्यपि वह हमेशा ही विनोबा का

(बाकी पेज २४ पर)

वापू की स्मृति में

वानूलाल माखरिया, वम्बई की ओर से

सादिया से····

मुंगेर जिले के खादीग्राम में गरीब बच्चों की पढ़ाई के लिए श्रमशाला की स्थापना हुई है। धीरेनदा की प्रेरणा से आचार्य राममूर्ति ने इसकी स्थापना की। आज इसे विद्या बहन एवं उनके साथी चला रहे हैं। बच्चे ६ घंटा शाला की खेती में श्रम करते हैं, दो-तीन घंटा अध्ययन करते हैं। इसमें से स्कूल के शिक्षकों का वेतन, शाला का अन्य खर्च, बच्चों के भोजन, कपड़े आदि का दो तिहाई हिस्सा निकल आता है। इसमें से थोड़ी-सी रकम बच्चे अपने मां-बाप को भी ले जाकर देते हैं। कमाओ और सीखो ही नही, कमाओ सीखो और खाओ का यह अद्भुत नमूना यहां पेश किया जा रहा है। जो खादीग्राम में हुआ वह कहीं भी हो सकता है। इस उपक्रम ने भारत के सब गरीबों की शिक्षा का प्रश्न चुटकी सरीखा हल कर दिया है। लेकिन इसे देखने के लिए शिक्षित जगत के पास आंखें ही नही है, अनुकरण करने की बुद्धि कहा से आये?

मुजफ्फरपुर जिले के एक गाँव में खबर लगी कि एक बड़ा किसान अपने खेत का गेहू चुपके से मुजफ्फरपुर शहर में भेज रहा है, जिससे कि उसे अनाप-शनाप भाव मिल सके। पता चलते ही गाववालो ने उस मकान पर घेरा डाला। अपनी सामर्थ्य को कम आंक कर मुजफ्फरपुर शहर की कम्युनिस्ट पार्टी को खबर दी कि हमारी मदद मे आइएगा। पार्टी के लोग आये और गाव वालो को एक कतार मे खड़ाकर गेहूं बाँटा जाने लगा। कतार के प्रारम्भ में पार्टीवालो ने अपने कुछ शहर के समर्थको को भी खड़ा कर दिया और इनमें अनाज का कन्ट्रोल दर पर वितरण होने लगा। गाव वाले यह अन्याय कितनी देर देखते रहते। गाँव वालो ने शिकायत की। कहा-सुनी से काम निपट नही रहा है, यह देखकर एक कदम आगे बढ़कर गाव वालों ने इन शहरियों को कतार से बाहर निकाला, अब गाव वालो को गेहू बांटा गया और किसान को गेहू की पूरी रकम दे दी। ग्राम-शक्ति जग जाये तो किसकी हिम्मत है कि उसका मुकाबला कर सके?

ऋषि विनोबा

(पेज २१ से जारी)

आश्रय खोजता है। किन्तु आज विनोबा का वह वैसा ही उपयोग कर रहा है जैसा कभी कांग्रेस गांधी जी का करती थी। किन्तु जैसे गाधी जी का काम कांग्रेस के बिना भी चलता था, वैसे ही विनोबा को सर्व सेवा संघ की दरकार नही है किन्तु सर्वसेवा संघ ही क्या यह देश भी गाधी जी की ही तरह विनोबा के व्यक्तित्व से संसार मे सम्मान तो पाना चाहता है किंतु उसके मार्ग पर चलने की उसकी कम से कम अभी तो कोई मंशा नही दिखती है। पश्चिम में आज गाधी, विनोबा को कही अधिक समझा जा रहा है। यह शायद इस माथे पर पर ही लिखा है कि जब तक पश्चिम से होकर कोई बात हमारे यहा नही पहुचती तब तक हम उस पर ध्यान नही देते। किन्तु इससे विनोबा का नही इस देश का ही नुकसान होगा यह निश्चित है।

थाराचट्टी - जहां ग्रामस्वराज्य साकार हो रहा है

जमीन से आसमान में छाते हुए मुसहर

जिन्हें देखा और दिखाया अशोक बंग ने
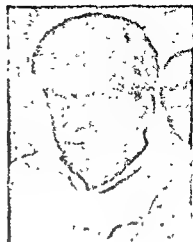
सौ गांव ऐसे हैं जिनमें कुछ न कुछ काम हुआ है।

क्षेत्र मे निम्न प्रवृत्तियां चल रही हैं :

१. ग्रामदान—ग्रामस्वराज्य की चार शर्तों के अनुसार कार्य।
२. भूमि-सुधार तथा उन्नत कृषि के कार्य, कुंआ बनाना आदि विकास कार्य तथा प्रशिक्षण-कार्य।
३. व्यापक रोजगारी, 'फुड फार वर्क' के द्वारा।
४. कर्ज मुक्ति एवं अदालत-मुक्ति।
५. समग्र शिक्षण-योजना : बालवाडी से लेकर प्रौढ शिक्षण तक सम्पूर्ण।

ग्राम सभाओं की स्थापना, उनकी सक्रियता, ग्रामकोष की शुरुआत, बीसवां हिस्सा जमीन का वितरण आदि बातें अक्सर सभी गांवों मे हो गयी हैं। ५५ गांवों से एक भी मुकदमा अदालत मे नहीं है, गांव का न्याय गांव में ही होता है। कुछ गांवों में थोड़ी जमीन पर ग्राम सभा की ओर से सामूहिक खेती भी चल रही है। ग्राम सभाओं में मासिक बुलेटिन पहुंचाई जाती है। इस प्रकार के कई काम चल रहे हैं।

ग्रामीण तरुणों का सगठन यहां के काम की एक खूबी है। ग्राम शान्ति सेना के नाम से बने इस संगठन में सशक्त सम्भावनाएं भी निर्माण हुई हैं। ५५ गावों में करीब दो सौ- ढाई सौ तरुण ग्राम शान्ति सेना में सक्रिय बने हैं। इनके शिक्षण की ओर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। द्वारकोजी और उनके साथी दिवाकर जी के अलावा शान्ति-सेना मंडल के अमरनाथ भाई का माह मे एक सप्ताह इस काम के लिए मिले ऐसी योजना है और उसकी शुरुआत भी हो चुकी है। अब तक इन तरुणों के दो शिविर एक सप्ताह के हुए हैं। आगे ऐसा भी सोचा जा रहा है कि तरुणों का ओरियंटेशन उनके गांव की परिस्थिति के परिवेश मे समवाय पद्धति से हो इसलिए अपने-अपने गांवों मे तरुणों के साथ अमरनाथ भाई दो-दो तीन-तीन दिन रहें। ग्रामीण युवा नेतृत्व मे सफेद पोश-पन न आये और उनका एक

मुसहर शिक्षक, मुसहर बच्चे: नयी शिक्षा

''नया वर्ग'' न बन जाय ये बातें इस तरीके के प्रशिक्षण को अपनाने से सध सकेंगी। ग्राम नेताओं की जड़ें जमीन से जुड़ी रहेंगी, पनपेंगी और ग्रास रूट लेवल सगठन बनेगा। यह पद्धति अन्य क्षेत्रों मे भी आजमाने लायक है।

इनमे से करीब चालीस तरुणों से कोसला नामक गांव मे हम मिले। कोसला गाव एक कार्यक्षेत्र का केन्द्र है। इस केन्द्र की मातहत पड़ने वाले करीब १० गावों से ये तरुण इकट्ठा हुए थे। इनमे से कुछ अपने-अपने गावों मे ग्रामसभा के अध्यक्ष या मंत्री भी हैं। हर माह की पहली तारीख को सघन क्षेत्र के ऐसे सभी तरुण बोधगया मे मिलते हैं और बैठक होती है। इन तरुणों मे से कइयों के चेहरों पर कुछ तेज और चमक है ऐसा महसूस हो रहा था। अधिकांश हाई स्कूल या मैट्रिक तक की शिक्षा प्राप्त हैं।

इनमे से करीब २० युवक चुने गये हैं जो क्षेत्र मे चलने वाली २० रात्रि पाठशालाओं में शिक्षक का काम करते हैं। कुछ गावों मे शत प्रतिशत साक्षरता हो गयी है। इस सघन क्षेत्र मे पाया जाने वाला ग्रामीण तरुणों का यह इतना अच्छा और सक्रिय सगठन बहुत कम जगह देखने मे आया है। कुछ का निर्वाह गाव की सामूहिक खेती पर होता है, कुछ तरुण सगठन से नाममात्र २५ रुपया माह आर्थिक सहायता पाते है।

इस क्षेत्र मे पुराने जमाने के कठिन ग्रामदान २०-२५ है। इनमे सारी जमीन की मिल्कियत वास्तव मे ग्रामसभा की हो गयी है और उसका समान वितरण भी हो चुका है। आज भी वे गाव अपने समान वितरण पर कायम हैं और उनमे ग्राम-स्वराज्य का काम आगे बढ़ाया जा सकता है। परन्तु कार्यकर्ताओं के अभाव से उनमे आज शिथिलता आ गयी है।

मनफर का एक ऐसा ही गांव है। मनफर का नाम लेते ही देश के कई सर्वोदय प्रेमियों के मन हरे हो उठे होंगे। ग्रामस्वराज्य आन्दोलन के मोर्चे पर एक समय अगुवाई पर रह चुका यह मनफर गाव!

पीपल वृक्ष के पास ही बने एक चबूतरे पर मनफर गाव के लोगों के साथ २ घंटा गपशप हुई। आज गाव उजड़ा हुआ सा लगता है। गाव के आज के स्वरूप को

→

देखकर यकीन नहीं होता है कि एक समय गाव गोकुल था। २२ एकड़ सामूहिक खेती होती थी। गोशाला, सामूहिक दुकान, खादी आदि प्रवृत्तियां चलती थीं। नियमित सामूहिक प्रार्थना हुआ करती थी। गाव का उत्पादन ढाई गुना बढ़ा था। सबसे बड़ी बात यह कि गाव ने सारी जमीन का समान पुनर्वितरण किया—एक बार नहीं दो बार। एक बार भूमि पुनर्वितरण के बाद कुछ सालों में बदली हुई परिस्थिति को देखकर दुबारा समान पुनर्वितरण हुआ।

दो गाव वालो की आपसी दुश्मनी गाव की फूट का एक प्रधान कारण बनी। फूट का एक कारण लगान की अदायगी के सम्बन्ध में भी रहा। जमीन के पुनर्वितरण के बाद भी सरकार पुराने भूमि धारण के आधार पर ही लगान मागती रही। प्रशासन की यह बेवकूफी कलेक्टर से लेकर राज्य के सर्वोच्च रेवेन्यू सेक्रेटरी तक पहुचायी गयी। ऊपर से उचित कार्रवाई के आश्वासन भी मिलते रहे लेकिन प्रशासन की फाइलों पर अभी धूल ज्यों की त्यों जमी रही। सामूहिक लगान भरने की समस्या आज तक हल नहीं हुई है। गाव वालों को चाहिये था कि इस मसले को लेकर सत्याग्रह करते। गाव वालों के साथ सर्वोदय संगठन भी सत्याग्रह में जुड़ा होता। दोनों ओर से इस बात की उपेक्षा हुई।

उठने से पहले अन्त में ठाकुरदास बग ने गाव वालों से एक सवाल पूछा—"यदि आज रात को भगवान आप लोगों के सपने में आयें और कहें कि मनरखावासियो, तुम सबने एक समय बहुत अच्छे-अच्छे काम किये, हम तुम पर प्रसन्न हैं। जो वर चाहो माग लो, तो आप लोग कौन सी चीज मागेंगे ?"

गाव वालों में से कई लोगों ने जवाब दिया। जवाब दिलचस्प थे। सबसे पहले चारमो ने कहा : "गाव के लोगों में उत्साह आये और गांव का संगठन पहले की तरह मजबूत हो और आपस में एकता हो, यह हम चाहेंगे।" कुछ और लोगों ने ऐसी ही बातें बतायीं। एक ने कहा : हम गाव के लिए तालाब मागेंगे और कुए मागेंगे। एक और ग्रामीण ने कहा, "हम भगवान से मागेंगे कि गाव में जो ५-१० अच्छे समझदार लोग हैं उन लोगों में फिर से पुरानी निष्ठा जगे और वे गाव की सभा को पहले जैसा जानदार बनायें।"

आज का मनरखा गहन इतिहास की विशाल वास्तु का एक खडहर-मात्र नहीं है। आज मनरखा की दीवारें भले ही ढह गयी हों, लेकिन गाव वालों के मन में उसकी बुनियाद कायम है।

ऐसे गाव इस क्षेत्र में हैं जहां सक्षम कार्यकर्ताओं की कमी के कारण काम रुका पड़ा है। ऐसे कार्यकर्ता साथियों की पर्याप्त टीम यहां खड़ी नहीं हो पायी। यह कमजोर पक्ष है।

उपरोक्त विशेषताओं से बढ़कर एक ऐसी बात है जो इस क्षेत्र के काम की खास विशेषता है। शिक्षण की प्रवृत्ति को ग्राम-स्वराज्य के काम से जोड़ने के लिए विद्यालयीन प्रवृत्तियां कुछ एक अन्य सघन क्षेत्रों में भी चल रही हैं। लेकिन इस क्षेत्र में चलने वाली 'समग्र शिक्षण-योजना' जिस कदर समग्र है और जिस खूबी से उसे क्षेत्रीय काम के साथ जोड़ने का प्रयास किया गया है वह अपने आप में अनोखी चीज है।

बाल्यावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक के लोगों का व्यावहारिक (फंक्शनल) शिक्षण हो सके इस दृष्टि से बालकों के लिए गावों में बालवाड़ियां चलती हैं, बुनियादी शिक्षा के लिए बखा नामक स्थान पर विद्यालय है, उत्तर बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए उत्तर-बुनियादी विद्यालय, किसानों के लिए एक साल का प्रशिक्षण कोर्स तथा प्रौढ़ों के के लिए गावों में रात्रि पाठशालाएं इस प्रकार की यह समग्र योजना है।

दिल्ली हावड़ा जी० टी० रोड पर बाईं तरफ एक रास्ता झाड़ियों में जाता है। बेर जैसे कटीले वृक्षों के बीच से होते हुए जगल से गुजरने वाला ३ मील का रास्ता पार करने पर आप जिस नन्दनवन में पहुंचेंगे उसका नाम बखा-विद्यालय है। विद्यालय के आहाते में प्रवेश करते ही वातावरण की सुरभि आपको पुलकित करेगी। समय यदि किसी काम का या वर्ग का न हो तो कुदकने वाले बच्चे चारों ओर से आपको 'प्रणाम भाईजी, प्रणाम भाईजी' कह-कहकर परेशान कर देंगे।

मोटे तौर पर, छह साल की उम्र से लेकर बारह साल तक के लड़के-लड़कियों के लिए यह आवासी विद्यालय है। १९६८ से इसका आरम्भ बखा में हुआ। भूदान में मिले बजर और पथरीले ८० एकड़ प्लाट पर यह विद्यालय बसा है। इस समय लगभग ११५ छात्र हैं, जिनमें से ३० तो लड़कियां ही हैं। सामान्यतः हर गाव से दो-चार लड़के-लड़कियों को विद्यालय के लिए चुना गया है। सदियों से पीड़ित, दलित और शोषित मुसहर जाति के ही अधिकांश छात्र

अभी से मेहनत

हैं। अन्त्योदय की दृष्टि से, जान-बूझकर निचली मानी जाने वाली जातियों के बालकों को प्रधानता दी गयी है। ८० एकड़ अनुपजाऊ जमीन काफी श्रम और पूंजी लगाकर विकसित की जा रही है। खेती काम, गोशाला, सफाई, नमिग क्रिया तथा प्रभृति

→

→
विज्ञान, सिलाई, रसोई, बौद्धिक वर्ग, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि पहलुओं को लेकर जो समग्र विकास छात्रों का हुआ है, और हो रहा है, वह देखते ही बनता है। जिस पर ये सारी प्रवृत्तियां लड़कों के लिए सतत आनन्द की प्रवृत्तियां बन गयी हैं—किसी भी कार्यक्रम में शरीक होकर अनुभव कर लीजिए। प्रातः चार बजे बच्चे उठते हैं। प्रार्थना में उनकी तन्मयता और संगीत सुन लीजिए। २ घंटे खेती काम चलता है उस समय जिस उत्साह और लगन के साथ सब लड़के-लड़कियां जुट जाते हैं वह देखकर दर्शक बनकर देखते रहना आपके लिए मुश्किल हो जायेगा। १ घंटा सफाई और रसोई का काम चलता है। चार घंटा वर्ग होते हैं। २ घंटे खेल और सांस्कृतिक कार्यक्रम। हर कार्यक्रम में काम, ज्ञान और आनन्द की अभिन्नता साफ झलकती है—बच्चों के चेहरे पर ही; खोजने की जरूरत नहीं है।
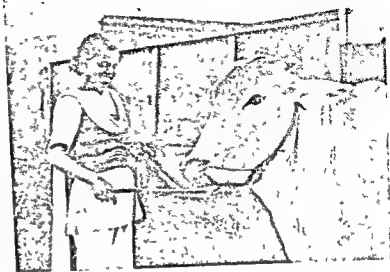
सारे जीवन में कलात्मकता, विज्ञान और शिक्षण का समन्वय है। भोजनालय में टंगे चित्र देखते समय मैं दंग रह गया था। दस-बारह साल के लड़कों ने प्रकृति के कार्बन-साइकिल, और नाइट्रोजन साइकिल के जो चित्र अपने हाथों से बनाये थे वे देखकर मन में सवाल उठा कि केवल बौद्धिक पहलू को ही जांचे तो भी, प्रचलित शिक्षा में पढ़ने वाले हाई स्कूल के छात्र बया-विद्यालय के इन लड़कों की बराबरी न गणित में कर सकेंगे, न विज्ञान में, न भाषा-शुद्धि और लिखावट में।

रात को सांस्कृतिक कार्यक्रम होने वाला था। मैं पहुंचा तब तक सारे लड़के पंक्तियों में बैठ चुके थे और सामूहिक गीत शुरू हो गये थे। जिस सुर और ताल में वे सौ लड़के सामूहिक गीत गा रहे थे वह सफल ब्रॉडकास्ट-सेना में भी देखने नहीं पाया। उनमें कुछ गीत खेती के विभिन्न कामों पर थे : धान की रोपाई कब करेंगे, बीज कितना डालेंगे, खाद कितनी देंगे, जापानी तरीका कैसे अपनायेंगे, मकई की कौन-सी उन्नत किस्में बोनी चाहिए, इस प्रकार के कुछ गीत थे। एक गीत रिवाज नया का स्थानिक बोली में बिरहा छंद में गेय अनुवाद था। 'बोल रहा है संत विनोबा करके ऊंची बांह रे' यह गीत भी जिस जमावट और बुलन्दी से १०० लड़कों ने गाया वह सुनते हुए मुझे इच्छा हो रही थी कि इसको रेकार्ड करके वह टेप हमारे अन्य साथियों को सुनाया जाय।

गीतों के बाद कई नृत्य हुए, डांडिया नृत्य हुआ, नृत्य-नाटिकाएं हुईं। सारे कार्यक्रम ऊंचे स्तर के थे।

द्वारकोजी बतला रहे थे कि अनेक कला में कुशल ऐसे लड़के निकल रहे हैं कि उनके विकास के लिए सुयोग्य शिक्षकों का अभाव हो रहा है। एक लड़का चित्रकला के और एक मूर्तिकला में काफी प्रतिभा रखता है, लेकिन उनके विकास में सहायक हो सकें ऐसे शिक्षक का अभाव है। कुनी नामक एक लड़की नृत्य में काफी विकास कर सकती है पर वैसा शिक्षक यहां नहीं है।

कुनी का नाम निकला तो विद्यालय की एक विशेष बात याद आ गयी। कुछ ही दिन पहले कुनी अपनी एक सहेली के घर गयी थी। वहां गांव में भोजन के अभाव में रोते-बिलखते बच्चों को देखकर उसके मन पर गहरा असर हुआ। बया में आकर कुनी ने द्वारकोजी से कहा कि सारी परिस्थिति को देखकर उसे बहुत खेद हो रहा है।

द्वारको जी ने पूछा, तुम उनके लिए कुछ कर सकती हो क्या ? कुनी बता नहीं पायी क्या किया जाय। इस बारे में सोचने के लिए स्कूल के सारे छात्रों की सभा बुलायी गयी। पहले तो लड़कों ने कहा, हम क्या कर सकते हैं ? सैकड़ों परिवारों में आज यही हालत है। द्वारकोजी ने सुझाया यदि हममें से कुछ लोग सप्ताह में एक शाम खाना छोड़ दें तो जरूरतमंदों की कठिन परिस्थिति में हम कुछ राहत दिला सकेंगे।

पहले रविवार को आधे छात्रों ने स्वेच्छा से शाम को उपवास रखा। शाम की प्रार्थना के बाद भोजनालय में न जाते हुए इन लड़के-लड़कियों ने गीत गाये और चर्चा की कि उपवास से जो नौ किलो अनाज बचा है उसे कैसे बांटा जाय। विद्यालय के अगल-बगल के चार देहातों को छात्रों ने चुना और बारी-बारी से वहां जाकर जरूरतमंदों को अनाज देने का तय किया।

यह मात्र भूतदया या सहानुभूति का ए
→

बया विद्यालय में गोपालन की शिक्षा

→

किस्सा नहीं है। बल्कि उससे कुछ अधिक भी है। सम्पन्नता के द्वीपों में रहकर बाहरी समाज से कटे रहने का खतरा टालने की दृष्टि से देखें तो गांवों के साथ इन छात्रों का यह जिन्दा सम्बन्ध बहुत गहरे माने रखता है। जिस समाज के निर्माण के लिए अनन्तोगत्वा यह विद्यालय है, उसके साथ एक रूप होने का यह एक क्रान्तिकारी सांस्कृतिक कार्यक्रम है। क्षेत्र की जनता के जीवन और संस्कृति के साथ अधिक सम्बन्ध रखकर, बच्चों को उसकी कमियों और रूढ़ियों के प्रति जागरूक रखा जा सके जिससे कि अलगाव पैदा न हो, यह आवश्यक है।

जीवन और शिक्षण में यह जो अभिन्नता सधी है और उसके कारण बच्चों का जो समग्र विकास हो रहा है वह देखकर एक बार जयप्रकाशजी की आंखों में आंसू भर आये थे। कहा था—'समाज के जिस तबके को हमने जानवर बना कर छोड़ा है उन्हीं के इन बच्चों में जो सांस्कृतिक क्रान्ति साकार होती दिख रही है वह असाधारण है!' बच्चों को एक विशेष प्रकार के आश्रमीय सांचे में ढालने की प्रवृत्ति बढ़ने का खतरा है, उससे जरूर बचना चाहिए।

कृषि गोशाला आदि उत्पादक प्रवृत्तियों के आधार पर २ या ३ साल के भीतर ही विद्यालय स्वावलम्बी हो जायेगा।

बुनियादी शिक्षा के बाद १२ से सोलह-साल की उम्र के लड़के-लड़कियों के लिए 'निर्माण के द्वारा शिक्षा' का तत्व अपनाया जा रहा है। निर्माण से मतलब है विकास कार्य और नव समाज-निर्माण का कार्य। योजना ऐसी है कि १२०० एकड़ भूदानी जमीन पर १० गांवों में बसे ५०० परिवारों का क्षेत्र यही इस विद्यालय का आहाता होगा। इस क्षेत्र में ग्राम-निर्माण की प्रक्रिया में और ग्राम स्वराज्य के सघन कार्य को आरम्भ से खड़ा करने में छात्र सहभागी होंगे। वे गांवों की परिस्थिति का सर्वेक्षण करेंगे, विकास की योजना बनाने में और उसके कार्यान्वयन में हिस्सा लेंगे। इस तरह चार-पांच साल की अवधि में काम करते-करते सीखेंगे और सीखते-सीखते काम करेंगे। कथा विद्यालय से निकले छात्र ही इस विद्यालय में क्रमशः लिये जायेंगे।

द्वारकोजी की प्रतिभा से चलने वाले ये दोनों प्रयोग अपने आप में अनोखे हैं एवम् शिक्षा में क्रान्ति के साकार उदाहरण हैं। रिवोल्यूशन इन एजुकेशन की दिशा में भी उल्लेखनीय प्रयास साबित हो सकता है। शिक्षा जगत में आजकल 'डीस्कूलिंग' की विचारधारा जोर पकड़ रही है। उस दृष्टि से भी यह प्रयोग संभावनाओं से भरपूर है। इस प्रकार की शिक्षा-प्राप्त नौजवान जब इस क्षेत्र में सब गांव-गांव में फैल जायेंगे तब वे ग्राम स्वराज्य की क्रान्ति में उत्प्रेरक की भूमिका अदा करेंगे। ग्रामस्वराज्य का काम और विद्यालय की प्रवृत्ति ये दोनों पहलू परस्पर पूरक अनिवार्य अंग हैं। कथा में छः साल रहने के बाद भी बच्चे अपने गांवों में अंत में वापिस जायें, गांव के जीवन के प्रति तिरस्कार की भावना न रखते हुए उसे समझदारी से स्वीकार करें, और सुधारने का सतत प्रयास करें, यह होगा तो ही इन प्रयोगों से अपेक्षित फल मिलेगा।

आज का समाज शास्त्र दंडशक्ति के विकसित किया गया है। इसलिए इस समाज शास्त्र से शोषण की परिस्थिति विकसित हुई है, क्योंकि शोषण के बिना इस समाज शास्त्र का अस्तित्व कभी भी बन नहीं पाता। बुनियादी परिवर्तन लाने का संकल्प लोगों में विकसित करना नयी क्रान्ति है। इस क्रान्ति की दिशा में बढ़ने के लिए आज का समाज सच्चा समाज नहीं है। और सच्चे समाज की पृष्ठभूमि बनाने के लिए नयी क्रांति की व्यूह रचना करनी होगी। आज का समाज एक दूसरे का शोषण करके बना है। मनुष्यों के संबंधों में विश्वास हासिल कर के ही सच्चा समाज बन सकता है। क्रान्ति की व्यूह रचना विश्वास के आधार पर मनुष्य संबंधों को विकसित करने की है। ग्रामस्वराज्य इसकी एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है। हमारे पुष्टि क्षेत्रों में जो भी कार्य किया जा रहा है वह ग्रामस्वराज्य के लिए गांवों को अपना अस्तित्व दिखाने के लिए किया जा रहा है। लेकिन दंडशक्ति के सहारे बनाये गये समाज शास्त्र को तोड़ने के लिए भी यह ग्रामस्वराज्य एक शस्त्र है। इसलिए पुष्टिक्षेत्रों में हमारा कार्य लोगों में आपसी सहयोग बनाने का है।

जव्हार में रोपे गये क्रान्ति के बीज

जव्हार : महाराष्ट्र में ग्रामस्वराज्य की दिशा

—बाबूराव चन्दावार

(विनोबा के 'ठाणा पाम्रो' आह्वान को महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों के १० नये, युवा कार्यकर्ताओं ने स्वीकार किया था। महाराष्ट्र के एक छोर पर बसी जव्हार तहसील जिला अभियान समिति का केन्द्र बनी। जव्हार में आज से ठीक एक वर्ष पहले २ अक्टूबर, '७२ से शुरू किये गये काम से 'एक नया वातावरण बना है' ऐसा कहा जा सकता है। लोग कार्यकर्ताओं से और कार्यकर्ता लोगों से, परिस्थिति से परिचित हुए हैं। फिर भी काम ने अभी रफ्तार नहीं पकड़ी है। कार्यकर्ता बहुत नये व समस्यायें बहुत पुरानी हैं इसलिए ठाणा जिला ग्राम स्वराज्य समिति ने जामसर गांव में गत १५ जुलाई से १५ अगस्त तक 'ग्रामस्वराज्य मार्ग खोजन' शिविर आयोजित किया था। शिविर ने सहअध्ययन व श्रम को पुष्ट एक नया 'प्रय' बनाया है। बाबूराव चन्दावार, जो पूरे समय तक इस शिविर में रहे, की यह रपट न सिर्फ शिविर की जानकारी देती है, बल्कि सघन क्षेत्रों में काम की रफ्तार बढ़ाने के लिए आवश्यक सैद्धान्तिक बहस का रास्ता भी खोलती है।)

यह सहयोग ही दंड शक्ति से असहयोग करेगा। इसके लिए हमें नयी पद्धति की खोज करनी होगी। क्षेत्रों से संबंधित कार्यकर्ताओं को इसलिए चिन्तनशील बनना होगा।

ग्रामदान पुष्टि में लगे कार्यकर्ताओं को अवसर दिलाने के लिए ही ठाणा क्षेत्र के पुष्टि कार्यकर्ताओं का एक महीने का शिविर किया गया। महाराष्ट्र के इस जिले का संकल्पित जिलादान घोषित किया गया था। लेकिन पुष्टि कार्य का आरंभ गत दो अक्टूबर से किया गया है। वैसे कुछ बिखरे ग्रामदानी गांवों में पुष्टि कार्य होता रहा है। लेकिन दो अक्टूबर से जव्हार तहसील के पैंतालीस गांवों का एक सघन क्षेत्र

बना कर पुष्टि कार्य किया जा रहा है। सघन क्षेत्रों में अनुभवी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है यह कई बार कहा जाता है। लेकिन अनुभवी कार्यकर्ताओं की कमी हर जगह महसूस होती है। जव्हार क्षेत्र में भी इसकी कमी महसूस होती है। फिर भी महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों से आये आठ-दस कार्यकर्ता प्रारंभ से ही यहां जमे हैं। ये सब कार्यकर्ता नये हैं। फिर भी लगन और सातत्य इनमें है। पिछले एक वर्ष में जो भी पुष्टि का कार्य हुआ है, उससे लोगों से कार्यकर्ताओं का और कार्यकर्ताओं से लोगों का परिचय हुआ है। क्षेत्र में एक नया वातावरण बनता दिखाई दे रहा है। कानूनी पुष्टि की तैयारी भी थोड़ी हुई है। कार्यकर्ताओं के प्रति लोगों में विश्वास बन रहा है। लेकिन आवश्यक गति अभी नहीं आ पा रही है। सामने जो प्रश्न खड़े होते हैं, उनसे कैसे निपटा जाये इसका कर्ता एक जगह बैठ कर अध्ययन ही कर सकेंगे, ऐसा माना गया था। लेकिन यह अध्ययन केवल किताबी न हो कर पद्धति की खोज के लिए सहायक हो इस पर सभी साथियों ने बल दिया। तब यह सोचा गया कि अध्ययन किसी ग्रामदानी गाँव में किया जाये। जामसर ग्रामदानी गाँव के ग्रामवासियों ने अपने गाँव में शिविर करने का आमंत्रण दिया। लेकिन यह शिविर सातत्य से एक महीने तक चलने वाला था, इसलिए ग्रामस्वराज्य अभियान समिति ने शिविर के खर्च आदि का भार उठा दिया। क्योंकि यहाँ का प्रत्येक गाँव अकाल से ग्रस्त है। शिविर काल १६ जुलाई से पंद्रह अगस्त तक निश्चित किया। पन्द्रह जुलाई की शाम को सब साथी कार्यकर्ता जामसर गाँव के ग्राम पंचायत भवन में पहुंच गये। जामसर गाँव के लोगों से चर्चा करके दूसरे दिन याने सोलह जुलाई को अपने बैल तथा हल जरूरतमंद लोगों को देंगे। हमारे सब कार्यकर्ताओं ने गाँववालों को आश्वासन दिया कि वे स्वयं खेत में काम करेंगे। रोज ४ घंटा इसी में लगायेंगे।

एक महीने का यह सहजीवन मजे में बीता। सब का स्वास्थ्य अच्छा रहा। एक दो मित्र एक दो रोज जुकाम, सिरदर्द से परेशान जरूर रहे। लेकिन एक दिन विश्राम लेते थे और दूसरे दिन अपने काम में लग जाते थे। इस एक महीने में चार ग्रामसभायें हुईं। बार बार सामूहिक भजन गान हुआ। जिस के पास अत्यल्प भूमि है और जो अधिकतर मजदूरी पर ही अपना जीवन बिताते हैं और जिनकी जमीन हर साल रोजी रोटी के काम में लगने से बोई नहीं जाती है, ऐसे पच्चीस ग्रामवासियों की भूमि में हमने धान, नागली, वरई के रोप लगाये। कुछ अच्छे किसानों के खेत में श्रमकार्य हुआ। ऐसे उन्तालीस

जामसर शिविर में किसानों के खेतों में धान रोपते कार्यकर्त्ता

नये कार्यकर्ताओं को ज्ञान कम है। लेकिन सातत्य की वजह से वह प्रश्नों को जान लेते हैं, कभी प्रश्नों से निपट भी लेते हैं। कभी निराश होते हैं। फिर भी क्षेत्र को पकड़े हुए हैं। मूल्यांकन किया गया। सभी ने कार्य की गति नहीं बढ़ती है इसकी चिंता व्यक्त करके पद्धति में खोज करने पर बल दिया। वर्षा के दिनों में यहाँ के गाँवों में लोगों से संपर्क करना सहज संभव नहीं है। इसलिए कार्य- आसपास के ५-६ गावों के प्रमुख मित्रों की एक जगह बैठक तय हुई। उस दिन पाँच-छह गावों से सम्पर्क किया गया। शाम को सब साथियों की बैठक हुई। बैठक में तय किया गया कि इस वर्ष आस-पास के पाँच-छह गावों के खेत बोये जायेंगे। किसी की जमीन परती नहीं रखी जायेगी। सहायता की आवश्यकता हो एक दूसरे को सहायता देंगे। बैल या हल की सहायता हो तो बैल और हल के मालिक किसानों के खेतों में श्रमकार्य हुआ। प्रति व्यक्ति ८७ ३० घंटे काम हुआ। सोलह एकड़ नौ गुंठे भूमि में रोप रोपे गये। कुल चौबीस दिन श्रमकार्य कर सके। दो दिन हमें काम नहीं मिला, क्योंकि खेती के काम खत्म होने आये थे। चार दिन गाँव के लोगों ने छुट्टी मनाई। रोज औसतन आधी एकड़ जमीन में रोप रोपन हुआ। इसमें खेत से घास निकाल
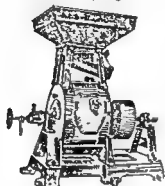
कर बाहर फेंकना, रोप खोदना, और उन्हे रोपना ऐसे काम के तीन प्रकार थे। नागली को सुधरी मराठी मे नाचणी कहते हैं। इसकी रोटी बनाई जाती है। वरई को भगर कहते हैं, जिसे उपवास मे पकाकर खाया जाता है। नागली और वरई रोपने मे श्रम कम और रोप उखाडकर जुडे बांधने मे श्रम अधिक लगता है। धान के रोप निकाल कर उसे कीचड मे लगाना सब से अधिक श्रम का कार्य था। खेतो मे कांटे, कंकड और पत्थर भी बहुत रहते हैं। धान के रोप कीचड़ मे लगाते वक्त नाखून के अन्दर कंकड, कीचड और कभी कांटा भी जाता है। फिर भी सावधानी से श्रम कार्य किया गया। लेकिन धान के रोप लगाने की कुशलता भी हमें प्राप्त हुई है। एक महीने के शिविर मे चार घंटे का श्रमकार्य सबके लिए उत्साहवर्धक रहा। जरूरतमंदो को गांव के लोगो ने बैल, हल की सहायता दी। जिसमे गांव मे सहयोग का वातावरण बना श्रमकार्य के अलावा हमारा जो एक महीने का शिविर चला वह चर्चा और चिंतन के द्वारा समस्याओं को समझने के लिए तथा विचार का स्तर बढ़ाने के लिए कारगर साबित हुआ। खाना पकाने का हो, कुए से पानी निकालने का हो, सिर पर पानी का बर्तन ढोने का हो, सफाई करने का हो, या रोप कीचड में लगाने का हो, हर समय चिंतन तथा विचार की प्रक्रिया चलती रही। इस कारण सुबह से शाम तक की संपूर्ण दिनचर्या किसी को बोझ नही लगती थी। धीरेन्द्र मजूमदार की 'क्रांति प्रयोग और चिंतन' किताब केवल पढ़ने के लिए पढ़ी नही गई, उसे समझा भी गया। इसलिए एक महीने में पढ़ कर खत्म करने का कोई लक्ष्य नही रहा। जितना पढ़ा उसे समझे बिना आगे नहीं बढ़े। सुबह की प्रार्थना के बाद विनोबा की मार्गदर्शक किताबें 'स्थितप्रज्ञ दर्शन' इशावास्यवृत्ति पढ़ी गयी। अनुशासन, निर्देशन, संचालन, मार्गदर्शन नाम की कोई चीज शिविर मे नही रखी गयी। इसलिए शिविर मे सबको अभिव्यक्ति हो पायी। स्वय प्रेरणा मे ही सब कुछ होना था। कभी कोई शिकायत करना भी था तो किसी को चुभे नही इसका ध्यान रखते थे। पन्द्रह अगस्त जामसर गांव मे ही बिताया गया और नये उत्साह के साथ सोलह की सुबह सब मित्रो ने घोषणाओ के वातावरण मे जामसर गांव छोडा।

अध्ययन शिविर : क्रांति, चिन्तन और प्रयोग

शिविर मे अध्ययन दो प्रकार से किया गया। क्रांति की व्यूह रचना के लिए तात्विक पहलुओ को स्पष्ट करते जाने का एक प्रकार था। दूसरा प्रकार था क्षेत्र मे काम करते वक्त जो समस्यायें खडी होती हैं उनको ठीक से समझना, तथा उनके निराकरण के लिए उपाय खोजना। चर्चा से जिस निष्कर्ष पर हम आये उसका सार है ग्राम स्वराज्य की सीढी ग्रामदान की चार शर्तों से तय की जाती है. (इन चार शर्तों को फिर से गहराई मे जा सोचा गया) संचालन पद्धति को समाप्त करके स्वचालन पद्धति विकसित करने के लिए लोगो को स्वचालन का महत्व समझना आवश्यक है। लेकिन इसे बिना समझे लोग कुछ करने जायेंगे तो स्वचालन नहीं आ पायेगा। इसलिए स्वचालन के लिए लोगो मे अभिक्रम निर्माण करना आवश्यक है। यह अभिक्रम कार्यकर्ता और लोगों के बीच विश्वास बनने पर ही निर्माण हो सकेगा। इसलिए क्षेत्र के लोगो से कार्यकर्ताओ का संपर्क बनने की आवश्यकता रहती है। अभी जो संपर्क है वह हमारी बातें लोगों तक पहुंचाने के लिए है। लोगो को अपनी बातो पर भरोसा हो सके ऐसा विश्वास अभी नहीं बन पा रहा है। इसलिए कार्यकर्ताओ को क्षेत्र मे नागरिक की भूमिका लेनी पड़ेगी। समाज संचालित न रह कर स्वाचलित रहे, इसको लोग जब तक महसूस नहीं करेंगे तब तक कार्यकर्ताओ के द्वारा किये जाने वाले पुष्टि कार्य से भी एक संचालन खडा होगा। तो सोचा गया कि लोगो से संपर्क ऐसा बने कि विश्वास पैदा हो। यह विश्वास कार्यकर्ताओ के प्रति बने और कार्यक्रम के प्रति भी। कार्यक्रम को जनाधार मिलेगा तो ही कार्यक्रम मे विश्वास बनेगा। लेकिन यदि स्थूल लक्ष्य के प्रति आकर्षण बढ़ाते जायेंगे और लोगो मे सोचने की प्रक्रिया चलेगी नही तो क्रांति कभी भी संभव नही होगी।

स्वचालन के लिए सबसे बडा बाधक तत्व राज्य सत्ता है। उसकी सहायक है धर्म सत्ता से बने संप्रदायो की परंपरा। समाज संचालन की एक रूढि बन गई है। इस रूढि से समाज को बाहर लाना सामान्य प्रयत्नो से संभव नही होगा। इसलिए जिन परंपराओ को तोडना है उनसे हमें सहयोग नही करना चाहिये। लेकिन यह संभव नही हो रहा है। संचालन नहीं चाहते हैं तो हमारी पद्धति ऐसी बन जाती है कि संचालन आ ही जाता है। तो खोज पद्धति मे करना है। हमारी संस्थाओ और सर्व सेवा संघ मे अभी स्वचालन को पूरी तरह अपनाया नही गया है। इसलिए उनका अस्तित्व परिणामशून्य है। स्वचालन →

→

को नहीं मानने वाली संस्थायें राज्य सत्ता और धर्म सत्ता के विकल्प नहीं खड़ा कर पाती, बल्कि पूरक बनती हैं। इसलिए क्षेत्रो के पुष्टिकार्य मे संस्थागत सहायता लेने से स्वचालन का तत्व पनपेगा नही। क्योकि संस्थागत सहायता निरपेक्ष नही रहेगी। कार्यकर्ता का जनाधार, कार्यक्रम का जनाधार-दोनो विश्वास को आधार बनाकर विकसित करना आवश्यक है। यह पुष्टि क्षेत्रो में ही संभव हो सकेगा।

लोगो की कई प्रकार की समस्यायें हैं। जिनको लेकर सत्याग्रह करने की बात भी हम सोचते रहते हैं। जहा कही काम रुक जाता है वहा सत्याग्रह का स्थान अवश्य होता ही ऐसा मानने वालो की संख्या कम नही है। लेकिन क्या सत्याग्रह सत्य समझे बिना किया जा सकता है? हरेक का अपना सत्य होता है। इस स्थिति मे हरेक अपना सत्याग्रह चलायेगा। लेकिन क्रान्ति की व्यूह रचना मे में सत्याग्रह का स्थान क्या हो? जो सत्याग्रह पर सोचते हैं वे क्रान्ति के संदर्भ को भूलते हैं ऐसा ही कुछ महसूस होने लगा है। इसलिए सत्याग्रह किसलिए? यह सवाल खडा हो जाता है। कोई कहता है अहिंसा को व्यक्त करने के लिए सत्याग्रह करना होगा। तो क्या यह सत्याग्रह प्रतिकारात्मक रह पायेगा? सोचना यह है कि हमारा सत्य क्या है। हमारा सत्य शासनहीन, शोषणहीन समाज बनाना है। केवल प्रतिकार करना नही है। यह सत्य राज्यसत्ता को क्षीण करने की कोशिश मे पकड में आयेगा। इसी के लिए तीसरी शक्ति बनाना है, जो दण्डशक्ति से भिन्न हिंसा विरोधी है। इस सत्य के लिए यदि आग्रह करना है तो उसकी पद्धति मूल्य परिवर्तन की क्रान्ति की व्यूह रचना किये बिना कैसे हासिल होगी? क्रान्ति की व्यूह रचना मे सत्याग्रह का स्थान अवश्य है। लेकिन सत्याग्रह केवल प्रतिकार का रूप लेकर सत्य से अलग पड जाये यह नही होना चाहिये। प्रश्नो को लेकर सत्याग्रह करने की बात सोची जाती है। लेकिन जो प्रश्न हैं वे सब आज की जीवन पद्धति से पैदा हुए हैं। जीवन पद्धति को बदले बिना प्रश्नो का हल निकलेगा कैसे? एक तरफ सत्याग्रह चलेगा, दूसरी तरफ परंपरागत जीवन पद्धति चलेगी। और बिना विश्वास का आधार बनाये नया समाज विकसित नही होगा। तो क्या इस स्थिति मे सत्याग्रह का मूल्य बन सकेगा? अपेक्षित परिणाम निकलेगा? हमारा सत्याग्रह यदि तीसरी शक्ति बनाने के लिए चाहिये तो अन्याय के प्रतिकार का सत्याग्रह नही चलेगा। गलत समाज शास्त्र से बनाये गये न्याय की प्रतिक्रियाएं हमेशा होती रहती हैं, जिसे हम अन्याय कहते हैं। गलत समाज-शास्त्र से बने न्याय को भी हम नही चाहते। क्योकि इस न्याय से मनुष्यो मे संबंध बनते नही, बिगड़ते हैं। इस तथ्य को बिना समझे हम सत्याग्रह करेंगे तो वह प्रतिकारात्मक भी रहे तो भी समाज जीवन के आज के वे गलत मूल्य ही प्रतिष्ठित होते जायेंगे, जो राज्य सत्ता तथा धर्मसत्ता को हमेशा बल देते आये हैं, राज्य सत्ता के पूरक बन कर जीते रहे हैं।

सत्याग्रह हमे चाहिये। लेकिन वह केवल प्रतिकारात्मक नही, क्योंकि प्रतिकार से सत्य अलग पड़ जाता है, आग्रह बाकी रह जाता है, जो वास्तव मे पूर्वाग्रह ही हो सकता है। तो हमारा सत्याग्रह राज्यसत्ता तथा धर्मसत्ता के सम्प्रदायो को असहयोग करके प्रकट होगा। (क्योकि इन्होंने ही आज का समाज बनाया है।) यह तभी हो सकेगा जब लोकशक्ति बनेगी। लोकशक्ति लोगो मे आपसी सहयोग बढने से बनेगी। याने जब लोगो के सहयोग की शक्ति राज्यसत्ता से असहयोग करेगी तभी राज्यसत्ता क्षीण हो पायेगी और यदि इस स्थिति मे राज्य सत्ता से संघर्ष होता है, तो वह करने की चीज है। इसके लिए सत्याग्रह प्रकट हो सके तो उसकी सार्थकता सिद्ध होगी। इसके लिए तैयारी करनी चाहिये। लोक शिक्षण करना चाहिये। इसलिए पुष्टि क्षेत्रों को नयी क्रान्ति के आरोहण के लिए विकसित करना चाहिये। राज्य सत्ता से संघर्ष होगा सत्याग्रह के माध्यम से, लेकिन यह माध्यम उपयोग मे लाया जायेगा लोकशक्ति को आधार बनाकर ही। इसलिए पुष्टि क्षेत्रो मे क्रान्ति के नये आरोहण की हमे तैयारी करनी चाहिये। लोगो का आपस मे सहयोग बने इसकी संरचना करने के लिए ही हम ग्रामदान को पुष्ट करना चाहते हैं। ग्रामदान द्वारा ही लोकशक्ति बन सकती है। इस दृष्टि से ग्रामदान की पुष्टि अपने आपमे संपूर्ण सत्याग्रह है।

गाव की समस्याओ को समझने के लिए लोगो से ठीक संपर्क करना पडता है। लेकिन समस्याओं का सही अर्थ लगाना हो तो उनके जीवन-क्रम का अध्ययन भी करना पडता है। कृषि उत्पादन मे लोगो को कई प्रकार की समस्याओ का सामना करना पडता है। जव्हार क्षेत्र के गावो मे भूमि धारण की विषमता कम है। बहुत बडे जमीन मालिक यहा पर नही हैं। बीस एकड के भूमि मालिक गाव मे दस के अन्दर ही मिलेंगे। इसमे भी ऊसर या घास उगने वाली जमीन होगी। तीन-चार एकड़ जमीन के मालिक अधिक मिलेंगे। भूमिहीन गाव मे दस से कम ही होंगे। लेकिन हर एक भूमिवान यदि उसके पास साल भर काम करने के लिए नौकर हो तो उसको कुछ जमीन जोतने के लिए दे देता है। उसका मुआवजा लेता नही। हरएक के पास अपनी झोपडी है। झोपडी और झोपडी की जमीन का मालिक दूसरा नही है। भूमिधारण की पद्धति मे अधिक विषमता नही होने पर भी जीवन स्तर नीचे है। खेतो से साल भर के लिए जितना अन्न चाहिये उतना जुटा नही पाते। खेतो मे हम श्रम के लिए जाते थे तो कई प्रकार की समस्याओ का अर्थ स्पष्ट होता जाता था। हमारे श्रम की गति बढ़ गई थी। मजदूर जितना काम कर सकते थे उससे कई गुना अधिक काम हम किया करते थे। पच्चीस मजदूर एक काम जितने समय मे कर सकते हैं उतना काम उतने ही समय मे हम दस कार्यकर्त्ता कर लेते थे। इसके कारण की जब हमने खोज की तो पता चला कि मजदूर खेत में काम बचा कर रखते हैं। यदि वे तेजी से काम करें तो थोडे ही दिनो मे काम समाप्त हो जायेगा और उनको खाना तक नहीं मिलेगा। मजदूर को यहा एक समय रोटी दी जाती है। केवल रोटी और रोजी के लिए ही मजदूर गतिपूर्वक काम नही करता। एक महीने के अन्दर-अन्दर ही सारे खेतो के काम समाप्त हो गये। दूसरा कोई काम यहा उपलब्ध नहीं है। अकाल सहायता का काम पत्थर तोडने का है, उस काम पर लोग जाते रहे। रोजी रोटी का सवाल इतना भयंकर है कि अपने खेत मे भी खेत का मालिक भूखे

→

→

काम करता है। यदि नही करता है तो खेत पडे रह जाते हैं। हमे ऐसा दिखा कि, खेत का मालिक उसकी पत्नी तथा बच्चे सब भूखे रहते हैं। उनके लिए खेत जोतना और बोना आवश्यक है। लेकिन भूख मिटाने के लिए मजदूरी कर लेते हैं, और खेत पडा रहता है। हम लोगो की सहायता से इस प्रकार के लोगो ने रोप रोपने का काम किया। यदि हम उनके खेतो मे नही जाते तो उनके रोप बेकाम हो जाते। अगले साल के लिए उसके पास थोडा भी अन्न जुटा पाना सम्भव नही होता। ऐसे कई छोटे किसान हर साल अपना सारा खेत जोत नही पाते। फिर कर्जा लेकर निकृष्ट जीवन जीते हैं। हम एक चार-पाच एकड भूमिवान के खेत मे चावल के रोप रोपने गये थे। वह हमारे शिविर के निकट रहता था। उसके दोनो बच्चे हमारे यहा से रोज रोटिया ले जाया करते थे। उससे पूछा तो कहने लगा "मेरे पास खाने को कुछ नही है। बच्चे आपकी रसोई से रोटिया लेते हैं। अभी अल्हार के कच्छी साहूकार से बारह रुपये लाया हू। फसल आने पर उसको मैं एक मन धान दे आउगा।" मैंने एक दूसरे अच्छे खाते-पीते किसान से पूछा, "एक मन धान की कीमत कितनी होती है?" उत्तर मे उसने कहा, "एक मन धान की कीमत सत्ताईस रुपये होती है।" इस प्रकार किसानो के पास जमीन रहते हुए भी कर्जा मे ही सारी फसल साहूकार को दे देनी पडती है। इनको कानून की सहायता नही मिल पाती। महाराष्ट्र मे 'पालेमोड' का कानून बना है। साहूकारी नष्ट करने के लिए कानून बना है। हर साल छोटे किसानो के पास खेत बोने के समय परिवार के लिए अनाज बचता नही। थोडे सूद से सरकार की तरफ से अनाज मिल जाता है। लेकिन इसका लाभ जरूरतमद उठा नहीं पाते, अच्छे खाने-पीने किसान फायदा उठा लेते हैं। इसलिए अभी भी साहूकारी पाश जैसा का तैसा बना है।

भूमिहीनो को भूमि मिलने पर भी वह अपने खेत से परिवार के लिए अनाज जुटा नही पायेगा। इसके कारण की खोज करने पर पता लगता है कि कृषि उत्पादन तथा उत्पादक का शोषण औद्योगिक वस्तुए कर रही है। इसलिए किसानो के लिए जमीन पर गुजारा करना आगे सम्भव नही होगा। किसान अन्न का उत्पादक है। लेकिन वह मालिक नही है। उद्योगो के मालिक स्वय उत्पादक नहीं है वहा मजदूर उत्पादक है, लेकिन उत्पादन का मालिक स्वय उद्योगपति है। उद्योगपति उत्पादन के मूल्य अपने नियत्रण मे रखता है इसलिए वह उत्पादन का मालिक बनता है। किसान उसके उत्पादन के मूल्य अपने नियत्रण मे नही रख पाता। बाजार तथा सरकार उसको नियत्रण मे रखते हैं। इसलिए वह उत्पादन का मालिक नही बन पाता। उद्योगो मे उत्पादित वस्तुए खरीदकर किसान अधिक मूल्य देता है। लेकिन जब अपना उत्पादित अन्न बेचता है तब कम मूल्य लेता है। इसलिए औद्योगिक वस्तुओ के द्वारा किसान के अन्न का अपहरण होता जा रहा है। अधिक अन्नोत्पादन होने पर भी अन्नोत्पादन के मूल्य किसान के नियत्रण मे नही रहेगे तो वह हमेशा की तरह नगण्य ही रहेगा। इसलिए किसान तग आ कर खेतो को छोडकर शहरो के कारखाने के इर्द-गिर्द आ कर बसते हैं शहरो मे गदी बस्तिया बनती है। यह सब अनियन्त्रित औद्योगीकरण का परिणाम है। अनियन्त्रित उद्योगो से किसान को मुक्ति दिलाये बिना अन्न उत्पादन मे जो उत्साह चाहिए वह नही आ पायेगा। अन्न के बारे मे आत्म निर्भरता नहीं आयेगी। तो गावो की समस्याए शहरो की औद्योगिकता की हैं इसलिए गाव शहरो तथा उद्योगो के उपनिवेश बने हैं। गावो मे चलने वाले छोटे उद्योग नष्ट कर दिये गये हैं और जो खेत अभी बचे हैं उनका भी अपहरण होने लगा है। इसलिए गाव मे अन्नोत्पादन की आज की पद्धति मे फर्क करना आवश्यक हो गया है। उत्पादन का सयोजन मूल्य किसानो के नियन्त्रण मे रह पाये ऐसा करना होगा। भूमिहीन का भूमिवान बन जाने से गाव की समस्या हल नही होगी। गाव की समस्याओ का हल गाव शहरो से असहयोग करेंगे तो ही हो सकता है। इस लिए गांवो का सुदृढ सगठन करना अनिवार्य है। गाव का अस्तित्व बनाने के लिए गाव को आत्मनिर्भर बनना होगा, पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा। यह सभव हुआ तो गावों मे क्रान्ति होगी।

शिविर समाप्ति के तीन दिन पहले से ही शिविर का मूल्याकन करना शुरू किया गया था। इसमे सभी मित्रो का मानस बिना सकोच के व्यक्त होता था। "ग्रामस्वराज्य के महत्त्वपूर्ण अभियान को सही तरीके से समझने का अवसर एक महीने में मिला इसमे सतोष है"—ऐसा कहने से कोई भी पीछे नही रहा। एक त्रुटि अवश्य रही वह यह कि गाव के लोगो के घरो मे जाकर सम्पर्क करने का सोचा गया था वह हो नही सका। गाव के सब लोग सुबह होते ही खेत पर या पत्थर तोडने के लिए चले जाते थे। शाम को वे थक कर आते थे, हम भी थके ही रहते थे इसलिए रात को सम्पर्क करना सम्भव नही हो सका। दूसरा कारण यह भी है कि रात को सब लोग शराब पीकर घर मे रहते हैं। स्त्री-पुरुष, बच्चे सब शराब पीते हैं। इसलिए भी रात को सम्पर्क करने का कोई फायदा नही हो पाता।

गोविन्दपुर : ग्रामस्वराज्य का गीत गोविन्द

—अशोक बंग

दरवाजे से झांकता ज्ञान का सूरज

गोविन्दपुर : जहां ग्रामस्वराज्य पैरों पर खड़ा है

उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले का पहाडी इलाका गोविन्दपुर। आदिवासियों की आबादी है। छः साल पहले पूरी एक तहसील मे ग्रामदान हुआ। उसके बाद ग्रामदान यहा साकार हो रहा है।

सोन नदी के दक्षिण मे मिर्जापुर जिले का जो इलाका पड़ता है, उसमे पिछले छ सालों स शान्त लेकिन क्रान्तिकारी काम चल रहा है।

यह आदिवासी इलाका काफी पिछड़ा रहा है। सब प्रकार का शोषण और हर तरह का दमन यहा की जनता सहती रही है। उसमे से बना एक मानस—भयग्रस्त निराशावादी, परावलम्बी मनोवृत्तिवाला और रूढ़िवादी।

ऐसे इस क्षेत्र मे भूदान के जमाने मे कुछ न कुछ काम सर्वोदय आन्दोलन का हुआ था। गांधी निधि का केन्द्र भी यहा सेवा के काम करता था। ग्रामदान के विचार-प्रचार का और ग्रामदान प्राप्ति का जो आन्दोलन देश-भर मे चला, वह यहा भी चला और सन् ६७ मे इस क्षेत्र की दुधी तहसील ग्रामदानी क्षेत्र घोषित की गयी। लेकिन आगामी समस्या हल होती दिखायी नही दी। अहिंसक क्रान्ति की दिशा मे तो दूर, विकास के लिए भी लोगो की शक्ति जग नही पायी। जनता पूर्ववत् निष्क्रिय बनी रही। ग्रामदानोत्तर काम शुरू नही हो पाया।

यही स्थिति कमोबेश देश के अधिकांश ग्रामदानी क्षेत्रो मे थी। सर्वोदय आन्दोलन मे भूदान के बाद विचार-प्रचार के स्तर को जो व्यापक काम चला उसके बाद आवश्यकता थी किसी भिन्न प्रकार की व्यूह रचना की। ऐसी स्थिति मे १९६७ मे प्रेम भाई ने इस क्षेत्र मे काम करने का तय किया। 'आंपिडम' प्रोजेक्ट →

के नाम से काम नये ढंग से और दीर्घ-दृष्टि के साथ आरम्भ हुआ। ग्रामदानोत्तर नवनिर्माण का तथा ग्रामस्वराज्य की स्थापना की व्यूह रचना का एक अनोखा तरीका यहां अपनाया गया। क्षेत्र में काम खड़ा करने की दिशा में दो चरण माने गये : प्रथम चरण में, क्रान्ति की व्यूह्रचना में उत्प्रेरक भूमिका [केटे.लक रोल] निभाने के लिए समर्थ संस्था खड़ी करने की दृष्टि से गोविन्दपुर आश्रम पर अधिक ध्यान दिया गया। द्वितीय चरण में क्षेत्र के गांवों में ग्रामस्वराज्य को साकार करने के लिए माध्यम के तौर पर विभिन्न प्रवृत्तिया शुरू की गयी।

ग्रामस्वराज्य के विचार को गतिमान तथा क्रियान्वित करने के लिए विभिन्न विकास के तथा सुधार के कार्य भी चलाये जायं ऐसा प्रेमभाई मानते हैं। लोगों को सक्रिय करना, सर्व सम्मति, परस्पर सहयोग तथा त्याग-भावना पर आधारित ग्रामसमुदाय बनाना, उनमें निर्भयता, हिम्मत एव आत्मविश्वास अनुप्राणित करना ये तो हमारे उद्देश्य हैं ही। लेकिन यह बात तभी सम्भव होगी जब गांव के स्तर पर सतत् कार्यक्रमो का मच विकसित किया जायेगा जहा पर कि अपनी समस्याओं के निवारणार्थ ग्रामीण जनता सहयोग की बुनियाद पर खुद सगठित हो। इसे प्रत्यक्ष करने के लिए ऐसा लोक-सगठन गांव-गांव में और सारे क्षेत्र में खड़ा करना चाहिये जिसे लोग सतत् अपने बीच 'महसूस' करें।

इस दृष्टि का और काम का अध्ययन करने के लिए सर्व सेवा सघ की ओर से एक अध्ययन दल इस क्षेत्र में जुलाई के तीसरे सप्ताह में घूमा। सघ के अध्यक्ष और मत्री इसमें थे।

उत्प्रेरक संस्था

प्रथम चरण के रूप में इस क्षेत्र में अपनी भूमिका निभाने के काबिल संस्था को बनाने का काम प्रेमभाई ने अपने साथियो समेत किया। कृषि को वैज्ञानिक ढग से करके उत्पादन बढाकर दिखाना यह भी यहा के जनमानस के लिए क्रान्तिकारी बात थी। एक दिन सुबह ८ बजे जब हम लोग सिचाई के लिए बने बंधारे पर खड़े होकर आश्रम की खेती देख रहे थे, तो प्रेम भाई हमे ६ साल पहले के आश्रम में ले गये। आश्रम की सारी जमीन बजर थी और अधिकाश पर फसल नहीं होती थी। ६७ के पहले जिस जमीन पर कुल १० मन धान होता था, आज उसी जमीन में ३००० मन तो केवल धान ही होता है। सब्जियां, फल तथा अन्य फसलें होती हैं सो अलग। प्रेम भाई ने पढाई तो आर्टस् के विषयो में की और यहां खेती में कमालकर दिखाया। यह बात इस आदमी ने कैसे साधी यह जितनी अचरज की बात है, उससे अधिक है इस आदमी के दबग इरादों की, आसमान को छूनेवाली उमगो की और धरती में जमे पुरुषार्थ की।

"चारो ओर से आनेवाले पाच नाले सामने उस जगह मिलते थे और सारी जमीन चट्टानों और पत्थरो के सिवा कुछ नही थी। अगली सूभरो के लोह तो थे थे ही।" बधे पर खडे होकर प्रेम भाई बता रहे थे। आज इसी जमीन में साल में धान की तीन फसलें उगायी जाती हैं।

संस्था मे खेती के अलावा अन्य कई प्रवृत्तिया चलती हैं जो सभी गावो मे चलने वाले ग्रामस्वराज्य-कार्य से अनुप्राणित की गयी हैं। आश्रम की खेती क्षेत्र के लिए डिमान्स्ट्रेशन फार्म का काम तो करती है ही, गावो के किसानो के लिए उन्नत कृषि के जो शिविर समय-समय पर चलते हैं उनमे प्रशिक्षण के लिए भी इसका लाभ होता है। क्षेत्र के कई कार्यकर्ता संस्था में चल रही खेती व उत्पादक प्रवृत्तियो के आधार पर मुक्त रूप से ग्रामस्वराज्य का कार्य करते है और उनकी जीविका के लिए उन्हें बाहर से मदद नहीं लेनी पडती। खेती के अलावा संस्था मे अस्पताल है तथा क्षेत्र मे स्वास्थ्य-शिक्षा और स्वास्थ्य-सेवा का भी कुछ काम चलता है। प्रेम भाई की पत्नी डा० रागिनीबहन एम डी हैं। बर्कशॉप, गोशाला, गैसप्लॉट, आदि प्रवृत्तिया भी इसी तरह सहायक हैं। पिछले साल से आश्रम मे एक विद्यालय भी शुरू हुआ है। गावो से लडको को चुनकर उन्हे उद्योगाधारित जीवन-शिक्षा दी जायेगी। लडके-लडकिया शिक्षा पूरी होने पर अपने गावो मे लौटेंगे तो ग्रामस्वराज्य के कार्य के लिए गाव-गाव मे वे उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकेंगे।

ग्रामदानी गाव की ग्रामसभा की बैठक

त्रिस्तरीय संगठनात्मक रचना

क्षेत्र का काम देखने के लिए दो दिन दूर-दूर तक देहातो मे घूमना हुआ। करीब १०० गावो मे सघन कार्य चल रहा है। इन्हें सुविधा के लिए पाच क्षेत्रों मे बाटा है। हर क्षेत्र के बीच मे एक गाव मे संगठन का केन्द्र होता है। हर केन्द्र पर एक पूरा समय देने वाला एक प्रमुख सक्षम कार्यकर्ता और उसके साथ दो सहयोगी कार्यकर्ता होते हैं। ये तीनो मिलकर अपने-अपने क्षेत्र मे पडने वाले गावो के काम के साथ एव लोगो के साथ सतत् सम्पर्क मे रहते हैं। इनमे से अधिकाश कार्यकर्ता खेती आदि का भी अच्छा ज्ञान रखते हैं। हर केन्द्र के अन्तर्गत आनेवाले लगभग १५-२० गावों मे गाव पीछे एक आशिक-समय-कार्यकर्ता होता है। यह सामान्यत. गाव का ही शिक्षित युवक होता है। व्यावहारिक साक्षरता योजना के अन्तर्गत लगभग सभी गावों मे रात्रि पाठशालाए चलती हैं। इन मे शिक्षक की भूमिका निभाना इन ग्राम-कार्यकर्ताओ का प्रधान काम है। इसके अलावा संगठन की ओर से चलनेवाले सब प्रकार के विकास, प्रतिकार और विचार-प्रचार आदि कामो मे वे सक्रिय सहयोग देते हैं। इस तरह हर क्षेत्र के पीछे १ प्रमुख कार्यकर्ता और २ सहायक इतने पूर्ण-समय-कार्यकर्ता, एव १५-२० आशिक-समय-देनेवाले तरुण कार्यकर्ता ऐसी त्रिपुटी या त्रिस्तरी संगठनात्मक व्यूहरचना यहा की गयी है।
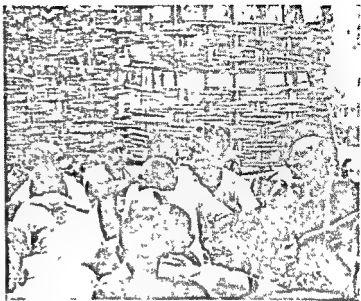
इन्ही क्षेत्रो मे एक क्षेत्र बकुलिया है। बकुलिया गाव मे तीन क्षेत्रो के ग्रामीणो की ग्रामसभा आयोजित की गयी थी—बकुलिया क्षेत्र, बभनी क्षेत्र के कुछ गाव और परिपाल क्षेत्र। सन् ७० से इन केन्द्रो पर कार्यकर्ता आकर बैठे।

बकुलिया क्षेत्र मे रमाशकर भाई रहते हैं। सभा के प्रारम्भ मे काम का सक्षिप्त विवरण देते हुए उन्होने बतलाया कि कर्ज और रेहन के मामलो का सुलझाव, पानी की समस्या के लिए गाव-बधा तथा उन्नत कृषि की दृष्टि से अनेक कार्यक्रम लिये गये हैं। रात्रि पाठशालाए भी अन्य क्षेत्रो की तरह हर गाव मे चल ही रही हैं, ३ गाव पीछे ए चल-पुस्तकालय भी है। परन्तु इस क्षेत्र विशेष काम कुछ और भी हैं। ५ गावो ग्रामदान की शर्तों की पुष्टि का काम पूर्ण गया है। ५ गावो की एक 'समग्र विका योजना' बनायी गयी है। भूमिहीनता प्रा मिट गयी है। बाहर से आकर बसे ३-४ भूमिहीन हैं।

बकुलिया केन्द्र की मातहत पडनेवा कुल २० गावो मे से १५ मे ग्रामसभाए ब गयी हैं और कुछ सक्रिय भी हैं। मीटिंग हर गाव की होती है। कही-कही उसके रिका भी रखे गये हैं। हर गाव मे ग्रामकोष प्रारम्भ हुआ है और ४ से १२ क्विटल त अनाज ग्रामकोष मे हर गाव मे है। उसके रिकार्ड रखे रहते हैं।

जून ७३ मे एक पुष्टि अभियान इस क्षे मे ६ गावो में हुआ। लोक-पदयात्राए भी और कुल २५० लोगो ने उनमे भाग लिय कुछ गावों मे से तो हर घर से एक व्यक्ति लोकपदयात्रा मे बाजे के साथ शामिल हुआ कुल १५० एकड भूमि दान मे मिली जि

→

से नयी प्राप्त भूमि ४५ एकड़ है। इसमें से ६० एकड़ वितरण हो चुकी है।

गीत के बाद धनगोर गांव के सभापति ने अपने गांव की पुष्टि की बातें बतायीं फिर कुछ झगड़ों का निपटारा गांव ने कैसे किया यह भी सुनाया। इस गांव में भूमिहीन कोई नहीं है। पुस्तकालय, रात्रि पाठशाला सब चल रहे हैं। १० बंधे बने हैं। बकुलिया गांव के सभापति ने सुनाया कि हमारा ग्रामदान ६५ में ही हो गया था। ६० एकड़ जमीन बंटी है। भूमिहीन कोई नहीं। ३ छोटी बगिया गांव में बनी है।

क्षेत्र में बाड लेबर (बधक श्रमिक) का आम रिवाज था। ऐसे ही एक अन्याय का का निपटारा रमाशंकर भाई ने करवाया उसका हिस्सा यों है—एक मजदूर ने ७ मन गल्ला और १०० रुपया कर्ज लिया था। उस पर साहूकार ने मजदूर से १० बरस तक बाड लेबर करवाया जो कि 'स्लेव लेबर' से कम नहीं था। १० साल बाद भी साहूकार ने मजदूर को छोड़ा नहीं, उल्टे सूद के रूप में १० मन अनाज नाम पर चढ़ा दिया। अन्त में रमाशंकर भाई ने १० साल का हिसाब साहूकार को समझाकर बतलाया कि कर्ज की अदायगी पूरी हो गयी है ऐसा मान लो और वैसा ही हुआ।

इस गांव में भूदान काफी मिला। गजराज नाम के एक बड़े दाता सभा में आये थे। पूछने पर खड़े होकर बतलाया—'कितना दिया हमें याद नहीं। मेरी ६० एकड़ जमीन में से कोई ३० एकड़ दिया होगा। मैंने कहां इतना याद रखा है? इनको दिया, वो भी दिया, कुछ जमीन इसे भी दी' '।'

ग्राम जूरा के रामशरण वृद्ध हैं। पोपले मुंह से जब वे बातें करते हैं तो अचरज होता है कि बूढ़ा इतनी बातें कैसे समझता है। बदन पर बिना बांह की बंडी और घुटने तक मैली सी धोती। अपने गांव के एक अन्याय निवारण का वाकया बताते हुए खड़े होकर कहा 'कर्ज-मुक्ति की एक बात हमारे गांव की भी सुनिये। एक जरूरतमंद मजदूर ने साहूकार से कर्ज लिया। बाद में जब कुड़की आयी तो हमारे पास आया। हमने उसे समझाया कि भैया, तुमने जरूरत के समय पहले गांव को बताया होता तो गांव ने मिलकर कुछ रास्ता निकाला होता। सीधे कर्ज क्यों ले लिया? तो खैर। आखिर में हम गांव वालों ने मिल के खड़े होकर, मामला शान्ति से निपटाया।

घगरा गांव के एक ग्राम-नेता ने कहा कि बंधे आदि सुधार के कार्यक्रम से हमारे गांव में धान की उपज काफी बढ़ी है। बंधे के लिए मजदूरी के रूप में जो 'फुड फार वर्क' हमें मिला था वह हम ग्रामसभा को स्वेच्छा से लौटा देंगे। इस समय ग्रामकोष में ६४० किलो अनाज है। लौटा देना यानी तो 'अपने को ही देना' है। 'खुद ही दें खुद ही लें ऐसा अद्भुत दान करें' वाली बात गांव वालों की समझ में कुछ-कुछ आ रही है, देखकर मैं कुछ रोमांचित-सा हो गया।

ढलती दोपहर में बकुलिया से निकलकर बभनी आये। बभनी ब्लाक का गांव है तथा इस क्षेत्र का केन्द्र भी बभनी में ही है। अन्य क्षेत्रों की तरह यहां भी कर्जमुक्ति अन्याय निवारण, रात्रि पाठशाला, अदालतमुक्ति, सिंचाई के लिए बंधे बनाना आदि काम चलते हैं और हर काम ग्रामसभा के माध्यम से ही चलता है। ग्राम-समुदाय की शक्ति और अभिक्रम

→

बढ़ाने में ये कार्यक्रम साधनरूप तो होते ही हैं, लोक-शिक्षण के लिए भी निमित्त बन जाते हैं। बभनी क्षेत्र की एक स्नामियर यहां के कार्यकर्ता ने बतायी कि पांच ग्रामपंचायतों के सभापति (सरकारी ग्राम पंचायतों के) भी सर्वसम्मति से चुने गये हैं और ये सर्वोदय विचार में आस्था भी रखते हैं।

क्षेत्र की सभा में गांव वाले अपने-अपने गांव के बारे में बतलाने लगे। मुद्दी नाम के एक किसान भी बैठे थे। उन्होंने साहूकारों के शोषण का बयान मजेदार तरीके से किया—'एक गांव में साहूकार ने १२ आने मूलधन को कुछ ही सालों में ३५ रुपये बनाकर कर्जदार के माथे चढ़ाया। पूछिये कैसे! तो मजदूर ने १२ आना कर्ज लिया था। एक साल बाद मजदूर को बुलाकर साहूकार ने उलटा-सीधा हिसाब करके कहा, दस रुपिया हुआ! असल में सवाया-ड्योढ़ा भी सूद लें तो साल के बाद १-२ रुपये के ऊपर नहीं होना चाहिये। परन्तु अपढ़ और दीन मजदूर क्या जाने हिसाब-किताब, और कहां रखे लिखकर कि कितना पैसा कर्ज लिया था? तो फिर मजदूर से साहूकार ने कहा, 'दस रुपया हुआ न?' मजदूर कहे, 'हां'। तब दो-चार गांव वालों को बुलाकर उनके सामने वही बात दोहरा दी गयी कि दस रुपया हो गया है। अब यहां से

साइकिल पर चल पुस्तकालय

चलिये साहब! एक साल बाद १० रुपया मूलधन हो गया। तो पैंतीस रुपया तक पहुंचना कौन मुश्किल बात है?"

ऐसे कई मसले अब गांवों में ही सुलझाये जा रहे हैं। संगठन के कार्यकर्ता की शक्ति उसमें लगती जरूर है। आरम्भ में वह स्वाभाविक भी है। लेकिन इन सब समस्याओं का *निपटारा व्यक्ति-केन्द्रित नहीं है—अकेले प्रेम*भाई नहीं करते, बल्कि प्रेमभाई तो करते ही नहीं। केन्द्रों में बैठे कार्यकर्ता और गांव वाले ये काम करते हैं।

शाम को हम गांव के घरों और खेतों में गये, गांव-गांव में खेतों पर बड़े-छोटे मिट्टी के अनेक बंधे बने हैं। इससे गांव वालों को रोजगार तो मिलता ही है, तकनीक भी इस स्तर की होती है कि गांव वाले उसे समझ सकें और उसका रख-रखाव भी बाहरी मदद *के बिना खुद ही कर सकें। विकास के कामों में अन्त्योदय की दृष्टि रखी जाती है* यह भी प्रेम भाई ने बतलाया। लेकिन उस बात को अधिक समझने के लिए मैंने उनसे पूछा, 'विकास के कामों में अन्त्योदय कैसे सधता है?' प्रेमभाई ने बताया कि सबसे पहले यह बात समझ लेनी चाहिये कि यहां गरीबी तो भयंकर है लेकिन विषमता बहुत नहीं है और वर्गभेद भी कम है। अत: प्राय: सभी लोग अन्तिम आदमी ही होते हैं। भूमिहीनता भी बहुत कम है। तिसपर बंधे, कुएं और अन्य विकास-कार्यों के लिए साधनादि देते समय हम ग्रामसभाओं के सामने अन्त्योदय की बात रखते हैं। विकास कार्यों से लाभान्वित किसानों से ग्रामकोष में अतिरिक्त गल्ला भी दिलवाते हैं। इनके अलावा बीसवां हिस्सा जमीन का वितरण, ग्रामकोष आदि ग्रामदान की बातें तो यहां भी हैं ही।

सुबह उठकर पिपरहर केन्द्र के लिए रवाना हुए। पहुंचकर पहले गांव का चक्कर लगाने के लिए चल दिये। एक बंधे को ऊंचा करने का काम चल रहा है। करीब १०० मजदूर स्त्री-पुरुष काम कर रहे थे। हमारे पहुंचने पर आधा घंटा काम रुकवाकर पेड़ के *तले मजदूरों के साथ बातचीत चली।* प्रेम भाई ने बतलाया कि इस तरह कार्यकर्ता अक्सर करते हैं। 'फुड फार वर्क' देकर बंधे पर

कर्जदार जमन के घर पर
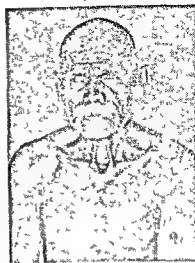
जहां काम चल रहा है, उसे बीच में आधा घन्टा बन्द करवा कर (मजदूरी बिना काटे) सबको इकट्ठा किया हो और फिर गांव की परिस्थितियों को लेकर वैचारिक शिक्षण का एक वर्ग चल रहा हो ऐसा प्राय: होता है। 'एजुकेशन एंड वर्क' का यह तरीका अनोखा है।

गांव में प्रवेश करने के पहले एक बड़ा बंधा पड़ता है। इस बंधे के बनने से पहले जमीन बिलकुल पथरीली और बंजर थी, उसे काट-काटकर समतल बनाकर खेत बनाये गये और करीब ४० एकड़ जमीन ऐसी बनी जो काश्त योग्य बनायी जा सके। उसमें आज दो-दो फसलें साल में होती हैं। इस जमीन को गांव वालों ने समान रूप से आपस में बांट लिया।

देखते-देखते सूरज माथे पर आ गया था। पिपरहर गांव में ग्रामसभा के मकान में ग्रामसभा की बैठक होने वाली थी। 'मिलकर रहना करना प्यार, बांट कर खाना धर्म हमार' इन नारों के साथ सभा की कार्रवाई शुरू हुई। हर महीने होने वाली ग्रामसभा की बैठक की कार्रवाई बाकायदा रजिस्टर में नियमित रूप से लिखी गयी है।

लक्ष्मीचन्द त्यागी ने कार्रवाई आरम्भ की। त्यागीजी एग्रिकल्चरल एक्सटेंशन में एम० एस० सी० हैं। पिछले ४-५ वर्षों से

गोविन्दपुर क्षेत्र मे है । रुद्रप्रसादजी से भी परिचय हुआ । आप धीरेन्द्र मजूमदार के साथ भी बरनपुर प्रयोग मे रह चुके हैं। विचारो की पकड़ है । पिपरहर क्षेत्र के आप प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं । रुद्रप्रसादजी ने बतलाया कि विकास का कार्य ग्रामसभा की सर्वानुमति से और ग्रामसभा के प्रस्ताव के बाद ही हो, यह हमारा विशेष आग्रह रहता है।

बैठक शुरू होने जा रही थी। जगलों के बीच बसा हुआ यह गाव, गाव का यह संगठन, उस ग्राम-संगठन की यह बैठक! आरम्भ मे सभापति बलभद्रदरजी ने गाव के काम की जानकारी दी.

"भूमिहीनता अब नही बची है। सरकारी अधिकारियो का जुल्म और घूसखोरी हमने बन्द कर दी है । झगडे आपस मे ही सुलझाते हैं। इस समय गाव का एक भी झगडा अदालत मे नही है और पिछले दस सालो से नहीं गया है। ग्रामकोष मे १४ क्विटल अनाज है। उसमे से जरूरतमंदो को कर्जा देते हैं और वसूली ठीक हो जाती है। एक बार एक बुढिया के दो सगे मर गये। क्रिया-कर्म के लिए उसे साहूकार से कर्ज न लेना पड़े इसलिए गाव वालों ने चदा करके क्रियाकर्म का खर्चा निभाया। ग्रामकोष से सहकारी दूकान भी ग्रामसभा ने खोली है। इस दूकान के अलावा गाव मे और कोई दूकान नहीं है । रात्रि पाठशाला हर रोज चलती है, ४०-५० लोग आते हैं। महिलाओ मे से फिलहाल कोई नही आता। करीब आधे बच्चे ही आते हैं रात्रि पाठशाला मे । हमारे गाव मे ग्रामस्वराज्य का काम शुरू हुआ उसके पहले हम साल मे केवल ३ महीने अनाज खा पाते थे। अब करीब ८ माह खेती का अनाज खा सकते हैं इतनी उपज बढ़ी है और उत्पादन का वितरण भी गाव मे ठीक से हुआ है।"

इस साल सूखे के कारण हालत कुछ कठिन है । सस्ते गल्ले की दूकान पिपरहर गाव मे है ही नही। ८ मील दूर बिलबिल नामक गाव मे एक दूकान है। चार गावो के लिए एक दूकान। हर माह प्रति व्यक्ति ६ किलो अनाज आता है ऐसा कहा जाता है। उसमे भी गेहू कभी नही मिलता। गेहू का राष्ट्रीयकरण जो हो चुका है। मक्का, चावलो, ज्वार आदि कभी-कभी आते हैं।

"गेहू बिल्कुल नही मिलता ?"

"जी ना। सारा गेहू दुध्दी (तहसील का गाव) में ही गायब हो जाता है।"

"और चीनी ?"

"क्या पूछ रहे हैं ? हम गांव वाले अन्न गेहूं, चावल, चीनी ये चीजें खाना जानते हैं जानते तो हैं सिर्फ शहर वाले। एक माह पहले अनाज आया था गाव की दूकान में तब से कुछ नहीं है। जो कुछ अनाज आता है उसमे से भी आधा सरकारी कर्मचारी खा-पी के चौपट कर देते हैं।"

एक सास में गाव का एक नौजवान काफी कुछ कह गया था। हमे याद आये बिहार के पूर्णिया, मुगेर, गया जिले के कई क्षेत्र जहा गाववालो ने कहा था: आठ-आठ माह से राशन की दूकान से अनाज का एक फूटा दाना नही मिल पाया है।

सभा समाप्त होने पर रुद्रप्रसादजी ने एक और बात बतायी थी। नाबालिगसिंह नाम के एक घोर आतंककारी सामंत यहां थे। जीप, पिस्तौल और बन्दूक रखते थे। "मार के दबा देंगे" यह थी उनकी नीति। लेकिन खुद ब खुद ग्रामसभा की बैठक मे आते हैं। कुछ तो उनमे परिवर्तन हुआ है, कुछ लोगो मे भी शक्ति का अहसास हुआ है कि—'संगठित होकर प्रतिकार करेंगे।'

एक तरफ उगली दिखाकर प्रेमभाई ने

लाया, यही है वे नावानिग सिहजी। उन्हें देख रहा था तो स्मरण हुआ कि परहर ग्रामस्वराज्य सभा की बैठक मे वे मेरे पास ही बैठे थे।

१६४० वर्गमील क्षेत्र मे फैले १०० वों मे यह काम चल रहा है। इसके लिए र्थ दृष्टि का सगठन और व्यूहरचना यहा निर्मित की गयी है। पूरा समय देने वाले • तथा आंशिक समय देने वाले १०० र्यकर्त्ता पूरे क्षेत्र मे लगे है। पूरा समय ने वाले ५० कार्यकर्त्ताओ मे से करीब आधे र्यकर्त्ता प्रधानतः उत्पादक प्रवृत्तियो मे ाश्रम मे लगे है।

ग्रामीण जनता, ग्रामसेना तथा कार्यकर्त्ता इन सबमे जिस-जिस स्तर तक सर्वोदय विचार के प्रति चेतना जगी है और बढ रही है, वह मात्र एक सामयिक उफान या तूफान न बन जाय, लेकिन उसमे सातत्य बना रहे और वह विकसित होती जाय इस बात को प्रेमभाई काफी महत्त्व देते है। तीन कारण है जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि यह सम्भव होगा।

एक : विचार-प्रचार के कार्य को रचनात्मक कार्य, अन्याय निवारण तथा प्रतिकार के कार्यक्रमो के साथ जोडा है।

दो : इक्के-दुक्के कार्यकर्त्ताओ के बजाय सारे क्षेत्र मे कार्यकर्त्ताओ की 'टीम' सगठित तरीके से जमाने का प्रयास है। प्रेमभाई कहा करते है कि 'सिंगल पोल टेंट (एक-खभा टेंट)' टिक नहीं सकता। प्रमुख कार्यकर्त्ताओ की आवश्यकता धीरे-धीरे घटती जाय और स्थानीय नेतृत्व ही इसे उठाता चला जाय यह प्रयास है।

तीन : प्रमुख कार्यकर्त्ताओ मे उद्देश्यो के प्रति काफी चेतना है एव वैचारिक स्पष्टता है।

सरकार की अनेक योजनाओ का उपयोग ग्रामस्वराज्य-कार्य के लिए साधन या माध्यम के रूप मे किया जा रहा है। मसलन, साक्षरता-योजना। अक्षर ज्ञान के लिए जो पुस्तके क्षेत्र मे चलाई जाती है उनमे सब ग्रामस्वराज्य का ही विचार है। रात्रि पाठशालाओ के शिक्षको के लिए प्रति माह २० रुपया शासन की शिक्षा-योजना से मिल जाता है। इन शिक्षको का ३ माह का प्रशिक्षण गोविन्दपुर आश्रम से ही हुआ है। इस तरह शासन की प्रौढ-शिक्षा योजना इस क्षेत्र मे पूरी तरह ग्रामस्वराज्य की ही दिशा मे मोडी गयी है। और ऐसी इन प्रवृत्तियो के लिए किसी प्रकार का समझौता नही किया जाता है। प्रेमभाई कह रहे थे कि अक्सर जो नयी योजनाए शासन से आती है उनके बारे मे सरकारी तत्र की न कोई स्पष्ट दृष्टि होती है, न उसकी अपनी कार्यान्वयन की व्यूहरचना तैयार होती है। इसलिए यदि हम लोग शासन के एक कदम पहले तैयार हो जाते है और एप्रोच करते है तो उन योजनाओ को अपनी तरफ मोड सकते है। और उन्हे अपने सगठन द्वारा पूरा करते-करते उस माध्यम से ग्रामस्वराज्य के काम के लिए बल पहुचाया जा सकता है तथा सगठन खडा किया जा सकता है। सावधानी इतनी ही बरतनी चाहिये कि हमारे मुख्य पथ से वे हम भटका न दें, गौण प्रवृत्तियो मे उलझा न दें। ऐसी योजनाओ को साधन के तौर पर इस्तेमाल करने की सामर्थ्य और कुशलता हम मे होना जरूरी है, जो यहा पायी गयी।

प्रेमभाई : एक बांस पर तम्बू नहीं तनता।

हर माह की पहली दूसरी और तीसरी तारीख को क्षेत्र के सारे कार्यकर्ता तीन दिन आश्रम मे मिलते है। पहले दिन रिपोर्टिंग और बचे दो दिनो मे काम की तथा वैचारिक पहलू की चर्चा होती है और भावी योजना बनती है।

वर्तमान समाज-रचना मे मौजूद सगठनो, सस्थाओ तथा सत्ता-केन्द्रो के साथ सम्बन्ध और उन पर असर कैसा है, यह एक दिलचस्प विषय है। पाया गया कि शासन, सरकारी कर्मचारी, देशी-विदेशी स्वयसेवी सस्थाए इन सबका ग्रामस्वराज्य कार्य के लिए कुशलता से लाभ लेने की कला यहा सधी है। यह करते समय कार्यकर्त्ताओ की दीनता बढने का खतरा यहा देखने मे नही आया। धीरे-धीरे ग्रामसभाओ और पचायतो मे सर्वोदय के तत्त्वो से प्रभावित व्यक्ति आ रहे है।

कोआकोल ने कौल लिया है।

एक क़दम पीछे, दस छलांग आगे

—त्रिपुरारि शरण

बिहार-दान की घोषणा १९६९ में हुई थी। इसके लिये जो तूफान मचा था उससे जनता ग्रामदान के कार्यक्रम को सरल मानने लगी थी। इस ग्रामदान में भूमि के ग्रामीणीकरण की दिशा में एक मनोवैज्ञानिक कदम है जिसमें जनता की ग्राम सभा के संगठन, बीघा कट्ठा का भूमिहीन परिवारों के बीच वितरण और ग्रामकोष के निर्माण जैसे लोकतंत्र और समता के बीज पड़े हैं। अगर आवाम किसी क्रांतिकारी कार्यक्रम को सहज मानने लगे तो मानना चाहिये कि सामाजिक क्रांति का प्रथम चरण सम्पन्न हुआ। लेकिन जब तक स्वेच्छा आधारित क्रांति में सातत्य नहीं होता तब तक उसमें न तो गति आती है और न उसका प्रभाव ही टिक पाता है। यही हाल बिहारदान के साथ हुआ।

ऐसा हुआ क्यों? कहा जाता है कि क्रांति किसी के लिये इन्तजार नहीं करती। यह भी कहा जाता है कि आंधी में पत्तियां और कई प्रकार की गन्दगियां भी उड़ती हैं। यही बात क्रांति के साथ भी जुड़ी हुई है। इस तूफान के साथ एक बड़ी भूल यह हुई कि परिमाण परिवर्तन की वैयक्तिक मनोदशा सामाजिक चेतना पर हावी हो गई जिससे क्रांति के धक्के खा गये और उसका रूप भी बदल गया।

जमीन पर पुष्टि

कुछ कदम पीछे हटकर कई छलांग आगे मारी जा सकती है। इसलिये जयप्रकाश जी ने ग्रामदान पुष्टि के लिये नक्सलवादियों के क्षेत्र मुसहरी में कार्य करना आरम्भ कर दिया। यह इस बात का संकेत था कि अब हम कुछ कदम पीछे हटें यानी सिमटकर काम शुरू करें।

ग्राम निर्माण मण्डल ने अकाल के बाद से ही कौआकोल प्रखंड में सघन रूप में ग्रामदान पुष्टि एवं निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया था। लेकिन जे० पी० के इस संकेत का अर्थ था, मुसहरी से शक्ति लगाकर अहिंसक क्रांति के लिए काम करना।

ग्रामदान के बाद इस प्रखण्ड में १४८ गांवों में से ११६ ग्रामों में ग्रामसभा की स्थापना की गई। लेकिन अनुभव हुआ कि सामान्यतः बीघा कट्ठा के वितरण के बाद ही ग्रामसभाएं वास्तव में क्रियाशील हो सकती हैं। अभी तक २६ गांवों में बीघाकट्ठे का वितरण हो चुका है जिनमें से २३ ग्राम सभाएं क्रियाशील हैं। कानूनी पुष्टि के लिए २२ गांवों के कागज पत्र पुष्टि पदाधिकारी को प्रेषित किये जा चुके हैं जिनमें से १३ गांवों का गजट हो चुका है। ४० गांवों में ग्रामकोष निर्माण के भी कार्य हुए हैं।

माध्यम ग्रामसभा

आज यहां की ग्रामसभायें सहकारी प्रयत्नों से सामूहिक उपभोग के लिए सिंचाई के कुआं, आहर, तालाब एवं बांधों का निर्माण तथा उनके पुनरुद्धार, पम्पिंग सेट की खरीद, विद्युतीकरण, ग्रामकोष निर्माण तकनीकी प्रशिक्षण के लिए व्यक्ति का चुनाव गृह निर्माण, उद्योगों के संगठन, स्वास्थ्य एवं शिक्षा की व्यवस्था आदि के कार्य करती हैं। ये सभायें समय २ पर अपने कार्यों का लेखा-जोखा करती हैं और गरीबी से मुक्ति, उपयुक्त नेतृत्व, अच्छी व्यवस्था, पूंजी निर्माण आदि के लिये प्रयत्न करती हैं।

ग्राम सभा का संगठन कर देना काफी नहीं है।

ग्राम समुदाय की रचना व्यक्ति और परिवार की दृष्टि और संस्कार में काफी परिवर्तन की मांग करती है। बराबर अभ्यास चाहिये वरन् व्यक्ति और परिवार के स्वार्थ ग्राम समाजों पर हावी हो जाते हैं।

जहां पुरुषार्थी लगनवाले विवेकशील कार्यकर्ता सघन रूप से काम करते हैं, वहां की ग्रामसभायें अधिक विकसित होती हैं तथा इसका पड़ोस के गांवों पर भी बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ता है। ग्राम सभाओं के सही विकास के लिए सृजनशील संगठन की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रचलित मान्यताओं पर आधारित प्रशासन की पद्धतियां स्वशासन की दृष्टि और शक्ति प्रदान नहीं कर सकतीं।

प्रारम्भ में ग्राम सभाएं सामान्यतः काफी क्रियाशील रहती हैं। कुछ दिनों के बाद उनमें निहित स्वार्थ उभर आते हैं और नैतिकता एवं नेतृत्व के संकट उपस्थित हो जाते हैं। कालान्तर में पुनः गांव में सहकारी चेतना प्रकट होती है जिससे ग्रामसभाओं का रूप बहतर हो जाता है। कुछ ग्रामसभायें तो बहुत दिनों के लिए मर-सी जाती हैं।

विभिन्न जाति के बड़े गांव में ग्रामसभा को विकसित करना एक कठिन कार्य है। इसलिये कि ऐसे गांव अत्यधिक संघर्ष के शिकार रहते हैं तथा सभी वर्गों से संपर्क करना एक कठिन कार्य हो जाता है। अतः इसके तीन उपाय उपयुक्त लगते हैं। एक तो गांव छोटा बनाना। दूर दूर तक बसे टोलों में गांव का स्वतन्त्र अस्तित्व खड़ा करना और वहां ग्राम सभा की स्थापना करना। दूसरा, अगर वे गांव के रूप में विभक्त नहीं हो सकते तो उस गांव के परिवारों का अलग बसाने के लिए उत्साहित करना। तीसरा, गांव में सघन प्रयास के बावजूद वह कई टोलों में जाति नेतृत्व अथवा और कई कारणों से विभक्त रहता है। उन विभक्त टोलों में नया नेतृत्व उभारकर ग्राम सभा को सामूहिक शक्ति प्रदान करना।

सहकारी शक्ति

प्रारम्भ में ग्रामसभायें सामान्यतः क्रांतिकारी भावना से प्रचलित मान्यताओं पर आधारित होकर काम करती हैं लेकिन ये तो समाधान कारक होती नहीं। इसलिए लोगों को अन्तर्वेदना और सामूहिक हित की दृष्टि से नयी मान्यताओं का विकास करना होता है जिससे अहित और ईर्ष्या की प्रतिक्रिया न होने →

पाये। उदाहरण के लिए किसी झगड़े में सामान्यतः दोनों ही पक्ष सच्चे और झूठे तर्क प्रस्तुत करते है। और वे इसके लिए झूठे साक्षी भी तैयार रखते हैं। ऐसी प्रक्रिया के कारण ग्रामसभा की शक्ति क्षीण होने लगती है। लेकिन आदर्श के प्रभाव या अत्यधिक विकास के कारण अपनी गलतियो को स्वय स्वीकार करने तथा आपसी झगडों को ग्राम सभा की सहायता लिए बिना समाप्त करने से गाव मे एक मौलिक सहकारी शक्ति का उदय होता है। इस प्रक्रिया से ग्राम-सभाएं गाव के संघर्षों को हल करने मे समर्थ होती हैं। लेकिन इसके लिये सृजनशील शोध और सतत अभ्यास की आवश्यकता होती है। आज समाज मे अपनी गलतियो को छिपाने और निहित स्वार्थ को पूरा करने की वृति प्रचलित है। जब तक उस प्रवाह मे आमूल परिवर्तन नही होता तब तक सच्चे मायने मे सहकारी प्रयत्नों को कटीले तारों पर पालने जैसा होगा।

ग्रामदान प्राप्ति के समय हमने सभी क्षेत्रो के नेताओ की सहायता ली जैसी कि हमारे कार्य की प्रक्रिया है। यह अच्छा हुआ। इन नेताओं में कुछ तो आज भी ग्रामदान के कामो को सहायता या नैतिक समर्थन प्रदान कर रहे हैं। लेकिन ग्रामदान के बाद के कामों मे इनमे से अधिकाश नेता सहायक नहीं सिद्ध हो रहे हैं उनके नेतृत्व के कारण नयी शक्ति भी खड़ी नही हुई। अतः ग्रामदान के बाद उपयुक्त नेतृत्व का विकास हमारे लिए एक मौलिक समस्या बन गई। ऊपर कहा जा चुका है कि ग्राम सभा के गठन के कुछ दिनों बाद नेतृत्व का सकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि निहित स्वार्थ उभर पडते हैं, नेतृत्व के प्रति गहरा अविश्वास प्रकट होता है। अगर सावधानी के साथ तथ्यों के आधार पर अविश्वासों और शकाओ का हल नही निकाला गया तो स्थिति और भी गम्भीर हो जाती है इसलिए एक तरफ सहकारी भावना के आधार पर समस्याओ के समाधान और दूसरी तरफ उपयुक्त नेतृत्व की तलाश और उसका विकास आवश्यक है। उपयुक्त नये लोगों को ग्राम सभाओ के सचालन का दायित्व देने मे तथाकथित नेता बहुत प्रकार की बाधा डालते हैं इसलिये नये नेतृत्व के लिए गाव मे पोषक तत्व की नैतिक शक्ति का विकास आवश्यक है। इसके लिए यह आवश्यक है कि हरेक गाव के साथ हमारी एक जैसी कड़ी हो जो उसके सगठन और उपयुक्त नेतृत्व के सगठन का मार्गदर्शन कर सके। इसी दृष्टि से यहा छः केंद्रों की स्थापना हुई जो ऐसी शक्ति विकसित करने मे सहायक हों। हमारे सघन कार्य के हरेक गाव में बेहतर नेतृत्व प्रकट होते दीख रहा है और वह गाव को सही दिशा में ले जाने में प्रयत्नशील भी है। वह नेतृत्व उपयुक्त हो सके इसके लिए अभी और काम करने की आवश्यकता है। वहा नेतृत्व का अर्थ गण सेवकत्व की भूमिका मे है।

अब तक ग्राम सभाओ द्वारा ६०, ००० रुपये के मूल्य का विभिन्न रूप मे ग्रामकोष का निर्माण हुआ। इस कोष निर्माण मे प्रत्यक्ष श्रम का अधिक अ श है। इस कोष के सहारे सिंचाई के पक्के कार्य, मालगुजारी भुगतान, पम्पिंग सेट खरीद, सदस्यो को खेती के लिए कर्ज देने आदि के कार्य मुख्य हैं। उपज से मन मे एक सेर का कोष निकालना उसी अवस्था मे सफल होता है जब किसी प्रभावकारी समस्या के हल के प्रसग सामने आते हैं। इसके लिए विद्युतीकरण, पम्पिंग सेट की खरीद, सिंचाई मे कुछ पक्के कार्य बड़े प्रभावकारी प्रमाणित हुए हैं। गाव मे अब दो →

साधनों के उपयोग की शक्ति बन रही है

ग्रामदान के बाद गांव के लोगों की दृष्टि और व्यवहार में आवश्यक परिवर्तन हो गया, ऐसा नहीं। ग्रामदान के विचार के प्रति आस्था या रुचि अवश्य हो जाती है। लेकिन परिवर्तन तो निर्माण की प्रक्रिया से ही सम्भव है। पुरानी आदतों को नयी आदतों में परिवर्तित करना एक बुनियादी कार्य है जैसे चोरी की आदत की जगह पर आवश्यकता की पूर्ति के लिये ईमानदारी पूर्वक सामूहिक व्यवस्था के प्रति आस्था कायम कर पुरुषार्थ करने में सातत्य की आवश्यकता है। यह आवश्यक नहीं है कि ऐसे परिवर्तन गांव की एक बड़ी समस्या के हल करने से ही हों। उदाहरण के लिये एक गांव के स्त्री, पुरुष, बच्चे सभी खाने के लिए महुआ के पेड़ से गिरे फूल चुराया करते थे। इस समस्या को ग्रामसभा के सम्मुख रखा गया और उसके सम्भावित भयावह परिणाम पर गम्भीरता पूर्वक चर्चा हुई। तब इस काम को सामूहिक रूप से अनैतिक माना गया और इस आदत को रोकने का सर्व सम्मति से तय हुआ। इस प्रकार महुआ फूल की चोरी समाप्त हुई और साथ साथ चोरी करने की आदत भी गई। इसके परिणाम स्वरूप क्षेत्र में उनके प्रति लोगों में विश्वास और सम्मान बढ़ा। इस प्रसंग में उस महत्वपूर्ण चर्चा को यहां प्रस्तुत करना आवश्यक लगता है कि जिसने ग्राम के सभी लोगों को प्रभावित किया था। इस गांव में दो डिजल पम्पिंग सेट संस्था की तरफ से भाड़ा-क्रय पद्धति से दिये गये थे। उस दिन की ग्राम सभा में कहा गया था कि गांव में पम्पिंग सेट रखने की नैतिक ताकत नहीं है। मान लीजिये कि एक टीम के पम्पिंग सेट के कुछ पार्ट पुर्जे टूट गये। चोरी की आदत के कारण दूसरे पम्पिंग सेट के पार्ट चुराकर टूटे हुए पम्पिंग सेट में लगाये जा सकते हैं। इसी प्रकार दूसरे टीम के पम्पिंग सेट वाले करेंगे। इस प्रकार गांव में पम्पिंग सेट नहीं चलेंगे। अतः उस गांव में पम्पिंग सेट रखने की नैतिक क्षमता नहीं है।

किसी भी कार्य में आवश्यकतानुसार सहकारिता का सफल समावेश आवश्यक है।

प्रकार की पूंजी का निर्माण हो रहा है--- पारिवारिक और ग्राम की। जहां ग्राम की पूंजी के निर्माण में लोगों की दिलचस्पी है वहां ग्रामस्तर पर विकास के प्रभावशाली कार्य होते हैं। गांव की पूंजी आर्थिक विकास का मौलिक साधन है। इस सामुदायिक पूंजी के निर्माण और उसके प्रभावशाली उपयोग के लिए ग्रामशक्ति को जाग्रत करना सामुदायिक विकास का एक अनिवार्य तत्व है।

भूदान के परिणाम स्वरूप वैसे पूरे प्रखण्ड से १२१ भूमिहीन परिवारों के बीच ११०७ एकड़ भूमि वितरित की गई। ग्रामदान के कारण १७६ एकड़ भूमि का उनके बीच वितरण हुआ। भूमिहीनता मिटाने के कई प्रयत्न हुए। लेकिन अनुकूल प्रवश बाहर से भूमिहीन परिवार हमारे निर्माण में आते हैं। इसलिए भूमिहीनता मिटाना एक समस्या बन गयी है।

भूमि बांट देने से भूमिहीन परिवार की गरीबी और उसकी भूख मिट गयी, ऐसी बात नहीं। जब तक उनकी धरती उपज के लायक न बन जाये, सिंचाई-प्रबन्ध न हो जाये, बीज, बैल, खाद, दवा, खेती करने के समय भोजन के लिए अन्न, पंप, खेती का ज्ञान और लायक सस्कार विकसित न हो जाय तबतक भूमिहीन अपने पैरों पर खड़े नहीं हो सकते।

यह क्षेत्र बराबर से सूखे और अकाल का रहा है। इसलिये आधा छोटे भूमिवान परिवार के लिए साल भर के लिए अन्न का उत्पादन सम्भव नहीं हुआ।

पिछले वर्षों के प्रयत्न से अब तक ५०० एकड़ भूमि को खेती के लायक बनाने के कार्य हुए। २१ गांवों में जो कुओं, बोरिंग, अहर, तालाब, पईन, बांध, नाली, आदि के निर्माण हुए उनसे ११०० परिवारों के लिये दो हजार एकड़ जमीन की खेती की सिंचाई हो रही है और ४०० एकड़ भूमि की साल भर सिंचाई होगी। इन परिवारों में से २०० वे हैं जो भूमिहीन थे और जिन्हें भूमि दी गयी।

इन कार्यों के अलावा पम्पिंग सेट की मरम्मत के लिये एक कर्मशाला की स्थापना की गयी जिसके जरिये क्षेत्र के ७०-८० पम्पिंग सेटों की मरम्मत का काम हो रहा है। बाजार के शोषण की मुक्ति के लिए एक अन्न भण्डार की स्थापना की गयी है। फसल के समय किसान अपना अनाज इस भण्डार के हाथों उस समय के मूल्य दर पर बेच सकते हैं और अनुकूल बाजार दर के समय अन्न भण्डार को वे अनाज बेच देने का आदेश देते हैं। भण्डार व्यवस्था खर्च काटकर किसानों को अतिरिक्त मूल्य दे देता है।

किसानों को बिना सूद पर खाद, बीज, दवा, बैल कृषि यन्त्र कूप निर्माण के लिए कर्ज देने की व्यवस्था भी की गयी है। कृषि प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना की गयी है। इसके जरिये अब तक ग्राम सभाओं के द्वारा भेजे गये ५४ युवकों का सघन खेती के लिये प्रशिक्षण दिया गया है। इनमें से अधिकांश युवक अपनी खेती के विकास में अच्छा काम कर रहे हैं और वे अपने गांव की सेवा भी कर रहे हैं। इनके अलावा १२ युवकों का पम्पिंग सेट चालित करने एवं उनके प्रारम्भिक मरम्मत के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

सिंचाई प्रबन्ध के पूर्व इनमें से १०० परिवार ही ऐसे होंगे जो साल भर के लिए अपनी आवश्यकता भर अन्न का उत्पादन करते होंगे अब १००० परिवार ऐसे हैं जो अन्न में स्वावलम्बी हो गये हैं। शेष २०० परिवार वर्ष में ४ से ८ महीनों के लिये अन्न में स्वावलम्बी हो चुके हैं अगर इसी प्रकार प्रयत्न होता रहा तो आगामी तीन वर्षों में कुल १३०० परिवार अन्न में स्वावलम्बी हो जायेंगे। यह पिछले पांच वर्षों के कृषि क्षेत्र में विकास की कहानी है।

आज से पांच वर्ष पूर्व की तुलना में थे गरीबी की रेखा के नीचे के परिवार तन ढंकने लायक ज्यादा वस्त्र का प्रबन्ध करने लगे हैं। जूते भी पहनने लगे हैं। घर में मिट्टी के दीये के स्थान पर लालटेन का उपयोग करने लगे हैं। नियोजन भी पहले से अधिक प्राप्त होने लगा है। सबसे बड़ी दो बातें स्पष्ट दीखती हैं---जीवन में आशा का सचार और अपनी सन्तान को शिक्षित करने की इच्छा।

गरीबी और अमीरी में फर्क गुणात्मक नहीं है

→

इस सहकारिता का उदय मात्र इस उद्देश्य से नहीं हो कि भौतिक आकांक्षा की पूर्ति करनी है बल्कि सहकारी जीवन तीव्र आकांक्षा और व्यवहार के रूप में आ जाय, इसकी आवश्यकता है। मण्डल जिन कार्यक्रमों की पूर्ति के लिये आर्थिक सहायता करता है उनमें इसी प्रक्रिया को अपनाना है और उसमें बहुत हद तक सफलता भी मिलती है। उदाहरणार्थ ग्राम निर्माण मण्डल आज से ५ वर्ष पूर्व से ही गाव के लोगों को सामूहिक रूप से सिंचाई के कूपों के निर्माण मे सहायता करता है। वह इस शर्त पर सहायता करता है कि कूप निर्माण से कम से कम चार परिवारों को लाभ अवश्य होना चाहिये और उनके निर्माण में संबंधित परिवारों का उत्साहपूर्वक सहयोग हो। प्रारम्भ में ऐसे सहयोग का प्रायः अभाव था। विशेषकर कूप निर्माण मे परम्परा यह रही है कि कोई एक व्यक्ति कुएँ का निर्माण करता है और कोई भी व्यक्ति उसका उपयोग। पहले कूप निर्माण एक धार्मिक कार्य था। लेकिन आज वह निजी स्वार्थ का साधन मात्र है। ऐसी हालत में सबके सहयोग से कुंए का निर्माण होना एक कठिन कार्य हो गया है। मण्डल के इस प्रयत्न से दूसरे वर्ष से ही लोगों में सहयोग की बात मन मे बैठने लगी। तीसरे वर्ष से मण्डल ने स्थानीय सहयोगी शक्ति को उत्साहित करने के लिए सिंचाई की समस्या हल करने मे मदद देने की नीति अपनायी। अत्यन्त गरीब लोगों ने इस सहयोग की शर्त आगे बढ़कर पूरी की। जैसे-जैसे सहयोग की शक्ति बढ़ती चली गयी वैसे-वैसे आर्थिक सहायता की आवश्यकता भी कम होती गयी। इस प्रकार समस्या को समझने और वैयक्तिक प्रयत्न के स्थान पर सामूहिक हित के सहकारी प्रयत्नों के क्षेत्र का विकास एवं विस्तार हुआ।

गरीबी, विषमता और शोषण ये तीनों तत्व वर्तमान समाज व्यवस्था मे निहित हैं। इनसे लड़ाई लड़ना दूसरे से नहीं है बल्कि सबको स्वय से है। लोग जिनमे हम कार्यकर्ता सबसे पहले सम्मिलित हैं जितने इन विघटनकारी तत्वों से ऊपर उठेंगे उतना निर्माण का कार्य पूरा होगा।

इस निर्माण के कार्य मे अनुभव यही हुआ कि गरीब और अमीर मे कोई बुनियादी गुणात्मक फर्क नहीं है। जब गरीब धनी बन जाता है तब वह शोषक दीखता है और जब धनी गरीब तब शोषित। इसलिये भौतिक विषमता मानसिक विषमता का परिणाम है। इसलिये गाव में परस्पर ऐसे सहयोग की शक्ति खड़ी करनी है जिससे सत्ता और संग्रह के स्थान पर सेवा की दृष्टि और संस्कृति का निर्माण हो सके।

आज किसी भी ग्रामीण परिवार की अर्थ व्यवस्था सगुच्छित स्वभाव की है चाहे वह धनी या गरीब परिवार हो। जैसे अगर कोई किसान परिवार है तो वह खेती, गोपालन तथा साथ ही वह कुछ और धंधा करता है। अगर कोई चर्मकार परिवार है तो वह चर्मोद्योग के साथ-साथ खेती, सुअर पालन, मुर्गीपालन आदि का काम करता है। इनमें से किसी भी धंधे के ह्रास से उस परिवार का आर्थिक संतुलन बिगड़ जाता है। अतः किसी भी परिवार के आर्थिक विकास के लिये समग्र रूप से सहायता होनी चाहिये।

अगर किसी परिवार को आर्थिक सहायता करनी हो तो उसे इतनी सहायता अवश्य हो जिससे वह अर्थ व्यवस्था स्वयं स्फूर्त की स्थिति मे पहुँचे जाये।

आदिवासी तथा कृषक मजदूरों को उत्पादन का साधन प्राप्त करने में सहायता की जाती है। सहायता प्राप्त परिवारों मे से १०-१५ प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जिनके पास आर्थिक व्यवस्था की क्षमता है और प्रगति की कल्पना भी। इनमें से १०-१५ प्रतिशत परिवार ऐसे मिलते हैं जिनमे निराशा घर दबाये रहती है और उनकी प्रगति की आकांक्षा मरी हुई जैसी लगती है। उनमे न संग्रह वृति है और न वैसा संस्कार। अगर संस्था द्रुतगति से काम करने लगती है और परिणाम पर ध्यान देती है तो ये परिवार सहायता से वंचित हो जाते हैं। ७५-८० प्रतिशत लोग ऐसे होते हैं जिनके विकास की गति मंथर है। उनकी सहायता करते समय सहज ढंग से उनकी आकांक्षा को जगाना और वर्षों तक लगातार उन्हें संगठित करना किसी भी संस्था का प्राथमिक कर्तव्य है।

उन्हे उत्पादन के साधन की प्राप्ति में उतनी ही सहायता करनी चाहिये जितनी की वे व्यवस्था कर सकें।

आज गरीब की आर्थिक प्रगति का सबसे बड़ा बाधक शोषण से ज्यादा शराबखोरी है। अगर इसे रोका नहीं गया तो समाज के इस कमजोर अंग को उठाया नहीं जा सकता।

इस क्षेत्र में प्रत्येक वर्ष अस्वस्थता और बीमारी के कारण कम से कम एक प्रतिशत परिवार कंगाल की रेखा में चले जाते हैं। यह बड़ा कारण है कि कंगालों की संख्या बढ़ती जा रही है। इसलिये आरोग्य का प्रबन्ध अन्त्योदय और आर्थिक प्रगति के लिये एक मौलिक कार्यक्रम है।

यह प्रश्न बराबर उठता रहा है कि परिवर्तन और रचना का एक छोटा नमूना प्रस्तुत किया जाय या व्यापक आन्दोलन हो। प्रचलित मान्यताओं के बीच नमूनावाद सफल नहीं होता। लेकिन व्यापक आन्दोलन भी सातत्य के अभाव मे विफल हो जाता है। इस लिये सातत्य के साथ व्यापकता की ओर बढ़ते जाना क्रांति और रचना के लिए यहा के अनुभवों की दृष्टि से सही कदम होगा।

इसके साथ ही किसी परिवर्तन के लिये शासन के नियमों का क्रम बदलना अत्यावश्यक है अन्यथा रचनात्मक क्रांति द्वारा तैयार की हुई परिस्थिति कुछ दिनों में प्रभावहीन हो जाती है। अतः सत्ता का अनुकूल होना विधायक क्रांति के लिये भी एक आवश्यक शर्त है। लेकिन स्वैच्छिक परिवर्तन एवं रचना के लिये प्रत्यक्ष रूप से काम करने वाले लोगों और उनकी संस्थाओं को सत्ता से स्वतंत्र होना चाहिये अन्यथा परिवर्तन करने की शक्ति कुंठित हो जाती है।

●

सवर्ण जमीदारो के अत्याचारों से पीडित तंजावूर के हरिजनों को पुनः स्थापित करने और उनके हकों के लिए लगातार सघर्ष कर रहे सर्वोदय सेवक अब केलवणमणि में नयी रचना कर रहे हैं।

झोपड़ियों की राख पर खिलते नये फूल

—सुन्दरलाल बहुगुणा

चोल राजाओं द्वारा निर्मित कावेरी सिचाई योजनाओं से सिंचित तजावूर की उर्वरा भूमि सोना उगलती है। धान की दो और दाल की तीसरी फसल उगाने वाली इस भूमि के कारण तजावूर को दक्षिण का अन्न-भण्डार होने का गौरव प्राप्त हुआ है। जहा भी जायें सड़क के दोनो ओर धान के हरे-भरे खेतों का मनोहरी दृश्य है। कई स्थानो पर तो सड़क के साथ-साथ दूर तक बहने वाली नहरें इस पर चार-चाद लगा रही हैं। परन्तु प्रकृति के इस वरदान के पीछे मनुष्य की कठोरता छिपी हुई है। कई भूमि सुधार कानूनो के बावजूद भी यह भूमि अभी तक बड़े-बड़े भूमिपतियो (मीरासदारो) के कब्जे मे है। इसके अलावा मदिर और मठों की जमीनें हैं। तजावूर जिले की कुल भूमि का पाचवा हिस्सा मदिर और मठो के पास है। इस जिले के तीन बड़े-बड़े मठों धर्मपुरम अधीनम् के पास १५,००० एकड, तिरुवाडुदुराई अधीनम् के पास २५,००० एकड भूमि है, और तिरुपनंदाल अधीनम् के पास २०,००० एकड भूमि है। तिरुवारूर के त्यागराज स्वामी मदिर के पास ८००० एकड, कुम्बकोणम् के महालिंग स्वामी मदिर के पास २९७४ एकड तथा शियाली के सट्टनाथेश्वरार के पास ११२३ एकड भूमि है। भूमि सीमा कानून के अनुसार कोई परिवार अपने पास १५ एकड से अधिक भूमि नहीं रख सकता और मदिर तथा ट्रस्ट २० एकड से अधिक भूमि खुद काश्त मे नही रख सकते, शेष उन्हे पट्टे पर देनी होगी और वह भी एक परिवार को ५ एकड से अधिक नही। परन्तु भूमि सीमा कानून मे इतने अपवाद थे कि उनका सहारा लेकर एक ही व्यक्ति कई सौ एकड भूमि रख सकता है। भूमिपतियो ने अपनी फालतू भूमि के शिक्षण सस्थाओं, अस्पतालों आदि के नाम से ट्रस्ट बनवा लिये। कुछ बेनामी काश्तकारों के नाम से दर्ज करवा दी, परन्तु वास्तव मे उसका उपयोग वे स्वय ही करते हैं। वलीवलम् के मीरासदार के पास १८०० एकड भूमि थी।

भक्ति भावना से दान मे दी हुई यह भूमि ही मंदिरो मे भूमिहीन कृषि-मजदूरों के उत्पीड़न का कारण बनी, कैसाकुडी के ११ वर्षीय मार्तिकन के पास अभी भी

एस० जगन्नाथन

सन् १९४४ तक खेत-मजदूरो पर होने वाले अमानवीय अत्याचारो की कहानिया सुनाते को हैं। उन्हें घोडे के चाबुक से पीटा जाता था। पानी में गोबर घोलकर पिलाया जाता था।

यह हत्याकाण्ड

तजावूर जिले के पिछले २५ वर्षों के आन्दोलनो की कहानी वामपंथियो द्वारा मजदूरों की मुक्ति और उनकी मजदूरी बढाने के लिए किये गये सघर्ष की कहानी है। पल्लैयर और पल्लैयन मे केवल एक ही अक्षर का अन्तर है, परन्तु पल्लैयर साधन सपन्न भूमिपति और पल्लैयन विपन्न खेत मजदूर। पूरे भारत मे खेत मजदूरो का औसत १६.८० प्रतिशत है, परन्तु तमिलनाडु मे १८.४२ प्रतिशत और तजावूर जिले मे ३२.५७ प्रतिशत है। परन्तु नान्नीलम, सिरकाली और नागपट्टम् तालुको मे तो यह क्रमश: ४६.०८ और ३६.३६ प्रतिशत है। धान की रोपाई से पूर्व मजदूरी बढ़ाने के लिए भूमिपति-मजदूर सघर्ष एक नियमित घटना है।

इस सघर्ष का मुकाबला करने के लिए पाच वर्ष पूर्व जागीरदारो ने उत्पादक सघ बनाया। वे अपने साथ कुछ मजदूरो को भी शामिल करते थे। इसने उग्रपथियो को और भी उग्र बना दिया, जिसके फलस्वरूप मजदूरो को जागीरदारो की ओर तोड़ने के लिए जिम्मेदार एक व्यक्ति की २५ दिसबर, ६८ सायकाल को चाय के होटल मे हत्या कर उसका शव केलवणमणी गाव मे डाल दिया गया। इस खून का बदला लेने के लिए रात के ९ बजे केलवणमणी गाव को हथियारो से सुसज्जित सैकड़ो लोगो ने घेर लिया। जो सशक्त थे वे भाग गये, कुछ धान के खेतो मे छिप गये। इस भगदड़ मे चली गोलियो के निशान अभी कई लोगो के शरीर पर हैं। इसके बाद खेत-मजदूरो की झोपडियो मे आग लगाई गयी। बूढे, बच्चे और स्त्रिया जो भाग नही सके थे उन्होने भूमिपतियो का पक्षधर माने जाने वाले एक मजदूर की झोपडी मे शरण ली, परन्तु आततायियो ने इस झोपड़ी के बाहर ताला लगाकर इसमे भी आग झोक दी। आग की लपटों से बाहर कूदकर आने वालो को पुन. उसी मे डाल दिया गया और इस प्रकार ४४ मासूम लोगो का स्वतत्रता, समानता और बधुता का उद्घोष करने वाले देश मे, मध्य युग मे नही, बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध मे बलिदान हुआ। इस दिन सारी दुनिया मे नहीं केलवणमणी से कुछ दूर प्रसिद्ध आरोग्य माता के गिर्जाघर में करुणा की मूर्ति ईसा के भक्त क्रिसमस का त्यौहार मना रहे थे। इस काण्ड मे जलने वालों मे से ३, ५ और ६ वर्ष के २-२ बच्चो से लेकर ७० वर्षीय बूढ़े सुप्पन

→

तक थे। तीन पूरे परिवार और कुल २५ परिवारों के लोग थे।

करुणा का झरना

केलवणमणी काण्ड से कठोर से कठोर हृदय भी रो उठे थे। इन रोने वालों में दलित और पीड़ितों के सेवक एम० जगन्नाथन् और उनकी सहधर्मिणी कृष्णाम्माल भी थी। जगन्नाथन् को उनकी आध्यात्मिक वृत्ति विद्यार्थी अवस्था में ही साधु-सन्तों के आश्रमों में ले गयी थी। उन्होंने युवा साधु के रूप में उत्तराखण्ड की पैदल-यात्रा भी की। रामकृष्ण मठ में गये, परन्तु समाधान मिला उन्हें गाधी के रास्ते में।

इसलिए सन् १९३३ में उन्होंने हरिजन सेवक के रूप में सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया, सन् १९५१ में एक और सेविका कृष्णाम्माल के साथ परिणय-सूत्र में बंधकर दोनों तमिलनाडु के दलित और पीड़ितों की सेवा के लिए विनोबा के भूदान आन्दोलन में शामिल हो गये। महीनों तक विनोबा के साथ उत्तर भारत की भूदान-यात्रा में रहने के बाद वे दक्षिण में विनोबा का सत्य, प्रेम और करुणा का सदेश फैलाने के लिए विनोबा के हनुमान बनकर आये और तब से यह हनुमान अडिग निष्ठा और अथक परिश्रम के साथ राम की सेवा में लगा हुआ है। जगन्नाथन् की सेवा से कामराज इतने प्रभावित हुए कि जब वे कांग्रेस के अध्यक्ष हुए तो कांग्रेस का सदस्य न होते हुए भी कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य के रूप में जगन्नाथन् के नाम की घोषणा कर दी,. परन्तु जगन्नाथन् का तो रास्ता ही दूसरा था—सत्ता और दलगत राजनीति से अलग रहकर निष्काम सेवा का।

समय के साथ लोग केलवणमणी की घटना को भूलने लगे, परन्तु जगन्नाथन् दंपति ने पूर्वी तजावूर को ही अपनी कर्म-भूमि बना लिया जिस तरह परस्पर अविश्वास, घृणा और द्वेष का वातावरण बना हुआ था, उससे दक्षिण में कई केलवणमणी काण्डों की पुनरावृत्ति हो सकती थी। कुछ निष्ठावान सर्वोदय-सेवकों के साथ उन्होंने इस क्षेत्र की पदयात्राएं की। गाधी जन्म शताब्दी कार्यक्रम के अंतर्गत हरिजन बस्तियों में पीने के पानी के कुए खुदवाये। इनके साथ-साथ वे मानव-हृदयों में छिपे करुणा के स्रोतों की खुदाई भी करने लगे, परन्तु जितनी ही अधिक कोमल और उपजाऊ तजावूर की शस्य श्यामला धरती है, उतने ही कठोर और नीरस उन लोगों के दिल हो गये थे, जिनके पास धन है, धरती है, विद्या है, बुद्धि है, सत्ता है और अधिकार है।
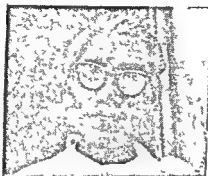
माणिक्यम्

अहिंसक संघर्ष

भूमिहीनों को मठ, मंदिरों और ट्रस्टों की भूमि पट्टे पर दिलाने के लिए वे उनसे मिले। श्री शंकरराव देव के नेतृत्व में हृदय-परिवर्तन के लिये प्रयास प्रारंभ हुए। परन्तु चट्टानें पिघली नहीं तो कई गावों में सामूहिक सत्याग्रह हुए, उपवास हुए और लम्बी लम्बी पदयात्राएं हुयीं। शान्ति के इन प्रयोगों ने काल चक्र को पलट दिया। हिंसा और प्रतिशोध पर उतारू हुये लोग अब कई गावों में ग्राम-स्वराज्य, ग्राम सभाएं बनाकर शांति और अहिंसा के तरीके से मानवता की नव-रचना करने में लगे हुए हैं। लगभग ३० भाई बहिन ५ शांति-केन्द्र और १० बालवाड़ियों के माध्यम से उनका पथ-प्रदर्शन कर रहे हैं। इनमें से इंगलैण्ड के एक शिक्षा शास्त्री की २६ वर्षीय बेटी क्रिम भी चार वर्षों से इस क्षेत्र में काम कर रही है। उसने केवल भारतीय भोजन और वेशभूषा ही नहीं अपनाई है, बल्कि पीड़ितों के साथ अपनी किस्मत भी जोड़ दी है। किसने कई उपवासों और सत्याग्रहों में भाग लिया है। वह आजकल तमिल लिखना और पढ़ना सीख रही है। एस० जगन्नाथन् का जो डेढ़ वर्ष पूर्व सर्व सेवा सघ के अध्यक्ष थे, मुख्य केन्द्र मद्रास और मदुराई के बड़े नगरों में नहीं है। यहा तक कि वे तजावूर और तिरुवारुर में भी नहीं रहते हैं। सपर्क के लिए तिरुवारुर के शांति केन्द्र में उनके मुख्य साथी माणिक्यम् रहते हैं। वे स्वयं वल्लीवल्लम् की बालवाड़ी की झोपड़ी में रहते हैं। गाधी की कल्पना का लोक सेवक भारत के दीन दुखी और दलितों के साथ एक रूप हो गया है।

गाधी शांति केन्द्र का पहला काम केलवणमणी के पीड़ितों का पुनर्वास था। उनकी झोपड़ियों में सब कुछ स्वाहा हो गया। शांति केन्द्र ने उन्हें रोजी कमाने के लिए चटाई बुनने के कर्घे दिये। कर्जा दिलाकर १० परिवारों के लिए १० एकड़ कृषि भूमि का प्रबध कर दिया। अब उनके अपने खेत हैं। तमिलनाडु सरकार ने ३० परिवारों के लिये पक्की झोपड़िया बना दी हैं। हाल ही में मद्रास हाई कोर्ट के फैसले में केलवणमणी कांड के सभी अभियुक्त निर्दोष करार देकर रिहा कर दिये गये हैं। मीरासदारों के सघ ने मुख्य अभियुक्त का अभिनन्दन कर उसे अपना अध्यक्ष बना दिया है। परन्तु जागीरदारों के एजेन्ट की हत्या के अभियुक्त पाँच कृषि-मजदूर ९ वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक का दण्ड भुगत रहे हैं। इनमें से एक पररतीवेल के डेढ़ वर्षीय बेटे वासुदेवन ने अभी अपना बाप नहीं देखा है। शांति केन्द्र द्वारा स्थापित बालवाड़ी वासुदेवन और उसी की तरह धूल-मिट्टी तथा गन्दगी में दिन गुजारने वाले बच्चों के नवजीवन का केन्द्र बन गई है। यह पीढ़ी मानवीय घृणा की विरासत से मुक्त होकर करुणा के झरनों का स्रोत बनेगी।

ग्रामस्वराज्य का चित्र उभर रहा है

मंदिरों के प्रदेश तमिलनाडु के १९४५ मंदिरों में से १३०६ तजावूर जिले में हैं। अपनी भक्ति भावना को प्रकट करने और जनता को रोजगार देने के लिए इन मंदिरों का निर्माण चोल राजाओं के काल में हुआ। इन्हीं में से ५०० वर्ष पुराना हृदय कमलनाथ

शराबबन्दी के लिए आन्दोलन महात्मा गांधी के अठारह रचनात्मक कार्यों में एक प्रमुख कार्यक्रम था। आजादी के पहले गांधीजी ने शराबबन्दी के लिए जो किया और करवाया उसे दुहरा रहा है राजस्थान। शराबबन्दी सत्याग्रह राजस्थान का खास कार्यक्रम हो गया है। अजमेर में नौ महीनों से सत्याग्रह चल रहा है। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, जैसलमेर, सिरोही, बांसवाड़ा, सीकर, कोटा, भरतपुर आदि शहरों में उपवास और प्रदर्शन हुए हैं। अब तक कोई आठ सौ सत्याग्रही गिरफ्तार हुए हैं। पिछले वर्ष राजस्थान ने जो किया उसकी यह रपट है— लिखी है—त्रिलोकचन्दजी ने।

राजस्थान में सत्याग्रह चल रहा है

देश में अंग्रेजी शासन काल में शराब का आम रूप से प्रचलन ही नहीं बढ़ा, अपितु शिक्षित समाज में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ी थी। उस समय के प्रशासकों की दिलचस्पी आबकारी आय बढ़ाने की थी। सन् १९०८ में लोकमान्य तिलक ने भारतीय समाज में बढ़ती हुई शराबखोरी के खिलाफ आंदोलन चलाने की घोषणा की। फिर गांधीजी के नेतृत्व में स्वराज्य प्राप्ति का जो अहिंसक आंदोलन चला शराबबन्दी उसका एक विशेष व अभिन्न कार्यक्रम रहा। फलतः उस समय शराब की दूकानों के सामने पिकेटिंग की गयी और सत्याग्रहियों ने जेल यातनाएं उठाईं।

स्वराज्य के बाद भारत के संविधान में भी नशाबन्दी को निर्देशक तत्त्वों में स्थान दिया गया। कई राज्यों ने शराबबन्दी के लिए उत्साहप्रद कदम उठाये जिसके परिणामस्वरूप तमिलनाडु, महाराष्ट्र, गुजरात राज्यों में पूर्ण शराबबन्दी तथा आन्ध्र के आंशिक जिलों में शराबबन्दी लागू की।

राजस्थान में आन्दोलन का प्रारम्भ गांधी शताब्दी वर्ष से राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए राजस्थान ने अप्रैल १९६८ से प्रदेश के वयोवृद्ध लोक सेवक श्री गोकुलभाई भट्ट के नेतृत्व में आंदोलन शुरू

→

→

किया। लगभग साढ़े तीन महीने शराब निर्माण शालाओं पर सत्याग्रह चला। परिणामस्वरूप तत्कालीन राजस्थान सरकार ने क्रमिक कार्यक्रम द्वारा अप्रैल, ७२ तक राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू कर देने की घोषणा की। गुजरात से लगे जिले, सिरोही, बासवाड़ा, बाड़मेर, जैसलमेर, जालौर, उदयपुर की ६ तहसीलों में शराबबन्दी लागू कर दी। इसके अलावा सरकार की ओर से अपने वचन को सन्, ७२ की अप्रैल में पूरा कर देने की घोषणा के सिवाय कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। प्रदेश नशाबन्दी समिति राज्य सरकार से हर वर्ष शराबबन्दी को जिले में बढ़ाने की माग करती रही।

सन्, ७१ में सुखाड़िया सरकार ने त्याग पत्र दे दिया और श्री बरकतुल्ला खान ने नयी सरकार बनाई। नयी सरकार ने मार्च ७२ के अन्तिम सप्ताह में आर्थिक कारणों से राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने में अपनी असमर्थता व्यक्त कर दी। इस प्रकार वह अपने वायदे से मुकर गयी।

फलस्वरूप राजस्थान को फिर आदोलन प्रारम्भ करना पड़ा। अप्रैल, ७२ से ही आदोलन की तैयारियां शुरू हो गयी। श्री गोकुलभाई भट्ट ने १६ मई से आमरण अनशन किया तथा श्री यज्ञदत्त उपाध्याय ने २१ मई से अनिश्चित काल के लिए अजमेर मे अनशन शुरू किया।

क्रमिक उपवास, पिकेटिंग, प्रदर्शन तथा व्यापक सहयोग : श्री गोकुलभाई भट्ट के उपवास से सारे प्रदेश और देश के विधायक क्षेत्र में हलचल हो गई। जयपुर, भरतपुर, बीकानेर, अजमेर व फलोदी में शराब की दूकानों पर पिकेटिंग हुई। जयपुर में सचिवालय के सामने, जोधपुर, बीकानेर, भीलवाड़ा, जैसलमेर, सिरोही, बासवाड़ा, सीकर, कोटा, भरतपुर, अजमेर इत्यादि नगरों में जिलाधीश कार्यालयों के समक्ष क्रमिक उपवास हुए।

जयपुर, अजमेर, जोधपुर, फलोदी, बीकानेर, भरतपुर नगरों में शराब की दूकानों पर पिकेटिंग हुई, फलस्वरूप फलोदी में स्पिन वेयर हाउस आज तक बन्द है। राज्य विधान सभा के सम्मुख विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसका नेतृत्व अ० भा० नशाबन्दी परिषद की अध्यक्षा डा० सुशीला नैयर ने तथा सर्व सघ के प्रतिनिधि श्री अक्षयकुमार करण ने किया। सरकार को एक ज्ञापन दिया गया। इसी प्रकार जिलाधीश कार्यालयों पर भी प्रदर्शन किये गये तथा जिलाधीशों को भी ज्ञापन दिये गये।

आदोलन को सफल बनाने के लिए राजस्थान अणुव्रत समिति, राजस्थान शिक्षक सघ, आर्य समाज, प्रदेश की सब विधायक सस्थाएं, धार्मिक सस्थानों, मजदूर सगठनों, विधायकों, व सासदों का समर्थन प्राप्त हुआ। राज्य विधान सभा में सभी दलों तथा निर्दलीय विधायकों ने शराबबन्दी का समर्थन किया। राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू कर गोकुलभाई की प्राण रक्षा के लिए सरकार

→

अनशन के लिए गोकुल भाई के माथे पर तिलक

→
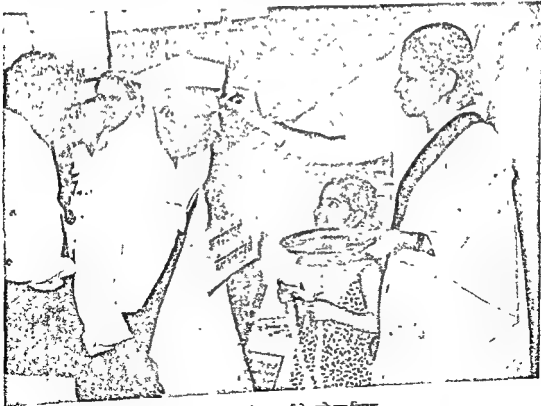
से प्रार्थना की। संसद में भी राजस्थान में शराबबन्दी लागू करने का प्रश्न उठा। शराबबन्दी में विश्वास रखने वाले सभी भाई बहनों ने उत्साह से आंदोलन में सहयोग दिया। प्रदेश से बाहर सारे देश से सत्याग्रह में सम्मिलित होने के लिए जत्थे पहुंचने की सूचनाएं बराबर आ रही थीं। नकोदर में हुए अ० भा० सर्वोदय सम्मेलन में राजस्थान में चल रहे शराबबन्दी आंदोलन का समर्थन किया और सारे देश से सत्याग्रह में शामिल होने के लिए जयपुर पहुंचने का आवाहन दिया गया। दादा धर्माधिकारी, आचार्य राममूर्ति, सर्व-सेवा संघ के मंत्री प्रो० ठाकुरदास बंग, तथा महाराष्ट्र के गोविन्दराव देशपांडे व कई सर्वोदय कार्यकर्ता कई दिनों तक दिल्ली में रुके रहे ताकि जयपुर से सूचना मिलते ही वे सत्याग्रह के लिए जल्दी से जयपुर पहुंच सकें।

उपवास के तीन दिन भी पूरे न हो पाये और राज्य सरकार ने श्री गोकुलभाई भट्ट को आत्महत्या के अपराध में गिरफ्तार कर लिया, उन्हें अस्पताल में हिरासत में रखा गया। उपवास के ११ वें दिन २६ मई की की रात्रि को एकाएक प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने टेलीफोन द्वारा हस्तक्षेप किया तथा गोकुलभाई से बातचीत की। प्रधानमन्त्री द्वारा मध्यस्थता का आश्वासन दिये जाने पर २७ मई, ७२ को गोकुलभाई भट्ट का अनशन छूटा।

आश्वासन पूरे नहीं हुए

२७ मई, ७२ से २५ जनवरी, ७३ तक इस बात का इन्तजार रहा कि प्रधानमन्त्री राज्य सरकार को निर्देश करेंगी और राज्य सरकार २ अक्तूबर, ७२, गांधी जयन्ती या १४ नवम्बर, नेहरू जयन्ती अथवा २६ जनवरी, ७३ गणतन्त्र दिवस से राज्य में पूर्ण शराबबन्दी लागू करा देगी। इस सम्बन्ध में सर्व सेवा संघ, नशाबन्दी परिषद का प्रतिनिधि मण्डल प्रधानमन्त्री से मिला। श्री गोकुलभाई भट्ट ने भी प्रधानमन्त्री से दो बार तथा राज्य के मुख्यमन्त्री व वित्तमन्त्री से भी मुलाकात की। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा भी इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री से मिले। पत्र व्यवहार चला। किन्तु कुछ

डिस्टीलरी के बाहर धरना

परिणाम नहीं निकला। राज्य सरकार बराबर आर्थिक घाटे की दलील देती रही और शराबबन्दी के नैतिक कदम को टालने का अनैतिक साहस करती रही। प्रधानमन्त्री भी शराबबन्दी के सिलसिले में उदासीन ही रहीं और राज्य सरकार को पूर्ण शराबबन्दी की ओर कदम उठाने के लिए निश्चित निर्देश नहीं दे सकीं।

ऐसी उपेक्षा और उदासीनता से भरी परिस्थिति में २६ जनवरी, गणतन्त्र दिवस से प्रदेश शराबबन्दी समिति ने पुनः आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। २६ जनवरी से गोकुलभाई भट्ट ने ६ दिन का अनशन प्रारम्भ किया। अनशन का प्रारम्भ मुख्यमंत्री के निवास के बाहर सामूहिक उपवास से हुआ। शेष ८ दिन का उपवास अजमेर नगर में गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में हुआ जो ४ फरवरी को निर्विघ्न समाप्त हुआ। उपवास काल में सिरोही बांसवाड़ा, टोंक, अजमेर, नागौर, अलवर भीलवाड़ा जयपुर जिला मुख्यालयों पर प्रदर्शन किए गये और ज्ञापन दिये गये।

सीधी कार्यवाही

१२ फरवरी से अजमेर में रामगंज डिस्टीलरी में प्रवेश कर शराब उंडेलने की सीधी कार्यवाही शुरू हुई, जिसका नेतृत्व गोकुलभाई भट्ट व डा० सुशीला नैयर ने किया। पुलिस के घेरे से घिरी डिस्टीलरी में सुशीला बहन व गोकुलभाई भट्ट ने प्रवेश करने का प्रयत्न किया। राज्य सरकार ने उन्हें अन्य चार साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया और दिन भर हिरासत में रखा। शाम को उन्हें व अन्य चार साथियों को मुक्त कर दिया। इस प्रकार १२ फरवरी से लेकर आज तक बराबर डिस्टीलरी पर सत्याग्रह चल रहा है और गिरफ्तारियां हो रही हैं। अब तक लगभग ६०० भाई बहन गिरफ्तार किये जा चुके हैं।

१७ फरवरी को लगभग ७० भाई बहनों के जत्थे डिस्टीलरी पर सत्याग्रह के लिए पहुंचे। उस दिन सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया गया। उन पर १०७, ११७ व १५१ की धारा लगाकर उन्हें जेल भिजवा दिया गया। गिरफ्तार कर जेल भेजने का यह क्रम १७ मार्च तक चला। इस अवधि में लगभग २५० व्यक्ति जेल भेजे गये। इनकी अवैधानिक गिरफ्तारियों के बारे में सिटी मजिस्ट्रेट की कोर्ट में मुकदमे की पैरवी बीकानेर के सुप्रसिद्ध एडवोकेट रघुवरदयाल गोयल तथा तथा नागौर जिले के लोकसेवी बद्रीप्रसाद स्वामी ने की। १७ मार्च को सब सत्याग्रहियों को राज्य सरकार ने बिना शर्त जेल से रिहा कर दिया। ३० अगस्त को ४ सत्याग्रहियों पर दफा ४४१ व ४४८ लगा-

→

→
पर गिरफ्तार किया गया और उन्हें जेल भेज दिया गया।

१८ फरवरी को अ० भा० नशाबन्दी परिषद, सर्व सेवा संघ, अणुव्रत समिति के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थान में पूर्ण शराबबन्दी के प्रश्न को लेकर विभिन्न राज्यों के ७०० भाई बहनों ने प्रधान मंत्री निवास पर शांत प्रदर्शन, उपवास व प्रार्थना का आयोजन किया। इसी दिन एक शिष्ट मंडल प्रधान मंत्री से मिला और उन्हें ज्ञापन प्रस्तुत किया। शिष्ट मंडल में नशाबंदी परिषद की अध्यक्षा डा० सुशीला नैयर, सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा, संसद सदस्य डा० जीवराज मेहता व श्याम-नन्दन मिश्र, गांधी स्मारक निधि के मंत्री देवेन्द्र कुमार गुप्त, गोकुलभाई भट्ट व रूपनारायण जी इत्यादि सम्मिलित हुए।

विधायकों एवं सांसदों द्वारा नशाबन्दी का समर्थन : ८ मार्च व १६ मार्च को राजस्थान विधान सभा के सभी पक्षों के व निर्दलीय विधायकों ने शराबबन्दी का पूरा समर्थन किया और शराबबन्दी के मामले में वित्तमंत्री की आर्थिक घाटे की दलील को चुनौती दी। विरोधी दलों के सभी विधायकों ने इतनी दूर तक जाकर समर्थन किया कि शराबबन्दी के लिए यदि राज्य सरकार किसी नये कर का भी प्रस्ताव करेगी तो वे उसका समर्थन करेंगे। इसी प्रकार राजस्थान के सांसदों ने भी शराबबन्दी आंदोलन का समर्थन किया तथा राज्य सरकार से अपने वायदे को पूरा करने तथा शराब से होने वाले घाटे की पूर्ति के लिए राज्य सरकार को आर्थिक सहायता के लिए प्रावधान करने के छठे वित्त आयोग को ज्ञापन देने का निश्चय किया।

डिस्टीलरी पर अवरोध

राजस्थान में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए चल रहे आंदोलन के समर्थन में विधान सभा के सामने जयपुर में २४ घंटे के क्रमिक उपवास का आयोजन २१ मार्च से किया गया जो ६ अप्रैल सत्रावसान तक बराबर चला।

फिर इसी प्रकार के उपवास का क्रम १८ अप्रैल भूक्रान्ति दिवस से सचिवालय के सामने प्रारम्भ हुआ जो ७ जुलाई तक बराबर चलता रहा। फिर राजस्थान कर्मचारी आंदोलन के सिलसिले में पुलिस द्वारा की गई ज्यादतियों तथा उपवास करने वालों के साथ हुए दुर्व्यवहार के विरोध स्वरूप ७ जुलाई से उपवास क्रम स्थगित किया। १३ अप्रैल से डिस्टीलरी पर अवरोधात्मक कार्यक्रम शुरू किया गया। २४ घंटे का सत्याग्रह प्रारम्भ कर डिस्टीलरी से शराब का आवागमन रोक दिया गया। इस प्रकार डिस्टीलरी पर प्रारम्भ किये गये अवरोधात्मक कार्यक्रम का क्रम आज तक जारी है।

पदयात्राएं . अजमेर डिस्टीलरी पर सत्याग्रह करने व गांवों में शराबबन्दी का संदेश पहुंचाते हुए जयपुर, नागौर, एवं भीलवाड़ा जिले से तीन पदयात्रा टोलियां अजमेर पहुंची। जयपुर की टोली का संयोजन जवाहरलालजी जैन, भीलवाड़ा टोली का संयोजन सेढूरामजी खींची तथा मकराना टोली का संयोजन बद्रीप्रसाद जी ने किया। टोलियों ने अजमेर डिस्टलरी पर सत्याग्रह कर गिरफ्तारी के लिए अपने को प्रस्तुत किया।

हर जिले में सत्याग्रहियों द्वारा १२ तारीख को जिलाधीश कार्यालयों, तहसील हैडक्वार्टरों, पर प्रदर्शन करने तथा ज्ञापन देने का आयोजन किया जाता है। कई नगरों में दुकानों पर पिकेटिंग किया जाता है। जिनमें अजमेर, सिरोही, टौंक, बूंदी, बांसवाड़ा, नागौर, किशनगढ़, जोधपुर, फलोदी, जयपुर, भीलवाड़ा, बीकानेर, इत्यादि जिले व कस्बे प्रमुख हैं।

सरकार की घोषित नीति के अनुसार शिक्षणालयों, देवालयों, श्रमिक बस्तियों व सार्वजनिक स्थानों के नजदीक जो दुकान हैं, उनको हटाया जायेगा। इस प्रकार की अवैध दुकानों का सर्वेक्षण कर उनको हटाने के लिए जिला आबकारी अधिकारी तथा जिलाधीशों को ज्ञापन दिये जा रहे हैं। तथा इनके लिए नागरिकों के सहयोग से आंदोलन व पिकेटिंग प्रारंभ किये गये।

शराब की दुकान हटी : शराबबन्दी आन्दोलन, पिकेटिंग एवं प्रतिरोधात्मक कदम के कारण अजमेर नगर में ब्रह्मपुरा की दुकान हटी, टोंक में खादी समिति के पास की दुकान, तथा सांवर ग्राम में शराब के ठेके की दुकान तथा जयपुर में बासबों गांव की दुकान तथा ब्यावर नगर की चांगगेट रोड पर स्थित शराब की दुकान बंद करवा दी गई है। फलौदी में मई, ७२ से सरकारी गोदाम पर सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ, जिसके फलस्वरूप वह गोदाम अब तक बंद पड़ा है और मालूम हुआ है कि फलोदी से शराब का गोदाम हटा लिया गया है।

प्रदेश की बहनों ने भी शराबबन्दी के लिए काफी उत्साह दिखलाया। जेल भी गईं। दुकानों पर पिकेटिंग में भाग लिया। अजमेर डिस्टलरी पर सत्याग्रह के लिए तथा गिरफ्तारी के लिए अपने को प्रस्तुत किया। क्रमिक उपवास के कार्यक्रमों व प्रदर्शनों में भी बहनों ने उत्साह से भाग लिया। उत्तर प्रदेश की लोक सेवी बहनों ने भी जयपुर व अजमेर नगर में शराबबन्दी का प्रचार किया और बहनों को प्रेरणा दी। इन बहनों ने अजमेर डिस्टीलरी पर सत्याग्रह में भी भाग लिया और डिस्टीलरी में भी प्रवेश किया।

सबका सहयोग

शराबबन्दी एक नैतिक आंदोलन है। और यह प्रदेश के नैतिक जीवन के उत्थान के लिए है। इसलिए लोकहित में किये गये इस आंदोलन को प्रदेश के कई भाई बहनों का व्यापक समर्थन मिला है। प्रदेश की रचनात्मक व धार्मिक व सामाजिक व श्रमिक संस्थानों, स्वतंत्रता सेनानियों व शराबबन्दी में विश्वास रखने वाले भाई बहनों, राजनैतिक पक्षों, विधायकों व सांसदों तथा प्रदेश के रचनात्मक व समाज सेवी कार्यकर्त्ताओं का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है।

शराबबन्दी का वचन देकर राज्य सरकार द्वारा शराबबन्दी लागू नहीं करने तथा एक लोकहितकारी कार्य के लिए जनता से किये गये वायदे से मुकर जाने के विरोध स्वरूप स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी जीतमल लूणिया तथा श्री अजना देवी ने अपना ताम्रपत्र सरकार को वापिस लौटा दिया। उनकी इस घोषणा से आंदोलन को काफी बल मिला।

गोकुलभाई आत्मोत्सर्ग के लिए भी तैयार हैं

श्रमिक व हरिजन बस्तियों मे प्रचार : जयपुर नगर की श्रमिक बस्तियों एव हरिजन बस्तियो मे शराब के लिए सभाए की गई व शराब छुडवाने के लिए अभियान चलाया गया। स्थानीय आर्य समाज का इस कार्यक्रम मे सराहनीय सहयोग मिला।

कुमारप्पा ग्राम स्वराज्य संस्थान जयपुर ने जयपुर नगर की रैगरो की कोठी की पूरी बस्ती का, आदतन शराब पीने वालो की आर्थिक, सामाजिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी स्थिति का सर्वेक्षण किया। इसी प्रकार संस्थान द्वारा बासवाडा जिला जो आदिवासी क्षेत्र है और जहा शराबबन्दी है, उस क्षेत्र का शराबबन्दी के बाद के प्रभाव का सर्वेक्षण किया गया जिसके बडे उद्बोधक फलितार्थ सामने आये। इसी प्रकार जयपुर जिला सर्वोदय मडल ने १७ अलग मे स्थित शराब की दुकानो का सर्वेक्षण किया। जोधपुर नगर का भी सर्वेक्षण किया जा रहा है।

सर्व सेवा संघ का समर्थन : सर्व सेवा सघ ने प्रदेश के शराबबन्दी सत्याग्रह को पूरा समर्थन किया है। अ० भा० सर्वोदय सम्मेलन नकोदर म सारे देश के सर्वोदय कार्यकर्त्ताओ का समर्थन मिला। सत्याग्रह मे सम्मिलित होने के लिए सारे देश के कार्यकर्त्ताओ ने तैयारी बताई। वाराणसी की सभा मे सर्व सेवा सघ प्रबन्ध समिति ने केन्द्रीय सरकार से माग की है कि वह पचवर्षीय योजनाओ मे शराबबन्दी कार्यक्रम को भी स्थान दे।

संसद सदस्य डा० जीवराज मेहता, डा० सुशीला नैयर बराबर इस प्रयत्न मे है कि राजस्थान का शराबबन्दी का प्रश्न सुलझाया जाये। डा० जीवराज मेहता प्रधान मत्री से इस बारे म सपर्क बनाये हुए हैं। डा० सुशीला नैयर कई बार मुख्य मत्री से मिल चुकी है। गोकुलभाई भट्ट केन्द्रीय नेताओ और प्रदेश मत्री मडल के सदस्यो से कई बार मिल चुके हैं। मालुम हुआ है कि प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने राज्य के मुख्य मत्री को पत्र लिखकर शराब-बन्दी की ओर कदम बढाने के लिए सलाह दी है।

गोकुलभाई भट्ट की घोषणा : राजस्थान सरकार शराबबन्दी की ओर कदम नही बढा रही। प्रधान मत्री ने भी इस प्रश्न की ओर उपेक्षा ही बरती है। पिछले नौ माह से सत्याग्रह चल रहा है। गोकुलभाई ने घोषणा की है कि वे अब अधिक दिनो तक इस परिस्थिति को नही देख सकेंगे। उन्होने मुख्यमत्री को पत्र लिखकर सूचना की है उन्होने राष्ट्र के सविधान पर हस्ताक्षर किये हैं, इसलिए वे निर्देशक तत्वो की इस प्रकार अवहेलना के साक्षी नही रह सकेंगे और प्राणोत्सर्ग कर सविधान की मान-मर्यादा की रक्षा करेंगे। विनोबाजी प्रधान मत्री व देश एव प्रदेश के वरिष्ठ नेताओ और कार्यकर्ताओ ने गोकुल भाई से इतना सख्त कदम न उठाने के लिए अपील की है। ●

हरियाणा में भी शराबबन्दी आन्दोलन

राधाकृष्ण बजाज
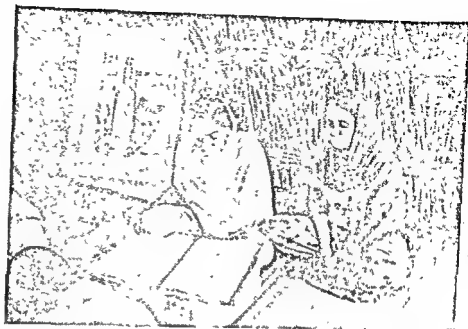
शराबबन्दी के लिए बहनों का सत्याग्रह धर्मग्रन्थ का पाठ : सम्मति किसे मिल रही है ?

चण्डीगढ से करीब २५ मील रायपुर रानी नामक एक स्थान है, जहा पर शराबबन्दी के लिए २७ मार्च, ७३ से सत्याग्रह चल रहा है। सत्याग्रह के लिए स्थानीय लोगो का खासकर स्थानीय बहनो का उत्साह देखकर लगता है आज नही कल शराबबन्दी अवश्य होकर रहेगी।

विरोध के बावजूद

एक जैन मुनिजी उस तरफ कई दिनो से घूम-घूम कर मदिरा-मास के खिलाफ प्रचार कर रहे थे और लोगो से सकल्प भी लिवा रहे थे। उस क्षेत्र की १६-१७ पचायतो से प्रस्ताव कराया गया कि हमारे यहा शराब के ठेके न खोले जायें। वहीं एक गढीकोटा गाव है जहा की पचायत ने अपने यहा शराब का ठेका न खोले जाने का प्रस्ताव किया और मार्च से पूर्व ही विधिवत मुख्यमन्त्री, आबकारी कमिश्नर, जिला आबकारी अधिकारी और कलेक्टर को प्रस्ताव भेज दिये थे। स्थानीय जनता का विरोध होने के बावजूद यह कहकर कि गाव मे अवैध शराब पकड़ी गई है इसलिए ठेका खोल दिया गया।

वहा की पचायत के आदेशानुसार ठेकेदार को शराब की दूकान के लिए किसी ने भी मकान नही दिया। यहा तक कि खाली जमीन भी नही दी। मजबूर होकर गाव से डेढ मील पहले मेन रोड पर दो गावो की सीमा के बीच सार्वजनिक निर्माण विभाग की जमीन पर ठेकेदार ने रातो-रात मकान बना लिया। इसकी सूचना सार्वजनिक निर्माण विभाग को दी गई। उन्होने ठेकेदार को नोटिस दिया लेकिन हटाने की कोई कारंवाई आज तक नही की। तब मुनिजी के मार्गदर्शन मे ठेके के मकान के सामने ही टेम्परेरी कैम्प लगाकर २७ मार्च ७३ से सत्याग्रह आरम्भ किया गया। दादा गणेशीलालजी ने जो हरियाणा शराबबन्दी समिति के अध्यक्ष हैं, इस काम को सभाला।

कार्यकर्त्ताओं की पिटाई

शुरु मे प्रार्थना सभा और २४ घण्टे का उपवास रखकर कार्य की शुरुआत की। बीच-बीच मे बहनो और पुरुषों ने ५-५ दिन के उपवास भी रखे। हरियाणा सरकार या ठेकेदार पर इसका कोई परिणाम नही हुआ। एक बार ठेकेदार ने कार्यकर्ताओ की मार-पिटाई भी की जिसकी खबर पुलिस को कर दी गई थी लेकिन कोई सुनवाई नही हुई।

दादा गणेशीलालजी तथा सोमभाई वेदालंकार, अध्यक्ष हरियाणा सर्वोदय मण्डल दोनो ने मिलकर हरियाणा के मुख्यमन्त्री, आबकारी मन्त्री, विधान सभा के अध्यक्ष को सारी घटना की जानकारी दी। इस सम्बन्ध मे कारंवाई करने का वादा करने पर भी गाडी आगे नही बढी।

ठेकेदारी प्रचार

इस मामले मे सरकार की लापरवाही देखकर या वहां सरकार की अनुकूलता देख कर ठेकेदार को प्रचार का उत्साह हुआ। उसने १७ अगस्त को जीप पर लाउडस्पीकर लगाकर गावो मे सस्ती शराब का खूब प्रचार किया। उस प्रचार का परिणाम उसके विपरीत गया। गावों मे लोग एकदम चौकन्ने हो गये एव उस दिन से गाव-गाव से सत्याग्रही आने लगे। सत्याग्रहियो की सख्या दुगुनी-तिगुनी बढ गयी। बहनें भी बाहर निकल आयी।

रोजाना १५-२० स्त्री-पुरुष सत्याग्रह के लिए देहातो से आ जाते हैं। श्री मुनिजी और दादा गणेशीलालजी वहा डटकर बैठे हुए हैं। उन्हें विश्वास है कि उनका सही कदम वहां से शराब को उठाकर रहेगा।

कुरुक्षेत्र में ११ अप्रैल '७३ को हुए महिला सर्वोदय सम्मेलन ने फैसला किया था कि ११ से १७ अक्तूबर '७३ पूरे देश में 'स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह' के रूप में मनाया जाये । इस सप्ताह में देश के ३०० जिलों से ३०० महिला पदयात्राएं निकालने की तैयारी में लगी सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने कहा है—

स्त्री को दबना और आदमी को दबाना छोड़ना होगा

स्त्री शक्ति जागरण के लिए एक शिविर आयोजित किया गया था। मैं बम्बई गई थी। लोग कह रहे थे—अनाज नहीं, चीनी नहीं, तेल नहीं। सर्वत्र यही चर्चा होती रहती थी कि क्या करें ? आरम्भ में आर्कबिशप महोदय का संदेश सुनाया गया, 'अंधेरे को कोसने रहने के बजाय दीया जलाओ।' लोग भाग्य की बात कहते हैं। भाग्य किसका सोता है ? वेद कहता है—सोने वाला कलियुग में, बैठने वाला त्रेता युग में, उठने वाला द्वापर में और चलने वाला सतयुग में रहता है। देश के भाग्य को बनाना है तो हमें चलना होगा, स्त्री की शक्ति जागृत हो, इसलिए यह पदयात्रा—कश्मीर से कन्याकुमारी तक द्वारिका से सदिया तक ११ अक्टूबर से १७ अक्टूबर तक देश के प्रत्येक जिले में चलेगी। सैकड़ों महिलाएं चलने लगेंगी तो देश का भाग्य भी चलेगा।

जब कोई नया विचार निकलता है तो उस पर आचार होता है, फिर सचार और प्रचार होता है। यह प्रक्रिया है धर्म विचार को फैलाने की। हम क्या कह रहे हैं सबसे —गांव-गांव में जाना है।

किसके खिलाफ

किसी ने पूछा स्त्री शक्ति जागरण क्या पुरुषों के खिलाफ आन्दोलन है ? स्त्री शक्ति विनाशक नहीं, पुनर्वाचक है। स्त्री के जो विशेष गुण हैं—धी, कीर्ति, धृति, वाणी—उनका जागरण। ये गुण जगेंगे तो जन-शक्ति जगेगी। कौन करे ? आज हर बात के लिए हम सरकार की ओर देखते हैं। विनोबाजी कहते हैं कि लोग खुद को तो भूल ही गये, खुदा को भी भूल गये हैं। कश्मीर में विनोबाजी घूम रहे थे। किसी ने कहा सबीर में सर्वोदय का संदेश सुनाओ तो उन्होंने कहा "खुद पर भरोसा रखो, खुदा पर भरोसा रखो।"

हम सबको सिखाते हैं आज तो अबला है और कवि ने कहा है,—

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी,
आंचल में है दूध और आंखों में पानी।

हमें सिखाया जाता है कि तुम भेड़ हो। हम तो शेर हैं। शेर से ज्यादा बहादुर होती है शेरनी, हम अबला नहीं महिला हैं। महान है। हम अपने से सवाल पूछना चाहिये कि हम कौन हैं ? सबसे बड़ी ताकत रूहानी ताकत है। गांधीजी के पास कौनसी ताकत थी ? आत्मशक्ति। शरीर से तो वे इतने कमज़ोर थे कि छोटा बच्चा उनको पटक देता। हम उस शक्ति को पहचानें। हम देह नहीं, आत्मा हैं। हम उसे पहचानेंगे तो शक्ति प्रकट होगी, समाज की आत्मशक्ति जगेगी तो जनशक्ति जगेगी।

ताकत आत्मा में है

तुलसीदासजी ने कहा है—पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।

पराधीन तो सपने में भी सुख नहीं देखता। मैंने बम्बई की बहनों से कहा कि आपको राशन की दुकानों के सामने लम्बे-लम्बे क्यू में खड़ा रहना पड़ता है। आप तो सपने में भी 'क्यू' ही देखती होंगी। और देखती होंगी कि आपकी बारी आने तक दुकान पर तख्ती टँग गई 'दुकान बन्द'। आप को सपने में भी दुःख, जागृति में भी दुःख। विनोबाजी का ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य का आन्दोलन क्या है ? गांव की शक्ति जुड़े। आपस में जुड़ जाएँगे एक बनेंगे और नेक बनेंगे। अपनी आत्म-शक्ति को जगाना है। उस शक्ति के बल पर हम समाज की समस्याओं को हल करेंगे, सरकार भी उसमें मदद करेगी। असली ताकत दिल्ली में नहीं, देहात में है। देह में नहीं, आत्मा में है— यह संदेश गांव-गांव फैलाना है।

पहाड़ और मैदान की बहनें

पढ़ी-लिखी लड़कियां अधिक डरती हैं। क्या आगरा शहर की लड़की १२ बजे रात का अकेली कहीं जा सकती है ? इसके विपरीत पहाड़ी क्षेत्र की बहनें बहादुर हैं। उन्होंने शराबबन्दी के लिए सत्याग्रह किया था, किसी की हिम्मत नहीं उनके साथ छेड़खानी करे। एक बार दो जवान लड़कियां जंगल से घास काट कर गीत गाती हुई रात का घर आ रही थीं। दो सिपाहियों ने अकेला देख कर उनका छेड़ना शुरू कर दिया, तो इन लड़कियों ने क्या किया। वे रोयी चिल्लाई नहीं। उनमें से एक ने सिपाही का हाथ काट डाला। फौज की छावनी पास थी। अफसर ने गांव के लोगों से कहा, 'अपनी लड़कियों को सम्हालिए, सड़क और छावनी की तरफ न आने दीजिये। यहां सिपाही हैं।" गांव के लोगों ने कहा, 'हमारी लड़कियां तो वैसे ही घूमेंगी। आप अपने सिपाहियों को सम्हालिए।' कभी-कभी वे बाघ का मुकाबला भी करती हैं। यह बहादुरी सब महिलाओं में आनी चाहिये। पुरुष कैसे रक्षा करेगा ? द्रौपदी के तो पांच-पांच पति थे, परन्तु जब संकट आया तो किसने रक्षा की ? उसने जो हम सबके अन्दर है। हमें केवल सुरक्षित ही नहीं बनना है, स्वरक्षित बनना है। कुल समाज निर्भय बने। हमको जो गलत संस्कार दिये हैं कि हम अबला हैं, उन्हें

→

महिला अबला नहीं है महान है—

→

बदलना है। विज्ञान क्या कहता है ? प्रकृति की सर्वोत्तम कृति क्या है ? मनुष्य का शरीर और उससे भी सर्वश्रेष्ठ कृति स्त्री का शरीर। शरीर भी मजबूत है। गलत संस्कारों के कारण हम अपने को कमजोर समझते हैं। आत्म शक्ति तो है ही, ऐसी निर्भयता समाज में लानी है।

मैत्री के रिश्ते

इसके साथ-साथ गलत मूल्यों को भी बदलना है। जहां-जहां तानाशाही चलती है उसे मिटाना है। परिवार में भी तानाशाही चलती है। मेरे भाई बहुत पढ़े-लिखे हैं। भाभी डाक्टर है परन्तु घर में आते ही भाभी पर हुक्म चलाते हैं। इस प्रकार परिवार में पति का हुक्म चलता है। समाज में जहां-जहां तानाशाही चलती है, मिटानी है। नये समाज में सबके रिश्ते में मैत्री होगी। पति पत्नी दोनों एक-दूसरे के मित्र बनेंगे। 'मैत्री' का सम्बन्ध परिवार में, समाज में सब जगह कायम करना है। समाज को बदलना है। यह मैत्री का रिश्ता कैसे कायम होगा ? इस यात्रा में यह समझाना होगा कि जमाना बदल गया है। स्त्री को दबना छोड़ना पड़ेगा पुरुष को दबाना छोड़ना पड़ेगा।

मैं दक्षिण में गई थी, वहां एक किलवणीमणी गाँव है। ४४ मासूम हरिजन स्त्री-बच्चों और बूढ़ों को पाच साल पहले जिंदा जलाया गया था, उनका एक ही अपराध था कि वे अपने काम की उचित मजदूरी मांगते थे। एम०ए० पास हरिजन शिक्षक को जूता पहने या छाता लगाकर बाहर निकलने पर पीटा गया। यह मानस बदलना होगा। आज के जमाने के नये सम्बन्ध कायम करने होंगे। यह स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह का सन्देश है।

इस्लाम में एक बात है कि अल्लाह एक है। अब हमको इसके साथ एक नया नारा देना है कि इन्सान एक है। इन्सान-इन्सान के बीच का रिश्ता 'मैत्री' का होगा। यह काम हमको करना है। गांधीजी ने हमसे यह अपेक्षा रखी थी कि उनके बाद हिन्दुस्तान का काम स्त्रियां चलायेंगी।

प्रेम किसके पास है ?

स्त्री का प्रेम परिवार के अन्दर सीमित हो गया है। उसको व्यापक करना है। प्रेम सरिता को बहाना है। प्रेम जब परिवार में सीमित हो जाता है तो आसक्ति बन कर गंदा हो जाता है, जैसे आप अपने बच्चों के दुख को मिटाने के लिए प्रयत्नशील रहती हैं, वैसे ही आप सारे गांव के बच्चों का दुख मिटाइए। हमारे यहां कहा है 'वसुधैव कुटुम्बकम्' गांव को परिवार मानो। आज क्या गांवों में अनाज नहीं है ? पर कुछ बच्चे भूखे क्यों हैं ? हमारे गांव में कोई भूखा नहीं न रहे। प्रेम का व्यापक बनाना है। पैमाने को बदलना है। अभी तक हम समझते थे कि यह परिवार जो घर में रहता है, हमारा है। विज्ञान का जमाना है, लोग चन्द्रलोक में जाते हैं। हमारे शहर की लड़की स्पेस यान में बैठ कर जापान पढ़ने जा सकेगी और फिर शाम को वापस लौट सकेगी चन्द्रलोक में धरती का आदमी जायेगा, तो वह यह नहीं कहेगा कि उत्तर प्रदेश या भारत से आया हूं। कहेगा पृथ्वी से आया हू। नये जमाने में कुल गांव या मुहल्ला हमारा परिवार बनेगा। जिला गांव बनेगा, प्रदेश ब्लाक और देश जिला बन जायेगा। अब विश्व बन गया है देश। पृथ्वी के देश सब प्रदेश बन जायेंगे जब दिल जुड़ेंगे तो देश जुड़ेंगे। जोड़ का काम प्रेम करेगा और प्रेम किसके पास है ? स्त्रियों के पास। बाबा हमसे कहते हैं कि हमारी प्रधानमन्त्री इन्दिराजी हैं। सीलोन में श्रीमती भण्डार नायके हैं, इजरायल में श्रीमती गोल्डामायर हैं। क्या अमेरिका, इंग्लैंड, रूस और चीन में कोई महिला राष्ट्रपति या प्रधानमन्त्री बनी ? क्यों ? इस देश की सभ्यता में स्त्री-पुरुष भेद है ही नहीं। यह बाहर से आया। वेद में गार्गी, मैत्री आदि विदुषियों का वर्णन आता है। दुनिया की पहली मिशनरी कौन थी ? एक महिला संघमित्रा, जिसने धर्म-विचार देश के बाहर फैलाया। प्राचीन परम्परा में स्त्री-पुरुष भेद नहीं हैं। सब भेदों को मिटाकर एक नया समाज बनाना है, जिसमें समता होगी। नई क्रान्ति करनी है। इसका सन्देश लेकर ११ से १७ अक्टूबर तक हम गांव-गांव जायेंगे। सात दिन तक पुरुष लोग बच्चों को सम्हालेंगे, चूल्हा जलायेंगे और समाज का नेतृत्व करने के लिए महिलाएं निकलेंगी।

आर्थिक स्वतन्त्रता

कहा जाता है कि पुरुष कमाने का काम करते हैं। इंग्लैंड में स्त्रियों ने हिसाब जोड़ा अपने काम का तो वह पुरुषों की कमाई से दुगुना निकला। मैं मानती हूं कि स्त्रियों को आर्थिक स्वतन्त्रता होनी चाहिये पर परिवार में मां जो खाना खिलाती है वह बहुत बड़ा काम है।

हम चलना शुरू करेंगे तो भाग्य भी हमारे साथ चलने लगेगा।

महिला मिशनरी

स्त्री शक्ति आत्म शक्ति, जनशक्ति जगाने का कार्यक्रम है सबके कल्याण का आन्दोलन है। जैसे एक जमाने में सैकड़ों बौद्ध भिक्षुणियां बुद्ध भगवान का यह सदेश लेकर धर्म प्रचार करने के लिए निकली थीं :

बहुजन हिताय बहुजन सुखाय। वे चीन भी गयी होंगी। उसका असर क्या हुआ ? चीन में हमारे पहले राजदूत सरदार पणिक्कर ने एक पुस्तक लिखी है 'इन टू चाइना'। उसमें वे लिखते हैं कि जब मैं माओ त्से तुंग के पास अपने परिचय पत्र पेश करने गया तो उसने पूछा क्या आप जानते हैं कि हम चीनी आपके बारे में क्या सोचते हैं। हमारे यहां कहावत है कि जब कोई चीनी पुण्य करके मरता है तो वह पुण्य भूमि भारत में जन्म लेता।" हो सकता है आप और हम पिछले जन्म में चीनी रहे हों।

✱

जेट युग में पदयात्रा : क्रान्ति का नया आयाम

—सरला बहन

पश्चिम में शौक के लिए तथा भारत में तीर्थ के लिए लम्बी पैदल यात्राएं करने का रिवाज रहा है। लेकिन हवाई जहाज के युग में पदयात्रा का एक नया और क्रान्तिकारी महत्त्व हुआ है।

यह कब से शुरू हुआ? जब नमक सत्याग्रह का क्रान्तिकारी विचार बापू को सूझा तब उनके साथियों को, निकट के साथियों को भी शंका हुई कि समुद्र के तट पर नमक बनाने से स्वराज्य कहां मिलने वाला है? इसलिए, उस विचार को व्यवहार में लाने के लिए बापू को एक नई क्रान्तिकारी पद्धति की खोज करनी पड़ी और वह पद्धति क्या निकली? डांडी कूच पर साथियों को साथ लेकर हाथ में अपनी लाठी पकड़कर बापू समुद्र के तट पर नमक बनाने के लिए निकले। गांव-गांव के किसान और मजदूरों ने निकल कर उन्हें साथ दिया। यदि बापू रेलगाडी में या बस में बैठकर जाते, तो शायद नमक बनाने की क्रिया एक मखौल रह जाती, लेकिन डांडी कूच ने उसे एक देशव्यापी जोशीला स्वरूप दिया था। बापू के पावों ने हमारे गांव-गांव की मिट्टी का स्पर्श करके, गांव-गांव के निवासियों के हृदय में प्रवेश किया।

नयी तीर्थयात्रा

बाद में, जब दंगाग्रस्त नोआखली में बापू अपने परम्परागत वाहनों को छोड़कर दुखित हृदय से नंगे पांव, गांव-गांव में अपने साथियों को साथ लेकर पैदल चलने लगे, उसका असर बिजली का सा हुआ। घर-घर में पहुँचकर वह अपनी प्रेमभरी बोली से, अपने दुखी हृदय से सब के आंसुओं को पोंछने लगे, सबके हृदयों को जोड़ने लगे। वह यदि मोटर में बैठ कर गांव-गांव में पहुंचते तो इतना प्रभाव नहीं हो पाता। यह पदयात्रा सैर सपाटे की तो नहीं थी वह थी एक प्रकार से तीर्थ यात्रा। लेकिन एक नये तीर्थ की यात्रा! मानव के हृदय में दुखी दरिद्र नारायण के दर्शन के लिए वह तीर्थ यात्रा थी। और तूफान के बाद शांति की स्थापना होने से, वह दर्शन बराबर मिलते रहे।

सरला बहन : सन् ३२ में भारत आयीं और सेवाग्राम पहुंच कर गांधी की हो गयीं। तब से वे देश भर में घूम कर गांधी कार्य में लगी हैं।

भूदान यात्रा

लेकिन उसके बाद पदयात्रा का सिलसिला फिर टूट गया। १९४७ से लेकर १९५१ तक लोग सोये रहे। लोग इस नई तीर्थ यात्रा के महत्त्व को भूल गये थे। आखिर १९५१ में, जब साथी लोग विनोबा जी को तंग कर रहे थे कि वे शिवरामपल्ली के सर्वोदय सम्मेलन में अवश्य चलें, और वह अपनी कांचन मुक्ति का प्रयोग नहीं छोड़ना चाहते थे तो उन्हें भी यह सूझा, कि यदि उन्हें जाना ही है तो गांव-गांव में दरिद्रनारायण के दर्शन करके जाना चाहिए, ताकि सम्मेलन में वे अपने देश के देहातों की परिस्थिति सही ढंग से रख सकें।

इस यात्रा के फलस्वरूप, पहली बात वे समझे कि इस देश के सामने सब से बड़ी समस्या जमीन की है। सम्मेलन के बाद जब वे पदयात्रा करके दंगाग्रस्त तेलंगाना की ओर बढ़े तो वहां पर हमारे देश की प्रतिभा अपने आप प्रगट हुई, और जमीन की समस्या का हल करने के लिए एक नई अहिंसक पद्धति का जन्म हुआ—करुणा का मार्ग भूदान का मार्ग! यदि उन्होंने वाहन से यात्रा की होती, तो वह प्रतिभा प्रगट नहीं हुई होती। पांवों की मिट्टी का स्पर्श मिलने के साथ ही साथ, मनुष्यों के हृदय का स्पर्श भी बढ़ता रहा।

उस काम को आगे बढ़ाने के लिए हमारे देश में सिर्फ विनोबा जी की हजारों मील लम्बी पदयात्रा ही नहीं चली, बल्कि देश के गांव-गांव में देश के छोटे-बड़े सेवक पदयात्राएं निकालते रहे, और उसके फलस्वरूप भूदान यज्ञ में ४५,००,००० एकड़ भूमि का हस्तान्तरण स्वेच्छा से, करुणा प्रेरित भावना से हुआ।

दुनिया के दूर देशों से जिज्ञासु लोग आते रहे, देखने के लिए कि हवाई जहाज के युग में इस पदयात्रा की पद्धति में क्या जादू है? पश्चिम में भी, शांति स्थापना के लिए, लड़ाई या अत्याचार का विरोध करने के लिए अच्छे विचारों का प्रचार करने के लिए पदयात्राएँ शुरू होने लगीं। अन्तर्राष्ट्रीय पदयात्राएँ भी चलने लगीं। कई देश के सेवक मिलकर, कई देशों में शान्ति और पारस्परिक समझौता कराने के लिए घूमने लगे। समुद्र में अणु विस्फोटक का विरोध करने के लिए नाव यात्राएँ भी निकलीं। हमारे देश के दो युवक शान्ति का सन्देश सुनाने के लिए अखिल विश्व की कांचनमुक्त पदयात्रा पर निकले। चीन भारत संघर्ष के दिनों में दिल्ली से एक अन्तर्राष्ट्रीय पदयात्रा पीकिंग के लिए निकली थी। हालांकि पाकिस्तान से होकर घूमने की इजाजत नहीं मिलने से वह यात्रा अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाई थी।

पदयात्राएं—विदेश में

फिर सघन पदयात्राओं की पद्धति का विकास हुआ। विलायत के अणुबम बनाने वाले कारखाने के लिए ५० मील दूर लन्दन से सघन पदयात्रा चली जिसमें हजारों लोग शामिल हुए। अब यह यात्रा हर साल चलती है। अमेरिका में कालों के नागरिक अधिकार पाने के आन्दोलन की पुष्टि में अब वाशिंगटन तक ऐसी सघन पदयात्राएं चलती हैं जिनमें काले लोगों के साथ गोरे लोग भी मिलकर सामाजिक न्याय और समानता के लिए अपनी आवाज उठाते हैं।

→

सामाजिक क्रान्ति की प्रतीक्षा है, अपेक्षा है महिलाओं से

हवाई जहाज के युग मे पदयात्रा एक बड़ी महत्त्वपूर्ण सामाजिक, सास्कृतिक क्रान्ति की प्रतीक है। और सास्कृतिक क्रान्ति के लिए बापू हमेशा बहनो को पुकारते थे। उन की सबसे प्रथम पुकार दक्षिण अफ्रीका मे, बहनो की इज्जत के कानूनी संरक्षण के लिए हुई थी, बाद में भारत मे, शराब के विरुद्ध नमक सत्याग्रह मे लाठी का सामना करने में, छुआछूत के कलंक को मिटाने के लिए, नई तालीम मे, सब में बापू ने बहनो को पुकारा बहनो ने अवसर उनका साथ दिया, कभी उन्हे धोखा नही दिया। नोआखाली की पद यात्रा मे बहनें पूरी यात्रा मे उनके साथ रही और उस त्रस्त क्षेत्र मे भी अकेली घूमती रही।

विनोबा की प्रथम पदयात्रा मे भी बहनें और बच्चे उनके साथ रहे। और भूदान और ग्रामदान यात्राओ मे भी, बहनो ने कमाल कर दिया। अब, इस साल मे, भारत की बहनो के सामने, पदयात्रा की पद्धति को आगे बढ़ाने का एक बड़ा मौका मिल रहा है—सघन पदयात्रा का विकेन्द्रीकरण।

११ अक्तूबर से १७ अक्तूबर तक भारत के जिले-जिले मे बहनो की पदयात्राए निकालने की योजना है।

हालाकि मैं बराबर उसकी तैयारी मे साथ दे रही थी तथापि मेरे मन मे शका बराबर रहती थी कि यह कैसे सभव होगा? लेकिन अब कस्तूरबा ग्रामसीकेरी मे मैसूर राज्य के प्रथम पूर्व तैयारी के शिविर मे स्पष्ट हुआ कि वास्तव मे यह पद्धति हमारी बहनो की प्रतिभा के लिए सर्वथा अनुकूल है। जो बहनें पहले-पहल कुछ तिरस्कार और शका की दृष्टि से सुनती थी, तीन दिनो के अन्त मे, इस सास्कृतिक पुकार के महत्त्व को सुनकर समझकर, इतनी सचल हुई हैं कि प्रथम बार अपने ग्रामीण केन्द्रो को छोड़कर ये एक ज्यादा व्यापक क्षेत्र मे, एक ज्यादा व्यापक सदेश को लेकर घूमेगी। भ्रष्टाचार, अश्लीलता से सांस्कृतिक पतन, विवाह मे गलत मूल्य, शृगार शोषण और अन्याय के विरुद्ध, बापू के आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए, बहनो को घर-घर मे इस काम को आगे बढाने की प्रेरणा देंगी।

विदा लेते समय आकाश उनके नारो से गूज उठा, हमारा मत्र—जय जगत, हमारा तत्र ग्रामदान, हमारा लक्ष्य विश्व शाति'—गाव-गाव से बहनो का अहिंसक संगठन उस विश्व शान्ति की नीव बनेगा, उस सदेश को अच्छी तरह समझकर, ये अपनी पड़ोसी बहनो मे फैलाती रहेगी और इस विचार से कि भारत के तीन सौ जिलो मे हजारो बहनें हमारे साथ घूम रही हैं, एक नई शक्ति महसूस कर रही है।

सर्वोदय पात्र, सुपात्र बनाता है

हंसा बहन अपने लड़के के साथ

बम्बई शहर हालांकि समुद्र किनारे बसा है फिर भी हर बड़े शहर की तरह यहां के घर छोटे-छोटे कूपों की तरह है, जिनमें रहने वाले उसी को दुनिया मान बैठते हैं। उन्हें ऐसे संकीर्ण कूपों से निकाल कर विशाल सुने समुद्र से जोड़ने के लिए सन् ६४ से श्रीमती हंसा बहन मुलुण्ड उपनगर में काम कर रही हैं। मुलुण्ड बम्बई का एक घनी आबादी वाला इलाका है। सन् ६२ के पहले बम्बई के सर्वोदय कार्यकर्ता एनी गडकर ने यहां के परिवारों से सम्पर्क शुरू किया था, और सन् ६४ तक इसी सम्पर्क के आधार पर डेनियल माभगावकर ने इस काम को आगे बढ़ाया। सन् ६४ के बाद श्रीमती डेनियल ने इसे एक नये ढंग से शुरू कर उसे सर्वोदय पात्रों तक पहुँचाया।

अन्न समस्या से भूदान में

श्रीमती हंसा माभगावकर ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश कस्तूरबा ट्रस्ट के माध्यम से किया था। वे गुजरात में अहमदाबाद के निकट बोचा नामक स्थान में कस्तूरबा केन्द्र में खादी प्रशिक्षण देती थीं। वहां पर्दा प्रथा थी, महिलाएं खेतों पर काम नहीं कर सकती थीं। फिर अकाल का दौर चला। आदमी बाहर मजदूरी ढूंढने निकलते लेकिन महिलाएं पर्दे के कारण घर पर रहतीं, ऐसी हालत में श्रीमती हंसा बहन को लगा कि हम इन्हें खाना नहीं दे सकते लेकिन कपड़ा तो दे ही सकते हैं, उन्होंने दस गांवों को चुनकर खादी प्रचार का व्यापक कार्यक्रम बनाया। वे अकाल के दौरान कपड़ा देती रहीं, खाने के बारे में सोचती रहीं। खाने की समस्या से वे जमीन के मसले तक आयीं और फिर भूदान आन्दोलन से जुड़ीं। फिर वे कस्तूरबा ट्रस्ट छोड़कर विनोबा की गुजरात पदयात्रा में शामिल रहीं। डेनियल माभगावकर से विवाह होने के बाद उन्होंने पहली बार बम्बई में आकर शहरी जीवन देखा।

खाना देने की उनकी तलाश मन में बहुत गहरी पैठ चुकी थी, ऐसी हालत में उन्हें बम्बई में कुछ भी न कर हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना असह्य अपराध ही लगा। उन्होंने तय किया कि वे इस परिस्थिति में कम से कम गांव से पूरी तरह कटे शहरी लोगों को फिर से गांवों की समस्या से जोड़ने का काम तो कर ही सकती हैं। माध्यम चुना सर्वोदय साहित्य प्रचार।

सर्वोदय साहित्य से शुरुआत

गांव के वातावरण से घनी आबादी वाले शहर में आकर काम शुरू करने में श्रीमती हंसा बहन के सामने कई तरह की दिक्कतें थीं। गांवों में वे किसी भी समय किसी भी घर में प्रवेश कर पाती थीं, यहां हरेक के दरवाजे बन्द रहते थे। घरों के आदमी सुबह ८ बजे दफ्तर चले जाते हैं, सत्तर हजार की आबादी वाले इस उपनगर में सुबह आठ से शाम आठ तक केवल महिलाएं और बच्चे रह जाते हैं, वे शहरों में होने वाले अपराधों से डर कर दरवाजा बन्द रखे रहते हैं। सीधे किसी भी घर में घुस जाना ठीक नहीं माना जाता—इस शहरी दिमाग को उनका मन कभी पकड़ नहीं पाया था। वे रोज सुबह घर का काम जल्दी निपटा कर, थैले में सर्वोदय साहित्य लेकर निकल पड़तीं। किसी का दरवाजा खटखटातीं तो झांकने वाले छेद से झांकती हुई भीतर की गृहणी सवालों की बौछार लगा देती—"तुम कौन हो? क्या बेचती हो? चौकीदार से पूछकर अहाते में आयी हो?" श्रीमती हंसा माभगावकर का कहना है कि, "बहुत महीनों तक लोग सर्वोदय साहित्य से भरे झोले को एक चोर के झोले की तरह शंकित होकर देखते रहे। धीरे-धीरे यहां के काफी लोग मुझसे, मेरे झोले से परिचित होने लगे। जहां पहले घरों में प्रवेश पाना असम्भव था, वहां धीरे-धीरे नये घरों में भी मुझे बुलाया जाने लगा। यहां मुलुण्ड के पश्चिमी भाग में कच्छ के बहुत से लोग आकर बसे हैं, उनसे गुजराती के 'भूमिपुत्र' पत्र के कारण बातचीत शुरू होने लगी। रोज सुबह निकलती शाम तक कोई सौ घरों में साहित्य व सर्वोदय पत्रिकाएं लेकर पहुंचती। कच्छी महिलाएं ज्यादातर अनपढ़ होती हैं, वे अपने ख्याल से कुछ नहीं खरीद सकती थीं। वे तब यह भी मानकर चलतीं कि इस झोले में शाम को थके लौटने वाले उनके पति, भ... आदि के लिए कोई किताब नहीं है, इसलि... सन् ६४ से ६६ के दौर में अधिकतर बालो... पयोगी साहित्य ही बिका करता था। दिन भर में औसतन १० रुपये का साहित्य बिकता था। जब इन घरों में काफी साहित्य बट चुका तब फिर मैंने धीरे-धीरे उनके सामने सर्वोदय पात्रों की योजना रखी। तब १००० घरों में साहित्य बटता था, और ५०० घरों में सर्वोदय पात्र चलने लगे।"

कूंओं की परिधि से ऊपर

"ज्यादातर लोगों ने तब इस योजना को बहुत बहस के बाद काफी सोच-समझ कर अपनाया था। धीरे-धीरे वे अपने संकीर्ण कूओं के ऊपर झांककर अपने आपको एक बड़े परिवार का सदस्य मानने लगे थे। दूसरे के सुख, दुख में सहानुभूति जगने लगी थी। इन घरों में सर्वोदय साहित्य और पत्रिकाओं की पहुंच भी व्यापक होने लगी थी। सर्वोदय विचार-प्रचार का तो काम ठीक चल रहा था, फिर भी सर्वोदय पात्रों की हालत उतनी अच्छी नहीं बन पा रही थी। हमारी ओर से भी कुछ दिक्कत थीं, सर्वोदय पात्रों में एकत्र अनाज का संग्रह करना, फिर उसे राशन की दुकान पर पैसे में बदलवाना तब कहीं उसका उचित वितरण करना—हमारे लिए भी एक लम्बी प्रक्रिया साबित हो रही थी। फिर एक

→

सुपात्र बनाता है..................
→

वार जब हम विनोवा के पास गये तो उनके सामने हमने यह समस्या रखी। बाबा ने एक दम कहा कि अनाज के बदले एक-एक पैसा डाला जा सकता है। उन्होंने तब केरल का उदाहरण भी दिया कि वहां सुपारी ज्यादा पैदा होती है तो वहां के लोग सर्वोदय पात्र मे सुपारी डाल सकते हैं।"

"फिर इस तरह यहा एक मुट्ठी अनाज के बदले एक पैसा डालना शुरू हुआ है। आज भी ५०० सर्वोदय पात्र नियमित रूप से चल रहे हैं। मैं केवल २०० सर्वोदय पात्र रखने वाले परिवारो से सम्पर्क कर पाती हूं। अब काम बढ रहा है। इसलिए धीरे-धीरे स्थानीय महिलाए इसे उठा सकें,ऐसी कोशिश कर रही हूं। मुलुण्ड के एक वकील, एक दो डाक्टर और एक इन्जीनियर ने भी इस काम को आगे बढ़ाने मे दिलचस्पी लेना शुरू किया है।"

हसा बहन रोज सुबह अपने पति डेनियल और दो बच्चो—माईकेल तथा मोजेस (जिन्हे विनोवा ने प्यार से लव और कुश कहा है) के साथ घर का काम निपटा कर सपर्क के लिए रवाना हो जाती हैं। साहित्य बिक्री, सर्वोदय पात्र आदि के अलावा इन परिवारो मे बम्बई मे देश के अन्य भागो से आने वाले सर्वोदय कार्यकर्ताओ पर बातचीत चलती है। अक्सर किसी न किसी परिवार से उन्हें अपने यहां ठहराने का, मुलण्ड उपनगर मे उनकी एक सभा आयोजित करने का निमंत्रण मिल जाता है। मुलुण्ड के ये परिवार सर्वोदय आन्दोलन के अनेक कार्यकर्ताओं को समय-समय पर ठहरा चुके हैं। लेकिन केवल सर्वोदय कार्यकर्ताओ से परिचित हो जाना सर्वोदय पात्र का लक्ष्य नही है। हसा बहन का कहना है कि अभी कोई परिवर्तन नही हुआ है यहा, पैसा भी कोई खास इकट्ठा नहीं हो पाता। यह काम उन्हे सर्वोदय कार्यकर्ताओ के माध्यम से जब दूर गाव के लोगो और उनके अगले ही दरवाजे पर रहने वाले पडोसी से उनके बीच की दूरी कम कर देगा तब हम अपने को इस काम मे सफल मान सकेंगे। ●

राजस्थान के कुछ ग्रामदानी गांवों का एक सर्वेक्षण कुमारप्पा ग्रामस्वराज्य संस्थान जयपुर की ओर से किया गया है। इस सर्वेक्षण में निम्नलिखित गांवों को शामिल किया गया है—सेजड़ावास (जयपुर), श्रीकृष्णपुरा (नागौर), असावा (सिरोही), गांधीग्राम (टोंक), सुन्दरराव (बांसवाड़ा) और नाथवाड़ा (सीकर)। इस सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों का एक संक्षिप्त अंश यहां प्रस्तुत है।

ग्रामदान से बनते नये मानवीय सामाजिक और आर्थिक सम्बन्ध

डॉ० अवधप्रसाद के सर्वेक्षण की रपट

ग्रामीण जीवन में कई स्तर पर सामाजिक सहृदयता का विकास होता है। ग्रामदान इस सहृदयता को और अधिक मजबूत करने का प्रयास करता है। भारतीय समाज व्यवस्था में वर्णाश्रम धर्म के आधार पर सामाजिक सम्बंधों का विकास हुआ है। परन्तु आज इस वर्णाश्रम धर्म की वकालत करना उचित नहीं है। वर्ण जातियों एवं उपजातियों के घेरे में घिर कर संकीर्णता का माध्यम बन चुका है। ग्रामदान सामाजिक सम्बन्धों में व्याप्त संकीर्णता को समाप्त करने का लक्ष्य रखता है। इस लक्ष्य की ओर बढ़ने के क्रम में कई चरण पार करने पड़ेंगे। परम्परागत समाज में जातिगत संकीर्णता को कम करना ही एक बड़ा सामाजिक परिवर्तन का काम है। ग्रामदान की घोषणा के बाद जातिगत संकीर्णता या छुआछूत तुरन्त समाप्त हो जायेगी ऐसी अपेक्षा रखना समाज व्यवस्था की वास्तविकता को नहीं समझने के समान है। हां, दिशा क्या है, यह महत्त्व की बात है।

यह उल्लेखनीय है कि जिस गांव में एक ही जाति के लोग हैं वहां एक प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध बनते हैं और विविध जाति के गांव में दूसरे प्रकार के। सुन्दरराव (आदिवासी) और गांधीग्राम एक जातीय गांव है। गांधीग्राम में हरिजन जातियां हैं। इन दोनों गांव में जातिस्तर पर भेद भाव देखने को नहीं मिलेगा। ग्रामदान के बाद इनके मन से जातिगत संकीर्णता दूर करने का प्रयास किया है। इस प्रयास का ठोस प्रमाण उनके मानस को देखकर लगाया जा सकता है। ये लोग परम्परा से नीच समझे जाते रहे हैं और स्वयं को हीन महसूस करते रहे हैं। आज जो परिस्थिति है उसमें इनका स्वाभिमान काफी मजबूत हुआ है। वे अपने को हीन नहीं समझते हैं। इस परिवर्तन को पास पड़ोस के उच्च जाति के लोगों के साथ व्यवहार, उठना-बैठना, बाजार में उनके साथ किया जाने वाले व्यवहार में सहज ही देखा जा सकता है।

आपसी सौहार्द

नाथवाड़ा एवं श्री कृष्णपुरा में सामाजिक—आर्थिक दृष्टि से मध्यम वर्ग के लोग हैं। सर्वेक्षण के दौरान इस बात पर आम सहमति देखने को मिली कि ग्रामदान के बाद विभिन्न जातियों में आपसी सौहार्द बढ़ा है। आपसी व्यवहार में जातिगत कठोरता काफी कम हुई है। इस कठोरता की सत्य गांव में जाकर कोई भी व्यक्ति कर सकता है। पास पड़ोस के गांव में जिस प्रकार का जातिगत व्यवहार है वह इन गांवों में नहीं मिलेगा। विविध जाति के गांवों में इस परिवर्तन को सहज ही परखा जा सकता है। असावा में प्रायः हर प्रकार की जातियां हैं। ब्राह्मण प्रधान इस गांव में ग्रामदान के विचार ने जातिगत संकीर्णता की गांठें किस हद तक ढीली की हैं उसे पास-पड़ोस के गांवों में ब्राह्मण तथा अन्य उच्च जाति के साथ अछूतों के व्यवहार को देखकर जाना जा सकता है। परम्परा से यहां जाति कट्टरता मौजूद थी। ग्रामदान के बाद विचार प्रचार के माध्यम से इस कट्टरता को कम करने का प्रयास किया गया है। अब यह स्थिति है कि अछूत जाति के लोग उच्च जाति के साथ एक मंच बैठते हैं, एक कुए पर पानी भरते हैं तथा व्यवहार में समानता का बर्ताव करते हैं। यह स्थिति पास के गांवों में नहीं है। यही स्थिति सेजड़ावास में देखने को मिलेगी। ग्रामदान के बाद जातिगत संकीर्णता के सम्बन्ध में किये गये साक्षात्कार एवं प्राप्त उत्तरों से स्थिति और भी साफ नजर आयेगी।

→

सामाजिक मूल्यों में परिवर्तन

जातिवाद में परिवर्तन की दिशा

वक्तव्य	प्रतिशत
१. कुओं पर नीच जाति के लोग भी पानी भरते हैं।	६०
२. मन्दिर में जाने पर प्रतिबन्ध नहीं है, जाते भी हैं।	७०
३. जातिगत सकीर्णता कम हुई है।	७०
४. ग्रामसभा की बैठक के निर्णय मे पिछड़ी जाति के लोगो का भी पूरा सहयोग रहता—वे खुल कर बोलते है।	६०

एक बात का उल्लेख करना जरूरी है। इस बात की खोज करना कि अन्तर्जातीय विवाह की तैयारी या इसी प्रकार के क्रान्तिकारी कदम उठ सके हैं या नहीं उचित नहीं है। अन्तर्जातीय विवाह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर विचार करना अलग बात है। इस बात की खोज करने वाले स्वयं पर इस प्रश्न को लागू करें एव प्रगतिशील कहे जाने वाले लोगों मे इस बात का सर्वेक्षण करें कि वे इस दिशा मे कितने आगे बढे हैं।

पारिवारिकता का विकास

सामाजिक मूल्यो मे परिवर्तन की दृष्टि से सामाजिक सम्बन्धो के विभिन्न पक्ष मे हुए परिवर्तन को देखना आवश्यक है। जातिगत सकीर्णता से मुक्त होना एक पक्ष है। विवाह, पडोसी के साथ व्यवहार, रीति-रिवाज मे परिवर्तन का भी खास महत्व है। गाधीग्राम मे मृत्युभोज न करने तथा विवाह मे अधिक व्यय न करने की परम्परा विकसित हुई है। यही परम्परा श्रीकृष्णपुरा एव सेजडावास मे भी विकसित की गयी है। विवाह मे व्याप्त रूढियो के कारण परिवार जिस आर्थिक सकट का सामना करता एवं मृत्यु के दु.ख मे भोज का जो स्थान बन चुका था, उससे मुक्त होने का प्रयास सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कदम माना जाना चाहिये। परिवार सबसे छोटी तथा सबसे मजबूत सामाजिक सस्था है। व्यक्ति के विकास मे इसका प्रमुख स्थान है। ग्रामदान के बाद गाव परिवार के रूप मे विकसित हो इस दिशा मे सोचा जाना प्रारम्भ होता है। यह तभी सम्भव है जब हर परिवार मे शान्ति एव सद्भाव हो तथा पडोसीपन की भावना का विकास हो। परिवार मे आन्तरिक तथा एक दूसरे परिवार के साथ सम्बन्धो मे मधुरता लाने का प्रयास किया गया। प्राय सभी गावो मे इस प्रकार के प्रयास किये गये है। १ पारिवारिक झगडे कम हो और यदि हो तो इसका निपटारा गाव मे ही हो जाय २ ग्रामसभा मे सभी परिवार के लोग आयें और सबके मत का समान महत्व हो ३ गाव के झगडे अदालत मे न जायें। यह जानकर आश्चर्य हुआ कि ग्रामदान के बाद गाव के गिने-चुने झगडे ही अदालत मे गये हैं। स्थिति इस प्रकार बनी कि जो झगडे अदालत मे थे वे भी वापस ले लिये गये।

जमीन का वितरण

ग्रामदान जमीन का सामूहीकरण या सहकारी खेती का आन्दोलन नहीं है। यह तो गाव को हर दृष्टि से एक सूत्र मे बाधने का प्रयास करता है। और प्रथम चरण के रूप मे चार शर्तों को मूर्तरूप देने का प्रयास करता है। यह अपेक्षा रखना कि ग्रामदान के बाद जमीन का समान वितरण होगा एव सामूहिक खेती होगी, विचार को न समझने के समान है। ग्रामदान के बाद जमीन का केन्द्रीकरण उस समय कम होगा जबकि व्यक्ति अपनी जमीन का २० वा हिस्सा निकालेगा और भूमिहीनो को देगा। ग्रामदान के बाद भूमिहीनता समाप्त होती है यह ग्रामदानी गाव मे देखा जा सकता है।

ग्रामदान के बाद भूमिहीनता विवरण

गाव	वितरित भूमि (बीघा मे)	परिवार स०
१. सुन्दरराव	१२०	२०
२. गाधीग्राम[1]	—	—
३ मायवाडा	२३	४
४ श्रीकृष्णपुरा[2]	२७७	६
५ असावा	६०	३
३ सेजडावास[3]	१६६	१३

[1] गाधीग्राम भूदान की जमीन पर पर बसा गाव है।

[2] गाव के ६ भूमिहीनो के अतिरिक्त अन्य कम जमीन वालो को भी जमीन दी गयी है।

[3] इस गाव मे जोत की जमीन कम थी। आस पास के गाव से जमीन प्राप्त कर उसका वितरण किया गया।

वितरण कैसे

जमीन वितरण ग्रामसभा की बैठक मे किया जाता है। ग्रामसभा को इसका पूरा अधिकार है। साधारणत. हरिजन एवं पिछडी जातिया भूमिहीन होती हैं और उन्हें जमीन दी जाती है पर यदि अन्य जाति के लोग भी भूमिहीन हैं तो उन्हे भी जमीन दी जाती है। जहा एक इच जमीन के लिए खून बहता है वहा स्वेच्छा से इतनी जमीन बटना क्रातिकारी कदम माना जायेगा। फिर ग्रामदान के बाद जमीन सम्बन्धी झगडे काफी कम हुए हैं, यह कहीं भी देखा जा सकता है। सर्वेक्षित गावो मे सामान्य तथा जमीन सम्बन्धी झगड़े अदालत में नहीं हैं। सेजडावास, श्रीकृष्णपुरा, सुन्दरराव मे जमीन सम्बन्धी अनेक झगड़े अदालत से वापस आये एव ग्रामसभा द्वारा सुलझाये गये।

—

ग्रामदान सरकार के प्रगतिशील कानूनों को मूर्तरूप देने में भी सहायक सिद्ध होता है। ग्रामदान व्यक्तिगत स्वामित्व की जड़ को हिलाता है और प्रथम चरण के रूप में एक हिस्सा भूमिहीनों में बाटता भी है। सरकार यदि जमीन का समान वितरण कम करना चाहती है तो ग्रामदान इस कार्य में सहायक होता है। वास्तव में तो ग्रामदान व्यक्तिगत स्वामित्व के स्थान पर ग्रामस्वामित्व की स्थापना की ओर बढ़ना प्रारम्भ करता है। सरकार के प्रगतिशील कानून में ग्रामदान बाधा पहुंचाता है, ऐसा उदाहरण देखने को नहीं मिला। वास्तविकता तो यह है कि सरकारी कानून ही इस प्रकार के हैं, जिनमें कानून से बच निकलने के रास्ते छोड़ दिये जाते हैं। सरकार यदि वास्तव में जमीन की असमानता दूर करना चाहती है तो ग्रामदानी गांव एवं उनमें लगे लोग इस कार्य में मदद करते हैं।

आर्थिक विकास

ग्रामदान आर्थिक विकास को नई दिशा प्रदान करता है। उत्पादन में सहयोग एवं उपभोग में सहयोग का प्रयास ग्रामदान के बाद प्रारम्भ होता है। गांव में उत्पादन में सहयोग का विकास है। इसके लिए कई ग्रामदानी गांवों में खेती के कार्य में सहयोग की परम्परा विकसित हुई है। सुन्दरराव एवं सेजड़ाराम में ग्रामसभा इस बात का प्रयास करती है कि सामान्यतया किसी की खेती पिछड़े नहीं। यदि किसी परिवार के पास कतिपय कारणों से हल-बैल, बीज या श्रमशक्ति का अभाव है तो ग्रामसभा कुछ शर्तों के साथ इस अभाव की पूर्ति करती है। गांव का अन्तिम वर्ग जो कि भूखा रहता है, जिसके पास जीविका का आधार नहीं है उनके लिए इन गांवों में ये प्रयास किये गये हैं—

१. भूमिहीनों को भूमि दी गई।

२. ग्रामसभा ऐसे किसानों की कृषि कार्य में मदद करती है जो कि कतिपय कारणों से कृषि नहीं कर पाते हैं।

३. अकाल या अन्य कष्ट के समय ग्रामकोष या अन्य तरीकों से जरूरतमन्द की मदद करना।

सुन्दरराव की ग्रामसभा ने कृषि के लिए बीज का प्रबन्ध किया है। समय पर किसान को अच्छा बीज प्राप्त हो जाय इस आवश्यकता की पूर्ति यहां की ग्रामसभा करती है। पूर्ति के लिए परिवार से कुछ न कुछ अन्न जमा किया जाता है। इस समय ग्रामसभा के पास ६० क्विंटल गेहूं एवं धान जमा है। अन्य गांवों में विभिन्न कार्यों के लिए श्रमदान एवं नकद चन्दा एकत्र किया जाता रहा है।

ग्रामदान के बाद इन गांवों में कई निर्माणकार्य हाथ में लिये गये। ये सारा निर्माण कार्य गांव की सामूहिक शक्ति के सहयोग से किया गया है। ग्रामदान के बाद गांव की श्रम शक्ति के सहयोग से किये गये निर्माण कार्य का इस रूप में दर्शन है—

साधन एवं नकद धन प्रदान करते हैं।

आर्थिक विकास के कार्य में ग्रामसभा मुख्य भूमिका निभाती है। जहां की ग्रामसभा जितनी सक्रिय है वहां उतना ही विकास कार्य हो सका है। ऐसा पाया गया कि ग्रामसभा उन कार्यों को पहले हाथ में ले पाती है जिसमें सबका हित है। निर्माण कार्य में गरीब तबके के लोगों का सहयोग-प्राप्त करने के लिए श्रमदान की पद्धति उपयोगी सिद्ध हुई है। साथ ही साथ ऐसे निर्माण कार्य भी हाथ में लिए गए हैं जिनसे बेकार को—खासकर मजदूर को—मजदूरी प्राप्त हो सके। निर्माण कार्य से एक ओर आर्थिक विकास को गति मिली तो दूसरी ओर जरूरतमन्द को गांव में ही काम मिला तथा ऐसे कार्य हुए जिनसे भविष्य में उन्हें ही उससे लाभ प्राप्त होगा।

आर्थिक विकास के कार्य

गांव	अनुदान एवं नकद कर्ज (रु०)	श्रमदान एवं साधन सहयोग (रु०)	निर्माण कार्य
१ सुन्दरराव	३५६५०-००	४६७८०-००	कुआं, पम्पिंगसेट, बीज गोदाम, दुकान, विद्यालय, सभा भवन।
२ श्रीकृष्णपुरा	२८५००-००	११७५०-००	तालाब, कुआं, पानी का टैंक।
३ नायकाड़ा	१५००-००	१८५००-००	बांध, विद्यालय, सड़क
४ सेजड़ाराम	१३५०-००	३८५०-००	विद्यालय, सार्वजनिक कुआं, मन्दिर।

सुन्दरराव पहाड़ी क्षेत्र है। सीढ़ीनुमा खेत होने के कारण सिंचाई के लिए जगह-जगह बांध बनाकर सिंचाई का प्रबन्ध किया जा सकता है। इस दृष्टि से ग्रामसभा इस बात के लिए हमेशा प्रयत्नशील है कि अधिक से अधिक बांध बनें। ग्रामदान के बाद व्यक्तिगत एवं सामूहिक श्रमदान से अनेक बांध बनाये गये एवं सिंचाई का प्रबन्ध किया गया। उक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि प्रायः सभी गांवों में द्रव्य के श्रम एवं साधन सहयोग से निर्माण कार्य को पूरा किया गया। ग्रामीणों का सहयोग मुख्यतः दो प्रकार से प्राप्त हुआ है। एक, श्रमदान करके और दूसरा जिनके पास साधन हैं वे

पिछले २५ वर्षों में दलगत राजनीति ने समाज को हर स्तर पर तोड़ने का काम किया है। इस बात की पुष्टि के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है कि दलगत राजनीति एवं ग्रामस्तर के राजनैतिक संगठन गांव में किस प्रकार कटुता का विकास करता है। वोट के दम पर गांव एवं घर को तोड़ने का भरसक प्रयास किया जाता है। चुनाव चाहे दलगत संगठन का हो या पंचायत जैसी कल्याणकारी संस्था का हो सबसे वोट प्राप्ति के लिए दिलों को तोड़ा जाता है। लोकतन्त्र के नाम पर लोकमत को विकृत करने का इससे अच्छा उदाहरण देखने को नहीं मिलेगा।

→

लोकनीति

ग्रामदान गाव मे लोकनीति के विकास का एक प्रयोग कर रहा है। ग्रामदानी गाव लोकनीति पर चलने का प्रयास करता है। हम यहा स्पष्ट करना चाहेंगे कि जबकि पूरे समाज का वातावरण लोकतान्त्रिक मूल्यो को समाप्त करने की ओर है, ग्रामदान के इस प्रयोग का खास महत्त्व है। इस प्रयोग की सीमा को स्वीकार करते हुए इस बात की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए कि ग्रामदान के बाद गाव मे तुरन्त लोकनीति का लक्ष्य प्राप्त जायेगा। आखिर ग्रामदान के बाद भी गाव में वे ही लोग रहते है जो कल तक दलगत राजनीति के दल-दल मे फसे थे। फिर पूरे समाज मे उनके प्रयोग के विपरीत वातावरण है। इस विपरीत परिस्थिति मे यदि ये गाव एक कदम भी लक्ष्य की ओर बढ सकें तो बड़ी उपलब्धि मानी जानी चाहिए।

सर्वेक्षित गावो में यह देखने को नही मिला कि ग्रामदान के बाद ग्रामीण राजनीति मे कटुता बढी है। ग्रामीण राजनीति मे गुटबन्दी, स्वार्थ, आदि स्वभाव बन गया है। इस स्वभाव से मुक्ति पाना सहज नही है। ग्रामदान ग्रामसभा के माध्यम से लोकनीति की स्थापना का एक प्रयास है। इस प्रयास मे निर्णय प्रक्रिया मे "सर्व" को स्थान प्राप्त है। ग्रामदान मे सर्वसम्मति से निर्णय किया जाता है। समाज का अछूत तथा हर दृष्टि से दबा व्यक्ति समान मच पर आकर निर्णय-प्रक्रिया मे हाथ बंटाता है। व्यवहार मे इस समान मंच का खास महत्त्व भले न दीखे पर इससे विभिन्न सामाजिक स्तर के लोगों को समान सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और हर वर्ग के लोग एक दूसरे को समझने का प्रयास करते हैं। इसमे नौकरशाही का प्रभुत्व न होकर लोक व्यवस्था होती है। जनता अपना प्रशासन, अपनी व्यवस्था स्वय करती है।

ग्रामदानी गाव इस दिशा मे चलने के लिए प्रयत्नशील है। आवश्यकता है इस प्रयत्न को आगे बढाने की। ग्रामस्तर के नेतृत्व को पर्याप्त प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि उनका वैचारिक आधार मजबूत हो सके और उनमे विपरीत परिस्थितियो का मुकाबला करने की क्षमता आये।

ग्रामदान के बाद स्वामित्वगत मूल्यो मे परिवर्तन की दिशा क्या है यह भी विचारणीय है। यह सामान्य अनुभव है कि ग्रामदान के बाद व्यक्तिगत स्वामित्व के स्थान पर ग्रामस्वामित्व (सामूहिक स्वामित्व) की जड़ें मजबूत हो रही हैं। जमीन सम्बन्धी झगडे तो कम हुए ही है साथ ही साथ यह धारणा भी मजबूत हुई है कि ग्रामदान जिस प्रकार की स्वामित्वगत व्यवस्था प्रस्तुत करता है इससे सबको लाभ है और यह विचार सरकार के किसी भी प्रगतिशील कानून से अधिक प्रगतिशील है। जमीन के समान वितरण की ओर बढने के प्रथम कदम के रूप मे २० वें हिस्से का पुर्नवितरण तत्काल प्रारम्भ हो जाता है और भविष्य मे ग्रामसभा स्वयं के निर्णय द्वारा आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए स्वतन्त्र होती है। प्रथम कदम के रूप मे उत्पादन मे सहयोग की भावना को मूर्तरूप देने का प्रयास किया जाता है।

सर्वोदय आन्दोलन, भू-दान, ग्रामदान आदोलन किसी प्रकार का करिश्मा नही है और न यह कोई धार्मिक आन्दोलन ही है। हा, यह आन्दोलन धार्मिक एव नैतिक मूल्यो को स्वीकार करता है। कानून इस आन्दोलन मे बाधक नही है। कानून इसमे उसी सीमा तक साथ देता है जब तक कि वह इसमे सहायक है। सिद्धान्त एव व्यवहार के सन्तुलन को कायम रखने के लिए कानून जितना आवश्यक है ग्रामदान उतना कानून स्वीकार करता है। इस वैचारिक आन्दोलन को मूर्तरूप देने का प्रयास कुछ ग्रामदानी गाव कर रहे है। गाधीजी ने सिद्धान्त और व्यवहार का सन्तुलन साध्य-साधन की समरूपता के रूप मे प्रस्तुत किया है। जब सिद्धान्त व्यवहार के लिए प्रतीक्षा नही करता और साथ-साथ चलता है तो क्रान्ति की प्रक्रिया वह नही होगी जो साम्यवाद या अन्य विचारधारा मे होती है। ग्रामदान तो तत्काल सिद्धान्त को व्यवहार मे लागू करता है। साध्य की ओर बढने के लिए साध्य अनुरूप ही साधन को स्वीकार करता है। सिद्धान्त और व्यवहार, साध्य एव साधन के इस सन्तुलन मे क्रान्ति की एक अहिंसक प्रक्रिया होती है जो कि परम्परागत क्रान्ति की प्रक्रिया से भिन्न है। आवश्यकता है भिन्न प्रक्रिया को समझने की।

→

समर्पणकारी बागियों को ८७,२२५ रुपये तथा बागियों द्वारा पीड़ित १२ परिवारों को १५,४०० रुपये पुनर्वास-सहायता दी जा चुकी है। सहायता देने का क्रम जारी है।

छात्रवृत्ति : आत्मसमर्पणकारी बागियों के २०५ बच्चों को ५५,३७१ रुपये और बागियों द्वारा पीड़ित परिवारों के १४०७ बच्चों को ३,१३,६७२ रुपये छात्र-वृत्ति के रूप में प्रदान किये गये हैं।

वर्ष ७३-७४ के लिए ११,३५,१४० रुपये की धनराशि स्वीकृति की गयी है। जो कि चम्बल-क्षेत्र के ६ जिलों (ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना, गुना, शिवपुरी और दतिया) को वितरण के लिए दे दी गयी है। छात्रवृत्ति के १२७५ प्रकरण अभी लम्बित हैं।

शासकीय-सेवा : ३ आत्मसमर्पणकारी बागियों के तथा बागियों द्वारा पीड़ित ८६ परिवारों के बच्चों को शासकीय-सेवा में लिया गया है।

भूदान भूमि : म० प्र० भूदान यज्ञ बोर्ड, भोपाल द्वारा १३ आत्मसमर्पणकारी बागियों को कृषि योग्य लगभग १३० एकड़ भूदान भूमि दी गयी है।

उत्तरप्रदेश राज्य शासन द्वारा : आत्मसमर्पणकारी बागी श्री गयाप्रसाद (जालौन) को ५ बीघा जमीन, रहट, हल तथा बीज आदि के लिए ५०० रुपये की नकद सहायता एवं लड़के की पढ़ाई के लिए १० रुपये प्रति माह की छात्रवृत्ति की संस्तुति की गयी है।

आत्मसमर्पणकारी श्री शहीद खां (इटावा) को ५ बीघा जमीन एवं तीन माह के लिए अन्तरिम-सहायता के रूप में २ क्विन्टल खाद्यान्न देने की संस्तुति की गयी है। श्री गोविन्द सिंह (जालौन) के भाई रूपसिंह को रुपये बीस प्रति माह की छात्रवृत्ति की संस्तुति की गयी है।

नवसंस्कार

आत्मसमर्पणकारी बागियों में नये संस्कारों के लिए मिशन प्रारम्भ से ही प्रयत्नशील है। ग्वालियर, नरसिंहगढ़ और सागर जेल में देश के अनेक मनीषी और विद्वानों के सत्संग का लाभ आत्मसमर्पणकारियों को मिला है। प्रवचन, कथा, गीत-रामायण पाठ, भजन-पूजन के अलावा इस कार्यक्रम में खेल-कूद, मनोरंजन, पी० टी० परेड तथा बिना पढ़े-लिखे समर्पणकारियों के लिए लिखाई-पढ़ाई आदि का कार्यक्रम चलता रहा है।

सागर जेल में आत्मसमर्पणकारियों के बीच गांधी विद्यापीठ वेडछी, (गुजरात) के स्नातक-अध्यापक-मन्दिर के ३० भाई बहनों द्वारा ४ सितम्बर ७३ से १४ सितम्बर ७३ तक एक शिविर का आयोजन मिशन द्वारा किया गया। समर्पणकारियों ने शिविर में काफी उत्साह से भाग लिया। सभी ने इस शिविर की सराहना की है। गुजरात के इन्हीं साथियों ने गत वर्ष ग्वालियर जेल में भी आत्मसमर्पणकारियों के बीच इसी प्रकार का एक शिविर लगाया था।

सर्वश्री धीरेन्द्र मजूमदार, सरलाबहन, काशीनाथजी त्रिवेदी, रामगोपाल दीक्षित, और वसन्तकुमार सिन्धु का इस दिशा में योगदान उल्लेखनीय है।

महिला-लोक यात्रा

पूज्य विनोबाजी के परामर्श के अनुसार चम्बल घाटी क्षेत्र में महिला-लोकयात्रा २ मई से १५ अगस्त ७३ तक चली। यात्रा का शुभारम्भ सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने किया। सरोज गुप्ता पूरे समय यात्रा में रहीं। सुश्री अन्नपूर्णा महाराणा, पद्मा भावसार, शारदा देसाई, मीरा भट्ट, वृन्दा बालम्बीकर, दीपा बुर्ते, जमु चौधरी, हरविलास शाह, शकुन्तला पाण्डे, गीता, शिवकुमारी शर्मा, प्रेमलता शर्मा, वीरकाला शर्मा, लक्ष्मी शर्मा आदि बहनों ने महिला-लोकयात्रा में समय-समय पर रहकर योगदान दिया।

ग्वालियर की सुप्रसिद्ध समाजसेविका श्रीमती चन्द्रकला सहाय ने मां की तरह यात्रा की देखभाल की और अनेक पड़ावों पर यात्रा में साथ रहीं। श्रीमती कमला देवी यादव ने भी श्योपुर क्षेत्र में यात्रा के पड़ावों पर पहुंच कर यात्री बहनों का उत्साह बढ़ाया।

महिला-लोकयात्रा चम्बलघाटी के चार जिलों में हुई। लगभग १०५ गावों में यात्रा का पड़ाव हुआ। हजारों भाईयों और बहनों ने पदयात्री-बहनों के विचारों का लाभ उठाया। सत्य, प्रेम, करुणा का सन्देश और ग्रामस्वराज्य का विचार गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचा।

चम्बलघाटी क्षेत्र में यह अभूतपूर्व और अनूठा आयोजन था। लोग कहते सुने गये कि हमारे इलाके में आज़ादी तो अब आयी है। बहनों के पराक्रम की सर्वत्र सराहना हुई।

महिला-लोकयात्रा को ग्वालियर की महिला संस्थाओं का सहयोग मिला। जिला सर्वोदय मंडल, जिला ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य समिति, ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना और शिवपुरी, मध्यप्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड भोपाल, तथा पंचायत एवं शिक्षा विभाग के सहयोग से मिशन ने यात्रा का आयोजन किया। सर्वश्री प्रेमनारायण शर्मा, राजकुमार चौबे, रामसेवक पाठक, डा० मनोहरलाल मेहता श्री मथुराप्रसाद नामदेव, नाथूराम धाकड़ चन्द्रभान सिंह, सोबरनसिंह, भवानीशंकर पाठक और शिवचरण लाल दीवान ने यात्रा की व्यवस्था में विशेष सहयोग दिया।

लगभग सभी बागी सरदारों ने अपने अपराध स्वीकार किये : चम्बल तथा बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लगभग सभी प्रमुख बागी सरदारों ने हत्या के आरोप में अपने अपराध न्यायालय में स्वीकार किये हैं।

समाचार

आत्मसमर्पणकारी विनोबाजी से मिले

आत्मसमर्पणकारी बागी सरदार माधोसिंह कल्याणसिंह, रामसहाय, मोहरसिंह, मोतीराम मूरतसिंह, मकरसिंह और पलटनिया ने विनोबा से उनके आश्रम परंधाम पवनार में भेंट की और अपना जीवन सुधारने के लिए उनका मार्गदर्शन प्राप्त किया।

चम्बर चरखे : मिशन की ओर से केन्द्रीय-जेल ग्वालियर में ७५ और नरसिंहगढ़ उप जेल में दो नये माडल के चम्बर चर्खे चालू किये गये हैं।

इस कार्य के लिए जे० सी० मिल्स ग्वालियर ने ५,००० रुपये (पांच हजार) की देन स्वीकार किया है।

श्री रामस्वरूप दिवंगत : केन्द्रीय जेल ग्वालियर में आत्मसमर्पित-बागी श्री रामस्वरूप (जिला मुरैना) का बीमारी के कारण निधन

→

हो गया। सभी आत्मसमर्पणकारियों ने अपने साथी के निधन पर एक दिन का उपवास रखा।

श्री मथुराप्रसाद की हत्या : आत्मसमर्पणकारी श्री रामप्रकाश शर्मा के पिताजी श्री मथुराप्रसाद शर्मा की उनके विरोधियों द्वारा हत्या कर दी गयी। यह घटना उस समय घटी जब कि श्री रामप्रकाश पैरोल पर अपने गांव उदोनगढ़ गये हुए थे।

राजस्थान शासन द्वारा १०,००० रुपये : राजस्थान राज्य-शासन ने, मिशन को शांति कार्य के लिए १०,००० रुपये (दस हजार) की सहायता स्वीकृत की है। स्वीकृत-धनराशि अभी प्राप्त नहीं हुई है।

उत्तरप्रदेश शासन द्वारा १,००,००० रुपये : उत्तरप्रदेश के आत्मसमर्पणकारी बागियों तथा उनके द्वारा पीड़ित परिवारों की सहायता के लिए उत्तरप्रदेश राज्य शासन ने १,००,००० रुपये (एक लाख) की सहायता मिशन को देना स्वीकार किया है। स्वीकृत धनराशि अभी प्राप्त नहीं हुई है।

अनहोनी घटना : दिनांक ८ अगस्त ७३ को जयारोग्य अस्पताल ग्वालियर में इलाज के लिए जेल से आये १२ बागियों और मेडीकल कालेज के छात्रों के बीच हुए संघर्ष को मिशन और बागियों ने दुखद, खेदपूर्ण और अनहोनी घटना माना है।

आत्मसमर्पणकारी बागी पैरोल पर : मध्यप्रदेश शासन की उदार नीति के अनुसार आत्मसमर्पणकारी बागियों को पैरोल पर छोड़ने का क्षेत्र में अच्छा असर हो रहा है। सदियों से चली आ रही आपसी कटुता कम हो रही है। परस्पर सद्भाव बढ़ रहा है। वातावरण नम हो रहा है। लगभग ८० प्रतिशत आत्मसमर्पणकारी पैरोल का लाभ उठा चुके हैं।

धीरेन दा सागर, ग्वालियर तथा नरसिंहगढ़ में : देश के सुप्रसिद्ध विचारक श्री धीरेन्द्र मजूमदार २६ अगस्त से ३० अगस्त तक सागर में, ३१ अगस्त से ८ सितम्बर तक ग्वालियर में तथा ६ से १० सितम्बर तक मिशन के मेहमान रहे।

वृहत्तर-ग्वालियर के शिक्षक, शिक्षिकाओं, रचनात्मक कार्यकर्ताओं, पत्रकारों, व्यापारियों, महिलाओं तथा नगर पालिक निगम के पार्षदों, महापौर, उपमहापौर आदि ने धीरेन्द्र दा से गप की और उनके विचारों से लाभ उठाया। सागर में बहनों तथा नगर पालिका के सदस्यों के बीच कार्यक्रम हुए। केन्द्रीय-जेल ग्वालियर में दो दिन तथा जिला-जेल सागर में एक दिन आत्मसमर्पणकारियों के बीच धीरेन्द्रदा की गप-गोष्ठियां चलीं।

हेमदेव शर्मा

मंत्री, चम्बल घाटी शांति मिशन, कम्पू, लश्कर, ग्वालियर (म० प्र०) द्वारा प्रसारित

सर्व सम्मति ही सब कुछ है

—योगेश चन्द्र बहुगुणा

सेवाग्राम मे २१ सितम्बर से २३ सितम्बर तक सम्पन्न हुए लोकसेवकों के अधिवेशन को इस माने मे ऐतिहासिक माना जा सकता है कि इसमे अपनी अब तक की विफलताओं को शाब्दिक तर्क जाल मे उलझाने के बजाय आगे की दिशा मे बढने के लिए नये आयाम तलाश करने का प्रयत्न किया गया। नारायण देसाई के शब्दो मे सर्वोदय आन्दोलन को सेवाग्राम मे एक 'थ्रैंक यू' मिला है। अधिवेशन मे औपचारिक चर्चाओं की अपेक्षा आपसी बहस व विचार मथन का जोर रहा।

अधिवेशन का प्रारम्भ २१ को सुबह अखिल भारतीय रचनात्मक सस्थाओं के प्रतिनिधियो के सम्मेलन के साथ हुआ। अधिवेशन के इस सत्र के अध्यक्ष के रूप मे देवेन्द्र कुमार गुप्त ने अपने प्रस्ताविक भाषण मे आशा प्रकट की कि यह सम्मेलन सर्वोदय आन्दोलन और रचनात्मक सस्थाओं को नजदीक लाने के प्रयत्न मे सफल होगा। इस सम्मेलन से पूर्व इसी स्थान पर राष्ट्रीय परिषद की एक दिवसीय बैठक सम्पन्न हो चुकी थी। परिषद मे स्वीकृत निवेदन को लोकसेवको व रचनात्मक सस्थाओं के प्रतिनिधियो के सामने विचारार्थ रखा। नारायण देसाई ने और उस पर निर्मला देशपाण्डे और सोमदत्त जी ने अपना मन्तव्य रखा।

आशा का दीप

आचार्य कृपलानी पूरे अधिवेशन मे उपस्थित नही रह सके परन्तु पहले दिन उनके विचारों का लाभ मिला। महादेव-भाई भवन के हाल को प्रतिनिधियो से खचाखच भरा देख कर कृपलानी जी ने कहा "देश मे बहुत से लोग हैं जो आज की परिस्थिति से निराश हैं, मैं स्वीकार करता हू कि मैं भी उन लोगो मे से एक हू। परन्तु आप लोगो के बीच आकर मेरी निराशा कुछ कम हुई है। हमारे काम मे कमजोरी कोआरडिनेशन की है।"

यह अधिवेशन भी कुछ आदर्श और कुछ कार्यक्रमों की बातें करने के बाद शायद समाप्त हो जाता अगर सर्व सेवा सघ के मत्री ठाकुरदास बग कुछ रूढ शब्दो का प्रयोग न कर बैठते। उन्होने कहा "सेवाग्राम के इस सम्मेलन मे लोक सेवक सघ का एक नया अवतार हो रहा है। हमारे काम का एक व्यापक क्षेत्र बन रहा है। सर्वोदय आन्दोलन का पोलिटिकलाइजेशन हो रहा है। यह सेवाग्राम का सदेश है। बाबा (विनोबा) का आशीर्वाद हमे मिला है।"

ओफ ! एक शब्द

उनके पोलिटिकलाइजेशन ने लोगो मे असतोष और उत्तेजना पैदा कर दी इसलिए २२ को सुबह जब अधिवेशन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई तो निर्मला देशपाण्डे ने आपत्ति पेश की। 'हम सर्वोदय आन्दोलन का पोलिटिकलाइजेशन (राजनीतिकरण) चाहते हैं या स्पिरिचुलाइजेशन, आध्यात्मीकरण ? अगर राजनीतिकरण चाहते हैं तो कृपया विनोबाजी का नाम इसके साथ न जोडिये।" तालियो की गडगडाहट से लगा कि उन्होने पूरे सदन की भावना प्रस्तुत की। प्रकाश भाई, रामचन्द्र राही ने भी कुछ इसी तरह के विचार प्रकट किये। इनको लगा कि सर्वोदय को एक राजनैतिक पक्ष का रूप दिया जा रहा है। डॉ० दयानिधि पटनायक ने तो यहा तक कहा कि यदि सघ की भावना 'गणानुगतिक' ही है, तब तो मुझे कुछ नही कहना है लेकिन यदि भावना कुछ दूसरी याने राजनैतिक दिशा देने की है तो हमें बहुत कुछ कहना है। नाक भण्डारी का जहा विचार था कि "पोलिटिकल को आध्यात्मिक बनाना भी पॉलिटिक्स ही है', वहां नारायण देसाई ने इस बारे मे काफी स्पष्टता की। उन्होने कहा "हमारे मत्री ने एक शब्द इस्तेमाल किया उस पर अविश्वास करना अपनी पारस्परिकता को चोट पहुचाना है। इस आदोलन ने कई न्ये शब्द बनाये हैं। हमे अपने आदोलन को नया वेग देने के लिए नये आयामों की जरूरत है इतना ही बग साहब का मन्तव्य था।" इसकी स्पष्टता अन्त मे धीरेनदा ने की। उन्होने कहा "मुझे लगता है कि शब्दो की गलतफहमी हुई है। पोलिटिक्स इस देश मे वह भवानी है जो सिर पर चढ़ कर बोलती है इसलिए इस शब्द का समझबूझ कर प्रयोग करना चाहिए। पालिटिक्स वालो की जो पद्धति है उसमे से उस निवेदन (राष्ट्रीय परिषद का निवेदन) के द्वारा आगे बढ़े हैं। उन्होंने कोई मार्गदर्शन आपको नही दिया है। उनका यह कदम हमारे काम के लिए बहुत मददगार होगा।" शब्द के सम्यक प्रयोग न होने के कारण कितनी भ्रान्तिया हो सकती हैं यह घटना जहा इस ओर इगित करती है वहा इस तथ्य की ओर भी ध्यान दिलाती है कि 'पुराने शब्दो पर नये अर्थ की कलम लगाने' को विचार क्रान्ति की अहिंसक प्रक्रिया मानने वाले लोग शब्दो के प्रयोग के प्रति कितने असहिष्णु हैं।

सत्याग्रह, हत्याग्रह नहीं

तात्कालिक समस्याओं व समाज मे होने वाले अन्यायो व अत्याचारो का मुकाबला करने के लिए गाधी प्रेरित सत्याग्रह पद्धति का अमल होना चाहिए या नही यह सर्व सेवा सघ के प्रस्ताव के बावजूद भी विवाद का विषय रहा है। १९६८ मे इसी महादेव-भाई भवन मे इस विषय को लेकर गरमा-गरमी पैदा हुई थी और अन्त मे दादा धर्माधिकारी ने इन शब्दो के साथ सबको निरुत्तरित किया था कि जिस नागरिक को वोट देने का भी तमीज नही है वह सत्याग्रह क्या खाक करेगा ? १९७३ मे जैसा कि विनय अवस्थी ने कहा वही लोग इसके सबसे बड़े पक्षधर बन गये हैं जो तब विरोध मे थे। सत्याग्रह का प्रश्न अधिवेशन की तरफ से विनोबा के सामने भी प्रस्तुत किया गया था और यह उनके जीवन का पहला मौका है जबकि उन्होने इतनी स्पष्टता से, हालाकि मर्यादा के साथ, सत्याग्रह पद्धति को अपना →

→

आशीर्वाद दिया । उन्होने कहा, "सर्व सेवा संघ वाले इक्ट्ठा हो कर सर्व सम्मति से तय करेंगे तो बाबा को यह स्वीकार होगा। अगर शान्ति सैनिक सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव करें कि हरएक को पिस्तोल रखना है तो बाबा पास करेगा। सत्याग्रह के लिए मैं आशीर्वाद दे चुका बशर्ते कि वह सर्व सम्मति से हो । गाव के टुकडे नही होने चाहिए परन्तु अगर आपके भी टुकड़े हो गये तो सर्वनाश हो जायेगा । बाबा ने सत्याग्रह क्यों नहीं किया ? इसके बाबा के अपने कारण हैं । उन्हे बाबा के पास ही रहने दीजिये । बाबा पर शकराचार्य का सबसे अधिक असर है । शंकराचार्य का कहना था कि जब तक शक्ति होगी तब तक अपनी बात समझता रहूगा । बाबा ब्राह्मण है। ब्राह्मण भगवान का मुख है । मुख के दो काम हैं—खाना और बोलना । वही बाबा करता है । बाबा समझाने के अलावा न करता है, न किया और न करेगा।"

विनोबा के इस वक्तव्य मे काल पुरुष की इस आकाक्षा को समझकर कि 'सत्याग्रह का विकल्प शस्त्र होगा' जहा सर्व सम्मति की मर्यादा रख कर उसकी छूट दी गई है वहा जैसा कि धीरेन्द्र दा ने बताया, सत्याग्रह की प्रक्रिया एक शैक्षणिक प्रक्रिया होनी चाहिए इस ओर भी इशारा किया गया है। जगन्नाथन जी ने, जो तमिलनाडु मे मठो की जमीन को भूमिहीनो मे वितरित करने के लिए सत्याग्रह की पद्धति से तंजावूर जिले में काम कर रहे हैं, भूमि समस्या को लेकर राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ करने पर जोर देते हुए कहा, 'बाबा शकराचार्य की परम्परा मे है परन्तु मुझे लगता है कि गाधी की पद्धति के अनुसार कुछ कार्यक्रम लेने चाहिए। भूमि का मसला, शराब का मसला भारत भर मे है । इन मसलो को लेकर भारत भर मे सत्याग्रह के प्रयोग करना आवश्यक है। हम लोग विनोबा की तरह शकराचार्य की परम्परा मे नही हैं और न डण्डे वाले गुण्डे ही हैं । हम गृहस्थ है अत. हमे प्रतिकार का कोई रास्ता ढूढना ही होगा। विनोबा को दान मे मिली पवित्र भूमि मे बेदखली हो रही है यह मुझसे बर्दाश्त नही हो सकता । बाबा का कहना है कि सत्याग्रह मे दबाव नही होना चाहिए। कुछ न कुछ दबाव तो होगा ही, कुछ प्रभाव भी होगा धीरे-धीरे दबाव कम होता जायेगा । हम गाधी और विनोबा दोनो को लेकर गाव मे काम करेंगे ।" उन्होंने बताया कि तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने ग्राम सभाओ मे 'हजारो वलिवलम्' (जहा भूमि समस्या को लेकर सत्याग्रह का प्रयोग हो रहा है) बनाने की माग की है।

धीरेन्द्र दा ने कहा "हमारे काम की मर्यादा नही आई है । अब तक हम ढोल पीटने का काम करते रहे । नादब्रह्म की उपासना चलती रही है । इस उपासना से हमने सब लोगो तक विचार पहुचाया है। वह सब कर लिया है। क्रान्ति के आरोहण की प्रक्रिया मे इस समय हम थक कर कुछ सास ले रहे हैं। रुकावट है, ऐसा मुझे नहीं लगता। आगे जो स्टेज है वह अर्थ सचार करने याने शुद्ध भगवान की उपासना की है।" इसीलिए उन्होने स्पष्ट तौर पर कहा कि 'ग्राम स्वराज्य का मूल काम करते हुए राष्ट्रीय परिषद की सिफारिशों को उन्हीं क्षेत्रो मे अमल मे लाना चाहिए जहां हमारे काम के सघन क्षेत्र बने हैं । अगर 'प्राइवोलेशन' मे हम उन प्रयोगो को करेंगे तो उसमे मेरी जरा भी मदद नहीं होगी ।" उदाहरण के लिए उन्होंने कहा "अनाज के मामले को लेकर यदि सत्याग्रह करना है तो उन सघन क्षेत्रो मे ही यह हो, लोग गाव से बाहर, यहा तक कि सरकार को भी अनाज बेचना बन्द कर दें।"

इस बार का पूरा संघ अधिवेशन इन्ही प्रश्नो के जवाब ढूढते-ढूढते एक संक्षिप्त निवेदन की सर्व सम्मत स्वीकृति के साथ समाप्त हुआ । निवेदन मे कहा है कि सेवाग्राम मे हुई राष्ट्रीय परिषद द्वारा की गई सिफारिशो का यह अधिवेशन स्वागत करता है । ग्रामसभाओ के सगठन द्वारा समस्याओ को हल करने की पद्धति को स्वीकार करके परिषद ने ग्रामस्वराज्य के विचार का जो समर्थन किया है उससे हमारा उत्साह बढ़ा है। सब रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं, लोकसेवको, व चिन्तनशील लोगो से परिषद के निर्णयों को अपने-अपने क्षेत्र मे अमल में लाने की सिफारिश करता है।

ह रि या णा

आशाओं और उपलब्धियों की भूमि

हरियाणा भारतीय गणराज्य के सबसे नये और छोटे राज्यों में से एक है। फिर भी इसने शानदार प्रगति की है। पिछले पाँच वर्षों में राज्य ने जिस तेजी से कदम बढ़ाये हैं उसे देख कर आश्चर्य होता है।

सिंचाई :—राज्य में कुल सिंचित भूमि १६६६ में १४.८३ लाख हेक्टेयर से बढ़ कर १५.६५ हेक्टेयर हो गई है।

विद्युत :—हरियाणा की एक अनोखी उपलब्धि भारत का वह सर्वप्रथम राज्य होना है जहाँ शत-प्रतिशत ग्रामीण विद्युतीकरण पूरा हो चुका है।

खाद्यान्न :—राज्य में खाद्यान्न का उत्पादन १६६६-६७ में २६ लाख टन से बढ़ कर १६७१-७२ में ४५.४८ लाख टन हो गया।

प्रति व्यक्ति आय :—राज्य में प्रति व्यक्ति आय १६६८-६६ में ३५२ रु० से बढ़ कर १६७१-७२ में ४३५ रु० (१६६०-६१ की कीमतों पर) हो गई। इस संबंध में राज्य का देश में दूसरा स्थान है।

सड़कें :—राज्य के साठ प्रतिशत गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ दिया गया है।

यातायात :—नवम्बर १६७२ में मुसाफिर यातायात का पूर्ण राष्ट्रीयकरण हो गया था। हरियाणा रोडवेज देश में कार्यरत सबसे कार्यकुशल यातायात संस्थान है। इसकी बसों की संख्या १६६८ में ५६७ से बढ़कर १,४३० हो गयी है।

R.N. 2091/57 BHOODAN YAGYA 1 OCTOBER, 1973 Regd. No. D. 2[illegible]

गांधीजी की पुण्य स्मृति में

सिन्धिया स्टीम नेवीगेशन कं० लिमिटेड बम्बई, के लिए
श्रीमती सुमतिबेन मोरारजी के सौजन्य मे

[illegible] ७५ पैसे। वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सजिल्द प्रति : १५ रु०, एक प्रति २० पैसे), विदेश १० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, [illegible] अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ८ अक्टूबर, '७३

भूदान-यज्ञ

८ अक्टूबर, '७३

वर्ष २०　　　अंक २

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

तात्कालिकता को अपने बुनियादी काम से ही जोड़ना है

सेवाग्राम में राजनीतिवालो ने सर्वोदय सेवकों से कहा कि उनका राजनीति से दूर रहना ही बेहतर है। पिछले कई वर्षों मे यह पहला मौका है जब राजनीतिज्ञो ने सर्वोदय के मंच से राजनीति की व्यर्थता स्वीकार की हो और यह कहा हो कि वर्तमान परिस्थिति मे एक ऐसी जमात होनी चाहिये जो राजनीति और सत्ता से दूर रह कर जनमत बनाने और लोकशक्ति खड़ी करने मे अपनी पूरी ताकत लगाये। उनका ऐसी जमात की आवश्यकता मे विश्वास और राजनीतिक कार्यवाहियो के तौर तरीकों से उनकी निराशा हमारे लिए विश्वास की जनक होनी चाहिये। यह कोई कम महत्त्वपूर्ण नही है कि जिस विश्वास को लेकर हम बीस-बाईस वर्षों से धूनी रमाये हुए थे उसे आखिर महल के लोगो ने स्वीकार किया। अपनी इस उपलब्धि पर हम सन्तोष कर सकते हैं!

इस संदर्भ मे संघ अधिवेशन मे बंग साहब के 'पोलिटिकलाइजेशन' शब्द के उपयोग से जो उत्तेजक बहस चली वह निश्चित ही निरर्थक और अपथ्यकारी लगती है। जब राजनीति वाले हमे बार-बार उनके अखाड़े में आने का निमंत्रण दे रहे थे और हाथ पकड़-पकड़ कर ले जाने की कोशिश कर रहे थे तब हम नहीं गये तो अब जब कि वे स्वयं हमारे रास्ते के सही होने की दाद दे रहे हैं तो हमारे राजनीतिकरण का सवाल ही कहां उठता है? एक बिलकुल दूसरे संदर्भ में कहे गये एक रूढ शब्द से इतनी उत्तेजना अकारण तो है ही आपसी विश्वास मे कमी का भी परिचायक है। शायद इसीलिए विनोबा को कहना पड़ा—"गांव के टुकड़े नहीं होने चाहिये परन्तु अगर आपके भी टुकड़े हो गये तो सर्वनाश हो जायेगा।" प्रसन्नता है कि राजनीतिकरण की बहस आखिर सद्भाव मे समाप्त हुई और हमारे विश्वास की पहली शर्त सर्वसम्मति पूरी स्वस्थता के साथ प्रकट हुई। संघ अधिवेशन ने परिषद के निवेदन को स्वीकार किया और लोकसेवको ने उस पर अमल की तैयारी दिखायी।

अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि परिषद ने जो 'एक्शन प्रोग्राम' सुझाया है और संघ अधिवेशन ने जिसे स्वीकार किया है उस पर किस तरह और कहा कार्यवाही की जाये? संघ अधिवेशन ने माना है कि कार्यवाही उन सघन क्षेत्रों मे की जाये जहा ग्रामस्वराज्य का कार्य बरसों से चल रहा है। यह क्षेत्र-चुनाव बहुत अर्थवान है। जहा बुनियादी काम से हमारी जड़ें न उतरी हो वहा इस तरह की कार्यवाही का कोई असर नही होगा क्योकि स्थानीय समस्याओं का केवल हल हमारा उद्देश्य नहीं है। तात्कालिकता को हमे अन्ततः अपने बुनियादी काम से ही जोड़ना है और इस तरह की कार्यवाहियों से जो लोक-शक्ति बनेगी उससे समाज परिवर्तन के सपने को साकार करना है। ऐसे प्रयोग व्यापक रूप से उत्तराखण्ड और तंजावूर में हुए हैं और सघन क्षेत्र उनका लाभ ले सकते हैं।

प्रभाष जोशी

शुभ-संकल्प

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने राज्य में पूर्णरूप से शराबबन्दी के पक्ष मे अपना मत व्यक्त किया है। गांधी शताब्दी वर्ष मे वहां शराबबन्दी हटाई गई थी। और अब गांधी जयन्ती के अवसर पर ही यह मत व्यक्त किया गया है, यह निसंदेह और भी प्रसन्नता की बात हो जाती है। श्री करुणानिधि ने इस बीच राज्य को शराब से होने वाले लाभ और हानि को तोल कर ही ऐसा सोचा होगा। दूसरे राज्यो को भी इस घटना के बाद पुनर्विचार करने की बात सोचनी चाहिए। नेपाल मादक-द्रव्यों की हानि को अभी कुछ दिन पहले समझ कर इस प्रकार का निर्णय ले ही चुका है।

भवानी प्रसाद मिश्र

गांधी की याद फिर से

देश और विदेश से गांधीजी के १०४ वें जन्मदिवस मनाने के समाचार आ रहे हैं। इस वर्ष गांधी जयन्ती के समारोहों के दायरे में बंगला देश भी उत्साहपूर्वक शामिल हुआ। दिल्ली स्थित राजघाट समाधि पर बहुत सुबह से ही पुष्पांजलि अर्पित करने वालों की लम्बी कतार लग गयी थी, जो शाम तक कायम रही। राष्ट्रपति गिरि ने सुबह समाधि पर हार चढ़ाया। उपराष्ट्रपति श्री पाठक, केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री उमाशंकर दीक्षित, खाद्यमन्त्री श्री फखरुद्दीन अहमद, श्री भोला पासवान शास्त्री आदि ने समाधि पर सुबह हुई प्रार्थना सभा में भाग लिया। एक घण्टे की इस प्रार्थना के बाद भजन हुए। समाधि पर २४ घण्टे की अखण्ड कताई भी इन सारे समारोहों के साथ-साथ चलती रही। प्रार्थना सभा में हजारों नागरिकों के अलावा जापान से आये ६ बौद्धभिक्षु भी शामिल थे। सभा के बाद श्री पाठक ने गांधी स्मारक संग्रहालय में इस अवसर पर आयोजित एक विशेष प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। गांधी जी के १०४ वें जन्म दिवस के अवसर पर लगाई गई इस प्रदर्शनी में गांधीजी के १०४ रंगीन चित्रों को, जिन पर उन्हीं के १०४ सुभाषित अंकित हैं, एक-एक गमले में सजाया गया है। गांधी संग्रहालय के श्री तुरलिया जी का कहना है कि इस प्रदर्शनी का एक उद्देश्य यह भी है कि आज की विषमताओं और विरूपताओं के बीच फंसा हुआ व्यक्ति इन सुभाषितों को पढ़, चिन्तन-मनन करे और उनका अपने जीवन में आचरण कर उन समस्याओं से निपटने का मार्ग प्रशस्त कर सके।

ये छुपे १०४ गमलों में रोपे गये ये सचित्र सुमन जीवन के हर कोने को निखारने की क्षमता रखते हैं। क्षमता का एक आभास प्रदर्शनी के दर्शकों की राय व्यक्त करने वाली पुस्तिका से लग सकता है। प्रदर्शनी पर अपनी सम्मति व्यक्त करते हुए एक दर्शक लिख गये हैं कि मैं इस प्रदर्शनी से बहुत प्रभावित हुआ, मैं आज से ही बीड़ी-सिगरेट पीना बन्द करने की प्रतिज्ञा करता हूं।

चण्डीगढ़ पंजाब, हरियाणा तथा चंडीगढ़ में अनेक स्थानों पर प्रभात फेरियों, प्रार्थना-सभा, जगह-जगह गांधीजी की मूर्तियों पर माल्यार्पण तथा पंजाब राज्यपाल श्री एम० एम० चौधरी के निवास पर हुए एक सादे समारोह से गांधी जयन्ती सम्पन्न हुई।

कानपुर प्रभात फेरी, नवनिर्मित गांधी भवन पर बिजली से रोशनी, शाम को आतिशबाजी से जन्म दिवस मनाया गया।

भोपाल खादी बिक्री पर विशेष छूट, जनता द्वारा चलाये जाने वाले एक सहकारी बाजार के निर्माण के लिए की गई भूमिपूजा इस दिवस की विशेषता रही।

शिमला हिमाचल कृषि मन्त्री श्री शालिग्राम की अध्यक्षता में आयोजित सभा ने नागरिकों से गांधीजी के दर्शन पर चलने का आग्रह किया।

जयपुर गांधी जयन्ती उत्सव यहां पर समाज सेवा सप्ताह के रूप में शुरू हुआ।

अमरतोगा, पटना तथा मथुरा में क्रमशः जूट मिल, रेलवे सर्विस कमीशन तथा तेल शोधक कारखाने का शिलान्यास किया गया।

अहमदाबाद में विभिन्न धर्मों, सम्प्रदायों की प्रार्थना सभाओं, दूर-दूर गांवों में लोकसेवकों द्वारा नशाबन्दी के कार्यक्रम को मजबूती से अमल में लाने के लिए किये गये जनसंपर्क विशेष उल्लेखनीय हैं। राज्यपाल के० के० विश्वनाथन् तथा काका कालेलकर की उपस्थिति में साबरमती आश्रम में प्रार्थना सभा व अखंड सूत यज्ञ सम्पन्न हुआ।

कोहिमा : नगा शांति केन्द्र में बाईबिल तथा गांधी-वचनों के संयुक्त पठन से लोगों ने गांधी जयन्ती मनायी।

हैदराबाद : आंध्र प्रदेश नशाबंदी संघ की पन्द्रह महिला कार्यकर्ताओं ने शहर में लगे शराब के विज्ञापनवाले विज्ञापन-पट्टों पर काला रंग पोता।

मद्रास : राज्यपाल की पत्नी द्वारा प्रज्वलित किया गया एक मशाल जलूस शहर के प्रमुख मार्गों से निकला।

अलीगढ़ जहांगीर नगर विश्वविद्यालय में अनेक छात्रों, बुद्धिजीवियों ने एक विचार गोष्ठी में भाग लेकर निष्कर्ष निकाला कि गांधी इस महाद्वीप में धर्मनिरपेक्षता के पहले उपदेशक थे।

लंदन भारतीय विद्या भवन द्वारा आयोजित पश्चिमी और भारतीय संगीत के एक समारोह में गांधीजी का स्मरण किया गया। विश्व प्रसिद्ध वायलिन वादक श्री यहूदी मेनुहिन कलाकारों और वादकों दोनों में ही शामिल थे।

और सबसे अंत में बिहार के दरभंगा जिले के रचनात्मक कार्यकर्ताओं द्वारा इस अवसर पर लिया गया निर्णय है। दरभंगा जिला सुलभ स्वच्छ शौचालय निर्माण समिति के मंत्री श्री बशिष्ठ नारायण पाण्डेय के अनुसार गांधी जयन्ती से समिति इस जिले में सघन रूप से भंगी-मुक्ति पाखानों के निर्माण में लग जायेगी। अब तक समिति जिले में ११,५०० भंगी मुक्ति पाखाने बना चुकी है। दरभंगा इस संख्या में न केवल बिहार में, बल्कि भारत के अन्य सभी जिलों से आगे है।

स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह

आधी दुनिया को जगाने के लिए

बापू ने कहा है, "अहिंसा की नींव पर रचे गये जीवन की योजना मे, जितना और जैसा अधिकार पुरुष को अपने भविष्य की रचना का है, उतना और वैसा ही अधिकार स्त्री को भी अपना भविष्य तय करने का है। लेकिन अहिंसक समाज की व्यवस्था मे जो अधिकार मिलते है, वे किसी न किसी कर्तव्य या धर्म के पालन से प्राप्त होते हैं।"

आज भारत की स्त्री को न अपने अधिकार का भान है, न उसके साथ आने वाले कर्तव्यो का। भारत की बहनो की असली स्थिति का भान तब होता है, जब हम गावोमे घूमते हैं, एक बुजुर्ग सर्वोदय-सेविका स्वराज्य के आन्दोलन से स्त्रियो मे काम करती हैं। उनका अधिकतर समय उत्तर प्रदेश की बहनो मे काम करने मे ही गया और वहा की बहनें किस कदर परदो मे, घूघट मे बन्द हैं, उसे वे देख चुकी हैं, फिर भी चार-पाच साल पहले जब उन्हें बिहार के गावो मे काम करने का मौका मिला, तब वहा की बहनो की स्थिति वे देख नही पायी। विनोबाजी बिहार की बहनो का 'सवाई अरविंद' कह कर वर्णन करते हैं। श्री अरविन्द अपनी साधना के लिये चालीस साल एक कोठरी मे बन्द रहे। बिहार की बहनो की छोटी उम्र मे शादी हो जाती है। और शादी होकर एक बार वे घर के अन्दर गयी कि बाहर तभी आती हैं, जब उनकी लाश बनती है। चम्बल के ठाकुर जमात के एक भाई बता रहे थे कि उनकी जमात मे सात-आठ साल की उम्र मे ही लडकी की शादी हो जाती है। जब यह नववधु अपनी ससुराल मे आती है तब घर के अन्दर प्रवेश करने के पहले एक बार उसे मकान के सारे परिसर मे घुमाया जाता है, मकान मे भी घुमाया जाता है कि एक बार तू अपना मकान देख ले, बाद मे यह कभी तुझे देखने को नही मिलने वाला है। आठ साल की वह लड़की प्रथम बार अपना मकान जो देखती है, वह आखिर का ही। उसके बाद वह अन्त:पुर के बाहर नही आ सकती, घूघट ऊपर नही उठा सकती। स्त्री-जीवन की ये करुण कहानियां भारत के सभी प्रदेशो मे कमवेशी प्रमाण मे देखने को मिलती हैं।

शहर की बहनो की स्थिति इस मुकाबले मे कुछ अच्छी जरूर है। पर वहां भी उनका मानस अभी घूघट मे ही पड़ा है। अपने कर्तव्यो का, अपनी शक्ति का, अपनी कमियो का, अपनी विशेषताओं का, किसी का भी आज उन्हे भान नही।

ऐसी कम से कम तीन सौ पदयात्राएं निकलेंगी

स्त्री प्रथम एक व्यक्ति यानी मानव है, फिर कुटुम्ब की अधिष्ठात्री है और फिर समाज की एक जिम्मेदार घटक है। उसकी इन तीनो हस्तियो का आज उसे भान नही।

उसकी हस्ती की व्यापकता के साथ-साथ उसके कर्तव्य व्यापक बनते जाते हैं। समाज का एक अंग, यह उसकी सर्वाधिक व्यापक हस्ती, पर उसका वहा कर्तव्य सबसे अधिक आसान हो जाता है। अगर वह कुटुम्ब की योग्य और परिपूर्ण अधिष्ठात्री बन जाये, तो उसका सामाजिक कर्तव्य बहुत बडी मात्रा मे पूरा हो सकेगा। और अगर वह व्यक्ति के नाते—मानव के नाते अपना कर्तव्य पहचान ले, तो कुटुम्ब की नीव बनने मे उसे कोई कठिनाई नही रहेगी। इसलिये प्रथम आवश्यक है उसे मानव के रूप में देखना।

मानव के नाते उसका क्या कर्तव्य है? मानव के नाते उसका कर्तव्य है मानव-जीवन का अन्तिम लक्ष्य गाठना। इसका भान आज स्त्री को नही है। मनुष्य-जीवन का अन्तिम लक्ष्य है आत्मसाक्षात्कार।

आज समाज का एक घटक—पुरुष इन बातो पर सोच सकता है और उसे वह पूरा करने का भी स्वातन्त्र्य है। पर स्त्री को वह नही है। माना गया कि स्त्री की अपनी गति नहीं, पति ही उसकी गति और जिसको पति नही उसको गति ही नही। विनोबाजी ने उसे उपमा दी है अगूर-केलो से भरे रेलवे के डिब्बे की। इन्जन कोयले से भरा है, पर उसे अपनी गति है। डिब्बे अगूर-केलो से भरे हैं, पर उनकी गति इन्जन के आधार से तय होती है। यही आज स्त्रियों की हालत है। अगर समाज का आधा अंग अपने असली कर्तव्य से च्युत रहे तो समाज आगे कैसे बढ़ेगा?

सुखवादी, शान्त समाज मे भी हर घटक को अपना कर्तव्य पूरा करना आवश्यक होता है, तो आज विज्ञान के कारण जब कि समाज जटिल बना है, इसकी आवश्यकता सहज ही

(बाकी पेज १३ पर)

उपवास-दान

आन्दोलन के लिए तन, मन और धन

—सिद्धराज ढड्ढा

१९५४। बोधगया का सर्वोदय सम्मेलन। देशभर से हजारों सर्वोदय कार्यकर्ता सम्मेलन के अवसर पर बोधगया में इकट्ठे थे। जयप्रकाशजी सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। साम्यवादी जयप्रकाश प्रजातांत्रिक समाजवाद की राह से होते हुए सर्वोदय तक पहुंच चुके थे। अपने भाषण में उन्होंने भूदान आंदोलन और सर्वोदय के महत्त्व को बतलाते हुए अन्त में जब यह घोषणा की कि मैं सर्वोदय क्रान्ति के लिए अपना शेष जीवन समर्पित करता हूं तो सम्मेलन के पंडाल में एक बिजली सी दौड़ गयी। कोने-कोने से 'जीवनदान' का तांता लग गया और तो और भूदान आंदोलन के प्रणेता और पुरस्कर्ता संत विनोबा ने स्वयं अपनी ओर से जयप्रकाशजी को लिखकर दिया, "भूदान-यज्ञ मूलक, ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति के लिए मेरा जीवन समर्पण" भूदान आन्दोलन के इतिहास में यह अविस्मरणीय घटना थी। जिस क्रान्ति को उसने जन्म दिया, उसी के लिए क्रान्ति का जन्मदाता स्वयं अपना जीवन समर्पित कर रहा था।

जीवनदान के बाद उपवासदान

११ सितम्बर १९७३ को ऐसी ही एक घटना अपेक्षित रूप से फिर घटी। ११ सितम्बर था विनोबा का जन्म-दिन। आज उन्होंने ७८ वर्ष पूरे करके जीवन के ७९वें में प्रवेश किया था। सवेरे सवा दस बजे का समय, धाम नदी के किनारे स्वयं विनोबाजी द्वारा स्थापित किये गये परंधाम आश्रम में विनोबा के जन्म-दिन पर अपनी श्रद्धा के फूल उन्हें समर्पित करने के लिए करीब दो-तीन सौ भाई-बहनों का एक छोटा-सा समूह वहां एकत्रित था। सर्वधर्म प्रार्थना के बाद विनोबा ने बोलना शुरू किया। सामने धाम नदी कल-कल निनाद कर रही थी। विनोबा ने कहा,

"मैंने आजतक उपवास नहीं किये हैं। तुकाराम ने लिखा है कि जो मनुष्य हर काम के साथ रामनाम लेता है वह उपवास ही करता है। इस दृष्टि से तो अभी तक मेरे २०-२५ हजार उपवास हो गये होंगे लेकिन वैसे उपवास नहीं किये। अब मैंने उपवास शुरू किया है—आधे दिन का उपवास तारीख ११ को, जिस दिन मेरा जन्म हुआ था और आधे दिन का उपवास तारीख २५ को जिस दिन मैंने गृह-त्याग किया था। इस प्रकार दो दिन मिलाकर एक पूरे दिन का उपवास होगा। मेरे प्रति दिन के खाने का खर्च ३ रुपया आता है। (विनोबा आजकल दिनभर में करीब १ सेर दूध और १५ तोले गुड़ की चाशनी प्रसृत लेते हैं। रोज थोड़ा ईसबगोल भी। यही उनकी खुराक है। पेट में बहुत पुराना 'अल्सर' होने से अन्न तो कई वर्षों से बन्द है।) सालभर में ३६ रुपया होता है। मैंने सोचा है कि सर्व सेवा संघ के काम के लिए मेरी तरफ से इतना दान दूंगा। साल भर का ३६ रुपया आज पहले ही दे दूंगा। सर्व सेवा संघ को अपना काम चलाने के लिए हर साल ४०-५ लाख रुपये की जरूरत होती है। देशभर में फैले हुए हमारे कार्यकर्ता, सहयोगी और सर्वोदय विचार में श्रद्धा रखने वाले लोग इस प्रकार एक महीने में एक उपवास करके उसकी जो बचत होगी वह सर्व सेवा संघ को अपना काम चलाने के लिए देंगे तो सर्वोदय आंदोलन का खर्च इस पवित्र दान से चलाना मुश्किल नहीं होना चाहिए।

नये कार्यक्रम का प्रारम्भ

इस प्रकार कभी उपवास न करने वाले विनोबा ने हर माह उपवास करने का निश्चय किया। रोज 'कैलोरीज' का हिसाब करके नपा-तुला खाने वाले अहिंसक आदमी' महीने में १ दिन के भोजन की जो बचत होगी वह सर्व सेवा संघ के काम के लिए उसे दान में देने की घोषणा। यह सब कुछ इतना अटपटा था कि कुछ क्षण तो सुनने वालों को उसे ठीक से समझने में लगे होंगे। सभा से उठते ही विनोबाजी ने मानभाई से कहा, "हमारी ओर से दान के ३६ रुपये सर्व सेवा संघ को अभी दे दो।" विनोबा ने अपने भाषण में कहा था कि उनका अपना एक दिन के भोजन का खर्च तो ३ रुपये होता है लेकिन परिवार में रहने वाले कार्यकर्ताओं का खर्च एक दिन का २ रुपये मानें तो वर्ष में २४ रुपये होता है। उन्होंने कहा कि हिसाब की सरलता की दृष्टि से महीने में एक दिन उपवास करने वाले कार्यकर्ता अपने भोजन की बचत के वर्ष के २५ रुपये सर्व सेवा संघ को दें। कुछ मित्रों ने तत्काल अपने उपवास-दान की अग्रिम रकम हम लोगों को दे दी। इस प्रकार उपवास-दान के एक नये कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ।

एक नया संकेत है

जिस तरह जीवनदान के समय आन्दोलन के प्रणेता ने स्वयं आन्दोलन के लिए जीवनदान की घोषणा की उसी प्रकार आज फिर विनोबा ने अपनी ओर से सर्व सेवा संघ का दान देने की घोषणा करके इस तरह कार्यकर्ताओं को इस बात का संकेत दिया कि हम सर्वोदय आन्दोलन के लिए तन-मन से तो वर्षों से काम कर ही रहे हैं, अब हम स्वयं जिस काम में से अपना आपका निर्वाह लेते होंगे उसमें से कुछ 'धन' भी अपने खाने में बचत करके उसी काम के लिए दें।

भूदान आंदोलन में इस प्रकार एक अद्भुत दान सदा होता ही रहा है। ग्राम-समाज के लोग अपनी जमीन में से गांव के भूमिहीन के लिए जमीन का दान करते और वह जमीन उसी ग्राम-समाज के भूमिहीनों में बांट दी जाती है। ग्राम-समाज स्वयं ही दान करता है खुद ही उसको प्राप्त करता है। देने वालों और लेने वालों का द्वैत इस प्रकार समाप्त हो कर ग्राम-समाज में एक का अद्वैत खड़ा हो जाता है। वैसा ही विनोबा का यह उपवास-दान है। "खुद दें, खुद ही लें ऐसा अद्भुत दान करें।"

×

विश्वविद्यालय : बेकारी बढ़ानेवाले कारखाने

वंशीधर श्रीवास्तव

इन विश्वविद्यालयों और इनसे संबंधित डिग्री कालेजों की अनुत्पादक शिक्षा देश में केवल बेकार और निकम्मे तरुणों की वृद्धि कर रही है। १९७१ में इन विश्वविद्यालयों और डिग्री कालेजों से निकले हुए ३ लाख ९४ हजार ग्रेजुएट बेरोजगार थे। १९७२ में यह संख्या लगभग दूनी यानी ६ लाख ३ हजार हो गयी थी। इसका अर्थ हुआ कि प्रति वर्ष निकलने वाले ग्रेजुएटों का बड़ा प्रतिशत बेरोजगार है। अतः बेरोजगार और बेकारी बढ़ाने वाले इन कारखानों को बंद करने से राष्ट्र का किसी प्रकार का अनहित नहीं होगा।

विश्वविद्यालय किन के लिए

हमारे विश्वविद्यालय और डिग्री कालेज केवल कुछ अल्पसंख्यक सुविधासम्पन्न विशिष्ट जनों की सफलता के लिए हैं और केवल थोड़े से आदमियों को सुविधाओं पर एकाधिकार दिलाने में मदद करते हैं, और इस तरह हमारी उच्च शिक्षा एक सुविधा संपन्न सामाजिक और आर्थिक प्रणाली को बनाये रखने में सहायता करती है। यह शोषक और शोषितों के टुकड़ों में बटे हुए समाज के प्रच्छन्न हिंसक कृत्यों को स्वीकृति प्रदान करती है। सच पूछिये तो शोषण का अधिकार प्रदान करने वाली यह शिक्षा असमानता और बौद्धिक संकीर्णता को बढ़ाने का सबसे बड़ा साधन हो रही है। हमारे विश्वविद्यालय यथास्थितिवाद के सबसे बड़े गढ़ हैं और इनसे वे अपेक्षायें कभी भी पूरी नहीं होंगी, जो हमारा लोकतंत्रीय समाजवाद शिक्षा से करता है।

स्वतंत्रता के बाद विश्वविद्यालयों की संख्या में एक तरह का विस्फोट हुआ है। यह संख्या २.५ लाख से बढ़कर २५ लाख हो गयी है। परन्तु अगर हम ऐसे लड़के लड़कियों की उम्र १७ से २४ वर्ष की रखें, जिन्हें विश्वविद्यालयों और डिग्री कालेजों में पढ़ने का मौका मिलना चाहिए तो इस उम्र के लड़के लड़कियों का केवल ३.२ प्रतिशत हमारे विश्वविद्यालयों और कालेजों में शिक्षा पा रहा है। अर्थात इन उच्च शिक्षा-संस्थाओं में पढ़ सकने वाले हमारे लड़के-लड़कियों का ९६.८ प्रतिशत ऐच्छिक या अनैच्छिक रूप से विश्वविद्यालय शिक्षा से वंचित रह रहा है। पूरी शिक्षा अब भी सुविधा संपन्न कुछ थोड़े लोगों तक ही सीमित है।

विश्वविद्यालयों से निकले हुए स्नातक और दूसरे लोगों का ८० प्रतिशत हमारे समाज के ऊपर के तबके से आता है और इस प्रकार इस उच्च शिक्षा के कारण समाज में अलगाव की प्रवृत्ति का पोषण हो रहा है, और वर्गभेद की खाई दिन प्रति दिन गहरी होती जा रही है। जो २० प्रतिशत छात्रवृत्ति आदि के बल पर नीचे के स्तरों से आते हैं वे भी मानो विशिष्ट वर्ग में प्रवेश करते हैं और वे जिस समाज से आते हैं उसे ही नीची निगाह से देखने लगते हैं। लोकतंत्र के लिए यह प्रवृत्ति घातक है।

हिंसा और विनाश के विद्यालय

ये विश्वविद्यालय और कालेज हिंसात्मक और विनाशात्मक क्रियाकलापों के गढ़ हो रहे हैं। १९ दिसम्बर १९७२ को केंद्रीय सरकार द्वारा लोकसभा में यह घोषणा की गई कि विश्वविद्यालय स्तर की ३२९७ संस्थाओं में से १० प्रतिशत में आमतौर नित्य हड़ताल पर रही हैं और सार्वजनिक संपत्ति के विनाश में लगी रही हैं। यह चिंता की बात है। लेकिन इससे अधिक चिंता की बात यह है कि १९७२ के जून और नवम्बर के बीच देश की शिक्षा संस्थाओं में अशांति पैदा करने वाले ४३१६ मामले हुए। इसका अर्थ यह हुआ कि ६ महीने के बीच मानो देश के सभी विश्वविद्यालय और कालेज कम से कम एक बार अशांतिग्रस्त हुए और एक तिहाई तो दो बार अशांति के शिकार हुए।

हमने अपने कृषि विश्वविद्यालयों और इंडियन इंस्टीट्यूट्स ऑफ टेक्नोलाजी की स्थापना करके इन विश्वविद्यालयों और कालेजों को अलग और एकांतिक कर दिया है। आज के युग में इन टेक्निकल संस्थाओं की आवश्यकता है। परन्तु उनका सामान्य विश्वविद्यालय के साथ न रहना इन सामान्य विश्वविद्यालयों की व्यर्थता स्वतः सिद्ध कर देता है।

विश्वविद्यालय बंद हों

विश्वविद्यालय को बन्द करने से जो धन बचे उसका उपयोग माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण में किया जाये। परन्तु माध्यमिक स्तर की शिक्षा के व्यवसायीकरण का अर्थ उत्तर माध्यमिक व्यावसायिक कालेज (पोस्ट सेकेन्डरी वोकेशनल कालेज) खोलना नहीं है (जैसा मध्य प्रदेश में किया जा रहा है) बल्कि सामान्य शिक्षा की संकल्पना को ही इतना व्यापक बनाना है कि आज माध्यमिक स्तर के विभिन्न प्रकार के शिक्षणों में जो भेद है वह मिट जाये जैसे सामान्य, वैज्ञानिक, टेक्निकल और व्यावसायिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा एक साथ सैद्धान्तिक, टेक्निकल और व्यावसायिक हो। विश्वविद्यालयों के बंद होने के फलस्वरूप जो अध्यापक खाली हों वे इन संस्थाओं में अध्यापन का कार्य करें। नये पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाने की उनकी तैयारी होनी चाहिए।

इस प्रकार के विद्यालयों के लिए जनता अथवा सरकार पर्याप्त पूंजी, भूमि भवन और साज-सज्जा दे। परन्तु जब हम सर्वसाधारण की शिक्षा (मास एजुकेशन) की बात सोचते हैं जो लोकतंत्रीय समाजवाद में आवश्यक है, तो किसी भी सरकारी विद्यालयी शिक्षण को सफल बनाने में अपर्याप्त सिद्ध होगी और इसे समुदाय में स्थित औद्योगिक कारखानों और कृषि फार्मों का व्यापक शैक्षिक उपयोग करना होगा। व्यावसायिक और टेक्नीकल ट्रेनिंग का उत्तरदायित्व केवल विद्यालयी प्रणाली का होने से काम नहीं चलेगा। विद्यालय के बाहर के सभी प्रकार के उत्पादक ट्रेनिंग में भाग लें। बल्कि बिना किसानों, उद्योगों और व्यवसाय के नेता और मालिक एवं सरकार के सहयोग के यह काम पूरा नहीं होगा। पर-

(शेष पेज १० पर)

हृदय परिवर्तन : धीरज की जरूरत है

—हेमदेव शर्मा

चम्बल व बुन्देलखण्ड क्षेत्रों के बागियों के सामूहिक आत्मसमर्पण से सम्मति-शक्ति और सहकार-पद्धति की व्यापक, सभावनाएं प्रकट हुई थीं। सदियों के बाद, पहली बार लोगों को इज्जत से जीने का मौका मिला। ऐसा लगा कि हमारे इलाके में आजादी अब आई है। बागियों के आत्मसमर्पण के बाद मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री जो जब चम्बल-क्षेत्र के दौरे पर गये तो लोगों ने पुलिस थानों और चौकियों के बजाय खेतों के लिए पानी और बच्चों की शिक्षा के लिये स्कूल, कॉलेज की मांग की।

संचालन से सहकार पद्धति

लेकिन दण्डशक्ति और संचालन पद्धति के विकल्प के रूप में जिस सम्मति-शक्ति और सहकार-पद्धति को हमने सिद्ध किया, उसे क्षेत्र के गांव-गांव में संगठित करने का काम नहीं हो सका। विनोबा जी और जयप्रकाशजी की सलाह तथा महिला लोकयात्रा में बहिनों की तपस्या के बावजूद भी गांव-गांव में ग्राम-सभाएं गठित करने और उनके माध्यम से क्षेत्र में शांति और विकास के काम की पहल नहीं हो सकी।

मिशन के सामने तात्कालिक काम हैं। उसे पहले वे काम करने हैं, जिन्हें करने का वचन उसने समर्पण से पूर्व बागियों को दिया था। जैसे समर्पणकारियों के मुकदमों की पैरवी, उनके परिवारों की देखभाल, और उनका पुर्नवास आदि···।

कानूनी पैरवी के मामले में मिशन के द्वारा जो काम पिछले एक वर्ष से हुआ है वह सतोषजनक कहा जा सकता है। ग्वालियर और सागर जैसों में स्थापित विशेष न्यायालयों में प्रमुख बागी सरदारों ने हत्या के जघन्य आरोपों में स्वेच्छापूर्वक अपने अपराध स्वीकार करके अपने अदम्य साहस, और अपूर्व शौर्य का परिचय तो दिया ही है, साथ ही अपराध शास्त्र, दण्डशास्त्र और नीति शास्त्र में स्वर्णिम अध्याय जोड़कर अपराध और अपराधी के प्रति नये तरीके से सोचने के लिए ठोस आधार प्रस्तुत किये हैं। ग्वालियर में ८० प्रतिशत और सागर में ६६ प्रतिशत मुकदमे निपट गये हैं। एक वर्ष में सभी मुकदमों का निपटारा हो सकता था यदि स्थापित न्यायालयों को विशेष न्यायालय का दर्जा दिया गया होता। दिये गये आश्वासन के अनुसार माननीय न्यायाधीशों को भत्ता दिया जाता और उनके लिए समुचित स्टॉफ की व्यवस्था की जाती। सागर में काफी समय तक विशेष-दण्डाधिकारी की कमी खलती रही, अब अपर सत्र न्यायाधीश महोदय की कमी अखर रही है। अभियोजन पक्ष के वकील आह्वान को मुक्त हस्त से दिया जा रहा पारिश्रमिक भी मुकदमा के निपटारे में विलम्ब का कारण बन रहा है।

उत्तर प्रदेश और राजस्थान के मुकदमें विशेष न्यायालय ग्वालियर में स्थानांतरित कराने का काम राज्य—सरकारों का था। वह दायित्व वे पूरा नहीं कर सकीं और मिशन को लाचार ही इस काम में पड़ना पड़ा। सभी मुकदमों की सूची एक बारगी दे दी गई होती तो ठीक था। दूसरी सूची तो जुलाई आखिर में मिली है। खैर, मिशन को तो यह काम करना ही है। उत्तर प्रदेश के १४ और राजस्थान के ६ प्रकरण ग्वालियर विशेष न्यायालय में स्थानांतरित करने के लिए मिशन ने सर्वोच्च न्यायालय में पहल की है। ८ अक्टूबर को अन्तिम सुनवाई है। उत्तर प्रदेश के ११ आत्म-समर्पणकारी बागियों के ११६ प्रकरण ग्वालियर और सागर स्थित विशेष न्यायालयों में स्थानांतरित करने के लिए मिशन प्रयत्नशील है। आर॰ एल॰ कोहली एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट, नई-दिल्ली, मिशन की ओर से यह सेवा-कार्य कर रहे हैं।

मन को ऊंचा उठाना

जेल जीवन में समर्पणकारियों का मानसिक विकास हो, इस आशय से नव संस्कार कार्यक्रम मिशन ने शुरू किया। काशीनाथ त्रिवेदी, सरला बहन और यशवन्त कुमार सिन्धु ने समर्पणकारियों से प्रत्यक्ष सम्पर्क रख कर उनके मन को ऊंचा उठाने की निरन्तर कोशिश की। काशीनाथ त्रिवेदी के व्यापक सम्पर्क के कारण ही देश के मनीषी, गुरुजन, समाजसेवी, साहित्यकार और रचनात्मक कार्यकर्ता भाई बहनों के सत्संग, प्रवचन आदि का लाभ समर्पणकारियों को मिला और उनके अध्ययन के लिए सुरुचिपूर्ण और सृजनात्मक साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाओं की व्यवस्था हुई। गांधी विद्यापीठ, वेड़छी, गुजरात के भाई बहनों ने शिविर लगाये खेल-कूद पी टी, परेड व्यायाम, सामूहिक गीत आदि कार्यक्रमों के माध्यम से उन मन को मोड़ने की कोशिश की गई। अ॰ भा शांति सेना मण्डल के रामगोपाल दीक्षित ने इस दिशा में अच्छा काम किया। किन्तु उनका अधिक समय मिशन को इस काम के लिए उपलब्ध नहीं हो सका। इन सभी प्रयासों का अच्छा असर भी हुआ है। प्रमुख बागी सरदारों द्वारा हत्या जैसे जघन्य—अपराधों में स्वेच्छापूर्वक की गयी अपराध स्वीकृति, पैरोल के समय विरोधियों से की गई क्षमा याचना द्वारा क्षेत्र में सद्भावना का विकास, विकासशील मन की ही अभिव्यक्ति है। लेकिन जेल और अस्पताल की दुखद घटनाएं इस बात का संकेत है कि अभी मन में मैल बाकी है। और इस दिशा में मिशन को और उससे भी कहीं अधिक स्वयं आत्म समर्पणकारियों को करना शेष है। इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जाना चाहिए कि आत्मसमर्पणकारी भाइयों का मानसिक विकास तब तक नहीं होगा जब तक कि वे स्वयं इस दिशा में पूरे मनोयोग से प्रयत्न नहीं करेंगे। उन्हें यह समझना चाहिए कि उनका उद्धार उन्हें स्वयं करना है और देश के सच्चे और उपयोगी नागरिक बनना है। नये जीवन की राह पर चलने में मिशन उनकी सहायता भर कर सकता है। यह सही है कि आत्म-समर्पणकारियों का पूरी तरह हृदय परिवर्तन [illegible] नहीं हुआ है लेकिन यह उससे भी कहीं [illegible] अधिक सही है कि हृदय परिवर्तन एक [illegible] ■

सहकार पद्धति का संगठन : शांति मिशन का मुख्य काम

प्रक्रिया है और उसके लिए सबको धैर्य पूर्वक प्रतीक्षा करनी होगी।

समर्पणकारियों के लिए, मुगावली (गुना) में खुली जेल बनाने तथा ७ वर्ष या उससे अधिक सजा प्राप्त आत्मसमर्पणकारियों को उसमें रखने का निर्णय मध्य प्रदेश शासन ने लिया है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रकाश चन्द्र सेठी और जेल-मंत्री श्री कृष्णपाल सिंह राज्य-शासन द्वारा लिये गये इस प्रगतिशील कदम के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। २ अक्टूबर ७३ को खुली जेल शुरू हो जाये और श्रद्धेय जयप्रकाश जी उसका उद्‌घाटन करें यह शासन की इच्छा है। २ अक्टूबर के बजाय खुली जेल १४ नवम्बर को भी शुरू हो तब भी कोई हर्ज नहीं है। लेकिन जिन्हें खुली-जेल में काम करना है उन सभी अधिकारी व कर्मचारियों को नये इंसान बनाने के काम में सहायक होना है इसलिए काम शुरू करने के पहले उनका इस दृष्टि से प्रशिक्षण बहुत आवश्यक है। साथ ही जिन आत्म-समर्पणकारी भाइयों को उस खुली जेल में रहना है उनकी छवि भी जेल-विभाग ने तैयार कर ली होगी। यदि यह काम अभी तक नहीं किया गया हो तो वह प्रयोग शुरू करने के पहले ही कर लिया जाना चाहिये।

शक्ति कहां लगती है ?

म० प्र० शासन ने आत्मसमर्पणकारियों के पुर्नवास का काम उठा लिया है। राज्य द्वारा आत्मसमर्पणकारी बागी भाइयों को दी गई १,२०,००० रुपये की तात्कालिक—आर्थिक सहायता, ४२३६-७१ एकड़ भूमि, बैल, बीज, खाद और कृषि उपकरणों के लिये दी गई ६७,२२५ रुपये की पुनर्वास सहायता और ५५,३७१ रुपये छात्रवृत्ति, के लिए मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री और उनकी सरकार नि:सदेह धन्यवाद की पात्र है। लेकिन सहायता का यह कार्य केवल सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा न होकर पुर्नवास बोर्ड के माध्यम से किया गया होता तो निश्चय ही वितरण अधिक न्यायपूर्ण उपयोगी और जल्दी होता।

आत्मसमर्पणकारियों के घर की समस्याओं में मिशन को बहुत समय और शक्ति खर्च करनी पड़ी है। समर्पित भाइयों के जंगल जीवन के साथी और सहयोगी तथा उनके परिवार के लोग अक्सर छोटी-मोटी बातों को बढ़ा-चढ़ा कर उनके सामने रखते हैं और *मिशन उनकी सब समस्याओं* को हल कर दे यह अपेक्षा रखते हैं। परिणामस्वरूप मिशन के दफ्तर का काम अनावश्यक रूप से बढ़ता जाता है। और क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं का अत्यधिक समय और शक्ति इन्हीं छोटी-मोटी बातों में चली जाती है।

ताल-मेल की कमी है

वैसे आत्मसमर्पणकारी बागियों की कठिनाइयों को सुनने के लिए शासन ने शिकायत प्रकोष्ठ की स्थापना जेल में की है। एक उपजिलाध्यक्ष और एक उप अधीक्षक (पुलिस) इसी काम के लिए नियुक्त भी है। लेकिन शिकायत प्रकोष्ठ बहुत सक्रिय नहीं है। यदि शिकायत प्रकोष्ठ सक्रिय हो, उसके लिए नियुक्त अधिकारी केवल उसी काम के लिए हो, उन्हें आवश्यक साधन *दिये जायें और वे सम्बन्धित अधिकारियों* से सम्पर्क करके समर्पित भाइयों की कठिनाइयां दूर करने में पूरी तत्परता से सहायता करें, तो मिशन का समय और शक्ति अधिक उपयोगी कामों में लग सकती है।

मुख्यमंत्री की अनुकूलता और शासन *की उदारनीति के बावजूद भी प्रशासन का* अनुभव बहुत अच्छा नहीं रहा है। बिना मुख्यमंत्री के कोई काम होता नहीं है और मुख्यमंत्री अन्य आवश्यक कार्यों में व्यस्त रहने के कारण उतना समय इस काम के लिए नहीं दे पाते, जितना कि उन्हें देना चाहिए। सम्बन्धित विभागों में ताल-मेल की कमी है। परिणामस्वरूप काम में शिथिलता तो है ही अनावश्यक विलम्ब भी होता रहता है। समर्पणकारियों में असंतोष और मिशन के प्रति गलतफहमियां पैदा करने के लिए प्रशासन का यह स्वाभाविक और परंपरागत तरीका काफी है। समर्पित भाई समझते हैं कि सरकार ने तो सब कुछ मिशन पर ही छोड़ दिया है मिशन जो चाहे सो कर सकता है, लेकिन करता नहीं है। शासकीय अधिकारियों व कर्मचारियों की बातचीत भी इस गलतफहमी को बढ़ावा देने में सहायक रही है। यदि राज्य-शासन ने इस काम के लिए अपने ही अधिकारियों *व कर्मचारियों में से समझदारी पूर्वक अधिक* उपयुक्त व्यक्तियों की खोज की होती तो उसे ऐसे लोग तो अपने में से ही मिल सकते थे, लेकिन वैसी तीव्रता शासन में दिखाई नहीं देती।

अभी तक के अनुभव के आधार पर मिशन को आगे कौन से काम करने हैं यह मिशन को तय कर लेना चाहिए और उसके अनुसार अपनी नीति निर्धारित करना चाहिए। जेल के अन्दर समर्पणकारियों के मानसिक विकास और क्षेत्र में सहकार-पद्धति (भूदान ग्रामदान पद्धति) की उपयोगिता की प्रतीति लोगों में कराते हुए सम्मतिशक्ति संगठित करने का काम मिशन *का मुख्य काम है। छोटी-मोटी बातों* को सरकार पर ही छोड़ कर उसे अपने मुख्य काम को ध्यान में रख कर योजना बनानी चाहिए और उसका आयोजन इस प्रकार करना चाहिए कि क्षेत्र में लोग जागृत हों, अपनी जिम्मेदारियों को समझें और उन्हें निभाने में आगे आयें।

मुख्यमंत्री की अनुकूलता, राज्य-शासन की सद्‌भावना, प्रशासन और सहयोगी संस्थाओं से जो भी सहयोग मिले कृतज्ञता-पूर्वक स्वीकार करते हुए मिशन को अपने और क्षेत्र की जनता जनार्दन के भरोसे काम खड़ा करना होगा। तभी क्षेत्र में पुरुषार्थ का संचार होगा। मिशन की छवि निखरेगी और सरकारें भी जो मिशन की कभी सुनती हैं, कभी सुनी अनसुनी करती हैं और कभी बिलकुल नहीं सुनतीं, वे भी मिशन की राय को कद्र करेंगी और उस पर अमल *करने के लिये मिशन के साथ सहयोग करने* की तत्परता दिखायेंगी।

×

खुली जेल का सफल पूर्वाभ्यास : नरसिंहगढ़ ट्रांजिट कैम्प

—यशवंत कुमार सिंधु

चम्बल घाटी के ऐतिहासिक आत्म समर्पण के बाद ग्वालियर सेन्ट्रल जेल में गठित विशेष सत्र न्यायालयों में अपराध स्वीकृति का अप्रतिम कीर्तिमान स्थापित करने वाले जिन प्रमुख बागियों को आजन्म कारावास की सजा सुनाई गई थी उन्हें खुली जेल में रखने से पूर्व राज्य शासन ने ट्रांजिट कैम्प में खुली जेल व्यवस्था का पूर्वाभ्यास कराने की योजना बनाई। इसके अन्तर्गत नरसिंहगढ़ उप जेल को आत्म समर्पित बागियों के ट्रांजिट कैम्प के रूप में प्रयुक्त किया गया। ट्रांजिट कैम्प को आत्म समर्पित बन्दी बागियों के नये जीवन का प्रवेश द्वार भी कहा जा सकता है। क्योंकि चम्बल घाटी शान्ति मिशन के सक्रिय सहयोग से इस शिविर ने नवजीवन संस्कार शिविर की महती भूमिका गत छः माहों में बड़ी सफलता के साथ निभाई है।

इस शिविर को संचालित करने के लिए जब चम्बल घाटी शान्ति मिशन ने मेरी सेवाएं चाहीं तो बागी सरदारों के सानिध्य की रोमांचक कल्पना और फिर उनकी जीवन धारा को रचनात्मक दिशा में संचालित करने की चाह ने मुझे लुभाया।

१ अप्रैल १९७३ से प्रारम्भ हुए इस नवजीवन संस्कार शिविर में कुल १४ शिविरार्थी हैं। मोहरसिंह, माधोसिंह, माधूसिंह और मानसिंह के साथ आये कल्याणसिंह, स्वरूप सिंह, माताप्रसाद, जगजीतसिंह, मनीराम, जियालाल, प्रताप-सिंह, हरविलास, रामस्वरूप और मगाधर। मेरी पूर्व की यह धारणा कि अपराधी जन्मजात नहीं होते उन्हें परिस्थितियां अपराधी करार दे देती हैं यहां आकर गलत प्रतीत नहीं उतरी। वर्तमान परिस्थितियों के मजिस्ट्रेट वातावरण के बीच यहां के विस्थापित मानस ने मेरे चीतन को झकझोर दिया।

सर्वधर्म प्रार्थना, गीता, रामायण और विष्णुसहस्रनाम के साथ गांधी-दर्शन और विचार के सम्भाग वर्गों ने इन्हें आध्यात्मिक दिशा दी। श्रमदान सफाई और अपने कार्यों को स्वयं करने के संकल्पों से इनके जीवन में श्रम की यथेष्ट प्रतिष्ठा हुई। कुछ समय में ही निरक्षर बागी भाइयों ने साक्षरता के महत्व को स्वीकार किया और फिर अक्षर ज्ञान से लगाकर स्वाध्याय तक का कार्य नियमित रूप से चलने लगा। सभी शिविरार्थी बागी भाई सामूहिक प्रार्थना और सामूहिक भोजन करने लगे।

जब १४ अप्रैल ७३ को बागी भाइयों ने अपने आत्मसमर्पण की पहली वर्षगांठ मनाई तब स्वेच्छा से उन्होंने महात्मा गांधी के चित्र को साक्षी मानकर बीड़ी, सिगरेट शराब और मांस को तिलांजलि दे दी। प्रेरणादायी महात्मा के इस अनूठे पर्व पर उनके द्वारा लिये गये अपूर्व संकल्पों से उनका मानस और ऊंचा उठा, जनता के बीच उनकी स्थिति और स्पष्ट हुई। मुझे ऐसा लगने लगा कि यह शिविर मात्र बन्दीगृह और खुली जेल के बीच का ही ट्रांजिट कैम्प नहीं है बल्कि अन्तरात्मा और परमात्मा के बीच का दैहिक ट्रांजिट कैम्प भी है। जियालाल और प्रतापसिंह अल्पाहार मुक्त हो आज जिस काम, क्रोध मद, लोभ को जीतने की साधना में लग रहे हैं वह ईश्वर के नजदीक पहुंचाने वाला ही रास्ता है।

१ अप्रैल १९७३ से ३० जून ७३ तक इस शिविर का पहला त्रैमासिक चरण चला। इस बीच आत्म समर्पित बन्दी बागी भाइयों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को हल करने और दर्शक के रूप में आने वाले सम्बन्धित विभाग के प्रमुखों द्वारा दिये गये मौखिक आश्वासनों को व्यावहारिक रूप दिलाने में मुझे बहुत सा समय प्रदेश की राजधानी में देना पड़ा।

इस शिविर के सभी शिविरार्थी जिनमें दो लाख रुपये के घोषित पुरस्कार वाले मोहरसिंह और माधोसिंह भी सम्मिलित हैं, बिना किसी पुलिस व्यवस्था के पूर्णत स्वतन्त्र होकर यहां पैरोल पर मुक्त हुए और निर्धारित अवधि बड़ी शान्ति के साथ अपने घर नगर या गांव में बिताकर समय से नरसिंहगढ़ जेल वापिस आ गये। आत्म समर्पण और अपराध स्वीकृति के बाद हृदय परिवर्तन की एक और कसौटी पर भी ये विश्वास एवं वचन के पक्के बागी भाई खरे उतरे।

नवजीवन शिविर को अभी तक जिन महानुभावों ने देखा है वे बागी भाइयों के विनम्र और सरल स्वभाव की छाप अपने साथ लेकर लौटे हैं। विधि विभाग के मन्त्री कृष्णपालसिंह, वन राज्यमन्त्री उमराव सिंह और लोकनिर्माण मन्त्री तेजलाल टेंभरे आदि ने नवजीवन संस्कार शिविर का निरीक्षण करने के बाद इसकी कार्य पद्धति को सराहा है।

प्रादेशिक जेल व्यवस्था और प्रशासन के इतिहास में अपराधिक मनोवृत्ति के कीर्तिस्थ अपराधियों के हृदय परिवर्तन का यह एक अनूठा प्रयोग था जिसकी सफलता पर आज चम्बल घाटी शान्ति मिशन को ही नहीं बल्कि प्रादेशिक जेल व्यवस्था एवं प्रशासन को भी गर्व है।

नवजीवन संस्कार शिविर के माध्यम से आत्मसमर्पित बागियों ने अपने नये जीवन की देहरी पर पैर रख कर अभी तक जो यथेष्ट दूरी तय की है उसमें, आदरणीय सरला बहन प्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष काशीनाथ त्रिवेदी, ग्रामभारती के गोपाल भाई भट्ट और भोपाल जिला सर्वोदय मण्डल के मन्त्री चक्रादत्त भारतीय का उल्लेखनीय योगदान रहा है। हमारा मार्ग दर्शन करने के लिए समय-समय पर दवेन्द्र भाई, महावीरसिंह, हेमदेव शर्मा और लक्ष्मीनारायणसिंह के साथ प० लोकमन ने जो यात्राएं की हैं उनका भी इस शिविर के शिविरार्थी बागी भाइयों पर यथेष्ट प्रभाव पड़ा है।

नवजीवन शिविर के नाम से प्रयुक्त नरसिंहगढ़ उप जेल के जेलर बनवारी लाल जी बिसारिया ने जिस रुचि के साथ जेल नियमों का पालन करते हुए बागियों का अविकल्प हित चिन्तन किया है—उसका ही आज यह परिणाम हमारे सामने है कि नवजीवन संस्कार शिविर की व्यवस्था में सरकार और शान्ति मिशन एक दूसरे के पूरक हैं।

अब जहां हम इस नवजीवन शिविर के शिविरार्थी बागी भाइयों को दो अक्टूबर से खुली जेल में रखने की तैयारी कर रहे हैं, वहां हमें इस बात का बराबर ध्यान रखना चाहिये कि कार्यक्रम को हम मनोवैज्ञानिक ढंग से इस प्रकार समायोजित करें कि यहां इनको अभिरुचियां और भी सुसंस्कृत हो सकें।

शिक्षा : स्कूल से खेत खलिहानों तक

(पेज ६ से जारी)

खेत-खलियान, दूकान, सरकारी दफ्तर, खानें और कारखाने यदि सभी शिक्षा लेने-देने के साधन नहीं बने तो शिक्षा को सार्वभौमिक नहीं बनाया जा सकता।

और फिर अगर इन व्यावसायिक विद्यालयों में जो ट्रेनिंग मिलती है, उसे अगर उन स्थानों पर पूरा नहीं किया गया जहां सचमुच काम होता है तो विद्यार्थी का सामाजिक व्यक्तित्व विकसित नहीं होगा जो लोकतंत्र की सफलता की सबसे बड़ी शर्त है।

इन माध्यमिक संस्थाओं में सर्वत्र शिक्षण का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषायें हों।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा का व्यवसायीकरण तब अधिक सहज और प्राकृतिक होगा जब प्राथमिक स्तर की शिक्षा भी अनिवार्य रूप से उत्पादन और विकास कार्यों से सम्बन्धित कर दी जाये और समाजोपयोगी उत्पादन काम शैक्षिक प्रक्रिया का अभिन्न अंग बन जाये। अतः इस स्तर की शिक्षा भी एक साथ सैद्धान्तिक, प्रायोगिक, मैनुअल और टेकनिकल हो। सामान्य विषयों के शिक्षण का पूरा मूल्य प्राप्त करने के लिए बौद्धिक शिक्षा और हाथ के काम की शिक्षा का समन्वय किया जाये।

प्रारम्भिक स्तर की शिक्षा का ढांचा ऐसा बनाया जाये कि वह बच्चों के लिए ही नहीं वयस्कों के लिए भी मुक्त हो। यह शिक्षा व्यक्ति में ज्ञान और निर्णय-शक्ति के विकास के साथ इस भावना का भी सृजन करे कि वह समुदाय का अंग है और उसका अपने और दूसरों के प्रति रचनात्मक उत्तरदायित्व है।

जाहिर है कि ऐसा ढांचा तभी बनेगा जब इस स्तर की शिक्षा भी स्कूल की चहारदीवारियों के बाहर खेत-खलिहानों, दूकानों-कारखानों में दी जाये। निर्धारित स्तर से विद्यार्थी समुदाय के इन क्षेत्रों में जहां सचमुच काम हो रहा है शिक्षा ग्रहण करे, और इस प्रकार स्कूल के बाहर निजी तौर पर समुदाय के उत्पादन केन्द्रों में काम करना विद्यालय के टाइम-टेबल का अंग हो।

आज आवश्यकता इस बात की है कि अधिकाधिक विद्यार्थी अधिक स्वतन्त्रतापूर्वक एक ही संस्था में एक स्तर से दूसरे स्तर तक अधिक आसानी से आ जा सकें। अतः विभिन्न प्रकार की शिक्षा संस्थाओं, व्यवस्थापकों, पाठ्यक्रमों और स्तरों के बीच कृत्रिम अवरोध और औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच का व्यवधान समाप्त किया जाये और विद्यार्थी प्रारम्भिक स्तर की परम्परित अनिवार्य शिक्षा-काल को समाप्त किये बिना ही उच्च शिक्षा ग्रहण के लिए स्वतन्त्र हों। उन्हें शिक्षा की एक शाखा से दूसरी शाखा में जाने की पूरी स्वतन्त्रता हो। इस प्रकार की पुनरावर्तक शिक्षा (रिकरेन्ट ऐजुकेशन) विद्यालयी और अविद्यालयी शिक्षा के विरोध को समाप्त कर देगी। इसका यह भी अर्थ हुआ कि संस्थाओं में प्रवेश पाने की कसौटी अनौपचारिक और उदार हो और यह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और उनके व्यावसायिक भविष्य को ध्यान में रख कर निर्धारित की जाये, उनके स्कूल के प्रमाण-पत्रों और डिप्लोमाओं के आधार पर नहीं।

उत्तरप्रदेश के लोकसेवकों के नाम

[पिछले ७ महीनों से यह चिट्ठी आपकी सेवा में इस आशा से निःशुल्क भेजी जाती रही है कि आप भूदान-यज्ञ के ग्राहक बन जायेंगे। कई मित्र बन भी गये हैं। जो अकेले न बन सकते हो, २-३ मित्र मिल कर ग्राहक बनें या अपने मुहल्ले के किसी समर्थ साथी या संस्था को ग्राहक बनाइये, जिससे आप आन्दोलन के समाचारों से अवगत रहें। इस माह से यह चिट्ठी तो पहले सप्ताह में प्रकाशित होती रहेगी, परन्तु अंक निःशुल्क नहीं भेजा सकेगा।—संयोजक]

स्त्री शक्ति जागरण : ७ और ८ सितम्बर को प्रदेश का चौथा और अन्तिम स्त्री-शक्ति जागरण शिविर केदारनाथ के निकट चमोली जिले के रामपुर गांव में हुआ। घनघोर वर्षा और टूटी हुई सड़कों के बावजूद गोपेश्वर, टिहरी और कोटद्वार के अलावा आसपास के गांवों से भी बहिनें आई थी। इस शिविर में कालेज की दो छात्राओं को छोड़कर सब ग्रामीण महिलायें थी, जिनमें से अधिकांश ने शराबबन्दी सत्याग्रहों में भाग लिया था। शिविर का संयोजन उत्तराखण्ड सर्वोदय मण्डल के संयोजक श्री आनन्द सिंह बिष्ट और केदारघाटी के निष्ठावान सेवक श्री केदार सिंह रावत ने किया। रामपाल के गांव के लोगों ने अपने खेतों से आलू खोद कर दिये और अन्य खाद्य-सामग्री भी दी।

अगले दिन अधिकांश शिविरार्थी बहनें निर्मला बहन के साथ केदारनाथ की यात्रा पर गयीं। केदारनाथ की २० कि० मी० की चढ़ाई की पदयात्रा उन्होंने हंसते हंसते पूरी की। एक बहन तो दूध पीती बच्ची को गोद में लेकर गई थी। आद्य शंकराचार्य की समाधि के निकट मंदिर के प्रांगण में हुई आम सभा में ब्रह्म विद्या पर निर्मला बहन का प्रवचन हुआ।

१६ सितम्बर को लखनऊ गांधी भवन में प्रदेशीय महिला सम्मेलन हुआ, इस में भारतीय ग्रामीण महिला समाज के अलावा कई जिलों की यात्रा-संयोजिकायें आई थी। प्रायः प्रत्येक जिले में एक-एक पदयात्रा निकालने की योजना बनी। लखनऊ, कानपुर और आगरा में एक से अधिक पदयात्रायें निकलेंगी। जहां-जहां कस्तूरबा ट्रस्ट और ग्रामीण महिला समाज के केन्द्र हैं, वहां निश्चित रूप से यात्रायें निकलेंगी। हरिजन सेवक संघ ने भी अपनी बाल सेविकाओं को इन यात्राओं में शामिल होने के लिए निर्देश दिये हैं। यात्रा-टोलियों को बिक्री के लिए साहित्य गांधी आश्रमों से प्राप्त हो सकेगा। कई शिविरों में और खासतौर से उत्तराखण्ड में हमारे साथियों ने घर का काम स्वयं संभालकर अपनी सहधर्मिणियों को शिविरों में आने का अवसर दिया। आशा है ११ से १७ अक्तूबर तक स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के दौरान सभी लोक सेवक घर का दायित्व संभालकर बहनों को यात्रा में शामिल होने की प्रेरणा देंगे और इस कार्यक्रम को सफल बनायेंगे।

उपवास दान : ७६ वें वर्ष में प्रवेश करने के दिन (११ सितम्बर को) पवनार से बाबा के ये शब्द आपने पढ़े होंगे, "इन दिनों मैंने उपवास शुरू किया है, एक है ११ ता० का आज का और दूसरा २५ तारीख को।" इनमें से एक उनका जन्म और दूसरा गृह-त्याग का दिन है। इस उपवास से एक वर्ष की बचत की रकम—३६ रु० उन्होंने सर्व सेवा संघ को दान देते हुये अपील की है कि "हमारे साथी, कार्यकर्ता, सहयोगी, सर्वोदय विचार में श्रद्धा रखने वाले जितने भी लोग भारत में हैं वे महीने में अगर एक उपवास करेंगे और साल भर का जो खर्च होगा उपवास का वह सर्व सेवा संघ को देंगे तो बहुत बड़ा काम होगा।" उन्होंने देश भर में ४० हजार उपवास करने वाले लोगों की अपेक्षा रखी है। रचनात्मक कार्यकर्ताओं की सभा में इसकी व्याख्या करते हुए बाबा ने कहा आज तक हमारा काम सर्व (सब) के दान से चलता था, अब शुद्ध दान से चलेगा।

उपवास-दान देने वाले दो प्रकार के लोग होंगे। २५ रुपये और ३६ रुपये वार्षिक देने वाले, परन्तु यह दाता की इच्छा पर छोड़ दिया है। कई मित्रों ने सेवाग्राम सम्मेलन में ही अपना उपवास-दान सर्व सेवा संघ को दिया और वहां से अपने-अपने क्षेत्रों में अधिक उपवास-दानी तैयार करने का संकल्प लेकर लौटे। लखनऊ के हकीम श्यामदास जी ने बताया कि वे सिंधी समाज से ४० उपवास-दानियों का दान अगले २ माह में भेजेंगे।

हम सबके लिए अपने छोटे-छोटे समूहों, और जिला सर्वोदय मण्डलों की बैठकों में विचार कर तुरन्त अमल करने के लिए एक व्यावहारिक कार्यक्रम मिला है। यह केवल उपवास करने वाले को ऊंचा उठाने के लिए ही नहीं, बल्कि हमारे संगठन को शुद्ध साधन देकर अहिंसा का कारगर शस्त्र बनाने का अभिनव प्रयोग है। भारतीय लोकजीवन में और खासतौर से राजनैतिक पक्षों द्वारा अपने कार्यों के लिये चन्दे के रूप में जमा किये जाने वाले *काले धन के कारण आई हुई मलीनता* को दूर करने का एक नया रास्ता खुल गया है।

सहरसा महा अभियान : कई वर्षों से सहरसा में चलने वाले सघन पुष्टि अभियान पर एक बार पुनः देश की शक्ति लगाने का निश्चय हुआ है। इसके लिए नवम्बर से अप्रैल तक का एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया गया है, जिसमें प्रखण्ड स्तर के शिविरों, पदयात्राओं और गांव-गांव में ग्रामसभायें गठित करने की योजना है। इस अभियान के लिये देश भर से ऐसे २५ वरिष्ठ कार्यकर्ता जो प्रखण्ड के काम का दायित्व ले सकें और १२५ अन्य साथियों की मांग की गई है। बंगाल से चारू बाबा और तमिलनाडु से

बिना टिप्पणी के

मैं भूदान-यज्ञ पत्रिका का ग्राहक, लोक सेवक तथा प्राथमिक सर्वोदय मंडल का संयोजक हूं। मैं लगातार पत्रिका पढ़ते आ रहा हूँ। कुछ ही दिनों से मुझे पत्रिका में कुछ कमियां दिख रही हैं। जिनके मार्ग-पथ पर यह संस्था चल रही है, उनकी अनमोल वाणी नहीं दिख पाती, मेरी आपसे व्यक्तिगत आग्रह व विनती है व इसे आप सुझाव ही समझिये कि हर पत्र में बापूजी की वाणी जरूर लिखी हो, ताकि नये व पुराने पाठक पढ़ कर उपयोगी सिद्ध कर सकें और विशेष लाभ उठा सकें। बापूजी की वाणी में इतनी शुद्ध प्रखर शक्ति है कहई रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना। राम काज लगि तव अवतारा। सुनतहिं भयउ पर्वताकारा॥ आप इसे सोचिए, समझिए, उचित जचे तो जरूर व्यवस्था करें।

जगदीश राम,
मु० व पो० सोलकर, बालोद
जिला दुर्ग (म० प्र०)

मैं कुछ ऐसा अनुभव करता हू कि जबसे भूदान-यज्ञ बनारस से राजधानी दिल्ली पहुचा है, उस पर भी वहा की हवा का असर हो गया है। वह भी देश के हर व्यक्ति की उदय न चाह कर पक्ष-विशेष की बात ज्यादातर कहने लगा है और सरकार या अन्य राजनैतिक दलों की भांति आलोचक बन गया है। सर्वोदय का उद्देश्य तो रचनात्मक है और होना भी चाहिए न कि आलोचनात्मक ही आलोचनात्मक। शायद रचनात्मक सर्वोदयी विचारधारा वाली पीढ़ी धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। मैं भूदान को कई साल से पढ़ता आ रहा हूँ और एक लोकसेवक के नाते कुछ न कुछ रचनात्मक काम भी करता रहता हूं। अब इसके पढ़ने में वह रस नहीं आता।

प्रताप चन्द्र जैन, २१/६३
धूलियागंज, आगरा-३ (उ. प्र.)

हमारा आन्दोलन असफल रहा, इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि हम अपने लक्ष्य या सिद्धान्त, जनता में से 'दे-दुज्म' (हमारा काम हमारे प्रतिनिधि, माई-बाप, सरकार या कोई तानाशाह करेगा) की भावना को उन ग्रामों में भी दूर नहीं कर सके, जिनका कि ग्रामदान हो चुका है। बल्कि आजकल हम सरकार के कामों की आलोचना या समर्थन कर अपने इस उद्देश्य से भी च्युत हो रहे हैं। व्यवस्था के अन्दर ही समाधान ढूंढ़ कर या उसकी आलोचना या समर्थन कर क्रांति करने की कल्पना कितनी सुन्दर है? इससे कितनी अधिक लोकशक्ति जाग्रत होगी।

इस बात का सबसे ताजा उदाहरण है, हमारे द्वारा गेहूं के सरकारीकरण पर अपनाया गया रुख। हमने सरकार की आलोचना की, उसके समक्ष कुछ सुझाव रखे और आशा की कि वह उन्हें मान ले। हमने जनता को कोई दृष्टि नहीं दी। जिन गांवों का ग्रामदान हो चुका है, उनमें से कुछ गांवों को तैयार करते कि वे यह घोषणा कर देते कि उनके यहां इतना गेहूं हुआ है, इतना उन्हें साल भर तक खाने के लिए चाहिए और इतना बीज के लिए, इतना बचता जिसे वे अमुक लागत पर, जो उन्हें आयी है, सरकार को देने के लिए तैयार हैं। अगर सरकार इससे अधिक गेहूं लेने की कोशिश करेगी या इससे कम भाव देगी तो सारा गांव सत्याग्रह करेगा।

किसी काम की, या क्रांति की सफलता के लिए नीयत हिम्मत साहस व सातत्य चाहिए। हम में सातत्य है, नीयत के बारे में कभी-कभी शंका पैदा होती है। फिर भी वह है। साहस का मौका नहीं आया या हमने ऐसे मौकों को टाल दिया। हमारी सबसे बड़ी कमी है—हिकमत (तकनीक)।

आज की स्थिति में अहिंसक क्रांति की हिकमत क्या हो सकती है? जिस प्रकार गांधी जी ने कहा था कि समुद्र प्रकृति का दिया हुआ है और श्रम करना मनुष्य का अधिकार है अतः समुद्र से नमक बनाना हमारा मौलिक अधिकार है; उसी प्रकार हमें ग्राम सभाओं से यह घोषित करवाना चाहिए कि ग्राम की व्यवस्था करना, उसमें चुनाव व निर्णय करना हमारा मौलिक अधिकार है और उसमें सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती। 'ग्रामस्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'—यह नारा आज की अहिंसक क्रांति की सही हिकमत हो सकती है।

इसके लिए हमें ग्रामसभाओं से यह घोषणा करवानी चाहिए कि ग्राम व नगर समाज की प्रथम व संगठित इकाई हैं अतः प्रशासकीय व अन्य कार्यों के लिए वे सक्षम व पूर्ण हैं और जिला, प्रांत व देश की इकाइयों का कार्य सिर्फ इनका आपस में समन्वय व संतुलन बनाने का है, उन पर शासन करने का नहीं। अर्थात् ग्राम व नगर अपने आप में सार्वभौम गणराज्य हैं और जिला, प्रांत और केन्द्र उनके संघ। अत: ये इकाइयां अपने यहां की शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, शांति, औद्योगिक, वितरण, उत्पादन, निर्माणकार्य आदि की व्यवस्था स्वयं करेंगी और इस सम्बन्ध में प्रांतीय व केन्द्रीय सरकार के नियम, कानून व आदेश नहीं मानेंगी और न उनके कर्मचारियों को अपने क्षेत्र में कार्य करने देंगी। साथ ही भूमि का लगान, आय-कर, विक्रय-कर, भवन-कर, औद्योगिक-कर आदि वे स्वयं वसूल कर रही हैं। प्रांतीय खर्च के लिए उत्पादन-कर, सड़क-कर, मनोरंजन-कर आदि हैं और केन्द्र के खर्च के लिए बड़े उद्योगों के उत्पादन-कर, आयात-निर्यात कर आदि हो सकते हैं। वे यह भी घोषित करदें कि क्षेत्र की समस्त भूमि उनकी है और उसका वितरण, पुर्नवितरण और बदोबस्त वे स्वयं कर रही हैं।

अगर सरकार इसका विरोध करे या इसके पालन में अड़चन डाले तो हमें गांव को सत्याग्रह के लिए तैयार करना होगा।

अगर हमें ईमानदारी से क्रांति करना है और कल्पनालोक से धरती पर उतरना है तो हमें इस पर गंभीरता व सक्रियता से विचार करना होगा।

मदन मोहन व्यास
१३ अजंता टाकीज के पास
रतलाम (म. प्र.)

स्त्री को सबसे पहले निर्भय बनना होगा

(पेज ४ से जारी)

ध्यान में आ सकती है। विज्ञान ने आज हमारे सामने जो चुनौती खड़ी कर दी है, उसे हम सब जानते हैं। यदि विज्ञान की शक्ति को ठीक दिशादर्शन नहीं दिया गया तो वह दुनिया को सर्वनाश की ओर ले जायेगी। इसलिये इसके आगे समाज की रचना अहिंसा की बुनियाद पर ही हो सकती है तभी समाज बचेगा, यह आज की एक आम राय है। अहिंसक समाज की स्थापना तभी होगी, जब अहिंसा के लिये आवश्यक गुणों का विकास होगा। अहिंसा के लिये आवश्यक गुण मानव मात्र में मौजूद हैं, पर अपने कर्तव्य तथा अपनी प्रकृति के कारण स्त्रियों में वे अधिक सहज हैं। इसलिये अहिंसक समाज की स्थापना के कार्यक्रम में स्त्री ही प्रधान रहेगी। उसकी शक्ति का विकास करना आज एक सामाजिक आवश्यकता है। स्त्री शक्ति लिंगवाचक शब्द नहीं है, वह गुणवाचक शब्द है। अहिंसा का पोषक विधायक गुण यानी स्त्री-शक्ति। जहां कहीं ये गुण हैं, वहां उनका परिपोष करना होगा। इसलिये आवश्यक है कि समाज का आधा अंग, जो आज गाढ़ निद्रा में पड़ा है, उसे जगायें।

आज की समाज-रचना अपनी बुनियाद में गलत है। अतः उसमें किसी एक अंश में परिवर्तन करने से काम नहीं बनेगा। नई पीढ़ी को ही तैयार करना होगा। आज की नई पीढ़ी के सामने जो समस्यायें उभरी हैं, उसका प्रमुख कारण परिवार की नींव का हिल जाना है। परिवार की नींव भी स्त्री ही है। इसलिये भी स्त्री-शक्ति का विकास आवश्यक है।

आज स्त्री को इस तथ्य का भान क्यों नहीं है? क्योंकि समाज ने और खुद स्त्री ने भी परिवार का सीमित दायरा ही स्त्री का विस्तार-क्षेत्र माना है, अतः उसने ही विस्तार में वह बद्ध है, क्यों कि वह अज्ञान में पड़ी है, क्योंकि समाज तथा कुटुम्ब में उसकी भूमिका गौण मानी गई है, क्योंकि उसको आर्थिक, सामाजिक स्वतन्त्रता नहीं है, क्यों कि आज की शिक्षा उसे गलत राह पर ले जा रही है, क्योंकि आज समाज में और स्वयं स्त्री के मन में उसके शरीर का ही मूल्य है, जिसके कारण वह अत्याचार का शिकार बन जाती है और इसलिये खुद को अपमीन तथा असुरक्षित मानती है, क्योंकि मानवमात्र को प्राप्त ब्रह्मविद्या का अधिकार उससे छीन लिया गया है। इस स्थिति से ऊपर उठाने के लिये स्त्री को क्या करना चाहिये?

आज बहनें पुरुषों पर अवलंबित हैं। पुरुषों ने अपने स्वार्थ के लिए स्त्रियों को परावलम्बी बनाया है। स्त्री को अपने बल पर खड़ा रहना चाहिए। उसके लिए सबसे पहले तो उसे निर्भय बनना चाहिए। उसकी आत्मिक शक्ति जागृत होनी चाहिए। उसे अविचार से विचार तक, विचार से सुविचार तक आना चाहिए।

संयम तथा ब्रह्मचर्य का विकास करना चाहिए। दुर्जनता का सामना तभी हो सकता है जब उससे कई गुना अधिक परिणाम में सज्जनता सामने खड़ी होती है। स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों का मुकाबला तभी होगा, जब स्त्रियों का संयम गुण भोगवृत्ति से कई अधिक परिमाण में समाज में पनपेगा। और यह तभी बनेगा, जब समाज में कुछ स्त्रियां प्रखर ब्रह्मचर्य का पालन करेंगी और पूरे समाज में संयमवृत्ति का स्तर ऊपर उठेगा।

संयम गुण के विकास के लिए चार आश्रमों की पुनः प्रतिष्ठापना करना आवश्यक है। जिस तरह गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठापना विधिवत् होती है, उसी तरह वानप्रस्थाश्रम की विधिवत् प्रतिष्ठापना होनी चाहिए। उससे गृहस्थाश्रम का स्तर एकदम ऊपर उठेगा। समाज में संयम की स्थापना होगी। गृहस्थों के कर्तव्य से मुक्त तपस्वी समाज को सेवक के रूप में प्राप्त होंगे, जिनके द्वारा लोकशिक्षण का कार्य सहजता से हो पायेगा।

इस सब के लिए व्यापक तौर पर स्त्रियों से संपर्क करना, स्त्रियों को सोचने के लिए प्रवृत्त करना आवश्यक है। यह काम किस तरह से हो सकता है?

भारत की पदयात्रा करने वाली चार बहनें पांच साल से घूम रही हैं। उनका जगह-जगह सर्वसाधारण स्त्रियों से सम्पर्क आता है। सर्वसाधारण स्त्रियों तक पहुंचने हैं, तो पता चलता है कि वे नवविचार को सुनने के लिए कितनी उत्सुक हैं। सवाल है उनके पास पहुंचने का। पदयात्रा उसके लिए एक उत्तम साधन है। इसलिए भारत की पदयात्रा करने वाली ऐसी और बहनें निकलें। प्रादेशिक स्तर पर भी महिलाएं पदयात्राएं करें और भारत के कोने-कोने में रहने वाली बहनों से मिलें, उनके सुख-दुःख सुनें, विचार का उन्हें परिचय करायें। साल में एक 'स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह' मनाया जाये, जिसमें सैकड़ों की तादाद में छोटी-छोटी महिला यात्राएं निकलें।

छोटे-छोटे क्षेत्रों में आसपास की बहनों के शिविर हों। कुछ शिविर अध्ययन-शिविर भी हों।

इस क्रांतिकार्य में महिला-संस्थाएं भी सक्रिय बनें, इसलिए उनके पास भी पहुंचना होगा।

कई बहनें अविवाहित रह कर स्वतन्त्र जीवन जीना चाहती हैं, ऐसी बहनों को बल, हिम्मत दिलानी होगी। उनमें से जो कोई सेवा करना, निष्ठापूर्वक जीना चाहती हों, उन्हें योग्य व्यक्ति या स्थान से संपर्क करा देना चाहिए।

कई बहनें केवल इसीलिए विवाह करती हैं कि वे अकेले रहने की हिम्मत नहीं कर पाती। साथी या मिशन के अभाव में निरुत्साहित जीवन अपनाती हैं। परिणामतः जीवन में एक रिक्तता महसूस करती हैं। ऐसी स्त्रियों का किसी स्त्री-समूह से जु[ड़ना] आवश्यक है, ताकि वे अकेलापन महसूस न करें। उनके सामने पराक्रम के दूसरे मार्ग भी हैं, यह उन्हें मालूम हो।

स्त्रियों की शक्ति बढ़ाने की दृष्टि से स्त्री-समूह बनना आवश्यक है। गा[ंव] में भी ग्रामसभा के साथ-साथ स्त्री-स[भा] भी हो।

स्त्रियों की शक्ति को सक्रिय बनाने [के] लिए कुछ ऐसे कार्यक्रम हाथ में लिये जा[यें] जिनमें बड़ी तादाद में स्त्रियां इकट्ठी [हों]...

हम स्त्री-पुरुष की गुत्थी से ऊपर उठकर विचार करें

→

सकें। एक० मा-बहनों को अपमानित करने वाले गंदे अशोभनीय पोस्टर्स तथा इश्तिहार के खिलाफ संगठित आवाज उठायें, आंदोलन चलायें; दो० महिला-शांतिसेना का गठन करें, घर-घर शांतिपात्र की स्थापना करें; तीन० किशोर शांतिसेना संगठित करें; चार० शहरों के विभागों में तथा गांवों में साप्ताहिक सामूहिक सर्वधर्म-प्रार्थना चलायें, पांच० अध्ययन-मंडल चलायें।

स्त्रीशक्ति पर सोचते हुए एक बात अवश्य ध्यान में रखनी होगी कि मूलतः हमें पूरे समाज के संदर्भ में सोचना है। सारी दुनिया हमारी है यह विश्वास बन पायेगा, तभी हमारा व दुनिया का कल्याण होगा। इसलिए हमारा चिंतन स्त्री-पुरुष-गुत्थी में, तेरा-मेरा की भावना में बद्ध नहीं रहना चाहिए। अखंड समाज के पूरे संदर्भ में ही स्त्रीशक्ति-जागरण की बात सोचनी है।

भारत की गत बीस-बाईस साल की गतिविधियों को देखें तो एक बात स्पष्टरूप से ध्यान में आती है कि इस काल में स्त्रियों की शक्ति विकसित अवश्य हुई है। सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में भारत की महिला अपना हिस्सा उठाने की कोशिश कर रही है। ग्रामीण क्षेत्र में कस्तूरबा ट्रस्ट ने जो विशेष काम किया है, वह सर्वविदित है। अलावा इसके, अ. भा. महिला परिषद, अ. भा. ग्रामीण महिला संघ, समाज कल्याण बोर्ड आदि राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं ने भी इस कार्य को आगे बढ़ाया है। सर्वोदय आंदोलन ने भी इस काम में बड़ा योगदान दिया है। इन सब माध्यमों से जो कुछ बहनें कार्यकर्ता या सेवक के रूप में आगे आयीं, उन सबके कार्य का निचोड़ यही रहा कि यद्यपि इस दिशा में कुछ कार्य हुआ है, साधारण—खासकर ग्रामीण क्षेत्र की महिला आज की विकास-धारा से लगभग अछूती ही रही है। इसलिए भिन्न-भिन्न क्षेत्र में काम करने वाली ये सारी बहनें एक बार इकट्ठा हों और स्त्रीशक्ति-जागृति जैसे सर्वव्यापी, गहरे विचार तथा काम का स्पर्श सब स्तरों की महिलाओं को किस तरह हो सकता है, इस विषय पर चिंतन करें, इस हेतु गत ११ अप्रैल को कुरुक्षेत्र में एक सर्वोदय महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया था। चर्चा के बाद सम्मेलन ने निर्णय लिया कि ११ अक्टूबर से १७ अक्टूबर १९७३, समूचे देश में 'स्त्री शक्ति-जागरण सप्ताह' के रूप में मनाया जाये।

वहां एक सामूहिक राय यह भी रही कि आम स्त्री तक-खास कर गांव की बहनों तक पहुंचने का सर्वोत्तम साधन गांवों की पदयात्रा ही है। इस राय के आधार पर सोचा गया कि इस सप्ताह में भारत के ३०० जिलों में ३०० महिला-पदयात्राएं निकलें। हर जिले में (कम से कम) एक महिला टोली तैयार हो, जो सात दिन गांवों की पदयात्रा करे। बड़े-बड़े शहरों में सात दिन नगर-परिक्रमा करें। पदयात्राएं बहनों से सम्पर्क साधने, उनमें विकास की उमंग जगाने, और उनका उत्साह कायम रखने का समर्थ साधन हैं। इन यात्राओं में स्त्री के अपने स्वाभाविक गुणों के विकास की शिक्षा, शांतिकार्य, सहिष्णुता, सामाजिक एकात्मकता आदि विषयों पर स्त्री समाज का ध्यान आकर्षित किया जायेगा। समूचे भारत में एक साथ ३०० या उससे भी अधिक महिला-टोलियां अगर पदयात्रा पर निकलती हैं, तो एक बहुत बड़ी शक्ति शांति की दिशा में प्रकट होगी।

संयोजक की चिट्ठी····

जगन्नाथजी ने इस अभियान के लिये पूरा समय दिया है। प्रत्येक प्रदेश से साथी, इसमें आ रहे हैं। इस प्रकार विभिन्न प्रदेशों के साथियों के लिये एक साथ मिलकर काम करने और एक दूसरे के अनुभवों से लाभ उठाने का अच्छा अवसर हमारे सामने उपस्थित हो रहा है।

केवल बिहार के पड़ोसी और हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेश होने के नाते सहरसा के अभियान के लिये हमारी सेवायें अधिक उपयोगी नहीं होंगी, बल्कि प्रारम्भ ही से हमारा सहरसा के मोर्चे से सम्बन्ध रहा है। श्री बाबूलाल जी मित्तल और पुजारी राय जी वहां हैं। अलख भाई लम्बे अर्से तक वहां रहे हैं और कई साथियों का वहां के गांव-गांव से घनिष्ठ सम्पर्क है। मेरा आपसे निवेदन है कि इस विषय पर प्राथमिक, जिला और क्षेत्रीय बैठकों में विचार कर सहरसा अभियान के लिये अपनी सेवायें दें। आप कब और कितने समय के लिये जा सकते हैं, प्रदेश सर्वोदय मण्डल को सूचना भेज कर कृतार्थ करें।

नवीनीकरण . एक बार लोक सेवक का निष्ठा पत्र भरने के बाद प्रति वर्ष तीन रुपये पैंसठ पैसे या ६ गुण्डी सूत देकर नवीनीकरण कराना होता है। हमारे प्रदेश में अधिकांश लोकसेवक सन् १९७१ में बने थे, उनमें से कुछ का नवीनीकरण १९७२ में और बहुत कम का १९७३ में हुआ है। जिन मित्रों ने अपना अन्तिम शुल्क १९७२ के लिए दिया है, उन्हें देर से देर ३१ दिसम्बर १९७३ तक इस वर्ष के लिये अपना शुल्क जिला सर्वोदय मण्डल में जमाकर नवीनीकरण कराना है। आपने अपना इस वर्ष का शुल्क कब और कहां जमा किया है, इसकी जानकारी इस पत्र के पढ़ते ही उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल, श्री गांधी आश्रम, गढ़ रोड, मेरठ को भेजिये।

विनीत
सुन्दर लाल बहुगुणा
संयोजक

टिप्पणी • टिप्पणी • टिप्पणी • टिप्पणी

विज्ञान और विनाश

लॉस ऐंजिल्स के प्रसिद्ध विचार-पत्र 'मनस' में ४-५ महीने पहले किसी एक अंक में कहा था कि अब विज्ञान के बढ़ते कदम आदमी के मन में आश्वास की जगह भय उत्पन्न करते हैं। वैज्ञानिकों को अपने प्रति पनप रहे इस भाव का अहसास होने लगा है और इसीलिए खबर के अनुसार 'अमेरिकन एसोसिएशन फार द एडवान्स ऑफ साइन्स' ने अपने अगले अधिवेशन में 'विज्ञान के विनाश का स्वरूप और लोगों को उस भय के प्रति आश्वस्त करने के प्रयत्न' को मुख्य विचारणीय विषय की तरह रखना तय किया है।

वास्तव में विज्ञान की इच्छा तो खोजें करके मनुष्य को अधिकाधिक सुखी बनाने की रही है किन्तु उद्योग के क्षेत्र में अनावश्यक वस्तुओं के मनमाने उत्पादन, राजसत्ता के क्षेत्र में अमर्यादित सैनिक-शक्ति और परम संहारक शस्त्रों को बढ़ाते जाने की होड़ तथा चिकित्सा पद्धति में दूरगामी परिणामों को सोचे बिना रासायनिक पदार्थों के नित-नये मिश्रणों के प्रयोग ने विज्ञान के अकल्याणकारी उपयोग को ऐसा बढ़ा कर दिया है कि आज विज्ञान एक अपराधी की तरह कटघरे में खड़ा दिखाई दे रहा है।

अपराध का आरोप लगाकर विज्ञान को कटघरे में खड़ा भी आखिरकार किसने किया है? वैज्ञानिकों ने ही। [illegible] वैज्ञानिक ही ऐसा कर सकते हैं, रासायनिक खादों और औषधियों के बारे में वैज्ञानिक अपना ही डरावने तथ्य उपस्थित कर रहे हैं। उन्हीं ने बताया है कि कल कारखानों, रेलगाड़ियों, मोटर गाड़ियों जहाजों और हवाई जहाजों तथा अब राकेटों और अणु-अस्त्रों के धमाकों के भीतर, समुद्र की सतह, बहुत ऊपर आसमान में परीक्षण आदि के बढ़ते हुए अनुपातों ने प्रकृति का संतुलन अस्त-व्यस्त कर दिया है, यहाँ तक कि वे खाद्य और पेय पदार्थ जो वर्षों की कृपा से 'मनुष्य के हाथ के स्पर्श से अछूते' हमारे पास पहुँचाये जाते थे और इसलिए जो स्वास्थ्य के लिए सर्वथा निरापद माने जाते थे, रोगों के निधान बनाये जा रहे हैं। जैसे डिब्बा बंद भोजन नलों से मिलने वाला पानी, सुखाया गया दूध साफ की हुई चीनी, साफ किया हुआ चावल और चोकर अलग किया हुआ आटा, मैदा आदि के दुर्गुण तो बहुश्रुत हैं। रासायनिक खादों से उत्पन्न सारे प्रकार के अन्न और साग-सब्जियाँ किसी न किसी प्रकार के रोग का पैदा करने वाले बने जा रहे हैं। इन खादों से भूमि धीरे धीरे सत्वहीन बंजर हो जाती है। यह सब हम वैज्ञानिक ही बता रहे हैं। औद्योगीकरण और शहरों का नगरीकरण मानसिक असन्तुलन का उद्गम है यह हमें मनोवैज्ञानिक बता रहा है। इसी प्रकार अणु-विज्ञानवेत्ता ही अणुअस्त्रों के सबसे बड़े और सर्वाधिक निर्मम आलोचक हैं। अर्थात् समझना यह है कि पदार्थों और उनकी गति की हद तक विज्ञान की खोज ठीक है, किन्तु जब इन खोजों का मनुष्य और प्रकृति से सानुपात संबंध करने के बजाय उनके हित की अवज्ञा करके मनमाने कारणों से उन्हें लागू किया जाता है तो विज्ञान का मानो स्वभाव ही बदल जाता है। इसलिए आवश्यक है कि पदार्थों के स्वभाव और गति को मनुष्य तथा प्रकृति के अनुरूप बना कर स्थापित किया जाय। विज्ञान का अन्य किसी भी ढंग का उपयोग अहितकारी ही होगा।

'मनस' में दिये गये विचार प्रस्तुत करने का उपस्थित कारण विज्ञान का एक छोटा सा उपयोगी अनुसंधान है, जिससे आदमी की अन्न के बल उत्पादन, अन्न-पूर्ण भोजन की समस्या काफी बड़ी हद तक हल हो सकती है। अभी विज्ञान ने प्रयोगों के एक लम्बे सिलसिले के फलस्वरूप एक नया अन्न उगाया है जिसे हम 'गेहूँ-रा' कह सकते हैं। गेहूँ-रा गेहूँ और राई का संकर परिणाम है। इसका पारिभाषिक नाम 'ट्राइटि-केल' रखा गया है क्यों कि ट्राइटिकम गेहूँ और सीकेल राई के वैज्ञानिक नाम हैं। यह नया अन्न गेहूँ के अनुपात में अधिक पौष्टिक होने के साथ-साथ पैदावार भी अधिक देता है और यह ऐसी भूमि में बोया जा सकता है जो बंजर मानी जाती है। कम वर्षा का भी इस पर दुष्परिणाम नहीं होता। राई अ— गेहूँ का संकर होने के कारण श्वेतसार अतिरिक्त गेहूँ के प्रमाण में इसमें प्रोटीन त भी पर्याप्त मात्रा में अधिक होता है।

उत्तर प्रदेश के पन्तनगर कृषि अनुसंध विश्वविद्यालय मध्यप्रदेश के जवाहर ल कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर और कृ अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली में अभी इस संभावनों को पूरी तरह जानने के प्रयोग च रहे हैं। आशा की जाती है कि प्रयोगों बाद यह भविष्य में संसार को भूख अं अस्वास्थ्य से बचाने वाला अनुपम अन्न सि होगा। अब तक इसकी तीन प्रकार तैय किये जा चुके हैं। एक प्रकार अगली र बी की बुआई के वक्त तक किसानों को बोने लिए दिया जा सकेगा। कम वर्षा के प्रदे में इसका वितरण किया जायेगा और सभ वना ऐसी है कि वे प्रदेश इस नये अन्न क्षेत्र बन जायेंगे। ऐसा विज्ञान प्रणम्य है।

गौरव इतिहास का या गुलामी का ?

अभी १० सितम्बर को एक शोभा औ ऐश्वर्य और थोड़ी बहुत करतब और कल बाजी के बीच एक उत्सव राष्ट्रपति भवन में मनाया गया—अवसर राष्ट्रपति के अं रक्षकों की परम्परा का दो-सौ बरस पूरे जाने का था। उस दिन इस इतिहास स्मृति में एक डाक टिकट भी निकाला गया रात को आकाशवाणी और दूसरे दिन सा अखबारों ने बड़े उत्साहपूर्ण शब्दों में इस विवरण प्रस्तुत किया। मन में दो प्रश आये। एक तो यह कि दो सौ वर्षों १७७४ तो गुलाम बना कर रखने वालों थे, अपनी गुलामी के दिनों को भी गौरव

R.N. 2091/57 BHOODAN YAGYA 8 OCTOBER, 1973 Regd. No. D. 273

आन्दोलन के समाचार

● तरुण शांति सेना का चौथा राष्ट्रीय सम्मेलन २० से २२ अक्टूबर तक महाराष्ट्र में औरंगाबाद में हो रहा है। सम्मेलन का विषय है 'भारत में गरीबी : कारण और निवारण'। तरुण शांति सेना ने इस सम्मेलन में शामिल होने का निमंत्रण देते हुए कहा है कि गरीबी उन्मूलन और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के इस कठिन काम में केवल इस देश के युवा ही सहायक हो सकते हैं। इस स्थिति पर विचारों का आदान-प्रदान करने और एक ऐसा कार्यक्रम बनाने के लिए जो इस स्थिति का मुकाबला कर सके हम सभी युवाजनों को आमंत्रित करते हैं। सम्मेलन से सम्बन्धित अन्य जानकारी इस प्रकार है : प्रवेश शुल्क ५ रुपया है। इसे मनीआर्डर द्वारा संयोजक तरुण शांति सेना, राजघाट, वाराणसी २२१००१ को भेज कर सम्मेलन स्थान तक पहुँचने का रेलवे कन्सेशन प्राप्त किया जा सकता है। निवास व्यवस्था निःशुल्क है। भोजन शुल्क ५ रुपया है जो सम्मेलन स्थल पर ही जमा कराया जा सकता है।

● उत्तर प्रदेश ग्रामदान प्राप्ति समिति के भूतपूर्व मंत्री श्री कपिल अवस्थी ने रायबरेली जिले में १० गांवों का एक सघन क्षेत्र बनाया है जिसमें किसानों के बीच गोष्ठियां करके आरोग्य योजना और आत्मनिर्भरता का प्रयास करेंगे। अभी उन गांवों में पाक्षिक गोष्ठियां हो रही हैं।

● पवनार में विनोबा के सान्निध्य में सम्पन्न ट्रस्टीशिप परिषद की सिफारिशों के अमल के लिए श्रीमन्नारायण के संयोजकत्व में नौ सदस्यीय समन्वय समिति गठित की गई है। सदस्यों के नाम इस प्रकार हैं : सर्वश्री श्रीमन्नारायण (संयोजक), नवल टाटा, अन्तर्राष्ट्रीय चैम्बर ऑफ कामर्स के भू० पू० अध्यक्ष डा० भरतराम, मनमोहन मंगलदास, फेडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर ऑफ कामर्स एवं इंडस्ट्री के अध्यक्ष चरनराम, एसोसियेटेड चेम्बर ऑफ कामर्स के अध्यक्ष ए० एन० ह्वसर तथा आल इण्डिया फेडरेशन के अध्यक्ष श्री राम अग्रवाल।

केन्द्रीय वित्तमंत्री श्री चव्हाण, औद्योगिक विकास मंत्री श्री सुब्रमण्यम तथा कुछ अन्य केन्द्रीय मन्त्री भी उक्त समिति से सम्बन्धित रहेंगे। समिति की पहली बैठक नवम्बर के मध्य में दिल्ली में होगी।

● कस्तूरबा स्वास्थ्य संस्था, जो कि सेवाग्राम में महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज चलाती है, ने अपने अस्पताल में दस बिस्तरों की व्यवस्था वाला प्राकृतिक चिकित्सा विभाग खोलने का निर्णय किया है।

पता चला है कि इस के लिए गुजरात सरकार ने ५१,००० रुपये का प्रथम दान दिया है।

अ० भा० प्राकृतिक चिकित्सा महासंघ की कार्यकारिणी की बैठक ने तथा विनोबा ने इस निर्णय का स्वागत किया है।

यह देश का पहला अस्पताल होगा जहां एलोपैथी के साथ प्राकृतिक उपचार की भी व्यवस्था होगी।

● शराबबन्दी समिति के अध्यक्ष श्री गोकुल भाई भट्ट राज्य में पूर्ण नशाबन्दी के मसले पर विनोबा से विचार विमर्श कर हाल ही में लौटे हैं।

विनोबा ने श्री भट्ट को फिलहाल उपवास न करने का परामर्श दिया है।

विनोबा के प्रतिनिधि के रूप में आंध्र के सर्वोदयी नेता श्री प्रभाकर जी शीघ्र ही प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से शराबबंदी पर विचार करने के लिए दिल्ली पहुंचने वाले हैं।

टिप्पणियां

→ साथ मनाने की बात किसने सुझाई होगी। और वह किस आधार पर मान्य की गई होगी। दूसरा सवाल मन में यह उठा कि लार्ड हैस्टिंग्स के कार्यकाल में अंगरक्षक दल का संगठन हुआ था। इसकी शताब्दी तो अंग्रेजों के समय में भी मनाई जा सकती थी। क्या हमने उनकी त्रुटि की ही इस प्रकार पूर्ति की है?

अंगरक्षकों ने घुड़सवारी के कुछ करतब दिखाये। उन की भी इस भाव से प्रशंसा की गई कि अगर राष्ट्रपति के अंगरक्षक सधे हुए घुड़सवार हों तो फिर राष्ट्र को इस शानदार शान-शौकत को सारे राष्ट्र का सौभाग्य मान कर संतुष्ट और प्रसन्न रहना चाहिए। अंगरक्षकों की वेषभूषा और चांदी की तुरही की बात भी आकाशवाणी और अखबारों ने काफी की। गरीब देश के निवासियों को ऐसी खबरें इतने विस्तार से देना कम से कम गैरजरूरी तो माना ही जाना चाहिए। इनसे किसी का मन प्रफुल्लित नहीं हो सकता।

कवि डब्लू० एच० आडेन

सितम्बर २९ को आस्ट्रिया की राजधानी वियेना के होटल में कवि आडेन का गहरी नींद में शरीर छूट गया।

आडेन हमारी शताब्दी के बड़े से बड़े कवियों में थे। और वे बहुत दिनों तक अपने काव्यगत गुणों के कारण साहित्य जगत में प्रिय बने रहेंगे। आडेन का जन्म इंगलैंड में हुआ था। किन्तु वे १९३९ में अमरीका चले गये। वहां की नागरिकता ले ली और पच्चीस वर्ष वहां रहे।

आडेन कवि और नाटककार दोनों रूपों में प्रतिष्ठित हुए और जब इंगलैंड लौट कर आये तब उनके राज-कवि घोषित किये जाने की आशा भी की जाती रही। किन्तु दो कारण कदाचित इसके आड़े आते रहे। एक तो उनकी प्रारंभिक रचनाओं का आन्दोलनात्मक स्वर, दूसरा देश की नागरिकता छोड़ कर एक लम्बे अरसे तक दूसरे देश की नागरिकता स्वीकार करके वहां रहना। इंगलैंड ने उन्हें उक्त मान दिया या नहीं, यह उन्होंने भी शायद महत्वपूर्ण नहीं माना होगा, उनके पाठकों ने तो इसे भी महत्वपूर्ण नहीं माना। कवि के रूप में वे सारे संसार के साहित्य मर्मज्ञों के निकट आदर के पात्र बने रहे और बने रहेंगे। म० प्र० मिश्र

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १५ अक्टूबर, '७३

× टिहरी-गढ़वाल में हरिजन पूजा × संगठन व व्यक्ति-अभिक्रम के बीच सामंजस्य बना रहे × क्या अनादि-अनन्त ब्रह्माण्ड का छोर मिल गया है? × सहरसा : अन्तिम अभियान

हरिजन-पूजा के बाद मूर्तियों के साथ स्वामी चिदानन्द जी

भूदान-यज्ञ

१५ अक्टूबर, '७३

वर्ष २० अंक ३

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

सन्मति दे भगवान !

अरबों और इजराइलियों के बीच इस बार जब लड़ाई छिड़ी तो चीन ने शिकायत की थी कि यह युद्ध रूस और अमरीका की मिलीभगत से हो रहा है। चीन ने सही कहा था। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के इस तथ्य पर उसकी शिकायत बेमानी थी क्योंकि इस तरह की मिलीभगत में वह स्वयं कई जगह शामिल रहा है। रूस, अमरीका और चीन अपने को दुनिया के जमींदार मानते हैं और अपने-अपने इलाके में अपनी साख-धाक बनाये रखना चाहते हैं। वे जानते हैं कि उनके इलाके के देश आपस में लड़ना चाहते हैं लेकिन उनके लिए हमें आपस में सीधे नहीं लड़ना चाहिए। इन तीन महा-शक्तियों की सैनिक ताकतों ने उन्हें आपस में लड़ने से बरज रखा है और महानाश की सम्भावना उन्हें एक दूसरे के प्रति समझदारी से काम लेने पर बाध्य किये हुए है। लेकिन यह शान्ति की सकारात्मक इच्छा नहीं है उसे बनाये रखने की मजबूरी है। इसलिए सीधे न लड़ते हुए और सीधे न लड़ने का अलिखित समझौता किये हुए भी ये महा-शक्तियां अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र के देशों को लगातार हथियार देती रहती हैं और इस कारण सीमित युद्ध होते रहते हैं। महायुद्धों से चूंकि अब किसी को कोई विजय नहीं मिल सकती न उनसे कोई मसला हल हो सकता है इसलिए स्थानीय और सीमित युद्धों की उपयोगिता बढ़ गयी है। सन् '७१ में बंगला देश के लिए हुआ भारत-पाक युद्ध और पश्चिम एशिया में चल रही वर्तमान लड़ाई ऐसे युद्धों के नमूने हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि पश्चिम एशिया में चल रहा युद्ध अमरीका और रूस की अनुमति से ही हो रहा है। सन् ६७ में छः दिनों के युद्ध में इजरायल ने जो जमीन जीती थी उसे लौटाने के लिए कितनी ही कोशिशें राष्ट्रसंघ और रूस और अमरीका ने पिछले छः वर्षों में की हैं लेकिन इजरायल ने एक नहीं सुनी। अमरीका भी इजरायल को मना नहीं पाया जो कि उसके शस्त्रभण्डार का सबसे बड़ा दाता है। दूसरी तरफ अरब देश अपनी हारी हुई जमीन को वापस लेने के लिए कटिबद्ध हैं और रूस उन्हें चाहे जितने हथियार दे दे वह उन्हें इस पर राजी नहीं कर सकता कि वे जमीन छोड़ दें। इस तरह रूस और अमरीका अपने प्रभाव क्षेत्र के इन देशों को अगर चाहें भी तो उनसे उनके राष्ट्रीय हितों के खिलाफ काम नहीं करवा सकते। ऐसी स्थिति में युद्ध होना ही था। रूस और अमरीका को अपने बिगड़ैल और झग-ड़ैल दोस्तों को यह अनुमति देनी पड़ी है कि वे आपस में निपट लें। उनमें शायद यह भी आपसी समझ है कि जब तक उनके हित-स्वार्थ बुरी तरह न बिगड़ें और जब तक युद्ध स्थानीय और सीमित रहे तब तक वे कोई बड़ा हस्त-क्षेप नहीं करेंगे। लेकिन अब यह लगभग तय है कि युद्ध लम्बा चलेगा और उसे आगे चलाने की स्वतन्त्र क्षमता न अरब देशों में है न इज-राइल में। इसलिए इस लड़ाई में भिड़े इन देशों ने अपने-अपने दाताओं से नये शस्त्रों और गोला बारूद की मांग की और रूस और अमरीका दोनों ही शस्त्र दे रहे हैं। अब जिस की सेना में जितनी क्षमता होगी उतनी जल्दी वह इस युद्ध को निर्णायक स्थिति में ला देगा।

राष्ट्रसंघ में अगर शांति का कोई प्रयत्न अभी तक सफल नहीं हो पाया है तो इसका कारण यही है कि रूस और अमरीका तब तक युद्ध विराम नहीं चाहते जब तक कि युद्ध के मैदान में कोई फैसला न हो जाये। वे अपने-अपने मुर्गों को लड़ा रहे हैं और उनमें समझौता है कि वे खुद नहीं लड़ेंगे। लेकिन इस लड़ाई के लिए अमरीका और रूस को कोसने में कोई मतलब नहीं है। गलती उन छोटे देशों की है जो मुर्गे बनते हैं, खेमों में बटते हैं और बड़ी शक्तियों के हित-स्वार्थों की रक्षा करते हुए अपने राष्ट्रीय हित पूरे करना चाहते हैं। यह खेल भयानक है लेकिन इससे महाशक्तियों का कुछ भी बनता-बिगड़ता नहीं। कीमती जानें और सम्पत्ति इन्हीं देशों की बर्बाद होती है और हर युद्ध के बाद उनकी परनिर्भरता बढ़ती जाती है। सन्मति की जरूरत इजराइ-लियों और अरबों को है, इजराइलियों को ज्यादा है। हम सिवाय इसके क्या कर सकते हैं कि इन्हें सन्मति देने के लिए भगवान से प्रार्थना करें ?

—प्रभाष जोशी

गांधी-जयन्ती पर

टिहरी-गढ़वाल में हरिजन-पूजा

—अनुपम मिश्र

उत्तर प्रदेश के पर्वतीय भाग टिहरी गढ़वाल में इस वर्ष गांधी-जयन्ती के अवसर पर प्रभातफेरी और प्रार्थना सभाओं के परम्परागत कार्यक्रमों के अलावा स्वामी चिदानन्दजी द्वारा हरिजनों की षोडषोपचार पूजा की गयी। स्वामी चिदानन्दजी ऋषिकेश स्थित दिव्य जीवन संघ के परमाध्यक्ष हैं। वे गांधीजी की मृत्यु के बाद से प्रति वर्ष अपने आश्रम में वेदान्त दर्शन को व्यावहारिक रूप देते हुए, हरेक में एकत्व की अनुभूति करने के लिए निजी रूप से हर गांधी जयन्ती पर हरिजन पूजा करते आ रहे थे। यह दूसरा वर्ष था जबकि उन्होंने इसे सार्वजनिक रूप से सम्पन्न किया है। गत वर्ष गांधी जयन्ती पर इसी पर्वतीय भाग के सीमान्त जिले उत्तरकाशी में एक सार्वजनिक स्थान पर इस हरिजन-पूजा के कार्यक्रम को सम्पन्न कर वहां के राजनैतिकों, समाज सुधारकों, प्रगतिशील व कट्टर पंथियों के सामने अनेक सवाल खड़े कर दिये थे।

और भी सहयोगी साथ दे रहे थे। पैर धो-पोंछ रहे स्वामीजी और पैर धुला रहे हरिजन के चेहरों में एक अजीब अन्तर होता था। इस सारी प्रक्रिया के दौरान स्वामी का चेहरा कभी गंभीर बनता, कभी उनकी आंखें नम पड़ जातीं तो कभी वे अपने आपको प्रायश्चित सा कर लेने वाला मान कर संतुष्ट की मुद्रा में आ जाते थे। लेकिन जिस हरिजन के पैर धुल-पुंछ रहे होते वह प्रायः भौंचक्का सा खड़ा रहता। कुछ हरिजन तो शायद अब तक उस घटना पर विश्वास भी न कर पाये होंगे कि कोई शुद्ध गेरुए कपड़ों वाला स्वामी या ब्राह्मण उनके पैर धो रहा था, पोंछ रहा था।

पैर पखारने के बाद सभी 'मूर्तियां' भीतर आयीं। इन ५६ मूर्तियों को एक कतार में प्रतिष्ठित किया गया। फिर स्वामी चिदानन्दजी ने उनके माथों पर एक-एक करके भस्म, रोली तथा तिलक चढ़ाया। फिर पूजा की थाली में फूल सजाये गये। स्वामीजी अपने सहयोगियों के साथ एक कोने से दूसरे

टिहरी बस्ती में काम कर रहे कोई ५६ सफाई कर्मचारियों को स्वामीजी द्वारा १ अक्टूबर की शाम को निमंत्रण भेजा गया था। ये सभी निमंत्रित कर्मचारी जिन्हें पूजने वाले स्वामीजी 'मूर्तियां' कहते थे, गांधी जयन्ती की सुबह स्वामीजी के स्थान पर आ गये थे। चरण पखारने से लेकर दक्षिणा स्वरूप गांधीजी के आठ आने वाले सिक्के देने तक इस प्रक्रिया में उन सोलह चरणों का समावेश था जो देवमूर्ति की विभिन्न पूजा-अर्चना में सम्मिलित किये जाते हैं।

स्वामी चिदानन्दजी 'मूर्तियों' को प्रवेश द्वार पर ला कर पहले उनके चरण धोते। उनके एक सहयोगी चरणों पर लोटे से पानी डालते स्वामीजी अपने हाथों से रगड़-रगड़ कर सामने खड़े हरिजन के पांव धोते, फिर बगल में रखे एक कपड़े से गीले पांवों को पोंछ कर सुखाते। इस क्रिया में उनके कुछ

कोने तक हर मूर्ति के भाल व चरणों में फूल चढ़ाते गये। ये सभी ५६ हरिजन स्थानीय सफाई विभाग में थे, वे इसे भी किसी तरह का सरकारी आयोजन मान कर अपनी खाकी वर्दियों में ही आये थे। लेकिन अब जब स्वामीजी उनकी खाकी टोपी पर फूल रखते, पैरों के अंगूठों, उंगलियों के बीच फूल का डंठल फंसाते तो अनेक हरिजनों आंखें गीली पड़ जातीं। पुष्पार्पण के बाद धूपबत्ती को लेकर स्वामीजी एक स्थान से दूसरे स्थान तक घूम गये। धूपबत्ती का सुगंधित धुआं अभी कमरे में मंडरा ही रहा था कि स्वामीजी व उनके सहयोगी शिष्य मन्त्रोच्चारण के साथ एक-एक हरिजन मूर्ति की आरती उतारने लगे। पूरा पूजा स्थल सुगंधित धुएं, वैदिक मंत्रों, शंख व घंटी की ध्वनियों से भर गया था। इस क्षण यह कल्पना करना कि किसी

→

संगठन व व्यक्ति-अभिक्रम के बीच सामंजस्य बना रहे

—जयप्रकाश नारायण

एक दूसरे के विचारों के लिए आदर होना चाहिए

→
कर, पूरे वर्ष तक हम सहरसा के मोर्चे पर भिड़ जायें और उस अवधि में जो ग्रामसभाएं बनें, जो नया नेतृत्व या सेवकत्व निर्माण हो, उन सब पर आगे का कार्य भार समर्पित कर हम दूसरे मोर्चों पर जा डटें। इस योजना से हम में नया उत्साह आयेगा, नई शक्ति प्राप्त होगी। हमारा निरुत्साह दूर होगा। आन्दोलन के चरण आगे बढ़ेंगे। हां, एक अत्यन्त आवश्यक योजना इसके साथ-साथ हमें तय कर लेना होगी कि हममें से कौन-कौन साथी कब-कब और कितने-कितने समय के लिए बारी-बारी से सहरसा से सम्पर्क कायम रखेंगे और वहां की नवोद्भूत शक्ति के आगे बढ़ते रहने में सहायक होते रहेंगे।

इस सम्बन्ध में आपके सामने एक विचारणीय प्रश्न रखना चाहता हूँ। कल्पना कीजिए कि जो मार्गदर्शन बाबा ने सहरसा के सम्बन्ध में दिया, वह हम में से किसी और ने दिया होता; मान लीजिए मैंने दिया होता या बैद्यनाथ बाबू ने या त्रिपुरारिजी या अन्य किसी ने दिया होता तो उसका क्या हश्र होता? कितना वितंडावाद खड़ा होता, विनोबा के असली और गैरअसली अनुयायियों का भेद खड़ा होता, हममें कैसा बिखराव पैदा होता! तो इस घटना से हमें सबक लेना चाहिए। हममें विचार की मुक्तता होनी चाहिए और एक दूसरे के विचारों के लिए आदर होना चाहिए। हम में बिखराव न हो, इसके लिए सर्वसम्मति सर्वानुमति की प्रक्रिया बाबा ने सुझाई है। वह सामान्य रीति से सुन्दर और उपयोगी है। परन्तु उसके नाम से विचार-स्वातन्त्र्य को कुंठित नहीं करना चाहिए और जो भी व्यक्ति सर्वसम्मति-सर्वानुमति की धारा में अपने को किसी समय बहा न पाये, उसके अकेले चलने का न केवल हमें आदर ही करना चाहिए, उसको प्रोत्साहित भी करना चाहिए।

एक अंतिम बात। प्रदेश सर्वोदय मण्डल के निर्माण का यह नतीजा कभी न होना चाहिए कि किसी व्यक्ति के अभिक्रम पर प्रतिबंध लगाया जाय। संगठन और व्यक्ति अभिक्रम के बीच सामंजस्य बिठाते रहना पड़ेगा। नियम, अनुशासन, अधिकार आदि के बंधन कम से कम हों, यह प्रयास होना चाहिए, नहीं तो संगठन हिंसा का साधन बन सकता है। अपना संगठन एक भाईचारा, एक बिरादरी बने। नियमों से नहीं, स्नेह से वह बांधा जाये। एक दूसरे की हम सहायता करें और किसी को गिराने के बजाय उसे उठाने का यत्न करें। दोषों को स्नेह से दूर करें, न कि निंदा और अनुशासन से।

सहरसा के कठिन मोर्चे पर आप जूझने की तैयारी कर रहे हैं। श्रद्धेय धीरेनदा आपके लिए कृष्ण और भीष्म दोनों का ही पार्ट अदा करते आ रहे हैं। मैं उनके सामने सहस्र बार नतमस्तक हूं कि रोगग्रस्त शरीर को लेकर भी वे इतना घोर तप कर रहे हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि मुझे वे शक्ति प्रदान करें कि आपके साथ कम से कम एक मास तक कार्य करूं। कुछ अधिक तो न कर पाऊंगा, पर आपके बीच आकर यदि चुपचाप भी बैठा रहूं तो मुझे अपार सन्तोष होगा। आगे प्रभु की जैसी इच्छा।

विश्व

रूस और चीन : लक्ष्य साम्यवाद या युद्ध

अमरीका के जासूसी विभाग ने वर्षों तक रूस-चीन सम्बन्धों की छानबीन करके कुछ निष्कर्ष पेश किये हैं। निष्कर्षों के हिसाब से रूस-चीन की अणुशक्ति को अपरिमित होने के पहले, और माओ और चाऊ एन लाई के प्रति चीन की जनता के मन में असन्तोष के चिन्ह जागृत होने के बाद हमला करने की ताक में है। हमला इसलिए किया जायेगा कि चीन रूस पर हमला करने की परिस्थिति में आने के पहले शक्तिहीन कर दिया जाये और अणुशस्त्रों के जो कण प्रशान्त महासागर पर से हवा के साथ जायें वे अमरीका पर भी अपना प्रभाव छोड़ें और संसार की शक्ति सन्तुलन की धुरी ही बदल जाये। इसलिए अमरीका के लिए यह अनिवार्य है कि वह इन दोनों साम्यवादी देशों के बीच युद्ध न होने देने की परिस्थिति बनाये। निष्कर्षों के अनुसार इस समय रूस की सेना की बागडोर पुराने लोगों के हाथ से लेकर अधिक साहसी और हमले के लिए उत्सुक जवान अधिकारियों के हाथ में ही दी जा चुकी है। इन खोज बीन करने वाले विशेषज्ञों का कहना है कि रूस, मंचूरिया, सिंक्याग और चीन की उत्तरी पट्टी को बिलकुल बेअसर हिस्सा बना देना चाहता है। इस दृष्टि से वह अस्त्रास्त्रों और कीटाणुओं का प्रयोग भी करेगा।

चीन और रूस की ५०० मील की सीमा पर दोनों देशों ने अपनी सेनायें सज्ज करके रख छोड़ी हैं। यह सीमा पश्चिम संसार की सबसे बड़ी और शस्त्रों से लैस सीमा रक्षक सेना है। चीनी सीमा में ब्लाडिवास्टक, इर्कुटस्क और साईबेरिया के अन्य शहरों को तैस-नाबूद कर डालने में समर्थ कम दूरी तक मार करने वाले अणुअस्त्र निशानों पर आंख लगाये खड़े हैं और रूस में सीधा तीव्र गति से हमला कर सकने वाली टुकड़ियां इसी तरह तत्पर हैं। चीनियों ने कई डिविजन इस हिसाब से भी तैयार रखे हैं कि वे जरूरत पड़ते ही चुपचाप मोरचन की तरह घुस कर रूसी सेना के पीछे घुस कर छोर गुरिल्ला युद्ध करने में जुट सकते हैं।

आज की यह परिस्थिति क्रमश: १९६४ से बन रही है। १६ अक्तूबर १९६४ को चीन ने पहला अणु परीक्षण किया। चीन की बकिम सी बातों को रूस सुनी अनसुनी कर देता था। जब चीन ने भारत पर हमला किया था और रूस से संसार ने इस पर उसका रुख जानना चाहा था तब रूस ने साफ कहा था, भारत हमारा मित्र है। मगर चीन भाई है। और भाई तो भाई ही होता है। १९६४ के इस अणुपरीक्षण के बाद भाईचारे में एक बड़ी दरार आई और कोई चार साल बाद नवम्बर १९६८ में ब्रेजनेव ने चौंकाने वाली घोषणा की कि सारे कम्युनिस्ट देश एक सीमित अर्थ में ही स्वतन्त्र सत्ताएं हैं। रूस के कम्युनिस्ट दल को उनके किसी भी काम में जब आवश्यक जान पड़े हस्तक्षेप का अधिकार है और वह भी इसी आधार पर कि हम सब कम्युनिस्ट देश एक बिरादरी के हैं। इस घोषणा से रूस ने साम्यवादी आदर्श की रक्षा के लिए अपने ही चीन पर हमला करने का अधिकारी कह दिया।

इसी के बाद १९६९ में चीन और रूस की सीमाओं पर तनाव बढ़ने लगा और कभी-कभी साधारण खिझाने-चिढ़ाने से आगे जा कर झड़पें भी होने लगीं। १९६९ में ही क्रेमलिन में परस्पर चीन को अणु-शक्ति हीन करने की सम्भावना पर विचार विमर्श हुआ और उसी वर्ष रूस राजनयिक हाहे-बगाहे प्रीति भाव आदि में अपने किन्तु बिना कोई गंभीर रुख अपनाये एकाध शब्द में यह विचार प्रकट तक करने लगे और इस बात को समझने की कोशिश भी की जाने लगी कि अगर हम चीन पर हमला कर दें तो अमरीका का रुख क्या होगा। निक्सन ने दृढ़तापूर्वक ऐसा न करने की सलाह दी और स्वयं मार्शल जुकोव ने भी यह कदम उठाने की दिशा में कुछ करने की बात पर असहमति प्रकट की। १९७१ के दिसम्बर में, इन जानकारों के अनुसार, रूस ने भारत को उस समय यह आश्वासन दिया कि यदि चीन युद्ध में पाकिस्तान की ओर से कूदता है या नया मोर्चा खोलता है तो रूस सिंक्यांग में अपनी सेनाएं प्रविष्ट कर देगा। यह वह बंजर विभाग है जहां चीन अपने अणु अस्त्रों का परीक्षण करता है।

मई १९७२ में प्रेसीडेंट निक्सन ने मास्को शिखर सम्मेलन के समय बड़े नपे-तुले शब्दों में सावधानी के साथ यह बात प्रस्तुत की कि रूस और चीन के बीच का तनाव समाप्त होने में सबकी सुरक्षा है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के पास फाजिल जमीन की कमी नहीं है—बंजर और बेकार जमीन को मसला बना कर उनका परस्पर लड़ बैठना अनुचित होगा। उन्होंने कहा ऐसा युद्ध अमरीका के हित के विरोध में जायेगा। इसका यह अर्थ भी था कि ऐसी अवस्था में शायद अमरीका को ही हस्तक्षेप करना पड़े। कहते हैं श्री ब्रेजनेव ने कहा कि कम्युनिस्ट देशों के अपने मामले में अमरीका या अन्य किसी भी गैर कम्युनिस्ट देश को बोलने की कोई जरूरत नहीं है। अब परिस्थिति यह है कि अगर रूस और चीन भिड़ जायें तो रूस के पास इस समय चीन को ध्वस्त कर देने योग्य अस्त्रास्त्र हैं। किन्तु चीन के प्रेक्षणास्त्र ऐसे पहाड़ी प्रदेशों में लगे हैं जहां उन्हें आंच पहुंचाना बहुत कठिन है। वे जवाबी हमला कर ही सकेंगे। इसके अतिरिक्त जनता और उद्योगों की रक्षा के लिए भी चीन ने पक्की और पूरी तैयारी कर रखी है। मगर इस सबसे भी अधिक विचारणीय चीन की अपार सेना है जो गुरिल्ला-युद्ध में निष्णात है और जो साईबेरिया में रूस की सेनाओं के पीछे पहुंच कर उन्हें शेष देश से अलग थलग कर सकती है। वियतनाम के युद्ध में गुरिल्ला सैनिकों ने जो कर के दिखाया वह करिश्मा भी इनकी कला के आगे फीका पड़ जायेगा। मगर फिर भी कुछ निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता। प्रसिद्ध अखबारनवीस जोजेफ अलसोप बार-बार कह रहा है रूस हमला करेगा, रूस हमला करेगा और अमरीका इस लगभग आसन्न भविष्यवाणी को लेकर चिंतित है।

(यूनाइटेड फीचर सिंडीकेट के एक फीचर का भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा रूपान्तर)

• टिप्पणी • टिप्पणी

देश के भीतरी मामले ?

यों तो जब से रूस में 'क्रान्ति' होकर राजतंत्र में परिवर्तन हुआ तब से वहां मतभेद रखने वालों के प्रति होने वाले व्यवहार की बात कभी बन्द नहीं हुई। 'क्रान्ति' में हाथ बटाने वाली ट्राटस्की जैसी हस्तियों से लगा कर अभी-अभी ख्रुश्चेव तक के साथ वहां जो व्यवहार हुआ और स्वयं ख्रुश्चेव ने अपने पूर्ववर्ती 'महान स्टालिन' की समाधि तक के प्रति जो बर्ताव किया, उसे वहां पीढ़ी दर पीढ़ी मतभेद के प्रति रखी जाने वाली संकीर्ण दृष्टि का उत्थान ही कहा जायेगा। वहां व्यक्ति और समूचे समुदाय अपने-अपने समय के तानाशाह से अलग विचार रखने की आशंका भर के आधार पर 'लिक्विडेट' किये जाते रहे हैं। अब शायद किसी कहने योग्य संख्या में वहां ऐसे लोग बचे ही नहीं हैं जो अपना कोई विचार रखते भी हों—सब एक ही तरह सोचने विचारने और जीवन जीने के आदी बना दिये गये हैं, इसलिए शायद किसी बहुत बड़ी संख्या में लोग अनुदिन सताये या मारे नहीं जाते किन्तु अब तक भी बीच-बीच में कोई कवि, कलाकार, उपन्यासकार वहां ऐसा उग आता है, जिसका वहां की धरती पर उगना साधारणतया संभाव्य नहीं होता था। वह विसंगत स्वर में बोलता है और तंग किया जाता है। तथापि अब 'लौहआवरण' अपेक्षाकृत उतना ठोस और अपारदर्शी नहीं बचा है। वे आवाजें और आवाज उठाने के कारण दी जाने वाली तकलीफों की आहटें बाहरी दुनिया तक ज्यादा आसानी से पहुंच जाती हैं। स्वाभाविक है कि बाहरी दुनिया में इस सबका चर्चा होता है और तब रूस बाहर के लोगों से कहता है यह हमारा भीतरी मामला है—इस पर टीका-टिप्पणी करके कोई हमारे भीतरी मामलों में हस्तक्षेप न करे। इन दिनों यही हो रहा है।

जैसे रूस के बुद्धिजीवी अपने जीवन को घुटा-घुटा महसूस कर रहे हैं। इसे उन्होंने कहा और बाहर के लोगों ने उनके कथन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। अमरीका में विशेषतौर पर इसकी आलोचना हुई और रूस ने अमरीका को इस विशेषतौर से आगाह किया। तो क्या इसे रूस का भीतरी मामला भर माना जा सकता है? और यदि यह एक भीतरी मामला है तो चिली की सत्ता में जो उथल-पुथल हुई, वह भीतरी मामला क्यों नहीं है? रूस को उस पर क्यों बोलना चाहिए या पाकिस्तान में खान अब्दुल गफ्फार खां की नजरबन्दी और तीन-तीन, चार-चार बार खान वली खां की हत्या का प्रयत्न वहां का भीतरी मामला क्यों नहीं है? भारत को या किसी अन्य देश को इस पर बोलने का हक कैसे मिल सकता है? या वाटरगेट का मामला अमरीका का भीतरी मामला क्यों नहीं है? क्या ऐसी गंभीर घटनाओं और रुखों और तौर-तरीकों को कहीं का भी भीतरी मामला मानकर उस तरफ से आंख बन्द करना विज्ञान द्वारा देश-काल जीतने के जबर्दस्त तथ्य को पीठ देने की कोशिश नहीं है? क्या जो ऐसा करेगा या कराना चाहेगा, आज तक के मनुष्य की बुद्धि और हृदय के गुणों को व्यर्थ करता हुआ नहीं कहा जायेगा?

ऐसी बातें कदापि किसी देश की अपनी बातें नहीं हैं, क्योंकि संसार आज लगभग एक इकाई है, एक का गुण या अवगुण दूसरे को छूता ही है—आज अच्छाई हो चाहे बुराई संक्रामक है। कहीं अच्छा होगा तो उसकी स्निग्धता सबको सहलायेगी और कहीं कुछ बुरा किया जायेगा तो सब तक उसकी आंच आयेगी। आज सब कुछ जागतिक पैमाने पर अपना कम ज्यादा असर डालता है। हमारे यहां के अनिवर्षण या अतिवर्षण का जब सारे संसार की अर्थदृष्टि पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है तो फिर हमारे या आपके अनैतिक आचरण, कुशासन, भ्रष्टाचार या अनाचार का भी जगत भर का ध्यान अपनी ओर खींचना उचित क्यों नहीं है? सच कहें तो आज की दुनिया में कहीं कुछ भी किसी एक देश या समाज का नहीं है, विज्ञान जब हमें इतने पास-पास ले आया है तब हम जो कुछ करें या कहें उसे ऐसा मान कर ही करें या कहें कि उसमें केवल हमारा कुछ नहीं है। सबका उससे सम्बन्ध है। आज भी जो अपनी मुर्गी की तीन टांगें होने पर जोर देना चाहता है उसे जगत भर में कट कर रहने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

जिनके मरने पर

सार्वजनिक जो कर दिया गया है यह काम
कितने सारे लोग हैं जिनके मरने का-
मनाना पड़ेगा हमें शोक खुले आम।

पूरे एक युग का सिंहावलोकन
जरूरी हो जाता है जिनके मरने पर
कितने सारे लोग हैं ऐसे
कैसे चुप रह सकते हैं हम
कम से कम ऐसे लोगों के मरने पर
तुले रहते हैं जो
कुछ न कुछ करने पर हमारे लिए।

रोज रोज मरता है ऐसा
कोई न कोई आदमी
खोला था जिसने हमारे सामने
हमारा दुख और उसकी पर्तों को
समझाया था जिसने हमें हमारा सुख
और सुख की शर्तों को
और जानता था जो कि कुछ
खास नहीं है जिसे वह
हमारे लिए कर रहा है
मगर फिर भी बदलने के सिलसिले में
हमारी हालत, वह बस भर उसे
हमारे सामने धर रहा है।

ऐसा ही एक आदमी
सो गया गहरी नींद में कल की रात
जो हो गया था बूढ़ा और फिर भी
सोचता था अपनी नहीं
हमारी बात।

(डब्ल्यू० एच० आडेन की फ्रायड की मृत्यु पर लिखी एक लंबी कविता के प्रारंभिक अंश का रूपान्तर)

युद्ध, स्वार्थ और हित

चिली और गिनी-बसाऊ में सत्ता की उलट-पुलट अभी सबको अपने-अपने ढंग से चिन्ता में डाले हुए थी कि अरब देशों और इजराइल के बीच फिर युद्ध भड़क उठा है। युद्ध दुनिया के किसी भी हिस्से में और किन्हीं भी देशों के बीच क्यों न हो सबकी चिन्ता का कारण बन जाता है और संसार जाने-अनजाने अपनी सहानुभूति के आधार पर खेमों में बंटने लगता है। अब पश्चिम के ज्यादातर प्रजातन्त्रीय देशों और अमरीका की सहानुभूति इजराईल की तरफ तथा पूर्व के तटस्थ कहे जाने वाले देशों तथा साम्यवादी समाज वाले देशों की सहानुभूति अरब राष्ट्रों की तरफ होना स्वाभाविक है। इस तरह अमरीका और रूस इसी प्रकार अमरीका और चीन के बीच जो सामान्य सम्बन्धों की आशा बढ़ रही थी उसे धक्का लगा है। अमरीका ने और रूस ने इस युद्ध के बारे में अभी खुलकर कुछ नहीं कहा है, मगर चीन कह चुका है और भारत भी कह चुका है।

इस समय राष्ट्र संघ का अधिवेशन चल रहा है। यदि हमला अरब राष्ट्रों की ओर से हुआ है तो कहा जा सकता है कि उन्होंने ठीक समय चुना है। राष्ट्र संघ के पुराने प्रस्ताव जो इजराइल ने नहीं माने थे अब फिर पूरी शक्ति के साथ दोहराये जा सकते हैं और ठीक समझौता लागू कराया जा सकता है। यों राष्ट्र संघ ने बिना पिछली शर्तों पर जोर दिये युद्ध विराम की जो बात उठाई [illegible] उसे रूस और चीन ने अस्वीकृत कर दिया है। यह उचित इसलिए है कि अब वे संसार में वे दिन गये-बीते माने जाने चाहिए जब कोई किसी की जमीन पर बलपूर्वक कब्जा करके उसे छोड़े बिना शान्ति की बात मनवाने के स्वप्न देख सकता हो।

अमरीका काफी संयत भाव से मसले को हल करने की कोशिश करता दिखाई देता है। यह एक अच्छा लक्षण है। दूसरी बड़ी शक्तियां भी आवेश में न आयें, दुनिया भर को ध्यान में रख कर सोचें। युद्ध की यह चिनगारी चाहे जैसा रूप धर ले सकती है। सब अपनी अपनी जीत या जिद्द न सोचें, ठीक परिस्थिति बनाने की रीत निकालें और सबका हित सामने रखकर। क्योंकि स्वार्थ अलग-अलग हो सकते हैं, हित सबके एक हैं।

यह अच्छा और शुभ संयोग है कि सारी दुनिया के प्रतिनिधि राष्ट्र संघ के अधिवेशन में इकट्ठा हैं, मिल-जुल कर सोचने की सुविधा उपस्थित है। उस सुविधा को सब मिल कर सार्थक करें, व्यर्थ न जाने दें। जागतिक-संस्था अपना पूरा जोर सही हल निकालने में लगाये। युद्ध का यह अवसर एक बड़े आरम्भ का अवसर हो सकता है।

चीन, तिब्बत और भारत

हमारे राष्ट्रपतिजी को रूमानिया के राष्ट्रपति ने बताया है कि चीन के मन में अब भारत के प्रति पहले जितना रोष नहीं है। यदि ऐसा है तो खैर हम कृतज्ञ होने को तैयार हैं। मगर मन में प्रश्न तो उठता ही है कि रोष के कारण तो चीन महोदय ही देते रहे हैं और हम हर जरा सी बात पर अटकल लगाते रहे हैं कि वे शायद अब कम नाराज हैं। बीच-बीच में हम कहते भी रहे कि हम चीन से मित्र भाव मिले तो उसका स्वागत करेंगे। चीन ने इस पर कभी कोई सम्यक प्रतिक्रिया नहीं दिखाई। हम 'कोतवाल को डांट' बताने की पुरानी मगर सटीक कहावत का उपयोग इसलिए नहीं करना चाहते कि हम थोड़ा खोकर भी संसार में शान्ति के हामी बने रहना चाहते हैं, चीन की भृकुटी-भंगिमा उसे मुबारक। हम बावजूद उस भ्रू-कुंचन के शान्ति के साथ उसकी सद्भावना की प्रतीक्षा करेंगे। हमारे सिर पर सौ काम हैं, हजार झगड़े हैं। मनाने के लिए जहां-तहां आने-जाने का हमारे पास अवकाश अवश्य नहीं है, मगर कोई सुबह का भूला शाम को हमारे पास आ जाना चाहे तो हम उसका स्वागत करेंगे।

इसी तरह खबरें इस आशय की भी हैं कि चीन दलाईलामा को तिब्बत लौट आने के इंगित दे रहा है। दलाईलामा इन दिनों यूरोप के देशों में घूम रहे हैं। दो महीने पहले उन्होंने मैनचेस्टर गार्जियन को भेंट देते हुए कहा था कि चीन की ओर से तनाव कम होने के आसार दिखाई [illegible] रहे हैं और सम्भावना है कि वे कभी अपने देश में फिर लौटने की परिस्थिति को आमने-सामने देखें। श्री दलाईलामा एक धार्मिक महापुरुष हैं। राजनीति में निष्णात चीनी शासकों को उनसे साधारणतया कोई भय नहीं हो सकता, तो भी अगर उन्हें तिब्बत लौटने की बात सुझाने के पीछे कोई भय हो, यह एकदम अकल्पनीय भी नहीं है। दलाईलामा जहां जाते हैं, वहां उनकी सौम्यता का एक प्रभा मंडल तो बनता ही है और चीन की तसवीर जो वैसे भी बहुत साफ नहीं है और काली पड़ती है। वैसे राजनीतिज्ञ तसवीर के काली-पीली होने की बहुत चिन्ता नहीं करता। हो सकता है, यह दलाईलामा को तिब्बत में महदूद कर रखने का एक तरीका चीन को सूझा हो।

● चम्बल घाटी के भूतपूर्व बागी सरदार माधोसिंह ने अपनी आत्मकथा पूरी कर ली है। शान्ति मिशन के एक प्रवक्ता ने बताया कि पुस्तक में ८ अध्याय हैं। पहले तीन भाग ६०० वर्ष पूर्व के दस्यु लिसा धनपाल व दस्युराज मानसिंह से सम्बन्धित हैं। 'चम्बल और माधोसिंह' नामक इस आत्मकथा में दिल्ली व शिवपुरी के ऐतिहासिक अपहरण कांड, कुमेरपुरा में दस्युदल व पुलिस के बीच २८ घण्टे की टक्कर तथा समर्पण से पूर्व विनोबाजी व जयप्रकाश नारायणजी से हुई वार्ताओं का पूरा विवरण है।

बिना टिप्पणी के

× कुर्बानी का बदला
× राजनीति से निरपेक्ष नीति

हम बारह साल तक भूदान कमेटी के शाहजहांपुर जिले के संयोजक रहे तथा लोक सेवक रहे और शांति सैनिक तो अभी भी हैं। गांधी स्मारक निधि मे मैंने आठ हजार रुपया इकट्ठा करके जमा किया। आजाद हिन्द फौज का कैम्प लगाया उसमे ६० सैनिक थे, वह भी अपने खर्च पर, तिस पर भी दो सौ रुपये वाली पेन्शन व बिल्ला मुझे अभी तक नही मिला, जिन्होने सिवा जेल, कातने के और कुछ नही किया उनकी पेन्शन मंजूर हो गयी। कृपया आप 'कुर्बानी का बदला बनाम अपमानजनक निर्णय' (भूदान यज्ञ २० अगस्त '७३) को और ३-४ अखबारो मे छपवायें। मेरी उम्र ७५ वर्ष है, बीमार रहता हू, कमजोर हू।

कन्हईलाल शुक्ल,
द्वारा राजाराम, ग्रा० व पो०
रुरुआ, तह० पुवाया,
शाहजहांपुर (उ० प्र०)

राष्ट्रीय परिषद मे तीन दिन की निस्संकोच तथा उन्मुक्त चर्चा के बाद सर्व सम्मति से राष्ट्र के नाम एक निवेदन स्वीकार किया गया जिसके आठ-सूत्री कार्यक्रम की यथार्थता एवं व्यापकता ही सम्मेलन की सर्वोत्तम उपलब्धि है। इसे न्यूनतम कार्यक्रम की उपमा दी जा सकती है, जिसमे व्यक्तिगत एवं सामूहिक पहल-उपक्रम की पूरी-पूरी सम्भावना विद्यमान है। इसके कार्यान्वियन में हर विचार का देशभक्त-नागरिक अथवा अपना न्यूनाधिक सहयोग दे सकता है।

आज के संदर्भ मे सम्मेलन की आवश्यकता तथा महत्त्व स्वय सिद्ध है। वर्तमान दलगत राजनीति ने राष्ट्र के जीवन को अस्तव्यस्त कर रखा है। चरित्र का ह्रास सर्व विदित है। समूची भारतीय संस्कृति संकटग्रस्त है। ऐसी विकट घडी के मुकाबले मे एक दलनिरपेक्ष, नि स्वार्थ व्यक्तित्व अथवा सगठन की अपेक्षा थी, जो विभिन्न विचारधाराओ के एक संगम की भूमिका अदा कर सके ताकि राष्ट्र को और अधिक पतन से बचा लिया जाये। ले-दे कर पूज्य विनोबा और उन्ही के हाथो परवान चढी संस्था सर्व सेवा संघ ही इस भूमिका के लिए उपयुक्त है।

बड़े हर्ष की बात है कि २५ वर्ष पहले विनोबा के नेतृत्व में इसी पुण्य भूमि पर अपनी स्थापना के बाद सर्वोदय समाज ने अपनी राजनीति-निरपेक्ष सकीर्ण नीति से कुछ हट कर अपनी वास्तविक भूमिका को पहचानना आरम्भ कर दिया है। यही राष्ट्रीय सम्मेलन इसका ताजा प्रमाण है। अन्यथा कौन इस तथ्य से इन्कार कर सकता है कि बापू के बलिदान के बाद यदि एक समग्र-सर्वांगीण नेतृत्व का जो कदाचित अभाव रहा है उसकी जिम्मेदारी बहुत हद तक सर्वोदय नेताओ पर ही आती है। उन्होंने ही गाधीजी की समग्र नीति से मुह मोडकर राजनीति से मानो सन्यास लेने का पाठ पढाया। वे सुझाते रहे हैं कि रचनात्मक कार्य और राजनीति मे कोई मेल नहीं। सत विनोबा के शब्द हैं, "राजनीति के दिन लद गये" इस सर्वोदयी मनोवृत्ति के फलस्वरूप राजनीति मे निरकुश अनैतिकता का बोलबाला तो होने ही लगा, रचनात्मक कार्य भी राहत कार्य बन गये। अन्याय-शोषण का प्रतिकारात्मक अहिंसक सघर्ष मद पड़ते-पड़ते नितान्त बंद हो गया। इतना ही नहीं, सत्याग्रह का विचारपूर्वक विरोध भी होने लगा और अपनी सरकार को परेशान न करने का उपदेश दिया जाने लगा। मानों अपनी सरकार के साथ किसी प्रकार के मतभेद या सघर्ष का आधार ही राजनीतिक स्वतत्रता के बाद समाप्त हो चुका है। अपनत्व की भावना की कितनी भ्रान्तिपूर्ण धारणा है! जिस प्यार मे झगड़ा न हो और मात्र सौजन्यता ही हो वह प्यार का विकृत रूप है। कितना सघर्ष-झगड़ा होता था बापू-बा के बीच।

रचनात्मक कार्य के सबंध मे भी सर्वोदय समाज की दृष्टि भ्रामक रही है। समूचे रचनात्मक कार्य का कोई लक्ष्य नहीं रहा, जैसे गाधीजी के निकट सारे रचनात्मक कार्यों का एकमात्र उद्देश्य स्वराज्य था। सर्वोदय नेता भी कह सकते हैं कि उनके ग्रामदान का लक्ष्य ग्रामस्वराज्य है। परन्तु वे यह भूल जाते हैं कि ग्रामदान आन्दोलन ने ही रचनात्मक कार्यों को निगल लिया है। ग्रामदान का आधार ग्रामस्वावलबन है ही नही, क्योंकि सारे आन्दोलन मे उत्पादक शरीर श्रम का कोई स्थान नहीं। बिरला ही कोई सर्वोदय नेता नियमित रूप से उत्पादक शरीर श्रम करता है। उनकी भूमिका अधिकतर प्रचारक-उपदेशक-शिक्षक की बन गयी है। गत वर्ष राजघाट, नई दिल्ली मे रचनात्मक सस्थाओं के अखिल भारतीय सम्मेलन में सर्वोदय नेता आचार्य राममूर्ति ने इस तथ्य को खुले आम स्वीकार भी किया था।

सर्वोदय समाज की इस राजनीति-निरपेक्ष नीति का एक अन्य दुष्परिणाम भी सामने आया। राजनेताओ ने भी रचनात्मक-कार्य निरपेक्ष राजनीति अपना कर विशुद्ध सत्ता की राजनीति की शरण ली। इस तरह बापू का समग्र व्यक्तित्व उनके दो उत्तराधिकारियो-विनोबा और नेहरू मे विभक्त होकर दो लगभग स्वतन्त्र समानान्तर धाराओ मे बहने लगा।

एकमात्र इसी कारण से आज देश की गम्भीर स्थिति देशभक्तो की चिन्ता का विषय बनी हुई है और इसी चिंता का परिणाम सर्व सेवा सघ द्वारा आमंत्रित यह राष्ट्रीय सम्मेलन था। सर्व सेवा सघ के अध्यक्ष (और सम्मेलन के अध्यक्ष भी) श्री सिद्धराज ढड्ढा और मत्री श्री बग ने सम्मेलन के सचालन मे अपनी सूझ-बूझ और व्यवहार कुशलता का स्पष्ट परिचय दिया। सभी विचारधाराओं के प्रतिनिधियो ने मुक्त कठ से सम्मेलन के निवेदन का अनुमोदन किया और आशा व्यक्त की कि इस प्रक्रिया को आगे बढाया जायेगा। (शेष पृष्ठ १६ पर)

क्या अनादि—अनन्त ब्रह्माण्ड का छोर मिल गया ?

आदमी हजारों बरसों से ब्रह्माण्ड को नापने की, तोलने की कोशिश कर रहा है, अन्तहीन इस खोज में उसने अन्ध विश्वास, विश्राम, दर्शन-शास्त्र, गणित शास्त्र सभी का सहारा लिया है। लेकिन अब अमेरिका की पैसाडेना स्थित हेल वेधशाला के खगोल-शास्त्री एलेन आर० सैंडेज ने दावा किया है कि उन्होंने तथा अमेरिका में ही शोध कर रहे कुछ उनके मित्रों ने शायद इस अन्तहीन खोज का अन्त पा लिया है। श्री एलेन का कहना है कि उन्होंने स्पष्ट रूप से ब्रह्माण्ड की 'सीमा' को देख लिया है।

श्री एलेन की दलील इस प्रकार है : क्वेसार, जो कि तारों की तरह होते हैं, अन्तरिक्ष में सबसे अधिक चमकदार चीजों में से एक हैं। अब तक की खोज के मुताबिक जो सबसे दूर क्वेसार है उसकी दूरी, १२,०००,०००,००० प्रकाशवर्ष मील है। (प्रकाश की गति १८६,००० मील प्रति सेकिण्ड है, इस अकल्पनीय गति से चलने वाले प्रकाश को जिस दूरी को तय करने में पूरा एक वर्ष लगता है, उसे प्रकाशवर्ष कहते हैं।) क्वेसार, जिसका खगोलशास्त्रीय नाम ओ० एच० ४२७ रखा गया है, टेलीस्कोप से देखने पर खूब चमकीला और बिलकुल साफ दिखाई देता है। यह क्वेसार इतना साफ दिखता है कि यदि इसके पीछे कोई और भी क्वेसार होता या होते तो कम से कम कुछ धुंधले ही सही, दिखाई जरूर देते। अब चूंकि खगोलशास्त्री इस क्वेसार के पार और कुछ भी नहीं देख पा रहे हैं, श्री एलेन सैंडेज का कहना है कि ब्रह्माण्ड का विस्तार असीमित न होकर सीमित है, अनन्त नहीं है। खगोलशास्त्री इसी क्वेसार को ब्रह्माण्ड की सीमा मान रहे हैं।

एक दार्शनिक की ब्रह्माण्ड की कल्पना : पन्द्रहवीं शताब्दी का एक जर्मन वुडकट

ब्रह्माण्ड के अनादि-अनन्त होने का विचार, शून्य की कल्पना की तरह पूर्व से ही निकला था। लेकिन पश्चिम का झुकाव प्रायः असीमित की सीमा को नापने का रहा है। आज क्वेसार ओ० एच० ४२७ उस अन्तहीन विश्व का अन्त मान लिया गया है। इससे पहले कि अनादि-अनन्त की कल्पना विज्ञान की चौखट पर चकनाचूर कर दी जाये, यह याद कर लेना जरूरी है कि इन क्वेसार नामक सितारों की खोज हुए अभी केवल दस बरस ही बीते हैं। अंग्रेजी समाचार साप्ताहिक टाईम्स ने ब्रह्माण्ड की सीमा खोजने का दावा करने वाले इस समाचार पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि इसमें काफी गुंजाइश है कि ये खगोलशास्त्री जो देख रहे हैं वह शायद उनकी दृष्टि की सीमा है। जिसे हम ब्रह्माण्ड की सीमा मान बैठे हैं वह शायद हमारे दिमाग की ही सीमा हो।

हजारों बरस से आदमी रात को आकाश देखता रहा है, वह चकित होता रहा, मुग्ध होता रहा, भय खाता रहा है। लेकिन अभी कुछ मुट्ठी भर सदियां ही बीती हैं जब हमें यह मालूम हो सका है कि हमारा यह पृथ्वी और यह सूर्य एक सौर प्रणाली का भाग है। हमारी पृथ्वी और उसके आस-पास के अन्य ग्रहों (आस पास भी भ्रामक शब्द है अभी चार पांच बरस ही हुए जब कि आदमी ने पृथ्वी के उपग्रह चांद पर ही कदम रखा है। शेष ग्रहों में से दो की ओर याने मंगल और शुक्र की ओर मानव विहीन यान ही रवाना किये जा सके हैं।) का विशाल दिखने वाला परिवार पूरे ब्रह्माण्ड में एक कण के बराबर हैसियत रखता है। ब्रह्माण्ड में अनेक सौर प्रणालियां हैं, हमारी ही आकाशगंगा में अनेक तारे हैं। इन तारों का अपना ग्रह-परिवार होगा। इस विस्तार में कहीं हम पड़े हैं दुबककर! हम अपने को विशाल इस समुद्र में हीन भी न मानें, लेकिन गर्व की, दम्भ की तो कोई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। इस विस्तार का कोई और परिणाम हो या न हो, इतना तो होना ही चाहिए कि हमें अदना का, अपने अज्ञान का ज्ञान हो जाये। यह अज्ञान का आत्मविश्वास ही हमें आगे बढ़ाता जायेगा। ऐसा लगता है कि जैसे-जैसे हमारे अज्ञान के आत्म विश्वास की सीमा बढ़ती जायेगी वैसे-वैसे ही ब्रह्माण्ड की भी 'सीमा' सरकती जायेगी। शायद जो हालत केनोपनिषद में ब्रह्म की है वही ब्रह्माण्ड की है :

यस्यामतं तस्य मतं मतं यस्य न वेद सः।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम् ॥

महिला-पदयात्राएं महिला संगठनों की नींव रखें

कान्ता-हरविलास

"मेरी युवावस्था में मैंने कुछ भाइयों को तैयार किया, अब कुछ बहनें तैयार हों ऐसी मेरी इच्छा है। मुझे शेष जीवन स्त्रियों की सेवा में व्यतीत करना है।" विनोबा जी ने कई बार अपनी यह इच्छा प्रकट की है। इसी सिलसिले में उनकी प्रेरणा से १६५६ में पवनार में ब्रह्मविद्या मन्दिर की स्थापना हुई। वहां रहकर ब्रह्मचारिणी बहनें आज चौदह साल से साधना कर रही हैं।

उनकी इस तीव्र इच्छा का दूसरा परिणाम है अखिल-भारत-महिला पदयात्रा। चार ब्रह्मचारिणी बहनें पूरे देश की बारह साल की पैदल यात्रा करने निकली हैं। पिछले छः साल में करीब बारह-चौदह हजार मील की पदयात्रा वे कर चुकी हैं। देश के नौ प्रदेशों में उनकी यात्रा हो चुकी है। अभी वे आन्ध्र प्रदेश में घूम रही हैं। जनता की ओर से इस महिला पदयात्रा टोली का बहुत स्वागत हो रहा है। कई लोग उनसे कहा करते हैं कि ऐसी तो अनेक महिला लोक-यात्रायें निकलनी चाहिए।

ऐसा ही सुझाव जनवरी में विनोबाजी के सानिध्य में जब भगिनी स्नेह मिलन हुआ तब भी सामने आया। बहनों के प्रश्नों के बारे में वहां सोच विचार हुआ। तब सोचे गये कुछ कार्यक्रमों में एक यह भी था कि सारे देश में स्त्री-शक्ति-जागृति सप्ताह मनाया जाये। उस सप्ताह में देश के प्रत्येक जिले में बहनों की पदयात्रायें निकलें। कुछ माह पहले कुरुक्षेत्र में पहला अ० भा० महिला सर्वोदय सम्मेलन हुआ। तब से इसके लिए तैयारियां शुरू हुईं। इसके अनुसार अब ११ से १७ अक्टूबर तक सारे देश में करीब ३०० जिले में बहनों की पदयात्रायें निकल रही हैं। जैसे दिवाली, जन्माष्टमी आदि त्यौहार एक साथ सारे देश में मनाये जाते हैं, उसी तरह इन सात दिनों में कश्मीर से लेकर केरल और असम से गुजरात तक सब जगह एक साथ हजारों बहनें पदयात्रा करेंगी।

गुजरात में भी हमने यह कार्यक्रम उठाया है। जून माह में इसके लिए एक प्रारम्भिक शिविर नडियाद में हुआ था। ४५० बहनें आईं। कई संस्थाओं के लोगों का कहना था कि अपना किराया खुद खर्च करके इतनी बड़ी तादाद में शायद ही कभी इतनी बहनें इकट्ठी हुई होंगी। बहनों में इतना उत्साह था कि हरेक जिले में सिर्फ एक ही पदयात्रा नहीं, बल्कि चार-चार, पांच-पांच पदयात्रायें निकालना तय हुआ। उस मुताबिक सब जगह तैयारियां हो रही हैं। अब तक मिली हुई जानकारी के अनुसार गुजरात के कुल १६ जिलों में सौ-सवा सौ पदयात्रायें निकल रही हैं।
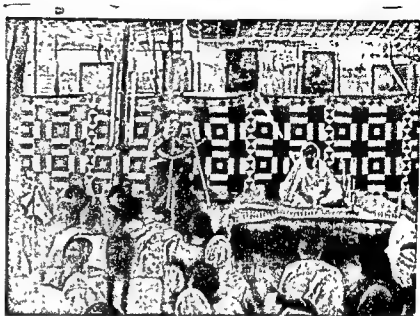
कुरुक्षेत्र में हुआ पहला महिला सम्मेलन जिसमें स्त्री जागरण सप्ताह का निर्णय हुआ

ये सब टोलियां हमारे दूर-दूर के गांवों की बहनों के पास पहुंचेंगी और जागृति के बारे में बातचीत करेंगी। गांव की बहनों तक बहुत कम लोग पहुंचते हैं। और खास बहनों के सवालों के बारे में बहुत कम चर्चा हुआ करती है। इस सप्ताह के निमित्त उन सबका संपर्क होगा। और पदयात्रा चूंकि बहनों की है इसलिए ठेठ घर के अन्दर चूल्हे तक उनका प्रवेश हो सकेगा।

इस सप्ताह में पदयात्रा के अतिरिक्त स्त्री जागृति के सन्दर्भ में अन्य विविध कार्यक्रम भी होंगे। नाटक, संवाद, गीत, चर्चा आदि के द्वारा व्यापक प्रचार होगा। अनुभवी बहनों के व्याख्यान भी आयोजित किये जायेंगे। सूरत, खेड़ा, अहमदाबाद जिले में इस तरह के कार्यक्रम कस्बे नगर और शहरों में आयोजित हुए हैं।

गुजरात में कई सालों से कुछ संस्थायें स्त्री जागृति के लिए काम कर रही हैं। उन सबका सुन्दर समन्वय हो और सब एक साथ मिल कर स्त्री जागृति का काम सक्रिय रूप से चलायें ऐसी हमारी कोशिश है।

जगह-जगह महिला सगठन बनाने की ओर जहां हो वहां सक्रिय करने की कोशिश की जायेगी। ये संगठन स्त्री-समाज के लिए लाछन रूप ऐसे अशोभनीय पोस्टर और विज्ञापनों के सामने विरोध जगायें। स्त्रियों की छेड़छाड़, बलात्कार आदि के विरुद्ध लोक-शिक्षण करके लोकमत खड़ा करें। बालविवाह दहेज आदि कुरिवाजों के सामने आन्दोलन जगायें। बहनों को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाने के लिए विविध गृह उद्योग और ग्रामोद्योग चलायें। सर्वोदय-पात्र जैसी प्रवृत्ति द्वारा घर में और समाज में शान्ति एवं अहिंसा के संस्कार दें। इस प्रकार के विविध कार्यक्रमों के बीज इस सप्ताह के दौरान भारत भर में बोये जायेंगे।

सहरसा : अन्तिम अभियान

सहरसा ग्रामस्वराज्य सम्पर्क केन्द्र के मित्रों का मित्र मिलन तारीख १२ से १६ सितम्बर तक विनोबा के सान्निध्य में हुआ था। २५ अगस्त से ही सहरसा के साथी ब्रह्मविद्या मन्दिर में इकट्ठा होने लगे थे। ऐसे तो रोज ही बाबा साथियों से कुछ न कुछ बातें करते ही थे, पर १० सितम्बर को सभी साथियों को इकट्ठा देख कर विनोबा ने सहज ही तीन महीने में सहरसा के काम को पूरा करने का आवाहन किया। वैद्यनाथ बाबू ने कहा कि यहां तीन साल से हम सब लगे ही हुए हैं, लेकिन काम पूरा नहीं हो पा रहा है। विनोबा ने कहा कि इसी अनुभव से हम तीन महीने में काम पूरा करने को कह रहे हैं। तीन महीने कम पड़ते हों तो चार महीने मिल सकते हैं। २ अक्तूबर से काम शुरू हो और तीस जनवरी तक पूरा किया जाय।

११ सितम्बर विनोबा जयन्ती के शुभ अवसर पर बिहार के राजस्व मंत्री श्री लहटन चौधरी विनोबा को अपनी श्रद्धा अर्पित करने आ पहुंचे। बाबा की पदयात्रा के दिनों में, सहरसा जिले में लहटन चौधरी यात्रा के समय लालटेन लेकर आगे चलते थे, तब से बाबा उन्हें लहटन के बदले 'लालटेन' चौधरी के नाम से पुकारते हैं। उस दिन दोपहर में बाबा ने पुनः कहा, "अब मित्र गण सहरसा का काम चार महीने में पूरा करें। काम पूरा नहीं हो पाता तो सभी सागर में समुन्दर प्रवेश करें।" बाबा के इस आवाहन पर रात में सहरसा के मित्रों ने पूरी गम्भीरता से चर्चा की। सभी महसूस कर रहे थे कि वर्तमान स्थिति देखते हुए सिर्फ कार्यकर्ताओं की शक्ति से सहरसा का काम पूरा होने की सम्भावना बहुत कम है। इसके लिए बाबा की प्रत्यक्ष उपस्थिति की आवश्यकता महसूस की गई और बाबा का सहरसा चलने का आमन्त्रण देने का निर्णय हुआ। यह भी सोचा गया कि चार महीने में काम पूरा हो सके, इसके लिए अच्छी पूर्व तैयारी करना अत्यन्त जरूरी है। तय पाया कि अक्तूबर से दिसम्बर तक पूर्व तैयारी की जाये, जिसमें चार महीने के अभियान संयोजन के लिए जिला स्तरीय संगठन बन जाये, प्रखण्ड स्तर अभियान समितियां गठित कर ली जायें, जिले के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं, बड़े भूमि-वालों तथा सरकारी सेवकों की सभाएं हों और अभियान में इन सभी का भरपूर सहयोग मिले। फिर जनवरी से अप्रैल तक चार महीने का अभियान चलेगा। इस अवधि में काम का पूरा वेग रहे के लिए एक महीने का बृहद अभियान करने का तय हुआ। इस महीने के लिए हर प्रखण्ड में कम से कम दो समर्थ साथी हों, जिनमें एक बिहार से और एक दूसरे प्रदेश से प्राप्त हों, जो प्रखण्ड से काम की समुचित योजना करेंगे। माना गया कि ग्राम सभा बन जाय, गांव में रहने वाली जमीन की कम से कम पचास प्रतिशत भूमि बंट जाय, भूदान की जमीन का निपटारा हो जाये और ग्रामदान की शर्तों के आधार पर सभी प्रखण्ड में प्रखण्ड सभाएं बन जायें तो काम पूरा हुआ माना जायगा।

दूसरे दिन १२ सितम्बर को विनोबा के साथ मित्रों की दो बार चर्चा हुई। पहले दिन सोची हुई अभियान की योजना बाबा के सामने प्रस्तुत की गई और उसकी पूर्ति के लिए बाबा से सहरसा चलने का अनुरोध किया गया। बाबा ने कहा, "आपकी योजना ठीक है। इतने गंभीर प्रयास के लिए आठ महीने की मुद्दत चाहिए, यह ठीक है। पर मैंने कहा था कि सहरसा का काम पूरा हो या सागर में प्रवेश करो। यह जो निश्चय सागर में स्नान करने का है उसका दूसरा भी अर्थ है। वह यह कि भारत व्यापी सागर है, उसमें प्रवेश करो। बिहार के साथी निकल पड़ें भारत में। आज भारत के साथ सम्बन्ध रखने वाले कितने लोग होंगे? आज भारत में अखिल भारतीय नेतृत्व नहीं बन रहा है। पहले एक-एक प्रदेश के नेता अखिल भारत के नेता होते थे। इसलिए आज हमारे कुछ साथियों को अखिल भारत में पहुंचना चाहिए। आठ महीना पूरी शक्ति के साथ सहरसा के काम में लगो। पचास प्रतिशत काम पूरा हुआ तो सफल माना जायेगा। अगर सफल हुआ तो सफलता के साथ भारत में जायेंगे। असफल रहा तो असफलता के साथ जायेंगे। आठ महीने के बाद बिहार के साथ भारत में जायेंगे। पूर्ण प्रयत्न के बावजूद असफलता मिली तो वह बड़ी सफलता मानी जायेगी। मुसीबतों का अनुभव आ जायेगा। अनुभवी मनुष्य होकर आप बाहर निकलेंगे। उस अनुभव का लाभ दूसरे को मिलेगा। जितनी भी सफलता मिले, उतनी ही लेकर बाहर निकलना है।"

बाबा के सहरसा चलने के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि बाबा इस यात्रा में आयेंगे तो सफलता मिल भी सकती है। ऐसा मान सकते हैं। लेकिन उससे आपकी ताकत बढ़ेगी नहीं। एक मनुष्य की ताकत प्रकट होगी। बाकी लोगों का सहयोग होगा। उनकी ताकत दब जायगी। इस वास्ते बाबा अभिध्यान करेगा। अभिध्यान से ताकत मिलेगी। बाबा वहां सूक्ष्म रूपेण हाजिर रहेगा।

विनोबा से प्राप्त आदेश और निर्देशन के सन्दर्भ में सहरसा अभियान की, जिसे उन्होंने अन्तिम अभियान कहा है रूप रेखा मित्र मिलन की गोष्ठी में स्थिर की गई। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा तथा मंत्री ठाकुरदास बंग भी इस गोष्ठी में शामिल हुए। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार नवम्बर और दिसम्बर में पूर्व तैयारी के बाद जनवरी से अप्रैल तक अभियान चलेगा। एक महीने का बृहद अभियान जनवरी महीने में होगा। जिसमें सहरसा के अतिरिक्त बिहार के १२५ तथा देश के अन्य भागों से १२५ कार्यकर्ता भाग लेंगे और एक साथ अपनी सामूहिक शक्ति ग्रामदान पुष्टि कार्य में लगायेंगे। बृहद अभियान के बाद भी ये साथी शेष महीने का समय वहां के काम में देंगे।

सेवाग्राम संघ अधिवेशन में भाग लेने के लिए बिहार से प्रान्तीय सर्वोदय मंडल, जिला सर्वोदय मंडलों व खादी एवं अन्य रचनात्मक

कालपुरुष की प्रेरणा हमारे साथ है

प्रश्न: मानव समाज जिस दिशा में जा रहा है उसे अपनी मरजी की दिशा में ले जाने में सामाजिक हिंसा और आसक्ति का आभास नहीं है क्या ?

विनोबा: मुझे लगता है कि धीरे-धीरे *मानव समाज उन्नति की दिशा की ओर जा* रहा है। कुल दुनिया शान्ति, एकता की ओर जा रही है। तब क्या कोई कहेगा कि हम चीन नहीं जायेंगे। मानव समाज शांति की ओर जा रहा है। यदि वह किसी खतरे की दिशा में जा रहा हो तो उसे उलटने की *बात आती है।* पर मुझे ऐसा नहीं लगता है।

प्रश्न: आज जो परिस्थिति बनी है, उसका कर्त्ता मानव ही हो तो उसमें काल पुरुष का संकेत है क्या ?

विनोबा: आज जो परिस्थिति पैदा हो रही है वह कालपुरुष का परिणाम है। फिर से बुद्ध जाग्रत हो जाये ऐसी अभी कालपुरुष की चाह है। २५०० वर्ष पहले गौतम बुद्ध पैदा हुए। फिर वे हट गये। अब फिर पैदा हुए हैं। जिनकी जयन्ती २५०० साल के बाद शुरू हुई है। वे आगे भी। टिकेंगे बौद्ध काल में शांति आयेगी। मानव जाति गिरेगी, फिर ऊपर उठेगी। पर आज हमारे लिए अत्यंत अनुकूल परिस्थिति है, ऐसा मुझे दिखता है।

प्रश्न. आज की विषम परिस्थिति का भान लोगों को होने के बावजूद भी उसके निराकरण की तीव्रता क्यों नजर नहीं आती है ?

विनोबा. देखिये यह आश्रम है। दूर से देखने वाले को लगता है कि आश्रम कितना *सुन्दर है। पर पास वाले को लगेगा कि यहां* कूड़ा कचरा पड़ा है, वहां पड़ा है। दूर वाले को यह कचरा दिखता नहीं है। पास से देखने पर दिखता है। यानी सफाई नहीं करना, ऐसा नहीं है। सफाई अच्छी है। ऐसी श्रद्धा रखनी ही है। आसपास गंदगी है ऐसा न कहें। पर सफाई करते रहें। गुजराती में कहावत है कि *डुंगरा दूर थी रलियामणा' यानी पहाड़ दूर से ही सुहावने लगते हैं। यह बात भी समझनी* चाहिए।

प्रश्न सौराष्ट्र में लोग भूमि छोड़ दें, ऐसा वातावरण नहीं है। वहां का मिजाज ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ने का कोई कदम सुझाइये।

विनोबा जमीन बांटने की जो बात है उसे आप वहां छोड़ दें। और सबसे कहें कि ग्रामसभा की रचना कीजिये। सर्व सम्मति से गांव के कार्य कीजिये, गांव में कोई भूखा न रहे। एक भी व्यक्ति भूखा हो तो उसकी जिम्मेदारी ग्रामसभा को लेनी चाहिए। वह जब लायेगा तब ग्रामसभा वाले भोजन करेंगे। ऐसी हवा गांव-गांव में बनाइये। इतना होगा, ग्रामसभा बनेगी भले ही जमीन न बटे तो भी बाबा उसे बाबा मान्य करेगा। क्योंकि बाबा कभी अपने शब्दों का आग्रह नहीं रखता है। सौराष्ट्र में ऐसा करेंगे तो भी चलेगा। सौराष्ट्र के लोग कहां-कहां *नहीं जाते हैं? महासागरों के उस पार* दूर-दूर तक जाते हैं। गुजराती इतने दूर नहीं जाते हैं। वह कहावत है न "जे जन जाय जावे, पाछीना आवे। आवे तो परियानां खावे एरलु धन लावे" अर्थात जो व्यक्ति *जावा देश जायेगा वह वापस नहीं लौटता।* यदि लौटेगा तो इतना धन कमा कर वह लायेगा कि उसकी पीढ़ी दर पीढ़ी को भी पुरेगा। पहली बात तो यही है कि वह वापस नहीं लौटेगा। वापस चला आया तो वह दूसरी बात।

प्रश्न: आज की अन्यायपूर्ण समाज रचना ही गांव की एकता का तोड़ रही है। तब एकता-एकता की रट कहां तक व कितनी सुसंगत है ?

विनोबा कितनी गिनें ? एक बार एकता कि दो बार, कि तीन बार या चार बार एकता ? "कितनी बार क्षमा किया जाये," ऐसा ईसा से पूछा गया। ईसा ने कहा, "सात बार क्षमा करूंगा।" "फिर भी कुछ नहीं हुआ तो ?" ईसा ने कहा कि "७×७ इस प्रकार गणित के गुना के हिसाब से क्षमा करते रहो।" एकता का जाप कितना किया जाये ? राम...राम जपने से कुछ न मिला तो क्या रावण... रावण ऐसा शुरू किया जाये ? यह तो भक्ति की कसौटी है। गांव की एकता कभी टूटनी नहीं चाहिए। आज की परिस्थिति, सरकार, मजदूर, मालिक कोई भी कारण हो, फिर भी एकता टूटनी नहीं चाहिए। श्रद्धापूर्वक एकता का प्रयत्न करते रहना यही हमारा काम है। **(गुजराती से अनुवाद)**

→

संस्थाओं के पदाधिकारीगण तथा अनेक लोकसेवक, कार्यकर्ता आये थे। २० सितम्बर को इनके समक्ष बोलते हुए बाबा ने कहा, "आज सहरसा काम का अन्तिम दिन है।" बिहार की खादी-संस्थाओं के मार्गदर्शक एवं पदाधिकारियों से खादी कार्य की समस्याओं एवं उनके समाधान की चर्चा के दौरान कबीर की पंक्ति 'जो घर फूके आपनो चले हमारे साथ' का उल्लेख करते हुए बाबा ने कहा कि, "खादी को बचाने का एक ही रास्ता है, घर फूको और लगो इस काम में। ग्राम-स्वराज्य के काम में पूरी शक्ति और पूंजी *लगा दो। खादी का भविष्य और उसकी* समस्याओं के समाधान का एकमात्र उपाय है खादी काम को गांव के आधार पर खड़ा करना। बिहार सर्वोदय मंडल की सारी शक्ति इसमें लगनी चाहिए।" बिहार के *साथियों ने उत्साहपूर्वक इस अभियान में* लगने का निश्चय किया है।

इस अभियान में ब्रह्मविद्या मन्दिर की ओर से दो बहनें और दो भाई भेजने का निश्चय किया गया है। बाबा के सुझाव पर बंगाल के श्री चारुचन्द्र भंडारी मार्च तक *सहरसा में रहेंगे और फिर बंगाल में होने* वाले सर्वोदय समाज सम्मेलन के लिए जायेंगे। तमिलनाडु से श्री जगन्नाथन् जी भी अभियान में तीन महीने का समय देंगे। इसी तरह गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश उत्तर *प्रदेश, कर्नाटक तथा अन्य प्रान्तों से आन्दोलन* के बहुत से साथी एवं उत्साही मित्रों ने बाबा की प्रेरणा से सहरसा के इस अन्तिम अभियान में लगने का निश्चय किया है।

(विद्यासागर व सूर्यनारायण द्वारा)

मध्य प्रदेश

प्रगति और सफलताओं का एक वर्ष

- डाकुओं के आत्मसमर्पण के परिणामस्वरूप सदियों से डाकू पीड़ित चम्बल और बुन्देलखण्ड क्षेत्रों में शान्ति, सहयोग तथा आत्मविश्वास के नये युग का प्रारम्भ।
- खेती की जमीन और शहरी सम्पत्ति की नयी न्यायपूर्ण सीमा निर्धारण की कानून बनाया गया।
- राज्य के संतुलित विकास के लिये पहली बार राज्य योजना मण्डल का गठन।
- वर्ष के अन्त तक सभी उपलब्ध कृषि योग्य भूमि वितरण का कार्य प्रारम्भ।
- खेतिहर मजदूरों के आवास के लिये निःशुल्क भू-खण्ड का वितरण।
- नलकूपों तथा लघु सिंचाई योजनाओं द्वारा १ लाख १० हजार एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई।
- २ से ३ एकड़ वाले छोटे किसानों को सहकारिता का लाभ।
- १ लाख ८६ हजार पम्पों द्वारा खेतों को सिंचाई सुविधा।
- द्रुत औद्योगीकरण की दिशा में ठोस कदम।
- शासकीय कर्मचारियों को अच्छे वेतनमान, भत्ते तथा अन्य सुविधाएं।
- स्वायत्तशासी संस्थाओं के कर्मचारियों की सेवा शर्तों में सुधार।
- ग्राम पंचायतों को व्यापक अधिकार।
- छात्र-कल्याण सलाहकार परिषद का गठन।
- बांस के व्यापार के राष्ट्रीयकरण का निर्णय।

उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की दिशा में
सघन प्रयास

सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, म० प्र० द्वारा प्रसारित

मु० प्र० स० । २३८४/७३

भूदान-यज्ञ

२२ अक्टूबर, '७३

वर्ष २० अंक ४

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

शांति पुरस्कार

नोबेल शान्ति पुरस्कार के लिए इस वर्ष अमेरिका के डा० हेनरी किसिंजर और उत्तरी वियतनाम के ली डक थो के नाम घोषित किये गये हैं। पिछले वर्ष की अशान्ति शमन की घटनाओं में जिन्होंने सबसे अधिक कार्य किया उनमें इन दोनों का योगदान माना गया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वियतनाम का लम्बा युद्ध इन दोनों के प्रयास से थमा है फिर शान्ति चाहे वहां जितनी कमजोर और अस्थाई हो। शांति के इन वार्ताकारों के हित में लिये गये निर्णय को स्टाकहोम में विवाद का विषय माना गया है। स्वीडन के शान्तिवादियों और लेखकों ने इस निर्णय पर आक्रोश प्रकट किया है। यह भी संभावना है कि ली डक थो पुरस्कार स्वीकार ही नहीं करें। लेखिका लिंडमन ने कहा है, 'अगर सिर्फ ली डक थो को ही यह पुरस्कार दिया जाता तो बात फिर भी समझ में आ सकती थी, लेकिन अगर इसमें उन्हें हेनरी किसिंजर जैसे युद्ध अपराधी के साथ भागेदारी करनी है तो यह निश्चित ही उनका अपमान है।'

शांति पुरस्कार की यह परम्परा इस सदी से प्रारम्भ हुई है। पुरस्कार प्राप्त करने वालों का चुनाव नार्वे की पार्लियामेंट के द्वारा बनाई गई पांच सदस्यों की एक समिति करती है। और जिसको सलाह देने के लिए नार्वेजियन नोबेल इन्स्टीच्यूट मददगार होता है। यह इन्स्टीच्यूट अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विकास और उनकी समस्याओं का शान्तिपूर्ण हल निकालने की दिशा में होने वाले कामों का अध्ययन करता है, तथा इन सब के आधार पर शांति पुरस्कार के वितरण के संबंध में सलाह भी देता है। नोबेल कमेटी के सामने जो नाम पेश किये जाते हैं वे या तो कमेटी के सदस्यों या भूतपूर्व सदस्यों द्वारा सुझाये जाते हैं या विभिन्न देशों के संसद सदस्यों द्वारा या विश्व के विश्वविद्यालयों के राजनीति, इतिहास कानून और दर्शन शास्त्र के विभागाध्यक्षों आदि के द्वारा पेश होते हैं। इस प्रकार से आये हुए नामों के बारे में सब जानकारी इकट्ठी की जाती है और उनमें से योग्य नाम तय होता है।

थो का चयन इतिहास में पहली बार किसी एशियाई को यह आदर प्रदान करता है और इसके लिए जहां वे एक ओर बधाई के पात्र हैं और शांति पुरस्कार समिति की प्रशंसा की जानी चाहिए वहां यह ध्यान भी आये बिना नहीं रहता कि विश्व शांति की दिशा में इन ७३ वर्षों में क्या इसके पूर्व किसी एशियाई ने ऐसा शांति कार्य नहीं किया कि जो विश्व के इस पुरस्कार के योग्य हो ? साथ ही शान्ति पुरस्कार के संबंध में अन्य सवाल भी उठते हैं।

पहला तो यह है कि शांति के ही दो प्रकार हैं एक अशान्ति शमन का है, जिस कोटि में इस वर्ष का पुरस्कार आता है, और दूसरा है शांति के स्थाई आधार निर्माण करने का यह दूसरी कोटि बुनियादी है और इसमें लगे शांतिवादियों के काम गहराई से देखने पर ही समझे जा सकते हैं। नोबेल शांति पुरस्कार ऐसे, जिन्होंने मानवीय सम्बन्धों में शान्ति की दिशा में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये हैं, महामानवों को भी दिया गया है। इनमें एलबर्ट श्वाइतजर और पादर पीयरे के नाम हमारे सामने हैं। परन्तु यह समझ में नहीं आता कि भारत में गांधी के नेतृत्व में जो काम हुआ और हो रहा है उसको नोबेल शांति समिति ने समझने की कोशिश क्यों नहीं की और विश्व शांति की सीमाओं को आगे बढ़ाने का जो मूलगामी प्रयोग यहां हुआ उसकी तरफ से वे बेखबर क्यों हैं ? देखने की जरूरत है कि इसमें सुझाने वालों की गलती है या नोबेल इन्स्टीच्यूट की कमी है या कि चुनाव करने वालों के दिल पर राजनीति ज्यादा हावी है।

१९६६ की गर्मियों में नोबेल इन्स्टीच्यूट के प्रमुख और पुरस्कार समिति के मंत्री से उसी कमरे में मिलने का मौका मिला जहां बैठ कर समिति निर्णय लेती है। उन्होंने पूरी कार्य पद्धति के संबंध में विस्तार से जब बताया तभी ऐसा महसूस हुआ कि जो तटस्थता, गहराई और बाहरी दबाव से मुक्त वातावरण की जैसी आवश्यकता इस प्रकार के चुनाव के लिए है वह शायद ही संभव है और हम बेकार ही इस पुरस्कार के बारे में बहुत ऊंची भावना रखते हैं। पिछले साल विलीब्रांट का और इस साल का चुनाव यह बताता है कि दिशा राजनैतिक अधिक गहरी है, मानवीय कम। दे०

जगनेर में जागरण, आगरे में अगुवाई

—अनुपम मिश्र

(देश के तीन सौ जिलों; अनेक शहरों में ११ अक्तूबर से १७ तक स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के दौरान महिला पदयात्राएं हुई। उत्तर प्रदेश के आगरा में कुल ६ टोलियां, जिनमें से ॥ जिले के विभिन्न विकास खण्डों के गावों में तथा एक शहर के मुहल्लों में निकली। आगरा शहर तथा विकास खंड जगनेर में, जहां ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का भी काम चल रहा है, स्त्री-शक्ति जगाने को निकली दो टोलियों की रपट यहां दी जा रही है।)

'हम लोग अगले पड़ाव रूंद का रास्ता भूल गये थे, खेतों में जा रहे थे कि सामने कुछ दूर पर बन्दूकें लिए कुछ लोगों को बैठे देखा। वे सब पायजामे बनियान, वगैरा पहने थे, हमें लगा कि ये बागी होंगे। बहुत डर लगने लगा फिर सबने हिम्मत बटोरी और सीधे उनकी ओर ही चलने लगे", जगनेर विकास खंड के गावों में घूम रही टोली की कृष्णागुप्ता बड़े मजे में किस्सा सुना रही थी, "हमें आता देख वे सब खड़े हो गये, हिम्मत करके उनसे रास्ता पूछा। बन्दूक लिये एक आदमी ने हमें सारा रास्ता समझा दिया और फिर पोशाक से शहरी दीखने वाली हम चारों महिलाओं से इतने सुबह-सुबह एक गांव तक जाने का कारण भी पूछ डाला।" पदयात्री टोली ने कारण समझाया। विनोबा का जिक्र सुनकर इन बन्दूक वालों ने कहा कि, "इस इलाके में एक आदमी बागी बन कर फरार हुआ है, हम पुलिस के लोग इसीलिए गश्त लगा रहे हैं। आप लोगों को अकेले जाने में खतरा है। हमारे कुछ साथी अगले पड़ाव तक आपको छोड़ आयेंगे।" शताब्दियों से स्त्री की 'सुरक्षा' के नाम पर उसे घर के भीतर एकदम नजरबन्द कर रखने वाले पुरुष-स्वभाव का ही यह नमूना था—हालांकि यहां उनकी नीयत अच्छी ही थी। फिर भी महिला पदयात्रा टोली ने पुलिस की 'सुरक्षा' में अगले पड़ाव तक जाने से इन्कार किया। जो टोली स्त्री को 'सुरक्षित' के स्तर से ऊपर उठा कर 'स्वरक्षित' बनाने निकली थी, वह रास्ते में ही अपने उद्देश्य से कैसे डिगती?

रूंद पहुंचने पर गांव के लोगों ने टोली का आत्मीय स्वागत किया। टोली के आने की खबर उन्हें पहले ही लग चुकी थी। दोपहर की सभा को छोड़कर, सुबह और शाम दोनों ही ग्रामसभाओं में काफी संख्या में आदमियों ने भाग लिया, स्त्री-शक्ति जागरण विषय पर हुए भाषणों के बाद लगभग १७ रुपये का साहित्य भी बिका।

दोपहर की सभा में केवल महिलाएं ही आयी थीं। सम्पन्न परिवारों की महिलाएं दोपहर से पहले चूल्हे से मुक्त नहीं हो पाती। सभा में गांव की ऐसी महिलाओं की संख्या ही अधिक रहती थी, जो विशिष्ट जात, विशिष्ट आर्थिक स्थिति की होते हुए भी घूंघट परदा, चूल्हा-चौका में बंधी रहती हैं। पिछड़ी जाति की माने जाने वाली औरतें अपेक्षाकृत ज्यादा स्वतंत्र भी हैं और 'स्वरक्षित' भी। लेकिन वे प्रायः इन सभाओं में नहीं आ पाती थीं। वे दूसरे के खेतों में मजदूरी कर रही थीं क्योंकि यह फसल का समय था।

पदयात्रा टोली का पड़ाव प्रायः गांव की पाठशाला या फिर गांव का कोई प्रतिष्ठित घर होता था। पाठशाला में ठहराने पर भी उनका खाना पीना तो घरों में ही रखा जाता था। गांव के लोगों को चार महिलाओं का 'इस तरह अकेला' घूमना बहुत आश्चर्यजनक लगता था। महिला पदयात्रियों द्वारा अपनी यात्रा का उद्देश्य बताने पर भी यह आश्चर्य प्रायः कम नहीं होता। वे 'इस तरह अकेले' घूमने के पीछे एक बड़े संत का आशीर्वाद मानते।

पदयात्रा टोली के भाषणों से महिलाओं पर क्या असर पड़ा, क्या पड़ेगा ऐसा सोचने का अभी समय नहीं आया है। यह पहली पदयात्रा थी, इसने दूर-दूर परदों में ढकी, चबूतरों में बसी महिलाओं तक एक दस्तक दी है, केवल महिलाओं ने ही नहीं पुरुषों ने भी सुनी है आगरा जिले के शमशाबाद विकास खंड के गढ़गांव में टोली नायक प्रकाशवती सूद के भाषण के बाद दो आदमी भाव विभोर हो गये। सभा में ही उठ कर उन दोनों ने घोषणा की कि वे कई बरस से शराब पीकर घर लौटते थे, नशे में मारपीट भी हो ही जाती थी। आज से हम शपथ लेते हैं कि हम फिर कभी भी शराब नहीं छूएंगे।

जगनेर टोली का १३ तारीख का पड़ाव ऐसे गांव में था जहां बड़े पैमाने पर पूरा गांव खुजली फोड़े आदि से पीड़ित था। जिस घर में यह टोली ठहरी थी वहां भी पांच में से चार सदस्य बीमार थे। सभी सदस्याएं अपने-अपने झोलों में रखी प्राथमिक उपचार की पोटलियों को खोलकर इन सबके उपचार में जुट गयीं। खुद के लिए जो दवाएं लेकर वे चली थीं वे दूसरे के काम आ गयीं।

पदयात्रा भी पहली बार निकली और आगरा जिले की इन पदयात्राओं में भाग लेने वाली महिलाएं भी पहली बार इस तरह से बाहर आयी थीं। उनके अपने भी अनुभव कम नहीं हैं। जगनेर विकास खंड की टोली की कृष्णागुप्ता भूगोल विषय में एम० ए० हैं। उनका कहना है कि हमने दुनिया भर का भूगोल पढ़ डाला लेकिन गांव का भूगोल अब शुरू हुआ है। शहर में उन्हें काफी पीने की आदत है लेकिन यात्रा में वे अपने साथ जान-बूझ कर काफी नहीं लायीं। सात दिन खूब चलना, खूब खाना तथा खूब खुश रहना—इस दिनचर्या से उनका अभी अभी शुरू हुआ रक्तचाप का रोग भी गायब हो गया है। इसी टोली की एक अन्य पदयात्री यात्रा पर

→

श्रीमती शकुन्तला ओक व कृष्णा गुप्ता

→

रवाना होने के पहले बाटा की नयी चप्पल पहन कर आयी थी, वह पहले ही दिन टूट गई। गावो मे व शहर मे घूम रही सभी टोलियो से शहर व गांव के सर्वोदय कार्यकर्ता बारी-बारी सम्पर्क रखते थे। सपर्क करने वाले कम थे इसलिए एक दिन इधर तो दूसरे दिन उधर जाते थे। जगनेर टोली से जब १५ अक्तूबर को सम्पर्क हुआ तो पदयात्रियो को सोप की याद आयी। अखबार पाच दिन से देखा नही था, उसी दिन उन्हे श्री बरकतुल्ला जी के निधन की खबर मिली। इस टोली की सचालिका श्रीमती शर्मा शहर के एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर तथा गोवर्धन होटल के सर्वेसर्वा श्री केदारनाथ शर्मा की पत्नी थी। उसी दिन उन्हे मालूम पड़ा कि उनके पति व्यापारिक काम से हवाई जहाज द्वारा असम चले गये हैं। पति हवाई जहाज पर और पत्नी पदयात्रा पर! जब भी संपर्क करने वाले एक टोली मे पहुचते तो टोली अन्य चार विकास खडो व आगरा शहर मे चल रही टोलियो की खबर पूछती। सपर्क के लिए जाने वाले कार्यकर्ता केवल टोली से ही सपर्क नही करते वे गाव के अन्य घरो मे भी कुछ देर बैठते, बातचीत करते। कुद गाव मे गलियो मे जगह-जगह घरो से निकलने वाला पानी भरा था। उन्हे पानी सोखने वाला गड्ढा बनाने की तरकीब इन कार्यकर्ताओ ने समझायी।

चतोरा गाव से टोली जब अगले पडाव पर जाने लगी तो गाव के प्रधान की पत्नी रोने लगी, उन्होंने पूछा कि अब दुबारा हमारे गाव मे कब आओगी? "अगले साल फिर ऐसी ही टोली आयेगी" सुन कर उनका रोना रुका नहीं। उन्होंने कहा कि एक हफ्ते तो हमारे गाव मे रुकना ही चाहिए था। एक दिन से क्या हुआ?

आगरा जिले के इन विकास खण्डो के अलावा शहर मे भी पदयात्रा निकली थी। शहर की जिन्दगी की अपनी एक भगदड़ होती है, जिसका कि इस पदयात्रा पर असर पड़ना ही। लेकिन कुछ और भी बड़े दिलचस्प कारण थे। शहर मे एक से अधिक टोलियां निकलें ऐसी कोशिश की जा रही थी। लेकिन पहले तो शहर मे रहने वाली औरतें सुबह से दफ्तर जाने वाले, स्कूल कालेज जाने वाले के वास्ते खाने के डिब्बे तैयार करने लग जाती है, उससे छुट्टी तो बाजार के काम और कही कुछ समय खाली मिला तो थोड़ी देर 'कमर सीधी' करना। खुद दफ्तर जाने वाली महिला के लिए तो सुबह १० से ५ एक दूसरा ही चौका खुल जाता है। घर मे रहने वाली महिलाए किसी तरह सात दिन के लिए अपने पतियो को चूल्हा-चौका सोप देती। पति स्वीकार भी कर लेते, लेकिन ११ अक्तूबर का दिन आगरा वालो के लिए बड़ी तकलीफ बढ़ा गया। उस दिन शरद पूर्णिमा थी। आगरा मे ताजमहल है—और शरद पूर्णिमा की चादनी मे ताज को देखने के लिए कोई एक लाख दर्शक आगरा चले आते है। इस बार भी यही हुआ। घर-घर मे मेहमान और कही-कही तो घर के सदस्यो से अधिक मेहमान। ऐसी हालत मे कई महिलाओ को बहुत सकोच लगा कि वे सात दिन के लिए 'चूल्हा-चौका' पुरुषो को सौंप कर चली जायँ।

"फिर हमारा भी एक त्योहार इसी हफ्ते पड़ता था", आगरा की एक महिला ने पदयात्रा मे शामिल होने की इच्छा रखते हुए भी शामिल न हो पाने का कारण साफ करते हुए कहा कि, "करवाचौथ को हम उपवास रखते हैं, उस दिन घर से बाहर कैसे जाते?" एक अन्य महिला पदयात्रा मे जाने को तैयार थी लेकिन उनके सामने एक दिक्कत थी। उनकी टोली का एक पडाव उस घर मे था, जहा इनके परिवार की लडकी का विवाह हुआ था। जैसा कि चलन है वे उस घर में कुछ भी खा-पी नही सकती थी। लडकी को 'पराया' मानना, फिर विवाह के बाद उसके घर का खाना-पीना छोडना ये धारणायें गहरी हैं—न तो एकाध पदयात्रा मे शामिल होने से और न एकाध पदयात्रा निकलने से इन पर कोई असर होगा। योजना है कि स्त्री-जागरण पदयात्राए जगह-जगह महिला सगठन बनायेंगी। ये सगठन कारगर ढंग से साल भर तक महिलाओ के बीच इन धारणाओ को मिटाने के लिए काम करेंगे।

अनेक दिक्कतो के बाद शहर की पदयात्रा भी निकली ही। श्रीमती शकुन्तला घोष, जो यहा अंग्रेजी की प्राध्यापिका हैं, भी शामिल हुई। उनका कालेज चल रहा था। इसलिए वे कालेज के समय अपनी कक्षाए लेकर वापस पदयात्रा मे शामिल हो जाती। घर पास ही होने के कारण शहर की पदयात्रा टोली के सामने एक झझट और

(शेष पृष्ठ १५ पर)

बिदाई : आगरा शहर तथा गांवों में निकली टोलियां

बीते साल की दिल दुखाने वाली यादें

(११ अक्टूबर को जे. पी. ने अपने संघर्षमय जीवन के ७१ वर्ष पूरे कर ७२ वें मे प्रवेश किया। पिछले एक साल मे कम से कम एक ऐसी घटना हुई है जिसने जयप्रकाशजी के न सिर्फ व्यक्तिगत जीवन को बल्कि सामाजिक जीवन को भी झकझोर दिया है। लोग कहते हैं कि प्रभावती दीदी के अवसान के बाद जे. पी. बहुत बदल गये हैं। देवेन्द्र भाई ने यहा जे. पी. के वर्तमान कार्यक्रमो और जीवन के बारे मे सार में लिखा है।)

पटना मे अपने पुराने स्थान पर ही जयप्रकाश जी रह रहे है। दीदी के जाने के बाद वह जगह बिलकुल सूनी-सी लगती है पर उनकी स्मृतियो से भरी हुई। इस ११ अक्टूबर को उनका एक वर्ष पूरा हुआ जिसमे वे जिम्मेदारियो से मुक्त होकर रहना चाहते थे और उन्होंने अपने ७२वें वर्ष मे प्रवेश किया। गये-बीते साल की यादें दिल दुखाने वाली हैं। अपने शरीर स्वास्थ्य पर उन सबका भी असर पड़ा ही है। इधर बम्बई मे जुलाई-अगस्त माह मे दो सप्ताह अस्पताल मे और तीन सप्ताह आराम लेने के लिए वे अपने भाई के यहा रहे। २८ अगस्त को वे पटना आये। और डाक्टरों का कहना रहा कि तीन माह तक शरीर पर बिलकुल जोर न डालें। इसलिए नवम्बर अन्त तक उन्होंने अपना एक क्रम बनाया है जिसमें बातचीत करने पर भी समय की रोक रखी है। पर वे उतने दिन भी आराम न ले पायेंगे। दीपावली पर वे अपने गाव सीता-बदियारा जायेंगे जहा उनके गोद लिये पुत्र-भतीजे विवाहोपरान्त पहली दीवाली पर आयेंगे। दीदी के जाने के बाद दीवाली तो सूनी ही जायेगी पर वे रहतीं तो जो करती उसे पूरा करने का कर्तव्य जे० पी० ने अपना माना है।

एक समर्पणकारी बागी भाई ने पत्र लिखा है कि आपने वायदा किया था कि इस आराम के वर्ष मे भी हमारे काम का न छोड़ेंगे पर आप साल भर मे आ न सके, अब आइये। मुख्यमंत्री सेठी का आग्रह है कि अब जब खुली जेल का प्रयोग समर्पणकारी बन्दियों पर होने वाला है तो उस प्रयोग के उद्घाटन में वे आयें इसलिए ८ नवम्बर को वे पटना से निकलने की सोचते है। लखनऊ दिल्ली, मुगावली (जहा खुली जेल बनी है, बीना के पास), सागर, ग्वालियर, भोपाल का कार्यक्रम २१-२२ तक का बन रहा है। बाद मे वे दक्षिण भारत जाने का सोचते है। बाबा से भी मिलना है।

श्री जयप्रकाश जी

अपने शरीर के बारे मे बताते हुए उन्होंने कहा "हृदय मे कई खाने होते हैं। बाईं तरफ का खाना जहा से खून पम्प होकर आता है वहा की मांसपेशी (मसल) कमजोर है। जब शरीर पर जोर अधिक पड़ता है जैसे भ्रमण, अधिक बोलना आदि तब हृदय का बोझ बढ़ जाता है। ऐसे मे फेफड़ों का रक्त पूरा नहीं निकल पाता और सांस फूलने लगती है। नब्ज ६०-६५ की जगह ९०-९५ हो जाती है इसे डाक्टर दिल का दौरा तो नहीं कहते पर ऐसे मे शरीर को क्षति पहुचती है। दिल अपनी क्षति की पूर्ति करने की ताकत रखता है तभी वह इतना जबरदस्त काम शरीर मे कर पाता है, पर इसके लिए उसे आराम चाहिए। इसलिए मुझे आराम की सलाह दी गई है।"

× मध्यप्रदेश के कानून व जेल मंत्री श्री कृष्णपाल सिंह १८ अक्टूबर को श्री जयप्रकाश जी से मिलने दिल्ली से पटना गये। श्री सिंह की जे० पी० से भेंट का मुख्य हेतु जयप्रकाश जी को मध्यप्रदेश में खुल रही खुली जेल के उद्घाटन समारोह हेतु आमंत्रित करना था। जेल मंत्री अपने साथ मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी का एक पत्र भी जयप्रकाश जी के लिए ले गये। भारत में अपने ढंग की पहली खुली जेल, जिसमें आत्मसमर्पित बागियों को रखा जायेगा, का उद्घाटन १४ नवम्बर को होगा। यह जेल दिल्ली-भोपाल मार्ग पर स्थित बीना जंक्शन से २५ मील पश्चिम में मुगावली नामक स्थान पर बनायी गयी है। इस खुली जेल में १०० बागी रह सकेंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार इन सौ बागियों में चम्बल व बुन्देलखंड क्षेत्र के बागी सरदार, सम्मिलित होंगे। बुन्देलखंड क्षेत्र के बागियों के लिए एक अलग खुली जेल बनाने का विचार भी चल रहा है। अगर जयप्रकाश जी खुली जेल के कार्यक्रम हेतु अपनी स्वीकृति दे देते हैं तो वे १४ व १५ नवम्बर को मुगावली में १६, १७ व १८ को सागर में, १९, २०, २१ को ग्वालियर में व २२ व २३ नवम्बर को भोपाल में रह कर दिल्ली आयेंगे।

× ११ अक्टूबर को गोखोडेवरा (बिहार) सर्वोदय आश्रम में श्री जयप्रकाशजी की ७१ वीं वर्षगांठ मनायी गयी। इसी अवसर पर सर्वोदय आश्रम में बिहार सर्वोदय मंडल के तत्वावधान में आयोजित ग्राम स्वराज्य प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन समारोह श्री विद्यासागर जी द्वारा सम्पन्न हुआ। उपस्थित समुदाय ने श्री जयप्रकाश जी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के

स्त्री को मुक्ति का अधिकार नहीं है

स्त्री-शक्ति-जागरण युग की मांग है, आवश्यकता है। स्त्री-शक्ति-जागरण का मतलब हमें समझना होगा। यों तो आधुनिक काल में स्त्रियों को हर तरह से आगे आने के लिए मौका दिया गया है। राजनैतिक स्तर पर, सामाजिक स्तर पर, यदि हम अपना संविधान देखेंगे, तो किसी भी स्तर पर स्त्री को कानून की दृष्टि से पीछे नहीं रखा गया है। यह नहीं कह सकते कि कानून की दृष्टि स्त्री पिछड़ी है। फिर आज हमें स्त्री-शक्ति जागरण की आवश्यकता क्यों महसूस होती? क्योंकि कानून से जो पाया, जो दिया था वह अपने जीवन में प्रत्यक्ष उतरा नहीं है। भले ही हमारा प्रधानमंत्री एक स्त्री है। समाज महसूस करता है कि स्त्री हर जगह पर दबी पड़ी है।

कहते हैं, वेदकालीन और उपनिषद्कालीन समाज में स्त्री का और पुरुष का समान दर्जा था। धार्मिक दृष्टि से भी समाज में समान स्तर था। लेकिन यह इतिहास भी हम जानते हैं, जब कई धर्मों के शास्त्र-ग्रन्थों में माना गया कि स्त्री को मुक्ति का अधिकार नहीं है। पुरुष के बराबरी की वह हो नहीं सकती है। यह कह दिया कि उसे तो घर-बार संभालना है। लेकिन वेद और उपनिषद् कालों में विद्वानों और आत्मशक्ति से सम्पन्न ऐसी स्त्रियों—गार्गी, मैत्रेयी आदि के नाम बताये जाते हैं। महाभारत में सुलभा का प्रसंग आता है, जिसने राजा जनक को भी चुनौती दे दी थी।

मैं मानती हूं कि वेद, पुराण उपनिषद्-काल में स्त्री को आध्यात्मिक समानता का अधिकार कुछ हद तक अवश्य मिला होगा, तभी तो कुछ स्त्रियां ऊपर आयीं। बुद्ध-काल में, खासकर जैनकाल में स्त्रियों को अधिकार मिला। वह बराबरी के नाते से अपना आध्यात्मिक अधिकार पा सकी। लेकिन बाद के काल में एकदम अवनति हो गयी, स्त्री को एक वस्तु माना गया। एक भगाने, चुराने और उपभोग करने की वस्तु माना गया। आधुनिक काल में तो मध्ययुग से भी ज्यादा अवनति हुई। क्या वास्तव में आधुनिक काल में शिक्षा-प्राप्त स्त्री भी निर्भर होकर केवल मनुष्य के नाते समाज में काम कर सकती है?

मुझे लगता है यह स्त्री को देखने की जो दृष्टि समाज में व्याप्त है, उसमें आधा जिम्मा आधुनिक काल की स्त्री का है। वह स्वयं अपनी तरफ किस दृष्टि से देखती है, इस पर भी बहुत कुछ निर्भर है। सारे समाज ने सदियों से स्त्रियों के रक्त में यह भावना प्रवेश करायी है। जो कुछ स्त्रियों ने जीवन दिखा दिया—मुक्ता हुई, मीरा हुई, लल्लेश्वरी हुई-ये सारी जो स्त्रियां हुयीं, इन सबने दिखा दिया कि स्त्री अपने शरीर से ऊपर उठ सकती है। जैसे, शुक, शंकराचार्य हो सकते हैं, वैसा स्त्रियों में भी वह सत्त्व है। जब तक सारे समाज में मनुष्य और मनुष्य के संबंध प्रेम के, स्नेह के या कहिये अहिंसा के आधार पर नहीं होंगे, तब तक मनुष्य एक-दूसरे का शोषण करता रहेगा। नाम कोई भी हो। लिंग अलग है इसलिए करूंगा, जाति अलग है इसलिए करूंगा, धर्म अलग है, इसलिए करूंगा, राष्ट्र-वाद अलग है इसलिए करूंगा, गरीब है इस-लिए करूंगा—नाम कुछ भी हो, लेकिन दूसरों को दबाऊंगा। जब तक मनुष्य के चित्त में यह प्रेरणा है, तब तक स्त्री कभी भी समाज में सुरक्षित नहीं हो सकेगी।

हमारे बहुत से विद्वान, उद्‌भट लोग कहते हैं कि स्त्री का रक्षण तो होना ही चाहिए, क्योंकि निसर्ग ने उसको कोमल शरीर दिया है। आधुनिक काल के बहुत से विद्वान इस ढंग से बहस करते हैं। लेकिन अपना रक्षण दूसरे किसी के हाथ में देना क्या सुरक्षितता है? जो वास्तव में स्वरक्षित है वही सुरक्षित है। शील और चारित्र्य की रक्षा और उसकी पवित्रता का मूल्य जैसे जैसे समाज में बढ़ता जायेगा, वैसे-वैसे समाज की दृष्टि स्त्री की तरफ देखने की बदलती जायेगी।

अब यह भ्रष्टाचार ही लीजिए। 'करप्शन' का पैसा मेरे घर में नहीं आयेगा, यह अगर पत्नी कहती है तो किस पति की हिम्मत होगी कि करप्शन का पैसा लाये। सारे समाज में अनैतिकता बढ़ती जाती है। आज चारों तरफ हम यह बात सुनते हैं। स्त्री स्वयं इसके खिलाफ खड़ी नहीं होती और खुद में जीवन में कष्ट-सहन नहीं करती, तब तक समाज में आमूल-परिवर्तन होने की कोई संभावना नहीं है। स्त्री और पुरुष दोनों में यह होने की आवश्यकता है। लेकिन अगुआ उसे बनना होगा जो ज्यादा दबा हुआ है।

जब तक स्त्री ऊपर उठकर यह नहीं कहेगी कि मनुष्यत्व का जो आन्तरिक सत्व है, उस सत्व को हम अपने जीवन में जाग्रत करेंगी फिर न पुरुष स्त्री पर अन्याय व अत्याचार करेगा और न कोई गरीब को दबायेगा, न कोई अन्यायी दूसरे पर अन्याय करेगा। शस्त्र, सत्ता, और सम्पत्ति का सम्पूर्ण रूप से विलीनीकरण हो, प्रेम और अहिंसा की शक्ति समाज में उभरे—इस दिशा में स्त्री ज्यादा काम कर सकती है। शरीर की अनुकूलता है, निसर्ग ने उसको मां बनने की शक्ति दी है कि बच्चे को जन्म भी दो और प्रेम से उसे बड़ा भी करो। यह प्रेम करने, अपने को भूलने की, अह को विसर्जित करने की शक्ति निसर्ग ने शरीर के साथ स्त्री को दी है—समाज-जीवन के समस्त अंगों-उपांगों में उसका विकास करने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हम शरीर नहीं है, कोई भी मनुष्य वास्तव में शरीर, मन, बुद्धि नहीं है। स्त्री स्वतंत्रता के आन्दोलन को सही दिशा देने के लिए भारतीय स्त्री में जागरण लाने की बहुत बड़ी आवश्यकता है। स्त्री की असली शक्ति का परिचय स्त्री को होगा तभी सारे समाज को होगा। पुरुष की अभिसत्ता चलानी है यह स्त्री-शक्ति-जागरण नहीं है। मनुष्य की शक्ति का, आन्तरिक शक्ति का जागरण करते हुए सारे मनुष्य-समाज में पारस्परिक व्यवहार प्रेम के आधार पर हो—इसलिए स्त्री को अपना जागरण करने की आवश्यकता है। स्त्री लोकयात्रा का यही एकमात्र ध्येय है।

—डा० इन्दु टिकेकर

संस्मरण

तमिलनाडु, उत्तराखण्ड और शराबबन्दी

उत्तर में हिमालय के श्वेत शिखरों की सन्निधि में रहने वालों के लिए समुद्र तट पर बसे हुए सुदूर दक्षिण की यात्रा एक रोमांचकारी अनुभव है। पर्वतीय लोग घर से दूर जाने पर घर की याद में उदास रहने के लिए प्रसिद्ध हैं। गढ़वाली भाषा में तो इसके लिए "खुद" एक ऐसा शब्द है, जो किसी दूसरी भाषा में मिलता नहीं। परन्तु दो सप्ताह की तामिलनाडु की यात्रा के दौरान में मुझे कभी "खुद" नहीं लगी, घर की याद नहीं आई, इसका कारण शायद उत्तराखण्ड के लोगों का दक्षिण से १२०० वर्ष पुराना घनिष्ठ सम्पर्क है, जिसकी नींव जगद्गुरु आद्य शंकराचार्य डाल गये थे। तब से आज तक बद्रीनाथ मंदिर के रावल (मुख्य पुजारी) केरल के नम्बूदरी जाति के होते हैं। केदारनाथ, तुंगनाथ और मद्महेश्वर के पुजारी कर्नाटक से आते हैं।

उत्तराखण्ड की यात्रा के लिए प्रति वर्ष दक्षिण से आने वाले सहस्रों तीर्थ यात्री अपनी भक्ति-भावना से इस सम्पर्क पर मजबूती की मुहर लगाते जाते हैं, परन्तु इसको अधिक स्थायित्व प्रदान किया है, दक्षिण के दो सन्तों ने। पालघाट (केरल) में जन्मे स्वामी तपोवनम्‌जी महाराज ने उत्तरकाशी को और पट्टमड़ाई (तमिलनाडु) में जन्मे स्वामी शिवानन्दजी सरस्वती ने मुनि की रेती को अपनी तप स्थली बनाकर पुनीत किया है। स्वामी शिवानन्दजी के मुख्य शिष्य और उत्तराधिकारी स्वामी चिदानन्दजी का जन्म भी मंगलौर (कर्नाटक) में और शिक्षण लायला कालेज, मद्रास में हुआ था। उनके आश्रम में प्रति वर्ष दक्षिण के हजारों भक्त, साधक और तीर्थयात्री आते हैं। स्वयं स्वामी चिदानन्दजी देश-विदेश में आध्यात्मिक प्रचार के अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद भी पहाड़ी गांवों की सेवा के लिए समय देते हैं।

चीनी आक्रमण के पश्चात् हिमालय का एक नया महत्त्व प्रकट हुआ है। जिन गुफाओं में पहले ऋषि-मुनि कठोर तपस्या करते थे, वहां आज देश की सुरक्षा के लिए तैनात जवान कठोर साधना कर रहे हैं। बर्फीली चोटियों से सुदूर कन्याकुमारी से जन्मा सीमा का प्रहरी भारत की एकता का उद्घोष करता है। सैनिक-सेवा और तीर्थ-यात्रा के अलावा उत्तराखण्ड में युवा-पराक्रम का एक नया क्षेत्र खुला है। वह है नेहरू पर्वतारोहण सस्थान के माध्यम से दुर्गम शिखरों पर चढ़ने, स्वयं बर्फ की कुल्हाड़ी से रास्ता बनाते हुए ग्लेशियरों को पार करने का शिक्षण। समुद्र तटवासियों के लिए बर्फीले शिखरों पर चढ़ना एक अपूर्व रोमांचकारी अनुभव होगा।

प्रेरणा भूमि

सैकड़ों मंदिरों के कारण दक्षिण आज भी भक्ति का प्रदेश बना हुआ है। मेरे मन पर इस भक्ति भावना की गहरी छाप २१ वर्ष पूर्व यहां की शिक्षण यात्रा के दौरान पड़ी थी। अन्नमलाई नगर से कुछ आगे एक गांव में हम रास्ता भटक गए—मैं और मेरा साथी नवीन। धूप और भूख से व्याकुल होकर हम रोने लगे। तामिल हम जानते नहीं थे और हिन्दी या अंग्रेजी गांव के लोग जानते नहीं थे, रास्ता भी पूछते तो किससे? आखिर हम जोर से चिल्लाये, "बद्रीनाथ" "गंगोत्री" और हम यह देखकर हक्के-बक्के रह गए कि तुरन्त बैलगाड़ी से कूदकर दो व्यक्ति हमारे चरणों पर दण्डवत प्रणाम कर रहे हैं। उन्होंने हमें गाड़ी पर बिठाया और नगर में छोड़ दिया। इस घटना का मेरे दिल पर इतना गहरा प्रभाव है कि जब उत्तराखण्ड में शराब का प्रकोप बढ़ने लगा, तो मैंने सैकड़ों सभाओं में इस घटना का स्मरण करते हुए लोगों से कहा, "दक्षिण के लोग हमें देवभूमि और हमें देवता समझते हैं, वे एक-एक कौड़ी जोड़कर यहां की तीर्थयात्रा के लिए आते हैं। अगर मेरा वह अन्नमलाई नगर का मित्र यहां आयेगा और हमें शराब के नशे में चूर देखेगा तो उसके दिल को कितना बड़ा धक्का लगेगा!" इससे लोगों में आत्मगौरव की भावना जागृत हुई। उन्होंने देश की धार्मिक श्रद्धा भावना के अमानतदार के रूप में अपना दायित्व पहिचाना, उत्तराखण्ड में शराबबन्दी के लिए कई सत्याग्रह हुए, जिसमें हजारों लोगों ने, मुख्यत. माताओं ने, सक्रिय भाग लिया, कई जेल गयीं और अब उ० प्र० के पांच पर्वतीय जिलों में पूर्ण शराबबन्दी है।

तेईस वर्षों की शराबबन्दी के बाद शराब की आमदनी के मोह में अन्य राज्य सरकारों के साथ होड़ करने के लिए दो वर्ष पूर्व तामिलनाडु ने शराबबन्दी को समाप्त किया था। इससे यहां शराबबन्दी समर्थकों को भारी धक्का लगा था। भारतीय राजनीति के भीष्म पितामह चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यजी नब्बे वर्ष की वृद्धावस्था में कमजोर स्वास्थ्य के बावजूद भी शराबबन्दी कायम रखने की मांग को लेकर करुणानिधि के पास गये, परन्तु खाली हाथ लौटे। सभाओं, प्रदर्शनों, पिकेटिंग और उपवास का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, परन्तु इस वर्ष डिंडीगल के उपचुनाव में महिला मतदाताओं ने शराबबन्दी के खिलाफ मतदान करके द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम की आंखें खोल दी, तामिलनाडु पुन. शराबबन्दी की ओर बढ़ा है। १ सितबर से ताड़ी की ७००० की दुकानें बन्द हो गयी और अगले वर्ष से देशी शराब की दुकानें भी। तामिलनाडु ने सारे देश के लिये शराबबन्दी का नारा बुलन्द किया है और यहां के मुख्यमंत्री करुणानिधि ने उसका नेतृत्व करने की तैयारी बताई है। कामराज के नेतृत्व में सगठन कांग्रेस तमिलनाडु में तत्काल पूर्ण शराबबन्दी के लिए जन-आन्दोलन छेड़ने की तैयारी कर रही है। इसमें जितनी भी राजनीति हो, परन्तु तामिलनाडु के गरीब लोग, खास तौर से महिला समाज शराबबन्दी की घोषणा से प्रफुल्लित है। १ सितबर को ताड़ी की दुकानों के बन्द होने के दिन, कई गांवों में ताड़ी के दैत्य का पुतला जलाने का कार्यक्रम बनाया गया। इन दो वर्षों में दारू के दैत्य के ताण्डव कुसस्कारों से अगली पीढ़ी को मुक्त करने के लिए। ●

—सुन्दरलाल बहुगुणा

बिना टिप्पणी के

× भूदान की उपलब्धियां और सरकारी कानून

बिहार सरकार की ओर से भूमि ार वर्ष के उपलक्ष्य मे ११ सूत्री कार्यक्रम िश्चित किया गया है जिसका क्रियान्वयन क वर्ष की अवधि मे होना है। वास्तव मे ह कार्यक्रम वर्तमान परिस्थितियों मे पयुक्त तथा समाजवाद की दिशा मे अत्यत ारगर कदम है। सभी सरकारी अधिका-रियो को पूरी मुस्तैदी के साथ इसे अमल मे ाने के लिए हिदायतें दी गई हैं। गत छ ःहीनो मे इस दिशा में जो कुछ हुआ, उससे ूमि सुधार के लिए किये गये इस प्रयास की क्रियात्मक दृष्टि से वास्तविक निष्पत्ति क्या ोगी, अभी कहना कठिन है।

सरकारी प्रयासो को सामने रखते हुए ाव हम भूदान आन्दोलन की उपलब्धियो ार विचार करेंगे तो लगता है कि वे ंचारिक प्रयत्नो के द्वारा स्वेच्छापूर्वक दिया या भूदान, भूमि सुधार की दृष्टि से ी महत्वपूर्ण नही बल्कि समाज परिवर्तन ी दिशा मे भी एक सफल प्रयास व भारतीय ास्कृति की दृष्टि से उपयुक्त प्रयोग सिद्ध ुआ है। अपने जिले को ही जब मैं देखता ू तो लगता है कि कितना विशाल जन सम्पर्क रके विचार-प्रचार व शान्तिमय प्रयास े द्वारा गैर-सरकारी स्तर पर कितनी बडी उपलब्धि हुई है। जिले के ५७०० गावो के ६५००० दाताओ ने एक लाख पाच हजार एकड़ भूमि दान मे दी, अर्थात् जिले के सभी ग्रामो मे कार्यकर्ता पहुचे और विचार प्रचार किया। गाधीजी के बाद, स्वराज्य प्राप्त होने पर विनोबा जी ही ऐसे गाधीवादी हैं जिन्होंने गाव-गांव पदयात्रा के विचार के आधार पर जन मानस को तैयार करने मे सफलता प्राप्त की। भूमि जैसी कीमती व प्रिय वस्तु भी गरीब भाइयो के लिए दान मे प्राप्त की।

समाज का सबसे कमजोर वर्ग जो आजादी के बाद भी अपने को आजाद नही मानता और जिसकी मान्यता है कि वह गुलाम पैदा हुआ है और इसी स्थिति मे उसका अन्त होगा, सदियों से शोषण व अन्याय का शिकार रहा है। गाव मे न उसका घर न भूमि, किसी प्रकार फूस का छोटा सा घर बना कर जीवन व्यतीत करता रहा है। और इस झोपडी से भी कभी भी बे-दखल किया जा सकता है, अगर मालिक की तावेदारी मे कोई कुसूर हुआ। ऐसे निराशाजनक जीवन मे रहने वाले व्यक्तियो के लिए भूदान की भूमि से वितरण का कार्य आरम्भ हुआ। जो कभी सोच भी नही सकता था कि उसे भूमि मिलेगी वह भी अपनी भूमि जोत-आवाद करके समाज मे अधिकार, प्राप्त करेगा। ऐसे लोगो मे भूमि दी गई, उन्हे बसाया गया, साधन दिये गये। यह सब कार्य इनके सामने विचित्र व स्वप्न ही है। देहली व पटना के लोग स्वराज्य का लाभ ले सकते है परन्तु इस वर्ग की झोपडियो मे स्वराज्य की किरण का प्रवेश भी नही हो पाया। वास्तव मे गाधी जी चाहते थे कि स्वराज्य तभी सच्चा स्वराज्य होगा जब कि गाव-गाव के गरीब सुखी होंगे और इसलिए वे चाहते थे कि अब काग्रेस की आवश्यकता नही बल्कि लोकसेवक सघ बने जिसके माध्यम से गाव-गाव मे निर्माण के कार्य किये जायें। उनकी इस इच्छा की पूर्ति बहुत हद तक विनोबा जी ने की।

जहा तक इस वर्ग की सामाजिक सुरक्षा का प्रश्न है उसने आज भी उसी प्रकार के जहा तहा जुल्म होते रहते हैं जब कि कानून बने हुए हैं। परन्तु कानूनो से अभी तक कोई सुरक्षा नही हो पाई। गरीब मुकदमे मे फसा दिया जाता है, उसकी रक्षा तो बिलकुल ही नही हो पाती। इन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा मिले तथा किसी प्रकार का अन्याय न हो इसके लिए गाव-गाव मे ग्राम सभाओ का गठन किया गया है ताकि गाव की समस्याएं गाव के ही अभिक्रम से समाप्त हो।

गाव की गरीबी का कारण, अशिक्षा और पुराने सस्कार भी हैं। इसके लिए यह सोचा गया कि इस समाज की युवक पीढी मे परिवर्तन लाया जाये। अत उनके शिक्षण आदि के लिए रात्रि मे सामाजिक शिक्षण केन्द्रो की स्थापना करके युवको को प्रशिक्षित करने का कार्य जारी है। गाव के छोटे बच्चो को आवासीय विद्यालय मे रखा गया है तथा कृषि गोपालन व अन्य शिक्षण की व्यवस्था है। ये लडके इस विद्यालय मे पाच वर्ष रहने के बाद अपने-अपने गाव मे छोटे-छोटे केन्द्र स्थापित करेंगे और समग्र विकास का कार्य आरभ करेंगे। गाधी जी की कल्पना थी कि भारत के प्रत्येक गाव मे कार्यकर्ता खड़े हों और वे अपने गाव मे कार्य करें इसी दृष्टि से इस विद्यालय की स्थापना की गई है। कुछ सस्थानो मे बालवाड़ियो के माध्यम से सस्कार बनाने के कार्य सचालित हैं तथा रात्रि मे युवको के सामाजिक शिक्षण हेतु गाव मे केन्द्र है।

इन सब उपलब्धियो से उत्साहवर्धक परिणाम निकले है। लेकिन भूदान भूमि सबधी बिहार भूदान यज्ञ एक्ट के अन्तर्गत सरकारी स्तर पर हुए कार्य से निराशा ही हुई है। गत १५ वर्षों से भूदान किसानो के दाखिल-खारिज की कार्रवाई, दानपत्रो की सम्पुष्टि आदि कुछ ऐसे कार्य है जिसके कारण भूदान आन्दोलन को धक्का पहुचा है। अगर सरकारी स्तर पर भूदान यज्ञ एक्ट को कारगर रूप दे दिया जाता और सभी कागजात को प्रमुखता दी होती तो इस काम मे और भी गतिशीलता आती।

यह हर्ष का विषय है कि भूदान कार्य को भी ११ सूत्री कार्यक्रमो मे रखा गया है और इस कार्य को भी प्रमुख स्थान देकर विशेष अभियान चलाने का प्रयास है। इस अवधि मे इस कार्य को अगर पूर्ण रूप से सम्पन्न कर दिया जाता है तो भूमि सुधार वर्ष का बडा महत्व बढेगा और सफल परिणामो की आशा की जा सकती है।

—सू०

सूक्ष्म के साथ स्थूल का भी विकास होना चाहिए

—सरला बहन

इस समय भारत के सामने अनेक समस्याएं खड़ी हैं—हम गिनने लगेंगे तो शायद हम उन्हें अगणित पायेंगे। जमीन की समस्या, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक असमानता की समस्या, राजनैतिक समस्याएं, ये सब स्वार्थ और लोभ से जनित समस्याएं हैं। काला बाजार, भ्रष्टाचार, विपन्नता के बीच में भुखमरी, महंगाई और कठिनाई से मिलने वाला न्याय इन सब समस्याओं के मूल में एक ही रोग है। और वह रोग है मनुष्य का व्यक्तिगत स्वार्थ और लालसा। अहिंसक क्रान्ति का मूल प्रहार उन सूक्ष्म भावनाओं पर है और इसलिये उसे हम सिर्फ स्थूल प्रमाणों से नहीं नाप सकेंगे।

अभी तक पश्चिम में जितनी क्रान्तियां हुई हैं, उन्होंने प्रत्यक्ष स्थूल आर्थिक पहलुओं को उठाया था, लेकिन गरीबों और अमीरों में व्याप्त, उनके पीछे प्रेरक लोभ, लालच और स्वार्थ की सूक्ष्म भावनाओं पर उन्होंने प्रहार नहीं किया था।

गांधी जी की क्रान्ति मूल में सांस्कृतिक क्रान्ति थी, लेकिन कम लोग उसके मूल का महत्व समझ पाये थे। वे उसके ऊपर के स्थूल स्वरूप—राजनैतिक दृष्टि भर को समझ पाये थे। उनके लिए राजनैतिक स्वतन्त्रता लक्ष्य था। गांधी जी के लिए वह साधन था। शायद यह स्वाभाविक मानना चाहिए कि देश की राजनैतिक बागडोर उन लोगों के हाथ में पड़ी जो सकुचित राजनैतिक लक्ष्य को, देश की आजादी को ही समझ सके थे, लोकनीति या विकेन्द्रित उद्योग के लक्ष्य को वे समझ नहीं पाये थे।

मौलिक विचार गतिशील होता है, जगम होता है, जड़ नहीं रहता है। इसलिए दूसरी ओर, गांधी जी के चले जाने के बाद उन विचारों का व्यावहारिक स्वरूप बहुत तेजी से आगे बढ़ता रहा। भूदान के स्वयंभू कार्यक्रम के द्वारा दुनिया में, करुणा की भावना से फर्क को देखने से दुनिया की समस्या का हल करना। उसके बाद, आगे जाकर करुणा के द्वारा पारिवारिक भावना का विस्तार करके, जनता की स्वैच्छिक अहिंसक शक्ति के द्वारा, दुनिया को एक नया दर्शन मिला। ईर्ष्या से फर्क को देखने के बदले में करुणा से फर्क को देखने से दुनिया की समस्याओं का हल हो सकेगा। गांवों की समस्याओं का हल स्थानीय जनता की अहिंसक संगठित शक्ति से करना।

यह एक बहुत लम्बा आरोहण है। पूरे समाज के दूध में जामन डालकर दही बनाने का सवाल है। यह स्थूल काम नहीं, सूक्ष्म काम है। स्थूल काम की प्रगति आंकड़ों से गिनी जा सकती है। कितनी भूमि का वितरण हुआ, ग्रामसभाओं की कितनी बैठकें हुईं, ग्रामकोष कितना जमा हुआ, कितने झगड़ों के फैसले गांव में हुए, कितने लोगों को कर्ज मुक्त बनाया—ये सब प्रत्यक्ष दिखने वाले स्थूल काम हैं। लेकिन उन्हें प्रेरणा देने वाली सूक्ष्म भावनाओं की जांच कैसी हो सकती है?

आजकल कार्यकर्ताओं में जनता से यह कहने का एक फैशन हो गया है कि हम केटलिस्ट (जामन) हैं। हम कुछ नहीं करेंगे। हम आपको सिर्फ प्रेरणा देंगे, सब कुछ आपको स्वयं करना पड़ेगा। घूमते-फिरते ये ऐसी घोषणा करके स्थूल प्रमाणों को नापने की फिक्र में रहते हैं।

मेरी नम्र राय में इसी प्रकार से सोचने में कुछ विचार दोष है। क्योंकि मूल में हमारी क्रान्ति सूक्ष्म मूल्यों की क्रान्ति है। जिसका नाप आंकड़ों में नहीं हो सकता। शायद उन मूल्यों की जांच बाहर से करना सम्भव नहीं है। दूध का दही जमाने में, जामन को सारे दूध में मिल कर लुप्त होना पड़ता है। बाहर से जामन देखता रहा और दही बनने के तरीके पर उपदेश देता रहा तो दूध न दही बनेगा न शुद्ध दूध रहेगा। अपने समय में वह खराब होकर फट जायेगा। मुझे लगता है कि यदि हम एक कुशल किसान की तरह, अपनी जमीन पर तथा अपने बीज पर विश्वास रखते हैं तो बच्चे की तरह हम बारम्बार अपने बोये हुए बीज को उखाड़ कर देखने की आवश्यकता महसूस नहीं करेंगे। लेकिन अक्सर बाहर से देखने से, सूक्ष्म अनुभव नहीं आने से, भीतर दूध की परिस्थिति क्या है, क्या वह भीतर से मीठा बन रहा है या जामन डालने की दूषित पद्धति से वह कड़वा बन रहा है, उस बात की सही जांच हम नहीं कर पाते हैं। बारम्बार उ हिलाकर देखने की आवश्यकता महसूस होत है तथा उस उतावली में वह सही ढंग से ज नहीं पाता है। लगता है कि जो लोग ए क्षेत्र में बैठ कर लुप्त होने की कला सी पायेंगे, वे ही ग्रामस्वराज्य की भावना विकास की सही परीक्षा कर पायेंगे। वे ह समझ पायेंगे कि लोगों की भावनाओं कितना फर्क हो रहा है, पुराने गल सामाजिक रिवाजों को तोड़ने की कितन हिम्मत बढ़ रही है, समाज में स्त्रियों प्रति भावना कितनी बदल रही है, छुआछू की भावना छूट रही है या नहीं? गांधी ज की क्रान्ति सिर्फ आर्थिक और राजनैति तथ्यों में यदि आंकी गयी तो फिर उसक अर्थ यह होगा कि साम्यवादी क्रान्ति तथ अहिंसक क्रान्ति में सिर्फ साधनों का को फर्क रहा है—लक्ष्य में कोई फर्क नहीं रह है।

यह तो निश्चित है कि सूक्ष्म के साथ, स्थूल का विकास भी होना चाहिए। सूक्ष्म यदि व्यवहार में परिणत नहीं हुआ तो वह केवल ढोंग और मिथ्या रहेगा। लेकिन इस आरोहण में हमारा पैमाना सिर्फ स्थूल प्रमाणों पर निर्भर नहीं रह सकता है, सूक्ष्म प्रमाण मुख्य रहना चाहिए। आरोहण में समय लगेगा। लेकिन जो कार्यकर्ता अपने अस्तित्व को छोड़कर समाज में घुल कर लुप्त हो गये हैं वे सारी परिस्थिति को समझ कर उसका प्रमाण सही ढंग से समझ सकेंगे। स्पष्ट लगता है कि जामन-जामन कह कर

(शेष पृष्ठ १२ पर)

क्या मुसलमान देश की मूलधारा के साथ हैं ?

क्या मुसलमान देश की मूलधारा के साथ हैं ?

→ जा सकता। सब धर्मों ने अपने मूल सिद्धान्तों को छोड़ अपने चारों ओर कर्मकांडों और तद्जनित अंध विश्वासों का एक अभेद दुष्चक्र खड़ा कर लिया है। जिसके भेदन के लिए धर्मावलम्बियों में ही बहुत बड़ा पुरुषार्थ और साहस चाहिये। जिसका प्रायः उनमें अभाव ही पाया जाता है। यही भावना इन्हें राग-द्वेष से अनुप्रेरित रखती हुई, राष्ट्रीय एकता की भावनाओं में विभाजित—रेखाएं खींचती हुई वोट प्राप्त करने में सहायक होती है, वोट मांगने के समय राष्ट्रहित उपेक्षित हो जाता है और निजी-स्वार्थ, सत्तालोलुपता तथा दलीय हित प्रबलतर हो उठते हैं, जो साम्प्रदायिकता के विष को आज तक हरा रखने में समर्थ हुए हैं।

यह एक दुखद प्रसंग है कि राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत और स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख संस्था राष्ट्रीय कांग्रेस के २६ वर्ष तक लगातार शासन में रहने पर भी वह एक राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण करने में असमर्थ रही। क्योंकि उसने भी चुनावों के समय येनकेन प्रकारेण सत्ता में बने रहने की तीव्र अभिलाषा एवं तृष्णा में सिद्धान्तों से हट करके अराष्ट्रीय तत्वों के साथ समझौता किया और यह इन्हीं समझौतों का प्रतिफल है कि समय-समय पर संकीर्ण हिन्दू व मुस्लिम साम्प्रदायवाद सिर उठाता रहा है और राष्ट्रीय जीवन की धारा को कलुषित करता रहता है। इस प्रकार राजनैतिक दल ही साम्प्रदायिकता के प्राणवायु बने हुए हैं।

साम्प्रदायिक जोश और उसकी मदान्धता में एक प्रबल शक्ति होती है। उसको राष्ट्रीय निर्माण-कार्य में नियोजित कर लेने में शासकगण असफल रहे हैं। इस प्रचण्ड शक्ति के सम्मुख राष्ट्रीय सरकारें कोई ऐसा उदात्त राष्ट्रीय लक्ष्य रखने में असमर्थ रही है, जिस ओर इन दुर्लक्ष्य शक्तियों का सारा पुरुषार्थ मुड़कर राष्ट्र निर्माण के विधायक कार्यों की धारा में प्रवाहित हो सके। उनके पुरुषार्थ को खुलकर व्यापक संदर्भ में काम करने का अवकाश मिल सके और जिससे एक समन्वित सशक्त राष्ट्रीय जीवनधारा निसृत हो सके। लेकिन निर्माण के सारे कार्य तो धीरे-धीरे सरकार के हाथों में सिकुड़ते गये। फलतः नागरिक जीवन की स्वतंत्र कर्मधारा से राष्ट्रीय संस्कृति को पल्लवित होने के अवसर भी कम होते गये। अन्त इन संकीर्ण मनोवृत्तिवाली साम्प्रदायिक शक्तियों को परिष्कृत होने का अवसर ही नहीं रह गया। एक स्वस्थ एवं प्रबुद्ध राष्ट्रीय संस्कृति की जीवन धारा का उद्भव नहीं हो सका। जो सारी साम्प्रदायिक संकीर्ण मनोवृत्तियों को अपने साथ लेकर उनको परिष्कृत करती हुई हिन्द के महासागर में विलीन कर देती है। इसके लिए आवश्यकता थी एक ध्येय-निष्ठ शिक्षा प्रणाली की ओर सौहार्दपूर्ण निरपेक्ष एवं सबल राष्ट्रीय चेतना की। जिसके लिए आवश्यकता होती है राष्ट्रहित-चिन्तन, पारस्परिक-सद्भाव एवं भाई चारे की प्रखर भावना की जो इस साम्प्रदायिक संकीर्णता के दुर्भेद्य दुर्ग की दीवारों का तोड़कर एक नई समन्वित संस्कृति का निर्माण कर सके। इसके लिए परित्याग करना होता है सत्ता प्राप्ति के सिद्धान्त-विहीन समझौतों की मनोवृत्ति का।

लेकिन राष्ट्रीय धारा की एक सबसे बड़ी कमजोर कड़ी है मुस्लिम सम्प्रदाय की संकीर्ण मनोवृत्ति एवं धार्मिक कट्टरपन्थीपन। जिसका व्यापक मानवीय संदर्भ की अन्तर्दृष्टि से आवश्यकता है। यह प्रबुद्ध मुस्लिम चेतना के लिए चुनौती है। मुस्लिम-जगत जागरण की नव चेतना से बिल्कुल ही अछूता है, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता। उसमें भी जागरण की धाराएं एवं उदारतावादी दृष्टिकोण तरंगित हो रहा है। आज वह धारा क्षीण है। फिर भी संकीर्ण सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर निर्भीकता और साहसपूर्ण कदम आगे बढ़ने को उत्सुक हैं। इस धारा को प्रवेगमय बनाने के लिए आवश्यकता है मुस्लिम समाज को राष्ट्रीय शिक्षा के नजदीक लाने की तथा संतुलित मानस वाले उदात्त राष्ट्रीय चरित्र वाले मार्ग दर्शक की। क्योंकि मुस्लिम राजनीति यानस प्रतिशोध की भावना से अनुप्रेरित होकर राष्ट्रीय जीवन को कलुषित करने के लिए जिस बार पुनः सन्नद्ध हो रही है, उसका समय रहते पहले ही समझ लिया जाना चाहिये। जहर राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित कर उसके पहले ही उसका निराकरण हो जाना चाहिए, जो दमन के बजाय मानस का परिष्करण कर सके। यह प्रयास राजनैतिक दलों एवं शासन की अपेक्षा स्वतंत्र नागरिक शक्ति द्वारा हो जो राष्ट्रीय पुरुषार्थ का प्रतीक बन सके और जो आगे चल कर राष्ट्रीय जीवन की सहज धारा बन सके।

—त्रिलोकचन्द

(पृष्ठ ६ से जारी)

बाहर रहने से क्रान्ति का काम आगे नहीं बढ़ेगा। किनारे-किनारे खड़े रह कर तैरने के करतबों का तरीका कहते-कहते या इशारा उनको करने में भी तैरना नहीं आ जायेगा। उसमें जो कठिनाई है वह समझ में भी नहीं आयेगी। यदि तैरना सीखना है तो पानी में खुद कूदना पड़ेगा। अब यदि ग्रामस्वराज्य की सही सम्भावनाओं को जानना हो तो एक क्षेत्र में, चाहे वह बहुत बड़ा क्षेत्र हो या छोटा, उसी में घुसने से ग्रामस्वराज्य की सही सम्भावनाओं की सही जांच हो सकती है। बाहर से घूमते रहने से, भाषण और सलाह देने से, सहानुभूति प्रकट करने से कि अब सेचुरेशन बिन्दु आ गया है—काम नहीं चलेगा। जिस प्रकार एक समय आया, जब गांधी जी को यह कहना पड़ा कि यदि काम करने के प्रयोगशील कार्यकर्ता इतनी कठिनाइयाँ महसूस करते हैं तो मुझे खुद वर्धा शहर को छोड़ कर देहात में जाकर खुद प्रयोग करना चाहिए, इसी प्रकार अब हमारा उच्च स्तर के कार्यकर्ताओं को एक क्षेत्र लेकर उसमें लुप्त होकर प्रयोग करने का समय आ गया है। आसन दूर से निष्क्रिय स्थिर रहना स्वयं प्रमाण की सही जांच हो सके तो हि ठीक। जिस हद तक ठीक बन रहा है।

→
और इस वर्ष यह वृद्धि ४५ ६ प्रतिशत के लगभग होने वाली है। यही वह चीज है जिसने रुपये की कीमत को छाट डाला है और इस दीवाली को सबसे महंगी दिवाली बना दिया है।

यह देख कर बड़ा दुख होता है कि स्थिति सरकार के काबू के बाहर होती जा रही है। इस डर से कि कहीं सेठीशाह या बाजार-नरेश गल्ला न दें और शहरों में गल्ला न पहुंचने से अकाल न पड़ जाये, सरकार ने विदेश से अनाज मगाना शुरू कर दिया है। इससे पौंड पावने का हमारा ताल-मेल (बैलेन्स आफ पेमेन्ट) गड़बड़ा जाता है और बहुत सी योजनाओं या कार्यों को रद्द करना या कम कर देना पड़ा है। फिर, सरकार घाटे के बजट का सहारा बड़ी तेजी से ले रही है। १९७२-७३ में यह आंकड़ा ८८० करोड रुपये था और इस साल के शुरू के तीन महीनों में ही ३८० करोड रुपया को तो पार कर चुका है। साथ ही, मुद्रा की आपूर्ति भी बड़ी तादाद में सरकार कर रही है। जहां १९६५-६६ से १९६८-६९ तक इसकी मात्रा सात प्रतिशत वार्षिक थी वहां पिछले चार सालों में कहीं ज्यादा बढ़ी है :

१९६९-७०	१० ८ प्रतिशत
१९७०-७१	११ ५ प्रतिशत
१९७१-७२	१३ ९ प्रतिशत
१९७२-७३	१५ ६ प्रतिशत

जब घाटे का बजट बढ़ेगा और मुद्रा की आपूर्ति असीम रूप से होगी तो मूल्यों का बढ़ना अनिवार्य है। अब लाचारी की हालत में सरकार ने निजी पूजी, विदेशी और देशी, को प्रोत्साहन देने और पूजीशाहों को हर तरह की सुविधाएं देने का फैसला किया है। जब हमारे मकान, साबुन, तेल, बिस्कुट, मक्खन, कपड़े, जूते आदि जरूरत की चीजें विदेशी पूजी के सहारे बनेंगी तो क्या भारत कभी भी आर्थिक स्वराज्य प्राप्त कर सकेगा? आज देश को निहित स्वार्थों के यहा गिरवी रखा जा रहा है और दीन-दुखी जनता के पैरों पर ऐसी कुल्हाड़ी मारी जा रही है कि वह कभी सीधे उठ कर खड़ी भी न हो सके। आने वाली संतति आश्चर्य करेगी कि स्वराज्य के बाद की पहली पीढ़ी इतनी निर्वीर्य और हतप्रभ कैसे हो गयी कि उसने देश को बिना सिद्धान्त, विवेक या अन्त:करण के शोषकों के हाथ बेच डाला।

वास्तव में परिस्थिति अत्यन्त विपदाजनक और चुनौतीपूर्ण है। लेकिन सरकार को इस तरह हतोत्साह होकर अपना आत्म-विश्वास नहीं खोना चाहिए। उसे हिम्मत बाधनी चाहिए और जनता पर विश्वास करने का सकल्प लेकर उससे प्राणदायिनी शक्ति ग्रहण करनी चाहिए। जनता की मदद और सहयोग से, वह भयानक कठिनाई और सकट का चाहे वह बाहरी हो या अन्दरूनी, सामना कर सकती है।

कोई पूछेगा—सरकार क्या करे, जिससे उसे जनता का पूरा साथ मिल सके? इसका क्या जवाब हो सकता है। बहुत नम्रता-पूर्वक, सात सुझाव पेश करता हू

एक० यह ऐलान कर दिया जाये कि सत्ताधारण करने की साठ साल की सीमा रहेगी और इससे ऊपर उमर वाला कोई व्यक्ति कोई भी पद ग्रहण नहीं करेगा और न विधान-सभा या संसद के लिए चुनाव लड़ेगा। साठ के ऊपर वाले सत्ता से हट कर, जनता से समरस होकर सेवा करें।

दो० केन्द्र या प्रदेशों में जो मिनिस्टर या विधायक हैं उनके वर्तमान वेतनों को उच्चतम घोषित कर उनको मिलने वाली सुविधाएं, मुफ्त मकान, नौकर, पानी, बिजली, टेलीफोन, परिवार-यात्रा आदि खत्म कर दी जायें, ताकि आम आदमी की तरह वे जीवन बिता सकें।

तीन० वातानुकूलित यत्र और सबन्धित सहूलियतें सारे मकानों, दफ्तरों, भवनों (जिनमे राष्ट्रपति भवन और राजभवन भी शामिल हैं) से हटा दी जायें और बिजली के पखों या खस की टट्टियों से काम चलाया जाय।

चार० भूमि का राष्ट्रीयकरण कर दिया जाये और उसकी खरीद बिक्री सदा के लिए बन्द कर दी जाये।

पांच० खाने, पहनने और रहने की सारी वस्तुओं पर से कन्ट्रोल हटा लिए जायें और उनके आने-जाने पर लगी सारी पाबन्दियों (जिनके कारण भारत एक न रह कर ३५० भारतों में बट गया है और हर जिलाधिकारी एक निरंकुश तानाशाह की तरह व्यवहार कर रहा है) खत्म कर दी जायें।

छः० आजीविका—श्रम (उत्पादक, शारीरिक मशक्कत) सबके लिये, बूढ़ों और बच्चों को छोड़कर, अनिवार्य कर दी जाये ताकि उत्पादन में सब प्रत्यक्ष रूप से भाग ले सकें।

सात० गल्ला और खाने पहनने और रहने सम्बन्धी सामान और पूजी का विदेशों से आयात न किया जाये और स्वदेशी या स्वावलम्बन के सिद्धान्त को हर क्षेत्र में लागू किया जाये।

उपर्युक्त सात कदम उठाना सरकार के लिए एक बड़ा जोखिम का काम हो सकता है, लेकिन वह कोई जुआ नहीं है। क्योंकि, जनता पूरे दिल से उसका साथ देगी और डटकर काम करेगी। जरूरत सिर्फ यह है कि सरकार निडर हो के बहादुरी से काम करे और जनता पर अपना विश्वास रखे। साथ ही साथ, जनता को भी स्वदेशी या स्वावलम्बन की शपथ लेनी चाहिए और हर नागरिक को यह देखना चाहिए कि जो भी पैसा खर्च किया जाये या जिस चीज का भी उपयोग किया जाये, उसका लाभ उद्योग-पतियों या पूजीशाहों को, देशी हो या विदेशी, न जाकर अपने मेहनतकश दीन-दुखी भाई-बहनों को जाये जिनको भरपेट खुराक तक कभी नसीब नहीं होती है। अपने सकल्प और दृढ़ता के साथ जितनी तेजी से जनता आगे बढ़ेगी, सरकार में भी उसी तेजी से आत्म-विश्वास बढ़ेगा और वह आगे कदम उठा सकेगी। जनता की स्वावलम्बी ताकत यानि लोक-शक्ति और सरकार की अपनी ताकत, यानी राज-शक्ति, इन दोनों का मेल होने पर देश की काया पलट सकेगी और आने वाली हर दीवाली उत्साह, ज्योति और आनन्द का स्रोत बन जायेगी। ●

(पृष्ठ ४ का शेष)

रहती थी। घर में कुछ गड़बड़ हुई तो पदयात्रा से हट कर रात को उसे सम्भालने घर आना पड़ता। ऐसे एक-दो मौके आये, पदयात्री महिलाएं घर गयी और फिर अगले दिन फिर पड़ाव पर सुबह तड़के ही शामिल हो गयी। शहर पदयात्रा टोली ने मुहल्लों में आम सभाएं ली, जिनमें स्त्री-पुरुष दोनों ही आये। मुहल्लों में पढ़ने वाली पाठशालाओं में भी कार्यक्रम रखा जाता था। शहर की टोली अपने एक पड़ाव लाजगंज में रहने वाली वेश्याओं के संपर्क में उनके बीच में भी एक सभा आयोजित करने वाली थी लेकिन इस बार वह इस काम में असफल रही। अगले वर्ष टोली इसकी तैयारी पहले से करे—ऐसा आयोजक सोच रहे हैं।

पुरुषों के लिए यह सप्ताह कैसा रहा? आगरा के एक व्यापारी महोदय जिनकी पत्नी एक टोली के साथ घूम रही थी, का कहना है कि "पूरा हफ्ता बवाल का था। इधर व्यापार चौपट रहा, उधर घर भी नहीं संभाल पाये, पहले पदयात्रियों की विदाई में व्यस्त रहे फिर अलग अलग टोलियों से सम्पर्क में हफ्ता खत्म हो गया अब टोलियों के स्वागत में भी एक दिन लगेगा।" उनका लहजा शिकायत का नहीं था, अचानक आ गयी नयी जिम्मेदारी के भार की परेशानी भर थी।

आगरा जिले के पांच विकास खण्डों तथा शहर में निकली इन पदयात्राओं में—सभी महिलाएं शहर की थीं। ये उन ऐसे घरों से थी जिनका 'सर्वोदय मित्र' या 'सहयोगी शक्ति' कहा जाता है। इन कार्यक्रम के लिए आम नागरिकों ने तो उत्साह बताया ही शहर के कांग्रेस दल ने भी इसमें शामिल होकर राजनैतिक दलों की परम्परागत पद्धति को छोड़ा है। रक्षामंत्री जगजीवन राम ने आगरा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र द्वारा आयोजित एक सभा में भाषण दिया था। भाषण के बाद केन्द्र के कार्यकर्ता कृष्ण चन्द्र सहाय से जब वहां के कुछ कांग्रेसी कार्यकर्ता मिले, तब उन्हें स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह और उस दौरान निकलने वाली पदयात्राओं का अन्दाजा लगा। उन्होंने ऐसे कार्यक्रम में शामिल होने की इच्छा व्यक्त की। सहाय ने उन्हें एक नई टोली निकालने का सुझाव दिया। कांग्रेस की १५ महिला कार्यकर्ताओं की एक टोली अगले दिन से शहर के सिकन्दरा क्षेत्र में घूमने लगी। इस टोली के पास भी स्त्री-जागरण से सम्बन्धित वही सर्वोदय साहित्य है जो हर पदयात्रा टोली बांटने के लिए अपने साथ रखती है। श्रीमती प्रेमलता धाकरे के नेतृत्व में चल रही इस टोली की व्यवस्था नगर कांग्रेस कमेटी ने की तथा साहित्य दिया नगर सर्वोदय मंडल ने।

आगरा में स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह की प्रारम्भिक तैयारी के लिए दो दिन का एक शिविर अगस्त के अन्तिम दिनों में हुआ था, जिसमें निर्मला देशपाण्डे ने महिलाओं को सम्बोधित किया था। (२ अक्टूबर '७३ भूदान यज्ञ) फिर कृष्णा गुप्ता ने नगर की महिलाओं से व्यापक सम्पर्क कर २६ महिलाओं को तैयार किया था। इन २६ महिलाओं में आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाली श्रीमती सत्यवती सूद से लेकर साधारण गृहस्थी में लगी महिलाएं, कॉलिज छात्रा कु० अन्नेप्टी आदि तक शामिल थी। ११ अक्टूबर को इन २६ पदयात्रियों को विदा करने के लिए स्थानीय बैकुंठी देवी कन्या महाविद्यालय में भूतपूर्व नगर प्रमुख शम्भूनाथ चतुर्वेदी की अध्यक्षता में एक समारोह आयोजित किया था। समारोह के बाद विभिन्न इलाकों के लिए रवाना होने वाली टोलियों को नारियल, गीता प्रवचन तथा प्रार्थना पुस्तिका दे कर विदा किया गया। पदयात्राएं आगरा शहर के अलावा जगनेर, शमशाबाद, अछनेरा व टूंडला विकास खंडों में चली।

पदयात्राओं की व्यवस्था नगर सर्वोदय मंडल शहर के नागरिकों के सहयोग से कर रहा है। व्यवस्था में गोवर्धन होटल के मालिक कैलाशनाथ शर्मा, शिरोमणि, शिवनारायण अग्रवाल तथा नगर सर्वोदय मंडल के मंत्री लोचन प्रसाद, रामलाल शर्मा आदि विशेष सक्रिय रहे।

× गांधी विद्या मंदिर, सरदार शहर के श्री गणेशमल दूगड़ ने राजस्थान के आबकारी मंत्री श्री चन्दनमल वैद को एक पत्र लिखकर कहा है कि आगामी वर्ष सारे भारत में भगवान महावीर का २५००वां निर्वाण वर्ष मनाया जा रहा है। अत: उपयुक्त ही होगा अगर राज्य सरकार पूरे प्रान्त में शराबबन्दी लागू करने की घोषणा कर दे।

× रतलाम से प्राप्त समाचारों के अनुसार ११ अक्टूबर को महिला जागृति सप्ताह पदयात्रा के लिए निकले पदयात्रा-दल के सदस्यों को श्रीमती धूरीबाई की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में विदाई दी गयी। इस अवसर पर विधान सभा सदस्य श्रीमती लीलादेवी चौधरी ने भी महिलाओं को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर श्री मानवमुनी व श्री नाथूलाल मूणतजी ने भी अपने विचार प्रकट किये। महिला पदयात्रा दल की आठ टोलियां जिले के छह विकास खंडों में १७ अक्टूबर तक घूमेगी। पदयात्राओं का संयोजन श्रीमती पुखराज देवी कुमठ ने किया है।

× अ० भा० शान्ति सेना मंडल से प्राप्त जानकारी के अनुसार अखिल भारत ग्राम शान्ति सेना नायक प्रशिक्षण शिविर १५ नवम्बर से १४ दिसम्बर १९७३ तक शान्ति सेना विद्यालय मढ़ाडी (गुजरात) में होगा। ग्राम शान्तिसेना में रुचि रखने वाले कार्यकर्त्ता इस शिविर में भाग ले सकेंगे। शिविर में भाग लेने वालों के लिए आयु तथा शिक्षा की कोई मर्यादा नहीं है। शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखा गया है। शिविर के दौरान, निवास व प्रशिक्षण निःशुल्क रहेगा। प्रवास खर्च भाग लेने वालों को या भेजने वाली संस्था को ही देना होगा। प्रवेश शुल्क १० रुपया है। आवेदन पत्र अ० भा० शान्ति सेना मंडल राजघाट, वाराणसी-२२१००१ पर ५ नवम्बर तक भेजे जा सकते है।

× राजस्थान शराबबन्दी सत्याग्रह समिति के अध्यक्ष श्री गोकुलभाई भट्ट ने घोषणा की कि उनको विनोबा जी ने २५ दिसम्बर, १९७३ तक प्रारम्भ न करने हेतु परामर्श दिया है।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २६ अक्टूबर, '७२

बाढ़ आती है तो गांव के गांव उजड़ जाते हैं।
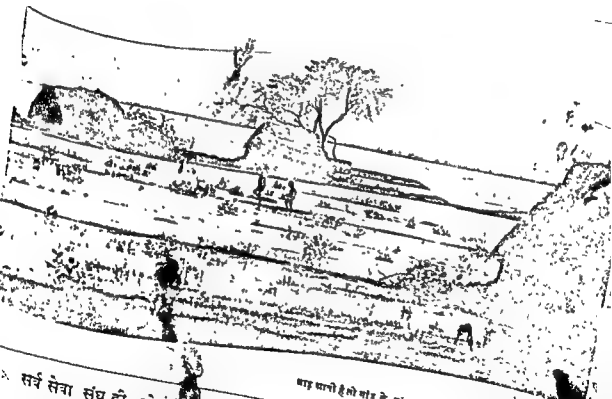
× सर्व सेवा संघ ही लोक-सेवक संघ है × जंगल कटेंगे तबाही आयेगी ही
× अनाज न मिलने पर क्या रमैया ? × सबसे ज्यादा अपमानित और तिरस्कृत रोगी कुष्ट के हैं × २६ जनवरी से पब्लिक स्कूलों पर सत्याग्रह

भूदान-यज्ञ

२९ अक्टूबर, '७३

वर्ष २० अंक ५

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी, है,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

ग ५...
। इस अवसर पर ५९ ~
र्यक्रम आयोजित हुए और ८७ .
न समस्याओं के सन्दर्भ में विनोबा सिह...

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति २० ...
एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित ...

सर्व सेवा संघ ही लोक सेवक संघ है : विनोबा

सर्व सेवा संघ ही लोक सेवक संघ है यह सुनकर सब लोगों को एकदम उत्साह आ गया। तो सोचा कि उस शब्द का थोड़ा इतिहास आपके सामने रखूं।

लोकसेवक संघ क्या है, उसकी क्या कल्पना है, यह मैं आज सुबह फिर से पढ़ गया। १९४८ में गांधीजी के जाने के बाद, पं० नेहरू के आमंत्रण पर उनके काम में मदद देने के लिए मुझे दिल्ली जाना पड़ा था। दिल्ली और पंजाब में उनके साथ घूमने और बात करने के बहुत मौके आये। उनके सामने मैंने *यह बात रखी कि कांग्रेस को 'लोकसेवक संघ' बनाना चाहिए था* (बापू का यह अन्तिम शब्द है। उन्होंने कहा, यह शब्द तो अच्छा है। लेकिन आज की हालत में जरा भी व्यवहार्य नहीं है। आज कांग्रेस

विनोबा

लोक सेवक संघ बनेगी तो हिन्दुस्तान के आज टुकड़े बने ही हैं, और ४-५ टुकड़े करके एडमिनिस्ट्रेशन में इतनी ... बैठ गई है कि मुझे देश में हो, यह हो तो हम ...दी भी खतरे ... लड़ाई

आजादी टिक सकती है। यह सुनकर मैंने उनसे कहा कि आपकी बात मुझे १०० प्रतिशत से जच गई। इसलिए मैंने वह मान्य किया। कांग्रेस लोक सेवक संघ क्यों नहीं बनी उसके आरंभ का यह इतिहास है। फिर ८-१० साल के बाद कांग्रेस वालों से बात हुई, पं० नेहरू से नहीं हुई। कांग्रेसवालों ने कहा इट इज नाउ टू लेट, पहले था टू अरली अब टू लेट हो गया। कुल मिलाकर कांग्रेस लोक सेवक संघ नहीं बन सकी। वह कभी बनती तो वह तो देशव्यापी परिणाम आता। जो काम गांधीजी ने सोच रखे थे, वे बहुत सारे हो सकते थे। परन्तु सर्व सेवा संघ उस जमाने में हवा में ही था। सिर्फ चन्द साथी थे। उनकी हालत ऐसी नहीं थी कि वे इसे उठावें। लोग भी उनको नहीं जानते थे और वे लोगों को नहीं जानते थे। ऐसी हालत में हम कितनी भी कोशिश करते तो भी "लोक सेवक संघ" नहीं बन सकते थे।

मेरा ख्याल है कि आपके ध्यान में यह बात आयी होगी कि हर चीज का अपना एक समय होता है। १५-२० साल के आंदोलन के बाद अब सर्व सेवा संघ का सम्बन्ध लाखों लोगों से, गांवों से आया है। इसलिए यह जिम्मेदारी सर्व सेवा संघ पर आ पड़ती है। लेकिन उसमें सर्व सेवा संघ को क्या-क्या करना पड़ेगा, यह जब मैं सोचता हूं तब ध्यान में आता है कि बहुत ही थोड़ा करना पड़ेगा, जो आज तक न किया हो। आप गांव-गांव में जाते ही हैं। गांववालों को स्वावलम्बी बनाना, ग्रामसभाएं खड़ी करना, भूमि-समस्या को हल करना, लोगों को जागृत करना, यह सब आप करते ही हैं। अब इसके अलावा वोटर्स लिस्ट देखना आदि बात सुझायी गई थी, वह लिस्ट ठीक है या बेठीक है, यह देखना। लेकिन आपको मालूम है कि

(शेष पृष्ठ १० पर)

जंगल कटेंगे तबाही आयेगी ही

(हिन्दुस्तान सूखे और बाढ़ों का देश है। हिन्दुस्तान के आम आदमी की जिन्दगी सूखे और बाढ़ के बीच का अन्तराल है। विशेषज्ञ कह रहे हैं कि लगातार कटने वाले जंगल बाढ़ का कारण हैं। पर जंगल लगातार कट रहे हैं और वन महोत्सव भी लगातार मनाए जा रहे हैं। पिछले दिनों के० एल० राव ने बाढ़ों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा था उसने बड़ा हंगामा खड़ा किया था (देखिये 'भूदान-यज्ञ' १० सितम्बर '७३)। प्रधानमंत्री हाल ही पहाड़ी क्षेत्रों के दौरे पर गई थीं, उन्होंने जो कुछ कहा वह काफी महत्त्वपूर्ण है। गांधी जी की सहयोगी सुश्री मीरा बहन भारत की बाढ़ों के प्रति आस्ट्रिया में भी चिन्तित हैं। यहां हम तीनों के विचार दे रहे हैं।)

आराम से बैठे हुए मंत्री बाढ़ नहीं रोक सकेंगे

फिर से उत्तर भारत हिमालय से उतर रही बाढ़ में डूब गया है। भारी वर्षा होने पर इसके अलावा और हो भी क्या सकता है? जब तक की हिमालय के ओक वृक्षों को उन्हें प्रकृति द्वारा दी गई जमीन में फिर से स्थापित नहीं किया जाता और चीड़-पाइन के वृक्षों में जबर्दस्त कटौती नहीं की जाती। हिमालय क्षेत्र में काम करने के दौरान मैंने बार-बार इस के लिए प्रार्थना की, समाचार पत्रों में विस्तृत लेख भी लिखे, क्योंकि गंगा को पूरने वाले पानी के क्षेत्र में ध्वस्त हो रहे ओक वृक्षों के बीच रहती थी। पंडित नेहरू ने वन-विभाग के उच्च अधिकारियों से मुझे मिलाया। उन्होंने मेरी बातों को विनयवत् सुना, पर इसके अलावा कुछ नहीं किया। हिमालय के ओक को पुनः प्रतिष्ठित करने और चीड़-पाइन को घटा देने में उनकी अर्थ व्यवस्था उलट जाती। हिमालय का ओक व्यावसायिक रूप से उपयोगी नहीं है, जब कि चीड़-पाइन से रेजिन, इमारती लकड़ी दोनों मिलते हैं। साथ ही इसका उगाना बहुत सरल है क्योंकि यह जंगली घास की तरह खुद-ब-खुद फैलता जाता है।

शासन के सामने अब दो ही सूरतें हैं जिनमें से उसे चुनना है। या तो हिमालय में पानी इकट्ठा होने वाले इलाके में मिट्टी टूटने दें जिसके परिणाम स्वरूप बाढ़ों की विनाशलीला बढ़ती ही जायेगी। बेशुमार दर्दनाक नुकसान के अलावा इसकी कीमत आदमी जानों और दुःखों में चुकानी पड़ेगी। या फिर चीड़-पाइन के वृक्ष ५००० फुट की ऊंचाई पर ही रोक दिये जायें और कम से कम ५००० से ८००० फुट तक ओक वृक्षों को फिर लगाया जाय।

प्रकृति ने ओक वृक्षों की यह पट्टी इस ऊंचाई पर टूट कर गिरने वाली वर्षा को सोखने के लिए ही रची है। ओक वृक्षों की चौड़ी पत्तियां और इसके नीचे उगने वाली झाड़ियों और घास के कारण यह काम वे सुगमता से कर पाते हैं। अब जहां-जहां चीड़-पाइन फैल गया है वहां वर्षा का पानी दौड़ता हुआ सीधा घाटियों में आता है। जहां छोटी-छोटी धारायें प्रचण्ड प्रवाह बन जाती हैं। ये धाराएं ही इकट्ठी हो कर मैदानों में जाने वाली नदियों में मिलती हैं।

'स्वाधीनता' ने ओक वनों की विनाशलीला को किस तरह बढ़ावा दिया है, यह मैंने अपने कुछ लेखों में समझाया है। लेकिन मैं यहां विस्तार में नहीं जाऊंगी। क्योंकि आजकल लोगों के पास इस तरह की चीजें पढ़ने के लिए समय नहीं है और मैं सच में चाहती हूं कि यह लेख पढ़ा जाय।

मैं यह पूरी तरह से जानती हूं कि ओक वनों को पुनर्जीवित करना एक दीर्घकालीन योजना होगी। जिसके लिए इस क्षेत्र में दृढ़ आस्था और धैर्य की जरूरत होगी। इसमें एक तो स्थानीय ग्रामीण निवासियों का सहयोग नितान्त आवश्यक है। चारे और ईंधन की लकड़ी में इस प्रकार जो कमी होगी उसे पूरा करने के लिए मुआवजे के रूप में उनकी मदद करनी होगी। जब तक कि प्रकृति का संतुलन फिर से लौट नहीं आता। साथ ही ओक वनों में वन विभाग के कर्मचारियों की संख्या बढ़ानी पड़ेगी। जिससे गांववासियों द्वारा पेड़ काटने और वन संपदा को नष्ट करने पर स्थायी रोक लग सके। पर सबसे महत्त्वपूर्ण बात जिसके बिना कुछ भी नहीं हो पायेगा, वो सरकारी कर्मचारियों की ईमानदारी है। अभी जो हालत है उसमें भ्रष्टाचार सारी सरकारी योजनाओं को विफल कर देता है और इस तरह की दूर दराज योजनाओं में तो ईमानदारी के प्रति जागरूक रहना दुहरा आवश्यक हो जाता है।

परिस्थिति ऐसी है पर जहां चाह है वहां राह भी है। और यदि मंत्रियों को, जो नई दिल्ली में आराम से बैठे रहते हैं, उन इलाकों में दुश्चिन्ता के साथ जीना होता, जहां बार-बार बाढ़ उनके घरों को तबाह कर देती, तो हिमालय के ओक पुनः अपनी प्रतिष्ठा पा जाते। इसके सिवाय दूसरा कोई उपाय नहीं है।

—मीरा बहन

दीपावली अभिनन्दन

देश के हजारों हजार गांवों में फैले हुए सर्वोदय परिवार के साथियों का हम दीपावली पर अभिनन्दन करते हैं। हम अपने उन सहयोगियों के प्रति भी मंगलकामना प्रकट करते हैं जिनके सतत् स्नेह को जुटाकर हम लगातार आगे बढ़ने के प्रयत्न में हैं।

'भूदान-यज्ञ' परिवार

स्कूल का हर बच्चा एक पेड़ अवश्य लगाये

—श्रीमती इन्दिरा गांधी

भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने हाल ही में उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों का दौरा किया। इस अवसर पर वहा की वन-समस्याओं को लेकर कुछ सार्वजनिक कार्यकर्ता (श्री धनजय भट्ट, श्री आनन्द सिंह बिष्ट, श्री चण्डी प्रसाद भट्ट और श्री योगेश चन्द्र बहुगुणा) ने उनसे मुलाकात की और वन सम्पदा पर आधारित ग्रामोद्योग इकाइयों के काम की जानकारी देने, उनके काम में आने वाली समस्याओं और उत्तर प्रदेश सरकार की वननीति में आवश्यक क्रान्तिकारी परिवर्तन सुझाने वाला एक ज्ञापन भी प्रधान मंत्री को दिया। इस चर्चा में केन्द्रीय संचार मंत्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा, गृहराज्य मंत्री श्री के० सी० पंत, आयुक्त गढ़वाल कमिश्नरी और कन्जरवेटर आफ फोरेस्ट ने भी भाग लिया। मुलाकात का आयोजन संचार मंत्री, जो हिमालय सेवा संघ के ऋषिकेश सम्मेलन के बाद से पहाड़ी क्षेत्रों की समस्याओं में गहरी दिलचस्पी ले रहे हैं, के प्रयत्नों से किया गया था। प्रधानमंत्री ने काफी ध्यानपूर्वक और गम्भीरता से सारी बातों को सुना।

इस मुलाकात का और चाहे जो भी परिणाम निकले परन्तु इतना तो तत्काल हुआ कि पौड़ी की आमसभा में प्रधानमंत्री ने इस विषय पर रोशनी डाली, उन्होंने कहा "अभी अभी जंगलात के सम्बन्ध में चर्चा हुई, हमें लकड़ी की आवश्यकता कई कामों के लिए है। परन्तु जंगलों के तेजी से कटने के कारण मौसम में भारी परिवर्तन हो रहा है। मिट्टी का कटाव तेज हो रहा है। इससे मैदानों को भी भारी नुक्सान हो रहा है। बाढ़ का खतरा भी बढ़ रहा है," इसलिए उनका सुझाव था कि जितने पेड़ काटने आवश्यक हों उतने ही लगाये भी जाने चाहिए, हर स्कूल का हर बच्चा एक पेड़ अवश्य लगाये।

यह हर्ष का विषय है कि देश की प्रधानमंत्री सहित देश के नेताओं, प्रशासकों और जनता का ध्यान वनों के महत्त्व की ओर आकृष्ट हुआ है। उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों के वन विभाग व राजस्व विभाग की तरफ से वनीकरण की विस्तृत योजना बन रही है और क्षेत्र विकास समितियों में उसकी चर्चा हो रही है। वनों को आर्थिक विकास में चिन्तन के केन्द्र में स्थापित करने का यह श्रेय परिवेश शास्त्रियों, (जिनका एक महत्वपूर्ण सेमिनार कुछ समय पहले दिल्ली में हुआ) रचनात्मक कार्यकर्ताओं व देश के समाचार पत्रों को है।

वनों को उत्तर प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों के आर्थिक विकास में केन्द्रीय स्थान देने की बात काफी लम्बे समय के काम के अनुभवों के बाद उठी है। तीन साल पहले खादी-ग्रामद्योग आयोग की आर्थिक मदद से आठ स्थानीय समाज-सेवी संस्थाओं ने चीड़ के पेड़ों से निकलने वाले लीसे से बिरोजा व तारपीन तैयार करने की इकाइयां प्रारंभ की है, इसके साथ ही वनौषधि संग्रह का काम भी इन्होंने अपने हाथों में लिया। इन संस्थाओं के काम प्रारम्भ करने से पूर्व उक्त दोनों काम (बिरोजा व तारपीन तैयार करना तथा वनौषधि संग्रह) या तो व्यक्तिगत क्षेत्र में या फिर सहकारी क्षेत्र में ही किया जाता रहा है। ग्रामोद्योगी क्षेत्र में इस तरह का प्रयोग करने का पहला ही अवसर है।

हमें बाढ़ों के साथ रहना सीखना होगा

—के० एल० राव

केन्द्रीय सिंचाई और बिजली मंत्री के० एल० राव ने कहा है कि हमें बाढ़ों के साथ जीना सीखना होगा। बाढ़ें प्राकृतिक विपत्तियां नहीं हैं, वे आदमी के द्वारा बुलाई गई हैं। शासन की वन-नीति के अनुसार पहाड़ों में वनों का क्षेत्र ६०% से कम नहीं होना चाहिए और मैदानों में यह कम से कम २०% होना चाहिए। सब मिला कर जंगलों का कुल क्षेत्रफल ३३% से कम नहीं होना चाहिए। यदि यह प्रतिशत ३३ से कम हो जाता है तो नदियां भारी वर्षा में अपने किनारों से उफन कर विनाशकारी बाढ़ें लायेंगी। और जंगल सारे देश में समान रूप से फैले होने चाहिए। भारत में हमारे सारे क्षेत्रफल के कुल २४% में वन है। पंजाब में वनों का प्रतिशत पांचवा हिस्सा है फिर इसमें क्या आश्चर्य कि हमें बाढ़ों का प्रकोप झेलना पड़ता है।

एक छोर का उदाहरण लीजिये यदि हिमालय की ढलानों पर के सारे पेड़ काट लिये जायें तो सिन्धु-गंगा के मैदानों के सारे गांव और शहर केवल एक बरसात में बह जायेंगे। वृक्ष अपनी जड़ों में बहुत पानी सोख लेते हैं, जिसे वे धीरे-धीरे झरनों के रूप में, पत्तियों से भाप बन कर यदि तरीकों से निकालते हैं। पेड़ों की जड़ों की जमीन पर मजबूत पकड़ होती है। जब कोई पेड़ कट जाता है यह पकड़ ढीली पड़ जाती है और जमीन वर्षा में धुल कर नदी में आ जाती है और मैदानों तक आते-आते इसके परिणाम से बाढ़ का ताडव होता है। इसलिए वन प्राकृतिक बांधों और जलाशयों का काम करते हैं। इसने हजारों-करोड़ रुपये अप्राकृतिक बांधों और जलाशयों के बनाने में खर्च किये हैं ताकि हमारी आर्थिक हालत सुधरे, पर अपनी वनसंपदा को हमने नष्ट कर दिया है।

वन केन्द्र का विषय होना चाहिए ताकि एक राष्ट्रीय वन-नीति को लागू किया जा सके। ●

सर्वेक्षण

अनाज न मिलने पर बदले में क्या खाया ?

पिछले साल भारत के अधिकांश प्रदेशों में भयकर अकाल था। गुजरात भी उनमें से एक था। जून, जुलाई, अगस्त के तीन माह के दौरान अनाज के बटवारे और इस्तेमाल की परिस्थिति, भुखमरी का असर, बेकारी की स्थिति, गेहू और चावल के व्यापार के राष्ट्रीयकरण के बारे में जनमत और इन सब से बचने के उपाय जानने के लिए गुजरात सर्वोदय मडल की ओर से एक सर्वेक्षण किया गया।

[illegible] सितम्बर तक 702 फार्म भरकर आये। सार के रूप में निकाले गये आंकड़े अत्यन्त दिलचस्प हैं। आये हुए फार्म को 4 विभागों में बाटा गया।

(अ) धनिक वर्ग : इन्कमटैक्स देने वाले इस वर्ग के 66 फार्म भर कर आये।

(ब) मध्यम वर्ग : ज्यादातर नगर में नौकरी करने वाला वर्ग, इस वर्ग के 229 फार्म भर कर आये।

(स) किसान वर्ग : गाव में अनाज उगाने वाला और खुद की जमीन वाला वर्ग, 103 फार्मस् भर कर आये।

(द) खेत मजदूर वर्ग : गाव में रहने वाले खेती मजदूरों का वर्ग, इसके 304 फार्म भर कर आये।

इस प्रश्नावली के उत्तरों का सार इस प्रकार है।

प्रश्न : (क) सस्ते अनाज की दुकान से कितना अनाज मिला ?

उत्तर (अ वर्ग को यह प्रश्न लागू नहीं होता)

	ब	स	द
तटस्थ	95	77	[illegible]
5 कि. ग्रा तक	82	[illegible]	85
5 से 10 कि ग्रा तक	82	7	76
10 कि [illegible] से ज्यादा	50	—	63
	229	103	304

(ख) अपने खेत में से कितना अनाज मिला ?

उत्तर 103 किसानों में से केवल सैंतीस (37) किसानों को औसत [illegible] कि० ग्रा० अनाज मिला।

प्रश्न (ग) किसानों से किस भाव में अनाज मिला ?

विभाग	अ	ब	स	द
गेहू	—	90 पैसे से 1-75 रु तक	85 पैसे 1-55 रु तक	90 पैसे से 2-00 रु० तक
चावल	—	2-25 रु से 3-50 रु तक	2-55 रु से 2-50 रु तक	1-65 रु से 3-75 रु तक
मोटा धान	—	1-00 रु से 1-75 रु तक	1-10 रु से 2 00 रु तक	80 पैसे से 2-00 रु तक

(भाव 1 कि० ग्रा० के हैं)

प्रश्न (घ) व्यापारियों से किस भाव में अनाज मिला ?

विवरण	अ	ब	स	द
गेहू	—	1-00 रु से 1-75 रु तक	1-25 रु से 1-75 रु तक	[illegible] पैसे से 2-00 तक
चावल	—	1-50 रु से 4 00 रु तक	1-80 रु से 3 00 रु तक	1-50 रु से 3-50 रु तक
मोटा धान	—	90 पैसे से 1-80 रु तक	1 00 से 1-90 तक	90 पैसे से 2 25 रु तक

प्रश्न (ङ) यदि भूखा रहना पड़ा हो तो ?
इस प्रश्न के उत्तर सिर्फ द वर्ग ने दिये हैं।

	विवरण	तटस्थ	कितने व्यक्ति	औसत दिन
1-	दिन भर भूखे रहे	206	98	7
2-	एक जून भूखे रहे	184	120	11
3-	(अ) पैसे होने पर भी अनाज न मिला	211	93	136
	(ब) पैसे ही नहीं थे	161	143	15

प्रश्न (च) सस्ते अनाज की दुकान से अनाज ठीक ठीक मिलता है क्या ?

उत्तर	विवरण	अ	ब	स	द
	तटस्थ	14	75	36	80
	हां	0	101	50	117
	ना	52	53	17	102
योग		66	229	103	304

भुखमरी के कारण कितने मरे ?

प्रश्न : गेहूं का व्यापार द्वारा अपने हाथ मे लेने के संबंध मे

वर्ग	विवरण	1 सामान्य अभिप्राय	2 क्या गेहूं सस्ता हुआ ?	3 सरकार बीच मे पड़ती तो भाव ऊंचा उठता क्या ?	4 सरकार के बीच मे पड़ने से गेहूं महगा हुआ क्या ?	5 गेहूं के अभाव के कारण मोटे अनाज के दाम बढ़े ?
अ	तटस्थ	2	1	3	2	1
	हां (अनुकूल)	6	7	6	60	62
	ना	58	58	57	4	3
		66	66	66	66	66
ब	तटस्थ	18	13	10	22	9
	हां (अनुकूल)	27	26	37	181	199
	ना	184	190	182	26	21
	योग	229	229	229	229	229
स	तटस्थ	4	3	6	11	9
	हां (अनुकूल)	19	17	24	82	89
	ना	80	83	73	10	5
	योग	103	103	103	103	103
द	तटस्थ	55	26	29	35	32
	हां (अनुकूल)	96	101	141	200	248
	ना	153	177	134	69	24
	योग	304	304	304	304	304

प्रश्न ६: चावल का व्यापार सरकार को हस्तगत करना चाहिए या नही ?

विवरण	अ	ब	स	द	कुल
तटस्थ	2	14	4	33	53
हा	4	42	21	111	178
ना	60	173	78	160	471
योग	66	229	103	304	702

प्रश्न : (ग) अनाज न मिलने पर उसके बदले मे क्या खाया ?

उत्तर सिर्फ द वर्ग से सबन्धित है उनके सामान्य उत्तर इस प्रकार है :—

1 भूखे रहे 2 जंगली फल खाये 3 चाय पी

प्रश्न बेकारी से सबन्धित (सिर्फ द वर्ग को लागू होता है)

उत्तर विवरण	तटस्थ	व्यक्ति	औसत दिन
1-कितने दिन काम मिला ?	129	175	26
2-मजदूरी का दर क्या था ?		औसत रु- 2-00	
3- साथ मे रोटी या अनाज मिलता ?	19	31 (हा)	154 नही

प्रश्न भुखमरी के कारण कितने मरे ?

उत्तर द वर्ग मे से ■ मौतें हुई। विवरण इस प्रकार है

ग्राम तेलो, तालुका आमादे जि० भरु (1) वेसग भाई गोपालभाई, उम्र 60 वर्ष (2) श्री फकीरा भाई अमयाभाई, सूरत नगर मे (3) भाणा भाई, उम्र 4 वर्ष, (4) मजूबेन उम्र 3 वर्ष (5) भाणा उका, उम्र 25 वर्ष (6) सोमीबेन, उम्र 20 वर्ष।

प्रश्न (क) महगाई दूर करने के उपाय आप कुछ सुझा सकते है ?

उत्तर अ वर्ग : (1) उत्पादन बढ़ाना, (2) मुद्रास्फीति कम करना, (3) वेतन-वृद्धि स्थगित करना, (4) जोन-बन्दी खत्म करना, (5) मुक्त व्यापार रखना।

ब वर्ग : (1) उत्पादको को पूरे भाव देना (2) जीवन की आवश्यक चीजो का उत्पादन बढ़ाना (3) जीवन की आवश्यक चीजो की बिक्री के दाम निर्धारित करके उत्पादको को होने वाले घाटे की पूर्ति सरकार करे (4) वेतन का उच्चांक तय किया जाय (5) सग्रह खोरी बन्द की जाय।

स वर्ग : (1) मण्डी की फसल का नियमन किया जाय, (2) लगान अनाज के रूप मे वसूल किया जाये, (3) सग्रह खोरो को सख्त सजा दी जाये (4) ग्राम स्तर पर आवश्यक अनाज सुरक्षित रखा जाये। (5) मजदूरो को मजदूरी कुछ नकद तथा कुछ

(शेष पृष्ठ १० पर)

सबसे ज्यादा अपमानित और तिरस्कृत रोगी कुष्ट के हैं

बीमारियों के नाम पर वैसे तो कई रोग हैं, पर समाज में कुष्टरोग के बारे में जितनी गैरसमझदारी और गलतफहमी व्याप्त है वैसी स्थिति और किसी रोग की नहीं। साथ ही समाज में जितने अपमानित और तिरस्कृत रोगी कुष्ट रोग के हैं उतने और किसी के नहीं। इन अपमानित और तिरस्कृत रोगियों का एक सा हाल है। भारत में कुल रोगियों की संख्या का एक चौथाई विद्यमान है। लगभग २५ लाख कुष्ट रोगी भारत में हैं। इतनी बड़ी संख्या में कुष्ट रोगियों के होने का सबसे बड़ा कारण इसके साथ अन्धविश्वासों, पूर्वाग्रहों, भय और सामाजिक प्रतिक्रिया की लम्बी श्रृंखला का जुड़ा होना है। रोग की वास्तविकता और समाज की धारणाओं में दो ध्रुवों जैसी दूरियां है।

कुष्ट रोग के प्रति भय का एक कारण यह भी है कि जितनी शारीरिक क्षति इस रोग के कारण होती है उतनी अन्य किसी रोग के कारण नहीं होती। कुष्ट रोग के रोगी के साथ समाज का तिरस्कार तो शारीरिक क्षति के बहुत पहले से ही प्रारम्भ हो जाता है, जब वह कुष्ट रोग के रोगी के हाथ, चेहरे या होठों पर रोग के चिन्ह देखना प्रारम्भ कर देता है। दूसरा परिणाम यह होता है कि इस रोग पर वे तमाम भर्त्सनाएं भी आरोपित कर दी जाती हैं, जिनका रोग की मूल प्रकृति से कोई संबंध नहीं है। रोग के प्रति व्याप्त भय का यह हाल है कि एक समय यह माना जाता था कि अगर किसी स्वस्थ प्राणी को कुष्ट रोग का रोगी छू ही ले या उसकी छाह ही उस पर पड़ जाये तो भी स्वस्थ प्राणी को रोग लग जायेगा। परिवार के किसी सदस्य को अगर यह रोग हो जाये तो परिवार के शेष लोगों के प्रति भी इस धारणा का होना कि कुष्ट पीढ़ी दर-पीढ़ी हो सकता है, एक लम्बे समय तक सामाजिक मान्यता रही है। यह भी मान्यता रही है कि अगर कोई व्यक्ति किन्हीं बुरे और अनैतिक कृत्यों में फंसा हुआ है तो उसे कुष्ट हो जाता है। ऐसे अंध विश्वासों और मान्यताओं की एक लम्बी फेहरिस्त है और उन सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित है, जहां तक हमारी कल्पना दौड़ सकती है।

उक्त गलत मान्यताओं के कारण सामाजिक परिवेश न सिर्फ कुष्ट रोगियों के प्रति आक्रामक दृष्टिकोण अपनाए रहता है, बल्कि उन लोगों के प्रति भी संवेदनशून्य हो जाता है जो इन रोगियों के नजदीक रहते हैं। इस सामाजिक प्रतिरोध के कारण कुष्ट रोगी न तो सम्मानपूर्वक अपना जीवन यापन कर पाता है और न ही उसे समाज में रहने का स्थान ही मिलता है। उसके लिए केवल एक ही रास्ता शेष रह जाता है कि वह या तो भीख मांग कर जिन्दा रहे या आत्महत्या कर ले।

आखिर यह कुष्ट रोग है क्या? क्या यह उतना भयंकर है, जितना इसका प्रचार किया गया? यह सच है कि कुष्ट एक संक्रामक रोग है पर उतना नहीं जितना कहा जाता है। कुष्ट का हर रोगी संक्रामक नहीं होता। सत्य तो यह है कि कुल कुष्ट रोगियों का अस्सी प्रतिशत असंक्रामक होता है। केवल बीस प्रतिशत कुष्ट रोगी तीव्र प्रकार के होते हैं जिनसे रोग प्रसार का काम होता है।

कुष्ट रोग वंशानुगत नहीं होता और यह जरूरी नहीं कि कुष्ट रोगी पिता की सन्तान भी कुष्टी ही हो, अगर रोग की रोकथाम के पर्याप्त उपाय किये जायें। वैसे अब कुष्ट रोग असाध्य भी नहीं रहा है। हर प्रकार के कुष्ट रोग के लिए प्रभावकारी दवाइयां आज उपलब्ध हैं। रोग चाहे जिस अवस्था पर हो ये दवाएं प्रभावकारी हैं और सरलता से ली भी जा सकती हैं। कुष्ट रोग से सम्बन्धित अस्पतालों और शासकीय चिकित्सालयों पर ये दवाएं सहजता से उपलब्ध हैं। जरा सी सावधानी अगर बरती जाये तो प्रारंभिक अवस्था में ही रोग के लक्षणों को समझ कर इलाज किया जा सकता है।

→

कुष्ट के रोगी बच्चे : अन्धकारमय भविष्य की चिन्ता (चित्र : विश्व स्वास्थ्य संगठन)

अतः कुष्ट भी अन्य रोगों की तरह का एक रोग है और उचित उपचार द्वारा दूर किया जा सकता है। सहज ही है कि जल्द उपचार निरोगी करने मे कम समय लेगा और देरी से प्रारंभ किया उपचार ज्यादा समय।

कुष्ट रोग के बढ़ने को दो शब्दों में बांधा जा सकता है, एक तो अज्ञान और दूसरा भय। रोग के प्रति अज्ञान के कारण रोग की प्रारंभिक अवस्था में ध्यान नहीं दिया जाता और रोगी जाने-अनजाने अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को भी रोग से प्रभावित करता है। चूंकि रोग के लक्षण किसी जख्म के रूप में नहीं होते और रोगी किसी प्रकार का दर्द व पीड़ा नहीं महसूस करता इसलिए वह रोग के प्रति अनभिज्ञ हो रहता है और किसी चिकित्सक से शिकायत नहीं कर पाता। इस कारण रोग फैलता जाता है। इसके विपरीत कुछ रोगी सामाजिक प्रतिष्ठा और तिरस्कार के भय से अपना रोग कुरूपता की स्थिति आ जाने तक छुपाते रहते हैं। इस प्रकार रोगी न केवल स्वयं को यातना देता बल्कि सम्पर्क में आने वालों को भी प्रभावित करता है।

कुष्ट रोग के जीवाणु की खोज करने वाले वैज्ञानिक हेन्सन की स्मृति मे यह वर्ष सारी दुनिया में शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। हालांकि कुष्ट रोग के जीवाणु की खोज सौ वर्ष पहले ही हो गई थी, लेकिन जिस अनुपात में कुष्ट सेवा के कार्य की जरूरत है वह नहीं हो पाई। न सिर्फ कुष्ट रोगियों की संख्या की दृष्टि से भारत पिछड़ा हुआ है बल्कि रोगियों को समाज में सबसे हीन दृष्टि से भी देखा जाता है, जो कि दुनिया के दूसरे देशों में सहानुभूति और सहायता के पात्र माने जाते हैं। समस्याओं की जिस दुनिया में हम लोग आज जी रहे हैं उसमें कम से कम इतना तो हो ही सकता है कि इस देश के चालीस लाख लोग कुष्ट मुक्त हो जायें और समाज में एक सम्मानजनक इन्सान की तरह जी सकें।

(सेवाग्राम में सम्पन्न हुए कुष्ट कार्यकर्ता—सम्मेलन के अवसर पर श्री सुधाकर के एक लेख के आधार पर)

उत्तरप्रदेश के गोण्डा जिले के श्री बस्ती ग्राम में तरुण शान्ति सेना का चतुर्थ प्रादेशिक शिविर तथा तृतीय प्रान्तीय सम्मेलन १ से ७ अक्टूबर तक बाबा राघवदास श्रम साधना आश्रम में सम्पन्न हुआ।

हमारे अब तक के शिविर सम्मेलनों में विषय विशेष पर ही चर्चा से हुआ करती थी किन्तु इस शिविर में समस्याओं का विश्लेषण प्रश्नोत्तर से प्रारम्भ हुआ। आज सभी समाज सेवी संस्थाएं तथा राजनीतिक पार्टियां अपनी घोषणाओं में अन्तिम व्यक्ति की चर्चा करती है। यह अन्तिम आदमी वास्तव में है कौन? क्या खाता-पीता है? क्या उसकी समस्याएं हैं, समाज की यह अन्तिम इकाई इसी दशा में रहे, इसके लिए हम किस हद तक जिम्मेदार है? आदि सारे तथ्यों का अच्छा विश्लेषण हुआ। ओमप्रकाश दीपक ने सरकारी योजनाओं और देश की वर्तमान आवश्यकता के अन्तर्विरोध को स्पष्ट करते हुए गरीबी के कारण बताये, अन्त्यज की स्थिति को स्पष्ट किया। उनके साथ तीन-चार भागों में हुई चर्चा में यूरोप और भारत के तात्विक चिन्तन में जो अन्तर रहा और उसकी वजह से सामाजिक बदलाव के सन्दर्भ में दोनों जगह जो एकांगिता रही, उसे उन्होंने स्पष्ट किया। दुनिया के कुछ बड़े और प्रमुख देश मार्क्स के विचारों से प्रभावित रहे हैं, जो मोटे तौर पर अन्तिम वर्ग के हितों का प्रवक्ता समझा जाता रहा और जिसने वर्ग-संघर्ष को अनिवार्य बनाते हुए शोषक समाज के खत्म होने की बात कही। मार्क्स ने यूरोप के निचले तबके अर्थात् गोरे मजदूरों की मुक्ति का दर्शन तो दिया किन्तु दुनिया की आधी से अधिक काली और रंगीन आबादी के लिए उनकी पहली शर्त यह रही कि उनकी मुक्ति यूरोप अर्थात् गोरे साम्राज्यवाद के अन्दर ही होगी। 'दुनिया के मजदूरों एक हो' का नारा देते हुए भी अपने विश्लेषण में उन्होंने मान्य किया कि काले और रंगीन लोगों की सांस्कृतिक चेतना का विकास तो गोरों के अधीन ही सम्भव है। गांधी के विचार और उनकी कार्यप्रणाली इस मायने में भिन्न रही। उनने भारत की आजादी के लिए जिस अस्त्र का प्रयोग किया उसने मानव-मानव के बीच कोई भेद नहीं माना और प्रतिकार के लिए अपनाये गये उनके सत्याग्रह-अस्त्र का इस्तेमाल विभिन्न देशों ने किया। अहिंसा और सत्याग्रह की शक्ति इस माने में दुनिया के लिए एक अनूठी ताकत साबित हुई कि इसका उपयोग केवल अपने से निर्बल वर्ग के लिए ही उपयोगी होगा, ऐसा नहीं। इस सन्दर्भ में गांधी का यह अनूठा आविष्कार हमेशा याद किया जायेगा।

हिन्दुस्तान में शोषण और बेरोजगारी की बात स्पष्ट करते हुए किशन पटनायक ने कहा कि वास्तविक बदलाव के लिए मध्य वर्गीय शिक्षित तरुणों की तैयारी नहीं है। हिन्दुस्तान जितनी घनी आबादी वाले देश में किसी भी तरह की शिक्षित बेरोजगारी की समस्या का सवाल ही नहीं उठता, यदि ढंग से उत्पादन बढ़ाने की बात की गयी होती। कृषि क्षेत्र के उत्पादन और अशिक्षित बेकारों की तरफ उचित ध्यान दिये बगैर जो हम बेरोजगारी हटाने की बात सोचते हैं, यह तत्वतः गलत है। शिक्षा के अबूरेपन को भी उन्होंने उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया।

इस तरह कुल ४ दिनों की चर्चाओं में शिविरार्थियों की तरफ से किये गये प्रश्नोत्तर, आपसी चर्चाओं एवं व्याख्यानों द्वारा दुनिया की वर्तमान परिस्थिति, देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति और उसके बीच 'अन्तिम आदमी' की हैसियत का अच्छा विश्लेषण हुआ।

अब सवाल उठा कि आगे क्या करना है और समग्र सामाजिक परिस्थिति के सन्दर्भ में हमारी भूमिका क्या होगी? हम कहां हैं? यदि सामाजिक परिस्थितियों में आमूल परिवर्तन करना है तो उसकी दिशा क्या होगी और हमारी अपनी तैयारी क्या होगी? हम जिस अन्तिम आदमी की परिस्थिति का विश्लेषण करते रहे हैं, उसमें चेतना जागृत करने के लिए क्या हमें अपने संस्कारों में परिवर्तन नहीं करना होगा? क्या शिक्षित तरुणों के बीच बैठकर इस किस्म की चर्चा भर कर लेने से और श्रम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए का नारा भर देने से हम दायित्व मुक्त हो जायेंगे? यह तो सही है कि जिस परिवेश में हम पले-बढ़े हैं उसमें एकदम से अन्तिम आदमी की भूमिका में हम उतरेंगे तो यह सम्भव नहीं हो पायेगा। अतः हमें साल में

२६ जनवरी से पब्लिक स्कूलों पर सत्याग्रह होगा

३-४ महीने तो ऐसे निश्चित करने ही चाहिए जहां उत्तरप्रदेश भर के तरुण शान्ति सैनिक एकत्र होकर डिक्लासिफिकेशन की भूमिका में रह सकें। चर्चा के यहां तक पहुंचने के बाद स्वभाविक रूप से गांधी के चिन्तन और विनोबा के मार्ग के प्रति उत्सुकता जगी। शिविरार्थी एक दिन पड़ोस का एक गांव देखने भी गये थे। उनके विभिन्न विषय के सवाल जवाब अब धीरेन दा से शुरू हुए। दादा शुरू से ही शिविर-सम्मेलन की चर्चा-गोष्ठियों में बराबर घन्टे, डेढ़ घन्टे के लिए आते रहे। जब-जब उनसे बातचीत हुई तब-तब विषय-विशेष को पकड़कर सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में जो सूक्ष्म व्याख्या उन्होंने की उससे कई तथ्य स्पष्ट हुए। साथ ही गांधी के चिन्तन और विनोबा की कार्य-पद्धति का भी पता चला। उन्होंने सामाजिक विकास का ऐतिहासिक सन्दर्भ बताते हुए राज्य की स्थापना की बात कही। मनुष्य की चेतना के विकास के साथ-साथ ही किस तरह व्यक्ति और संस्थाएं समस्याओं के समाधान में असमर्थ हो रही हैं, इसका उन्होंने सूक्ष्म विश्लेषण किया। इससे पैदा होने वाली सडान्ध की व्याख्या करते हुए उन्होंने बताया कि अब काम सत्ता के परिवर्तन से नहीं चलेगा वरन् समाज में स्थापित हो गये मूल्यों के विरोध में काम करना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में गांधी और विनोबा की भूमिका स्पष्ट करते हुए उन्होंने गांधी के तीन रूप बताये 'महात्मा' गान्धी जिसके स्वरूप को हिन्दुस्तान में प्रतिष्ठा प्रदान की है, 'विद्रोही' गांधी जिसे पश्चिम ने पहचाना है और हिन्दुस्तान में लोहिया के अलावा गांधी के कुछ अनुयायियों ने। किन्तु गांधी के तीसरे स्वरूप, क्रांतिकारी गांधी को अब तक किसी ने नहीं पहचाना है। यह सही है कि विद्रोही गांधी की सम्भावना को गांधी अपने जीवन-काल में प्रकट करके गये किन्तु क्रांतिकारी गांधी की सम्भावना का प्रकटीकरण उनके जीवन काल में सम्भव नहीं हो सका। वह उनके विचारों में छा गया था। राज्य और सत्ता की शक्ति से भिन्न जिस सम्मति शक्ति के निर्माण की उन्होंने कल्पना की थी आज विनोबा उसी सम्भावना को धरती पर उतारने के लिए प्रयत्नशील हैं किन्तु आप सबों को अपनी राह खोजनी होगी। मार्क्स गांधी या विनोबा किसी का चिन्तन आपके समय में उभर रही जटिलताओं के समाधान में पूर्णत सक्षम है, ऐसा नहीं। काल की आवाज और समाज की आवश्यकताओं को पहचानते हुए, आपको-हमको मूल्य बदल के सन्दर्भ में नयी दिशा खोजनी होगी।

शिविर में हुई सम्पूर्ण चर्चा की रोशनी में उत्तर प्रदेश तरुण शान्ति सेना के सम्मेलन ने अपने संगठन का नवीनीकरण करके कार्यक्रमों को उठाने का निश्चय किया। प्रथम तो उसने इस बात का निर्णय लिया है कि तरुण शान्ति सैनिक क्रमशः अपने पुराने संस्कार तोड़ने की भूमिका में आयेगा अर्थात् उसकी कोशिश सतत् डिक्लासीफिकेशन की रहेगी। दूसरा निर्णय जो पिछले साल किया गया था उसे फिर से दुहराया गया और पुनः २६ से ३० जनवरी तक पब्लिक स्कूल पर सत्याग्रह का कार्यक्रम बनाया गया।

समूह-चर्चा का दृश्य। चार दिनों की चर्चाओं में शिविरार्थियों की तरफ से किये गये प्रश्नोत्तर, चर्चाओं और व्याख्यानों द्वारा दुनिया की वर्तमान परिस्थिति, देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति और उसके बीच "अन्तिम आदमी" की हैसियत का अच्छा विश्लेषण हुआ।

शिक्षा में क्रांति की हमारी मांग पिछले तीन सालों से रही है। सन् '७१ की जनवरी में हमने देश में चल रही दो प्रकार की शिक्षा प्रणालियों की ओर सम्पूर्ण समाज का ध्यान आकर्षित करने के लिए पब्लिक स्कूलों पर सत्याग्रह के कार्यक्रम का निश्चय किया था किन्तु कई कठिनाइयों की वजह से वह पूरा नहीं हुआ। इस बार पुनः वह कार्यक्रम हो ऐसा प्रस्ताव कई मित्रों की ओर से आया। कुछ साथियों का इससे मतभेद रहा। उनका कहना था कि व्यापक तैयारी के अभाव में हमें इस कार्यक्रम को नहीं लेना चाहिए। फिर यह राजनीतिक स्टन्ट से ज्यादा कुछ नहीं बनने का। आम विद्यार्थियों को इससे कोई मतलब नहीं होता। राजनीतिक पार्टी वाले तुरन्त इसे अपना नारा बना लेंगे। कुल मिलाकर इससे बहुत निकलने वाला नहीं। किन्तु कई मित्रों का कहना रहा कि कार्यक्रम में हम कितने सफल या असफल होते हैं बात इसकी नहीं। प्रमुखता इस बात की होनी चाहिए कि हमारी मांग सही है या नहीं। हमारे काम की कसौटी पब्लिक स्कूलों का बन्द होना नहीं होगा वरन् जो एक गलत प्रणाली इस समाज में चल रही है उसकी तरफ देश का ध्यान आकर्षित करने में यदि हम जरा भी सफल होते हैं तो यही हमारी सफलता होगी। आज पब्लिक स्कूल और नगर महापालिका या जिला परिषद के स्कूलों के बीच जितनी बड़ी खाई है उसे कौन नहीं जानता ? पब्लिक स्कूलों में जिस तरह शासक वर्ग तैयार करने और आम स्कूलों में शोषित समाज बनाने की जो सोची-समझी नीति विभिन्न वर्ग के सत्ताधीशों द्वारा बराबर चलायी जा रही है। उससे हम इन्कार करते हैं। जब इस देश में सम्पूर्ण सामन्तवाद चलता था तब भी रजवाड़े के और आम जनता के बच्चे एक ही स्कूल में पढ़ते थे (कृष्ण और

→

सुदामा) फिर आपकी इस समाजवादी सरकार के अन्तर्गत ही ऐसी विषमता क्यो ?

पब्लिक स्कूलों का कार्यक्रम हो या नही इस विषय में धीरेन दा से भी सवाल किये गये। उन्होंने बड़ी बेबाक किन्तु तीखी भाषा में कहा कि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तुम सब गपोड़ हो। सामाजिक परिवर्तन की किसी भी लहर को तुम नही उठने देना चाहते। तुम जो अन्तिम आदमी के विषय में लम्बी-चौड़ी बातें करते हो वास्तव में उसके कन्धों पर बैठे हो, उसे चूस-चूसकर मौज कर रहे हो। आपके (बुद्धिजीवी मध्यमवर्ग के) कन्धों पर पूंजीपति बैठा है। आप उसे तो उतारना चाहते हैं किन्तु खुद श्रमजीवी के कन्धो से उतरना नही चाहते। पब्लिक स्कूल का कार्यक्रम शिक्षा में क्रान्ति का कार्यक्रम नही सामाजिक परिवर्तन का कार्यक्रम है। केवल इसकी माग हम शिक्षण में क्रान्ति के द्वारा कर रहे हैं और ऐसा मात्र इसलिए, क्योकि शिक्षा मे परिवर्तन की माग समाज मे उठ चुकी है जबकि सामाजिक परिवर्तन की माग की कोई सुगबुगाहट नही। अत: जिस चीज की माग हो उसी माध्यम से अपनी बात रखो। पब्लिक स्कूल ही क्यो ? इसे स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि जो सबसे लम्बी नाक है उसे सबसे पहले खीचो तो ध्यान जल्दी आकर्षित होगा। पब्लिक स्कूल स्थापित समाज की सबसे ऊंची नाक है। अत: इस पर उगली रखने मे भी यदि तुम सफल हुए तो बडा काम होगा। शिक्षा मे क्रान्ति का मतलब क्या होता है'? ...बिना सामाजिक क्रान्ति के शिक्षा मे क्रान्ति सम्भव है क्या ? यह कार्यक्रम सामाजिक परिवर्तन का कार्यक्रम है। नीतिगत रूप मे उतना ध्यान जरूर रखना कि उस स्कूल को पहले मत लेना जिस पर जनता की श्रद्धा हो। उन्होंने तो यहां तक कहा कि उस कार्यक्रम को प्रदेशिक स्तर पर भले उठाया जाये किन्तु इसे समर्थन अखिल भारतीय स्तर पर मिलना चाहिए। यह कार्यक्रम तुम सबो का सामूहिक मोर्चा होना चाहिए, भले करे उसे कोई एक प्रदेश।

शिविर मे कुल ५२ शिविरार्थी क्रमश: इटावा, इलाहाबाद, वाराणसी, जौनपुर, बलिया, गोरखपुर, गोण्डा, कानपुर, लखनऊ, उन्नाव, फर्रुखाबाद, जालौन, टिहरी गढवाल, हरदोई, शाहजहांपुर १५ जिलो तथा ६ विश्वविद्यालयो से आये थे। २८ तारीख से होने वाली लगातार बारिश ने शिविर के श्रम आदि के कार्यक्रम सुचारुरूप से चलने नही दिये। सख्या भी इसलिये कम रही। फिर भी बुलाये गये वक्ताओ मे ओमप्रकाश दीपक, बाबूराव चन्दावार, किशन पटनायक, नरेन्द्र भाई और धीरेन दादा की उपस्थिति ने शिविर को लगातार सोचने का मसाला दिया, जिससे बारिश और भोजन की दिक्कत महसूस नही हुई।

स्वानुशासन के आधार पर चलने वाले इस शिविर के सचालन मे अमरनाथ भाई, रामचन्द्र राही और विनय भाई ने अरुण भाई आदि तरुणो को आवश्यक सहयोग प्रदान किया। व्यवस्था का मुख्य भार आश्रम के व्यवस्थापक बाबा सीताराम सिंह तथा श्री गोपाल भाई ने उठाया। आर्थिक सयोजन पूर्णतया स्थानीय आधार पर आश्रम द्वारा बलरामपुर आदि पड़ोसी क्षेत्र के नागरिको के सहयोग से जुटाया गया।

—वन्दना 'भारतीय'

(पृष्ठ ६ से जारी)

अनाज के रूप में दी जाये, (6) ग्रामोद्योगो को बढाया जाय।

द वर्ग (1) गरीब वर्ग के लिए जीवन की आवश्यक सभी चीजें पर्याप्त निश्चित व सस्ते दामो मे गाव की ही दूकान से मिलनी चाहिए (2) खेत मजदूरो की रोजी बढ़ाई जाय।

प्रश्न (ख): मजदूरी या वेतन का कुछ हिस्सा अनाज के रूप मे मिले तो ?

उत्तर	विवरण	अ	ब	स	द
	तटस्थ	14	64	13	121
	अच्छा	39	107	71	143
	अच्छा नही	13	58	19	37
योग		66	229	103	304

सम्पादन : जगदीश शाह। गुजराती से अनुवाद : श्री अखिल भाई

(पृष्ठ २ का शेष)

अब इलेक्शन कमीशन बन गया है तो बहुत सारी बातें, जो गाधीजी लोकसेवक सघ से अपेक्षा करते थे, वह सब इलेक्शन कमीशन कर लेता है। फिर भी इलेक्शन मे भ्रष्टाचार वगैरह होता है, तो उसका देखना आज शक्य है। सर्व सेवा सघ ही आज 'लोक सेवक सघ' बन गया है तो और क्या-क्या करना पड़ेगा ? गाव-गाव से आपका सम्बन्ध है हो। वह थोड़ा व्यापक करना होगा। और कुछ नही करना है। लेकिन एक शब्द होता है, जिससे प्रेरणा मिलती है। 'लोक सेवक सघ' वैसा शब्द है। उस शब्द मे से 'लोक सेवक' तो हमने उठा लिया था। भारत मे आज कई लोक सेवक हैं। शान्ति सैनिक भी कई लोग हैं। इस वास्ते नबर एक मे यह बात है कि अब समय आ गया है।

नबर दो मे यह बात है कि फिर भी कुछ लोगो को समाधान नहीं होगा। वे कहेंगे जो सूझ बापू की थी वह बाबा की नही है। यह बात सत्य सत्य सत्यम् है। त्रिवार सत्यम् है। एक दफा महादेवभाई से बात हो रही थी। वे बोले बापू कभी ऐसी बात करते हैं कि सुनने पर लगता है कि यह बात इतनी सरल थी फिर भी हमारे ध्यान मे क्यों और कैसे नही आई। मैने पूछा, 'आपने क्या उत्तर निकाला ?'' तो उन्होंने कहा, एक ही उत्तर निकला, गाधीजी थे प्राग्प्रज्ञ बुद्धि वाणीया और हम हैं पाश्चात् बुद्धि बामणीया। महादेवभाजी बामणीया थे। मैंने उनसे कहा कि आपका बिलकुल ठीक उत्तर है। फिर भी आप बामणीया होकर भी गुजराती हैं। इसलिए बामणीया को भी वाणीया की संगति से थोडा हिसाब आता है। लेकिन बाबा है महाराष्ट्र का बामणीया। वह हिसाब जानता ही नही। इस वास्ते यह बामणीया 'रेज्ड टू सेकेण्ड पाउर' यानी बामणिया है। यह हालत बाबा की है। इस वास्ते इसमे कोई शक नहीं कि गाधीजी की जो अपनी सूझ थी, उसका जितना थोड़ा-सा हिस्सा बाबा की अपनी सूझ के मुताबिक समझना है, उसको अमल मे लाने की कोशिश करना है।

सत्याग्रह की लड़ाई उच्च ढंग से ही चलानी चाहिए

—काका कालेलकर

आश्चर्य की बात है कि जिस जमाने में शिक्षा का प्रचार इतना जोरों से और व्यापक हो रहा है, ज्ञान और चिंतन का प्रचार उसी प्रमाण में कम होता जा रहा है। हमारे राष्ट्रीय जीवन में जो विचार अत्यंत मौलिक और सर्वव्यापी हैं, उन्हीं के अर्थ का अनर्थ सामान्य संभाषणों में और व्याख्यानों में सार्वत्रिक होता दीख पड़ता है।

महात्मा गांधी ने भारतीय संस्कृति को ऊपर उठाने वाला एक नया प्रयोग प्रथम दक्षिण अफ्रीका में और बाद में भारत में करके दिखाया और उसे जनता व्यापी राष्ट्रीय स्वरूप भी वे दे सके। उस महान प्रवृत्ति के साथ उन्होंने हमारी और दुनिया की भाषा को एक अर्थ-समृद्ध तेजस्वी शब्द भी दे दिया, 'सत्याग्रह'।

आज देश के सामान्य लोग क्या, बड़े बड़े नेता लोग भी सत्याग्रह शब्द का दिन-रात दुरुपयोग कर रहे हैं, मानो सत्याग्रह मान मनवाने का एक मामूली तरीका।

और जो लोग उस शब्द का सच्चा अर्थ थोड़ा कुछ जानते हैं वे तनिक भी चिंतन किये बिना उसका मजाक उड़ाते दीख पड़ते हैं।

यह तो हुई इस युग के एक नये प्राणदायी शब्द की हालत। लेकिन अहिंसा, शब्द तो, हमारी भारतीय संस्कृति के जितना ही, पुराना और सर्वव्यापी है। सत्य और अहिंसा, संयम और सेवा, त्याग और वैराग्य, साधना और सिद्धि ऐसे शब्द हमारे भारतीय साहित्य में वेदकाल से पाये जाते हैं और भारत की सभी भाषाओं में इनका प्रचलन है।

इन शब्दों में अहिंसा शब्द को शायद सबसे अधिक काम में लाया जाता है। और अहिंसा का पुरस्कार जितना वैदिक ऋषियों ने किया, उतना ही वेदान्त आदि दर्शनोंने भी किया है। सनातनियों के सर्वमान्य ग्रन्थ रामायण, महाभारत, भागवत और भगवद्गीता जैसे ग्रन्थों में अहिंसा की जितनी चर्चा है इतनी किसी और शब्द की नहीं होगी।

और सनातनी संस्कृति में अत्यन्त आवश्यक सुधार करने वाले दो सुधारक धर्मोंने, बौद्ध और जैन धर्मोंने अहिंसा की प्रतिष्ठा सर्वोपरि मान ली। आज यह शब्द निर्माल्य-सा हो गया है। कई लोग इसका एक ही संकुचित अर्थ करते हैं कि मांस नहीं खाना। 'शाकाहार और दुग्धाहार से संतोष मानना' इतना ही अहिंसा का प्रचार कर लोगों ने है। और दूसरे लोग कहते हैं 'लड़ना-झगड़ना टाल देना, मारकाट से बच जाना और जहां अन्याय या विरोध दीख पड़े, अहिंसा का नाम लेकर झगड़ा टाल कर शरण जाना यही अहिंसा का अर्थ है।'

'अहिंसा का ऐसा अर्थ करके उस नीति की निंदा करना और लोगोंको झगड़े के लिये तैयार करना यही एक बड़ी समाज-सेवा मानी जाती है।

जिस भारतीय-संस्कृति ने क्षत्रिय धर्म को जन्म दिया, युद्ध करने के संस्कृति-मान्य नियम बनाये और भारतीय युद्ध के जैसे महायुद्ध पर महाकाव्य लिखे ऐसे देश के आज के बड़े नेता क्षात्रधर्म का नाम लेकर जब आपस में मारकाट करते हैं और उसका समर्थन करते हैं तब दुःख से कहना पड़ता है कि 'संस्कृति का आदर्श तो बाजू पर रहा, सामान्य तौर पर सफलतापूर्वक मारकाट

काका साहब कालेलकर

करने के सर्वमान्य नियम भी ऐसे लोगों को मान्य नहीं हैं।' हमारे यहां हिंसा और अहिंसा दोनों का गहरा चिंतन हुआ था। हिंसा का प्रचार करने वाले भी अपना उत्तरदायित्व जानते थे। और युद्ध चलाकर, उस में प्रत्यक्ष हिस्सा लेकर, जिन लोगोंने विजय पायी थी ऐसे-ऐसे लोगोंने ही जब अहिंसा का प्रचार चलाया था तब हिंसा-अहिंसा का जो अर्थ होता था उसे आज के लोग जानते तो नहीं, लेकिन समझने की तैयारी भी नहीं बताते।

ऐसे जमाने का अहिंसा क्या चीज है और सत्याग्रह के द्वारा गांधीजी ने मानवी-संस्कृति को कौन सी बड़ी देन दी है, इसका थोड़ा सूचन करना शायद लाभदायी होगा।

कौटुम्बिक जीवन हो या सामाजिक आन्तर्राष्ट्रीय हो, संघर्ष के प्रसंग आते ही हैं। कौरव-पांडवों के महायुद्ध के जैसा आन्तर्राष्ट्रीय युद्ध हो, उसमें सफलता पाने के लिये और संस्कृतिनाश टालने के लिये कई नियमों का और संयम का पालन करना ही पड़ता है। उस की चर्चा इस वक्त हम छोड़ दें और सत्याग्रह शब्द का अर्थ ही प्रथम स्पष्ट कर दें। जहां जीवन है वहां मतभेद, दृष्टिभेद और लाभ-हानि के संघर्ष रहेंगे ही। ऐसे समय पर परस्पर विरोधी दल के नेता मानते हैं कि जहां गलत फहमी के कारण विरोध खड़ा होने की संभावना हो, वहां परस्पर विचार-विनिमय करके अपनी-अपनी बाजू समझाकर न्याय और सर्वहित क्या है यह एक दूसरे को समझाना जरूरी होता है। इस के लिये साथ बैठकर चर्चा और विचार-विनिमय किया जाता है।

थोड़ी चर्चा के बाद अनुभव होता है कि दोनों पक्षों में कुछ सत्य, कुछ अधिकार और कुछ न्याय होता ही है। तब ईमानदार लोग, अपनी-अपनी बात थोड़ी कुछ छोड़कर विरोधी की दृष्टि का जितना सत्य हो स्वीकार कर लेते हैं और उभय-हितकारी ऐसा बीच का रास्ता निकालते हैं। इस के

लिये शब्द है समन्वयकारी रास्ता। जिसके लिये अंग्रेजी शब्द है सिन्थेसिस Synthesis

ऐसा सिन्थेसिस मिल जाना बड़े सौभाग्य की बात है। दोनों पक्ष जब समझदार और न्यायी होते हैं तब समन्वय पर आ जाना बहुत बार आसान होता है। और समन्वय उभयमान्य होने से उसका अमल भी तुरन्त प्रसन्नता से हो जाता है।

लेकिन कभी-कभी समन्वय न मिला तो भी दोनों पक्ष किसी समझौते के लिये तैयार हो जाते हैं। क्योंकि समझौता न किया तो जो झगड़ा चलेगा उसमें दोनों पक्षों की असह्य हानि होने वाली है।

ऐसे समझौते में जो पक्ष कमजोर है, वह अपनी कमजोरी समझ कर अपने हक की बातें भी छोड़ देने को तैयार होता है। कभी-कभी एक पक्ष झगड़ा और उससे होने वाली हत्या और नाश को टालने के लिये उदार होकर अपना स्वार्थ छोड़ देने को तैयार होता है और अन्यायी समझौता भी कभी-कभी मंजूर करता है।

ऐसे समझौते दुनिया में हमेशा चलते आये हैं। क्योंकि झगड़ा अथवा युद्ध चलाने से दोनों पक्षों को बेहद नुकसान सहन करना पड़ता है। अपनी बात न्याय की हो तो भी डर के मारे अथवा उदारता के कारण लोग समझौते पर आने के लिये तैयार हो जाते हैं। समझौते की बात अलग है। मानवी जीवन में उसको अवश्य स्थान है। लेकिन 'समन्वय' चीज ही अलग है।

दो पक्षों को साथ रहना पड़ा, सहयोग करना पड़ा और दोनों में चंद बातों में मतभेद हुआ। जीवन के आदर्श भी भिन्न रहे। तब क्या किया जाय?

दोनों अगर सत्य के उपासक हैं, समाज सेवा की दीर्घदृष्टि दोनों में है तो सत्य का जो अंश दूसरे पक्षों में दीख पड़ेगा, उसका प्रसन्नता से (या परिस्थिति के कारण) स्वीकार करेंगे। और उसमें से जो उत्तम समन्वय निकालेंगे वह दोनों के लिये परम सत्य होगा। क्योंकि सत्य भी जीवन के लिये ही है। जीवन की शुद्धि, जीवन की कार्य-शक्ति और उसकी समृद्धि प्राप्त करने के लिये ही हम सत्य की उपासना करते हैं। ऐसी हालत में दो सत्यों में से जो समन्वय निकलेगा वही जीवन के लिये परम हितकारी होगा।

महात्मा गांधी सत्य के उपासक थे। सत्य से बढ़कर उनके सामने कोई चीज थी नहीं। 'सत्य ही ईश्वर है' यह था उनका सिद्धान्त।

सत्य की उपासना करते गांधीजी को अनुभव हुआ कि हिंसा के द्वारा मनुष्य अपने पक्ष की विजय प्राप्त कर सकता है, लेकिन सत्य को नहीं। परम हितकारी सत्य प्राप्त करने के लिये लड़ना पड़े तो लड़ने की गांधीजी की पूरी तैयारी शुरू से आखिर तक थी। लेकिन उन्होंने देख लिया कि हिंसा द्वारा सत्य की विजय हो नहीं सकती। तब जाकर उन्होंने सत्य की मदद में अहिंसा को ले लिया और तुरन्त अनुभव किया कि सत्य की सफलता के लिये जब लड़ना अपरिहार्य होगा तब ऐसी लड़ाई उच्च ढंग से ही चलानी चाहिये।

यहां पर गांधीजी का चिंतन खास ध्यानपूर्वक समझना चाहिये।

अगर मेरा सत्य मेरा विरोधी आदमी नहीं मानता है तो उसे धमकाकर या मारपीट-कर उससे मनवाऊं और वह आदमी मान जाय तो अपने शरीर को बचाने के लिये, शारीरिक दुःख से बचने के लिये, या दूसरे-दूसरे लाभ पाने के लिये, अथवा संकट टालने के लिए, वह मान जायेगा। यानी वह मेरे विचार की सत्यता, श्रेष्ठता और परम उपयोगिता का स्वीकार करके नहीं, किंतु केवल हीन वृत्ति से अपने शरीर को बचाने के लिये, नुकसान टालने के लिये वह मान जायेगा। इसमें उस आदमी की कायरता याने हीनवृत्ति की विजय सिद्ध होगी। और न उसका सत्य सिद्ध होगा, न मेरे सत्य का उसके मन पर प्रभाव पड़ेगा। हिंसात्मक लड़ाई-झगड़े के अन्त में विरोधी की हीनवृत्ति की विजय होती है और मेरा सत्य अपमानित होता है। शत्रु को मैंने मार डाला तो वह मेरी भौतिक शक्ति की विजय हुई, मेरी कठोरता और क्रूरता की विजय हुई। मेरे विरोधी ने मेरी क्रूरता और कठोरता के सामने शरण न जाते हुए मरण को पसंद किया, इसमें तो उसी की विजय हुई। मेरा समाधान इतना ही रहेगा कि मेरा विरोधी अपने विरोध को जिंदा रखकर स्वयं इस लोक से चला गया इस वास्ते उसके विरोध की मैं उपेक्षा कर सकता हूं और अपनी बात को अमल में ला सकता हूं। (दुनिया के लोगों को इतने से संतोष होता है लेकिन सत्य के उपासकों को नहीं होगा।)

सत्य का सच्चा उपासक कहेगा, मैं अपने सत्य को नहीं छोड़ूंगा, उसके आग्रह पर कायम रहूंगा। वैसा करते अगर मेरे विरोधी ने जोर किया, मुझे कष्ट दिया, जेल में डाला तो वह मैं सारा सहन करूंगा। उस कष्ट के सामने शरण जाने जितना शरीर धर्मी मैं नहीं हूं। मैं कष्ट सहन कर के अपने सत्य पर के विश्वास की दृढ़ता साबित करूंगा और उस तपस्या के फलस्वरूप मेरे विरोधी की नैतिकता जाग्रत होगी। मेरे आग्रह का महत्व वह समझेगा और अन्त में मेरी बात को मान जायेगा।

मेरे सत्य के समर्थन में मैं अपनी तपस्या खड़ी कर दूंगा। इस तरह अपने विरोधी की न्यायबुद्धि जाग्रत करूंगा। फिर वह अपनी जिद छोड़कर मेरी बाजू समझने जितना तटस्थ और उदार बनेगा। सहन करूंगा मैं और विरोधी को सज्जन बना दूंगा। यह है उत्तम नैतिक लड़ाई का तरीका। तपस्या देखकर मेरा विरोधी अपनी कुल-लालसा छोड़ देगा, अपनी लोभी वृत्ति से शरमायेगा और मेरी बात मानने में ही अपनी भलाई है, इतना मान्य करेगा।

हिंसा द्वारा होने वाली विजय में यह लाभ नहीं है। गांधीजी के सत्याग्रह के अन्त में दोनों पक्ष आदर के साथ एक-दूसरे के नजदीक आते हैं और दोस्त बनने की संभावना पैदा होती है। दुनिया में तो कल्याण की वृद्धि होती ही है। मेरी तेजस्विता और शत्रु की उदारता दोनों की वृद्धि के कारण समस्त मानवता उन्नत होती है। यह है गांधीजी का सत्याग्रह। यह व्यवहार्य है, इसको आजमाना (योग्य नेतृत्व रहा तो) करोड़ों के लिये भी शक्य है। इसके पूरे ऐतिहासिक सबूत देकर ही गांधीजी चले गये।

ऐसे सत्याग्रह की हांसी करना, उपेक्षा करना अयोग्य है। समन्वय और सत्याग्रह यही मानव जाति के पास उत्तमोत्तम और नित्य सफल साधनाएं हैं।

सरकार मात्र दूर करने की कोई सामूहिक साधना प्रक्रिया तलाशें ?

३: अक्टूबर '७३ के अंक में बिना टिप्पणी के स्तम्भ के अंतर्गत श्री जगनराम साहनी ने जिस मुद्दे को उठाया है, वह शायद आजकल सर्वोदय-जगत में सबसे अधिक चर्चा का विषय बना हुआ है। मेरा सुझाव है कि इस पर 'भूदान-यज्ञ' को एक परिचर्चा चलानी चाहिए।

श्री साहनी जी ने राजनीति में निरंकुश अनैतिकता का बोलबाला हो जाने और रचनात्मक कार्यों के सरकारार्य बन जाने की जिम्मेदारी 'राजनीति के दिन लद गये' वाली सर्वोदयी-मनोवृत्ति पर डाली है। अब यह जिम्मेदारी इतनी बड़ी है कि एक सर्वोदय-कार्यकर्ता के नाते मुझे तो इसे अपने ऊपर लेने में बहुत संकोच हो रहा है और साथ ही ऐसा लगता है कि क्या यह सोचना एक अहंकार का ही द्योतक नहीं होगा कि अगर हम राजनीति निरपेक्ष नहीं हुए होते तो आज देश की यह दुर्दशा न होती ? सर्वोदय के जिन व्यापक मूल्यों की भी साहनी ने प्रश्न में चर्चा की है क्या उसमें दिखायी देने वाले इस देश के महान् नेता भी राजनीति निरपेक्ष ही रहे हैं ? वे तो राजनीति सापेक्ष ही रहे हैं न ? क्या वे गांधी विचार के अनुयायी और जिम्मेदार व्यक्ति नहीं रहे हैं ? वे तो जन-नेता रहे हैं ! क्या उनके अनुभवों पर से भी हमें कुछ सीखने की जरूरत नहीं है ? ले-देकर एक जयप्रकाशजी ने विनोबा और भूदान-आन्दोलन के कारण साहनी जी कथित राजनीतिक निरपेक्षता स्वीकारी थी और उन्होंने तब से अब तक इस सन्दर्भ में देश के सामने बराबर स्पष्टीकरण भी पेश किया है। क्या राजनीति के सन्दर्भ में सही सर्वोदयी दृष्टिकोण को, जिसे जयप्रकाशजी ने प्रस्तुत किया है, मात्र 'राजनीति-निरपेक्षता' कह देना न्याय-संगत है ? मेरी विनम्र सलाह है कि सर्वोदय की राजनीति के संदर्भ में क्या दृष्टि है, इसे पूरी तरह समझने के लिए जयप्रकाश नारायण की नवीनतम पुस्तक 'मेरी विचार यात्रा' पढ़ें।

हां, सही सर्वोदयी राजनीतिक दृष्टिकोण के संदर्भ में शिकायत अगर हो सकती है तो यह कि आन्दोलन अब तक अपनी घोषित लोकनीति की (राजनीति की वैकल्पिक) शक्ति पैदा करने में असफल रहा है। इसकी चर्चा हो सकती है, कार्य की व्यूहरचना में संशोधन हो सकता है, लेकिन उसकी दिशा ग्रामस्वराज्य की ही हो सकती है, होनी चाहिए।

ग्रामस्वराज्य की दिशा संकुचित या सीमित है, यह मानना और कहना या तो इसकी समग्रता के दर्शन का अभाव प्रकट करता है या इसकी सम्भावना के प्रति अनास्था। भारत तो क्या सारी दुनिया की—क्या दक्षिणपंथी और क्या वामपंथी—राजनीति आज जिस बिन्दु पर पहुंची है, उससे आगे की तलाश हर जगह तेजी के साथ हो रही है। क्या उस तलाश में ग्रामस्वराज्य की विकेन्द्रित राजनीति (जिसे हम किसी विशेष संदर्भ को प्रस्तुत करने के लिए लोकनीति कहते हैं) के तत्व नजर आ रहे हैं ? मुझे लगता है कि दुनिया के चिन्तकों का ध्यान जिन बिन्दुओं पर आज की राजनीति के सन्दर्भ में केन्द्रित हो रहा है, उनमें ग्रामस्वराज्य की लोकनीति भी एक महत्वपूर्ण बिन्दु है। इसलिए इसे सीमित दायरा न प्रदान किया जाय तो ही अच्छा।

एक कठिनाई जरूर है। अगर हम मौजूदा राजनीतिक ढांचे को ही आधार मानकर ग्रामस्वराज्य को परखने चलेंगे, तो शायद इस आन्दोलन के साथ न्याय नहीं कर पायेंगे। मौजूदा ढांचे तो अपने अंतर्विरोधों के कारण भारत में ही नहीं, सारी दुनिया में चरमराने से लगे हैं। और ऐसा हो रहा है इतिहास के एक विकासक्रम में। इसलिए अब तो इसके संरक्षण के लिए ग्रामस्वराज्य की ओर नहीं देखना चाहिए, बल्कि इससे मुक्ति के लिए इसमें सक्रिय होना चाहिए।

रामचन्द्र राही

वाराणसी (उ० प्र०)

रोम में करीब दो सप्ताह ठहरा। यहां पोपपाल से पुन: भेंट हुई। इस बार की भेंट कुछ लम्बी तथा रचनात्मक हुई। मेरी पहली बार की भेंट की उनको स्मृति थी। मैंने पुन: उनको निवेदन किया कि यह अभी उचित समय है कि उन्हें अपने नैतिक दबाव का इस्तेमाल विश्व में शांति स्थापना के लिए करना चाहिए। अभी यह उचित समय है, जब वे बेलफास्ट, पेलेस्टाइन, दक्षिण वियतनाम, पुर्तगाल, रोडेशिया आदि का दौरा करें। मैंने उनको स्मरण कराया कि दक्षिण वियतनाम और पुर्तगाल में कैथोलिक सरकारें हैं। दक्षिण वियतनाम में वहां की सरकार उन हजारों-लाखों बौद्ध राजनैतिक कैदियों को खत्म कर रही हैं जो वास्तव में हिंसक नहीं हैं बल्कि जनतांत्रिक शासन की स्थापना वहां चाहते हैं। वहां के राष्ट्रपति को आपने रिसीव किया है। इसी प्रकार से दक्षिण अफ्रीका और ब्राजील आदि का जिक्र उनसे हुआ। उन्होंने कहा कि अभी बाहर जाने की स्थिति में तो वे नहीं हैं, लेकिन वे आज की इन घटनाओं से बहुत चिन्तित हैं।

मैंने उनसे कहा कि यदि वे अभी जाने की स्थिति में नहीं हैं तो एक सप्ताह या दस दिन का उपवास वे क्रिसमिस पर विशेषकर अमुक अशांत क्षेत्रों के लिए करें तथा सब चर्चों तथा विभिन्न धर्म के मठों, मस्जिदों, मंदिरों और विश्व के शांतिप्रिय लोगों को अपील करें कि वे उस समय उपवास उनके साथ रखें। सब धर्मों के मुखियाओं को लेकर एक कान्फ्रेंस का आयोजन करें, सब साथ बैठें, विचार करें और विश्वशांति के लिए सामूहिक रूप से प्रार्थना करें। संयुक्तराष्ट्र संघ के अन्तर्गत एक स्थायी शांति सेना के गठन के लिए संयुक्त राष्ट्र को संदेश दें। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय स्थायी शान्ति सेना की स्थापना का यह विचार समयानुकूल है और इसकी शुरुआत हो सके तो ठीक है। लेकिन यह काम बहुत कठिन है। इसके अलावा निशस्त्रीकरण आदि विषयों पर भी उनमें चर्चाएं हुईं।

रामसहाय पुरोहित

(यूरोप प्रवास से)

'आपके टुकड़े पड़ सकते हैं, वे न पड़ें यह देखना है'

प्रश्न —क्या आप हमें सत्याग्रह के लिए इजाजत देंगे ?

विनोबाजी . मैंने एक बात कह दी है कि आप सर्व सेवा संघ वाले २००-३०० लोग जो होंगे वे सब इकट्ठा बैठ कर सर्वसम्मति से जो तय करेंगे, उसे बाबा की सम्मति है। अगर आप सर्वसम्मति से यह तय करेंगे कि शान्ति सेना से काम नहीं चलेगा, हाथ में पिस्तौल लेना होगा, तो सर्व सेवा संघ के ३०० लोगों ने अविरोध से यह तय किया तो बाबा उसे आनन्दपूर्वक सम्मति देगा और कहेगा कि भगवत् गीता का नाम लो। मारते समय मन में वैर नहीं रखना। निर्वैर भाव से काम करो ताकि उसके हृदय में आपका विचार भी बैठ जाये। गीता को याद करो। यह मैं कहूंगा और पिस्तौल रखने की सम्मति दूंगा। एक बार स्त्रियों ने मुझे पूछा था कि स्त्रियों पर आक्रमण होता है तो क्या हम पिस्तौल रख सकते हैं ? मैंने कहा, जो स्त्री अत्यन्त पवित्र होती है उस पर कोई आक्रमण नहीं हो सकता है। जैसे सीता अत्यन्त पवित्र थी तो रावण कुछ नहीं कर सका। परन्तु वह शक्ति हर एक की नहीं हो सकती है। इसलिए मैंने स्त्रियों से कह दिया कि कोई अत्याचार करने आये तो उसे मारो। लेकिन इस कुशलता से मारो कि वह जख्मी होकर गिर पड़े, मरे नहीं। फिर भी वह मर गया तो उसे स्वर्गदान मिलेगा। तो इस तरह मैं सम्मति दे चुका हूं। इसलिए आप सब लोग मिलकर पिस्तौल से मारने की बात तय करें तो भी बाबा प्रेमपूर्वक सम्मति देगा।

प्रश्न . आप कहते हैं कि गांव की एकता न टूटे इस तरह से काम करो। लेकिन आज गांव में दबाव है, शोषण है, तो एकता कैसे रहेगी ? क्या सत्याग्रह की प्रक्रिया से समाज के अन्दर पैठे शोषण, विषमता, विरोध आदि को दूर कर सकते हैं ?

विनोबाजी : मैं आपको मार्गदर्शन दे चुका। मैंने यहां तक कहा कि आप सब लोग मिलकर यह तय करेंगे कि आज की परिस्थिति में शान्ति सेना के बदले पिस्तौल रखना ठीक है तो उसके लिए भी बाबा की सम्मति है। बशर्ते, जो भी करना हो सर्वसम्मति से करो। नहीं तो तुम्हारे अपने टुकड़े पड़ जायेंगे। गांव के टुकड़े न हों, यह तो आगे की बात है। आपके टुकड़े पड़ सकते हैं वे न पड़ें यह देखना है। आप सत्याग्रह कर सकते हैं, जो भी करना हो, फेस टू फेस बैठकर सर्वसम्मति से तय करो तो बाबा की पूर्ण अनुमति है। बाबा ने ऐसा सत्याग्रह क्यों नहीं किया ? उसके कारण बाबा के अपने हैं। बाबा ज्यादा पला है, धर्मविद्या के विचार में। शंकराचार्य का बाबा पर सबसे ज्यादा असर है। उनको पूछा गया था कि लोगों को आप अपनी बात समझायेंगे और वे नहीं समझेंगे तो आप क्या करेंगे ? कहा, दुबारा समझाऊंगा। फिर पूछा, दुबारा समझाने से नहीं समझेंगे तो क्या करेंगे ? उन्होंने कहा, तीबारा समझाऊंगा, जबतक वह नहीं समझेगा तब तब समझाता रहूंगा। या जबतक मुझमें समझाने की शक्ति है तबतक समझाता रहूंगा। 'समझाना' एक मात्र शक्ति है। शास्त्र ज्ञापक, न तु कारकम्। जनाता है, कराता नहीं। हाथ पकड़कर सुरक्षित ले जाना एक पद्धति है। और दूसरी पद्धति है कि सामने पुल टूटा हो तो साइन पोस्ट बतलाता है कि पुल टूटा है, आगे मत जाना। फिर लोग उधर जायेंगे या उनकी मर्जी की बात है। यह शंकराचार्य का मार्ग है। यह बाबा का मार्ग है। लोग पूछते हैं कि फलानी समस्या है तो बाबा आप क्या करेंगे ? मैं कहूंगा तो अभी मैं जो करता हूं वही करूंगा। अभी मैं क्या करता हूं ? समझाता हूं, वैसे हाथ में डंडा रखा है वह पीटने के लिए नहीं। मुनशीदास जी की आज्ञा से रखा है। तुलसीदासजी की आज्ञा है दण्ड जतीन्ह कर। राम राज्य में यति के, सन्यासी के हाथ में दंड था। राजा के हाथ में दण्ड नहीं था। बाबा चलता है, लड़खड़ाता है तो डंडा मदद करता है। ब्राम्हणस्य मुखमासीन—ब्राम्हण के दो काम हैं। मैं ब्राम्हण यानी मुख, उसके दो काम, खाना और बोलना। ये दो काम बाबा करता है। फिर अगर परमात्मा की प्रेरणा हो जाये कि बाबा अब तू बहुत थक गया है इसलिए अब तुम अन्तिम उपवास कर लो, तो वह होगा। बाबा के मन में कुछ न कुछ उस दिशा में चलता रहता है। अभी निर्णय नहीं हुआ है। बजाय इसके कि रोगी होकर परमात्मा के पास पहुंचे, अन्तिम उपवास करके उसके पास पहुंचना अच्छा है। तात्पर्य यह है कि समझाने के अलावा न और कोई काम करता है न उसने कभी किया है और न वह कभी करेगा। बाबा तो यही काम करेगा। बाकी सब काम करने के लिए इजाजत है।

प्रश्न उस दिन कृपलानी जी ने सेवाग्राम के सम्मेलन में कहा है कि गांधीजी सोशल नान वायलेन्स मानते थे। इसलिये उन्होंने सोशल अन्याय के प्रतिकार के लिये सत्याग्रह चलाया। लेकिन विनोबाजी सोशल नान वायलेन्स नहीं मानते हैं। सिर्फ इनडिविड्यूवल नान वायलेन्स उनको मान्य है। उनकी नीति—'रेजिस्ट नाट इवील।' क्योंकि आपने कहा कि जिस के खिलाफ सत्याग्रह करना है उस पर सत्याग्रह करने वाले को प्रेम होना चाहिये और उस का भी सत्याग्रह करने वाले पर प्रेम होना चाहिए। जहां ऐसा पारस्परिक का सपर्क है वहां ही सत्याग्रह चलने लायक है। लेकिन मुझे लगता है कि आपने उपवास के सम्बन्ध में यह बात कही थी, सामान्य सत्याग्रह के बारे में नहीं। आप भी सोशल नान वायलेन्स मानते हैं। लेकिन अब उसका योग्य क्षेत्र कौन सा होना चाहिये, यह विचार्य है। आप तमिलनाडु में मन्दिरों की जमीन के बारे में सत्याग्रह का समर्थन करते हैं। राजस्थान में शराबबन्दी के बारे में जो सत्याग्रह चल रहा है वह आपको ना-मंजूर नहीं है। लेकिन आप मानते हैं कि एक साधो सब सधे। ग्रामस्वराज्य की स्थापना होने पर सभी समस्याओं का हल होने वाला है। इस लिये अब सब शक्ति उस पर लगनी चाहिये, उस पर जोर देना चाहिये। यानी कुछ हद तक प्रोआरिटी (Priority) का प्रश्न है। कृपया इस विषय पर प्रकाश डालें, ताकि

इस विषय में कोई अस्पष्ट धारणा नहीं रहे।

विनोबाजी : मैंने जो बात कही थी उपवास-सत्याग्रह के बारे में, सामान्य सत्याग्रह के बारे में नहीं कही थी, आपकी बात सही है कि सोशल और व्यक्तिगत अहिंसा इस प्रकार का फर्क बाबा के मन में नहीं है। यह फर्क काल्पनिक है। एक मनुष्य में जो आत्मा रहती है वही सारे समाज में रहती है। इसलिए आत्मतत्त्व समान है। पर किसी चीज के एक्सपेरीमेन्ट-लेबोरेटरी में होते हैं। वे सफल हो गये तो फिर अप्लाय (Apply) किये जाते हैं। इसी तरह व्यक्तिगत क्षेत्र में प्रथम प्रयोग करने पड़ते हैं। वे सफल हों तो

वे सफल सत्याग्रह नहीं मानते थे। इसकी एक मिसाल दूंगा। उन्होंने सत्याग्रह शुरू किया था बाबा साहेब आंबेडकर के सामने इलेक्शन के मामले में। उस सत्याग्रह की बात सुनकर रवीन्द्र नाथ बंगाल से पूना दौड़े आये। अन्त में मेल-मिलाप हुआ। बापू ने और अंबेडकर ने जो विचार मान्य किये उन्होंने भी मान्य किया। लेकिन बंगाल वापस जाने के बाद उन्होंने लिखा, 'गांधीजी के मर जाने का मुझे डर लगा था, इसलिए मैंने अपने मन का, विचार को छोड़ा। लेकिन मैं मानता हूं कि वह जो समझौता हुआ, उसका बंगाल पर गलत असर होगा।' समझने की बात है कि रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे महापुरुष पर भी जिसका दबाव पड़ सकता है—वह वास्तविक सत्याग्रह है

भाई से पूछा कि "यह नाम क्यों रखा?" तो उसने कहा कि "तुकाराम बीडी नाम इसलिये रखा कि बीडी पीने वाले जरा संयम से पीयेंगे।" जहां तुकाराम के नाम से बीडी चलती है, वहां सर्वोदय के नाम से और कुछ चले तो हर्ज नहीं। सबको अधिकार है, उस शब्द को इस्तेमाल करने का।

प्रश्न बाबा, सर्वोदय वाले सब कहते हैं कि *बाबा ने कहा विचार-प्रचार करो,* इसलिये हमारा काम विचार-प्रचार ही है। लोग समझते हैं कि ये सर्वोदय वाले वाक्‌शूर हैं कार्यशूर नहीं। देश में आचार-प्रचार की ही जरूरत है। आप सर्वोदय वालों से क्यों नहीं कहते कम से कम अब से आचार-प्रचार करो, यानी काम ज्यादा करो बात कम करो? सर्वोदय वाले केवल विचार-प्रचार करते हैं। वे वाक्‌शूर हैं, कृतिशूर

फिर व्यापक क्षेत्र में लागू किये जाते है। एक होता है पीयोर साइन्स और एक होता है अप्लाइड साइन्स, पीयोर साइन्स के प्रयोग लेबोरेटरी में सिद्ध हुये हैं तो फिर समाज में अपनाई किये जाते है। इसलिये लेबोरेटरी में प्रयोग होना अत्यन्त आवश्यक है।

आपको सोचने की बात है कि गांधीजी ने आखिर में क्या कहा था? प्यारेलाल जी के ग्रन्थ में पढ़िये, उन्होंने कहा था, स्वराज्य-प्राप्ति के काम में भगवान को मेरा उपयोग कर लेना था इसलिए भगवान ने मेरी आंख पर पट्टी बांध दी। इसलिए मैं देख नहीं सका कि हमारे सत्याग्रह वीक लोगों के थे। सत्याग्रह आफ द वीक थे, स्ट्रांग (strong) के नहीं थे। वह तो पैसिव रेसिसटेन्स का ही प्रकार था। ये वास्तव में सत्याग्रह नहीं थे। उनके जितने सत्याग्रह हुए उसे

नहीं। सामान्य मनुष्य पर दबाव पड़े तो दूसरी बात है। प्रभाव एक चीज है, दबाव दूसरी चीज है। सत्याग्रह का प्रभाव पड़ना चाहिये, दबाव नहीं पड़ना चाहिये। लेकिन उसमें दबाव पड़ा और रवीन्द्रनाथ जैसे महापुरुष के चित्त पर पड़ा। यह एक मिसाल मैंने दी, लेकिन ऐसी अनेक हैं। कुल मिलाकर अन्त में बापू को यह अनुभव आया कि वह सारा पैसिव रेसिसटेन्स था, सत्याग्रह नहीं था। उनके अनुभव का लाभ हमें लेना चाहिये। उस अनुभव के आधार पर हमें विचार करना चाहिये।

प्रश्न : सर्वोदय शब्द का बहुत गलत उपयोग भी किया जाता है, इसे कैसे रोकें?

विनोबाजी : महाराष्ट्र में एक शब्द चलता है, "तुकाराम बीडी"। तुकाराम एक महान संत थे, उनके नाम से बीडी चलती है। कौन रोकता है उसे? मैंने उस

नहीं। कोई कृति का कार्यक्रम उठाना चाहिये।

विनोबाजी सर्वोदय वाले विचार-प्रचार करते हैं, इस काम में उनको पचास मील घूमना पड़ता है। यह बड़ा भारी आचार है। निरन्तर घूमना क्या कम आचार है? शंकराचार्य सोलह साल घूमे। केरल के थे और कश्मीर तक गये। कश्मीर में हम गये थे तो देखा वहां पर एक शंकराचार्य टीला है। शंकराचार्य यहां आये थे, इसका स्मरण वहां के मुसलमान भी रखते हैं। इतना सारा विचार-प्रचार उन्होंने किया, क्या यह आचार नहीं है? उसमें 'चर' धातु है। घर-घर जाना, घूमना, यह आचार ही है। नहीं तो घर में बकवास करना दूसरी बात है। जो घूमते हैं और बोलते हैं उसके अनुसार उन्हें आचरण करना पड़ेगा। नहीं तो चलेगा नहीं। लोग जागृत हुए हैं वे तुरन्त पूछेंगे कि आपका आचरण क्या है? ✶

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर,

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली, सोमवार, ५ नवम्बर, '७२

मुगावली (म० प्र०) में बागियों के लिये बन रही खुली जेल का बाहर से दृश्य। विशेष लेख पृष्ठ २ पर

भूदान-यज्ञ

५ नवम्बर, '७३

वर्ष २० अंक ६

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

आत्म-समर्पित बागी बन्दियों के लिए मध्यप्रदेश के गुना जिले में मुंगावली में जो खुली जेल नेहरू जयन्ती पर खोली जा रही है वह कोई साधारण खुली जेल नहीं है। देश के ग्यारह राज्यों में जो अठारह खुली जेलें इस समय चल रही हैं उनमें अधिकांश रूप से ऐसे बन्दी रखे गये हैं जिन्होंने अपराध किये, फिर पुलिस द्वारा पकड़े गये, अदालत ने उन्हें सजाएं दीं और वे अपनी सजाओं की काफी बड़ी अवधि बन्द जेलों में काट कर अपने अच्छे व्यवहार के कारण खुली जेल में भेजे जाने के योग्य पाये गये। ये सभी ग्यारह राज्य खुली जेलों में बन्दियों के सुधार और कार्य से सन्तुष्ट हैं और मोटे तौर पर यह माना जा सकता है कि खुली जेलों का सिर्फ बीस साल पहले शुरू किया गया प्रयोग अपराधियों को समाज में पुनर्प्रतिष्ठित करने में सफल हुआ है।

मुंगावली की खुली जेल में १४ नवम्बर को जो बन्दी भेजे जायेंगे वे अपराधियों की साधारण श्रेणी में नहीं आते। वे चम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड के नामी-गिरामी डाकू और डाकू दलों के सरदार थे। सरकारों ने उनके सिरों पर लाखों रुपयों के इनाम घोषित किये थे। उन्हें पकड़ने अथवा उनकी गतिविधियों को नियन्त्रित करने के लिए मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और राजस्थान की सरकारों ने हजारों सशस्त्र पुलिस वाले तैनात कर रखे थे और कुल मिला कर करोड़ों रुपयों का खर्च करना पड़ता था। चम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड के जंगल इन डाकू दलों के कारण आतंकित थे और वहां का जीवन अस्त-व्यस्त था। इन क्षेत्रों का समाज स्वयं डाकू दल और पुलिस वाले एक सदियों पुराने दुश्चक्र में फंसे हुए थे। विधि और व्यवस्था की परम्परागत कार्यवाहियां इस दुश्चक्र को तोड़ने में नाकामयाब थीं।

मुंगावली की खुली जेल में आ रहे इन सौ बन्दियों ने अपने अन्य चार सौ साथियों के साथ डेढ़ साल पहले फैसला किया कि वे संगठित और सबसे खूंखार अपराधों का अपना जीवन बदलेंगे। जयप्रकाश नारायण और सर्वोदय कार्यकर्ताओं से सम्पर्क कर के इन भूतपूर्व डाकुओं ने शस्त्र विदाई के अपने निर्णय को अमल में लाने की पहल की। जे० पी० की चर्चाओं से सरकारों को विश्वास हुआ कि दुश्चक्र तोड़ने का एक नया रास्ता निकल सकता है। सरकारों की स्वीकृति से आश्वस्त हो कर पांच सौ से ज्यादा डाकुओं ने आत्मसमर्पण किया और सार्वजनिक सभाओं में अपने अपराधों की समाज से क्षमा मांगी। अदालतों में खुद अपने अपराध कुबूल किये और सजा भुगतने के लिए तैयार हुए। जिस तरह ये लोग अपराधी बड़े थे उसी तरह ये बन्दी भी बड़े साबित हुए। जो खुद अपने को समाज और कानून के सामने समर्पित करे और अपराधों की सजा भुगतने को स्वेच्छा से तैयार हो वह साधारण बन्दी नहीं माना जा सकता। इन भूतपूर्व डाकुओं ने विधि और व्यवस्था की जो सहायता की है और एक सदियों पुरानी समाज विरोधी संस्था की समाप्ति में जो योगदान दिया है उसे देखते हुए यह उचित और स्वाभाविक ही है कि सरकारें उनके प्रति उदारता का रवैया अपनायें और समाज के लिए उपयोगी नागरिक बनने में उनकी सहायता करें। सरकारों ने, खास कर मध्यप्रदेश की सरकार ने, इन भूतपूर्व अपराधियों के परिवारों के पुनर्वास और इनकी पुनर्प्रतिष्ठा के लिए जो निर्णय लिये वे सचमुच ही एक प्रगतिशील सरकार के योग्य हैं। उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री कमलापति त्रिपाठी ने तो अपनी यह निजी राय दो साल पहले ही प्रकट की थी कि जब इतनी बड़ी संख्या में डाकू आत्म-समर्पण के लिए तैयार हैं तो उन्हें जेलों में रखा ही क्यों जाये और उन पर मुकदमे भी क्यों चलाये जायें? उन्हें क्यों नहीं सीधे पुनर्वास की सुविधाएं दे दी जायें? पर त्रिपाठीजी की यह निजी राय थी और निश्चित ही सरकारी तन्त्र इसे समूची स्वीकार करने की मनःस्थिति में नहीं था। सरकारों को यह भय होना स्वाभाविक था कि अगर आत्मसमर्पणकारी डाकुओं के मामले में दण्ड और कानून व्यवस्था को बिलकुल तिलांजलि दे दी जाये तो इसने विधि-व्यवस्था पर क्या असर पड़ेगा और हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया क्या कोई समस्या का रूप ले सकती है कि जिसके कारण प्रचलित व्यवस्था को टूटने दिया जाये। हृदय परिवर्तन इसम →

खुली जेल : अवसर और चुनौतियां

कोई सन्देह नहीं कि समाज जीवन के लिए सबसे उपयोगी प्रक्रिया है। लेकिन हृदय परिवर्तन एक वैयक्तिक प्रक्रिया है और वह व्यक्ति में कई तरह के कारणों और उद्देश्यों से शुरू हो सकती है। इन कारणों और उद्देश्यों को व्यक्ति निरपेक्ष नहीं किया जा सकता और जिस प्रक्रिया को व्यक्ति निरपेक्ष नहीं किया जा सकता उसे सब पर समान रूप से लागू होने वाली व्यवस्था का रूप कैसे दिया जा सकता है? क्रान्तिकारी सरकारें भी कई मामलों में परम्परागत ढांचों और धारणाओं पर चलती हैं। एक संवेदनशील, दूरदर्शी और प्रजातांत्रिक सरकार का यह अनिवार्य कर्तव्य जरूर है कि जो अपराधी हृदय परिवर्तन के कारण उसकी सहायता के लिए स्वयं अपने को सौंप रहा हो उसके प्रति वह साधारण अपराधियों जैसा व्यवहार न करे और कानून के उद्देश्यों की पूर्ति करने वाले अपराधी के प्रति उदारता बरते। भारत सरकार और मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान की सरकारें और दूसरी मामलों में चाहे जितनी दकियानूस और संवेदनहीन हों इसमें सन्देह नहीं कि तमाम उदासीनता के कुछ उदाहरणों को छोड़ कर समर्पित बागियों के प्रति इन सरकारों ने उदार और संवेदनशील व्यवहार किया है। इस व्यवहार को देखते हुए मध्यप्रदेश सरकार का मुंगावली में खुली जेल खोलना एक समझदार निर्णय की तार्किक परिणति ही कहा जायेगा।

समर्पित बागियों के दृष्टिकोण से देखें तो खुली जेल उनके लिए अप्रस्तुत है। खुली जेलों का उद्देश्य अपराधियों में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना पैदा करना और उन्हें समाज में शामिल होने का अवसर प्रदान करना है। समर्पित बागियों ने इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समर्पण किया था। वे चाहते थे कि अपना अपराधी जीवन छोड़ कर, अपने पापों का प्रायश्चित कर के वे समाज के हित का कार्य करें इसीलिए उन्होंने शस्त्रों और डकैतियों से विदा ली। जेल बन्द हो या खुली हो, अपने अपराधों की सजा भुगतने के लिए कटिबद्ध बन्दियों को कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर जेल में ये नहीं भी भेजे जाते और उन्हें सजाएं नहीं भी होतीं तो भी इसकी सम्भावना बहुत कम थी कि वे डकैती के पुराने जीवन में लौट जाते। डकैती, हत्या, अपहरण आदि छोड़ने के लिए उन्हें किसी ने बाध्य नहीं किया था। इन अपराधों के कारण वे पुलिस द्वारा पकड़े नहीं गये थे। उस जीवन को छोड़ने का निर्णय उन्होंने स्वयं लिया था और जो अपना निर्णय स्वयं करते हैं उनकी जिम्मेदारी वे अपनी मानते हैं। अधिकांश बागियों ने स्वयं अपना जीवन बदला है इसलिए उनके ठीक रास्ते पर चलने की ग्यारंटी जेल और रक्षक नहीं हो सकते उनकी अपनी चेतना या आत्मा ही हो सकती है। इसीलिए हमने कहा कि खुली जेल आत्मसमर्पित बन्दियों के लिए अप्रस्तुत है, प्रासंगिक नहीं है।

लेकिन जिस तरह इन लोगों के डाकू होने के लिए हमारी समाज-व्यवस्था और परिस्थितियां जिम्मेदार हैं उसी तरह इनको अच्छे नागरिक बनने की परिस्थितियां देने की जिम्मेदारी समाज के प्रतिनिधि के नाते सरकार की है। समर्पित बागियों में शायद एक भी बागी ऐसा नहीं है जिसने निर्णय किया हो कि वह डाकू बने। परिस्थितियों की मजबूरी से जिस तरह ये लोग डाकू बने उसी तरह परिस्थितियां इन्हें पुनः उस जीवन की ओर लौटने को मजबूर कर सकती हैं। क्योंकि इनके समर्पण से सामाजिक परिस्थितियों में तो कोई बुनियादी परिवर्तन नहीं आया है। सच पूछा जाये तो समर्पण जैसी ऐतिहासिक घटना भी परिस्थितियों का बुनियादी रूप से इतनी जल्दी नहीं बदल सकती। छब्बीस साल पहले मिली आजादी भारत के राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन की एक ऐतिहासिक क्रान्तिकारी घटना थी। लेकिन इन पाव सदी में हमने देखा है कि सामाजिक परिस्थितियां और सामाजिक मन कितने धीरे-धीरे बदलता है।

समर्पण का असर चम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड पर निश्चित ही बहुत अच्छा हुआ है लेकिन यह असर इतना जबर्दस्त नहीं है कि स्वयंसेवी संस्थाओं और सरकारों के प्रयासों के बिना स्थायी रह सके। असर को स्थायी बनाने और सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन लाने में उसका कारगर उपयोग करने के लिए कहीं ज्यादा संगठित, समन्वित और शान्तिवान प्रयत्नों की आवश्यकता है। स्वयंसेवी संस्थाएं और सरकारें अभी ऐसे प्रयत्न शुरू भी नहीं कर पायी हैं। ऐसी स्थिति में यह बेहतर है कि समर्पित डाकुओं को सीधे उस समाज में न भेजा जाये जो उन्हें गलत जीवन जीने पर मजबूर कर चुका था। खुली जेल की प्रासंगिकता इसी में है कि एक तरफ तो सरकारों और समाजसेवी संस्थाओं को डकैती के सदियों पुराने अभिशाप से मुक्त हुए समाज को परिवर्तित करने का अवसर देगी और दूसरी तरफ समर्पित बन्दियों को मौका देगी कि भविष्य में वे जिस प्रकार का जीवन जीना चाहते हैं उसके लिए अपने को तैयार कर लें। यह सही है कि डाकू बनने से पहले ये लोग कोई न कोई प्रतिष्ठित कार्य करते थे। लेकिन डाकू का जीवन बिताते हुए भी उन्हें काफी समय हो चुका था और एक जीवन पद्धति को छोड़ कर दूसरी जीवन पद्धति अपनाने में कुछ समय, कुछ प्रयोग, कुछ परिस्थितियां जरूरी होती हैं। मुंगावली की खुली जेल उन्हें यह अवसर देगी। लेकिन भूतपूर्व डाकुओं ने जो शपथ ली है उसके लिए इतना ही पर्याप्त नहीं है। उन पर एक ऐतिहासिक जिम्मेदारी भी है। डेढ़ साल पहले तक वे जिस समाजघाती संस्था के सक्रिय सदस्य थे और जिस संस्था ने चम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड में परिवर्तन और विकास के दरवाजे बन्द कर रखे थे उस संस्था के असर को मिटाने में भी उन्हें सक्रिय रूप से भाग लेना है। यानी खुली जेल में उन्हें स्वयं को प्रशिक्षण देना है कि वे चम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड में आगे होने वाले विकास कार्यों में हरावल दस्ते बन सकें। उन्हें स्वयं अपना जीवन तो सुधारना ही है, एक सामाजिक ऐतिहासिक जिम्मेदारी के लिए तैयार भी होना है।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

राजनीतिक अड़चनें और सीकर में कुओं की खुदाई

पिछले पांच-सात वर्षों में राजस्थान में १०० करोड़ से भी अधिक की रकम अकाल सहायता में खर्च हो चुकी है। जो अस्थाई कार्य हुए जैसे कच्ची सड़क बनाना आदि वे सब हवा में उड़ गये। ऐसी विषम परिस्थिति में ३० साल के एक नवजवान कलेक्टर के दिल में अकाल के स्थाई हल की योजना प्रकट हुई। अकेले सीकर जिले में बारह माह के भीतर ४००० कुए तैयार कराने की २ करोड़ की योजना राज्य सरकार के सामने रखी। राज्य सरकार ने उदारतापूर्वक योजना स्वीकार की। योजना का शुभारम्भ अप्रेल १९७३ में राज्यपाल श्री जोगेन्द्रसिंहजी के कर कमलों द्वारा किया गया। नवजवान कलेक्टर की सूझ-बूझ और साथियों का अथक परिश्रम दोनों के कारण अप्रेल १९७३ में प्रारम्भ किया हुआ काम वायु वेग से बढ़ने लगा। तीन चार महिने में करीब तीन चौथाई काम हो गया। अक्टूबर ७३ में योजना को आरम्भ हुए ६ माह पूरे होंगे, इस अवधि में ३७०० कुये तैयार हो चुके हैं। बाकी ३०० भी अक्टूबर के अन्त तक पूरे हो जायेंगे। इन कुओं पर बिजली के पम्प लगाने की भी कलेक्टर की योजना है। आधे कुओं के क्षेत्र में बिजली जाती है।

योजना के अन्तर्गत हर किसान को २५००) का अनुदान राज्य सरकार द्वारा दिया गया है और २५००) का कर्जा पंजाब नेशनल बैंक के जरिये ९ प्रतिशत ब्याज पर दिलाया गया है। इस योजना में प्रशासन की यह विशेषता रही है कि भ्रष्टाचार के लिये कोई स्थान नहीं रहने दिया। यह तय किया गया था कि काश्तकार के दरवाजे पर जाकर कुए की स्वीकृति दी जाय। जिनमें संसद सदस्य, विधायक, प्रधान पंचायत समिति, सरपंच, एस-डी-ओ, तहसीलदार, विकास अधिकारी और बैंक प्रतिनिधि और सरकारी आफीसर किसान के कुए पर जाकर पैसा चुकाते थे। बैंक द्वारा कर्ज दिलाने में भी यह व्यवस्था की गई थी कि बैंक के हक में रजिस्ट्रेशन तहसीलदार द्वारा कुए पर जाकर ही किया गया। इस काम के लिये १७ दल बनाये गये थे। ६०० गांवों में ये चार हजार कुए बने हैं। इस योजना की प्रमुख समाचार पत्रों द्वारा सराहना की गई। अनेक प्रत्यक्षदर्शियों के अभिप्राय आये हैं। राज्य सरकार की ओर से विधायकों के दल भी योजना का निरीक्षण कर गये हैं।

सितम्बर के मध्य में विधायकों का एक दल एस्टीमेटस् कमेटी के अध्यक्ष भूतपूर्व शिक्षामंत्री पूनमचन्दजी विश्नोई के संयोजकत्व में आया। विधायकों का दूसरा दल पिटीशन कमेटी के मगारामजी चौधरी भू० पू० उपमंत्री के संयोजकत्व में आया। सभी विधायक प्रभावित होकर गये— राज्य सरकार को रिपोर्ट दी ही होगी। १९ संसद सदस्यों का दल सितम्बर में श्री किशन जी मोदी के संयोजकत्व में इस क्षेत्र का निरीक्षण करके गया है। इन लोगों ने भी अपनी रिपोर्ट भारत सरकार को दी होगी। इस दल में शशिभूषण, राव वीरेन्द्रसिंह, दरबारासिंह, नाथूराम मिर्धा, बालकृष्ण कौल आदि कई प्रमुख सांसद थे।

इस प्रकार बिना किसी भ्रष्टाचार और बिना किसी प्रशासनिक ढिलाई के युद्ध स्तर पर योजना पूरी करके दिखाने वाले कलेक्टर को राज्य सरकार की ओर से यह पुरस्कार मिला कि उनका भरतपुर तबादला कर दिया गया। यह तबादला इसलिए नहीं हुआ कि राज्य सरकार की उन पर नाराजी थी या राज्य सरकार उनके काम की कदर नहीं जानती थी। इस काम से प्रेरित होकर राज्य सरकार ने ऐसा ही कूप निर्माण का काम झुंझनू व जयपुर जिलों में भी शुरू किया है। लेकिन राज्य सरकार को राजनैतिक विधायकों की गुटबाजी के आगे झुकना पड़ा।

स्वराज्य के बाद इन पच्चीस सालों में अकाल के व्यापक हल के लिये कोई ठोस योजना हो सकी तो यह कुओं की योजना थी। इसका अभी पूरा विकास होना बाकी है, कलेक्टर को इस जिले में आये केवल ६ महिने हुए हैं। यह भी नहीं कि बहुत वर्षों हो गये। ऐसे शुभ कार्य में जिन राजनीतिज्ञों ने निहित स्वार्थवश अड़चनें लगाई हैं उनका फैसला जनता की कोर्ट में होना चाहिए।

राज्य सरकार को चाहिए कि सीकर जिले के इस निर्माण के नमूने का कार्य इसी कलेक्टर से पूरा कराया जाये और इन्हें कम से कम ५ वर्ष का समय दिया जाय। इस अभूतपूर्व काम के करने वाले नौजवान कलेक्टर का नाम पशुपतिनाथ भण्डारी है।

—राधाकृष्ण बजाज

(पिछले पृष्ठ से जारी)

मध्यप्रदेश सरकार का यह प्रयोग भी तभी सार्थक होगा जब वह सहज एवं प्रचलित और प्रगतिशील कदम के नाते खुली जेल को न देखे। देश में खुली जेलों की कमी नहीं है। कम से कम ग्यारह और सरकारें ऐसी जेलें खोल चुकी हैं। एक प्रगतिशील रस्म के नाते अगर मध्यप्रदेश सरकार ने इस खुली जेल को लिया तो कोई बड़ा काम नहीं होगा। यह जरूरी है कि मध्यप्रदेश की सरकार और खास कर मुख्यमंत्री सेठी और देश मंत्री कृष्णपाल सिंह इसकी व्यवस्था करें कि मुंगावली में रहने वाले बंदी अपनी सजा काटने या छूटने की तैयारी के दौरान भविष्य के विकास के माध्यम बन सकें। उन्हें एक हरावल दस्ते के रूप में प्रशिक्षित करने के लिए यह जरूरी है कि उन्हें न सिर्फ चम्बल घाटी और बुंदेलखण्ड के विकास की योजनाओं से अवगत कराया जाये बल्कि उनके तैयार किये जाने में उनका सहयोग लिया जाये उन्हें इस्तेमाल किया जाये और उन्हें इस पेशे को अपनाने की सुविधा दी जाय कि वे उसे अमल में लाने की प्रक्रिया में स्वयं भी कार्य कर सकें। खुली जेल में काम करने के लिए सरकार को अपने कर्मचारियों का चुनाव भी इसी उद्देश्य से करना होगा, वैसे ही नीति नियम बनाने होंगे और समाजसेवी संस्थाओं खास कर चम्बल घाटी शान्ति मिशन का पूरा सहयोग लेना होगा। खुली जेल सम्मानित बन्दियों की ही बस्ती नहीं बननी चाहिये वह उनमें स्वाभिमान, सरकार और जिम्मेदारियों के निर्वाह की क्षमता पैदा करने वाली पाठशाला होनी चाहिये।

—प्रभाष जोशी

बनना है। बाबा "महात्मा गांधी" है नहीं। इसलिए गाधीजी के नाम से कुछ नहीं बोलता। बाबा को जो सत्य लगता है वह बोलता है। उसमे से जो स्वीकार हो वह आप लीजिए। स्वीकार न हो वह छोड दीजिए। "बाबा वाक्यं प्रमाणम" नहीं होना चाहिए। अपने दिमाग से सोचना चाहिए।

बाबा ने जो सम्मति दी थी "ग्रामवस्त्र" के लिए दी थी। फिर रामचन्द्रजी ने जो लोक वस्त्र बनाया, उसके लिए बाबा की सम्मति है नहीं। उन्होंने तो "मिनी-मिल" चलायी। वह ठीक नहीं है। फिर भी वह कर सकते हैं, उससे कई लोगों को काम मिलेगा। बाबा की उसके लिए सम्मति है ऐसा माना जाता था, लेकिन सम्मति है नहीं। इस वास्ते ग्रामवस्त्र के लिए बाबा ने जो सम्मति दी है उसमे बाबा को कोई गलती नहीं मालूम होती है। क्योंकि वह सम्मति बाबा ने गाधी जी के नाम से नहीं दी थी, अपने नाम से दी थी। लेकिन काका साहब का पत्र पढकर नारायण दास गाधी ने लिखा कि यज्ञ के तौर पर सूत कातना और वही सूत दान देना। इसे मैं पसन्द करता हूं। अम्बर से नहीं, तकली से या चरखे से यज्ञ के तौर पर कातें और वह दान दें। वह भी अत्यन्त पवित्र है। जैसे उपवास की बात पवित्र है। दोनों का योग आप अच्छी तरह कर सकते हैं।

प्रश्न : अपने आन्दोलन मे युवक कम आते हैं। उनके लिए कोई आकर्षक कार्यक्रम होने चाहिए। जिससे युवकों की बड़ी जमात इस आन्दोलन के साथ लग सके।

विनोबा जी : युवक की व्याख्या क्या है, इस पर निर्भर है। युवक की व्याख्या यह है कि ४५ साल के नीचे जो हैं वे युवक हैं। अपने आन्दोलन में ४५ साल के नीचे काफी लोग हैं। लेकिन २०-२२ साल के जवान कुछ कम हैं, वे कैसे आयें ? उसके लिए आपने बहुत अच्छा कार्यक्रम उठाया है, "अकाल बनाम तरुण।" उसमे सरकार की ... भी ली। फिर भी बाबा ने मंजूर किया और कहा, गांव-गांव जाओ और ग्रामशक्ति खड़ी करो। आखिर हमे सरकार को तोड़ना भी है। लेकिन जिस पेड़ की टहनी को तोड़ना है, उस पेड़ की टहनी पर बैठकर उसे काटना। टूटने से पहले अलग होना इतना देख लो। यह मैंने सरकारी लोगों को भी कहा है कि यह आन्दोलन सरकार की शक्ति को काटने का आन्दोलन है। फिर भी आपको आना हो तो आप इस आन्दोलन में आ सकते हैं और वे आये भी हैं। इस प्रकार हम तरुणों की मदद ले सकते हैं तो तरुण भी इसमें आ जायेंगे।

प्रश्न : आपने कहा कि लेबोरेटरी में खूब प्रयोग होना चाहिए। सहरसा को अपने काम की लेबोरेटरी मानते हैं, तो आप *वहा के प्रयोग की अवधि क्यों तय करते हैं ?* आपने तो सहरसा को एक बार ईश्वरार्पण कर दिया था।

सहरसा के साथियों से आपने कहा कि धीरेन भाई का नाम ही धीरेन है इसलिए वे धीरे-धीरे करने को कहते हैं। धीरेन दादा ने कहा कि बाबा को मालूम नहीं कि मेरा नाम धीरे-धीरे भाई नहीं है, धीरे "न" भाई है।

विनोबा जी : वे धीरेन भाई हैं, उनको जितनी उतावली है उतनी शायद ही किसी को है। वे मानते हैं कि इस काम के लिए हड्डी गलानी पड़ेगी। शायद पाच साल लगेंगे। यह मैं भी मानता हूं। मैंने मुद्दत इसलिए रखी है कि हमे लेबोरेटरी मे अनेक प्रयोग करने हैं। इसी प्रयोग मे जिन्दगी भर रहेंगे तो व्यापक नहीं बनेंगे। इसलिए अब ८ महीने की मर्यादा रखी। यह सफल हुआ तो इस सफलता को लेकर, सफलतापूर्वक भारत मे जाना है और निष्फल होगा तो भी भारत मे घूमना है। दोनों हालत मे वहां के कार्यकर्ताओं को भारत के कार्यकर्ता बनना है। यह आखिरी मौका है। मैं चाहता हूं कि गुजरात से २-४ कार्यकर्ता वहां जायें, हर प्रान्त से जायें। पूरा पानीपत का संग्राम करो। धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे, बराबर संग्राम करो। कौरव-पांडवों की लड़ाई का क्या परिणाम आया ? क्या किसी को सफलता मिली ? ६-७ लोग जीवित रहे। वैसे ही इस लड़ाई का हो सकता है।

प्रश्न : शुद्ध भगवान की उपासना शुरू करने के लिए हमारे पास यानी सर्व सेवा संघ के पास कोई संपत्ति रहे, यह शायद उचित नहीं है। आपकी क्या राय है ?

विनोबाजी : इस प्रश्न मे "शायद" जो लिखा है वह अच्छा है। हम यह कहते हैं कि व्यक्तिगत नाते हमारे पास पैसा रखना उचित नहीं है। जितना त्याग कर सकते हैं, उतना अच्छा है। लेकिन हमारा समूह बना है तो कई कामों के लिए पैसे की आवश्यकता पड़ती है। तो शुद्ध, पवित्र पैसा उनके पास पहुंचे यह जरूरी है। लेकिन मैंने विद्यासागर को सलाह दी थी कि तुम सहरसा जाओगे तो तुम्हारे पास जो पैसा है वह पटना मे गंगा नदी मे डुबा दो। फिर सहरसा चले जाओ। व्यक्ति के नाते यह ठीक है। लेकिन सामूहिक काम के लिए पैसा होना चाहिए। लेकिन वह पैसा पवित्र होना चाहिए। उसकी अभी योजना बनी है।

प्रश्न क्या ग्रामसभा के लिए ध्यान सूचना आप देंगे ?

विनोबा जी : मैंने सूचना दी है कि ग्रामसभा हर हफ्ते एक दफा इकट्ठा होना चाहिए, सामूहिक प्रार्थना करनी चाहिए, विष्णु सहस्रनाम भी कर सकते हैं और फिर लोगों की समस्याओं पर चर्चा करनी चाहिए। हर महीने या तीन महीने में प्रखण्ड में सेमिनार वगैरह हों, लेकिन गांव में हर हफ्ते प्रार्थना के नाम पर इकट्ठा होना चाहिए।

प्रश्न : सहरसा गंगा जल समाधी के लिए प्रेरणा दें ?

विनोबाजी : सहरसा को स्थूल गंगा में डूबने के लिए बाबा की सम्मति नहीं है। लोक गंगा मे डूबना है। आठ महीना लोक गंगा मे डूबने के बाद फिर वहीं डूबना है या भारत जाना है, यह सोचेंगे। जो बिहार के नहीं हैं, उनके बारे में सोचा जायेगा। जो बिहार के हैं उनको आदेश मिला है कि आठ महीने के बाद भारत मे जाना है।

→

प्रश्न : उपवासदान अगर सालाना देना किसी को सम्भव न हो तो क्या कोई मासिक या तिमाही भी दे सकता है ?

विनोबाजी : उपवासदान के लिए छोटा शब्द चाहिए तो उपदान हो सकता है। सिद्धराज ढड्ढा को पसन्द है तो चलेगा। इसमे मासिक दान भी दे सकते हैं लेकिन मेरी सलाह से वार्षिक दान देना अच्छा रहेगा। मासिक मे १२ दफा रिसीट देना वगैरह की तकलीफ रहेगी, शायद कठिन जायेगा। इसलिए साल का संकल्प करो।

प्रश्न : सर्व सेवा संघ के कार्यक्रमो मे "विश्व-एकता" स्पष्ट रूप से स्वीकृत होना चाहिए। इस विचार की तरफ आपकी ओर से ध्यान खींचना जरूरी लगता है ?

विनोबाजी : मैंने कई दफा कहा है कि आज प्रान्तीय भावना बिलकुल ही पुरानी पड गयी है। भारतीय भावना रहेगी तो माफ है। क्योंकि भारत अनेक भाषाओ का एक राष्ट्र बना है। इसलिए भारतीय भावना लगभग इन्टर-नेशनल भावना है। इसलिए वह भावना हो तो बाबा की तरफ से माफ है। लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। आज विश्व-भावना चाहिए। खास कर विद्वज्जनो के आचार्यकुल की, युनिवर्सिटी के लोगो के सामने मैं रखता हू कि आपको केवल भारत की ही नही, बल्कि दुनिया भर की समस्याओ का चिन्तन करना चाहिए और अपने विचार प्रकट करने चाहिए।

प्रश्न . ग्रामदान आन्दोलन त्याग की भावना पर खड़ा करता है। मगर गाव मे त्याग की बात कोई सुनता नही और ग्राम-स्वराज्य सिद्ध नही होता। इसलिए क्या करना ?

विनोबाजी : ग्रामदान मे जो काम करना है उसमे त्याग का सवाल है नही। त्याग तो मुनियों के लिए, ब्रह्मचारियों के लिए होता है। गाववालो को इतना ही कहना है कि तुम्हारा गृहस्थाश्रम उत्तम चले, इसके लिए जरूरी है कि थोडा हिस्सा गाव के लिए दिया जाये। तो आपका सहयोग गाव को मिलेगा और गाव का सहयोग आपको मिलेगा। आपको त्यागी, सन्यासी बनाने के लिये बाबा यह नही कह रहा है। बल्कि आपका गृहस्थाश्रम अच्छा चले इसलिए कह रहा है। बाबा त्यागियो की, सन्यासियो की सेना जरूर चाहता है। सारे भारत मे ५०० त्यागी, ब्रह्मचारी, सन्यासी पूर्ण प्रतिज्ञा करके इसमे लग जाते हैं तो बाबा को समाधान होगा। बाकी जो काम हैं उसमे बाबा की यही कोशिश है कि गृहस्थाश्रमी लोगो का गृहस्थाश्रम अच्छा चले।

प्रश्न बहुत से लोगो का आज राजनैतिक दलोमें विश्वास नही है। फिर भी लोग छोडने को तैयार नही होते, ऐसा क्यो ?

विनोबाजी राजनैतिक लोगो का राजनीतिपर विश्वास नही रहा है। फिर भी वे उसे छोडने के लिए तैयार नही। क्योंकि उसमे सत्ता है। सत्ता का थोडा लाभ हमको मिल जाये। ऐसी सत्ता की लालसा बहुत पडी है। इसलिए थोडा सत्ता का चिन्तन होता रहता है। अगर उन्हे मालूम हो कि अभी बाबा का राज्य चलने वाला है, सर्वोदय के मिनिस्टर्स, प्राइम मिनिस्टर वगैरह बनेंगे, तो लाखो लोग आयेंगे।

लेकिन हमारे आन्दोलन मे क्या मिलेगा ? "कबीरा खडा बजार मे लिये लुकाठी हाथ। जो घर फूके आपना चले हमारे साथ।" कबीरदास बाजार मे खड़ा होकर पुकारता है। उसी तरह हर गाव मे पुकारता है, "चलें हमारे साथ।" अपना घर जो फूकने के लिए तैयार होंगे वे हमारे साथ चलें। ऐसे घर फूकने वाले कुछ साथी बाबा जरूर चाहता है। पर ५-७ हजार नही। बाकी गाव-गाव मे काम करेंगे। सत्ता-वालो की सत्ता हाथ मे लेना बाबा का ध्येय नहीं है। बाबा सत्तावालों की सत्ता खतम करना चाहता है, शासन मुक्ति चाहता है। गाव-गाव में सत्ता बट जाये और ऊपर नाम-मात्र सत्ता रहे। ज्यादे से ज्यादा सत्ता गाव में उससे कम प्रखण्ड मे, उससे कम जिले मे, उससे कम प्रान्त मे और उससे कम देश में हो इस वास्ते आपको सत्ता की अभिलाषा है गाव की सेवा करो, गाव के प्रेमी बनो। तो गाव के लोग आपको ग्रामसभा के सभापति चुनेंगे। फिर आपके हाथ में बहुत सत्ता आयेगी। काहे की सत्ता ? बाटने की।

प्रश्न : श्याम प्रकाश ने लिखा है बिहार के लिए सन्देश चाहिए।

विनोबाजी : बिहार की जनता के पास बाबा का सन्देश कैसे पहुचेगा ? इसके लिए आपको गाव-गाव जाना पड़ेगा। आप गाव-गाव जायेंगे तो यहा आपने जो सुना है वह गाववालो को सुनाइये। लिखित चिट्ठी की क्या जरूरत है ?

प्रश्न आज की परिस्थिति मे कार्यकर्ता अपनी आस्था और विचार-स्वतन्त्र्य की रक्षा किस रूप मे करें ?

विनोबाजी : विचार-स्वतंत्र्य के बारे मे आपको जैन धर्म सीखना चाहिए। जैन धर्म मे एक बडी बात कही है कि अपने पास पूरा सत्य है ऐसा अभिमान मत रखो। आपके पास सत्य का एक अंश है, दूसरे के पास भी सत्य का एक अंश चाहिए। हमे मत प्रगट करने का स्वातंत्र्य होना चाहिए, तो सामने वालो को भी ऐसा स्वतन्त्र्य होना चाहिए। लेकिन दोनो टकरायेंगे तो ऐसा टकराने का स्वातन्त्र्य नही है। दोनो का सुनना चाहिए। मेल-जोल, जोड कैसे हो सकता है, यह देखना चाहिए। इसलिए मत-स्वातन्त्र्य पर, विचार-स्वतन्त्रता पर ज्यादा जोर नही देना चाहिए। जोर देना चाहिए भावनात्मक एकता पर। यह शाम बहादुर के लिए जरूरी है। वह शाम भी है और बहादुर भी है। इसलिए आवेश आता है। लेकिन जरूरी यह है कि चित्त मे क्षोभ जरा भी न हो।

प्रश्न कल परसो जो महाराष्ट्र सरकार ने अनाज के भाव बाधे हैं वह ठीक है। लेकिन हमे काश्तकारो को जीवनोपयोगी वस्तु के बढ़ने भाव बन्द कर देने चाहिए, वरना हम अनाज वसूली यानी लेवी नही देंगे। इस पर आप कुछ विचार सुझायें।

विनोबाजी . अनाज के बारे मे मैंने जो कहा है वह सबने सुना है। लेकिन करते कोई नही हैं। मैंने कहा, अनाज मे टैक्स दिया जाये। (यानी लैण्ड रेवेन्यु) किसान को अनाज बेचकर कागजी टुकडो (नोटो) सरकार को देने के लिए कहना, महामूर्खता है। हमारा दूसरा सुझाव यह है कि सरकारी अधिकारी आदि को जो तनख्वाह दिये जाते हैं उनका एक हिस्सा अनाज मे दिया जाये। मेरी इन दो सूचनाओ पर जब तक अमल होता नही तब तक देश के मजदूर और सरकारी नौकर सुखी होंगे नही।

→

शिक्षक प्रशिक्षार्थियों को सुखद आश्चर्य होता था कि सेवा-ग्राम निवास की अवधि में उनका स्वास्थ्य सुधरा। उनमें फुर्ती आई, शारीरिक और मानसिक कार्य करने की शक्ति बढ़ी। जब उनको इसका मूल कारण वहां शुद्ध और पौष्टिक भोजन बताया जाता तो वे तत्काल सहज रूप से स्वीकार नहीं करते थे। क्योंकि अच्छे भोजन की उनकी सामान्य धारणा चटपटा, उनकी आदत अनुसार जीभ को रुचिकर भोजन था। वहां उनकी यह धारणा और वहां उनका सेवा-ग्राम का प्राकृतिक कृषि पर स्वास्थ्य जीवन के सिद्धान्त से पका भोजन। प्रत्यक्ष की जरूरत क्या, तथ्य को वे अस्वीकार भी नहीं कर सकते थे।

स्वस्थ्य भोजन और परिवार नियोजन

ऐसी एक प्रचलित मान्यता है कि पूर्ण स्वस्थ्य दम्पति की सन्तानें स्वस्थ्य होंगी और सीमित भी होंगी। सामान्य अवलोकन से इसकी पुष्टि भी होती है। ऐसे वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता है जिससे पता चले कि भोजन का और सन्तानोत्पत्ति का मनुष्यों में क्या सम्बन्ध है। यदि यह सिद्ध होता है कि सन्तुलित और स्वस्थ पोषक भोजन से समृद्धि के साथ साथ सन्तानोत्पत्ति भी सीमित हो जाती है तब हमारा परिवार नियोजन का नारा अभी तक दिये गये सामान्य फूहड़ नारों से भिन्न "स्वस्थ भोजन, सुखी परिवार" होगा।

स्वास्थ्य और कृषि की समन्वित योजना

मानव का कुपोषण और भूमि का कुपोषण, मानव भोजन और अस्वास्थ्य एवं स्वस्थ्य भूमि और स्वस्थ्य मानव का एक दूसरों से जुड़ा हुआ सबंध है। इसके अनेक प्रमाण हैं। कुपोषण, उसका उद्गम चाहे जो भी हो, अपर्याप्त और अनुपयुक्त भोजन, सामाजिक और आर्थिक स्थितियां या इन सबके सम्मिलित प्रभाव के कारण शरीर-शक्ति, उत्साह, कार्यक्षमता और जीवन-शक्ति का ह्रास होना है और किसी रोग आदि से अच्छे होने में, उबरने में अधिक समय लगता है।

नटाल अफ्रीका में स्थित "वोथा हिल स्वास्थ्य केन्द्र" ने इन बातों का प्रत्यक्ष अनुभव वहां के आदिवासियों के स्वास्थ्य के अध्ययन के आधार पर पाया। उनके सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ कि भुलु जाति के लोग कुछ ही पीढ़ियों पहले उनके उत्तम गठन, स्वास्थ्य, कठिन परिश्रम करने का पीढ़ीगत अनुशासन एवं सामाजिक शक्ति के लिए प्रसिद्ध थे। उनका परम्परागत आहार अति पोषक था। बट या सम्पूर्ण मक्का के पदार्थ, दलिया आदि। पकी मुलाई फलियां, खाने योग्य जंगली पत्ते, एक प्रकार का दही और कभी-कभी मांसाहार। इस आहार से उनका स्वास्थ्य स्तर बहुत उच्च था।

सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ कि उनका स्वास्थ्य का स्तर बहुत खराब है। वे अपोषण और कुपोषण के शिकार हैं। तथाकथित हुए विकास ने उन्हें नगराभिमुख किया। उनकी भूमि की उत्पादकता मारी गई और वे फार्म और घर पर तैयार किये आहार के स्थान पर फैक्ट्री में बने पदार्थों का उपयोग करने लगे जैसे चोकर रहित आटा, सफेद शक्कर, जैम, चाय, कोका सरीखे पेय आदि। यह ही उनका दैनिक आहार बन गया।

एक और बात का पता चला वह है उनकी भूमि की गिरी हालत। भूमि की उर्वरा शक्ति बनाये रखने का ध्यान न देने के कारण, भूमि बेकाम-सी हो गई थी।

डा० स्टार (जो कि यहां की स्वास्थ्य योजना के संचालक थे) को लगा कि लोगों का स्वास्थ्य सुधारने के लिए उनकी भूमि सुधारना आवश्यक है जिससे कि उन्हें स्वस्थ और पोषक आहार मिले। भूमि सुधार एवं अधिक कृषि उपज प्राप्त करने का भार उन्होंने एक व्यक्ति को सौंपा जिसने आश्वासन दिया कि वह रासायनिक खाद के उपयोग के बिना एवं सिंचाई की आशा के बिना यह कार्य करेगा। इस व्यक्ति ने वही रीति अपनाई जिसे इन्दौर में हावर्ड, मैंगी में हिन्दुस्तानी और सेवाग्राम में नायकमजी एवं अन्ना साहब ने अपनाई थी।

संक्षेप में यह युक्ति है भूमि का सेन्द्रिय तत्व बढ़ाकर उसकी उत्पादन क्षमता एवं नमी धारण करने की शक्ति बढ़ाना है और भूमि को नमी प्राप्त हो इस हेतु बन्धान एवं छोटे-छोटे तालाब आदि बनाना है। सेन्द्रिय तत्व बढ़ाने के लिये खेत में खाईयां खोद-कर उनमें कचरा डाल कर मिट्टी से ढकना है। खाई या नाली, पार बनाने वाले हल से बनाई जा सकती है। इस युक्ति से एक ही वर्ष में फसलों का उत्पादन बढ़ गया तथा खेत से प्राप्त फसलें स्वस्थ और पोषक थीं। इनका भोजन में समावेश करने से फिर से भुलू लोगों का स्वास्थ्य क्रमश: पूर्ववत् होने लगा।

मध्य प्रदेश के धार-झबुआ सरीखे इलाकों की भूमि और निवासियों के स्वास्थ्य की वही हालत है जो वोथा हिल के लोगों की थी। यहां उल्लेखित पद्धति इन क्षेत्रों की हालत सुधार सकती है। वहां के लोगों को न केवल भुखमरी से बचायेगी, उन्हें उत्पादक काम भी देगी और स्वास्थ्य भी। 'क्रैश' कार्यक्रम के अन्तर्गत सड़क के नाम से मिट्टी डलवाने के बजाय खेतों में खेती खोद, कूड़ा-कचरा दबाने की योजना अधिक स्थायी और समस्यामूलक सिद्ध होगी। प्रश्न है तथा-कथित विज्ञान के नाम पर हमारे मन में भरी अवैज्ञानिक भावना से ऊपर उठना। यह समय का तकाजा है और चुनौती भी। हम इसे स्वीकार करें और स्वस्थ्य भूमि सुखी और स्वस्थ नागरिक का कार्यक्रम अपनायें। ◘

× श्री होमिता प्रसाद त्रिपाठी, मंत्री, जिला सर्वोदय मण्डल फैजाबाद से प्राप्त जानकारी के अनुसार इस बार गांधी जयन्ती ग्राम-स्वराज्य- सत्याग्रह दिवस के रूप में ग्रामीण क्षेत्र में मनाई गई। सचालन लोकसेवक श्री भगवती प्रसाद त्रिपाठी ने अपने दस सह-योगियों के साथ किया। फैजाबाद जिले का दक्षिणी और पश्चिमी ग्रामीण क्षेत्र जो अत्यन्त पिछड़ा हुआ है, उसमें ग्रामस्वराज्य की स्थापना का काम प्रारम्भ किया गया। जगह-जगह ग्रामस्वराज्य सभाएं आयोजित करके यह भी संकल्प किया गया कि यदि ग्राम-स्वराज्य के लिए आवश्यकता हुई तो सत्याग्रह किए जाएंगे।

सेवाग्राम में कुष्ठ-कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन

१२ से १६ अक्टूबर तक सेवाग्राम (वर्धा) में कुष्ठ रोग के जीवाणु की शोध-शताब्दी, अ० भा० कुष्ठ-कार्यकर्त्ता सम्मेलन की रजत जयन्ती के साथ मनाई गई। कुष्ठ-सेवा के सम्बन्ध मे उच्च स्तरीय वैज्ञानिक विचार-विमर्श के साथ सम्मेलन मे तीव्रता से यह महसूस किया गया कि रोग के सम्बन्ध मे जितनी जरूरत प्रत्यक्ष सेवा की है उतनी ही विज्ञान की खोज की भी है। डॉ० सुशीला नैयर ने सम्मेलन की सगठन-अध्यक्षा होने के नाते परिश्रम के साथ सम्मेलन मे भाग लिया।

सम्मेलन मे अन्य अनेक विषयो के साथ फॉदर डेमियन और डॉ० हैन्सन को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये सम्मेलन के अवसर पर विशेष अधिवेशन रखे गये। डा० हेन्सन ने सौ वर्ष पूर्व कुष्ठ रोग के जीवाणु की खोज की थी और फॉदर डेमियन ने रोगियो की सेवा के लिये ही अपना जीवन अर्पित कर दिया था।

सम्मेलन का प्रारम्भ विनोबा जी के आशीर्वाद से हुआ। १२ अक्टूबर की प्रात सम्मेलन में भाग लेने आये सभी प्रतिनिधि पवनार गये। विनोबा जी ने कुष्ठ कार्य के सम्बन्ध मे अपना मार्मिक उद्बोधन प्रतिनिधियो को दिया। विनोबा जी ने कहा—

"सामान्यत. किसी भी समाज के सामने जब मुझे बोलना होता है तो मैं कुछ सोचता नही। चेहरे देखकर जो सूझता है सो बोलता हूं। यहा पर आसाम से लेकर केरल तक के अखिल भारतीय डाक्टर इकट्ठा हुए हैं, यह बडी प्रसन्नता की बात है। इस प्रकार का यह पहला ही प्रसग है। यहा मै क्या कहू यह मेरे सामने सवाल आता है, क्योकि हमारे साथी जो यहा कुष्ठ सेवा का काम कई सालो से करते है, मनोहर जी, उन्होने अभी तक मेरे जो व्याख्यान कुष्ठ रोगियो के बारे मे हुए थे वह सारे मुझे दिखा दिये। उस पर से ध्यान मे आया कि मेरे पास कोई नयी बात कहने को बाकी नही है।

"मुझे भूदान-यज्ञ मे काम करने की प्रेरणा हुई और लगभग २२ साल मेरे उस काम मे बीते। सारे भारत मे पदयात्रा हुई, मोटर यात्रा हुई, रेल यात्रा हुई, और जगह-जगह लोगो से मिलने का प्रसग आया। जहा-जहाँ मेरे मार्ग मे कुष्ठ सेवा होती थी, ऐसा एक भी कुष्ठ-सेवा केन्द्र नही होगा जो मेरे मार्ग मे होते हुए वहा पहुचा नही और हर जगह करने के काम समझता रहा हू। कुछ काम करना है ग्रामसभा को। हर गाव मे ग्रामसभा बने और वह जिम्मेवारी उठाये। वह कौन सी जिम्मेवारियां हैं ? तो मैने उनको व, बा, वि, बी, बु, बू, नाम दिया है। बारहखड़ी होती है। बच्चे, बूढे, विधवाए बीमार और बेकार इस तरह पाच "ब" की सेवा करनी है। अनाथ बच्चे होते हैं, बूढे होते हैं जिनके बच्चे वगैरह नही रहते। विधवाए—जिनको कोई आश्रय नही, बीमार की सेवा और बेकार को काम दिलाना, इन सबकी चिन्ता करना ग्रामसभा का कर्तव्य है। हर ग्रामदानी गाव मे ग्रामसभा बनायें। वह सब गाव की जिम्मेवारी उठाये। इसके अलावा बेकारो को काम देने की जिम्मेवारी और बीमार की सेवा करना, यह उसका कर्तव्य है। बीमारो के नाम मे पहला स्थान महारोगी, लूले, लगडे, नम्बर दो क्षयरोगी तथा तीसरे मे और भी जो रोगी होंगे—उनकी सेवा करना यह सारा मैने कह दिया है जगह-जगह। कुछ काम करना है ग्रामसभा को, कुछ काम करना है सरकार को, कुछ काम करना है डाक्टर को और कुछ काम करने है सेवको को। तो ग्रामसभा का काम आपके सामने रखा जो करना है।

"डाक्टर लोग आये हैं जो जगह-जगह सेवा का काम कर रहे है। आप इस काम →
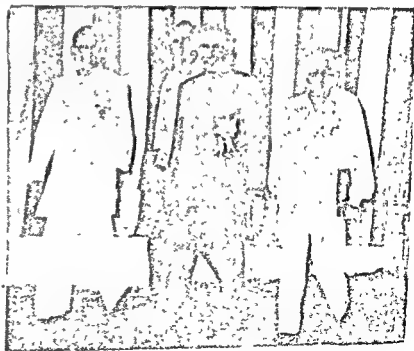
उद्घाटन अवसर पर श्री खाडिलकर (दाएं) मुख्यमंत्री श्री नाईक (मध्य मे) डॉ. रविशंकर शर्मा

→

के लिए प्रेरित हुए हैं, भगवान की कृपा से तो कुछ न कुछ काम यहां कर रहे हैं। मुझ पर यह असर पड़ा है कि सरकार भी यथाशक्ति करती है, जो कुछ कर सकती है, काम करती है। महाराष्ट्र सरकार की रिपोर्ट जो मेरे पास आई है कुष्ठ सेवा के लिए कहां सेंटर खोले हैं, क्या-क्या काम हुए हैं आदि। उस पर से ध्यान में आया कि काफी कोशिश वे करते हैं। जिनको जो कुछ करना है वे कर रहे हैं। हर गांव में आलवारी पहुंचाना सेवकों का काम है। सेवक कितने हैं? लगभग १० हजार हैं बाबा की कल्पना के अनुसार। भारत में गांव हैं पांच लाख। पांच गांव के लिए एक सेवक मानें तो भी एक लाख सेवक चाहिए और हैं १० हजार। मतलब १० प्रतिशत हैं। परमात्मा की सेवकों की जमात बढ़े। मेरी बहुत ख्वाहिश हो रही है त्याग करने सेवकों की जमात बढ़ाने की। वह जमात बढ़ेगी तो ज्यादा काम होगा। यह तो मैंने जो कुछ हो रहा है होना चाहिए और हो सकता है, उसका एक चित्र आपके सामने रखा।

"परन्तु शिकायत है आप लोगों की जो कि सही है कि रोग दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। अकेले भारत में कहते हैं कि ३० लाख कुष्ठ रोगी हैं। ५५ करोड़ का देश है। हमारा अन्दाज है कि ३० लाख हैं। दो साल बाद ४ लाख और बढ़ जायेंगे—दिन-दिन बढ़ता चलो रे भाई। यह बढ़ ही रही है। इसकी चिन्ता आप लोगों को हो रही, यह स्वाभाविक ही है। परन्तु तीन दोष हैं इन त्रिदोषों के कारण यह रोग बढ़ रहे हैं। न केवल महारोग बल्कि जितना मैंने नाम लिया वे भी बढ़ रहे हैं। समाज में त्रिदोष हुआ है।

'पहला दोष है पोषण का अभाव। मिनिमम जितना मिलना चाहिए, मैक्सिमम की बात नहीं करता, देह और आत्मा को एकत्र रखने के लिए जितना चाहिए, वह भी आज ४० प्रतिशत लोगों को नहीं मिल रहा है। इसलिए उपनिषद में उपदेश देते हैं—'अन्न खूब बढ़ाओ, उत्पादन करो।' यह था उपनिषद है—यह पंचवर्षीय योजना बनाने वाला प्लैनिंग कमीशन नहीं है। उपनिषद कहता है "अन्न ब्रह्मेति विजानात" अन्न को परमेश्वर समझो। प्राण, मन, विज्ञान और फिर आनंद इस तरह से पंच ब्रह्म बतलाये। आखिर में आनंद ब्रह्म कहा किन्तु सबसे पहले अन्न ब्रह्म है ऐसा कहा। "भूखे भजन न होई गोपाला।" बुद्ध भगवान के शिष्य आनन्द एक आदमी को लेकर आये उपदेश के लिए। बुद्ध भगवान ने कहा कि यह भूखा दिखता है। उससे पूछने पर बताया कि वह तीन दिन से भूखा है, खाना नहीं मिला। गौतम बुद्ध ने कहा पहले उसको खाना खिलाओ। यह गौतम बुद्ध ने सिखाया कि जो भूखा है उसको अध्यात्म क्या सिखायेंगे? पहले अन्न से तृप्ति हो जाये फिर कुछ सिखाया जा सकता है। इस वास्ते यह पहला काम है। यह समस्या केवल भारत की ही नहीं है बल्कि यह एशिया की समस्या है। एशिया की ही नहीं बल्कि दुनिया भर की समस्या है। विज्ञान के कारण दुनिया नजदीक आ रही है इस वास्ते इस समस्या का हल करना केवल दुनिया का कर्तव्य नहीं पूरी मानवता का कर्तव्य है, ऐसा बाबा मानता है। यह बहुत बड़ा कारण है जिसके कारण अनेक रोग बढ़ रहे हैं।

'दूसरा दोष है स्वैराचार, असंयम। क्या नाटक, क्या सिनेमा, क्या साहित्य इसका प्रचार सर्वत्र भरा है कि उस हालत में चित्त को पवित्र रखना अत्यन्त कठिन हो जाता है। शहरों की हालत ऐसी है कि रावण सिखाता है, कान फट जाएं। जो रव करता है उसे रावण कहते हैं। ऐसा बाबा ने नाम दिया। जगह-जगह कान पर ये बजते हुए लाउडस्पीकर आदि की जोरदार आवाज आती है परिणाम यह होता है कि चित्त भ्रष्ट हो जाता है। उस भ्रष्टता से सर्वत्र सन्तान बढ़ रही है। सन्तान इस तरह से बढ़ती रही तो उसका क्या परिणाम होगा? २० साल में दुनिया की आबादी दुगुनी हो जायेगी, भारत की आबादी ५५ करोड़ से बढ़ते ११० करोड़ हो जायेगी। उसका परिणाम यह होगा कि जमीन का रकबा कम पड़ेगा। ऐसी हालत में भुखमरी और चोर लुटेरों, आज से ज्यादा होंगे। लेकिन धार्मिक लोग होंगे, सत्पुरुष पैदा होंगे तो उनसे पृथ्वी पर भार नहीं बढ़ेगा, वे उत्तम कार्य करेंगे। परन्तु यह जो सन्तान बढ़ रही है, व्यभिचार से बढ़ रही है। गृहस्थाश्रम को आज व्यभिचार का लायसेंस मानते हैं। जो गृहस्थाश्रम व्यवस्था पहले थी वह खतम हो गई है। किशोर लाल भाई का नाम आप लोग जानते होंगे। मैं उनसे बात कर रहा था—नरसी मेहता क्या कहता है "दूसरे की स्त्री को माता समझो"। तुकाराम कहता है—'दूसरे की पत्नी को माता के समान देखो'। इस तरह से जो भी उठता है वह बात करता पर-स्त्री के साथ संबंध न रखो, ब्रह्मचर्य की बात ही नहीं करते। इस पर किशोर लाल भाई ने कहा कि आपको समाज का ज्ञान नहीं है। उन्होंने बताया कि हजार गृहस्थ में से कोई एक ही निकलेगा जो पर स्त्री के साथ संबंध न रखता हो। यह आश्चर्य की बात है। संस्कृत में भी कहावत है कि अपनी दारा में संतुष्ट रहने वाले क्वचित ही दिखते हैं। इस प्रकार से व्यभिचार सब दूर बढ़ रहा है। इससे बड़ी संख्या में रोग बढ़ेगा, यह भगवान का आशीर्वाद है। आप कहेंगे कि हम आये हैं रोग हटाने के लिए और यह कह रहे हैं कि इसमें भगवान का आशीर्वाद है। यह दूसरा कारण है।

"तीसरा दोष है हवा में दूषण है। नदियां गंदी हो रही हैं। कुछ नदियां समुद्र में मिलती हैं। उससे समुद्र का समुद्र गंदा हो गया है। वहां से मछलियां भाग गईं या मर गईं। हवा गंदी हो गई है, वनस्पति दूषित हो गई है। इसके लिए नया शास्त्र निकला है "इकालाजी"। अपने आसपास की परिस्थिति को स्वच्छ रखना, इसकी बहुत जरूरत है। इस तरफ ध्यान मोड़ने के लिए नया शास्त्र निकला है। योरप में नीचे सफाई अच्छी रखते हैं, लेकिन वहां ऊपर की हवा सर्वत्र बिगड़ गई है। हिंदुस्तान में नीचे सफाई कम रखते हैं, लेकिन अभी ऊपर की हवा विशेष दूषित नहीं हुई। योरप में तरह-तरह के रोग फैल रहे हैं। पांच छः साल पहले की बात है योरप-अमेरिका के डाक्टर एकत्र हुए थे। उन्होंने कहा कि यह समझ में नहीं आता कि डाक्टर बढ़ रहे हैं उसके साथ-साथ रोग भी बढ़ रहे हैं। तरह-तरह के नये रोग बढ़ रहे हैं जिनके नाम भी नहीं मिलते।

→

हम सब अपनी-अपनी तरफ देखें : वैद्यनाथ बाबू

(श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी पिछले तीन वर्षों से बिहार के रुपौली प्रखण्ड में अपने साथियों के साथ लगे हैं और गांधी-विनोबा की कल्पना के स्वराज्य को शक्ल दे रहे हैं। रुपौली प्रखण्ड और आसपास की परिस्थिति से दुखी होकर पिछले दिनों जब उन्होंने पांच दिनों का उपवास किया तो कई लोगों ने उन्हें चिट्ठियां लिखीं और कारण जानने चाहे। प्रस्तुत पत्र में उन्होंने अपने उपवास के कारणों को स्पष्ट किया है।)

श्री वैद्यनाथ बाबू

मैं सर्वप्रथम यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि मेरा उपवास किसी घटना के विरोध में या उसके प्रतिरोध स्वरूप नहीं था। मैंने प्रार्थना के जो पांच मुद्दे रखे हैं और उन पर चलने की शक्ति प्रदान के लिए ईश्वर से प्रार्थना की थी। आप देखेंगे उसमें मैंने जानबूझ कर "मुझे" की जगह "हमें" शब्द का प्रयोग किया है। यों तो मेरा व्यापक परिवार है जिला, प्रदेश तथा अखिल भारत स्तर की संस्थाओं से भी मेरा संबंध रहा है तथा आज भी है परन्तु आप सब जानते हैं कि गत तीन वर्ष से मैं अपने प्रेम क्षेत्र के रूप में रुपौली प्रखण्ड में ग्राम स्वराज्य के कार्यक्रम के लिये शक्ति लगा रहा हूं। इसलिये मेरे "हमें" शब्द से अभिप्राय है रुपौली प्रखण्ड की जनता तथा यहां की सरकारी, गैरसरकारी एवं ग्राम स्वराज्य संबंधी संस्थाएं। मैंने जिन बातों का उल्लेख किया है यह जानी हुई बात है कि उसके संबंध में अनेक त्रुटियां मेरी ओर से तथा इस प्रखण्ड के अन्य संबंधित लोगों से इस अवधि में होती रही हैं। जिसमें एकदम त्रुटि न हो, दोष रहित हो यह तो भगवान ही हो सकता है। मानव से त्रुटि होना स्वाभाविक ही माना जायेगा पर त्रुटियों का भान होने पर उसके परिमार्जन के लिए प्रायश्चित किया जाता है और ईश्वर से शक्ति की याचना के लिए प्रार्थना की जाती है। मैंने वही किया था। अब समझने-समझाने के लिये थोड़े विस्तार में कहूं तो कहना होगा कि—

● गलत मार्ग पर चलने वाला घूसखोरी, चोरबाजारी, झूठा बिल हिसाब बनाना या उस पर मजूरी लेना-देना, झूठी गवाही देना, परस्पर विरोधी कागजों पर हस्ताक्षर करना आदि कैसे कर सकता है?

● अपने संकल्पों पर दृढ़ रहने के लिए कुछ त्याग एवं कष्ट सहन तो करना ही पड़ता है। उदाहरण के लिए भूदान दिया, बीघा कट्ठा दिया देकर उसे नहीं निकालना, वेदखल करना हम उपज का ४० वां हिस्सा अथवा अपनी मजदूरी का ३० वां हिस्सा ग्रामकोष निकालेंगे, बीघा कट्ठा भूमिहीनों के लिये देंगे, इसी प्रकार ग्राम सभाओं के ११ संकल्प जो गांव-गांव में दुहराये गये हैं उसे कार्यान्वित नहीं करना अथवा उसमें मुक्ति को क्या कहा जायेगा? इसी प्रकार सार्वजनिक कामों, सेवा कार्यों के लिए समय देने की घोषणा करके अथवा कार्यक्रम निश्चित करके उसे पूरा नहीं करना आदि संकल्प भंग ही माना जायेगा।

● अपने साथियों तथा पड़ोसियों के साथ प्रेम करने के संबंध में हम देख सकते हैं कि कार्यकर्ताओं में, ग्राम सभाओं के पदाधिकारियों में, संस्थाओं, विद्यालय आदि के स्टाफ एवं समितियों में मतभेद पर पड़ोसियों के दुख दर्द की समवेदना का प्रभाव हममें है या नहीं?

● अन्याय एवं शोषण के विरुद्ध लोकमत जागृत करने तथा अहिंसा के मार्ग से उसके निराकरण के लिए हम क्या कुछ करते हैं? मजदूरी की समस्या, बटाईदारी की समस्या, सीलिंग कानून, बासगीत का पर्चा, दाखिल खारिज आदि अनेक समस्याएं जो हैं हमारा ध्यान खींचती हैं।

● सार्वजनिक कोष के व्यवहार में संस्थाओं, सरकारी महकमों, रिलीफ आदि कार्यों में आज जो स्थिति है उससे हम सब मुक्त भोगी हैं।

मैंने ऊपर जिन बातों का उल्लेख किया है मैं यह कहने की स्थिति में नहीं हूं कि मैं पूर्णरूप से इन दोषों से मुक्त हूं। जब तक सामाजिक स्थिति में सुधार नहीं होता कोई व्यक्ति इन दोषों से पूर्णरूप से मुक्त नहीं हो सकता है। उसके उदाहरण में मैं नहीं पहुंचा। इन प्रश्नों तथा दोषों की तरफ हमारा ध्यान जाये और हम सब अपनी-अपनी तरफ देखें, अपने दोषों तथा जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज के उन दोषों को दूर—कम करने के लिए प्रयत्न करें, इसी उद्देश्य से मेरा प्रायश्चित तथा उपवास हुआ। मैं मानता हूं कि मेरी ही कमी है कि मैं जिस क्षेत्र एवं जनता की सेवा का प्रयत्न कर रहा हूं मैं उन्हें अपनी बात समझा नहीं सकता या प्रभावित नहीं कर सकता। और इसीलिए मैंने सबको सत्य मार्ग पर चलने की सुबुद्धि एवं शक्ति ईश्वर प्रदान करे एतदर्थ यह छोटा सा प्रयत्न किया है।

उपवास जैसी प्रक्रिया में बहुतों को विश्वास ही नहीं है। विरोधात्मक उपवास ने उपवास की प्रतिष्ठा भी घटाई है। जो ऐसे साधनों में नहीं मानते हैं उनसे मुझे कुछ नहीं कहना है। मैं गांधीजी के बताये मार्ग में विश्वास करता हूं और उसी दृष्टि से यह पांच दिन का उपवास किया है। मैंने शुद्ध प्रायश्चित एवं प्रार्थना के रूप में यह उपवास कर्तव्य मानकर किया है। फल तो ईश्वर को समर्पित है।

आप सब की सहानुभूति मुझे उपवास में मिली है इसके लिये धन्यवाद।

चलता मुसाफिर ही पायेगा मंज़िल और मुकाम

अक्टूबर २५ से श्री सुन्दरलाल बहुगुणा ने अपने कुछ साथियों के साथ उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों की १०० दिन की पदयात्रा प्रारम्भ की है। इस दिन जहां पूरे देश भर में दीपावली के त्योहार की धूमधाम से मनाने की तैयारी घर-घर चल रही थी वहां टिहरी नगरी में प्रेम का प्रकाश और हृदय के दीप जलाने के लक्ष्य को लेकर इस यात्रा की तैयारियां सम्पन्न हुई। टिहरी नगर वेदान्ती सन्त स्वामी रामतीर्थ का निर्वाण-स्थल है और इस वर्ष २५ अक्टूबर से उनकी जन्म-शताब्दी मनायी जा रही है।

१२ वर्ष पहले भूदान-यज्ञ के प्रणेता सन्त विनोबा भावे की प्रेरणा और गांधीजी की अंग्रेज शिष्या सरला बहन के मार्गदर्शन में उत्तराखण्ड में सर्वोदय विचार-प्रचार का व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ था। उस समय देश की सीमाओं पर चीन की चुनौती उपस्थित थी; अतः सर्वोदय के प्रत्यक्ष कार्य के रूप में ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य का कार्यक्रम उत्तराखण्ड में चलाया गया। उत्तर काशी जिलादान व जोशीमठ व धारचूला प्रखण्ड दान सहित लगभग १००० गांवों ने ग्रामस्वराज्य की घोषणा की। लगभग १४ विकास-खण्डों में प्रखण्ड-स्तर के रचनात्मक कार्यों की संस्थाएं बनी। उत्तराखण्ड की पवित्रता, पर्वतीय क्षेत्रों की गरीबी और सीमा-सुरक्षा के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार ने जनता की मांग का आदर करते हुए उत्तराखण्ड के अधिकांश क्षेत्र में शराबबन्दी लागू की। 'चिपको' आन्दोलन के रूप में उत्तराखण्ड की जनता का ध्यान वन-सम्पदा की सुरक्षा और उसका लाभ वनों के निकट रहने वाले वनवासियों को दिलवाने की ओर आकृष्ट हुआ है। इस तरह उत्तराखण्ड के त्वरित विकास के लिए और यहां की जटिल समस्याओं के समाधान के लिए जनशक्ति को संगठित करने की एक पृष्ठभूमि तैयार हुई है।

लेकिन सुनियोजित सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए अल्पकालिक प्रयासों के साथ-साथ निरन्तर जागरूकता और सतत् प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता होती है। एक वैदिक मन्त्र का आश्वासन है - 'यो जागर: तम् ऋच: कामयन्ते, यो जागर: तमु सामानि यन्ति'—जो जागृत है ऋचाएं उसी की कामना करती है, जो जागृत है उसी को सामगान प्राप्त होता है। सामाजिक मोर्चे पर टकराते हुए सैनिक कई बार थक जाते हैं, निराश व पस्त हिम्मत हो जाते हैं। तब नई व्यूह रचना, नई रणशैली का विकास करके फौज को आगे बढ़ाना पड़ता है। पूरे देश की तरह उत्तराखण्ड के रचनात्मक आन्दोलन को भी शायद इस संक्रमण काल से गुजरना पड़ा है। सौभाग्य से उत्तराखण्ड के सर्वोदय परिवार को श्री बहुगुणा जैसे कर्मठ, कुशल व निष्ठावान् सेवक का नेतृत्व प्राप्त है। वे एक सुलझे हुए सेनापति के साथ-साथ एक समर्पित सिपाही भी हैं। उनके नेतृत्व में चलने वाली इस १०० दिन की पदयात्रा—जिसमें वे पूरे समय तक रहेंगे—का उद्देश्य जहां एक ओर ग्राम-स्वराज्य का *विचार गांव-गांव पहुंचाना है और ग्राम*-स्वराज्य की पृष्ठभूमि में दूरस्थ गांवों तक पहाड़ों की ऊंची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडियों पर पैदल चलकर भ्रष्टाचार-मुक्ति भूमि समस्या शराबबन्दी, वन-समस्या व स्त्री शक्ति जागरण जैसे उत्तराखण्ड के अहम् सवालों पर गांव के लोगों के साथ विचार-विमर्श करना और उसके लिए आवश्यक अनुकूल वातावरण तैयार करना है वहां उसका सहज परिणाम रचनात्मक जगत में छाये नैराश्य की समाप्ति में होने वाला है।

पदयात्रा का प्रारम्भ टिहरी नगर में कुछ औपचारिक कर्मकाण्ड के द्वारा हुआ। २५ अक्टूबर को प्रातः भिलंगना के तट पर जहां ६७ वर्ष पूर्व दीपावली के दिन राम बादशाह (स्वामी रामतीर्थ) ने जल-समाधि ली थी, मौन प्रार्थना के साथ जन्म-शताब्दी का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दिव्य जीवन संघ, शिवानन्द नगर के अध्यक्ष स्वामी चिदानन्द, जो पिछले दो वर्षों से सर्वोदय परिवार के बहुत निकट आये हैं, ने इस अवसर पर अपने प्रेरक प्रवचन में कहा कि स्वामी राम हमें क्षुद्र व्यक्तित्व को महान जीवन-रूपी कुण्ड में होम करने की प्रेरणा देते हैं। गोल कोठी में सर्व धर्म प्रार्थना हुई तथा स्वामी रामतीर्थ प्रकाश स्थान में पुष्पांजलि अर्पित की गयी। वहीं पर विष्णु सहस्रनाम के पाठ के पश्चात् सुन्दरलाल बहुगुणा की टोली की १०० दिवसीय उत्तराखण्ड पदयात्रा प्रारम्भ हुई। इसमें अन्य नागरिकों के साथ-साथ चर्चा करते स्वामी चिदानन्द भी बढ़े।

दोपहर में टिहरी नगर के पास आजाद *मैदान में स्वामी चिदानन्द की* अध्यक्षता में एक आम सभा हुई जिसमें श्री महावीर प्रसाद गैरोला, श्रीमती बहुनी; प्रिंसिपल नरेन्द्र महिला विद्यालय, श्री सुन्दरलाल, श्री भक्त दर्शन व स्वामी आनन्द ने प्रवचन किये। श्री सुन्दरलाल ने अपनी यात्रा का उद्देश्य बताते हुए कहा कि, "स्वामी राम का व्यावहारिक वेदान्त का सन्देश जन-जन तक पहुंचाने और पर्वतीय समाज को उनकी महान् आध्यात्मिक विरासत का भान कराने के लिए मैं गांव-गांव जा रहा हूं। मैं उनसे श्रमिकों, स्त्रियों और बच्चों का आदर करने का निवेदन करूंगा।" श्री भक्तदर्शन का मानना था कि इस कार्यक्रम से पहाड़ों में एक नये विकास युग का प्रारम्भ हो रहा है। लोग इससे प्रेरणा लेंगे। उन्होंने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि सभी महापुरुष अन्तिम दिनों में यहां पर आये। उनमें से दो तो आद्य शंकराचार्य और स्वामी रामतीर्थ ३३ वर्ष में ही अपना जीवन कार्य पूरा कर चले गये। स्वामी चिदानन्द ने अध्यक्षीय पद *से बोलते हुए कहा कि राम बादशाह की* शताब्दी ऐसे अवसर पर आयी है जब हमें श्रमिकों व श्रम के प्रति श्रद्धा की भावना जगानी है। प्रान्तीयता देश को खा रही है। भारतीय एकता को हमें पुष्ट करना है। कन्याकुमारी के विवेकानन्द स्मारक की तरह हिमालय

→

→

मे स्वामी रामतीर्थ का एक विशाल स्मारक बनना चाहिए, जिसमे उत्तर और दक्षिण के बीच की आध्यात्मिक कड़ी जुड़े और यह अध्यात्म के क्षेत्र मे सारे विश्व का नेतृत्व करे।

अन्त मे पदयात्रा टोली ने मन्दिर, मस्जिद और गुरुद्वारे की परिक्रमा करके गाव की ओर प्रयाण किया इस निश्चिय की पुष्टि करते हुए कि "अपना मुसाफिर ही पायेगा मंजिल और मुकाम रे।"

६ अक्टूबर को जब टिहरी के ठक्कर बापा छात्रावास मे उत्तराखण्ड के कुछ साथी इस तरह की पदयात्रा टोली निकालने की योजना पर विचार कर रहे थे तब से अब तक कइयो ने इस पर अपने प्रश्न चिन्ह अंकित किये हैं। कइयो ने इसका मजाक उड़ाया है। जेट युग का आदमी पदयात्रा को बचकानापन या निठल्लो के मनबहलाव का साधन समझता है। निस्सन्देह पैदल चलना एक पागलपन ही है यदि उसका सम्बन्ध किसी महान व व्यापक कार्य से नहीं जुड़ता है। पहाड़ी आदमी की पीढ़िया मिट चुकी हैं पैदल चलते चलते। वह बहुत चला है किन्तु पहुँचा कही भी नहीं है। लेकिन बुद्ध, महावीर, शंकर जब सत्य की, करुणा की अलख जगाते घूमे, गांधी ने जब इतिहास प्रसिद्ध पैदल दण्डी मार्च किया, विनोबा ने २० साल लगातार हजारो मील नापे तो उसमे से धर्म के चक्र को नई दिशा मिली। बुद्ध, विनोबा हर काल व हर देश मे नही होते। तब शायद क्या यह आवश्यक नही बनता जायेगा कि मानवता के लिए दिये जलाने के लिए लाखो महेन्द्र और संघमित्रा धरती के कोने-कोने तक कल्याणकारी वाणी को लोगो तक पहुँचाने के लिए निकल पड़े? "बहुजन हिताय बहुजन सुखाय चरथ भिक्खवे चारिकं" ... "इमा वाच कल्याणी मा वदानि जनेभ्य" क्या स्वामी विवेकानन्द का यह कथन अप्रासंगिक है कि कारवा गुजरता जाता है और कुत्ते भौंकते रहते हैं? या जिनके पास कोई काम नही होता वे राह चलने वालो पर-कंकड मारा करते हैं?

एक गहरा प्रश्न यह भी उठता है कि १०० दिन की यह पदयात्रा स्वामी रामतीर्थ जन्म-शताब्दी समारोह के साथ प्रारम्भ हुई है, यह अनुबन्ध कहा तक सफल हो सकता है? स्वामी राम ने जहा एक ओर अध्यात्म की चरम ऊंचाइयो को स्पर्श किया था वहा उनके जीवन की कुछ घटनाओ मे भावी मानवता के स्वरूप के विकास चिन्ह भी हैं। उनके जीवनी लेखक सरदार पूरण सिंह ने लिखा है कि विदेश की यात्रा से लौटने के बाद स्वामीजी जब हिमालय की गोद मे विचरण कर रहे थे तब उन्होने अपने उद्गार प्रगट करते हुए कहा था कि मैं जब मैदानो मे आऊगा तो सन्यासी के इन वस्त्रो को फाड़-फाड़ कर फेंक दूगा और दुनिया को बताऊगा कि सन्यास भी एक बन्धन है। सरदार पूरण सिंह ने इस उद्गार का विश्लेषण करते हुए कहा है कि स्वामीजी का हृदय मुक्त कवि का हृदय था। सन्यास की कठोरता उनके स्वभाव के अनुकूल नहीं थी। सन्यास और बन्धन! सन्यास तो समस्त बन्धनो से मुक्ति का नाम है। सच्चाई शायद कुछ विपरीत हो सकती है। सारा आवरण, सारी नाम पट्टिया, सारे विचार, सिद्धान्त और मूल्य प्रतिष्ठान मानव की आत्मा को मार देने वाले हैं, उन्हें नाम चाहे जितना बड़ा दे दिया जाय। मुक्ति तो निपट इन्सान की भूमिका पर रहने और सहज स्वाभाविक जीवन जीने मे ही है। क्या यह पदयात्रा टोली इस तरह की हिम्मत कर सकेगी कि वह किसी विचार, सिद्धान्त पन्थ व व्यक्ति की तख्ती हटाकर निपट नागरिक की भूमिका से जन-जन को मुक्ति का सन्देश दे सके?

सरफरोशी की तमन्ना जिनके मन मे रहती है उनके पावो को किसी की उठी हुई उंगलिया कब रोक सकी हैं? ऐसे लोगो के लिए तो चलना ही जिन्दगी है: उनके सामने चलने का विकल्प मिट जाता है। ऐसे ही चिर यात्री की भाव-दशा मे रवि बाबू ने गाया होगा "पथेर साथी नमि बारम्बार। पथिक जनेर लह नमस्कार।"... "अंतरे आमार भोरे। चलिते पथे गान गाही प्राण भरे।" क्या यह १०० दिन की अखण्ड पदयात्रा इसी दिशा की ओर इंगित नहीं है?

—योगेशचन्द्र बहुगुणा

× तरुण शांति सेना समिति, जिला सागर (म० प्र०) ने अपना प्रथम एवं सफल प्रयास ३० सितम्बर को मध्य प्रदेश के बाढ पीड़ितो की सहायतार्थ एक फिल्म चैरिटी शो का आयोजन करके किया। इस आयोजन के द्वारा २००१ रुपए की राशि एकत्रित की गई। यह रकम जिलाधीश श्री आनन्द मोहन का ११ अक्टूबर को एक सभा मे दी गई।

× महाराष्ट्र मे महाकोशल क्षेत्र को छोड़कर शेष क्षेत्र के जिलो से १ अक्टूबर १९७३ तक ४८, १६० एकड भूमि भूदान प्राप्त हुई और २६, ३८८ एकड वितरित कर दी गई। ८०८३ दाताओ द्वारा दी गई जमीन ५३६५ अदाताओ मे वितरित की गई।

× बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी द्वारा अब तक सम्पादित कार्यों की संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है —

प्राप्ति —गांव संख्या—३७, ६६!
दाता-संख्या—२, ६७, २००

रकबा —१६, १७, ४६७ एकड़

वितरण —खेती के योग्य वितरित भूमि का रकबा—४, ३२, ४६७ आदाता संख्या—२, ६२, ३६७, खेती के लिये अयोग्य पायी गई भूमि का रकबा—११, ६४, ६८५ सर्वेक्षण के लिये बची भूमि का रकबा—४, ८६, ६८५

ग्रामदान —बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर, दरभगा, सहरसा, मुगेर, संथाल परगना, पूर्णिया, गया एवं पटना जिले मे पुष्टि अधिकारी कार्यरत हैं। कुल १, ६ ३६ गावो के ८६, १७० समर्पण पत्र दाखिल किये गये जिनमे ४१, ५३५ भूमिवानो एवं ४४, ६३५ भूमिहीनो के हैं। बिहार गजट मे ६७५ गावो का ग्रामदान ग्राम के रूप मे प्रकाशन हुआ है। अधिनियम के अनुसार घोषित ग्राम सभाओ को सहकारी समिति के रूप मे पंजीकृत करने हेतु बिहार सरकार के सहकारिता विभाग द्वारा परिपत्र जारी किया जा चुका है। ग्राम सभाओ का राजस्व वसूली सम्बन्धी अधिकार देने के लिए राज्य सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया है।

आन्दोलन के समाचार

× गत अप्रैल में कुरुक्षेत्र में आयोजित हुए महिला सम्मेलन के निर्णयानुसार पूरे देश में ११ से १७ अक्टूबर तक महिला-पदयात्राएं सम्पन्न हुयीं। वाराणसी में पांच बहनों की एक टोली नगर के पूरे क्षेत्र में घूमती रही। इस टोली में सर्वश्री अनुराधा नन्न, मीरा मेहता, चम्पा देवी, माया और मंजू पूरे समय रहीं। पदयात्रा का संयोजन नगर सर्वोदय मण्डल के तत्वावधान में गांधी शांति प्रतिष्ठान, स्त्री शक्ति संस्थान, भारतीय समाज कल्याण परिषद तथा नगर की अन्य शिक्षण संस्थाओं के सहयोग से कु० सुभद्रा तेलंग और श्रीमती शांति मैनेन ने किया। पूरी यात्रा में श्री रामवृक्ष शास्त्री और हरदेवी मनवानी का पूर्ण सहयोग पदयात्रियों को मिला।

छतरपुर (म० प्र०) जिले में भी बहनों की पदयात्रा उत्साहपूर्वक चली। बहनों में श्रीमती शकुन्तला पाण्डेय, पुष्पा बक्षी, पुष्पा देवी तामर, मालती श्रीवास्तव, मालती सक्सेना, कु० शांतिसिंह, लक्ष्मी सिंह व श्रीमती किशोरी खरे ने भाग लिया। श्री बहोरीलाल कुशवाहा पूरे समय पदयात्रा टोली के साथ रहे। पूर्व तैयारी में श्री कमलापति चौधरी ने सहयोग दिया। संयोजन श्रीमती गायत्री देवी पवार ने किया तथा व्यवस्था जिला ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य समिति एवं गांधी-स्मारक-भवन, छतरपुर ने की।

बरेली में इस सप्ताह के दौरान पदयात्रा के स्थान पर नगर की विभिन्न महिलाओं से सम्पर्क करके उनके पास 'स्त्री शक्ति' 'सप्त-शक्तियां' आदि पुस्तकें पहुंचाई गयीं। श्रीमती शांतिदेवी चतुर्वेदी ने १७ अक्टूबर को समापन समारोह की अध्यक्षता की।

सादाबाद सहपउ क्षेत्रीय] प्राथमिक सर्वोदय मंडल (मथुरा, उ० प्र०) के तत्वावधान में पदयात्रा का कार्यक्रम श्रीमती कटोरी देवी के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। पदयात्रा टोली में श्रीमती कटोरी देवी चन्द्रकला देवी, सहोद्रो देवी, कृष्णा देवी, कु० सुमन वर्मा, कु० विशाला तथा श्री हरनामसिंह व श्री जयन्ती प्रसाद जी ने भाग लिया।

कानपुर के ग्रामीण क्षेत्र 'क्यदन' में स्थानीय महिला सर्वोदयी कार्यकर्त्ताओं ने उत्साहपूर्ण ढंग से सप्ताह मनाया। श्रीमती सरला बहन व सावित्री बहन ने घर-घर जाकर महिला समाज से सम्पर्क किया। स्थानीय कार्यकर्ता श्री कमलनारायण ने पदयात्रा का मार्गदर्शन किया। पूरी पदयात्रा में लगभग १००० बहनों ने सक्रिय भाग लिया।

पूना (महाराष्ट्र) के पहाड़ी क्षेत्र मावल में स्त्री-शक्ति-जागरण सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाया गया। पूर्व तैयारी के लिये ८ अक्टूबर को मवबली गांव में सौ० मालती, वचलकर व श्रीमती इन्दुताई बनरे ने एक शिविर आयोजित किया।

× बिहार सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री देवानन्द मिश्र ने सूचित किया है कि बिहार राज्य सर्वोदय सम्मेलन दरभंगा जिले के बिरोल प्रखण्ड में ४, ५ व ६ नवम्बर को होगा। सम्मेलन का उद्घाटन बिहार विधान सभा के अध्यक्ष श्री हरिनाथ मिश्र करेंगे व उद्योग मंत्री, श्री चन्द्रशेखरसिंह, मुख्य अतिथि होंगे।

श्री मिश्र ने बताया कि विनोबाजी के आवाहन पर सहरसा जिले में ग्राम स्वराज्य के अभियान को सफल बनाने की दृष्टि से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया है। बिहार राज्य के करीब ५०० प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग लेंगे।

श्री मिश्र के अनुसार नवम्बर १९७३ से अप्रैल १९७४ के दौरान सहरसा के राष्ट्रीय मोर्चे पर ग्रामस्वराज की स्थापना के कार्य में सहयोग देने के लिए देश भर के पांच सौ वरिष्ठ कार्यकर्त्ता भाग लेने आयेंगे। श्री जयप्रकाश जी ने अपनी अस्वस्थता के बावजूद भी अभियान में एक माह का समय देने की इच्छा व्यक्त की है।

× गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र, जयपुर द्वारा आयोजित विचार सभा में डा० दयानिधि पटनायक ने 'वर्तमान युग में गांधी की उपादेयता' विषय पर बोलते हुए दुनिया में शांति और समृद्धि के लिए विज्ञान तथा अध्यात्म के समन्वय की आवश्यकता प्रतिपादित की।

डॉ० दयानिधि पटनायक

उन्होंने समाज परिवर्तन के लिए विचार शांति पर बल दिया और कहा कि विज्ञान के युग में हमें सर्वनाश या सर्वोदय में से एक को चुनना होगा। शांति प्रतिष्ठान के मंत्री श्री रामेश्वर दिग्धी ने आगन्तुकों का स्वागत किया व केन्द्र की जानकारी दी।

× शिक्षा के विकास कार्यों का विचार और समाज में प्राध्यापकों के योगदान पर बम्बई में २ नवम्बर से तीन दिवसीय महत्वपूर्ण गोष्ठी आयोजित की जा रही है।

गोष्ठी का, जो पोद्दार कॉलेज हॉल, माटुंगा में होगी उद्घाटन बम्बई विश्वविद्यालय के कुलपति श्री टी० के० टोपे करेंगे। सर्वोदय-दर्शन के प्रसिद्ध भाष्यकार दादा धर्माधिकारी प्रमुख वक्ता होंगे। इनके अलावा स्थानीय कीर्ति कालेज के प्रो० एम० पी० रेगे, प्रो० जे० जोशी (पोद्दार कालेज) तथा टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्सेज के डॉ० एम० एस० गोरे भी गोष्ठी में विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करेंगे। श्री अण्णा साहब सहस्रबुद्धे गोष्ठी में विशेष रूप से भाग लेंगे। गोष्ठी का आयोजन सर्वोदय मण्डल द्वारा किया जा रहा है।

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १० रु० या २५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, बुधवार, १४ नवम्बर, '७३

समर्पणकारियों के लिए
मुंगावली में
खुली जेल

प्रशिक्षित बेरोजगारों को चिन्ता मुक्त करने के ठोस प्रयत्न छोटे उद्योग स्थापित करने के लिए राज्य शासन द्वारा विशेष सुविधाएं

- ❖ छात्रवृत्ति और सांयांत्रिक प्रशिक्षण की व्यवस्था।
- ❖ दुर्लभ कच्चे माल की प्राप्ति की सुविधा।
- ❖ भूमि एवं वितानों के आवंटन में प्राथमिकता।
- ❖ किश्त खरीदी पर यन्त्र सुलभ।
- ❖ राज्य सहायता अधिनियम के अन्तर्गत सहायता।
- ❖ मध्य प्रदेश वित्त निगम से ऋण प्राप्ति की सुविधा।
- ❖ मुफ्त तकनीकी सहायता और उद्योगों के चयन में मार्ग दर्शन।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क साधिये

उद्योग संचालक, मध्य प्रदेश, भोपाल।

(उद्योग संचालनालय, मध्य प्रदेश द्वारा प्रसारित)

मु०प्र०सं० २७११/७३

भूदान-यज्ञ

. १४ नवम्बर १९७३ .

वर्ष २० अंक ७-८

सम्पादक : राममूर्ति, भवानी प्रसाद मिश्र : कार्यकारी सम्पादक : प्रभाप जोशी

इस अंक में

१९, राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

हमारे छायाकार

मुंगावली में खुल रही खुली जेल के अवसर पर प्रकाशित हुए इस विशेषांक का आकर्षक मुखपृष्ठ एवं अन्दर के भी लगभग सभी छाया चित्र 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक के सह-सम्पादक श्री अनुपम मिश्र के हैं। अनुपम जी के चित्र हमारे पाठक पिछले प्रकाशित चार विशेषांकों में देख चुके हैं। 'भूदान-यज्ञ' के प्रकाशित होने वाले सामान्य अंकों में भी इनके चित्र नियमित प्रकाशित होते रहते हैं। कुशल छायाकार श्री अनुपम के चित्र देश के सभी प्रमुख समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

—सम्पादक

अनुपम मिश्र

प्रकाशकीय

इस वर्ष में सर्वोदय साप्ताहिक 'भूदान-यज्ञ' का यह पांचवा विशेषांक है। आप जानते हैं कि हम व्यावसायिक पत्र नहीं हैं। अखबारी कागज के अकाल और आसमान पर चढ़ते हुए भावों ने आर्थिक रूप से सम्पन्न अच्छे-अच्छे व्यवसायी पत्रों को दुर्भिक्ष-पीड़ितों की हालत में ला दिया है। असर हम पर भी हुआ है। फिर भी गांधी जयन्ती के विशेषांक के बाद समर्पणकारी बागियों के लिए मुंगावली, मध्यप्रदेश में खुल रही खुली जेल पर यह विशेषांक हम निकाल पाये हैं तो इसका मात्र कारण सर्वोदय विचार को समर्थन देने वाले व्यक्तियों का बाहुल्य है। यह समर्थन इस वर्ष हमें कई क्षेत्रों और कई प्रकार से मिला है। कागज की कमी ने तफसील पर प्रतिबन्ध लगा रखा है नहीं तो हम कृतज्ञतापूर्वक सबके नामों का उल्लेख करते।

समर्पणकारियों का खुली जेल में आना एक ऐसी घटना है जो दण्डशास्त्र और अपराधियों को समाज में पुनर्प्राप्ति करने के प्रयत्नों में—स्वयं समर्पण से कम महत्वपूर्ण नहीं है। लेकिन हर ऐतिहासिक घटना एक चुनौती होती है और हम जितनी तत्परता और तैयारी से उसका सामना करते हैं उतना ही बेहतर उपयोग इतिहास का हमसे हो सकता है। हमें विश्वास है कि मध्यप्रदेश सरकार और चम्बल घाटी शान्ति मिशन इस चुनौती को अवसर में बदलने में समर्थ होंगे। आशा है यह विशेषांक इस चुनौती को स्पष्ट करने में सहायक होगा।

विशेषांक हम निकाल सके क्योंकि हमें मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री प्रकाशचन्द सेठी, जेल मंत्री कृष्णपाल सिंह, सूचना एवं प्रकाशन सलाहकार राजेन्द्रलाल हाण्डा, गुना के जिलाधीश विष्णुप्रताप सिंह और शान्ति मिशन के देवेन्द्र कुमार गुप्त, महावीर सिंह और हेमदेव शर्मा का सहयोग मिला। विशेषांक आपके हाथों में है क्योंकि इसके लिए मेरे सहयोगी श्रवण कुमार गर्ग और अनुपम मिश्र ने जी तोड़ मेहनत की, क्योंकि सत्येन्द्र त्रिपाठी और किरणशंकर पन्त ने व्यवस्था संभाली और क्योंकि ए० जे० प्रिन्टर्स के अनिल नरेन्द्र, जनकराज जी और पुत्तीलाल जी ने इसे बावजूद हमारी कठिनाइयों के छाप दिया।

आशा है विशेषांक आपको पठनीय लगेगा।

—प्रकाशक

जेलों को अस्पतालों में बदलना हो तो···महात्मा गांधी

अहिंसक ढंग के स्वतंत्र भारत में अपराध होंगे किन्तु अपराधी नहीं होंगे। अपराध करने वाले को दण्ड नहीं दिया जायेगा। अपराध अन्य किसी भी रोग की तरह एक रोग ही है। इस रोग की उत्पत्ति प्रचलित सामाजिक व्यवस्था में से होती है। इसलिए सभी अपराधों को, जिनमें हत्या तक शामिल है, स्वतंत्र भारत में एक रोग ही माना जायेगा और ऐसी दृष्टि रखकर ही उसकी चिकित्सा होगी। इस प्रकार के भारत का निर्माण कभी संभव होगा या नहीं—यह एक अलग बात है।

स्वतंत्र भारत में हमारे जेलों का स्वरूप क्या होगा? वहां सब अपराधियों को रोगी मानकर चला जायेगा। इस दृष्टि से हमारे जेलों को इस प्रकार के रोगियों की चिकित्सा करके नीरोग बनाने के औषधालय-जैसे बनना चाहिए। अपराध कोई शौकिया नहीं करता। वह तो मन की विकृति का चिन्ह है। विशिष्ट रोगों के लक्षणों का पहले निदान किया जाना चाहिए और फिर उनका इलाज।

यदि जेलों को अस्पतालों में बदलना तो इसके लिए भी किन्हीं बड़ी-बड़ी इमारतों या भवनों की जरूरत नहीं है। किसी भी देश में इसकी आवश्यकता नहीं है, खासकर भारत जैसे गरीब देश में। जेल के कर्मचारियों का दृष्टिकोण अवश्य ही अस्पतालों के चिकित्सों और परिचर्या करने वालों जैसा होना चाहिए। और जिस तरह रोगी अस्पताल में यह महसूस करता है कि वहां के कर्मचारीगण उसके मित्र हैं, जेल में अपराधी को उसी प्रकार महसूस होना चाहिए। उसे अनुभव होना चाहिए कि कर्मचारीगण उसे किसी भी तरह तंग नहीं करना चाहते बल्कि उसके मानसिक स्वास्थ्य को पुन लौटाने में मदद करना चाहते हैं। अब सरकारों को इसके लिए आवश्यक आदेश निकालने चाहिए; किन्तु जब तक यह नहीं होता तब तक भी जेल के कर्मचारी अपनी प्रशासकीय पद्धति को बदलने के लिए स्वयं ही बहुत कुछ कर सकते हैं।

जेल में अपराधियों का कर्तव्य क्या है? उन्हें आदर्श कैदियों के समान बर्ताव करना चाहिए। जेल के अनुशासन को तोड़ने से पूरी तरह बचना चाहिए। जो भी काम उन्हें सौंपे जाय, उन्हें चाहिए कि वे उन्हें मनोयोग के साथ करें। उदाहरण के लिए कैदियों को अपना भोजन स्वयं बनाना होता है, उन्हें दाल, चावल अथवा भोजन की जो सामग्री दी जाती है, वे उसे भलीभांति साफ करें, ताकि उसमें कंकड़ न रहने पायें और न किसी और तरह का कोई कूड़ा कर्कट!

कैदियों को अपनी हर छोटी-बड़ी शिकायत कर्मचारियों के सामने बड़ी ही शालीनता के साथ रखनी चाहिए। वे अपने छोटे-से समाज में पारस्परिक व्यवहार भी ऐसा सम्हाल कर करें जो उन्हें जेल से बाहर जाते समय जेल में आने के समय से अच्छा व्यक्ति बना सके।

क्या डाकू भगवान ने पैदा किये हैं···विनोबा

डाकू कोई जन्म से नहीं होते। हम जैसे भाई वे भी हैं। डाकू कौन हैं और कौन नहीं हैं, इसका फैसला करने वाला तो परमेश्वर है। कुछ लोग दुनिया में डाकू कहे जाते हैं। यह जरूरी नहीं कि केवल वे ही डाकू हों। परमेश्वर की निगाह में कुछ दूसरे लोग अधिक गुनाहगार साबित हो सकते हैं। पता नहीं डाकू कौन है? डाकू भी शोषण करता है, हम भी तरह-तरह से शोषण करते हैं। भगवान हमें भी 'डाकू' की उपाधि दे सकता है। ये डाकू क्या भगवान ने पैदा किये हैं? डाकुओं के दो नाकें होती हैं क्या? चार हाथ, चार पैर होते हैं क्या? हमारी तरह ही एक नाक वाले, दो पैर वाले आदमी को 'डाकू' कहना ठीक है क्या? कोई आदमी डाकू पैदा नहीं होता। हम दूसरों को लूटते हैं, चूसते हैं, कंजूस बनते हैं, दूसरों की परवाह नहीं करते निष्ठुर होकर जीवन बिताते हैं। उसी का यह नतीजा है। हरेक के दिल में अच्छे बुरे ख्याल आते रहते हैं। भगवान की जिन पर अखण्ड कृपा होती है उन्हीं को सदा सद्विचार आते हैं। इसलिए हमेशा के लिए कोई डाकू नहीं होता। दो बातें ध्यान में रखने लायक हैं—एक तो जन्म से कोई बुरा नहीं होता और दूसरा कायमी तौर पर कोई बुरा नहीं होता। इसलिए हमारे मन में दया हो, सहानुभूति हो।

सुमति-कुमति सबके उर रहहीं

हमारे दिल में डाकू के लिये बड़ा प्यार है। हम जानते हैं कि वे बहादुर हैं, सिर्फ उनकी गाड़ी गलत पटरी पर चली गयी है। वैसे वे दिल के सीधे और सरल होते हैं। डाकुओं का परिवर्तन अच्छे साधुओं में, सिपाहियों में और काश्तकारों में हो सकता है। इन्सान जब अपने प्यार को भूल जाता है →

तो ऐसे बदतर काम कर सकता है कि जानवर से भी नीचे जा सकता है। ऊँचा चढ़े, तो इतना चढ़ सकता है, जितना देवता भी नहीं चढ़ सकता। नर-देह ऐसी देह है, जिससे मनुष्य परमेश्वर को पा सकता है। ये बागी भाई क्यों न साधु बनें? जोरदार इंजन है, पटरी बदलने भर की देर है। ऐसे लोगों को प्यार से जीतना बहुत सरल है। जो डाकू कहलाते हैं उनमें से भी उत्तम शान्ति कायम करनेवाले निकल सकते हैं। सच्चा पश्चाताप हो तो उनमें से महात्मा भी पैदा हो सकते हैं। हमें डाकुओं को भी अपना भाई मानना चाहिए। इन्सान-इन्सान में कोई फर्क नहीं करना चाहिए। "सुमति-कुमति सबके उर रह हीं" ऐसा मान कर सब दिल एक करने की कोशिश करनी चाहिए।

प्रेम से मसले हल होंगे

भगवान ने मनुष्य को तीन अनमोल देनें दी हैं। एक देन है—बोलने की। जानवरों को यह देन नहीं। प्रेम से हम सत्य बोलें। रामजी का नाम लें। दूसरी देन है—हाथ। हाथ बन्दर के भी हैं। पर वह तोड़ना और उखाड़ना ही जानता है, बोना नहीं। हम हाथ से तरह-तरह के सेवा के काम करें। 'हाथ दिये कर दान रे' दुखियों को बचाने के लिए, दूसरों की मदद के लिए ये हाथ हैं। भगवान की तीसरी और सबसे बड़ी देन है—हमदर्द दिल। सदा के लिए कोई निष्ठुर नहीं हो सकता है। भगवान ने सम्त दिल किसी को नहीं दिया। हम सब के साथ हमदर्दी करें।

समाज यह तय कर ले कि हम इन गुमराह भाइयों को ज्यादा सतायेंगे नहीं, सरकार भी सोचे कि जो लोग अपना गुनाह कबूल करते हैं उनके साथ सख्ती न करते। पुलिस उनके साथ बुरा व्यवहार न करे। इस तरह प्रेम, सद्भाव से यह समस्या जरूर सुलझ सकती है। मानवता का स्पर्श होने पर दुर्जन एक क्षण में सज्जन बन सकता है। मैं पूरे विश्वास से मानता हूँ कि यहाँ लोगों को मानवता का स्पर्श होगा, ऊपर से ढकना हट जायेगा और भीतर का प्रकाश बाहर आ जायेगा। यह सज्जनों का क्षेत्र सन्तों का जाहिर होगा। अनेक सत्पुरुषों का उदय यहाँ हो रहा है। हम हमदर्दी और श्रद्धा से काम करें। ●

लिए दीवारों, तालों, सीकचों और विशेष सुरक्षा गार्ड जैसी भौतिक सावधानियां न्यूनतम हैं और जहां आत्मानुशासन पर आधारित एक ऐसी व्यवस्था है जो बन्दी के मन में उस समूह के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना पैदा कर सकें कि जिसमें वह रहता है।

इसमें वे आत्मसमर्पित डाकू रखे जायेंगे जिन्हें सात और उससे ज्यादा वर्षों की सजा हुई है।

मुगावली का शिविर मुख्यत कृषि पर आधारित होगा और बन्दियों का अधिकतर श्रम खेती में ही लगेगा। खेती के अलावा मुर्गी पालन और डेरी का काम भी होगा। धीरे-धीरे खादी, सुतारी, लुहारी और शिविर की जरूरतों को पूरी करने वाले धंधे भी शुरू किये जा सकेंगे। प्रारंभिक तौर पर पचास बन्दियों को खेती और बागवानी, दस को डेयरी, दस को मुर्गी पालन, पांच को दर्जीगिरी और धुलाई, बीस को शिविर के रखरखाव के काम दिये जायेंगे। माना गया है कि औसत तौर पर पांच बन्दी रोज काम के योग्य भी नहीं हो सकेंगे। हो सकता है कि शुरू में कोई लाभ नहीं हो लेकिन जैसे-जैसे उत्पादन बढेगा और लाभ होगा सरकार द्वारा काम करने वाले बन्दियों को बोनस दिया जा सकता है। काम करने वाले प्रत्येक बन्दी को प्रति दिन साठ पैसा दिया जायेगा। अच्छे कार्य पर सौ रुपये तक का वार्षिक पुरस्कार दिया जा सकेगा। पारिश्रमिक का एक तिहाई धन बन्दी व्यय कर सकता है और एक तिहाई परिवार को भेज सकता है और बाकी का एक तिहाई उसके नाम पर जमा किया जायेगा जो कि छूटने पर उसे दे दिया जायेगा। प्रत्येक बन्दी को उसके काम का कुछ न कुछ पारिश्रमिक मिलना जरूरी है।

बन्दी शिविर के पूरे अहाते में घूमने-फिरने के लिए स्वतंत्र होंगे। निगरानी रखने वाले कर्मचारी बिना शस्त्र वरदी के उनकी गतिविधियों की देखरेख करेंगे। बन्दियों के लिए सुबह पांच बजे से रात नौ बजे तक का कार्यक्रम बनाया गया है। इसमें प्रार्थना, नाश्ता, भोजन, काम, विश्राम, खेलकूद, मनोरंजन और पठन-पाठन होगा।

बन्द जेलों में जो छुट्टियाँ होती हैं वे खुली जेल में भी होंगी।

बन्दियों को भोजन, कारावास संहिता में वर्णित 'बी' श्रेणी के बन्दियों जैसा मिलेगा। प्रतिदिन का भोजन व्यय बाजार भाव के उतार-चढ़ाव के कारण तय नहीं किया गया है।

बन्दियों को अपने कपड़े पहनने की छूट होगी। जिनके पास अपने कपड़े नहीं होंगे उन्हें दो सफेद पायजामे या धोतियां, दो सफेद कुर्ते या कमीज, दो सूती टोपियां और तीन महीनों में एक सूती तौलिया दिया जायेगा। बिस्तर के लिए एक गद्दा, एक दरी या गोनापट्टी, दो चादरें, एक तकिया और दो कम्बल दिये जायेंगे। बीमारी की हालत में कम्बलों की संख्या बढ़ाई जा सकेगी। बर्तन बासे की एक थाली, एक कटोरा और एक गिलास।

एक पार्ट टाइम सहायक सर्जन और पूरे समय के लिए एक कम्पाउण्डर या पुरुष परिचारक की सेवाएं उपलब्ध होंगी। ये सेवाएं परिस्थिति के अनुसार बढ़ाई जा सकेंगी।

साल में दो बार कुल १० दिनों की घर जाने की छुट्टी प्रत्येक बन्दी को मिलेगी। इसमें यात्रा के दिन शामिल नहीं हैं। यह छुट्टी की अवधि खुली जेल में बिताई गयी अवधि में ही मानी जायेगी। छुट्टियां गुना के जिला न्यायाधीश स्वीकार करेंगे।

सजा में छूट महीने में पन्द्रह दिन। सद्व्यवहार पर तीस दिन। कठिन परिश्रम और जेल प्रशासन में सहयोग पर अधीक्षक साल में तीस दिन की विशेष छूट दे सकेंगे। अधीक्षक की सिफारिश पर पुलिस महानिरीक्षक (कारावास) साल में साठ दिन की छूट दे सकेंगे। राज्य सरकार द्वारा जब-तब दी जाने वाली छूट भी मिल सकेगी।

बन्दी अपनी कैन्टीन स्वयं चला सकेंगे। कैन्टीन के लिए शुरू में पांच सौ रुपये की व्यवस्था की जायेगी। यह पूंजी लाभ से उचित किश्तों में वापस ली जायेगी। हिसाब-किताब देखने वाले कर्मचारी को पन्द्रह रुपये प्रति माह भत्ता दिया जायेगा।

खुली जेल में बन्दी महीने में दो बार मुलाकातियों से मिल सकेंगे। मुलाकात का समय घंटे भर का होगा। मुलाकात नजदीकी देखरेख में नहीं होगी। मुलाकातें और उनका समय जेल अधीक्षक के निर्णय और विवेक पर बढ़ सकेगा। बाद में जब सरकार को उचित लगेगा तो बन्दी की रिहाई की पूर्व तैयारी के नाते बन्दी अपना परिवार अतिथि-गृह में रख सकेगा।

सरकारी खर्च पर बन्दी महीने में चार पत्र लिख सकेगा। अपने खर्च पर वह चाहे जितने पत्र लिख सकता है। पत्र पाने पर कोई सीमा नहीं होगी। आने-जाने वाले पत्र को एक जिम्मेदार अफसर देखेगा।

वाचनालय में पुस्तकें, पत्रिकाएं और अखबार रखे जायेंगे। जेल अधीक्षक की अनुमति से बन्दी अपनी किताबें और कागज आदि रख सकेंगे। रोजमर्रा की ऊब तोड़ने और बन्दियों को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने के लिए खेलकूद को प्रोत्साहन दिया जायेगा। फिल्में दिखाई जायेंगी।

सबसे बड़ा दण्ड होगा बन्द जेल में वापसी और यह दिया उस बन्दी को जायेगा जो सुरक्षा व्यवस्था को तोड़ेगा और अनुशासन को बुरी तरह भंग करेगा। लेकिन दण्ड में उसकी अब तक अर्जित छूट काटी नहीं जायेगी। छोटे दण्डों में—चेतावनी, छूट की समाप्ति, जुर्माना और विशेषाधिकार का निलम्बन शामिल होगा।

बन्दी आपस में अपने पांच-पंच चुनेंगे और यह पंचायत छोटे अपराधों का दण्ड देने पर जेल अधीक्षक को सलाह देगी। अन्य मामलों में भी पंचायत से सलाह ली जायेगी।

शान्ति मिशन के दो कार्यकर्ता रहेंगे जो जेल अधिकारियों और बन्दियों के बीच सम्पर्क सूत्र रखने का कार्य करेंगे।

कुछ और विशेषताएं : खाना बन्दी स्वयं बनायेंगे। खाना बनाने वालों का चुनाव बन्दी करेंगे। बैरकों में रात को ताला नहीं लगाया जायेगा। सौ मुर्गे-मुर्गियों के साथ मुर्गी पालन और तीन गायों और दो भैंसों के साथ पशु-पालन शुरू होगा। कृषि अधिकारी और ग्राम सेवक बन्दियों की सहायता करेंगे। पुलिस अधीक्षक को वायरलेस सेट दिया जायेगा।

खुली जेल कैसी हो ? : बदलते लचीले मानदण्ड

जिसमें दीवारें न हों, ताले न जड़े हों, सींखचे न हों और न हथियारबन्द रक्षक हों, सुरक्षा के इन बाहरी साधनों की जगह पर आत्मानुशासन की ऐसी व्यवस्था हो जो बन्दियों में अपने साथियों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना जगाये।

खुली जेल की परिस्थितियाँ सामान्य जीवन से मिलती-जुलती हों। वे बन्दियों के व्यवहार और दृष्टिकोण को इस प्रकार प्रभावित करें कि उनके सामाजिक नैतिक और आर्थिक पुनर्वास में मददगार साबित हो सकें। इससे बन्दियों में आत्मसम्मान की भावना जागेगी और इच्छा पैदा होगी कि छूटने के बाद वे कानून का सम्मान करने वाले आत्मनिर्भर व्यक्ति बनें।

खुली जेल ऐसे स्थान में हो जो न बिलकुल शहर में हो न शहरी आबादी से इतनी दूर हो कि बन्दियों के लोकाचार सामाजिक और अनुरंजक सम्पर्क टूट जायें। शहर से पच्चीस से पैंतीस किलोमीटर की दूरी ठीक रहेगी। यह जरूरी है कि खुली जेल रेल, मोटर आदि मार्गों से जुड़ी हुई हो। पानी मिलने के भरपूर साधन हों। बिजली होना भी जरूरी है। अगर बिजली की लाइन न लाई जा सके तो एक जनरेटर लगाना चाहिए।

साधारण तौर पर एक खुली जेल में दो सौ से पाँच सौ बन्दी रखे जाने चाहिए। लेकिन इन्हें ज्यादा से ज्यादा दो सौ की स्वतन्त्र इकाई में रखना बेहतर होगा ताकि उन्हें वैयक्तिक रूप से सम्हाला जा सके और उन पर समूह का असर हो सके।

स्थायी खुली जेल में बन्दियों को या तो बैरकों में रखा जाय या कुटीरों में। एक कुटीर में बीस और बैरक में पचास बन्दियों के लिए जगह हो। जहाँ तक सम्भव हो बरामदे, स्नानघर और फ्लश शौचालय आठ बन्दियों पर एक हो। अस्थायी खुली जेल में निवास के लिए ऐसी सामग्री का उपयोग किया जाये जो आसानी से हटायी जा सके।

एक ऐसा सभा भवन जरूरी है जिसमें कई तरह की गतिविधियाँ चलाई जा सकें।

बाहर के लोगों की घुसपैठ और जानवरों को रोकने के लिए खुली जेल की सीमाएँ तय करने वाली कोई व्यवस्था होनी चाहिए। बाण्ड या काँटेदार तारों से यह काम किया जा सकता है।

खुली जेल में ऐसे सभी बन्दी भेजे जा सकते हैं जिनमें अच्छे नागरिक बनने की पूरी मानवीय सम्भावनाएँ हों। फिर भी बन्दियों के चुनाव के लिए कुछ मानदण्ड तो होने ही चाहिए। ऐसे बन्दियों को प्राथमिकता दी जा सकती है जो आदतन अपराधी न हों, राज्य के रहने वाले हों, इक्कीस से पचास वर्ष की उम्र के हों और उनका शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो, उन्हें ऐसा कोई रोग पहले न हुआ हो जो खुले वातावरण में फिर हो सकता है, व्यवहार अच्छा हो, और मानसिक रूप से स्थिर हों, अच्छे पारिवारिक सम्बन्ध हों, जिन्होंने सजा की कुछ अवधि कारावास में काटी हो और साधारण तौर पर जिनकी रिहाई पाँच साल से पहले होने वाली हो। जो बन्दी पैरोल या घर की छुट्टी पर जा चुके हों उन्हें प्राथमिकता दी जा सकती है। जो खुली जेल में काम करने को तैयार हों। खुली जेल से भागे न हों, और ऐसे अपराधों के लिए दण्डित हों जिन्हें कोई गहरी मानसिक गड़बड़ी के बिना किया जा सकता हो। जिसके खिलाफ कोई और मामला अदालत के सामने न हो। प्रारम्भिक चुनाव स्थानीय चुनाव समिति द्वारा किये जाएँ जिसमें जेल अधीक्षक, मेडीकल आफिसर, वरिष्ठ वेलफेयर और जेल के कल्याण अधिकारी शामिल हों। समिति जिन बन्दियों को चुने उन्हें पहले खुली जेल के नजदीकी बन्द जेल में भेजा जाय ताकि वहाँ खुली जेल के अधीक्षक उनसे पूछताछ कर सकें और अन्तिम चुनाव करके उन्हें खुली जेल की तैयारी का प्रशिक्षण दे सकें। खुली जेल में बन्दियों को बिना हथकड़ी-बेड़ी के ले जाया जाय ताकि उनमें आत्मविश्वास का भाव आये और उन्हें लगे

→
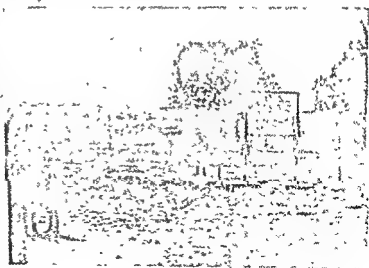
मुंगावली (मध्यप्रदेश) की खुली जेल

कि उन पर भरोसा किया गया है। बन्दियों को इस तरह ले जाने के लिए पहरेदारों की समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए।

खुली जेल के पास अपने वाहन होने चाहिए ताकि जेल कर्मचारियो, बन्दियो और मिलने जुलने वालो को लाया-पहुंचाया जा सके। सामान लाने ले जाने के लिए वाहनों की जरूरत तो होती ही है।

खुली जेल के लिए एक अधीक्षक, एक उपअधीक्षक और एक जेलर होना चाहिए। बन्दियो की संख्या पर इन पदो मे फेरबदल किया जा सकता है। इसके अलावा प्रत्येक दो सौ बन्दियो पर एक जेलर, दो उप जेलर या कल्याण अधिकारी होने चाहिए। देखरेख करने वाले कर्मचारियो की संख्या बन्दियो की संख्या का दस प्रतिशत हो। इन कर्मचारियो का उपयोग बन्दियो के साथ बाहर आने-जाने मे और दूसरे कामो मे भी किया जा सकता है। प्रत्येक दो सौ बन्दियो पर एक कारकून या सहायक जेलर हो।

पाच सौ बन्दियों वाली खुली जेल मे एक मेडीकल ऑफीसर और एक कम्पाउडर होना चाहिए। जहां बन्दियो की सख्या कम हो और पास में अस्पताल हो वहां के डाक्टर को भी नियुक्त किया जा सकता है। लेकिन यह जरूरी है कि डाक्टर दिन मे एक बार दौरा करे। प्रत्येक खुली जेल मे कम से कम तीन नर्सें हों और गम्भीर बीमारो को जेल के या दूसरे अस्पताल मे भेजने की व्यवस्था हो।

अक्षर ज्ञान, सामाजिक शिक्षण और अनुरंजन के कार्यक्रमों को चलाने के लिए कर्मचारी होने चाहिए। धार्मिक शिक्षा की भी व्यवस्था होनी चाहिए। खुली जेल में जो भी उद्योग धंधा सिखाया जाना हो उसे सिखाने के लिए योग्य व्यक्ति नियुक्त किये जाने चाहिए। सफाई आदि के लिए अलग से कर्मचारी होने चाहिए।

खुली जेल के अधिकारियों और कर्मचारियों का प्रशिक्षित होना जरूरी है। उनमे नेतृत्व, प्रामाणिकता और मानवता के गुण होने चाहिए। वे ऐसे व्यक्ति होने चाहिए जो बन्दियो को समझने और उनमे वैयक्तिक रुचि लेने को तैयार हो। अगर ऐसे प्रशिक्षित व्यक्ति न मिल सकते हो तो उनके प्रशिक्षण और तैयारी की व्यवस्था करके उन्हे नियुक्त किया जाये। खुली जेल की नीतियों और कार्यक्रमो पर विचार करने के लिए अधिकारियों और कर्मचारियो की बैठकें लगातार होनी चाहिए। खुली जेल के उत्तरदायित्व और परिस्थितियो के अनुसार ही इन लोगो को तनख्वाह और अन्य सुविधाएं दी जायें।

खुली जेल मे काम का तरीका और संगठन ऐसा हो जैसा कि इस तरह का काम बाहर किया जाता है। इससे बन्दियो को सामान्य परिस्थितियो मे कामकाज करने की आदत पड़ेगी। चूंकि अधिकांश बन्दी गावो के होते हैं और खेती जानते हैं इसीलिए उनके पुनर्स्थापन की दृष्टि से उन्हे खेती करने का मौका दिया जाना चाहिए। खेती के अलावा खेती पर आधारित उद्योग-धधे जैसे पशुपालन, मुर्गीपालन, बागवानी, फलो का रस निकालना आदि शुरु किये जा सकते हैं। उन्हें खेती के औजारो का रखरखाव, उनकी मरम्मत आदि सिखाई जा सकती है। बन्दियो को उपयोगी रोजगार देने के लिए जेल विभाग या सरकार द्वारा छोटे-मोटे उद्योग चलाये जा सकते हैं। ऐसे कामो से बन्दियो को रोजगार तो मिलेगा ही राज्य को शीघ्र ही कुछ आमदनी भी हो सकती है।

बन्दियो को बाध बनाने, नहरें खोदने, पुल, सड़कें और भवन बनाने, जगल काटने या लगाने, खेती के लिए जमीन तैयार करने जैसे राष्ट्रीय महत्व के काम मे भी लगाया जा सकता है। इससे बन्दियो का पुनर्वास तो होगा ही देश के विकास मे योगदान मिलेगा। और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से बन्दियो के श्रम का सम्बन्ध जुडेगा। बन्दियो से दो पालियो मे आठ घटे तक काम लिया जाना चाहिए। दिन का कार्यक्रम ऐसा बनाया जाना चाहिए कि बन्दियो को सामूहिक प्रार्थना, अपनी पूजा-पाठ, शिक्षा, मनोरजन आदि के लिए पर्याप्त समय मिल सके। त्यौहारो, राष्ट्रीय त्यौहारो और रविवारो को बन्दियों को छुट्टी मिल सकनी चाहिए। प्रत्येक बन्दी को उसके द्वारा किये गये कार्यक्रम पर पारिश्रमिक मिलना चाहिए। लाभ मे से पाच से दस प्रतिशत तक वार्षिक बोनस भी दिया जाना चाहिए।

खुली जेल के रख-रखाव का खर्च बन्दियों के पारिश्रमिक से निकलना चाहिए। खर्च का हिसाब पिछले साल राज्य भर मे बन्दियो के रख रखाव पर हुए खर्च के आधार पर किया जाये। बन्दियो को प्रोत्साहित किया जाये कि वे अपनी कमाई का एक तिहाई अपने परिवार को भेजें और इतना ही छूटने पर अपने पुनर्वास के लिए बचायें। बाकी की कमाई वे अपनी वैयक्तिक आवश्यकताओ पर एक सीमा मे खर्च कर सकते है।

खुली जेल के जीवन का हर पहलू बन्दे के दृष्टिकोण पर असर डालता है, पर परिसुधार के विशेष अवसर शिक्षा, कार्य अनुरजन और धार्मिक कार्यक्रमो से मिलते हैं। इसलिए अक्षर-ज्ञान देने की व्यवस्था के साथ-साथ सामाजिक शिक्षण भी दिया जाना चाहिए। इसके लिए शिक्षको के अलावा शिक्षण के अन्य साधन भी दिये जाने चाहिए। बन्दियो को स्थानीय सार्वजनिक सस्थाओ के सहयोग से कार्यक्रम करने की सुविधा मिलनी चाहिए। चुनिन्दा पुस्तको का एक पुस्तकालय अवश्य रखा जाना चाहिए। पुस्तकें मनोरजन करने के साथ शिक्षा देने वाली भी हो, यौन और अपराध सम्बन्धी पुस्तकें न रखी जायें। बन्दियो को प्रोत्साहित किया जाये कि वे वाचनालय का पूरा उपयोग करें।

धार्मिक और नैतिक शिक्षा की समुचित व्यवस्था जरूरी है। बन्दियो को उनके धर्म के अनुसार आराधना करने, धर्मग्रंथ पढने और अन्य गतिविधिया चलाने का पूरा मौका दिया जाये। खेलकूद, मनोरजन आदि की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

सुविधाएं और विशेष अधिकार इसलिए दिये जाएं कि बन्दियो मे अच्छे व्यवहार, सामाजिक उत्तरदायित्व और अपने कार्य मे रुचि पैदा हो सके। स्वतन्त्रता और सुविधाएं प्रयोग की सफलता के अनुपात मे बढ़ायी जायें।

सजा में छूट का आधार बन्द जेल की अपेक्षा खुली जेल मे ज्यादा उदार होना

→

चाहिए। लेकिन जो भी छूट बन्दी अर्जित करें वह उसकी कुल सजा की आधी से ज्यादा न हो। पैरोल या घर की छुट्टी पन्द्रह दिन के लिए दी जाये पर उसी बन्दी को जो कम से कम एक वर्ष तक खुली जेल में रह चुका हो। चूंकि खुली जेल में बन्दी का सामाजिक पुनर्स्थापन जल्दी होता है इसलिए लम्बे समय तक उसे रखने का उस पर उलटा असर भी पड़ सकता है। इसलिए लम्बी सजा वाले बन्दियों को जल्दी छोड़ने के लिए विभिन्न नियमों के अनुसार उदार नीति बरती जा सकती है। पैरोल पर छोड़ कर बन्दियों को काम पर या अपने परिवार के साथ रहने की सुविधा दी जा सकती है।

स्थानीय समाज में बन्दियों को मिलने के अवसर मेलों में, धार्मिक कार्यक्रमों में और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिये जा सकते हैं। लेकिन सावधानी बरतनी चाहिए। महत्वपूर्ण व्यक्तियों को खुली जेल में बुलाया जाना चाहिए और खुली जेल की गतिविधियों के बारे में प्रेस वक्तव्य भी दिये जा सकते हैं।

खुली जेल में बन्दियों को कार्य के अनुसार भोजन दिया जाये। ऐसे कपड़े न दिये जायें जो उनके बंदी होने का स्मरण दिलाते हों। नहाने-धोने के लिए साबुन आदि दिये जायें। बन्दियों को एक कैन्टीन चलाने दी जाये और उसके लाभ का उपयोग मनोरंजन के कार्यक्रमों और जरूरतमंद बन्दियों की मदद में किया जाये।

खुली जेल में चिट्ठियां लिखने और पाने पर उदारता की नीति बरती जाये। बन्दियों के परिवार वाले जब मिलने आयें तो उन्हें तीन दिन रहने की सुविधा मुफ्त दी जाये। अधीक्षक की अनुमति से बन्दी को उसके परिवार के साथ रहने आने की इजाजत दी जा सकती है। लेकिन कार्य से छुट्टी न दी जाये।

अनुशासन के लिए जोर सजा पर नहीं बल्कि समझाइश और अच्छे व्यवहार पर दिया जाये। अधिकारी और कर्मचारी स्वयं अपने उदाहरण से नियमों के पालन की वृत्ति पैदा करें। प्रत्येक बन्दी को अधीक्षक से निवेदन और शिकायतें करने का अवसर बराबर दिया जाये।

खुली जेल में दिया जाने वाला दण्ड निश्चित ही बन्द जेलों से भिन्न होना चाहिए। चूंकि खुली जेल में बन्दी पर विश्वास ही सबसे बड़ी चीज है शारीरिक दण्ड या भौतिक प्रतिबन्ध कारगर नहीं माने जा सकते। दण्ड के प्रकार निम्नलिखित हो सकते हैं—चेतावनी, पारिश्रमिक में कटौती या काम के सिलसिले में हुए अपराध पर जुर्माना, सजा की छूट में समाप्ति, कुछ अवधि के लिए विशेषाधिकारों की समाप्ति, बन्द जेल में वापसी और सौ दिन की छूट की समाप्ति। अगर अधीक्षक की राय में सौ दिन की छूट से अधिक की समाप्ति करनी हो तो महानिरीक्षक की अनुमति लेनी होगी।

खुली जेल से छूटने वाले बन्दियों की समाज में पुनर्स्थापना के लिए सरकारी अथवा समाजसेवी एजेन्सियों को व्यवस्था करना चाहिए। रोजगार दफ्तरों में उनके नाम दर्ज किये जाने चाहिये और सरकार ... चौथी श्रेणी के कर्मचारियों के पदों के लिए उम्मीदवारी करने की छूट उन्हें दी जानी चाहिए।

खुली जेल : 'अपराध-शास्त्र' के क्षेत्र में भारत का महत्वपूर्ण योगदान

—श्रीमती ज्योत्स्ना शाह
निदेशक, सेन्ट्रल ब्यूरो ऑफ करेक्शनल सर्विसेज

"खुली जेल" के शब्द में कुछ विरोधाभास सा मालूम होता है कि अगर वह जेल है तो खुली कैसे हो सकती है ? किन्तु 'अपराध शास्त्र' का जो नया सिद्धान्त आज चल रहा है, उसमें ये कोई नई बात नहीं है। क्यों कि जो समाज सजा देता है उसका हेतु कैदी को या गुनाहगार को ज्यादा से ज्यादा समय जेल में रखने का नहीं होता, बल्कि जल्दी से उसका सुधारकर समाज में वापस भेजने का होता है। इसलिए जेल में कितना वक्त किसी कैदी को रखना चाहिए, उसका आधार उसके सुधार पर होता है। यह जो ख्याल है कि धीरे-धीरे कैदी को मुक्ति का वातावरण दिया जाए, यह स्वयंसिद्ध और स्वीकृत किया हुआ अच्छा सिद्धान्त है। हमारे यहां लोगों को लगता है जैसे यह कोई नयी बात हो और वे सवाल आदि पूछते हैं। लेकिन अन्य देशों में इसका काफी अच्छा प्रयोग किया गया है। कुछ देशों में तो जेल में जाने का मौका कम से कम लोगों को ही दिया जाता है। क्योंकि कैद की जो समस्या है, जेल आदि में रहने की, उससे अपराधी बहुत सारी समस्याओं में घिर जाता है। इसलिए यह जो 'खुली जेल' का ख्याल है—साबित किया हुआ और अमल में लाया हुआ एक अच्छा प्रयोग है। भारत के अनेक राज्यों ने आजादी के बाद के पच्चीस वर्षों में खुली जेल के अच्छे अनुभव लिये हैं। खास कर जब उत्तर प्रदेश में 'खुली जेल' का कार्य प्रारम्भ हुआ तब अन्य प्रान्तों ने भी अपने-अपने यहां प्रयोग करके देखा कि कैदी को कुछ सजा के बाद जब इसकी जांच कर ली जाए, व्यक्तिगत रूप से उससे परिचय हो जाये कि समाज के लिए अब वह इतना खतरनाक व्यक्ति नहीं है और उसको मुक्ति देने से समाज को ज्यादा नुकसान नहीं होता है बल्कि भला होता है—तो इस तरह से चुने हुए कैदियों को, खास करके लम्बे अर्से के कैदियों को, खुली जेलों में भेजा जा रहा है। उसको वहां जाने के लिए कुछ उत्साह बढ़ाया जाये इसलिए 'रेमिशन' (सजा में कटौती) वह भी कुछ ज्यादा दिया जाता है कुछ प्रान्तों में। इसमें अच्छा एक तत्व यह है कि व्यक्ति के ऊपर अपने विश्वास का बोझ डाला जाता है कि जैसे और जितनी जल्दी वह आत्म-विश्वास करेगा, उतनी जल्दी ही वह मुक्ति पा सकता है। बिल्कुल बन्धन और सम्पूर्ण स्वतन्त्रता इसके दरम्यान में यह प्रयोग है। समाज, सरकार भी देख सकती है कि ऐसे कैदियों को भी पूरी मुक्ति देने में समाज को कोई खतरा या धोखा नहीं होगा।

अब एक बात यहां मध्यप्रदेश के डाकुओं के बारे में सोची जाती है, वह यह है कि सजा के तुरन्त बाद ही उन्हें खुली जेल में भेजने का निर्णय ले लिया गया। भारत में इस प्रकार का प्रयोग पहला ही है। अन्य देशों में अगर स्वीडन का उदाहरण ही लिया जाय तो, बीस प्रतिशत अपराधियों को ही जेल में भेजा जाता है, शेष अस्सी प्रतिशत लोगों को मुक्त वातावरण में, पर अनुशासन में रखा जाता है। दरम्यान का रास्ता है, हॉफ-वे हाउसेस इनको बोलते हैं जिसमें गुनाहगार दिन में बाहर जाकर अपना काम करेगा और शाम को आकर होस्टल में अपना समय बिताएगा,—इस तरह के काफी प्रयोग वहां हो चुके हैं।

हिंदुस्तान में जो कैदी खुली जेल में जाते हैं वे ज्यादातर आजन्म कारावास की सजा पाये हुए होते हैं। ऐसे कैदियों के साथ पांच-सात साल का प्रयोग बन्द जेल में करने के बाद ही उन्हें खुली जेलों में भेजते हैं। यह प्रयोग हमारे यहां, भारत में, महान प्रयोग होगा और इसलिए यह जरूरी है कि हम अपने आयोजन को पूरी तरह से साबित करें और इसके लिए पूरी तरह से सोचकर तैयारी रखें।

एक खास चीज यह है कि गुनाहगार को बन्धन के सिवा आत्म विकास के लिए और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व के लिए तैयार करना। खुली जेल की यह जो संस्था तैयार होगी उसमें हर कदम पर ध्यान रखना होगा। यह नहीं होना चाहिए कि बागी होने से या डाकू होने से कोई विशेष सुविधाएं उन्हें दी जायें। किन्तु जैसे समर्पण किया है वैसे-वैसे अपने किये के प्रति पश्चाताप के लिए और अपने उत्तरदायित्व के लिए उन्हें यह ख्याल रहे कि वे समाज के प्रति अपने कर्तव्य भी निभा रहे हैं। यह एक खास चीज होगी कि खुली जेल में उन पर न्यूनतम निगरानी रहे, बिल्कुल नहीं रहे यह तो नहीं होगा क्योंकि आखिर में वह अनुशासन की ही एक संस्था है। साथ ही बागियों के सहकार से उन पर कैद या निगरानी का आयोजन करें, जिससे हर एक कैदी, हर एक बागी को यह लगे कि समाज के प्रति उसे जो योगदान करना चाहिए उसमें वह लगा हुआ है। इस ख्याल से वे काम करेंगे तो उनका भी उत्साह बढ़ेगा। अनुशासन के प्रति वे विरोध प्रकट नहीं करेंगे। जैसे-जैसे उनका व्यक्तिगत सुधार और उनकी प्रगति दिखती जायेगी उसी तरह उनको विकास की सुविधाएं तथा पुनर्वास की सुविधाएं होंगी। सहकारी भावना से, सहकारी जीवन के लिए उनके संगठन का उपयोग (समाज को नुकसान पहुंचाने के लिए उनका संगठन बना हुआ था) हम समाज को सुलझाने में, समाज की सहायता करने में और खुद उनकी सहायता में कर सकेंगे। पूरे आर्थिक, सामाजिक विकास में अगर उनको जुटने का मौका दिया जाये तो यह प्रयोग दुनिया भर में एक अभिनव तरह का होगा और 'अपराध-शास्त्र' के क्षेत्र में भारत ने एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है—ऐसा माना जायेगा।

यह एक नया ही सवाल था हमारे सामने कि खुली जेल का स्वरूप क्या हो ? लेकिन उसके दो-चार पहलू थे जिन पर सर्वोदय →

→

वाली है) उसमे इन लोगों की क्या साझेदारी होगी और उसमे इन लोगों का विकास के लिए किस तरह से उपयोग किया जायेगा ?

उत्तर : इस प्रश्न पर मैंने इनके नेताओं से बात की थी। प्रमुख रूप से माधोसिंह से जो बहुत चतुर व सूझबूझ वाला आदमी है। उसने मुझ से कहा कि अब हमने जब आत्म-समर्पण किया है तो हमारी यह उत्सुकता है कि हमारे निकलने के बाद फिर हमें वहां कोई बागी नजर न आये। हमने उसने कहा कि हम भी यही चाहते है। अगर आप लोगों का सहयोग शासन के साथ इस प्रकार रहा तो हम हर कदम पर आपसे सहयोग लेना चाहेंगे और शासन आप सबको हर कदम पर सहयोग देना चाहेगा। इससे चम्बल घाटी में जहां बन्दूकें रोज धमकती थी, वे आवाजें खामोश हो जायें और दुनिया में जो इस क्षेत्र की बदनामी लग गई है कि यहां सिर्फ डाकू ही पैदा होते है- वह खत्म हो जाय। इस पर उन लोगों ने हमें आश्वासन दिया कि हम पूरा प्रयत्न करेंगे, और इसके लिए शासन उनका जो भी उपयोग करना चाहे वे उस काम को करने के लिए तैयार है। उनके सुझाव वैसे तो व्यक्तिगत जीवन के बहुत है, जैसे परिवार के लोगों को हमारे साथ रहने की ज्यादा से ज्यादा सुविधा दी जाय। केवल इन्हीं लोगों से नहीं मै तो जब त्रिवेन्द्रम गया था तो वहां भी मैंने कैदियों के सुझाव मांगे थे। उनका कहना था कि परिवार के लोगों को हमारे साथ रहने की ज्यादा से ज्यादा सुविधा दी जाये। वैसे हम खुद सुविधा ज्यादा से ज्यादा देना चाहेंगे। लेकिन जेल के नियम के अन्दर ही। दूसरा हम इनका ट्रेड-यूनियन के आन्दोलन जैसा स्वरूप नहीं बनने देंगे। बल्कि हम उन्हें रचनात्मक कामों के लिए प्रोत्साहन देंगे, उसका प्रशिक्षण देंगे और उस संबंध मे जितना भी होगा सहयोग देंगे। मैं तो बिल्कुल आश्वस्त हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि इन [illegible] सौ आदमियों में से सौ तो कम से कम ऐसे दृढ प्रतिज्ञ लोग निकलेंगे जो सेवक समाज [illegible] सुधार का काम करेंगे और जिनका प्रयत्न [illegible] होगा कि इस क्षेत्र के लिए डाकू समस्या हमेशा के लिए मिट जाये।

प्रश्न: लोग पूछते हैं कि क्या खुली जेल चल सकेगी ? उन्हें कहा कि जेल तो देश में कई जगह चल रही है, और खुली जेल से भागने वालों की संख्या बंद जेल से भागने वालों की संख्या से बहुत कम है। तो कहते है वे लोग तो चोर-चकारे थे, ये तो डाकू हैं। तो क्या यह जेल चल जायेगी ? आप लोग खतरे का निर्णय तो ले ही रहे हैं, इस खतरे को लेने का आपके पास क्या औचित्य है ? आप इन लोगों में अपना जो विश्वास रख रहे हैं, उसके लिए क्या कारण हैं और क्या आपको लगता है कि इस खुली जेल से कुछ निकलेगा ?
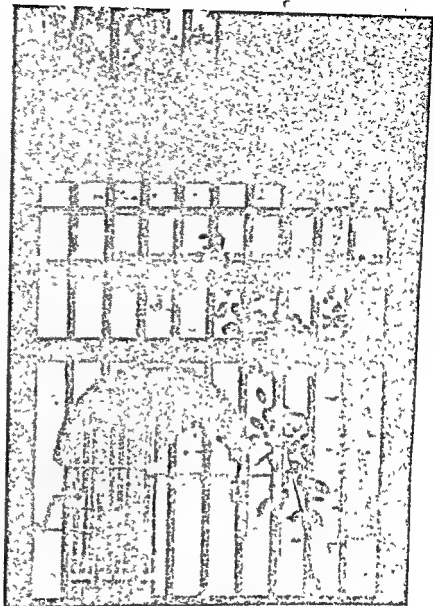
उत्तर: देखिये, खुली जेल और बंद जेल दोनों का तुलनात्मक अध्ययन हमने किया है। खुली जेल से भागने वालों की संख्या हजार में एक निकली जब कि बंद जेल से भागने वालों की संख्या हजार में पांच थी। [illegible] जो आंकड़े इकट्ठे किये गए, उनसे हम [illegible] कि इसमें हमें सफलता मिलेगी।

→

शीरस जेल पर उगती एक सरस बेल

दूसरी बात यह है कि जिस तरह गांधी के आन्दोलन में भाग लेने वाले लोग सभी एक दिन में गांधी के अनुगामी नहीं बन गए और न गांधीवादी बन पाये एक दिन में। हम लोग समाजवादी आन्दोलन में जाते थे। सैकड़ों की भीड़ हमारे साथ चलती थी तो सब उसी समय एकदम समाजवादी नहीं बन गए थे। लेकिन प्रशिक्षण अनुभव आदि ने हममें से बहुतों को समाजवादी और बहुतों को गांधीवादी बना दिया। मैं मानता हूं कि मनुष्य पर विश्वास रखना चाहिए। मैं उन बागियों के जीवन में जो मानवता है उस पर विश्वास रखता हूं। मेरी पूर्ण आस्था है कि इनमें से बहुत से लोग बहुत अच्छे काम करेंगे। फिर भी यह प्रयास हम कर रहे हैं तो इसमें खतरा तो है ही। लेकिन जब तक हम खतरा नहीं मोल लेंगे, शासन कोई काम नहीं कर सकेगा। मैं यह खतरा भी मोल लेने को तैयार हूं कि दो-चार अनियंत्रित लोग हमें फिलहाल तंग करेंगे क्योंकि हमने उनको बिना बंद जेल में भेजे, जैसा कि दूसरी खुली जेलों में किया जाता है, उनको सीधे खुली जेल में भेजा है। जिन लोगों को एक लम्बे समय तक बंद जेल में रख के बाद खुली जेल में भेजा जाता है, वे ऐसे

जब तक खतरा हम मोल नहीं लेंगे, शासन कोई काम नहीं कर सकेगा

अपराधी थे जिन्होंने आत्मसमर्पण नहीं किया था। लेकिन यहां इस मामले में बात दूसरी थी। इन लोगों को शासन पकड़ने में सफल नहीं रहा, सैकड़ों जानें लीं, हजारों को उन्होंने मारा, हजारों लुट गए। दूसरे जब मुकदमे वगैरा चलने लगे तब भी लोगों ने यह संदेह व्यक्त किया कि ये लोग क्या अपना जुर्म मंजूर करेंगे? फांसी की सजा, आजीवन कारावास की सजा कोई मंजूर करने जायेगा? लेकिन हमने, आपने देखा कि सब लोगों ने अपने जुर्म मंजूर किये और आज ८०% मुकदमे ग्वालियर तथा ६०% मुकदमे भिण्ड में निपट चुके हैं। अगर इन लोगों ने खुद अपने अपराध स्वीकार कर ऐसा सहयोग नहीं दिया होता तो ये मुकदमे इतनी जल्दी नहीं निपट सकते थे। जिन लोगों ने बिना पकड़े गये जयप्रकाश जी के, मुख्यमंत्री जी के सामने,

गांधीजी की तस्वीर के सामने आत्मसमर्पण किया, जिन्होंने बिना हमारे कहे अपने जुर्म मंजूर किये, जिन्हें जब हमने लम्बे पैरोल पर छोड़ा तो वे वहां बिना कोई परिस्थिति बिगाड़े ठीक समय पर वापस लौट आये उनके जीवन पर हम पूरा विश्वास रखते हैं और खतरों के रहते हुए भी इस दृष्टि को लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

प्रश्न खुली जेल में आप इन लोगों से सचमुच क्या करवाना चाहते हैं? कितनों का दल बनवाना चाहते हैं? उन दलों को क्या काम देना चाहते हैं?

उत्तर इस दिशा में तो हम अंतिम फैसला शीघ्र ही करेंगे। सर्वोदय नेता, गृह सचिव, आई० जी० जेल, मैं स्वयं सब बैठ कर इसे अंतिम स्वरूप देंगे। लेकिन अभी मेरे मन में यह भावना है कि इनसे भी चर्चा की जाये। एजुकेशन और इन्जेक्शन में फर्क है। शिक्षा मन के भीतर तक समाती है। इन्जेक्शन ऊपर से लगाया जाता है। उसी तरह मैं समझता हूं कि हम इन लोगों से भी चर्चा करनी चाहिए। इनमें से कुछ लोग पशुपालन में, मुर्गी पालन, सूअर पालन में, कुछ लोग मछली पालन में और कुछ अंदर खेत में काम लें, हम उनको प्रोत्साहन दें, पैसा दें, सुविधाएं दें, और फिर उन्हें उस धन्धे में लगायें। लेकिन हमारा अभी तक यह विचार है कि हम पांच-पांच का दल बना दें। इनका यह जो जत्था बनेगा उसे इकाई मान कर काम किया जाये। उन पांचों से यह कहें कि भाई अपना एक नेता चुन लो। काम लेने की और ठीक काम करने की जिम्मेदारी उसी की होगी। उनसे हम वैसा काम नहीं लेना चाहते जैसे एक पूंजीपति औद्योगिक संस्थानों में अपने मजदूरों ■ लेना चाहता है। ज्यादा से ज्यादा शोषण करता है। हम उनसे एक स्वतंत्र नागरिक की तरह एक समाजवादी सरकार जिस तरीके से व्यवहार करती है, उस तरह से करना चाहेंगे।

प्रश्न सरकार ने एक नेवास्कर कमीशन बैठाया था, इसी डाकू समस्या के लिए। नेवास्कर साहब ने कुछ सुझाव रखे थे कि इस इलाके में कौन-कौन से उद्योग स्थापित किये जा सकते हैं। उनमें कुछ सुझाव बहुत अच्छे हैं जैसे वहां ईंट-भट्टा का काम शुरू किया जा सकता है, क्योंकि वहां की मिट्टी इसके लिए बहुत अच्छी साबित होगी। तो क्या आप उस कमीशन की रिपोर्ट को भी ध्यान में रखेंगे?

उत्तर जी हां, हम सभी कमीशनों की रिपोर्ट्स का अध्ययन करायेंगे। आप सब लोगों की हम राय लेंगे और इसके अलावा दुनिया में जितनी खुली जेलें हैं उनका भी अध्ययन करेंगे। अपने देश में भी चार-पांच जगह की जेल अभी हम देखने जाना है, वहां देखेंगे। हम चाहेंगे कि यह खुली जेल एक बहुत अच्छी खुली जेल का स्वरूप ले सके और जुर्म करने वालों के सुधार की दिशा में यह एक कदम सिद्ध हो। यह इन डकैतों के साथ कोई पक्षपात नहीं है। ये दस-पांच साल में छूट कर चले जायेंगे। आगे आने वाले कैदियों को भी हम इन्हीं में रखेंगे। यह तो सब क्रम चलता रहेगा। मैं समझता हूं कि जुर्म करने वाले लोगों के साथ में व्यवहार करने का जो तरीका है जो आदि इतिहास से चला आ रहा है कि हाथ काटने के बदले हाथ काट लेना, सिर ■ बदले सिर काट लेना, खून के बदले खून आदि का बदला ही गया है। अब अपराधियों के साथ सहानुभूति के साथ विचार किया जाने लगा है, यह सोच कर कि इनको हम कैसे अच्छा नागरिक बना सकें। आज जो सजा पाकर जाय वह फिर कोई जुर्म करके सजा भोगने वापस न आये। वह लौट कर एक अच्छा नागरिक बन सके इस दिशा में दुनिया में बहुत तेजी से काम हो रहा है। हम से भी ज्यादा विचार करके लोगों ने इस भावना को आगे बढ़ाया है। हम तो अभी इसमें बहुत पीछे हैं। हम चाहते हैं कि जो लोग इस खुली जेल में रहें, वे वहां से निकल कर अच्छे नागरिक बनें—यह उनकी सजा न हो, उनका प्रशिक्षण साबित हो।

(प्रभाष जोशी से हुई एक बात-चीत के आधार पर)

हर अपराध में समाज का हाथ है

—प्रिंस क्रोपाटकिन

हम लोग जिसे अपराध कहते हैं, हमारी सन्तानें उसे आगे चल कर 'सामाजिक व्याधि' के नाम से पुकारेंगी। हमें इस सामाजिक व्याधि के लिए भी वही करना पड़ेगा, जो हम शारीरिक व्याधि के लिए करते रहे हैं। इस रोग को होने से रोकना ही उसका सर्वश्रेष्ठ इलाज है। समस्त आधुनिक चिन्तनशील व्यक्ति, जिन्होंने 'अपराधों' पर विचार किया है, इसी परिणाम पर पहुंचे हैं। इन व्यक्तियों द्वारा लिखे गये समस्त ग्रन्थों में इस बात का पूरा मसाला मौजूद है कि हम लोगों को उन लोगों के प्रति—जिन्हें समाज ने अब तक बड़ी कायरता से पंगु बना रखा है, कैद कर रखा है या फांसी पर लटका दिया है—एक नवीन भाव ग्रहण करना चाहिए।

समाज विरोधी कार्यों के, जो अपराध के नाम से पुकारे जाते हैं, होने के कारण तीन प्रधान श्रेणियों के होते हैं। ये श्रेणियां सामाजिक, शरीर-धर्म-सम्बन्धी और भौतिक हैं। इनमें से मैं पहले अन्तिम कारण पर विचार करूंगा। यद्यपि इन कारणों का ज्ञान लोगों को कम है, लेकिन उनके प्रभाव में कोई सन्देह नहीं है।

जब हमारा कोई मित्र चिट्ठी लिख कर उस पर पता लिखे बिना ही उसे डाकखाने में डाल देता है, तो हम कहते हैं, यह एक दुर्घटना है। यह तो ऐसी बात हुई जिसका पहले कभी ख्याल ही नहीं किया था। मगर असली बात यह है कि मानव-समाज में ये दुर्घटनाएं, ये अप्रत्याशित बातें, वैसे ही नियमित रूप से हुआ करती हैं, जैसे वे घटनाएं, जिनका बहुत पहले से सोच-विचार किया जाता है। डाक में छोड़े जाने वाले बिना पते लिखे हुए पत्रों की संख्या प्रतिवर्ष नियमित रूप से एक सी रहती है, जिसे देख कर आश्चर्य होगा। उनकी संख्या में प्रतिवर्ष कुछ थोड़ी-बहुत घटा-बढ़ी हो सकती है, लेकिन यह घटा-बढ़ी बहुत ही थोड़ी होती है। इसका कारण लोगों का भुलक्कड़पन है। यद्यपि यह भुलक्कड़पन एक अनिश्चित सी बात जान पड़ती है, लेकिन दरअसल वह भी ऐसे कड़े नियमों के अधीन है ही जैसे ग्रहों की चाल।

यह बात प्रतिवर्ष होने वाली हत्याओं के लिए भी लागू है। पिछले वर्ष के आंकड़ों को लेकर कोई भी व्यक्ति यह भविष्यवाणी कर सकता है कि फलां देश में इस वर्ष लगभग इतनी हत्याएं होंगी। यह भविष्यवाणी आश्चर्यजनक रूप से ठीक होती है।

हमारे कर्मों पर भौतिक कारणों का क्या प्रभाव पड़ता है, इसका पूर्ण विश्लेषण अभी तक नहीं हुआ है, मगर यह मालूम हो गया है कि गर्मी में मार-पीट आदि मामले अधिक होते हैं और जाड़ों में सम्पत्ति के विरुद्ध अपराधों की संख्या अधिक रहती है। प्रोफेसर इनरिको फेरी ने ग्राफ पेपर पर अपराधों की संख्या की वक्ररेखा खींची है। यदि आप उस रेखा का ताप (टेम्परेचर) की वक्ररेखा के साथ मिलान करें, तो यह साफ दिखाई दे जाएगा कि अपराधों की वक्ररेखा ताप की वक्ररेखा के साथ उठती-गिरती है। तब आपको यह मालूम हो जायगा कि मनुष्य कितना अधिक मशीन के समान है। मनुष्य अपनी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति का गर्व किया करता है। पर वह ताप की घटा-बढ़ी, आंधी-पानी तथा अन्य भौतिक कारणों पर कितना निर्भर करता है! जब ऋतु अच्छी हो, फसल भी भरपूर हुई हो और गांव वाले मजे में हों, तो अपने झगड़ों को मिटाने के लिए वे छुरी की शरण कम लेंगे, परन्तु जब ऋतु अच्छी न हो और फसल खराब हो, तो उस समय गांव वाले चिन्तित होते हैं और झगड़ों का रूप अधिक भयंकर हो जाता है।

शरीर धर्म सम्बन्धी कारण—जो मस्तिष्क की बनावट, पाचन-शक्ति और स्नायु-प्रणाली पर निर्भर करते हैं—निश्चय ही भौतिक कारणों से अधिक महत्वपूर्ण हैं। पैतृक शक्तियों और शारीरिक संगठन का हमारे कर्मों पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस बात की बड़ी खोजपूर्ण जांच हो चुकी है। इसलिए हम इनके महत्व का काफी सही अन्दाज लगा सकते हैं।

सेसारे लम्ब्रोसो का कथन है कि जेल-अधिवासियों में अधिकांश के मस्तिष्क की बनावट में कुछ दोष होता है। इस बात को हम सभी स्वीकार कर सकते हैं, जब हम जेल में मरने वालों के दिमागों और जेल के बाहर की दरिद्रता में बुरी तरह जीवन व्यतीत करके मरने वालों के दिमागों की तुलना करें। उसने यह दिखलाया है कि निर्दयतापूर्ण हत्या करने वाले व्यक्ति वे होते हैं जिनके दिमागों में कोई बड़ा दोष होता है। उसके इस कथन से हम सहमत हैं, क्योंकि यह बात निरीक्षण द्वारा सिद्ध हो चुकी है। मगर जब लम्ब्रोसो यह कहता है कि समाज को अधिकार है कि वह इन दोषपूर्ण मस्तिष्क वालों के विरुद्ध कार्रवाई करे, तब हम उसका कथन मानने को तैयार नहीं हैं। समाज को इस बात का कोई अधिकार नहीं है कि वह इन रोगी मस्तिष्क वालों को नष्ट कर दे। हम मानते हैं कि जो लोग ये क्रूर अपराध करते हैं, वे करीब-करीब बुद्धि-सिड़ी से—होते हैं। मगर सभी सिड़ी तो खूनी नहीं होते।

राजमहलों से लेकर पागलखानों तक अनेकों कुटुम्बों में आपको सिड़ी लोग मिलेंगे जिनमें वे सब लक्षण मौजूद हैं, जो लम्ब्रोसो के अनुसार 'अपराधी सनकियों' में विशेषता से पाये जाते हैं। उनमें और फांसी पर चढ़ने वालों में यदि अन्तर है तो केवल उस वातावरण का, जिसमें वे रहते हैं। दिमागी बीमारियां निश्चय ही हत्या करने की प्रवृत्ति को उकसा सकती हैं, मगर यह अवश्यम्भावी नहीं है कि वे ऐसा करें ही। प्रत्येक बात उन परिस्थितियों पर निर्भर करती है, जिनमें मानसिक रोगी को रहना पड़ता है।

इस सम्बन्ध में जितने तथ्य एकत्र हो चुके हैं, उनमें प्रत्येक समझदार आदमी यह

→

→

आसानी से देख सकता है कि जिन लोगों के साथ अपराधी की भाँति व्यवहार होता है, उनमें से अधिकांश किसी न किसी रोग से पीड़ित हैं। इसलिए जरूरत इस बात की है कि होशियारी से उनका रोग दूर करके उन्हें स्वस्थ करने की कोशिश की जाये, न कि उन्हें जेलखानों में जहाँ उनका रोग और भी बढ़ जाता है—ठेल दिया जाये।

अगर हम लोग स्वयं अपने ही विचारों का गहरा विश्लेषण करें, तो हम देखेंगे कि समय-समय पर हमारे दिमागों में ऐसे अनेक विचार बिजली की तेजी से दौड़ जाया करते हैं जिनमें जुर्मों की नींव डालने वाले कीटाणु छिपे रहते हैं। साधारणतः हम लोग इन विचारों को ठुकरा देते हैं, लेकिन यदि हम ऐसी परिस्थिति में हों, जिनमें इन विचारों को अनुकूल प्रोत्साहन मिले अथवा यदि हमारे अन्य भाव—जैसे प्रेम, दया, भ्रातृत्व-भाव आदि इन क्रूर विचारों का प्रतिकार न करें, तो ये विचार भी हमें अन्त में अपराधों में ला घसीटेंगे। नतीजे में यही कहना चाहिए कि लोगों को जेल पहुँचाने में शरीर धर्म-सम्बन्धी कारणों का महत्त्वपूर्ण हाथ है। परन्तु यदि ठीक तौर से देखिए तो मालूम होगा कि ये कारण अपराधों के कारण नहीं हैं।

मस्तिष्क के इन विकारों की गुंजाइश हम सब में पाई जाती है। हम में से अधिकांश को इस प्रकार कोई न कोई रोग होता है, मगर जब तक बाहरी परिस्थितियाँ हमारे इन रोगों को बुराई की ओर नहीं फेर देती, तब तक हम लोग जुर्म नहीं करते।

जब भौतिक कारण हमारे कर्मों पर इतना जोरदार प्रभाव डालते हैं और जब शरीर-धर्म सम्बन्धी कारण अगर हमारे समाज विरोधी कर्मों के कारण हुआ करते हैं, तब यह बात सहज में ही समझी जा सकती है कि हमारे अपराधों के सम्बन्ध में सामाजिक कारणों का कितना शक्तिशाली प्रभाव होगा। हमारे समय के सबसे अधिक दूरदर्शी और बुद्धि सम्पन्न मस्तिष्क वाले महानुभाव यह घोषित करते हैं कि प्रत्येक समाज-विरोधी अपराध के लिए सम्पूर्ण समाज दोषी है। यदि हमारे वीरों और प्रतिष्ठाशाली व्यक्तियों की प्रतिभा में हमारा हिस्सा है, तो हमारे लुटेरों के जुर्मों में भी हमारा भाग है। हमारे अपराधी जैसे हैं, उन्हें हम लोगों ने ही वैसा बनाया है। आज के लाख बच्चों बालक हमारे बड़े शहरों की अनैतिक तथा सामाजिक गन्दगी में पलते हैं। उनका लालन-पोषण उन लोगों के बीच में होता है जिन्हें रोज भूखों मर कर पानी पीना पड़ता है और इसी कारण उनका नैतिक पतन हो चुका है। इन बच्चों ने कभी यह नहीं जाना कि अपना घर कैसा होता है। यदि आज ये किसी टूटे-फूटे झोंपड़े में हैं तो कल सड़क पर पड़े दिखाई देंगे। जब हम देखते हैं कि बच्चों की इतनी बड़ी संख्या ऐसी बुरी दशा में पलती है तो आश्चर्य इस बात का होना चाहिए कि उनमें से इतने थोड़े लोग क्यों डाकू और हत्यारे होते हैं। मुझे तो बालक मात्र में सामाजिक भावों की गहराई देख कर ताज्जुब होता है। खराब से खराब मुहल्लों में भी आपको मित्रता के भाव दिखाई देंगे। यदि यह न होता तो समाज के नियमक विद्रोह बोलने वालों की संख्या बहुत अधिक होती। यदि लोगों में मित्रता के भाव न होते, यदि उनमें हिंसा के प्रति विरोधी प्रवृत्ति न होती, तो हमारे शहरों के बड़े-बड़े महलों का एक पत्थर भी साबुत न बचता।

यह तो हुई समाज की निम्नतम सीढ़ी की बात, परन्तु अब यह देखिये कि सड़क पर पलने वाले ये लड़के समाज के सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर क्या देखते हैं? उन्हें वहां संवेदना-शून्य और मूर्खतापूर्ण अय्याशी, सजी हुई दुकानें, धन का प्रदर्शन करने वाला साहित्य, संपत्ति की तृष्णा उत्पन्न करने वाली धन की उपासना और दूसरे के आनन्द से मजा करने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। वहां का मूल मंत्र है—"धनवान बनो। तुम्हारे मार्ग में जो कुछ रुकावट डाले, उसे नष्ट कर दो। जिन उपायों से जेल जाना पड़े, केवल उन उपायों को छोड़ कर, इसके लिए तुम जो उपाय चाहो, काम में लाओ।" शारीरिक मेहनत से वे यहां तक घृणा करते हैं कि अधिक से अधिक वे जिमनास्टिक कर लेंगे या टेनिस खेल लेंगे, मगर फावड़ा या आरा छूना उन्हें गुनाह है। उनमें कठोर मेहनती भुजाएं निम्नता का चिह्न समझी जाती हैं और रेशमी पोशाक उच्चता की निशानी मानी जाती है।

स्वयं समाज खुद ही ऐसे लोगों को उत्पन्न करता है जो ईमानदारी से परिश्रम करके जीवन बिताने के योग्य नहीं हैं और जिनमें समाज विरोधी भावनाएं भरी रहती हैं। जब उनके जुर्मों के साथ उन्हें काफी सफलता भी प्राप्त हो जाती है तो यही समाज उनकी प्रशंसा के गीत गाता है और जब ये लोग 'सफल' नहीं होते, तो उन्हें जेल भेज देता है। जब सामाजिक क्रांति श्रम और पूंजी के पारस्परिक सम्बन्ध को बदल देगी, तब काहिलों का नाम न रह जायेगा, जब प्रत्येक व्यक्ति अपनी अपनी प्रवृत्ति के अनुसार सार्वजनिक भलाई के लिए काम करेगा, जब प्रत्येक बालक को उसकी आत्मा और मस्तिष्क के विकास के साथ-साथ हाथ से काम करना भी सिखाया जायेगा, तब हमें जेलखानों, कचहरियों और जजों की जरूरत न रह जायेगी।

मनुष्य तो अपने चारों ओर की परिस्थितियों का, जिनमें वह बढ़ता है और अपना जीवन व्यतीत करता है, फल हुआ करता है। यदि वह अपने को सम्पूर्ण समाज का अंश समझने का आदी हो जाय, यदि वह यह समझने लगे कि अगर वह किसी को कुछ हानि पहुँचायेगा, तो उस हानि का असर अन्त में उस पर भी वैसा पड़ेगा, तो नैतिक सिद्धान्तों का उल्लंघन करने वाले कार्यों की संख्या बहुत कम रह जायेगी।

मैं यह नहीं कहता कि जेलखाने तोड़कर उनके स्थान पर पागलखाने बना दिये जायें। ऐसी दुष्ट बात मेरे हृदय से बहुत दूर है। पागलखाना भी तो एक तरह का जेलखाना है। कुछ उदार विचार वाले लोग कहते हैं कि जेलखाने का कायम रखना ही चाहिए, मगर उनमें डाक्टरों और शिक्षकों की नियुक्ति कर देना चाहिए। मेरे विचार उनके इस सिद्धान्त से भी बहुत दूर हैं। असल में कैदियों को समाज में आजकल जिस चीज का अभाव है, वह है उनकी सहायता के लिए बढ़ाया हुआ हाथ। उन्हें समाज में कोई ऐसा नहीं मिलता जो बाल्यावस्था से ही वात्सल्यपूर्वक मित्रता का हाथ बढ़ा कर उनकी उच्च मानसिक वृत्तियों और आत्मा को विकसित करने में सहायता दे। शरीर की बनावट में दोष होने के कारण या खराब सामाजिक

→

दशाओं के कारण, जिन्हें स्वयं समाज लाखों आदमियों के लिए उत्पन्न करता है, लोगों की इन उच्च मानसिक वृत्तियों के स्वाभाविक विकास में व्याघात पहुँचता है, और इसलिए वे लोग अपराधी हो जाते हैं, लेकिन यदि किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत स्वतंत्रता छीन ली जाय और उसे किसी भी काम को पसन्द करने या न करने का अधिकार न रह जाय, तो वह अपने मस्तिष्क और हृदय की उच्च वृत्तियों को इस्तेमाल नहीं कर सकता। उनके लिए डाक्टरों वाला जेलखाना या पागलखाना मौजूदा जेलों से भी खराब होगा। मनुष्यों की उन बीमारियों का, जिन्हें हम अपराध कहा करते हैं, केवल मात्र इलाज मानवी बन्धुत्व भाव और स्वतंत्रता है।

निःसन्देह प्रत्येक समाज में—चाहे वह कैसी ही उत्तमता से सगठित क्यों न हो— ऐसे मनुष्य अवश्य ही मिलेंगे, जो आसानी से आवेश में आ जाएंगे और जो समय-समय पर समाज विरोधी कार्य भी कर डालेंगे, लेकिन इसे रोकने के लिए जरूरत है तो इस बात की कि उनके आवेश को स्वस्थ राह पर लगाया जाय, वे उसे दूसरे ढंग पर निकाल सकें।

आजकल हम लोग बड़ा एकाकी जीवन व्यतीत करते हैं। निजी सपत्ति प्रणाली ने हमारे पारस्परिक संबंधों में एक भ्रमात्मक व्यक्तिवाद उत्पन्न कर दिया है। हर एक दूसरे को बहुत कम जानता है। हमें एक दूसरे के संपर्क में आने के मौके बहुत कम मिलते हैं किन्तु हम देख चुके हैं कि इतिहास में समष्टिवादी जीवन के उदाहरण-जिनमें लोग एक दूसरे से अधिक से अधिक घनिष्टता से बधते हैं—मौजूद हैं, जैसे चीन का 'सम्मिलित कुटुम्ब' या 'कृषक संघ' ये लोग एक दूसरे को बखूबी जानते हैं। परिस्थितियों के दबाव से उन्हें एक दूसरे को सांसारिक और नैतिक सहायता देनी ही पड़ती है।

आदि काल में कौटुम्बिक जीवन समष्टिवाद का अंश था। वह अब लुप्त हो गया है। अब उसके स्थान में एक *नये कौटुम्बिक* जीवन का प्रादुर्भाव होगा जो समाज आकांक्षाओं वाले आदमियों का कुटुम्ब होगा।

इस कुटुम्ब में लोगों को मजबूरन एक दूसरे को जानना पड़ेगा, एक दूसरे की सहायता करनी पड़ेगी और प्रत्येक अवसर पर उन्हें एक दूसरे को नैतिक सहारा देना पड़ेगा। इस पारस्परिक अवलम्बन से अधिकांश समाज *विरोधी कार्य*, जिन्हें हम आज देखते हैं, रुक जायेंगे।

लेकिन यह कहा जा सकता है कि फिर भी समाज में बहुत से लोग ऐसे बने ही रहेंगे आप चाहें तो उन्हें रोगी कह सकते हैं—जो समाज के लिए खतरनाक होंगे। क्या यह आवश्यक नहीं है कि हम लोग उनसे छुटकारा पा लें ? या कम से कम उन्हें औरों को हानि पहुँचाने से रोकें ?

कोई भी समाज—चाहे कितना ही कम समझ क्यों न हो—इस ऐसे उट-पटाग समाधान को मजूर नहीं करेगा। उनका कारण भी सुन लीजिये। पुराने जमाने में यह समझा जाता था कि पागलों पर शैतान आता था, इसलिये उनके साथ उसी के अनुसार बर्ताव भी किया जाता था, वे लोग जंगली पशुओं की भांति जंजीरों में जकड़कर अस्तबल की दीवारों में बांध दिये जाते थे। मगर महान क्रांतिकारी पाइनेल ने उनकी जंजीरें खोलकर उनके साथ भाई की भांति व्यवहार करने *की चेष्टा की। पागलों के रक्षकों ने कहा 'वे तुम्हें निगल जायेंगे'*। मगर पाइनेल ने उनकी बातों की परवाह न की और साहसपूर्वक इन पागलों को अपनाया। फल यह हुआ कि वे लोग, जो पहले जानवर समझे जाते थे, वे सब पाइनेल के चारों ओर आकर एकत्रित होने लगे। इस प्रकार उन लोगों ने अपने व्यवहार से यह सिद्ध कर दिया कि चाहे मनुष्य की बुद्धि रोग से आच्छादित क्यों न हो गई हो, फिर भी मानव स्वभाव के उत्तम अंशों पर विश्वास करना कठिन नहीं है। इसके बाद पाइनेल का आन्दोलन सफल हो गया, और तभी से पागलों को जंजीर में बांधना *बन्द हो गया।*

इसके बाद बेल्जियम के चील नामक एक छोटे ग्राम के किसानों ने कुछ और भी अच्छी बात निकाली। उन्होंने कहा—"तुम लोग अपने पागलों को हमारे यहां भेज दो। हम उन्हें पूरी स्वतंत्रता दे देंगे" उन्होंने उन्हें अपने कुटुम्बों में शामिल कर लिया और उन्हें अपनी मेज पर स्थान दिया। वे मौके-मौके पर उन्हें अपने खेत जोतने में साथ ले जाने लगे और नाच तमाशे में उन्हें सम्मिलित करने लगे। उनका कथन था—"हम लोगों के साथ खाओ, पियो और नाच तमाशे में सम्मिलित हो। तुम्हारी तबीयत चाहे तो काम करो, या मैदान में दौड़ लगाओ। जो चाहो करो, तुम एकदम स्वतन्त्र हो।" बस बेल्जियम के किसानों *का यही सिद्धान्त और यही प्रणाली थी।*

मैं यह प्रारम्भिक काल की बात कहता हूं। आजकल तो चील में पागलों का इलाज एक खासा पेशा हो गया है। जब कोई बात पैसे के लिए पेशा बना डाली जाती है तब उसमें कोई तत्व नहीं रह जाता। इस स्वतन्त्रता ने जादू जैसा असर किया। पागल लोग अच्छे हो गये। यहां तक कि उन लोगों का, जिनका विचार असाध्य था, व्यवहार भी मधुर हो गया और वे कुटुम्ब के अन्य व्यक्तियों की *भांति मानने मानने के योग्य हो गये।* उनका मस्तिष्क तो सदा अस्वाभाविक रीति से काम करता था, मगर उन लोगों का हृदय ठीक था। वे कहने लगे कि यह एकदम जादू की भांति था। लोग कहने लगे कि रोगियों का *रोग मोचन एक देवी और देवता की कृपा से* शांत हुआ था, मगर असल में देवी स्वतन्त्रता की देवी थी और देवता था खेतों का काम और भाई चारे का व्यवहार।

माड्स्ले कहता है—"पागलपन और अपराध के बीच में एक विस्तृत क्षेत्र है इस क्षेत्र के एक सिरे पर स्वतन्त्रता और बन्धुभाव ने अपना जादू कर दिखाया है, अतः उसके दूसरे सिरे *पर भी वे वैसा ही कर दिखायेंगे।"*

जेलखाने समाज-विरोधी कर्मों को होने से नहीं रोक सकते। वे उन कार्यों की संख्या में वृद्धि करते हैं। वे जेलखाने उन लोगों का, जो उनमें जाते हैं, कोई सुधार नहीं कर सकते। जेलों में चाहे जितना सुधार किया जाये, वे सदा कैदखाने ही रहेंगे। उनका वातावरण *मठों की भांति कृत्रिम ही रहेगा* और वे कैदियों को उत्तरोत्तर सामाजिक जीवन के अयोग्य बनाते रहेंगे। जेलखाने अपने उद्देश्य को पूरा नहीं करते। वे समाज का पतन करते हैं। उनका नाम ही मिटा देना चाहिए। वे पाखंडपूर्ण उदारतामिश्रित बर्बरता के अवशेष हैं।

('क्रांति की भावना' नामक पुस्तक से साभार)

दण्ड-शास्त्र : बदलती धारणाएं

दण्डशास्त्र आज भी इस बात का हल निकाल पाने में असफल है कि प्रभावी दण्ड के लिए क्या साधन हों, अविलम्ब तथा अनिवार्य अभियोजन कैसे हो, नई शुरुआत के लिए उचित अवसर कैसे प्रदान किये जाएं तथा राज्य द्वारा समर्थित मूल्य कैसे हों, जिन्हें अपराधी अपने स्वयं के मूल्यों से अधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ मान सकें।

यद्यपि आधार भूत धारणाओं में कतिपय दूरगामी परिवर्तन हुए हैं किन्तु दण्ड की पद्धतियां मूलतः अभी भी 'आनन्दवाद' के उस सिद्धान्त पर आधारित हैं जिसे कि सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में 'युक्तिवाद' के उदय के साथ समस्त मानवीय आचरणों के प्राथमिक स्पष्टीकरण के रूप में स्वीकार कर लिया गया था और जो मध्ययुगीन दण्डशास्त्र में 'दण्ड के लिए दण्ड' के सिद्धांत के स्थान पर प्रतिस्थापित हुआ था। 'आनन्दवादी सिद्धान्त' में यह बात निहित थी कि किसी अपराधी ने कोई अपराध इसलिए किया है कि उसे अपराध करने से मिलने वाले आनन्द का मूल्य इतना अधिक है कि वह सम्भाव्य दण्ड से होने वाले कष्ट की चिन्ता नहीं करता और इसलिए अपराध तथा दण्ड के बीच सन्तुलन बनाये रखा जाना चाहिए।

सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में और विशेषतः आचरण सबंधी ज्ञान की शाखाओं में हुई प्रगति ने 'आनन्दवाद' के किसी समय क्रान्तिकारी समझे गये सिद्धान्त को पूरी तरह भ्रामक सिद्ध कर दिया है। अनेक अध्ययनों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि अपराधियों की उत्पत्ति, मनुष्टि, विकास, असम सामाजीकरण तथा मैत्रीपूर्ण वातावरण के अभाव के कारण होती है।

समाजशास्त्रियों ने तो यहां तक कहा है कि अपराधियों की उत्पत्ति का मूल कारण वैयक्तिक विकृति नहीं है। अपराध समाज-जनित बुराचार है। अपराध सामाजिक उद्देश्यों (उदाहरणार्थ, अच्छी आर्थिक स्थिति) एवं संवैधानिक साधनों (उदाहरणार्थ, अवसर की असमानता) के आपसी टकराव से पैदा होते हैं।

सामाजिक ढांचे की कतिपय अवस्थाएं ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर देती हैं जो सामाजिक संहिताओं (जिनमें विधिक संहिताएं सम्मिलित हैं) के उल्लंघन के प्रति 'सामान्य' प्रतिक्रिया (सामान्य प्रतिक्रिया से मतलब है ऐसी प्रतिक्रिया जिसे सांस्कृतिक स्वीकृति प्राप्त हो भले ही, सांस्कृतिक अनुमोदन प्राप्त न हो) जागृत करती हैं। यह अनेक बार स्पष्ट हो चुका है कि सामाजिक ढांचा कुछ व्यक्तियों पर 'समाज विरोधी' रवैये अपनाने के लिए इतना अधिक दबाव डालता है कि वह व्यक्ति कौन सा तरीका अपनायेगा यह तकनीकी आवश्यकताओं पर तथा इस बात पर निर्भर करता है कि कौन सा तरीका सामाजिक रूप से अनुमोदित मूल्यों को प्राप्त करने की दृष्टि से अधिक कारगर है।

भारत में भी प्रायः यही स्थिति है। यदि हम चम्बल क्षेत्र में सदियों से होने वाली डकैती की असाधारण घटनाओं के कारणों का विश्लेषण करें तो इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वे एक बड़ी सीमा तक समाज-जनित अपराध की श्रेणी में ही आती हैं।

प्रश्न यह है कि जिस प्रकार औषधिशास्त्र में सभी रोगियों के लिए एक जैसा उपचार नहीं हो सकता उसी प्रकार सभी 'अपराधियों' के लिए एक जैसी सजा नहीं हो सकती। किन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अपराध के सामाजिक सांस्कृतिक स्रोतों के बारे में निकाले गये निष्कर्ष भले ही कुछ भी क्यों न हों, आज की दण्डपद्धति एक बड़ी सीमा तक 'आनन्दवाद' के सिद्धान्त पर आधारित है जो कि 'मोशर लिन' के सिद्धान्त से मिलता जुलता है।

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी में मानववाद तथा प्रजातान्त्रिक सिद्धान्त के विकास के साथ दण्ड पद्धति में सुधार के लिए तीव्र आन्दोलन छेड़े गये किन्तु उनका भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न प्रभाव रहा। यद्यपि इंग्लैंड तथा अन्य देशों पर दण्डशास्त्र की इन नवीन प्रवृत्तियों का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा।

यह विचार कि कारावास में अपराधियों का सुधार हो सकता है आश्चर्यजनक रूप से एक नया विचार था। अठारहवीं शताब्दी के

मुंगावली की खुली जेल का बाहर से एक दृश्य

पूर्व लोगों ने बलात्कारियों का नपुंसकीकरण कर दिया, चोरों के हाथ काट डाले। किन्तु इस पर भी जब अपराध बढ़ते ही गये तब सुधारकों ने यह विचार व्यक्त किया कि 'प्रोवर किल' दण्ड डर उत्पन्न करने वाला दण्ड नहीं है और मानवीय विकल्प की तौर पर 'केजिग सिन्ड्रोम' (कारावास) की पद्धति का विकास हुआ जिसने वर्तमान युग के दांडिक-सुधारों को गतिहीन बना दिया है।

किन्तु यह भलीभांति सिद्ध हो चुका है कि कारागारों के कैदियों का सुधार नहीं होता। न्यूनाधिक रूप से सभी अपराधियों की यह धारणा होती है कि समाज दोषी है न कि वह, और उनके लिए कारागार सर्वसत्तावादी समाज के एक ऐसे माध्यम के प्रतीक होते हैं जिनके द्वारा उन्हें उसके प्रशासन के प्रति समर्पित होने के लिए विवश किया जाता है। इस प्रक्रिया के कारण उनमें से अधिकांश मानवद्वेषी होकर कठोर समाजद्रोही बन सकते हैं। अतएव, यह स्पष्ट हो जाता है कि 'दण्ड' का उद्देश्य न तो 'दमन करना' है और न ही 'भावुकता पूर्ण व्यवहार' करना है और इसका एकमात्र हल आत्मसम्मान है। अमेरिका के कारागारों का नैतिक स्तर कभी भी इतना ऊंचा नहीं था जितना कि वह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान रहा, जब कि बन्दियों को युद्ध सामग्री तथा खाद्य उत्पादन का कार्य सौंपा गया। उनका नैतिक स्तर कभी भी इतना निम्न नहीं रहा जितना कि वह युद्ध समाप्त हो जाने के पश्चात् पुनः अकर्मण्यता आ जाने के समय था। कारागार, चिकित्सालयों के समान होने चाहिए, दण्ड का उद्देश्य मनुष्यों को कर्मशील बनाना है जो कि अपराधों को रोकने का एकमात्र उपाय है। कारागार पद्धति में आधुनिक मनोविज्ञान के इस मूलमन्त्र का समावेश होना चाहिए कि 'पाजिटिव रिइन्फोर्समेंट (दण्ड की अपेक्षा पुरस्कार') के माध्यम से वांछनीय व्यवहार अधिक सरलता से सुनिश्चित किया जा सकता है।

अपराध निवारण अंशतः अपराधों को जन्म देने वाली सामाजिक परिस्थितियों पर प्रहार करके और अंशतः अधिक कुशल एवं कार्यदक्ष पुलिस तथा न्यायालयों की स्थापना करके किया जा सकता है। कैदियों तथा समाज के पारस्परिक मेलजोल के नवीन विचार का भी अपना महत्व है। अपराधी को यह अवसर मिलना चाहिए कि वह समाज में पुनः स्थान प्राप्त कर सके।

मृत्यु दण्ड

उसी समय से जब कि केन (बाइबिल का एक पात्र) ने अपने भाई की हत्या की, समाज मृत्यु दण्ड की समस्या को ले कर उलझा रहा है किन्तु अभी भी उस समस्या का कोई निदान नहीं हो पाया है। शताब्दियों से, मृत्यु दण्ड प्राप्त कैदी का वध करने के लिए बहुधा भयानक और वीभत्स तरीके निकाले जाते रहे हैं जिन्हें जुगुप्साजनक और क्रूरतापूर्ण मानकर आज के युग में अमान्य कर दिया गया है।

वर्ग पक्षपात

यद्यपि मध्ययुग में दण्ड की प्रथा प्रायः नृशंस एवं अनियन्त्रित थी, तथापि एक ध्यान देने योग्य बात है कि मृत्युदण्ड का सर्वाधिक प्रयोग पश्चिमी यूरोप में औद्योगिक और कृषिक क्रान्ति के काल में किया गया जब कि औद्योगिक और कृषिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप सामाजिक-विस्थापन हो रहा था और सामाजिक-अशान्ति फैली हुई थी तथा गंभीर अपराधों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। इस काम में मृत्युदण्ड का अधिकाधिक प्रयोग धनिक वर्ग की उक्त विकास के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया का द्योतक है। इंगलैंड में १३ वर्ष के बालकों को भी छोटी-मोटी चोरी के या दूसरों के खेतों में भेड़ चराने के अपराध के लिए सरे आम फांसी पर लटका दिया जाता था।

अमेरिका में लगभग सभी दक्षिणी राज्यों ने मृत्युदण्ड कायम रखा है लेकिन बहुत से उत्तरी राज्यों ने मृत्युदण्ड-समाप्त कर दिया है। दक्षिणी राज्यों में चरम कोटि के दण्ड का प्रयोग अधिकांशतः काले सिद्धदोष व्यक्तियों पर किया गया। सन् १९३०-६५ की कालावधि के दौरान जिन सिद्धदोष व्यक्तियों को मृत्युदण्ड दिया गया उनमें ५४.४ प्रतिशत अश्वेत व्यक्ति थे। आजकल जिस देश में इस दमनकारी तरीके का अत्यन्त प्रभावी ढंग से प्रयोग किया जा रहा है वह है दक्षिणी अफ्रीका। एक अन्य संगत तथ्य जिस पर विचार किया जाना चाहिए, यह है कि अपराधी की गरीबी तथा विधि प्रतिरक्षा की अपर्याप्तता जिससे कि यह सिद्ध होता है कि कुछ मामलों में न्याय असमान हो सकता है और यह कि न्याय की विफलता की सम्भावना उतनी कम नहीं है जितनी कि वह समझी जाती है।

विश्व व्यापी प्रवृत्तियां

मृत्युदण्ड की प्रथा पश्चिमी यूरोप, उत्तरी अमेरिका तथा लेटिन अमेरिका में समाप्त होती जा रही है। यह प्रतीत होता है कि मृत्युदण्ड की समाप्ति विषयक आंदोलन प्रजातान्त्रिक आदर्श के उद्भव पर निर्भर करता है। बहुत से एशियाई एवं अफ्रीकी देशों ने मृत्युदण्ड कायम रखा किन्तु उन अपराधों की, जिनके लिए कि मृत्युदण्ड निहित किया गया है, संख्या में लगभग सभी देशों में कमी कर दी गई है। जापान में अभी भी ऐसे अपराधों की संख्या १३ है जिनके लिए कि अपराधी को मृत्युदण्ड दिया जा सकता है किन्तु भारत में केवल पूर्व चिन्तित हत्या ही ऐसा अपराध है जिसके लिए मृत्यु-दण्ड दिया जा सकता है।

यूरोप में केवल फ्रांस, स्पेन, तथा ग्रीक में ही मृत्युदण्ड कायम रखा गया है। किन्तु फ्रेन्को के स्पेन में भी पिछले दशकों के दौरान मृत्युदण्ड का प्रयोग "राजनैतिक अपराधों" तक के लिए यदाकदा ही किया गया।

ब्रिटेन में जहां कि ८०० वर्षों तक सिद्ध-दोष व्यक्तियों को (जिनमें कुछ तो सात वर्ष तक की आयु के बच्चे थे) फांसी की सजा दी जाती रही, पांच वर्ष के प्रतिबन्धकाल के पश्चात्, जिसमें कि हत्या की दर में कोई वृद्धि नहीं हुई, इस प्रथा को सन् १९६९ में समाप्त कर दिया गया।

अमेरिका में, १४ राज्यों ने मृत्युदण्ड समाप्त कर दिया है और अन्य तीन राज्यों ने उसे कुछ वर्षों के लिए समाप्त किया था किन्तु बाद में उसे पुनः लागू कर दिया।

→
किन्तु संघीय स्तर पर, उच्चतम न्यायालय के उस विनिश्चय के अनुसार जो कि मृत्युदण्ड की सावंधानिकता के संबंध में २६ जून, सन् १९७२ को दिया गया है, समस्त राज्यों में मृत्युदण्ड समाप्त हो जायेगा।

सन् १९६२ में राष्ट्रसंघ को प्रस्तुत की गई रिपोर्ट से यह तथ्य प्रकाश में आया कि ऐसे अपराधों के, जिनके लिए मृत्युदण्ड अधिरोपित किया जा सकता है, प्रश्नों की संख्या को कम करने की प्रवृत्ति विश्वव्यापी बन चुकी है, तथापि मृत्युदण्ड समाप्ति के आन्दोलन ने बहुत अधिक प्रगति नहीं की है।

तर्क और आंकड़े

इन समगत तर्कों के अतिरिक्त कि मृत्युदण्ड कायम आधारों पर न्यायसंगत है और यह कि मृत्युदण्ड का उद्देश्य प्रतिरण्ड है, मृत्युदण्ड कायम रखने के औचित्य का प्रतिपादन निम्नलिखित आधारों पर किया गया है.

(१) 'समुदाय' का संरक्षण : सम्भाव्य हत्याओं के विरुद्ध यह एक अत्यन्त प्रभावी प्रतिरोधक है और यह कि उसके स्थान पर आजीवन कारावास या कम दण्ड की व्यवस्था करना संकट जनक है। .

किन्तु यह धारणा कि मृत्युदण्ड एक प्रतिरोधक दण्ड है सिद्ध नहीं हो पाई है। उन राज्यों में जहां मृत्युदण्ड कायम रखा गया है तथा उन राज्यों में जहां वह समाप्त कर दिया गया है, मानव वध से हुई मृत्युओं की दरों से संबंधित सांख्यिकी का उपयोग मृत्युदण्ड कायम रखने के हिमायती तथा उसे समाप्त करने के हिमायती दोनों ने ही अपने-अपने मतों के समर्थन में किया है और अधिकांश मामलों में गहन विश्लेषण करने से यह सिद्ध हुआ कि यद्यपि निष्कर्ष स्पष्ट नहीं थे किन्तु उनसे निकाले गये अनुमान भ्रामक थे।

सेलिन (थार्स्टन) ने अमेरिका के उन पड़ोसी राज्यों में जहां मृत्युदण्ड समाप्त कर दिया गया था तथा साथ ही उन राज्यों में जहां मृत्युदण्ड कायम था, ३१ वर्ष से भी अधिक समय तक, मानव वध से हुई मृत्युओं के संबंध में व्यापक अध्ययन किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि किसी ऐसे राज्य में, जहां हत्या के लिए मृत्युदण्ड की व्यवस्था है, मानव वध की दरों पर कोई अधिक प्रभाव नहीं है।

मृत्युदण्ड के संबंध में गठित रायल कमीशन भी, जिसने ५ वर्ष के मोरेटोरियम के दौरान मानव वध से हुई मृत्यु की दरों का पुनर्विलोकन किया था, इसी निष्कर्ष पर पहुंचा अर्थात् "इस बात का कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है कि मृत्युदण्ड की प्रथा समाप्त करने के परिणाम स्वरूप हत्या की दरों में कोई स्थायी वृद्धि हुई है और इस प्रकार के अनेक अपराधी हैं जिन पर भयोत्पादक प्रभाव बहुत कम या प्रायः नहीं के बराबर हुआ।" (२) यह कि मृत्युदण्ड विधि-प्रवर्तक एजेन्सीज, पुलिस तथा संरक्षण दल, आदि के व्यक्तियों के संरक्षण के लिए प्रभावी प्रतिरोधक है।

इस धारणा की, जो कि मृत्युदण्ड कायम रखने के हिमायती व्यक्तियों द्वारा बहुधा व्यक्त की गई है, खोजबीन करने के लिए गवेषणाएं की गईं। अमेरिका में सेलिन (थार्सटन) द्वारा किये गये व्यापक अध्ययन से यह सिद्ध नहीं हो सका कि आरक्षियों (पुलिसमैन) की हत्या का तथा मृत्युदण्ड की व्यवस्था होने या न होने का आपस में कोई संबंध है।

(३) यह कि मृत्युदण्ड कठोर अपराधियों का निपटारा करने का अत्यन्त मितव्ययी तरीका है। तथापि, इसके विरुद्ध प्रस्तुत किया गया एक तर्क कि लम्बी अवधि की सजा प्राप्त बंदी न केवल कारागार में अपने निर्वाह खर्च का गुजारा कर लेते हैं वरन् वे समाज के प्रति भी अपना योगदान कर सकते हैं, विश्व भर में किये गये अनेक प्रयोगों द्वारा प्रमाणित हो चुका है। यदि वे समाज के लिए बोझ स्वरूप हैं, तो यह समाज का ही दोष है। अमेरिका के कारागारों में बंदियों ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान लाखों डालरों की कीमत की युद्ध सामग्री तथा खाद्यान्न का उत्पादन किया और बन्दियों का नैतिक स्तर कभी भी इतना ऊंचा नहीं रहा जितना कि उन वर्षों के दौरान था।

कारागार सुधार की प्रवृत्तियां

विश्व के दण्ड शास्त्रों में 'जेलिंग' (कारावास) की प्रथा एक पुरानी प्रवृत्ति सिद्ध हुई है जो कि मुश्किल से समाप्त होगी है। इसे कारावा... प्रतिरोध ... नहीं है अपितु ... मुख्य प्रयोजन है। ... क सिद्ध दोष व्यक्ति को ... जहीं है और यह कि उसे अ... न्यूनतम कालावधि के लिए ही समाज से हटा कर नियंत्रित वातावरण में रखा जाना चाहिए जिससे कि समाज में उसका पुन. स्थापन हो सके।

अब प्रत्येक कैदी को केवल व्यक्ति के रूप में ही समझा जाना चाहिए। किसी वर्ग के सदस्य के रूप में नहीं। उसकी भावात्मक आवश्यकताओं तथा पृष्ठभूमि को सावधानीपूर्वक अभिनिश्चित करके, उसकी शिक्षा तथा उसके पुन स्थापन के लिए उपयुक्त कार्यक्रम तैयार किये जाने चाहिए। इस प्रक्रिया में न केवल कारागार के कर्मचारियों को ही बरन बन्दी के कुटुम्ब के सदस्यों, उसके मित्रों तथा रिश्तेदारों को एव ऐसे सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी जिन्हें कि भावनात्मक परेशानियों से लोगों की सहायता करने में दक्षता हासिल हो, महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। न केवल उन्हें, अपितु समूचे समाज को सुधार की योजना तैयार करनी चाहिए, जिससे कि बंदी यह महसूस कर सके कि समाज उसे 'स्वीकार' कर लेगा और वह आत्मसम्मान के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए समाज में वापिस आ सकेगा।

संसार के कारागार विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि शिक्षा संबंधी तथा पुन. स्थापन संबंधी प्रक्रिया केवल उसी स्थिति में सफल हो सकती है जब कि कारागार की आन्तरिक परिस्थितियां उसके बाहर के विधिपालक समाज की परिस्थितियों के समान हों। अत: उस समय भी जब कि बंदी कारागार की सजा भुगत रहा हो, समाज से उसका रिश्ता पूर्णत: नहीं टूट जाना चाहिए। साप्ताहिक मुलाकात, पत्राचार एवं लेखन की सुविधाएं आदि के अतिरिक्त काम करने के लिए छोड़ दिये जाने (अपराधी को कारागार के बाहर कार्य करने के लिए विशिष्ट समय के लिए छोड़ दिया जाता है) पैरोल, निलम्बित दण्ड आदि की योजनाएं बंदियों के पुनः स्थापना में बहुत सहायक सिद्ध हुई हैं।

मृत्युदण्ड कब बन्द होगा ?

—जी. डी. खोसला

आपने उन मल्लाहों की कहानी तो सुनी होगी, जिनका जहाज डूब गया था और जिन्हें एक अनजाने द्वीप तक तैरकर जाना पड़ा था। मल्लाह बहुत ही धीमी रफ्तार से और चौकन्ने होकर आगे बढ़ रहे थे कि कहीं अचानक आदिम या नरभक्षी कबीले उन पर आक्रमण न कर बैठें। अकस्मात एक मोड़ पार करते ही उन्होंने एक खुले मैदान में फांसी की टिकटी देखी। वे रुके तथा उन्होंने आश्चर्यचकित होकर सन्तोष की सांस लेते हुए कहा, "परमात्मा तेरा लाख शुक्र हम सभ्य स्थान पर हैं।" अर्थात् न्याय की निर्मम प्रतीक वह टिकटी उनके लिए सभ्यता का अर्थात् ऐसी व्यवस्था जहां हत्या के लिए मृत्युदण्ड दिया जाता हो, चिह्न था।

इसी प्रकार का दृष्टिकोण हम संस्कृत के प्राचीन नाटक 'मृच्छकटिक' में भी मिलता है। इस नाटक में इस बात का वर्णन है कि मृत्युदण्ड पाये अपराधी का किस प्रकार वध किया जाता था। हत्यारे को नगर की सड़कों पर ले जाया जाता था, उसके आगे आगे चाण्डाल ढोलक साथ लेकर चलता था। अपराधी के माथे पर एक मुकुट लगा होता था तथा उसके शरीर पर लाल का लेप किया होता था तथा रक्त चन्दन के द्वारा शरीर पर चिह्न बने होते थे। उसके कन्धे पर एक शूली होती था, जिस पर उसको मृत्युदण्ड दिया जाना होता था।

बार-बार एक ढोल बजाया जाता था और कुछ इस प्रकार की घोषणा की जाती रहती थी, सुनो, भद्रजनों! यह अमुक व्यक्ति है तथा इस अमुक व्यक्ति की हत्या का दोषी पाया गया है। अब राजा की आज्ञानुसार हम इसको मृत्युदण्ड दे देंगे। यदि कोई भी व्यक्ति इस प्रकार का जघन्य अपराध करता तो उसे भी राजा इसी प्रकार का दण्ड देता।

तत्पश्चात् अपराधी को वधस्थल पर ले जाया जाता था और उसे भूमि पर लिटा दिया जाता था और जल्लाद की तलवार एक भरपूर वार से उसका सिर धड़ से अलग कर देती थी।

अपराधी—एक रोगी

लेकिन एक समय ऐसा भी आया जब मृत्युदण्ड का औचित्य, यहां तक कि न्याय समझा जाने लगा। आंख के बदले आंख, मौत के बदले मौत वाली बातें तब तक ही सही थीं, जब तक कि फ्रॉयड, जुंग, एडलर तथा अन्य दूसरों ने मानवमन की गहराइयों में नहीं झांका था तथा मानव को अपराधों के लिए उकसाने वाले तत्त्वों और मनोभावों का पता नहीं लगाया था।

'एरव्होन' में सैमुअल बटलर ने एक ऐसे देश के नागरिकों का वर्णन किया है जहां अपराधी को एक रोगी व्यक्ति माना जाता है। उसको इलाज के लिए भेजा जाता था। वहां उसके मित्र व सम्बन्धी उससे मिलने तथा उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करते। इसके विपरीत एक रोगी को मजबूर अपराध रखा जाता तथा उस अपराधी की भांति डांटा-फटकारा जाता क्योंकि उसका शरीर में ज्यादती करके और आहार सम्बन्धी अन्य अनियमितता के लिए दोषी माना जाता था।

इस प्रकार कई देशों ने मृत्युदण्ड हटा दिया। उनके अनुसार राज्य का प्रतिशोधी या हत्यारा नहीं होना चाहिए। दण्ड का उद्देश्य अपराधी से बदला लेना न होकर अपराध रोकना तथा अपराधी का सुधार होना चाहिए।

इसका अधिकतर जो दलील आवेश में की जाती है उसमें फांसी का भय भी हत्यारे को नहीं रोक पाता। अतः मृत्युदण्ड शायद ही अपराध निवारक का काम करता है और शायद इससे अपराधी सुधरता भी नहीं। ऐसा कहा गया है कि मृत्युदण्ड बन्द कर देने से हत्याओं या अन्य हिंसात्मक अपराधों में वृद्धि नहीं हुई है।

चौंकानेवाले दो मामले

दो-एक ऐसे चौंका देनेवाले मामले हुए जिन्होंने मृत्युदण्ड बन्द कर देने के लिए आधार तैयार किया। एक अमेरिकी विमान-चालक मेयर को तीन-चौदह लड़कों की हत्या के अपराध में मृत्युदण्ड दिए जाने के निर्धारित समय से कुछ ही घण्टे पहले उसकी रिहाई का आदेश प्राप्त हुआ। वास्तविक हत्यारे ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था।

एक अंग्रेज, ईवान्स, पर हत्या के आरोप में मुकदमा चलाया गया तथा उसे दोषी पाये जाने पर मृत्युदण्ड दिया गया। बाद में पता चला कि वह निर्दोष था, असली अपराधी कोई दूसरा ही व्यक्ति था। इस घटना का ब्रिटेन में मृत्युदण्ड समाप्त करने के हेतु कानून बनाने में भारी हाथ रहा। बेल्जियम, हालैंड, डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन तथा अन्य कई देशों में मृत्युदण्ड नहीं दिया जाता।

लेकिन आजकल की हिंसात्मक प्रवृत्तियों ने एक बार फिर मृत्युदण्ड के बारे में दोबारा सोचने पर विवश कर दिया है। नक्सलवादी युवकों द्वारा निष्कारण व अंधाधुंध हत्याओं, राजनीतिक अपहरणों, विमान अपहरण एवं विध्वंस, युवतियों के साथ बलात्कारों की घटनाओं तथा हिंसात्मक कार्रवाइयों की घटनाओं से कुछ लोग इस बात पर विश्वास करने के लिए मजबूर हो गए हैं कि कठोर दण्ड तथा मृत्युदण्ड अत्यन्त ही अनिवार्य हैं।

लेकिन एक बात बता दूं कि कोई भी मृत्युदण्ड हटाने और हिंसा के बढ़ने के बीच सम्बन्ध स्थापित नहीं कर पाया है। इस प्रकार के नये प्रकार के अपराधियों को अपराध करने से रोकने में किसी प्रकार की सहायता मिलने की आशा नहीं है। इसका समाधान कोई और ही योजना होगा।

पीढ़ियों का अन्तर

युवा-वर्ग की कुण्ठाओं को दूर करने, पीढ़ियों के अन्तर को दूर करने, सम्भावित अपराधियों को शिक्षित करने और उनमें समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करने तथा उन्हें दुष्प्रभावों से बचाने के लिए सुगठित प्रयास करना आवश्यक है। सम्भव है कि ये बातें आदर्शवादी उक्तियां और मात्र दीन दृष्टिकोण लगें, लेकिन कठोर दृष्टिकोण और विरोधी कार्रवाई एक सीमा तक ही प्रभावशाली होती है।

→

हालांकि मैं वर्तमान की इस अनुशासनात्मक स्थिति का समर्थक नहीं हूं, जिसके परिणामस्वरूप अनुशासनहीनता, गुंडागर्दी और हिंसात्मक अपराधों को अपनाने का अवसर मिला है, फिर भी मैं इस बात पर विश्वास नहीं करता कि मृत्युदण्ड से थोड़े से हत्यारों को रोका जा सकता है। गलती तथा न्याय में भूल की सम्भावना बनी ही रहती है। और निर्दोष व्यक्तियों को मृत्युदण्ड दिये जाने के बाद इस प्रकार की भूलों को सुधारने का कोई रास्ता ही नहीं रह जाता।

मैं समझता हूं कि भारत में मृत्युदण्ड उन्मूलन को जनता का समर्थन नहीं मिल पाया है। अतः हमें तब तक प्रतीक्षा करनी होगी जब तक कि हमारी जनता और विशेष कर हमारे विधि-निर्माताओं को अपराध-मनोविज्ञान का और अच्छा ज्ञान न हो जाय तथा वे सुधार के तरीकों व समाज-बहिष्कृत अपराधियों का पुनरुद्धार करने के उपाय नहीं जान पाते।

कैसी विडम्बना है कि वकील और न्यायाधीश, जिन लोगों को इन मामलों पर सड़क चलते आदमी से अधिक ज्ञान होना चाहिए, मृत्युदण्ड उन्मूलन के प्रस्ताव का विरोध करते हैं। शायद उन्हें रोजमर्रा वास्ता पड़ने वाले अपराधियों की नृशंसता और निर्दयता से डर लगता है और अनुभव ने उनमें हत्यारे के प्रति गैर-सहानुभूतिपूर्ण भावनाएं भर दी हैं।

कुछ वर्षों पहले हमारे कानून में मामूली-सा संशोधन किया गया था। इसके अनुसार किसी हत्यारे को पहले की तरह मृत्युदण्ड न दिया जाकर उम्र-कैद दी जा सकती है। इससे पूर्व मृत्युदण्ड से कम दण्ड देने के लिए न्यायाधीश को कारण बताने होते थे।

मैं नहीं कह सकता कि मृत्युदण्ड उन्मूलन के लिए हमें कितनी प्रतीक्षा करनी होगी। दुर्भाग्य की बात है कि विश्वव्यापी आधुनिक प्रवृत्तियों ने मानव को पाषाण-हृदयी बना दिया है तथा मौजूदा हिंसा और अराजकता के मूल कारणों को दूर करने के बजाय हम अपराधी से सहानुभूति और उससे व्यवहार करने के प्रति उदासीन हैं।

('जनवार्ता' से साभार)

बागी, अब समाज के सभ्य नागरिक बनना चाहते हैं

—बनवारीलाल बिसारिया

(१४ और १६ अप्रैल १९७२ को चम्बलघाटी के अधिकांश बागियों ने आत्म-समर्पण किया था। अपने मुकदमों के दौरान ये ग्वालियर स्थित केन्द्रीय जेल में ही रहे। मार्च १९७३ तक अधिकांश बागी सरदारों के मुकदमे समाप्त हो गये और कानून के अनुसार उन्हें सजाएं भी हो गईं। मुकदमों की समाप्ति के बाद प्रयोग के लिये चौदह प्रमुख बागियों को २३ मार्च १९७२ को नरसिंहगढ़ (म० प्र०) की उप जेल में रखा गया। ग्वालियर जेल के कुछ अन्य बागियों के साथ ये चौदह लोग भी अब मुंगावली की खुली जेल में रहेंगे। नरसिंहगढ़ खुली जेल में मार्च से नवम्बर के दौरान बागियों का जो रुख रहा उसका मुंगावली में भी प्रभाव होना स्वाभाविक ही है। यहां हम नरसिंहगढ़ उप जेल के जेलर श्री बिसारिया के अनुभव दे रहे हैं। स)

प्रश्न : जेल में साधारण कैदियों और समर्पित बागियों के व्यवहार में क्या फर्क है?

उत्तर : ये लोग जेल के नियम का पालन बिलकुल नियमित रूप से करते हैं। यह बात इनके अंदर इतनी नहीं है। वह आयेगी जरूर। परिवर्तन आया है इनमें, लेकिन धीरे-धीरे। अभी तक ये लोग जंगलों में बिल्कुल आजाद रहे। अब बंदिश में उन्हें यहां रहना पड़ रहा है तो धीरे-धीरे उसके आदी होंगे।

प्रश्न : ऐसे कौन से नियम हैं जिनका इन्होंने यहां पालन नहीं किया?

उत्तर : जैसे इनके रिश्तेदारों की मुलाकात का समय है, खाद्य सामग्री का सामान वगैरा है। इन सब में ये लोग कुछ न कुछ बदलाव चाहते ही हैं। जिसमें खाद्य सामग्री में तो ये लोग बहुत एडजैस्टमेंट करना चाहते हैं। मुख्यमंत्रीजी ने डेढ़ साल पहले चार रुपया प्रति व्यक्ति कहा था और फिर ग्वालियर जेल में इन लोगों की स्केल बन गयी, वही स्केल हमें यहां मिली। अब उस स्केल के अनुसार चीजों के भाव में काफी अन्तर आ गया है।

प्रश्न . अब प्रति बंदी डाइट करीब ■ रुपया आता है?

उत्तर : हां करीब छः रुपये दोनों समय का, पूरे दिन का।

प्रश्न और कौन से नियम हैं जिनका पालन नहीं हो पाता?

उत्तर . जैसे सुबह सोकर उठने का है, नहाने-धोने का है, तरतीब से बैठकर खाने का है। जब जिसकी मर्जी आती है खाना बनाने चला जाता है। नहीं भी जाता है। कभी-कभी जो साधारण बंदी हैं हमारे यहां उनसे भी इनके लिए काम करवाना पड़ता है।

प्रश्न याने नियमबद्ध कोई काम ये नहीं कर पाते हैं।

उत्तर हां, लेकिन अब अपने काम को करने की आदत सी पैदा हो रही है और उम्मीद है कि खुली जेल में ये काम करने लगेंगे।

प्रश्न जब से ये आये थे यहां, छः महीने पहले, तब से क्या परिवर्तन आये हैं?

उत्तर सबसे बड़ा परिवर्तन तो आप यह समझिये कि इनमें जो गुस्सा वगैरा जैसी चीज थी वे कम हो गयी हैं।

प्रश्न लड़ाई-झगड़ा···

उत्तर नहीं कभी भी नहीं किया।

प्रश्न आपस में कोई दुश्मनी?

उत्तर . नहीं, कभी कोई नहीं।

प्रश्न . आप चाहते तो इन नियमों का भी पालन इनसे करवा सकते थे?

उत्तर हां, लेकिन नियमों का पालन कराने के लिए हमारे पास इतना स्टाफ नहीं है। कुछ स्टाफ होता तो ठीक था। जब तक शान्ति मिशन के भिक्षु जी रहे तब तक नियमों का पालन होना रहा। और इनके कार्यक्रम नियमबद्ध चलते रहे। जब वे चले गये तो, हमने यह नोटिस किया कि अब सर्वोदय और शान्ति मिशन जेल वालों के साथ रहेंगे तो वहां ये चीज सुविधाजनक चलेगी। अकेले स्टॉफ के सामने तो इन लोगों की समस्या ज्यादा पैदा होती ही हैं कुछ न कुछ औ[र] उनका हल करने में उनकी दिक्कतें भी आ[ती] हैं। अब जैसे इन्हें किसी चीज की जरूरत पड़ती है तो ये फौरन कह देंगे कि कल ह[में] यह उपलब्ध होनी चाहिए नहीं तो ह[म] अनशन कर देंगे।

बिसारिया जी

प्रश्न इनके दृष्टिकोण में और क्या फ[र्क] आया है?

उत्तर पहले जंगल में रहते थे, अब उ[स] जिंदगी को तो ये पसन्द नहीं करते, वे उस[पर] पछता रहे हैं और ये चाहते हैं कि ये समा[ज] के अंदर एक अच्छे नागरिक बन कर रहें वैसे एकदम पूरा परिवर्तन तो आयेगा नहीं धीरे-धीरे जरूर आयेगा।

प्रश्न . किस व्यक्ति में आप मानते [हैं] कि काफी परिवर्तन आया है?

उत्तर इन २३ में से माधोसिंह, जिय[ा]लाल, पंचमसिंह, प्रतापसिंह, नारायण पुजारी, मोहरसिंह, इनमें बहुत परिवर्तन आया है। जियालाल व प्रतापसिंह तो एकदम साधु [से] हो गये हैं।

प्रश्न : इनके (जियालाल व प्रताप सिंह में) परिवर्तन का क्या कारण आप मानते हैं?

त्तर : कारण है शान्ति मिशन। ' के जरिये इनके ऊपर कुछ अच्छा तो पड़ा ही है। इन लोगों ने महसूस है कि हम लोगों ने जो काम किये थे वे ठीक नहीं थे, समाज के लिए ये काम निंदा के थे और उस पर अब उन्हे ा हुआ तो इन लोगों ने अपने को इस ं ढाल लिया।

श्न : सब लोग अपना-अपना खाना अलग बनाते हैं क्या ?

त्तर : नहीं सब तो नहीं। २३ मे ७-८ अलग बनाते है।

से नारायण पुजारी और पचमसिह ग बनता है, जगराम का, प्रतापसिह ग-अलग है, जियालाल का भी अलग पर रूपसिंह, हरविलासिंह का भी अलग है और फिर आठ-दस जनो का एक साथ है।

श्न : क्या यह फर्क शाकाहार और र के कारण है ?

त्तर : नहीं केवल इसलिए नहीं है। खाने-पीने का फर्क है, फिर कुछ त का भी इनके दिलो मे विचार है। खाने का स्वभाव भी अलग है जैसे जियालाल बहुत शुद्ध सात्विक खाना बनाता है।

ऐसे ही नारायण पुजारी और पचमसिह का है, प्रतापसिह का है। इसलिए इनका तामसिक खाने वालों से अलग होता है।

प्रश्न : ये लोग मेहनती लगे कि नहीं आपको ?

उत्तर : कुछ तो हैं ऐसे, लेकिन कुछ लोग, मै उम्मीद करता हू कि शायद खुली जेल मे भी उतनी मेहनत न करें। या हो सकता है कि उनके दिल मे हो कि हम मुखिया रहे है, सरदार रहे हैं, और यह भावना खुली जेल मे हट जाये और फिर वहा ये मेहनत कर सकते हैं। खुली जेल मे परिश्रम जरूर करेंगे वहा खेती उद्योग वगैरा का बंदोबस्त किया गया है—प्रशिक्षक रखे है तो ये लोग उसमे चाव लेंगे इसमे कोई शक नहीं। यहां पर (नरसिहगढ जेल मे) कोई काम नहीं था इसलिए भी ये लोग अपना खाना खाकर लेट जाते थे। इससे एक प्रकार का आलसीपन बढ ही गया है।

प्रश्न खुली जेल के बारे मे ये आपस मे क्या बातें करते हैं ?

इन स्लेटों पर जो कुछ लिखा है उसे बागियों ने लिखा है जिनकी उगलियां केवल राइफल के ट्रिगर पर चलती थीं।
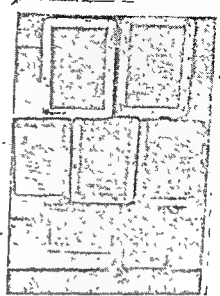
उत्तर खुली जेल मे जाने के लिए ये सब तैयार हैं, उत्सुक हैं। वहा पर एक खास ध्यान यही रखना पड़ेगा अपने को कि इन लोगों को काम मे लगाये रखें। खाली कम बैठें, जो भी कार्यक्रम हो एक नियमबद्ध तरीके से हो। अगर इन्हे फालतू समय मिला तो आलसीपन बढ़ता चला जायेगा और फिर इनकी रुचि हट जायेगी।

प्रश्न क्योंकि यही से ये लोग छूटकर पैरोल पर गए और लौटे, इनके व्यवहार से क्या ये भविष्य मे समाज के लिए उपयोगी हो सकते हैं ?

उत्तर : मैं तो आश्वस्त हूँ। ये आगे जाकर समाज के लिए एक उपयोगी भूमिका अदा कर सकते हैं। अब खुली जेल मे जा भी रहा रहे, उसके बाद जब ये समाज मे जायेंगे—उस पर भी इनका उपयोगी होना निर्भर करेगा। ऐसा मैं जब से ये आये हैं (२३ मार्च '७३) तब से मानता हूँ। मेरी यही छाप है कि इनमे परिवर्तन हुआ है और इनमे परिवर्तन की भावना है। और आगे ये कुछ करना भी चाहते हैं और अगर इनका ठीक से उपयोग किया गया तो ये समाज के लिए उपयोगी भी हो सकते हैं।
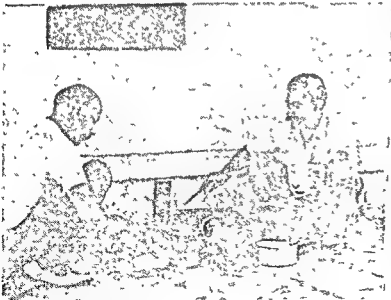
दार माधूसिह (दाएं) का खाना कभी उनके लोग बनाते थे, पर समर्पण के माधूसिह अपना भोजन स्वयं बनाने लगे हैं।

सारी दुनिया ही एक खुली जेल है —माधोसिंह

प्रश्न : खुली जेल में जाने के लिए आपके मन की क्या तैयारी है और आपको कैसा लग रहा है ?

उत्तर : खुली जेल में जाने के लिए तो हम पिछले पाँच सात महीनों से ही तैयार थे और तैयारी ग्वालियर से ही हो गई थी। यहाँ (नरसिंहगढ़ जेल में) तो सरकार ने ः महीने रखने के लिए कहा था, पर र तैयारी करने के लिए पाँच मास महीने ल गये। मेरे विचार से तो सभी लोग ली जेल की तैयारी जो मानी जाती है, ो कर चुके हैं।

प्रश्न : क्या समर्पण करते समय या सके पहले आपके मन में यह था कि आप ग खुली जेल में जाकर रहेंगे ?

उत्तर : समर्पण के समय और समर्पण के ने ऐसा कुछ तय नहीं था कि समर्पणकारियों लिए खुली जेल बनाई जायेगी। वैसे तो मारे दिल में, और दूसरे लोगों के दिल में ो, एक ही बात है कि खुली जेल हो या न्द जेल हो नाम रखने से तो कुछ नहीं ोता है। हाँ, अगर खुली जेल वाकई में ुली ही है तो वह अलग बात है। सरकार । यह जो नया कदम उठाया वह भी बगैर ोगी बातचीत के व पहले तय करके, यह हुत अच्छा हुआ है। खुली जेल अगर खुली ेल ही है तो वह अलग से उदारता ही मानी ायेगी, मध्य प्रदेश सरकार की।

प्रश्न : जेल मंत्री जी ने खुली जेल का िचार शायद आप लोगों के सामने पहले रखा था और आप लोगों से पूछा था कि ि खुली जेल कैसी हो ? आप लोगों ने क्या सुझाव दिये थे ?

उत्तर : हमने जो सुझाव दिये थे उसमें कहा था कि खुली जेल का मतलब खुली जेल ही हो। जैसे बन्द जेल में जब दिन में कई दिन में हर बार बार बन्द कर देते हैं। ताला लगा देते हैं, रात को बन्द कर लेते हैं। शौचादि के लिए भी बेड़ियों में जाना पड़ता है—ऐसी अनेक दिक्कतें होती हैं। खुली जेल में यह सब नहीं होना चाहिए। खुली जेल में बन्द रखने का तो सवाल ही नहीं होना चाहिए। चाहे वह दिन हो या रात हो। इसके अलावा उसमें कैदी को कुछ स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

प्रश्न : क्या आपको कैदी मानेंगे, खुली जेल वाले फिर ?

उत्तर : बात यह है कि खुली जेल तो देखी नहीं मैंने और अभी तक रहा नहीं, पहला ही काम है।

प्रश्न : क्या समर्पण के पहले खुली जेल में नहीं थे ?

उत्तर : थे तो। वैसे तो यह सारी दुनिया ही एक खुली जेल है। दोनों ही बात हैं कि सारी दुनिया खुली जेल में भी है और बन्द जेल में भी है। कोई जेल से बाहर न जेल के भीतर है। जहाँ तक हमारा कानून रख सके उतने ज्यादा से ज्यादा स्वतन्त्र हम रहना चाहते हैं। इसके लिए क्या साधन होने चाहिए, जिससे कि हम अपना मानसिक सन्तुलन बनाये रहें और अपने आप में यह महसूस करें कि हम स्वतन्त्र हैं ? उसके लिए यह जरूरी है कि जैसा हमारे गाँवों में जो होता है, पशुपालन, मुर्गीपालन, कृषि, थोड़े बहुत कुटीर उद्योग के साधन आदि खुली जेल में हों। ये सुझाव रखे गये थे, खुली जेल के लिए। अब विचार तो सरकार के सामने रख दिये हैं, सरकार ने इस बारे में कहाँ तक कुछ किया है बाद में, हमको पता नहीं पड़ा है। दरअसल में दीवार हो या ना हो उसे तो हम कुछ नहीं मानते हैं। हम तो जेल के मैनुअल को मानते हैं। भारत में जेल का मैनुअल तो आप ऐसा समझिये जैसे 'गरुड़ पुराण' है। 'गरुड़ पुराण' हम लोगों में बाँचा जाता है, उसमें कहीं भी पैर रखने के लिए जगह नहीं है। तो पुराना जो मैनुअल बना हुआ है, गरुड़ पुराण जैसा है। अब खुली जेल की बजाय से जो मैनुअल है जेल का, वो खुला हो तब तो जेल खुली है।

प्रश्न : आप अपनी स्वतन्त्रता का उपयोग किस प्रकार करेंगे ? पुराने जीवन से मुक्त हो कर नये समाज-जीवन को आप किस प्रकार बना सकेंगे ?

उत्तर : मुक्त हो ही कहाँ रहे हैं ? है तो जेल ही उसका नाम ! भाई, बन्द जेल को भी हमने तो अपना घर जैसा ही माना

माधोसिंह

है और ऐसा महसूस किया है कि यह हमारा घर ही है और इसमें अपना प्रायश्चित कर लेना चाहिए और जब प्रायश्चित की भावना किसी के दिल में आती है, तो संस्कार बदल जाते हैं। यह तो स्वाभाविक ही बात है। अब जब खुली जेल का सवाल है तो खुली जेल को भी घर जैसा मानते हैं, घर में जो कुछ भी होता है उसी तरह से करेंगे।

प्रश्न : खुली जेल खोलने के पीछे एक खास विचार यही था कि आप लोगों की जो शक्ति है, आप लोगों में संगठन शक्ति है,

→

→

बहादुरी है, युद्ध कर गुजरने की इच्छा है; इन सब शक्तियों का उपयोग वहां हो सके—आपके हित में और समाज के हित में, इसके लिए आप क्या करना चाहते है ?

उत्तर : हम तो कई दफा सरकार को कह चुके है। समर्पण के बाद कई दफा कहा है कि हमारे दिल में एक ही भावना है कि हमने बुरा किया है। ऐसा अक्सर महसूस करते हैं कि सरकार हमें कोई मौका दे तो हम समाज के लिए, दुनिया के लिए कुछ अच्छा करें। अब खुली जेल में हम कितना कर सकते हैं यह तो वहा के मैनुअल पर निर्भर है। हम तो अब, सभी लोग, यह निश्चय कर चुके हैं कि बाकी जो जीवन है, समाज की भलाई के लिए ही है।

प्रश्न : मान लीजिये जेल का मैनुअल आपको काफी छूट देता है, तो किस प्रकार के काम आप वहां करना चाहेंगे ?

उत्तर : सबसे ज्यादा लोग तो खेती करना पसन्द करेंगे। उसके बाद जो भी वहां काम होगा वह सभी पसन्द करेंगे। जैसे पहले मैंने बताया—मुर्गी पालन, पशुपालन, खेती और छोटे-मोटे कुटीर उद्योग। जेल में तो ये ही हो सकते हैं।

प्रश्न : जैसा कि जयप्रकाश जी ने कहा है कि समर्पण से आप लोगों की मुक्ति तो हुई है, डकैती नाम की संस्था का अन्त भी हुआ है लेकिन यह सब होने के बाद समाज के प्रति आपकी उपयोगिता किस प्रकार बढ़ सकती है और आप अपनी शक्तियों को किस प्रकार उसमें लगा सकते है ?

उत्तर : अंग्रेजी में कहते हैं कि जिस काम को जो करता है, करता रहा है उस काम को वह दूसरे लोगों से अच्छा कर सकता है। हम लोग बड़ी से बड़ी 'रिस्क' वाला काम उठाने के आदती हैं। इसका ज्यादा से ज्यादा जो तजुर्बा है वो जंगली क्षेत्रों में रहने और एक बीरता के साथ रहने, एकाउंटर वगैरा करने और गोली वगैरा चलाने का रहा है। मैंने आपस में बात की तो ये विचार मिले हैं कि सरकार चाहे तो फौज या पुलिस इनमें देश की सेवा करने का मौका दे तो हम लोग तैयार हैं। मेरे विचार में भी जो लोग इन कामों में जाना चाहें उनको खुली से खुली छूट देकर और ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन देकर उसमें भेजा जाय तो ये अधिक से अधिक काम कर सकते हैं। क्योंकि काफी लोगों का पन्द्रह-पन्द्रह, बीस-बीस सालों का तजुर्बा है और सब कामों से ज्यादा तो इस काम में शीघ्र से शीघ्र कामयाब हो सकते हैं और दूसरे लोगों से अधिक अच्छा काम कर सकते है।

प्रश्न दो-तीन बातें और हैं जो खुली जेल में जाने के बाद आप लोगों के सामने आ सकती हैं। खुली जेल में वातावरण खुला होगा, आप लोग घूम-फिर सकेंगे, अपना काम-काज कर सकेंगे, लेकिन उसके कारण आपसी झगड़ों को हल करने, उसको कम करने के लिए आप लोग क्या सोचते है ?

उत्तर उसका विचार किया है। झगड़े का कारण तो एक ही होता है, संस्कार। ग्वालियर से लेकर सागर तक की जेल के समर्पणकारियों में संस्कारों की कमी रही है और संस्कार अच्छे न होने से झगड़े वगैरा हुए। मेरा तो ख्याल है कि पहले से हालत अब बेहतर है और अच्छे संस्कार हुए हैं। लेकिन फिर भी खुली जेल में इस बात को देखना है कि ज्यादा से ज्यादा संस्कार हम लोगों में भरे जाएं। उसके लिए प्रबन्ध किये जाएं। सर्वोदय करे या सरकार करे। तब मुमकिन है कि कोई झगड़ा नहीं होगा आपस में।

प्रश्न . खुली जेल खुलने से आप लोग यह मानते हैं कि समर्पण के बाद का बड़ा अध्याय समाप्त हुआ और एक नया अध्याय शुरू हुआ। लेकिन इस सारे समय में आपके परिवार के लोगों को पुनर्स्थापित करने के लिए, उनकी सहायता करने के लिए मध्य-प्रदेश सरकार ने और शान्ति मिशन ने जो कुछ किया उसके बारे में आपका क्या कहना है ?

उत्तर : अभी तक कुल मिला कर जो हुआ है उससे तो सबको शान्ति है।

प्रश्न आप लोग पैरोल पर छूटकर बाहर गये और अपने घरों में जाने के बाद आपस में मिले जुले हैं, वहा लोगों में रहे। वहा जो हालत आपने देखी वह क्या आप जब बागी थे, तब से बदल गई है ?

उत्तर हम जब छुट्टी पर गये, ये हमने अनुभव किया, छोटे गांव से लेकर बड़े कस्बे तक और बाजार तक में, वहा अब ऐसा लगता है जैसे रामराज्य हो।

प्रश्न . आप लोगों के प्रति लोगों में आतंक का, भय का, या दुश्मनी का जो भाव था वह कुछ कम हुआ है क्या ?

उत्तर सौ में पांच प्रतिशत ही अब बकाया है। बदले की भावना अब पांच प्रतिशत ही रह गई है। मैं तो वैसे 'ना' के बराबर मानता हूं उसे।

प्रश्न हम ऐसा क्या कर सकते हैं कि चम्बल घाटी में बुनियादी परिवर्तन हो सकें। मुल्क का वो हिस्सा जो इतिहास से इतनी सदियों से बढ़ा रहा है वो फिर से इस देश का लहलहाता हुआ भाग हो सके ?

उत्तर : इसके लिए तो अब पैसे की जरूरत है। अगर योजनाओं पर पैसा यहां खर्च किया जाय तो अभी कुछ बन सकता है। हुआ तो यह है कि इसी समस्या (डकैती) के कारण सैकड़ों वर्षों से यहां विकास का कोई काम नहीं हो पाया है। जैसे बड़े

→

समर्पण से पहले जौरा (मुरैना, म० प्र०) के पास धौरेरा नामक गांव के इसी स्थान पर माधो सिंह अपने साथियों के साथ ठहरे थे

ठेकेदार वगैरा डर की वजह से जंगल में जा नहीं पाते थे। तो प्राईवेट ठेका लेने के लिए कोई तैयार नहीं था। रहा गवर्नमेंट का? वह ऐसे काम वहां कर नहीं सकी थी। ये कई दिक्कतें थीं। इसके अलावा इस समस्या पर ही सरकार का पूरा पैसा खर्च हो जा रहा था। तो दूसरी तरफ ध्यान नहीं गया। इसलिए यह इलाका पिछड़ा ही रहा।

चम्बल घाटी का सारा ही इलाका हम लोगों का ज्यादा जाना हुआ है। चम्बल घाटी का हर वातावरण हम लोगों के दिमाग में जाना हुआ है। बच्चे से लेकर बूढ़े तक। और छोटे से आदिवासी से लेकर एक बड़े पूंजीपति तक की भावना का हम लोगों के पास खजाना है। मानव का भी और वहां की प्राकृतिक-ईश्वरीय देन का भी। हम लोगों के दिमाग में हर चीज बैठी हुई है। अब सरकार की कोई योजना बने तो सरकार हमसे जो कुछ कराना चाहती हो, सेवा कराना चाहती हो, तो हम लोग तैयार हैं। हम लोगों की एक समिति बना दी जाये और समिति से सरकार जो भी सुझाव पूछे तो हम बतायेंगे। अभी तक तो किसी ने ये नहीं पूछा कि यहां क्या होना चाहिए? यहां जो पैसा हम लगा रहे हैं उसको कैसे खर्च करें, इसमें क्या होगा।

प्रश्न . समर्पण करने के बाद से अब तक आपके मन में क्या फर्क आया?

उत्तर : ग्वालियर जेल में आते ही आते थोड़ा सा एक भटका महसूस हुआ कि हम कहीं ऐसी जगह पर हैं जहां धंधा नहीं लगता। उसके बाद जब केस चलने का वातावरण बना तो बड़ी परेशानी हुई। कोई कहे ये कबूल कर लो, कोई कहे ये, कोई यह करो, तमाम रद्दे चले, मंजिल कोई दिखाई नहीं दे रही थी। लेकिन जब जयप्रकाशजी ने और सुब्बरावजी ने एक रास्ता बताया कि यह आपके लिए ठीक है, हालांकि उस रास्ते पर हम नहीं पहुंच पाये थे, तो उस रास्ते को अपनाया और अपने अपराध स्वीकार किये तो शान्ति हो गई। एक मंजिल सी मिल गई। फिर तकलीफ नहीं हुई।

(प्रभाष जोशी से हुई बातचीत के आधार पर)

मध्य प्रदेश

प्रगति और सफलताओं का एक वर्ष

- पांच सौ एक डाकुओं के आत्मसमर्पण से सदियों पुरानी डाकू समस्या प्राय समाप्त।
- शहरी हस्तक्षेप से मुक्त तथा जन कल्याण केन्द्रित प्रशासन।
- खेती की जमीन और शहरी संपत्ति की नयी सीमा निर्धारित।
- राज्य के सन्तुलित विकास की दृष्टि से पहली बार राज्य योजना मंडल का गठन।
- इस वर्ष के अन्त तक सभी उपलब्ध कृषि योग्य भूमि तथा ग्रामीण क्षेत्रों में निःशुल्क आवासीय भूमि का वितरण।
- पांचवी योजना के अन्त तक कुल क्षेत्र के २३ प्रतिशत में सिंचाई के विस्तार की योजना का सूत्रपात।
- २१,५११ सिंचाई पम्पों, १०२४ गावों तथा १६७ हरिजन बस्तियों को बिजली उपलब्ध।
- ६७,०३– एकड़ अतिरिक्त क्षेत्र में सिंचाई।
- सूखाग्रस्त क्षेत्रों को तत्काल सहायता।
- द्रुत औद्योगीकरण की दृष्टि से ठोस कदम।
- शासकीय कर्मचारियों को अच्छे वेतनमान, भत्ते तथा अन्य सुविधाएं।
- छात्र कल्याण सलाहकार परिषद का गठन।

उज्ज्वल भविष्य के निर्माण की दिशा में सघन प्रयास

सूचना तथा प्रकाशन संचालनालय, म० प्र० द्वारा प्रसारित

सू० प्र० सं० २७११/७३

खुली जेल भी बनाने की क्या जरूरत है ?

नाथूसिंह

प्रश्न : बागी होने के बाद नाथूसिंह जी आप बाहर चले गये थे, बनारस में गुप्त रूप से कपड़े का व्यापार करने लगे थे। इस प्रकार से आप बगावत छोड़कर दुनिया में आ गये थे। उसके बाद आपको लगा कि समर्पण करना चाहिए। तो आप दुनिया को छोड़कर खुद अपनी मर्जी से जेल में क्यों आये ?

उत्तर : पहले के पाप से छूटने के लिए। कहीं भी हम रहते, कोई भी व्यापार करते, हमें डर रहता, हम अपने परिवारवालों से नहीं मिल सकते थे। दुनिया के लिए हम हमेशा डाकू ही बने रहते।

प्रश्न : डाकू होने से जिन लोगों की आपके कारण खराबी हुई थी उनको धोने के लिए आप क्या करेंगे ?

उत्तर : उनके लिए हम क्या करेंगे ? यदि हमारे जैसे वे हो सकें तो हम बहुत करेंगे। जैसी अब हमारी भावना है वैसी ही उनकी हो जाये तो हम उनकी बहुत मदद कर सकते हैं।

प्रश्न : उनकी ऐसी भावना बनाने में भी आप मदद कर सकते हैं या नहीं ?

उत्तर : लेकिन अब वो हमको मारने को तैयार हैं तो हम मदद कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न : अभी भी वो आपको मारने के लिए तैयार हैं क्या ?

उत्तर : हां।

प्रश्न : आप पैरोल पर गये थे तब भी वो मारने पर तुले थे ?

उत्तर : हम वहां बस्ती गये ही नहीं और हम जाते तो वैसा हो जाता।

प्रश्न : तो उन लोगों का हृदय परिवर्तन आपको करवाना चाहिए।

उत्तर : हृदय परिवर्तन तो हमारे जयप्रकाश बाबू से करवाओ, मुख्यमंत्री सेठी जी से करवाओ।

प्रश्न : फिर भी आपको उनके हृदय परिवर्तन में या उनकी मदद करनी चाहिए।

उत्तर : मदद तो हम उनकी तब करें जब हम वहां रहने दें। वो हमको रहने ही नहीं देंगे तो हम उनकी क्या मदद करेंगे ? वो तो हमको पहले ही मार देंगे। जैसे हमने उनके आदमी मार दिये थे, वो हमको मारने के लिए खुद डाल रहे हैं।

प्रश्न : पक्की बात है ?

उत्तर : पक्की बात है। दो-चार केस तो सामने आ भी चुके हैं जो पैरोल पर गये उनको मारने आये, वो भाग आये तो उनके पिता को मार डाला।

प्रश्न : इसका मतलब है कि आपके मन में एक धुकधुकी तो बनी ही होगी।

उत्तर : यह धुकधुकी न हो तो हम लोग इन लोगों से क्यों कहते हैं कि इनकी बन्दूकें वापस होनी चाहिए। यहां जो कोई भी आता है हम उनसे बारबार कहते हैं कि उनकी बन्दूकें जमा कराई जायें। हमको डर है, हमारे परिवार वालों को भी डर बना रहता है।

प्रश्न : इस काम में आपको कितनी मदद चाहिए ?

उत्तर : जयप्रकाश बाबू ये काम कर सकते हैं। वो भी मनुष्य हैं उन्हें समझ में आ सकता है।

प्रश्न : आपके मन में इतनी ताकत नहीं पैदा हुई है कि आप उन्हें खुद समझा सकें ?

उत्तर : इतनी नहीं है, अभी। हमें डर लगता है कि जब तक हम समझायेंगे वो हमारी पीठ में बन्दूक लगा देंगे।

प्रश्न : डेढ़ साल तक यहां आप क्या करते रहे ?

उत्तर : यहां कोई काम है ही नहीं। खाना बनाओ, भगवान का नाम लो और विनोबा जी ने जो किताबें दी हैं उनको पढ़ो। किताबें कम समझ में आती हैं। रामायण तो हम रोज पढ़ते, गीताप्रवचन पढ़ते हैं, सहस्रनाम पढ़ते हैं। चर्खा कातते हैं।

प्रश्न : आप खुली जेल में जाने वाले हैं, आपको कैसा लगता है ? उसके बारे में आप क्या सोचते हैं ?

उत्तर : हमें तो बहुत अच्छा लगता है। यहां तो कोई काम है नहीं करने को वहां जायेंगे तो खूब खेती मिलेगी, दीवार नहीं होगी, खूब खुली हवा मिलेगी, दो आदमी भी आया करेंगे हमारे पास। कुछ वो बनायेंगे कुछ हम करेंगे।

प्रश्न : यदि आपको खुली जेल बनानी पड़े तो कैसी बनायेंगे आप ?

उत्तर : तब तो हम इन लोगों (समर्पणकारियों) से पूछते। जैसी कहते वैसे बना देते। और बल्कि हमें तो खुली जेल की जरूरत न पड़ती। यदि ये सोच लेते कि इन लोगों ने इतने अत्याचार किये, और फिर ये हमारे सामने हथियार लेकर आ गये। जेल में से इनको दस-दस दिन के लिए छोड़ दिया, तो भी अपने आप ठीक समय में वापस आ जाते हैं, फिर इनके लिए खुली जेल बनाने की भी क्या जरूरत है ? फिर तो इतना भर कह देते कि यहां फारम है, जाओ खेती शुरू करो। खुली जेल भी बनाने की क्या जरूरत है ? तार लगाओ, पुलिस डिपार्टमेंट रखो, जेल रखो, कर्मचारी रखो—इतनी खर्चे की क्या जरूरत है ? दूसरों को लगेगा कि हम जेल में हैं। याने एक तो हमारे मन पर वजन पड़ता है कि जेल है और देखने वालों को लगेगा कि ये जेल है। घर पर इससे दस गुना ज्यादा काम करके बता सकते हैं।

मोहरसिंह

प्रश्न : सुली जेल मुंगावली जाते हुए मन में कैसा लग रहा है ?

उत्तर : मन में अबे तो बड़ी खुशी है। अच्छी हवा में जाय रये हैं, कोठरा-गोठरा कुछ नही होयगो। वाँ जाके तो अच्छो लगेगा, चौड़ी जगा मे जा रये हैं, वाँ अच्छी सुविधा रैगी।

प्रश्न : वहा आप क्या करना चाहते हैं ?

उत्तर : वाँ जो सिरकार बतायेगी वोई करेंगे।

प्रश्न : नही, पर आपके मन मे क्या है ?

उत्तर : हमारे मन में ? खेती भी कर सकते हैं। पशुपालन भी कर सकते हैं, मुर्गी पालन भी कर सकते हैं। कुछ भी काम कर सकते हैं। कभो फौज्ज में कहें, मिलेटरी मे कहें। पशुपालन करेंगे हम तो।

प्रश्न : बागी बनने से पहले भी आप पशुपालन करते थे न ?

उत्तर : हाँ, मेरा यह काम था पहले।

प्रश्न : पशुपालन मे आपकी इतनी रुचि क्यों है ?

उत्तर : रुचि तो दूध पीता हूं और दंड लगाता हूं और का रुचि है ?

प्रश्न : पशुपालन के अलावा आपके मन में क्या है जो आप करना चाहेगे ?

उत्तर : देश की सेवा कर सकते हैं। झोला टाढे फिरेंगे गाव-गाव।

प्रश्न : गाव-गाव मे क्या कहेंगे ?

उत्तर : कहेंगे के भैय्या शान्ति से रहा करो, लड़ा-झड़ी मत करो।

प्रश्न : सिर्फ समझाने से मान लो नही भी काम बने, उन पर असर न हो तो फिर आप अपनी जिन्दगी इस तरह से चला सकते हैं कि उन लोगों को लगे कि देखो मोहर सिंह आजकल ऐसे काम कर रहा है, इतना भला आदमी बन गया है।

उत्तर : हम अपनी तो जिन्दगी चलायेंगे ई वैसी। हमने तो दोई तरफ देख लई है। वा तरफ तो हम अब झुक ही नही सकत।

प्रश्न : जिस दिन पगारा में आपने गांधी जी के चरणो मे अपनी बंदूक रख दी और लोगों से हाथ जोड़ कर माफी मांगी और फिर ग्वालियर जेल गये, उसके बाद से अब तक आपने अपनी नई जिन्दगी के लिए क्या-क्या किये हैं ?

उत्तर : नई जिन्दगी के लिए थोरा बहुत पढ़े-लिखे हैं और कबूल करके मुकदमे से निपट गये। शान्ति से पड़े रहते, हैं बहुत अच्छे, रात सोते, सुबह जागते, नाय-धोते हैं, मस्ती चल रई है। पूजा-पाठ करत हैं, अब कोइ चिन्ता नई हम लोगन को।

प्रश्न : पैरोल पर आप गये थे तो वहा क्या किया ?

उत्तर : वाँ कुछ नई, घूमत-फिरत रहे, लोगों से मिलत रहे, अच्छी तौर से। गावो मे घूमे फिरे खूब, कोई तकलीफ नई।

प्रश्न : आपने वहां का वातावरण कैसा पाया ?

मोहरसिंह

उत्तर : वह तो बहुत ही अच्छा पाया, कोई डर नई, रातो-दिन लोग फिरते रहते हैं, कतई कोई डरता नई। पहले दिन के चार बजे के बाद कोई खेत पर मिलते नई था—भाग जाते थे घर को सबै, अब तो सब खेत मे रात-रात रुकते हैं। कोई डर नई, बहुत सुन्दर है।

प्रश्न : पैरोल पर जब आप लोगो से मिले, जो लोग आपसे मिलने आये, उनने आपसे कैसा व्यवहार किया ?

उत्तर : बहुत अच्छा किया। पहले जैसा डर उन्हें लगता था वो डर अब नई रहा उनमे। अब तो वो भाई की तरह मे देखते हैं, हमारा भी भला चाहते हैं। कोई डर का उनका सवाल नई। वो लोग मानते हैं कि अब इन लोगो ने अच्छा किया है पहले अच्छा काम नई करते थे। अब डरते नई बौत ज्यादा इज्जत भी करते हैं।

प्रश्न : चम्बल घाटी मे सबकी जिन्दगी खुशहाल हो, उनके घर, खलिहान भरें उनमे शिक्षा आये, वहा उद्योग-धंधे खुलें—इस सबके लिए आप क्या कर सकते हैं ? आपके मन मे क्या है ?

उत्तर : मन मे हमारे ? उनकी मदद करी जाय, पढाइ की जाय, नौकरी पर लै जाय, धधे भी करें, सिरकार पुनर्वास कर रही है।

प्रश्न : इस डेढ़ साल मे ऐसी कौन सी घटना घटी जिसने आपके मन पर सबसे ज्यादा असर किया ?

उत्तर : डेढ़ साल मे कोई भी ऐसी बात नई होई कि हमे बुरी लगी। सबै अच्छी लगी। फिर भी सबसे अच्छी हमे जे लगी कि हमने जो पाप करे, वे हमने कबूल कर दये तो हमे बीस साल की सजा हो गयी।

प्रश्न . कबूल करते वक्त आपके मन मे क्या था ?

उत्तर : ये था कि हमारे पाप की सजा हो जाय। अदालत गंगा होती है, तो जाके वहा, गोता मार के कि गंगा मैया तू पाप धो हमारे। और कबूल नई करते (गोता नई लगाते) तो पाप नई धुलते हमारे। कुछ या जनम मे भोगन पड़ते कछु, जा जनम मे ई भोगते।

प्रश्न : मान लो कि मध्य प्रदेश सरकार आपको एक जिला दे दे और कहे कि मोहर सिंह जी आप और आपके साथियों की यह जिम्मेदारी है कि इस जिले मे अब कोई डकैती, चोरी, मारपीट, खून आदि नहीं होना चाहिए। लेकिन यह आप बंदूक के बल पर नहीं करेंगे, लोगों के बीच रह कर उनको समझा कर करेंगे। तो आप करेंगे इसे ?

उत्तर : हाँ, बिलकुल, डंडे के बल से नहीं, रामनाम के हम कर सकते। कोई भी हम मे से डाकू नहीं बन सकता। दंगा तो हम सिरकार को पकड़ कर दे देंगे। हम शान्ति सैनिक बनने को तैयार हैं—खादी टोप के।

मुंगावली की खुली जेल : गुना जिले में महान घटना

—व्ही. पी. सिंह, जिलाधीश, गुना

व्ही. पी. सिंह

वर्ष १९७१-७२ मध्य-प्रदेश के इतिहास में ही नही बल्कि समस्त भारत के इतिहास मे एक नया पृष्ठ जोड़ने वाला वर्ष रहा है, जब कि पीढ़ियों से पीड़ित समाज को तथा चम्बल घाटी को जनता को दस्युओ द्वारा आत्म समर्पण के पश्चात् सुख की नींद सोने का अवसर मिला।

दस्युओ से आक्रान्त भूमि, जनमानस तथा वातावरण जो आतंक और आक्रोश से भयभीत रहता था, शान्ति मिशन के प्रयासो द्वारा शान्त हुआ। अहिंसा ने हिंसा पर विजय पायी। चम्बल घाटी मे बीहड़ कछार, भरकाइयाँ, खाई-खन्दर, ऐसे स्थान जहां गोलियो की गूंज सुनायी पड़ती थी तथा जहां की भूमि रक्त रंजित हो चुकी थी, कल्पना नहीं हो सकती थी कि उसी भूमि पर हरे-भरे खेत लहलहायेंगे और गांधी, विनोबा का स्वप्न साकार होगा।

मध्यप्रदेश शासन ने दस्युपीड़ितों तथा दस्युओं द्वारा मारे गये व्यक्तियो के परिवारो, सताये गये व्यक्तियो के परिवारो तथा उनके पुत्र-पुत्रियो को विशेष सहायता प्रदान किये जाने के आदेश प्रसारित किये।

फलस्वरूप ऐसे परिवारों को, उनके पुत्र-पुत्रियों को मंडल गुना मे भी वर्ष ७२-७३ मे सहायता की गयी। यद्यपि इस मंडल मे दस्युओं का विशेष प्रभाव नहीं रहा है, फिर भी शिवपुरी मंडल के निकट होने से यह क्षेत्र भी पूर्णत अछूता नहीं रहा है।

मंडल गुना मे इस प्रकार सिरसी गुना क्षेत्र के तीन पीड़ित व्यक्तियो को ४५ एकड़ भूमि कृषि कार्य हेतु प्रदान की गयी तथा वर्ष ७२-७३ मे ८८ छात्र-छात्राओ को शिक्षा विभाग द्वारा २४१९५-८८ रुपये की धनराशि शिक्षा-वृत्ति मे वितरित की गयी एवं वर्ष ७३-७४ मे अभी तक १२१७०-०० रुपये की धनराशि वितरित हो चुकी है। छात्रवृत्ति अब प्रतिमाह वितरित करने की व्यवस्था है जिससे वे अपनी शिक्षा-दीक्षा सुविधा पूर्वक ग्रहण कर सकें। जैसे ही छात्रो की ओर से आवेदनपत्र प्राप्त होते हैं, उन्हे तत्काल पुलिस अधीक्षक के पास परीक्षण हेतु भेज दिया जाता है। तदोपरांत आये आवेदन पत्रो पर कलेक्टरेट द्वारा प्रमाणीकरण हो चुकने पर शिक्षा विभाग द्वारा छात्र वृत्तियां वितरित की जाती हैं।

इसके अतिरिक्त पीड़ित परिवारो के व्यक्तियो मे से इस मंडल मे ८ व्यक्तियो को शासकीय सेवा मे तथा ६ व्यक्तियो को शिक्षक पद पर नियुक्त किया जा रहा है। दस्यु परिवारो मे से ३० परिवारो को ६७०००-०० रुपये की धनराशि भूमि आवास हेतु बन्टन की जा चुकी है तथा ७१ दस्युओ को सामान्यतः एक हजार एकड़ भूमि कृषि कार्य हेतु प्रदान की गयी है।

मुंगावली, जिला गुना, स्थित

स्वतंत्र कारावास भवन के

उद्घाटन के शुभ अवसर पर

मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द जी सेठी

एवं

सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश जी का

हार्दिक अभिनन्दन करते हैं

मेसर्स विशन दयाल गजानन्द अग्रवाल

इण्डियन आयल एजेण्ट, गुना (म० प्र०)

नगर पालिका परिषद् गुना माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्द जी सेठी एवं सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण जी का मुंगावली नगर मे खुली जेल के उद्घाटन समारोह पर हार्दिक अभिनन्दन करती है।

गुना नगर पालिका शासन के विकास कार्यों के अन्तर्गत गुना नगर मे नगरवासियो के लिये अपने सीमित आर्थिक साधनो से समुचित नागरिक सुविधाओं के लिये हर सम्भव प्रयास कर रही है।

परिषद् की वर्तमान व भावी योजनाए (१) नगर को सत्यं, शिव, सुन्दरम् बनाने के लिए सफाई के टैंकरो की खरीदी। (२) सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियो के लिए आधुनिक व्यवस्थाओ से सुसज्जित टाउन हाल निर्माण, (३) छात्राओं की शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु कस्तूरवा कन्या विद्यालय में कक्षो का निर्माण (४) सडको पर डामरीकरण, नालियो का निर्माण, ट्यूब लाइट्स की व्यवस्था, उद्यानो का विकास, कार्यालय भवन आदि। (५) नगर के सुनियोजित एव व्यवस्थित विकास के लिए मास्टर प्लान बनाना (६) फायर ब्रिगेड व तत्सम्बन्धित सामग्री का क्रय करना। इन विकास कार्यों मे जन सहयोग की यह परिषद् कामना करती है।

सी० बी० शाह, मुख्य नगरपालिका अधिकारी एवं स्टाफ

पूरनचन्द जैन, अध्यक्ष एव पार्षदगण न० पा० गुना

कार्यालय कृषि उपज मण्डी समिति, गुना

हार्दिक अभिनन्दन

यह सूचित करते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि गुना जिले की मुंगावली तहसील मे खुली जेल के उद्घाटन हेतु सर्वोदयी नेता श्री जयप्रकाश नारायण के पधारने के शुभ अवसर पर मण्डी समिति गुना मण्डी क्षेत्र के समस्त कृषक एवं व्यापारी बन्धुओ की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करती है।

मण्डी समिति अनुरोध करती है कि इस शुभ अवसर पर कृषकगण देश मे हो रही हरित क्रांति को सफल बनावें तथा व्यापारियान क्रय-विक्रय की न्यायपूर्ण व्यवस्था बनाने मे सहयोग देवें।

नेमीचन्द जैन
सचिव, मण्डी समिति

एस० जी० कापसे
भारसाधक पदाधिकारी

कार्यालय कृषि उपज मंडी समिति मुंगावली

मुंगावली मण्डल गुना मे आत्मसमर्पित दस्युओं के लिए निर्मित खुली जेल के उद्घाटन समारोह के अवसर पर सर्वोदय नेता माननीय श्री जयप्रकाश नारायणजी एवं माननीय मुख्यमंत्री श्री प्रकाशचन्दजी सेठी, मध्यप्रदेश, का कृषि उपज मण्डी समिति मुंगावली, कृषक वर्ग एवं व्यापारी वर्ग की ओर से हार्दिक स्वागत करती है।

रमेशचन्द जैन,
सचिव, मंडी समिति
मुंगावली (म० प्र०)

शिवनारायण पाण्डे
भारसाधक अधिकारी,
मंडी समिति मुंगावली

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १० रु० या २५ शिलिंग या ५ डालर, इस अंक का मूल्य २० पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

भूदान-यज्ञ

२६ नवम्बर, '७३

वर्ष २०   अंक ६

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

छायाकार : अनुपम मिश्र

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

अब उन हाथों में हँसिया है

और अब चम्बल घाटी के भूतपूर्व डाकुओं की एक पूरी पीढ़ी के हाथों में हँसिया है।

सदियों के एक अभिशाप को अपनी नियति की तरह ढोने वाली इस पीढ़ी को एक दुश्चक्र ने हिंसक पशुओं का जंगली जीवन जीने पर मजबूर किया था। जाने कब तक यह दुश्चक्र इन्हें, इनके परिवारों को और पूरी चम्बल घाटी को अपनी निर्मम चाल से कुचलता रहता। घाटी के सीने पर रोज नये जख्म लगते, रोज ताजा लहू बहता और रोज कोई पुराना जख्म कैंसर बन कर एक जिंदगी को मिटा देता। लेकिन जो घाव एक कैंसर में बदलने वाला था उसी ने मरहम खोजा और पकते घाव ने ही एक सहानुभूतिशील डॉक्टर का ध्यान खींचने में सफलता पायी। घाव और डॉक्टर ने मिल कर चम्बल के कैंसर की दवा इजाद की। जब दर्द दवा हुआ और घाव इलाज बन गया तो एक पूरी पीढ़ी ने उपचार के लिए अपने को सौंप दिया।

डेढ़ साल पहले चम्बल घाटी के इन भूतपूर्व डाकुओं के हाथों में आधुनिक शस्त्र थे। ये शस्त्र इन लोगों ने गांधी के चरणों में समर्पित किये और बदले में तुलसीदास की रामायण और विनोबा का गीता प्रवचन जयप्रकाश नारायण से प्राप्त किया। रामायण और गीता ने इन्हें प्रायश्चित की प्रेरणा दी और एक के बाद एक इन लोगों ने प्रदालत को गंगा मैया मान कर उसकी धारा में अपने अपराध कुबूल किये। मध्यप्रदेश की संवेदनशील सरकार ने इनमें आये परिवर्तन को समझा और समर्पण की आत्मा का सम्मान करते हुए मुंगावली में नेहरू जयन्ती के दिन खुली जेल की स्थापना की।

जयप्रकाश नारायण इस खुली जेल का उद्घाटन करने १४ नवम्बर की सुबह दिल्ली से बीना पहुंचे। आसपास के लोगों में दंडशास्त्र के क्षेत्र में किये जा रहे इस अभिनव प्रयोग को लेकर कितना उत्साह है इसका पहला प्रदर्शन बीना स्टेशन पर ही हुआ। बहुत से लोग हार-फूल लेकर जे. पी. की जय-जयकार करने आये और देखते-देखते वे फूलों से लाद दिये गये। मुंगावली—बीना कटनी लाइन पर बीना से अठारह किलोमीटर दूर है। मुंगावली जाने वाली रेल खड़ी थी और उसका प्रथम श्रेणी का एक डब्बा फूलों और पताकाओं से सजा था। भीड़ जे. पी. को उस डब्बे तक ले गयी और सांस की कमी से आजकल त्रस्त हो जाने वाले जे. पी. ने अन्दर जाकर

मुंगावली स्टेशन पर स्वागत

गहरी सांस ली। पुलिस के जवानों ने भीड़ को डब्बे से एक सम्मानजनक दूरी तक खिसका दिया। सभी तरह के लोग उनसे मिलने आते गये। जे पी के लिए किये गये इन्तजाम में आक्सीजन का एक सिलेण्डर भी था और →

हलब कर हँसिया उठाया

डाक्टर भी। ठीक दस बज कर बीस मिनट पर रेलगाड़ी खिसकने लगी। लेकिन बीना स्टेशन से निकलने में उसे कोई दस मिनट लगे होंगे। महीनों के बाद यह गाड़ी समय पर चली थी और इस कारण रोज के अभ्यस्त यात्री लेट हो जाते थे और बार-बार चेन खींची जा रही थी।

आधा घण्टे में गाड़ी मुंगावली पहुंच गयी। आम तौर पर ऊंघने वाला स्टेशन चमत्कार था। और ठसाठस भरा हुआ था। मुख्यमंत्री सेठी, जेल और विधि मन्त्री कृष्णपाल सिंह, बहुत से प्रशासक और कोई दो हजार लोग जे. पी. का स्वागत करने के लिए इतने उत्साहित थे कि गाड़ी के रुकते ही अराजक भगदड़ मच गयी और बाहर एक बैंड उन्मादी की तरह बजने लगा। मालाओं और फूलों की इतनी कमी पड़ गयी कि लोगों ने डिब्बे की सजावट तहस-नहस करके फूल तोड़े और जे. पी. पर न्योछावर किये। लोग डब्बे पर चढ़ गये। कारें, बाजी जय जय कार और भीड़ की रेल पेल इतनी अधिक बढ़ गयी कि जे. पी. को शीघ्र ही यहां से निकाल ले जाने का आग्रह करना पड़ा। पुलिस, प्रशासकों और स्वयं सेवकों ने भीड़ को हटाया और जे. पी. को महावीरसिंह स्टेशन से बाहर निकाल लाये। एक एम्बेसेडर में बैठ कर वे नजदीक ही बने सर्किट हाउस के लिए रवाना हो गये। सेठीजी और कृष्णपालसिंह एक खुली जीप में बैठ कर लोगों का अभिवादन स्वीकारते हुए जुलूस में निकले। नगरपालिका की ओर से पहला स्वागत द्वार बनाया था और उसके बाद शहर और खुली जेल यानी नवजीवन शिविर तक कई स्वागत द्वार खड़े किये गये थे। लेकिन जुलूस सर्किट हाउस पर ही समाप्त हो गया। सर्किट हाउस के अहाते में दाहिने हाथ पर शान्ति मिशन का शिविर था और बायें हाथ पर एक बड़ा-सा शामियाना खड़ा किया गया था यह सोच कर कि जे. पी. शायद यहां बैठ कर छोटी बैठकें लेना पसन्द करें। लेकिन जे. पी. का स्वास्थ्य आजकल ज्यादा दौड़-धूप बर्दाश्त नहीं करता इसलिए जिन तीन घण्टों तक वे मुंगावली में रहे शामियाने में सिर्फ दर्शनार्थी और पुलिस वाले बैठे रहे।

बीस-पच्चीस दिन पहले जब हम मुंगावली आये थे तब यह पत्थर की दीवारों में शासन की याद पर उगता हुआ एक कस्बा था। आसपास शांति थी और नगर बाहर की दुनिया से बेखबर अपने आप में मस्त रहा था। और खुली जेल की बात करते हुए कहते थे कि वैसे तो सब लोग खुश हैं लेकिन जेल के कुछ लोग मन ही मन डरे हुए हैं।

नवजीवन शिविर का निरीक्षण : जे. पी. के साथ श्री नायडू

आखिर यहां खुली जेल में डाकू आ रहे हैं। लेकिन आज इन्हीं लोगों ने बड़े-बड़े स्वागत द्वार सजाये थे, रंग में बड़ी चहलपहल थी आसपास के गांवों-शहरों ने मुंगावली की आबादी दुगनी-चौगुनी बढ़ा दी थी। वातावरण उत्सव के उल्लास से भरा था। मुंगावली जैसे कस्बे में जे. पी., मुख्यमंत्री सेठी उनके साथियों और दूसरे 'बड़े-बड़े' लोगों का आगमन निश्चित ही एक सार्वजनिक उत्सव था। जीपें, मोटरें और बसें दौड़ रही थीं।

सर्किट हाउस से लगभग दो किलोमीटर दूर-मिरगाबाद में बनी खुली जेल के अहाते में तीन बजे उद्घाटन कार्यक्रम शुरू हुआ। लगभग सात हजार लोग समारोह में आये थे। जबलपुर जेल का मशहूर बैंड और खादी के धवल कपड़ों में बैठे सत्तर बागी आकर्षण के केन्द्र थे। इन भूतपूर्व बागियों के भजन से समारोह शुरू हुआ। मंच पर गांधी विनोबा के दो बड़े चित्र थे। उनकी लाइन में जे. पी., मुख्यमंत्री सेठी उनकी पत्नी और मंत्रीगण बैठे और मंच पर शान्ति मिशन के हेमेन्द्र भाई, महावीर भाई, हेमदेव शर्मा, कुब्बाराव, ए. लोकमन, नरसिंहबहादुर सिंह, चरनसिंह आदि को आग्रहपूर्वक बैठाया गया। जेल मंत्री कृष्णपालसिंह ने खुली जेल खोलने के बारे में मध्यप्रदेश सरकार का दृष्टिकोण बताया और अन्य जानकारी दी। भूतपूर्व बागियों से उन्होंने कहा कि वे अपने व्यवहार से सिद्ध करें कि जे. पी. और सरकार ने उनमें जो विश्वास प्रकट किया है वे उसके योग्य हैं। जे. पी. ने अपने भाषण में खुली जेल के प्रयोग का दर्शन बताया और समाज के काय-कर वर्गों में हुई प्रतिक्रियाओं का उत्तर दिया।

(भाषण इस अंक में अन्यत्र पढ़िये) जे. पी. के बाद सेठी जी ने सम्पादकीय भाषण में अपराध और दण्ड के बारे में जे. पी. के विचारों का समर्थन करते हुए कहा कि समाज को पुलिस के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलना चाहिए। अब यह पुलिस आजादी से पहले की पुलिस नहीं है। पुलिस से सेठीजी ने कहा कि उसे लोगों का दोस्त और मार्गदर्शक बनना चाहिए। चम्बलघाटी और बुन्देलखण्ड के विकास की योजनाओं पर अमल के लिए जे. पी. ने जो जोर दिया था उसका भी अनुमोदन सेठीजी ने किया। माधोसिंह ने सब बागियों से सद्व्यवहार की प्रतिज्ञा करवाई। फिर नये जीवन के प्रतीक के रूप में एक-एक बागी ने आकर गांधी विनोबा के चित्र को प्रणाम कर के हाथ में हंसिया लिया। डॉ. दुबनगार ने आभार प्रदर्शन किया।

समारोह के बाद जे. पी. और सेठीजी अठारह लाख की लागत से बनी खुली जेल के भीतर गये। जेल के कांटेदार तारों पर सुभा-

खुली जेल : एक विहंगम दृश्य

माधवराव सिन्धिया की स्मृति में शिलालेख

त चमक रहे से। जलपान मे भूतपूर्व बागी तिष्ठित व्यक्तियों, शासकों, पत्रकारो आदि मिले-जुले और जे. पी. के प्रति कृतज्ञता हट करके सेठी जी चले गये। शाम हो गई । और लोग लौट रहे थे। देर से लौटने लों मे ज्यादातर लोग मिरकाबाद के ये मोगिया, बावड़ी और सासी लोग थे जिन्हे ७४ वर्ष पहले यहा माधवराव सिन्धिया ने बसाया था। इनमे से एक बूढ़ी खुशनुमा महिला ने कहा—ये (बागी) लोग तो हमारे भाई-बन्द हैं। हमे इनसे क्या डर? फिर वह महिला स्मृतियो की पगडंडियो पर पीछे भटक गयी और मिरकाबाद सेटलमेन्ट के किस्से सुनाने लगी।

मोगिये : पुराने जरायमपेशा : नये मजदूर

पन्द्रह नवम्बर को जे. पी. ग्यारह बजे खुली जेल देखने और बागियो से मिलने आये। जेल मन्त्री, कृष्णपाल सिंह, पुलिस महानिरीक्षक (कारावास) नायडू, जेल अधीक्षक इसरार अहमद ने उन्हें जेल दिखाई। जगह-जगह अलग चूल्हे देख कर जे. पी. ने बागियो को मजाक मे समझाया कि अब चूल्हा एक ही होना चाहिए। माधोसिंह, मोहरसिंह आदि गांधी फिल्म समिति द्वारा बनायी जा रही फिल्म की शूटिंग के लिए अपने पुराने सूटों में थे। जे. पी., खेल के मैदान अस्पताल आदि व्यवस्था देखी। फिर अधिकारियो से चर्चा की और बाहर के शामियाने मे बागियो की बैठक मे आये। सुब्बाराव और बागियो ने 'जय-जगत पुकारे जा' गीत गाया और दृश्य और वातावरण बिलकुल १४ अप्रैल ७२ पगारा जैसा हो गया। जे. पी. की स्मृतिया ताजी हो गयी। जब उनसे बोलने को कहा गया तो जे. पी. का कण्ठ भर गया और आखो से आंसू बहने लगे। दीदी आज नही थी···दीदी आज ससार मे कही नही थी और जे. पी. बागियों के सामने अकेले थे। पाच मिनट मे सिसकियो को रोकते-बरजते जे. पी. ने एक वाक्य कहा-"आज आप लोगो के बीच अकेला आया हूं।" सब लोग सन्नाटे मे थे···यादों के दुखदायी ससार में खोये हुए गीले और गुमसुम। सिर्फ चिड़ियाओ की चहक थी जो स्मृति के मन्दिर मे घण्टियों की तरह बज रही थी। जे. पी. ने अपने को सम्हाला और धीरे-धीरे बोलना शुरू किया।

एक बजे जे. पी. उठे। मध्यप्रदेश के मंत्री चन्द्रप्रतापसिंह, शान्ति मिशन के लोगों और बागियो ने उन्हें विदा किया। मोहरसिंह ने जे. पी. के पास खड़े हुए और कहा—बाबूजी आप अच्छे हो···तभी आइये!···हम लोगों की तरफ से कोई फिक्र न करें।···

जे. पी. को बागियो की ओर से फिक्र नही है। उनके हाथ में अब हंसिये हैं और सामने धरती माता है नये जीवन की नयी फसल सामने है। लेकिन समाज में अभी बहुत कुछ बातें बदलनी हैं और जे. पी. उनसे बेफिक्र नहीं हो सकते।

—प्रभात त्रिवेदी

अपराध और दण्ड के प्रति दृष्टि बदलनी होगी

बागियों के बीच इस बार जे. पी. बिना बीबी के अकेले गये थे इसलिये जब बोलना शुरू किया तो फूट फूटकर रो पड़े।

पिछले दिनों आत्मसमर्पण करने वाले और अब लम्बे कारावास के लिए दण्डित चम्बलघाटी और बुन्देलखण्ड के डाकुओं के लिए खुली जेल स्थापित करने पर मुख्यमंत्री *श्री सेठी, विधि और जेल मंत्री श्री कृष्णपाल* सिंह तथा मध्यप्रदेश के प्रशासन को मैं बधाई देता हूं। चम्बलघाटी शान्ति मिशन और मध्यप्रदेश सरकार ने शुरू से जो मानवीय दृष्टिकोण अपनाया है और कुख्यात डाकुओं ने उसका जो शानदार उत्तर दिया है उसे देखते हुए इन लोगों को अगर साधारण जेलों पतन-कारी और भ्रष्टाचारी वातावरण में रखा जाता तो यह निश्चित ही गलत होता। इस-लिए मैं शुरू से जोर देता रहा हूं कि इन्हें ऐसी परिस्थितियों में रखा जाये जिस उनके परिवर्तन और समर्पण से समाज में उनकी पुन-प्राप्ति की जो प्रक्रिया शुरू हुई है वह चलती रहे और जब वे अपनी सजा काट कर रिहा हों तो समाज में अच्छे भले और जिम्मेदार नागरिकों की तरह लौट सकें। इस प्रक्रिया को समझ कर मध्यप्रदेश सरकार ने खुली जेल की स्थापना की इसलिए श्री सेठी और उनके साथियों के प्रति मैं विशेष तौर से प्रसन्न और कृतज्ञ हूं।

मुझे मालूम है कि डाकुओं के साथ जो व्यवहार किया जा रहा है उसे कतिपय सर-कारी और सार्वजनिक क्षेत्रों में जघन्य अप-राधों के लिए दोषी पाये गये अपराधियों को लाड़ लड़ाना माना गया है। यह बड़े दुख की बात है कि अपराध और दण्ड के मामले में कुछ लोग, नौकरशाह और राजनीतिक नेता, बहुत ही दकियानूस और पिछड़े हुए हैं। वे अभी भी दांत के लिए दांत, आंख के लिए आंख, और मौत के लिए मौत के दर्शन से चिपके हुए हैं। उन्हें कोई अन्दाज नहीं है कि दण्डशास्त्र के ऐसे दर्शन की कितनी भारी और भयानक सामाजिक, नैतिक और भौतिक कीमत समाज को चुकानी पड़ती है। इन लोगों को अभी यह समझना है कि अपराधी एक बीमार आदमी की तरह होता है और समाज का काम उसे उसके रोग के लिए दण्डित करना नहीं बल्कि उसका इलाज करना है। जरा गहराई से सोचा जाये तो समझ में आयेगा कि अपराधी का इलाज करने की कोशिश में समाज स्वयं अपना भी उपचार करता है। जो हो, अपराध और दण्ड के बारे में इस दकियानूसी रवैये से उपजा मेरा दुख, मेरी इस प्रसन्नता से काफी कुछ हलका हो गया है कि देश के सबसे बड़े और एक प्रमुख राज्य मध्यप्रदेश ने इस बारे में शुरू से इतनी समझदार और दूरदर्शी नीति अपनाई है। यह खुली जेल इसी नीति की परिणति है।

कतिपय क्षेत्रों में एक और आलोचना यह की गई है कि चम्बलघाटी और बुन्देलखण्ड के कुछ सौ डाकुओं के समर्पण का बड़ा ढोल पीटा जा रहा है। इस आलोचना को मैं स्वीकार करता हूं और मुझे इसका दुख भी है। लेकिन साथ ही इस घटना को वृहत्तर समाज शास्त्रीय दृष्टि से महत्वहीन मान कर इसे इतिहास की कब्रगाह में डाल कर भुला दिये जाने के खतरे की ओर भी मैं लोगों का ध्यान खींचना चाहता हूं। समर्पण के बाद हुई कुछ घटनाएं, सच पूछा जाये तो इस

→

खतरे को रेखांकित करती हैं। केन्द्रीय और मध्यप्रदेश सरकार ने तो गये साल अप्रैल में मेरे साथ हुए समझौते को कमोबेश पूरा किया है, लेकिन मुझे भय है कि अन्य दो राज्य सरकारों, खास कर उत्तर प्रदेश की सरकार के बारे में यह नहीं कहा जा सकता।

समर्पण की इस घटना से जो उस समय किसी भी दृष्टि से विलक्षण और अद्भुत मानी गई थी, कोई व्यापक और गहरे सबक लिये गये हों इसके कोई संकेत नहीं हैं। केन्द्रीय गृहमन्त्रालय सम्बन्धित राज्यों के गृह विभाग और उनके विधि और व्यवस्था के प्रशासकों में से किसी ने भी ऐसी कोई जागरूकता नहीं दिखाई कि इस घटना से अपराध और समाजिक हिंसा को हल करने का शायद कोई ऐसा तरीका निकल सकता है जो ज्यादा मानवीय और ज्यादा समझदारी का हो और जो सामाजिक और पूंजी की लागत की दृष्टि से कम खर्चीला हो और जिसे आमतौर पर लागू किया जा सकता हो।

नये तरीके का विस्तार करने के बजाय मध्यप्रदेश जैसी जागरूक सरकार ने भी चम्बल घाटी और बुन्देलखंड तक में स्थायी सामाजिक शान्ति स्थापित करने के लिए विधि और परम्परागत मशनरी पर भरोसा किया है। इसका एक उदाहरण यह है कि अकेले चम्बल-घाटी क्षेत्र में इकतालीस नये थाने स्थापित किये गये हैं। पुलिस के प्रति पूरे सम्मान के साथ कहना चाहता हूं कि ज्यादा संभावना इसी की है यह थाने शान्ति स्थापित करने वाले केन्द्रों के बजाय तनाव बढ़ाने वाले साबित होंगे। पूरी विनम्रता के साथ मैं निवेदन करना चाहता हूं कि शान्ति मिशन के मार्गदर्शन में काम करने वाले शान्ति सैनिकों के इकतालीस शान्ति केन्द्र इन थानों से कहीं अधिक सस्ते और प्रभावशाली होते।

सही है कि शांति मिशन को अपने ही बलबूते पर ऐसे शांति केन्द्र स्थापित करने चाहिए थे। लेकिन आर्थिक सहयोग के अभाव में शांति मिशन अपनी न्यूनतम और अत्यधिक अनिवार्य गतिविधियां भी बड़ी मुश्किल से चला पा रहा है। समर्पण के समय चमत्कार से उत्पन्न वाचाल और उदार शाब्दिक जन समर्थन अब लगभग शून्य हो गया है। अगर मुख्यमंत्री श्री सेठी ने समय-समय पर अनुदान नहीं दिया होता तो शान्ति मिशन को अब तक अपने सारे काम काज बन्द कर देने पर मजबूर होना पड़ता। मेरे साथी अभी भी थोड़ा बहुत कोष जमा करते हैं, लेकिन उससे हमारा काम आगे नहीं बढ़ सकता। फिर पिछले महीनों से मेरा स्वास्थ्य इतना अच्छा नहीं चल रहा है कि मैं कोष संग्रह करने का कोई अभियान छेड़ सकूं। जो हो मैं थोड़ा भटक गया। लेकिन मैंने यह मुद्दा इसलिए उठाया कि सम्बन्धित क्षेत्रों में शांति मिशन अपनी शांति योजनाएं क्यों नहीं चला पाया इसके कारण बता सकूं। जिस खास मुद्दे पर मैं यहां जोर देना चाहता हूं वह यह है कि १९७२ के समर्पण से उत्पन्न हुई समस्त संभावनाओं पर सिर्फ भोपाल में ही नहीं, दिल्ली में भी अगर उच्चतम स्तर पर विचार नहीं किया जायेगा तो अपराध और दण्ड का पुराना दुश्चक्र निश्चित ही फिर चलने वाला है। इस दुश्चक्र के चक्र बढ़ने वाले हैं और इसकी कितनी भयावह नैतिक और भौतिक कीमत देश को चुकानी पड़ेगी इसकी कल्पना पिछले अनुभवों से की जा सकती है।

इसी सिलसिले में एक बात और कह दूं। उत्तरप्रदेश सरकार चाहती है कि चम्बल घाटी शान्ति मिशन आगरा से इटावा के डाकू ग्रस्त क्षेत्र में अपनी गतिविधियां शुरू करे। लेकिन मैं अपनी समिति और अपने साथियों को यह जिम्मेदारी उठाने की सलाह देने में सावधानी बरतना चाहता हूं। जब तक उत्तर प्रदेश की सरकार उत्तर प्रदेश के समर्पण कारी डाकुओं के बारे में दिये गये वचनों को पूरा नहीं करती तब तक यह जिम्मेदारी हम नहीं लेना चाहते। त्रिपाठी प्रशासन ने जो निर्णय लिए थे उन पर अभी तक अमल नहीं हुआ है।

ऐसे कई मुद्दे हैं जो पिछले महीनों में अखबारों और सार्वजनिक क्षेत्रों में उठे हैं और जिन पर मैं बोलना चाहूंगा। लेकिन अभी मैं सिर्फ एक मुद्दा उठाऊंगा और भाषण समाप्त करूंगा। यह मुद्दा-चम्बल-घाटी और बुन्देलखण्ड के पिछड़े हुए और गरीबी ग्रस्त क्षेत्रों के सामाजिक और आर्थिक विकास की योजनाओं के बारे में है इन योजनाओं पर बड़ी चर्चा हुई है। भारत सरकार ने शुरू से ही इस मामले में बड़ी रुचि ली और शीघ्र विकास की योजना बनाने के लिए एक टॉस्क फोर्स की नियुक्ति की। तब मैंने सुना था कि कुछ सौ करोड़ रुपयों की लागत से इन क्षेत्रों का युद्ध स्तर पर विकास किया जायेगा। मध्य प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग ने भी इन क्षेत्रों के सामाजिक शिक्षण और विकास के लिए पांच करोड़ की एक योजना बनाई थी हालांकि वित्तीय सहायता के मामले में वह केन्द्रीय सरकार पर निर्भर थी।

यह बड़े खेद की बात है कि सिर्फ डेढ़ साल में शुरू-शुरू का वह उत्साह कपूर की तरह उड़ गया है। इस रवैये को समझना बड़ा मुश्किल है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा नियुक्त आयोगों ने ही नहीं चम्बलघाटी में डकैती की समस्या का अध्ययन करने वाले हर व्यक्ति ने बार-बार इस बात पर जोर दिया है कि जब तक विधि व्यवस्था और शान्ति स्थापना के अन्य कार्यक्रमों के साथ सामाजिक और आर्थिक विकास के बहुमुखी कार्यक्रम जल्दी से जल्दी पूरे नहीं किये जायेंगे तब तक सदियों पुराने इस कलंक को मिटाया नहीं जा सकता। मैंने भी अपने सभी सार्वजनिक वक्तव्यों में इस बात पर जोर दिया है। और जहां तक मैं जानता हूं प्रधानमन्त्री, केन्द्रीय गृहमंत्री और तीनों सम्बन्धित मुख्य मन्त्रियों ने इस बात को पूरी तरह स्वीकार किया है और फिर भी, अब तक इस मामले में लगभग कुछ नहीं किया गया है और जहां तक मैंने सुना है पांचवीं योजना में इस कार्यक्रम का शायद ही कोई उल्लेख है। यह तो इस है एक ऐसी कहानी के जिसे आधुनिक भारत के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान मिल चुका है। मैं आशा करता हूं कि प्रधानमन्त्री, अपनी दूसरी समस्याओं के इस बात पर पूरी गंभीरता से विचार करेंगी।

जो सरकार करेगी, हमें अच्छा ही लगेगा

माखनसिंह

प्रश्न : क्या करना चाहते हैं आप, खुली में ?

उत्तर : काश्तकारी करेंगे हम गांव। में हम काश्तकारी ही करते थे।

प्रश्न : काश्तकारी में क्या करना चाहेंगे ?

उत्तर : घर पर तो बाजरा पैदा करते लेकिन उधर सरकार क्या करायेगी, मालूम [illegible], कैसी जमीन है ?

प्रश्न : जमीन तो मुगावली की बहुत [illegible]ी है।

उत्तर : जमीन तो ठीक है, पर पता क्या [illegible]ाई की क्या हालत है ? पानी की जमीन [illegible] होती है और बिना पानी का माल [illegible] होता है। पानी हुआ तो आलू कर लो, [illegible]ी कर लो।

प्रश्न : जब आपने तय ही कर लिया है [illegible] आप खेती करेंगे और सरकार ने भी तय [illegible]या है कि खेती चाहने वालों को हर प्रकार [illegible] साधन दिये जायेंगे तो फिर आप किस [illegible]कार की खेती करना चाहेंगे ? क्या साधन [illegible] चाहेंगे ?

उत्तर : पानी और टैक्टर। जमीन [illegible] है, जो हल से होगी नहीं, टैक्टर अच्छा [illegible]गा। पानी मिलेगा तो फसल खूब होगी। [illegible] तो गांव में भी किसान टैक्टर चला[illegible] हैं।

प्रश्न : पहले आपके पास कितनी जमीन [illegible] ?

उत्तर : हमारे पास ५ एकड़ थी। और [illegible] पास करीब ११ बीघा जमीन है हमारे पास, [illegible] अकेले ही रहते थे।

प्रश्न : उस पर कितनी फसल कर लेते [illegible] ?

उत्तर : ४०-५० मन बाजरा, १०-८ मन [illegible] और ज्वार हो जाती थी। यहां पानी मिलेगा तो यहां से भी ज्यादा करके दिखायेंगे। बिना पानी के कुछ नहीं होता सब।

प्रश्न : उन्होंने कहा है कि जितना आप पैदा करेंगे उसका कुछ हिस्सा तो आपको दे भी देंगे या आपके नाम जमा कर देंगे या घर भेज देंगे। यह आपको कैसा लगता है ?

उत्तर : यह तो सरकार की मर्जी है, करेंगे तो अच्छा ही है। जो सरकार करेगी वह हमें अच्छा ही लगेगा। अब कुछ बुरा भी करेगी तो भी अच्छा ही लगेगा। सरकार का, जयप्रकाश बाबू का विश्वास है हमें, यह नहीं (विश्वास) होता तो जेल में क्यों आते।

प्रश्न : अच्छी खेती की ट्रेनिंग चाहिए आपको ?

माखनसिंह

उत्तर : हां ट्रेनिंग जरूरी सीखनी पड़ेगी।

प्रश्न : अगर मान लो आपको अच्छी ट्रेनिंग देकर कहा जाये कि इस प्रकार गांव में जाकर और लोगों से खेती करवाओ तो क्या आपको जमेगा ?

उत्तर : हां जमेगा, ट्रेनिंग जरूरी देनी चाहिए, क्योंकि हम लोग पढ़े-लिखे तो हैं नहीं, पहले सीधी खेती करते थे, फिर १६ साल से बाहर रहे, इस बीच नये तरीके आये होंगे, नये बीज बन गये अब, खाद भी आई है, जो हम सब जानते नहीं, पुराना काम जानते हैं। तो ट्रेनिंग जरूरी है।

प्रताप सिंह (जो साधू सा हो गया है)

प्रश्न : आपकी जिन्दगी में बहुत फेर-बदल आया है। उसके बारे में कुछ बतायेंगे ?

उत्तर : मेरी बुद्धि ठीक काम नहीं देती है महाराज ! मैं तो सदा खुली जेल में ही रहता हूं। यहां भी खुली जेल ही है।

प्रश्न : किस तरह आप अपना समय व्यतीत करते हैं ?

उत्तर : पागल की तरह बैठा रहता हूं। एक चिन्ता लगी रहती है रात-दिन। जिस कारण यह देह प्राप्त हुई थी वो काम मैं पूरा नहीं कर पाया, रात-दिन इसी चिन्ता में लगा रहता हूं।

प्रश्न : जनहित के लिए आप क्या कर रहे हैं ?

उत्तर : इसके लिए भगवान से यही विनती करना चाहता हूं कि ऐसी बुद्धि देवे कि पहले तो मैं जनहित करूं, सबकी सेवा कर सकूं। फिर प्रभु तेरे दर्शन हो सकें।

प्रश्न : खुली जेल में आप क्या जनहित करेंगे ?

उत्तर : मैं तो कुछ नहीं कर पाऊंगा।

प्रश्न : आप कुछ नहीं कर पाते ?

उत्तर : जी हां, रात-दिन कोई उधेड़-बुन लगी रहती है। उसी से फुर्सत नहीं मिलती। अगला कदम रखता हूं तो सामने लगता है कि क्या रखूं क्या नहीं।

प्रतापसिंह

निष्पक्ष संगठन : विधायक आन्दोलन : क्रांतिनिष्ठ लोगों की जमात

—रामभूषण

अखिल भारतीय तरुण शांति सेना का पहला सम्मेलन विद्याभवन कालेज, बम्बई में १९६९ में हुआ था। अ० भा० शांति सेना मंडल द्वारा संचालित इस सम्मेलन की अध्यक्षता श्री जयप्रकाश नारायण ने की थी। बम्बई विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री पी० बी० गजेन्द्र गडकर स्वागत समिति के अध्यक्ष थे और प्रसिद्ध शिक्षा विशारद एवं कवि श्री उमाशंकर जोशी ने उद्घाटन भाषण किया था। देश के विभिन्न भागों से आये ४०० प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया था। तरुण शांति सेना का दूसरा सम्मेलन १९७० में इन्दौर में कुमारी मंदाकिनी दवे की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन में काम के लिए एक वर्ष का समय देने वाले कई तरुण निकले, जिन्होंने बंगला देश भी जाकर काम किया। बेलगांव (कर्नाटक) में १९७२ में हुए अपने तीसरे सम्मेलन तक आते-आते तरुण शांति सेना भाईचारे के आधार पर निर्मित एक स्वतन्त्र संगठन बन गयी। श्री लखनदीन की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन को चलाने की पूरी जिम्मेदारी तरुणों की ही रही। 'अकाल बनाम तरुण' के सन्दर्भ में आयोजित अखिल भारतीय तरुण शांति सेना का औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में गत २० से २२ अक्टूबर तक हुआ यह चतुर्थ सम्मेलन पूर्णरूप से तरुणों द्वारा आयोजित व संचालित सम्मेलन रहा जिसकी अध्यक्षता कुमारी जानकी पांडे ने की।

औरंगाबाद में सम्पन्न हुए अखिल भारतीय तरुण शांति सेना सम्मेलन की सफलता-असफलता के बारे में यदि वही मापदंड रखे जायें जो साधारणतः सम्मेलनों के लिए रख दिये जाते हैं तो संभवतः कहने के लिए कोई बात नहीं मिलेगी और कुछ औपचारिक बातें ही कह कर इतिश्री कर देनी होगी। तरुणों की एक अच्छी संख्या, चहल-पहल पूर्ण वातावरण, भाषण व चर्चाएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम व मनोरंजन, पर्यटन व देश-दर्शन जो साधारणतः सभी सम्मेलनों के अंग होते हैं, इसके भी थे। इस सम्मेलन की अपनी विशेषता क्या थी? कौन सी बातें इसे एक अलग व्यक्तित्व प्रदान करती हैं और कौन से चिन्ह इसका भावी स्वरूप निर्धारित करते हैं?

यह राष्ट्रीय सम्मेलन औरंगाबाद के मौलाना आज़ाद डिग्री कालेज के विद्यालय व छात्रावास कैंपस में सम्पन्न हुआ। कालेज के लाइब्रेरी-हॉल में उद्घाटन की कार्रवाई हुई और वहीं तीसरे दिन समापन भी हुआ। कार्य का प्रारम्भ सुश्री भद्राबेन के सुमधुर भजन से हुआ। मराठावाडा विश्वविद्यालय के उपकुलपति व स्वागत समिति के अध्यक्ष प्रो० र० प० नाथ ने अपने भाषण में भारतीय संस्कृति की मौलिक विशेषता 'अनेकता में एकता' पर बल देते हुए देश के विभिन्न भागों से आये तरुणों (६००) एवं अन्य लोगों का स्वागत किया और आज के संक्रांतिकाल में ऐसे सम्मेलनों व शिविरों की उपयोगिता बतायी, क्योंकि ऐसे सम्मेलनों एवं शिविरों से देश की भावनात्मक एकता को बल मिलता है। "जैसे इन्द्र धनुष अपने सात प्रकार के रंगों द्वारा सुन्दरता का निर्माण करता है वैसे ही आपका एक शिविर में रहना और एक साथ रहकर विचार करना सौम्य व उपयुक्त है और यही अनेकता में एकता है।" संतुलित विचार की आवश्यकता और उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने आवश्यक मूल्यों को ग्रहण करने और अनावश्यक मूल्यों को छोड़ देने के बीच के समय का तत्परता से उपयोग करने की सलाह दी। "यदि हम इस संक्रांतिकाल पर काबू पा जायें तो हम अच्छे मार्ग पर जा सकते हैं और उस पर जिस रफ्तार से युवा पीढ़ी जायेगी अन्य नहीं जा सकेंगे।"

आये हुए तरुणों व अन्य लोगों के समक्ष →

→

सम्मेलन की अध्यक्ष कुमारी जानकी पांडे का परिचय श्री अमरनाथ भाई ने दिया। अध्यक्ष के साथ सभा-सचालन मे दक्षता के साथ सहयोग करने वाले कुमार प्रभात का तरुणों के सामने अधिक परिचय देने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि भारतीय तरुण शांति सेना व उससे सबधित लोग धर्मयुग, तरुणमन, सर्वोदय व अन्य पत्र-पत्रिकाओं के सुपरिचित लेखक व इस उदीयमान युवक से परिचित थे। कुमारी जानकी पांडे उत्तराखण्ड के पिथोरागढ़ जिले मे शैलयात्रा के अचल मे स्थित एक सुदूरवर्ती गाव की निवासी हैं। सुश्री निर्मला बहन के सान्निध्य मे कस्तूरबा ग्राम शांति सेना विद्यालय, इन्दौर मे प्रशिक्षण के बाद वे सर्वोदय आदोलन के महत्त्वपूर्ण कार्य क्षेत्र सहरसा (बिहार) मे लगीं और आज भी वहीं के अभियान में कार्य कर रही हैं।

श्री नारायण देसाई ने उपस्थित लोगों के सामने तरुण शांति सेना का परिचय देते हुए उसके तीन लक्षणों की चर्चा की . निष्पक्ष सगठन, विधायक आदोलन और क्रांतिनिष्ठ लोगों की जमात। ऐसे तरुणों की निष्पक्षता उन्हें राजनीति से अलग नहीं रखना चाहती, लेकिन उसमे न फसते हुए उसे प्रभावित करना चाहती है। पक्ष व पक्षातपूर्ण राजनीति को प्रभावित करना तरुण शांति सेना का वैचारिक पक्ष है। भावना के क्षेत्र मे उसकी निष्ठा शांति के साथ है। मौजूदा समाज रचना, मौजूदा मूल्य एव मौजूदा मनोवृत्तियों मे आमूल परिवर्तन तथा नये मूल्यों की प्रस्थापना एव नये मनुष्य-निर्माण के प्रयास उसकी शांति निष्ठा के चिन्ह हैं। तरुण शांति सेना के नाम मे ही उसका स्वरूप, उसकी निष्ठा व सगठन निहित है, अत तरुण शांति सेना के स्थान में तरुण शांति सेना रखने की आवश्यकता नहीं। कम से कम ऐसे ६० पागल हैं जो चालू पढ़ाई छोड़कर या सम्भ कर एक-डेढ़ साल से तरुण शांति सेना के कार्य मे लगे हुए हैं। आज हमें यदि क्रांति करनी है तो उसकी शुरुआत स्वय अपने ही से करनी होगी। "यह सम्मेलन तभी सफल माना जायगा जब इने गिने ही सही, लेकिन ऐसे पागल निकलेंगे जो कहेंगे कि गरीबी मिटाने के लिये हम अपना यौवन व साहस लगाने के लिए तैयार हैं।"

अध्यक्ष जानकी पाण्डे ने दो शब्द कहकर तरुणों को उद्बोधित किया और कहा हम देश की समस्याओं के चिंतन व समाधान के लिए इकट्ठे हुए हैं। आज देश की दशा क्या है? गरीबी, भुखमरी, विषमता, शोषण, दलीकरण और विघटन व्याप्त है। दुनिया मे सबसे बड़ा आदोलन सर्वोदय आदोलन है, जिससे तरुणों को मार्गदर्शन मिलेगा।

श्री ठाकुरदास बग का उद्बोधन भाषण सारगर्भित व महत्त्वपूर्ण रहा। "जो हुआ है वह गलत है। मीठी, चिकनी-चुपड़ी बातें गरीब के साथ द्रोह हैं। गरीब के हित मे इस देश मे इच्छाशक्ति जगनी चाहिए, जिसके लिए सभी दिशाओं मे प्रचड सगठनात्मक कार्य की आवश्यकता है।" अन्त मे युधिष्ठिर-यक्ष प्रश्नों तथा अमेरिकी गुलामी प्रथा की समाप्ति के सबध मे गैरिसन के शब्दों की याद दिलाते हुए बग साहब ने अपना भाषण समाप्त किया।

तरुण शांति सेना के केन्द्रीय सयोजक श्री अशोक भार्गव ने पिछले वर्ष के कार्य की स्पष्ट प्रस्तुत की। पिछले वर्ष तरुण शांति सेना ने अकाल बनाम तरुण अभियान मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। तरुण शांति सेना ने ही इस अभियान की योजना बनायी थी, और उसने इसमे अपनी शक्ति भर पूरा सहयोग भी दिया था। गुजरात व मराठवाड़ा मे इस अभियान के सदर्भ मे विशेष काम हुआ।

सम्मेलन के अंतिम दिन सम्मेलन की अध्यक्ष कुमारी जानकी ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे देश के गावों की विपन्नता का जिक्र करते हुए देश के क्रांतिकारियों का गहराई से सोचने के लिए आह्वान किया। ऐसे चिंतन के लिए विधायक असतोष की आवश्यकता है जिसका हममे अक्सर अभाव रहता है। हमारी दृष्टि स्पष्ट रहे इसके लिए हमे नये समाज का स्वरूप अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। नये समाज की दिशा मे हमे क्रांति-कार्य, सेवा-कार्य व पुण्यकार्य के बीच का फर्क भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। यदि सर्वोदय आंदोलन मे भारतीय तरुणों को उनके सपनों की तस्वीर दिखाई पड़ रही हो तो उसे समझने और उसके निकट आने की जरूरत है। इस दृष्टि से गाधीजी ने जिन ७ लाख जिदा शहीदों की माग की थी हमे देखना चाहिए कि क्या हम वे शहीद बन सकते हैं। आज स्थिति यह है कि गरीबी जितनी बड़ी समस्या है अमीरी भी उतनी ही बड़ी समस्या है। अत ऐसे समाज का निर्माण होना चाहिए जिसमें दोनों न हो, जहा केवल मनुष्य हो।

श्री रामगोपाल दीक्षित द्वारा सम्मेलन के संयोजन मे किसी भी प्रकार की मदद देनेवालों के प्रति आभार प्रदर्शन व धन्यवाद प्रकाश के बाद देश के प्रसिद्ध विचारक, सर्वोदयक श्री अच्युत पटवर्धन ने अपना समापवर्तन भाषण दिया। पटवर्धनजी ने अपने विचारोत्तेजक भाषण मे अपनी पीढ़ी की उस ऐतिहासिक भूल की चर्चा की जो दादा भाई नौरोजी के जमाने से लेकर सुभाषचन्द्र बोस तक लोग करते आये थे। यह भूल थी केवल राजसत्ता प्राप्त करने पर जोर, लेकिन उसके बाद के परिवर्तनों एव निर्माणकर्ता की उपेक्षा। आज युवकों के बीच कुछ असन्तोष जरूर दिखाई पड़ता है लेकिन असतोष को जब तक विवेक की डोर नहीं मिलती है तब तक क्रांति नहीं होगी। आज हम गरीबी हटाने की बात करते हैं और यह समझते हैं कि गरीबी का कारण अमीर है लेकिन यह भ्रम है। गरीबी की जड़ हमारे दिमाग मे है। हिन्दुस्तान की गरीबी तब तक नहीं मिटेगी जब तक श्रमशक्ति व बुद्धिशक्ति का मेल नहीं बैठता। आज हमारे ग्रामीण-उद्योग इसीलिए नहीं पनप रहे हैं, क्योंकि ग्रामीणों में अभिक्रम व्यवस्था-शक्ति का अभाव है। तरुण शांति सेना को इन सारी बातों पर सोचना होगा। अच्छा ही है कि उसे अभी लोक प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं हुई है, क्योंकि जिस कार्य को लोक प्रतिष्ठा प्राप्त होती है उसका विकास रुक जाता है।

समूह गोष्ठियां

राष्ट्रीय सम्मेलन मे चर्चा का विषय 'गरीबी : कारण और निवारण' इस विषय पर प्रतिनिधियों की सहायता के लिए मुख्य दो अध्ययन पत्र निर्धारित किये गये थे, जो थी विराम भाई व गाधी विद्या संस्थान ...।

ो अमृतानन्ददास ने तैयार किया था। र्चा १६ विभिन्न गोष्ठियों में दो दिनों तक ती। अन्त में श्री ठाकुरदास बंग द्वारा प्रस्तुत वारण के उपायों पर भी विचार हुआ। ी चर्चा के बाद टोलियों की सम्मिलित फारिशें सम्मेलन में प्रस्तुत की गयी। वे फारिशें मुख्यतः ये हैं : आर्थिक दृष्टि से ष्ट्र को आत्म-निर्भर बनाने वाले उद्योगों ा प्राथमिकता दी जाय। सीमित उद्योगों ा छोड़कर अन्य सभी उद्योग लघु एवं मोद्योग के स्तर पर हों, जिनसे अधिकाधिक गों को काम मिल सके। समान काम के ए स्त्री-पुरुष को समान वेतन दिया जाय र वेतन की न्यूनतम सीमा जीवन यापन योग्य हो। गांव में वस्त्रावलंबन को थमिकता दी जाय तथा शुद्ध जल एवं फाई पर विशेष ध्यान हो। श्रम-बैंक का धिकाधिक प्रयोग हो। राजनीतिक दृष्टि से ी सम्मति के आधार पर ग्रामव्यवस्था, माधारित एवं श्रमबहुल उद्योग, सत्ता के केंद्रीकरण, सर्वसम्मति द्वारा चुनाव, पक्ष-न राजनीति, भूमि-वितरण, सभी प्रगति-ल कानूनों पर अविलंब अमल व मतदाता शिक्षण की आवश्यकता महसूस की गयी। क्षणिक दृष्टि से श्रमप्रधान उद्योगों से सम-र रखने वाली शिक्षा तथा प्राथमिक प्रौढ़ शा के प्रसार एवं शिक्षण में वेतन की असम-नता अविलंब दूर करने की बात कही । सामाजिक दृष्टि से जनसंख्या-नियंत्रण, वन शैली में आमूल परिवर्तन, मादक ों से मुक्ति और समाज में नीचे से दबाव-र्माण करने की सिफारिश की गयी। तरुण ति सेना की दृष्टि से राष्ट्रीय शिविर-मेलन को गावों में रखने, गरीबी हटाने में णों द्वारा ग्रामसभाओं के मार्गदर्शन, बी की रेखा के नीचे के परिवारों का क्षण, कॉलेज या तरुण शांति सेना द्वारा ों को अडाप्ट किये जाने तथा व्यक्ति एवं र मंडलियों के स्तर पर प्रतिवार कार्यक्रम ने के सुझाव रखे गये। स्वयं सम्मेलन के ्र में यह सिफारिश की गयी कि भविष्य म्मेलन के साथ समानान्तर कार्यक्रम न जाएं।

क्या देश या समाज तथा गरीबी के संबंध में किशोरों के भी कुछ विचार हैं? हां, हैं और काफी सशक्त विचार हैं। सम्मेलन में आये किशोरों का प्रतिनिधित्व किया १२ वर्षीय विकास शास्त्री व १५ वर्षीय हेमन्त बाघ ने। विकास शास्त्री ने चारों ओर फैली गरीबी की तीव्र अनुभूति व उसके प्रति वेदना प्रकट की और साथ ही इस बात पर क्षोभ प्रकट किया कि आजादी की लड़ाई के दिनों के सच्चे देश सेवक आज एक किनारे पड़ गये हैं और अवांछनीय तत्व सत्ता प्राप्त किये बैठे हैं। हेमन्त बाघ ने जन-जन को शिक्षित करने और जनता की शक्ति को आगे बढ़ाने की बात कही।

निर्णय व भावी कार्यक्रम :

राष्ट्रीय सम्मेलन में तरुणों ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए और काम की योजना बनायी। तरुण शांति सेना राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ जिसके सदस्य हैं सर्वश्री अनिल राठौर, अशोक बंग, अशोक भार्गव, कुमार प्रशांत, कु० जानकी पांडे, नचिकेता देसाई, कु० मदाकिनी दवे, रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, वेणु गोपाल, शिवाजी कागणीकर, सन्तोष भारतीय, समरजीत चक्रवर्ती, सुधाकर जाधव व सुधीर जोशी।

यह निश्चय किया गया कि तरुण शांति सेना का संयोजक एक वर्ष तक कार्य करे व उसका एक सहायक रहे। प्रादेशिक संगठन अपना ऑडिट स्वयं करें। किशोरों के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये एक समिति बनी जिसके संयोजक इन्द्रसिंह रावत व सदस्य सुहास मरोदे, मदाकिनी दवे, भारती बहन तथा भगवान बजाज हैं। हुनरों (स्किल्स) के प्रशिक्षण के लिए एक समिति बनी जिसमें श्री दीनानाथ राय, प्रेमभाई तथा अशोक भार्गव (संयोजक) हैं। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में इन्दौर में नाट्क-मिलन के पश्चात् सघन कार्य क्षेत्रों का चयन किया जायेगा। तरुण शांति सेना पुस्तिका के निर्माण के लिए कुमार प्रशांत, महेन्द्र भाई तथा नचिकेता देसाई (संयोजक) की एक समिति बनायी गयी। कु० मदाकिनी दवे तरुण शांति सेना की संयोजक चुनी गयी। श्री नचिकेता देसाई व कुमार प्रशांत उनके सहायक रहेंगे। तरुण शांति सेना की मासिक पत्रिका 'तरुण मन' की आर्थिक सहायता के लिए अलग-अलग लोगों ने संकल्प किया। 'तरुण मन' के नव निर्मित संपादक मण्डल के सदस्य हैं : श्याम बहादुर नम्र, कुमार प्रशांत, रामभूषण व नारायण देसाई (संपादक)। तरुण शांति सेना के राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए कोष एकत्रित करने की जिम्मेदारी तरुणों ने उठाई।

मौन जुलूस

सम्मेलन का एक आकर्षक कार्यक्रम था मौन जुलूस। मौलाना आजाद कॉलेज के छात्रावास से प्रारम्भ होकर यह मौन जुलूस औरंगाबाद नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ सरस्वती डिग्री कालेज तक पहुंच कर सार्वजनिक सभा में परिणत हो गया। सभा की अध्यक्षता नारायण देसाई ने की। कुमार प्रशान्त, मन्दकिनी दवे, नीलकंठ कोटेकर तथा अशोक भार्गव ने अपने भाषणों में 'मनुष्य' को प्रतिष्ठित करने पर बल दिया। "हम तरुणों के मन में आज की दुनिया के बारे में निराशा नहीं है। हमसे जो बाद में पैदा हुए हैं वह हमारी जैसी नहीं बल्कि हमसे अच्छी दुनिया बनाए।" इस शुभेच्छा के साथ श्री नारायण देसाई ने अपना भाषण समाप्त किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

क्या सम्मेलन में दिन-भर बातें व चर्चाएं होती रहीं या कुछ मनोरंजन के भी कार्यक्रम रहे, जिनसे दिन भर की थकान दूर होकर आगे के दिन के लिए स्वस्थ प्रेरणा मिल सके? हां, २१ अक्तूबर की शाम को मौलाना आजाद कॉलेज थियेटर ग्राउण्ड पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें तरुणों का स्वस्थ मनोरंजन हुआ। नारायण देसाई व अफलातून देसाई द्वारा प्रस्तुत 'दूसरे ग्रह का प्राणी', कुमारी जयश्री वसोड़ का नृत्य, वेणुगोपाल का नाटक व कुमारी भट्टाचार्या की गजल विशेष आकर्षण के कार्यक्रम रहे।

यह कहा जा सकता है कि इस सम्मेलन ने तरुणों का अभिक्रम जगाया है और उन्हें सरकार, राजनीति और पक्षमुक्त होकर स्वयं अपने पुरुषार्थ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

ी अमृतानन्ददास ने तैयार किया था।
र्ता १६ विभिन्न गोष्ठियों में दो दिनों तक
ी। अन्त में श्री ठाकुरदास बंग द्वारा प्रस्तुत
वारण के उपायों पर भी विचार हुआ।
ी चर्चा के बाद टोलियों की सम्मिलित
फारिशें सम्मेलन में प्रस्तुत की गयी। वे
फारिशें मुख्यतः ये हैं : आर्थिक दृष्टि से
ष्ट्र को आत्म-निर्भर बनाने वाले उद्योगों
प्राथमिकता दी जाय। सीमित उद्योगों
छोड़कर अन्य सभी उद्योग लघु एवं
मोद्योग के स्तर पर हों, जिनसे अधिकाधिक
गों को काम मिल सके। समान काम के
ए स्त्री-पुरुष को समान वेतन दिया जाय
र वेतन की न्यूनतम सीमा जीवन यापन
योग्य हो। गाँव में वस्त्रावलंबन को
थमिकता दी जाय तथा शुद्ध जल एवं
ाई पर विशेष ध्यान हो। श्रम-बैंक का
धकाधिक प्रयोग हो। राजनीतिक दृष्टि से
सम्मति के आधार पर ग्रामव्यवस्था,
माधारित एवं श्रमबहुल उद्योग, सत्ता के
केंद्रीकरण, सर्वसम्मति द्वारा चुनाव, पक्ष-
न राजनीति, भूमि-वितरण, सभी प्रगति-
ल कानूनों पर अविलंब अमल व मतदाता
शिक्षण की आवश्यकता महसूस की गयी।
क्षणिक दृष्टि से श्रमप्रधान उद्योगों से सम-
र रखने वाली शिक्षा तथा प्राथमिक प्रौढ़
क्षा के प्रसार एवं शिक्षण में वेतन की असः
नता अविलंब दूर करने की बात कही
। सामाजिक दृष्टि से जनसंख्या-नियन्त्रण,
न शैली में आमूल परिवर्तन, मादक
ों से मुक्ति और समाज में नीचे से दबाव-
ाए करने की सिफारिश की गयी। तरुण
ति सेना की दृष्टि से राष्ट्रीय शिविर-
मेलन को गांवों में रखने, गरीबी हटाने में
णों द्वारा ग्रामसभाओं के मार्गदर्शन,
बी की रेखा के नीचे के परिवारों का
क्षण, कॉलेज या तरुण शांति सेना द्वारा
ों को अडाप्ट किये जाने तथा व्यक्ति एवं
मंडलियों के स्तर पर प्रतिकार कार्यक्रम
ने के सुझाव रखे गये। स्वयं सम्मेलन के
र में यह सिफारिश की गयी कि भविष्य
म्मेलन के साथ समानान्तर कार्यक्रम न
जाए।

क्या देश या समाज तथा गरीबी के संबंध में किशोरों के भी कुछ विचार हैं? हां, हैं और काफी सशक्त विचार हैं। सम्मेलन में आये किशोरों का प्रतिनिधित्व किया १२ वर्षीय विकास शास्त्री व १५ वर्षीय हेमन्त बाघ ने। विकास शास्त्री ने चारों ओर फैली गरीबी की तीव्र अनुभूति व उसके प्रति वेदना प्रकट की और साथ ही इस बात पर क्षोभ प्रकट किया कि आजादी की लड़ाई के दिनों के सच्चे देश सेवक आज एक किनारे पड़ गये हैं और अवाछनीय तत्व सत्ता प्राप्त किये बैठे हैं। हेमंत बाघ ने जन-जन को शिक्षित करने और जनता की शक्ति को आगे बढ़ाने की बात कही।

निर्णय व भावी कार्यक्रम :

राष्ट्रीय सम्मेलन में तरुणों ने कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लिए और काम की योजना बनायी। तरुण शांति सेना राष्ट्रीय समिति का गठन हुआ जिसके सदस्य हैं सर्वश्री अनिल राठौर, अशोक बंग, अशोक भार्गव, कुमार प्रशांत, कु० जानकी पाडे, नचिकेता देसाई, कु० मदालिनी दवे, रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, वेणु गोपाल, शिवाजी कागणीकर, सन्तोष भारतीय, समरजीत चक्रवर्ती, सुधाकर जाधव व सुधीर जोशी।

यह निश्चय किया गया कि तरुण शांति सेना का संयोजक एक वर्ष तक कार्य करे व उसका एक सहायक रहे। प्रादेशिक संगठन अपना ऑडिट स्वय करें। किशोरों के प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये एक समिति बनी जिसके संयोजक इन्द्रसिंह रावत व सदस्य सुहास सरोदे, मदालिनी दवे, भारती बहन तथा भगवान बजाज हैं। हुनरों (स्किल्स) के प्रशिक्षण के लिए एक समिति बनी जिसमें श्री दीनानाथ राय, प्रेमभाई तथा अशोक भार्गव (संयोजक) हैं। नवम्बर के अन्तिम सप्ताह में इन्दौर में नाहक-मिलन के पश्चात् सघन कार्य क्षेत्रों का चयन किया जायेगा। तरुण शांति सेना पुस्तिका के निर्माण के लिए कुमार प्रशांत, महेन्द्र भाई तथा नचिकेता देसाई (संयोजक) की एक समिति बनायी गयी। कु० मदालिनी दवे तरुण शांति सेना की संयोजक चुनी गयी। श्री नचिकेता देसाई व कुमार प्रशांत उनके सहायक रहेंगे। तरुण शांति सेना की मासिक पत्रिका 'तरुण मन' की आर्थिक सहायता के लिए अलग-अलग लोगों ने संकल्प लिया। 'तरुण मन' के नव निर्मित संपादक मण्डल के सदस्य हैं : श्याम बहादुर नम्र, कुमार प्रशांत, रामभूपण व नारायण देसाई (संपादक)। तरुण शांति सेना के राष्ट्रीय कार्यक्रमों के लिए कोष एकत्रित करने की जिम्मेदारी तरुणों ने उठाई।

मौन जुलूस

सम्मेलन का एक आकर्षक कार्यक्रम था मौन जुलूस। मौलाना आजाद कॉलेज के छात्रावास से प्रारम्भ होकर यह मौन जुलूस औरंगाबाद नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ सरस्वती डिग्री कालेज तक पहुंच कर सार्वजनिक सभा में परिणत हो गया। सभा की अध्यक्षता नारायण देसाई ने की। कुमार प्रशान्त, मन्दाकिनी दवे, नीलकंठ कोठेकर तथा अशोक भार्गव ने अपने भाषणों में 'मनुष्य' को प्रतिष्ठित करने पर बल दिया। "हम तरुणों के मन में आज की दुनिया के बारे में निराशा नहीं है। हमसे जो बाद में पैदा हुए है वह हमारी जैसी नहीं बल्कि हमसे अच्छी दुनिया बनाए।" इस शुभेच्छा के साथ श्री नारायण देसाई ने अपना भाषण समाप्त किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

क्या सम्मेलन में दिन-भर बातें व चर्चाएं होती रही या कुछ मनोरंजन के भी कार्यक्रम रहे, जिससे दिन भर की थकान दूर होकर आगे के दिन के लिए स्वस्थ प्रेरणा मिल सके? हां, २१ अक्तूबर की शाम को मौलाना आजाद कॉलेज थियेटर ग्राउण्ड पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें तरुणों का स्वस्थ मनोरंजन हुआ। नारायण देसाई व अफलातून देसाई द्वारा प्रस्तुत 'दूसरे ग्रह का प्राणी', कुमारी जयश्री कलोड का नृत्य, वेणुगोपाल का नाटक व कुमारी भट्टाचार्या की गजल विशेष आकर्षण के कार्यक्रम रहे।

यह कहा जा सकता है कि इस सम्मेलन ने तरुणों का अभिक्रम जगाया है और उन्हें सरकार, राजनीति और पक्षमुक्त होकर स्वयं अपने पुरुषार्थ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

"इसीलिए मैंने कहा कि इजरायल ने जो युद्ध किया सो उत्तम किया। उसने दुनिया को दिखा दिया कि बिल्कुल मामूली जमीन में मरुस्थल सरीखे भू-भाग में वे उत्तम फसलें पैदा कर सकते हैं और शस्त्र-शक्ति सम्पन्न भी बन सकते हैं। उन्हें अरब देशों ने पीठ दिखायी। दोनों ही प्रकार से इन्होंने अपनी शक्ति प्रगट कर दी। इसलिए मैं उनका जयजयकार करता हूं। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूं। प्रश्न करने वाले के ध्यान में यह अभिप्राय ठीक बैठ जायेगा यह मैं ऐसी आशा करता हूं।"

विनोबा का इजरायल के प्रसंग में सत्याग्रह विषयक यह स्पष्टीकरण हमारे यहां भी उन लोगों के लिए बहुत विचारणीय है जो इन दिनों शासन की मनमानी के विरोध में सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग करने की बात उठाते रहते हैं। सोचकर देखना चाहिए कि जब स्वयं विनोबा सत्याग्रह करने योग्य विशुद्ध अहिंसक शक्ति का अपने भीतर अनुभव नहीं कर रहे हैं तब हममें से अन्य किसी की इस मैदान में उतर पड़ने की इच्छा कितनी खतरनाक साबित हो सकती है।

सत्ता विरोधी रुख !

पांचवी योजना को अन्तिम रूप दिया जा चुका है और रंग रोगन देकर वह सजधज के साथ उपस्थित की ही जाने वाली है। ऐसे अवसर पर लोगों को आश्वस्त किया जा रहा है और बताया जा रहा है कि हमारे पिछले बुरे दिनों का अन्त निकट है। कहा जा रहा है कि अनेक प्रकार के अभावों की जड़ों में बंगला देश को जो मदद करनी पड़ी उसका काफी बड़ा हाथ था। हड़तालें और सत्ता विरोधी दलों द्वारा सुचारु रूप से काम न करने देने के प्रयत्न भी पिछले कष्टों के कारण के रूप में प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

चौथी पंचवर्षीय योजना के लक्ष्य किसी क्षेत्र में पूरे नहीं हुए और १९७२ में जून में जो १४.२ प्रतिशत मुद्रास्फीति हुई वह इस समय तक १९.९ और बढ़ गई है। निसन्देह इसे बांगला देश या हड़तालों आदि के सिर नहीं मढ़ा जा सकता। चौथी पंचवर्षीय योजना की अवधि में तीन वर्ष तो उत्तम वर्षा के रहे और बावजूद इस तथ्य के सरकार ने केवल गेहूं की फसल में १५० लाख टन प्रतिवर्ष का इजाफा करने के विचार से इस दिशा में १५० करोड़ रुपया अतिरिक्त व्यय भी किया, फसल में कोई इजाफा होना तो दूर रहा वह कम होती चली गई। लोगों से सदा यही कहा जाता रहा कि हमारे पास पर्याप्त अन्न का भंडार है, चिन्ता की कोई बात नहीं है—किन्तु जब परिस्थिति सँभाले नहीं सँभली तो हमें विदेशों के दरवाजे खटखटाने पड़े।

इसी तरह हमारी बड़ी-बड़ी सिंचाई बिजली और इस्पात की योजनाएं भी मृगजल साबित हुई। उदाहरण के लिए १९७१ में आन्ध्र ने अपने यहाँ इस्पात कारखाने के लिए प्रबल आन्दोलन किया, और शीघ्र ही मंजूर किया जा कर विशाखापट्टनम में प्रधानमंत्री के द्वारा उसका उद्घाटन किया गया। इस योजना की आशा की उच्चता दर्शाने के लिए उस समय एक साठ फुट ऊंचा सिंह द्वार खड़ा किया किन्तु सिवा इसके कि उस सिंह द्वार पर भी जंग चढ़ रही है इस योजना ने अन्य कोई करिश्मा कर के नहीं दिखाया। कोचीन के लिए दूसरी जहाजी गोदी तो दूसरी योजना के अन्त तक ही बन कर तैयार हो जायेगी, ऐसी बात थी, किन्तु अभी तक उसकी नींव भी पूरी बन कर तैयार नहीं हो पाई है। तमिलनाडु सरकार और केन्द्रीय सरकार ने मिल कर १६० करोड़ रुपये की लागत से जो भूरे रंग का कोयला (लिग्नाइट) तैयार करने की योजना तैयार की थी उसका कारण आर्थिक के बजाय राजनैतिक अधिक समझ में आ रहा है। क्योंकि आज तक उस पर ५८ करोड़ का नुकसान हो चुका है और आगे नुकसान कम हो कर लाभ की कोई सूरत नजर नहीं आ रही है। हिमाचल प्रदेश की पौंग-बांध योजना का पूरा तखमीना १२० करोड़ का था उस पर २०० करोड़ लग चुके हैं और तीन बरस के बाद भी यह नहीं कहा जा सकता कि वह पूरी कब होगी। इस योजना के सिलसिले में जिन किसानों की जमीन ली गई थी, वे सिंचाई तो दूर सूखी खेती से भी गये।

टाइम्स वीकली ने हमारी इन अनेक बड़ी योजनाओं का बड़ा दिल दहलाने वाला खाका खींचा है। उसे और रिजर्व बैंक की हाल ही में प्रकाशित रिपोर्ट को पढ़ कर असफलताओं के जो कारण सामने आते हैं वे हैं, तर्क हीन तथा आर्थिक आधार से अधिक राजनीतिक आधारों पर तय की हुई योजनाएं, उनको सफल बनाने की दिशा में सब ओर से लापरवाही भ्रष्टाचार और लोगों की चीख पुकार को किसी न किसी ढंग से दबा देने की शक्ति पर सत्ता का असीम विश्वास। पांचवीं पंचवर्षीय योजना इतने जबर्दस्त कष्टों को भोग चुकने के बाद कुछ अधिक सावधानी से लागू की जायेगी, हम इतना आशा और आग्रह व्यक्त करना चाहते हैं। संभव है ऐसी आशा रखना भी सत्ता द्वारा विरोधी रुख माना जाये।

भवानी प्रसाद मिश्र

× श्री मानव मुनि से प्राप्त समाचारों के अनुसार म० प्र० के वयोवृद्ध सेवक श्री दादाभाई नाईक १५ अगस्त १९७२ को ग्वालियर में श्री जयप्रकाश जी के आशीर्वाद से प्रारम्भ हुई प्रदेश की अपनी पदयात्रा १ दिसम्बर १९७३ को विनोबा जी द्वारा १९६० में स्थापित किये विसर्जन आश्रम में पदार्पण से पूर्ण करेंगे। यात्रा का पूर्णाहुति कार्यक्रम विनोबा जी के लघुभ्राता श्री शिवाजी भावे के सान्निध्य में सम्पन्न होगा। इन्दौर जिले में सावेर तहसील के बड़ोदिया ग्राम में २० नवम्बर को दादाभाई ने प्रवेश किया। इस अवसर पर जिले के कार्यकर्ता व नागरिक सीमा पर दादाभाई व साथियों का स्वागत हुआ।

मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठकर देवत्व की ओर बढ़ सकता था

—सरला बहन

करोड़ो वर्षों से हमारे पृथ्वी-ग्रह पर 'प्रकृति की भूल सुधार' पद्धति से विकास का क्रम चलता रहा है।

एक कोशीय एलगाई से वनस्पति का विकास विशाल वनों तक हुआ। वे विशाल वन दबकर हमारे लिए कोयले का स्रोत बने वाली वे अपने रूप में बहुत सफल सिद्ध नहीं हुए। समाप्त होने पर उन्होंने कोयले के रूप में परिवर्तित होकर नये युग की बुनियाद डाली। उन्होंने अपनी विरासत में ज्यादा सौम्य पौधों को छोड़ा जो उनसे ज्यादा सफल साबित हुए।

प्राणियों का विकास एककोशीय प्राणी, अमीबा से, डिनोसोर तक हुआ। हर युग में आकार का विकास भी हुआ। उस क्रम की पराकाष्ठा डिनोसोरों के युग में हुई। ८०-९० फुट लम्बे ये विशाल प्राणी जिन्होंने एक दूसरे से लड़ाई में विजय पाने के लिए अपने शरीर को भयंकर शस्त्रों से सुसज्जित किया, एक दूसरे के वंश का ध्वंस करने के लिए एक दूसरे के अण्डे भी खा जाते थे।

लेकिन प्राणियों के विकास में भी इस हद तक पहुंचकर प्रकृति चेत गई। आखिर, उसे सर्वनाश का मार्ग अपनाना चाहिए, या सृजन का मार्ग? अब डिनोसोरों के युग में, धीरे-धीरे, एक ऐसे प्राणी का विकास होने लगा, जिसका मूल सिद्धान्त संघर्ष नहीं सहयोग था, और हिंसात्मकता के स्थान पर सहिष्णुता की ओर बढ़ने लगा। प्रथम बार दुनिया में एक नई अहम शक्ति प्रकट होने लगी—संघर्ष के बदले में सेवा और प्रेम।

अपने वंश की सुरक्षा के लिए उन स्तनधारी प्राणियों ने बाहुबल के भयंकर संघर्ष के बदले में अपने बच्चों के पालन पोषण में प्रेम और सेवा का सिद्धान्त अपनाया। अपने शरीर को भयंकर शस्त्रों से सुसज्जित करने के बदले अपने स्तनों में दूध के प्रेम फुहारे का विकास किया। अपने बच्चों के अण्डों को भाग्य की मर्जी पर छोड़ने के बदले उन्हें जन्म तक अपने शरीर में संभालने की प्रक्रिया अपनाई। अन्त में डिनोसोर लड़ झगड़ कर अपने वंश को खत्म करके, भविष्य के लिए खनिज तेल का भण्डार बन गये और स्तनपायी नये युग के सम्राट् बने।

इस युग में भी शुरू से प्रकृति ने अपनी नई दिशा का पूरा महत्त्व नहीं समझा था। प्रेम की धारा के साथ ही साथ, अभी तक विशाल बाहुबल और संघर्ष का प्रयास भी चलता रहा। लेकिन अन्त में विशाल मैमथ तथा तलवार-दांत वाले शेर के स्थान पर छोटे और सौम्य पशुओं का विकास ज्यादा सफल साबित हुआ। और खतरनाक जानवरों का भी अन्त हुआ।

उन जानवरों के बीच में एक दूसरे प्राणी का विकास धीरे-धीरे हो रहा था, जिसने अपने विकास के लिए एक और नया सिद्धांत अपनाया। सर्वप्रथम खड़े होकर, पांव के बदले में हाथों का उपयोग करना विकास क्रम में एक बहुत बड़ा कदम था। फिर सहज-वृत्ति की शारीरिक शक्ति के बदले में प्रथम बार दुनिया में एक और नई शक्ति विकसित होने लगी—बुद्धि और भावनाएं, यानी आत्मा का प्रवेश हुआ। बुद्धि और भावनाओं के विकास से प्रकृति के स्वाभाविक विकास के क्रम में पुराने मनुष्यों ने अपने शरीर के बाहर शस्त्र और औजारों का विकास करना शुरू किया। आग को काबू में किया, कृषि की सम्भावना पैदा हुई। अब बुद्धि का उपयोग करके मनुष्य में एक हद तक विकास की दिशा को निर्धारित करने की शक्ति आई। सृजन करने की शक्ति पैदा हुई। इसके साथ ही साथ परिवार में प्रेम और सहयोग और सहयोगिता की भावना का विकास हो रहा था। अपने सगे-सम्बन्धियों के लिए सेवा, त्याग तथा श्रम करने की वृत्ति का विकास हुआ। इससे गांव, नगर तथा राष्ट्रीय संगठन का विकास भी हुआ। लेकिन 'अपना' और 'पराया' 'तेरा' और 'मेरा' की भावना रहने से संघर्ष और स्पर्धा की भी वृत्ति दुनिया में रही। इधर लगता है कि 'भूल-सुधार' का प्रयोग तभी तक चलता रहा जब तक मनुष्य ने आत्मा और बुद्धि का मर्म पूरा नहीं समझा; अहिंसा की भावना की पूरी गहराई तक जाने की चुनौती को वह पूरा उत्तर दे नहीं पाया। सहअनुभूति, भूल सुधार की पद्धति के स्थान पर हुई नियोजित विकास की ओर बढ़ने की क्रिया का अभी तक विकास नहीं हुआ। उसके बदले विशालता की ओर बढ़ने लगे। परिवार से जाति और गांव, गांव से राष्ट्र और उस राष्ट्र को बढ़ाने की स्थापित से, अन्तर्राष्ट्रीय भगड़ा तथा संचार साधनों के विकास से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ा बढ़ने लगा।

इधर भी बुद्धि नहीं, भूल सुधार की पद्धति से मनुष्य आगे बढ़ा। जैसे जैसे वह नई-नई शक्तियों को अपने वश में लेने लगा वैसे-वैसे उन शक्तियों का उपयोग व्यक्तिगत तौर पर अपने हित के लिए करने लगा। इधर वह अभी तक डिनोसोरों के संघर्ष की पद्धति से भटकता रहा और भटक रहा है।

अब, अपने शरीर के बाहर उसने ऐसे खतरनाक अस्त्र बनाये, जिनसे डिनोसोरों के प्राकृतिक अस्त्र अपने बच्चों के खिलौने थे। धर्म के आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र के विकास से शक्तियों का संघर्ष हो रहा है। [illegible] विकास

इन सब हथियारों का [illegible] बुद्धि के ही उपयोग से हुआ है। लेकिन जैसे बुद्धि के उपयोग से प्रकृति ने [illegible] इन विशाल साधनों का विकास [illegible]

(शेष पृष्ठ ११ पर)

समुद्र को मीठा बनाने की कल्पना मत कीजिए

प्रश्न: चार-पांच रोज से सम्मेलन में गाय के बारे में किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा है। कृत्रिम गर्भाधान से हिन्दुस्तान की अपनी गाय लोप होने का डर है। मार्गदर्शन देने की कृपा करें। लोग दूध बढ़ाने के लिए हिंसा-अहिंसा का ध्यान नहीं रखते हैं। यह पाप अपनी ही संस्थाओं में चल रहा है। आप इसे नहीं रोक सकते हैं?

उत्तर: बलवन्त सिंह यानी गाय। उनको चिन्ता है गाय की। गाय का अर्थ है गरीब। लेकिन वह गरीब गाय नहीं है। झगड़ालू गाय है। इनकी उम्र ७५ है, फिर भी कसकर लड़ते हैं। स्पष्ट बात है कि यह (कृत्रिम गर्भाधान) अनुचित काम है। इससे मनुष्य बचेगा नहीं। मनुष्य को दूध लेना है तो गाय के पावित्र्य पर आक्रमण नहीं करना चाहिए। यह गोमाता है। मानव की रक्षा के लिए ब्रह्मविद्या की शिक्षा देनी होगी। ब्रह्मविद्या की साधना होगी, तभी मानवता टिकेगी।

प्रश्न: सर्व सेवा संघ के कार्यक्रम में ग्राम-स्वराज्य-ग्रामदान आदि व्यापक क्षेत्र होगा। उसमें भंगी-मुक्ति कार्यक्रम का जो शहरों से ही सम्बन्धित है, क्या स्थान होगा?

उत्तर: भंगी मुक्ति करना, इसका अर्थ यह है कि हमारे कार्यकर्ताओं को आदेश है गांव-गांव जाकर झाड़ू लगाओ। उन्होंने उसका पालन भी किया है। गांव में जाकर प्रथम क्या करना? झाड़ू लगाना और सब जाति, धर्मवालों को इकट्ठा करके प्रार्थना करना। यह भंगी-मुक्ति के लिए आदेश है। बाकी म्यूनिसीपालिटी वगैरह काम करेगी। सेप्टिक टैंक, संडास वगैरह की योजना सब दूर होनी चाहिए। फिर खाद भी बनेगी और भंगी-मुक्ति होगी।

प्रश्न: आचार्य कुल का काम भी रचनात्मक है। वह भी एक एक्शन प्रोग्राम है, ऐसा सर्वोदय काम में लगे लोगों को लगता नहीं। यह काम कैसे प्रभावकारी बने?

उत्तर: उसका एक कारण यह है कि वे अपने काम में इतने ग्रस्त होते हैं कि उन्हें सोचने का समय नहीं मिलता। और दूसरा कारण यह है कि वे बेचारे विद्वान हैं नहीं।

लेकिन विद्वानों को इस काम के लिए आगे आना चाहिए। और हाथ में झंडा लेकर सर्वोदय के सेवकों के पास जाना चाहिए और कहना चाहिए, हमारी बात सुनो।

गांव-गांव शिक्षकों के पास जाकर हमारी बात सुनाओ। क्योंकि तुम गांव-गांव जाते ही हो। आचार्यकुल का काम अत्यन्त महत्व का है। लेकिन अभी-अभी चार-पांच साल से शुरू हुआ है। ऊपर के प्रान्तों में शुरू हुआ है। गुजरात में भी शुरू हो रहा है। गुजरात में यह विचार जायेगा तो पूर्णमान्य होगा। गांधीजी का विचार था कि शिक्षा पूर्ण सरकार मुक्त हो। इसलिए आचार्यकुल का संगठन गुजरात में मान्य होना ही चाहिए। इसमें किसी भी आचार्य का मतभेद नहीं हो सकता है। वहां कुछ उत्तम आचार्य हैं, आचार्य की योग्यता समझते हैं। लेकिन तुरन्त राजनीति को छोड़ नहीं सकते। उन्हें भास होता है कि "गांधीजी जीवन को समग्र मानते थे। इसलिए राजनीति को अलग नहीं रख सकते हैं।" मैं भी कहता हूं कि राजनीति को अलग नहीं रख सकते हैं, आपको राजनीति को तोड़ना है पर वे समझते हैं कि वहां अन्दर प्रवेश करके सरकार पर, कांग्रेस पर असर डालेंगे। मैंने कहा कि यह प्रयोग गंगा, यमुना आदि सब नदियों ने कर लिया है। अपना मीठा पानी डालकर समुद्र को मीठा बनायेंगे, यह प्रयोग उन्होंने किया है। यह गंगा, यमुना को सधा नहीं, तो आपको कैसे सधेगा? इसलिए इस खारे समुद्र को मीठा बनाने की कल्पना मत कीजिए।

प्रश्न: कुछ लोगों को देश की परिस्थिति देखकर अत्यन्त निराशा और अंधकार दीखता है। आपके कहने से भविष्य उज्ज्वल है। वे कहते हैं, देश सर्वनाश की तरफ जा रहा है आपको दीखता है कि उदय की तरफ जा रहा है। यह इतना भिन्न दर्शन क्यों होता है?

उत्तर: ऐसा है कि जो मानव होते हैं उनको दिन में अत्यन्त उज्ज्वल प्रकाश दीखता है। लेकिन जो शेर होते हैं उन्हें दिन में अंधेरा दीखता है। मानव की दृष्टि में और शेर की दृष्टि में फर्क है।

इस वक्त कुल दुनिया वेग से शान्ति की तरफ जा रही है। कुल दुनिया के लोग नजदीक आ रहे हैं। यहां जो चलता है, जो समस्याएं हैं, जैसे भुखमरी, दारिद्र्य उसके कारण कुछ लोग इन्दिरा पर टीका करते हैं। मैं कहता हूं कि कुछ लोग हैं इन्दिरा के भक्त और कुछ हैं विरोधी भक्त। रावण राम का विरोधी भक्त था। विरोधी भक्ति करके वह राम की ज्योति में लीन हो गया। हनुमान सख्य भक्ति करके राम की ज्योति में लीन हो गया। अभी इस समय भारत में दो प्रकार के इन्दिरा भक्त हैं। एक है विरोधी-भक्त जो कम कर विरोध करते हैं। सदा सर्वदा इन्दिरा, इन्दिरा, इन्दिरा।' इन्दिरा ने यह बुरा किया ऐसा कहते रहते हैं। ये लोग मर जायेंगे तो इन्दिरा की ज्योति में लीन हो जायेंगे। दूसरे कुछ हैं जो दास्यभक्ति करते हैं। वे भी मर जायेंगे तो इंदिरा की ज्योति में लीन हो जायेंगे। आप इन दो में से एक भी बनें, यह बाबा ठीक नहीं मानता।

यहां की समस्याएं कोई पार्टी या कोई सरकार हल कर सकती है, ऐसा बाबा नहीं मानता। हम सबको मिलकर यह काम करना होगा। मैंने व्यापारियों की सभा में कहा था कि समाज की पांच शक्तियों के (जनशक्ति, सज्जनशक्ति, विद्वद्जनशक्ति, महाजन शक्ति, शासन शक्ति) सहयोग से मसले हल होंगे। लेकिन इन्दिरा फेल है या पास इसकी बाबा के पास एक ही कसौटी है, कि वह अन्तर राष्ट्रीय क्षेत्र में सफल होती है या असफल। अभी तक यही दीखता है कि जितना उसने

→

→

किया है वह सफल ही दीखता है। बांगला देश स्वतंत्र बना, वहां से लाखों लोग आये थे, उनके लिए बहुत खर्चा उठाया योरप, अमरीका में जाकर सबको समझाया और बांगला देश में जीत हुई तो वेस्टर्न फ्रंट पर फौरन यूनि-लैटरल सीज फायर किया। अभी शिमला में और दिल्ली में बातचीत चलायी। कुल मिला कर उसने आन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में काफी सफलता प्राप्त की है। इसलिए बाबा इन्दिरा को धन्य-वाद देता है। अब यहां की जो समस्याएं हैं, गरीबी वगैरह वह इन्दिरा हल नहीं कर सकेगी। वह तो आपको, हमको सबको मिल कर हल करना है।

प्रश्न: बांगला देश की आजादी के लिए इन्दिरा जी से कहीं अधिक काम तो जयप्रकाश जी ने किया है?

उत्तर अधिक काम किसने किया और किसने नहीं किया, इसका विचार मैं नहीं करता हूं। परन्तु प्राइम मिनिस्टर के नाते उन्होंने जो काम किया वह प्रशंसनीय है। तुलना मैं किसी की, किसी से करता नहीं।

प्रश्न मैं गांव में काम करता हूं, कुछ लोग मुझसे जाति पूछते हैं। मैं उन्हें इन्सान बताता हूं। जब हरिजन महार बताया जाता है तो पहले से कार्य करने में मदद कम मिलती है। मार्गदर्शन दें?

उत्तर . [illegible] अच्छी जाति है, वह बतायी जाये। अपनी जाति है, मानव। वेद में लिखा है, विश्वमानुष। हम सब विश्वमानव हैं। 'मनु' पद से 'मानव' बना है। मनन करता है, वह मानव है। हम सब मनन करनेवाले हैं, मानव हैं।

प्रश्न. मायावाद भिन्न है या 'निर्विचार-वाद'? बाबा के [illegible] की प्रस्तावना के 'निर्विचारवाद' कहते लिखा है। इसका 'निर्विचारवाद' के बारे में मालूम कराइए?

उत्तर इसका विवरण १३०० साल से शंकर रामानुज करते आये हैं। शंकराचार्य की धारणा काम तक करना रहेगा। इसलिए यह स्थान शंकराचार्य के लिए छोड़ा।

भूदान-यज्ञ : सोमवार, २६ नवम्बर '७३,

मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठकर देवत्व की ओर बढ़ सकता था

(पृष्ठ १३ का शेष)

वैसे-वैसे प्रकृति के निकट रह कर जो आध्यात्मिक साधना और भक्ति का विकास हुआ था, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक विचारों से मानवीय जीवन में जो सौन्दर्य, कला, काव्य आनन्द का प्रवेश हुआ था, वैसे वह उन सबको भूलता गया। यों आत्मा और भावनाओं का विकास कुण्ठित होने लगा, बुद्धि का विकास प्रधान रहा।

इन सब साधनों का विकास, सुख-शान्ति की खोज में हुआ है। लेकिन अब इसके सामने मानव की गिनती नहीं रही है। भारत-पाकिस्तान के संघर्ष की खबरों में, कितने विमान नष्ट हुए, कितने टैंक नष्ट हुए, उसकी गिनती मिलती रही लेकिन कितने मनुष्य नष्ट हुए घायल हुए, मर गये, कितनी बहनें विधवा हुईं, कितने बच्चे अनाथ हुए, कितनी माताएं पुत्र विहीन हुईं, इसका कोई जिक्र नहीं।

मनुष्य के विकास में, मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठ कर देवत्व की ओर बढ़ सकता था, लेकिन अब वह पशुओं से नीचे गिर कर दानवता की ओर बढ़ रहा है। पशु सहज-वृत्ति से झगड़ता है। मनुष्य उसमें बुद्धि का उपयोग करता है, जो सर्वथा बुद्धिमत्ता का अभाव है। फिर भी वह अभी तक उस भूल-सुधार, की पद्धति में भटक रहा है। इरादा करके दानवत्व को छोड़कर देवत्व की ओर बढ़ने की हिम्मत और श्रद्धा नहीं है।

इस युग में गांधी जी ने दुनिया के सामने नये युग की चुनौती का उत्तर बताया था। उन्होंने साबित किया कि प्रेम में संघर्ष को जीतने और शस्त्र में भिन्न को जीतने की शक्ति है। पुलिस की शक्ति को, साम्राज्य की शक्ति को, जीतने में अहिंसा समर्थ है। फिर भी, मनुष्य अभी तक पैदा नहीं। दिशा बदलने का निर्णय नहीं कर पाता है, सुनियोजित सर्वांगीण विकास की दिशा में आगे बढ़ने के बदले में, वह अभी तक 'मेरे' परिवार, 'मेरे' राष्ट्र की धुन में पड़ा है। ऋषियों तथा सन्तों के विशाल दर्शन को छोड़ कर वह कृत्रिम डिनोसौर के युग में आगे बढ़ने को तत्पर है।

व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वार्थों की टक्कर से, संकुचित [illegible] भावनाओं की टक्कर से, शक्ति की पूजा के मद से संघर्ष पैदा होता है; तब मनुष्य शान्ति का समझौता करने के लिए दौड़ता है, लेकिन अभी तक वह समझ नहीं पा रहा है कि दिशा बदलना है। बाह्य शक्ति के स्थान पर आन्तरिक शक्ति बाहुबल के स्थान पर प्रेम की शक्ति, संघर्ष की शक्ति के बदले में सहयोग की शक्ति विशालता के बदले में सौम्यता की शक्ति का विकास करना है। नहीं तो मनुष्य यन्त्र का गुलाम बना कर जानवर से भी बदतर, यन्त्र का एक पुर्जा बनता जा रहा है,—यन्त्र के सामने मनुष्य के अस्तित्व की कोई गिनती नहीं रही है।

वर्तमान युग को हम योजना का युग कह सकते हैं। दुनिया भर में पंचवर्षीय योजनाओं की भरमार है। लेकिन उन सब योजनाओं में एक भी योजना ऐसी नहीं है जो निश्चय करके संघर्ष की जड़ों को काटकर दुनिया को शान्ति की धारा में ला सके। उनका मूलभूत सिद्धान्त अभी तक उस भूल सुधार की पद्धति पर आधारित है इसलिए यह मनुष्य को सर्वनाश की ओर बढ़ा कर ले जा रही है।

सारी परिस्थिति को देख कर, उसका विश्लेषण करके, अब यदि नई दिशा, योजना और बढ़ना, उसे स्वीकार नहीं करते हैं तो चाहे युद्ध से, चाहे प्रकृति के साधनों अंधाधुंध दोहन से, चाहे प्रकृति के महान मानव शक्ति, अपनी बुद्धि और निर्णय शक्ति के विकास के बावजूद नाश की ओर जाने या सर्वनाश की ओर ही बढ़ेंगे।

—

R.N. 2091/57 BHOODAN YAGYA 26 NOVEMBER, 1973 Regd. No. D. 273

श्री आर. आर. दिवाकर

श्री श्रीमन्नारायण

अत्यंत ही भावपूर्ण और अनौपचारिक समारोह के अन्तर्गत १६ नवम्बर को राजघाट कालोनी, नई दिल्ली, स्थित केन्द्रीय गांधीनिधि के कार्यकर्ता परिवार ने निधि के अब तक के अध्यक्ष आदरणीय श्री रंगनाथ रामचन्द्र दिवाकर को भावभीनी विदाई दी, और अपने नये अध्यक्ष श्री श्रीमन्नारायण का स्वागत किया। दिवाकर जी विगत सत्रह वर्षों से निधि के अध्यक्ष थे। निधि के मंत्री श्री देवेन्द्र कुमार ने दिवाकर जी को विदाई देते हुए आशा व्यक्त की कि अध्यक्ष पद से मुक्त होने के बाद भी दिवाकर जी का मार्गदर्शन निधि को प्राप्त होता रहेगा। दिवाकर जी ने कहा कि शारीरिक रूप से वे चाहे निधि से मुक्त हो जाए, पर मानसिक रूप से वे हमेशा निधि से जुडे रहेंगे। श्रीमन्नारायण जी ने निधि के कार्यकर्ताओं से सहयोग की अपेक्षा करते हुए आशा व्यक्त की कि जिस प्रकार दिवाकर जी को निधि के लोगों का सहयोग मिलता रहा उन्हें भी प्राप्त होगा।

नये अध्यक्ष का चयन १७ नवम्बर को नई दिल्ली में निधि के ट्रस्टियों की बैठक में हुआ।

× आत्मीय समारोह के अन्तर्गत पश्चिम बंगाल के सर्वोदय और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने १६ अक्टूबर को कलकत्ता के कुमारसिंह हाल में बंगाल के सुप्रसिद्ध सर्वोदय सेवक श्री चारुचन्द्र भण्डारी का ७८वां जन्म दिवस मनाया। बंगाल के सम्मानित सर्वोदय कार्यकर्ता व स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री कृष्णकान्त चक्रवर्ती ने इस अवसर पर चारुदा को दो हजार पांच सौ नौ रुपये अड़सठ पैसे की थैली भेंट की। पश्चिम बंगाल सर्वोदय मंडल द्वारा आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता श्री शशिशेखर पाल ने की।

चारुदा को थैली भेंट करते हुए श्री चक्रवर्ती

× आगरा से श्री कृष्णचन्द सहाय से प्राप्त जानकारी के अनुसार 'भारत का भावी स्वरूप क्या हो?' व्याख्यान माला के अन्तर्गत दूसरा भाषण संगठन कांग्रेस के अध्यक्ष श्री अशोक मेहता ने दिया। स्थानीय नागरी प्रचारणी सभा भवन में १४ नवम्बर को व्याख्यान का आयोजन हुआ। श्री मेहता ने 'लोकतांत्रिक समाजवाद' पर अपने विचार प्रकट किये। व्याख्यान माला का प्रथम भाषण केन्द्रीय रक्षामंत्री श्री जगजीवनराम ने १३ अक्टूबर को दिया था।

× मध्य प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा प्रदत्त एक जानकारी के अनुसार आगामी ४ व ५ दिसम्बर, '७३ को कस्तूरबा ग्राम (इन्दौर) में तेरहवां प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन होने जा रहा है। सम्मेलन का उद्‌घाटन श्री दादाभाई नाईक करेंगे और अध्यक्षता हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि एवं 'भूदान-यज्ञ' के सम्पादक श्री भवानी प्रसाद मिश्र करेंगे।

सम्मेलन की कार्यवाही ४ दिसम्बर को तीसरे पहर से शुरू होगी। सम्मेलन में जिला सर्वोदय मण्डलों के संयोजक, प्रतिनिधि, रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधि एवं सर्व सेवा संघ के प्रादेशीय संघ सदस्यगण भाग लेंगे।

× [illegible] जानकारी के अनुसार सुपरिचित लेखक [illegible] की 'चम्बल घाटी में डाकू समस्या के समाधान में राज्य शासन और सर्वोदय का योगदान' विषय पर एक शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा स्वीकृत कर जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर ने पी० एच० डी० के लिए पंजीकृत कर ली है।

× आगामी १२ व १३ जनवरी, १९७४ प्रथम राष्ट्रीय आचार्यकुल सम्मेलन आचार्य विनोबा भावे के सान्निध्य में परमधाम आश्रम पवनार (वर्धा) महाराष्ट्र में आयोजित होगा। सम्मेलन में देश भर से कई विद्वान भाग लेंगे और देश की ज्वलन्त समस्याओं पर तटस्थ चिन्तन तथा आचार्यकुल के संगठनात्मक पहलुओं पर विचार-विमर्श करेंगे।

× महात्मा गांधी आश्रम जौरा के संचालक श्री एस० एन० सुब्बाराव ने बताया कि आगामी १ से १५ दिसम्बर तक जौरा (जिला-मुरैना) में गांधी-मेला लगाया जायेगा। २ दिसम्बर को मेले का उद्‌घाटन केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री जगजीवनराम करेंगे। मेले की व्यापक तैयारियां शुरू कर दी गयी हैं।

मेले के अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित की जा रही है। जिसके सम्पादक प्रो० गुणशरण हैं।

मेले के बाद चम्बल घाटी के लोगों को लेकर एक विशेष रेलयात्रा के आयोजन का विचार है।

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

भूदान-यज्ञ

३ दिसम्बर, '७३

वर्ष २०　　　　अंक १०

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

नये आयाम !

सोवियत दल के प्रधान नेता भारत आये हुए हैं। हमने उनका जी खोल कर स्वागत किया है। पारस्परिक हित में एक दूसरे के लिए क्या कुछ किया जा सकता है इसके विभिन्न पहलुओं पर हमारी प्रधानमंत्री और श्री ब्रेझनेव में बातचीत चल रही है। बातचीत के बाद जो संयुक्त वक्तव्य निकलेगा उससे साफ होगा कि क्या-क्या तय हुआ है। अभी तक दोनों देशों के प्रतिनिधि लगभग एक सप्ताह से बात करके हमारे प्रधानमंत्री और सोवियत दल के नेता के बीच बातचीत का आधार बना चुके हैं और नागरिक अभिनन्दन के अवसर पर लालकिले में दोनों वरिष्ठ नेताओं ने जो कुछ कहा है उससे इतना समझ में आ गया है कि भारत और रूस अपने को एक-दूसरे का घनिष्ठ मित्र मानते हैं। रूस ने भारत के प्रति सदा मैत्री-भाव को बढ़ाते चले जाने की घोषणा की है और भारत ने तो मुक्त कंठ से कहा है कि ऐसे गाढ़े अवसर पर जब कोई बाकी देश और पाकिस्तान के संघर्ष के बीच हमारी परिस्थिति समझने तक को तैयार नहीं था, रूस ने हमारा अप्रत्याशित समर्थन किया और उसके कारण हम एक बड़ी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुसीबत से पार हुए। इन्दिराजी ने कृतज्ञ भाव से कहा कि रूस ने हमें जो सबसे बड़ी चीज दी है, वह उसकी हमारे प्रति असंदिग्ध मैत्री है—उन्होंने यह भी कहा कि मेरे पिता का यह कहना था कि कोई किसीको बड़ी से बड़ी कुछ चीज दे सकता है तो वह मित्रता ही है। रूस ने हमें यह मित्रता दी है। श्री ब्रेझनेव ने कहा कि भारत-रूस मित्रता के घनिष्ठ होने का मतलब 'लेनिन के सपने का साकार' होना है। भिलाई कारखाने से लेकर आज तक की मित्रता के सूत्रों को उन्होंने अपने दीर्घ भाषण में उपस्थित लोगों के सामने रखा। इन्दिराजी ने नम्रतापूर्वक जनता को और सोवियत दल के नेता को यह बताया कि हम समाजवाद का मार्ग अपनाने का प्रयत्न कर रहे हैं—मगर हर देश की अपनी एक परम्परा होती है और कुछ विभिन्न से मूल्य भी होते हैं। हम उनके अनुरूप रास्ता अपनाकर वांछित दिशा में बढ़ना चाह रहे हैं।

अभी तक की बातचीत आदि से संभावना इस बात की दिख रही है कि कोई दीर्घकालीन आर्थिक और तकनीकी समझौता दोनों देशों के बीच होगा। संभव है यह अवधि पंद्रह से लेकर बीस वर्ष तक की तय की जाय। सुरक्षा के प्रश्न को व्यापक दृष्टिकोण से देखा जा रहा है—इसमें यूरोप और पूर्वी-पश्चिमी एशिया के क्षेत्र भी किसी रूप में शामिल रह सकते हैं, इस पहलू पर भी पर्याप्त जोर है। यह सर्वथा उचित है। शान्ति या मित्रता अथवा उससे विपरीत भावनाएं अब महदूद नहीं रखी जा सकती। शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व, आर्थिक सहयोग और सद्भावना बढ़ाने के कार्यों की निरन्तर अधिकाधिक व्याप्ति किये बिना निस्तार नहीं है। भारत-रूस-बांगलादेश के बीच की संधि इसका केवल प्रारंभिक बिंदु है। इसे केन्द्र मान कर एक ऐसे वृत्त का निर्माण किया जा सकता है जो अपने में यथासंभव सभी पास दूर के देशों को समाहित करके उन्हें शान्ति और सहयोग के साथ रहने में समर्थ बना सके। इसे सोवियत-शासन-समाचार-अधिकरण तास के संचालक श्री जामियातिन ने 'ब्रेझनेव-योजना' कहा है। 'ब्रेझनेव-योजना' का ठीक अभिप्राय जानने के लिए भारतीय पत्रकारों ने जब श्री जामियातिन से कुछ प्रश्न किये तो उन्होंने स्पष्टीकरण देना अनावश्यक माना। इतना तो स्वीकार किया ही गया है कि शान्ति और सहयोग के लिए उत्सुक सारे देश इस योजना में शामिल हो सकते हैं—यहां तक कि चीन भी इसमें शामिल होकर योगदान कर सकता है। शीतयुद्ध की पैंतरेबाजी से निकल कर सीधे और सद्भावनापूर्ण सहयोग की सीमा और संभावनाओं को बढ़ावा देने का विचार सर्वथा श्लाघ्य है। इस प्रकार के इशारे भी मिलते हैं कि राष्ट्रसंघ बड़ी शक्तियों के सहयोग से इस परिणाम को यथासंभव जल्दी से जल्दी आयत्त करने और कराने के लिए उत्सुक है।

यदि भारत और रूस के इन संभावित सम्मिलित प्रयासों को आंशिक सफलता भी मिल सकी तो संदेह और उस कारण शस्त्रों

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पचास रुपए में लड़का बिकता है

किस्सा साढ़े तीन यार जैसी कोई कपोल-कल्पित कथा का नहीं और न यह बात प्रागैतिहासिक काल की जंगली सभ्यता की ही है। मुगलिया शासन और अंग्रेजी सल्तनत के जमाने की भी बात नहीं। बात है यह नवम्बर उन्नीस सौ तिहत्तर की, जब भारत की आजादी का रजत-जयन्ती वर्ष पूरा हो गया है। आज भी असम, नेफा और नेपाल की तराई की बात होती तो आदमी की अज्ञानता मान कर माफ करने लायक बात थी। बड़े-बड़े शहरों में भी अपवाद स्वरूप पेट की कठोर किस्म ब्लड बैंक में खून बेचकर रिक्शा चलाते को चुकाते देखा जाता है। पर लक्ष्मीपुर थाने के खादीग्राम (मुंगेर, बिहार) के आस-पड़ोस के गांवों का तो सामान्य जीवन, व्यापार-व्यवहार तथा आम रिवाज शोषण की पराकाष्ठा तक पहुंच गया है। खादीग्राम में अठारह वर्ष रहने के बाद भी इस पाशविक शोषण का दर्शन नहीं हो पाया था। गत दो-तीन माह से इन गांवों में जाने का अक्सर अवसर आता है। इनकी चटाई पर बैठकर इनके नजदीक आने पर नित्य कुछ ऐसी जानकारी मिलती है जिस पर विश्वास करने में कठिनाई होती है।

कौन मानेगा कि पचास रुपये में लड़का बिकता है?—तिलक-दहेज नहीं, 'तोता' की माता की असमय मृत्यु। न पांच रुपये का उधार थाली लोट, नाइन, धोबिन में खर्च हुआ था। तोता की उम्र के साथ यह कर्ज भी बढ़ता जाता था। दस वर्ष की उम्र में तोता पाठशाला में भरती हुआ। उस समय उसके सिर पर पचास रुपये का कर्ज हो गया था। यदि मजूरी करके पढ़ने की व्यवस्था नहीं होती तो तोता कभी अपना नाम लिखना भी नहीं सीख पाता। अब तक तो बकरी चराता था, गीदड़ों से मुर्गी की रखवाली करता था। मां-बाप जब जीविका के लिए अन्यत्र चले जाते तो 'घर' की रखवाली भी तोता ही करता था। इस कमाऊ बच्चे को पढ़ने का एक अवसर जब खादीग्राम में मिला तो महाजन के कान खड़े हुए। अब तोता भण्डाफोड़ हो जाएगा, वह हमारे पिंजरे से बाहर होने वाला है। महाजन 'तोते' की खोज में खादीग्राम आया। महाजन ने कहा आपने हमारा मजदूर भगा लिया। उसे ५० रुपये में खरीदा है। आचार्य राममूर्ति ने कहा, "यहां तो सब बच्चे हैं।" महाजन ने कहा, "यह तोता बड़ा होकर मेरा मजूर बनेगा। इसे हमने खरीदा है।" आचार्य राममूर्तिजी ने ५० रुपये नकद देकर तोते को मुक्त किया। उनका कहना है कि हमारे कुल साठ विद्यार्थियों के परिवार के माथे करीब चौवन हजार रुपये का कर्ज है। इनके बाप-दादे इसी ऋण में महाजनों की गुलामी करते रहे और यदि इनको ऋण मुक्ति नहीं हो जाती है तो इनको भी यह भार ढोना होगा।

कुछ रोज पहले समाजवादी नेता जार्ज फर्नांडिस ने खादीग्राम में जब यह सुना तो आश्चर्य से उन्होंने कहा, "क्या यह १९७३ में भी होता है?"

ढाई रुपये सेर नहीं रुपये का ढाई सेर धान

सरकार चिल्लाती है कि सत्तर रुपये क्विंटल पर किसान लेवी का धान नहीं देता है, लेकिन धान पकने के एक माह पहले दुर्गा-पूजा और दिवाली के खर्च में, वर्षा काल में होने वाले शीत-ज्वर, मोती-झरी जैसी बीमारी के इलाज में और सबसे अधिक खाली पेट को भरने के लिए दस कट्ठा, एक बीघा जमीन जोतने वाला मजदूर परिवार महाजन के हाथ अपनी क्यारी के धान की अगली थाली बेच देता है। बताया, गांव के मोदी ने कि सवा सोलह रुपये मन धान का भाव काटा जाएगा। किसान धान झाड़-पीट कर महाजन के सामने सुखाकर तौलायेगा।

सरकार सावन-भादो में यदि इन किसानों को ऋण देने की व्यवस्था करती तो इनको आज से दुगना दाम मिलता और सरकार को सही दर में धान मिल जाता। पुनः यह धान इनके हाथ बेचा जाता तो ये महंगाई के शिकार नहीं होते।

घोड़े को पांच रुपये का चना, मनुष्य को पाव भर दाना नहीं

मल्लेपुर स्टेशन से इक्के पर खादीग्राम आ रहा था। रास्ते में कोचवान ने कहना शुरू किया, "दस रुपये रोज मालिक को देना होता है, उस पर भी मालिक अब टमटम रखने को तैयार नहीं है। मालिक को मुनाफा नहीं आ रहा है। दो सेर चने का ही दाम पांच रुपया हो गया। कुन्नी, भूसी और घास का दाम तो अलग है।" यह खर्च अस्तबल के घोड़े का नहीं, टमटम खींचनेवाले टट्टू का है। मैंने हंसकर कहा, "सस्ता तो दूध पिलाना होगा। रुपये में एक किलो खांटी दूध इस क्षेत्र में आसानी से उपलब्ध है।"

पक्की सड़क पर टमटम छोड़कर खादीग्राम की ओर बढ़ा। वहीं सेठ हेमराम साथ हो गया। "भाईजी मैं तपलय स्कूल में दर्जा दस में पढ़ता था। पढ़ाई का खर्च नहीं चल सका...।" मैंने बीच में बात काट कर पूछा, "क्या तुमको स्टाइपेंड नहीं मिलता था?" भाईजी दस्तखत तो बराबर बनाता गया पर कभी कुछ मिला नहीं।" सुनकर कोई आश्चर्य नहीं हुआ। यहां ही नहीं, अन्य स्थानों पर भी अक्सर यही सुनने को मिला है। इस कारण कान ऐसा सुनने के अभ्यस्त बन गये हैं। सेठ ने अपना कहना जारी रखा, "यहीं पहाड़ पर पत्थर फोड़ने का काम करता हूं, मुश्किल से साठ-सत्तर पैसे रोज कमा पाता हूं। मेरा अभ्यास नहीं है, दूसरे लोग चार बजे सुबह से लगते हैं। दस-बारह घंटे काम करते हैं। देखता हूं आंखें झपकियां ले रही हैं, पर हथौड़े की आवाज नहीं रुकती। खट-खट-खट।" सुबह पांच बजे जब घूमने निकलता तो धनमोर, बोधवा, फेंकू, मलचोधी सभी

पहाड़ियों से सौ-सौ शब्द 'खट-खट' के सुनायी देते हैं। पत्थर से भी कठोर काया चट्टानों से चिपटी, अपने खून की बाती जलाती "बड़े भाग्य मानुष तन पावा", की लीला देख रहा हूं। औद्योगीकरण और शहरीकरण की चकाचौंध में समाज इसे देख नहीं पाता है, लाउडस्पीकर की ध्वनि गरीबों की कराह सुनने नहीं देती, 'जयन्ती-जनता' और 'राजधानी' एक्सप्रेसों में चलने वाले प्रतिनिधि दिल्ली पहुंचने के पहले डनलपपीलो की गुदगुदी नींद में भूल जाते हैं—अपने गांव की बात। याद रह जाती मात्र मधुबनी पेंटिंग।

प्रधानमन्त्री ने पेट्रोल की बचत और सादगी के प्रतीक में राष्ट्रपति भवन के शाही घोड़े से जुती बग्घी पर सवारी की। लेकिन वह घोड़ा नित्य कितने गरीब का हिस्सा खाकर अस्तबल की शोभा बढ़ा रहा है यह हिसाब कभी प्रधानमन्त्री के वात्सल्य-पूर्ण हृदय को स्पर्श कर सका है क्या?

जंगली जानवरों से भी खूंखार कौन?

जंगल-विभाग के एक अधिकारी ने कहा 'जंगल का सब से बड़ा दुश्मन मनुष्य है। जंगल उजड़ रहे हैं, जंगली जानवरों की पूरी जाति समाप्त होने को है। कौन उजाड़ता है जंगल को? कौन समाप्त कर रहा है, वन-पशुओं को। जंगल के जीवन का नीरव संगीत किसने छीन लिया?

'कितनी कैलरीज जरूरी है, इसके जिने के लिए?' आचार्य राममूर्ति ने लकड़ी ढोने वाले एक आदिवासी को देख कर कहा। बोझे के बोझ से झुककर धनुष हो रहा था वह। बहंगी के दोनों किनारे से एक-एक मन सूखी लकड़ी का बोझा लटक रहा था। बीच में काली दुर्बल देह, सभ्यता की ओर निशाना कर रही थी। ५ मील पहाड़ी का रास्ता तय कर पक्की सड़क तक आया है वह, अभी सात मील शहर पहुंचने को बाकी है। पीपल की छांह में सांस लेकर फिर शहर की गलियों में घूम कर बेचने की दूरी, इस बारह मील के अतिरिक्त होगी। शाम तक जो पैसा लेकर वापस आयगा उस का गणित करने से पता चला कि एक किलो गेहूं की कीमत इसके हाथ आने वाली है।

आश्चर्य हुआ, कम से कम बारह रुपये की लकड़ी ढोकर ले जा रहा है, फिर इतनी कम मजूरी क्यों आयी? बताया गया कि जंगल से लेकर शहर तक अनेक 'देवताओं' की पूजा करनी होती है। मंगलू की बछिया बिक गयी। उसने गत वर्ष अपनी झोपड़ी खड़ी की थी। उसी समय से झंझट चला आ रहा था, वन-रक्षक पचास रुपये से कम पर राजी नहीं हो रहा था। यह तो सामान्य तरह खुली है। जंगल के किनारे बसने वालों को घर बनाने पर प्रति घर ५० रुपये वन-विभाग के सिपाही को देना पड़ता है। साल में दो बार ढाई-ढाई सेर पर्वी देनी पड़ती है। सब्जी-मुर्गी तो शिष्टाचार वश बराबर देनी ही होती है। इन सब के अतिरिक्त प्रतिदिन जंगल की सीमा में प्रवेश करने के पहले दक्षिणा चुकानी होती है।

'तेरा घर' अस्पताल के डाक्टर ने आदमखोर खूंखार नर-पशुओं से चूसे गये इस क्षेत्र के नरकवासों के स्वास्थ्य का सर्वेक्षण किया तो यह पता चला कि इन में से सैकड़े में ३० आदमी यक्ष्मा रोग से पीड़ित हो रहे हैं।

कागज का भयंकर-भूत

अर्थशास्त्र में पढ़ा था कि ये नोट भूत हैं। लेकिन इनसे भी भयंकर सरकार की मालगुजारी की रसीद है। यह सरकारी रसीद गरीब को कोई मदद नहीं करती पर मजबूत की तलवार है। पुरनाडीह के मौलवी साहब अठारह एकड़ की रसीद लेकर अठारह साल से चक्कर काट रहे हैं। पर अंगूठे भर भी जमीन उनको पाना कठिन हो रहा है। जबर्दस्त आदमी उसे घुसने नहीं देता। सरकार की शरण में आता है तो बताया जाता है। कि इस रसीद की पीठ पर सरकार ने पहले ही मुहर लगा दी है 'बिना किसी विपरीत असर के।' यानी पैसा तो लिया, पर जमीन की जिम्मेदारी नहीं, अजीब है यह रसीद। जोतने के समय गाय और दुहने के समय बैल। इस सरकारी रसीद से जमीन नहीं मिल सकती है, पर मालगुजारी नहीं चुकाने पर दरवाजे की चौखट तो खुदाई ही जाएगी। अब तो मौलवी साहब को अठारह एकड़ जमीन पर धान की लेवी भी देनी होगी क्योंकि इस 'लेवी' की देवी को खप्पर कागज के भूतनी भर पाते हैं।

लेकिन ये भूत भी बड़े बेईमान हैं, इनकी भी दृष्टि गरीबों पर तीरछी होती है, जीवित शरीर का अभ्यास भूत भी नहीं भूलता। सरकारी कागज तो छपा है, उस की कुछ वजन भी है, पर आदिवासियों और मुसहरों के लिए तो पुराना सड़ागला कागज भी भयंकर रूप धारण कर लेता है। बाप-दादों से दखल-कब्जे की जमीन, धान के लहलहाते खेत, मात्र एक कागज के टुकड़े से छीन लिये जाते हैं! फरजी कागज जिसका कोई आधार नहीं, इनकी जमीन पर से भगा कर घर घुसाने के लिए काफी है।

कार्तिक पूर्णिमा के दिन भूदानपुरी की पूर्णिमा-सभा में पास-पड़ोस के बीस-बाईस गांवों की ग्राम-सभाओं के पदाधिकारियों की करीब सवा-सौ लोगों की प्रतिनिधिक उपस्थिति सभा में सुनने को मिली। राशन कार्ड पास में है, पर साल भर में कभी गेहूं नहीं मिला। चीनी-किरोसिन का तेल भी इस पर मिलता है यह किसी को मालूम ही नहीं और भी न जाने क्या-क्या सुनने को मिला। वापस आते समय रास्ते में सोच रहा था कौन विश्वास करेगा इन बातों पर? चांद पर जाने वाला मनुष्य धरती से कितना दूर है! इतने में चांद का हंसता चेहरा बादल में छिप गया। मानो धरती की क्रूरता को चांद का धवल और कोमल दिल स्वीकार करना नहीं चाहता। कि०

(पृष्ठ २ का शेष)

की स्पर्धा से कई देशों को राहत मिलेगी, वे रचनात्मक दृष्टिकोण अपना कर धरती पर एक नया युग लाने की दिशा में बढ़ सकेंगे। तब हम गरीब देश में अपनी भयंकर तंगदस्ती के दिनों में सोवियत दल के नेता के स्वागत में जो अपार उत्साह दिखाकर लगभग अनुमान से परे धनराशि खर्च की है वह सार्थक मानी जा सकेगी। पिछले बीस-पच्चीस दिनों की भागदौड़, सरकारी सरगर्में, आकाशवाणी के अति-उत्साह समन्वित वार्ताकारों और पत्रकारों की परिचर्चाओं के स्वर और शोर के बीच अभी तक मुद्दे ढंग से सोचना संभव नहीं था—इन सबने विचार शक्ति को अगर बाध्य जरूर लगाई है। यह आशा जैसा कि हमने कहा, अंततः भी पूरी हुई, तो सब कुछ भर पाया।

भवानीप्रसाद मिश्र

ठीक है कि नहीं। साध्य को हम भूल भी जा सकते हैं। लेकिन हम जो पहला कदम उठाते हैं, फिर दूसरा कदम उठाते हैं, फिर तीसरा कदम उठाते हैं तो हम फिर वहीं पहुंचेंगे। इसका उल्टा रास्ता है—हर कदम हमारा गलत हो और हम सोचें कि हम उसी लक्ष्य पर जा पहुंचेंगे—यह असम्भव बात है।

यह नवम्बर ७ बीता—७ नवम्बर १९१७ को रूस की क्रान्ति हुई थी। आज ७३ है, ५६ बरस हो गये। इन ५६ बरसों में शासन मुक्त समाज के कितने करीब आये हैं वे? आज उसका सौवां हिस्सा भी वहां नहीं है। उनके बड़े से बड़े वैज्ञानिक जैसे सखारोव, बड़े से बड़े साहित्यकार जैसे सोल्जेनित्सिन ये दोनों आज उनके निशाने बने हुए हैं और पता नहीं किस दिन उनको पकड़ लिया जाये। आज दुनिया में जितने भी नोबेल पुरस्कार प्राप्त लोग जीवित हैं उन सब लोगों ने, कोई अस्सी-पच्चासी लोगों ने, मिल कर रूस के प्रशासकों से अपील की है कि ये आपकी दो महान विभूतियां हैं। इन्हें बचाइये। इनमें से एक को तो वह नोबेल पुरस्कार मिल भी चुका है। सखारोव दुनिया के वैज्ञानिकों में किसी से कम नहीं है। रूस की आज जो शक्ति है, चाहे वह अणु शक्ति हो, चाहे अन्तरिक्ष में, चाद पर जाने मंगलग्रह तक जाने की शक्ति हो, वह सारी सखारोव के बुनियादी काम के ऊपर आधारित है। तो यह तो आज उनकी हालत है। चम्बल घाटी में जो काम हुआ, इसका आधार यह है कि मनुष्य को भगवान ने बुद्धि दी है, बुरा-भला उसका किसमें है—यह वह सोच सकता है। उसको सहारा मिलता है अपना भला करने के लिए, तो वह एक कदम आगे बढ़ता है, अब इसे हृदय परिवर्तन कह लीजिए या जो भी कह लीजिए। वह अपनी भलाई की तरफ जाता है। मैं तो हृदय-परिवर्तन की बात करता नहीं हूं, यह बहुत बड़ी बात है। माधोसिंह जी मेरे पास आए तो उनके बहुत राजी करने पर तो मैं राजी हुआ। ठीक है यह काम लूंगा। उन्होंने कहा कि इस बार दस, बीस, पचास के आत्मसमर्पण की बात नहीं है, सैंकड़ों के सैंकड़ों कर देंगे। तो मैं समझा कि बहकी हुई बात कर रहे हैं। अपनी बात करें, या अपने दल की बात करें। दूसरों का नाम भी सुना हुआ था, मोहरसिंहजी आदि का, सब सरदारों का नाम तो मैंने नहीं सुना था कुछ थोड़ा बहुत परिचय था इस इलाके से फिर भी मैंने समझा कि जब ये कह ही रहे हैं तो कुछ तो बात होगी ही। उन्हें याद होगा तब मैंने उनसे कहा था कि देखिए मैं महात्मा नहीं हूं, विनोबा नहीं हूं, मैं यह नहीं कह सकता कि भगवान का ध्यान करके उनकी शरण में चले जाओ और अपना आत्मसमर्पण कर दो, जो कुछ होना होगा, होगा। हम इस बात की कोई जिम्मेदारी नहीं लेते हैं कि तुम्हें फांसी होगी या नहीं होगी। मुझ से पूछते हो तो मेरी आत्मा कहती है कि तुम्हें फांसी नहीं होगी। लेकिन मैं तुम्हें सरकार की ओर से कोई आश्वासन दिलाने का काम नहीं कर सकता हूं। लोकमनजी वगैरा ने विनोबाजी की बात समझी और वह सब किया। मैंने माधोसिंहजी से कहा था कि मैं तो एक सामाजिक कार्यकर्ता हूं। समाज को सुधारने का ढंग समाज शासन से कुछ सीखा, कुछ गांधी से सीखा, कुछ विनोबा से सीखा। जिस हद तक स्वयं सुधरा हूं, उसी हद तक दूसरों को सुधार सकता हूं। अब जियालालजी और प्रतापसिंहजी बन गए साधु और कहते थे कि आप की कृपा से हुए हैं। तो मैंने कहा कि यह तो भगवान की कृपा से हुआ है। मैं तो साधु नहीं बना हूं, आप बन गए, मुझ से बड़ी आगे चले गए, चेला चीनी हो गया और गुरु तो अभी गुड़ ही रहा है। तो माधोसिंहजी से मैंने कहा कि आपकी शर्तें क्या हैं? किन शर्तों के पूरा होने से आप लोग आत्मसमर्पण करोगे। जबानी कहा उन्होंने कुछ तो मैंने उन्हें कमरे में आराम करने भेजा कहा कि शाम को और बात करेंगे। शाम को सात शर्तें लिख कर वे ले आए। उसमें मुख्य बात यह थी कि फांसी की सजा किसी को हो भी जाए तो भी फांसी न हो और हमारे साथ अच्छा व्यवहार हो। कोई हमें जेल में या थाने में गाली देगा, मारपीट करेगा तो हम सहन नहीं कर सकते। 'बी' क्लास का बर्ताव हो, बच्चों की देखरेख हो। आदि।

मैंने कहा कि मुझे तो आपकी ये शर्तें बहुत ही मुनासिब लगती हैं। मैं तो किसी का आत्मसमर्पण स्वीकार नहीं कर सकता हूं, मुझे यदि इत्मीनान न हो कि फांसी की सजा हाईकोर्ट से मिलने के बाद इनको फांसी नहीं होगी। मैं किसी की मौत का अपने ऊपर पाप लेना नहीं चाहता। विनोबा ले सकते थे, मैं तो नहीं ले सकता हूं। विनोबाजी को यह विश्वास था कि शासन इसमें से किसी को फांसी नहीं देगा। फिर माधोसिंहजी से और बातें हुई फिर इन्होंने हमारे आश्रम में विश्राम किया। अंत में "मैंने तो कह यह भी दिया था कि 'अब तो बात फैल गई जाने सब कोई' यह फांसी की बात इंदिराजी तक गई और जिस दिन मैं आने वाला था पगारा डैम आप लोगों से मिलने के लिए सेठीजी अपने जहाज में लाने वाले थे। १० तारीख को हम लोगों की मुलाकात हुई। उस दिन भी मैंने गृहमंत्रालय में कहा था कि मैं नहीं जाऊंगा। यह निश्चित है। मुझे पंतजी ने (तत्कालीन गृहमंत्री) और शर्तें लिखित दे दी हैं। लेकिन जब तक यह बात भी नहीं तय होती तब तक मैं इसमें नहीं पड़ूंगा। ९ ता० को १० बजे रात को, गोविन्द नारायण जी जो उस समय गृह सचिव थे, उनकी चिट्ठी लेकर उनका एक चपरासी आया हमारे निवास पर दिल्ली में। मैंने उनको फोन किया कि अब हमारे जान में जान आई है। आपका बहुत शुक्रिया, बहुत धन्यवाद। उन्होंने कहा कि यह बात किसी से कहियेगा नहीं। अगर आपके भी मुंह से यह बात निकलेगी तो फिर हमें खंडन करना पड़ेगा कि हमने कोई ऐसा आश्वासन जयप्रकाश नारायण को नहीं दिया है। मैंने कहा कि आप खातिर जमा रखिए, इत्मीनान रखिए। मैं कहीं नहीं कहने वाला हूं। लेकिन बागियों को कहूंगा कि नहीं? क्योंकि उनसे नहीं कहूंगा तो आत्मसमर्पण कैसे करवाऊंगा? उन्होंने कहा कि उनसे जरूर आप कहें। मोहरसिंहजी से मैंने कहा था कि आप में से एक अदना से अदना जो बागी है, उसकी और हमारी जान बराबर है। मैंने देखा तो नहीं इनको, लेकिन नारायण देसाई ने बाद में कहा कि ये अपनी बंदूक उठाकर भागते उछलते-कूदते बाहर निकले, यह कहते हुए कि बाबू जी ने कह दिया है कि हमारी जान, तुम्हारी जान बराबर है।

→

यह एक प्रक्रिया है इसे मैं वैज्ञानिक प्रक्रिया कहता हूं। यह समाजशास्त्रीय वैज्ञानिक प्रक्रिया है मनुष्य को समझ कर मनुष्य के साथ बर्ताव करने की। नहीं तो एक दुष्चक्र है इसमें से कभी आदमी निकल नहीं सकता है। सदियों से कोई रास्ता नहीं निकला है। यदि कोई रास्ता निकला तो इस प्रकार ही निकलेगा। आज विज्ञान का इतना विकास हुआ है कि इससे चांद तक भी जा सकते हैं। लेकिन मनुष्य का उतना विकास नहीं हुआ है यह दुर्भाग्य की बात है। और यह विकास मनुष्य का भारत के अध्यात्म से ही हो सकता है। दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि मैं विश्वासपूर्वक मानता हूं कि यह मार्ग ऐसा है कि चम्बल घाटी या बुन्देलखण्ड के बागियों पर ही लागू होता हो ऐसा नहीं है। यह किसी पर भी ऊपर लागू हो सकता है। यह एक शास्त्रीय तरीका है, शास्त्रीय माने वैज्ञानिक, धर्मशास्त्र के मायने में नहीं कह रहा हूं, यह रास्ता फेल नहीं कर सकता। गांधीजी ने यही बात लिखी है कि जेलखाने को तो अस्पताल होना चाहिए। जिसने जुर्म किया है, अपराध किया है वह रोगी है। रोग कहां से आता है ? जन्म से आता है ? जन्म से नहीं तो रोग उसके मां-बाप से आया होगा। पूरे समाज से वह रोग लेकर आता है। तो जब तक इस समाज का सुधार नहीं होगा और केवल अपराध का सुधार करना चाहेंगे, इस किया पर, उस प्रक्रिया का उपयोग करके तो सुधार हर्गिज नहीं होगा। समाज में से ही यह सब पैदा होता है। समाज में ही ये बुराईयां हैं। समाज में शोषण, विषमता, अन्याय, ये तमाम भ्रष्टाचार, बेईमानी---यह सब समाज में चलता रहे और जो जुर्म करते हैं, डाका डालते हैं, अपराध करते हैं, उनका सुधार करना चाहें, तो यह असम्भव होगा, सरकार फेल करेगी और हम भी इस रास्ते में फेल करेंगे। सफल नहीं हो सकते। हजारों लोग हैं, लाखों लोग हैं इस देश में उसमें से ५२० डाकू निकल कर आये हैं, इसने क्या होता है ? लेकिन हांडी का एक चावल निकाल कर देखने में यह पता चल जाता है कि वह पका है कि नहीं। उसी तरह इससे यह सिद्ध होता है कि यह काम सफल हो सकता है। लेकिन साथ ही साथ जिसकी औलाद है वह जुर्म, जिसकी सन्तान है यह अपराध, उस माता को, उस समाज को सुधारना आवश्यक है। यह दुर्भाग्य है कि एक तरफ उसके सुधार का भी काम हो रहा है लेकिन मैं देखता हूं कि पिछले बरसों में हमारा समाज बिगड़ता ही जा रहा है। तो यह तरीका है। प्रेम का तरीका, मनुष्य की आत्मा को छूने का, उसकी बुद्धि को, उसके विवेक को जगाने का तरीका। आखिर क्या हुआ ? मैंने माधोसिंह जी से पूछा कि आखिर क्यों आप कहते कि इतने लोग आत्मसमर्पण कर देंगे ? उन्होंने कहा कि लोग ऊब गये हैं, बाबू जी ये लोग कोई धरा-धमपेशा लोग नहीं हैं। ये अमुक अन्याय से, गांव के अन्याय, समाज के अन्याय से, प्रशासन के अन्याय से, अमुक परिस्थिति से, चले गये उस तरफ बन्दूक उठा ली, जंगल में भाग गये। लेकिन जैसे हिंसक पशुओं का हाल होता है वैसे इनका हाल है कि पुलिस से भागे-भागे फिरते हैं। यह ठीक है कि हमारे पास बन्दूक है जो मारेंगे तो हम भी मारेंगे, हिम्मत से मरेंगे। बहादुर की मौत मरेंगे यह ठीक है। लेकिन इस जीवन को देख लिया है हमने निकलने का रास्ता कोई नहीं मिलता, हम उस रास्ते से आयेंगे तो फिर वही सब चलेगा। सन् ४८ की बात है स्वराज्य के एक बरस बाद उन्होंने समर्पण किया। उनके साथ क्या हुआ ? उनके मुंह से विष्टा तक डालने की कोशिश की गयी। किसने कोशिश की ? पुलिस ने की। अब इस प्रकार से सुधार तो हो नहीं सकता। यह तो मानव को नीचे ढकेलने की कोशिश है, नीचे फेंकने की बात है। मैं कहता हूं कि मेरे पास, महावीर सिंह जी के पास, हेमदेव जी के पास, पंडित लोकमन के पास तहसीलदार सिंह जी के पास क्या ताकत थी ? कौन सी आध्यात्मिक शक्ति है, जो हम लोग आपको उठा सकेंगे ? आपके हृदय का परिवर्तन कर सकेंगे ? अंगुलिमाल जैसा भगवान बुद्ध ने किया वैसा कुछ कर सकेंगे ? लेकिन इस दुष्चक्र से सम्मानपूर्वक निकलने का आपको मौका मिला, इतना ही हमारा दावा है। यह जो झगड़ा चलता है कि पुलिस के डर से समर्पण हुआ---इस झगड़े में आज भी मैं जाना नहीं चाहता फिर से एक विवाद शुरू हो सकता है। उनको भी समझना चाहिए कि उनकी क्या मर्यादा है, और हमको भी समझना चाहिए कि हमारी क्या मर्यादा है।

× श्री ओम प्रकाश त्रिखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार 'ग्राम-भावना' मासिक पत्रिका जनवरी माह से 'सर्वोदय डाइजेस्ट' के रूप में प्रकाशित होगी। जनवरी से 'ग्राम-भावना' मासिक अपने प्रकाशन के ग्यारहवें वर्ष में पदार्पण कर रही है। नये रूप के अन्तर्गत पत्रिका में यथासम्भव सभी भारतीय पत्र-पत्रिकाओं से प्रेरक सामग्री संकलित कर प्रकाशित की जायेगी। परामर्श और मार्ग-दर्शन के लिए एक सम्पादक मंडल का गठन किया गया है। सम्पादन श्री सादीराम जोशी व श्री जगदीशचन्द्र जौहर करेंगे। सम्पादकीय पत्र व्यवहार का पता है : द्वारा : श्री ति० न० आत्रेय, ४ राजघाट कालोनी नई दिल्ली-११०००१।

× आगामी २, ३ व ४ दिसम्बर को कस्तूरबा ग्राम (इन्दौर) में मध्य प्रदेश सेवक संघ द्वारा वार्षिक मित्र-मिलन आमन्त्रित किया गया है। मित्र-मिलन में प्रदेश में समाज-सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत ऐसे रचनात्मक कार्यकर्ता भाई-बहन भाग लेंगे जो दल और सत्ता की राजनीति से मुक्त हैं। इस वर्ष मित्र-मिलन में वनवासी सेवा मण्डल के श्री नाना बापट 'मध्य प्रदेश के आदिवासी उनकी समस्याएं और उनका निराकरण, पर अपना निबन्ध प्रस्तुत करेंगे। मित्र-मिलन की अवधि में 'अन्त्योदय' विषय पर एक भाषण-माला भी रखी जा रही है।

× आगामी १ दिसम्बर, १९७१ को मध्य प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन, तीसरे प्रादेशिक मित्र-मिलन और स्वतन्त्रता की रजत जयन्ती के निमित्त से प्रदेश के वयोवृद्ध लोकसेवक श्री दादाभाई नाईक के नेतृत्व में चल रही ग्रामस्वराज्य पदयात्रा की पूर्णाहुति के मंगल अवसर पर म० प्र० गांधी स्मारक निधि द्वारा संचालित पा० 'शताब्दी-सन्देश' का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। इस विशेषांक में मध्यप्रदेश में सर्वोदय-आंदोलन, प्रादेशिक ग्रामस्वराज्य-पदयात्रा, प्रदेश-मित्र-मिलन के बढ़ते चरण, मुंगावली में प्रारम्भ हो रही खुली जेल, बागी-आत्मसमर्पण के बाद, मध्य प्रदेश के आदिवासी : उनकी समस्याएं और उनका निराकरण, प्रदेश में खादी-ग्रामोद्योग का विकास और ऐसी ही महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रकाशित की जायेगी।

बिना लोगों को हिस्सेदार बनाए, योजनाएं नहीं चलेंगी

—रणबहादुर सिंह, संसद सदस्य

हर विकसित देश में योजना बनाने का उद्देश्य दो मुख्य लक्ष्यों की प्राप्ति होता है—सामाजिक न्याय की उपलब्धि और जनता की आम जरूरतों की पूर्ति। हम भी पिछले बीस वर्षों से इस युक्ति का सहारा ले रहे हैं और अब पांचवी योजना मे भी इसी प्रयोग को जारी रखेंगे। क्या पांचवी योजना इन दो उद्देश्यों को पूरा करेगी? पिछले १५ वर्षों से गांव मे रहने के कारण और वहा की परिस्थितियों से परिचित होने के कारण मुझे यह लगता है कि योजना एक तरह का कर्मकाण्ड बन कर रह गया है। जैसे कि हिन्दू धर्म के पुराने मन्त्र जिनके मात्र शब्द बचे हैं और अर्थ खो गये हैं कुछ इसी भांति हमारी योजनाएं हो गई हैं।

एक यह धारणा भी जोर पकड़ रही है कि योजना का उद्देश्य धीरे-धीरे योजना बनाना ही होता जा रहा है। योजना बनाने का एक अनवरत क्रम चलता रहता है। हमने ऐसा प्रशासन और समस्याएं सुलझाने के ऐसे तरीके बना लिये हैं जिनका खुद ही भारी बोझ हो गया है। देश में लगभग १००० करोड़ रुपये प्रशासन के द्वारा ऐसे कार्यों में खर्च कर दिये जाते हैं जिनकी कोई उत्पादकता नही है। अभी हाल मे ही गेहू के व्यापार के राष्ट्रीयकरण का प्रयोग चलाया। गेहू की वसूली के लिए कही-कही प्रशासन का सारा जिला तंत्र इधर से उधर भाग-दौड करता रहा। यदि इसमें हुए पेट्रोल के खर्च को जोड़ा जाये तो इस तरह वसूले गये गेहूं की लागत कहीं-कही २०० रु० प्रति क्विटल से भी अधिक पड़ेगी। इस दशा मे ऐसी परिस्थिति भी आ गई है जब विकास के रास्ते मे आने वाली रुकावटो को दूर करते-करते प्रशासनिक तंत्र को ही हटाने की माग उठने लगी है।

इस विकट परिस्थिति का मूल कारण यह है कि पिछले बीस वर्षों से हमने समाज के एक सीमित वर्ग द्वारा सारे देश को उठाने की कोशिश की है और बाकी की बहुसंख्यक जनता को इस योजना को बनाने में और कार्यान्वित करने मे सहयोगी नही बनाया गया। यह विचार धारा हमारे देश मे कभी भी फलवती नही हो सकती। मुझे लगता है कि यह पांचवी योजना भी ऐसा ही निरा बौद्धिक पराक्रम बन कर रह जायेगी।

अभी तक जनता का सहयोग प्राप्त करने के जो तरीके अपनाये गये हैं क्या उनसे इसमे सफलता मिलेगी? क्या योजना की आकड़ो मे बड़ी रूपरेखा प्रस्तुत करने भर से जनता का उत्साह जगाया जा सकता है? मेरे विनम्र विचार मे यह तब तक सभव नही है जब तक कि हम देश के दो विचारकों गांधी और विनोबा से सीख नहीं लेते। सिवाय समानता के और किसी भी आधार पर जन सहयोग प्राप्त नही किया जा
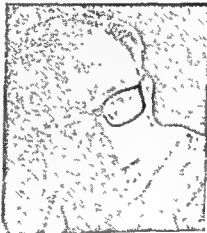
रणबहादुर सिंह

सकता। एक ग्रामीण और एक अफसर के बीच कोई समानता नही है। आज जैसी परिस्थिति मे योजना यहा बनती है और उसको लागू करने का काम जिलों के प्रशासनिक तंत्र पर छोड़ दिया जाता है। गांव तक पहुचने-पहुंचते यह तंत्र एक बीमार की तरह कुछ भी कर पाने मे असमर्थ हो जाना हो जाता है। यह ऐसा ही है जैसे केन्द्र मे खून अधिक इकट्ठा हो जाये और किनारो पर पहुचे ही नही।

इस कठिनाई से बचने का रास्ता है गांव के स्तर पर विनोबा जी के सर्वोदय कार्यक्रम को विकसित करना। इसका मुख्य प्रयत्न गांव मे ऐसी परिस्थिति बनाना है जिसमे अपना विकास करने के लिए लोग स्वयं ही उन्मुख हो जायें। अब समय आ गया है कि विकास की गोरे कन्धो से भूरे कन्धो पर आई जिम्मेदारी गांव के काले कन्धे बटा सकें। इसके लिए अब तक के तरीको को बिल्कुल छोड देना होगा। यह तभी हो सकता है जब गांव के लोगो को पूरी आजादी दी जाय, जब लोगो मे विश्वास किया जाय और जब प्रशासनिक कार्यों का विकेन्द्रीकरण हो।

कहते हैं जब चर्चिल ने हिन्दुस्तान को आजादी देने से इन्कार किया था तब उनका एक तर्क यह भी था कि भूखे-अधनगे लोग अपना शासन स्वयं चलाने के काबिल नही हैं। लेकिन हम स्वतन्त्र हुए और पिछले छब्बीस वर्षों से एक स्वतन्त्र राष्ट्र के रूप मे कायम हैं। अब समय आ गया है कि गांवो के लोगो पर जो अभी भी अधपेट और अधनंगे हैं, भरोसा किया जाये। योजना और प्रशासन के काम उनके हाथो मे दिये जाएं। भले ही हमें यह लगता हो कि वे इसका दुरुपयोग करेंगे।

स्वतन्त्रता का दुरुपयोग नहीं हो सकता। उसका तो केवल प्रयोग ही हो सकता है। सच्ची आजादी में गलतियो को सुधार कर अपने को सही करने की क्षमता निहित है। लेकिन यदि यह सोचा जाये कि आजादी किसी तरह प्रशिक्षण से या नियोजन से आ सकती है तो यह सभव नहीं है। अभी तक यह दुनिया मे कही नही हुआ है अतः जब हम योजना बनाते हैं, पिछड़ेपन से निपटने की, खाद्यान्न की पूर्ति की और स्वावलम्बी बनने की बात सोचते हैं तब यह भी सोचें कि यह सब बिना लोगो के इसमें हिस्सेदार बने संभव नही है। तुलसीदास की पंक्तियां इस सदर्भ मे बहुत युक्तिसंगत हैं—

मुखिया मुख सम चाहिए,
खान पान में एक।
पाले पोसे सकल अंग,
तुलसी सहित विवेक।

चीनी शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन

—दिलीप पाडगांवकर

चीन में कुछ सप्ताह पहले जब नया शिक्षा सत्र प्रारंभ हुआ तो विश्वविद्यालयों में १,५०००० नये विद्यार्थी थे। वे सीधे माध्यमिक विद्यालयों से नहीं आये थे। वे उन खेतों और कारखानों से आ रहे थे जहां उन्होंने 'उत्पादन श्रम' करने में दो से तीन वर्ष तक बिताये थे। सांस्कृतिक क्रांति के समय शिक्षा में जो आमूल सुधार प्रारंभ हुए थे उनके यह अनुकूल ही था।

सुधारों का उद्देश्य शारीरिक और बौद्धिक श्रम के विभेदों को मिटाना था और इस तरह उस जड़ को ही समाप्त करना था जिससे विशिष्टजनों का वर्ग पनपता है और जिसको पुरानी शिक्षा पद्धति ने मजबूत किया था।

नये स्वरूप में बौद्धिक श्रम में और हाथ से काम करने में, कालिख से बचने और कालिख लगने के कामों कोई फर्क नहीं होगा। साथ ही शहरों और गांवों में काम करने में भी आमतौर पर कोई अन्तर नहीं होगा। जोर लाभकारी और उत्पादक श्रम पर होगा न कि किताबी ज्ञान और व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा पर।

इन नये सुधारों का दो बातों पर बड़ा व्यावहारिक असर पड़ा है, उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थियों के चयन और उच्च शिक्षा के स्वरूप तथा समय पर। विश्वविद्यालय के लिए चुने जाने के लिए केवल अपने विषयों को रटना काफी नहीं है, उनके साथ खेतों और कारखानों में काम करने वाले साथियों की सिफारिश होना भी जरूरी है। प्रवेशार्थी ने किस उत्साह और लगन के साथ कारखाने या सामुदायिक खेत में काम किया, काफी यह उस पर निर्भर करता है।

उच्च शिक्षा की अवधि भी पांच या छः वर्षों से घटा कर तीन वर्ष कर दी गयी है। इस अवधि में भी विद्यार्थी सप्ताह में दो दिन 'उत्पादन श्रम' में लगाते हैं। पाठ्य पुस्तकें भी बदल गयी हैं ताकि सैद्धांतिक ज्ञान भी बढ़े और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल व्यावहारिक ज्ञान पर भी जोर दिया जा सके। शिक्षक और विद्यार्थी के संबंधों का अन्तर कम हो गया है क्योंकि अब शिक्षकों को भी काम में हाथ मैले करना पड़ता है। परीक्षा प्रणाली कुछ और लचीली बन गयी है।

इन सुधारों में कहां तक सफलता मिली है? 'पीपुल्स डेली' ने शिक्षा सत्र के अवसर पर प्रकाशित अपने एक लेख में प्रच्छन्न रूप से इस सवाल को उठाया है। लेख में कहा गया है कि खेतों और कारखानों के काम ने विद्यार्थियों की कोरी बुद्धिवादिता से तो बचा दिया है पर अन्य ज्ञान विषमताओं को पूरी तरह से मिटाने में सफलता नहीं मिली है।

वे ही विद्यार्थी कठोर लिखित परीक्षा में सफल हो सके जिन्होंने अपने हिस्से का 'उत्पादन श्रम' करने के साथ-साथ मेहनत से परीक्षा की तैयारी भी की थी। एक 'ईमानदार' विद्यार्थी चामगार ने 'पीपुल्स डेली' में प्रकाशित एक पत्र में शिकायत की है कि परीक्षा देने में वह बिल्कुल असफल रहा क्योंकि उसने अपनी सारी शक्ति किसानों के साथ काम करने में लगा दी थी।

इस पत्र के प्रकाशन का उद्देश्य पुन शिक्षा संबंधी ऐसे प्रश्नों पर बहस शुरू करना था जैसे परीक्षा, योग्यता जांचने और परखने की वैकल्पिक पद्धतियां, पाठ्यक्रम और विभिन्न विषयों में लगने वाला समय। विद्यार्थियों को इसके लिए प्रोत्साहित किया गया कि वे दीवारी अखबारों द्वारा शिक्षा पद्धति की क्रान्तिकारी आलोचना करें।

उच्च शिक्षा की कई संस्थाओं में व्यापक रूप से बहस होने की खबरें मिली हैं। विद्यार्थी इस पर बहस करते हैं कि उन्हें मिलने वाली शिक्षा से जनता की सेवा करने में मदद मिलेगी या नहीं। वे अपने कुछ प्राध्यापकों की प्रशंसा करने में और कुछ अन्य की आलोचना करने में व्यस्त हैं। विद्यार्थियों में शिक्षा के दौरान शारीरिक श्रम का क्या स्थान हो इस पर भी बहस चल रही है।

यह सारी बहस अपेक्षाकृत संतुलित वातावरण में हो रही है और सांस्कृतिक क्रान्ति के जैसा शोर शराबा, उत्तेजना और तोड़-फोड़ आदि नहीं है। शिक्षा का स्तर ऊपर उठाने की बात पर अधिकारीगण विशेष रूप से जोर दे रहे हैं। सांस्कृतिक क्रान्ति के समय दो वर्षों से भी अधिक समय तक लगभग सभी शिक्षा संस्थाओं के बन्द रहने के कारण शिक्षा का स्तर एकाएक गिर गया था।

(टाइम्स ऑफ इण्डिया में प्रकाशित लेख के आधार पर श्री सत्येन्द्र त्रिपाठी द्वारा अनूदित)

पसोना व रसाही प्राईमरी से विश्वविद्यालय तक
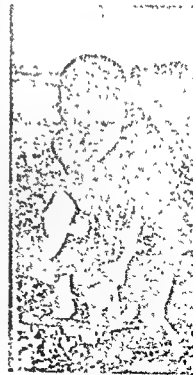
मध्यप्रदेश में सर्वोदय कार्य

दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में कस्तूरबा ग्राम, इन्दौर (मध्य प्रदेश) में मध्य प्रदेश का प्रान्तीय सर्वोदय सम्मेलन आयोजित हो रहा है। मध्य प्रदेश सर्वोदय मंडल ने प्रदेश में हुए सर्वोदय कार्य की जानकारी देने के उद्देश्य से १९७० से १९७३ के बीच हुए कार्यों की जानकारी देने वाला एक प्रपत्र प्रकाशित किया है। इस प्रपत्र के अनुसार भूदान आन्दोलन के अन्तर्गत प्रदेश में करीब ४ लाख एकड़ भूमि प्राप्त हुई थी। प्राप्त भूमि में से २ लाख एकड़ भूमि प्रदेश के ४० हजार भूमिहीन परिवारों में बांटी जा चुकी है।

'भूदान' आन्दोलन के बाद जब ग्रामदान आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो प्रदेश के २०-२२ हजार गावों में ग्रामदान का विचार पहुंचाया गया। प्रदेश के सात जिले और करीब ११ हजार गांव ग्रामदानी बने। गांधी शताब्दी वर्ष के बाद विनोबा जी की हीरक जयन्ती मनाने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश की जनता द्वारा १० लाख रुपयों का ग्रामस्वराज्य कोष विनोबा जी को समर्पित किया गया।

प्रदेश के पहले ग्रामदानी जिले टीकमगढ़ के बलदेवगढ़ विकास खण्ड में बलदेवगढ़ को केन्द्र मानकर जून १९७१ में पुष्टिकार्य किया गया, फलस्वरूप कुछ काम भी हुआ। इसी प्रकार इन्दौर और सरगुजा जिलों में भी कार्य की शुरुआत की गयी। इन्दौर जिले की सांवेर तहसील के पालिया गांव को केन्द्र मानकर उस क्षेत्र में पुष्टिकार्य शुरू किया गया। २३ गावों में ग्रामसभा का गठन हुआ और ग्राम शान्ति सेना भी बनी।

प्रदेश के सात जिलादानी जिले हैं— प० निमाड़ (ग्रामदान १४८१), देवास (ग्रामदान ८८८), टीकमगढ़ (ग्रामदान ७७०), भिण्ड (ग्रामदान ७६०), ग्वालियर (ग्रामदान ६६४), इन्दौर (ग्रामदान २९७), दतिया (ग्रामदान ३४०)।

प्रदेश के अन्य जिलों में ग्रामदान की स्थिति इस प्रकार है : सरगुजा ९९८, सीधी ८८०, सीहोर ५८३, मुरैना ५७५, विदिशा ५२६, मन्दसौर २६०, शहडोल २४०, जबलपुर २३६, रीवां १९३, रतलाम १७२, मण्डला १२५, सिवनी १२१, बस्तर ११६, उज्जैन ११८, रायपुर १११, छतरपुर ९४, नरसिंहपुर ९३, धार ८७, बैतूल ८५, भाबुआ ६६, शाजापुर ६०, राजगढ़ ३७, सागर ३४, बालाघाट ३१, दुर्ग २०, सतना १८, बिलासपुर १५, रायगढ़ १२, गुना ४७, होशंगाबाद ७, छिंदवाड़ा ७, पन्ना ५, पूर्वी निमाड़ ५ व दमोह ३।

प्रदेश में चल रहे कार्य में शक्ति लगाने के अलावा भी समय-समय पर प्रदेश के कार्यकर्ता अन्य प्रदेशों में ग्रामस्वराज्य के कार्य हेतु गये। सहरसा, मुजफ्फरपुर (बिहार), भण्डारा (महाराष्ट्र) और महबूब-नगर (आन्ध्र) के सघन अभियानों में प्रदेश के कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया।

ग्रामदान के कार्य को सबसे ज्यादा सफलताएं प्रदेश के जिलों में चले सामूहिक अभियानों में प्राप्त हुई। उज्जैन जिले के तराना विकास खण्ड में फरवरी १९७२ में एक सप्ताह का अभियान चला। इसमें १४ नये ग्रामदान और ३० बीघा जमीन प्राप्त हुई। नवम्बर १९७२ में गुना जिले के बमोरी विकास खण्ड में चले अभियान के फलस्वरूप २० ग्रामदान और १९२ बीघा जमीन की की उपलब्धि हुई। १८ अप्रैल से ३० अप्रैल १९७२ तक सीधी जिले में चले प्राप्ति पुष्टि अभियान में ३३ नये ग्रामदान मिले, १२७ एकड़ भूमि प्राप्त हुई, २६ गावों में तदर्थ ग्रामसभाओं का गठन किया गया।

मार्च १९७२ में सिवनी में हुए १२वें प्रदेश सर्वोदय मण्डल में व्यक्त भावना को ध्यान में रख कर आजादी की रजत जयन्ती के निमित्त से समूचे प्रदेश में ग्रामस्वराज्य का विचार पहुंचाने की दृष्टि से प्रदेश स्तर की ग्रामस्वराज्य पदयात्रा का कार्यक्रम बना। प्रदेश के वयोवृद्ध लोकसेवक श्री दादाभाई नाईक के नेतृत्व में १५ अगस्त १९७२ के दिन श्री जयप्रकाश की शुभ-कामनाओं के साथ यह पदयात्रा ग्वालियर से शुरू हुई। प्रकाशित विवरण के अनुसार प्रदेश के ३८ जिलों में यात्रा पूरी हो चुकी है। १४ महीनों में ७००० किलोमीटर की पदयात्रा हुई।

प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा चम्बल घाटी और बुन्देलखण्ड क्षेत्र के आत्मसमर्पित बागियों के बीच जेलों में मवसदभार कार्य में भी सहयोग दिया गया। आचार्यकुल, खादी, सर्वोदय साहित्य प्रचार-प्रसार, नशाबन्दी, मित्र मिलन व शान्ति सेना आदि कार्यों की दिशा में भी विगत तीन वर्षों में सफलताएं प्राप्त हुई।

सीधी में अभियान के दौरान एक सभा को सम्बोधित करते श्री बंग

कार्यकर्त्ताओं के भरोसे अभियान कब तक चलेंगे ?

१६६३ में बिहार सर्वोदय मंडल का विघटन हो गया था। १० वर्षों के बाद इस साल पुनः काफी विचार विमर्श करने के पश्चात इसका गठन जुलाई महीने में हुआ। साथ ही यह भी सोचा गया कि प्रदेश में इस गठन को मजबूत करने की दृष्टि से समय-समय पर शिविर-सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया जाना चाहिए। तदनुसार बिहार सर्वोदय मंडल की प्रबन्ध समिति ने अपनी २ अक्तूबर की बैठक में तय किया कि इस बार का प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन बिरौल में ४,५ और ६ नवम्बर को किया जाये। यहां इस सम्मेलन की रपट प्रस्तुत है।

बिरौल दरभंगा जिले का पिछड़ा हुआ प्रखंड है। कोसी कमला और बलान नदियों की विभीषिका ने यहां के जन-जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। तरह-तरह की बीमारियों और कष्टों से यहां के निवासी मौत से जूझते रहे हैं। यातायात की भी कोई उचित व्यवस्था नहीं है। वैसे बिरौल तक जाने के लिए दरभंगा, लहेरियासराय और सकरी से प्राइवेट बस सेवा है किन्तु छः घन्टों के दौरान ये पुरानी बसें यात्रियों को कब और कहां मंजिल तक पहुंचाने के पहले उतार देंगी, कहा नहीं जा सकता इस पर भी यात्रियों की भीड़ इतनी होती है कि दम घुटने लगता है।

फिर भी सम्मेलन के लिए ऐसा पिछड़ा और उपेक्षित क्षेत्र चुना गया, इसका क्या अर्थ हो सकता है? एक तो बिरौल ग्राम स्वराज्य अभियान के राष्ट्रीय मोर्चे का एक हिस्सा है, उसका पश्चिमी छोर है और दूसरे यहां की जनता के शुद्ध और निश्छल मानस की ऐसी चाह थी। यों तो अधिकांश सम्मेलन बड़े-बड़े नगरों में हुआ करते हैं, या प्रसिद्ध तीर्थस्थलों में या फिर प्रकृति की गोद में बसे हिल स्टेशनों में। मगर बिरौल का यह सर्वोदय सम्मेलन विशुद्ध लोकगंगा के तट पर हुआ।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए बिहार के सभी जिलों के लोकसेवकों एवं रचनात्मक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को लिखा गया। बिहार सर्वोदय मंडल, जिला सर्वोदय मंडल और प्रखंड सर्वोदय मंडल की सम्मिलित शक्ति पूर्व तैयारी तथा सम्मेलन की सफलता के लिए लगाई गयी। बिरौल प्रखंड में स्थानीय लोगों की एक स्वागत समिति भी बनी। स्वागत समिति ने सम्मेलन के खर्च की पूरी जिम्मेदारी यहां की जनता की ओर से अपने ऊपर उठायी। बिहार सर्वोदय मंडल तथा जिला सर्वोदय मंडल ने भी सहयोग दिया।

सम्मेलन में २२ जिलों तथा १० रचनात्मक संस्थाओं की ओर से लगभग ३२२ प्रतिनिधि आये थे। खादी के कार्यकर्ता भी अच्छी संख्या में इस बार वहां दिखाई दिये। जो भी प्रतिनिधि सम्मेलन में आये थे उनमें एक नया उत्साह, एक नया जोश, एक नया आत्मविश्वास झलक रहा था।

बिरौल का बोआर उच्च विद्यालय प्रतिनिधियों के ठहरने के लिए तथा उसी विद्यालय का विस्तृत मैदान सम्मेलन के लिए चुना गया था। मैदान के एक सिरे पर विशाल मंच बनाया गया था जो रंग-बिरंगे खादी वस्त्रों से सजा हुआ था। उसके सामने श्रोताओं के बैठने के लिए शामियाना लगा था। बगल-बगल पेड़ के नीचे का स्थान लोगों के बैठने की उपयुक्त जगह थी। महिलाओं के लिए मंच से दायीं ओर की जगह सुरक्षित थी।

सुबह आठ बजे से १२ बजे तक २-३० बजे से ४ बजे तक तथा ७ बजे संध्या से ९ बजे रात्रि तक प्रतिनिधि सभा के लिए निर्धारित समय था और ४ बजे से ६ बजे तक ग्राम-सभा के लिए। त्रिदिवसीय सम्मेलन की अध्यक्षता अनिरुद्ध प्रसाद सिंह ने की। ग्राम सभा की अध्यक्षता प्रथम दिन अनिरुद्ध प्रसाद सिंह, दूसरे दिन गोपाल जी झा शास्त्री तथा तीसरे दिन निर्मला देशपांडे ने की।

सम्मेलन में चर्चा के लिए मुख्य दो विषय रखे गये थे। पहला, राष्ट्रीय परिषद के अष्टसूत्री सुझावों और निवेदन का कार्यान्वयन तथा दूसरा सहरसा का अन्तिम और सर्वोत्तम अभियान।

प्रथम विषय पर प्रथम दिन ही चर्चा हुई और प्रतिनिधियों ने उत्साह से इसमें भाग लिया। प्रतिनिधियों के दो सुझाव आये (क) राष्ट्रीय मोर्चे के विभिन्न प्रखंडों की परिस्थिति को देखते हुए वहां के लिए जो कार्यक्रम अनुकूल होता हो उसके कार्यान्वयन की दिशा में प्रयत्नशील होना और (ख) गांव-गांव अथवा प्रखंड स्तर पर एक सभा बुलाकर आम लोगों के बीच उपरोक्त कार्यक्रमों को प्रचारित करना तथा उनके कार्यान्वयन की दिशा में उनका सहयोग प्राप्त करने का प्रयास करना।

अन्त में तीन आदमियों की उपसमिति को इससे सम्बन्धित एक प्रस्ताव तैयार कर सम्मेलन के सामने प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी दी गयी। समिति ने जो प्रस्ताव तैयार किया वह इस प्रकार है

"बिहार प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन, बिरौल सर्वसम्मति से राष्ट्रीय परिषद एवं सर्व सेवा संघ द्वारा स्वीकृत अष्टसूत्री कार्यक्रमों को सर्वोदय आन्दोलन में एक ऐतिहासिक मोड़ मानता है। इन कार्यक्रमों से ग्राम-स्वराज्य का आन्दोलन जनआन्दोलन का रूप लेगा। ग्रामसभाओं के व्यापक संगठन द्वारा लोकशक्ति और लोक-संगठन मजबूत, सुदृढ़ एवं सक्रिय बनेगा।

आज कार्यकर्ताओं एवं आन्दोलन के शुभचिन्तकों द्वारा आज तक जिस प्रकार की मांगें होती रही हैं उनकी पूर्ति इन कार्यक्रमों से हो

→

सकती है। साथ ही कार्यकर्ताओं एवं ग्राम जनता में एक नया उत्साह और उमंग पैदा होगी।

आज की परिस्थिति का मुकाबला लोक-शिक्षण से ही संभव है। व्यापक और सघन शिक्षण योजनाओं के द्वारा जनता में राजनैतिक चेतना लाना, मतदाता शिक्षण एवं जनता का संगठन ही अष्टसूत्री कार्यक्रमों का सही लक्ष्य हो सकता है।

लोकशक्ति को सुदृढ़ और मजबूत करने की दृष्टि से अब ग्रामसभाओं और मुहल्ला सभाओं द्वारा हमें 'एक्शन प्रोग्राम' के रूप में अत्याचार एवं अन्याय का, भ्रष्टाचार और अनैतिकता का प्रतिकार करना चाहिए। हमारा विश्वास है कि उसमें से ही लोकसंगठन खड़ा हो सकेगा।

अत: इन कार्यक्रमों को ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य के सघन क्षेत्रों में एवं रचनात्मक कार्य के क्षेत्रों में विशेष रूप से उठाया जाए। अन्य क्षेत्रों में जहां अनुकूलता हो इन्हें निश्चित रूप से उठाया जाना चाहिए। व्यापक शिक्षण की दृष्टि से सर्वोदय के मित्रों को राष्ट्रीय परिषद के जैसा ही प्रखंड से प्रदेश स्तर तक एक आयोजन करना चाहिए और कोशिश यह होनी चाहिए कि इसके माध्यम से एक स्वतंत्र शक्ति पैदा हो सके।

सम्मेलन यह अनुभव करता है कि राष्ट्रीय परिषद के अवसर पर विभिन्न पक्षों एवं सर्व सेवा संघ ने वास्तविक लोकशाही की एवं राष्ट्रीय हितों के संरक्षण हेतु, लोकशक्ति के उदय एवं संगठन हेतु ग्रामसभा एवं मुहल्ला सभा की स्थापना और उसके मजबूत करने के कार्यक्रमों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का जो संकेत किया है, वह हमारे काम की बुनियाद होगी।"

दूसरे और तीसरे दिन सहरसा अभियान के संबंध में चर्चा हुई। चर्चा के दौरान प्रतिनिधियों ने महसूस किया कि सहरसा में अभी तक कार्यकर्ताओं की शक्ति से ही अभियान चला है। हम स्थानीय शक्ति को ग्रामस्वराज्य के काम को उठा लेने के लिए तैयार नहीं कर सके हैं। कार्यकर्ताओं के भरोसे कब तक हम वहां का (सहरसा का) अभियान चला सकेंगे? हम वहां आने के लिए ऐसी पद्धति अपनायें कि सर्वोदय कार्यकर्ताओं के वहां से हट जाने पर भी स्थानीय शक्ति के बल पर वहां का काम चलता रह सके। सहरसा की शक्ति से ही वहां का काम होने वाला है।

कुछ साथियों ने ऐसा स्वीकार किया कि हमने अब तक सहरसा अभियान को ईमानदारी पूर्वक, निष्ठा के साथ तथा समर्पित होकर अपना समय दिया ही नहीं है। हम बार-बार यही दुहराते हैं कि विनोबाजी ने सहरसा में ग्रामस्वराज्य का अभियान चलाने का आह्वान किया है, इसीलिए हमें वहां के काम में लगना चाहिए। हमने कभी ऐसा महसूस नहीं किया कि सहरसा में ग्रामस्वराज्य का काम करने का निर्णय हमारा भी निर्णय है, विनोबाजी का आदेशमात्र नहीं है।

कुछ साथियों का कहना था कि वरिष्ठ और समर्थ शब्दों के प्रयोग से हम ग्राम कार्यकर्ताओं में हीनता लाते हैं। ऐसे विशेष शब्दों का इस्तेमाल अपने आंदोलन में नहीं होना चाहिए। आन्दोलन के सभी साथी समर्थ हैं, ऐसा माना जाना चाहिए।

चर्चा के अन्त में सबने एक स्वर से सहरसा के इस अन्तिम और सर्वोत्तम अभियान के लिए अपनी शक्ति और साधन लगाकर इसे सफल बनाने के लिए ईमानदारी पूर्वक अपना समय देने का निश्चय किया। प्रतिनिधियों ने खुद लगने की अपनी तैयारी तो बतायी ही साथ ही अपने क्षेत्र से दो-चार दूसरे साथियों को भी सहरसा आने के लिए प्रेरित करने का वचन भी दिया। कई खादी संस्थाओं ने भी अपने कार्यकर्ता और साधन देने की घोषणा की। उन्होंने स्वीकार किया कि खादी संस्थाओं के लिए भी ग्रामस्वराज्य एक मुख्य कार्यक्रम है।

उपस्थित प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से तय किया कि सहरसा का अभियान वहां के जिला सर्वोदय मंडल के तत्वावधान में ही चले। इससे सर्वोदय मंडल की ताकत बढ़ेगी। पांच साथियों की प्रांत स्तर की उपसमिति भी बनी जो अभियान के लिए बाहर से कार्यकर्ताओं तथा साधनों को जुटाने का काम करेगी। इस उपसमिति के संयोजक बिहार सर्वोदय मंडल के मंत्री देवानन्दजी बनाये गये।

प्रतिनिधियों ने यह भी महसूस किया कि बिहार सर्वोदय मंडल का एक कैम्प कार्यालय पूरे अभियान काल में सहरसा में रहना चाहिए। पटना कार्यालय में ताला बन्द करना उचित नहीं होगा।

प्रत्येक दिन ४ बजे से ग्रामसभा का आयोजन किया गया था। ग्रामसभा में १० से १२ हजार की भीड़ होती थी। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया था जिसमें स्थानीय कलाकारों के अलावा मोद मंडली के कलाकारों ने भी भाग लिया। तरुण शांति सेना के साथियों ने भी जनता का अच्छा मनोरंजन किया।

सम्मेलन का उद्घाटन बिहार विधान सभा के अध्यक्ष हरिनाथ मिश्र तथा समावर्तन पुराने समाजवादी नेता रामनन्दन मिश्र ने किया। दोनों वक्ताओं ने श्रोताओं पर जादू सा असर डाला। दूसरे दिन ग्राम सभा में निर्मला देशपांडे का तथा प्रथम दिन कार्यकर्ताओं के बीच बिहार सरकार के उद्योग मंत्री चन्द्रशेखर सिंह का बड़ा ही प्रेरक भाषण हुआ।

६ नवम्बर की सन्ध्या को सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त हुई। प्रतिनिधियों के चेहरों पर थकान के बावजूद एक दृढ़ता झलक रही थी। सम्मेलन में लिये गए संकल्पों से उनमें आत्मविश्वास की दीप्ति फूट रही थी।

शोभाकान्त झा स्वागताध्यक्ष तथा कामेश्वर सिंह स्वागत मंत्री ने उस क्षेत्र की जनता की ओर से आगत प्रतिनिधियों से कष्ट के लिए क्षमा मांगी। और तब 'जय जगत' के नारों से आसमान गूंज उठा।

प्रमोद कुमार

टिप्पणी

तालीम किधर बढ़ेगी ?

शिक्षा के क्षेत्र में सुधार के संबंध में सेवाग्राम में दिसम्बर ७२ में एक राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ था, जिसमें प्रधानमंत्री भी गई थीं और करीब-करीब सभी राज्यों के शिक्षा मंत्री, विश्वविद्यालयों के उपकुलपति तथा शिक्षाशास्त्रियों ने *हिस्सा लिया था।* उसके निर्णयों को अमल में लाने के लिए प्रयास करते हेतु श्रीमन्नारायणजी की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गई थी। इस समिति की चौथी बैठक नई दिल्ली में नवम्बर को हुई जिसमें वि० वि० अनुदान आयोग अध्यक्ष प्रो० यार्ज जैकब ने और योजना आयोग के प्रेम चक्रवर्ती ने भी हिस्सा लिया था। डा० जैकब ने यह बताया कि राष्ट्रीय योजना है कि वि० वि० के विभिन्न कालेजों में से, जो प्रगतिशील दिशा दिखाते हैं उनको स्वायत्त्य देने का प्रयोग किया जाय जिससे वे कालेज अपने तरीके से *शिक्षा* के प्रयोग कर सकें। इस प्रकार के प्रयोगों से १००-१५० सालों से जो ढर्रा शिक्षा का अपने देश में चल रहा है उसे बदलने का रास्ता मिल सकेगा। यह भी ज्ञात हुआ है कि प्रधानमंत्री स्वयं सेवाग्राम *शिक्षा सम्मेलन के* नतीजों को आगे बढ़ाने के बारे में दिलचस्पी रखती हैं और चाहती हैं कि इस दिशा में प्रशासनीय स्तर पर क्या काम चल रहा है और सरकार से क्या उम्मीद रखी जाती है इसकी जानकारी उनको मिलती रहे। *चर्चाओं में यह भी बताया गया* कि इस साल के शैक्षणिक वर्ष में देश के वि० वि० में विद्यार्थी विद्रोह, हड़ताल आदि की मात्रा अपेक्षाकृत कम रही है यद्यपि इसके कारणों के बारे में कोई प्रकाश न डाला गया। *योजना आयोग के चक्रवर्ती भी इस समिति* के साथ संबंध रखते रहे हैं और योजना में इन नये विचारों के प्रतिबिम्बित होने की आशा रखी जाती थी पर जो योजना प्रकाश में आई है उसमें समिति की कोई विशेषता नहीं दिखाई दी। जो खास बात, जिस पर सेवाग्राम सम्मेलन में सबसे ज्यादा जोर दिया गया था वह है कि वि० वि० डिग्री का आज जो सरकारी नौकरियों से संबंध जुड़ गया है वह तोड़ा जाय अन्यथा अधिकाधिक लोग डिग्री लेने को बाध्य होते हैं क्योंकि नौकरी के लिए वह आवश्यक हो जाता है। प्रो० चक्रवर्ती ने बताया कि योजना आयोग इस दिशा में प्रयास कर रहा है और भर्ती के नियमों में वैसे परि-*वर्तन सुझा रहा है।* हर शासकीय विभाग में भर्ती की परीक्षा के अपने तरीके होने चाहिए जिसमें डिग्री का कोई संबंध नहीं जोड़ा जाना चाहिए। हायर सेकेन्डरी के बाद विद्यार्थी को दूसरे रास्ते खुलने चाहिए जिसमें नौकरियों के लिए पढ़ाई जारी रखने के बजाय उनका व्यावसायीकरण हो और उनकी ट्रेनिंग उन विषयों में हो जिनकी जरूरत उनके क्षेत्र के नये कामों में लगने में हो। उनके व्यावसायी कोर्स दो साल के लिए ऐसे बनें जो स्थानीय विकास की दिशा से संबंधित हों। राज्य सम्पर्क बोर्ड गुजरात में बनाया गया था *जिसमें शिक्षा संस्था, शासन और उद्योग के* प्रमुख लोग बैठकर विचार करते थे कि कितने लोग इस प्रकार के काम के लिए चाहिए जिससे उसी आधार पर शिक्षा की दिशा को मोड़ा जा सके। आज भी बैंक वाले अपने नये कर्मचारियों को ४-५ वर्ष का कोर्स देते हैं कि दूसरे ५-६ माह में वह काम करते हैं। इसी प्रकार से प्रयोग बढ़ाये जाएं तो पढ़े-लिखों को बेकारी से बचने और अनावश्यक रूप से शिक्षा संस्थाओं से वर्षों तक बंधे रहने की जरूरत न पड़े। जो भी कोर्स हों वे हायर-सेकेन्डरी के बाद आज की आवश्यकता के मुताबिक बनाये जाएं इसके लिए शिक्षा को विकास के साथ जोड़ना जरूरी है। समाज के विकास के साथ जुड़ कर ही शिक्षा का स्वरूप सुधरेगा। प्रो० चक्रवर्ती ने बताया कि योजना आयोग की दिशा शिक्षा के संबंध में—यह है कि प्राथमिक स्तर पर वह आंचलिक हो, हायर सेकण्डरी स्तर पर व्यावसायिक हो और विश्वविद्यालय में उसे तकनीकी विकास और दूसरी प्रगति से जोड़ा जावे।

हर समाज सेवा के कार्यक्रम का शैक्षणिक पहलू होना चाहिए। चाहे वह स्वास्थ्य का राष्ट्रीय कार्यक्रम हो या और कोई। इस प्रकार राष्ट्रीय कार्यक्रमों में नई पीढ़ी को शामिल भी किया जा सकेगा।

नये प्रयोगों के लिए हाई स्कूल और शिक्षकों के ट्रेनिंग स्कूलों को पूरी स्वतंत्रता दी जानी चाहिए। इसके लिए जहां भी योग्य परिस्थितियां और मनोवृत्ति बने, उसको योग्य सुविधाएं दी जाएं।

देवेन्द्रकुमार

बिना टिप्पणी के

अधिवेशन पर रपट

पिछले कुछ अंकों में लगातार सेवाग्राम अधिवेशन में हुई अन्तिम दिन की (ग्राम स्वराज्य पर) चर्चा पर टिप्पणियां आई हैं। पहली भाई प्रभाष जोशी की है जो उन्होंने 'भूदान-यज्ञ' के आठ अक्तूबर के सम्पादकीय में लिखी है तथा दूसरी श्री जगनराम साहनी की है जो १५ अक्तूबर की 'बिना टिप्पणी' में आई है।

कोई भी चर्चा कभी बेमानी नहीं होती। सेवाग्राम अधिवेशन में मैं उपस्थित था। मैंने देखा था कि श्री बंग साहब द्वारा प्रयुक्त 'राजनीतिकरण' (पोलिटिकलाईजेशन) पर वहां सदस्यों में भयंकर भ्रम फैला था। जिस भाषा को सामान्य सदस्य न समझ पाएं उसे बोलना, वह भी आन्दोलन के संदर्भ में, खतरनाक होना है। फिर इस शब्द ने चारू बाबू जैसे बुजुर्ग के मन को भी शंकित किया था। सम्पादकीय लेख में हुई चर्चा को, इतनी महत्वपूर्ण बहस को 'निरर्थक' और 'अपव्ययी' बतलाना अच्छा नहीं है।

जगनराम साहनी की १५ अक्तूबर के अंक में 'बिना टिप्पणी के' तो मन को झकझोर देती है। साहनीजी को एक एस्टेब्लिशमेंट से त्रस्त कुछ युवक दिखाई दिये जिन्होंने इस सवाल पर बहस की 'प्रथम गोली' दागी। जो एस्टेब्लिशमेंट उनके स्वार्थों की पूर्ति में बाधा बना है। जिसके लिए विरोध करना आवश्यक है—दूसरे शब्दों में सर्व सेवा संघ एस्टेब्लिशमेंट बन गया है।

साहनीजी को कुछ 'आध्यात्मवादी' भी दिखाई दिये। मुझे पता नहीं था कि साहनी जी सारे समय चर्चा में उपस्थित थे या नहीं,

(शेष पृष्ठ १५ पर)

गुजरात में महिला पदयात्राओं की उपलब्धियां

—कान्ता, हरविलास

एक कंधे पर है आठ महीने का बच्चा और दूसरे कंधे पर है दस पन्द्रह सेर का बगल झोला। देखने वाले को दया आयी। 'जिस गांव से यात्रा प्रारंभ करनी है, वहा तक बस में जाइये और फिर वहां से पदयात्रा शुरू कीजिये।'

लेकिन जवाब मिला। 'आज तो स्वर्ग से पुष्पक विमान भी आये तो उसमे नहीं बैठूंगी। पदयात्रा याने पदयात्रा।'

भड़ौंच जिले की इस कुमुद बहन जैसी सैकड़ों बहनों के दृढ सकल्प और मनोबल के कारण ही अक्टूबर ११ से १७ तक गुजरात के दो जिलों को छोड़कर सभी जिलो मे, शहरों मे बहनों की कुल १७५ टोलिया पदयात्रा करती हुई घूमी और स्त्री-शक्ति-जागृति का सदेश गुजरात के करीब ७००-८०० गावों मे पहुंचा कर आयी। करीब ११७५ बहनो ने इन पद-यात्राओं में भाग लिया। उसमें जोशीली युवतियां थीं, समझदार प्रौढ़ाएं थीं, और अनुभवी वृद्धाएं भी थी।

बावला गांव की ७० साल की पार्वती बहन ने धोलका तहसील की पदयात्रा की। कहती थी 'एक जगह तो आधे मील तक कीचड़ मे चलना हुआ। मेरे पैर तो कीचड़ मे ऐसे घुस जाते थे! डाकोर की (गुजरात का तीर्थ-स्थान जहां भगवान कृष्ण का बड़ा मन्दिर है) यात्रा के लिए तो पदयात्रा करके आयी थी। लेकिन ऐसी अच्छी-अच्छी बातें लेकर गांव-गांव पैदल जाने का यह पहला अनुभव है।' बलसाड जिले की हमारी निष्ठावान प्रौढ बहन कमल बहन पैर मे तकलीफ होने पर भी पूरे सात दिन पदयात्रा मे रही। और खेडा जिले की एक प्रौढ सरपंच बहन ने भी पदयात्रा की।

बहनो के लिए इस तरह सात दिन घरके बाहर निकलना कोई आसान बात नही है। समाज की अनेक ग्रंथियां भी होती हैं। कुछ पति देवों ने तीसरे नेत्र का परचा भी बनाया। 'बच्चों को अनाथाश्रम मे छोड़कर पदयात्रा में या जहां कही घूमने जाना हो, चली जाओ।' तो दूसरे ने कहा, 'पवनार आश्रम मे बच्चो को लेकर रहने चली जा, और उसके बाद जो करना है सो कर।"

लेकिन सिक्के का दूसरा पहलू भी होता है। पति ने बच्चे को खुद सभालकर पत्नी को उत्साह से पदयात्रा मे भेजा। भड़ौंच जिले के दीनुभाई ने पूर्णाहुति समारभ मे अपनी पत्नी का फूलहार पहना कर खुशी से स्वागत किया।

दो-चार गावो मे लोगो की ओर से नाराजी भी प्रकट हुई। एक गांव से सदेश आया, 'पदयात्रा लेकर आइये मत। बहुत जागृति हो गयी है। सजोग मुश्किल है।' कही-कही लोग ऐसा भी कह बैठते। 'चुनाव की बातें हम सुनना नही चाहते, और कुटुम्ब-नियोजन की बात भी नही सुननी है।' लेकिन सभी जगह पर बहनो ने बहुत धैर्य और विवेक से काम लिया। ऐसे मौके पर बहनें पदयात्रा के परचे लोगो के हाथ में रख देती थी। उसे पढ कर लोगो के चेहरे के भाव बदले जाते थे। यह तो किसी पक्ष और चुनाव की बातें नही हैं। कुटुम्ब और समाज के उत्थान की बातें हैं। अच्छे संस्कार की बातें हैं। गलतफहमी दूर होते ही सत्कार होने लगता।

सामान्यतः पदयात्रा टोलियो का बहुत उत्साह भरा स्वागत हुआ। साबरकाठा जिले मे सुनने को मिला कि इतने अन्दरुनी गांवो तक ऐसी बातें कहने के लिए कौन आता है? कई जगह पर श्रीफल कलश के साथ बहनों का स्वागत हुआ। बड़ौदा जिले की एक पद-यात्री कमला बहन कहती थी, 'एक गाव मे तो बहनो ने मुझे हाथो में उठा लिया और भावविभोर होकर वे बोलने लगी—विनोबा का सत आया है! विनोबा का सन आया है! एक गांव मे तो एक भावुक बहन ने सत विनोबा की बातें लेकर लड़कियां आ रही हैं इसलिए रात को दो बजे उठकर मीठी रसोई बनायी और जल्दी सुबह उनके स्वागत के लिए तैयार हो गयी। मुसलिम गांवों मे रोजे चालू होने पर भी बहनें स्वागत मे और सभाओं मे बड़ी सख्या मे आती थी।

भाव नगर जिले की सावरकुडला तहसील के गांवो मे पचास बहनो की एक टोली घूमी, और गाव-गांव मे स्त्री-जागृति की बातों को जोड़कर सास्कृतिक कार्यक्रम किये। इसमे गांव की ५०-७५ प्रतिशत आबादी उमड़ती और पूरा वातावरण उत्सवमय बन जाता। बड़ौदा जिले के एक गांव मे गरबे का कार्यक्रम हुआ। उसके समाप्ति मे क्या उपहार बांटा जाय? तय हुआ, 'पदयात्री बहनें अपने साथ जो परचा 'बहनो आटलु तो करे ज!' बहनें इतना तो करें ही—लायी हैं वह बांटा जाय।' यह विशिष्ट उपहार लेकर बहनें अपने घर गयी। गांधी-विद्यापीठ, वेडछी के विद्यार्थी भाई बहनो ने वेद काल से लेकर आज तक स्त्री-जागृति के प्रयासो का परिचय करने वाला एक अच्छा प्रदर्शन तैयार किया।

गाव-गाव मे भाईयो की ग्राम-सभाएँ तो होती रहती हैं। उन सभाओ मे कभी-कभी बहनें आती हैं। लेकिन खास बहनों की ग्राम-सभा होने का यह अनुभव विशिष्ट ही रहा। सबके लिए यह कुतुहल का विषय भी बन जाता था। लोग भी सभामें आते थे और बहनो की बात दिलचस्पी से सुनते थे। जूना-गढ जिले के एक गाव के भाई कहने लगे, 'हम भी आपकी बातें सुनना चाहते हैं। पुरुषो के क्या दोष है, क्या गलतियां हमसे होती रही हैं। उसका खयाल हमे भी आना चाहिये न?" और बाद मे उस गाव मे आठ सौ-हजार भाई बहन इकट्ठे हो गये।

इस तरह सौ-दो-सौ-पांच-सौ हजार लोगो की सभाएँ हुईं। पदयात्राएं मे गयी बहनें कोई नेता या वक्ता तो थी नहीं। बल्कि बहुत सी बहनें तो पहली बार इस तरह की पदयात्रा मे आयी थीं इसलिये मन में एक प्रकार का डर था। पदयात्रा करने जायेंगी तो सही, लेकिन गावो मे क्या करेंगी? क्या कहेंगी? सभा के बीच क्या बोलेंगी? स्वा-

→

→

स्वाभाविक ही मन में संकोच था। सभा-प्रवचन वगैरह उनके लिए बिलकुल नई बात, इसलिए बहनों को अपने आप पर विश्वास नहीं बैठता था। सबके बीच खड़े होकर प्रवचन कैसे देंगी? हम उनको समझाते थे कि आप सभा या प्रवचन करने जा रही ऐसा सोचिए ही मत। आप गांव की बहनों से मिलने जा रही हैं। और अपने घर में जिस तरह बातें करती हैं उसी तरह गांव की बहनों को इकट्ठे करके बातचीत कीजिये। हरेक टोली को हमने बातचीत के मुद्दों का परचा छपवाकर दिया।

और सचमुच बहुत सुन्दर परिणाम आया। ज्यादातर बहनें गांव-गांव में बहुत ही बढ़िया बातें करके आयी। अपने जीवन के, घर-गृहस्थी के निजी अनुभवों की बातें बहनों होती हैं, तब उसका सहज स्फुरण होता है। बहनों की बातें सभाको रसपूर्ण बना देती थी। कुछ यात्रिक बहनें वक्ता की तरह उभरी। बहुत बामनी तो साने गुरुजी की "श्याम की मां" पुस्तक में से उदाहरण देकर सभा को भाव-विभोर बना देती थीं।

इन सब बातों का गांवों पर असर भी हुआ। 'आपकी बातों से समाज में सात्त्विकता और नीतिमत्ता बढ़ेगी,' ऐसा सब जगह सुनने को मिला। नये-नये विचारों ने बहनों को चिंतन की नयी-नयी राहें बतायी। स्त्री शक्ति-जागृति के संदेश ने बहुत बहनों को झकझोर दिया। खेड़ा जिले में कुसुम बहन के पास गांव की तीन बहनें आयी और सास-ससुर के नाम चिट्ठी लिखवाकर ले गयी कि बहुओं के पास घूंघट निकलवाना छुड़वा दें। बड़े-बूढ़ों को सम्मान देना, उनके साथ विवेक से बरतना यही सच्ची इज्जत है—घूंघट निकालने का सही अर्थ यही है। डभोई तहसील में पोस्टरों, विज्ञापन में—नारीदेह का अशोभनीय प्रदर्शन होता है उसके बारे में कहा गया तो सभामें ही बहनें कहने लगी कि डभोई साड़ी खरीदने के लिये जाना होगा तब दुकान वाले से ही पूछेंगी कि स्त्री की ऐसी नंगी मूर्ति क्यों रखी है? तो एक बहन बोल उठी कि उससे पूछने की और सोचने की क्या जरूरत? उठाकर फेंक देना ही है। वेड़छी, गांधी विद्यापीठ के परिवारों की बहनों ने पड़ोस के मोहल्ले की स्त्रियों के लिए महीने में एक सप्ताह देने का निर्णय लिया।

बहनों ने गांवों में जाकर सर्वोदय के साहित्य की बिक्री की और 'भूमिपुत्र' के ग्राहक भी बनाये। साहित्य कुल मिलाकर करीब ८५४ रुपयों का बिका और 'भूमिपुत्र' के ३५८ ग्राहक बने।

शहरों में भी कार्यक्रम रखा गया था। वहां कहीं-कहीं ऐसा भी सुर सुनायी दिया कि 'शहरों में तो स्त्री-शक्ति जागृत ही है, लेकिन नये दृष्टिकोण के साथ जब विचार सुने तब उनकी समझ में आया कि शहरों में भी इस कार्यक्रम की जरूरत है। अभी तो मंजिल बहुत दूर है। अहमदाबाद, सूरत और बड़ौदा शहरों के वाडा में पदयात्रा और सभा-वार्तालापों का कार्यक्रम हुआ। बड़ौदा और बगसरा शहर में जैन साध्वीश्रीओं का भी सहकार मिला। सूरत शहर में गांधी-विद्यापीठ की १७ बहनें सात दिन तक हररोज दो घंटे तक गीत भजन गाती हुई पदयात्रा करती थीं। भावनगर-वेरावल जैसे कुछ शहरों में सिर्फ सभाओं के कार्यक्रम रहे।

शहर की और धनी घर की बहनें गांवों में गईं तो उनको भी स्मरणीय अनुभव हुए। ऐसी एक बहन कहती थी कि गांवों के लोग गरीब हैं, लेकिन दिल के बड़े उदार हैं। शहर की बहनों के लिये हरे-भरे खेत, खुला आसमान और प्रकृति का सान्निध्य आह्लादक अनुभव था।

इस तरह पूरे गुजरात में पदयात्रा के माध्यम से स्त्री शक्ति-जागृति का सन्देश पहुंचा। आमोद-जंबुसर के पूर्णाहुति समारंभ में श्री. श्री मगन भाई ने सच ही कहा, "विनोबाजी एक विलक्षण संत हैं। उनका दिया गया स्त्री-शक्ति-जागृति का बीज आपकी आत्मा में बोया गया, इसलिए वह आपमें तो उगेगा ही, लेकिन साथ-साथ जिन गांवों में ये बीज आप बाट आयी उन गांवों में भी वे उगेंगे।"

जामनगर की मंजुला बहन इस कार्यक्रम के लिए प्रारंभ से ही उत्साही थीं। उन्होंने जिले की सभी संस्थाओं के सहकार से सुन्दर आयोजन करके ४४ पदयात्रा टोलियां के मार्फत बहुत अच्छा वातावरण तैयार किया। उनकी हरेक टोली ३-४ दिन के लिए घूमी थी।

विनोबाजी कहते हैं कि अगस्ते मुनि ने हजार उपवास किये ऐसा कहा जाता है, उसका अर्थ है कि उनकी प्रेरणा से हजार व्यक्तियों ने एक साथ उपवास किया। उसी तरह गुजरात में करीब बारह सौ बहनें स्त्री-शक्ति-जागृति का संदेश लेकर एक साथ हजार से भी ज्यादा गांवों में पहुंची। हरेक टोली ने अपनी विशिष्ट सूझ-बूझ के साथ काम किया इसलिये उसमें दिलचस्प वैविध्य भी रहा। पूरे गुजरात में इतनी बड़ी संख्या में पदयात्रा टोलियां एक साथ घूमी हों शायद यह पहला ही प्रसंग है। आत्मविश्वास, लोगों में विश्वास और कार्य में विश्वास—इस त्रिविध विश्वास से अगर कोई भी काम उठाते हैं तो उसके पीछे परोक्ष प्रेरणा-शक्ति भी काम करती है, ऐसा अनुभव आया।

(पृष्ठ १३ का शेष)

क्योंकि एक साथ ही अनेक रचनात्मक संस्थाओं की बैठक भी हो रही थी। यदि वे होते तो समझते कि सारी चर्चा के मूल में ग्राम स्वराज्य था जो कि 'दुनिया के हर काम' में बोझ छूटता जा रहा है।

अधिवेशन में राष्ट्रीय परिषद के समर्थन में जो प्रस्ताव स्वीकार किया उसमें स्पष्ट उल्लेख था कि 'ग्राम स्वराज्य के समवाय' में सारे कार्यक्रम होने चाहिए। पर शाहनीजी को इसका अर्थ 'सब का भावी कार्यक्रम ग्रामस्वराज्य की चौहद्दी में जकड़ा न रहने वाला' दिखाई दिया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने कार्यों का विश्लेषण करें, इसे सामान्य जन की बहस का मुद्दा बनायें, जिससे हम स्वयं को दिग्भ्रमित होने से बचा सकें। अन्यथा 'ऐसी टिप्पणियां' इस आन्दोलन को सामान्य, लेकिन बुनियादी इरादों को भ्रम में डाल देंगी।

संतोष 'भारतीय'

R·N. 2091/57 BHOODAN YAGYA　　3 DECEMBER, 1973　　Regd. No. D.273

आन्दोलन के समाचार

नवम्बर के प्रथम सप्ताह मे शान्ति सैनिको का एक अन्तर्राष्ट्रीय दल सायप्रस के लिए रवाना हो गया। यह दल वहा जनवरी १९७४ तक मध्यस्थ के रूप मे विस्थापितो के पुनर्वास की व्यवस्था करेगा। यूनान और तुर्की दोनो देशो ने अहिंसक सघर्ष शामक और सायप्रस पुनर्वास प्रायोजना केन्द्र को लिखित रूप से आवश्यक अधिकार दिये हैं कि वह उक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिए दोनों पक्षों को सक्रिय सहायता देने की व्यवस्था करे। इस दल मे अनेक देश के स्वयसेवको के अलावा भारत के ६ स्वयसेवक भी शामिल हैं। भारतीय दल के सदस्य हैं : गुजरात मे शान्ति सेना के सयोजक श्री जगदीश लाखिया, अखिल भारतीय शान्ति सेना मण्डल के प्रशिक्षक श्री अमरनाथ, तरुण शान्ति सेना की राष्ट्रीय समिति के सदस्य श्री नचिकेता देसाई, कलकत्ता के सामाजिक कार्यकर्ता श्री मानव मण्डल और गुजरात के सर्वोदय कार्यकर्ता श्री अरुण भाटिया। कटक की कुमारी माधवी चौधरी भी नवम्बर के अन्त में सायप्रस के लिए रवाना हो कर दल मे शामिल होगी। चित्र मे बायें से सर्वश्री अमरनाथ, नचिकेता देसाई व मानव मण्डल।

× जिला सर्वोदय मण्डल बुलन्दशहर के तत्वावधान में ६ दिसम्बर १९७३ को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया है। परिसंवाद का विषय है—'समाज और राष्ट्र की बहुमुखी समस्याएं और उनका समाधान'। परिसंवाद का आरम्भ डा० पाण्डेय तथा समापन मास्टर सुन्दरलाल करेंगे।

× श्री सतीशनारायण से प्राप्त समाचारो के अनुसार श्री धीरेन भाई की लोक गंगा यात्रा १७ नवम्बर से प्रारम्भ हो गई है। २० फरवरी' ७४ तक यात्रा सहरसा (बिहार) जिले के किशनगज प्रखण्ड मे चलेगी। यात्रा टोली मे दादा के अलावा और लोग और हैं—श्री बालेश्वर भाई, श्री वासुदेव भाई, श्री सतीशनारायण और प्रियम्वदा। यात्रा मे इस बार प्रारम्भ से ही अन्त्यजनो के अधिकाधिक निकट पहुचने का प्रयास किया जा रहा है। अन्त्यजनो के घरो मे निवास करना व गांव के सभी घरो से एक-एक मुट्ठी अनाज एकत्र कर भोजन करना, रात्रि मे मजदूरों की सभा व दिन मे ग्रामसभा करना—यात्रियो के कार्यक्रम रहते हैं।

× जनशक्ति और शासनशक्ति के सहयोग से भूमि वितरण कार्यक्रम पिछले दिनो पूर्णिया (बिहार) मे सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम मे बिहार के राजस्व मन्त्री श्री लहटन चौधरी एव श्री कृष्णकान्त ने भाग लिया। ११२ एकड भूमि ११० भूमिहीनो मे वितरित की गई। जिस भूमि पर भूमिहीनो का कब्जा नही था उन्हे कब्जा दिलाया गया। २१० बासगीत के पर्चे बाटे गये।

× २० नवम्बर १९७३ [illegible] सेवा सघ को उपवासदान के अन्तर्गत [illegible] रुपये की राशि प्राप्त हुई। यह राशि २०६ लोगो के उपवास दान से प्राप्त हुई। सबसे ज्यादा राशि महाराष्ट्र से (१,२६६ रुपये) प्राप्त हुई, जिसे ५० लोगो ने दिया।

× नारी-जागरण सप्ताह के दौरान उडीसा मे १० से १६ अक्तूबर तक २१४ महिलाओ के २४ दलों ने [illegible] जिलों मे ७४६ मील की पदयात्रा की [illegible] स्थानो पर सभाओ का आयोजन भी किया गया, जिनमे बड़ी सख्या मे ग्रामीणो ने भाग लिया।

× श्री हरिहर [illegible] से प्राप्त जानकारी के अनुसार [illegible] स्वाध्याय मण्डल तमकुहीरोड (देवरिया) ने अपना १२वा वार्षिकोत्सव तथा स्त्री-शक्ति-जागरण सम्मेलन २८ अक्तूबर को सुश्री निर्मला देशपाण्डे की उपस्थिति मे मनाया।

× ४ नवम्बर को सम्पन्न हुए भागलपुर नगर पालिका के चुनाव के दौरान स्थानीय गाधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र, तरुण शान्ति सेना के साथियो ने मतदाता प्रशिक्षण के लिए प्रशसनीय कार्य किया। चुनाव शान्तिमय ढग से सम्पन्न हो इसके लिए छोटी-छोटी टोलियो मे शान्ति सैनिक प्राय: सभी ३२ वार्डों मे घूमते रहे।

× केन्द्रीय गाधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ने विश्वविद्यालयो मे गाधी-विचार अनुसधान योजना का एक विभाग स्थापित किया है। यह विभाग विश्वविद्यालयो से यह जानकारी प्राप्त कर रहा है कि उनके यहाँ गाधी-विचार के अध्ययन-अध्यापन का क्या सिलसिला चल रहा है और पाठ्यक्रम में क्या-क्या बातें शामिल हैं ? ताकि उसके आधार पर स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तावित की जा सके। जिससे देश भर के विश्वविद्यालयो मे गाधी विचार के अध्ययन-अध्यापन मे एकरूपता लायी जा सकेगी।

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एवं ए० के० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १० दिसम्बर, '७३

भूदान-यज्ञ

१० दिसम्बर, '७३

वर्ष २० अंक ११

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

मतदाता पांचों साल सजग रहे

ठाकुरदास बंग

भारत में प्रजातंत्र है। इस देश की अधिकांश प्रजा गरीब है। प्रजातंत्र में एक-एक को एक वोट है। देश में चार आम चुनाव सम्पन्न हुए, तो भी गरीब को, शोषित पीड़ित को न्याय नहीं मिला। उसी के मत पर बनी सरकार ने चार विकास योजनाएं बनाईं। फलस्वरूप देश की दौलत बढ़ी। लेकिन साथ-साथ गरीबी, बेकारी एवं विषमता भी बढ़ी। व्यसन बढ़े। परावलम्बन बढ़ा, जनता दिनों दिन असहाय होती गई। ऐसा क्यों हुआ ?

क्योंकि मतदाता सोया हुआ है। घोषणाओं की, नारों की शराब पीकर वह बेहोश हो गया है। जाति, धर्म, दल आदि बंधन उसे जकड़े हुए हैं। इस भ्रमजाल में रहकर वह मताधिकार का उपयोग करता है। कभी-कभी इसके साथ शराब, पैसा आदि का भी प्रयोग उसे ललचाने के लिए किया जाता है। उसमें वह फंसाया जाता है। लाठी से उसे डराने की घटनाएं भी पिछले आम चुनाव से होने लगी हैं। ऐसी परिस्थिति में मताधिकार का सही उपयोग नहीं होता है। अब उसके दुर्दिन कैसे पलटेंगे ?

रामायण में एक कहानी आती है। कहते हैं कि राक्षस राज रावण का भाई कुंभकर्ण छः माह सोता था और एक दिन जागता था। मतदाताओं की नींद कुंभकर्ण की नींद से अधिक लम्बी है। मतदाता पांच साल में घंटे दो घंटे के लिए जागता है और उसके मत पर बनी सरकार पर अपना भाग्य छोड़ कर फिर चार साल, ग्यारह महीने, उन्तीस दिन और तेईस घंटों के लिए सो जाता है। जब जागता है ऐसा लगता है कि तब भी सही नहीं जागता। यह हमने ऊपर देखा ही है।

इसलिए मतदाता को जगाना होगा। मतदाता शिक्षण का काम हाथ में लेना होगा। जो चुनावों में उम्मीदवार होगा या उसके समर्थक होंगे वे शिक्षण का पुनीत काम नहीं कर सकेंगे। उनके सारे तर्कों का फलितार्थ एक ही होगा कि येन-केन-प्रकारेण वोट अमुक को मिले। इसलिए चुनावों की दल-दल से दूर तटस्थ नागरिकों को, समाज सेवकों को यह कार्य अपने कन्धों पर झेलना होगा।

प्रजातंत्र के प्रारम्भ के दिनों में चुनाव काल में गांव-गांव में एवं नगरों के हर मुहल्ले में चुनाव सभाएं होती थीं। इन चुनाव सभाओं में क्षेत्र के स्थानीय प्रश्न, सड़क, बिजली, शाला, नहर आदि सामने आते थे। उम्मीदवार को उन पर अपना मन्तव्य बताना पड़ता था। नेहरू सरीखे वरिष्ठ नेता चुनाव सभाओं में समाजवाद, तटस्थ विदेशनीति, सहकारिता, समाज-विकास आदि बुनियादी सवालों की चर्चा करते थे। इससे लोकशिक्षण होता था। अब ये दोनों बातें कम होने लगी हैं। अब घर-घर जाकर वोट मांगने का तरीका निकला है। इसमें न व्याख्यान, न क्षेत्रीय प्रश्नों की चर्चा होती है। इस प्रकार, चुनाव के समय जो थोड़ा बहुत लोकशिक्षण होता था वह भी समाप्तप्राय है। घर-घर जाकर वोट मांगने में जाति, रिश्तेदारी, महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का प्रभाव आदि बातें अपना असर करेंगी और वोट मिल जायेंगे। लेकिन समझे बिना दिये हुए वोट की कीमत ही क्या ? आज की ही बकना जारी रहेगी।

इस परिस्थिति पर विचार करने के लिए २४ जनवरी को नई दिल्ली में सर्वोदय संगठनों के प्रमुख एवं इस विषय में दिलचस्पी रखने वाले अन्य व्यक्ति सेवाग्राम आश्रम/परिषद् से निर्मित विचारविमर्श समिति के रूप में बैठे। उत्तर प्रदेश में आगे फरवरी में होने वाले चुनावों ने यह प्रश्न प्रखर बना दिया था। सबने मिल कर निर्णय लिया कि इस समय मतदाता जागरण का व्यापक अभियान चलाना चाहिए। इस बारे में [illegible] में प्रमुख सर्वोदय कार्यकर्ताओं की एवं नागरिकों की तारीख १६ को बैठक हुई। [illegible] ने विचार रखा कि प्रजातंत्र में जो [illegible] इलेक्शन हो इसलिए [illegible] कर कुछ [illegible]

(शेष पृष्ठ १४ पर)

जनता चुनौती स्वीकार करे

—सिद्धराज ढड्ढा

देश के एक बड़े हिस्से में जल्दी ही आम
 होने वाले हैं। उत्तर प्रदेश, उड़ीसा,
लैंड, त्रिपुरा और पांडिचेरी आदि राज्यों
वरी १९७४ में नई विधानसभाओं के
 होने जा रहे हैं। छोटे-बड़े सब प्रदेशों
मिलकर करीब १३-१४ करोड़ जितनी
आबादी के क्षेत्र में जनता अपने प्रति-
यों को चुनेगी।

संसदीय जनतन्त्र (पार्लियामेंटरी डेमो-
) में आम चुनाव एक बड़ा पर्व है।
 जनतन्त्र की नींव या उसकी रीढ़ है।
 के सहारे जनतन्त्र खड़ा रह सकता है।
 चुनाव की प्रक्रिया में दोष आ जाय तो
 जनतन्त्र दूषित हो जाता है। यह सही है
 संसदीय जनतंत्र और चुनाव की मौजूदा
ाली अपने-आप में अपर्याप्त और गलत
 इनके बारे में मूलभूत तरीके से सोचने
 जरूरत है। इन बातों की ओर देश के
ारकों और हितचिन्तकों का ध्यान जल्दी
 जल्दी जाना चाहिए। लेकिन जब तक
में परिवर्तन नहीं होता तब तक आज के
 चुनाव यथासंभव सही ढंग से हों, लोग
ना किसी डर या प्रलोभन आदि के अपने
ाधिकार का सही उपयोग कर सकें, यह
 बहुत जरूरी है। चुनाव सही और निष्पक्ष
 इसकी चौकसी के लिए संविधान में एक
न्त्र चुनाव आयोग का प्रावधान है और
ाव किस तरह से हों इसके संबंध में कायदे-
ानून बने हुए हैं।

भारत जैसे बड़े देश में जहां करोड़ों लोगों
ो एक साथ मतदान करना होता है, चुनाव
 कुछ न कुछ कमी या दोष रहना स्वाभाविक
। मनुष्य के सभी कामों में ऐसी संभावना
हती है लेकिन आज हम जिस स्थिति में जिस
स्थिति पर हम पहुंच गये हैं वह इन स्वाभा-
विक या सामान्य दोषों की मर्यादा से आगे
 गई है। राजनैतिक दलों का और जनता
ा, मत प्राप्त करने के लिए खड़े होने वाले
उम्मीदवारों का यह एक पवित्र कर्तव्य होना
चाहिए था कि वे चुनाव के नियमों के कड़ाई
से पालन का आग्रह और सावधानी रखते,
क्योंकि जनता के जीवन-मरण से संबंध रखने
वाले इस महत्वपूर्ण खेल के वही मुख्यपात्र
और खिलाड़ी हैं। उनकी यह जिम्मेदारी थी।
पर दुर्भाग्य से आजादी के बाद सन् १९५२ में
संविधान के अनुसार पहला आम चुनाव हुआ
तब से अब तक इन २२-२३ वर्षों में परि-
स्थिति बिल्कुल उलटी बनी है। आज तो
चुनाव के समय सभी पार्टियों में और इक्के-
दुक्के छोड़कर सभी उम्मीदवारों में यह होड़
लग जाती है कि कौन दूसरे से ज्यादा चालाकी,
बेईमानी या तिकड़म करके, अर्थात् बुरे या
भले जैसे भी तरीकों से हो सके, वोट हासिल
कर ले और जीत जाय। नतीजा यह हुआ कि
चुनावों में पैसे का लालच, शराब का उपयोग,
जात-पांत की भावना, तरह-तरह की बेईमानी
और भ्रष्टाचार, यहां तक कि लाठी, पिस्तौल
और जोर-जबरदस्ती—ये सब साधन
उत्तरोत्तर अधिक परिमाण में काम में लाये
जाने लगे हैं। चुनाव क्या वास्तव में 'चुनाव'
रह गये हैं, यानी क्या चुनावों में आम लोगों
को अपने मत का निर्भयतापूर्वक या मरजी के
अनुसार उपयोग करने की गुंजाइश रह गई
है, इस बारे में एक के बाद दूसरे चुनाव में
स्थिति उत्तरोत्तर शंकास्पद होती जा रही है।

चुनावों में होने वाले खर्च की तो बात
करना ही व्यर्थ है। संविधान के निर्माताओं
की, कायदे-कानून बनाने वालों की, इस
विषय में क्या कल्पना थी उसका अन्दाज इसी
बात से लगाया जा सकता है कि लोकसभा के
चुनाव में २५ हजार और राज्यों की विधान
सभाओं के चुनाव में ५-७ हजार से ज्यादा
खर्च कोई उम्मीदवार न करे, इसकी कानून
में पाबन्दी है। यह साबित हो जाय कि इससे
ज्यादा किसी उम्मीदवार ने खर्च किया है तो
उसका चुनाव रद्द कर दिया जाता है, और
आगे अमुक वर्षों तक चुनाव के लिए खड़े
होने का उसका अधिकार छीन लिया जाता
है। कानून की पोथियों में आज भी यह
नियम मौजूद है, लेकिन स्थिति यहां तक
पहुंच गई है कि अब हजारों की बात नहीं,
विधान सभा की एक-एक सीट के लिए तीस-
तीस लाख और लोक सभा की सीट के लिए
साठ लाख रुपया खर्च किये जाने की बात
केवल अफवाह नहीं बल्कि संबंधित पार्टी के
जिम्मेदार लोगों द्वारा कही जा रही है।

चुनावों में बेईमानी का सवाल हो या
अनाप-शनाप खर्च का, जो पार्टी शासन में
होती है उसके लिए यह सब करने का मौका
और गुंजाइश स्वाभाविक ही दूसरी पार्टियों
से ज्यादा रहती है। जानकार और जिम्मेदार
लोगों का कहना है कि उत्तर प्रदेश के आगामी
चुनावों के लिए १५-२० करोड़ रुपया इकट्ठा
किया जा रहा है। इतना रुपया गरीबों से तो
मिल नहीं सकता अतः देश के बड़े-बड़े पूंजी-
पतियों से इस बारे में सौदे किये गए हैं और
विभिन्न प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों को भी उनकी
क्षमता के अनुसार जिम्मेदारियां बांटी गई हैं।
दूसरी पार्टियों के लोग यह नहीं करना चाहते
या नहीं करते सो बात नहीं है, पर इस बारे
में उनकी एक मर्यादा है। इस बात में वे
शासक पार्टी की मात नहीं कर सकते। सर-
कारी तंत्र और सत्ता का उपयोग भी पार्टी के
हित में करने का मौका शासक-दल को मिलता
है, और यह शिकायत उत्तरोत्तर बढ़ती जा
रही है। कई चुनाव-याचिकाओं में अदालतों
द्वारा उसकी पुष्टि भी की जा चुकी है।

'हर काम में थोड़ी-बहुत बेईमानी और
बुराई होती ही है' और 'दूसरे देशों में भी
यह होता है', ऐसी दलीलें देकर अकसर परि-
स्थिति की गंभीरता को छिपाने और कहने
वालों का मुंह बंद करने की कोशिश की
जाती है। जिनका हित या स्वार्थ इन बातों
के साथ जुड़ा हुआ है वे ऐसा करें तो कोई
ताज्जुब नहीं है, पर देश का हित चाहने वालों
और खासकर जनतंत्र में विश्वास करने वालों
के सामने यह आज एक गंभीर चुनौती के
रूप में उपस्थित हो गई है। राजनैतिक नेता
और दल इस बारे में जनता को दगा दे रहे
हैं। उन पर जो भरोसा रखा गया था कि वे
चुनाव में ईमानदारी से काम लेंगे वह गलत
साबित हो रहा है क्योंकि वे देशहित की
अपेक्षा अपने निहित स्वार्थ को ज्यादा तरजीह
दे रहे हैं। सरकारी तंत्र भी चूंकि इन्हीं लोगों
के कब्जे में है इसलिए जब तक बाहर वालों
का दबाव, विरोध या मदद न हो तब तक

उससे भी ज्यादा उम्मीद नही की जा सकती। इसलिए यह चुनौती अब स्वयं जनता को और स्वार्थ से ऊपर उठकर सोच सकने वाले जिम्मेदार नागरिकों को उठा लेनी होगी। क्योंकि अगर इस प्रवृत्ति पर रोक नही लगी तो जनतंत्र खतरे में है। अगर चुनावो के निष्पक्ष, सही और कानूनी ढंग से होने मे जनता का विश्वास उठ जायगा, वह उसका प्रतिकार करने से लाचारी महसूस करने लगेगी तथा विरोधी पार्टिया भी कमजोर होने के कारण, या शासक दल को ज्यादा अवसर होने के कारण, उसे अपदस्थ करने मे असमर्थ रही, जैसा कि आज हो रहा है, तो देश मे तानाशाही के लिए रास्ता खुल जायगा, चाहे फिर चुनावो का यह खेल चलता रहे और जनतन्त्र का ऊपरी ढाचा कायम रहे।

इस विषय मे समय-समय पर कुछ छुट-पुट आवाज या चिन्ता प्रकट होती रहती है। पर आवश्यकता संगठित और समझबूझकर प्रयत्न करने की है। अभी दो महीने पहले सर्व सेवा संघ के निमंत्रण पर सेवाग्राम मे देश की मौजूदा स्थिति पर विचार करने के लिए एक राष्ट्रीय परिषद मिली थी। उसमे विभिन्न वर्गों और दलो के कुछ प्रमुख लोग, पत्रकार, साहित्यसेवी-समाजसेवक, राजनैतिक नेता आदि इकट्ठे हुए थे। इस परिषद् ने सर्वसम्मति से तय किया है कि इस विषय में सरकार और जनता को सावधान करने के साथ-साथ निर्दलीय और निष्पक्ष तरीके से कुछ सक्रिय और सामूहिक कदम भी उठाये जायें। अब शुरुआत के तौर पर उत्तर प्रदेश के आगामी चुनावो में इस दिशा मे जनमत खड़ा करने, चुनावों में भ्रष्ट तरीकों को रोकने और आवश्यक हो तो इन तरीकों को काम मे लाने वालों के खिलाफ सत्याग्रह करने का भी तय हुआ है।

राजनैतिक पार्टियां और उम्मीदवार जनता की उदासीनता का फायदा उठाकर जनतत्र की प्रक्रिया को दूषित करते रहें यह अब बर्दाश्त नही किया जाना चाहिए क्योंकि इसमे सारे देश को खतरा है। देश को बर्बाद होने से बचाने के लिए यह आवश्यक है कि सब समझदार नागरिक, खासकर नई पीढ़ी के नौजवान, संगठित रूप से यह आन्दोलन उठायें ताकि कोई भी राजनैतिक पार्टी या उम्मीदवार चुनावो मे भ्रष्ट तरीके काम में न ला सकें। समय आ गया है जब जनता को इस चुनौती को उठा लेना चाहिए।

मतदाता शिक्षण

उत्तर प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं द्वारा तैयारी

दिसम्बर शुरू हो चुका है। फरवरी मे उत्तर प्रदेश मे चुनाव हो रहा है। समय कम बचा है, साधन सीमित हैं ही, लेकिन बचे हुए कम समय का ज्यादा से ज्यादा तथा सीमित साधनो का बेहतर उपयोग हो सके इसकी तैयारी शुरू हो चुकी है। दिल्ली में हुई २४-२५ नवम्बर की बैठक के बाद २६ नवम्बर को लखनऊ में सर्वोदय कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक हुई जिसमे मतदाता शिक्षण अभियान पर बातचीत हुई। बैठक मे मास्टर सुन्दर लाल, करणभाई, विनय भाई, रामप्रवेश शास्त्री, राधेश्याम योगी आदि के अतिरिक्त दिल्ली से रूपनारायण तथा कृष्णस्वामी ने भी भाग लिया। कृष्णचन्द सहाय अस्वस्थता तथा सुन्दरलाल बहुगुणा उत्तराखण्ड मे चल रही सौ दिन की पदयात्रा मे व्यस्त रहने के कारण भाग न ले सके।

बैठक मे व्यक्त किये विचारो मे यह बात सबसे ज्यादा उभर कर आयी कि मतदाता शिक्षण अभियान क्षणिक न होकर एक स्थायी कार्यक्रम होना चाहिए। हरिजन मतदाताओ के बारे मे रपट देने वाले एक कार्यकर्त्ता का कहना था कि हरिजनो की बस्तियो से प्राय: लोग वोट डालने निकलते ही नही हैं। इन हरिजनो को कलेक्टर खुद आकर भी आश्वासन दे कि आप निडर होकर वोट डालें, वे वोट देने नही आते। उनकी सीधी सी दलील है: हमें महाराज चुनाव के बाद भी यहीं पर रहना है, आप यहां से चले जाओगे। जाहिर है कि वे चुनाव में भाग लेकर किसी एक पक्ष को तो नाराज करेंगे ही। चुनाव के समय यदि साहस बटोर कर वे वोट दे भी दें तो उसके बाद मारपीट होती है। अन्याय की इन घटनाओ को लेकर वे अदालत भी नहीं जा पाते। कार्यकर्त्ताओं का कहना था कि इस अभियान को शुरू करते समय हमें यह भी तय कर डालना है कि हमें केवल मतदान के समय ही निर्भय होकर मतदान करने मे मतदाता का साथ नहीं देना है, यह साथ तो मतदान के बाद भी बना रहे, इसका भी ध्यान रखना है।

यह बहस एक बार फिर उठी कि पहले हम इस राजनीतिक प्रणाली के ही विरुद्ध थे, अल्पमत और बहुमत के बदले सर्वसम्मति की बात करते थे फिर क्यों हम उठे हाथो की गिनती के आधार पर चलने वाले इस खेल मे गिनती मे बरती गयी बेईमानी को ईमानदारी की ओर ले जाना चाहते हैं।

यह साफ है कि इस देश मे आने वाले काफी समय तक बहुमत का राज चलेगा। जब तक उस पद्धति का कोई विकल्प नही बनता तब तक तो वह पद्धति ही कम से कम अपने घोषित नियमों और एक सर्व मान्य नैतिकता को आधार मानकर चले। फिर पद्धतियां, नियम आदि गौण हैं, सबसे ऊपर है आदमी। उसे आज एक मत मिला है अपनी पसन्द, नापसन्द बताने के लिए। हम को मिल कर एक ऐसा वातावरण बनाने मे मदद करनी है कि किसी भिन्न पद्धति मे उसका मत छिन जाने की स्थिति में भी वह साहसपूर्वक अपनी पसन्द-नापसन्द जाहिर कर सके। आज उसे यह हक है फिर भी वातावरण ऐसा बनता जाता है कि वह उसका उपयोग भूलता जा रहा है।

लखनऊ में एकत्र हुए ये कार्यकर्त्ता सहमत थे कि मतदाता अपने मत का उपयोग न भूल पायें। उन्होंने इस अभियान पर विचार करने रविवार, १६ दिसम्बर' ७१ को गांधी भवन में ग्यारह बजे उत्तर प्रदेश में काम कर रहे कार्यकर्त्ताओं का एक सम्मेलन बुलाया है। संयोजक हैं मास्टर सुन्दरलाल। उत्तराखण्ड, मेरठ, कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, आगरा, लखनऊ आदि जिलो के अलावा मुरादाबाद, अलीगढ़, देवरिया व जिलों से इस सम्मेलन मे कार्यकर्त्ता भाग लेने आ रहे हैं। इन्हीं मे से कुछ स्थानों पर मतदाता शिक्षण अभियान को सघन रूप मे चलाया जायेगा। सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के अलावा अन्य प्रान्तो के भी कार्यकर्त्ताओं की मदद लेने के बारे मे निर्णय लिया जायेगा। समय और साधन कम हैं, लेकिन उत्तर प्रदेश के कार्यकर्त्ता उनका बेहतर उपयोग करने में जुट गये हैं।

राष्ट्रीय परिषद के बाद

आखिर कोई आवाज तो उठनी चाहिए

नवम्बर २४, १९७३ को गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में सर्व-सेवा-संघ द्वारा आमंत्रित राष्ट्रीय परिषद की 'फालो-अप' कमेटी की बैठक हुई। बैठक की कार्यसूची में तीन विचारणीय विषय थे। एक, सितम्बर ७३ में सेवाग्राम में आयोजित राष्ट्रीय परिषद के निर्णयों को क्रियान्वित करना। दो, फालो अप कमेटी में को-आप्शन। तीन, उत्तर प्रदेश के आगामी चुनाव में रचनात्मक कार्यों में लगे लोगों की भूमिका।

बैठक में प्रमुख रूप से भाग लेने वालों में सर्वश्री जयप्रकाश जी, आचार्य कृपलानी, कृष्णकान्त, डी० वी० द्रविड, सिद्धराज ढड्ढा, राधाकृष्ण, देवेन्द्र कुमार व हरिवल्लभ पारिख के नाम उल्लेखनीय हैं। उत्तरप्रदेश के चुनावों में मतदाता शिक्षण का कार्य करने की दृष्टि से सम्भावनाओं पर विचार करने के लिए सर्वश्री रूपनारायण, रामस्नेह शास्त्री (लखनऊ) व रामप्रकाश गौर को भी बैठक में आमंत्रित किया गया था।

सिद्धराज जी ने आमंत्रितों के सम्मुख बैठक बुलाये जाने के उद्देश्यों की जानकारी दी और सेवाग्राम की राष्ट्रीय-परिषद में स्वीकृत हुए आठ सूत्रीय प्रतिवेदन की चर्चा की। आपने कहा कि स्वीकृत आठसूत्रीय कार्यक्रम को लागू करने के लिए फालोअप कमेटी के गठन की तुरन्त आवश्यकता है।

सिद्धराज जी ने श्री जयप्रकाश जी से निवेदन किया कि वे फालोअप कमिटी की अध्यक्षता का भार स्वीकार करें। जयप्रकाश जी ने कहा कि वर्तमान स्वास्थ्य की स्थिति को देखते हुए उनके लिए यह सम्भव नहीं होगा कि वे कोई नई जिम्मेदारी लें। हां, जहां तक राय मशवरे का प्रश्न है वे यथा-सम्भव सहायता देते रहेंगे।

उत्तरप्रदेश में चुनाव की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करने के लिए गांधी-शान्ति प्रतिष्ठान की ओर से श्री रूपनारायण हाल ही में उत्तरप्रदेश गये थे और लखनऊ आदि स्थानों पर स्थानीय व्यक्तियों के साथ उन्होंने चर्चा भी की थी। अत: उनसे निवेदन किया गया कि वे तत्सम्बन्ध में जानकारी दें।

श्री रूपनारायण ने अपने दौरे के बारे में बैठक को जानकारी देते हुए बताया कि लखनऊ में विभिन्न व्यक्तियों से हुई चर्चा के बाद उन्हें लगता है कि समय काफी बीत चुका है और चुनाव नजदीक ही है। लेकिन यदि मतदाता प्रशिक्षण का काम तेजी से उठाया जा सके तो उसका कम से कम कुछ चुनाव क्षेत्रों में तो अनुकूल ही प्रभाव पड़ेगा।

श्री एस० जी० मारे जिन्होंने बैठक में केवल एक पर्यवेक्षक की हैसियत से भाग लेना स्वीकार किया था, कहा कि क्या हम चुनावों में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने की कोई इच्छा रखते हैं और मतदाताओं को यह स्पष्ट कहने को तैयार हैं कि आप अमुक व्यक्ति को ही वोट दीजिए? इस बात की सम्भावना कम ही होगी कि चुनाव में किसी शुद्ध उम्मीदवार को हम खड़ा कर सकें।

दादा कृपलानी ने कहा कि हम इतना तो कर ही सकते हैं कि मतदाताओं का शिक्षण कर सकें। हम मतदाताओं से इतना तो कह ही सकते हैं कि वे अपना वोट बेचें नहीं और ईमानदारी से मतदान करें। चुनाव के समय कई प्रलोभन आपके सामने आयेंगे जो आपको भ्रष्ट करना चाहेंगे पर आप अपनी आत्मा को धोखा मत दीजिये।

श्री जयप्रकाश जी ने कहा कि सर्व सेवा संघ द्वारा पिछले चुनावों के दौरान भी मतदाता शिक्षण का कार्य किया गया था और उसमें काफी हद तक सफलताएं भी मिली थीं। यह सच है कि हमारे प्रयासों की कुछ मर्यादायें हैं। सर्वोदय वालों की राजनीतिज्ञों से यह शिकायत पुरानी है कि प्रभावशाली कुछ करने के लिए उन्हें (सर्वोदय वालों को) राजनीति में आना चाहिए। आखिर राजनीतिक दलों के अलावा गैर पार्टी स्तर पर भी कुछ आवाज उठ सकती है जो कल्याणकारी और हितकारी हो सकती है। अन्यथा देश का सार्वजनिक जीवन पार्टियों तक सीमित होकर रह जायेगा। जितना भी काम हो सके वह काफी है, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो। आखिर कोई आवाज होनी तो चाहिए।

उत्तरप्रदेश के चुनाव के बारे में कार्यक्रम सुझाते हुए जे० पी० ने कहा कि जो हम पुराने लोग हैं—सर्वोदय वाले, कुछ लोग तो उत्तरप्रदेश के पचास-साठ कालेजों में विद्यार्थियों के समक्ष भाषण दें। विद्यार्थियों की गैर दलीय रैलियों का आयोजन करें और उनका आवाहन करें। विद्यार्थी अगर अपने कालेजों से निरन्तर गांवों का दौरा करेंगे और नई शक्ति अगर खड़ी हो सकेगी तो बड़ा काम होगा। अगर चुनाव इसी प्रकार भ्रष्ट होते रहेंगे तो प्रजातन्त्र समाप्त हो जायगा। जे० पी० ने कहा कि लखनऊ आदि एक-दो स्थानों पर आकर वे भी विद्यार्थी से बोलना चाहेंगे।

श्री कृष्णकान्त ने जे० पी० के विचारों का पूरे हृदय से समर्थन करते हुए कहा कि जयप्रकाशजी ने उनके मन की बात कह दी है। जितने भी कालेज हैं और स्कूल हैं वे वातावरण बनाने में मदद देते हैं। अगर हम अभी से हवा बनायें और विद्यार्थियों के सामने चित्र रखें कि देश किधर जा रहा है, तो बड़ी बात बनेगी। यह काम केवल मतदाता शिक्षण का ही नहीं है, सब राजनीतिक दलों के लिए चुनौती खड़ी करने की बात है। श्री कृष्णकान्त ने कहा कि चूंकि पार्टी की कुछ मर्यादाएं उनके साथ हैं इसलिए वे बाहर आकर ज्यादा मदद नहीं कर सकेंगे, पर पार्टी के अन्दर जितना भी सम्भव होगा, वे कार्य करेंगे।

श्री पुरुषोत्तम मावलंकर ने भी जयप्रकाश जी द्वारा व्यक्त विचारों पर अपनी सहमति जाहिर की।

श्री वी० पी० द्रविड़ ने भी योजना के प्रति अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि यह तो एक प्रक्रिया है जिसमें यदि हम थोड़ा भी सफल हुए तो एक नयी शक्ति को जन्म दे सकेंगे।

—श्रवणकुमार गर्ग

धुलिया

[हरित क्रांति विपन्नता की नींव पर सम्पन्नता का एक नया वर्ग खड़ा कर रही है। धुलिया में हाल में ही हुई घटनाएं इस तथ्य को उजागर कर रही हैं। वहां अब खड़ी फसलों की लूट की आशंका कर भूमिवानों ने सशस्त्र फसल बचाव सेना की योजना भी बना डाली है। भूमिहीनता और व्यापक गरीबी की समस्याओं से कतराकर ऐसा प्रयास करना भविष्य में शान्त वातावरण की कोई गारंटी नहीं है। प्रस्तुत लेख में बेन क्रो ने इस स्थिति का सर्वे किया है। ब्रितानी बेन क्रो इंजीनियर थे, बाद में वे 'आपरेशन ओमेगा' के सदस्य बने। आजकल वे भारत में चल रहे अहिंसक आन्दोलनों का अध्ययन कर रहे हैं। शहादा में चल रहे सर्वोदय कार्य की एक रपट हम अगले अंकों में दे रहे हैं। सं०]

हरित क्रांति से आक्रांत

महाराष्ट्र में वर्षा का आगमन हुआ। पिछले कई वर्षों में सबसे अच्छी वर्षा। अब पहली फसल कट चुकी है। दुर्भिक्ष चला गया है, पर समस्यायें बाकी हैं।

उत्तरी महाराष्ट्र के धुलिया जिले के कुछ हिस्से मे 'फसल बचाव सेना' का प्रस्ताव वहा के भूमिवानों ने रखा है, जिसको लेकर संसद मे सवाल उठाये गये है। कुछ अखबारो ने इस प्रस्ताव को भूमिवानो और भूमिहीनो के बीच बढते हुए टकराव के अन्तर्गत मान कर बड़ी सुर्खियां दी हैं। सचाई यह है कि धुलिया मे अभी तक दगे नही हुए और बड़े भूमिवानों की धारणा के विपरीत फसल लूटने को एक राजनैतिक शस्त्र की तरह इस्तेमाल करने का अभी तक कोई संगठित प्रयास भी नही हुआ है। लेकिन भूमिवान और भूमिहीन दोनो अपना-अपना सगठन कर रहे हैं। यदि क्षेत्र की अनेक विषमताओं का कोई हल नहीं निकला तो आगे-पीछे संघर्ष होगा ही।

धुलिया जिला अपेक्षाकृत सपन्न क्षेत्र है। ताप्ती और उसकी सहायक नदियों से उपजाऊ जमीन को पानी मिलता है। जिनके पास जमीन और पूंजी है उनको हरित क्रांति से भरपूर लाभ मिला है। केवल कुछ खेतो मे सिंचाई होती है। कटीली झाडियो में समायी-बिखरी धूल इस पानी से गीली कत्थई धरती में बदल जाती है, जिसमें गन्ना, गेहूं और मूगफली का जबर्दस्त उत्पादन होता है। शहादा के छोटे से कस्बे मे चमकती हुई मोटर साइकिलो और चुस्त नये ट्रैक्टरो पर इधर-उधर जाते हुए सपन्न भूमिवानों मे उर्वरक, पम्पो और अधिक पैदावार वाली किस्मो से हुआ फायदा झलकता है। १९५६ में शहादा ताल्लुके में कोई ट्रैक्टर नहीं था। १९६७ तक यहा १५० थे जो बढ़कर १९७१ में ३०० हो गये। उस समय सारे महाराष्ट्र में (२३५ ताल्लुके) लगभग २००० ट्रैक्टर थे। इस इलाके के उपजाऊ होने के बावजूद कुछ लोगो पर उनके हिस्से से ज्यादा गरीबी का बोझ लदा है। ये हैं इलाके के भूमिहीन—अधिकतर हरिजन और आदिवासी। शहादा ताल्लुके में ४० प्रतिशत और तलोदा में ७५ प्रतिशत लोग आदिवासी है। महाराष्ट्र के इस क्षेत्र के अधिकांश आदिवासी भील हैं। केन्द्र और राज्य सरकारों के ऊंचे विचारों और योजनाओं के बावजूद किसी हरिजन के साथ पशुवत् व्यवहार किये जाने की रोज कम से कम एक खबर छपती है। आदिवासियों के शोषण मे भी कोई कमी नहीं हुई है, हालांकि उसका इतना प्रचार नही होता।

आदिवासियो की आर्थिक दुर्दशा बहुधा दोहराये जाने वाले नारे 'विविधता में एकता' पर एक मूक व्यंग है। शहादा इलाके में केवल लगभग ५० प्रतिशत के पास जमीन है। बाकी के लिए है—तीन महीने इधर-उधर जाकर मजदूरी करना, फसल काटना और शेष वर्ष छोटे-मोटे काम करना या धनी भूमिवानो के यहा सालाना ठेके पर घरेलू और मेहनत के काम। १८७१ में अंग्रेजों ने तब तक भटकते-फिरते भीलों को जमीनें दी। २५ साल बाद जब सरकारी अफसरों को यह समझ मे आया कि ये जमीनें हस्तांतरित हो रही हैं तो आदिवासियों की जमीन की खरीद-बिक्री पर रोक लगा दी गयी। स्वतंत्रता के बाद जमीन पर लगी ये रोक हटा ली गई लेकिन जमीन के सौदे में

→

जिलाधीश की अनुमति लेना तक भी जरूरी रहा। तब से इस नियम के बावजूद भीलों की गरीबी ने उन्हें अत्यन्त प्रतिकूल शर्तों पर ये जमीनें गिरवी रखने के लिए मजबूर कर दिया, खासतौर से १९५४ से ५८ के बीच पड़े अकालों के दौरान।

ऐसे कई मामलों में जमीन का मूल मालिक उस पर खेती तो करता रहा पर उसे महाजन को फसल का अधिकांश भाग तब तक देते रहना था जब तक वह उसका कर्ज नहीं चुका देता। कहीं-कहीं तो सारी जमीन पर महाजन का कब्जा हो गया और ऐसे में जमीन के पट्टे के कानून को महाजन के फायदे के लिए उल्टा कर दिया जाता है। इस कानून के अनुसार किसी भी पट्टेदार द्वारा यह सिद्ध करने पर कि वह कई वर्षों से उस पर खेती कर रहा है, जमीन पर कब्जा हो जाता है। जहां भी महाजन ने बंधक रखी जमीन पर खेती करना शुरू कर दिया वहां इस तरह उसका कब्जा हो जाता है।

कुल मिला कर शहादा और तलोदा में कोई ५० से ६० प्रतिशत परिवार भूमिहीन हैं। उनके लिए तो जैसा कि एक हरिजन कवि ने हाल ही में लिखा है 'केवल गरीबों ही उनकी खुद की जमीन है।'

दो वर्ष पहले शहादा और तलोदा में भूमिहीनता पर हुए एक सर्वेक्षण के बाद आदिवासी नेता अमरसिंह महाराज ने बम्बई में एक सभा बुलाई, जिसका उद्देश्य था—भूमिहीनों को संगठित करके उनकी दशा बदलने में बाहरी सहयोग और सहायता जुटाना। इसमें कांग्रेस से लेकर जनसंघ और 'मान विकास' तक सभी राजनैतिक दलों ने भाग लिया।

इस सभा में बाद में तो कुछ पर कोई क्रियात्मक परिणाम इसमें नहीं निकला। लेकिन बम्बई के चार क्रान्तिकारी युवक यह मानकर कि समाज परिवर्तन के लिए शहादा भी उतनी ही उपयुक्त जगह थी जितनी कि कोई और, अमरसिंह महाराज के साथ हो लिए। उन्होंने शहादा के अन्य दलों के साथ मिल कर संयुक्त मोर्चा गठित किया। जिसकी परिणति 'श्रमिक संगठन' में हुई।

उनके पहले अभियान को कोई नाटकीय सफलता तो मिली नहीं लेकिन उसने उन्हें स्थानीय लोगों और स्थानीय समस्याओं से परिचित करा दिया। मार्च '७२ के चुनावों में उन्होंने लोकतन्त्रीय पद्धति और गरीबों का उद्धार करने में उसकी विफलता के खिलाफ प्रचार किया। उन्होंने गरीबों से कहा कि अपने मतदान-पत्र फाड़ दें। थोड़े ही लोगों ने यह किया, कुछ इस कारण से कि लोग स्थानीय राजनैतिक नेताओं से डरते थे और कुछ की यह अभियान समझ में नहीं आया। लेकिन मतदान, जो सामान्यतया ५५ से ६० प्रतिशत तक होता था, गिरकर ३३ प्रतिशत रह गया।

गांव में लगातार होने वाली बैठकों में संगठन ने एक 'तरुण मंडल' की शुरुआत की। इसके बाद तरुण मंडल के सदस्यों की

धुलिया जहां अमीरी और गरीबी दो परस्पर विपरीत ध्रुव बन गये हैं।

शक्ति को आधार बना कर संगठन 'अक्षय तृतीया' त्यौहार के लिए तैयारी करने लगा जब सामान्यतः ठेके पर काम करने वाले मजदूर 'मालदार' बदले जाते हैं या दुबारा रखे जाते हैं। सालदारों की एक समिति ने मालिकों को अपनी मांगें दीं, अधिक मेहनताना और संगठित रूप से मजदूरी तय करने का अधिकार। दोनों तालुकों के २०० गांवों में से ४५ से ५० गांवों में मांगें पूरी न होने पर हड़ताल रही। कुछ दिनों बाद समझौते की बातचीत शुरू हुई। बातचीत की शुरुआत भी तब ही शुरू हो पाई जब मालिक लोग अपनी कुर्सियों से उतर कर मजदूरों के साथ जमीन पर बैठे। "पहली बार बराबरी से इस तरह की बातचीत हुई, यह सबमें महत्वपूर्ण बात थी। हमें उनके चेहरों पर खुशी दिखाई दी क्योंकि पहली बार वे अपने मेहनताने की बात कर सकते थे", संगठन का दावा है कि इन हड़तालों से और इस वर्ष फिर उनकी पुनरावृत्ति से, मेहनताने २५ से ५० प्रतिशत तक बढ़े हैं, साप्ताहिक छुट्टियां और साल में सवेतन के १० दिन की छुट्टी मिलती है। जिन बड़े भूमिवानों से मैंने बात की उन्होंने आवेश के साथ संगठन के अन्य दावों की तरह इन तथ्यों को भी गलत बताया।

प्रदर्शनों की शृंखला में संगठन ने अपना पहला प्रदर्शन अगस्त '७२ में आयोजित किया, हरेक प्रदर्शन में कई हजार लोगों ने भाग लिया। इसमें सरकार से अकाल का सामना करने के लिए अधिक 'राहत-कार्यों' की मांग की गई, रोजगार की अधिक सुविधाएं मांगी गईं। लगातार पड़ते आ रहे सूखे का यह तीसरा साल था और महाराष्ट्र में तो इससे जैसा दारुण समय पहले कभी नहीं आया था। सारे महाराष्ट्र में इस तरह के प्रदर्शन हो रहे थे। अवरल में मिले इन राहत कार्यों, मिट्टी खोदने से लेकर सिंचाई योजनाओं के विकास तक, के बिना सूखे और फसल नष्ट होने से बड़ी संख्या में लोग मरते।

संगठन का सबसे क्रान्तिकारी अभियान सितम्बर '७२ में प्रारम्भ हुआ। तीन माह के समय में संगठन ने ४००० एकड़ जमीन महाजनों के कब्जे से वापस ले लेने का दावा किया है। जहां उनको ऐसा लगा कि कर्ज की अदायगी हो चुकी है वहां उन्होंने पुलिस को सूचना देने के बाद बेदखल किये गये जमीन के मूल मालिक की ओर से फसल काट ली। मालिकों के पास कानून का फायदा उठाने का कोई तरीका नहीं था क्योंकि अधिकांश लेन-देन बिना लिखा-पढ़ी के हुआ था और इस तरह जमीन फिर से अपने मूल मालिक के पास चली गई। इसी तरह अक्तूबर में वन विभाग के धीमे विकास कार्यक्रम के कारण बेकार पड़ी जमीन में खेती करने का कदम उठाया गया। बेदखली मिटाने में अगड़े हुए थे और फिर इस नयी खेती से

गिरफ्तारियां हुईं। इन दोनों मामलों में प्रचार भी काफी हुआ, जिससे आन्दोलन की ताकत बढ़ी। संगठन की धारणा है कि वे काफी आगे बढ़े हैं। संगठन के इन दावों का भी उन मालिकों ने खंडन किया जिनसे मैंने बातचीत की। अब संगठन ने इस फिर से कब्जा की गई जमीन पर खेती के लिए बैल खरीदने और अन्य चीजें जुटाने के लिए बैंकों से ऋण लेने में मदद की। एक गांव में दुकानदारों के मन्दी के समय अनाज खरीदने और तेजी के समय बेचने के कुचक्र को तोड़ने के लिए एक दुकान भी खोली गई।

अब तक केवल एक गांव में हाई-स्कूल शुरू करने का प्रयास सफल हुआ है। वह यहां दो माह से चल रहा है। श्रमिक संगठन में आचार शुद्धता का आग्रह दिखा। शायद यह मालिकों की इस मान्यता के जवाब में है कि "ये आदिवासी महत्वाकांक्षी लोग नहीं हैं—असली कठिनाई तो यही है। ये आलसी हैं और अत्यधिक शराबखोर हैं।" हर गांव में तरुण मण्डल ने लोगों की शराब और जुआखोरी छुड़वाने के लिए तर्कों द्वारा समझाया है, मनाया है और नहीं मानने पर उनके खिलाफ धरना देने की धमकी का भी इस्ते-

संदेह नहीं है। संगठन के कार्यकर्ता के साथ मैं शहादा के निकट एक गांव से १।४ मील के अंधेरे रास्ते के बाद नदी पार करके एक बड़े रेतीले तट पर पहुंचा संगठन के लोगों ने नारा लगाया 'श्रमिक संगठन ....'। खाने बनाने के लिए जगह-जगह जल रही आग के पास से पहले एक धीमा 'श्रमिक संगठन जिन्दाबाद' उत्तर में सुनाई पड़ा। दूसरी बार 'जिन्दाबाद' काफी बुलन्द था। जब हम लोग शिविर में गये तो कई लोग अभिवादन करते हुए आये और फिर वे लगभग एक घंटे तक खबरों का आदान-प्रदान करते रहे।

२०० भील, घुमक्कड़ मजदूरों का यह शिविर रोमांचक तो था पर बड़ा दुखद थी। सर्दी से बचाव के लिए किसी के पास एक कम्बल से ज्यादा कुछ नहीं था। रात में जलती हुई आगें मद्धी पड़ गईं। भोर के समय तट पर सिकुड़ी-सिमटी ये आकृतियां १६ वीं सदी के अमेरिकन इण्डियनों के किसी चित्र की याद दिला रही थीं—निरपराध और अकेले।

→

खण्डन करते हैं, "योजना का समाचारपत्रों ने गलत अर्थ लगाया है।" फसल की रक्षा नई बात नहीं है। हरेक को अपनी-अपनी जायदाद की रक्षा करनी पड़ती है। हम आदिवासियों की जमीन छीनना चाहते हैं, यह कहना सही नहीं है।" उनका कहना है कि धनी लोग गरीबों के खिलाफ संगठित हो रहे हैं यह सही नहीं है। चारों ओर बीस मील के इलाके में बड़े लोगों के पास जमीनें हैं। छोटा भूमिवान अपना निजी चौकीदार नहीं रख सकता…"

सनसनी तो सचमुच में इस बात से फैली है कि सारी दुनिया में ठीक इस तरह की योजना कहीं नहीं है।

"……महाराष्ट्र में कानून के अन्तर्गत फसल की सुरक्षा समितियों का विधान है। कभी-कभी ग्राम पंचायत यह काम उठाती है, कभी यह गैरसरकारी होता है, कभी सरकार के साथ मिला जुला, आवश्यकता होने पर बन्दूक के लाइसेंस भी उन्हें मिलते हैं। यह कोई अनोखी बात नहीं है।" (मुझे एक पुलिस अधिकारी ने यह बताया था कि ऐसे मामलों में बन्दूक का लाइसेंस नहीं दिया जाता) "इसमें बेतुका है ही क्या? हम तो घेराबन्दी कर रहे हैं, चोर बचकर निकल न पायें इसलिए…और अपनी ताकत बटोर रहे हैं।"

"क्या फसल की चोरी बढ़ रही है?"

"यह रोजमर्रा की बात है। ऐसा भी होता है, जिसमें २००-५०० लोग फसल काटते हैं…जो खुद अपनी खेती करते हैं आदिवासी भी, वे फसल चुराने के लिए अन्य जगह नहीं जाते। वे अपना काम करते हैं। उनकी फसलों की सुरक्षा भी इस योजना से होगी।"

एक दूसरे भूमिवान ने मुझे बताया "चोरियां संगठित ढंग से हो रही हैं। इनकी रोकथाम के लिए किसानों और भूमिवानों का एक प्रकार का संगठन होना चाहिए…यही पी० के० पाटिल का सुझाव है…मैं नहीं जानता कि कौन इन चोरियों का संगठन कर रहा है लेकिन मिसाल के लिए मेरी कपास की फसल एक बार १५० लोगों ने लूटी। मैंने शासन को इस चोरी की खबर दी। रपट दर्ज कराई। लेकिन उनमें

भूमिवानों द्वारा प्रस्तावित सशस्त्र फसल बचाव सेना एक नजर में

प्रारम्भिक खर्च	रुपयों में
१ जीप	३०,०००
१२ मोटर साइकिल	८४,०००
१००० घोड़े	२००,०००
१२० बन्दूकें	१०८,०००
कुल	४२२,०००

मासिक व्यय	
१२०० चौकीदार (९० रु० प्रति माह वेतन)	१०८,०००
१०० हवलदार (१५० रु० प्रति माह वेतन)	१५,०००
१२ कमान्डर (२५० रु० प्रति माह वेतन)	३,०००
६ क्लर्क (१५० रु० प्रति माह वेतन)	६००
१०० घोड़ों के रखरखाव का खर्च	६,०००
१२ मोटर साइकिलों के रखरखाव का खर्च	२,४००
१ मेजर	४००
१ जीप के रखरखाव का खर्च	१,०००
कुल	१४६,७००

प्रति माह अस्त्रों में इस्तेमाल किये जाने वाले गोला बारूद का खर्च	१,५००
सालाना खर्च	१७७८,४००
घिसावट	१०५,०००
कुल	१,८८३,४००

प्रारम्भिक खर्च के लिए जुटाई गई राशि बढ़े हुए उत्पादन द्वारा तीन वर्ष में इस तरह से वसूल की जाएगी	
३०,००० एकड़ जमीन जिस पर गन्ना लगा है ७ रु० प्रति एकड़ के हिसाब से	२१,००००
४५,००० एकड़ जमीन जिस पर अन्य मिश्रित फसलें लगी हैं, ५ रु० प्रति एकड़ के हिसाब से	२२५,०००
४००,००० एकड़ सूखी जमीन ४ रु० प्रति एकड़ के हिसाब से	१,६००,०००
कुल	२,०३५,०००

खेत में काम कर रहे भगवान से मिलने

—स्वामी चिदानन्द

यह यात्रा एक अनोखी और नवीन यात्रा है। उत्तराखण्ड में तीर्थस्थान और मन्दिर में बसे हुए मूर्तिमन्त भगवान् के दर्शन के वास्ते हर साल लाखों की संख्या में यात्री आते हैं। गंगोत्री, यमुनोत्री, तुंगनाथ, बद्रीनाथ, केदारनाथ, हेमकुण्ड लोकपाल के दर्शनों के वास्ते आते हैं और उनकी सेवा-पूजा के रूप में परिक्रमा के रूप में और भेंट चढ़ाने के रूप में, अपनी श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं। यह प्रथा शताब्दियों से चलती आयी है। परन्तु उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र के १०० दिन के इस पर्यटन की अपनी एक विशिष्टता है। जिस यात्रा का मैंने अभी बयान किया है वह अचल हेतु होती है, लेकिन जिस विराट् स्वरूप में पर्वतीय प्रदेश के निवासी हैं, जन सामान्य में उपस्थित जो भगवान् विचरता है चलता-फिरता है उस प्रभु के यहां आकर दर्शन करने के लिए यह यात्रा है। उनकी सेवा में और उनके हित में हमारी अपनी समय की, अपने प्रेम की और अपनी सद्भावना प्रकट करने की इच्छा है। यह चलता-फिरता भगवान् खेत में काम कर रहा है, जंगल में घास-पत्ती के लिए जा रहा है, खेतों में सिंचाई कर रहा है। हल के पीछे है। गायों को चराने गया है। इस तरह प्रभु के मानव रूप में मन्दिर में न रहते हुए चलते-फिरते सर्वत्र विराट् मूर्ति के दर्शन, सेवा द्वारा, श्रमदान द्वारा, विद्या के दान द्वारा, सब प्रकार के दान द्वारा उनके चरणों में, उनके दरबार में भेंट चढ़ाते हुए एक नई विचित्र तरह की पूजा यह पदयात्रा शुरू कर रही है। इसमें मैं भारत वर्ष के लिए एक बहुत भारी अर्थ देखता हूं। यह यात्रा सबके लिए प्रेरणादायी है और भारतवर्ष के सभी प्रदेशों में, हर एक खण्ड में, कोने-कोने में इस प्रकार से छोटी-छोटी सेवा के लिए निस्स्वार्थ भावना को अपना कर जनता की सेवा ही अपना उद्देश्य बनाकर अनेक लोग ऐसी यात्रा को अपनायें, जिससे भारतवर्ष की जनता का कल्याण जनता के द्वारा ही हो। किसी सरकार के द्वारा, किसी एक विभाग के द्वारा जनता का कल्याण नहीं हो सकता है। मैं भारतीय संस्कृति का महान सन्देश इस देश के अन्दर फैलाने की शक्ति, १०० दिन की इस यात्रा में देखता हूं।

साल करके अब सुन्दरलाल जी अपना

पीट्ठू (पहाड़ों पर पीठ पर बोझा ढोने का बड़ा थैला) लेकर यात्रा पर निकले हैं तो सर्वोदय के कार्यक्रम के अलावा कुछ और कार्यक्रम के बारे में मैं उनसे कहना चाहता हूं। जब आप पर्वतीय जनता से मिलें और उनसे ग्राम-स्वराज्य समाज बनाने, मद्यपान मुक्ति, ग्राम शान्ति सेना, भूमिदान, शराबबन्दी, जंगल-भूमि-जंगल की सम्पदा की सुरक्षा, स्त्री-शक्ति जागरण और अस्पृश्यता निवारण के बारे में कहें तो स्वामी रामतीर्थ जी का आध्यात्मिक सन्देश भी फैलायें। रामबादशाह का आनन्दमय वेदान्त का सन्देश जिसके साथ नित्य नवीन आशा, हर्ष और आत्मिक एकता जुड़ी हुई है, जो मनुष्य-२ के बीच भय दूर करता है सुनायें। प्रेम और एकात्मता के द्वारा निर्भयता का सन्देश दें। इस वर्ष स्वामी रामतीर्थ की जन्म शताब्दी है इसलिए अपनी पदयात्रा के दौरान राम के नाम की घोषणा करने और उनका सन्देश फैलाने का आपको पूरा-पूरा अधिकार है।

मैं इसके साथ दो और बात जोड़ देता हूं। बहुत साल इस शरीर के अन्दर बिताने के बाद मुझे यह प्रतीत होता है कि मानव के लिए शारीरिक स्वास्थ्य एक अमूल्य निधि है, क्योंकि जो कुछ मानव को करना है करना है वह शरीर के द्वारा करना है, करना है। यही एक यन्त्र भगवान् ने मानव को दिया है। इसी यन्त्र से काम लेकर हमें अपने जीवन का कार्य करना है। इसकी सुरक्षा और इसका स्वास्थ्य हमें ठीक रखना है।

'धर्मार्थकाममोक्षाणां आरोग्यं मूलमुत्तमम्' ऐसी कहावत है। आरोग्य बनाने का मुख्य स्थान होता है हर एक व्यक्ति के जीवन में, लेकिन मैं यह देखता हूं कि शरीर का स्वास्थ्य अपने आप नहीं बनता है, जैसे कि बरसाती मौसम में जंगल में झाड़ियां आ जाती हैं। लोगों में भावना जागृत करनी है कि स्वस्थ रहना तुम्हारा एक कर्त्तव्य है। जिस तरह हर व्यक्ति का माता-पिता के प्रति, पड़ोस के प्रति कर्त्तव्य होता है, हर एक व्यक्ति का अपने प्रति भी एक कर्त्तव्य है और इसमें मुख्य यह है कि भगवान् ने जो शरीर हमें दिया है उसे अच्छी तरह तन्दुरुस्त रखना। सरल स्वास्थ्य विज्ञान उनको देना है क्योंकि हम देखते हैं कि जहां पर अपढ़ हैं, अशिक्षित हैं, लोग स्वास्थ्य का क ख भी नहीं जानते हैं। छोटी सी बात है। पानी को उबाल कर पीने के लिए इस्तेमाल करते हैं। लोगों को इतना भी ज्ञान नहीं कि बच्चों को उससे दूर रखें। छिलका बच्चों की आंख में चला जाता है तो जीवन भर के लिए आंख खराब हो जाती है। छोटी-छोटी चीज बड़ा रूप धारण कर लेती है। सरल स्वास्थ्य विज्ञान देकर इसे टाला जा सकता है। बीमार होकर ठीक होना एक बात है, लेकिन बीमार ही नहीं होना है, यह जताना है। इसी तरह कुष्ठ रोग के बारे में लोगों में जो गलत धारणा है, वह मिटानी है। इस रोग का इलाज हो सकता है। रोगी से नफरत नहीं करना और उसके साथ दया का बरताव करना।

और बाकी तो शुभ कार्य जो है, वह स्वयं आशीर्वाद देता है। वही आशीर्वाद स्वरूप है। शुभ भावना आ गयी तो भगवान का आशीर्वाद अवश्यमेव है। भगवान का आशीर्वाद जब मानव के ऊपर आता है तब आकर उसके दिल में शुभ भावना आती है, शुभ कार्य करने के लिए प्रेरणा आती है। सकल्प उसका सात्विक होता है। प्रभु के दरबार में मैं यही प्रार्थना करता हूं कि इन पदयात्रियों का शारीरिक स्वास्थ्य बना रहे। जितनी भी कठिनाइयां आयें, कठिनाइयां उनके स्वास्थ्य को और भी बढ़ाती जायें। उनका तमाम रास्ता निर्विघ्न हो, बाधा से रहित हो ताकि १०० दिन के समय में वे जनता का उपकार, भलाई और सेवा यथाशक्ति कर के कर सकें, उसी में रम जायें।

चालीस हजार उपवास-दान कब मिलेंगे ?

विनोबा

विनोबा ने प्रत्येक गुरुवार को एक समय का भोजन छोड़ना शुरू किया है। इससे पहले उन्होंने तय किया था कि वे हर महीने ग्यारह और पच्चीस तारीख को आधे दिन का उपवास रखेंगे और इस तरह महीने में एक दिन के भोजन की जो बचत होगी वह सर्व सेवा संघ को उसका काम चलाने के लिए दान स्वरूप देंगे। इस वर्ष अपने उपवास-दान की अग्रिम रकम ३६ रुपये वे सर्व सेवा संघ को भेंट कर चुके थे। अब इस सप्ताह में जुड़े एक समय के नये उपवासों से होने वाली अतिरिक्त बचत की राशि भी सर्व सेवा संघ का उनकी ओर से दी जा चुकी है। सर्व सेवा संघ के प्रधान कार्यालय (गोपुरी) को विनोबा निवास से मिली खबरों के अनुसार विनोबा के आह्वान पर देश में कई कार्यकर्ता व सर्वोदय-प्रेमी उपवास दान का संकल्प ले रहे हैं। प्रधान कार्यालय ने सूचना दी है कि उपवास-दान की रकम जिला या प्रदेश सर्वोदय मंडल में जमा करने के बदले सीधे सर्व सेवा संघ गोपुरी वर्धा (महाराष्ट्र) ही भेजी जाये।

राजा बोले सेना हिले···

हर मनुष्य महीने में एक उपवास करे। आधा-आधा उपवास दो दिन में करे अथवा पूरा एक दिन उपवास करे। इस प्रकार से कोशिश की जाये, तो अकेले वर्धा में हजार होंगे। इतनी संस्थाएं यहां हैं तो इतना काम यहां आसानी से हो सकता है।

मैंने पूछा था प्रबन्ध समिति में, कितना समय लगेगा ४० हजार उपवास-दान प्राप्त करने में ? उन लोगों ने पांच उंगलियां दिखायीं। मुझे लगा, पांच महीने कहते होंगे। उन्होंने कहा, 'पांच साल' मैंने कहा, "पांच साल में तो भगवान जाने क्या-क्या होगा।" आखिर उन्होंने एक साल कबूल किया। एक साल में डेढ़ महीना तो निकल गया।

विचार की पहुंच कितनी दूर ?

यह अपने आन्दोलन का महत्व का पहलू है ४० हजार उपवास। नम्बर दो, अपने जो अखबार हैं, पत्रिकाएं हैं उनके ग्राहक बनाना। अभी दो कामों पर जोर दें।

बात ऐसी है, आप लोग सोच रहे हैं कि अखिल भारत में लोक सेवक संघ का काम करें। हमने कह दिया कि सर्व सेवा संघ ही लोक सेवक संघ है। तो इन लोगों को उत्साह आ गया। लेकिन आपका कोई विचार एकदम कितने लोग ग्रहण करते हैं, उससे मालूम होगा कि भारत पर आपका असर पड़ेगा या नहीं ? मान लीजिए ४० हजार उपवास की बात जाहिर की और वह दो महीने में पूरा हो गया तो आपका भारत पर असर है और उसके द्वारा आप काम कर सकते हैं। परन्तु आपके आन्दोलन का भारत पर एकदम असर नहीं होता, इतने छोटे से आन्दोलन का भी असर नहीं होता तो बड़ा काम क्या करेंगे आप ?

गांधी जी ने प्रथम चौबीस घंटे का उपवास जाहिर किया। भारत में हजारों लोगों ने वह उपवास किया। २४ घंटा उपवास यानी आज शाम को ६ बजे खाया तो दूसरे दिन शाम को ६ बजे भोजन करना। वास्तव में वह आठ-दस घंटे का ही उपवास होता है। नाम दिया उसे २४ घंटे का उपवास। मैंने उनसे पूछा था, इसका उद्देश्य क्या ? उन्होंने कहा, "उद्देश्य यह है कि भारत में कितने लोग जवाब देंगे इसका, इस पर से अपना आन्दोलन व्यापक होगा कि नहीं होगा, इसका अन्दाज लग सकता है।"

५५ करोड़ का भारत है। ३५० जिले हैं। उनमें से १०० जिले छोड़ दिये जायें, २५० जिले लीजिये। हर जिले में उपवास करने वाले कितने होने चाहिए ४० हजार के ख्याल से ? १६०। कौन सा कठिन काम है ? मैंने इन लोगों से (सर्व सेवा संघ) पूछा था, भारत में ६ हजार प्रखण्ड हैं। कितने प्रखंडों में कांग्रेस कमिटी होगी ? जवाब मिला लगभग हर प्रखंड में। कितने प्रखंडों में सर्वोदय-मंडल हैं ? तो २०० प्रखण्डों में हैं, ऐसा उत्तर मिला। तो आप लोक सेवक संघ का काम कैसे करेंगे।

बाबा ने अभी दाढ़ी साफ कर ली है। पहले दाढ़ी काफी थी बड़ी। पंडित नेहरू से एक बार बात हो रही थी। मैंने कहा, "फलानी जगह नाहक फलाने आदमी को जेल में डाला है।" उन्होंने कहा, "उसको जेल से मुक्त करने के लिए मैं हुकुम दे चुका हूं। दो-तीन महीने हो गये। अमल नहीं हो रहा है। ऐसी नौकरशाही है।" मैंने उनको मराठी कहावत सुनाई, "राजा बोले दळ हाले। मियां बोले दाढ़ी हाले।" राजा बोलता है तो सेना हिलती है। मियां बोलता है तो दाढ़ी हिलती है, बाबा बोलता है तो दाढ़ी हिलती है और पंडित नेहरू बोले तो कुछ भी न हिले।—वैसे आज हमने विचार जाहिर किया। आपके डेढ़ लाख ग्रामदानी गांव हैं। तो बाबा का विचार पहुंचा है इन डेढ़ लाख गांवों में ?

(शेष पृष्ठ १५ पर)

बीघे से बड़ी बुलाक

निर्मलचन्द्र

बिहार भूमि सुधार के कानून बनाने में जितना आगे रहा, इन कानूनों के कार्यान्वयन में उतना ही पीछे। यहां सीलिंग-एक्ट से जमीन निकाल कर भूमिहीनों के बीच वितरित नहीं की जा सकी। लाखों एकड़ गैरमजरुआ जमीन पर भूमिवालों ने कब्जा कर लिया, पर अब तक सरकार जमीन नहीं बांट सकी। भूमिवानों को बासगीत जमीन के अधिकार देने का एकमात्र काम किसी अंश में पूरा हुआ है। सरकार की ओर से तो यह दावा किया जाता है कि यह काम किसी हद तक सारे राज्य में पूरा हो गया, लेकिन गांवों में जाकर देखने से निराशा होती है। अब भी पूरे-पूरे हरिजन आदिवासियों के ऐसे गांव मिलते हैं, जहां उनका छप्पर अपनी जमीन पर नहीं है। पर्चे जहां दिये भी गये हैं, वहां मात्र कानूनी खाना-पूरी की गयी है।

बासगीत या कबूतर के दरबे

इन बंटे हुए पर्चों की छान-बीन करने से पता लगता है कि बड़े पैमाने पर एक विसमल, सवा विसमल जमीन के पर्चे दिये गये हैं। आश्चर्य होता है—ये घर के पर्चे हैं या कबूतरों के दरबे! एक घर में दो खाटें बिछाने तथा इनके चारों ओर आने-जाने के रास्ते के लिए ५४ वर्ग-हाथ का घर चाहिए। गांवों में किसान नौ-तला घर बनाते हैं। इनकी मिट्टी की दीवालों का नीचे का हिस्सा मोटा दो-हाथ रखना चाहिए, फिर इनकी ओलती के लिए दो-हाथ और जगह चाहिए। अर्थ यह है कि ६० वर्ग-गज में सिर्फ एक घर खड़ा होता है। किसान का घर है, एक बरामदा तो चाहिए ही। रसोई कहां बनायेगा? फिर एक आंगन चाहिए। इसके अतिरिक्त गाय, बछिया और बकरी के नाद-खूंटे की जमीन तो चाहिए! सरकार ने अब १३० वर्ग-गज की न्यूनतम सीमा निर्धारित की है। इसमें घर, आंगन तो हो जायगा, लेकिन आने-जाने के रास्ते की समस्या बनी रह जायेगी। सबसे अधिक चिन्ता का प्रश्न तो अब उन लोगों के लिए उपस्थित है जिनको पहले एक या डेढ़ डिसमल का पर्चा दिया जा चुका है। जिन भू-स्वामियों की जमीन पर बासगीत का पर्चा दिया गया, वे बिचारे किसान उनके कोप भाजन बन रहे हैं। घर के बाहर आने-जाने का रास्ता नहीं। बच्चों के टट्टी-पेशाब के स्थान की कठिनाई है। लाचार होकर घर छोड़ने को बाध्य होने की नौबत आती है।

बासगीत के पर्चों का काम १९६७ के बाद बड़े पैमाने पर शुरू हुआ था। इसके लिए अभियान चलाये गये, इस शीघ्रकार्यता में काफी त्रुटि-पूर्ण काम हुए हैं। मिनिस्टर साहब के हाथ से पर्चा बांटने की तारीख तय हुई। कर्मचारियों का कोटा निर्धारित हो गया। गांवों में कहा जाता है—'घर-फूंक विवाह, कनपट्टी सिन्दूर,' यही चरितार्थ हुआ। गति के साथ मति ठीक नहीं रही। कुछ का खाता नम्बर ठीक है तो खसरा गलत और खसरा ठीक है तो खाता नम्बर गलत! और यह भूल तो कुछ कम हुई है पर चौहद्दी तो प्रायः दोष-पूर्ण देखी जाती है।

दो पैसे पर बीस रुपया

सबसे अधिक कष्ट यह देख कर होता है कि तीन-चार वर्ष पर्चा मिले हो गये लेकिन वे अब तक रसीद नहीं कटा पाये। कई कर्मचारियों को भी यह मालूम नहीं कि उन्हें इस सम्बन्ध में क्या करना चाहिए!

पहले के बांटे गये पर्चों में बासगीत जमीन वालों को दर-रैयती हक दी गयी। इसके अनुसार बासगीत जमीन का पर्चा पाने वाले किसानों को, भूमिवानों को मालगुजारी चुकानी थी। पर बाद में कानून में संशोधन कर बासगीत के पर्चों में पूर्ण रैयती हक-प्रदान किया गया तथा भूमिवालों को मुआवजा देने का प्रावधान किया गया। कर्मचारी यह नहीं समझ पाते हैं कि इस संशोधन के पूर्व की स्थिति में उन्हें अब क्या करना है।

अधिकांश किसानों को तो यह मालूम भी नहीं कि उनको रसीद भी कटानी है। रसीद काटने के लिए बीस-बीस रुपये रिश्वत की फर्माइश की जाती है। पर्चे पर लिखा है—मालगुजारी दो पैसे मात्र, पर घूस बीस रुपये! दुल्हन से बड़ी बुलाक!

भूमिहीनों को बासगीत के पर्चे दिये गये। एक पवित्र काम हुआ। बिहार में १९६७ के बाद जो भी राजस्व मंत्री हुए, उन्होंने इस कार्य में अपनी रुचि दिखायी। राष्ट्रपति शासन-काल में राज्यपाल के परामर्शी श्री टी० पी० सिंह (जूनियर) आई० सी० एस० के समय में सबसे अधिक पर्चे बांटे गये। पर बड़े अधिकारियों की सदपेक्षा और और सद्-प्रयास धरती तक नहीं पहुंच पाती। या ये बातें उनकी आंखों से ओझल हैं? यदि सरकार समय से ध्यान नहीं देगी तो वर्षों के बाद भी मानवीय अधिकार के लिए किया गया यह सामान्य काम भी समाप्त हो जायगा।

बहुत बड़ा प्रश्न नहीं है। थोड़ी सी मुस्तैदी से पीछे की भूलें सुधारी जा सकती हैं। १९७३ का यह वर्ष भूमि सुधार वर्ष माना गया। बड़े-बड़े लक्ष्य लिए गये, लेकिन सफलता कितने प्रतिशत मिली? प्रथम और दूसरे दर्जे की बात तो दूर रही, उसीगे मालकर पाया या तिहाई काम भी क्या किसी जिले में पूरा हो सका? क्या बिहार सरकार इस विफलता का मूल्यांकन करने को प्रस्तुत है? नवम्बर में चालीस प्रतिशत लगान वसूल करना था। दिसम्बर में तो इसी का पूरा अभियान शुरू होगा। भूमि-हदबंदी भूमिवालों की खिलाफी भावनाओं से नहीं तोड़ने वाली है। लेकिन जिन बेजमीन लोगों को बासगीत के पर्चे अब तक नहीं मिल पाये हैं, उनको भी पर्चा देने का काम यदि पूरा हो जाय तो किसी अंश में भूमि सुधार वर्ष के बारे को एक सार्थकता सिद्ध हो पायेगी।

मतदाता शिक्षण अभियान के बुनियादी लक्ष्य

१. इस अभियान का एकमात्र उद्देश्य यह है कि चुनाव सही और स्वतंत्रतापूर्वक संपन्न हो, किसी भी पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष विपक्ष मे यह अभियान नही है।

२. मतदाता किस उम्मीदवार को अपना वोट दे इस बारे मे इस अभियान मे भाग लेनेवालो को कुछ नही कहना है। उनका एकमात्र काम यह देखने का है कि मतदाता को स्वतंत्रतापूर्वक और बिना किसी दबाव के अपनी इच्छा के अनुसार वोट देने का अवसर मिले।

३. यह अभियान केवल मतदाता शिक्षण का अभियान नही है, बल्कि चुनाव सही, शुद्ध और कानूनी ढंग से हो इस बात को सुरक्षित करने का प्रयत्न है। इसलिए इस अभियान मे भाग लेनेवाले इस बात की चौकसी रखेंगे कि चुनाव के दौरान उम्मीदवारो की ओर से या पार्टियों की ओर से किसी प्रकार का भ्रष्टाचार, जोर जबर्दस्ती या अनैतिक काम न हो।

४. मतदान के दिन मतदान केन्द्रो पर किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती या अनियमितता न हो और जो मतदाता जिसे अपना मत देना चाहे, वह निर्भयतापूर्वक दे सके इस बात की निगरानी के लिए अभियान की ओर से नव-जवानों की टुकड़िया मतदान केन्द्रो पर विशेष सतर्कता बरतेंगी।

५. अभियान की ओर से किसी भी पार्टी या उम्मीदवार के पक्ष मे या विपक्ष मे किसी प्रकार का प्रचार नही किया जायेगा। इस मर्यादा का पालन करते हुए सर्व-सामान्य तौर पर उम्मीदवार मे क्या गुण होने चाहिए और क्या अवगुण नही होने चाहिए इस बारे मे मतदाताओ का आवश्यक शिक्षण किया जायेगा।

६. जिन व्यक्तियो के खिलाफ किसी जाच कमीशन या समिति के द्वारा भ्रष्टाचार के या अपने सार्वजनिक पद का दुरुपयोग करने के आरोप सिद्ध हो चुके होगे ऐसे लोग अगर चुनाव मे खडे हो या खड़े किये जाएं तो उन्हें मतदाता मत न दें इसका प्रचार अभियान की ओर से किया जा सकेगा।

७. चुनाव सबंधी कानूनों और नियमो का उल्लघन न हो इसकी देखरेख अभियान की ओर से करने का प्रयत्न होगा।

(पृष्ठ २ का शेष)

कब्जे मे लेना, बोगस वोटिंग आदि कतई नही होनी चाहिए। ये बातें होने का जिन मतदाता क्षेत्रों मे अंदेशा हो वहा प्रजातंत्र प्रहरी दल कायम किये जाएं एव वे मतदान के दिन इस विषय मे पूरी सावधानी बरतें। कही बलप्रयोग की घटना होने लगे तो वहा सत्याग्रह किया जाय। उत्तर प्रदेश के कालेज के छात्रो का आवाहन किया जाय कि प्रजातंत्र की रक्षा के लिए वे एक माह के लिए अपना समय इस काम मे दें। श्री जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी, श्री सिद्धराज ढड्ढा आदि इस काम लिए विश्वविद्यालयो मे जायेंगे। वैसे ही अन्य स्वेच्छा संगठनो से कई सेवक मिलेंगे, जिन्हें इस काम मे रुचि है। नागरिको मे से भी कई व्यक्ति मिलेंगे। इन सबका मतदाता शिक्षण एवं प्रजातन्त्रीकरण के इस कार्य के लिए आवाहन किया जाय।

जाहिर है इस काम मे लगने वाले स्वयंसेवक किसी उम्मीदवार का या दल का न प्रचार करेंगे, न किसी दल या व्यक्ति के खिलाफ बोलेंगे। वे स्वयसेवक सामान्य कसौटिया मतदाताओ को बतलायेंगे जिन पर परख कर मतदाता हर उम्मीदवार की परीक्षा करें और इन कसौटियो पर खरे उतरने वाले उम्मीदवार को वोट दें। दलो की दलदल से अब बाहर निकल कर उम्मीदवारों को जाचना-परखना होगा, क्योकि विभिन्न दलो के घोषणापत्रो मे अधिकाश भाग समान हैं—भले ही शब्दावली भिन्न हो। सभी समाजवाद (जनसघ, भारतीय समाजवाद की, भारतीय क्रान्ति दल, ट्रस्टीशिप की), गरीबी हटाने की, बेकारी मिटाने की बातें करते हैं। आखिर व्यक्ति ही दल बनाते हैं। यदि व्यक्ति सच्चरित्र, ईमानदार, पद का लाभ उठाकर अपनी संपत्ति न बढाने वाला, व्यक्ति लाभ के लिए दल न बदलने वाला, शान्तिमय साधनो मे विश्वास रखने वाला, शराब से मुक्त, जनसेवा मे समय देने वाला रहे तो ही दल के अच्छे उद्देश्य सफल होंगे। जो उम्मीदवार ऐसी कसौटियो पर खरे नही उतरते हैं, उन्हें कदापि न वोट दिया जाय—वे चाहे जिस पक्ष के हो।

यह सब मतदाताओ को समझना होगा। राष्ट्र पिता ने कहा था कि लोक सेवक सघ का पहला काम मतदाता शिक्षण का है। यह नही हुआ। परिणाम सामने है। अतः मतदाताओं को जगाना होगा और वे अपने पसन्द के व्यक्ति को मत मुक्तता से दे सकें ऐसा वातावरण कायम रखना होगा। इसलिए इसमें हर नागरिक को हिस्सा लेना चाहिए। स्वराज्य प्राप्ति से कम महत्व का यह कार्य नही। मतदाता भारत भाग्य विधाता है उसे उसकी ताकत भान करा देना होगा। तब ही प्रजातत्र सफल होगा।

ककवन ब्लाक की ३० ग्रामसभाओं मे से २० ग्राम सभाओ के लोगो का एक प्रशिक्षण शिविर नवम्बर के पहले सप्ताह मे आयोजित किया गया, जिस मे जिले के लाभचन्द वर्मा, विनय भाई, विनय कुमार, आनन्द स्वरूप गुप्ता, अलख भाई, जवाहर लाल, सूर्य प्रसाद, मन्त्री जिला सर्वोदय मडल ने भाग लिया। ककवन ब्लाक के शेष बचे हुए गावो मे ऐसे ही प्रशिक्षण शिविर लगाने के लिए अलख भाई व विनयकुमार एक पदयात्रा के माध्यम से तैयारी मे जुटे हैं।

संसद सदस्य अपनी सुविधाओं का दुरुपयोग न करें

संसद सदस्यों द्वारा अपने ही बनाये गये कानूनों को तोड़ने के खिलाफ सत्याग्रह के उद्देश्य से चले रामचन्द्र मेहरोत्रा दिल्ली पहुंच गये हैं। यहां वे सत्याग्रह से पहले संसद सदस्यों के अलावा बुद्धि जीवियों, साहित्यकारों, समाज-सेवियों आदि से अलग-अलग समूहों में मिलकर अपनी पदयात्रा का उद्देश्य स्पष्ट कर रहे हैं, एक वातावरण बना रहे हैं, जो शायद सत्याग्रह करने की जरूरत को ही खत्म कर दे। मेहरोत्रा अपने साथियों के साथ १५ अगस्त को रायबरेली से चले थे व लगभग ४ माह की पदयात्रा के बाद ८ नवम्बर को वे दिल्ली पहुंच गये थे। इस पदयात्रा टोली ने रास्ते में जगह-जगह पड़ावों पर आम लोगों से चर्चा की, उन्हें समझाया कि जो हमारे देश का कानून बनाते हैं, देश की चीजों को व्यवस्थित रूप से रखने की जिम्मेदारी जिनके ऊपर है वह स्वयं अपने बनाये हुए कानूनों को कहीं तोड़ तो नहीं रहे हैं, अपनी जिम्मेदारी से भाग तो नहीं रहे हैं—इस की निगरानी रखना जरूरी हो गया है। मेहरोत्रा ने बहुत सारे ऐसे पहलुओं में से केवल एक पहलू उठाया है, प्रतीक के रूप में।

संसद सदस्यों को दिल्ली में रहने के लिए मकान, गैरेज, नौकरों का कमरा आदि सुविधाएं मिलती हैं। रहन-सहन की सुविधाएं संसद सदस्य के ऊपर निर्भर करने वालों को भी दी जाती हैं। सदस्य का मेहमान भी इस में शामिल किया जाता है। लेकिन मेहमान को रखने के लिए संसद सदस्य को सूचना देनी पड़ती है। किरायेदार रखने की कहीं कोई बात नहीं है। लेकिन मेहरोत्रा का कहना है कि इन नियमों का केवल १० प्रतिशत सदस्य ही पालन कर रहे हैं। मेहरोत्रा की दलील है कि यदि किरायेदार रखना जरूरी ही है तो संसद सदस्यों को कानून में संशोधन कर लेना चाहिए। जनप्रतिनिधियों का जीवन देश की जनता के नजदीक होना चाहिए व उनकी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। दिल्ली में आने के बाद मेहरोत्रा संसद की हाउसिंग-कमेटी के अध्यक्ष से मिल चुके हैं। अध्यक्ष ने आश्वासन दिया है कि वे भविष्य में एक बैठक बुलायेंगे जिसमें संसद सदस्यों के सामने इस सब को रखेंगे। अध्यक्ष ने एक संसद सदस्य की भी नियुक्ति की है जो अन्य सदस्यों से इस मामले में बातचीत शुरू कर चुके हैं। इधर संसद सदस्य श्री एम० एम० बनर्जी ने मेहरोत्रा से हुई अपनी बातचीत में खाली पड़े मोटर गैरज तथा घरेलू नौकरों के मकानों के बेहतर इस्तेमाल के लिए अब्बरत मद किरायेदारों का रखे जाने के मामले के मानवीय पहलू पर भी ध्यान देने कहा है। लेकिन साथ ही साथ श्री बनर्जी मकान में सदस्य द्वारा किरायेदार रखने के पक्ष में नहीं दीखते। श्री मेहरोत्रा से यह पूछने पर कि क्या इस आन्दोलन में कुछ संसद सदस्य भी शामिल हो सकेंगे, उन्होंने बताया कि श्रीमती सुशीला अड्विरेकर पूरा समर्थन दे रही हैं। ये लोग सदस्यों के मकान में रहने वाले कुछ किरायेदारों से भी मिल चुके हैं लेकिन अभी तक ऐसे किसी संसद सदस्य से सीधी बातचीत नहीं हो पाई है जिन्होंने कानून तोड़कर किरायेदार रखे हैं इस आन्दोलन में लोकसेवक मंडल लाजपत भवन भी अपना समर्थन देगा। बातचीत द्वारा कोई हल नहीं निकलने की दशा में संसद सदस्यों के मोहल्ले नार्थ एवेन्यू और साउथ एवेन्यू पर फरवरी में किसी समय सत्याग्रह होने की संभावना है।

बायें से दायें कृष्णकुमार मिश्र, रघुवर दयाल मोदी, शेर खां, रामचन्द्र मेहरोत्रा

(पृष्ठ १२ का शेष)

सवाल यह है कि आपकी कोई बात लोगों के कानों तक पहुंचती है? ऐसी योजना होनी चाहिए कि आपकी बात कम से कम सुनने में तो आये लोगों के। अमल करना दूसरी बात है। उपवास दान की बात बाबा ने की। यह बात अखिल भारत में कितने लोगों को मालूम है? मालूम ही नहीं है, अमल करना तो आगे की बात है।

जापान का मुख्य शहर है, तोकियो। वहां का दैनिक अखबार है, 'तोकियो शिबुन।' ६० लाख ग्राहक हैं उसके। जापान की जनसंख्या १० करोड़ है। ६० लाख को वह अखबार समेटता है। भारत में केरल में 'मलयालम्-मनोरमा' के पौने तीन लाख ग्राहक हैं। 'मातृभूमि' के सवा दो-ढाई लाख ग्राहक हैं। ऐसा ही बंगाल में 'युगान्तर' चलता है, उसके ग्राहक हैं दो-ढाई लाख। ऐसे आपकी पत्रिकाओं के ग्राहक बनने चाहिए और आपका विचार तुरन्त लोगों तक पहुंचना चाहिए।

(बम्बई के कार्यकर्ताओं के साथ २६-१०-७३ को हुई चर्चा)

आन्दोलन के समाचार

× हरियाणा सर्वोदय मंडल ने निश्चित किया है कि रामपुरराणी, गढ़कोटा क्षेत्र में जहां शराबबन्दी आन्दोलन चल रहा है सर्वोदय विचार प्रचार का ठोस काम किया जायेगा। गढ़कोटा में एक सर्वोदय प्रचारकेन्द्र के माध्यम से लोकसेवक खुशीराम ने आसपास के गांवों में सर्वोदय विचार फैलाना शुरू किया है। जैनमुनि श्री जनक राज जी, जिन्होंने हरियाणा शराबबन्दी आन्दोलन का संचालन किया था, ने घोषित किया है कि वे भगवान महावीर की ढाई हजारवी जयन्ती के उत्सव में भाग लेने के लिए दिल्ली पैदल ही पहुंचेंगे। इनकी पदयात्रा का प्रबन्ध प्रदेश सर्वोदय मंडल कर रहा है।

हरियाणा सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष सोमभाई को अम्बाला के डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि नशाबन्दी आन्दोलन के समय में गिरफ्तार किये गये सत्याग्रहियों के मुकदमे शीघ्र ही वापस ले लिये जायेंगे और ३१ मार्च ७४ के बाद गढ़कोटा में वर्तमान शराब का ठेका दुबारा नीलाम नहीं किया जायेगा।

× बलिया के कार्यकर्ताओं ने लोगों के सामने अपने इलाके से, पड़ोस से, पड़ोसियों की समस्याओं से परिचित होकर उनके हल करने में हाथ बटाने के लिए एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया है। पड़ोसी-धर्म 'अभियान' नामक इस कार्यक्रम में नगर को पड़ोस की सुविधा के अनुसार कुछ इकाइयों में बांट कर काम किया जायेगा। एक इकाई के कुछ चुने हुए व्यक्ति परस्पर पड़ोस धर्म के अभियान को समझ कर अपनी इकाई के सभी परिवारों से एक-एक व्यक्ति की पड़ोसी सभा बुलायेंगे, जिनमें सामूहिक रूप से व्यक्तिगत व सामूहिक समस्याओं पर बहस कर समाधान का छोर तलाशने की कोशिश की जायेगी।

× खण्डवा जिले की ग्राम स्वराज्य समिति की ओर से ग्राम ललवाड़ा, मूंदी, ढोढवाड़ा, बिजोरा, पिपलिया, सरगावनिमानी, टिगरिया, जामली कला आदि १६ गांवों में ग्राम स्वराज्य का प्रचार नवम्बर माह में किया गया। अब जिले के एक प्रमुख गांव मूंदी को केन्द्र मानकर आसपास के क्षेत्र में आचार्य कुल, शान्ति सेना के माध्यम से सघन कार्य करने की योजना है।

× अखिल भारत कृषि गोसेवा संघ का कार्यालय नवम्बर के पहले सप्ताह से गोपुरी वर्धा आ गया है। नये स्थान पर काम शुरू करते हुए संघ ने तय किया है कि वह एक सर्वे द्वारा अपने समर्थकों के बारे में जानकारी एकत्रित करेगा। सदस्य संख्या बढ़ाने का भी प्रयत्न है। संघ के साधारण सदस्य, सहयोगी सदस्य और संस्था सदस्यों का एक सम्मेलन फरवरी के दूसरे सप्ताह में वर्धा में आयोजित किया जायेगा।

× कार्तिक पूर्णिमा तथा गुरुनानक जयन्ती के अवसर पर उन्नाव जनपद में गंगा स्नान के मेला-स्थल पर तरुण शान्ति सेना उन्नाव तथा गांधी-शान्ति प्रतिष्ठान कानपुर के सहयोग से एक संयुक्त शिविर लगाया गया। शिविरार्थियों ने गंगा स्नान मेले के दौरान शहर के बाजारों, घाटों आदि पर तीर्थ-यात्रियों की भारी भीड़ व यातायात को व्यवस्थित बनाये रखा। खोये हुए बच्चों को या तो उनके संरक्षकों को सौंपा या उन्हें सरकारी केन्द्र तक पहुंचाया।

× नारायण देसाई, संयोजक अ० भा० शान्ति सेना मंडल, प्रणव्रत घोष, संयोजक अरुणाचल प्रदेश शान्ति सेना कार्यालय और आर० सुब्रह्मण्यम, फील्ड डायरेक्टर ऑक्सफॉम अरुणाचल प्रदेश यात्रा के दौरान मृत्यु के मुख से बालबाल बचे। ये शान्ति केन्द्रों की यात्रा पर जा रहे थे जहां शांति सेना ने ऑक्सफॉम की सहायता से क्षय तथा चर्म रोगों के निवारण का एक व्यापक कार्यक्रम उठाने की योजना बनाई है। इन लोगों की जीप पर ८ नवम्बर की शाम को लखीमपुर जीरो सड़क पर किमिन से २३ किलोमीटर दूर एक जंगली हाथी ने अचानक धावा बोल दिया। हाथी की सूंड के धक्के ने सारे कांच तोड़ दिये और दूसरे धक्के ने जीप को उल्टा दिया। जीप के ड्राईवर तथा सुब्रह्मण्यम बाहर फेंके गये और श्री घोष व देसाई जीप के नीचे फंस गये। हाथी ने अपना एक पैर जीप पर रखा था लेकिन चूंकि वह हिस्सा इन्जिन की ओर था इसलिए उस हिस्से के चकनाचूर हो जाने के बाद भी यात्रियों को कोई नुकसान नहीं हो पाया। इसी समय सड़क का एक भाग नीचे की ओर धस गया और हाथी उल्टा होकर नीचे गढ्ढे में जा गिरा जहां से वह जंगल में भाग गया। चारों यात्रियों ने जंगल में एक मजदूर की झोंपड़ी में रात बिताई और दूसरे दिन अपनी चोटों के बावजूद सुबह फिर से अपनी यात्रा शुरू कर दी।

× मध्यप्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड के संयुक्त सचिव सत्यनारायण शर्मा ने एक जानकारी में बताया कि भूदान-आन्दोलन के अन्तर्गत प्रदेश में अब तक ४ लाख ६ हजार ६६६ एकड़ भूमि भूदान में प्राप्त हुई है। इसमें तत्कालीन मध्य भारत शासन द्वारा प्रदत्त २ लाख १७ हजार ६६८ एकड़ वन भूमि का भूदान भी सम्मिलित है। प्रदेश के ११, ७६६ गांवों में भूदान मिला है। भूदान दाताओं की संख्या ५८, ८७८ है। बोर्ड के नाम से २ लाख ५२ हजार ४६० एकड़ भूमि निहित है। प्राप्त भूमि की जांच के पश्चात ५६, २२७ एकड़ भूमि खारिज की गई है। १ लाख २ हजार २४७ एकड़ भूमि का शासन द्वारा प्रमाणीकरण होना फिलहाल शेष है।

प्रदेश में १ लाख ६७ हजार ८६६ एकड़ भूदान भूमि ५६, ८४५ भूमिहीन परिवारों में बांटी गई है। आदाताओं में सवर्ण, हरिजन तथा आदिवासी तीनों वर्ग सम्मिलित है। यह भूदान-वितरण प्रदेश के ६, ७३८ गांवों में हुआ है। ३३, ४८६ भूदान कृषकों (आदाताओं) को पक्के पट्टे दिये जा चुके हैं। आदाताओं को सहकारी समितियों से कर्ज भी मिलता है।

श्री शर्मा ने यह भी बताया कि लगभग ४०० भूदान कृषकों को भूमि से बेदखल किये जाने के प्रकरण सामने आये हैं। इसे रोकने के लिए बोर्ड अधिनियम १९६८ की धारा ३५ के अन्तर्गत कार्यवाही करता है। कतिपय दाताओं द्वारा दान वापस लेने के प्रकरण भी कोर्ट में चल रहे हैं।

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु०, एक प्रति ३० पैसे), विदेश १०. रु० या ३२ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष चोधी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १७ दिसम्बर, '७३

मध्यप्रदेश में दादाभाई नाईक की पदयात्रा

अपराधी, परिवार और कानून × सिवनी के बाद कस्तूरबाग्राम में बहस × अहिंसा का पुजारी हर बिन्दु पर चौकन्ना रहे × अंग्रेजियत को परास्त करने वाला समाजवाद × सर्व सेवा संघ उपवास-दान पर चलेगा × मतदाता, धोखा देने वालों को धोखा दें

भूदान-यज्ञ

१७ दिसम्बर, '७३

वर्ष २० अंक १२

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

अपराधी, परिवार और कानून

[जे० पी० का यह वक्तव्य बिहार के नक्सलवादी नेता सत्यनारायण सिंह के सम्बन्ध में है। सत्यनारायण सिंह भोजपुर जिलान्तर्गत धमार गांव के रहने वाले हैं। गत पन्द्रह अक्टूबर को बिहार और बंगाल की पुलिस ने धमार स्थित उनके पैतृक घर पर छापा मारा। सत्यनारायण सिंह मिले नहीं। तब पुलिस ने उनके भाइयों और दूसरे सम्बन्धियों को सम्पत्ति जब्त करने की धमकी दी। इसके पहले भी पुलिस ने उनके घर पर छापा मारा था। इस प्रकार वह उनके भाइयों और सम्बन्धियों को एक अर्से से परेशान करने लगी है।]

समाचार पत्रों से यह जानकर मुझे दुःख हुआ है कि बिहार और बंगाल की खुफि पुलिस ने संयुक्त रूप से भारतीय साम्यवादी दल (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) के प्रभावशाली गु के महामंत्री सत्यनारायण सिंह के पैतृक घर पर छापा मारा है और श्री सिंह का पता न मिलने पर उनके भाइयों तथा अन्य सम्बन्धियों की सम्पत्ति जब्त करने की धमकी दी है सत्यनारायण सिंह एक लम्बी अवधि से फरार बताये जाते हैं, पुलिस के कथनानुसार उन प हिंसक अपराधों में शामिल होने के आरोप हैं।

अगर इन समाचारों में कोई सच्चाई है तो यह विषय बिहार और पश्चिम बंगाल की सरकारों के लिए गंभीरतापूर्वक ध्यान देने योग्य है। किसी अभियुक्त या प्रमाणभूत अपराधी के भी परिवार को दण्डित करना बहुत अनुचित और हमारे संविधान के बुनियादी सिद्धान्तों तथा देश के कानूनों के विरुद्ध है। जहां तक मैं समझता हूं, सत्यनारायण सिंह का उनकी पैतृक सम्पत्ति में कोई हिस्सा नहीं है, क्योंकि उन्होंने अपना हिस्सा, जो किसी भी स्थिति में बहुत थोड़ा ही था, अपनी पत्नी के नाम से लिख दिया है। उन्होंने चाहे जो अपराध किये हों, उनके लिए न तो उनकी पत्नी और न उनके भाई अथवा परिवार के अन्य कोई सदस्य जिम्मेवार ठहराये जा सकते हैं। इसलिए मैं आशावान हूं कि भविष्य में दोनों सरकारें सत्यनारायण सिंह के सम्बन्धियों को परेशान करने से बाज आयेंगी।

मेरे कथन का कहीं कोई गलत अर्थ न लगा लिया जाये, इसलिए मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं सत्यनारायण सिंह तथा उनके गुट की हिंसक विचारधारा और कार्यक्रम का समर्थक नहीं हूं; फिर भी उनके प्रति मेरे दिल में थोड़ी सहानुभूति है। इसके दो कारण हैं। एक तो यह कि निरर्थक व्यक्तिगत हत्या एवं राष्ट्रीय कीर्ति-स्तम्भों को विद्रूपित करने का जो उन्मादपूर्ण मार्ग स्वर्गीय चारू मजूमदार का रहा है, उससे नक्सलवादी आन्दोलन के एक बड़े भाग को विरत करने का बहुत कुछ श्रेय सत्यनारायण सिंह तथा उनके प्रमुख साथियों को है। दूसरा कारण यह है कि सत्यनारायण सिंह ने चारू मजूमदार के इस बचकाना नारे का खंडन किया है कि 'अध्यक्ष माओ हमारे भी अध्यक्ष हैं', जिसकी कुरूपता का साक्ष्य आज भी कलकत्ते की दीवारें दे रही हैं। साथ ही उन्होंने साहसपूर्वक यह कहा है कि यद्यपि माओ भारत जैसे कृषि-प्रधान देश के लिए आज भी सर्वाधिक प्रासंगिक हैं, परन्तु वे भारतीय (साम्यवादी) दल के या भारतीय संघ के अध्यक्ष नहीं हो सकते। सूचनानुसार हिन्दी 'जनता' की एक भेंट में उन्होंने यह बताया कि चीनी नेता ने स्वयं कभी ऐसे विचार को प्रस्तुत या प्रोत्साहित नहीं किया। शेष मामलों में, साम्यवादी दल (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) उस पुराने हिंसक सामाजिक क्रांति के मार्ग का अब भी अनुसरण करता है, जिसका अनुगमन सभी प्रकार के भारतीय साम्यवादी करते हैं, उनके बीच यदि मतभेद हैं तो इन प्रश्नों पर हैं कि उस क्रांति के लिए व्यूहरचना और मुहूर्त क्या होगा, उसमें औद्योगिक श्रमिकों की तथा भूमिहीन मजदूर सहित गरीब किसानों की सापेक्ष क्रांतिकारी भूमिकाएं क्या होंगी, रूस एवं चीन के प्रति वफादारी कहां तक होगी और अपने क्रांतिकारी लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में संसदीय संस्थाओं की उपयोगिता के प्रति उनका रुख क्या होगा ?

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सिवनी के बाद कस्तूरबाग्राम में बहस

चार और पांच दिसम्बर को कस्तूरबाग्राम, इन्दौर, मे तेरहवां मध्यप्रदेश सर्वोदय सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में वह सब हुआ जो नहीं भी हो सकता था और वह सब नहीं हुआ जो अपेक्षित था। विगत वर्षों हुए सर्वोदय सम्मेलनों को ध्यान मे रखकर इस सम्मेलन के बारे मे अगर सोचा जाए तो देश मे सर्वोदय आन्दोलन के कार्य के बारे में इस सम्मेलन मे सामान्य चर्चा भी नही के बराबर हुई। सम्मेलन मे प्रदेश भर से कोई सौ लोग एकत्र हुए और दो दिनों के दौरान चार बैठकें हुईं।

मध्यप्रदेश का यह सर्वोदय सम्मेलन कई मामलों मे विशेष था। दो, तीन व चार दिसम्बर को सर्वोदय सम्मेलन में भाग लेने वाले साथियों ने प्रदेश के सेवकों मे आपसी भाईचारा बढ़ाने की नियत से बनाई गई संस्था 'मध्यप्रदेश सेवक संघ' के वार्षिक 'मित्र-मिलन' मे भाग लिया और उसकी चार बैठकों मे आपस के बारे मतभेद और मनभेद भुलाकर भाई चारे से काम करने की सम्भावनाओं पर विचार किया, पुण्य सलिला मुक्ति श्री प्रकाशी अमार सिंह से सत्सम्बन्ध के प्रेरणादायी उद्बोधन प्राप्त किये। मित्र-मिलन और सर्वोदय सम्मेलन के साथ एक प्रेरणादायी प्रसंग भी इस अवसर पर जुड़ा था, वह था श्री दादाभाई नाईक और साथियों की मध्यप्रदेश-स्वराज्य पदयात्रा की पूर्णाहुति। ५ दिसम्बर को दादाभाई ने अपने साथियों के साथ ४३० दिन की यात्रा के बाद इन्दौर मे कस्तूरबाग्राम आश्रम में प्रवेश किया। राजस्थान के झालावाड़ और उत्तर प्रदेश के झांसी को मिलाकर प्रदेश के ४५ जिलों मे पदयात्रा की।

मित्र-मिलन के औपचारिक भाषणों के बाद सर्वोदय सम्मेलन की सूनी चर्चा जिस एक खास मुद्दे पर केन्द्रित रही वह थी प्रदेश-भर के लिए एक सही नेतृत्व की तलाश। राजनीतिक दलों और सर्वोदय के अलग और दूसरी संस्थाओं में आम तौर से नेतृत्व को लेकर इतनी परेशानी नही होती, क्योंकि एक स्थापित परम्पराओं का सिलसिला वहां मौजूद रहता है। इन स्थानों पर परेशानी वैचारिक मतभेदों की रहती है। सर्वोदय में अन्दर व बाहर सभी जगह सर्व सम्मति और या सर्वानुमति पर जोर दिया जाता है इस लिए नेतृत्व का संकट उभर कर दीखता है, कई बार इतना उभरता है कि और मसले छूट जाते है और यही एक मुख्य हो जाता है। मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल का बारहवां

दादाभाई नाईक

सम्मेलन सिवनी मे हुआ था। प्रदेश में सर्वोदय-कार्य के नेतृत्व के सर्वसम्मति को लेकर वहां कुछ मन खट्टे हुए थे और उसकी याद इस सम्मेलन तक भी लोगों को थी। धन्यवाद देना होगा कि इस बार सिवनी के किस्सा कलाप दुहराये नहीं गये और आत्मीयता के वातावरण में सर्व सम्मति से नेतृत्व की दिशा में पहल की गई। हालांकि इस अवसर पर जितने भी लिखे-अनलिखे वक्तव्य दिये गये उनमें प्रदेश में आंदोलन को लगातार कम होती ऊर्जा के प्रति असन्तोषका स्वर ही मुखर था।

सम्मेलन के पहले दिन प्रदेश सर्वोदय मण्डल के मंत्री श्री इन्द्रलाल मिश्र ने पिछले डेढ़-दो वर्षों मे हुए कार्य की जानकारी दी। श्री मिश्र ने अपनी रपट मे बागियों के समर्पण को प्रदेश के सर्वोदय कार्य की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया। अखिल भारतीय स्तर पर सर्व-सेवा संघ की रपटों में भी एक से अधिक बार बागी समर्पण को एक बड़ी उपलब्धि के रूप मे गिना जाता रहा है। देश के सर्वोदय कार्यकर्ता भी आम जनता से बातचीत मे समर्पण की घटना को अपनी उपलब्धि के रूप मे गिनाना नही भूलते। इसलिए मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल अपनी रपट में इसका विस्तार से उल्लेख करे तो कोई हर्ज नही। पर समर्पण का कार्य बागियों के समर्पण से पूरा नहीं होता। बागियों के परिवार और बागियों से पीड़ित परिवारों के पुनर्वास का कार्य, और बच्चों कि उचित शिक्षा-दीक्षा का सवाल और चम्बल-बुन्देलखण्ड मे स्थायी शान्ति की दिशा मे प्रयास ऐसे महत्वपूर्ण कार्य है जिनके लिए उचित योजना और कार्यक्रम का समुचित उल्लेख और उसके क्रियान्वयन की आवश्यकता स्पष्ट महसूस की जा सकती है, पर न तो रपट मे इस बारे मे कोई उल्लेख है न सम्मेलन मे ही कोई विशेष चर्चा इस पर हुई। सम्मेलन मे बहुत थोड़ी चर्चा जयप्रकाश जी द्वारा लिखे गये इस पत्र पर हुई कि चम्बल घाटी मे स्थायी शान्ति की स्थापना का कार्य प्रदेश मण्डल उठाये और जेलों मे सजा पा रहे बागियों के नव संस्कार का कार्य प्रदेश गांधी स्मारक निधि। पर इस बारे मे विस्तार से कोई चर्चा नहीं हुई और न ही ठोस कार्यक्रम सुझाये गये।

सिवनी के १२ वें सर्वोदय सम्मेलन की समाप्ति के बाद ही प्रदेश के ३२ कार्यकर्ता सहरसा के राष्ट्रीय अभियान मे सम्मिलित हुए थे और राघोपुर, बसन्तपुर, मुरलीगंज, त्रिवेणीगंज और सिमरी प्रखण्डों में कुछ समय कार्य किया था। दूसरे राष्ट्रीय अभियान मे भी प्रदेश के दस साथियों द्वारा लगाई गई

शक्ति का रपट मे उल्लेख है। सर्वोदय सम्मेलन एक उचित अवसर था जब सहरसा के अन्तिम अभियान के बारे मे चर्चा की जाती और विनोबा द्वारा दिये गये आवाहन को ध्यान में रखकर कार्यकर्त्ताओ की माग की जाती।

पिछले दो वर्षों मे ग्रामस्वराज्य के मुख्य कार्य के सन्दर्भ मे केवल दो अभियानों का रपट मे उल्लेख है। एक अभियान १० से १८ नवम्बर १९७२ तक गुना जिला ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य समिति के तत्त्वावधान गुना जिलेमे जिले के बामोरी प्रखण्ड मे हुआ था और सीधी के रामपुर नैकिन प्रखण्ड मे जिला समिति सीधी तथा प्रदेश मण्डल के संयुक्त तत्वावधान में १८ अप्रैल ७३ से ३० अप्रैल ७३ तक प्रान्तीय ग्रामदान प्राप्ति पुष्टि का दूसरा अभियान आयोजित किया गया था। रपट के अनुसार पहले अभियान मे ३९ नये ग्रामदान प्राप्त हुए और १९२ बीघा भूमि भूदान मे प्राप्त हुई। १४ बीघा भूमि भूमिहीनो मे बाँट दी गई। १४ गावो मे तदर्थ ग्राम सभाओ का गठन हुआ। सीधी अभियान में ३३ नये ग्रामदान मिले। १२७ एकड भूमि भूदान मे मिली। २६ गावो मे तदर्थ ग्रामसभाओं का गठन हुआ।

गुना के अभियान को एक वर्ष से ऊपर हो गया है व सीधी अभियान को आठ महीने। सीधी से ससद सदस्य श्री रणबहादुर सिंह, जिन्होंने अभियान मे महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था, के अनुसार जनवरी मे एक और अभियान आयोजित होगा। पूरे देश मे ग्रामस्वराज्य आन्दोलन की तीव्रता और प्रदेश के कमजोर योगदान के सन्दर्भ मे यह महत्त्वपूर्ण अवसर था जब कुछ चर्चा नये सघन क्षेत्र लेकर लगने की होती, कुछ चर्चा इस बात पर होती कि गुना अभियान मे प्राप्त पूरी भूमि का वितरण शीघ्र सम्पन्न हो और बनी हुई ग्रामसभाए सक्रिय हो, प्राप्त ग्रामदानो मे पुष्टि का कार्य कैसे चले आदि, आदि। इस बात पर भी चर्चा आवश्यक थी कि अगर जनवरी (एक माह बाद ही) अभियान होना है तो उसकी स्ट्रैटेजी क्या रहेगी। सम्मेलन मे पन्द्रह मिनट इस विषय पर चर्चा हुई कि नये सघन क्षेत्र कौन से लिये जाए। जो कार्यकर्त्ता जहा बैठा है उसने वही का नाम सुझा दिया।

श्री राधेलाल भूते ने सुझाया कि प्रदेश मे चार-पाँच क्षेत्र हो और उनमे सबकी शक्ति लगे। श्री शकर लाल मण्डलोई इन्दौर जिले की पालिया तहसील मे शराब बन्दी के लिए कार्य कर रहे हैं। उन्होने इन्दौर को सघन क्षेत्र बनाने की बात कही। इसी प्रकार एक सुझाव मन्दसौर को सघन क्षेत्र बनाने का आया। श्री सिन्धूजी ने सुझाव दिया कि सीहोर जिले की इच्छावर तहसील मे सबकी शक्ति लगे। साना भी सघन क्षेत्र हेतु सुझाया गया। पर शीघ्र ही सारी चर्चा सघन क्षेत्रो से हटकर शराबबन्दी पर आ गयी।

प्रदेश मे सर्वोदय कार्य की दृष्टि से वर्ष की सबसे बडी घटना श्री दादाभाई नाईक की ग्रामस्वराज्य पदयात्रा है। लगभग सोलह महीने तक वे अपने सहयोगियों के साथ घूमे और लगभग १४०० सभाओ मे प्रदेश के लाखो लोगो से जीवित सम्पर्क मे आये। सर्वोदय आन्दोलन मे गहरी पैठ होने के कारण वे इस बात को भली-भाँति समझ सकते हैं कि प्रदेश की हालत क्या है और किन क्षेत्रो मे किस कार्य के लिये अनुकूलताएं हैं। दादाभाई ने यात्रा के बाद प्रदेश के सन्दर्भ मे जिन तथ्यो को उजागर किया है वे काफी रोचक हैं।

एक, जनता मे आज भी जागृति नहीं, वह अपने को इस देश का मालिक नहीं मानती बल्कि शासित प्रजा ही मानती है।

दो, वह असगठित, भीरु, अपढ, अभावग्रस्त है। नेता शासन मुखापेक्षी हैं।

तीन, शिक्षित समाज जनता से सहानुभूति रखता है। पर वह श्रीमानो की ओर दृष्टि रखे है। परिश्रम से बचना चाहता है। परोपजीवी है।

चार, नेता तथा अधिकारीगण जनतंत्र की जय करते हैं पर राजतंत्र ही चलाते हैं। जो ऊपर से नीचे को देता है उनके नाम पर सब कुछ करता है।

पाँच, राजा नही तो राजनीति कैसे? जनतन्त्र मे लोकनीति ही चाहिए। राजनीति भेदपरक शासन है। जननीति ऐक्यमूलक स्वाभिक्रमी होती है।

छह, विशाल बढती आबादी और सुखोन्मुख सुविधा की दृष्टि, श्रम के कारण महगाई, अभाव, झगडे, रिश्वत, कालाबाजार, गलत नापतौल, पक्षपात पनपना है। स्वदेशी तथा पराक्रम से अर्जन की प्रणाली हो।

सात, खेती के साथ ग्रामोद्योग आवश्यक हैं। ग्रामोद्योग रूढ तरीके पर नही बल्कि आधुनिक विज्ञान तथा इन्टरमीजिएट टेक्नोंलॉजी के यन्त्रों द्वारा विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त पर खडे हो। अम्बर चर्खा ग्राम सार्वत्रिक वस्त्र स्वावलम्बन के लिए अनिवार्य है।

आठ, अन्याय मार्जन के लिए अंतिम-रूप से सत्याग्रह आवश्यक है उसी से जनता मे हिम्मत आयेगी। वह सगठित होगी। उसके पूर्व रचनात्मक कार्य तथा शिक्षण हो। शिक्षण जीवन से सम्बद्ध तथा कृषि उद्योग से सम्बन्धित हो।

नौ, जीवन के वर्ष दो वर्ष देने वाले, नियमित घंटे प्रतिदिन देने वाले निरपेक्ष युवा व वानप्रस्थी चाहिए।

दस, जनाधार, सर्वोदय पात्र, खलिहान मे अन्न वसूली, सम्पत्तिदान, परिश्रम [illegible] रा २५ ग्रामो का क्षेत्र बनाकर रहने वाले कार्यकर्ता तथा प्रशिक्षण व्यवस्था हो।

मध्यप्रदेश देश का सबसे बडा राज्य है। प्रदेश के ४५ जिलो मे इतनी विविधता है कि एक बड़े राष्ट्र के समान समस्याए उसमे मौजूद हैं। सर्वोदय कार्य के लिये सामाजिक परिस्थितियां जितनी अनुकूल मध्यप्रदेश मे है और जितना आर्थिक सहयोग प्राप्त हो सकता है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। तमाम मतभेदों,

(शेष पृष्ठ १४ पर)

गाव मे फैल जाएं और अपने ही विचार और व्यक्तित्व के आधार पर खड़े रहकर समग्र ग्राम सेवा द्वारा स्वराज्य की बुनियाद डालें। उन्होंने तत्काल एक सन्धिकालीन व्यवस्था का भी सुझाव दिया। फिर कैबिनेट मिशन का आगमन, आजादी की प्राप्ति, साम्प्रदायिक दंगे आदि मे वह सम्पूर्ण रूप से फँसे रहे और उसी परिस्थिति मे वे चले भी गये। फलस्वरूप हम लोग समुचित मार्गदर्शन के अभाव में नया मार्ग पकड़ नही पाये, पुरानी लीक से यानी संस्थावादी तरीके से ही चलते रहे। गांधीजी ने जिस तरह चर्खा संघ को शून्य बनाने के लिए कहा था उसी तरह चलते-चलते उन्होंने कांग्रेस को भी राजनैतिक दल के रूप मे विसर्जित कर 'लोक सेवक संघ' के रूप मे परिणत करने के लिए कहा था और उसकी व्यवस्था के लिए कुछ प्रारूप के संकेत भी दिये थे। वह संस्था का रूप न होकर संगठन का रूप होता। लेकिन वे इस दस्तावेज को रूप दिये बिना ही चले गये।

एक अंधकार के बाद

गांधीजी के निधन से मानो देश में अंधकार ही फैल गया। नेता लोग अंग्रेजी राज्य के छोड़े तंत्र के संचालन के अलावा बाकी हर विषय मे शून्यता का अनुभव कर रहे थे। वे समझ नही पा रहे थे कि राज्य के बाहर भी कुछ किया जा सकता है। अतएव देश के तमाम कार्यकर्ताओं को बुलाकर गांधी जी के छोड़े हुए काम को किस तरह आगे बढ़ाया जाय इस पर सोचने के लिए १९४८ में सेवाग्राम में एक रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया जहां सभी नेता उपस्थित थे। उससे पूर्व विनोबा एकान्त साधना मे लगे हुए थे। लेकिन उस सम्मेलन मे उन्होंने महत्त्वपूर्ण पार्ट अदा किया। उन्होंने कहा कि सर्वोदय का विचार अहिंसा का विचार है यह विचार स्वतः स्फूर्त होना चाहिए। उसकी प्रक्रिया का संकेत करते हुए उन्होंने कहा कि इसके लिए किसी किस्म की संस्था नही बननी चाहिए और कोई वैधानिक संगठन भी नही। देश भर में फैले हुए सर्वोदय सेवक अपने-अपने क्षेत्रो में विचार का फैलाव करते हुए और जनता को तदनुसार प्रवृत्ति चलाने के लिए प्रेरित करते हुए समय-समय पर परस्पर मिलें और चर्चा करें। चर्चा का निष्कर्ष लेकर अपने क्षेत्र मे लौट कर अपने-अपने ढग से पुरुषार्थ करते रहें। प्राचीन काल के कुम्भ मेला का उदाहरण देते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि ऐसे सेवक साल मे एक बार कही मिलकर व्यापक स्तर पर चर्चा करें ताकि एक दूसरे के विचार और चर्चा के अनुभव से लाभान्वित हो सकें।

सर्वोदय समाज का सेवक कौन होगा? इस प्रश्न के उत्तर मे उन्होंने कहा एक रजिस्टर होगा और कोई आदमी सम्मेलन मे आमत्रण के रूप मे रजिस्टर को संभालेगा और सम्मेलन के लिए निमत्रण भेजेगा। जो कोई सेवक नाम दर्ज कराने की इच्छा जाहिर करे उसका नाम वह रजिस्टर मे दर्ज करेगा। उन्होंने उसको सर्वोदय समाज की सज्ञा दी और कहा कि यह कोई सगठन नही होगा बल्कि एक बिरादरी के रूप मे ढीली जमात रहेगी।

उस सम्मेलन में उपस्थित नेता और कार्यकर्ता को मानो कोई चाद हाथ लग गया। अत्यन्त उत्साह और सर्व सम्मति के साथ उस प्रस्ताव को स्वीकार किया। उस कारण पूरे वातावरण मे एक उत्साह की लहर दिखाई देने लगी। जहां कही भी दो-चार दस लोग ग्रुप मे बैठते थे वे प्रस्ताव के अनुकूल चर्चा करते थे और अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कहते थे कि देश का सौभाग्य है कि ऐसा मार्गदर्शन हुआ और इस अन्धकार मे एक आदमी निकल आया।

इतिहास की अपूर्व घटना

सम्मेलन के समारोप के बाद हिन्दुस्तानी तालीमी संघ के अध्यक्ष डा० जाकिर हुसैन जब आशादेवी आर्यनायकम के घर पर पहुंचे और वहाँ के लोगों के साथ बैठें तो बैठते ही, उनके मुह से निकला आज इतिहास की एक अद्भुत और अपूर्व घटना घट गयी। इतिहास का यह प्रथम अवसर है कि किसी युग पुरुष के चले जाने के बाद उनके अनुयायियो ने कोई संगठन नही बनाया। बल्कि विचार पूर्वक संगठन के विरोध मे ही अपनी भावना प्रकट की।

यह तय हुआ और देश के बड़े राजनैतिक नेता अपने-अपने स्थानो मे वापस चले गये। तब रचनात्मक कार्य का नेतृ वर्ग उक्त विचार के कार्यान्वयन की पद्धति और तरीके की खोज मे चर्चा के लिए बैठा। स्पष्ट है कि उस समय आवश्यकता यह थी कि जिस नये विचार को स्वीकार किया गया था उस दिशा मे शास्त्र विकसित करने के लिए नये ढग से खोजना शुरू होता और उसके प्रयोग के लिए नयी पद्धति अपनायी जाती। लेकिन नेताओ ने निर्णय किया कि इस समाज की क्रियाशीलता के लिए सर्व सेवा सघ के नाम से एक संगठन बनाया जाय जिसका स्वरूप गाधीजी द्वारा प्रवर्तित भिन्न-भिन्न रचनात्मक सस्थाओ के प्रतिनिधियो द्वारा बनायी गयी एक यूनियन का हो।

इस प्रकार सर्वोदय समाज का क्रान्तिकारी विचार पीछे पड गया और रचनात्मक कार्यकर्ता परम्परागत सस्थावादी पद्धति से सर्व सेवा सघ नामक एक संस्था बना कर बैठ गये। गाधीजी द्वारा प्रवर्तित हर प्रवृत्ति के लिए अलग-अलग सस्थाएं मौजूद थीं तो स्पष्ट है कि सर्व सेवा सघ के पास चर्चा के सिवा कोई निश्चित कार्यक्रम नही था। अतः वह एक प्रकार से एक निष्क्रिय सस्था के रूप मे कायम रहा।

भूदान गंगा का चश्मा

१९५१ मे पोचमपल्ली से जब भूदान गंगा का चश्मा फूटा, तो मौजूदा भिन्न-भिन्न रचनात्मक प्रवृत्तियो से भिन्न देश मे एक नया कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। लेकिन शुरू-शुरू में उसे विनोबाजी की व्यक्तिगत प्रवृत्ति मानकर सर्व सेवा संघ उस आन्दोलन को अपने आन्दोलन के रूप मे ग्रहण नहीं कर सका। विनोबा जी ने अपनी निजी प्रेरणा से तथा भिन्न-भिन्न सस्था और कार्यकर्ताओ की मदद से भूदान यात्रा शुरू कर दी। बाद मे १९५२ के सर्वोदय सम्मेलन, सेवापुरी मे जब इस आन्दोलन की सभावना विराट रूप से परिलक्षित हो गयी तो सर्व सेवा सघ ने इसे अपने आधिकारिक कार्यक्रम के रूप मे स्वीकार कर लिया। उसी सम्मेलन से सर्वोदय सम्मेलन भी व्यवहारतः सर्व सेवा सघ का सम्मेलन बनता चला गया, और सर्वोदय समाज के बुनियादी विचार पर ग्रहण लगता गया। सम्मेलन के ऊपर का ढांचा आज वैसा ही बना हुआ है जैसा प्रारंभ

→

मे परिकल्पित किया गया था। सर्वोदय समाज का आज भी एक आमंत्रक है और औपचारिक रूप से उसी पर सम्मेलन का भार है। लेकिन सम्मेलन का सारा काम काज सर्व सेवा संघ द्वारा ही संचालित होता है। उसका दफ्तर भी उठकर सम्मेलन भूमि पर चला आता है। मेरा कहने का अर्थ यह है कि सर्वोदय भी क्रमशः सर्व सेवा संघ की एक प्रवृत्ति बनकर रह गयी। जब तक सर्व सेवा संघ ने भूदान के काम को अपना नहीं लिया था तब तक विनोबाजी जहां जाते थे वहां की भिन्न-भिन्न संस्थाएं, पार्टियां तथा व्यक्तिगत मित्र अपनी तरफ से उस काम को उठाते थे। लेकिन जब से आन्दोलन सर्व सेवा संघ के संचालन में आ गया तब से भिन्न संस्थाएं तथा दूसरे व्यक्तिगत मित्र भी यह मानने लगे कि यह काम सर्व सेवा संघ का ही है। जिनको यह काम पसन्द था और कुछ मदद करना चाहते थे वे वह मदद सर्व सेवा संघ के संयोजकत्व में ही करने थे।

विनोबा की कोशिश चलती रही

यह सब हुआ। लेकिन विनोबा अपने आन्दोलन के सिलसिले में हमेशा हमारे काम को उसी दिशा में ले जाने के लिए प्रयास करते रहे, जिस दिशा में उन्होंने प्रथम रचनात्मक सम्मेलन के अवसर पर मार्गदर्शन किया था। पहले उन्होंने गांधीजी द्वारा परिकल्पित बिखरी हुई संस्थाओं को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया और उसके लिए सभी रचनात्मक संस्थाओं को सर्व सेवा संघ में विलीन होने का सुझाव दिया, ताकि सब लोग एक साथ व एक जुट होकर भिन्न-भिन्न शक्तियों को समग्र रूप में तथा आन्दोलन के समभाव में बना सकें। तुम लोग कह सकते हो कि विनोबा जी का यह प्रयास उनके विचार के साथ मेल नहीं खाता था। उसमें विसंगति दिखायी देती होगी। लेकिन मैं मानता हूं कि उनका प्रयास अत्यन्त कुशल नेतृत्व का परिचायक था। हर संस्था दीर्घ काल तक एक तरफा काम करते-करते तेजविहीन हो गयी थी। वे सब भिन्न-भिन्न नेतृत्व में भिन्न-भिन्न लोगों की टोलियों के माध्यम से चलती थी। अगर सारी संस्थाओं को एक निश्चित दिशा में मोड़ना था तो यह प्राथमिक आवश्यकता थी कि भिन्न-भिन्न सभी नेतृत्व और टोलियां एक साथ होकर सम्मिलित चिंतन में लगें। यह तभी संभव हो सकता था जब विनोबा इस सम्मिलित टोली को किसी निश्चित दिशा में मुड़ने के लिए प्रेरणा देते। धीरे-धीरे सभी संस्थाएं सर्व सेवा संघ में विलीन हो गयी और संघ एक समग्र संस्था बन गयी।

इतना काम पूरा करके जब उन्होंने देखा कि संघ की टोली धीरे-धीरे कुछ ठोस शक्ल पर आ गयी तब संघ को भाई धारा के रूप में अपने को परिवर्तित करने की दिशा में प्रेरणा देना शुरू कर दिया।

पहला संकेत

सन् १९५५ में काञ्चीपुरम् सम्मेलन के अवसर पर ही उन्होंने इस दिशा में मोड़ने के लिए प्रथम संकेत किया। वे शुरू से ही अपने इस विचार को रह-रहकर दोहराते रहे कि बनी बनाई संस्था द्वारा क्रान्ति नहीं हो सकती है। काञ्चीपुरम् में उन्होंने हम सबके सामने उस विचार को स्पष्ट रूप से रख दिया। उन्होंने कहा था कि क्यों न हम क्रांति का एक नाटक कर लें और इस संस्थात्मक संगठन को बन्द कर दें। हम में से दो चार लोगों को यह विचार पसन्द आया। लेकिन पूरी जमात को यह पसन्द नहीं था। इसलिए उस समय सर्व सेवा संघ उस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सका। हमने स्वीकार नहीं किया।

लेकिन विनोबा इस बात का बीच-बीच में जिक्र करते हुए हमें तैयार करने का प्रयास करते रहे। और १९५७ के पलनी सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति की जो बैठक हुई थी उसमें अन्तिम दिन फिर से स्पष्ट रूप से तंत्र मुक्ति और निधि मुक्ति का प्रस्ताव रख दिया। विनोबा जी के इस प्रस्ताव को सुनकर भाई सिद्धराज के दिल में एकदम उसका असर हुआ और उन्होंने उठकर प्रस्ताव किया कि इस प्रस्ताव पर विचार करने के लिए बैठक की अवधि एक दिन बढ़ाई जाये। सभी उपस्थित मित्रों ने अत्यन्त उत्साह के साथ भाई सिद्धराज के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया तथा एक दिन अधिक रुकने का निर्णय लिया। रात को विनोबा जी की अनुपस्थिति में उनके उस प्रस्ताव पर विचार करने के लिए अनौपचारिक रूप में सब एकत्रित हुए। उस बैठक में एक अजीब फिजा बनी हुई थी। सब लोग इतने अधिक उत्साहित थे कि एक साथ उस पर अपना अभिमत जाहिर करने लगे और काफी देर तक उसी लहजे में चर्चा करते रहे। सर्वप्रथम तंत्र मुक्ति का अर्थ क्या है इसी पर सब लोग जोर-जोर से अभिप्राय प्रकट करने लगे। लेकिन वे सारे उत्साह और जोश के बावजूद किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाते थे। रात बहुत अधिक बीत गयी तो शंकरराव जी ने कहा कि हम सब अन्धे लोग हाथी का बयान करने में लगे हुए हैं। इसलिए तत्काल इस चर्चा को स्थगित कर दिया जाय और सुबह हाथी के पास पहुंच कर पूछा जाये कि वे अपने प्रस्ताव का क्या अर्थ लगाते हैं। दूसरे दिन विनोबा जी ने अपना विचार बताया कि अपने और अपने मातहत सभी तंत्र विसर्जित करें, सब लोग अपने-अपने स्थान पर काम करें और सर्वोदय सम्मेलन में आकर चर्चा द्वारा विचार की सफाई कर लें और लौट कर क्षेत्र में काम करें। यह पूछने पर कि बीच में विचारों के आदान-प्रदान के लिए कौन सी एजेन्सी रहेगी तो उन्होंने कहा कि प्रकाशन विभाग स्वतंत्र यूनिट के रूप में रहे। भूदान यज्ञ चले और उसी के जरिये बीच-बीच में विचारों का आदान-प्रदान होता रहे। प्रबन्ध समिति के सदस्यों ने सर्व सम्मति से उस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

विचार बनाम संस्कार

मनुष्य बड़ा अद्भुत प्राणी होता है। अत्यन्त प्रगतिशील मनुष्य भी विचार और संस्कार के द्वन्द्व का शिकार हो जाता है। विचार प्रगतिशील और क्रांतिकारी होते हुए भी उसका संस्कार किसी न किसी रूप में गहरे पैमाने पर सुरक्षित रह ही जाता है। इस कारण उसका मानस विचार और संस्कार के संघर्ष में उलझ जाता है और प्रायः संस्कार विचार पर हावी हो जाता है। बहुत थोड़े अपवादी व्यक्ति ऐसे होते हैं जो विचार से रूढ़ संस्कार को दबाकर उसका विघटन कर पाते हैं। हम लोग भी इसी मन स्थिति के शिकार हो गये और आन्दोलन को नयी →

भूमिका में अधिष्ठित नहीं कर सके। हम लोग परम्परागत संस्कार के अधीन सर्व सेवा संघ के संमेलन में ही काम करते रहे। इतना अवश्य किया कि तंत्र मुक्ति के अमल में भूदान-यज्ञ समितियों को विघटित कर दिया और निधि मुक्ति के कार्यान्वयन के लिए गांधी स्मारक निधि के अनुदान को अस्वीकृत कर दिया। इस प्रकार अधूरे अमल से आन्दोलन को लाभ के बजाय हानि ही हुई। भूदान समितियों को विघटित कर हमने तमाम स्थानीय और छोटे कार्यकर्ताओं को मुक्त जरूर कर दिया लेकिन हम लोगो के निधियुक्त बने रहने के कारण न निधि मुक्ति को प्रेरणा दे सके और न सामान्य कार्यकर्ताओं के गुजारे के लिए निधि-मुक्त-पद्धति का मार्गदर्शन ही कर सके। हम उन्हें मुक्त कर या तो उदासीन हो गये या फिर उन्हें गाधी निधि आदि विभिन्न संस्थाओं में शामिल करके निधि युक्त ही बना दिया और जिन्हें दूसरी संस्थाओं ने स्वीकार नहीं किया, उन्हें असहाय बनाकर मैदान में छोड़ दिया। दुर्भाग्य से ऐसे असहाय कार्यकर्ताओं की संख्या बहुमत में ही थी, फलस्वरूप हमारी शक्ति बिखर गयी और हम कमजोर हो गये। हमें न दीन मिला न दुनिया मिली। हम न तंत्र मुक्त बिरादरी बना सके और न संस्थागत मजबूती को ही रख सके।

विनोबा का दूसरा प्रयास

बाद में अजमेर सम्मेलन के अवसर पर विनोबा ने हमको समझाने के लिए एक बार फिर कोशिश की थी और सर्व सेवा संघ को विघटित करने की सलाह दी थी। लेकिन इस बार किसी ने उसे स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप जब उन्होंने देख लिया कि हमारी तैयारी बिरादरी मूलक सर्वोदय समाज बनाने की नहीं है तब उन्होंने उस बात को कहना छोड़ दिया तथा अपनी व्यक्तिगत प्रेरणा से सरकारी और गैर सरकारी, हर प्रकार की संस्थाओं और व्यक्तियों से काम लेने की परिपाटी को डाला।

इस तरह हम परिपूर्ण संस्थागत संचालन पद्धति से अब तक चलते रहे और इसी पद्धति से एक बनवास को झेल कर एक नया तूफान भी खड़ा कर लिया। लेकिन जैसा कि मैं हमेशा कहता हूं यह सब करके हमने केवल देश और दुनिया का ध्यानाकर्षण ही किया। ग्राम स्वराज्य के आरोहण में कोई विशेष कदम नहीं बढ़ा सके हैं। यद्यपि ध्यानाकर्षण भी किसी नये क्रान्ति विचार के अधिष्ठान में बड़ी निष्पत्ति होती है। अब ध्यानाकर्षण का अध्याय समाप्त हुआ, तो समय आ गया है कि हमने २५ साल पूर्व जिस कल्पना को लेकर सर्वोदय समाज बनाने की बात सोची थी और जिस आधार पर इतने दिनों तक एक निश्चित दिशा में तथा तीव्र और व्यवस्थित कदम से इतना आगे बढ़े हैं, उस कल्पना को साकार करने की दिशा में हमें तीव्रता के साथ सोचना चाहिए। यही कारण है कि पिछले मार्च, अप्रैल के अभियान के दिनों में मैंने तुम लोगों के सामने संचालन पद्धति के स्थान पर सहकारी पद्धति से कार्य खोजने के लिए निवेदन किया था। मुझे खुशी है कि तब से हमारे तमाम मित्र भिन्न-भिन्न संस्कार और दृष्टिकोण के अनुसार विचार करने लगे हैं। यद्यपि इस प्रश्न को लेकर तुम लोगों में आपस में दृष्टि भेद पैदा हो रहा है। फिर भी इसमें अपनी क्रान्ति के लिए शुभ लक्षण ही मानता हूं।

संस्था, संगठन और बिरादरी अलग-अलग वस्तु हैं। उनमें क्या अन्तर है यह समझना चाहिए। संस्था और संगठन में एक निश्चित विधान होता है। उसका काम उस विधान के अनुसार चलता है। बिरादरी में कोई विधान नहीं होता है। केवल भाईचारा होता है, और उसका काम परम्परा से चलता है। संस्था और संगठन में सदस्यों के लिए किसी विचार के आधार पर संकल्प पत्र होता है और बिरादरी की सदस्यता के लिए इच्छा जाहिर करना काफी होता है। संस्था और संगठन में वह संकल्प पत्र एक दूसरे को एक साथ बांधता है। बिरादरी में परस्पर स्नेह है जो एक दूसरे से जोड़ता है। संस्था और संगठन में काम करने के लिए कार्यकर्ताओं की नियुक्ति होती है। बिरादरी में किसी कार्यकर्ता की नियुक्ति नहीं होती है बल्कि बिरादरी के सदस्य ही अपनी-अपनी परिस्थिति के अनुसार जितना जितना होता है करते हैं। संस्था और संगठन में अपना कोष होता है जिसके सहारे नियुक्त कार्यकर्ताओं का गुजारा होता है। बिरादरी का अपना कोई कोष नहीं होता है, हर सदस्य अपने व्यक्तिगत प्रयास से गुजारे की व्यवस्था करता है। यह प्रयास वे कहीं नौकरी करके, ट्यूशन करके, व्यवसाय करके या किसी संस्था या निधि से मदद लेकर कर सकते हैं। लेकिन यह सदस्य अपने-अपने भरोसे या अपने स्नेही जन के सहारे करते हैं। संस्था और संगठन में निर्णय होता है जिसको प्रस्ताव के रूप में प्रसारित किया जाता है। बिरादरी में चर्चाओं का निचोड़ होता है जिसे बिरादरी के निवेदन के रूप में प्रसारित किया जाता है।

संस्था और संगठन में भी कुछ अन्तर होता है। संगठन का प्रारम्भ किसी देश या क्षेत्र के बुनियादी लोक से होता है। संस्था का प्रारम्भ किसी निश्चित विचार में निष्ठा रखने वाले मनुष्यों या किसी प्रवृत्ति को चलाने वाले व्यक्तियों द्वारा स्थापना करने से होता है। संस्था, सेवक होती है, लोक सेवक होती है। संगठन लोक द्वारा निर्मित आत्म व्यवस्था के लिए बनता है। बिरादरी किसी विचार को मानने वालों का भाईचारा होता है जो आम लोगों में उस विचार का प्रसार और शिक्षण करता है। उदाहरण के लिए सर्व सेवा संघ संस्था है और तुम लोग जो गांव-गांव में ग्रामसभा और प्रखण्डसभा बनाने का प्रयास करते हो वह संगठन का स्वरूप होगा और विनोबा जी ने जो सर्वोदय समाज की कल्पना की थी अगर वैसा सम्भव हुआ तो वह बिरादरी का स्वरूप होगा। सर्व सेवा संघ का वर्तमान विधान बनने से पहले गुजरात के मित्रों ने अपने काम के लिए बिरादरी विकसित करने का कुछ प्रयोग किया था। वह चलता होता तो बिरादरी का कुछ और स्वरूप प्रकट होता। गांधी जी ने लोक सेवक संघ का जो प्रारूप तैयार किया था वह भी संस्था न बनकर संगठन का ही कुछ स्वरूप होता। इस दृष्टि से विनोबा ने जो कहा है कि लोक सेवक संघ की कल्पना ही सर्व सेवा संघ है मेरी दृष्टि में उसमें कुछ भेद है। कार्यक्रम के बिन्दु पर विनोबा जी ने जो समझाया है कि 'सर्व सेवा संघ लोक सेवक संघ द्वारा समर्पित' है उससे मैं सोलह आना सहमत हूं। लेकिन मेरी राय में सर्व सेवा संघ

→

संस्था है और परिवर्तित लोक सेवक संघ संगठन से मिलती-जुलती कोई चीज है।

हमारे कुछ मित्र मानते हैं कि अगर किसी संस्था के संचालक कार्यकर्ताओं को पूरी-पूरी स्वायत्तता का अवसर देते हैं, उनके काम में दखल नहीं देते, हर निर्णय सबसे चर्चा के निचोड़ पर किया जाता है इत्यादि अनेक छूट उपलब्ध करा दी जाती है तो वह संस्था न रहकर बिरादरी बन जाती है। लेकिन ऐसा समझना भूल है। इस बिन्दु पर मैंने अपने २५ मार्च के पत्र में लिखा था कि ऐसा स्वरूप संचालन की कुशलता मात्र है, संचालन पद्धति का विसर्जन नहीं है।

मान लो तुम सब सर्व सेवा संघ के सदस्य मेरे विचार को स्वीकार करते हो तो तुम्हारा सीधा सवाल यह होगा कि आज सर्व सेवा संघ जो संस्था के रूप में अधिष्ठित है उसे बिरादरी में परिवर्तन करने के लिए तात्कालिक कदम क्या होगा ? और उसकी प्रक्रिया क्या होगी ? यह प्रश्न कठिन है। अगर अजमेर सम्मेलन के अवसर पर विनोबा जी ने सर्व सेवा संघ के विसर्जन का जो सुझाव दिया था वह माना गया होता और फिर नये सिरे से ग्राम स्वराज्य के बिन्दु पर सर्वोदय समाज की बिरादरी खड़ी करनी होती तो वह आसान होता। फिर भी संस्था को क्रमशः बिरादरी में परिवर्तन करना है तो कठिन होने पर भी उसके मार्ग खोजने की जरूरत है। मेरे पास कोई बना बनाया उत्तर नहीं है और इतिहास के पन्नों पर इस प्रक्रिया का कोई चार्ट नहीं बना हुआ है। क्योंकि अब तक ऐसे हस्तान्तरण का कोई प्रयोग नहीं हुआ था। अतः यह काम 'अनचार्टेड सी' की यात्रा है। इसके लिए हर एक को मार्ग खोजने में लगना होगा, परस्पर चर्चा करना होगा और कोई रास्ता खोज निकालना होगा। फिर भी यहाँ मैं कुछ प्रकट चर्चा करना चाहूँगा जिसका रूप निम्न लिखित हो सकता है। एक अभी सर्व सेवा संघ काफी ढीली संस्था है और उसे अधिक ढीला करने का प्रयास करना चाहिए जैसे अध्यक्ष मंत्री और प्रबन्ध समिति का गठन न करना तथा सर्व सम्मति से एक निवेदक चुनना।

दो किसी विषय के विशेष प्रश्न पर चर्चा के लिए, अभी पिछले दिनों सेवाग्राम में जैसी परिषद बुलायी गयी थी, उस तरह भिन्न प्रदेशों में आवश्यक संस्था में कभी-कभी लोक सेवकों की परिषद बुलायी जाये। उसी परिषद की सामूहिक चर्चा का निचोड़ निवेदन के रूप में प्रकाशित किया जाये। आवश्यकता पड़ने पर ऐसे मित्र जो लोक सेवक नहीं हैं और सम विचार रखते हैं उन्हें भी आमंत्रित किया जाये। उसी परिषद में सर्व सम्मति से यह भी निर्णय किया जाये कि अगली बैठक कहाँ और कब होगी ?

तीन स्थान और समय के लिए परिषद में उपस्थित सदस्यों के निमंत्रण पर विचार किया जाये।

संघ के विधान में जो यह है कि संघ की प्राथमिक इकाई प्राथमिक सर्वोदय मण्डल होगा उसको वास्तविक बनाने के लिए गम्भीरता और तीव्रता के साथ प्रयास किया जाये।

सहकारी पद्धति और बिरादरी के स्वरूप की ओर संस्था को मोड़ने के लिए मेरा यह सुझाव प्रथम कदम का रूप है। सब लोगों का चिन्तन शुरू होगा तो कोई रास्ता निकलेगा। और कदम-कदम पर नयी सूझ प्रकट होगी ऐसा मुझे विश्वास है।

बिना टिप्पणी के

इजरायल, सत्याग्रह और विनोबा

२६नवम्बर' ७३ के सर्वोदय मे विनोबा जी के हवाले से एक टिप्पणी दी गयी है, जिसका अभिप्राय यह है कि शासन की मनमानी के विरुद्ध सत्याग्रह की बात करना गलत है ।

यदि टिप्पणी केवल धमकी देने के अर्थ मे किये गये सत्याग्रह के बारे मे होती है (जैसे तथाकथित सत्याग्रह आजकल होते रहते हैं) तब तो कोई बात नही थी किन्तु टिप्पणी मे सरकार की मनमानी के विरुद्ध सत्याग्रह मात्र विचार को चुनौती दी गई । अत: इसके पीछे छिपी हुई भ्रान्ति के निवारण का प्रयत्न आवश्यक है ।

यह टिप्पणी विनोबा जी की इसराईल सम्बन्धी उक्तियो के आधार पर दी गई है । वास्तव मे बड़े आदमियो की उक्तियां हमेशा ही माननीय नही होती । विशेषत. तब जब वे और बड़े आदमियों की उक्तियो के विरुद्ध हों । श्री लल्लूभाई पटेल ने सही कहा कि सत्याग्रह का हथियार केवल भले शत्रुओ के विरुद्ध ही प्रयोग करने की चीज नहीं है । वह निष्ठुर से निष्ठुर शत्रु के विरुद्ध भी प्रयुक्त होना चाहिए । हिटलर के हृदय मे कोमलता थी या नही यह बिलकुल अप्रासंगिक है । हिटलर के हृदय को न हिला सकना आवश्यक तौर पर साधना की कमी नही है । साधना तो वहा पूरी हो जाती है जहा सत्याग्रही सत्य की रक्षा करता हुआ आततायी के द्वारा मारा जाता है । किन्तु आततायी का आततायी पन नहीं जा सका इसका कारण यह होता है कि उसके लिए जिस किस्म का और जिस तादाद मे खून बहना आवश्यक था, उतना नही बहा ।

विनोबा जी का यह कहना सही नही है कि यहूदियों से सत्याग्रह के लिये कहना मूर्खता थी । वैसे तो विनोबा जी की इस उक्ति को अनुचित सिद्ध करने के लिए गाधी जी का इस सम्बन्ध मे लिखा हुआ वह लेख ही काफी उक्तियुक्त है जो उन्होंने २६/११/३८ के हरिजन मे लिखा और जो 'सत्याग्रह' नामक पुस्तक मे पृष्ठ ३४८-५० पर छपा हुआ है ।

किन्तु इसके अलावा भी विनोबा जी स्वयं मानते है कि गांधी जी का सत्याग्रह और गाधी जी द्वारा कल्पित अहिंसक शक्ति निसन्देह ऐसी है कि वह किसी भी परिस्थिति मे सदैव सफल होगी । ऐसे व्यक्ति का यहूदियो को सत्याग्रह के लिए कहना मूर्खतापूर्ण तो नही ही था, गलत भी नही था ।

वास्तव मे ज्ञानमार्ग प्रणेता शकर के अनुयायी विनोबा और कर्ममार्गी गाधी के विचारो मे मतभेद होना स्वाभाविक है । गाधी हिटलर द्वारा सताये गये यहूदियो को अथवा याहिया द्वारा सताये गये बगालियो को पीठ दिखा कर देश छोड़कर भागने का मशवरा नही दे सकता था उसके पास तो एक ही मशवरा था कि आततायी के सामने सिर मत झुकाओ उसे पीठ दिखा कर भागो नही बल्कि मुकाबला करते हुए प्राण उत्सर्ग कर दो । हां यदि आप में पर्याप्त अहिंसक शक्ति नही आई है और उसमे आपका विश्वास जाग्रत नही हुआ है तो आततायी के सामने झुकने या पीठ दिखा कर भागने से तो हिंसात्मक मुकाबला करना ही श्रेयस्कर है ।

इस संदर्भ मे निश्चय ही वह बगला देश वासियों को भी यही सलाह देते और इसके न माने जाने पर भी वीरो की, जिन्होंने हथियार से ही सही याहिया का मुकाबला किया, तारीफ करते । तो इसलिए यह सुझाव देना गलत है कि जब तक इतनी शक्ति प्राप्त न हो जाये मुकाबले का मशवरा देना ही गलत है बल्कि भागने का मशवरा देना चाहिए । यह तो इत्तफाक है कि यहूदियों को बसने के लिए फिलस्तीन मिल गया वरना देश छोड़ना उनके लिए बहुत ही घातक होता जैसा फिलस्तीनी अरबो के लिए हो रहा है ।

ऐसी दशा मे सिवाय मुकाबले के और कोई मशविरा सभव ही नही है और क्योंकि गाधी जी अहिंसा तथा उसकी शक्ति मे विश्वास रखते थे और हिंसा लायक हथियार हो ही नहीं सकते थे इसलिए उन्होंने आत्मबल को जाग्रत करके अहिंसक आत्मबल द्वारा मुकाबला करने को कहा ।

हिन्दू-मुस्लिम मारकाट से व्यथित गाधी के मुह से निकले हुए कुछ शब्दों को लेकर विनोबा जी का यह कहना भी गलत है कि चूंकि अंग्रेज सरकार किन्हीं विधिनियमो को मानने वाली थी इसलिए हमारी कमजोर शक्ति का भी निबाह हो गया । अंग्रेजो को विधि-नियमो का मानने वाला अथवा दयालु कहना न केवल उन क्रांतिकारियों के प्रति घोर अन्याय है जिनके खून से अंग्रेजो ने अपने हाथ लाल किये बल्कि जलियावाला बाग के निहत्थे शहीदो व अष्टीचिमूर मे मारे गये मासूमो के प्रति भी घोर अन्याय है, फिर जे० पी० व अन्य लोगो पर जेल मे जो अमानुषिक अत्याचार हुए उनका तो कहना ही क्या ।

जहां तक कमजोर शक्ति का सवाल है यह तो सही है कि अपने आर्थिक स्वार्थ को देखते मे चतुर अंग्रेज ने भारतवासियों को इस अवसर से वंचित कर दिया कि वह अंग्रेजो का यहा टिकना असभव बना कर उन्हें निकाल देते और समय को देखते हुए वह कुछ पहले ही चला गया । किन्तु स्वतन्त्रता के लिए लडने की शक्ति उत्तरोत्तर बढती रहती है उसे एक विशेष समय की दशा मे ही समझे रहना गलत दृष्टिकोण है । अत: यह माना जा सकता है कि १९४६ तक हमारी शक्ति इतनी बढ़ न पायी हो कि हम उसी समय अपना राज्य अंग्रेजो की जगह स्थापित कर पाते । किन्तु इसमें सन्देह की गुन्जाइश नहीं है कि गाधी जी के अहिंसक मार्ग पर चलते हुए ही हम निश्चित ही कुछ समय बाद अंग्रेजों का यहा टिकना असंभव बनाकर अपना राज्य स्थापित कर लेते । कदाचित यह अच्छा भी होता । यह कहना तो सही है कि अपने यहा कुछ किये बगैर दूसरो को उपदेश देना सही नहीं है । किन्तु साथ ही यह बात भी गलत है कि जब तक हम ईसामसीह या शंकराचार्य जैसी

(शेष पृष्ठ १२ पर)

ब्रेझनेव को परास्त करने वाला समाजवाद

—राजेन्द्र माथुर

ब्रेझनेव की भारत यात्रा से जनता में कोई उत्साह की लहर पैदा नहीं हो सकी, हालांकि भारत के आर्थिक एवं अन्तर्राष्ट्रीय भविष्य की दृष्टि से वह बेहद महत्वपूर्ण थी। इसका कारण यह नहीं है कि सोवियत रूस बदल गया है। बदले हुए हम हैं। इसलिए १८ साल पहले बुल्गानिन और ख्रुश्चोफ की भारत यात्रा ने जो नए मोड़ की स्फूर्ति दी थी, वह आज गायब है। ये ठोस भौतिक धरातल पर सोवियत रूस से हमें वह सब मिल रहा है, जो एक मित्र राष्ट्र से हम चाह सकते हैं। चीन, अमेरिका और पाकिस्तान की खुराफातों के खिलाफ सोवियत रूस ने हमें लगभग सैनिक गारंटी दे रखी है। हमारी अर्थव्यवस्था की नींव मजबूत करने के लिए उसने वे भारी कारखाने भारत में खोले हैं, जिनकी पूंजीवादी विश्व के देशों से कभी उम्मीद भी नहीं की जा सकती थी। भारत की अन्दरूनी और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिरता की जितनी भी जमानत एक बाहरी देश अपने स्वार्थों को ध्यान में रखते हुए दे सकता है, उतनी रूस दे रहा है। इतने टेकों और सहारों के बाद भी यदि हम निराश हैं, तो इससे केवल यही सिद्ध होता है कि अपने आप में हमें कितना कम भरोसा बचा है। विदेशी धर्मशालाओं से ताजगी महसूस करने के दिन अब लद चुके हैं, लेकिन अपनी कर्मठता पर गर्व करने के दिन अभी आए नहीं हैं। निश्चय ही बोकारो किसी दिन एक करोड़ टन इस्पात पैदा करेगा और भिलाई की क्षमता तब ७० लाख टन होगी। शायद हमारे बाद की पीढ़ी इन आंकड़ों को कोई बेहतर अर्थ दे सकेगी। लेकिन आज तक तो स्थिति यह है कि सोवियत रूस जब भारत में एक चलती हुई औद्योगिक मशीन कायम करने के लिए पूरी मदद दे रहा है, तब हमारे नेता, नारे, नौकरशाह और सब बाहरी उस मशीन को ठप करने के लिए कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रहे हैं। ब्रेझनेव शायद भारत को दुनिया का एक ताकतवर देश बनते देखना चाहते हैं, ताकि वह चीन के वजन को संतुलित करे और एशिया की स्थिरता में अपना योग दे। लेकिन सोवियत रूस के इन लक्ष्यों के जो दो बड़े दुश्मन इस देश में हैं, वे हैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और यह ब्रेझनेव का दुर्भाग्य है कि वे इन दोनों के साथ सहयोग करने के लिए अभिशप्त हैं। यहां इन पार्टियों का नाम लेना भी शायद बेमतलब है, क्योंकि वे भारत के उस शासक वर्ग (याने मोटर वर्ग) का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो देश को चालू या ठप्प रखने का निर्णय दे सकता है। ब्रेझनेव का यह दुर्भाग्य है कि भारत में आज ऐसा शासकवर्ग सत्तारूढ़ है जो भारत को गति देने के नाम पर रूस से मदद लेता है और फिर ऐसी नीतियां अपनाता है जिनके कारण वह मदद गटर में बह जाती है। साठ के दशक में अमेरिका ने यह पाया था कि एशिया और अफ्रीका में उसने जो भी मदद की है, उससे पिछड़ेपन में कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि सारी मदद ठेकेदारों और सरकारी अफसरों और दलालों की जेब में पहुंच गई है। शायद अगले दशक में सोवियत रूस भी यही खोज करे, और तब वह यह जानकर निश्चय ही चौंकेगा कि भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी भी इस दलाली में साझेदार रही है।

अठारह साल पहले अन्दाज नहीं था कि भारत-सोवियत मैत्री का यह हश्र होगा। २६ जनवरी १९५५ को "सोवियत भूमि" नामक पत्रिका ने पहली बार भारतीय गणतंत्र का अभिनन्दन किया था और लिखा था कि कांग्रेस पार्टी एक प्रगतिशील पार्टी है और उसके तत्वावधान में संसदीय प्रजातंत्र के रास्ते चलकर भी समाजवाद आ सकता है। तब यह सुनना बहुत अच्छा लगा था और हम इस बात का श्रेय लेकर अपनी पीठ थपथपा रहे थे कि रूस जैसे महादेश को स्तालिनवादी अंधता के अंधकार से हम उबार रहे हैं। हमें तब लगा था कि भारत के प्रयोग से साम्यवाद की आंखें खुल गई हैं और नेहरू के कारण सोवियत रूस का चरित्र बदल रहा है। कांग्रेस का अभिनन्दन करके क्रेमलिन के कम्युनिस्टों ने तीन बातें स्वीकार कीं। एक तो यह कि किसान मजदूर क्रान्ति की कोई स्थितियां यहां नहीं हैं, दूसरे यह कि कांग्रेस के छाते के नीचे जो बुर्जुआ नवशाहाए देश पर राज कर रहे हैं, वे इस बात के लिए कृतसंकल्प हैं कि भारत पूंजीवादी विश्व को कच्चा माल देते रहने वाला पिछड़ा, औपनिवेशिक, अविकसित सामन्तवादी देश न बना रहे। वे तेजी से उद्योग की ओर, उपनिवेश विरोध व आर्थिक स्वाधीनता की ओर, अविकास से योजनाबद्ध विकास की ओर, सामन्तवाद से आधुनिकता की ओर जाना चाहते हैं। तीसरे उन्हें यह भी लगा कि स्वाधीनता संघर्ष के दिनों में जनता के साथ कंधा मिला कर कार्य करने वाली कांग्रेस में दरिद्रतम लाखों के प्रति सहानुभूति है, और सामाजिक न्याय का बोध है, जो उसे वामपंथी दिशाओं में खींचता है। अगर वे क्रान्ति की ही रट लगाये रहते तो भारत सरकार की निरन्तर शत्रुता के अलावा क्या पाते? न केवल भारत, बल्कि सारे नये एशियाई विश्व के प्रगतिशील हुक्मरानों से हाथ मिलाने का फैसला सोवियत रूस ने किया और गैर कम्युनिस्ट वामपंथ का एक नया आरोहण दोनों महाद्वीपों में शुरू हुआ। जब सोवियत रूस को घेरने के लिए अमेरिका सैनिक संधियां रच रहा था, तब क्रेमलिन ने विचारधारा के इस नये अस्त्र का उपयोग शीतयुद्ध में किया, और उसे बड़ी सफलता भी मिली। जब अमेरिका बदनाम तानाशाहों को बन्दूकें दे रहा था, तब सोवियत रूस लोकप्रिय राष्ट्रीय आन्दोलनों को आर्थिक स्वाधीनता की दिशा में सहायता दे रहा था।

नेहरू और ख्रुश्चोफ का यह संयुक्त स्वप्न साकार होने में कहां ठप हो गया? क्रान्ति की स्थितियां आज भी नहीं हैं। भारत का बुर्जुआ मध्यम वर्ग आज भी प्रगतिशील है। गरीबों के प्रति हमदर्दी जितनी मुखर आज →

है, उतनी पहले कभी नहीं थी। इस सबके बावजूद हिन्दुस्तान एशिया का सबसे बीमार और रक्तहीन मुल्क क्यों है ?

इस विस्मयजनक प्रक्रिया का कारण शायद यह है कि भारत का शासक वर्ग सिर्फ अक्ल से आधुनिक है, और देश सिर्फ अक्ल से ही नहीं चला करते। वे संस्कार, सहजवृत्ति और उन आदतों के सहारे चला करते हैं जिन्होंने राष्ट्रीय रिफ्लेक्स का रूप ले लिया है। अगर हमारे यहां एक मजदूर की निगरानी करने के लिए पांच क्लर्क और केशियर और सुपरवाइजर खड़े हो जाते हैं, तो यह निश्चित ही एक राष्ट्रीय रिफ्लेक्स है। यह वह कुत्ते की दुम है जो मार्क्सवाद की भोंगली में बारह साल रहने के बाद भी सीधी नहीं होगी। दरअसल समाजवाद हमें सांत्वना देता है कि क्लर्क और केशियर और सुपरवाइजर नियुक्त करके हम कोई गलत काम नहीं कर रहे। अर्थ व्यवस्था पर राज्य का कब्जा हो अथवा निगरानी हो, यही समाजवाद है। इसलिए कब्जा और निगरानी करने वाले अफसर बढ़ते जा रहे हैं, और काम करने वाले के बजाय निगरानी करने वाले का रुतबा बढ़ता जा रहा है। जो भी आज मेहनत करता है, उसकी आकांक्षा है कि कल उसकी तरक्की हो, और वह निगरानी करनेवाला बन जाए। मेहनत शूद्रकर्म है, इसलिए त्याज्य है। निगरानी सवर्ण बनाती है, इसलिए श्रेयस्कर है। समाजवाद ने भारत के हर वजनदार वोटर को पहली बार मौका दिया है कि वह सवर्ण बने, सुपरवाइजर बने। सर्वहारा की तानाशाही को हमने शीर्षासन करवा दिया है, और हम तुरन्त एक ऐसे भारत में सांस लेना चाहते हैं, जो सर्वहाराविहीन हो, श्रमविहीन हो और जहां हर आदमी निगरानी करता पाया जाये। समाजवाद हमें इसलिए पसन्द है कि वह हमारी अक्ल की तरह उन्नत और हमारे संस्कारों की तरह पिछड़ा हुआ है। वह ब्रेजनेव का आग्रह नहीं, बल्कि हमारी अन्दरूनी जरूरत है।

समाजवाद के नाम पर बीमार रहने वाले हिन्दुस्तान के बजाय ब्रेजनेव शायद ऐसा भारत पसन्द करेंगे, जो स्फूर्त हो, उत्साहित हो और अपनी आय खुद पैदा करके तेजी से चल रहा हो। जापान और पश्चिम जर्मनी और अमेरिका समाजवादी नहीं हैं, लेकिन वे रूस की निगाह में सम्मान के पात्र हैं, और उनसे बराबरी के आर्थिक समझौते किये जाते हैं। साइबेरिया के विकास के लिए रूस पूंजीवादी विश्व से पूंजी और हुनर उधार लेना चाहता है। अतः क्रेमलिन की प्राथमिकता समाजवादी हिन्दुस्तान नहीं, सशक्त और समर्थ हिन्दुस्तान है। जो लोग समाजवाद, अपना रहे हैं, और यह नहीं जानते कि राष्ट्रीय आदतों के कारण हिन्दुस्तान में उसकी शक्ल कैसी प्रतिक्रियावादी और प्रगतिविरोधी हो जायेगी, वे अन्ततः ब्रेजनेव के हाथ कमजोर कर रहे हैं। रूस हमें वैसे ही मदद दे रहा है, जैसे कि वह १८ साल पहले दे रहा था। लेकिन इस दौरान अपनी कमजोरियों और असफलताओं से हमने क्या सबक सीखा है?

(पृष्ठ १० से जारी)

पूर्ण शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते तब तक हमें अहिंसक सत्याग्रह के बारे में कुछ कहने का अथवा करने का अधिकार नहीं है।

शक्ति तो विकासशील और बढ़ने वाली चीज है और यह संघर्ष से ही बढ़ती है। यदि इस डर से कि अभी पूर्ण शक्ति प्राप्त नहीं हुई है कोई संघर्ष ही न करें तब तो यथास्थिति ही रहने वाली है। मुकाबले के अहिंसक जद्दोजहद के अभाव में ही तो ग्रामदान का क्रान्तिकारी तत्व खत्म होकर एक सुधारवादी कार्यक्रम मात्र रह गया, जिसने सुधार तो किया किन्तु चिन्गारी नहीं जलाई थी।

अतः हम बहुत नम्रतापूर्वक निवेदन करना चाहते हैं कि यह विचार गलत है कि शासन की मनमानी के विरोध में जब स्वयं विनोबा जी सत्याग्रह करने योग्य विशुद्ध अहिंसक शक्ति को अपने भीतर अनुभव नहीं कर रहे हैं तब हम में से अन्य किसी की इस मैदान में उतर पड़ने की इच्छा कितनी खतरनाक साबित हो सकती है, अर्थात् त्याज्य है। शासन की मनमानी को बर्दास्त करते हुए हमें न केवल स्वयं ही उसके विरुद्ध कदम उठाना चाहिए बल्कि जनता को भी अपने साथ लेना चाहिए। हमारा कदम दम्भ या अमर्ष का न हो लालच या ख्याति की नीयत से न किया गया हो यही प्रेरणा जनता को देनी चाहिए। वह कदम अहिंसक सत्याग्रह का हो। यदि इसमें कुछ कमी रहती है तब भी हम शासन की मनमानी का अपनी अपूर्ण अहिंसा से मुकाबला करते-करते पूर्ण अहिंसक सत्याग्रह की ओर उत्तरोत्तर बढ़ते रहें।

वास्तव में खतरा शासन की मनमानी होने देने में है, उसका मुकाबला करने में नहीं है। चाहे वह अपूर्ण अहिंसा ही क्यों न हो।

जीवोराम, एडवोकेट
सिविल लाइंस, मुरादाबाद

(पृष्ठ २ का शेष)

इतना मैं केवल अपनी स्थिति को स्पष्ट करने के लिए कह रहा हूं; मैं इस बात की वकालत नहीं कर रहा हूं कि श्री सिंह या उनके सहयोगियों के साथ कानून समुचित ढंग से पेश नहीं आये। परन्तु मैं पुनः इस बात पर बल देना चाहूंगा कि कानून को, कानून की नजर में अपराधी एवं उसकी सम्पत्ति तथा उसके परिवार के सदस्यों एवं उनकी सम्पत्ति के बीच एक स्पष्ट रेखा अवश्य खिंचनी चाहिए। अगर राज्य नागरिक की स्वतंत्रताओं का तथा संविधान का आदर करता है तो उसे किसी अपराधी के संबंधियों के शरीर या सम्पत्ति पर प्रहार करने का अधिकार नहीं है। मैं दोनों संबंधित सरकारों से साग्रह अनुरोध करता हूं कि वे इस सुझाव पर अनुद्विग्न भाव से विचार करें।

टिप्पणी • टिप्पणी • टिप्पणी • टिप्पणी

बेचारे वैज्ञानिक

मस्तिष्क की सर्जरी और विद्युत से मस्तिष्क को उसकी औसत शक्ति से अधिक शक्ति देकर आजकल मनुष्य की प्रकृति और प्रवृत्तियों को बदलने के प्रयोग हो रहे हैं। इन नये प्रयोगों के सामाजिक और नैतिक परिणाम कैसे क्या हो सकते हैं, इस पर न्यूयार्क की 'इंस्टीट्यूट आफ सोसायटी एथिक्स' ने अनुसंधानकर्ताओं का एक दल तैयार किया है। १९७१ के दिसम्बर में इस दल के कुछ सदस्यों ने 'मस्तिष्क की मोड़ना' विषय को लेकर तर्कों से जो परिसंवाद किया था हम उसमें से केवल एक सत्र डा० डेलगेडो की खोजों के बारे में उन्होंने जो जानकारी दी, उसे पाठकों के सामने बहुत संक्षेप में पेश रहे हैं। पाठक देखेंगे कि इस प्रकार की खोजों और उपयोगों के जहां अच्छे प्रयोग हो सकते हैं, वहीं अन्य वैज्ञानिक खोजों की तरह बुरे से बुरे ऐसे उपयोग सत्ता के माध्यम करवाये जा सकते हैं। सोचना चाहिए कि इन्हें उपकार की तरह कितना कम और अपकार की तरह प्रयुक्त करने का कितना अधिक औसत है।

डा० डेलगेडो से अनुसंधानकर्ताओं के एक सदस्य गैलिन ने कुछ महत्त्वपूर्ण बातें करके प्रश्न किये। पहला तो यह कि मस्तिष्क की सर्जरी और विद्युत से उसको प्रेरित करने के लिए इन दिनों आप किस तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं, उसका उपयोग या प्रयोग किस विचार से कर रहे हैं, दूसरा नई तकनीकें जो क्षितिज पर उभरने वाली हैं, कौन कौन सी हैं और आज जो शोधकार्य हो रहा है उसका रुख किस तरफ है, तीसरा अगर आपके पास समय मनमाना हो, शक्ति मनमानी हो, मनचाही संख्या में इस दिशा में काम करने वाले प्रतिभावान व्यक्ति मिल सकते हों तो आप अपने शोध से क्या पाना चाहेंगे—कौन सा सपना आप साकार करना चाहते हैं? और अंतिम कि इन प्रयोगों के पीछे तर्क क्या है, ये जरूरी ही क्यों लग रहे हैं—इनसे क्या कोई कहने लायक या सचमुच प्राप्य उद्देश्य हस्तगत होगे?

डा० डेलगेडो ने वैज्ञानिक शान्ति के साथ जो उत्तर दिया उसका सार अत्यन्त विचारोत्तेजक है। वे बोले, देखिये आदमी के बर्ताव को निश्चित प्रणालियां देने के दो उपाय हैं: एक तो उसे जानकारियां देकर और दूसरा उपाय जो इस समय हमारा विषय है, मस्तिष्क पर ही सीधे-सीधे वैज्ञानिक प्रयोग करके। मस्तिष्क पर तीन तरह के प्रयुक्त या प्रभावों का उपयोग किया जा सकता है।

एक—सर्जरी करके, दो—विद्युत से मस्तिष्क को संचालित करके और तीन—मस्तिष्क के भीतर कुछ रासायनिक पदार्थ रखकर। यहां अर्थ उन मादक द्रव्यों से नहीं है जो खाये जाते हैं और जिनसे मस्तिष्क पर निश्चित असर होते हैं। यहां तो अभिप्राय सीधे ही मस्तिष्क को खोलकर उसमें किसी प्रकार का रासायनिक पदार्थ जो उस मस्तिष्क वाले के लिए जरूरी हो, वहां रख कर फिर मस्तिष्क बंद कर देने से है। इसके सिवा एक प्रकार और भी है, विद्युत और रासायनिक दोनों के सम्मिलित प्रयोगों से निर्मित परिस्थिति का दिमाग पर असर डालना। इस नयी निर्मित परिस्थिति से भी हम दिमाग की प्रवृत्तियों और उसकी विकृत या प्रकृत हालत को बदल सकते हैं। डा० डेलगेडो ने कहा, 'दर्शन का यह शाश्वत प्रश्न कि व्यक्ति क्या है, या मैं कौन हूं इन नयी खोजों में अगर नहीं तो एकदम नया रूप तो धारण कर ही लेता है। प्रश्न तब इस तरह बन जाता है कि हम किस तरह का आदमी बनाना चाहते हैं? सर्जरी, विद्युत-संचालन या रासायनिक-प्रयोग से हम मस्तिष्क की मनचाही प्रक्रियाओं में रत और निष्प्राण बना सकते हैं। इनसे असल में मन की बनावट ही बदल जाती है। सोचने-समझने के नये आधार इनसे दिये जा सकते हैं। यह शक्ति तो और हमने पा ही गई है कि हम आदमी के 'मस्तिष्क' के काम करने के पूरे तरीके को जान गये हैं और अब इन तरीकों को अपने ढंग से जमा कर, जैसे मन के नक्शे के मुताबिक मकान बनाया जा सकता है, वैसे सारी मानव जाति को मन चाहे सांचे में ढाला जा सकता है। सुनने में यह भयानक भी लग सकता है। क्योंकि इनसे व्यक्तित्व, स्वतन्त्रता और नैतिकता, मनैतिकता के संदर्भ ही नहीं बचते।

केवल यह रह जाता है कि ये 'हम' कौन हैं जो आदमी को अपने मन के सांचे में ढालना चाहते हैं, या ढालना चाहेंगे, इन खोजों का उपयोग करेंगे, डा० डेलगेडो ने इसी पहलू से सम्बद्ध तमाम प्रश्नों के जो उत्तर दिये उन उत्तरों से यह विभीषिका विभिन्न जमानों के शक्तिवान 'हम' अपने-अपने मन की सनक के हिसाब से आदमी को मनचाही इमारत या चलती-फिरती मशीन बनाने में सहज समर्थ हो जायेंगे।

उनसे यह भी पूछा गया था कि तब क्या यह एक अच्छा और पर्याप्त कारण नहीं है कि आप अपनी खोज बंद कर दें और जितनी कर चुके हैं, उनके प्रयोगों का प्रचार न करें। उन्होंने बताया कि सभ्यताएं प्रारम्भ से आदमी को ढालने के विभिन्न उपकरणों का आधार लेकर प्रयत्न होते आये हैं। एक सदस्य ने कहा कि इसका अर्थ है कि मस्तिष्क कोई भीतरी चीज ही नहीं है, बाहरी चीज है। आप जैसे भीतर से उसे बदल सकते हैं, वह अभी तक बाहर से भी बदला जाता रहा है—मगर उसके सामाजिक माध्यमों के बजाय अब वह सत्ता के इशारों पर बदला जा सकेगा, यह आपको कैसा लगता है? वैज्ञानिक ने जवाब दिया, "मेरे लगने का सवाल नहीं है—कुछ शोधें मैंने की हैं। उनके अच्छे प्रयोग हों, यह मेरी इच्छा है।

मगर ऐसी इच्छा का भी कोई क्या अर्थ करे। मानव को उसके शारीरिक पहलू से जानकर उसकी व्याधियों की पूर्ति में ये शोधें निस्संदेह समर्थ हैं किन्तु अणु तोड़ने के परिणामों की तरह इनके उपयोग और परिणाम भी भयानक हो सकते हैं। फिर भी वैज्ञानिक शोध करना कैसे रोकें। यह तो ठीक है कि प्रकृति का गुलाम होना भी चिन्त्य है किन्तु क्या वह उतना चिन्त्य है जितना प्रकृति के सम्बन्ध में ज्ञात हुए तथ्यों के उपयोग का गुलाम होना?

—प्र० प्र० मिश्र

अठारह कार्यक्रमों को लेकर पदयात्रा

तीन दिसम्बर को रुपौली प्रखण्ड की ग्रामसभाओं से सम्पर्क करने सर्वोदय आश्रम रुपौली से तीन टोलियां रवाना हो गयी। हर टोली के ३ पदयात्रियों के अलावा प्रखण्ड स्वराज्यसभा के पदाधिकारी प्रखंड महिला समिति की संयोजिका और जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष भी पडावो पर पहुचते रहेंगे। यह अभियान तीस दिसम्बर तक चलेगा। प्रखण्ड को सम्पर्क की सुविधा के ख्याल से उत्तरी, दक्षिणी व पूर्वी, क्षेत्र मे बाटा गया है। रुद्रेश्वर प्रसाद राय, महावीर प्रसाद गुप्त व रामशरण सिंह क्रमशः इन क्षेत्रों के प्रभारी हैं।

पदयात्रा टोलियों के रवाना होने से पहले प्रखंड स्वराज सभा के मंत्री ने ग्रामसभाओ के नाम लिखे गये एक पत्र मे कहा है कि अगर हम मे आत्मीयता की भावना सूखती गयी और वर्तमान सरकारी तन्त्र इसी प्रकार दिनो-दिन केन्द्रित व भ्रष्ट होते गया और व्यापारियो की वर्तमान क्रूरनीति और क्रूर नीति गयी तो इस प्रखंड और देश को अराजकता और अभाव व अकाल से शायद ही छुटकारा मिल पायेगा। पदयात्रा टोली जिन १८ कार्यक्रमो को लेकर ग्रामसभाओ तक पहुंच रही हैं उनमे से कुछ इस प्रकार है :

१. सुबह ग्रामसभा की कार्य समिति की बैठक बुलाकर उसमे ग्रामसभा की सही स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाय। साधारण सभा में पेश किये जाने के लिए तैयार की गई रिपोर्ट एवं आमद-खर्च का प्रस्ताव विचारार्थ प्रस्तुत किया जाय।

२. दोपहर मे ग्रामसभा की साधारण सभा की बैठक बुलायी जाय, जिसमे मंत्री, ग्रामसभा द्वारा किये गये कार्यों का प्रतिवेदन तथा आमद खर्च का हिसाब पेश करे। पर्युक्त निर्णयानुसार ग्रामसभा के कृषि, उद्योग, शिक्षा, वित्त, स्वास्थ्य, न्याय, शान्ति सेना, अन्त्योदय और महिला उपसमितियो का नवीकरण किया जाय।

३. ग्रामसभाओ को पेयजल एवं सिंचाई बिहार रिलीफ कमिटी द्वारा दिलाये गये ... का निरीक्षण तथा किसानो को उससे मिले लाभ एवं ऋण के किस्त भुगतान करने सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की जाय।

४. हिंसा तथा असामाजिक तत्त्वो का मुकाबला करने की दृष्टि से शान्ति सेना की भर्ती तथा उसके प्रशिक्षण की योजना बनायें और कस्तूरबा ट्रस्ट द्वारा १७ जनवरी '७४ से प्रारम्भ होने वाली महिला शान्ति सेना प्रशिक्षण विद्यालय के लिए ग्राम महिला समिति के सहयोग से एक महिला प्रशिक्षार्थी का चयन किया जाय।

५. भूमिवानो से बीघा-कट्ठा की जमीन प्राप्त कर उसका वितरण करना और वितरित जमीन पर आदाताओं का कब्जा है कि नहीं, उसका निरीक्षण।

६. ग्रामकोष के हिसाब का निरीक्षण, ग्रामकोष संग्रह मे ग्रामसभा को यदि टोली की प्रत्यक्ष मदद की जरूरत हो तो उसे आवश्यक सहयोग दिया जाय।

७. जिस ग्रामसभा का बैंक मे खाता नहीं खुला है उस ग्रामसभा की बैठक मे खाता खोलवाने सबंधी प्रस्ताव पारित कराने की कार्यवाही की जाय।

८. एक सौ परिवार से कम आबादी वाले ग्रामसभा मे ५ तथा सौ परिवार से ऊपर वाले गाव मे प्रति सौ परिवार ५ सर्वोदय मित्र बनाये जायें।

९. भूदान की वितरित एवं वितरण योग्य भूमि की जानकारी प्राप्त कर ग्रामसभा स्थानीय सरकारी कर्मचारियों के सहयोग से भूदान किसानो के नाम लगान निर्धारण कराने एवं वितरण योग्य प्राप्त भूमि का वितरण करने सम्बन्धी कार्यवाही करे।

१० गाव मे उत्पादन बढाने की दृष्टि से बिहार रिलीफ कमिटी, रुपौली द्वारा चलायी जा रही सिंचाई योजना की जानकारी देना। सरकारी विकास योजना द्वारा अथवा किसान के अपने खुद के प्रयत्न से गांव मे अब तक हुए सिंचाई सम्बन्धी कार्यों की जानकारी प्राप्त की जाय।

११. गाव में चल रहे चर्खे का निरीक्षण तथा खादी एव सर्वोदय साहित्य व पत्रिकाओं का प्रचार।

१२ गाव मे कोई मामला मुकदमा हो तो उसके आपसी समझौते के लिए पहल की जाय।

१३ परिवार की आय बढाने की दृष्टि से फलदार वृक्ष रोपने के लिए प्रोत्साहन और रुपौली मे चल रहे नर्सरी की जानकारी दी जाय।

१४ ग्रामसभा हर बालिग स्त्री एव पुरुष को काम देने की योजना बनाये और उसकी व्यवस्था करे। सरकारी सस्ते-गल्ले की दुकान से प्राप्त होने वाले अन्न, वस्त्र तथा अन्य जरूरी सामान सही उपभोक्ताओ को प्राप्त कराने मे अवसर पर सक्रिय सहयोग करे। ग्रामसभा का यही कर्तव्य है कि वह अपने गाव के अन्नाभाव दूर कराने के लिए ऐसा कार्यक्रम बनाये कि ग्रामसभा द्वारा निर्धारित मूल्य पर वहां के निवासियो को अनाज उपलब्ध हो सके।

१५ ग्रामसभा सीलिंग, बासगीत, बेदखली आदि भूमि से सम्बन्धित कानूनो के अमल के लिए कार्यवाही करे और तत्सम्बन्धी प्रतिवेदन अपनी बैठको मे पेश करे।

१६. घूसखोरी, दहेज, फिजूलखर्ची तथा विलासपूर्ण उपभोग जैसी सामाजिक कुरीतियो के खिलाफ ग्रामसभा आन्दोलन करे।

(पृष्ठ ४ का शेष)

और मतभेदो के बावजूद अभी इतनी आत्मीयता यहां है कि एक साथ एकत्र होकर विचार कर लेते है। अनुकूलताएं इतनी हैं और देश की परिस्थिति ऐसी है कि सब कुछ विस्फोट के कगार पर है। लोगो का मानना है कि इस बार अवसर हाथ से निकल गया तो शायद फिर नही आये। बीस-बाईस वर्षों की सर्वोदय-साधना को अगर वर्तमान संकट तोड़ देता है तो उन लोगो पर शायद इसका कम असर हो जो शुद्ध रोजी-रोटी की तलाश मे सर्वोदय मे आ अटके हैं, पर उन लोगों के लिए तो यह आघात का विषय ही होगा जो एक विचार से प्रभावित होकर इसमे आये हैं और अपना जीवन ही इसके लिए समर्पित कर दिया है।

—पवन कुमार गर्ग

सर्व सेवा संघ उपवास-दान पर चलेगा

विनोबा और जयप्रकाशजी की उपस्थिति में एक से छः दिसम्बर तक ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार में हुई समीति ने सर्व सम्मति से सिफारिश की है कि सर्व सेवा संघ आगामी विनोबा जयन्ती यानी ११ सितम्बर '७४ से अपना खर्च उपवासदान से प्राप्त शुद्ध आय से चलाये। समीति ने यह भी सुझाव दिया है कि संघ अपना खर्च चलाने के लिए अब चन्दा इकट्ठा न करे। लेकिन अपनी मर्जी से जो दान देना पसन्द करे उसे वह स्वीकार कर सकता है। सर्वोदय-पात्र और सर्वोदय मित्र बनाने से जो रकम उसे प्राप्त होती है उसे वह पूर्ववत स्वीकार कर सकता है।

समीति में देश भर के कोई बावन सर्वोदय सेवक एकत्रित हुए थे और छः दिनों तक उन्होंने आन्दोलन, संगठन, लोकनीति और इनसे सम्बन्धित अन्य सभी विषयों पर खुल कर चर्चा की। समीति में प्राय प्राय प्रत्येक व्यक्ति को पहले तीन दिन में अवसर दिया गया कि वह खुलकर अपनी बात सबके सामने रखे। इस प्रकार जो वक्तव्य आये उनमें से चर्चा के मुद्दे छांटे गये और फिर तीन दिनों तक उन मुद्दों पर चर्चा हुई। उपवासदान से काम चलाने के सुझाव पर तो जल्दी ही सर्वसम्मति हो गयी थी, लेकिन उत्तर प्रदेश में आगामी आम चुनाव के समय मतदाता शिक्षण का कार्यक्रम उठाने पर काफी जीवन्त बहस हुई। आखिरी दिन और आखिरी बैठक में जयप्रकाशजी द्वारा इस सम्बन्ध में लिखे गए एक वक्तव्य पर विनोबा जी ने सो फी सदी सहमति प्रकट की और उसे बैठक में सुनाया गया। यह भी स्पष्ट किया गया कि अक्टूबर में सेवाग्राम में हुई राष्ट्रीय परिषद ने भी इस कार्यक्रम की सिफारिश की थी और संघ अधिवेशन में उसे स्वीकार किया गया था। फिर भी उत्तर-प्रदेश के साथियों से इस कार्यक्रम पर आगे और विचारविमर्श करके इसे उठाया जायेगा।

समीति को चार बार विनोबा ने और तीन बार जयप्रकाशजी ने सम्बोधित किया। विनोबाजी ने खास कर उपवासदान पर जोर दिया और कहा कि प्रान्तों को चालीस हजार उपवासदान का लक्ष्य पूरा करना चाहिए। उनका जोर इस बात पर भी था कि एक लाख की प्रसार-संख्या वाली एक साप्ताहिक पत्रिका निकलनी चाहिए जो देश में सब जगह पहुंचे और सभी प्रकार के पाठक वर्गों की जरूरत पूरी करे। अभी चूंकि ऐसा कोई पत्रिका निकलना संभव नहीं है। इसलिए तय किया गया कि सभी सर्वोदय पत्रों की प्रसार संख्या तिगुनी की जाये। अभी यह छत्तीस हजार के लगभग है। समीति में तय किया गया कि सभी क्षेत्रों में सर्वोदय पत्रों की प्रसार संख्या तिगुनी करने पर जोर दिया जायगा।

× जयप्रकाश नारायण तथा मुख्यमंत्री प्रकाशचन्द्र सेठी के बीच हुई चर्चाओं के अनुसार शासकीय अधिकारियों व सर्वोदय प्रतिनिधियों की एक तीन सदस्यीय संयुक्त समिति गठित की जा रही है, जो मुंगावली की खुली जेल में सजा काट रहे आत्मसमर्पित डाकुओं के सरदारों से चर्चा कर उन लोगों के नाम पूछेगी जिनसे डाकुओं को अस्त्र-शस्त्र मिलते रहे हैं। राज्य सरकार ने आत्मसमर्पित डाकुओं की यह शर्त स्वीकार कर ली है कि जिन लोगों के नाम हथियार देने के संबंध में बताये जायेंगे, उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी। लेकिन ऐसे लोगों पर इस दृष्टि से अवश्य निगरानी रखी जायेगी कि वे लोग अब भी शेष बचे डाकुओं को हथियार दे रहे हैं या नहीं और कहीं वे लोग हथियारों को उपलब्ध कराकर नये डाकू दल बनाने में तो योग नहीं रहे हैं।

गत १४ नवम्बर को मुंगावली में खुली जेल के उद्घाटन समारोह में जयप्रकाश जी ने बागी सरदारों से चर्चा कर उनको जिनसे हथियार मिलते हैं, उनके नाम बताने के लिए डाकुओं की सशर्त सहमति की बात व्यक्त की थी। उस समय मुख्यमन्त्री ने अपनी कोई प्रतिक्रिया प्रकट नहीं की थी, लेकिन भोपाल में जयप्रकाश जी से चर्चा के दौरान वे इसके लिए सहमत हो गये। इस संबंध में जो समिति गठित की जा रही है उसमें गृह सचिव आर० सी० राय० के अलावा शान्ति मिशन के उपाध्यक्ष देवेन्द्र कुमार को भी लिया जा रहा है।

× बिहार में भूदान में प्राप्त अवितरित भूमि में से चालू वर्ष में माह सितम्बर तक ४,२५४ एकड़ भूमि का वितरण ४,६६३ भूमिहीन किसान परिवारों में किया गया है। भूदान में प्राप्त २१ लाख एकड़ जमीन में से अब तक खेती के योग्य पाई गई ४ लाख ३६ हजार एकड़ जमीन का वितरण हो चुका है।

बिहार भूदान यज्ञ कमिटी के मन्त्री श्यामप्रकाश मिश्र ने बताया कि अभी भी लगभग पांच लाख एकड़ जमीन का सर्वे करना बाकी है। इस काम में कमिटी काफी तत्पर है और १५ भूवितरण टोलियों के माध्यम से चालू वर्ष में अवितरित जमीन को बांट देना चाहती है। सरकार ने भी इस काम के लिए करीब २०० अमीनों को रखा है। चालू भूमि सुधार वर्ष में सरकारी अधिकारियों को भी भूदान के लम्बित कामों को पूरा करने का सरकारी आदेश है। इस वर्ष १२४५ भूदान किसानों के नाम दाखिल खारिज हुआ है। परन्तु किसानों के नाम लगानबन्दी की दिशा में काफी काम करना बाकी है। दानपत्रों को संपुष्ट करने में संतोषजनक प्रगति हुई है। इस वर्ष ५३६१ दानपत्र संपुष्ट किये गये हैं।

श्री बंग उत्तरप्रदेश के दौरे पर

सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री ठाकुरदास बंग उत्तरप्रदेश में मतदाता प्रशिक्षण के कार्यक्रम के आयोजन के सिलसिले में प्रदेश के आठ दिन के दौरे पर जा रहे हैं। वे १६ दिसम्बर को लखनऊ जायेंगे, १८ को वाराणसी, १९ को इलाहाबाद, २० को कानपुर, २१ को मेरठ, २२ को अलीगढ़ और २३-२४ दिसम्बर को आगरा में रहेंगे।

मतदाता, धोखा देने वालों को धोखा दें : आचार्य कृपलानी

हम मतदाताओं के सामने निष्पक्ष तथा स्वतन्त्र चुनावों की आवश्यकता की बात रखेंगे। हम जानते हैं कि मतदाताओं को फुसलाने के लिए बहुत पैसा खर्च किया जाता है। मतदाता अपना मत किसी विशेष व्यक्ति या पार्टी को दे, इसके लिए जाति और समाज का दबाव, शराब पिलाना और नाना प्रकार की धमकियों का प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी मतदाताओं पर दबाव डालने के लिए सरकारी साधनों भी इस्तेमाल किया जाता है।

हमें मतदाताओं को इन बुराइयों से सावधान करना है। सभी राजनैतिक दल इनमें से कुछ तरीके इस्तेमाल में लाते हैं। हम इस बात से अवगत हैं कि उनके पास प्रभाव डालने के लिए राज्यशक्ति नहीं है, जो सत्ताधारी दल को सुलभ है।

लाइसेंस और परमिट-कोटा-लाइसेंस जो भूमिका अदा कर रहे हैं और जिसकी कीमत उपभोक्ता को तथा देश को चुकानी पड़ रही है उससे भी हम अवगत हैं। कभी-कभी सत्ताधारी दल जो कुछ करता है वह मात्रा में इतना अधिक हो जाता है कि चीजों के गुण तक बदल जाते हैं। हमारी जनता गरीब और

आचार्य कृपलानी

अज्ञान है, हम यह जानते है। हम उन्हें इन बुराइयों से आगाह करेंगे और उनसे अपनी अन्तरात्मा के अनुसार देश के भले को सोचकर मत देने को कहेंगे, न कि सिर्फ किसी व्यक्ति विशेष या पार्टी के हित में।

हम उनसे कहेंगे कि वे किसी प्रलोभन के शिकार न बनें। फिर भी हमें मालूम है कि कभी-कभी प्रलोभन इतना बड़ा और दबाव इतना अधिक होता है कि हमारे लोग उसका सामना नहीं कर सकते। हम उन्हें मुकाबला करने को कहेंगे, पर यदि वे ऐसा नहीं कर सकते तो उन्हें हम बतायेंगे कि ये देश को धोखा देने के चलन हैं। देश के साथ विश्वासघात करने से यह उनके लिए कहीं बेहतर है कि वे धोखा देने वाले को ही धोखा दें। और भी कई तरीकों से हम मतदाताओं को समझायेंगे कि वे अवैध, अनैतिक, गैरप्रजातांत्रिक और राष्ट्रद्रोही प्रयत्नों के शिकार न हों और अपना मत स्वतन्त्र रूप से अपनी अन्तरात्मा के अनुसार दें। आखिरकार मत गुप्त होता है और इसमें कोई किसी पर दबाव नहीं डाल सकता। (अंग्रेजी से अनूदित)

आन्दोलन के समाचार

चार और पाँच दिसम्बर को कस्तूरबाग्राम, इन्दौर में सम्पन्न हुए मध्यप्रदेश सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर प्रदेश सर्वोदय मंडल के नये अध्यक्ष के लिए श्री हेमदेव शर्मा का चयन किया गया। मन्त्रि-पद हेतु श्री इन्द्रलाल मिश्र का ही पुनः चयन किया गया। इस अवसर पर हुई प्रदेश गांधी स्मारक निधि के राज्य बोर्ड की बैठक में श्री बनवारीलाल चौधरी को म. प्र. गांधी स्मारक निधि का अध्यक्ष व श्री बालकृष्ण जोशी को मंत्री मनोनीत किया गया।

× सर्वोदय समिति सरगुजा के मन्त्री श्री गौड ने बताया कि जिले के पोरपुर, सीतापुर और अम्बिकापुर प्रखण्ड के ३४ गावों में पदयात्रा करके ग्रामवासियों से पुनः संपर्क किया गया और ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का विचार समझाया गया। परिणामस्वरूप १५ गावों में विधिवत ग्रामसभाओं का गठन हुआ। पदाधिकारियों ने ग्रामकोष के निर्माण के लिए ४३६ रुपये २५ पैसे और १२७ किलोग्राम अनाज तत्काल संग्रह किया। सभाओं ने धान की नई फसल आने पर उपज का ४० वा हिस्सा निश्चित रूप से निकलवाने का सर्व सम्मति से प्रस्ताव किया है।

जिले में सर्वोदय समिति के ६ खादी उत्पादन एवं वस्त्र स्वावलम्बन केन्द्र, ४ खादी बिक्री भण्डार और १ ऊनी खादी उत्पादन केन्द्र है। समिति जिले के १५७ ग्रामदानी गावों में खादी और ग्रामोद्योग का कार्य कर रही है। २५७० वस्त्र स्वावलम्बी कत्तिनें और ४४५ पंजीकृत बुनकर हैं। परम्परागत चरखों के लिए कत्तिनें हाथ धुनाई मोडियो से पोनी बनाकर कताई करती हैं। ग्रामदानी सीतापुर प्रखण्ड में १५० सर्वधातु दो तकुआ अम्बर चर्खे वितरित किये गये हैं। इसके अलावा जिले में अलग-अलग जगह सूती-ऊनी खादी उत्पादन, मधुमक्खी पालन, लोहारी-सुनारी, धान-कुटाई तथा ग्रामीण तेल-उद्योग के द्वारा लगभग १३०० लोगों को रोजगार दिया गया है। खादी-ग्रामोद्योग-आयोग ने उक्त प्रवृत्तियों के लिए आवश्यक अनुदान एवं कार्यशील पूँजी प्रदान की है।

× जिला सर्वोदय मंडल नैनीताल के कार्यकर्ताओं ने सर्वसम्मति से तय किया है कि हर माह की पच्चीसवी तारीख को किसी न किसी गाव में बैठक रखी जाये और जनसम्पर्क बढ़ाकर जनशक्ति को जगाया जाये। निश्चयानुसार २५ नवम्बर को इन्दरपुर में बैठक हुई। बैठक में तय किया गया कि गाव के स्कूल जाने वाली सड़क की श्रमदान से मरम्मत की जाये। बैठक में उपयोग-दान के लिए निम्नलिखित भाइयों ने संकल्प लिया : सर्वश्री इनवारी देवी, बन्धु प्रसाद, सुवेकादेवी, मेदारू भगत, रामअवतार राम, कन्हई भगत, तेतरा देवी।

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु., एक प्रति ३० पैसे), विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २४ दिसम्बर, '७३

पवनार में संगीति : विवरण पृष्ठ २ पर

भूदान-यज्ञ

२४ दिसम्बर, '७३

वर्ष २० अंक १३

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

सबकी संगत : छः दिन की संगीति

ग्रामस्वराज्य संगीति के लिए सर्व सेवा संघ की ओर से सिद्धराज जी और बंग साहब ने बाकायदा कार्यसूची बनायी थी और विषयों का चयन कर के उन पर संक्षिप्त टिप्पणियां भी तैयार की थी। लेकिन एक से छः दिसम्बर ब्रह्म विद्यामन्दिर पवनार में चलने वाली यह संगीतिसही मानो मे संगीतिही सिद्ध हुई और उस मे पूर्वनिर्धारित कार्यक्रम के अनुसार कुछ नही हुआ। एक अर्थ मे यह ठीक ही हुआ, क्योंकि 'ग्रामस्वराज्य संगीति' हो कर यह कुछ औपचारिक हो जाता औरविचारशीलकार्यकर्ताओ के आपसी विश्वास के सम्पादन की जो उपलब्धि इस संगीति मे हुई वह शायद नही हो पाती। संगीति को अगर वास्तविक और आपसी समझ बढाने वाली बनना था तो यह जरूरी था कि यह सेवाग्राम मे अक्टूबर मे हुई राष्ट्रीय परिषद और फिर हुए संघ अधिवेशन से जुडती। कहा गया था और कई लोग महसूस भी कर रहे थे कि हालांकि राष्ट्रीय परिषद द्वारा पारित आठ सूत्री कार्यक्रम को संघ अधिवेशन ने सर्वसम्मति से अनुमोदित किया था लेकिन इस दौरान ऐसे कई अवसर आये थे जब साफ लगा था कि हम लोग एक दूसरे की बात ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं और ऐसे कई विषय और शब्द हैं जिनके अर्थ अलग-अलग मनो मे अलग-अलग ध्वनियां और झंकार पैदा करते हैं। विचार की प्रेरणा और भाईचारे के बंधन से बंधे लोगो मे आपसी समझ की यह कमी निश्चित ही वांछनीय नहीं मानी जा सकती। परमधाम संगीति मे एक दूसरे को समझने का भरपूर मौका मिला और उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यही मानी जानी चाहिए कि सर्वोदय आन्दोलन मे लगे विचारशील लोग एक दूसरे के करीब आये।

संगीति के लिए अस्सी से ज्यादा व्यक्तियों को निमन्त्रित किया गया था। आये पचपन। लेकिन इन पचपन व्यक्तियों में तमिलनाडु के जगन्नाथन और कृष्णम्मा थे तो हिमाचल प्रदेश के भूमिक्षु, गुजरात के हरिवल्लभ परीख, कान्ता, हरविलास और कांति भाई थे तो उड़ीसा के मनमोहन चौधरी, आसाम मे काफी वर्षों तक काम किये चुन्नीभाई वैद और बंगाल के विमल पाल थे। महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, केरल, पंजाब हरियाणा आदि सभी प्रान्तों के लोग संगीति मे आये थे। कमी थी तो सिर्फ मध्यप्रदेश के भाइयो की जो उन्ही दिनों कस्तूरबाग्राम मे हुए प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन के कारण नहीं आ पाये। उम्र और अनुभव के नाते भी संगीति बहुत सम्पन्न और विविध थी। बैद्यनाथ बाबू जैसे स्वराज्य आन्दोलन के वयोवृद्ध सिपाही मौजूद थे तो कुमार प्रशान्त भी थे जिनकी उम्र 'शायद उतनी ही है जितनी कि सर्वोदय आन्दोलन की। अनुभव वृद्ध लोगो के साथ कुमार शुभमूर्ति, अशोक और अभयबंग और बीच मे थे आधे से ज्यादा प्रौढ। सघन क्षेत्रो के कर्मठ कार्यकर्ता थे तो शान्ति के लिये सर पर कफन बांध कर निकले लोग भी थे। और इन सब के बीच आने के लिए थे विनोबा और जयप्रकाश नारायण। छः दिन का समय था और स्थान था पवनार, जहां से जरूरी कार्य के लिए भी किसी का निकल पाना मुश्किल था। (नरेन्द्र भाई ने सेवाग्राम अपने घर कुछ मित्रों को बुलाया था लेकिन छः दिसम्बर तक उनका निमन्त्रण खडा ही था।) गुलाबी ठण्ड और गुनगुनी धूप ने एक बाबूराव चन्दावार को छोड़ कर किसी को कष्ट नहीं होने दिया।

चूंकि विश्वास सम्पादन और आपसी समझ बढ़ाना एक प्रमुख उद्देश्य था इसलिए विषय और समय के बन्धनो को छोड़ दिया गया और स्वीकार किया गया कि सब खुले दिल से बोलें और जो भी बोलना चाहें, जैसे भी बोलना चाहें बोलें। पहले तीन दिनों तक यह 'बोलना' चलता रहा। पाटील साहब की अनौपचारिक अध्यक्षता मे यह बोलना बहुत ही मुक्त ढंग मे चला और पूरा नहीं हो पाया इसलिए तीन दिसम्बर की रात को भी एक बैठक हुई जिसमे उत्तरप्रदेश के हरदमसिंह ने ठेठ ग्रामीण शैली में बहुत सटीक ढंग से अपनी बातें रखीं। अधिकांश बोलने वालो ने बिना

→

चुनावों में बढ़ता भ्रष्टाचार और प्रजातंत्र का भविष्य

पैगम्बर मुहम्मद की तस्वीर

—यदुनाथ थत्ते

प्रख्यात पत्रिका टाइम के ५ नवंबर १९७३ के अंग मे पैगंबर मुहम्मद का चित्रछपा था। भारत सरकार ने उस अंक के वितरण पर प्रतिबन्ध लगा दिया। आर्थर बच्चो के एक विश्वविख्यात साहित्यकार हैं। आपने बच्चो के लिए एक विश्वकोष बनाया और प्रकाशित किया। मुहम्मद पैगंबर जैसी शख्सि-यत को भला वे कैसे भूलते ? उनके बारे मे एक चित्र के साथ कुछ जानकारी विश्व कोष में दी गयी और इसी वजह से उस ग्रन्थमाला पर भारत सरकार ने पाबन्दी लगा दी। बच्चो की किताबें चित्रमय होना अनिवार्य होता है। अभी एक अमेरिकन कम्पनी मुहम्मद साहब की जीवनी पर एक फिल्म बनाने की बात सोच रही है। अमरिकी चित्र निर्माताओं के बारे मे भारत सरकार कुछ नहीं कर सकती, लेकिन भारत मे उस फिल्म का प्रदर्शन करने संगठन ने संपादक को कोर्ट मे खींचने का नोटिस दिया। जो चित्र छपा था वह कोई संपादक की सूझ से किसी स्थानीय कलाकार द्वारा निर्मित नही था। कला के बारे मे छपी एक पुस्तक से वह लिया गया है, ऐसा स्पष्ट उल्लेख उस चित्र के साथ साधना के संपादक ने किया था। इस्लामी चित्रकला की यह पुस्तक १९२९ मे पहले छपी। उसके अनेक संस्करण है अब तक निकल चुके हैं और उसकी लाखों कापियां बिक चुकी हैं। इग्लैंड के अलावा और देशो मे भी उसके संस्करण निकल चुके है। अन्य देशों के मुसलमानो को नाज है कि इतनी सुन्दर कला का इस्लाम ने निर्माण किया। मुसलमानों को अपनी यह एक बड़ी वसीयत है ऐसा लगता है, लेकिन भारत के मुसलमानों को न इस पर नाज है, न उसको [illegible] है। से मिलने आया। संपादक से उन्होंने जवाब तलब करना चाहा और मांग की कि संपादक मुसलमानो से माफी मांगे। इस तरह के वाक-यात जो पहले हुए हैं उनके बारे मे भी उन्होने बताया। उनके बोलने मे धमकी की बू आ रही थी। भारतीय विद्याभवन की एक पुस्तक मे मुहम्मद की तस्वीर छपने के कारण उस पुस्तक को पंडित जवाहरलाल नेहरु के जमाने मे वापस खींचना पड़ा था। कलकत्ता के प्रख्यात पत्र 'स्टेट्समन' के दफ्तर पर मुसलमानो ने धावा बोल दिया था और विध्वंस किया था, इसलिए कि उसने टॉयनबी जैसे एक विश्वविख्यात इतिहासकार का एक लेख छापा था, जिसमे मुहम्मद पैगंबर और महात्मा गांधी की तुलना की गयी थी। पैगं-बर के साथ दुनिया के किसी भी महान व्यक्ति की इस तरह तुलना मुसलमान कभी बर्दाश्त नहीं कर सकते, ऐसा बड़े गर्व के साथ उन्होंने संपादकजी से कहा। संपादकजी ने नम्रता-पूर्वक शिष्ट मण्डल के सदस्यो से कहा कि आप इस तरह की धमकियों की भाषा का प्रयोग करना चाहते हो तो आपसे बातें नही हो

शब्द के माध्यम द्वारा अपनी अनुभूति को प्रकट करेगा तो चित्रकार कागज, रंग और कलम के या शिल्पि के माध्यम द्वारा उसको प्रकट करने की कोशिश करेगा। लेखक और कवि को तो आजादी है, लेकिन चित्रकार को नहीं ऐसा क्यों होना चाहिए? अपने माध्यम का चुनाव करने की स्वतंत्रता क्या कलाकारों को नहीं होगी? दुनिया के मुसलमान तथा गैर मुसलमान साहित्यकारों ने मुहम्मद साहब की जीवनी तथा कार्य के बारे में बहुत सारा लिखा है। कलाकार अगर पत्थर या कागज का उपयोग करना चाहें तो उनको हम मना करेंगे? यह तो दोगली नीति होगी। अन्य मुसलमान देशों के कलाकारों को यह आजादी थी, तभी तो 'पेंटिंग्ज ऑफ इस्लाम' जैसी पुस्तक में मुहम्मद साहब का, मुसलमान कलाकार का बनाया चित्र हम पाते हैं। एक ऐसी नहीं कई किताबें निकली हैं और विश्वकोष कार्यालय में या उसके समक्ष किसी ग्रंथालय में हम उनको देख सकते हैं। मजहब के नाम पर कलाकार पर इस तरह पाबंदी लगाना उचित नहीं होगा। लेकिन भारत के मुसलमान इसको अभी समझ नहीं रहे हैं। अच्छे और भद्दे का फर्क जरूर करना चाहिए और भद्दी बात के खिलाफ आवाज भी उठानी चाहिए, लेकिन मजहब के नाम पर नहीं, सभ्यता के नाम पर उठानी चाहिए।

दूसरी बात अधिक गंभीर है। क्या मुसलमानों को यह विशेष अधिकार दिया गया है कि वे अपनी मान्यताओं को दूसरों पर थोप दें? क्या वे भारत के सर्वसामान्य नागरिक न होकर विशेष नागरिक अपने को मानते हैं? मुसलमानों को यह पूरा अधिकार है कि वे मुहम्मद साहब की कोई प्रतिमा न बनायें, लेकिन गैर मुसलमान पर पाबंदी लगाने का विशेषाधिकार उनको किसने दिया है? मुसलमानों की मान्यताएं और रस्मोरिवाज वे गैर मुसलमानों पर कैसे लाद सकते हैं? और दूसरा भी ऐसा बर्ताव करे तो?

आज की छोटी बनी दुनिया में धर्म की पुस्तकों पर समाज के किसी अंश का ठेका नहीं चल सकता। विज्ञान के कारण सभी धर्म की पुस्तकें सब के लिए खुली हो गयी हैं। औपचारिक दीक्षा को स्वीकार करने की उसके लिए कोई आवश्यकता नहीं। किसी भी पुस्तक की दुकान से कोई भी आदमी जाकर गीता, बाइबिल, कुरान, जेंद अवेस्ता खरीद सकता है उसको पढ़ सकता है, उसके बारे में अपने विचार प्रकट कर सकता है। गैर मुसलमान कुरान को पढ़ सकता है, गैर हिंदू गीता का अध्ययन कर सकता है, गैर ईसाई बायबिल का अभ्यास कर सकता है। धर्मग्रन्थों का तत्त्वज्ञान, इतिहास तथा साहित्य की दृष्टि से अध्ययन किया जा सकता है और उस पर अपने विचार कोई प्रकट करना चाहे तो उसको छूट होती है। इस नयी परिस्थिति से भारतीय मुसलमान अपने को अनजान रखना चाहते हैं, ऐसा लगता। क्या मुसलमान कुरान शरीफ के तथा मुहम्मद पैगंबर साहब के अपने को ठेकेदार मानते हैं? क्या कुरान शरीफ या मुहम्मद पैगंबर के बारे में गैर मुसलमानों को बोलने तथा लिखने की स्वतंत्रता वे नहीं देंगे? ऐसा कोई अधिकार मांगने का मतलब विशेष नागरिकता की मांग करना है। और सेक्युलर शासन में यह अधिकार किसी को दिया नहीं जा सकता।

क्या मुहम्मद पैगंबर को पैगंबर मानने के बदले इतिहास के प्रवाह को नया मोड़ देने वाली हस्ती मानने में गैर मुसलमान कोई अपराध करते हैं? मुसलमानों को इसका सीधा जवाब देना होगा। इतिहास को नया मोड़ देने वाले एक व्यक्ति के रूप में अगर मुहम्मद पैगंबर साहब को कोई देखना चाहे तो अन्य समकक्ष व्यक्तियों से उनकी तुलना की जायेगी। मुसलमान उनको भले पैगंबर मानें, लेकिन यह आवश्यक नहीं कि गैर मुसलमान भी वैसा ही करें। यही बात कुरान शरीफ के बारे में भी सही है। यदि मुहम्मद आखरी पैगंबर और कुरान शरीफ खुदा का आखरी लब्ज है उस पर कोई नुक्ताचीनी नहीं होनी चाहिए, गैर मुसलमानों से किस तरह कहा जा सकता है? मुसलमानों का यह रुख जमाने से मेल नहीं खाता। उस पर कोई भी सरकार अमल नहीं कर पायेगी। अल्पमत का यह दावा प्रगति-विरोधी है।

●

(पृष्ठ ५ का शेष)

आज तक हम ऐसा सोचते थे कि हम हैं समुद्र। समुद्र में गन्दे नाले भी मिल सकते हैं और गंगा भी मिल सकती है। इसलिए अच्छे काम के लिए कोई भी पैसा देता है तो लेने में कोई हर्ज नहीं है। क्योंकि हम समुद्र स्थान में हैं। यह अपनी बात आज तक थी। भगवान दो प्रकार का है। एक है 'सर्व' भगवान, दूसरा है 'शुद्ध' भगवान। भगवान कैसा है, यह पूछोगे तो उत्तर आयेगा कि उसके दो रूप हैं। (१) भला, बुरा सब भगवान है। (२) भगवान स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल है। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी ले ली। अब बाबा ने तय किया है कि हम 'सर्व' भगवान की जो सेवा कर सकते थे वह अब तक की। अब 'शुद्ध' भगवान की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय को मानने वाला हर मनुष्य हर महीने एक पूरा उपवास करे और उसमें जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे दे।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा संघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हम लोग, जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास कर के दान दें। उससे चित्त-शुद्धि होगी, आरोग्य प्राप्ति होगी। अगर ४० हजार लोग महीने में एक दिन उपवास करते हैं और एक व्यक्ति के साल भर के १२ उपवास से ७५ रु० मिलते हैं तो १० लाख रुपये होंगे। इसमें क्या होगा? कोई करोड़पति है मान लीजिए, और वह दान देना चाहता है, तो उसको १२ उपवास करने होंगे। उसका भोजन खर्च ज्यादा हो सकता है। किसी का तीन रुपये होता है, उसका चार, छः या आठ हो सकता है। तो मान लें, उसके १२ उपवास से १०० रुपये होंगे, उतना दान वह देगा। है करोड़पति, लेकिन उससे उतना ही प्राप्त करेंगे। यह है शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल दान।

इस तरह सब उपवास करके दे दें १० लाख (सर्व सेवा संघ को)। १० लाख के ऊपर होगा तो वह प्रान्त को देगा। १० लाख तक सर्व सेवा संघ को। 'सर्व देव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।' इस तरह सबके पास का पैसा सर्व सेवा संघ के पास, गोपुरी (पो० गोपुरी, वर्धा, महाराष्ट्र) पहुंच जाये।

साइप्रस में तुर्क शरणार्थियों के बीच

—अमरनाथ

साइप्रस के बीस हजार तुर्क शरणार्थियों के बीच पुनर्वास का कार्य करने नवम्बर में जो अन्तर्राष्ट्रीय शांति दल साइप्रस पहुंचा है उसमें भारत के पांच लोग हैं (देखिये "भूदान-यज्ञ" ३ दिसम्बर '७३)। शांति दल में अखिल भारतीय शांति सेना मंडल के प्रशिक्षक श्री अमरनाथ भी हैं। साइप्रस पहुंचकर दल ने वहां की जो स्थिति देखी उसकी रपट श्री अमरनाथ भाई ने 'भूदान-यज्ञ' के लिए भेजी है। रपट हम ज्यों की त्यों प्रकाशित कर रहे हैं।

कुछ समय पूर्व विनोबा जी ने सुझाव दिया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ को अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सेना रखनी चाहिए। जयप्रकाश जी ने भी इस दिशा में पहल की और यह बात संयुक्त राष्ट्र संघ के सदस्यों तक पहुंचाई गई। अधिकांश सदस्य राष्ट्रों ने सुझाव का स्वागत किया और प्रयोग के तौर पर साइप्रस के तुर्कों के पुनर्वास का मामला उठाने का सुझाव दिया। साइप्रस में ग्रीक व तुर्कों के आपसी दंगों के फलस्वरूप पिछले दस वर्षों से कोई बीस हजार तुर्क घर-बार छोड़ कर भटक रहे हैं। कार्य की प्रारम्भिक भूमिका तैयार करने के उद्देश्य से अमरीका से प्रो० पाल० हेयर व चार्ली वाकर, भारत से श्री नारायण देसाई तथा इंग्लैंड से कुछ मित्र साइप्रस आये थे। साइप्रस के राष्ट्रपति श्री मेकारियोस तथा तुर्क नेता उपराष्ट्रपति श्री डेन्टास ने भी अपनी स्वीकृति और सहमति इस पुनर्वास-कार्य के लिए दी।

नवम्बर के दूसरे सप्ताह में यह अन्तर-राष्ट्रीय शान्ति दल साइप्रस पहुंच गया। इस दल में भारत से पांच सदस्य हैं, अमरीका से चार सदस्य तथा दक्षिण अमरीका से एक सदस्य। कुल मिलाकर दस सदस्यों का दल पुनर्वास के कार्य में जुटा है। दल के संयोजक श्री पाल हेयर हैं। इंग्लैंड से भी कुछ लोगों के दल में सम्मिलित होने की आशा है।

प्रारम्भ में एक सप्ताह निकोसिया में रहकर साइप्रस के बारे में सामान्य तथा शरणार्थी समस्या के बारे में विशेष रूप से जानकारी प्राप्त करने के बाद सत्रह नवम्बर से तीन टोलियों में विभाजित होकर हम गांवों में आ गये। दल के सभी सदस्य इन्हीं गांवों में रहते हैं और क्षेत्र के समस्याग्रस्त इलाकों में काम करते हैं। सप्ताह में एक दिन अपने पिछले काम का लेखा-जोखा करने तथा भावी योजना बनाने आदि की दृष्टि से सभी लोग निकोसिया में मिलते हैं।

साइप्रस की वर्तमान समस्या के सन्दर्भ में पुनर्वास कार्य का स्वरूप जानने के लिए साइप्रस का पिछला इतिहास संक्षेप में समझ लेना उचित होगा। साइप्रस भूमध्यसागर स्थित एक छोटा सा द्वीप है। यहां ग्रीक तथा तुर्क मुख्य दो जातियां रहती हैं। तुर्क लोग कुल आबादी का १८ प्रतिशत हैं। साइप्रस की कुल आबादी ६ लाख है। १५७१ में साइप्रस पर तुर्कों ने अपना शासन किया। अंग्रेजों के शासक बनने तक वे शासन करते रहे। १८७८ में इंग्लैंड से अंग्रेज व्यापार के लिए साइप्रस आये और १९१२ तक वे यहां के शासक बन गये। १९३१ में साइप्रस के ग्रीक लोगों ने अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के लिए स्वतंत्रता संग्राम प्रारंभ किया। साइप्रस के तुर्कों ने स्वतंत्रता संग्राम में भाग नहीं लिया और वे अंग्रेजों के ही साथ बने रहे। स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नेता साइप्रस के वर्तमान राष्ट्रपति मेकारियोस थे। आजादी की लम्बी लड़ाई के बाद १९५९ में इंग्लैंड में एक संधि हुई। संधि में साइप्रस के ग्रीक तथा तुर्क प्रतिनिधि व तुर्की व ग्रीस सरकारों के प्रतिनिधि और ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि शामिल हुए। संधि में तुर्कों को विशेष अधिकार देने की बात मुख्य रूप से तय हुई। १६ अगस्त १९६० को साइप्रस स्वतंत्र घोषित हुआ। ग्रीक नेता मेकारि-

→

बाएं से श्री अमरनाथ, श्री नचिकेता देसाई व श्री मानव मंडल

ग्रीस के राष्ट्रपति बने तथा तुर्क नेता डा० कुचुक उपराष्ट्रपति बने। संविधान के अनुसार उपराष्ट्रपति को विदेशी मामले, सुरक्षा तथा कुछ आर्थिक प्रश्नों में विशेषाधिकार दिये गये। राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति दोनों को अपने लिए अलग-अलग क्रमश: सात और तीन मंत्री नियुक्त करने की सुविधा भी प्रदान की गई। यही अनुपात ग्रीक और तुर्कों के लिए सभी सार्वजनिक सेवाओं में माना गया। संविधान में तुर्कों को आनुपातिक अधिकार मिले, पर प्रत्यक्ष व्यवहार में तुर्कों को वे सुविधाएं नहीं मिलीं। उनके प्रति सौतेलेपन का व्यवहार ही चलता रहा। परिणाम स्वरूप धीरे धीरे तुर्कों में असन्तोष बढ़ता गया और आपसी खींचतान चलती रही। ग्रीक और तुर्कों के बीच ईर्ष्या-द्वेष की सुलगती आग भीषण ज्वाला के रूप में १९६३ तक भभक उठी और २१ दिसम्बर १९६३ से साइप्रस में दंगे प्रारंभ हो गये। अल्पमत में होने के कारण तुर्कों को ही अधिक हानि पहुंची। आगजनी, लूट और हत्याएं व्यापक पैमाने पर हुईं। तुर्कों का कहना है कि उन पर योजनाबद्ध ढंग से हमला किया था। यहां के गांवों में हमने पाया कि कुछ जगह तुर्क तथा ग्रीक सम्मिलित रूप से रह रहे हैं, कुछ गांव केवल तुर्कों के हैं और कुछ केवल ग्रीकवासियों के हैं। स्वतन्त्रता के समय इंग्लैंड में हुई संधि के अनुसार ग्रीस, ब्रिटेन, टर्की—तीनों ने साइप्रस की आंतरिक तथा बाह्य आक्रमणों से रक्षा की जिम्मेदारी ली थी। जब दंगे हुए तो केवल टर्की की वायुसेना के हवाई जहाजों ने चेतावनी के रूप में निकोसिया पर चक्कर काटने शुरू कर दिये, तब ५ दिनों तक लगातार चले हिंसक दंगों पर काबू पाया जा सका। बाद में ब्रिटेन के सैनिक भी आये। नैटो के सदस्य राष्ट्रों ने भी कुछ पहल की और अन्त में यह मामला संयुक्त राष्ट्रसंघ को सौंप दिया गया।

१९६४ में संयुक्त राष्ट्र संघ की फौज 'पीस कीपिंग फोर्स' के रूप में यहां आई और आज भी साइप्रस में मौजूद है। संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से आर्थिक विकास का काम भी शुरू किया गया। दंगे में लगभग २० हजार तुर्क बेघरबार होकर बड़ी आबादी के तुर्क गांवों में शरणार्थी के रूप में चले गये।

दंगों के बाद तुर्क लोग साइप्रस की सरकार से अलग हो गये। १९६८ के चुनाव में तुर्कों ने अपने नये नेता डेन्टाश को चुना, जिन्हें वे उपराष्ट्रपति कहते हैं। डा० कुचुक ने डेन्टाश के समर्थन में अपने को वापस ले लिया था। उधर मैकारियोस ही राष्ट्रपति बने रहे। आज साइप्रस की मान्य सरकार मैकारियोस की ही है, लेकिन डेन्टाश के नेतृत्व में तुर्क लोगों ने सरकार जैसा ही स्वरूप देने की कोशिश है, जिसे ग्रीक लोग 'टर्की लिडरशिप' कहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की मध्यस्थता में नगरों में तुर्क बहुल क्षेत्रों को ग्रीक क्षेत्रों से अलग किया गया है जिसे ग्रीन लाइन कहते हैं। गांवों में तुर्कों के बहुसंख्यक गांव उसके अन्तर्गत हैं। तुर्क और ग्रीक सीमाओं पर उनके अलग चेक पोस्ट हैं, जहां तुर्क व ग्रीक पोलिस खड़ी रहती है। बीच-बीच में राष्ट्र संघ की निगरानी चौकियां हैं। तुर्कों को ग्रीकों के क्षेत्र में आने की छूट है लेकिन ग्रीकों को तुर्क क्षेत्र में आने की छूट नहीं है। उन्हें तुर्क क्षेत्र में आने के लिए पास लेना पड़ता है। सामान्यतया उनका आना कम ही होता है। तुर्कों की साइप्रस सरकार से अलग अपनी खुद की पुलिस-फोर्स, झण्डा तथा अन्य सार्वजनिक सेवाओं की प्रशासनीय व्यवस्था है। टर्की का राष्ट्रीय झण्डा ही तुर्क लोग लगाते हैं, और उसे ही वे अपना राष्ट्रीय झण्डा भी मानते हैं। ग्रीक लोग ग्रीस का झण्डा लगाते हैं। साइप्रस का राष्ट्रीय झण्डा तो केवल कुछ सरकारी भवनों पर दीखता है। यद्यपि मैकारियोस स्वतंत्र साइप्रस के पक्षपाती हैं, पर सुना है कि उन घर पर भी ग्रीस का ही झण्डा लगा है। साइ प्रस में तुर्कों को टर्की का समर्थन और सहा मिला है और ग्रीकों को ग्रीस की।

ऐसी विषम परिस्थिति में अन्तर्राष्ट्री दल को पुनर्वास का कार्य करना है। लगत क्या है कि शरणार्थियों का पुनर्वास तो ह भी जायेगा, पर दोनों समुदायों के सम्बन्ध अगर आज जैसे ही रहे तो सब कुछ फिर उजड़ जायेगा। सरकार से विस्थापितों मकान बनवाकर उन्हें बसाने से भी बड़ काम उनके टूटे हुए दिलों को जोड़ने का है जनता के स्तर पर यह काम थोड़ा आसा हो सकता है, क्योंकि दस वर्षों के अन्तराल के बाद दोनों पक्ष अब पिछला कुछ भूल र रहे हैं। १९६३ के पहले का जमाना वे हसरत भरी निगाह से याद करते हैं। लेकिन नेताओं की कलाबाजी और राजनीतिज्ञों के पैंतरे जनता को क्या आपस में मिलने देंगे? शायद यहां की समस्याओं का हल उच्चस्तरीय राज नीतिक संधि से ही सम्भव है।

तुर्क शरणार्थियों को उनके गांवों के बसाने का कदम राष्ट्रसंघ के प्रयास से कुछ वर्ष पहले किया गया था। सरकार ने कुछ गांवों में मकान बनाये, लेकिन तुर्क वापस वहां नहीं गये। सरकार का कहना है कि तुर्कों के नेता उन्हें वापस अपने घरों को नहीं जाने देते। 'साइप्रस रिसेटलमेंट प्रोजेक्ट' के मार्फत, जिसके नाम से हम काम करते हैं, दोनों ओर से सम्पर्क कर उन्हें राजी किया गया है। 'टर्की लीडरशिप' ने सर्वेक्षण

(शेष पृष्ठ १२ पर)

बिना टिप्पणी के

इजराईल, सत्याग्रह और विनोबा ! एक और प्रतिक्रिया

नवम्बर २६ के अंक में 'इजराईल सत्याग्रह और विनोबा' शीर्षक से टिप्पणी प्रकाशित हुई है जिसमें सत्याग्रह सम्बन्धी वल्लभभाई पटेल के अभिमत के मुकाबले में विनोबाजी के विचार का स्पष्ट समर्थन मिलता है।

सर्व विदित न भी हो, कम से कम सर्वोदय क्षेत्र के तो सभी नेता-कार्यकर्ता इस बात से भली भांति परिचित हैं कि गांधी जी के सत्याग्रह और उनके द्वारा कल्पित अहिंसक प्रतिकार के बारे में विनोबा जी मूल मतभेद रखते हैं। अन्य बातों के अतिरिक्त मत विनोबा को यह मान्य नहीं कि कोई सत्य का आग्रही हो, वह सत्याग्रही हो सकता है आदि-आदि।

यहां इजराईल के प्रसंग में सत्याग्रह विषयक उनका स्पष्टीकरण भी उनकी इसी मान्यता की व्याख्या है जो बहुत विचारणीय है, न केवल उन लोगों के लिए ही, जो टिप्पणीकार के विचार में 'इन दिनों शासन की मनमानी के विरोध में सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग करने की बात उठाते हैं' बल्कि उनके लिए भी जो गांधी जी के बलिदान के बाद से आये दिन पूंजीवादी शोषणाधारित शासन की चुनौतियों से मुंह चुराते आ रहे हैं। टिप्पणीकार को यह भय-भ्रम तो खाए जा रहा है कि 'जब स्वयं विनोबा सत्याग्रह करने योग्य विशुद्ध अहिंसक शक्ति का अपने भीतर अनुभव नहीं कर रहे | तब हममें से अन्य किसी की इस मैदान में उतर पड़ने की इच्छा कितनी घनरनाक साबित हो सकती है'। परन्तु इस तथ्य से उन्हें रंचमात्र भी दुख-दर्द नहीं कि भारतीय जनता, विशेष कर किसान-मजदूर पहले जैसे शोषण तन्त्र में, सत्याग्रह अथवा अहिंसक प्रतिकार के अभाव में और अधिक महीन पिसते जा रहे हैं। वे तो विनोबा के उद्गार पढ़ कर यथास्थिति से सन्तुष्ट दीखते हैं। किन्तु सत्याग्रह के लिए जिस 'विशुद्ध अहिंसक शक्ति' का वे उल्लेख करते हैं वह तो युक्लिड की रेखा के समान एक आदर्श भर है जिस तक अपूर्ण सत्याग्रही पहुंचने की सतत साधना करता है। वस्तुतः ऐसी शक्ति न तो ईसा में थी न गांधी में। तभी तो ईसा ने कहा था, स्वर्ग में अपने पिता (यहां विशुद्ध अहिंसक शक्ति पढ़ सकते हैं—सा०) के समान पूर्ण बनो। वे अपने में ऐसी पूर्ण शक्ति का अभाव देखते थे। गांधी जी तो अपनी अपूर्णता की व्यथा कई बार व्यक्त भी कर चुके हैं। वे स्वयं अपूर्ण थे, उनके सहयोगी और अनुयायी और अधिक अपूर्ण थे। इसी अपूर्णता के साथ उन्होंने विश्व के सबसे बड़े साम्राज्य से लोहा लिया, यानी गुलाम-बाजार के मुकाबले में नाजुक-निर्बल (शारीरिक तौर पर) चिड़ियों को खड़ा कर दिया था। वे अपनी इस अपूर्णता को लेकर अंग्रेजी साम्राज्य की मनमानी का किसी आश्रम में बैठे टुकुर-टुकुर नहीं देखते रह सके थे और न ही उन्होंने कभी सत्याग्रह करने योग्य विशुद्ध अहिंसक शक्ति की अपने भीतर कमी का रोना रोया है। उनका समूचा जीवन इस कमी को दूर करने के सतत प्रयास-संघर्ष की गाथा है जिससे प्रेरित हो कर मोतीलाल, जवाहरलाल, सी० आर० दास, विपिनचन्द्र पाल जैसे सुखी-सम्पन्न और कोमल व्यक्ति सत्याग्रह संघर्ष की आग में तप कर लोह-पुरुष सिद्ध हुए।

इस सन्दर्भ में, गांधी जी ने यह ठीक ही माना कि मेरी ओर से जितने सत्याग्रह हुए थे, वे सब वीर (निर्बल) व्यक्तियों के सत्याग्रह थे, वास्तविक सत्याग्रह नहीं थे। असल में, उस काल में तो सारा देश ही पराधीन-निर्बल था। वास्तविक सत्याग्रह-अहिंसक स्वाधीन बलवान का ही होता है। परन्तु ऐसा कहने से गांधी का मतलब यह कदापि नहीं था कि वे सारे सत्याग्रह गलत थे। यह ठीक है कि उनमें सत्य-अहिंसा की दृष्टि से बेहद कमियां थीं। लेकिन इसका यह अर्थ निकालना कि वे गलत थे गांधी जी ही नहीं, लाखों अपूर्ण-अहिंसक स्वतन्त्रता सेनानियों, बलिदानियों के प्रति भी अन्याय है। स्वतन्त्रतापूर्व के इन अपूर्ण सत्याग्रहों की स्वतन्त्रता के बाद नये रूप के शोषण के विरुद्ध स्वतन्त्र-बलवानों के सत्याग्रहों द्वारा इनकी कमी-अपूर्णता को भटाना गांधी जी के उत्तराधिकारियों का कर्तव्य था जो उन्होंने पूरा नहीं किया, बल्कि विचार पूर्वक सत्याग्रह की भावना को ही कुंठित किया, जिसका खमियाजा भारत ही नहीं, विश्व की शोषित जनता भुगत रही है।

वास्तव में उस 'विशुद्ध अहिंसक शक्ति' का वास तो हर व्यक्ति के अभ्यन्तर में है। हर मानव में अनन्त दिव्य सम्भावनाएं सुप्तावस्था में विद्यमान हैं। महाप्राण, महात्मा पुरुष केवल इन्हें उजागर कर देते हैं।

फिर विनोबा जी कहते हैं, 'गांधी जी का सत्याग्रह और गांधी जी द्वारा कल्पित अहिंसक शक्ति निस्सन्देह ऐसी है कि वह किसी भी परिस्थिति में सदैव सफल होगी। अलबत्ता वैसी शक्ति तुम्हारे पास होनी चाहिए। क्या वह तुम्हारे पास है?'

यहां प्रश्न उठता है व्यक्तिगत सत्याग्रह के लिए जब गांधी जी ने विनोबा जी को चुना था, तब क्या उन्होंने चयन से पहले विनोबा से ऐसा प्रश्न पूछा था? यदि नहीं तो स्वयं विनोबा को यह देना चाहिए था कि ऐसी शक्ति मुझ में नहीं है, जैसा कि वे अब कहते हैं।

विनोबा जी यह भी कहते हैं कि 'यह शक्ति ईसा मसीह में थी'। यहां भी एक प्रश्न पैदा होता है कि क्या कभी गांधी जी ने भी अपने देशवासियों से ऐसा कहा था" भाईयो और बहनो, मैं ब्रिटानी साम्राज्य के विरुद्ध सत्याग्रह करने योग्य ईसा मसीह जैसी विशुद्ध अहिंसक शक्ति का अपने भीतर अनुभव नहीं कर रहा हूं, इसलिए मैं किसी को सत्याग्रह के लिए नहीं कहता।" उन्होंने तो उल्टे यहूदियों को हिटलर के विरुद्ध सत्याग्रह करने की सलाह दी थी। लेकिन विनोबा जी के अनुसार 'यहूदियों से ऐसा कहना कि तुम सत्याग्रह करो मूर्खता के सिवा कुछ नहीं है'। और 'ऐसी अवस्था में तुम सत्याग्रह करो इस प्रकार का उपदेश देते रहना 'परोपदेश पाण्डित्यम्' जैसी बात है। ऐसे उद्गारों पर टिप्पणी कोई क्या करे? लगता ऐसा है कि

→

(पृष्ठ ६ का शेष)

कर अपने घरो को वापस लौटने वालो की सूची तैयार करना शुरू किया है, उसी के अनुसार सरकार ने मकान बनाने का या मरम्मत कराने की अनुकूलता व्यक्त की है। वस्तुतः पिछले दस वर्षों में जो भी तुर्क शरणार्थी जहां भी गये, वे वही बस गये हैं। केवल गड़रिये तथा किसान मुख्य रूप से वापस होना चाहते हैं, लेकिन उनका कहना है कि वे पूरे गांव के सभी परिवारो के साथ एक साथ ग्रुप मे वापस जाना चाहते है, ताकि अपना सामाजिक, आर्थिक व्यवहार वे आपस मे कर सकें। सुरक्षा का प्रश्न भी उनके मन में है ही। पहले के बने मकानों में कही-कही कुछ परिवार वापस भी लौटे हैं। सरकार की कठिनाई है—एक गाव के सभी मकानो की मरम्मत या निर्माण के लिए मजदूरो तथा अन्य सुविधाओं को जुटाना। हमारे प्रयास से, सरकार अपने चालू बजट से शायद ४ गावो में शीघ्र ही काम शुरू कर दे, ऐसी आशा है।

कुल २१ गांवो की सूची शुरू में पुनर्वास के कार्य के लिए बनी थी। बाद में यह सूची ३४ गावो तक फैल गयी। हम गावो मे ग्रीक तथा तुर्क—दोनो परिवारो से सम्पर्क करते हैं। अपने क्षेत्र के किस गांव के शरणार्थी कहा बसे है इसकी जानकारी प्राप्त कर उनसे जाकर मिलते हैं। सर्वेक्षण का काम भी देखते है। हमारी बहुत बड़ी मर्यादा भाषा की है। गावो मे अंग्रेजी जानने वाले मुश्किल से ही मिल पाते है। स्कूल-शिक्षक, पुलिस तथा दफ्तर मे काम करने वाला कोई मिल जाता है तो अनुवाद मे सहायता मिल जाती है। कार्यक्रम तो हम बहुत सारे सोचते हैं, जैसे ग्रीक लोग अपने गावो मे तुर्कों को आने के लिए अपने स्तर पर भी अभिप्रेरित करें। सम्भव हो तो आपस में चन्दा कर तुर्क लोगो के लिए मसजिद व स्कूल आदि प्रतीक के रूप में स्वय बनवा दे या मरम्मत करवा दे। दोनों समुदायो के बच्चे आपस मे खेलकूद करें। ग्रीक-तुर्कों के बीच सामूहिक कार्यक्रम किये जायें। दोनो समुदायों मे आपसी सद्भावना, प्रेम, भाईचारा विकसित हो और वे पड़ोसियो की तरह रह सकें। लेकिन इस दिशा मे पहल करने के लिए भाषा बड़ी बाधा बन कर हमारे सामने आ खड़ी होती है। वैसे ही हमारा यह मानना है कि यह प्रश्न साइप्रस का है और साइप्रसवाले ही इसका स्थायी हल ढूंढ सकेंगे। अगर राष्ट्रीय, जिला तथा गाव के स्तर पर समितिया गठित की जायें, जिसमे दोनों समुदायो के विचारक, नेता, प्रतिनिधि शामिल हो जो मैत्री, एकता व भाईचारे की दिशा मे प्रयत्न करें तो इस समस्या के निराकरण मे बड़ी मदद मिलेगी।

समुद्र की गोद तथा पर्वतों की छाया मे रहने वाले यहा के लोग बड़े ही प्रेमल, परिश्रमी, स्वस्थ व सुन्दर दीखते हैं। समृद्धि यहा काफी है। प्रति ६ व्यक्तियों के बीच एक कार है। गावो के सामान्य घरो मे भी रेफ्रीजरेटर, टेलीविजन आदि विज्ञान की आधुनिक सुविधाएं देखने को मिल जाती हैं। अंगूर, सतरे, नीबू आदि के फल बड़े पैमाने पर होते हैं। यहां की शराब प्रसिद्ध मानी जाती है। होटल यहा का बड़ा व्यवसाय है, क्योंकि अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के कारण साइप्रस विश्व के पर्यटकों का मुख्य केन्द्र है। लगभग पूरी ही खेती यान्त्रिक उपकरणो से होती है। दूध, दही, मक्खन भी पर्याप्त मात्रा मे मिल जाता है। हर गांव मे दो-चार कॉफी हाउस मिल जाते हैं जो हर वक्त भरे रहते है।

वस्तुत. प्रकृति तथा विज्ञान का भरपूर वरदान साइप्रसवालो को मिला है, लेकिन राजनीतिज्ञों के दाव-पेंच के शिकार बनकर वे अभिशप्त जीवन जी रहे हैं। ●

× डा० दयानिधि पटनायक का कार्यक्रम हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले मे हुआ। सर्वोदय विचार से लगभग अछूते इस जिले में डा० साहब ने माजरा सतौन और पावटा साहिब गावों मे शिविर लिये। दिन मे स्कूल के विद्यार्थियो की सभा और फिर अध्यापकों के साथ चर्चा होती थी, रात को आसपास के गावो मे ग्राम सभाएं। छात्रो और ग्रामीणो के जुलूस भी निकलते थे। अध्यापक जिस गाव मे रहते है, उस गाव की समस्याओं को सुलझाने मे मदद दें, गाव सगठित होकर अपनी समस्या को कैसे हल कर सकता है—इन पर विस्तृत चर्चा जगह-जगह होती थी।

× गाधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र कानपुर मे २० नवम्बर को केन्द्र की सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष डा० सोमनाथ शुक्ल ने रूस की सामाजिक स्थिति पर भाषण दिया। शुक्ल हाल मे ही रूस से लौटकर आये हैं। स्नेह मिलन मे उन्होने कहा कि 'रूस मे अन्न, वस्त्र, आवास, पोषण, शिक्षण आदि बुनियादी आवश्यकताएं जनता को उपलब्ध हैं किन्तु इन सब को पाने के लिए वहा के निवासियों को बहुत बड़ी कीमत देनी पड़ती है। उन्हें अपना मन और मस्तिष्क सरकार को सौंप देना पड़ता है। वहा अध्ययन और चिंतन की आजादी नही है। हमारी किताब भी तालाघर मे जमा कर ली गयी थी। उनका आदर्श तो शासन मुक्त समाज था लेकिन प्रक्रिया उल्टी ही चल रही है। हम विचारो की आजादी नही खोना चाहेंगे, लेकिन हमारे सामने करोड़ो अभावग्रस्त लोग भी हैं। सर्वोदय विचार से यह हल होगा' डा० शुक्ल ने ऐसी आशा व्यक्त की।

→

गाधी जी के सत्याग्रह के प्रति विनोबा जी के ये विचार कि 'वह किसी भी परिस्थिति मे सदैव सफल होगा' मात्र शिष्टता और औपचारिकता का पुट लिए हुए दीखते हैं।

और फिर सत्याग्रह मे सफलता-असफलता का कोई प्रश्न भी तो नही होता। शायद विनोबा जी के निकट इसका आशय बाहरी दीख रही तथाकथित सफलता हो सकता है। तभी तो यहूदियों द्वारा हिटलर के विरुद्ध सत्याग्रह न कर अपने अलग राष्ट्र इजराईल की मांग मे उनकी सफलता की वह मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं : 'इसलिए मैंने कहा कि इजराईल ने जो युद्ध किया सो उत्तम किया''' इसलिए मैं उनका जयजयकार करता हूं' सन्त विनोबा का यह तर्क मेरे जैसे लघु मानव की समझ से परे की बात है।

इस प्रकार मुद्दे तो कई हैं इस विषय पर चर्चा के लिए परन्तु ऐसी शाब्दिक चर्चाएं निरर्थक ही होती हैं।

जगतराम साहनी,

सौ दिन की पदयात्रा से

उत्तरप्रदेश के संयोजक की चिट्ठी

प्रिय साथी,

यह पत्र मैं आपको टिहरी-गढ़वाल के एक दूरस्थ गांव से अपनी १०० दिवसीय पदयात्रा के छठे पड़ाव से लिख रहा हूं। यह डाक, तार और मोटर से दूर है, इसलिए इस पत्र में मैं प्रदेश के अन्य भागों के अधिक समाचार आपको नहीं दे सकूंगा।

अक्तूबर के प्रारंभ में मेरठ में उ० प्र० भूदान यज्ञ समिति की बैठक हुई थी और चौथे सप्ताह में लखनऊ में ग्रामदान उप-समिति की बैठक। राज्य सरकार द्वारा बनाये गये ग्रामदान अधिनियम के मसविदे पर विचार हुआ और उसे अंतिम रूप देने से पूर्व एक बार राज्य सरकार के अधिकारियों के साथ बैठक होगी, भूदान समिति की ओर से जिला विनरकों के एक शिविर का आयोजन इस माह के अन्तिम सप्ताह में बनवासी सेवा आश्रम, गोविन्दपुर में होगा। आपको याद होगा बनवासी सेवा आश्रम द्वारा दुद्धी क्षेत्र में पुष्टि का सघन कार्य चलाया जा रहा है और बमनी विकास खण्ड के कई गांवों में भूमिहीनता मिटाने में वे सफल हुए हैं।

अक्तूबर के प्रथम सप्ताह में ही श्रावस्ती में प्रदेशीय तरुण शान्ति सेना का शिविर एवं सम्मेलन हुआ। प्रदेश के विभिन्न भागों से आये हुए ५० से अधिक तरुणों को इस शिविर में एक सप्ताह तक पू० धीरेन भाई का सानिध्य प्राप्त हुआ और उन्होंने देहरादून के पब्लिक स्कूल में प्रदर्शन व पिकेटिंग करने का निश्चय किया है।

११ से १७ अक्तूबर तक स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह मनाने के लिए कई जिलों में महिला पदयात्रा निकली और उनके अनुभव बहुत उत्साह वर्धक रहे। मुझे स्वयं टिहरी-गढ़वाल जिले की पदयात्रा टोली के विदाई समारोह में उपस्थित रहने और उसके पश्चात उनके अनुभव सुनने का अवसर मिला। ५ बहनों की इस टोली के साथ एक लोकसेवक थे, परन्तु गांवों में जगह-जगह उनके लिए विशाल सभाओं का आयोजन किया गया था। जहां-जहां वे गईं, महिलाओं में अभूतपूर्व जागृति आई और खेती-बाड़ी के काम के दिनों में सार्वजनिक काम करने के लिए पहली बार बहनों को घूमते देख कर अन्य बहनों को भी इस कार्यक्रम से प्रेरणा मिली। मैं उत्सुकता के साथ आपके जिलों के विवरण की प्रतिक्षा कर रहा हूं।

पावली खुर्द में प्रदेशीय सर्वोदय सम्मेलन के दौरान और उसके पश्चात क्षेत्रीय सम्मेलनों में मैंने प्रदेश के आन्दोलन को गतिमान बनाने के लिए तीन सुझाव रखे थे। (१) प्रत्येक क्षेत्र में कम से कम एक सघन क्षेत्र का चुनाव कर उसमें ग्रामस्वराज्य का सघन कार्य, (२) प्रत्येक क्षेत्र में एक पदयात्रा और (३) महिला लोकयात्राएं। इस बीच सभा सम्मेलन तो होते रहे हैं, परन्तु करछना के सघन क्षेत्र और बमनी के अभियान तथा महिला लोकयात्राओं के अलावा प्रत्यक्ष कार्य की दिशा में हम बहुत तेजी से नहीं बढ़ पाये। मेरा अधिकांश समय भी बैठकों और यात्राओं में गया। इस प्रकार के कार्यक्रमों का सिलसिला टूटने के बजाय बढ़ता ही जा रहा था और जगह-जगह से किसी शिविर या गोष्ठी के लिए मित्रों के निमन्त्रण मुझे मिलते रहते थे। मैंने यह महसूस किया कि अपने सुझाये हुए कार्यक्रमों में से किसी एक पर मुझे ही सबसे पहले अमल करना चाहिए। उत्तराखण्ड में विनोबा आन्दोलन को अधिक व्यापक बनाने और उसके लिए लोकशिक्षण करने हेतु सारे क्षेत्र की एक पदयात्रा निकालने का सुझाव मई में हमारे सामने आया था। हमारे अन्य कार्यक्रमों के सम्बन्ध में जनता को निरन्तर जागरूक रखने और नये साथियों को आन्दोलन में लाने के लिए भी इस प्रकार की पदयात्रा आवश्यक थी इसलिए उत्तराखण्ड सर्वोदय मंडल के निश्चयानुसार २५ अक्तूबर को स्वामी रामतीर्थ जी की जन्मशताब्दी के दिन टिहरी से हमारी पदयात्रा प्रारंभ हुई है।

इस शताब्दी के प्रारंभ में जिन महापुरुषों ने भारतीय युवकों को राष्ट्र सेवा की ओर अग्रसर किया, उनमें युवा वेदान्ती सन्त स्वामी रामतीर्थ प्रमुख थे। २७ वर्ष की अल्पायु में लाहौर में कालेज की प्रोफेसरी छोड़ कर वे हिमालय में आये और टिहरी के पास अपनी पत्नी ने गहनों की पोटली तथा अपनी सारी भौतिक सम्पत्ति को भागीरथी में प्रवाहित कर के वे सन्यासी हो गये। वे हिमालय के जंगलों, पहाड़ों और हिमानियों में घूमते रहे। गुफाओं में निवास करते थे और भेड़ पालक उनके संगी-साथी थे। अमेरिका में जाकर उन्होंने वेदान्त की पताका फहराई और वहां से वापस लौटकर सोये हुए भारत को जगाने के लिए 'वैज्ञानिक समाजवाद' का विचार दिया। उस समय यदि 'सर्वोदय' शब्द निकला होता तो वे सर्वोदय का ही घोष करते। ३३ वर्ष की आयु में उन्होंने दीपावली के दिन टिहरी में मिलगना नदी में जल-समाधि लेकर अपने प्राण त्याग दिये, परन्तु उनके द्वारा दिया गया प्रकाश आज भी करोड़ों हृदयों को आलोकित करता है।

पहाड़ जहां हम काम करते हैं, अभावों की भूमि है, परन्तु सबसे अधिक अभाव लोगों में आत्म विश्वास का है। लोग निराश हैं कि गरीबी और कष्टमय जीवन से कभी हमें मुक्ति मिल नहीं सकती। स्वामी रामतीर्थ जी ने पहाड़ी लोगों के बीच उन्हीं जैसा कठोर जीवन बिताया, इसलिए हमने अपनी यात्रा उनके स्मारक से प्रारम्भ कर उनके उपदेशों और उनकी जीवन कथा के द्वारा लोगों में आत्म-विश्वास पैदा करने का यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया है। हमने उसके साथ ग्रामस्वराज्य की पृष्ठभूमि में स्त्री शक्ति जागरण, वनों की सुरक्षा, शराबबन्दी, अदालत-मुक्ति आदि व्यावहारिक कार्यक्रमों को जोड़ दिया है। हमारी यात्रा के पहले दो पड़ावों पर उ० प्र० तरुण शान्ति सेना के अध्यक्ष श्री कुंवर प्रसून रहे हैं और अब मैं और उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के संयोजक श्री आनन्द सिंह बिष्ट हैं। हम अपने साथ लगभग २०-२० किलो सामान, जिसमें अपने कपड़े व बिस्तरों के अलावा, मेगामाइक, टेप-रिकार्डर व सर्वोदय साहित्य है, लेकर प्रतिदिन १०-१२ किलोमीटर तक चलते हैं। औसतन २-२

→

अगला पड़ाव बर्फीला होगा

सभायें करते हैं, और लोगों से सम्पर्क करते हैं। कल (३० अक्तूबर) हमने क्षेत्र विकास समिति को संबोधित किया।

हमारी यात्रा को विदाई देने के लिए पू० स्वामी चिदानन्द जी महाराज आये थे। उन्होंने कामना की कि इस प्रकार की यात्रायें भारत के प्रत्येक खंड में चलें कानपुर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति भवतदर्शन जी स्वयं आकर इन शब्दों में अपना आशीर्वाद दे गये कि "इस कार्यक्रम से उत्तराखंड में एक नये युग का सूत्रपात हो रहा है।"

२

उत्तराखण्ड सर्वोदय पदयात्रा के दौरान ही मैंने अपनी पिछली चिट्ठी आपकी सेवा में भेजी थी, ऐसा लगता है कि डाक की गड़बड़ी के कारण वह समय पर न पहुँच सकी और प्रकाशित भी नहीं हुई है। मैं स्वयं दूरस्थ गांवों में घूमता रहा। उत्तरकाशी और टिहरी गढ़वाल जिलों की ४२५ कि०मी० की पदयात्रा सम्पन्न कर ८ दिसम्बर चमोली जिले में पहुंचे। यह 'चिपको' आन्दोलन की जन्म भूमि है। टिहरी और उत्तरकाशी दोनों वन-प्रधान जिले हैं। अतः वहां पर हमारी चर्चा का मुख्य विषय सरकारी लालच, ठेकेदारी शोषण और जनता की उपेक्षा से जंगलों की तबाही को रोकने, शराबबन्दी की सफलता के लिए जनशक्ति का जागृत करना तथा स्त्री शक्ति को जगाने का हमारा कार्यक्रम रहा है। यात्रा के ६ सप्ताहों में 'भूदान-यज्ञ' के ६६ ग्राहक बने हैं और ३६५ रु० के साहित्य की बिक्री हुई है। पीठ पर ही बोझ ढोने के कारण हम अपने साथ अधिक साहित्य नहीं रख सकते। हमने अपने साथ एक टेप-रेकार्डर रखा है। इससे हम दूर-दूर बसे हुए पहाड़ी गांवों के लोगों को एक दूसरे की बातें सुना पाते हैं। वे नक्शे पर तो निकट दिखते हैं, पर कभी-कभी एक गांव से दूसरे गांव तक पहुंचने में पूरा दिन लग जाता है। गांव प्रायः घाटियों में बसे हुए हैं और एक घाटी से दूसरी घाटी तक पहुंचने के लिए ७ से लेकर ६ हजार फुट की ऊंची चोटियां पार करनी पड़ती हैं। हेमन्त की पहली वर्षा ३ दिसम्बर को हुई और उसके साथ ही हिमालय की चोटियों पर इस मौसम का पहला हिमपात। अपने अगले पड़ावों पर हमें बर्फ मिलने की आशा है।

इस बीच डाक का सम्पर्क प्रायः टूट गया है। इसलिए अन्य जिलों के अधिक समाचार नहीं मिल पाये। नैनीताल जिला सर्वोदय मंडल ने ११ उपजाऊदारियों ने संकल्प कराये। आशा है अन्य जिलों में भी इस दिशा में कार्य हुआ होगा। हमारे सामने अब मतदाता शिक्षण का कार्य भी आ गया है। इस दिशा में आपकी तैयारियों को जानने के लिए उत्सुक हूं।

विनीत सुन्दरलाल बहुगुणा

(पृष्ठ १३ का शेष)

एक तो परेशानियों का अम्बार, फिर उस पर उपदेशों की चोट क्या यही गरीबी मिटाने की योजना है, जिसके लिए राष्ट्र की जनता के साथ वायदा किया है और उसका विश्वास प्राप्त किया था। क्या उसका यही प्रतिदान है कि गरीब आदमी जीवन की आवश्यक वस्तुओं का बहिष्कार कर, अपना जीवन गलत नीतियों को समर्पित कर दें। खूब सलाह है और कह भी कितनी सरलता से दे दी गई। आज हर भारतीय इस निर्णय के बीच झूल रहा है कि वह विवशता को स्वीकार करे या इसे नकारे और विद्रोह करे।

यह तो जाहिर था कि अस्थिर सरकार और आर्थिक केन्द्रीकरण की नीति का यही दुष्परिणाम आने वाला था। हम इसका दोष अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि पर आरोपित कर मुक्त होने की चेष्टा कर सकते हैं। या राजनैतिक वातावरण के भूल-भुलैया से जनता का ध्यान बटा सकते हैं। लेकिन केन्द्रित अर्थ व्यवस्था के ये दुष्परिणाम हैं। जो स्वाभाविक हैं। स्वार्थ-परक नौकरशाही, अफसरशाही और नेताशाही के भरोसे पर राष्ट्रीयकरण की व्यवस्था का पवित्र जिम्मा नहीं उठाया जा सकता है। जब गोदाम में पड़े हुए गेहूं की किस्म बदल सकती है, हजारों टन अनाज प्रतिबंधित क्षेत्र से बाहर चला जा सकता है, सरकारी नियंत्रण की वस्तु ब्लैक मार्केट व खुले आम बिकती है, वह प्रशासन राष्ट्रीयकरण की अर्थ व्यवस्था को सच्चाई से सम्भाल सकता है, यह मानना मूर्खों के स्वर्ग में रहना है। इसके लिए समर्पित सेवापरायण और ईमानदार राष्ट्रीय चारित्र्य वाले व्यक्ति चाहिए जिनका आज देश नितान्त अभाव है।

इसलिए ऐसी हालत में तो ऐसी राज्य व्यवस्था का बहिष्कार ही श्रेयमार्ग है। बहिष्कार का अर्थ है जनता की अपनी व्यवस्था स्वावलंबी, स्वाश्रयी और स्वशक्ति पर आधारित स्थानीय प्रशासन। विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था, विकेन्द्रित न्याय व्यवस्था। इस प्रकार जनशक्ति के आधार पर स्वदेशी और स्वाश्रयी व्यवस्था से ही आज की इस विषम परिस्थिति का मुकाबला किया जा सकता है।

प्रधान मन्त्री द्वारा अहमदाबाद में गृहणियों को जो सलाह दी गई वह उनकी शासन व्यवस्था पर एक व्यंगात्मक समीक्षा है। इसके सिवा शासन में स्थित एक राजपुरुष की अपने निजाम की विवशता एवं असफलता की इससे बढ़कर अन्य क्या अभिव्यक्ति हो सकती है। वस्तुओं के मूल्यों में निरन्तर असाधारण वृद्धि वस्तुओं का अभाव, वितरण की अव्यवस्था और क्रय-शक्ति का निरन्तर ह्रास ने ऐसी परिस्थितियों का निर्माण कर दिया है कि वस्तु तो स्वयं ही अलभ्य हो गई है। उसके लिए किसी योजना और अभियान की आवश्यकता नहीं है। उसके लिए अदृश्य पैसा या प्रभाव लेकर घूमना होता है, तब कहीं वस्तु पकड़ में आती है।

प्रधान मन्त्री की अभिव्यक्ति स्पष्टतया दो बातों की ओर संकेत करती है शासनमुक्ति और बाजार मुक्ति। छोड़ना है इस निजाम को एवं बाजार व्यवस्था को। तब होगी इन कठिनाईयों से मुक्ति। अतः प्रकट होना चाहिये, एक मुक्ति आन्दोलन।

आन्दोलन के समाचार

× केन्द्रीय आचार्यकुल समिति द्वारा आयोजित प्रथम राष्ट्रीय आचार्यकुल सम्मेलन पवनार, वर्धा (महाराष्ट्र) में १२ व १३ जनवरी '७४ को आयोजित हो रहा है। १० दिसम्बर १९७३ को सम्मेलन की स्वागत समिति एवं तैयारी समिति की बैठक में महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

किये गये निर्णयों के अनुसार १२ जनवरी को सम्मेलन का उद्घाटन श्रीमन्नारायण करेंगे और विनोबा जी सम्मेलन को अपना आशीर्वचन देंगे। १३ जनवरी को सम्मेलन का समारोप महाराष्ट्र के प्रसिद्ध पत्रकार श्री अनन्तगोपाल शेवड़े करेंगे। इसी दिन विनोबा जी चर्चाओं में उठे प्रश्नों के उत्तर भी देंगे। चर्चा गोष्ठियों की अध्यक्षता श्री रोहित मेहता और जैनेन्द्र कुमार करेंगे। विषय प्रवेश प्रो० सहस्त्रबुद्धे और श्री गुन्शरण करेंगे।

सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि शुल्क १० रुपए रखा गया है। रेलवे विभाग द्वारा सम्मेलन में भाग लेने के लिए रेलवे कन्सेशन की सुविधा भी प्रदान की गई है। रेलवे कन्सेशन संयोजक प्रादेशिक आचार्यकुल से अथवा श्री दी० ह० सहस्त्रबुद्धे, धर्मपेठ, नागपुर (महाराष्ट्र) से १० रुपए अग्रिम भेजने पर भी प्राप्त किये जा सकते है।

× श्री फूलिया भगत से प्राप्त जानकारी के अनुसार उन्होंने नवम्बर माह में हरियाणा के जिन्द, रोहतक व भिवानी जिलों में ८१ मील की पदयात्रा करके १९९ रु० का सर्वोदय साहित्य बेचा।

× प्राप्त जानकारी के अनुसार २, ३ व ४ जनवरी १९७४ को कस्तूरबाग्राम (इन्दौर) में एक किसान-सम्मेलन का आयोजन कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित कृषि क्षेत्र द्वारा किया जा रहा है। सम्मेलन में उन्नत एवं संतुलित कृषि के बारे में जानकारी दी जायेगी।

× प्राप्त एक जानकारी के अनुसार उत्तर प्रदेश में आचार्य विनोबा भावे द्वारा चलाये गए भूदान-आन्दोलन के अन्तर्गत १ लाख ९८ हजार २७९ एकड़ भूमि भूदान में मिली है। यहां ८,२८२ गांवों में भूदान प्राप्त हुआ है एवं भूदान दाताओं की संख्या ८३,३७४ है। प्राप्त भूदानभूमि का वर्गीकरण भी हुआ है। समूचे राज्य में १ लाख ४० हजार ८१७ एकड़ भूदान-भूमि ३७७९ गांवों में बसने वाले ९९,४९७ आदाताओं (भूमिहीनों) में वितरित की गई है। भूदान-भूमि का विधिवत् नामोन्तरण भी हुआ है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

और कोई लाइन ऑफ एक्शन नहीं निकल पायी। निर्मला देशपाण्डे ने कहा कि यह तो एक प्रक्रिया है। इसी तरह खुल कर बातचीत करने और निर्बन्ध सामूहिक विचार से ही भाईचारा और सर्वसम्मति पनप सकती है। समय इसमें लगता ही लेकिन कितना समय लगा—यह अप्रासंगिक है। प्रासंगिक यह है कि हम एक-दूसरे को समझ रहे हैं। विनोबा और जे. पी. चूंकि संगीति में पूरे समय उपस्थित नहीं रह पाते थे इसलिए उनके लिए रिपोर्ट लिखी जाती थी। संगीति की रिपोर्ट प्राप्त करने के बाद विनोबा ने विनोद में कहा कि हमारे यहां कई तरह के आनन्द होते हैं—हम लोग शब्दानन्द हैं। जे. पी. ने कहा कि इन प्रश्नों पर हम कितनी बार बहस कर चुके हैं? हम प्रश्न ही उठाते रहेंगे या उनके उत्तर भी देंगे। जे. पी. ने यह भी कहा कि अर्थवान संवाद के लिए संगीति की संख्या ज्यादा थी। इसमें बोलना ही ज्यादा होता है—संवाद, सम्प्रेषण नहीं हो पाता।

निर्मला देशपाण्डे, कांतिभाई शाह, रामचन्द्र राही और कुमार प्रशांत की रिपोर्टिंग समिति ने अपने नोट्स के आधार पर चर्चा के मुद्दे छांटे और फिर तीन दिन तक मनमोहन चौधरी की अध्यक्षता में उन मुद्दों पर चर्चा हुई। मुद्दे राजनीति से हमारे सम्बन्ध से लेकर आपसी विश्वास बढ़ाने और भाईचारे तक फैले हुए थे और यह असम्भव ही था कि सब विषयों और मुद्दों पर सर्वांग और निर्णायक चर्चा हो पाती। इसलिए एक-एक विषय पर विचार करके जितनी बातें सामने आती गयी उन्हें मनमोहन भाई—'सम अप' करते गये। निर्णय पर पहुंचना वैसे जरूरी भी नहीं था। चुनाव के समय (खास कर उत्तर प्रदेश के चुनाव में) मतदाता प्रशिक्षण के कार्यक्रम को लेकर काफी बहस हुई और अन्ततः जे पी. के सुझाये गये कार्यक्रम पर जब विनोबा ने सौ फी सदी सहमति प्रकट की तो उसे माना गया।

विनोबा ने अपने चारों प्रवचनों में उपवासदान नागरी लिपि... के प्रसार वाली एक पत्रिका ... पर जोर दिया। उपवासदान पर अच्छी चर्चा संगठन पर विचार के दौरान हुई। सर्वसम्मति से सिफारिश की गयी कि संगठन की बुनियादी इकाई प्राथमिक सर्वोदय मण्डल और लोकसेवकों को सक्रिय और सशक्त किया जाय और सर्व सेवा संघ चन्दा इकट्ठा करना बन्द करके उपवासदान की शुद्ध रकम से अपना काम चलाये। अब बंगाल में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन के समय प्रबन्ध समिति और संघ अधिवेशन में इस पर विचार किया जायेगा और पूरी संभावना है कि सिफारिश मान ली जायेगी। बाबा ने चालीस हजार उपवासदान की जो अपेक्षा की है उसका प्रान्तवार विभाजन हुआ। पत्रिकाओं के ग्राहक निभुने करने के भी संकल्प हुए।

छः दिनों की संगीति जे. पी. के भाषण के साथ समाप्त हुई। जे. पी. ने राष्ट्रीय परिस्थिति और उत्तर प्रदेश के चुनाव के दौरान—लोकतंत्र की बुनियादें सुरक्षित रखने के कार्यक्रम पर जोर दिया। प्र० ओ०

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु., एक प्रति ३० पैसे), विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय
सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ३१ दिसम्बर, '७३

भूदान-यज्ञ

३१ दिसम्बर, '७३

वर्ष २० अंक १४

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

नये साल की सम्भावना

आजाद हिन्दुस्तान के इतिहास मे शामिल होता यह वर्ष निश्चित ही-'बढ़ती कीमतो और बिगड़ती अर्थ-व्यवस्था' का वर्ष माना जायेगा। आम आदमी इन पिछले छब्बीस वर्षों मे शायद कभी भी इतना परेशान, निराश और उत्तेजित नही रहा होगा जितना वह इस वर्ष रहा। लगभग हर आदमी ने निजी तौर पर या सार्वजनिकरूप से यह सवाल अवश्य पूछा है कि उसका और उसके परिवार का क्या होगा ? इस देश का क्या होगा ? उसे कोई विश्वसनीय उत्तर नही मिला है। उसे मिले हैं कुछ नारे, भड़काने वाले कुछ आवाहन और पांचवी योजना का प्रारूप। दुकानदार, कारखानेदार और व्यापारी जिनके गले राजनीति ने यह संकट लाने की घंटी बांधी है, आम आदमी की तरह रोते हुए और अनिश्चय से भय खाते हुए दिखाई दे रहे हैं। आर्थिक अराजकता के इस वातावरण मे हर आदमी का एक बियावान कोना है जहां बैठ कर वह अरण्य रोदन कर रहा है। यह नहीं कि चीजें नही हैं, यह भी नही कि उन्हे खरीदने के लिए पैसा नही है। चीजें मिल भी रही हैं और लोग भूखो नही मर रहे हैं लेकिन अव्यवस्था, अनिश्चय और असन्तोष ने वह विश्वास छीन लिया है जो लोगो को मानसिक रूप से वर्तमान मे स्थिर और भविष्य के प्रति आश्वस्त करता है। हमारे सामने जो संकट है इससे कही अधिक बड़े और गहरे संकट हम झेल चुके हैं और उनसे संघर्ष करते हुए सही साबुत निकले हैं। वर्तमान निराशा का कारण संकट नहीं है, इस संकट से उबरने के लिए सही कोई अभिक्रम न कर पाने की असहायता है।

इसमे कोई सन्देह नहीं कि आज हम जो भुगत रहे हैं उसकी शुरुआत दो साल पहले यानी सन् '७१ से हो गयी थी। मार्च '७१ मे बांगला देश के लिए पूर्व बंगालियों को संघर्ष छेड़ना पड़ा और शरणार्थियों की अनन्त और असंख्य भीड़ हमारे पूर्वी भागो मे आने लगी। उन्हीं दिनो हमारे यहां मध्यावधि चुनाव हुए और सब जानते हैं कि मध्यावधि मे कितना धन खर्च किया गया और वह कहां से आया ? शरणार्थियो को खिलाने मे हमारा अन्न भण्डार समाप्त हुआ और चुनाव मे मिले धन ने धोले धन को काले मे बदलने की प्रक्रिया तेज की। फिर हमने बांगला देश की मुक्ति का युद्ध लड़ा और जीतने के तीन महीने बाद फिर राज्यो मे चुनाव हुए। इन सबसे हमारे घाटे की अर्थव्यवस्था पर जबर्दस्त असर पड़ा।

लेकिन जिन्हे हमने भाग्यविधाता बनाया था उन्होने अर्थव्यवस्था को सुधारने के सही, वास्तविक और ईमानदार प्रयत्न करने के बजाय जनता को नारे और भ्रम दिये और उत्पादक क्षेत्रो पर ऐसे प्रतिबंध लगाने की कोशिश की जिन्हे लगा सकने की क्षमता उनमे नही थी। कुछ तो सूखा और कुछ उत्पादन का गला घोंटने वाली नीतियां दोनो ने मिलकर अभाव और आपसी अविश्वास का ऐसा वातावरण पैदा किया कि सब चीजों के दाम दुगने-तिगुने हो गये। जनता समझती थी कि सरकार इस हालत पर काबू पा सकती है क्योंकि उसके पास अनन्त सत्ता है। लेकिन सत्ताधारियो के पास पूरी सत्ता होने के बावजूद नैतिक अधिकार की शक्ति नही थी। वे सब जानते हैं कि उन्होंने क्या किया है और कैसे किया है और क्यो किया है कि जिसका यह नतीजा है। जो वे सार्वजनिक रूप से करते हैं और कहते हैं उसमे स्वयं उनका विश्वास नही है और इसलिए उनमें वह नैतिक शक्ति नही है जो संकट का सामना करने के लिए जरूरी है। सबके नीचे रैले हैं सबकी अलमारियो मे मुर्दे छुपे हुए हैं इसलिए कोई किसी को कुछ नही कह सकता न किसी का कुछ बिगाड़ सकता है। आदर्श और विश्वासहीनता के कारण पैदा हुई अव्यवस्था, अराजकता और भ्रष्टाचार मे यह साल गुजरा है। और हालांकि प्रधानमंत्री ने कहा है कि नाजुक समय अब गुजर गया है पर नये साल मे उत्तरप्रदेश के चुनाव हैं और राजनीति के अर्थव्यवस्था पर असर के दुष्परिणाम अभी और आने हैं ! नया साल आम आदमी की असहायता में और वृद्धि नहीं करेगा क्या ?

—प्रभाष जोशी

ठूंठ पेड़ पर कोमल स्निग्ध कोपलें

—भवानी प्रसाद मिश्र

मैं नकदी आदमी हूँ—बातों का जमा खर्च अपने खातों में करता रहता हूँ। अंग्रेजी में ऐसे आदमी को 'मैन ऑफ लैटर्स' कहते हैं। अब यह 'मैन ऑफ लैटर्स' किस मर्ज की दवा है? शायद किसी मर्ज की नहीं। तो फिर मैं क्या करूं? तय किया कि मैं कुछ नहीं करूंगा मेरी कुछ श्रद्धाएं हैं। श्रद्धाएं जिनसे मैं बंधा हूं और जिन ने मुझे बांध कर मुक्त किया है। मेरी मान्यता है कि जो किसी बड़ी श्रद्धा से बंधना नहीं है—कहीं से छूट नहीं पाता, हजार मनगढ़न्तों का दास होकर जीता है। अगर वह किसी एक बड़ी श्रद्धा, एक किसी महत् मूल्य, किसी एक विराट् विचार को अपने पर कस लेता है तो मनगढ़न्ताएं ढीली पड़ने लगती हैं, खिसक-खिसक कर गिरने लगती हैं। श्रद्धा का बन्धन आकर्षण में बदल जाता है [illegible]मक हो जाता है, एक से दूसरे को छूता है और [illegible] दूसरे के आकर्षणों की परिधि बढ़ती चल[illegible] है। आकाशमय ग्रह-नक्षत्र और तारिकाएं[illegible] श्रद्धा के ये अनवरत आकर्षण एक दूसरे[illegible]कर महाराम-मय आनन्द की सृष्टि[illegible] और आनन्द यह निष्क्रिय नहीं होता, यानी, मनोरंजन नहीं होता है, सक्रिय आनन्द होता है। सर्जना का आनन्द होता है, चीजें इसके बल पर शून्य में से उभरने और बनने लगती हैं। वे उपस्थित चीजों पर अपनी नयी सर्जना की किरणें डाल कर उनको निखार देती हैं।

तो मैं अपनी पहली श्रद्धा आपके सामने रखता हूं। मेरी पहली श्रद्धा यह है कि यह जगत कोई अंधी पहेली नहीं है। यह निरे अंधेरे में से उजाले में प्रविष्ट और प्रवेशमान किसी चैतन्य की अनुराग इच्छा है। यह चंक्रमण जिस रूप में रूपायित हो रही है वह कोई आकस्मिक संयोगों का खेल नहीं है। 'ठीक एक दृष्टि, इस समूची सृष्टि की समूची तफसील में काम करती रही है और इसका लक्ष्य चाहे जितना अनिश्चित हो, इसका अन्त या इसकी परिणति कल्याण की ही प्राप्ति में है।

इस श्रद्धा के कारण मेरा मत है कि जीवन का दर्शन और उसको जीने की पद्धतियां प्रकृति में से लेनी चाहिए और अपने जीवन को उसी तरह विकसित और परिणत करना चाहिए जिस तरह पौधा फूल में विकसित और फल में परिणत होता है। अब यह बात आदमी के लिए फूल-पौधे, पशु-पक्षी आदि की तरह सरल नहीं है। आदमी अपनी प्रकृति को श्रम, समझ, प्रेम और विवेक के नित्य आयतसमन्वय के द्वारा हस्तगत कर पाता है और इसीलिए हम देखते हैं कि हर गुलाब के पौधे का गुलाब हो जाना, या गाय के बछड़े का शानदार डीलडौल पा लेना स्वाभाविक है। हर शेर का बच्चा शेर बन जाता है, हर आम्रवृक्ष आम के फल देता है और हर बबूल का पेड़ कांटे। नदी हर एक बहती है पत्थर हर एक सख्त होता है, हीरा हर एक चमकता है। मगर आदमी सब न फूल पाते हैं, न तरल-सरल हो पाते हैं, न अन्य अपेक्षित गुणों का उनमें विकास होता है। उन्हें तो यह कठिनाई से प्राप्त होता है। हजारों में से एक आदमी 'आदमी' बन पाता है।

मेरी दूसरी श्रद्धा यह है कि आदमी की यह लाचारी ही उसका बड़प्पन है कष्टों के बीच से विकास, प्रतिकूल परिस्थितियों में से अनुकूल और साफ-सुथरे रास्ते निकाल लेने की प्रतिभा उसको मिली है। रास्ते निकालने के प्रयत्न दो प्रकार के हो सकते हैं। एक तथ्यों का विश्लेषण करके उन्हें अनुकूल बना कर या फिर उनमें सामंजस्य पैदा करके। पहली पद्धति हमें प्रकृति के तौर तरीकों को समझ कर जीतने की दिशा में और दूसरी उन तौर-तरीकों के तत्त्वों को प्रकृति का सन्तुलन बिगाड़े बगैर अपने अनुरूप ढालने की दिशा में ले जाती है।

अभी हम विश्लेषणात्मक पद्धति और उसके नतीजों के कारण प्रकृति से संघर्ष पर बहुत जोर देते हैं। और उससे सामंजस्य बैठाने की ओर से लापरवाह हैं फलस्वरूप विज्ञान ने जो प्रगति की है, वह पदार्थ बहुलता और अनावश्यक अवकाश, साथ ही निरंतर भाग दौड़ के सिवा हमें जो कुछ दे रही है, वह सब हानिकारक है। आज के आदमी को ऐसा लगता है कि जैसे वह किसी तूफान में पड़े जहाज का यात्री है, किस क्षण जहाज लहरों के थपेड़ों से तितर-बितर हो जायेगा कोई नहीं जानता। लोग जो उसके आसपास हैं वे एक दूसरे से अनजान और अपरिचित हैं—याने ऐसे हैं जिन्हें न वह आश्वस्त करना चाहता है न उनसे उसे आश्वासन मिल सकता है और साथ मिल कर बचने का उपाय न वे जानते हैं और न अब थोड़ी देर में जान सकते हैं। जहाज के कुछ चलाने वाले आदि हैं वे उन्हें चीखने पुकारने पर डांट देते हैं या शराब की बोतल थमा देते हैं कि लो इसे पीकर चुप हो जाओ—तब तक हम कुछ करते हैं। अब इस तसवीर या रूपक को बहुत बढ़ा कर विस्तार से रखा जा सकता है—मगर उसका उद्देश्य केवल बताना यह है कि आज के आदमी की परिस्थिति दयनीय है—पहल किसी काम की उसके हाथ में नहीं है और वह इस तरह या तो एक मशीनी पुर्जा या 'बीस्ट आफ बरडन (काम का पशु) है, वह सब जगह तकनीकी बन्धनों में बंधा और उनकी बागडोरों से खिंचा फिर रहा है। उस ने लाचार किसी वध्य पशु की तरह आंखें बन्द कर ली हैं कि जो होना होगा, सो होगा। जब आदमी में अपने कुछ होने का भान नहीं बचा तो उसने अपने को गया-गुजरा मान लिया है। 'अस्तित्ववाद' का सिद्धान्त उसका सबसे बड़ा दर्शन हो गया है—उसे यह समझाने वाले बुद्धिजीवियों की एक जमात है कि हम इस दुनिया में अपनी मर्जी से नहीं आये हैं। इसलिए इस संसार के प्रति हमारी कोई जिम्मेदारी, कोई उत्तरदायित्व नहीं है। प्रगति की योजनाएं बनती हैं, वे सावधानी से बनायी जाती हैं मगर एक तटस्थ यहां तक कि विरोधी रुख, लोगों का उसके तरफ बनता है और लोग पूछते हैं, कभी

भूदान-यज्ञ, सोमवार, ३१ दिसम्बर, '७३

अकेले-अकेले सभी समुदायों में, कि मानव मूल्यों का आधार स्वतंत्रता है या बंधे-बंधाये किसी चौखट में फिट होना? इस प्रकार एक तरह के दरवाजे पर आज सारी मानव जाति खड़ी है—बल्कि वह सकते हैं असंभवता के पिंजरे में पड़ी फड़फड़ा रही है। हर नयी समस्या का जमाव एक नयी पहेली में होता है—क्योंकि समस्या पैदा करने वाले उसका हल नहीं दे सकते। समस्या पैदा हुई है अत्यधिक संगठन से। अत्यधिक संगठन ने आदमी के द्वारा खोजी हुई हर बड़ी चीज को बौना बना डाला है। हजारों बरस की अवधि में पनपाये और विकसित किये गये धर्म, दर्शन, संस्कृति और सभ्यता के मूल्यों को अत्यधिक संगठन ने संकीर्ण क्षेत्रों में भींच कर बौना कर दिया है—वे ऊपर उठाने वाले मूल्यों के बजाय नीचे गिराने वाले बंधन तक लगने लगे हैं। तब फिर सोचना पड़ता है कि आदमी को नये सिरे से प्राकृतिक नियमों के दर्पण में झांक कर देखना चाहिए और अपने रहने-सहने के तरीके वहीं से उठाने चाहिए। हमें जिंदगी के झरने पर धार-धार ऊपर जाना चाहिए और जहां से फूटा है वहां बैठकर उसमें पांव डाल कर कुछ क्षण बैठने का अनुभव लेना चाहिए। यह एक तसवीर प्रकृतिस्थ आदमी की हुई। मगर यही एक तसवीर उसकी नहीं है। प्रकृति का आदमी से संबंध विचित्र और निविड़ है। भारत की संस्कृति तो आरण्यक ही कही गयी है। रवीन्द्रनाथ ने उसे तपोवन की संस्कृति कहा है—हमारे बड़े से बड़े धर्मग्रंथ 'जंगली' लोगों की, आरण्यकों की, ऋषियों की देन है। बुद्ध को ज्ञान एक वृक्ष के नीचे हुआ था और कृष्ण ने अपनी ज्योति भी एक वृक्ष के नीचे बैठे-बैठे विलीन की थी, सर्वव्यापी बनायी थी। हमारी संस्कृति के इस सार को, सरल और सादे रहन-सहन के बीच ही मानवीयता के तत्वों के पनपने की संभावना को, सारे संसार के नंगेपन के बीच खड़े होकर गांधी ने दिखाया और इसलिए वह ऐसी बातें कह सका जिन के उसके मुंह से निकालते ही पूरे देश को लगा कि उन के प्राण को अपने वाली आकाश-वाणी हो गयी है। आधे-अधूरे ढंग से ही सही शहरों के पढ़े-लिखों ने उसकी वाणी को माना और यह शायद इसलिये कि गांवों के लोगों ने उसे प्राणपण से मान लिया था। शहर की अधूरी मान्यता और गांवों की विचार की हद तक पूरी-पूरी मान्यता, गांधी को मिली और परिणाम आये। अब ये परिणाम गांधी के जाने के बाद भी जते चले आ रहे हैं। कारण है हमने आत्मविश्वास के साथ उन्हीं मूल्यों को पकड़कर चलना तय नहीं किया जो हमें अपनी एक मंजिल तक लाये थे।

हम गांधी और भारत की, समूची आध्यात्मिक होने के साथ-साथ जो परम व्यावसायिक पद्धति है, उसे एक अन्धविश्वास में पड़ कर छोड़ बैठे। अन्धविश्वास यह कि प्रगति पश्चिम में विज्ञान के द्वारा हुई है और उसी का प्रतिरूप बने बिना हमारा निस्तार नहीं है। हमने इतना ही सोचा कि विज्ञान और यांत्रिक प्रगति के सहारे हम अपनी पार्थिव परिस्थितियां बदल लें, बाद में और कुछ सोचा जायेगा। इसमें तो कोई संदेह नहीं है कि विज्ञान और यांत्रिक सहारों से उत्पादन बहुत बढ़ाया जा सकता है, मगर यह जो उत्पादन होता है शायद आदमी की जरूरत पूरी कर देता है, वह हमें संस्कृत यहां तक कि सभ्य नहीं बनाता, क्योंकि यह उत्पादन मनुष्य के मन और प्राण और अनुभूति, कभी-कभी उसके स्पर्श तक से अछूता है। फिर यह जो उत्पादन इस प्रकार चलता है इसके अपने तर्क बन जाते हैं, मानवीय बुद्धि से नितांत निरंकुश और असंगत इन तर्कों की शक्ति इन्हें एक अबाध गति देती है। तब ये तर्क इस प्रकार के उत्पादन के रास्ते में जो कुछ आता है उसे दबाने, कुचलते जगतव्यापी होते चले जाते हैं। रास्ते में आते क्या हैं? मानवीय-मूल्य। इतिहास, हमारी प्रकृति, हमारी जानी-मानी स्वस्थ परम्पराएं वे चीजें जो सुरक्षा और शान्ति की एक भावना दिये हुए थीं, हमारी अपनी व्यक्तिमत्ता, कभी अकेले बैठ सकने की सुविधा, खुलापन, सौंदर्य और हर चीज जो कोमल है और प्रिय है। 'यांत्रिकता' के तर्क अर्थात् केन्द्रीय अर्थ-व्यवस्था, विशाल पैमाने पर व्यवस्था और संगठन और इन का संचालन करने वाले तब हमारे जीवन की हर छोटी-बड़ी तफसील तय करते हैं और जब वे सुविधाएं जो हमने काम्य मानी थीं, नित्य संकट में वाली ही नहीं, काटने कुचलने वाली शक्तियां बन जाती हैं। अपने देशों का कोई छोटा सा हिस्सा तब हमें अन्धेरे में रख सकता है, बिजली घर का कर्मचारी हमारी हरी-भरी फसल को दो दिन में नेस्तनाबूद कर सकता है, और नयी सुविधाओं के आदी हम एकदम लाचार, किंकर्तव्यविमूढ़, दस-पांच दिन भी कैसे कटेंगे, यह समझ नहीं पाते।

अव्यवस्था तब इस व्यवस्था का पहला परिणाम होता है, दूसरा होता है भ्रष्टाचार, तीसरा होता है हम जो नहीं हैं वह दिखने रहने का प्रयत्न याने तब शासक, नितांत स्वेच्छाचारी शासक, अपने को जनता का सेवक, गरीब का हितैषी बताता है, व्यापारी अपने को दूध का धुला, बड़ी-बड़ी तनख्वाहें पाने वाला अपने को शोषित और गुमराह करने वाला अपने को मार्गदर्शक घोषित करता है। उत्पादन की इस तर्क-विसंगत बल्कि मानवता विरोधी प्रणालियों से युद्ध का जन्म तो होता ही है। उत्पादन अपनी आवश्यकता के विचार से नहीं, एक बड़े लंबे चौड़े विश्वव्यापी बाजार के विचार से होने लगता है, तब बाजारों को मुट्ठी में करने की होड़ चलती है और प्रभाव क्षेत्र बनाने की धुन में बड़े-बड़े देश जो पहले खुद लड़ते थे अब छोटे देशों को परस्पर लड़ाने की कला निकाल कर निश्चिन्त हो गये—उन्हें हथियार बेचते हैं और भूखों मरने पर गल्ला भी।

कोई यान्त्रिक उत्पादन के गुणगान गिनाये तो गिनाता ही चला जा सकता है। गलत वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता मिलती है, जैसे गल्ले और कपड़े के उत्पादन पर उतना जोर नहीं होगा, जितना विलास की चीजों के उत्पादन या शस्त्रों के उत्पादन पर होगा, केवल चीजें ही नहीं रहन-सहन के ढंग जो बनेंगे और कानून भी जो बनेंगे, उन पर गलत उत्पादन का दबाव रहेगा और इसलिए वे गलत बनेंगे। तकनीक के नाहक और गैर जरूरी प्रयोगों के कारण, फिर वे चाहे प्रजातन्त्रीय पद्धति के देशों में हो रहे हों, चाहे साम्यवादी पद्धति से चलाये जाने वाले देशों में हों, लोकशक्ति में ह्रास अर्थात् व्यक्ति की स्वतन्त्रता का विनाश, वातावरण का सदूषण, कृत्रिम और अनुत्पादक कामों तक में व्यस्त रहने की मजबूरी, पारस्परिक ऐसे मिलने-मिलाने की समाप्ति, जिसमें सामाजिकता

बड़े, अपनेपन की प्रतीति जागे, यहाँ तक कि पड़ोसीपन का भारी लगना सर्व साधारण और एकदम मोटी नजर से दिख जाने वाले नुकसान है। मानापन, व्यक्तित्व तो एक गुमशुदा चीज है। बच्चा जब से जरा समझने लायक हुआ कि उसे स्कूल या उससे मिलती-जुलती संस्थाओं के शिकंजे में डाल दिया जाता है। ये स्कूल या अर्ध स्कूल बच्चे की सहज परिकल्पना, सर्जकता, प्रयोगशीलता के बजाय उन पर समाज के तयशुदा मूल्यों, अनुशासन, सांचों-ढांचों, और ऐसी निरर्थक जानकारी थोपने लगते हैं, जो उसे या तो कुंठित कर देती या स्पर्धा की दौड़ में झोंक कर उसका जीवन बरबाद कर देती है। वह निज मजे सुख-साधन जुटाने की कल्पना में दूसरों के सुख-दुःख से बेभान एक ऐसा आत्म-केंद्रित प्राणी बन जाता है, जिसके हर अच्छे काम का मतलब पहले उसी को लाभ देना होता है। वह सोचता नहीं है, किसी स्वयंचालित यंत्र की तरह चलता है—यह नहीं सोचता कि उसकी चाल की चपेट में क्या कहां और किस तरह पिस रहा है। स्वभाव, भावना, सहज रूप से किसी काम की ओर आकर्षित हो जाना क्या होता है, कोई जानता ही नहीं। काम जो करते हैं उनका वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता। सारा परिवार उससे मिलने वाले पैसे के सिवा अछूता होता है। किसानी जिस तरह घर के हर व्यक्ति और पशु तक जुड़ी है, गांव के हर आदमी से जुड़ी है, वैसा आज की सभ्यता के कामों का स्वभाव नहीं है—और अगर थोड़ा बहुत बचा है तो हमारे पिछड़े कहे जाने वाले देशों में। वे वास्तव में इसलिए पिछड़े हैं कि अभी तक उनमें कुछ लोग आदमी बने हुए हैं।

मगर इन सबके बीच में घने घने अंधेरे से बंद इस नये युग के मन में बार-बार एक बिजली कौंध रही है। गांधी शताब्दी वर्ष में सारे संसार में हमने इस तथ्य को देखा कि विकसित बड़े से बड़े उद्योगशील देशों ने इस सत्य का अमरीत्य उच्चारण किया कि इस दुनिया में एक जीवन जीने के लिए अपनाये जाने वाले तरीके निरपेक्ष होना चाहिए और उनमें वही कुशलता वैसी अपनाई जानी चाहिए जिसे गीता ने 'योग' कहा है—अर्थात् जीवन पद्धति ऐसी नहीं होनी चाहिए जो सुविधाओं की, व्यक्तिगत सुविधाओं की, या समाजगत सुविधाओं की या राष्ट्रगत सुविधाओं की अपेक्षा रखे, बल्कि जो निरपेक्ष हो अर्थात् दूसरे का स्थान पहले रखे और इसे साधने के लिए जो काम हों वे कुशलता से किए जायें और तोड़ने वाले न हों जोड़ने वाले हों। संसार में आज इस तरह से सोचने वालों की संख्या रोज-रोज बढ़ रही है जो यांत्रिक जीवन में मुक्ति का पाथ पाया हुआ या अपने बल पर पाना लादा हुआ महसूस करना चाहते हैं। वे उस समाज के द्वारा किसी एकदम अजान देश जाति या जमात के लिए निरर्थक मात्र या मनोरंजन शस्त्र बनाने की नाकामी में ढूंढ़ना चाहते हैं व अलिखित मूल्यों या फिर धाय करके अपने में सम का अनुभव कर रहे हैं। क्योंकि वे देखते हैं कि आज किस पड़े या मोटे-मोटे कर ऊंचे जिन कामों में अपना सारा समय लगाना पड़ता है वे कोई बहुत सार्थक नहीं कम लायक विधायक कल्याणमय या सुरुचि की तरफ ले जाने वाले काम नहीं हैं। वे उबाऊ और थकान पैदा करने वाले काम की जगह सीधा सादा छन्द और आनन्द देने वाला काम अप-नाना चाहते हैं—और यह अभी तो केवल इस कल्पना में ढूंढ़ा जाने के लिए। फिर तो वे काम बढ़ेंगे और जान अनजाने गांधीवाद के अदर्श के मन सूर्योदय को उगा-येंगे। यही भविष्य का वह भास्कर है जो सारे संसार का अब तक की अनजानी धूप में नह-लायेगा। गांधीवाद कल के आदर्श की तलवार है, जिसे तो सारे समाज ने समझ लिया है। वह दूर-नजदीक इसी धार इसी विचार को अपनाने वाला है। यही एक मात्र विचार है जो बिना किसी भूगोल, जाति वंश धर्म अथवा भाषा के भेदभाव की बाधा माने एक आधार, एक प्यार धार प्रेरणा देगा, और यह प्रेरणा देगा दीर्घ जीवी ही नहीं नित्य वर्तमान होगी, अजर होगी, अमर होगी और इसकी संभावनाएं धरा में अलग-अलग वृक्षों पर फूटने वाली कोंपलों की तरह कोमल और स्निग्ध और मासूम और अपार अन्य आभाएं लेकर फूटेंगी। तमाम सिद्धांत इसकी राह में बाधक होकर युग से कभी जाना चाहेंगे, मिटेगा कोई सिद्धांत नहीं, सवरेंगे-सुधरेंगे सब, क्योंकि सबके मूल में परम इच्छा तो शान्ति और आनन्द की ही पड़ी हुई है। यह विचार भारत की संस्कृति की तरह समन्वयकारी है। यह विचार राजनैतिक सिद्धांतों और कर्मों को मनुष्य ही नहीं सारी प्रकृति के साथ सामंजस्य साध कर जो प्रयोग करेगा वे बाहरी दिखावे, लाभ या लच्छेदार आडंबर को छोड़ देंगे और मनुष्य को प्रकाशित करेंगे उसके स्वाभाविक और सहज उस रूप में जो उसका वास्तविक प्राप्य है। गांधी का विचार एक त्याग और प्रेम से भरी विचार शक्ति है जिसका स्पर्श आदमी को नया अनुभव, नयी तरंग देता, देता है। जिन्होंने इसे यत्किंचित् भी अपनाया है वे लांछित हैं, विजड़ित हैं, प्रेरित हैं और फिर भी प्रसन्न हैं। उसने सभ्यता को नापने का एक नया पैमाना प्रस्तुत किया है इसके लिए एक नयी आंख दी है। यह नया पैमाना, नयी यह दृष्टि अपने वर्तमान की स्थितियों का ठीक दिया देगी, उन पर अंकुश लगाकर जिस अनतिद्रुत और आवश्यक गति में उसे चलना है, उसी गति में उसे चलायगी।

बिना गांधी विचार की प्रस्थापना के शान्ति की किसी संभावना का सपना भी नहीं देखा जा सकता। शक्ति संपन्न विजेता के मद का वहीं ताड़ेगा और वहीं विजित के घाव इस तरह भरेगा कि घाव का चिह्न भी विलीन हो जाय। इस तरह गांधी विचार आदमी को आदमी के पास ले जायगा। भौतिक अर्थों में नहीं, आध्यात्मिक अर्थों में। इस विचार का मर्म राष्ट्रों की स्पर्धा पोंछ देगा और वे अपनी-अपनी सीमाओं को उसी तरह मिटा देंगे जैसे कभी भारत-वर्ष ने माना था और उसमें आर्य, शक, और हूण और कुषाण और पठान और अभी-अभी तक यूरोप के जाति वंश आये थे। तब देश अपना मान रखने के लिए कहीं नहीं भेजेंगे। बहुत तो प्रकाश के सार की तरह अपने-अपने विचारक भेजेंगे और सारे विचारक प्रेम के अनन्त पहलूदार रत्न की आभा पर प्रकाश डालेंगे। वर्तमान की समूची पृष्ठभूमि तब गांधी की आदर्श-दृष्टि, गांधी के तकनीक,

→

आधार और निष्कर्षों से परिवर्तित हो जायेगी। आज की वैज्ञानिक खोजों ने जो भय सामने उपस्थित कर दिये हैं, उनकी जगह विकेन्द्रित और इसलिए सबको अभय देने वाले और जितनी चाहिए उतनी सुविधा देने वाले आर्थ कर्म और विचार हिल्लोलित होने लगेंगे। गांधी का सत्य, गांधी की अहिंसा, गांधी के शाश्वत मूल्य एक सर्वभौम स्वतंत्रता को प्रकाशित करेंगे।

हम यह नहीं कहते कि जब गांधी विचार प्रस्थापित होगा तब सब जगह उसका नाम भी गांधी से संबन्धित रहेगा। हमारी समझ में तो उसके अपने-अपने घरेलू नाम होंगे, मगर शक्ति उसे मिलेगी उन्हीं मूल स्त्रोतों से जिसे गांधी ने सामने रखा था, अर्थात सत्य और अहिंसा और इसलिए पारस्परिक प्रेम और व्यक्तिगत शरीर श्रम से यंत्र का स्थान सब जगह नितांत गौण हो जायेगा। जैसे दाल में नमक। इसके अस्तित्व की धारा के जल में किसी प्रकार की स्पर्धा या स्वार्थ या वैमनस्य के उत्पादन का विपाक्त कर देने वाला मैल आकर नहीं मिलेगा, इसके अस्तित्व की धारा का नित्य के सरल कामों में सरल ही नहीं विमल उपयोग होगा। इतिहास का सर्वश्रेष्ठ, हर गांव, हर राष्ट्र के हृदय की धड़कन होगी और व्यक्तिगत आदर्श और सार्वभौमता में कोईविरोध नहीं बचेगा। सारी हिंसा, सारी स्पर्धा, सारी भाग दौड़ अपनी व्यर्थता को समझ लेंगी। विचार—क्षेत्र की हद तक यह होने भी लगा है, कोई इसे 'डीटेन्ट' कह रहा है, कोई 'सहअस्तित्व' तो कोई 'एक-विश्वसत्ता' को इस दृष्टि से सुदृढ करने का सपना देख रहा है कि सारे देश एक बड़ी माला के मनके बन सकें।

अब यह गांधी का विचार विभिन्न देशों में चाहे जिस नाम से आये, नयी पीढ़ियों के हाथों से आयेगा—वे अपने को पुराने ढंग के सामने पेश करेंगे, उसकी दी हुई यातना भोगेंगे और हर तपे और तप रहे सिर पर स्नेह की छाया करेंगे। स्पष्ट है कि खुश्चेव, ब्रेजनेव, निक्सन, माओ, कास्त्रो या टीटो और फिर जरा कम शक्तिशालियों में नासिर, सादात, अय्यूब या भुट्टो और हमारे देश के शासकों ने आन्तरिकता से न सही मुंह से परम मूल्य शान्ति को मानना शुरू कर दिया है। अब जरूरत नहीं है कि वे नाम गांधी का लें। सबने इतना समझ लिया है कि हम कोई ४ शताब्दियों से नित्य एक गलत दिशा को सही मान कर उसकी तरफ बढ़ रहे थे। हमने संगठन, संस्थाओं और उनके बल पर उत्पन्न यंत्र के फैलाव को समस्याओं का हल माना था। अगर यह मान लिया जाये कि अपने ही भले की इच्छा एक गलत इच्छा है तो इस इच्छा से उद्भूत सारे संगठन फिर उसका नाम चाहे प्रजातंत्र हो चाहे गणतंत्र चाहे राजतंत्र समान रूप से बुरे हैं। इसलिए जरूरी हो गया है एक नये ही अर्थात बहुत पुराने जीवन को नये रूप में लाना। नये जीवन की रूप रेखा बना कर सामने रख देना, भविष्य को साकार कर देना ही है। गांधी हिन्द स्वराज्य में यह रूप रेखा बना कर रख गये हैं। उसको निर्मित करने लगो तो राजनीतिक और आर्थिक सवाल नगण्य ही नहीं निरर्थक तक ही रहते हैं। नया जीवन एक बार आरंभ हो गया तो फिर कोई नये समाज-संगठन भी बनने लगेंगे। यह ठीक है और स्थानीय प्रतिभाओं के हिसाब से उनका नामकरण भी होने लगेगा। किन्तु इसमें संदेह नहीं कि इन समाजों की चिन्ता राजनीति या आर्थिक शक्ति समेटना नहीं होगी, इनकी चिन्ता वे मूल्य होंगे, जिनसे आदमी का जीवन मूल्यवान बनता है।

इस नये जीवन को लाने के लिए किसी के द्वारा पहल किये जाने की प्रतीक्षा का सवाल नहीं है। पहल गांधी कर गये हैं, इसलिए भारत के छोटे-छोटे हम लोग जो गांधी की बात समझे हैं उसकी पहल के उत्तराधिकारी हैं। पहल वास्तव में हमारे हाथ में है। हम पुराने तमाम मूल्यों को समवेत करके और नया जितना उपयोगी है उसे उनमें कॅट-मिलाकर एक ऐसा पात्र बनाने में लगे है जिनमें भविष्य भरा जा सकेगा। कल्पना और कला और सूझबूझ और स्नेह इस नये सृष्टमान-पात्र के तत्व हैं। गांधी ने इन्हें एकादशव्रत पूर्वक साधने की बात कही और विनोबा केवल सत्य प्रेम और करुणा कहकर उनका समाहार कर चुके हैं। आज की नई पीढ़ी चाहे तो इसे किसी दूसरी तरह से व्यक्त कर सकती है कि परिवेश के प्रीति सतर्कता और चेतनता संभालकर हम पुराने विचारों में पड़े-पड़े सड़ने और सड़ाने वाले उन 'वैज्ञानिक' अंधविश्वासियों को शिक्षित करेंगे जो चीजों, कामों और अनुभवों को प्रणालीबद्ध किये बैठे हैं। शिक्षा की वे परिभाषा भी नयी दे सकते है जो उसकी वास्तविक परिभाषा है। वे कह सकते हैं कि शिक्षाशालाओं में ढाई या पांच बरस की उम्र से शुरू होकर १८ या २५ वर्ष की उम्र तक खत्म नहीं हो जाती। वह तो आदमी को किसी एक लकीर का फकीर भर बनाकर छोड़ देती है और जैसे ही वह लकीर आंखों के आगे धुन्धली पड़ी, व्यक्ति भटक जाता है, किसी काम का नहीं रहता, या तो नौकरी कर सकता है, तस्करी कर सकता है, शस्त्रों से काटने मारने वाला बन सकता है या भूख और अभाव और अत्याचार बर्दाश्त करने वाला निरीह एक प्राणी।

यह भी संभव है कि गांधी के विचार की प्रस्थापना में लगे लोग अपने को कभी अकेला, कभी थका, कभी अपर्याप्त, कभी परिवर्तन लाने में अक्षम तक महसूस करने लगें—क्योंकि शक्तियां जिनके विरोध में उन्हें बढ़ना है, बड़ी हैं और बहुत हद तक बार-बार मुंह से एक बात कहते हुए जाना दूसरी ही ओर चाह रही हैं—जो उस ओर नहीं जा रहे हैं उन्हें विरोधी मान रही हैं और कुचल रही है, तथापि समय अब उनके साथ नहीं है, हम इस विश्वास की गांठ बांध लें। कालपुरुष उनको त्याग चुका है, ऐसा समझिये और यन्त्र जो उनकी सबसे बड़ी ताकत थी उनके खिलाफ जा रही है। अब न यन्त्र उन्हें बचायेगा न उनका तन्त्र। अब व्यक्ति का विकास होगा व्यक्ति-व्यक्ति समाज बनेगा और मारी-मारी फिरने वाली भीड़ की जगह, जगह-जगह कर्म और स्नेह के निर्झर बहते दिखेंगे।

०

चादर की लम्बाई से अधिक पैर न पसारिए

—सरला बहन

भारत के अहिंसक स्वराज्य आन्दोलन से मजबूर होकर, परिस्थिति के वश होकर, जमाने की मांग स्वीकार करके, पश्चिम के साम्राज्यवादी देशों ने अपने उपनिवेशों को आजादी प्रदान की। यह एक बहुत अच्छा प्रथम कदम था। इससे उम्मीद पैदा हुई थी कि विश्व एक नये शान्तिमय अहिंसक युग की ओर बढ़ सकेगा। लेकिन एक सिद्धान्त को अपनी पूर्णता में ही अपनाने की आवश्यकता होती है। दुर्भाग्यवश आजकल किसी विचार की गहराई में जाने की दृष्टि नहीं है—ऊपर से व्यावहारिक सफलताओं को देख कर उनमें सन्तोष मानने की दृष्टि है।

विश्वशान्ति लाने के लिए उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद का अन्त होना, प्रथम आवश्यक कदम था। लेकिन उसके साथ ही साथ मैत्री स्वावलंबन का सिद्धान्त अपनाने की आवश्यकता है ताकि राजनैतिक आधिपत्य का स्थान आर्थिक आधिपत्य न ले और एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र की विवशता से लाभ न उठाये। तीसरी शर्त है उन सिद्धान्तों पर विश्वास के साथ साथ अन्य राष्ट्रों की सच्चाई पर भी विश्वास रखना यानी आपस में खुली कूटनीति। इसके साथ साथ सन्तुलन शक्ति के दृष्टिकोण, संरक्षण और स्वामित्व का सिद्धान्त। इन सब तत्त्वों को छोड़ कर सिर्फ प्रथम तत्त्व से काम पूरा नहीं हो पाता है।

उपभोक्ता समाज के लिए उत्पादन बढ़ाने में ऊर्जा मुख्य समस्या है। औद्योगिक देशों ने समझा कि अरब देशों से तेल का उत्पादन करना ज्यादा सस्ता होगा, बनिस्बत भूगर्भ की गहराई में उतरते जाने वाले अपने भण्डारों के, या अपने देशों में तेल के नये स्रोतों से उपयोग की व्यवस्था करने के। दुनिया में आजकल रुपया ही ईश्वर बना है इसलिए सबने सिद्धान्त को छोड़कर सेठ आर्थिक प्रगति की मजबूरियत को देखना स्वाभाविक ही था।

इसी प्रकार धीरे-धीरे करके ज्यादा सस्ते उत्पादन की दृष्टि से, पश्चिमी औद्योगिक राष्ट्र ज्यादा से ज्यादा अरब देशों के खनिज तेल पर अवलम्बित होने लगे। इससे आर्थिक असन्तुलन बढ़ता गया। अपने कुओं का विकास करने के बाद ये छोटे अरब राष्ट्र उस महान प्रमाण पर पश्चिमी देशों के उत्पादन को खपा न सके। उनके बाजारों की भी एक सीमा हो गयी थी। उन्हें सामान के बदले में रुपयों से ही अपने तेल की कीमत वसूल करनी पड़ी। और उनके पास पाउन्ड, डॉलर, फ्रैंक, ड्यूश-मार्क इत्यादि का ढेर बढ़ने लगा। उन्हें विदेशों में अपना रुपया या लगान के अवसर ढूंढना पड़ा और इससे अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा के बाजार में असन्तुलन आने लगा। सब देशों में मुद्रा-स्फीति बढ़ने से तेल का दाम बढ़ता गया। इस से भी और गड़बड़ी पैदा हुई। अब अन्तर्राष्ट्रीय पैसा के बाजार में अरब राष्ट्रों का भारी प्रभाव हो गया है।

अरब राष्ट्रों में, ज्यादा से ज्यादा तेल का उत्पादन सऊदी अरेबिया में होता है और उसके राजा फैजल शायद पैलेस्टाइन तथा यरुशलम का अरबों के कब्जे में वापस लेने पर, सबसे ज्यादा निष्ठा से तुले हुए हैं। इस मामले में वे बहुत ही उग्र हैं। हालांकि वह अमेरिका की साम्यवादी विरोधी भावनाओं से पूरी तरह सहमत हैं तथापि वे अमेरिका के यहूदियों के पक्षपात का सम्पूर्ण विरोध करते हैं और भूल नहीं सकते कि एक बार इस सिलसिले में अमेरिका ने अपना वायदा तोड़ कर उन्हें धोखा दिया है। वह अमेरिका की यहूदियों के प्रति पक्षपाती नीति में परिवर्तन देखना चाहते हैं।

इजराइल तथा अरब राष्ट्रों के बीच में जो युद्ध की परिस्थिति रहती है, उसमें पश्चिमी देशों की भी बड़ी दिलचस्पी है। दोनों तरफ को दोनों विरोधी गुटों से (अमेरिका व रूस) सामरिक सहायता मिली है। किसिंगर की मध्यस्थता से युद्ध विराम भी हुआ है। लेकिन अभी लगने लगा है कि उस युद्ध का फैसला रण के मैदान में, शस्त्रों से नहीं होने वाला है। वह कूटनीति के स्तर पर, तेल की बुनियाद पर ही होगा।

अरब राष्ट्र तेल का उत्पादन कम करते करते उसके दाम को बढ़ाते-बढ़ाते अन्त में बड़े राष्ट्रों तक को झुकाने का प्रयास करेंगे। (होलैंड से अप्रसन्न होकर उन्होंने अभी से उसे तेल बेचना निषेध किया है।) अमेरिका हालांकि सिर्फ ६% तेल के लिए उन पर अवलम्बित है तथापि उसे या तो अपना उत्पादन घटा कर तेल के उपयोग में किफायत करनी पड़ेगी या इजराइल के पक्षपात को छोड़ यरुशलम के बारे में अरब देशों की मांगों को स्वीकार करना पड़ेगा।

हम पूछ सकते हैं, कि आखिर में यदि अमेरिका तेल के कुओं को अपने कब्जे में लेने के लिए अपने सैनिक बल का प्रयोग करे तो क्या अरब राष्ट्र उसका सामना करने की शक्ति रखते हैं? लेकिन उनके हाथ में एक आखिरी शस्त्र यह है कि यदि तेल के लिए हमारे ऊपर शस्त्र का प्रहार हो, तो हम अपने तेल के कुओं को नष्ट करेंगे।

ऐसी समस्याओं के हल के लिए, गांधीजी के साठ वर्ष पूर्व सुझाये हुए दो सिद्धान्तों के सिवा कोई और सभर हल दीखता नहीं है—क्षेत्रीय स्वावलम्बन, और अपनी आवश्यकताओं का कम करना। यानी अपने पास जो कपड़ा है, उसके अनुसार अपने कपड़ों को छांटना नहीं तो जिसकी लाठी उसकी भैंस। उत्पादन उपयोग के लिए नहीं, आवश्यक उपयोग के लिए ही हो।

कश्मीर के दो रूप : एक अशांत और एक शांत

अनुभवी उंगलियों द्वारा पश्मीना की कढ़ाई

१८ नवम्बर को हम लोग अपने कार्यक्रम के अनुसार रघोपुर-गुपनाडा के लिए बस पकड़ने अड्डे पर गये। वहां जाकर मालूम पड़ा कि आज ट्रान्सपोर्टरों की हड़ताल है। हम लोग बडशाह पुल के पास आ गये। कुछ नाबालिग लड़के नारे लगा रहे थे 'भीर-कासिम गद्दी छोड़ो या किराया घटाओ', पेट्रोल की कीमत के बढ़ने के बाद सरकार ने किराया बढ़ाया लेकिन फिर यह मानकर कि इससे जनता नाराज हो जायगी उसे कम कर दिया। इधर प्राईवेट ट्रान्सपोर्ट वाले किराये को बढ़ाये रखने की मांग कर रहे थे। उन्हीं इस मांग में बहुत सारे लोग भी शामिल हो गये थे। जो लड़के किराया बढ़ाने का नारा लगा रहे थे उन्हें तो किराया कम करने पर सरकार को धन्यवाद देना चाहिए था।

कुछ ही समय बीता होगा कि बडशाह बस अड्डे से ५ दर्जन लड़कों भरी हुई अमीराकदल से लालचौक की ओर आयी। उसके भीतर बैठे और आसपास लड़के ज्यादा किराया बढ़ाने के नारे लगा रहे थे।

लाल चौक पर भीड़ रुकी। नारे पर इन्तजार करते हुए लोगों ने गाड़ियों में यात्री मिल कर जुलूस में रूप में दौड़ने लगे। सड़कों पर चलने वाली टैक्सियां, मोटर गाड़ियों आदि को रोक कर उनको पत्थर मार, शीशे तोड़ दिये। पुलिस सामने खड़ी थी लेकिन भीड़ को रोकना नहीं चाहती थी। तोड़फोड़ की कार्रवाई चलती रही दोपहर बाद बाजार बन्द हो गया। ४ बजे के करीब भीड़ ने एक होटल और एक समाचारपत्र के कार्यालय को नष्ट कर डाला। पत्थरों की वर्षा करती हुई यह भीड़ अमीर कदल के चौराहे से मुड़ गई। यह पाकिस्तान समर्थक नारे बीच-बीच में लगाती रहती थी। अमीर कदल के पुल पर पहुंच कर भीड़ ने पुल को आग लगाने की कोशिश की। इस बीच सी० आर० पी० के नौजवान वहां पर आ गए और उन्होंने भीड़ को तितर-बितर कर दिया। इस भीड़ में जिसमें अधिकतर लोग मैले फटे कपड़े पहने थे। गरीबी जिनके चेहरे पर अंकित थी ऐसे लोग बस का किराया बढ़ाने की मांग क्यों कर रहे हैं यह न मुझे समझ में आया था और न अब आया है।

इन्दरकदल और गोकदल आदि भीतरी मोहल्लों में भी भगदड़ मची थी। पुलिस और उपद्रवी में मुठभेड़ें चल रही थीं। किसी मकान ज्यादा हुआ आयी तब दूसरे का धीरा [illegible]। गाण्डसिफार मुहल्ले में तो और भी मजेदार तमाशा था। १८-२० औरतें एक घर की छत पर से पुलिस पर पत्थर फेंक रही थीं। पुलिस उधर पास के लोगों से औरतों का समाधान के लिए कह रही थी।

श्यामबजार की ओर पांच बजे अंधेरा हो गया। ७ बजे तक बाद तो सारा श्रीनगर सो गया था। रात को ८-३० बजे गाड़ी कमीशन का चौकीदार भी चौकीदारी करने अकेला नहीं आया। दिन भर की अशान्त स्थिति का ऐसा कुछ उसका असर हुई भी उसके साथ ऐसा था। इन दोनों का कहना था कि यहां की भीड़ नीमा पार के इशारा पर नाचती है। फिर कश्मीर पुलिस ने पाकिस्तान के कारण भी यह नाम का नारा काम करते हैं। [illegible] आज शान्ति [illegible] है १८ नवम्बर की सुबह सी० आर० पी० और सरकार अधिकारियों की देखरेख में स्थिति सामान्य होने लगी। हम लोग आज दिन पामपुर पहुंचे। पामपुर कश्मीर का प्रसिद्ध नगर है। यहीं केसर की खेती होती है। केसर की खेती से हर परिवार की वार्षिक आय २ हजार से २० हजार रुपए के बीच है। ग्रामी आश्रम के व्यवस्थापक श्री मोहम्मद सिद्दीकी का कहना था कि उनकी १३ कनाल जमीन पर केसर से ४ हजार रुपये की आमदनी होती है। केसर के अलावा हिन्दुस्तान स्टील, राजकीय स्वचालित प्लान्ट मिल, सेन्चुरी का सामान बनाने का कारखाना, पत्थरों के बर्तन, रोडी बनाने के कारखाने भी यहां स्थापित किये गये हैं। लेकिन इन सबसे अलावा यहां अधिकतर लोगों को रोजगार देने वाला खादी ग्रामोद्योग है। खादी ग्रामोद्योग यहां पर प्रतिवर्ष २० लाख रुपये की ऊनी खादी तैयार करता है। यहां पर सेन्ट्रल सिरीकल्चर सीड स्टेशन भी है जहां से पूरे भारत में रेशम के कीड़ों का वितरण किया जाता है। आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित यह स्टेशन रेशम के क्षेत्र में नित नए प्रयोग कर रहा है। स्टेशन के डायरेक्टर श्री सी० एस० टीकू ने बताया कि श्रीनगर में रेशम का धन्धा सदियों पहले से होता आया है। आज से लगभग १२५ वर्ष पहले एक बीमारी के कारण यहां रेशम के कीड़े बिलकुल समाप्त हो गये थे। उसके बाद से आज तक यहां पर आयात किये गये कीड़े ही पाले जाते हैं। मुख्यतः जापान से अण्डों का आयात किया जाता है। आयात से होने वाली विभिन्न कठिनाइयों से छुटकारा पाने के लिए केन्द्रीय रेशम बोर्ड ने इस स्टेशन की स्थापना की पी-१ और २ पी-३, आदि के कीड़े पैदा किये जा रहे हैं साथ ही इनसे अधिक उत्पादन लेने के लिए भी शोध किया जा रहा है।

पी-१ और पी-२ जाति के कीड़े जम्मू-कश्मीर राज्य की जरूरतों को पूरा कर देते हैं। हिमाचल प्रदेश एवं पंजाब में भी इस जाति के कीड़े भेजे जाते हैं। श्री टिक्कू ने बताया कि हमने अपनी १२-३५ एकड़ भूमि में शहतूत उत्पादन और अनुसंधान का कार्य भी प्रारम्भ किया है। इस समय यहां पर ३२ जाति के शहतूत के पेड़ हैं जिनमें २१ विदेशी और ११ देशी हैं।

जम्मू-कश्मीर राज्य में लगभग १ लाख कोया का उत्पादन करता है। कोया राज्य सरकार के एकाधिकार में है इसलिए इन्हें इ[illegible] प्रति किलो बेचना पड़ता है जब कि मैसूर में इसी जाति का कोया २४ रुपए प्रति किलो के हिसाब से बिकता है। कोया उत्पादन से जम्मू कश्मीर के लोगों को १० लाख रुपए प्रतिवर्ष आमदनी होती है। रेशम उद्योग के कारण होने वाले आर्थिक फायदे को नजर में रखते हुए इस उद्योग ■ ज्यादा [illegible] सामने का

→ |

को राज्य की ओर से सख्त सजा की व्यवस्था की गई है : शहतूत के पेड़ को हानी पहुंचाने पर हर क्षेत्र में बड़ी सजा का प्रबंध है। एक परिवार की काकून से होने वाली औसत आमदनी ५००/रुपया है। शहतूत के पेड़ गांव-गांव में पुत्रवत् पाले जाते है। कश्मीर सेब का भी बड़ा उद्योगी राज्य है लेकिन फल का मूल्य घटने तथा सड़ने के कारण अब सेब का स्थान धीरे-धीरे ककून लेता जा रहा है। अभी तक साल में अन्य राज्यों की २ फसलों की तुलना में केवल एक ही फसल सितम्बर-अक्तूबर में मे प्राप्त की जाती है।

रेशम के रिलिंग और रीविंग का कार्य श्रीनगर में होता है। यहा पर गांवो में रेशम उत्पादकों की समस्याओं की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। बीहड़ गांवो के साधारण लोग ककून बेचने के लिए श्रीनगर आते है। उसमे उनका पैसा लगता है। इसलिए यदि ककून के विक्रय का प्रबंध गांवो मे ही हो जाय तो किसानो का अतिरिक्त धन खर्च नही होगा। रीविंग और रिलिंग के कार्य को केन्द्रित करने के बजाय ५-५ गावो के बीच मे यह कार्य शुरू किया जाय जिससे गाव वालो की रुचि रेशम उत्पादन मे अधिक से अधिक बढ़ाई जा सके।

२० नवम्बर को स्थिति सामान्य हो गई थी। हम लोग श्रीनगर के उस इलाके मे आ गये जहा अखरोट की लकड़ी का बहुत सारा सामान बनाया जाता है। उस पर हाथो से नक्काशी का काम किया जाता है। चमड़े का भी काफी काम इस इलाके मे होता है। ऊनी कपड़ो पर हाथो की कुशलता और खादीग्रामोद्योग द्वारा सचालित यानी जाम बार बुनाई केन्द्र का माहौल तो देखते ही बनता है। श्रीनगर के यह सारे कार्य श्रीनगर के प्राकृतिक नजारे से कम आकर्षक नही है लेकिन दूसरे दिन जब हम लोग श्रीनगर से भी भीतर के गांव मे गये तो उन गावो में बनने वाले सामान के आगे श्रीनगर का सामान धुधला सा पड़ने लगा। एक और अन्तर यह था कि जहां श्रीनगर मे अशान्त वातावरण दगे झगड़े रोज की घटना बन गई थी वहा दूसरी ओर इन गावो मे चारो ओर शान्ति और सरसता का वातावरण बना रहता है।

२४ नवम्बर को जम्मू से १६ मील दूर

(पृष्ठ १२ पर जारी)

जन-शासन प्रदेश का भविष्य संवारने के लिए कटिबद्ध

संकल्प की पूर्ति में तीव्रता और दृढ़ता

दलित वर्ग की ओर विशेष ध्यान

- नौकरियों में हरिजनों को १८ प्रतिशत अंश तुरन्त दिया जायेगा।
- पचास प्रतिशत पुलिस कांसटेबुलों के रिक्त स्थान हरिजनों के लिए आरक्षित किये गये हैं।
- वर्ष के अन्त तक चार लाख हरिजन परिवारों के लिए आवासभूमि का आवंटन सम्पन्न कर दिया जायेगा।
- आगामी मार्च तक ८७५ गांवों में हरिजनों के लिए एक करोड़ पच्चीस लाख रुपयों की लागत से ५,७५० मकान तैयार कर दिये जायेंगे।
- हरिजनों के उत्पीड़न के मामलों में स्थानीय पुलिस तथा सिविल अधिकारियों से जवाब-तलब किया जायेगा।
- प्रदेश के सरकारी तथा गैर सरकारी डिग्री कालिजों के छात्रावासों में १८ प्रतिशत स्थान हरिजन छात्रों के लिए आरक्षित कर दिये गये हैं।

शासन सामन्तवादी प्रतिक्रियाओं का दमन करके ही रहेगा।

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित, विज्ञापन संख्या–८

पसीने के साथ अब आंदोलन के लिए खून भी

—ठाकुरदास बंग

बाबा के पेट में अल्सर है और उन्हें कई बार थोड़ा-थोड़ा तरल आहार वह भी केवल ७० तोला-आरोग्य के लिए लेना अनिवार्य है। फिर भी उन्होंने उपवास कर वचन की साल की रकम ४० हजार सर्व सेवा संघ का खर्च चलाने के लिए दिया। मानो यह आधुनिक दधीचि अपने खून से सर्व सेवा संघ के पौधे को सींचना चाहता है और उसे बलवान एवं आरोग्यवान बनाना चाहता है।

विनोबाजी ने यह अपेक्षा रखी कि जल्द-से जल्द सर्व सेवा संघ चन्दा इकट्ठा करना बंद कर उपवासदान से अपना खर्च चलाये। इसीलिए हर व्यक्ति सालाना २५ रु० देगा इस हिसाब से १० लाख रुपयों की पूर्ति के लिए ४०,००० उपवासदानी प्राप्त करने के लिए उन्होंने सब सर्वोदय प्रेमियों से आवाहन किया।

दुनिया में तरह तरह के जनसेवा के, जनकल्याण के एवं क्रान्ति के काम चल रहे हैं। इन सब कामों को चलाने के लिए खर्च तो लगता ही है। यह खर्च सदस्यता शुल्क एवं चन्दे द्वारा अर्थ संग्रह करके चलता है। सदस्य बढ़ाने एवं अर्थसंग्रह करने में तरह-तरह के प्रभाव का, दबाव का उपयोग अक्सर किया जाता है, कई बार दाता धन देते हैं एवं रसीद 'क्ष' के नाम से बनाने को कहते हैं। यह कई बार कीर्ति न हो इस सद्हेतु से किया जाता है, लेकिन कई बार काले धन से दान किया गया इसलिए भी होता है। इकट्ठा की गयी रकम ▪ विनियोग हमेशा ठीक से ही होता है यह गारंटी नहीं। पैसा काफी रहा तो अनावश्यक खर्च होता है। जो कार्यकर्ता है उनका दान इसमें सम्मिलित न होने से और अन्यों के दान पर ही आरंभ चलने से खर्च करते समय मितव्ययिता करने की कार्यकर्ता को प्रेरणा नहीं रहती है। धनवानों के आगे कभी कभी किसी-किसी को दबना भी पड़ता है, उनकी खुशामदें भी की जाती है इत्यादि दोष भी कभी-कभी दीख जाते हैं। इनसे कार्य की एवं कार्यकर्ता की तेजोहानि होती है और आत्मग्लानि पैदा होती है। धनवान का अहंकार इससे निष्कारण बढ़ता है। कई बार मनन रहते हुए भी दबाव के कारण दबना या चन्दा देना पड़ता है। अब वह कार्यकर्ता को टालने लगता है। इससे मानव मानव के बीच सम्पर्क का मार्ग अवरुद्ध होता है।

ये सब दोष सर्व सेवा संघ के अर्थ संग्रह की पद्धति में आने का डर पैदा हो गया था। बाबा ने इस पर गहराई से सोचा होगा। और स्वयं ही हाने वाले दोषों से संघ को मुक्त करने के लिए एक उपाय उन्हें सूझा। वही यह उपवासदान है। इसका आरंभ कर उन्होंने हमें प्रेरणा दी है कि कार्यकर्ता न केवल अपना तन एवं मन सर्वोदय आन्दोलन के लिए दें, लेकिन अपना धन भी दें। और धन अपनी प्रथम आवश्यकता अन्न में से यानी अन्न में से। अब यह दान शुद्धतम होगा। उन्होंने ठीक ही कहा कि अभी तक हमने सर्व भगवान की उपासना की, अब हमें शुद्ध भगवान की उपासना करनी है। इससे न केवल शुद्ध दान प्राप्त होगा, बल्कि मुट्ठीभर अमीर या सैकड़ों मध्यमवर्ग के मित्रों पर अवलम्बित रहने के बजाय हजारों कार्यकर्ताओं एवं सर्वोदय प्रेमी नागरिकों एवं सर्वोदय प्रेमी नागरिकों से दान प्राप्त होने के कारण संघ का आर्थिक आधार व्यापक होगा एवं शुद्धतम होगा।

ऐसे ४०,००० लोगों से आगामी सर्वोदय सम्मेलन तक सम्पर्क करना साधना है। इसमें इससे कई गुना लोगों से सम्पर्क आयेगा। इन उपवासदानियों से बराबर सम्पर्क रखा जाना चाहिए। इनमें से कई व्यक्ति सर्वोदय आन्दोलन को आगे-आगे क्षेत्र में अपना समय भी देंगे। उन्हें उनकी रुचि एवं क्षमता के अनुसार सर्वोदय के विविध कार्यक्रमों में लगाने की योजना सर्वोदय मण्डलों को बनानी होगी। इससे काम बढ़ेगा आन्दोलन के प्राणवान होने में मदद मिलेगी।

हमारा सम्पर्क आजतक लाखों भूदानदाता ग्रामदाताओं से आया। लेकिन हमने उनसे सतत सम्पर्क नहीं रखा। नतीजा यह हुआ कि इतनी मानवीय शक्ति आन्दोलन की दृष्टि से व्यर्थ-सी गई। दुबारा ऐसा न हो इसकी पूरी सावधानी हमें बरतनी चाहिए। केवल हजार-दो हजार सर्वोदय कार्यकर्ताओं की छटपटाहट से क्रान्ति नहीं हो सकती। उसके लिए हजारों लाखों आंशिक समयदानी कार्यकर्ता लगेंगे। हजारों उपवासदानियों से सम्पर्क रखकर इस कमी की पूर्ति करने का कार्य प्रारंभ हो सकता है। यदि ऐसा हम न कर सके तो पैसा भले ही प्रथम वर्ष मिल जाय, लेकिन आन्दोलन के प्रचार में आगे यह काम भी ढीला होने जाने का डर है। ग्रामस्वराज्य कोष के ७५ लाख रुपये में आन्दोलन का वेग अपेक्षानुरूप नहीं बढ़ सका यह हमने देख लिया है। लाखों में अनुपात ▪ काम न रहा तो केवल अर्थ ▪ प्रदान करके भी आन्दोलन कैसे चल सकता है? और चले भी क्यों?

आजतक दुनिया में कोई संस्था, संगठन या आन्दोलन उपवास की अपना से चला हो ऐसा देखा नहीं गया। यह एक अद्भुत प्रयोग है। इसमें आत्मशुद्धि, अर्थशुद्धि, विनियोगशुद्धि एवं नई मानवीय शक्ति जगाने वाली है। ७६ वें साल में बाबा ने मानो अपना रक्त देकर, सर्व सेवा संघ को प्राणवान बनाने का शुभ आरंभ किया है। हम सब इसे समझें, हृदयगंम करें और इस काम में अपने आप को महीन एकाग्र होकर लगा दें। इससे आन्दोलन का एक नया अध्याय खुलेगा, जिससे शक्ति एवं शुद्धि दोनों प्राप्त होंगे। नैतिकशक्ति ने लड़ाई का एक नया मोर्चा खोल दिया है। हम सब इसमें आगामी दिनों में डट जायें तो सिद्धि असाध्य नहीं, कष्टसाध्य जरूर है। और बिना कष्ट के जो सिद्धि प्राप्त हो उसकी कीमत ही कितनी! लाखों दाताओं से लाखों एकड़ भूदान प्राप्त करने वाली जमात को, एक साल देहातों में ग्रामदानों को खादी द्वारा सहारा देनेवाली जमात को, विभिन्न रचनात्मक कामों ▪ लगे हुए गांधीमार्गियों को लक्ष्य तक पहुंचना आसान भले ही न हो, बहुत कठिन भी नहीं है।

बिना टिप्पणी के

महोदय,

आजकल पू० विनोबा जी शुद्ध और पवित्र पैसे की बात करते हैं। शुद्ध पैसे के धन का परिणाम शुद्धि में होगा ऐसा वे कहते हैं (सर्वोदय ५-११) स्वामी विवेकानन्द शुद्ध आहार पर जोर देते थे। आहार शुद्धी सत्त्व-शुद्धि. उसका फल है बुद्धि में सात्त्विकता आना। तब विनोबा जी की बात जरूर गले उतरती है। परन्तु मन में यह शंका पैदा होती है कि *गांधी जी ने व्यापारियों और उद्योगपतियों से* जो धन लिया वह अशुद्ध तो था ही। उसके कारण आज गांधीवाद का लोप होकर सब जगह दंभ और भ्रष्टाचार दिखाई देता है। (विनोबा जी का भी यही अनुभव है) यह मानना पड़ेगा। परन्तु गांधी जी द्वारा इस तरह की 'हिमालयन ब्लंडर' कैसे हुई इसका खुलासा कोई कर सकेगा?

वि० मा० सानोलकर

महोदय,

आपके पत्र में सिद्धराज ढड्ढा व जे०पी० व अन्य साथियों के चुनाव सम्बन्धी विचार खास तौर से पढ़े और उत्तर प्रदेश की लखनऊ वाली बैठक की कार्यवाही भी पढ़ी। इसी प्रकार मैंने पिछले चुनाव में भी कुछ दौड़-धूप की टिप्पणी पढ़ी-देखी। ठीक आज जैसा ही तब हुआ था जब चुनाव के दो ढाई महीने शेष रह गये थे। पिछले चुनाव में आज के चुनाव तक करीब-करीब पूर्ण रूप से खामोशी रही आयी और सारी बहुत सी बातें चलीं। इस चुनाव की बात सरकार की ओर से तथा पार्टियों की ओर से आज कम से कम एक साल से चल रही है लेकिन हम सर्वोदय वालों का अब होश आया जब यह कहने का मौका सामने *आया कि समय कम है।*

मैं तो एक छोटा सा कार्यकर्ता हूं और एक कोने में एक गरीब की भांति पड़ा सोचता रहता हूं और कुछ करता रहता हूं। जहां तक मैंने विचार पढ़े, बड़े सुन्दर और सराहनीय के हैं और आज ही जरूरी नहीं बहुत साल पहले भी जरूरी थे। आज मुझे दुख से यह कहना है कि सर्वोदय वालों के चुनाव सम्बन्धी कार्यक्रम केवल इसलिए समाज के सामने लाये गये हैं ताकि लोग समझ लें कि सर्वोदय वाले *भी समाज के हित में है बाकी कुछ होना तो* है नहीं। अगर मतदाता प्रशिक्षण की बात करना है तो एक स्थायी अनवरत रूप से चलने वाला प्रोग्राम सोचा जाये। आज नहीं चुनाव के बाद। दुनिया या देश आज ही खत्म नहीं हो रहा। देश रहेगा, चुनाव रहेगा। आज सिवा हिंसा के कुछ हाथ आने वाला नहीं है। मुझे तो आचार्यकुल कायम करने और उसके माध्यम से सारे मानव कल्याणकारी कार्य करने की योजना ही एक मात्र सही और प्रभावकारी प्रतीत होती है। और इसी में सारे विचारक, देश सेवकों और सन्तों को जुट जाना चाहिए। पत्ता सींचने के स्थान पर मूल सींचा जाय तो देश रूपी वृक्ष हरा होगा और फले-फूलेगा।

शम्भूदयाल त्यागी, इटावा

ब्रिटेन में अगले साल आम चुनाव आ रहा है। प्रधानमंत्री हीथ सोचने लगे हैं कि आगामी चुनाव में स्त्रियों के वोट ज्यादा से ज्यादा संख्या में कैसे मिल सकेंगे? इसलिए वे अब पार्लियामेंट में अश्लील पोस्टर तथा अश्लील विज्ञापन विरोधी बिल पेश करने की तैयारी कर रहे हैं।

जब ब्रिटेन में ऐसा विचार चल रहा है, *तो भारत में हमारी बहनें इस समस्या के बारे में ज्यादा सक्रिय क्यों नहीं होती है? हमारे यहां तो प्रधानमंत्री भी एक महिला ही है!*

सरला बहन

(पृष्ठ १० का शेष)

उधमपुर की ओर अगठी गांव के हरिजन भाई श्री चरणदास का मेहमान बनने का सौभाग्य मिला। चरण भाई ने ७ एकड़ भूमि में फलों का एक बगीचा लगाया है। इससे प्रतिवर्ष २ हजार रुपये की आमदनी होती है। सब्जी उत्पादन के कार्य से २ हजार और एक हजार रुपये प्रतिवर्ष अन्य फसलों से आमदनी हो जाती है। चरण भाई खादी ग्रामोद्योग कमीशन की सहायता से बिजली से चलने वाली एक सहकारी तेलघानी भी चला रहे हैं। मुर्गी पालन और भेड़पालन भी उनके यहां हो रहा है। आखिर समस्याएँ उनकी हल हो चुकी है लेकिन छुआछूत की समस्या अभी बरकरार है। *एक ही कुएं से पानी भरने के* कारण स्वर्णों ने मारपीट की थी, कोर्ट में भी मुकदमा चल रहा है। फिर उनके कारोबार को भी देख कर कुछ वर्णों के लोग उनसे ईर्ष्या करते हैं। अगठी गांव में चल रही तेलघानी की वर्तमान प्रबंध समिति मुझे भारत में एक आदर्श संगठन लगा जिस में सभी जातियों के लोगों का प्रतिनिधित्व है। समिति रोजगार के साधनों के लिए कटिबद्ध है। मैंने तेलघानी सहकारी समिति के मंत्री श्री शरबुद्दीन से श्रीनगर और जम्मू की परि-*स्थिति के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि* उस सब से हम लोगों का कोई सरोकार नहीं है हम न तो वह पसन्द करते हैं और न वह हमारी *आदत है। वो लोग हल्ला मचाते हैं, सरकार* लाखों रुपये भेज देती है। यह क्रम चलता रहता है। लेकिन हम अपने पुरुषार्थ से काम कर रहे हैं अपनी और अपने इलाके की हालत बदलने के लिए।

२६ नवम्बर को वापस उत्तराखंड लौटते हुए मेरी आंखों में एक नहीं दो कश्मीर थे। एक कश्मीर में पत्थर और गोलियां चल रही थी, दंगे हो रहे थे तो दूसरे कश्मीर में पसीने, तानों जामा चार बुना जा रहा था।

निष्काम कर्म के बजाय

देश की हालत सारी तब्दीलों में खराब है। इस परिस्थिति में से देश को अपेक्षाकृत थोड़ी भी अच्छी हालत में निकाल ले जाना शासनकर्ताओं के लिए बहुत कठिन हो गया है। उन्हें इस बात का अहसास तो है कि एक के बाद जो दूसरा दिन आता है, ज्यादा कठिन आता है, किन्तु वे लोगों से बहुत पड़ते हैं कि बुरे दिन तेजी से बीत रहे हैं। प्रधानमंत्री ने अभी ११ दिसम्बर को उड़ीसा के ढेंकानाल और बोलनगीर नाम की जगहों में तो यहां तक कहा, निस्संकोच और जोर देकर कि देश प्रतिदिन ही नहीं प्रतिमिनिट प्रगति कर रहा है—याने संसार में हमारी तस्वीर के आसपास का 'प्रभा-मंडल' बढ़ता जा रहा है, महंगाई, बेकारी, अन्न का (परिलक्षित) अभाव जरूर है, मगर ये सारी बातें विरोधी दलों और उनमें भी विशेषत उन पुराने राजा महाराजाओं के कारण हैं, जो जब हम अंग्रेजों से लड़ रहे, उनके जूते चाट रहे थे। प्रधानमन्त्री के कथन में सार हो सकता है। उनकी किसी कही हुई बात का खोखलापन सिद्ध करके देश का मनोबल गिराने का ख्याल भी हमारे मन में नहीं आना चाहिए। तथापि परिस्थिति को इस प्रकार बिना किसी हिचक के अपना पल्ला झाड़कर दूसरों पर मढ़कर निश्चिन्त होना या लोगों को निश्चिन्त करना न श्रेयस्कर है न सम्भव। यह मनरंजन तक है। सच तो यह है कि प्रगति, हर दिन या हर मिनिट न बढ़कर, परेशानियां प्रतिक्षण बढ़ रही हैं। इसी सत्य को समझकर तथा लोगों को समझाकर और उनकी समस्याओं के हल में साथ लेकर निज का आचरण रोका, संभाला और सुधारा जा सकता है।

विरोधी पक्षों, राजा-महाराजाओं और सर्वसाधारण ने आजादी के अवसर पर शासन द्वारा जब भी सच्चे मन से सहयोग मांगा गया, आपत्तियों को हल करने में पूरी शक्ति लगाई। राजनीति में दो मुंही बातें करने का चलन है। देश के स्वतन्त्र होते ही देशी राज्यों के राजाओं और नवाबों ने जो सहयोग का रुख अपनाया और देश को खंडित करने की चाल को जैसे उत्साह के साथ विफल किया उसकी स्व० सरदार पटेल ने और हमारे हृदय सम्राट पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जी खोलकर प्रशंसा की थी। कांग्रेस दल की शक्ति बढ़ाने में भी उनका काफी हाथ रहा और केन्द्रीय तथा प्रांतीय मंत्रिमंडलों तक में उन्होंने दूसरों की अपेक्षा सौंपे हुए कामों को अधिक प्रामाणिकता और तत्परता से अंजाम दिया। इनमें से अधिकतर लोग अपने-अपने समय के प्रधानमंत्रियों और मुख्यमंत्रियों के निकटतम और विश्वास-पात्र व्यक्तियों में रहे। यदि उनमें से कुछ अकारण विरोध करते हैं तो विरोध के कारणों को दूर करना चाहिए। वैसा न करके अशोभन भाषा का प्रयोग करना औचित्य नहीं रखता। विरोध प्रजातन्त्र का प्राण है। जहां विरोध करने की आजादी नहीं है वहां का तन्त्र और चाहे जिस नाम से पुकारा जाय, उसे प्रजातन्त्र नहीं कहा जा सकता। जिस पर जो दल द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, मुस्लिम लीग और शिवसेना जैसे संकीर्ण मनोवृत्ति का पालन करने वाले दलों से अवसर देखकर हाथ मिलाने में नहीं हिचकता, उसके सीदेश्य व्यक्तियों का अपेक्षाकृत अधिक उदार दलों के प्रति अपनाया जाने वाला रवैया समस्याओं को और उलझाने वाला ही बनता है।

सबसे बड़े जो सवाल हैं वे अन्न का त्रुटिपूर्ण वितरण, आवागमन का अभूतपूर्व संकट, मुद्रास्फीति, चौगुनी बढ़ती हुई मंहगाई है। अन्न की वसूली और उसका वितरण लगभग पूरी तरह सरकार के हाथ में है। रेल, हवाई जहाज और बसों द्वारा परिवहन सरकार के हाथ में है। इनसे सम्बन्धित तेल, कोयला और कर्मचारी भी उसी के द्वारा संचालित हैं। इनके अत्यन्त असन्तोषजनक और शर्मनाक प्रबन्ध के लिए विरोधी दलों को दोष देकर अपने आप को निर्दोष बताना हास्यास्पद है। मुद्रास्फीति के लिए भी सिवा सरकार के किसे उत्तरदायी माना जाए? सरकार स्वयं भी इस तथ्य को भली-भांति जानती है। अकारण और अचानक चीनी के दामों में साढ़े सात प्रतिशत वृद्धि की घोषणा का विरोधी दलों से क्या सम्बन्ध है, और फिर चीनी को साढ़े सात प्रतिशत नहीं बाजार में लगभग तीन प्रतिशत बढ़ाये गये दामों पर बिकने देने का भी विरोधी दलों से क्या सम्बन्ध है? राशन की दुकानों पर अन्न न मिलने के बारे में भी विरोधी दलों पर किस प्रकार दोष दिया जा सकता है? भूख से अधिकतर जन साधारण छोटे-छोटे रोगों का आक्रमण बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। मृत्यु का प्रतिशत बढ़ रहा है। एक सप्ताह में शीत लहर से अकेले बिहार में लगभग दो-सौ व्यक्ति मर गये। क्या उनके मरने के कारण को अन्न और वस्त्र के अभाव से जोड़ना और उसे कहना देशद्रोह माना जायेगा? राशन की मात्रा को बढ़ाने के बजाय घटाते चले जाना क्या प्रगति का लक्षण है? महाराष्ट्र के नागपुर नगर में प्रति व्यक्ति ७ किलो मासिक राशन दिया जाता है। तीस दिन की आठ खुराकों का सात किलो में बांटें तो जो प्रमाण बनता है, उससे अधिक की मांग करना सहानुभूति के साथ सोचकर उपाय ढूंढने की बात है या मांग करने वालों पर अश्रु गैस छोड़ने और लाठीचार्ज करने की?

देश का हर व्यक्ति चाहता है कि शासन स्वच्छ और ऐसा शक्ति सम्पन्न भी हो कि समस्यायें धीरे-धीरे ही सही हल की जा सकें। सभी वर्गों में कांग्रेस से इसकी आशा लगाये बैठे हैं और अपने-अपने ढंग से सहयोग भी करना चाहते हैं। मगर कांग्रेस है कि जन सेवक की भूमिका छोड़कर कोरे शासक की भूमिका को नित्य अधिकाधिक अपनाये जा रही है और पुराने राजा-महाराजाओं से भी अधिक उत्तरदायित्वहीनता, आरामतलबी

(शेष पृष्ठ १६ पर)

स्वैच्छिक सेवा यानी घोर अन्धेरे में उजाले की रेखा

यह विचार आसानी से मन में नहीं उतरता कि आपको एक ऐसी सभा में भाग लेना है जो मने बने किसी शहर के सरकारी अस्पताल के आउट डोअर में हो रही हो। सभा के लिए सभा भवन होते हैं, खुली जगह में लगे शामियाने होते हैं या किसी सार्वजनिक संस्था का कोई कमरा होता है। किसी अस्पताल के आउट डोअर विभाग का खुला बरामदा तो निश्चित ही सभा का स्थान नहीं हो सकता। हो भी सकता है तो शायद तभी जब कोई शोक सभा हो रही हो। लेकिन जब आपको मालूम हो कि आप जिसमें जा रहे हैं वह शोक सभा नहीं है और फिर भी अस्पताल के आउट डोअर में ही हो रही है तो आप कैसा महसूस करेंगे?

आगरा की अस्पताल सर्वोदय सेवक समिति के सत्रहवें वार्षिक अधिवेशन की सभा सरोजिनी नायडू अस्पताल के आउट डोअर बरामदे में २४ दिसम्बर की दोपहर को हुई और सभा समाप्त होते-होते मैं अच्छी तरह समझ गया कि यह सभा आउट डोअर के सिवाय कहीं हो ही नहीं सकती थी। अधिवेशन भी—अधिवेशन जैसा कोई समारोह नहीं था। अस्पताल की उन बेंचों पर जो सवेरे मरीजों के काम आती हैं, दर्शक बैठे थे। दर्शक भी 'दर्शक' नहीं थे वे या तो समिति के कार्यकर्ता थे या सहयोगी। 'सभापति और वक्ता जिन कुर्सियों पर बैठे थे वे भी आउट डोअर की ही कुर्सियां थीं और सभापति की मेज भी वही थी जिस पर अस्पताल का कार्यकर्ता सवेरे बैठ कर मरीजों को चिठियां बांटता है।

सभापति थे अस्पताल के अधीक्षक डॉ० आर० पी० एस० राठौर जो आधी से ज्यादा जिन्दगी उत्तरप्रदेश के अस्पतालों में काम करते रहे हैं। डॉ० राठौर ने कहा कि अपनी जिंदगी में उन्होंने ऐसी कोई समिति कहीं नहीं देखी जो अस्पताल सर्वोदय सेवक समिति की तरह काम करती हो। इस काम से वे इतने प्रभावित हैं कि समिति के लिए उन्होंने अस्पताल के आउट डोअर में एक कमरा बनवा दिया है। बाबूलाल मित्तल ने सभा के बाद समिति के इस कार्यालय का उद्घाटन किया।

यह भी शायद पहला ही मौका है जब किसी सरकारी अस्पताल में स्वैच्छिक सेवकों की समिति को इस तरह का कार्यालय दिया गया हो।

यह समिति ऐसा क्या कार्य करती है कि अस्पताल के प्रशासन ने उसे बाकायदा कार्यालय खोलने का स्थान दिया है? समिति के मंत्री जम्नूमल कोडवानी ने काम का बड़ा प्रभावकारी और भावनामय ब्यौरा दिया। सरोजिनी नायडू अस्पताल में आसपास के गांवों के और आगरा शहर के भी ऐसे कई मरीज आते थे जो अस्पताल की व्यवस्था न जानने के कारण भटकते थे और इस भटकन में वक्त बर्बाद हो जाता था जो मरीज के लिए घातक सिद्ध होता था। फिर व्यवस्था के सही उपयोग का भी सवाल था। दवाएं थीं डॉ० थे और अस्पताल था लेकिन इन सबका ठीक और जरूरतमन्द मरीज के लिए उपयोग हो पाना कई कारणों से संभव नहीं था। इन कारणों में एक तो था मरीजों की संख्या अत्यधिक होना और दूसरा था व्यवस्था का अपर्याप्त होना। ऐसी स्थिति में कुछ सेवाभावी लोगों ने सत्रह साल पहले अपनी सेवाएं देने का प्रस्ताव किया और तत्कालीन अधीक्षक से कहा कि वे लिख कर दे दें कि उन्हें काम करने दिया जायेगा। लिखित अनुमति मिल गयी और एक पेड़ के नीचे से इन लोगों ने काम शुरू किया। कोडवानी जी ने कहा पांच महीने पेड़ के नीचे और सत्रह साल एक तख्त से हमने काम किया और अब हमें कमरा मिल गया है। जब हमने काम शुरू किया था तो लोग कहते थे कि ये आ गये अपना धंधा करने। अस्पताल में भी लोगों के मन में शंकाएं थीं। लोग पूछते थे कि आप क्या करते हैं—तो हम कहते कि हम तो सिर्फ रास्ता बनाने वाले हैं। हम पुलिया हैं। लोग कहते बस इसीलिए आप बैठे हैं! लोग पूछते कि आपका गुजारा कैसे होता है? कुछ तो मिलता होगा. कहाँ से? कांग्रेस की तरफ से तनख्वाह मिलती होगी? जब हम कहते कि हम इस काम से कुछ नहीं लेते तो लोगों को विश्वास नहीं होता। अभी तक ऐसे लोगों हैं जो यह नहीं मानते कि हम बिना कुछ लिये यह काम करते हैं। ठाकुरदास बंग के शब्दों में "कृतज्ञता के इस अभाव और दोषारोपण के बावजूद"—यह समिति सत्रह साल से काम कर रही है। रविवार की छुट्टी के अलावा साल में सिर्फ चार दिन समिति के कार्यकर्ता छुट्टी मानते हैं—१५ अगस्त, २६ जनवरी, होली और दीवाली। इन छुट्टियों के अलावा किसी मौसम में कोई नागा नहीं। कोडवानी जी, गणसिंह, गिल्सी बाबू, मुसलाल, पुरुषोत्तम पंडा, राजाराम आदि कार्यकर्ताओं की इस अथक सेवा का उल्लेख करते हुए रो पड़े कि कैसे हम इन्हें धन्यवाद दें - सब अपनी रोजी रोटी के लिए अलग काम करते हैं, नौकरियां करते हैं लेकिन अस्पताल में अपनी ड्यूटी से कभी नहीं चूकते। सत्रह साल हो गये इन्हें, कोई इमर्जेन्सी वार्ड में काम करता है, कोई टी. बी. वार्ड में और कोई रसोईघर में देखता है कि मरीजों के लिए बना खाना ठीक है या नहीं और सबको मिला कि नहीं। गणेशीलाल हैं, सरदार सिंह जैन हैं, ज्ञानचन्द नारवानी हैं, जिसे जब फुरसत मिलती है आता है और अपना काम पूरा कर के जाता है।

समिति के संस्थापकों में से एक बाबूलाल मित्तल ने कहा कि लोग आगरा के ताजमहल के कंगूरों को तो देखते हैं, क्योंकि वे ऊपर दिखते हैं लेकिन नींव के पत्थरों को कोई नहीं देखता कि, जिनके ऊपर ताजमहल खड़ा है। यहां सेवा करने वाले लोग नींव के पत्थर हैं। चुपचाप और ऐसे सातत्य से काम करने वाले लोग दुनिया में विरले ही हैं जो सेवा का पुण्य तक दूसरों के नाम कर देते हैं। निस्वार्थ सेवा का ऋण भगवान मानता है और वह ऐसा कर्जदार है जो पाई-पाई तक चुकता है। मैं तो यही प्रार्थना करूंगा कि भगवान समिति के कार्यकर्ताओं और सहयोगियों को श्रद्धा और शक्ति दे। बंग साहब ने क्रिसमस का जिक्र करते हुए कहा कि ऐसे लोगों के लिए ईसा मसीह आशीर्वाद दे गये हैं कि तुम्हारी जमात बढ़े। डॉ० राठौर ने कहा कि उन्हें समिति के लिए कमरा इसीलिए बनवाना पड़ा कि

→

समाचार

सूताजलि के लिए अपील करते हुए सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा ने अपने एक निवेदन में कहा है कि १२ फरवरी का दिन निकट आ रहा है। वह दिन गांधी जी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के लिए "सर्वोदय दिवस" के रूप में मनाया जाता है। इस दिन देश के अनेक स्थानों पर सर्वोदय मेले लगते हैं जिनमें अपने हाथ से कते हुए सूत की एक गुंडी (एक हजार मीटर) समर्पण करने का कार्यक्रम मुख्य होता है। पू० विनोबा जी ने इसे सर्वोदय समाज की रचना के लिए दिये जानेवाले वोट की संज्ञा दी है।

सिद्धराजजी

आपको मालूम ही है कि पू० विनोबा जी ने अब इस बात पर जोर दिया है कि सर्व सेवा संघ का काम चंदे से नहीं बल्कि व्यक्ति-२ के त्याग द्वारा एकत्रित रकम से चलना चाहिए। इसके लिए उन्होंने उपवासदान या अन्नदान कार्यक्रम भी हमको दिया है। इस संदर्भ में सूताजलि का महत्व और भी बढ़ जाता है।

गांधी जी के विचार में श्रद्धा रखनेवाले सब मित्रों, खास करके खादी कार्यकर्त्ताओं से और संस्थाओं से प्रार्थना है कि वे इस नये संदर्भ में सूताजलि समर्पण के कार्यक्रम की ओर विशेष ध्यान दें। खादी कार्यकर्त्ताओं, कत्तियों, बुनकरों आदि से तथा अन्य नागरिकों से सूताजलि प्राप्त करने की कोशिश की जाय। सूताजलि समर्पण के लिए विशेष कार्यक्रम मनाये जाय।

१२ फरवरी के बाद जल्दी से जल्दी सूताजलि संग्रह की पूरी रिपोर्ट, तथा सर्व सेवा संघ को उसमें से मिलने वाली रकम सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा के पते पर भिजवाने का कष्ट करें।

प्राप्त जानकारी के अनुसार १० दिसम्बर को लोकसभा में संसदसदस्य स्वामी ब्रह्मानन्द ने कहा कि अपराध क्या होते हैं, इस पर हमें विचार करना चाहिए। आप चाहे जितने कानून बनाते जाइये, ज्यादा कानून बनायेंगे, ज्यादा टूटेंगे। अपराध गरीबी से होते हैं और सारा देश मिल कर गरीबी मिटा सकता है, केवल सरकार नहीं। अगर सरकार के ऊपर सारी जिम्मेदारी है तो सरकार को सारी चीजों का राष्ट्रीयकरण कर लेना चाहिए और सारा इन्तजाम सरकार करे, यह ठीक रहता है।

मैं जानना चाहता हूं दफा १०३ में क्या हालत है? एक दरोगा पैसा लेकर एक पार्टी के पचास आदमियों का नाम लिख देता है। सारे का सारा गांव घूमता है, सब वकील के आगे-पीछे घूमते हैं। इसलिए ये जितने कानून हैं, तब तक सफल नहीं होंगे जब तक गरीबी नहीं मिटती। कोई मुट्ठी भर चना उखाड़ लेता है तो उसे हथकड़ी डाल कर जेल में बंद कर देते हैं, लेकिन जो करोड़ों की सम्पत्ति हड़प कर लेता है, बड़े-बड़े पूंजीपति हैं, बदमाशी करते हैं, उनको आपका कानून पकड़ नहीं पाता। इसलिए कानून थोड़ा होना चाहिए, मजबूत होना चाहिए और उसका पालन होना चाहिए। पहले जमाने में चोरी करने वाले के सारे हाथ काट दिये जाते थे, परन्तु ऐसा कब होता था? जब उनको सारी सुविधाएं उपलब्ध थी। एक तरफ एक आदमी भूखा मरता है, सर्दी में ठिठुरता है, दूसरी तरफ एक आदमी के पास करोड़ों रुपये के कम्बल हैं। अगर सर्दी से मरने वाला कम्बल चुरा लेता है तो उस पर कानून लागू हो जाता है, लेकिन जिसके पास करोड़ों रुपये के कम्बल हैं, उस पर कानून लागू नहीं होता।

यह सारी सृष्टि भगवान की है और सारे मनुष्यों को बराबर के अधिकार हैं। हर आदमी को भगवान ने मुंह दिया है, कान दिये हैं, बाजू दिये हैं ताकि हर आदमी काम करे, हर आदमी मेहनत करे। हर आदमी को बराबर भोजन मिले लेकिन मिलता कहां है? जो बड़े आदमी हैं वे वकील कर लेते हैं। मैंने एक बार बताया था कि आप गांधी जी के सपने को पूरा करें, आप शराबबन्दी करें, बी डी-सिगरेट पीना बन्द करें। अभी शराब के मामले में ही इलाहाबाद में दंगा हो गया और वहां पर कर्फ्यू लगा। तो इसमें क्या करेगा कानून जब तक कि आप नशाबन्दी न करें। इसलिए आप गांधी जी के सपने के अनुसार गांव पंचायतें बनायें तथा अदालतों और वकीलों को समाप्त करें। वकील भूतों की तरह अदालतों में घूमा करते हैं, तो जो अपराध होते हैं, वह कैसे निपट सकते हैं? और ये जो कानून हैं वे तभी काम करेंगे जब कि आप सभी लोगों के लिए खाने-पीने और कपड़े का इन्तजाम करेंगे। यह बात तभी हो सकती है जब यहां से पूंजीवाद खत्म होगा। इसलिए आप ऐसे कानून लाये जिससे करोड़पतियों का खात्मा हो। बड़े-बड़े जमींदार और राजा तो खत्म हुए लेकिन अब नये-नये राजा पैदा हो गये हैं, जिनकी दिल्ली में १२-१२ कोठियां हैं। उनकी मोटर से अगर कोई आदमी कुचल जाये तो भी उनका कुछ नहीं होता है। आपको यह देखना चाहिए अपराध क्यों होते हैं और उनका इलाज करना चाहिए अपराध इसलिए होते हैं कि आप बड़ी-बड़ी सम्पत्तियों को खत्म नहीं करते हैं।

(पृष्ठ १३ का शेष)

और स्वार्थ साधन का आभास दे रही है। अभी-अभी स्वयं प्रधानमन्त्री ने किसी हृदय-मंथन के क्षण में यह कह दिया था कि हम 'निष्काम कर्म' के (आदर्श के) बजाय 'निष्कर्म काम' (भोग विलास) की ओर बढ़ रहे हैं। प्रधानमन्त्री ने यह कहते समय 'हम' की परिधि सकीर्ण नहीं रखी होगी—याने अपने दल को भी निश्चित ही उसमें शामिल माना होगा। वे तटस्थ होकर सोचें तो उनका यह कथन अगर सर्वाधिक कहीं चस्पाँ होता है तो सत्तारूढ़ उन्हीं के दल पर।

वार्षिक शुल्क : १२ रु० (सफेद कागज : १५ रु., एक प्रति ३० पैसे), विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य २५ पैसे। प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र,
नई दिल्ली, सोमवार, ७ जनवरी, '७४
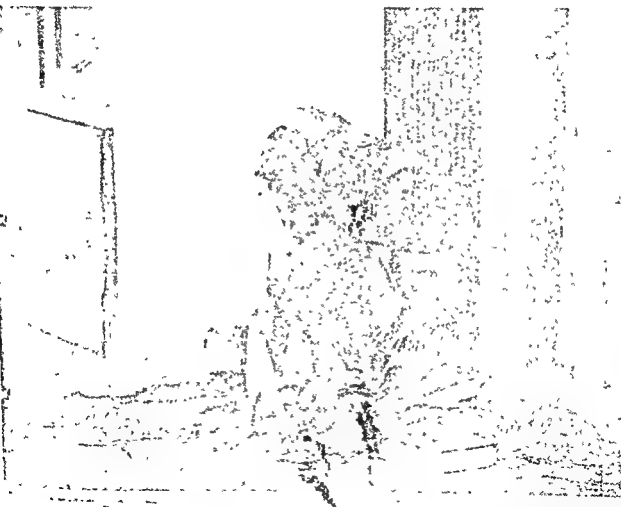
नये साल की शीत लहर विशेष लेख पृष्ठ २ पर

× नये साल की शीत लहर × उत्पादन क्यों नहीं बढ़ता, वितरण क्यों नहीं होता ? × बालाघाट में मजदूरों पर अत्याचार × गांधी के जमाने का सत्याग्रह आज नहीं चल

भूदान-यज्ञ

७ जनवरी, '७४

वर्ष २१ अंक १५

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

नये साल की शीत लहर

नया साल लगते-लगते शीत लहर ने उत्तर भारत में लगभग साढ़े तीन सौ व्यक्तियों को ठिठुरा कर मार दिया। बदन पर कपड़े और सिर पर छत के अभाव में मरने वालों की बढ़ती संख्या अखबारों में पारे के घटने-उठने की खबर के ठण्डे गणित के साथ छपती रही। हवाई जहाजों के न उड़ पाने, दफ्तरों के खाली रहने और बिजली के ज्यादा खर्च होने जैसी तकलीफों में ही मौत के आंकड़े गुम होते रहे। और इस सब को हीटरों के सामने बैठे वे लोग पढ़ते रहे जो गर्म कपड़ों में लिपटे, बंद कमरों में सुरक्षित और रोज की रोजी कमाने के अभिशाप से मुक्त हैं।

यह हर साल होता है। ठण्ड के महीनों में लोग ठण्ड से मरते हैं, गर्मी के दिनों में गर्मी से और बरसात के दिनों में बाढ़ से। इन मरने वालों की सिर्फ संख्या छपती है। यह कभी नहीं छपता कि ये लोग कौन हैं और ऐसी कौनसी परिस्थितियां हैं जो देश के इतने लोगों को हर साल अकाल मृत्यु के गुमनाम घाट पर उतार देती हैं? इन गुमनाम लोगों की मौत से किसी का क्या कोई सरोकार नहीं है। क्या कल्याणकारी राज्य का, उत्तरदायी समाज का और स्वयंसेवी संस्थाओं का इन लावारिस लोगों के प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं है। उस समाज की संवेदनशीलता के बारे में क्या कहा जाये जो इतने लोगों को इस तरह मर जाने देता है और उसके गले से कोई आह तक नहीं निकलती। लोगों के मामलों का और उनकी परिस्थितियों का अध्ययन करने वाले कितने संस्थान इस देश में हैं। क्या कभी कोई संस्थान इस विषय में रुचि नहीं ले सकता? क्या वह सरकार और समाज को बता नहीं सकता कि किस हद तक यह अपने लोगों के प्रति लापरवाह है?

ऐसा नहीं होगा। क्योंकि ऐसा अध्ययन डॉक्टरेट, सरकारी सहायता और पाण्डित्यिक वाहवाही नहीं दिला सकता। आवास मंत्रालय और राज्य सरकारों के आवास विभाग, नगर निगम और नगर पालिकाएं भी इन लोगों के प्रति सचेत नहीं होंगी क्योंकि मरने वाले अधिकांश लोग समाज के उस तबके के हैं जो संगठित नहीं है, जो नौकरीपेशा नहीं हैं और जिनके पास इतना समय और धन होता कि राजनीति को प्रभावित कर पाते तो इस तरह कुत्ते की मौत मरते ही नहीं। ये वे लोग हैं जो कल्याणकारी राज्य और संगठित समाज के दायरे से बाहर हैं और जाने कब तक बाहर ही रखे जायेंगे। देश में ऐसे ही लोगों का बहुमत है और उनके बल पर ही यह प्रजातन्त्र कायम है, लेकिन नियोजित अर्थ व्यवस्था और विकास के सारे लाभ वे लोग ले जाते हैं जो अपनी ही नहीं, आने वाली अपनी सन्तानों तक के भविष्य सुरक्षित कर चुके हैं। सार्वजनिक संस्थाएं, नगर पालिकाएं और नगर निगम इन्हीं लोगों को सुविधाएं देने के लिए सड़कें, बगीचे, फव्वारे आदि बनवा कर शहरों को खूबसूरत बनाती हैं। शहर के 'शहर' होने के मानदण्ड ये नहीं हैं कि उनमें लोग छत के अभाव में, सुरक्षा के अभाव में और संवेदनशीलता के अभाव में न मरें। आवास विभाग और बीमा निगम उन लोगों के लिए पर्याप्त शरणस्थलियां नहीं बनाता जो सड़कों पर रहने और मरने के लिए मजबूर हैं। देश में सबसे बड़ा तबका उन लोगों का है जो अपना काम खुद करते हैं, जो अनिश्चित रोजी में हैं और किसी को दबाव में नहीं ला सकते। ठण्ड से, गर्मी से और बरसात से ये ही लोग मरते हैं, क्योंकि इनका काम पर जाना जरूरी होता है और परिस्थितियां काम पर होते हुए उनकी सुरक्षा की कोई गैरन्टी नहीं देतीं। इनकी सुनवाई कौन करेगा?

—प्र० जो०

शुभकामनाएं

एक साल हुआ जब 'भूदान-यज्ञ' सर्वोदय साप्ताहिक का प्रकाशन दिल्ली से प्रारम्भ हुआ था। दिल्ली आने से पूर्व पिछले १६ वर्षों से इसका प्रकाशन वाराणसी से हो रहा था।

हमें जो भी कुछ सफलता मिली है उसका सारा श्रेय हमारे पाठकों, लेखकों, एजेन्टों और विज्ञापन दाताओं को जाता है। हमें आशा है कि इस अंक से प्रारम्भ होने वाले वर्ष के लिए भी आपका सहयोग हमें मिलेगा।

नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ,

भूदान-यज्ञ परिवार

उत्पादन क्यों नहीं बढ़ता, वितरण क्यों नहीं होता ?

... नये वर्ष की पूर्व सन्ध्या को नई दिल्ली में हुई पत्रकार परिषद दरअसल एक ऐसा मंच था जिससे प्रधान मन्त्री पत्रकारों के जरिये पूरे देश से बातचीत कर रही थीं। उन्होंने पिछले वर्ष की समीक्षा की और अगले वर्ष की सम्भावनाओं का धुंधला चित्र देश के सामने रखा। उन्होंने नव वर्ष की शुभकामनाएं दीं और कहा कि सुख एक सापेक्ष चीज है। सुख का मतलब अगर चीजें जमा करना है तो शायद यह सुख अगले साल नहीं मिल सकेगा।

फिर प्रधानमन्त्री ने देश के लोगों से कहा कि वे आशा, एकता और सहयोग की नयी दिशा में काम करें। "मैं यह नहीं कहती कि १९७५ कम मुश्किलों का वर्ष होगा लेकिन जो भी मुश्किलें आयें, आइये उनका हम साहस और प्रसन्नता से सामना करें। भारत अन्धेरे के कई वक्तों से गुजर चुका है। हम आशा करें कि अगला साल एक अच्छा साल होगा।" प्रधान मन्त्री ने कहा कि उत्पादन तो हमें बढ़ाना ही होगा लेकिन उत्पादन का बढ़ना ही पर्याप्त नहीं है। उसके साथ ही एक व्यवस्थित और सक्षम वितरण व्यवस्था भी जरूरी है ताकि लोगों की अनिवार्य आवश्यकताएं पूरी हो सकें। "अनिवार्य वस्तुएं हमें उन्हें देने की कोशिश करना चाहिए कि जिन्हें उनकी सख्त जरूरत है। बाकी के लिए हमें एक नयी जीवन पद्धति खोजनी होगी।"

आर्थिक दृष्टि से सबसे कठिन गुजरे वर्ष के बारे में प्रधान मन्त्री ने जो भी कहा उसमें दो राय नहीं हो सकती। उत्पादन बढ़ाना अनिवार्य है क्योंकि जिस गति से देश की आबादी बढ़ रही है और जितने ज्यादा लोग इस देश में गरीबी भुगत रहे हैं उन्हें देखते हुए उत्पादन बढ़ाना ही होगा नहीं तो अराजकता को हम टाल नहीं सकेंगे। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि समुचित और सक्षम वितरण व्यवस्था के अभाव में बढ़ा हुआ उत्पादन भी काम का नहीं होता क्योंकि चीजें पड़ी रह जायेंगी और वे उन तक नहीं पहुंचेंगी जिन्हें उनकी सख्त जरूरत है। लेकिन सवाल यह है कि अर्थशास्त्र के इन सामान्य और अवमान्य सिद्धान्तों को दुहराने से क्या देश की आर्थिक स्थिति सुधर जायेगी? क्या प्रधान मन्त्री देश के मेधावी आम लोगों को नये साल के उपलक्ष में अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त समझा रही थीं? उत्पादन बढ़ना चाहिए और वितरण ठीक करना चाहिए जैसी बातें क्या हम पच्चीस साल से नहीं सुन रहे हैं? कितनी योजनाएं बनाई गयीं और कितने अरब रुपये खर्च किये गये लेकिन कितना उत्पादन बढ़ा? गरीबी के आंकड़े हमारी चारों योजनाओं और पांचवीं योजना के सपनों की धज्जियां उड़ा रहे हैं। वितरण व्यवस्था सुधारने के बहाने सरकार ने कितने प्रतिबन्ध लगाये और कितना राष्ट्रीयकरण किया लेकिन बढ़ हुए उत्पादन का लाभ उन लोगों को नहीं मिला जो दो जून रोटी पाने के लिए तरस रहे थे और अभी भी तरस रहे हैं। एक पवित्र इच्छा की तरह प्रधान मन्त्री ने कहा कि अनिवार्य वस्तुएं पहले हम उन्हें दें जिन्हें उनकी सख्त जरूरत है लेकिन सारी अनिवार्य वस्तुएं एक एक करके जरूरतमन्दों की पहुंच से बाहर हो रही हैं और पिछले साल तो अनाज भी उनकी पहुंच से बाहर हो गया। उत्पादन और वितरण व्यवस्था के सारे लाभ उन लोगों के पास पहुंचे हैं जो उनका लाभ लेने की हालत में थे। यह जरूर है कि इन सारे सरकारी प्रयत्नों से ऐसे लोगों की संख्या जरूर बढ़ी है जो लाभ उठा सकते हैं। वह जरूरतमन्द आदमी—वह अन्तिम आदमी अभी भी वहीं है जहां योजना के 'स्वर्णयुग' के पहले था। ऊपर से सरकार ने योजना के जरिये दूध-दही की जो नदियां बहायी हैं उनकी एक बूंद भी नीचे उस आदमी के पास नहीं पहुंची है जिसे उसकी सख्त जरूरत थी। लाभ उन लोगों को मिला है जिनके बारे में प्रधान मन्त्री ने कहा कि उन्हें एक नयी जीवन पद्धति अपनानी होगी।

देश का दुर्भाग्य यह है कि जिन लोगों को नयी जीवन पद्धति अपनानी चाहिए वे पश्चिमी जीवन पद्धति को ही नयी जीवन पद्धति मानते हैं और इन लोगों में हमारा पूरा निम्न मध्य वर्ग, मध्यवर्ग और उच्चवर्ग शामिल है। ये ही वे लोग हैं जो पश्चिम की जीवन पद्धति के कायल हैं। इन्हीं के हाथों में आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक सत्ता है और आजादी के बाद इन्हीं लोगों ने एक ऐसी मिश्रित अर्थ व्यवस्था स्थापित की है जिसमें पूंजीवादी और साम्यवादी दोनों व्यवस्थाओं के दोष हैं और इन दोषों का लाभ इस वर्ग को मिलता है। यह वर्ग आजादी के बाद तेजी से बढ़ा है और प्रायः सभी क्षेत्रों में इसकी घुसपैठ है। वर्तमान व्यवस्था को बनाये रखने में इस वर्ग के गहरे निहित स्वार्थ हैं और चूंकि यही कर्ता धर्ता हैं इसलिए ऐसी कोई व्यवस्था पर विचार तक नहीं होता जो इस देश की वास्तविक परिस्थितियों के अनुकूल हो और जिसमें लाभ सीधे उन लोगों को मिल सकें कि जिनकी बहुतायत है और जो गरीब है।

प्रधान मन्त्री कहती हैं कि यह जरूरी नहीं है कि हम आर्थिक स्तर पर वही पद्धति अपनायें जो कि पश्चिम के विकसित देशों ने अपनायी है। हमें अपनी पद्धति खोजनी चाहिए। महात्मा गांधी ने आजादी के काफी पहले एक ऐसी भारतीय पद्धति देश के सामने रख दी थी जो देश की वास्तविकताओं में से उपजी थी और जिसमें सभी 'दरिद्रनारायण' भागीदार हो सकते थे और जिसके माध्यम से गरीबों को मिल सकते थे। अगर देश के समझदार और विचारक लोगों ने इस पद्धति को समझा होता तो न उन्हें 'तकनीकी ज्ञान' के लिए बाहर दौड़ना पड़ता न आर्थिक सहायता के लिए।

लेकिन देश ने गांधी की उस विकेन्द्रित और ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक पद्धति को बिना आजमाये छोड़ दिया। पश्चिम से लगभग दो सौ साल तक दबे रहने के बाद जब हमने खुले में सांस ली तो न तो हम दिमाग से सचमुच आजाद थे न अपने देश की परिस्थितियों का हमें समुचित ज्ञान था। हमारी गुलामी की आदतों ने हमें पश्चिम के ढंग से सोचने, वहीं की जीवन पद्धति अपनाने और आर्थिक विकास के पश्चिमी नुस्खों को उतारने पर मजबूर किया। ऐसा करने में सबसे बड़ा योगदान नौकरशाही ने दिया और नारों के आधार पर चलने वाली चुनावी राजनीति ने बुनियादी परिवर्तन करने वाला कोई निर्णय नहीं लिया। यथास्थितिवाद के नौकरशाही स्वार्थों को जनता परस्त कही जाने वाली राजनीति से पोषण मिला। नौकरशाही बनी 'जन सेवक' काम करने वाली राजनीति पनपी और इन दोनों के संरक्षण से ऐसे 'उद्योगपतियों' की नयी जमात खड़ी हुई जो कोटा परमिट लाइसेन्स ले कर और उन्हें 'ब्लैक मार्केट' में बेच कर धनवान होती गयी। उत्पादन में रुचि रखने वाले उद्योगपतियों पर समाजवाद के नाम पर अंकुश लगे, समाजवाद के नाम पर ही सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े-बड़े उद्योग खोले गये जो नौकरशाही और ट्रेड यूनियनवाद के अड्डे बने और जिन्होंने उत्पादन के वे मामूली लक्ष्य भी कभी पूरे नहीं किये जो पहले दो तीन वर्षों में ही पूरे हो जाने चाहिए थे। सच्चे उत्पादन में न उद्योग की रुचि रही न सरकार को। यथास्थिति से लाभ उठाने वाले वर्गों ने सरकारीकरण की नयी जरूरत पैदा

→

की। सरकार ने राष्ट्रीयकरण किया उत्पादन का और वितरण का, लेकिन वहाँ भी वह योजनाओ को सही ढग से लागू नही कर सकी।

गये साल जो आर्थिक सकट देश ने भुगता है और जो अभी भी किसी तरह कम नही हुआ है उसके लिए जिम्मेदार वर्ग वही है जो इस सकट के बावजूद मजे मे है। इस वर्ग को मालूम है कि उत्पादन क्यो नही बढ़ता, वितरण ठीक से क्यो नही होता, लेकिन इसमें उसकी रुचि नही है कि अर्थ व्यवस्था सुधरे। राजनीतिज्ञो मे इतना साहस नहीं है कि वे बुनियादी गलतियों को ठीक करने वाले निर्णय ले सकें। वे लोकप्रिय बने रहने के लिए घाटे की अर्थ व्यवस्था बराबर चलाते जायेंगे। चूँकि यथास्थिति के राजनीतिक लाभ वे लेते रहे हैं और लेते रहना चाहते हैं इसलिए उनमें वह नैतिक शक्ति नही है कि नौकरशाही, धन बनाने वाले उद्योगपतियो और काम न करने वाले नौकरो और मजदूरो को कह सकें कि यह नही चलेगा। भ्रष्टाचार रोकना इसलिए सभव नही है, कीमतो को बढ़ने से इसलिए रोका नही जा सकता और इसलिए—गरीब आदमी का स्तर नही उठ सकता।

तात्कालिक लाभ पर दृष्टि सबकी है—राजनीतिज्ञ की, नौकरशाह की और तथाकथित उद्योगपति की। इन तीनो का एक असगठित गुट है और इन तीनो मे एक अलिखित समझौता है कि वे एक दूसरे के हितो को नुकसान नही पहुचायेंगे और स्वार्थपूर्ति मे एक दूसरे का सहयोग करेंगे। इस गुट को और इसके दुश्चक्र को जब तक प्रधानमत्री तोड़ेंगी नही तब तक अर्थ-व्यवस्था सुधर नही सकती। जिस वर्ग को अपनी जीवन पद्धति बदलना चाहिए ताकि जरूरतमन्दो की आवश्यकताएं पूरी हो सकें—वह वर्ग यही है। अर्थशास्त्र के सिद्धान्त समझाने से यह वर्ग नही समझेगा, क्योंकि उसका अर्थशास्त्र अलग है और वह जानता है कि दूसरे किस्म के अर्थशास्त्रो को किस प्रकार रोका जाता है। यह वर्ग एक नये 'ब्राह्मणवाद' की तरह स्थापित हो गया है और देश के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक मामलो पर से इसकी पकड़ ढीली करनी होगी। जब तक यह नही होगा और एक वास्तविकतावादी विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की ओर हम नहीं बढ़ेंगे तब तक, ७३ जैसे मुश्किल वर्ष आते रहेंगे।

और अन्त मे जैसा कि प्रधानमत्री ने कहा—सुख अगर वस्तुए इकट्ठी करने मे है तो यह सुख इस साल नही मिलेगा। यानी सुख अगर सत्ता के केन्द्रीकरण मे है और उसी से सब काम होना है तो बहुत सभव है कि यह १६ साल नहीं मिलेगा। —प्र० जो०

नया जमीन कानून

जगदीश शाह

गुजरात की सरकार ने जमीन का नया कानून बना कर एक प्रगतिपूर्ण कदम उठाया है। पर इस कानून के अमल के लिए सरकार एव सत्ताधारी पक्ष पर्याप्त रूप से ईमानदार हैं, इसकी प्रतीति जनता को कराना आवश्यक है।

भूदान मुहीम के समय रविशकर महाराज जमाने के तकाजे को इन शब्दो में रखते थे—"तीर भय्या दौड़े क्यो ?" तीर भाई का जवाब था "न दौड़ूं तो क्या करूं ? पीछे जो डोरी (प्रत्यचा) की मार है !" वैसे ही इन्दिरा जी के तीव्र उद्घमशाही कार्यक्रम के धक्के से यह कानून तो बन गया है, पर गावो में इससे किसी प्रकार भी नई आशा का कोई सचार दीख नही रहा है। उल्टे यह कानून न बने इस हेतु किसान-समाज के कार्यकर्ताओ ने आमरण अनशन किया। यह समाचार कानून के तीव्रता से पालन कराने के बारे में शका पैदा करता है।

यह कानून अपने आप में असामान्य है। विधानसभा सदस्य एव मत्रिगण जो जमीन के मालिक हैं, वे ही यदि इस कानून के पालन के प्रति उत्सुक न हो व ढीले हो तो सरकारी तत्र किसी भी प्रकार के कानून को अमल में नही ला सकता है। उलटे कानून को नाकामयाब बना कर तंत्र अधिक ढीला व रिश्वतखोर बनेगा।

मत्री, विधायक, सत्ताधारी पक्ष के ओहदेदार, एव सक्रिय सदस्यो को जनता के सामने इस बारे मे स्पष्ट हो जाना अत्यन्त आवश्यक है। दिखाने के और, चबाने के और, वाली नीति रहेगी तो लोगो मे शका निराशा और अतत: हिंसा पैदा होगी। हम आशा रखते हैं कि इस सम्बन्ध मे सरकार व सत्ताधारी पक्ष अपने आचरण द्वारा जनता के सामने साफ एव स्पष्ट होंगे।

क्या सरकार इतना करेगी?

एक, इस कानून की मोटी जानकारी गुजरात के सभी दैनिक, साप्ताहिक व पाक्षिकों मे प्रकाशित करें।

दो, विवरण सहित इस कानून की छोटी पत्रिका, लाखो की तादाद मे छपवा कर सूचना एव समाज कल्याण विभाग के द्वारा गाव-गाव-हरिजन, बारैया, भील जैसे गरीब तबके के लोगो मे मुक्त-हस्त से वितरित करे और लाउडस्पीकर द्वारा ऐलान करे।

तीन, इस कानून के अन्तर्गत जिन व्यक्तियो की अतिरिक्त जमीन निकल सकती है उनकी नामावली हर तहसील भी प्रकाशित करे। उसमे मालिक का नाम, गाँव, व जमीन की तफसील, पचायत, कचहरी, ग्राम पंचायत, सहकारी समिति, सार्वजनिक वाचनालय आदि में आम लोगो की जानकारी के लिए लगाई जाए। साथ ही जो चाहे उनको यह नामावली ०-१० या ०-२० पैसे में मिल सके।

क्या सत्ताधारी पक्ष इतना करेगा ?

एक, सभी मत्री, विधायक और पंचातो के नेता, अपनी मालकियत की जमीन की घोषणा करें। कानून का जिन पर असर होना है उसका वे विशेष उल्लेख करें। अतिरिक्त जमीन भूमिहीनो में बाटने के लिए समारोहो का आयोजन करें।

दो, पक्ष के सक्रिय सदस्य जिनको यह कानून स्पर्श करता है वे भी विधायको के कदमो पर आगे बढ़ें।

तीन, इस कानून की व्यवस्था में से छूटने वाले पक्ष के सदस्यों को तुरन्त मुक्त किया जाय।

आज समाज के आखिरी स्तर के लोग भी सरकार व राजकीय पक्ष के नेताओ की सौदेबाजी, लाच-रिश्वत, पक्षपलटा आदि प्रवृत्तियो की निंदा करते हैं। फलत. इस देश के सभी समस्त क्षेत्रों मे व्याप्त भ्रष्टाचार की जिम्मेदारी इन नेताओ के आचरण पर रखी जाती है। यही अवसर है कि व्यापक जनसमुदाय को प्रभावित करने वाले इस कानून के पालन का एक प्रामाणिक प्रयत्न इस प्रकार से होगा तो निराशा और उसमें पैदा होने वाली हिंसा की ओर बढ़ने वाली जनता को इनसे उबरने का एक अच्छा आधार मिलेगा, यह निर्विवाद है।

(अनिल भाई द्वारा गुजराती से अनूदित)

बालाघाट में मजदूरों पर अत्याचार

—लिम्बाजी पारधी

मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के लाजी प्रखंड में जंगली भाग के गांव सावरी के पास हुए भयंकर अत्याचार की मिसाल रोंगटे खड़े कर देने वाली है। मजदूरों को उत्पीड़ित करने की अमानवीयता किस हद तक पहुंच गयी है, उसका यह एक नमूना है। देश के एक कोने पर पिछड़े हुए भाग में सरकारी अधिकारी और ठेकेदार कैसे आतंक मचाया करते हैं, यह पढ़ कर किसी भी स्वातंत्र्य प्रेमी और प्रजातंत्र में विश्वास रखने वाले व्यक्ति को धक्का ही लगेगा।

सावरी गांव के पास सराठी तालाब के नहर का कार्य सिंचाई विभाग की ओर से चल रहा था। काम शुरू हुआ दिसम्बर ७२ के आखिर में। काम एक ठेकेदार ने लिया था। आसपास के गांवों के ४१६ मजदूर, स्त्री व पुरुष, जिस पर कार्यरत थे। मजदूरी पुरुषों को दो रुपये और स्त्रियों को डेढ़ रुपये प्रति दिन थी। अकाल के दिन थे। मजदूरों के घरों में खाने को कुछ न था। जंगली साग भाजी और पेज पीकर लोग जी रहे थे। सुबह ७ बजे से शाम को पांच बजे तक भूखे पेट रह कर काम करते थे। कारण, आज नहीं तो कल मजदूरी मिलेगी ही ऐसी आशा थी।

लेकिन पहले बटवारे में मजदूरों के हाथ में मिले केवल आधे पैसे। ठेकेदार ने कहा कि बाकी पैसा सामने बटवारे में मिलेगा। दिन गमगीन हो रहे थे और लोग काम करते ही जा रहे थे। कारण उन्हें भविष्य की आशा थी। दूसरा कोई मार्ग भी न था। फिर दूसरा बटवारा हुआ, लेकिन उन्हें पिछले बटवारे के पैसे तो मिले नहीं, इस बटवारे के भी थोड़े से ही पैसे मिले। ठेकेदार ने बहाना बताया कि काम पास नहीं हुआ, पास होने पर चुकता कर दूंगा। भोलेभाले मजदूरों ने उस पर विश्वास किया। काम चालू रहा। तीसरा बटवारा भी हो गया पर वही कहानी दुहराई गई।

अकाल की परिस्थिति से मजदूर जर्जर हो गये थे। जनवरी महीने में एक रुपये किलो मिलने वाला मोटा चावल दो रुपये और ढाई रुपया किलो हो गया था। अमल के भाजी खाके पर लोग जी रहे थे। वैसी स्थिति में नहर पर मिट्टी खोदने का कठिन कार्य वे कर रहे थे। चौथे बटवारे की बारी आई तब ठेकेदार चम्पत हो गया। अब मजदूर पैसे न मिलने से बहुत परेशान हुए और चिढ़ गये। उन्होंने किसी तरह ठेकेदार को खोजकर काम की जगह बुलवाया और उसका हस्ताक्षर से पूरा स्वाधान किया। आखिर में उसने देखा कि छुटकारा नहीं है, तब मजदूरों की मिन्नतें कर २ मार्च ७३ को सब पैसे चुकता करने का ऐसा करार लिखित रूप में दिया। तब मजदूरों ने उसे छोड़ा। ठेकेदार बाहर गया था। जब छुटकारा पा कर गया तो आने का नाम ही नहीं। मजदूरों को लगा कि अब काम शुरू रखने में कुछ अर्थ नहीं। १५ मार्च को उन्होंने काम बंद कर दिया और कई दिनों तक काम बंद ही रहा। अप्रैल ७३ के शुरू होते ही अचानक काम शुरू होने का सिलसिला मजदूरों को दिखाई दिया। वही अधूरा काम एक दूसरे ठेकेदार को दिया गया था। उसने बाहर से मजदूर लाकर काम शुरू किया था। भुक्तभोगी मजदूरों ने विचार किया कि यदि दूसरे ठेकेदार का काम चालू रहा और काम पूर्ण हो गया तो अपनी मिलने वाली मजदूरी की कौन फरियाद सुनेगा? वे सब मिल कर काम की जगह गये। उस जगह पर ओवरसियर साहब उपस्थित थे। उन्होंने मजदूरों को डांट लगाई कि काम सरकार की तरफ से चल रहा है। यदि तुम काम में किसी प्रकार का विघ्न डालोगे तो उसका परिणाम तुम्हें भुगतना पड़ेगा। परन्तु सब मजदूरों ने मिल कर जवाब दिया कि काम सरकार की तरफ से नहीं, नये ठेकेदार की तरफ से हो रहा है। मजदूरों ने नये मजदूरों को समझा कर उनका गैंती-फावड़े चलाना रुकवाया। काम बन्द हुआ। ओवरसियर और ठेकेदार ने पुलिस को शिकायत की। दूसरे दिन पुलिस आई और उसकी मदद से काम फिर शुरू हुआ। पर चिढ़े हुए मजदूरों ने फिर बीच में पड़कर काम बंद करवाया। पुलिस और सिंचाई अधिकारी की कुछ न चली। आखिर उन्हें आश्वासन देना पड़ा कि तुम्हारा बकाया पैसा दिये बगैर काम शुरू नहीं करेंगे।

उसके बाद एक दिन सूचना दी गयी कि २४ अप्रैल ७३ को बकाया पैसों का बटवारा किया जायगा। उस दिन सब मजदूर सराठी डाक बंगले में हाजिर हुए जहां कि उपस्थित होने को कहा गया था। सिंचाई विभाग के एस० डी० ओ० साहब आये ■। उन्होंने पैसों का बटवारा करने का कार्य छोड़कर मस्टर क्लर्क को मस्टर रोल की नई प्रति तैयार करने की आज्ञा दी। परन्तु ४१६ मजदूरों का मस्टर रोल शीघ्र बनाना असम्भव ही था। फिर भी उनको वैसी आज्ञा देने पर एस० डी० ओ० साहब ने मस्टर क्लर्क व मजदूरों को गालीगलौज देना शुरू कर दिया। कुछ कारण न होते हुए भी साहब की गालीगलौज करते हुए लाल कर काल और स्वाभिमानी मजदूर क्रोध हो बंगले से बाहर आ गये। साहब ने पुलिस को बुलवाया। पुलिस आई और उसने बंदूकों को मजदूरों की ओर निशाना करके गोली से उड़ा देने की धमकी दी। परन्तु मजदूरों ने बिना घबराए हुए अपना पक्ष थानेदार साहब के सामने रखा। थानेदार ने देखा कि बात मजदूरों की सही है, तब उन्होंने आश्वासन दिया कि "मैं तुम्हारे पैसे दिलाने की जिम्मेदारी लेता हूं।" २८ अप्रैल ७३ को मस्टर क्लर्क ने नये मस्टर रोल की प्रति तैयार करके थानेदार साहब को लाजी थाने में लाकर दे दी। उन्होंने बताया कि १ मई ७३ को कैसे भी हो तुम्हें पैसे दिये जायेंगे। पर १ मई को कोई भी बटवारे के लिए नहीं पहुंचा।

मजदूर अशिक्षित और देहाती थे। उन्हें अपने हक के लिए लड़ना मालूम न था। संगठन भी न था। पर उनका था पेट जो खाली और गट्ठा मात्र था। उनके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाई गई थी। वे जिद्द की आग से सुलगे हुए थे। उनकी लड़ाई मजदूरी के जमा-खर्च के आगे पहुंच गई थी। इसलिए वे एकबद्ध हुए और संगठित रूप से अन्याय का प्रतिकार कर अपनी मजदूरी मांगने का आग्रह अधिकारियों के सामने रखते गये। आगे चलकर उन पर ऐसी विलक्षण घटनाएं प्रत्यक्ष घटीं जिनमें मजदूरों ने अपनी सूझबूझ का परिचय दिया। ओवरसियर का बंगला मजदूरों के गांव के पास ही था। शायद उन्हें मजदूरों की क्रोधाग्नि का डर लगा हो। ५ मई '७३ को उन्होंने अपना सब सामान दो गाड़ियों में रखवा कर लांजी की तरफ रवाना किया। मजदूरों को इस घटना का सुराग मिला। ओवरसीयर अपना पैसा न देते हुए नौ-दो-ग्यारह हो रहे हैं, यह ध्यान में आते ही उन्होंने सामान की गाड़ियां रोक लीं और सीधे अपने गांव के मध्य में लाकर एक घर के पास मैदान में खड़ा किया। गाड़ियां किराये की थीं। उन्होंने किरायेदारों को बैलजोड़ी के साथ अपने घरों को जाने को कहा और ओवरसियर को खबर भिजवाई कि हमारी मजदूरी के पैसे, जो छः हजार रुपये से अधिक होते हैं, दे दिये जायें तब हमारा आपसे कोई झगड़ा नहीं रहेगा।

१५ मई '७३ की रात दो बजे के लगभग ओवरसियर ने दो कोटवार और चार नौकरों को सामान की दोनों गाड़ियां चोरी से लाने भेजा। गर्मी के दिन थे। रात में लोग आंगन में ही सोते थे। गाड़ी जोतने व रवाना करने की आवाज से लोग जाग उठे और आसपास के सोये हुए अनेक लोग गाड़ी के सामने आये। कुछ लोगों ने गाड़ियां रोक लीं। कोटवार और नौकर खाली हाथ वापस गये। पर जाते हुए कोटवारों ने जमा हुए लोगों में से मुहल्ले के १६ लोगों के नाम नोट कर अधिकारियों को दे दिये। उसमें से अधिकांश लोग मजदूर नहीं थे। केवल कुतूहलवश शोर के कारण गाड़ी के पास जमा हुए थे।

उसके बाद १६ मई ७३ को सब-इन्सपेक्टर और सर्किल इन्सपेक्टर कई पुलिस जवानों को लेकर गाड़ी ले जाने सावरी हाजिर हुए, लेकिन मजदूरों ने उन्हें गाड़ियां नहीं ले जाने दीं। मजदूरों ने कहा कि हमें चोरी नहीं करना है। इन सामानों में से हम एक वस्तु भी हाथ नहीं लगायेंगे, सब सुरक्षित रहेगा। हमने भूखे रह कर पसीने की गाढ़ी कमाई की है। मजदूरी का छः हजार रुपया दिलवा दीजिये। वह हमें मिला तो हम गाड़ियों को अभी लांजी पहुंचा देंगे। लेकिन पहले हमारी गाढ़ी कमाई के पैसे हमें मिलने चाहिए।

मजदूरों के प्रश्नों का उत्तर संगीनधारी पुलिस के पास नहीं था। वास्तविकता को वे नजर अन्दाज भी नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्हें मजदूरी के पैसों को दिलाने का आश्वासन दे कर ही वापस जाना पड़ा।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या मजदूरों की विजय हो गई थी? उनकी सीधी सादी और हक की मांगें पूरी हो गई थीं? पर इसका उत्तर अधिकारियों के भयंकर कृत्यों से ही उन्हें मिला। वह कृत्य मनुष्यता पर कालिमा पोतने वाला था।

पांच जून ७३ की दोपहर १ बजे से सराठी तालाब के डाक बंगले पर मजदूरी का बंटवारा होगा, ऐसी सूचना मिली। उसके अनुसार मजदूर हाजिर हुए और १ बजे से ६ बजे शाम तक डाक बंगले पर बैठे रहे। लेकिन तब तक कोई भी अधिकारी बंटवारे के लिए नहीं आये। इसलिए सब मजदूर अपने-अपने घरों को वापस हुए। उसके पश्चात् सात-आठ बजे मजदूरी चुकाने आये एम० डी. बालाघाट, एस. डी. ओ. एरीगेशन, सर्किल इन्सपेक्टर बालाघाट, सब इन्स्पेक्टर लांजी और ओवरसियर तथा ठेकेदार। उनके साथ नगर सेना बालाघाट और पुलिस के २५-३० जवान जो सब लाठियों व बन्दूकों से लैस थे।

इस तरह मजदूरी चुकाने का नया तरीका अधिकारियों ने अपनाया। वह विलक्षण और क्रूर बंटवारे की पद्धति शायद प्रथम ही अपनाई गयी होगी। इतनी रात को मजदूरी लेने बंगले पर जाना संभव नहीं था। इसलिए उपरोक्त दल वहीं बंगले पर रुका और सूचना दी गई कि मजदूर ६ जून को सुबह ७ बजे मजदूरी लेने बंगले पर पहुंचे।

मजदूरी बांटने के लिए इतने अधिकारियों की क्या आवश्यकता थी? और साथ में इतने संगीनधारी पुलिस किसलिए थे? शायद इसीलिए कि मजदूर पसीने की रोटी मांग रहे थे। इसके अलावा उन्हें कुछ नहीं चाहिए था।

अधिकारियों और संगीनधारी जवानों के जमाव से मजदूर समझ चुके थे कि इसमें कुछ रहस्य है, जो कि बंगले पर घटने वाला है। किन्तु भूखे पेट ने उन्हें मजबूर बनाया। और आतंक पैदा करने वाली नौकरशाही का मुकाबला करने बंगले पर पहुंचे। अधिकारियों ने सर्वप्रथम मस्टर क्लर्क से रजिस्टर और मस्टर रोल अपने कब्जे में किया। फिर ठेकेदार के सहयोग से बनावटी मस्टर रोल तैयार किया, जिसमें हाजिरी के दिन कम किये गये। मस्टर क्लर्क ने इसका विरोध किया तो उसे बंदूक से उड़ा देने की धमकी दी गई। एक पुलिस अधिकारी ने उसका गला पकड़ा और धकियाते हुए पुलिस के हवाले किया और बोलने की उस पर पाबंदी लगाई, फिर दहशत के वातावरण में मजदूरी बांटने का काम शुरू हुआ।

मजदूरी बनावटी मस्टर रोल के हिसाब से दी जाती और दस्तखत या अंगूठा सही मस्टर रोल पर लिया जाता था। कुछ मजदूरों ने इसका विरोध किया तब उसमें से दो मजदूरों का गला पकड़ कर धक्का देते हुए पुलिस के कब्जे में दिया गया। उनकी हालत देख कर सारे मजदूर खामोश रह गये और डर के मारे जितने पैसे मिले उतने स्वीकार लिये। पैसे देने के बाद चाहे स्त्री हो या पुरुष, पुलिस प्रत्येक जाते हुए मजदूर की पीठ पर डण्डे से ढकेलते हुए बंगले से १ फर्लांग तक ले जाती रही। सबको बोलने की सख्त मनाही थी। थोड़ी भी आवाज आने पर पुलिस व अधिकारी डांट-डपट, गाली गलौज करते और क्रूर ढंग से बाहर ढकेलते रहे।

उसके पश्चात गाड़ी रोकने के जुर्म में १६ लोगों को पुलिस ने गिरफ्तार किया तथा उन्हें सीधे रास्ते से लांजी न ले जाते हुए जीप और ट्रक से बहेला सिगोला फेरे वाले मार्ग से २०-२५ किलोमीटर घुमाकर ले जाया गया। जब कि डाक बंगले से लांजी दस-बारह किलोमीटर दूर है। जब उन्हें गिरफ्तार करके लांजी पहुं-

→
चाया गया तब काफी रात बीत चुकी थी।

गाड़ी रोकने के जुर्म में बचे हुए लोगों के लिए सब इंस्पेक्टर पुलिस जवानों को लेकर ट्रक से रात को १२ बजे गावरी पहुंचे। पंचम नाई के आंगन में सोते हुए घुस कर सब पुलिस के जवानों ने उसे जबरन मारपीट की और मारते हुए ही उसे ट्रक में हाथ-पैर पकड़ कर डाल दिया गया। असल में पंचम नाई मजदूर नहीं था। उसी प्रकार दौलत नाम के मजदूर के घर में पुलिस घुसी और उसे मारते हुए ट्रक में बैठाया। लेकिन दौलत वास्तव में जुर्मी लोगों की लिस्ट में ही नहीं था। उसे भूल से पकड़ा और खूब जम कर पिटाई की। रात को ट्रक से लाकी थाने में लाकर पुनः पुलिस ने पंचम नाई को बुरी तरह पीटा। जिससे वह बेहोश हो गया। सात-आठ दिन बाद वे सब जमानत पर रिहा हुए। कुछ दिनों बाद पंचम नाई की मृत्यु हुई। उसका कारण पुलिस की मारपीट है ऐसा गांव वालों की पक्की धारणा है।

सौ डेढ़ सौ मजदूर गांव के थे जो ६ जून ७३ के दिन हाजिर नहीं हुए थे। उन्हें आज भी पैसा नहीं दिया है।

इसी प्रकार मिट्टी खोदने के पट्टे धाम की खिदाई का काम होता था। उस काम के लिए सात आठ मजदूर थे। ये मजदूर सिंचाई विभाग की ओर से काम पर थे। उनका कारदा बढ़ा कर लगभग १०० की संख्या बनाई गयी और वह पैसा हड़प लिया गया। ये बढ़े हुए मजदूरों के नाम मिट्टी फेंकने वाले मजदूरों के नामों में से थे।

पकड़े हुए मजदूरों पर पुलिस ने १०७/११७ दफा का मुकदमा दायर किया। उसके लिए उन्हें १०० किलोमीटर दूर बालाघाट के चक्कर लगाने पड़े। उसमें उन्हें अपनी गाय बकरी थाली-लोटा, और जेवर बेचने पड़े। लेकिन केस में कुछ 'राम' न था इसलिए मजिस्ट्रेट ने अन्त में केस को खारिज कर दिया।

मजदूरों की समझ में नहीं आता कि उन्होंने कौन सा जुर्म किया है। उन्हें किस तरह सताया जा रहा है यह देखें। अभी-अभी उन्हें नोटिस मिला था कि २४ नवम्बर ७३ को उनकी पेशी बालाघाट में है। उसके लिए वे थाने पर आयें और जमानतदार के साथ प्रत्येक १०-१० रु० लायें। किन्तु कई बार के दूध से जले मजदूर होशियार बन गये हैं। उन्होंने एस० डी० एम० के पास जाकर पता लगाया तब पता चला कि पेशी पर आने की कोई जरूरत नहीं है तब एक और संकट टला।

और भी एक किस्सा सुनिये। मजदूरों से सहानुभूति रखने वाले चार व्यक्तियों पर गुंडागिरी का मिसला लगाया गया है जिसमें एक प्रतिष्ठित शिक्षक भी है।

आज के प्रजातांत्रिक युग में सामन्तशाही को भी लजाने वाला ऐसा भयंकर अत्याचार है इस पर शायद किसी को विश्वास न हो पर यह हकीकत है। इसी क्षेत्र में कुछ दिन पहले सरकारी अधिकारियों के भ्रष्टाचार का एक और नमूना प्रकाश में आया था। सड़क बनाने के सिलसिले में ८० हजार रुपये का घपला पकड़ा गया था। जिसमें एस० डी० ओ० सड़क विभाग का हाथ था।

कुछ अनुभवी लोगों का ऐसा अन्दाज है कि ठेकेदार तो नाम मात्र के ही रहते हैं। पीछे कुछ बड़े अधिकारी रहते हैं और उनकी आड़ में काली करतूतें चलती रहती हैं। उसी से ऐसे निर्दयी अत्याचार होते हैं। क्या इस प्रकरण की निष्पक्ष व खुली उच्च स्तरीय जांच नहीं होनी चाहिए? ❖

'गांधी के जमाने का सत्याग्रह आज नहीं चल सकता'

—विनोबा

आजकल हर बात में गांधी का नाम लेकर अपने मन से काम करने का एक रिवाज-सा हो गया है। सत्याग्रह के बारे में भी गांधी का नाम लिया जाता है। हर कोई लेता है। किन्तु मैं तो कभी गांधी के नाम से कोई काम करता नहीं हूं। उसका कारण है। मैं गांधी का नाम लेकर अपना काम करता हूं तो कौन कह सकता है कि अमुक मौके पर गांधी क्या करते? आज यह कहना कि अमुक अवसर पर गांधी इस तरह से करते, ऐसा है मानो हम ही गांधी हो गये। किन्तु मेरे लिए तो वह शक्य नहीं है। मैं गांधी नहीं हूं। मुझमें वह शक्ति मैं देखता नहीं। तब मैं गांधी के नाम से क्यों अपना काम करूं? यदि हम ऐसा करेंगे तो लोग कहेंगे देखो यही गांधी हो गया है और यह बात सही नहीं होगी।

फिर गांधीजी ने कहा था कि मैंने जितने भी सत्याग्रह किये वे असल में सत्याग्रह थे नहीं। वे यह भी कहते थे कि मेरे विचारों में लोग संगति (कान्सिसटेंसी) न ढूंढें, क्योंकि मेरे विचारों का विकास होता रहा है और मैं नित्य बदलता रहता हूं। इसलिए मेरे नये विचार पकड़ो, पुराने को नहीं। अब उनके विचारों को कैसे पकड़ें। मेरे पास सरकार के प्रकाशन वाले कुछ वर्ष पहले आये थे जब गांधी शताब्दी मनाई जा रही थी। वे गांधीजी के सभी पुराने पत्रों, लेखों आदि का संग्रह करके छाप रहे हैं। काफी छप भी गया है। मुझसे कहने लगे कि मैं इस पर अपनी कुछ राय दूं। अब मैं क्या राय देता। मुझे तो हंसी-सी आई और मैंने जरा कुछ गंभीर होकर कहा कि गांधी के पुराने जन्म की भी कुछ सामग्री इसमें हो तो बहुत अच्छा हो। तो वे भी हंसने लगे। यह हंसने का ही मामला है। शंकराचार्य ने अपने जीवन के उन सोलह सालों में, जब वे सारे भारत में घूमे, हजारों भाषण दिये होंगे। उन सबको यदि एकत्र किया जाये तो वे कितने होते! किन्तु उनका जो भी साहित्य है वह शायद कुल ८०० पन्ने से अधिक नहीं होगा। किन्तु वह १२०० साल से चल रहा है। इसलिए मैं कहता हूं कि आपको जो कुछ करना हो अपने नाम से करो उसमें गांधी का नाम मत जोड़ो। पिछले साल पंजाब से कुछ सिख भाई नामदेव के जन्म स्थान को जाते हुए मुझसे मिलने आये। अब नामदेव गुरु नानक से कोई ३०० साल पहले हुये होंगे। वे घूमते-घूमते पंजाब तक भी गये थे और उनका देहावसान भी हो गया। अब गुरुग्रन्थ साहब में नामदेव तो ७०० साल तक जिये। हम कितने जियेंगे? इसलिये हम अपना कर्तव्य देखें और वैसा करें। उसमें हर बात में गांधी का नाम नहीं जोड़ें। आज गांधीजी होते तो उनके विचार वही रहते क्या? वे हमेशा विकसित होते रहे हैं।

फिर मैं एक बात और भी मानता हूं। गांधीजी के जमाने का सत्याग्रह आज नहीं चल सकता। इसका कारण है। उस समय किसी को विचार स्वातंत्र्य नहीं था। हमें तो केवल विचार प्रकट करने की जितनी स्वतंत्रता आज के भारत में है उतनी दुनिया के अन्य किसी भी देश में नहीं है। अमरीका में भी नहीं है। अतः आज का सत्याग्रह खंडित हो गया है। आज तो अखबार रोज सरकार के विरुद्ध बातों से भरे रहते हैं। इसलिये लोकतंत्र में सत्याग्रह की भूमिका भिन्न होगी, यह मेरा मानना है।

फिर एक बात पर भी विचार करना चाहिये। आज सत्याग्रह परिणाम के लिये किये जाते हैं। किन्तु परिणाम एक मानसशास्त्र है। स्वामी रामतीर्थ जब अमरीका गये तो जहाज पर से उतरते समय और लोग तो हड़बड़ी करके जल्दी-जल्दी उतर कर अपने-अपने घरों की ओर जाने लगे। किन्तु उस सारी हलचल में और एकदम अपरिचित जगह पर भी रामतीर्थ अविचल, शान्त बैठे रहे। तो आखिर में एक महिला का ध्यान उनकी तरफ गया। उसने देखा कि यह आदमी इतना शान्त बैठा है क्या बात है। उसने राम से पूछा कि "आपको कहां जाना है?" राम ने जवाब दिया कि वे अमरीका आये हैं। महिला ने पूछा कि "क्या यहां उनका कोई जान-पहचान का है?" राम ने कहा कि, हां है। महिला ने पूछा कौन है।" तो राम ने कहा "आप ही है।" इस पर वह महिला आश्चर्य में पड़ गई। उसने पूछा, क्या आप मेरे घर चलेंगे? राम ने कहा "हां चलूंगा" और यहां से फिर राम की अमरीका यात्रा का प्रारम्भ हो गया। रामतीर्थ भी दूसरों की तरह से हड़बड़ी करते तो उनके अमरीका प्रवास का यह परिणाम नहीं होता जो हुआ है। वे उस सारी हलचल के बीच भी एकदम अविचल, शान्त रह सके इससे ही अमरीका पर उनका प्रभाव पड़ा। अविचलता, शान्तचित्तता की बहुत आवश्यकता है। किन्तु आजकल तो सत्याग्रह के नाम से क्या होता है। आज तो अखबारों में रोज सत्याग्रह होता है। छात्रों का सत्याग्रह, मजदूरों का सत्याग्रह, नौकरों का सत्याग्रह, पुलिस का सत्याग्रह। और ये सभी सत्याग्रह फिर सत्याग्रह और फिर सत्याग्रह बन जाते हैं। तब इस हालत में आप क्या करेंगे। आप शान्त रहेंगे और शान्ति से अपना काम करते रहेंगे तो परिणाम आयेगा।

अभी मैं महावीर का स्मरण करके बोल रहा हूं। अभी महावीर स्वामी की २५००वीं जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। मुझे उनके उपदेश सौ फीसदी मान्य हैं। उन्होंने एक अत्यन्त ही महत्व की बात कही है। उन्होंने कहा कि सत्यग्राही बनो। सत्य का अंश तो हर एक के पास है। तो दूसरे का सत्य पहले ग्रहण करने का प्रयास करलें। तभी वह आपका भी सत्य ग्रहण करेगा। इससे विरोध मिटेगा। यह जैन धर्म की सर्वोत्तम शिक्षा है कि सामने वाले का गुण ग्रहण करने की वृत्ति होगी तो ही वह आपके गुण देख सकेगा। तो मैं पूछता हूं कि दूसरों के पास भी कुछ सत्य है या नहीं? क्या सब सत्य हमारे ही पास है, कोई यह दावा कर सकता है? यदि किसी के पास पूर्ण सत्य हो जाय, जैसे कि राम के पास था, तो वह रावण का वध भी कर सकता है जिसके

(शेष पृष्ठ ११ पर)

'कार्य ही हमारी सबसे सशक्त भाषा है'

'कार्य ही हमारी सबसे सशक्त भाषा है' यह विचार २६ दिसम्बर को सर्विस सिविल इण्टरनेशनल की नई दिल्ली में हुई अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की समूह-गोष्ठी में एक विदेशी प्रतिनिधि द्वारा प्रकट किया गया। समस्याओं की प्रतीति, अभियान वृद्धि, उपयुक्त शिक्षा, मानवीय स्तर पर अधिकाधिक सेवा व चिन्ता, संगठन की सदस्य संख्या व उसके कार्यों का विस्तार आदि अन्य कई बातें भी कही गईं, जिनसे लोगों की सहमति रही। सर्विस सिविल इण्टरनेशनल की इस अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस की बैठक का विषय था, 'स्वायत्त सेवा का शांति के लिए योगदान'। 'दक्षएम्स' के प्रतिनिधि के तौर पर मैं इस बैठक में शामिल होने के लिए आया था।

कांग्रेस की बैठक में कुल मिलाकर लगभग १५० प्रतिनिधि शामिल हुए जिसमें बेल्जियम के मिशेलीन सिवम, ब्रिटेन से एम० केलनर, जापान से कोबायाशी, नार्वे-स्वीडेन से एरिक गैनी और स्विटजरलैंड से मार्ई मॉरिज के नाम उल्लेखनीय हैं। विदेशों से आए कुल प्रतिनिधियों की संख्या ४८ और भारतीय संस्थाओं-संगठनों के प्रतिनिधियों की ३० थी। बैठक प्रातः १० बजे से शुरू हुई जिसकी अध्यक्षता फादर सीरा ने की। इस बैठक में श्री रैल्फ हूगनोर, श्रीमती अन्ना पार्ज, श्री एस० के० डे व प्रोफेसर फकि ठाकुरदास के भाषण हुए।

एस० सी० आई० (सर्विस सिविल इंटरनेशनल) का प्रारम्भ १९२० में स्विटजरलैंड में हुआ था। आज भी वहीं इसका अन्तर्राष्ट्रीय सेक्रेटेरियट स्थित है। प्रथम महायुद्ध के बाद कुछ संवेदनशील लोगों ने एकत्रित होकर हिंसा, क्रूरता, नरसंहार, विनाश आदि से संसार को बचाने और उसे शांति की दिशा में ले जाने के सम्बन्ध में चिन्तन व विचार-विमर्श किया। परिणामस्वरूप इस संगठन का जन्म हुआ। आज आधी शताब्दी से भी ऊपर के अपने कार्यकाल में यह संसार के २४ देशों में अपनी शाखाएं संचालित कर रहा है। इसके लगभग १०,००० सदस्य संसार के ५० से भी अधिक देशों में मनुष्य की विभिन्न रूपों में सेवा कर रहे हैं। सर्विस सिविल इण्टरनेशनल की मानववादी कार्यों में आस्था है। उसका विश्वशान्ति का सबसे सशक्त माध्यम अन्तर्राष्ट्रीय सेवाकार्य ही हो सकता है। और इसीलिए मानवनिर्मित व प्राकृतिक विनाश के क्षणों में यह संगठन अपने स्वयं सेवकों को भेजकर मनुष्य की भरसक सहायता करने की प्रेरणा देता है। इस संगठन के उद्देश्य संक्षेप में इस प्रकार हैं: एक बात से अधिक कार्य को महत्व देना, दो प्राकृतिक विपत्तियों तथा अन्य संकटों में सभी देशों के स्वयं सेवकों के माध्यम से सभी व्यावहारिक सहायता एवं सेवाएं प्रदान करना, तीन मनुष्य को मनुष्य से अलग करने वाली सभी सीमाओं व बाधाओं को तोड़ कर एक ऐसी सद्भावना का प्रसार जो देशों में एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध को नैतिक रूप से असम्भव बनाये, चार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे रचनात्मक कार्य करना जिनसे राष्ट्रों के बीच परस्पर विश्वास को बल मिले और अन्त में सैनिक सेवाओं की समाप्ति की जा सके, तथा पांच राष्ट्रीयता, जाति, धर्म, राजनीति, व वर्ग आदि के भेदभाव के बिना परस्पर सहायता, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, स्वानुशासन व बंधुत्व के प्रशिक्षण की व्यवस्था करना।

जहां तक सर्विस सिविल इण्टरनेशनल की गतिविधियों का प्रश्न है यह विशेष रूप से कहा जा सकता है कि यह संगठन विश्वभर के उन सभी लोगों के लिए कार्य शिविर आयोजित करता है जिनको ऐसे कार्य शिविरों की जरूरत रहती है। ये कार्य शिविर मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं: सप्ताहान्त शिविर कार्य, थोड़े समय के शिविर कार्य तथा दीर्घकालीन शिविर कार्य। इन कार्य शिविरों में देश-विदेश के सदस्य भाग लेते हैं जो कठिन शारीरिक श्रम करते हैं। दीर्घकालीन शिविरों के लिए प्रतिवर्ष विभिन्न देशों के अनुभवहीन सदस्यों को चुनकर किसी एक देश में कार्य के लिए भेजा जाता है। यह सेवा कार्य तीन या छः मास या वर्ष भर का हो सकता है। चूंकि यह संगठन व यह संस्था गैरसरकारी है इसलिए अपनी धन सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए इसे मुख्यतः अपने सदस्यों के वार्षिक चन्दे अथवा व्यक्तियों, समुदायों व प्रतिष्ठानों से प्राप्त होने वाली राशियों पर निर्भर रहना पड़ता है। विशेष कार्यों व आवश्यकताओं व विशेष आयोजनों के लिए कभी-कभी सरकार से भी अनुदान मिल जाता है। आपत्कालीन सहायता कार्यों व दीर्घकालीन सेवाओं के लिए प्रदर्शनी, चलचित्रों तथा पैदल यात्राओं का आयोजन करके भी धन संग्रह किया जाता है। सम्प्रति संस्था के पास ६० ऐसे कार्यकर्ता हैं जो विश्वभर में पूरे समय संस्था का कार्य कर रहे हैं।

भारत में इस संस्था ने १९३४ के भयंकर भूकम्प से पीड़ित बिहार के उजड़े गांवों के पुनर्निर्माण से अपना कार्य प्रारम्भ किया था। उस समय देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद कांग्रेस की तरफ से बिहार भूकम्प सहायता कार्य के संचालक थे। स्थानीय व विदेशी लोगों के साथ उनकी इस कार्य में सद्भावना व सहयोग की भावना लोग याद करते हैं। सम्प्रति इस संस्था की पांच उपशाखायें भारत में कार्य कर रही हैं। ये शाखायें दिल्ली, महाराष्ट्र, पश्चिमी बंगाल, मध्य प्रदेश व मद्रास में हैं। संस्था की भारत शाखा ने पिछले वर्षों में कई कार्यों का आयोजन किया है जिनमें मद्रास में मछुओं की बस्ती बसाना, उड़ीसा में कोढ़ियों की सहायता, नांगलोई (दिल्ली) झुग्गी-झोपड़ी कालोनी में दवाखाना बनाना, रोगियों व कमजोर बच्चों के लिए पौष्टिक आहार तथा दवाओं तथा उनकी जीविका एवं प्रशिक्षण का प्रबंध, विशेष उल्लेखनीय हैं। १९७० में इस संस्था की ५०वीं वर्षगांठ एवं स्वर्ण-जयन्ती का आयोजन २७ दिसम्बर से २९ दिसम्बर तक जनपुर में किया गया।

श्री रैल्फ हूगनोर इस समय एस० सी०
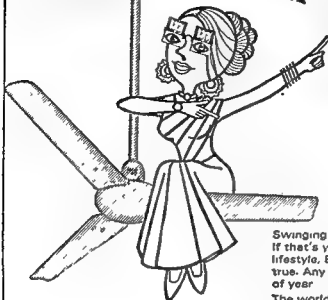
SWING HIGH WITH
bajaj
PRODUCTS
Swinging times and carefree living If that's your wish for a modern lifestyle, Bajaj can make it come true. Any time of day Any season of year
The world of Bajaj Products is, in fact, created for modern homemakers' Icecream Freezer, Pressure Cookers, Toasters Mixers, Ovens, Fans, Lamps, Lighting Fixtures, Accessories and so forth.
And, Bajaj alone have as many as 3,500 Dealers and 16 Branches throughout the country. Here you'll find the greatest Before and After Sales Service-where everything goes with a swing!
bajaj electricals limited
45-47, Veer Nariman Road, Bombay-400 001.
Branches all over India
heros' BE-180

अन्तिम अभियान क्रांति की आकांक्षा का निर्माण करे

—धीरेन मजूमदार

सहरसा में समय-समय पर सघन अभियान होते रहे और लोग आते जाते रहे, पर धीरेनदा एक चित्त होकर प्रारम्भ से लगे ही रहे। अब जब सहरसा में अन्तिम अभियान होने वाला है त्रिवेणीगंज प्रखण्ड की ग्रामस्वराज्य समिति के गठन और अभियान की पूर्व तैयारी के अवसर पर श्री धीरेनदा द्वारा प्रकट किये विचारों का महत्व और भी बढ़ जाता है।

अक्तूबर १९६९ में यानी गांधी शताब्दी के पुण्य अवसर पर बिहार दान की घोषणा हुई। घोषणा से केवल शब्द ही निकलता है और कुछ संकल्प का बोध होता है। केवल घोषणा से उत्साह हो सकता है। उसमें से पुरुषार्थ नहीं निकल सकता है अर्थ ही। विनोबा जी ने अत्यन्त तेज गति से तथा सभी पक्ष और श्रेणी के लोगों को आन्दोलन में शामिल कर के ग्रामस्वराज्य क्रांति के इस महत्त्वपूर्ण प्रथम अध्याय को समाप्त किया। इससे पहले यद्यपि ग्रामदान और ग्रामस्वराज्य शब्द का उच्चारण हम सब करते रहे हैं, वह शब्द राष्ट्र जन और विश्व जन का ध्यान आकर्षित नहीं कर सका था। यह स्वाभाविक भी था। क्यों कि आज के जमाने के विश्वव्यापी चीत्कारपूर्ण कोलाहल के जंगल में किसी भी चीज की धीमी आवाज सार्वजनिक कान पर पहुंचना संभव नहीं होता है।

राष्ट्रव्यापी तथा विश्वव्यापी जन मानस में शब्द का व्यापक प्रसार यानी सार्वजनिक ध्यानाकर्षण के लिए विनोबा जी ने लघन का से एक प्रदेश में प्रदेश दान की घोषणा कराकर उस उद्देश्य का पूरा कर लिया तब १९७० अक्तूबर में विचार तथा शब्द की संभावना प्रकट करने के लिए एक जिले सहरसा को चुनकर इसमें सघन विचार पुष्टि का अभियान चलाने का संकेत किया। कोई भी चीज जिसका शब्द चाहे जितना फैला हुआ हो और जनमानस उसे चाहे जितना आदरणीय समझे, जन पुरुषार्थ को आवाहित नहीं कर सकती है, अगर उसकी संभावना प्रकट नहीं होती है। अगर गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में शान्तिमय प्रतिरोध तथा भारत में बारडोली ताल्लुका में ग्राम सत्याग्रह की संभावना प्रकट नहीं की होती तो भारत की जनता सन् १९४२ जैसा उसका व्यापक प्रयोग नहीं करती होती। अतएव विनोबा के ग्रामस्वराज्य आंदोलन के लिए यह आवश्यक स्टेज थी कि शब्द संचार का काम पूरा होने के बाद वे संभावना प्रकट करने के प्रयास में लगते। वह काम उन्होंने सहरसा में राष्ट्रीय सघन अभियान के लिए देश के सर्वोदय समाज को प्रेरित करके किया। सर्वोदय समाज की कार्यकारी संस्था सर्व सेवा संघ ने इस सुझाव को अपना लिया और तब से आज तक सहरसा जिले में ग्रामस्वराज्य पुष्टि का सतत् कार्यक्रम चलता रहा।

सहरसा का चुनाव सहरसा की जनता की अनुकूल मानसिक परिस्थिति के कारण नहीं हुआ। इस प्रकार के संपूर्ण नये विचार और नये आंदोलन के लिए सभी क्षेत्र की जनता समान रूप से उदासीन होती है। यह चुनाव सहरसा की विशेष स्थिति के कारण हुआ। सहरसा जिला दो विदेशी सीमाओं के बीच में पड़ता है। सीमा क्षेत्र की मजबूती देश की मजबूती होती है। फिर सहरसा बंगाल से सटा हुआ है। बंगाल देश के हिंसात्मक आन्दोलन का केन्द्र-बिन्दु रहा है। सहरसा में अहिंसा शक्ति की संभावना प्रकट होने पर हिंसात्मक विचार वालों पर इसका प्रभाव अनिवार्य है, ऐसा मानना चाहिए। सहरसा की यह स्थिति भौगोलिक अनुकूलता है। दूसरा पहलू यह था कि देश में बिहार करीब करीब सबसे गरीब प्रदेश है और सहरसा बिहार में सबसे गरीब। यह जिला कोसी के प्रचंड प्रकोप के कारण हमेशा त्रस्त रहा है। इसलिए किसी भी आन्दोलन के लिए सहरसा की मांग सर्वोपरि है।

अब आप सहरसा सघन आन्दोलन की व्यूहरचना को समझने की कोशिश करें। ऐसे व्यापक आन्दोलन के लिए सबसे पहले उस शब्द को जिसका संचार हो चुका है, कुछ अर्थ और संभावना प्रकट के साथ दोबारा संचारित करने की आवश्यकता थी। प्रथम स्टेज में यह काम सम्पूर्ण रूप से संस्था शक्ति द्वारा ही किया जा सकता था। किसी भी काम के लिए प्रथम आवश्यकता शक्ति ही होती है। आज की भूमिका में मनुष्य समाज का काम दो ही शक्ति से हो सकता है संस्था शक्ति और सामूहिक शक्ति। अति प्राचीन काल में यानी सामन्तवादी युग में व्यक्ति शक्ति द्वारा ही समाज का कार्य चलता था। उन दिनों राजा, गुरु, पुरोहित आदि व्यक्ति ही सामाजिक शक्ति के रूप में क्रियाशील होते थे। फिर लोकतन्त्र और आधुनिक समाजवाद में व्यक्ति के स्थान पर संस्था शक्ति ही सामाजिक शक्ति के रूप में प्रकट हुई। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी, बल्कि मनुष्य के विकास क्रम की एक कड़ी मात्र थी। अगर ग्रामस्वराज्य आन्दोलन को समझना है तो मानव समाज के इस विकास क्रम को भी समझना होगा। सामाजिक संगठन के प्रथम युग में केवल समाज की परिधि छोटी थी और इसलिए समस्याएं स्थानीय और सरल होती थीं। उन समस्या के समाधान तथा समाज की व्यवस्था विशिष्ट प्रतिभाशाली व्यक्ति की मर्यादित शक्ति के अन्तर्गत रही थी। लेकिन मनुष्य के विकास के साथ जैसे-जैसे विज्ञान की प्रगति होती गयी केवल समाज की परिधि बढ़ती गयी तथा समस्या स्थानीय न रहकर व्यापक क्षेत्र में फैलती गई। तथा वह जटिल से जटिलतर होती गयी। इस तरह कालक्रम में व्यक्ति-शक्ति मनुष्य-समस्या के मुकाबले में छोटी पड़ती गयी। दूसरी तरफ व्यक्ति की शक्ति में भी कुछ ह्रास हुआ। दीर्घकालीन विशिष्ट पद पर रहने से उनका नेतृत्व क्रमशः प्रभुत्व में परिणत होता गया। स्वभावतः प्रभुत्व के कारण वे भ्रष्ट भी होते गये। इस तरह उनमें तेज घटा। आवश्यकता आविष्कार की जननी होती है। और

→

तंत्र और समाजवाद के आंदोलन से व्यक्तिवाद से निकल कर के सस्थावाद तक पहुंचा। और फिर व्यक्तिगत क्रियाशीलता से आगे बढ़कर इन्सान संस्थागत क्रियाशीलता पर पहुंच गया। तब राजा, गुरु तथा पुरोहित के स्थान पर राज्य सस्था, शिक्षण सस्था और सेवा संस्थाएं क्रियाशील बनी। और उन्ही के सहारे आज की दुनिया चल रही है। अब विज्ञान की अतिप्रगति तथा समाज शास्त्र के विकास के कारण आज चेतना सार्वजनिक बन रही है और समस्यायें जटिलतम। अब कोई भी समस्या न स्थानीय रह गयी और न राष्ट्रीय। हर समस्या विश्व समस्या बन गयी है। आप देख रहे हैं कि अभी-अभी सुदूर इजराइल और अरब की लड़ाई छिड़ते ही गावो में मिट्टी का तेल दुष्प्राप्य हो गया है। दूसरी तरफ सस्थाएं भी दीर्घकालीन विशिष्ट पदाधिकार के फलस्वरूप प्रभुत्वनिष्ट और भ्रष्ट हो गयी।

अतएव वर्तमान परिस्थिति मे सस्थाएं भी समस्याओ के मुकाबले मे सामर्थ्यहीन हो रही हैं। दूसरी छोटी-छोटी सस्थाओ की बात तो छोड़ ही दीजिए, राज्य शक्ति जो धीरे-धीरे सर्वाधिकारी बनती जा रही है, आज की समस्याओ के समाधान के लिए असमर्थ हो रही रही हैं। इस वस्तुस्थिति का प्रत्यक्ष दर्शन कर रहे हैं तो फिर इन्सान के सामने नई शक्ति के आविष्कार की नई आवश्यकता उत्पन्न हो गई है। गांधी इसका दिशा सकेत कर के चले गये और आज उनके महान शिष्य विनोबा मनुष्य के लिये ग्रामस्वराज्य आन्दोलन का दिशा दर्शन कर रहे हैं, अर्थात् जिस तरह मनुष्य के विकास क्रम में व्यक्तिवाद से आगे बढ़कर सस्थावाद की आवश्यकता हुई थी, उसी तरह आज सस्थावाद से आगे बढकर मनुष्य को समाजवाद पर पहुंचने की आवश्यकता हो गई है। समाजवाद का अर्थ जैसा कि आज समझा जाता है सरकारवाद नहीं है। सरकारवाद, संस्थावाद है, समाजवाद नहीं। समाजवाद का अर्थ है, जिस तरह व्यक्तिवाद मे व्यक्ति हर समस्या के समाधान मे क्रियाशील था, सस्थावाद मे संस्था क्रियाशील थी, उसी तरह समाजवाद मे समाज को अपनी ही शक्ति से क्रियाशील होना है। अर्थात् आज संस्था-शक्ति के स्थान पर नागरिक-शक्ति का अधिष्ठान और सगठन करना होगा।

यही कारण है कि विनोबा सहरसा जिले मे धीरे-धीरे नागरिक-शक्ति निखारने का प्रयास कर रहे हैं। वस्तुतः ससार मे आज तक नागरिक शक्ति सुप्त रही है। इतिहास के प्रथम युग से उसने कभी नही माना था कि सामाजिक व्यवस्था और समस्या के समाधान के लिए वह खुद जिम्मेवार है, उसने हमेशा यही माना कि कोई राजा, गुरु, पुरोहित या कोई राज्य सस्था, सेवा सस्था, कल्याण सस्था, धर्म सस्था आदि उनकी सारी समस्याओ का समाधान तथा उनकी शान्ति और शृखला की व्यवस्था करेगी। उनसे जो फीस या शुल्क मांगा जायेगा वो सहर्ष देंगे। ये शुल्क टैक्स के रूप मे, चन्दे के रूप मे, दक्षिणा के रूप मे, या इसी प्रकार चाहे जिस रूप मे हो। अत. यह स्पष्ट है कि अभियान के प्राथमिक चरण मे इस सुप्त नागरिक के जागरण के लिए शुद्ध सस्था-शक्ति का इस्तेमाल करना था, और १९७१ मे वो किया गया। पहले साल अभियान की अवधि मे ५०० से अधिक सस्था मे देश भर की भिन्न भिन्न सस्थाओं के कार्यकर्ताओ ने सहरसा जिले मे आकर काम किया और जिले की नागरिक शक्ति को प्रेरित किया। पहले साल के काम से जब कुछ नागरिक-शक्ति प्रेरित हुई और आन्दोलन के प्रति उनकी दिलचस्पी बढ़ी तो सस्थाओ से २००-२५० से अधिक कार्यकर्ता नही आये और बाकी काम नागरिक शक्ति के सहयोग से चला। अब इस तीसरे साल के अभियान मे, जिसे विनोबा ने आखिरी अभियान की संज्ञा दी है, कुल नागरिक शक्ति का ही पुरुषार्थ निखरना चाहिए ताकि आगे का काम केवल नागरिक-शक्ति मे ही चल सके। अगर क्रांति के लिए साधन और साध्य की एकरूपता आवश्यक है तो स्पष्ट रूप से यह समझ लेना चाहिए कि समाज की क्रियाशीलता के लिए सस्था-शक्ति को पीछे छोड़कर नागरिक-शक्ति का ही अधिष्ठान साध्य है, तो उसके लिए साधन नागरिक-शक्ति ही होनी चाहिए।

नागरिक-शक्ति भी दो चरणों मे विकसित हो सकेगी। पहला चरण अर्ध नागरिक का नेतृत्व होगा। यानी पहला चरण संस्थामूलक नागरिक का होगा। यह सस्थामूलक नागरिक कौन है? पहले आप शुद्ध सस्था-शक्ति और सस्थामूलक अर्धनागरिक शक्ति मे फर्क क्या है, समझ लें। शुद्ध संस्था-शक्ति का अर्थ है "सस्था का कार्यकर्ता जिस काम को करता है वह उसी सस्था का ही कार्यक्रम है और कार्यकर्ता उसी सस्था के अनुशासन और आदेश से काम करता है। वह नागरिक भी है। लेकिन सस्था के काम को वह नागरिक की हैसियत से नही करता है, बल्कि सस्था के कार्यकर्ता की हैसियत से ही करता है।"

यह अर्द्ध नागरिक दूसरी संस्थाओ के कार्यकर्ता होंगे, जिन सस्थाओ का उद्देश्य या कार्यक्रम सीधा ग्रामस्वराज्य नही है। उदाहरण के लिए आप शिक्षण-सस्था तथा दूसरी सरकारी संस्थाओ को ले सकते हैं। उन सस्थाओ के कार्यकर्ताओ मे जिनमे सामाजिक भावना है, विचार की प्रेरणा है, देश और दुनिया के सकट में कुछ करने की उत्कंठा है, वे इसका नेतृत्व करेंगे। यह काम वे अपनी अपनी सस्था की ओर से नही करेंगे और उनके आदेश से। संस्था के कार्यकर्ता के उपरान्त वे जो नागरिक हैं उस हैसियत करेंगे।

इस तरह जिले का काम पहले शुद्ध सस्था-शक्ति से, फिर दूसरे चरण मे सस्था शक्ति का नेतृत्व तथा नागरिक-शक्ति के सहकार से हुआ। अब अर्धनागरिक शक्ति के नेतृत्व तथा शुद्ध नागरिक-शक्ति के सहकार से इस अभियान को चलाना होगा। शुद्ध सस्था के लोग भी रहेंगे। लेकिन उनकी भूमिका बीच मे कुछ मार्गदर्शन करने की होगी, न कि काम चलाने की। तब यह अर्धनागरिक का प्रयास होगा। अभियान के सिलसिले में पहले के काम की अवधि मे जो नागरिक सहयोगी शक्ति उभरी है उसे विकसित करना, प्रसारित करना और उसमें से कुछ अनुपात मे सहयोगी शक्ति को जिम्मेदार शक्ति मे परिणत करना। ताकि अगले चरण मे यह अर्धनागरिक के साथ विकसित जिम्मेवार नागरिक शक्ति मिलकर सम्मिलित नेतृत्व करेंगे। सवाल कितना काम होता है

(शेष अगले पृष्ठ पर)

आन्दोलन के समाचार

उत्तराखण्ड के सर्वोदय सेवक सोहनलाल भूभिक्षु गये माह विनोबाजी से मिलने के लिए पवनार गये थे। वहां उन्होंने बाबा से कहा कि २ अक्टूबर '७४ से वे उत्तरभारत की साम्ययोग पदयात्रा पर निकलना चाहते हैं। बाबा ने उनसे कहा कि अच्छे काम मे देर नहीं करनी चाहिए और उत्तर के बजाय उन्हें दक्षिण की पदयात्रा करनी चाहिए। भूभिक्षु प्रेरित हुए और ६ दिसम्बर को ही पदयात्रा पर निकल पड़े। सूर्योदय के समय उन्हें बाबा और जे० पी० ने आशीर्वाद दिये और नर्मदा से आये भाइयों और ब्रह्म विद्या मन्दिर की बहनों ने उन्हें बिदा किया। उनका पहला पड़ाव दत्तपुर का है।

शुल्क वृद्धि की सूचना

कागज की कीमतों और मुद्रण की दरों मे हाल ही मे असामान्य वृद्धि होने के कारण 'भूदान-यज्ञ' का लागत खर्च अत्यधिक बढ़ गया है। इस स्थिति मे पत्र का प्रकाशन बहुत कठिन हो गया है और हम न चाहते हुए भी इस बढ़े हुए खर्च की आंशिक पूर्ति के लिए पत्र का मूल्य बढ़ाने मे विवश हो गये हैं। अब आगामी ७ जनवरी ७४ के अंक से एक प्रति का मूल्य २५ पैसे के स्थान पर ३० पैसे तथा वार्षिक शुल्क १२ रु० के स्थान पर १५ रु० किया जा रहा है। इसी प्रकार हम सफेद कागज पर अंक का प्रकाशन भी बन्द कर रहे हैं। जनवरी के अंक से पूरा भूदान-यज्ञ न्यूजप्रिंट पर ही प्रकाशित हुआ करेगा।

हमें आशा है कि पाठकगण हमारी विवशता को समझेंगे और मूल्य मे की जा रही इस अनिवार्य वृद्धि को किसी प्रकार अन्यथा न लेते हुए पूर्ववत पत्र के प्रति अपना सौहार्द और स्नेह बनाये रखेंगे।

उपवास-दान पर पत्र

उपवास-दान के सम्बन्ध मे जानकारी मिली। सिद्धराजजी का 'सर्वोदय' मे लेख भी पढ़ा।

मैं अपनी बीमारियों के कारण दिन भर का उपवास तो नहीं कर सकता, परन्तु एक दिन के भोजन का खर्च अन्दाज से रुपया आठ पड़ता है। तो बारह महीने का रुपया ९६ हुआ। उसमें रुपया चार जोड़कर रुपया सौ आपको मनीआर्डर से भेज दिया है। यह अक्टूबर १९७३ से सितम्बर १९७४ तक का उपवास-दान होगा।

पटना (बिहार)

जयप्रकाश नारायण

(जयप्रकाशजी ने हर सप्ताह एक खाना छोड़ने का तय किया है। स.)

मैं लोक सेवक हूं। बहुत वर्षों से सप्ताह मे हर शुक्रवार को एक समय का भोजन छोड़ता हूं। प्रभु कृपा से वह चालू रहेगा। संत विनोबाजी की प्रेरणा से उनके जन्म दिवस, ११ सितम्बर १९७३, से हर सप्ताह एक भोजन का एक रुपया के हिसाब से एक वर्ष का बावन रुपया उपवास दान का सर्व सेवा संघ के लिए भेज रहा हूं।

—नाईलाल भाई भीखाभाई

बोरियावी (गुजरात)

पू० विनोबाजी की प्रेरणा से प्रभावित होकर अभी तीन कार्यकर्ता संकल्प फार्म भरकर भेज रहे हैं। हर महीने मे एक दिन उपवास करके उस दिन के भोजन-खर्च की रकम सर्व सेवा संघ को देंगे। एक श्री मनन्नामसिंह, दो : श्री वेदप्रकाश, तीन : श्री जगेन्द्रपाल।

कार्यकर्ता संघ

कपूरथला जिला-पंजाब गांधी ग्राम योग

'उपवास-दान' के सम्बन्ध मे विनोबाजी का विचार, अध्यक्ष महोदय की अपील तथा सर्व सेवा संघ का परिपत्र देखा। नवम्बर माह से मैंने प्रति एकादशी को एक शाम उपवास तथा एक शाम अल्प फलाहार रखना आरंभ कर दिया है। एक वर्ष के उपवास-दान की रकम का २४ रुपये १३-११-७३ को आपको सेवा मे मनीआर्डर से भेज दिया है।

रामनारायण सिंह
जिला सर्वोदय मण्डल, मुंगेर

विनोबा प्रधानमंत्री के प्रेरणा स्रोत

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने पवनार आश्रम मे कहा कि आचार्य विनोबा भी उनकी प्रेरणा के स्रोत हैं। विनोबाजी राष्ट्रीयता से ऊपर उठ गये हैं और सारी मानवता से तादात्म्य महसूस करते हैं। उनके जैसी दृष्टि वाले आदमी को समझने मे समय लगता है। वर्तमान पीढ़ी के बहुत से लोग भले विनोबा जी के विचारों से सहमत नहीं हो पायें लेकिन भावी पीढ़ियां उनके विचारों को समझेंगी और उनका आदर करेंगी।

प्रधानमंत्री २ जनवरी को विनोबा जी से अपनी मिलकर राष्ट्रीय परिस्थिति पर विचार करने के बाद आश्रम के कार्यकर्ताओं मे बोल रही थीं।

विनोबा जी ने कहा कि सर्वोदय विचार और श्रीमती इन्दिरा गांधी के दृष्टिकोण मे सहमति के कई क्षेत्र हैं। इन्दिरा जी जब नागपुर से हेलिकॉप्टर द्वारा पवनार आयीं और ब्रह्म विद्या मन्दिर मे पहुंचीं तो विनोबा जी ने बाहर आकर स्नेहपूर्वक उनका स्वागत किया। इन्दिरा जी ने सम्मान से झुकते हुए कहा— मेरी अगवानी के लिए आप क्यों इतनी तकलीफ उठा रहे हैं। मैं तो खुद ही आपके पास आ रही थी।

वार्षिक शुल्क : १५ रु०, विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १९ जनवरी, ७६

उत्तराखण्ड में चिपको आन्दोलन : विशेष लेख पृष्ठ ३ पर

भूदान-यज्ञ

१४ जनवरी, '७४

वर्ष २० अंक १६

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

मुख पृष्ठ : अनुपम मिश्र

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१.

विनोबा-इन्दिरा वार्ता

राज्य शक्ति के प्रतीक महल और आध्यात्मिक-सामाजिक शक्ति के प्रतीक आश्रम के बीच सम्बन्धो की एक लम्बी परम्परा इस देश मे रही है। जब-जब महल और आश्रम के बीच सहयोग, सम्मान और समन्वय के सम्बन्ध रहे हैं तब-तब समाज ऊपर उठा है और ऐसे कालखण्ड हमारे देश में आये हैं जिन्हें इतिहासकार स्वर्णयुग कहते हैं। लेकिन जब यह सहयोग टूटा और महल ने आश्रम की या आश्रम ने महल की उपेक्षा की और एक दूसरे के कार्य तथा प्रभाव क्षेत्रो का अतिक्रमण किया तब समाज टूटा है, देश गुलाम हुआ है और हमारा पतन हुआ है। आश्रम हमारे आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक जीवन के मूल्यो को विकसित, स्थापित और नियमित करते रहे हैं और महल राजनीतिक मामलो और विधि-व्यवस्था को चलाते रहे हैं।

अब जीवन बहुत सश्लिष्ट हो गया है। चीजें एक दूसरे मे इतनी गुंथ गयी हैं कि पहले के दायरे और कार्य तथा प्रभाव क्षेत्रो को विभाजित करने वाली रेखाए टूट गयी हैं। कोई भी मूल्य महज आध्यात्मिक, सामाजिक या नैतिक नही रह गया है। एक विचार एक घटना और एक कर्म का असर प्राय सब तरफ होता है। राजनीति और अर्थव्यवस्था की ऐसी सगाई हुई है कि वे दोनो मिल कर सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक जीवन को ही नही, लोगो के वैयक्तिक जीवन तक को प्रभावित, नियमित और नियंत्रित करना चाहती हैं। राजनीति और अर्थ व्यवस्था को यह महत्व विज्ञान के कारण मिला है क्योंकि आज जो दुनिया है उसे ऐसी बनाने का श्रेय विज्ञान को है। लेकिन यह मनुष्यता का दुर्भाग्य है कि विज्ञान अपनी स्वतंत्र सत्ता कायम नही कर पाया और राजनीति तथा अर्थ व्यवस्था ने उसका इस्तेमाल अधिक से अधिक शक्ति अपने हाथो मे केन्द्रित करने मे किया है। आर्थिक रूप से विकसित माने जाने वाले देशो मे अर्थ व्यवस्था और राजनीति के बीच एक सन्तुलन बन गया है। दोनो एक दूसरे को प्रभावित करती हैं और एक दूसरे पर नियन्त्रण रखती हैं। लेकिन जिन देशो को विकासशील या अविकसित कहा जाता है उनमे प्राय राजनीति ही अधिक शक्तिशाली है और वह अपने लक्ष्यो और निहित स्वार्थों के अनुसार ही अर्थ व्यवस्था को सचालित करती है।

अपने देश मे आजादी के बाद से राज्यशक्ति व्यापक हुई है और राजनीति की तो प्राय हर क्षेत्र में दखलदाजी हो गयी है। आठ सौ वर्षों की गुलामी के बाद पहली बार जब पूरे देश मे अपने लोगों की सरकार बनी और सत्ता उन लोगो के पास आयी जो बीसवी शताब्दी मे आश्रम के सबसे जीवन्त और शक्तिशाली प्रतीक महात्मा गाधी को मानने वाले थे तो राज्यशक्ति के प्रति लोगो का मोह और उस पर निर्भरता बढ़ना स्वाभाविक था। हालांकि सरकार पर एक स्तर पर इतनी अधिक निर्भरता और राजनीति को इतनी अधिक मान्यता के बावजूद मानस के एक स्तर पर लोग गैर राजनीतिक भी बने रहे हैं और 'कोउ नृप होय हमे का हानी' का हमारा स्थायी भाव भी पूर्ववत है। शायद इसी भाव के कारण राजनीति इतनी निरकुश हो गयी है और राज्य पर निर्भरता इतनी बढ़ी हुई है। राजनीति और राज्य के जो तात्कालिक लक्ष्य अथवा निहित स्वार्थ हैं उन्हें देखते हुए यह स्वाभाविक ही है कि वे लोगो की उदासीनता का लाभ उठाने से बाज नही आयेंगे और न यह चाहेंगे कि उनके हाथों मे अभी जो अपार राजनीतिक और आर्थिक सत्ता है वह जनता की जागरूकता के कारण घटे या कम हो। इसलिए लोकशिक्षण पर न राज्य जोर देता है न राजनीतिक पार्टियां।

इस असन्तुलन को समाप्त करने के लिए और सच्चा स्वराज्य लाने के लिए विनोबाजी ने लोकशिक्षण को अनिवार्य माना और ग्रामस्वराज्य के सपने को साकार करने के लिए लोकशिक्षण का सबसे कारगर माध्यम के नाते उपयोग किया। उनकी प्रेरणा से आज हजारो सर्वोदय सेवक लोकशिक्षण में लगे हुए हैं। लोकशिक्षण को अपनी आस्था का पहला तत्व मानने वाले विनोबा जी से प्रधान मंत्री

(शेष पृष्ठ १६ पर)

इन्दिराजी सर्व सेवा संघ की सदस्या ही हैं

२ जनवरी को प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरागांधी विनोबा जी से मिलने गईं। विनोबा जी से उनकी ८० मिनट तक बातें हुईं। उस दिन उनका भोजन ब्रह्मविद्या मन्दिर में ही हुआ। भोजन के बाद, थोड़ी देर आश्रम की बहनों के साथ अनौपचारिक बातें होने के बाद, विनोबा जी तथा इन्दिरा जी, दोनों ने आश्रम के बृहत् परिवार को संबोधित किया।

विनोबा जी ने कहा : आज हमारी बातें एक घंटा होने वाली थी। उसके बदले में ८० मिनट हुईं। काफी विषयों पर चर्चा हुई। ऐसा पाया गया कि बहुत से विषयों में एक ही राय हमारी हो गई। उससे विश्वास बन गया कि सर्वोदय का विचार, खास कर उसकी आध्यात्मिक बुनियाद और आज जो सामाजिक कार्य चल रहा है सरकार की ओर से, उनके बीच उत्तम संपर्क हो सकेगा, ऐसी आशा दोनों बाजू से बनी है। इससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैंने तो यहां तक कह दिया कि आपके और हमारे विचार-विमर्श से लगता है कि आप सर्व सेवा संघ की सदस्या ही हैं। यह सुन कर आपने कहा कि इस बचपन से मैं अपना गौरव समझती हूं। यह हमारा जो प्रेमसंवाद हुआ थोड़े में आपके सामने रखा।

विनोबा जी के उद्बोधन के बाद इन्दिरा जी ने कहा : "मुझे तो बहुत दिनों से इच्छा थी बाबा से मिलने की। सालभर से ऊपर हो गया जब मैं बाबा के पास आई थी, इससे बहुत पहले आना चाहती थी। परन्तु ऐसा जीवन हमारा बन गया है कि बहुत पहले से निर्णय करके कार्यक्रम न बने तो इच्छा होने पर भी संभव नहीं होता है। अब की बार बहुत पहले से ही निर्णय करके लिख रखा था। बाबा से मिलकर मुझे हमेशा ही बहुत आनन्द होता है, प्रेरणा मिलती है और मार्ग दर्शन मिलता है।

"हमारे देश का यह बड़ा सौभाग्य है कि हर काल में ऐसे महापुरुष हमारे देश में रहे हैं। चारों तरफ चाहे कितनी भी अशान्ति हो या जिसे हम गलत बात कहते हैं जो नहीं होनी चाहिए वह होती हो, तो भी उसके बीच में अगर एक शान्ति केन्द्र है, वह चाहे कितना भी छोटा हो तो भी उसका प्रभाव उस काल में भी पड़ता है और बाद में आगे भी पड़ता है।

"अभी आश्रम की बहनें मुझे बापू के बारे में पूछ रही थीं, तो मैंने कहा था कि बापू से मैं पहली दफा कब मिली मुझे याद नहीं है, क्योंकि बहुत छोटी थी तब से हमारे घर में उनका आना जाना होता था। हम उनके इतने पास थे कि मुझे लगता है कि उनको अभी कोई पहचान नहीं पाया है। जैसे-जैसे समय जायेगा, उनकी कितनी महानता थी वह आहिस्ता-आहिस्ता खुलेगी। वह उतनी ही खुलेगी जितनी जिसकी जानने की शक्ति होगी। हमारा स्वयं का दृष्टिकोण छोटा हो तो हम उतना ही देखेंगे। लेकिन आहिस्ते-आहिस्ते हमारे ही देश में नहीं, दूसरे देशों में भी इसकी पूरी जानकारी आयेगी वे कितने महान व्यक्ति थे और कितनी महान शक्ति थी। वैसे ही हम बाबा के बारे में भी कह सकते हैं। अपने जीवन काल में लोग उन्हें नहीं पहचान पाते हैं। लेकिन यहां इस आश्रम के और भारत में दूसरे कामों के जरिये उन्होंने एक दिशा दी है, वह बहुत महत्वपूर्ण है।

"आज यह बात बहुत होती है कि देहात का उद्धार होना चाहिए, यह ठीक है। लेकिन यह साईन्स (विज्ञान) का युग है। साईन्स और टेकनालाजी बढ़नी चाहिए। मैं उन लोगों में से हूं जो मानते हैं कि उन दोनों की (देहात का उद्धार और साईन्स) कोई लड़ाई नहीं है। आज हम दुनिया से अलग नहीं रह सकते हैं। जो भी दुनिया में प्रगति हो रही है, उसका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ेगा ही। लेकिन उसका उपयोग किस तरह करना जिससे कि हम समाज का सुधार, देहात का सुधार कर सकते हैं और हमारे समाज के जो बुनियादी गुण हैं, प्राचीन सभ्यता के जो गुण हैं उनको रखते हुए, किस तरह कर सकते हैं, यह देखना है। मैं मानती हूं कि उन दोनों में कोई विरोध नहीं है।

"आजकल बहुत से लोग अपने को आधुनिक समझते हैं। उनकी आधुनिकता बाहरी चीजों में, वस्त्र वगैरा में होती हैं, लेकिन वह कोई बुनियादी चीज नहीं है। फैशन तो आता है और जाता है। क्या बुनियादी चीज है यह हमें देखना है। और हमारे पुराने तरीकों में भी क्या बुनियादी चीज है और क्या दूसरा है, अंध-विश्वास वगैरा है, यह देखना है। हमारे पास भी कई पुरानी चीजें हैं जो अच्छी नहीं हैं। जैसे साम्प्रदायिकता, भाषा भेद वगैरह, जिससे बापू हमेशा लड़ते थे और बाबा भी लड़ते हैं, यह सब छोड़नी होगी। बाबा तो राष्ट्रीयता से भी ऊपर उठ गये हैं और जगत की बात करते हैं। वह भविष्य की बात है आज जो वे कह रहे हैं भविष्य में वह सब होगा। जब स्वयं कोई मजबूत होता तब वह बाहर बढ़ सकती है और वह सबसे प्रेम कर सकता है। हमें राष्ट्र के लिए प्रेम न हो तो जगत के लिए प्रेम नहीं हो सकता। राष्ट्र लिए हम प्रेम करेंगे तब दुनिया के लिए भी कर सकेंगे। जो छोटा प्रेम होता है, जैसे परिवार, कौम, जाति, राष्ट्र के लिए उसका बड़े प्रेम से मतभेद नहीं है। छोटे प्रेम को और बढ़ाते जाना चाहिए। ये विचार एक माने में पुराने भी हैं। और आज हम कह सकते हैं कि नये भी हैं। दुनिया के दूसरे देशों में भी इन विचारों की झलक दिखाई देती है, सब में नहीं, थोड़े लोगों में। लेकिन कोई नई बात पहले थोड़े लोग ही अपनाते हैं।

"यहां पर आप सब लोग जो काम कर रहे हैं, जो ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं उसका काफी योगदान हो सकता है। हमें आशा है कि उसका प्रभाव देश पर पड़ेगा।"

सच्चे जन-प्रजातंत्र के लिए

जयप्रकाश नारायण

(कलकत्ता में २९ और ३० दिसम्बर '७३ को हुई आॅल इण्डिया रेडिकल ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन के सम्मेलन मे दिये गये उद्घाटन भाषण से—)

दलीय प्रजातंत्र का अब हमे छब्बीस वर्षों का अनुभव हो चुका है। इस दौरान लगभग हर एक राजनीतिक दल को सत्ता मे भागीदारी मिल चुकी है और सत्ता मे आने के बाद इनके रंग-ढंग हम देख चुके हैं और हमे मालूम है कि लोगो के लिए इन दलो ने क्या किया है। यह कहना गलत नही होगा कि अपने घोषणा पत्रो से भिन्न इन पार्टियो का व्यवहार और कामकाज सापनाथ के भाई नागनाथ जैसा रहा है फिर चाहे वे सरकार मे रही हो या उसके बाहर। लेकिन इसे एक बार छोड़भी दें तो बुनियादी मुद्दा यह है कि पार्टी-प्रणाली पर आधारित और पार्टियो द्वारा संचालित दलीय प्रजातन्त्र एक बहुत ही असन्तोषजनक और त्रुटिपूर्ण प्रजातान्त्रिक प्रणाली है। आम तौर पर लोग राजनीतिक पार्टियो और प्रशासन के वर्तमान स्वरूप और तौर-तरीको से ऊब गये हैं। वे वोट दे कर इस प्रजातन्त्र मे जैसे-तैसे नाममात्र का अपना रोल अदा करते हैं, क्योंकि उनके सामने कोई विकल्प नही है। चर्चिल के इस कथन की हमे अक्सर याद आती है कि दलीय प्रजातन्त्र में स्पष्ट ही कई त्रुटियां हैं लेकिन जब तक कोई दूसरी प्रणाली नही खोज ली जाती, सरकार चलाने की यह सर्वश्रेष्ठ प्रणाली है। मेरा विश्वास है कि लोगों के पास विकल्प है और लोगों के सच्चे प्रजातंत्र का बेहतर प्रजातान्त्रिक स्वरूप सम्भव है :

ऐसा मत सोचिए कि यह मेरा विकल्प है या मैंने अकेले ने ही इस पर विचार किया है। प्रजातन्त्र के इस स्वरूप के सिद्धान्त और इसकी रूपरेखा स्वय गाधी जी और एम० एन० रॉय ने बनाई है। सच पूछिये तो इसका अन्तर्निहित विचार तो और भी पहले का है। इसे आप श्रीमती एनीबेसेन्ट की भारतीय प्रजातन्त्र की अवधारणा मे देख सकते है, देश बन्धु चितरंजन दास के विचारो मे पा सकते हैं और डा० भगवानदास की स्वतन्त्र भारत के संविधान की तथाकथित रूपरेखा मे भी यह पाया जाता है।

जहां तक मैं जानता हूं एम० एन० रॉय इतिहास के ऐसे अकेले राजनीतिक नेता है जिन्होने रेडिकल ह्यूमनिस्ट पार्टी का विचार दिया, पार्टी बनाई, और खड़ी की और फिर स्वयं ही उसे समाप्त कर दिया। इसमे कोई सन्देह नही कि गाधी जी अगर जिन्दा रहते तो अपनी शहादत के पहले वाली रात मे काग्रेस कार्यकारिणी के सुझाव पर उन्होने कांग्रेस को भंग करने और लोकसेवक संघ के रूप मे उसे पुनर्गठित करने का जो मसविदा प्रस्ताव तैयार किया था उस पर वे अमल करते। लेकिन दूसरे ही दिन उनकी हत्या कर दी गयी और इस तरह रॉय ही ऐसे एक-मात्र राजनीतिक नेता हैं जिसने अपनी पार्टी भंग की हो।

गाधी जी और रॉय दोनो के ही उस राजनीतिक ढांचे के अपने-अपने चित्र थे जिन्हें वे बनाने की कोशिश करते। जहां तक मैं समझता हूं, इन चित्रों में बहुत अधिक समानता है हालांकि जिस शब्दावली मे इन दोनों ने अपने चित्रो का वर्णन किया है और उनके समर्थन मे जो दलीलें दी हैं वे अनिवार्य रूप से भिन्न हैं, क्योंकि इन दोनो की पृष्ठभूमियो और दृष्टिकोणो मे अन्तर था। दो बुनियादी तत्व जो दोनो मे समान है, इस प्रकार हैं—दोनों ने ही पार्टी विहीन प्रजातन्त्र की बात कही है और दोनों ही इस मुद्दे पर स्पष्ट थे कि यह प्रजातंत्र नीचे से बनाया जायेगा। गाधी जी इसका आधार ग्रामराज (ग्राम स्वशासन) को मानते थे और राय जन समितियो को मानते थे। सामाजिक कार्यकर्ता होने के नाते वैचारिक ढांचे खड़े करने मे ही मेरी रुचि नही है। मैं तो आपके सामने और आपके जरिये पूरे देश और गांव गांव के सामने सामाजिक-राजनीतिक कार्यवाही का एक तात्कालिक कार्यक्रम रखना चाहता हूं। मेरा आवाहन है—'जन प्रजातंत्र की ओर'।

जन प्रजातंत्र की ओर पहला कदम है—इसकी नीव रखना। यह नीव गांवो मे ग्रामसभाएं और नगरो और कस्बो मे मोहल्ला या वार्ड समितियां गठित करने से रखी जा सकेंगी। ये ग्रामसभाएं लोगो के प्रतिनिधियो की संस्था न हो कर, गांव के सभी बालिगो की प्राथमिक संस्थाएं होंगी। गांव का मतलब भी यहां मौजे से नही है बल्कि छोटी-बड़ी कोई भी बस्ती से है फिर चाहे उसे पल्ली कहा जाता हो, टोला कहा जाता हो या पुरवा। यह एक ऐसा समाज है जिसमे लोग एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं और आपस मे उनके सीधे सम्बन्ध हैं। ऐसे समाज मे ही सीधा प्रशासन व्यावहारिक हो सकता है। शहरी इलाको मे वर्तमान नगरपालिका वार्ड ऐसी इकाई के नाते बहुत बड़े पड़ेंगे। इन वार्डों की आबादी एक ऐसे समुदाय के नाते बहुत ज्यादा है जिसमे सभी बालिग या प्रत्येक परिवार का एक सदस्य भी, आमने-सामने बैठ कर किसी सार्थक कार्यवाही मे भाग ले सकें। इसलिए मैंने मोहल्ला सभाओ या पड़ोस परिषदो का सुझाव दिया है जो पास मे रहने वाले सौ परिवारो की हो। कारखानो, दफ्तरो, स्कूलो-कालेजो और काम के स्थानो मे, दुकानो, दफ्तरों या किसी भी सुविधाजनक स्थान मे ऐसे समुदाय बनाये जा सकते हैं जो निर्णय करने, कार्यवाही करने और कामकाज चलाने मे भागीदारी के पूरे अवसर दे सकते हों।

क्रमश

मूल अंग्रेजी से अनूदित

×प्राप्त जानकारी के अनुसार २२वां सर्वोदय सम्मेलन कलकत्ता के निकट रहरा में ३०, ३१ मई और १ जून १९७४ को आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन के पहले सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति और अधिवेशन की बैठकें भी होंगी। सम्मेलन की तैयारी शुरू हो गई हैं।

'चिपको आंदोलन' की एक और विजय

—अनुपम मिश्र

तीर्थस्थल केदारनाथ से २६ किलोमीटर नीचे ही रामपुर गांव में वनवासियों के लिए एक 'नया केदारनाथ' बन गया है। इस नये केदारनाथ पर एक अधूरा कटा हुआ और चार पूरे कटे हुए अंगू के पेड़ पड़े हुए हैं। खेलकूद का सामान बनाने वाली इलाहाबाद की साइमन कम्पनी तथा देहरादून की सरकारी स्पोर्ट्स गुड्स कम्पनी के अधिकारी अंगू के १० पेड़ काट कर ले जाने के वन-विभागीय आदेशों के रहते हुए भी वनवासियों के सक्रिय अहिंसक प्रतिकार के कारण इन कीमती पेड़ों को उठा ले जाने में असफल रहे। वनवासी अंगू की लकड़ी से कृषियन्त्र बनाते थे लेकिन अब सरकार की वननीति के कारण अंगू की लकड़ी उन्हें नहीं मिल कर खेलकूद का सामान बनाने वाली कम्पनियों को मिलने लगी थी। स्थानीय लोगों के विरुद्ध बड़ी कम्पनियों के पक्ष में जाने वाली वननीति को बदलने के लिए उत्तराखण्ड के चमोली व उत्तरकाशी जिलों में गत वर्ष जो 'चिपको आन्दोलन' शुरू हुआ था उसकी सफल परिणति इस २४ दिसम्बर को कम्पनियों के ठेकेदारों द्वारा कटवाये गये हुए पेड़ों को जंगल से बाहर नहीं निकलने देने में हुई।

ठीक साल भर पहले उत्तर प्रदेश सरकार के वनविभाग से इलाहाबाद की साइमन कम्पनी ने अंगू के पेड़ खरीदने का सौदा तय किया था। तब गोपेश्वर के दशोली ग्राम-स्वराज्य संघ ने इस पर आपत्ति की थी कि जो पेड़ वनवासी कृषियन्त्रों को बनाने के काम आते हैं उन्हें न देकर खेलकूद का सामान बनाने वाली कम्पनी को देना ठीक नहीं है। यदि ऐसा हुआ और कम्पनी ने आकर ये पेड़ काटने की कोशिश की तो वनवासी इन पेड़ों से चिपक कर कुल्हाड़ों के वार को अपनी पीठ पर सहेंगे। गोपेश्वर के समीप के जंगल में अंगू के पेड़ काटने का आदेश कम्पनी को मिला। कम्पनी ने उन्हें काटने की कोशिश की लेकिन वहां के लोगों ने ढोल बाजे-गाजे बजाकर वननीति में परिवर्तन के लोकगीत गाकर ऐसा वातावरण बना दिया कि तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट को बेतार के तार से यह खबर लखनऊ भेजनी पड़ी कि कम्पनी द्वारा पेड़ काटे जाने की हालत में यहां की स्थिति हाथ के बाहर भी हो सकती है। राजधानी ने तब साइमन को दिए गए आदेश स्थगित किये फिर मई '७३ को सरकार ने कम्पनी के ठेके का स्थान गोपेश्वर से बदल कर केदारनाथ वनप्रभाग में फाटा रेंज के जंगल में कर दिया। केदारनाथ मार्ग पर फाटा-रामपुर के १० हजार फुट पर स्थित इस जंगल में साइमन के अतिरिक्त देहरादून की एक और कम्पनी [illegible], जिनकी मियाद ३१ दिसम्बर तक थी, अंगू के पेड़ काट कर ले जाने की एक और असफल कोशिश की।

इस जंगल की छाया में बसे गांवों को गत मई में खबर लगी थी कि सरकार ने गोपेश्वर के स्थानीय लोगों का विरोधी रुख देख कर अब कम्पनी को रामपुर के पास जंगल से पेड़ काटने का आदेश दिया है। उधर २ मई को दशोली ग्रामस्वराज्य संघ में वनवासियों की एक बैठक हुई जिसमें विभिन्न ग्रामसभाओं के प्रधानों, स्थानीय लोगों, राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों आदि ने भाग लिया था। बैठक में तय किया कि कम्पनी को जिस नये स्थान पर पेड़ काटने के आदेश मिले हैं वहां के निवासियों को इसकी सूचना देनी चाहिए। ३ मई की सुबह गोपेश्वर से एक पदयात्री टोली इसकी सूचना देने, गोपेश्वर में कम्पनी द्वारा पेड़ काटने की असमर्थता बताने तथा वननीति में परिवर्तन के लिए जनशिक्षण करते ऊखीमठ रवाना हुई। टोली में सुन्दरलाल बहुगुणा, उत्तराखण्ड सर्वोदय मंडल के वर्तमान संयोजक आनन्दसिंह बिष्ट आदि के अलावा एक १४ →

अंगू का पेड़ जो वननीति की जड़ें हिला रहा है

७ हजार से ९ हजार फुट की ऊंचाई वाले जंगलों में मिलने वाला अंगू का पेड़ (ऐश) अपनी पूरी उम्र में कोई १०० फुट ऊंचा जाता है। और पूरी उम्र है १०० वर्ष। वनवासी इसकी लकड़ी का उपयोग परम्परा से हल का जुआ बनाने में करते रहे हैं। पीढ़ियों से कृषियन्त्रों के लिए इसके चुने जाने का कारण इसकी विशिष्ट लकड़ी है। पहाड़ों में ठण्ड के मौसम में चटक धूप खिलती है। खेत में हल खींच रहे बैल के कंधों पर ऐसी लकड़ी का जुआ रखा जा सकता है जो मौसम के अनुसार न गरम होता हो न ठण्डा। बैल के कंधों पर वजन भी बहुत कम पड़ना चाहिए, क्योंकि अधिक मेहनत में सांस चढ़ जाती है और पहाड़ों पर ऊंचाई में सहज ही सांस फूल जाती है। अंगू में ये सब गुण हैं। हल्केपन के साथ यह लकड़ी मजबूत भी खूब है और न आसानी से गरम होती है न आसानी से ठंडी। इन्हीं गुणों के कारण कृषियन्त्रों के अलावा अंगू की लकड़ी का खेलकूद का सामान बनाने में भी उपयोग होने लगा। इससे बैडमिंटन, टेनिस, आदि के बल्ले बनाये जाते हैं। गांव वाले इस पेड़ का खेलकूद में इस्तेमाल बन्द नहीं करना चाहते। उनकी केवल इतनी ही मांग है कि वन के सबसे निकट रहने के कारण उन्हें उनकी जरूरत की लकड़ी मिल जानी चाहिए। बची लकड़ी का खेलकूद का सामान बने तो उन्हें एतराज नहीं है। लेकिन वे कहते हैं कि सरकार अपनी नीति तो स्पष्ट कर दे। क्या वह देश में केवल खेलकूद का सामान बनाना चाहती है या खेती बाड़ी की ओर भी उतनी ही गंभीरता से ध्यान देना चाहती है। अंगू की विशेषता देखते हुए हुए इन गांव वालों का कहना है कि मैदान के किसानों को भी अंगू की लकड़ी से जुआ बनाना शुरू करना चाहिए।

→

वर्षीय किशोर भी शामिल था। ५ मई को यह टोली रास्ते में पड़ने वाले सभी गावों मे इस घटना की जानकारी देते हुए उखीमठ पहुची। वहा टोली के यात्रियो ने क्षेत्रसमिति के सदस्यो की एक बैठक मे अपनी बात को रखा। समिति की बैठक ने पेड का स्थान बदल कर उखीमठ रेंज में रखने का विरोध किया और तय किया कि अगू के पेड गाव वालो को भी मिल सकें इसके लिए आदोलन जारी रहेगा। १६ जून को इस नये जगल मे वनविभाग ने कम्पनी द्वारा काटे जाने वाले पेडो पर छापे लगा दिये। छापे लगाने की खबर से लोगो मे चिन्ता फैली। केदारनाथ मार्ग पर अन्तिम बस पडाव सोनप्रयाग पर २० जून को एक बैठक हुई। बैठक ने शासन से निवेदन किया कि सन् १६११ का वन बन्दोबस्त तुरन्त बदला जाय, गाव वालो को कृषियंत्र बनाने अगू का पेड पूर्ववत दिया जाए तथा इस क्षेत्र मे लोगो की क्षमता देख कर वनाधारित उद्योग धधे खोले जायें तथा साइमन को इस जगह दिये गये पेड़ निरस्त करें नही तो वनवासी पेड काटे जाने की स्थिति मे उनसे चिपक कर उन्हे बचायेंगे। ज्ञापन जिला मजिस्ट्रेट को भेजा गया तथा उनसे २७ जून तक इस सिलसिले में जवाब की उम्मीद की गयी। इन गाव वालो को शासन जवाब देने लायक तो छोडिये, पत्र की पहुच की सूचना देने लायक भी नही मान पाया। रोज मिलते रहने वाले ज्ञापनो के बड़े ढेर मे वनवासियों का ज्ञापन भी अनुत्तरित रखा गया।

२७ जून को शासन से कोई जवाब न मिलने पर फाटा गाव मे भारी वर्षा के बाद भी छाते और ऊनी बरसाती दोरखा ओढे ग्रामीणो ने वननीति मे परिवर्तन की माग लेकर फिर एक प्रदर्शन किया।

इस तरह २ मई से २७ जून तक प्रदर्शन आदि होते रहे, लोग जगह-जगह से शासन से वननीति मे वनवासियों को शामिल करने के अनुरोध करते रहे। किसी भी ज्ञापन का कोई उत्तर नही आया। फिर सितम्बर तक फाटा, रामपुर मे बिल्कुल चुप्पी रही। इस चुप्पी के दौरान यहा कनिष्ठ उपप्रमुख केदारसिंह रावत, जिन्होंने इस क्षेत्र मे 'तीर्थयात्रा मजदूर सहकारी संघ' का निर्माण किया था, ने गावो मे

श्री शिशुपाल सिंह, श्री चण्डी प्रसाद भट्ट व निगरानी दल के १७ वर्षीय अध्यक्ष

अपने साथियो के साथ घूमकर जगल पर निगरानी करने वालो का एक दल बना लिया था।

२६ सितम्बर को साइमन वाले आरा-कुल्हाडी आदि लेकर फाटा बस स्टैंड उतरे तो लोगो ने उन्हे पहचान लिया। बडासू गाव पर, जो जगल के ठीक नीचे पडता है, लोग एकत्र होने लगे। हलचल देख साइमन कम्पनी वाले ऊपर नही गये, वापस लौट गये। जनवरी '७३ मे साइमन को उत्तराखण्ड से अगू के पेड काटने की अनुमति मिल गई थी। वे उन पेडो को काट कर देश और विदेश की खपत के लिए बैडमिंटन और टेनिस के रैकेट, हॉकी की स्टिक और क्रिकेट के बल्ले बनाते हैं। इधर गाव वाले इन पेडो को पीढ़ियो से हल के जुए बनाने के काम मे लाते थे। गाव वालो का इन पेडों को लेकर यह सघर्ष इस बात के लिए था कि इस देश मे कृषि के यंत्रो की कीमत पर खेल, खिलौने तैयार किये जायेंगे क्या? गाव वाले इस मे किसी सकीर्ण क्षेत्रीयता या मैदान बनाम पहाडी जैसे संघर्ष मे नही पडे थे। उनका कहना था कि अंगू के सारे पेड़ो से जुआ नही बनाना है। हम अंगू जैसे कीमती पेड़ की लकड़ी को बर्बाद नहीं होने देना चाहते। लेकिन जब से सरकार ने कृषि यन्त्रो के बजाय इस लकडी को खेलकूद का सामान बनने के लिए देना शुरू किया है तब से इसकी दोहरी बर्बादी हो रही है। गाव वाले अभी भी यथा सभव अंगू से ही जुआ बनाते हैं। नीति उनके पक्ष मे नही होने के कारण अब वे लोग चोरी छिपे जगल मे जा कर अंगू को काटते हैं। चोरी की हडबडाहट मे काटा गया पूरा पेड तो वे उठा नही पाते, उसके कुछ हिस्से लेकर भागते हैं। इस तरह पेड तो पूरा कट जाता है पर जुआ एक या दो ही बन पाते हैं। पूरे पेड कटने पर १०-१५ तक जुए बनने चाहिए। इस तरह बाकी कीमती लकडी बर्बाद हो जाती है। प्राईवेट कम्पनी वाले भी इस पेड पर अत्याचार करते है। वनविभाग से उन्हे जितने पेड काटने की अनुमति मिलती हैं प्राय उससे ज्यादे ही काटे जाते हैं। इसमें मजबूरी भी है और भ्रष्टाचार भी। कई बार काटा गया पेड अपनी ऊचाई के कारण (६० से १०० फुट) गिर कर आसपास के कम उम्र के पेडो मे अटक जाता है। नम्बर छापे गये उस पेड को पाने के लिए बिना छापे गये पेड भी काटने पड जाते हैं। चाहे गाव वाले हो चाहे व्यापारी, वनविभाग से विमुख नीति के कारण अगू का पेड दोनो का ही शिकार हो रहा है। इस पेड की सख्या घने जगलो मे भी लगातार कम होती जा रही है।

१४ दिसम्बर '७३ को अगू के पेड को लेकर गाव वाला और कम्पनी के बीच आख-मिचौली का खेल फिर शुरू हुआ लेकिन इस बार स्थिति कुछ बदली थी। इलाहाबाद की प्राईवेट साइमन कम्पनी के साथ देहरादून की सरकारी कम्पनी स्पोर्टस गुड्स के ठेकेदार भी फाटा गाव आये। इन लोगों ने गाव वालो और सर्वोदय कार्यकर्त्ताओ की शैली मे ही पदयात्रा निकाली। जगह-जगह लोगो को समझाया कि 'गोपेश्वर के सर्वोदय-कार्यकर्त्ता रिश्वत ले चुके हैं और अब यहा चिपको आन्दोलन का हल्ला कर रहे हैं। रामपुर मे भी जो लोग चिपको आदोलन का हल्ला कर रहे हैं वे भी हमसे पैसा खाना चाहते हैं। अपने काम करो, चिपको आदोलन छोड दो।' लोगो ने जगह-जगह उनसे कहा कि हमे जुआ नही मिल रहा, इस पेड में हमारी खेती, हमारी बैल, हमारा पेट जुड़ा हुआ है। हम इसे कटने नही देंगे।

केदार सिंह रावत ने एक पत्र द्वारा पहले अपने साथियो की सहायता से साइमन और स्पोर्टस गुड्स कम्पनी के आने की खबर गांव-गाव पहुचाई। २२ दिसम्बर को फाटा में त्रिजुगी नारायण (केदारनाथ मार्ग पर भारत तिब्बत सीमा पर यह अन्तिम गांव है) राम-

→

पुर, रामपुर, सेरसी, बड़ासूं, जाखू, रविग्राम, मैखंडा आदि गावों के ग्रामप्रधान तथा अन्य लोग, क्षेत्र समिति के सदस्य आदि की एक बैठक हुई। बैठक ने शासन से ५ मई, २० जून २७ जून की मांगों को पूरा करने का अनुरोध किया। कहा कि अंगू के पेड़ नहीं कटवाये जायें। अन्यथा हमें अपनी पीठ पर कुल्हाड़ी की वार सहना होगा। इस बैठक में इन गांव वालों ने कम्पनियों के प्रतिनिधि, सर्व श्री सक्सेना, श्रीवास्तव और ठेकेदार नौटियाल को भी अपना पक्ष गांव वालों के सामने रखने आमन्त्रित किया था। वे आये भी उन्होंने तो पेड़ काट कर सीधे ले जाने की ही बात कही। उनका कहना था कि "हम तो इन पेड़ों की कीमत सरकार को दे चुके हैं। कौन आता है पेड़ से चिपकने, हम उससे निपट लेंगे। गांव के लोग आरंभ से ही मन से उनकी उत्तेजना को पीते रहे। फिर बहस चली गांवों में वनाधारित उद्योग धन्धे लगाने की। कम्पनी के लोगों ने इसे बेमतलब करार दिया। उनका कहना था कि एक-एक मशीन २०,०० रुपये की आती है। तुम लोग खरीद सकते हो? जानकार, दिमाग वाला विशेषज्ञ चाहिए, ला सकते हो? कौन करेगा यह सब तुम लोगों में से, और कर सकते हो तो अब तक उद्योग लगा क्यों नहीं लिये?"

वन-उद्योग गांव में नहीं लगने के कई कारण हैं। जंगल की छाया में ही बसे इन गांवों को जंगल का कच्चा माल व्यापार के लिए तो छोड़िये, कृषि तक के लिए नहीं मिल पाता। बैठक में पेड़ों से चिपकने का प्रस्ताव कम्पनी के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में ही पास हुआ।

बैठक खत्म हुई, लोग घर लौट रहे थे कि सभी ग्राम प्रधानों को खबर मिली की शाम को गुप्तकाशी में वनविभाग की ओर से एक चलचित्र का आयोजन किया गया है। सबको आना चाहिए। बैठक में सभी लोग तथा गांवों के अधिकांश आदमी १२-१४ किलोमीटर पैदल चल कर रात गुप्तकाशी आये। वहां भीड़ पहुंची तो मालूम हुआ कि फिल्म को स्थगित कर दिया गया है। कारण बताया गया कि फिल्म की गाड़ी नहीं आयी है और गाड़ी भी आ जाती तो गुप्तकाशी में

सत्तर वर्षीय श्रीमती श्यामा देवी

बिजली फेल हो गई थी। गांव वाले रात को गुप्तकाशी में ही रुके। सुबह जल्दी अपने अपने घरों को रवाना हुए। वापस लौटते वक्त ये सभी रास्ते में चिपको आन्दोलन के नारे लगाते रहे। इन लोगों को लेकर जब बस शाम को रामपुर पहुंची तो उत्साहपूर्वक लग रहे नारे एकदम खामोश हो गये। बस अड्डे पर ही गांव की औरतों से खबर लगी कि जंगल में कुछ लोग आरा आदि ले कर ऊपर गये हैं। खलबली मच गई एक बार फिर से। रात को जंगल के आसपास के हर गांवों में, शायद ही कोई घर बचा हो, जो बैठकघर में नहीं बदल गया हो। जगह-जगह लोग भारी ठंड के बावजूद (रामपुर में तापमान शून्य से २ डिग्री नीचे था) आग के चारों तरफ बैठ कर चिपको आन्दोलन पर बात करते रहे, कल की योजना बनाते रहे। कुछ को शक था कि लोगों की निगाह से बचाकर कम्पनी के प्रतिनिधियों को जंगल भेजने के लिए झूठमूठ इस फिल्म की खबर दी गई थी।

२४ दिसम्बर को सुबह, रामपुर से ७० लोगों का एक दल ढोल नगाड़े ले कर जंगल चढ़ने लगा। गांव से करीब १२०० फुट और चढ़ने पर जंगल का सीलमर्क आया। सील (सीलन) हिस्से में ही अंगू पेड़ पाया जाता है। जंगल का यह हिस्सा हमेशा पहाड़ की छाया में रहता है, धूप नहीं आती। घने पेड़ों से घिरे इस शीतल हिस्से में ढोल नगाड़े बजाते हुए ये ७० लोग आखिर अंगू के स्थान पर पहुंच ही गये।

५ पेड़ काटे जा चुके थे, एक के तने पर कुल्हाड़ी के कई वार हो चुके थे पर अभी वह पूरा कट नहीं पाया था। ढोल नगाड़ों का हल्ला सुन कर ठेकेदार अपने औजारों, मजदूरों समेत इस जगह से भाग चुके थे। उन्होंने घबरा कर जंगल से उतरने के लिए दूसरा रास्ता चुन लिया था। गांव वालों ने पाया कि बिना छापे गये पेड़ों को भी काटने की कोशिश की गयी है। केदार सिंह रावत का कहना है कि हमें कटे पेड़ देख कर बहुत [illegible]ख हुआ लेकिन धीरज इसलिए बना रहा कि कम्पनी वाले कटे हुए पेड़ों को अपने साथ नहीं ले जा पाये। हम सब बहुत देर तक कटे पेड़ों को घेरे वननीति में परिवर्तन के नारे लगाते रहे। फिर वहीं पर एक सभा हुई जिसमें तय किया कि बारी पद्धति से (हर परिवार से एक बालिग सदस्य) इन काटे गये पेड़ों की चौकसी की जायेगी। रामपुर और जंगल के इस स्थान के बीच पड़ने वाले तरसाली गांव को जंगल में होने वाली किसी भी हलचल की खबर रामपुर में देने के लिए नियुक्त किया गया। फिर सबने ढोल नगाड़े के साथ वनों को अंधाधुंध कटाई से बचाने, वनों को काटने से भूमिस्खलन बाढ़, पानी नहीं मिलना, आदि वातावरण सम्बन्धी खतरों का वर्णन करने वाला लोक-गीत गाया। दसोली ग्राम स्वराज्य संघ के शिशुपाल सिंह का कहना है कि धोखे से काट लिये गये इन पांच पेड़ों की हम चिपक कर रक्षा नहीं कर पाये इसका हमें बहुत गहरा सदमा पहुंचा। फिर आगे के लिए निगरानी रखने के अलावा हम लोगों ने जगह-जगह लोगों को पेड़ों से चिपक कर उनको कटने से बचाने का प्रशिक्षण भी दिया। ठेकेदार और मजदूर आदि उस समय मिल जाते तो आप लोग क्या करते, इसके जवाब में उन्होंने कहा कि हमसे भयभीत होकर वे क्यों भागे यह समझ नहीं आता। हमारा ठेकेदार से न मजदूर से ही कोई विरोध था। हम तो एक ऐसी वननीति की मांग कर रहे हैं जिसमें वन के

(शेष पृष्ठ १४ पर)

धूलिया में आदिवासी आंदोलन की उपलब्धियां

—सन्तोष भारतीय व किशोर शाह

'भूदान-यज्ञ' के १० दिसम्बर के अंक में हमने धूलिया में चल रहे आदिवासी आन्दोलन के बारे में अंग्रेज पत्रकार श्री बेन की की रपट प्रकाशित की थी। हरित क्रांति विपन्नता की नींव पर सम्पन्नता का जो नया वर्ग धूलिया में खड़ा कर रही है और वहां खड़ी फसलों की आदिवासियों द्वारा लूट की आशंका से भूमिवानों ने सशस्त्र बचाव सेना की जो योजना बनाई उसका विवरण अंग्रेज पत्रकार ने दिया था। इस अंक में हम सर्वोदय क्षेत्र के दो युवा पत्रकारों, श्री सन्तोष भारतीय व किशोर शाह, द्वारा धूलिया के आन्दोलन का सर्वोदय की दृष्टि से विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं। दोनों ने हाल ही में धूलिया का दौरा किया था। —सं०

धूलिया जिले की उपजाऊ शहादा और तलोदा तहसील में फसल संरक्षण के नाम पर एक समूह विशेष की संगठित सशस्त्र सेना बनाने की योजना बनी। जब एक पर्चे के माध्यम से देश को इसकी जानकारी मिली तो समाचार पत्रों में और महाराष्ट्र विधानसभा में भी इसका हंगामा मचा। इससे फलस्वरूप इस सेना को हथियार के लाइसेंस देने पर रोक लगाई गई और महाराष्ट्र सरकार को स्थिति की जांच के लिए एक वरिष्ठ अधिकारी की नियुक्ति करनी पड़ी। सनसनी और चर्चा ज्यादातर इस परिस्थिति को लेकर है कि इलाके के भूखे नंगे और भोले-भाले आदिवासियों का बेहद शोषण हो रहा है। इस समय वहां पर बाहर ने कुछ युवकों के काम से जागृति पैदा हुई है और इस जागृति को कुचलने के लिए इस सेना (जो पुरुषोत्तम सेना के नाम से प्रसिद्ध हो गई) की योजना बनी है। आर्थिक रूप से इन तहसीलों के आदिवासियों की परिस्थिति देश के अन्य ग्रामीण क्षेत्रों से अलग नहीं है—उदाहरण स्वरूप उत्तर बिहार के भूमिहीन मजदूरों का भुखमरी और नंगापन ज्यादा गहरा है। इस आंदोलन के प्रारंभ के पहले शहादा में मजदूरी की जो दर थी, उत्तर-बिहार में खेतीहर मजदूरों को आज भी उस से कम मजदूरी मिलती है। यहां के ज्यादातर आदिवासी भूमिहीन भी नहीं है। अनेक गांवों में आदिवासियों के पास ही अधिक जमीन है। यहां की सामाजिक चेतना भी अन्य आदिवासी इलाकों से कम नहीं है। आज की सामान्य ग्रामीण सामाजिक चेतना से कुछ ज्यादा ही है। रस्म-रिवाज और नैतिकता का मापदंड हिन्दू समाज से भिन्न भले ही हो, लेकिन जहां तक सामाजिक न्याय की आकांक्षा और आत्म-सम्मान की तलाश, व्यापक दुनिया से संपर्क, और उसके साथ कदम मिला कर चलने की इच्छा का सवाल है, यह क्षेत्र कतई इस देश के मुख्य ग्रामीण समाज से पीछे नहीं है। अन्य आदिवासी इलाकों की तरह यह देश के मुख्य प्रवाह से कटा हुआ हुआ भी नहीं है। सतपुड़ा की तराई का यह इलाका है। भुसावल से सूरत जाने वाली रेल के किनारे है और शिरपुर से भडोच जाने वाली सड़क शहादा से गुजरती है। घरों में ट्रांजिस्टर कोई असाधारण बात नहीं है, इस सामाजिक चेतना का श्रेय केवल पिछले दो साल से चल रहे आंदोलन को नहीं है। आन्दोलन ने इस बढ़ती हुई चेतना को रूप और गति जरूर दी है। शहादा, तलोदा और अन्य ग्रामीण इलाकों में एक महत्वपूर्ण अन्तर यह अवश्य है कि यहां पीड़ित वर्ग में किसी राजनैतिक दल का प्रवेश अब तक नहीं हुआ है।

अतः शहादा तलोदा की परिस्थिति का विश्लेषण इस इलाके का विशेष न मानकर करना अधिक लाभदायी होगा। परिस्थिति को सामान्य मानते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि आज देश में चल रहे संक्रमणकाल काल का यह एक प्रकट लक्षण है। संक्रमण के बाद जो स्थितियां निर्मित हो सकती हैं उनकी संभावनाएं समाज में पहले से ही दीखने लगती हैं। इन संभावनाओं में से कुछ संभावनाएं देश की परिस्थिति और मन:स्थिति से बिल्कुल प्रतिकूल रहती हैं और समाज उनको तुरन्त अस्वीकार कर देता है। कुछ संभावनाएं ऐसी होती हैं जो एक हलचल सी पैदा कर देती है और समाज के सम्बन्धों का समीकरण बदल देती हैं। कुछ संभावनाओं का असर बाहरी हलचल के रूप में विशेष नहीं होता है। लेकिन समाज के अन्त:करण को प्रभावित कर देती हैं और संक्रमणकालीन परिस्थिति में उस संभावना की धार से समाज का पूरा प्रवाह ही एक नया मोड़ ले लेता है। इन अनेक जाने-अनजाने प्रयोगों से समाज आगे बढ़ता रहता है, कभी धीरे-धीरे कभी तेजी से, कभी झटके के साथ। इतिहास, शहादा-तलोदा में आदिवासियों के लिए हो रहे अच्छे काम को या पुरुषोत्तम सेना की सफलता-असफलता को उतना महत्व नहीं देगा जितना शहादा-तलोदा में जो संभावनाएं प्रकट होंगी उनको देगा। बारडोली में सरदार वल्लभभाई पटेल ने अच्छा संगठन खड़ा किया था, लेकिन वह संगठन के नाते आज प्रसिद्ध नहीं है, प्रसिद्ध है नमक सत्याग्रह के गर्भ स्थान के नाते। क्योंकि नमक सत्याग्रह ने उस समय के समाज के परिवर्तन के लिए जन-शक्ति को एक बहुत उपयुक्त साधन बनाया था। उसी तरह से नक्सलवाड़ी ने भी मजदूरी और जमीन का अधिकार प्राप्त करवाने की एक संभावना प्रकट की, जिसने कुछ समय तक देश में हलचल मचा दी। शहादा और तलोदा समाज के सामने कौन सी संभावनाएं प्रकट कर रहे हैं—या कर सकेंगे ?

आज के समाज में जो संभावनाएं प्रकट हो सकती हैं उनको पहचान लेने से शहादा-तलोदा अपर भूमिका अदा कर सकते हैं उसे समझने में सहूलियत होगी। आज विश्व ऐसे चौराहे पर खड़ा है जहां से कुछ मार्ग तो जाने-पहचाने निकलते हैं, लेकिन वह ऐसे मार्ग हैं जिनकी संभावना अतीत के लिए असीम थी, उन्होंने सामाजिक अन्तर विरोधों को सुलझाते हुए आगे बढ़ने में बहुत सहायता दी, लेकिन आज की परिस्थिति में उन संभावनाओं की सीमा आ चुकी है। कुछ ऐसे मार्ग हैं जिनकी उपलब्धियों के बारे में आज एक भ्रम बना हुआ है—एक समय इन मार्गों से →

किशोर शाह

→

बड़ी उपलब्धियां हुई, लेकिन आज नहीं हो सकती हैं। इसका ज्ञान समाज में अब तक व्याप्त नहीं हुआ है। कुछ ऐसे मार्ग हैं जिनकी सम्भावनाएं आज की परिस्थिति में असीम हैं, लेकिन उनके अपरिचित होने से आज मानस उस मार्ग को स्वीकार नहीं कर पा रहा है और न उस मार्ग पर चलने की हिम्मत बटोर पा रहा है। हर संक्रमणकाल में साहसी और दूरदर्शी क्रान्तिकारी निकलते हैं जो इन मार्गों पर चल कर समाज का भय दूर करते हैं।

शहादा-तलोदा के आज के सामाजिक सन्तुलन को देखने समझने पर वहां की आगे की दिशा के बारे में एक अच्छी झलक मिलती है। इस सन्तुलन को तय करने में तीन तबकों का विशेष महत्त्व है—आदिवासी, जमीनदार और सरकार। आदिवासी समाज के संचालन की डोर आज आंदोलन के हाथ में है। उस आन्दोलन के तीन मुख्य घटक हैं—आदिवासी लोग, उनका लोकनायक अम्बर सिंह और पूरा समय देने वाले कार्यकर्ता—जिनमें से कुछ तो वहां के हैं और कुछ पूना, बम्बई, धनगांव (महाराष्ट्र) आदि शहरों से आये हुए हैं। आन्दोलन का आधार है अन्याय, अत्याचार और शोषण का प्रतिकार और आदिवासी समाज का उद्धार। अम्बर सिंह लगभग ३५-४० वर्ष का शहादा-तलोदा का ही निवासी आदिवासी युवक है। स्वभाव से शान्त और साहसी, अम्बर सिंह १९६० से ही सामाजिक कार्य में लग गया था। करीब १० साल तक उसने शहादा तलोदा से लगे पहाड़ी इलाके, धड़गांव में सर्वोदय संस्थाओं के साथ काम किया। एक समय वह सतपुड़ा सर्वोदय मण्डल का मन्त्री भी रह चुका है। अपने ही गांव, पडालडा में अत्याचार के समाचार उसको वापस शहादा खींच लाये। शहादा के गांव-गांव में घूम-घूमकर भजन और वाणी के माध्यम से उसने लोगों का दिल जीत लिया। लोगों के झगड़े सुलझाने का और शराब की घातक आदत से छुड़वाने का अच्छा कार्य वहां होने लगा। २ मई १९७१ को एक भील की हत्या हुयी तब उन्होंने सर्वोदय के लोगों को मदद के लिए बुलाया। महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल के एक वरिष्ठ साथी, गोविन्दराव शिंदे और कुछ अन्य साथी एक सप्ताह तक वहां घूमे और उनको लगा कि वहां काम करना चाहिए। धीरे-धीरे ३० जनवरी १९७२ से जमीन की समस्या लेकर एक आन्दोलन खड़ा हो गया। इस आन्दोलन ने आदिवासियों को एक शक्तिशाली व्यक्ति अम्बर सिंह के रूप में दिया है। अम्बर सिंह आज एक कुशल लोक-नायक की भूमिका अदा कर रहा है। सभा में आवाज की बुलन्दी, भाषण देने की शैली और गांवों में सहजता से लोगों के साथ मिल जाने के गुणों से उसकी लोकप्रियता बढ़ती जा रही है और लोगों में साहसिकता बढ़ाने का काम उसके लिए आसान हो जाता है। अपने आदमी को पुलिस के डर से नहीं दबने हुए और आमसभा में पुलिस और जमीनदारों को चुनौती देते हुए देख कर आदिवासियों को अपना खोया हुआ आत्मविश्वास और शक्ति का भान वापस मिलता है।

सन्तोष भारतीय

अम्बरसिंह के सहयोग में पूरा समय देने वाले १०-१२ कार्यकर्ता हैं। इनमें से ५-६ युवक बम्बई, पूना आदि शहरों को छोड़कर समाज परिवर्तन की धुन में गांव का कठिन जीवन मस्ती से बिता रहे हैं। ३० जनवरी '७२ से इन युवकों का आगमन प्रारम्भ हुआ। मई ७१ और जनवरी ७२ के बीच में गोविन्दराव शिंदे और अन्य सर्वोदय साथियों ने करीब ७० गांवों का सर्वेक्षण किया। जिससे वे इस नतीजे पर पहुंचे कि जमीन की समस्या के बारे में कुछ करना चाहिए। सर्वेक्षण के दरम्यान यह समझ में आया कि आदिवासी पिछले सालों में अपनी बहुत सारी जमीन पर से मालकियत का अधिकार खो बैठे हैं। ब्रिटिश राज के समय आदिवासी की सुरक्षा के लिए 'जुनीशर्त' नाम से प्रसिद्ध एक कानून था जो आदिवासी की जमीन की बिक्री पर रोक लगाता था। स्वराज के बाद जमीनदारों ने अपने स्वार्थ के लिए इस कानून को रद्द करवाया। इसके बाद जब आदिवासियों को कर्ज के लिए पैसे की जरूरत पड़ी तो जमीनदारों ने उनकी जमीन अपने नाम पर कर ली। जमीनदार कहते हैं कि जमीन के ट्रांसफर के बारे में आदिवासी लोगों को मालूम था और आन्दोलनकारियों का कहना है कि आदिवासियों के अनजाने ही जमीन का ट्रांसफर हो गया। वे तो समझते थे कि कर्ज मिल रहा है। कभी-कभी कर्ज देते समय जमीन गिरवी रखी जाती थी और दो से दस साल का करार रहता था। करार की अवधि में जमीन वापस न मिलने पर जमीन देनदार के नाम पर ट्रांसफर होती गई। और आन्दोलनकारियों का दावा है कि कुछ जमीन सीधे-सादे ठगी गई—जमीन की अदला बदली में भी जिस जमीन की अदला-बदली करनी थी वह ना की ही नहीं, बल्कि कहीं-कहीं तो साफ बेदखल कर दिया गया।

खैर, सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने इस जमीन का मसला हल करने के लिए पहल करने का सोचा और ३० जनवरी ७२ के दिन इलाके की सब पार्टियों की एक बैठक बुलाई। बम्बई और पूना से पत्रकार और कुछ युवक भी आये। इन युवकों को वहां पर काम करने के लिए रुक जाने का आह्वान किया। और चार युवक उसी समय रुक गये। कुछ युवा

→

साथी पत्रिका और अखबारों की रिपोर्टिंग या अन्य माध्यम से आकर्षित होकर बाद में इस आंदोलन के साथ जुड़ गये।

आंदोलन में जुड़ने के लिए तीन शर्तें हैं—एक : किसी पार्टी के साथ जुड़े न हों, दो : सब मिल कर समस्या का हल करेंगे, तीन : अहिंसक साधनों का उपयोग करेंगे।

स्थानीय साथियों के एक शिविर के बाद ८ फरवरी ७२ से ही सलसाडी गांव से कार्य प्रारंभ हो गया। बातचीत के बाद उस गांव के जमींदार, आदिवासियों की जमीन वापस देने के लिए तैयार हो गये थे। निर्णयों को कागज पर लिखा ही जा रहा था कि पुलिस की जीप पहुंची और आदिवासियों को मारने लगी तथा अम्बरसिंह सहित सब कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। जेल में तो ८ ही घंटा रहना पड़ा लेकिन इससे अखबारों में अच्छी प्रसिद्धि मिल गई और आन्दोलन में भी तेजी आई। आंदोलनकारियों का दावा है कि उन्होंने अब तक ३००० से ४००० एकड़ जमीन पर वापस आदिवासियों का कब्जा दिलवाया है। जमीन के अलावा मजदूरी भी पहले से डेढ़ से दोगुनी हो गई है, बैंकों से कर्ज दिलवाने में मदद की है और गांवों को शराब और अदालत से मुक्ति का कार्यक्रम भी उठाया है। महिलाओं में जो जागृति आई है वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस आंदोलन में कार्यकर्ता का मुख्य दायित्व रहा है लोगों को मोर्चा, सत्याग्रह, सभा, शिविर आदि के लिए इकट्ठा करना, लोगों की मुसीबतों को सुलझाने के लिए उनके और सरकार-जमींनदार के बीच की कड़ी बनना; और आखिरी लेकिन महत्वपूर्ण कार्य—दिशा निर्देश करने का। इनके दिशा निर्देश का प्रभाव लोकनायक पर भी पड़ता है।

आदिवासी समाज का मुख्य काम जगह-जगह पर इकाइयां बनाना, जन शक्ति के प्रदर्शन करना, अपने शिक्षण के लिए मोर्चा, सभा, शिविर के समय इकट्ठा होना, और आन्दोलन चलाने के लिए चंदा इकट्ठा करना है। गांवों में तीन प्रकार की इकाइयां बनायी जाती हैं—श्रमिक संगठन, तरुण मंडल और महिला मंडल। आंदोलन चलाने के कुल खर्च में से ६० प्रतिशत बम्बई—पूना के मित्रों से मिलता है और ४० प्रतिशत आदिवासी इकट्ठा कर लेते हैं।

इस पूरे चित्र से यह ख्याल आयेगा कि दिशा-निर्देशन और उसके माध्यम से जो लोकशिक्षण होता है वह दूरगामी महत्व रखता है। दिशा-निर्देशन का एक महत्वपूर्ण साधन है शब्द जो भाषण, गोष्ठी, शिविर, साहित्य, गाने वगैरह के रूप में प्रयुक्त होता है। शहादा-तलोदा में नये समाज का कोई चित्र प्रस्तुत करने में इन साधनों का उपयोग या तो नहीं ही किया जाता है और जब किया जाता है तो नये समाज के चित्र को गौण मानकर इन साधनों का उपयोग किया जाता है। शब्द-शक्ति के उपयोग के समय मुख्य जोर रहता है आज की कठिनाइयों को हल करने पर। जमीन की आवश्यकता है इसलिए जमीन मिलनी चाहिए, रोटी, कपड़ा मकान आदि की व्यवस्था करने में दिक्कत आती है इसलिए मजदूरी बढ़नी चाहिए, आदि-आदि। इन आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए नया समाज खड़ा करने की प्रक्रिया पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है। आवश्यकता की पूर्ति करने के तरीके भी परंपरागत हैं और कोई नई सामाजिक व्यवस्था कायम करने में साधक होने के बजाय इस देश की चल रही व्यवस्था को ही मजबूत करते हैं। शहादा-तलोदा के सीमित संदर्भ में जरूर अन्तर आता दिखाई देता है। जमींनदार समाज के सामने, मांगें प्रस्तुत करने का काम आंदोलन का एक मुख्य कार्यक्रम है। इन मांगों पर फिर बातचीत होती है जिसके लिए आदिवासी और जमींनदार की शक्तियां आमने-सामने आती हैं। दोनों की संगठित शक्तियां और कानून ही आखिरी निर्णय की प्रक्रिया में प्रमुख रहते हैं। आन्दोलन का इसके अलावा किसी व्यापक संदर्भ में जमींनदार वर्ग से संपर्क नगण्य ही रहता है। समस्याओं को हल करने में सरकार के आधार का व्यापक जोर रहता है। कार्यकर्ता, आज के समाज में सरकार का जो रोल है उसको ठीक ही मानते हैं। उन्हें शिकायत इसी की है कि सरकार उस रोल को ठीक से अदा नहीं कर रही है और खुद को वे सरकारी व्यवस्था से ठीक से काम करवाने के लिए स्वयं नियुक्त पुलिस मैन जैसा मानते हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि यह आंदोलन, आदिवासी जमींनदार और सरकार के बीच के संबंध कानूनी आधार पर तथा कार्यकर्ता के सहारे ठीक करने का अच्छा प्रयत्न कर रहा है। जमीन मजदूरी के प्रश्नों को छूने के अलावा पुलिस का अत्याचार, नैतिक उत्थान, शराब और अदालत से मुक्ति और बैंक से कर्ज दिलवाने का कार्य भी आंदोलन के मार्फत हो ही रहा है।

कुमार और प्रकाश दोनों बम्बई में इंजीनियर थे। दोनों में आज के समाज के प्रति आक्रोश और आदिवासी समाज की अवस्था के प्रति करुणा है। यह विद्रोह और करुणा दोनों को, बम्बई के सुरक्षित सुख और सुविधा से मुक्ति दिलवा कर इन गांवों की धूल में घुमा रही है। वे एक नई मस्ती का अनुभव कर रहे हैं। इनकी बातों और क्षेत्र के कार्य से यही एहसास होता है कि इनके साथी-समूह की विद्रोह और करुणा भावना को क्रान्ति भावना में परिवर्तित होना अभी भी शेष है। और यही कारण है कि आन्दोलन का दिशा-निर्देशन आज की तात्कालिक समस्याओं को हल करने में व्यस्त है, पर इसके साथ-साथ नये समाज का चित्र प्रस्तुत करने में तथा उसकी रचना से कमजोर है।

आन्दोलन ने एक बड़ा काम जो यह किया है कि यहां के जमींनदारों को उनकी प्रगाढ़ निद्रा से झकझोर दिया है। वे भयभीत हो गये हैं, लेकिन घबरा नहीं गये हैं, वे परिस्थिति को वापस अपने हाथ में लेने में लगे हैं। शहादा-तलोदा में जाने ही जमींनदारों का आपस में कितना मजबूत संगठन है वह समझ में आ जाता है। वे केवल संगठित ही नहीं, चतुर भी हैं। समय की हवा पहचान कर उन्होंने अपने तौर, तरीकों और आदतों को बदल दिया है। लगता है कि बम्बई के व्यापारी और उद्योगपतियों की मजदूरों के संगठन के साथ व्यवहार करने की जो कौशलता है उसे वे अपनाने लगे हैं। उन्होंने घोड़े, मोटर-साइकिल और जीप से सज्जित सशस्त्र खानगी सेना बनाने की योजना की भूल जरूर की, लेकिन उस भूल से सबक लेकर आदिवासियों को नियंत्रण में रखने के लिए वे नये तरीके ढूंढ लें तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। अम्बरसिंह और कार्यकर्ताओं के बारे में या तो वे ईमानदारी से मानते हैं या केवल

→
प्रचार करते हैं कि ये लोग छुपे नक्सलवादी हैं और सर्वोदय के मुखौटे पहने हुए हैं।

शहादा-तलोदा के आज के इस सामाजिक चित्र से दो स्थितियों के प्रकट होने की अधिक संभावना दीखती है। एक स्थिति तो यह आ सकती है कि दोनों वर्गों के बीच में संवाद बन्द सा हो जाय, आतंक फैल जाय और नक्सलवादी से जो प्रक्रिया शुरू हुई थी उसको पुनः बल मिले। यदि पूरे देश में इस तरह की आतंक की स्थिति फैलती है तब ही शहादा-तलोदा में यह स्थिति टिक सकेगी। परन्तु यदि पूरे देश में ऐसी स्थिति फैलती है तो शायद उसका अन्त विवेकहीन अराजकतावाद होगा। पर क्योंकि यह अराजकतावाद विवेकहीन होगा इसलिए टिक नहीं सकेगा और इसका फायदा उठाके देशी या विदेशी तानाशाही पनपेगी। इस तानाशाही में से एक विशिष्ट सत्ताधारी वर्ग का भी निर्माण होगा।

आतंक की यह परिस्थिति तभी आयेगी जब आज का शासक वर्ग बेवकूफी करे और अपने दाँव-पेंच गलत ढंग से खेले। नक्सलवाद की हलचल के बाद खेल की गेंद इस शासकवर्ग के हाथ में आ गई है और शासकवर्ग ने बहुत ही कुशलता से गेंद को अपने हाथ में रखा है। व्यापक स्तर पर इस कुशलता का उदाहरण है इन्दिराजी का 'गरीबी हटाओ' का नारा और शहादा-तलोदा में इसका उदाहरण है आदिवासियों की मांगों की उपेक्षा न करना, बल्कि चुने हुए आदिवासियों को कर्ज आदि दिलवाने की पहल भी करना। ज्यादा संभावना इसी बात की है कि शासक वर्ग चालाकी से लेन-देन कर गेंद अपने हाथ में रखेगा तथा शोषण और शासन का स्वरूप बदल कर जनता की आँखों में धूल झोंकता जायेगा। यह बदला हुआ स्वरूप व्यापक स्तर पर जो होगा सो होगा लेकिन शहादा-तलोदा और देश के अन्य ग्रामीण इलाकों में इसका असर खेती में व्यापारिक मूल्य प्रवेश करवाने का होगा। जमीनदार और खेतीहर मजदूर के संबंध मिल-मालिक और मिल-मजदूर के समान हो जायेंगे और इन संबंधों को तनाव रहित बनाये रखने के लिए बीच की कड़ियों का विस्तार होगा। मजदूर संगठनों के नेता, व्यवस्थापक वर्ग और कानून के रूप में सरकारी मशीनरी—यह होगा इन कड़ियों के विस्तार का स्वरूप। ये कड़ियाँ नौकरशाही, उद्योग और खेती—तीनों जगह बल एकत्र करती हैं। तीनों शक्तियों के इकट्ठा होने से शासन-शोषण का एक नया वर्ग खड़ा हो जायेगा जिसमें पुराने शासन-शोषण वर्ग के कुछ लोग बने रहेंगे और शेष नये आयेंगे। शासन-शोषण के यह नये तरीके आज के तरीकों से ज्यादा गहरी जड़ें जमा सकते हैं। क्योंकि पुराने तरीकों को किसी भी क्षेत्र मान्यता नहीं रही है। नये तरीकों का तो मुक्ति दाता के रूप में स्वागत किया जाता है। स्थिति अपने अन्तिम छोर पर नहीं भी जाती है तब भी इस दिशा में एक नया सन्तुलन बनने की संभावना जरूर है।

यह दोनों संभावनाएं पहली आतंक से तानाशाही और दूसरी समझौता से नये शोषण शासक वर्ग के निर्माण की आज के व्यापक समाज (शहादा और तलोदा दोनों) में ज्यादा दीखती है। यह दोनों संभावनाएं शासन शोषण में संबंधों की जगह पर कोई नये संबंध का निर्माण नहीं करती है, केवल इन संबंधों के नये रूप और सन्तुलन सामने लाती है।

यदि इन दोनों में से कोई एक संभावना प्रकट होती है तो बाहर से आये हुए युवकों की समर्पण-भावना और मेहनत का पूरा लाभ समाज को नहीं मिलेगा। समाज को विरले ही ऐसे युवक मिलते हैं इसलिए इन युवकों पर बहुत बड़ा दायित्व आ जाता है। इस दायित्व को निभाने के लिए इन युवकों को संबंधों के ऐसे नये आयाम खोजने का प्रयास करना चाहिए जिससे शोषण शसन मुक्त समाज की संभावना प्रकट हो। यह खोज सरल नहीं है। अपरिचित मार्गों को टटोलना पड़ेगा और समाज की तरफ से विफल घोषित किये जाने की तैयारी करनी पड़ेगी और इससे भी ज्यादा अपने अन्दर 'हम कुछ नहीं कर रहे हैं' ऐसी भावना ▮ बचना पड़ेगा। बहुत संभव है कि नये मार्ग की तलाश में इन युवकों को अपनी आज की 'कर्ता' की भूमिका छोड़नी पड़े। ऐसे समय पर समाज का प्रहार झेलना मुश्किल बन सकता है। पर युवकों का साहस देख कर विश्वास होता है कि यदि वे खुला दिमाग रखेंगे और अपने की ऐसी खोज । लगे हुए दूसरे साथियों के अनुभव से देखते रहेंगे तो समाज को आज के अन्तर विरोध से मुक्त करवा कर एक नये मार्ग पर ले ज मे इनका बहुत ही बड़ा योगदान रहेगा।

शुल्क वृद्धि की सूचना

कागज की कीमतों और मुद्रण की दरों में हाल ही में असामान्य वृद्धि होने के कारण 'भूदान-यज्ञ' का लागत खर्च अत्यधिक बढ़ गया है। इस स्थिति में पत्र का प्रकाशन बहुत कठिन हो गया है और हम न चाहते हुए भी इस बढ़े हुए खर्चे की आंशिक पूर्ति के लिए पत्र का मूल्य बढ़ाने को विवश हो गये हैं। अतः ७ जनवरी '७४ के अंक से एक प्रति का मूल्य २५ पैसे के स्थान पर ३० पैसे तथा वार्षिक शुल्क १२ रु० के स्थान पर १५ रु० कर दिया गया है। इसी प्रकार हम सफेद कागज पर अंक का प्रकाशन भी बन्द कर रहे हैं। जनवरी के अंक से पूर्ण 'भूदान-यज्ञ' न्यूजप्रिंट पर ही प्रकाशित हुआ करेगा।

हमें आशा है कि पाठकगण हमारी विवशता को समझेंगे और मूल्य में की जा रही इस अनिवार्य वृद्धि को किसी प्रकार अन्यथा न लेते हुए पूर्ववत पत्र के प्रति अपना सौहार्द और स्नेह बनाये रखेंगे।

बापा, बापू से भी दो कदम आगे थे

—रामगोपाल त्यागी

१६ जनवरी ठक्कर बापा की जयन्ती तिथि है। मन में आज उनकी याद का उभर आना मेरे लिए बहुत स्वाभाविक है। मैं बापा के सान्निध्य में उस समय पहुंचा जब वे लगभग सत्तर वर्ष के हो चुके थे। परन्तु उस समय भी वे इतना काम करते थे कि हम सब लोग उन्हें देखकर मन ही मन लज्जित होते रहते थे। गोस्वामी तुलसीदास ने भरत की जो महिमा गायी है और उसमें आदर का जो स्तर है, उसे रामभक्त भी ऐसा कुछ मानते हैं मानो तुलसीदासजी के मन में किसी न किसी बात की हद तक भरत के प्रति राम से भी अधिक श्रद्धा थी। इसी प्रकार जिन्होंने ठक्कर बापा के साथ काम किया है उनके मन में भी कभी न कभी ऐसी प्रतीति हुई है कि बापा, बापू से भी दो कदम आगे थे। स्वयं बापू ने बापा की सत्तरवीं वर्षगांठ पर कहा था कि मैं अपना जीवन बापा की तरह समर्पित जीवन बनाना चाहता हूँ।" सरदार वल्लभभाई पटेल उन्हें 'अनमोल हीरा' और नेहरूजी उन्हें सदा ही व्यक्ति नहीं 'संस्था' कहा करते थे। भारत की संसद के जनक कहे जाने वाले दादा साहेब मावलंकर तो उन्हें सेवा के क्षेत्र में अपना गुरु ही मानते थे। दादा साहब मावलंकर पहले वकालत करते थे; बापा ने ही उनसे वकालत छुड़वाकर उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र में दीक्षित किया था। भारत के प्रथम राष्ट्रपति 'देश रत्न' और 'भारत रत्न' डा० राजेन्द्र प्रसाद तो उनके प्रति इतनी अगाध श्रद्धा रखते थे कि जब वे राष्ट्रपति चुने गये तो राजघाट पर गांधीजी की समाधि पर माला चढ़ाने के बाद सीधे हरिजन निवास में बापा के पास पहुंचे और उन्हें प्रणाम करके आशीर्वाद मांगा, "पूज्य बापा! मुझे आशीर्वाद दें कि मैं इस बड़ी जिम्मेदारी को निभा सकूं।" उस समय बापा और राजेन्द्र बाबू दोनों के नेत्र सजल हो गये। जिन्होंने भी वह दृश्य देखा है, वे उसे भूल नहीं सकते।

महात्मा गांधी ने अपने सभी रचनात्मक कार्य प्रारम्भ करते समय अन्य सहयोगियों के सिवाय बापा से भी सदा सलाह ली। यों बापा न कांग्रेस के सदस्य थे और न बापू के आश्रमवासी ही, वे तो गोखले जी द्वारा स्थापित सर्वेंट ऑफ इण्डिया सोसायटी के आजीवन सदस्य और उपाध्यक्ष थे तथा राजनीति से अलग रहकर निष्ठापूर्वक सामाजिक सेवा को ही अपना क्षेत्र मानते थे। अकाल, बाढ़, भूचाल, साम्प्रदायिक दंगे—किसी भी प्रकार की कठिन परिस्थिति में बापा बापू के शब्दों में, 'गरुड़ वेग' से दौड़ कर पहुंच जाते थे।

बापा बापू के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले से प्रेरणा लेकर बम्बई में इंजीनियर का पद छोड़ कर सर्वेण्ट्स ऑफ इण्डिया के नियमानुसार ४५ रुपये मासिक पर पैंतालीस वर्ष की अवस्था में सेवा के लिए चले गये थे। कुछ लोगों ने उस समय यह कहा था कि जो व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांश उपयोगी भाग सरकारी नौकरी में लगा चुका है वह अब यहां आकर क्या सेवा करेगा, परन्तु गोखले जी ने कहा, 'सच मेम्बर्स विल बी लस्टर आन अवर सोसायटी।' मनुष्य रूपी रत्नों के पारखी श्री गोखले के शब्दों को बापा ने अपनी सेवा, निष्ठा, प्रामाणिकता और परिश्रम से अक्षरशः सिद्ध कर दिखाया।

जैसा कि मैंने ऊपर कहा है, मैं जब उनके चरणों में पहुंचा तब वे लगभग सत्तर वर्ष के हो चुके थे। परन्तु उस उम्र में भी वे छः बजे सुबह से लेकर रात के दस और कभी-कभी ग्यारह बजे तक निरन्तर काम करते रहते थे। स्नान और भोजन के समय भी वे लोगों को बुलाकर उनसे काम-धाम की बातें करते रहते थे। दिन में कभी विश्राम नहीं लेते थे। कभी बहुत ही थक गये तो घंटा आध घंटा लेट गये किन्तु काम तब भी बन्द नहीं हुआ। आंखें बन्द करके उस समय भी या तो कोई रिपोर्ट सुनते थे या सहायक को पत्र लिखाते थे। कार्यालय का समय समाप्त हो जाने के बाद भी वे कभी ६ और कभी ७ बजे तक उठने का नाम नहीं लेते थे—हम तथाकथित नवयुवक कर्मचारियों को झुंझलाहट होती और गृहिणियों को तो इससे कष्ट ही होता था। उस समय बापा पचहत्तर वर्ष के हो चुके थे, किन्तु उनका काम घटने के बजाय बढ़ता ही जाता था। आंखों से कम दिखाई देने लगा था, किन्तु उनका काम बढ़ता जा रहा था और उनके साथ दूसरों का भी। हरिजन निवास की महिलाएं सोचने लगीं कि क्या करें? एक दिन श्रीमती पद्मा शिवम् हरिजन निवास की महिलाओं का एक शिष्ट मंडल लेकर बापा के निवास पर जा पहुंचीं। शिवम् जी पहले बापा के साथ ही रहते थे और बापा उन्हें पुत्रवत मानते थे, इसलिए श्रीमती शिवम् बापा से निस्संकोच बात कर लेती थीं। श्रीमती पद्मा शिवम् ने बापा से कहा कि आप पांच बजे के बजाय सात सात बजे तक दफ्तर चलाते हैं। आपके सभी कर्मचारी बालबच्चेदार हैं। उन्हें परिवार के भी कई काम होते हैं, साग-सब्जी और घर का सौदा वे कब लायें? आपको तो इन बातों से कोई वास्ता नहीं? आपका सब काम तो नौकर कर देता है।" बापा ने उस दिन की अपनी डायरी में लिखा, 'आज पद्मा के नेतृत्व में हरिजन निवास की महिलाओं का शिष्टमंडल मिलने आया। पद्मा ने मुझे खूब लताड़ा और कहा कि 'बुढ़िया साथ होती तो पता चलता कि गृहस्थी कैसे चलती है।' मैंने उनकी बातों को हंसकर झेल लिया और सबको खुश करके वापस भेजा।"

एक समय सात बजे से दस बजे तक मेरी ड्यूटी उनके साथ काम करने के लिए लगायी गयी। समाचार पढ़ना और रिपोर्ट पढ़कर सुनाना, पत्रों के उत्तर लिखना आदि काम तभी से शुरू हो जाते थे। फिर १० से ११ बजे तक स्नान-भोजन करके वे मुझसे भी पहले ११ बजे दफ्तर में पहुंच जाते। शाम को दफ्तर के बाद मेरे ही जिले मुरादाबाद के श्री रामचरणदास दस बजे रात तक उनके साथ काम करते थे। एक बार रामचरणदास कुछ दिनों की छुट्टी पर गये और तब उनका

(शेष पृष्ठ १४ पर)

टिप्पणी : विगत वर्ष

सन् १९७३ देश की आन्तरिक स्थिति की दृष्टि से बहुत कष्टकर वर्ष रहा। अनावृष्टि, अतिवृष्टि और फलस्वरूप अकाल, बाढ़ें, महँगाई, सरकारी और गैर सरकारी सभी क्षेत्रों में बंद और हड़तालों के कारण अव्यवस्था तथा उत्पादन में कमी, बेरोजगारी और भुखमरी, आये दिन की चीजें बनी रहीं। शासन इन सब समस्याओं को हल करने में सफल रहा, ऐसा कहना कठिन है। गेहूँ के व्यापार का राष्ट्रीकरण करके जहाँ उसका यह दावा है कि उसने लोगों को व्यापक क्षेत्रों में अन्न पहुँचाकर राहत पहुँचाई, वहाँ सर्वसाधारण का ख्याल है कि इसके कारण अन्न के व्यापार से सम्बन्धित सरकारी क्षेत्रों में भ्रष्टाचार और उससे सम्बन्धित सार्वजनिक क्षेत्रों में तस्करी और कालाबाजार पनपे। घी, तेल, कोयला जैसी रोजमर्रा की जरूरत की चीजें वर्ष के अधिकांश हिस्से में खुले बाजार से लगभग गायब रहीं, और बिजली और अन्य साधनों से प्राप्त होने वाली ऊर्जा की कमी के कारण केवल कल-कारखानों के उत्पादन पर ही फर्क नहीं पड़ा, पकने पर आयी हुई फसलें कमजोर यहाँ तक कि निरर्थक ही रहीं।

लोगों ने इन सब अभावों का बहादुरी से मुकाबला किया, दूसरे किसी भी देश में इतना कम हो-हल्ला किये बगैर इतने बड़े-बड़े अभावों को सह सकने की बात की कल्पना कठिन है। भारत के लोगों को अभावों में रहने की आदत है, वे यह सब बर्दाश्त कर गये। इन सब अभावों ने शासन के मन में यह एक विचार जरूर उत्पन्न किया है कि भारत को अपनी अर्थ व्यवस्था अपने ढंग की बनानी चाहिए। उसे वस्तुओं के उत्पादन में बड़े-बड़े कल कारखानों की जगह कुटीर उद्योग पनपाने चाहिए और उसी तरह खेती, पशुपालन आदि की दिशा में भी पुराने ढंग में ही सुधार करके बढ़ने की बात सोचनी चाहिए। रासायनिक खाद की कमी के संदर्भ में प्रधानमंत्री ने गोबरखाद के गुणों का जो बखान किया और ट्रैक्टर आदि की जगह अपने ही पशुधन का उपयोग करने की बात कही, वह इस बात की ओर इशारा है कि लाचारी से ही क्यों न हो अविकसित देशों के लोगों को पुराने ढंग के सन्तोषप्रद रहन-सहन से जहाँ तहाँ आधुनिकता की मदद लेकर साधारण आराम से मानवीय मूल्यों और आत्मसम्मान की रक्षा करके रहना अधिक उपयोगी और व्यावहारिक लगने लगा है। पिछले वर्ष भर बार-बार इस सिलसिले में हमारे देश में ही नहीं विकसित देशों में भी चीन का उदाहरण देकर यह बात कही जाती रही कि विलासिता और पदार्थ बहुलता के बीच जीने की इच्छा अन्ततोगत्वा सारे संसार के लिए कष्टकारक सिद्ध होगी। अर्न्स्ट शुमाकर ने तो एक पूरी किताब ही इस बात को लेकर लिखी कि अनावश्यक उत्पादन की पागल दौड़ को छोड़कर स्वेच्छा के साथ संयम का पालन करते हुए नितान्त आवश्यक वस्तुओं का व्यवहार करना और जीवन को हार्दिक गुणों से सम्पन्न बनाना ही सच्चा जीवन है। उसने कहा आज की दुनिया में विपुलता कहाँ है? जरूरत से ज्यादा उत्पादन जरूर है, मगर वह तो आदमी को हताश और उदास बना देने वाली चीज है। विपुलता एक प्रकृतिस्थ चीज है। उसका समय, श्रम, शक्ति और पैसे से कोई सम्बन्ध नहीं है। प्रकृति में निरीक्षणमात्र से विपुलता प्राप्त हो जाती है। तथापि हमें मानना चाहिए कि हमारे देश ने पिछला वर्ष गरीबी में नहीं, दारिद्र्य में बिताया है। दारिद्र्य, अशक्ति और राष्ट्र को दीन और हीन बनाता है, ऊपर नहीं उठाता। हम मानसिक रूप से पिछले वर्ष इसी अवस्था में रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में, हमारे देश ने पिछले वर्ष कई दृष्टियों से उन्नति की दिशा में पाँव बढ़ाये, ऐसा कह सकते हैं। जैसे शिमला समझौते के कारण पाकिस्तान के साथ हमारे सम्बन्ध सुधरे। अगरचे पाकिस्तान ने इसमें जैसा चाहिए वैसा सहयोग नहीं दिया, तथापि हमारी प्रधानमंत्री ने बड़ी सूझ-बूझ के साथ काम लिया और सम्बन्धों को अधिक खराब नहीं होने दिया। वे उन्हें कल्याणप्रद दिशा में ही ले जाने के लिए कटिबद्ध रहीं और उसका पाकिस्तान पर भी प्रभाव पड़ा। नेपाल के साथ हमारे सम्बन्ध सुधरे। भूटान, अफगानिस्तान और ईराक के साथ तो सुधरे हुए थे ही, वे और भी सुधरे। बर्मा से भी सुधरे। बंगलादेश से हमारी मित्रता दृढ़ से दृढ़तर होती चली गई और एक ऐसे समय जब अमेरिका से हमारे सम्बन्ध काफी खराब हो गये थे, रूस के साथ हमने अपने सम्बन्धों को और भी व्यापक और गहरा बनाया और इस प्रकार एक ऐसी घड़ी में जब सारे संसार में यह बात फैलाई जा रही थी कि हम अकेले और मित्रहीन हैं, हमने शक्ति का अनुभव किया। यह अलग बात है कि रूस और अमरीका ने भी इस बीच अपने सम्बन्ध अच्छे किये हैं और कुल मिलाकर यह बात अधिकाधिक साफ होती जा रही है कि सारी दुनिया के छोटे-बड़े देश अब सबसे पहले अपनी ही बात सोचते हैं, मित्रता सा जगह दोयम दरजे की चीज है। अरब और इजरायल के युद्ध ने इसे दिन की तरह साफ कर दिया है, यों इसके पहले भी अमेरीका ने चीन से दोस्ती का अधिक आवश्यक मानकर ताइवान की ओर से मुँह मोड़ लिया था। अर इजरायल युद्ध के बाद तो तेल की मार ने सारे योरोप को उघाड़ा कर दिया है। शाय अरब देशों के प्रति हमारी सद्भावना तेल के मामले में हमारे लिए भविष्य में लाभकार ठहरे-अभी तक तो ऐसा कुछ हुआ नहीं है मगर बीच बीच में इस प्रकार की सूचना आती रहती है कि अरब देश भारत के बा में दूसरी तरह से सोच रहे हैं।

भारत के सामने तीन मुख्य समस्याएँ हैं एक तो अपनी राजनीतिक स्वतंत्रता को स्वतंत्रता में बदलना अर्थात् गुटनिरपेक्ष र पर आन्तरिक अभावों से ऊपर उठकर लो के जीवन को सन्तोष से जी सकने लाय बनाना। दो आसपास के पड़ोसी देशों सद्भावना का वातावरण बनाना और स

अपने ही देशवासियों के मन में त्याग, बलिदान और एकता की भावना पैदा करना। पहला उद्देश्य भारी भरकम योजनाओं का मोह छोड़कर गांधीजी के बताये हुए रास्ते से हल किया जा सकता है। यद्यपि पंचवर्षीय योजना में इसका कोई बड़ा इशारा नहीं मिलता तथापि प्रधानमंत्री का बीच-बीच में सेवाग्राम और पवनार जाना इस बात का द्योतक है कि वे इस दिशा में भी सोच रही हैं। दूसरी बात को हद तक बीच को छोड़ दिया जाय तो हम बहुत हद तक सफल हो गये हैं। और तीसरी बात पर प्रधानमंत्री ने अपने नये वर्ष के भाषण में काफी जोर दिया है। यह तीसरी बात प्रधानमंत्री स्वयं भी, व्यक्ति विशेष को उठाने या गिराने की प्रवृत्ति को समाप्त करके बड़ा सकने में समर्थ हैं। हर राष्ट्रीय मसले पर राष्ट्रीय दृष्टि से विचार होना चाहिए सत्तारूढ़ दल के दृष्टिकोण से नहीं। यदि इतना होने लगे तो पिछले वर्ष की आन्तरिक अनेक आपत्तियों के हल निकल आयेंगे। आन्तरिक समस्याओं के हलों के निकलने पर अंतर्राष्ट्रीय परेशानियां तो कम होने ही लगती हैं। निराशाओं के बीच में आशा करने का हक सबको है हम नये बरस के बारे में ऐसी ही आशा व्यक्त करना चाहते हैं। भ० प्र० मि०

(पृष्ठ ६ का शेष)

सबसे निकट रहने वाले आदमी का वन संपदा पर हक हो, अपने हित के लिए, स्वार्थ के लिए नहीं।

पेड़ कट जाने का दुखद समाचार फैलाने १५ दिसम्बर को सीतापुर गांव से फाटा तक १२ किलोमीटर लम्बी रैली निकली। अब का चिपको आन्दोलन के जनक-स्थान गोपेश्वर में भी रामपुर में पेड़ कटने की जानकारी पहुंची, वहां से सर्वोदय कार्यकर्ता चंडीप्रसाद भट्ट और उनके साथ ४ महिलायें रामपुर आयी। २८ दिसम्बर को फिर ४०० लोगों का प्रदर्शन हुआ। इस बार इसमें अन्तिम गांव त्रिजुगीनारायण के रणसिंगा भी बज रहे थे (रणसिंगा एक वाद्य है जो धार्मिक या फिर किसी विशेष अवसर पर ही बजाया जाता है) २९ को गोपेश्वर से आयी चार औरतों ने गांव-गांव जाकर औरतों से बातचीत की। औरतों का कहना था कि उन्हें इस वननीति से सबसे ज्यादा तकलीफ है, उन्हें ही जंगल में भेड़ों के लिए पत्ती, आग के लिए लकड़ी आदि बटोरने जाना पड़ता है। वनरक्षक उनसे बुरा व्यवहार करते हैं। कभी रिश्वत तो कभी जुर्माना देना पड़ता है। कभी रक्षक क्रोध में आ कर उनकी दरांती तोड़ देता है। औरतों द्वारा गाये जाने वाले अधिकांश लोकगीतों में पतरोला (पत्तियों की रक्षा करने वाला-फौरेस्ट गार्ड) प्रायः खलनायक की तरह ही पेश किया जाता है। औरतों को संगठित करने गोपेश्वर से जो चार औरतें आयी उनमें श्रीमती श्यामादेवी भट्ट ७० वर्ष की थी। ३० दिसम्बर को श्यामा देवी भट्ट की अध्यक्षता में ४० औरतों की सभा रामपुर में हुई। खबर लगी थी कि इस दिन चमोली जिला मजिस्ट्रेट रामपुर आने वाले हैं। औरतें वननीति के बारे में अपनी तकलीफें मजिस्ट्रेट महोदय को सुनाने के लिए उनका इन्तजार करती रही। लेकिन किसी कारण से वे उस दिन आ नहीं पाये।

एक नई वननीति के लिए पिछले साल शुरू हुए इस चिपको आन्दोलन में अभी तक किसी को पेड़ से चिपक कर उसकी रक्षा करने की जरूरत नहीं पड़ी है। पेड़ों के कट जाने पर, फिर भी कम्पनी द्वारा उनको न ले जाने से इस आंदोलन ने एक विजय पाई है। आन्दोलन की शुरुआत उत्तराखण्ड में काम कर रहे सर्वोदय कार्यकर्ताओं के रचनात्मक कामों के बाद उनमें सरकारी नीति के कारण आने वाली रुकावटों से हुई थी। आन्दोलन सर्वोदय कार्यकर्ता से शुरू हुआ लेकिन अब यह लोगों में फैल गया है। चमोली जिले के कुछ गांवों में लोगों में इस परिवर्तन की आकांक्षा फैल चुकी है। इस बार रामपुर में जो भी हुआ उसमें उत्तराखंड के कोई भी सर्वोदय कार्यकर्ता उपस्थित नहीं हो पाये, कुछ खबर देरी से मिलने के कारण तो कुछ अन्यत्र व्यस्त रहने के कारण। गांव वालों ने बिना किसी नेता के आन्दोलन चलाया। केदार सिंह रावत का कहना है कि यहां तूर डिब्बा एंजिन के साथ तैयार हुआ है। यदि यह नहीं होता तो हम सब डिब्बे किसी एक एंजिन के चलने से ही चलते उसके ठप्प होने से ठप्प रहते।

(पृष्ठ १२ का शेष).

जगह रात को भी मेरी ही ड्यूटी लग गयी। मेरा स्वभाव विद्यार्थी जीवन से ही जल्दी सोने और जल्दी उठने का रहा है। अब भी मैं आठ बजे सो जाता और तीन बजे सुबह उठता हूं। बापा के साथ काम करते हुए भी आदत के अनुसार मुझे आठ बजे से नींद सताने लगती। नौ बजे के बाद तो आंखें खोले रखना मुश्किल हो जाता, तब बापा कहते, "जाओ, नल पर जाकर ठंडे पानी से मुंह धोकर आओ, नींद भाग जायेगी।" रामचरणदास कोई दस दिन छुट्टी पर रहे। जब वे लौट कर आये तो बापा ने मुझसे कहा, "त्यागी, तुमने एक गरासिया की तरह काम किया। जानते हो गरासिया कौन होता है? गुजरात में गरासिया राज-परिवार के व्यक्ति को कहते हैं। अगर राजा अपने परिवार के आदमी से ही बेगार लेने लगे तो वह उस प्रकार काम करता है जैसा तुमने रामचरण के छुट्टी जाने पर किया।"

भाई रामचरण, शिवम् श्यामलाल जी आदि निस्सन्देह मुझसे अधिक निष्ठा से काम करते थे, मगर बापा ने मुझे सदैव क्षमा किया। बापा अपने सहायकों को वेतन-भोगी कर्मचारी नहीं समझते थे, बल्कि परिवार के सदस्य के रूप में देखते थे। कभी कोई बीमार हो जाता तो दफ्तर जाते समय और घर लौटते समय उसे देखने जाते। कभी-कभी साथ में डाक्टर या वैद्य भी होता। एकाध बार अपना मोटा बेंत रोगी को दिखाकर कहते कि कल तक ठीक नहीं हुए तो इस बेंत से खबर लूंगा।

एक बार मुझे उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्र से लौटने पर मलेरिया ने घर दबाया। ज्वर १०४ डिग्री से भी ज्यादा आता था। बापा अस्सी वर्ष की अवस्था में भी रात भर मेरी खाट के पास कुर्सी डालकर बैठे रहते थे। पेशाब करने उठता तो स्वयं पकड़ कर सहारा देते। जब उस दृश्य को याद करता हूं तो आज भी मन भर जाता है। वे जैसा कस कर काम लेते थे, वैसा ही स्नेह और प्यार भी लुटाते थे।

●

समाचार

× शान्ति-दिवस तथा गाधी स्मृति के लिए दस पैसे की कीमत के शांति दिवस बिल्ले तैयार किये गये हैं। अग्रिम राशि भेजकर या वी. पी. पी. द्वारा अ० भा० शान्ति सेना मण्डल, राजघाट, वाराणसी २२१००१ से बिल्ले प्राप्त किये जा सकते हैं।

× संबन्धित सूत्रों के अनुसार उत्तर प्रदेशमे आचार्य विनोबा भावे के भूदान आन्दोलन के अन्तर्गत ४ लाख ३६ हजार ६ एकड भूमि भूदान में मिली है एव भूदानदाताओ की सख्या ३८,२६७ है। जाच के पश्चात् ८७,२७३ एकड भूमि खारिज कर देनी पडी है।

उत्तर प्रदेश मे प्राप्त भूदान मे से २ लाख २३ हजार १६५ एकड भूमि ७७,१४३ भूमि-हीन परिवारो मे वितरित की गई है। सभी आदाताओ को पक्के पट्टे भी दिये गए हैं और आदाताओं के नाम भूमि का विधिवत नामान्तरण भी हुआ है।

यह उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड ने भूदान किसानो के सात गाव भी बसाये हैं।

(पृष्ठ २ का शेष)

ीमती इन्दिरा गाधी का स्वय मिलने जाना ीर उनसे अस्सी मिनट तक बात करना ारतीय परम्परा और वर्तमान राष्ट्रीय परि-स्थिति के सदर्भ मे अर्थवान है। इन्दिराजी के ास जितनी राजनीतिक शक्ति आज है और नकी सरकार के हाथो मे जितनी आर्थिक त्ता है उतनी शायद किसी भी प्रधान मत्री : हाथ मे कभी नही रही। इसलिए वे सगठित ाज्यशक्ति की अच्छी प्रतीक है और राज्य-ाक्ति की प्रतीक का लोकशक्ति के अध्येता से ातचीत करना देश के लिए शुभ सकेत है। ानोबाजी ने तो कहा ही है कि बहुत से ाद्दों पर इन्दिरा जी की उनसे एक राय ही और सरकार की ओर से होने वाले सामजिक कार्य और सर्वोदय विचार मे उत्तम सम्पर्क हो सकेगा। इन्दिरा जी ने कहा कि गाधी-विनोबा जैसे द्रष्टाओ को आसानी से समझा नही जाता और इन लोगों के विचारो का सम्मान आगे आने वाली पीढियाँ करेंगी। इन्दिरा जी ने यह भी कहा कि उन्हें विनोबाजी से चर्चा करके प्रेरणा मिलती है। हमें आशा है कि इन्दिरा जी इस प्रेरणा को कार्यरूप मे बदलने की कोशिश करेंगी।

फिर भी एक सवाल उठता ही है। गाधी और विनोबा को शाब्दिक और दिखलौटी श्रद्धाजलि इस देश मे कोई कम नहीं अर्पित की गयी है। सरकार, राजनीतिक पार्टियां और लोग अक्सर ही उनका नाम लेते हैं और ऐसा मानने वालो की भी कमी नहीं है कि देश की वर्तमान स्थिति का कारण यह है कि हमने गाधी को भुला दिया और विनोबा की नही सुनी। यह सही हो सकता है कि आने वाली पीढ़ियां इन द्रष्टाओ को समझेंगी और उनके विचारो पर अमल करेंगी। लेकिन वे पीढ़ियां यह भी पूछेंगी और जाचेंगी कि उन लोगो ने क्या किया जो गाधी और विनोबा का नाम लेते थ। महापुरुषो को श्रद्धांजलि चढ़ाना आसान है क्योंकि वह कुछ हद तक हमारे कर्मों से उत्पन्न होने वाले अपराध भाव से हमें बचाता है। लेकिन इतिहास अथवा कालपुरुष सहानुभूति से निर्णय नहीं करता। वह कथनी को नहीं सुनता करनी को जाचता है और उसी के अनुसार फैसला देता है।

दि हमने सगठन की हमारी बुनियाद पक्की नाली, तो आरोहण मे हम उस व्यापक गठन को भी हमारे साथ ले सकेंगे। और तनी मात्रा मे हमारा आदोलन जन आदोलन न सकेगा। जन-आदोलन, जन-आन्दोलन हते रहने से यह अभी जन-आदोलन बनने ाला है नही।

मैं मानता हूं कि जैसे 'तूफान' के स्टेज मे हार आगे रहा, वैसे इस स्टेज मे गुजरात ागे रहेगा। हा, आप हैं, वैद्यनाथ बाबू हैं, बिहार मे भी अपवादरूप रहेंगे। लेकिन ब मिलाकर अभी का यह रचनात्मक काम ाुजरात के स्वभाव को विशेष अनुकूल है।

संक्षेप मे, हमारे कार्यक्रम विचार आदि कोई फर्क नही पडता, फिर भी मत्र बदले होने से कार्यपद्धति मे बुनियादी परिवर्तन हो जाता है। जैसे कि ग्रामदान तो वैसा-का-वैसा ही रहा था। फिर भी 'तूफान' मत्र मिलने से उस मे एक गुणात्मक परिवर्तन (क्वालिटेटिव चेन्ज) आ गया। फिरउसी तरह 'लोक-सेवक सघ' के नये मत्र से भी होगा। 'तूफान' खडा करना हो तो एक व्यूह रचना (स्ट्रेटेजी) काम मे आयेगी। 'लोकसेवक सघ' खडा करना हो, तो दूसरी व्यूह रचना (स्ट्रेटेजी)।

हमारे आदोलन का एक अत्यत महत्व का मोड़ का बिन्दु (टर्निंग पाइन्ट) आज है। इसलिए मेरे मन मे बात आयी कि इस वक्त आप एकाध महीना पवनार रह सकते, तो आन्दोलन के लिए लाभदायी होगा।

यह सब मथन पिछले कुछ महीनो से मेरे मन मे चल रहा था। इसलिए 'भूमिपुत्र' से हटकर किसी क्षेत्र मे बैठने का तय तो कर लिया था। लेकिन 'तूफान' के बाद 'प्रति तूफान' का जो ऐलान बाबा के मुह से निकला था, वह मेरे चिन्तन मे और एकशन मे बाधा-रूप बनता था। मैं सोचता रहता था कि क्या मेरे चिंतन मे कुछ गलती तो नही है? क्या करू? इतना बाबा-परस्त तो मैं हू ही! लेकिन अब की बार सेवाग्राम मे लोकसेवक-सघ का नया मत्र मिलने से अब मेरे सामने का रास्ता बिलकुल साफ़ हो गया है। अब तो रविशकर महाराज सम्मान-ग्रन्थ, प्रभा-स्मृति ग्रन्थ, सघ प्रकाशन और कई दिल्लर जिम्मेदारियो से दिसम्बर अन्त तक छुटकारा पाकर मैं किसी एक जिले मे बैठ जाऊगा, और ऊपर लिखी कल्पना अनुसार वहा काम खडा करने की कोशिश करूंगा।

(२६-१०-१९७३ को श्री जयप्रकाश नारायण के नाम श्री कान्ति शाह द्वारा लिखा गया पत्र।)

वार्षिक शुल्क : १५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

भूदान-यज्ञ

२१ जनवरी, '७४

वर्ष २० अंक १७

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

प्रातिभिकता और बुद्धिमानी

साधारणतया 'प्रातिभिकता' की जगह 'प्रतिभा' शब्द का प्रयोग पर्याप्त होना चाहिए किन्तु हमने जानबूझ कर यह शब्द, आप चाहे तो गढ़ सकते हैं, गढ़ा है। अभी लॉसएंजिल्स से प्रकाशित होने वाले प्रसिद्ध पत्र 'मनस' में लॉयड कान्ह नाम के एक वास्तुकार के किसी लेख का सारांश दिया गया है। लेख का नाम था 'स्मार्ट बट नाट वाइज', और यह गोरी दुनिया की उस कार्रवाई को कैलीफोर्निया के एक आदिवासी द्वारा दिये गये उस नाम का वर्णन है जिसे गोरी दुनिया 'टेक्नालॉजी' कहती है। कैलीफोर्निया के आदिवासी गोरी दुनिया की वैज्ञानिक प्रगति को चतुराई या चालाकी मानते हैं, बुद्धिमानी नहीं। हम भी उसे चालाकी न सही, 'प्रतिभा' मानने को तैयार नहीं हो सके और इसलिए 'प्रातिभिक' शब्द का उपयोग किया। कहने का अर्थ यह है कि पश्चिमी सभ्यता, 'विज्ञान के चमत्कार' कह कर जिन बातों का झंडा उड़ाती चली आ रही है वे सच्ची प्रतिभा के फल न हो कर उसके किसी एक घटिया अंश के बफल सिद्ध हो रहे हैं इसलिए उन्हें प्रतिभाजन्य न कह कर बहुत चालाक लोगों की प्रातिभिकता कहना अधिक योग्य जान पड़ता है।

लॉयड कान्ह ने अपने लेख में लकड़ी, ईंट, पत्थर की जगह आजकल पश्चिम में इमारतें खड़ी करने में प्लास्टिक का जो उपयोग बढ़ता जा रहा है, उसी की निरर्थकता, सौन्दर्य-हीनता और उसके संभावित खतरों के सम्बन्ध में लिखा है। उसका कहना है, 'जरा सोचिये कि वृक्ष को इमारती लकड़ी बनाने तक सूरज क्या-क्या करता है; वह उसे ठीक अनुपात में हवा, पानी और खनिज पहुंचा कर एक ठीक सुगढ़ देता है और मजबूत बनाता है। इसके सिवा वृक्ष अपने बढ़ने की अवधि में और पूरे बढ़ चुकने पर वातावरण को सौन्दर्य देते हैं। हवा को साफ करने में मदद पहुंचाते हैं, पंछियों को छाया देते हैं, पक्षियों, गिलहरियों तथा अन्य प्राणियों को फल देते हैं और हमारे समूचे दृष्टि पथ को मानो रूप और रंग से भर देते हैं। फिर लकड़ी ही ऐसा एकमात्र इमारती साधन है जिसे हम पैदा करते रह सकते हैं, जब कि ज्यादा प्लास्टिक पाने के लिए हमें रोज-रोज जमीन से अधिकाधिक तेल निकालते रहना जरूरी है। उसे हम पैदा नहीं कर सकते, उसे निकाल सकते हैं, जला सकते हैं, साफ कर सकते हैं या उसे किसी एक रूप से दूसरे रूप में बदल सकते हैं। हम इन सारी प्रक्रियाओं में हवा और नदियों और समुद्रों को दुर्गन्ध से भरते हैं, वायु मंडल को विषाक्त करते हैं। तथा तमाम समझदार लोगों की तरह इस वास्तुकार ने यह भी कहा है कि जरूरत सारे संसार की वन-नीति बदलने, पेड़ लगाने और उन्हें बढ़ने देने का समय देने की है, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां घर बनाने के लिए ठीक साधन पा सकें—हवा, पानी और धूप में मारी-मारी न फिरें।

मुश्किल उत्पन्न होती है उद्योग धंधों में पड़े लोग और सर्वसाधारण लोगों की दृष्टि के अन्तर के कारण। पहली किस्म के लोग ह्रस्वदृष्टि रख कर अपनी ही हद तक सोचते हैं और दूसरी किस्म के लोग आने वाले दिनों की चिन्ता भी करना चाहते हैं। उद्योग-धन्धों में लगे लोग और उनसे सम्बन्धित वैज्ञानिक भी प्रायः इस बात को भूले रहते हैं कि विज्ञान में या शास्त्र के दो प्रकार माने गये हैं। और उनमें एक का नाम मानव-शास्त्र (ह्यूमैनिटीज) है। इसका क्या यह अर्थ नहीं है कि जो बच रहता है वह अमानवीय बल्कि दानवीय शास्त्र है। अब यह अलग बात है कि इस दानवीय शास्त्र को 'व्यावहारिक विज्ञान (एप्लायड साइन्स) का नाम दिया गया है, किन्तु थोड़ी भी बुद्धि दौड़ाने से समझ में आ जाता है कि हमारे ये व्यवहार-विज्ञान विनाश को पास लाने के अचूक तरीके हैं। पहले इतनी गनीमत थी कि इनकी गति मद्धिम थी, अब तो वह अकल्पनीय रूप से गतिशील हो गई है। व्यावहारिक-विज्ञान को 'आध्यात्मिक-विज्ञान' का मार्गदर्शन दिलाये बिना हम गति नहीं, दुर्गति ही को प्राप्त हो सकते हैं। गांधी जी ने इस बात को 'हिन्द स्वराज्य' में अपने सीधे-सादे ढंग से बार-बार कहा है। अब विनोबा ने 'विज्ञान और अध्यात्म' के सामंजस्य की

(शेष पृष्ठ १४ पर)

लोकतंत्र बच सकता है, अगर चुनाव शुद्ध हों

नवम्बर माह में नयी दिल्ली स्थित गांधी शांति प्रतिष्ठान में सर्व सेवा संघ ने एक बैठक का आयोजन किया था। वैसे बैठक का मूल हेतु सितम्बर १९७३ में सेवाग्राम में आयोजित राष्ट्रीय परिषद के लिए गये निर्णयों को अमल में लाने की पहल करना था। पर बैठक की पूरी चर्चा उत्तरप्रदेश के आगामी चुनाव में मतदाता प्रशिक्षण के कार्य पर ही केन्द्रित रही थी। बैठक में जयप्रकाश जी के अलावा आचार्य कृपलानी, श्री कृष्णराव थी एन जी गोरे, श्री पुरुषोत्तम मावलंकर भी उपस्थित थे। जयप्रकाश जी के इस सुझाव का बैठक ने समर्थन किया था कि "जो हम पुराने लोग हैं—सर्वोदय वाले, कुछ लोग उत्तर प्रदेश के पचास-साठ कालेजों में विद्यार्थियों के समक्ष भाषण दें। विद्यार्थियों की गैर दलीय रैलियों का आयोजन करें और उनका आवाहन करें। विद्यार्थी अगर अपने कालिजोंसे निकलकर गावों का दौरा करेंगे और नई शक्ति अगर खड़ी हो सकेगी तो बहुत बड़ा काम होगा। अगर चुनाव इसी प्रकार भ्रष्ट होते रहेंगे तो प्रजातन्त्र समाप्त हो जायेगा।' बैठक में जे० पी० ने कहा था कि अगर आवश्यक हुआ तो अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद वे लखनऊ आदि स्थानों पर जाकर विद्यार्थियों के बीच बोलना चाहेंगे।

अपने कथन के अनुसार उत्तर प्रदेश मतदाता शिक्षण समिति के निमंत्रण पर जयप्रकाश जी अपनी चार दिवसीय यात्रा पर लखनऊ पहुंच गये।

६ जनवरी की दोपहर उन्होंने स्थानीय गांधीभवन में नगर के विभिन्न वर्गों जैसे डाक्टरों, वकीलों, महिलाओं, प्राध्यापकों, सम्पादकों तथा तरुणों से अलग-अलग भेंट की और मतदाता शिक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम के बारे में कहा कि सभी लोग प्रदेश में स्वतन्त्र या शुद्ध चुनाव कराने में अपना योगदान दान करें।

सायं नगर के युवकों, छात्रों तथा तरुण शांति सैनिकों के बीच में भाषण करते हुए जे० पी० ने कहा कि लोकतन्त्र की जड़ें निरन्तर खोखली होती जा रही हैं। जो सन् ५२ में चुनाव में नैतिकता थी वह आज नहीं रही और जो कुछ भी शेष बची है वह भविष्य में रहने वाली नहीं है। जब नैतिकता ही नहीं रहेगी तो लोकतन्त्र की स्थिति क्या होगी? यह सब के लिए चुनौती है। उसे कल नहीं, आज ही स्वीकार करना चाहिए और लोकतन्त्र को बचाने के लिए सभी निष्पक्ष तरुणों को मिलकर शुद्ध और स्वतन्त्र चुनाव कराने के कार्य में लगना चाहिए। जे० पी० ने कहा कि यदि कहीं गलत वोटिंग हो रहा हो तो युवकों को उस समय शांतिपूर्ण घेराव भी करना चाहिए कि जब तक यह काम शुद्ध नहीं होगा हम हटेंगे नहीं। जरूरत पड़े तो पोल भी रद्द कराने की तैयारी रहनी चाहिए।

जे० पी० ने आगे कहा कि मैं कभी भी राजनीति का विरोधी नहीं रहा हूं। आखिर छात्र विश्वविद्यालय में राजनीति नहीं सीखेंगे तो कहां सीखेंगे? लेकिन यूनियन जो छात्रों की है वह अवश्य निर्दलीय होनी चाहिए, क्योंकि यूनियन का निर्माण ही छात्रों के हित में हुआ है।

गंगा प्रसाद हाल में डा० राममनोहर लोहिया संस्थान द्वारा आयोजित सभा में जे० पी० ने कहा कि समाजवादी शक्तियां बिखर रही हैं इसलिए सभी लोग अपने को समाजवादी कहने लगे हैं। इस संस्थान को समाजवाद के बारे में गहरा अध्ययन तथा शोधकार्य करना चाहिए।

१० जनवरी को प्रांत प्रदेश के सर्वोदय कार्यकर्ताओं के बीच जयप्रकाश जी ने कहा कि हमारा चिन्तन केवल मतदाता प्रशिक्षण का नहीं है बल्कि प्रदेश में होने वाले चुनाव शुद्ध और स्वतन्त्र हों इसके लिए प्रयास करना चाहिए इसीलिए मैंने पवनार(वर्धा) से युवकों को आवाहन करते हुए 'यूथ बनाम डेमाक्रेसी' शीर्षक से एक वक्तव्य प्रकाशित किया था।

प्रदेश के कुछ साथियों के इस कथन पर कि मतदाता शिक्षण के काम में विलम्ब हुआ है तथा सत्न् आरम्भ करना चाहिए, जयप्रकाश जी ने कहा कि यह काम तो प्रदेश वालों का था। उत्तर प्रदेश में सर्वोदय मण्डल बना है उसे सोचना चाहिए था कि यह काम उठाना है या नहीं। व्यर्थ में समय की बात करके समय बर्बाद करते हैं। जिसको यह काम अच्छा लगता है उन्हें जुट जाना चाहिए। जिन्हें नहीं लगता है उन्हें जो वे इस समय काम कर रहे हैं करते रहना चाहिए। मेरी दृष्टि में यह काम क्रान्तिकारी ही लगता है, क्योंकि चुनाव से पैदा हुआ भ्रष्टाचार ऊपर तक पहुंचता है। जब नींव में ही यह कमजोरी आ जायेगी तो लोकतन्त्र कैसे चल सकेगा?

पत्रकार गोष्ठी में जे० पी० ने कहा कि उन्हें भी इस काम में मदद करनी चाहिए क्यों कि चुनाव में यदि भ्रष्टाचार हुआ तो लोकतन्त्र के लिए खतरा है। आज जो प्रेस तथा बोलने की स्वतन्त्रता है वह भी खतरे में पड़ सकती है।

एक प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि चुनाव के समय सरकारी मशीनरी का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए—यह बात तो आचार संहिता में भी स्वीकार की है। उन्होंने कहा कि पांच वर्षों के बाद केवल एक बार जनता को अपने मताधिकार के प्रयोग का अवसर मिलता है। यदि इस अवसर को भ्रष्ट तरीकों द्वारा छीन लिया गया तो लोकतन्त्र निस्तेज हो जायेगा और तानाशाही का रास्ता खुल जायेगा।

११ जनवरी को प्रांत उत्तर प्रदेश मतदाता शिक्षण समिति की बैठक में जे० पी० ने कहा कि कुछ क्षेत्र लेकर सघनरूप से काम करना चाहिए—विशेषकर जहां हरिजन या अन्य वर्ग के लोग वोट नहीं दे पाते हैं वहां हमारे कार्यकर्ताओं की शक्ति लगनी चाहिए। साथ ही अपने-अपने क्षेत्र में इस काम के लिए युवकों और छात्रों को निकालना चाहिए। समिति के सदस्यों एवं संयोजक महोदय ने आश्वासन दिया कि प्रदेश की पांच महानगरियों एवं अन्य १५ जिलों को लेकर सघनरूप से कार्य किया जायेगा। इलाहाबाद, कानपुर, आगरा में समितियां बन गई हैं। श्री आर० के० पाटिल प्रदेश का दौरा कर रहे हैं।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

जनाधारित प्रजातंत्र के लिए

—जयप्रकाश नारायण

(२९ और ३० दिसम्बर ७३ को आल इण्डिया रेडिकल ह्यूमेनिस्ट एसोसियेशन के सम्मेलन में दिये गये उद्घाटन भाषण का गतांक से आगे का अंश)

ग्राम सभायें, नगर सभायें और श्रम सभायें—यों ये शब्द कोई पक्के पारिभाषिक शब्द नहीं हैं. हम इनकी जगह कोई दूसरे शब्दों को इस्तेमाल भी कर सकते हैं—बनायी जायें; मगर इनको बना लेने भर से सच्चे जनाधारित प्रजातंत्र की इमारत उठाने का काम पूरा नहीं हो जाता। ये सभायें सक्रिय होनी चाहिए। इन संस्थाओं की बैठकें बराबर होती रहें। ये स्थानीय सार्वजनिक समस्याओं पर बहस करें और मिलजुल कर सहयोग के आधार पर अपने मसलों को खुद हल करें। परस्पर हाथ बंटान के तरीकों और एक दूसरे को किन-किन रूपों में मदद दी जा सकती है, इस पर सोच कर उनका विकास करना होगा। ऐसे पढ़े-लिखे जवान जिन्होंने स्कूल या कालेज छोड़ दिये हैं या ऐसे उच्च शिक्षा प्राप्त ग्रेजुएट या पोस्ट-ग्रेजुएट तरुण जो जीविका उपार्जन के किसी काम में नहीं लगे हैं, खाली हैं, आगे आयें और इस काम को हाथ में लें। मैं इस काम के लिए खास तौर पर ऐसे ही तरुणों का आवाहन कर रहा हूँ।

जब लोगों के बीच में इस तरह का ग्राम निर्भर जनतंत्र चलने लगेगा तब एक ऐसी स्थिति आयेगी कि इस प्रकार चलने वाली जनतान्त्रिक इकाइयां विस्तृत भी होंगी और ऊंची भी उठेंगी और उस समय सच्चे जनतंत्र का संचालन करने वाली इन प्राथमिक इकाइयों से आगे की माध्यमिक संस्थाओं का निर्माण होगा।

मैं अपने विचार को प्रान्तीय चुनाव का उदाहरण दे कर स्पष्ट करना चाहता हूँ। आज की दलीय पद्धति में दल अथवा दलों का हाई कमान ऊपर से उम्मीदवार थोपता है। लोगों का इसमें कोई हाथ नहीं होता। विभिन्न दल जिन लोगों को चुनाव में खड़ा करते हैं, लोगों का काम उनमें से किसी एक को वोट देना भर होता है। जो उम्मीदवार जीत जाता है वह सम्बन्धित क्षेत्र के लोगों का 'प्रतिनिधि' बन जाता है। किन्तु वोट डालने वाले मतदाताओं का किसी भी प्रकार का अंकुश इस व्यक्ति पर नहीं होता। सच कहें तो मतदाताओं की कोई सामूहिक सत्ता या अन्य कोई ऐसा सामूहिक संगठन नहीं होता कि वे अपने इस तथाकथित प्रतिनिधि की बागडोर सम्भाले रख सकें या उस पर किसी तरह का असर कायम कर पायें। यह तो हाई कमान के हाथ में होता है।

मैं जो तरीका सोच रहा हूँ उसमें काम किस तरह चलेगा ? हम विधान सभा के किसी देहाती क्षेत्र को लें। मामूली तौर पर इसमें कोई लाख या ६० हजार मतदाता होंगे। हम मान लें कि उक्त क्षेत्र में १०० गांव है। (सचमुच में तो गांवों की संख्या इससे अधिक ही होगी) हम पहले जिस स्थिति की चर्चा कर चुके हैं, अगर हमने उसे पूरा कर लिया है तो हर गांव में हमारे पास एक सक्रिय ग्राम सभा होगी। विधान सभा के चुनाव के लगभग छः महीने पहले से हर ग्राम सभा को चाहिए कि वह अपना-अपना प्रतिनिधि चुने और इस तरह चुने गये सब प्रतिनिधियों की एक ग्रामसभा परिषद बन जाय। गांव की आबादी के अनुपात में ग्राम सभा परिषद के लिए प्रतिनिधि चुने जायेंगे। यानि कोई ग्राम एक प्रतिनिधि चुनेगा, कोई एकाधिक। किन्तु छोटे से छोटे हर गांव का एक और बड़े से बड़े गांव के पांच तक प्रतिनिधि हो सकते हैं। मान लीजिए कि इस तरह प्रतिनिधियों की प्रति गांव औसत संख्या तीन हुई तो ग्राम सभा परिषद में ३०० सदस्य होंगे। ये सब प्रतिनिधि परिषद के बन जाने के बाद क्षेत्र के किसी केन्द्रीय स्थान में इकट्ठा हो और वहां विधान सभा के लिए अपने क्षेत्र का उम्मीदवार चुनें। इस आकार-प्रकार के प्रजातंत्र के सफल संचालन की दृष्टि से दो बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहली तो यह कि ग्राम-सभा अथवा उसकी कार्यकारिणी के सभी निर्णय सर्वसम्मिति से हो या उनके बारे में एक सर्वसाधारण ऐसी सहमति हो जिसमें विरोध कम से कम हो। जहां ऐसा लगे कि तत्काल निर्णय न लेना नुकसानदेह हो सकता हो, वहां निर्णय कम से कम ८० प्रतिशत सहमति के आधार पर ले लेना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर निर्णय लेने के दूसरे तरीके भी काम में लाये जा सकते हैं, चिट्ठी डालना या निर्णय किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों की समिति को सौंप देना। किन्तु इन तरीकों को भी तभी अपनाया जाय जब उनके बारे में सर्वसम्मति हो, या कम से कम विरोध न हो।

आपस में फूट रोकने और दल बन्दी को बचाने की दृष्टि से यह जरूरी है। यों इस तरह निर्णय लेने के जो दोष हैं वे काफी स्पष्ट हैं। किन्तु विनोबा जी ने ग्राम-स्वराज्य का जो आन्दोलन चलाया है, तत्सम्बन्धी अपने अनुभवों के आधार पर मैं यह कह सकता हूं कि कुल मिला कर इससे होने वाली हानि के मुकाबले में लाभ की मात्रा अधिक है।

दूसरी जरूरी शर्त यह है कि गांव या शहर या काम करने वाले किसी जमात का ऐसा कोई भी आदमी, ग्राम सभा या अन्य जनतांत्रिक इकाइयों द्वारा किस पद के लिए नहीं चुना जाना चाहिए, जो किसी राजनैतिक दल का सदस्य हो। सबब बिल्कुल साफ है। सबब यह है कि दल विशेष का सदस्य अपने दल के नेताओं की राय के मुताबिक चलता है जब कि सच्चे प्रजातंत्र में प्रजा अथवा जनता का दबाव नीचे से ऊपर तक होना चाहिए या उसके द्वारा चुनी गयी वैसी संस्थाओं का जिनका हमने अभी खुलासा किया है। इसका यह अर्थ भी हुआ कि ग्राम

(शेष पृष्ठ १२ पर)

आखिरी कमजोर कड़ी

—ठाकुरदास बंग

१०×१० फीट की छोटी सी घास की उसकी कुटिया में उसकी गृहस्थी समायी थी, जिसमें चीजों से बच्चे ज्यादा थे। एक सूप, तीन टोकनियां, एक चटाई, अल्युमिनियम का एक बर्तन, एक थाली तथा अनाज रखने का मिट्टी का एक डोला, जिसको शायद ही कभी अनाज का दर्शन होता होगा, यह थी सारी सम्पत्ति। स्त्री की गन्दी देह पर तथा फटे-मैले कपड़ों पर मक्खियां भिन-भिना रही थीं। मेरा जी मिचलाने लगा। 'क्यों, हर रोज स्नान नहीं करती हो? इसलिए तुम्हें खुजली है। अच्छी तरह नहाया करो ना, खुजली चली जायेगी। कपड़े क्यों नहीं धोती हर रोज? पानी तो बहुत है यहां?' मैंने उपदेश दिया। "एक ही तो साड़ी है, नहाकर बदलने के लिए दूसरा कपड़ा है नहीं, कैसे स्नान करूं और कैसे धोऊं कपड़े हर रोज? जब अंधेरी रात होती है तो ८-१० दिन में कभी एकाध बार नहा लेती हूं। साड़ी धोकर वही गीली पहनकर घर आती हूं। देह पर ही साड़ी सूखती है।' उसने जवाब दिया।

उसके पति भुवनेश्वर के पास एक एकड़ से भी कम भूमि है। खुजली से पीड़ित उसकी पत्नी को उसके छः बच्चों ने घेर रखा था। पिछले तीन सप्ताह से रोटी या भात का निवाला भी इस परिवार में आंखों से नहीं देखा था। गांव की नदी से "घोंघा" पकड़ कर लाना, और खाना यह क्रम था। पिछले कई दिनों से काम नहीं मिला था तो खाना कहां से मिलता?

यह हालत सिर्फ भुवनेश्वर अकेले की नहीं थी। कुल १२२ परिवारों में से २२ परिवार ऐसे हैं जो भूमिहीन हैं और करीब २७ परिवार ऐसे हैं जिनके पास नाममात्र की भूमि है। वे कैसे जीते हैं, तो लगता है कि मरते नहीं इसलिए।

धान कटने का बड़ा त्यौहार बिहार भर में धूमधाम से मनता है। रेडियो पर उसका वर्णन भी आ रहा है। इस गांव में देखा तो रास्ते में एक पैंसठ सत्तर साल की कमर झुकी बूढ़ा चूल्हा जलाती दिखाई दी। 'माजी, क्या छट का खाना बना रही हो?" मैंने पूछा। "मारे-मारे घूम फिर कर कलई (उड़द) की ये मुट्ठी भर पत्तियां लाई हूं जो उबाल कर पेट की आग बुझाऊंगी। कहां से बनाऊं खाना? कितना घूमी पर काम नहीं मिला।"

'क्या तुम काम करोगी?'

'हाय हाय बेटा, कैसी पूछते हो! क्यों नहीं करूंगी! मिले तो सही काम।' बूढ़ा ने मेरा हाथ अपने कांपते हुए हाथों में पकड़ा और मेरी ओर देखने लगी। उसकी और मेरी दोनों की आंखों से गंगा-जमुना बहने लगी। इतने में उधर से एक तरुण बहन चिल्लाई—"दिन भर घूमी पर काम नहीं मिला, छट का पर्व हाथ हुए एक दाना नहीं पाया?

गांव के करीब एक तिहाई परिवारों की पिछले तीन सप्ताह से यही हालत थी। ये लोग भीख तो नहीं मांगते, काम करके अपने पसीने की रोटी खाना चाहते हैं। क्या यह उनकी मांग स्वराज्य के पच्चीस साल बाद, चार चार विकास योजनाओं के बाद भी बेजाविब है? इसी वर्ष के जुलाई माह में हम इसी पूर्णिया जिले के अन्य कुछ देहातों में घूमे थे। तब भी यह हाल था। घड़मल की पत्तियां खा-खा कर लोग जी रहे थे। उस वक्त बारिश समय पर न होने की वजह बताई गई थी। पर इस समय तो सिवा बेकारी के कोई दूसरा कारण नहीं था। इसलिए यहां का भूमिहीन भूमि के लिए तरसता है।

यहां के गुरनु को भूदान की सिर्फ ग्यारह कट्ठा (एकड़ का तीसरा हिस्सा) भूमि मिली है। लेकिन पाइप पम्प की मदद से बढ़िया फसल उगाता है। दो-चार गायें और भैंसें भी पाल रखी हैं। सुखी है।

गांव में भूदान की भूमि का बंटवारा होने के बाद दूसरे दिन एक भूमिहीन आया और कहने लगा—"सबको भूमि मिली, पर हमको नहीं मिली। कबतक मिलेगी?' उससे पूछा "तुम क्यों दो-चार कट्ठा भूमि चाहते हो? अबर सर्वा क्यों नहीं लेते हो जो तुम्हें २-३ रुपया नियमित रोजी देगा?'

बोला—"बाबू जी पैसा तो हम मजूरी में कमाते ही हैं कभी कम, कभी ज्यादा। हमारे बच्चों को कभी एकाध बार भुट्टा या मिर्चा खाने की इच्छा हो तो वह कहां से लायेंगे? बाजार से ही न खरीद कर लाना होगा? अपनी दो-चार कट्ठा भी भूमि हो तो हम मन चाही चीज पैदा कर सकते हैं।'

पढ़े-लिखे लोग इसका क्या जवाब देंगे? भारत के सभी भूमिहीन परिवारों की भूमि के प्रति देखने की यही दृष्टि है और इसलिए उसे भूमि की तीव्र चाह भी है।

ऐसे मेलवा गांव में गांव का सर्वे होने के बाद तीन बार ग्रामसभा बैठी। यहां की भूमि अत्यन्त उपजाऊ है और पानी बहुत नजदीक है। गांव की एकड़ भूमि जिसमें से करीब तीन सौ एकड़ के छः बड़े जमींदार बाहर गांव रहते हैं। एक इंच भी भूमि पड़ती नहीं है। गांव में स्कूल की इमारत और कुछ हैंडपम्प चार वर्षीय योजनाओं की याद दिला रहे थे। पिछले पच्चीस सालों के विकास की यही निष्पत्ति है। जो ग्यारह हैंडपम्प मिले थे उनमें से नौ खराब निकले और दो किसी तरह चल रहे थे। विकास अधिकारियों ने गांव के मुखिया को हर पम्प के पीछे पच्चीस रुपया घूस दी, खुद ने पचहत्तर खाये तो और सौ का पम्प किसानों को दो सौ में दिला दिया था। इतना रद्दी माल कैसे काम देगा? सिवा दो के एक भी पम्प ने एक इंच जमीन भी न सींची।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

कृषि – नीति के आधार क्या हों ?

—बनवारीलाल चौधरी

आपने क्या भोजन किया है यह मालूम करके बताया जा सकता है कि आप कैसे हैं ? भोजन की गुणवत्ता अन्ततोगत्वा भोजन करने वाले के गुणों को, उसके स्वभाव को, उसके आचार-विचार को प्रभावित करती है। मनुष्य का स्वास्थ्य तो स्पष्टत भोजन के प्रकार से बनता-बिगड़ता है। आयुर्वेद में वात, कफ और पित्त के असन्तुलन को बीमारी का कारण माना है, निश्चय ही यह असन्तुलन भोजन से उत्पन्न होता है। सन्तुलन का पुनं स्थापन भी भोजन में तदनुरूप परिवर्तन या सुधार करके किया जा सकता है। इस रूप में भोजन एक प्रकार से औषधि ही बन जाता है। मनुष्य का भोजन और अन्य वनस्पतियां जिन्हें जड़ी-बूटी के रूप में उपयोग करते है, कृषि जनित हैं। इस प्रकार सदियों या यों कहिये कि अनन्तकाल से कृषि और औषधियों का आपस में घनिष्ट सम्बन्ध रहा है।

मानव के पोषण का स्रोत भूमि-धरती माता-ही है। जिस पर जीवन की निरन्तरता अवलम्बित है। पौधे और प्राणियों द्वारा भूमि की उर्वरकता का सश्लेषित किया रूप ही मनुष्य का भोजन है। अनन्तकाल से पौधों ने मनुष्यों की कई बीमारियां और व्याधियों का इलाज प्रस्तुत किया है। एक क्षेत्र विशेष के पर्यावरण में जंगली रूप में पनपे या काश्त किये देशज पौधों का उस क्षेत्र और पर्यावरण में औषधि के रूप में विशेष महत्व रहता है। इसी कारण पहले के वैद्य अपनी बगिया में और लोगों की वाड़ी में औषधोपयोगी पौधे लगाने का सुझाव देते रहे हैं। रैसलपुर (जिला होशंगाबाद) के कई घरों में एक स्थानीय वैद्य ने गूगल, वनतुलसी, तेज, गुरवेल, कड़ुआचिरेता, मरु आदोला, गौती-चाय, वाल आदि लगवाये थे। निशानी के रूप में आज भी इनमें के कुछ पौधे इक्के-दुक्के घरों में मिलेंगे। कृषि और औषधि की यह एक दूसरों पर आधारित निर्भरता ने ही हलधर किसान को वैद्य बनने को प्रेरित किया और कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कई डाक्टर और वैद्य भूमि की, खेती की ओर आकर्षित होते हैं।

स्वास्थ्य का आधार—दिनोंदिन उत्तरोत्तर रूप में यह माना जाने लगा है कि स्वास्थ्य का महत्त्वपूर्ण आधार घटक स्वस्थ, पोषक, स्वादिष्ट और रुचिकर भोजन है। भोजन की गुणवत्ता का यह महत्व यदि निर्विवाद है तब औषधोपचारक को इस बात पर विशेष ध्यान देना होगा कि उपभोक्ता को खाद्य पदार्थ किस स्थिति में (ताजे, बासी, सड़े, गले, गन्दे आदि), किस रूप में और गुणवत्ता की किस कोटि में उपलब्ध होते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि न वैद्य, हकीम और न डाक्टर ही इस ओर ध्यान देते हैं और न वे इसके लिए चिंतित ही हैं। तथा सब बीमारियों का उत्तम एवं उपयुक्त इलाज स्वस्थ, पौष्टिक भोजन को छोड़ के दुनिया भर की औषधियां, विटामिन की गोलियां और पाचक चूर्ण देते है। यह पद्धति चिकित्सक के धन्धे की अवश्य पोषक है, पर मरीज की नहीं।

अमेरिका में किये मानव पोषण के एक अध्ययन से इस चौंकाने वाले निष्कर्ष का पता चला है कि सबसे अधिक मृत्यु दर उन क्षेत्रों में पाई जाती है जहां कि भूमि की उत्पादन शक्ति का ह्रास हो चुका है। हमारे अति भूक्षरण के क्षेत्र के आदिवासी और सघन जंगल में बसे वनवासी की मृत्युदर में भी संभव है इसी प्रकार का अन्तर मिले।

भूमि शोषण:—कृषि की वर्तमान नीति हर सम्भव युक्ति से कम-से-कम समय में, उत्पादन अधिक से अधिक व अधिक से अधिक मुनाफा कमाना है। इस कमाई में उपज की गुणवत्ता, भूमि का क्षरण, भूमि का दिल टूटना, भूमि की भावी स्थिति आदि की ओर ध्यान दिलाना दकियानूसी और अवैज्ञानिक माना जाता है, पिछड़ेपन की निशानी गिना जाता है। यह आर्थिक निमोडन या गला घोटन की प्रक्रिया परोक्ष रूपेण निहित स्वार्थ द्वारा प्रेरित सत्तात्मक दबाव का प्रतिफल है। मौनध्वनि की किरणों के समान ही अदृश्य में यह घातक प्रभाव करती है। समाज इन प्रभावों से बेखबर होने से उत्पादन की चकाचौंध में घर फूंक तमाशा देखता है, आनन्द मनाता है। रक्त वर्णीय क्रांति को हरित क्रांति का नाम दे उसमें अफीम रस डाल के लोगों को गफलत में डालना है।

तथाकथित वर्तमान वैज्ञानिक कृषि, भूमि का अधिक-से-अधिक शोषण करने पर आधारित है। भूमि के शोषित होते रहने की भी एक सीमा होती है। फिर उसका दिल टूट जाता है। यह इस स्थिति के आने पर अधिक उपज लेने के लिए क्रमशः कई कृत्रिम उपायों का सहारा लेना पड़ता है और वर्ष-दर-वर्ष अधिक और अधिक प्रमाण में रासायनिक खाद, कीटनाशक औषधियां आदि का प्रयोग करना पड़ता है। यह ऐसी हालत बना देता है कि ज्यों-ज्यों दवा की त्यों-त्यों बीमारी बढ़ती गई। इससे निष्कृति पाना कठिन हो जाता है।

सूक्ष्म तत्वों की कमी—वर्तमान सघन कृषि पद्धति में मूलत नत्रजन, स्फुर और पोटास रसायन ही बाहुल्यता में रासायनिक मिश्रण के रूप में दिये जाते हैं। भूमि में प्रचुर मात्रा में इनकी उपस्थिति भूमि में गुहित सूक्ष्म तत्वों को खींच उतना उपयोग कर लेता है और कुछ वर्षों में इन सूक्ष्म तत्वों की कमी प्रदर्शित होने लगती है। "हीरा" मरीखी बोनी किस्म के गेहूं की सघन काश्त में ३-४ वर्षों में ही जस्ता की कमी आ जाती है। इस प्रकार क्रमशः अन्य सूक्ष्म तत्वों की कमी भी प्रदर्शित होने लगती है। मक्का की काश्त में ऐसे अनुपात में मक्का के दान में जस्ता कम हो जाता है। यदि यह सामान्य रूप में होता हो तो इसका गांव की गरीब जनता के स्वास्थ्य पर, जो कि मक्का, ज्वार आदि मोटे अनाज पर आधारित है, बहुत असर होगा।

सूक्ष्म तत्वों की कमी वाली स्थिति में पैदा किया अन्न, सागभाजी आदि को खाने वाले →

क्या इन्दिराजी की गलत नीतियों के कारण लोकतंत्र समाप्त हो रहा है?

सेवा-ग्राम सघ अधिवेशन और उसके बाद की हमारी चर्चाओं में जो विचार भिन्नता और मतभेद प्रकट हो रहा है, उसे मार्ग-खोजन की दिशा में शुभ संकेत मानकर आपने जो स्पष्टीकरण और मार्ग दर्शन किया उसके लिए आभारी हू।

क्रांति की मुख्य धारा, कार्य-प्रणाली सहयोगी खोजन के साथ-साथ आपने देश और राज्य व्यवस्था के सन्दर्भ मे लोकतत्र को स्पष्ट किया और बताया कि अफगा-निस्तान का गणतत्र और भारत का लोकतत्र जो ऊपर के राज्य तत्र के द्वारा स्थापित हुआ है वास्तविक गणतत्र या लोकतत्र नही है। गण और लोक की सम्मति और सगठन से जो तंत्र बनेगा और जिस पर लोक का अकुश रहेगा वही सही लोकतत्र होगा। उसी की स्थापना के लिए गाधीजी ने काग्रेस को लोक सेवक सघ बनाने का सुझाया था। और चरखा सघ को गाव-गाव मे फैलने का बताया था। विनोबा भी ग्रामदान-ग्रामस्व-राज्य द्वारा लोक सम्मति और लोक-सगठन नीचे से खड़ा करने का बता रहे हैं। यानी आज के गणतत्र और लोकतत्र के द्वारा लोकराज्य स्थापना से भिन्न लोक के द्वारा उनका लोक राज्य बनाने की नयी पद्धति और विकल्प बता रहे हैं। इसमे लोगो को त्याग और निर्णय करने का अवसर है। इससे उनकी शक्ति और जिम्मेवारी दोनो विकसित होती है।

परन्तु आज सर्वोदय आन्दोलन मे हमारे साथी लोक शिक्षण और लोक सगठन से पक्षमुक्त लोकराज्य की बात करते हैं, और सर्वसम्मति की नयी पद्धति से विकल्प खड़ा करना चाहते हैं। साथ-साथ आज के राज्य तत्र और उसकी अव्यवस्था के सन्दर्भ में निम्न भूमिकाए व्यक्त करते हैं—

× आज की समस्याए वर्तमान राज्य पद्धति का परिणाम है। उससे निराश या क्षुब्ध न होकर उसकी उपेक्षा करना और अपना कार्य एकाग्रता पूर्वक करते रहना।

× आज की समस्याओ और प्रश्नो का विश्लेषण करना, और प्रचलित राज्य व्यवस्था द्वारा निराकरण का हल सुझाना, उसके लिए लोक शिक्षण करना, साथ-साथ लोगो द्वारा भी निराकरण का मार्ग बताना।

× आज की समस्याओ और प्रश्नो के सन्दर्भ में प्रचलित पक्षीय राज्य तत्र के अच्छे कामो का गौरव करना और गलत कामो की आलोचना करना। इन दोनो से लोगो की आस्था राज्यतत्र में ही पुष्ट होती है। आलो-चना से लोगो में असतोष फैलता है। जाने अनजाने हम सहयोगी या विरोधी पक्षो की भूमिका में माने जाने लगते हैं। इससे कन-फ्युजन उलझन फैलता है। आज के राज्य-तत्र और इन्दिराजी के बारे में कुछ ऐसा ही नजर आता है। क्या आप भी यह मानते हैं कि इन्दिराजी की गलत नीतियो और कार्य पद्धति के कारण नैतिकता का ह्रास हो रहा है, भ्रष्टाचार बढ रहा है और प्रचलित लोकतत्र समाप्त हो रहा है?
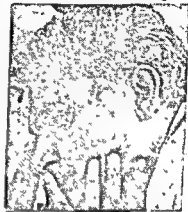
कृष्णराज मेहता

—कृष्णराज मेहता

→

होगा। यदि ऐसा न हुआ तो मनुष्य को कई प्रकार की नई-नई बीमारियो का सामना करना पड़ेगा और उनके इलाज के रूप मे कई विषैली प्रतिक्रियात्मक उपविष या व्यापक का आविष्कार करना होगा। बीमारिया और मनुष्यो की यह एक ऐसी दौड है जिसमे मनुष्य कभी भी विजयी नही होगा। बीमारी का पलड़ा हमेशा भारी रहेगा।

हमारा अस्तित्व इन आश्चर्यकारी उप-विष और कीटनाशक रसायनो के भरोसे नही टिक सकता। वह केवल भूमि की उत्पादक क्षमता बनाये रखने पर निर्भर करता है। वही उसकी नीव है। आगामी पीढी के पोषण की माग को पूरा करने का अन्य कोई तरीका है नही। इतिहास साक्षी है कि जिस राष्ट्र ने, जिस संस्कृति ने भूमि की अवहेलना की वह काल के गर्त मे समा गई। भारतीय संस्कृति अभी टिकी है। "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी"। यह बात है कि अभी तक भारत ने धरती माता का दोहन किया है शोषण नही। परन्तु अब हम ऐसे चौराहे पर पहुचे है जहा हमे सही मार्ग चुनना होगा। चुनाव हमे रीति का नही नीति का करना है। प्रश्न पद्धति का नही फिलासफी का, जीवन मूल्य का है। हमारे द्वारा निर्धारित जीवन मूल्य के अनुरूप ही हमे साधन और पद्धति का निर्णय करना होगा। नागरिको का वर्तमान और भविष्य में उत्तम स्वास्थ्य बनाये रखने से अच्छी कोई कृषि नीति हो नहीं सकती। स्वस्थ राष्ट्र ही स्वतंत्रता बनाये रख सकता है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता कायम रखने के लिये "गरीबी हटाओ" सरीखे राज-नैतिक नारो के स्थान पर हमारा उद्घोष हो "स्वस्थ नागरिक : स्वतन्त्र देश।" ■

एक जनवरी १९७४ से 'भूदान-यज्ञ' के मूल्यों मे परिवर्तन किया गया है। नये ग्राहक बनते और बनाते समय ध्यान रखें कि एक प्रति का मूल्य ३० पैसे और वार्षिक मूल्य पन्द्रह रुपये है।

इन्दिराजी ने रचनात्मक शक्तियों को सम्भलने का मौका दिया है

हम लोग में जो मतभेद चल रहा है वह पुराने संस्कार और नये चिन्तन का मंथन है। इसे समझने के लिए आज दुनिया में लोकतंत्र का जो परम्परागत विचार चल रहा है, उसे समझ लेना चाहिए। राजतंत्र के जमाने में नये राजनैतिक चिन्तकों ने लोकतंत्र का विचार रखा था। चिन्तकों का चिन्तन इंसान को आगे बढ़ाने के लिए होता है, मनुष्य में जो पाशविक याने आसुरी तत्व मौजूद है उसे नियंत्रित कर उसके बौद्धिक, सांस्कृतिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक सत्ता के विकास के लिए दण्डशक्ति याने दबाव की शक्ति का विकसित किया गया था। लोकतंत्र के चिन्तकों ने आसुरी शक्ति के नियंत्रण तथा नियमन के लिए सैनिक-शक्ति के रूप में याने दबाव शक्ति के रूप में आसुरी शक्ति के इस्तेमाल का विरोध किया। उन्होंने देखा यद्यपि आसुरी शक्ति द्वारा इन्सान के अन्तर्निहित असुर को स्थान कुछ नियंत्रित किया जा सका है, यदि उसके सांस्कृतिक विकास के लिए तत्वतः आसुरी शक्ति के साधन का इस्तेमाल असफल ही होगा, और वैसा हुआ।

समाज में जिस तत्व को प्रतिष्ठा मिलेगी उसका विकास और प्रसार होगा ही। देवासुर के युद्ध में अगर देव-तत्व की सुरक्षा के लिए असुर-शक्ति का ही भरोसा किया गया, तो स्पष्ट है उसी को गौरव तथा प्रतिष्ठा को मान्यता मिली, फलस्वरूप धीरे-धीरे दुनिया में असुर वृत्ति विकसित होती गयी और आज विश्व भर में उसके साम्राज्य की स्थापना हो गयी।

लोकतंत्र के प्रथम चिन्तकों ने मनुष्य के सामाजिक चिन्तन की इस प्राथमिक भूल को सुधारना चाहा था। इन्सान की इन्सानियत को अगर आगे बढ़ाना है तो हैवान-वृत्ति के नियंत्रण के लिए भी इन्सानी शक्ति का इस्तेमाल ही अनिवार्य है, ऐसा उन्होंने सोचा। नहीं तो हैवानी शक्ति द्वारा इन्सानी वृत्ति के विकास का प्रयास माया ही साबित होगी। उस वृत्ति का विकास उसे अपनी शक्ति द्वारा ही करना होगा, तभी वो सफल प्रयास होगा। अतएव उन्होंने समाज के संचालन, संवर्धन तथा उनके संतुलन की रक्षा के लिए दबाव शक्ति के स्थान पर मानव शक्ति याने सम्मति शक्ति का विचार रखा।

धीरेनदा

यद्यपि लोकतंत्र के ऋषियों ने सम्मति शक्ति का गौरव किया और मानव की गति-शक्ति तथा धृति-शक्ति के लिए उसी शक्ति का इस्तेमाल अनिवार्य माना। तथापि पुराने संस्कार की परंपरा के अनुसार लोकतंत्र के संयोजकों ने उसी शक्ति को थोड़े हेरफेर के साथ लोकतंत्र के विकास के लिए भी इस्तेमाल की पद्धति बनाई। राजतंत्र के अनुसार दंड-शक्ति याने सैनिक-शक्ति का इस्तेमाल राजा के एक-छत्र-अधिकार में था। लोकतंत्र के संयोजकों ने केवल इस एक-छत्रता को बदलकर लोक-सम्मति का विकल्प रखा। उन्होंने यह पद्धति बनाई कि मनुष्य के विकास के लिए तथा उसकी शांति और संतुलन की रक्षा के लिए सैनिक शक्ति याने आसुरी शक्ति तो अनिवार्य है ही लेकिन वह शक्ति किसी के एकछत्र अधिकार में न रहकर कोई लोक सम्मत प्रतिनिधि के हाथ में रहना चाहिए। इसी को उन्होंने दबाव शक्ति के स्थान पर सम्मति शक्ति का कोअर्शन के स्थान पर कसेंट का अधिष्ठान माना। फिर शक्ति का दुरुपयोग न हो इसलिए पक्षगत राजनैतिक सिद्धान्त का आविष्कार किया। उस सिद्धान्त के अनुसार दंड-शक्ति के संचालन के लिए अर्थात् शासन के संचालन के लिए शासक दल तथा उस दल की गलतियों के सुधार के लिए और शक्ति के दुरुपयोग की रुकावट के लिए एक विरोधी दल की कल्पना की।

अर्थात् आज के परम्परागत तथा प्रचलित लोकतंत्र के अनुसार राजनीति के क्षेत्र में इतना ही सुधार हुआ कि दंड-संचालन लोक सम्मति तथा कुछ हद तक शासक को अंकुश के अन्तर्गत रखने की परिपाटी बनी। लेकिन मूलतः इन्सान के विकास के लिए, आसुरी शक्ति का ही गौरव तथा उसकी प्रतिष्ठा को ही सर्वमान्य बनाये रखा गया।

राजनीति के क्षेत्र में गांधी के आविर्भाव के पहले तक लोकतंत्र के बिन्दु पर शासक दल और विरोधी दल का संगठन लोकतांत्रिक चिन्तकों की आखिरी पहुँच बनी रही। लेकिन इस पक्षगत राजनीति की पद्धति से उनके उद्देश्य की सिद्धि नहीं हुई। यद्यपि विरोधी दल का रोल शासक दल का सुधार और नियंत्रण है ऐसा माना गया, तथापि वह दल उस स्थान पर टिक नहीं सका। उसका रोल प्रतिद्वन्द्वी दल के रूप में विकसित हुआ। फलस्वरूप उसकी आलोचना सुधार की दृष्टि से न होकर उसे समाप्त कर शासक दल के रूप में अपने को अधिष्ठित करने के लिए प्रयास मात्र बन गया। फिर गांधीजी ने उसी प्रचलित लोकतंत्र के अन्दर एक नई कल्पना की बात की। वह थी शासक दल और विरोधी दल के बाहर तथा सत्ता संघर्ष से अलिप्त ऐसे सचेतक पक्षों का निर्माण, जो वे दो राजनैतिक दलों में शामिल नहीं होंगे लेकिन उनके कार्यकलापों की समीक्षा करते रहेंगे। उनके सही और अच्छे कामों का गौरव करेंगे तथा गलत कामों की आलोचना

करेंगे। ये पक्ष कोई संगठित जमात भी हो सकते हैं और स्वतंत्र विचारकों के रूप में अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व का अस्तित्व रख सकते हैं।

लेकिन वास्तविक तथा प्रत्यक्ष लोकतंत्र की स्थापना के लिए गांधीजी की मूल कल्पना यही थी। वे स्पष्ट रूप से लोकतंत्र का निर्माण लोक की बुनियादी इकाई से शुरू करके विश्व-तंत्र तक पहुंचने की बात करते थे। उसी की एक तस्वीर के रूप में दुनिया के सामने पेश करने के लिए ओशनिक सर्कल के चित्र को रखा। दुर्भाग्य से विदेशी राज के हटते ही गांधी चले गये, और अपनी इस परिकल्पना को साकार करने का अवसर उन्हें नहीं मिला। गांधी के चले जाने पर विनोबा ने ग्रामस्वराज्य आंदोलन द्वारा उनके छोड़े हुए छोर से उस दिशा में प्रयास करना शुरू कर दिया और २० साल में इस विचार को दुनिया के सामने स्पष्ट रूप से प्रकाशित कर दिया। मैं मानता हूं कि देश में आज जो संकट चल रहा है वह पुरानी राजनैतिक परम्परा का फलित भाव है। और तब तक दुनिया के राजनैतिक संकट का निराकरण नहीं होगा, जब तक लोकतंत्र की इमारत के निर्माण का श्रीगणेश लोक द्वारा समाज की इकाई पर से प्रारंभ नहीं होगा। इस प्रश्न पर मैंने काफी चर्चा की है, इसलिए इसकी अधिक चर्चा आवश्यक नहीं है। मैं सिर्फ इतना ही दुहराना चाहूंगा कि जो लोग बुनियादी लोकतंत्र की स्थापना के लिए गांधी द्वारा परिकल्पित तथा विनोबा द्वारा प्रतिपादित ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रम में लगे हुए हैं, उन्हें निष्ठा, सातत्य और एकाग्रता के साथ अपनी शक्ति को इसी में केन्द्रित करना चाहिए। वे अपनी शक्ति प्रचलित लोकतंत्र के सुधार के दूसरे कामों में, चाहे वे तात्कालिक दृष्टि से कितने ही उपयोगी और आवश्यक क्यों न हों, न लगायें। नहीं तो उनकी शक्ति बिखर जायेगी। उन कामों के लिए परंपरागत लोकतंत्र के प्रगतिशील विचारकों पर भरोसा करना चाहिए। वस्तुतः इस पद्धति के सुधार की कल्पना इन्हीं लोगों के चिन्तन का परिणाम है।

प्रचलित लोकतंत्र के प्रश्न पर तटस्थ पक्ष के सुझाव के अलावा कुछ और सुधार की बात सामने आयी है, और इसकी पहल जयप्रकाश बाबू जैसे प्रगतिशील विचारकों द्वारा हो रही है। लोकतंत्र के प्रचलन विचार के अनुसार तंत्र में लोक की प्रत्यक्ष भागीदारी को अनिवार्य माना गया है। इस तत्व को पार्टिसिपेटिव डेमाक्रेसी की संज्ञा दी गयी है। जयप्रकाश बाबू के लोक राज्य की कल्पना इसी विचार के अनुसार है लेकिन तुम लोग विनोबा की प्रेरणा से जिस लोकतंत्र की स्थापना करना चाहते हो वह पार्टिसिपेटिव डेमोक्रेसी से आगे बढ़कर इनीशियेटिव डेमोक्रेसी की कल्पना है।

आज तुम लोगों में जो मतभेद चल रहा है वह मुख्यतः इन्हीं प्रश्नों को लेकर है। बाकी जो ब्यौरे की चर्चा हो रही है वह सब इन्हीं मुख्य दो दृष्टियों से जुड़ी हुई है। हमारे कुछ मित्र लोकतंत्र की पहली दृष्टि में सुधार के पक्षपाती हैं। और उस दृष्टि को फलीभूत करने के लिए हमने जनता के उम्मीदवार के विचार को प्रसिद्ध किया है और सर्व-सेवा-संघ को उपरोक्त तटस्थ पक्ष के रूप में विकसित करना चाहते हैं। मैं मानता हूं शायद जमात की हैसियत में हम वहीं तक बढ़ सकते हैं। लेकिन उस काम को संयोजित करने में हमें इस बात पर ध्यान रखना होगा कि उसे ग्रामस्वराज्य की मूल कल्पना के समवाय में ही प्रसारित और संगठित करना होगा। जो लोग ग्रामस्वराज्य की परिपूर्ण कल्पना के अनुसार लगे हुए हैं वे उसी काम में अपनी शक्ति केन्द्रित करते हुए भी उपरोक्त प्रचलित राजनैतिक सुधार के प्रयास के साथ अपना पूर्ण सहकार कर सकते हैं। मैं मानता हूं कि उपरोक्त दोनों दृष्टियों को मानने वाले संपूर्ण रूप से परस्पर सहकार में लग सकते हैं। इतना ही नहीं बल्कि वह सहकार एक दूसरे की पूरक शक्ति के रूप में काम करेगा। तुम लोगों को ये जो भय है कि तीसरे तटस्थ या राजनीति निरपेक्ष पक्ष द्वारा राजनीति के सही कामों का गौरव और गलत कामों की आलोचना से लोगों में ये बुद्धिभेद पैदा होगा कि हममें से कुछ शासक पक्ष के साथ और कुछ विरोधी पक्ष के साथ है वह सही नहीं है क्योंकि वह जो तीसरा पक्ष है वह केवल जनमत के लिए गलत-सही बातों का विश्लेषण करता रहेगा। उसमें किसी के साथ जोड़ने का सवाल पैदा नहीं होना चाहिए। अतएव आज जो मतभेद और दृष्टिभेद का दर्शन हो रहा है उससे घबराने की आवश्यकता नहीं है बल्कि यह समझना चाहिए कि अगर हम इस चीज से घबरायेंगे तो भय है इस घबराहट के गर्भ में से पक्षभेद का जन्म न हो जाय।

आखिर में तुमने इन्दराजी के बारे में मेरा अभिप्राय पूछा है। अच्छा है तुमने पूछ लिया। क्योंकि मैं इस सवाल पर कुछ कहता नहीं हूं मेरा विचार अपने साथियों से भिन्न है। वस्तुतः इन्दिरा के लिए मेरे मन में बहुत अधिक सहानुभूति है। मैं मानता हूं इसने सत्ता पर पहुंचने के लिए और उसे चलाने के लिए काफी अनैतिक काम किया है, लेकिन उस बिन्दु को मैं विशेष महत्व नहीं देता हूं। आज की राजनीति इतनी गंदी है और यह स्वाभाविक रूप से है, क्योंकि यह राजनीति अब आउट आफ डेट हो गयी है, बासी हो गयी है और सड़ने लगी है। अब स्पष्ट है कि जो कोई भी उसमें रहेगा वह अनैतिकता का शिकार होगा ही। तो दुनिया के राजनीति वाले जो धंधा करते हैं, इंदिरा भी वह ही करती है। हम लोग बचपन में एलजबरा का इक्वेशन बनाते थे। उसमें कुल मदों में जितना समान, कामन होता था उसे ब्रैकेट के बाहर करके बाकी ब्रैकेट के अन्दर रखते थे उसी तरह जब मैं कभी राजनैतिक व्यक्तियों पर विचार करता हूं तो अनैतिकता को ब्रैकेट के बाहर करके उनके केवल काम का ही विचार करता हूं। यानी मैं यह देखता हूं कि अनैतिकता के अलावा उसने जो कुछ किया है उसका स्थान राष्ट्रजीवन में कहां रहता है।

इस दृष्टि से जब मैं, इन्दिरा ने क्या किया है, इस पर विचार करता हूं, तो मैं देखता हूं कि उसने बहुत बड़ा काम किया है। वस्तुतः मेरी दृष्टि में उसने देश को बचाया है। १९४७ से १९६७ तक दो दशकों में मुल्क के सबसे मजबूत पक्ष ने अपनी सारी साख गवा दी थी और देश के अधिकांश राज्यों में उसकी सत्ता समाप्त हो गयी थी। केन्द्र में भी उसकी शक्ति अत्यधिक कमजोर हो

(शेष पृष्ठ १२ पर)

बिना टिप्पणी के : भील आदाता नौकरशाही के चक्कर में

राजस्थान में उदयपुर जिले की रेलमगरा तहसील में करीब १००० बीघा भूमि भूदान में प्राप्त हुई जिसके वितरण की व्यवस्था राजस्थान भूदान यज्ञ बोर्ड ने अपने कार्यकर्ता एवं स्थानीय खादी संस्था के मार्फत की। इसी तहसील में बेंटूबो गांव में १२ पिछड़ी जाति (भील) के भूमिहीन लोगों को १०० बीघा भूमि वितरित की गयी। तत्कालीन तहसीलदार ने सन् १९६५ में भूमि पैमूद कर भूदान बोर्ड के नाम दर्ज करने के आदेश पटवारी हलका को दिये किन्तु वह आदेश कागजों में ही पड़ा रहा और दो-तीन साल तक कोई कार्यवाही नहीं की गयी। कई बार भूदान बोर्ड जयपुर से कार्यकर्ता इस काम को निपटाने हेतु आये और स्थानीय संस्था के कार्यकर्ता ने भी समय-समय पर तकाजे किये किन्तु पटवारी जी के कान में जूं तक नहीं रेंगी। लगातार तकाजे से पटवारी जी की कृपा हुई और उन्होंने भूमि नाप दी। किन्तु रेवेन्यू रिकार्ड की सम्पूर्ण कार्यवाही नहीं की गयी। भील खुश हुए और वे उस भूमि को अपने कठिन परिश्रम से उपजाऊ बनाने में जुट गये। लेकिन ४ वर्ष बाद फिर आफत की घड़ी आयी। नये तहसीलदार ने उन भीलों को सरकारी भूमि पर नाजायज कब्जा करने के कारण जुर्माना अदा करने तथा भूमि से कब्जा हटाने का नोटिस जारी कर दिया। भीलों में तहलका मच गया। उनके तमाम भविष्य के सपने ढह गये। इन दीनहीन गरीबों पर ५० रु० से लेकर २०० रुपया तक जुर्माना किया गया। इन लोगों ने लाख कहा कि यह भूमि हमें भूदान में मिली है—हम इस पर गत ५ वर्षों से कृषि कर रहे हैं—इस पर हमारा कब्जा है। हमने कोई नाजायज कब्जा नहीं किया है। लेकिन इन गरीब भूमिहीनों की आवाज इस आजाद मुल्क में कौन सुनता है? कई बड़े जमींदारों, साहूकारों एवं प्रतिष्ठित लोगों ने सैकड़ों बीघा सरकारी भूमि पर नाजायज कब्जा कर रखा है। लेकिन उन्हें बेदखल करने का नोटिस जारी नहीं होता, क्योंकि वे साधन सम्पन्न हैं, प्रभावशाली हैं, उन्हें भेंट देने और दिलवाने हैं। सताने के लिए गरीब जो हैं। तहसीलदार ने इन गरीबों की एक न सुनी और न अपने कार्यालय में दीमक चाटती भूदान की फाइल का देखने की आवश्यकता को महसूस की। वे सताये हुए भील मेरे पास आये। मैं उन दिनों स्थानीय खादी संस्था में कार्यकर्ता था। खादीधारी भाइयों के पास उनके दर्द की दवा होती है, ऐसी उनकी धारणा थी। मैं उनको लेकर तहसीलदार से मिला और उनको सम्पूर्ण जानकारी से अवगत कराया और प्रार्थना की कि इस समस्या को तत्काल सुलझाया जाय। तथा जब तक यह मामला तय न हो जाय तब तक इन्हें तंग न किया जाय। इस प्रार्थनापत्र की प्रतिलिपि भूदान यज्ञ बोर्ड जयपुर तथा जिलाधीश, उदयपुर को भी दी। माननीय यज्ञदत्त जी उपाध्याय, अध्यक्ष भूदान यज्ञ बोर्ड ने इसमें गहरी दिलचस्पी लेकर जिलाधीश तथा तहसीलदार को इस कार्य को शीघ्र निपटाने एवं भीलों को जलील न करने हेतु तार दिये। और पत्र लिखे। लेकिन इसके बावजूद भी भीलों को सताना जारी रहा। उन्हें आये दिन पेशी पर रेलमगरा तहसील में बुलाया जाता। उन्हें नहीं मालूम कि एक दिन मजदूरी नहीं करने से उन गरीबों के घरों में चूल्हा तक भी नहीं जलेगा। कई लोगों ने मजबूरी से कर्ज लेकर जुर्माना भर दिया।

लेकिन भाग्य ने पलटा खाया। तहसीलदार का स्थानान्तरण हो गया। उसकी जगह एक नेकनाम पुरुष शायद उन भीलों का उद्धार करने आया। मैंने उन्हें फिर से इस केस की जानकारी दी। उन्होंने फौरन सभी सम्बंधित कर्मचारियों को फटकारा और कहा कि इन गरीबों के पास खाने को घर में दाने भी नहीं हैं और तुम इन्हें तंग करते हो, शर्म नहीं आती। ६ वर्षों में भी इस भूदान के कार्य को क्यों नहीं निपटाया गया? आखिरकार हम बेंटूबो गये। गांव के प्रतिष्ठित लोगों को बुलाया गया। भूमि नापी गयी। किन्तु मामला बड़ा पेचीदा निकला। भूतपूर्व पटवारी ने अपने स्वार्थवश वास्तविक भूमि को नापी न कर अंदाज से सीमा निर्धारण कर दिया था और नासमझ भीलों ने जिस भूमि पर कब्जा किया उसमें कुछ सरकारी बिला नाम थी, कुछ चरनोट थी और कुछ भूदान की भूमि थी। उस पटवारी ने मामला कितना उलझा दिया। चरनोट किसी को बन्दोबस्त नहीं की जा सकती है। ६ वर्षों तक ये लोग इस भूमि पर काबिज थे और काश्त करते आ रहे थे। इन वर्षों में सरकारी कर्मचारी नींद निकाल रहे थे—इधर गांववालों को भी भड़काया गया। जिससे वे लोग भी चरनोट की भूमि को देने का विरोध करने लगे। चरनोट मलोट करने के लिए सम्बंधित ग्रामसभा की सहमति चाहिए। दुर्भाग्यवश ग्रामसभा के कानून में गरीबों का भला करना नहीं लिखा है। तहसीलदार जी के सामने गंभीर समस्या पैदा हो गयी। इधर वे इन भीलों का भला करना चाहते थे उधर गांववाले उन्हें बेदखल करने पर अड़े हुए थे। तहसीलदार ने गांववालों को समझाया कि देखो ये गरीब भूमिहीन आपके सहारे यहां पड़े हुए हैं ये आप ही की मेहनत मजूरी करके अपना पेट भरते हैं। यदि इनको भूमि से बेदखल किया गया तो ये भूखों मर जायेंगे। वर्षों से की गयी इनकी मेहनत बेकार जायगी। यदि आप इन्हें भूमि देने में सहायक होंगे तो ये लोग आपको दुआ देंगे। इस बात का लोगों पर असर हुआ उनके दिमाग में करुणा जागी—स्वीकृति मिल गयी—भीलों को भूमि मिल गयी—उन्होंने गांववालों तथा तहसीलदार की जय-जयकार की। इस प्रकार उन गरीब भीलों को परेशानी से छुटकारा मिला।

आज भी कई जगह ऐसी समस्याएं हैं। भूदान की भूमि के झगड़े चल रहे हैं। लोगों को इसी प्रकार सरकारी तंत्र का शिकार होना पड़ रहा है। भूदान यज्ञ बोर्ड को यथाशीघ्र भूदान की भूमि का निपटारा करना चाहिए। इससे एक ओर गरीबों को राहत मिलेगी तो दूसरी ओर ग्रामस्वराज्य की स्थापना के लिए लोकशक्ति जागृत होगी। सर्वोदय कार्यकर्ता लोकसेवकों का यह परम कर्तव्य है कि वे अपने-अपने क्षेत्र में ऐसे कार्य हाथ में लें और अपने को सच्चे माने में लोकसेवक सिद्ध करें। ताकि गांधी, विनोबा, जयप्रकाश का स्वप्न साकार हो।

उमराव बेग मिर्जा

(पृष्ठ ५ का शेष)

गांव पर कुल बयालीस हजार रुपये का कर्ज है। उसमें से करीब इक्कीस हजार रुपया ग्रामवासियों ने महाजनों से लिया है जो पच्चीस प्रतिशत सूद लेते हैं। कर्ज के ब्याज का हिसाब दिखाई दी वह ग्रामसभा के सामने रखी गई और योजना बनी कि इस कर्ज से मुक्ति हो। ग्राम भूमि के लिए सिंचाई का प्रबन्ध करने का तय किया गया जिन किसानों को सिंचाई के साधन मिलेंगे उन्हें हर एक को एक भूमिहीन परिवार को साल भर काम देना अनिवार्य माना गया। राष्ट्रीय बैंकों से बिहार स्टेट कमेटी के मार्फत इसके लिए कर्ज लिया जायेगा। पच्चीस बोरिंग (जमीन से पानी ऊपर लाने का स्थानीय यन्त्र) और पांच पाईप इनके अतिरिक्त पच्चीस हैण्ड पम्प ग्रामसभा के मार्फत छोटे किसानों को दिये जायेंगे। खाद के काम में एक तंगी नहीं पड़ती है इसमें बहुत बड़े प्रमाण में "सूद" नाम की हरी वनस्पति पैदा होती है जिसका बढ़िया खाद बनाया जा सकता है। कूड़े-कचरे का ढंग से कम्पोस्ट खाद बनाने का ढंग गांव वालों ने सीखा। पाखाना बनवा कर मल-मूत्र का भी खाद बना कर इस्तेमाल करने का प्रयास होगा। ईंधन देने वाले पेड़ लगाये जायेंगे। ईंधन जलाने के बाद गोबर जलाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। गोबर-गैस प्लांट भी बैठाया जायेगा। गांव में ही उत्तम बीज उगाये जायेंगे।

पूरक उद्योग के तौर पर कम्बल बनाने तथा कपड़े भी बनाये जायेंगे। अमनाबादी जाति की बकरियां भी रखी जायेंगी। तेलघानी मधुमक्खी-पालन, सिलाई आदि उद्योग शुरू होंगे।

इन सारी बातों की पंचवर्षीय योजना गांव वालों ने बनाई। उसको कार्यान्वित करने के लिए ग्रामसभा की कार्यकारिणी को बल पहुंचाने की दृष्टि से पड़ोसी गांवों के उत्साही सज्जनों की तथा समाज सेवी कार्यकर्ताओं की मदद और मार्गदर्शन सतत् मिलता रहे ऐसा प्रयत्न होगा।

राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजनाएं गांव की बेकारी दूर करने में असमर्थ सिद्ध हुईं। क्यों कि वह ऊपर से लादी गई थी। अतः सामान्य ग्रामवासियों के पहुंच के बाहर की थी। वे पूंजी-केन्द्रित तथा ज्यादह खर्चीली थीं। परन्तु बेलसा की यह पंचवर्षीय योजना गांव वालों ने खुद बनाई है। इसमें आखिरी व्यक्ति का पहले ख्याल रखा गया है और उत्पादन वृद्धि में सामाजिक न्याय को नजरन्दाज नहीं किया गया है।

बेलसा आशा भरी नजर से विकास के लिए ऊपर देखता, आगम के टुकड़ों के लिए सरकार के सामने हाथ फैलाना यही अब तक गांव जानता था लेकिन अब यह उसकी अपनी योजना बनी है।

(पृष्ठ १० का शेष)

गयी थी। उस सत्ता से भी वह किसी दिन गिर सकती थी। लेकिन देश में कोई दूसरी एक पार्टी उसके नजदीक का भी दर्जा नहीं बन सकती थी पर ज्यादह देश में एक अत्यन्त खतरनाक व्हैक्युम पैदा हो गया था। वही स्थिति अगर चलती रहती तो वह दिन बिलकुल निकट आ गया था, जब मुल्क के संपूर्ण विघटन का खतरा आ जाता। फिर तो देश में एक्सट्रीम लेफ्ट और एक्सट्रीम राइट के बीच भयंकर गृह युद्ध का आविर्भाव हो जाता यह स्थिति पाकिस्तान की स्थिति से ज्यादा भयंकर होती। पाकिस्तान में तो एक के बाद दूसरी सैनिक तानाशाही कायम होती गयी, और चाहे जिस तरह हो मुल्क का संचालन होता रहा। लेकिन दीर्घकाल की सिविल-वॉर की स्थिति में वह भी नहीं चल सकती थी। ऐसे नाजुक मुहूर्त में इन्दिरा का आविर्भाव हुआ और उसने देश को एक स्टेबल सरकार दे दी।

हमारे बहुत से मित्र कहते हैं, और सही कहते हैं, कि इन्दिरा अपनी सरकार चलाने में तानाशाही पद्धति का इस्तेमाल करती है। अगर वह इसी तरह से हर राज्य में हस्तक्षेप करती चली तो उसके बाद मुल्क एकाएक कोलैप्स कर जायेगा। लेकिन सोचने की बात यह है कि संविद के प्रयोग की असफलता के कारण देश करीब करीब कोलैप्स कर ही चुका था। सर्वाधिक मजबूत पार्टी, कांग्रेस की टिमटिमाती आग बस तब उसको रोक सकती थी।

तब इन्दिरा ने अपने व्यक्तिगत हस्तक्षेप से अपने तानाशाही ढंग से ही सही उस स्थिति को अगर कुछ सालों के लिए स्थगित भी कर लिया है तो जो लोग शिकायत करते हैं और मुल्क का बनाना और सभालना भी चाहते हैं, तो इन्दिरा ने कम से कम उनको इस काम के लिए काफी सालों का मौका दे दिया है। मैं मानता हूं देश की जो स्थिति है, इन्दिरा या किसी दूसरे की सरकार उसको सभाल नहीं सकती है। उसका कारण मैंने अपने एक कमाल ७ में कह ही दिया है। लेकिन मैं इतना जरूर मानता हूं कि उसने भय संकट को इतने दिनों के लिए टालकर रचनात्मक शक्ति को देश को सभालने के लिए लम्बा समय दे दिया है। इसमें तुम लोग जो अपने को रचनात्मक शक्ति मानते हो, उसके लिए एक बड़ा अवसर निर्माण हो गया है। उसने और भी कुछ अच्छे काम किये हैं, जैसे बंगला देश की क्राईसिस में उसने अत्यन्त सतुलित और सूक्ष्म बुद्धि का परिचय दिया है। राष्ट्र के विभिन्न मामलों में जनता के किसी तबके के दबाव नीति के प्रश्न पर हिम्मत और मजबूती के साथ अपने स्थान पर डटी रही, वैदेशिक मामलों में काफी हद तक भारत की साख को सुधारा है, आदि। उसके कृतित्व को अगर छोड़ भी दिया जाये तब भी देश के उपरोक्त संकट को जिस ढंग से उसने सभालकर देश की सभी रचनात्मक शक्तियों को सभालने के लिए जो मौका दे दिया है, उसको मैं अत्यन्त महत्वपूर्ण मानता हूं। यह काम आज देश के जितने दूसरे नेता हैं उनमें से कोई नहीं कर सकते थे। इस लिए मेरे मन में इन्दिरा के लिए बहुत आदर है। साथ ही उसकी जो परिस्थिति है उसके लिए अत्यधिक सहानुभूति है। वह बेचारी एक तरह से अकेली जूझ रही है। मुझको उसके चारो तरफ दो ही तत्व दिखाई दे रहे हैं, एक चाटुकार और दूसरे विरोधी। वास्तविक मित्र और साथी करीब-करीब निल हैं। ●

समाजवादियों की सर्वोदयवालों से कहां-कहां सहमति है ?

बलरामपुर गोष्ठी का आयोजन पूर्व-निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार २०, २१, २२ दिसम्बर ७३ को बलरामपुर गांव में हुआ। २७ लोगों को निमंत्रित किया था। समाजवादी मित्रों ने भी अपनी ओर से करीब १५ व्यक्तियों को आमंत्रित किया था। गाड़ियों के बन्द होने के कारण गोष्ठी में भाग लेने के लिए सिर्फ १० आदमी ही बाहर से पहुंच सके। इनके अलावा बलरामपुर के कुछ लोगों ने भी गोष्ठी में भाग लिया। बाहर से आये लोगों में सर्वश्री ओमप्रकाश दीपक, राम एकबाल, रामजी भाई, नरेन्द्र भाई बाबूराव चन्दावार, शुभमूर्ति, किशोर, सन्तोष, सत्य नारायण तथा राही थे। स्थानीय तरुणों में अधिक समय तक गोष्ठियों में शामिल रहने वालों में सर्वश्री त्रिभुवन और अरुण थे।

२० दिसम्बर को तीसरे पहर हमारी चर्चा शुरू हुई। चर्चा के दूसरे दौर में गोष्ठी में भाग ले रहे सब लोगों ने अपनी वैचारिक और कार्यगत भूमिका स्पष्ट की। इसी क्रम में यह बातें भी सामने आयीं कि सर्वोदय-आन्दोलन में काम कर रहे लोगों की समाजवादी मित्रों की ,विचार और कार्यपद्धति के बारे में क्या राय है, सहमति, असहमति के कौन-कौन से बिन्दु दिखाई देते हैं। और इसी प्रकार समाजवादी आन्दोलन में लगे साथियोंने सर्वोदय की विचार और कार्यपद्धति के बारे में अपनी राय जाहिर की।

पूरी बातचीत के बाद ऐसा लगा कि ,हमारे बीच बुनियादी मुद्दों पर साम्य है। अगर कहीं भिन्नता है तो कार्य के क्रम और जोर देने के बिन्दुओं के मामले में, भाषा और अभिव्यक्ति की शैली में, तथा कार्य की व्यूहरचना में। ये भिन्नताएं आपसी व्यवहार और समझदारी के अभाव में ऊपर-ऊपर से देखने पर बुनियादी लगती हैं। लेकिन यह बुनियादी नहीं है। ऐसा हम सबने महसूस किया।

समाजवादी मित्रों के अनुभव की कुछ मुख्य बातें।

.क अन्यायी व्यवस्था को समाप्त करने के लिए निषेधात्मक के साथ विधायक प्रयत्न हम नहीं कर पाये। उसी तरह ऐसा लगता है कि सर्वोदय आन्दोलन में विधायक पर इतना जोर रहा कि निषेधात्मक पहलू को छुआ ही नहीं गया।

ख विचार-दर्शन के आधार पर अब तक के बने संघटन अपने लक्ष्य से च्युत हो चुके हैं। क्रांति के सन्दर्भ में संगठन के प्रश्न पर बुनियादी चिन्तन और प्रयोग अनिवार्य है।

ग अब तक हमने आपने जो कुछ किया है। उससे जिन परिणामों की अपेक्षा की गई थी वे परिणाम प्रगट नहीं हो पाये।

घ हमारे बीच सामन्ती और जातिवादी संस्कारों से मुक्ति की प्रक्रिया तीव्र नहीं हो पायी। जिसके कारण हम आमजन के साथ अधिकाधिक तादात्म्य नहीं साध पाये हैं।

विशेषरूप से सर्वोदय-आन्दोलन के बारे में समाजवादी मित्रों का अभिप्राय

१. सर्वोदय वाले अन्याय से लड़ते नहीं, सत्ता से टकराव को टालते हैं।

२ सत्याग्रह के सन्दर्भ में स्वयं और जनता में भेद करते हैं।

३ सर्वसम्मति या सर्वानुमति पर अत्यधिक जोर देते समय वर्तमान समाज के बलशाली लोगों की अन्याय करने की क्षमता इस से बढ़ने वाली है। इस बात को नजरन्दाज करते हैं।

सर्वोदय आन्दोलन में लगे साथियों ने जो बातें कहीं। उनमें ऊपर लिखे मुद्दों क, ख, ग, घ पर प्रायः सहमति व्यक्त की। इसके अलावा उनका कहना था

.१ हमारे काम की व्यूहरचना पर्याप्त रही है। अपेक्षित परिणाम नहीं आये हैं यह सही है। लेकिन हमारा जोर कदम-कदम पर हो रहे अन्याय से लड़ने पर नहीं। इस पूरी अन्यायी व्यवस्था से लड़ने और उसे समाप्त करने की लोक शक्ति पैदा करने पर रहा है। और सत्ता को क्षीण करना हमारा लक्ष्य है। समाजवादी मित्र भी केन्द्रित राज्य-सत्ता और अर्थसत्ता के विकेन्द्रीकरण को नयी समाज रचना का बुनियादी आधार मानते हैं।

२ हम अपने और जनता में जो भेद करते हैं उसके पीछे आशय यह है कि हम संवेदना के स्तर पर अन्याय पीड़ित लोगों के साथ हैं। लेकिन हम उन मानों में उनके स्तर पर अन्याय पीड़ित नहीं हैं। क्रांति को क्रांति करने वालों के निहित स्वार्थ का शिकार बनने से रोकने के लिए अब यह सिद्ध हो चुका है कि क्रांति की अगुवायी वह करे जो अन्याय पीड़ित है, उस व्यवस्था का सबसे अधिक शिकार है, जिस व्यवस्था को समाप्त करना है। नहीं तो हमारी अगुवाई हमारे सामन्ती संस्कारों के कारण क्रांति के रास्ते में बाधक बन सकती है। इसलिए हम मानते हैं कि अन्याय पीड़ितों में अन्याय के प्रतिकार की ताकत पैदा करने का ही काम हमें करना चाहिए।

३ हमारा मानना है कि वर्तमान व्यवस्था में सुधार के लिए सत्याग्रह करने से यह व्यवस्था ही सुदृढ़ होती है। इसलिए इसे बदलने की सत्याग्रही शक्ति पैदा करना हमने अपना लक्ष्य माना है। इस सन्दर्भ में हम आगे चलकर जिस सत्याग्रह की कल्पना करते हैं, वह लोकशक्ति का राज्यशक्ति से असहकार के रूप में शुरू होगा, सीधी टक्कर के रूप में नहीं। इसलिए हम गांव में सहकार की शक्ति विकसित करना चाहते हैं ताकि वर्तमान अन्यायी व्यवस्था का एक पुर्जा बनकर रहने से लोग इनकार करें और केन्द्रित राज्य तथा अर्थसत्ता से लड़ने की शक्ति हासिल कर सकें।

४ सर्वसम्मति पर हम इसलिए अधिक जोर देते हैं। क्योंकि हमारा अनुभव यह है कि इसे मान्य करने पर ही सबको मत व्यक्त करने का अवसर मिलता है और कमजोर की आवाज को भी ताकत मिलती है। बहुमत-अल्पमत में विभक्त करके समर्थन प्राप्त करने की भरपूर गुंजाइश है। सर्वसम्मति या सर्वानुमति में अगर इसकी गुंजाइश होगी भी तो अल्पतम ही।

—रामचन्द्र राही

(पृष्ठ २ का शेष)

आवश्यकता को अपनी पैनी दृष्टि से, योग्य शब्दों में रखा तो विज्ञान के आत्यंतिक पक्षधर और अध्यात्म के बारे में कदाचित ही सहानुभूति के साथ सोचने वाले पंडित जवाहर लाल नेहरू को बात कुछ ऐसी पटी कि वे बाद में जहां जाते वहां 'विज्ञान और अध्यात्म' में सामंजस्य की चर्चा किये बिना नहीं रहते थे। यों यन्त्र-युग के प्रारम्भ से ही पश्चिम की ठीक प्रतिभाओं ने इस 'प्रांतिभिकता' के खतरों से लोगों को आगाह करना प्रारम्भ कर दिया था। किन्तु जैसी बुंदेलखंड में लोकोक्ति है। 'बुढ़िया कहत तो ठीक है, पै सुनै कौन ?' शिलर ने अठारहवीं शताब्दी में ही कहा था, 'अनवरत घूमते चले जाने वाले यंत्र के चक्र की नीरस धुन में आदमी अपने अस्तित्व के रस को कुंठित किये बिना नहीं रह सकता— बहुत होगा तो वह विज्ञान को हस्तगत करके उन औजारों से काम लेने में कुशलता प्राप्त करेगा, उन्हीं की छाप उसके चेहरे पर आ जायेगी और वह आदमी नहीं, औजार की शक्ल लिए घूमेगा।' समाज में बढ़ रही पदार्थ बहुलता के प्रति व्यक्ति के आकर्षण को और भी सटीक शब्दों में बांधा इमर्सन ने; उन्होंने लिखा :

चीजें हौदे पर चढ़ी हैं
हौदा बंधा है आदमी की पीठ पर
दूसरी तरह कहें तो कह सकते हैं
आदमी चीजों के फेर में
कोल्हू का बैल हो गया है
मोटी पट्टी बंधी है जिसकी पीठ पर
क्योंकि नियम निश्चित हैं कब के
विरोधी और पक्के
चीजों के और व्यक्ति के
उनकी अलग-अलग शक्ति के
चीजें शहर बनाती हैं और सैनिक और सिपाही
आदमी को कुछ नहीं देती वे
देती हैं तो सिर्फ तबाही

भ० प्र० मि०

(पृष्ठ ४ का शेष)

सभा प्रतिनिधि परिषद को या तो सर्वसामान्य सहमति के आधार पर या केवल मतों की संख्या के आधार पर इस विचार से अपने प्रतिनिधियों को चुनना चाहिए कि सबसे अधिक लोकप्रियता किसे प्राप्त है। इस प्रकार के प्रतिनिधि को चुन लेने के बाद परिषद को चाहिए कि वह सर्व सम्मति से उसे अपना उम्मीदवार घोषित कर दे। यदि वह सारा काम समझदारी और सद्भावना से हो सके तो स्पष्ट कि निर्णीत उम्मीदवार एक भी पैसा खर्च किये बिना चुनाव जीत जायेगा। वह लोगों का ही उम्मीदवार होगा और यह लोगों का कर्तव्य ही बन जायेगा कि वे उसे चुनें।

यह तो ठीक ही है कि यह एक आदर्श तस्वीर हुई। इसे व्यावहारिक स्तर पर लाने में कई कठिनाइयां सामने आयेंगी और राजनीतिक दल तथा दूसरे निहित स्वार्थ इस पद्धति को विफल बनाने में एड़ी-चोटी का जोर लगा देंगे। यह तो कोई भी नहीं कहता कि सच्चा जनाधारित लोकतंत्र अनायास या पहले ही प्रयत्न में साकार हो जायेगा।

अपने प्रस्ताव को थोड़ा और साफ करने की गरज से मैं दो-एक बातें और कहूंगा। पहली तो यह कि ग्रामसभा प्रतिनिधि परिषद अपने उम्मीदवार को चुनने और घोषित करने के बाद समाप्त नहीं हो जायेगी। बल्कि अगला चुनाव आने तक वह भी सक्रिय रहेगी दूसरी यह कि उसका मुख्य काम ग्रामसभाओं से सम्पर्क रखने का होगा, वह उन्हें कहां क्या हो रहा है इससे आगाह रखेगी और उनसे भी उनकी बात पूछेगी-जानेगी। दूसरी ओर वह विधायक से सम्पर्क रख कर इसकी जानकारी भी रखेगी कि कहां, क्या हो रहा है, जान लेने पर उसके साथ विचार विमर्श करेगी और उसे सलाह देगी और उसका मार्गदर्शन करेगी। परिषद सम्बन्धित क्षेत्र में विधायक के द्वारा सम्पर्क कार्यक्रम का प्रबंध करेगी, ताकि विधायक अपने मतदाताओं के साथ सीधा-सीधा जुड़ा रहे।

विधान सभा में इस पद्धति से चुने हुए विधायक, काम किस प्रकार करेंगे और यदि उनका बहुमत हो जाता है तो वे किस प्रकार प्रान्तीय सरकारों का गठन या संचालन करेंगे, ये मसले महत्वपूर्ण हैं। मेरे इस संबंध में अपने विचार हैं; किन्तु फिलहाल उनके बारे में कुछ कहना प्रासंगिक नहीं है।

एक यह प्रश्न भी पर्याप्त महत्वपूर्ण है कि पास-पड़ोस के समाज और उनकी परिषदें, कार्यसमितियां और उनकी परिषदें किस ढंग से काम करती हैं, लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मैंने इस क्षेत्र में कुछ किया नहीं है और इसलिए मेरे पास ऐसा कोई अनुभव नहीं है जिसके बल पर मैं कुछ सर्वसामान्य निष्कर्ष सामने रख सकूं। मेरे ख्याल से यही वह क्षेत्र है जिसमें आप सबको जुटना है और जिसके लिए आप भरपूर योग्यता भी रखते हैं। आप में से ज्यादातर लोग शहरों से संबंधित हैं और आप में से कुछ का ताल्लुक मजदूर आन्दोलन से भी है इसलिए यह आप के लिए ठीक क्षेत्र और उचित घड़ी है आप श्रीराय का 'जन-समितियों' से जो अभिप्राय था, उसे साकार कर सकते हैं।

गांवों के लिए पिछले कुछ बरसों में विनोबा जी के भूदान-ग्रामदान और ग्राम स्वराज्य ने क्रमानुसार मुझे और देश भर में सैकड़ों कार्यकर्ताओं को इस बात के लिए आवश्यक अनुभव और दृष्टि दी है कि वे इस दिशा में पहल कर सकते हैं और कार्यक्रम को ठोस रूप दे सकते हैं। एक ओर दलीय जनतंत्र की निरर्थकता का अहसास और दूसरी ओर सर्वोदय आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग ले कर बिलकुल जमीन पर खड़े हो कर ग्राम स्वराज्य की दिशा में काम कर चुकना, ऐसे दो अनुभव हैं जिन्होंने इन विरुद्ध दिशाओं से आ कर वह आधार और वातावरण बना दिया है जिसका लाभ उठा कर सच्चे जनाधारित लोकतंत्र की दिशा में लंबी छलांग लगाई जा सकती है। देश के नौजवानों से मेरी अपील है कि वे इस ठीक मौके के आंचल को हाथ से छूटने न दें, इस अवसर को कस कर पकड़ लें और जमाना उनसे जो आशा कर रहा है उसे अंजाम दें। नव युवक और युवतियां आगे आ कर इस मशाल को थामें और बढ़ें। साम्य आप सबको आवाज लगा रहा है। सफलता प्रतीक्षा में खड़ी है।

टिप्पणी | ... का कहिए

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सर्वश्री ब्रह्मानन्द रेड्डी, केशवदेव मालवीय और बुद्धप्रिय मौर्य को राज्य मंत्री नियुक्त करके अपने मंत्रिमंडल का विस्तार कर लिया है और इस तरह अब केन्द्रीय मंत्रिमंडल में छोटे-बड़े मंत्रियों की संख्या साठ हो गई है। किसी दिन वह एक सौ साठ भी हो सकती है—मगर वह अलग अध्याय है। यहां हम श्री केशवदेव मालवीय को मंत्रिमंडल में लेने पर जो बातें चल निकली हैं, उनको भर छूना चाहते हैं।

श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी की कोई अपकीर्ति नहीं है और बुद्धप्रिय मौर्य पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले माने जा सकते हैं, इसलिए इन्हें मंत्रिमंडल में लेने के विरोध में कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। मालवीय जी की नियुक्ति की विरोधी प्रतिक्रिया हुई है। कारण स्पष्ट है। वे पंडित जी के समय में कभी पेट्रोलियम आदि के मंत्री थे। जब तक एक उनका निर्वाधानन्द काम चला रहा, फिर सिराजुद्दीन कम्पनियों से संबंधित भ्रष्टाचार की इतनी चर्चा हुई कि जांच करवानी पड़ी। मालवीय जी भ्रष्टाचार से जुड़े माने गये और न चाहते हुए भी पंडित जी को उन्हें मंत्रित्व पद से अलग करना पड़ा।

एक जगह से हटा कर भी लोगों को कहीं न कहीं कुछ देने की कोई लाचारी सत्ता की राजनीति से शायद जुड़ी हुई होती है। (श्री रेड्डी की नियुक्ति भी इसी लाचारी के अन्तर्गत मानी जा सकती है) मालवीय जी को मंत्रिमंडल से अलग होने के बाद रांची-स्थित भारी उद्योग-निगम का 'अध्यक्ष बना दिया गया—अर्थात् भ्रष्टाचार से तब भी एक समझौता किया गया था। किन्तु अब उनका दस वर्षों के बाद फिर से केन्द्रीय मंत्रिमंडल में ही शामिल कर लिया जाना तो बहुत ही घिनौना है। प्रधानमंत्री द्वारा की गई इस नियुक्ति के पीछे, संभवतः, कांग्रेस में साम्यवादी विचारधारा से सहानुभूति रखने वाले तत्वों तथा भारतीय साम्यवादी दल के दबाव का हाथ है। दबाव तो एक अरसे से था। किन्तु कई की विमान दुर्घटना में श्री कुमार मंगलम् की मृत्यु हो जाने के बाद साम्यवादियों ने यह अनुभव करना शुरू किया कि अब केन्द्र में उनका ऐसा कोई साथी नहीं रह गया है जिसके माध्यम से वे अपने लक्ष्यों की पूर्ति करवाते रहने के साथ ही सरकार की नीतियों को भी प्रभावित कर सकें। साम्यवादियों के दबाव को मान लेने का एक फौरी कारण उत्तर प्रदेश के चुनाव भी बन गये। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से सत्ता कांग्रेस दल कोई न कोई चुनाव समझौता तो चाहता ही है। वे ३० से ४० के बीच में सीटें मांग रहे हैं। जब कि अभी तक विधान सभा में उनके पास केवल ४ सीटें हैं। कदाचित् श्रीमती गांधी ने विचार किया हो कि अगर साम्यवादी विचारधारा का कोई व्यक्ति कैबिनेट स्तर के मंत्री के रूप में ले लिया जाये तो उसी को आधार बनाकर उत्तर प्रदेश में साम्यवादियों से, अपेक्षाकृत कम सीटें दे कर, चुनाव गठबंधन कर पाना आसान हो जायेगा। साथ ही साम्यवादी दल ज्यादा जी खोल कर चुनाव अभियान में भी हाथ बटायेगा। यों चुनाव अभियान की प्रधान मंत्री को विशेष चिन्ता होना हमें फाजिल दिखता है। सत्ता कांग्रेस के पास चुनाव लड़ने के जो साधन हैं वे इतने विविध और पर्याप्त से कहीं अधिक हैं कि प्रचार-अभियान उसके लिए चिन्ता का विषय नहीं हो सकता। मालवीय जी को केन्द्रीय मंत्रिमंडल में लाने का सम्बन्ध सीटों की सौदेबाजी से ही अधिक है।

कुछ भी हो, एक ऐसे सज्जन को फिर से मंत्रिमंडल में शामिल करना जो भ्रष्टाचार में सम्मिलित तय किये जा चुके हों, स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्पराओं के साथ कतई ठीक नहीं बैठता। इसीलिए जी होता है कि तुलसीदास जी के अन्य संदर्भ में कहे गये आश्चर्य सूचक इन शब्दों का उपयोग किया जावे 'केशव, कहि न जाय, का कहिए।' चार विपक्षी दलों ने सिराजुद्दीन कांड की रिपोर्ट प्रकाशित की जाय, ऐसी मांग भी की है। किन्तु हमारी वर्तमान सरकार विपक्षियों की मांग पर कान देने की जरूरत क्यों समझे!

एक उत्तम उदाहरण

इसी सप्ताह ट्यूनिशिया और लीबिया दोनों देशों ने दो की जगह मिल कर एक देश हो जाने की सोचा है। अब दोनों देशों में एक ही सेना, एक ही संसद, एक ही संविधान और एक ही राष्ट्रध्वज तथा एक ही राष्ट्रगान होगा। दोनों देशों ने मिलकर एक ही 'इस्लामिक अरब रिपब्लिक' बनाना तय किया है। अरबी में इसका कोई दूसरा नाम रखा गया होगा—मगर हमें तो समाचार अंग्रेजी में ही मिलते हैं और इस प्रकार कि व्यक्तियों, मूल संस्थाओं और देशों के सही नामों का अनुमान तक लगाना मुश्किल हो जाता है।

दो देशों का इस प्रकार एक हो जाना 'जय-जगत' की दिशा में चाहे जितना छोटा क्यों न हो, एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

—अ० प्र० मि०

(पृष्ठ ३ का शेष)

लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्रों की आयोजित सभा में बोलते हुए जे० पी० ने कहा कि छात्र अपनी शक्ति छोटे-छोटे कामों के आन्दोलन करके नष्ट कर रहे हैं। शिक्षा के आमूल परिवर्तन के लिए आंदोलन किया होता तो शिक्षा का स्वरूप ही इस देश का कुछ और होता। उन्होंने कहा अगले माह में प्रदेश में चुनाव होने जा रहे हैं—आखिर आप क्या यह भ्रष्टाचार देखते ही रहेंगे? अपनी तरुणाई को उपयोग करने का कब अवसर मिलेगा? अब समय आया है कि आप की शक्ति स्वतंत्र तथा शुद्ध चुनाव कराने में लगनी चाहिए—चाहे इसके लिए पन्द्रह-बीस दिन की पढ़ाई ही छोड़नी पड़े।

उन्होंने कहा कि इस समय शुद्ध तथा स्वतंत्र चुनाव तो प्राथमिक कर्तव्य होगा। लेकिन आगे लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए देश के ग्रामस्तर पर ग्राम सभाओं को सर्व सम्मति से निर्माण होगा और वहां के द्वारा सर्व सम्मति से चुने गये निष्पक्ष व्यक्ति चुनाव लड़ेंगे। —कृष्णचन्द्र सहाय

समाचार

× ३० नवम्बर को बेगूसराय में खादी प्रेमियों एवं कार्यकर्त्ताओं की बैठक में खादी का नव संस्करण कर उसे जनाधारित बनाने का निर्णय लिया गया। इस कार्य के लिए एक लाख रुपये की धनराशि एकत्र करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया। विधान एवं कार्य योजना के लिये जिले की एक तदर्थ समिति गठित की गई। बैठक की अध्यक्षता बिहार के भू. पू. मंत्री श्री सरयुप्रसाद सिंह ने की। ग्रामस्वराज्य संघ के मंत्री श्री निर्मलचन्द्र ने भी बैठक को सम्बोधित किया।

× रतलाम जिले के ग्रामदानी गांव रूपाखेड़ा में २८, २९ व ३० दिसम्बर को सम्भागीय तरुण शांति सेना शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में इन्दौर, रतलाम, धार तथा पूर्व निमाड़ जिले के ३० तरुणों ने भाग लिया। शिविरार्थियों के भोजन एवं निवास की व्यवस्था का भार गांव वालों ने ही वहन किया। शिविर संचालन श्री धर्मपाल भाई ने किया। रूपाखेडा में व्यक्तिगत अभिक्रम से किसानों ने १७ गोबर गैस प्लांट लगाये हैं।

× २२ एवं २३ दिसम्बर को पलामू जिला सर्वोदय मण्डल द्वारा डालटनगंज में जिला भूदान किसानों का सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन में लगभग चार हजार किसानों ने भाग लिया। सम्मेलन में जिले के सभी सरकारी अधिकारियों ने भी भागलिया। भूमि सुधार वर्ष के दौरान जिले में सराहनीय कार्य हुआ है। इस अवसर पर श्री लहटन चौधरी, राजस्व मंत्री बिहार, तथा वन राज्य मंत्री श्री राजेश्वरी सरोजदास भी उपस्थित रहे।

× गत २५ दिसम्बर को पूर्णानन्द इन्टर कालेज दुबे छपरा में आचार्यकुल के तत्वावधान में 'शिक्षा में स्वायत्तता' विषय पर गोष्ठी का आयोजन हुआ लगभग ४० शिक्षकों ने गोष्ठी में भाग लिया। बैठक का सभापतित्व बलिया जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री रामेश्वर प्रसाद ने किया। श्री रामचन्द्र राही, श्री राम जी भाई व श्री बाबूराव चन्दावार ने भी इस अवसर पर अपने विचार प्रकट किये।

× पिछले दिनों वाराणसी में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय शांति शोध संघ के पांचवें सम्मेलन ने एक प्रस्ताव द्वारा निर्णय लिया कि एशिया में इप्रा की एक क्षेत्रीय शाखा स्थापित की जाय जिसका मुख्य कार्यालय वाराणसी में गांधी विद्या संस्थान में रहेगा और जिसके प्रथम महामंत्री गांधी विद्या संस्थान के निदेशक प्रो० सुगत दासगुप्त होंगे। सम्मेलन में आये जापान, दक्षिण कोरिया और भारत के प्रतिनिधियों की एक बैठक एशियायी संगठन के संबंध में हुई और एक कार्य-समिति निम्नलिखित व्यक्तियों की बनायी गयी —

सर्वश्री इशीदा ताकेशी, जापान, चोई चाग-की, दक्षिण कोरिया, मुशाकोजी, जापान, राधाकृष्ण, भारत; ग्रामलाल पारीख, भारत, नुरुल हक चौधरी, बंगला देश, सुरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, भारत, एसबियार्न आइडे (महामंत्री. इप्रा)

× सर्व सेवा संघ के मंत्री श्री ठाकुरदास बंग ने गश्ती-पत्र भेजते हुए सभी प्रांतीय एवं जिला सर्वोदय मण्डलों को लिखा है कि प्रति वर्ष जनवरी में लोकसेवकों की सदस्यता दर्ज होनी है जिसकी अंतिम तारीख ३१ जनवरी है। इसके बाद जिला सर्वोदय मण्डलों के पदाधिकारियों एवं सर्व सेवा संघ के लिए जिला प्रतिनिधि चुनने की कार्यवाही प्रारंभ होती है जो फरवरी माह के अंत तक पूर्ण हो जानी चाहिए।

श्री बंग ने विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करते हुए लिखा है कि लोक सेवक निष्ठा-पत्र में वर्णित निष्ठाओं का वास्तविक पालन करने वाले व्यक्तियों को ही लोकसेवक बनाना चाहिये। चुनाव के लिए समस्त लोकसेवकों को यथा समय सूचना दी जानी चाहिए। इन चुनावों में वे लोकसेवक ही हिस्सा लें जो ३१ जनवरी, १९७४ तक लोकसेवक बन गये हों और जिनका सदस्यता शुल्क मिल गया हो। चुनाव के पश्चात जिला सर्वोदय मण्डलों के पदाधिकारियों एवं जिला प्रतिनिधियों के नाम एवं पतों की सूची प्रदेश तथा सर्व सेवा संघ को मार्च, १९७४ तक भेज देना चाहिए। लोकसेवकों के निष्ठा पत्र पूर्ण रूप से खाना-पूर्ति कर शुल्क एवं सूची के साथ संघ कार्यालय में भेजी जाय और सूचना प्रदेश सर्वोदय मंडल को भी दी जाय प्रत्येक जिले में विधिवत लोकसेवक रजिस्टर भी रखा जाय।

अंत में संघ मंत्री श्री बंग ने आशा प्रकट की है कि संगठन को पवित्र, नियमित, और भाईचारा एवं विश्वास पर आधारित बनायेंगे।

× हरियाणा प्रान्त सर्वोदय मंडल ने दिसम्बर माह में साढ़े सात सौ रुपयें के साहित्य की बिक्री के अतिरिक्त माह के पहले सप्ताह में खानपुर गुरुकुल डिग्री कालेज तथा नेशनल कालेज परिवार में पंडित प्रो० प्र० सिन्हा के प्रवचन, दूसरेसप्ताहमे जगाधरी राडौर, कुरुक्षेत्र और रायपुररानी की विभिन्न शिक्षा संस्थाओं में मुनि जनक विजय तथा प्रान्तीय मण्डल के मन्त्री शीतलभाई ने नशाबंदी को मुख्य विषय बना कर विचार प्रचार किया। इस सप्ताह में लगभग तीन हजार विद्यार्थियों से सपर्क हुआ।

दूसरे सप्ताह में जगाधरी नशाबंदी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। पूर्व तैयारी और व्यवस्था में मन्त्री के अतिरिक्त बाबा लाल सिंह तथा भीमसिंह जी ने अथक प्रयत्न किया तथा सम्मेलन मुनिजनक विजयी जी के योगदान से सफल हुआ। सोमभाई तथा गणेशी लाल जी आदि सर्वोदय नेतागण भी इस में पधारे और उन्होंने इसमे भाग लिया। तीसरे सप्ताह में भी नशाबंदी का प्रचार कार्य हुआ। चौथे सप्ताह में पट्टीकल्याणा आश्रम के कार्य के अतिरिक्त २५ दिसम्बर को गन्नौर जनता हाई स्कूल के वार्षिक उत्सव में सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने हाथ बटाया और भविष्य के लिए रोहतक, हिसार, भिवानी, सिरसा, एलनाबाद आदि में प्रचार और सम्पर्क कार्य किया गया।

× प्राप्त जानकारी के अनुसार तमिलनाडु में भूदान-आन्दोलन के अन्तर्गत ४७, ४६६ एकड़ भूमि मिली है। यह भूदान प्रदेश के ५७७३ गांवों में ६,७६३ दानाओं से मिली है।

प्राप्त भूदान में से २०,४०६ एकड़ भूमि ५३५३ गांवों में बसने वाले १२,६०० भूमिहीन परिवारों में वितरित की गई है तथा जांच के बाद २३,१६७ एकड़ भूमि खारिज कर देनी पड़ी है।

वार्षिक शुल्क : १५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली. बुधवार, ३० जनवरी, '७४

गांधी के अन्तिम आदमी को उसकी जमीन का टुकड़ा। विशेष लेख पृष्ठ ६ पर

र सहरसा की सहस्र चुनौतियां × बेदखल दाखिल होंगे, दरवाजे खुलेंगे × हजारों हाथों में जकड़ी ह
ाति × सहरसा अन्तिम अभियान के लिए तैयार है × मुसहरी प्रखण्ड लोक-गणराज्य की अ
ग्रामदानी और गैर ग्रामदानी गांव में फर्क क्या है ? × ग्रामदान की गाड़ी कहां ? × कुदाल इ
ाम पर समान अधिकार × लाशों की गिनती का पेशा, पेशेवर लोग × हिंसा से हालत सुधरेगी ना

भूदान-यज्ञ

३० जनवरी, '७४

वर्ष २०   अंक १८–१९

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कालोनी,
ांधी स्मारक निधि,
ई दिल्ली-११०००१

आदर्श राज्य की ओर

'राज्य' शब्द का अर्थ है वह स्थिति जो शोभनीय हो। राजे, परिस्थिति मे और परिवेशो मे सजे। सजने वाली या शोभनीय स्थिति मे सबसे पहली चीज होनी है—तरतीब, व्यवस्था, जैसा और जितना होना चाहिए वैसा—पन। आदर्श राज्य को गाधी 'राम-राज' शब्द से व्यक्त करते थे और स्वराज्य आने के बाद ज्यादातर लोगो ने 'स्व' से भी अधिक महत्व शायद इसीलिए उपसर्ग—'सु'—शोभनीय, सुन्दर को दिया है। भारतीय सविधान ने हमारे शासन की कल्पना 'वेलफेयर-स्टेट', कल्याणकारी राज्य के रूप मे की और यह माना कि लोगो के सर्वतोमुखी कल्याण का प्राथमिक उपकरण शासन-तत्र बनेगा। इसी दृष्टि से हमारी चार पचवर्षीय योजनाए बनायी गई और पाचवी अपने अतिम रूप मे सामने आ गई है। इस अवसर पर अगर एक बार फिर से यह देख लिया जाये कि हमारा स्वराज्य कब और कहा-कहा अशोभनीय है तो उसे शोभनीय बनाने, तरतीब देने, व्यवस्थित करने मे मदद मिल सकती है।

हमारे राष्ट्रपति ने गणतत्र दिवस पर अपने सदेश में जो कहा उसके निहितार्थों मे से इतनी बातें आती है : एक तो यह कि देश मे सर्वत्र हिसा का वातावरण और अनुशासन हीनता व्याप्त है। दूसरी यह कि इसका परिणाम 'सुराज' तो दूर 'अराजकता' मे फलित हो सकता है। तीसरी यह कि कीमतें बढती चली जा रही हैं और लोग जैसे अभावग्रस्त और त्रस्त कभी नही रहे वैसे आज हैं। उन्होने इस स्थिति से सुलझने के कुछ उपाय भी सुझाये—किन्तु वे उपाय मूलत: प्रजा को काम मे लाने हैं। जब कि स्पष्ट है, प्रजा के हाथ मे पहल किसी रचनात्मक काम या रोजमर्रा की जरूरत को भी व्यवस्थित कर सकने की नही है। सब कुछ राष्ट्रीयकरण की छाया मे है—अर्थात राज्य के हाथ मे है; राज्य मे नौकर ही शाह होता है। प्रजा के बजाय हर जगह पहल सरकारी कर्मचारी के हाथ मे है और सरकारी कर्मचारी अपने वेतन की बढती के साथ-साथ भ्रष्ट उपायो से अपनी आमदनी बढ़ाने के अतिरिक्त अन्य किसी बात को महत्वपूर्ण नही मानता। सत्ता की नकेल अधिकाधिक राष्ट्रीयकरण के कारण उसके हाथ मे आ गई है। यातायात, शिक्षा, चिकित्सा, अन्न और वस्त्र सब सुविधाए वही दे सकता है और देना चाहता है, सत्ता की कल्पना के हिसाब से नही अपने स्वार्थ को अधिक से अधिक साध कर, जनता के कष्ट की कम से कम परवाह किये बिना।

राष्ट्रपति के मन मे यह स्थिति सदेश देते समय स्पष्ट थी और उन्होने इसीलिए यह कहा कि देश तो गावो मे बसा है। हमारा शासकीय तंत्र और आर्थिक तत्र गावो को निगाह मे रख कर सचालित किया जाना चाहिए। और उनको सख्त सजा दी जानी चाहिए जो असामाजिक रवैये अपनाते हैं, व्यक्तिगत लाभ के लिए समाज की हानि की कतई परवाह नही करते। उन्होने यह भी कहा कि जो दुष्कर्मी हैं, प्रजा को चाहिए वह उन्हे सब के सामने खीचकर खडा करे।

अब कौन हैं ये दुष्कर्मी ? प्रधानमत्री, गृहमत्री और अन्य मत्री कहते हैं ये दुष्कर्मी विरोधी पक्ष हैं और विरोधी पक्ष कहते हैं दुष्कर्मों की धारा सत्ता के शिखर से फूटकर बह रही है। कभी कभी सत्तारूढ लोग भी कहते हैं, 'भारतीय अर्थतंत्र मे काले धन का राज है।' कम से कम तमिलनाडु के परिवहन मत्री एस० रामचद्रन ने तो इसे खुले आम कहा—या कहिए स्वीकार किया। अर्थतत्र पर काले धन के राज का मतलब होता है, समूचे तंत्र पर काले धन का राज। हमारा तत्र चुनाव-आधारित है। चुनाव भ्रष्ट तरीको से, जिनमे सबसे अधिक प्रधान 'काला धन' होता है, जीते जाते हैं। जो पक्षातीत हैं अर्थात जो न सत्ता मे हैं, न सत्ता के विरोध मे हैं वे यही कहते हैं कि चुनावों को स्वच्छ बनाओ, सब स्वच्छ हो जाएगा। जयप्रकाशजी यही कह रहे हैं, सर्व सेवा संघ यही मत व्यक्त कर रहा है, विनोबा का इसे समर्थन है। पिछले

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

सहरसा की सहस्र चुनौतियां

—प्रभाष जोशी

तीन वर्ष से ग्रामस्वराज्य के राष्ट्रीय मोर्चे के नाते प्रसिद्ध बिहार के सहरसा जिले में अन्तिम अभियान शुरू हो गया है। वैसे तो जब तक ग्रामस्वराज्य कायम नहीं हो जाता तब तक कोई भी अभियान अन्तिम नहीं हो सकता। फिर भी इस अभियान को स्वयं विनोबा ने अन्तिम कहा है तो इसलिए कि देश के कार्यकर्ताओं की सम्मिलित शक्ति को एक पूरे जिले में एक बार पूरी तरह लगा कर वे यह देखना चाहते हैं कि वहां क्या होता है? वहां के अनुभव के आधार पर फिर नये काम की शुरुआत हो सकती है। सहरसा में जिन लोगों ने अपने को प्रतिबद्ध कर दिया था उनके लिए भी यह आखिरी मौका है कि वे अपनी प्रतिबद्धता को फलित करें और वहां से जो भी प्राप्त करें उसे फिर पूरे देश को दें।

अन्तिम अभियान का आवाहन विनोबा ने अपनी ७९ वीं वर्षगांठ के एक दिन पहले १० सितम्बर ७३ को किया था। सहरसा के कार्यकर्ता उन दिनों ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार में इकट्ठे हुए थे और विनोबा के सानिध्य में उनका चिन्तन मिलन चल रहा था। विनोबा ने जब कहा कि तीन महीने में सहरसा का काम पूरा होना चाहिए तो वैद्यनाथ बाबू ने कहा था कि तीन साल से हम सब सहरसा में लगे ही हुए हैं लेकिन काम पूरा नहीं हो पा रहा है। विनोबा ने तब कहा कि तीन साल के इसी अनुभव से हम तीन महीने में काम पूरा करने को कह रहे हैं। तीन कम पड़ते हैं तो चार महीने मिल सकते हैं। दो अक्टूबर से काम शुरू हो और तीन जनवरी तक पूरा किया जाये।

११ सितम्बर को दोपहर में बाबा ने फिर कहा "सब मिल कर सहरसा का काम चार महीनों में पूरा करें। काम पूरा नहीं हो पाया तो सभी गंगा में सामूहिक प्रवेश करें।" सहरसा के साथियों ने उस रात विचार-विनिमय किया और आठ महीनों के काम की एक योजना बनायी। अक्टूबर से दिसम्बर तक पूर्व तैयारी और अभियान संयोजना के लिए जनवरी से अप्रैल ७४ तक अभियान चलाने का कार्यक्रम बनाया। इस योजना पर १२ सितम्बर को विनोबा ने कहा— 'आपकी योजना ठीक है। इतने गम्भीर प्रयास के लिए आठ महीने की मुद्दत चाहिए। कल मैंने कहा था कि सहरसा का काम पूरा करो या गंगा प्रवेश करो। यह जो निश्चय गंगा में गोता लगाने का है उसका दूसरा भी अर्थ है। वह यह कि भारत व्यापी गंगा है उसमें प्रवेश करो। बिहार के साथी निकल पड़ें भारत में। आठ महीना पूरी शक्ति के साथ सहरसा के काम में लगो। पचास प्रतिशत काम हुआ तो सफल माना जायेगा। अगर सफल हुआ तो सफलता के साथ भारत में जायेंगे, असफल हुआ तो असफलता के साथ जायेंगे। पूर्ण प्रयत्न के बावजूद असफलता मिली तो वह बड़ी सफलता मानी जायेगी। मुसीबतों का अनुभव आ जायेगा। अनुभवी मनुष्य हो कर आप बाहर निकलेंगे, उस अनुभव का लाभ दूसरों को मिलेगा।"

विनोबा के इस आवाहन के उत्तर में सहरसा अब फिर गरमा रहा है। पूर्व तैयारी हो चुकी है, अभियान संयोजन हो गया है और नागरिक शक्ति के साथ इस बार समाजवादी दल के लोग भी कार्यकर्ताओं की मदद कर रहे हैं। चूंकि देश में और भी जगह ग्रामस्वराज्य के मोर्चे खुले हुए हैं और कार्यकर्ता उनमें लगे हुए हैं इसलिए देश के साथी लोग सहरसा पहुंच नहीं पाये हैं। सच पूछिए तो ऐसा कभी भी हो नहीं पाया है। सहरसा में पिछले वर्षों से लगे लोगों की अक्सर यह शिकायत रही है कि जितने कार्यकर्ता सहरसा में लगने चाहिए थे उतने कभी नहीं लगे और इसी कारण वहां का कार्य पूरा नहीं हो पाया। एक देशव्यापी आन्दोलन में ऐसा हो पाना शायद संभव भी नहीं है। जिन लोगों ने जगह-जगह काम ले रखे हों और ग्रामस्वराज्य के मोर्चे खोल रखे हों उन सब के लिए अपना काम पूरी तरह छोड़ कर सहरसे समा के लिए किसी जगह जुट जाना सम्भव नहीं हो पाता। फिर जैसा कि पिछली नवम्बर में दरभंगा जिले के विरोल गांव में हुए प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन में कहा गया—"हमने अब तक सहरसा अभियान को ईमानदारी पूर्वक निष्ठा के साथ तथा समर्पित हो कर अपना समय दिया ही नहीं है। हम बार-बार यही दुहराते हैं कि विनोबा जी ने सहरसा में ग्रामस्वराज्य का अभियान चलाने का आवाहन किया है इसलिए हम वहां के काम में लगना चाहिए। हमने कभी ऐसा महसूस नहीं किया कि सहरसा में ग्रामस्वराज्य का काम करने का निर्णय हमारा भी निर्णय है, विनोबाजी का आदेशमात्र नहीं है।" इसी सम्मेलन में प्रतिनिधियों ने यह भी कहा कि "सहरसा में अभी तक कार्यकर्ताओं की शक्ति से ही अभियान चला है। हम स्थानीय शक्ति को ग्रामस्वराज्य के काम को उठा लेने के लिए तैयार नहीं कर सके हैं। कार्यकर्ताओं के भरोसे हम कब तक वहां अभियान चला सकेंगे। हम आगे के लिए वहां ऐसी पद्धति अपनायें कि वहां सर्वोदय कार्यकर्ताओं के हट जाने पर भी स्थानीय शक्ति के बल पर काम चलता रह सके। सहरसा की शक्ति से ही वहां काम होने वाला है।"

फिर भी यह सही है कि वहां काफी कार्यकर्ता शक्ति लगी है और स्थानीय सहयोग भी कम नहीं मिला है। लेकिन काम पूरा नहीं हो पाया। क्यों नहीं हो पाया? इसके कारण हमें ढूंढना चाहिए। सहरसा में भूदान के जमाने में काफी जमीन मिली थी और ग्रामदान भी वहां बहुत अच्छा हुआ था। बिहार दान की घोषणा अक्टूबर ६९ में हुई थी और स्वयं विनोबा उस राजगीर सम्मेलन में मौजूद थे जहां गांधी शताब्दी वर्ष में जे पी ने एक तूफान उठा कर यह कार्य पूरा किया था। लेकिन समाचार पत्रों और खुद सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने कहा था कि बिहार

→

दान में काफी कुछ बोगस काम हुआ है। विनोबा और जे.पी. ने तब कहा था कि इतने बड़े पैमाने पर जब इतना बड़ा काम होता है तो सभी जगह काम पुख्ता नहीं हो पाता। बाबा ने तो बाद में बोगस की मजाक भी चलाई थी जिसमें वे अपने को भी बोगस कहा करते थे। लेकिन "काम सिर्फ कागज पर हुआ है" की चुनौती स्वीकार की गयी थी और विनोबा ने कहा था कि अब एक प्रति तूफान उठा कर पूरे बिहार में ग्रामदान की पुष्टि की जाये। यानी जिन गांवों ने ग्रामदान की शर्तों को स्वीकार करके घोषणा पत्र भरे हैं—उनमें बीघा में कट्ठा निकाला जाये, ग्रामसभा गठित और सक्रिय हो, आदि। लेकिन बिहार से विनोबा सेवाग्राम आये और फिर क्षेत्र संन्यास ले कर वे पवनार में रहने लगे। तूफान से थके लोगों ने प्रति तूफान उठाने की कोई जल्दी या बेसब्री नहीं दिखाई। अक्टूबर ६९ से मई ७० तक के आठ महीने में पुष्टि का काम शुरू जरूर हुआ लेकिन वहां भी उसने गति नहीं पकड़ी।

तभी नियति जे. पी. को मुसहरी खींच लायी। विनोबा के शब्दों में—"जयप्रकाश जी का शरीर थका हुआ था और लोगों के आग्रह से जरा आराम के लिए वे हिमालय की गोद में पहुंचे थे। इतने में हमारे दो साथियों को लिखित धमकी दी गयी, नक्सलवादियों की तरफ से कि तुमको कतल किया जायेगा। इसकी जानकारी जयप्रकाश जी को मिली तो फौरन दौड़े आये और जान की बाजी लगायी।"

लेकिन जे पी. ने जान की बाजी मुजफ्फरपुर के दो साथियों की जान बचाने के लिए ही नहीं लगायी थी। पुष्टि का काम कैसे तेजी से चले और बिहार में जो ग्रामदान कागज पर हुए हैं वे प्रत्यक्ष में पूरे कैसे हों, इस पर जे.पी. लगातार सोच रहे थे। मुजफ्फरपुर के मुसहरी प्रखंड में नक्सलवादियों के कारण एक तात्कालिक चुनौती आयी और जे पी. जून के प्रथम सप्ताह में यह प्रतिज्ञा ले कर मुसहरी आये कि या तो यहां काम पूरा होगा या मेरी हड्डियां गिरेंगी। नक्सलवादियों की खूनी क्रांति के सामने जे. पी. अहिंसक क्रांति की मिसाल पेश करना चाहते थे और इसके लिए उन्होंने ग्रामदान की पुष्टि का माध्यम अपनाया। जे. पी. की प्रतिज्ञा और उनके मुसहरी आने से बिहार के सर्वोदय जगत में हलचल मची और लोग तन्द्रा से जागे। चार महीने तक जे पी. मुसहरी में भिड़े रहे। फिर दो अक्टूबर को सेवाग्राम में संघ अधिवेशन हुआ और विनोबा को ग्रामस्वराज्य कोष भेंट किया गया। उन्हीं दिनों पवनार में जब बिहार के साथी विनोबा से मिले और पूरे बिहार में चल रहे पुष्टि कार्य की रिपोर्ट उन्हें दी तो विनोबा ने पूरे सहरसा जिले में पुष्टि अभियान चलाने का आवाहन किया। उन्होंने कहा—"बिहार में पुष्टि का काम जिले के नीचे तो सोचना ही नहीं चाहिए।" फिर उन्होंने महेन्द्र नारायण को बुलाया और पूछा—"सहरसा जिला की पुष्टि हो सकेगी न?" उत्तर मिला—"बाबा का आशीर्वाद है तो जरूर होगी।"

फिर १६ और १७ अक्टूबर को सर्वोदय ग्राम, मुजफ्फरपुर में बिहार ग्रामस्वराज्य समिति की बैठक हुई। जे पी. इस बैठक में उपस्थित रहे और सहरसा जिला पुष्टि अभियान की योजना बनी। एक सप्ताह बाद सहरसा में काम शुरू हो गया।

विनोबा ने पूरे जिले में पुष्टि अभियान चलाने की बात क्यों कही और इसके लिए सहरसा को ही क्यों चुना? इस प्रश्न के कई उत्तर हो सकते हैं। खास तो विनोबा, जे पी. के मुसहरी आने से बिहार और सारे देश में आयी जागरूकता को किसी बड़े काम में लगाना चाहते थे। जे पी. के मुसहरी मोर्चे पर जे. पी. पर्याप्त थे और बची हुई कार्यकर्ता शक्ति अगर वहां पूरी तरह लगती भी तो शायद इसकी जरूरत नहीं थी। इसलिए विनोबा एक दूसरा मोर्चा खोलना चाहते थे जिसमें देश के अन्य कार्यकर्ता तथा बिहार के बचे हुए कार्यकर्ता अपने को झोंक सकें। फिर पहले भूदान-यात्रा के समय और ग्रामदान-तूफान के समय विनोबा दो बार सहरसा में घूमे थे। उनका विश्वास था कि पुष्टि कार्य के लिए सहरसा सबसे आसान जिला है। उन्होंने कहा भी था कि जे०पी० ने बिहार का सबसे कठिन क्षेत्र चुना है। बाकी के लोगों को सबसे आसान सहरसा में अपनी ताकत लगाना चाहिए। "सहरसा सारे बिहार में छोटा है। लोगों की भावना वहां बहुत अनुकूल है। बारिश में वहां बाढ़ आती है। आज रास्ते खुले हुए हैं इसलिए अभी दो महीना ताकत लगाओ। पूरा हुआ तो ठीक, नहीं तो मर जाना ऐसा निश्चय करो। सहरसा हो जाने के बाद मैं कुछ कहूंगा नहीं। कहने की जरूरत ही नहीं होगी। सहरसा की प्रेरणा से ही काम हो जायेगा-" दिसम्बर ७० में विनोबा ने विद्या सागर को कहा था। इसी चर्चा के दौरान उन्होंने यह प्रसिद्ध वाक्य कहा था—"अब तुम सब ऑफिस को ताला लगाओ और सहरसा में जा कर बसो। आज का काम आज ही करो। कल करेंगे, परसों करेंगे-ऐसा नहीं होना चाहिए। ... अब यह आखिरी कूद है (सहरसा)। प्रयत्न करके सफलता नहीं मिली तो परमात्मा की मदद मिल सकती है। अगर आप प्रयत्न ही नहीं करें तो फिर तो प्राइवेट काम करने होंगे। आपके हाथ में १९७१ तक ही समय है। आगे का समय मैं नहीं मानता। १९५१ में आन्दोलन शुरू हुआ। बीस साल के बाद कुछ नहीं होगा तो आपकी टैनेसिटी, आपका मातत्य प्रशसनीय है। लेकिन यह होने वाला काम नहीं ऐसा माना जायगा। ....अब जो भी आयेगा उसे मैं सहरसा जाने के लिए कहूंगा।...

सहरसा का काम पूरा करने के लिए विनोबा का सन्देश करो या मरो था। उनसे जो भी मिलने आता उसे वे सहरसा जाने को कहते और धीरे-धीरे सहरसा ग्रामस्वराज्य का राष्ट्रीय मोर्चा बन गया। सहरसा का विनोबा-आश्रम कार्यकर्ताओं की काशी बन गया। कृष्णराज महता, निर्मला देशपांडे, विद्यासागर और कई कार्यकर्ता वहां पहुंच कर घस गये। धीरेन दा आये और उनकी लोकयात्रा शुरू हुई। वैद्यनाथ बाबू और बाबूलाल मित्तल जैसे अनुभवी वृद्ध लोग भी घसे। किशोर भाई, कुमार प्रशान्त, शुभमूर्ति और जावरी जैसे तरुणों ने धूनी रमाई। तीन साल तक दबाव को छोड़ कर सतत काम चला लेकिन सच्चाई यह है कि वहां अभी काम पूरा नहीं हुआ है।

[—

→

लोक शिक्षण और विचार-प्रचार सहरसा के काम के दो मुख्य आधार रहे हैं। मरौना में प्रखंड सभा का गठन भी हुआ है और जहां-जहां काम चला वहां बीघे में कट्ठा भी निकाला गया है और जमीन बंटी भी है। सहरसा का शायद ही ऐसा कोई गांव होगा जहां ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का विचार हवा में तैर कर जमीन पर न उतरा हो। लेकिन अभी सिर्फ मरौना में प्रखंड सभा बनी है। तेईस प्रखण्डों में बननी है। सब गांवों में ग्रामसभाएं गठित नहीं हुई हैं। जहां हुई हैं वहां वे इतनी सक्रिय नहीं हैं कि ग्रामस्वराज्य बनाने में सक्षम हों। भूमि बंटी है, लेकिन अधिकतर भूमि अभी बटनी है। भूदान की पन्द्रह हजार एकड़ जमीन का वितरण होना है। वितरित सत्रह हजार एकड़ जमीन पर आदाताओं का असल कब्जा होना है। जब तक जमीन का यह काम नहीं हो जाता तब तक ग्रामस्वराज्य की गाड़ी सहरसा में थमी रहेगी।

विनोबा ने अन्तिम अभियान का आवाहन शायद इसलिए किया कि प्रचार-प्रचार और लोकशिक्षण वहां पर्याप्त हो चुका है। विचार ठीक तरह से समझाया जा चुका है और हस्ताक्षर से प्राप्त होने वाली सम्मति मिल चुकी है। इतना सब हो चुकने के बाद जमीन का प्रत्यक्ष वितरण, ग्रामसभाओं में सक्रिय हो कर गांव के मामलों को अपने हाथों में उठाने की क्षमता और ग्रामस्वराज्य की ओर बढ़ने की योजनाएं बनाना और उनको अमल में लाना होना ही चाहिए। अगर यह सब नहीं होता है तो फिर लोकशिक्षण और विचार-प्रचार के कोई मानी नहीं हैं। सरकार ऐसी अपनी पंचवर्षीय योजनाओं और समाजवादी कार्यक्रम के प्रचार प्रसार में कोई कम समय और शक्ति नहीं लगाती है। अगर हम उनके प्रभावहीन होने की बात कहते हैं तो हमें खुद भी देखना चाहिए कि हमारा अपना कार्यक्रम जमीन पर कितना उतरा और अपना लक्ष्य कितना पूरा हुआ है। क्रांति के हिज्जे करना, उसके अन्तर्निहित विचार को लोगों के गले उतारना क्रान्ति का सपना लोगों को देना और क्रांति के लिए हमारे मन जो आकांक्षा है वैसी लोक आकांक्षा पैदा करना सब अनिवार्य है। लेकिन यह सब प्रत्यक्ष में होना चाहिये और कितना हुआ है इसको जानने के मापदन्ड भी हमारे पास होने चाहिए और उन्हें हम पग-पग पर लागू करना चाहिए। भूमिहीनता की समस्या का निराकरण निश्चित ही हमारे काम का एक मापदण्ड है और सहरसा के काम को भी इस कसौटी पर चढ़ाना चाहिए।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि ग्रामदान की घोषणा जितनी आसान है उसकी शर्तों को पूरी कर के प्रत्यक्ष काम शुरू करना उतना ही कठिन है। गांव एक हो, अपने पांव पर खड़ा हो, भूमिहीनता मिटे, समानता आये, सब मिल कर ग्रामसभा के जरिये गांव के मामले निपटायें इसमें गांव का कोई भी आदमी इन्कार नहीं करता। ये सब बातें ऐसी हैं जो भारत के गांवों को मान्य रही हैं और इनकी सैद्धान्तिक अनिवार्यता स्वाभाविक है। फिर भी जो आदमी भूमि देने के कागज पर दस्तखत कर चुका है वह भूमि निकाल कर देने के प्रत्यक्ष कार्य को पूरा करने में हिचकता है, हीले हवाले करता है और उस क्षण को टालने की कोशिश करता है जिसमें उसे अपनी भूमि का कुछ भाग छोड़ना है। लेकिन जब तक वह खुशी से अपनी जमीन का बीघे भूमिहीन को दे नहीं देता तब तक उसके हस्ताक्षर बेमानी हैं। पुष्टि के अभियान के तीन-चार तीन वर्षों का यही सबक है कि महज घोषणा से कुछ नहीं होता। प्राप्ति और पुष्टि एक साथ होना चाहिए। कथनी और करनी का फर्क ग्रामस्वराज्य का कभी खड़ा नहीं होने देगा। जब हम भूमि के तत्काल वितरण पर जोर देंगे और यहां और अभी की तात्कालिकता का वातावरण पैदा करेंगे तभी भूदान के समय से बना यह प्रभाव दूर होगा कि हम महज भले लोग हैं भला काम करना चाहते हैं लेकिन हमारा कोई आग्रह नहीं है। यहां और अभी का वातावरण बनाने के लिए यह भी जरूरी है कि हम पिछला हिसाब साफ करें। भूदान की जितनी जमीन अवितरित पड़ी है उसका तत्काल वितरण करवायें और वितरित जमीन पर आदाता का प्रत्यक्ष कब्जा करवायें। सहरसा के अभियान में इन सब बातों पर ध्यान देना जरूरी है।

अभियान पद्धति में हम एक हवा बनाते हैं और प्रारम्भ के लिए कुछ जमीन भी बंटवाते हैं। ग्रामसभा के जरिये ही यह सब होना है क्योंकि उसे ही सब कुछ करना है। ग्रामसभा वह औजार है जिसे ग्रामस्वराज्य की क्रांति को फलीभूत करना है। लेकिन हम अक्सर देखते हैं कि बन जाने के बाद ग्रामसभाएं सक्रिय नहीं होतीं। इसका कारण शायद यह कि ये ग्रामसभाएं विचार में तो गांव की प्रभुसत्ता सम्पन्न इकाइयां मान ली जाती हैं पर प्रत्यक्ष में इनके हाथों में लगभग कुछ नहीं होता, न सब कुछ करने की तीव्र इच्छा ही होती है। उनके हाथों में प्रत्यक्ष सत्ता आये और उनमें सबकुछ करने की तीव्र इच्छा हो इसलिए यह जरूरी है कि उन्हें गांवों के तात्कालिक प्रश्नों और दैनन्दिन मामलों से सबद्ध किया जाये। सैकड़ों वर्षों की गुलामी और उससे उत्पन्न दीनता और हीनभावना ने गांव वालों के मन से यह विश्वास उठा दिया है कि अपने संसार के मालिक वे खुद हैं। आजादी के बाद कल्याणकारी राज्य ने कल्याण के नाम पर उनकी परनिर्भरता और परमुखापेक्षिता को और बढ़ाया है। उनमें आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास विचार-प्रचार से नहीं आयेगा। यह तभी आयेगा जब वे अपनी सर्वमान्य संस्था ग्रामसभा के जरिये सीधे और प्रत्यक्ष कार्य को करेंगे। यह पुरानी कहावत निरर्थक नहीं है कि एक मन विचार से एक तोला अमल में ज्यादा शक्ति है। यह सही है कि उनकी मार से काम करने और उनसे काम करवाने से हम उनके मानस का परिवर्तन नहीं कर सकते। लेकिन हम करने वाले नहीं है-यह मान कर भी हम उनके मानस को बदल नहीं सकते। हम क्रांति के शुभ्र-धवल राजहंस की तरह पर फड़फड़ाते गांव पर उतरें और अपने गुंजन से वातावरण को शुद्ध हुआ मान कर चले जायें तो न तो इतिहास की परतें उतरेंगी न लोकशक्ति जागृत होगी। हमें गांव वाले की तरह ही अपने को मान कर और बना कर गांव वाले की तरह जिम्मेदार होना होगा। कार्यकर्ता की भूमिका में हम जब तक रहेंगे तब तक हम चाहे

(शेष पृष्ठ २७ पर)

बेदखल दाखिल होगा, दरवाजे खुलेंगे

—अनुपम मिश्र

जहां तक नजर जाती है ऊबड़-खाबड़ पथरीली परती जमीन है। कहीं-कहीं छोटी-छोटी कटीली झाड़ियां। डूबते जा रहे सूरज की लाली ने कुम्हलाती लाल मिट्टी को और भी सुर्ख बना दिया है। बरगद और पीछे छूट गया है, दूर ढोल बजने की आवाजें आ रही हैं। उस ओर थोड़ा आगे बढ़ने पर परती पड़े इस बड़े भूखण्ड के टीलों पर जगह-जगह एक-एक दो-दो लोग खड़े दिखाई देते हैं। इन लोगों के पैरों के पास आसपास से बटोर कर रखे गये छोटे-छोटे पत्थरों के कुछ टुकड़े पड़े हैं। चारों ओर पत्थरों के उन निशानों पर खड़े पचास लोगों के लिए १० जनवरी '७४ की यह शाम पीढ़ियों की दर्द भरी शामों से बिल्कुल भिन्न है। आज उन्हें जमीन मिल रही है। कुछ देर अपने-अपने टीलों पर खड़े रहने के बाद वे सब थोड़ी दूर बज रहे ढोल की ओर चल दिए हैं।

छोटे बच्चों, बूढ़ों और औरतों से घिरे संथाल लोग ढोल बजा कर नाच रहे हैं। जमीन मिलने की घटना उनके लिए किसी भी उत्सव से बड़ी है। हर ढोल बजाने वाले ने उत्सव में पहना जाने वाला एक लाल कपड़ा अपने कंधों से कमर तक डाला है, उत्साहपूर्वक नाचने से कपड़ा ऊपर उठ जाता है, नीचे उनके चिथड़े लगे, या फटे हुए कपड़े उभर आते हैं।

मुंगेर जिले के लक्ष्मीपुर प्रखण्ड में भूमिहीनता निवारण में लगे खादीग्राम के कार्यकर्ताओं के पहुंचने पर एक बार ढोल और तेज हुए फिर सभा के लिए धीरे-धीरे मद्धम पड़कर बन्द हो गए। भूमिहीन परिवारों द्वारा लायी गई एक पुरानी दरी पर एक ओर आचार्य राममूर्ति, रामनारायण बाबू, मुंगेर जिले के खादी ग्रामोद्योग अधिकारी शिवेन्द्र सिंह, हेमनाथ सिंह व निर्मलचन्द बैठे, उनकी बगल में दो अमीन और सामने पचास भूमिहीन परिवार के सदस्य बैठे हैं। रामनारायण बाबू ने बोलना शुरू किया—वे स्थानीय बोली में विनोबा द्वारा शुरू किये आन्दोलन के परिचय में खेत की जमीन समस्या, बासगीत का पर्चा, जमीन मिल जाने पर लगान के बदले अधिकारियों द्वारा रिश्वत लेना, रसीद नहीं देना, कभी भी बेदखल कर दिये जाने आदि की समस्या पर आए।

भाषण के दौरान अमीन साहब जरीब (जंजीर) से जमीन की नापी कर चुके थे अब वे हर परिवार को दी जा रही जमीन के नक्शे कागज पर उतार रहे हैं। पचास परिवारों में बांटी जा रही ६२ एकड़ जमीन भूदान की और सरकारी गैर मजरुआ की है। फिर भी कोई भी सरकारी अधिकारी उपस्थित नहीं है। रामनारायण बाबू के भाषण के बाद शिवेन्द्र जी ने भूमिहीनों को जमीन के कागज बांटना शुरू किया। समारोह में मालाओं की कमी है। भूमिहीनों ने अपनी बस्तियों से आते समय दो-तीन माला बना ली थी, सर्वोदय कार्यकर्ताओं को पहनाने के लिए। अब शिवेन्द्र जी उन्हीं मालाओं को बारी-बारी से कागज पाने वाले भूमिहीन को पहनाते, भूमिहीन यह जानते हुए कि मालाएं कम हैं, जाते समय अपनी माला उतार कर रख देता। ६० एकड़ जमीन ५० परिवारों में बांटी गई, इनमें लगभग १५-१५ परिवार संथाल, मुसहर व यादव हैं। शेष ५ परिवारों में कुम्हार, नाई व मिस्त्री लोग। इनमें से २५ परिवार ऐसे हैं जिनके पास अपनी झोंपड़ी का बासगीत पर्चा तक नहीं है। कुछ आम रास्तों पर बसे

भूदानपुरी में फिर से जीवन लौट आया है

→
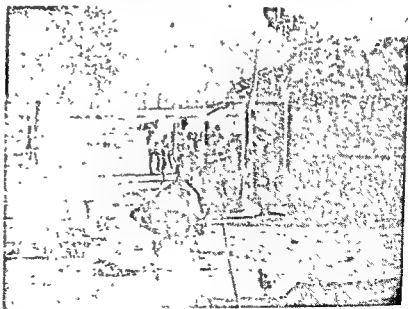
साथियो के साथ मलंपुर से एक ट्रैक्टर-ट्राली पर फिर उसी खादीग्राम को चौरनी सड़क से भूदानपुरी आये। सभी लोग लाठियो से लैस थे। इतने लोगों को आता देख भूदानपुरी के लोग भाग खड़े हुए। आक्रमणकारियो ने उनके खाली घरों पर ही हमला बोला। एक मुसहर के घर होता ही क्या है? मुगिया, कुछ पुराने कपडे, टूटे-फूटे अलम्युनियम के बर्तन और भगदड़ मे छूटा एक छोटा बच्चा उठा ले गये। डरे हुए भूदान किसान कई दिनों तक अपने परिचितो के घर छिपे रहे। फिर पुलिस मे दोनों ओर से रपट दर्ज हुई। मलंपुर के वीरेन्द्र सिंह जी ने कहा कि वे दो हजार रुपये लेकर जा रहे थे, भूदानपुरी वालो ने लूट लिए! उधर भूदान किसानो ने भी अपने खेतो से बेदखल किये जाने, घर को लूटने की रपट की। फिर इलाके के समाजवादियो व साम्यवादियो ने दोनों पक्षो मे एक 'समझौता' करा दिया—भूदान किसानो से लिखवा लिया कि जमीन उनकी नही है, मलंपुर की है।

२८ जून को आचार्य राममूर्ति खादीग्राम आये। उन्हे घटना मालूम पड़ी। उन्होने रोज भूदानपुरी जाना शुरू किया। भूदान किसानो को एकत्र कर साहस दिलाना शुरू किया। उधर मलंपुर वालो से भी सम्पर्क किया शांति की तलाश शुरू हुई। मलंपुर ने ३-४ दिन का समय मांगा। सारे कांड ने राममूर्ति को हिला दिया था। उनका कहना था कि प्रहार केवल मुसहरो पर नही सर्वोदय पर भी हुआ है। भूदानपुरी मे रामू को नहीं विनोबा को बेदखल किया गया है। इधर सभी कार्यकर्ताओ ने मामले पर बातचीत की, रामनारायणबाबू मुंगेर जाकर जिला मजिस्ट्रेट से मिले, कार्यकर्ताओ का निर्णय सुनाया कि भूदान किसानों को वे बेदखल नही होने देंगे।

मलंपुर के श्री चन्द्रशेखर वर्तमान सरकार मे उद्योगमन्त्री हैं। मलंपुर के कुछ दानपत्रों पर उनके गवाह होने के दस्तखत है। उन्ही के गांव ने यह बेदखली की है। मन्त्री जी ने स्वयं भूदानपुरी आने को कहा। स्वयं कलेक्टर से मिले, कहा कि इस मामले मे सरकार की ओर से जो भी मदद भूदान किसानो को दी
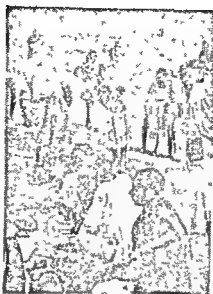
धीरेनपुरी जमीन नप रही है

जा सकती है, दी जाय। आचार्य राममूर्ति के रोज भूदानपुरी पहुचने से गांव वाले सब अपने घरो मे आने लगे थे। इस बीच बेदखल किये खेत पर ट्रैक्टर चला कर वे लोग अरहर बो गये थे। खेत पर कुछ लठैत भी पहरा देते थे, जो राममूर्ति के आने पर जरा हट कर खडे हो जाते थे। १८ अगस्त को घटना-स्थल पर कलेक्टर आये, अधिकारियो की एक टोली के साथ वही सम्बन्धित अधिकारियो को फटका। कुछ के तबादले हुए। इसे देखकर मलंपुर के लोगो का पाशविक मनोबल टूटा। वे सब अगले दिन आश्रम आये और राममूर्ति जी से ही फैसला निपटाने को कहा। मलंपुर के वीरेन्द्र सिंह ने, जिन्होंने रामू को बेदखल किया था, फिर सारी जमीन छोड दी। वह जब नापी गई तो पिछले कब्जे से कुछ ज्यादा ही निकली, अरहर की बोयी फसल भी रामू को दी गयी।

मामले मे सरकारी महकमे किस हद तक लाटो के साथ थे? विवादग्रस्त जमीन मलंपुर वालो ने एक मुसलमान से खरीदी थी। वह ३३ एकड थी। दाम था ६ हजार और माल गुजारी केवल सौ रुपया। इसमे ६ एकड का भूदान था। दान का टुकड़ा भी मूल जमीन के साथ बिक गया। खरीदी दिसम्बर ७२ मे हुई, फरवरी ७३ तक उसके कागज वगैरा स पक्के हो गये। इस सारी क्रिया मे साधारणतः सरकारी विभाग ५ साल से १० साल तक समय लगा देते है। लेकिन शायद रिश्वत के कारण कुल कागज ३ महीने मे पक्के हो गये।

घटना तात्कालिक थी, टल गई लेकिन उससे राममूर्ति जी को लगा कि इसके नतीजे दीर्घकालीन होगे। मुंगेर के कार्यकर्ताओ ने, जो इस मामले के नजदीक थे, सोचा कि आज हमारा संगठन नही है। हम प्राप्त जमीन की पुष्टि भी नही कर पाये। अगली प्रक्रिया लिखते रहे, पिछली प्रक्रिया मिटाते रहे। चारो तरफ घूमते रहे लेकिन नाक के नीचे भूदान किसान बेदखल हुआ। आश्रम ने निर्माण के काम कम नही किये थे, आसपास के हर गांव मे कुए खुदवा दिये थे, लेकिन वास्तविकता की जमीन न खुद पायी और न उसमे पानी था।

भूदानपुरी की बेदखली से लड़ने के इस क्रम मे खादीग्राम के आसपास के भूमिहीनो मे आत्मविश्वास आने लगा था। उन्हे लगा कि सर्वोदय के लोग गरीबो के साथ हैं, जोखिम उठा सकते हैं। धीरे-धीरे आश्रम मे कुछ मुसहर व आदिवासी आने लगे। उन लोगो ने राममूर्ति जी से कहा हम जहां बसे है जो जमीन हम जोत रहे हैं, उसकी हमे रसीद नही मिलती। लगान के बदले रिश्वत मांगते हैं हमसे। अन्य कुछ लोगो ने आकर कहा कि हम जिस जमीन पर बसाये गये हैं, उसका हमे पर्चा नहीं मिलता है। जमीन से हटा देने की धमकियां भी दी जाती हैं। कुछ ने रैंग नोटिस भी दिखाये।

भूदान किसानो की बेदखली की घटना ताजी ही थी। उसने और फिर आसपास से आये इन गांववालो की बातो ने खादीग्राम के कार्यकर्ताओ को जमीन की समस्या को सुलझाने अपने पूरे काम पर एक नए सिरे से सोचने को मजबूर किया।

जोर, भट्ट., पचमेरी आदि गांवो मे जमीन की अनिश्चितताओं की घटनाएं सबमे ज्यादा पायी गयीं। आचार्य राममूर्ति, निर्मलचन्द्र आदि इन गांवो मे गये, वहां ऐसे लोगो के साथ बैठ कर सारी स्थिति समझने की कोशिश की। लोगो के नजदीक आने मे तथ्य सामने आया। १०-२० साल से जमीन

(शेष पृष्ठ २४ पर)

हजारों हाथों में जकड़ी हजरा जाति

चकाई प्रखण्ड (जिला मुंगेर, बिहार) के मगरडीह नामक गांव में ११ जनवरी, ७४ को एक अनोखा सम्मेलन हुआ—'असहाय अपराधी सम्मेलन।' सम्मेलन में हजरा जाति के, जिसे जरायमपेशा करार किया गया है, ५२ गांवों के १५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इस जाति को और सम्मेलन का स्थल मगरडीह गांव को बिहार गजेटियर तक में चोरी की आदत के लिए कुख्यात माना गया है। लेकिन जब से झाझा और चकाई प्रखण्डों में ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का आन्दोलन शुरू हुआ तब से इन दोनों प्रखण्डों के कार्यकर्ता इन लोगों के नजदीक आने लगे। इस नजदीकी से इस कौम के अपराधी चरित्र का एक महत्वपूर्ण पहलू खुला—ये अपराध करने के लिए मजबूर हैं, यदि चाहें भी तो चोरी करना छोड़ नहीं सकते। झाझा के शिवानन्द भाई ने अपने अन्य साथियों की मदद से हजरा कौम की असहायता समझने की कोशिश की। चोरी करने वाले हजरा को हर बार चोरी का माल एक निश्चित स्थान को ही बचना पड़ता है। चोरी का माल खरीदने वाले ये दलाल जिन्हें अर्बन कहा जाता है, इन लोगों से ऐसे माल को बहुत कम दामों पर खरीदते हैं। इस तरह होने वाले फायदे के कारण ये अर्बन इन लोगों को पुलिस से सरक्षण देते हैं। कहा जाता है कि इस सारे मामले में पुलिस का भी हाथ होता है। यदि किसी कारणवश हजरा जाति के वे चोर अर्बन द्वारा सुझाये गये स्थान पर चोरी करने से इन्कार करदें तो इन्हें किसी झूठे आरोप में फंसा दिया जाता है। स्थानीय सर्वोदय कार्यकर्ताओं को इस जाति की यह दुखद स्थिति मालूम पड़ी। उन्होंने इस मामले को सहानुभूति से देखना शुरू किया। उन्हें यह साफ दिखा कि ये लोग अपराधी नहीं हैं, अपराध करने को विवश किये गये हैं। ग्राम भारती, सिमुलतला के शिवानन्द भाई ने तय किया कि इन्हें और इनके गांवों को ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य के आन्दोलन से अछूता नहीं रखना चाहिए। इन गांवों से कार्यकर्ताओं ने सम्पर्क रखना शुरू किया, कुछ रचनात्मक कामों से हजराओं के मन में प्रवेश किया गया और इस बात की टोह ली गई कि क्या ये किसी बदली हुई परिस्थिति में अर्बन और पुलिस विभाग के ऐसे लोगों का, जो चोरी करने पर विवश करते हैं, मुकाबला कर अपने इस कलंक को धोकर समाज में एक सार्थक जीवन बिता सकते हैं? नतीजा आशाजनक निकला। और इसी नतीजे में गत ११ जनवरी को मगरडीह में चकाई प्रखण्ड के बैमराटाड़ बोढ़ा कीरहू बाला-गोजी सतुआ चन्द्रमडीह, नौवाडीह, राय पुर, मानसिंहडीह, आदि गांवों से १५० असहाय अपराधियों ने भाग लिया। सम्मेलन में २१ सदस्यों की एक समिति बनी है, जिसके संयोजक तेजनारायण हैं। सम्मेलन ने फैसला किया कि इस पेशे से सम्बन्धित प्रखण्ड में अन्य छूटे हुए गांवों से भी सम्पर्क किया जाये वहां के असहाय अपराधियों को समझाया जाय कि एक बार पूरी हिम्मत के साथ सार्वजनिक रूप से चोरी के धंधे को छोड़ने की शपथ लेकर बेहतर जिन्दगी बिताना शुरू किया जा सकता है। शपथ लेने के बाद चोरी का माल खरीदने वाले अर्बनों व उनसे मिले पुलिस के उन अधिकारियों का पूरी शक्ति से सामना किया जाये और जितनी ही विवशता हो—इस काम को सदा के लिए छोड़ दिया जाये। तेजनारायण के संयोजकत्व में गठित हजरा लोगों की यह समिति जनवरी से अप्रैल तक अपने लोगों से सम्पर्क करेगी। चकाई प्रखण्ड के किसी हजरा गांव में ही आगामी भूक्रान्ति दिवस, १८ अप्रैल को ये असहाय अपराधी एक बड़ा सम्मेलन आयोजित करेंगे और समाज के सामने शपथ लेकर अपने, अपनी जाति और अपने गांव से इस कलंक को मिटा देंगे।

इन असहाय अपराधियों के बीच कुछ रचनात्मक काम किया जा चुका है। ग्राम-

→

बिहार खादी ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष रमापति जी हजराओं को सम्बोधित करते हुए

सहरसा अन्तिम अभियान के लिए तैयार है

सहरसा ने अपने अन्तिम अभियान की तैयारियां पूरी कर ली हैं। पूर्व तैयारी नवम्बर में शुरू की गई थी। इस दौरान में प्रखण्ड स्तर पर अभियान समितियां गठित कर ली गई हैं। जिले के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं और समाज के अन्य हिस्सों में सम्पर्क किया गया है। जिले व प्रदेश की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं ने स्वीकार किया है कि ग्रामस्वराज्य उनका भी मुख्य कार्यक्रम है।

सहरसा के अन्तिम अभियान में सभी तरह की ताकतें एक जुट होकर काम कर सकें इस प्रयास में बिहार प्रदेश सोशलिस्ट पार्टी भी मोर्चे पर आ रही है। चार जनवरी को सहरसा में समाजवादी नेता कर्पूरी ठाकुर ने प्रदेश के समाजवादी कार्यकर्ताओं की एक बड़ी रैली को सम्बोधित करते हुए उनसे आग्रह किया कि वे सब इस अभियान को अपना अभियान मानें। रैली में शामिल समाजवादी कार्यकर्ताओं में सर्वोदय के काम को लेकर शंकाएं थीं। कई कार्यकर्ताओं ने इस बहस को बड़ा उठाया कि सर्वोदय अन्याय से नहीं लड़ता तो हम सहरसा अभियान में कैसे शामिल हो सकते हैं? कर्पूरी ठाकुर ने, जो सर्वोदय विचार को नजदीक से जानते हैं, अपने कार्यकर्ताओं को इस बहस की निरर्थकता समझायी, उन्होंने अन्याय से लड़ने के अनेक उदाहरणों को सामने रखते हुए कहा कि आज इस जमाने के लोग गांवों के जनजीवन से, वहां के शोषण से, जितने परिचित हैं उतने शायद ही कहीं मिलें। हमें इस अभियान में शामिल होकर उनके काम में मदद करनी चाहिए। और यदि आलोचना भी करनी है तो उस काम को गंभीरता से जान लेने के बाद ही वह की जाये। बिना ज्यादा जाने यह कह देना कि सर्वोदय अन्याय से लड़ नहीं रहा, ठीक नहीं। रैली ने अन्त में निर्णय लिया कि बिहार में समाजवादी कार्यकर्ता इस अभियान में यथाशक्ति साथ देंगे।

रैली के बाद कर्पूरी ठाकुर ने सहरसा से चार मील दूर बरमनिया में भूदान जमीन का वितरण किया। रैली में प्रदेश के ५ विधायक और १२५ कार्यकर्ता उपस्थित थे। लेकिन खादी संस्थाओं, समाजवादी दल के उत्साही कार्यकर्ताओं के अलावा सर्वोदय

(शेष पृष्ठ २३ पर)

सहरसा अभियान एक नजर में

अभियान का क्षेत्र २५ प्रखण्डों का है—

सहरसा के २२ प्रखण्ड—

१ कहरा २ महिषी ३ नवहट्टा ४ बख्तियारपुर ५ सलखुआ ६ सौर ७ सोनवर्षा राज ८ मुरलीगंज ९ किशनपुर १० पिपरा ११ त्रिवेणीगंज १२ मधेपुरा १३ सिंहेश्वर १४ शंकरपुर १५ बीजा १६ आलमनगर १७ कुमारखंड १८ मुरलीगंज १९ छातापुर २० बसन्तपुर २१ राघोपुर २२ निर्मली।

(मरौना में प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य समिति गठित हो चुकी है।)

पूर्णिया का एक प्रखण्ड—भवानीपुर प्रखण्ड (रुपौली में ग्रामस्वराज्य समिति गठित हो चुकी है।)

दरभंगा का—विरौल प्रखण्ड।

अभियान की अवधि—जनवरी से अप्रैल १९७४ तक तथा विशेष अभियान की अवधि—२६ जनवरी से १ मार्च।

अभियान की पूर्व तैयारी—

प्रखण्ड के सेवक, सहयोगी कार्यकर्ता तथा समय दानियों का प्रशिक्षण। प्रखण्ड स्तरीय ग्रामस्वराज्य समिति गठित करना। कार्यालय का समुचित स्थान तय करना। प्रखण्ड के खर्च के ४० मन अनाज और जिले के लिए ५ मन अनाज संग्रह करना।

अभियान में करने के कार्य—

कानूनी रूप से घोषित तथा गठित ग्रामसभाओं को ग्रामस्वराज्य की दिशा में सक्रिय करना, ग्रामसभा सर्वसम्मति से बनवाना। बीघा-कट्ठा भूमि बटवाना, ग्राम शान्ति सेना बनवाना, ग्रामदान के पर्चे दिलाना, भूदान की जमीन बटवाना, प्रखण्ड ग्रामसभा का गठन करना।

विशेष अभियान का कार्यक्रम—

२६ जनवरी—जिला स्तरीय शिविर सहरसा में

२७ जनवरी—प्रखण्डस्तरीय शिविर और आम सभा

२८ जनवरी—क्षेत्रों में पदयात्रा और गोष्ठी

२७ फरवरी—प्रखण्डस्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और कार्य संयोजन।

२८ फरवरी से १ मार्च—जिला स्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और कार्यसंयोजन।

अभियान का कार्यक्रम—

२७ अप्रैल—प्रखण्डस्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और संयोजन।

२९-३० अप्रैल—जिलास्तरीय गोष्ठी, रिपोर्ट और कार्य संयोजन।

मुसहरी प्रखंड लोक-गणराज्य की ओर

सुरेन्द्र चक्रपाणि

(सुरेन्द्र चक्रपाणि, अखिल भारतीय पंचायत परिषद की मासिक पत्रिका—'पंचायत संदेश' के सम्पादक रह चुके हैं। पिछले एक वर्ष से मुसहरी में हैं।)

वातावरण आशंकित, मजदूर चिन्तित, भूमिवान आतंकित, सड़क दिन में सूनी—ऐसी परिस्थिति में आज से साढ़े तीन वर्ष पूर्व जयप्रकाश नारायण मुसहरी में आये, हिंसा, उपद्रव, दमन, उत्पीड़न, शोषण एवं अन्याय के समाधान के लिए।

साढ़े तीन वर्ष की अवधि अधिक नहीं है। इस अवधि में मुसहरी प्रखंड ने ग्रामस्वराज्य की दिशा में अच्छी प्रगति की है। समाज परिवर्तन का कार्य कठिन है।

गांधी जी ने अपनी शहादत से एक दिन पूर्व देश के नाम अपनी वसीयत में कहा था "भारत को अपने मुट्ठी भर शहरों और कस्बों से भिन्न लाखों गांवों के संदर्भ में सामाजिक, नैतिक और आर्थिक आजादी अभी हासिल करना है।" देश का विकास इन लाखों गांवों के बुनियादी विकास पर निर्भर है। इस मूल सत्य को 'मुसहरी प्रखंड' ने पहचाना है। उसने इस विश्वास को बल दिया है कि स्वतंत्र भारत में ग्राम स्वशासन की इकाई कहीं पनप रही है तो वह है मुसहरी और इसका जीता-जागता उदाहरण है उसकी [१०] ग्रामसभाएं। ग्रामस्वराज्य की उसकी यात्रा अभी शुरू ही हुई है। अभी वह अपनी मंजिल के पहले चरण को पूरा कर दूसरे चरण में प्रवेश कर रहा है। उसकी यात्रा का अन्तिम पड़ाव होगा ग्रामस्वराज्य की भावना पर आधारित 'मुसहरी लोकगणराज्य की स्थापना।'

मुसहरी प्रखण्ड स्वराज्य सभा को इस ओर भारी प्रयास करने होंगे। मुसहरी प्रखंड स्वराज्य सभा जो पिछले २ वर्षों से एक तदर्थ समिति के रूप में कार्य कर रही थी उसे एक व्यवस्थित रूप दिया जाये ऐसी सभी साथियों की मान्यता थी। फलस्वरूप उन्नीस जुलाई ७३ को मुसहरी प्रखण्ड स्वराज्य सभा का सर्वसम्मत चुनाव हुआ। नये साथियों ने कार्यभार संभाला नई कार्य समिति का गठन हुआ अनेकों कार्य सामने आए। साधन कम थे, शक्ति सीमित थी, उत्तरदायित्व का पहाड़ मुंह बाये खड़ा था। धीरे-धीरे किन्तु मजबूत कदमों के साथ ग्रामस्वराज्य के काम में लगे साथियों की एकता का सम्बल लेकर मुसहरी के लोग आगे बढ़ते गये। विशेष कार्यक्रम भी लिये गये। बाहर से भी कई टोलियां मुसहरी प्रखण्ड में हो रहे कार्य का अवलोकन करने आईं। सर्वसेवा संघ के अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा, भाई ठाकुरदास बंग ने तीन दिन तक मुसहरी प्रखंड की ग्रामसभाओं में बैठकें कीं। कार्यकर्ताओं की गोष्ठी को सम्बोधित किया। उनसे उन्हें नई प्रेरणा मिली। आगे काम को नई दिशा देने का हौसला मिला। जानकी बहन ने भी सप्ताह भर महिला पदयात्रा का संचालन किया।

परम्परा से हटकर जयंती समारोह

मुसहरी की ग्रामसभाओं एवं प्रखंड स्वराज्य सभा का अपना एक विलक्षण व्यक्तित्व है। उनका अपना दृष्टिकोण है, उनके द्वारा आयोजित प्रत्येक कार्यक्रम, प्रत्येक उत्सव अपनी एक सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता का सूचक है। प्रेरणास्रोत महापुरुषों की जयन्ती उत्सव को ही लीजिए। परम्परा से हट कर मुसहरी की जनता ने एक नया तरीका अपनाया है।' विनोबा जयन्ती ११ सितम्बर को सर्वोदय ग्राम में मनाई गई। इसी अवसर पर मुसहरी प्रखंड स्वराज्य सभा की कार्यसमिति के सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने संकल्प ग्रहण किया और अपने कार्य को एक नई दिशा देने, समाज में मौलिक परिवर्तन लाने, शोषण, अन्याय से मुक्त समाज का निर्माण करने का व्रत लिया। संकल्प इस प्रकार है:

हम अपने प्रखंड में ग्रामस्वराज्य की भावना के लिए निष्ठा और विश्वासपूर्वक संकल्प करते हैं कि १ प्रखंड के गांवों में नैतिक, भौतिक, एवं सांस्कृतिक विकास तथा सर्वोदय विचार-प्रचार के लिए आपस में मिल कर अपनी शक्ति भर कोशिश करेंगे। २. प्रखंड में शान्ति और भाईचारे की भावना को दृढ़ करते हुए आपसी झगड़ों का पंच फैसले द्वारा निपटारा करायेंगे। ३ प्रखंड में सम्प्रदाय, जाति, वर्ण आदि के भेदभाव को समाप्त करते हुए अन्याय, अनीति और शोषण के विरुद्ध सत्याग्रह करेंगे। ४ प्रखंड में सामाजिक कुरीतियों तथा अधिकतम फिजूलखर्ची, दहेज, तिलक श्राद्ध एवं व्यसनों आदि में अपव्यय को रोकेंगे। ५ प्रखंड में विकास संस्थाओं के द्वारा किये जाने वाले विकास कार्यों के सफल संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत कर प्रखण्ड को आर्थिक दृष्टिकोण से सक्षम बना कर अन्त्योदय करेंगे। ६. प्रखण्ड में भूमिहीन, किसानों एवं बटाईदारों की बेदखली रोकते हुए गैरमजरुआ जमीन को उनके बीच वितरित करायेंगे और किसानों की आर्थिक आय के अनुरूप श्रमिकों के पारिश्रमिक (मजदूरी) निर्धारण में शक्ति भर कोशिश करेंगे। ७ प्रखण्ड में जीवनोपयोगी शिक्षा के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। ८ प्रखण्ड की जनता को भ्रष्टाचार से मुक्त कराकर यथासम्भव किसानों के उत्पादन का उचित मूल्य निर्धारण, आवश्यक वस्तुओं के उचित कीमत पर सुलभ कराने आदि में भरपूर सहयोग करेंगे तथा समय समय पर सामने आई स्थानीय राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए यथासम्भव प्रयास करेंगे।

उक्त संकल्पों के अतिरिक्त एक महत्वपूर्ण संकल्प यह भी लिया गया कि प्रखण्ड की ग्रामसभाओं द्वारा लिये गये संकल्प को कार्य रूप दिलाने में यथा सम्भव प्रयास करेंगे। मुसहरी की ग्रामसभाओं ने अपनी ग्राम सभाओं में जो संकल्प लिए हैं वे इस प्रकार हैं।

हम अपने गांव में ग्रामस्वराज्य की

स्थापना के लिए निष्ठा और विश्वासपूर्वक संकल्प करते हैं कि : १. गांव के नैतिक, भौतिक और सांस्कृतिक विकास के लिए आपस में मिलकर अपनी शक्ति भर कोशिश करेंगे। २. गांव में शान्ति बनाये रखेंगे। पहले के जो मामले—मुकदमे होंगे, उन्हें सम्बन्धित व्यक्तियों को राजी करा कर अदालत से उठवा लेने और आपसी समझौते अथवा पंच-फैसले द्वारा सुलझाने का प्रयत्न करेंगे। ३. भविष्य में गांव में झगड़े न हों, और हों तो उन्हें भी आपसी समझौते या पंच फैसले से सुलझाने का प्रयत्न करेंगे। ४. कोई भी निर्णय सम्प्रदाय, जाति, वर्ग आदि के भेदभाव से प्रभावित हो कर नहीं लेंगे, और सभी धर्मों के प्रति समान आदर तथा प्रेमभाव रखेंगे। ५. स्वयं शराब आदि व्यसनों से दूर रह कर गांव को इन सारी बुराइयों से बचायेंगे। ६. अपने गांव में शान्ति स्थापना और सुरक्षा का स्वयं प्रबन्ध करेंगे और इसके लिए ग्राम-शान्ति सेना का गठन करेंगे। ७. हम गांव का हर तरह से विकास करने के लिए हमेशा कोशिश करते रहेंगे और गांव में कृषि तथा उद्योग के विकास के लिए गांव के सहयोग से जो भी सम्भव होगा करेंगे। ८. हमारे गांव में अन्याय या अनीति न हो, इसका हम प्रयत्न करेंगे। ९. हमारे गांव में कोई भूखा, नंगा, बेरोजगार या बेघर न रहने पाये, इसके लिए हम यथाशक्ति उपाय करेंगे। १०. गांव का हर बच्चा भविष्य का अच्छा मनुष्य तथा नागरिक बने, इसलिए उसे जीवनोपयोगी शिक्षा दिलाने के लिए हम पूरी तरह प्रयत्नशील रहेंगे।

११-हम ग्रामसभा में हर निर्णय सर्व-सम्मति अथवा सर्वानुमति से करेंगे।

मुसहरी प्रखंड स्वराज्य सभा ने जय प्रकाश जयन्ती मनाने का निर्णय लिया। तैयारी कमेटी की बैठक में निश्चय किया गया कि ११ अक्तूबर जय प्रकाश जयन्ती दिवस तक कार्य समिति के सदस्य अपना बीघा-कट्ठा निकाल भूमिहीनों में वितरित कर देने की घोषणा करेंगे। और अगली जयन्ती तक प्रखंड स्वराज्य सभा की ग्राम सभा के २०० सदस्य तथा ग्रामसभाओं के पदाधिकारी अपना-अपना बीघा-कट्ठा निकाल भूमिहीनों में वितरित कर देंगे। बीघा कट्ठा से १३०० बीघा जमीन भूमिहीनों को मिलेगी। अब तक ३५५ भूमिहीनों को भूमि प्राप्त हो चुकी है।

सेवाग्राम में आयोजित राष्ट्रीय परिषद के निर्णय को मुसहरी प्रखंड में कैसे क्रियान्वित किया जाये यह एक आम चर्चा थी। १८ नवम्बर को द्रोणपुर ग्रामसभा में प्रखंड स्वराज्य सभा की ओर से एक दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय परिषद के निर्णय की व्यापक चर्चा हुई। आचार्य राममूर्ति का एक पत्र भी गोष्ठी के सामने रखा गया। इसी संदर्भ में बिहार में सरकार की ओर से चलाये जा रहे भूमि सुधार वर्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। काफी विचार-विमर्श के बाद तय हुआ कि सभी ग्रामसभाओं को राष्ट्रीय परिषद के अष्टसूत्री कार्यक्रम भेज दिये जायें और उनसे अपील की जाय कि अपनी शक्ति और क्षमता के आधार पर उसमें से सब या कोई कार्यक्रम वे अपनायें और उसे मूर्त रूप दें। यद्यपि मुसहरी प्रखंड में अष्टसूत्री कार्यक्रम कोई नई बात प्रस्तुत नहीं करता था किन्तु फिर भी वह एक आवाहन तो था ही। ग्रामसभाओं का उत्साही नेतृत्व जागा। घर छोड़ अनेकों कार्यकर्ता ग्राम सभाओं में फैल गये, समस्याओं को पकड़ने एवं उनके समाधान खोजने चल पड़े।

मुसहरी प्रखंड स्वराज्य सभा और ग्रामसभाओं के नेतृत्व की विशेषता रही है कि यह हर क्षण कुछ पाना चाहता है। ग्रामसभाओं की कानूनी पुष्टि का काम बहुत ही श्रम और समय साध्य होता है। थका देने वाला काम है। शासन व्यवस्था इस के अनुकूल काम करने को अभ्यस्त नहीं है जिससे अनेक कठिनाईयां सामने आती हैं किन्तु मुसहरी के लोग शासकीय मशीनरी की उदासीनता से घबराते नहीं हैं। उनका उत्साह मन्द नहीं पड़ता। १९ नवम्बर इन्दिरा जयन्ती से ३ दिसम्बर राजेन्द्र जयन्ती तक पुष्टि अभियान अबाध गति से चलता रहा। पुष्टि अभियान की उपलब्धि थी : १६ ग्रामसभाओं की पुष्टि सम्बन्धी दस्तावेज पुष्टिपदाधिकारी को संपुष्टि के लिए समर्पित किये गये। इस प्रकार संपुष्ट ग्रामसभाओं की संख्या ३६ तक पहुंची है।

३ दिसम्बर को राजेन्द्र जयन्ती मनाई गई। बड़ी गण्डक के किनारे-किनारे बुढनगरा ग्रामसभा में जयन्ती समारोह के बाद प्रखंड स्वराज्य सभा एवं बुढनगरा ग्रामसभा का फैसला था कि भूदान किसान की बेदखली समाप्त करेंगे अन्यथा अहिंसक प्रतिकार का रास्ता अपनायेंगे। सत्याग्रह का बिगुल गण्डक की तलहटी में गूंज उठेगा। उनका कार्यक्रम था, छूटे हुए लोगों को वासगीत के पर्चे मिलें, वासगीत पर्चों के आधार पर सरकारी रसीद कटाई जाये। १६ दिसम्बर से प्रखंड स्वराज्य के साथियों की टोली ने जिला सर्वोदय मंडल के मार्गदर्शन तथा बुढनगरा ग्रामसभा के उत्साही कार्यकर्ताओं के आवाहन पर गण्डक की तलहटी में अपना खेमा गाड़ दिया। भूमिवानों से सम्पर्क किया गया। तीन दिन तक रात-दिन यह सिलसिला जारी रहा। भूमिवान का मन जागा, "दान में दी हुई जमीन को मैं अभी तक अपने पास रखे हुए था आदाता को देना नहीं चाहता था यह पाप है।" भूमिवानों में से एक आगे बढ़ा, उसने घोषणा की कि मैं प्रायश्चित करता हूं, आदाता जमीन जोत ले। उसकी भूमि उसको समर्पित है। भूदान किसान का हौसला बढ़ा वह बोला—"मेरी जमीन पर आपने अथवा आप के किसी सहयोगी ने अन्न बो रखा है। मैं आपकी मेहनत इस प्रकार नहीं लूंगा। आप अपनी फसल में से आधा ले लेंगे इसी आश्वासन पर मैं भूदान में मिली अपनी जमीन पर कदम बढ़ाऊंगा।" सब एक-दूसरे से गले मिले। सैकड़ों की तादाद में एकत्रित लोगों ने जय-जयकार कर सर्वोदय की प्रेम धारा में स्नान किया। गण्डक नदी यह सब देखती रही।

यह तथ्य भी सामने आया कि बुढनगरा पंचायत में ५० एकड़ जमीन गैरमजरूआ है। प्रखंड स्वराज्य सभा का प्रयास है कि उस जमीन की आवश्यक जांच पड़ताल कर उसे भूमिहीन किसानों में वितरित कर दिया जाये। परमानन्दपुर गांव में भी इस का असर हुआ। ५ बीघा जमीन पर भूदान किसान वहां बेदखल थे। भूदान किसानों को उनकी जमीन वापस मिल गई।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

बातचीत : राममूर्ति व मनमोहन चौधरी के बीच

ग्रामदानी और गैर-ग्रामदानी गांव में फर्क क्या है ?

• राममूर्ति : हम देख रहे हैं कि ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य तक जाने का रास्ता नहीं खुल पा रहा है। गांव अपना स्वामित्व ग्रामसभा को सौंप दे, यह ग्रामीण समाज को स्वीकार नहीं हो रहा है बड़े भूमिवान को तो छोड़ दें, छोटे से छोटे भूमिवान को यहां तक कि गरीब को भी ग्रामदान स्वीकार नहीं है। इसका कारण अब समझ में आता है। यहां खादीग्राम के आसपास १५ ग्रामसभायें हैं। उनकी हर पूर्णिमा को किसी गांव में गोष्ठी होती है। ऐसी ही गोष्ठी में गांव वालों पर कर्ज की बात चली। तय हुआ कि इन गांवों में किस पर कितना कर्ज है और किस महाजन से लिया है, इसका एक सर्वेक्षण किया जाय। सर्वेक्षण हुआ तो लोगों ने अपना कर्ज तो बता दिया लेकिन कर्ज देने वाले महाजन का नाम बताने से इन्कार किया। उनका कहना था कि हमारे पास जो थोड़ी बहुत जमीन है उसके आधार पर हमें विपत्ति में इसी महाजन से कर्ज मिलता है; दूसरी कोई जगह नहीं है जहां से कर्ज ला सकें, इसलिए हम महाजन का नाम बता कर उसे नाराज नहीं करेंगे। ऐसी हालत में किसान अपनी जमीन के छोटे से टुकड़े के स्वामित्व का विसर्जन नहीं करना चाहते। जमीन स्वामित्व से मिलने वाली सुविधाओं के कारण बड़े भूमिवान अपना स्वामित्व नहीं छोड़ते। इस तरह ग्रामीणों ने ग्रामदान आंदोलन के साथ सौम्यतम असहकार किया है। उनसे भूदान मांगा तो उन्होंने दे दिया, स्वामित्व विसर्जन पर दस्तखत कराये गये तो वह भी कर दिया। पुष्टि के लिए गये तो उसे भी कर दिया—लेकिन उनसे वास्तव में जमीन मिली नहीं। आज ग्रामदानी और गैर-ग्रामदानी गांव में क्या फर्क है? एक घोषित ग्रामदानी गांव और पुष्ट ग्रामदानी गांव में क्या फर्क है? इसलिए ग्राम स्वामित्व के साथ ग्रामदान पर तत्काल आग्रह रखने का क्या प्रयोजन होगा? ग्रामस्वराज्य हमारा लक्ष्य जरूर रहेगा लेकिन भूमिहीनता निवारण का मुख्य प्रश्न हमारे सामने रहना चाहिए। ग्रामीणों का संगठन हम भूमि से करेंगे तथा मध्यमवर्ग का रोजगार के प्रश्न से। जमीन हम भूदान की बांट सकते हैं। दान में मांग सकते हैं, आदि।

मनमोहन चौधरी : विसर्जन की बात में दोनों तरह के अनुभव हैं। कोरापुट में ग्रामदान हुआ। वहां भी महाजनों ने कर्ज बन्द कर दिया फिर भी लोग ग्रामदान पर टिके रहे। उन दिनों में हमारे ग्रामकोष वगैरा भी बने नहीं थे। कर्ज लेने के विकल्प के बिना भी वे लोग काम चलाते रहे। फिर पुष्टि अधिकारी आये। वे लोग भी ग्रामदान में कोई खास सहानुभूति रखने वाले नहीं थे। उन्होंने गांव वालों से पुष्टि के दौरान उल्टे-सीधे प्रश्न किये तो भी पांच, सात साल बाद भी कोई ७५ प्रतिशत लोगों ने यह स्वीकार किया कि उन्होंने ग्रामदान किया है। इसलिए इस अनुभव से दोनों बातें सामने आती हैं।

राममूर्ति : विनोबा ने कहा कि ग्रामदान 'ट्रस्टीशिप इन एक्शन' है। ट्रस्टीशिप में भी मालिक से स्वामित्व- विसर्जन के कागज पर हस्ताक्षर लिया जाता?

मनमोहन : मुझे दादा धर्माधिकारी का भोपाल वाला सिद्धान्त अच्छा है। भूमिहीन और छोटे भूमिवान संगठित हो कर बड़े किसान के सामने आयें।

राममूर्ति : मान लें इस सिद्धान्त से एक गांव में भूमिहीन और छोटे भूमिवान संगठित हो कर बड़े किसान के पास गये, यदि वह राजी नहीं होता तो ठीक है सत्याग्रह वगैरा किया जा सकता है लेकिन एक स्थिति यह भी आ सकती है कि वह बड़ा किसान राजी हो जाये तब हम उसके आगे स्वामित्व-विसर्जन का कागज तो नहीं पेश कर देंगे?

मनमोहन : एक स्थिति और भी मुझे दिखती है। मान लें आज सरकार ग्रामदान एक्ट नहीं बनाती तो भी हम समाज में नैतिक दबाव से कोई मकान जगह ग्रामसभायें बना सकते थे। तो इस तरह बनी ग्रामसभा पर स्वामित्व-विसर्जन की कोई कानूनी मुहर नहीं लगती लेकिन नैतिक दबाव तो होगा ही।

राममूर्ति : स्वामित्व-विसर्जन तो लक्ष्य होगा ही ग्राम संगठन में। यह तो बिल्कुल पक्की बात है लेकिन सोचना तो केवल इस पर है कि स्वामित्व-विसर्जन का क्या क्रम होगा। स्वामित्व-विसर्जन से शुरू करें या वहां चलकर पहुंचें?

मनमोहन : जैसा कि मैंने अभी कहा था, दोनों तरह के अनुभव हैं। किसान स्वामित्व-विसर्जन से डरता भी है और कहीं-कहीं उसे इससे साहस भी मिलता है। तंजावूर में ज्यादातर गरीब ही हैं लेकिन उन लोगों ने ग्रामसभाएं बनाई हैं।

राममूर्ति : मनमोहन जी, जहां तक मुझे मालूम है—शायद मेरी जानकारी गलत हो, वहां ग्रामसभायें भिन्न परिस्थिति में बनी हैं। वे शायद हरिजन भूमिहीनों के गांवों में बनी हैं। वहां ग्रामसभा के पीछे स्वामित्व-विसर्जन की बात भी नहीं थी, क्योंकि सब भूमिहीन थे।

मनमोहन : सब भूमिहीन नहीं थे, कुछ के पास थोड़ी बहुत जमीन भी थी। इसलिए मैं मानता हूं कि दोनों प्रकार के अनुभव हमारे सामने हैं। स्वामित्व-विसर्जन कर देने बाद, उनको यह मालूम है कि उनका एक संगठन बन जाता है। ऐसे संगठन से उनमें आत्म-विश्वास आता है। लेकिन यह मान लेना चाहिए कि आज हम एक जगह पहुंच गये हैं। आगे जाने के लिए तरह-तरह के प्रयोग करने होंगे। कहीं किसी परिस्थिति में स्वामित्व-विसर्जन को आगे रखना पड़ सकता है, तो कहीं पीछे। लेकिन वह लक्ष्य है ही हमारा।

राममूर्ति : स्वामित्व-विसर्जन पर कोई

→

तात्विक मतभेद नहीं है। आज नया समाज बनाने के लिए लोगों के सामने कोई नयी प्रेरणा रखनी होगी। मुझे अब ऐसा लगता है कि ग्रामदान के त्रिविध कार्यक्रम शायद उतने काम न आयें।

मनमोहन : 'त्रिविध कार्यक्रम' एक नारे की तरह बन गया। हम कहते रहे कि ग्रामदान के बाद लोग सगठित होकर अपनी समस्याओं से खुद लड़ेंगे, यह हमारा सिद्धात तो था लेकिन व्यवहार मे यह कम आया। लोग लिडर नही बन पाये। हमे क्राति करनी है, हम तो क्राति के वाहक हैं, वगैरा सब ठीक है और इसलिए हम बूथ केप्चर आदि मे अपने को भटकाना नही चाहते लेकिन यह हमे सोचना चाहिए कि बूथ-कैप्चर यदि हो रहा है तो वह वहा के लोगो को निर्भय नही बना रहा। मतदान केन्द्र पर कब्जा करने की घटनाए बहुत सारे लोगो के मन मे आठ-दस आदमियो की लाठी का डर घुसा रही हैं। ऐसी कई घटनायें आदमी की ताकत को रोज-रोज क्षीण कर रही हैं। इसलिए मुझे लगता है कि अब जिन इलाको मे ग्रामदान अभियान नहीं चल रहा है वहा जो भी समस्या आये उसको सामने रख कर रास्ता खोजने का प्रयास करना चाहिए। कोई बधा-बधाया फार्मूला लेकर नही चलें। शकराचार्य जी की बात होती है। बाबा ने ग्रामदान को एक विचार-प्रचार की तरह रखा था। लेकिन क्या केवल 'अह ब्रह्मास्मि' जैसा कहते रहने से या 'मिल्कियत मिटनी चाहिए' ऐसा कहते जाने से मिल्कियत समाज से समाप्त हो जायेगी ? यदि केवल विचार-प्रचार का, गांव तक यह विचार पहुचाने का काम ही बाबा को हमसे कराना था तब तो वह फार्मूला ले कर जाने से काम चलता और आज भी हममे से कई साथी केवल विचार-प्रचार के काम को ही करते रह सकते हैं।

राममूर्ति : एक गाव से दूसरे गाव विचार पहुचायेंगे, कही रुक कर प्रचार को एक ठोस क्रान्ति का रूप देना था —एक ऐसी क्रान्ति जिसका असर पटना और दिल्ली मे भी दिखाई पड़ेगा। उस क्रान्ति के लिए विचार-प्रचार एक क्रम था। स्वामित्व विसर्जन भी उस बडी क्रान्ति का एक अग होता।

मनमोहन : उस क्रान्ति के लिए लोगो मे आत्मविश्वास पैदा होना चाहिए। इसलिए मुझे लगता है कि यदि स्वामित्व-विसर्जन ठोक-पीट कर कराया गया तो वह लोगो का आत्मविश्वास नहीं बढायेगा। आत्मविश्वास बढाने के लिए दादा का सिद्धान्त अपनाया गया है तंजावूर तथा रगपुर मे।

राममूर्ति : लेकिन रगपुर मे हरिवल्लभ परिख जी का काम आदिवासियो के बीच है।

रामनारायण : यहा बिहार मे भी आदिवासी क्षेत्र हैं। रपौली, भाभा, मुसहरी हमारे मुख्य क्षेत्र हैं। इनमे ग्रामसभाओ को कानूनी और व्यावहारिक दृष्टि से पुष्ट कराने का काम चल रहा है। लेकिन इसमे एक दिक्कत है सामने। यदि पूरे प्रखड मे कानूनी पुष्टि हो भी गयी तो एक प्रखड मे एक प्रतिशत से ज्यादा जमीन नहीं निकलती। इससे आप कितने भूमिहीनो को अपने पैरो पर खडा कर उनमे आत्मविश्वास ला सकते हैं ?

मनमोहन : इसका तो यह अर्थ है कि हम या तो थक गये है या फिर लोकप्रिय होने के लिए, विवादास्पद नही बनने के लिए, हम जमीन का प्रश्न छोड कर निर्माण के कामो मे लग जाते है। तो क्या यह स्वीकार किया जाये कि हम जमीन के प्रश्न को हाथ लगाने से डरने लगे हैं ? यदि हम अशान्ति नही चाहते, हिम्मत नही है हममे, समझ नही है हममे, तो फिर हम निर्माण कार्य ही करते रहेंगे। उड़ीसा मे भी मुझे लग रहा है कि हम लोग कुछ हल्के कामो की ओर आकर्षित होने लगे हैं। उड़ीसा मे हमारे एक बहुत कमठ साथी हैं, उनके पीछे कांग्रेस पडी है कि यदि तुम कांग्रेस के टिकट पर चुनाव नही लड़ना चाहते तो निर्दलीय ही लड़ो या जन प्रतिनिधियों वाले तरीके से लडो। लेकिन वे चाहते है कि वह वहा लडा हो। हमारी भी दो धाराए हैं। एक मे हम अपना पवित्र कैरेक्टर बनाये रखना चाहते हैं, दूसरे मे हम इस बात की भी मन ही मन उम्मीद करते हैं कि यदि सरकार मे हमारी दूर-दूर तक या पास तक भी पहुंच होगी तो हम कहीं बेदखली होगी तो उसे अधिकारियो से कह कर मिटवा देंगे। इस तरह हम लोगो को सगठित करने के बजाय कहीं-कहीं सरकारी अधिकारियो से मदद ले →

नवगठित जन

दलित वर्ग की ओर विशेष

—नौकरियों में हरिजनों प्रतिशत अश तुरन्त दिया ज —पचास प्रतिशत पुलिस कांस रिक्त स्थान हरिजनों के लि क्षित। —चार लाख हरिजन के लिए आवास भूमि का प्रतिशीघ्र किया जायेगा। — मार्च तक ८७५ गावों में हरि लिए ५,७५० मकान तैयार ह जायेंगे। —हरिजनों के उत्पी मामले में स्थानीय पुलिस सिविल अधिकारियों से जवाब किया जायेगा। —प्रदेश के म तथा गैर सरकारी डिग्री कालेज छात्रावासों में १८ प्रतिशत हरिजन छात्रों के लिए आरक्षित

जमाखोरी और चोर-बाजा विरुद्ध चौमुखी चौकसी

—गल्ले की जमाखोरी, चोर बा और मिलावट की रोकथाम के कठोर दण्ड की व्यवस्था। — अधिकारियों और मण्डलायुक्तों राशन की दूकानों का निरन्तर नि क्षण। —मिट्टी के तेल, डीजल उर्वरकों की पूर्ति में वृद्धि। के तेल पर कन्ट्रोल म ः गेहूं का राशन दुगना।—

सूचना

लेते है। इस शान्ति पीछे को जाती है। फिर यदि मोह ... तो धनिसान आदि करने पर भी ... नहीं निकल पाता। हममें से ...

...' शासन उत्तरप्रदेश का भविष्य संवारने के लिए कटिबद्ध

... को मिलें यदि अपनी पूर्ण क्षमतानुसार उत्पादन और सम्पूर्ति न करेंगी तो उन्हें अधिग्रहीत कर लिया जायगा।

किसानों को सिंचाई-सुविधा, बिजली की सम्पूर्ति, जिसमें मेलों का निर्माण यातायात की व्यवस्था

—किसानो को अब प्रतिदिन १८ घंटे बिजली उपलब्ध। नलकूप क्षेत्र के किसानो को पास-बुक का प्रबन्ध। —विद्युत उत्पादन पहले की अपेक्षा ड्योढ़ा। —विद्युत-चालित कोल्हुओं को तत्काल बिजली मिलेगी। —औद्योगिक संस्थानों को नौ घंटे का अतिरिक्त शिफ्ट। —डल्ला (मिर्जापुर) सीमेंट कारखाने का विस्तार प्रारम्भ। —टिहरी गढ़वाल में सीमेंट और घड़ी के कारखाने जल्दी ही स्थापित किये जायेंगे। —बाढ़पीड़ित जिलो के एक एकड़ तक की जोत के किसानो को मुफ्त बीज। —छब्बीस अभावग्रस्त जिलो में टेस्ट वर्क पुनः चालू। —खेतिहर मजदूरो को अधिक मजदूरी। —छोटे किसानो को खाद-सम्पूर्ति में प्राथमिकता।

आयोजनायें जिनका शिलान्यास हो चुका है

कताई मिलें—सण्डीला, बाराबंकी, झांसी, अकबरपुर और मऊनाथ भंजन।

चीनी मिलें—कायमगंज (फर्रुखाबाद), हरदुआगंज (अलीगढ़), सठियांव (आजमगढ़) और रसड़ा (बलिया)

पुल—फतेहगढ़-बांदा यमुना पुल, केन पुल (चित्रकूट, बांदा), गंगापुल (बिजनौर), रामनगर-वाराणसी गंगा पुल, जलसेतु, लखनऊ।

रेल—रामपुर, हल्द्वानी

नहर—सोन पम्प नहर, मिर्जापुर

विद्युत—भारी ट्रांसफार्मर का कारखाना, झांसी ११० मेगावाट के विद्युत सयंत्र, हरदुआगंज (अलीगढ़) और ओबरा (मिर्जापुर), आणविक विद्युत गृह, नरोरा (बुलन्द शहर) —डल्ला सीमेंट कारखाने का विस्तार। —लघु फौलाद की भट्टी, हलधरपुर (बलिया)।

आयोजनायें जिनका उद्घाटन हो चुका है

—शारदा सहायक परियोजना बराज, लखीमपुर-खीरी। —भारत इलेक्ट्रानिक्स कारखाना, गाजियाबाद। —पाठा पेयजल ग्रामीण सम्पूर्ति योजना, कर्वी (बांदा)। —हरिपुरा बांध, नैनीताल। —कृषि विश्वविद्यालय, फैजाबाद।

शिक्षक वर्ग और राज्य कर्मचारियों को राहत

माध्यमिक विद्यालयो के शिक्षक और गैर शिक्षक कर्मचारियो का वेतन तथा महगाई भत्ता सरकारी विद्यालयो के समस्तरीय कर्मचारियों के समान। —विश्वविद्यालयो की वित्तीय कठिनाइयो को दूर करने का भार शासन स्वयं वहन करेगा। —कुमाऊं और गढ़वाल में दो नये विश्वविद्यालय। —फैजाबाद में कृषि विश्वविद्यालय। —विश्वविद्यालयो में नये छात्रावासो का निर्माण इसी वर्ष। —सरकारी कर्मचारी जिन्होंने १ जनवरी १९७४ को तीन वर्ष की निरन्तर सेवा पूरी की है, स्थायी कर दिये जायेंगे। —मकान किराया भत्ता ७५० रु० तक वेतन पाने वाले कर्मचारियो को भी। —कार्यालयो मे सभी स्तरों पर व्हिटले काउन्सिल की तरह संयुक्त सलाहकार समितियां आगामी ३१ मार्च तक गठित कर दी जायेंगी।

निदेशालय उत्तरप्रदेश द्वारा प्रसारित

... आज इन बातो की ओर गंभीरता से नहीं सोच रहे है, हम लोग बस इसे एक कार्यक्रम बनाकर करते आ रहे है। इसलिए मुझे लगता है कि जो जहां है वहां की परिस्थिति ... स कुछ नया ढूंढकर प्रयास शुरू करे। एक ही चीज को दोहराते जाने से क्या होगा? सम्पूर्ति। हां, प्रयोग स्थानीय और समस्यामूलक हों तथा उनके साथ अनुभव ... कान्ति का हो, साथ ही 'निज' चिन्तन भारतीय हो, तब कोई नयी चीज हाथ आयेगी।

... : बुधवार, १० जनवरी, '७४

(पृष्ठ १४ का शेष)

बासगीत कानून जिन्दा हुआ

खेतिहर मजदूर अपनी झोपड़ी बना कर जिस स्थान पर रहता है वह उसकी है। उसे वहा से कोई हटा नहीं सकता। तत्सम्बन्धी कानून बिहार सरकार ने सन् १९४८ मे पास किया था। किन्तु अन्य कानूनो की तरह इस पर भी अमल न हो सका। जय प्रकाश नारायण ने इस ओर तत्परता दिखाई। मुसहरी प्रखड की ग्रामसभाओ ने इस काम को उठा लिया। हजारो की तादाद मे सम्बन्धित खेतिहर मजदूरो को उनके बास-गीत के पर्चे वितरित किये गये। आज भी ग्रामसभाए खोज-खोज कर ऐसे मामले ला रही है और अचलाधिकारी से सम्पर्क कर पर्चा दिलाने का प्रयास कर रही है। बासगीत के पर्चे की रसीद भी काटी जायेगी ताकि पीडित व्यक्ति पीड़ा शिकार का न हो सके। प्रखड स्वराज्य सभा के आवाहन पर ग्रामसभाए बहुत जल्दी यह माग करने वाली है कि सरकार की नई व्यवस्था के अन्तर्गत नवीनतम १३० वर्गगज भूमि प्रत्येक को रहने को दी जा रही है।"

अदालत-मुक्ति

ग्रामस्वराज्य का यह एक महत्वपूर्ण अग है। सदियो से ग्रामीण समाज थाने, कचहरी के कुचक्र का शिकार होता आया है। आजादी के बाद तो इसमे और भी वृद्धि हुई है। ग्राम-स्वराज्य के माध्यम से मुसहरी की जनता को इससे राहत मिली है। अनेको झगड़े-झझट ग्रामसभाओ ने तय किये है। मुसहरी प्रखड के मुसहरी गांव मे भूमि के एक छोटे से टुकड़े को लेकर एक भयकर विवाद उठा, रघुनाथ-पुर गाव मे एक गरीब विधवा की बेदखली से सामाजिक वातावरण गरम हो चला, गुस्ता गाव म एक झोपडी को लेकर ऐसी ही अप्रिय घटना हो गई। ग्रामसभाओ ने जिस ढग से उक्त समस्याओ का निपटारा किया उससे लोकभावना पर आधारित न्याय व्यवस्था की सार्थकता एक बार पुन उभर कर आई।

ग्राम शान्ति सेना

मुसहरी प्रखड मे ग्राम शान्ति सेना कार्य विधिवत् १९७० से ही प्रारभ हो चुका था। मनाह और नरौली, बिन्दा और मनिका के युवको की जे० पी० से चर्चा के परिणाम स्वरूप सर्वप्रथम शान्ति सेना का शिविर आयो-जित किया गया। शिविर मे ४५ शान्ति सैनिको ने भाग लिया था। उसके बाद से तो शिविरो का ताता ही लग गया। ग्रामस्वराज्य की हवा पूरे प्रखड मे फैल जाने से शान्ति सेना का कार्य भी फैला है। सोखोदेवरा, वाराणसी एव गुजरात आदि स्थानो मे भी मुसहरी के नौजवान शान्ति सैनिक पहुचते रहे है।

शिक्षा का नया प्रयोग

ग्रामीण विकास के समग्र चिन्तन के दौरान आज की प्रचलित शिक्षा पद्धति की खामियो की ओर मुसहरी की जनता का ध्यान पहुच गया। वह समझने लगी है कि समाज मे फैली अराजकता, अनुशासनहीनता, बुरे तत्वो मे वृद्धि, शिक्षित बेरोजगारो की जमात का बढ़ते जाना आदि के मूल म आज की गलत शिक्षा ही है उनके विचार से आज की शिक्षा जीवन निरपेक्ष हो चली है। जे० पी० की प्रेरणा से वह उसे नया मोड देने के लिए कटिबद्ध है। शिक्षा जीवन सापेक्ष हो, विद्या-लय और ग्रामसभा एक दूसरे के पूरक हो, शिक्षक अभिभावक एव छात्र समन्वित विचार से शिक्षा का जीर्णोद्धार करें यह उनकी चाह है। इससे निश्चय ही एक नये उत्साह का जन्म हुआ। गुजरात विद्यापीठ के आचार्य श्री ज्योतिभाई देसाई का मार्गदर्शन मुसहरी के विद्यालयो और शिक्षक समुदाय को बराबर मिलता रहा। अभी हाल ही मे वे एक दिन के लिए मुसहरी आये थे। नये प्रयोग की महत्ता एव शिक्षा की नई दिशा के बारे मे उन्होने चर्चा की। नये पहलू सामने आये जिस की पूर्ति मे शिक्षक समाज अपने प्रयास जारी रखेगा।

ग्रामीण नेतृत्व की गतिशीलता

ग्रामसभाओ मे समस्या को सुलझाने के लिए पहल करने की क्षमता आ रही है। अब वे किसी राजनीतिक दल के मोहताज नही रहना चाहते। उदाहरणार्थ—नयागाव मे आग लग गई। ग्यारह परिवार पूरी तरह तबाह हो गये। आग पर काबू पाने के उपरान्त ग्रामसभा ने पीडित परिवारो के लिए भोजन की व्यवस्था की। अगले दिन शासकीय अधि-कारियो से मिले, और राहत प्राप्त की। बाढ़ पीडित क्षेत्र की ग्रामसभाओ के नेतृत्व मे भी इसी प्रकार की गतिशीलता दिखाई दी। प्रखड से जिला स्तर तक के अधिकारियो से मिल कर राहत हासिल की। प्रतिदिन की समस्याओं : जैसे राशन, मिट्टी का तेल, विद्यालय आदि की व्यवस्था के लिए वे शासन की मशीनरी से सम्पर्क स्थापित करते है अपनी समस्याओ के समाधान के लिए वे उन्हे झकझोरते हैं।

ग्राम स्वराज्य एवं विकास कार्य

यह अनुभव किया गया कि ग्रामीण विकास के लिए किसी ठोस योजना का होना आवश्यक है। ग्रामीण उत्थान का कार्य कर रही सस्थाओ के महासघ अवार्ड जिसे ग्राम-सेवा सगम भी कहा जाता है के सघन प्रयास से मुसहरी योजना स्वरूप मे आई। देश के गत २० वर्षो के योजना काल मे सम्भवत. यह पहला प्रयास था जब ग्रामीण जनता में बैठ कर उसकी आवश्यकताओ को समझ कर उसकी प्राथमिकताओ को आत्म सात कर एक योजना बनाई गई। जनता के द्वारा जनता के लिए जनता की अपनी योजना की सज्ञा दी जा सकती है। इसकी सफलता से योजनाबद्ध विकास के नये मार्ग खुलेंगे। नई विधिकाओ का दिग्दर्शन होगा। केन्द्रीकृत आयोजन के पुराने मानदण्ड टूट जायेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर सरकार द्वारा किये जा रहे आयोजन को इस से नई दिशा मिलेगी। यही इस योजना की उपलब्धि होगी। सिचाई, कृषि, पशुपालन, एव उद्योग सभी कार्य स्वावलम्बन एव स्थानीय सहयोग के आधार पर होने है। अब तक किये गये विकास कार्यो का सक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है :—

सिचाई

मणिका मन उत्थान सिचाई योजना के अन्तर्गत दो १२५ अश्वशक्ति के उत्थान बिन्दु तथा १० अश्वशक्ति के सात लघु नलकूप विद्युतीकरण के लिए तैयार है। आशा है तत्काल बिजली मिल जायेगी और इन से वर्तमान रबी मे लगभग ८०० एकड भूमि में सिचाई होगी। इसके अतिरिक्त ऊषा से अवार्ड को दान मे प्राप्त ४ डीजल पपिग सेट चार सक्रिय ग्राम सभाओ को सामूहिक उप-योग के लिए दिये गये है। बुद्धनगरा, चोसीमा गुस्ता, बुना, अकबरपुर ग्राम सभाओ मे भी नलकूप छेदन का कार्य द्रुत गति से चल रहा है।

→

कृषि

एक सुयोग्य कृषि विशेषज्ञ के मार्गदर्शन में पूरे प्रखंड में निःशुल्क कृषि प्राविधिक सहायता उपलब्ध कराने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।

उपयोगी प्राविधिक जानकारी किसानों के पास समय से पहले चार पम्पलेट के रूप में पहुंचा दी गई है और उचित मूल्य पर गेहूं के उन्नत बीज के वितरण से एक अच्छी शुरूआत हुई है। आगे मिट्टी जांच रबी तथा खरीफ की फसलों के लिए नियोजन करके समयान्तर्गत आवश्यक व्यवस्था की जायेगी।

पशुपालन

इसे अन्त्योदय का मुख्य साधन बनाने तथा मुसहरी को इस क्षेत्र में आनन्द (गुजरात) की तरह विकसित करने योजना की है और इस दिशा में पर्याप्त प्रयत्न भी हुए हैं। परन्तु अभी यह कार्य प्रारंभ होने में कुछ समय और लग सकता है।

उद्योग

बम्बई द्वारा अन्य कुशल हिस्सेदारों के सहयोग से प्रवर्तित गुडमर्थ फार्म इक्विपमेंट प्रा० लि० नाम से एक पम्पिंग सेट बनाने की औद्योगिक इकाई की स्थापना बेला औद्योगिक प्रांगण में हो चुकी है और अब तक उसमें मुसहरी के पांच बेरोजगार युवकों को काम मिल चुका है। इसके अतिरिक्त वेल्डिंग में कुशल एक अन्य युवक को ट्राली बनाने की अनुपूरक इकाई की स्थापना का कार्य सौंप दिया गया है। गुडमर्थ को आवश्यक सुविधाएँ मिलती रहीं तो यह उत्तर बिहार में एक महत्वपूर्ण उद्योग समूह की स्थापना में अवश्य सफल होगा। व्यावसायिक प्रतिष्ठान होने के साथ-साथ इसके कुछ सामाजिक उद्देश्य भी हैं—जैसे २०%लाभ का स्थानीय विकास में खर्च, स्थानीय बेरोजगार लोगों को काम देना तथा अपने अभिन्न अंग के रूप में विकास विभाग की स्थापना।

कार्य के लिए भोजन कार्यक्रम

इसके अन्तर्गत अब तक १६ किलोमीटर लम्बी एक सड़क का निर्माण हो चुका है। जिसमें ३५ ७६५ श्रमिक दिवस लगे और १४२.४७ क्विंटल गेहूं का पारिश्रमिक दिया गया। औसतन प्रति श्रमिक दिवस पारिश्रमिक ४ किलो गेहूं दिया गया। श्रमिक कल्याण की दिशा में पारिश्रमिक सहित साप्ताहिक अवकाश का अग्रगामी कदम इस कार्यक्रम की एक अन्य विशेषता है।

बिहार रिलीफ कमेटी द्वारा चापा कल

बिहार रिलीफ कमेटी द्वारा सिंचाई के लिए ८५८, हरिजन बस्तियों में पेय जल के लिए २०७, गैर हरिजन बस्तियों में पेयजल के लिए २१, एवं बाढ पीड़ित में २४ चापाकल लगाये गये हैं। ३०० चापाकल अभी हाल में छोटे किसानों को सिंचाई के लिए और दिए गये हैं।

सम्पूर्ण ग्राम विकास परियोजना

पंचम पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित चार अग्रगामी सम्पूर्ण ग्राम विकास परियोजनाओं में से मुसहरी भी एक है। मुसहरी को केन्द्र की इस योजना के लिए केन्द्रीय अध्ययन दल ने सर्वोदय क्षेत्र के रूप में पाया, क्योंकि यहां ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य के कार्य के फलस्वरूप एक अच्छा आधार तैयार है। इसके अन्तर्गत मुसहरी की २३ सक्रिय ग्राम सभाएं प्रथमतः चुनी गईं। सम्बन्धित ग्रामसभाएं सामान्यतया इस परियोजना के लिए स्वैच्छिक चकबन्दी सामुदायिक सिंचाई कार्यों के आच्छादन क्षेत्र में समाज फसल कार्यक्रम, श्रमिकों के लिए वर्तमान पारिश्रमिक दरों से भरपूर अधिक न्यूनतम पारिश्रमिक दरों को स्वेच्छा से लागू करना, गैरमजरूआ का भूमिहीनों में वितरण इत्यादि जैसे प्रगतिशील अवयवों को स्वीकार कर चुकी हैं। इस योजना के लिए चुनी गई ग्रामसभाओं की सक्रियता उनकी बैठकों के नियमित रूप से होने, उनमें बीघा-कट्ठा वितरण होने, ग्राम कोष की स्थापना, पुलिस अदालत मुक्ति, इत्यादि कार्यक्रमों में प्रगति के आधार पर आंकी गई है।

ग्रामदान की गाड़ी कहां ?

—निर्मलचन्द्र

सारे भारत में ४१, ७०, ६८१ एकड़ जमीन के भूदान-दान की घोषणा की गई। भारत के कुल दान का आधा से थोड़ा अधिक दान बिहार में प्राप्त हुआ। विनोबा जी ने बिहार की भूमि समस्या के हल के लिए ४० लाख एकड़ भूदान का लक्ष्य निश्चित किया था। उनसे यह बताया गया कि बिहार की काश्त की जमीन का छठांश ३२ लाख होता है तब से यही लक्ष्य मानकर विनोबा चले। इस ३२ लाख एकड़ में से २१ लाख एकड़ के भूदान की प्राप्ति की घोषणा हुई। इसका अर्थ है कि छियासठ प्रतिशत सफलता मिली। भूदान की इतनी बड़ी सफलता के बावजूद बिहार की भूमि-समस्या बद से बदतर होती गई, इसका क्या कारण है ? एक तथ्य तो प्रगट है कि इस घोषित दान में से अब तक कुल करीब साढ़े चार लाख एकड़ जमीन का वितरण हो सका है। अनुमान किया जाता है पांच लाख एकड़ तक जमीन बंट सकती है। यह भी कम नहीं माना जा सकता। लक्ष्य का छठांश ही सही, पर एक बहुत बड़ी उपलब्धि सामने आई। इस उपलब्धि के बावजूद भूदान भूमि की समस्या को स्पर्श भी नहीं कर सका। यह स्पष्ट तथ्य है। कारणों के विश्लेषणों में जाने पर इसका सबसे बड़ा तथ्य यह निकलता है कि 'दान' भूमि का दान नहीं रहा। वह आगे चलकर भूमि की मालकियत का दान हो गया। इसे स्पष्टता से समझने के लिए बिहार की भूमि के निम्न विवरण पर ध्यान केन्द्रित करना होगा :—

जमींदारों की खास जमीन
का रकबा ३४, ६०, २६८ एकड़
कायमी रैयतों की जमीन
का रकबा १, ६४, ०८ १३६ एकड़
गैरकायमी जोतदारों
की जमीन २, ३४, १३१ एकड़
दर रैयतों के जोत की
कुल जमीन ३, ३६, ०२५ एकड़

....

कुल योग २, ३६, २७, ३८६ एकड़

बिहार की भूदान में मिली जमीन में से १७ लाख एकड़ जमीन का दान जमींदारों की खास जमीन में से मिला तथा चार लाख एकड़ जमीन कायमी रैयतों का दान मिला। जमींदारों की खास जमीन में से अधिकांश जमीन जंगल, पहाड़ आदि थे। शेष आबादी के योग्य जमीन में से जहां तक सम्भव हुआ जमींदारों ने जमीन्दारी सौंपने के समय अपने परिवार या हित सम्बन्धियों के नाम बन्दोबस्ती में दिखाने का प्रयत्न किया। ३४ लाख ६० हजार एकड़ जमीन जमींदारों की खास जमीन में से जो १७ लाख एकड़ भूदान में प्राप्त हुई, इस दान की जमीन में से जमींदारों की खुद काश्त तथा काश्त होने योग्य का रकबा नगण्य ही मानना चाहिए। वितरण के आंकड़ों से यह पता चलता है कि करीब २० प्रतिशत मात्र जमीन ऐसी निकल पाती है जिसे किसी प्रकार आबाद किया जा सके।

दूसरी ओर कायमी रैयतों की २ करोड़ एकड़ जमीन में से सिर्फ चार लाख एकड़ का दान मिला जो कुल कायमी रैयती जमीन का मात्र दो प्रतिशत है। यह भी बिहार के अधिकांश गांवों में छोटे-छोटे टुकड़े में बिखरा है। इनमें से करीब २५ हजार एकड़ जमीन ५ डिसमल से कम के दान के योग्य है। अल्प भूमिवानों के ऐसे प्रतीकात्मक दान की जमीन दाता को ही वापस देने की घोषणा भूदान कमेटी की ओर से की गई। शेष जमीन में से ब्योराहीन तथा बिखरे रहने के कारण मुश्किल से १०-२५ प्रतिशत का ही वितरण हो सका है। अर्थ यह कि लक्ष्य काश्त जमीन के छठांश का था यानी १६-१७ प्रतिशत जमीन दान में मिली और आधा प्रतिशत कायमी रैयतों की जमीन बांटी गई।

पोचमपल्ली के हरिजनों की ओर से ८० एकड़ जमीन की मांग हुई थी तथा श्री रामचन्द्र रेड्डी ने सौ एकड़ जमीन का दान दिया। प्रत्यक्ष जमीन का दान मिला। यहीं से भूदान की गंगा अवतरित हुई, लेकिन बिहार के भूदान के विवरण से यह साफ हो जाता है कि गंगा आंकड़ों के भूतनाथ की जटा में भटक गई। हमने यह देखा कि जोत की जमीन नहीं, 'मात्र मालकियत के दान को' भूदान मान लिया गया। वास्तव में इन जमींदारों की मालकियत भी नहीं रह गई थी। कई जमींदारों ने अपने दान पत्र में लिखा कि जमींदारी उन्मूलन कानून के कारण हमारा दान देने का हक नहीं रहा। पर ऐसा कहा जाता है कि हम अपनी गैरमजरूआ जमीन का दान दे सकते हैं। इसलिए हम अपनी गैरमजरूआ जमीन का दान दे रहे हैं। इस जमीन में से अधिकांश पहाड़, जंगल हैं। मात्र थोड़ी सी जमीन खेती के लायक बनायी जा सकती है। आंकड़ों की भूल ने मालकियत के इस अशरीर भूत को भूदान मान लिया। आन्दोलन आंकड़ों से छला गया।

ग्रामदान में इसी मालकियत को महत्व दिया गया है। ग्रामदान में सम्मिलित होने वाले को जमीन की जोत तथा उपज का हक कायम रहता है। जमीन का उत्तराधिकार भी पूर्ववत बना रहता है जमीन के अन्तरित करने के अधिकार को सुरक्षित रखते हुए मात्र इतनी व्यवस्था जोड़ी गई जिससे गांव की जमीन गांव में रह सके जो चकबन्दी कानून में भी है। उपज का अधिकार अन्तरण तथा उत्तराधिकार के अतिरिक्त मिलकियत के स्थूल रूप से और क्या बचा जाता है ? इसकी और भी गहराई में जाते हैं तो स्वामित्व-विसर्जन सूक्ष्म अशरीर और भी सूक्ष्म हो जाता है। जो व्यक्ति जिस गांव के ग्रामदान में शामिल हुआ है, उसका यह सांकेतिक मिलकियत-विसर्जन उसी राजस्व गांव में होगा जिस गांव के ग्रामदान में वह सम्मिलित है। बड़े काश्तकारों की जमीन कई राजस्व गांवों में होती है। इसलिए यह शर्त भी अनुशासन बड़े भूमिवानों को नहीं बांधती। एक तो ग्रामदान के समय बड़े भूमिवान छूट गये, कुछ ग्रामदान में आये भी तो उनकी जमीन ग्रामदान के कानूनी कठघरे से बाहर रह गयी।

ग्रामदान में जो नकद हिस्सा है, वह है बीघा कट्ठा दान का। एक बीघे में एक कट्ठा, यानी पाँच प्रतिशत भूमि का दान। यदि प्रत्येक राजस्व गाँव के पाँच प्रतिशत भूमि का दान भी ग्रामदान से हो सकने की सम्भावना होती तो बड़ी बात थी। हिसाब से करीब दस लाख एकड़ होता है। जिन गांवों का ग्रामदान नहीं हुआ तथा भूदान की जमीन को बाद कर दें तो भी पांच लाख एकड़ जमीन और बंटनी चाहिए, यह सहज सम्भावना इसके बाह्य दर्शन से प्रकट होती है, लेकिन व्याख्याकारों ने इसे भूदान से बत्तन-दान मात्र बना दिया। जिस गांव में ग्रामदान हुआ उसकी जमीन का बीसवां हिस्सा देना है। इसलिए भूमिवानों में से भी ९० प्रतिशत ग्रामदान में आये उनकी गैर गांव की जमीन छूट गई। जो अन्य भूमिवान हैं जिनकी जमीन गांव का २० प्रतिशत होता है, उनका बीघा कट्ठा इसलिए नहीं निकाला जा सकता क्योंकि वे भी कानूनी परिभाषा में भूमिहीन होंगे। हमें देखना यह है कि बाह्य रूप से सरल ग्रामदान से जहां ५ प्रतिशत जमीन भूमिहीनों के लिए होने वाली थी, वहां वास्तव में कितनी जमीन प्राप्त होने की सम्भावना रही। ग्रामदान कानून के अनुसार ग्रामदानी गाँव में रहने वाले भूमिवानों की इस गांव में कुल जितनी जमीन है, उसका ५१ प्रतिशत ग्रामदान में शरीक हो जाता है तो ग्रामदान की शर्त पूरी हो जाती है। प्रत्येक गांव में कम से कम २५ प्रतिशत जमीन पड़ोसी गांव के लोगों की या उस गांव के बाहर रहने वाले भूमिवानों की होती है। ग्रामदान की घोषणाओं की शीघ्रता में न्यून तम शर्तें ही पूरी की गईं। इस प्रकार गांव की कुल जमीन का ५६ प्रतिशत से अधिक ग्रामदान में सम्मिलित नहीं हो सका। ग्रामदान कानून के अनुसार बाकी जमीन ५१ प्रतिशत मान्यता में जोड़ी जायेगी। लेकिन बीघा कट्ठा के हिसाब से इसे अलग माना जायेगा। इस प्रकार अब कुल जमीन में से ३० प्रतिशत जमीन रह जाती है, जिसमें से बीघा-कट्ठा निकालना चाहिए। अब इस ३० प्रतिशत में भी कम से कम २० प्रतिशत ऐसे लोगों की जमीन है जो अन्य भूमिवान हैं उनकी जमीन से भी बीघा-कट्ठा नहीं निकाला जायेगा। अर्थ यह है कि १० प्रतिशत जमीन में से ५ प्रतिशत जमीन भूमिहीनों को निकलने की सम्भावना रही। पूरे बिहार का एक-एक गांव यदि ग्रामदान हो जाये तो बिहार की कुल जमीन का आधा प्रतिशत जमीन भूमिहीनों के लिए उपलब्ध होगी जिसका कुल रकबा एक लाख एकड़ से अधिक नहीं होगा। इसी में से भूदान में भी मिली जमीन बाद होगी। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि इस महायज्ञ को पूर्ण सफलता भी प्राप्त हो जाये तो भी भूमिहीनों को विभूति मिलेगी, उनकी समस्या को यह स्पर्श नहीं कर सकेगा।

अब प्रश्न यह उपस्थित हो जाता है कि भूदान ने भूमि समस्या का हल नहीं किया और यह ग्रामदान, जो भूमि समस्या के निराकरण की आशा से जनित 'भूदान-यज्ञ' आन्दोलन के बाद का कदम है, उसमें भी भूमिहीनों के लिए जमीन मिल सकने की कोई सम्भावना नहीं है। यह मात्र अनुमान नहीं बल्कि ग्रामदान पुष्टि के सघन अभियान के क्षेत्रों की जो उपलब्धि सामने आई हैं उसने इसे और भी पुष्ट किया है। मिलाजुलन-विसर्जन का नारा तो निराकार ब्रह्म जैसा है। कहीं भी उसका सदेह साक्षात्कार नहीं हो सका। ग्रामदान तूफान के बाद ग्रामदान के संकल्प पत्रों की धूल झाड़ कर विनोबाजी की सूक्ष्म डाइलूटेड प्रेरणा शक्ति से प्रेरित सारे भारत के चुने हुए सेवकों के अथक प्रयास ने जो निष्पत्ति अब तक सामने आई है, वह निराशाजनक है,

अब इस मोर्चे पर अन्तिम अभियान आहूत किया गया है। क्रान्ति के रथी, महारथी और अतिरथी सब लोग इसमें लगने वाले हैं। विनोबा जी ने कहा है कि यह अभियान सफल होगा तो सारे देश में इसका वितरण करना है और यदि असफल होगा तो भी सारे देश को अवलम्ब करना होगा। लेकिन कोई भी यह प्रश्न पूछेगा कि वह लक्ष्य कौन सा है जिस पर से सफलता या असफलता आंकी जायेगी। हमने देखा कि भूमि समस्या का अन्यतम हल तो इसमें सम्भव है नहीं। तो क्या इस आखिरी अभियान से ग्रामदान की कानूनी पुष्टि की जायेगी? अभियान की व्यूह रचना अब तक जो सामने आई है उसमें इसकी कोई तैयारी नहीं दीखती है। एक मात्र लक्ष्य है—गांव-गांव में ग्रामसभा का गठन करना। लेकिन गांव यह पूछेगा कि यह ग्राम सभा कौन सा काम करेगी? तात्कालिक प्रश्न से आन्दोलन दूर रहता है तो कोई शक्ति नहीं बनती।

तात्कालिक प्रश्नों को लेकर यदि बड़े पैमाने पर कोई आन्दोलन चलता है तो नीचे के संगठनों को सुविधा होती है। नीचे का संगठन स्थल सेना के जैसा है और ऊपर का आन्दोलन हवाई हमले का काम करता है। गांव के लोग यह जानना चाहेंगे कि क्या गल्ले का भाव कम होगा? क्या बेजमीन को जमीन मिलेगी? क्या बटाईदारों को कानूनी हक प्राप्त होगा। यह सब कुछ नहीं भी हो तो क्या कम से कम सहरसा जिले के भूदान की १५ हजार एकड़ अवितरित जमीन ही बांटी जाएगी? न सही अवितरित जमीन का वितरण, तो इस जिले के भूदान की १७ हजार एकड़ जमीन जो अब तक बंटी है, उसकी ही रसीद कट जायेगी क्या? क्या अब भूदान किसानों की बेदखली इस जिले में नहीं रह जायेगी? क्या अन्त में मात्र इतना ही संकल्प लिया जायेगा कि इस सहरसा के कम से कम दो गांवों में जहां भूदान की अग्रगामी योजना की बस्ती की परिकल्पना की गई थी और भूमि पुत्रों को काफी आशा लेकर भूदान के भू-खण्डों पर बसाया गया था। क्या प्रतीक रूप में उन दो गांवों की भूदान की बेदखली निवारण का प्रत्यक्ष कार्यक्रम लिया जा सकेगा? गत अभियानों में उनकी बेदखली की यह समस्या, अहिल्या की शिला सी पड़ी रही। इस अभियान के लिए इतना सा भी प्रत्यक्ष कार्यक्रम लिया गया होता तो शक्ति प्रयोग का आधार माना जा सकता था। आन्दोलन के चरण-रज की महिमा बढ़ जायेगी, लेकिन ऐसे प्रत्यक्ष लक्ष्य के अभाव में सफलता और विफलता के माप का धरातल क्या होगा?

मान लें कि ग्राम-सभा के संगठन का ढांचा मात्र खड़ा कर लेना ही लक्ष्य हो तो इससे क्या बनेगा? क्या ग्रामसभा बनाने के पहले यह देख लेना आवश्यक नहीं है कि इस अभियान के पहले जो ग्राम-सभाएं बनायी गयीं, वे क्या कर रही हैं? सामयिक समस्या के लिए इन्हें सक्रिय किया भी नहीं गया था। सर्कीर्तन, सत्संग, सुचिता आदि सांस्कृतिक

सुन्दर शब्द, जिनसे उनका उद्बोधन किया था वे अब भी उन्हें याद रह गये हैं क्या? हजारों ग्राम-सभाएं बनीं। एक गांव में दुबारा जाने तक पहली ग्राम-सभा विस्मृत हो चुकी होती है। एक अर्थ में यह अच्छा है कि अब तक ग्राम सभा अधिक बन नहीं पायी और बनीं भी हैं तो शक्तिशाली नहीं बनी। कहा जाता है कि आज का गांव दुर्योधन का दरबार है। इस दरबार का पाण्डव भी जुआरी है। अन्तर जीते और हारे पक्ष का है। इस दरबार में भीष्म और द्रोण भी द्रौपदी का चीर-हरण देखकर मौन रहने वाले हैं। इस दुर्योधन के दरबार में सब कुछ हार जाने वाला व्यक्ति इस दरबार से क्या अपेक्षा रखता है? जो भी सभा बनेगी वह शोषण करेगी। उसे तो द्रौपदी के आकुल-नैन कुरुक्षेत्र की बलिवेदता के लिए ललकार रहा है, इन्हें तो अब निश्चय करना है·

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा
वाभोक्ष्य से महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय
युद्धाय कृत निश्चय.॥

अपने कुसंस्कारों से जूझना होगा। सामाजिक रूढ़ियों को झकझोरना होगा। हर प्रकार के अन्याय का विद्रोह करना होगा। यह सही है कि कुरुक्षेत्र में हिंसा के पुराने आयुध काम नहीं आने वाले हैं और यह भी सत्य है कि कार्यकर्ता कृष्ण बनेंगे, अर्जुन तो गोपियों की लोक-शक्ति में से खड़े होंगे। लेकिन अर्जुन तो निमित्त मात्र ही था। पाण्डु के पिता राजा थे, इस राजवंश की बलैब्यता नष्ट करने के लिए कृष्ण को गीता सुनाना पड़ा, सकल्प के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करना पड़ा। आज के गांव की निरीह शोषित जनता आह भी भर सके इतनी भी 'प्राण वायु अब शेष नहीं है। लोक-गंगा में धीरेन्द्र भाई 'छोर' खोज रहे हैं। विनोबा जी ने अपने को शास्त्री और धीरेन्द्र भाई को मिस्त्री माना है। उन्होंने कहा कि ग्रामदान की घोषणा के बाद शास्त्री का काम समाप्त हो जाता है। ग्रामदान-पुष्टि ,और निर्माण का काम धीरेन्द्र भाई जैसे मिस्त्री का है। तब से धीरेन्द्र भाई अपने जर्जर रोगग्रस्त शरीर को लेकर लोकशक्ति का 'छोर' खोज रहे हैं। उनकी दीप शिखा में अब बाती ही जलती चली जा रही है।

कार्यकर्ता चिन्तित हैं कि इस टिमटिमाते दीप के बाद क्या होगा? क्या इसलिए 'छोर' मिल जाने की प्रतीक्षा किये बिना विनोबा जी एक के बाद दूसरा अभियान छेड़ते चले जा रहे हैं। जो कार्यकर्ता अभियान में लगते हैं, उन्हें यह अनुभव होता है कि शंटिंग के डिब्बे की तरह रात भर मात्र पटरी बदलता रहा। इस बार आउटर सिगनल मिल गया है, लेकिन जनता में, बिना साइन-बोर्ड के डब्बे में चढ़ने का कोई कौतूहल नहीं। यात्री तो प्लेटफार्म पर ठगा सा ठिठका सा खड़ा है, यदि होश में होता तो गार्ड से पूछता 'पुराना साइनबोर्ड कहाँ उतार रखा?' क्या भूमि समस्या की हमारी मंजिल तय हो गयी?

(पृष्ठ ११ का शेष)

कार्यकर्ता भी इस बार अभियान के पीछे सब नहीं होंगे। पूर्व तैयारी में जिन ब्लाक में इस विचार और काम के प्रति स्थानीय लोगों ने उत्साह दिखाया है वहीं अभियान चलाना ठीक रहेगा—ऐसा तय किया गया है। अभी १५ या १६ ब्लाक ऐसे तैयार हुए हैं, इनमें स्थानीय लोग ही काम करेंगे तथा सभी तरह के कार्यकर्ता उनकी मदद ही करेंगे।

राष्ट्रीय मोर्चे सहरसा में चलने वाले इस अन्तिम अभियान में स्थानीय लोगों को आगे बढ़ा कर गांवों में सर्वसम्मति से ग्राम-सभा बनने, भूमिहीनों में बीघा-कट्ठा बांटने, ग्रामकोष जमा करने और शांति सेना गठित करने की बड़े पैमाने पर कोशिश की जायेगी। कार्यकर्ताओं की टोलिया सहरसा जिले के सभी प्रखण्डों के अलावा सहरसा से सटे हुए पूर्णिया और दरभंगा जिले के भवानीपुर तथा बिरौल प्रखण्डों में भी सघन अभियान चलायेंगी।

२५ और २६ जनवरी को एक शिविर द्वारा पूर्व तैयारी के बाद स्थिति का मूल्यांकन करने तथा आगे चलने वाले अभियान की पद्धति आदि पर विचार किया जायेगा। शिविर में जयप्रकाशजी भी शामिल रहेंगे। मुख्य बृहद् अभियान में ६० कार्यकर्ता प्रदेश के बाहर से व करीब १०० बिहार से भाग लेंगे, ऐसी उम्मीद है।

इस समय एक ओर गोविन्दन, निर्मला देशपांडे, कृष्णराज मेहता, बंगाल के वयोवृद्ध लोकसेवक चारुबाबू व धीरेनदा जैसे हैं लोग तो दूसरी ओर आलम्पी, सन्तोष, किशोर शाह, कुमार प्रशान्त, शुभमूर्ति जैसे तरुण साथी भी काम कर रहे हैं।

(पृष्ठ ८ का शेष)

को आबाद कर रहे किसानों के पास उस जमीन की रसीद नहीं है। लोगों ने बताया कि सरकारी कर्मचारी द्वारा सौ-सौ रुपये की रिश्वत मांगने पर अपनी गरीबी के बावजूद भी हमने पक्की रसीद पाने के लिए रिश्वत दी है लेकिन रसीद कभी मिली नहीं। खादीग्राम के बगल में एक गांव है। पीढ़ियों से लोग वहां बसे हैं, खेती कर रहे हैं लेकिन अपनी जमीन का कोई सरकारी कागज नहीं है उनके पास। हर साल राजस्व कर्मचारी ५०० रुपया ले जाते हैं, रसीद कभी मिलती नहीं। गांव के गांव हैं जिनमें राशनकार्ड बंटे हैं लेकिन उन पर स्थानीय दुकानें से साल में एक या दो बार ही सामान मिलता है। मुसहर आदिवासी दुकान पर जाते हैं, दुकानदार कह देता है अभी माल नहीं है फिर आना। दुकान भी आठ-दस गांवों के बीच एक ही है। ४-५ मील दुकान तक जाना फिर खाली हाथ वापस लौटना। राशन का गल्ला ब्लैक में बिक जाता है।

राममूर्ति जी को लगा कि ऐसी परिस्थिति में हम उन्हें कैसे केवल ग्रामदान की बात समझा सकते हैं, शासन मुक्ति की कल्पना कैसे उनके मन में बिठा सकते हैं। उन्होंने शासन मुक्ति से पहले दुश्शासन मुक्ति की बात आगे रखने की कोशिश की। जब तक जनता दुश्शासन को अपनी पीठ से फेंकने को तैयार नहीं होगी, वह कैसे शासनदान को अपनी पीठ से उतार सकेगी? इसी घटनाक्रम में उनके हाथ जमीन का छोर लगा।

जगह-जगह से गांववाले परती पड़ी सरकारी गैर मजरुआ जमीन की स्थिति बतलाने आश्रम आने लगे। आश्रम ने प्रखंड में भूमिहीनता निवारण, भूमि के सिलसिले में बरती जाने वाली अनियमितताओं से लड़ने का निर्णय ले लिया था। दाता और आदाताओं से टूटे सम्पर्क को फिर से जोड़ने सितम्बर में दाता-आदाता सम्मेलन हुआ। फिर अमीन नियुक्त किये गये। जगह-जगह अवितरित भूदान भूमि का हिसाब लगाया गया। आसपास से भूमिहीनों के आवेदन पत्र आने लगे। उन गांवों में सभा होती, जिनके आवेदन पत्र होते। सभी की उपस्थिति में पूछा जाता कि आवेदनकर्ता के पास जमीन तो नहीं है? सबकी सहमति से उसका आवेदन रख लिया जाता। ११ अक्तूबर ७३ को जयप्रकाश जी के जन्मदिवस पर उद्योगमन्त्री चन्द्रशेखर द्वारा पहला भूवितरण समारोह हुआ। इससे ६० भूमिहीनों को पर्चा मिला। भूदान-यज्ञ बोर्ड समिति को सरकारी गैर मजरुआ जमीन बांटने का भी हक है लेकिन उसके फॉर्म सरकार से मिलते हैं। वितरण के समय कार्यकर्ताओं को सरकारी फॉर्म लेनेमें दिक्कतआई। प्रखंड स्तरीय कर्मचारी शायद फार्म देना पसन्द नहीं करते थे। कार्यकर्ताओं ने हूबहू वैसे फार्म स्वयं छपवाकर विभाग से उन पर मुहर लगवाना तय किया है।

सेवाग्राम में हुई राष्ट्रीय परिषद में प्रस्तुत एक नोट में सर्व सेवा संघ ने कहा था, केरल को छोड़ शायद अन्य किसी भी देश में बेजमीन और बेघर खेतिहर मजदूर को झोपड़ी खड़ी करने लायक जमीन दिलाने का यत्न गंभीरता से नहीं लिया गया। बिहार में थोड़ा बहुत हुआ लेकिन समस्या की तुलना में वह भी अपर्याप्त है। अब हम भूमि के न्याययुक्त वितरण, भूमिहीनों में भूमि का हस्तांतरण, भूमिहीन श्रमिकों को काम और पर्याप्त मजदूरी की समस्याओं का निराकरण करने के लिए तत्काल सम्मिलित प्रयत्न करना चाहिए। गांव-गांव में ग्रामीणों की ग्रामसभा में सम्बन्धित अधिकारी, विभिन्न दलों के सदस्य, समाजसेवियों आदि के सामने मौके पर गांव की जांच कर तत्काल वितरण किया जाये और भूमि सम्बन्धित अन्य समस्याओं का निराकरण किया जाय तभी सफलता मिल सकती है।'

मुंगेर के लक्ष्मीपुर प्रखंड में जमीन का छोर पकड़ कर समस्या हाथ में ले ली गई थी। समस्या चूंकि तत्काल आ पड़ी विपत्ति से शुरू हुई थी, निर्णय तत्काल लेने पड़े इस लिए सारे प्रकरण को तात्कालिक और दीर्घकालिक शब्दों के द्वन्द्व में फंसना पड़ा है। कुछ साथी इसे राहत कार्य की तरह देख सकते हैं। कुछ इसे स्थायी क्रांति से भटक कर छुटपुट संघर्ष मान सकते हैं। राममूर्ति जी का कहना है कि जमीन का प्रश्न तात्कालिक नहीं है, केवल भारतके लिए ही नहीं, सारे एशिया के लिए। जमीन की अपनी एक भाषा है, सिर्फ भूमिहीन ही नहीं, भूमिवान भी इस भाषा में सोचता है। ग्रामीण समाज का केन्द्र बिन्दु जमीन है। फिर कुछ चीजें तात्कालिक दिख सकती हैं, हो भी सकती हैं, लेकिन यह हमारी क्षमता पर निर्भर करता है कि हम उनको दीर्घकालिक नतीजों तक बराबर चला ले जा सकते हैं या नहीं। एक जमाना था जब शक्कर और गुड़ बनानेवालों ने भी नमक बनाया था। स्वराज्य का नमक भी तात्कालिक था लेकिन नतीजे उसके दीर्घकालिक थे। इसलिए आज लोकचेतना में प्रवेश करने के लिए कोई भी स्थानीय मुद्दा उठाना पड़ेगा। ग्रामस्वराज्य हमारा लक्ष्य है। ग्रामस्वराज्य के आंदोलन को बहुमुखी बनना होगा। गांव में कोई भी मोर्चा आज खुले, ध्यान इतना ही रखा जाय कि जमीन का प्रश्न नहीं छूटे। हमारे यहां के काम में एक हिसाब से राहत या लोककल्याण भी है लेकिन लोकसंगठन उसका नतीजा होना अनिवार्य है। जमीन के छोर को पकड़ कर हम उनके नजदीक गये हैं, उसी छोर से वे हमारे नजदीक आये हैं। इस नजदीकी से बने संगठन का एक ही कदम काफी है, बशर्ते वह सही दिशा में हो।'

जमीन का छोर मिल गया है इसलिए खादीग्राम अब किसी जमाने का सेवाग्राम हो गया है। इसके पहले भी मैं खादीग्राम गया और ग्रामग्राम की नीरवता के बीच चलने वाली खादीग्राम की गतिविधियां मुझे ऋषिकेश के किसी महात्मा के आश्रम की तरह समय की अनादि अनन्त नदी में बुदबुद के समान लगने लगी हैं। अब खादीग्राम आश्रम नहीं है, प्राणहीन प्रतिष्ठान नहीं है। खादीग्राम अब अपने अस्तित्व की अनिवार्यता से सम्बद्ध और बेचैन है। उसके लिपे-पुते आंगन पर गांधी के अन्तिम आदमी और ईसा के उस बेदखल (डिसइनहेरिटेड) आदमी के पांवों का कीचड़ लग रहा है। इस कीचड़ से खादीग्राम ज्यादा जीवन्त और इसीलिए ज्यादा पवित्र हो गया है। अहिंसक क्रांति के ब्रह्म को अवतरित होने के लिए वहां शरीर मिल रहा है। शरीर तात्कालिक है लेकिन उसके बिना कोई भी अजर-अमर आत्मा प्रकट नहीं हो सकती। शरीर तात्कालिक है लेकिन उसके बिना कोई भी दीर्घकालिक कार्य नहीं हो सकता। खादीग्राम में प्राण प्रतिष्ठा हो रही है, खादीग्राम को नहीं उस बेदखल अन्तिम आदमी की!

श्रमशाला: कुदाल और कलम पर समान अधिकार

—विद्या बहन

आज से १३ वर्ष पहले सन् १९५६ में श्रमभारती, खादीग्राम, में धीरेन भाई के मार्गदर्शन में एक 'श्रमशाला' के माध्यम से बाल-शिक्षण का प्रयोग प्रारम्भ हुआ था। तीन साल चलाकर जनवरी १९५९ में हम लोगों ने श्रमशाला बन्द कर दी क्योंकि ग्रामदान-ग्रामदान का कार्यक्रम लेकर हम लोग संस्था से बाहर गावों में चले गए थे। ९ साल बाद ४ मार्च १९६८ को श्रमशाला की पुनर्स्थापना हुई। विनोबा जी ने उसका उद्घाटन किया। इस पुनर्स्थापित श्रमशाला में एक विशेष प्रकार के बच्चे हैं। बच्चे सब भूमिहीन या निकट भूमिहीन हैं और अधिकांश 'हलवाही' में बिके हुए हैं। इन बच्चों की उम्र शिक्षा पाने की है, किन्तु यहां आने के पूर्व वे अपनी परिस्थितिवश अपने मालिक की (जिससे उनके मां-बाप ने कभी कर्ज लिया था) मजदूरी करने को मजबूर थे। यदि ये बच्चे श्रमशाला में न होते तो आजीवन शिक्षा के अवसर से वंचित रह जाते।

श्रमशाला को एक विशेष शिक्षण-प्रयोग माना है। इसका उद्देश्य है कमाई के साथ पढ़ाई' का, अर्थात् श्रमशक्ति का ज्ञानशक्ति के साथ समन्वय सिद्ध करना। इस समन्वय द्वारा हम साधनहीन बच्चों को मुक्ति की दिशा में ले जाना चाहते हैं। शिक्षा ही ऐसी चीज है जिसमें सभी धन, जन और समाज की शक्ति से मनुष्य का निर्माण होता है तथा मनुष्य समाज के विकास में सहयोग दे सकता है और उसके प्रति उत्तरदायित्व निभा सकता है। स्वस्थ समाज के लिए स्वस्थ मनुष्य चाहिए जो जीवन में भौतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों का सन्तुलन रख सके। आज जो मजदूर, तिरस्कृत, वंचित तथा शोषित हैं, उन्हें अपनी स्थिति का बोध हो, अपने अस्तित्व की प्रतीति हो, अपने भाग्य विधाता वे स्वयं बन सकें और कुदाल और कलम पर उनका समान अधिकार हो, यह हमारी श्रमशाला की मूल प्रेरणा है।

हम ऐसे श्रमिक बच्चों को शिक्षण के लिए लेते हैं जो पांच-सात साल की आयु से ही कमाई के छोटे-मोटे कामों में लग जाने के कारण सुव्यवस्थित शिक्षण से वंचित रह जाते हैं।

श्रमशाला में हम इन बच्चों को आठ साल में इतना शिक्षण देना चाहते हैं कि ये बच्चे प्रचलित पद्धति के अनुसार माध्यमिक स्तर तक पहुंच जायें साथ ही इन आठ वर्षों में इन बच्चों के हाथ कोई ऐसा हुनर आ जाए जिससे वे ग्रामीण समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हों तथा अपनी जीविका के लिए स्वावलंबी हों।

कालक्रम से हम अपनी शिक्षण योजना बच्चों के परिवारों तक पहुंचाना चाहते हैं। हमारी योजना यह है कि इनकी छोटी खेती का विकास हो, उन्हें कोई पूरक उद्योग सिखाया जाए, तथा संगठित होकर वे समाज की एक परस्पर सहकारी इकाई बनें। शिक्षण, संगठन और विकास का यह समन्वित कार्य हम अपने विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के माध्यम से करना चाहते हैं।

छात्र-किसान अपने खलियान में

इस समय श्रमशाला में ६० विद्यार्थी हैं। लनमटिया गांव से ८, लकड़ा से १७, टेगहरा से २, नुमर से ३, विशनपुर से ४, पाडो से १०, सपड़ा मन्डार से २, करमा से ३, मानिकपुर से १, मन्दरा से २, लोय से ३, राजघाट से २, जानपुर से २ तथा पुर्णाडीह से १।

इनमें यादव १४, बढ़ई ५, कुम्हार ५, तेली ९, धानुक २, घटवार ३, पासवान १४, मुसहर ६, चमार १ धोबी ४ तथा पासी २ हैं।

इस समय ६० विद्यार्थी पांच वर्गों में विभाजित हैं। पांच शिक्षक हैं। संस्था के अन्य कार्यकर्ता भी शिक्षण में सहयोग देते हैं। पड़ोस के गांव के एक दर्जी, सिलाई-शिक्षक हैं एक श्रमिक-खेतिहर हल चलाना सिखाता है।

जहां तक पुस्तकों का सम्बन्ध है हम बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम की पुस्तकों के आधार पर मौलिक शिक्षण दे रहे हैं। किन्तु हमारे शिक्षण का मुख्य माध्यम जीवन की क्रियाएं प्रक्रियाएं ही हैं। विद्यार्थी प्रतिदिन दो घंटे पढ़ते हैं, छः घंटे खेतों, बगीचे, वर्कशाप आदि में श्रम करते हैं।

अन्न, दलहन, तेलहन, खाद, भूमि सुधार (परती भूमि को खेती के योग्य बनाना) ग्रामीण इंजीनियरिंग, मेड़बन्दी, खेत को समतल करना, वर्षा के पानी को रोकना, सिंचाई के लिए पानी को खेत-खेत में पहुंचाना अधिक पानी की निकासी आदि हमारी मुख्य प्रवृत्तियां हैं। इसके अलावा हर मौसम की सब्जी, बागवानी, फल-मौसमी और स्थायी तालाबों में मछली-पालन, लोहारी मशीनी काम जैसे खेती के सामान्य औजार बनाना, डीजल, बिजली की मोटर की देखभाल और मरम्मत आदि भी सिखायी जाती है। सभी तरह के कामों में छात्र और शिक्षक साथ-साथ श्रम करते हैं।

वार्षिक परीक्षा के लिए प्रश्न-पत्र पड़ोस के स्कूल से प्राप्त किये जाते हैं। परीक्षा फल सामान्य स्कूलों से अच्छा ही रहता है। इस बार परीक्षाफल अपेक्षाकृत अच्छा रहा। गत वर्षों की अपेक्षा बच्चे अब पढ़ने की ओर अधिक ध्यान दे रहे हैं। किताब, कापी का महत्व समझने लगे हैं। वे परिवार के अशैक्षणिक संस्कार से मुक्त हो रहे हैं।

→

विद्यार्थियो ने अपना एक कोष बनाया है, जिसमे डेढ किलो अनाज प्रतिदिन पाने वाले विद्यार्थी प्रतिमाह ५ किलो और १ किलो पानेवाले विद्यार्थी ३ किलो जमा करते हैं। इस कोष की धनराशि उनके कपडे तथा कापी, किताब आदि मे खर्च होती है।

विद्यार्थियो का एक मन्त्रिमण्डल है। यह मन्त्रिमंडल छात्रावास की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने मे सहायक होता है। इसका चुनाव हर माह होता है। इस समय सब विद्यार्थी छात्रावास मे ही रहते हैं। छात्रावास मे रहने से उनको सामूहिक निर्णय और सहकारी व्यवस्था द्वारा उन्हे सामूहिक जीवन का अभ्यास हो रहा है। मध्यम वर्गीय बच्चो की अपेक्षा श्रमिक बच्चो मे सहकारी वृत्ति अधिक दिखाई देती है।

अपने भोजनालय की व्यवस्था एक शिक्षक की मदद से विद्यार्थी स्वय कर लेते हैं। बच्चो ने दाल-भात, रोटी-सब्जी, खीर-खिचडी, पूड़ी-पूआ तथा ठेकुआ आदि बनाना सीख लिया है। भोजन व्यवस्था का बच्चो के स्वास्थ्य पर अच्छा प्रभाव पडा है, उनके स्वास्थ्य मे निरन्तर सुधार है।

विद्यार्थियो के स्वास्थ्य का डाक्टरी निरीक्षण हर तीन माह होता है। वजन, ऊचाई आदि की जानकारी रखी जाती है। तीन महीने मे किसी-किसी बच्चे का वजन तीन किलो तक बढा है।

बीमार पडने पर रोगी-विद्यार्थियो के लिए अलग रहने तथा दवा आदि की व्यवस्था है लेकिन रोगी-सेवा के लिए जिन साधनो की आवश्यकता है उनका अभी पूर्ण अभाव है।

स्वस्थ रहने के लिए सफाई की जितनी आवश्यकता है इसको बच्चे अब कुछ अश मे समझने लगे हैं। जो बच्चे नये आते हैं उनसे तीन महीने तक इन कामो के लिए बार-बार कहना पडता है, तब धीरे-धीरे आदत बन पाती है। शुक्रवार विशेष सफाई का दिन माना गया है। बच्चो का कपडे धोने के लिए सप्ताह मे एक दिन (शुक्रवार को) साबुन दिया जाता है। जाडे के दिनो मे वस्त्र के अभाव मे साफ रहना असभव नही तो अत्यन्त कठिन अवश्य हो जाता है। बरसात मे भी कभी-कभी कपडो की कमी बहुत अखरती है, जबकि काम करते समय कपड़े भीग जाते हैं और बदलने के लिए कोई अन्य कपड़ा नही रह जाता है।

अभी बच्चो की आवश्यकता भर कपडे नही बन पाते। वर्ष मे दो जोडे बुशर्ट-पेंट तथा एक जोडा गजी-जांघिया बनवा सकें तो उनकी आवश्यकता पूरी हो सकेगी। उनके पास जाडे मे ओढने-बिछाने के लिए भी कमी है। दो साल पहले एक-एक चादर दी गई थी। मात्र वही एक चादर उनके पास है। उसको ही ओढकर बच्चो ने अब तक शरीर को कपा देने वाली सर्द हवाओ का सामना किया है।

विद्यार्थियों के अन्दर उत्तरदायित्व की भावना का विकास दिना-दिनो हो रहा है। ये जिम्मेदारी से अपने कार्य को पूरा करते हैं काम करते समय कोई शिक्षक वहा रहे या न रहे जो काम उन्हे सौंपा जाता है उसे पूरा करने मे वे प्रयत्नशील रहते हैं। वे किसी अचानक पैदा हुई परिस्थिति मे घबडाते नही, उनमे परिस्थिति का सामना करने की क्षमता दृढ हो रही है। लेकिन श्रमिक वर्ग सदा से मालिक का हुक्म बजाने का आदी है। उनका मन मालिक के भय और परवशता की भावना से भरा रहता है। आत्म-सम्मान की भावना तो उनमे पैदा होने ही नही दी जाती। शुरू के कितने दिनो तक ये श्रमिक बच्चे सामने खड़े होकर बोल तक नही पाते थे। छोटे बच्चे सस्था के व्यक्तियो को देखकर सहम जाते थे। लेकिन अब इतने दिनो म इन सभी पहलुओ मे स्पष्ट सुधार हुआ है। विद्यार्थी अब अपने को मजदूर से कहीं अधिक विद्यार्थी मानने लगे हैं।

विद्यार्थियो की छमाही और वार्षिक परीक्षाओ के बाद अभिभावको की सभा बुलाई जाती है। उन्हे परीक्षाफल की तथा बच्चो के बारे मे अन्य जानकारी दी जाती है। वे किस प्रकार बच्चो के विकास मे सहायक हो सकते है इस ओर उनका ध्यान खीचा जाता है। श्रमशाला मे रहने के बाद मे वे अपने बच्चो के बारे मे क्या सोचते है, और उनकी क्या राय बनी है, इसे वे बैठक मे व्यक्त करते हैं। बच्चो का व्यवहार घरवालो से कैसा रहता है, यहा से जाने पर वे काम मे सहयोग देते हैं या नही, इन बातो पर चर्चा की जाती है।

श्रमशाला के पास १६ एकड भूमि है जिसमें ३ एकड का नया पपीतो का बाग लगाया जा रहा है। १६ एकड़ मे खेती होती है। सिचाई के लिए एक तालाब और दो कुए है। दो बिजली की मोटरें तथा एक डीजल पम्प है। १६ एकड भूमि मे श्रमशाला के नन्हे श्रमिक खेती सीख रहे हैं। वे रबी, खरीफ और जायद, तीनो फसलें बोते और काटते है। पूरी १६ एकड़ भूमि इन बच्चो के श्रम पर ही निर्भर है।

विद्या बहन : विद्यालय की संचालिका

भूमिहीन परिवारो के बच्चो की शिक्षा के इस प्रयोग मे अभी हम लोग ६० से ७० प्रतिशत के बीच स्वावलम्बी हुए हैं। ३०-४० प्रतिशत की कमी दान और सहायता से पूरी होती है। पूर्ण स्वावलम्बी कब हो सकेंगे यह अभी भविष्य के गर्भ मे है।

हम लोगो का निर्णय है कि श्रमशाला के विकास के साथ-साथ श्रमभारती की पूरी खेती श्रमशाला के अन्तर्गत आ जायेगी। उस स्थिति मे विद्यार्थियो की सख्या दो सौ तक बढ़ सकेगी। धीरे-धीरे श्रमशाला का विकसित तथा विस्तृत रूप एक श्रम विद्यालय का होगा। खेती के अलावा गोपालन, मुर्गी पालन, फल-सरक्षण, रेशम-उद्योग, कुम्हारी, लोहारी, बढ़ईगिरी आदि अन्य उद्योग भी जोड़े जा सकते है। इनमे से कई उद्योग शुरू किये गये हैं लेकिन अर्थाभाव के कारण उनका पूर्ण विकास नही हो सका है। विकसित उद्योगो के अभाव मे हमारी आर्थिक स्थिति नहीं सुधर रही।

हम सोचते है कि ८ घन्टे काम करें और ३ घन्टे पढाई तथा १ घन्टा सफाई की जाय ताकि वस्त्राभाव दूर हो, किन्तु तत्काल यह करना सभव नहीं दिखाई देता है। खेती

अधिक समय ले लेती है। बड़े विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने से शायद स्थिति में सुधार हो। अधिक सुधरे हुए यन्त्रों की भी आवश्यकता है। यदि हर बच्चा अपनी कमाई में से बचाकर माह में पांच से दस रुपया तक अपने परिवार को नहीं देगा तो भय है कि परिवार की गरीबी बच्चों को श्रमशाला से वापस घर खींच लेगी। श्रमिक बच्चों के शिक्षण का यह एक कठोर सत्य है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। बच्चों के माता-पिता की यह अपेक्षा रहती है कि दिनों दिन बच्चों की कमाई बढ़ती जाये किन्तु अभी ऐसा होना शक्य नहीं है। गरीबी से संत्रस्त लोग कुछ अधिक पैसा पाने के लोभ में बच्चों की पढ़ाई छुड़ा देते हैं और उन्हें अन्यत्र कहीं काम पर लगा देते हैं। इस प्रकार सीखते हुए कई बच्चे अन्य स्थानों पर चले गये हैं और अपने काम नौसिखिये ही रह गये हैं।

श्रमशाला के उद्देश्य एवं योजना की सफलता के लिए हमको साधन चाहिए। क्योंकि साधन के अभाव में योजनाएं सफल नहीं होती हैं।

हमें काम के विस्तार को देखते हुए मोटे तौर पर ७०,००० रुपये की जरूरत है इस राशि से एक जोड़ा बैल, खेती के लिए चालू पूंजी, सिलाई उद्योग, ३० सेट अम्बर चर्खे, पूनी मशीन, रुई वरघा आदि, छात्रावास के लिए चौकी टाट पट्टी आदि, वर्कशाप, डेयरी उद्योग, फल संरक्षण, रेशा उद्योग, कुम्हारी आदि में मदद मिलेगी।

(पृष्ठ २ का शेष)

हिंसक क्रांति वाले हों चाहे, अहिंसक क्रांति वाले, या फिर भले ही क्रांति की अवधारणा में ही क्रांति करने वाले हों—हमसे वह सर्वोदय समाज नहीं बनेगा जिसके लिए हम सिर पर कफन बांधे घूम रहे हैं। गांव के लोगों में अगर स्वयं क्रांति करने की इच्छा और शक्ति होती तो वे कभी का कर चुके होते। तब न हमारी जरूरत होती न विनोबा को पांव भारत नापना पड़ता। विनोबा के "हमें जामन बनना है" वाक्य का यही मतलब है। जामन तब तक शून्य नहीं हो सकता जब तक कि सारा दूध दही नहीं हो जाता।

इसलिए ग्रामसभाओं की सार्थकता की जिम्मेदारी हमें ग्रामसभा के एक सदस्य की तरह लेनी होगी और गांव के अस्तित्व के प्रश्नों से ग्रामसभा को जोड़ना होगा। गांधी ने जब काम शुरू किया था तो स्वराज्य एक सपना था और चम्पारण से लेकर साम्प्रदायिकता की समस्याएं सभी तात्कालिक थीं। वे देश के अस्तित्व की समस्याएं थीं और गांधी ने स्वराज्य को उनसे जोड़ा। इसलिए इस देश के इतिहास में पहली बार लोगों में जागृति और शक्ति आयी। गांधी का स्वराज्य अगर नहीं आया तो इसका एक कारण यह भी है कि उनके स्वराज्य में विश्वास करने वाले लोग अति तात्कालिकता वाली राजनीति और स्थायी सम्पूर्ण क्रांति के चक्कर में बंट गये।

सहरसा के अन्तिम अभियान के सामने ये और ऐसी अनेकों चुनौतियां हैं। अभियान की सफलता-असफलता को नापने का मानदण्ड यही होना चाहिए कि इन चुनौतियों का कितना उत्तर अभियान से मिलता है। अनिवार्यता और तात्कालिकता पैदा करने में विनोबा ने कोई कसर नहीं छोड़ी है।

लाशों की गिनती का पेशा, पेशेवर लोग

→

डॉक्टर बनने में जो खर्च परिवार करता है उसके लाभ वह लेना चाहता है। यह तो धंधा है। इसमें इंसान की जान बचाने, मरीजों की सेवा करने और देश को तन्दुरुस्त रखने जैसी बड़ी बातों के लिए जगह नहीं है। जिस तरह हमारे यहाँ कारखाने चलाने वाले समाज के प्रति अपना कर्तव्य नहीं मानते उसी प्रकार बड़े-बड़े और प्रतिष्ठित पेशों में लोग अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं मानते। वैसे तो कारखानों और धंधों में लगने वाला पैसा भी लगाने वालों का नहीं होता, समाज का ही होता है। लेकिन पेशों में तो लोगों को समाज ही तैयार करता है। डॉक्टर को डॉक्टर इन्जीनियर को इन्जीनियर और बड़े अफसर को अफसर बनाने में समाज का जितना खर्चा होता है उतना उनका या उनके परिवारों का नहीं। लेकिन पेशेवर लोग इस समाज के बारे में जिम्मेदार नहीं होना चाहते। गये साल हमने देखा कि सात सौ से लेकर सात हजार रुपयों तक हर माह कमानेवाले डॉक्टरों, इन्जीनियरों, हवाई जहाज उड़ाने वालों और अफसरों ने हड़तालें कीं और सरकार को उनके सामने झुकना पड़ा। क्योंकि देश के पचपन करोड़ लोगों की जिन्दगी ये कुछ लाख लोग तहस-नहस कर सकते हैं। इनके संघ हैं और अपनी एकता और अपने काम और अपनी पूंजी के बल पर ये सरकार को झुका सकते हैं। सरकार इसलिए झुकती है कि इनकी हड़ताल से लोगों को जो तकलीफ होती है उससे वह डरती है। लोगों को अगर तकलीफ हुई तो वे वोट नहीं देंगे। और वोट नहीं मिलेंगे तो हमारी सरकार कैसे बनेगी? सरकार के इस डर को ये पेशेवर लोग अच्छी तरह जानते हैं और उसका फायदा अपने लिए सुख-सुविधा जुटाने में करते हैं। इन लोगों को ज्यादा पैसा देने के लिए सरकार नोट ज्यादा छापती है और इस कारण पूरा देश घटे की अर्थव्यवस्था में पिसता है। चुकाना पड़ता है गरीबों को ही। उन्हीं गरीबों को जिनकी इन पेशेवर लोगों को कोई फिकर नहीं है और जिनका पेट काट कर ये लोग गुलछर्रे उड़ाते हैं? विदेश में डॉक्टर, इन्जीनियर, आदि लोगों को कितना पैसा मिलता है! हम भी उतने ही काबिल हैं जितने वे हैं फिर उन्हें इतना ज्यादा और हमें इतना कम क्यों मिलता है? ये लोग आम जनता की सहानुभूति पाने के लिए अपनी तुलना भले ही धनरामों से कर लें लेकिन उनके मन में सपना तो विदेशों जैसी दौलत का है। इन्हें इस सच्चाई से कोई लेना-देना नहीं है कि देश के पच्चीस करोड़ लोग गरीबी की माप से भी गरीब हैं क्योंकि इस देश के समाज में इनकी जड़ें नहीं हैं। इनकी जड़ें वहाँ फूटना चाहती हैं जहाँ की विद्या इन लोगों ने सीखी है। मौका मिलते ही ये लोग पश्चिम के किसी भी धनी देश में चले जाते हैं। अपने पेशे का उपयोग वे अपने समाज या किसी भी समाज के लिए नहीं करना चाहते हैं उसका उपयोग वे अपने लिए करना चाहते हैं और जहाँ ज्यादा पैसे मिलते हैं वहाँ जाते हैं। नहीं जा पाते तो सरकार के सीने पर मूंग दलते हैं या समाज को लूटते हैं।

छोटे डाक्टरों की तनख्वाह तय करने वाली एक समिति के एक आदमी ने पिछले दिनों कहा कि इन डाक्टरों को याद रखना चाहिए उन्हें डाक्टर बनाने में समाज का बहुत सा पैसा लगा है और इस समाज के प्रति भी इनकी कोई जिम्मेदारी है। लेकिन डॉक्टरों ने हड़ताल नहीं तोड़ी। डाक्टर अच्छी तरह जानते हैं कि समाज के बारे में हमको अपनी जिम्मेदारी की याद दिलाने वाली सरकार कितनी जिम्मेदार है। अगर डॉक्टरों को अपने पेशे की फिकर है तो सरकार को राजनीति की फिकर है। दोनों ही जनता के नाम पर चलते हैं लेकिन जानते हैं कि इस जनता को तिकड़म से बरगलाया जा सकता है। दोनों एक दूसरे की कमजोरियां जानते हैं और इसलिए ज्यादा फायदे के लिए आपस में जोर आजमाते रहते हैं। इनमें कोई भी समाज के प्रति पूरा वफादार और जिम्मेदार होता तो यह धांधली नहीं चल सकती थी। डॉक्टरी अगर पेशा है और उसमें पैसा है तो राजनीति भी पेशा और उसमें पैसा तो है ही और भी ताकत है और इस समय देश में कोई भी पेशेवर अपने पेशे को उसमें मिलने वाले पैसे और ताकत से जोड़ता है। समाज से नहीं जोड़ता।

अगर डॉक्टरों, इन्जीनियरों और दूसरे पेशेवर लोगों को देश की फिकर नहीं है तो इसके लिए कौन जिम्मेदार है? किसने यह बात समाज में फैलाई कि डॉक्टरों, इन्जीनियरों और अफसरों की देश को सख्त जरूरत है और जो लोग देश को एकदम खुशहाल बना सकते हैं उन्हें ज्यादा पैसा और सम्मान मिलना चाहिए? लोगों को खुश करने वाली हमारी सरकार ने। क्योंकि सरकार के सामने भी देश की खुशहाली का जो सपना था और है वह उसने पश्चिम के देशों से उधार लिया है। इस देश के लोगों का और गरीब लोगों का क्या सपना है इसे न सरकार ने समझा न सरकार बनाने वालों ने। चीन ने तो डॉक्टरों इन्जीनियरों प्रोफेसरों सेना और सरकारी अफसरों में मेलों और कारखानों में काम करवाया क्योंकि वहाँ भी भारत की तरह ही गरीब लोग ही ज्यादा थे। चीन में गरीबी काफी मिट गयी। हमारे यहाँ नहीं मिटी क्योंकि हमने जो भी किया उसका फायदा उन लोगों को मिला जो गरीब नहीं थे। अब इन लोगों की एक जमात खड़ी हो गयी है जिसे मेहनत-मशक्कत के काम से, समाज से देश की गरीबी से वास्ता नहीं है। इसके पास पेशे की ताकत है और वह सरकार और समाज को अपनी दया पर रख सकता है।

पहले कम से कम इतना तो था कि गरीब आदमी चाहे तो इनके पंजे से बच सकता था। लेकिन अब जैसे-जैसे सरकार अपने हाथ पांव फैला कर सारे कामकाज अपने ऊपर ले रही है। वैसे-वैसे आम आदमी ज्यादा से ज्यादा इन लोगों की दया पर जीने के लिए मजबूर होता जाता है। ये ही लोग हैं जो सरकार को ज्यादा से ज्यादा काम लेने के लिए उकसाते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि सरकार को झुकाना आसान है और उसके साथ काम करने में सबसे बड़ा फायदा यह है कि काम नहीं करना पड़ता, नौकरी से कोई निकाल सकता और पैसे कमाने की पूरी छूट और रास्ते खुल जाते हैं।

गये साल सरकार ने जितने ज्यादा काम हाथ में लिए उतनी ही ज्यादा हड़तालें हुईं और ये हड़तालें उन गरीब लोगों ने नहीं कीं जो कीमतों के आसमान पर चढ़ने से जमीन में धंस गये हैं। हड़तालें सब समर्थ लोगों ने की हैं। सरकारीकरण के फायदे हमारे सामने हैं।

—प्रभाष जोशी

कानपुर में स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह

स्त्री-शक्ति जागरण के लिए उत्तरप्रदेश की उद्योग नगरी कानपुर में ११ से १७ अक्तूबर ७३ तक महिलाओं की पदयात्रा चली। पदयात्रा में डाक्टर चन्द्रकान्ता रोहतगी, श्रीमती सुमति भटनागर, श्रीमती कमला नैयर, श्रीमती शांति जौहरी, श्रीमती कनक त्रिवेदी, श्रीमती चन्द्रप्रभा और कुमारी सरोजा ने भाग लिया। इनकी पदयात्रा ११ अक्तूबर को फूलबाग, गांधी प्रतिमा से शुरू हुई। अखिल भारत महिला सम्मेलन की श्रीमती सन्तोष महेन्द्रजीत सिंह, श्रीमती सावित्री बोहरा, श्रीमती लक्ष्मीदेवी तथा श्रीमती कोहिली ने टोली की सदस्याओं को फूल मालायें पहनाईं और नगर की समाज-सेविका श्रीमती स्वरूपरानी रोहतगी ने तिलक लगा कर आशीर्वाद दिया।

पहला पड़ाव सत्ती चौरा में हुआ जहां पहले महेश विद्या मन्दिर में और फिर जुहारीदेवी डिग्री कॉलेज में सभायें हुईं। शाम को पड़ाव स्थल पर ही एक महिला सभा हुई। दूसरे दिन पड़ाव शांति नगर में हुआ। गर्ल्स इन्टर कालेज में सभा हुई और रात में घर-घर सम्पर्क किया गया। साहित्य बिक्री और सर्वोदय पात्र रखने की बात हुई। तीसरे दिन बिरहाना रोड पड़ाव पर जाते हुए टोली के कहने पर विनय भाई ने एक अशोभनीय पोस्टर फाड़ दिया। दोपहर को आचार्य नरेन्द्रदेव कालेज में सभा हुई। चौथे दिन का पड़ाव सिविल लाइन्स में हुआ। चार बजे महिला सभा हुई और घर-घर सम्पर्क किया गया। पांचवें दिन आर्या नगर के पड़ाव में मुस्लिम जुबली गर्ल्स इन्टर कालेज में मुस्लिम बहनों के बीच सभा हुई। छठा पड़ाव स्वरूप नगर में हुआ जिसे पदयात्रा का सबसे अच्छा कार्यक्रम कहा जा सकता है। वहां पहले एस० एन० कालेज में एक विशाल सभा हुई और शाम को बाल निकुंज में महिलाओं की सभा हुई। गृहलक्ष्मी समाज की बहनों ने प्रमुख रूप से भाग लिया। सरोजा बहन ने चम्बल घाटी महिला पदयात्रा के संस्मरण सुनाये। आखिरी पड़ाव अशोक नगर में हुआ जहां सुबह फातिमा कानवेंट स्कूल और फिर तिलक व्यायामशाला में महिला सभाएं हुईं कार्यक्रम शाम तक चला।

सातों दिन बहुत अच्छा सम्पर्क हुआ और सर्वोदय आंदोलन में महिलाओं की रुचि जाग्रत हुई। उन्हें अपनी शक्ति और उसके लिए अवसरों का भान हुआ।

चित्र में बाएं से दाएं सर्वश्री सरोजा बहन, कमला नैयर, श्रीमती त्रिवेदी, श्रीमती जौहरी, श्रीमती चन्द्रप्रभा, डॉ० चन्द्रकान्ता रोहतगी व श्रीमती सुमति भटनागर

हिंसा से हालत सुधरेगी नहीं : जे० पी०

पिछले कुछ दिनों में गुजरात से मिले समाचार बहुत परेशान करने वाले हैं। एक स्वतन्त्र और प्रजातान्त्रिक देश में लोगों को, खासकर जवान लोगों को आंदोलन करने और विरोध प्रकट करने का पूरा अधिकार है। वर्तमान आर्थिक स्थिति तो शक्तिशाली लोक कार्यवाही की मांग करती ही है। लेकिन एक बार लोग हिंसक तरीके अपनाना शुरू करते हैं तो न सिर्फ विरोध करने के अपने प्रजातान्त्रिक अधिकार को भूल बैठते हैं, वे उन प्रयोजन के खिलाफ भी काम करने लगते हैं कि जिसके लिए वे संघर्ष करने का दावा करते हैं।

मैंने सुना है कि अहमदाबाद के विद्यार्थी अपनी कार्यवाही के औचित्य में हाल ही के मेरे कुछ बयानों का हवाला दे रहे हैं। अगर पहले वे मुझे समझ लेते और फिर मेरा अनुसरण करते तो मैं सचमुच अपनी प्रशंसा से पानी-पानी हो जाता। विश्वविद्यालयों और दूसरे शैक्षणिक संस्थानों को बन्द कर देने सम्बन्धी मेरी टिप्पणी अखबारों में ठीक तरह से प्रकाशित नहीं हुई है। वह बात मैंने शिक्षा की सम्पूर्ण पद्धति, उसके लक्ष्य और तन्त्र में क्रांतिकारी परिवर्तन की ज्वलन्त आवश्यकता के संदर्भ में कही थी। किसी शैक्षणिक संस्था के कार्यालय से कतिपय अवरोधों को हटाने जैसे सीमित लक्ष्य से इस बात का कोई लेना-देना नहीं है।

ऐसा भी नहीं लगता कि गुजरात के विद्यार्थियों के वर्तमान आन्दोलन का देश के जवानों से नाम की गई हाल की मेरी दो अपीलों से कोई सम्बन्ध है। मेरा उनसे तात्कालिक आवाहन तो यह था कि वे एकजुट होकर वर्तमान प्रजातान्त्रिक संस्थाओं और प्रक्रियाओं की रक्षा करें खासकर नागरिकों के इस सार्वभौम अधिकार की कि वे स्वतन्त्र और निष्पक्ष वातावरण में अपने प्रतिनिधि चुन सकें। दीर्घकालिक आवाहन जवानों से मेरा यह था कि गांधीजी के ग्रामराज के सपने या सामुदायिक स्वशासन के आधार पर वे लोक प्रजातन्त्र का विकल्प खड़ा करने में लगें जिसमें सरकार चलाने की प्रक्रियाओं में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी हो सके। ये सब क्रांतिकारी लेकिन रचनात्मक कार्य हैं और इनके लिये सावधानीपूर्वक की गई अनुशासित तैयारी की जरूरत है। इनमें सीधी कार्यवाही भी जरूरी हो सकती है लेकिन एक बेहतर और सम्पूर्ण प्रजातन्त्र के लिए की गई कार्यवाही का हिंसा से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता।

हो सकता है कि वर्तमान आन्दोलन का अपना औचित्य होगा लेकिन हिंसा से तो, अराजकता की ऐसी शक्तियां को ही बल मिलेगा जो मौजूदा आर्थिक और राजनीतिक स्थिति को और बिगाड़ेंगी और राष्ट्रीय स्थिति के सन्तुलन में और अधिक देर लगेगी।

अगर अखबार मेरे इन शब्दों को गुजरात के लोगों और जवानों तक पहुंचायेंगे तो मुझे आशा है कि वे मेरी सलाह मानेंगे और अनुशासित तथा शांतिपूर्ण ढंग से अपना आंदोलन चलायेंगे।

(गुजरात की स्थिति पर पटना में २६ जनवरी १९७४ को श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा दिया गया बयान।)

(पृष्ठ २ का शेष)

रहों में तो विनोबा वोट देने ही नहीं गये। 'श्री राम सुमिर जग लड़बा दे' के हिसाब से उन्होंने चुनाव को अभी तक अनावश्यक एवं हिंसामय, स्वार्थमय संघर्ष माना है। जयप्रकाश जी ने चुनावों को हम किस प्रकार स्वच्छ कर सकते हैं, इस पर विस्तार से कुछ दिनों से विस्तार के साथ सोचना-समझना शुरू किया है। इसके कुछ तत्त्व और तरीके हम अपने पिछले दो अंकों में दे चुके हैं। यहां इतना ही कहना चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश के चुनावों का आधार टिकट बांटने के ढंग से ही सत्ताधारी दल की ओर से जिस तरह अस्वच्छ हुआ है वह अस्वच्छ है। जहां प्रतिनिधि ही अस्वच्छ पद्धति से चुने गये हैं, वहां आगे भी यही सरकार चलेगी पड़ता है कि चोरी छोटी भी उसी पद्धति से पकड़ेंगी। तब क्या करें? अस्वच्छता में उतरें या बिलकुल न उतरें। लोगों से चुनाव में भाग लेने को कहें या चुनाव में उन्हें भाग लेने से एकदम विमुख करें। यदि लोग एक-दो चुनावों में यह रुख अपना लें कि हम चुनावों के स्वच्छ होने तक वोट देने जायेंगे ही नहीं तो शायद इसका 'आदर्श राज्य की ओर बढ़ने में बड़ा उपयोग हो। विनोबा तो पिछली बार इशारतन यह कह कर हमें एक रास्ता सुझा चुके हैं।

म० प्र० मि०

R N. 2091/57 BHOODAN YAGYA 30 JANUARY, 1974 Regd. No. D-(C.)-266

तीस जनवरी की स्मृति में

द देहली क्लॉथ मिल्स क० लिमिटेड के लिए श्री भरतराम के सौजन्य से

वार्षिक शुल्क : १५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, इस अंक का मूल्य ६० पैसे।
प्रभाकर जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली सोमवार, ११ फरवरी, '७४

× गांधी को याद करने वाले × लोकतंत्र नया चाहिए, समाजवाद नया चाहिए × आचार्यकुल शिक्षकों की ट्रेड यूनियन नहीं है × सर्वोदयवाले राजनीति में नहीं पड़ें × शिक्षा-संस्थाएं सरकार से स्वतंत्र हों × देश जल रहा है और वे वंसी बजा रहे हैं × हम पशुओं से बदतर हैं × चुनाव़ी नक्कारखाने में तूती की आवाज

भूदान-यज्ञ

११ फरवरी, '७४

वर्ष २० अंक २०

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

मुखपृष्ठ : श्री अबू अब्राहम (इन्डियन एक्सप्रेस के सौजन्य से)

राजघाट कालोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

गांधी को याद करने वाले

इस बार तीस जनवरी को देश ने जिस हालात मे गांधी को याद किया उसकी सच्चाई अबू अब्राहम के उस व्यंग्य चित्र मे प्रकट होती है जिसे हम मुखपृष्ठ पर प्रकाशित कर रहे हैं। गांधी अपने आखिरी दिनो मे आज हो रही हिंसा से कही अधिक उग्र और सब तरफ फैली मारकाट के बीच अकेले घूमे थे और एक ज्वालामुखी के बीच शान्ति की चट्टान की तरह खड़े थे। उनकी शहादत के छब्बीस साल बाद हालत यह है कि गुजरात जहां वे जन्मे थे, अराजक भीड़ की हिंसा में जल रहा है और जहा उनका आश्रम था उस अहमदाबाद की रक्षा सेना कर रही थी। पन्द्रह दिन के आन्दोलन में चवालीस लोग मर चुके थे, चालीस शहरो और कस्बो मे कर्फ्यू लग चुका था और बाजार लुट चुके थे। देखने वालों का कहना है कि गुजरात मे भारत छोड़ो आन्दोलन के समय भी जनता का गुस्सा इतने विकराल रूप मे नही फूटा था। भारत छोड़ो आंदोलन से इस आंदोलन की तुलना का एक सबसे बड़ा मतलब यह भी है कि उस समय नेतृत्व विहीन लोग बिना किसी सगठन के एकदम सड़को पर आ गये थे और अंग्रेजों को बता रहे थे कि उन्हे भारत छोड़ना पड़ेगा। इस बार भी नेतृत्व-विहीन लोग, बिना किसी सगठन और योजना के सड़को पर आ गये है और चिमनभाई पटेल की भ्रष्टाचारी सरकार से गद्दी छोड़ने की माग कर रहे हैं।

लोगो के इस हिंसक आक्रोश को गृह मंत्री ने विरोधी पार्टियो द्वारा उकसायी गयी अराजकता कहा है और जनसंघ तथा कम्युनिस्टो पर आरोप लगाया है कि अनाज की कमी से उत्पन्न असन्तोष का इन लोगो ने राजनीतिक लाभ लेने की कोशिश की है। प्रचारित किया गया है कि पिछले एक महीने से गुजरात में अनाज को लेकर दंगे चल रहे हैं। यह सही है कि अनाज और खाने के तेल के आसमान पर चढ़ते भावों ने गुजरात में व्यापक असन्तोष फैलाया है लेकिन लोगों का आक्रोश महंगाई पर उतना नहीं है जितना चिमनभाई की सरकार की अविश्वसनीयता पर है। केन्द्रीय सरकार ने जिस तरह चिमनभाई का समर्थन किया है उससे लोगो का विश्वास उसके भी इरादो से उठ गया है। विद्यार्थियो ने अहमदाबाद मे एक पट्टी पर इन्दिरा जी के लिए लिखा—'आपको गुजरात ने पचपन प्रतिशत बहुमत दिया और आप हमे ऐसे पांच प्रतिशत मंत्री भी नहीं दे सकी जो ईमानदार हो।" चिमनभाई जब दिल्ली में इन्दिराजी से मिलने आये तो विद्यार्थियो ने तार भेजा—'कृपया उन्हे वापस मत भेजिये।' लोगो के आक्रोश के लक्ष्य मंत्री और सत्तारूढ़ पार्टी के विधायक हैं। इन निर्वाचित प्रतिनिधियो मे से एक की भी ताकत नहीं है कि वे जनता का सामना कर सकें। लोगो को अब सस्ता अनाज और तेल नहीं चाहिए—वे चाहते हैं कि चिमन भाई की सरकार इस्तीफा दे। लोगो का सरकार पर विश्वास पूरी तरह उठ गया है। अविश्वसनीयता के कारण है। गुजरात में इस साल मुंगफली की अच्छी फसल हुई है लेकिन तेल के भाव और ऊंचे चढ़े है, बाजरा अच्छा हुआ है पर एक लाख टन की वसूली के लक्ष्य मे से सरकार सिर्फ एक हजार सात सौ टन इकट्ठा कर पाती है। लोगों को लगता है कि सरकार तेल मिल मालिको और बड़े किसानो से मिल गयी है और इसलिए अच्छी फसल के बावजूद चीजें नहीं मिल रही है और भाव बढ़ गये हैं। विरोधियो का यह आरोप उन्हे सही लगता है कि सरकार ने उत्तरप्रदेश और उड़ीसा के चुनाव के लिए पैसा लेकर चीजो को महगा होने दिया है।

रविशंकर महाराज जैसे वयोवृद्ध सर्वोदय सेवक तक ने इन्दिराजी से मांग की है कि वे चिमनभाई की सरकार को हटायें। चूंकि केन्द्र ऐसा नही करना चाहता इसलिए महाराज ने सभी विधायको से अपील की है कि वे इस्तीफा दें। सगठन कांग्रेस के विधायको ने तो इस्तीफे पहुंचा भी दिये हैं। महाराज किसी विरोधी पार्टी के गुर्गे नही है और उनकी सच्चाई तथा ईमानदारी मे किसी को सन्देह नही है। फिर भी चिमनभाई की भ्रष्टाचारी सरकार बेशर्मी से डटी हुई है और इन्दिराजी दबाव और हिंसा के सामने झुकना नहीं चाहती।

जिन लोगों पर जनता को विश्वास नहीं है क्या वे सरकार मे रहने और गांधी जी को याद करने के अधिकारी है? —प्र० जो०

लोकतंत्र नया चाहिए, समाजवाद नया चाहिए

—राममूर्ति

इस वक्त उत्तर प्रदेश में चुनावों की धूम है। कुछ दिन बाद जनता अपने वोट से तय करेगी कि अगले पांच वर्ष, कौन जाने उससे कम भी, उस पर कौन शासन करेगा। शासक बनने के लिए ही सारी दौड़ धूप है। हैलिकोप्टर से, जीप और साइकिल से, मोटर से और पैदल शहर-शहर, गांव-गांव, घर-घर के चक्कर लगाये जा रहे हैं, वादों और आश्वासनों की झड़ी लगाई जा रही है। एक कहता है 'चिन्ता मत करो, आने वाला कल सुनहरा होगा। तकलीफ दुनिया में कहां नहीं है, धीरज रखो, देश बहुत आगे बढ़ चुका है। हमारे हाथ में तुम्हारा भाग्य सुरक्षित है। हमें वोट दो"। दूसरा समझाता है "अब ज्यादा इनके भुलावे में मत पड़ो। यह महंगाई, यह भ्रष्टाचार, यह चोर बाजारी, यह उपद्रव और आतंक, क्या अब भी आंखें नहीं खुलतीं? वोट इन्हें नहीं हमें दो, हम तुम्हारे सारे दुख दूर करेंगे"।

इसी तरह की बातें हम पिछले सत्ताईस वर्षों से सुनते आ रहे हैं। इन वर्षों में देश भर में कितनी ही सरकारें बनीं और टूटीं। सभी दलों की सरकारें बनीं, कभी मिल कर बनीं और कभी अकेली। हम बारी-बारी अपना वोट देते रहे—कभी इस दल को कभी उस दल को। लेकिन हुआ क्या? क्या हमारी कोई उम्मीद पूरी हुई? कोई समस्या हल हुई? सबको रोटी मिली, रोजगार मिला? हमारे बच्चों का भविष्य बना? जनता की मुहताजी घटी? देश की शक्ल बदली? और, जो कुछ हुआ भी वह कितने लोगों के लिए हुआ?

कहा जाता है कि लोकतंत्र ऐसा ही होता है। इसमें नाम जनता का चलता है लेकिन राज दल और दफ्तर का होता है और बाजार होता है सेठ और साहूकार का। नारे लगाते हैं समाजवाद के, लेकिन बढ़ता है सामंतवाद और पूंजीवाद। पिछले वर्षों में सरकार ने समाजवाद का नाम लेकर सब कुछ अपने हाथ में कर लिया और हम रोटी-कपड़े तक के लिए मुहताज हो गये। विकास के नाम में कारीगर की कारीगरी गई, छोटे किसान की कमर टूटी, युवक का भविष्य गया, हर गांव फूट और जातिवाद और दलबन्दी का अखाड़ा बन गया, शोषण का बोलबाला हुआ। पैसा परमेश्वर बना। अगर घी में उंगली पड़ी तो उनकी जो "नेता" हुए, जो पिछलग्गू बने, जो अफसर कुर्सी पर बैठे।

देश की विधान सभाओं, विधान-परिषदों और संसद को मिला कर लगभग पांच हजार नेता हैं। इन्हीं के दल हैं, इन्हीं की सरकारें हैं। एक करोड़ से अधिक सरकार के अपने अधिकारी कर्मचारी हैं। जनता के टैक्स का बहुत बड़ा हिस्सा सरकार अपने इन कुटुम्बियों पर लगा रही है। गांव से लेकर दिल्ली तक ये ही छाये हुए हैं। इन्हीं के पास प्रभुत्व और पूंजी है, प्रभाव और पहुंच है, पद और पदवी है। क्या प्रशासन और व्यवस्था, क्या विकास, क्या रेल, पानी और बिजली, क्या बाजार-भाव और अखबार, तथा क्या शिक्षा और न्याय, सब इन्हीं के हाथों में है। सब पर दलों की राजनीति हावी है। स्वराज्य का असली सुख ये और इनके लोग भोग रहे हैं। बाकी लोगों के लिये जिन्दगी एक लम्बी अंधेरी रात है। क्यों ये लोग कोई ऐसा बुनियादी परिवर्तन चाहेंगे जिससे उनका प्रभुत्व घटे? वे जानते हैं कि हम लोग थोथे नारों के भुलावे में पड़ जाते हैं, इसलिए वे एक से एक मोहक नारे लगाते हैं। हम कभी इस दल को अपना मानते हैं कभी उस दल को। इस भ्रम में पड़ कर हम भूल जाते हैं कि दलों के नाम चाहे जो हों, राजनीति सबकी एक ही है। लाला जी एक हैं, दुकानें अलग-अलग हैं। हर दल सत्तावादी है। जनतावादी कौन है? सत्ता बढ़ रही है और सत्ता से सम्पत्ति पल रही है। दोनों के गठ-बन्धन का नाम राजनीति है। यह दलगत राजनीति परिवर्तन विरोधी है, राष्ट्र विरोधी है, लोकतंत्र विरोधी है।

सच बात तो यह है कि आज तक हमने जिसे लोकतंत्र समझा था वह लोकतंत्र नहीं दलतंत्र है, और जिसे समाजवाद माना था वह शुद्ध सरकारवाद है। हमारी इस भूल के कारण हमारे ऊपर दोहरी मार पड़ी। लोकतंत्र के नाम में हम अनेक दलों और झण्डों में बंट गए। एक ओर संगठित हो कर हमने बुनियादी समस्याओं को हल करने की कोशिश नहीं की, गांव के लोग, शहर के लोग, विद्यार्थी, शिक्षक, मजदूर सब एक दूसरे के सामने मुक्का तान खड़े हो गये। पूरा देश सत्ता के युद्ध में फंस गया। उधर सरकार लोक कल्याण के नाम में समाज को निगलती चली गयी। जनता जैसे कुछ रह ही नहीं गई। सरकार जो खिलाये हम खायें, जो पढ़ाये हम पढ़ें, जो कहे हम करें—अब यही स्थिति हो गई है। कहां है गांधी का ग्रामराज, कांग्रेस का पंचायती राज, लोहिया का चौखम्भा राज, या कम्युनिस्ट का किसान-मजदूर राज? कहने को सरकार अपनी है, देश अपना है, दल अपने हैं, लेकिन जनता? जनता पराई हो गई है।

यह चुनाव क्या है, दलों का असहाय जनता पर आक्रमण है, जिसमें सब हथियार आक्रमण करने वालों के हाथ में हैं। उनके पास बेशुमार "ब्लैकमनी" है, मूढ़ को सब बनाने वाले प्रचार के साधन हैं, वोट छीन लेने वाले हथकंडे हैं। वे हमें निर्भय हो कर, सोच-समझ कर वोट भी नहीं देने देते। ऐसे भ्रष्ट चुनाव से शुद्ध लोकतंत्र कैसे कायम होगा?

सवाल है कि कब तक हम इस तरह दीन और असहाय बने रहेंगे? क्या अब भी समय नहीं आया है कि हम इस दलतंत्र को छोड़ दें और सच्चे लोकतंत्र की तलाश करें? क्या यह सम्भव नहीं है कि गांव-गांव में (सब बालिगों को लेकर) ग्राम सभायें और नगरों में मुहल्ला सभायें गठित हों, और उसी तरह कारखानों, विद्यालयों और दफ्तरों में भी

→

अपनी-अपनी सभायें बनें ? हर सभा अपनी समस्याओं के बारे में आमने-सामने बैठ कर सोचे और उनका हल निकाले। ये सभायें अपने दायरे में एक स्वायत्त इकाई के रूप में काम करें, और अपने जीवन में अनुचित बाहरी हस्तक्षेप न होने दें। नीचे की सभाएं बन जायें तो उनके सर्व सम्मत प्रतिनिधि लेकर जिला सभायें बनें, और आगे चलकर राज्यसभायें और राष्ट्रसभा भी बन जायें। इन सभाओं में विचार के भेद भले ही हों, लेकिन सबके काम सबकी राय से हों, काम, दाम और आराम की व्यवस्था सबके लिए हो, सबको ईमान की रोटी और इज्जत की जिन्दगी मयस्सर हो। क्यों कोई दल हो, और क्यों हमारा जीवन सरकार के हाथ में पड़े ? सरकार का अपना क्षेत्र हो जो सीमित हो।

चुनाव सामने है। आप इसमें वोट दें और जिसे चाहे वोट दें। लेकिन लालच और डर तथा जाति और धर्म के भेदभाव से अलग रह कर वोट दें। और यह सोच कर वोट दें कि देश दल से बड़ा है। अब हमें वैसा लोकतंत्र बनाना है जो चुनाव के साथ आने वाला और चुनाव के साथ ही चला जाने वाला न हो, बल्कि जिसमें समाज अपनी इकाईयों में सगठित हो, जिसमें हर व्यक्ति हिस्सा ले सके, जिसमें सिर्फ इस बात का फैसला न हो कि हमारे ऊपर हुकूमत कौन करेगा, बल्कि यह तय हो कि हम अपने पड़ोसियों के साथ मिल कर आपसी जीवन के *काम कैसे चलायेंगे। ये ही स्वायत्त सहकारी,* सगठित इकाइयां सरकार में अपने प्रतिनिधियों के काम का ब्यौरा लेंगी और उन पर अंकुश रखेंगी। इस तरह जो सरकार बनेगी वह दलों की नहीं होगी। वह प्रतिनिधियों की आम राय से बनेगी। तथा सर्व मान्य कार्यक्रम के अनुसार काम करेगी। जो सच्चे अगुआ होंगे वे सरकार में न जाकर लोक शक्ति विकसित करने का काम करेंगे। इस प्रकार पूरा तंत्र 'लोक' का हो जाएगा, "दल" का नहीं रहेगा।

हम आप सब मानते हैं कि आज का लोकतंत्र निकम्मा है। सभी चाहते हैं कि लोकतंत्र नया हो। लेकिन होगा तब जब उसकी तलाश होगी। हम आप उसकी शुरुआत कर सकते हैं। नीचे की छोटी-इकाइयां सगठित और सक्रिय होंगी तो लोकशक्ति बनेगी और लोकशक्ति बनेगी तो नया लोकतंत्र बनेगा। नया समाजवाद आयेगा। लोकशक्ति नहीं तो कैसा लोकतंत्र और कैसा समाजवाद ?

बिहार में उपवासदान

सहरसा कुसुम जाधव, राजेन्द्र मिश्र, धीरेन्द्र भाई, अण्णा जाधव, महेन्द्रनारायण, कृष्णराज मेहता, किशोर शाह, वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, हरि भाई, पुजारी राय, ऐलीगडकर, सोमनाथ साहु, केदार प्रसाद मंडल, कांतिलाल बोरा, चारचन्द्र भण्डारी। पटना : जयप्रकाश नारायण, राम पलट सिंह, विद्यासागर, श्यामबहादुर सिंह, सर्व नारायण दास, उदितराम बरई, धनबाद, रामन रायण सिंह, मुंगेर, ध्वजाप्रसाद साहु, मुजफ्फरपुर, अनिरुद्ध, नवादा, कीर्तिनारायण शर्मा, फरीदपुर।

आचार्यकुल शिक्षकों की ट्रेड यूनियन नहीं है

आचार्यकुल के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए आचार्य विनोबा

(परमधाम आश्रम, पवनार में १२ व १३ जनवरी, १९७४ को आचार्यकुल का प्रथम राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। यहां उसकी रपट प्रस्तुत है।)

१२ जनवरी को प्रातः साढ़े आठ बजे सम्मेलन का उद्घाटन श्री श्रीमन्नारायण ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में आचार्यकुल की स्थापना, उद्देश्य और आवश्यकता पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात सुश्री शोभाबहन ने ब्रह्म-विद्या-मन्दिर, पवनार की प्रवृत्तियों का परिचय देते हुए बताया कि सेवी और भक्ति, श्रमनिष्ठा और स्वेच्छित दारिद्र्य, ब्रह्मचर्य व समूह साधना यहां की विशेषता है।

सम्मेलन के प्रारम्भ में केन्द्रीय आचार्यकुल के संगठक प्रो० गुरु शरण (आचार्यकुल के संयोजक वंशीधर श्रीवास्तव अस्वस्थता के कारण अनुपस्थित थे) ने विभिन्न राज्यों में आचार्यकुल की प्रगति की रिपोर्ट पेश की तथा स्वागत-समिति के संयोजक प्रो० सहस्रबुद्धे (नागपुर) ने सम्मेलन की सफलता के लिए प्राप्त शुभ सन्देश पढ़े।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए विनोबा (जो आचार्यकुल के संस्थापक भी हैं) ने देश की वर्तमान संकटग्रस्त स्थिति के बारे में चिन्ता व्यक्त की और कहा कि आज देश में अन्न उत्पादन में वृद्धि प्रथम आवश्यकता है। भोजन के बिना मनुष्य विचार नहीं कर पाता अतः यह जरूरी है कि समाज के अन्तिम व्यक्ति को भी भोजन मिले और उसके पुरुषार्थ से उत्पादन में बाढ़ हो।

दक्षिण भारत में आचार्यों की परम्परा रही है। अतः दक्षिण भारत में आचार्यकुल का विचार ज्यादा से ज्यादा ग्रहणीय है। इसके लिए आचार्यों को संस्कृत भाषा का उत्तम अध्ययन कर देश को जोड़ने का महान कार्य करना होगा।

बाबा ने कहा कि पहले से आज आचार्यकुल की जरूरत ज्यादा है। अनेक मसले देश और दुनिया के सामने हैं। सब समस्याओं का शान्त समत्वयुक्त अध्ययन करना और अपना अभिप्राय प्रकट करना बहुत जरूरी हो गया है। आचार्यकुल के शब्द को प्रतिष्ठा तभी मिलेगी जब आचार्यों में सदाचरण तथा मित भाषिता के गुण होंगे।

तीसरे पहर सम्मेलन की दूसरी बैठक में भी विनोबा फिर बोले (पूरा भाषण इस अंक में अन्यत्र)

उसके पूर्व गोविन्दराव देशपांडे ने 'आचार्यकुल की कल्पना' विषय पर चर्चा करते हुए कहा कि आचार्यकुल शिक्षकों की कोई ट्रेड यूनियन नहीं है। इसका उद्देश्य बहुत व्यापक और दूरदर्शी है। संक्षेप में आचार्यकुल पीड़ित मानवता को मुक्त करने की प्रवृत्ति है।

प्राध्यापक सहस्रबुद्धे ने 'आचार्यकुल की शिक्षा नीति और उसका कार्यान्वयन' विषय पर प्रकाश डाला। इस चर्चा में विभिन्न प्रान्तों के प्राध्यापकों ने भाग लिया। कई वक्ताओं ने शिक्षण क्षेत्र में राज्यतन्त्र के बढ़ते हुए दमन के बारे में विरोध एवं चिन्ता व्यक्त की। इस गोष्ठी की अध्यक्षता आगरा विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति शीतलप्रसाद ने की।

दूसरे दिन प्रातः साहित्यकार जैनेन्द्र कुमार की अध्यक्षता में सम्मेलन की तीसरी बैठक शुरू हुई, जिसमें सर्वप्रथम भागलपुर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डा० रामजी मिश्र ने वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थिति व आचार्यकुल' विषय पर ओजस्वी एवं भावपूर्ण व्याख्यान दिया। देश के वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक इन सभी क्षेत्रों में हो रहे नैतिक ह्रास एवं अवमूल्यन के बारे में तीव्र चिन्ता और क्षोभ व्यक्त करते हुए आपने शिक्षकों को दृढ़ श्रद्धा व तटस्थ बुद्धि से न्याय का पक्ष धारण करने की अपील की।

प्राध्यापक गुरुशरण ने आचार्यकुल संगठन और कार्यक्रम संबंधी अपना निबंध प्रस्तुत करते हुए प्राथमिक एवं जिला आचार्यकुल

(शेष पृष्ठ ...पर)

सर्वोदयवाले राजनीति में नहीं पड़ें

इस परिषद में लगभग ३०० लोग आये हैं। उनमें तमिलनाडु के १ हैं, केरल के २, आंध्र के ५ और कर्नाटक के शून्य। दक्षिण के ४ प्रांत मिलकर ८ लोग हैं। ३०० में दक्षिण भारत के आठ। हम लोगों के लिए सोचने की बात है। सुबह मैंने इशारा किया था कि भारत के लिए जो खतरा है वह हम लोगों को ध्यान में रखना चाहिए। भारत १५-१६ विकसित भाषाओं का देश है और भारत की जन संख्या ५५ करोड़ है। रूस को अलग करें तो बाकी के योरप की जन संख्या ४० करोड़ है। उसका मतलब हुआ कि योरप जितना ही यह देश बड़ा है। यहां १५-१६ भाषाएं विकसित हैं। वहां के १५-१६ राष्ट्र हैं। विशाल राष्ट्र बनाया प्राचीनकाल से आज तक। इन दिनों कुछ ऐसी प्रवृत्ति रही है कि मानों प्रांत अलग-अलग टूट रहे हैं। ऐसे तो भारत से कोई अलग नहीं होना चाहेंगे, परन्तु अपने प्रांतों के लिए ज्यादा अधिकार चाहिए, ज्यादा सत्ता चाहिए इत्यादि-इत्यादि। इनमें कुछ मांगें ठीक भी होती हैं, कुछ बेठीक भी होती हैं, प्रांत-प्रांत अलग-अलग टूट रहे हैं, यह हमारे लिए खतरनाक बात है। आज योरप एक हो रहा है, कॉमन मार्केट आरंभ हो गया है। वहां एकता का आरम्भ होता है और हमारे यहां जो एकता पहले है वह विश्रृंखल होती है। तो हमें महसूस करना चाहिए कि हमको दक्षिण भारत के साथ विशेष संपर्क रखना है। मेरी अपेक्षा यह है कि अगर महाराष्ट्र से १२६ सदस्य आये हैं तो गुजरात के १२६ से कम तो होना ही नहीं चाहिए। क्योंकि गुजरात में नयी-तालीम के प्रयोग जगह-जगह पर पर बहुत अच्छी तरह से चलते हैं। यह विचार गुजरात वालों के लिए नया नहीं है। गांधीजी ने इसे बार-बार दुहराया है लेकिन वहां गलतफहमी है। कहते हैं कि गांधी जो कहते थे, जीवन एक है उसके टुकड़े नहीं हो सकते। इस वास्ते राजनीति से हम अलग नहीं हो सकते। इस प्रकार से गांधी के नाम से गुजरात में एक भ्रांत भावना पड़ी है। मुझको लगा कि गांधी जी के नाम से कांग्रेस के दो टुकड़े हुए तो कम से कम हमारा भ्रम-निरसन हुआ होगा। हमारी शक्ति तब बढ़ेगी जब हम इस झमेले से दूर होंगे। यह जो राजनैतिक झमेला है वह तोड़ना जानता है, जोड़ना नहीं जानता। राजनैतिक झमेलों के कारण प्रांत-प्रांत, राष्ट्र-राष्ट्र टूट रहे हैं। यह बर्लिन की दीवार है। कोरिया के दो टुकड़े कर दिये गये। इस प्रकार छोटे-छोटे राष्ट्र के टुकड़े पैदा हुए। कहीं थोड़ा झगड़ा, करो टुकड़े। राजनीति को ऐसा ही सूझता है। इसलिए मुझे आशा है कि भ्रम-निरसन हुआ होगा। नहीं हुआ, कुछ बचा होगा तो बाबा दो मिनट में बात रखेगा।

बाबा नहीं कहता कि जीवन के टुकड़े करो जीवन पूरा एक है। राजनीति उसके अन्दर शामिल है। बाबा जानता है, मानता है, कहता है, परन्तु ! क्या परन्तु ? अगर हम राजनीति पर अंकुश रखना चाहते हैं तो राजनीति से अलग होना पड़ेगा। अगर राजनीति का हमको ठीक निरीक्षण करना है तो जरूरी है कि उसका साक्षी होना चाहिए, न कि खेल के अन्दर दाखिल होना चाहिए। जो खेल के अन्दर दाखिल है उसे मालूम नहीं खेल कहां खेला जा रहा है, क्या हो रहा है ? इस वास्ते खेल के लिए तटस्थ निरीक्षक रखने पड़ते हैं। निरीक्षक खेल से अलग रहकर ठीक राय दे सकते हैं। इसलिए हम लोग आचार्यकुल के लोग, शिक्षक लोग राजनीति का अपना राइट परस्पेक्टिव प्राप्त करना चाहते हैं तो झमेले में पड़ना, अन्दर जाना हमारे लिए किसी प्रकार से लाभदायक नहीं। परन्तु उससे अलग रहकर अंधेरे पर टॉर्च का लाइट डालना, प्रहार करना हमारा कार्य होना चाहिए। गुजरात में यह अच्छी तरह से हो सकता है। क्योंकि गांधी के अनेक भावी रचनात्मक काम, मे, नयी तालीम के काम में लगे हैं। मेरी अपील है गुजरात वालों से कि बाबा का यह विचार ठीक समझें। वह नहीं चाहता कि राजनीति का चिंतन आप न करें। केवल अपने देश का नहीं, विश्व की राजनीति का चिंतन चले। बाबा ज्यादातर इन दिनों विश्व का चिंतन करता है। बाबा का मंत्र एक बाजू है ग्रामदान, दूसरी बाजू है जय जगत। जगत से कम बाबा बोलता नहीं। और इन दिनों जानते हैं तेलास्त्र-प्रक्षेपण हो गया। सारी मोटर-गाड़ियां गड़बड़ाने लगीं। और बहुत बड़ा प्रचंड संकट खड़ा हो गया जापान के सामने। जापान की आधी राजनीति टूटने लगी और अब तीन दिन का हफ्ता करने की नौबत आयी लन्दन में !

आज दुनिया एक हो गयी है विज्ञान के कारण। हृदय एक नहीं बना। लेकिन बुद्धि एक बनी है। बड़ी खतरनाक बात है। बुद्धि एक बनी और हृदय एक नहीं बना तो मानव जाति के झगड़े होंगे ! देखने में क्या दीखेगा ? फ्रांस और जर्मनी के झगड़े। अमरीका और योरप के झगड़े। क्या दीखेगा, जापान और चीन के झगड़े। कौन से झगड़े ? बुद्धि और हृदय के झगड़े। लेकिन नाम उनको तरह-तरह से मिलेगा। इसलिए हमको विश्व राजनीति का अध्ययन करना चाहिए और इन दिनों बाबा ज्यादातर अध्ययन विश्व की राजनीति का करता है। हिन्दुस्तान की राजनीति का कम करता है। क्योंकि जानता है यहां पर क्या होता है। यहां जो सुनने को मिलता है, काफी है। इसलिए अध्ययन की जरूरत नहीं। अध्ययन करता है विश्व का ज्यादा। विश्व की किस तरह की कौन-सी ताकतें नजदीक आ रही हैं उसका नित्य चिंतन चलता है। बाबा के पास नक्शा रखा है। सब राष्ट्रों की यादें रखी हैं। कितनी पापुलेशन इत्यादि-इत्यादि। तो अध्ययन खूब करो विश्व की राजनीति का। परन्तु अपने को अलग साक्षीरूपेण रखो तभी तुम्हारी शक्ति काम देगी। अन्यथा तुम्हारे टुकड़े हो जायेंगे, जैसे राजनीति के टुकड़े हो जाते हैं। राजनीति से मनुष्य दिमाग लगाता है, एकदम टुकड़े हैं। कहीं कहते हैं कि हमारे यहां कांग्रेस के दो टुकड़े हो

(शेष पृष्ठ ८ पर)

शिक्षा-संस्थाएं सरकार से स्वतंत्र हों

आचार्यकुल के विचार का उस समय उदय हुआ जब तत्कालीन राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन सन १९६७ मे आचार्य विनोबा से बिहार मे मिले और उनसे शिक्षा की समस्याओ पर विचार विनिमय किया। आचार्यकुल की संकल्पना के अनुसार उसका विधान बना, संगठन की स्थापना हुई, आचार्यो के लिए ज्ञान निष्ठा, विद्यार्थियो के प्रति वात्सल्य एव तटस्थवृत्ति पर जोर दिया गया, धीरे-धीरे कार्य आगे बढ़ा। अब प्रथम राष्ट्रीय आचार्यकुल सम्मेलन परमधाम आश्रम पवनार मे १२ और १३ जनवरी, १९७४ को विनोबा के सान्निध्य मे सम्पन्न हुआ। देशभर के लगभग ३२० प्रतिनिधियो ने इसमे भाग लिया। वर्तमान राष्ट्रीय परिस्थिति और आचार्यकुल संगठन और कार्यक्रम के सम्बन्ध मे दो दिन तक गम्भीर चर्चा हुई और सम्मेलन की ओर से निम्न निवेदन सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ :

"स्वाधीनता के बाद पिछले पच्चीस वर्षो मे राष्ट्र ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक क्षेत्रो मे अनेक उपलब्धियां प्राप्त की है। किन्तु कई परिस्थितियो के कारण व्यक्ति के सर्वांगीण विकास और लोकशक्ति के निर्माण मे कुछ बाधायें भी उत्पन्न हुई। शिक्षा के क्षेत्र मे बढ़ता हुआ सरकारी नियन्त्रण सचमुच गहरी चिन्ता का कारण बना है। आचार्यकुल का प्रारम्भ से ही यह बुनियादी सिद्धान्त रहा है कि शिक्षा शासन मुक्त हो और शिक्षा संस्थाओ की स्वायत्तता मे सरकार दखल न दे। यद्यपि निजी संस्थाओ मे बढ़ती हुई अनेक बुराइयां हटाने के लिए भरसक प्रयत्न होना आवश्यक है लेकिन शासन को शिक्षा के क्षेत्र मे विशेष परिस्थिति के अलावा सामान्य रूप से हस्तक्षेप नही करना चाहिए। आचार्यकुल का यह राष्ट्रीय सम्मेलन आशा करता है कि सभी राज्य सरकारें इस ओर विशेष ध्यान देंगी।

यह भी अत्यन्त आवश्यक है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली मे आमूलाग्र परिवर्तन तेजी से किये जायें। पिछले वर्ष सेवाग्राम के राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन ने जाहिर किया था कि शिक्षा हर स्तर पर सामाजिक दृष्टि से उपयोगी एव उत्पादक क्रिया कलापो द्वारा आर्थिक विकास व समृद्धि से सम्बद्ध रह कर ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रो मे प्रचलित हो। इस बात पर भी जोर दिया गया था कि सभी पाठ्यक्रमों मे आत्मनिर्भरता, आत्म विश्वास सामुदायिक सेवा और नैतिक मूल्यो के सिंचन का समावेश होना आवश्यक है। आचार्यकुल का अनुरोध है कि सेवाग्राम सम्मेलन की सिफारिशो के आधार पर देश की शिक्षा प्रणाली मे तेजी से परिवर्तन लाये जायें ताकि राष्ट्र का विकास सही दिशा मे हो सके।

इसके लिए यह भी जरूरी है कि शिक्षा जगत दल, पक्ष सम्प्रदाय आदि की संकीर्णता से मुक्त हो। तभी हमारी शिक्षण संस्थाए व्यापक रूप से देश के लोकतन्त्र को मजबूत कर सकेंगी। इसी दृष्टि से यह निश्चित किया गया है कि आचार्यकुल के सभी सदस्य दलगत राजनीति से पृथक रहें और देश की तात्कालिक समस्याओ पर पक्ष मुक्त ढंग से अपनी तटस्थ राय दृढ़ता से जाहिर करते रहे। यह तभी सम्भव हो सकता है जब शिक्षक किसी राजनीतिक पार्टी के सदस्य न हो और सत्ता की भवर मे न फंसे। हालांकि शिक्षक वर्ग को देश और दुनिया की व्यापक राजनीति का गहराई से अध्ययन तो करते ही रहना चाहिए।

स्वायत्त शिक्षा, लोकशक्ति का विकास और राष्ट्र की विभिन्न समस्याओ के हल के लिए अहिंसक शक्ति को संगठित करना आवश्यक है। इस अहिंसा शक्ति को विनोबा ने तीसरी शक्ति कहा है जो हिंसा शक्ति की विरोधी और दंड शक्ति से भिन्न है। उसका विकास तभी किया जा सकता है जब जनशिक्षण द्वारा समाज के विचार मे परिवर्तन लाया जाए और लोगो की आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास को जगाया जाये। इस लिये आचार्यकुल ने यह तय किया है कि किसी भी उद्देश्य की सिद्धि के लिए हिंसा का मार्ग न अपनाया जाय और न उसका समर्थन ही किया जाय।

आचार्यकुल को राष्ट्र निर्माण और नये समाज की स्थापना का सजग और सक्रिय प्रहरी बनना चाहिए। हाल ही मे मुख्य न्यायधीश की नियुक्ति के समय देश मे जो विषम परिस्थिति खड़ी हुई उसका आचार्यकुल ने तटस्थता से गहरा अध्ययन किया और उसका अभिमत भी प्रकाशित किया गया। इसी प्रकार हाल ही मे विश्वविद्यालयो के सम्बन्ध मे जो विधेयक विभिन्न विधान सभाओ मे पेश किये गये है या पारित हुए है उनके बारे मे भी आचार्यकुल का संतुलित अभिमत राष्ट्र के सामने शीघ्र प्रस्तुत होना चाहिए ताकि उसके द्वारा सही लोक शिक्षण और नागरिक जागृति का संचार हो सके।

अब समय आ गया है कि आचार्यकुल का संगठन सारे देश मे व्यापक ढंग से फैलाया जाए। देश की लोक शक्ति को जगाने के लिए और राष्ट्र की विकास योजनाओ को सही दिशा मे ले जाने के लिए यह बहुत जरूरी है। यह सम्मेलन आशा करता है कि देश की प्राथमिक माध्यमिक और उच्च स्तरीय शि
शिक्षण संस्थाओ के शिक्षक और आचार्यकु
की निष्ठाओ मे विश्वास रखने वाले साहित
कार, कलाकार, पत्रकार और समाज सेव
इस संस्था के सदस्य बनेंगे और राष्ट्र निर्माण
महत्वपूर्ण कार्य मे हाथ बटायेंगे। यह सम्मेलन आचार्यकुल के सभी सदस्यो व उसकी इकाइयो को इस दिशा मे तत्परता से प्रयत्नशील होने होने लिए आवाहन करता है और आशा एव विश्वास रखता है कि इस राष्ट्रीय कार्य में इन्हे जनता का प्रोत्साहन व सहकार्य प्राप्त होगा।

(पृष्ठ ५ का शेष)

केन्द्रों के अधिक सक्रिय होने, आर्थिक स्वावलम्बन तथा समन्वय पर जोर दिया। कार्यक्रम के बारे में सुझाव देते हुए उन्होंने कहा कि अन्याय और अनीति के खिलाफ आचार्यकुल में प्रतिकार का सामर्थ्य माना चाहिए। स्थानीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं पर निष्पक्ष वैज्ञानिक विश्लेषण का सिलसिला सतत् चलते रहना चाहिए। इसके अलावा राज्यों में शिक्षा सम्मेलन आयोजित हो और उनके लिए आचार्यकुल पहल करे जिनमें शिक्षा की समस्याओं पर खुलकर चिन्तन हो। न्यायपूर्ण मांगों के लिए सशक्त वातावरण बने और कुछ ऐसी स्थिति निर्मित हो कि शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाले सभी विषयों पर जनता और सरकार के बीच आचार्यकुल संपर्क का माध्यम सिद्ध हो।

जैनेन्द्रकुमार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि विद्वतजनों को केवल ज्ञान के हिमालय पर चढ़कर बैठने की अपेक्षा करुणापूर्ण हृदय से जनसाधारण की समस्यायें हल करने की दिशा में पहल करनी चाहिए।

तीसरे पहर की चौथी बैठक में साहित्यकार अनन्त गोपाल शेवडे की अध्यक्षता में सम्मेलन का समापन समारोह हुआ। जिसमें सम्मेलन में हुई चर्चाओं और निष्कर्ष का सार रूप निवेदन पूर्णचन्द्र जैन ने प्रस्तुत किया।

शेवडे ने अपने समापन भाषण में आचार्यकुल के व्यापक उद्देश्यों के प्रति समाधान प्रकट किया और कहा कि शासन शक्ति पर नैतिक व आध्यात्मिक अंकुश की परम्परा भारत में प्राचीनकाल से चली आ रही है। विनोबा ने जिस पंचशक्ति—जनशक्ति, सज्जनशक्ति, विद्वज्जनशक्ति, महाजनशक्ति और शासनशक्ति—में परस्पर विश्वास समन्वय और सामंजस्य का आवाहन किया है उसे आचार्यकुल उठा ले। परन्तु लगता है कि कि शायद विद्वानों का स्वयं का बुद्धिशक्ति पर विश्वास डावांडोल हो गया है और चारों ओर अंधकार दीखता है। मेरा निवेदन है कि अन्धकार को दोष देने की अपेक्षा स्वयं एक दीप प्रज्वलित करना अधिक श्रेयस्कर है।

अन्त में अपने आशीर्वाद प्रवचन में विनोबा ने कहा कि सज्जनशक्ति का संगठन आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। सभी पक्षों से मुक्त होकर विद्वान आचार्यकुल में सम्मिलित हो। राजनीतिक दलों में शामिल होकर राजनीति का शुद्धिकरण सम्भव नहीं है। राजनीति से दूर रह कर तटस्थ निरीक्षक की आवश्यकता स्वयं गांधीजी ने अनुभव की थी। इसलिए अन्त में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता भी छोड़ दी थी।

दुनिया में अहिंसा का विकास हो रहा है और सारे देश निकट आ रहे हैं। दो कोरिया, चीन, जापान, दो जर्मन, अमरीका रूस इत्यादि देशों में सबध सुधार शुभ चिन्ह है।

भारत में उपस्थित असंख्य समस्याओं से घबराने का कोई कारण नहीं है। यह बात ध्यान में आनी चाहिए भारत अनेक देशों का बना एक देश है।

सम्मेलन में देश के अलग-अलग राज्यों से लगभग ३५० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिसमें प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के शिक्षक, प्रधानाध्यापक, महाविद्यालयों के प्राध्यापक, प्राचार्य, पत्रकार, साहित्यिक व समाजसेवक सभी शामिल थे। इन प्रतिनिधियों के निवास की व्यवस्था आश्रम में बने नये भवनों तथा तम्बुओं में की गई थी। प्रतिनिधियों ने आश्रम की प्रातः एवं सायंकालीन सामूहिक प्रार्थना कार्यक्रमों में भी भाग लिया। कई प्रतिनिधियों ने व्यक्तिगत रूप से विनोबाजी से मुलाकात की।

महाराष्ट्र आचार्यकुल के संयोजक एवं स्वागतसमिति के मन्त्री मामा क्षीरसागर ने सबके प्रति आभार व्यक्त किया।

— महेन्द्रकुमार

(पृष्ठ ६ का शेष)

गये। मैंने कहा, तीन नहीं हुए मेहरबानी की बात है। तीन होते तो आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि संस्कृत में तीन बहुवचन है, दो के लिए द्विवचन है, कम से कम तीन टुकड़े होने दो। बाबा राह देखता है कि अनेक टुकड़े हो जाए। एक-एक पार्टी के अनेक टुकड़े हो जायं। पी० एस० पी० में हमारे खूब मित्र हैं। प० स० प० माने पशोपेश। उस पार्टी का झमेला कहीं खतम नहीं होगा। हमेशा चर्चा करते रहेंगे। पी० एस० पी०, एस० एस० पी०, इस तरह उनके एक के दो, दो के चार टुकड़े होने रहेंगे। दक्षिण भारत में यह प्रक्रिया चल रही है। धर्म के, भाषा के कारण टुकड़े हो रहे हैं। दक्षिण भारत के चार प्रान्तों में से एक प्रांत के यहां पर जीरो है। बाकी के तीन प्रांत के आठ आये हैं। एक प्रान्त का जीरो क्यों आया? क्योंकि कर्नाटक-महाराष्ट्र का झगड़ा चलता है इसलिए बाकी जो ताकत हमारी है, वहां के दंगे मिटाने में लग गयी। उनको यहां फुरसत है यहां आने की? इसलिए कर्नाटक में जीरो। क्योंकि टुकड़े हैं। कौन टुकड़े हैं? बेलगांव महाराष्ट्र में हो या कर्नाटक में। भारत में तो है ही। विश्व में भी है, और ये नक्षत्र मालिका है उसमें भी है। फिर भी सवाल है किस प्रान्त में हो, और सरकार का विषय है, सरकार देखेगी। परन्तु मेरा कहना था कि जीरो प्राप्त हुआ है इसका मुख्य कारण झगड़ा है। ऐसे अनेक झगड़े प्रान्तों प्रान्तों के बीच चलते हैं।

हमारी जिम्मेदारी है कि राजनीति में न पड़ें, नहीं तो हमारे भी टुकड़े होंगे, मैं गांधी जी के नाम से बोलता नहीं, क्योंकि आज जो उठता है सो गांधी का नाम लेता है। गुजरात के लिए खास कहना था, मेरी वाणी सब दूर पहुंचायें। तुकाराम होटेल, तुकाराम बीडी। तुकाराम महाराज का नाम बीड़ी के कारखाने के लिए क्यों? ऐसा मैंने पूछा। तो किसी ने कहा कि तुकाराम महाराज के नाम से कम पीयेंगे। बीड़ी के लिए तुकाराम महाराजका नाम लेने का अधिकार है तो गांधी का नाम लेने का अधिकार है ही। इस वास्ते बाबा गांधी के नाम से कहता नहीं। बाबा एक सद्विचार गुजरात के सामने रखता है। यह मेरा व्याख्यान खास करके गुजरात के वास्ते है। बाबा आशा करता है कि जितना महाराष्ट्र में आचार्यकुल का प्रचार है उससे गुजरात में आचार्यकुल का प्रचार ज्यादा होना चाहिए।

देश जल रहा है और वे बंसी बजा रहे हैं

गगन विहारी मेहता इस देश की पुरानी पीढ़ी के एक अत्यन्त सम्मान्य व्यक्ति हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त, अंग्रेजी और गुजराती के उच्च कोटि के लेखक, एक कुशल संचालक। (वे देश की शायद सबसे बड़ी और पुरानी जहाजरानी कम्पनी, 'सिंधिया स्टीम नैवीगेशन' के वर्षों तक व्यवस्थापक रहे) वे आजादी की लड़ाई के दिनों में देश के उन थोड़े से ऊँचे तबके के लोगों में से थे जिनमें राष्ट्रीय भावना थी और जो अंग्रेज शासकों की नाराजी मोल लेकर भी सदा राष्ट्रीयता के प्रबल समर्थक रहे। स्वतन्त्रता के बाद वे अमेरिका में इस देश के राजदूत और भारतीय फाईनेंस कार्पोरेशन के अध्यक्ष जैसे जिम्मेदार पदों पर रहे।

यह सब पृष्ठभूमि बताने की जरूरत इसलिए हुई कि उन्होंने अभी हाल ही में अंग्रेजी दैनिक 'टाइम्स ऑफ इण्डिया' में जो पत्र लिखा है (२२ जनवरी- दिल्ली संस्करण) उसकी गंभीरता हमारे और देश के शासकों के ध्यान में आये। गगन विहारी मेहता की भावनाओं को न तो किसी विरोधी पार्टी के नेता की बात कह कर उसे स्वार्थ प्रेरित कहा जा सकता है, न किसी गैर-जिम्मेदारी व्यक्ति की बात कह कर उसकी अवहेलना की जा सकती है। श्री गगन विहारी के 'टाइम्स' में प्रकाशित पत्र का हिन्दी अनुवाद हम ज्यों का त्यों इस उद्देश्य से नीचे दे रहे हैं ताकि देश की वर्तमान परिस्थिति की गंभीरता और वास्तविक स्थिति ध्यान में आ सके।

इस पत्र का अन्तिम वाक्य खास तौर से ध्यान में देने योग्य है, क्योंकि देश की सर्वोच्च नेता, हमारी प्रधान मन्त्री अगर देश के करोड़ों लोगों की वास्तविक स्थिति से अनभिज्ञ नहीं होतीं तो शायद अभी हाल ही के अपने एक भाषण में वे यह कर आज की परिस्थितियों का बचाव करने की कोशिश नहीं करतीं कि सिनेमाघरों की खिड़कियों पर टिकट लेने वालों की होड़, चाय-पान की दुकानों पर भीड़ आदि बातें यह जाहिर करती हैं कि बावजूद कठिनाइयों के देश की जनता पहले से अधिक खुशहाल है। अनभिज्ञ न होने पर इस प्रकार की बात कहने का जो फलित होता है उसकी कल्पना हमारी प्रधान मन्त्री जैसी सम्मान्य और जिम्मेदारी व्यक्ति के लिए करना उचित नहीं होगा।

श्री मेहता का पत्र इस प्रकार है

"महोदय,

क्या आगामी गणतन्त्र दिवस (२६ जनवरी) के अवसर पर हम शान-शौकत और तड़क भड़क के प्रदर्शन से बाज नहीं आ सकते? रोम के बादशाह अपनी प्रजा के लिए "रोटी और सर्कस' की व्यवस्था किया करते थे (ताकि उसका रंजन होता रहे और वह सर न उठाये—अनुवादक) चूंकि हमारे शासक रोटी नहीं दे सकते (उन लोगों को भी जो खरीद सकते हैं उन बहुसंख्यक लोगों की तो बात छोड़ दीजिये जो खरीद नहीं सकते हैं), इसलिए अच्छा होगा वे ये 'सर्कस' दिखाना भी छोड़ दें।

सरकार द्वारा हर साल जनता को अपनी (सरकार की) सफलताओं से प्रभावित करने की कोशिश करने की आवश्यकता नहीं है। वे अपने दैनन्दिन जीवन में उनसे अच्छी तरह परिचित हैं। साधारण आदमी एक ओर बड़ी संख्या में उद्योगपतियों, व्यापारियों और दुकानदारों की लालच और बेईमानी तथा दूसरी ओर सरकार की कार्यकुशलता के अभाव और उसके भ्रष्टाचार की चक्की, इन दो पाटों के बीच पिस रहा है। उसका मनोरंजन करने की आवश्यकता नहीं है, आवश्यकता है उसका पेट भरने की।

बहरहाल, अगर उत्सव मनाना ही तो मोटर गाड़ियों पर परेड निकाल कर बहुमूल्य तेल बेकार खर्च करने के बजाय क्यों नहीं सेना के घुड़सवारों और पैदल दस्तों को 'मार्च' कराई जाये? क्यों नहीं विद्यार्थियों और नौजवान लड़के-लड़कियों की ट्रकों पर 'झांकियां' निकालने के बजाय उन्हें पैदल चलायें (बजाय इसके कि वे हड़ताल करने या आवश्यकता की चीजों के लिए लम्बी कतारों में खड़े रहें?)

देश के अमीर लोग शादियों, स्वागत-समारोहों और विलासितापूर्ण बड़ी-बड़ी होटलों में भोजों के अवसर पर जो प्रदर्शनकारी खर्च और अपव्यय करते हैं वह तो अपने आप में बुरी चीज है ही, पर क्या अधिकारी लोग मित-व्ययिता या कमर-कसने का उपदेश देने के साथ-साथ उस पर कुछ अमल नहीं कर सकते?—बिना जीवन के अपने तौर-तरीकों को बदले या बिना उत्तर प्रदेश के चुनावों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले, जो कि नई दिल्ली के शासकों के सामने शायद आज की केन्द्रीय समस्या है?

आज देश में अराजकता या अव्यवस्था की स्थिति के बावजूद (शासकों में) जो तत्परता का अभाव और अनुभूति शून्यता नजर आ रही है उसे जब देखते हैं तो इंग्लैंड की कन्जर्वेटिव पार्टी के एक सदस्य की यह उक्ति याद आ जाती है जो उसने हेराल्ड विल्सन (ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमन्त्री) के बारे में कही थी कि "हमारे शासकों में और नीरो (प्राचीन रोम का विलासी राजा जिसके बारे में यह कहा जाता है कि जब रोम जल रहा था तब वह बंसी बजा रहा था—अनु०) में यह अन्तर है कि नीरो जब बंसी बजा रहा था तो उस समय उसे कम से कम यह तो मालूम था कि रोम जल रहा है।"

—सिद्धराज ढड्ढा

उत्कल में उपवासदान

आलेख पात्र, सबलपुर, विनायक, राउरकेला, तेजनारायण तिवारी, सुन्दरगढ़, मोहम्मद बाबी, कोरापुट। कटक रमा देवी चौधरी, श्रीमती अन्नपूर्णा महाराणा, मगल सेन, सावित्री मोहन्ती, सरोजी देवी, सुरेन्द्र मोहन्ती, निर्मलचन्द्र राय, सच्चिदानन्द मोहन्ती, विनोद माहन्ती, रामचन्द्र प्रधान, कमलकुमार सेन, जोगेशचन्द्र राउत, श्रीमती सावित्री पाल।

टिप्पणी

हम पशुओं से बदतर हैं

तीन वर्ष पहले बलगेरिया में १०८० राजकीय फार्म और सहकारी समितियों का नवीनीकरण हुआ। उनके स्थान पर कुल १७२ कृषि-औद्योगिक संगठनों का निर्माण हुआ था, जिनका औसत क्षेत्रफल २०,००० हेक्टर (६४,२४८ एकड) ही है। सब से छोटी इकाई १६,००० हेक्टर की है, जिस पर १२०० मजदूर काम करते हैं। उन मजदूरों को बहुत कम मजदूरी मिलती है, लेकिन उन्हें सामाजिक सेवाएं भरपूर मिलती हैं तथा खुराक में भी उन्हें सहूलियतें मिलती हैं। स्वास्थ्य और शिक्षा की अच्छी सहूलियतें मिलती हैं। वृद्धों को पेंशन भी मिलती है। कुछ गांवों में गरीबी काफी रहती है, लेकिन यान्त्रिक प्रगति को तेजी से आगे बढ़ाने का प्रयत्न चल रहा है। दफ्तर सब बहुत साधारण कच्चे मकान के हैं, लेकिन सामान पूरे आधुनिक हैं। यन्त्रीकरण के सहारे से, दफ्तरों में बीस कारकून पूरे १०० लोगों का काम आसानी से पूरा कर लेते हैं। लेकिन चूंकि सब मजदूर प्रायः अशिक्षित रहते हैं, इसलिए कृषि के यन्त्रों का उपयोग वे कम कर पाते हैं।

बलगेरिया में फल और तरकारी का उत्पादन एक मुख्य कृषि उद्योग है। लेकिन अभी उनका निर्यात होने की वजह से उनकी काफी कमी भी रहती है।

लेकिन इस केन्द्रीयकरण के साथ ही साथ, फिर भी अभी तक कुछ छोटे पैमाने के कृषि सहकारी संघ काम कर रहे हैं। ये ६.१ प्रतिशत कुल कृषि भूमि में काम करते हैं। १९७० में राष्ट्र भर के उत्पादन में २२.८ प्रतिशत गोश्त, १५.४ प्रतिशत दूध और ३०.७ प्रतिशत अण्डों का उत्पादन उन छोटे कृषि संघों ने किया था। ये मानते हैं कि यदि सरकार की तरफ से उन्हें उचित प्रोत्साहन और सहायता मिलती तो ये अपना उत्पादन और २०/३० प्रतिशत बढ़ा सकते थे। लेकिन अधिकारी ज्यादातर उनके काम में सहायक नहीं, बाधक ही हो जाते हैं।

इन आंकड़ों से, ऐसी छोटी कृषि की इकाईयों की उपयोगिता स्पष्ट सिद्ध होती है, जिनमें मजदूरों का अपने उत्पादन से सीधा सम्पर्क होता है। ये आजकल के 'भीमकाय' संगठनों की उपयोगिता पर शंका डालती हैं।

बलगेरिया की सरकार घटती हुई जन-संख्या से परेशान है। लोगों को ज्यादा सन्तान पैदा करने का प्रोत्साहन मिले, और जचकी के समय छुट्टी तथा अन्य काफी सहूलियतें देने की व्यवस्था कर रहे हैं।

हम पशुओं से बदतर हैं

विज्ञान के युग में हम अनुभव करते हैं कि हर एक वैज्ञानिक आविष्कार का उपयोग सत्ता और सम्पत्ति के लाभ के लिए होता है। इसके साथ-साथ जहां एक तरफ लोग इस भ्रम में पड़े हैं कि हम सभ्यता की पराकाष्ठा तक पहुंच रहे हैं, वास्तव में, हर प्रकार से हम पशुत्व की ओर बल्कि पशुत्व से नीचे भी गिर रहे हैं!

इसका एक प्रमाण, कैद में अपने दुश्मनों को सताना या राजनैतिक कैदियों को सता कर उनसे 'कन्फेशन' लेने की बढ़ती हुई प्रथा है।

हाल ही में चिली की राज्यक्रान्ति में, सेन्टियेगो के राष्ट्रीय स्टेडियम में जिस प्रकार बन्दियों को सता-सता कर मारा गया था, वह अवर्णनीय है। उसका वर्णन पढ़ कर रोंगटे खड़े होते हैं।

हाल ही में तुर्की की साम्यवादी पत्रिकाओं ने सताने की प्रक्रिया के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया और जनता के सामने काफी तथ्य प्रकट किये, लेकिन सरकार कहती रही कि अब उन्होंने राजबन्दियों को सताना छोड़ दिया है। उन्होंने साबित किया है कि आज तक भी 'बस्टिने दो' का उपयोग हो रहा है, बिजली 'इलाज' होता है, लोगों के नाखूनों को जलाया जाता है और कई प्रकार की चोटें लगायी जाती हैं।

एक महिला को जमीन पर गिरा कर उसके हाथ खम्भों पर बांध दिये गये। उसके पांव के अंगूठे पर एक नंगा बिजली का तार बांध कर उसके दूसरे सिरे को एक छोटी लकड़ी पर बांध कर उस लकड़ी को उसकी योनी में ठूस दिया गया। कहते हैं कि पुरुषों को इससे बुरे ढंग से सताते हैं लेकिन अभी तक उसका पूरा तथ्य नहीं खुल पाया है। अब तुर्की की सरकार ने इस सिलसिले में एक पूछताछ आयोग कायम किया है।

इस प्रश्न पर पूछताछ करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय समिति की स्थापना हुई थी। पहले यूनेस्को ने उन्हें अपने पेरिस स्थित मकान का एक हिस्सा किराये पर देना स्वीकार किया था लेकिन बाद में यूनेस्को के प्रभावशाली सदस्यों ने इस पर एतराज किया और उन्हें एकदम निकाला गया। दूसरा मकान मिलने में उन्हें काफी कठिनाई हुई। बाहर से फिल्मों के आयात में भी उन्हें काफी कठिनाई होती है। इसी प्रकार बड़े राष्ट्र उनके काम में बाधा पहुंचा रहे हैं। इसका मतलब यह है कि ये खुद इस सताने की प्रथा को मान्यता देते हैं और उसका उपयोग भी करते हैं।

अधिकारी अब कैदियों को सताने के लिए नई पद्धतियों का आविष्कार कर रहे हैं। काफी प्रयोग पावलोव के मनोवैज्ञानिक प्रयोगों पर आधारित हैं। पाया जाता है कि लोगों से कन्फेशन करवाने में ये पद्धतियां बहुत ज्यादा जल्दी सफल होती हैं और बाहर के सुनने वाले लोगों को ये इतनी बुरी नहीं मालूम होती हैं। अलस्टर में तथा गाईअना में ब्रिटेन ने उनका काफी उपयोग किया है। शायद उनके आविष्कार सबसे आधुनिक माने जाते हैं। कैदी को एक दिशा देने के लिए इलेक्ट्रानिक ध्वनियों का उपयोग होता है। लोगों को चौबीस घंटों तक जगाये रखते हैं—उन्हें बिल्कुल सोने नहीं देते। लोगों को चौबीसों घंटे खड़ा रखते हैं उन्हें बैठने या लेटने नहीं देते हैं। सबसे सफल तरीका है, पूरे सिर पर एक काली टोपी बांधना। कहते हैं इसमें चौबीस घंटे के अन्दर आप कैदी से जो कुछ कहलवाना चाहते हैं, कहलवा सकते हैं।

(शेष पृष्ठ १३ पर)

बिना टिप्पणी के

चुनावी नक्कारखाने में तूती की आवाज

चुनाव की चर्चा चतुर, चालाक और घरफड़े लोगों के चित्त में चहल-पहल ला देती है। भोजन-भाषण, मोटर-माईक, नारा-नशा, पोस्टर-पर्चा, सन्दूक-बन्दूक की सम्मिलित शक्ति के बावजूद भारत के सर्व-सामान्य लोगों के लिए इसने कोई आकर्षण पैदा नहीं किया। पचास-साठ प्रतिशत लोग किसी प्रकार पोलिंग बूथ तक पहुंचाये जाते हैं। इनमें से चौथाई व्यक्तियों के भी हृदय में कोई स्वाभाविक कौतूहल नहीं, चन्द लोगों का तमाशा है, खाने-पीने का अच्छा अवसर मात्र। हां सर्वोदय-समाज में सर्व-सामान्य से अधिक स्पन्दन दीखता है। सत्ता की राजनीति से दूर रहने का भले ही संकल्प लिया हो, पर चुनाव की चटकदार चाट अन्त मन को आन्दोलित कर ही देती है। दर्शक-दीर्घा में बैठे बूढ़े खिलाड़ी का भी पांव गोल के समीप गेंद जाते ही फड़क जाता है।

अत्यन्त नफरत है राजनीति से, पचास-इकावन की चुनाव नीति निहायतः गलत मानी जाती है। लोक-तन्त्र में लोक हत्या देखकर मर्माहत होते हैं। वर्तमान के प्रति विरोध, घृणा, उपेक्षा सब स्वीकार है, पर समाज तो यह देखना चाहेगा कि सर्वोदय सेवकों का यह दग्ध-चित्त भावुक विकल्प प्रस्तुत करने में कितना सफल हुआ है? लोक-प्रतिनिधि तक की बात तो मात्र शब्द-शक्ति को पुष्ट करती है; धरती पर कितने गांवों में गूंज उठी—लोक शक्ति की? कोई पांच-दस गांवों का भी एक क्षेत्र होता जहां नागरिक पद-लोलुप प्रत्याशियों से यह पूछ सकते कि आपने किस त्याग, सेवा और निष्ठा की पूंजी लेकर अपने को हमारे इस कीमती मत का हकदार माना है? इस लोक-पुरुषार्थ के आधार के अभाव की कोई चिन्ता नहीं, पर पूरे समाज को सीख देने की हवाई-योजना बन जाती है। रेड-क्रास का बिल्ला लगाकर युद्ध में शरीक होना रण-नीति का विरोध नहीं कहा जा सकता?

शान्ति का सच्चा प्रयत्न, युद्ध का अवसर ही न पैदा होने देना है।

सहरसा से अधिक सर्वोदय के नेताओं का ध्यान उत्तर-प्रदेश के चुनाव की ओर है। गत चुनावों में तो विशेषांक निकलते देखा, लोक-शिक्षण के नाम पर व्यंग-चित्रों के द्वारा चुनाव की बुराईयों पर प्रहार किया गया। इतना उत्साह इतनी तैयारी!! जितनी कभी अपनी विधायक पीठिका प्रस्तुत करने में नहीं दीखी। उस वैष्णव की कथा साकार होती है जो अपनी नियम-निष्ठा से अधिक सामने के मकान में रहने वाली वेश्या की विलासिता से चिन्त रहा करते थे।

बात कुछ सामान्य समझ के बाहर मालूम होती है। सर्वोदय के लोग कहते हैं—"अच्छे उम्मीदवार को वोट दें।" मतदाता सोचता है कि हमारे लिए अच्छा आदमी कौन? जिसने धींगा-धांगी करके इलाके की सड़क पर रोड़े बिछवा दिये, जिसके सामने सरकारी अधिकारी सरकस के बन्दर की तरह नाचते हैं या वह सज्जन व्यक्ति जो शील, संकोच और सिद्धान्त की सीमाओं में सिमटे-सिमटे रहता है? मतदाता यह जानना चाहता है फाग के राग-रंग में पुजारीजी कौन सी भूमिका निभायेंगे? बंगला देश के मुक्ति मोर्चे पर विनोबा क्या काम आते? सरकार का सारा कारोबार घेराव, पथराव से चल रहा है। वह पत्थर भी जब नाक के नथने पर प्रहार करता है, तभी सरकार का ध्यान जाता है। जंगल का न्याय, जिसकी लाठी उसी की भैंस। कोई भला आदमी नक्कार-खाने में तूती की आवाज लगाने का दुःसाहस करके उस ओर कदम उठाना चाहता भी हो तो उस पर ममता कर रोकना चाहिए, समझाना चाहिए। सज्जनों की सेवा के अभाव में समाज चेतना-शून्य बना हुआ है। ऐसे भ्रमित सज्जन व्यक्ति के प्रति करुणा तथा समाज की वास्तविक सेवा, योग्य लोगों के दामन को राजनीति से बचाना है। भला आदमी हारकर 'हरिराम' लेता हुआ वापस आयेगा तो वह मानेगा कि दिनभर का भटका हुआ शाम को घर लौट गया।

चिन्ता व्यक्त की जाती है कि दादा कृपलानी तथा श्री ढेबर जैसे लोगों की शक्ति संसदीय प्रणाली में नाकामयाब सिद्ध हुई सर्वोदय सेवकों की निष्ठा में उम्मीदवारी क दोष माना गया है। सत्ता की राजनीति दूर रहने की प्रतिज्ञा ली जाती है। सर्वोदय विचार इसकी शुद्धि में आस्था नहीं रखता, इसका विकल्प प्रस्तुत करना चाहता है। सर्वोदय के इस विचार का मेल चुनाव की वर्तमान पद्धति को शुद्ध करने के प्रयत्न से मेल नहीं खाता। सत्ता की राजनीति और वर्तमान चुनाव-प्रणाली के मौलिक दोष हैं, इसकी जो खोलाएं देखने को मिलती हैं, वे अस्वाभाविक नहीं स्वभाविक हैं। घी डालकर आग की दाहकता समाप्त करने का प्रयत्न करना। ऐसे अस्वाभाविक प्रयत्न में पड़कर साहक शक्ति का अपव्यय होता है। लोक-परिहास होता है तथा सिद्ध होता है सर्वोदय समाज का छिछलापन। विधायक कार्यक्रम की एकाग्रता नष्ट होती है।

निर्मल चन्द्र
अध्यक्ष, सर्वोदय मंडल, मुंगेर

उपवादान
(प्रदेशवार संख्या)

प्रदेश	उपवास-दान
आन्ध्र	७
उत्कल	१७
उत्तर प्रदेश	८९
केरल	१
कर्नाटक	५
गुजरात	९६
तमिलनाडु	३
पंजाब	७
प० बंगाल	१२
बिहार	२५
मध्य प्रदेश	३७
महाराष्ट्र	६७
राजस्थान	२६
हरियाणा	८
दिल्ली	४
विदेश : स्वीडन से—	१
कुल	४०५

सहरसा शिविर से

हम बीज बो रहे हैं

२५ जनवरी १९७४ को सहरसा के जिला स्कूल मे ग्रामस्वराज्य के मुख्य एवं अन्तिम अभियान मे भाग लेने वाले कार्यकर्ताओ के दो दिवसीय शिविर का उद्घाटन जयप्रकाशजी ने किया। जयप्रकाशजी ने कहा कि आज देश मे विस्फोटक स्थिति पैदा हो गयी है। अन्न का अभाव, भ्रष्टाचार महगाई, बेकारी और वह भी शिक्षितो की बेकारी के कारण लगता है कि डेढ-दो वर्षों मे देश मे विस्फोट न हो जाये। देश टूट रहा है। देश को सरकार उबार सकती है इसमे शंका प्रकट करते हुए आपने कहा कि जनता चाहे तो देश को अवश्य उबार सकती है। जयप्रकाश जी ने कार्यकर्ताओ से कहा कि इन समस्याओ के सदर्भ मे ग्रामस्वराज्य का विचार लोगो के सामने प्रस्तुत किया जाये।

ग्रामस्वराज्य विचार की चर्चा के साथ गाव की कुछ समस्याओं की ओर लोगो का ध्यान दिलाने की बात भी आपने कही। जैसे मजदूरी का प्रश्न, वास गीत का पर्चा, आवास, पीने का पानी आदि। ग्राम सभा को सक्रिय करने की बात उन्होंने बतायी और कहा कि ज्यादा से ज्यादा लोगो को ग्रामसभा की बैठको मे आना चाहिए। मुसहरी के लिए तैयार किये गये ग्यारह सकल्पो का जिक्र करते हुए आपने कहा कि ग्रामसभाओ मे ये सकल्प कराने चाहिए। सहरसा जिले के बाहर के कार्यकर्ताओ से उन्होने अपेक्षा की कि वे जिस प्रखड मे इस समय काम करें उससे आगे भी सपर्क बनाये रखें। क्योंकि सम्पर्क टूट जाने से किया कराया काम भी समाप्त हो जाता है।

सिद्धराज जी की अध्यक्षता मे शिविर आरम्भ हुआ। महेन्द्र नारायण जी ने शिविर मे आए लोगो का स्वागत किया। विद्यासागर भाई ने कहा कि सहरसा मे सन् ७० से ग्रामस्वराज्य का काम शुरू हुआ है। इस दरमियान अनेक प्रकार के प्रयोग किये गये। अनुभवो के आधार पर जिले के चार प्रखंडो मे काम को समेटा गया। सहरसा के काम से हमे निराशा नही हुई। अनुभव आया कि यह कार्य समय साध्य है। लम्बे समय तक कार्य करने के लिए धीरज और सातत्य की आवश्यकता है।

बिहार सरकार के राजस्व मत्री लहटन चौधरी आए हुए थे। उन्होने कार्यकर्ताओ का सम्मान करते हुए सहरसा मे किए कार्यों के लिए बधाई दी। उन्होने कहा कि भूदान से बिहार मे साढे चार लाख एकड जमीन बाटी जा चुकी है। यद्यपि सरकार की ओर से अभी प्रयास हो किया जा रहा है। सरकारने सीलिंग से दस लाख एकड जमीन बाटने का सोचा था। बाद मे पाच लाख एकड हुआ और आज राजस्व मत्री होने के बावजूद उन्होने कहा कि मैं इस स्थिति मे नही हू कि कह सकू कितनी जमीन बटेगी। स्थानीय लोगो से उन्होने अपील की कि वे अपनी शक्ति इस अभियान मे लगायें और बाहर से आए सर्वोदय कार्यकर्ता उनको प्रेरणा दें।

सहरसा जिला सर्वोदय मडल के अध्यक्ष तपेश्वर जी ने पूर्व तैयारी की जानकारी प्रस्तुत की। अब तक सहरसा मे जो कार्य हुए वे आकडो मे निम्न प्रकार हैं :

५८५ ग्रामसभाए बनी। १५५४ बीघा कट्ठा प्राप्त हुआ। १०४४ बीघों का वितरण हुआ। १३५ शान्ति सैनिक बने १७०० ग्राम शान्ति सैनिक हैं। ४६ तरुण शान्ति सेना केन्द्र हैं। ४०२ तरुण शाति सैनिक हैं। २३ आचार्यकुल केन्द्र हैं।

सहरसा के कवि लल्लन ने अपनी कविता पेश की। जहा पर चाह होती है वहा पर राह होती है। रात को साढे सात बजे पुन बैठक हुई। बिहार भूदान यज्ञ कमेटी के मन्त्री श्याम प्रकाश जी ने इस जिले की भूदान की स्थिति की जानकारी दी। आपने बताया कि ६००० एकड जमीन का ब्यौरा प्राप्त है, जिस के वितरण की व्यवस्था इस अभियानके दौरान की गयी है। यह काम भूदान कमेटी के २६ कार्यकर्ता ४ टोलियो मे बटकर करेंगे। ५००० एकड़ जमीन का ब्यौरा अभी तक प्राप्त नहीं है। ब्यौरा प्राप्त करने की कोशिश की जायेगी ब्यौरा प्राप्त कराने मे सरकारी अधिकारी और कर्मचारी मदद करें इसके लिए सरकार की ओर से आदेश हो चुका है। निर्मली और मरौना प्रखडो मे गलत वितरित १००० एकड भूमि का पुर्नवितरण किया गया। इन अभियानो मे कमेटी के अध्यक्ष और मत्री में से कोई एक बराबर रहेंगे। कमेटी का एक इन्सपेक्टर भी रहेगा।

२६ जनवरी को सुबह नौ बजे तीसरी बैठक शुरू हुई। यह बैठक खुली चर्चा के लिए थी। निर्मला बहन ने चर्चा शुरू की। उन्होने सहरसा के ग्रामस्वराज्य अभियान से निष्पन्न अनेक आयामो की ओर ध्यान दिलाया और कहा कि हम कार्यकर्ता साथी एक लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग खोजन के काम मे लगे हुए हैं। मार्ग खोजन मे विभिन्न पद्धतिया और विभिन्न प्रयोग हो सकते हैं। सहरसा के काम को दो दृष्टियो से देखना चाहिए पहली दृष्टि यह कि सहरसा से क्या मिला और सहरसा मे क्या हुआ ? पहली दृष्टि मे हम देखेंगे तो पायेंगे कि सहरसा ने आगे चलने की दिशा दी, प्रेरणा दी और कार्य की पद्धति मिली। इसके अलावा आगे की कार्य की गहराई दी और वह तपस्या की ओर हमे ले गया। कई कार्यकर्ता साथियो ने तपस्या की। बाबा ने अभिध्यान और धीरेन भाई ने हमे प्रत्यक्ष मार्गदर्शन किया। विकास कार्य की चर्चा करते हुए आपने कहा—कि महत्व की चीज है विकास और निर्माण के कार्य को हम किस दिशा म ले जा रहे हैं। प्रान्त के प्रति अपनी आशा प्रकट करते हुए निर्मला बहन ने कहा कि हम बीज बोने का कार्य कर रहे हैं और बीज बोने के बाद फल के लिए सब्र की आवश्यकता होती है। आर्थिक विकास के कार्यक्रमो से स्वाश्रयिता, स्वावलम्बन, परिवार भावना, ग्रामभावना और नैतिक उत्थान की निष्पत्ति होनी चाहिए। आपने इस अभियान को राष्ट्रीय मोर्चे का सर्वोत्तम अभियान करते हुए कहा कि इस से ज्यादा से ज्यादा स्थानीय साथी निकलने चाहिए। यह इस अभियान की महत्वपूर्ण कसौटी है।

अनुमति से चर्चा आगे बढ़ी। अनेक कार्यकर्ता साथियो के अलावा स्थानीय ग्रामीण

(शेष अगले पृष्ठ पर)

जौनसार बावर में पदयात्रा

जनवरी ६ को अशोक आश्रम कालसी (जिला देहरादून उ० प्र०) से एक पदयात्रा टोली इन क्षेत्रों में व्याप्त वेश्यावृत्ति आदि समस्याओं का अध्ययन करने के लिए रवाना हुई। टोली में उत्तराखंड सर्वोदय मंडल के संयोजक आनन्दसिंह बिष्ट, बुद्धदत्त, सुरेन्द्रदत्त भट्ट, भवानी दत्त, गंगा प्रसाद बहुगुणा, घनश्याम रतूड़ी, हिमाचल प्रदेश के रतन चन्द ओझा तथा योगेश चन्द्र बहुगुणा शामिल हैं। राधा भट्ट व मंगला उपाध्याय आदि साथी यात्रा के दौरान किसी पड़ाव पर सम्मिलित होंगे। पदयात्रा एक माह तक चलेगी जिसमें देहरादून, टिहरी और उत्तरकाशी जिलों के चकरौता व कालसी, जौनपुर-नौगांव व पुरोला विकास खंडों का अध्ययन किया जायेगा। संभव है कि अध्ययन के बाद इन विकास खंडों को सघन क्षेत्र मान कर काम शुरू किया जाये। एक माह की पदयात्रा में ३२ गांव से सम्पर्क किया जायेगा।

दिसम्बर २२, १९७३ को कुछ साथियों की बैठक, दिव्य जीवन संघ शिवानन्द नगर, ऋषिकेश में हुई थी, जिसमें मुख्य रूप से जौनसार बावर व उसके आसपास के क्षेत्रों के बारे में विस्तृत विचार विनिमय हुआ। इन क्षेत्रों के बारे में पहले भी कई बार सभा सम्मेलनों में विचार होता आया है। इस बैठक में भी इन विषयों पर गम्भीरता पूर्वक बातचीत हुई और कुछ निर्णय लिए गये। स्वीकार किया गया कि इन क्षेत्रों में स्त्रियों की समस्या असाधारण है और उसका संबन्ध दूसरी कई समस्याओं से जुड़ा हुआ है। इसके साथ ही इस क्षेत्र में सामुदायिक सहजीवन के सूत्र अभी भी सुदृढ़ हैं और ग्राम स्वराज्य के प्रयोग के लिए यह क्षेत्र अनुकूल है। बैठक की राय थी कि इन क्षेत्रों में प्रत्यक्ष काम की कोई भी योजना सुझाने से पहले यह आवश्यक प्रतीत होता है कि इन क्षेत्रों का सामाजिक, आर्थिक व शैक्षणिक दृष्टि से प्रत्यक्ष अध्ययन किया जाये ताकि वास्तविक स्थिति का सही-सही मूल्यांकन हो सके।

इस काम के लिए एक मास की पदयात्रा का निश्चय किया गया। पदयात्रा का उपयुक्त समय माघ का महीना (जनवरी व फरवरी) माना गया क्योंकि इसी महीने में यहां 'मरोज' (पशुबलि) बड़े पैमाने पर होती है और इसी प्रथा के कारण लोगों के साथ आसानी से सम्पर्क किया जा सकता है। प्रथा के परिणामस्वरूप गरीब परिवारों के लोग बकरे खरीदने के लिए अपने जेवर, बर्तन और खेत भी बेच देते हैं और शराब व मांसाहार का बड़े पैमाने पर खान-पान चलता है।

पदयात्रा की समाप्ति पर सभी साथी मिलकर अपने अनुभवों का आदान-प्रदान करेंगे और सभी सम्बन्धित संस्थाओं व सहयोगियों की सम्मिलित शक्ति से कार्य-योजना निर्धारित की जायेगी।

—कृष्णमूर्ति गुप्त

→

लोगों ने भी चर्चा में भाग लिया। बंगाल के वयोवृद्ध नेता चारु बाबू ने ग्रामसभाओं को सक्रिय बनाने के लिए लोगों के दिल और दिमाग को जगाने की बात कही। इसके लिए अन्दर और बाह्य परिस्थिति को समझने की आवश्यकता उन्होंने बतायी। ललन ने कहा कि इस अभियान के बाद कार्यकर्ता का क्या रोल होगा इसे प्रदेश को निश्चय करना चाहिए।

बाबूराव चन्दावार ने कहा कि हम बना बनाया कोई काम लेकर गांव में न जायें। ग्रामस्वराज्य का चित्र स्पष्ट करें और ग्रामीणों को निश्चय करने दें। उन्होंने कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की बात भी कही। उनकी राय में नेताओं से मार्गदर्शन की अपेक्षा न रखकर स्वयं मार्ग खोजने की कोशिश करनी चाहिए। रामजी भाई ने जनता की बुद्धि का जागृति करने पर भी बल दिया।

इसके बाद अभियान में चुने गये प्रखंडों और टोलियों की जानकारी दी गयी। सघन अभियान के लिए निम्नलिखित १२ प्रखंड चुने गये :

१. महिषी २. रानीगंज(?) ३ सिमरनपुर(?) ४ निर्मली ५ घोघा(?) ६ सिरौल(?) ७ भवानीपुर ८ नौहट्टा ९ मधेपुरा १० त्रिवेणी गंज ११ छातापुर १२ किशुनगंज। कुल कार्यकर्ता २६० हैं।

शिविर का समारोप जयप्रकाश जी ने किया। आपने आशा प्रकट की कि जिन १२ प्रखंडों को सघन कार्य के लिए चुना गया है उनमें आप यह दिखा सकेंगे कि जितना कार्य सरकार ने नहीं किया उससे ज्यादा काम आपने किया है। ग्राम में शोषण मुक्ति और शासन मुक्ति आनी चाहिए। लोग अदालत से मुक्त हों। ग्रामस्वराज्य, प्रखंडस्वराज्य, जिला स्वराज्य, राज्य स्वराज्य, एक-एक मंजिल के क्रमिक विकास की चर्चा करते हुए आपने कहा कि विधान सभा के अगले चुनाव में ग्राम सभा के उम्मीदवार इन बारह प्रखंडों के चुनाव क्षेत्रों से खड़े किए जाने चाहिए।

समारोपीय भाषण के बाद प्रखंडों के संयोजकों को तिलक लगाया गया और उन्हें प्रखंड के कागजों का थैला जयप्रकाश जी द्वारा प्रदान किया गया।

—कृष्णकुमार

(पृष्ठ १० का शेष)

कहते हैं कि सबसे पहले, पावलोव की खोजों की बुनियाद पर रूस में इन प्रयोगों का उपयोग प्रारंभ हुआ, लेकिन अब ब्रिटेन उन्हें अपनी पराकाष्ठा तक पहुंचा रहा है।

पेरिस की एक संस्था दुनिया का आवाहन करती है, कि हम सब लोगों को मिल कर सताने की पद्धति का विरोध करके इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि दुनिया से इस पद्धति का अस्त हो जाये।

लेकिन वास्तव में यह पद्धति अपने आप में एक समस्या नहीं है—यान्त्रिक युग में मानव प्रकृति से और अपने स्वाभाव से दूर हो रहा है -यह उसी बात का एक लक्षण मात्र है। हमें जड़ में जाकर समस्या का हल करना ही पड़ेगा—इन सब लक्षणों से सबक सीख कर इसके लिए हमारी योजना बननी चाहिए।

—सरला देवी

झाझा में प्रखंड सभा-वार्षिकोत्सव

बीस जनवरी, ७४ को प्रखण्ड स्वराज्य सभा झाझा का वार्षिकोत्सव सादे ढंग से महात्मा गाधी हाई स्कूल झाझा के प्रागण मे सम्पन्न हुआ। 'ग्राम स्वराज्य' सम्मेलन के पूर्व ग्रामदानी ग्रामसभाग्रो के प्रतिनिधियो का विशाल शांति जुलूस झाझा शहर की मुख्य सड़को पर निकाला गया।

सम्मेलन मे प्रखण्ड स्वराज्य सभा के मन्त्री मोहम्मद इसहाक ग्रली ने अपने प्रतिवेदन में साल भर के कार्यों की समीक्षा करते हुए आगे के काम की योजना प्रस्तुत की। उसके बाद गाव के मुखिया एव साधारण लोगो ने बडे ही सहज ढग से अपने-अपने गावो मे ग्राम सभा द्वारा किये गये कार्यों का ब्यौरा दिया।

मुख्य ग्रतिथि के पद से भाषण करते हुए श्रीकृष्णसिंह भूतपूर्व विद्युत मन्त्री बिहार ने वर्तमान परिस्थिति मे ग्रामदान की आवश्यकता बताते हुए प्रखण्ड सभा के प्रति मगल कामना की। उन्होंने कहा कि ग्राप सब छोटे लोग बडा काम कर रहे हैं। अपने गाव के भूमिहीन भाइयो के लिए बीघा-कट्ठा देना तथा गॉव के विकास के लिए ग्रामकोष इकट्ठा करना निश्चय ही क्रांतिकारी कदम है। ग्रापके इन सद्प्रयास से क्रांति की सभावना दीखती है।

स्थानीय सो० पा० विधायक शिवनन्दन झा ने ग्रामदान के सगठनात्मक स्वरूप पर विस्तार से चर्चा करते हुए ग्रामीणो से ग्राम सभा तथा प्रखण्ड सभा द्वारा किये जाने वाले

झाझा मे निर्माणकार्य लोक सगठन के लिए

निर्णय पर ठोस रूप से ग्रमल करने का निवेदन किया। श्री झा ने इस पुनीत कार्य के लिए ग्रामीणो का अभिवादन करते हुए अपनी ग्रोर से भरपूर सहयोग देने का ग्राश्वासन दिया।

प्रखण्ड सभा के चुनाव मे ग्रगले तीन वर्षों के लिए पुन श्री गोपालशरण सिंह, अध्यक्ष, मो० इसहाक ग्रली मन्त्री; तथा महावीरसाहू कोषाध्यक्ष सर्वसम्मति से चुने गये।

—नर्मदेश्वर

ग्राम स्वराज्य के बिना लोकतन्त्र खोखला

कानपुर। 'ग्रभी देश की जनता को केवल अपने प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार मिला है। जब तक गाव ग्रौर मुहल्लो के नागरिको को ग्रपने-ग्रपने क्षेत्र के लिए कानून बनाने, उन्हें ग्रमल मे लाने तथा न्याय करने का सवैधानिक ग्रधिकार नहीं प्राप्त होता तब तक जनतन्त्र खोखला ही रहेगा। क्योंकि इसके बिना न्यूनतम मजदूरी, भूमि सीमा ग्रौर सयोजन ग्रादि के सम्बन्ध मे बनने वाले सारे कानून तथा योजनायें सफल नहीं हो सकती। इसलिए इस ग्राम चुनाव मे मतदाताग्रो को चाहिए कि वे सत्ता के वास्तविक विकेन्द्रण की माग उम्मीदवारो से करें।' श्रीरामकृष्ण पाटील ने १७ जनवरी ७४ को को जिला सर्वोदय मण्डल द्वारा ग्रायोजित मतदाता शिक्षण ग्रभियान विषयक शिवली ग्राम की सभा मे विचार रखे। उन्होंने सलाह दी कि इस गरीब देश मे जहा लाखोलाख लोग ग्रन्न से भी वचित हैं वहाँ चुनाव मे इतना ग्रधिक धन खर्च करने वाले उम्मीदवारो को वोट न दें।

इसी दिन काकादेव नागरिक सघ द्वारा आयोजित सभा में श्री पाटिल ने कहा कि "हमें केन्द्रीकरण तथा विकेन्द्रीकरण के बीच एक सर्वसम्मत सुसगति बनानी चाहिए। यदि तानाशाही की तरह लोकशाही मे भी जनता को शासन पर निर्भर रहना पड़े तो फर्क क्या रहा? जिस तरह सविधान मे राज्य की सूची मे निर्धारित विषयो पर ससद भी कानून नहीं बना सकती है उसी तरह सविधान की ४०वी धारा के ग्राधार पर राज्य को भी गाव तथा मुहल्लो को स्वशासन के पूरे ग्रधिकार देने चाहिए। नगर प्रमुख की ग्राज्ञा के बिना गोली नहीं चल सके। ग्रतः ग्रापको मत देने से सन्तोष न करके सच्चे स्वशासन की माग करनी चाहिए। यही गाधी जी के पचायतराज ग्रौर विनोबा के ग्रामस्वराज्य का उद्देश्य है।"

श्री पाटिल ने ग्रपने त्रिदिवसीय कार्यक्रम मे ग्रार्यनगर ग्रौर सिविल लाइन्स क्षेत्र के नागरिको तथा बार ग्रसोसिएशन ग्रौर क्राइस्ट चर्च कालेज की सभाग्रो को भी सम्बोधित किया।

—विनय ग्रवस्थी

देश भर में उपवास-दान

आंध्र प्रदेश

हैदराबाद विरधीचन्द्र चौधरी, सुरभि शर्मा, सी० वी० चारी, के० वेंकनायन्, गड्डम सन्यासी राव, के०कोदण्ड रामा रेड्डी, कोडाटी नारायण राव।

केरल

पी० नारायण, पालघाट।

कर्नाटक

बेलगांव : गंगाधर व्यामनि, कडाली, प्रभाकर मराठे, सिद्धाराम गुरूजी, मुगवसाऊ, के० ए० वेंकट रामैया, बंगलोर, टी० ए० दासप्पा।

तमिलनाडु

मद्रास : नानालाल भट्ट, श्रीमती मधुबेन शाह, के० अरुणाचलम्, मदुराई।

पंजाब

आर०के० निकला, चंडीगढ़, कपि गौरी शंकर, जालंधर, डा० दयानिधि पटनायक, चण्डीगढ़, यशपाल गुप्त, पठानकोट। यशपाल मित्तल, एन० एस० बक्शी, एम० एस० बक्शी।

प० बंगाल

२४ परगना : अनुकूलचन्द्र राय, कु० पूर्णिमा कुर्मकार, कृष्णा राय, कलकत्ता : दानाराम मक्कड, बिट्ठलदास जाजू, मणि बहन बिट्ठलदास, दिनेश वल्लभदास, अरुण वल्लभदास, शिशिरराय चौधरी, शिवरतन बागड़ी, मोतीलाल साठ दुर्गाचरण दत्त।

हरियाणा

हिसार : हरलाल शाह, सतलाल, रामेश्वरदास, जयनारायण, पोकरराम।

माता शांति देवी, रेवाड़ी, विशननारायण सम्मा, गुडगाव, पूर्लिया भगत, रोहतक।

दिल्ली

वि० न० भार्गव, देवेन्द्र कुमार, डा० विश्वनाथ टण्डन, मित्रप्रकाश भाई।

राजस्थान

जयपुर सिद्धराज ढड्ढा, पूर्णचन्द जैन, पचम भाई, मित्रदेवी अग्रवाल, रामवल्लभ अग्रवाल, राधाकृष्ण बजाज रामेश्वर विद्यार्थी, हरिचन्द स्वामी, रामसिंह भाटी, जवाहरलाल जैन, उदयपुर दीनदयाल दशोत्तर, उमरावबेग मिर्जा, सिरोही देवीचन्द सागरमल, चन्दनमल चैननल सोलखी, नागौर हीरालाल भालोड, भेरूराम, प्रजापति, बद्रीप्रसाद स्वामी, बांसवाड़ा जगन्नाथ, लक्ष्मीवहन पाठक, रतनलाल हिन्दुस्तानी, जोधपुर : भवानी भाई, पाली महीधर, झुंझनू महावीर, गंगानगर कैलाशचन्द्र अग्रवाल, बीकानेर : भवरलाल कोठारी।

महाराष्ट्र

वर्धा विनोबा, रविशंकर शर्मा, ठाकुर दास बंग, भाऊरानडे, प्रभाकर शर्मा, डा० जगन्नाथ महोदय ऊषा, कालिन्दी, जया, कुसुम, सरोज, महादेवी ताई, विजया, गया, रेखा, करुणा, वीना, शान्ति, निर्मला, मोई, लक्ष्मी, शीला, गीता, पद्मा, कला, श्यामा, जयदेव, बालभाई, अच्युतभाई, बालू भाई मेहता, सूरजमल मामा, बाबा जी मोघे, गोमत बजाज, गोविन्दन, सत्यव्रत, लक्ष्मीसत्यव्रत, जानकीदेवी बजाज, मनोहर दीवान, सुशीला अग्रवाल, निरंजन गोयल, नारायण आग, वे० एच० आपाजू, निर्मला देशपांडे, कामेश्वरप्रसाद बहुगुणा, सुमन बंग, श्रीमती वत्सला पानसे, श्रीमन्नारायण, दत्तोबा दास्ताने, वसन्त भाई पोहरे, भाऊराव बेले, पी० एम० सिंहल, पूना रानाडे, शोभना रानाडे, डा० ह० रा० दिवाकर, सीताबाई दातार, चन्द्रा किर्लोस्कर, प्रागमल नरोत्तम राजमिया।

बम्बई : कमला गायकवाड, सोमैया टी०, माधवकृष्ण देशपांडे, शान्ताभट्ट, विट्ठलदास बोदाणी, लीना विट्ठलदास बोदाणी, हरीन, वी० बोदाणी, अरुणा ह० बोदाणी, जगदीश बोदाणी, लक्ष्मण दुर्गाजी महाजन, गोविन्दराव देशपांडे, श्रीमती इन्दिरा ठाकर, लालजी भाई वीरजी भाई, श्रीमती प्रभावती लालजी, चुनीलाल ल० डगली, रसिकलाल नन्दलाल सेठ, शशिकांत कड़िया।

अहमदनगर : श्रीमती वसन्तमाल भण्डारी, शीलवती निसल, कमला रानाडे, मथुरा बाई जयवन्त देशमुख, घो० वि० कठी, फकीरचन्द्र बालाराम, गुलाबबाई कनकमल गांधी, झुंबरलाल सीताराम सारडा। धूलिया रामेश्वर पोद्दार, गंगाबेन रामेश्वर पोद्दार, गंगाबेन की माताजी, बालमुकन्द पोद्दार, नागपुर आर० के० पाटिल, ठाणा भा० स० राउत, परशुराम भागवत, जीवन हरि सुनार, हरिश्चन्द्र गारु वनमाली, शशिकला सुरेश कडू, हृषिकेश्वर बलवन्त धसक, मनोहर देवीदास जोशी, दत्तात्रय सखाराम बाघ, कु० मन्दा मारुति जवरे, अकोला : रामचन्द्र माडे, स० वि० मराठे, अमरावती : कालिन्दी सरवटे, ए० के० सरवटे, यवतमाल सुहास सरोदे, लक्ष्मीचन्द चुन्नी लाल चोरड़िया, द० गु० नन्दापुरे, परभणी द्वारकाप्रसाद अग्रवाल।

उत्तरप्रदेश

लखनऊ हबीब श्यामदास, भगतमल सिन्धी, वाराणसी : चुन्नी भाई वैद्य, रामचन्द्र राही, नारायण देसाई, बालाबेन चौधरी, केवजी भाई चौधरी, जानकी पांडे, बेनीप्रसाद याज्ञिक, नवीनराम त्रिसपुने, गयाप्रसाद वर्मा, लालता प्रसाद पाण्डेय, राजाराम सिंह, रवीन्द्र प्रसाद भगत, स्वामी सत्यानन्द। आगरा : बाबूलाल मित्तल, श्री रामजीदाऊदयाल अग्रवाल, विश्वेश्वर दयाल अग्रवाल, गोविन्द प्रसाद चतुर्वेदी, रामदुलारे तिवारी, कांतिस्वरूप कौशिक, सुमनन्दन गुप्ता, डा० ज्योति प्रकाश अग्रवाल, ओमप्रकाश अग्रवाल, भुवनेश्वर प्रसाद, गंगादेवी अग्रवाल, शिवनारायण अग्रवाल, लोचनप्रसाद माहेश्वरी, सीतादेवी, कन्हैया लाल एडवोकेट, रामलाल वर्मा, फूलचन्द्र बंसल, लीलावती बंसल, निहालसिंह वर्मा, कैलाशनाथ शर्मा, विशम्भरनाथ खंडेलवाल, विनोद भूषण सिंहल, वासदेव गुप्ता, जगदीश नारायण भार्गव, प्रयाग चन्द्र अग्रवाल, कृष्णचन्द्र →

→

सहाय, कु० मधुसहाय, कृष्णगोपाल शर्मा, चन्द्रदेव शर्मा, श्रीमती तिलोत्तमा अनानी, जयप्रकाश कपूर, जैमाराम आर्य, देवदत्त जमूजा, श्रीमती आकाशकामिनी अग्रवाल, कु० कृष्णा, राजेन्द्र कुमार गुप्ता। मथुरा : जयन्ती प्रसाद, मदनमोहन गुप्ता, माधव प्रकाश, सूरजपाल गौतम, घनश्याम सिंह, शिवलाल, कुमारी सुमन वर्मा, किशन सिंह, डा० रमेशचन्द्र गर्ग, राधारमण गौतम मंनीताल इन्द्रासन सिंह, भुवनेश्वर भगत, दीपनारायण साही, सरजू प्रसाद, रामकीरत सिंह, हीरालाल श्रीवास्तव, सुवशादेवी, इतवारी देवी, इन्द्रासन सिंह। इलाहाबाद राधवप्रसाद शुक्ल, शंकरदत्त जोशी। टिहरी गढ़वाल सुन्दरलाल बहुगुणा। मेरठ : लक्ष्मेन्द्र प्रकाश, राजाराम भाई। बरेली बलवीर बहादुर। हरदोई कामतानाथ गुप्त सूरजप्रकाश, कानपुर विनय अवस्थी, आनन्द स्वरूप गुप्ता, इकबाल बहादुर सिन्हा, लालचन्द्र वर्मा, श्रीमती भगवती देवी पंत। गोण्डा रामलाल भाई। रायबरेली गिरजाशंकर दीक्षित।

मध्यप्रदेश

इन्दौर मानवमुनी, जसन्त राय, काशीनाथ त्रिवेदी, श्रीमती कान्तिदेवी, किशोरीलाल गुप्त, यशवन्त कुमार सिंधु, रामकुमार भारती, शरदचन्द्र मठोरे, बालकृष्ण जोशी, इन्द्रलाल मिश्र। होशंगाबाद बनवारीलाल चौधरी, रामकुमार चौधरी, काता कुमारी चौधरी, हरप्रसाद ज्योतिषी, नर्मदाप्रसाद पटेल। बैतूल : ग० उ० पाटनकर। प० निमाड : वि० म० खोडे ग्वालियर : गुरुशरण, हेमदेव शर्मा। उज्जैन : रामचन्द्र भार्गव, रुक्मणी भार्गव। रायपुर : नन्दकुमार दानी, हरिराम बिसराम चौहान, धनीराम वर्मा, भागीबेन मोनजी भाई चावडा, मोतीलाल त्रिपाठी, रामानन्द दुबे, ग्वालदास डागा, जानाबाई, श्रीमती हरिराम चौहान, बचीबाई रुड़ाबाई सावरिया, श्रीमती सरस्वती दुबे, हरिप्रेम जी बघेल, राधेलाल भूते, नीलकंठ डेवांगन। खंडवा : जादव जी मारू, रायचन्द्र नागडा, मनोगे लाल राठौर।

गुजरात

भावनगर : मनु सिमानी, दुलेराय माटलिया, सुमाधा बहन लाल जी भाई सवाणी, अरुणा बहन लालजी भाई सवाणी, कौशिक भाई दवे, अरुण भाईभट्ट, मीरा बहनभट्ट, महेन्द्रभट्ट, भारती बहन परीख। खेडा : मोहनभाई मयूरभाई, माईलालभाई भीखाभाई, श्रीमती शांताबहन बाबू भाई पटेल, भीखाभाई, धीरुभाई। बिलीमोरा : विष्णुनारायण अम्यंकर। जूनागढ़ रामजी परसाणिया, हिम्मतलाल रामजी भाई पटेल, रामजी भाई प्रेमजी भाई। साबरकांठा हरगोविन्ददास धनेश्वर जोशी। पोरबन्दर बालजी रतनजी रुघाणी, मनुभाई रुघाणी। महेसाणा डाह्या भाई भू० पटेल, मोतीलाल मणीलाल सेठ, दामोदर भाई दयाराम भावसार, पार्वतीदेवी दामोदरदास भावसार, जयन्त कुमार दामोदरदास भावसार, डा० द्वारका दास जोशी, रतन बहन द्वारकादास, डा० मिहिर भाई द्वारकादास जोशी हेमलता बहन मिहिरभाई जोशी, सौभाग्यचन्द्र। कच्छ छगनभाई न० अहमदाबादी, मगनलाल गोविन्द जी सोनी। बड़ौदा मुलजी भाई लक्ष्मीदास पटेल, गोरधन भाई मोती भाई पटेल, कान्तिलाल-जमनादास पारिख, मुकुन्दभाई पडवा, श्रीमती अनसूया बहन मुकुन्दभाई पडवा, जगदीशभाई म० शाह, मंजुला बहन जगदीश भाई शाह, बिनुभाई शाह, मधुबहन-बिनुभाई शाह, हरविलास बहन शाह, कान्ति भाई शाह, अम्बालाल छोटालाल शाह, शंकर लाल रतीलाल शाह, कांतिलाल मणिलाल छत्रपति, पूजा भाई अम्बालाल पटेल, छोटू भाई बसनजी मेहता। सूरत : निर्मला बहन ठक्कर। अहमदाबाद नन्दलाल जी ठक्कर, हिम्मत लाल मगनलाल छोत्रारा, कौन्तिकुमार म० मेहता, धीरुभाई दीनानाथ पटेल कु० आशा बहन छोटालाल मेहता। बलसाड : मगनलाल दुर्लभदास देसाई, सोमाभाई डाह्या भाई पटेल, इन्द्रसिंह रावत, धीरू भाई मणिभाई देसाई। भरुच : पुरेन्द्र न० मजूमदार, सरला देवी, बद्रीशंकर मोतीराम जोशी, हितेन जयेन्द्रलाल भवेरी। राजकोट : किशोर का० गोहिल।

विद्यार्थियों में गजब का उत्साह

उत्तर प्रदेश में मतदाता शिक्षण अभियान अब पूरे जोर पर है। जयप्रकाश नारायण ने विद्यार्थियों से—आम चुनाव को निष्पक्ष और स्वतन्त्र वातावरण में सम्पन्न करवाने में सक्रिय भाग लेने के लिए जो आवाहन किया था उसका गजब का असर हुआ है। पार्टियों द्वारा राजनीतिक हितों के लिए मोहरों की तरह उपयोग किये गये विद्यार्थी उनकी सभाओं में हजारों की संख्या में भाग ले रहे हैं और 'लोकतंत्र के लिए नवजवान' नाम से समितियां कुछ चुनिन्दा क्षेत्रों में युवा शक्ति को संगठित कर रही हैं और वे इस पर कटिबद्ध हैं कि उत्तरप्रदेश के चुनाव में भ्रष्टाचारी तरीकों का उपयोग नहीं होने देंगे। वे मतदाताओं को समझा रहे हैं कि उन्हें अपने वोट का उपयोग सोच समझ कर करना है।

दिसम्बर '७३ में लखनऊ में गठित उत्तरप्रदेश मतदाता शिक्षण समिति के निमंत्रण पर जे० पी० गये माह लखनऊ गये थे और वहां उन्होंने विद्यार्थियों से बातचीत की थी। ३ और ४ फरवरी को वे कानपुर गये, ५, ६ और ७ फरवरी को आगरा और १० और ११ फरवरी का इलाहाबाद जाने के बाद वे वाराणसी जायेंगे। (विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में)

दिल्ली में संत-सेवक समागम

आगामी १५ से १६ मार्च, १९७४ तक दिल्ली में सन्त-सेवकसमागम सम्मेलन करने का तय किया गया है। यह जानकारी सम्मेलन के संयोजक श्री मानव मुनि ने यहां दी।

परिषद् के सदस्य सर्वश्री ..... हेबर, जैनेन्द्रकुमार, आर० आर० दिवाकर, अम्बुभाई शाह० गु०र० कुरेशी, ललिता बहन, निर्मला देशपाण्डे, बुधमल शामसुख तथा मानव मुनि (संयोजक) मनोनीत हुए।

सम्मेलन का उद्देश्य है संतों की आध्यात्मिक शक्ति राष्ट्र के नैतिक जागरण में व अन्याय के प्रतिकार में लगाई जाकर देश को उन्नतिशील बनाने में सहयोगी बने। इस पर विचार-विनिमय किया जाएगा।

आचार्य विनोबा भावे ने सन्त-सेवक सम्मेलन के लिए पूर्ण आशीर्वाद दिया है। सम्मेलन में सर्व सेवा संघ, गांधी स्मारक निधि, गांधी शांति प्रतिष्ठान आदि अखिल भारत स्तर की समाजसेवी संस्थाओं के प्रमुख भी भाग लेंगे।

वार्षिक शुल्क : १५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १८ फरवरी, '७४

...पुर में मतदाता शिक्षण : जयप्रकाश नारायण ग्रामसभा को सम्बोधित करते हुए : इस कार्य के लिये डॉ० चन्द्रकान्ता रोहतगी से ग्यारह हजार की थैली लेते हुए और क्राइस्ट चर्च कालेज में विद्यार्थियों के बीच। (विशेष रिपोर्ट पेज ४ पर)

● गुजरात की जनता क्या फिर नहीं छली जायेगी ?

भूदान-यज्ञ

१८ फरवरी, '७४

वर्ष २०   अंक २१

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

राजघाट कॉलोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

चिमनभाई ने बहुत बेआबरू होकर गुजरात की गद्दी छोड़ दी है। महीने भर के जन आन्दोलन के बाद अब वहां राष्ट्रपति का शासन है और विधान सभा स्थगित है।

भारत सरकार और कांग्रेस हायकमान को आशा है कि चिमनभाई के इस्तीफे से गुजरात में शांति लौट आयेगी और फिर ठण्डे दिमाग से वहां की समस्याओं का हल किया जा सकेगा। राज्यपाल विश्वनाथन स्वयं एक कुशल प्रशासक हैं और उनकी मदद के लिए सरीन साहब को सलाहकार बनाया गया है। सरीन साहब ने गये साल बहुत समझदारी से आंध्र प्रदेश में मुल्की आन्दोलन को सम्हाला था और उनकी इन सेवाओं के ऐवज में उन्हें इस साल छब्बीस जनवरी को पद्म विभूषण का खिताब दिया गया है। उत्तरदायी निर्वाचित सरकार जब इस तरह विफल हो जाती है और सर्वधानिक मशनरी जनआन्दोलन के दबाव से टूट जाती है तो भारत सरकार किसी की बलि देकर भूत उतारना चाहती है और आग पर पानी डाल कर फिर किसी जोड़तोड़ से नयी सरकार को बैठाल देती है। यह एक स्थापित तरीका है और कई बार कारगर साबित हुआ है। इसलिए भारत सरकार को आशा है कि महीने दो महीने बाद चिमनभाई की जगह कोई नया मुख्यमंत्री बना कर वह ठण्डे दिमाग से गुजरात की समस्याओं का हल कर लेगी। विधान सभा इसीलिए स्थगित की गयी है, भंग नहीं की गयी।

कांग्रेस हायकमान और भारत सरकार का मानना है कि गुजरात में जो कुछ हुआ वह महगाई और अनाज की कमी के कारण शुरू हुआ। पहले विरोधी पार्टियों ने विद्यार्थियों को उकसाया और दंगे करवाये। फिर कांग्रेस के असन्तुष्ट मंत्रियों ने आग में घास के पूले डाले और मुख्यमन्त्री को निशाना बनाया। चूंकि आग पर काबू पाने के लिए मंत्रीमण्डल के मचान को गिराना जरूरी था इसलिए आग बुझाने के लिए जलते अहमदाबाद से दूर दिल्ली में दमकल खड़ा करना पड़ा ! यह सब कुछ ही समय के लिए है। थोड़े दिनों में सब ठीक हो जायेगा।

गुजरात की हालत का यह विश्लेषण भारत सरकार और कांग्रेस हायकमान को मुबारक हो। भगवान करे उनका भोला-विश्वास उन्हें काम आये।

लेकिन गुजरात के इस जन आन्दोलन में अगुआई करने वाले विद्यार्थियों की नव निर्माण युवक समिति ने कहा है कि उसका आंदोलन तब तक चलता रहेगा जब तक कि विधान सभा भंग नहीं की जाती। यानी विद्यार्थी चाहते हैं कि गुजरात में फिर से चुनाव हों। फिर से चुनाव करवाने की मांग विरोधी पार्टियों ने भी की है। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि केन्द्र नये चुनाव करवाने पर राजी होगा। सच पूछा जाये तो नये चुनाव की सभावना का उपयोग कांग्रेस हायकमान गुजरात विधानसभा के १६८ सदस्यों में से १४० कांग्रेसी विधायकों में एकता लाने में करेगा। ये विधायक जो महीने भर के जन आन्दोलन में अपने घर से निकलने का साहस तक नहीं कर सकते थे और जिनके घरों पर क्रुद्ध भीड़ ने बार-बार हमला किया था और जिनसे इस्तीफे की मांग की थी, फिर चुनाव लड़ने को तैयार नहीं होंगे। वे जानते हैं कि लोग उनसे कितने नाराज है और शायद यह भी जानते हैं कि जिस सर्वव्यापी भ्रष्टाचार के खिलाफ लोगों ने आंदोलन किया था उसके लिए वे खुद कितने जिम्मेदार हैं। गुजरात के कांग्रेस विधायकों में न इतना राजनीतिक साहस बचा है न इतना नैतिक बल कि वे मतदाताओं के सामने जा सकें। इसलिए सभावना यही है कि अब ये विधायक राज्यपाल की मदद करके किसी तरह कांग्रेस को पुनः सत्ता में लाने की कोशिश करेंगे।

चूंकि भारत सरकार मानती है कि गुजरात में जन आंदोलन महगाई और अनाज की कमी के कारण हुआ इसलिए राज्यपाल विश्वनाथन और उनके सलाहकार सरीन पूरी कोशिश करेंगे कि गुजरात को केन्द्र से और ज्यादा अनाज मिले और सस्ते अनाज की दुकानों के जरिये ठीक से उसका वितरण हो। अनाज वसूली जो अब तक लक्ष्य से एक तिहाई भी नहीं हो पायी थी, तेज की जायेगी और सभव है काफी हो भी जाय। आंतरिक फूट के कारण जिन विधायकों ने जमाखोरों को राजनीतिक सरक्षण दे रखा था वे ही अब वसूली में मदद करेंगे। हालत सुधारने में राज्यपाल की जो जितनी सहायता करेगा बाद में राजनीतिक लाभ पाने में वह उतना ही आगे रह सकेगा। हायकमान के सामने उसकी छवि

→

लोकतंत्र के भारतीय विकल्प का शिक्षण

(उत्तर प्रदेश के चुनाव की गर्म फिज़ा और अंधाधुन्ध प्रचार से भ्रमित मतदाताओं के सामने जय प्रकाश नारायण ने मतदाता प्रशिक्षण के निमित्त लोकतन्त्र का भारतीय विकल्प रखा। नवयुवकों ने विकल्प खड़ा करने की ठानी है।)

—हमारे संवाददाता द्वारा

"अब बताइये यह प्रजातंत्र है?" जिस रेलगाडी से मैं कानपुर गया उसके एक डब्बे मे एक सूटधारी सज्जन बहुत उत्तेजित हो कर अंग्रेजी मे पूछ रहे थे। सवाल मुझसे नही पूछा गया था और पूछा भी गया होता तो उत्तेजना मे अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयो को मैं जवाब नही देता। ये सज्जन पहले से अपनी बर्थ रिजर्व करवा के नही आये थे और अंग्रेजी बोलकर उस कण्डक्टर पर रौब गालिब कर रहे थे जो पैसा लेकर दूसरों को बर्थ दे रहा था। चूंकि उन्हे बर्थ मिल चुकी थी इसलिए अब उनका ध्यान प्रजातन्त्र पर गया था। उनकी शिकायत वैसे सही थी। वे कह रहे थे (जी हां अंग्रेजी मे) "अब बताइये यह प्रजातन्त्र है? एक मंत्री को देर से आने की आदत है इसलिए यह मेल गाडी रुकी हुई है। एक आदमी के लिए पूरी रेल रुकी है। और ये कहते हैं कि यह प्रजातन्त्र है।"

मंत्री जी उत्तर प्रदेश की किसी चुनाव सभा के लिए जा रहे थे और रेलगाडी उनके आने का इन्तजार कर रही थी। वे कोई पन्द्रह मिनट देर से आये तब गाडी चली। प्रजातन्त्र मे ऐसा नही होना चाहिए लेकिन ऐसा होता है क्योंकि सवाल उठाने वालो का ध्यान प्रजातन्त्र की तरफ तभी जाता है जब उन्हें बर्थ मिल जाती है। प्रजातन्त्र को सब उससे अपने को मिलने वाले लाभ से तौलते हैं। प्रजातन्त्र मे सरकार के पास बांटने के लिए बहुत से लाभ हैं लेकिन ये लाभ उन्ही को मिलते हैं जो उन्हे लेने की स्थिति मे हैं और जो उनके न मिलने पर कामकाज ठप्प कर सकते हैं। इसलिए इस देश मे प्रजातन्त्र राजनीतिज्ञो, नौकरशाहो और पैसो वालो का हो गया है। वैसे तो कही भी प्रजातन्त्र जनता का जनता के द्वारा और जनता के लिए नही हो पाया है लेकिन भारत मे तो ऐसा वह बिलकुल ही नही है। लाखो रुपये खर्च करने वाला उम्मीदवार चुन लिये जाने के बाद उन लोगो पर ध्यान देता है जिन्होने उसे चुनाव लडने के लिए पैसे और साधन दिये है, फिर वह उनकी फिक्र करता है जिन्होने उसे वोट दिलाये हैं, इसके बाद वह पार्टी की सुनता है जिसके कारण उसे प्रजातन्त्र की अपनी दुकान चलाना है। मतदाताओ के लिए उसके पास समय नही रहता और मतदाता उस पर कोई दबाव नही डाल सकते क्योंकि वे न उसे वापस बुला सकते हैं न वे संगठित हैं कि अपने प्रतिनिधि की नींद हराम कर सकें। पांच साल बाद वे उसे वोट देने से जरूर इन्कार कर सकते है लेकिन तब तक मतदाता को बरगलाने और उसे खरीदने के कई साधन उम्मीदवार के पास जुट चुके होते हैं।

कानपुर के नानाराव पार्क की आमसभा मे जयप्रकाश नारायण लोगो को यही समझा रहे थे। नेहरू के जमाने मे चुनाव फिर भी लोक शिक्षण के अवसर होते थे और स्वयं वे अपने तूफानी चुनावी दौरो मे एक प्राथमिक शिक्षक की तरह लोगो को देश की समस्याओ और उनके हल के रास्ते बताते थे। लेकिन अब चुनाव पार्टियो के आपसी झगडे और मतदाताओ के सामने एक दूसरे को जलील करने के मौके रह गये हैं। चुनाव देश की समस्याओ और उनके निराकरण की नीतियो को समझाने का अवसर नही है। चुनाव बोगस मतदान से, बूथ पर अधिकार करने से, बल प्रयोग करने से और अन्धाधुन्ध खर्च करने से जीते जाते हैं। इन भ्रष्टाचारी हथकण्डो को आजमाने से कोई बाज नही आता। प्रजातन्त्र की मखौल जितनी चुनाव के समय उडायी जाती है उतनी उसके बाद नही उडायी जाती है।

जयप्रकाश नारायण ने उत्तर प्रदेश मे मतदाता के इस पवित्र अधिकार की रक्षा, और चुनावो को निष्पक्ष और स्वतन्त्र रूप से सम्पन्न करवाने के लिए नवजवानो का आवाहन किया है। दिसम्बर मे लखनऊ मे एक मतदाता शिक्षण समिति गठित की गयी थी जिसने पांच महानगरो और पन्द्रह जिलो मे इस अभियान को उठाना तय किया था। इस समिति के सम्पर्क मे नागरिक और काफी संख्या मे नवजवान आगे आये हैं और वे निष्पक्ष और स्वतन्त्र मतदान के लिए संगठित प्रयास कर रहे हैं। इस समिति के निमंत्रण पर ही जे० पी० ३ और ४ फरवरी को कानपुर और ५, ६ और ७ फरवरी को आगरा मे रहे।

कानपुर मे उनकी पहली सभा डी० ए० वी० कालेज मे हुई और छुट्टी के बावजूद वहां लगभग तीन हजार विद्यार्थी आये थे। विद्यार्थियो ने जे० पी० से कहा कि वे राजनीतिक पार्टियो द्वारा उपयोग किये जाने से ऊब गये हैं और वर्तमान प्रणाली मे उनके लिए कोई जगह नही है। हम देख रहे हैं कि देश गड्ढे मे उतर रहा है। बताइए, हम क्या करें? जे० पी० ने कहा कि देश के क्षितिज पर सन् बयालीस जैसी क्रान्ति के संकेत स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। मैं आप लोगो की शक्ति पर विश्वास करता हूं क्योंकि सिर्फ जवान लोग ही यह नई क्रान्ति ला सकते हैं। देश भर मे भ्रष्टाचार है और इस कारण लोगो मे हताशा की भावना आ रही है। जगह-जगह जो हिंसा हो रही है वह किसी दिन देश को तानाशाही के गर्त मे ला पटकेगी। फ्रांस, चीन और रूस के उदाहरण देकर जे० पी० ने कहा कि खूनी क्रान्ति से कभी भी सत्ता जनता के हाथ मे नहीं आती। इसलिए जो नई क्रान्ति आप लोगो को करना है उसका अहिंसक होना जरूरी है। →

भारत में समस्या खाली हाथों की है

→

कि जनता राज चलाने के लायक नहीं है। मैं मानता हूं कि जब तक जिम्मेदारी दी नहीं जाती तब तक कोई भी अपनी योग्यता बता नहीं सकता। जनता के हाथों में सत्ता तभी आयेगी जब हम जनता का नया लोकतन्त्र खड़ा करेंगे। ग्राम सभा के पहले मतदाता शिक्षण के लिए इकट्ठे किये गये ११ हजार रुपये की थैली डॉ० चन्द्रकान्ता रोहतगी ने जे० पी० को भेंट की।

दूसरे दिन यानी ४ फरवरी को-लोकतन्त्र के लिए प्रजातन्त्र फोरम और मतदाता शिक्षण समिति के कार्यकर्त्ताओं की बैठक क्राइस्ट चर्च कालेज में रखी गई थी। लेकिन विद्यार्थी और लोग इतने आये कि बैठक सभा हो गई। कॉलिज के विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष सुरेश शुक्ल ने जे० पी० से कहा कि वे बतायें कि हम गन्दी राजनीति में भाग लें या नहीं? न लें तो गन्दगी बढ़ती जाती है और हम असहाय देखते रहते हैं? इस गन्दी राजनीति को हम कैसे ठीक कर सकते हैं। गांधी शांति प्रतिष्ठान के विनय भाई ने बताया कि जिस तरह बिहार रिलीफ कमेटी के काम से तरुण शांति सेना निकली थी उसी तरह जे० पी० के लोकतन्त्र के लिए नवजवान-आवाहन से लोकतन्त्र के लिए नवजवान फोरम-कानपुर में बना है। इसमें वही युवक आये हैं जो कि लोकतन्त्र के लिए काम करना चाहते हैं। कानपुर में हमने जनरलगंज चुनाव क्षेत्र काम के लिए चुना है। सौ कार्यकर्त्ता आ गये हैं पाँच सौ हो जायेंगे।

नवयुवकों में काम करने के लिए जालौन से आये राधेश्याम योगी ने कहा कि दस दिनों में कोई दस हजार विद्यार्थियों से हमारा संपर्क हुआ है। विद्यार्थियों में एक प्रकार की उद्विग्नता है। वे मानते रहे हैं कि उनके सामने कोई रास्ता नहीं है। लेकिन जे० पी० ने नवजवानों का जो आवाहन किया है उससे विद्यार्थियों में उत्साह आया है और उन्हें लगने लगा है उनके लिए रास्ता खुल रहा है। लेकिन यह युग सोडा वाटर बोतल का युग है। उफान आता है और चला जाता है। विद्यार्थियों के उत्साह को बनाये रखने के लिए यूथ फॉर डेमोक्रेसी फोरम गठित कर लिया गया है जो इस चुनाव में मतदाता शिक्षण का काम करने के बाद लोकस्वराज्य की स्थापना में लगेगा।

कानपुर की मतदाता शिक्षण समिति के संयोजक इकबाल भाई ने कहा कि कानपुर में मतदाता शिक्षण सन् ५७ के आम चुनाव से ही चल रहा है। '७१ के मध्यावधि चुनाव में काफी अच्छा और प्रभावशाली मतदाता शिक्षण हुआ था।

रामजी भाई वर्मा ने कहा कि ग्राम स्वराज्य के सघन क्षेत्र बकुवन में विद्यार्थियों का स्वागत है। वे टोलियों में आयें और ग्रामस्वराज्य के बुनियादी कार्य में सहयोग दें।

जे० पी० ने विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष के प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि विद्यार्थियों का संगठन राजनीति से ऊपर होना चाहिए। नागरिक के नाते उन्हें राजनीति में भाग लेने का पूरा अधिकार है। पर जो विद्यार्थी राजनीति में जाते है वे इस या उस पार्टी के शिकार हो जाते हैं। राजनीतिक विचारधाराओं का अध्ययन, देश की समस्याओं की समझ और उनके व्यावहारिक निराकरण के प्रयत्न वे नहीं कर पाते। आज की राजनीति ऐसी अनिवार्य गतिविधियों के लिए अयोग्य हो गयी है। विद्यार्थी पार्टी में जाते ही अगर टिकट और पदों की माँग करने लग जाते है तो राजनीति में कोई योगदान नहीं हो सकता और इससे विद्यार्थियों की शक्ति तो घटती है ही।

युवकों का जो आवाहन मैंने किया है वह सिर्फ मतदाता शिक्षण के लिए नहीं है। वह भी कीजिए। इससे मतदान के पवित्र अधिकार की रक्षा होगी। प्रजातन्त्र में आपका प्रशिक्षण होगा और देश की कुछ सेवा होगी। पर मूल बात तो विकल्प खड़ा करने की है। विकल्प खड़ा करने के लिए तरुणाई का जोश चाहिए, शक्ति चाहिए, लगन चाहिए, सातत्य चाहिए। सिर्फ भाषण देने से कुछ नहीं होगा। पाँच वर्ष अभी अगले चुनाव के लिए हैं। आप लग जाते हैं तो बहुत से चुनाव क्षेत्रों में नये ढंग से उम्मीदवार खड़े किये जा सकते हैं।

क्राइस्ट चर्च कॉलिज से जे० पी० आई० आई० टी० गये। वहां विद्यार्थियों से खचाखच भरे हाल में जे० पी० ने कहा कि मैं आपके लिये एक संदेश लाया हूं। यह संदेश मेरा नहीं है। संदेश गांधी का है, संदेश भारत की संस्कृति, इतिहास और इसकी भूमि का है। सन्देश यह है कि आप लोगों को प्रजातन्त्र का अपना विकल्प खड़ा करना है। पिछले छब्बीस वर्षों में हमने देखा है कि पश्चिम का प्रजातन्त्र हमारी जीनियस के मुताबिक नहीं है। हमें सामुदायिक प्रजातन्त्र विकसित करना होगा।

फिर जे० पी० तकनीक शास्त्र पर बोले। उन्होंने कहा भारत में एक तरफ बैलगाड़ी है और दूसरी तरफ जेट यान। एक तरफ आणविक शक्ति है और दूसरी तरफ गोबर के उपलों से मिलने वाली शक्ति है। और हमारे सामने विकास की समस्यायें हैं। सवाल यह है कि हम तकनीक शास्त्र का उपयोग करके इन समस्याओं को कैसे हल कर सकते है। अगर हम आधुनिकतम तकनीक अपनाते हैं तो लाखों हाथ बेकार हो जाते हैं और ऐसे विकास के लाभ जरूरतमन्द लोगों तक नहीं पहुँचते। हर साल बेकारों की संख्या बढ़ती जाती है और हम सामाजिक स्तर पर एक ऐसी विस्फोटक स्थिति उत्पन्न करते हैं जो हमारे समाज को ध्वस्त कर देगी। मशीन के खिलाफ हम नहीं हैं, न महात्मा गांधी थे। उन्होंने तो चर्खे का विकसित मॉडल बनाने वाले को एक लाख रुपये का इनाम देने की घोषणा की थी। चरखा भी आखिर एक मशीन ही है। गांधी सिर्फ यह चाहते थे कि मशीन इन्सान से बड़ी न हो। अमरीका में जहां इन्सान को प्रगति का केन्द्र बिन्दु नहीं माना गया वहां अब जो समस्याएं पैदा हुई है उन्हें आप जानते ही है

तो भारत में सवाल यह है कि यहां जो प्रचण्ड मनुष्य शक्ति मौजूद उसका उपयोग विकास में कैसे हो और इस विकास का वितरण समान कैसे किया जाये। इस तरह की स्थिति के लिए पश्चिम के केन्द्रीकृत तकनीक शास्त्र की जरूरत नहीं है। इसके लिए हमें

→

मध्यम दर्जे की तकनीक चाहिए । लेकिन जब हम मध्यम दर्जे की तकनीक की बात करते हैं तो लोग कहते हैं कि हम गांधीवादी लोग देश को पिछड़ा हुआ ही रखना चाहते हैं। इसलिए हमने इसे "उपयुक्त तकनीक" का नाम दिया है । जब तक हम अपनी परिस्थितियों के अनुसार तकनीक विकसित नहीं करेंगे कुछ क्षेत्रों में उधार ली हुई कितनी ही आधुनिक तकनीक इस्तेमाल कर लें देश पिछड़ा हुआ ही रहेगा । तेल के संकट से अब लोग घबरा रहे हैं और गांधी की तरफ आ रहे हैं। आप इस देश के सबसे बुद्धिमान लड़के हैं, आपका समाज विशेषाधिकार सम्पन्न समाज है और आप अपना अस्सी प्रतिशत से अधिक समय और शक्ति अमीर देशों की समस्याओं पर शोध करने में लगाते हैं । जब तक आपकी शोध का सम्बन्ध इस देश के आम आदमी की समस्याओं से नहीं जुड़ेगा तब तक आपका सब काम अप्रासंगिक है।

दोपहर बाद जे० पी० ने पत्रकारों से चर्चा की और फिर यूथ फॉर डेमोक्रेसी फोरम के कार्यकर्ताओं से बातचीत की । विद्यार्थियों ने कहा कि हमारा विश्वास संख्या से ज्यादा गुणात्मकता में है । हम दो सौ ऐसे युवा कार्यकर्ता मतदाता शिक्षण के लिए खड़े करना चाहते हैं जिन्हें लोकतांत्रिक तरीकों में विश्वास है और जो विकल्प खड़ा करने के लिए तत्पर हैं । इस चुनाव के बाद हम उसी में लगेंगे ।

शाम को जे० पी० ने रोटरी क्लब में कहा कि जब तक इस देश के उद्योग और व्यापार में सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना नहीं आयेगी तब तक राष्ट्रीयकरण होता रहेगा । और उद्योग नष्ट होते रहेंगे। ट्रस्टीशिप को स्वीकारे बिना इस देश में उद्योग पनप नहीं सकता । सभा की समाप्ति के बाद रोटरी क्लब की ओर से मतदाता शिक्षण के लिए १००१ की थैली जे० पी० को दी गई । प्रेसिडेंट डॉ० चन्द्रकांता रोहतगी की अपील पर देखते-देखते वहीं—१७१३ रुपये और इकट्ठे हुए ।

२ फरवरी को सवेरे जे० पी० आगरा रवाना हो गए ।

आगरा में

जयप्रकाश नारायण ने आगरा के सेन्ट जोन्स कालेज, आगरा कालेज तथा बलवन्त विद्यापीठ बिचपुरी में आयोजित छात्रों एवं तरुणों की सभाओं में कहा कि जब तक वर्तमान लोकतन्त्र की प्रणाली कायम है तब तक मतदान निष्पक्ष तथा स्वतन्त्र होना चाहिए । मतदाताओं को शराब, दबाव, रिश्वत, जातिबिरादरी आदि से प्रभावित करने अथवा प्रलोभित करने वाले प्रत्याशियों का बहिष्कार किया जाए और उनको वोट न दिया जाए ।

जे० पी० ने कहा कि पश्चिम का लोकतन्त्र व समाजवाद औद्योगिक परिवर्तन की देन है, हमारा देश कृषि प्रधान है अतः यहां पर समाजवाद का स्वरूप क्या हो यह भी सोचने की बात है। हम पश्चिम व रूस या चीन की नकल नहीं कर सकते । यहां की भौगोलिक सांस्कृतिक व अन्य परिस्थितियां वहां से भिन्न हैं। उनकी जीवन पद्धति भी अलग है। चीन में आवश्यकता होने पर देश भर के विद्यार्थियों को लाल मोर्चे पर भेज दिया गया । क्या यह यहां सम्भव है ?

मैं आज अनुभव करता हूं कि हिंसा के द्वारा समाजवाद स्थापित करना न स्थायी है न अन्तिम है । आगे जाकर वह कुण्ठाग्रस्त हो जाता है जिसका उदाहरण रूस में बढ़ती हुई आध्यात्म की प्यास है । वहां आज महसूस किया जा रहा है कि समाज को महज भौतिक उन्नति से संतुष्ट नहीं किया जा सकता । इसके लिए हृदय परिवर्तन द्वारा समाजवाद के मूल्यों की स्थापना की जाये जो कानून से भी ऊपर है।

देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के बारे में जे० पी० ने कहा कि भ्रष्टाचार एक व्यापक शब्द है। यह हर युग में रहा है किन्तु इसकी मर्यादा होती है उससे आगे बढ़ने से उसका रूपान्तर हो जाता है जैसे पानी एक खास डिग्री पर गर्म होने पर भाप बन कर उड़ जाता है। भ्रष्टाचार से सभी वर्ग दुखी हैं। युवक उसके विरुद्ध प्रदर्शन करते हैं, उत्तेजना बढ़ती है, बन्द होते हैं किन्तु इससे महंगाई, बेकारी, या अभाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता । इसके लिए सभी को मिलकर उपाय खोजना चाहिए कि नागरिक भ्रष्टाचार को कैसे रोकें ? भ्रष्टाचार ऊपर से चलता है इस को दूर करने का जो तरीका निकले वह शांतिमय अवश्य होना चाहिए।

जे० पी० ने कहा कि हमारे देश में दुर्भाग्य से राजनीति का स्थान सर्वोपरि है जबकि अन्य देशों में सत्ता के मुकाबले अन्य शक्तियां भी हैं । राजनीति के आधार को बदलना जरूरी है ।

जे० पी० ने छात्रों का आवाहन किया कि अभी वे निष्पक्ष और स्वतन्त्र चुनाव के लिए १५ दिन के लिए कालेज छोड़ें फिर अवकाश के दिनों में गांवों में जायें और आम लोगों को लोकतन्त्र की दल-विहीन पद्धति अपनाने के लिए तैयार करें । इसके लिए ग्रामसभाएं स्थापित की जायें और उनके प्रतिनिधि मिल कर ऐसी कार्य समिति बना कर प्रत्याशी तैयार करें जो विधान सभा तथा लोकसभा के लिए चुनाव लड़ सकें।

जे० पी० ने सुरक्षा कानून जैसे कानूनों के उपयोग के प्रति घोर नाराजगी प्रकट की और कहा कि यदि इसके हटाने में युवा शक्ति का प्रयोग होता है तो उनका साहस बढ़ेगा। उन्होंने सर्वोदय कार्यकर्ताओं तथा पत्रकारों से लोकतन्त्र के नय मूल्यों की स्थापना के लिए ग्रामस्वराज्य को प्रमुख स्थान देने की बात कही।

जे० पी० स्वामी कृष्णानन्द से उनके आश्रम में भेंट करने गये जो विगत चार माह से एक बस दुर्घटना में घायल पड़े हुए हैं। आखिरी दिन नैतिक विकास संगठन के २० युवकों ने यूथ फॉर डेमोक्रेसी के लिए अपने को प्रस्तुत किया। बिचपुरी के ४० छात्रों ने अपना समय दिया। जे० पी० ने रवाना होने के पूर्व यूथ फॉर डेमोक्रेसी की यूनिट को अपना आशीर्वाद दिया।

आगरा में बाह तथा जगनेर प्रखंड में तथा नगर में आगरा पूर्वी क्षेत्र में काम करने का निश्चय सर्वोदय मित्रों ने किया उससे जे० पी० को अवगत कराया गया। मुख्यतः इस काम की जिम्मेदारी कन्हैया लाल एडवोकेट, महावीर सिंह गणेश भाई, शिवनारायण अग्रवाल, लोचन प्रसाद, बालमुकुन्द भल्ला कैलाश भाई, कृष्णचन्द्र सहाय, गोपाल नारायण शिरोमणी और राधेमोहन अग्रवाल ने ली।

गुजरात के महाराज कह रहे हैं........

रविशंकर महाराज

"सरकार ने जनता का विश्वास खो दिया है ऐसी स्थिति में गोलीबारी, डंडा मार या गिरफ्तारियों से कारोबार लम्बे अर्से तक नहीं चल सकेगा।

शान्ति, अनुशासन और अहिंसा से आन्दोलन चलाने का प्रत्येक नागरिक को अधिकार है।

समझदार गुजरात में, पिछले कुछ समय से लूटपाट, तोड़फोड़ और मकान आदि जलाने की जो घटनाएं घटी हैं उनसे मैं अत्यन्त व्यथित हुआ हूं। ये अपना यश नहीं बढ़ायेंगी। मैं सायटिका के दर्द से पीड़ित हूं अतः लोगों के बीच में घूम नहीं सकता। यह मेरा दुर्दैव है। पर गुजरात की जनता को एक दर्दभरा आवाहन करता हूं कि हम गांधी के नाम को न लजाएं। कोई भी आंदोलन शान्ति और अहिंसात्मक ढंग से किया जाये तभी सफल हो सकता है। गांधी और सरदार ने जो सिद्धि पायी वह इसी मार्ग से पायी है। राष्ट्र की या दूसरों की सम्पत्ति तोड़ने या जलाने से तो हम ही गरीब बनते हैं। चाहे जैसी उत्तेजना फैलायी जाती हो तो भी, शान्ति अहिंसा और अनुशासन से आन्दोलन चलाया जा सकता है। और ऐसा आन्दोलन चलाना प्रत्येक नागरिक का अधिकार है। विद्यार्थी मित्र, जो कि जन कल्याण, राहत और कुदरती प्रकोप आदि कार्यों में नित्य तत्पर रहे हैं—जिसका मैं स्वयं साक्षी हूं—उन्हें मैं आग्रहपूर्वक कहूंगा कि किसी के पिछलग्गू हुए बिना शान्ति और अहिंसा के मार्ग से किंचित भी विचलित न हों।

आम लोगों से मैं विशेष रूप से अनुनय करूंगा कि सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक व्यवस्था में बुनियादी परिवर्तन किये बिना हमें परेशान करने वाली समस्याओं का निराकरण हो नहीं सकेगा। इसके लिए सब को मिल कर पुरुषार्थ करना पड़ेगा।"

बिल्ली चूहे को पकड़े और तितर-बितर हो जाये ऐसी स्थिति चुनाव खर्च के बारे में विधायक की हो जाती है। वे भी उतने ही अस्त-व्यस्त हो जाते हैं और चुनाव-खर्च वापस पाने के प्रयत्न में ही सतत् संलग्न रहते हैं। पहले दो-दो, पांच-पांच हजार रुपयों के खर्च की बात करते थे, लेकिन आज लाख रुपये के खर्च की बात होती है। इस प्रकार पैसे खर्च करके खुद चल कर सेवा करने के उद्देश्य से गये हुए विधायक इस्तीफा देंगे नहीं, चुनाव खर्च वापस प्राप्त करने के लिए विधान सभा में पहुंचे हैं!

लोगों को तो अब बिना पैसे चुन कर आ जायें—ऐसे लोक सेवक प्रतिनिधियों को विधान सभा में चुनकर भेजना चाहिए जिससे—चूंकि चुनाव में कुछ खोना नहीं पड़ रहा है—अतः उसे वापस प्राप्त करने की उन्हें इच्छा ही न रहे या जनता के बुलाने पर तुरन्त इस्तीफा दे कर वापस आ जाएं।

क्या हम इस संकेत को समझेंगे ?

गुजरात में जो घटनाएं घट रही हैं वे किसी परिस्थिति या कारण विशेष के प्रति जनता का आक्रोश नहीं है, बल्कि आजादी के बाद पिछले २५-२६ वर्षों में जनता का जो भ्रम निरसन हुआ है उसका संकेत है। तरह-तरह के प्रश्नों को लेकर देश के विभिन्न हिस्सों में छोटे-बड़े आन्दोलन होते रहे हैं परन्तु पिछले महीने भर से गुजरात में जो कुछ हो रहा है वह देश के क्षितिज पर नये अरुणोदय का संकेत प्रतीत होता है। गुजरात में जनता का आक्रोश छुट-पुट किन्हीं भी कारणों को लेकर प्रकट हुआ हो परन्तु उसका अब जो स्वरूप बना है वह किसी एक या दूसरी समस्या के समाधान का प्रयत्न नहीं है बल्कि पिछले पच्चीस वर्षों में एक के बाद एक जनता की जो आशाएं और आकांक्षाएं टूटी हैं उनके प्रति लोक-विद्रोह का संकेत है। सवाल किसी खास समस्या के हल का, एक की सरकार बन जाने के बजाय दूसरी सरकार के बन जाने का नहीं है, परन्तु एक प्रकार से जनता के सम्पूर्ण भ्रम निरसन का यह द्योतक है।

गुजरात का जन-विद्रोह जिस चीज की ओर संकेत कर रहा है उसका समाधान छुट-पुट समस्याओं के हल से, मंत्रिमंडल के परिवर्तन से या जनता की कुछ तात्कालिक कठिनाइयों को दूर कर देने मात्र से नहीं होगा। शायद वह देश की सारी परिस्थिति में पक रहे किसी बहुत बड़े परिवर्तन का संकेत है। जिस जन-शक्ति को प्राप्त करने की कोशिश हम इतने वर्षों से कर रहे हैं वह एक अकल्पित रूप में गुजरात में प्रकट होती नजर आ रही है। क्या हम इस संकेत को समझेंगे? गुजरात की घटनाओं में एक नई क्रान्ति के अरुणोदय का दर्शन हो रहा है। क्या हम इस संकेत को और इस अवसर को पकड़ पायेंगे?

—सिद्धराज ढड्ढा

मैं मरने को तैयार हूं

(रविशंकर महाराज की उपस्थिति में हुई अहमदाबाद के प्रमुख नागरिकों की बैठक ने गुजरात की वर्तमान परिस्थिति में, नागरिकों के लिए आवश्यक आपद्धर्म के बारे में चर्चा की।)

मुकेश पटेल (गुजरात विश्वविद्यालय सीनेट के विद्यार्थी सदस्य) विद्यार्थियों से आप क्या अपेक्षा रखते हैं ?

महाराज नगर में हिंसा न फैले यह विद्यार्थी देखें।

मुकेश विद्यार्थी अहिंसक ढंग से ही लड़ना चाहते हैं। विद्यार्थी अभी हिंसक नहीं हैं। ग्रामीण भी उत्साह से जन जागृति के हमारे इस आन्दोलन में जुड़े हैं। पर सरकार उन्हें रोकती है। भ्रष्टाचार देखकर विद्यार्थियों का दिल तिलमिला उठता है। शासन की कुरीति और गलत नीतियों का शिकार जब आम-समुदाय, जनता है, तब वह बंद हो यही विद्यार्थियों का प्रधान लक्ष्य है। यदि विद्यार्थी-आन्दोलन न हुआ होता तो शासन इतना भी सचेत नहीं होता।

महाराज इस जागृति के साथ सेना भी आई है।

मुकेश साथ में म. राज भी आया है।

उमाशंकर जोशी यह सेना तो आ गई अब आगे क्या ?

महाराज आप सोचिये कि क्या किया जाय ?

आचार्य यशवंत शुक्ल आपने जो अन्तर-व्यथा व्यक्त की है वह सबने स्वीकार की है। यह सिर्फ दाना-पानी का सवाल नहीं है।

महाराज मैं मरने का तैयार हूं।

मुकेश नगर के नेता भी इस जंग में साथ दें। अपनी रसिया दूर रख कर अनुभवहीन विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करें। वे यदि सहयोग दें तो हम शासन को निकाल कर ही दम लेंगे। अन्यथा विद्यार्थियों को और कोई दिलचस्पी नहीं है।

उमाशंकर जोशी यदि आन्दोलन अहिंसक होगा तो सभी उसमें आयेंगे। आप भी अगवानी में रहें।

मुकेश हम तो आगे हैं ही और रहने के लिए तैयार भी हैं।

भ्रष्टाचार के सबसे बड़े पुतले को निकाल फेंकेंगे तभी भ्रष्टाचार खतम होगा।

परिवर्तन में विश्वास रखने वाले युवकों का खुला पत्र

पूज्य रविशंकर महाराज,

गुजरात की वर्तमान परिस्थिति के बारे में आपके विचारों के अनुसार हम जैसे सैकड़ों जवानों को नूतन प्रभात के दर्शन हो रहे हैं। इसलिए यह पत्र लिख रहे हैं।

हमने गांधी को देखा नहीं है पर गांधी के नाम पर खादी पहनकर राजसत्ता और व्यापार उद्योग चलाने वाले सांठगांठिये होते हैं और व्यक्तिगत स्वार्थ-लोलुप होते हैं ऐसी ही हमारी धारणा बनी है। सत्ता में बैठे हुए लोग प्रजातंत्र के नाम पर गरीब व अज्ञान जनता के पैसे से सेवा के नाम पर गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। ऐसी मिट्टी से बने नेता बातचीत या अनुनय-विनय को तो सुनते ही नहीं हैं, पत्थर या एकाध बस को जलाना ही पड़ता है, ऐसा अनुभव हमें हो चुका है।

इस बार भ्रष्टाचार और उसके ही कारण उत्पन्न अनाज आन्दोलनों में समूचे गुजरात की सामान्य जनता ने जो आवाज उठाई उसमें हमारे जैसे नवजवानों ने अगवानी की है और ऊपर जैसे कहा गया है वैसे ही हिंसक साधन अपनाये। हम समझते हैं कि तोड़-फोड़ से जो नुकसान होता है वह राष्ट्र की सम्पत्ति का ही होता है और उसे हम ही को चुकाना होता है। परन्तु भ्रष्टाचारी नेता लोगों के हिसाब से जनता का पैसा हजम करते हैं। इसके सामने हमसे हुए नुकसान की तुलना क्या हो सकती है ?

अभी गुजरात में शांति दीखती है पर पुलिस और सेना के बल पर शांति रहेगी नहीं। जिस जनता ने अंग्रेज जैसों को हटाया, उसके सामने इन छोटे जन्तुओं की कोई हस्ती नहीं है। सरकारी आश्वासनों में जनता को कोई भरोसा नहीं है। गुजरात की ढाई करोड़ जनता को पर्याप्त मात्रा में और उचित भाव में अनाज, तेल, किरोसीन, कपड़ा आदि उचित दाम से पहुंचाने की ताकत इस भ्रष्ट सरकार में नहीं है। और उसके द्वारा ढाये गये इस अभूतपूर्व जुल्म को जनता भूलने वाली नहीं है। इसलिए इस शासन के विधायकों को इस्तीफा देने की आपने जो चेतावनी दी है इससे हमें बड़ी खुशी हुई है। पर आपके निवेदन मात्र से चालबाज, जिद्दी, महत्वाकांक्षी भ्रष्ट नेतागण इस्तीफा दे देंगे इस बात में कोई दम नहीं है। इसके लिए किसी कार्यक्रम की आवश्यकता रहेगी। इस या उस पक्ष या गुट में हमें कोई दिलचस्पी नहीं है। आपने जैसे सुझाया है उस प्रकार के लोकसेवानिष्ठ लोक प्रतिनिधि ही विधान सभा में पहुंचें यह आवश्यक है।

इस परिस्थिति में हमारे जैसे हजारों नवयुवक आन्दोलन के दूसरे चरण के लिए अधीर और तत्पर हैं। गुजरात में आज अहिंसक नेतृत्व की कमी महसूस हो रही है। हम जैसे विद्यार्थी, पत्रकार, साहित्यकार, सर्वोदयी कार्यकर्ता, अध्यापक तथा सामान्य शांतिप्रिय नागरिक आपके जैसे सर्वथा योग्य पुरुष के मार्गदर्शन की अपेक्षा रखते हैं।

इस समय के अनुभव से हमें लगा है कि बेतरतीब वर्तन करने से हमारा उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ है। सामान्य जनता भी परेशानी में पड़ गयी है। ऐसे मौके पर आपके जैसे अनुभव-वृद्ध गांधीवादी, त्यागी नेता के नेतृत्व की हमें आवश्यकता है। हमें अहिंसक प्रतिकार की तालीम आप दें। कोई ठोस कार्यक्रम हमें दें। प्रजातंत्र में किस तरीके से आंदोलन हो सकता है इसका मार्गदर्शन करें। दुर्दैव से अंग्रेजों को भी मात दे दे, ऐसा फासिस्टवादी नेतृत्व आज है जो शासन-तंत्र छोड़ने को तैयार नहीं है। इस परिस्थिति को गांधी के सत्याग्रह के लिए उपयुक्त व अमूल्य अवसर मानकर आप हमारी अगवानी करें।

इस गुजरात राज्य का आपने उद्घाटन किया है। गुजरात राज्य के सभी मुख्यमंत्री अपना पद ग्रहण करके सबसे पहले आपके चरण छूते हैं। इसलिए जनता को सही राह दिखाने की अब आपकी ही जिम्मेदारी है।

हम आपकी राह देख रहे हैं।

विनीत

सामाजिक परिवर्तन में विश्वास रखने वाले युवक

भूदान-यज्ञ, सोमवार, १८ फरवरी,'७४

गुजरात सुलग रहा है। अपनी चुनी हुई लोकतांत्रिक सरकार और अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के सामने सामान्य जनता का रोष विविध स्वरूप में प्रकट हो रहा है। जनता उनके सामने आरोपनामा पेश कर रही है—

गुजरात के शासकों के नाम

जनता का आरोपनामा

कान्ति शाह

—जनता का आरोप है कि हमने 'गरीबी हटाओ' के नारे पर विश्वास रख कर जिन को प्रचण्ड बहुमत के साथ चुन कर विधान सभा में भेजा, उन्होंने हमारा विश्वासघात किया है। इस नारे को व्यवहार में चरितार्थ करने के लिए उन्होंने न कोई तत्परता या एकाग्रता दिखाई है न कोई प्रतीतिकर पुरुषार्थ किया है। बल्कि उनके बरताव से तो ऐसा लगता है कि उनमें से ज्यादातर लोग प्रामाणिक ही नहीं हैं। उनके लिए यह महज एक राजनीतिक नारा है।

—जनता का आरोप है कि जिस काम के लिए इन प्रतिनिधियों को चुन कर भेजा जाता है, वह तो एक किनारे रह जाता है और ये निर्लज्जता से सत्ता की होड़ और एक-दूसरे के पाँव खींचने में लग जाते हैं। लोग बेचारे यह नया नाटक देखते रहते हैं। 'लोक' को बेवकूफ मानकर मनचाही तिकड़म करते रहने का इन राजधारियों को चस्का लग गया है। इसलिए जनता का आरोप है कि उन्होंने अपने या अपने गुट के या अपने पक्ष के सकीर्ण, और तात्कालीन स्वार्थ के खातिर हमारा विश्वासघात किया है और खुद सत्ताधारियों के हाथ में कठपुतली के माफिक नाचते रहे हैं।

—जनता का आरोप है कि चारों ओर आज जो व्यापक भ्रष्टाचार फैला हुआ है, उसमें अब उच्चस्थान पर बैठे हुए लोग भी शामिल हैं। इस भ्रष्टाचार को निर्मूल करने की बात तो दूर रही, उसको अत्यन्त बढ़ावा दे, ऐसी ही इन लोगों की कुछ रीति-नीति रही है। मर्चन्टों और सत्ताधारियों की आपस की साठगाठ के फलस्वरूप इस भ्रष्टाचार को अपार प्रश्रय, गंभीर और व्यापक स्वरूप मिला है। इनमें से जनता को छुड़ाने के लिए ये प्रतिनिधि लगने वाले नहीं हैं, क्योंकि आज तो सब खुद ही भक्षक बन चुका है।

—जनता का आरोप है कि आम लोगों को जीवन की आवश्यक चीजें उपलब्ध करवाने में ये प्रतिनिधि और सरकार बिलकुल गैर-जिम्मेदार रहे हैं। आज अब यहाँ से अनाज जा रहा है, वहाँ से आ रहा है, ऐसी बातें आये दिन हो रही हैं। लेकिन आज तक ये सब व्यवस्थापक कहाँ सोये हुए थे। इसलिए ये सब प्रतिनिधि जनता की तकलीफ दूर करने के लिए उत्सुक, तत्पर एवं ईमानदार हैं, इसी का विश्वास जनता को नहीं हो रहा है। ये लोग जनता के कष्टों के प्रति क्रूर रूप से उदासीन हैं।

आरोप है कि जनता की आस्था और विश्वास के बजाय इनको सत्ता और लाठी-बंदूक पर ज्यादा भरोसा है। इसलिए जनता के रोष को समझने और शान्त करने की कोशिश में लगने के बदले पुलिस-सिपाही के जरिये कुचलने की चेष्टा वे करते हैं। लोकतान्त्रिक भावना के यह विरुद्ध है।

—यह भी समझने की बात है कि यह आरोपनामा किसी एक व्यक्ति, किसी एक गुट, या किसी एक पक्ष तक ही सीमित नहीं है। यह आरोपनामा तो आज के पार्टी प्रजातन्त्र के लिए है। और यह सिर्फ पिछले दो-तीन साल की परिस्थिति के फलस्वरूप भी नहीं है। स्वतन्त्रता के बाद पिछले २६ सालों में पार्टी राजनीति के बारे में मन में जो अनास्था बढ़ती रही है, वही आज प्रकट हो उठी है। जनता अब इस राजनीति से ऊब गई है। जैसे १९४२ में भारत की जनता ने कह दिया था—भारत छोड़ो, वैसे आज वह इन राजनीति के खिलाड़ियों को कहना चाहती है—गद्दी छोड़ो। हमें ऐसी राजनीति नहीं चाहिए। हम चाहते हैं लोक प्रजातन्त्र।

यह है आज की घड़ी की चुनौती। यह चुनौती है सामान्य जनता का हित चाहने वाले सभी के सामने, क्रांति के सभी अलम्बरदारियों के सामने, समाज-परिवर्तन और प्रगति के लिए उत्सुक सभी के सामने, आज के लोकतंत्र को परिशुद्ध करके उसको वास्तविक बनाने की इच्छा रखने वालों के सामने, मानवतावादियों के सामने, नव वामपथ के सामने, नये समाज के नव-निर्माण की आकांक्षा रखने वाले नवयुवकों के सामने। लोकतन्त्र के विकास के लिए एक बिलकुल नया मार्ग ढूंढना है।

आज सिर्फ अपने देश में ही नहीं, सारी दुनिया में परम्परागत लोकतन्त्र और समाज-परिवर्तन कुंठित हो गया है। सत्ता, संपत्ति और संगठित स्वार्थ के शिकंजे में आज वह जकड़ गया है। और इन तीनों की अदृश्य साठगाठ से मामला अत्यन्त भयावह हो गया है। सत्ता और संपत्ति अपने-अपने स्वार्थ के लिए एक दूसरे को पूरी तरह से मदद दे रही है। अपनी लूट कायम रखने के लिए संगठित स्वार्थों यूनियनों को भी कुछ हिस्सा देकर मोल ले लेती है, राजी कर लेती है। इन तीनों का बोझ ढो रही है—आम जनता। बेचारी आम जनता का लगातार शोषण हो रहा है। इसमें से मुक्ति की कोई राह आज उसको नहीं दीखती। जो यह राह दिखायेगा, वह अब इस देश में और दुनिया में नयी क्रांति लायेगा। वह होगी आम जनता की क्रांति, मानवमुक्ति की क्रांति।

ऐसी क्रांति के लिए सर्वोदय आंदोलन प्रतिज्ञाबद्ध है। पिछले २०-२२ साल से हम सब इसके लिए प्रयास कर रहे हैं। यह आंदोलन परिस्थिति की माँग में से, चुनौती में से जन्मा है और पनपा है। १९५१ में तेलंगाना से एक चुनौती उठी थी। उसका मुख्य स्वरूप आर्थिक था। उसके उत्तर में भूदान का कार्यक्रम निकला। वह मुख्यतया आर्थिक परिवर्तन का कार्यक्रम था। इसलिए उस वक्त के ग्रामदान में भी जोर रहा मिल्कियत विसर्जन एवं दान पर।

बाद में १९६२ में चुनौती आयी चीन

(शेष पेज १६ पर)

अन्न भी राजनीति का मोहरा

कुमार प्रशांत

उस दिन सामान्य चर्चा मे बम्बई के एक मित्र बोले, "बम्बई म आज दो ही जगह भीड है —एक तो राशन की दुकानो पर और दूसरी न होटलो मे जहा एक 'डायट' की कीमत ो रुपये से भी ऊपर होती है।" बम्बई इन यों मे इस देश का प्रतिनिधित्व कर रहा है। देश मे भीड है उसके दरवाजे पर जिसके सपत्ति द्वारा खरीदी सत्ता है और शोर सके नाम का, जिसके पास सत्ता, सपत्ति स्वाभिमान तीनो से रहित सख्या है। कम मे गाधी के दरिद्र नारायण की दरि- उसकी सस्कृति बन गई है।

श मे सर्वत्र अभाव है, और देश का डा वर्ग भविष्य की तमाम आशाए ा है। बहुत देर चर्चा करने के बाद के गाव के एक हलवारे प्रतापचन्द ने गहरी सास लेकर कहा था 'अब गरीबवा कौनो ऊपाय नई धई।' (गरीब के लिए अब कोई रास्ता नही रह गया) गरीबी हटाओ' के जोरदार नारे का यह मासूम निष्कर्ष है। पैसे का मूल्य लगातार गिरता जा रहा है। पिछले दिनो विसमश्री ने लोकसभा म बताया कि १९६२-६३ मे रुपये की कीमत ९२ ५६ पैसे थी जो १९७२-७३ मे ४८ ३१ पैसे रह गई है। यह स्थिति स्पष्ट से स्पष्टतर होती जा रही है कि बाजार सरकार के नियत्रण म नही है और एक साधारण आदमी का, सरकार और बाजार दोनो पर कोई अधिकार नही है। गरीब के वोट और नोट से चलने वाली इन दोनो शक्तियो ने उस गरीब को देश की प्रगति के हाशिये पर डाल दिया है।

हरित क्रान्ति का खोखलापन

जिस हरित क्रान्ति के विषय मे इतने वादे हुए, उसका हश्र हुआ कि १९७२-७३ मे कृषि उत्पादन मे ४५ लाख टनसे भी ज्यादागिरावट हुई है। अन्न के अभाव ने लोगो को बेहाल कर रखा है। आज तक विदेशी अन्न हमारी सहायता करता रहा है। आज से कुछ समय पहले ही अभाव की स्थिति स उबरने के लिए सरकार ने ४५लाख टन अनाज आयात करने की सोची थी। अनुमान किया गया था कि १२४ डालर प्रति टन की दर से ५६० करोड रुपये की विदेशी मुद्रा, इतने अन्न की खरीददारी के लिए पर्याप्त होगी। अभी यह योजना कागज पर ही थी कि विदेशी बाजारो म खाद्यान्न दर २०० डालर प्रति टन हो गई। आशा की गई कि यूरोप और अमरिका के बाजारो मे नई फसल पहुचने ही अनाज का भाव गिरेगा। पर वह आशा भी विफल गई। आज २१४ डॉलर प्रतिटन की दर से खरीद चल रही है और यह भाव बने रहने की उम्मीद है। अब हमारे व्यवस्थापको का आस्ट्रेलिया के अनाज का भरोसा है। पर इस कमी का मुकाबला करने के लिए आस्ट्रेलिया हम पूरा अनाज नही दे सकेगा। समार खाद्यान्न कमी के सकट मे पडा है।

सयुक्त राष्ट्र सघ की खाद्य सस्था न विश्व की गम्भीर खाद्यस्थिति की सूचना दी है। उसके अनुसार विश्व म दो प्रतिशत की दर से जन सख्या वृद्धि हुई है तो तीन प्रतिशत की दर से अनाज के उत्पादन मे गिरावट आई है। परिणामस्वरूप ससार विकट खाद्यस्थिति के सम्मुख है। आशका है कि कोई एक करोड लोग अनाज की कमी के कारण तुरन्त या धीरे-धीरे मृत्यु के मुख म जायेंगे। इस विकट स्थिति के पहले शिकार विकासशील देश होगे।

तस्वीर का दूसरा पहलू

यह तस्वीर का एक पहलू है। दूसरा पहलू ज्यादा महत्वपूर्ण और स्थिति की तहे खोलने वाला है। अन्न आज राजनीतिक शत-रज की गोटी बन गया है। बडे मुल्क सबकुछ लेकर बाजार मे उतर आये है। कल तक मनुष्य सौदे की वस्तु था। सभ्यता के इति-हास मे यह घडी भी आई है जब मनुष्य की मौत बाजार मे बिकने वाली वस्तु हो गई है।

१९७१ मे रूस मे १८.१२ करोड टन अनाज पैदा हुआ और १९७२ में १६ ८० करोड टन। रूस के उत्पादन मे कमी हुई तो

प्रतापचन्द

'गरीब ला कौनो उपाय नई धई'

पूर्व यूरोप के साम्यवादी देशो म उत्पादन बढा। किन्तु उत्पादन मे वृद्धि के बावजूद पूर्व यूरोपीय देश अन्न के मामले मे आत्मनिर्भर नही हुए है। रूस पर वे निर्भर है और रूस इस निर्भरता का राजनैतिक फायदा उठाता रहा है। इस बार उसने अम-रिका कनाडा, आस्ट्रेलिया अर्जेन्टिना आदि से ३०० लाख टन अनाज खरीदने की तैयारी की है जिसम अकेले अमेरिका से उसे ३ करोड टन गेहू मिला है। और अमेरिका ने रूस को यह गेहू माटी मोल दिया है—१ ६५ डॉलर प्रति बुशल। रूस इतना बडा अनाज-भडार इकट्ठा कर क्यो रहा है? उसके अनाज मे कुल ८ प्रतिशत की कमी हुई थी। रूस के अतिरिक्त जापान, चीन भी ऊची कीमतें दे कर अपना अनाज भण्डार इकट्ठा कर रहे है और अमेरिका इन्हें अनाज दे रहा है। इन बडी खरीददारियो के कारण अनाज बाजार मे दाम बेहिसाब बढ गये है। १ ६५ डॉलर प्रति बुशल गेहू रूस को देने के बाद अभी बाजार मे गेहू ४ ७७ डालर प्रति बुशल है। पूर्व यूरोपीय देशो के पास इतनी विदेशी मुद्रा है कहा कि वे मनमाना अन्न खरीदकर पेट पाल सकें? इस विकट स्थिति मे रूस दूसरे म खरीदा अन्न उनके हाथ 'उचित

→

→

कीमत' पर बेचेगा और खरीदेगा उनकी विवश स्वामिभक्ति ! रूस ने घोषित कर रखा है कि पूर्वी यूरोप की खाद्य समस्या के के लिए वह ५० लाख टन अनाज देगा। इटली को रूस ने २२,००० टन गेहूं दिया है और भारत को २० लाख टन गेहूं उधार देगा। पूर्व यूरोपीय देशों को सिर्फ अन्न के लिए भी नहीं, यहां कल-कारखानों के कच्चे माल के लिए भी रूस पर निर्भर रहना पड़ता है। यह निर्भरता भी उन्हें खरीदकर लेनी पड़ती है (या अपना कुछ गिरवी रख कर अपनानी पड़ती है)।

भारत ने रूस से, अनाज पहले ही मांगा था—अपने खरीदे अनाज में से कुछ हमें दो। पर रूस ने इन्कार कर दिया था। भारत की स्थिति जब और बुरी हुई तब जाकर रूस वही अनाज दे रहा है, किन्तु इसके साथ क्या शर्तें होंगी जनता जान पायेगी क्या ?

बदलते हथियार

विश्व में सत्ता संघर्ष के शस्त्र तेजी से रूप बदल रहे हैं। हथियारों की लड़ाई जितनी महंगी होती जा रही है उतनी ही निरर्थक भी, चूंकि निर्णायक विजय किसी पक्ष को मिल नहीं पाती, अतः आर्थिक शस्त्र ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं। अन्न हो तेल हो या और कुछ, विकसित देश उत्पादक देशों से बड़ी मात्रा में इन चीजों को खरीद कर बाजार सूना कर देते हैं। बाजार में कीमतें आकाश छूने लगती है। अविकसित देश अपनी जेब की कूवत समझते हैं। अन्न सहकार देशों के पास जाते हैं और उनके प्रभाव क्षेत्र में पलने लगते हैं। ये सहायताएं अविकसित देशों को किसी भी क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं बनाती, उनका राजनैतिक और आर्थिक शोषण ही करती है। अफ्रीकी देशों में चीन समेत सभी बड़े राष्ट्रों की भूमिका, पाकिस्तान में अमेरिका की भूमिका, पूर्वी यूरोप में रूस की भूमिका, पी० एल० ४८० का इस देश का अनुभव—सब मिल कर यही प्रमाणित करते हैं। आज की परिस्थिति में अमेरिका एक कुशल व्यापारी की भूमिका अदा कर रहा है। इस वर्ष वहां फसल वृद्धि की आशा है। कुछ अनाजों के उत्पादन में २० प्रतिशत और कुछ में इससे भी ज्यादा वृद्धि की आशा है। अनाज की ऊंची (और ऊंची चढ़ती जा रही) दर ने अमेरिकी उत्पादकों को इस वर्ष खेती में खूब खचने को आकर्षित किया है। अतः अभी जरूरतमंद शक्तियों को उनके स्वार्थानुकूल अनाज मुहैया कर अमेरिका अपनी 'शान्तिप्रिय' भूमिका भी बरकरार रखेगा और अगली फसल आने पर फिर से अपने प्रभाव क्षेत्रों के विस्तार में समर्थ हो जाएगा।

सत्ता-संघर्ष की इस धक्कमपेल में भारत समेत सभी विकासशील देशों को अपनी भूमिका तय कर लेनी चाहिए।

देश की आर्थिक नीतियों को फिर से परखने की जरूरत है। सरकार के पास खाद्यान्न का भंडार होना चाहिए और इसके लिए उत्पादक को प्राथमिकता देनी होगी। पांचवी पंचवर्षीय योजना के चालू होने से पहले एक वर्ष के 'योजना-अवकाश' की जो सिफारिश आर्थिक अनुसंधान परिषद के महामंत्री एस० भूतलिंगम् ने की है वह वरदान बन सकती है यदि सरकार हठधर्मिता छोड़कर सारे आयोजन पर पुनर्विचार करे।

गुन्नार मिर्डल का यह कथन ध्यान देने योग्य है अविकसित देशों के अधिकतर अर्थशास्त्री भी पश्चिमी राष्ट्रों से पढ़ कर आते है और इसलिए उनके अर्थशास्त्र का ज्ञान भी पश्चिमी बाजार के अनुकूल होता है। अपने राष्ट्र के लिए उनका ज्ञान निरर्थक है। भारत के लिए भी यह स्थिति लागू होती है। हमारी तमाम योजनाएं उधार की अक्ल और सहायता पर चलती हैं।

मालगुजारी में अन्न

सरकार ने गेहूं का थोक व्यापार अपने हाथ में ले लिया। पर कितना गेहूं सरकारी भंडार में इकट्ठा हो सका ? इसके बदले यदि सरकार किसानों से मालगुजारी के रूप में पैसा न लेकर अन्न ले तो बड़ी सहजता से अनाज का नियमित भंडार उसके पास रहेगा। किसान अनाज उपजाये, उसे बाजार में बेचे और फिर सरकार को पैसा दे—इस गोरख धंधे में सरकार के हाथ अनाज का एक दाना भी नहीं आता है। हमें वृहत योजनाओं का, फार्मों का मोह छोड़ना चाहिए। छोटे जोत के खेतों की उत्पादन क्षमता कैसे बढ़ेगी, लघु उद्योगों का मान कैसे सरता होगा, आदि हमारी योजना के विशेष पक्ष होने चाहिए। बड़े राष्ट्रों की धक्कमपेल से स्वाभिमानपूर्वक अलग बने रहने के लिए आवश्यक है कि विकासशील देश अन्न के मामले में आत्मनिर्भर हो जायें। और इसके लिए इस देश की आर्थिक नीति में गांवों की क्या भूमिका होगी इसका स्पष्ट आकलन आवश्यक है।

जमीन का सवाल

दक्षिणी गोलार्ध में किसी भी सामाजिक परिवर्तन की कल्पना, जमीन के सवाल को परे रख कर नहीं की जा सकती। इस जमीन से जीवन पानेवाली जनता के पुरुषार्थ को जिस आर्थिक आयोजना में जगह न हो वह इस देश के लिए अनुपयुक्त है। सत्ता, सम्पत्ति आदि के केन्द्रीयकरण की योजना, आज की जड़ता को तोड़ नहीं सकेगी। विज्ञान के साधनों के उपभोग की दौड़ में सबसे पीछे खड़ा गांधी का 'अन्तिम व्यक्ति' अपनी भूमिका नहीं देख पा रहा है।

वह अन्तिम व्यक्ति जब तक अन्त में खड़ा रहेगा, देश आगे आने वाला नहीं है।

कस्तूरबाग्राम में गोसंवर्धन

इन्दौर, कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत निकटस्थ कस्तूरबा ग्राम के कृषि क्षेत्र में कृषि एवं गो-संवर्धन के सघन प्रयोग हो रहे हैं। इन प्रयोगों का लाभ किसानों को भी मिले इस हेतु से किसानों के स्तर' पर कृषि एवं गोसंवर्धन का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया जा रहा है। पाठ्यक्रम तीन व छः माह की अवधि के हैं। प्रशिक्षण अवधि में प्रशिक्षणार्थी को ६०, ८० माहवार छात्रवृत्ति भी दी जाती है। अधिक जानकारी के लिए संयोजक, प्रशिक्षण कृषि क्षेत्र, पो० कस्तूरबा ग्राम (जिला-इन्दौर) से संपर्क किया जा सकता है।

यह स्मरणीय है कि कस्तूरबा ग्राम का कृषि क्षेत्र एवं गोशाला प्रदेश एवं देश में आदर्श है। (सप्रेस)

आजादी के बाद बदतर के पच्चीस साल

—श्रवणकुमार गर्ग

यह चर्चा फिर हवा में है कि देश से अंग्रेजी हटाई जाए या नहीं ? समस्त भारतीय भाषाओं के लिए क्या एक लिपि हो सकती है ? क्या राष्ट्रसंघ में हिन्दी के प्रवेश की सम्भावना के ख्याल से उसे रोमन लिपि में लिखा जाना चाहिए ? आदि-आदि।

अखिल भारतीय अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन ने हाल ही में डा० वेदप्रताप वैदिक के भाषणों व लेखों की एक पुस्तिका— अंग्रेजी हटाओ क्यों और कैसे ? प्रकाशित की है। डा० वैदिक अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन के प्रवक्ताओं में हैं। पुस्तिका ने अपनी रोचकता के कारण सम्बन्धित सभी लोगों का ध्यान आकर्षित किया है।

लगभग ४० पृष्ठों की पुस्तिका में वैदिक ने एक भाषा को हटाने और दूसरी किसी भाषा, या किन्हीं भाषाओं, को स्थापित करने के सम्बन्ध में यथा सम्भव सभी सम्भावनाओं की चर्चा की है। वैदिक का मानना है कि देश की चौतरफा प्रगति के रास्ते अब तक केवल इसलिए बन्द रहे हैं कि हम एक विदेशी भाषा अंग्रेजी को गुलामों की तरह अपनाए हुए हैं। और अंग्रेजी ज्ञान का एक साधन होने के बजाय इस देश में रुतबे का, विशेषाधिकार का, रुपए का हथियार बन गई है।

अंग्रेजी के समर्थन में दिये जाने वाले तमाम तर्कों की पुस्तिका में न सिर्फ भर्त्सना की गई है, भारतीय भाषाओं, विशेषकर हिन्दी को उचित स्थान प्राप्त कराने की जोरदार मांग भी की गई है।

वैदिक नई दिल्ली स्थित अन्तर्राष्ट्रीय शोध संस्थान (स्कूल ऑफ इण्टरनेशनल स्टडीज) के विद्यार्थी रहे हैं और अफगानिस्तान की विदेश नीति पर अपना शोध प्रबंध अंग्रेजी के बजाय हिन्दी में लिखने के लिए उन्होंने लम्बे अरसे तक संस्थान और सरकार से लड़ाई की और सफलता हासिल की है। अपने शोध प्रबंध से सम्बन्धित सामग्री प्राप्त करने के सम्बन्ध में उन्होंने विश्व के एक दर्जन से अधिक देशों की यात्रा भी की है। विश्व के और देशों में अंग्रेजी का स्थान क्या है ? अंग्रेजी किस हद तक विश्व भाषा है ? अन्य देश बिना अंग्रेजी के भी अपना काम-काज कैसे चला लेते हैं ? इन सब बातों को उन्होंने नजदीक से परखा है और इसीलिए पुस्तिका में भाषा के सवाल पर विश्व सन्दर्भ में चर्चा की गई है।

इसे हिन्दुस्तान का दुर्भाग्य ही मानना चाहिए कि आजादी के पच्चीस वर्षों के बाद भी एक ऐसे मसले को जिसके लिए किसी विदेशी सहायता की और विदेशी सधि की आवश्यकता नहीं थी हम हल नहीं कर सके। ऐसे कई छोटे छोटे राष्ट्र हैं जो १९४७ के बाद आजाद हुए और अपनी अपनी भाषाओं के पैरों पर खड़े हो गए और हम हैं जिन्हें 'नकली बैसाखियां असली पैरों से भी अधिक प्यारी हो गई हैं। एक विदेशी जुबान को ओढ़ कर देश की भाषा को अपनाने से हम लगातार कतरा रहे हैं।

जो लोग इस देश में अंग्रेजी को बनाये रखना चाहते हैं, उनका मुख्य तर्क यह है कि अंग्रेजी एक विश्व भाषा है विश्व के अधिकांश हिस्सों में अंग्रेजी बोली जाती है, दुनिया का सारा ज्ञान सारे महत्वपूर्ण ग्रन्थ और आधुनिकतम वैज्ञानिक उपलब्धियां अंग्रेजी में ही उपलब्ध हैं। विश्व के अन्य देशों के साथ हिन्दुस्तान वैज्ञानिक घुड़दौड़ में पीछे रह जाएगा अगर अंग्रेजी का दामन छोड़ दिया, आदि आदि।

वैदिक ने बताया है कि यह सरासर झूठ है कि अंग्रेजी एक विश्व-भाषा है। अगर आपने अंग्रेजी भाषा के ज्ञान पर जिन्दा रहने की कसम खा कर कोई विश्वयात्रा पर निकल पड़ें तो बहुत मुमकिन है कुछ एक बड़े नगरों को छोड़ कर, जहां (शर्म के साथ) टूटी फूटी अंग्रेजी बोलने वाले मिल जाएं, पर अन्य स्थानों पर भूखे तक मर जाने की नौबत आ सकती है। इसी प्रकार विश्व के श्रेष्ठ साहित्य, कला आदि की विरासत भी अंग्रेजी में नहीं अपितु अलग-अलग देशों की अन्यान्य भाषाओं में सुरक्षित है। दर्शन शास्त्र के जर्मन ग्रंथों को अंग्रेजी में पढ़ने में वैसा ही मजा है जो रामचरित मानस, महाभारत और वेद-पुराणों को किसी कान्वेन्ट पास हिन्दुस्तानी विद्यार्थी के अंग्रेजी में पढ़ने में है।

तमाम गैरवाजिब तर्कों के आधार पर भी इस बात को मान लिया जाये कि अंग्रेजी एक विश्व सम्पर्क भाषा है तो सोचना यह है कि हिन्दुस्तान जैसे गरीब और अनपढ़ मुल्क में एक ऐसी भाषा के जीवित रहने का कहां तक औचित्य है जो गुलामी के काल में कुछ लोगों द्वारा एक बड़े समुदाय के शोषण का और आजादी के बाद इन्हीं कुछ लोगों के लिए एक बड़े समुदाय से अतिरिक्त शोषण का हथियार बन गई है। 'गुलामी में हम आधे गुलाम थे, आजादी में हम पूरे गुलाम हो गये। जहां तक भाषा का सवाल है, आजादी के ये पच्चीस साल गुलामी के पच्चीस सालों से भी बदतर सिद्ध हुए हैं।'

इस बात से कौन इन्कार कर सकता कि मुट्ठी भर अंग्रेजी जानने वाले लोग इस देश का शासन चला रहे हैं। ये ही कुछ लोग उन लाखों योग्य लोगों को उनकी योग्यता के प्रमाणपत्र व उपाधियां देते हैं जिन्होंने अपनी भाषा और संस्कृति पर कार्य किया है, इन्हीं लोगों का देश की पचपन करोड़ जनता से सीधा सम्बन्ध नहीं है और भाषा के दलाल शासक और शासित के बीच अनुवादक का काम करते हैं, देश की सर्वोच्च संस्था संसद में बैठने वाले पांच सौ से ज्यादा प्रतिनिधियों में लगभग चार सौ सिर्फ हाथ उठाने और विभिन्न अवसरों पर 'वाक-आउट' करने के लिए ही बैठे रहते हैं, वे सिर्फ इसलिए नहीं बोल पाते कि अंग्रेजी (और कई बार हिन्दी भी) उन्हें बोलना नहीं आता और अपनी मातृभाषा में बोलने में उन्हें कई कारणों से संकोच है। कितने मुद्दों पर समानता ढूंढी जा सकती है उन बच्चों के बीच जो बड़ी बड़ी फीस देकर मिशनरियों के दम पर कान्वेन्ट्स में शिक्षा

(शेष पृष्ठ १६ पर)

सौ दिन की पदयात्रा से

उत्तरप्रदेश के लोकसेवकों के नाम संयोजक की चिट्ठी

आज एक फरवरी को उत्तराखंड में हमारी १०० दिवसीय पदयात्रा के १०० दिन पूरे हो गए हैं, परन्तु अभी एक गढ़वाल जिला शेष है। इसलिए हमने २० या २२ फरवरी को यात्रा पूरी करने का निश्चय किया है। दिसम्बर और जनवरी में यात्रा चमोली, अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ जिले के दूरस्थ गांवों में चली। इस साल शीतकालीन वर्षा हुई ही नहीं, इसलिए कहीं बर्फ का सामना नहीं करना पड़ा।

पिथौरागढ़ जिले की यात्रा में बहनें भी शामिल हुईं, इसलिए स्थान-स्थान पर स्त्रियों की सभाएं हो सकीं। वहां के विद्यार्थी नेता हयातसिंह तड़ागी ने भी तीन दिनों तक हमारे साथ साथ यात्रा की। अल्मोड़ा के विद्यार्थी नेता चन्द्रशेखर पाठक ने युवकों की एक गोष्ठी का आयोजन किया था। इसमें उ० प्र० तरुण शांति सेना के अध्यक्ष कुंवर 'प्रसून' टिहरी से और प्रतापसिंह श्रीनगर (गढ़वाल) से आकर शामिल हुए। हाल ही में खुले कुमायूं और गढ़वाल के विश्वविद्यालयों का पाठ्यक्रम क्या हो, इस विषय पर उनकी विचारोत्तेजक चर्चा हुई। ये छात्र गर्मियों की छुट्टियों में 'अस्कोट से आराकोट' तक की पदयात्रा करने के बारे में सोच रहे हैं। अस्कोट नेपाल की सीमा पर बसा हुआ भारत का अन्तिम गांव है और आराकोट हिमाचल प्रदेश की सीमा पर स्थित उत्तर प्रदेश का अन्तिम गांव। इस प्रकार एक छोर से दूसरे छोर तक पूरे उत्तराखंड की यात्रा हो जायगी। जब मैंने इस की चर्चा नैनीताल में विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० बंदीदत्त पंत से की तो वे उछल पड़े, कहने लगे इन लड़कों को मुझ से मिलाओ। मैं पाठ्यक्रम और यात्रा के कार्यक्रम के बारे में विस्तार से उनसे साथ विचार-विमर्श करना चाहता हूं।

सम्पन्न तराई के विपन्न लोग २० फरवरी को एक घने जंगल में नैनीताल जिला सर्वोदय मंडल के मंत्री दीपनारायण शाही से हुई भेंट ने उन्हें और मुझे—दोनों को आश्चर्य चकित कर दिया। वे मुझ से मिलने गरम पानी गये थे, पर मैं तो अपने साथी को नैनीताल के कार्यक्रम की तैयारी के लिए आगे भेज कर अकेला पैदल के रास्ते से बढ़ रहा था। वे भुवाली से गांव के लोगों को साथ लेकर मुझे खोजने-खोजते आगे बढ़ रहे थे। नैनीताल से छोटे पहाड़ी मार्ग से रामनगर पहुंचने के बजाय हमने हलद्वानी, शांतिपुरी, किच्छा, रुद्रपुर, बाजपुर, काशीपुर होते हुए दस दिन बाद रामनगर पहुंचने का निश्चय किया। तराई का यह क्षेत्र हरित क्रांति का केन्द्र है और यहां केवल २०-२२ वर्ष से ही जंगलों को काट कर और घास को उखाड़ कर आबादी बसी है। नई बस्तियों में सैनिकों, स्वतन्त्रता-संग्राम के सेनानियों, पंजाब और बंगाल के विस्थापितों के अलावा कुछ भूमिहीन भी बसे हैं। परन्तु सम्पन्न तराई के बीच भी बिहार और पूर्वी उ० प्र० की जैसी खेत-मजदूरों की विपन्नता जगह-जगह फैली हुई है।

उपवास दान पहाड़ों में इतनी गरीबी है कि उपवासदान की साल भर की रकम एक साथ देने के लिए हम लोगों को तैयार ही नहीं कर पाये। विनोबा का अनुमान था कि एक व्यक्ति एक बार एक रुपया तो खाता ही है, परन्तु पहाड़ी गांवों में मुश्किल से आठ आने का हिसाब बैठता होगा। हम अभी इस खोज में हैं कि किस प्रकार गरीब से गरीब लोगों को इसमें शामिल करें। उनके पास साल भर की रकम एक साथ देने को नहीं होती। एक गांव में २० बहनों ने उपवासदान करने का निश्चय किया है। वहां के कार्यकर्ता यह सोच रहे हैं कि उनके उस दिन को बचत का राशन बेच कर जो रकम प्राप्त हो वह सर्व सेवा संघ को भेजी जावे। परन्तु तराई क्षेत्र में हमें बहुत आसानी से उपवासदान मिले। नैनीताल जिले के ११ लोकसेवक पहले ही उपवासदान की रकम भेज चुके हैं। प्रतापपुर गांव में एक साथ २२ लोगों ने उपवासदान किया। इसी प्रकार प्रेमनगर में १० लोगों ने। अब तक हमारी यात्रा के दौरान ५१ उपवासदान हो चुके हैं।

हमने इस यात्रा में नैनीताल के लिए १०० उपवासदान तक का लक्ष्य रखा था। यहां के साथी इतने उत्साह के साथ इसमें जुटे हैं कि सर्वोदय पक्ष के दौरान वे इसकी पूर्ति कर लेंगे। उपवासदान देने वालों में एक साम्यवादी कार्यकर्ता जमुनासिंह भी हैं। उनका कहना था, "सर्वोदय की मुझे आज तक जानकारी नहीं मिली थी। आप लोग सोये थे। अब जागे हैं तो मेरा दान भी हाजिर है।" न मालूम हमारे जागने के इंतजार में कितने ऐसे लोग हैं? "सारे देश से ४० हजार उपवासदान की बाबा की मांग के अनुसार आबादी के हिसाब से हमारे प्रदेश का हिस्सा लगभग आठ हजार का होता है।

भैंसापाड़ी वाला 'सर्वोदय' का ग्राहक : हम हलद्वानी से लालकुआं आये थे। स्कूल के लड़कों ने रात को हमारी सभा का ऐलान किया। हमारे पास लोगों को आकर्षित करने के लिए इसके सिवा कुछ नहीं था कि हम पैदल चल कर आये हैं। बहुत थोड़े लोग सभा में आये। जब 'सर्वोदय' का ग्राहक बनाने की अपील की तो कोई उत्तर नहीं मिला। जिनके हम अतिथि थे उन्होंने यह कह कर टाल दिया कि हम राजनीति वाले हैं। हम उन्हें यह नहीं समझा सके कि 'सर्वोदय' विचार उनके लिए वर्जित नहीं। परन्तु सभा के बीच में एक आदमी ने अपने बेटे के हाथ में एक रुपये का नोट देकर मेरी ओर बढ़ाया। मैंने कहा, हम पैसा नहीं रखते। लोगों ने कहा यह शराब पीता है तो मैंने कहा, कि हमारा सत्कार ही करना है तो शराब छोड़ने का संकल्प कीजिए। उसने अपनी वर्षों पुरानी आदत वहीं छोड़ दी। उसने पूछा, "मुझे हमेशा सद्विचार मिलता रहे। इसका क्या उपाय है?" हमने कहा 'सर्वोदय' पत्रिका मंगाइये, वह जेब से पंद्रह रुपये निकाल कर ग्राहक बन गया। वह न व्यापारी था और न तराई का कोई सम्पन्न किसान, वह था भैंसापाड़ी हांकने वाला मामूली पढ़ा-लिखा राजबहादुर सिंह।

→

रुद्रपुर में गणतन्त्र-दिवस के लिए आयोजित ग्राम सभा में आयोजकों ने हमें भी बोलने का अवसर दिया, पर साथियों की राय थी कि अगले दिन विशिष्ट लोगों की एक सभा की जाए। इस सभा की खबर पाकर एक अज्ञात व्यक्ति भी पहुंच गये। सभा की समाप्ति पर उन्होंने हमारे हाथ में २० रुपये रख दिये। कहने लगे "यह विनोबा जी की पत्रिका के लिए है—'मैत्री' का चन्दा। वे मुरादाबाद जिले के कस्बा भोजपुर के किराना दुकानदार हरदत्त सिंह थे

इस यात्रा के दौरान अब तक सर्वोदय पत्रिकाओं के २०८ ग्राहक बने हैं, बाबा की एक लाख की मांग में एक छोटा सा योगदान।

आपको मतदाता शिक्षण के सिलसिले में कई अनुभव हो रहे होंगे। लोगों को चुनावों के दोषों—आत्मप्रशंसा परनिन्दा और मिथ्याभाषण से परिचित कराते हुए शराब, दबाव, और प्रलोभनों से मुक्त रह कर मताधिकार का प्रयोग करने की सलाह हम देते हैं। वैसे यहां पर मतदाता शिक्षण के सिलसिलेवार कार्य का कोई सघन क्षेत्र नहीं बना है, परन्तु जिन क्षेत्रों से हम गुजर रहे हैं वहां के लोगों को एक नया विचार देने की कोशिश कर रहे हैं।

—सुन्दरलाल बहुगुणा

(पृष्ठ १३ का शेष)

पाते हैं और उन बच्चों के बीच जो दम तोड़ती इमारतों की टपकती छतों के नीचे ठण्ड, गर्मी और बरसात में फटी टाटपट्टियों पर टट्टी और पेशाब की बदबू के बीच वेतन-खोर शिक्षकों के द्वारा शिक्षा प्राप्त करते हैं? निश्चित ही कहीं भी समानता नहीं हो सकती। कान्वेन्ट का विद्यार्थी देश का शासक बनता है और पाठशाला का विद्यार्थी उसका क्लर्क, चपरासी और ड्राइवर।

प्रश्न यह भी है कि देश की शिक्षा के साथ और नौकरियों की अनिवार्यता के साथ अंग्रेजी का वर्चस्व कायम रखा जाए? क्या ऐसा नहीं हो सकता कि जो स्थान इन देश में फ्रेंच, जर्मन रूसी और जापानी भाषा का है वह अंग्रेजी का भी हो जाए। यानी कि अंग्रेजी न्यायालय, राजकाज, कारखानों फौज, अस्पताल, पाठशाला, प्रयोगशाला और घर-द्वार-बाजार से हटा दी जाय और पुस्तकालयों और विदेशी भाषा शिक्षण संस्थाओं तक सीमित हो जाए जिसे पढ़ना हो पढ़े। भारतीय भाषाओं को इस प्रकार अपनी अभिव्यक्ति का पूरा मौका मिलेगा। जिस दिन यह शुरुआत होगी उस दिन कुछ गिने-चुने अंग्रेजी के अखबार देश का भविष्य नहीं बना-बिगाड़ पाएंगे रूस, जर्मन, फ्रांस और जापान आदि देशों के दूतावासों में नियुक्त किये जाने वाले भारतीय राजदूतों को अपना परिचय पत्र अंग्रेजी में देने और अपना काम अंग्रेजी में करने में तब शर्म आएगी, वे रूसी, जर्मनी, फ्रेंच और जापानी भाषा सीखेंगे और वहां की जनता तक भारतीय भावनाएं ठीक से पहुंचा पाएंगे। जब ऐसा होगा तो उत्तराखण्ड के पहाड़ों से अंग्रेजी पढ़ाई के डर से मैदान की होटलों में बर्तन धोने के लिए घर से भागकर आने वाले बच्चों की बाढ़ रुक जाएगी। और जब तक यह शुरुआत नहीं होगी देश के शासक बोलते रहेंगे और शासित गूंगों की तरह सुनते रहेंगे।

किसी अरब देश की कहानी है। राजा ने राष्ट्र संकट के समय देश की महिलाओं से आग्रह किया कि वे सोना चांदी पहन कर न निकलें और उन राष्ट्र के त्राण हेतु दान में दे दें। किसी ने राजा की बात पर ध्यान नहीं दिया। राजा ने दूसरी घोषणा की कि केवल वेश्यायें ही सोना चांदी पहन कर निकल सकती हैं। दूसरे दिन से किसी भी भद्र महिला ने राष्ट्र-सम्मान के विरुद्ध सोना चांदी पहन कर निकलने की हिम्मत नहीं की। शायद इस देश में भी अंग्रेजी के बारे में एक ऐसी ही घोषणा की जरूरत है।

बैंदिक की पुस्तिका ने भाषा के सदर्भ में काफी रोचक तत्वों को उजागर किया है और भाषा के सवाल पर इस बात की पूरी सफाई की है कि अंग्रेजी के बिना हिन्दुस्तान समाजवाद जल्दी हासिल कर सकता है।

R.N. 2091/57 BHOODAN YAGYA · 18 FEBRUARY, 1974 Regd. No D. (C) 266

जे. पी. गुजरात में

● गुजरात सर्वोदय मण्डल के आग्रह पर जयप्रकाश नारायण अहमदाबाद पहुँच गये हैं। ११ फरवरी को आंदोलन ग्रस्त राजधानी में पहुचते ही जे० पी० ने अनशन पर बैठे विद्यार्थियों से चर्चा की और दूसरे दिन उनकी उपस्थिति में विद्यार्थियों ने अनशन तोड़ा। जे. पी. गुजरात में प्राध्यापकों, विद्यार्थियों, नागरिकों और सर्वोदय कार्यकर्ताओं से मिल रहे हैं। स्थिति का अध्ययन करने के बाद उनकी सलाह पर गुजरात सर्वोदय मण्डल अपना आगे का कार्यक्रम बनायेगा।

जे. पी. से मिलने के लिए गुजरात के सर्वोदय साथियों का एक शिष्टमण्डल ८ फरवरी को दिल्ली आया था। नारायण देसाई, कांति भाई आदि इस शिष्टमण्डल में आये थे। और उन्होंने जे. पी. से कहा कि सर्वोदय कार्यकर्ताओं का ही नहीं बल्कि गुजरात के विद्यार्थियों, प्राध्यापकों, बुद्धिजीवियों और नागरिकों का भी आग्रह है कि वे गुजरात आयें। जे. पी. मतदाता प्रशिक्षण के लिए इलाहाबाद और वाराणसी का कार्यक्रम बना चुके थे। यह कार्यक्रम उन्हें रद्द करना पड़ा। उनकी जगह सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा अब उत्तरप्रदेश का दौरा कर रहे हैं।

● उत्तराखण्ड के जौनसार बावर, रंवाई आदि क्षेत्रों की एक माह की पदयात्रा करने वाली टोली का स्वागत ८ फरवरी की शाम हिमालय सेवा संघ ने नई दिल्ली में किया। पदयात्रा में भाग लेने वाले योगेशचन्द्र बहुगुणा, सुरेन्द्र दत्त भट्ट और गंगाप्रसाद जी बैठक में उपस्थित थे।

योगेश भाई ने पदयात्रियों की ओर से अनुभव सुनाते हुए कहा कि उन्होंने बत्तीस गांवों के लोगों से सम्पर्क किया और तीन सौ बीस किलोमीटर की यात्रा की। कुछ क्षेत्रों में अधिकांश कोल्टा जाति में ही स्त्रियों को बड़े शहरों में वेश्यावृत्ति के लिए ले जाया जाता है। इसके कारण आर्थिक हैं। एक सामाजिक कार्यकर्ता की हत्या करवा दी गयी क्योंकि वे वेश्यावृत्ति, पशुबलि आदि कुरीतियों के खिलाफ काम कर रहे थे।

● गांधी शांति प्रतिष्ठान, मवाई, और इंग्लैण्ड के इण्डिया डेवलेपमेंट ग्रुप द्वारा दिल्ली में बुलायी गयी दो दिवसीय गोष्ठी ने इस बात पर जोर दिया है कि ग्रामसभाओं को राजनीति से दूर रखा जाये और उन्हें इतना सक्षम और सक्रिय किया जाये कि वे ग्राम विकास का काम स्वयं कर सकें यह भी जरूरी है कि ग्रामसभाएं इतनी जागरूक हों कि सरकारी मशीनरी के ढीले-ढाले रवैये और भ्रष्टाचार आदि को सविनय अवज्ञा और विरोध प्रदर्शन से ठीक कर सकें। गोष्ठी में कहा गया कि इन ग्रामसभाओं का अपने साधन विकसित करने के लिए तकनीकी व्यवस्थापकीय और वित्तीय सहायता भी दी जानी चाहिए।

९ और १० फरवरी को हुई इस गोष्ठी में चवालीस स्वैच्छिक संस्थाओं, सरकारी एजेन्सियों और ट्रेड यूनियनों के सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया। गोष्ठी का उद्घाटन जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में राष्ट्रपति गिरी ने किया था। (विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में)

● देवनागरी को देश की भाषाओं की जोड़ लिपि बनाने पर विचार करने के लिए ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार में २३ और २४ फरवरी को एक सम्मेलन बुलाया गया है। इस सम्मेलन में भारत की विभिन्न भाषाओं के जानकार व्यक्तियों, लेखकों, सम्पादकों और बुद्धिजीवियों के अलावा राजनेताओं को भी आमंत्रित किया गया है।

● राजघाट अहिंसा विद्यालय, दिल्ली की पहली ग्रामीण शाखा मेरठ के नजदीक सिवाई गांव में गांधी श्राद्ध दिवस १२ फरवरी को खुल गयी है। सिवाई शाखा में सुरेशचन्द्र शर्मा और रमेशचन्द्र शर्मा कार्य करेंगे और वहीं स्थायी रूप से रहेंगे। यह शाखा राजघाट अहिंसा विद्यालय में आने वाले युवकों के लिए ग्रामीण केन्द्र के नाते भी काम करेगी। १२ फरवरी को इस गांव में आयोजित एक सभा में केन्द्र ने बाकायदा कामकाज शुरू किया। सभा को विद्यालय के संचालक देवेन्द्र कुमार ने सम्बोधित किया।

जनता का आरोपनामा (पेज १० से जारी)

के आक्रमण से उसका मुख्य स्वरूप आर्थिक और सामाजिक था। गाँव में हित-संघर्ष नहीं हित-साम्य, हित-समन्वय हो इसके लिए सभी को भागीदारी एवं सर्वानुमति से काम करने के संस्कार देने का कार्यक्रम जुड़ा। उसमें जोर रहा ग्राम-समाज, ग्राम-आयोजन और ग्राम स्वराज पर।

आज की परिस्थिति में हमारे सामने तीसरी चुनौती उपस्थित हुई है। उसका मुख्य स्वरूप है राजनीतिक और नैतिक। उच्च लोकतन्त्र के लिए स्वतन्त्र नागरिक की स्वतंत्र लोकशक्ति चाहिए। ऐसी स्वतन्त्र लोकशक्ति के अभाव में ही आज सारी दुनिया में परम्परागत लोकतन्त्र कुंठित है। और दूसरा है भ्रष्टाचार। उसमें से मुक्त हुए बिना सही माने में मानव-मुक्ति असंभव है। हर प्रकार के स्थूल-सूक्ष्म भ्रष्टाचार में से मुक्ति। इस के लिए अब हमारे आंदोलन में लोकनीति का कोई सीधा कार्यक्रम जुड़ने की अत्यन्त आवश्यकता है। गुजरात में आज की विधान सभा का विसर्जन करके नये चुनाव में जनता के उम्मीदवार, जनता की सरकार आदि का हमारा कार्यक्रम हमें उठाना चाहिए।

यही आज की चुनौती है। गांधीजी ने अपने वसीयतनामे में कहा था कि आर्थिक, सामाजिक, एवं नैतिक स्वतन्त्रता लानी अभी बाकी है। वह आयेगी तभी अंग्रेजों से मिली राजनैतिक स्वतन्त्रता वास्तविक बनेगी। आज इन तीनों पहलुओं को एक साथ लेकर स्वतन्त्र लोकशक्ति के जरिये सही माने में जनता का प्रजातन्त्र की ओर इस देश को ले जाने का काम क्या आज हमारा सर्वोदय आंदोलन उठा सकेगा? रचनात्मक क्रांति का ऐसा एक समग्र कार्यक्रम आज उठाना होगा। १९४२ में इस देश की जनता ने विदेशी शासन से मुक्ति का उद्घोष किया था। आज अब विदेशीकृत शासन से मुक्ति का फिर से उद्घोष वह करेगी? आज की चुनौती को क्या सर्वोदय आंदोलन उठा सकेगा?

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय
सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २५ फरवरी, '७४
26 JAN 1974
● उत्तरप्रदेश में चुनाव : मतदाता शिक्षण और लोकस्वराज्य
● गुजरात विधान सभा भंग हो
● शिक्षक और छात्र स्कूल कालेज छोड़ें
● जोड़ लिपि नागरी
मेरठ
बनारस
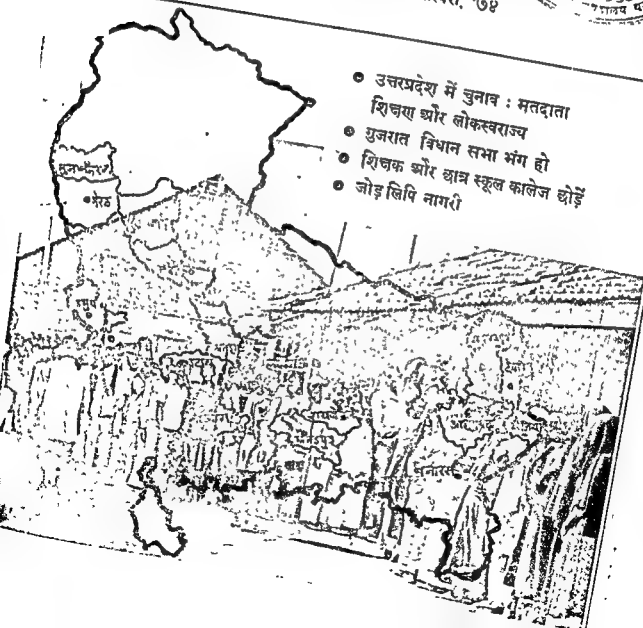
भूदान-यज्ञ

२५ फरवरी, '७४

वर्ष २०   अंक २२

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

राजघाट कॉलोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

विरोधी पार्टियों की गैरजिम्मेदाराना हरकतों के बावजूद संसद के बजट अधिवेशन की शुरुआत गंभीर हुई है । पिछले कई वर्षों में आर्थिक मोर्चे का इतना निराशाजनक चित्र राष्ट्रपति के उद्घाटन भाषण में नहीं आया था जितना इस बार आया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह वर्ष आर्थिक रूप से आजादी के बाद का सबसे कठिन वर्ष है। तेल के संकट ने हमारी घाटे की अर्थव्यवस्था को अराजकता की हालत में ला पटका है। यह संकट और भी कई देशों के सामने है। बाहर से आने वाली चीजों के भाव चौगुने हो गए हैं लेकिन जो चीजें हम बाहर भेजते हैं उनके भावों में मामूली वृद्धि हुई है। माना जा सकता है कि इस संकट पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। लेकिन तेल का संकट ही एक मात्र संकट नहीं है जिसने हमारी अर्थ-व्यवस्था को इतने बुरे कोने में धकेला है। संकट पहले से मौजूद था और वह हमारा अपना बनाया हुआ है। तेल ने तो आग पर घी और भड़की भर है।

राष्ट्रपति ने कहा है कि देश भर में महंगाई और अभाव का कारण जमाखोरी सट्टेबाजी और हड़ताल तथा बन्द हैं। ये कारण कोई नये नहीं हैं। साल भर से स्वयं राष्ट्रपति इन कारणों को गुनगुनाते आ रहे हैं और बार-बार कह रहे हैं कि जमाखोरों और कालेबाजारियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायेगी। लेकिन सरकार सख्त कार्यवाही की जितनी घोषणाएं करती है बाजार से उतनी ही तेजी से चीजें गायब होती जाती हैं और भाव बढ़ते जाते हैं। अनाज की वसूली पर सरकारी घोषणाओं में जितना जोर दिया जाता है उतने दाने भी सरकार के भण्डार में जमा नहीं होते। सार्वजनिक वितरण को ठीक करने के जितने कदमों की घोषणा की जाती है उतनी ही व्यवस्था बिगड़ती जाती है। काले बाजार में सब मिल सकता है। अभाव कहीं नहीं है। है तो पैसे का है और इस अभाव को दूर करने के लिए सरकार नोट छापती जाती है। घाटे को बढ़ाना ही शायद सरकारी मान्यता में उसे कम करने का रास्ता है।

घाटा आर्थिक नहीं है

जमाखोरी और कालाबाजारी बढ़ी है तो इसका दोष सरकार के सिवा किस को है? सरकार जानती है कि जमाखोरी कहां होती है और कौन करता है। कितना अनाज बाजार और सरकारी भंडार से बाहर है इसका भी अन्दाज सरकार को है। कालाबाजारियों को भी सरकार जानती है। फिर क्यों इनके खिलाफ कार्यवाही नहीं होती? अनाज के अभाव और महंगाई के खिलाफ प्रदर्शन करने वाले लोग आन्तरिक सुरक्षा कानून और भारत रक्षा कानून के तहत पकड़े जाते हैं। जमाखोर और कालेबाजारिये नहीं पकड़े जाते। अनाज की लेवी छोटे किसानों से बुरी तरह वसूल की जाती है लेकिन बड़े किसानों पर सरकार का कोई जोर नहीं चलता। जमाखोरी और कालाबाजारी इसलिए बन्द नहीं होती कि सरकार के पास न इतना राजनीतिक साहस है न इतनी प्रशासनिक क्षमता है कि यह सब कर सके। नौकरशाही और बड़े व्यापारियों के बीच जो काला गठबन्धन चल रहा है उसे तोड़ने की ताकत सरकार में नहीं है। राज्य सरकारें अनाज की वसूली को अभी भी गम्भीरता से नहीं लिया है। बड़े और प्रभावशाली किसानों को नाराज करने का साहस भी राज्य सरकार में नहीं है।

फिर राष्ट्रपति किसके लिए यह कहते हैं। उस जनता के लिए जो इस महंगाई के लिए जिम्मेदार नहीं है? गोष्ठी में राष्ट्रपति जब अपना भाषण दे चुके तो जयप्रकाश नारायण ने विनम्रता के साथ कहा—'मुझे खुशी है कि आप इतनी अच्छी-अच्छी बातें कह रहे हैं लेकिन सरकार उनमें से एक पर भी अमल नहीं करती।' सरकार अमल नहीं कर सकती क्योंकि सत्ता उसके पास भले हो, अगर अधिकार उसके पास होता तब नहीं अधिकार मान्यता और विश्वास से आता है, जिसका घाटा सरकार में आर्थिक घाटे से भी ज्यादा है।

प्रभाष

उत्तर प्रदेश के मतदाता क्या करें ?

मत का मूल्य समझें और समझकर वोट दें
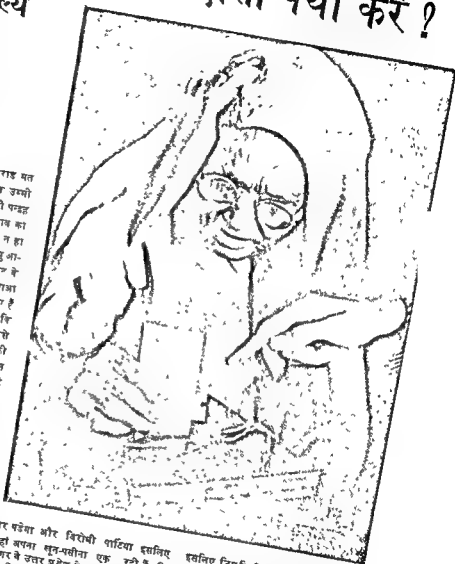
उत्तर प्रदेश के लगभग पांच करोड़ मतदाता इस सप्ताह चार हजार से अधिक उम्मीदवारों में से विधानसभा के चार सौ पन्द्रह विधायकों का चुनाव करेंगे। इस चुनाव को लेकर मतदाताओं में चाहे रुचि हो या न हो पार्टियों और उम्मीदवारों की तरफ से धुआंधार प्रचार हो रहा है। कागज के संकट के बावजूद सारे अखबार अपने संवाददाताओं की लम्बी-लम्बी ऐसी रपटों से भरे हुए हैं जिनमें अटकलबाजियां लगायी गयी हैं कि कौन कहां जीत सकता है। कौन जाति किसे वोट देगी और अल्पसंख्यक इस बार किसकी तरफ जाते लगते हैं। जो अखबार जिस पार्टी का है या जिसकी ओर झुका हुआ है वह उसी पार्टी के जीतने की संभावनाएं बता रहा है। इन परस्पर विरोधी रपटों को पढ़ने वाला भरमामालुम इसका कोई अन्दाज नहीं लगा सकता कि उत्तरप्रदेश के मतदाताओं के मन में क्या है ? पार्टियों ने तो खैर लोकशिक्षण को तिलांजलि दे ही दी है अखबारों में भी यह इच्छा नहीं दिखाई देती कि कोई तटस्थ और सच्चा चित्र लोगों के सामने रखें। लोकशिक्षण के माध्यम ऐसा लगता है कि चुनाव के समय प्रचार के माध्यम हो जाते हैं।

उत्तरप्रदेश के चुनावों को दिये जा रहे इस अत्यधिक महत्व का कारण यह है कि पार्टियों की समझ में उत्तरप्रदेश का राजनीतिक चित्र सारे देश का नक्शा बदलता है। जो पार्टी देश के इस सबसे बड़े राज्य में ताकतवर हो जाती है उसे विश्वास हो जाता है कि उसने पूरे देश को फतह कर लिया। कांग्रेस के लिए उत्तरप्रदेश के चुनाव महत्वपूर्ण हैं क्योंकि उसके नतीजे का असर दिल्ली पर पड़ेगा और विरोधी पार्टियां इसलिए वहां अपना खून-पसीना एक रही हैं कि अगर वे उत्तर प्रदेश में कांग्रेस को हरा दें तो फिर दिल्ली की सरकार को डगमगाया जा सकता है। यह सही है कि उत्तरप्रदेश में सबसे ज्यादा मतदाता हैं लेकिन यह एक राज्य ही राजनीतिक दृष्टि से इसलिए महत्वपूर्ण है कि हमारी प्रजातांत्रिक व्यवस्था केन्द्रीकरण के गणित पर टिकी हुई है। कोई भी पार्टी इस केन्द्रीकरण के खिलाफ नहीं है इसलिए जिस किसी पार्टी को थोड़ी भी संभावना उत्तरप्रदेश में दिखी उसने अपनी पूरी ताकत वहां लगा दी है। नतीजा यह हुआ है कि उत्तरप्रदेश का चुनाव इन दिनों देश का केन्द्रबिन्दु हो गया है। सारी चीजें उसके आसपास घूम रही हैं। हालत इतनी विकट है कि एक अखबार को तो लिखना पड़ा कि उत्तरप्रदेश के कारण सरकार देश को भूल गयी है। कितना पैसा इकट्ठा किया गया है,

→

दान-पत्र : सोमवार, २५ फरवरी, '७४

→

कितनी जीपें लगायी हैं, कितने कार्यकर्ता भेजे गये हैं इसका गणित अगर लगाया जाये तो आँकड़े किसी युद्ध के आकड़ों से कम नहीं निकलेंगे। आरोप प्रत्यारोप और कीचड़ उछालने से कोई नहीं बचा है। चुनाव प्रजातंत्र का पवित्र पर्व जरूर है लेकिन उसके कारण सामान्य जीवन इस तरह गड़बड़ायेगा तो प्रजातंत्र कैसे चल सकता है? लेकिन चुनाव एक अन्धी दौड़ है और उसमें पड़ी हुई पार्टियों को मतदान से ज्यादा दूर दिखाई नहीं देता। ज्यादा से ज्यादा वे कुर्सियां देख सकती हैं। सबके तौर तरीके समान हैं और जिसे जहां मौका मिलता है वह तत्काल उस का लाभ लेना चाहता है।

इस धुआंधार प्रचार और नाटक के बीच महगाई, अभाव और गरीबी से दुखी मतदाता उदासीन और गुम है। यह सारा नाटक उसी का मन जीतने के लिए किया जा रहा है जिसमें उसका कोई रोल नहीं है। पांच वर्ष में एक बार उसके आसपास पार्टियां ढोल-नगाड़े बजा कर उसी तरह शोर करती हैं जिस तरह शिकार की पार्टियां करती हैं। एक बार शिकार हाथ आया यानी मतदाता ने वोट दे दिया तो फिर वह अपने भाग्य पर छोड़ दिया जाता है। वह हर उम्मीदवार जो अपने को जनता का उम्मीदवार कहता है और जीतने पर अपनी जीत को जनता की जीत कह कर फूलों से लदा जुलूस में घूमता है देखते-देखते पार्टी का विधायक हो जाता है और राजधानी में जाकर ऐसा खेल खेलने लगता है जिसका जनता से न कोई वास्ता है न जिसमें जनता खेल रही है। कुम्भों और शोभायात्राओं के बाद देवता अपने आसन पर विराज जाते हैं और किराये के पुजारी मन्दिर के पट बन्द कर देते हैं। देवताओं को पांच साल बाद फुरसत मिलती है।

लेकिन इस नाटक के लिए पार्टियों और विधायकों को दोष देने में कोई मतलब नहीं है। मतदाता को अपने पवित्र अधिकार का भान नहीं है। वह राजा है लेकिन न अपना राज्य जानता है न राज्य चलाना जानता है। ऐसा भी अक्सर लगता है कि वह चाहता ही नहीं कि उसका राज्य चले। 'कोउ नृप होय हमें का हानी' वाला जनमानस अपनी हानि और हालत से बेखबर है और जानता नहीं है कि उसे अगर अनाज नहीं मिल रहा है, तेल नहीं मिल रहा है, लकड़ी नहीं मिल रही है तो क्यों नहीं मिल रही है। अगर वह खुद अपने पांव पर खड़ा नहीं होता और अपना भाग्यविधाता बनना तय नहीं करता तो इसमें दोष किसका है? वह आजाद देश का आजाद नागरिक है लेकिन उसे अगर अपने नागरिक अधिकारों की चिन्ता नहीं है तो पार्टियां और सरकारें तो वह सब करेंगी ही जो वे पिछले पच्चीस वर्षों से करती आयी हैं। मतदाता जैसा कि जयप्रकाश नारायण अक्सर कहते हैं बालू के कणों की तरह बिखरे हुए हैं। वे एक प्रजातांत्रिक रस्म निभाते हुए वोट दे आते हैं और और अक्सर जाति धर्म, क्षेत्रीयता आदि के आधार पर वोट देते हैं। उनके वोट खरीद लिये जाते हैं क्योंकि वे बेचने को तैयार हैं। मतदान किये बिना उनके वोट डाल दिये जाते हैं क्योंकि उन्हें इसकी चिन्ता नहीं है कि उनके वोट का क्या होता है। बल प्रयोग पिछले कुछ चुनावों से बढ़ गया है। गांवों के शक्तिशाली गुट हरिजनों और दूसरी नीची कही जाने वाली जातियों को डण्डे के जोर पर वोट डालने नहीं जाने देते।।

पार्टियां मतदाताओं की चिन्ता नहीं करतीं और विधायक उनके विश्वास का सम्मान नहीं करता तो इसका कारण यही है कि स्वयं मतदाता चिन्ता नहीं करता कि उसके मत का क्या हुआ और जिस व्यक्ति को उन्होंने चुना था वह क्या कर रहा है। पिछले बीस वर्षों से मतदाताओं को संगठित करने के छुटपुट प्रयास समाजसेवी संस्थाओं ने किये हैं। लेकिन वे सफल नहीं हो पाये क्योंकि मौजूदा हालत में वोट एक हवाई चीज है। वोट का सीधा सम्बन्ध नागरिक के जीवन और उसकी समस्याओं से कायम नहीं हो पाया है। अगर ऐसा होता तो मतदाता अपने प्रतिनिधि से जाकर पूछता कि उसकी हालत दिनों दिन बदतर क्यों हो रही है। लेकिन वह जिसे चुनता है उस पर अंकुश रखने के बजाय विरोधी पार्टियों के जुलूस में शामिल हो जाता है।

सबसे बड़ी समस्या यह है कि वोट को वोट देने वाले के जीवन से कैसे जोड़ा जाये? चार-पांच लाख का संसदीय चुनाव क्षेत्र और लाख-सवा लाख का विधानसभा क्षेत्र इतना बड़ा होता है कि उसके मतदाता एक जगह कभी इकट्ठे नहीं हो सकते और थोड़े बहुत कहीं इकट्ठे भी हो तो पार्टियां उन्हें बांट देती हैं। जब तक मतदाता एक ऐसे समुदाय में नहीं आते जिसमें वे आमने-सामने बैठकर अपनी समस्याओं के हल पर विचार करके उन्हें अमल में नहीं लाते तब तक उन्हें न तो अपने मन की ताकत का अन्दाज होगा न यह विश्वास पैदा होगा कि अपनी समस्याएं वे खुद सुलझा सकते हैं। देश इतना बड़ा है कि इसमें प्रत्यक्ष प्रजातंत्र सम्भव नहीं है। प्रतिनिधित्व की एक लम्बी और मारक परम्परा इस देश में है। प्रजातंत्र में पार्टियों ने इस उदासीन प्रतिनिधित्व की भावना का काफी लाभ उठाया है। अगर देश के प्रत्येक नागरिक को अपने कार्य और निर्णय के लिए जिम्मेदार और जागरूक बनाना हो तो इस प्रतिनिधिक प्रजातंत्र को समाप्त करना होगा। ऐसे छोटे-छोटे और परस्पर निर्भर समुदाय गठित करने होंगे जो अपनी समस्याएं स्वयं निपटायें और क्षेत्र की समस्याओं और मामलों को अपनी परिषदों से और राष्ट्रीय मामलों को राष्ट्रीय परिषदों से हल करें। ऐसा विकेन्द्रीकरण के सिवाय सम्भव नहीं है। यह विकेन्द्रीकरण तभी हो सकता है जब केन्द्रीकृत व्यवस्था की प्रतीक पार्टियां टूटें और पार्टियों के प्रतिनिधि के बजाय जनता के प्रतिनिधि सब स्तरों पर देश का कामकाज चलायें। विनोबा और जे० पी० ने इसे लोकस्वराज्य का नाम दिया है। ऐसे स्वराज्य के लिए शहरों में पड़ोस सभाएं, और गांवों में ग्रामसभाएं गठित करना होगा। सारे स्थानीय मामले इन सभाओं को सौंपने होंगे। सर्व सम्मति से ये सभाएं अपना कामकाज चलायेंगी और सर्वसम्मति से चुने गये इनके प्रतिनिधि क्षेत्रीय और राष्ट्रीय मामले देखेंगे। जब तक हम ऐसा स्वराज्य कायम नहीं करते तब तक मतदाता के मत का उस के जीवन से सम्बन्ध नहीं जुड़ेगा न वह अपने कामकाज के लिए जिम्मेदार होगा। प्रजातन्त्र नकली होगा और सत्ता कभी भी जनता के हाथ में नहीं आयेगी।

उत्तर प्रदेश के चुनावों के पहले मतदाता शिक्षण समिति ने और जे० पी० ने लोगों के सामने यह विकल्प रखा है। विकल्प बताने के साथ-साथ समिति ने विद्यार्थियों और नागरिकों की मदद से मतदाताओं के शिक्षण और चुनाव निष्पक्ष तथा स्वतन्त्र कराने की भी व्यवस्था की है। पन्द्रह जिलों और पांच महानगरों में समिति ने कार्यक्रम पिछले दो महीनों से चलाया है। इस सप्ताह उसकी परीक्षा है। इस चुनाव के अनुभव और इस कार्य से संचित नागरिक शक्ति के साथ आगे इस समिति को लोकस्वराज्य के कार्य में लगना है।

विधानसभा भंग करना ही एक मात्र हल

—जे० पी०

चार दिन की अध्ययन यात्रा के बाद जयप्रकाश नारायण ने अहमदाबाद में कहा कि गुजरात की समस्या का एक ही हल है विधानसभा भंग कर दी जाये। रविशंकर महाराज भी यही मानते हैं और गुजरात के लोगों की भी यही मांग है। जे० पी० ने आशा प्रकट की कि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी इस मांग का औचित्य समझेंगी और सन् ६० में गुजरात राज्य का उद्घाटन करने वाले महाराज की राय स्वीकार करेंगी।

अहमदाबाद से लौट कर जे० पी० पन्द्रह फरवरी को दिल्ली में इन्दिरा जी और राष्ट्रपति से मिलने गये। लेकिन ऐसा लगता है कि प्रधानमन्त्री विधानसभा को भंग नहीं करवाना चाहती। अखबारों में छपा है कि उन्होंने इस मांग को अप्रजातान्त्रिक कहा है। जानकार क्षेत्रों में माना जाता है कि गुजरात विधानसभा को भंग करने की मांग इसलिए नहीं मानी जा रही है कि अगस्त में राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है। इस चुनाव में गुजरात के विधायकों के एक सौ चालीस वोट महत्वपूर्ण हैं और कांग्रेस हायकमान उन्हें गवाना नहीं चाहता। गुजरात के कुछ कांग्रेस विधायकों ने ऐसा स्पष्ट कहा भी है कि अगस्त के बाद विधानसभा के भविष्य पर निर्णय किया जाये। पहले जब चिमनभाई से इस्तीफे की मांग की जा रही थी और गुजरात में व्यापक आंदोलन चल रहा था तब मुख्यमंत्री को इसलिए नहीं हटाया जा रहा था कि इसका उत्तरप्रदेश के चुनाव में कांग्रेस की स्थिति पर बुरा असर पड़ेगा। लेकिन जब आंदोलन और तेज हुआ और मंत्रियों ने इस्तीफे दे दिये तो कांग्रेस हाईकमान को चिमनभाई को गद्दी छोड़ने की सलाह देनी पड़ी।

ऐसा लगता है कि हाईकमान को राष्ट्रपति के चुनाव तक गुजरात विधानसभा को निलम्बित रखने का इरादा भी छोड़ना पड़ेगा। संगठन कांग्रेस के सोलह विधायकों ने इस्तीफे दे दिये हैं और सत्तारूढ़ कांग्रेस के भी कुछ विधायकों को इस्तीफे देने पर मजबूर होना पड़ा है। नवनिर्माण युवक समिति ने विधानसभा को भंग किये जाने की मांग तेज कर दी है और विद्यार्थी जगह-जगह विधायकों और पार्षदों का घेराव कर रहे हैं। समिति ने जनमत बनाने और मोर्चे निकालने के अलावा मन्दिरों मस्जिदों गुरुद्वारों और गिरजाघरों में प्रार्थना करने का कार्यक्रम भी बनाया है। समिति के नेता उमाकान्त मनकड़ ने एक आम सभा में बताया कि समिति के नेताओं को कांग्रेस हाईकमान ने दिल्ली में चर्चा करने के लिए बुलाया था लेकिन समिति ने यह निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया है। एक बयान में समिति ने कहा है कि सत्ता वाले लोग अगर गुजरात के लोगों में रुचि रखते हैं तो वे अहमदाबाद आकर मिल सकते हैं। अध्यापकों के महासंघ ने भी विधानसभा को भंग करने के आंदोलन को तेज करने का फैसला किया है। अध्यापक परीक्षाओं का कोई काम नहीं करेंगे, न प्रश्न पत्र बनायेंगे न पेपर जाँचेंगे।

विद्यार्थियों और अध्यापकों की इस कटिबद्धता और जागरूकता ने जे० पी० को भी अत्यधिक प्रभावित किया है। जे० पी० ने दिल्ली में इस संवाददाता को बताया कि विद्यार्थियों और अध्यापकों का उनसे बहुत प्रगाढ़ संवाद कायम हुआ। विद्यार्थियों ने जे० पी० से कहा कि वे उनका नेतृत्व करें। जे० पी० ने उनसे कहा कि आन्दोलन उनका है इसलिए नेतृत्व भी उन्हीं का होना चाहिए। 'मैं तो आपको सलाह भर दे सकता हूँ—' जे० पी० ने विद्यार्थियों से अहमदाबाद में कहा।

जे० पी० ने अहमदाबाद पहुँचने के बाद अनशन पर बैठे विद्यार्थियों से बातचीत की और उनका अनशन तुड़वाया। फिर तीन-चार जगह विद्यार्थियों और अध्यापकों की बड़ी-बड़ी सभाओं को सम्बोधित किया। जे० पी० ने गुजरात के विद्यार्थियों को बधाई दी कि उन्होंने कॉलेज के छोटे-मोटे मामलों पर आंदोलन करने के बजाय बढ़ती हुई महंगाई, अनाज के वितरण और राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसे बड़े सवालों पर आंदोलन चलाकर देश भर के युवकों के सामने एक मिसाल पेश की है। उन्होंने आवाहन किया कि विद्यार्थी एक साल के लिए कॉलेज छोड़ कर देश में युवक्रान्ति करने के लिए काम करें। गुजरात ने युवकों के मन में यह विश्वास पैदा किया है कि वे भ्रष्टाचार जैसे व्यापक मसलों पर राष्ट्रीय आंदोलन चला सकते हैं। लेकिन जे० पी० ने सलाह दी कि कॉलेज के विद्यार्थी स्कूली बच्चों को अपने साथ न लें क्योंकि वे अभी छोटे हैं।

जे० पी० ने कहा कि विधानसभा को भंग किये जाने की मांग उचित है लेकिन मुख्यमंत्री के हटाये जाने विधानसभा भंग होने और नये चुनाव करवाने से समस्यायें हल नहीं होंगी। नये चुनाव होंगे और उनमें फिर इन्हीं पार्टियों के उम्मीदवार खड़े होंगे। इन उम्मीदवारों का चयन भी पार्टियों के हाईकमान ही करेंगे। इनका भी गुजरात के लोगों या नवनिर्माण युवक समिति से कोई लेना देना नहीं होगा। जे० पी० ने विद्यार्थियों से कहा कि वे गांवों और शहरों में जाकर जनमत बनायें और ऐसे उम्मीदवारों को खड़ा करवायें जो किसी पार्टी के न होकर जनता के उम्मीदवार हों सच्चरित्र हों और जनसेवक हों।

जे० पी० ने विद्यार्थियों को यह सलाह दी कि विधायकों से इस्तीफे दिलवाने का आन्दोलन शान्तिपूर्ण और अहिंसक होना चाहिए।

जे० पी० ने कांकरिया फुटबाल मैदान पर एक प्रचण्ड आम सभा को भी सम्बोधित किया।

गुजरात के सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने लोकस्वराज्य सम्मेलन बुलाया था जिसमें जे० पी० और रविशंकर महाराज दोनों ने गुजरात की वर्तमान स्थिति में सर्वोदय कार्यकर्ताओं का कर्त्तव्य स्पष्ट किया। एक लोकस्वराज्य समिति गठित की गई है जो विद्यार्थियों अध्यापकों और नागरिकों के सहयोग से लोकस्वराज्य की स्थापना का कार्यक्रम चलायेगी। रविशंकर महाराज बावजूद अपने सायटिका रोग के इस कार्यक्रम में उतर आये हैं। नारायण देसाई ने इस कार्य के लिए एक साल देना तय किया है।

विभीषण का राजतिलक मत रोको !

गुजरात कांग्रेस के अध्यक्ष भीना भाई दर्जी का आरोप है कि विद्यार्थियों और अध्यापकों ने विधानसभा को भंग करने की मांग करके जो हालत पैदा की है, सर्वोदय के लोग उसका फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। "विद्यार्थियों और अध्यापकों की अगुवाई करने वाले ये लोग कहां थे" भीना भाई ने पूछा है "जब पुलिस गोलियां चला रही थी और लड़कियों तक पर अत्याचार हो रहे थे। मैं ही अकेला आदमी था—भीना भाई का दावा है—कि जिसने इन अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठाई। हालांकि मैं सत्तारूढ़ पार्टी का आदमी हूं।"

भीना भाई की शिकायत समझदारी की मांग करती है। लोगों की याददाश्त बहुत कमजोर है और वे भूल गये हैं कि चिमन भाई को गद्दी से हटाने में सबसे बड़ा योगदान उन्हीं का है। लेकिन लोग बहुत कृतघ्न है और विद्यार्थी और अध्यापक इतने मगरूर हो गये हैं कि भीना भाई को कोई श्रेय देना नहीं चाहते। पन्द्रह दिन पहले लोगों की मांग थी कि चिमन भाई को हटाओ। जनता की इस मांग को पूरी करने के लिए भीना भाई ने क्या नहीं किया ? प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष होते हुए भी उन्होंने कांग्रेसी मुख्यमन्त्री को हटाने के लिए पूरा जोर लगाया। पहले चिमन भाई को कहा कि इस्तीफा दे दो। लेकिन चिमन भाई ने जनता की मांग पर ध्यान नहीं दिया और कुर्सी से चिपके रहे। भीना भाई को दिल्ली आना पड़ा। उन्होंने प्रधानमन्त्री और कांग्रेस हाईकमान से कहा कि जनता की मांग है चिमन भाई को हटाओ। लेकिन दिल्ली वालों ने भी उनकी नहीं सुनी। वे लौट कर आये अहमदाबाद और जनता की मांग पूरी करने के लिए उन्होंने चिमन भाई के विरोधी कांग्रेसियों को भड़काया। कितना बड़ा खतरा भीना भाई ने उठाया। सत्तारूढ़ पार्टी के होते हुए भी जनता की तरफ से बोले। पुलिस के अत्याचारों के खिलाफ बयान छोड़ा और अपने घर में बैठे षडयन्त्र करते रहे कि जनता की मांग कैसे पूरी हो ?

लेकिन जब भीना भाई के जोर से चिमन भाई हट गये तो विद्यार्थी और अध्यापक उन्हें अपना नेता मानने के बजाय जयप्रकाश नारायण और रविशंकर महाराज की सुन रहे हैं। अब बताइये क्या जे० पी० या महाराज गुजरात कांग्रेस के अध्यक्ष हैं ? क्या वे दिल्ली गये थे ? क्या उन्होंने पुलिस अत्याचारों के खिलाफ बयान दिया था ? क्या उन्होंने चिमन भाई के मंत्रीमंडल को तोड़ा ? अगर इन लोगों ने यह सब नहीं किया तो उन्हें विद्यार्थियों की नेतागिरी करने का क्या अधिकार है ? भीना भाई के साथ सरासर अन्याय हो रहा है। जनता की तरफ से उन्होंने इतनी बड़ी लड़ाई लड़ी लेकिन लोग उलटे उन्हीं पर आरोप लगा रहे है कि चिमन भाई चूंकि उनके विरोधी गुट के आदमी थे इसलिए भीना भाई ने मौके का फायदा उठाया और पुराना हिसाब साफ कर लिया। जनता की तरफ से बोलने का जमाना नहीं रहा। एक मांग पूरी करवाओ तो बेवफा जनता दूसरी मांग करने लग जाती है।

भीना भाई की दूसरी शिकायत भी वाजिब है। विद्यार्थी और अध्यापक विधानसभा को भंग क्यों करवाना चाहते हैं ? और ये सर्वोदय वाले क्यों उनकी पीठ ठोक रहे हैं ? गुजरात में अनाज की कमी क्यों हुई और भाव आसमान पर क्यों गये ? क्योंकि चिमन भाई और उनके लोग भ्रष्टाचारी थे। हमने उन्हें हटा दिया। रावण गया तो अब विभीषण का राजतिलक होना चाहिए। ठीक है कुछ दिन गुजरात की हालत सुधारने के लिए राष्ट्रपति का रामराज्य चले। पर विधानसभा भंग होगी तो विभीषण का क्या होगा ? कांग्रेस विधायक पार्टी में भीना भाई के गुट के ऐसे बहुत से लोग हैं जो दूध के धोये हुए हैं। ये लोग सच्चे जनसेवक हैं और चिमन भाई को हटाने में अपनी ही सरकार के खिलाफ जनता की तरफ से लड़े हैं। पार्टी का अनुशासन तोड़ने और प्रशासन को ठप्प करने में इन लोगों ने बड़े साहस से काम किया है। विधानसभा भंग हो जायेगी तो नयी सरकार बना कर इन लोगों को जनता की सेवा करने का मौका कैसे मिलेगा ? गुजरात का कितना बड़ा नुकसान होगा ? जिन विधायकों में से एक-एक आदमी मुख्यमन्त्री बनने की तमन्ना और ताकत रखता है, वे सब बेचारे पटिये पर आ जायेंगे ? चिमन भाई भ्रष्टाचारी होंगे, लेकिन भीना भाई और उनके लोग भ्रष्टाचार का नाम तक नहीं जानते। ऐसे सच्चे-शुद्ध जनसेवकों को सरकार बनाने का मौका देने के बजाय उन्हें मतदाताओं के सामने फिर से खड़ा कर देना कहां का प्रजातन्त्र है ? जनता को वोट देने का अधिकार है तो कांग्रेसी विधायकों को सरकार बनाने का जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्हें उनके इस प्रजातांत्रिक अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

भीना भाई ने दिल्ली में कहा था कि गुजरात की जनता को चिमनभाई में विश्वास नहीं है लेकिन इन्दिरा जी पर उसका पूरा विश्वास है। और अब प्रधानमन्त्री ने भीना भाई की बात का समर्थन किया है। विधानसभा को भंग करने की मांग अप्रजातांत्रिक है। जनता को अधिकार नहीं है कि वह उन प्रतिनिधियों को पांच वर्ष के पहले ही वापस बुलाये जिन्हें उसने दो वर्ष पहले ही चुन कर भेजा है। एक बार जिसे चुन दिया उसे पांच वर्ष के पहले जनता वापस नहीं बुला सकती। यह असंवैधानिक है। संविधान में कहां लिखा है कि जनता को अपने प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार है। विधायक बनना पांच वर्ष का अमर पट्टा प्राप्त करना है। यह एक बीमा है जिसके जरिये विधायक कोठी बनाने धन जमा करने, कार खरीदने और अपना भविष्य सुरक्षित करने का अधिकारी है। बीमे को भुनवाने के लिए विधायक दल बदल से लेकर कुछ भी कर सकता है। उसे जनता के विश्वास की नहीं विधायक होने के लाभ की ग्यारंटी चाहिए। प्रजातंत्र इसी का नाम है और संविधान भी इजाजत देता है। हाईकमान जब तक तय नहीं करता तब तक विधायक फिर से चुनाव क्यों लड़े ? और अभी तो हाईकमान को गुजरात के एक सौ चालीस विधायकों की सख्त जरूरत है। अगस्त में राष्ट्रपति का चुनाव होने वाला है और इन्दिरा जी के हाथ मजबूत करना है।

प्रभाष जोशी

शिक्षक और छात्र हड़ताल कर दें निकम्मी शिक्षा में शामिल न हों

—विनोबा

पवनार में राष्ट्रीय आचार्यकुल सम्मेलन में आये हुए बिहार आचार्यकुल के सदस्यों का एक दल विनोबा जी से मिला और उनसे शिक्षा तथा आचार्यकुल के संबंध में विभिन्न सवाल किये। सवाल-जवाब इस प्रकार हैं—

प्रश्न : आज शिक्षा में परिवर्तन की बात तो बहुत होती है किन्तु कुछ होता नहीं है। क्या किया जाय ?

विनोबा : सबसे बड़ी बात तो यह है कि क्या शिक्षकों को लगता है कि यह शिक्षा बदली जानी चाहिए ? आज की शिक्षा तो इतनी निकम्मी है कि उसे एक दिन के लिए भी जारी रखना नहीं चाहिए। बाबा ने तो सन् १९१६ में ही स्कूल छोड़ दिया था क्योंकि वह शिक्षा नौकरी के लिए थी और बाबा को नौकरी तो करनी नहीं थी। वह बेकार शिक्षा को लेकर क्या करना ? फिर आज तो नौकरी भी नहीं मिलती। किन्तु शिक्षा तो वही चल रही है। इससे तो आज बेकारी बढ़ रही है। बस दिन ब दिन बढ़ती चली जाती। यह शिक्षा इतनी निकम्मी है फिर भी कोई इसे त्यागना नहीं चाहता। तो मैं कहता हूं कि शिक्षक मिलकर सब हड़ताल कर दें और इस निकम्मी शिक्षा में शामिल होने से इन्कार कर दें। वे अपने छात्रों को भी इसमें अपने साथ कर लें।

आचार्यकुल जिम्मेदारी ले

शिक्षा के सुधार का अब समय नहीं रहा है। अनेक कमीशन बैठे हैं। पहले राधाकृष्णन् कमीशन बैठा फिर कोठारी कमीशन बैठा। और भी कई कमीशन बैठे किन्तु क्या हुआ ? बाबा ने कभी कहा था कि आजादी मिलने ही जैसे हमने गुलामी का पुराना झंडा उसी दिन उतार कर फेंक दिया वैसे ही शिक्षा उसी दिन बदल दी जानी चाहिये थी। गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा का विचार देश के सामने रखा था। बाबा ने भी योग, उद्योग और सहयोग की शिक्षा का विचार रखा है। अब यह काम आचार्यकुल का है कि वह सोचे कि देश में कैसी शिक्षा चलनी चाहिए। मेरा कहना है कि शिक्षा का संचालन विश्वविद्यालयों के हाथों में हो और विश्वविद्यालय तथा स्कूल कालेज सरकार से मुक्त हों। इनमें सभी शिक्षक आचार्यकुल का विचार मान कर काम करें। या तो शिक्षा को बदलो या स्कूल का त्याग करो।

प्रश्न : आप कहते हैं कि शिक्षक स्कूलों का त्याग कर दें तो फिर उनकी जीविका का क्या होगा ?

विनोबा : अब बिहार में शायद कुल दो लाख शिक्षक होंगे। विश्वविद्यालय और स्कूल में सब मिलाकर। और देहात शायद ७५ हजार के करीब हैं। याने हर देहात के पीछे ऐसे दो तीन ही शिक्षक आते हैं। तो शिक्षक गांव की सेवा करें और गांव उनका दायित्व उठायें। शिक्षा सुधार केवल शिक्षकों को ही नहीं चाहिए वह सब अभिभावकों को भी तो चाहिए न। तो सब लोग शिक्षक और अभिभावक मिलकर शिक्षा बदलने के लिए आगे आयें।

परिवर्तन के लिए सत्याग्रह

प्रश्न : आप कहते हैं कि शिक्षा विश्वविद्यालयों के हाथ में रहे। वे तो आज भी काफी हद तक स्वतंत्र हैं फिर भी उनमें सबसे अधिक पार्टीबाजियां हैं और शिक्षा में बिगाड़ है तो क्या करें ?

विनोबा : यह हो सकता है क्योंकि जो जितना ऊंचा होता है उसमें उतना बड़ा मोह होता है। तो उनके मोह निरसन का काम करें। किन्तु जो करना हो वह अभी करो। मेरा कहना है कि शिक्षा में सुधार के लिए उत्तमोत्तम सत्याग्रह करो। आज की शिक्षा बदलने के लिए विश्वविद्यालयों को भी आगे आना चाहिए। आप तो जानते हैं कि डा० जाकिर हुसैन बहुत बड़े शिक्षाशास्त्री थे और हमारे राष्ट्रपति तो थे ही। वे एक बार मेरे पास आये और शिक्षा सुधार के बारे में चर्चा होने लगी। तो मैंने कहा कि इस शिक्षा से सरकार के सामने भी एक दुविधा है कि वह लोगों को न पढ़ाये तो लोग मूर्ख रहेंगे और पढ़ाये तो वे बेकार रहेंगे। तो उन्होंने झट से कहा कि इससे तो वे दोनों ही होते हैं। ऐसी थी उनकी सहज प्रतिभा। तो आप शिक्षक लोग इस शिक्षा के खिलाफ सत्याग्रह करोगे सब छात्र और शिक्षक मिलकर हड़ताल करोगे तो फिर सरकार के भी ध्यान में आजायगा कि अब क्या करना है। उसे फिर इस सारे सवाल पर सोचना होगा वह फिर कमीशन बिठायेगी और फिर उस पर अमल भी करेगी।

कर्तव्य अधिकार से पहले है

प्रश्न : आज तो शिक्षक संघ आये दिन रोज ही हड़ताल करते रहते हैं और सरकार पर उसका कोई भी असर नहीं होता है। इस पर आपका क्या कहना है ?

विनोबा : जहां तक मैंने सुना है आज तो शिक्षक इसलिए हड़ताल नहीं करते कि शिक्षा में सुधार हो। वे तो केवल अपना वेतन बढ़ाने के लिए हड़ताल करते हैं। अपने अधिकार के लिए हड़ताल करते हैं। किन्तु इस अधिकार से पहले आपका कर्तव्य है कि देश निकम्मी शिक्षा से मुक्ति पाये। हमने आचार्यकुल में कर्तव्यों को पहले रखा है। इसका अर्थ यह नहीं कि आचार्यकुल शिक्षकों की समस्याओं की ओर से बेखबर होगा किन्तु समझना चाहिए कि भगवान ने जीव के लिए कर्तव्य ही रखा है अधिकार अपने हाथ में रखा है। इसलिए हम पहले से अपना कर्तव्य पूरा करें तो भगवान अधिकार भी हमें दे देगा।

मानव जीवन का ध्येय

प्रश्न : मानव जीवन का ध्येय क्या है ?

हड़ताल कर दें....

विनोबा : मानव जीवन का ध्येय तय नहीं हुआ है। किन्तु यह देखना है कि परमात्मा ने अपनी किसी इच्छा की पूर्ति के लिए ही मनुष्य को बनाया है। नहीं तो वह मनुष्य से पहले बनाये गये अनेक प्राणियो से ही सन्तुष्ट हो जाता। पर उनसे उसे सन्तोष नही हुआ और जब मनुष्य बना तो वह बहुत हर्षित हुआ और उसे अपनी इस सृष्टि पर सन्तोष हो गया। तो इससे क्या यह नहीं लगता कि मानव जीवन का ध्येय ईश्वर की इच्छा की पूर्ति करना है। उसका अर्थ है ईश्वर की बनाई इस सृष्टि की याने जीवो की सेवा करना है।

सहरसा के लिए आवाहन

प्रश्न : सहरसा से भी शिक्षको का एक दल आया है। सहरसा के शिक्षको के लिए आपका क्या सन्देश है ?

विनोबा . सहरसा मे अभी एक और अन्तिम अभियान हो रहा है। आचार्यकुल के लोग साढे तीन माह उसके लिये दें। वहा पर अभी धीरेन दा है जयप्रकाश जी वहा हो आये हैं। बंगाल के चारु बाबू भी वहीं बैठे हैं तो इन सब बुजुर्गों की शक्ति से आप लोग लाभ ले सकते हैं। अब इस अन्तिम अभियान के बाद सफलता हुई तो भी बाहर और असफलता हुई तो भी बाहर। इसके बाद वहा पर सभी सेवक सभी बाहर निकल कर लोकगंगा मे तैरने के लिए निकल जायेगें। तो यह सहरसा के शिक्षको का दायित्व है कि वे इसमे शामिल होकर इसे सफल करने का काम करें।

प्रश्न : आपने कहा कि वे साढे तीन माह दें। किन्तु शिक्षको के अपने भी तो अनेक झमेले है और फिर उन्हे इतने लम्बे समय तक का अवकाश कैसे मिलेगा ?

विनोबा : यह समझना चाहिए कि क्रान्तिकार्य के लिए हमें हमे हर प्रकार के झमेलो को त्यागना होगा। क्रान्ति करना हो तो फिर वह झमेले तोड कर ही की जा सकती है। अवकाश मागो तो फिर सरकार भी मान सकती है कि आप अच्छे काम मे जा रहे हैं।

नागरी देश को जोड़ने वाली लिपि है

—देवेन्द्र कुमार

दुनिया मे बोलियो का विकास पिछले १०-१२ हजार साल का ही माना जाता है। तथा लिखावट का उपयोग साकेतिक रूप मे ७-८ हजार साल पुराना भी मिलता हो तो भी विकसित रूप पिछले तीन हजार साल मे ही हो पाया है। लिखावट के कारण एक पीढी का ज्ञान दूसरी पीढी को देने का जो तरीका इन्सान को मिला है उसकी वजह से ही ज्ञान मे गहरी प्रगति आ पायी। इस लिए लिपि का महत्व बोली के महत्व से किसी प्रकार कम नही है।

आज दुनिया मे बडे पैमाने पर बोली जाने वाली जो बोलिया हैं उनको कायम रखते हुए क्या उनके लिए एक लिपि अपनायी जा सकती है, यह सवाल कई बार उठा है। इससे भाषाओ को परस्पर निकट आने का मौका मिलेगा और उनको सीखने मे भी आसानी होगी। एक ही लिपि हो तो अलग-अलग भाषाए एक-दूसरे के नजदीक आती है। आज फैलाव की दृष्टि से देखें तो रोमन लिपि है जिसमे अमरीका, आस्ट्रेलिया और पश्चिमी योरोप की सभी भाषाऐं लिखी जाती है। जिनकी अपनी कोई लिपि नही थी और जो पाश्चात्य प्रभाव मे आये उन्होंने भी विशेष कर रोमन को अपनाया है।

अफ्रीका के महाद्वीप मे उत्तर के अरब-प्रभावित देश छोड दें तो बाकी अफ्रीकी देशो की बोलिया रोमन लिपि मे ही विकसित की जा रही हैं। पूर्व यूरोप एशिया और रूस मे ग्रीक लिपि से सबधित लिपिया हैं, परन्तु वहाँ भी रोमन लिपि परिवार की ही मानी जायेगी।

एशिया मे सोवियत रूस को छोड दें तो तीन प्रकार की लिपियाँ हैं : पूर्व एशिया मे चीनी चित्र लिपि, पश्चिमी एशिया मे अरबी लिपि, और दक्षिण तथा आग्नेय एशिया मे नागरी परिवार की लिपिया।

रोमन लिपि के अत्यत व्यापक होने पर भी उसकी वैज्ञानिकता के संबध मे बराबर सदेह उठाया जाता रहा है। इसका सबसे बडा प्रसिद्ध नमूना साहित्यिक बर्नार्ड शा की वह वसीयत है जिसमे उन्होंने अपनी सारी जायदाद इस बात के लिए ट्रस्ट कर दी है कि कोई लिपि मे ऐसा सुधार निकाले जो कम से कम अक्षरो मे भाषा को प्रकट कर सके और जैसा बोला जाये वैसा ही लिखा जा सके। इन आधारो पर जब हम देखते हैं तो उपरोक्त चारो लिपि परिवारो मे, अर्थात रोमन, अरबी, चीनी और नागरी मे से एक खूबी नागरी मे सबसे अधिक पायी जाती है। इसके दो कारण हैं। एक तो नागरी मे व्यजनो की व्यवस्था ऐसी है कि अक्षर जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है और दूसरा, स्वर का आभास देने के लिए व्यजनो पर मात्रा लगाने का विधान है. 'क' मे 'ा' की मात्रा लगा देने से 'का' हो जाता है जब कि और किसी भी लिपि मे उसके लिए 'क' के साथ दूसरा स्वर-अक्षर लगाना पडता है। यह बडी-खूबी इस लिपि को सक्षिप्त और आसान बना देती है।

अगर दुनिया मे नागरी लिपि कबूल कर ली जाती है तो यह एक बहुत बडा ऐतिहासिक कदम होगा, क्योंकि इससे भाषाओ को परस्पर नजदीक आने मे मदद मिलेगी।

नागरी लिपि परिवार मे लिखी जाने वाली भाषाएं . तिब्बती, नेपाली, असमिया, बगला, बर्मी, हिन्दी, डोगरी, गुजराती, मराठी, कन्नड, मलयालम, तमिल, सिहली, तेलुगू, उडिया, थाई, लाओसी, कम्बोडियाई वियतनाम की भाषाए और सस्कृत तथा पाली। इन सब मे क, का, कि, की, आदि बारहखडी तथा क-वर्ग, च-वर्ग, प वर्ग का क्रम भी समान है।

विश्व की सभी लिपिया सैकडो वर्षों के संस्कारो से बनी है और अपने-अपने सौन्दर्य के साथ प्रस्थापित है। इस सारे वैविध्य, वैचित्र्य को हटा कर एक समान लिपि सारे ससार मे चले यह ठीक नही होगा और न

उत्तर भारत में हिन्दी या हिन्दुस्तानी एक जोड़-भाषा के रूप में चल भी रही है। लेकिन दक्षिण की चारों भाषाएं एक-दूसरे के बहुत निकट होते हुए भी परस्पर जोड़ने वाली किसी कड़ी से वंचित है। पढ़े-लिखों में अंग्रेजी का चलन वहां इसीलिए बढ़ा है।

→

सम्भव ही है। लेकिन जब सभी देशों में उन की अपनी एक लिपि के साथ-साथ एक दूसरी लिपि का भी उपयोग सीखा जायेगा तो वह प्रयोग दुनिया को जोड़ने वाला साबित होगा। किसी भी कार्य को जब हम एक विशेष दृष्टि से सामने रखते हैं तो उसका अमल पहले एक छोटे क्षेत्र में सिद्ध करके ही लोकमत उसके पक्ष में बना सकते हैं। इसलिए विश्व लिपि नागरी के विचार को भी पहले नागरी लिपि परिवार के क्षेत्र में लागू करने की बात रखी जा रही है। यों तो भारत में १९६२ में मुख्यमंत्रियों के एक सम्मेलन में पंडित नेहरू की अध्यक्षता में यह तय किया गया था कि भारत की सभी भाषाओं को नागरी लिपि में लिखा जाय, इस का प्रयास होगा। परन्तु वह बात आगे नहीं बढ़ पायी। लिपियों की एकता और भाषाओं की एकता को साथ जोड़ना उचित नहीं है क्योंकि जैसा हम देख रहे हैं भाषाओं के अलग रहते हुए भी लिपि एक हो सकती है जैसा कि पश्चिमी योरोप में है। अभी तो बात इतनी ही है कि प्रारंभ में भारत की विभिन्न भाषाओं में अपनी अपनी विशिष्ट लिपि के साथ एक जोड़-लिपि नागरी को स्वीकार किया जाये। इसमें कहीं भी यह भावना नहीं है कि देश की विभिन्न विकसित लिपियां आज जिस रूप में प्रचलित हैं उनको समाप्त किया जाये। विचार केवल इतना ही है कि एक और लिपि भी बच्चे अपनी भाषाओं की लिपि के साथ-साथ सीख लें।

गुजराती पाठ्य-पुस्तकों में एक पद्धति अपनाई गयी थी जो अभी हाल तक चलती थी। इसमें गुजराती लिपि के साथ-साथ नागरी लिपि का भी उपयोग होता था। बच्चों की पाठ्य-पुस्तकों में कविताओं और लेखों के शीर्षक तो नागरी (जिसे बालबोध कहते हैं) में छपते थे, बाकी सब गुजराती में ही रहता था। इस प्रकार नागरी लिपि के साथ बालक का परिचय हो जाता था। नागरी परिवार की सभी लिपियों के साथ-साथ नागरी लिपि भी सीख लेना कोई कठिन बात नहीं है। आज तो अंग्रेजी जब सीखते हैं तो उसकी लिपि के लिए चार प्रकार के अक्षरों के साथ परिचय करना पड़ता है—पढ़ाई की अलग लिखाई की अलग और दोनों में छोटे और बड़े (कैपिटल) अक्षर अलग। इसलिए एक अंग्रेजी को सीखने के लिए चार लिपियों का प्रयोग करना पड़ता है। भारत की लिपियों के साथ-साथ मिलती-जुलती नागरी लिपि सीखने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती।

यह काम उत्तर भारत के लिए आसान मालूम पड़ता है क्योंकि वहां की लिपियों के अक्षरों का विन्यास समान है। नेपाली, डोगरी, मराठी, हिन्दी तो नागरी में लिखी ही जाती हैं, परन्तु दक्षिण की चारों भाषाओं की लिपियां भी नागरी के अक्षरों से दूर नहीं हैं। साथ ही जितनी विशेष आवश्यकता दक्षिण की भाषाओं को निकट लाने की है उतनी उत्तर में नहीं है उत्तर में तो स्वाभाविक रूप से भाषाएं परस्पर मिल-जुल जाती हैं। वहां हिन्दी या हिन्दुस्तानी एक जोड़ भाषा के रूप में उपयोग हो भी रही है। लेकिन दक्षिण में चारों भाषाएं एक दूसरे के बहुत निकट होने पर भी परस्पर जोड़ने वाली किसी कड़ी से वंचित हैं। पढ़े-लिखों के बीच अंग्रेजी का उपयोग इसीलिए वहां अधिक बढ़ा है क्योंकि कन्नड़ का व्यक्ति तेलुगु वाले से, अथवा तेलुगु या तमिल का मलयालम वाले से किसी भाषा में सम्पर्क नहीं हो पाता है। इन चारों भाषाओं को पास लाने में एक लिपि बहुत मदद कर सकेगी क्योंकि भाषाएं इतनी अधिक निकट हैं कि यदि लिपि एक हो तो आसानी से एक दूसरे की भाषा समझी जा सकेगी। नागरी के व्यवहार से प्रच्छन्न रूप में हिन्दी को दक्षिण में लाया जाये यह एक लिपि का उद्देश्य नहीं है। हां नागरी जानने के बाद उत्तर की भाषाएं और विशेष कर हिन्दी पढ़ने-लिखने में आसानी होगी और सारे देश को जोड़ने वाली लिपि से सभी भाषाएं एक-दूसरे को समृद्ध कर सकेंगी वह तो अपनी जगह ठीक है परन्तु दक्षिण में वहां की भाषाओं के द्वारा परस्पर एक-दूसरे से सम्पर्क सम्बन्ध बढ़ाने में नागरी अवश्य सहायक बनेगी।

हाल में विनोबाजी ने एक चीनी प्राईमर नागरी में तैयार कराई है, जिससे भारत के लोग चीनी सीख सकें। इस पुस्तक को वे चीन को भेंट करना चाहते हैं। इसके पीछे यह भी भावना है कि चित्र लिपि वाली चीनी के परिवार की भाषाएं नागरी लिपि की वैज्ञानिकता के सम्बन्ध में विचार करें। चीन के राष्ट्रपति माओ त्से तुंग ने तो यह कहा ही है कि जिस लिपि में एक बच्चे को डेढ़-दो हजार सकेत सीखे बिना लिखना नहीं आ सकता, उसे हटा कर जल्द से जल्द दूसरी कोई वैज्ञानिक 'लिपि' प्राप्त करनी चाहिए। और रोमन लिपि की ओर भी उनका झुकाव बना है यह प्रकट हुआ है। विनोबा विश्व के चारों बड़े लिपि-परिवारों को नागरी की वैज्ञानिकता समझाना चाहते हैं।

अभी भारत में अपनी लिपि के साथ-साथ नागरी लिपि का उपयोग प्रारम्भ करने का प्रयोग सीमित रूप में हुआ है असमिया बंगला, उड़िया, तेलुगू कन्नड़, गुजराती और पंजाबी भाषाओं की सर्वोदय पत्रिकाएं नागरी लिपि में छप रही हैं। उनके द्वारा इस विचार को जनता के समक्ष लाया गया है। यदि देश की जनता को यह सारा वैज्ञानिक तथ्य ठीक से समझाया जाय और इस ओर बढ़ने में जो भी मानसिक रुकावटें हैं वे दूर की गई तो इसमें कोई शक नहीं है कि भारत विश्व के लिए एक नयी देन दे सकता है। इस क्रम में स्वयं अपने देश की एकता को भी मजबूत कर सकता है। ●

ग्रामस्वराज्य का रास्ता सामने है यात्रा लम्बी है, वहुत दूर जाना है

—कुमार प्रशान्त

रायोपुर (सहरसा) से जयप्रकाश बाबू का परिचय नया नहीं है। इतना पुराना और गहरा है कि 'जयप्रकाश बाबू' के बारे में यहा किस्से मशहूर हैं,किंवदन्तिया चलती हैं। अतः सहरसा अभियान को गति देने जब २५ जनवरी से ३१ जनवरी तक के लिए जयप्रकाश बाबू सहरसा आये तो ३१ को रायोपुर मे उनका कार्यक्रम हमने रखा। प्रखड के तरुण शांति सैनिक, ग्राम शांति सैनिक तथा अन्य युवको की एक रैली की जाये, ग्राम सभा हो, कुछ बासगीत के पर्चे बटे, भूदान की जमीन के पर्चे कटें तथा प्रखण्ड के प्रमुख लोगो, ग्रामसभा के पदाधिकारियों के साथ परिचय हो ऐसा कार्यक्रम रखा था। बहुत कम समय मे यह सारा कार्यक्रम हमने किया जिसमे नागरिक मित्रों का बहुत सहयोग मिला। बी० डी० ओ० साहब के विशेष प्रयास से ६३३ बासगीत के पर्चे तैयार हुए तथा सौ से ऊपर भूदान की जमीन के पर्चे बने जय प्रकाश बाबू के हाथो कुछ पर्चों का वितरण हुआ। तेज हवा मे ठड थी, पर लोग अच्छी सख्या मे आये। '४२' की छिपती-भागती लड़ाई मे इस क्षेत्र मे जयप्रकाश जी को छिपाने-भगाने के काम में जिन लोगो ने मदद की थी उनमे कुछ से मिलकर वे काफी भावुक हो गये।

युवकों की रैली के गुजरने के बाद जयप्रकाश जी ने ग्रामसभा को सबोधित किया: मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है, आज खास तौर पर ऐसा महसूस कर रहा हू, भीतर से ऐसा लग रहा है कि मुझे अब सहरसा आना नही चाहिए। यहा जब भी आता हू तो पुरानी स्मृतिया, पुराने चेहरे, पुरानी बातें सुनता हूं और मन मे एक आंदोलन होता है। वह ४२ का जमाना याद आता है और अगर मेरी दृष्टि गलती नही कर रही है तो मुझे लगता है कि आज हम एक दूसरे ४२ के किनारे पर खडे हैं। एक दूसरी क्रांति होने जा रही है। उसका आभास मिल रहा है। शहरो मे हिंसा काड, विद्यार्थियों के उपद्रव और कही दूसरे प्रकार से जनता का असतोष दु ख प्रकट हो रहा है। देहातो मे भी लोगो के दिलो मे, मानस मे परेशानी है। ये चिन्ह हैं आने वाली क्रांति के।

मुझसे पूछते हैं लोग कि जयप्रकाश जी, अहिंसा की क्रांति पहले होगी कि हिंसा की? मैं कहता हूं कि मैं ज्योतिषी नही हू, पर दुनिया का इतिहास पढने के बाद मैं इतना जानता हू कि हिंसा की क्राति होगी तो उसके गर्भ से तानाशाही पैदा होगी। वह भी आवाज गरीबो की हिमायत की ही लगायेगी, पर सत्ता उसकी होगी जिसके हाथ मे बन्दूक होगी। माओ ने एक सच्ची बात कही है कि सत्ता बन्दूक की नली से निकलती है। पर, चीन मे भी किसानो के हाथो मे बन्दूक नही है। बन्दूक लेकर जनता की कसम खाते हैं, पर राज चलता है बन्दूक का। कौन पूछता है किसानो, मजदूरों को? और ये बन्दूकें बाट भी दो तो ये जो बडे हथियार हैं, बम हवाई जहाज, टैंक वगैरह वे क्या जनता मे बाटे जायेंगे? ये तो जनता का नाम लेनेवालो के हाथ मे ही रहेंगे। कहा से सत्ता आयेगी जनता के पास?

जनता का नाम लेनेवाले राजनीतिक दलो का खेल देखा है हमने। माओ भी जनता का नाम लेता है। मैं नही जानता हू कि हिंसा से क्राति होगी या अहिंसा से। इसका फैसला तो इतिहास करेगा। पर एक फैसला इतिहास ने कर दिया है कि हिंसा से क्राति होगी तो सारे अधिकार मुट्ठी भर लोगो के हाथ मे रहेंगे। हिंसा की क्राति गावो को, लोगो को शक्ति के हथियार नही देगी, इसलिए हमे हिंसा की क्रांति मान्य नही...यदि गावो का राज, आपका राज होना हो तो कहा से होगा? सब पटना, दिल्ली जाकर तो राज नहीं करेंगे। राज गाव मे होगा। वही क्षेत्र है आपका। ग्रामस्वराज्य का मतलब है जनता का राज।

इतिहास मे एक ही नेता पैदा हुआ जिसने सच्चाई से जनता राज बनाना चाहा और वह था मोहनदास करमचन्द गाधी। उसने कहा ग्रामस्वराज्य लाना है। अत: काग्रेस को तोडकर नया रूप देना होगा। यदि यही आजादी उसका स्वराज्य होती तो वह भारत का राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बन सकता था। कौन रोकता उसे? १९४६ मे जब दो-तिहाई लोग सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनाना चाहते थे उसने मिनटो में जवाहरलाल जी को प्रधान मन्त्री बनवा दिया। जो दूसरे को बनवा सकता था उसे स्वय बनने मे क्या दिक्कत थी? पर, उसके स्वराज्य का नक्शा दूसरा था।

२६ वर्षों मे जो हुआ इस देश मे वह किसी से छिपा नही है। फैसला कीजिये कि आखें बदकर चलना है कि खोलकर? राजनीति मे जो मेरे जो मित्र हैं उनसे मेरी यही शिकायत है कि दिमाग के दरवाजे खोलकर सोचते क्यो नही? कोल्हू के बैल की तरह बनी लीक पर चक्कर काट रहे हैं ये। मेरे एक मित्र ने कहा कि मुझे राजनीति मे आना चाहिए। क्या करूगा मैं राजनीति मे आकर कोई जादू की पुडिया है मेरे पास? यदि मैं ईमानदारी से चुनाव लडूंगा तो मेरे समेत सारे साथी हार जायेंगे। हमे दूसरा रास्ता खोजना होगा और दूसरा रास्ता आपके पास है। विनोबा जी को क्या दीखा सहरसा मे कि उन्होंने सहरसा को ग्रामस्वराज्य के प्रयोग के लिए चुना, पता नही। पर, आप भाग्यशाली हैं कि यहा यह काम चल रहा है।

मैंने गाधी से सीखा और उससे पहले लेनिन से सीखा कि चुनाव का रास्ता क्राति का रास्ता नही है। उसने कहा था कि प्रथम कोटि के नेताओ को जार की 'ड्यूमा' मे नही जाना है। उन्हे जनता मे जाना है। दूसरी पक्ति के लोग वहा जाकर अपनी आवाज वहा तक पहुचाएं। कानून से क्रांति नही होती है, थोडा बहुत सुधार होता है। जमीन के कितने कानून बने, पर क्या हुआ धरती पर? जो चल रहा है वैसा ही चलता रहे यदि आप ऐसा चाहते हैं तो कुछ मत करें। जो चलता है चलने दें। महगाई वगैरह का रोना न रोयें। लेकिन बदलना चाहते हैं तो →

जैविक खाद : अन्न समस्या का हल

हजारी बाग (बिहार) के किसान शत्रुघ्न प्रसाद अपने १२ एकड़ के खेत में रासायनिक खाद के बदले प्राकृतिक खाद का उपयोग कर रहे हैं। उन्होंने यह साबित किया है कि इससे न केवल उपज बढ़ती है बल्कि जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बराबर कायम रहती है।

प्रश्न : पुरानी प्रणाली से कृषि करने के बावजूद भी आपकी कृषि इतनी सफल क्यों हो रही है?

उत्तर : पुरानी प्रणाली में कृषि करने के बावजूद भी आज के वैज्ञानिक ढंग से कृषि करने में जो उपज हो सकती है, उससे अधिक एवं वैज्ञानिक रूप से अधिक उपज ले रहा हूँ। और यह प्रणाली भारत जैसे देश के लिए बहुत ही उपयोगी है। मैं एक साल में कम से कम तीन और ज्यादा से ज्यादा ४ फसल एक ही जमीन पर लेता हूँ, जो कि आज के आधुनिक वैज्ञानिकों को असम्भव प्रतीत होती है।

मैं जैविक खाद को व्यवहार में लाता हूँ और इसका व्यवहार करने का मेरा अपना तरीका है। आधुनिक खेती करने वाले कृत्रिम खाद का व्यवहार करते हैं। अपने तरीके से जैविक खाद व्यवहार करने से कृत्रिम खाद व्यवहार करने की अपेक्षा समय की अधिक बचत होती है और उतने समय में मैं एक दो फसल ले लेता हूँ।

प्रश्न : आपको पर्याप्त रूप में जैविक खाद मिल जाता है?

उत्तर : सिर्फ पर्याप्त रूप में ही नहीं वरन् मुझे अपनी जरूरत से भी बहुत ही ज्यादा प्राप्त हो जाता है, जिसको कि मैं अपने तरीके से कम्पोस्ट में तैयार कर बाहर अपने देहात के खेतों में भेजता हूँ।

प्रश्न : आपको पर्याप्त रूप में जैविक खाद कैसे प्राप्त होता है?

उत्तर : मैं मानव के मलमूत्र, नालियों से बहने वाला पानी एवं गो-मलमूत्र का व्यवहार करता हूँ और उसी से कम्पोस्ट खाद तैयार करता हूँ।

प्रश्न : आपके हजारी बाग का फार्म कितना बड़ा है?

उत्तर : करीब १२ एकड़ का है।

प्रश्न : आप को १२ एकड़ जमीन के लिए कितने नाइट्रोजन, फास्फेट, पोटाश और अन्य तत्वों की जरूरत है?

उत्तर : मुझे हजारीबाग फार्म के लिए करीब-करीब ३ क्विंटल नाइट्रोजन, ३ क्विंटल फास्फेट व पोटाश एवं अन्य तत्व चाहिए।

प्रश्न : कितने मानव-मलमूत्र और गो-मलमूत्र से आपके फार्म के लिए आवश्यक जैविक खाद की पूर्ति हो जाती है।

उत्तर : १० मनुष्य और तीन मवेशी के मलमूत्र से हमारे फार्म को पर्याप्त मात्रा में जैविक खाद मिल सकता है। लेकिन मुझे करीब २० मनुष्य का मलमूत्र तथा २० मवेशी का गोबर एवं मूत्र तथा नाली का पानी मिल जाता है। मेरी आवश्यकता से अधिक होने पर मवेशी व मानव मलमूत्र तथा रिफ्यूज से कम्पोस्ट तैयार करता हूँ, जिससे अपने फार्म के अतिरिक्त साठ एकड़ खेत को पर्याप्त रूप से खाद प्रदान करता हूँ।

प्रश्न : क्या आपकी कृषि की प्रणाली भारत वर्ष के अन्य कृषक अपना सकते हैं?

उत्तर : भारत का प्रत्येक कृषक इस प्रणाली को अपना सकता है और इस प्रणाली से भारत की कृषि में बहुत बड़ी उन्नति हो सकती है। अगर इस प्रणाली से कृषि की जाये तो सिर्फ ४ करोड़ मवेशी के मलमूत्र और ४ करोड़ मानव के मलमूत्र से →

→ कुछ करना होगा। दूसरे रास्ते की तलाश हो यदि तो यह ग्रामस्वराज्य का रास्ता सामने है।

यहां आप सारे मुखिया बैठे हैं। मैं पूरे सात वर्ष तक आप मुखियों का मुखिया रहा हूँ, पंचायत परिषद का अध्यक्ष रहा हूँ। कल्पना थी हमारी इस पंचायती राज के विषय में और क्या हुआ। पंचायती राज का हाल देखकर मेरा दिल रोता है। पूरा बानरोकरण हो गया है इस व्यवस्था का।

ग्रामस्वराज्य की प्रक्रिया में किस प्रकार दलों के प्रतिनिधियों के स्थान पर जनता के प्रतिनिधि खड़े होकर लोकनीति के अनुसार शासन चला सकते हैं इसका विशद विवेचन करते हुए उन्होंने कहा, 'चुनाव के वास्ते यह बात ध्यान में लाइये कि एक-एक गांव में ग्रामसभा बन जाये, पुष्टि हो और यह सारा काम इन थोड़े से साथियों के बल पर नहीं, आपके द्वारा होना चाहिए। आपको करना है और हम बनाने के लिए जायेंगे। आपके चुनाव क्षेत्र में सब जगह ग्रामसभाएं बन जाती हैं और चलने लगती हैं तो १९७६ का चुनाव सामने है। उसमें आपका प्रतिनिधि खड़ा होगा। यदि आपने ग्रामसभाएं बना ली तो मैं उस वक्त फिर आकर उस प्रक्रिया में आपकी मदद करूंगा।

भारत के क्षितिज पर सन् ४२ आ रहा है। मैं देख रहा हूं सामने परिस्थिति पक रही है। पर, स्वास्थ्य मेरा साथ नहीं दे रहा है। तूफान खड़ा कर सकता था मैं इस परिस्थिति में। अब भी जयप्रकाश में वही आग बची है। बूढ़ा हो गया हूं, पर, दिल तो बूढ़ा नहीं हुआ है। जवान है वह तो। यह सपना नहीं था मेरी आंखों में। इसके लिए नहीं लड़ा था मैं। पर, अब तो अपनी बेबसी से रो पड़ता हूं। क्या करूं? ऐसी स्थिति में मैं भाषण भर ही दे पाता हूँ।

. . इतिहास का नया वर्क उलटना है, तो यह ग्रामस्वराज्य तो करना ही होगा। यात्रा बड़ी लम्बी है, बहुत दूर जाना है..."।

राघोपुर प्रखंड में ग्रामस्वराज्य के सघन-कार्य का लगभग एक साल पूरा हो रहा है। वहां इस समय मुख्य रूप से पांच साथी काम कर रहे हैं। प्रखंड और वहां चल रहे काम का संक्षिप्त ब्योरा इस प्रकार है

- कुल जनसंख्या — १,१७,२८५
- कुल क्षेत्रफल — ७३,४६८·१०
- कुल उपजाऊ भूमि — ६३,६४२
- कुल पंचायतें — २७
- कुल गांव — ६६
- अब तक बनी ग्रामसभाएं — २०
- पुष्टि के लिए गयी— — ११
- नोटिस में — ७
- बीघा-कट्ठा वितरण — २
- एक ग्रामसभा राशन की दुकान चलाती है और ग्रामकोष बैंक में जमा करती है।

ही भारत की खाद्य समस्या का हल हो सकता है जबकि भारत की पशुसंख्या करीब ४५ करोड है। अगर यह काम और भी उचित ढंग से किया जाये तो भारत के पशु एवं जनसंख्या से उपलब्ध जैविक खाद खेती योग्य जमीन से दुनिया की आधी जनसंख्या को आहार दिया जा सकता है।

प्रश्न . क्या आपके विचार से जैविक खाद, कृत्रिम खाद से अधिक उपयोगी है ?

उत्तर : सिर्फ मेरा ही विचार नही बल्कि ससार के बड़े-बड़े कृषि विशेषज्ञ और वैज्ञानिकों के विचारों ने यह सिद्ध कर दिया है कि जैविक खाद कृत्रिम खाद से बहुत ही अधिक उपयोगी है। वैज्ञानिकों ने इस विषय पर अपना-अपना तर्क दिया है और आज ससार के जितने अग्रगण्य कृषि-प्रधान देश हैं वे जैविक खाद के प्रयोग पर ही जोर दे रहे हैं।

प्रश्न : क्या कृत्रिम खाद और जैविक खाद के हानि और लाभ को स्पष्ट कर सकते हैं।

उत्तर : कृत्रिम खाद से बहुत-सी हानियां हैं जबकि लोगों की नजर में इससे एक ही लाभ है। लाभ सिर्फ यह है कि कृत्रिम खाद उपज को तुरन्त देती है किन्तु उस उपज की हानि लोगों को साक्षात् नजर नही आती है।

तत्काल उपज तो हो जाती है, परन्तु उस उपज का बाजार मूल्य कम होता है और उस जमीन की उपज दूसरे साल कम हो जाती है। इसके साथ ही कृत्रिम खाद के उपयोग के लिए विशेष जानकार व्यक्ति की आवश्यकता होती है। उस जमीन से अधिक उपज लेने के लिए अधिकाधिक कृत्रिम खाद देना पड़ता है। परिणाम यह होता है कि फसलों में बीमारी लग जाती है। इन सब बुराइयों को हटाने के लिए जैविक खाद के इस्तेमाल का सुझाव दिया जाता है।

जैविक खाद के व्यवहार में इन कुचक्रों से परे हो सकते हैं। इसकी उपज स्वादिष्ट होती है। इसकी उपज को बहुत दिन तक रखा जा सकता है। इस उपज का बाजार मूल्य अधिक होता है। फसल में बीमारी लगने की सम्भावना नही होती है। जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ती है तथा विशेषज्ञ की जरूरत नही पड़ती और सबसे जबरदस्त लाभ यह है कि जैविक खाद से एक पौधे को जितने तत्वों की जरूरत है करीब-करीब सभी मिलते हैं।

कृत्रिम खाद में दिक्कत यह है कि पौधे को आवश्यकतानुसार तत्व नहीं मिल सकते और अगर तत्व मिलें भी तो भारत में उन की कीमत इतनी अधिक होगी कि भारत की कृषि आर्थिक दृष्टि से लाभकर नही होगी। एक पौधे के लिए १६ तत्वों की जरूरत होती है। कृत्रिम खाद के रूप में इन तत्वों को बहुत कम ही लोग दे सकते हैं।

फिर कृत्रिम खाद के व्यवहार से भी जो बीमारी होती है उसके निवारण के लिए कीटाणुनाशक दवाइयों का इस्तेमाल करना पड़ता है।

प्रश्न : तो क्या आप अपने फार्म में कीटाणुनाशक दवाइयों का इस्तेमाल नही करते ?

उत्तर हमारे खेतों में जहा सरकारी अफसरों ने राष्ट्रीय प्रदर्शन किया उसमें तक मुझे दवाइयों का इस्तेमाल नही करना पड़ा। आज तक मैंने अपने खेतों में दवाइयों का इस्तेमाल नहीं किया है। कीटाणुनाशक इस्तेमाल करने से नाइट्रोजन बैक्टीरिया का नाश हो जाता है जिससे जमीन की बड़ी हानि होती है।

खादी और ग्रामोद्योग किनके लिए ?

द्वारकानाथ वि० लेले

भारत की कुछ सामाजिक तथा आर्थिक खासियतों और भारत की करीब ६० करोड़ की आबादी को हम हमारे ख्याल से दूर नहीं रख सकते। करीब ८३ प्रतिशत आबादी देहातों में और कस्बों में रहती है। भारत ये कभी भी शहरी संस्कृति-प्रधान नहीं था। इसलिए उसका आर्थिक ढांचा भी शहर प्रधान नहीं था। बीसवीं सदी के मध्य में जमीन पर उपजीविका करने वालों की संख्या बढ़ जाने से तथा निरंतर बेकारी और बढ़ती आर्थिक कठिनाइयों के कारण रोजगारी ढूंढने के ख्याल से देहाती जनता अधिकाधिक संख्या में शहरों में तथा औद्योगिक कस्बों में जोरों से भीड़ कर रही है।

भारत की काश्तकारी जमीन का बंट-वारा देख लेने से यह अधिक स्पष्ट होगा।

	फीसदी कुटुंब	जमीन का रकबा
खूब बड़े जमींदार	१	६० एकड़
बड़े ,,	१४	१४ ,,
मध्यम ,,	१५	६ ,,
छोटे किसान	३०	४.५ ,,
नाम मात्र किसान	४०	०.५ ,,

इसका मतलब ८० फीसदी से ज्यादा ग्रामीण कुटुंबों के लिए पांच-छः एकड़ से अधिक जमीन है ही नहीं। इससे उनका गुजारा कितनी मुश्किल से होता होगा।

उपर्युक्त लोग जहां रहते हैं वे गांव भी कैसे हैं यह भी देख लिया जाए। ५०० से कम आबादी वाले गांव ३,५२,०२६ हैं। और उनमें साढ़े सात करोड़ लोग रहते हैं। ५०१ से १००० तक आबादी के गांव १,१६-१९७ हैं, जिनमें साढ़े आठ करोड़ लोग रहते हैं। जबकि १००० से २००० तक आबादी-वाले गांव ६५,३८३ हैं जिनमें नौ करोड़ लोग बसे हैं। भारत के कुल गांवों की संख्या ५,६७,३३० है जिन में ८० फीसदी कम आबादी वाले गांवों में ६० फीसदी जनसंख्या रहती है और उनमें से करीब ८० फीसदी लोग खेती पर गुजारा करते हैं। गुजारा तो क्या कहा जाए, वे तो जिन्दगी और मौत के बीच 'जी' रहे हैं।

देश की इतनी बड़ी ग्रामीण जनसंख्या के मुकाबले आज के बड़े-बड़े कल कारखाने बहुत ही छोटी संख्या में नगण्य तादाद में काम दे रहे हैं। केवल संख्या की दृष्टि से विचार किया जाए तो बड़े-बड़े कल कारखानों द्वारा सबको काम तथा रोटी यानी दाम मिल सकेगा यह मानने के लिए बुद्धि तैयार ही नहीं होती है। शहरी यानी केन्द्रित उद्योगों के लिए ग्रामीण यानी विकेंद्रित उद्योगों को उखाड़ना क्या मुनासिब होगा? समझ लीजिए ऐसा मान भी लिया तो उनके लिए कल कारखाने खड़े करने में कितनी पूंजी लगेगी और उत्पादन की निकासी के लिए भी कहां जायेंगे यह पहले सोच लेना जरूरी है। बेहतर तो यह होगा कि ग्रामीण लोगों को उनके गांवों में, वे कर सकें ऐसे ही उद्योग खड़े करने चाहिए।

अभी तक की पंचवर्षीय योजनाओं में आर्थिक स्तर उठाने के लिए उद्योगीकरण को वास्तविक महत्व नहीं दिया गया है। पहली पंचवर्षीय योजना में देहाती जनता का कुछ कुछ ख्याल जरूर था लेकिन दूसरी योजना में सारा जोर उद्योगीकरण पर रहा। चार पंच वर्षीय योजनाओं के बावजूद अपेक्षित सफलता नहीं मिली है तो दूसरे अनेकानेक कारण बतलाये जाते हैं। इन योजनाओं में कहीं भी जनता का आवाहन नहीं था। न कहीं भी जनता की करोड़ों में गिनी जानेवाली आबादी सामने थी और न हमारे देश की उत्तर दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम की करीब ३००० किलोमीटर की लम्बाई चौड़ाई का ख्याल और साढ़े पांच लाख गांवों में फैली हुई बस्ती का विचार ही था। हमारा सारा राष्ट्रीय आयोजन करोड़ों करोड़ लोगों को मद्देनजर रखकर होना चाहिए था। वह कुछ लाख लोगों को सामने रख कर होता है यह कितनी दयनीय अवस्था है। और फिर भी दुनिया के सामने हमारा देश लोकतंत्र की गवाही देने का साहस करता है। लोकतंत्र यानी बहुसंख्यकों क... जनता प्रतिष्ठित है, प... है अन्यथा उसकी आवाज ... उठ पाती तो वह कहती कि ... है वह देहातों में बसी जनता के ... से करना चाहिए।

गांधीजी ने यह सारा देख लिया ... चरखा तथा ग्रामोद्योगों की जो बात उन्ह... गांधी और की वह इन अभागे करोड़ों लोगों का पूरा-पूरा ख्याल करके। आज तो हमने गांधी का नाम लेने के सिवा उनका काम करना छोड़ ही दिया है। लेकिन यह बहुत दिन चलने वाला नहीं है। जैसे-जैसे जन जागृति होती जाएगी वैसे-वैसे जनता अपना हक अदा करने की सोचेगी। जगह-जगह आज उसके चिन्ह नजर आ रहे हैं। थोड़ी सी भी अशांति कहीं हो जाती है तो सामान तोड़-फोड़ दिया जाता है या उसको आग लगा दी जाती है क्योंकि जनता सोचती है कि जो सारी सुविधाएं दिखायी देती हैं वे थोड़े लोगों के लिए हैं बहुसंख्यकों के उपयोग में आने वाली नहीं हैं। आश्चर्य नहीं होना चाहिए यदि बेकारी की आग में जलने वाले लोग उद्योगीकरण व समाजीकरण के सारे चिन्ह सचमुच ही जला डालें।

इन दिनों बहुत से रचनात्मक काम में बरसों से लगे कार्यकर्ता माध्यमिक तकनालाजी का उद्घोष करते थकते नहीं हैं। तकनालाजी का आदर जरूर करना चाहिए लेकिन वह उपयुक्त तकनालाजी होनी चाहिए। खड़े चरखा जो देश भर में कहीं-कहीं चालू था उसकी सारी खामियां हटाकर गांधीजी ने देश को यरवदा चक्र दिया। किसी नाजुक क्षण में गांधीजी ने अधिक उत्पन्न देने वाला चरखा तैयार करने के लिए एक लाख रुपयों का इनाम भी जाहिर किया लेकिन उनको उसका दर्शन जब हुआ तो उन्होंने वह इनाम वापिस खींच लिया। तथा नारायणदास जी गांधी को आगाखान महल से लिखा कि आपकी बड़ी-बड़ी यंत्र योजनाओं की बनिस्बत गोमलनाय की गति से चलने वाला चरखा ही अधिकतम भाता है। विनोबा जी ने भी शुरुआत में चार तकुवे वाले अंबर का दर्शन "अंबरावतार"

क तबुके
नहीं के
सब
सका
जी
में
ही

... उस दृष्टि से ... अंबर औजार कितने भी अच्छे होंगे तो भी उन्हें सुदूर जनता तक पहुंचाने में तथा दुरुस्त रखने में असंख्य अड़चनें खड़ी होंगी। जिसका साक्षात्कार अभी हम कर रहे हैं।

अंबर आया और लाखों पारंपरिक चरखे बन्द हुए। कारण कुछ भी हो। लेकिन अंबर चरखा लाखों की तादाद में फैलाना हो तो उन चरखों का उत्पादन करना, उसके लिए पूंजी जुटाना, उन्हें वितरित करके अपेक्षित सूत उत्पादन प्राप्त कर उसकी खादी बनाना और बेचना हो तो कितना बड़ा काम हो जायेगा। केवल कुछ हजार लोगों को ही काम देकर संतोष मानना हो तो उसमें त्यागी कार्यकर्ताओं का दल क्यों लगाना चाहिए? पहली पंचवर्षीय योजना में जब खादी ग्रामोद्योग का जिक्र किया गया तो कम पैसे खर्च कर लाखों लोगों को पूरा या आंशिक-सचमुच आंशिक ही काम दिया जाएगा ऐसी अपेक्षा रखी गयी थी। वह समुचित ही थी। आंशिक काम की सचमुच जरूरत है ही। हमारा देश ग्रामीण है, काश्तकारों का है जिन्हें आंशिक काम की जरूरत भी है। उनमें मिलने वाली मजदूरी का पैमाना भी उसी ढंग का है इसलिए पूरे बेकार लोग खादी ग्रामोद्योगों का काम करने के लिए आकृष्ट नहीं होते और होंगे भी नहीं।

सारे खादी ग्रामोद्योग स्वतन्त्र उद्योग हैं नहीं। काश्तकार जो फसल पैदा करता है उसके प्रशोधन के स्वरूप के वे सारे उद्योग हैं और बहुत से मौसमी हैं।

खादी ग्रामोद्योग मंडल तथा कमीशन के काम के मूल्यांकन में यह बतलाया गया है कि बेकार लोगों को बहुत कम परिणाम में काम दिया गया है। मूल्यांकन करने वालों को यह मालूम कर लेना चाहिए कि पंचवर्षीय योजनाओं में खादी ग्रामोद्योग का कार्यक्रम बेकारी निवारण के रूप में सभी सोचा ही नहीं गया था किन्तु देश की विशिष्ट परिस्थिति देखते हुए छोटे काश्तकारों की मदद के लिए वे सोचे गये थे और वह काम ठीक से किया गया है यह मानना पड़ेगा।

पूरी बेकारी दिखायी देती है। और आज की सरकारों को उसका विचार करना ही पड़ता है तथा विचार करना भी पड़ेगा। अन्यथा असंतोष की आग में सारा खाक होकर देश में अराजकता फैल जाएगी।

अनेकानेक पंचवर्षीय योजनाओं के बावजूद ७३ फीसदी जमीन वर्षा के पानी पर ही निर्भर करती है। ऊपर देखा गया है कि बहुसंख्य काश्तकारों के पास जमीन का रकबा कितना अल्प है जिसमें उनको पूरे साल के लिए काम मिलना असंभव ही है। भारत की जमीन कई हजार-कम से कम पांच हजार-सालों से काश्त में आ जाने से एक तरह से वृद्ध हो गयी है इसलिए हमारे प्रयत्न करने पर भी दूसरे देशों में फी एकड़ जो उत्पादन होता है वह इस देश में सर्वसाधारणतया हो ही नहीं सकेगा।

आंशिक बेकारी दिखायी नहीं देती है लेकिन वह अति भयंकर है। बहुसंख्य जनता को इस तरह से आंशिक बेकारी में रखना और भी अधिक खतरनाक है। आंशिक बेकारी आदमी को धीरे-धीरे सड़ाती है और उससे वे दिन-ब-दिन निकम्मे हो जाते हैं। बहुसंख्य जनता को निकम्मा रखकर देश का भला हो ही नहीं सकता। उनकी आवाज बुलन्द नहीं है, मंद है लेकिन बुलंद होने तक राह देखना राष्ट्र घातक सिद्ध होगा। क्योंकि देश यही कारखवार है। खादी ग्रामोद्योग के काम में लगे कार्यकर्ताओं को उन उद्योगों की मर्यादा जान लेनी चाहिये।

बेकारी निवारण का काम पारंपरिक खादी ग्रामोद्योग द्वारा नहीं हो सकेगा। पारंपरिक पद्धति छोड़ दी जाएगी तो लघु स्तरीय उद्योगों के ढंग से काम करना होगा और उसकी सारी मर्यादायें माननी पड़ेंगी। फिर श्रम प्रधानता नहीं रहेगी। जीवन वेतन देना होगा और तत्सम्बन्धी सारी आनुषंगिक बातें मंजूर करनी पड़ेंगी।

गोबर गैस :

ईंधन संकट का हल

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग, बम्बई ने देश में ऊर्जा संकट के मुकाबले के लिए भारत सरकार के सहयोग से बीस हजार गोबर गैस संयंत्र स्थापित करने की एक योजना बनाई है। ये प्रति विकास खण्ड दस के हिसाब से दो हजार विकास खंडों में लगाये जायेंगे।

देश के विभिन्न राज्यों में अगस्त, १९७३ तक ६, २५० गोबर गैस संयंत्र चल रहे हैं जिनकी राज्यवार तालिका इस प्रकार है :—आन्ध्र प्रदेश ३७२ असम १९, बिहार ८७, गुजरात २,८१३, हिमाचल प्रदेश ७; हरियाणा १७५, केरल १०१; मध्यप्रदेश १९३, महाराष्ट्र १,४०५' कर्नाटक २५५; उड़ीसा १५, पंजाब ९२, राजस्थान ४१; तमिलनाडु २०१, उत्तरप्रदेश ४२५, दिल्ली ३, गोआ और दमन ७, तथा पांडुचेरी ४; कुल ६२५०।

इन गोबर गैस संयत्रों से १४०६१ लाख घन मीटर मिथेन गैस पैदा होती है, जिसका मूल्य २७ लाख ५४ हजार रुपये होता है। इसके अलावा २१ लाख ४७ हजार रुपये मूल्य की ७५,५१५ टन बढ़िया किस्म की खाद भी मिलती है।

ऐसा ही २५०० घन फीट का एक गोबर गैस संयंत्र इंदौर के निकट कृषि क्षेत्र, कस्तूरबा ग्राम में पिछले चार वर्षों से सफलतापूर्वक चल रहा है। इससे कृषि क्षेत्र के ३८ मजदूर परिवार ईंधन के लिए गैस का का भरपूर उपयोग कर रहे हैं। साथ-साथ वर्ष भर में लगभग २० हजार मूल्य की उत्तम कम्पोस्ट खाद भी मिलती है।

कृषि क्षेत्र द्वारा लगाये गये एक हिसाब के अनुसार वर्ष भर में एक गाय के गोबर से ३६ किलो नाइट्रोजन, १८ किलो फास्फोरस तथा ५७ किलो पोटाश खाद मिलता है।

इसी प्रकार रतलाम जिले के ग्रामदानी गाँव रूपाखेड़ा में भी किसानों ने स्वयं अभिक्रम से अपने घरों में १७ गोबर गैस संयत्र लगाये हैं।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ से मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ४ मार्च, '७४

• **प्रजातंत्र की सवारी :** उत्तर प्रदेश के सभी शहरो मे चलनेवाले रिक्शो का सभी पार्टियो ने वोटरो को लाने मे खुलकर उपयोग किया। रिक्शा गरीब आदमी की सवारी है और प्रजातन्त्र भी उसी पर सवार होकर आता है।

- आदेश देने वालों से ग्यारंटी ?
- जयपुर की रेगर बस्ती में शराबबन्दी

भूदान-यज्ञ

४ मार्च, '७४

वर्ष २० अंक २३

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कॉलोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

अपनी-अपनी मान्यता

बांगला देश बनने के लगभग सवा दो साल बाद पाकिस्तान ने उसे स्वीकार किया है। सच्चाई को मान्यता देने में प्रधानमन्त्री भुट्टो को इतना समय इसलिए लगा कि इस उपमहाद्वीप में दिसम्बर ७१ के युद्ध से हुए परिवर्तनों को वे और पाकिस्तान के लोग आसानी से हजम नहीं कर सकते थे। धर्म के जिस सिद्धांत के आधार पर सन् ४७ में पाकिस्तान बना था और चौबीस वर्षों तक साम्प्रदायिकता के जिस भूत को नकली हवाओं में जिन्दा रखा गया था, उसे बांगला देश ने एक झटके में उतार दिया था। लेकिन एक देश के शरीर में आया भूत एक झटके में कभी नहीं उतरता। वास्तविकता लोगों के मानस में बहुत धीरे-धीरे उतरती है। पाकिस्तान के लिए तो यह और भी मुश्किल था क्योंकि अवास्तविकता को ही उसके अस्तित्व की शर्त के रूप में स्वीकार गया था। अस्तित्व की शर्तें एकदम कभी नहीं बदलती और पाकिस्तान जैसे देश में तो वे बहुत धीरे बदलेंगी क्योंकि उन्हें न बदलने का आन्तरिक आग्रह बहुत ज्यादा रहा है। भुट्टो अपने देश के मानस की इस हालत को जानते हैं और इसलिए बांगला देश को एक स्वतन्त्र-प्रभुसत्ता सम्पन्न देश के नाते मान्यता देने के लिए उन्होंने इस्लामी सम्मेलन का सहारा लिया।

लाहौर में हुआ इस्लामी सम्मेलन पाकिस्तान की जनता के सामने इस्लामी एकता और शक्ति की मिसाल के नाते रखा गया था। बांगला देश के उदय से राष्ट्रीयता का जो धार्मिक आधार ध्वस्त हुआ था और इसके कारण लोगों के मन में जो भय आया था, वह इस्लामी सम्मेलन के वातावरण में निश्चित ही दबा होगा। लोगों को विश्वास हो कि इस्लामी देश एक हैं, शक्तिशाली हैं और उन्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है इस लिए भुट्टो साहब ने जी-तोड़ कोशिश की कि लाहौर में सभी इस्लामी देशों के राष्ट्र प्रमुख भाग लें। आश्वस्ति और शक्ति का ऐसा वातावरण बना कर ही भुट्टो बांगला देश को औपचारिक मान्यता दे सकते थे। जो लोग चाहते थे कि बांगला देश न बने और अनन्त काल तक के लिए पाकिस्तान का अंग रहे तो मुसलिम बंगाल, तो बना रहे उन्हें कम से कम इतना तो बताना ही था कि बांगला देश एक मुसलिम देश है और इसी नाते उसे इस्लामी सम्मेलन में शामिल किया जा रहा है। बांगला देश अलग हो गया तो क्या हुआ, वह मुसलमान तो है ही और मुसलमान भाई-भाई हैं इसलिए बांगला देश को बिरादरी के बाहर नहीं रखना चाहिए। यह सही है कि शेख मुजीब का स्वागत सरकारी तामझाम था और भुट्टो-मुजीब भाई-भाई का नारा भी सरकार की ओर से लगवाया गया था। फिर भी पाकिस्तान की जनता ने शेख मुजीब को प्रधानमन्त्री के रूप में मानने में कोई एतराज नहीं किया। भुट्टो और उनकी सरकार पाकिस्तान को यह नहीं बताना चाहती कि बांगला देश एक धर्मनिरपेक्ष देश है। बांगला देश अपने लिए चाहे धर्मनिरपेक्ष होगा लेकिन पाकिस्तान के लिए तो वह एक मुसलिम देश ही है।

पाकिस्तान द्वारा दी गयी मान्यता और शेख मुजीब के इस्लामी सम्मेलन में लाहौर जाने से हमारे देश में कुछ शंकाएं पैदा हुई हैं। भुट्टो ने मान्यता का समय सिर्फ अपने देश के लोगों के लिए ही नहीं भारत के लिए भी चुना था। एक तो उन्होंने इस्लामी देशों से मध्यस्थता करवा के भारत को बताया कि उन्हें शिमला और दिल्ली समझौतों से ज्यादा इस्लामी सम्मेलन पर विश्वास है। दूसरे वह भारत के कुछ तबकों में इस पुरानी शंका को बल देना चाहते थे कि मुसलमान आखिर मुसलमान है और भारत, बांगला देश की दोस्ती को मानी हुई बात की तरह नहीं ले सकता। अखबारों में जो कुछ छपा है उससे लगता है कि भुट्टो अपने इस इरादे में काफी हद तक सफल हुए हैं। भुट्टो और चीन की यह इच्छा होना स्वाभाविक है कि भारत-बांगला देश के सम्बन्धों को बिगाड़ा जाये और उनमें फूट डाली जाये। हमें इस खेल को समझना चाहिए और एक सामान शिकार की तरह फंदे में नहीं आना चाहिए। अगर हम मानते हैं कि बांगला देश और भारत की दोस्ती दोनों देशों के जवानों के खून से बनी है तो

(शेष पृष्ठ १४ पर)

पार्टियों को प्रजातंत्र की फिक्र नहीं, लेकिन किसे है?

कानपुर मे चुनाव : वोट डालने तक मतदाता के पीछे मुसलिम लीग के कार्यकर्ता, जनसंघ का दीपक और कांग्रेस की मिली बात

बैंडबाजे बजवाते, नारे लगाते और खुशियाँ मनाते हुए सब के जुलूसों में निकल चुके हैं। अपने जिन उम्मीदवारों को उन्होंने जनता के उम्मीदवार घोषित किया था उनकी जीत को जनता की जीत बता कर अब वे उन्हें लखनऊ पहुंचाने की तैयारी मे हैं। जनता के प्रतिनिधि जब लखनऊ पहुंचेंगे तो राजा-रजवाड़ों के जमाने में गद्दी के लिए [illegible]ने वाले षड्यन्त्रों की तरह सत्ता का [illegible]रबी खेल शुरू होगा। इस खेल से जनता [illegible] उतना ही सम्बन्ध होगा जितना दर्शक का किसी भी खेल में हुआ करता है। फिर भी सारे खिलाड़ी कहेंगे और इसी बार इसी तरह से कहेंगे कि जनता के पास इसे मानने के अलावा कोई चारा नहीं रहेगा कि [य]ही प्रजातन्त्र है। असली प्रजातन्त्र, जनता [का] राज!!

उत्तरप्रदेश के चुनाव मे, कौन सी पार्टी [ज]ीती और किस की सरकार बनेगी? सबसे [ग]र्म चर्चा अखबारों और रेडियो और अड्डों के चौराहों पर इन्ही बातों की होगी। [गुल]ाम [के] रिकार्ड की तरह घिसा-घिसाया यह [मं]तर बार-बार दोहराया जायेगा कि चुनाव [क]ा नतीजा जनता का आदेश है। बहुमत की जीत का दुहाई सिद्धान्त प्रतिपादित करने वाले प्रजातन्त्र की अर्थविचार जांचना हो तो [ज़]रा इन आंकड़ों पर गौर कीजिये। [उत्]तरप्रदेश मे मोटे सरकारी अनुमान से [ब]ास साठ प्रतिशत मतदान हुआ। यानी

इस प्रदेश मे जो कुल चार करोड़ छियानवे लाख मतदाता हैं उनमे से लगभग दो करोड़ पैंतालीस लाख लोग वोट देने गये। अखबारों मे छपे और भाषो-देते विवरण के अनुसार सभी पार्टियों ने सभी प्रकार की सवारियों का खुल कर और पूरा-पूरा उपयोग किया। मतदाताओं को सवारियों में बैठा कर लाना चुनाव कानून के खिलाफ है। लेकिन किसी भी पार्टी ने इस कानून का पालन नहीं किया और न चुनाव-आयोग और प्रशासन मे इतनी ताकत थी कि इस कानून का पालन करवाते। वाहनों का उपयोग इतना खुला और जबर्दस्त था कि यह कहना और मानना गलत लगता है कि सवारियों का उपयोग गैरकानूनी है।

यह अनुमान पक्का लगता है कि जो दो करोड़ पचास लाख मतदाता वोट देने गये उनमे से कम से कम आधे से ज्यादा लोगों को पार्टियों के लोग घरों से निकाल कर और सवारियों मे बैठाकर मतदान केन्द्रों पर लाये। कम से कम पाँच प्रतिशत मतदान जाली हुआ और पाँच प्रतिशत लोग वे थे जो पार्टियों के उनके द्वारा जगाये गए जाति, धर्म, सम्प्रदाय और ऐसे ही गैर-प्रजातान्त्रिक विचारों से कार्यकर्त्ता हो गये थे। कुल दस प्रतिशत मतदाता ऐसे होंगे जिन्होंने सोच समझ कर और अपने स्वतन्त्र बुद्धि विवेक के अनुसार वोट दिया होगा।

पूरा चित्र इस प्रकार है—सौ में से पचास लोग वोट देने आये। इन पचास में से बीस लोग लाये गये। बाकी के बीस में से पाँच आये नहीं लेकिन नकली मतदान से आये माने गये। पाँच पार्टियों के लोग थे। सिर्फ दस मतदाता असली मायने में मतदाता थे। यानी अगर प्रजातन्त्र की आत्मा और भावना की कसौटी से परखा जाये तो कुल दस प्रतिशत लोगों का आदेश इस चुनाव का नतीजा माना जायेगा। दस प्रतिशत का आंकड़ा प्रजातन्त्र के गणित मे अल्पमत है। प्रजातन्त्र मे कम से कम इक्यावन प्रतिशत बहुमत चाहिए। लेकिन जनता के प्रतिनिधियों को कुल दस प्रतिशत का समर्थन है। और कहा जाता है कि वे सभी उत्तरप्रदेश की जनता के प्रतिनिधि हैं।

और यह सब भी महीनों के उस धन्धा-धुन्ध प्रचार से हुआ है जिसमे वोटर को प्रभावित करने, फुसलाने और हासिल करने में किसी भी पार्टी ने कोई भी हथकंडा छोड़ा नहीं था। सत्तारूढ़ पार्टी की ओर से चुनाव को ध्यान में रखते हुए जगह-जगह शुरू की गई योजनायें और भावी योजनाओं के शिलालेखों से लेकर विरोधी पार्टियों की ओर से चलाये-उकसाये गये आन्दोलन तथा मारपीट हत्याएं, पथराव लूट-खसोट और एक-दूसरी की सभाओं को बिगाड़ने-उखाड़ने की कोशिश की गई। दिन-रात प्रचार के इंजेक्शन लगा-लगा कर पार्टियों ने चुनाव का बुखार पैदा किया। जाति, धर्म और सम्प्रदायों के नाम पर खुले आम वोटर को जगाने

संगठित करने और उकसाने के प्रयत्न हुए। ऐसे वायदे किये गये जिन्हें तानाशाही सरकारें भी पूरे नहीं कर सकती थी। धन, शराब और दूसरे सभी किस्म के लालच दिए गये। खुले दबाव से लेकर प्रभावशाली लोगों के असर का उपयोग किया गया। मतदाता को कहीं भी और कभी भी उसके अपने फैसले पर छोड़ा नहीं गया। प्रजातन्त्र के पवित्र-पर्व को मनाने के लिए सारे गैर प्रजातान्त्रिक तौर-तरीकों का इस्तेमाल किया गया। चुनाव पार्टियों का धर्मयुद्ध हो गया था जिसमें किसी भी पार्टी ने धर्म की रक्षा नहीं की, न नीति-नियमों का पालन किया गया। फिर भी लगातार दावा किया गया और किया जा रहा है कि यह प्रजातन्त्र है। प्रजा का है, प्रजा के द्वारा है और प्रजा के लिए है।

मतदान के आंकड़ों से जाहिर है कि चुनाव में पार्टियों के अलावा और किसी की रुचि नहीं थी। जिस पार्टी को सत्ता हासिल करने की जितनी जरूरत और सम्भावना थी उतनी ही ज्यादा उसकी रुचि थी। किस पार्टी ने कितना रुपया खर्च किया इसका हिसाब कभी भी जनता के सामने नहीं आयेगा। लेकिन सब जानते है कि पैसा पानी की तरह बहाया गया है। पैसे पर पार्टियों का भरोसा इतना साफ और वाचाल था कि यह मानना मजाक करना होगा कि उनका जनता में भरोसा है। खुले रूप से कहा गया है कि किस पार्टी ने किस आश्वासन और रियायत पर किस पैसे वाले से पैसा लिया है। अब चुनाव लड़ने के लिए व्यापार उद्योग और धनवान तबकों ने जो पैसा दिया है उससे दुगुना पैसा प्राप्त करने की कोशिश वे लोग करेंगे। दुगुना पैसा बनाने में उन्हें जो रियायतें मिलेंगी वे देश को कम से कम दस गुना घाटा देंगी और यह सब होगा एक अनुत्पादक पर्व के लिए।

कानूनों, नीति-नियमों, नैतिक और प्रजातान्त्रिक मान्यताओं और सार्वजनिक शालीनताओं का इतना उद्दण्ड उल्लंघन हुआ है प्रजातन्त्र और जनता के नाम पर! लेकिन इसे लेकर न कहीं कोई आक्रोश है न कोई चर्चा कि ऐसा नहीं होना चाहिए था। *विनोबा ने कहा है कि भ्रष्टाचार जब इतना व्यापक हो जाये तो वह शिष्टाचार हो जाता*
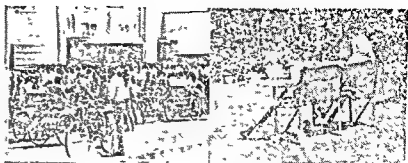
कानपुर में मतदान के दिन कनाडियन फिल्मों के लिए भीड़। सोते हुए प्रहरी।

है। उत्तरप्रदेश के चुनाव में जो कुछ हुआ वह इतना व्यापक और सार्वत्रिक हुआ है कि इसे अपने प्रजातन्त्र की आम परम्परा ही मान लिया गया है। पार्टियों ने एक दूसरे को ऐसा करने से नहीं रोका क्योंकि सभी के तौर-तरीके समान थे। कांच के घरों में रहने वालों ने एक दूसरे पर पत्थर नहीं फेंके क्योंकि प्रजातन्त्र को असली और सच्चा बनाने में उनकी *रुचि नहीं है उनकी रुचि इससे मिलने वाली* रियायतों और सत्ता में है। लेकिन क्या उत्तरप्रदेश और देश की जनता चाहती है कि राज उसका हो और सचमुच हो? अगर वह चाहती होती तो पार्टियां यह सब कर नहीं सकती थी। ●

बाबा का काका को आश्वासन

"एक बात आप सब के लिए सहज कह दूं जिससे कि आपको समाधान होगा। काका साहब कल आये थे और मुझ से कहने लगे कि आप कभी-कभी बात करते हो कि दो साल में चले जायेंगे, तीन साल में जायेंगे, जल्दी-जल्दी जाने की बात करते हो, यह ठीक नहीं। मैं आप से दस साल बड़ा हूं। (काका साहब मुझ से दस साल बड़े हैं) तो मेरे मरने के दस साल बाद तक आपको जीना है। ऐसा उन्होंने मुझे आदेश दिया। और आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि बाबा ने तुरन्त कह दिया कि 'जी हां'। उनका आदेश मान लिया। होगा तो वही होगा जो भगवान को मंजूर होगा, परन्तु काका साहब का आदेश बाबा ने मान लिया। विनोबा (पवनार, २४ फरवरी)।

दिल्ली प्रदेश सर्वोदय मण्डल का पुनर्गठन

दिल्ली प्रदेश सर्वोदय सेवकों की १० फरवरी को हुई बैठक में मंडल का पुनर्गठन हो गया है। श्री भूषण भारद्वाज सर्व सम्मति से प्रदेश मंडल के संयोजक चुने गये हैं। सर्वोदय मंडल का कार्यालय २, राजघाट कालोनी नई दिल्ली-१ (फोन नं० २७१०४३) पर रखा गया है।

पवनार में महिला सम्मेलन

ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार (वर्धा) में अखिल भारत महिला सम्मेलन ८, ९ और १० मार्च को हो रहा है। कुरुक्षेत्र में हुए प्रथम महिला सम्मेलन और स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह में आये अनुभवों के आधार पर इस सम्मेलन में चर्चा होगी। विनोबाजी के तो सानिध्य में सम्मेलन हो ही रहा है प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी भी ९ मार्च को सम्मेलन में शामिल होंगी।

अन्न-नीति क्या हो?

मध्यप्रदेश की बिगड़ती अन्न-नीति के संदर्भ, मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल की ओर से इन्दौर में ३ और ४ मार्च को एक संगोष्ठी आयोजित की गयी जिसमें सर्वोदय कार्यकर्ता राजनीतिज्ञ, पत्रकार और समाज सेवकों ने भाग लिया।

जे० पी० का स्वास्थ्य

जे० पी० का स्वास्थ्य अब अच्छा है और वे सोमवार ४ मार्च को दिल्ली से पटना जा रहे हैं।

आदेश देनेवालों से ग्यारंटी ?

प्रभाश जोशी

गुजरात में हिंसा फिर भड़क उठी है। शहरों में फिर लूटपाट हो रही है, पुलिस और लोगों में लड़ाइयां हो रही हैं, कर्फ्यू लग रहा है, गोलियां चल रही हैं और लोग मर रहे हैं। विधानसभा के विसर्जन का आंदोलन चिमन भाई की सरकार को हटाने की मांग से ज्यादा उग्र हो गया है।

यह कहना कठिन है कि हिंसा कौन कर रहा है। अठारह फरवरी को अहमदाबाद में माण्डवीनी पोल से नव-निर्माण युवक समिति के कोई तीन सौ युवकों का जुलूस कांग्रेसी विधायक लालभाई कुण्डीवाला से त्यागपत्र की मांग करने निकला। इस जुलूस पर लाठियों और धारियों से लैस एक हजार लोगों की भीड़ ने हमला किया। हमला गीता मन्दिर रोड पर हुआ। विद्यार्थियों और इस हमलावार भीड़ के बीच हुई लड़ाई में आठ विद्यार्थी घायल हो हुए। पुलिस ने कुछ लोगों को गिरफ्तार किया। हिंसा युवकों के जुलूस ने नहीं की, उन पर की गई थी। विधायक का इस्तीफा मांगने वाले जुलूस पर जिन सशस्त्र लोगों ने हमला किया वे कौन थे और उन्होंने क्यों किया यह जाना नहीं जा सकता। संभव है जिन युवकों पर हमला किया गया वे जानते हैं कि ये लोग कौन लोग थे। लेकिन किसी पर झूठा आरोप लगाये बिना भी समझा जा सकता है कि हमलावार कौन रहे होंगे। वे या तो विधायक के लोग होंगे या उन विधायकों की ओर से वे कार्यवाही कर रहे होंगे जिनसे इस्तीफे की मांग की जा रही है और जो त्यागपत्र नहीं देना चाहते।

विद्यार्थियों पर हुए इस हमले की प्रतिक्रिया तीव्र हुई। समिति ने अहमदाबाद बंद का नारा दिया और हिंसक घटनायें बढ़ गयीं। बड़ौदा, राजकोट आदि कई शहरों में पथराव, आगजनी लूटपाट की वारदातें हुईं। निश्चित ही ये वारदातें ऐसी हैं जो पुलिस की ओर से सख्ती की मांग करती हैं। पुलिस गोली चलाती है, लोग मरते हैं और फिर लोग गुस्से में हिंसा पर उतर आते हैं। यह एक दुष्चक्र है जिसकी पकड़ में गुजरात आ गया है। भारत सरकार ने गुजरात की सरकार को हिदायतें दी हैं कि वह आंदोलनकारियों से सख्ती से निपटे और सत्तारूढ़ कांग्रेस के लोग आन्दोलन का जवाब देने की तैयारी और फैसला कर चुके हैं। गीता मंदिर रोड पर विद्यार्थियों पर हुआ हमला इसी जवाबी कार्यवाही का अंग है। गुजरात और केन्द्र की सरकार शांति और व्यवस्था बनाये रखने की अपील करती है लेकिन इनके तौर तरीकों से साफ है कि उनका विश्वास लोगों का सहयोग जीतने पर नहीं है। कांग्रेस के विधायक भी लोगों के सामने जाकर उन्हें समझाने का साहस नहीं दिखा रहे हैं। वे भी जवाबी कार्यवाही पर उतारू हैं। ऐसी हालत में लोगों की ओर से हिंसा होना स्वाभाविक है। राज्य की संगठित हिंसा और पार्टी की राजनीतिक हिंसा और ज्यादा हिंसा को ही जन्म देती है। ऐसी परिस्थिति का सब से ज्यादा लाभ वे लोग उठाते हैं जिन्हें प्रशासनिक भाषा में समाज विरोधी तत्व कहा जाता है। यह संभव है कि पथराव और आगजनी में वे शोषित नागरिक भी शामिल हों जो राज्य की सत्ता के प्रतीक स्थानों पर अपना गुस्सा निकाल रहे हों। माना कि यह सब गलत है लेकिन जिन विधायकों में लोगों का विश्वास नहीं रहा हो उनका निलम्बित विधानसभा से चिपके रहना भी सही नहीं है।

लेकिन केन्द्रीय नेताओं के बयानों से यह नहीं लगता कि वे हालत को जानते हैं। जानते भी होंगे तो जानबूझ कर उन्होंने एक ऐसा रवैया अपना लिया है जो उनके पार्टी हित स्वार्थों के अनुकूल है लेकिन जिसके वे सैद्धांतिक कारण दे रहे हैं। जैसे कांग्रेस हाईकमान ने स्पीकर को हिदायत दी है कि वह विधायकों के इस्तीफे मंजूर नहीं करे क्योंकि 'प्रजातंत्र को मिटाने वाले' तत्व उन पर नाजायज और हिंसक दबाव डाल रहे हैं। यह सही है कि सारे इस्तीफे स्वेच्छिक नहीं हैं लेकिन इनमें कई इस्तीफे स्वेच्छिक भी हैं और एक विधायक ने तो कहा भी है कि विधायकों को वापस बुलाने का नैतिक अधिकार जनता को है। अब इस्तीफे न मंजूर करने का फैसला और उसकी मांग करने वाले लोगों पर हमले स्थिति को सुधार नहीं सकते। इससे निश्चित ही लोगों का गुस्सा भड़कता है। फिर सरकारी नेताओं की तरफ से विधानसभा को भंग करने की मांग को विरोधियों का षडयन्त्र करार देना और आंदोलनकारियों को समाजविरोधी तत्व कहने से भी लोगों का गुस्सा भड़कता ही है। प्रधानमन्त्री ने उत्तरप्रदेश की चुनावी सभाओं में गुजरात के आंदोलन को अमीर पूंजीपतियों द्वारा उकसाये गए खाते-पीते लोगों का आंदोलन कहा है। उनका दावा है कि गरीब लोग इस आंदोलन में नहीं हैं न उन्हें सम्पत्ति नष्ट करने में कोई रुचि है। गुजरात में नये चुनाव करवाने की कोई उपयोगिता उनकी नजर में नहीं है क्योंकि बाकायदा चुने गये लोगों पर इस्तीफा देने के लिए दबाव डाला जा रहा है। "गुजरात में बहुमत वाली पार्टी है और उसके विधायकों से त्यागपत्र दिलवाने की कोशिश की रही है। हम नये चुनाव क्यों करवायें ? इसकी क्या ग्यारंटी है कि इन लोगों के स्थान पर चुने गये लोगों के साथ ऐसा ही व्यवहार नहीं किया जायेगा ?"—प्रधानमन्त्री ने पूछा है।

प्रधानमन्त्री जनता से तो ग्यारंटी मांगती हैं लेकिन उन विधायकों और मंत्रियों से कोई ग्यारंटी नहीं मांगतीं कि वे जनता के विश्वास का सम्मान करेंगे। अहमदाबाद के विद्यार्थियों ने लिखा था— इन्दिरा जी गुजरात ने आपको पचपन प्रतिशत बहुमत दिया लेकिन हमें आप पांच प्रतिशत भी ऐसे शासक नहीं दे सकीं जो ईमानदार हों।" यह सचमुच हास्यास्पद है कि प्रजातन्त्र में प्रधानमन्त्री उन लोगों से ग्यारंटी मांग रही हैं, जिनसे दो साल पहले उन्होंने आदेश मांगा था। अच्छे व्यवहार की ग्यारंटी जनता को नहीं देना है। उन प्रतिनिधियों को देना है जिन पर निर्वाचन के बाद जनता का कोई अंकुश नहीं रहता और जो बड़ी बेशर्मी से अपने पद का लाभ उठाते हैं।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

लोकजाग्रति रचनात्मक बने

गुजरात के रचनात्मक कार्यकर्ता एवं लोकनीति-विचारधारा में दिलचस्पी रखने वाले मित्रों का यह सम्मेलन, पिछले एक महीने से गुजरात में लोकजागृति का जो दर्शन करवाया है उसका हार्दिक स्वागत करता है। विद्यार्थियों एवं अध्यापकों ने इस आंदोलन में जो भूमिका अदा की है, सम्मेलन उसकी तहेदिल से सराहना करता है।

जिस सरकार ने जनता का विश्वास खो दिया लोकजागृति ने ऐसी सरकार को हटा दिया ; यह एक घटना हमारी आज की लोकशाही में लोकमत और लोकतंत्र कितनी बड़ी चीज है इसका हमें दर्शन कराती है। यह घटना हमारी लोकशाही के विकास में एक नई आशा की किरण फैला रही है। इस आंदोलन में जहां कहीं भी जनता एवं सरकार द्वारा जिस भी मात्रा में हिंसा का प्रयोग किया या सहारा लिया गया वह खेद की बात है। अब हमें यह देखना है कि जो 'लोकजागृति आयी है वह केवल चंद रोज के लिए न हो साथ ही पक्ष या दल अपने संकुचित हितों की पूर्ति के लिए उसका दुरुपयोग न करें।

लोकशिक्षण द्वारा इस लोकजागृति को रचनात्मक रास्ते पर ले जाना होगा। आज जो यह शुभ अवसर हमारी सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करने का प्राप्त हुआ है उसके लिए लोकनीति की विचार धारा में जो विश्वास रखते हैं उनका सहयोग हमें मिले इसके लिए अनुरोध करते हैं।

मौजूदा हालत में नये चुनाव द्वारा जनता को अपना मत प्रकट करने और जनता को जिम्मेदार रहने वाली नयी सरकार बनाने की बात भी उचित है। अतः यह सम्मेलन मौजूदा विधान सभा तुरन्त भंग करने की मांग का पूर्ण समर्थन करता है।

यह मांग अपने मतदाताओं की है इसे खास तौर से ध्यान में रखते हुए सम्मेलन गुजरात विधान सभा के तमाम सदस्यों से अनुरोध करता है कि वे स्वेच्छा से अपना त्यागपत्र दे दें। यदि आवश्यकता हो तो विधान सभा के ये सदस्य अपने मतदाताओं से सम्पर्क स्थापित करें और मतदाताओं की राय हासिल कर लें।

विधान सभा भंग किये जाने का आंदोलन जनता द्वारा चलाया जाय। यह आंदोलन शांतिपूर्ण हो, किसी भी तरह के बल या दबाव का प्रयोग न किया जाय। यह बहुत ही जरूरी है। हिंसक एवं विध्वंस वृत्ति आजमाने से लोक आंदोलन के मुख्य उद्देश्य को क्षति पहुंचेगी। विधान सभा भंग कराने के लिए अनशन का प्रयोग अनुचित होगा।

गुजरात में अब चुनाव का वक्त आयेगा तब कई दूषित तत्व जैसे के गलत साधनों का उपयोग, पक्ष-पक्ष में रस्साकस्सी, यह सब होता है। जब वह चीज आ जाती है तब चुनाव में आम जनता की आकांक्षाएं दूर किनारे रह जाती हैं। चुनाव में उम्मीदवार की पसंदगी में जनता की राय ही सर्वोपरी मानी जानी चाहिए। चुनाव जीत लेने के बाद वह जनता का प्रतिनिधि जनता के साथ हमेशा संपर्क बना कर रखे। इन सब बातों को ध्यान में लाना होगा।

हमारे इन आदर्शों की पूर्ति हो और सफलता प्राप्त हो इसके लिए जो लोग लोकनीति की विचारधारा में अपना पूर्ण विश्वास रखते हैं उन सब को एक हो कर समाज के सामने अपनी शक्ति का परिचय कराना होगा।

मतदाताओं के मंडलों की स्थापना करनी होगी। उन्हीं मंडलों में से जनता स्वयं अपने प्रतिनिधि को चुनाव के लिए पसन्द करे। इसके लिए भी हमें भरपूर प्रयत्न करना होगा। ऐसे जनता के प्रतिनिधि किसी भी राजनैतिक दल के सदस्य नहीं होंगे।...

(१३ फरवरी '७४ को जयप्रकाश नारायण व रविशंकर महाराज के सानिध्य में हुए सम्मेलन का निवेदन)

लोकतंत्र को नया रूप देने में पीछे न हटें

माननीय विधान सभा सदस्य,

तेरह फरवरी ७४ को साबरमती आश्रम में श्री जयप्रकाश नारायण और पू० श्री रविशंकर महाराज के सानिध्य में आयोजित सम्मेलन में महाराज ने जो निवेदन किया था वह इस पत्र के साथ भेज रहा हूं।

उस निवेदन में आज जो गुजरात की आम जनता में जागृति आई है उसका स्वागत किया है किन्तु उस जागृति को रचनात्मक ढंग से आगे बढाया जाय इस के लिए सबसे अनुरोध किया है। इस वक्त जो लोक जागृति हुई है संभव है कि वह गुजरात की तारीख में एक महत्वपूर्ण घटना बन जाये। आम जनता में अब ऐसी आकांक्षाएं पैदा हुई हैं कि लोकशाही में जनता का फर्ज है कि वह जागरूक हो कर सक्रिय रूप से अपना फर्ज अदा करे। अतः जनता चाहती है कि लोकशाही के लिए चुनाव, विधानसभा, सरकार आदि की जो प्रणाली बन चुकी है उसमें आमूल परिवर्तन करना चाहिए। जनता की उक्त नई आकांक्षाएं, उम्मीदें और मनसूबों का दर्शन तो लोकशाही में नये चुनाव के द्वारा ही हो सकता है।

इसलिये सारे गुजरात में एक ही आवाज निकल रही है कि मौजूदा विधानसभा को जल्द से जल्द भंग किया जाय।

आम जनता की उक्त मांग के साथ हम न केवल सहमत हैं किन्तु इसे उचित भी मानते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि विधान सभा भंग की मांग में आप भी अपनी आवाज देंगे और साथ ही विधान सभा का नया चुनाव हो उसके लिये रास्ते खुलें अतः आप अपनी विधानसभा की सदस्यता का त्याग दें और अपना त्यागपत्र स्वेच्छा से गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष को स्वयं जा कर दें। आप द्वारा ऐसा कदम उठाने से फिलहाल आम जनता की जो भावनाएं हैं उनकी आप ने पूरी कदर की है ऐसा माना जायेगा। साथ ही साथ लोकशाही को नया रूप देने में आपने एक महत्व का योगदान दिया है ऐसा भी माना जायेगा।

जनता ने ही आपको चुन कर विधान सभा में अपने विश्वास के साथ भेजा है। आज वही जनता आपको आवाज दे रही है अतः आप उनकी आकांक्षाओं को ध्यान में रख कर विधान सभा सदस्यता का त्याग कर उनकी भावनाओं की कदर करें।

सस्नेह,
कांतिशाह,
मन्त्री, गुजरात सर्वोदय मंडल

रैगर बस्ती के ठेके पर ताला

रामवल्लभ अग्रवाल

जयपुर के रेंगरो की बस्ती में शराब की दुकान पर लगा ताला और वहाँ दो महीनो से चल रहा शान्त सत्याग्रह इस सच्चाई का उदाहरण है कि पीढ़ियो से आदतन शराब पीने वाले लोगो के गले भी जब उतर जाये कि शराब बुरी चीज है तो वे इसे हटाने के लिए क्या नही कर सकते। वहा शराब की दुकान पर बस्ती के लोग ही दो महीनों से अखण्ड कीर्तन कर रहे हैं और बारी-बारी से चौबीस घण्टे के लगातार उपवास चल रहे हैं। शराब की दुकान पर ताला वही के लोगो ने लगाया है और उनका यह निर्णय कि ठेका हटाया जाये पूरी बस्ती का निर्णय है। इस फैसले और कार्यवाही की सूचना बस्ती ने सरकार और सभी सम्बन्धित विभागो को दे दी है। फिर भी सरकार की ओर से अभी तक कोई कदम नही उठाया गया है। देश भर की सरकारो ने यह स्वीकार किया है कि अगर किसी आबादी के पचहत्तर प्रतिशत लोग लिख कर दे दें तो वहा से शराब की दुकान हटा दी जायेगी। लेकिन राजस्थान की सरकार ने अभी तक कोई कार्यवाही नही की है।

रैगरो की बस्ती में शात सत्याग्रह चल रहा है।

---

२६ नवम्बर से रेगरो की बस्ती मे सम्पर्क एव सभाओं का आयोजन रखा गया। १ दिसम्बर से बस्ती की प्रभात फेरी निकाली गई जो सतत अब तक जारी है। रेगरो की बस्ती, जयपुर नगर की चौकडी, घाट दरवाजे में सबसे घनी एव सबसे गदी बस्ती है जहा लगभग १००० मजदूर परिवार रहते है। शराब का व्यसन उनमे पीढ़ियो से चला आ रहा है। बहुत ही कम लोग ऐसे हैं जो इससे बचे हुए हैं। बस्ती के मध्य मे शराब का बड़ा ठेका चल रहा है जो शराब के व्यसन को प्रसारित करने का सबसे बड़ा कारण बना हुआ है। ठेके पर लगभग तीन हजार रुपये रोज की शराब बिकती है। इन मेहनतकश भाईयो का आधे से ज्यादा पैसा इस पर बरबाद हो जाता है। इसके साथ ही बस्ती के कई लोग अपने घरो मे शराब की अवैध बिक्री के धन्धे मे लगे हुए हैं। यहा की जनता शराब के कारण बेहद परेशान है पर अपने को लाचार मानती थी और इसका कारण भी था। आजादी के बाद पच्चीस वर्षों मे अनेक बार इस ठेके को बन्द कराने एव समाज मे से इस शराब को निष्कासित करने के कई प्रयास हुए पर सब निष्फल। हमारी सरकार, ठेके को बन्द कैसे कर सकती है? यह पाप की कमाई तो उसकी आमदनी का सबसे बड़ा और आसान जरिया जो है।

निराशा के बीच

हम लोग मानक चन्द भागवी व कुछ मित्रों के साथ वहा २६ नवम्बर से आने लगे। सब ओर निराशा थी। लोग मान बैठे थे ठेका बन्द कराने की बात फिजूल है उसमें शक्ति लगाने की बात नासमझी है। फिर भी वहा की पंचायत के अध्यक्ष मोती लाल भडारी, एक भाई मूलचन्दजी, नवयुवक माधो कजोड़मल शालीग्राम व भगवान सहाय आदि गिने चुने लोगो ने साथ दिया और तीस नवम्बर को गोकुलभाई की अध्यक्षता में एक बैठक हुई तथा एक दिसम्बर से नियमित प्रभात फेरी मुहल्ला सभा व सपर्क का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। धीरे-धीरे बालक व कुछ लोग साथ आने लगे। हिम्मत बढ़ती गई, बस्ती जागने लगी वरिष्ठ लोगो का मार्ग दर्शन व सहयोग मिलता रहा और फिर से जनता की ओर से ठेका बन्द करने की मांग सरकार को भिजवाई गई और सीधी कार्यवाही की बात भी उनको कही गयी।

अनशन टला

लगता था कि पच्चीस दिसम्बर को गोकुल भाई के उपवास की तिथि के आस-पास यहा पिकेटिंग या तालाबन्दी करना होगा। राधाकृष्ण बजाज ने भी इसके लिये अपने आपको समर्पित रखा था पर सौभाग्य से भारत सरकार द्वारा राजस्थान के मसले पर शीघ्र निर्णय लेने के लिए समिति गठित की गई और गोकुलभाई का अनशन टला। सत्याग्रह स्थगित हुआ। ऐसी हालत मे एक दुविधा हुई अब हमारे कार्यक्रम का स्वरूप क्या हो? वरिष्ठ लोगों के निर्देशन एवं बस्ती के सब साथियो की सलाह और सहयोग से कार्यक्रम पूर्ववत जारी रहा। बस्ती मे नव जागरण एव साहस बढ़ता चला गया। चार जनवरी की प्रतीक्षा थी कि उपरोक्त समिति अवैध ठेके तो बन्द कराने का निर्णय लेगी पर समिति का काम जैसा होता है अपने तरीके से ही चला। इससे पहले ही हमारे एक विद्यार्थी साथी भाई लक्ष्मण शर्मा ने घोषणा कर दी कि यदि चार जनवरी को यहा के ठेके के बारे मे कोई निर्णय न हो पाता है तो छः जनवरी को वहा ताला लगा दिया जायेगा।

छ जनवरी का सकल्प था, पाच जनवरी को सायकाल से बस्ती के नव युवकों मे मत्रणा हुई, चर्चा हुई, सगठित हुए और दूसरे दिन ठेके पर ताला जड देने का फैसला कर लिया उस दिन वहा एक अजब माहौल। गगा माता के मन्दिर के बाहर पचासों की सख्या मे नव युवक समय से पहले जमा हो गए। अपूर्व उत्साह एव उमग देखने को मिली। दारू बद करायेंगे चाहे मर मिट जायेंगे के नारे के साथ निकल पड़े। घुमावदार और सकरी गन्दी गलियो को पार करते हुए ज्यो-ज्यो यह जुलूस आगे गया काफला बढता ही गया और ठेके पर पहुचते-पहुचते तीन सौ लोगो की भीड़ जमा हो गई और ठेके को बन्द करने की चुनौती देने लगे। इस दृश्य को देखकर ठेकेदार व पुलिस जो ठेके के सरक्षण के लिये जब से यह कार्यक्रम चला उपस्थित रहती थी, एक तरफ सरक गये। युवको ने आगे बढ कर एक नही दो-दो ताले जड दिये। 'भारत माता की जय' 'गोकुलभाई की ललकार' से सारी बस्ती गूंज उठी। बस्ती के अध्यक्ष, अनेक बुजर्गों ने, नव युवको ने खुले आम घोषणा की कि जब तक यह ठेका यहाँ से नहीं हटता है हम यहाँ से नही हटेंगे। चाहे मर मिट जायेंगे ठेका बन्द करायेंगे यह ठेका यहा नही रहेगा, नही रहेगा, नहीं रहेगा।'

→

तब से दिन रात २४घन्टे ठेके के बाहर, जहां किसी समय कोई जाना पसन्द नहीं करता था, रात दिन सड़ाई पमाद का वातावरण रहता था प्रात सत्संग व रामधुन का मेला हटा हुआ है : गाये गोविंद बोलो-दारू छोड़ो बोतल फोड़ो। अनेक प्रमुख लोग भोगीलाल पड़्या, गंगाधर मंत्री (रिपावर) चिरंजीलाल शर्मा, दुर्गा प्रसाद चौधरी, दीनदयालजी गोयल, जे० पी० सरोहा, गोवर्द्धनजी पत्र, बालकृष्ण गर्ग, गणपत, सम्पतलाल जैन आदि वहां पहुंचे, जनता के उभार में अभिवृद्धि की ओर अपने पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। राजकीय अधिकारी भी गये और परिस्थिति का जायजा लिया। स्थानीय पत्रों ने भी जनता द्वारा उठाये गये इस कदम की सराहना की। अब राक्षस तो मरा पर उसको दफनाने की तैयारी में और प्रतीक्षा में वहां के लोग हैं ताकि ही सारे समाज को इस दारू दैत्य से मुक्ति मिल सके इसके लिये भी वे सचेष्ट हैं।

कानूनी और गैरकानूनी

इस ठेके के अलावा बस्ती के ही कुछ लोग जो अवैध रूप से इस अनैतिक धन्धे में लगे हुए थे। उनको भी बन्द करने का निर्णय पंचायत ने लिया। ऐसे सभी लोग पंचायत के सामने हाजिर हुए और भविष्य में समाज एवं देश द्रोही इस नापाक धन्धे को छोड़ने का संकल्प जाहिर किया। बस्ती के बाल, युवा, वृद्ध नर नारी अब इसी आशा में बैठे हुए हैं कि यह बला अब यहां से तुरन्त हट जाय और इस स्थान पर एक दवाखाना व सत्संग भवन खोला जाय। ठेके की तालाबन्दी के बाद से ही सब लोग इस इन्तजार में थे कि गोकुल भाई का वहां आगमन हो। गोकुलभाई के बाहर से आने के दस जनवरी को, रात में विशाल सभा आयोजित हुई। जिसमें अपने प्रेरक के प्रति भाव भीनी श्रद्धांजलियां व्यक्त की गई। गोकुलभाई भी अभिभूत हो उठे।

●

जयपुर शहर की रैगर बस्ती

डा० अवध प्रसाद

जयपुर शहर की मुख्य घनी आबादी के एक किनारे पर बसी है रैगर कोठी जिसे रैगर बस्ती भी कहा जाता है। जैसा कि शब्द से स्पष्ट है यहां की अधिकांश आबादी रैगरों की है। रैगर जाति के लोगों का मुख्य धन्धा चमड़े का काम है। इन्हें सामाजिक दृष्टि से अछूत माना जाता है, शायद इसी कारण से इन्हें शहर के एक किनारे पर बसाया गया था। हालांकि आज शहर का विकास होने के बाद यह हिस्सा किनारे में नहीं है। रैगर बस्ती के आसपास भी पिछड़ी जाति के लोगों की पर्याप्त संख्या है और इस पूरे क्षेत्र में अत्यन्त गिरी हुई आर्थिक स्थिति के लोग रहते हैं। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखें तो यह प्रारम्भ से ही उपेक्षित क्षेत्र रहा है। इस उपेक्षित क्षेत्र में सुरा एवं सुन्दरी का प्रवेश प्रारम्भ से ही माना जाता है।

ऐतिहासिक भट्टी

जिस समय शराब का केन्द्रित उत्पादन नहीं था और शराब कलालों द्वारा भट्टियों में निकाली जाती थी, उस समय यहां जयपुर शहर की प्रसिद्ध शराब की भट्टियां थी। यहां के कलाल शराब के मुख्य उत्पादकों में से थे। वे कलाल शराब के उत्पादन एवं विक्रेता थे परन्तु इस कार्य में रैगर जाति के लोग भी लगते थे। शराब की भट्टियां रैगर बस्ती में ही होने के कारण यहां शराब का प्रचलन हो गया। जब शराब का केन्द्रित उत्पादन प्रारम्भ हुआ और ठेके की व्यवस्था के अन्तर्गत शराब की बिक्री प्रारम्भ होने लगी तब यहां स्थायी रूप से शराब की दुकान खुली। एक दो मकान परिवर्तन के साथ वर्तमान दुकान प्रारम्भ से इसी स्थान पर है। इस प्रकार रैगर कोठी में शराब का उत्पादन एवं बिक्री की परम्परा यहां के जनजीवन के साथ जुड़ी हुई है। वित्तीय वर्ष में इस दुकान से सरकारी खजाने में तीन लाख रुपये से अधिक राशि जाती है। यहां के सामाजिक आर्थिक पिछड़ेपन का अन्दाज यहां के सामान्य जनजीवन की गतिविधियों के अवलोकन से लगाया जा सकता है। यदि हम यह देखना चाहें कि इस मुहल्ले में शराब पीने वालों की संख्या कितनी है तो यह पायेंगे कि यहां परम्परा से शराब पी जाती रही है और आम आदमी कमोबेश शराब पीता है। गिना चुना परिवार शराब से मुक्त भी मिल सकता है। यदि पीने की मात्रा की दृष्टि से देखें तो इस मुहल्ले में पीने वालों को तीन वर्गों में बांट सकते हैं (१) कभी-कभी तीज त्योहार में पीने वाले। (२) अपनी आर्थिक स्थिति को देखते हुए नियमित पीने वाले और (३) शराबी किस्म से पीने वाले। ऐसे लोग अपनी आर्थिक तथा स्वयं की शारीरिक तथा परिवार की परवाह किये बिना शराब पीते हैं।

आधी आमदनी

जिस मुहल्ले में शराब पीने की लत इतनी गहराई तक प्रवेश कर चुकी हो वहां शराब मुक्ति का प्रभाव सामाजिक आर्थिक जीवन पर क्या पड़ेगा इसका उत्साह वर्धक अन्दाज लगाया जा सकता है। जिस परिवार की कुल आय का आधा से अधिक भाग शराब में चला जाता है उसकी इतनी रकम यदि स्वास्थ्य, शिक्षा, भोजन पर खर्च होगी तो परिणाम फलदायी होगा इसे समझने के लिए शायद ज्यादा दिमाग लड़ाने की जरूरत नहीं है। यह बात रैगर कोठी के लोगों ने समझ ली है और अब वहां की दुकान पर ताला है।

उपदेश की पात्र केवल जनता नहीं, सरकार भी है

→

सत्याग्रह के साथ यह दुर्व्यवहार करते हैं, तो राजनीतिक आंदोलनों के साथ योजना बद्ध हिंसा का व्यवहार ही करें, यह संभव है। अब आप ही समझ लीजिये कि सरकारों की यह दुर्नीति ही हिंसा को प्रोत्साहन देती है। अजमेर डिस्टलरी पर सन् १९६८ में आपकी सरकार के द्वारा घोषित नीति के परिपालनार्थ ११ महीनों तक शांत सत्याग्रह चला। शराबबंदी सत्याग्रहियों को जेल दी गई। अजमेर डिस्टलरी पर शराब के ठेकेदारों ने सत्याग्रहियों के साथ जो निर्मम पिटाई की और राज्य सरकार तटस्थता से हिंसक वातावरण को देखती रही। क्या किसी सत्ताधारी दल के नेताओं ने सरकार की नीति की निंदा की? आपने भी शराबबंदी सत्याग्रहियों की सहानुभूति में एक भी शब्द कहा? राज्य सरकार की निन्दा की? आप जैसे राज्य पुरुषों की यह दोहरी नीति ही हिंसा को जन्म देती है।

इसलिए आपने जहाँ जनता को हिंसा नहीं करने का उपदेश दिया, वहाँ राज्य सरकारों को भी प्रदेशों में शांत वातावरण बनाने के लिए शांत सत्याग्रहों का आदर करने की सलाह भी देनी चाहिए और आपको भी ऐसे शान्त सत्याग्रहियों की सार्वजनिक सराहना करनी चाहिए। तब शांत सत्याग्रहों की जनता में और राज्याधिकारियों के मानस में प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

दो हाथों से ताली

अहिंसा और हिंसा का वातावरण एक तरफा रास्ता नहीं है। अहिंसा राज्यसत्ता को लोकात्मा में विश्वास करना सीखना होगा। पुलिस की लाठी और बंदूक की शरण में सुरक्षा अनुभव करने के बजाय, जब वह आत्मोत्सर्ग की भावना लेकर लोकात्मा की शरण में आने का साहस जुटायेगी, तंत्र के बजाय जनता में शक्ति का अधिष्ठान समझेगी तथा तंत्रशाही की गिरफ्त व दुराग्रह से मुक्त होकर शांत सत्याग्रहों का समुचित समादर करने के लिए जब राज्यसत्ता अभ्यस्त होगी तब ही हिंसक आंदोलन शान्त सत्याग्रहों में बदलेंगे, तब ही जनतंत्र की सुरक्षा संभव है। अन्यथा सत्ता का आक्रोश जब हिंसा स्वरूप लेता है और जनता पर जिस बेरहमी से पिल पड़ता है, अजमेर बासवाड़ा, और उदयपुर नगर की घटनाएं इसका उदाहरण हैं। इससे अराजकता और तानाशाही के तत्वों को ही अधिक पोषण मिलेगा।

इसलिए देश में व्याप्त हिंसा के वातावरण को बदलने के लिए सरकारों को जन आंदोलनों के साथ व्यवहार करने के अपने पुराने हिंसक तरीकों में बदल करना चाहिए। क्योंकि हिंसा के सशक्त आयुध सरकारों के पास ही हैं। उनके पास प्रशिक्षित जमात भी है जो समाज में योजना बद्ध तरीकों से तनाव बनाये रखती है। इसलिए आपको अपने प्रशासकीय अनुभव के आधार पर राज्य सरकारों को भी यह सलाह देनी चाहिए थी कि राज्य के उन नागरिकों के साथ, जिनके कि वे प्रतिनिधि होने का दावा रात-दिन प्रस्तुत करते रहते हैं, हिंसा का व्यवहार न करें। अपनी प्रशिक्षित नौकरशाही को मर्यादा में रहने और लोक व्यवहार में संयम बरतने का भी उपदेश दें और चुनावों के समय जिस भावना के साथ जनता के पास जाते हैं, हिंसक वातावरण में भी उसी शक्ति और साहस का आवाहन करें, तब ही फिजां बदल सकती है।

—त्रिलोकचन्द

'भूदान-यज्ञ' का प्रकाशन वक्तव्य

[समाचार-पत्र पंजीकरण अधिनियम (फार्म नं० ४, नियम ८) के अनुसार हर पत्रिका के प्रकाशक को निम्न जानकारी प्रस्तुत करने के साथ-साथ अपनी पत्रिका में भी प्रकाशित करना होता है। तदनुसार प्रतिलिपि यहां दी जा रही है।—सं०]

(१) प्रकाशन स्थान	: नई दिल्ली
(२) प्रकाशन अवधि	: सप्ताह में एक बार (सोमवार)
(३) मुद्रक	: प्रभाष जोशी
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: १९, राजघाट कालोनी, नई दिल्ली १
(४) प्रकाशक	: प्रभाष जोशी
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: १९, राजघाट कालोनी, नई दिल्ली-१
(५) संपादक	: राममूर्ति
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: १९, राजघाट कालोनी, नई दिल्ली-१
(६) पत्रिका के संचालकों का पता	: सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) (सन् १८६० के सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट २१ के अनुसार पंजीकृत सार्वजनिक संस्था) पंजीयन सं० ५२

मैं, प्रभाष जोशी, यह स्वीकार करता हूं कि मेरी जानकारी के अनुसार उपर्युक्त विवरण सही है।

—प्रभाष जोशी,
प्रकाशक

नई दिल्ली; २८/२/७४

दलितों की उभरती नयी शक्ति : दलित पैंथर

श्रीपाद केलकर

दलित पैन्थर (चीतों) ने अचानक अखबारों में सुर्खियाँ पा ली हैं और इसके लिए उन्हें काफी कीमत भी चुकानी पड़ी है। गत महीने के शुरू में बम्बई में पुलिस और सवर्णों के साथ हुए उनके संघर्ष के बाद 'दलित पैन्थर' के सभी नेता पकड़े जा चुके हैं और इस समय सींखचों में बन्द हैं। इन मुठभेड़ों में उनके एक नेता को जान से हाथ धोना पड़ा और सैकड़ों हरिजनों को जो धर्म परिवर्तन कर अब बौद्ध हो गये हैं, गम्भीर रूप से मार पड़ी है

समाज के दबे हिस्सों को साथ लेकर चलने का दावा करने वाली रिपब्लिकन पार्टी की वास्तविक स्थिति देश की मौजूदा व्यवस्था में चलने वाले अन्य राजनैतिक दलों से भिन्न नहीं है। इसके कुछ युवा कार्यकर्ताओं को एक अर्से से यह लग रहा था कि पार्टी जिन दलित तबके की वकालत करती है उनके लिए कुछ खास कर नहीं पाती। कथनी-करनी के अन्तर में उन्हें पार्टी के कुछ स्वार्थी नेता भी दिखे। इन युवा कार्यकर्ताओं ने उससे विद्रोह कर अप्रैल ७२ में दलित पैन्थर नामक यह नया संगठन कायम किया था। अमेरिका में कुछ विद्रोही काले लोगों ने गोरों के अत्याचार के विरुद्ध 'ब्लैक पैन्थर (काले चीते) नामक एक संगठन बनाया था। उसी से प्रेरणा लेकर महाराष्ट्र के दलितों के बीच 'दलित पैन्थर' जन्मा है।

दलित पैन्थर को इस बात पर गर्व है कि मध्य बम्बई लोकसभा उपचुनाव में पिछले महीनों हुई कांग्रेस की करारी हार उसके 'चुनाव बहिष्कार आंदोलन' की जीत है। कुछ अखबारों और तटस्थ निरीक्षकों को भी इस दावे में काफी सच्चाई दीखती है। पिछले कुछ वर्षों में देश में संसदीय प्रणाली से निराश समाज के कुछ पिछले तबकों ने (जैसे आदिवासी) या गावों ने चुनाव बहिष्कार का सुनियोजित प्रयोग इधर-उधर किया भी है। लेकिन बम्बई के लोकसभा उपचुनावों में जिस पैमाने पर और जिस कारीगरी से 'दलित पैन्थर' ने इसका इस्तेमाल किया वह आश्चर्यजनक था। इस चुनाव क्षेत्र में परिगणित मतदाताओं (अछूत) की संख्या करीब १ लाख १२ हजार है। अगर पैंथर ने बहिष्कार का आयोजन नहीं किया होता तो इनमें से कम से कम ८०-६० हजार मतदाता अपना मत डालने के लिए मतदान केन्द्रों पर पहुंचते। सत्ता कांग्रेस को उम्मीद थी कि ये सब मत उसके उम्मीदवार को ही मिलेंगे क्योंकि मालूम नहीं किस उपाय से, रिपब्लिकन पार्टी के दोनों गुटों—गायकवाड तथा खोब्रागडे—से समझौता करने में सत्ता कांग्रेस के बॅरिस्टर रजनी पटेल कामयाब हुए थे। पैन्थर के बहिष्कार आंदोलन के कारण कांग्रेस को परिगणित जाति के मतदाताओं के अपेक्षित ७०-८० हजार मतों से हाथ धोना पड़ा। कांग्रेस की हार का निश्चय ही यह एक मुख्य कारण है।

मतदान तिथि के पहले इस चुनाव क्षेत्र में एक अमानवीय घटना न घटी होती तो सम्भवत पैन्थर के बहिष्कार आंदोलन को इतनी सफलता नहीं मिलती। एक जुलूस में पैन्थर के युवा नेता, साहित्यकार और कलाकार श्री भागवत जाधव की कुछ गुंडों ने निमर्म हत्या की। बताया जाता है कि ये कांग्रेस और शिवसेना के गुंडे थे। इसके पूर्व बहिष्कार आंदोलन के सिलसिले में पैन्थर द्वारा इस चुनाव क्षेत्र के वरली खंड में आयोजित एक सभा पर शिवसेना और कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने जबरदस्त पत्थरबाजी की थी। परिणामस्वरूप शिवसेना, कांग्रेस तथा पैन्थर के समर्थकों के बीच घमासान लड़ाई हुई। पुलिस ने भी अपना 'कर्तव्य' निभाया था। पैन्थर के कई सैनिक घायल हुए थे। पैन्थर का जुलूस पुलिस और गुंडों के अत्याचारों के विरोध में ही था और पैन्थर का युवा नेता भागवत जाधव उसमें शामिल था।

बहिष्कार आंदोलन की कामयाबी का एक और भी कारण है। रिपब्लिकन पार्टी के दोनों गुटों के नेताओं की अवसरवादी और स्वार्थप्रेरित राजनीति से पार्टी के युवा कार्यकर्ता और साधारण अनुयायी कुछ अरसे से क्रुद्ध हैं। डा० अंबेडकर के निधन के बाद पार्टी के कई छोटे-बड़े नेताओं ने पद लालसा से या तो सत्ता कांग्रेस की शरण ली या कांग्रेस के साथ कुछ चुनावों में सीटों का सौदा किया। इस मौकापरस्ती का लाभ कुछ चुने हुए रिपब्लिकन नेताओं को तो अवश्य मिला। लेकिन दलित समाज जहां था, वहीं रहा। अछूत भूमिहीनों की हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। गांवों के हरिजनों पर अत्याचार बढ़ते रहे। अछूतों की पार्टी रिपब्लिकन पार्टी और कांग्रेस अधिकतर इन दोनों दलों में राजनैतिक स्तर पर समझौता जरूर हुआ, लेकिन सामाजिक स्तर पर समझौते के जो अच्छे नतीजे निकालना जरूरी था, वे नहीं निकल पाये। श्री यशवंतराव चव्हाण और रिपब्लिकन पार्टी के नेता स्वर्गीय दादासाहब गायकवाड ने कांग्रेस रिपब्लिकन चुनावी गठबन्धन का समर्थन इन शब्दों में किया था. 'इस समझौते से देहातों में स्पृश्य और अस्पृश्य समाजों में सदियों से जो भयानक दूरी है वह मिट जायेगी'। मगर यह हुआ नहीं। हो भी नहीं सकता था।

हरिजनों पर अत्याचार बढ़ते रहे, लेकिन रिपब्लिकन पार्टी के नेतागणों ने जिस सत्ता कांग्रेस के साथ गठबंधन किया था और जिसकी सरकार स्पृश्यों के प्रभाव के कारण हरिजनों पर अत्याचारों के प्रति या तो निष्क्रिय थी या नरम रुख अपना रही थी, उस अत्याचारों को रोकने के लिए बाध्य नहीं कर पाये। वे कांग्रेसी कृपा से प्राप्त अपने पद संभाल रहे थे।

इस पृष्ठभूमि में जब दोनों गुटों के रिपब्लिकन नेताओं ने बम्बई के लोकसभा उपचुनाव में कांग्रेसी उम्मीदवार का समर्थन करने का फैसला किया तो सारे महाराष्ट्र के युवा रिपब्लिकन कार्यकर्ता और भी क्रुद्ध हुए। बंबई में 'दलित पैन्थर' ने इन युवजनों को नेतृत्व दिया, दिशा भी दी। बहिष्कार आन्दोलन इसीका नतीजा था जो अप्रत्याशित रूप से सफल हुआ। 'दलित पैन्थर' एक विद्रोह है—भूतपूर्व रिपब्लिकन दल के मौकापरस्त और स्वार्थी नेताओं की राजनीति के विरुद्ध विद्रोह। पैन्थर के लगभग सभी सदस्य युवा हैं—१७ से ३० की उम्र के। अधिकतर पढ़े-लिखे, विश्वविद्यालयों के स्नातक भी हैं। बेरोजगारी और भविष्य के अंधेरे की आग में जलने वाले शिक्षित भी काफी बड़ी संख्या में

→

है। यह समझना गलत है कि पैन्थर मे सिर्फ बौद्ध या अछूत ही शामिल हैं। इस मे महाराष्ट्र के सभी पिछड़े समूहों—मातंग, ढोर, रामोशी, चमार आदि युवजन कम-अधिक संख्या मे हैं। काफी बड़ी संख्या मे गरीब मुसलमान भी हैं। बम्बई 'दलित पैन्थर' के उपाध्यक्ष सैय्यद निजामी हैं और कार्यकारिणी के एक सदस्य लतीफ खाटीक है। कुछ ब्राह्मण युवा भी हैं—जैसे बम्बई शाखा के उपसचिव बाल खैरमोडे।

'दलित पैन्थर' का जन्म कोई डेढ़ साल पहले बम्बई मे हुआ था। इस समय नागपुर, बम्बई, औरंगाबाद और पुणे जैसे प्रमुख नगरो के अलावा महाराष्ट्र के तीनो हिस्सो मे—विदर्भ, मराठवाडा और पश्चिमी जिले—पैंथर का विस्तार हो रहा है। पैंथर के संस्थापकों मे सर्वश्री नामदेव ढसाल ज०वि० पवार, अविनाश महातेकर, भाई संगारे, राजा ढाले आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। नामदेव ढसाल तथा राजा ढाले दोनो लोकप्रिय नेता हैं, दोनों जाने-माने दलित साहित्यकार भी हैं। युवा दलित साहित्यकारो का अच्छा खासा जमाव पैन्थर मे है। जो साहित्यकार पैंथर मे नहीं है, वे भी पैंथर के प्रशंसक और समर्थक हैं। कुछ वर्षों से महाराष्ट्र मे उच्च वर्गीय और सफेदपोश साहित्य के प्रभाव से मराठी साहित्य को मुक्त करने का जो आन्दोलन जारी है, उस मे सभी दलित साहित्यकार अगुआ है।

महाराष्ट्र मे राजनीति के सभी समझदार लोगो के लिए अब यह मानना लाजमी हो गया है कि 'दलित पैन्थर' एक उभरती, लड़ाकू शक्ति है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। उसका बाहरी रूप उग्र है। पैन्थर वाले नारा लगाते हैं—खून का बदला खून से लेंगे। वे यह भी कहते हैं कि 'वियतनामी, कंबोडियायी, अफ्रीकी और अमरीकी ब्लैक पैन्थर हमारे आदर्श हैं। इन घोषणाओं से यह निष्कर्ष निकालना कि पैंथर हिंसा और आतंकवाद के रास्ते पर जाना चाहते हैं, असामयिक होगा। संसदीय प्रणाली तथा सत्याग्रह की उपयोगिता के बारे में पैंथर को आशंका है, लेकिन यह नहीं दीखता कि फिलहाल वह इन साधनों को पूरी तरह से छोड़ना चाहता है।

'जैसे को तैसा' यह पैंथर का एक और नारा है। यह केवल नारा ही नहीं है, क्योंकि पैंथर ने पिछले एक वर्ष मे यह साबित कर दिया है: बम्बई मे कई बार शिवसेना के सैनिकों और कभी पुलिस से भी पैन्थर की मुठभेड हुई है।

राजनीतिक दलो के दक्षिणपंथी और वामपंथी गुटो मे वर्गीकरण के हिसाब से दलित पैंथर को वामपंथी कहा जा सकता है। अपने सिद्धान्त-नीति वक्तव्य मे पैंथर कहता है: "दलितो का मुक्ति संघर्ष सर्वतोमुखी क्रान्ति चाहता है। सामाजिक दास्य से अगर हम मुक्ति पाना चाहते है तो वरिष्ठ राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्रो मे दलितो *की सत्ता कायम होनी चाहिए। सारी सत्ता* दलितो के हाथ मे हो।" इसलिए पैंथर का प्रयास है कि "हम समाज के सभी क्रान्तिकारी समूहों को जागृत करेंगे। इन समूहों की संघर्ष शक्ति से क्रान्ति की लहर उठेगी।"

'दलित कौन हैं? इसकी व्याख्या करते हुए नीति वक्तव्यो मे कहा गया है कि 'अनुसूचित जातियां, श्रमिक जनता मजदूर, भूमिहीन, खेतिहर मजदूर, गरीब किसान, आदिवासी इन सबको हम दलित मानते है।'

अपने शत्रुओ की घोषणा करते हुए पैंथर का नीति वक्तव्य पुकारता है, 'सत्ता, सपत्ति, प्रतिष्ठा तथा जमींदार, धनिक, साहूकार और इन सब के अनुयायी, साथ-साथ साम्प्रदायिक राजनीतिक दल तथा उनको संरक्षण देने वाला शासन।' दलितो के प्रमुख सवालो को पैन्थर ने गिनाया है—'अन्न, जल, वस्त्र और झोपड़ी, नौकरी, जमीन, अस्पृश्यता तथा अस्पृश्यो पर हो रहे अत्याचार।' 'दलित पैन्थर' कम से कम इस समय हरिजनो पर हो रहे अत्याचारो का मुकाबला करना अपना प्रमुख कार्यक्रम मानता है। अपने को एक सम्यक राजनैतिक समूह मे विकसित करने के लिए इतना ही काफी नहीं है, पैन्थर जब यह महसूस करेगा तभी उसका असली स्वरूप सामने आयेगा।

(दिनमान से साभार)

गुजरात की विधान सभा का भंग होना जरूरी है

(पृष्ठ ५ का शेष)

गुजरात की विधानसभा का भंग होना जरूरी है क्योंकि इस देश मे एक बार जब तक यह स्थापित नहीं होगा कि जनता के विश्वास का अपमान करने वाले प्रतिनिधि विधानसभा या संसद मे नहीं रह सकते तब तक प्रतिनिधियो पर अंकुश नहीं रह सकता। संविधान और प्रजातांत्रिक ढांचा विधायकों पर अंकुश लगाने मे सक्षम नहीं है यह हमने पच्चीस सालो मे देख लिया है। हमने यह भी देख लिया है कि मनमाना और गैर-प्रजातान्त्रिक व्यवहार करने वाले लोग ही संविधान और प्रजातान्त्रिक व्यवस्था का लाभ सत्ता के लिए उठाते हैं। जनता जिन्हे अपने प्रतिनिधि चुनती है उन्हीं से अगर वह हिफाजत नहीं मांग सकती तो तो फिर उसके पास क्या अधिकार है? सिर्फ वोट देने का। और वोट देकर असहाय दर्शकों की तरह राजनीति का खेल देखते रहने का। गुजरात में जनता का जीतना जरूरी है अगर राज उसका है।

लेकिन अगर गुजरात के विद्यार्थी अध्यापक और लोग हिंसक कार्यवाही करेंगे तो उनकी जीत नहीं होगी। सरकार उनसे ज्यादा बड़ी और कारगर हिंसा करने की ताकत रखती है। फिर हिंसक कार्यवाही मे आम जनता भाग नहीं ले सकती न ऐसी कार्यवाही का लगातार समर्थन कर सकती है। अगर गुजरात के लोग चाहते हैं कि, विधानसभा का विसर्जन उनके इस अधिकार को स्थापित करे कि प्रतिनिधियो पर अन्तिम अंकुश उनका है जिन्हें इन्होंने आदेश दिया है तो उनका आंदोलन अनिवार्य रूप से अहिंसक होना चाहिए। यह सिद्ध करने के लिए कि पूरी जनता विधानसभा को भंग करना चाहती है—गुजरात मे अनौपचारिक मतदान हो सकता है। विधायकों से लाखों लोग अहिंसक असहकार कर सकते हैं। उस जनता पर कोई भी शासन नहीं कर सकता जो शासित होने के लिए तैयार न हो। गांधीजी ने इसे सिद्ध करके बताया है और गांधीजी ने यह सब इसी गुजरात से शुरू किया था। अहिंसा के सिवाय जनता अपना अधिकार प्राप्त नहीं कर सकती।

रवाई, जौनसार पदयात्रा के अनुभव

योगेशचन्द्र बहुगुणा

एक माह तक उत्तराखण्ड के रवाई, जौनपुर व जौनसार बावर क्षेत्र के गावो मे पैदल घूमने के बाद हमे इस क्षेत्र की खूबियो और खामियो ने एक साथ दर्शन हुए हैं। पारस्परिक विश्वास, जो कि लोक-नीति की बुनियाद है, इस क्षेत्र की सबसे बडी विशेषता मानी जायेगी। पचायती राज एक्ट लागू होने के बावजूद भी स्थानीय खुमडियो (परम्परागत पचायतें) आज भी प्रभावशाली हैं। सार्वजनिक हित के प्रश्नो को लेकर लोगो के सगठित होने के एक से एक चमत्कृत कर देने वाले उदाहरण मिलते हैं। हाल ही मे सरकार ने चकरौता से मसूरी तक फलपट्टी बनाने की योजना स्वीकार की। इस योजना के कारण यहा के कीमती जगलों की विनाश लीला प्रारभ होने वाली थी। लोगो के चुगान-चुगान के स्थान भी इस योजना के अन्तर्गत आ रहे थे और सबसे बडी विडम्बना यह थी कि फलपट्टी योजना का अधिकतर लाभ मैदानी क्षेत्रो के सम्पन्न वर्ग को ही मिलने वाला था। इस मनमाने विकास को रोकने के लिए जब क्षेत्रीय जनता की सारी अनुनय-विनय बेकार सिद्ध हुई तो बाईस गावों ने मिलकर कानून का सहारा लिया जिस पर उनके उन्नीस हजार रुपये खर्च हुए। सरकार के साथ मुकदमा चल ही रहा था कि अधिकारियों ने जमीन के रकबे बाटने प्रारंभ कर दिये। जनता का आक्रोश चरम सीमा पर पहुंच गया। ढाई सौ लोगो के पहले दल ने कमिश्नर सहित जीप मे बैठे अधिकारियो को हाथ खीचकर बाहर फेंक दिया और जीप को उठाकर ढगार मे गिराने लगे। हार मान कर प्रशासन को इस योजना को रद्द करना पड़ा। आश्चर्य है कि इसी से लगे क्षेत्र की चम्बा-मसूरी फलपट्टी योजना की समान परिस्थिति होने के बावजूद वहा की जनता छुटपुट अखबारबाजी के और कोई भी सक्रिय कदम नही उठा सकी।

पारस्परिक विश्वास और परम्परागत सगठन के सुदृढ आधार होने के साथ-साथ यहा का समाज कई सकटो का सामना करने लगा है। जिनमे से कुछ प्रमुख समस्याए इस प्रकार हैं।

बाल विवाह व छूट. भारत मे राजा राम मोहनराय से लेकर अब तक अनेक समाज सुधारको ने बाल विवाह पर प्रहार किया है परन्तु उत्तराखण्ड के इस क्षेत्र मे बाल विवाह एक आम बात है। एक गाव मे हमारे पहुचने से दो दिन पहले ही एक लडकी की मा को उसे दूध पिलाने के लिए बारात के साथ ही लडकी की ससुराल तक जाना पड़ा (यहा लडके की बारात न जाकर लडकी की बारात जाती है) इसी तरह हमारा एक मेजबान अपने चार साल के लडके को जो सम्भवत सूखा रोग से पीडित था, अपनी गोद मे लेकर उसकी शादी शीघ्र कर देने की आकाक्षा प्रकट कर रहा था।

स्थानीय जनता की मान्यता है कि इस क्षेत्र मे छूट (विवाह विच्छेद) का एक मात्र कारण बाल विवाह है। बाल दम्पति जब तक पूरे यौवन पर आते हैं तब तक उनका पारस्परिक आकर्षण समाप्त हो जाता है और नयेपन की तलाश शुरू हो जाती है। नारी-जीवन का दुहरा नैतिक स्तर इस खोज मे सहूलियत पैदा करता है। इस पूरे बहुपति-वादी क्षेत्र मे नारी जीवन की दो भूमिकाए हैं। जब वह ससुराल मे होती है तो राठी कहलाती है और जब वही स्त्री मायके में होती है तो ध्याडुडी कही जाती है। ध्याडुडी को राठी की अपेक्षा आजादी है। वह आगन मे आकर अपने समवयस्क पुरुषो के साथ नाच गा सकती है और आवश्यकता पडे तो नये पति का चयन भी कर सकती है। नये पति का चुनाव यदि पक्का हो गया तो पहले वाले पति को छूट (तलाक) दे दी जायगी। कभी पांच-छह बार तक लडकी की छूट होती है।

स्थानीय लोगो ने इतनी अधिक छूट का कारण भले ही बाल विवाह बताया है परन्तु वास्तव मे यह कारण प्रबल नहीं है। यदि ऐसा होता तो अपनी पसन्द का पति मिल जाने पर एक लडकी एक से अधिक बार छूट करवाने को तैयार नही हो सकती। वास्तव मे दूसरे क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र मे भी स्त्री एक आर्थिक यातना है। कई मामलो मे तो लडकी से जबर्दस्ती छूट दिलवाली जाती है और इसमे उसके बाप तथा अन्य पंचो का हाथ होता है। वे जब पैसो की आवश्यकता समझते हैं या लडकी के बदले और अधिक पैसा लेने का लालच होता है तो बाप लड़की को घर पर ही रोक लेगा ससुराल नही भेजेगा। लडकी को भी सिखा देगा कि वह ससुराल जाने से इन्कार कर दे। इस बीच दूसरा पति भी तलाश करवा लिया जाता है जो लडकी के बदले में पिता को इतनी रकम दे सके कि उससे पूर्व पति द्वारा दी गई रकम भी लौटाई जा सके तथा कुछ बाप को भी बच जाए।

छूट के मामलो को लेकर यहा विवाद बहुतायत से होते हैं। रवाई और जौनपुर मे छूट को रियासत कालीन शासन के द्वारा कानूनी मान्यता थी और इससे सरकारी खजाने मे अच्छी खासी आमदनी होती थी। एक बुजुर्ग ने बताया कि पहले छूट की तय होने वाली रकम का दो आना प्रति रुपया रियासती सरकार को देना पडता था। बाद मे यह रकम कुल तीस रुपये हो गई, छूट की रकम चाहे जो हो। अब छूट स्थानीय पचो द्वारा होती है। पचो के पचायत की रकम पच लोगो मे बट जाती है। इस तरह रियासती सरकार के स्थान पर अब यह स्थानीय पचो की कमाई का धन्धा बन गया है और लोग यत्नपूर्वक छूट करवाने की व्यवस्था करते हैं ताकि उन्हें पचायत करके पचायना प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हो सके। जौनसार-बावर मे भी छूट स्थानीय खुमडियो के द्वारा ही होती है। पूर्व पति पचो के सामने रकम प्राप्ति की चिट्ठी लिख देता है। उसको कानून का अनुमोदन दस्तूरउल अमल (मुल्की नियम) के आधार पर स्वत हो जाता है।

दहेज वाली शादी. इस क्षेत्र मे कन्या-दान आमतौर पर नही होता, यद्यपि पहले शादी मे लडके के पिता से भारी रकम भी नहीं ऐंठी जाती, परन्तु जैसा कि एक बुजुर्ग

→

हम असफलता के लिए तैयार थे

निर्मला देशपांडे

स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह देश भर मे मनायेंगे—भारत के तीन सो जिलो मे तीन सौ पदयात्राएं होंगी, कुरुक्षेत्र के सर्वोदय सम्मेलन के साथ हुए महिला-सम्मेलन के निर्णय सुन कर एक सज्जन सहानुभूति के स्वर मे कहने लगे, 'सौ यात्रायें निकल जाए तो भी आपका कार्यक्रम शत-प्रतिशत सफल हुआ माना जाएगा।' कश्मीर से कन्याकुमारी और द्वारिका से डिब्रूगढ़ तक फैला हुआ यह देश, बरसात, बाढ़, आंधी-तूफान जैसी प्राकृतिक और मानव निर्मित कठिनाइया, सम्पर्क करने वाली इनी-गिनी चार-छह बहनें और उनके पास भी पचासो काम—असफलता की पूरी तैयारी थी। लेकिन जब ११ से १७ अक्तूबर तक मनाये गये स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के विवरण आने लगे तो सभी कहने लगे, 'अद्भुत, अभूतपूर्व, चमत्कार।' अभी तक आये हुए विवरण ▪ अनुसार देश मे पाच सौ पदयात्राएं निकली जिनमे कम-से-कम पाच हजार बहनें सम्मिलित हुई और इन सबकी सामूहिक साधना के परिणाम-स्वरूप उस सप्ताह मे दस हजार मील की पदयात्रा हुई।

इन पदयात्री बहनों मे प्रभुशीला बहन की एक माह की बच्ची करुणा से लेकर सत्तर पचहत्तर साल की वृद्धाए तथा बालिकाए, युवतियां, प्रौढाए भी शामिल हुई। जीवन मे पहली बार घर की देहरी को पार कर घूंघट लेकर निकली हुई महिलाओ से लेकर विदेशो की यात्रायें करने वाली अत्याधुनिक शहरी महिलाएं, अशिक्षित, अल्पशिक्षित, ग्रामीण गृहीणियो से लेकर आचार्य, वकील, डाक्टर, राजनीतिक आदि महिलायें, हिन्दू, मुसलमान ईसाई, बौद्ध, जैन, पारसी, यहूदी, सिक्ख आदि सभी धर्मो की महिलायें, भारत की हर भाषा बोलने वाली महिलायें पदयात्रा मे शामिल हुई थी। समग्र भारत की प्रतिनिधि स्त्री-शक्ति गतिमान हो उठी थी। पदयात्रा करने वाली, पद-यात्राओ का सयोजन करने वाली इन महिलाओ मे मुश्किल से दस प्रतिशत ऐसी होगी जिनका सर्वोदय कार्य से प्रत्यक्ष सम्पर्क हो। बाकी नब्बे प्रतिशत महिलाए उस ग्राम जनता की प्रतीक थी, जिसको जगाना सर्वोदय आदोलन का एक प्रधान लक्ष्य है।

आखिर यह, सब हुआ कैसे? कही पर सर्वोदय और रचनात्मक कार्यकर्ता सक्रिय बने कहीं महिला-सगठन या सस्थाओ ने अपने अभिक्रम से आदोलन किया, कही शिक्षा सस्थाओ ने जिम्मा उठाया तो कही कोई व्यक्ति आगे आये। असम मे इन सबके साथ साथ सरकारी अधिकारी भी स्त्री-शक्ति जागरण को अपना काम मान कर इसमे लगे और प्रदेश के करीब-करीब हर प्रखड मे महिला पदयात्रा टोली निकली। हर जगह स्थानीय अभिक्रम जाग उठा, नये गीत बने, नये नारे बने। सप्ताह के कार्यक्रम मे गाव-गाव और नगर-नगर मे महिला सभा, सत्सग गोष्ठी, भजन, कीर्तन ग्राम सभाओ के साथ, साथ महिलाओ ने अपने अभिक्रम ▪ कई कार्यक्रम उठाये। कर्नाटक की महिलाओं ने अशोभनीय पोस्टरो को हटाने तथा कैबरे नृत्य को बन्द करवाने का कार्यक्रम उठाकर नारी के अपमान के खिलाफ आन्दोलन उठाया। तमिलनाडु और बिहार के ग्रामदानी सघन क्षेत्रो मे निर्णय हुआ कि ग्राम-सभाओ मे महिलाओ का योगदान हो और ग्राम परिवार की भावना को विकसित करने के लिए महिलाएं आगे आयें। उत्कल मे ग्राम सफाई, श्रमदान, बच्चो की सफाई तथा उन्हे कहानी, खेल, गीत आदि के द्वारा सुसस्कार देने के कार्यक्रम भी उठाये गये। तमिलनाडु के तजावूर जिले मे सत्याग्रह के लिए महिलाओ को सगठित करने का काम चला। गुजरात और उत्तरप्रदेश मे नाटक तथा अन्य सास्कृतिक कार्यक्रमो के द्वारा क्रांति-विचार को लोकप्रिय बनाने के सफल प्रयास हुए। हरियाणा, राजस्थान और उत्तरप्रदेश के कुछ क्षेत्रो मे शराबबन्दी के काम मे गति लाने का तथा चर्खे के द्वारा ग्रामीण जनता को जगाने के प्रयास हुए। केरल मे सर्व धर्म समभाव के कार्य पर विशेष जोर दिया गया। देश भर के नगरो में सर्वोदय-पात्र, शाति सेना तथा गावो मे ग्रामदान का प्रचार पदयात्राओ का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था ही। स्त्री-शक्ति जागरण की आध्यात्मिक बुनियाद की चर्चा भी चलती रही, कही पर युवतियो ने ब्रह्मचर्य की, प्रौढाओ ने वानप्रस्थ की प्रेरणा भी पायी। स्थायी कार्यक्रम के लिए अनेको स्थानो पर महिला मडल बने, पहले बने हुए मडलो ने कार्यक्रम उठाये। सर्वोदय साहित्य प्रचार और पत्रिकाओ के ग्राहक बनाने का काम भी चलता रहा।

सप्ताह के कार्यक्रम मे सर्वाधिक सफलता मिली गाधीजी के गुजरात मे। यहां १७५ टोलिया निकली और हजार बहनों ने पदयात्रा की। जामनगर जिले मे ४४ टोलिया निकली, यह सख्या सबसे ज्यादा थी दूसरा स्थान पाया असम ने जहा ६५ टोलिया निकली। तीसरा स्थान मध्यप्रदेश ▪ इदौर जिले १८ और पश्चिम निमाड जिले में १० टोलिया निकली। एक पदयात्रा टोली मे औसतन सात महिलायें होती थी। लेकिन कई स्थानो पर गाव की सैकडो महिलायें पदयात्रा टोली के साथ दूसरे गाव पैदल चलती। तमिलनाडु के मदुरै जिले मे कुल का कुल गाव पदयात्रा टोली के साथ चला था। बगाल के चौबीस परगना जिले में अन्तिम दिन की पदयात्रा मे करीब एक हजार बहनें शामिल हुई थी।

पदयात्रियो का यह कार्यक्रम तो केवल आरम्भ मात्र है—स्त्री-शक्ति, आत्म शक्ति, जनशक्ति के जागरण के आंदोलन का। सभी प्रदेशो से माग आयी है कि यह कार्यक्रम हर साल चलना चाहिए। बहनो की मांग के अनुसार मार्च मे ब्रह्मविद्या मन्दिर (पवनार) मे एक महिला सम्मेलन आयोजित किया है, जिसमे देश के कोने-कोने से चार सौ महिलाएं सम्मिलित होगी।

दत्तपुर कुष्ठधाम का संकल्प

बद्रीनाथ सहाय

वर्धा तथा पवनार के बीच रास्ते में ही दत्तपुर कुष्ठ पीड़ितों का एक सेवाश्रम है। इस आश्रम की स्थापना अप्रैल, १९३६ में हुई थी। तब से अब तक यह संस्था कुष्ठ पीड़ितों की सेवा करती आ रही है। अभी इस आश्रम को सुयोग्य संचालक डा० रविशंकर शर्मा का मार्ग दर्शन मिल रहा है। कुष्ठ रोगी अपग एव कमजोर होने हुए भी स्वाश्रयी हो सका है, इसकी सही तस्वीर दत्तपुर के इस आश्रम में दिखाई देती है। विनोबा के उपवासदान आवाहन पर इस कुष्ठ सेवाश्रम के रोगियों तथा कार्यकर्ताओं ने अपना उपवासदान घोषित किया है। इस आश्रम के १२२ व्य [illegible] ने उपवासदान का सकल्प पत्र भर कर [illegible] प्राप्त रकम सर्व सेवा संघ को दे [illegible] विचार का का भी मथन हुआ। [illegible] महारोगी हैं, इनकी ही सेवा की अधिक जरूरत है। फिर भी इन्होंने सर्वसेवा में कुष्ठसेवा आ ही जाती है, ऐसा मानकर पुण्य कार्य के लिए उपवास कर बचत की रकम दान देना तय किया है।

दत्तपुर आश्रम में मुझे घूमते हुए ऐसे अनेक भाई-बहनों से सम्पर्क साधने का अवसर मिला जो कुष्ठ रोग से कुछ न कुछ सीमा तक पीड़ित होते हुए भी वहाँ की अनेक विध प्रवृत्तियों में सलग्न हैं और उनमें से बहुत से महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को उठाये हुए हैं। यह तो स्पष्ट ही है कि वे कुछ तो शिक्षित हैं ही। उन में से दफ्तर में काम कर रहे एक भाई से मैंने पूछा, 'क्यों भाई आपने भी उपवास दान किया है ? 'जी, हाँ।' उसका यही उत्तर था।

मैंने फिर पूछा, 'आप तो महारोगी हैं। जीवन-निर्वाह के लिए काफी, मेहनत करनी पड़ती है। फिर भी उपवास करके उससे बची रकम दान देने की प्रेरणा कैसे जगी ?' जब डा० साहब (रविशंकर शर्मा) ने उपवासदान की बात समझायी और यह भी बताया कि, विनोबा जी तथा देश के ऐसे बहुत सारे लोग महीने में एक रोज का उपवास कर उससे बची रकम सर्व सेवा संघ, जो एक सेवाभावी संस्था है को दान दे रहे हैं, तो हम लोग भी क्यों न इस बड़े काम में शरीक हों। जैसे हम कष्ट में हैं वैसे हम से भी ज्यादा कितने लोग होंगे जो काफी कष्ट में जीवन बिताते होंगे। कितनी तकलीफें सहते होंगे। उनसे तो शायद हम अच्छी हालत में ही हों। इसलिए सोचा कि यहाँ जो सुविधा हमें प्राप्त है उसी में से थोड़ा-सा दूसरों के लिए दें। दुखी लोग दूसरों के दुख नहीं समझेंगे तो वह उनका दुख और दुख-निवारण का उपाय भी एक लोभ बन सकता है जिसे वे अकेले भोग नहीं सकते। वे स्वयं भी फसेंगे और समाज में भी उदारता नहीं पनप सकेगी।'

वह प्रजुएट है। समाज के दबाव के कारण वह घर छोड़कर आश्रम की शरण में आ गया है। मुझे निस्तब्ध भाव से खड़े देखकर उसने फिर कहा, 'रोगियों को समाज पर भार रूप होकर रहने की जरूरत नहीं और भीख माँगते फिरने की भी जरूरत नहीं। थोड़े साधन एवं व्यवस्था उपलब्ध कर देने से कुष्ठ रोगी स्वावलम्बी, आदर्श गाँव का निर्माण कर सकता है। अगर आपको मेरी बात पर यकीन न हो तो दत्तपुर के इस आश्रम में घूम कर देख लीजिए। क्या

एक उपवासदानी चटाई बनाते हुए

रोगियों ने गांधी की कल्पना का ग्रामस्वराज्य यहाँ खड़ा नहीं कर लिया है ?'

उसके मुँह से ग्रामस्वराज्य की बात सुनकर मुझे सचमुच लगा कि जहाँ बड़े पैमाने पर कृषि का काम कर अपने लिए अन्न पैदा कर लेना, वस्त्र स्वावलम्बन के लिए कपास पैदा कर लेने से लेकर कपड़ा बना लेने तक की सारी प्रक्रिया, गोशाला, चर्मोद्योग, सिलाई मशीन, बाल-मन्दिर एवं पाठशाला, कुक्कुट पालन, गोबर गैस प्लान्ट, तथा सहकारी दुकान जैसी अनेक प्रवृत्तियों के द्वारा व्यक्तिगत स्वावलम्बन से आश्रम तक स्वावलम्बी हो, वहाँ अब कौन सा ग्रामस्वराज्य बाकी है ?

जब विनोबाजी ने दत्तपुर के १२२ उपवासदानियों की सूची तथा उससे प्राप्त *१५०४ रुपये की वार्षिक रकम देखी तो खुश* होकर डा० रविशंकर शर्मा की तरफ इशारा करते हुए कहने लगे, 'बहुत अच्छा काम किया है आप लोगों ने।'

भंडारा जिले (महाराष्ट्र) से प्रभाकर बापट लिखते हैं : मेरा जीवन गत २६ सालों से जनाधारित रहा है। भोजन यत्रतत्र होता है। दूसरी जरूरतों की भी निश्चित व्यवस्था नहीं है लेकिन मुझे किसी चीज की कमी नहीं पड़ी। फिलहाल कुछ महीनों से सर्वोदय समिति आधलगाव मुझे खाना खिला रही है।

कई वर्षों से बुधवार को मैंने एक वक्त का भोजन छोड़ दिया है लेकिन दूध, फल, कन्द आदि कुछ खा लेता रहा। अब उपवासदान के सकल्प से मैंने बुधवार को चौबीस घन्टे में सिर्फ एक वक्त के भोजन व पानी के अलावा दूसरा कोई भी भोजन न लेना तय किया है। दूध फलाहार में आठ बारह आना खिलाने वाले का लग ही जाता था। महीने के चार बुधवार से यावर्ष में ५२ बुधवारों से बचने वाली रकम, पचास पैसे के हिसाब से २६ रुपये मैं सर्वोदय समिति से मांगूंगा। और दान की पूर्ति कर सर्व सेवा संघ को भेजूंगा।

उपवासदान से विषमता निराकरण भी होगा। सर्वोदय की निधि इकट्ठा करने में अभी तक बड़े कार्यकर्ता ही ज्यादातर काम करते थे, छोटे कार्यकर्ता दीनता महसूस करते थे। उपवासदान इस विषमता को समाप्त करेगा।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ११ मार्च, '७४

बस्ती के लोगों ने शराब की दुकान आबकारी विभाग में जा पटकी। (विशेष लेख पृष्ठ ५ पर)

- स्वैच्छिक शराबबंदी का आन्दोलन ● अपनी टोली में सबको इकट्ठा करो
- नक्कारखाने में तूती की आवाज सुनी गयी ● चमड़े के लिए भैंस को

अब चर्चा का समय है!

भूदान-यज्ञ

११ मार्च, '७४

वर्ष २० अंक २४

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

राजघाट कॉलोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

गुजरात से दिल्ली आये विद्यार्थी नेताओं से चर्चा करने की जो उत्सुकता और तत्परता केन्द्रीय नेताओं ने दिखायी है उससे लगता है कि सरकार ने विधानसभा को भग करने की माग पर अपना दिमाग बना लिया है। हिचक शायद एक ही है कि पहले विधानसभा के विसर्जन की घोषणा की जाये या पहले गुजरात में शांति स्थापित हो। विधानसभा के विसर्जन के प्रश्न पर प्रधान मन्त्री स्वय कई बार अपने विचार बदल चुकी हैं। पहले वे इस में बिलकुल नहीं थीं कि विधानसभा को भग किया जाये। लेकिन चिमन भाई और भीना भाई दर्जी के झगड़े साफ करने के प्रयत्नों का जो नतीजा निकला उससे शायद अब वे मान चुकी हैं कि गुजरात में कांग्रेस की सरकार फिर से नहीं बन सकती। इसलिए लोकसभा में उन्होंने घोषित किया कि गुजरात के मामले में उनका दिमाग खुला हुआ है और वहां शांति स्थापित होने और परिस्थिति सामान्य होने के बाद लोगों की माग पर विचार किया जायेगा। लेकिन इस घोषणा से भी वहां शांति स्थापित नहीं हुई और मरने वालों का औसत घटा नहीं। एक बार यह घोषित कर देने के बाद कि विसर्जन की माग पर तभी विचार होगा जब शांति स्थापित होगी, सरकार के लिए यह शायद मुश्किल है कि शर्त पूरी होने के पहले ही फैसले की घोषणा कर दे। विद्यार्थियों नेताओं से चर्चा करने की उत्सुकता इसीलिए है कि कोई बीच का रास्ता निकल आये।

दिल्ली में केन्द्रीय नेताओं से चर्चा करने के सवाल पर आन्दोलन चलाने वाली नवनिर्माण युवक समिति में एकमत नहीं है। पहले तो विद्यार्थी नेताओं ने दिल्ली आ कर बात करने से इन्कार ही कर दिया था। लेकिन ऐसा लगता है कि दिल्ली से उनके पास इस आशय के सन्देश गये हैं कि विधानसभा विसर्जन की माग मानी जा सकती है अगर समिति के नेता दिल्ली आयें और आश्वासन दें कि आंदोलन वापस ले लिया जायेगा। आंदोलन वापिस होने और शांति स्थापित होने के दौरान भी सरकार विसर्जन की घोषणा कर सकती है। अगर सरकार शर्त मनवाने की जिद छोड़ने को तैयार हो तो शायद विद्यार्थी नेता भी आंदोलन वापस लेने को तैयार हो जायेंगे। लेकिन जैसा कि समिति के नेताओं ने अहमदाबाद में कहा कुछ विरोधी पार्टियां उन्हें दिल्ली जाने से रोक रही हैं। विद्यार्थी नेताओं को हवाई जहाज में बैठने से रोकने के प्रयत्न इसके उदाहरण हैं। फिर भी ये लोग दिल्ली आ गये हैं और केन्द्रीय नेताओं से उसे चर्चा करने का यह अवसर छोड़ना नहीं चाहिए। विद्यार्थी नेताओं के लिए भी यह श्रेयस्कर होगा कि वे चर्चा कर लें। जिस मामले पर सरकार उनकी बात मानने को तैयार है उस पर अड़ना ठीक नहीं है।

यह गुजरात के हित में होगा कि विद्यार्थी नेता दिल्ली में चर्चा करने के बाद अहमदाबाद जायें और वहां समिति के अन्य नेताओं और विद्यार्थी वर्ग से सलाह करके आंदोलन के बारे में अपने फैसले की घोषणा करें। साथ ही केन्द्रीय सरकार इसकी घोषणा करे कि विधानसभा विसर्जित की जायेगी। विद्यार्थियों और सरकार की तरफ से होने वाली इन घोषणाओं से शांति स्थापना में निश्चित मदद मिलेगी, गुजरात का वातावरण सुधरेगा और हालत सामान्य होगी। विधानसभा भग होने के बाद विद्यार्थी नेता ने कहा है कि स्कूल कॉलेज शुरू जायेंगे लेकिन महगाई और भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन चलता रहेगा। विद्यार्थी निश्चित ही इन प्रश्नों पर आंदोलन जारी रख सकते हैं पर इसका शांतिपूर्ण और अहिंसक होना जरूरी है। विधानसभा विसर्जन के बाद नये चुनावों की तैयारी शुरू होगी और विद्यार्थियों के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि वे फिर से ऐसी विधानसभा न बनने दें जो भ्रष्टाचार कर सकती हो। इसके लिए अलग किस्म और चरित्र के आंदोलन की जरूरत होगी। तब जरूरी यह होगा कि विद्यार्थी मतदाताओं को सगठित करें उन्हें समझायें और सिर्फ ऐसे उम्मीदवार को निर्वाचित होने दें जो प्रजातन्त्र की व्यवस्था के लाभ लेने के बजाय लोगों की सेवा करने की इच्छा रखने हों।

कानपुर में सीधी उँगली : सीधी कार्यवाही

कानपुर में मतदाता शिक्षण हुआ, पर्यवेक्षण हुआ और सीधी कार्यवाही भी। लेकिन महानगर में रहने वाले इस भीड़ भरे शहर के नक्कारखाने का शोर भी बहुत अधिक था इसलिए तूती की आवाज का डूब जाना स्वाभाविक है। जब सभी उंगलियाँ टेढ़ी हों और घी निकालने में एक दूसरे में उलझ रही हों तब एक सीधी उंगली की लिखाई आकर्षण का केन्द्र हो जाती है। कानपुर में मतदाता शिक्षण सीधी उंगली की तरह था और उसके जरिये कई लोगों को प्रजातंत्र का सीधा रास्ता दिखाया गया।

कानपुर में मतदाता शिक्षण इस देश के पहले आम चुनाव से चल रहा है। प्रचार और शिक्षण के जरिये वहाँ मतदाताओं से हमेशा ही सम्पर्क किया जाता रहा है। नुक्कड़ सभाएं, सर्वदलीय सभाएं और छोटी-छोटी बैठकें वहाँ पहले भी होती रही हैं। हरवान भाई, डॉ० सोमनाथ शुक्ल, डॉ० चन्द्रकान्ता रोहतगी और विनय भाई चुनाव के समय हर बार यह अभियान चलाते रहे हैं। लेकिन इस बार अभियान को जो धार मिली उसका श्रेय 'युवा शक्ति' को है। जे० पी० की अपील और फिर फरवरी के पहले सप्ताह में उनके कॉलेजों में घूमने से डेढ़ सौ ऐसे नवयुवक आगे आये जिन्होंने लोकतन्त्र के लिए नवजवान फोरम गठित किया। इन युवकों ने फरवरी के दूसरे सप्ताह से रोज बैठकें करना, मुहल्ले-मुहल्ले घूमना शुरू किया। एक शिविर हुआ जिसमें युवकों को काम करने का प्रशिक्षण मिला फिर नगर को यह सूचित करने के लिए कि युवकों ने चुनाव को स्वतन्त्र और शुद्ध करवाने का जिम्मा ले लिया है एक मौन जुलूस निकाला गया। राधेश्याम योगी युवकों में इस कार्यक्रम के लिए लगाव पैदा करने के लिए एक महीने से काम कर रहे थे। मतदान के एक दिन पहले युवकों ने जनरलगंज चुनाव क्षेत्र █ दस मतदान केन्द्र सघन कार्य के लिए तय किये। प्रत्येक केन्द्र पर दस युवक तैनात हुए
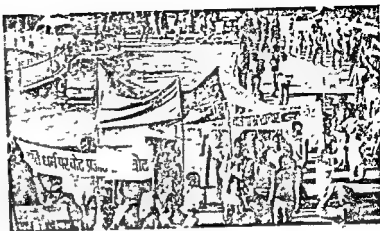
मतदाता प्रशिक्षण के लिए मौन जलूस

और बाकी के युवकों ने अपने-अपने क्षेत्र में स्थानीय सहायता से काम करना तय किया।

मतदाता शिक्षण समिति ने भी मतदान से पहले कार्यक्रम बनाया कि उसके सदस्य फूलबाग में गांधी प्रतिमा पर इकट्ठे होंगे और मतदान की पर्यवेक्षण तथा निगरानी करेंगे। यहाँ चुनाव आयोग की तरफ से पास मिले थे। इस तरह अभियान ने काम को तीन कार्यों में बाँट लिया था। एक दल पर्यवेक्षण करने वाला था, एक दल निगरानी और युवकों के दल चुनाव में भ्रष्टाचार न होने देने के लिए सीधी कार्यवाही करने वाले थे। चौबीस फरवरी को पर्यवेक्षण करने वाला दल फूलबाग से रवाना हुआ, निगरानी के दस्ते भी पहुँच गये लेकिन युवकों को तनातनी का सामना करना पड़ा। तय किया गया था कि दस मतदान केन्द्रों के बाहर युवकों के दल उसी तरह तम्बू तक्त लगायेंगे जिस तरह पार्टियाँ लगाती हैं।

लेकिन गुजराती स्कूल के बाहर नहर के किनारे पर जब शिवसहाय मिश्र अपने साथियों की मदद █ तम्बू लगाने लगे तो जनसंघ के लोगों ने एतराज किया। उनकी शिकायत थी कि मतदाता शिक्षण के रूप में यह कांग्रेस चाल है। मतदान अधिकारी के आदेश से युवकों को हटना पड़ा। लेकिन जब मतदान केन्द्र पर लगायी जा रही हल्की स्याही के कारण बोगस मतदान के उदाहरण आये तो जनसंघ के कार्यकर्ताओं ने ही इन युवकों से कहा कि कुछ कीजिए। युवकों की कार्यवाही से ही स्याही बदलनी पड़ी। बोगस मतदान करने वाले कुछ लोगों को युवकों ने पकड़ा भी लेकिन पुलिस वालों ने उन्हें छोड़ दिया। गुजराती स्कूल में इन युवकों के कारण पार्टियाँ, मतदान अधिकारी और पुलिस वाले काफी 'परेशान' हुए। कर्तव्यों और नियमों का पालन करवाने वालों को आजकल कोई दोस्त नहीं समझता।

डी० ए० वी० कॉलेज के बाहर युवकों ने सवारियों के सरेआम उपयोग पर एतराज किया। मजिस्ट्रेट को कहा कि यह गलत है और इसे रुकवाया जाना चाहिए। मजिस्ट्रेट ने कहा कि जब तक कोई पार्टी एतराज नहीं करती वे कार्यवाही नहीं कर सकते और अगर अपनी तरफ से करना भी चाहें तो उनके पास फोर्स नहीं है। मजिस्ट्रेट खिसक गये। युवकों ने पाया कि सभी पार्टियों के

तौर तरीके समान हैं इसलिए वे शिकायत नहीं करेंगी और मजिस्ट्रेट के पास फोर्स नहीं है तो वोटरों को लाने और मतदान तक उनके पीछे पड़े रहने को कैसे रोका जाये। एक और मजिस्ट्रेट आये तो लड़कों ने उन्हें घेर लिया। मजिस्ट्रेट लगभग जान छुड़ाने के अन्दाज से तम्बुओं में गये और निवेदन करके खिसक गये। युवकों की कार्यवाही से कम से कम इतना हुआ कि सवारियां मतदान की लाईन तक मतदाताओं को नहीं ले जा सकीं।

कुछ केन्द्रों पर युवकों ने सौ गज के भीतर प्रचार नहीं करने दिया और मतदाताओं को समझाया कि उन्हें अपने मत का उपयोग आजादी से करना चाहिए।

शाम को सब युवक गांधी शांति प्रतिष्ठान में इकट्ठे हुए और अपने-अपने अनुभव सुनाये। सवारियों के उपयोग और मतदान केन्द्र के अन्दर तक प्रचार की बातें सभी ने कहीं। किसी ने कहा कि मतदान की गोपनीयता कई जगह भंग हुई है और अधिकारियों ने कुछ नहीं किया। मतदाताओं को शराब पिलाई गई और लाइन में लगे लोगों को लंच के पैकेट दिए गये। इन्द्रपाल सिंह चौहान ने कहा कि डी० ए० वी० कालेज के होस्टल में ऐसे कई लड़के मिले जिन्होंने अलग-अलग नामों से वोट दिये। इनमें कुछ ने पार्टी के लिए और कुछ ने पैसों के लिए ऐसा किया। लव सक्सेना ने एक नकली मतदाता पकड़ा लेकिन उसकी गिरफ्तारी में न पार्टियों ने मदद की न पुलिस वालों ने। सन्दीप मिश्र ने बताया कि सभी पार्टियों ने बोगस मतदान करवाया। मतदाता सूची में भयंकर गलतियां थीं। तेरह-चौदह वर्ष की एक लड़की वोट देने आई। 'लोकतन्त्र के लिए नवजवान' बिल्लों का दुरुपयोग करके लोगों ने मतदान तक प्रचार किया। विश्वबन्धु वाजपेयी छावनी चुनाव क्षेत्र में थे जहां माना जाता था कि सबसे ज्यादा तनाव रहेगा और झगड़े की नौबत आयेगी। वहां सवारियों की जबर्दस्त होड़ थी। सैकड़ों मतदाताओं के नाम सूची से गायब थे। मतदान अधिकारियों को नीति नियमों का कोई ज्ञान नहीं था। सबसे मजेदार अनुभव सुनाया राकेश
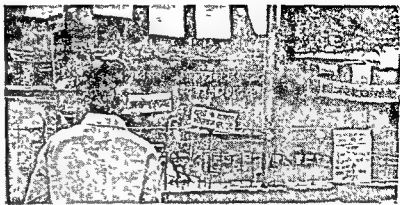
मतदाता की सहायता के लिए युवकों का तम्बू

मिश्र ने। उन्होंने बड़ी बेतकल्लुफी से कहा कि उनका पूरा खानदान कांग्रेसी है इसलिए उन्हें पोलिंग एजेन्ट बनना पड़ा। उनके घर के लोगों ने ही हजारों की संख्या में बोगस मतदान करवाया। उनका झगड़ा हो गया और वे पोलिंग एजेन्ट की जिम्मेदारी छोड़ कर बाहर आ गये। उन्होंने कहा कि सुरक्षा विभाग के बहुत से मतदाता कानपुर में हैं और उन्हें समझाने के लिए मंत्री महोदय दिल्ली से आये थे। वे जानते हैं, क्योंकि मंत्री उनके नजदीकी रिश्तेदार हैं।

विनय भाई के पास प्रेस पास था इस लिए वे जगह-जगह मतदान केन्द्रों में गये। बिल्लों और चुनाव चिन्हों के अन्दर तक होने वाले उपयोग को उन्होंने दर्शाया। उन्होंने पाया कि अधिकारियों और पुलिस वालों का रवैया दखल न देने और अनुमति भरपूर देने का था। चुनाव के नियमों का प्रायः हर जगह अज्ञान था।

पर्यवेक्षकों के दल की डॉ० चन्द्रकान्ता रोहतगी ने कहा कि चुनाव में धन का उपयोग खुल कर किया गया। मध्यवर्ग और उच्चवर्ग के लोगों ने अपनी-अपनी पसन्द के अनुसार अपने साधन पार्टियों को दिए और इसलिए कारों और मिनी बसों और टैम्पो का खुल कर उपयोग हुआ। प्रचार की कोई सीमा नहीं मानी गई न प्रशासन ने लागू करने की कोशिश की। मतदान पेटियों के छेद बहुत छोटे थे और मतपत्र बहुत बड़े थे। इसलिए मत को पेटी में उतारने के लिए दूसरों की मदद लेनी पड़ी और गोपनीयता भंग हुई।

लोकतन्त्र के लिए नवजवान फोरम ने अच्छा काम किया है। लेकिन मतदाता शिक्षण उनका मुख्य कार्य नहीं है। उन्हें दरअसल अपनी जवानी लोकतन्त्र का विकल्प खड़ा करने में लगानी है। और इसके लिए उन्हें शहरों और गांवों में फैल कर पड़ोस सभाएं और ग्रामसभाएं और गठित कर के लोक स्वराज्य की बुनियाद नीचे से उठाना है। तीन और चार मार्च को जे० पी० ने फोरम के सात युवकों को दिल्ली बुला कर यह सब समझाया है।

नक्कारखाने में तूती की आवाज सुनी गयी

छब्बीस फरवरी की शाम उत्तरप्रदेश में मतदान हो जाने के बाद आगरा के अनुभवी शिवनारायण अग्रवाल ने कहा 'हम जानते थे कि चुनाव के इस नक्कारखाने में तूती की आवाज कोई नहीं सुनेगा। लेकिन मतदाताओं ने हमारी बात इतने ध्यान से सुनी कि हमें खुद आश्चर्य है।' उन्होंने एक बात और कही 'आगरा में चुनाव के दिनों अगर कोई गड़बड़ी नहीं हुई तो इसका कुछ तो श्रेय हमारे प्रचार और सम्पर्क को दीजिये।' श्रेय देने या लेने से चूंकि मेरा कोई वास्ता नहीं था इसलिए मैंने बहस नहीं की। चुनाव शांतिपूर्वक सम्पन्न होने के और भी कारण हैं। शांति में उस हर बड़ी पार्टी का दांव लगा हुआ था जिसे जीतने की उम्मीद थी और हर पार्टी के पास इतनी शक्ति थी कि एक दूसरे का भय गड़बड़ करने

[शेष पेज १३ पर]

अपने और अपनी सरकार से लड़ती रेंगर जाति

—रामभूषण

रेंगरो के मुहल्ले मे शराब के ठेके की दुकान पर कीर्तन चल रहा था। शराब की दुकान और कीर्तन, बात कुछ बेमेल लग रही थी। देखा, दुकान के दरवाजे पर एक ऊंचा तख्त जिस पर रामचरित मानस, दोनो ओर राम-सीता की सिंहासन पर बैठी तस्वीरें बीच मे राधाकृष्ण की एक बड़ी तस्वीर, सभी तस्वीरें मालाएं पहनाई हुई, दीवाल पर एक तरफ गांधी जी की तस्वीर जिसके नीचे शराब सम्बन्धी उनके उद्गार, दूसरी ओर ध्यान मुद्रा मे भगवान बुद्ध की तस्वीर जिसके नीचे *मदिरा के सम्बन्ध मे उनकी पुनीत वाणी।* बड़े तख्ते की बगले मे ही दुकान की दीवाल से लगा एक और छोटा तख्त जिस पर नई उमर के दो लड़के बैठे हुए। दीवाल पर एक ओर से लेकर दूसरी ओर तक मदिरा-विरोधी तस्वीरें व पोस्टर। बड़े तख्त के सामने ही एक बड़ी दरी जिस पर कुछ लोग बैठे हुए, बच्चो की भी एक अच्छी संख्या और माइक पर कीर्तन व भक्ति सम्बन्धी भजन-गाने। पता चला कि इस क्रम का यह उनचासवां दिन था। तख्त पर जो दो लड़के बैठे थे वे चौबीस घंटे के उपवास पर बैठे थे। लोगों से बातचीत करने पर पता चला दुकान के दरवाजे पर बस्ती के लोगो ने मुहरबन्द ताला लगा दिया है और उपवास, कीर्तन, मांग-पत्र व अपने भाषणो द्वारा वे आबकारी विभाग पर यह असर डाल रहे हैं कि उनके मुहल्ले से शराब का ठेका हटा लिया जाये व शराब की बिक्री बन्द कर दी जावे।

शराब की दुकान :

दूसरे दिन सवेरे आकर दुकान जरा और साफ तौर पर देखी। ईंट-पत्थरो की चूने से चुनी एक छोटी इमारत ▪ दो छोटे कमरे, कमरों के बीच का एक बरामदा व आंगन जिसके बीच नीम का एक छोटा पेड़ है। कोने मे एक लम्बी टेबल पड़ी है, कुछ बोतलें लुढ़की पड़ी हैं। एक तरफ टोंटी लगा एक कड़ाल रखा हुआ है, झरोखे से एक मिल्की बल्ब लटक रहा है। एक तरफ काले रंग से रंगा हुआ टिन का वही बोर्ड लटक रहा है जो शराब की दुकानो पर अक्सर रहता है। बोर्ड पर सफेद रंग से लिखा है

ठेका देशी शराब

रेंगरो की कोठी, जयपुर,

दुकान के दरवाजे की साकल अन्दर से भी लगी हुई। लगता है ठेकेदार के आदमी सारा माल-मत्ता लेकर साकल लगाने के बाद पीछे से निकल गये हैं। रेंगर बस्ती के लोगो ने तालाबन्दी के बाद दुकान की सामने की दीवाल पर कुछ पोस्टर व चित्र लगा रखे है।

मैं उपवास पर बैठे दोनो लड़को—सत्रह वर्षीय हरिराम खोरवाल व चौदह वर्षीय सादराम ढूडिया—से मिला। दोना ही आठवी कक्षा के विद्यार्थी हैं। दोनो ने बताया कि वे उपवास पर अपनी स्वय की इच्छा से बैठे हैं। बातचीत के दौरान दोनो ने ही बताया कि शराब पीने वालो के खिलाफ जो भी कार्यवाही होगी दोनो उसम शामिल होंगे। नौ बजे सवेरे इन दोनो के उपवास के चौबीस घंटे खत्म हुए। इसी बीच बस्ती की कुछ स्त्रियां-लड़कियां गीत गाते आईं। इनमे एक के हाथ मे आरती की थाली थी। उसने इन दोनो लड़को की आरती उतारी और माथे पर तिलक लगाया। फिर एक ने इन्हे माला पहनाई। चूंकि मैं आगन्तुक था, काशी से आया था, अतः मेरे हाथ से उन्हे कुल्हड़ मे दूध पीने को दिलाया गया। फिर स्त्रियों ने उन्हें मिष्ठान खाने को दिये जिसके बाद उन्हें निकट के गंगामाता के मन्दिर ले जाया गया, जहा दर्शन करने के बाद वे अपना काम करने के लिए खाली हो गये। इसी बीच तेईस वर्षीय युवक कन्हैयालाल टोनिया व बाईस वर्षीय मदनलाल बड़ोनिया आकर चौबीस घंटे के उपवास पर बैठ गये। यह क्रम रोज-रोज चल रहा है। ६ फरवरी '७४ से प्रारम्भ इस उपवास क्रम मे इसके पहले तक बयालीस व्यक्ति जिनमे आठ से दस वर्ष के बच्चे भी थे, शामिल हो चुके है।

रेंगर बस्ती

रेंगर बस्ती के लिए शराब की यह दुकान कोई नई बात हो ऐसी बात नही है। रेंगरों की यह बस्ती जो जयपुर शहर मे ज्यादातर *रेंगरो की कोठी के नाम से जानी जाती है*

रेंगर की बस्ती मे प्रभात फेरी

एक ऐसा इलाका है जहा काफी पहले से शराब की भट्ठियां चली आ रही थीं। बाद मे उसी जगह शराब की दुकान खुली जहा आज तक चली आ रही है। जयपुर शहर म वैसे साठ-सत्तर साल पहले शराब की स्वतन्त्र दुकानें खुली थीं। उसके पहिले शराब भट्ठियो म बनाई जाती थी। शहर की कई जगहो मे शराब की भट्ठियां चलती रही हैं। रेंगर कोठी मे भी शराब की चार भट्ठिया थी। आज जहां शराब की दुकान है, वहा भी एक भट्ठी थी। रेंगरों की कोठी की दुकान शहर की सबसे पुरानी दुकानो मे से एक है। यहा की शराब अच्छी मानी जाती रही है। और यही वजह थी कि यहा के कलालो की राजदरबार तक पहुच हो सकी।

→

रेंगर कोठी का अर्थ है रेंगरो का कुआ। राजस्थान मे कोठी का अर्थ कुआ होता है। आज से ढाई-तीन सौ वर्ष से भी पहले किसी समय रेंगर जाति के लोग यहा आये और यहां के कुएं को इस्तेमाल करने लगे। इस-लिए इस इलाके को रेंगरो की कोठी कहा जाने लगा। कुछ लोगो का कहना है कि यहा पहले बंजारे रहते थे इसलिए इसे कभी बंजारे की कोठी कहा जाता था। ऐसा कहा जाता है कि एक बड़ा कुआ बंजारो ने ही बनवाया था। बंजारो का यह स्वभाव है कि वे किसी एक स्थान पर लम्बे अर्से तक नही बसते। बंजारों के जाने के बाद यहा रेंगर जाति के लोग बसे। जयपुर के महाराजा रामसिह के समय राज ने इन्हे बसने मे मदद दी थी। रेंगर कोठी के ठीक बगल में कलाल जाति के लोग बसे जो शराब बनाते थे। गाने-बजाने की सुविधा के लिए इस इलाके मे ऐसे परि-वार बसे जो गाना-बजाने का धन्धा करते थे। धीरे-धीरे इस क्षेत्र मे नाचने-गाने वाली स्त्रिया आ बसी और उनका धन्धा चल निकला। इस तरह शहर के इस इलाके की एक खास स्थिति बन गई और यहा का वातावरण भी एक खास ढंग का हो गया। रेंगर कोठी में रेंगर जाति के लोग रहते थे और पास-पडोस मे गाने-बजाने वाले तथा नाचने-गाने वाली कलाल स्त्रिया रहती थी। शौकीन व सामन्ती मिजाज के लोग यहा आते-जाते थे। कुछ ही दिनो मे यह इलाका शराब व नाचने गाने वाली स्त्रियो के लिए मशहूर हो गया।

रेंगरो की कोठी, पुराने जयपुर शहर के पूर्वी किनारे पर बसाई गई थी। आज तो नया शहर काफी आगे तक बढ गया है जिसके अन्दर यह बस्ती भी आ गयी है। रेंगर जाति का मुख्य धन्धा चमडे का है और यही वजह थी जो इन्हे शहर के किनारे बसाया गया। आज जहां केवल रेंगर लोग हैं मुख्यतः वही रेंगर-कोठी कहा जाता है। इस बस्ती मे आज एक हजार परिवार है जिनमे छः हजार व्यक्ति हैं। बस्ती मे आप कभी भी जायें भयंकर गन्दगी आपका सर भन्ना देगी। सकरी गलिया, जगह-जगह कूडा, मलमूत्र, सडता पानी, सड़ी घास, आदमी भी क्या जानवर है जो किसी भी जगह रह लेता है। रेंगर-कोठी में कुल आठ सौ पचास पक्के मकान हैं, डेढ सौ झोंपड़ियां हैं। पक्के मकान का अर्थ अपटू-डेट पक्का मकान नही बल्कि पत्थर व ईट का मकान चूना पुता हुआ। यहा के लोगों से जब बात हुई तो उन्होने बताया : "हम अपनी गरीबी-अपनी कुटेवो से जूझते रहे, सरकार हमारे फटेहाली, हमारी कमजोरियो को अपनी कमाई का साधन बनाये रही। मुल्क के आजाद होने से आज तक सिवा हमे बरबाद करने के सरकार ने हमारे लिए किया ही क्या है? पहले हमे इस शैतान (शराब) से निपटने दीजिये, बाकी हम धीरे-धीरे खुद ही निबट लेंगे।" वैसे सामाजिक कल्याण के लिए रेंगर कोठी मे आज चार सगठन काम कर रहे हैं : रेंगर विकास मंडल, नवयुवक सेवा समिति, शू रिपेयर मजदूर सघ और रेंगर पचायत। हरिजन सेवा सघ की तरफ से यहा एक बाल-मन्दिर भी चलता है जिसमे चालीस विद्यार्थी हैं।
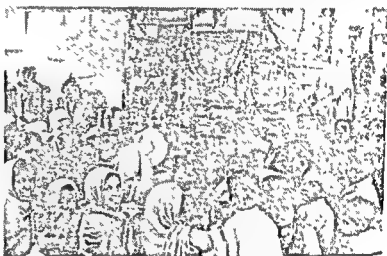
रेंगरो की पचायत के काम करने का अपना एक तरीका है। इनका सारा मुहल्ला पाच पंचायत क्षेत्रो मे बंटा हुआ है जिनमे से प्रत्येक से पाच-पांच व्यक्ति चुनकर आते हैं जो अपना प्रधान चुनते हैं। बैठक करने के सम्बन्ध में इसके दो सदस्यो से जानकारी मिली कि इसके लिए कोई खास अवधि तय नही है लेकिन जब जरूरत पडती है बैठक बुला ली जाती है। नगाडा बजा कर सारे मुहल्ले मे बैठक के बारे मे मुनादी कर दी जाती है। इस पचायत की एक यह भी विशे-षता है कि इसमे आम आदमी भी शामिल हो सकते हैं और वे भी राय दे सकते हैं। ऐसी कई उपयोगी रायें मानी भी गई हैं।

शराब की दुकान पर ताला लगाने का निर्णय भी रेंगर पंचायत ने ही लिया। ५ जनवरी '७४ को पचायत ने युवको की एक बैठक बुलाई और उसी समय 'शराब-समिति' की पहली बैठक भी की गई। उसी के बाद शराब की दुकान पर ताला लगाकर उसे मुहर-बन्द कर दिया गया। पचायत ने यह भी निर्णय लिया कि २२ जनवरी से ठेके का पूर्णत बहिष्कार हो और उनके मुहल्ले से शराब की बुराई खत्म हो। लेकिन पचायत के इस निर्णय से ही शराब की बिक्री रुकी नही। समाज विरोधी व कमजोर नीयत कुछ लोगो ने लुके छिपे शराब बेचने का धन्धा चालू रखा। पचायत फिर बैठी। नौ बजे से सुबह चार बजे तक पाच सौ आदमी बैठे विचार-विमर्श करते रहे। निर्णय लिया गया कि अवैध रूप से शराब बेचने वालों पर पाबन्दी लगायी जाय और ऐसा करने वाले व्यक्ति पर एक सौ एक रु० का दण्ड भी लगाया गया। फिर भी जब ठेकेदार ने एक आदमी को लुके छिपे शराब बेचने के लिए उकसाया और उसने शराब बिकवायी तो उस आदमी के मुंह पर कालिख पोत कर उसे सारे मुहल्ले मे घुमाया गया।

शराब के ठेके पर ताला, धार्मिक तस्वीरें तथा कीर्तन गाते रेंगर

रेंगर पचायत ने यह भी निर्णय किया कि शराब बन्दी के लिए रोज प्रभात फेरी निकाली जाय और प्रतेक दिन सभा

का कार्यक्रम रखा जाय। १ दिसम्बर '७३ से बस्ती मे प्रभात फेरी चालू कर दी गई। आगे चलकर ६ फरवरी से नियमित उपवास पर बैठने की प्रक्रिया भी पचायत ने निकाली। स्त्रियो ने इस कार्यक्रम मे विशेष रुचि ली और उन्होंने इसे एक धार्मिक स्वरूप दे रखा है। २४ फरवरी की प्रभातफेरी मे मैं भी शामिल हुआ। मुहल्ले की वानर सेना व तरुण सेना अन्य लोगों के साथ सारी बस्ती मे घूमती है और शराब के बहिष्कार पर जोर देती है। बच्चो व नौजवानो मे बड़ा उत्साह दिखायी पड़ता है।

२४ की सुबह की सभा मे मैं भी शामिल हुआ। सभा का यह क्रम रोज ही चलता है। रात आठ बजे की सभा अच्छी जमती है। उसमे बोलने वालो की सख्या भी कई हो जाती है। कभी-कभी दूर-दूर से लोग आ जाते हैं और स्थानीय काफी प्रतिष्ठित लोग भी। रैंगर समाज राजस्थान मे जहा कही भी है उसके सद्भावना सन्देश बराबर आते रहते हैं। अन्य समाजो के लोगो की भी सहानुभूति बराबर मिल रही है। आज की सभा मे वैसे बोलने वालो की सख्या अधिक नही थी फिर भी उनके दिल मे जो दर्द, जो आक्रोश व जो तत्परता व कटिबद्धता थी वह उनकी बात मे देखी जा सकती थी। बूढामल मुहल्ले के ही आदमी हैं। उन्होंने सरकार की निष्क्रियता पर क्षोभ जाहिर करते हुए कहा : 'शराब आन्दोलन के आज कई दिन हो गये फिर भी सरकार निष्क्रिय है। लेकिन वे याद रखें; चाहे जितनी कुर्बानी देनी पड़े फिर भी हम हटेंगे नहीं। वे जानते हैं कि यदि वे इसे बंद कर देंगे तो उनकी कई कुसिया छिन जायेंगी, उनकी सुरा सुन्दरी छिन जायेगी, लेकिन इन बालको, बूढो मे भी अब यह बात आ चुकी है जो उन्हें अट्टालिकाओं से बाहर खीच लायेगी।" पीरडीवाल ने बड़े दर्द के साथ अपना निश्चय व्यक्त किया : 'रैंगर बस्ती के लोगो ने इस शराब की दुकान मे हमेशा-हमेशा के लिए ताला लगाया है। सरकार से उम्मीद रखना बेकार है। करना सब हम लोगो को है। आज बुजुर्ग महिलाओं में जोश है कि वे इस बुराई को मिटाकर ही रहेंगी। पहले हमारे लोग गगा जी हरिद्वार जाकर भी शराब पी लिया करते थे लेकिन अब यह शुभ चेतना जाग गई है कि पहले ठेके को बन्द किया जाय।" रैंगर पचायत के प्रधान मोतीलाल भण्डारे की बात मे दर्द जरूर था लेकिन उत्साह की भी कमी नही थी। सरकार की भर्त्सना करते हुए उन्होने कहा "जयपुर नगर गुलाबी नगर कहा

उपवास तुड़वाते गोकुल भाई

जाता है जिसे देखने के लिए विदेशो से भी लोग आते है। लेकिन आजादी के छब्बीस वर्ष बाद भी गरीबो की बस्तिया नरककुण्ड के रूप मे चालू है ···· सरकार यदि इसी तरह अनसुनी करती रही तो भी दिन के बजाय अगर महीने व वर्ष भी हो तो भी जो हरि-कीर्तन, उपवास चला रहे हैं वह चलता रहेगा।"

भूरामल डीगवाल ने भी सरकार की बद-नीयती की ओर इशारा करते हुए कहा. "वे चाहते हैं कि हम ऐसे ही रहें, आगे न बढ़ सकें। हम तो सिर्फ इतना कहते हैं कि वे ठेका यहा से उठा लें फिर चाहे जहा रखें।" बस्ती के निवासी बाबूलाल सिंह को भी सरकार की नीयत पर एतबार नहीं था। उन्होंने भी कहा."शराब की दुकान राजस्थान सरकार बन्द करे ही राशन पर रही है। ये लोग सुरा सुन्दरी मे विश्वास रखते हैं, देश को खुशहाल नहीं रखना चाहते।" रामलाल नाटोलिया ने भी सरकार की अकर्मण्यता पर क्षोभ प्रकट किया।

शराब की थड़ी ·

रैंगरो की बस्ती के निकट ही कुछ और पूरब जाकर कोलियो (बुनकरो) का मुहल्ला है जिसमे ३ हजार घर व आबादी करीब पच्चीस हजार बताई गई। इस बस्ती मे हिन्दुओ का अनुपात मुसलमानो से अधिक है। मुहल्ले के ५०% लोग बुनाई मे लगे हुए हैं। अन्य ५०% बुनाई न मिलने के कारण मजदूरी तथा अन्य धन्धो मे लगे हुए हैं। गरीबी व गन्दगी का वही हाल जो रैंगरो की कोठी का है। कहीं-कहीं उससे भी बदतर। २४ फरवरी की सुबह ६ बजे जब मैं कोलियों की कोठी मे शराब की थड़ी (टिन की दुकान जो उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जायी जा सकती है) पर पहुचा तो देखा थड़ी मे दोनो तरफ ताला लगा हुआ है। सामने दो बुढ़िया, एक अधेड़ स्त्री व एक बहू बैठी थी। मैंने जब अधेड़ महिला प्रेमा से पूछा कि वे यहा क्यों बैठी हैं तो उन्होने बताया. "मेरे घर पर मे चार प्राणी हैं, एक मैं, मेरा आदमी, एक बेटा व उसकी बहू। बेटा अहमदाबाद मे काम करता है। वह शराब नही पीता फिर भी मुझसे दूसरो का दुःख नहीं देखा जाता। हम यहा ग्यारह बजे रात तक बैठे रहते हैं। दिन मे बैठे-बैठे यहा बिनना, पछोरना आदि घरेलू काम करते रहते हैं। पिछले रविवार [illegible] थड़ी मे ताला डाल दिया गया है। औरतें भजन

रामभूषण

करती है, रामधुन कहती हैं, जलूस मे जाती है।" मुझे बताया गया कि मुहल्ले वालो ने ठेकेदार के ताले पर ही अपना ताला जड़ दिया था। लेकिन एक दिन रात को चुपके [illegible] ठेकेदार अपना ताला खोल ले गया और मुहल्ले का ताला रहने दिया। २४ता० की रात को ही किसी ने थड़ी में आग लगाने की कोशिश की लेकिन एक बुढ़िया ने आकर उसे बुझाया।

[क्रमश]

अपनी टोली में सबको इकट्ठा करो

— विनोबा

गुजरात की सर्वोदय-पत्रिका 'भूमिपुत्र' के दो संपादक प्रबोध चोक्सी और अमृत मोदी ने २५ और २६ फरवरी को गुजरात की वर्तमान स्थिति की जानकारी विनोबा जी को पवनार मे दी। उनके बीच हुए प्रश्नोत्तर का सार इस प्रकार है।

बाबा : गुजरात मे दंगे हो रहे है, इसीलिए आपके 'भूमिपुत्र' के ग्राहक एक लाख होने चाहिए। क्यों नहीं होते हैं? इतनी सुन्दर पत्रिका है आपकी। सब खबरें तटस्थ बुद्धि से छापो उसमे। आज तुम्हारे पन्द्रह हजार ग्राहक हैं। पन्द्रह हजार और एक लाख मे बहुत फरक है। तुम्हारा मुख्य काम यही होना चाहिए कि इस आंदोलन के कारण 'भूमिपुत्र' के एक लाख ग्राहक बने हैं। 'न्यूज' जो भी जाहिर करो, तटस्थ बुद्धि से जाहिर करो। परस्पर विरोधी खबरें आती हैं वह भी दें। 'लाठी जिसकी भैंस उसी की' ऐसी कहावत अब न चलेगी। ऐसा गीत दुलायल ने लिखा है। (उसकी सिंधी पत्रिका नागरी मे अभी शुरू नहीं हुई है, उसे भी मदद दो।)

अमृतभाई : गुजरात के साथियों से हम क्या कहें?

बाबा : किसी से कुछ भी नहीं कहना। सिर्फ दो ही बाते कहना, एक, 'भूमिपुत्र' के एक लाख ग्राहक बनाना, दो, पांच हजार उपवास-दान प्राप्त करना।

गुजरात मे जैन लोग ज्यादा हैं। जैन लोग उपवास ज्यादा करते है। लेकिन कांता ने मुझे बताया कि जैन बहनें उपवास तो खूब करेंगी, लेकिन पैसा देंगी कि नहीं सवाल है।

जहां तक 'पोलीटिक्स' का सवाल है, 'पोलीटिक्स' मे जो लोग पड़ेंगे, उनके सिर्फ दो नहीं, आठ टुकड़े पड़ेंगे। कुछ लोग सर्वोदय का 'पोलीटिकलाइजेशन' करना चाहते हैं। मैंने कहा, 'टोलीटिकलाइजेशन' करो। अपनी 'टोली' है। तो अपनी 'टोली' मे सब इकट्ठा हो। गुजरात मे तुम लोगों के (सर्वोदय) दो ही टुकड़े पड़े, इसका आश्चर्य हुआ। क्योंकि राजनीति मे पड़ने वालो के तो अनेक टुकड़े पड़ते हैं। इस प्रकार के टुकड़े सर्वोदय वालो के अवश्य पड़ेंगे, अगर वे राजनीति मे जायेंगे। इसलिए उनको लोकनीति लानी चाहिए।

प्रबोधभाई : एक ही राजा का राज उत्तम हो सकता है कि नहीं?

बाबा : हो सकता है। अगर वह राम के जैसा राजा हो। एक राजा का राज जैसे उत्तम हो सकता है वैसे खराब भी हो सकता है, मध्यम भी हो सकता है। लेकिन 'डेमोक्रेसी' औसत होती है। जैसे डेयरी का दूध होता है। वह न उत्तम होता है, न खराब। 'डेमोक्रेसी' का राज उत्तम राजा के राज के जैसा उत्तम नहीं होता, खराब राजा के राज के जैसा खराब नहीं होता। तो 'डेमोक्रेसी' का डीलडौल मध्यम है। उससे हमारा मतलब नहीं। हमे तो लोक-नीति खड़ी करनी है। वह कब होगी मालूम नहीं। लेकिन लोग उसे कबूल करेंगे तभी उनका भला होगा। लोकनीति छोड़कर अन्य जो विचार है, उनके दो आधार है, 'देइज्म' ('वे' वाद। मतलब, हमारे लिए जो कुछ करना है वह सरकार करे, हम अपने लिए कुछ नहीं करते।) मिलिटरी (सेना)। एक प्रकार है नाजी (नाजीज्म), एक है फाजी (फसिज्म), एक है कामी (कम्युनिस्ट), एक है लोभी (पूंजीवाद)। ऐसे प्रकार हैं और इन सबका 'सैंक्शन' है, 'देइज्म' और मिलिटरी। इसीलिए तुम लोग 'पोलीटिक्स' से जितना दूर हट जाओ उतना अच्छा है।

(गुजरात के रचनात्मक कार्य के एक वरिष्ठ नेता को बाबा का इंदिराजी के संबंध का कथन, (कि 'वह सर्वसेवा संघ की सदस्या ही हैं,') पढ़कर खेद हुआ। और उन्होंने इस पर एक लेख भी लिखा। वह बाबा को बताया गया।)

बाबा : मैंने पहले ही जाहिर किया है कि मैं पंच शक्तियों का सहयोग चाहता हूं, समाज के स्वास्थ्य के लिए। उसमे जन-शक्ति, सज्जन-शक्ति, विद्वद्जन-शक्ति, महाजन-शक्ति और पांचवी है शासन-शक्ति, इनके बीच सहयोग होना चाहिए। उसमे सबसे कम ताकतवाली है शासन-शक्ति। और सबसे ज्यादा ताकतवाली है, जन-शक्ति और सज्जन-शक्ति। और शासन के जितने गलत काम होंगे उनका हम विरोध करेंगे। जितने अच्छे काम होंगे उनसे सहयोग करेंगे। हमारे काम मे उनका सहयोग हासिल करेंगे। ऐसा मैंने कहा, उस वक्त तो किसी ने विरोध नहीं किया। किसी ने ऐसा नहीं कहा कि शासन-शक्ति के सहयोग की बात क्यो कहते हो? शासन से असहयोग होना चाहिए ऐसा तो किसी ने नहीं कहा।

आश्चर्य की बात है कि उस दिन (२२ फरवरी) को सुबह दस बजे मैंने कहा (गांधी शांति प्रतिष्ठान की बैठक मे) कि पाकिस्तान बांगला देश को जल्दी मान्यता देगा। उसी दिन शाम को भुट्टो ने बांगला देश को मान्यता दी। मैं देखता था कि भुट्टो का 'माइंड' धीरे-धीरे तैयार हो रहा है बांगला देश को मान्यता देने के लिए। वह कुशल है। इसलिए तरह-तरह की बातें बोलता है, ताकि उसके इरादे का पता लोगों को न चले। मेरा जो विश्व-निरीक्षण है उस पर से मैं जानता था कि वह एक दिन बांगला देश को मान्यता देगा। इससे इंदिरा को और एक सफलता मिली है, तीनों को एकत्र लाने मे। अब आज खबर है कि भुट्टो ने कहा, 'काश्मीर का सवाल हम ऐसा ही न छोड़ेंगे।'' ऐसा कुछ वह बोलेगा नहीं तो उसकी क्या कीमत रहेगी? इसलिए वह ऐसा बोलता है। लेकिन वह (काश्मीर का) जो मसला है, दोनों के बीच ही हल होगा। तीसरे को उसमे नहीं पड़ने देंगे। ठीक है, अभी तो उस पर चर्चा चलेगी।

जहां तक 'फॉरेन पालीसी' का ताल्लुक है, हिन्दुस्तान को तटस्थ बनाकर रखने मे इंदिरा को सफलता मिली है। रशिया से →

भ्रष्टाचार, महंगाई और दूसरी तकलीफों के लिए गुजरात में एक बड़ा भारी आंदोलन चला। इन दिनों गुजरात में बहुत दुःखद घटनाएं घटीं। कम से कम पचास व्यक्तियों की जानें गईं, माल की तो अपार हानि हुई। और भी कई तकलीफें सहनी पड़ीं। आखिर सरकार को त्यागपत्र देना पड़ा। राष्ट्रपति शासन आया। अब प्रजा की इच्छा है कि लोकहित करने वाली सरकार आये।

किसी भी प्रकार की बहस में पड़े बिना विधान सभा के सदस्य अपना त्यागपत्र पेश करें ऐसी सलाह मैंने चिमनभाई पटेल को दी थी। यही सलाह अन्य सदस्यों को भी देता हूं। जब लोगों का मंत्रियों और सदस्यों दोनों से विश्वास उठ गया है तब वे किस तरह वहां रह सकते हैं? उनका कर्तव्य है कि वे अपना स्थान जल्दी से जल्दी रिक्त करें।

आन्दोलन करने वालों को भी मालूम है कि हिंसा और जानमाल का नुकसान किसी के हित में नहीं है। समाज के दैनिक जीवन में शान्ति और स्वस्थ वातावरण लाने के लिए अनेक विद्यार्थियों और प्राध्यापकों ने उपवास किये हैं और लोगों से शान्ति रखने के लिए अपील की है। सरकार ने भी गिरफ्तार आन्दोलनकारियों को छोड़ कर बहुत अच्छा किया है।

आज गुजरात अन्न की भारी तकलीफ सह रहा है ऐसे में किसानों से मेरी अपील है कि वे ज्यादा अन्न उपजाने की कोशिश करें। अपने लिए जरूरी हो उतना रखकर शेष जनता के लिए ठीक भाव से दें। ज्यादा लाभ की आकांक्षा न रखें। व्यापारी भी वही नीति अपनाएं। अपना रोज का काम चल सके इतने ही मुनाफा से सन्तोष मानें। जमाखोरी कालाबाजारी रिश्वत आदि देकर अपना काम निकाल लेना आदि धन्धे छोड़ें। आज लोगों के मन में जितना गुस्सा सरकार के मंत्रियों वगैरह के लिए है, उतना ही गुस्सा व्यापारी वर्ग के लिए भी है। इन दोनों वर्गों का आज जागृत होना आवश्यक है। नहीं तो बड़ा भारी विप्लव होगा और जन-जीवन का नाश होगा।

आम लोगों से भी मेरा कहना है कि वे देश का उत्पादन बढ़ाने में सहायता करें। अपने हिस्से में जो काम आया है वह प्रामाणिकता और बहुत कुशलता से करें। जिस प्रकार तोड़-फोड़ और मारकाट हिंसा है उस प्रकार कालाबाजारी, किसी का शोषण और बिना मेहनत बैठकर खाना भी हिंसा ही है। उस दोष से भी हमें मुक्त होना चाहिए।

सरकारी अफसर अपना कर्तव्य बराबर पूरा करें। वे जन-सेवक हैं। जनता के मालिक नहीं। उनका धर्म जनता की तकलीफें कम करना है। अपने और अपने रिश्तेदारों के फायदे के लिए लोगों को हैरान-परेशान करके धन कमाना बड़ा पाप है—ऐसा समझें। रिश्वत वगैरह से जनता आज बहुत तंग हो गई है। वे अपना व्यवहार नहीं बदलेंगे तो उनका भी नाश होगा। अब लोग ज्यादा सहने को तैयार नहीं।

सभी कामों में आज सरकार दखल दे रही है। जनता को जो काम करना चाहिए वही काम सरकार करने की कोशिश करती है। इससे जनता परावलम्बी बनती जा रही है। वह अपने परिश्रम से जीना भूल गई है। आज सभी की मनोवृत्ति ऐसी हो गई है कि सभी काम सरकार करे और वे सिर्फ बैठकर खायें। लोकतंत्र में लोगों को ही अपना काम करना चाहिए। सरकार तो सिर्फ रुकी गाड़ी को धक्का देने के लिए ही रहे। लोगों को यह बात बराबर समझ लेनी चाहिए। सभी बातों में सरकार से आशा रख कर न बैठें, न बैठना चाहिए।

आने वाले चुनाव के समय हम जनता के सच्चे सेवक को ही चुनेंगे। पैसा, पद और किसी भी प्रकार का लालच देनेवालों को नहीं। मैं जीवित रहूंगा तो सब जगह घूम-घूमकर लोगों को समझाऊंगा। किसी की शह में आये बिना सच्चे व्यक्ति ही चुने जाएं। लोगों से मेरी प्रार्थना है कि वे यह सभी काम अहिंसा द्वारा ही करें। हिंसा का आश्रय कभी भी न लें। उस मार्ग से आज तक कोई लाभ नहीं हुआ है। उलझन और समस्या खड़ी हो जाती है। निश्चय और परिश्रम से आगे बढ़ें।

—रविशंकर महाराज

मैत्री बनायी, लेकिन रशिया का 'डामीनन्स' स्वीकारा नहीं। अरब देशों के साथ सहयोग है, लेकिन इसराइल को मान्यता है। पहले तो अरब देश इसराइल को खत्म करना चाहते हैं, उनकी सीमा—'बाउंडरी' तय करना चाहते हैं। इस वास्ते मुझे उम्मीद है कि जहां तक 'फॉरेन पॉलीसी' का ताल्लुक है वहां तक अपनी, हिंदुस्तान की भूमिका अच्छी रहेगी।

दोनों कोरिया एक हो गये हैं, चीन और जापान का मेल हो रहा है, इसराइल का मसला हल हो रहा है, इंडोचीन का मसला हल हो गया है, वहां लड़ाई कम हो रही है, अमरीका और चीन का ताल्लुक अच्छा बन रहा है। यहां भी बांगला देश आजाद हो गया है, उसका हिन्दुस्तान के साथ प्रेम-संबंध हो गया है। हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बीच संबंध अच्छा बनने की आशा है, क्योंकि पाकिस्तान ने बांगला देश को मान्यता दी है। यह कुल का कुल सुझाता है कि विश्व शांति की तरफ जा रहा है।

अमृतभाई : लेकिन देश के अंदर तो अशांति बढ़ रही है।

बाबा : देश के अंदर अशांति बढ़ रही है, ऐसा भास होता होगा। लेकिन आज भी पंढरपुर (महाराष्ट्र का तीर्थक्षेत्र) की यात्रा में लाखों लोग जाते हैं। (महाराष्ट्र) में ज्ञानदेव, तुकाराम के ग्रंथ जितने पढ़े जाते हैं उतने और कोई ग्रंथ पढ़े नहीं जाते। उत्तरप्रदेश में तुलसी-रामायण जितनी छापी जाती है उतनी दूसरी कोई भी किताब नहीं छपती। इस साल अकेले भारत में बाइबल की साठ लाख प्रतियां बिकीं। इस सबका अर्थ है कि जनता को अकल है। अपना भला कौन करेगा, तारक कौन है, हमारा उद्धार कौन करेगा, यह जनता जानती है। ये राजनैतिक नेता तो आयेंगे और जायेंगे। इनको कोई याद भी नहीं करेगा। इस वास्ते हिंदुस्तान की जनता का दिमाग अपने ठिकाने पर है। दिमाग बिगड़ा है उनका, जिन पर पश्चिम के विचार का असर हुआ है।

❖

चमड़े के लिए भैंस को मत मारो भाई

चिमन भाई पटेल का विधानसभा से इस्तीफा और फिर कांग्रेस से उनका निष्कासन दो बातों को साफ करता है। एक, गुजरात विधानसभा का भंग होना अनिवार्य है; दो, कांग्रेस हाईकमान और केन्द्रीय सरकार अभी इसके खिलाफ है। इन्दिरा जी से ले कर हर बड़े नेता ने कहा है कि वे गुजरात के लोगों की इस मांग पर खुले दिमाग से विचार कर सकने हैं लेकिन इसके लिए पहले यह जरूरी है कि वहां शांति स्थापित हो। केन्द्र हिंसा और जोर जबरदस्ती के सामने झुकना नहीं चाहता और गुजरात की जनता चाहती है कि जब तक उसकी मांग पूरी नहीं होती आंदोलन चलता रहेगा। एक सौ अड़सठ सदस्यों की विधानसभा से लगभग साठ विधायक इस्तीफा दे चुके हैं। रोज ही कहीं न कहीं गोलीबार होता है, लोग मरते हैं और कई नगरों मे एक साथ कर्फ्यू लगता है। उपद्रव और लूटपाट करने वालो को न पुलिस रोक पा रही है न नवनिर्माण- युवक समिति के नेता। प्रतिष्ठा का प्रश्न मासूम लोगों की जान से खेल रहा है।

नई दिल्ली के नेताओं के सामने अब यह तो स्पष्ट हो ही जाना चाहिए कि गुजरात में वे नयी कांग्रेस सरकार बनाने का अपना इरादा पूरा नहीं कर सकते। चिमन भाई को दिल्ली बुला कर आखिर यही तो कहा गया था कि वे विधायक दल के नेता पद से इस्तीफा दे दें। साथ ही भीना भाई दर्जी से कहा गया था कि वे गुजरात कांग्रेस का अध्यक्ष पद छोड़ दें। चिमन भाई और भीना भाई से ये इस्तीफे इसीलिए मांगे गये थे कि इन दोनों की दुश्मनी खत्म कर के और उन्हें हटा कर नई सरकार बनाने की कोशिश की जाये। लेकिन चिमन भाई ने तय किया कि "मैं नहीं तो कांग्रेस नहीं" और केन्द्रीय नेताओं को गच्चा देकर उन्होंने जनता के सामने अपने को एक शहीद के रूप मे पेश कर दिया। अब वे नई पार्टी बनाने का सोच रहे हैं। चिमन भाई भले ही हद से ज्यादा बदनाम हो गये हो और उनके इरादो मे किसी को भी विश्वास न हो पर उनके इस्तीफे से इतना तो स्पष्ट है कि गुजरात कांग्रेस की अन्दरूनी दरारें केन्द्र को वहां दूसरा प्रयोग नहीं करने देंगी। हाईकमान को अगर अपने पार्टी हित गुजरात मे सुरक्षित रखना है तो विधानसभा तत्काल भंग करनी चाहिए क्योंकि जो आंदोलन पहले चिमन भाई पर केन्द्रित था वह अब केन्द्र सरकार के खिलाफ हो गया है और अगर रोज लोग इसी तरह मरते रहे तो कांग्रेस की मिट्टी पलीत हो जायेगी।

यह सही है कि गुजरात का आंदोलन अहिंसक नहीं है। लेकिन इसका दोष विद्यार्थियों को नहीं दिया जा सकता। आजादी के बाद लोगों में यह विश्वास सरकारों ने ही जमाया है कि दबाव के बिना वे कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हो सकती। गुजरात के बारे में जो रवैया केन्द्र ने अपनाया है वैसा ही हर बार अपनाया है और हर बार सरकारें हिंसा-लूटमार और व्यापक अशांति के बाद झुकी है। हिंसा को यह बढ़ावा सरकार की निरर्थक हिंसा से मिला है और लोकतन्त्र को जितना नुकसान इस हिंसक प्रवृत्ति से हुआ है उतना देश में व्याप्त व्यापक भ्रष्टाचार से भी नहीं हुआ होगा। गुजरात मे प्रशासन की ओर से दो महीनों से लगातार चल रही हिंसा का क्या औचित्य है? प्रधानमन्त्री ने कहा है कि गुजरात मे जो कुछ हुआ वह तो एक रिहर्सल मात्र है। देश को बर्बाद करने और प्रजातन्त्र को समाप्त करने का एक बहुत बड़ा षडयन्त्र इस देश मे चल रहा है। इस तरह की बातें कम्युनिस्ट देशो मे ही कही जाती हैं कि देश को बाहर से और भीतर से प्रतिक्रियावादी शक्तियों से खतरा है। खतरे का हल्ला दिखा कर जनता को एक करना और उसकी आकांक्षाओं को दबाना निश्चित ही लोकतांत्रिक नहीं है। इस तरह के तौर तरीकों से न तो प्रजातन्त्र मजबूत होता है न जनता की शक्ति बढ़ती है। जिस सरकार मे जनता का विश्वास न रहा हो और जिसकी अक्षमता बुरी तरह जाहिर हो गई हो उसे हटाने की मांग बिलकुल प्रजातांत्रिक है। जिन विधायकों की ईमानदारी और प्रामाणिकता पर जनता का विश्वास उठ गया हो वे भले ही दो साल पहले प्रचण्ड बहुमत से जीते हो पर अब उन्हें विधायक बनने का कोई भी नैतिक अधिकार नहीं है। प्रजातन्त्र की आत्मा की सरेआम हत्या करके आप उस के शरीर को जीवित नहीं रख सकते। प्रजातंत्र की आत्मा जनता का विश्वास है और इस विश्वास को भंग करने वाली कोई भी सरकार प्रजातांत्रिक नहीं हो सकती।

भय दिखाया जाता है कि गुजरात मे जिस तरह मुख्यमन्त्री को हटाया गया और विधायकों से इस्तीफे लिये जा रहे हैं वैसा अगर देश मे सब जगह होने लगा तो प्रजातांत्रिक व्यवस्था ही नष्ट हो जायेगी। यह नहीं कहा जाता कि गुजरात मे जिस तरह भ्रष्टाचार हुआ और सरकार जिस तरह अनाज और दूसरी चीजें मुहैया कराने में विफल हुई और अपने आचरण तथा अक्षमता को छुपाने के लिए उसने जो हिंसक तौर तरीके अपनाये उनसे प्रजातन्त्र मे ही जनता का विश्वास उठ जायेगा। लोग आखिर क्यों अपने प्रतिनिधियों को विधानसभा में भेजते हैं और ये प्रतिनिधि आखिर किस लिए सरकार बनाते हैं? आपस की विश्वसनीयता और सरकार की क्षमता अगर इतनी बुरी तरह टूट जाती है तो प्रजातन्त्र की व्यवस्था का ऊपरी ढांचा कैसे पवित्र हो सकता है जिसकी रक्षा के लिए सेना और पुलिस को लगातार गोलियां चलानी पड़ें? चमड़े के लिए भैंस को मारना प्रजातन्त्र नहीं है।

गुजरात के आंदोलन में जनता की ओर से हुई हिंसा चाहे जितनी अक्षम्य हो पर एक तथ्य वहां के विद्यार्थियों और लोगों ने अभूतपूर्व रूप से स्थापित कर दिया है। अब कोई भी सरकार इस देश मे भ्रष्टाचार कर के टिकी नहीं रह सकती। जनता का अंकुश इतने वर्षों से सरकारों पर कहीं नहीं था वह कम से कम गुजरात में तो कारगर हुआ। लोगों को यह विश्वास तो हुआ कि जिसे वे गद्दी पर बैठा सकते हैं उसे उतार भी सकते हैं, जिसे विधानसभा में भेज सकते हैं उसे

(शेष पृष्ठ १२ पर)

सहरसा से

एक तटस्थ नजर से आन्दोलन

—कुमार प्रशांत

कोसी से निकली नहरों से सहरसा जिले के क्षेत्र पटे हैं। ऐसी एक नहर में, घुटने भर पानी ठेल कर हम बाइसी गोट नाम के टोले में पहुंचे। बाइसी पंचायत के इस टोले में पहुंचने के लिए पांव के अतिरिक्त और साधन नहीं है।

यहीं मिले महाकान्त बाबू। देखने में महाकान्त बाबू सामान्य हैं। पान की लाली से सने उनके चेहरे पर एक आत्मीयता झलकती है। विनोबा के विराट व्यक्तित्व के किस पहलू ने कब, किसको, कहां, अपनी ओर खींच लिया इसका प्रमाण गांवों में मिलने वाले कई 'महाकान्त बाबुओं' से मिलता है। अपनी भूदान-यात्रा के क्रम में जब विनोबा इस गांव में आये थे, महाकान्त बाबू और कुछ लोग उनके विचारों से इस प्रकार खिंचे कि अपने टोले का टोला दान कर दिया। ग्राम सभा-सा एक संगठन गठित करने की कोशिश भी की। कुछ काम चला फिर विनोबा गये; उलझन आई, काम गया, समय के प्रवाह ने महाकान्त बाबू को इस दीवानगी से निकाल कर कहीं और पहुंचा दिया। इस काम में एक बार खूब डूबकर लगे महाकान्त बाबू काफी समय से इसके तटस्थ दर्शक रहे हैं। इस बार वे फिर मिले तो बातचीत पुस्तकों से शुरू हुई :

"आपने जयप्रकाश बाबू की नई पुस्तक 'मेरी विचार यात्रा' देखी है क्या ?"

कुछ देर चुप रह कर वे बोले, "नहीं देखी है। इन पुस्तकों से, प्रचार से यह आन्दोलन चलने वाला नहीं है। मेरे पास सैकड़ों रुपए की किताबें हैं, उनको पढ़ा है मैंने, समझा भी है। पर क्या करता हूं मैं आन्दोलन के लिए ? मैं तो कहूंगा कि इसमें ज्यादा अनुकूल वे हैं जो इस विचार को समझते नहीं, पुस्तकें पढ़ते नहीं, उनमें आज भी इस विचार के प्रति श्रद्धा है।

"पुस्तकों से ही यह आन्दोलन चलेगा, ऐसा तो हम भी नहीं मानते, अन्यथा पुस्तकों की दुकान खोलने का ही आन्दोलन चलायें, फिर भी पुस्तकों का अपना महत्त्व तो है ही।"

"हां महत्त्व तो है, पर इस आन्दोलन की असलियत से आप लोगों को वाकिफ होना ही चाहिए। आप लोग जितने सक्रिय हैं, क्षेत्र में आन्दोलन उतना ही निष्प्रभ है, लोगों में कोई रुचि नहीं है। आपके साथ जो लोग आते हैं वे सब पर्दे में रह कर आपका काम करते हैं। पथ की बात और मन की बात में बड़ी दूरी है।

"क्या कारण है इसका ?"

"कारण तो स्पष्ट है कि आप जिसको काम सुपुर्द करते हैं वे कुछ करते नहीं हैं। कांग्रेस का चवन्निया मेम्बर भी होता है तो कम से कम घूम कर चंदा तो इकट्ठा करता है। आपके लोग इसके लिए भी घर-घर नहीं घूमते हैं। घर-घर से कुछ इकट्ठा कीजिये तब सबको मालूम होगा कि सर्वोदय का काम अब भी चल रहा है। उसके लिए हम पैसा दे रहे हैं। पर आप एक तो कुछ करेंगे नहीं और करेंगे भी तो बाजार ■ आगे आयेंगे नहीं।"

"परिस्थिति तो आपने ठीक बयान की। पर इस आन्दोलन को आगे बढ़ाने के लिए मनुष्य का ही माध्यम तो है। उसमें कुछ नहीं करने वाले हैं तो कुछ करने वाले भी हैं। सही आदमी ही आये ऐसी कोई प्रक्रिया आप सुझा सकते हैं क्या ?"

"आप लोगों की प्रक्रिया गलत है, ऐसा तो मैं नहीं कह सकता हूं। काम आगे बढ़ाने के लिए माध्यम तो खोजना ही होगा। पर आंदोलन को अब तक देख कर मैं कह सकता हूं कि इसमें दो ही तरह के लोग हैं। एक वर्ग उनका है जो चोटी के त्यागी, तपस्वी, विचारक हैं और दूसरा वर्ग उनका है जो एकदम मूढ़, नौकरी की भावना से आये हैं और इस आंदोलन को बेच कर खा रहे हैं। मध्यमवर्गीय कार्यकर्ता आपके साथ नहीं आया है। जब तक इन के बीच की कड़ी नहीं बनती तब तक आंदोलन इसी अवस्था में रहेगा। मैं मानता हूं कि यह विचार जितना क्रांतिकारी है उतने ही क्रांतिकारी कार्यकर्ता खोजने होंगे। आज जो स्थापित लोग हैं समाज में, अधिकारी, मंत्री, नेता आदि "वही आपके मंच पर भी हैं। अगली कतार में खड़े हैं। इनकी जगह एक नई जमात खड़ी करनी पड़ेगी। युवकों में प्रवेश कीजिये, मजदूरों में खोजिये वह नहीं है आपके साथ। यह आंदोलन जैसे-जैसे जड़ पकड़ेगा 'लोकल लीडरशिप' निष्प्रभ होती जायेगी और यही लीडरशिप आपके साथ है। यह क्यों चाहेगी कि आपका काम सफल हो ? आपके साथ रह कर ये आपकी जड़ काटते हैं।"

"हम तो युवक, मजदूर, सबसे मिलते हैं, समझाते हैं पर वह इतना चेतन नहीं है कि आगे आये, वह आयेगा कैसे ?"

"आज की 'लीडरशिप' या जो आपके साथ हैं, उनके 'समानान्तर' एक टीम बनानी होगी। लोकल आदमी के बीच बैठना होगा और जहां जो मिले उसे कुछ न कुछ काम सौंपते चलना होगा। आप लोग तो गांव-गांव घूमते हैं, वहीं से छानना शुरू किया जाये।"

फिर भूदान से चल कर आंदोलन कहां तक पहुंचा है, किस जगह है और कार्यकर्ता की भूमिका क्या है आदि की चर्चा होती है। महाकान्त बाबू तब के अनुभवी हैं, पर विचार से आज के साथ हैं। आज आंदोलन जहां है उससे उन्हें समाधान नजर आता है।

"अब काम प्रारम्भ करना है और आप को पुरानी भूमिका निभानी है।"

"ठीक है मुझसे जहां तक होगा मैं करूंगा। बचपन से ही विनोबा का भक्त रहा हूं। क्यों पूछेंगे तो नहीं बता सकूंगा। पर विनोबा कहते हैं तो कुछ गलत होगा नहीं यही मान कर तब काम प्रारम्भ किया था। विचार समझ कर लगा कि यह काम आज →

नहीं तो कल तो होगा ही। यह यदि बुरा है तो भी 'नेसेसरी इविल' है।''

''सी० एम० कालेज में पढ़ता था तब शिवानन्द भाई साथ थे हमारे। तब मैं इसका समर्थक था और वे नहीं थे। आज वे इतना आगे बढ़ कर काम कर रहे हैं, मैं पीछे छूट गया हूं।''

''मैं भी चाहता हूं इस टोले से छूटा काम, इसी टोले से प्रारम्भ हो। एक बार फिर प्रारम्भ किया जाये।''

चलते-चलते सभा की तारीख वगैरह तय होती है और 'मेरी विचार यात्रा' के साथ-साथ वे दो चार पुस्तकें और खरीद लेते हैं।

महाकात बाबू के गांव में काम होगा — महाकात बाबू ने कहा है।

पृष्ठ १० का शेष

वापस भी बुला सकते हैं। एक मूल्य के नाते यह स्थापना प्रजातन्त्र को मजबूत और वास्तविक बनायेगी लेकिन दुख है कि यह सब अहिंसा से नहीं हुआ। दबाव और दमन में विश्वास करने वाले राजनीतिज्ञों के लिए यह सबक भले ही ठीक हो लेकिन व्यापक लोकहित की दृष्टि से यह शंकास्पद है। अगर इस आंदोलन से कोई रचना नहीं होती, व्यवस्था का कोई विकल्प नहीं उभरता तो इतने लोगों का मरना, घायल होना और सम्पत्ति का नष्ट होना बेमानी होगा। यथास्थिति तोड़ना जरूरी है लेकिन वैकल्पिक व्यवस्था खड़ी करना अनिवार्य है। सवाल यह है कि विधानसभा के विर्सजन के बाद क्या?

अगर इसी तरह के पार्टीतन्त्र को चलने दिया गया इसी तरह चुनाव होते गये और इसी तरह सरकारें बनती टूटती रहीं तो इससे कोई परिवर्तन नहीं होगा। उलटे तानाशाही का मार्ग प्रशस्त होगा। इसलिए अनिवार्य है कि गुजरात में वैकल्पिक व्यवस्था का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया जाये। रविशंकर महाराज के नेतृत्व में वहां शुरू हुआ लोकस्वराज्य आंदोलन अन्धेरे के क्षितिज पर सुबह के आभास की तरह उठ रहा है। इस आंदोलन ने वहां लोगों को स्थानीय रूप से और पार्टी-निरपेक्ष ढंग से संगठित करना शुरू किया है। अगर गांवों में ग्रामसभाएं और शहरों में पड़ोससभाएं बनाने और उन्हें सक्रिय करने में यह आंदोलन सफल हुआ तो पहल पार्टियों के हाथों से निकल कर लोगों के हाथ में आ सकती है। गुजरात में परिस्थिति सर्वसम्मति से चुने जा सकने वाले लोकउम्मीदवारों के पक्ष में है। लोकनीति में विश्वास रखने वालों के लिए गुजरात में अवसर है और चुनौती भी।

प्रभाष जोशी

● क्षेत्रीय श्री गांधी आश्रम इलाहाबाद का मुख्य कार्यालय जो अब तक इलाहाबाद में था, काम की सहूलियत के लिए जनवरी २६ से हरपालपुर (जिला छतरपुर (म० प्र०) चला गया है। भविष्य में कार्यालय सम्बन्धित जो भी पत्र-व्यवहार हो वह इस नये पते पर ही किया जाये।

● अखिल भारतीय शान्ति सेना मण्डल द्वारा आयोजित शान्ति सेना जंगम विद्यापीठ का पहला शिविर १६ मार्च से १८ अप्रैल '७४ तक गुजरात में होगा।

नक्कारखाने में तूती की आवाज.......

(पेज ४ का बाकी)

से उन्हें रोके रहा। फिर सशस्त्र सिपाहियों की परेड और प्रायः हर मतदान केन्द्र पर उनकी तैनाती भी अमन चैन का कारण थी। मैं मानता हूं कि ये नकारात्मक कारण हैं और शांति के सकारात्मक कारणों में मतदाता शिक्षण अभियान का काफी बड़ा हाथ है। फिर भी कहना होगा कि शांति बनाये रखने के अलावा इस अभियान का एक और लक्ष्य था कि चुनाव स्वतन्त्र और निष्पक्ष हो। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए समय और शक्ति दोनों की ही जरूरत थी और इन दोनों की ही अभियान के पास कमी थी। जितना समय और जितने लोग इस अभियान के पास थे उसे देखते हुए प्रचार और सम्पर्क ही हो सकता था और यह आगरा में काफी अच्छी तरह से हुआ।

हर जगह पार्टियों के पोस्टर के साथ अभियान का पोस्टर भी लगा था जो मतदाताओं को अपना फैसला करने में मदद देता था। अभियान समिति ▇ लोग जब मतदान के समय आगरा पूर्व के मतदान केंद्रों पर घूमे तो पार्टियों के कार्यकर्त्ताओं और मतदाताओं ने पहचान की मुस्कान के साथ उनका स्वागत किया। इस पहचान के पीछे पर्चों और जीप कारों पर लगे लाउडस्पीकर से किया गया प्रचार और लगभग सौ स्थानों पर की गई आम सभायें हैं। आगरा की समिति के सभी लोग प्रतिष्ठित नागरिक हैं और अपने क्षेत्र में उनका काफी नैतिक असर है। इस असर के कारण उन्हें दुविधा भी हुई। लोगों ने उनसे पूछा कि वे किसे वोट दें। चूंकि अभियान का उद्देश्य ही मतदाता को स्वयं अपना निर्णय करने की प्रेरणा देना था इसलिये इन्हें चुप रह जाना पड़ा। समिति के संयोजक कन्हैयालाल एडवोकेट ने कहा कि चुनाव में कोई पहली बार मतदाता शिक्षण हमने नहीं किया है। पहले भी किया था लेकिन हम लोगों में उत्साह नहीं आया। इस बार जे० पी० के आने से स्वतन्त्र और निष्पक्ष चुनाव के प्रचार का वातावरण बना। लेकिन हमारे पास मुश्किल से पन्द्रह-बीस दिन थे। प्रचार सामग्री भी लखनऊ से बराबर मिली नहीं। पोस्टर-पर्चे सब यहीं छपवाये गये। यहां एक चुनावी सभा बिगाड़ी गई थी और हमें डर था कि इसकी प्रतिक्रिया होगी। हमने प्रचार किया कि सभा भंग करने वालों को वोट मत दीजिए। इसका अच्छा असर हुआ और फिर कोई सभा बिगाड़ी नहीं गई। हमें पार्टियों और लोगों दोनों से ही सहयोग मिला। यहां छः व्यक्तियों को चुनाव आयोग की ओर से पर्यवेक्षक के पास मिले थे। हमारी राय है कि मतदान अधिकारियों और कर्मचारियों को चुनाव कानून और नियमों का ज्ञान नहीं था। कई जगह मतदाता सूचियों में हाथ से ही मनमाने सुधार किये गये थे।

लोचन प्रसाद ने कहा कि मतदान में उत्साह की कमी थी। वे ही लोग वोट डालने आये जिन्हें या तो उत्तेजित किया गया था या सवारियां दी गई थीं। मतदान केन्द्र के भीतर तक प्रचार हुआ है इस बार। डॉ० अग्रवाल ने कहा कि रिक्शों और कारों पर प्रतिबन्ध लगाना अगर मुश्किल था तो प्रशासन कम से कम ट्रकों को तो रोक ही सकता था। ट्रकों में सवारियां वैसे भी नहीं बैठाई जा सकतीं, वोटरों को तो खैर लाया ही नहीं जा सकता।

मनोज भाई ने कहा कि इस अभियान का सबसे उत्साहवर्धक पहलू यह है कि हम आम लोगों में प्रवेश कर सके। हम बहुत समय से सोच रहे थे कि आगरा जैसे शहर में सार्वजनिक मामलों में सर्वोदय की पहुंच कैसे हो। अब हमें लगता है कि ऐसे अवसर पर लोग हमारी बात सुनने को तैयार रहते हैं। हमारा प्रचार तटस्थ और अविरोधी था फिर भी लोग उसे आसानी से और ध्यान से सुनने आये। जनता को छूने वाले मामले अगर हम उठायें तो सर्वोदय की प्रासंगिकता और प्रभावशीलता बढ़ती है।

कृष्णचन्द्र सहाय ने कहा कि चुनाव समाप्त हुआ और अब हम फिर सुस्त होकर बैठ जायेंगे। तात्कालिक कामकाज के साथ यही दिक्कत है। तात्कालिक और बुनियादी कामों को जोड़ने की कला अभी हमें सधी नहीं है। मतदाता शिक्षण अभियान को लोकस्वराज्य के बुनियादी काम से जोड़ना चाहिए।

इस चर्चा में रामनिवास यादव नामक नवयुवक काफी उद्विग्न रहे। उनका आग्रह था कि चुनाव में हमें पर्यवेक्षक ही नहीं रहना था। सीधी कार्यवाही का भी कोई कार्यक्रम बनाना चाहिए था। समय की कमी का बहाना हम अभी तो बना सकते हैं लेकिन ७६ में फिर चुनाव होने हैं। तब लोकस्वराज्य के विचार को कसौटी पर ला सकते हैं। लेकिन इसके लिए अभी से यहीं से काम करना होगा।

—एक संवाददाता

मुजफ्फरनगर में उपवासदान, आचार्यकुल के सदस्य व सर्वोदय पात्रों की संख्या बढ़ाने के लिए संगठित काम शुरू कर दिया गया है। शहर में घर-घर से सम्पर्क करने के लिए मोहल्ला सभाओं का आयोजन किया जा रहा है। जनवरी महीने में जैन गर्ल्स कालेज, आर्य कन्या इन्टर कालेज तथा मोहल्ला पत्थर वाली सराय में सभाएं हुई। इन सभाओं में उपवासदान का संकल्प देने वाली महिलाओं ने हरदम सिंह जी से कहा कि आर्थिक हालत देखते हुए कई घरों के लिए यह सम्भव नहीं है कि साल भर के उपवास दान की रकम एक साथ ही भेज सकें। उन्हें प्रतिमाह उपवास से बची रकम भेजने में अधिक सुविधा होगी। स्थानीय सनातन धर्म इन्टर कालेज में आचार्यकुल की एक शाखा खोली गई है। आचार्यकुल के नये सदस्यों में मासिक "मैत्री" पत्रिका के ग्राहक भी बनाये जा रहे हैं।

• कुछ चुनाव की • कुछ बजट की • कुछ.........

बहुगुणा फिर मुख्यमंत्री

× उत्तर प्रदेश में हुए आमचुनाव में कांग्रेस को ४२४ में से २१५ सीटें मिली। भारतीय क्रांतिदल, समाजवादी और मुसलिम मजलिस के त्रिगुट को १०६, जनसंघ को ६१, संगठन कांग्रेस को १०, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी को १६, निर्दलीय अन्य पार्टियों को ११ सीटें मिली। एक सीट के लिए चुनाव होना है। बहुमत के लिए कांग्रेस को २१३ सीटें चाहिए थी। चू कि उसे २१५ सीटें मिलीं इसलिए पांच मार्च को हेमवती नन्दन बहुगुणा के नेतृत्व में उसने सरकार बनायी। बहुगुणा मंत्रीमंडल में अभी ग्यारह मंत्री हैं।

उड़ीसा में अल्पमत सरकार

× उड़ीसा में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। १४६ में से उसे ६६, उत्कल कांग्रेस, स्वतन्त्र और समाजवादियों की प्रगति पार्टी को ५६, कम्युनिस्ट पार्टी को ७, कम्युनिस्ट मार्क्सिस्ट और झारखंड को ३-३, तथा निर्दलयी और दूसरी पार्टियों को बाकी की ८ सीटें मिलीं। बहुमत के लिए कांग्रेस को ७४ सीटें चाहिए थी। चू कि कम्युनिस्ट पार्टी का कांग्रेस को समर्थन है इसलिए श्रीमती नन्दिनी सतपथी ने छः मार्च को सरकार बनायी। उनके मंत्री मण्डल में अठारह सदस्य हैं।

मणिपुर में संकट

× मणिपुर में भी किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। विधान सभा की साठ सीटों में से मणिपुर पीपुल्स पार्टी को २० मणिपुर हिल्स यूनियन को १२ कांग्रेस को १३, कम्युनिस्ट पार्टी को ६, समाजवादी पार्टी और कुकी नेशनल एसेम्बली को २-२, और निर्दलीय को। मणिपुर पीपुल्स पार्टी ने मणिपुर हिल्स यूनियन और चार निर्दलीय सदस्यों की सहायता से चार मार्च को सरकार बनाई लेकिन दूसरे ही दिन हिल्स यूनियन ने अपना समर्थन वापस ले लिया। हिल्स यूनियन के नेता शैजा ने कांग्रेस, कम्युनिस्ट और निर्दलियों की सहायता से नयी सरकार बनाने का फैसला लिया।

नागालैण्ड फ्रन्ट की सरकार

× नागालैण्ड में हुए चुनाव में भी किसी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। साठ सदस्यों की विधानसभा में यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रन्ट को २५ नागालैण्ड नेशलिस्ट आर्गनाइजेशन को २३ और निर्दलियों को बाकी की तेरह सीटें मिली। नागालैण्ड में यह तीसरा आमचुनाव था। पिछली सरकार में डेमोक्रेटिक फ्रन्ट विरोधी पार्टी थी लेकिन अब उसने निर्दलीय सहयोग से सरकार बनायी है। विजोल के मंत्रीमण्डल में पन्द्रह सदस्य हैं।

इंग्लैण्ड में फिर चुनाव

× लेबर पार्टी के नेता हेरल्ड विलसन ने ब्रिटेन में नयी सरकार बनायी है। कन्जरवेटिव पार्टी के नेता एडवर्ड हीथ ने २८ फरवरी को हुए चुनाव में हार जाने के बाद इस्तीफा दे दिया था। कोयला खदान के मजदूरों द्वारा की गयी हड़ताल के कारण हीथ ने नये चुनाव करवाये थे। चुनाव में संसद की ६३५ सीटों में से लेबर को ३०१, कन्जरवेटिव को २९६ और लिबरल को १४ सीटें मिली। किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला। कन्जरवेटिव ने लिबरल की सहायता से सरकार बनाना चाहा पर गठबन्धन नहीं जमा। आखिर रानी ने विलसन को अल्पमत सरकार बनाने का निमन्त्रण दिया। लेकिन लगता है कि इंग्लैण्ड में फिर से चुनाव करवाने पड़ेंगे।

रेल घाटे में

× २८ फरवरी को वित्तमंत्री यशवन्त राव चव्हाण ने अगले वर्ष के लिए फिर घाटे का बजट संसद के सामने रखा। कुल घाटा उन्होंने ३११ करोड़ रुपयों का माना है जिस में से २५५ करोड़ का घाटा नये टैक्सों से पूरा किया जायेगा। ये टैक्स पेट्रोलियम पदार्थों, टेलीविजन, रेफ्रीजरेटर, साबुन, सोडा वाटर, टूथपेस्ट, महीन कपड़ा, मोटर, स्कूटर आदि पर लगेंगे। पोस्टकार्ड पन्द्रह पैसे का और अन्तर्देशीय पत्र बीस पैसे का हो जायेगा। इनके बावजूद १२५ करोड़ का घाटा बचा ही रहेगा। पिछले वित्तीय वर्ष में ६५० करोड़ का घाटा रहा।

बढ़ता हुआ घाटा

× २७ फरवरी को रेलमन्त्री ललित नारायण मिश्र ने भी अगले साल का घाटे का ही रेल बजट रखा। मुसाफिरों का किराया और माल ढुलाई बढ़ा कर १२८ करोड़ की अतिरिक्त आय की जायेगी। फिर भी ५२.७९ करोड़ का घाटा रहेगा। गये साल ६६.७५ करोड़ का घाटा था। आठ साल पहले तक रेलवे कमाई करती थी और देश के राजस्व में उसका योगदान होता था। लेकिन अब उसमें भी घाटा है।

नये गठित नैनीताल जिला सर्वोदय मंडल ने तय किया है कि रुद्रपुर तथा बाजपुर प्रखंडों के हर गांव से सम्पर्क कर ग्रामस्वराज्य समितियों का गठन किया जाये। इन्हीं दो प्रखंडों में उपवास दान तथा सर्वोदय-विचार की पत्रिकाओं के प्रसार के लिए भी काम किया जायेगा। नये गठित मंडल ने सर्वोदय पात्रों की संख्या बढ़ाने का काम भी घर से ही शुरू किया है। अब हर लोक सेवक के यहां सर्वोदय पात्र रखा जा रहा है।

सभी भाषाओं के लिये देवनागरी लिपिः विनोबा

केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि द्वारा संयोजित देवनागरी लिपि संगोष्ठी २३ और २४ फरवरी, १९७४ को परधाम आश्रम पवनार में सपन्न हुई। विनोबा ने उसका उद्‌घाटन किया और उसमें देश के विभिन्न भागों के पचास प्रमुख विद्वान, लेखक, सम्पादक और शिक्षा शास्त्री शामिल हुए।

इस संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य पूज्य विनोबा जी के इस विचार को स्वीकार करना और लोकप्रिय बनाना था कि भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं और एशिया की भी कई भाषाओं के लिए उनकी अपनी विशिष्ट लिपियों के अलावा देवनागरी लिपि का भी प्रयोग किया जाये ताकि हमारी सांस्कृतिक एकता अधिक मजबूत बन सके। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि एक निश्चित कार्ययोजना बनायी जाये।

दो दिन की चर्चा के बाद निम्नलिखित सर्वानुमति प्रकट हुई :

(१) यह संगोष्ठी ऋषि विनोबा के इस प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करती है कि आपसी सांस्कृतिक एकता को समृद्ध बनाने के लिए सभी भारतीय भाषाओं और एशिया की भी कई भाषाओं के लिए देवनागरी का एक अतिरिक्त लिपि के रूप में इस्तेमाल किया जाय। आवश्यकतानुसार नागरी लिपि में कुछ अन्य ध्वनियों को शामिल किया जा सकता है।

(२) इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए केन्द्रीय शासन, राज्य सरकारें, शिक्षण और बहुत-सी रचनात्मक संस्थाओं के सहयोग से एक कार्य योजना तैयार की जाये। इस योजना में नीचे लिखे उद्देश्य शामिल किये जा सकते हैं।

(अ) विभिन्न भारतीय भाषाओं की उत्कृष्ट कृतियां देवनागरी लिपि में और हिन्दी का ऊंचा साहित्य प्रादेशिक लिपियों में प्रकाशित करने की व्यवस्था की जाय।

(आ) केन्द्रीय शासन की ओर से इस समय भारतीय भाषाओं के तार देवनागरी लिपि में भेजने की जो व्यवस्था है उसका आम जनता द्वारा पूरा लाभ उठाया जाना चाहिए।

(इ) सभी केन्द्रीय कानून विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में और देवनागरी लिपि में प्रकाशित किये जायें।

देव नागरी लिपि संगोष्ठी में विनोबा और श्री श्रीमन्नारायण

(ई) भारतीय भाषाओं की दैनिक और साप्ताहिक पत्र-पत्रिकाओं को प्रोत्साहित किया जाय कि वे अपने कुछ कालमों में प्रादेशिक भाषा के समाचार नागरी लिपि में भी पाठकों के शिक्षण के लिए प्रकाशित करते रहें।

(उ) राज्य सरकारों से निवेदन किया जाय कि वे स्कूलों की पाठ्य-पुस्तकें प्रादेशिक तथा देवनागरी दोनों ही लिपियों में प्रकाशित करें और विद्यार्थियों को विकल्प हो कि वे किसी भी लिपि में अपनी भाषा का अध्ययन कर सकें।

(ऊ) राष्ट्रीयकृत बैंक, जीवन बीमा आयोग और अन्य सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाएं अपने निवेदन-पत्र आदि प्रादेशिक भाषाओं किन्तु नागरी लिपि में प्रकाशित करें।

(ए) इसी प्रकार की नागरीलिपि संगोष्ठी प्रत्येक राज्य में आयोजित की जाय ताकि इस विचार का तेजी से प्रचार किया जा सके।

ये मुद्दे उदाहरण के लिए दिये गये हैं, इसमें और भी मुद्दे जोड़े जा सकते हैं।

(३) इन सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए संगोष्ठी के संयोजक श्रीमन्नारायण को अधिकार दिया जाता है कि वे विनोबा जी के परामर्श से २१ सदस्यों की एक कार्यान्वयन समिति नियुक्त करें, जिसमें प्रत्येक भारतीय भाषा का कम से कम एक प्रतिनिधि रहे। इस समिति को अधिकार होगा कि वह अपने में और भी सदस्य आवश्यकतानुसार जोड़ ले।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १८ मार्च, '७४
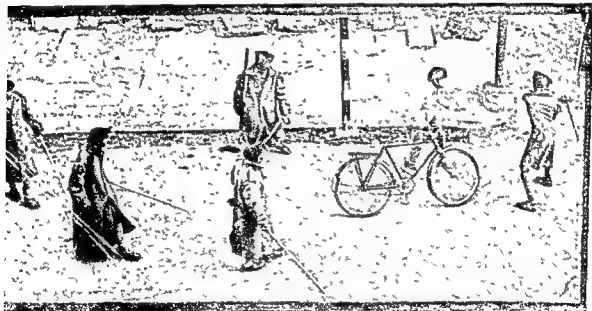
अहमदाबाद की एक सूनी सड़क पर पुलिस वालों से घिरा एक विद्यार्थी

- गुजरात के विद्यार्थी : ताजी जागरूकता शक्ति और दोषों के साथ
- शराबबन्दी : क्या जनअभिक्रम बेकार जायेगा ?

भूदान-यज्ञ

१८ मार्च, '७४

वर्ष २०　　अंक २५

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

इस अंक में

—

राजघाट कॉलोनी,
गांधी स्मारक निधि,
नई दिल्ली-११०००१

सवाल अनाज का

कुछ बातें सामने आई हैं जिनके कारण सरकार द्वारा अनाज के राष्ट्रीयकरण के प्रश्न पर फिर से विचार या कम से कम कुछ तरमीम जरूरी हो गई है। जो बातें सामने आई हैं उनमें से कुछ तो तरमीमें ही हैं; जैसे 'कृषि मूल्य आयोग' की यह सिफारिश कि सरकार गेहूं की अपनी खरीदी के भाव निहत्तर रुपये क्विंटल से बढ़ाकर नव्वे और सौ के बीच में कर दे। पिछली बार जो दाम रखे गये थे, किसानों को उन दामों पर अपना अनाज बेचते हुए लगभग ऐसा अहसास हुआ था कि उनसे बन्दूक दिखाकर गल्ला वसूल किया जा रहा है। बड़े-बड़े ज्यादातर किसान तो खिला-पिला कर इस मजबूरी से मुक्त भी हो गये थे, ऐसा कहा जाता है और उन्होंने चोरी-छुपे महंगे दामों व्यापारियों के हाथ उसे बेचा था। यदि यह सिफारिश मान ली जाये तो छोटे किसानों का कष्ट कुछ कम हो जायेगा। उपभोक्ता का कष्ट तो वितरण प्रणाली की खूबी या खराबी से कम ज्यादा होता है, उसके बारे में 'ढाक के तीन पात' रहने ही वाले हैं।

दूसरी एक सिफारिश गल्ले के रूप में लगान को स्वीकार करने की है। विनोबा बहुत दिनों से यह सुझाव देते आ रहे हैं। अब के बार जब राष्ट्रपति शिक्षा मंडल वर्धा की हीरक जयन्ती के अवसर पर वहां गये तो पहले विनोबा से मिले और अन्य अनेक बातों के बीच विनोबा ने अपना यह सुझाव सामने रखा। राष्ट्रपति ने इसे ठीक माना और कहा जा रहा है कि इस पर अमल करने का विचार हो रहा है। सवाल यह है कि गल्ले के रूप में लेने के बाद सरकार अपने द्वारा निर्णीत भावों पर खरीदी भी अनिवार्य रखेगी या नहीं। न रखे तो इस कदम से बड़ी राहत मिलेगी।

तीसरी बात पंजाब और हरियाणा में गेहूं की फसल के बिगड़ जाने की परिस्थिति है। उर्वरकों की कमी, वर्षा का अभाव और सिंचाई के लिए तेल का न होना इसका कारण है। कहा जा रहा है कि १०-१२ दिन और ऐसे ही बीत गये तो गेहूं आदि की इस मौसम की फसल अप्रत्याशित रूप से बिगड़ जायेगी। सरकार तो १०-१२ दिन में कुछ करने से रही—वर्षा हो जाये तो बात अलग है।

फिर विश्व बैंक ने कहा है कि भारत ने कई दृष्टियों से अपनी परिस्थिति को समझ और सुधारने में त्रुटि बरती है। अपनी वार्षिक रपट में विश्व बैंक ने कहा है कि भारत की अन्न की हालत पांच बरस तक शोचनीय चलने की सम्भावना है और उसने रुपया-मुद्रा में पूर्व से व्यापार का जो प्रबंध जमाया है वह धनात्मक नहीं ऋणात्मक है। बाहरी देशों से जबर्दस्त मदद की भारत को आवश्यकता पड़ेगी—वास्तव में वे देश कौन से हो सकते हैं इस पर ठीक विचार नहीं किया गया। भारतीय योजनाकारों के द्वारा ही हमें ५ अरब डालर आवश्यक होंगे-विश्व बैंक का ख्याल है कि ५ अरब से काम नहीं चलेगा; १२ अरब डालर भारत को लेने होंगे। मगर ६ अरब से ज्यादा देने की तो कोई सूरत निकाली ही नहीं जा सकती; ऐसा उसका अनुमान है। फिर चाय और सन व चीनी का हमारा निर्यात भी गिर रहा है। गल्ला जो हमने दुर्दिन के विचार से इकट्ठा किया है, उसके ख्याल में लगभग नगण्य है। बैंक ने पूर्वी और पश्चिमी सभी देशों से भारत को अधिक से अधिक मदद देने का अनुरोध किया है। मगर सवाल सबसे बड़ा तो भारत का स्वयं अपनी परिस्थिति को समझ कर कदम उठाने का है। स्वयं 'राष्ट्रीय खाद्य-सलाहकार परिषद' में अन्न के व्यापार को लेकर मतभेद जोर पकड़ता जा रहा है। बहुत से सदस्यों की राय में सरकार के साथ-साथ व्यापारियों को सीधी खरीदी और बिक्री की सुविधा दी जानी चाहिए। कुछ का तो यहां तक कहना है कि अन्न के सरकारी व्यापार को समाप्त कर दिया जाना ही श्रेयस्कर है। कुछ कहते हैं नहीं 'लेवी' अधिक उत्पादन क्षेत्रों से ही अनुपात देखकर वसूल की जाये और कम उत्पादन के क्षेत्रों से वसूली बंद कर दी जाये। कुछ की राय है कि जोत के क्षेत्र के आधार पर कुछ कम जोत वाले किसानों को एकदम छोड़ दिया जाये। गरज यह कि उन्नीस सदस्यों वाली इस परिषद में कम से कम १० प्रकार की रायें तो हैं ही। यह तो सभी मानते हैं कि इस वर्ष गेहूं की फसल कुल मिला कर पिछले वर्ष से कम आयेगी।

पंजाब और हरियाणा तथा अन्य राज्यों के मुख्यमंत्री भी केन्द्र पर गल्ले के व्यापार के संबंध में नीति बदलने की दृष्टि से जोर डाल रहे हैं।　　भ० प्र० मि०

जुलूस १६८ चूहों और उतने ही गधों का · आक्रोश की अभिव्यक्ति के नये रूप

गुजरात के विद्यार्थी

एक ताजी जागरूकता अपनी शक्ति और दोषों के साथ

—श्रवण-कुमार गर्ग

केन्द्र सरकार इस पसोपेश में है कि लगभग सत्ते विधायकों द्वारा विधानसभा से इस्तीफे दिये जाने के बावजूद भी विधानसभा भंग करे या न करे, पर गुजरात से दिल्ली आए दो-ढाई हजार विद्यार्थी (अपने तमाम आंतरिक मतभेदों के बावजूद) इस बात पर दृढ़ हैं कि जब तक विधानसभा भंग नहीं होती तब तक वे किसी की सुनने वाले नहीं हैं। दिल्ली के गुजराती समाज में रह रहे विद्यार्थियों और उनके नेताओं ने बताया कि सरकार जितनी देर करेगी मामला उतना ही बिगड़ेगा।

गुजरात के विद्यार्थियों ने दिल्ली में राष्ट्रपति गिरि और कानून मन्त्री गोखले से अपनी सम्मिलित और अलग-अलग मुलाकातों में गुजरात में फैले व्यापक भ्रष्टाचार की जानकारी दी और पुलिस तथा सेना द्वारा आम लोगों पर किए जा रहे अत्याचारों के चित्र दिखाए। सार्वजनिक जीवन, प्रशासन और व्यवसाय में फैले भ्रष्टाचार की न्यायिक जांच की मांग करते हुए विद्यार्थियों ने हितेन्द्र देसाई की सरकार से लगाकर चिमन भाई पटेल की सरकार तक के मंत्रियों पर व्यापक भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं। विद्यार्थियों ने एक भेंट में कहा कि वे पूरी विधानसभा भंग करने की मांग इसलिए कर रहे हैं कि सभी विधायक भ्रष्ट हैं और उन्होंने जनता का विश्वास खो दिया है। चिमन भाई पटेल अपने मंत्रिमण्डल की उपस्थिति में भ्रष्टाचार करते रहे और मंत्रिमंडल के भ्रष्टाचार के समय सारे विधायक सोते रहे। इसलिए विद्यार्थियों का कहना है कि ऐसे विधायक जनता के सेवक नहीं हो सकते जिनकी मौजूदगी में प्रशासन गड्ढे में गिरता रहे और वे विधानसभा में खड़े होकर आवाज भी न निकाल सकें। सभी विधायकों को इस्तीफा देकर नये सिरे से जनता का विश्वास प्राप्त करना चाहिए।

गुजरात के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री हितेन्द्र देसाई पर विद्यार्थियों का आरोप है कि १९६६-६७ में उन्होंने ८ लाख रुपये कपड़ा मिलों से इकट्ठा किए, बाबूभाई जसभाई पटेल ने गांधी नगर को राजधानी बनाने के सिलसिले में भ्रष्टाचार करके पैसा इकट्ठा किया, रसिकलाल पारिख ने धाप धा पैलेस को सरकार के लिए खरीदने में बेईमानी की, जयसुख लाल हाथी ने पत्रिका के वार्षिकियों के लिए पैसा इकट्ठा करने में भ्रष्टाचार किया, जयराम भाई पटेल ने सिनेमा के लायसेंस देने के मामले में पैसा इकट्ठा किया, चिमनभाई पटेल ने तेल मिल मालिकों से पैसा खाया, सनत मेहता और नरभी शंकर पानेरी ने तेल की खरीदी में गबन किया, माधवसिंह सोलंकी ने राजस्व सम्बन्धी मामलों को निपटाने में घूसखोरी की, जसवंत मेहता ने ट्यूबवेल के ठेकों में और खुदाई बांध के कार्य में भ्रष्टाचार किया, रतुभाई ने कपास की खरीद में पैसा जमा किया, भीलाभाई दर्जी ने जिला पंचायतों और अनाज राहत कोष की राशि में गोलमाल किया, नरेन्द्रसिंह झाला ने तेल मिल मालिकों से पैसे इकट्ठे किये। इसी प्रकार के आरोप दिव्यकांत नाणावटी, प्रेमजी भाई ठक्कर, प्रमुल देसाई, प्रबोध रावल और जामनदास वाकरिया पर हैं। कांतिलाल घीया पर आरोप है कि उन्होंने अपने पुत्र के लिए एजेन्सियां प्राप्त कीं, ठेके प्राप्त किये और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के फण्ड में गड़बड़ की। घनश्याम ओझा पर कोयले के कोटे की बिक्री द्वारा पैसा बनाने और नवीनचन्द्र रवानी पर साबरकांठा नगरपालिका के पैसे में हेराफेरी के आरोप हैं। गुजरात के छात्र जब इन आरोपों →

की जाच कराने की माग लेकर राष्ट्रपति से मिले तो राष्ट्रपति ने निर्धारित थोडे से समय मे कुछ समय यह सलाह दी कि युवको को हिंसात्मक कार्यवाहियो से बचना चाहिए और कुछ युवको की सुनने और मागपत्र देखने मे।

वैसे तो महगाई पूरे देश की बढ रही और भ्रष्टाचार देश के पूरे प्रजातंत्र को खा रहा है। जितना भ्रष्टाचार केन्द्र मे है उतना राज्यो मे भी हो सकता है। देश का कोई हिस्सा ऐसा नही बचा जो महंगाई और भ्रष्टाचार की मार से बचा हो। इसलिए गुजरात के सार्वजनिक जीवन मे भ्रष्टाचार फैल जाये, कोई अजूबा नही। पिछले साल गुजरात मे भयंकर अकाल पड़ा जिसमे कई इन्सान और मवेशी मर गए थे। पंचमहाल जैसे जिले मे जहा हर तीसरे साल अकाल पडता है और लोग मरते हैं, पिछले साल भी अच्छी खासी जानें गईं थी। पिछले साल जून जुलाई में बाजरा दो रुपये किलो, गेहूं साढे तीन, चार, चावल पाच और मूंगफली का तेल बारह रुपए किलो था। गुजरात के लोग इस महगाई से त्रस्त हो गए। बम्बई और महाराष्ट्र के अन्य हिस्सो मे महगाई के आज भी ये ही हाल हैं। उत्तर प्रदेश (चुनाव के समय छोड़ कर) और बिहार के ग्रामीण इलाको मे लोगो को चीजो के सही दाम कभी मालूम नही होते। सरकार जिस दाम पर उनका अनाज ले ले वही उनके लिए बेचने की कीमत और बनिया जिस दाम पर सौदा दे दे वही खरीदने के दाम हैं। पर ये लोग बरसो से इसी तरह जी रहे हैं, आदोलन नही करते। गुजरात और उत्तर प्रदेश, बिहार के लोगो मे कुछ फर्क भी है।

पहले अकाल फिर महंगाई फिर राजनीतिक भ्रष्टाचार ने गुजरात के आम जीवन की जडें हिला दी। १९४२ के बाद देश मे और १९५६ के बाद गुजरात मे जनता के दम पर एक आदोलन खडा हो गया। गैर राजनीतिक स्तर पर और बिना किसी संगठनात्मक प्रयास के आदोलन को नेतृत्व विद्यार्थियो ने दिया, चलाया भी विद्यार्थियो ने पर उसे बन्द अब जनता करेगी। मामला विद्यार्थियो के हाथो मे भी बहुत कम रह गया है। इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि गुजरात के विद्यार्थी नेता और ढेर सारे विद्यार्थी राजनीतिक समझौते के फेर मे दिल्ली घूम रहे हैं, पर गुजरात के शहरो मे अभी भी मौतें हो रही हैं और गोली चल रही है।

इसका कारण यह है कि गुजरात का आदोलन सिर्फ महगाई और भ्रष्टाचार के खिलाफ नही है, पूरी व्यवस्था के प्रति है। एक ऐसी व्यवस्था के प्रति जिसमे जनता की कोई भागीदारी नही और जनता को यह कानूनन अधिकार नही कि उसके द्वारा चुना गया प्रतिनिधि बेईमान हो जाए तो वह उसे वापस बुला ले। गुजरात के आदोलन की मंशा यह है कि भविष्य के लिए चुनी जाने वाली विधानसभा मे सिर्फ भले इन्सान चुन कर जाए और यह परम्परा स्थापित हो जाए कि अगर जनता के प्रतिनिधि भ्रष्ट होगे तो जनता उन्हें वापस भी बुला लेगी। गुजरात का उदाहरण अन्य प्रान्तो की सरकारो और केन्द्र सरकार के लिए भी एक खतरे की घण्टी है, जिसे आगे न पीछे गले मे बाधना ही पडेगा।

भारत के प्रजातांत्रिक जीवन मे पहली बार विरोधी पार्टियो से अलग जनता के स्तर पर किसी राज्य के मुख्यमन्त्री और उसके सहयोगियो पर सार्वजनिक रूप से आरोप गुजरात मे लगाये गए और विधायको का सडको पर जुलूसो के माध्यमसे मजाक उडाया गया। विधानसभा भंग करने और प्रदेश से भ्रष्टाचार समाप्त करने के लिए जितने उपवास गुजरात के लोगो ने इस बार किये, पहले कभी नही किये। चिमनभाई पटेल गुजरात के इतिहास मे अमर हो गये।

कुछ मोटे-मोटे आरोप जो चिमन भाई पर लगाये गये थे ये हैं। चिमन भाई पर यह आरोप है कि मुख्यमन्त्री बनने के लिए कांग्रेस विधायकों को उन्होंने पर्याप्त पैसा देकर अपनी ओर मिलाया। कातिलाल घिया अगर ज्यादा पैसा दे देते तो विधायक उनके हो जाते। नवनिर्माण युवक समिति के लोगो ने बताया कि अहमदाबाद के पास पनवटी फार्म मे चिमनभाई पटेल ने तीन दिन तक कांग्रेसी विधायकोंको मेहमाननवाजी की, उन्हें खिलाया पिलाया और पैसा दिया, तीन दिन उन्हें वहा से जाने नही दिया, प्रेस के लोगो को बुलाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया और विधायको के साथ फोटो खिचवाई। विद्यार्थियों का दूसरा आरोप यह है कि चूंकि चिमनभाई स्वयं शिक्षक रहे हैं इसलिए शिक्षा के क्षेत्र मे राजनीति की उन्हे अच्छी पकड़ है। चिमन भाई ने मुख्यमंत्रित्व को प्राप्त होते ही शिक्षा को व्यापार बना दिया। गुजरात विश्वविद्यालय मे उपकुलपति की नियुक्ति को लेकर जिस दर्जे की राजनीति चिमनभाई ने चलाई और 'अपने' आदमी को उपकुलपति बनाने के लिए जो क्रिया कलाप अपनाए उससे शिक्षक उनके खिलाफ हो गए। आदोलन मे शिक्षको के जुड जाने का यह भी कारण है। एक अन्य और बडा आरोप उन पर यह है कि मूंगफली की भारी उपज के बावजूद उनके मुख्यमन्त्री बनने के समय तेल के भाव आठ रुपए से बारह रुपये प्रति किलो के बीच थे। कहा जाता है कि मुख्यमन्त्री बनने के बाद उन्होने तेल मिल मालिको को चेतावनी दी कि अगर उन्होने तेल के भाव चार रुपए किलो तक नही किये तो राज्य सरकार तेल मिलो को अपने हाथो मे ले लेगी। चिमनभाई की चेतावनी के बावजूद तेल के भाव कम नही हुए। नवनिर्माण समिति का आरोप है कि चिमन भाई की सरकार ने तेल मिल मालिको से लगभग पच्चीस लाख रुपए चेतावनी के मुआवजे के रूप मे प्राप्त किये और इस राशि को उत्तरप्रदेश और उडीसा के चुनावो के लिए केंद्र को दे दिया जिससे चुनाव 'ठीक से' सम्पन्न हो सकें।

कहते हैं जब जापान मे अमरीकी राष्ट्रपति के आगमन का विरोध करना था तो जापान के नवजवानो ने साप की शक्ल मे बडे-बड़े जुलूस निकाले और अन्ततः अमरीकी राष्ट्रपति की जापान यात्रा रद्द करवाई। चिमनभाई पटेल की सरकार और विधानसभा के १६८ विधायको के प्रति अपना रोष व्यक्त करने के लिए गुजरात के युवको ने भी कुछ कम नही किया। चिमनभाई के पुतले को सार्वजनिक रूप से फासी दी और फिर शवयात्रा निकाल कर दाह सस्कार किया। विधानसभा के सदस्यो के प्रतीक के रूप मे गधो का जुलूस निकाला, १६८ चूहो को ठेला गाडो पर रख कर शहर मे घुमाया और

(शेष पृष्ठ १३ पर)

गुजरात में अच्छे लोग चुनकर आयेंगे, इसका क्या भरोसा ?

महेन्द्र कुमार के प्रश्न और विनोबा के उत्तर

प्रश्न : गुजरात मे विधान सभा के चुने हुए प्रतिनिधियो को त्याग-पत्र देने का एक अभियान-सा चलाया जा रहा है। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने कहा है कि चुने हुए प्रतिनिधियो से इस प्रकार त्यागपत्र मांगा जाना और उसके लिए उन पर दबाव डालना कहां तक उचित है ? इस बारे मे आप इंदिराजी की राय से कहां तक सहमत हैं ?

विनोबा : *बाबा इन दिनो भारतीय* राजनीति के बारे मे सोचना नही है। विश्व राजनीति के बारे मे सोचना है। अब दुनिया बहुत छोटी हो गई है। इसलिए भारत की राजनीति और प्रदेश की राजनीति उसके भी नीचे आ गयी। उस पर सोचना याने अपनी *चिन्तन शक्ति व्यर्थ खराब करना। होना तो* चाहिए विश्व राज्य । भारत उसका एक प्रान्त, चीन उसका एक प्रान्त इत्यादि, इत्यादि और इन सबका एक कोर्ट हो। आज जो दो राष्ट्रो के बीच झगड़े हैं वे दो प्रान्तो के बीच झगड़े माने जाय और इस कोर्ट के सामने वे पेश किये जाय। और यह कोर्ट जो फैसला देगा, वह सर्वमान्य होगा । आगे जो रचना करनी है वह यह है। इसके लिए बाबा एक बाजू बोलता है जय ग्रामदान, और दूसरी बाजू बोलता है जय जगत्। इसमे जय-हिन्द, जय-भारत, जय गरवी गुजरात—क्यो गुजरात मे कहते हैं कि नहीं, उत्तरमा अम्बा मां, दक्षिण मा काली मा, जय-जय गरवी गुजरात, महाराष्ट्र म्हारा, यह महाराष्ट्र मेरा—तो इस तरह से प्रान्तीय भावना या भारत-भावना मिनिमम है और उत्तम है विश्व-भावना ।

फिर से गुजरात मे चुनाव किये जाय तो अच्छे लोग चुनकर आयेंगे इसका क्या भरोसा ? वही चक्र फिर-फिर ▮ जारी रहेगा। यदि आपमें यह ताकत होगी तो बाबा ने जो विचार पेश किया पहले से कि हर गांव मे एक ग्रामसभा बनाओ और ग्रामदानमूलक हो तो अच्छा है, न हो तो भी सर्व-सम्मति से काम करने वाली ग्रामसभा बनाओ। और उसके द्वारा एकमति से अपना मुखिया खड़ा करो—चुनाव मे ग्रामसभा की तरफ से। मान लीजिए कि एक चुनाव-क्षेत्र में पच्चीस गांव हैं। तो पच्चीस गांव के पच्चीस आदमी इकट्ठा हो जाय और सर्वानुमति से अपने मे से एक आदमी खड़ा करें। *यदि सर्वानुमति न होती हो तो अधिक बहुमत* से खड़ा करिये। जो आदमी चुना जायेगा, उसके खिलाफ कौन खड़ा होगा ? यह करने की अगर आपकी ताकत है तो कम-से कम एक जिले मे आजमाओ। होना तो चाहिए कम-से-कम एक प्रान्त मे। परन्तु ताकत कम है, *इसलिए एक जिले म पूरा हो जाय तो नमूना* हो जायेगा—दूसरे जिले को अनुकरण करने के लिए। किस प्रकार से काम करना है, क्या काम करना है यह हम जानते हैं। किस तरह से यह काम पूरा करना है, इसका मार्ग खोजना होगा हमको। तब हमारे ज्ञान मे वृद्धि होगी। इस वास्ते एक-एक जिले म भी अगर करें तो भी हो सकता है। वैसे चुनाव मे जिले की तरफ से खड़ा करना यह अगर हो सकता हो किसी एक जिले मे तो करने जैसा है। लेकिन यह अगर न हो सकता हो तो भी अपने मतदान केन्द्र पर जाना और वहां लोगो को टोकना-रोकना इत्यादि यह तो बेकारो का काम है। जिसको कोई काम ही नही है, उसके लिए अच्छा काम है।

नम्बर एक—अपना आदमी खड़ा करने की ताकत। नम्बर दो—वह ताकत अगर है नही तो चुनाव का बहिष्कार। मुझे एक जगह सुनाया गया कि किसी एक जिले मे कुछ *हजार लोगो ने चुनाव का बहिष्कार किया।* हमारी मांगें पूरी नहीं हो तो हम वोट नहीं देंगे। चुनाव का बहिष्कार करेंगे। तो मैंने उनको कहा कि हजारो लोगो ने बहिष्कार किया, यह बस नही। लाखो को बहिष्कार करना चाहिए तो उसका असर होगा। अगर चुनाव बहिष्कार करने का कार्यक्रम करें तो यह होगा कि मतदान केन्द्र पर बैठे जा ही नहीं रहे हैं लोग। यदि कुछ गये भी तो दस-बीस वोट से आ जायेंगे ये लोग। तो भी हमें नहीं, क्योंकि ताकत ही नहीं रहेगी उनमें।

प्रश्न : क्या आपको लगता है कि आज *की संकटग्रस्त स्थिति मे इंदिराजी द्वारा त्याग-*पत्र देकर हटना उचित होगा ? आप कोई विकल्प सोचते हैं ?

विनोबा : अब इंदिरा को क्या करना चाहिए, यह इंदिरा जाने, बाबा क्या जाने ? बाबा को क्या कहना चाहिए यह बाबा जाने, इंदिरा क्या जाने ? और दोनो को क्या करना चाहिए यह भगवान जाने। (आपके पास वे मार्गदर्शन के लिए आती हैं, फिर से आनेवाली हैं—प्रश्नकर्ता) मार्गदर्शन के लिए मेरे पास आती हैं तो मैं उन्हें बताता हूं कि यह उत्तर दिशा है इस दिशा म दिल्ली है। (हंसी) "। अगर इस विषय म मुझे पूछेंगी तो मैं उनको सलाह दे सकता हूं—अगर पूछेंगी तो। मनु-स्मृति मे एक नियम दिया है—मेरे जैसे ब्राह्मण के लिए। बिना पूछे किसी को कुछ बताना नहीं। फिर आगे कहा है कि अगर अन्याय से पूछेगा तो भी जवाब देना नहीं। आगे लिखा है कि प्रश्नवाला आदमी जानते हुए भी जड़ के समान रहता है। लेकिन राज-नैतिक स्तर पर सोचिए जरा अगर इस्तीफा दे भी दिया तो सब कहेंगे घबरा गयी। उनके खिलाफ वातावरण पैदा हुआ है—गुजरात मे और उत्तरप्रदेश म। और इसलिए घबराकर इस्तीफा दे दिया। इससे अच्छा तो यह है कि इस्तीफा देना ही है तो पूरी सफलता मिले, उस वक्त सोचा जा सकता है।

प्रश्न : कई लोगो का कहना है कि अफगानिस्तान से संपर्क के लिए बादशाह खान विवादास्पद व्यक्ति बन गये। उनकी हिन्दुस्तान मे उनके दौरे पर निधि की भेंट और उन्होंने मुसलमानो के बारे मे जो कहा, उस पर टीका हुई। इस संबंध मे काफी असंतोष है। क्या बादशाह खान के साथ कुछ संबंध जोड़ा जाय ?

विनोबा : यह बादशाह खान जो है वह

[शेष पृष्ठ १५ पर]

व्यवस्था हमारे अनुकूल नहीं है

संसद में मौलिक प्रश्नों पर विचार

रणबहादुर सिंह : हम लोग राष्ट्रपति के भाषण पर चर्चा कर रहे हैं। यहा पर जो भिन्न-भिन्न विचार व्यक्त किये गये हैं उनमें तात्कालिक राष्ट्रीय अस्वस्थता के मौलिक कारणों पर चर्चा नहीं हुई है। आज का समय कठिनाइयों के वर्णन का नहीं है। अधिक उपयुक्त यह है कि हम सोचें कि इनके निराकरण हेतु क्या किया जा सकता है। अतः कुछ ऐसे विचार प्रस्तुत करना चाहता हूं जो अभी तक की चर्चा में सर्वथा उपेक्षित हो गये हैं।

मैं निवेदन करना चाहता हू कि तात्कालिक परिस्थिति के संदर्भ में यह सारी व्यवस्था जो घिसे पिटे पुराने ग्रीको रोमन राजनैतिक विचारधारा पर आधारित है, हमारे लिए अनुकूल नही है। यह हमारी राष्ट्रीय आत्मा को ग्राह्य नहीं है। उन भद्र पुरुषो के प्रति आदर रखते हुए जिन्होंने हमारे संविधान के ढाचे की संरचना की है मैं यह निवेदन करूंगा कि इस देश का इतिहास उन राजनैतिक विचारों से जिन पर हमारे संविधान का ढाचा आधारित है—कही अधिक महान है। अतः यही समय है जबकि हम तात्कालिक समस्याओं का सामना करके निराकरण ढूंढते हुए यह भी सोचें कि क्या यह ग्रीको-रोमन राजनैतिक विचारधारा इस क्षेत्र के लिए अंतिम उपलब्धि है?

राजनैतिक विचारधाराएं और तत्वज्ञानों में लगातार विकास हो रहा है। स्वच्छंद पूंजीवाद में भी धीरे-धीरे सामाजिक नियंत्रण हो रहा है जैसा कि अमेरिका में न्यू डील के बाद स्पष्ट दिखाई पड़ता है। और जब हम समाजवाद की ओर देखते हैं विशेषतः सोवियत समाजवाद की ओर तो वहां भी समाजवाद अपनी कट्टरता खो रहा है जबसे प्रोफेसर लाइबरमैन के विचारों का प्रभाव पड़ा है। स्पष्ट है कि जब ये दो समानान्तर वादों की लकीरें एक दूसरे की ओर झुकी हैं तो यह भविष्य मे एक दूसरे से मिलने वाली हैं, वह कौन-सा बिन्दु होगा?

प्रो० मधु दण्डवते : शून्य मे।

रणबहादुर सिंह : विद्वान प्रोफेसर साहब चूक रहे हैं। मैंने कहा है कि जब समानान्तर लकीरें एक दूसरे की ओर झुकती हैं। क्या हम एक बुद्धिशील राष्ट्र होते हुए भविष्य के उस बिन्दु के प्रति आखें बद कर सकते हैं जहा यह दोनो लकीरें मिलने वाली हैं। यदि हमने आखें बन्द हो कर ली तो यह एक बडी भूल होगी। स्पष्ट है कि भविष्य का यह बिन्दु जहा ये दोनो लकीरें मिलेंगी वहा दोनो वादो की अच्छाइया होगी। यह मनुष्य मात्र के समस्त संचित अनुभवो की प्राकृतिक उपलब्धि है। हम सदैव अपनी पिछली भूलों से लाभान्वित हुए हैं।

पर मेरा यह भी निवेदन है, कि यह बिन्दु जहा पूंजीवाद और समाजवाद का समन्वय होगा वह राष्ट्रीयकरण नही है। वह राष्ट्रीयकरण से बहुत आगे होगा। वहा जब राष्ट्रीयकरण होगा तो राष्ट्रीयकृत उद्योग मे शासकीय अधिकारी नही रखे जायेंगे। वहा उत्तरदायित्व सीधे नागरिकों का होगा। और इसलिए वह समाजवाद के आगे की स्थिति है। वह पूंजीवाद के भी आगे होगा क्योकि व्यक्तिगत लाभ की भावना को परिष्कृत करके ट्रस्टीशिप मे बदल दिया गया होगा।

यह एक आदर्श कल्पना मात्र नही है। इसमे तात्कालिक समस्याओ का त्वरित निराकरण निकल सकता है। अन्न के राष्ट्रीयकरण का सर्वथा भिन्न ही निष्कर्ष निकलता यदि सामान्य नागरिक प्रशासको के समकक्ष होकर इसका क्रियान्वयन करते। मैं समकक्षता पर ही बल दे रहा हू। इसके अधिक विस्तृत विवेचन का यह समय नही है। यदि हम कोयले के राष्ट्रीयकरण को लें तो यह प्रयास भी प्रभावशाली होता यदि इसमे मजदूरो को बराबरी का उत्तरदायित्व देकर इस कार्य में सहयोगी बनाया जाता जबकि अभी वह केवल दास हैं जिन्हें नये मालिक दे दिये गये हैं। हमे राष्ट्रीयकरण से आगे उस व्यवस्था को लाना होगा जिसे मैं आशापूर्ण ढंग से नागरिकीकरण ही इस समय कह सकता हू। यही सम्भवतः वह भविष्य का बिन्दु है जहा दोनो विचार मिलेंगे।

मैं यह कहकर कोई एक पका पकाया निराकरण नही प्रस्तुत कर रहा हू। मैं तो केवल विचार मथन के लिए उन सभी सहृदय व्यक्तियो को आमंत्रण देना चाहता हू जो इस सदन मे हैं अथवा इसके बाहर। नागरिकीकरण जैसा मैं सोचता हूं पूंजीवाद के उन ऐतिहासिक सुरक्षा दलो से भी अधिक जागरूक होगा जो पश्चिमी अमेरिका मे बने थे। और साथ ही साथ चीन के पीपुल्स कोर्ट से भी अधिक समाजवादी होगा।

यह इन सभी दर्शनो से इसलिए आगे है क्योकि इसके स्फुरण का आधार वह प्राचीन मौलिक सत्य है जिसकी खोज इस देश के ऐसे लोगो ने की थी जिनके मस्तिष्कों की अंतिम अस्वस्थता समाप्त हो चुकी थी। अंग्रेज कवि मिल्टन ने इसी को महान मस्तिष्कों की अंतिम अस्वस्थता की संज्ञा इन शब्दो मे दी थी—

यश ही कारण है
जिसे शुद्ध हृदय जन्मता है
महान मस्तिष्कों की अंतिम अस्वस्थता।

अत मैं सभी माननीय सदस्यो को आमंत्रित करता हू और माननीय सदस्यो के माध्यम से सभी देशवासियो को भी कि वह इस नये विचार की चुनौती को स्वीकार करके इस देश के जीवन को नया मोड दे ताकि भविष्य की पीढिया हमारे बारे मे यह कह सकें कि आज की ही घड़ी हमारे लिए सब से सुन्दर थी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी : मैं एक शब्द श्री रणबहादुर सिंह के संक्षिप्त पर ताजगी देने वाले भाषण पर कहना चाहूगी। उन्होंने हमारा ध्यान आज की समस्याओं और कठिनाईयों से ऊपर उठाकर उन मौलिक तत्वो की चर्चा की जिन्हे ग्रीको-रोमन राजनैतिक विचार कहा जाता है। उन्होंने संसद से इस पर चर्चा करने का निवेदन किया ताकि यह स्पष्ट हो कि यह प्राचीन यूरोपीय विचार पद्धति किस मात्रा मे आज के भारत के लिए ही नही विश्व के लिए भी कितनी सार्थक रह गई है। मैं कहना चाहूगी कि मुझे उनके भाषण मे बहुत ताजगी दिखी और यदि माननीय सदस्य चाहेंगे तो इस विषय पर संसदीय चर्चा बहुत ही दिलचस्प होगी। ●

शराबबन्दी : क्या जन-अभिक्रम बेकार जायेगा ?

रामभूषण

देश मे शराब से होने वाली बर्बादी का अगर बयान करने बैठा जाय तो एक पूरी किताब भी छोटी ही पडेगी। अकेले जयपुर से सरकार को एक करोड चालीस लाख रुपये की आमदनी होती है। जयपुर मे शराब की डिस्टीलरी नही है, वहा सिर्फ बाटलिंग होती है यानी शराब बोतलो मे भरी जाती है। डिस्टिलरी, गगानगर, कोटा, तथा अन्य जगहो मे हैं जहा से शराब जयपुर लाई जाती है, जो यहा के २० ठेकों मे वितरित की जाती है। जयपुर मे विदेशी शराब की दुकानें पहले ४ थीं अब १० हैं।

शराबबन्दी के लिए कटिबद्ध महिलायें व बच्चे

कोलियो की कोठी मे भट्टी के सामने बैठी सुश्री प्रेमा ने मुझे बताया "शराब ने हमारी बस्ती मे क्या-क्या कर रखा है बताना मुश्किल हो रहा है। बहुओं का बाहर निकलना, पेशाब-पखाने तक जाना दूभर हो हो गया है। हरदम छेडछाड होती रहती है। ऐसा इन्तजाम करिये कि हमारे मुहल्ले से यह भट्टी उठ जाय और फिर कभी न आने पाये"। इसी तरह की बातें अन्य अनेक स्त्री-पुरुषो से सुनने को मिली। २५ जनवरी को सुबह कोली मुहल्ले के ही प्राइमरी स्कूल पर जब बच्चो व वयस्को की सभा हुई तो बच्चो ने श्री गोकुल भाई के सामने कहा . "घर मे हमारी पिटाई होती है, माँ बहिनो की पिटाई होती है, क्योंकि पिता पागल बनकर आते हैं। हम शराब को हटाकर रहेंगे, शैतान को भगा कर रहेंगे"। चाहे कोलियो की कोठी हो या रैगरो की, 'अभाव' व 'गरीब' शब्द मे चाहे जो अर्थ भर कर अनुमान लगा लीजिए, 'भयकर' 'घोर' 'विनाशकारी' 'कमरतोड' जैसे विशेषण भी सही अनुमान के लिए नाकाफी है।

'शराब शैतान' का जलूस

मैंने २४ फरवरी को कोलियो की कोठी में जब सुश्री प्रेमा से पूछा था कि वह इस तरह शराब की भट्टी के सामने धरना देकर कब तक बैठी रहेंगी तो उसने कहा "मैं तो आज ही हट जाऊ लेकिन यह भट्टी हटे तब तो। मुझे यहा बैठने का कोई शौक थोडे ही है, लेकिन यह आफत यहा से हटनी चाहिए।" और उसकी इच्छा का असर हुआ भी। २५ फरवरी से मुहल्ले मे यह विचार दृढ होने लगा कि भट्टी मुहल्ले से जल्द से जल्द हटनी चाहिए और अच्छा हो उसे कल ही यानी २६ फरवरी को हटा दिया जाय। २६ फरवरी की तारीख तय भी हो गई और छोटे-बडे सभी उत्साहित होने लगे। तय हुआ कि बच्चे बूढे सभी सुबह ८ बजे राजकीय प्राथमिक शाला पर इकट्ठे हो और यही से भट्टी बैल-गाडी पर लादकर जुलूस की शक्ल मे ले जायी जाय।

सुबह ८ बजे हम सभी प्राथमिक शाला पर पहुच गये। २५ की शाम को ही कुछ लोगो के सुझाव के अनुसार 'शराब-शैतान' का एक पुतला तैयार करवा दिया गया था। बांस की खपच्चियो, तौलियो व काले कागज का दस फीट ऊचा एक पुतला जिसकी मूछे व भावभंगी सभी शैतान की सी। बच्चे-बूढों सभी की हसी व कुतूहल का कारण बना हुआ। नारो के बीच भट्टी अपनी जगह से उठाकर प्राथमिक शाला के सामने के मैदान मे लाई गई और नगाडे की आवाज के बीच बैलगाडी पर लादी गई। करीब ५०० की भीड के बीच जिसमे बच्चो व स्त्रियो की भी एक अच्छी सख्या थी, भट्टी व 'शराब-शैतान' का पुतला रैगरो की कोठी मे उस स्थान पर लाया गया जहा शराब की दुकान के सामने ५२ दिनो से हरिकीर्तन वगैरह चल रहा था। उसके बाद जलूस जयपुर शहर के मुख्य बाजारो—रामगज बाजार, जौहरी बाजार, चौडा रास्ता, त्रिपोलिया बाजार, सिर ड्योढी बाजार—से होता हुआ राजस्थान विधान सभा के निकट आबकारी विभाग के कार्यालय पहुचा। जलूस मे लोग जोर-जोर से नारे लगा रहे थे—'शराब नही अनाज चाहिए', 'दारु छोडो जीवन मोडो,' 'जन जन को समझायेंगे दारु बन्द करायेंगे,' 'गाधी जी का रहा प्रयास, हो शराब का सत्यानाश' आदि। प्रदेश नशाबन्दी समिति के अध्यक्ष श्री गोकुल

→

भाई भट्ट जुलूस के साथ थे। अन्य लोगों में सर्वश्री राधाकृष्ण बजाज, छीतरमल गोयल, रामवल्लभ अग्रवाल, मदनलाल सैनान, गोवर्धन पंत व दुर्गाप्रसाद चौधरी के नाम प्रमुख है। कोली पंचायत के अध्यक्ष श्री नन्दकिशोर जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे।

श्री नन्दकिशोर के नेतृत्व में तीन बहनों का एक प्रतिनिधिमंडल आबकारी अधिकारी के पास गया और उनसे शराब की थड़ी को संभाल लेने के लिए निवेदन किया। आबकारी ने पुलिस अधिकारी श्री चौधरी को थड़ी संभाल लेने का आदेश दिया। पुलिस भी अपनी जगह किसी भी आकस्मिक परिस्थिति से निपटने के लिए तैयार थी। पुलिस जवान जिसमें बंदूकधारी व टोपधारी जवान भी थे, आबकारी अधिकारी के कार्यालय के सामने मुस्तैद थे। लेकिन ऐसी कोई स्थिति पैदा नहीं हुई जिसमें पुलिस को बल प्रयोग करना पड़ता। आबकारी अधिकारी को अपना ज्ञापन देने के बाद सुश्री प्रेमा ने 'शराब शैतान' में आग लगा दी जो सारे राजस्थान से शराबखोरी खत्म करने के प्रतीक स्वरूप था। तत्पश्चात उपस्थित भीड़ को सम्बोधित करते हुए कुछ लोगों ने संक्षिप्त भाषण किये। रैगर पंचायत के अध्यक्ष श्री मोतीलाल भण्डारे ने कहा कि उनकी बस्ती में ५२ दिनों से तालाबंदी चल रही है फिर भी उनके उत्साह में कमी नहीं है। श्री राधाकृष्ण बजाज व कम्युनिस्ट नेता श्री वकरुउल्लाहद ने अपने भाषण में सरकार से नशाबंदी तुरन्त लागू करने पर बल दिया। श्री रामवल्लभ अग्रवाल ने कोली व रैगर कोठी के लोगों की उनके प्रभिक्रम के लिए प्रशंसा की और यह आशा प्रकट की कि लोग यदि अपने अधिकारों व कर्तव्यों के प्रति इसी तरह जागरूक रहे तो कुछ मुहल्लों से ही नहीं सारे राजस्थान से शराब हटाई जा सकती है। रामधुन के साथ वहां की सभा खत्म हुई।

खटिकों की बस्ती

रैगरों की कोठी में शराब बन्दी प्रयास से स्थानीय खटिक बस्ती ने भी प्रेरणा ग्रहण की थी। वहां के कुछ उत्साही युवकों ने राजस्थान के आबकारी मिनिस्टर का उनके मुहल्ले में गुजरते हुए घेराव भी किया। उन्होंने ठेकेदार को चेतावनी दी कि यदि निर्धारित समय में दुकान नहीं हटी तो वे उसे स्वयं हटा देंगे। इसी बीच आबकारी अधिकारी भी वहां गये और मुहल्ले के लोगों ने उन्हें भी अपना निश्चय बताया। बस्ती में ऐसा प्रतिकूल मानस देखकर ठेकेदार दिसम्बर ७३ के अंत तक स्वयं दुकान खाली कर गया। उसके बाद वहां के युवकों ने मुहल्ले में 'लोकसेवा समिति' नाम की एक संस्था खोली और २० फरवरी शिवरात्रि के दिन वहां एक वाचनालय व पुस्तकालय की भी शुरुआत की गई जिसका उद्घाटन उन्होंने जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री छीतरमल गोयल से कराया। वहां की समिति बेरोजगारों को रोजगार, सफाई, झगड़ों का निरसन व व्यसन मुक्ति की दृष्टि से अच्छा काम कर रही है।

काफी कोशिश

रैगरों व कोलियों की कोठी के लोगों ने दुकान में तालाबन्दी या शराब की थड़ी को एकाएक हटाने का निश्चय सिर्फ उत्साह में आकर किया हो ऐसी बात नहीं है। इसके पहले उन्होंने सरकार व उसके ऊंचे अधिकारियों से बारबार यह अपील की है कि उनके मुहल्लों से शराबबंदी से सम्बन्धित चीजें हटाई जायें। २२ फरवरी' ७४ को रैगर कोठी की स्त्रियों ने प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के पास एक ज्ञापन भेजा जिसमें उन्होंने लिखा : " "हमारी बस्ती में पिछले लम्बे अरसे से शराब का एक ठेका है जो बस्ती के बीचोंबीच चल रहा है यह बस्ती नर्क बन गई है "आप गरीबी हटाना चाहती हैं तो गरीबों की बर्बादी का सबसे बड़ा कारण जो शराब है उसे हटाओ "हमारा भरोसा है आप हम बहनों की इस छोटी सी प्रार्थना पर ध्यान देंगी और हमारे यहां का ठेका तो फौरन ही हटाने के लिए आदेश देने की कृपा करेंगी "। इसी दिन रैगर बस्ती पंचायत के अध्यक्ष श्री मोतीलाल भण्डारे ने राज्य गृह मंत्री, भारत सरकार, के पास एक ज्ञापन भेजा जिसमें उन्होंने लिखा : " हमें विदित हुआ है कि राजस्थान में पूर्ण मद्य निषेध लागू करने के लिए जो समिति बनी है तथा जिसके कि आप माननीय सदस्य हैं उसकी अगली बैठक २८ फरवरी को जयपुर में होने वाली है"'हमारे यहां इस ठेके को अविलम्ब हटाये जाने के लिए राज्य सरकार को निर्देश देने का कष्ट करें'"। दिनांक २६ फरवरी जिस दिन कोलियों की कोठी से शराब की थड़ी हटाई गई उस दिन भी वहां लोगों ने एक छपा परचा वितरित किया जिसमें उन्होंने लिखा "'"राजस्थान सरकार ने गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर राज्य की ढाई करोड़ जनता के साथ यह वादा किया था कि राजस्थान में १ अप्रैल १ ७२ तक पूरी तौर से शराबबंदी लागू कर दी जायेगी। पर शराबबंदी करना तो दूर रहा, सरकार की ओर से हरिजन बस्तियों, मजदूर बस्तियों स्कूलों, मन्दिरों मस्जिदों के पास शराब की दुकानें न रखने का राज्य का जो कानून है उसके खिलाफ चलकर गरीब बस्तियों के बीच आज तक ठेके चलाये जा रहे हैं और गरीब जनता को शराब पिला कर पाप की कमाई द्वारा आमदनी करके राज्य के विकास की बात करते हैं "हमने चार दिन पहले जिलाधीश महोदय आबकारी अधिकारी जी व आबकारी मंत्री जी को लिखित रूप में तीन दिन की अवधि में इस थड़ी को हटाने के लिए निवेदन किया था पर उसके बावजूद इसे नहीं हटाया गया है। इसलिए हम बस्ती वालों को उस 'दारु दैत्य' का जनाजा निकाल कर आबकारी कार्यालय में पहुंचाने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है'" रैगर व कोली बस्ती के लोग सरकार से कोई नई बात करने के लिए कह रहे हो ऐसी बात नहीं थी। स्वयं सरकार का यह निर्णय है व उसका कानून है कि देशी शराब की दुकानों की बिक्री पाठशालाओं अस्पतालों, डिस्पेंसरियों, पूजास्थलों, कपड़ा मिलों अथवा श्रमिक बस्ती, जन आरामगृह के समीप नहीं हो सकती। राजस्थान सरकार वित्त (राजस्व तथा लेखापाल) विभाग की शराब बंदी बुलेटिन नं० १४ (अत्यावश्यक) स्पष्ट शब्दों में कहती है :—

" देशी शराब की दुकानों तथा धारा ७५ के अन्तर्गत वर्णित स्थानों के बीच की दूरी के सम्बन्ध में निम्न मार्ग निर्देशिकायें राज्य सरकार द्वारा निर्धारित की गई हैं : (क) देशी शराब की दुकानों और श्रमिक बस्तियां जिनमें वस्त्र निर्माण के कारखाने

शराब-चलाते रहना मंहगा पड़ेगा...

→ भी सम्मिलित हैं के बीच की दूरी कम से कम २५० मीटर होनी चाहिए। (ख) देशी शराब की दुकानों और धारा न० ७५ में लिखित अन्य स्थानों जिनमें वस्त्र मिलें भी आती हैं के बीच की दूरी न्यूनतम २०० मीटर रहनी चाहिए। इस दूरी का आशय स्थायी और निरन्तर काम में आने वाली सड़क की दूरी से है। दूरी मापने में काग दृष्टि न रहे (उदार दृष्टिकोण हो) एक भवन विशेष अथवा बड़े अहाते के बाहरी भाग चार दीवारी ■ दूरी मानें। इस स्थिति में अहाते के दोले से १०० मीटर की दूरी पर शराब की दुकान रह सकेगी। पूजा के स्थान इस उद्देश्य के लिए वे माने जायेंगे जहां काफी लोग आते हैं और सामान्य जनों द्वारा कम से कम दस साल से वह स्थान प्रार्थना स्थल के रूप में प्रतिष्ठित हो। महात्मा गांधी की प्रतिमाओं के सम्बन्ध में महात्मा गांधी की मूर्ति और शराब की दुकान के बीच की दूरी कम से कम १०० मीटर होनी चाहिए'' ''। यह बुलेटिन राज्य सरकार के विशेष सचिव श्री आर० रामकृष्ण के नाम से प्रसारित की गई है। नियम-कानून व सम्बन्धित बस्तियों के लोगों ■ बार-बार आग्रह ■ बावजूद राज्य सरकार या उसके अधिकारियों ने शराब की दुकान बंद करने या यहां हटाने के लिए कोई कार्रवाई नहीं की। यह सरकार की अकर्मण्यता और उसकी उपेक्षा नहीं तो क्या है? लोकतंत्र में यदि व्यक्ति और समूह की इच्छा या उसकी राय का महत्त्व है तो शराब जैसी चीज के सम्बन्ध में सुनवाई क्यों नहीं होती, इसका उत्तर कौन देगा? सुनवाई तो अलग रैगर बस्ती के आन्दोलन को राजस्थान के मौजूदा वित्त मंत्री श्री चन्दनमल वैद ने अवैध शराब विक्रेताओं का आन्दोलन बताया। चूंकि वे राजस्थान में इस तरह शराब को व्यापक बनाना चाहते हैं अतः उन्हें रैगर बस्ती की एक सभा में 'मदिरा रत्न' की उपाधि से विभूषित करने की सिफारिश की गई।

अभिक्रम का प्रसार

यह सही है कि रैगरों व कोलियों की कोठी के निवासियों के इस अभिक्रम को राजस्थान नशाबंदी समिति के पूरे आन्दोलन से प्रेरणा मिली है। राजस्थान के वातावरण में अप्रैल १९६९, गांधी शताब्दी वर्ष से गोकुल भाई भट्ट के नेतृत्व में प्रारम्भ शराब बन्दी आन्दोलन प्रतिध्वनित हो रहा है और वहां के वातावरण पर क्रमिक उपवास, पिकेटिंग, प्रदर्शन, व्यापक सहयोग, अजमेर डिस्टीलरी पर सीधी कार्रवाई, प्रधानमंत्री निवास पर मौन प्रदर्शन, विधायकों एवं संसद सदस्यों द्वारा शराबबंदी समर्थन, क्रमिक उपवास तथा जिलों के कार्यक्रम एवं वरिष्ठ लोगों के प्रयास की छाप है। जयपुर के स्थानीय लोकसेवकों व सर्वोदय कार्यकर्ताओं विशेषकर श्री रामवल्लभ अग्रवाल को इन बस्तियों में प्रेरणा भरने का बहुत कुछ श्रेय है। लेकिन यह भी सही है कि यदि इन बस्तियों के लोगों ने अपना अभिक्रम न दिखाया होता तो आज उनमें जो चेतना, जो जागृति, जो दृढ़ता व जो लगन दिखाई पड़ रही है वह न दिखाई पड़ती।

लेकिन लोगों के अभिक्रम से इन बस्तियों में कोई करिश्मा हो गया हो ऐसी बात नहीं है। हां यदि यही उत्साह व जागरूकता व चेष्टा बराबर बनी रही तो नशाबन्दी की दिशा में जरूर प्रशंसनीय सफलता मिलेगी। इतना फर्क जरूर पड़ा है कि जिस रैगर बस्ती से ६ लाख रुपये सालाना की आमदनी राज्य सरकार को ठेके से थी, और जहां ४ हजार रुपये की शराब प्रतिदिन बिकती थी वहां संक्रान्ति के दिन भी जब लोग छक कर पीते थे और ५-७ हजार रुपयों तक की शराब बिक जाती थी उस दिन भी शराबबंदी रही। लोग धीरे-धीरे बीड़ी सिगरेट पीना भी छोड़ रहे हैं। श्री किशोरचन्द रैगरों की कोठी में ही रहते हैं। वे खूब बीड़ी पीते थे लेकिन उन्होंने बताया कि वे जब उपवास पर बैठे तो उन्हें बीड़ी का ध्यान तक नहीं आया। श्री प्रेमचन्द पीपड़ीवाल ने बताया कि उन्होंने बीड़ी पीना छोड़ दिया। श्री मागीलाल शराब पीते थे, अब छोड़ दी है। उनका कहना है कि वे चाय-सिगरेट भी नहीं पीयेंगे। उन्होंने श्री रामवल्लभ अग्रवाल की उपस्थिति में कहा कि इस तरह उनके पास जो पैसा बचेगा उससे वे लोगों को मिठाई खिलायेंगे। दिल पर काफी असर करने वाली बात तो यह रही जो २५ की सुबह प्रभातफेरी के समय कोलियों की कोठी की दो स्त्रियों ने श्री गोकुल भाई भट्ट से कही। इन स्त्रियों ने गोकुल भाई के चरण छुए और कहा "यह दुकान तो हटवा ही दो और जो लोग पीते हैं उन्हें गोली मार दो"। उनकी वाणी में दुख व कातरता की झलक थी। पीने वालों में उनके पति भी हैं। पता चला एक स्त्री का पति जब काफी रात शराब पीकर घर लौटा तो पत्नी ने दरवाजा नहीं खोला। खटखटाते जाड़े की रात हताश पति वहां आया जहां लोग आग जलाये हरिकीर्तन कर रहे थे। जब उसे होश आया तो वह भी हरिकीर्तन में शामिल हुआ और उसने शराब न पीने की कसम खाई। ३४ वर्षीय युवक श्री गोविन्द राम से मुलाकात रोचक रही। उन्होंने बताया उन्होंने ६ महीने से पीना छोड़ दिया है। शराब के नशे में धुत होकर उनकी अपने दोस्त श्री ईश्वरलाल से लड़ाई हुई। पुलिस ने ईश्वरलाल की खूब पिटाई की। भरी जवानी में श्री ईश्वर लाल की अन्दरूनी चोट से मृत्यु हो गई। उनके पांच बच्चों व विधवा पत्नी का कष्ट इनसे देखा नहीं गया। स्वयं भी बवासीर से भयंकर तौर पर बीमार हुए। यह सब देखकर उन्होंने पीना कतई छोड़ दिया है। जो पीते भी हैं शरम खाते हैं, डरते हैं। यह भयंकर महंगाई और ५-६-७ अधिक से अधिक १० रु० रोज की कमाई, उन्होंने कहा अगर गरीब पीना नहीं छोड़ देंगे तो उनका जीना मुश्किल है। हम सरकार को क्या कहें यहां शराब व सट्टे की दुकानें खुलवाती है जिसे पुलिस चलाती है।

समय रहते ही लोगों के अभिक्रम व उनकी कोशिशों के प्रति सरकार व अन्य लोगों को जागरूक हो जाना चाहिए वरना उनका आक्रोश हिंसक व उग्र रूप भी धारण कर सकता है जिसका निराकरण बहुत मुश्किल हो जायेगा। और शराब जैसी चीज को तो बन्द न कर उसे चलाते रहना किसी भी दृष्टि से ठीक नहीं। दुनिया के अन्य देशों की मिसाल भी यही बता रही है कि शराब चलाते रहना कुल मिला कर महंगा पड़ता है। उससे लाभ कमाने की बात निराधार है।

(समाप्त)

युवकों ने काम अभी तो शुरू किया है

कृष्णस्वरूप आनन्दी

उत्तर प्रदेश के जिन पांच महानगरों में मतदाता शिक्षण अभियान चला उनमें प्रभावशीलता के नाते इलाहाबाद का नम्बर निर्विवाद रूप से पहला है। जयप्रकाश नारायण वहां जा नहीं सके और कुछ और विचारकों के कार्यक्रम भी रद्द हुए। फिर भी प्रो० बनवारी लाल शर्मा और नवयुवकों ने स्वयं प्रेरणा और अभिक्रम से जो कुछ किया वह इस अभियान के लिए अनुकरणीय है। यहां हम इलाहाबाद के काम की रपट दे रहे हैं—]

इलाहाबाद में डा० नैयानी तथा "सर्वोदय विचार प्रचार समिति" के मन्त्री बनवारी लाल शर्मा के संयुक्त संयोजकत्व में "मतदाता शिक्षण एवम् चुनावशुद्धि अभियान" चलाया गया।

२० जनवरी को इस अभियान का श्रीगणेश जिज्ञासु केन्द्र में आयोजित नागरिकों की सभा से हुआ, जिसमें सर्व सेवा संघ के मन्त्री ठाकुरदास बंग ने अभियान की आवश्यकता एवं कार्यक्रम पर विस्तार से प्रकाश डाला। अपनी सीमित शक्ति और साधनों का ध्यान रखते हुए अभियान को जिले के चार निर्वाचन क्षेत्रों (नगर के तीन और चौथे चायल (सुरक्षित) निर्वाचन क्षेत्र) में सघन रूप से चलाने का निर्णय लिया और संचालन हेतु ३३ सदस्यों की केन्द्रीय समिति गठित हुई जिसकी लगभग प्रति सप्ताह बैठकें होती रहीं।

तीन कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर नगर में हुए। पहला २० जनवरी को जिज्ञासु केन्द्र में, दूसरा शिविर ३ फरवरी को हिन्दुस्तानी ऐकेडमी में तथा तीसरा शिविर पुनः जिज्ञासु केन्द्र में १७ फरवरी को हुआ। चुन्नी भाई वैद्य के जिन्होंने आसाम में 'वोटदाता परिषद' के माध्यम से इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य किये हैं, महत्त्वपूर्ण अनुभव, विचारों व कार्यों की जानकारी, नवसन्देह कार्यकर्ताओं के लिए सर्वाधिक लाभप्रद रही। कार्यकर्ताओं में तरुणों की ही ज्यादा संख्या रही है और औसतन ५०-६० कार्यकर्ता इन शिविरों में भाग लेते रहे। ७ फरवरी को आदर्श इण्टर कालेज, सराय आकिल में ग्रामीण क्षेत्र के लगभग ४० कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण शिविर हुआ, चायल निर्वाचन क्षेत्र में अभियान के संचालकों में उक्त कालेज के दो उत्साही अध्यापकों ओमप्रकाश दुबे व छोटे लाल श्रीवास्तव का योगदान उल्लेखनीय है।

शुद्ध और स्वतन्त्र चुनाव के लिए छात्रों का मौन जुलूस

अभियान की ओर से १६ फरवरी को मोतीपार्क में तथा १७ फरवरी को दारागंज बस अड्डे पर ऐसे अभूतपूर्व मंच प्रदान किये गये जिनसे दक्षिणी व उत्तरी इलाहाबाद निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव लड़ने वाले अधिकांश प्रत्याशियों ने अपने कार्यक्रमों, नीतियों व लक्ष्यों से उपस्थित विशाल मतदाता समुदाय को अवगत कराया। सिद्धराज ढड्ढा व चुन्नी भाई वैद्य ने क्रम से उन दोनों सभाओं की अध्यक्षता की। दैनिक 'भारत' ने इसे अभियान का 'अनोखा प्रयोग' कहा है। दक्षिणी निर्वाचन क्षेत्र के जिन प्रत्याशियों ने मोतीपार्क वाली सभा को सम्बोधित किया था, उन्होंने अभियान के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की और खुले तौर पर स्वीकार किया कि चुनाव खर्च के न्यूनीकरण का यह सुगम तरीका है। उत्तरी निर्वाचन क्षेत्र के जिन प्रत्याशियों ने दारागंज बस अड्डे वाली सभा को सम्बोधित किया था, वे परस्पर परनिंदा करना चाह रहे थे। परन्तु उन्होंने इस 'मंच की पवित्रता' की दुहाई देकर अपने को ऐसा करने से बचा लिया। प्रारम्भ में संयोजक, बनवारी लाल शर्मा ने प्रत्याशियों से परस्पर निन्दा न करने की अपील करते हुए 'मंच की पवित्रता' कायम रखने के लिए विशेष बल दिया था। दारागंज में हुई सभा में हजारों लोग उपस्थित थे।

डा० सिद्दीकी के सहयोग से मुस्लिम बहुल गांव रसूलपुर में अभियान की ओर से एक आम सभा हुई। चुन्नी भाई वैद्य ने सरल भाषा में सर्वोदय विचार प्रचार तथा लोकतंत्र में मतदाता की सीधी भागीदारी के विचार को गांव वासियों को समझाया।

चायल निर्वाचन क्षेत्र में चार बड़ी ग्राम सभाएं हुईं। पहली ग्रामसभा २ फरवरी को सराय आकिल में बस अड्डे के मैदान में हुई इसकी अध्यक्षता आचार्य राममूर्ति की अनुपस्थिति में आचार्य कपिलदेव श्रीवास्तव (संयोजक, केन्द्रीय आचार्यकुल) ने की। मुख्य वक्ता थे मतदाता शिक्षण व चुनाव शुद्धि अभियान के संयोजक बनवारी लाल शर्मा। दूसरी सभा ५ फरवरी को निल्हापुर इण्टर कालेज में हुई, जिसमें गांधी जी के सहयोगी चन्द्रप्रकाश भाई के अलावा प्रो० बनवारी लाल शर्मा ने अभियान के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। तीसरी विशाल सभा ७ फरवरी को कनैली में तिलक इण्टर

→

कालेज मे हुई जिसमे स्थानीय लोगो, अध्यापकों, तरुणो के अतिरिक्त समीप के १०-१२ गावों के लोग भी उपस्थित थे। सभा को स्वामी सत्यानन्द ने सम्बोधित किया। चौथी सभा १४ फरवरी को डा० सिद्दीकी के सहयोग से मुस्लिम बहुल गांव रसूलपुर मे हुई।

इलाहाबाद नगर मे छ आम सभाए हुई है जिनमे सैकडो की सख्या मे लोग उपस्थित रहे। दो आम सभाएं दारागज (४ फरवरी व १३ फरवरी) मे, एक बलुआघाट (१५ फरवरी), मे एक हिन्दी साहित्य सम्मेलन (५ फरवरी), मे एक नया कटरा (२ फरवरी), मे तथा एक हरीजन आश्रम (५ फरवरी) मे हुई थी। दारागज में हुई आमसभाओं का दूरगामी असर तब देखने को मिला, जब निर्वाचन के दिन किसी भी मतदाता ने केन्द्र तक जाने आने के लिए उम्मीदवारों द्वारा दी गई वाहन-सुविधा का किसी भी रूप में इस्तेमाल नहीं किया। इसे अभियान की उपलब्धि ही मानी जानी चाहिए।

निर्वाचन के पूर्व नगर मे जहा चुनावी दगा हुआ था, वहां अभियान के कार्यकर्त्ताओ की टोली ने दौरा किया और मतदाताओ से शाति भग न करने की अपील की। टोली ने लोगो को सचेत किया कि वे उम्मीदवारो द्वारा भडकाये जाने से बचें, क्योंकि राजनैतिक लाभो के लिए मतदाताओ को जाति, धर्म, सम्प्रदाय, वर्ग आदि के नाम पर विघटित किया जाता है और विघटनकारी वर्ग उससे लाभान्वित होना चाहता है। लोगो ने टोली की अपील मानी। अशातिग्रस्त क्षेत्र का दौरा, लोगो को समझाना बुझाना, लोगों से शांति व्यवस्था बनाये रखने की अपील इन सब का तुरन्त असर हुआ। अभियान की ओर से जारी की गई एक अपील पर सभी उम्मीदवारो ने हस्ताक्षर किये जिसमे मतदाताओ से शांतिपूर्ण चुनावो के लिए हर सम्भव प्रयास करने की अपील की गई थी। यह अपील स्थानीय पत्रों द्वारा छापी भी गयी।

हिन्दुस्तान एकेडेमी मे सर्वदलीय सभा ३ फरवरी को हुई जिसमे उपस्थित उम्मीदवारों ने स्वतन्त्र और शुद्ध चुनाव के लिए अपनी सहमति जाहिर की और अभियान द्वारा इस सम्बन्ध मे जारी की गई अपील पर हस्ताक्षर भी किए।

मुहल्लो मे कार्यकर्त्ताओ ने घर-घर जाकर अभियान सबधी परचो और साहित्य का वितरण किया। लगभग ५० हजार परचे बांटे गये। परचों के वितरण ने अभियान को काफी लोकप्रिय बनाया। इससे दूसरा लाभ यह हुआ कि लोगो के बीच सम्पर्क सधा और नये-नये कार्यकर्त्ता तैयार हुए।

मतदाता से सम्पर्क करते समय इस बात पर बल दिया गया कि वह लोकतन्त्र में मालिक है। अत उसे इस वक्त सावधान रहना चाहिए तथा अपने प्रतिनिधियो के चुनाव मे अत्यन्त सतर्कता बरतनी चाहिए। इस बात का आग्रह किया गया कि मतदाता वोट देने अवश्य जायें। कोई भी उम्मीदवार पसन्द न हो तो अपना मत पत्र वापिस रद्द करा दें। उम्मीदवारो द्वारा मतदान केन्द्र पर ले जाने वाली सवारियो के बहिष्कार पर भी काफी बल दिया गया। मतदाता से कहा गया कि वह वोट मागने के लिए आने उम्मीदवार अथवा उनके समर्थको से तीन प्रश्न पूछें १. चुनाव मे विजयी हो जाने के बाद विधानसभा के हर एक अधिवेशन के पहले और बाद मे मतदाता की राय जानने और विधानसभा की कार्यवाही बताने के लिए क्या आप जनता के बीच मे आयेंगे? २ यदि आप दल बदलें तो क्या आप त्यागपत्र देकर पुन चुनाव लडेंगे? ३. जीत जाने पर क्या अपनी सालाना आमदनी का ब्योरा मतदाताओं को देंगे? मतदाता को यह भी बताया गया कि कैसे उम्मीदवारों को वोट न दें और कैसे उम्मीदवार को वोट दें। अभियान की केन्द्रीय समिति की ओर से सभी उम्मीदवारो के पास पत्र भेजे गए जिसमे ऊपरलिखित तीन प्रश्न पूछे गए थे लेकिन किसी भी उम्मीदवार का प्रत्युत्तर नही मिला।

२३ फरवरी को अभियान की ओर से नगर मे मौन जुलूस निकाला गया। जुलूस मे लगभग तीन सौ लोगो ने भाग लिया। इसमे तरुणो की सख्या ज्यादा थी। महिलाए भी थीं। तख्तियों पर चिपके [illegible] विविध रूपरंगो के हस्तलिखित पोस्टरो को डन्डो के सहारे लिए हुए २५० हाथो ने जैसे उस समय लोकतन्त्र के लोक निर्माता के लिए लोक का मौन आह्वान किया हो। जिन पोस्टरो मे 'यदि कोई भी उम्मीदवार पसन्द न हो तो यही बात मतपत्र पर लिख पेटी मे डालिए' लिखा था, उन पर दर्शकों का ध्यान काफी केंद्रित था।

चुनाव के दिन लगभग ६० मतदान केंद्रो को अभियान ने अपना कार्य क्षेत्र चुना। हर मतदान केन्द्र पर २ से लेकर ४ कार्यकर्त्ता ८ बजे से साय ५ बजे तक रहे। नगर के तीन चुनाव क्षेत्रो को पाच क्षेत्रों मे बाटा गया। हरएक मे एक निगरानी उडनदस्ता जिसमे कम से कम एक सदस्य के पास चुनाव आयोग द्वारा दिया गया अधिकार पत्र था जिसके आधार पर वे किसी पोलिग बूथ का निरीक्षण कर सकते थे, कार या स्कूटरो पर घूमता रहा। साथ ही हर क्षेत्र मे साईकिलो पर युवको की निगरानी टोली ने एक मतदान केन्द्र से दूसरे मतदान केन्द्र का सपर्क बनाये रखा। चूकि प्राय. हर मतदान केन्द्र पर कई मतदेय स्थल थे, इसलिए कार्यकर्त्ताओ ने मतदाताओ को मतदेय-स्थल बताने मे पूरा सहयोग दिया, जिस से मतदाताओ को काफी सहूलियत हुई। मतदेय-स्थल के १०० गज के अन्दर कार्यकर्त्ताओ की सतर्कता के कारण ही लोग दलीय टोपियां पहिने, बिल्ला लगाये व झण्डे लिए नही जा पाते थे। तनाव नही बढने दिया गया, समझा बुझाकर लोगो को शात किया गया। कार्यकर्त्ता किसी दल या उम्मीदवार के शिविर मे नही गये और न उनसे या उनके समर्थको से बातचीत ही की। वोटरो की छीनाझपटी रोकी और उन्हे आवश्यक सहायता दी गई।

मतदान के दिन कार्यकर्त्ताओ को तरह-तरह के अनुभव मिले जिसकी कुछ झलकिया यहा प्रस्तुत हैं एक मतदान केन्द्र पर एक प्रमुख पार्टी के उम्मीदवार अपनी पार्टी की टोपी और बिल्ला लगाये प्रवेश करना चाहते थे। कार्यकर्त्ताओ ने उनसे यह तीनो वस्तुए उतरवा दी तब उन्हे प्रवेश करने दिया। एक अन्य मतदान केन्द्र पर एक पार्टी के लगभग ३००-४०० कार्यकर्त्ता पोलिग बूथ को घेर कर नारे लगाने लगे और मतदाताओं को पकड़-पकड कर अपने उम्मीदवार को वोट डालने के लिए विवश करने लगे। हमारे कार्यकर्ताओं ने पीठासीन अधिकारी

→

मतदाता शिक्षण : वाह और इटावा में

महावीर सिंह

मतदाता शिक्षण के लिए वाह (जिला आगरा) एवं इटावा क्षेत्र में १०७ नुक्कड़ सभाएं और ग्रामीण सभायें की गईं। कालेजों में भी बैठकें की गईं। करीब ५,००० परचे व १,००० पोस्टर पूरे क्षेत्र में चिपकाये और वितरित किए गए। हमारे चुनाव सम्बन्धी विचारों का व्यापक प्रसर सामान्य जनता, बुद्धिजीवी एवं तरुणों पर पड़ा। काफी विलम्ब से काम प्रारम्भ हुआ, इसलिए अधिकांश लोग जिन्होंने इस विचार को पसन्द किया, वे सभी किसी न किसी उम्मीदवार के पक्ष में कार्य कर रहे थे। फिर भी कई सामाजिक कार्यकर्त्ता, शिक्षक एवं तरुणों ने तटस्थ भूमिका में हमारा पूरा-पूरा सहयोग किया। जगह-जगह आम लोग चुनाव प्रचारकों से सवाल करने लगे। हर क्षेत्र का हर उम्मीदवार हमारे प्रचार कार्य को सही मानता था और अपने चुनाव कार्यालयों तक में उन्होंने हमारे पोस्टर लगा रखे थे। यह एक प्रकार से इस विचार के प्रभाव से अपने को बचाने के लिये किया जा रहा था। क्योंकि प्रायः सभी उम्मीदवार किसी न किसी प्रकार से चुनाव नियमों का उल्लंघन कर रहे थे। हमारे सामने व्यावहारिक कठिनाई यह थी कि नये नये जवान कार्यकर्त्ताओं की भूमिका परिपक्व न होने की वजह से प्रतिकार के काम में हम उनका उपयोग नहीं कर सके। वैसे इन दोनों ही क्षेत्रों में चुनाव शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। हम अपनी टोली के साथ मतदान केन्द्रों पर घूमते रहे। कहीं-कहीं हमें ऐसी शिकायतें मिलीं कि किसी उम्मीदवार विशेष्य के प्रभाव की वजह से अमुक गांव के कमजोर लोग वोट नहीं डालना चाहते। शिकायत करने वालों से जब मैंने साथ चलने के लिए कहा तो उन्होंने अपनी मजबूरी बताई और कहा कि वे लोग किसी के कहने से मतदान केन्द्रों पर नहीं गये, उन को बहुत समझाने-बुझाने पर भी वे नहीं माने और अपने खेतों पर चले गए। अनियमितताओं की स्थिति यह रही कि वाह क्षेत्र के दो प्रमुख उम्मीदवारों का एक-एक लाख या उससे भी अधिक रुपया खर्च हुआ। शहरी सीट इटावा पर एक प्रमुख उम्मीदवार का अनुमानित तीन लाख से पांच लाख तक खर्च हुआ। जातिवाद का खुला प्रचार था। वोटर लाने में सभी उम्मीदवार जिनके पास साधन थे, बड़े पैमाने पर वाहनों का उपयोग कर रहे थे। इसकी शिकायत हमने सैक्टर मजिस्ट्रेट एवं निर्वाचन अधिकारी को लिखित रूप में दी। जहां जिस पोलिंग बूथ पर जिस उम्मीदवार का प्रभाव था, वहां फर्जी वोट भी डाले गये। लेकिन जहां दूसरी पार्टी के एजेंट ही एतराज न कर रहे हों, और हम वोटर को पहचानता नहीं थे, इसलिए इस गलत कार्यवाही को रोक नहीं सके। इस प्रकार की स्पष्ट स्वीकृति उम्मीदवारों के एजेन्टों ने बाद में की कि हमने अपने पोलिंग पर इतने फर्जी वोट डलवाये हैं। इस गलत काम की प्रायः सभी उम्मीदवारों की एक पूर्व नियोजित पद्धति ही बन गई है।

इस अनुभव से यह राय और भी मजबूत बनी कि वर्तमान चुनाव प्रणाली के द्वारा तथा दलगत राजनीति के द्वारा देश में लोकतन्त्र न तो सही माने में लोकतन्त्र ही है और न जनहित में कार्य करने के लिए सक्षम हो सकता है। और यदि यही स्थिति आगे रही तो लोकतन्त्र से जनता का विश्वास उठ जायेगा। और वह हिंसात्मक कार्यवाहियों में हिस्सेदार हो जायेगी। मौजूदा जनतन्त्र जिसमें केवल ५०% लोग (मतदाता) हिस्सा लेते हैं। उनकी स्थिति भी यह है कि केवल १०%

[शेष पृष्ठ १५ पर]

→

युवकों ने···

तथा पुलिस अधिकारियों से यह अनियमितता रोकने की प्रार्थना की, लेकिन उन्होंने अपनी असमर्थता जाहिर की। स्थिति बिगड़ती देखकर एक कार्यकर्त्ता चुनाव अधिकारी और पुलिस अधीक्षक के पास दौड़ गया, क्योंकि उनका कार्यालय नजदीक में था। पहले तो उन्होंने आनाकानी की। लेकिन कार्यकर्त्ता के आग्रह पर मतदान-स्थल पर जिलाधीश और सहायक पुलिस अधीक्षक अपनी फोर्स लेकर ४·३० बजे आए और हमारे कार्यकर्त्ताओं का सहयोग लेकर भीड़ को बाहर किया। दो मुहल्लों (दारागंज और कोटगंज-सोहनी पार्क धर्मशाला) में कार्यकर्त्ताओं ने मतदाताओं को लाने ले जाने वाली गाड़ी पर रोक लगा दी। सवारियों पर पार्टियों के झंडे कई स्थानों पर उतरवा दिए गए। एक मतदान केन्द्र पर एक पार्टी के कार्यकर्त्ता मतदाताओं को सवारी गाड़ी पर ला रहे थे। कार्यकर्त्ताओं ने जब उन्हें रोका तो कहने लगे कि यह बीमार है, चल नहीं सकता। कार्यकर्त्ताओं ने मतदाता को रिक्शे से उतार कर अपनी साइकिल पर बिठा कर तथा वोट डलवा कर उसके घर पहुंचा दिया। एक मतदान केन्द्र पर पोलिंग बूथ के पास उड़नदस्ते के सदस्य ज्योंही पहुंचे तो उन्होंने देखा कि एक पार्टी के कार्यकर्त्ता (एजेन्ट) मतदानाध्यक्ष को मारने पर उतारू थे। उनका आरोप था कि मतदानाध्यक्ष अनपढ़ महिलाओं की सहायता करने के बहाने एक विशेष उम्मीदवार के निशान पर ठप्पे लगवा रहे हैं उड़न दस्ते के सदस्यों ने स्थिति पर बड़ी चतुराई से काबू किया।

मतदाता-शिक्षण और चुनाव शुद्धि अभियान ने सोई तरुणाई को झकझोर दिया। लोकतन्त्र निर्माण लोक करे क्योंकि साम्प्रतिक लोकतान्त्रिक ढांचा लोकनिरपेक्षतावादी है और उसका निर्माण लोक ने नहीं किया है, बल्कि उस पर थोप दिया गया है और समूचा ढांचा तन्त्र-प्रधान है—अतएव स्थानीय तरुण कार्यकर्त्ताओं ने 'युवामंच' (लोकतन्त्र के लिए) का गठन कर लिया है। इस मंच के जरिये तरुणाई लोकशक्ति को जगाने के कार्यक्रमों को हाथ में लेगी। अब इस बात की आवश्यकता जोरों से महसूस की जा रही है कि तरुणाई राष्ट्रीय मंच पर आकर लोकतन्त्र के लोकनिर्माण में निर्णायक रोल अदा करे। 'युवामंच' (लोकतन्त्र के लिए) इसी दिशा में एक प्रयास है। इस चुनाव के अनुभवों और अभियान से नागरिक शक्ति के साथ 'युवामंच' को लोकस्वराज्य के कार्य में लगना है।

कार्यकर्त्ताओं ने यह माना कि २६ फरवरी को चुनाव-समाप्ति के साथ यह अभियान समाप्त नहीं हुआ बल्कि अब सही अर्थों में शुरू हुआ है। ❋

गुजरात के विद्यार्थी

(पृष्ठ ८ का शेष)

पाषाण हृदय विधायकों के प्रतीक स्वरूप १६८ पत्थरो का जुलूस निकाल उन पर खून डाल कर लोगो को बताया कि इन पत्थरों पर किसी भी चीज का असर नही होगा।

विधान सभा भग करने की माग का केन्द्र सरकार ने सिद्धान्ततः मान लिया है पर उसे उचित समय पर भग करने का निश्चय दोहराया है। दिल्ली आए गुजरात के लड़के इस बात से परेशान है कि जब गुजरात मे लगातार हालत बिगड रही है और जनता की माग प्रबल हो रही है तो दूसरा उचित समय और कौन सा होगा? क्या उचित समय तब आयेगा जब गुजरात के लोगो का अगला हमला ससद सदस्यो पर होगा कि वे ऐसी ससद से इस्तीफा दें जो जन आकाक्षाओ का निरादर करे? ११ मार्च को प्रदेश मे लगाये राष्ट्रपति शासन की ससद द्वारा स्वीकृति के समय गृहमत्री ने आरोप लगाया कि गुजरात के आन्दोलन को राजनीतिक दल अपने स्वार्थों के लिए भुना रहे हैं। गृहमत्री ने कहा कि अगर सामान्य जन-जीवन कायम हुए बिना गुजरात मे विधान सभा भग कर दी जाती है तो देश मे तानाशाही के लिए रास्ता खुल जाएगा और प्रजातन्त्र की जडें खोखली हो जाएगी।

गुजरात के विद्यार्थियो ने चर्चा मे बताया कि यह सच है कि गुजरात के आन्दोलन मे राजनीतिक दल भी सक्रिय हैं पर खुले रूप मे नही। आन्दोलन का सचालन करने वाली नव निर्माण युवक समिति पूरी तरह गैर राजनीतिक है और उसका किसी भी राजनीतिक दल से कोई लेना देना नही है। निर्माण समिति अपना आन्दोलन पूरी तरह शान्तिपूर्ण ढग से चलाने के पक्ष मे है, पर राजनीतिक दल और कांग्रेस भी इस प्रयास मे है कि आन्दोलन को साम्प्रदायिक रूप दे दिया जाए और हिंसक बना दिया जाए जिससे गुजरात के वे लोग ही इसके विरोध मे हो जाए जिनके लिए आन्दोलन चलाया जा रहा है। यही कारण है कि हालांकि करीब नब्बे विधायकों ने विधान सभा से इस्तीफे दे दिये पर पुलिस और सेना की गोलियो से अस्सी
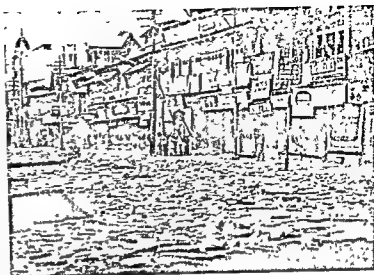
पत्थरों से पटी बडौदा की एक सडक

निरपराध लोगो के मरने के बाद विद्यार्थियो ने कहा कि हम प्रजातन्त्र मे विश्वास रखते हैं इसलिए प्रजातन्त्र मे हम विरोधी दलो को इस बात से नही रोक सकते कि वे जनता के आन्दोलन मे हिस्सा न लें। गुजरात के राजनीतिक दल अगर इस समय जनता का साथ नही देंगे तो कब देंगे।' विद्यार्थियो ने यह भी कहा कि 'यह तय है कि राजनीतिक दल चाहे हमारा साथ दें या न दें, लोगो की लाशों पर हम उन्हें उनकी राजनीतिक रोटियां नही सेकने देंगे। विधान सभा भग होने तक गुजरात के विद्यार्थी हर बलिदान के लिए तैयार हैं और हम आखिर दम तक आन्दोलन चलाएगे।'

पिछले कोई दो महीनो से गुजरात मे आन्दोलन चल रहा है। भारत के इतिहास मे यह पहली घटना है कि जब विद्यार्थियो ने जनता के लिए और जनता के साथ एक आन्दोलन को सिर पर उठा लिया। पर इतने दिनो के बाद सामान्य आदमी चाहता है कि अब रोज रोज की खोनीबारी बन्द हो और वो अपनी रोटी रोजी कमाए। अधिकाश विद्यार्थियो की भी इस बात मे रुचि थी कि 'रोज-रोज की होने वाली मौतो का सिलसिला खत्म हो, और कोई राजनीतिक समझौता हो जाए।' हजारो की सख्या मे आन्दोलन मे जुड़े गरीब विद्यार्थियो की भी इस बात मे रुचि थी कि स्कूल कालेज खुल जाए और उनका साल बच जाय। अत यह तय किया गया कि दिल्ली जाकर किसी समझौते की पहल की जाय। दिल्ली ने विद्यार्थियो के इस परिवर्तन का पूरा फायदा उठाया और चाहा कि दिल्ली आने और राजनीतिक समझौता करने की पहल से इन लोगो मे आपसी फूट पड़े। और वह पडी भी।

कहा जाता है कि गुजरात से आये विद्यार्थियो के एक प्रतिनिधि को सरकार ने चौदह हवाई टिकट दिये कि वह जाकर विद्यार्थियो के चौदह प्रतिनिधियो को दिल्ली उड़ा लाये। चूकि नव निर्माण समिति का कोई सगठन खड़ा नही हो सका और दूसरे विद्यार्थी सगठन भी इसमे बराबर का हिस्सा ले रहे थे इसलिए इस सकट का खडा होना वाजिब था—चौदह लोग कौन? और मैं क्यो नही? नेतृत्व का झगड़ा सत्ता द्वारा पीढियो से बोए जा रहे बीज का परिणाम है इसलिए वह बीज इन विद्यार्थियो मे भी उगा। श्रेय किसे मिले और नेतृत्व किसका, के झगडे के कारण कुछ विद्यार्थी हवाई जहाज से दिल्ली आ गये। जो बच गये या जिन्हे नही लाया गया उन्होंने →

→
रेल से दिल्ली आने का तय कर लिया। कहा जाता है कि रेल से आने वालों को अहमदाबाद स्टेशन पर रोका भी गया जिससे ट्रेन डेढ़ घण्टे लेट हुई। दिल्ली मे आज स्थिति यह है कि बिना किसी मतलब के गुजरात के दो ढाई हजार विद्यार्थी पडे हुए हैं। इन विद्यार्थियो को यहा न तो कोई धरना देना था, जुलूस निकालना था, न उपवास करना था। (आ गये तो कुछ उपयोग हो रहा है वह अलग बात है) न सरकार और राष्ट्रपति के साथ चर्चा मे इतने लोगो को भाग लेना था।

दिल्ली आने के सन्दर्भ मे हुए मतभेदो के साथ ही साथ कुछ और मसले भी विद्यार्थियों के साथ जुड गये। कुछ विद्यार्थियो ने चर्चा के दौरान बताया कि ऐसे समय जबकि गुजरात मे लोग बराबर मर रहे हैं, किसी भी चर्चा के लिए दिल्ली आना बेकार था। कुछ का कहना है कि जिस दिन हम अहमदाबाद से दिल्ली के लिये चले उस दिन भी भारी गोली बारी हुई और पाच छह लोग मर गये। कुछ विद्यार्थियो का कहना है कि विद्यार्थियो को दिल्ली लाने मे राजनीतिक दलो का ही हाथ प्रमुख है। इन विद्यार्थियो का यह भी मानना है कि केवल राजनीतिक दलो के प्रतिनिधि विद्यार्थी ही दिल्ली आ गये और पूरे मामले को राजनीतिक रग दे रहे है। जैसे कि कुछ विद्यार्थी यह मांग रख रहे हैं कि केवल विधान सभा भग हो जावे और एक साल बाद नये चुनाव हों। अगर विधानसभा तुरन्त भंग हो जाती है तो ये विद्यार्थी जन-जीवन सामान्य बनाने के काम मे जुट जायगे। कुछ विद्यार्थी कहते हैं कि विधानसभा भग होने के बाद भी वे भ्रष्टाचार और महगाई के खिलाफ अपना आन्दोलन जारी रखेंगे। यह माग करनेवालों मे बडौदा के एम. एस. विश्व विद्यालय की यूनियन के लोग हैं। इस विश्वविद्यालय मे लगभग सत्रह हजार विद्यार्थी हैं। जय पटेल इनके नेता हैं। जय पटेल का कहना है कि वे और उनके साथी विधान सभा भग होने के बाद भी आन्दोलन जारी रखेंगे। बडौदा स्टूडेण्ट फेडरेशन के अध्यक्ष नरेन्द्र तिवारी ने अपनी चर्चा मे जय पटेल पर आरोप लगाया कि वे चिमन भाई पटेल के लिये कार्य कर रहे हैं और नव निर्माण समिति मे फूट डालने दिल्ली आये हैं। इसी प्रकार नव निर्माण समिति के प्रमुख नेता जानी पर कुछ विद्यार्थियो ने आरोप लगाया कि वह रतू भाई अडानी के ग्रुप से मिल गये हैं। सात मार्च की रात को दिल्ली की गुजराती समाज मे जहा कि अधिकाश विद्यार्थी ठहरे हैं काफी तोड़ फोड केवल इसलिए हुई कि, विद्यार्थियो के कहे अनुसार, मनीषी जानी रतूभाई अडानी के साथ रात देर तक रहे और डेढ़ दो बजे वापस लौटे। कुछ विद्यार्थियो ने कहा कि अगर निर्माण समिति मे राजनीति वाले नही घुसते तो पुरुषोत्तम मावलकर जैसे आदर्श समिति से इस्तीफा नही देते।

इतना तय है कि अपनी तमाम कमजोरियो के बावजूद गुजरात का आन्दोलन चलता रहेगा। आगे या पीछे सरकार को विधान सभा को भग करना ही पड़ेगा। अगर विद्यार्थी आपसी झगडो के कारण बिखरे (जिसकी कि सम्भावना बहुत कम है) तो भी गुजरात के आम आदमी आन्दोलन चलाएगे। विधान सभा भग होने तक गुजरात का आन्दोलन भग नही होगा।

कुछ लोगो का कहना है कि विधान सभा भग हो जाने से ही क्या हो जायगा ? फिर चुनाव हो जाएगे और विधान सभा जुड जाएगी। विधान सभा भग होने और जुडने का सिलसिला कब तक चलता रहेगा?

विद्यार्थियो का कहना है कि मामला सिर्फ विधान सभा भग हो जाने से ही समाप्त नही हो जाएगा। विद्यार्थियो ने माग की है कि नये चुनाव एक साल के बाद हो। इस एक साल मे ये विद्यार्थी मतदाता शिक्षण का काम करेंगे। गुजरात के गाव-गाव मे जाएगे और लोगो को बताएगे कि किसी भी प्रलोभन मे न आकर उन्हें जनता के सच्चे सेवक को ही अपना मत देना है। ये विद्यार्थी इस बात की कोशिश करेंगे कि जनता मे से ही अच्छे और योग्य उम्मीदवार चुनाव में खड़े हों और जीत कर जाएं। पूर्व के भ्रष्टाचारी विधायक फिर से चुनाव न लड सकें। नव निर्माण युवक समिति का अभी कोई संगठनात्मक ढाचा नही है। लोगो ने और राजनीतिक दलो ने भी इस समिति के नाम का फायदा उठाकर जगह-जगह समितियां कायम करली हैं और मामले को राजनीतिक रग दे रहे हैं। नव निर्माण समिति के विद्यार्थियो ने कहा कि विधान सभा भंग होने के बाद वे समिति का एक गैर राजनीतिक सगठन खड़ा करना चाहते हैं। इसीलिए नव निर्माण समिति ने उन विद्यार्थियो के साथ अपनी असहमति प्रकट की है जिन्होंने विधान सभा भंग के साथ नर्मदा विवाद, रासायनिक खाद और पेट्रोल आदि के मामले को भी जोड़ दिया है और चाहते हैं कि विधान सभा भंग होने के बाद भी गुजरात मे आन्दोलन चलता रहे।

हालाकि विद्यार्थियो ने कहा है कि वे आखिरी दम तक आन्दोलन चलाएगे, पर बहुत सारे लोगो को शका है कि आम आदमी की बढती हुई तकलीफों के बीच और हिंसा के दम पर यह आन्दोलन कब तक चलेगा ? अंग्रेजो के जमाने मे पुलिस की गोली से एक आदमी भी मर जाता था तो देश मे तूफान उठ जाता था। गुजरात मे रोज लोग मरते रहे हैं और देश के लोग चाय के कप के साथ अखबार की खबरो को पी रहे हैं। इसलिए आज अगर पाच लोगो के मरने पर हल्ला नही होता तो कल पचास के मरने पर भी नही होगा। राज्य के पास जितनी बड़ी हिंसा शक्ति है उसके सामने गुजरात की छोटी हिंसा कुछ कर नही पाएगी।

रविशकर महाराज को गुजरात के विद्यार्थी पिता तुल्य मानते हैं। गुजरात के लोग यह भी मानते हैं कि अपने समय मे जो स्थान गाधी जी का था वह आज महाराज का है। महाराज ने ही सबसे पहले चिमन भाई पटेल की सरकार से इस्तीफे की माग की थी और केन्द्र से भी पटेल सरकार को हटाने की सिफारिश की थी। भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन को महाराज ने अपनी ९० वर्ष की उम्र और सायटिका के दर्द के बावजूद सक्रिय समर्थन दिया, पर महाराज मानते हैं कि अगर आन्दोलन अहिंसा से और शांतिपूर्ण ढग से चले तो वे मरने को भी तैयार है। गुजरात के विद्यार्थी कहते हैं कि महाराज के प्रति तमाम सम्मान के बावजूद अहिंसा वाली बात हमारे समझ मे नही आती। अहिंसा के कारण ही इतना भ्रष्टाचार पनपा है। हम हिंसा, अहिंसा के बीच का रास्ता चाहते हैं।

एक ही लक्ष्य को लेकर आज गुजरात मे दो तरह के आन्दोलन चल रहे हैं। रविशकर महाराज के नेतृत्व मे अहिंसक लोक स्वराज्य आन्दोलन चल रहा है जिसमे लोग शांतिपूर्ण ढग से प्रदर्शन कर अपनी गिरफ्तारियां दे रहे हैं। विरोधी दल भी अपने ढंग से आन्दोलन चलाये हुए है। १२ मार्च से मोरारजीदेसाई ने भी अपना अनशन आरम्भ कर दिया है। हिंसा और अहिंसा की बहस में बगैर पडे नव निर्माण समिति भी अपना आन्दोलन चला रही है। सभी लोग विधान सभा भग कराने और नये चुनाव करा सच्चे जन सेवको को विधान सभा मे पहुचाने के लिए ही लड रहे हैं। रास्ते अलग-अलग पर निशाना एक ही है। ●

[पृष्ठ ५ का शेष]

बाबा को बेवकूफ समझता है। बाबा और बेवकूफ दोनो मे "ब" समान है, यह तो ठीक ही है। लेकिन बादशाह खान मे भी "ब" है। वह क्या समझता है, अपने कृपलानी जी भी यही कहते हैं कि आप लोग जितना भी उत्तम काम करेंगे वह एक दिन खत्म कर देगी पॉलिटिकल पार्टी जो पावर मे आ जायेगी। इसलिए आपको राजनीति मे प्रवेश करना चाहिए, यह उनकी निश्चित राय है। और बाबा की निश्चित राय है कि गफ्फार खां अगर ग्रामदान का काम करता तो वह अत्यन्त लोकप्रिय होता। और उसके कहने से ग्रामदान भी होते—इसमे शक नही। लेकिन पॉलिटिक्स से उसका दिमाग हटता नही। उसने तेरह साल जेल मे बिताये और पॉलिटिक्स उसके दिमाग मे बैठ गया। लेकिन बाबा की नम्र राय है कि अगर वह ग्रामदान का आन्दोलन उठा लेता तो उसको बड़ी सफलता मिलती। अब क्या हुआ है, उसका लड़का जो है पॉलिटिक्स मे—वली खान, उसके और भुट्टो के बीच कुछ-न-कुछ झगड़े चला करते हैं। यह जो भुट्टो है, वह बहुत बड़ा अद्भुत व्यक्ति है। वह किस समय क्या बोलेगा, उसके विषय मे किसी को पता नहीं। यह वह जान-बूझकर करता है जिससे कि अपने इरादे का किसी को पता न चले। परंतु उसके मन मे भारत के साथ मैत्री करने का है, ऐसा बाबा समझता है। लेकिन अपना टाइम देखते हैं। राहु-केतु अनुकूल कब होंगे यह देखना पड़ता है। राजनीतिज्ञ के पीछे हमेशा यही ग्रह लगे रहते हैं। आपको मालूम होगा कि कई राजनीतिज्ञ तो ज्योतिषियो से सलाह भी करते हैं। नागपुर के एक ज्योतिषी ने तो राहु, केतु, चन्द्र, मगल, गुरु, शुक्र, शनि सब देखकर जाहिर किया है कि उत्तर प्रदेश मे बहुमत मिलेगा जनसघ को। क्योकि गुरु वहा पर है। कितना मत उनको मिलेगा क्योंकि शुक्र इनके खिलाफ हैं इत्यादि-इत्यादि। सब इतने डीटेल मे दिया है। अब ज्योतिषी के नसीब की परीक्षा है। लोकमान्य जब बीमार थे तो सवाल उठा कि जीयेंगे या मरेंगे। एक घर मे दो ज्योतिषी थे भाई-भाई। एक ने कहा कि मरेंगे, दूसरे ने कहा जीयेंगे। तो कुछ भी सही हुआ तो घर का नुकसान नही होगा।

यह जो बादशाह खान है उसमे बहुत बड़ी बात है। वह सच्चे अर्थ मे साधु पुरुष है। जो साधु पुरुष होते हैं, मूरख भी होते हैं, भोले होते हैं विश्वास कर लेते हैं, व्यवहार ज्यादा जानते नही—यह सब सन्तो का लक्षण है। लेकिन असम मे एक सन्त हो गये हैं—शंकरदेव। उनका एक उत्तम वाक्य है—"राजनीति राक्षसर शास्त्र" (राजनीति राक्षसो का शास्त्र है।)

[पेज १२ से जारी]

जागरूक तथा कथित नेता कार्यकर्त्ता ५०% मतदाताओ को घेर-बटोर कर पोलिंग बूथ पर लाता है, सही माने मे ९०% मतदाता आज भी अपने अधिकार और कर्त्तव्य को नही जानते और वे इन चुनावो से उदासीन हैं। लेकिन यह १० फीसदी कार्यकर्त्ता जिनका पेशा राजनीति है, वे समय-समय पर कभी देशहित के नाम पर, प्रदेश को उठाने के नाम पर तथा क्षेत्र की उन्नति के नाम पर थोथे समाजवाद और राष्ट्रवाद के सपनो को पूरा करने के नाम पर जातियता और साम्प्रदायिकता के नाम पर वोटरो को उत्तेजित करके पोलिंग बूथ पर लाते हैं। उसके बाद उदासीन वोटर अपने काम मे लग जाता है। और १०% कार्यकर्त्ता अपने राजनैतिक धन्धे मे लग जाते हैं। मुख्य लाभ धनी वर्ग को मिलता है। बड़े-बड़े उद्योगपति और व्यवसायी वर्ग, इस राजनीतिक व्यापार मे चुनाव के समय लाखो और करोड़ो रुपया साधन के रूप मे राजनीति पर लगाते हैं, चुनावो के बाद सत्ता पक्ष और विपक्ष के मार्फत व्यावसायिक लाभ उठाते हैं। जो जितना पूजी मे लगाता है, उससे अधिक कमाई करता है।

महिलाएँ हिंसा से जूझें : श्रीमती इंदिरा गाँधी

❖प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने ९ मार्च को विनोबा जी से पवनार में तीस मिनट तक चर्चा की और अपनी चर्चा के दौरान देश की मौजूदा समस्याओं पर बातचीत की। प्रधानमन्त्री अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के अवसर पर पवनार गईं थीं। प्रधानमन्त्री की विनोबा जी से यह इसी वर्ष में दूसरी मुलाकात थी। पहली मुलाकात दो जनवरी को हुई थी, जब दोनों नेताओं ने कोई अस्सी मिनट तक विभिन्न विषयों पर बातचीत की थी। इस पहली मुलाकात के बाद विनोबा जी ने कहा था कि शासन और सर्वोदय के बीच सहमति के बहुत सारे क्षेत्र इस चर्चा में प्रकट हुए। इसी अवसर पर विनोबा जी ने कहा था कि 'इन्दिरा जी सर्व सेवा संघ की सदस्या ही हैं।' अपने व्यस्त कार्यक्रमों के बावजूद श्रीमती गांधी ने महिला सम्मेलन का अतिथि होना स्वीकार किया था और वे पहुंची भी।

तीन दिन तक चले अ० भा० स्त्री शक्ति सम्मेलन में देश भर से कोई पांच सौ बहनें एकत्र हुईं और आज की बदलती परिस्थिति में 'स्त्री शक्ति' की महत्वपूर्ण भूमिका पर विचार विमर्श किया। सम्मेलन का उद्घाटन विनोबा जी ने किया।

देश में बढ़ रही हिंसा से जूझने और देश में शांति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए प्रधानमन्त्री ने सम्मेलन में महिलाओं से सहयोग देने की अपील की। श्रीमती गांधी ने कहा कि सिर्फ अनाज की कमी ही देश में बढ़ रही हिंसा का एकमात्र कारण नहीं है। अगर ऐसा होता तो अनाज की दुकानें नहीं जलाई जातीं। प्रधानमन्त्री ने कहा कि महिलायें देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

विनोबा जी के इस सुझाव पर कि सरकारी कर्मचारियों को उनके वेतन का एक हिस्सा अनाज के रूप में दिया जाए और किसानों से लगान की वसूली भी अनाज के रूप में की जाए—बोलते हुए श्रीमती गांधी ने कहा कि सरकार इस सुझाव की जांच कर रही है। समझा जाता है कि विनोबा जी ने यह सुझाव राष्ट्रपति श्री गिरि को उनकी पिछले दिनों की पवनार यात्रा के समय दिया था, पवनार के लिए आने से पूर्व श्रीमती गांधी की और राष्ट्रपति जी के बीच विनोबा के सुझावों के संदर्भ में चर्चा भी हुई थी।

अपने पचास मिनट के भाषण में विनोबा जी ने देश को चार चीजों से बचाने की चर्चा की। चार चीजों में विनोबा जी ने गन्दी फिल्मों का निर्माण रोकने परिवार नियोजन करने के बजाय ब्रह्मचर्य अपनाने, शराबबन्दी लागू करने और लगान की वसूली अनाज में करने के सुझाव दिये। (सम्मेलन के विस्तृत समाचारों की प्रतीक्षा है।)

❖उत्तर प्रदेश में हाल ही सम्पन्न हुए चुनावों के अवसर पर इलाहाबाद, कानपुर और आगरा के साथ-साथ वाराणसी में भी मतदाता शिक्षण का कार्यक्रम उठाया गया। जनवरी के प्रथम सप्ताह में काशी हिन्दु विश्वविद्यालय और काशी विद्यापीठ के छात्रों के बीच शुद्ध और स्वतन्त्र चुनावों के बारे में गोष्ठियां की गईं। पहली फरवरी को आचार्य राममूर्ति की उपस्थिति में 'लोकतंत्र का विकल्प' विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त फोल्डरों के वितरण द्वारा, दीवारों पर पोस्टर चिपका कर और सिनेमा घरों में स्लाइड्स के प्रदर्शन द्वारा मतदाता शिक्षण का कार्य किया गया। २४ व २६ फरवरी को मतदान के समय पोलिंग बूथों का निरीक्षण किया गया।

❖पांच मार्च को मुजफ्फरनगर (बिहार) जिले के गांव नरसिंहपुर के खादी सदन प्रांगण में जिले के सकरा प्रखण्ड भूदान किसानों की बैठक श्री निर्मल भाई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आचार्य राममूर्ति ने भूदान किसानों को अपनी बेदखली रोकने और संगठित रहने पर बल दिया। राममूर्ति जी ने कहा कि सर्वोदय मंडलों और अन्य रचनात्मक संस्थाओं का यह काम होना चाहिए कि वे बेदखली रोकें और इस कार्य के विकास को चालना देते हुए अपना उत्सर्ग करें। निर्मल बाबू ने संगठनात्मक शक्ति के विकास पर बल दिया। बिहार भूदान कमेटी के अध्यक्ष श्री बद्री बाबू ने आर्थिक, सामाजिक और औद्योगिक विकास से लाभ लेने पर प्रकाश डाला, श्री कामेश्वर बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

❖मध्यप्रदेश सेवक संघ के तत्वावधान में शांति केन्द्र हस्तिनापुर (ग्वालियर) में १६, १७ व १८ मार्च को एक त्रिदिवसीय विचार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। शिविर के पश्चात १९ मार्च से २४ मार्च तक ग्राम-सम्पर्क अभियान भी चलेगा। शिविर में श्री सुरेशराम भाई, श्री नरेन्द्र दुबे, श्री एस० एन० सुब्बाराव, श्री गुरुशरण और मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष श्री हेमदेव शर्मा भाग लेंगे।

❖प्राप्त समाचारों के अनुसार पश्चिम बंगाल के सर्वोदय कार्यकर्ता प्रदेश में होने वाले २२वें अखिल भारत सर्वोदय समाज सम्मेलन की तैयारियों में पूरे जोरशोर के साथ लगे हैं। १६ फरवरी को प्रदेश के नडिया जिले के विभिन्न स्थानों से आये कार्यकर्ता कृष्णनगर में एक बैठक में मिले और मई में होने वाले सर्वोदय सम्मेलन के सन्दर्भ में प्रदेश के सर्वोदय कार्य की स्थिति पर विचार किया। बैठक में उपवासदान पर भी चर्चा की गई। बैठक की अध्यक्षता पश्चिमी बंगाल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष श्री अनंगविजय मुखर्जी ने की। बैठक में निर्णय लिये गये कि नडिया जिले के कार्यकर्त्ता सर्वोदय सम्मेलन के लिए ५००० रुपये की राशि एकत्र करेंगे और कम से कम ५०० सर्वोदय मित्र बनायेंगे।

❖जिला भूदान-यज्ञ कार्यालय, डालटनगंज (पलामू) बिहार के कार्यालय मंत्री श्री सूर्यनारायण शर्मा ने तय किया है कि वे नियमित रूप से महीने में चार शाम उपवास करेंगे। वर्ष भर के दो उपवास की राशि पच्चीस रुपये उपवास दान में सर्व सेवा संघ को भेजेंगे और शेष दो शाम के उपवास की राशि अपने गांव की ग्रामसभा तथा अन्य स्थानीय संस्थाओं को दान में देंगे।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली, सोमवार, २५ मार्च, '७४

मनीषी जानी (बायें) तथा अशोक पंजाबी (बीच में लेटे हुए) ■ 'भूदान-यज्ञ' की विशेष बातचीत —पृष्ठ

सम्पादक -
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० २५ मार्च, '७४ अंक २६

राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

हिंसा का आश्रय

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने अभी विश्व भारती शान्ति निकेतन के दीक्षांत अधिवेशन के अवसर पर और उसके बाद पवनार में 'स्त्री-शक्ति जागरण' सम्मेलन में अनेक बातों की चर्चा करते हुए इस बात पर विशेष बल दिया कि राजनीति या अन्य किन्हीं भी योग्य उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लोगों को हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि अपने विचार अथवा मत अथवा उद्देश्यों की उपलब्धि का प्रयत्न सर्वथा उचित है—इनमें भेद भी होते ही हैं इसलिये आवश्यक है कि हम उन्हें पाने के लिए उचित उपायों का अवलंबन करें। प्रकारान्तर से 'साधन शुद्धि' की यह बात कहकर प्रधानमंत्री ने अच्छा ही किया है। राजनीतिक दल और उनमें भी जिसके पास जितनी अधिक शक्ति या सत्ता है, साधन शुद्धि की उतनी ही अधिक अवज्ञा करते हैं। हमारी आज की दुर्दशा इसी मनोवृत्ति का सीधा परिणाम है। जन-सामान्य हिंसा का सहारा क्यों लेता है, इसकी बात करते हुए स्वयं विनोबा ने अभी गुजरात और महाराष्ट्र के संदर्भ में यह कहा था कि लोगों ने देखा है कि जब तक हिंसा का सहारा न लें सरकार उचित मांगों पर ध्यान ही नहीं देती। यह तो हुआ एक ओर की हिंसा का कारण। अब दूसरी ओर अर्थात स्वयं शासन की ओर से जो अपरिमित हिंसा होती है उन न-कुछ-हिंसकों के प्रति उसके बारे में क्या कहा जाये। भूखे और तरह-तरह के अन्याय ग्रस्त लोगों की सत्ता के प्रति हिंसा वैसी कुछ है जैसी गांधी जी ने बिल्ली द्वारा पकड़ लिये गये चूहे की बताई थी। बेचारा जान बचाने के लिए दो-एक पंजे चला कर समाप्त हो जाता है। उसे हिंसा कैसे कहें।

पिछले दिनों दिल्ली में गुजरात के कुछ विद्यार्थी आये हुए थे। बताया कि पुलिस ने यह स्वीकार किया है कि कुछ भीड़ को तितर बितर करने के लिए नियमानुसार पहले आंसू गैस, फिर बेंत या लाठी चार्ज और अगर इससे भी काम न चले तो हवा में फायर या और आवश्यक होने पर किसी व्यक्ति की टांग आदि में गोली मारी जा सकती है। किन्तु गुजरात में चलन पहले ही गोली चलाने का रूढ़ हो गया था। इस हिंसा के विरोध में बोलें तो क्या 'साधन-शुद्धि' का उच्चारण करने वाली, स्त्री होने के कारण सहज दयामयी हमारी प्रधानमंत्री इस पर ध्यान देंगी? वे तो कहती हैं जब तक आन्दोलन (भले ही शान्तिपूर्ण क्यों न हो) बंद नहीं हो जाता, मांगों पर विचार नहीं किया जा सकता। एक कंकर के बदले गोलियों के राउण्ड पर राउण्ड कब विचारणीय समझे जायेंगे।

बम्बई में मुरारजी देसाई ने तो सारे देश से भ्रष्टाचार के विरोध में 'गुजरात प्रणाली' अपनाने को कहा है और कहा है कि देश आज ऐसी भयानक स्थिति तक आ पहुंचा है कि प्रामाणिकता के साथ जीवन-यापन करने वाले का जीना असंभव सा हो गया है। जनता से 'साधन-शुद्धि' पर किसी भी हालत में दृढ़ बने रहने की आशा रखने वालों को कभी-कभी अपनी तरफ भी देख लेना चाहिए।

आर० बी० आई और सी० बी० आई

आर० बी० आई अर्थात रिजर्व बैंक आफ इण्डिया और सी० बी० आई० अर्थात सेंट्रल ब्यूरो आफ इन्फर्मेशन। एक देश की अर्थ व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग तो दूसरा प्रशासन आदि को स्वच्छ रखने के लिए जिम्मेदार। इन दोनों का वास्तव में कभी सीधा आमना-सामना तब तक नहीं हो सकता जब तक एक में अर्थ सम्बन्धी अव्यवस्था और दूसरे में किसी आधारहीन शंका की भावना पैदा न हो जाये। बम्बई में इनका सीधा आमना-सामना ठन गया। किसी निर्यात-व्यापारी ने सी० बी० आई को सूचित किया कि उसे आर० बी० आई० के शीर्षस्थ अधिकारियों को रिश्वत देकर व्यापार चलाना पड़ रहा है तो सी० बी० आई० ने पहले बैंक के मुद्रा विनिमय विभाग और सम्बन्धित कुछ अधिकारियों के घर पर छापे डाले। मगर कोई बात हाथ नहीं लगी। संदेहास्पद कागजात या रुपया-पैसा कुछ नहीं मिला तो आर० बी० आई के अफसर सिर हो गए और उन्होंने केन्द्रीय सरकार से इस प्रकार के व्यवहार के विरोध में शिकायत की है। शिकायत तो करनी ही चाहिए। यहां तो कुछ मिला नहीं। अपराध के ठोस प्रमाण मिल जाने पर भी वहां प्रमाण इकट्ठा करने वालों को तबादला करके या इसी प्रकार की दूसरी सजायें दी गई हों, ऐसे उदाहरण अनगिनत हैं। इसलिए जब प्रमाण नहीं मिले तब तो सजायें दिलायी ही जा सकती हैं। सभी जानते हैं अपराध करने का जिन के खिलाफ प्रमाण मिलता है या नहीं मिलता, अपराध इन्हीं तक महदूद नहीं होता—इसके ताने-बाने लगभग अगम्य समझे जाने वाले छोरों तक पहुंचे हुए होते हैं। ये अगम्य छोर इस घटना पर क्या प्रतिक्रिया जाहिर करते हैं यह इसीलिए महत्वहीन है। अपराधी का रक्षण और निरपराध के प्रति सख्ती का रुख हमारी व्यवस्था का लगभग सिद्ध स्वभाव निश्चित हो चुका है।

साधन-शुद्धि प्रकारान्तर से

जनता को अन्न मिले और इसलिए किसानों को सिंचाई के लिए पानी, इस दृष्टि से नहरों की अपेक्षा ट्यूबवेल इस देश में कहीं अधिक उपयोगी है—इसे विशेषज्ञ कई बार कई तरह से कह चुके हैं। इस दृष्टि को स्वीकार किया जाता तो भाखड़ा, नगल आदि की जरूरत न पड़ती और उनके जो खतरे हो सकते हैं उनकी भी चिन्ता न करनी पड़ती। नर्मदा-बांध योजना को लेकर जो महाभारत चल रहा है वह भी अप्रस्तुत होता और तवा घाटी में तवा को बांध कर जिस प्रत्याशित भयंकरता की बात वहां के लोगों के मन में

(शेष पृष्ठ १४ पर)

मनीषी जानी और पंचाली से बातचीत

भ्रष्टाचार तो केन्द्र में भी है

दिल्ली की तिहाड जेल से अपने दो
ो साथियों के साथ शनिवार, सोलह मार्च,
को छूटने के बाद हम मनीषी जानी से मिले।
उन्होंने कहा कि विधान सभा भंग हो जाने से
हमारा एक बहुत बड़ा काम पूरा हो गया।
अहमदाबाद के आर्ट्स कालेज में दर्शनशास्त्र
का अध्ययन कर रहे मनीषी जानी एम० ए०
प्रथम वर्ष के छात्र हैं और गुजरात में आन्दो-
लन चलाने वाली नव निर्माण युवक समिति
के अध्यक्ष भी।

जानी से पूछा कि गुजरात लौटने के बाद
गा क्या कार्यक्रम रहेगा तो उन्होंने कहा
पिछले दो महीनो के आन्दोलन से सामान्य
ता की तकलीफें एकदम बढ़ गई हैं इस-
ए वे तुरन्त लौटकर जन-जीवन को पुन
मान्य करने के लिए कार्य करेंगे। आन्दोलन
दौरान छोटे-छोटे गावों में और मोहल्लों में
र निर्माण समिति के नाम से राजनीतिक
ों और निहित स्वार्थों ने छोटी-छोटी
मितियां कायम कर ली हैं। जानी ने कहा
'अब हमारे सामने सबसे बड़ा काम नव
र्माण समिति का एक अच्छा संगठन खड़ा
रना है। शायद अगले महीने नव निर्माण
मिति अपना एक बड़ा सम्मेलन भी आयो-
त करेगी जिसमें भविष्य के कार्यक्रम के बारे
विचार होगा।

जानी ने कहा कि अगले चुनाव अब एक
र्ष बाद ही कराये जायेंगे और इस दौरान
म लोग गांव-गांव में फैल कर लोगों के
शिक्षण का काम करेंगे। हम इस बात की
ोशिश करेंगे कि प्रजा के सच्चे प्रतिनिधि ही
ानी विधान सभा में पहुंच सकें। नव
निर्माण समिति एक आचार संहिता तैयार
रेगी और लोगों को बतायेगी कि किस प्रकार
े उम्मीदवार को वोट नहीं देना चाहिए।
जानी से जब पूछा कि क्या अच्छे उम्मीदवारों
के अभाव में नव निर्माण समिति अपने उम्मीद-
वारों को खड़ा करेगी, तो उन्होंने कहा कि
आज की राजनीति भ्रष्ट हो गई है। अगर
हमने अपने उम्मीदवार विधान सभा में भेजे
तो 'भ्रष्टाचार के धब्बे उनके दामन में भी
लग जायेंगे, इसलिए हमारी ऐसी कोई इच्छा
नहीं है कि नव निर्माण समिति के लोग चुनाव
में खड़े हों।' जानी ने इस बात को स्वीकार
किया कि अगर कभी ऐसा हो भी कि निर्माण
समिति के लोग चुनावों में जीतकर विधान
सभा में जायें और भ्रष्ट हो जायें तो उन्हें
भी जनता इसी तरह निकाल बाहर करेगी
जिस तरह उसने चिमनभाई की भ्रष्ट सरकार
को किया।

जानी से जब पूछा कि जनता की मांग
पर भंग विधान सभा के जिन विधायकों ने
इस्तीफा दे दिया और जिन्होंने नहीं दिया
उनका अगले चुनाव में क्या भविष्य होगा तो
उन्होंने कहा कि भंग विधान सभा के सारे ही
विधायक भ्रष्ट थे, जिन्होंने इस्तीफा दे दिया
वे भी और जिन्होंने नहीं दिया वे भी, इस
लिए इस बात की बिल्कुल संभावना नहीं है
कि भंग विधान सभा के १६८ विधायकों में
से एक भी पुनः चुनाव में खड़ा हो। जानी ने
कहा कि अगर किसी ने चुनाव में खड़े होने
की हिम्मत भी की तो जनता उन्हें नहीं
चुनेगी।

जानी ने इस बात को स्वीकार किया कि
न सिर्फ आज की राजनीति भ्रष्ट है, चुनाव भी
भ्रष्ट है इसलिए जरूरत इस बात की है कि
भ्रष्टाचार की इस पूरी व्यवस्था को ही
समाप्त कर दिया जाये' पर यह बात दूर की
है और हमारी शक्ति सीमित है। हम एक-
एक करके काम को उठाना चाहते हैं।" जानी
ने यह भी स्वीकार किया कि गुजरात से
भ्रष्टाचार सिर्फ पटेल मंत्रिमंडल को हटा देने
और विधान सभा भंग कर देने भर से समाप्त
नहीं हो जायेगा, पूरे शासन तंत्र को जो
नौकरशाही व्यवस्था संचालित कर रही है उसमें
भ्रष्टाचार घटता हुआ है और निर्माण समिति
का मुख्य काम इस व्यवस्था से भ्रष्टाचार
समाप्त करने का होगा। 'पर इसके लिए
अब हमें सड़कों पर आकर जलूस निकालना
नहीं है और न ही धरना देना है। अब हमारा
आन्दोलन चार दीवारी के अन्दर सीमित
रहेगा। टेबल पर बैठकर भी हम शासन-शुद्धि
का आन्दोलन चलायेंगे", जानी ने कहा।

आपके द्वारा आन्दोलन करने से कीमतें
कितनी कम हो गई? जानी ने उत्तर दिया
कि कीमतों का प्रश्न सारे हिन्दुस्तान का है,
अकेले गुजरात का नहीं। पर अपनी सीमित
शक्ति को देखते हुए हमने अभी सिर्फ गुजरात
को लिया है। हमारे आन्दोलन से जमाखोरों
को डर लगने लगा है और बड़े-बड़े उत्पादकों
ने हमें आश्वासन दिया है कि व दाम बढ़ने से
रोकेंगे। हमने तय किया है कि भविष्य में
चाहे जिस पार्टी की सरकार बने हम अपनी
ओर से उस सरकार को एक मांग पत्र देंगे
कि ये मांगे इतने समय में पूरी करना पड़ेंगी,
अगर सरकार उन मांगों को पूरा नहीं करेगी
तो हम उस सरकार से कहेंगे कि वह त्यागपत्र
दे। साथ ही हम भी अपनी पूरी शक्ति भर
सरकार की मदद देंगे।'

जानी ने कहा कि हमें और हमारे आन्दो-
लन को जयप्रकाश जी से बहुत प्रेरणा मिली।
जयप्रकाश जी ने जब कहा कि एक वर्ष के
लिए छात्रों को अपनी पढ़ाई बन्द कर देना
चाहिए और देश के कामों में लग जाना
चाहिए तो नव निर्माण समिति ने जे० पी०
की बात को कबूल किया। 'हालांकि हमने
जयप्रकाश जी से नेतृत्व की मांग की थी और
कार्यक्रम भी मांगा था। जे० पी० के आह्वान
पर हमें लगभग ५०० छात्र मिले हैं जो अपनी
पढ़ाई छोड़कर समाज सेवा के काम के लिए
तैयार हैं।'

जानी ने कहा कि नव निर्माण समिति
को हम एक गैर राजनीतिक संगठन बनाना
चाहते हैं इसलिए हम हर एक ऐसे व्यक्ति
का सहयोग लेना चाहेंगे जो राजनीति में
नहीं है। जानी ने कहा कि रविशंकर महा-
राज के नेतृत्व में जो लोक स्वराज्य आन्दो-
लन चल रहा है उसका हम पूरा समर्थन करते हैं
और मानते हैं कि हम भी उन्हीं का काम
कर रहे हैं। हम भी प्रजा को यही विश्वास
दिलाना चाहते हैं कि हम सत्ताभिमुखी नहीं हैं
और शासन शुद्धि करना चाहते हैं।

आन्दोलन कैसे आरम्भ हुआ इसकी चर्चा
करते हुए मनीषी जानी ने कहा कि गुजरात
में शिक्षा जगत ■ इतिहास में पहली बार
गुजरात विश्व विद्यालय की सीनेट में १२

→

→

विद्यार्थी प्रतिनिधियों को स्थान दिया गया। गुजरात विश्वविद्यालय मे लगभग १२६ कालेज हैं। गुजरात मे विधान सभा मे विरोधी पक्ष मजबूत नहीं है और सत्तारूढ़ दल की ही तरह प्रजा के कामो मे उसकी दिलचस्पी भी नहीं है इसलिए जब एल० डी० इंजीनियरिंग कालेज मे भोजन का बिल ८० रुपये से १२५ हो गया और छात्रो के लिए बोझ बन गया तो महगाई के विरोध मे बन्द का नारा दे दिया। प्रदेश मे तीन गुनी फसल होने के बावजूद बढ़ती महगाई से जनता भी त्रस्त थी, उसने भी विद्यार्थियो का साथ दिया इस प्रकार आन्दोलन चल निकला।

चिमनभाई पर लगाये गये भ्रष्टाचार के आरोपो की चर्चा करते हुए मनीषी ने कहा कि हमारे पास इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि तेल मिल मालिको ने पटेल को २५ लाख रुपये दिये और बदले मे तीन करोड रुपयो का लाभ लिया। मनीषी ने बताया कि जब फरवरी मे उन्हे आन्दोलन के सिलसिले मे गिरफ्तार करके सुरेन्द्रनगर जेल मे रखा गया तो आन्दोलन वापस लेने के कागजो पर हस्ताक्षर करवा लेने के लिए उनके सामने कोरा चेक भी रखा गया। जानी ने कहा कि भ्रष्टाचार तो केन्द्र सरकार मे भी है पर हमारे लिए उसे हटाना अभी दूर की बात है।

तिहाड जेल से रिहा होने से पहले प्रधान मत्री श्रीमती गाधी से भी जानी और अन्य छात्रो की भेंट हुई थी। श्रीमती गाधी से हुई अपनी भेंट का जिक्र करते हुए जानी ने कहा कि हमने इन्दिरा बेन से कहा कि आपको आपके आसपास के लोग 'मिस गाइड' करते हैं। कुछ दिनो पहले कांग्रेस के महामंत्री चन्द्रजीत यादव ने गुजरात के आन्दोलन को फासिस्टवादियों का काम बताया था। इंदिरा जी छात्रो को यहा बताते हैं कि वे क्रांति से घबराती नही, पर राजनीतिक दल इस प्रकार के आन्दोलनो से लाभ लेते हैं उससे उन्हे अवश्य चिन्ता होती है। जानी के अनुसार इन्दिरा जी ने गुजरात के छात्रो की थोडे मे प्रशसा ही की।

जानी ने बताया कि उन्होने इन्दिरा जी से कहा कि चिमन भाई को भ्रष्टाचार के मामले मे 'मीसा' के अन्तर्गत गिरफ्तार करना चाहिए तथा पुलिस आदि मे ऐसे जो कई अफसर हैं जो चिमन भाई द्वारा रखे गये हैं, उन्हे हटाया जाये।

मनीषी जानी तेईस-चौबीस साल का एक सीधा-साधा इन्सान है, जिसने कभी स्वप्न मे भी नही सोचा था कि वह एक रात मे गुजरात का इतना बडा छात्र नेता बन जायेगा। मनीषी जानी रातो रात बडा नेता अवश्य बन गया है पर उसकी आकाक्षायें अभी बहुत भोली और बच्चो जैसी ही हैं। मनीषी से जब पूछा कि पढाई खत्म करके क्या करोगे, तो बोला "मैं कवितायें और कहानियां लिखता हूं। गुजराती मे नवजवानो के लिए कोई अच्छी पत्रिका नही है, मैं एक अच्छी पत्रिका निकालना चाहता हू।" अपनी बात खत्म करते हुए उसने कहा कि 'प्रधानमन्त्री के पास मेरे बारे मे एक गलत खबर यह भी दी गई थी कि दो महीने तक मैने कलकत्ता मे नक्सलवादियो से ट्रेनिंग ली थी और मैं एक करोडपति का बेटा हू और अपने पैसे से आदोलन चला रहा हू'।"

जैसा सीधा-सादा छात्र नेता मनीषी जानी वैसा ही अशोक पजाबी। मूल रहने वाला है हिमाचल प्रदेश का। गुजरात विश्वविद्यालय मे बी० ए० दर्शनशास्त्र का विद्यार्थी अशोक जितनी बढिया गुजराती बोलता है उतनी ही साफ हिन्दी। कहते हैं पजाबी की सभा मे भी हजारो विद्यार्थी आते हैं और उसे अच्छी सुनते हैं। मनीषी जानी, उमाकात माकड़ के साथ अशोक पजाबी का नाम भी नव निर्माण युवक समिति के प्रमुख नेताओ मे है। अशोक ने बताया कि गुजरात मे आदोलन इसलिए खडा हुआ कि गुजरात के गांवके अमीर किसानो और शहर के निम्न मध्यम वर्ग के हितो मे टकराव उत्पन्न हो गया था, इस कारण आजादी के बाद से ही पिछले २७ वर्षो से प्रदेश मे असन्तोष बढ रहा था। केन्द्र ने घनश्याम ओझा को प्रदेश पर थोप दिया तो चिमन भाई ने भ्रष्टाचार से उन्हे भी हटा दिया। अशाक ने कहा कि स्कूल-कालेजो मे पढने वाले विद्यार्थी अपने परिवारो में समस्याओ को देखते रहते थे, इस आदोलन मे बस यह हुआ कि ये विद्यार्थी अपने परिवार की समस्याओ को सडको पर ले आये और महसूस किया कि जैसे आजादी हासिल की वैसे ही अब भ्रष्टाचार से निपटना होगा, कानून से कुछ नही होगा।

अशोक ने कहा कि गुजरात का आदोलन एक सही माने में लोकवादी और जनवादी आदोलन है। क्रांति एक लम्बी प्रक्रिया है और इस आदोलन ने उसे एक शुरुआत दी है। हमने अपने आदोलन के द्वारा पहली मजिल को पा लिया है। अशोक के अनुसार अगर सच्चे दिल से देश मे क्रांति करना है तो सगठित रूप से बाहर आना होगा। बगाल के बाद गुजरात ही ऐसा प्रांत है जहां छात्रो ने एक सशक्त आदोलन की शुरुआत की और सफलता पायी।

इन्दिरा जी से हुई बातचीत का जिक्र करते हुए अशोक ने बताया कि हम लोग कालाबाजारियों और जमाखोरो को पकड़ कर कानून के हवाले करेंगे और अगर कानून उनका कुछ नही कर पाया तो हम उन्हें सडक पर लायेंगे। अशोक ने कहा कि जब हमसे बातचीत में इन्दिरा जी ने आदोलन में मरे लोगो के प्रति दुख प्रकट किया तो हमने प्रत्येक मरे हुए व्यक्ति के परिवार को पाच के बजाय पचास हजार रुपये देने की माग की और कहा कि पुलिस ज्यादातियो की न्यायिक जाच की जानी चाहिए। अशोक ने बताया कि इन्दिरा जी से हम लोगो की पन्द्रह मिनट बात हुई।

सोलह मार्च की ही रात को मनीषी जानी और अशोक पजाबी गुजरात के लिए चल पड़े। अपने तुरन्त लौटने के बारे में उन्होने कहा कि हमें जल्दी से पहुच कर स्थिति को सम्भालना है, वरना असामाजिक तत्व गुजरात में शांति नहीं आने देंगे।

दिल्ली स्टेशन पर उस समय मौजूद लोगो का कहना है कि जब ये छात्र स्टेशन पहुचे तो वहा भारी भीड़ थी और नारो से पूरा प्लेटफार्म गूज रहा था। छात्रो को गुजरात पहुचने की जल्दी थी पर लोगो ने छ-सात बार ट्रेन की चेन खींची और डेढ़ घन्टा लेट किया। कहते हैं जब ये छात्र अहमदाबाद से दिल्ली के लिए चले थे तब भी इतनी बार चेन खीची गई और तब भी ट्रेन डेढ घन्टा लेट दिल्ली पहुची थी।

—श्रवण कुमार गर्ग

विनोबा निवास से

• नाम की महिमा • हम चोटियों से भी गये बीते • तो मार्क्स भी फेल है

ग्रामदान के नवनिर्माण मे मदद देने ली, विदेश मे गाधी-विचार पहुंचाने वाली, देश के साथ विचारो का तथा विचारको भी आदान-प्रदान करने वाली गाधी ाति प्रतिष्ठान संस्था के आजीवन सेवको ी त्रि-दिवसीय बैठक पहली बार ही बाबा सान्निध्य मे फरवरी के तीसरे सप्ताह मे ई। वैसे ये सदस्य अलग अलग बैठको के निमित्त यहा आते ही थे। परन्तु गाधी ाति प्रतिष्ठान की बैठक कभी हुई नही थी। प्रतिष्ठान के अध्यक्ष दिवाकर जी और मन्त्री राधाकृष्ण के अलावा केरल के जनार्दन पिल्ले, राधाकृष्ण मेनन, गोपीनाथन नायर, बगलूर के नारायणस्वामी, इन्दौर के महेन्द्रभाई, मारवाड की शकुन्तला कुर्तकोटी, गाधी शान्ति प्रतिष्ठान का युवक विभाग सभालने वाले तथा आत्मसमर्पणकारी बागियो के बीच कार्य करने वाले सुब्बाराव इस बैठक के लिए आये थे। बाबा ने कहा, गाधी शान्ति प्रतिष्ठान का मुख्य कार्य देश में अन्तर्गत शान्ति रखना, पुलिस को काम न मिले इस तरह का कार्य करना है और इसके अलावा देश के हर गाव मे और शहरों मे अपना प्रतिनिधि बनाना। गांवो में साढे पाच लाख तथा शहरो मे डेढ लाख सेवक, प्रतिनिधि खडे करना। इसके अलावा अन्य अनेक बुनियादी विषयो पर चर्चा हुई। एक बैठक मे प्रश्नोत्तर मे सुब्बाराव ने कहा, मैं श्रीलका गया था। वहा आर्यरत्ने बोलते हैं कि आपकी ही प्रेरणा से वे काम कर रहे है। आश्चर्य हुआ कि जो हम अपने गांवो मे करना चाह रहे हैं उनमे उनको खूब सफलता मिली है। विशेषत: ग्रामसभा। वहा अभी ग्रामदान का विचार फैलाना है, परन्तु ग्रामसभा के कार्य मे आश्चर्यजनक प्रगति हुई है।'

बाबा : आर्यरत्ने बाबा से मिलने आया था। बहुत श्रद्धा, भक्ति रखते हैं। लेकिन वह जो खास श्रद्धा है, वह गाधीजी मे है। पर गाधी जी की श्रद्धा बाबा को भी मुफ्त मे मिल जाती है। महाराष्ट्र मे ऐसा ही है। महाराष्ट्र मे ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम इन सन्तो पर लोगो की बडी श्रद्धा है। बाबा ने भी उन ग्रन्थो का सार निकाला है तो ज्ञानदेव की श्रद्धा बाबा को भी मुफ्त मे मिल जाती है। वारकरी समाज के बडे-बडे लोग कहते हैं कि विनोबा मे ज्ञानोबा का दर्शन होता है। विनोबा और ज्ञानोबा मे नोबा, ये दो अक्षर समान हैं। एक को ज्ञा यानि अक्ल है, ज्ञान है। वि यानि कुछ है नही। तो विनोबा का कुछ है नही। ज्ञानोबा और विनोबा मे इतना अन्तर है। फिर भी श्रद्धा रखते हैं।

सुब्बाराव : हम वहा कुछ गांवों मे गये, वहा देखा कि वे दो मिनट मौन और समूहगीत से काम शुरु करते है। शायद बौद्ध धर्म का प्रभाव है।

बाबा : यह बौद्ध धर्म का प्रभाव नही है उनकी अपनी अक्ल का प्रभाव है। बौद्ध धर्म से हिन्दू धर्म कम तो नही है। उसका क्या प्रभाव है हम पर ? धर्म का प्रभाव थोडे लोगो पर है। क्रिश्चियानिटी मे कहा है, कोई तुम्हारे एक गाल पर तमाचा मारे तो दूसरा गाल सामने करो। यह है क्रिश्चियानिटी। लेकिन जितनी लडाइया क्रिश्चियन लोग लडे उतनी दूसरे कोई नही लडे हैं। आज दुनिया मे १०० करोड क्रिश्चन हैं। लेकिन जो क्राइस्ट को पसन्द आयेंगे ऐसे कितने क्रिश्चन होंगे ? अगर कोई मुझे कहे कि ऐसे १०० क्रिश्चन हैं तो मैं कहूगा बहुत हैं, पृथ्वी का उद्धार होगा। वही हाल हिन्दू धर्म का है। आज कितने हिन्दू होंगे जो वैदिक धर्म का उत्तम आचरण करते हैं ? इस वास्ते श्री लंका के लोगो की अपनी श्रद्धा है। यह ठीक है कि गौतम बुद्ध के नाम से उनको प्रेरणा मिलती है। नाम की महिमा अगाध है।

... ...

दिवाकर जी आते हैं तब कुछ गम्भीर विषय पर चर्चा हो ही जाती है।

बाबा : महात्मा गांधी, महावीर, रामतीर्थ, श्री अरविंद, इन महापुरुषो की शताब्दी मनाई गई। इन शताब्दियो का कुछ असर होता है कि नहीं ?

दिवाकरजी : ऊपर-ऊपर-सुपरफिशियल असर होता है।

बाबा : श्री अरविन्द अतिमानस की बात करते थे मन को समत्वयुक्त रखना पहली बात है। फिर है अतिमानस। परन्तु हम मन को समत्वयुक्त नही कर पाते तो अतिमानस की तो बात ही दूर है। इन विषयो पर चर्चा होनी चाहिए। इन विषयो का अध्ययन होना चाहिए।

दिवाकरजी : पाश्चात्य मानस को ध्यानयोग, भक्ति जल्दी समझ आती है। परन्तु अनासक्त कर्मयोग समझ मे नही आता।

बाबा ठीक बात है। स्वामी रामतीर्थ अमरीका गए। वहा बन्दरगाह पर जहाज पहुंचा तो लोगो का हो हल्ला चला। स्वामी रामतीर्थ शान्ति से बैठे रहे। सब लोग अपना अपना सामान बटोरने मे लगे और यह शख्स शान्ति से बैठा रहा। इसी चीज का आकर्षण वहा एक बहन को हुआ। और बहन रामतीर्थ के पास गयी। उन्होंने पूछा, रामतीर्थ को, 'आपका कोई परिचित यहा हैं।' वे बोले, 'हां है।' पूछा, 'कौन ?' तो बोले, आप ही हैं। फिर बहन ने पूछा, 'क्या आप मेरे घर चलेंगे ?' स्वामी रामतीर्थ ने कहा, 'हा।' बस अब वही से उनका कार्य शुरु हो गया। तात्पर्य जहा खूब भीड, काम के लिए हो हल्ला चलता है वहा शान्ति का आकर्षण होता है। पश्चिम के लोगों को तो 'टाइम इज मनी' (समय पैसा है) होता है ना ? इसलिए उनको फुरसत है। नही तो कर्म करो और अनासक्त रहो यह उनको भयकर मालूम होता है। ध्यानयोग अच्छा है। क्योंकि उसमे कर्म से छुटकारा है। कोई आपसे कहेगा कि जिस खटिया मे खटमल हैं उस पर शान्त सो जाओ, तो वह आपको आसान मालूम होगा कि उस खटिया को छोडकर सोना ? खटमल वाली खटिया पर सोना और वह भी शान्ति से सोना और

→
कितना कठिन ! तो उन लोगों की खटमल वाली खटिया है।

दिवाकरजी : आसक्ति के बिना मनुष्य काम नहीं कर सकता है, ऐसी उनकी भावना है।

बाबा : हम लोग भी जो नाटक करते हैं कर्मयोग का, वह कहा तक सही है यह देखने की बात है। सचमुच बहुत ही कठिन है। लोकमान्य की कहानी प्रसिद्ध है। कोर्ट में उनको सजा सुनाई गई। छ साल की कैद। पुलिस उनको मोटर में ले गई। रात का समय था। वे मोटर में चढ़े और लेट गये। दो मिनट में गहरी निद्रा लग गयी। जो पुलिस अफसर उनके पास बैठा था, उसे बहुत ही आश्चर्य हुआ। इतनी लम्बी सजा हुई, लेकिन चित्त पर कुछ भी असर नहीं। यह है कर्मयोग। और माडले गये तो वहाँ आध्यात्मिक चिंतन के बिना दूसरा कुछ भी नहीं किया।

हम लोग १९४२ में जेल गए थे तो साथी पचांग देखते थे, हम कब छूटेंगे। बाहर यह हो रहा है, वह हो रहा है, हम छूटेंगे बस यही चर्चा। मैंने उन लोगो से एक दिन कहा, हम दो-तीन साल से जेल मे हैं, हम को लगता है, बहुत समय हो गया हम जेल मे हैं। इस जेल मे कुछ चींटियाँ है। उनका सारा जन्म जेल में जाता है। उनको भान ही नही होता कि हम जेल मे है। तो चींटियों से भी हम गये बीते हो गये।

अहिंसा से आत्मरक्षा

बम्बई से शाह अपने परिवार के साथ दो दिन के लिए आये थे। उन्होंने बम्बई के जीवन के कुछ अनुभव सुनाये और उस पर से कुछ प्रश्न भी पूछे।

'कोई हमे लूटने आया तो उसका सामना कैसे करें ? वे हमे मार डालें तो अहिंसा से पेश आयें ?

'बाबा का यह विश्वास है कि कोई मारने आयें और प्रारब्ध-क्षय न हुआ तो मनुष्य मरेगा नही। प्रारब्ध-क्षय होता है तभी मनुष्य मर जाता है। फिर कोई निमित्त होता है मरने का, ऊपर से बिजली गिर गई, बीमारी हुई, किसी ने खून किया, बाढ़ आई, ये सब निमित है।'

'कोई मारने आये, लूटपाट करें तो अहिंसा से सामना कैसे करें ?'

'अहिंसा मे यह ताकत नही कि लूटपाट से बचाव करे। यह ताकत है कि खुद आत्मसमर्पण करके मर जायें, परवश न हो। जुल्मी के वश न हो। सामना करना यानी शान्ति से, प्रेम से मार सहन करना। चोर आया लूटने के लिए तो उसे समझाना, भाई तुम को जो चाहिए वह मांगो, चोरी मत करो। एकनाथ महाराज (महाराष्ट्र के संत) के घर के लोगो को लूटने चोर आये थे। एकनाथ महाराज ने उनसे कहा, 'भाइयो, रात में आने का कष्ट क्यो उठाया, दिन मे आते। और यह घर आपका ही है। जो चाहें सो ले जाओ।' लुटेरे एकनाथ महाराज की शरण मे गिर पड़े। दूसरा उदाहरण है तुकाराम महाराज का। वे बड़े उदार थे, सन्त ही थे। दूसरे के खेत में मजदूरी करने जाते थे। मालिक ने एक दिन उनको बहुत सारे गन्ने दिये। गन्नो को ढोते तुकाराम महाराज घर आने लगे। रास्ते मे गाँव के बच्चे मिले। तो एक बच्चे को एक-एक गन्ना देने लगे आखिर घर पहुचे तो एक ही गन्ना उनके हाथ मे था। उनकी पत्नी बड़ी नाराज हुई। बोली, कैसा मालिक है आपका ? दिन भर इतना काम करवाता है और एक ही गन्ना दिया। तुकाराम ने उसे कहा, 'अरे मेरा मालिक बड़ा दयालु है। उसे कुछ मत कहना। रास्ते मे बच्चे मिले तो मैंने ही गन्ने बाँट दिये।' पत्नी तुकाराम पर बहुत गुस्सा हो गई। उसने वह गन्ना लिया और तुकाराम की पीठ पर मारा। गन्ने के दो टुकड़े हो गये। तुकाराम ने हंसते-हसते कहा 'अब तो दो गन्ने हो गये।' एक तुम्हारे लिए एक मेरे लिए।' यह है अहिंसा। अहिंसा मे यह ताकत नहीं है कि सबके सब गन्ने हाथ मे पकड़ कर घर ले आये। जो गन्ना लेगा उसे कहना, ले लो, तुम्हारा ही गन्ना है। अहिंसा से धन रक्षा, शरीर-रक्षा नही होती, आत्मरक्षा होती है।

ऐसे काम जिनका अन्त हो

सेवाग्राम से निर्मला बहन गांधी बीच-बीच मे बाबा से मिलने आती है। एक दिन उनसे आश्रम की कुछ समस्याओ पर चर्चा हुई। निर्मला बहन को लगा कि 'आसपास के गाव के कुछ बच्चो को लेकर उनको सिखाना शायद अच्छा रहेगा।' इस पर बाबा ने उनसे कहा, 'इसे झमेला' कहते है। मराठी मे एक शब्द है—लटाबर। ऐसे काम को चाहे झमेला कहे, चाहे लटाबर। दोनो एक ही हैं। बच्चे कब बड़े होगे ? वे ब्रह्मचारी रहेंगे कि शादी करेंगे, शादी किससे करेंगे ? अपनी जाति मे कि जाति के बाहर'''इत्यादि। यह तो अनादि काल से अनन्त काल तक चलने वाला है। जन्म, शादी, मृत्यु'''। हमे ऐसे काम करने चाहिए जिनका अंत है। जिनका अन्त ही नही ऐसे अनन्त काम हमें नही उठाने चाहिए। दुनिया के मसले हल करने वाले हम कौन होते है ? हमारा मसला हल हो जाये तो बहुत है। रामजी आये, उन्होने धनुष लिया, मसले हल किये। वे गये, नये मसले खड़े हुए। कृष्ण भगवान आये। उन्होंने देखा, धनुष की चलेगी नही। तो उन्होने बन्सी बजाई। लोगो को इकट्ठा किया, मक्खन खाना सिखाया, गायो की रक्षा करना सिखाया और बन्सी बजाना सिखाया। कुछ समस्याएं हल की। कृष्ण भगवान गये। नयी समस्या खड़ी हुई। गौतम बुद्ध आये। उन्होंने न धनुष चलाया, न बन्सी चलायी। मौन रखा। समस्याएं हल की। नई समस्याए खड़ी हुई। इस तरह नये नये मसले खड़े होते जाते हैं और नये-नये अवतार होते जाते है। हमारा एक मित्र था। वह सात बार मैट्रिक की परीक्षा मे बैठा, सातों बार फेल हुआ। आखिर आठवी बार उसने परीक्षा दी तो पास हो गया। उसे मैंने कहा, तूने बहुत उत्तम काम किया भगवान से बढ़ कर। भगवान तो बार-बार अवतार लेता रहता है और फेल ही होता है। सतत अवतार लेना ही पड़ता है उसे। भगवान के दस अवतार का वर्णन करते है। भागवत मे चौबीस अवतारो का वर्णन है।

अभी देखिये, मार्क्स ने कहा था, 'स्टेट विल विदर अवे' (राज्य का विलयन होगा)। परन्तु स्टेट न चीन मे विदर अवे हुई, न रशिया मे। दोनो देशो मे स्टेट पक्की है। तो मार्क्स की जो थियरी (सिद्धान्त) है वह प्रेक्टीकल दीखती नहीं। मार्क्स भी फेल है।

—कुसुम

सच्ची कहानी

एक गांव में लेवी की वसूली

प्रमोद कुमार प्रेम

सूर्यनारायण साहू परसरमा गाव (सहरसा) के एक साधारण बनिये हैं। मुझे देखते ही उसने बैठने को चटाई दी और उदास मन से कहना शुरू किया…"बीस जनवरी को एक बजे दिन मे सुपौल प्रखड के विकास पदाधिकारी, प्रखड कृषि पदाधिकारी तथा तीन लाठीधारी सिपाहियो के साथ एक हवलदार ने मेरे घर से पाँच बोरा धान लेवी के रूप मे जबर्दस्ती निकाल लिया। गाँव के तीन चार व्यक्ति भी उन लोगो का सहयोग कर रहे थे। उनके बाद मेरे चचेरे भाई नथुनी साहू के घर मे हवलदार ने घुसकर लाठी से एक कोठी फोड डाली जिसमे चावल रखा हुआ था। दो बोरे मे चावल भरा गया और जीप पर मेरे धान के बोरे के साथ ही रख दिया गया। नथुनी घर पर नही था, वह अपने खेत पर काम कर रहा था। उसकी पत्नी भी घर से बाहर थी। बाद मे वह छाती पीटती और रोती हुई आयी। इतनी देर मे बहुत से लोग वहा जमा हो गये थे। गाँव के तरुण भी धीरे-धीरे एक-एक करके वहाँ पहुच गये थे। वे लोग उस समय तमाशा देखने की दृष्टि से ही जमा हुए थे। तरुणो ने बी० डी० ओ० से आग्रह किया कि नथुनी साहू का चावल मत लिया जाये। उसकी ऐसी स्थिति नही है कि वह लेवी दे सके। सिपाहियो ने चावल का बोरा जीप पर से उतार दिया। बाद मे मालूम हुआ कि तीन तरुणो विजय, पकज और रतन पर बी० डी० ओ० को अपमानित करने के जुर्म मे मुकदमा किया गया है।'

"चार दिन के बाद मेरा धान वजन किया गया। कुल ८ मन ७ पसेरी धान हुआ और तीस रुपये प्रति मन की दर से मुझे धान का दाम दे दिया गया। बिना किसी पूर्व सूचना के ही हमसे धान वसूल किया गया। मेरा अनुमान है कि गाव के बड़े लोग-धनी लोग जिन्हें लेवी लगना चाहिए वे बी० डी० ओ० को मिलाकर हम जैसे लोगो से वसूल करवा कर अपने नाम से दर्ज करवा लेते हैं। थोडा बहुत वे अपनी ओर से भी मिला देते हैं।"

इसी बीच रतन जो उधर कहीं से आ रहा था, मुझे देखकर ठिठक गया। पूछने पर बताया कि हम लोगो पर ३५३ और ३७६ दफा लगायी गयी है यानी हम लोगो पर यह आरोप लगाया गया है कि हमने बी० डी० ओ० साहब का अपमान किया है तथा बलात जीप पर से चावल उतार लिया है।

मैं यह स्पष्ट कर दू कि सूर्यनारायण और नथुनी जो चचेरे भाई है मामूली किस्म के बनिया हैं, दुकानदारी करके अपना और अपने परिवार का पेट पालते हैं। सूर्यनारायण के पास चार बीघे और नथुनी के पास मात्र पन्द्रह कट्ठे जमीन है।

परसरमा सहरसा जिले का एक प्रतिष्ठित गाँव है। जनसख्या लगभग पाच हजार से ऊपर होगी तथा पढे लिखे लोगो की संख्या भी अधिक है। गाव का नेतृत्व सम्पन्न लोगो के हाथ है तथा आज भी उस गाँव से सामन्तवादी जमाने की बू आती है। एक बात जो विशेष रूप से उल्लेखनीय है वह यह कि वहा अब तक पचायत नही बन पायी है। मुझे एक ग्रामीण ने बताया कि लोगो ने सोचा कि पचायत आने से गाँव टुकडो मे बट जायेगा इसलिए उस दिशा मे कोई पहल नही की गयी। सच बात तो यह है कि वहा कौन किसकी मुखियागिरी कबूल करे? सब अपने आप को मुखिया ही समझते है। पचायत गठन के बाद लोगो का यह अहम तुष्ट नही होगा न!

रात मे कुछ तरुण मिलने आये। अधिकाश कालेज छात्र थे। उन्होने बताया कि गाँव के नेता गाँव को बरबाद करने पर तुले हुए है। गाँव मे पचायत नहीं होने के कारण एक निगरानी समिति का गठन गाँव के लोगो की ओर से किया गया था। मगर कुछ लोगो ने जिनकी पहुच मिनिस्टरो तक है गाव के बहुमत से बनी निगरानी समिति का बहिष्कार किया तथा अपने लोगो की एक दूसरी समिति बनाली। इस समिति को एक मिनिस्टर का भी आशीर्वाद प्राप्त है तथा बी० डी० ओ० साहब तो इन लोगो से बाहर रहनेवाले ही नही हैं। निश्चय ही यह थोडे से लोगों की समिति है। यही समिति जिसे प्रखंड की ओर से मान्यता प्राप्त है गाव का प्रतिनिधित्व करती है। समिति यानी उनके पाच मे से सिर्फ दो सदस्य तीन सदस्य निष्क्रिय जैसे ही है। समिति के वे दोनो सदस्य मनमानी करते हैं। सरकार की ओर से नलकूप के लिए जो ऋण मिले एक सदस्य ने चार-चार बार अपने नाम से या अपने नाबालिग बेटे के नाम से लिया है। छोटे और गरीब किसानो को शायद ही कोई नलकूप मिला हो। उसी तरह सरकारी बीज और खाद के बंटवारे मे भी हुआ है।

तरुणों ने आगे बताया कि निगरानी समिति के इन्ही सदस्यो के सकेत पर सूर्यनारायण साहू और नथुनी साहू से जबरन धान या चावल वसूला गया है। लेवी के लिए इस गाँव से सोलह व्यक्तियो के नाम की सूची बनी थी। इस सूची मे उपरोक्त दोनो व्यक्तियो के नाम नही थे।

तरुणो ने एक बात और बतायी। उन्होने कहा कि निगरानी समिति के उपरोक्त दोनो सदस्यो की सूर्यनारायण साहू और नथुनी साहू की दुकान से लेन-देन के सम्बन्ध मे कुछ खटपट हो गयी थी। इसलिए वे लोग (निगरानी समिति के दोनो सदस्य) किसी ऐसे मौके की ताक मे थे जब दोनो बनियो से बदला लिया जा सके। और यह उनके लिए सुन्दर मौका था।

"आप मे से तीन तरुणो पर मुकदमा चलाया गया है। क्या यह सच है कि आपने जीप पर से जबर्दस्ती बोरे उतारे या बी० डी० ओ० साहब को गाली दी या उनका अपमान किया?" मैंने उनसे पूछा।

एक तरुण ने बडी दृढ़ता से कहा—"नही। न तो हमने बी० डी० ओ० साहब

→

को गाली दी है या अपमान किया है और न बनात् जोर पर से बोरे ही उतारे हैं। बोरे बी० डी० ओ० साहब के आदेश पर ही कुली द्वारा उतारे गये हैं। हम लोगो ने घुमा तक नही। हां, यह बात सत्य है कि जब हमने नथुनी साहू जैसे गरीब बनिये से चावल लेते देखा तो बी० डी० ओ० साहब और उनको राह दिखाने वाले पथ प्रदर्शकों पर दुख जरूर हुआ। हम यही कहते रहे कि नथुनी साहू इस काबिल नही है कि उनसे आप अमानुषिक ढग से लेवी लें। पहले आप उनसे निश्चय ही वसूल करें जो देने योग्य है। गरीब आदमी को तंग करना शोभा नहीं देता। बाद मे बी० डी० ओ० साहब मान गये और बोले कि आप लोगो ने पहले क्यो नही बताया कि नथुनी साहू लेवी देने के काबिल नही है। खैर, मैं चावल उतरवा देता हू और तब उन्होंने खुद ही चावल का बोरा उतरवा दिया। अब अगर हम लोगो पर आरोप थोपा जाता है तो हम क्या करें? उस पर भी केवल तीन आदमी ही तो वहा नही थे। अगर हमें जबर्दस्ती ही करना होता तो फिर धान का ही बोरा क्यो फाड़ देते?''

''बी० डी० ओ० आप लोगो को जानता पहचानता है?''

''नही। किसी को नही।''

''तो फिर तीन लड़को के नाम से जो केस दायर हुआ है वह कैसे?

एक तरुण मुस्कुराया·····''आप हमसे सब कुछ उगलवा लेना चाहते हैं। तो सुनिये, बी० डी० ओ० किसी का नाम नहीं जानता है। निगरानी समिति के जो उपरोक्त दो सदस्य हैं वे तो गाव के ही हैं। उन्होने ही जोर डालकर हम तीन साथियो पर मुकदमा चलवाया है।''

''मगर क्यो? वे आपको क्यो तंग करना चाहते हैं?''

कुछ देर के बाद मुझे कहा गया ''इसलिए कि अब हम उनके अन्याय और पक्षपात पूर्ण रवैये को सह नही सकते। गाव के वातावरण को इन लोगों ने खराब कर दिया है। आप जानते हैं? जिन्हें नगरूप दिया गया है निग-
नी समिति के उक्त एक सदस्य ने उनसे पांच-
व रुपये घूस मे लिए हैं। उसी तरह कृषि
के समय भी उन्होंने पैसा बनाया है।''

दूसरे दिन मैं निगरानी समिति के वरिष्ठ सदस्य नरेन्द्र कुमार सिंह से मिला। वे मेरे अच्छे मित्र रह चुके हैं। उन्होंने कहा—''लेवी के सम्बन्ध मे निगरानी समिति की एक बैठक गत दिसम्बर माह मे हुई थी। उसी में सोलह व्यक्तियो के नाम की सूची तैयार की गयी थी। मगर किसे कितना धान लगना चाहिए यह तय नही हुआ था। बी० डी० ओ० ने अपने मन से रकम चढ़ायी। इस पर हमने विरोध भी किया कि लोगो से राय लिए बिना ऐसा नही किया जाना चाहिए।''

उस दिन यानी २० जनवरी को बी० डी० ओ० साहब के साथ मे, हरिदेव मिश्र और रामचन्द्र जी (दोनो निगरानी समिति के सदस्य) सूर्यनारायण झा जो अच्छे और सम्पन्न किसान हैं के यहा लेवी के लिए गये। बी० डी० ओ० साहब ने आठ क्विटल धान उनके नाम चढ़ाया था और झा जी एक क्विटल से अधिक देने को तैयार नही थे। बाद मे हम लोगो ने उन्हे दो और तीन क्विटल के बीच देने को राजी कर लिया। फिर हम लोग लाल दुल्हिन (लक्ष्मीनाथ परम हंस की भावज) के यहा गये। रास्ते मे ही सूर्यनारायण साहू और नथुनी साहू की दुकान है। जीप का ड्राइवर सूर्यनारायण साहू की दुकान मे सिगरेट लेने गया। ड्राइवर ने उसकी दुकान मे काफी धान देखा। जब हम लोग लाल दुल्हिन के यहा से लौटे तो ड्राइवर ने बताया कि इस दुकान मे काफी गल्ला है। फिर हम लोग वहा गये। अनुमान लगाया कि सूर्यनारायण साहू के घर मे करीब पचास मन धान तथा नथुनी के घर बीस मन चावल है।

मैंने बीच मे टोका—''क्या यह सच है कि ड्राइवर की सिगरेट खरीदते समय सूर्य-नारायण साहू से पैसे देने की बात पर कुछ कहा-सुनी हो गई थी?''

नरेन्द्र जी—''मुझे मालूम नही। खैर। मैंने सूर्यनारायण साहू को समझाया कि वह कुछ धान लेवी में दे दे। नही तो छापामारी के नाम पर धान भी चला जायगा, मुकदमा भी होगा फिर धान की कीमत कब मिले उसका भी कोई ठिकाना नही। ''हेरेसमेंट मे पड़ने से अच्छा है कि आप कुछ धान लेवी मे दे दें। इस पर सूर्यनारायण पाच क्विटल धान और नथुनी दो क्विटल चावल देने पर राजी हो गया। धान और चावल का तौल होने लगा और हम लोग दूसरे टोले मे चले गये।''

''मगर मुझे तो लोगों ने बताया कि धान या चावल को तौला नही गया, वैसे ही बोरे में रख लिया।'' मैने फिर टोका।

''नही, तौला गया था।'' नरेन्द्र जी ने बताया।

नरेन्द्र जी ने आगे बताया कि करीब पाच बजे शाम शोरगुल सुनायी पड़ा। एक सिपाही दौड़ता हुआ आया और बताया कि लड़को ने जीप को घेर लिया है और धान तथा चावल उतार देने को कह रहा है। पहले रामचेन्द्र जी गये फिर हरिदेव जी, मगर हल्ला शात नही हुआ। फिर मैं गया। मुझे भी दो टूक जवाब मिला। लड़को ने कहा कि बी० डी० ओ० को भेजिये। लड़के काफी उग्र थे मगर उनमे अब तक शिष्टता मौजूद थी। उनकी सख्या करीब ३०-३५ थी। बाद मे बी० डी० ओ० साहब के सामने कोई चारा नही था। और उन्होने चावल उतरवा दिया।

नरेन्द्र जी चुप हो गए तो मैंने पुनः उनसे पूछा—''नरेन्द्र जी, आपने अभी कहा है कि सौलह आदमियो की सूची निगरानी समिति की ओर से तैयार करके बी० डी० ओ० साहब को दी गयी थी। क्या उन सज्जनो मे से किसी के यहा से अभी तक लेवी वसूल हुई है?

''उनमे से अब तक किसी ने लेवी नही दी है।'' नरेन्द्र जी का उत्तर था।

''अच्छा, क्या आप कह सकते है कि जिन तीन लड़को पर मुकदमा किया गया है उनके नाम बी० डी० ओ० साहब को मालूम थे?''

''लड़को ने खुद अपना नाम बताया था। और फिर, जन सेवक तथा कर्मचारी तो नाम जानते ही होंगे इन लड़को को।''

''क्या शकर प्रसाद टेकरीवाल एम० एल० सी० २४ जनवरी को जानकारी लेने परमरमा आये थे?''

''हां, रतन के मामा उन्हें यहा लाये थे।''

''और मुकदमा २५ जनवरी को सध्या समय जब कोर्ट उठने पर थी, दायर किया गया था?''

''हा।''

''क्या यह सच है कि उन लड़को के नाम जिनके परिवार की पहुंच ऊपर तक है

और जो वसूकर मुकाबला कर सकते हैं, बी० डी० ओ० ने वापस ले लिये।"

"नहीं," ऐसी बात नहीं है। जो लड़के अगुआई कर रहे थे उन्हीं का नाम दिया गया है।"

"मगर मुझे अच्छी तरह मालूम है और शायद आप भी सोचते होंगे कि जिन पर मुकदमा किया गया है वे अगुवाई करने की क्षमता नहीं रखते। हां, यह हो सकता है कि सबके साथ इन लोगों ने भी अपना विरोध जाहिर किया हो।"

बी० डी० ओ० से मिलने में मुझे काफी परेशानी उठानी पड़ी। उनके दफ्तर से मैं दो बार बिना मिले लौट आया। वे लेवी के सिलसिले में बराबर बाहर ही रहते हैं। बाद में रात को करीब ८ बजे मैं पुनः गया। वे जीप पर बैठे कहीं बाहर जाने को थे। मैंने अपना परिचय दिया तो उतर कर टहलते हुए बातें करने लगे। मैंने देखा अभी इनसे इस तरह बातें करना ठीक नहीं। मैं ठीक से बात करना चाहता था। फिर भी उन्होंने जो कुछ बताया उसमें यही लगता था कि वे अपने को प्रशासन से बंधा हुआ मानते हैं। उन्होंने तरुणों को भी कसूरवार बताया तथा बोले कि उन्हें गाली तक दी गयी। मैंने उनसे कई प्रश्न पूछे मगर वे टालते गये। मैंने यह भी पूछा कि उस घटना से परसरमा की अभी जो विस्फोटक स्थिति है, गांव में जो एक आग फूटने वाली है या गांव जो टुकड़ों में बिखरने वाला है, लोगों में जो आपसी दुश्मनी बढ़ती जा रही है उसके लिए आप क्या कर रहे हैं? मगर वे इधर-उधर की ही बातें करते रहे और दूसरे दिन मुझे आने को बोले। तीसरे दिन बी० डी० ओ० से फिर मुलाकात हुई। उन्होंने कहा—"मेरे सामने लाचारी है, लेवी वसूल करना मेरे लिए आवश्यक है तथा गांव के लोग लेवी देने को तैयार नहीं। गांव के लोगों की मदद के बिना मैं कर भी क्या सकता हूं? मुझे क्या मालूम कि गांव में क्या-क्या 'पॉलिटिक्स' चलती है। परसरमा गांव के प्रतिनिधि जो कहते हैं, मुझे तो उन की बात पर भरोसा करना ही चाहिए।"

"लोगों का कहना है कि किसीने अपने नाबालिग बेटे के नाम से ऋण उठाया है, नलकूप के लिए चार-चार बार ऋण लिया है। क्या आपको इधर ध्यान नहीं देना चाहिए? जिन्हें ऋण चाहिए उन्हें मिलता नहीं और उन्हें मिल जाता है।"

"जिनके पास अपने भी साधन मौजूद हैं और वे सभी सम्पन्न लोग हैं? मैंने पूछा।

"भाई। मैं क्या करूं? मैं तो सबको जानता नहीं। विश्वास करना पड़ता है और प्रतिनिधि जिनको कहते हैं, हम उनके नाम की स्वीकृति दे डालते हैं।"

मुकदमे के बारे में उन्होंने बताया कि जन सेवक ने जिन-जिनका नाम बताया उनपर मुकदमा चलाया गया होगा। उस पर उन्होंने अपनी ओर से कोई पहल नहीं की इस मामले में। उन्होंने केवल लेवी इंचार्ज को इस घटना के बारे में रिपोर्ट दे दी थी। उनकी राय पर ही केस किया होगा।

बी० डी० ओ० साहब ने बताया कि केस करना उनके लिए प्रतिष्ठा का सवाल हो गया था। "इसके बावजूद लड़के आकर मुझ से मिलते या क्षमा मांग लेते तो शायद बात आगे नहीं बढ़ती। मगर वे लोग आये ही नहीं।" मुझे नरेन्द्र जी की वह बात याद आ गयी, उन्होंने भी इसी तरह की बात कही थी। मुझे इस बात पर कुछ तकलीफ भी हुई थी और मैंने कहा था कि इससे आप यह साबित करना चाहते हैं कि लड़कों ने गलती की है और इसलिए वे माफी मांग रहे हैं। दूसरी बात यह कि आप उनके स्वाभिमान को झुका कर अपने अहम् को संतुष्ट करना चाहते हैं। अगर आपसे क्षमा मांगने वे लड़के नहीं आये तो आप उन्हें परेशान करें मुझे यह अच्छा नहीं लगता है। ●

हिंसा सरकार की...

(पृष्ठ ७ का शेष)

नारे लगेंगे, सच को झूठ और झूठ को सच बनाया जायेगा, चुनाव जीता जाएगा। क्या गुजरात इतने के लिए ही सारी यातनाएं झेल रहा है? क्या इसी से उसका लक्ष्य पूरा हो जायेगा?

अभी से स्पष्ट निर्णय कर लेना चाहिए कि मांग सरकार बदलने की थी या व्यवस्था बदलने की? आज की समूची व्यवस्था ही इतनी दूषित है कि उसमें जाकर अच्छा भी बेकार हो जाता है, बुरा तो बुरा रहता है। इसीलिए तो प्रतिनिधि चुनने की पद्धति में किसी बुनियादी परिवर्तन की बात सोचनी चाहिए। मुख्य बात यह है कि उम्मीदवार जनता के हों, राजनैतिक दलों के नहीं। यह तत्काल संभव है। मौजूदा संविधान के अन्तर्गत संभव है। गांव-गांव की ग्रामसभाएं गठित की जायें, और शहरों में मोहल्ला-सभाएं। एक निर्वाचन-क्षेत्र में इस प्रकार की जितनी संगठित इकाइयां बनें, उसके सर्व-सम्मत प्रतिनिधियों को मिलाकर एक 'निर्वाचन-मंडल' बनाया जाये। यह मंडल अपना सर्वसम्मत या सर्वमान्य (बार-बार मत लेकर) उम्मीदवार तय करे और चुनाव में खड़ा करे। मंडल के सदस्य अपने-अपने क्षेत्र में इस उम्मीदवार के लिए काम करें और कोशिश करें कि दलों के उम्मीदवारों को (दलों को अपने उम्मीदवार खड़ा करने की छूट रहनी चाहिए) वोट न मिलें। यह काम पूरे गुजरात में हो ताकि चुनाव के बाद विधानसभा जन-प्रतिनिधियों की बने, दल-प्रतिनिधियों की नहीं। यह नयी विधानसभा एक साथ बैठकर अपना नेता चुने जो मुख्य-मंत्री हो, और वह पूरी सभा से (सिर्फ अपने दल से नहीं) अन्य मंत्रियों को चुन ले। सरकार विधानसभा में सर्वमान्य कार्यक्रम के अनुसार काम करे। उधर हर निर्वाचन-मण्डल अपने-अपने प्रतिनिधि के काम और आचरण पर कड़ी नजर रखे। प्रत्येक प्रतिनिधि अपने निर्वाचन मंडल को अपने काम का ब्यौरा दें और उसका अनुशासन मानें। ग्राम-सभाएं और नगर सभाएं अपने-अपने क्षेत्र के भीतरी जीवन को ज्यादा-से-ज्यादा आपसी सलाह और सहकार से चलाने की कोशिश करें। योजना उनकी हो, साधन की सहायता सरकार दे। इस प्रकार व्यवस्था-परिवर्तन की दिशा में एक ठोस, बुनियादी कदम उठे और जनता महसूस करे कि वह लोकतंत्र में प्रत्यक्ष रूप से साझेदार है।

दलों का प्रभुत्व समाप्त हो, तथा सरकार का क्षेत्र सीमित हो—यह लोकतंत्र के विकास का अगला चरण है। गुजरात ने कदम उठा लिया है। इसी दिशा में देश के अन्य भागों में भी शांतिपूर्ण, सुव्यवस्थित सुदृढ़ कदम उठने चाहिए ताकि अहिंसक सामाजिक क्रांति का लक्ष्य पूरा हो सके। लोक चेतना जग गयी है। अब लोकशक्ति प्रकट होनी चाहिए। लोकशक्ति प्रकट होगी तो दलशक्ति टूटेगी। लोकतंत्र का आधार लोकनीति है, राजनीति के दिन गये। यदि यह न हुआ तो मानना पड़ेगा कि गुजरात में एक लौ जगी और जलकर बुझ गयी। ●

अति समृद्धि और तेल का संकट

अक्तूबर ४५ में पहली बार 'बाल पाइन्ट पेन' बाजार में पहुंचा। उसे बनाने की लागत अस्सी सेंट थी। लेकिन वह बाजार में १२ ५० डालर में बिकता था। मार्च १९४६ तक दस हजार पेन बिके। निर्माता की अधिकृत पूंजी छब्बीस हजार डालर थी, लेकिन तब तक बैंक में उसके बीस लाख डालर जमा हो गये थे। महीने-महीने में वह पांच लाख डालर का नफा कमा रहा था। १९४६ के अन्त तक एक सौ विभिन्न कम्पनी बॉल पाइन्ट पेन का निर्माण करने लगी। पहली कीमत तीन सेन्ट हो गयी थी और यह बाजार में २ ९८ डालर पर बिकता था। १९४६ में वह बाजार में उनचालीस सेन्ट पर बिकने लगा। लागत कीमत दस सेन्ट पड़ती थी।

जब पूंजीपति या उद्योगपति ज्यादा तेज़ी से पैसे कमाने लगते हैं तो हमेशा यही हालत होती है।

आजकल तेल के मालिक अरबी देशों की यही हालत हो रही है। औद्योगिक देशों में तेल के लिए जबर्दस्त मांग है—उन्होंने कहा है कि उस मांग की पूर्ति करने के लिए पाश्चात्य देश उनकी सब जायज-नाजायज आर्थिक और राजनैतिक मांगों को स्वीकारने को तैयार हैं। इसलिए, अरबी देश अपने तेल की मांग के आधार पर इजराईल के विरुद्ध अपना प्रभुत्व दिखा तो रहे हैं लेकिन इसके साथ-साथ, तेल के बढ़े हुए दामों को कैसे भुनवाया जाये—किस माध्यम से भुनवाया जाये और भुगतान पर उन रकमों का उपयोग कैसे हो, यह भी एक बड़ा संकट बन रहा है। यदि पश्चिम उन्हें रोकड़ में भुगतान (जो शायद में असम्भव है) तो उस रोकड़ का उपयोग कैसे हो? स्वदेश में नहीं हो पायेगा। यदि विदेश में लगाया जाये तो एकदम सारी दुनिया के स्टॉक मार्केटों पर इसका विपरीत असर पड़ेगा। यदि सामान के, अदले-बदले भुगताया जाये तो समृद्धि इतनी बढ़ने पर, उन देशों में कितने सामानों की मांग बढ़ाई जाये—लेकिन उतना सामान बाजार में खप नहीं सकेगा। तो क्या?

'सोमवार मार्च '७४

... अरिया है। १९७२ में फ्रान्स ने अरब देशों को १७३ ४ करोड़ फ्रैंक के शस्त्र बेचे। हाल ही के युद्ध के दरमियान पश्चिमी देशों ने निकट पूर्वी देशों का शस्त्र बेचना बन्द किया—लेकिन अभी 'मित्र राष्ट्र' का प्रमाण पत्र पाने के लिए ये सब फिर उन्हें शस्त्र बेचने को तैयार हो रहे हैं। (सिर्फ अरबों को नहीं—ये इजराइल को भी देने को तैयार हैं) ब्रिटेन की उम्मीद है कि १९७४ में ये अरब देशों को ४७ करोड़ पौण्ड के शस्त्र बेच पायेंगे। अब दुनिया का आर्थिक सन्तुलन जारी रखने के लिए शस्त्र निर्माण एक जबरदस्त साधन बन रहा है। साथ ही अगर किया चाहें, तो आज ही वह अरब राष्ट्रों के उपयोग के लिए १५ लाख एम० ए० एस० ६९ मिसाइल को खरीदने की परिस्थिति में है। याने इजराइल के पास जितने विमान हैं—एक विमान के पीछे २०० मिसाइल (ये मिसाइल आजकल विमान को गिराने का सबसे सफल साधन माने जाते हैं।) यह एक तरीका है।

एक अर्थशास्त्री ने एक दूसरी तरकीब सुझायी। अरब देश अपना फालतू धन विकासशील देशों के विकास की सहायता के लिए खर्च करें। इससे विश्व के आर्थिक तथा सामरिक सन्तुलन को खतरनाक ढंग से बिगाड़ने के बदले, ये विश्व के खतरनाक आर्थिक असन्तुलन को सुधारने में सहायक होंगे। स्पर्धा में फंसने के बदले में ये दान और सेवा की होड़ में लगेंगे, तो दुनिया में एक नई भावना पैदा हो सकेगी और विकासशील राष्ट्र उनके पक्के हिमायती बन जायेंगे। वैसे पश्चिम के राष्ट्र तेल के नये स्रोतों का विकास तेजी से करने लगे हैं (कई जगह इसमें अरब राष्ट्रों की पूंजी भी लगी है) तथा तेल के बदले में उर्जा के अन्य स्रोत (मसलन आणविक शक्ति) भी खोजने लगे हैं। तो, अरब देशों का प्रभुत्व हमेशा के लिए कायम नहीं रह सकेगा। अभी से ये अपने धन का सदुपयोग करने का मार्ग खोजें, उसमें उन्हें शोभा है।

अभी तक सन्तुलन शास्त्र की दृष्टि से, व्यक्तिगत तौर पर अतिसमृद्धि एक समस्या बन रही थी। अब अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर भी वह विकट बन रही है। बहुत शीघ्र ही सर्वनाश या सर्वोदय की ओर बढ़ने की एक चुनौती इस समय विश्व के सामने खड़ी है।

फ्रान्स के प्रेस ब्यूरो के दो लेखों में लिये हुए ये स्फुट विचार भी दिखाते हैं कि वर्तमान आर्थिक संकट शायद लोगों को एक नई क्रान्तिकारी दिशा में सोचने को मजबूर कर सकता है।

मजबूरी से इस समय हम बहुत महंगी उर्जा के युग का सामना कर रहे हैं। क्या इससे लाभ उठा कर, हम एक नये तरीके के उत्पादन पर विचार कर सकेंगे, जिसमें यन्त्र का महत्त्व कम होगा?

बहुत दिनों से बाजार को ताकने के बद जिस सामान की कमी है उनके न्यायपू वितरण के लिए काफी लोग एक नई पद्धति की खोज करने लगे हैं।

स्टॉकहोम सम्मेलन ने इस आशय का प्रस्ताव पारित किया कि विश्व के लिए ऊर्जा नीति तय करते समय, ऊर्जा के सीमित स्रोतों पर व्यक्तिगत मालकियत नहीं रहनी चाहिए। उनका दुरुपयोग जायगा और व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं होना चाहिए।

अब ये लोग, जो कल तक अपनी कार में घूमते थे, बसों और रेलों का उपयोग करने लगेंगे। कुछ लोग समझने लगे हैं कि साम्यवादी दल में वर्तमान सामाजिक समस्याओं के अनुकूल अपने में परिवर्तन लाने की शक्ति बहुत कम रह गयी है।

यदि "विकासशील अर्थशास्त्र" को सच्चा अर्थ देना हो, तो उसके कई हिस्सों को बदल कर उन्हें एक पूरा नया स्वरूप देना पड़ेगा।

अभी तक, विज्ञापन-उद्योग की नीति रही कि ऐसी चीजों का विज्ञापन करें जो जल्दी में जीर्ण हो जायें, ताकि बारम्बार नये सामान से जीवन निरन्तर नया मालूम हो। लेकिन हाल में विज्ञापनों में लोग अपने सामानों के स्थायित्व तथा सुरक्षितता पर ज्यादा जोर देने लगे हैं।

वर्तमान समाज की एक और बुनियादी आवश्यकता है—अपने खरीदे हुए सामानों का पूरा उपयोग करना। यदि एक आदमी दो तीन साल ज्यादा तक अपने सामान का

अति समृद्धि और···

→

उपयोग करे तो क्या इससे उसे बहुत नुकसान होगा?

शायद एक नयी औद्योगिक व्यवस्था की ओर बढ़ना उपयोगी होगा जिसमे पैसे के लिए काम करने का महत्व कम हो। पैसे का न वह गुणात्मक न सत्यात्मक महत्व रहेगा, जो आजकल उसे प्राप्त है।

हमने अक्सर समझा था कि आर्थिक समृद्धि का एक लाभ यह होगा कि हम एक प्रकार के स्वर्ग में शान्ति और समन्वय से रहेंगे। लेकिन आजकल हमें इससे बिलकुल विपरीत नतीजा दिखाई दे रहा है। जीवन की रफ्तार बढ़ जाती है और हमारे जीवन मे ज्यादा से ज्यादा परेशानियाँ बढ़ जाती हैं।

आजकल प्रथम बार, एक उद्योग मे काम करने वाले लोगो ने सोचना शुरू किया कि क्या वास्तव मे ओवर टाइम के सिद्धान्त से कुशलता तथा बदलती माग का समन्वय हो पाता है?

नया साल पश्चिम के लिए नये तरीके से सोचने की चुनौती उपस्थित करता है। क्या हम यह नये सोचने का तरीका दुखदायी मानेंगे? यह इस पर निर्भर है...क्या हम "उपभोक्ता समाज" को भूत का स्वप्न मानेंगे, या औद्योगिक सभ्यता का एक खतरनाक पहलू मानेंगे।

तेल के दाम बढ़ गये है...इससे अनिवार्यतः युद्ध का परिणाम आयेगा... ऐसी बात नही है। विज्ञापन और झगड़े के सिवा, इससे अन्य भावनाएँ भी पैदा हो सकती हैं। '६५ मे अचानक कई दिनो तक न्यूयार्क मे बिजली बन्द हुई थी। लोग कहते थे कि इसके पहले धक्के के बाद उन्हें आश्चर्य हुआ कि एकदम, अपने आप, लोगो को एक दूसरे को इतनी मदद देने की प्रेरणा कहाँ से मिली? एक प्रकार से, सारा शहर सिर्फ अन्धकार से नही, बल्कि सहयोग की भावना मे भी डूब गया था।

यूनेस्को ने कुछ ऐसे आँकड़े निकाले हैं, जिससे पता चलता है कि हर राष्ट्र मे १० प्रतिशत धनिक लोगो की आमदनी तथा १० प्रतिशत गरीब लोगो की आमदनी मे क्या अनुपात है। सोवियत रूस में यह अनुपात ८ है, ब्रिटेन मे १५ है, पश्चिमी जर्मनी मे २०.५ है, नार्वे मे २५ है, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका मे २९ है, हॉलैन्ड मे ३३ है, लेकिन फ्रांस मे ७६ है।

यात्री के देश के साथ पेरिस का सम्पर्क नगण्य सा है। कोई सही विकेन्द्रीकरण नही हुआ है, हालांकि हाल ही मे स्थानीय स्वायत्त शासन का निर्माण हुआ है। सब लोगो को लगता है कि राजधानी सारे राष्ट्र का प्राण चूस रही है और उसके निर्णय अक्सर पेरिस निवासियों के पक्ष मे होते हैं।

राष्ट्रीय नीतियो के स्थान पर केन्द्रीकरण का प्रभाव बहुत बुरा पड़ रहा है। क्योकि इससे समाज वर्तमान नीतियो का सामना नही कर पा रहा है। इसका असली कारण यह है कि सरकारी अधिकारियो ने असली सत्ता अपने हाथो मे ले ली है।

सांस्कृतिक नमूने के तौर पर, अब यन्त्रीकरण की इज्जत नही रही। अब यह साबित हो रहा है कि अन्त तक यन्त्र की शक्ति मनुष्य का स्थान नही ले सकती। कीमतो की वजह से और परिस्थितियो की वजह से, उद्योग को कम ऊर्जा और कम कच्चे माल का उपयोग करना ही पड़ेगा। उसे अपनी आवश्यकताओ के लिए ज्यादा निकट भी देखना पड़ेगा।

उत्पादन कम करने मात्र से असमानताएँ कम होंगी ऐसी बात तो नही है। लेकिन यह तो निश्चित है कि उत्पादन बढ़ाने से असमानताएं भी बढ़ती हैं। लेकिन आजकल नई परिस्थितियो के साथ समन्वय करने के साधन, गरीबो की बनिस्बत अमीरो के हाथ मे बहुत ज्यादा हैं। यह ठीक है, कि पेट्रोल के बढ़ते दामो का असर छोटी कारो के बनिस्बत बड़ी कारो पर ज्यादा पड़े। व्यर्थ खर्च कम करने की दृष्टि से, तथा फालतू दिखावे का खर्च कम करने की दृष्टि से वर्ग संघर्ष कुछ कम हो सकता है। -

सरला देवी

×

ऊर्जा संकट : योजना संकट

—रण बहादुर सिंह

देश में ऊर्जा संकट है इस तथ्य से हम सब परिचित हैं। यह परिस्थिति तेल के संकट से और भी विकट बन चली है। इससे निपटने के लिए हमें अपने कोयले के प्राकृतिक भण्डारो का अधिकाधिक प्रयोग करना पड़ेगा। इस त्वरित आवश्यकता की पूर्ति के लिए हम गहराई वाले कोयले की खदानो से उतना कोयला इतनी जल्दी नही निकाल सकते कि हमारी आवश्यकताएं पूरी हो जायें। हमें उन क्षेत्रो से ही कोयला निकालना पड़ेगा जहा कोयला जमीन की सतह से काफी नजदीक हो जैसा कि मध्य प्रदेश में सगरौला क्षेत्र में है जहां कोयला भूमि की सतह से केवल बीस फुट नीचे है। पर हमें बताया जा रहा है कि यह कोयला भी आवश्यक मात्रा में केवल दो वर्षों बाद ही उपलब्ध होगा। कठिनाई यह बताई जाती है कि कण्टूर लाइन नक्शा तैयार नही है। और यह नक्शा तभी बन सकता है जबकि रक्षा मंत्रालय इस क्षेत्र का हवाई सर्वेक्षण कर स्वीकृति दे। रक्षा मन्त्रालय स्वीकृति तब देता है जब यह निश्चय हो जाय कि इस सर्वेक्षण से सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े और यदि ये सब कठिनाई दूर भी हो जाये तो खनिज की भारी मशीनरी का आयात होने पर ही कार्य प्रारम्भ होगा। खनिज की छोटी मशीन देश ही में निर्मित हो रही हैं— ट्रकों की भी पर्याप्त उपलब्धि है। पर यह निर्णय सा हो गया है कि बाहर से आयात की गयी भारी मशीनरी से ही यह कार्य होगा। और हमारे इस संकट काल में यह कोयला नही मिल पायेगा। उस क्षेत्र में व्यापक बेरोजगारी है। यह सर्वथा सम्भव है कि १०००० बेरोजगार भूखे व्यक्ति उस कोयले को तीन महीने में खुदाई कर बाहर निकाल सकते हैं। पर सम्भावना यही है कि हम तीन साल बाद ही यह कार्य प्रारम्भ करेंगे। यही हमारी योजनाओ की सबसे बड़ी कमजोरी है। हमें तो अब शीघ्रता से कठिन निर्णय लेने होंगे। उस क्षेत्र के लोगों को वही योजना रुचिकर होगी जो उनकी भी आवश्यकता का समुचित निराकरण प्रस्तुत करे।

उपवासदान : स्थिति और सूची

फरवरी २८ तक उपवासदान की प्रदेशवार स्थिति

प्रदेश	संख्या	रकम	विशेष विवरण
असम	८	२१०-००	
आंध्र	६	२४७-००	
उत्कल	१७	१६६-००	मासिक ब्यौरा
उत्तर प्रदेश	२०६	५४२२-६०	१ नवम्बर १२०
केरल	२	७५-००	२ दिसम्बर ११७
कर्नाटक	२२	४६३-५०	३ जनवरी ३४३
गुजरात	७६	२१२३-००	४ फरवरी २८७
तमिलनाडु	१०	२६३ ००	
पंजाब	२८	६०४-५०	
प० बंगाल	४१	१४७७-००	
बिहार	४७	११९६-०६	
मध्य प्रदेश	६७	१७४८-००	
महाराष्ट्र	२४५	४८३६-२०	
राजस्थान	३८	६८१-००	
हरियाणा	३१	७६७-००	
हिमाचल	१	२५-००	
दिल्ली	१४	४६१-००	
नागालैंड	४	—	
विदेश	१	६०-००	
	८६७	२१,१०७-२०	

उत्तर प्रदेश

वाराणसी : विक्रमादित्य सिंह, विद्याशंकर पाण्डेय, लालजी, दुक्खु प्रसाद, गिरजा शंकर सिंह, महादेव प्रसाद, नरहरि रणप्पा, रामदुलार शर्मा। **टिहरी गढ़वाल .** धूमसिंह नेगी। **मथुरा :** गौरी शंकर अग्रवाल, सरस्वती देवी भाटिया, जयन्ती प्रसाद, बनवारीलाल दूधवाले, श्रीमती निर्मला देवी। **देवरिया :** मुरारी प्रसाद वर्मा, डा० हरिहर प्रसाद पाण्डेय। **मिर्जापुर :** प्रेमभाई। **कानपुर :** डा० श्री० पी० चतुर्वेदी, श्रीमती एम०आर० सदानन्दा। **आगरा :** रोशनलाल गुप्ता, रामकिशन अग्रवाल, ब्रह्मा देवी, सियूरकान्त चतुर्वेदी, डा० शिवमदन मोतीलाल, गिरीशचन्द्र गुप्ता, ओम प्रकाश मित्तल, बाबूलाल सिंघल, बालमुकुन्द बल्ला, श्रीमती वत्सला कुळे, सज्जाराम बंसल, हनुमान प्रसाद, राधारमण अग्रवाल, धर्मपाल विद्यार्थी, रामनारायण गुप्ता, आदिराम सिंघल, श्रीकृष्ण गुप्ता, ओम प्रकाश शर्मा। **पीलीभीत** मधुसूदन। **बलिया .** शिवकुमार मिश्र। **बदायूं :** भद्रगुप्त आर्य। **सहारनपुर** कमला कान्त त्रिपाठी। **बुलंदशहर :** द्वारका प्रसाद गर्ग। **गोंडा** सीताराम सिंह। **देहरादून** लक्ष्मण देव। **लखनऊ** लाजकिशन मेहरा, विचित्र नारायण शर्मा। **गोरखपुर** सरस्वती प्रसाद श्रीवास्तव, शकुन्तला देवी श्रीवास्तव। **आजमगढ़** मेवालाल गोस्वामी। **नैनीताल :** राजेन्द्र सिंह, श्रीमती राजवती देवी, गोपाल तिवारी, बच्चाप्रसाद हरिजन, राधव सिंह, राजेश्वर शाही, जिनेन्द्रनाथ तिवारी, वीरेन्द्र बहादुर शाही, राजेन्द्र प्रतापचन्द्र, श्रीमती सूर्यमणि देवी, चन्द्रावती देवी, फूलमती देवी, राजकिशोर शाही, मुन्ना देवी, जगरानी देवी, रामकुमार गुप्ता, रामनैन सिंह, सत्यजीत गुलाटी, शिव प्रसाद पाण्डे, विभूति मिस्त्री, जमुना सिंह, देवनाथ राम, राधेसिंह, श्रीमती मनिका देवी, हरदेव सिंह, प० रूपकिशोर शर्मा, मुन्ना लाल शर्मा, पुरुषोत्तम, रामकिशोर शास्त्री। **गाजीपुर :** कृष्णसिंह, रामकृष्ण प्रसाद, ओमप्रकाश नेवटिया, गजानन्द, सतीचन्द। **जौनपुर** रामनिहोर मिश्र। **शाहजहांपुर** राजाराम, कन्हईलाल शुक्ला। **इटावा** शम्भूदयाल त्यागी। **मुजफ्फरनगर :** हरदम सिंह, श्याम सिंह, सुखबीर सिंह, राजाराम, दिलीप सिंह, ब्रह्मादेवी।

हरियाणा

हिसार गोदावरी, श्रीमती पार्वती, मर्जुनदास, पूर्णचन्द्र गुप्त, रामकुमार नाहर, सीताराम बागला, घेरलाल टाटिया, हरिश्चन्द्र लादूराम घेंघलाल, हनुमानदास मुनीम, अर्जुनदास, श्रीमती शान्तिदेवी, ब्रह्मानन्द, मुरजाराम, मासाराम सेन, गणेशीलाल। **रोहतक** दीवान चन्द्र, सूरत सिंह, फूलिया भगत। **जीन्द** हरिश्चन्द्र। **भिवानी :** राधेश्याम तिवारी। **करनाल :** सोमदत्त वेदालकार, शादीराम जोशी। **गुड़गांव :** भगवान दास।

हिमाचल प्रदेश

भट्ठनाथ मंडी जयचन्द मल्होत्रा।

दिल्ली

प्यारा राम छाबड़ा, नायबराज कालरा, आर्यभूषण भारद्वाज, रमेशचन्द्र शर्मा, कृष्णमूर्तिगुप्त, राधाकृष्ण, श्रीमती कमला बहन, डा० भीमसेन सच्चर, डा० श्रीराम शर्मा, सी० ए० मेनन।

पं० बंगाल

कलकत्ता मोतीलाल लाठ, दुर्गाचरण दत्त, सी० एस० नियोगी, बलदेव दास अग्रवाल, श्रीमती मीराबाई मक्कड़, राधेलाल अग्रवाल, भाई०डी०दमाणी, कान्तिलाल दिलजी पटेल, अरुण कुमार गुप्ता लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, घनश्यामदास बंसल, नेमकुमार जैन, **चौबीस परगना :** कु० मंजुराय, चारुचन्द्र भण्डारी, **बीरभूम** स्वामी चिदानन्द।

राजस्थान

बीकानेर : रूपभराज जैन, सोहनलाल मोदी। **श्रीगंगानगर** मुरलीधर जी गोयल, रामचन्द्र सक्सेना, डूंगरमल शर्मा। **जयपुर .** चौथमलजी, त्रिलोकचन्द, श्रीमती बादामबाई, बलवंत सिंह। **बापूनगर .** रामेश्वरलाल।

(पृष्ठ २ का शेष)

सम्पादकीय टिप्पणियां

घूम रही है, उसे जागृत करना भी अनावश्यक होता। मगर कठिनाई यह है कि योजना चाहे बांधों की हो चाहे पाताल कुएं तैयार करने की सब जगह आड़ आने वाली चीज बेईमानी का क्या करें।

चार वर्ष हुए पंजाब राज्य मे चार करोड़ रुपयो की लागत से पाताल कुए खोदने के लिए एक 'कॉरपोरेशन' की रचना की थी। चार साल मे तीन कुएं खोदे गये और आनन्द यह है कि काम एक भी नही दे पा रहा है। स्वयं सरकार ने विधान सभा मे विवरण देते हुए कहा कि राज्य मे सब साधनो के द्वारा विगत २६ वर्षों मे ३८२ पाताल कुएं खोदे गये इनमे से १८० को काम के योग्य बनाने का प्रयास किया गया, शेष को यो ही छोड़ दिया गया। इन १८० में से १२० राजस्थान ट्यूबवेल बोर्ड द्वारा खोदे गये थे और इनमे केवल ८ का पानी खेतो तक ले जाने का प्रबन्ध हुआ तथा बिजली केवल तीन को दी गई। मगर काम तो अभी किसी एक से भी नही लिया जा सका है।

अब अगर वहां के लोग अपनी परेशानी को भोगते रहने मे असमर्थ होकर किसी दिन ऐसी बदइंतजामी और बेईमानी के खिलाफ इकट्ठा होकर आवाज लगायें, सुनी न जाये तो नाराज दिखाई देने लगें, गुजरात की तरह वहा कोई आन्दोलन शुरू हो जाये, विद्यार्थी या किसान कस्बो और शहरों मे जुलूस निकाल कर घूमने लगें, वहा की सत्ता का मृत्यु-घंटा नाद जो आन्दोलन का अहिंसक प्रकार ही कहा जायेगा बज उठे तो 'साधन शुद्धि' के प्रति हमारी सजग सरकार निस्सदेह गुजरात की ही तरह उन्हें तितर-बितर करने के लिए न समझाने बुझाने की कोशिश करेगी न उनकी माग पूरी करने का वायदा। वह सीधी गोलिया चलायेगी और शेष समाज से अपेक्षा करेगी कि वह साधु-साधु' 'खूब-खूब' 'उचित-उचित' 'उत्तम-उत्तम' का स्वर उठा कर उसका समर्थन करेगा।

बेचारे मॉनिकशॉ ने बम्बई के रोटरी क्लब मे बोलते हुए कहा कि भाई हम देश मे तरह-तरह के अभावो की बात कर रहे हैं—मगर सबसे खतरनाक जो अभाव है वह स्वच्छ प्रशासन का है। अन्न का अभाव लेवी लगाकर, तेल का अभाव 'बाम्बेहाई' या आसाम मे नये कुओं का पता लगाकर संभाला जा सकता है मगर यह जो चारित्रिक अभाव, नेतृत्व मे प्रामाणिकता का अभाव जड़-पकड गया है सबसे अधिक दुरूह काम तो इससे सुलटना है। शब्द क्या जाने, मगर उस पर प्रामाणिकता के बदे चारो ओर से लगभग उसी प्रकार कूद पडे हैं जैसे नागपुर मे हेडाऊ महाशय टूट पडे थे। साध्य-साधन एकता की बात मूलगामी है। इस पर जितना जोर दिया जाये कम है। हजार विषयो पर बोलने के बजाय प्रधानमंत्री अपने आसपास इस एक दम गायब तत्व को पनपाने का प्रयत्न करें तो इस एक को साधन से सब सध जायेगा। सब साधने की भागदौड मे सब कुछ निःशेष होकर रह जाता है, यह कौन नही जानता।

अब तक प्राप्त उपवास-दानियों की सूची का शेष भाग अगले अंक में प्रकाशित हो रहा है।

SWING HIGH WITH
bajaj
PRODUCTS
Swinging times and carefree living If that's your wish for a modern lifestyle, Ba,aj can make it come true Any time of day Any season of year
The world of Bajaj Products is, in fact, created for modern homemakers. Icecream Freezer Pressure Cookers Toasters Mixers Ovens Fans Lamp Lighting Fixtures Accessories and so forth
And Ba,aj alone have as many as 3 500 Dea ers and 18 Branches throughout the country Here you'll find the greatest Before and After Sales Service-where everything goes with a sw ng !
bajaj electricals limited
Branches all over India

अन्न की नीति पर गोष्ठी

मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल तथा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र, इन्दौर के तत्वावधान में ३ और ४ मार्च, ७४ को इन्दौर में आयोजित अन्न-नीति गोष्ठी में निम्न सुझाव दिये हैं :

(१) सरकार के लिए लेवी द्वारा अनाज खरीदना अनिवार्य है पर इसमें किसानों से ग्रेडेड लेवी सिस्टम से अनाज खरीदा जाए। सरकारी खरीद मूल्य और प्रचलित बाजार मूल्यों में अधिक अन्तर नहीं रहना चाहिए। अन्यथा किसान लेवी चुकाने में उत्साहित नहीं होगा।

(२) लेवी द्वारा पर्याप्त खरीद न हो तो प्रमाणित व्यापारियों से उनकी खरीद की जाय। उनके पास अनाज का १५ प्रतिशत तक सरकारी खरीद मूल्य पर लेवी के रूप में वसूल किया जाय।

(३) जिलाबन्दी और प्रतिबन्ध लगाकर ही लेवी वसूली और सरकारी खरीद का प्रतिबन्ध कम से कम समय के लिए ही होना चाहिए।

(४) लेवी चुकाने के बाद शेष अनाज किसान प्रमाणित थोक और खुदरा व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं को बेच सके।

(५) प्रमाणित थोक व्यापारियों पर यह प्रतिबंध होना आवश्यक है कि थोक खरीदी और उपभोक्ताओं को बिक्री के बीच का मार्जिन १५ रुपये प्रति क्विंटल से अधिक का न हो।

(६) गांव में ग्रामसभाओं तथा नगर में मोहल्ला सभाओं का गठन करके उनके मार्गदर्शन में सहकारिता के आधार पर सस्ते अनाज की दुकानें खोलने को प्रोत्साहन दिया जाय। इन दुकानों की नागरिक लोग ही निगरानी रखेंगे तो वितरण व्यवस्था ठीक चल सकेगी।

(७) सबसे पहले कमजोर वर्ग और निम्न आय समूह को सस्ता अनाज देने की जिम्मेदारी सरकार उठाये। शहरों में ऐसे निम्न आय वाले वर्गों को राशन कार्ड दिये जायें और उन्हें प्रतिव्यक्ति कम से कम ७ किलो खाद्यान्न की आपूर्ति अवश्य की जाये। जैसे-जैसे सरकार के पास अनाज का पर्याप्त स्टाक उपलब्ध होता जाय वैसे-वैसे वह अधिकाधिक लोगों को वितरण व्यवस्था में सम्मिलित करती जाये।

(८) भूमि लगान की वसूली अनाज में करने की नीति बहुत प्रभावशाली हो सकती है। लेकिन इसे और भी युक्ति संगत करने के लिए कम भूमि पर अन्न लगान और अधिक भूमि पर अन्न लगान का अधिक भार बढ़ाना होगा।

(९) सरकार अपने कर्मचारियों को वेतन का एक हिस्सा अनाज में दे तो इससे कर्मचारियों को बहुत राहत मिलेगी। इसका कुछ चुने हुए क्षेत्रों और विभागों में प्रयोग किया जाय।

(१०) ग्रामों में भूमिहीन श्रमिकों को मजदूरी का एक अंश अनाज में मिले, यह प्रथा कायम रहना आवश्यक है।

■ १८ को समाप्त हुए चौथे संत सेवक समागम के निवेदन में कहा गया है कि राष्ट्रीय आवश्यकताओं की दृष्टि से जनतंत्र का विकास किस दिशा में हो, यह प्रजा के नैतिक एवं मानसिक चेतना पर निर्भर है। उस चेतना को जाग्रत एवं प्रबुद्ध रखना इस समागम का केन्द्रीय अभिप्रेत है।" समागम में राजधर्म एवं ऋषिधर्म, लोक जीवन में नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापन तथा 'भारतीय गणतंत्र में दलतंत्र से जनतंत्र की ओर विकास' पर विस्तार से चर्चा हुई है।

तीन दिनों तक हुई उपरोक्त चर्चा के संदर्भ में इस प्रकार के समागम की आवश्यकता एवं उपयोगिता विशेष रूप से महसूस हुई।

आध्यात्मिक एवं नैतिक शक्ति के द्वारा देश की वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए दिशा निर्देश करना तथा अहिंसक शक्तियों को जोड़ना समागम का मुख्य उद्देश्य रहेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह समागम एक 'समन्वय मंच' का काम करेगा। यह कोई संगठन नहीं होगा।

समागम के द्वारा निम्नलिखित कार्य को प्रेरित किया जाय :

(१) संतों के मार्ग दर्शन में सेवकों के सम्मिलित प्रयास से समाज तथा शासन के संचालन पर जन-शक्ति द्वारा नैतिक अनुशासन स्थापित करना। (२) विभिन्न लोक संगठनों में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का विकास। (३) लोक जीवन में होने वाले आंदोलनों का स्वरूप अहिंसात्मक हो, तदर्थ प्रयास करना। (४) देश की वर्तमान आर्थिक समस्याओं के हल के लिए श्रमनिष्ठा, त्याग संयम और सादगी का वातावरण बनाकर स्वैच्छिक नियंत्रण तथा परिग्रह मर्यादा को विकसित करना। (५) समाज परिवर्तन के अहिंसक विकल्प प्रस्तुत करना तथा उनके प्रयोग करना।

इस कार्य हेतु संयोजन के लिए एक समागम समिति रहेगी तथा समय-समय पर समागम, शिविर आदि इसके माध्यम से आयोजित किये जायेंगे।

समागम में आचार्य तुलसी स्वामी *अखण्डानन्द सरस्वती, स्वामी शरणानन्द* आदि ने भाग लिया।

● खड़वा (म० प्र०) की ग्रामदान-ग्राम स्वराज्य समिति ने फरवरी में जिले के गोरडड़, सिगोट, जमवाडी, बलवाडी, पिपलोद, गुडी, खादपुर आदि २२ गांवों में विचार-प्रचार यात्रा की। इन गांवों में केरल भाषा में ग्रामस्वराज्य पर लिखा गया साहित्य बांटा गया।

● हिमाचल सर्वोदय मंडल से प्राप्त *जानकारी के अनुसार हिमाचल प्रदेश सरकार* ने प्रदेश भूदान-यज्ञ बोर्ड का पुनर्गठन किया है। श्री देसराज महाजन (राजस्व मन्त्री, हिमाचल प्रदेश) को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। बोर्ड के सदस्यों में श्रीमती गौरा देवी, श्री ओंकार चन्द्र (विधायक) श्री सूरत सिंह, श्री निहलचन्द, श्री रणजीत सिंह, श्री जयचन्द एडवोकेट व श्री सुन्दर सिंह (विधायक) को लिया गया है। श्री लक्ष्मीदास सदस्य सचिव बनाये गये हैं।

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश २० रु० या २५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार १ अप्रैल, '७४

किशोर शाह (बायें) अमरनाथ (बीच में) तथा संतोष भारतीय (दायें)· अब मुजफ्फरपुर जेल में

बिहार में राजनैतिक व प्रशासनिक अदूरदर्शिता की पुरानी कहानी

जयप्रकाश नारायण

पटना में अठारह मार्च को ऐसे किसी भी व्यक्ति के लिए आंसू रोक पाना मुश्किल हुआ होगा जिसमें थोड़ी भी संवेदनशीलता और देशभक्ति हो और जो जानता हो कि वहां क्या हो रहा है। उन्नीस मार्च को ये पंक्तियां लिखते हुए मेरी आंखों में आंसू उमड़ पड़ रहे हैं। (कल मेरी शक्ति चुक गयी इसलिए आज मैं मौन रख रहा हूं) स्वतन्त्रता संग्राम का प्रकाश-स्तम्भ, सर्चलाइट ही नहीं, और भी बहुत कुछ नष्ट हो चुका है। बिहार की आत्मा घायल पड़ी है और उसके शरीर से खून बह रहा है। मैं नहीं जानता कि क्या बिहार को नष्ट होने दिया जायेगा ?

अठारह मार्च को पटना में प्रशासन जिस बुरी तरह विफल हुआ उसके बाद किसी भी प्रजातान्त्रिक देश में सरकार इस्तीफा दे देती लेकिन इस देश में हम अपनी गलतियों को छुपाने, बहाने बनाने और बलि के बकरे ढूंढने में बहुत माहिर हो गये हैं। अब समय है कि हम अपनी दिशा सुधार लें। श्री अब्दुल गफूर एक सम्माननीय व्यक्ति हैं और मेरी जानकारियों के अनुसार सत्ता के प्रति उनमें कोई अत्यधिक लालसा नहीं है। उन्हें मेरी दोस्ताना सलाह है कि हाईकमान की चाहे जो राय हो, अपने और प्रान्त के हित में उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्हें अपनी आत्मा से पूछना चाहिए। अगर वे सचमुच महसूस करते हों कि बार-बार निवेदन किये जाने के बावजूद भी, वे सर्चलाइट, इण्डियन नेशन और दुकानों को आगजनी और लूटपाट से नहीं बचा पाये, तो उन्हें त्यागपत्र दे देना चाहिए। लेकिन अगर वे मानते हों कि पुलिस मौके पर जब पहुंची तब उसका भागती हुई भीड़, राहगीरों और बच्चों पर अंधाधुंध गोली चलाना उचित था, अगर वे सोचते हैं कि बदमाश गुण्डों और बिहार सरकार को उलटने और खुले आम हिंसक व्यवहार करने और उसका उपदेश देने वाली पार्टियों के आग-उगलते नेताओं को गिरफ्तार न करना लेकिन श्री कर्पूरी ठाकुर, श्री रामविलास मण्डल और उनके सहयोगियों तथा श्री ठाकुर प्रसाद, श्री रुद्र प्रसाद सारंगी और उनके साथियों को गिरफ्तार करना उचित था, अगर वे मानते हैं कि शस्त्र कानून और विस्फोट कानून के तहत श्री कर्पूरी ठाकुर अपराधी हो सकते हैं, अगर वे मानते हों कि यह सब सही है तो निश्चित ही उन्हें इस्तीफा नहीं देना चाहिए। लेकिन अगर वे ऐसा नहीं सोचते तो त्रासदी और दुख की इस घड़ी में हाईकमान नहीं बल्कि अपनी आत्मा का मार्ग दर्शन उन्हें लेना चाहिए।

श्री विद्याकर कवि से अधिक विनम्र व्यक्ति मैंने कम ही देखे हैं। हाल ही वे गम्भीर रूप से बीमार थे फिर भी प्रदर्शनकारियों से मिलने के लिए अपने घर से निकलने का साहस और सौजन्य दिखाया। यह शनिवार सोलह मार्च की बात है। उस दिन उनके साथ जो हुआ उसे पूरा बिहार जानता है। उस घटना से सम्बन्धित पार्टी या पार्टियों का कोई भी नेता गिरफ्तार किया गया है ?

इस परिस्थिति में न सिर्फ सरकार को त्यागपत्र देना चाहिए बल्कि प्रशासन और पुलिस के सर्वोच्च अधिकारियों को भी हटाया जाना चाहिए। पहले नागरिक खुफिया विभाग को भी मैंने इसमें शामिल किया था लेकिन बाद में मिली जानकारियों से पता चला कि वह दोषी नहीं है। कतिपय स्थानों को जलाने और लूटने की योजनाओं की जानकारी यह विभाग बारह मार्च को ही सरकार को दे चुका था। इस हालत में प्रशासन की विफलता और भी आश्चर्यजनक हो जाती है।

इस सब को वैयक्तिक और राजनैतिक लक्ष्यों के लिए प्रेरित बातों के रूप में गलत समझा जा सकता है। लेकिन मेरा कोई वैयक्तिक लक्ष्य नहीं है और अच्छी सरकार तथा बेहतर प्रजातान्त्रिक ढांचे के सिवाय मेरा कोई राजनैतिक लक्ष्य नहीं है। सबसे ऊपर और पहले मैं लोगों की भलाई चाहता हूं।

पटना और दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में कहा जाता है कि युवकों को मैंने भड़काया है। पटना, मुजफ्फरपुर, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर, आगरा और अहमदाबाद में सारे भाषण सार्वजनिक सभाओं में दिये गये हैं और उनमें से कई के टेप भी मौजूद हैं। सरकार उनका पुलिस रिकार्ड देख सकती है। जो हो, मैंने जो भी कहा है उसके प्रत्येक शब्द की जिम्मेवारी मैं लेता हूं और जैसे ही मेरा स्वास्थ्य ठीक होगा, युवकों के बीच अपना काम मैं फिर शुरू करना चाहता हूं।

ऐसा भी माना जाता है कि मैंने अहमदाबाद में कहा कि बिहार अगला गुजरात होगा। यह कोई पहला मौका नहीं है जब मेरे शब्दों को तोड़ा-मरोड़ा गया हो। अहमदाबाद में अपने कुछ मित्र समूहों में मैंने पूछा था कि बिहार और उत्तर प्रदेश में गुजरात से कोई दस गुना भ्रष्टाचार होगा। फिर क्या बात है कि गुजरात इस तरह उठ खड़ा हुआ ? उनका उत्तर था कि यह गुजरात के लोगों का चरित्र है कि भ्रष्टाचार या अन्याय को वे एक सीमा तक ही सह सकते हैं। उसके बाद चीजों को ठीक करने के लिए खड़े हो जाते हैं। कुछ मैं मुरार जी भाई से सहमत हूं कि गुजरात ने जो कुछ किया उसे और कहीं दुहराया नहीं जा सकता। और जहां तक मैं देखता हूं बिहार में तो बिलकुल नहीं। यहां जमींदारी के दिनों से लोग अन्याय और दमन के आदी हैं। फिर विद्यार्थी यहां आपस में बुरी तरह विभाजित हैं, न केवल गैर-साम्यवादी बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति और साम्यवादी बिहार राज्य छात्र नौजवान संघर्ष मोर्चे में बल्कि विभिन्न पार्टियों, नेताओं और अध्यापकों के प्रति अपनी सम्बद्धता, समीपता और वफादारी के कारण ये दोनों मोर्चे अपने आप भी और विभाजित हैं। मोटे तौर पर संघर्ष समिति का विश्वास शान्तिपूर्ण तरीकों में है, लेकिन इन तरीकों से उसकी प्रतिबद्धता न सच्ची है न मजबूत। संघर्ष मोर्चे का कमोबेश हिंसक तरीकों में विश्वास है। बिहार के विद्यार्थियों और शिक्षकों में वे नैतिक गुण भी नहीं हैं जो गुजरात के छात्रों और शिक्षकों में हैं। फिर भी, जो भी कोई इस देश की भलाई के लिए काम करना चाहता है उसे युवकों में काम करना चाहिए, क्योंकि वे ही देश का भविष्य बना सकते हैं।

पटना में अठारह मार्च को जो हुआ उसके बारे में दो शब्द और कहना चाहता हूं। (दूसरी जगहों के बारे में मेरी कोई वैयक्तिक

→

→

जानकारी नही है।) गुण्डो और उपद्रवकारियो के बारे मे हर एक कोई अस्पष्ट ढग से बोलता है। निश्चित ही कई उपद्रवकारी उस दिन सक्रिय थे। यह भी ठीक लगता है कि आगजनी की बडी घटनाओं के लिए जिम्मेदार लोग बाहर के थे। सभवत: भागलपुर के, और इस काम मे वे कुछ माहिर भी थे। बमो का प्रहरण करने वाले कुछ चालक अच्छी तरह प्रशिक्षित थे और ऐसा भी लगता है कि आग लगाने के लिए जिस सामग्री का उपयोग किया गया वह साधारण चीजो से अधिक शक्तिशाली थी, क्योकि आग एकदम बडी तेजी से फैली। मुझे पता है कि सरकार इसकी छानबीन कर रही है। लेकिन उपद्रव करने वालो मे कुछ हिंसक क्रान्तिकारी, और उनके विद्यार्थी अनुगामी, लूट या आगजनी की कार्यवाही से आकर्षित विद्यार्थी और ऐसे लोग शामिल थे जो महज उत्तेजित हो गये थे। शायद इन लोगो ने सोचा होगा कि वे सन '४२ की क्रान्ति को दुहरा रहे हैं। लेकिन लूट और आगजनी से क्रान्ति नही होती।

मैं नही जानता कि ये तत्व मेरी सुनेंगे। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (वामपथी मार्क्सवादी) शायद मेरी बात पर विचार करें। इन पार्टियो के राष्ट्रीय नेताओ मे मेरे बहुत से मित्र हैं और बावजूद मतभेदो के मै इनका सम्मान करता हू, क्योकि वे किसी विदेशी शक्ति के गुर्गे नही हैं और अपना चिन्तन स्वय करते हैं। जहा तक भारतीय साम्यवादी पार्टी का सवाल है, मुझे भय है मेरे शब्दो का उसके सामने कोई वजन नही है। जो हो, इन लोगो ने चोर को चोरी करने के लिए उकसाने और चौकीदार को सावधान रखने के खेल मे गजब की महारत हासिल की है।

इन सब से मेरी सलाह है कि गुण्डों से मिलकर वे न सिर्फ अपनी छवि बिगाडते हैं, बल्कि अपने लक्ष्य को भी पराजित करते हैं। मेरी दूसरी सलाह है कि वे अगर क्रान्ति करना चाहते हैं तो क्रान्ति उन्हे लोगो के साथ न कि उनके खिलाफ करनी चाहिए। पटना मे इन लोगो ने जो किया उसमे पूरा शहर उनके खिलाफ हो गया है—गुण्डों और असामाजिक तत्वो की बात छोड दीजिए।

छात्र सघर्ष समिति के कुछ नेता उन्नीस मार्च को मुझ से मिले थे, तीन सोमवार को ही मिल चुके थे। ये सब सचिवालय के बाहर प्रदर्शन मे थे और कुछ ने पीठ और गर्दन पर लाठिया भी खायी थी। मैं जानता हू कि इन लोगो ने शांतिपूर्ण तरीके अपनाने की पूरी कोशिश की, लेकिन सफल नही हो सके। चू कि उनका विवरण और कही छप नही पायेगा इसलिए यहा मैं उसे सक्षेप मे दे रहा हू। एक समूह के रूप मे इन युवको ने लूट, आगजनी और दूसरी हिंसक कार्यवाहियो की भर्त्सना की है। शुरु मे सचिवालय के सामने वे बिल्कुल शान्त थे। वे उस फाटक के सामने लेट गये थे जहा से राज्यपाल विधानसभा जाने वाले थे। उनसे उठने को कहा गया। उठने से उन्होंने इन्कार किया और पुलिस से कहा कि चाहें तो उन्हें गिरफ्तार कर सकते हैं। उनसे कहा गया कि वे गिरफ्तार हैं। कुछ खडे हो गये और कुछ खडे हो रहे थे। तभी एकदम उन पर लाठिया बरस पडी। तब वहा एकत्रित हजारो विद्यार्थियो मे यह बात फैल गयी कि "हमारे नेताओ को पीटा गया है"। इसके बाद पथराव शुरू हुआ और दूसरी घटनायें हुई। इन युवको ने अपनी कहानी कही उसे प्रकट करना मै जरूरी समझता हू। हालाकि इसकी सच्चाई को प्रमाणित करने की स्थिति मे मैं नही हू। जो युवक नेता मुझसे मिले उनमे कुछ संयुक्त समाजवादी पार्टी के, कुछ सगठन काग्रेस के और कुछ विद्यार्थी परिषद के थे। इनके अलावा भी कुछ युवक थे।

अभी मुजफ्फरपुर से खबर आई है। खबर क्या है राजनीतिक और प्रशासनिक अदूरदर्शिता की पुरानी कहानी है। गिरफ्तार युवको मे तरुण शांति सेना, गाधी शान्ति प्रतिष्ठान के सचिव और आईना के सम्पादक शामिल हैं। जो लोग शान्ति मे विश्वास करते है और उसके लिए काम करते है उन्हे दूसरो की हिंसा के लिए दण्डित किया जा रहा है। तरुण शान्ति सेना और गाधी शान्ति प्रतिष्ठान के कार्यकर्ता फरवरी के महीने से व्यापारियों को समझा रहे थे कि उन्हे जरूरत की चीजें निश्चित दामो पर बेचना चाहिए और इन दामो की सार्वजनिक घोषणा की जानी थी। होली के पहले वे दालडा के भाव घटवाने मे सफल हो चुके थे। जिला अधिकारियो का उन्हें सहयोग मिल रहा था। लेकिन बाद मे कुछ गलत फहमियां पैदा हुई और वे पकड लिए गये। मै इस मामले की छानबीन करता रहा हू। मुजफ्फरपुर के जिला मजिस्ट्रेट को मै जानता हू और वे एक अच्छे और योग्य अधिकारी है और मुजफ्फरपुर मे हमारे काम मे उन्होने बडा सहयोग दिया है। इस कारण युवको की गिरफ्तारियो को समझ पाना और भी मुश्किल हो गया है।

(मूल अंग्रेजी वक्तव्य का हिन्दी अनुवाद)

(पृष्ठ २ का शेष)

किशोर भाई की तो और भी पक्की स्थिति है। मुख्यमंत्री अब्दुल गफूर ने बीस मार्च को विधानसभा मे कहा कि ऐसे कुछ प्रमाण मिले हैं जिनसे इस शका को बल मिलता है कि बिहार मे हाल ही हुए उपद्रवो के पीछे विदेशी षडयन्त्र हो सकता है। 'विदेशी षडयन्त्र' का प्रमाण देते हुए गफूर साहब ने कहा कि मुजफ्फरपुर मे सन्देहास्पद परिस्थितियो मे तीस वर्ष के एक व्यक्ति को पकडा गया है। उससे पूछताछ करने के लिए 'विशेषज्ञ' भेजे गए है। गफूर साहब ने न इस व्यक्ति का नाम लिया न यह बताया कि उस पर क्या आरोप है। गिरफ्तार व्यक्ति आन्तरिक सुरक्षा कानून के अन्तर्गत लिया गया है इसलिए तो महीनो तक कोई कारण बताने की जरूरत भी नही होगी।

किशोर भाई को सिलेक्ट और उसके बाद नागालैण्ड मे बेकर महत्वा के साथ काने तक जानते हैं। अहिंसा और सामाजिक एकता मे विश्वास रखने वाले इस युवक के इरादे और सूझ समझ कडी से कडी अग्नि परीक्षा मे भी खरे उतर सकते हैं। अहिंसक लोकशक्ति जाग्रत करने मे किशोर भाई, कुमार प्रशान्त, मनोज भारतीय, अमरनाथ भाई और इरफान जैसे अनेकों नवयुवकों की कुर्बानी स्मरणीय है और सभी इनके नेक इरादो मे कोई सन्देह नहीं है। प्रशासन ने इन पर जो आरोप लगाये है वे निश्चय झूठे सिद्ध होंगे।

सवाल इन युवको का नही है। सवाल बिहार के मुख्यमंत्री, बिहार प्रशासन और उनके इरादो का है। किशोर भाई पर विदेशी षडयन्त्र मे शामिल होने और दूसरे युवको पर तोडफोड करने का आरोप लगा कर बिहार सरकार क्या हासिल करना चाहती है? अपनी प्रशासनिक असफलता और अपने ही दिल के लोगों से अपने राज्य मे जो सकट खडा किया है उसे विदेशी षडयन्त्र बताकर वह किसे दूर्ग बनाना चाहती है?

नये विश्व की आशा है—स्त्री शक्ति

(स्त्री शक्ति सम्मेलन के दूसरे दिन ६ मार्च को पवनार में विनोबा द्वारा दिया गया प्रवचन । तब प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी भी उपस्थित थीं।)

इन दिनों अक्सर बोलने के पहले मैं कुछ भी चिन्तन नहीं करता। सभा में आने के बाद, सभा में भगवान का दर्शन होने पर जो सूझता है वही बोलता हूं। परन्तु आज कम बदला है। आज चिन्तन बिन्दु मैं लिख लाया हूं। नम्बर दो, अक्सर इन दिनों बोलने की वृत्ति मेरी कम है। परन्तु इस वक्त शायद थोड़ा अधिक समय लूंगा। तो मानो जो हो आदतें हैं, उनको उलट करके मेरा आज काम हो रहा है।

यह स्त्री-शक्ति सम्मेलन है। 'स्त्री' को भारत में महिला' कहते हैं। इतना उन्नत शब्द, मुझे दुनिया की जिन बीस-बाईस भाषाओं का ज्ञान है उनमें नहीं है। जहां तक मैं जानता हूं न योरोप की भाषाओं में है, न एशिया के किसी भाषा में है। महिला यानी 'महान' शक्तिशाली। बहुत बड़ा शब्द है। यह शब्द ही सुझाता है कि 'स्त्री' के बारे में भारत की क्या राय है और क्या अपेक्षा है। नम्बर दो, यह जो 'स्त्री' शब्द है वह 'स्तृ' धातु से बना है। 'स्तृ' का अर्थ होता है विस्तार करना, फैलाना। प्रेम को कुल दुनिया में फैलाना—यह स्त्री का कार्य है। तो प्रेम की व्यापकता स्त्रियों द्वारा होगी। फिर आपने पढ़ा होगा गीता में, स्त्रियों की सात शक्तियों का वर्णन है। 'स्मृतिर्मेधा धृति क्षमा'—स्मृति, मेधा, धृति, क्षमा इत्यादि सात गिने हैं। ये सात स्त्री शक्तियां हैं। 'स्त्रियों' से भगवत गीता की अपेक्षा इस से जाहिर है। इससे भी बड़ी बात है, गीता स्वयं माता है अत। 'अंबा' त्वां अनुसन्दधामि। प्राचीन काल से गीता का जो ध्यान होता है उसमें गीता को माता कहा है और उसी नाते से हम उसकी तरफ देखते हैं। 'मातृधाम्' मातृ दृष्टि से। और गीता नाम भी स्त्रियों में होता है। यहां भी दो चार गीता हैं। किसी पुरुष को गीता नाम मिलता नहीं, स्त्री को ही मिलता है। और गीता हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा श्रेष्ठ ग्रन्थ है। वेद से बढ़कर उपनिषद और उपनिषद से बढ़कर गीता, यह हमारी परम्परा है और इस गीता का असर कुल दुनिया पर पड़ा है। दुनिया की कोई भाषा नहीं, कोई धर्म विचार नहीं जिस पर 'गीता' का असर नहीं पड़ा है।

इतनी महान शक्ति स्त्रियों में मानी गई और उनका सम्मेलन हो रहा है। और हिन्दुस्तान के कुल प्रदेशों से बहनें यहां इस सम्मेलन में आयी हैं असम से लेकर केरल तक की। हिन्दू भी हैं, जैन भी हैं, मुस्लिम भी हैं, क्रिश्चियन भी हैं, सब धर्मों की बहनें यहां आई हुई हैं। यह सम्मेलन हमारे लिए बहुत ही शक्तिशाली होगा, ऐसी मैं उम्मीद करता हूं। आप लोगों ने सुना होगा कि १९७४ का साल पूरे विश्व में स्त्री वर्ष माना गया है। उसके साथ इस सम्मेलन का सहज मेल मिल गया।

ब्रह्मचर्य-सामाजिक मूल्य

इतनी शक्ति होने पर भी स्त्री की तरफ लोग देखते हैं 'कामिनी' के तौर पर। यह काम साधना का एक विषय है। यह मातृ-शक्ति का सबसे ज्यादा अपमान है। हिन्दुस्तान में माता के लिए मनुस्मृति एक श्लोक पेश किया है—'उपाध्यायान् दशाचार्य': जो मनुष्य गुरुमन्त्र छोटा सा देता है, उपनयन करते समय, उसे उपाध्याय कहते हैं, उस उपाध्याय से दस गुना श्रेष्ठ है, दस उपाध्याय बराबर एक आचार्य है। आचार्य यानी ज्ञान देने वाला। उपाध्यायान् दश आचार्याणां शत पिता। और सौ आचार्य बराबर एक पिता। फिर आगे वाक्य आया, सहस्रतु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते। और हजार पिताओं से माता बढ़कर है। यह भी नहीं कहा कि हजार पिता बराबर एक माता। बल्कि एक माता हजार पिताओं से श्रेष्ठ है ऐसा कह दिया। इतना मातृगौरव हिन्दुस्तान में है। लेकिन आज यह विषय बन गयी है—काम-वासना का। इसलिए स्त्री शक्ति बढ़ाने के लिए एक, कामवासना प्रेरक जो-जो चीजें हैं उन पर प्रथम प्रहार करना होगा। उन चीजों में पहली चीज है गन्दा सिनेमा और पोस्टर, वे इतने खराब हैं और वे बच्चों को दिखाए जाते हैं, बहनें भी देखती हैं, पुरुष भी देखते हैं और सर्वत्र विषयवासना का व्यापक प्रचार हो रहा है। इसके खिलाफ बाबा ने इन्दौर में आन्दोलन शुरू किया था, पोस्टरों पर डामर लगाने का। वहां एक महीना बाबा का निवास था। इस आन्दोलन का परिणाम भी कुछ हुआ था। परन्तु सरकार को निर्णय करना चाहिए कि अगर स्त्री-शक्ति आप खड़ी करना चाहते हैं तो इस प्रकार के खराब सिनेमा भारत में नहीं चलेंगे।

आप लोगों को शायद मालूम होगा कि रूस में खराब सिनेमा होते नहीं। खराब होते हैं इंग्लैंड, अमेरिका वगैरह देशों में। कारण क्या है? रूस के पास बहुत ज्यादा जमीन पड़ी है, साइबेरिया पूरा का पूरा और मनुष्य कम पड़ रहे हैं। इस वास्ते वे लोग संतति को उत्तेजन देते हैं और मातृशक्ति का गौरव करते हैं। आज रूस में जिस माता को १०-१२ बच्चे होते उसको उत्तम माता है, इस प्रकार गौरव करते हैं, मानपत्र देते हैं। यह कारण है कि वहां क्यों खराब सिनेमा नहीं होते। मातृशक्ति का गौरव करना चाहते हैं और संतान की आवश्यकता महसूस करते हैं और यही हालत भारत की थी, प्राचीन काल में। प्राचीन काल में भारत के पास

→

जमीन बहुत थी और लोग बहुत कम थे। इस वास्ते उस वक्त भी मातृशक्ति की वंदना करते थे अभी अगर हम संयम चाहते हैं तो देखिये प्राचीन काल में गृहस्थाश्रम की प्रतिष्ठा थी। उसका कारण मैंने बता दिया। परन्तु उस वक्त भी ब्रह्मचर्य की महिमा वहां थी। इसे आध्यात्मिक मूल्य था। ब्रह्मचर्य का आध्यात्मिक मूल्य आज कायम है और अब इसे सामाजिक मूल्य मिला है। कौन सा? आज ज्यादा संतान की जरूरत नहीं। इसका अर्थ हुआ—ब्रह्मचर्य को आज आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्य मिल गया। इस तरह जिस ट्रेन को डबल इंजन लग गया वह ट्रेन कितनी वेग से जानी चाहिए? आज अगर कुछ करना होगा तो संयम बढाना होगा, ब्रह्मचर्य को उत्तेजन देना पडेगा और फिर भी गृहस्थ आश्रम जारी रहेगा। उसमें भी संयम सीखना होगा। क्या करना होगा?

राम के दो लड़के थे

पद यात्रा में बिहार में तुलसी रामायण सुना रहा था। बिहार में दो-तीन साल घूमा ग्रामदान के सिलसिले में। मैंने देखा वहा के लोग रामायण के अलावा कुछ भी पढ़ते नहीं। बिहार में जितनी बहनें हैं कुल की कुल तुलसी रामायण जानती हैं। तो उस रोज वहा मैं रामायण सुना रहा था, ज्यादा संतान पैदा करना अच्छा नहीं, इस जमाने में यह मुझे उनको समझाना था। मैंने उनको कहा, आपने रामायण पढ़ी है कि नहीं? सामने स्त्रिया और पुरुष बैठे थे। बोले "यही तो एक मात्र किताब है जो हम पढ़ते हैं"। तो मैंने कहा, मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र थे, उनके दो ही लडके थे, यह मालूम है कि नहीं? बोले, हा मैंने कहा मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र ने अगर दो ही लडके उत्पन्न किये तो आपको हमको क्या अधिकार है कि हम दो से ज्यादा लडके पैदा करें? (सभा में बहनें हंस पडी) ये सारी बहनें तो विद्वान बहनें हैं इसलिए हंस रही हैं। लेकिन वे बहनें रोने लगीं। सभा में उनकी आखो में आसू बहने लगे। क्योंकि उन की निष्ठा थी तुलसी रामायण पर। वे बोली, 'हमको आज तक किसी ने ऐसा समझाया नहीं। तो बाबा का बड़ा उपकार उन्होंने ... कि तुलसीदास की रामायण के रामचन्द्र का चरित्र हमको समझाया। मुझे इसमें कोई शंका नहीं कि जिनकी आखों में आसू निकले उन्होंने दो से ज्यादा बच्चों की कल्पना नहीं की होगी। हमें संयम का वातावरण पैदा करना होगा तभी स्त्री-शक्ति बढेगी। मैंने एक तो नाम लिया—महावीर का, दूसरा तुलसी रामायण का, दोनों की जयंती इस साल है। लेकिन जीसस क्राइस्ट के प्रथम शिष्य संत थामस भारत में आये थे। इसे बहुत लोग जानते नहीं कि योरप में क्रिश्चियानिटी बाद में गयी है और हिन्दुस्तान में प्रथम आई है। सबसे प्रथम क्रिश्चियानिटी जो वहा से निकली तो पहले हिन्दुस्तान में मलबार के किनारे आई। संत थामस मलबार के किनारे आया और उसने शुरू किया काम, जीसस की कहानी वहा समझाई। जो कैथोलिक लोग थे उन्होंने ब्रह्मचारिणी बहनें पैदा की और आज भी आप देखेंगे (इन्दिरा जी तो सब जानती हैं, उनको क्या कहना।) जगह-जगह अस्पतालों में केरल की रोमन कैथोलिक स्त्रिया सेवा करते तैयार दीख पडेंगी। ब्रह्मचारिणी, जीसस का क्रास लगाया हुआ, ब्रह्मचर्य का व्रत लिया है सन्यास का व्रत लिया है। जगह-जगह आ करके संदेशा सुनाती हैं, जीसस का, और अस्पतालों में जाकर सेवा करना। निरन्तर सेवा करना उनका व्रत है। वे सारे भारत भर में ज्ञान का प्रचार करती है। कहा जाता है १०० क्रिश्चियनो में रोमन कैथोलिक में ५ स्त्रिया 'नन' यानी सन्यासिनी होती हैं। हिन्दुस्तान में गीता कितनी छपती होगी? बोले, छपती होगी कोई लाख-दो लाख, बहुत हुआ तो चार लाख। बाईबिल की साठ लाख प्रतियां इस साल भारत में बिकी। इतना व्यापक प्रचार किसी धर्म का जगह-जगह जाकर वे लोग करते हैं। मुझे बडा आनन्द होता है। धर्म प्रचार के साथ-साथ अस्पतालों में जाकर सेवा भी करती हैं। तो हमें महावीर और जीसस क्राइस्ट के मुताबिक स्त्रियों को स्वतंत्र शक्तिशाली बनाना होगा।

तात्पर्य यह है कि स्त्री-शक्ति बढ़ाने के लिए हमें जो करना है उसमें पहली चीज मैंने बताई संयम का वातावरण तैयार करना चाहिए। उसके लिए ये रद्दी सिनेमा बिल्कुल बंद होने चाहिए। उसके लिए आप घेराव वगैरह कर सकती हैं, पालियामेंट के सामने भी कर सकती हैं और इंदिरा जी के घर के सामने भी कर सकती है। (हंसी)

शराब : स्त्री और घर की दुश्मन

स्त्री-शक्ति के लिए और क्या करना होगा? दूसरी बात, अब मैं बता रहा हू। यह दूसरी बात मैंने दो महीने पहले हमारी बहिन (इन्दिरा जी) से कही थी। शराब पीने वाले पतिदेव घर आकर पत्नियों को ठोकते-पीटते हैं। इससे गरीबी तो हटती नहीं, उल्टा जो पैसा मिलता है वह शराब में जाता है। आप लोगों को महसूस होगा, इन्दिरा जी भी जानती होगी कि भारत में बहनों की एक पदयात्रा चल रही है। वह पदयात्रा जगह-जगह जाती है। छः सौ मील वह घूम चुकी है। छ प्रान्त हो चुके हैं। अब तमिलनाडु पहुंची है। उसमें एक बहन है सिंध प्रान्त की, एक पाकिस्तान की और एक है असम की। ऐसी तीन लडकिया हैं। वे जगह-जगह बहनों की स्वतंत्र सभा करती है तो बहनें उनके सामने यही शिकायत करती हैं कि हमारे पति हमें मारते पीटते हैं क्या करें? तो बहनें त्रस्त है, शराब पीकर घर आते हैं और भान रहता बेचारों को? और वह शराब हमने सब दूर खोल दी है, भारत भर में। परिणाम क्या पैसा। पैसा यानी क्या? उसके लिए क्या-क्या किया जाता है। एक जो शराब का पैसा दूसरी बात, एक है छापाखाना नासिक में। उसमें पैसा छपता है। ठप् एक रुपया। ठप सौ रुपये। इसको मैं इंद्रजाल कहता हू। एक रुपये का नोट खरीदने में हमें एक किलो अनाज बेचना पडेगा। सौ रुपये का नोट खरीदने में सौ किलो अनाज बेचना पडेगा। परन्तु उनको एक ही ठप में सौ रुपया। एक पर दो शून्य दिये कम हो गया। एक ही ठप से एक रुपया और एक ही ठप से सौ रुपया इसका नाम है इंद्रजाल। उस पैसे को क्या चाटते हो? क्या काम देगा वह पैसा? वह नासिक प्रेसवाला पैसा क्या आपको बचायेगा? गुजरात में अभी बहुत ज्यादा आदोलन चला। आप लोगों ने सुना होगा, पढ़ा होगा। पर

(शेष पृष्ठ १३ पर)

अधिक प्रिय क्या है, योजना या स्वतन्त्रता ?

एक बात बहुत स्पष्ट होकर सामने आ गई है कि इन पच्चीस वर्षों में योजनाओं के बाद हम एक चौराहे पर आ पहुंचे हैं। एक पुरानी कथा याद आ रही है। एक राजा ने जो बिल्कुल निर्वस्त्र था अपने मंत्रियों से अपनी पोशाक के बारे में राय मांगी थी। भय के कारण किसी भी मंत्री को सत्य बात कहना कठिन हो रहा था। आज भी कुछ ऐसी ही परिस्थिति बन पड़ी है। योजना प्रक्रिया की उपलब्धियों पर कटु सत्य सुनने को कोई भी तैयार नहीं है।

वास्तविकता यह है कि योजना और स्वतन्त्रता में विरोधाभास है। हमारे सारे प्रयास इन दोनों विरोधी गतिविधियों में सामंजस्य लाने के हैं। मैं तो कहूंगा कि यह समय है जबकि हमें गहराई से विचार कर के निर्णय लेना चाहिए कि हमें अधिक प्रिय क्या है—योजना अथवा स्वतन्त्रता ? हम लगातार इस देश की प्राचीन संचित निधि को खर्च करते आ रहे हैं। यह निधि सरकार के ऊपर जनता के विश्वास की है। यह निधि इस देश के लोगों की सहन शक्ति है। यह निधि देशवासियों की कठिनाईयों में गुजर कर लेने की शक्ति की है। पिछले पच्चीस वर्षों में हमने यह अमूल्य निधि करीब-करीब सारी खर्च कर डाली है। यदि इस विशाल निधि के बचे हुए अंश की रक्षा करना हमें उचित लगता हो तो आज जो स्वतन्त्रता एक मृगमरीचिका मात्र बनकर रह गई है और जिसमें एक साधारण व्यक्ति को केवल मृत्यु की ही स्वतन्त्रता रह गई है उसमें मौलिक ढंग से परिवर्तन करना होगा। या फिर हम ऐसे ढंग में अब कह दें कि स्वतन्त्रता का आवरण फाड़ कर फेंको और एकतन्त्रात्मक शासन अब होगा।

परन्तु यदि हमें स्वतन्त्रता लेशमात्र भी प्रिय है तो हमें जनसाधारण पर विश्वास करना पड़ेगा।

योजना को दिल्ली से जिलों के केन्द्र तक पहुंचने मात्र में बीस वर्ष लगे हैं। क्योंकि पंचम पंचवर्षीय योजना में पहली बार हम जिला स्तर पर योजना समितियों के गठन की बात सोचने लगे हैं। जिलो से गांवों तक पहुंचने में इस गति से और भी दस वर्ष लग सकते हैं। क्या हमारे पास इतना समय है ? यदि हमें स्वतन्त्रता प्रिय है और हम एकतन्त्रात्मक शासन नहीं लाना चाहते तो हमें दिल्ली में बैठे हुए सबसे बौद्धिक योजना शास्त्री के समकक्ष ग्रामीणों को भी लाकर बैठाना पड़ेगा। इस देश की आत्मा गांवों में ही बसती है। पिछले पच्चीस वर्षों में एक बड़े ही चिंताजनक ढंग से ग्रामीण संस्थाओं का विघटन हो रहा है। और इस स्थिति के लिए मुख्य रूप से ग्राम पंचायत कानून उत्तरदायी है। इस कानून ने एक ऐसी परिस्थिति

रणबहादुर सिंह

पैदा कर दी है जैसे चार वर्ष के बच्चे को जान बूझकर एक पैनी धार वाला चाकू पकड़ाया गया है। परिणामतः हमारे गांव इस कानून से टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं। हर गांव के शरीर में अनगिनत घाव हो गये हैं। विडम्बना तो यह है कि हमारे शासक और योजना शास्त्री इन्हीं घावों को इंगित करके कहते हैं कि ग्रामीण अभी उत्तरदायित्व उठाने के लायक नहीं बन पाये हैं। यह बात कौन पूछता है कि घाव करने वाला चाकू (ग्राम पंचायत कानून) किसके दिमाग की देन है ?

पर यदि आज भी हम ग्रामीणों पर विश्वास कर सकें, ग्रामीणों को योजना शास्त्रियों के समकक्ष आदर देने की कटुता को स्वीकार कर सकें तो परिस्थिति बदल सकती है। हमें ग्रामीण वर्ग का पूरा सहयोग पांचवी योजना हेतु मिल सकता है। इतना ही नहीं पंचम योजना की सबसे बड़ी कठिनाई यानी कि धन की कमी में भी एक बहुत बड़ा सहयोग पांच लाख गांवों से सुगमता और सहजता से मिलेगा। एक गांव यदि केवल पन्द्रह सौ रुपये मात्र ही अपनी योजना के लिए व्यय करेगा तो कुल धनराशि जो राष्ट्र को उपलब्ध होगी, ७५ करोड़ होगी।

पर वास्तविकता तो यह है कि इस देश में अंग्रेजों द्वारा स्थापित शासकीय तंत्र केवल यहां से लगान वसूल करके विलायत भेजने हेतु बना था। हमने स्वतन्त्रता के बाद जनतांत्रिक पद्धति से योजना बनाने के प्रयास किये और इस भूल के साथ ही लगान वसूल करने वाले तंत्र से योजनाओं की क्रियान्वयन की भी अपेक्षा करली। यह तंत्र अब भी लगान वसूली कानून और व्यवस्था बनाये रखने को विकास से अधिक महत्व देता आ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में शासक बनकर रह रहे हैं सेवक नहीं। आज भी ग्रामीण लोग पटवारियों और विकास अधिकारियों से बराबर भयभीत रहते हैं। ग्रामीणों को इस भय से मुक्त करने पर ही उनका सहज सहयोग योजनाओं के क्रियान्वयन में मिल सकता है।

सामुदायिक विकास कार्यक्रम की विचार धारा के पौधे की रोपनी इस देश में अमेरिका से लाकर की गई थी। अगर केवल इतना ही था कि अमेरिका में ग्रामीण समुदाय इस प्रकार के कार्यक्रमों को स्वयं संचालित करते थे, नीति निर्धारण क्रियान्वयन करते थे, पर यहां ग्रामीण समुदाय के हाथों में कोई उत्तरदायित्व नहीं है। हमें निर्णय कर लेना चाहिए कि हम योजना एक स्वतन्त्र देश के लिए बना रहे हैं या कि एकतन्त्रात्मक देश के लिए। ●

ऊंट की सवारी में दचके लगेंगे ही

स्वामी ब्रह्मानन्द

(१२ मार्च को लोकसभा में दिये गये भाषण से)

मैं देख रहा हूं कि विधान ही हमारा ऐसा है। क्योंकि आदमी अगर ऊंट पर बैठेगा तो हिलेगा। मगर अच्छी सवारी होगी तो नहीं हिलेगा। हमारा विधान बिल्कुल खत्म करने लायक है। आज क्या किसी गरीब को न्याय मिलता है? यह सुप्रीम कोर्ट खत्म कर देनी चाहिए, हाई कोर्ट खत्म कर देनी चाहिए। होना क्या चाहिए? गांधी जी के स्वप्न का पंचायत राज्य। गांव पंचायत होनी चाहिए। जिला परिषदें, जिला की अदालतों का काम करें। विधान सभा के लोग हाई कोर्ट का काम करें और ये चार सौ वाले पार्लियामेंट के मेम्बर सुप्रीम कोर्ट का काम करें यह सर्चा सारा खत्म हो जायेगा। यह व्यर्थ की फिजूलखर्ची हमारे ऊपर लदी हुई है। और ये वकील जो इतने ज्यादा हैं देश में वह क्या करते हैं? उत्तर प्रदेश के एक जिले में चार लाख की आबादी है और साढ़े छ. सौ वकील हैं। अब कहिए क्या होगा? साढ़े चार सौ गांव नहीं हैं। ये वकील जब तक खत्म नहीं होंगे तब तक काम नहीं होगा। ६० प्रतिशत मामले गांव पंचायत को दीजिए। कुछ जिला परिषद को दीजिए और थाने की सारी पुलिस जो है न्याय प्रमुख के अधीन हो, जिला परिषद के अधीन जिला पुलिस हो और मुख्य मंत्रियों के अधीन तो अब भी पुलिस रहती है। लेकिन मुख्यमन्त्री क्या है? आजकल हमारे मन्त्री क्या करते हैं। बिल्कुल मोहर लगाते हैं और पूरा का पूरा अधिकारियों का राज्य है। एक दरोगा एक एम. पी. से ज्यादा हैसियत रखता है। किसी जमाने में रिपोर्ट होती थी तो मुखिया के दस्तखत होते थे। आज जो चाहे चला जाये, किसी का भी नाम लिखा दे, दरोगा पहुंच जायेगा कि आप के खिलाफ यह बात है। विधान नहीं बदला जाता है तो क्या होगा?

शिक्षा के लिए हर एक नेता जोर देता है कि शिक्षा का परिवर्तन करना है। किसे करना है? कौन करने आयेगा? क्या खुदा करने आयेगा? क्यों नहीं करते हो? शिक्षा के अन्दर केवल पढ़ाई नहीं होनी चाहिए। वहां उद्योग भी सिखाया जाना चाहिए। पुलिस के अन्दर भी एक घन्टा काम होना चाहिए। पार्लियामेंट के मेम्बर और विधान सभा के मेम्बरों को एक घन्टा कृषि का काम करना चाहिए। तब उद्योग बढ़ेगा और काम चलेगा। आज विधान तो हमारा सड़ियल है। हम भ्रष्टाचार की बात कहते हैं। बड़े-बड़े लेक्चर हमारे ऊपर दिए जाते हैं। पं. जवाहर लाल ने कहा था कि भ्रष्टाचार करने वाले को फांसी पर चढ़ा दो। पं० जवाहर लाल ने कुछ आदमियों के ऊपर मुकदमे चलायें वे आदमी मर गये। हमारे पंडित जी भी मर गये, मुकदमे लेने वाले वकील मर गये लेकिन वह मुकदमे अभी भी पड़े हुए हैं। यह अदालतें हैं? इनको खत्म करना पड़ेगा। मैंने कहा था कि वर्तमान में एक बेईमान व्यापारी एक बेईमान अधिकारी और एक बेईमान मिनिस्टर को फांसी दे दी जाये पार्लियामेंट के सामने तो भ्रष्टाचार खत्म हो जायेगा। लेकिन कभी हमने किसी भ्रष्ट मिनिस्टर पर मामला नहीं चलाया। हमने उत्तर प्रदेश में कितना कहा कि ये भ्रष्टाचारी मिनिस्टर हैं। पर एक हमारी नहीं चली। उन्होंने भ्रष्टाचार की कमाई के बल पर चुनाव लड़े "कांग्रेस के खिलाफ। बातों से समाजवाद नहीं आयेगा।

मैं अर्थशास्त्र का ज्ञाता नहीं हूं। इतना जानता हूं। आत्मवत सर्व भूतेषु "सारे प्राणी अपने समान हैं, सारे प्राणियों को खाना चाहिए, सारे प्राणियों को कपड़े चाहिए सारे प्राणियों को दवाई चाहिए, सारे प्राणियों को न्याय चाहिए। यह भावना होनी चाहिए कि आत्मवत और मातृवत परदारेषु हमने शराब बन्द करने के लिए धरने दिए हैं और आज हमारे बड़े-बड़े नेता शराब पीते हैं। उनके ऊपर क्या प्रतिबन्ध है? अगर कानूनी प्रतिबन्ध नहीं लगा सकते तो पार्टी से निकाल देना चाहिए। कांग्रेस के अन्दर फॉर्म पर दस्तखत किए जाते हैं कि मैं शराब नहीं पिऊंगा। और यहां कई कांग्रेसियों के मुंह से दुर्गन्ध आती है। वे शराब पीते हैं। तो नतीजा क्या होगा? सिद्धान्त के अनुसार नहीं चलते हैं हम लोग। यह सारा सर्चा अगर हम बन्द कर दें, गांधी जी की नीतियों पर चलें तो सारी समस्या हल हो सकती है। तीन ही नीतियां हैं। एक तो है रशिया की नीति, दूसरी है अमेरिका की नीति और तीसरी है गांधी जी की नीति, गांधी जी का समाजवाद। लेकिन हम कहीं के नहीं हैं। न रशिया के न अमेरिका के और न गांधी जी के। हैं क्या हम? सिर्फ कुर्सियों के चक्कर में हैं।

राज्य सभा यतीमखाना है, आप की विधान परिषदें यतीमखाना हैं। किसी समय में बनाने वालों ने विधान इसलिए बनाया होगा कि कोई बुद्धिमान आदमी या किसी जमाने का आदमी रह गया हो तो उसे राज्य सभा या विधान परिषद में ले लिया जाये। लेकिन आज ये यतीमखाना बने हुए हैं। लोक सभा में हारा तो राज्य सभा में ले लिया। चाहे वह किसी भी पार्टी का आदमी हो आज परेशान है कि कैसे यहां आकर बैठें। रात दिन चक्कर काटता है। कुर्सी का चक्कर है। इंदिरा जी के आस पास मक्खी की तरह दौड़ रहे हैं कि उनको ले लिया जाये और अटल बिहारी जी के भी दो आदमी आते हैं, उनके यहां भी पचास चक्कर लग रहे होंगे कि साहब मुझे भेज दीजिए, मुझे भेज दीजिए। असल में होना यह चाहिए था कि आदमी को मनाया जाता कि आप मिनिस्ट्री में आ कर काम कीजिए और वह कहता कि मैं नहीं कर सकता। उसके बजाय आज कुर्सियों के लिए लोग दौड़ रहे हैं। काम कोई नहीं करता। हिंसा हो रही है, जगह-जगह उपद्रव हो रहे हैं। क्या जिम्मेदारी है गृह मन्त्रालय की? हिन्दू मुसलमान के दंगे होते हैं, गरीबों के मकान फूंके जाते हैं, गृह मन्त्री क्यों इस्तीफा नहीं देते हैं? क्या उन्होंने उस जगह की रजिस्ट्री करा ली है? उस जगह किसी की बपौती नहीं है। देश का काम जो उसे सौंपा गया है, नहीं कर सके तो उसको अलग हो जाना चाहिए। हमारी पार्टी में ३६० सदस्य हैं। उनमें से काबिल से काबिल नौजवान बैठे हुए हैं, उनको मौका दें, लेकिन वह नहीं देते हैं क्योंकि कुर्सी का फेर है।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

सहरसा : क्या मिला ? क्या दिया ?

—कुमार प्रशांत

सहरसा का अन्तिम अभियान अप्रैल तक चलेगा—वह चलेगा चूं कि विनोबा ने वह सीमा निर्धारित की है, अन्यथा साथियो ने इसे 'अन्तिम अभियान' मान लिया है, 'सर्वोत्तम, को परे रख दिया है। एक माह का विशेष अभियान २५ जनवरी से प्रारंभ हुआ तो जयप्रकाश बाबू भी सहरसा में थे। जब २८ फरवरी को उसका समापन हुआ तो एक भी 'वरिष्ठ' साथी वहां नजर नहीं आ रहा था। इसे शोभनीय ही कहना चाहिए। अन्तिम दिन जब क्षेत्रो में हुए काम की अलग-अलग जानकारी दी जा रही थी, इन पंक्तियों के लेखक ने अनायास ही ३-४ साथियों से एक सवाल पूछा। प्रश्न और उनके उत्तर यहां ज्यों-के त्यों प्रस्तुत हैं :

'विनोबा ने इस बार आखिरी अभियान की घोषणा कर दी है। इस घोषणा के संदर्भ में यहां आ कर काम करने के बाद, आपकी क्या प्रतिक्रिया है ?'

उत्तर प्राय इसी प्रश्न पर केन्द्रित रहे। कभी कभी विचार स्पष्ट करवाने की दृष्टि से पूरक प्रश्न भी पूछने पड़े। इन उत्तरो से कोई राय नहीं बनायी जा सकती है। पर प्रत्यक्ष क्षेत्र में काम कर रहे साथियो की चिन्तन-दिशा का संकेत मिलता है, जो आन्दोलन के भविष्य की दृष्टि से बहुत महत्व का है।

प्रकाश भाई (मेरठ)

मैं पहले ग्रामदानी गांव मगरोठ में पूरे ६ वर्ष बैठा रहा हूं। पर इस संदर्भ में अनुभव से कह सकता हूं कि एक जगह बैठ कर काम करना हमारे आंदोलन का आधार नहीं बन सकता है। अब व्यापकतम रूप से—गांवों में, बुद्धिजीवियो में, तरुणों में, महिलाओं में सभी वर्ग में फैलना होगा। स्थानिक सहयोग समस्या का हल कर सकेंगी इस पर से अवका विश्वास हटता प्रतीत होता है। इस अवसर पर जनता अपने सामूहिक प्रयास से अपनी दैनंदिन समस्या हल कर सके, ऐसा ग्रामस्वराज्य का मार्ग उसे दिखाना है।

कुछ लोगों की वृत्ति ही होती है बैठकर काम करने की। वे वैसा करें कोई हर्ज नहीं, पर स्थिर हुए बनने वाला भी नहीं है। हमारे काम का जो स्तर है उसमें बैठकर हम न्याय नहीं कर सकते हैं। अब तक सहरसा के काम की मूल प्रेरणा बैठनेवाली, गढ़नेवाली रही। लम्बे समय तक इस प्रकार काम चला, उसे अब बदलना जरूरी था। विनोबा जी ने बहुत सही घोषणा कर दी और पूरे काम का स्वरूप बदल दिया। अब काम वे करें जो स्थानीय हैं। उनका स्वधर्म है यह बैठकर काम करना। मानस तो बदलना है व्यापक आंदोलन से। हमें वही करना है।

रामजी भाई (उत्तर प्रदेश)

सहरसा के लिए यह अभियान अन्तिम है और देश के लिए प्रारंभ है, नई शुरुआत है। प्रारंभ इस अर्थ में है कि अब तक जिस ढंग से संपूर्ण आंदोलन चला है उस अनुभव पर से सारी व्यूह रचना में आमूल परिवर्तन हो। उसकी आवश्यकता है। आमूल परिवर्तन हो सारे देश के लिए और इसी संदर्भ में यहां के लिए भी।

गड़कर काम करने और घूमकर काम करने में संतुलन बनाना होगा। चिन्तन इन दोनो का होना चाहिए। इन दोनों को ध्यान में रखकर व्यूह रचना बननी चाहिए। गड़कर काम करने का अर्थ मैं मानता हूं कि एक क्षेत्र या अनुकूल कई क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य की तीव्र आकांक्षा का निर्माण करना और बाकी स्थानो पर व्यापक की भूमिका रखना। यह भी आवश्यक है कि एक ही आदमी इन दोनों भूमिकाओं में रहे अन्यथा आंदोलन और क्रान्ति का संतुलन नहीं रहेगा।

विनोबा ने सहरसा छोड़ने का निर्देश बहुत सही दिया है। सहरसा से उन लोगो को तो हट जाना चाहिए जो बिहारवासी हैं या बिहार को ही अपना कार्य क्षेत्र मानते हैं। यह इसलिए भी आवश्यक है कि उनकी कल्पना शक्ति उर्वर हो सके, 'विजन ग्रांड' हो सके। बाहर के प्रान्त के वे लोग जो अब तक सहरसा नहीं आये हैं, अब भी आ सकते हैं। जो पहले आ चुके हैं, उन्हें फिर आने की आवश्यकता नहीं है। नये आने साथी भी आयें तो सिर्फ सहरसा के लिए नहीं आयें बल्कि संपूर्ण देश के कार्यक्रम के सिलसिले में ही यहां भी आयें। यदि ऐसे साथी नहीं आते हैं तो यहां खाली—वैक्यूम—छोड़ देना चाहिए। किन्तु यहां के नेतृवर्ग को तो सहरसा ही नहीं, सम्पूर्ण बिहार छोड़ कर देश भर में घूमकर काम करना चाहिए।

बाबूराव चन्दावार (थाना, महाराष्ट्र)

सहरसा में मुझे तो लगता है कि विचार खूब फैल गया है। श्रद्धा भी खूब दीखती है, विचार और विनोबा दोनो के प्रति। इस श्रद्धा और विचार का यदि सही उपयोग करना हो तो हम अपने आज तक के काम का एक विश्लेषण करना चाहिए, ऐसी कल्पना विनोबा की होगी अन्तिम अभियान की घोषणा के पीछे, ऐसा मैं मानता हूं।

अन्तिम अभियान की बात कह कर विनोबा ने इतना टाइम नहीं दिया था। कम समय में पूरा करने को कहा था। साथियो ने विनोबा से ज्यादा समय मांगा। मुझे लगता है साथियो के मन में विनोबा की बात साफ नहीं हुई थी। अन्तिम अभियान करने के संदर्भ में उन्होने विनोबा को ठीक समझा नहीं। अब विनोबा का एक स्वभाव है कि जो जितना समझे उसे उतना ही प्रोग्राम देना। सो दिया विनोबा ने। साथी काम को समझें समय भी साथियो की इच्छानुसार दिया। ठीक सोचा है उसने मुझे ऐसा लगता है। सहरसा का काम कुल मिला कर ठीक दिशा में चला है।

सब साथियो को सहरसा छोड़ना नहीं है। पूरे जिले में संपर्क रखने के लिए कुछ साथी जरूर रहें। एक प्रखंड में 'सघन' काम होना चाहिए। उसमें सब लगें और बाहर से आने वाले साथी भी उसमें जुड़ें। 'सघन' काम आगे व्यापक काम में सहायक होता है। उस एक प्रखंड में जिसे 'डेमान्स्ट्रेशन' कहते हैं वह होते रहना चाहिए। राष्ट्रीय मोर्चे के रूप में सहरसा की जो स्थिति थी वह उस प्रखंड की रहनी चाहिए। राष्ट्रीय स्तर का सघन नहीं होना चाहिए।

(शेष पृष्ठ १० पर)

साधन और साध्य, गुजरात विहार और उत्तरप्रदेश के सन्दर्भ में

—सरला देवी

गांधी जी कहा करते थे कि कायरता से तो हिंसा ठीक है—लेकिन हिंसा से कोई स्थायी स्थिति बनती नहीं—स्थायित्व सत्य और अहिंसा से ही बन सकता है। उनमें यह नैतिक हिम्मत थी कि एक बहुत सफल आन्दोलन के बीच जब दूर चोरा-चोरी में जनता की तरफ से हिंसा फूट पड़ी तो अपने साथियों के विरोध के बावजूद उन्होंने आन्दोलन वापस लिया। क्योंकि उन्हें पक्का विश्वास था कि साधन के अनुसार ही साध्य मिलेगा—हिंसक साधनों से हिंसा ही पैदा होती है—शान्ति और स्थायित्व की स्थापना अहिंसा से ही हो सकती है।

पच्चीस वर्ष से जनता बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, जमाखोरी और महगाई की खूब जबानी शिकायत करती रही, लेकिन उसने उसके विरुद्ध कोई सक्रिय कदम नहीं उठाया। यह कुछ कायरता की वजह से, कुछ आलस्य और अकर्मण्यता की आदत की वजह से हुआ। आखिर, स्वराज्य तो इने-गिने लोगों के पराक्रम से ही मिला था। सारी जनता उसमें सक्रिय थोड़ी रही।

इसलिए, एक दृष्टि से गुजरात में जो हुआ, आजकल जो विहार में हो रहा है, और जो शायद उत्तर प्रदेश में होने जा रहा है, उसका स्वागत हम कर सकते हैं कि जनता अपनी अकर्मण्यता छोड़ कर सक्रिय हो रही है। लेकिन हम यह उम्मीद नहीं कर सकते हैं कि ऐसे हिंसात्मक आन्दोलन गाधी जी या विनोबा के समर्थन के योग्य हैं। कुछ क्षेत्रों में खुशियां मनाई जा रही हैं कि १९४२ के आन्दोलन का जोश फिर पैदा हो रहा है।

इसलिए उचित होगा कि हम एक बार देख लें कि १९४२ के आन्दोलन की जड़ में क्या था और उसका नतीजा क्या हुआ?

९ अगस्त १९४२ की सुबह जब गाधी जी गिरफ्तार हुए तो उन्होंने 'करो और मरो' कहा, 'करो और मारो' नहीं कहा। याने उनका मतलब था कि अहिंसक प्रतिकार करके लाठी और गोली का सामना प्रेम से करने को तैयार हो। उनके निकट साथियों को आगाखान महल तथा अहमदनगर में बन्द करके, सरकार ने देश को उनके नेतृत्व से वंचित किया। देश यह बात सहन नहीं कर सका और इसलिए प्रतिकार हुआ—लेकिन उस प्रतिकार को सही मार्गदर्शन देने वाला कोई न रहा—इसलिए चारों ओर हिंसा फूट पड़ी। दुख प्रकट करने के अलावा गाधी जी के सामने और कोई मार्ग न रहा। अतः उन्हें २१ दिनों का उपवास करना पड़ा। इससे हम समझ सकते हैं कि १९४२ में गाधी जी ने हिंसक आन्दोलन का समर्थन नहीं किया था।

आगे जाकर, स्वराज्य लेने के लिए एक और बहुत बड़ी गलती हुई जिसको गाधी जी का समर्थन नहीं था और जो हमारे वर्तमान दुखों का एक बहुत बड़ा कारण बना है। अपनी अहिंसक लड़ाई में हमने भारत के सब तत्वों को जोड़ने का प्रयत्न किया लेकिन जल्दी में स्वराज्य पाने के लिए हमने एक खण्डित देश पाकिस्तान और भारत को स्वीकार करके भारत के दो टुकड़े करके स्थायी मनभेद का बीज बोया। इससे फौरन कैसी भयंकर हिंसा फूटी और वह हिंसा अभी तक बीच-बीच में फूटती है। बंगला देश में फूटी, साम्प्रदायिक दंगों में फूटती, भाषा के झगड़ों में, सीमाओं के झगड़ों में कई रूपों में फूटती रही और हम उसके आदी बने हुए हैं। इस लिए किसी भी आन्दोलन के फूटने पर, भले उसके प्रवर्तक अहिंसक आन्दोलन करना चाहें, लेकिन वह जल्दी में अवांछनीय तत्वों के प्रभाव में इसलिए आता है, क्यों कि हमने अहिंसा के सिद्धान्त को गहराई से नहीं समझा और जनता में हिंसा को देखने की आदत बढ़ रही है। यह इस कारण भी हुआ कि गाधी जी के बाद देश को सक्रिय अहिंसक नेतृत्व नहीं मिला।

हिंसा से जो प्रतिहिंसा पैदा होती है वह और ज्यादा भयंकर है। 'देखते ही गोली मारो' उसकी प्रथम प्रक्रिया है। लेकिन जब देश में 'शांति' को कायम रखने के लिए हमें बारम्बार फौज का सहारा लेना पड़ता है—तो इसका आखिरी नतीजा क्या होगा? अराजकता या फौजी तानाशाही। 'देखते ही गोली मारो' का अर्थ यह है कि भले ही हम कहें कि यह हिंसक आन्दोलन प्रजातंत्र के संरक्षण के लिए हो रहा है, लेकिन वह अपने में प्रजातांत्रिक नहीं है। और वह हमारे देश में प्रजातन्त्र को खत्म करने वाला है। प्रजातन्त्र का तरीका मेज पर बैठकर अपनी समस्याओं का हल करना है, न कि एक तरफ आगजनी और दूसरी तरफ गोली से।

इन छब्बीस वर्षों में हम सब लोगों ने मिलकर गाधी जी के काम को दफनाने का भरसक प्रयत्न किया और अब भी हिंसक तरीकों के समर्थन में उनका नाम लेते रहते हैं। अब यह बहुत आवश्यक है कि सब लोग, जो गाधी का नाम लेते हैं, चाहे सरकार में हो, चाहे सार्वजनिक क्षेत्र में हों, चाहे साधारण नागरिक हों, अच्छी तरह समझें कि गाधी जी की श्रद्धा सत्य, अहिंसा, रचनात्मक कामों में थी और सब मिलकर उन बुराइयों को जड़ से निकालने में जुट जायें। इन सब बुराइयों की जड़ व्यक्तिगत स्वार्थ है इससे भारत और उसकी संस्कृति का ह्रास हो रहा है। यदि इस संकेत से हम मिलकर, चेतकर, गाधी जी के मार्ग पर लौटने में असफल रहे तो निश्चित तौर पर भारत से प्रजातन्त्र खत्म हो जायेगा और इससे सारी दुनिया में प्रजातन्त्र को एक बहुत बड़ा धक्का लगेगा। हिंसक कार्यवाहियों से न प्रजातन्त्र का संरक्षण हो सकता है, न गाधी जी का समर्थन ही उन्हें मिल सकता है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

विहार के साथियों को काम का व्यापक दृष्टिकोण मिले, इस दृष्टि से विहार के साथियों को व्यापक रूप से फैलने को कहा है विनोबा ने। यह ठीक है।

सहरसा से मुझे ग्रामस्वराज्य की 'स्ट्रैटजी' सोचने को मिली। यह सहरसा की सारे आन्दोलन को देन है। मैं आया ही इस तलाश में था। इस अनुभव पर से मैं थाना के अपने काम में कुछ परिवर्तन करूंगा। ●

एक हजार पूरे हुए

मार्च १६ तक उपवासदान

प्रदेश	संख्या	रकम	विशेष विवरण
असम	११	२७५-००	
आंध्र	२२	५४६-००	
उत्कल	२१	२५६-००	
उत्तर प्रदेश	२४०	६३४१-००	
केरल	२	७५-००	
कर्नाटक	३६	६६८-५०	
गुजरात	६०	२४७३-००	
तमिलनाडु	१६	५६७ ००	
पंजाब	३१	६५६-००	
प० बंगाल	७१	२५०८-००	
बिहार	५४	१२३१ ००	
मध्यप्रदेश	१०५	२६७८-००	
महाराष्ट्र	३२५	७२५६-५०	
राजस्थान	४२	१०८१-००	
हरियाणा	५८	१४०८-००	
हिमाचल	१	२५-००	
दिल्ली	१६	५११-००	
नागालैंड	४		
महिला लोकयात्री	१	१०-००	
विदेश	२	१७२-००	
योग	११६३	२८,८१८-००	

उपवासदान प्रगति

१	नवम्बर	१२०
२	दिसम्बर	११७
३	जनवरी	३४३
४	फरवरी	२८७
५	मार्च	२६६
	योग	११६३

गुजरात

राजकोट . किशोर बा० गोहिल। अमरेली : सोमभाई डाह्या पटेल, दुर्लभसिंह रावत। पोरबन्दर . ललिता बेन त्यागी, विद्यानन्द ब्राम जी त्यागी, अहमदाबाद : मन्नुभाई छोटा भाई, वेंकटराव नामाजो, कृष्णदास भाई गांधी, जेठालाल बक्शी। खेड़ा : फूलाभाई मूलन भाई।

असम

गोहाटी : सच्चिदान सन्धा, गोपालदास। लखीमपुर : निरल बरुआ, हरि चन्द दत्ता, लिलत दत्ता। शिवसागर . तरुण चन्द्र बरुआ। धरीमारी : एन० सी० वेणुगोपाल।

तमिलनाडु

पालैयामकोट्टई : आर० एम० कुमार स्वामी। तंजाऊर : एम० माणिक्कम। मदुरई : आर० आर० सेतान।

कर्नाटक

बीजापुर सगप्पा बसप्पा सिद्दरेड्डी। बेलगांव . सदाशिवराव भोमने, नीलकंठ गो० शास्त्री, पकीरानन्द उज्जन गौड़ पाटील, गंगाधर मूरियेप्पा, महालिंगप्पा बसेटेप्पा। मैसूर के० पट्टाभिरामन। कर्नाटक जी० बी० नारायण मूर्ति। कनारा : ए० म० बुरडे। धारवाड़ · रायप्पा मारमुड, सम्मुसप्पा हेलीकेरी। कोलार : एच० एन० नागप्पा। बंगलूर : एच० श्रीनिवासगौव। कुर्ग : एन० डी० कृष्णा।

केरल

कोचीन : के० पी० माधवन।

महाराष्ट्र

बम्बई : गोविन्द बा० शिन्दे, कचन मगनदास पटेल, श्रीमती जमनी रानडी। वर्धा. द्वारकानाथ विष्णु लेले, नामदेवराव गुलहाणे बालाजी सानपुने, शंकरराव महाकालकर, मारोती मुरे, बालकृष्ण मुजबेले, भिकल महाकालकर, दामोदर महाकालकर, प्रम्बादास महाकालकर, ज्ञानेश्वर सोनपुने, गजानन्द पेटकर, तुलसीराम बेले, भाऊराव मुजवेले, गणपत पाटील, नरहरि सानपुने, रणजीत भाई, हेमभाई, बाबूलाल जी, मुरलीधरजी, विट्ठल भाई, विवेकानन्द, आनन्द भाई, निरंजित, निम्माण्णाजी, रामभाऊ, मुकाभाऊ नागोजी चौधरी, श्रीमती शेवन्ती बाई चौधरी, श्रीमती मदालसा नारायण, डा० वी० के० मलन्दीकर, श्रीधर रावजी महाजन, माधव नारायण मजूमदार, रामदहिन शर्मा, रामचन्द्र महादेव दण्डे, प्रह्लाद भाऊ रावजी खानखेडे, बबन गलांडे, दिनकर वामनराव पाटील, आलमसिंह रामपूत, नारायण श्रावण कावलकर, उदयभान दभडू एर्ने, रामगोपाल दलाल, गोपराव पाडुरंगजी मानकर, विट्ठल नारायण नेभाडे, भाऊराव राउत, कृष्णराव सोमाजी गिरी, मणिकराव रामजी गोलकर, र० वी० डभारे, श्रावण पैकूजी पिसले, निम्बाजी रोड्या राउत, श्रीमती लीला रामदीन शर्मा, श्रीमती बिन्दु पाटील, ठाकुर प्रसाद, भाना रघुनाथ, गुरुदेव देसाई, मुका सगन घोषने, बाबाराव अम्बादास शिंदे, गोविन्दराव सगन रायपुरे, विठोबा गोखले, वमरबेब यादव, शिवाराम कुकरेजी, तुकाराम गंगाराम पाटील, हरिश्चन्द्र मुरा बरकडे, त्र्यंबक दाजीबा देवतले, माधोराव मंगोलराव, बकाराम बगड मडावी, नरहरि रघुनाथ अम्बकर, स्वामी जगदानन्द ब्रह्मचारी, श्रीमती ताराबाई तुकाराम, श्रीमती शान्तादेवी दरबारी, श्रीमती चन्द्रभागा शुक्देव, श्रीमती सुनना बाई बापूराव, श्रीमती मथुराबाई भामरे, श्रीमती ताराबाई मेश्राम, श्रीमती कौसल्या दौलत ठाकरे, नन्दू धारसी मुकर, बनारसी चौधरी, श्रीमती मालन बाई, श्रीमती राही बाई, श्रीमती लक्ष्मी सापरे, शान्ताबाई रामभाऊ वाघ, श्रीमती भीमाबाई राघो, श्रीमती मनाबाई उत्तमराव पोहार, श्रीमती अनुसुया गंगाराम, श्रीमती गोदावरी दामोदर, श्रीमती चन्द्रभागा नागोराव, श्रीमती जनाबाई सीताराम, श्रीमती तानी मुरारी, श्रीमती दुरपी दमरू, श्रीमती नुमा-

सर्व सेवा संघ का व्यापक स्वरूप

बद्रीप्रसाद स्वामी

गांधी जी के बाद विभिन्न रचनात्मक कार्य में लगी संस्थाओं व सेवकों ने सर्व सेवा संघ के रूप में अपने आप को संगठित कर विनोबा जी के मार्ग दर्शन में काम करना शुरू किया तथा पिछले २५ वर्षों से लगातार गांव-गांव में ग्रामस्वराज्य एवं देश में सर्वोदय समाज रचना के स्वप्न को साकार करने में लगे रहे। फलस्वरूप आज देश व दुनिया के सामने सर्वोदय समाज रचना व व्यवस्था का समग्र विचार ही प्रकट नहीं हुआ बल्कि देश के अनेक क्षेत्रों, नगरों व गांवों में ग्रामस्वराज्य नगर स्वराज्य, शांति सेना एवं ट्रस्टीशिप के व्यावहारिक प्रयोग जारी हैं। आजादी के बाद कांग्रेस संगठन से जो अपेक्षा गांधी जी ने गांव गांव जाकर लोकशिक्षण व संगठन की रखी थी, उस अपेक्षा की पूर्ति काफी हद तक सर्व सेवा संघ ने की इसलिए कुछ समय पूर्व वर्धा में आयोजित राष्ट्रीय परिषद ने इसे लोक सेवक संघ की संज्ञा दी और विनोबा ने भी जाहिर किया कि अब सर्व सेवा संघ लोक सेवक संघ कहलाने योग्य हो गया। क्योंकि अब तक देश भर में व्यापक लोक-शिक्षण कार्य किया है और अब ग्रामसभा एवं मोहल्ला सभा के रूप में लोक संगठन करना है जिसे परिषद ने भी मान्य किया है। व्यापक लोकसंगठन के लिए यह आवश्यक है कि सर्व-प्रथम सर्व सेवा संघ व्यापक रूप से संगठित हो। इस में कोई शक नहीं कि देश भर में लाखों लोग गांधी विनोबा के विचारों से प्रेरित रचनात्मक कार्य में लगे हैं जिन्हें विनोबा एक से अधिक बार सेवक व सैनिक घोषित कर चुके हैं। अब समय आया है कि हम सब रचनात्मक सेवकगणों को लोकसेवक व शांति सैनिक के रूप में संगठित हो कर सर्व सेवा संघ को सक्षम करना चाहिए ताकि गांधी के पांच लाख सेवक व सैनिक की कल्पना साकार हो सके तथा सर्व सेवा संघ की नींव से बुनियाद मजबूत हो सके। इसके बाद हर लोकसेवक व शांति सैनिक को अपने आसपास के सज्जन, सहयोगियों को सर्वोदय मित्र के रूप में संगठित करना चाहिए। इस प्रकार सर्व सेवा संघ को सर्व प्रथम सेवक व सज्जन शक्ति को संगठित कर अपने व्यापक स्वरूप को विकसित करना चाहिए तभी वह व्यापक लोक संगठन कर लोकशक्ति प्रकट कर सकेगा।

सर्व सेवा संघ के हर लोकसेवक व सैनिक की सदस्यता हर वर्ष जनवरी से आरम्भ होती है। १२ फरवरी तक शांति पर्व चला। इस दौरान जो लोकसेवक व शांति सैनिक बने हैं या बन चुके हैं उन्हें चाहिए कि वे अपनी-अपनी संस्था व क्षेत्र के सभी साथियों को लोकसेवक व सैनिक के रूप में अपने साथ संगठित करें तथा हर लोकसेवक व सैनिक अपने सहयोगी सज्जनों को सर्वोदय मित्र के रूप में अपने साथ ले। इस प्रकार देश भर में सर्व सेवा संघ को चाहिए कि वह अपनी व्यापक शक्ति को संगठित करने का अठारह अप्रैल तक एक देश व्यापी अभियान चलाये ताकि इस बार के सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर सर्व सेवा संघ के व्यापक स्वरूप का दर्शन हो सके और आगामी वर्ष के लिए देश व्यापक लोकसंगठन का व्यापक कार्यक्रम प्रारम्भ किया जा सके।

→

बाई लोखंडे, श्रीमती भिवरा बाई काळडे, श्रीमती मुलाबाई बलीराम ढोमणे, श्रीमती यशोदा ऋषि धवाते, श्रीमती रुखमाबाई कोरेवार, श्रीमती शेवताबाई चौधरी, श्रीमती शेवताबाई सावदेकर, श्रीमती शांताबाई मुवा, श्रीमती सरस्वती चिडमोड़, श्रीमती सारजाबाई सर्वे, सानू सदाशिव परममोडे, श्रीमती सीताबाई आत्माराम पाटील, श्रीमती सुगंधाबाई राय, श्रीमती सोनाबाई पातुरकर, श्रीमती सोनाबाई पूंजाराम, श्रीमती मीना मनोहर दलरी, श्रीमती सुधा महादेव भोम, श्रीमती पार्वती बाई महादेव राव, गोपाल-राव वालुजकर, नारायण रामचन्द्र सोवानी, वसंत वोकटकर। भंडारा : प्रभाकर विनायक वापट, शंकर गोपालराव डभरे, नामदेव भिवल थेरपुठे। ठाणे : बा० गो० गायकवाड़ मि० सी० लोटलीकर, के० जो० पाटील, म० वि० इंगले, म० र० पाटील, क० सु० अन्तरकर, दि० ल० अन्तरकर, श्रीमती मा० श० वाडेकर। अकोला एम० बी० मराठे। परभणी बी० आर० दाके, किशनराव माधवराव करजे, मुकुन्दराव बाबासाहेब चौधरी, काशी-नाथ नागोराव, व० च० अम्बुरे, शंकरराव नागोराव खलीकर, श्रीमती शान्ताबाई, पन्नालालजी काकानी, गुरुलिंग महादेव अप्पानाले। चन्द्रपुर आशोबा बी० पाडकुज हनवते। यवतमाळ . गणपत नारायण राव घोषडे, उत्तमराव पुजारामजी भोजने, शंकर खडतकर, श्रीमती सुमनताई म० खलकर। अमरावती : एकनाथ हिरूडकर।

बिहार

मुंगेर : गणेशप्रसाद सिंह, हनुमान प्रसाद खेतान। पटना : जानकी नायक, देवानन्द मिश्र, मधुसूदन वर्मा, प्रमोद कुमार, कपिलदेव कुमार, रामनगीना सिंह, सूरजलाल सिंह। सहरसा : वीरेन्द्र प्रकाश कुलश्रेष्ठ, केदार प्रसाद मण्डल। पूर्णिया : रामलगन इशर। दरभंगा : मुद्रिकादास, महेन्द्र नारायणदास। मधुबनी : शितिकंठ झा। भागलपुर : डा० रामजी सिंह। नवादा : महावीर प्रसाद।

मध्य प्रदेश

दमोह : रणछोड़ शंकर धगट। सागर : दुलीचन्द नाहर। सतना : सीताप्रसाद श्रीवास्तव। रायपुर : कन्हैयालाल लूणिया, श्रीमती डा० इन्दुमति जोशी, श्रीमती केशर-देव लूणिया, श्रीमती विजयन्ता बाई, पारि-जात गिरी, श्रीमती इन्दुमति देशपाण्डे, श्रीमती गंगाबाई आर्य, श्रीमती सीताबाई रेड्डी महेन्द्र पवार, रोमलाल, श्रीमती रुक्मणी चावड़ा। मुरैना : उदयभान चौहान, लक्ष्मी चन्द वैश्य। इन्दौर : वैद्यनाथ महोदय, दादाभाई नाइक, जम्बूप्रसाद जैन। उज्जैन : रामविलास पोरवाल, मोहनभाई नथवानी। टीकमगढ़ : चतुर्भुज पाठक। रतलाम : रतनलाल गांधी। दुर्ग : रामकुमार सिगरोल, चन्द्रिकाप्रसाद पाण्डेय। जबलपुर : गणेशप्रसाद नायक।

पंजाब

फिरोजपुर : बनारसीदास गोयल। जालंधर : रामरणधीर, सम्पूर्णानन्द, उदय-चन्द, देशराज। संगरूर : यशभारती, मणि-कान्त सेनान। पठानकोट : पूर्णसिंह, कु० प्रेमलता गुप्ता, सत्यमभाई। अम्बाला : सुभाष अग्रवाल। अमृतसर : गोपालसिंह। कपूरथला : सतनाम सिंह, वेद प्रकाश।

लगान अन्न में लिया जाये वेतन अन्न में दिया जाये

(पृष्ठ २ का शेष)

वहा पर नोट कम पड़े ऐसी बात नहीं। कमी अनाज की थी। अनाज की जो कीमत है वह स्पष्ट है और नोटों की कीमत है नहीं। आज आपसे सौ किलो अनाज लिया, सो मैंने वापस दे दिया। जैसा स्वच्छ आपसे लिया वैसा ही स्वच्छ वापस दिया। लेकिन मान लीजिये आपसे मैंने सौ रुपये का नोट लिया और पांच साल बाद वापस किया तो क्या वापस नहीं किया। क्योंकि पांच साल में सौ रुपये की कीमत गिर जायेगी। आधी भी कीमत नहीं रहेगी। इस वास्ते ये जो नोट हैं उनका अपना मूल्य है नहीं। अनाज का अपना मूल्य है।

इस वास्ते उपनिषद ने आदेश दिया, अन्न ब्रह्मेति व्यजानात्। अन्न ब्रह्म है। और इसीलिए अन्न बहु कुर्वीत तद्व्रतम्। अन्न खूब पैदा करो यह व्रत ले लो। यह कोई मोक्ष प्रयोग की चीज नहीं है, उपनिषद की है। उपनिषद ब्रह्म विद्या है। परन्तु ब्रह्म विद्या होने के साथ ही साथ उपनिषद के ऋषि भी जानते हैं कि अन्न पहला ब्रह्म है। वह पेट में नहीं जायेगा तो सर्वत्र अग्नि भड़केगी। उस हालत में कोई भी आध्यात्मिक विषय नहीं हो सकता। एक भाई आ गये गौतम बुद्ध के पास बोध लेने के लिए। देखा गौतम बुद्ध ने कि वे भाई कमजोर हैं तो शिष्य को आज्ञा दी कि इसे पहले खिलाओ पीछे करेंगे बोध। बुद्ध भगवान की बुद्धि थी। वे बुद्ध थे, हम बुद्धू हैं। इतना फरक। अन्न वृद्धि सर्वत्र होनी चाहिए।

अब यह आश्चर्य की बात है। राष्ट्रपति हमसे मिलने यहां आए थे। एक ही चीज अनन्त बनते रहे। मेरे सामने यही बात, बहनों के सामने भी यही बात की और गांव में (वर्धा शहर) में भी यही बात की अनाज कैसे बढ़ेगा? मुझसे कहा "आप इसमें आगे बढ़िये और देश को आदेश दीजिये। मैंने कहा, मैं हूं मिया का ही बच्चा। मराठी में कहावत है राजा बोले सेना हाले। मियां बोले दाढ़ी हाले, बाबा की दाढ़ी हिलती रही। सतत बोलता रहा। ऐसी ही बात पंडित नेहरू से हुई थी। हम मेवों को बसाने के काम में लगे थे पंडित नेहरू के साथ। तब एक दफा मैंने उनसे कहा, "एक आदमी को निष्कारण जेल में रखा है। मैंने तलाश की है, उस आदमी का कोई भी दोष है ऐसा मैं देखता नहीं"। पंडित जी बोले "मैं भी जानता हूं और मैं आदेश दे चुका हूं उसकी रिहाई के लिए। तीन महीने हो गये। परन्तु हमारी यह जो नौकरशाही है वह तो इतनी धीमी चलती है कि अभी तक कुछ हो ही नहीं रहा। तो मैंने उनको विनोद में यह कहावत सुनाई थी "राजा बोले सेना हाले।' राजा के इशारे से सेना हिलती है और मियां बोले दाढ़ी हाले और पंडित नेहरू बोले तो कुछ भी। दाढ़ी भी रखते नहीं। (हंसी) बाबा की दाढ़ी है तो उतनी हिलती है। तो मैं कह रहा था कि राष्ट्रपति आये और कहने लगे कि अनाज की कमी है। मैंने सुझाया कि आप जो लगान लेते हैं उसका फिर से मापन किया जाये। जाहिर करो कि फलानी जमीन से आगे दस साल इतना-इतना अनाज लेंगे। तो सरकार के पास भी अनाज आयेगा और वह अपने नौकरों को भी थोड़ा अनाज दे सकेगी। एक अच्छी चीज होगी। लेकिन किसान को कहते हैं कि तुम अपना अनाज बेचो और नोट बनाओ, यह कागजवाला नोट हमें दे दो। यह लेकर हम क्या करने वाले हैं? उत्तरोत्तर बढ़ते जा रहे हैं नोट। अनाज को कमजोर समझ कर उसे व्यापारी को बेचता। वह (व्यापारी) कम पैसे में खरीदता है और ज्यादा पैसे में बेचता है और जनता त्रस्त है। इस वास्ते अनाज में ही लेना चाहिए लगान, कागज में न लेते हुए यह बिल्कुल सादी अक्ल की बात है। ■ नहीं समझता इसमें बहुत ज्यादा अक्ल की जरूरत है। अभी तक यह किया नहीं है। गिरी बोले कि, 'आप इसमें सब लोगों को समझाने के लिए तैयार हो जाओ गांव-गांव तो यह हो सकता है।' मैंने कहा प्रथम सरकार इसे स्वीकार करे और तय करे कि दस साल के लिए फलानी जमीन से इतना अनाज लेंगे। तो गांव-गांव समझाने के लिए बाबा अपने हजारों सेवकों को भेज सकता है, और यह बन सकता है।' यही पहला आदमी मिला हमको जो सत्ताधारी होते हुए भी अक्ल रखने वाला। उन्होंने कहा, इसका प्रचार मैं करूंगा मुझे विश्वास है (बाबा ने इंदिरा जी से पूछा आपके साथ भी उन्होंने यह बात की होगी) यह जब होगा तब होगा। परन्तु यह अगर होगा तो आप पूछेंगे इसके साथ स्त्री शक्ति का सम्बन्ध क्या है। स्त्रियों को अनाज पकाना पड़ता है घर में, बच्चों को खिलाना पड़ता है। उन्हें क्या खिलायें खुद क्या खायें यह सवाल आता है उसके सामने। जब तक घर में पूर्ण अनाज न हो, घर समृद्ध न हो तब तक स्त्री शक्ति बढ़ नहीं सकती।

परदा और स्त्री शक्ति

स्त्रियों को अगर शक्तिशाली बनाना है तो उनको परदे से बाहर लाना चाहिए। परदा उनकी शक्ति को बहुत ज्यादा रोकने वाली चीज है। खास करके राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बिहार में मुसलमानों के कारण एक रिवाज चल पड़ा है। वह इतना विलक्षण है। बिहार में मैं एक आश्रम में था, एक शहर से पांच मील दूर वह स्थान था। वहां मैंने देखा रोज आश्रम में मैं घूमता था मुझे एक मास हो गया था वहां, लेकिन एक भी स्त्री का दर्शन मुझे नहीं होता था। बहुत दिनों बाद एक उत्सव आया तो कुछ स्त्रियां आईं। उन से पूछा कहां रहती हो। बोलीं यहीं। मुझे लगा नजदीक पांच मील पर शहर है वहां से आई होंगी। उन्होंने कहा 'यहीं से आती सामने वाले घर से। अब वह आश्रम ऐसा ही था और नजदीक ही सामने के घर से वे आयी थीं। इतने दिन नहीं आयी थी परदे के कारण। उस दिन उत्सव था तो बाबा के दर्शन के लिए आयीं। यह है स्त्रियों की स्थिति। उनकी शादी जब हो गई तब घर के अन्दर बैठ गई, फिर घर के आंगन में भी नहीं आ सकती। अन्दर ही रहेगी। केवल एक ही किताब तुलसी-रामायण पढ़ती है। बच्चों को घर भी रामायण सुनाती है। सन्तोष से घर का काम करती रहती है। 'सबाई परविद' हैं। परविद शोध हो गये हैं वे २५-३० साल एक ही कोठरी में रहे थे। तो यहां की स्त्रियां 'सबाई परविद' हैं। उनका बाहर आना होगा तो

आगे युग अहिंसा का है

→

परदा हटाना पड़ेगा। उनको समझाना होगा कि आपको घर के बाहर आना चाहिए। इस के आगे आपकी दुनिया है, आपकी यानी स्त्रियों की दुनिया है। जब तक मुख्य आधार सेना का था तब तक पुरुषों का ही राज चल सकता था। परन्तु इसके आगे दुनिया धीरे-धीरे शस्त्र परित्याग की तरफ आ रही है और अहिंसा का राज होने वाला है, कुल दुनिया में। अहिंसा शक्ति को खड़ी करने में स्त्रियां ज्यादा कामयाब होंगी। इसके आगे का युग अहिंसा का है। यानी स्त्रियों का है इसलिए स्त्रियों को परदे से बाहर आना चाहिए तब स्त्री शक्ति जाग उठेगी।

मुसलिम कानून

स्त्री शक्ति के लिए और क्या करना पड़ेगा? मुस्लिम जमात में एक पति तीन-चार पत्नियां करता है। हमारा धर्म निरपेक्ष राज्य है। फिर भी ऐसा विलक्षण कानून है स्त्रियों को तकलीफ देने वाला। घर में तीन, चार बहनें हों तो कैसा कलह होता होगा, कौन सी शांति रहती होगी?

वे कहते हैं इसका कारण है मुस्लिम लॉ। लेकिन बाबा इतना बेवकूफ नहीं है। बाबा ने कुरान शरीफ का अध्ययन कम से कम तीस साल किया और उसका सार निकाला है। रुहुल कुरआन। उसमें जो मुख्य चीज है उसे 'उम्मुल किताब' कहते हैं। यानी कुरान का मुख्य हिस्सा। भगवान कैसा है, उसका स्वरूप क्या है, उसकी भक्ति कैसी करना, उसके लिए दान-धर्म आदि करना, इत्यादि जो है धर्म-विचार वह मुख्य है। बाकी आप जिसे 'कानून' कहते है, 'शरियत' वह उत्तरोत्तर बदलती जाती है। मुहम्मद पैगम्बर के जमाने में भी बदली है, बाद में भी बदली है। परन्तु हम लोग समझते हैं कि ऐसी मांग मुसलमानों की तरफ से आ जाये तो अच्छा है। कुछ मुसलमानों की तरफ से यह मांग आ भी रही है। हमें जरा राह देखनी चाहिए। मैं उसके विरोध में नहीं हूं। ठीक है थोड़ी राह देखना अच्छा है। परन्तु उनको समझाना चाहिए कि समान व्यवहार सब पत्नियों के साथ संभव नहीं है।

आखिर में एक बात कहता हूं। शादी में दहेज दिया जाता है। यानी आपने जहाँ लड़की दी वहां उसके साथ थोड़ा सा सुवर्ण इत्यादि देते हैं। वह खास करके स्त्री का धन माना जाता है। उस पर किसी का हक नहीं माना जाता है। 'स्त्री धन' के तौर पर वह माना जाता है। तो मैं उस 'दहेज' के खिलाफ नहीं हूं। मैं 'सहेज' के खिलाफ हूं। एम० ए० की परीक्षा पास की उसमें इतना-इतना खर्चा आया। हमारे एक साथी है व्यापारी हैं, छोटे, उनके घर में शादी थी तो मेरे पास आये थे आशीर्वाद मांगने। मैंने कहा, ठीक है, प्रेम से रहो, प्रेम से रहो, सेवा भाव से रहो, आशीर्वाद है बाबा का। मैंने उनसे पूछा, 'शादी में कितना खर्च करोगे एक हजार?' उन्होंने पांच उंगलियां दिखाईं। मैंने कहा 'पांच हजार?' बोले, नहीं पांच लाख'। अब क्या कहा जाये कहां रहेगी स्त्री शक्ति इसमें? यह सब सोचने की बात है। हम अमरीका जा कर आये हैं, इतना सारा खर्चा हुआ। वह खर्चा कहां से निकलेगा? तो इस 'दहेज' में से मैंने एक सूत्र बनाया है। 'एक शादी यानी जिंदगी भर की बरबादी' सतत ब्याज देते रहते हैं, साहूकार को। उसमें से छुटकारा होता नहीं। ऐसी हालत है। तो वह जो 'दहेज' है उसका विरोध करना चाहिए। और उस वा[illegible] स्त्रियों को भी समझाते रहना चाहिए [illegible] स्त्री शक्ति खड़ी होगी।

और एक आखिरी बात। भंगी-मु[illegible] होगी तब स्त्री शक्ति आयेगी। जहां-जहां भं[illegible] काम करते हैं, मैंने देखा है इन्दौर में अ[illegible] अन्य शहरों में भी, मैला उठाने का क[illegible] स्त्रियां करती हैं। और पतिदेव बैठे रहते गाड़ी पर। अन्दर जा कर मैला लाना, गा[illegible] में डालना, नाक बदबू से भर जाती है तात्पर्य यह है कि कि भंगी लोग बराब[illegible] दबाते हैं बहनों को।

स्त्री-शक्ति के लिए क्या-क्या कर[illegible] पड़ेगा उसका सामान्य हिसाब मैंने आपके साम[illegible] रखा। अब इन्दिरा जी अपने विचार रखेंगी क्योंकि वे स्वयं स्त्री हैं।

ऊँट की सवारी में

(पृष्ठ ८ का शेष)

सवाल यही है कि काम नहीं करेंगे तो उत्पादन कैसे बढ़ेगा। हम लोग ' देहात वालों को···आधा किलो शक्कर एक परिवार को मिलती है और शहर में एक आदमी को एक किलो मिलती है। अगर एक आदमी के परिवार में २० आदमी हैं तो शहर में २० किलो मिलेगी, लेकिन देहात में एक आदमी के परिवार में चाहे २० आदमी हों तो भी आधा किलो मिलती है···यह क्या समाजवाद है? मजाक बना रखा है। पूंजीवादी लोग हमारे समाजवाद का मजाक उड़ाते हैं। हमको जनता के पहनने के लिए एक यूनीफार्म बना देना चाहिये, सबके लिये तय कर देना चाहिये कि मोटा कपड़ा पहनेंगे। जो लोग दिन में तीन बार नई-नई पोशाकें बदलते है, एक नाटक सा करते हैं, उनके ऊपर कुछ प्रतिबन्ध होना चाहिए।

हमारे यहां अन्न नहीं है तो आधा पाव अन्न खा कर भी हम जीवित रह सकते हैं यदि समान बित रण हो। किसी के पास अन्न भरा पड़ा है और कोई भूखों मरे, ऐसा नहीं होना चाहिए। मेरी बातें दार्शनिक बातें हैं संसद यह मेरी संसद नहीं है, मेरी संसद तो मानव-समाज है, जहां मैं रहता हूं··· सर्वम् खल्विदम् ब्रह्म···सब कुछ ब्रह्म है, किसी की कोई सम्पत्ति नहीं है, किसी की कोई जाति नहीं है, सब ब्रह्म है। ये बातें मैं बाहर कहा करता हूं। अगर मैं यहां न बोलूं तो लोग कहते हैं कि स्वामी जी बोलते नहीं हैं··· आज यहां बजट पर बहस हो रही है, न प्रधान मन्त्री हैं और न दूसरे मन्त्री है। हर तरफ कोई खिचड़ी पक रही है, ऐसे मौके पर तमाम संसद सदस्यों को, प्रधान मन्त्री जी को, सब मन्त्रियों को रहना चाहिये, लेकिन सब ने मजाक बना रखा है। इन शब्दों के साथ बजट का इसलिए समर्थन करता हूं क्योंकि मैं कांग्रेस का मेम्बर हूं, जो कांग्रेस वाले कहते है, वही करता हूं। ●

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ८ अप्रैल '७४

उत्तरप्रदेश-गतिविधियों का एक वर्ष

भूदान-यज्ञ

सम्पादक:
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २०   ८ अप्रैल, '७४   अंक २८
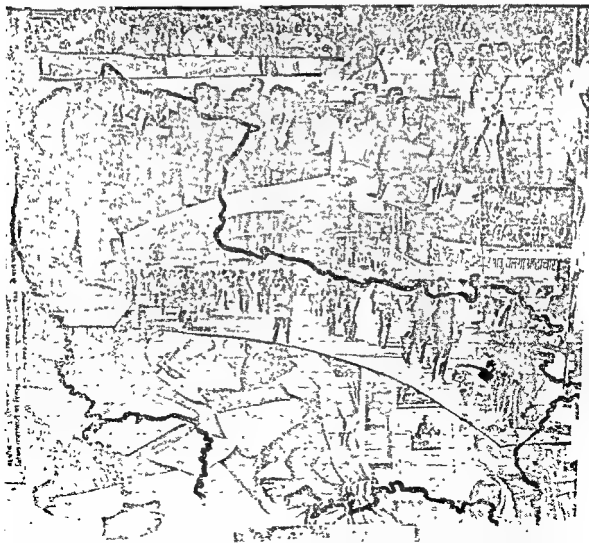
१९ राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

समझदारी का फैसला

गेहूं के व्यापार का राष्ट्रीयकरण समाप्त करके भारत सरकार ने परिस्थिति की वास्तविकता को समझने का साहस दिखाया है। एक विचारात्मक नीति को एक साल बाद ही बदलना किसी भी सरकार के लिए आसान नहीं होता। भारत सरकार के लिए तो ऐसा करना और भी मुश्किल था क्योंकि इस नीति को सही बताने के लिए पिछले साल भर में उसने कोई कम प्रचार नहीं किया था। कांग्रेस का ऐसा एक भी जिम्मेदार नेता अथवा कार्यकर्ता नहीं होगा जिसने अपनी निजी राय को ताक में रख कर इस नीति की तारीफ कर के नक्कारखाने में अपनी आवाज न मिलायी हो। राष्ट्रीयकरण और प्रगतिशीलता के होड़ भरे राजनीतिक वातावरण में सरकार के लिए यह निश्चित ही बहुत मुश्किल रहा होगा कि वह प्रतिक्रियावादी कहे जाने का खतरा मोल ले। फिर भी सरकार ने वास्तविकता को समझ कर स्वागतयोग्य निर्णय लिया तो इसका श्रेय निश्चित ही श्रीमती इन्दिरा गांधी को दिया जाना चाहिए। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, दूसरे साम्यवादी दल और कांग्रेस के अपने 'प्रगतिवादियों' ने जिस तरह इस फैसले को पराजय और प्रतिक्रियावादियों के सामने झुकना बताया है उससे और भी स्पष्ट हो जाता है कि प्रधानमन्त्री को कितने साहस से काम लेना पड़ा होगा।

सरकार अपने फैसले पर पुनर्विचार कर रही है यह तो कोई महीने भर पहले ही साफ हो गया था। राष्ट्रीय खाद्य परिषद की बैठक में काफी लोगों ने मांग की थी कि गेहूं के व्यापार का एकाधिकार सरकार समाप्त कर दे। फिर जब दिल्ली में खाद्यनीति पर विचार करने के लिए मुख्यमन्त्रियों की बैठक हुई तो उसमें भी स्पष्ट हो गया कि कई राज्य राष्ट्रीयकरण के पक्ष में नहीं हैं। खाद्य परिषद और मुख्यमन्त्रियों की राय ने तो खैर सरकार के निर्णय को प्रभावित किया ही होगा वास्तविकताओं ने भी कोई कम असर नहीं किया है। इस साल गेहूं की फसल पिछले साल की तुलना में कम होने वाली है। ठण्ड में पानी न गिरना तो इसका एक कारण है ही, बिजली और तेल के संकट से सिंचाई की जो थोड़ी बहुत सुविधाएं थीं उन्हें भी ठप्प कर दिया था। उर्वरकों की कमी भी उत्पादन में गिरावट के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है। सरकार के आशावादी हिसाबियों के अन्दाज से भी इस बार दो करोड़ बीस लाख टन से ज्यादा गेहूं नहीं होने वाला है। गये साल जब ढाई करोड़ टन गेहूं हुआ था तब सरकार आधा करोड़ टन भी गेहूं इकट्ठा नहीं कर पायी थी। फिर बीज, सिंचाई और खाद को लेकर किसान गये साल उतना परेशान नहीं था जितना वह इस वर्ष हुआ है। इस हालत में यह असम्भव ही था कि सरकार आधा करोड़ टन गेहूं लेवी में ले पाती।

सरकारी मशीनरी की अजगरी अक्षमता और सरकारी नीति के प्रति किसानों और व्यापारियों का विरोध प्रयोग के इस एक वर्ष में अन्धे को भी दिख सकता है। पूर्व तैयारी किये बिना गेहूं जैसी चीज के व्यापार के सरकारीकरण का विरोध विनोबा और जयप्रकाश नारायण ने इसीलिए किया था कि सरकार के पास वह मशीनरी नहीं है जो इस नीति के अमल की ग्यारंटी कर सके। भारतीय खाद्य निगम अपनी जिम्मेदारी निवाहने में जिस बुरी तरह से विफल हुआ है यह हम उपभोक्ताओं को हुई परेशानियों से देख सकते हैं। अनाज की जमाखोरी और काला बाजारी को रोकने में भी सरकारी मशीनरी की असफलता जगजाहिर है। अब भी सरकार अगर अपने फैसले पर पुनर्विचार नहीं करती तो सार्वजनिक वितरण के पूरी तरह ठप्प होने का डर था। संसार में, अमरीका को छोड़ कर किसी भी देश के पास गेहूं नहीं है जो सरकार बाहर से मंगवा लेती और फिर गेहूं की कीमतें इतनी बढ़ गयी हैं कि विदेशी मुद्रा के तीव्र अभाव में हमारे लिए पर्याप्त मात्रा में आयात करना असंभव होगा।

फिर इस नीति का उत्पादन पर भी बुरा असर पड़ रहा था। सरकार ने खरीदी के जो भाव तय किये थे वे इतने अवास्तविक थे कि किसानों को उत्पादन बढ़ाने की प्रेरणा देने के बजाय उन्हें गेहूं के अलावा कोई और अधिक कमाई वाली फसल लगाने के लिए मजबूर कर रहे थे। बिजली तेल और उर्वरकों के संकट ने हमारी तथाकथित हरित क्रांति को फेल कर दिया है। ऐसी हालत में देश को भुखमरी से बचाने और कीमतों को और भी ज्यादा बढ़ने से रोकने का यही तरीका था कि खाद्यनीति किसान के खिलाफ न जाये।

इन सब कारणों को देखते हुए सरकार ने जो फैसला किया वह मौजूदा हालत में सब से सही फैसला है। राजनीति अनाज के मामले में जो अड़ंगे लगा रही थीं उन्हें निकाल कर श्रीमती गांधी ने दूरदर्शिता से काम लिया है। लोगों को सचमुच इससे कोई मतलब नहीं था कि उनकी सरकार कितनी 'प्रगतिशील' है। उनकी सबसे बड़ी समस्या यह थी कि दो जून खानेको मिल सकता है या नहीं। अब सरकारने खरीदी के भाव ७६ रु० से बढ़ा कर १०५ रु० कर दिये हैं तो किसान को अपना गेहूं बेचने में हिचक नहीं होगी। सच पूछा जाये तो पंजाब और हरियाणा के किसानों ने गये साल एक आंदोलन चला कर इन्हीं भावों की मांग की थी। फिर थोक व्यापारियों को भी अब मौका दिया गया है कि वे व्यापार में फिर से आयें और सिद्ध करें कि वे जनविरोधी नहीं हैं और गये साल उन्होंने सरकारी नीति का जो विरोध किया था वह महज हित स्वार्थों की पूर्ति के लिए नहीं था। सरकार ने उन्हें कहा

(शेष पृष्ठ १५ पर)

बिहार में फिर एक चुनौती स्वीकार

तीस मार्च को पटना में जयप्रकाश
णए ने कहा, "बिहार सरकार को मेरी
दार सलाह है कि वह विद्यार्थियों और
ों से शान्तिपूर्ण विरोध और कार्यवाही
नका अधिकार नहीं छीने। इकतीस मार्च
छात्र संघर्ष समिति को मौन जलूस
ल्ने की अनुमति नहीं दी गई और कई
ों को गिरफ्तार किया गया। बिहार शान्ति
समिति कई दिनों से शहर में मौन जलूस
लने की अनुमति मांग रही है लेकिन
कारी आनाकानी कर रहे हैं। छात्र संघर्ष
ति को आम सभा करने की इजाजत नहीं
गई है और कहा जाता है कि गिरफ्तार-
ा दो विद्यार्थियों को पीटा गया। अगर
कार लोगों के शान्तिपूर्ण आन्दोलनों को
तरह कुचलती रही तो हिंसक विस्फोट
कर रहेगा। लगता है कि सरकार लोगों के
को बिल्कुल नहीं समझ पा रही है"।

"और अब अन्त में एक शब्द सर्वोदय के बारे में। जो लोग समझते हैं कि सर्वोदय अहिंसक क्रान्ति की बात करने वाले ऐसे भले लोगों का आंदोलन है जो अपनी शान्ति के बारे में गम्भीर नहीं हैं, वे अब अचरज में पड़ने वाले हैं। जहां तक मेरी बात है—मैं भ्रष्टाचार और कुशासन का मौन दर्शक नहीं रह सकता फिर चाहे वह पटना में हो, दिल्ली में हो, या और कहीं। कम से कम उसके लिए आजादी की लड़ाई मैं नहीं लड़ा था। इस मन्त्रीमण्डल को उस मन्त्रीमण्डल से हटाये जाने या विधान सभा का विसर्जन करवाने में मेरी कोई रुचि नहीं है। ये पराश्रित सदस्य हैं और इनकी पूर्ति से कोई अन्तर नहीं पड़ेगा। यह नागनाथ की जगह सांपनाथ को देने की तरह है। मैंने भ्रष्टाचार और कुशासन, काला-बाजारी मुनाफाखोरी और जमाखोरी के खिलाफ लड़ना तय किया है, शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण परिवर्तन और लोगों के सच्चे लोक-तन्त्र के लिए संघर्ष करना तय किया' है। दुर्भाग्य से मेरा स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता। लेकिन लोगों को शान्तिपूर्ण विरोध और कार्यवाही का अधिकार न देने की सरकार की वर्तमान नीति अगर जारी रही तो स्वस्थ होने के पहले ही शान्ति सैनिकों, विद्यार्थियों और सत्याग्रहियों के रूप में नाम लिखाने वाले नागरिकों का मौन जलूस निकालने के लिए मैं अपने को बाध्य पाऊंगा। यह धमकी नहीं है एक दोस्ताना चेतावनी है"।

इस वक्तव्य के बाद जयप्रकाश नारायण ने तय किया कि वे आठ अप्रैल को पटना में सत्याग्रहियों का मौन जलूस निकालेंगे।

एक अप्रैल को भुवनेश्वर, उड़ीसा में प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने गुजरात और बिहार में तथाकथित पुलिस

→

सबसे बड़ा संकट सरकार में विश्वास का है

—राममूर्ति

देश सरकार और विद्यार्थियों से इन प्रश्नों का उत्तर चाहता है। वह हिंसा के ऐसे घेरे में घिर गया है जो उसे दबाता, कसता, चला जा रहा है। सरकार की हिंसा, विद्यार्थियों की हिंसा, गुन्डों की हिंसा—इन सब हिंसाओं का मुकाबला देश एक साथ कैसे करे? इसलिए देश सरकार और विद्यार्थी दोनों से जानना चाहता है कि वे अपना जहर उसके सिर क्यों उतार रहे हैं?

अभी कुछ दिन पहले १८ मार्च को पटना और बिहार में जो कुछ हुआ उससे तो यही लगता है कि देश की चिन्ता न सरकार को रह गयी है न विद्यार्थियों को। जरूर, विद्यार्थियों की कई मांगें ऐसी थीं जो सही और मानने लायक थीं, लेकिन उस दिन तो उनकी खास जिद यह थी कि राज्यपाल विधान मंडल के संयुक्त अधिवेशन में अपना अभिभाषण पढ़ने न पाएं। राज्यपाल के अभिभाषण को उन्होंने इतना महत्व क्यों दिया? राज्यपाल रोज एक भाषण दें तो क्या बिगड़ता है, और न दें तो क्या बनता है? सरकार ने जिद से जिद का जवाब दिया। दोनों ओर से डटने का निश्चय हुआ। सरकार ने हथियारबन्द सैनिक बुला लिये। विद्यार्थियों के नेता यही कहते रहे कि प्रदर्शन और घेराव शांतिपूर्ण होगा, लेकिन वे यह नहीं समझ सके कि मूंछ की लड़ाई कभी शांति के साथ नहीं होती। मूंछ और विवेक का सह-अस्तित्व नहीं होता। इसलिए जहां विवेक नहीं होता वहां शांति कैसे रह सकती है? ऐसी स्थिति में परिणाम वही हुआ जो होना चाहिए था। सशस्त्र सैनिकों से घिरकर राज्यपाल महोदय विधान सभा भवन गए और उन्होंने अपना अनमोल अभिभाषण पढ़ा। बावजूद सारे बन्दोबस्त के सभा-भवन में भी शांति नहीं रह सकी। स्वयं सभा के सदस्यों और मंत्रियों के अगरक्षकों में गुत्थमगुत्थी हो गई जिसमें कई मंत्रियों को भी धक्के और झटके खाने पड़े। और, बाहर शहर में तो पूरे पांच घंटे जैसे कोई सरकार रही ही नहीं। न पुलिस का पता था, और न सेना का। मालूम नहीं सब के सब बंदूकधारी सैनिक कहां रह गये? उधर उपद्रव पर उतारू (सब नहीं) विद्यार्थियों के साथ मिलकर गुन्डों ने (जिनमें कुछ 'भद्र' भी समझे जाते हैं) जो चाहा किया। प्रेस जलाये, होटल जलाये, कार्यालय जलाये, तोड़-फोड़ की, गाड़ियां फूंकी, दुकानें लूटीं।

यह सब बिहार के अनेक स्थानों पर हुआ, किन्तु सबसे अधिक स्वयं राजधानी में हुआ। विचित्र बात यह है कि जब पटना जलता रहा, तो किसी एक जगह भी कोई बंदूकधारी रक्षक नहीं दिखाई पड़ा। जब सब कुछ हो चुका तो सरकार की ओर से कारवाई शुरू हुई। गोली चलने लगी, कर्फ्यू लागू किया गया, गश्त चालू कर दी गई, गिरफ्तारियां होने लगीं। इतना होने पर रेडियो बोलने लगा 'अब शांति है, स्थिति काबू में है।' उपद्रव जब हो चुकता है तो शांति के सिवाय दूसरा होना क्या है?

जब आग लग चुकी और लाखों की सम्पत्ति को जलाकर बुझ चुकी तो ही सरकार की ओर से बताया जाने लगा कि आग लगाने वाले कौन थे। कहा गया कि वे ऐसे लोग थे जो लोकतंत्र और समाजवाद के शत्रु हैं, जो सरकार के 'क्रांतिकारी' कामों से नाराज हैं, जो चुनावों में हार कर अपनी खिसियाहट मिटाना चाहते हैं, जो देश के पुराने आदर्शों और नये मूल्यों को मटियामेट करने पर उतारू हैं। ये तत्व देशी भी हैं, और विदेशी भी। पटना और दिल्ली में बार-बार ये बातें कही गयीं, लेकिन किसी ने यह नहीं बताया कि पटना में १८ मार्च को जब लपटें उठ रही थीं और लूट हो रही थी तो इतने घंटों तक उसकी पुलिस और सेना कहां थी? क्यों 'सर्चलाइट' और 'इण्डियन नेशन' जैसे पत्रों को फोन पर कोई एक भी अधिकारी नहीं मिला जिससे वे कह सकते कि उनके प्रेस जलाये जा रहे हैं? कहां चले गये थे ये लोग? या, कहीं ऐसा तो नहीं था कि स्वयं सरकार के घर में दरार पड़ गयी थी, और संकट की घड़ी में कोई किसी की सुन और मान नहीं रहा था…मुख्यमंत्री की भी नहीं। सबसे विचित्र बात तो यह है कि सरकार के खुफिया विभाग को भी पहले से पता नहीं था…या था, बताया नहीं? कि १८ मार्च को कौन क्या करने वाला है? किस प्रकार गुन्डे चुपके-चुपके इस पैमाने पर संगठित हो गये? कहां से अचानक इतने 'विदेशी तत्व' पैदा हो गये? एक युवक जिसका मुख्य मंत्री जी ने बिहार विधान सभा में षड्यंत्र का रहस्योद्घाटन करते हुए उल्लेख किया वह न विदेशी है, न विध्वंसक, वह वर्षों से सर्वोदय का एक जाना-माना, खुला और निर्भीक, कार्यकर्ता है। जन्म उसका जरूर केनया में हुआ था लेकिन उसके माता-पिता अब भारत में ही रहते हैं। कुछ भी हो, जनता को सरकार से यह पूछने का अधिकार है कि अगर वह ऐसे खुले उपद्रव से जनता की रक्षा नहीं कर सकती तो कानून और व्यवस्था के नाम में करोड़ों रुपये टैक्स में क्यों लेती है? जब सब कुछ हो चुका तो सरकार और शासक-दल के नेताओं को जैसे 'इलहाम' हुआ कि जनसंघ, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और आनंद मार्ग के लोग देश के शत्रु हो गए हैं। यह कह कर सरकार अपनी जिम्मेदारी से बरी कैसे होना चाहती है? कितनी भोली है सरकार? और गाय जैसी कितनी सरल है जनता, कि जो घास सामने रख दीजिए चाव से चर लेगी। जनता को चाहे जो समझा दीजिए, उससे चाहे जो करा लीजिए!

एक बात साफ है। देश के सामने इससे बड़ा संकट क्या होगा, कि जनता को अपने ही प्रतिनिधियों पर भरोसा न रह जाए, और मंत्रियों की मंत्रणा सुनने के लिए किसी के कान तैयार न हों? इससे भी अधिक, सरकार के कहने से खुद उसके आदमी न हों। क्या सरकार यह कहना चाहती है कि सिवाय उसके और उसके दल के नेताओं के देश के प्रति वफादार अब देश में दूसरा कोई नहीं रह गया है? अगर चुनाव में हारने वाले आग लगाने पर उतारू हो गये हों तो सोचने की बात है कि दलों को चुनाव का ऐसा खेल खेलने ही क्यों दिया जाये कि जनता के सामने अपने घर और दुकान से हाथ धोने की नौबत आ जाये?

→

'क्यों न प्रतिनिधित्व की कोई दूसरी पद्धति सोची जाये? एक और दूसरा प्रश्न है। क्या हमारे नेता···सरकार और विरोध दोनो के···कभी अपनी अंतरात्मा को टटोलते हैं? क्या वे कभी यह सोचते हैं कि देश को आज की स्थिति तक पहुचाने मे उनकी क्या जिम्मेदारी है? नीचे से ऊपर तक हर दल के लोग यही कहते रहते हैं कि जो उनके साथ नही है वह देश-द्रोही है। सत्ता की जो राजनीति वे चला रहे हैं उसमे वे अपने दल की सत्ता को लोकसत्ता मान लेते है, इसलिए उनके दल की सत्ता उनके लिए साध्य बन जाती है और हर उपाय चाहे वह जितना गलत हो···साधन बन जाता है। स्वयं जनता को काले पैसे और झूठे प्रचार के बल पर वे दल की सत्ता का साधन बना लेते हैं। जनता को ही नही, गुन्डो को भी। कैसे हमारी देश की राजनीति मे गुंडे प्रतिष्ठित हो गये? एक बार जब चुनाव जीतने के लिए गुंडों से 'बूथ कैप्चर' करा लिया गया तो क्या उन्हे दूकान लूटने, घर जलाने, स्मगलिंग और चोरबाजारी करने से रोका जा सकता है? क्या वे रोकने से रुकेंगे? क्या हमारे नेता बता सकते हैं कि कैसे हमारी राजनीतिक सारे मूल्यों और मान्यताओं को छोड़कर एक 'संगठित अपराध' बन गई? गुंडों की सेवा लेने वाले नेताओं को गुडो का संरक्षक बनने मे कितनी देर लगती है? और, अब तो गुंडे अपने नेता भी तैयार करने और उन्हें चुनाव जिताकर मुखिया से एम० पी० तक बनाने लगे हैं।

लोकतंत्र का स्वांग रचने वाला यह दलतंत्र देश के लिए आज सबसे बड़ा खतरा बन गया है। इसने राजनीति को अपराध और सरकार को जन-विरोधी बना दिया है। ऐसी लोकतंत्र की छत्रछाया मे वे सारे तत्व पल रहे हैं जो स्वार्थी और समाज-विरोधी हैं। स्वाभाविक है कि इस प्रकार की सरकारें जनता की शक्ति से कही अधिक अपनी गोली पर भरोसा करेंगी। आज वे यही कर रही हैं, दुहाई वे चाहे जिन सिद्धान्तो, मूल्यों, और आदर्शों की दें।

इसी भूमिका मे देश ने गुजरात के आन्दोलन को देखा था जिसमे युवकों की अगुवाई मे जनता ने एक भ्रष्ट और जनविरोधी सरकार को अस्वीकार किया था। वही ध्वनि बिहार मे भी प्रकट हुई थी, लेकिन बिहार के युवक चूक गये। बिहार मे अंदर से जर्जर सरकार तथा दलीय राजनीति और विद्यालयो के भ्रष्ट कुप्रभाव मे पले कुछ विद्यार्थी, दोनो समाज के 'शत्रु' सिद्ध हुए। वहा न सरकार शांति कायम रख सकी और न विद्यार्थी 'क्रांति' को आगे बढ सके। दोनों का 'पाप' समाज के सिर उतरा। सरकार समझती रही कि जनता को अलग रखकर केवल सैनिको के बल पर शांति रखी जा सकती है। और विद्यार्थी समझते रहे कि जनता को अलग रखकर केवल उपद्रव के बल पर क्रांति की नीव डाली जा सकती है। दोनो ने समान रूप से जनता की शक्ति मे अविश्वास प्रकट किया और उसका दंड भोगा समाज ने। सैनिक शक्ति पर आधारित सरकार का 'कल्याणवाद' और दलीय राजनीति की प्रेरणा से चलने वाला युवको का 'संघर्षवाद' दोनो अंत मे परिवर्तन-विरोधी, यथास्थितिवादी ही सिद्ध होते हैं।

युवक सोचें कि इस स्थिति मे उन्हे क्या करना है। यह कहना काफी नही है 'आग हमने नही लगायी, असामाजिक तत्वो ने लगाई'। जो लोग शांतिपूर्ण क्रांति करना चाहते हैं उन्हें सैनिको और गुंडों दोनो की हिंसा पर काबू रखना सीखना होगा। यह तभी हो सकता है जब जनता की शक्ति साथ होगी। जन-शक्ति के अभाव मे समाज के किसी एक अंग का आन्दोलन बुनियादी सामाजिक परिवर्तन का वाहन नही बन सकेगा। गुजरात मे जनता आन्दोलनकारियो के साथ थी, बिहार मे नहीं। और, १८ मार्च के अनुभव के बाद तो जनता को साथ लेना पहले से कही अधिक कठिन हो जायगा। बिहार की घटनाओ ने युवकों के पक्ष को कमजोर किया है। कुशल है कि वहां के युवको में एक धारा प्रकट हो गयी है जो शांति की शक्ति को समझती है। ऐसे युवको को अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिए।

एक बात समझ लेने की है। किसी समस्या के समाधान के लिए अगुआई विद्यार्थियों की हो या अन्य किसी की, आज की सामाजिक परिस्थिति मे कोई समस्या ऐसी नही रह गई है जो समाज की सभी शक्तियों के सहयोग के बिना हल हो सके। शांतिपूर्ण क्रांति का यह मंत्र है। सहयोग की खोज प्रसंग के अनुसार असहयोग क्या, अवज्ञा तक आवश्यक हो सकती है, किन्तु अन्तिम चिंता सहयोग की ही करनी होगी। सहयोग के वृत्त के भीतर समाज के साथ-साथ सरकार भी आती है। ऐसा सहयोग दलबंदी का दिल और दिमाग रखने से नही प्राप्त किया जा सकता, न सरकार प्राप्त कर सकती है, और न विद्यार्थी। लेकिन यदि समाज सरकार को निरंकुश छोड़ देगा और विद्यार्थियो को अकेला छोड़ देगा तो उसे अपनी निष्क्रियता का दंड भोगना ही पड़ेगा।

शिक्षण विद्यार्थियो का विशेष क्षेत्र है। निकम्मा शिक्षण ग्रहण करने से इन्कार करने का, उन्हे पूरा अधिकार है। मौजूदा शिक्षण सौ फीसदी निकम्मा है, इस प्रश्न पर अब देश मे दो रायें नही रह गई हैं। कोई भी सरकार विद्यार्थियो को इन विद्यालयो मे जहां विद्या का लय होता हो, रहने के लिए विवश नही कर सकती।

इसी तरह स्वतंत्र और निष्पक्ष बालिग *मताधिकार है। इस अधिकार को सुरक्षित* रखने की चिंता हर एक को होनी चाहिए। युवको को सबसे अधिक क्योकि इसके साथ उनका पूरा भविष्य जुड़ा हुआ है।

लोकतंत्र की अन्तिम शक्ति लोकशक्ति ही है। समाज की अन्य सभी शक्तियां उसका अंग हैं। विद्यार्थियो से अपेक्षा है कि शिक्षण और लोकतंत्र के दो प्रश्नो पर वे लोकशक्ति को जगाने और उसे साथ लेने का प्रयत्न करें। इस प्रयत्न मे पहला काम है कि गांव की ग्राम सभा, नगर मे मुहल्ला सभाएं, हर विद्यालय की विद्यालय सभा, तथा कार्यालय और कारखाने मे अपनी-अपनी सभाएं गठित हों जो अपनी जगह आंतरिक जीवन के लिए जिम्मेदारी लें। ये इकाइयां संगठित होकर एक होकर, परिवर्तन की दिशा मे पहल करें। जितना परिवर्तन स्वयं कर सकती हैं करें। जहां आवश्यक हो परिवर्तन के लिए सरकार पर दबाव डालें। यह प्रयत्न देश का होगा, देशव्यापी होगा, शांति के साथ होगा, संगठित होगा: न किसी दल का होगा, न जाति और वर्ग का होगा। इसमे शरीक होने के लिए सरकार को भी आमंत्रण होगा। यह देश की बात है। शान्तिपूर्ण क्रांति की राह भी यही है।

बाँये हाथ का खेल

—भवानीप्रसाद मिश्र

गुजरात की विधानसभा के भंग होते ही बिहार में सत्तारूढ़ दल के विरोध में छात्रों ने [आं]दोलन छेड़ दिया और सत्तारूढ़ दल ने, [गु]जरात से वैसा सबक ले कर जो प्रायः भय-[भी]त व्यक्ति लिया करता है, बिहार में अभूत-[पू]र्व दमन की वर्षा की। उससे जिसे हम [?]नहीं शांति' कह सकते हैं, स्थापित हो गई [है]। सत्तारूढ़ दल ने हमेशा की तरह इस बार [भ]ी हिंसा के लिए 'असामाजिक तत्वों' को जिम्मेदार बताया और उसमें कुछ संस्थाओं [के] नाम भी लिए, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, [आ]नन्द मार्गी आदि। फिर सदा से अपने [शां]ति प्रयत्नों के लिए विख्यात गांधी शांति प्रतिष्ठान के अमरनाथ, सन्तोष भारतीय व कुमार प्रशान्त जैसे कार्यकर्ताओं को गिर-फ्तार किया। आंदोलन में विदेशी तत्वों का हाथ बताया जाना भी जरूरी था इसलिए 'भेड़िये और मेमने' की अति प्राचीन कहानी को चरितार्थ करते हुए 'कौनिया के' किशोर शाह को भी गिरफ्तार कर लिया। अब किशोर शाह के बारे में अखबारों में काफी तथ्य आ चुके हैं, इसलिए हम इस निर्भय और सौ फीसदी सत्य-प्रेम-करुणा के पथ पर चलने वाले बच्चे का यहां अधिक परिचय नहीं दे रहे हैं। हम केवल पाठकों का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित करना चाहते हैं कि एक अरसे से कहीं की भी जनता किसी भी कारण से विक्षुब्ध क्यों न हो, उसके पीछे सदा 'असा-माजिक तत्वों' का हाथ बताया जाता है, उसे सदा उग्रवादी दक्षिणपन्थियों की कार गुजारी कह कर फिर कुछ संस्थाओं के नाम गिनाये जाते हैं और घोर दमन का इस प्रकार समर्थन करने-कराने की आशा की जाती है। सरकार का मुरगा की तरह फैला हुआ मुख, आकाशवाणी और इसलिए देश के लगभग सारे समाचार पत्र, जिन्हें शासकीय मुखपत्र हो जाने के सिवा चारा नहीं बचा है, इन बातों को दोहराते हैं। अगर संसद में सत्र चल रहे हों तो वहां, और नहीं तो साथ-साथ जहां कहीं प्रधान मन्त्री अपने सार्वजनिक भाषण देती हैं उनमें और उनके बाद उनके स्वर को भी सच्चा स्वर घोषित करने के लिए बाध्य मन्त्री आदि इसे चरम धर्म मान कर दोहराने लगते हैं।

मगर भारत की जनता को क्या हो गया है, वह कहीं भी इस प्रकार के उद्घोषों पर विश्वास करती दिखाई नहीं देती। कमरों में, सड़कों पर, सरकारी-गैर सरकारी कार्यालयों, बाजारों, बसों रेलगाड़ियों या जहां कहीं भी कर्फ्यू लगा नहीं होता···क्योंकि आजकल वह वहां नहीं लगा है · और जहां कहीं भी गोली नहीं चल रही होती · क्योंकि वह आज कल वहां नहीं चल रही है···लोग जो बात करते हैं उनका अर्थ तो यही निकलता है कि हर उपद्रव का उत्तरदायित्व शासन कहिए प्रशासन कहिए या शासन कर्ता या कर्त्री का है। देश की छोटी से छोटी हलचल के संचा-लन सूत्र प्रजातंत्र के नाम पर उसी ने अपनी मुट्ठी में कस कर पकड़ रखे हैं। क्या बात है कि जनता रात दिन 'भेड़िया आया' भेड़िया आया' कहने वाले आकाशवाणी बुले-टिनों, समाचार-समीक्षाओं, राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री तथा तरह-तरह के गण्य-अगण्य मंत्रियों के वक्तव्यों के बावजूद इस बात को जरा भी ध्यान देने योग्य क्यों नहीं मानती, क्यों इस से चिन्तित नहीं हो उठती, 'सरकार के साथ' 'असमाजवादी तत्वों' से 'निपटने' का संकल्प क्यों नहीं कर लेती? क्या कहीं इसका यह कारण तो नहीं है कि इसे वह सच नहीं मानती इसका जो सत्य के समीप पहुंचने वाला कारण उसके मन में दृढ़ है वह तो यही है कि ठेठ वह सब जगह ऊंट के अगो में ही देखती है। वह देखती ही नहीं, भोगती है कि न साफ गल्ला मिल रहा है न सड़ा गल्ला, न खालिस घी मिल रहा है न उसका बनावटी रूप वन-स्पति और न मिलावट से भरा तेल। मिट्टी के तेल का सवाल, लोहे का सवाल सीमेंट का सवाल, पेट्रोल का सवाल, कोयले का सवाल, बिजली का सवाल, कागज का सवाल तो अब उठाना ही निरर्थक है। सामान्य जनता ने इन के बारे में सोचना बन्द कर दिया है···इन के बारे में उद्योगपति सोचें या बिना सोचे काले धन को अन्धे की रेवड़ी तरह किसी फंड में देकर इस सेवा के बदले प्राप्त मेवा के रूप में इन सब चीजों को जितना चाहे उतना पाता चला जा रहा है···मगर सामान्य जनता ने इस सब को फिर पूर्ववत पाने की आशा छोड़ दी है। नैराश्यं ही परम सुखम्।

सरकार खुद जानती है कि वह जिन-जिन को दोषी बनाती है वे दोषी नहीं हैं, कई बार परस्पर उनके विरोधी बयानों से यह साफ हो जाता है और कभी-कभी उसके उन आंसुओं से जिसे हमारे कभी के बल्कि अभी के भी राज्यकर्ताओं की भाषा में जो यथावत अंग्रेजी ही बनी है 'क्रोकोडाइल टियर्स' कहते हैं। मैथलीशरण जी ने इसी मुहावरे का अनु-वाद करके कहा था·· 'देखो भयंकर भेड़िये भी आज आंसू ढालते!' 'सर्च लाइट' की मशीनें जलीं तो प्रधान मन्त्री से लगा कर हर छुटभैये ने आंसुओं की गंडक प्रवाहित कर दी और गंडक के इस उद्गम को हमने शंका की दृष्टि से देखा। तीसरे दिन ही 'सर्च लाइट' की ओर से जो वक्तव्य निकला उसने इन आंसुओं का पर्दा फाश कर दिया···साफ हो गया कि यह आगजनी आनन्दमार्गी असा-माजिक तत्वों की न हो कर परम सामाजिक और प्रजातन्त्रीय मूल्यों के लिए व्याकुल सत्तारूढ़ दल के दाहिने न कहें, बायें हाथ की करामात है। दाहिने हाथ की बात बायें हाथ को न मालूम हो ऐसी सतर्कता की यह दाहिना हाथ आवश्यकता नहीं समझता। न समझे···वह इस पर बेशक अपने अभिप्राय मीमांसित करके करणीय सिद्ध करता रहे··· मगर फिर हमारा इतना ही निवेदन है कि वह सारे संसार को मूर्ख न माने; या कम से कम मन ही मन और परस्पर हंसे-हंसाये और कहे कि हर प्रकार के विरोधियों को, फिर चाहे वे परम अहिंसक शांति दल के तरुण हों, चाहे और कोई···कुचलना हमारे बायें हाथ का खेल हो गया है, हम उस खेल को रोज-रोज अधिकाधिक सफाई से खेलते चले जाने का अभ्यास कर रहे हैं। अभ्यास के लिए हम कभी मैदान गुजरात को चुनते हैं कभी बिहार को कभी बंगाल को...क्योंकि सर्व भूमि गोपाल की! हम सोच रहे हैं बायें हाथ के ये खेल क्या एक के बाद एक सफल होते जायेंगे?

●

जयप्रकाशजी हिंसा को उचित या योग्य नहीं समझते

—विनोबा

रक्षा-उत्पादन राज्य मंत्री विद्याचरण शुक्ल २३ मार्च को विनोबाजी से मिलने आये। उनके सवाल और विनोबा जी के जवाब इस प्रकार हैं—

प्रश्न : सवाल आज की देश की स्थिति का है। सरकार की तरफ से और राजनैतिक दलों की तरफ से इस स्थिति को ठीक करने के लिए क्या करना चाहिए? अल्पकालिक दृष्टि से और दीर्घकालिक दृष्टि से।

उत्तर : इस सिलसिले में कल हमने अखबारवालों के लिए वक्तव्य दिया था कि सब पक्ष मिल करके हिंसा का विरोध करें। असंतोष के कई कारण हैं। उसके लिए जो कुछ करना है वह करें। लेकिन वह सब अहिंसा की मर्यादा में करें। उसका परिणाम कम नहीं होगा। अच्छा ही होगा। आज ये लोग हिंसा का आश्रय लेते हैं इससे देश की परिस्थिति बिगड़ती है। अपने देश की एक इमेज (छवि) है, वह बिगड़ती है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर खराब असर पड़ता है। हमारे सामने आज मुख्य सवाल है, भारत, पाकिस्तान और बंगला देश का उत्तम संबंध बने। ताकि आगे जाकर सेना पर पैसा कम खर्च करना होगा। इस दृष्टि से आज हमारे देश में हिंसक आंदोलन हो रहे हैं, यह बिल्कुल अच्छा नहीं है।

प्रश्न : जयप्रकाश जी ने जो वक्तव्य दिये हैं उसमें आप जो कह रहे हैं वह बात साफ झलकती नहीं। उसमें से ऐसा झलकता है कि उन्हें इसका गहरा असन्तोष नहीं कि हिंसा का प्रयोग भारी मात्रा में सार्वजनिक रूप से किया जा रहा है। इससे लोगों के मन में गलतफहमी हो रही है कि आखिर वे किस चीज को पसन्द करते हैं और किस चीज को नापसंद करते हैं।

उत्तर : उनके कहने का तात्पर्य आज जो हिंसक आंदोलन चले हैं उसे वे पसन्द करते हैं यह मैं नहीं लेता। तात्पर्य मैं यह लेता हूं कि आज इतना असन्तोष है कि उसके लिए यह हिंसा स्वाभाविक है। यह उचित है योग्य है ऐसा अर्थ मैं नहीं करता। स्वाभाविक है, नेचरल है। मुझसे अगर पूछा जायेगा तो मैं भी कहूंगा कि यह स्वाभाविक है। आप मुझ पर गुस्सा करते हैं तो मैं आप पर गुस्सा करूं यह स्वाभाविक है। आप मुझे पीटने आते हैं तो मैं आपको पीटूं यह स्वाभाविक है। परन्तु आप मुझे पीटने आ जायें फिर भी मैं आपको न पीटूं यह उत्तम है।

आज की हालत में तरुण लोगों का हिंसा पर उतारू होना स्वाभाविक है। जे० पी० का यही कहना है। उचित है या योग्य है ऐसा मैं उनके कहने का अर्थ नहीं लेता। उनसे मेरी बातचीत नहीं हुई है। इन दिनों बहुत दिनों से उनसे मेरा मिलना नहीं हुआ है। लेकिन जिस तरह मैं उनको समझता हूं उसका अर्थ मैं ऐसा लेता हूं।

प्रश्न : हमारे लिए व्यक्तिगत रूप से क्या निर्देश है?

उत्तर दिमाग न खोयें। खासकर जो लोग सत्ता में हैं, जिन पर ज्यादा जिम्मेदारी है वे शांति या समत्व न खोयें। जिम्मेदारी बहुत ज्यादा है, इसलिए समत्व खोते हैं तो गलत निर्णय हो सकते हैं। इसलिए मैं कहता [illegible] कि जिसे 'क्षोभ' कहते हैं वह आउटडेटेड है। आपने देखा होगा खासकर युद्ध के समय हवाई जहाज से जो बम डालते हैं, बेलेस्टिक वेपन्स डालते हैं, उन्हें शांत दिमाग से काम करना पड़ता है। युधिष्ठिर की शांति से उन्हें काम करना होता है। इसके उल्टे अगर कोई मुझे मारने के लिए आयेगा तो क्रोध भरा उसका चेहरा भयंकर दीखेगा। क्षुब्ध रूप दीखेगा। परन्तु आज जो सेना में काम करते हैं उनको शान्ति से काम करना होता है। हिंसा में भी क्षोभ चलता नहीं तो अहिंसा में तो क्षोभ चलना ही नहीं चाहिए। इस वास्ते राज्यकर्ताओं को किसी भी हालत में मानसिक क्षोभ होने नहीं देना चाहिए। क्या उपाय किया जाये? गीता पढ़नी चाहिए। गीता में आया है, "समत्व योग उच्यते"। (समत्व ही योग है) सामने वाला जितना क्षुब्ध होगा उतना हमें शांत रहना चाहिए। ●

सभी दल हिंसा का निषेध करें

सर्व सेवा संघ के कार्यालय मन्त्री सत्यव्रत प्रबन्ध समिति के कागजात विनोबा को देने गये। कागजात पढ़ने के बाद विनोबा ने कहा

"हिन्दुस्तान में आज की हालत में अनेक प्रकार के असन्तोष हैं, समस्याएं हैं, लेकिन किसी भी कारण से और किसी भी परिस्थिति में हिंसा का आश्रय न लिया जाये, हिंसा को उत्तेजन न दिया जाये। हिंसा की जो घटनाएं हो रही हैं वे देश के लिए नुकसान दायी है। देशहित को सामने रखकर, सभी राजनैतिक दल हिंसा का निषेध करें और देश में शांति और अहिंसा का वातावरण बनाने का काम करें।

हिंसात्मक आंदोलन तो करने ही नहीं चाहिए। और जब तक पाकिस्तान, भारत, बंगलादेश में पूर्ण सामंजस्य नहीं होता है तब तक सरकार के खिलाफ अहिंसात्मक आंदोलन भी नहीं करना चाहिए। नहीं तो देश के लिए खतरा है। रचनात्मक काम के द्वारा देश की गरीबी आदि के बारे में बहुत कुछ हो सकता है।

देश की समस्याओं के बारे में आप सोचते ही हैं, सोचें। इतना बड़ा देश है। हमने चार सूत्र दिये हैं (१) पंचशक्तियों का सहयोग (२) ग्रामस्वराज्य (३) उपवासदान (४) सर्वसम्मति से जो भी निर्णय करें, मान्य। सर्वसम्मत निर्णय में केवल बीस-पच्चीस लोग ही नहीं, सारे भारत के जो तीन सौ साथी हैं, वे सब मिलकर जो सर्वसम्मति से निर्णय करें, वह मान्य है।

एक 'विदेशी एजेण्ट' का आत्म वक्तव्य

किशोर शाह

मेरे पिताजी सन् १६२६ के आस-पास रोजी-रोटी कमाने के सिलसिले में गुजरात से केनिया गये। वहा उनके एक चाचा दुकान चला रहे थे, उसी में मदद करने लगे और धीरे-धीरे अपना व्यापार प्रारम्भ किया। हम चार भाई और दो बहनें हैं। सब भाई-बहनो का जन्म केनिया मे थीका नाम के छोटे से कस्बे मे हुआ। १६५२ तक पिताजी के दूसरे भाई भी आ गये थे जिससे व्यापार बहुत अच्छा चलने लगा। १६६३ मे केनिया को स्वतंत्रता मिली और अब भारतीय व्यापारियो के लिए आगे का भविष्य उज्ज्वल नही दीख रहा था। इस परिस्थिति में पिताजी और बड़े भाइयो ने भारत में आकर बसने का निर्णय किया। अप्रैल ६८ में बड़ी भाभी और उनके बच्चे के साथ में भारत आया और इन्दौर में बस गया। इन्दौर में कुछ रिश्तेदार आकर व्यापार करने लगे थे और अनाज का एक अच्छा केन्द्र होने के नाते इन्दौर को चुना था। बड़े भाई नवम्बर ६८ में भारत आये और नवम्बर '६६ में पिताजी एक साल के लिए आये थे और व्यापार जमाकर चले गये। पिताजी वापस केनिया लौटकर और वहां पर अपना कारोबार समेट कर फरवरी—मार्च '७३ में पूरे परिवार के साथ इन्दौर आ गये।

मैंने '६२ तक नैरोबी में अध्ययन किया। '६२ में सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा में बहुत ही अच्छा रिजल्ट आया। इस रिजल्ट के आधार पर और दूसरी परीक्षाएं, इण्टरव्यू आदि के आधार पर मुझे अमेरिका के एक छात्रवृत्ति कार्यक्रम के लिए कई दूसरे विद्यार्थियों के साथ चुना गया और मैं कौरनल विश्वविद्यालय में पढ़ने को '६३ में अमेरिका गया और जून '६७ में अर्थशास्त्र में ऑनर्स के साथ उपाधि हासिल की। ग्रेजुएशन के बाद छ महीने के एक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें से आखिरी तीन महीने राष्ट्रसंघ के सचिवालय में रहा।

अमेरिका में पढ़ाई के दौरान वियतनाम युद्ध विरोधी आन्दोलन और काले लोगो के आन्दोलनो में सक्रिय भाग लिया। आन्दोलन के अनुभवो, अमेरिकी समाज के अनुभव, कॉलेज और उसके बाहर के अध्ययन और अन्त में राष्ट्रसंघ की कार्य पद्धति के अध्ययन और अनुभव से यह पक्का विश्वास हो गया कि इस तंत्र में रहकर समाज की मुक्ति और भलाई के लिए मैं कुछ नही कर पाऊंगा और न मुझे व्यक्तिगत जीवन में कोई समाधान होगा। यह धारणा मजबूत होने लगी थी कि गांव में काम करना चाहिए। अफ्रीका में काम करना कि भारत में, यह प्रश्न बराबर बना रहा। भारतीय संस्कृति जिसके साथ मेरे संस्कार जुड़े हुए थे, उसकी आध्यात्मिक परम्परा और गांधी जी ने मुझे आकर्षित किया। पिताजी का भारत में बसने का निर्णय आखिर मुझे भारत को अपनी कर्म-भूमि बनाने के लिए खींच लाया। अप्रैल '६८ मे भारत आया। पांडीचेरी का आकर्षण था। →

सहरसा में पूर्ण सफलता

धीरेन दा

धीरेन भाई द्वारा अपनी लोकयात्रा के राघोपुर (सहरसा) पड़ाव से प्रसारित किया गया वक्तव्य।

इस बार सहरसा मे जो अभियान चल रहा है, उसे विनोबाजी ने सहरसा के लिए आखिरी अभियान कहा है। तीन साल पहले सहरसा को 'राष्ट्रीय मोर्चे' के रूप में चुना गया था। तब से आज तक हम कुछ साथी जनता के बीच मे ग्रामस्वराज्य के मूल विचार की सफाई करते रहे हैं। हर साल देश भर के हमारे चुने हुए कार्यकर्ता भी काफी तादाद मे यहां आये उन्होंने अभियान चलाकर जनमानस को आलोडित किया।

लोग पूछेंगे कि सहरसा मे क्या मिला और क्या हुआ? जो लोग ऐसा पूछते हैं, या कुछ देखना चाहते हैं, उनको कहने के लिए या दिखाने के लिए ऐसा कुछ नहीं हुआ। इस प्रकार की बुनियादी क्रांति, जिसे हम सम्पूर्ण क्रांति कहते हैं और जिसके परिणाम से सम्पूर्ण नयी संस्कृति के आविर्भाव की अपेक्षा रखते हैं, वह इस तरह थोड़े समय मे सिद्ध नही हो सकती है। लेकिन जो हुआ है, और जितना हुआ है, उसे पूर्ण सफलता की संज्ञा दी जा सकती है। लोकमानस में ग्रामस्वराज्य क्या चीज है, इसका स्पष्ट परिचय हुआ है। इस जिले मे कम से कम सचेतन जनता ने इतना समझा है कि ग्रामस्वराज्य का अर्थ क्या है, और उनमे काफी तादाद ऐसे लोग की भी है, जिनमे यह एहसास हो रहा है कि देश की वर्तमान संकटकालीन समस्या का एकमात्र समाधान ग्रामस्वराज्य-मूलक आर्थिक तथा राजनैतिक ढांचे के निर्माण से ही हो सकता है। जनता मे ऐसे भी कुछ व्यक्ति निकल आये हैं जो इस काम मे सक्रिय भाग ले रहे हैं, इतना ही नही, बल्कि धीरे-धीरे उनमे जिम्मेवारी उठाने का मानस बन रहा है। अर्थात् इस क्षेत्र मे क्रांति का बीज बोया जा चुका है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बीज के अंकुरण के लिए उस क्षेत्र को छोड़ दिया जाय ताकि स्वाभाविक नियम के अनुसार वह अंकुरित हो और आगे बढ़े।

कोई भी किसान बीज बोने के बाद भी जुताई और हेंगारी जारी नहीं रखता है। अब विनोबाजी ने देखा कि बीज की बोआई अब समाप्त हो चुकी है, और आवश्यकता यह है कि इस खेत में जुताई और हेंगाई का काम बंद किया जाय तो एक कुशल नेता के नाते उन्होंने स्पष्ट रूप से यह संकेत किया है कि सहरसा मे अभियान-मूलक कार्यक्रम बन्द किया जाये और वहां की सफलता का अनुभव लेकर हम लोग अखिल भारत तथा अपनी शक्ति भर अखिल विश्व भर मे फैल जाय। क्योंकि अब विश्वास हो रहा है कि जमीन के नीचे से क्रांति का अंकुरण उसी तरह से हो ही जायेगा जैसे हर फसल के उगाने में एक निश्चित समय लगता है। इस क्रांति की उगाई में भी उतना समय लगेगा, और किसान जिस विश्वास के साथ इन्तजार करता है, उसी विश्वास के साथ क्रांतिकारी के लिए प्रतीक्षा की आवश्यकता है।

गिरफ्तारियाँ क्यों हुई?

२१ मार्च को सन्तोष, प्रशांत सहरसा से लौट कर यहाँ आये और जे० पी० की अपील पर सुगबुगाते तरुणों की जमात को सक्रिय करने में लग गये। चूंकि इनके काम की बुनियाद शुरू से अलग रही है अतः पटने के आंदोलन में शामिल होने की तैयारी न कर ये लोग मुहल्ला समितियां बनाने में लगे जिनके माध्यम से सर्वप्रथम महंगाई की दिशा में कदम उठाने की बात सोची। मुहल्ला समितियों के अलावा व्यापारियों, अधिकारियों और तरुणों की एक मिली जुली जमात नगर स्तर पर शांति व्यवस्था के लिए तैयार हुई। वे लोग थोक व्यापारियों के यहां जा कर स्टॉक चेकिंग और काले बाजार में बिकते माल को खुले में लाने की कोशिश में लगे। उनके प्रयत्नों से कुछ राशन का सामान, चीनी और बेबी फूड बाजार में सही दाम पर आया और होली के अवसर पर डालडा ८-७५ के भाव पर पूरे शहर को उपलब्ध हुआ। अब तक व्यापारी डर और खीझ से तथा अधिकारी मजबूरी से इनके साथ थे कि मामला होली के पकवानों तक ही सीमित रहेगा। लड़कों को अधिकारियों को राशन की दुकानों से मिलने वाले 'हिस्से' की भी खबर थी। अतः जब होली के बाद भी अपना महगाई उन्मूलन आंदोलन मुहल्ला समितियों के माध्यम से इन लोगों ने जारी रखा तो व्यापारी, अधिकारियों का माथा ठनका। छात्र युवा मंच ने १६ मार्च की बैठक में सभी वस्तुओं का उचित मूल्य तय कर उसे अधिकारियों व्यापारियों के सामने रखा और उस को ज्यादा कम करने पर विचार करने को कहा, व्यापारियों के समय मांगा। समय देते हुए इन सबों ने कहा 'यदि निश्चित-अवधि के बाद भी आप मूल्य निर्धारण में आना-कानी करते रहे तो हम अपना बाजार भाव जनता को सुना देंगे। १७ की शाम बैठक का निश्चय हुआ। इस दिन कोई नहीं पहुंचा। जिलाधीश ने इन लोगों को बुला कर अपने समय न होने की बात कही और १६ या २० को अपने चैम्बर में बैठक होने की सूचना दी। ये लोग लौट आये और 'अब हम नागरिकों से क्या कहें' इस पर विचार करने लगे। इसी समय 'जिलाधीश अपने यहाँ व्यापारियों की बैठक कर रहे हैं' इसकी सूचना मिली। अब इन लोगों ने तय किया कि १९ को एक आम सभा बुलाकर सारी स्थिति नागरिकों से कह दी जाये। फिर वे जो करें। मुहल्ला समितियों के माध्यम से और माईक से प्रचार शुरू हुआ। १९ की सुबह डी० एम० ने इन लोगों को बुला कर पूछा कि 'आप सभा करने को कटिबद्ध हैं?' 'पटने के आन्दोलन से हमारा कोई संबंध नहीं अतः हम सभा करेंगे। हां उपद्रव नहीं होगा।' जिलाधीश इनके कड़े रख से पहले ही परेशान थे, व्यापारी भी क्रुद्ध और डरा हुआ। अच्छा मौका जान भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत प्रशान्त, सन्तोष, कन्हैया शरण गिरफ्तार किये गये। शाम की सभा में सुरेश शर्मा नाम का एक लड़का गिरफ्तार हुआ उसे तो पीटा भी। परसों रात हमारे घर छापा मार कर किशोर शाह को गिरफ्तार किया और कल १० बजे दिन में गांधी शांति प्रतिष्ठान के प्रमुख सचिव हलधर जी को। हलधर जी को भी पीटा गया है ऐसी खबर है।

वन्दना भारतीय के २३ मार्च के पत्र से

लेकिन बड़े भाई के आने तक इन्दौर में रहने का पिताजी का आग्रह मानना पड़ा। और नम्बर '६८ तक इन्दौर में ही रहा। इसी बीच सर्वोदय विचार और कार्यकर्ताओं से सम्पर्क हुआ और लगा कि मेरे विचार और वृत्ति के साथ इस समाज का ठीक मेल बैठता है। धीरे-धीरे सर्वोदय विचार और आन्दोलन के साथ सम्पर्क बढ़ता गया और '७० में इन्दौर के विसर्जन आश्रम में रहने के लिए चला गया। '७० में ही विनोबा ने सहरसा को सर्वोदय आन्दोलन का राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की दिशा में संकेत किया और उसी सिलसिले में दो महीने के लिए सहरसा आया। यहां के काम का महत्व देखकर यहीं पर कुछ साल के लिए अपना कार्य-क्षेत्र बनाने का तय किया। बीच-बीच में साथियों के आग्रह से देश भर में तरुण शान्ति सेना के काम में भी मदद करता रहा। एक साथी के साथ होली बिताने के लिए और साथियों से मिलकर आगे का कार्यक्रम तय करने के लिए मुजफ्फरपुर आया। इस समय मुजफ्फरपुर में मूल्य निर्धारण का काम युवकों, अधिकारियों और व्यापारियों के आपसी सहयोग से चल रहा था और मुहल्ला समितियों के माध्यम से इस को और व्यापक बनाने की कोशिश भी चल रही थी। मैं सहरसा में ग्रामस्वराज्य का काम कर रहा था। अभी का काम शहर के लिए एक अच्छे नमूने का प्रारम्भ है, ऐसा मुझे यहां दीखा और यहां रुककर मदद करने का सोचा। जब देखा कि मुजफ्फरपुर में ७ दिन से अधिक और सहरसा के बाहर १४ दिन से अधिक हो जायेगा, तब नियमानुसार दो जगह के एस० पी० आफिस में, सहरसा में रजिस्टर्ड पत्र के माध्यम से और मुजफ्फरपुर में व्यक्तिगत रूप से मिल कर सूचना दे दी।

यहां पर एक जिक्र करना आवश्यक समझता हूं कि सहरसा के एस० पी० के विदेश विभाग में जो कर्मचारी हैं, उनको कानून की पूरी जानकारी नहीं है और कभी उनकी तरफ से समुचित व्यवहार नहीं मिलता है। जून '७२ में यहां रहने का परमिट बढ़ाने के लिए दरख्वास्त दी जिसका अब तक कोई जवाब नहीं मिला है। इस सिलसिले में एस० पी० से बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्र के साथ मिला। लेकिन कोई समाधान कारक हल नहीं निकला रहने की इजाजत जो मेरे पास रहनी चाहिए वह भी सम्बन्धित कर्मचारी ने अपने पास रख ली। अपनी तरफ से मैं विभाग को सब सूचना देता रहा—व्यक्तिगत रूप से, पत्र ले जाकर, तार से रजिस्टर्ड पत्र से—जब जैसे सभव हुआ। '७३ में भारतीय नागरिकता प्राप्त करने का प्रयास भी किया, लेकिन सहरसा के जिलाधीश कार्यालय में आवेदन पत्र का फार्म तक प्राप्त नहीं हुआ। यहां की अक्षमता देख कर नागरिकता प्राप्त करने का काम, मौका मिलने पर, इन्दौर से करवाने का सोचा था।

यह मेरा संक्षिप्त इतिहास है। सर्वोदय के वयोवृद्ध नेता धीरेन्द्र मजूमदार का एक वाक्य बार-बार बल देता रहा है कि 'किशोर तो भारत की मिट्टी में मिल गया है।' कानूनन तो यहां का नागरिक नहीं बन पाया हू, लेकिन मन से मैं अपने को भारत का ही मानता हूं। जिन लोगों के बीच और जिन साथियों के साथ काम करता हूं, वे इसका सबूत देंगे। ●

उत्तर प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन पर

लोकसेवकों को संयोजक की रिपोर्ट

सुन्दरलाल बहुगुणा

१७ फरवरी' ७३ को पाचली खुर्द के प्रदेशीय सर्वोदय सम्मेलन की समाप्ति पर प्रदेश के लोकसेवक साथियो के प्रदेश सर्वोदय मण्डल का अध्यक्ष बनने के आग्रह को मैं कई कारणो से स्वीकार करने मे असमर्थ था। उनमे से सबसे बडा कारण तो संगठन संबंधी मेरी मान्यताओ का था, जिनके बारे मे पिछले दो दिनो से चर्चा हो चुकी थी। जिस प्रकार की विकेन्द्रित समाज रचना पर हम विश्वास करते हैं, उस के अनुरूप संगठन बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्थान लोकसेवक का और प्राथमिक व जिला सर्वोदय मण्डल का है। परन्तु वास्तविकता दूसरी ही है। हम देश र प्रदेश के संगठन को महत्व देते हैं। उसी । चलाने और उसके द्वारा चालित होने के ए अपने मे से किसी साथी को अध्यक्ष बना र सम्मानित करते हैं। अनजाने ही नई ाति के लिए समर्पित लोग पुराने मूल्यो ा पोषण करने लग जाते हैं। इसलिए मैंने अध्यक्ष के बजाय मण्डल का संयोजक बनना स्वीकार किया, प्रदेश के चार क्षेत्रो—पूर्वी मध्य, पश्चिमी और उत्तराखंड के लिए चार क्षेत्रीय संयोजक समितियो की योजना बनाई गई, जिससे लोकसेवक वहा बैठकर अपने काम की योजना बना सके और प्रदेश सर्वोदय मण्डल के बजाय छोटी-छोटी इकाइयो मे काम करने की शुरूआत हो सके। हमारे सामने मोटे तौर पर तीन कार्यक्रम थे। (१) व्यापक विचार प्रचार के लिए प्रत्येक क्षेत्र मे कम से कम एक पदयात्रा, (२) स्त्री शक्ति जागरण के कार्य, और (३) प्रत्येक क्षेत्र मे ग्राम स्वराज्य का एक-एक सघन क्षेत्र बनाकर काम करने की योजना।

लोकसेवकों से सम्पर्क : इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए पाचली मे ही क्षेत्रीय सम्मेलनों की योजनाएं बन चुकी थी, जो २२ मार्च ७३ को आजमगढ मे, ३१ मार्च ७३ को कानपुर में, ६ अप्रैल ७३ को कुरुक्षेत्र मे हुए। इन सम्मेलनो के माध्यम से १२८ लोकसेवकों से व्यक्तिगत सम्पर्क कर सका और उन्होंने अगले एक वर्ष के कार्य की अपनी योजनायें भी मेरे रजिस्टर पर दर्ज कर दी। ये अधिवेशन दोनो के—मेरे और उनके…लिए बहुत प्रेरणादायी थे, क्योंकि ये हमे एक दूसरे के कामों की जानकारी देने के लिए, स्वय कुछ करने की याद दिलाने वाले थे। 'सर्वोदय' मे प्रकाशित संयोजक की चिट्ठी के रूप मे, जो कुछ मुझे उपलब्ध हुआ उसे लोकसेवको तक पहुचाने का प्रयास करता रहा।

दूसरी ओर प्रदेश स्तर पर क्षेत्रों के काम के तालमेल के लिए प्रदेशीय संयोजक समिति की रचना की गई जिसमे क्षेत्रीय संयोजक समिति क्षेत्र मे सघन कार्य के लिए बैठने वाले मुख्य साथी के अतिरिक्त प्रदेश भूदान यज्ञ समिति, तरुण शान्ति सेना व चबल घाटी शान्ति मिशन के उपाध्यक्ष शामिल हुए। इस समिति की कुल मिलाकर चार बैठकें हुई, जिनमे से दो बैठकें तो सघ अधिवेशनो के अवसर पर कुरुक्षेत्र व सेवाग्राम मे हुई। इनमे अधिकाश लोकसेवक भी शामिल हुए।

सघन क्षेत्रों में क्षेत्रीय सम्मेलनों मे पूर्वी क्षेत्र में आजमगढ जिले के हरैय्या व मिर्जापुर जिले के लालगज विकास क्षेत्र को, मध्यक्षेत्र मे कानपुर जिले के अगनेर प्रखण्ड को सघन कार्य के लिए छाटा गया था। पूर्वी क्षेत्र मे आजमगढ मे तो यह कार्य शुरू नहीं हो सका, परन्तु मिर्जापुर जिले मे वनवासी सेवा आश्रम ने बभनी प्रखण्ड मे ग्राम सभाओ का गठन करके भूमिहीनता को मिटाने के अभियान मे सफलता प्राप्त की। मध्य क्षेत्र मे प्रदेश भूदान-यज्ञ समिति और जिला सर्वोदय मण्डल के सम्मिलित प्रयास से कनुवन मे शिविर और पदयात्रायें चलाई गई और इस क्षेत्र मे काम की बुनियाद बन रही है। अगनेर से कोई समाचार नही मिले, यद्यपि वहा पर पहले से चलने वाला सपर्क का काम जारी है।

स्त्री शक्ति जागरण देश भर मे महिला लोकयात्रा सप्ताह मनाने की पूर्व तैयारी के लिए गोरखपुर, कानपुर, आगरा और रामपुर (केदारनाथ) मे निर्मला देशपाण्डे के मार्गदर्शन मे महिला शिविर हुए। इन शिविरो में प्रत्येक जिले से भाग लेने वाली बहनो के अलावा कुछ बहनें एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्रो मे भी गईं। मध्य क्षेत्र मे कु॰ सरोज व डा॰ सन्तोष पोद्दार ने, पश्चिमी क्षेत्र में कु॰ कृष्णा बहन और पूर्वी क्षेत्र मे कु॰ मीरा मेहता व श्रीमती अनुराधा श्यामबहादुर ने यात्राए की। लखनऊ में प्रदेशीय महिला सम्मेलन हुआ। निर्मला बहन ने स्वय कई जिलों मे यात्रायें कीं। उत्तराखंड मे डॉ॰ इन्दु टिकेकर पहले से ही गाव-गाव मे श्रीमद्भागवत की कथाए कर स्त्री-शक्ति जागरण का कार्य कर रही थी। स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के दौरान इलाहाबाद, कानपुर, आगरा मुजफ्फरनगर, देहरादून और टिहरी मे विशेष उत्साह रहा। पवनार मे ८, ९, १० मार्च को हुए महिला सम्मेलन में प्रदेश से ६० बहनों [illegible] भाग लिया।

प्रदेशीय भूदान-यज्ञ समिति ने ग्रामदान बिल के मसविदे पर विचार किया और उसे अंतिम रूप देकर राजस्व विभाग को दिया है। प्रदेश के कई साथियो ने सहरसा के राष्ट्रीय मोर्चे पर पिछले वर्ष व इस वर्ष भी अभियानो मे भाग लिया। इस समय वहा पर १५ साथी कार्य कर रहे हैं।

बाबा की प्रेरणा से श्री सोहनलाल 'भूमित्र' जो उत्तर भारत की साम्ययोग यात्रा पर निकलने वाले थे, दक्षिण भारत की पदयात्रा कर रहे हैं।

देश के अन्य भागों मे . मैं केवल लोकसेवकों की सेवा मे उन कार्यक्रमो का ब्यौरा ही दे रहा हू, जिनमे मैं शामिल हुआ, यह प्रदेश के कार्य की रिपोर्ट नही मानी जानी चाहिए। फरवरी के अंत मे पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मैं उत्कल नवजीवन मण्डल के वार्षिक सम्मेलन मे शामिल होने गया। यह आदिवासी क्षेत्र वन प्रधान है और यहा के लोगो की वन समस्याए वही हैं जो उत्तर प्रदेश के वन प्रधान क्षेत्रों की हैं। उनके लिए वनो की सुरक्षा [illegible] लिए उत्तराखण्ड में होने वाली जनजागृति का सदेश विशेष प्रेरणादायी था।

उसके पश्चात सहरसा के राष्ट्रीय मोर्चे पर मार्च ७३ के प्रथम पक्ष में हुए अभियान में प्रदेश के अन्य साथियों के साथ भाग लिया। →

प्रप्रैल के अंत मे पवनार मे विनोबा जी के पास हुई गोष्ठी मे 'शनारगदे' का मत्र मिला। बाबा का यह सुझाव भी था कि उत्तर भारत मे सेवकों को दक्षिण भारत मे जाना चाहिए। उसके अनुसार अगस्त के अंतिम पखवाड़े मे तंजोर जिले के सघन कार्य क्षेत्र मे, जहा जगन्नाथन् जी और वहा के साथी केलवलमणि काण्ड के पश्चात् भूमिहीनो की समस्या का अहिंसक हल निकालने के लिए जूझ रहे हैं, घूमा। वहा के सेवको की निष्ठा, सादगी और कार्य पद्धति अत्यन्त प्रेरक है। सर्वोदय सेवको के अलावा मैं वहा पर पत्रकारो साहित्यकारो व राजनैतिक पक्ष के कार्यकर्ताओ से भी मिला। उत्तर भारत के जन-जीवन के बारे मे जितनी अधिक रुचि उन्हे थी, उससे भी अधिक लाभ वहा की जानकारी प्राप्त कर मुझे हुआ। इस वर्ष जगन्नाथन् जी के सुपुत्र भूमिकुमार उत्तराखण्ड की यात्रा पर आ रहे हैं।

देश के अन्य भागो की मेरी यात्रा कुरुक्षेत्र और सेवाग्राम मे सघ अधिवेशन के निमित्त हुई।

उत्तराखण्ड : मेरे सघन कार्य का क्षेत्र उत्तराखण्ड ही रहा है। प्रदेश के काम से सम्पर्क रखने के दायित्व के बावजूद भी मेरा अधिकाश समय उत्तराखण्ड मे ही बीता। वहाँ पर प्रारम्भ हुए 'चिपको' आन्दोलन को व्यापक बनाने के लिए चमोली व उत्तरकाशी जिले मे साथियो के साथ घूमा। गोपेश्वर की सफलता के पश्चात चिपको आन्दोलन केदारनाथ के क्षेत्र मे भी फैला। अप्रैल के अंत में राज्य सरकार द्वारा श्रीनगर (गढवाल) मे आयोजित पचवर्षीय योजना गोष्ठी मे 'सर्वोदय सेवको' के पहाड़ो के विकास सबधी विचारों को व्यापक समर्थन मिला और वे सर्वमान्य हुए। वन समस्या के सम्बन्ध मे एक शिष्टमंडल पौड़ी मे प्रधानमंत्री से भी मिला और बाद मे लखनऊ मे राष्ट्रपति शासन समाप्त होते ही मुख्यमत्री ने वन-समस्याओ पर विचार के लिए सर्वोदय सेवको को भी आमंत्रित किया।

उत्तराखण्ड सर्वोदय मण्डल ने २५ अक्तूबर को टिहरी मे स्वामी रामतीर्थ जी की समाधि से १०० दिवसीय सर्वोदय पदयात्रा निकाली। यह वेदांती संत स्वामी रामतीर्थ की शताब्दी का वर्ष भी था। वेदातिक समाजवाद का उद्घोष इस शताब्दी के प्रारम्भ मे उनके द्वारा 'सर्वोदय' विचार के उदय की पूर्व सूचना थी। मैंने इस पदयात्रा मे निरतर रहने का संकल्प किया, जिससे प्रदेश के अन्य क्षेत्रो के साथियो को भी इस दिशा मे सोचने का अवसर मिले और उत्तराखण्ड मे जिन कार्यों को पिछले कई वर्षों से हम करते आ रहे हैं उनकी बुनियाद मजबूत और व्यापक हो। इस यात्रा के दौरान जो १०० के बजाय १२१ दिनो तक आठ जिलो मे चली, ग्राम स्वराज्य की पृष्ठभूमि मे वन सुरक्षा, शराबबंदी और स्त्री शक्ति जागरण कार्य हुआ। एक ओर हजारो लोगो तक सर्वोदय विचार पहुचा और इसमे विशेष दिलचस्पी रखने वाले सैकड़ो लोग मिले। ६० लोगो ने यात्रा में भाग लिया जिनमे ६ बहनें थी। युवको ने इस यात्रा से प्रेरित होकर गर्मियो की छुट्टियो मे 'अस्कोट से अराकोट' तक के दूरस्थ क्षेत्रो की यात्रा करने और जन-जागरण करने का संकल्प लिया। हमारे आन्दोलन को व्यापक बनाये के लिए इस यात्रा से कई उपलब्धियां हुई। सपर्क मे आये लोगों तक निरन्तर विचार पहुचाने के लिए पत्रिकाओ के ग्राहक बनाये गये। यात्रा का शुभारभ और समापन स्वामी चिदानन्द महाराज ने किया था। उनके आश्रम के अन्य सन्यासी, साधक और भक्त सर्वोदय विचार के निकट आये और उन के द्वारा हमारे कार्यक्रमो के समर्थन से आन्दोलन के नये क्षितिज प्रकट हुए।

आश्रम : मेरा स्थायी निवास सिल्यारा आश्रम है, जहां मैं १८वर्षपूर्व अपनी सहधर्मिणी विमला के साथ ग्रामसेवा के लिए बैठा था। इस आश्रम को चलाने की हमारी सयुक्त जिम्मेदारी थी, परन्तु १४ वर्ष पूर्व बाबा के आवाहन पर मुझे बाहर के कामो मे अधिक समय देना पडा। वहा पर दफ्तर और खेती बाडी के अलावा आसपास के गावो के सामूहिक श्रमदान कार्यों मे भी १२ दिन का समय दिया। इनमें से ११ दिन का समय तो धान की रोपाई के समय सरकारी नहर के टूट जाने पर मरम्मत के काम में गये। सिंचाई विभाग स्वयं बहुत ढीलढाल कर रहा था और नहर बनने मे देरी के कारण सैकड़ों मन धान की क्षति होने का अंदेशा था, इस कार्य के दौरान ४ दिन का उपवास भी किया।

प्रदेश सर्वोदय मण्डल के कार्यालय का कार्यभार जुलाई के मध्य तक कृष्णचन्द्र सहाय ने तथा उसके पश्चात मास्टर सुन्दरलाल जी तथा तेजसिह भाई के मार्गदर्शन मे मेरठ के कृष्णकुमार खन्ना ने सभाला। उनके प्रति मैं आभार प्रकट करना चाहता हूं। पिछले कई वर्षों से मैं सर्वोदय मण्डल को अपना मासिक विवरण भेजता रहा। इन महीनो में सयोजक समिति के सदस्यो को भेजता रहा। इसके अलावा सर्वोदय प्रेस सर्विस इन्दौर के द्वारा कुछ लेखो का प्रसारण भी हुआ है,

मै यह ब्योरा और पिछले दिनो का हिसाब प्रदेश के सभी लोकसेवको के समक्ष पेश करना अपना कर्तव्य समझता हूं और यह निवेदन करता हू कि हमारे वार्षिक सम्मेलनो में अन्य बातो के अलावा हम अपने काम का लेखा-जोखा भी पेश करें, एक दूसरे के अनुभवो का लाभ उठायें और अहिंसक क्रान्ति की मशाल को आगे चलाने के लिए नया तेल प्राप्त करें।

१८ फरवरी '७३ से ३१ मार्च '७४ तक

	कुल दिन ४०७
सिल्यारा आश्रम	६८ दिन
उत्तराखण्ड	५० दिन
उत्तराखण्ड पदयात्रा	१२१ दिन
प्रदेश के अन्य भागो में	६५ दिन
देश के अन्य प्रान्तो में	६२ दिन

(तमिलनाड, उत्कल, बिहार)

जिले जिनसे सपर्क किया :

आगरा, आजमगढ़, इलाहाबाद, वाराणासी, जौनपुर, मिर्जापुर, भासी, कानपुर, लखनऊ, मेरठ, देहरादून, टिहरी, उत्तरकाशी, गढ़वाल, चमोली, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा नैनीताल, बरेली, गोरखपुर।

उत्तराखण्ड पदयात्रा के अलावा

पत्रिकाओ के ग्राहक ३४, साहित्य बिक्री ६६ रु० ३५ पै०

सघन क्षेत्र गोविन्दपुर से

पदयात्रा : भय मुक्ति के लिए

दिनकर चौधरी

तीन साल पहले दिनकर चौधरी ने निर्णय किया था कि बी० कॉम० के बाद आगे ...ा से विदाई लेकर तरुण शान्ति सेना का काम करना है। तब से लेकर आज तक तेईस ...दिनकर एक-निष्ठा से तरुण शांति सेना और सर्वोदय के काम में लगा है। पिछले चार ...में गोविन्दपुर क्षेत्र में ग्रामस्वराज्य के सघन काम में, खासकर ग्रामीण युवकों को सक्रिय ...र दिनकर जुटा है और सुदूर देहातों में बैठकर बिलकुल जमीन का काम भी कर ...।

...वनवासी सेवा आश्रम १९६८ में ...पुर जिले के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के गावों ...स्वराज्य का सघन काम कर रहा है। ...के आठ ग्रामनिर्माण केन्द्रों के माध्यम ...रा १०० गांवों में काम चल रहा है। ...निर्माण, जमीन समतल करना, उन्नत ...के लिए सुधरे खाद एवं बीज देना आदि ...कार्य के साथ समाज परिवर्तन की ...का काम चल रहा है, उसमें गांव का ...अनाचार एवम् अन्याय, शोषण के ...र गांवों में लोकशक्ति जागृति करने ...यत्न चल रहा है। आज कई गांवों में ...री तथा अन्याय के मसले लोकशक्ति के ...म से निपटाये गये हैं।

...लोकशक्ति खड़ी करने के लिए नौज-...का संगठन 'शांतिवाहिनी' के नाम से ...करने का सोचा गया (इस क्षेत्र में 'ग्राम ...सेना' का पर्यायी नाम शान्तिवाहिनी ...था)। यह ग्रामीण युवकों का संगठन ...इस शान्तिवाहिनी के द्वारा ग्रामस्वराज्य ...सक्रिय होगी। व्यापक विचार-प्रचार ...हेतु ग्राम-प्रमुखों का एक शिविर बकु-...लिया पर दिसम्बर, १९७३ में किया ...इसमें आंदोलन के लिए एक व्यापक ...योजना बन गई।

मुक्ति पदयात्रा का आयोजन क्षेत्र में ...न्याय और शोषण का एक महत्वपूर्ण कारण ...है कि लोगों में काफी भय है। यदि हम ...उन्हें भयमुक्त करते हैं, तो उनका शोषण ...एवं अन्याय बन्द हो सकता है और दीनता ...और लाचारी से ऊपर उठ सकते हैं।

...इस दृष्टि से 'सर्वोदय पक्ष' में (३० ...जनवरी गांधी निर्वाण दिन से १२ फरवरी, ...विनोबा के जन्मदिन तक) मुक्ति पदयात्रा का आयोजन ...किया गया, जिसका उद्देश्य था :

लोगों को भयमुक्त करना (इसलिए इस पदयात्रा का नाम 'मुक्ति पदयात्रा' रखा गया था।) गांव-गांव में शांतिदल का संगठन करना चुनाव के सन्दर्भ में मतदाता शिक्षण करना और ग्रामस्वराज्य का विचार-प्रचार।

ग्रामस्वराज्य के सातों केन्द्रों से (फरीपान बकुलिया, बभनी, गोविन्दपुर, पिपरहर, बिछियारी, कोटा) मुक्ति पदयात्रा एक ही साथ चली। जिसमें १७७ गांवोंसे सम्पर्क किया गया। ६८८ शांति दूत बने। 'शान्तिवाहिनी' का संगठन बनाने में लोगों का काफी उत्साह रहा। बिछियारी केन्द्र में तो एक गांव से दूसरे गांव जाते समय मुक्ति पदयात्रा में ४० लोग तक एक साथ रहे। हर जगह पदयात्रा के साथ में पोस्टर्स लेकर चलते रहे। जिन पर लिखा गया था 'जनता जागे, घूसखोर भागे, 'गल्ला खूब उगायेंगे, ग्रामकोष बनायेंगे, बांट-बाट कर खायेंगे।' 'गांव की धरती गांव का राज्य, गांव-गांव में ग्रामस्वराज्य' इत्यादि।

इसी समय उत्तर प्रदेश के विधान सभा का चुनाव प्रचार-धूम-धाम से चल रहा था। लोग चुनाव से तंग आये हुए दिखाई दे रहे थे। मुक्ति पदयात्रा से कुछ लोगों को यह गलतफहमी होती थी कि यह भी किसी पार्टी का चुनाव प्रचार ही है। लोगों की शंका दूर करने का भरसक प्रयास किया जाता था। उनको मुक्ति पदयात्रा का उद्देश्य स्पष्ट करके समझाया जाता था कि चुनाव शुद्ध हों एवम् लोग अपनी ओर से जनता का प्रतिनिधि खड़ा करने का प्रयास करें। इस मुक्ति पदयात्रा से नया वातावरण तैयार हुआ है।

क्षेत्रीय शिविर श्रमिका आश्रम के सभी केन्द्रों पर शान्तिवाहिनी के दो दिवसीय क्षेत्रीय शिविर १ मार्च से ११ मार्च के बीच लिये गये। सभी शिविरों में औसत उपस्थिति ७५ रही। इन क्षेत्रीय शिविरों में सभी शांतिदूत को निमन्त्रित किया गया था। कुल मिला कर ५०० शांतिदूतों ने इन प्राथमिक शिविरों में भाग लिया।

इन शिविरों का उद्देश्य था :

शान्तिवाहिनी की जानकारी देना शान्तिदूतों की अभिव्यक्ति हो, इस दृष्टि से शिविर में अवसर प्रदान करना और शांतिदूतों का प्रशिक्षण करना।

फरीपान, बभनी और बकुलिया इन केन्द्रों पर सुबह प्रभातफेरी भी निकली। शिविरार्थी अपने गले में केसरिया साफा और हाथ पर 'शांति दूत' का बिल्ला लगा कर जब चलते तो स्वयं शिविरार्थियों में एवम् जनता में उत्साह मालूम पड़ता था। सभी केन्द्रों पर १५ से २५ शिविरार्थियों ने गांव के संगठन के सम्बन्ध में, गांव की समस्या के बारे में तथा समस्या के हल के किस्से सुनाये, मुक्ति पदयात्रा के अनुभव कहे। लोग काफी अच्छे बोले और उससे पता चला कि समस्या का हल लोगों के पास है। केवल संगठन के अभाव से लोगों को अपनी शक्ति का एहसास नहीं है। इन शिविरों में खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि का भी आयोजन किया गया था। शांतिदूतों के कर्तव्यों के बारे में समझाया गया।

केन्द्रीय शिविर गोविन्दपुर. इस शिविर में केवल शांतिदल नायकों को निमन्त्रित किया गया था। यह केन्द्रीय शिविर गोविन्दपुर में १९ से २० मार्च तक सम्पन्न हुआ। श्रद्धेय जयप्रकाश नारायण इस शिविर में उपस्थित रहने वाले थे। लेकिन अस्वस्थता के कारण वे नहीं आ सके।

पूरे क्षेत्र में १०० गांवों में शांतिदल बने हैं। जिसमें से ९० गावों के शान्तिदल नायक उपस्थित रहे प्रतिनिधित्व की दृष्टि से शिविर काफी अच्छा रहा। इसके अलावा, इन छः दिनों के शिविर में पूरे समय उपस्थित रहना, और चर्चा करना यह ग्रामीण किसानों के लिए नया अनुभव था।

शिविर का उद्देश्य था :

(१) शांतिदल नायक गांवों में ग्राम-स्वराज्य के तथा अन्य कार्यक्रमों का सचालन कर सके, इस तरह का प्रशिक्षण देना।

(२) कानून का ज्ञान यहांके शोषण

(शेष पृष्ठ १४ पर)

चमोली जिले में चिपको आन्दोलन फिर शुरू

तिब्बत से जुड़े चमोली जिले (उ० प्र०) में एक बार फिर वनों की रक्षा के लोकगीत गूंजने लगे हैं, नगाड़े बजने लगे हैं। वनों की अन्धाधुंध कटाई को रोकने तथा वननीति को गांव और वनवासियों के करीब लाने के लिए पिछले साल मई में शुरू हुए 'चिपको' आंदोलन का यह तीसरा और सबसे चुनौती भरा चरण शुरू हुआ है। इस बार वनवासियों को रामपुर (केदारनाथ) के जंगल की तरह केवल १०-१२ पेड़ों को कटने से नहीं रोकना है, उनके सामने जोशीमठ तहसील का रेणीपेंग नामक पूरा जंगल खड़ा है।

रेणीपेंग जंगल को मार्च के पहले हफ्ते में देहरादून में हुई नीलामी में एक ठेकेदार ने ५ लाख रुपये में खरीदा था। रेणीपेंग जंगल के निवासी तथा 'चिपको' आंदोलन के लोगों ने इस नीलामी से पहले वनविभाग के लोगों को कई तरह से समझाया था कि रेणीपेंग जंगल की नीलामी छोटे-छोटे टुकड़ों में की जानी चाहिए। इससे एक तो गांव वाले भी अपनी सहकारी समितियां बना कर छोटे टुकड़ों की नीलामी में बोली लगा सकेंगे तथा दूसरे जंगल की कटाई धीरे-धीरे होगी, कटाई की रफ्तार कम होने और साथ ही साथ नये पेड़ लगाने की रफ्तार तेज करने से वनसम्पदा लगातार बढ़ती रहेगी।

अब रेणीपेंग के जंगल को, जिसमें देवदार, सुरई, रागा, थुनेर आदि के पेड़ हैं जोशीमठ, रेणी गांव व मलारी की महिलाएं घेरे खड़ी हैं। ठेकेदार वनविभाग के अधिकारियों और मजदूरों ने २६ मार्च को जंगल में प्रवेश कर पाया कि जिन पेड़ों को वे काटना चाहते थे, उन पर महिलाएं लिपटी हुई हैं। ठेकेदार आदि अपने औजारों समेत जंगल से नीचे उतर आये हैं।

आंदोलन को विकास क्षेत्र जोशीमठ के गांवों के सभी सभापतियों, अन्य स्थानीय लोगों के अलावा इस बार गोपेश्वर डिग्री कालेज के छात्रों का भी पूरा समर्थन मिला है। वनों की बेहिसाब कटाई और उसी से जुड़ी बाढ़ और जमीन खिसकने की दुर्घटनाओं से पीड़ित परिवारों के छात्र कालेज छोड़ कर रेणीपेंग जंगल में आ रहे हैं।

स्थानीय पुरुष १२ साल के अटके अपनी जमीन, जिस पर अब सेना का अधिकार हो गया है, के मुआवजे को लेने जिले के मुख्यालय गोपेश्वर चले गये हैं, उनके अभाव में गांव-गांव की महिलाओं ने आंदोलन संभाल लिया है। रेणीपेंग जंगल से चण्डीप्रसाद भट्ट लिखते हैं कि 'सीमांत क्षेत्र में स्त्री शक्ति जागरण का बहुत ही सुन्दर दृश्य मिल रहा है।'

○

छात्र और सरकार हिंसा को कोई प्रोत्साहन न दें

●मुजफ्फरपुर जिला सर्वोदय मंडल की एक आपात् बैठक बिहार में होने वाले आन्दोलन, विशेषकर मुजफ्फरपुर में घटित घटनाओं पर विचार करने के लिए २५ मई को ध्वजा प्रसाद साहु की अध्यक्षता में हुई, जिसमें निम्नलिखित प्रस्ताव पारित हुए :

(१) महंगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी एवं अन्य समस्याओं के निदान हेतु १८ मार्च से चल रहे आन्दोलन के सिलसिले में जो हिंसात्मक घटनायें हुई हैं उनकी यह सभा निन्दा करती है एवं इस क्रम में शहीदों छात्रों के लिए गहरा शोक व्यक्त करती है।

(२) आज की विषम राजनैतिक एवं आर्थिक परिस्थिति के कारण समाज में जो ऊब पैदा हुई है, उसके निदान का उत्तरदायित्व सबसे ज्यादा सरकार का है और उसे उसके लिए आगे बढ़ कर पहल करनी चाहिए तथा अन्य संगठन और व्यक्ति इस दिशा में जो शान्तिपूर्ण प्रयास करें, उसमें सरकार को योगदान देना चाहिए। ऐसा नहीं होने से हिंसात्मक घटनाओं को मौका मिलता है जिन्हें संगीन या कोरे विचार के बल पर रोका नहीं जा सकता। जनता के वर्तमान कष्ट दूर करने की दिशा में लोक शक्ति तथा अहिंसक तरीके के आधार पर स्थानीय तरुण शान्ति सेना एवं गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के तत्वावधान में पहल की गई तथा सरकारी पदाधिकारियों, जनता, व्यापारियों एवं छात्रों के प्रतिनिधियों को एक मंच पर लाकर समाधान ढूंढने के प्रयास में रत तरुण शान्ति सेना, गांधी शांति प्रतिष्ठान के कार्यकर्ताओं को तथा इस शान्तिपूर्ण आन्दोलन में लगे हुए अन्य निर्दोष छात्रों को जेल में डाल दिया गया। क्या इससे यह समझा जाय कि सरकार जनता के वर्तमान कष्टों को ज्यों का त्यों बने रहने देना या बढ़ाना चाहती है तथा उसकी मुनाफाखोर और जमाखोर व्यापारियों से सांठ-गांठ है? यह सभा उक्त निर्दोष कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी की भर्त्सना करती है। साथ ही कानून की मर्यादा का उलंघन करके, कानून के रक्षक समझे जाने वाले पुलिस, पदाधिकारियों द्वारा उक्त संगठनों के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करने के बाद पीटने के जघन्यकृत्य की यह सभा घोर निन्दा करती है और सरकार से अपेक्षा करती है कि वह निष्पक्ष जांच करके इस विषय में दोषी पदाधिकारियों को दंडित करे।

(३) उक्त परिस्थितियों में यह साफ है कि उपर्युक्त गिरफ्तारियां भ्रम या दुर्भावना के फलस्वरूप हुई हैं। अतएव तरुण शान्ति सैनिकों और गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के कार्यकर्ताओं तथा अन्य निर्दोष छात्रों को तत्काल रिहा किया जाय और इस प्रकार बेगुनाह व्यक्तियों को जेल में डालने की घटनाओं की उच्चस्तरीय जांच करके आवश्यक कार्रवाई की जाय।

(४) अंततः यह सभा छात्र एवं युवा समुदाय से अपील करती है कि किसी भी हालत में आन्दोलन में हिंसात्मक आगजनी एवं लूटपाट करने वाले तत्वों का समावेश नहीं होने दें तथा सरकार से भी आग्रह करती है कि ऐसी कोई उत्तेजना पूर्ण कार्रवाई न करे जिससे हिंसा को प्रोत्साहन मिले।

सर्वोदय सम्मेलन में बांगला प्रतिनिधि

● बाइसवां अखिल भारत सर्वोदय समाज सम्मेलन पूर्व निर्धारित तिथियों, ३१ मई से २ जून, १९७४ तक कलकत्ता में होगा इन तिथियों में किसी प्रकार का परिवर्तन प्रस्तावित नहीं है।

उक्त सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष क्षितीशराय चौधरी ने बांगला देश की यात्रा की और बांगला देश के प्रधानमंत्री मुजीबुर्रहमान से भेंट कर उन्हें सर्वोदय-समाज-सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण दिया। यदि परिस्थिति की अनुकूलता रही तो बंगबन्धु ने सम्मेलन में भाग लेने की इच्छा प्रकट की है। सम्मेलन में बड़ी संख्या में बांगला देश से प्रतिनिधियों के दल के भाग लेने की आशा है।

सम्मेलन को सफल बनाने के लिए आवश्यक साधन-सहायता जुटाने के सिलसिले में सम्मेलन के संगठन सचिव समरेन्द्रबसु ठाकुर तथा परमेश बसु २१ मार्च से उत्तरी बंगाल दार्जिलिंग, जलपाईगुड़ी, कूचबिहार, मालदा तथा पश्चिम दिनाजपुर जिलों का दौरा कर रहे हैं।

स्त्री शक्ति सम्मेलन का सप्त सूत्री कार्यक्रम

● ८ से १० मार्च तक पवनार में हुए स्त्री शक्ति सम्मेलन में निम्नलिखित सप्तसूत्री कार्यक्रम स्वीकृत किया गया है :

(१) स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह २ अक्टूबर से ८ अक्टूबर तक देश भर में मनाया जाये, हर ब्लाक में पदयात्रा आयोजन का प्रयत्न हो।

(२) नारी का अपमान करने वाले अशोभनीय पोस्टर्स, सिनेमा तथा इश्तिहारों के खिलाफ आंदोलन करने के लिए देशभर में एक दिन मनाया जाये। उस दिन इस तरह के पोस्टर्स को हटाने का कार्यक्रम किया जावे। इनके साथ-साथ समाज में संयम और ब्रह्मचर्य का वातावरण निर्माण करने का प्रयत्न किया जाय।

(३) सामूहिक सत्संग, स्वाध्याय शिविर तथा बच्चों को संस्कार देने के कार्यक्रमों का आयोजन स्थान-स्थान पर किया जाय।

(४) गांव-गांव में महिलाओं का मण्डल बनाया जाये, जो स्त्रियों पर होने वाले अन्याय और शोषण के विरोध में सक्रिय अहिंसक प्रतिकार करे। इसमें शराबखोरी, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह, बहुपत्नीत्व, पर्दा-प्रथा आदि के खिलाफ काम हो।

(५) भ्रष्टाचार, घूसखोरी को मिटाने के लिए बुनियादी सामाजिक परिवर्तन लाया जाये। इसमें स्वदेशी, खादी, भारतीयता का प्रचार, मितव्ययिता आदि सब आ जाते हैं।

(६) ज्यादा-से-ज्यादा उपवास-दान प्राप्त करने की कोशिश की जाये।

(७) स्त्री-शक्ति के कार्य को गति देने के लिए ब्रह्मविद्या-मंदिर को केन्द्र बनाकर, भारत-व्यापी संपर्क रखने की योजना बनायी जाये।

गोपद में ग्रामस्वराज्य पदयात्रा

● सीधी के संसद-सदस्य रणबहादुर सिंह के नेतृत्व में सीधी जिले की गोपद-तहसील के ८३ गांवों में १८ से २४ मार्च तक ग्रामस्वराज्य-पदयात्रा का आयोजन किया गया। इस में क्षेत्र के नागरिक, सर्वोदय सेवकों के अतिरिक्त सर्व-सेवा-संघ के सहमंत्री नरेन्द्र दुबे, मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल के मंत्री इन्द्रलाल मिश्र तथा ग्रामस्वराज सघन क्षेत्र, महू (इन्दौर) के संगठन सचिव धर्मपाल सैनी, मझौली जनपद के अध्यक्ष भूपेन्द्र बहादुरसिंह, पडवास के भूतपूर्व राजा कृष्णदेवसिंह, रीवां के समर बहादुरसिंह, मोतीसिंह तथा कल्याण चन्द्र त्रिपाठी ने भी भाग लिया। लगभग २५ ग्रामवासियों ने अपना समय देने का संकल्प किया।

रीवां सम्भाग में रचनात्मक प्रवृत्तियों के संगठन-संयोजन के लिए सभाग स्तर की एक रचनात्मक संस्था गठित करने का भी निर्णय लिया गया है। यह संस्था क्षेत्र में ग्रामस्वराज्य, खादी, आदिवासी-सेवा, कृषि-गोपालन तथा ऐसे ही अन्य सेवा-कार्य करेगी।

(पृष्ठ १३ का शेष)

और अन्याय का महत्वपूर्ण कारण है। इस लिए कानून की सामान्य जानकारी देने का प्रयास किया गया।

(३) 'शांतिवाहिनी' को सक्रिय एवम् सुगठित करने के लिए शांतिदल के नायकों को प्रशिक्षित करना।

शांतिवाहिनी का संगठन : शांतिवाहिनी की बुनियादी इकाई 'शांतिदूत' है। गांव के सब शांतिदूत मिलकर 'शांतिदल' बनता है। शांतिदल का 'नायक' रहेगा। एक क्षेत्र के (करीबन १५-२० गांव) सब शांतिदल नायक मिलाकर 'शांति समिति' बनती है। शांति समिति का प्रमुख 'संयोजक' कहलायेगा। सब शान्तिदूत मिलकर 'शांतिवाहिनी' बनेगी।

शांतिदल का साप्ताहिक मिलन होगा। जिसमें गांव की समस्या की चर्चा की जायेगी। खेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम उसमें जोड़े जायेंगे। गांव में बाहर से आनेवाले विघटनकारी तत्वों की डायरी रखी जायेगी।

इन विशेषताओं के अलावा शांतिवाहिनी ग्रामस्वराज्य सभा को सक्रिय बनाने के सभी कार्यक्रम करेगी। मसलन-ग्रामकोष, अदालत मुक्ति इत्यादि। अन्याय, शोषण, भ्रष्टाचार आदि समाज विरोधी तत्वों के खिलाफ एक पर्यायी लोकशक्ति खड़ी होगी।

समझदारी का फैसला

(पृष्ठ २ का शेष)

है कि वे अपनी खरीदी का आधा गेहूं सरकार को निश्चित भाव पर बेचे और बाकी का गेहूं खुले बाजार में बेचे। व्यापारी ज्यादा से ज्यादा किस भाव पर बेच सकते हैं यह अभी सरकार ने घोषित नहीं किया है। अनुमान है कि खुले बाजार में गेहूं ११० से ले कर १२० रु० क्विंटल तक बिकेगा। खुले बाजार में बिक्री का भाव सरकार शायद इसलिए घोषित नहीं कर रही है कि वह मण्डियों में गेहूं की आवक और व्यापारियों की खरीदी को देखना चाहती है।

अब जब कि सरकार ने अपनी मशीनरी को एक ऐसी जिम्मेदारी से मुक्त कर दिया है जिसे वह पूरी नहीं कर सकती थी इसलिए अपेक्षा करना चाहिए कि थोक व्यापारियों और सहकारी समितियों को लाइसेंस-परमिट देने और कीमतों पर नियंत्रण करने में वह क्षमता से काम लेगी। यह जरूरी है कि राशन की दुकान के भाव और खुले बाजार के भाव में ज्यादा अन्तर नहीं हो। यह प्रभावशाली नियंत्रण से ही संभव हो सकेगा। आशा है प्रधानमंत्री यह करवा सकेंगी।

प्रभाष जोशी

कम्पोस्ट तैयार करने में कोई पैसा नहीं लगता क्योंकि यह कूड़े-कचरे, सूखे पत्ते, छिलके, गोबर आदि से बनती है।

अच्छी कम्पोस्ट बनाने का तरीका जानने के लिए ग्राम सेवक से सलाह लीजिये।

(कम्पोस्ट डालिये, अधिक कमाइये)

davp 73/577

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५-डालर, एक प्रति का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाप जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार १५ अप्रैल, '७४

पटना में गांधी युग के अहिंसक [illegible] का वातावरण फिर देखा। विशेष लेख पृष्ठ

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २०   १५ अप्रैल, '७४   अंक २९

२९ राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

लौट तो रहे हैं सुबह के भूले

जयप्रकाश नारायण और इन्दिरा जी के बीच पिछले पखवाडे से जो दुखदायी सवाद चल निकला था उसकी समाप्ति के आशा-जनक आसार नजर आ रहे है। काग्रेस के 'प्रगतिशील' वीरो ने अपने को वफादार सिद्ध करने के लिए हवा मे पटा-बनेठी घुमा कर संघर्ष का वातावरण पैदा कर दिया था। पाच वर्ष की 'सियारी हुआ-हुआ' राजनीति से बन कर निकले ये 'वीर' साम्यवादी देशो के तौर-तरीके अपना कर 'असहमति' की आवाज को बदनाम करने पर तुले हुए थे। वे शायद समझ रहे थे कि काग्रेस के विघटन के बाद सिण्डीकेटी नेताओ को जिस तरह उन्होंने बदनाम करके समाप्त कर दिया था उसी तरह वे जयप्रकाश नारायण से भी 'निपट' लेंगे। शायद इसीलिए उन वीरो ने जे० पी० को पैसे वालो की कृपा पर जीने वाला फसिस्ट और प्रतिक्रियावादी शक्तियो का प्रवक्ता बताया था और आरोप लगाया था कि वे हिंसा और अराजकता फैला रहे हैं। जयप्रकाश नारायण की गतिविधियो और बयानो के खिलाफ जनता को आगाह करके ये 'प्रगतिशील' वीर समझ रहे थे कि अब लोग 'हुआ-हुआ' करने लगेंगे। निश्चित ही ये लोग गलतफहमी में थे और अपने अन्धे उत्साह मे एक ऐसे व्यक्ति से बदतमीजी के साथ भिड़ गये थे जिसने पचास वर्ष सार्वजनिक जीवन मे त्याग और तपस्या के बल पर लोगों का विश्वास कमाया है।

जनता की अदालत मे 'हुआ हुआ' का शोर नही चला और ईमानदार जनसेवा की विजय हुई। सोमवार आठ अप्रैल को पटना के लोगों ने जे० पी० के नेतृत्व मे निकले मौन जुलूस का जिस तरह समर्थन किया और दूसरे दिन लाखों लोगो ने तालियां बजाकर जिस तरह उन्हे 'लोकनायक' की उपाधि से फिर विभूषित किया उससे देश ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह झूठे नगाडो के बजाय पवित्र आक्रोश की हुकार सुनता है। कमजोर स्वास्थ्य के बावजूद जे० पी० ने जनता की अदालत मे अपने को पेश करके अपने जीवन को भले ही खतरे मे डाला हो पर उन सिद्धान्तो और मूल्यो को तो उन्होने निश्चित ही पुनर्जीवित कर दिया है जो उन्हे अपनी जान से भी प्यारे रहे हैं। बहत्तर वर्ष के संघर्ष से जर्जर हुए शरीर और देश की परिस्थिति तथा जीवनसगिनी के विछोह से दुखी हुए मन को यज्ञ की आहुति बना कर वे फिर उठ खडे हुए हैं तो देश के अन्धेरे क्षितिज पर आशा का उजाला फूटने लगा है।

काग्रेस के इक्कावन ससद सदस्यो, सरकार के बुजुर्ग मन्त्रियो और स्वय श्रीमती इन्दिरा गाधी ने उजाले की इस सम्भावना को पहचान कर निरर्थक सघर्ष को टालने के लिए जो पहल की है वह समझदारो का लक्षण है। सुबह के भूले-समझदारी तक पहुचने के लिए शाम तक नही भटके और दोपहर के पहले ही घर लौट आये। जैसा कि स्वय जे० पी० ने कहा है—इन्दिरा जी के प्रति मेरे मन मे विशेष वैयक्तिक सम्मान है क्योंकि वे हम सब के उस प्रिय व्यक्ति की लडकी है जिन्हे मैं अपना बडा भाई मानता था। मेरे निजी जीवन के बारे मे उनके द्वारा लगाये गये आरोपो का खण्डन करने के पहले सच पूछिये तो मैं काफी हिचका था। लेकिन मुझे ऐसा करना पडा क्यो कि इन आरोपो के कारण लोगो के मन मे पैदा हो सकने वाली गलतफहमियो को दूर करना जरूरी था।" काग्रेस पार्टी और उसकी सहयोगी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ने पिछले तीन महीनो से अभियान चला रखा था जिसका एकमात्र उद्देश्य जे० पी० से उनका वह नैतिक अधिकार छीनना था जिसके बल पर वे सार्वजनिक भ्रष्टाचार के खिलाफ जिहाद छेड़ रहे थे इस अभियान का मतलब था—हमारी दुम कटी है तो हम तुम्हारी भी दुम काटेंगे जे० पी० अगर चुप रह जाते और यह अभियान सफल हो जाता तो भ्रष्टाचार के खिलाफ उठने वाली कोई भी आवाज इस देश मे प्रामाणिक नही बचती। सार्वजनिक जीवन की शुद्धि के लिए तब कोई भी शांतिपूर्ण और अहिंसक आंदोलन नही चल पाता। जनता का आक्रोश दिनो दिन हिंसक विस्फोटो मे प्रकट होता, अराजकता फैलती और तानाशाही के लिए मार्ग प्रशस्त होता। नैतिक क्रांति के लिए आखिरी दम तक लड़ने की प्रतिज्ञा लेकर जे० पी० ने विद्यार्थियो का नेतृत्व करने की जो घोषणा की है उससे अहिंसक और प्रामाणिक जन नेतृत्व का सकट दूर होगा और लोगो मे विश्वास जमेगा कि उनकी तकलीफें किस तरह सचमुच दूर हो सकती है।

नैतिक क्रांति के लिए विद्यार्थियो पर अपनी समस्त आशाए केन्द्रित करते हुए भी जे० पी० ने उनके बारे मे साफ-साफ बातें कही है। आजादी के बाद युवा शक्ति जिस तरह के सकीर्ण उद्देश्यो की पूर्ति मे व्यर्थ जा रही थी उससे देश के भविष्य मे रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति का दुखी होना स्वाभाविक था। परीक्षाओ मे नकलपट्टी, अध्यापको को हटाने और सिनेमा के रियायती टिकट प्राप्त करने जैसी बातो को लेकर होने वाले छात्र उपद्रव न छात्रो के हित मे थे न देश के हित मे। इन उपद्रवो की दुखदायी परम्परा को तोड़ा गुजरात के विद्यार्थियो ने। देश मे पहली बार वहा के विद्यार्थी भ्रष्टाचार, महंगाई और अभाव के खिलाफ जनता की ओर से लडे और राजनीतिक पार्टियो से दूर रहे। गुजरात के विद्यार्थियो ने युवाशक्ति मे जे० पी० के विश्वास की पुष्टि की। लेकिन बिहार का विद्यार्थी आंदोलन, गुजरात जैसी नैतिक शक्ति नहीं रखता न वहा के अध्यापकों ने यह शक्ति दिखाई है। लेकिन अब चूकि जे० पी० उनका नेतृत्व करने को तैयार हो गये हैं तो आशा है कि विद्यार्थी और अध्यापक बदलेंगे।

—प्रभाष जोशी

पटना ने गांधी युग के अहिंसक प्रतिकार का वातावरण फिर देखा

मौन जलूस और ग्राम सभा का आंखों देखा हाल—श्रवण कुमार गर्ग

आठ और नौ अप्रैल को पटना में जो कुछ हुआ वह भारत के इतिहास में हमेशा-हमेशा के लिए अंकित हो गया। आजादी के पहले गांधी ऐसे व्यक्ति थे जिनके दर्शन के लिए लाखों लोग पलकें बिछाए घण्टों खड़े रहते थे। गांधी जब निकलते थे तो लोगों का बांध टूट जाता था। गांधी जब बोलते थे तो लाखों की सभा मौन हो जाती थी। गांधी एक गैर राजनीतिक लोक नेता थे। आठ और नौ अप्रैल को पटना में बिहार की जनता ने गांधी को फिर से जीवित कर दिया। किसी और गैर राजनीतिक जन नेता का आजादी के बाद इतना बड़ा सम्मान नहीं हुआ होगा जो जयप्रकाश जी का हुआ।

दिन आठ अप्रैल। समय पौने चार बजे। जयप्रकाश जी अस्वस्थ हैं पर उन्होंने जनता को वचन दिया है उसे पूरा करना है। 'लोगों को शांतिपूर्ण विरोध और कार्यवाही का अधिकार न देने की सरकार की वर्तमान नीति अगर जारी रही तो स्वस्थ होने के पहले ही शांति सैनिकों, विद्यार्थियों और सत्याग्रहियों के रूप में नाम लिखाने वाले नागरिकों का मौन जुलूस निकालने के लिए मैं अपने को बाध्य पाऊंगा। यह धमकी नहीं है, एक दोस्ताना चेतावनी है'—जे० पी० ने कहा था। डाक्टरों का कहना था कि किसी भी कीमत पर साठ मिनट से ज्यादा जुलूस में मत रहियेगा नहीं तो स्वास्थ्य पर खराब असर पड़ेगा। कदम कुआं स्थित महिला चर्खा समिति की पहली मंजिल से दो व्यक्तियों ने एक पालकी नुमा कुर्सी पर बैठाकर जे० पी० को नीचे उतारा। दाएं हाथ में छड़ी और बाएं हाथ से एक साथी का सहारा लेकर जे० पी० बिहार रिलिफ कमेटी की लैण्ड रोवर तक आये। सहारा देकर उन्हें बैठाया गया। चार बजते-बजते जे० पी० कदम कुआं स्थित कांग्रेस मैदान पर पहुंच गये। जे० पी० स्वयं आश्चर्य चकित थे। जुलूस में प्रतिज्ञा-पत्र भर कर भाग लेने वाले एक हजार लोगों के अतिरिक्त हजारों लोगों की अनुशासित भीड़ जमा थी। जैसे ही जे० पी० आये लोग उनके दर्शनों के लिए टूट पड़े। सैकड़ों मूव्ही और स्टील कैमरे क्लिक होने लगे। जैसे-तैसे जे० पी० को एक प्रतिमा के सामने खड़े एक हजार सत्याग्रहियों के सामने तक ले जाया जा सका। अनुग्रहनारायण बाबू के संरक्षण में जे० पी० ने अपने जीवन की शुरुआत की थी। अनुग्रह बाबू अब नहीं रहे जे० पी० के सब कुछ रहे। एक जीवन की शुरुआत जे० पी० ने अनुग्रह बाबू के जीवनकाल में की थी आज एक दूसरी शुरुआत भी उनकी प्रतिमा के सामने से ही जे० पी० करना चाहते थे। कुमार प्रशांत ने जे० पी० के गले में शांति सैनिक का केसरिया स्कार्फ बांधा। जे० पी० ने जुलूस में भाग लेने के लिए बनाये गये प्रतिज्ञा पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिये। धीरे-धीरे जुलूस रवाना हुआ।

जुलूस में सबसे आगे लैण्ड रोवर में अगली सीट पर जे० पी० बैठे और उनके बगल में उनका सेवक गुलाब अपने दादाजी की सार सम्भाल के लिए। पीछे जीसीटी पर वैद्यनाथ बाबू, ध्वजा बाबू और अन्य बुजुर्ग जो पैदल नहीं चल सकते थे पर जुलूस में भाग लेने पर उतारू थे। जे० पी० की मोटर के पीछे तरुणियां व महिलाएं। बारह साल से पैंसठ साल उमर तक। फिर तरुण व पुरुष। सबसे पीछे पुलिस का हुजूम (सुरक्षा के नाम पर)। जुलूस में भाग लेने वाले सभी लोगों के मुंह पर केसरिया पट्टियां। सभी के दोनों हाथ कमर के पीछे। बाजुओं पर शांति सैनिकों का बिल्ला। जिन लोगों ने हाथों में मांग पट्टियां उठा रखी, उनका भी एक हाथ पीछे। जुलूस पूरा मौन। एक भी नारा मुंह से नहीं। जो कुछ कहना है वह हाथों से उठाये गये प्ले कार्ड्स में लिखा हुआ है—हमारे हृदय क्षुब्ध हैं और जबान बन्द है, हमला चाहे जैसा हो, हाथ हमारा नहीं उठेगा, महंगी, बेकारी, भ्रष्टाचार, सत्ता ही है जिम्मेदार, लाठी, गोली, हिंसा, लूट—किसी को इनकी मिले न छूट।

आठ तारीख को ही पटना के नागरिकों के नाम जे० पी० ने एक अपील की थी जिसमें जुलूस के उद्देश्यों की घोषणा करते हुए असामाजिक तत्वों द्वारा तोड़-फोड़ करने की भी आशंका व्यक्त की थी। "जुलूस मौन इस लिए है कि यह जनता तथा शासन पर प्रकट करे कि यह आन्दोलन पूर्णतया शांतिमय है और हिंसावादियों, तोड़-फोड़, आगजनी आदि करने वालों से पृथक् है और इसमें सम्मिलित तत्व तथा संगठन ऐसे कार्यों की निन्दा करते हैं और जनता से मूक प्रार्थना करते हैं कि ऐसे आत्मघाती दुष्कृत्यों से दूर रहें और उनका शांतिमय मुकाबला करें। जुलूस में एक हजार से अधिक लोग नहीं होंगे और जो भी इसमें शरीक होंगे, वे सब शांतिमय संघर्ष और त्याग के लिए प्रतिज्ञाबद्ध होंगे। इसलिए पटना के नागरिकों से मेरी अपील है कि जुलूस में शरीक होने की कोशिश न करें। सड़कों के दोनों किनारे पर बिना यातायात में विघ्न डाले शांति से खड़े रहें और स्वयं कोई नारा न लगायें। सम्भव है कि इस आन्दोलन के विरोधी तत्व स्वयं या भाड़े के गुण्डों द्वारा मुझे और आन्दोलन को बदनाम और कमजोर करने के लिए जुलूस के समय अशान्ति पैदा करें। आपसे मेरी प्रार्थना है कि ऐसे मौके पर आप शान्त रहें, कहीं आग लगे तो उसको शांति से बुझाने और फैलने न देने का प्रयत्न

→

बड़बड़ाना बन्द करो जयप्रकाश ! तुम लोगों को गुमराह कर रहे हो । —टाइम्स ऑफ इण्डिया में लक्ष्मण

सरकारी नगाड़ेबाज़ और जयप्रकाश नारायण

जयप्रकाश नारायण के साफ बयानों और सीधी कार्यवाही के एलान के बाद सरकारी नगाड़ेबाजों के लिए चुप रहना मुश्किल हो गया है। पहले भुवनेश्वर में श्रीमती गांधी ने कहा कि स्वयं आचार्य विनोबा भावे अपने कुछ अनुयायियों के आंदोलनकारी रवैये से दुखी हैं। विनोबा जी के इस 'प्रधानमन्त्री कथित' दुख में उन्होंने अपना दुख भी जोड़ा कि—सर्वोदयी आजकल ग्रामसेवा का काम छोड़ कर राजनीति में कूद रहे हैं। इस साल सिर्फ दो बार विनोबाजी █ बातचीत करने के बाद प्रधानमन्त्री को समझ में आ गया कि खुद अपने और अपने जीवन भर के काम पर चुप कर हमने बाना यह आत्मघोषी मन्त्र आखिरकार क्यों इतना दुखी है। पवनार में विनोबा जी के दुख का समझ कर प्रधानमन्त्री ने भुवनेश्वर में उस पर आंसू बहाये। अब ये आंसू निश्चित ही प्रधानमन्त्री के थे और सर्वोदय आंदोलन का चरित्र 'भ्रष्ट' होने पर बहाये गये थे। देश की सर्वोच्च राजनीतिक नेत्री होने के कारण रचनात्मक शक्तियों के 'गुमराह-पतित' होने का सदमा उन्हें नहीं तो किसे लगेगा? भुवनेश्वर के सोतों और उनके जरिये सारे देश को प्रधानमन्त्री ने दो बातें बराबर आगाह किया। एक—सर्वोदय आंदोलन में फूट है और जयप्रकाश नारायण जो कुछ कर रहे हैं उसे विनोबाजी का समर्थन नहीं है. दो—जयप्रकाश नारायण अपने निर्वाह के लिए अमीरों से पैसा लेते हैं और उनके मेहमान घरों में ठहरते हैं इसलिए उन्हें भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने का अधिकार नहीं है।

लेकिन विनोबाजी और जयप्रकाश नारायण में आपस में कोई मतभेद न होने की घोषणा पवनार और पटना से एक साथ की और जे॰ पी॰ ने कहा कि प्रधानमन्त्री के मापदण्ड लागू किये जायें तो महात्मा गांधी सबसे भ्रष्ट व्यक्ति साबित होंगे। इस बात का सबसे ज्यादा दुख हुआ बिहार के वयोवृद्ध विभूति मिश्र को। वे चम्पारण में गांधी जी के साथ काम कर चुके हैं और अब बरसों से संसद सदस्य हैं। उन्हें लगा कि जयप्रकाश नारायण राष्ट्रपिता को बदनाम कर रहे हैं। मिश्र जी ने एक पत्र लिखा और जयप्रकाश नारायण के पास पहुंचाने के पहले ही उसे प्रेस को दे दिया। इस पत्र में उन्होंने कहा—जयप्रकाश तुमने गांधीजी पर भ्रष्टाचारी होने का आरोप लगाया है। जो लोग जानते हैं कि गांधीजी पवित्रता और त्याग की जीती-जागती मूर्ति थे, उनका सिर शर्म से झुक गया है कि राष्ट्रपिता के साथ काम करने का दावा करने वाले तुम्हारे जैसे व्यक्ति ने उन पर यह निर्लज्ज और आधारहीन आरोप लगाया। फिर मिश्र जी ने जे॰ पी॰ का आत्म-मर्थन करते हुए बताया कि गांधी जी कितनी सादगी से रहते थे और किस तरह साथी कार्यकर्ताओं के साथ तीसरे दर्जे में सफर करते थे। विपुलता में रहने और ऊंचे दर्जे में सफर करने वाले जयप्रकाश बाबू के तौर-तरीकों से अपनी तुलना कैसे कर सकते हैं? न्याय की मांग है कि राष्ट्रपिता पर ऐसे अधा-धुंध आरोप लगाने के पहले जयप्रकाश खुद अपना दिल टटोलें।

जे॰ पी॰ का बयान पढ़ने वाले लोगों को विभूति मिश्र की समझ पर फिजूल आश्चर्य हुआ। मिश्र जी इतने नासमझ नहीं हैं कि एक सीधी सी बात भी उनके दिमाग में नहीं आती। जे॰ पी॰ की बात को उन्होंने खूब सोच समझ कर तोड़ा-मरोड़ा है। सवाल गांधी जी का नहीं है श्रीमती इन्दिरा गांधी का है। श्रीमती गांधी ने कहा है कि जयप्रकाश नारायण को देश में व्याप्त व्यापक भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने का अधिकार नहीं है और जयप्रकाश ने कहा कि वे बोलेंगे और उसकी कीमत चुकाने को तैयार हैं। विभूति मिश्र ने यह पत्र लिख कर जे॰ पी॰ को बताया है कि उन्हें बोलने की क्या कीमत चुकानी पड़ेगी।

मिश्र जी के पत्र के बाद संसद के भी 'प्रगतिशील' कांग्रेस सदस्यों ने भी एक बयान दिया। जयप्रकाश नारायण ने श्रीमती गांधी के बारे में जो कहा वह उनकी राय में देश में पनप रही उन फासिस्ट शक्तियों को दिया गया आशीर्वाद है जो भ्रष्टाचार से लड़ने के नाम पर देश में हिंसा और अराजकता का वातावरण बना रही हैं। मिश्र जी की तरह इन संसद सदस्यों को भी खेद █ कि अपने आचार-

(शेष पृष्ठ १३ पर)

यथार्थ से साक्षात्कार

—अमरनाथ

मुजफ्फरपुर मे तरुण शांति सेना ने शांति स्थापन का काम किया या अशांति फैलाने का यह बताने की जरूरत मुजफ्फरपुर के नागरिकों को नहीं होनी चाहिए और न शायद वहा के प्रशासन को।

मैं २० मार्च को शांति सेना के प्रधान कार्यालय वाराणसी में था। बिहार की अशांत परिस्थिति में हमें क्या करना चाहिए इस पर वहा के साथियो से विचार-विमर्श करने के बाद मैंने बिहार आने का तय किया ताकि परिस्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन कर सकूं। चूंकि पटना के लिए यातायात बंद था इसलिए मुजफ्फरपुर के लिए निकल पड़ा।

२१ मार्च को मैं सुबह मुजफ्फरपुर पहुंचा। सीधा गांधी शांति प्रतिष्ठान गया जहा स्थानीय और प्रांतीय तरुण शांति सेना का भी कार्यालय है। वहां पहुंचते ही मुझे गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र के मन्त्री हलधरजी ने बताया कि 'प्रमुख तरुण शांति सैनिकों तथा गांधी शांति प्रतिष्ठान के उपाध्यक्ष कन्हैयाशरण जी को गिरफ्तार कर लिया गया है। और मेरी तलाश जारी है। रात मे मेरे घर का ताला तोडकर भी पुलिस ने मेरी खोज की लेकिन मैं तब घर मे नहीं था। इस वक्त यहा कार्यालय का काम कर रहा हूं। शायद किसी भी वक्त गिरफ्तार कर लिया जाऊं'।

शांति स्थापना का कार्य करने वालो को सरकार ने जेल में डालकर कोई बुद्धिमानी का काम तो नही किया है फिर भी मैंने हलधरजी से कहा 'हम लोग चलकर जिलाधिकारी से बातचीत करें।' तदनुसार हम दोनों रिक्शे से निकले कि अपने एक साथी से मिलते हुए जिलाधिकारी के पास जायें। लेकिन कल्याणी चौक से कुछ ही दूर आगे बढ़ने पर पुलिस की गाडी से उतरकर १०-१२ लाठीधारी सिपाहियों ने हमें चारों ओर से घेर लिया। हम तत्काल रिक्शे से उतरकर उनके आदेशानुसार उनकी गाड़ी में बैठे गये, हमे कोतवाली थाने पर ले जाया गया। वहा उतरते ही थाने में बैठे कई पुलिस अधिकारियो ने हमे घेर लिया और एक ने मेरी बांह पकड़ कर मुझे खीचना शुरू किया। मैंने कहा··· 'भाई जब मैं चल ही रहा हू तो बांह पकड़कर खीचने की क्या जरूरत है।' मेरे इतना कहते ही उस अधिकारी ने मुझे कस कर एक बेंत लगा दिया। और दूसरो ने गाली-गलौच शुरू कर दिया···'ये सब साले देशद्रोही हैं। नेतागिरी करते हैं, गद्दी पर बैठना चाहते हैं।' मैंने इस दुर्व्यवहार के बावजूद अपने को सयत रखने की कोशिश की और चुप रहा। सोचता रहा कि मैं इस समय आजादी की रजत जयती मना चुके १९७४ के आजाद लोकतात्रिक और समाजवादी देश में हू या १९४२ के बर्बर ब्रिटिश राज्य में ?

साढ़े दस बजे मुझे हाजत में डाल दिया गया और तब से रात के ९ बजे तक सिवाय मेरे पते के और न तो कुछ पूछा ही गया और न नाश्ता भोजन पानी तक दिया गया। जेल ले जाते समय मेरे हाथ मे हथकडी डालकर हवालात से बाहर निकाला गया। मुझे जेल ले जाने वाले पुलिस अधिकारी महोदय ने मेहरबानी करके मेरे हाथ की हथकडी बाद मे निकलवा दी। फिर पुलिस की गाड़ी से मैं जेल पहुचा दिया गया। मुझे किस दफा में और क्यों जेल भेजा गया तब तक इसकी कोई जानकारी नही दी गयी थी। दूसरे दिन पूछताछ करने पर मुझे पता चला कि मुझ पर दफा १०७ और १५१ लगाया गया है। मेरे साथ ही हलधरजी को गिरफ्तार किया गया लेकिन उन पर आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम लागू किया गया। वहीं मुझे यह भी ज्ञात हुआ कि छ: अन्य तरुण शांति सैनिकों को भी इसी अधिनियम मे गिरफ्तार किया गया है। क्या सभा करने की स्वीकृति प्राप्त करने की कोशिश को रोकने हेतु यह अधिनियम लागू करना कोई औचित्य रखता है? क्या यह इस अधिनियम का दुरुपयोग नही है? मुजफ्फरपुर सेन्ट्रल जेल मे बन्दी बनाये गये छात्रों तथा अन्य लोगो से बातचीत करने पर पता चला कि उनके साथ भी दुर्व्यवहार किया गया है। किसी भी लोकतांत्रिक देश मे अपनी शांतिपूर्ण अभिव्यक्ति चाहने वालो के प्रति यह व्यवहार क्या उचित कहा जायेगा ? क्या यह बुद्धिमानी की बात नही होगी कि सरकार तत्काल इन बेगुनाह लोगों को बिना शर्त रिहा करे ?

रचनात्मक तथा समाज मे शांति कायम हो इसके लिए काम कर रही तरुण शांति सेना तथा गांधी शांति प्रतिष्ठान के कार्यकर्ताओं के साथ पुलिस विभाग ने जो सक्रियता दिखाई है काश उतनी [सक्रियता बिहार में अशांति, आगजनी, लूटपाट करने वाले तत्वों के पीछे होती और उसे अपनी मारने-पीटने, गालीगलौज करने, जेल में डालने की क्षमता और कुशलता प्रदर्शन करना ही था तो उन अपराधियो को पकडने मे इसका प्रदर्शन किया होता। मुजफ्फरपुर मे तरुण शांति सेना और गांधी शांति प्रतिष्ठान ने छात्रों का सगठन करके मूल्य नियत्रण का जो काम शुरू किया था जिसमे स्थानीय उच्च अधिकारियो और बडे व्यापारियो का सहयोग प्राप्त करने की कोशिश शामिल थी वह कोई अपराधी कार्य था ? उससे आन्तरिक सुरक्षा मे बाधा पडती थी ? या अशांति की परिस्थिति का समाधान हो सकता था।

२७ मार्च की शाम को लगभग साढे छः बजे मैं जमानत पर छूटकर जेल से बाहर निकला। मेरे अन्दर पुलिस के प्रति कोई द्वेष भाव नही है। मैं यह महसूस कर रहा हू कि मेरे ऊपर अन्याय हुआ है, ज्यादती हुई है जो किसी भी आजाद लोकतांत्रिक देश के निरपराध नागरिक के साथ हर्गिज नही होनी चाहिए लेकिन क्या मैं सरकार के पास न्याय मागने जाऊं ? सरकार न्याय दे सकती है ?

पुलिस ने चाहे जो भी सोचकर मुझे गिरफ्तार किया हो पर मैं तो यह मानता हूं कि उसने मुझे यथार्थ से साक्षात्कार करने का मौका दिया। इसके लिए उसको धन्यवाद! नागरिको से मैं यह निवेदन करना चाहूगा कि वह गम्भीरता से सोचें कि जिस आजादी को शहीदो के खून और जनता की तपस्या से प्राप्त किया गया उस आजादी का सुख उसे कब और कैसे मिलेगा ? इस देश मे सच्चा लोकतन्त्र (जिसमे लोक तन्त्र को चलाता हो) कब और कैसे आयेगा ? और लोकतन्त्र के नाम पर वर्तमान 'तन्त्रलोक' कब और कैसे बदलेगा ?

बिहार के टीकापट्टी गांव में उपद्रवों के दौरान सरकारी लेवी का धान और खादी भण्डार लूटा गया। लेकिन शायद पहला मौका है जब गाँव ने मिलकर लूट का सामान वापस किया हो। वैद्यनाथ बाबू के अहिंसक नेतृत्व का चमत्कार······

अहिंसक जनशक्ति की उपद्रव पर विजय

वैद्यनाथ बाबू को रुपौली में एक बार फिर उपवास पर बैठना पड़ा। रुपौली प्रखंड में बिहार के दूसरे और तीसरे सप्ताह में हुई हिंसक घटनाओं के खिलाफ लोकमत जागृत करने, खादी ग्रामोद्योग भण्डारों और सरकारी लेवी के धान की लूट के खिलाफ २४ मार्च से शुरू किया गया यह उपवास २७ की शाम को आशाजनक नतीजों में समाप्त हुआ।

रुपौली प्रखण्ड में सन् ७० की ८ जुलाई को लगभग ऐसी ही परिस्थितियों के बीच वैद्यनाथ बाबू ने ग्रामस्वराज्य का काम शुरू किया था। उस समय भी इस प्रखण्ड में चारों ओर अशान्ति थी। फसल की लूट, भूमि हड़प आंदोलन मुकदमे बाजी आदि से पूरा प्रखण्ड त्रस्त था। चार वर्ष की अवधि में उन्होंने समर्थ कार्यकर्ताओं की एक टीम के साथ पूरे प्रखण्ड में घूम-घूमकर ग्रामसभाएं गठित कीं। ये ग्रामसभाएं आगे चल कर आपसी मुकदमों को निपटाने का महत्वपूर्ण मंच बनीं। गत वर्ष अक्तूबर में कुछ ग्रामसभाओं की निष्क्रियता के कारण वैद्यनाथ बाबू को ५ अक्तूबर से ८ अक्तूबर तक उपवास पर बैठना पड़ा था।

हाल में ही हुए बिहार के छात्र आंदोलन के दौरान रुपौली प्रखण्ड भी व्यापक असन्तोष और नये निर्णय की लहरों से अछूता नहीं रहा। लेकिन इस छात्र आंदोलन की आड़ में छुटपुट लूटपाट की घटनाएं प्रखण्ड में फिर से शुरू हो गईं। एक बार फिर से सन् ७० की स्थिति लौटने लगी है ऐसा लगने लगा। स्थिति का दोहरा लाभ उठा कर स्थानीय सरकारी अधिकारी और उनके एजेंट ऐसे निर्दोष लोगों को इन घटनाओं का जिम्मेदार बता कर फंसाने लगे जिन्होंने जनशक्ति को आधार बना कर सरकारी काम काज के समानान्तर एक व्यवस्था खड़ी करने का प्रयास किया था। ऐसी स्थिति में वैद्यनाथ बाबू का कहना है कि मेरा एक मात्र यही कर्तव्य रह जाता था कि मैं अपने कष्ट सहन कर यहां के सभी लोगों की आत्मा को जगा सकूं ताकि ये घटनाएं बन्द हों। मैंने २४ मार्च से अनिश्चित काल के लिए उपवास शुरू किया।

रुपौली प्रखण्ड की जनता बहुत देर तक सोती नहीं रह सकी। उपवास की अवधि में टीका पट्टी गाँव के लोग जहां सरकारी अनाज और खादी ग्रामोद्योग भण्डार लूटा गया था, एकत्रित हुए और उन्होंने निर्णय लिया कि एक अभियान के रूप में वे घर-घर जा कर लूटे गये माल को वापस दे देने की प्रार्थना करेंगे। इस अभियान के दौरान ३, ६०६ रु० ८७ पै० में से २,६६३ रु० ४० पै० की खादी उन्होंने घर-घर घूम कर वापस प्राप्त कर ली। लूटे गये धान के १६ बोरों में से अब तक १३३ किलो ५० ग्राम धान वापस मिल चुका है। बची हुई खादी और धान जो प्राप्त नहीं हो सका है उसके बदले में गांव के लोगों ने चन्दा इकट्ठा कर उसमें होने वाले नुकसान को पूरा कर दिया है। देश में लूटपाट तो रोज ही होती है लेकिन यह पहला अवसर है जब कि गाँव वालों के प्रयास से लूटा गया माल इस बड़ी तादाद में वापस एकत्र किया गया।

रुपौली प्रखण्ड के ग्रामीणों ने हिंसक घटनाओं के प्रायश्चित में २७ मार्च को अपने सब कामकाज बन्द रख कर १२ घण्टे का सामूहिक उपवास किया। उपवास में लगभग तीन चौथाई लोगों ने हिस्सा लिया।

सरकारी पुलिस एवं अन्य अधिकारियों ने भी गांव वालों की इस कोशिश की प्रशंसा की और सभी तरह की दमनात्मक कार्यवाही को रोक कर ग्रामीणों को शांति स्थापना करने का मौका दिया। सर्वोदय आश्रम रुपौली में पुलिस अधिकारियों ने वैद्यनाथ बाबू से मिल कर उनको आश्वासन दिया कि वे विद्यार्थी आंदोलन के सम्बन्ध में निर्दोष लोगों को परेशान नहीं करेंगे। २७ मार्च को रुपौली प्रखंड स्वराज्य सभा की कार्य समिति एवं कृषि तथा अन्त्योदय समिति की सम्मिलित बैठक आश्रम में हुई। इस बैठक का आयोजन हिंसक वारदातों और जन असन्तोष को जड़ से हटाने के लिए किया गया था। सदस्यों ने कहा कि प्रखण्ड में गल्ला न तो सस्ते और न सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान पर मिल रहा है। ऐसी स्थिति में किसानों द्वारा खेतिहर मजदूरों की मजदूरी कम करना, अनाज की जगह नकद पैसे में और वह भी पूरा नहीं देने के कारण, स्थिति बहुत चिन्ता जनक हो गई है। बैठक ने सर्व सम्मति से निर्णय लिये कि प्रखण्ड के किसान अनाज की कटनी तथा दैयारी में अनाज के रूप में ही पहले की तरह मजदूरी देते रहें। इसके लिए प्रचलित रिवाज के आधार पर एक सर्वमान्य रेट भी अलग-अलग फसलों का तय किया गया है। (बैठक में शामिल सभी सदस्य अपने-अपने गावों में लौट कर प्रयास कर रहे हैं कि दैनिक मजदूरी कहीं भी डेढ़ रुपये से कम न हो इसमें आदमी और औरत दोनों को दिन में एक बार नाश्ता और एक बार भोजन भी दिया जाना चाहिए।) बैठक ने माना कि निर्धारित मजदूरी से कम मजदूरी देने को सामाजिक अपराध की तरह माना जाये और प्रखण्ड की ग्रामसभाएं इस बात पर कड़ी नजर रखें। जहां कहीं भी ये नियम तोड़े जायें वहां उनमें सुधार के लिए तुरन्त कार्यवाही की जाय। बटाईदारों की बेदखली को भी बैठक ने बहुत गम्भीरता से लिया। प्रखण्ड में जहां-जहां बेदखली की घटनाएं हुई हों वहां आसपास की ग्रामसभाएं तुरन्त ही कदम उठाने वाली हैं। इन निर्णयों के बाद वैद्यनाथ बाबू से अनुरोध किया गया कि जिन कारणों से आपने उपवास शुरू किया था उनको पूरा करने के लिए प्रखण्ड के लोग पूरे मन से जाग गये हैं इसलिए अब आपको उपवास समाप्त करना चाहिए। वे मान गये।

अक्ल विज्ञान में नहीं आत्मज्ञान में है

—विनोबा

लेकिन आज विज्ञान बिक रहा है। बड़े-बड़े वैज्ञानिक विनाशक शस्त्रास्त्र बनाने को महत्व देते हैं। ये इतने अक्ल वाले होने पर भी पैसे से खरीदे जा सकते हैं। इन्हें पैसा मिले तो जिस प्रकार की खोज करने की आज्ञा दी जाये, उसी प्रकार की खोज ये कर देंगे फिर उससे चाहे दुनिया खतम हो जाये, चाहे दुनिया का भला हो। अगर वैज्ञानिक तय करें कि किसी के पैसे से वे खरीदे नहीं जायेंगे और ध्वंसात्मक शस्त्रास्त्र बनाने में किसी प्रकार योग न देंगे, संहार के काम की कोई शोध-खोज न करेंगे, तो दुनिया बच जायेगी। लेकिन वैज्ञानिकों में यह अक्ल तब तक नहीं आयेगी जब तक सारा समाज इस तरह के विचार नहीं अपनायेगा। संहार के लिए शोध करने की वृत्ति को लोग जब घृणा की दृष्टि से देखेंगे तभी वह बन्द होगा।

विज्ञान का विकास

पूछा जाता है कि अगर विज्ञान बढ़ता ही रहा, तो क्या उससे दुनिया का भला होगा? विज्ञान जिस तरह बढ़ता रहा है, उसी तरह बढ़ता रहे, क्या यह उचित है?

विज्ञान इन्हीं दिनों बढ़ रहा है ऐसी बात नहीं। मनुष्य जबसे पैदा हुआ है, तभी से विज्ञान के लिए प्रयत्न करता आया है। पुराने जमाने में लोगों ने जो प्रयोग किये उन्हीं के आधार पर आज का विज्ञान चल रहा है। अग्नि पैदा करना पहले वे लोग नहीं जानते थे। उसके बाद जब अग्नि की खोज हुई तो जीवन में कितना फर्क पड़ा। अग्नि न हो तो घरों की रसोई ही बंद हो जायगी। फिर ठंड से ठिठुरने लगेंगे। अग्नि के आधार पर कितनी ही वनस्पतियों की दवाएं बनती हैं, वे कैसे बनेंगी?

इसके भी पहले एक जमाना ऐसा था जबकि केवल पत्थरों से लोग अपने औजार बनाते थे। उनके पास लोहा नहीं था। उसके बाद जब लोहे की खोज हुई, तो जीवन में कितना परिवर्तन हुआ। पेंसिल छीलने के लिए चाकू, कपड़े सीने के लिए सुई, काटने के लिए कैंची, किसान की हल के लिए फाल और खोदने के लिए कुदाली, फावड़ा।

पहले लोग गाय का दूध दुहना नहीं जानते थे। शिकार करके प्राणियों को मारते थे। लेकिन जिस किसी को यह अक्ल सूझी कि गाय पर हम प्यार कर सकते हैं, उसे कुछ खिला सकते हैं और उनके स्तनों से दूध ले सकते हैं उसने कितनी भारी शोध की होगी। मतलब यह कि खेती की खोज, गोरक्षा की खोज अग्नि की खोज, कपास से कपड़ा बनाने की खोज कितनी ही खोजें पहले की गई।

पहले भाप की शक्ति का आविष्कार उसके बाद हम आज एटम तक पहुंच गये हैं। अणुशक्ति से भी कई प्रकार के कारखाने चलेंगे विकेन्द्रित उद्योग भी गांव-गांव जा सकेंगे। इस तरह विज्ञान प्राचीनकाल से आज तक लगातार बढ़ता आया है बढ़ेगा और बढ़ना चाहिए, उससे मानव जीवन में सुन्दरता आयेगी। मनुष्य को सृष्टि का जितना ज्ञान होगा, उतना ही वह सृष्टि का रूप अच्छी तरह समझकर उसकी शक्ति का उपयोग कर सकेगा।

जैसे पक्षी दो पंखों से उड़ता है, वैसे ही मनुष्य आत्मज्ञान और विज्ञान, इन दो शक्तियों से अग्रसर हो सुखी होता है। हर यंत्र में दो प्रकार की शक्तियां होती हैं। एक गति बढ़ाने वाली और दूसरी दिशा दिखाने वाली। अगर इन में से एक भी यन्त्र न हो, तो काम नहीं चलेगा। मोटर को दोनों यंत्रों की जरूरत रहेगी। हम पांव से चलते हैं, आंख से नहीं। आंख से तो दिशा मालूम होती है। आत्मज्ञान है आंख और विज्ञान है पांव। अगर मानव को आत्मज्ञान की दृष्टि न हो तो वह अन्धा मालूम नहीं कहां चला जायेगा। उसे आंखें हों, लेकिन पांव न हों तो इधर-उधर देख सकेगा, पर घर में ही उसे बैठे रहना पड़ेगा। इसलिए बिना विज्ञान के संसार में कोई काम ही न हो सकेगा। और बिना आत्मज्ञान के विज्ञान को ठीक दिशा ही न मिलेगी।

विज्ञान और अहिंसा का योग हो तो जमीन पर स्वर्ग उतर आयेगा

यदि विज्ञान बढ़ता जायेगा और उसे हम बढ़ने देना चाहते हैं तो उसके साथ अहिंसा को भी रखना चाहिए। तभी दुनिया का भला होगा। विज्ञान और अहिंसा दोनों का योग हो तो दुनिया में जमीन पर स्वर्ग उतर आयगा।' लेकिन अगर विज्ञान और हिंसा की जोड़ी बन गई उसका गठबंधन हो गया तो दुनिया बरबाद हो जायेगी। हम अहिंसा पर इतना ज्यादा जोर इसलिए देते हैं कि विज्ञान बढ़े। अगर विज्ञान को बढ़ाना है, तो उसके साथ उसकी रक्षा के लिए अहिंसा की जरूरत रहेगी। अगर आप हिंसा को कायम रखना चाहते हैं तो विज्ञान को नहीं बढ़ाना चाहिए।

विज्ञान और आत्मज्ञान

विज्ञान नीति-निरपेक्ष है। वह न नैतिक है न अनैतिक। इसीलिए उसको मूल्यों की आवश्यकता है। इस स्थिति में उसे गलत मार्गदर्शन मिलता है तो वह नरक मार्ग बन जाता है और सही मार्गदर्शन मिलता है, तो स्वर्ग में ना जा सकता है। सही मार्गदर्शन आत्मज्ञान से ही मिल सकता है।

मैं विज्ञान और टेक्नोलाजी में फर्क करता हूं। विज्ञान और तन्त्रशास्त्र का उपयोग व्यवहार में कहां तक करना चाहिए, इसका निर्णय विज्ञान नहीं देगा, अध्यात्म देगा। किस समाज में, किस काल में तन्त्रशास्त्र का कितना उपयोग करना चाहिए, इसकी आज्ञा विज्ञान को मिलेगी। विज्ञान की प्रगति की सीमा नहीं है, वह जितना आगे बढ़े उतना अच्छा ही है लेकिन उसके उपयोग के लिए आत्मज्ञान का मार्ग-दर्शन रहेगा।

भारत और विज्ञान

विज्ञान के युग में अगर हिन्दुस्तान को जीना है, तो क्या क्या करना होगा? एक, मानव की समस्याएं अहिंसक शक्ति, नैतिक शक्ति से ही हल करने का निश्चय किया जाये। दूसरे, विज्ञान का उपयोग सेवा के साधन में करें, संहार के साधन बनाने में नहीं। और तीसरे, विज्ञान को बड़े यंत्र बनाने की आज्ञा देनी है या छोटे की यह परिस्थिति देखकर तय किया जाये। ये बातें हम ध्यान में रखते हैं, तो विज्ञान से बहुत लाभ होगा।

गोबर गैस और ईंधन का संकट

—बैजनाथ महोदय

सरकारी सूत्रों के अनुसार सन् १९७२ में हमें २०० करोड़ का कच्चा तेल मंगाना पड़ा था। परन्तु अब तेल के मूल्य बढ़ जाने के कारण यह राशि ४६० करोड़ तक जा सकती है। यह बहुत बड़ी रकम है। इसके अलावा हमारे देश में भी तेल निकलता ही है और उसका मूल्य काफी होता है। इसके परिवहन, वितरण, प्रबन्ध आदि में भी धन-जन-समय की आवश्यकता होती ही है, उसकी भी हमें कीमत चुकानी ही पड़ती है। यह सारी खनिज सम्पत्ति पता नहीं कितने हजार या लाखों वर्षों में एकत्र हो पाई है। परन्तु हम तो इसे ऐसी तेजी के साथ खर्च कर रहे हैं कि उसे देखते हुए वह नहीं सकते कि मटके का पानी कितने दिन चल सकता है? एक-न-एक दिन वह खत्म होगा ही। तब हम क्या करेंगे? इसलिए हमें कोई ऐसा विकल्प ढूंढना ही होगा कि जो इस क्षति की पूर्ति भी साथ-साथ करता रहे। तो यह हम आज से ही क्यों न करें? शासन, समाज और वैज्ञानिकों को अन्य विकल्पों के साथ और उनके उत्पादन प्राप्ति, परिवहन, वितरण की समस्या के साथ इन सब पर होने वाला खर्च तथा स्थापित-पर्याप्तता आदि को ध्यान में रखते हुए "गोबर गैस" के विकल्प पर भी विचार करना उचित होगा।

गोबर गैस के पक्ष में नीचे लिखी बातें हैं :—

कच्चा माल.—इसका कच्चा माल दुर्लभ नहीं मनुष्य और पशुओं का मलमूत्र पशुशाला तथा घर, गांव और जंगलों-खेतों का सड़ा-गला कूड़ा-करकट सूखी घास-पात है।

लाभ:—सड़ा-गला कूड़ा-करकट और मलमूत्र गन्दगी और रोग फैलाते रहते हैं इनका सदुपयोग होगा, घर और बस्तियां साफ-सुथरी रहेंगी। घर के चूल्हे, आटे की चक्कियां, रोशनी आदि के लिए गैस मिलकर इन बातों में हर गांव स्वावलम्बी बन सकेगा। लकड़ी, कोयला, मिट्टी का तेल, गैस आदि की बचत होगी।

समाजीकरण.—इसके लिए हर गांव को अपने सम्मिलित पंचायती गोबर-गैस प्लांट गांव के बाहर एक तरफ बनाने होंगे। साथ ही अपनी पशुशालाएं तथा शौचालय भी इन गोबर गैस प्लांट के आसपास ही बनाने होंगे। ये भी सम्मिलित होंगी। इनसे उपलब्ध सम्पत्ति को भी सम्मिलित, सामूहिक या पंचायती बनाकर सबको उसका यथोचित लाभ मिलता रहे ऐसा प्रबन्ध किया जा सकता है। आज गांव में किसी गृहस्थ के यहां कम पशु होंगे तो किसी के पास अधिक इस कारण वे इस लाभ के समाजीकरण या पंचायतीकरण को यदि न भी स्वीकार करें तो हिसाब के अनुसार अपना हिस्सा ले सकते हैं परन्तु इससे सबके स्वार्थ परस्पर जुड़ जायेंगे। इससे उनके दिल भी जुड़ जायेंगे। फलतः गांव में परस्पर प्रेम और सहयोग, एकता बढ़ेगी।

गैस के साथ-साथ यह प्लांट गांव को अच्छा, शुद्ध तथा निर्गंध खाद भी देता रहेगा। गुण, उपयोगिता और शक्ति की दृष्टि से यह लगभग कम्पोस्ट के समान ही होगा।

इतना उत्तम खाद मिल जाने से और गांव में स्नेह सहयोग बढ़ जाने से खेती के उत्पादन में भी निश्चय ही वृद्धि होगी। और रासायनिक खादों से प्राप्त उपज से यह अवश्य ही अधिक अच्छी होगी।

समय, संभावना, कीमत—यह विकल्प हमारे देश के लिए किस हद तक उपयोगी हो सकता है इस विषय में स्वतंत्र बुद्धि वाले, स्वावलम्बन प्रेमी और हमारी ग्रामीण जनता की स्थिति, गति और शक्ति को जानने वाले तथा उसकी सुख-सुविधा की चिन्ता रखने वाले वैज्ञानिक विचार करें। जिन किसान गृहस्थों या संस्थाओं ने गोबर गैस का प्रयोग किया है उनके अनुभव भी प्राप्त किये जायें। इनसे यदि कोई भूलें हुई हों तो उनको सुधार कर पूरी वैज्ञानिकता के साथ इस विकल्प को आजमाया जाये।

हमारी बड़ी-बड़ी विज्ञानशालाओं के बारे में कुछ विचारशील विज्ञानशास्त्रियों से यही शिकायत सुनी गई है कि लोक सेवा और लोकहित की दृष्टि से अनुसन्धान करके उसे व्यावहारिक बनाकर पेश करने का जहां तक सम्बन्ध है ये विज्ञानशालाएं मुख्यतया बन्ध्या ही रही है। शासन की दृष्टि भी ग्रामीण जनता की तरफ ठीक से नहीं गई है।

गोबर गैस के विकल्प द्वारा अपनी इस ईंधन समस्या को हम कितने समय में हल कर सकेंगे यह हमारे समाज और शासन के पुरुषार्थ और प्रयत्न की उत्कटता पर निर्भर है। केन्द्रीय और प्रादेशिक सरकारें तथा सारे देश की ग्रामीण जनता परिस्थिति की गंभीरता को समझकर यदि सच्चे दिल से इस काम में जुट जायें तो बहुत जल्दी हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। अकेले शासन के बस की बात तो यह है ही नहीं। हां, वह प्रेरणा दे सकता है और सहयोग साधन भी दे सकता है। मुख्यतः यह काम ग्रामीण जनता के पुरुषार्थ से ही बन सकता है। परन्तु वह अभी अज्ञान के अंधकार में पड़ी है। शासन और पढ़े-लिखे समझदार नागरिक उसको जगाकर उसे उसकी अपनी ही सेवा में लगाकर गांवों को सुखी समृद्ध बना सकते हैं।

कीमत का प्रश्न भी ऐसा नहीं, जिसके कारण हम निराश होकर इस योजना को अव्यवहार्य कहकर अलग रख दें।

सबसे पहले हम हिसाब लगायें कि आज इस देशी-विदेशी ईंधन-तेल पर हम कितना खर्च करते हैं। गोबर गैस परिवहन और हमारे आवागमन के साधनों की सारी जरूरतें पूरी कर देगी यह दावा तो नहीं किया जा सकता। परन्तु हमारे गांवों की ईंधन, रोशनी और शक्ति पूर्ति यदि उससे हो सके तो यही क्या छोटा लाभ है? इससे शासन का बहुत बड़ा बोझ हलका हो सकता है। स्वयं ग्रामीण जनता को तो वह स्वावलम्बी सुखी, स्नेह-सहयोगशील बना ही सकता है।

देशी-विदेशी तेल ईंधन पर आज हम प्रतिवर्ष जितना खर्च करते हैं उतनी रकम यदि २-३ वर्ष तक हम खर्च कर सकें—और इसमें ग्रामीण जनता भी अवश्य ही पूरा-पूरा हाथ बटा सकती है—तो देश का एक बहुत बड़ा काम हो सकता है।

◆◆

सहरसा से निकला जो अमृत

"कहिए, आप लोगों का काम कैसा चल रहा है" ?

'अच्छा ही चल रहा है। अभी-अभी तो महीने भर का एक अभियान समाप्त हुआ है। काफी अच्छा ......" (बीच में ही बात काट कर) "भाई साहब मैंने तो सुना है कि जिला-दान क्या, पूरा बिहार प्रान्त दान हो चुका है। फिर जो आप लोग गांवों में ग्रामदान की बात कह रहे हैं उसका क्या अर्थ है" ?

'उसका अर्थ यह है कि उस समय ग्रामदान की प्राप्ति हुई थी और अब जो आंदोलन चल रहा है वह ग्रामदान की पुष्टि का आंदोलन चल रहा है।'

'पुष्टि से आपका मतलब' ?

सरकार से ग्रामदानी गांवों को मान्यता दिलवाई जाय इसको हम लोग पुष्टि कहते हैं। पुष्टि के बाद गांवों को अनेक प्रकार की कानूनी सहूलियतें मिल जायेंगी। समय-समय पर सरकार की मदद मिलेगी, कोआपरेटिव

मैं उपरोक्त चर्चा को ध्यान से सुन रहा था। चर्चा ने ग्रामदान को जब 'काफी अच्छा' से कोआपरेटिव तक पहुंचा दिया तो मेरे चेहरे पर एक दुःख भरी मुस्कान फैल गई थी। अग्रवाल बस सर्विस की बस थी प्रश्नकर्ता सहरसा जिले का एक नागरिक था और उत्तर देने वाला एक सर्वोदय कार्यकर्ता। एक महीने के अभियान की समाप्ति पर मैं अपने प्रखंड से लौट रहा था और वह अपने प्रखंड से। होली के अवसर पर घर जाऊं अथवा नहीं, मेरे मन में यह द्वंद चल रहा था। लेकिन इस चर्चा ने चिन्तन की दिशा ही बदल दी।

हमारे आंदोलन के बारे में जनता की जो धारणा है वो तो है ही लेकिन जब भी अपने ही साथियों के मुंह से ऐसी बातें सुनता हूं तब तब मन की उलझन और बढ़ जाती है। क्या पुष्टि का अर्थ यही होता है ? क्या यही ग्रामस्वराज्य की भावना है ? सुगम, स्वस्थ सरकारी संचालन का माध्यम है ग्रामदान या कि स्वतंत्र-ग्रामस्वराज्य की बुनियाद है ? विकास कार्यों का एक सुगठित माध्यम है या कि क्रान्ति की प्रक्रिया में समाज को शामिल करने की एक योजना है ? कहावत है—मानो तो देव नहीं तो पत्थर। और कहावतों में गहरा सत्य छुपा होता है। ग्रामदान कैसे ? यह जितना अहम सवाल है उससे कहीं ज्यादा अहम सवाल है कि ग्रामदान क्यों ? यदि ग्रामदान के भीतर हम ग्रामस्वराज्य की भावना भर देते हैं तो क्रांति का चरण पूरा होता है। लेकिन यदि ग्रामदान यानि वही सब जो बस के उस यात्री का बताया गया था तो निश्चित रूप से ग्रामदान यथास्थिति को पुष्ट करने वाला होगा। शोषण और दमन का ही एक माध्यम बन कर रह जायगा।

उस दिन भी मुझे एक मित्र की बात अखर गई थी जिसने कहा था कि 'पुष्टि-पदाधिकारी महोदय का स्वागत कुछ विशेष रूप से हम लोगों को करना ही चाहिए क्योंकि आखिर सारी बरात का दूल्हा तो वही है।' हमारी ये सारी बातें हमारे आंदोलन का यह चित्र पेश करती है जो हमने अपने मन में बनाया है। और क्या इस चित्र के आधार पर हम शोषण विहीन, शासन मुक्त समाज की रचना कर सकते हैं ? निश्चय ही नहीं कर सकते हैं। इन्हीं कारणों से मुझे तो लगता है कि हमने अभी अपने काम की शुरुआत भी नहीं की है।' पुष्टि पदाधिकारी हमारी बारात के दूल्हे नहीं हैं वरन हमारी बारात के बिन-बुलाये मेहमान हैं' जब तक हमारी स्वयं की मान्यता ऐसी नहीं बन जाती है तब तक हमें ऐसी आशा नहीं करनी चाहिए कि हम अपने आंदोलन की शुरुआत भी सही परिप्रेक्ष्य में कर सकेंगे। सही परिप्रेक्ष्य से मेरा मतलब यह है कि सबों को साफ-साफ महसूस हो जाये कि ग्रामदान से गाँव गोकुल बनता हो या नहीं, स्वदेशी शासन से मुक्ति की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

और आज सहरसा के मोर्चे पर हमारे आंदोलन ने अद्‌भुत सफलता प्राप्त की है। सहरसा के मोर्चे ने उस विन्दु को स्फटिक की तरह स्पष्ट कर दिया है जिसकी पृष्ठिभूमि में हमारा आंदोलन चलना चाहिए। इतना ही नहीं, उसने साफ-साफ यह भी बता दिया है और सिर्फ इसी पृष्ठिभूमि में हमारा आंदोलन चल सकता है और यदि किसी अन्य पृष्ठभूमि में हमने अपने आंदोलन को चलाने की कोशिश की तो हमारा आंदोलन इतिहास बन कर रह जायगा। और यह विन्दु है ग्रामस्वराज्य का। सहरसा के मोर्चे ने हमें चिल्ला कर कह दिया है कि यदि तुम्हारी शक्ति ग्रामस्वराज्य के विन्दु पर केन्द्रीभूत नहीं होती है तो तुम इतिहास के रास्ते पर धकेल दिये जाओगे। और यदि होती है तो फिर सम्पूर्ण भविष्य तुम्हारा है।

यह आरोप ठीक है कि सहरसा में हम बीघा-कट्ठा नहीं बांट सके, भूदान की पुरानी समस्याएं नहीं सुलझा सके, ग्राम-सभाएं नहीं बनवा सके तो भी यह कोई चिन्ता का विषय नहीं है। इन घटनाओं का तो निष्कर्ष ही यह है कि बीघा-कट्ठा बांटना, भूदान की समस्या सुलझाना, ग्रामसभाएं बनवाना हमारा काम नहीं है। आखिर दूसरों का काम हमें क्यों करना चाहिए ? हम 'दे इज्म' मिटाने निकले हैं तो हमारा पहला नारा होना चाहिए"' नेवर डू देअर वर्क। हमारा काम तो सिर्फ यही है कि उनके दिल में अपना काम आप करने की चाह पैदा कर दें। अपने अधिकार अपनी मुट्ठी में रखने की चेतना पैदा कर दें। सहरसा में यदि हमने कुछ बीघा-कट्ठा बांटा है कुछ भूदान की समस्याएं सुलझाई हैं, कुछ ग्रामसभाएं बनवाई है तो उनका औचित्य सिर्फ इतना ही है जितना कि वे ग्रामस्वराज्य की आकांक्षा पैदा कर सकी है, ग्रामस्वराज्य के प्रति विश्वास पैदा कर सकी हैं। शिक्षक उत्पादन का सूत्र बता देता है, परखनली में उसकी प्रक्रिया दिखा देता है, खुद कोई कारखाना खोल कर या दुकान सजा कर नहीं बैठ जाता है। शिक्षक-शिक्षक है, उसकी भूमिका मालिक की नहीं होनी चाहिए, व्यापारी की नहीं होनी चाहिए। हम भी क्रांति की दीक्षा देने और लेने निकले हैं। हमने शासन विहीन शोषण मुक्त समाज का सूत्र पाया है, ग्रामस्वराज्य की प्रक्रिया देखी है। समाज को यह सूत्र समझाना है, यह प्रक्रिया दिखलानी है, हमें प्रखण्डदान या जिला दान का कारोबार ले कर नहीं बैठ जाना है। जब समाज सूत्र समझ लेगा, प्रक्रिया देख कर उसको दिल जमई हो जायगी तो गांवों का समुद्री वर्तुल बनते देर नहीं लगेगी।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

पटना में गांधी युग........

(पेज ४ से जारी)

करीब डेढ़ लाख। वही बिहार रिलीफ कमेटी की लैन्ड रोवर बी० आर० क्यू० ४१६२ फिर आकर रुकती है। पर आज लोगों को चुप नहीं रहना है। 'जय प्रकाश नारायण की जय' से वातावरण गूंज उठता है। बड़ी मुश्किल से लोगों को हटा-हटाकर जे० पी० को मंच पर लाया जाता है। करतल ध्वनि का शोर गूंजता है और जे० पी० खड़े होकर जनता के अभिवादन को स्वीकार करते हैं। सभा शुरू होती है। पटना विश्वविद्यालय छात्रसंघ के अध्यक्ष लल्लू प्रसाद यादव को सभा का अध्यक्ष बनाया गया है। पहले दो मिनट खड़े होकर उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है जो गोलीबारी में मारे गये थे। फिर लल्लू प्रसाद बोलते हैं। उनके बाद एक और छात्र नेता श्री नरेन्द्र बोलते हैं। ओजस्वी आवाज में वे कहते हैं कि हमारी लड़ाई पूरी व्यवस्था के प्रति है। सत्ताईस वर्षों में देश को गर्त में पहुंचाने के जितने दोषी [illegible]सी हैं उतने ही विरोधी दल वाले हैं। [illegible]री लड़ाई दोनों से है। हमारे नेता जय-[illegible]श हैं और हमने अपना नेतृत्व उनके हाथों में सौंप दिया है। पूरी सभा तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठती है।

हमेशा की तरह आज भी जे० पी० ने डाक्टरों की सलाह को नहीं माना। दो घण्टे सभा चली और जे०पी० पूरे पौन घण्टा बोले, लिख कर कुछ नहीं लाये। पूरी सभा शान्त। एक-एक शब्द लोगों के दिलों में उतर रहा है। 'देखने में मैं बूढ़ा हूं पर दिल से जवान हूं। युवकों का आह्वान करने का मुझे सौभाग्य मिला है। इस सारी व्यवस्था को बदलना होगा। जनता लोकतन्त्र की प्रहरी बनकर साधारण कर्मचारी से लेकर प्रधानमन्त्री तक की निगरानी कर सके। यह स्वर्ण अवसर है। जब हम बिहार का नैतिक स्तर उठा सकते हैं। इस व्यवस्था ने हमें मजबूर कर दिया बेईमानी करने के लिए। रूस और चीन में बीच चुनाव किया जाए तो मैं आंख बन्द करके चीन का चुनाव करूंगा। पटना जलता रहा कोई पूछने वाला नहीं रहा। स्वराज्य के बाद सत्ताईस वर्षों से सब कुछ चुपचाप देखता रहा अब सहन के बाहर है। प्रण कर लिया है कि यह चलन नहीं दूंगा।'

(पृष्ठ ५ का शेष)

व्यवहार को उचित ठहराने के लिए प्रकाश नारायण गांधी जी का नाम घसीट रहे हैं। "लेकिन इससे भी ज्यादा दुख की बात यह है कि निर्वाचन पद्धति के सुधार के नाम पर जयप्रकाश संसदीय ढांचे पर ही प्रहार कर रहे हैं। श्रीमती गांधी को जयप्रकाश नारायण या किसी के भी प्रमाण पत्र की जरूरत नहीं है। श्रीमती गांधी को बदनाम करने के लिए चलाये जा रहे इस अभियान के प्रति हम जनता को सचेत करना चाहते हैं और आशा करते हैं कि लोग इसे समझ जायेंगे।"

मिश्र जी की तरह इन संसद सदस्यों ने भी जयप्रकाश नारायण से कहा कि वे अराजकता और हिंसा के खिलाफ और इन्दिराजी के समर्थन में खुल कर बोलें।

हमारा निवेदन है कि जब इन्दिरा जी के समर्थन में बोलने वाले इतने धुरंधर लोग इस देश में हैं तो बेचारे जयप्रकाश नारायण को ये लोग भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ने के लिए अकेला क्यों नहीं छोड़ देते? क्यों नहीं सुनते कि जयप्रकाश सैकड़ों बार अराजकता और हिंसा की भर्त्सना कर चुके हैं? और क्यों नहीं समझते कि उन्होंने कभी भी महात्मा गांधी की तरह जीवन जीने का दावा नहीं किया है, उनसे अपनी तुलना करने की तो खैर बात ही नहीं उठती है। अलबत्ता चाहें तो य समाजवादी लोग जे० पी० के रहन-सहन से अपने रहन-सहन की तुलना कर सकते हैं।

जौरा में समर्पण की दूसरी वर्षगांठ

● महात्मा गांधी आश्रम, जौरा में १२, १३, १४ तथा १५ अप्रैल को समर्पण दिवस एवं मित्र-मिलन-शिविर आयोजित किया गया है। इन कार्यक्रमों में मध्यप्रदेश के अलावा विभिन्न प्रान्तों के अनेक कार्यकर्ता, विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधि भाग लेंगे। समर्पण के बाद चम्बल घाटी क्षेत्र में जो परिवर्तन हुआ है उसका मूल्यांकन करने के साथ-साथ भविष्य के कार्यक्रमों के बारे में भी विचार-विनिमय होगा। कार्यक्रम का आयोजन गांधी आश्रम, जौरा तथा मध्यप्रदेश सेवक संघ के संयुक्त तत्वावधान में हो रहा है।

● रेणी में जो आजकल 'चिपको आंदोलन' का केन्द्र है, सीमान्त नीतिघाटी के नर-नारियों का ३१ मार्च को विशाल प्रदर्शन हुआ। लाता महिला मंगल दल के आह्वान पर घाटी के गांवों की सैकड़ों महिलाओं ने प्रदर्शन में भाग लिया। प्रदर्शन के बाद श्रीमती गौरादेवी की अध्यक्षता में सभा हुई, जिनके नेतृत्व में २६ मार्च को रेणी की महिलाओं ने पेड़ों पर चिपक कर उनकी रक्षा की थी। ब्लाक प्रमुख गोविन्दसिंह रावत, प्रधान वासवानन्द नौटियाल तथा सुदामासिंह नेगी, महेशानन्द पपलियाल एवं जयंतसिंह सभापति ने संकल्प दोहराया कि रेणी के पेड़ों को काटने से पहले हमारी पीठ पर कुल्हाड़ी चलानी होगी।

चण्डीप्रसाद भट्ट ने कहा कि पेड़ों के कटाव के कारण अनिवार्य भूस्खलन एवं बाढ़ के कारण मैदानों में भी भयंकर दुष्परिणाम होते हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश शासन से अपील की है कि गढ़ गंगा से मलारी तक के वनों को कटवाने से पूर्व भूगर्भ विभाग द्वारा जांच करवानी चाहिए।

गौरा देवी ने कहा कि हम जंगल से हमें साग भाजी घास पत्ती से लेकर के बहुमूल्य वनौषधि भी प्राप्त होती थी, किन्तु १९७० की बाढ़ के समय रेणी के जंगलों में भी व्यापक रूप से भूस्खलन हुआ जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे गांवों पर पड़ा। यदि इस वर्ष हम २५०० पेड़ों को एक साथ कटवाने की छूट दे देगें तो उसका दुष्परिणाम हमारे सभी वगड़ों पर पड़ेगा।

● पहली अप्रैल से उज्जैन (म० प्र०) में तीन शराब की दुकानें खुल गई हैं। अब तक वहां एक भी दुकान नहीं थी। प्रांतीय नशाबंदी समिति इन्दौर के संयोजक अमृत लाल अमृत पिछले दिसम्बर से मध्य प्रदेश शासन के विभिन्न विभागों व मुख्यमंत्री से लगातार लिखा-पढ़ी कर इस कदम को न उठाने का अनुरोध करते रहे हैं। नयी खोली गई दुकानों में से एक ताड़ी की दुकान माधव नगर क्षेत्र में सांवेर रोड पर है। इसके आस-पास घनी आबादी की मजदूर बस्तियां हैं। दो अन्य दुकानें टकी चौक व मजदूर बस्ती फाजलपुरा में खोली गयी हैं। ताड़ी की इन तीनों दुकानों के अलावा अंग्रेजी शराब के लायसेंस भी तेजी से दिए जा रहे हैं। शराब से अछूते इस ऐतिहासिक शहर में शराब के प्रवेश से पैदा हुई नयी परिस्थिति पर नशा निषेध-समिति उज्जैन व प्रांतीय नशाबंदी समिति इंदौर विचार कर रही है।

● उधर पहली अप्रैल को उज्जैन में शराब की नई दुकानें खुलीं और इधर हरियाणा के गढ़ी कोटाहा में पिछले एक साल से चल रहे नशाबंदी आन्दोलन के कारण पहली अप्रैल को वहां की शराब की दुकान बन्द कर दी गई। हरियाणा के इस छोटे से गांव में पिछले साल गांव वालों की इच्छा के विरुद्ध शराब की दुकान खोली गई थी। ठेकेदार को गांव में किसी ने भी दुकान खोलने की जगह न देकर असहयोग शुरू किया था; फिर भी उसने एक झोपड़ी बनाकर दुकान खोल दी थी। दुकान खुली लेकिन बिक्री बन्द हो गई, दुकान के आगे भजन कीर्तन चलता रहा। मुनि जनक विजय व सर्वोदय सेवकों के नेतृत्व में चले इस आन्दोलन की विजय पहली अप्रैल को भारी भीड़ के सामने शराब के ठेके की झोपड़ी,को प्रशासन द्वारा गिराने से मिली। इस जगह विजय उत्सव मनाते हुए डा० बलबीर सिंह, चौ० साधुराम, वेद प्रकाश, पं० योगध्यान और डा० वेनी प्रसाद ने लोगों से अनुरोध किया कि वे अन्य स्थानों पर भी शराब व अन्य व्यसनों के विरुद्ध अहिंसक आन्दोलन चलायें।

● इन्दौर खादी संघ तथा विनोबा जी की प्रेरणा से स्थापित कुष्ठ सेवा संस्था के मंत्री सुन्दरलाल मित्तल की चार अप्रैल की रात उनके परदेशीपुरा स्थित निवास के पास हत्या हो गयी। तीन दिन पूर्व उसी मोहल्ले में कव्वाली के कार्यक्रम को लेकर दो दलों के बीच झगड़ा हो गया था। मित्तल जी उसी की चर्चा कर रहे थे और चाह रहे थे कि कोई भी किसी के खिलाफ नहीं लड़े। अपने तिराहे से चर्चा समाप्त कर वे घर की तरफ जा ही रहे थे कि कोई पचास कदम आगे उन पर अज्ञात व्यक्तियों ने चाकू से वार किये। मित्तल जी के सीने पर चोट आई तथा पेट पर एक गहरा घाव आया। वे वहीं गिर पड़े। उनके मुंह से तीन बार "बचाओ, बचाओ" की आवाज निकली। आसपास के लोग तुरन्त दौड़े। उन्हें टैम्पो से अस्पताल भिजवाया गया, परन्तु तब तक उनके प्राण पखेरू उड़ चुके थे।

परदेशीपुरा श्मशान में दाह संस्कार के बाद शोक सभा हुई जिसमें उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। भूदान यज्ञ परिवार श्री मित्तलजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

(पृष्ठ १२ का शेष)

इसलिए सहरसा के मोर्चे की सफलता बीघे-कट्ठे में नहीं है वरन् इस बात में है कि इस मोर्चे पर जूझते हुए हमने और वहां के नागरिकों ने वहां तक ग्रामस्वराज्य की अनिवार्यता महसूस की है।

जहां तक हमारा सवाल है तो हम क्या हमारे आन्दोलन के ही सामने सहरसा के मोर्चे ने दूसरा कोई विकल्प रहने नहीं दिया है और उस दिन वे लोग भी कह रहे थे, बिल्कुल साधारण लोग, कि 'आपके बीघे-कट्ठे की बात तो जंचती है, लोग यह काम कर रहे हैं और उन्हें करना ही पड़ेगा, ग्रामसभाएं भी बनेंगी लेकिन यदि ग्रामस्वराज्य नहीं होगा तो समझिये कि सब कुछ व्यर्थ चला गया।' तीन वर्षों के मन्थन से सहरसा से यह जो चीज निकली है उसे मैं अपने आंदोलन के लिए अमृत मानता हूं और यह भी मानता हूं कि यदि इस चरम बिन्दु पर हम आंदोलन को अब जीना है तो उसे यह अमृत पीना पड़ेगा।

कुमार शुभमूर्ति,

ग्रामसभाओं की शक्ति नहीं बढ़ी तो सर्वनाश होगा

रुपौली प्रखण्ड (पूर्णिया, बिहार) के टीकापट्टी गाव मे प्रखण्ड सम्मेलन का आयोजन ३ मार्च ७४ को बगाल के वरिष्ठ नेता चारुचन्द्र भण्डारी की अध्यक्षता मे हुआ। गावो के लगभग १०० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। सम्मेलन मे चारु बाबू ने कहा कि आज देश की स्थिति विस्फोटक और ग्राम सभाओ की प्रगति अत्यन्त धीमी है। ग्राम सभाओ की शक्ति नही बढ़ेगी तो सर्वोदय के बदले सर्वनाश होगा। मुख्य अतिथि के रूप मे बिहार सरकार मे वित्त मत्री दरोगा राय ने भी भाग लिया। दरोगा राय ने कहा कि समाज-परिवर्तन का काम सरकार से कदापि सम्भव नही है। आज जनता की स्वय शक्ति जागृत करने की आवश्यकता है। सर्वोदय के लोगो का प्रयास सही दिशा मे है। इस काम मे मैं अपनी पूरी मदद दूगा।

रुपौली प्रखण्ड मे ८१ ग्रामसभाए बनी है। ४० ग्रामसभाओ ने अब तक कुल प्राप्त १४६ एकड ७७ डिसमिल भूमि मे से १२३ एकड भूमि का ३६३ आदाताओ के बीच वितरण किया है। एक गाव मौवाड्योढी मे कोई भूमिहीन न होने से बीघे कट्ठे की जमीन १२ एकड ग्रामसभा के लिए रखी गई है और उसकी उपज ग्राम कोष मे जमा होती है। ६५६ दाताओ द्वारा प्राप्त भूदान की १५४१ एकड भूमि मे से ७२८ एकड भूमि ६६२ किसानो के बीच बाटी गयी है। ५१ गावो के कागज तैयार करके पुष्टि पदाधिकारी के पास दाखिल किये गये हैं। १० गावो की पुष्टि बिहार गजट मे प्रकाशित हुई है और ४ गांवो मे कानूनी ग्राम सभा का गठन हुआ है। शान्ति सेना बन रही है। पर इस दिशा मे प्रगति अच्छी नहीं है। आचार्यकुल की बैठकें होती रहती हैं। १६ ग्रामसभाओ मे ग्रामकोष की रकम २४६४ रुपये बैंक मे जमा है। इसके अलावा १५८६ रुपये नकद और ५६१ किलो अनाज ५२ ग्रामसभाओ के पास है। पुलिस, अदालत मुक्ति का अच्छा प्रयास हुआ और १५८ झगडो का समझौता ग्रामसभाओ ने किया है। कोर्ट मे चल रहे २ मुकदमे और ११ मुकदमे थाने से वापस कराये गये हैं। पीने के पानी तथा सिचाई का प्रबन्ध भी किया गया है।

धीरेन्द्र मजूमदार की लोकगगा यात्रा, महिलाओ की पदयात्रा, क्षेत्रीय तथा प्रखण्ड स्तरीय गोष्ठियो के आयोजन से लोगो मे चेतना बढ रही है। खादी ग्रामोद्योग, रुपौली की पचवर्षीय योजना, तथा आदर्श विद्यालय योजना को क्रियान्वित किया जा रहा है।

रुपौली मे बराबर हलचल होती रहे सुस्ती नही आये इसका प्रयास वैद्यनाथ बाबू बराबर करते रहते हैं। २ मार्च को भूदान किसानो का सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता बिहार भूदानयज्ञ समिति के अध्यक्ष बद्रीनारायण सिंह ने की। इस सम्मेलन मे मुख्य अतिथि पूर्णिया के जिलाधीश थे जिन्होंने आश्वासन दिया कि भूदान किसानो के लगान निर्धारण का कार्य शीघ्र किया जायेगा और सिचाई योजनाओ मे उन्हे प्राथमिकता दी जायगी। ३ मार्च को शिक्षा सम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता की प्रो० रामजी सिंह ने और मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय मत्री श्री भोला पासवान शास्त्री। ३ मार्च को ही कृष्णकान्त सिंह की अध्यक्षता मे ग्रामदान सम्मेलन हुआ।

● मध्यप्रदेश राज्य शासन ने विधानसभा द्वारा पारित एक्ट के अनुसार मध्यप्रदेश ग्रामदान-बोर्ड का गठन कर दिया है। नवगठित ग्रामदान बोर्ड मे गगाधर पाटणकर (अध्यक्ष); हेमदेव शर्मा (उपाध्यक्ष), सदस्यो मे राधेलाल भूने, नन्दकुमार दाणी, ठाकुर रामप्रसाद, रणबहादुरसिंह, शिवनाथ शर्मा, कल्याणचन्द्र त्रिपाठी, पुजारी राय, भागवत साहू, श्रीमती रुक्मणी भार्गव, नरेन्द्र दुबे तथा बनवारीलाल चौधरी सम्मिलित हैं।

● महाराष्ट्र सर्वोदय मडल ने १८मार्च ७४ से एक साल के लिए महाराष्ट्र मे 'ग्रामस्वराज्य पदयात्रा' चलाने का सकल्प महाराष्ट्र सर्वोदय सम्मेलन बेलोरेनी (जि० अकोला) में लिया है। पदयात्रा का उद्देश्य है, ग्रामस्वराज्य का व्यापक प्रचार, सर्वोदय पत्रिकाओ के ग्राहक बनाना, साहित्य बिक्री, और सर्वोदय मित्र बनाना आदि।

● ब्रह्म विद्या मन्दिर की प्रवीणा देसाई ने लोहा और स्टील बनाने वाली कपनी 'मुकुन्द' मे २५ मार्च को सर्वोदय वाचनालय और अध्ययन वर्ग का उद्घाटन किया जो 'मुकुन्द सर्वोदय केन्द्र' की ओर से चलाये जायेंगे। बडे कारखानो के मजदूरो तक सर्वोदय विचार पहुचाने के ख्याल से बम्बई के विट्ठलदास मोदाणी ने मुकुन्द मे मजदूरो के बीच काम शुरू किया था।

सर्वोदय केन्द्र मे किसी भी तरह की सदस्यता आदि के नियम नहीं हैं। यह सब के लिए खुला है। विट्ठलदास मोदाणी का कहना है कि केवल एक ही बधन हमने माना है""स्नेह का। केन्द्र की ओर से कारखाने की मजदूर बस्तियो मे सास्कृतिक कार्यक्रम भी चलाये जाते हैं।

● सज्जन शक्ति को सगठित कर उसे ग्रामस्वराज्य के लिए हिमाचल प्रदेश मे जनवरी और फरवरी मे अलग-अलग स्थानो से दो पदयात्रायें की गईं। कागडा और चम्बा जिलो की दो जुडी तहसीलो मे चली इन पदयात्राओ मे गावो, स्कूलों के छात्र और अध्यापको आदि से सम्पर्क कर प्रान्त मे ग्रामस्वराज्य के लिए समय देने वाले साथियों की एक टीम तैयार की गई है।

● तरुण शाति सेना की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक २५-२६ मार्च को अहमदाबाद मे शान्ति सेना समिति के कार्यालय में हुई। राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न प्रान्तो मे चल रहे तरुण शान्ति सेना कार्य का सिंहावलोकन हुआ। आगे की कार्य-योजना पर विशेष तौर पर आगामी ग्रीष्मावकाश मे चलने वाले "गाँव चलो" योजना पर विचार हुआ।

बजट व आर्थिक सयोजन पर विचार होकर सदस्यो मे विभिन्न कार्यों की जिम्मेवारी बाटी गई। सयोजिका कु० मदाकिनी दवे ने गुजरात की परिस्थिति पर विस्तार से प्रकाश डाला व किस प्रकार लोक-शक्ति के निर्माण के सदर्भ मे पिछले दो महीनो म काम हुआ यह समझाया। अशोक भार्गव व अर्चना देसाई कुछ समय से गुजरात मे शक्ति लगा रहे हैं।

● गुजरात के सुप्रसिद्ध सर्वोदय सेवक बबल भाई मेहता ने ६ अप्रैल (दाडी सत्याग्रह दिवस) को दाडी से पदयात्रा प्रारंभ की। दाडी से साबरमती तक पदयात्री दल का प्रत्येक जिले मे दस-दस दिवसीय कार्यक्रम रहेगा।

R.N. 2091/57 BHOODAN YAGYA 15 APRIL 1974 Regd. No. D. (C) 266

१ से १५ मई तक उपवासदान पखवाड़ा मनाइये

देश भर में उपवास-दान का अच्छा स्वागत हुआ है और अब तक काफी उत्साह-वर्धक तथा प्रेरणाप्रद अनुभव प्राप्त हुए हैं। परन्तु उपवासदान की संख्या मार्च के अन्त तक १६६३ तक ही पहुंची है। सर्व सेवा संघ की अभी २६ से ३१ मार्च तक जलगाव में हुई बैठक में इस संदर्भ में उपवासदान के कार्यक्रम पर विशेष रूप से चर्चा हुई और प्रबंध समिति ने इसको देश भर में यथाशीघ्र गतिशील करने और उसके लिए देश भर में व्यापक तौर पर १ से १५ मई तक उपवासदान पक्ष मनाने का निर्णय किया है।

प्रदेशों तथा जिला सर्वोदय मंडलों के नाम इस सिलसिले में जारी की गयी एक अपील में सर्वसेवा संघ के सहमंत्री यशपाल मित्तल लिखते हैं इसके लिए आप अपने-अपने स्तर पर अभी से पूर्व तैयारी प्रारम्भ कीजिए। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में इसकी जानकारी तथा अपील प्रकाशित कीजिए। समस्त रचनात्मक संस्थाओं, महिला-संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं, आचार्यकुल, तरुण शांति सेना आदि से संपर्क कर इस कार्य को उठाने के लिए उनसे अपील की जाए। साथियों और इस काम में सक्रिय सहयोग देनेवाले मित्रों की बैठक बुलाकर प्रदेश के कार्यक्रम की चर्चा की जाय और योजना बनायी जाय। पक्ष के लिए यदि १ से १५ मई की तिथि आपके प्रदेश को अनुकूल न हो तो आप विशेष परिस्थिति में पक्ष का आयोजन उससे कुछ पूर्व भी (१८ अप्रैल या बाद की किसी तारीख से) शुरू कर सकते हैं। परन्तु कृपया १ से १५ मई से देर न की जाय, ताकि आगामी संघ-अधिवेशन और सर्वोदय-सम्मेलन से पहले ही इस दिशा में ठोस काम हो सके। पक्ष के दौरान सभी साथियों और सहयोगियों को अपनी सारी शक्ति उपवासदान के लिए संपर्क, प्रचार एवं संकल्प प्राप्ति के लिए ही लगानी चाहिए। आप जो भी कार्यवाही कर रहे हों, उसकी जानकारी गोपुरी दफ्तर को भेजें।

● कलकत्ता में वयोवृद्ध लोकसेवक दानाराम मक्कड सर्वोदय कार्यों में सातत्यपूर्वक लगे हैं। वे प्रतिवर्ष दीपावली पर अपने पिछले एक वर्ष में किये गये कार्य की जानकारी विनोबा जी को भेजते हैं। इस वर्ष की जानकारी इस प्रकार है :

पुस्तक बिक्री (रुपयों में) १२७१५.२६ पत्रिकाएं ६२७.२५ दैनन्दिनी ३१४५.००, गांधी डायरी ४४४.००, शान्ति किताब ५१५.२०, पत्रिकाओं के ग्राहक भूदान ५३, मैत्री ४५, भूमिपुत्र १८। इस एक वर्ष की अवधि में श्री दानाराम ने १११ रुपये से आन्दोलन को सहायता देने वाले २१ सर्वोदय सहायक मित्र बनाये। एक रुपया देने वाले सर्वोदय मित्रों के दायरे में ५३ नये साथी जोड़े। अपने सर्वोदय पात्र से ४७-४२ पैसा तथा १२०० रुपये का सम्पत्ति दान दिया है।

● हरियाणा के लोकसेवक फूलिया भगत ने सन् '७३ में १८८५ रुपये ६६ पैसे का सर्वोदय साहित्य बेचा। इस अवधि में उन्होंने ११२८ मील की पदयात्रा की तथा करीब २५० गांवों से सम्पर्क साधा। फूलिया भगत सन् ५६ से पैदल घूम-घूमकर सर्वोदय साहित्य और विचार फैला रहे हैं। अब तक इन १५ सालों में वे कुल २११२८ मील की पदयात्रा कर चुके हैं। इस दौरान उन्होंने ग्राम स्वराज्य के विचार को गांव की चौपालों में ५७८ गांव के निवासियों के सामने रखा है। १५ साल में कुल १७८६१ रुपये का साहित्य बेचा है।

सन् १९११ में जन्मे फूलिया भगत ने अपने गांव ठीठ (हरियाणा) में सर्वोदय आश्रम की स्थापना की थी। सन् ५६ में उन्होंने साहित्य प्रचार को अपना काम मान कर आश्रम को जनाधारित बना दिया। तब से वे स्वयं को विनोबा का डाकिया मानते हुए ग्रामस्वराज्य विचार की डाक गांव-गांव बांट रहे हैं। फूलिया भगत के इस अनोखे डाक विभाग में पिछले १५ सालों में कभी भी हड़ताल नहीं हुई है।

● २७ मार्च को राजस्थान भूदान बोर्ड बीकानेर कार्यालय में जिले के लोकसेवकों की एक बैठक देवीदत्त पंत जी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें जिला सर्वोदय मंडल का गठन किया गया। सर्व सम्मति से प्रेमसुख जी तोशनीवाल संयोजक चुने गये। मंडल ने इस साल १०१ लोक सेवक, १००० शांति सैनिक तथा १०१ उपवास दानी बनाने का फैसला किया। देवीदत्त पंत को उपवास दानी तथा लोकसेवक बनाने का, प्रेमसुख तोशनीवाल को सर्वोदय मित्र बनाने का तथा मोहनलाल मोदी को शांति सैनिक बनाने का जिम्मा सौंपा गया है।

● मध्य प्रदेश सेवक संघ के तत्वावधान में २३ से २५ मार्च से होशंगाबाद, बैतूल छिंदवाड़ा जिलों का संभागीय मित्र-मिलन हुआ। मिलन में ३० साथियों ने भाग लिया। [illegible] शिक्षक थे इस लिए शिवि[illegible] मुख्य विषय आचार्यकुल बना रहा। [illegible] मिलन का मत था कि आचार्य कुल और तरुण शांति सेना का सामंजस्य बिठाये बिना कोई असरदार काम नहीं हो पायेगा। यह भी सोचा गया कि होशंगाबाद में तहसील या जिले के सब प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों का एक दिवसीय सम्मेलन करना चाहिए। मित्र-मिलन में ६ उपवास-दान मिले।

● कानपुर के आर्यनगर सर्वोदय मंडल का पुनर्गठन हुआ। मंडल की भूतपूर्व अध्यक्षा भगवती देवी पंत ने वृद्धावस्था के कारण स्वेच्छा से पद छोड़कर नौजवानों को आगे किया। नये अध्यक्ष रवीन्द्रसिंह चौहान सर्व सम्मति से चुने गये। डा॰ प्रोमप्रकाश चतुर्वेदी पुनः मंत्री बनाये गये। डॉ॰ चतुर्वेदी गत चौदह सालों से इस भार को उठाते रहे हैं।

वार्षिक शुल्क—१५ रु॰ विदेश ३० रु॰ या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए॰ जे॰ प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २२ अप्रैल, '७४

बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ■ छात्र जे० पी० के साथ · शेष पृष्ठ १० पर]

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० | २२ अप्रैल, '७४ | अंक ३०

१६ राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

राजनीति का विघटन या विघटन की राजनीति

—प्रभाष जोशी

श्रीमती गांधी इन दिनों विघटन की राजनीति से चिन्तित हैं। इन लोगों की गति-विधियों से भी वे परेशान हैं जो अहिंसा की कसम खाते हुए जाने-अनजाने विघटन की राजनीति को बढ़ावा दे रहे हैं। इन लोगों के नाम वे नहीं लेतीं। नाम लेने का काम उन्होंने अपने नगाड़ेबाजों को सौंप दिया है। विघटनकारियों से निपटने का उनका तरीका एक कुशल शिकारी का है। प्रजातन्त्र को नुकसान पहुंचाने वाले जिस किसी सिंह को वे समाप्त करना चाहती हैं उसके पीछे बन्दूक लेकर स्वयं नहीं भागतीं। ढोल-नगाड़ा बजाने वाले लोगों को वे भाड़े पर बुलाती हैं और उन्हें हेंका करने पर लगा देती हैं। स्वयं वे कोई अच्छी सुरक्षित जगह में बने मचान पर सर्चलाइट और बन्दूकों से लैस होकर बैठ जाती हैं। हेंका करने वालों की भीड़ जब शोर करके शिकार को उनके मचान के पास ले आती है तो वे अचूक निशाना लगाकर सिंह को समाप्त करती हैं और फिर देश भर के फोटोग्राफरों से शिकार पर पैर रख कर फोटो खिंचवाती हैं। सब तरफ से फोटो छपते हैं।

लेकिन इस बार कुछ ऐसा हुआ है कि जिस 'जन-विरोधी' सिंह को वे समाप्त करना चाहती हैं वह खुद ही जंगल की अपनी गुफा से हुंकारता हुआ बाहर आ गया है। हेंका करने वालों के नगाड़ों से उसकी हुंकार ज्यादा तेज है जिसे सुन कर गांव वाले घरों से निकल कर बाहर आ गये हैं। खुद हेंका करने वालों में खलबली मच गई है और सिंह की [illegible] और शालीनता देख कर ढोल पीटने के बजाय वे उसका गौरव करने लगे हैं। जो सिंह हेंका करने वालों से भड़कता नहीं बन्दूकों और संगीनों से भयभीत नहीं होता वह गांव वालों को अभयदान देता है। शिकारी की बन्दूकें और हेंका करने वालों के ढोल हास्यास्पद हो जाते हैं।

[illegible] : सोमवार, २२ अप्रैल '७४

जैसे क्या यह हास्यास्पद नहीं कि श्रीमती इन्दिरा गांधी विघटन की राजनीति से देश को आगाह करें? जो कांग्रेस आजादी के लम्बे संघर्ष के दौरान नाजुक से नाजुक घड़ियों में नहीं टूटी थी उसे सन् ६९ में किसने विघटित किया? जो कांग्रेस अपने इतिहास में हमेशा देश की सर्वसम्मति की पार्टी रही है उसे किसने तोड़ कर विभिन्न मत वालों का एक दूसरे के खिलाफ खड़ा किया? किसने कांग्रेस के अधिकृत उम्मीदवार का राष्ट्रपति के चुनाव में हरवाया और किस ने उन प्रजातान्त्रिक परम्पराओं और धारणाओं का समापन किया जिन्हें इस देश की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं ने अपने वैचारिक आग्रह और आपसी मतभेद भुला कर स्थापित किया था? किसने इस देश की स्वतन्त्र न्यायपालिका का सामाजिक प्रतिबद्धता के नाम पर कार्यपालिका की अनुचर बनाया? अगर ये सारे कार्य प्रजातांत्रिक हैं तो भ्रष्टाचार, महंगाई और अभाव के खिलाफ अहिंसक प्रतिकार करना कैसे अप्रजातांत्रिक हो जाता है? संसदीय और प्रजातांत्रिक संस्थाओं को योजनाबद्ध तरीके से समाप्त करने के लिए कौन धन इकट्ठा कर रहा है? करोड़ों रुपये खर्च करके चुनाव जीतने वाले या चुनावों के दौरान मतदाताओं का प्रतिकार करने वाले?

इन प्रश्नों के उत्तर सब जानते हैं। फिर भी ये सवाल पूछे नहीं जाने चाहिए क्योंकि इस समय देश में संकट है और इन्दिरा जी परेशान हैं। जब वे उत्तर प्रदेश से कमलापति त्रिपाठी को हटाकर कांग्रेस की छवि सुधारने के लिए हेमवती नन्दन बहुगुणा को जिता रही थीं तब गुजरात विधानसभा के कांग्रेस दल में फूट पड़ गई। जब गुजरात जल रहा था तब प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष जीनाभाई दर्जी और मुख्यमंत्री चिमन भाई पटेल अपने आपसी हिसाब साफ कर रहे थे। जब कांग्रेस के आलाकमान ने चिमन भाई को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने को कहा तो उन्होंने विधान सभा से त्याग पत्र दे दिया। उस आदमी को कांग्रेस से निकालना पड़ा जो कल तक उसकी सरकार का प्रमुख था। विधान सभा के विसर्जन की मांग के चिमन भाई द्वारा किये गये समर्थन ने केन्द्रीय सरकार को अपनी हठ छोड़ने पर बाध्य किया। प्रजातन्त्र की रक्षा के नाम पर एक जन आन्दोलन कुचलने वाली सरकार को—स्थिति सामान्य हुए बिना विधान सभा विसर्जित करनी पड़ी और अब, बिहार में गफूर सरकार की छवि सुधारने के लिए कांग्रेस आलाकमान छियालीस में से चौबीस मंत्रियों को हटाना चाहता है तो मंत्रियों ने विद्रोह कर दिया है और वे राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग कर रहे हैं। मध्य प्रदेश में कांग्रेस विधायक सेठी को हटाना चाहते हैं। कौन सा ऐसा प्रदेश है जहां कांग्रेसी विधायक सत्ता के लिए खुद अपनी सरकार की नींद हराम नहीं किए हुए हैं?

कांग्रेस की यह अन्दरूनी राजनीति क्या रचना की राजनीति है? सन् ७२ में इन्दिरा जी ने राज्यों के लिए जनता से आदेश मांगा था और हर जगह कांग्रेस को प्रचण्ड बहुमत मिला। केन्द्र और राज्यों में इतने जोरदार समर्थन और जनता के स्पष्ट आदेश को कांग्रेस के भीतर चलने वाले सत्ता संघर्ष ने धूल में मिला दिया। विघटन की राजनीति न विरोधी पार्टियां चला रही हैं न वे 'मासूम' लोग जो अहिंसा की कसम खाते हुए हिंसा को भड़का रहे हैं। विघटन की राजनीति कांग्रेस चला रही है और उसकी एकमात्र नेत्री है—श्रीमती इन्दिरा गांधी। इसे हार्दिक दुख है कि अपने घर में मचे हुड़दंग को वे शान्त नहीं करतीं और इस अव्यवस्था के शिकार लोगों को कहती हैं कि वे चुप रहें और तकलीफों को बर्दाश्त करते चले जायें।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

भारत, पाकिस्तान और बांगला देश

भारत, पाकिस्तान और बंगला देश के बीच हुआ त्रिपक्षीय समझौता सन्' ७१ के युद्ध से उत्पन्न समस्याओं के ' गकरण की दिशा में एक रचनात्मक कदम ' । अगर इसी भावना और समझदारी से ये तीनों देश अपनी आपसी समस्याओं के हल निकालते रहे तो आशा की जाती है कि ब्रिटिश साम्राज्य ने इस उपमहाद्वीप का बँटवारा करके जो कृत्रिम स्थिति पैदा की है वह धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगी। धर्म राष्ट्रीयता हो सकता है यह विचार भारतीय नहीं है। यूरोप में भी धर्म राष्ट्रीयता की परिभाषा नहीं है। फिर भी मुसलमान एक अलग राष्ट्र है और हिन्दू एक अलग राष्ट्र यह अवधारणा अंग्रेजों ने ही हमारे दिमाग में भरी और आड़ी रेखाओं के जातीय स्तरों में बँटे समाज को उन्होंने खड़ी रेखाओं में बाँट कर हिन्दुओं, मुसलमानों, सिक्खों, ईसाइयों, पारसियों, बौद्धों और जैनों को एक दूसरे के खिलाफ खड़ा किया। इस्लाम की स्थापना के लिए भारत में आये मुसलमानों ने भी इस देश को धर्म के नाम पर इतने टुकड़ों में नहीं बाँटा था जितना कि सभ्यता और व्यापार के नाम पर आये अंग्रेजों ने बाँटा। युद्धों और पराजयों से छिन्न-भिन्न और दीन-हीन हुए भारतीय समाज में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह अंग्रेजों के खेल को समझ कर उसे रोकने का संगठित प्रयास करता। अंग्रेजों ने सामाजिक विभाजन के जो बीज इस बहुभाषी और बहुधर्मी देश में साम्राज्य चलाने के लिए बोये वे सन्' ४७ में बबूल के वृक्षों की तरह उगे और इस महाद्वीप के कृत्रिम टुकड़े हो गये।

सन्' ४७ के बाद अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और महाशक्तियों ने इस कृत्रिम विभाजन को फूट और हिंसा की आक्सीजन दे दे कर जिन्दा रखा। जो लोग सदियों से एक साथ रहते आये थे और सहिष्णुता जिनके सामाजिक जीवन का प्रतिष्ठित मूल्य था वे दो राष्ट्रों में विभाजित होकर एक दूसरे पर शक करने लगे और एक दूसरे के अस्तित्व के लिए खतरा बन गये। लोगों का नजदीक आना तो खैर असम्भव था ही उनकी सरकारें भी आपसी मामले सुलझाने के लिए टेबल पर बैठ कर परस्पर विश्वास से बातें नहीं कर सकती थीं। बिचौलों के स्वार्थ इसी में थे कि यह उपमहाद्वीप बँटा रहे और आपस में लड़ता रहे। इन बिचौलों ने उपमहाद्वीप की वास्तविकता को हमेशा नकारा और पाकिस्तान के अहम् के गुब्बारे को शस्त्रों की ताकत से फुलाये रखा। पाकिस्तानियों के मन में मध्यकाल की उन स्मृतियों को जीवित किया जो गलत इतिहास के अनुसार गिनती के इस्लामी जिहादियों द्वारा हिन्दुओं की विशाल सेना को हराने की घटनाओं में रची थीं। भारत और पाकिस्तान को शक्ति की तराजू पर बराबरी में रखने के इरादों ने पाकिस्तान को एक ऐसी आक्रमकता दी जो उसकी शक्ति की वास्तविकता से कोसों दूर थी और भारत को एक लकड़पाथी हाथी की छवि देकर उसके मन में झुंझलाहट की ऐसी भावना भरी जो उसकी वास्तविक शक्ति को ... थी।

शक्तियों की जमींदारी के पांव मजबूत किये। राष्ट्रसंघ इस जमींदारी को तोड़ने में असमर्थ था और छोटे देशों के हितों की रक्षा कर सकना उसके बस के बाहर की बात थी।

एक महाशक्ति के नाते चीन के उदय ने रूस और अमरीका के शक्ति सन्तुलन को गड़बड़ा दिया। हालांकि चीन ने अपने को तीसरे संसार के उद्धारक के रूप में पेश करने की कोशिश की पर उसके तौर-तरीके भी रूस और अमरीका से भिन्न नहीं थे। वह जमींदारी का इलाका निकाल लेना चाहता था। रूस और चीन के मतभेदों ने इन दोनों देशों को अमरीका के नजदीक किया और जागतिक शक्ति सन्तुलन के नये समीकरण दुनिया में उभरने लगे। अमरीका की तरह चीन भी आक्रमक सैनिक राष्ट्रीयता का समर्थक बना और हमारे उपमहाद्वीप में उसने वही रोल अदा करना शुरू किया जो अब तक अमेरीका कर रहा था। रूस ने चीन और अमेरिका की समर तोलि का असर मिटाने के लिए छोटे देशों की राष्ट्रीयता और स्वायत्तता का सम्मान करना शुरू किया। चीन ने पाकिस्तान को अमरीका की तरह शस्त्र दिये और रूस ने भारत का समर्थन किया और शस्त्र भी दिये।

ग्रामस्वराज्य का संसद से संबंध जुड़ा

उत्तरप्रदेश सर्वोदय सम्मेलन की रपट अनुपम मिश्र द्वारा

दस से बारह अप्रैल तक रुद्रपुर (जिला नैनीताल) मे हुए उत्तर प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन मे ३५ जिलो से आये १२५ लोकसेवको ने पिछले चौदह महीनो से चली आ रही 'अन्तरिम' व्यवस्था को खत्म कर एक बार फिर बाकायदा सर्वोदय मडल गठित कर लिया है। चम्बल के बागियो के बीच काम करने वाले महावीर सिंह सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुने गये है। महगाई, भ्रष्टाचार, कुशासन जैसी आर्थिक बुराई के दौर से गुजर रहे देश मे छात्र और जनता की विफरी और सरकार की संगठित हिंसा के टकराव की घटना था का प्रदेश सम्मेलन मे हुई बहसो पर पर्याप्त असर था। ऐसे वातावरण मे गाव और शहर के लोकसेवक क्या काम करें, कैसे करें जैसे प्रश्नो का कोई सर्वसम्मत उत्तर उत्तरप्रदेश सम्मेलन मे नही निकला लेकिन सर्वोदय आदोलन के लचीलेपन के कारण उत्तमहाद्वीप और देश की परिस्थिति पर एक निवेदन सभी लोकसेवको की सहमति █ पास हो गया।

दस अप्रैल को शुरू हुए खुले अधिवेशन मे महावीर सिंह व सुन्दरलाल बहुगुणा ने क्रमश: सम्मेलन अध्यक्ष ओमप्रकाश गौड और उद्घाटक स्वामी चिन्दानन्द का परिचय कराया। रामप्रवेश शास्त्री ने गत एक वर्ष मे जुदा हुए साथियो की स्मृति मे शोक प्रस्ताव रखा। स्वागत भाषण मे सम्पन्न तराई की जनता की ओर से अभिनन्दन करते हुए रामसुमेर भाई ने जहा यह उम्मीद की कि सत्ता की राजनीति से अलग रहकर काम कर रहे लोकसेवक घिरती हुई समस्याओ का हल खोज निकालेंगे वहा उनके बाद के वक्ता देव जी ने (इस क्षेत्र से काग्रेसी विधायक हैं) ऐसे ईमानदार लोकसेवको को सक्रिय राजनीति मे आकर देश की समस्याओ को हल करने का निमत्रण दे डाला। उन्हे विश्वास था कि दलीय पद्धति बनी रहेगी। पहले के मार्क्सवादी और अब के जनसघी रुद्रपुर के मेयर चतुर्वेदी जी को जिन्हे सन् ७२ मे डाकुओ का हृदय परिवर्तन देख कर विश्वास हुआ था कि जोर जबरदस्ती के बदले समझा बुझाकर भी समस्या हल हो जाती है, सर्वोदय सम्मेलन का मच इतना पवित्र लगा कि उन्होने सत्तारूढ दल की आलोचना की इच्छा को रोक कर केवल चरैवेति-चरैवेति अपने लक्ष्य की ओर सदा बढते रहो-भर कहा।

उद्घाटनकर्ता स्वामी चिन्दानन्द ने अपनी अमेरिकी यात्रा के दौरान टेनिसन की पुस्तक 'द सेंट इ वाक्स' से (पदयात्री सन्यासी') विनोबा को जाना था। वे पिछले तीन वर्षों से उत्तराखण्ड के सर्वोदय कार्यों मे मदद दे रहे है। उनको गौड साहब न माला पहनाई तो स्वामी जी न उनके पैर छू लिए।

स्वामी जी का लगभग दो घटे का उद्घाटन भाषण अध्यात्म रहित विज्ञान की अन्धी दौड वायुदूषण, मध्यम दर्जे की तकनीक, आदि अनेक विषयो को समेटता था।

जयप्रकाश नारायण का अभिनन्दन

रुद्रपुर (नैनीताल) मे १० अप्रैल से १२ अप्रैल तक आयोजित उत्तरप्रदेश का यह सर्वोदय सम्मेलन आज देश मे जो सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक एव साम्प्रदायिकता व जाति भेद जनित शोषण भ्रष्टाचार व असतोष और अशाति व्याप्त है, और उसके फलस्वरूप जनता जो घोर निराशा से तोड-फोड के द्वारा आज की परिस्थिति █ भयकर आक्रोश प्रकट करने की तरफ बढ़ रही थी, ऐसे नाजुक मौके पर जनता के आक्रोश को लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने अपनी क्रातिकारी सूझबूझ और अनुभव से जो अहिंसात्मक शांत और मौन जलूस का स्वरूप देकर एक नयी दिशा पटना मे दिखायी है और ७२ वर्ष की अवस्था होते हुए भी अहिंसक आन्दोलन के नेतृत्व करने की जो तैयारी बतायी है, उसका यह सम्मेलन हार्दिक अभिनन्दन और उसका समर्थन करता है।

प्रस्ताव : विनयभाई

अनुमोदक : प्रकाश भाई

आज की दुनिया पर छाये सकट का जिक्र करते हुए उन्होने कहा कि ' इसके मूल कारण हटाये बिना यह दूर नहीं होगा। अन्य कोई भी पद्धति लीपापोती ही होगी, हम बोझे को सिर से उतारकर कभी बाये कन्धे पर रखेंगे तो कभी दायें पर। केवल सर्वोदय के रास्ते से ही समस्याओ की गठरी हमारे शरीर से उतरेगी। विनोबा ने पदयात्राओ के माध्यम से ही लोगो के मन मे प्रवेश कर उनकी समस्यो को हल किया है—ऐसा कहते हुए उन्होने लोक सेवको से आग्रह किया के उ०प्र० मे अनेक अखड पदयात्राओ द्वारा विचार फैलाए।''

दूसरे दिन, ग्यारह बजे लोकसेवकों की बैठक मे सयोजक बहुगुणा ने वार्षिक रपट पेश करने की परम्परा को तोडा। उन्होने नया तरीका सुझाया। काम कर रहे कार्यकर्ता ही अपने-अपने क्षेत्रो मे साल भर █ काम की रपट दें। किसी एक व्यक्ति द्वारा पेश की जाने वाली नीरस रपट से यह तरीका बेहतर साबित होता यदि सम्मेलन मे प्रदेश मे चल रहे अलग-अलग कामो को करने वाले लोगो का पूरा प्रतिनिधित्व होता या वक्ता अधिक समय नही लेते। लेकिन ऐसा हुआ नहीं इसलिए केवल चम्बल का बागी आत्मसमर्पण, बाह इटावा मे मतदान शिक्षण (रपट दी महावीर सिंह ने) भूदान यज्ञ समिति (द्वार प्रसार) आचार्य कुल (रामरतन) तरुण शान्ति सेना (प्रदेश अध्यक्ष कुवर प्रसून की अनुपस्थिति मे विनय भाई), खादी कार्य (करण भाई) चिपको आन्दोलन (चण्डी प्रसाद भट्ट) —इतने ही काम की रपट सामने आ सकी। बकुवन ब्लाक, मिर्जापुर का बनवासी सेवाश्रम उपवास दान, उत्तराखण्ड मे १२० दिन पदयात्रा, हिमालय सेवा सघ द्वारा जौनसार बावर, रवाई क्षेत्रो मे आयोजित एक माह की पदयात्रा आदि अनेक कार्यों की जानकारी छूट गई।

बैठक के शुरू मे विनय भाई और राधेश्याम योगी ने पटना में आठ अप्रैल को निकले →

मौन जुलूस का आंखों देखा हाल सुना कर बैठक स्थल को कुछ समय के लिए पटना ही पहुंचा दिया था। राष्ट्रीय मोर्चे सहरसा के अंतिम सर्वोत्तम अभियान का वर्णन प्रकाश भाई ने सुनाया। उन्होने सहरसा के मूल्यवान अनुभवो को सहरसा के निधि व देन बताया।

वार्षिक कार्य के रपट के इस सत्र मे साढे दस बजे, चबल की रपट रोक कर विष्णु सहस्रनाम का पाठ शुरू किया गया। कुछ लोगो ने कार्यवाही रोक कर पाठ करना ठीक नही माना। उन्होने पूछा कि यह पाठ सुबह या बैठक के बाद नही किया जा सकता था? सभी जानते हैं कि पाठ का समय पूरे देश में १०-३० रखा गया है। उसे स्वीकार करना या न करना बिलकुल अलग बात है। लेकिन ऐसा वातावरण नहीं बनने देना चाहिए कि जिससे आस्तिक या नास्तिक, किसी के भी मन मे अपनी निष्ठाओ को लेकर अपराध भाव सा आ जाये।

शाम को खुले अधिवेशन मे ओम प्रकाश गौड ने ताजगी भरे अध्यक्षीय भाषण मे संसदीय प्रणाली के सकट, ग्रामस्वराज्य के स्पष्ट चित्र, ग्रामसभा, क्षेत्रीय परिषद् जन प्रतिनिधि आदि पर विस्तार से बोलते हुए कहा कि लोकतंत्र का वर्तमान ढाचा अभी बना रहेगा। इसलिए उसका निरन्तर विकास करते चले जाना है, यह विकास उसे सच्चे, प्रत्यक्ष लोकतंत्र मे बदल सकेगा। इस वर्ष उ० प्र० मे हुई क्षेत्रीय परिषद और मतदाता शिक्षण कार्य मे उन्होने कहा कि जयप्रकाश ने ग्रामस्वराज्य के काम का वर्तमान ससदीय प्रणाली से भी रिश्ता जोड़ा है। आखिर इस संसदीय प्रणाली को ग्रामस्वराज्य की गंगा मे ही तो लुप्त होना है। उन्होने आग्रह किया कि इन परिषदो को ग्रामदान की मूल क्रान्ति से जुदा कोई कार्यक्रम नहीं मानना चाहिये। हम किसी भी ओर चलें हमे मंजिल बराबर ध्यान में रखनी है, मंजिल हमारी ग्रामस्वराज्य ही है। फिर कहीं हिंसा और अराजकता की भर्त्सना करते हुए उन्होने चेताया कि देश मे ऐसी ताकतें हैं जो गांधी—विनोबा को अपना मसीहा नही मानती, यदि हम सजग नही रहे तो ये ताकतें देश को एक ऐसे बिन्दु तक भी ले जा सकती हैं जहां से लौटना बहुत कठिन होगा। शासन कर्ताओं

स्वामी चिदानन्द और बहुगुणा

नये अध्यक्ष महावीर सिंह

को नेक सलाह देते हुए ओमप्रकाश गौड़ ने कहा कि सरकारें दमन से अल्पायु होती हैं, सद्भावना और उदारता से दीर्घायु। हमे सत्तारूढ़ और विरोधी दोनो तरह के दलो को तीसरे रास्ते से परिचित कराना है।

विनोबा या जे० पी० के कार्यक्रमों तक ही कोई लोकसेवक अपने को सीमित न रखे। उन्होने अहिंसा के तरकश के कई तीरो का जिक्र करते हुए अंत मे कहा कि हमारी मंजिल समग्र क्रांति की है, समाज ग्राम या शासन सुधार की नही। नयी राह, नये कार्यक्रम हमें मैदान मे सूझेंगे।

कभी-कभी लोग धीरज जल्दी खो बैठते हैं, कम से कम उन विचारो को सुनते समय जो उन्हें पसन्द नही। अध्यक्ष के भाषण के दौरान 'घंटी बजाओ' की आवाज कमी गई। भाषण के बाद खुद गौड साहब को यह कह कर कि लोग ऊब चुके है, राधेश्याम योगी व कपिल अवस्थी को गीत गाने बुलवाना पड़ा।

रुद्रपुर के लोगो के बीच दूसरी बार आये डॉ दयानिधि पटनायक ने देश-दुनिया की समस्याओ का हल तलाशने वालो के सामने एक दूसरा पहलू रखा। विनम्र वैज्ञानिक पटनायक का कहना था कि हिंसक या अहिंसक किसी भी तरह के क्रान्तिकारी को आशावादी बनना होगा। निराशा का अर्थ मौत है निराशा के बीच भ्रष्टाचार, बुरा शासन आदि देख कर उनसे निपटने के लिए सत्याग्रह आदि सोचने के बारे मे डा० पटनायक ने कहा कि क्या विनोबा को भ्रष्टाचार नही दिखता, उसने तो 'भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार हो गया है' कह दिया है। वह सत्याग्रह क्यों नही करता—क्या वह सत्य से डरता है? आज किसी भी समस्या को हल करते समय लोगो को जोड़कर एक साथ आगे ले जाने का हमारा काम होना चाहिए। प्रेम से एकता, एकता से शान्ति, शान्ति से अहिंसा तक पहुंच कर ही हम अंत मे सत्य की मंजिल पर पहुंच सकेंगे।

लोक स्वराज्य की बात करते हुए पटनायक ने कहा कि बाबा ने उ० प्र० मे एक जिला से लेकर इस काम को पूरा कर दिखाने का सुझाव दिया ही था। यहा से यदि जन प्रतिनिधि सरकार मे जाते तो सरकार पर हमारा रंग चढ जाता। एशिया मे तीन देश हैं। चीन की आबादी ७० करोड़, भारत की ५५ करोड और रूस की २५ करोड़। रूस और चीन के विचार यहां फैल रहे हैं। चौथा देश २० करोड़ वाला—अमेरिका भी है। इसलिए हम जो भी कदम उठायें, यह सावधानी बरतें कि उससे कहीं गृह-युद्ध तो नही होगा।

"भ्रष्टाचार हटाने की बात एक भ्रम ही है। इसके लिए सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक, परिवर्तन की जरूरत है। वैज्ञानिक युग है, परिवर्तन जरूर आयेगा। हम मौजूदा व्यवस्था को टिकाये नहीं रखना चाहते, इसे बदलना है लेकिन समझा बुझाकर या जोर-

निर्मला देशपाण्डे, मास्टर सुन्दरलाल, ओमप्रकाश गौड तथा डा० दयानिधि पटनायक

→

जबरदस्ती से ?? विचार की शक्ति से आचार तक आयेंगे तब विधान, कानून खुद विचार के पास आ गिरेगा। जब किसी बात से ६० लोग सहमत होंगे १० नहीं तो उन १० के लिए कानून आयेगा। क्रान्ति साध्य और साधन पर उन्होंने कहा कि आप कोई भी कदम उठायें यह पक्का कर लें कि इसका अंत हिंसा, तोड़फोड़ में नहीं हो। हिंसा भड़काने की कोशिश कोई करे तो भड़का न पाये क्यों कि साध्य हमारा कई विचारों से मिलता है लेकिन साधन हमारे बिलकुल अलग है।"

"भ्रष्टाचार और बुरे शासन से अकेले नहीं निपटा जा सकता। हम कहें कि इस दोष में आप और हम दोषी हैं, आओ एक साथ चलकर इसे साफ करें। विनोबा के पास राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के देवरस भी आते हैं और इंदिरा भी, दोनों को उनका मार्गदर्शन है। यह हमारी कसौटी होगी, सब से कह सकें कि आओ मिल कर चलें, और वे चलें भी। पटना के मौन जुलूस का समर्थन करते हुए उन्होंने कहा कि मैं उस दिन का इन्तजार कर रहा हूं जब ४ लाख के बदले ४ करोड़ लोग हमारे साथ होंगे।

डा० पटनायक के भाषण के दौरान उनसे बीच में ही प्रश्न पूछने की कोशिश की गई। भाषण के अंत में भी उनसे असहमत कुछ लोकसेवक 'भ्रम फैलाने' जाने की शिकायत करते रहे।

इस सत्र में सम्पन्न तराई के विपन्न भूमिहीनों की समस्या का हल भी शुरू किया—९२ वर्षीय लल्लन प्रसाद ने मंच पर आकर २ एकड़ जमीन का दान दिया। तराई में इस उपजाऊ जमीन की कीमत बीस हजार रुपये है। मैत्री पत्रिका के नये ग्राहकों को संपादिका निर्मला बहन ने नये अंक भी भेंट किये।

मास्टर सुन्दरलाल के सतुलित भाषण ने एक दूसरे से भिन्न दृष्टिकोण रखने वालों से सहिष्णुता न लाने का आत्मीय आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इस परिस्थिति में विनोबा को भी तकलीफ है जे० पी० को भी। निर्मला बहन को भी किसी से कम दुख होगा यह मैं नहीं मानता। मुजफ्फरपुर में निर्मला बहन को नकली धमकी मिलने पर जे० पी० की आंखों में आंसू आये थे और जे० पी० के लिए बाबा की आंख में। क्या जे० पी० की आग अहिंसा से हट जायेगी ? अंत में उन्होंने कहा कि अपने साथियों को साम्प्रदायिक दंगों की आग में झोंक देने हैं, कोई साथी आज अपने को खुद झोंकने के लिए निकलेगा तो हम विचारों की बहस में नहीं पड़ेंगे—उसकी विदा फूलमाला पहना कर करेंगे।

शाम को उत्तराखण्ड के साथी अलग से बैठे, उन्होंने अखण्ड पदयात्राओं, शराबबन्दी स्त्री शक्ति जागरण, सरला बहन के ७५ वें जन्म दिन पर ७५ दिन की महिला पदयात्रा निकालने की योजना और चिपको आन्दोलन पर बातचीत की। सम्मेलनों में बहुप्रतीक्षित गरम भाप नये चुनाव का होता है। लेकिन रुद्रपुर में उस रात वह काफी ठंडा रहा। भोजन के बाद हुए इस सत्र में कोई ६० लोकसेवक रहे होंगे। महावीर सिंह व ओमप्रकाश गौड के नाम अध्यक्ष पद के लिए आये। नियम से ओमप्रकाश जी ने अपना नाम इस आधार पर वापस ले लिया कि प्रस्तावक ने उनकी सहमति नहीं ली थी। महावीर भाई ने जब बैठक में प्रवेश किया तो उन्हें यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि वे सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुन लिये गये हैं।

पाचली खुर्द में हुए पिछले सम्मेलन से उ० प्र० के लोकसेवक एक नये संगठन की तलाश में थे। संगठन का ढीलापन अच्छा है लेकिन वह काम को भी ढीला नहीं कर दे इस की उन्हें चिन्ता थी। पाचली खुर्द में किसी एक नतीजे तक नहीं पहुंच पाने से एक अंतरिम व्यवस्था खड़ी की गई—सुन्दरलाल बहुगुणा ने खुद को एक वर्ष तक संयोजक ही माना था। नये अध्यक्ष के चुनाव से उन्होंने अपने मुक्त मान कर सबको धन्यवाद दिया। संगठन में लोकसेवक इकाई है लेकिन कई कारणों से सम्मेलनों में वे ज्यादा नहीं आ पाते। कारण काम में व्यस्तता, आर्थिक कमी या उदासीनता भी हो सकता है। इसलिए सम्मेलन में चुनी गई कार्यकारिणी में सही प्रतिनिधित्व की कमी लोगों को लगती रही है। इस बार अध्यक्ष ने वहीं के वहीं कार्यकारिणी नहीं बनायी। सुझाव आया था कि प्रदेश के जिला अध्यक्षों को लेकर एक समिति बने। विनयभाई के इस सुझाव से कि कई जिलों में वहां के सक्रिय कार्यकर्ता अध्यक्ष नहीं बन पाते-इसलिए जिला अध्यक्षों के अतिरिक्त, अध्यक्ष १५ सक्रिय कार्यकर्ताओं को भी इस समिति में नामजद करें।

अन्तिम दिन सुबह लोकसेवकों ने अपने

मेजबान कृषि प्रशिक्षण कालेज के खेतों में गेहूं की कटाई की। डेढ़ घंटे के इस ठोस श्रमदान ने अलग-अलग दृष्टिकोणों को खेत पर खड़ा कर दिया था।

सुबह के सत्र में संयोजक की वार्षिक रपट के बदले कार्यकर्ताओं द्वारा दी जा रही जानकारी का छूटा क्रम पूरा किया गया। इकबाल बहादुर सिंह ने कानपुर में मुहल्ला सभाओं, मुजफ्फर नगर से बाला बहन ने उपवासदान, मुहल्ला सभाओं, आजमगढ़ से मेवालाल ने मधुबन क्षेत्र में टट ग्राम करने की योजना, धीरेन्दा का वहां शुरू हुआ कार्यक्रम आदि जानकारी दी। कानपुर के डा० सोमनाथ ने मुहल्ला सभा, ट्रस्टीशिप, रुद्रपुर के बलवन्त सिंह ने भूमिवानों के उन्नत फार्म और भूमिहीनों के संघर्ष, शराब के जोर आदि की जानकारी दी। इसी बीच जे० पी० के मौन जुलूस के समर्थन में एक प्रस्ताव एकाध शब्द के इधर-उधर करने से पास किया गया। फिर निर्मला बहन ने जो सम्मेलन में भाग लेने पवनार से आई थी एक अंतरंग चर्चा की शक्ल में इन दिनों विनोबा क्या और कैसा सोचते है को लोगों के सामने रखा। उन्होंने आंदोलन में चल रहे विचार मंथन का स्वागत करते हुए कहा कि मंथन से अमृत तो निकलता है लेकिन उसमें पहले विष बाहर आता है, उस विष को पीने वाला कोई एक नीलकंठ भी होता है। बाबा विषपान कर अमृत विश्व को दे रहे हैं। विनोबा के ही वाक्यों को उद्धृत कर उन्होंने बाबा को सामने रखा। जिस तंत्र पर निष्ठा रख कर हमने काम शुरू किया उस पर से हमारा विश्वास नहीं डिगना चाहिये।

दुनिया में आये तेल संकट, उपमहाद्वीप में बंगला देश, भारत, पाक के नजदीक आने से बने वातावरण को, सर्वोदय के विचार के लिए अच्छा अवसर बताकर उन्होंने अपील की कि अंग्रेजों द्वारा तोड़े गये टुकड़ों को जोड़ने के इस काम को कोई धक्का नहीं लगना चाहिए। सत्य पर विश्वास कर सब को साथ लेकर सबका हृदय बदलना होगा।

समापन सत्र में भावों के स्तर पर दो बिल्कुल भिन्न भाषण थे। स्वामी कृष्णानन्द ने तेज आवाज में कहा कि वोट सबका बराबर लेकिन पेट अमीर के अलग, गरीब के अलग? गरीब पिसता जा रहा है और हम सरकार की डफली बजायेंगे? आज तक किसी चुने गए प्रतिनिधि से मतदाता ने पूछा नहीं था कि तुम विधानसभा में क्या कर रहे हो। आज यह पूछा जाने लगा है—बहुत अच्छी शुरूआत है। परिस्थिति से निपटने के लिए अपने-अपने तरीकों को अजमाने की सलाह देते हुए उन्होंने शर्त रखी कि उससे हिंसा नहीं फूटनी चाहिए। विनोबा, जे० पी० के बीच कोई अन्तर न कर उन्होंने दोनों में नारायण हरि के दर्शन पाने की बात कही। समापन सत्र में महिला सम्मेलन भी होने वाला था, कस्बे से महिलाएं आ चुकी थीं। लेकिन समय बहुत कम था इसलिये तय हुआ कि निर्मला बहन अब केवल एक ही भाषण देंगी—सबके बीच। उनका परिचय कराने कौसानी के लक्ष्मी आश्रम की राधाभट्ट को बुलाया। उन्होंने परिचय के लिए मिले समय का उपयोग स्त्री शक्ति जागरण के लिए किये जा रहे प्रयासों के वर्णन में कर महिला सम्मेलन के न होने से हुई कमी को काफी हद तक पूरा कर लिया। ●

रुद्रपुर सम्मेलन का निवेदन

देश की मौजूदा गम्भीर परिस्थिति और उससे मुक्त होने के लिए किये जाने वाले प्रयासों पर उत्तर प्रदेश सर्वोदय सम्मेलन ने गम्भीरता से विचार किया। सम्मेलन की निश्चित राय है कि सत्ता की होड़ में व्यस्त राजनैतिक दलों का हिंसक प्रदर्शनों बंदों और हड़ताल आदि के द्वारा होने वाला आचरण जनहित के लिए घातक है। इसको दबाने के लिए प्रयुक्त राजकीय हिंसा से भी हिंसा की ही शक्ति बढ़ती है। इसलिए सम्मेलन सभी राजनैतिक दलों से विनम्र प्रार्थना करता है कि देश हित को ध्यान में रख कर शांतिमय तरीके अपनायें।

भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी जैसी ज्वलंत समस्याओं के विरुद्ध युवाशक्ति का जागरण एक नई घटना है और उसी क्रम ८ अप्रैल को पटना में जे० पी० के नेतृत्व में निकले मौन जुलूस ने सारे देश का और खास तौर से युवाशक्ति को एक नया मार्ग दिया है, जिस का अनुसरण हिंसक प्रदर्शनों का एक सर्वोत्तम विकल्प है।

इसी बीच भारत, पाकिस्तान और बंगला देश के बीच हुआ समझौता इस उप महाद्वीप की एक शुभ घटना है। अहिंसा के प्रयोगों के लिए नये क्षितिजों के प्रकटन से केवल इन समस्याओं के हल के लिए ही नहीं, समग्र क्रांति के लिए अहिंसा की शक्ति के प्रति हमारा विश्वास अधिक दृढ़ हुआ है। अराजकता और तानाशाही के मार्ग को प्रशस्त करने वाली हर प्रकार की हिंसा का हर स्तर और परिस्थिति में विरोध करने के लिए जनता को तैयार करने के अपने कर्तव्य के प्रति हम निरंतर जागरूक हैं।

हमारे देश और प्रदेश में अहिंसक मार्ग से समस्याओं को हल करने के कई प्रयोग हुए हैं। भूदान द्वारा लाखों एकड़ भूमि का वितरण हुआ, चम्बलघाटी में बागियों के आत्म-समर्पण को तो विश्व ने एक चमत्कार ही माना है। उत्तराखण्ड में शराब बन्दी और चिपको आंदोलन अहिंसक जन शक्ति की सफलता के दूसरे कीर्तिमान हैं।

सर्वोदय आंदोलन अहिंसक जन शक्ति के विकास के महान उद्देश्य की ओर हर समस्या और परिस्थितियों में आगे बढ़ता जायेगा क्योंकि उसके लिए अनुकूल परिस्थितियां बन रही हैं। इसके लिए ग्राम स्वराज्य के विचार पर आधारित गावों और नगरों में ग्राम सभाओं में और मुहल्ला समितियों के रूप में संगठित होकर केवल तात्कालिक समस्याओं को हल करने में ही नहीं बल्कि लोक स्वराज्य की दिशा में बढ़ने में भी जनता समर्थ होगी। प्रदेश के कोने-कोने में पदयात्राओं और स्त्री-शक्ति जागरण व उपवास दान के कार्यक्रमों के द्वारा अब तेजी से बुनियाद बनाने का समय है। हम राजकीय पक्षों समेत जन जीवन को उन्नत बनाने और समाज परिवर्तन के लिए सब निष्ठ सेवकों का इसके लिए आवाहन करते हैं।

६ अप्रैल को आयोजित पटना की विशाल सभा में श्री जय प्रकाश नारायण

बिहार में छात्र सड़कों पर क्यों हैं ?

—श्रवण कुमार गर्ग

बिहार में आग धीरे-धीरे सुलग रही है। आग का सुलगाना अगर जारी रह सका तो केवल गफूर साहब के इस्तीफा देने से ही काम नहीं चलेगा, विधानसभा भी भंग करना पड़ेगी। जय प्रकाश जी आदोलन जिस तरह चलाना चाहते हैं अगर उस तरह चला तो केवल विधानसभा भंग हो जाने से ही काम नहीं चलेगा, देश के सबसे गरीब और भ्रष्टाचार से सबसे अधिक त्रस्त प्रान्त बिहार से व्यवस्था परिवर्तन की एक शुरुआत का सिलसिला प्रारंभ होगा जो रेल मार्ग से उत्तर प्रदेश होता हुआ दिल्ली भी पहुंचेगा। १८ और १९ मार्च को पटना में जो आगजनी की घटनाएं हुई उसका धुंआ अभी बुझा नहीं है। धुंआ जिधर से भी गुजरता है लोगों की आंखों में घुसता है और आखों से पानी निकलता है। जारी लोगों की सभा में जब जयप्रकाश जी ने भरे दिल से ६ अप्रैल को पटना में कहा कि 'पटना जलता रहा और कोई पूछने वाला नहीं रहा' तो पूरी सभा की आंख नम हो आई।

गुजरात में और बिहार में बहुत फर्क है। बिहार में जितना दो दिन में जल कर राख हो गया उतना गुजरात में साठ दिन तक जलता रहा और आज भी जल रहा है। पटना स्टेशन पर उतर कर पूरे शहर में घूम जाइये ऐसा कुछ नहीं लगेगा कि यह शहर आंदोलन की चपेट में है। दुकानें पहले जैसी ही खुली हैं और गरीब साईकिल रिक्शावाले पहले की तरह ही रिक्शा खींचते मिलेंगे। पटना ही क्यों मुजफ्फरपुर, मुंगेर, गया, भागलपुर कहीं घूम आइये जिन्दगी बिहार की रफ्तार से ही चल रही है, कोई तब्दीली नहीं दीखेगी। पर कुछ है कि अन्दर ही अन्दर पिघल रहा है।

बात गुजरात से शुरू की जाए। गुजरात के एल० डी० इंजीनियरिंग कालेज में होस्टल के छात्रों के भोजन बिल को लेकर आदोलन शुरू हुआ। गुजरात के गरीब आदमी ने इन छात्रों से पूछा कि तुम तो आदोलन करके भोजन का बिल कम करवा लोगे पर हम गरीब लोग क्या करेंगे? छात्रों के पास इसका कोई जवाब नहीं था। इसीलिए गुजरात का आदोलन वहां के आम आदमी की जिन्दगी के साथ जुड़ गया। गुजरात के लोगों को लगा कि जब तक चिमनभाई पटेल के मंत्रिमंडल को नहीं हटाया जाता तब तक गुजरात से भ्रष्टाचार नहीं जायेगा। अलग-अलग विचारधाराओं को मानने वाले लोगों का जिस प्रकार आजादी के पहले यह मानना था कि पहले अंग्रेज जाएं तब समस्यायें सुलझेंगी उसी तरह सारा गुजरात पटेल को हटाने के लिए गैर राजनीतिक स्तर पर एक हो गया। पर जिस प्रकार अंग्रेजों के जाने के बाद बाद हुआ पटेल के जाते ही गुजरात के आंदोलनकारियों में आगे के कार्यक्रम को लेकर वैचारिक ध्रुवीकरण शुरू हो गया।

हालांकि बिहार के छात्रों ने अपने आदोलन की प्रेरणा गुजरात से प्राप्त की और कहा भी कि 'गुजरात की जीत हमारी है, अब बिहार की बारी है', पर बिहार के आदोलन की शुरुआत वैचारिक ध्रुवीकरण से हुई और गुजरात की तरह वहां के आंदोलनकारी गैर राजनीतिक स्तर पर अपने आपको एकत्र नहीं कर पाये। इसीलिये बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति में इस बात पर अभी तक मतैक्य नहीं हो पाया कि क्या गफूर साहब से इस्तीफे की मांग की जाये? क्या विधानसभा भंग करने की मांग की जाये? इन सवालों पर मतभेद होने के कई कारणों में एक यह भी है कि छात्र संघर्ष समिति में ऐसे भी कुछ सक्रिय लोग हैं जो कहते हैं कि केवल गफूर इस्तीफा दे देंगे इससे तो पूरी व्यवस्था बदल नहीं जायेगी, चुनाव की पद्धति तो पुरानी ही रहेगी और कोई नया मुख्यमन्त्री आ जायेगा। इससे न तो भ्रष्टाचार खत्म होगा न महगाई मिटेगी। बड़ी अजीबो-गरीब परिस्थिति में बिहार के आंदोलन की शुरुआत हुई?

बिहार सरकार को अपने गुप्तचर विभाग के माध्यम से इस बात की पूरी खबर थी कि गुजरात में जिस सिरे पर आंदोलन समाप्त हुआ है उसी सिरे को उठा कर बिहार में आदोलन चलाया जायेगा। इसीलिए (एक स्थानीय साप्ताहिक पत्र के अनुसार) 'गुजरात के जन आदोलन से आतंकित बिहार सरकार ने बहुत पहले से यह फैसला कर

रखा था कि छात्रों की जायज मांगें मानने के बजाय उनको और निरीह जनता का सर लाठीगोलियों की मदद से कुचल दिया जाए, क्योंकि सरकार भ्रष्टाचारियों और जमाखोरों से अपनी साटगाठ खत्म करना, अपने ही पैरों पर कुल्हाडी मारना समझती है, इसलिए विधानसभा के घेराव के पूर्व मुहूर्त में बड़े-बड़े विज्ञापनों के जरिये जनता और छात्रों में यह गलतफहमी फैलाने की कोशिश की कि सरकार ने छात्रों की सभी मांगें मान ली हैं, जब कि सत्ता कांग्रेस के महामंत्री चन्द्रजीत यादव आंदोलन के पांचवें दिन भी सरकार को यह सलाह दे गये (हैं) कि उसे छात्रों की जायज मांगें मान लेनी चाहिए और उस दिन भी सरकार विधानसभा में यही राग अलापती रही कि उसने छात्रों की मांगें मान ली हैं।'

फरवरी के तीसरे सप्ताह में पटना में बिहार के सभी विश्वविद्यालयों के छात्र प्रतिनिधियों का एक दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित हुआ था। इस सम्मेलन में लगभग सभी राजनैतिक दलों के छात्र प्रतिनिधियों ने भाग लिया। विद्यार्थी परिषद, समाजवादी युवजन सभा और संगठन कांग्रेस के लोग इस सम्मेलन में ज्यादा सक्रिय थे। सम्मेलन में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से सम्बद्ध अखिल भारतीय स्टूडेंट फेडरेशन के लोग भी थे, पर वे बाद में सरकार को होने वाली परेशानी के सम्बन्ध में उठे नीति मतभेदों के कारण टूट गये और प्रदेश छात्र संघर्ष समिति के समानांतर एक अलग मोर्चा बना कर कार्यक्रम चलाने लगे। सम्मेलन में जयप्रकाश जी द्वारा बालपुर और वाराणसी में दिये भाषणों की चर्चा हुई और यह महसूस किया गया कि बिहार में भी कुछ किया जाए।

मुख्यमंत्री गफूर के विधानसभाई चुनाव का *नतीजा जिस दिन घोषित होने वाला था,* उसी दिन लगभग २०० छात्रों ने मुख्यमंत्री के निवास पर २४ घंटे का अनशन और धरना दे कर भी अपनी व्यापक जन मांगों को उजागर किया। प्रमुख मांगें थी—भ्रष्टाचार समाप्त किया जाए और शिक्षा में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो। इन मांगों के साथ ही छात्रों की अपनी भी कुछ मांगें थी। लगभग ग्यारह मांगें छात्रों की ओर से की गई थी।

अपने मांगों की घोषणा के साथ ही संघर्ष समिति ने चेतावनी दी थी कि अगर १८ मार्च तक उनकी मांगें पूरी करने की दिशा में सरकार ने ठोस कदम नहीं उठाये तो उस दिन प्रदेश के छात्र विधानसभा के सामने प्रदर्शन और घेराव करेंगे तथा राज्यपाल और मंत्रियों समेत किसी भी विधायक को सभा भवन में प्रवेश नहीं करने देंगे। १८ मार्च तक सरकार ने सिर्फ यह किया कि विधानसभा भवन के आसपास केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस, सीमा सुरक्षा दल और बिहार पुलिस के हजारों जवानों को बन्दूक की गोलियों और लाठियों से लैस कर तैनात कर दिया और शहर की सुरक्षा को गुण्डों के हवाले कर दिया। जिसका फायदा उठा कर उन्होंने 'प्रदीप' और 'सर्चलाईट' को फूंक दिया। 'पटना जलता रहा और कोई पूछने वाला नहीं रहा।'

१८ मार्च को विधानसभा के अन्दर व बाहर जो कुछ हुआ उसे यहां दोहराना ठीक नहीं। ६ अप्रैल को जयप्रकाश जी ने लाखों लोगों के बीच १८ और १६ मार्च की घटनाओं के बारे में केवल इतना कहा कि उन्हें प्राप्त आंकड़ों के अनुसार ८१ लोगों को अस्पताल में भर्ती किया गया। जिन लोगों को गोलियां लगी उनमें दर्शक और साधारण कर्मचारी लोग ज्यादा थे। छोटे-बच्चों पर भी निर्दयता से गोली चलाई गई।

१८ मार्च को इतनी बड़ी घटना हो जायेगी इसकी उम्मीद छात्र संघर्ष समिति को भी नहीं थी। न यह उम्मीद ही थी कि विधानसभा के घेराव के समय पच्चीस-तीस हजार लोग पहुंच जायेंगे। इसलिए जब १८ को पटना और १६ को बिहार के अन्य हिस्सों में प्रेमपूर्वक गोली चलाई गई तो पूरे छात्र *आंदोलन का रूप बदल गया।*

बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ने छात्रों के लिए एक प्रतिज्ञा पत्र जारी किया "मैं यह प्रतिज्ञा करता हूं कि बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति द्वारा आयोजित सत्याग्रह में सम्मिलित होकर वर्तमान व्यवस्था के विरुद्ध निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण संघर्ष करूंगा। मैं संघर्ष समिति की प्रमुख मांगों-भ्रष्टाचार, बेरोजगारी एवं महंगाई मिटाने, शिक्षा में परिवर्तन, छात्रों एवं अन्य व्यक्तियों की रिहाई, संघर्ष में मारे गये एवं घायल व्यक्तियों को मुआवजा, बिना शर्त मुकदमे की वापसी, तथा गफूर मंत्रिमंडल के इस्तीफे में पूर्ण विश्वास करता हूं। नाम, पता, दिनांक व हस्ताक्षर। संघर्ष समिति ने यह भी तय किया कि ८ अप्रैल तक सभा, मौन जलूस भूख हड़ताल आदि का आयोजन किया जाये। और ९ अप्रैल से सरकार ठप्प करो सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाए। सरकार ठप्प करो सत्याग्रह के अन्तर्गत सरकारी दफ्तरों के समक्ष धरने दिये जायें गिरफ्तारियां दी जायें, कर्मचारियों से कार्यालय का स्वैच्छिक बहिष्कार करने की अपील की जाये और सभी वर्गों से दफा १४४ के उल्लंघन और सत्याग्रह की अपील की जाये। सारे काम मोहल्ला स्तर की सभाओं के द्वारा किए जाए। पटना में मैंने एक-एक दिन में डेढ़ सौ से अधिक स्थानों पर छात्र-छात्राओं, महिलाओं और बच्चों को उपवास करते देखा। गुजरात ने जितने तरह के जलूस (गधों, कुत्तों, चूहों आदि के) निकाले उससे अधिक बिहार में स्थान-स्थान पर लागों ने निकाले।

बिहार के पूरे आंदोलन में जयप्रकाश जी की भूमिका एक महत्वपूर्ण चीज है। यह सही है कि बिहार में जो आंदोलन फूटा उसके प्रेरणा स्रोत जय प्रकाश जी ही रहे और पूरा आंदोलन छात्र नेताओं ने यही कह कर खड़ा किया कि उनके आन्दोलन को जे० पी० का नैतिक समर्थन ही प्राप्त नहीं है, नेतृत्व भी प्राप्त है। इस सिलसिले में जे० पी० के दो बयानों का पूरा-पूरा उपयोग किया गया। एक वह जिसमें उन्होंने सरकार के प्रतिरोधों के बावजूद स्वयं के द्वारा मौनशांति जुलूस का नेतृत्व करने की घोषणा की थी, दूसरा वह जिसमें उन्होंने गफूर साहब से इस्तीफे के लिए अपना मन टटोलने को कहा था। जे०पी० मौन जुलूस क्यों निकालना चाहते थे इसे उन्होंने आठ अप्रैल को जारी किये अपने बयान में स्पष्ट किया (देखिये 'भूदान-यज्ञ' १२ अप्रैल) और गफूर साहब को सलाह क्यों दी थी यह स्पष्ट किया पटना से प्रकाशित होने वाले इण्डियन नेशन के २६

→ मुजफ्फरपुर में पहल प्रारम्भ हुई। १७ जनवरी और २० जनवरी को स्थानीय लंगट सिंह महा-विद्यालय और राम दयालु सिंह महाविद्यालय में जयप्रकाश जी ने सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं के रचनात्मक समाधान के लिए तरुणों का आवाहन किया, जिसका यहां के छात्रों पर काफी असर हुआ। मुजफ्फरपुर के गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र के कार्यकर्ताओं तथा तरुण शान्ति सेना के सदस्यों ने मुजफ्फरपुर के छात्रों के सहयोग से उपभोक्ता सामग्रियों को उचित मूल्य पर जनता को उपलब्ध कराने की योजना बनाई। इसी उद्देश्य से २ मार्च को गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र में व्यापारियों, सरकारी पदाधिकारियों और छात्रों की एक बैठक बुलाई गई। विचार-विमर्श के बाद एकमत से तय किया गया कि एक सप्ताह बाद आने वाले होली के पर्व पर वनस्पति घी निर्धारित मूल्यों पर लोगों को उपलब्ध कराया जाए। शासन के सहयोग से छात्रों ने एक उडनदस्ता भी कायम कर लिया। छात्र युवा मंच के माध्यम से इन तरुणों ने घी के सभी थोक व्यापारियों के स्टाक की जानकारी ली और उनसे मिल कर ८-७५ प्रति किलो की दर से उपभोक्ताओं के बीच घी वितरण करने की योजना बनाई। कहा जाता है कि कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों द्वारा वितरण का नेतृत्व छीनने की पर्याप्त कोशिशें हुईं, पर होली पर छात्र युवा मंच द्वारा घी का वितरण कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। शासकीय अधिकारियों, व्यापारियों और कम्युनिस्टों ने सोचा था कि होली पर डालडा के वितरण के बाद से मामला बन्द हो जाएगा, पर डालडा वितरण की सफलता के बाद छात्र युवा मंच ने उचित मूल्य पर खाद्यान्नों का वितरण और मूल्य निर्धारण का काम हाथ में ले लिया। शासकीय अधिकारियों और व्यापारियों के साथ लगातार बैठने पर भी जब मूल्य नहीं तय हो पाये और छात्रों को व्यापारियों के साथ ही शासन का भी पूरा सहयोग नहीं मिला तो १७ मार्च को छात्रों ने घोषणा कर दी कि जब उन्हें (छात्रों को) व्यापारी और सरकार के अधिकारी सहयोग नहीं दे रहे हैं तो छात्रों द्वारा निर्धारित मूल्य जनता में प्रसारित किये जायेंगे और मोहल्ला समितियों का निर्माण करके उनके माध्यम से निर्धारित दरों पर सामान बिक्री का कार्यक्रम चलाया जाएगा। १७ मार्च की ही बैठक में छात्रों ने तय किया कि १६ मार्च को स्थानीय कम्पनी बाग में सभा बुलाकर भावों की घोषणा कर दी जाए। निर्धारित मूल्य इस प्रकार थे—चावल १-८२ प्रति किलो, गेहूं १-२०, आटा १-६५, दाल १-७५, चीनी ३-००, मकई १-२५, चना १-५० और डालडा ८-७५ प्रति किलो।

१६ मार्च की सभा के लिए १७ को रात से ही नुक्कड़ सभाओं आयोजन प्रारंभ होगया। इसी बीच १८ मार्च को पटना में हुई घटनाओं की खबर मुजफ्फरपुर में भी फैल गई। १८ तारीख को छात्र युवा मंच की एक बैठक में देर रात तक विचार-विमर्श होता रहा कि १६ को सभा की जाए या नहीं। तय किया गया कि जिलाधीश से अनुमति प्राप्त करने का प्रयास किया जाए। १६ मार्च को प्रात जिलाधीश की ओर से सभा की अनुमति न देने की सूचना आ गई। इस सूचना के बाद तय हुआ कि चूंकि आमसभा की सूचना लोगों तक पहुंच चुकी है और वे इकट्ठा भी होंगे इसलिए समय पर सभा स्थल पर पहुंच कर सभा स्थगित करने की जानकारी लोगों को दे दी जाये। इस निर्णय की जानकारी देने जब कुमार प्रशान्त, सन्तोष भारतीय व सुरेन्द्र जिलाधीश कार्यालय गये तो उन्हें आन्तरिक सुरक्षा कानून के अन्तर्गत गिरफ्तार किया गया। इसी क्रम में किशोर शाह को विदेशी एजेन्ट घोषित कर २० मार्च को कुमार प्रशान्त के घर से पकड़ लिया गया। सभी लोगों को दस दिन जेल में रखने के बाद छोड़ा गया। मोहल्ला समितियां गठित कर जन-आन्दोलन से मोहल्ले और नगर की समस्याओं को हल करने और इस प्रकार धीरे-धीरे पूरी व्यवस्था में लचीलापन लाने की एक शुरुआत मुजफ्फरपुर में हुई। अगर इसी प्रकार का क्रम आगे बढ़ता है तो निश्चय ही बहुत सारी सम्भावनायें प्राप्त हो सकती हैं।

बिहार प्रदेश सर्वोदय मण्डल और तरुण शान्ति सेना के साथी जब ७ अप्रैल को पटना में एकत्र हुए तो जे॰ पी॰ ने सुझाया कि जन संघर्ष समितियों के नाम से पटना के हर मोहल्ले में मोहल्ला समितियां कायम हों जो नीचे से समाज परिवर्तन का काम प्रारंभ करें। तरुण शान्ति सेना और सर्वोदय मण्डल के लोग इस काम में लगे हुए हैं। (क्रमश.)

(पृष्ठ ६ का शेष)

अलग रखने हैं। अहिंसक आंदोलनों में हमेशा दो बिन्दु होते हैं—एक आंदोलनात्मक, दूसरा रचनात्मक। क्योंकि अहिंसक क्रांति में conquest और consolidation साथ-साथ चलते हैं। हिंसक क्रांति में conquest के बाद consolidation होता है। फलस्वरूप जिन दिनों क्रांतिकारी conquest में फंसे रहते हैं उसी समय प्रतिक्रांति की शक्ति क्रांति का ही बुलन्द नारा लगा कर समाज जीवन में दृढ़ता से अधिष्ठित हो जाती है। नतीजा यह होता है कि हमेशा क्रांति के बाद प्रतिक्रांति का उदय होता है। अतएव ग्रामस्वराज्य के प्रत्यक्ष कार्य में लगे हुए कार्यकर्ता आंदोलनात्मक काम को सम्पूर्ण रूप से अपना काम समझते हुए भी इसे आंदोलनात्मक विंग पर छोड़ कर अपने काम में जमे रहें।

—धीरेन्द्र मजूमदार

(पृष्ठ ३ का शेष)

जनता के विश्वास से इतनी बड़ी धोखेबाजी हुई है और वह अब उपदेश नहीं सुनेगी न उन शिकार आयोजनों के सर्कसों को देखकर ताली बजायेगी जो सिर्फ उसे गुमराह करने के लिए किए जाते हैं। गुजरात और बिहार की दीवारों पर खून से चेतावनियां लिखी गई हैं। इन्दिरा जी उन्हें न पढ़ने और क्रांति के खतरे ढूंढने के लिए स्वतन्त्र हैं। लेकिन भगवान के लिए वे यह न समझें कि बहानों से संकट और इतिहास को टाला जा सकता है।

(पृष्ठ ४ का शेष)

ऐसी हालत में भारत के लिए बांगला देश के स्वतन्त्रता संग्राम की सहायता करना अनिवार्य हो गया और आखिर दिसम्बर '७१ में हुए युद्ध में भारत को सीधे लड़ना पड़ा। अगर श्रीमती गांधी रूस से संधि नहीं करती तो यह युद्ध भी निर्णायक नहीं हो पाता। लेकिन रूस की संधि के कारण चीन और अमरीका युद्ध में कोई हस्तक्षेप नहीं कर सके और बंगालियों की मदद से भारतीय सेना ने बांगला देश को मुक्त कर दिया।

अब यह जरूरी है कि भारत पाकिस्तान और बांगला देश 'लो-दो' की भावना को आगे बढ़ायें और इस उपमहाद्वीप को आपस में मिलने-जुलने का मौका देकर उन पूर्वाग्रहों को मिटने दें जो दरअसल ब्रिटिश साम्राज्य की देन हैं। दिल्ली समझौते की सफलता की कसौटी यह है कि ये तीन राष्ट्र अपनी प्रभुसत्ता का उपयोग लोगों को अलग करने में नहीं उन्हें जोड़ने में करें। —प्रभाष जोशी

बिना टिप्पणी के | सत्ता, सन्यास और सर्वोदय

पर्दा हटा

विनोबा ने जब इन्दिराजी को सर्व सेवा संघ का सदस्य घोषित किया तो सर्वोदय की शांत झील में कुछ हलचल मची और तब बाबा को स्पष्ट करना पड़ा कि उन्हें पंच महाशक्तियों का सहयोग चाहिए। सत्ता से सहयोग लेने और सत्ता प्रतिष्ठानों को सहयोग देने के प्रयोग से गुजरने के बाद अनुभव क्या आया ? यही कि सत्ता की रीति-नीति, आकार-प्रकार और उसका चरित्र जब तक बदलेगा नहीं तब तक यह सहयोग एक प्रवचना मात्र है। सत्ता प्रतिष्ठानों की तरफ से सर्वोदय आंदोलन को जो अनुकूलता अब तक मिलती रही है वह अधिकांश मात्रा में तो जबानी सहानुभूति रही है और उन बुनियादी परिवर्तनों के लिए सत्ता के ठेकेदार कभी भी राजी नहीं हुए जिनके लिए सर्वोदय समाज वचन बद्ध है। जो जबानी सहानुभूति इस आंदोलन को सत्ता केन्द्रों द्वारा मिली भी वह केवल इसलिए कि वे यह मान कर चले कि सब भले लोग हैं, राजनीति की व्यायाम-शाला के घेरे से बाहर हैं, गांधी के व्यक्तित्व की एक फांक हैं, कल्पना लोक में विचरण करते हैं और हमारे लिए चुनौती प्रस्तुत न करके निष्कंटक राज-भोग में सहयोगी हैं। सत्ताधीशों ने और जनता ने भी यह माना कि ये लोग 'सत्ता समर्थक राजनीतिज्ञ' हैं। स्व० डा० लोहिया ने इसी धारणा के कारण विनोबा को 'सरकारी संत' की उपाधि दे डाली थी।

परन्तु इतिहास की नियति ने इस भ्रम को अब तोड़ दिया है। सत्ता प्रतिष्ठान उतनी ही दूर तक क्रांतिकारी तत्वों के साथ चल सकते हैं, जब तक क्रांतिकारी तत्व उनके लिए संकट या असुविधा पैदा नहीं करते। उससे आगे का रास्ता दोनों को अकेले ही तय करना पड़ता है। देश की विनाशजनक परिस्थिति से विवश हो कर सर्वोदय आंदोलन ने अपने संत स्वभाव से कुछ हटकर जो करवट बदलनी शुरू कर दी है और पूंजीवादी दलीय लोकतन्त्र के स्थान पर 'समाजवादी जनतंत्र (जनता के प्रतिनिधियों को लेकर गठित जन-संस्थायें) का शंखनाद किया है उससे सत्ताधारियों की महफिल में कुहराम सा मच गया है। उनकी नींद हराम हो गई है, प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ की राज-नीति की चूलें हिलने लगी हैं। जय प्रकाश बाबू ने युवा शक्ति को जागृत और संगठित करके जनता के राज्य का सही आधार रखने का जो क्रांतिकारी कदम उठाया है उस ताडव से भयभीत होकर तख्त के चहेतों ने उन्हें तरह-तरह से बदनाम करना भी प्रारम्भ कर दिया है और सत्ता की मुस्कराहट पर जीने वाले समाचार पत्र उनकी प्रतिमा को विकृत करने में लगे हैं। अलबत्ता विनोबा से उन्हें खूब प्यार है क्योंकि वे 'अपने मित्र की बेटी' को किसी संकट में नहीं डालना चाहते और जे० पी० की तरह वे 'जनआंदोलनों के समर्थन की मुद्रा में नहीं हैं। इसीलिए शायद राष्ट्रपति से लेकर प्रधानमन्त्री तक पवनार आश्रम के चक्कर लगा रहे हैं।

लोग हैं जो अभी भी सत्ता की कृपा की आशा लगाये बैठे हैं, आश्चर्य हुआ जब कि खादी कार्य के एक बहुत पुराने सेवक (सेवक कहूं या अधिकारी) ने मुझे सम्मेलन में कहा "चुनावों के समय यदि मैं मन से किसी की जीत के लिए प्रार्थना कर रहा था तो वह है, और चाह रहा था कि...पूरे बहुमत से आये ताकि किसी के सामने सहायता के लिए हाथ न फैलाने पड़े।' हो सकता है कि सत्ता में हमारे बहुत प्यारे लोग हों। परन्तु सार्व-जनिक तौर पर इस तरह के उद्गारों को प्रकट करने का क्या अर्थ हो सकता है ? यह रहा सहा भ्रम भी शीघ्र ही टूट जायेगा। क्योंकि सत्ता और क्रांति की दो तलवारें एक म्यान में कभी नहीं रह सकती।

घड़ी का पेंडूलम दूसरी ओर

अब प्रयोग का शायद दूसरा दौर प्रारंभ हुआ है। घड़ी का पेंडूलम सत्ता प्रतिष्ठानों की ओर से हट कर धर्म प्रतिष्ठानों की ओर झुकने लगा है। गेरुए वस्त्र धारियों द्वारा सर्वोदय सम्मेलनों के उद्घाटनों में इसकी झांकी मिलने लगी है। सत्ता प्रतिष्ठानों और धर्म प्रतिष्ठानों में स्वभाव और चरित्र की दृष्टि से कोई बुनियादी फर्क नहीं है। हमें लगता तो है कि धर्म के सिंहासन पर बैठा गेरुआ वस्त्र त्याग की खबर लाता है और राज के सिंहासन पर आसीन श्वेत वस्त्र धारी भोग की खबर देता है। परन्तु गहरे में डूब कर उत्तर ढूंढा जाये तो तथाकथित संन्यास शीर्षासन करती हुई सत्ता व भोग है। सत्ता और भोग उल्टे हो गए हैं इतनी ही बात है। वैसे भी आज जिसे हम सन्यासी कहते हैं उससे तो त्याग की प्रेरणा भी नहीं मिलती है क्योंकि आज सन्यासी वह है जो आकण्ठ भोग में डूबा हुआ है, अपनी आत्मरक्षा के लिए उसके पास 'त्येन त्यक्तेन भुंजिथा' का स्वर्णिम सूत्र तो है ही।

सन्यास का मैं एक ही अर्थ समझा हूं — खतरे में जीना, असुरक्षा को वरण करना। निर्वाण उपनिषद में सन्यासी के लक्षणों को गिनाते हुए एक लक्षण यह भी बताया गया है कि वह 'अकल्पित भिक्षार्थी' होता है। भोजन के लिए जिस भिक्षा की आवश्यकता होती है उसकी भी वह योजना नहीं बनाता है। सुरक्षा के जो जो उपाय हो सकते हैं, उन सबसे वह अपने को पृथक करता जाता है, वह परमात्मा आश्रित हो जाता है। अनियोजित और निराश्रमी होता है उसका जीवन तभी तो वह परम आश्रय को पा लेता है। परन्तु सन्यासियों के नाम से जाने वाली जमात आज जितनी सुरक्षा और सहूलियत में है, उतना कोई भी सपन्न गृहस्थ नहीं। फिर भी मजा तो यह है कि गृहस्थ को धनोपार्जन करने में कई पाप-पुण्यों की गठरी भी ढोनी होती है। सन्यासी तो सब तरह के पापों से मुक्त हो गया है। उनके हिस्से तो बस है—पुण्य और पुण्य, धनोपार्जन के पाप से भी उसे गुजरना नहीं पड़ता।

निसन्देह सन्यास जीवन की परम उपलब्धि है। वह मानवीय क्रांति का जलता दिया है, सृष्टि का परम ऐश्वर्य है परन्तु तभी जब कि वह विरासतों के आश्रय को छोड़कर एक लौ की तरह जलना सीखे। तभी जब कि वह धर्मों का न हो कर बस 'धर्म' का ही रह जाए, वह न हिन्दू सन्यासी हो, न मुसलमान,

→

वास्तविकता के गर्भ से संभावना का जन्म कैसे होगा ?

←

न पारसी न ईसाई। 'सर्व धर्मान परित्यज्य' जो केवल धर्म का रह जाए। सन्यासी तो वह है जो सम्पूर्ण जाति, धर्म, भाषा, विचार, राष्ट्र की सीमाओं को लांघ गया होता है। ऐसा सन्यासी निश्चय ही किसी क्रांतिकारी आंदोलन में लगे लोगों का उद्बोधन कर सकता है अन्यथा भय है कि आगे हमें अपने सम्मेलनों के उद्घाटन के लिए, समन्वय व सहयोग के नाम पर मुसलमान मौलवी और ईसाई पादरियों की तलाश भी करनी पड़ेगी। या फिर बार-बार अपने से पूछना पड़ेगा कि हमारे आंदोलन में मुसलमान लोग क्यों शामिल नहीं होते हैं और विनोबा को जवाब देना पड़ेगा कि इसके लिए 'मुसलमान भाइयों के बीच मेरे द्वारा सम्पादित कुरान की बिक्री करो।'

प्रस्तुतीकरण की तीसरी पद्धति

अहिंसक क्रांति के लिए समर्पित हम लोगों को अभी दो रूपों में देखा गया है। (१) या तो लोगों ने माना है कि हम सत्ताधारियों की शाखा हैं या (२) चाय-बीड़ी शराब न पीने वाले, फलाहार करने वाले, लंगोटी लगाने वाले, विष्णुसहस्रनाम का पाठ करने वाले यानी नैतिक और भले लोग हैं। मुस्कराते हैं, हाथ जोड़ते हैं, भली बातें बताते हैं और भला काम करते हैं, परन्तु स्वयं तो सर्वोदय ने अपने को नैतिक से कुछ अधिक ही माना है और 'कुछ अधिक' क्या है यह जनता को भान कराने की आवश्यकता है।

मेरी दृष्टि में वह 'कुछ अधिक' इस प्रकार है :

(१) सर्वोदय न तो सत्ता के तलुवे चाटने वाला है और न सत्ता का विरोधी। स्वयं विनोबा ने अपनी पुस्तक 'स्वराज्य शास्त्र' में राज्य की ओर अपनी तीन भूमिकाएं बताई हैं—सहकार असहकार और प्रतिकार, कब कौन सी भूमिका निभानी पड़ेगी यह उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करेगा।

(२) धर्म के मामले में हम न तो कंठी माला पहनने, चुटिया जनेऊ रखने वाले लोग हैं और न दाढ़ी रखने वाले लोग ही। हम 'धर्मों' के न होकर बस केवल 'धर्म' के हैं।

हम हर समय कहते थकते नहीं कि धर्म और राजनीति के दिन लद गये हैं। नहीं नहीं इनके दिन लदे नहीं हैं। अभी भी प्रचलित राजनीति और प्रचलित धर्म अपने जोरों पर हैं। यह वास्तविकता है। राजनीतिज्ञों, राजनैतिक दलों और धर्मोपदेशकों की बाढ़ जैसी आ गई है। पुरानी राजनीति और पुराना धर्म इस समय अपने चरमोत्कर्ष पर है। सम्भावना है कि यह विदा हो और लोक-स्वराज्य व विशेषण मुक्त धर्म का सूर्योदय हो परन्तु यदि हम लोग भी रूढ़ राजनीति, राजनीतिज्ञों व रूढ़ धर्म—धर्मोपदेशकों से हाथ मिलाते रहे तो वास्तविकता के गर्भ में से सम्भावना का जन्म किस तरह होगा ?

योगेश बहुगुणा

वार्षिक मूल्य—१२ रु० विदेश ३० रु० या २५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे ।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित ।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २९ अप्रैल, '७४

उपवासदान के प्रेरक विनोबा

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० | २९ अप्रैल, '७४ | अंक ३१

१९ राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

लोकशक्ति की बाढ़ को मोड़ दो!

बिहार में खतरे की घंटी सिर्फ गफूर साहब की कांग्रेसी सरकार के लिए नहीं बज रही है। वह उन राजनीतिक पार्टियों के लिए भी सिर्फ नहीं बज रही है जो सरकार की राजनीतिक और प्रशासनिक विफलताओं का लाभ लेना ही अपना काम समझती रही हैं। खतरे की यह घंटी सर्वोदय की उस जमात के लिए भी बज रही है जो बीस साल से लोक शक्ति की तलाश में धूनी रमाये घूम रही थी।

सर्वत्र व्याप्त अव्यवस्था, भ्रष्टाचार और स्वार्थपरता से उत्पन्न साधारण आदमी की निराशा तेजी से आक्रोश में बदल रही है और यह आक्रोश जंगल की आग की तरह चारों तरफ फैल रही है। दलगत राजनीति के अभिशाप से ग्रस्त कांग्रेस पार्टी दो साल पहले हुए चुनाव में प्राप्त बहुमत के बावजूद बिहार की आज की हालत में अप्रासंगिक हो गयी है। ये ही वे लोग हैं जिन्हें बांगला देश की मुक्ति में भारत की विजय के रथ पर चढ़ा कर विधान सभा में भेजा था। इन्हीं लोगों ने जन समर्थन की मालाएं पहन कर 'गरीबी हटाओ' का जाप शुरू किया था। इतिहास ने इन्हीं लोगों को एक ऐसा बिहार दिया था जो एक था, आश्वस्त था और केन्द्र के साथ मिल कर देश का कायाकल्प करने के लिए कटिबद्ध था। कहां गया वह वातावरण और जनता का वह विश्वास? सत्ता की विघटनकारी राजनीति और कुर्सी के बल पर बेशर्मी से की जाने वाली लूटपाट ने [illegible] आदमी की किस्मत पलटने का वह सुनहरा अवसर धूल में मिला दिया। इन्दिराजी द्वारा नामजद केदार पाण्डे मुश्किल से एक साल सरकार चला पाये और फिर बिहार में रेल मंत्री ललित नारायण मिश्र की राजनीति चलने लगी। सन् '७२ के आम चुनाव में इन्दिराजी ने राज्यों के मतदाताओं से कहा था कि उन्हें राज्यों से जनता का आदेश चाहिए ताकि वे अपनी जनवादी नीतियों को गांव के स्तर तक लागू कर सकें। लोगों ने उन्हें पूरे मन से आदेश दिया और इन्दिराजी ने कहा कि केदार पाण्डे की सरकार जनता के विश्वास का सम्मान करते हुए उनकी आशा आकांक्षाओं को पूरा करेगी। लेकिन देखते-देखते जनता के निर्वाचित प्रतिनिधि अपनी आशा-आकांक्षाएं पूरी करने लगे और वे जन-विरोधी थीं। एक बार फिर विधायकों ने जन प्रतिनिधित्व छोड़कर अपने गुटों और निहित स्वार्थों का प्रतिनिधित्व शुरू किया। इन्दिराजी के प्रतिनिधि को उतरना पड़ा और उनकी जगह ललित नारायण मिश्र के प्रतिनिधि गफूर साहब ने ली। अनाज वितरण के मामले में गफूर साहब की सरकार विफल हुई और राजनीतिक-प्रशासनिक भ्रष्टाचार ने जनता की रोटी दूभर कर दी। १८ मार्च को जब पटना जलाया गया और अपराधियों को छोड़कर पुलिस ने गोलियां चलायीं तो बिहार सरकार जनता से बिलकुल कट गयी। लोगों में तो उसका विश्वास समाप्त था ही अपनी पुलिस में भी उसे भरोसा नहीं रहा और आक्रोश प्रकट करने वाले लोगों को नियंत्रण में लाने के लिए सीमा सुरक्षा दल और केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के सिपाहियों का उपयोग किया जा रहा है। चारों तरफ खतरे की घंटी बज रही है लेकिन बिहार के निर्वाचित प्रतिनिधि और उनके आका कुर्सियों का खेल खेल रहे हैं। जनता क्या इन्हें माफ कर देगी?

और क्या जनता अपने उन प्रतिनिधियों को भी माफ करेगी जो विरोधी पक्ष में बैठकर सिर्फ सरकार की विफलताओं का लाभ लेना चाहते रहे हैं? क्या इन लोगों की नजरें भी कुर्सी की तरफ नहीं थी? अगर बिहार में विरोधी विधायक भी आज अप्रासंगिक हो गये हैं तो इसका भी कारण यही है कि उनकी नजरें भी जनता की तरफ नहीं थी।

'जनता के आक्रोश को वाणी देने और उसे कारगर शस्त्र बनाने के लिए सड़कों पर निकले विद्यार्थी भी दलगत राजनीति और वर्गगत स्वार्थों के शिकार रहे हैं इसलिए राजनीति उन्हें बांटने और तोड़ने में आसानी [illegible] सफल हो गयी। बिहार राज्य छात्र संघर्ष समिति के खिलाफ विद्यार्थियों का दूसरा नवजवान छात्र संघर्ष मोर्चा खड़ा हुआ। समानान्तर आन्दोलन चले और इनसे निपटने के लिए सरकार ने साम, दाम, दण्ड-भेद का इस्तेमाल किया। विद्यार्थियों का यह आन्दोलन भी जनता से कट जाता अगर जय प्रकाश नारायण पटना में मौन जुलूस निकाल कर और आमसभा में बोलकर इसे जनता का आन्दोलन बनाने के लिए अहिंसक नेतृत्व नहीं देते। इस सत्य को अब केन्द्र सरकार से लेकर उनके पुराने कम्युनिस्ट तक मान चुके हैं कि जे० पी० अगर आगे नहीं आते तो बिहार में हिंसा लूटपाट और अराजकता को कोई रोक नहीं सकता था। जे० पी० ने लोकशक्ति जागृत कर दी है और अब लोकशक्ति के पुजारियों का कर्तव्य है कि इतिहास की कृपा से मिले इस अवसर को वे धूल में न मिलने दें। बिहार में अगर अब लोकशक्ति मौजूदा जर्जर व्यवस्था के खिलाफ नया विकल्प खड़ा करनेके विधायक कार्य में नहीं लगी तो इसकी जिम्मेदारी सर्वोदय के सेवकों पर होगी। बिहार के लोग नयी व्यवस्था के लिए आकुल हैं। अगर अभी भी हम कगार पर बैठ कर लोकशक्ति की बाढ़ के मूक दर्शक बने रहे तो बाढ़ तो कुछ करेगी सो करेगी ही, जो तटस्थ हैं समय लिखेगा उनका भी अपराध।

—प्रभाष जोशी

महा कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का २४ अप्रैल को रात मद्रास में देहावसान हो गया। भूदान-यज्ञ परिवार दिनकर जी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

उपवास दान से समाज का दैन्य दूर होगा

—काका कालेलकर

'उपवासदान' की एक सुन्दर और महत्व की प्रवृत्ति श्री विनोबा जी ने अभी-अभी अपने ७९वें जन्म दिन शुरू की है। वे स्वय हर महीने ग्यारह तारीख को आधा दिन का उपवास करेंगे और पच्चीस तारीख को आधा दिन का उपवास करेंगे। इस तरह महीने में एक उपवास होगा। साल भर में बारह उपवास होंगे। उनके खाने का खर्चा रोज लगभग तीन रुपया आता है। साल भर में छत्तीस रुपये होंगे। उन्होंने सोचा है कि सर्व सेवा संघ के काम के लिए उनकी तरफ से यह दान होगा। अब उनका एक व्यापक सुझाव है कि सर्व सेवा सघ को हर साल अनेक कार्यों के लिए (जो भारत भर में चलते हैं) दस लाख रुपये की जरूरत होती है। सामान्य कार्यकर्त्ता का रोज का खाने का खर्चा दो रुपया होगा। वे अगर हिसाब की आसानी के लिए अपनी तरफ से एक साल के पच्चीस रुपये देंगे तो पूरी रकम पूरी करने के लिए चालीस हजार लोगो को उपवास करना पड़ेगा। विनोबा जी का ख्याल है कि इस उपवास-प्रेमी भारत में, ऐसे लाखो लोग मिलने चाहिए।

गांधीजी के जाने के बाद जितनी भी सस्थायें—चर्खा सघ, हरिजन सेवक सघ, नयी तालीम सघ, भूदान-ग्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्त्ता हैं सब का एक सघ बने, समूह बने यह जरूरी था। विनोबा लिखते हैं—"वह समूह बनाया हमने सर्व सेवा सघ। उपवास करके जो बचा वह दान अगर हमने सर्व सेवा सघ को दिया तो वह पवित्र दान होगा। आज तक हम सोचते थे कि हम हैं समुद्र। समुद्र में गंदे नाले भी मिल सकते हैं और गगा भी। इसलिए अच्छे काम के लिए कोई भी पैसा देते हैं तो लेने में हर्ज नही। क्योंकि हम समुद्र के स्थान में हैं। यह अपनी बात आज तक थी। भगवान दो प्रकार का है। एक है सर्व भगवान, दूसरा है शुद्ध भगवान—उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सपत्ति जो दान में मिलती थी ले ली। अब बाबा ने तय किया कि हम सर्व भगवान की जो सेवा कर सकते थे वह अब तक की। अब शुद्ध भगवान की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय में मानने वाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे। और उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। कोई करोड़पति महीने में एक उपवास करेगा, उसके बारह उपवास के शायद सौ रुपये होंगे। उतना दान वह देगा। वह है तो करोड़पति लेकिन हम सर्व सेवा सघ के लिए उससे सौ रुपये जितना ही प्राप्त करेंगे। वह होगा शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल दान।

इस तरह सब उपवास करके सर्व सेवा सघ को दान देंगे। दस लाख के ऊपर अगर हुआ, तो वह प्रांत को देना। दस लाख तक सर्व सेवा सघ को देना। इस तरह सबके फाके का पैसा गोपुरी (पो०-गोपुरी-वर्धा, महाराष्ट्र) पहुंच जाय।"

यह है उन्ही के शब्दो में विनोबा की योजना। योजना अच्छी है। इसलिए, और विनोबा जी जैसे पवित्र व्यक्ति की है इसलिए भी, हमारा विश्वास है कि चालीस हजार लोग, उपवास दान के ऐसे देने वाले जरूर मिल जायेंगे। विनोबा इसे 'सर्व ब्रह्म के बदले शुद्ध ब्रह्म की उपासना' कहते हैं। 'उपवास' और 'उपासना' का सम्बन्ध तो सब जानते ही हैं। अब गांधीजी का सुझाया हुआ कार्य करने वाली ऐसी भी थोड़ी सस्थायें होंगी

(शेष पृष्ठ १३ पर)

काम महत्वपूर्ण है पर मुश्किल नहीं

[सर्व] सेवा सघ की प्रबंध समिति ने अभी [हा]ल ही में हुई (जलगांव) महाराष्ट्र की अपनी [बै]ठक में देशभर के सर्वोदय कार्यकर्ताओं से यह [सि]फारिश की है कि १ मई से १५ मई तक वे 'उपवासदान-पक्ष' मनायें। इस अवधि में प्रत्येक कार्यकर्त्ता अपने क्षेत्र, जिला व तहसील में अपने साथियो, मित्रो तथा सर्वोदय से सहानुभूति रखने वाले लोगो से व्यक्तिगत सपर्क करें तथा उपवासदान के पीछे सर्वोदय आंदोलन को ऊंचा उठाने, सर्वोदय के प्रति सहानुभूति रखने वाले हर व्यक्ति को उस की सिद्धि के लिए स्वयं कुछ-न-कुछ लेकिन सर्व सुलभ त्याग करने की प्रेरणा देने और इस प्रकार आज चारो ओर स्वार्थ तथा आपाधापी से ग्रसित देश के सार्वजनिक जीवन में नैतिक आयाम दाखिल करने की पूज्य विनोबाजी की जो गहरी दृष्टि है वह समझा-कर उनसे उपवासदान प्राप्त करें।

सर्वोदय आंदोलन से देश को जो आशाए हैं उनकी पूर्ति सर्वोदय जमात की आंतरिक एकता, शुद्धता और मजबूती पर निर्भर करती है। उपवासदान का कार्यक्रम इसका बहुत प्रभावशाली माध्यम बन सकता है। विनोबाजी स्वय इस कार्यक्रम को कितना महत्व देते हैं वह पिछले दिनो समय-समय पर उन्होंने जो कहा है उससे स्पष्ट है। अभी हाल ही में एक चर्चा के दौरान पूज्य विनोबा जी ने फिर कहा—"बाबा ने ऐसा क्या काम किया जो आज तक उसने नहीं किया था। बाबा ने अपना उपवासदान दिया। अगर सर्व सेवा सघ की शक्ति पर उसे विश्वास नही होता तो बाबा ऐसा काम क्यों करता? हम सबकी चित्त शुद्धि हो, एकता रहे, ताकत बने ऐसा बाबा चाहता है।"

सघ के सहमत्री श्री यशपाल मित्तल ने उपवासदान-पक्ष मनाने के सबध में सब प्रदेश व जिला सर्वोदय मडलो को लिखा है। सर्वोदय-कार्यकर्त्ता साथियो से मेरी प्रार्थना है कि वे अभी से अपने-अपने हाथ में परिचितो और सर्वोदय-प्रेमियों की सूची बनाकर मई के पहले पखवाड़े में उन सबसे मिलने की योजना तैयार कर लें और उस पखवाड़े में अपनी यथासभव सारी शक्ति इस कार्यक्रम को सफल बनाने में लगा दें। यह काम बहुत महत्वपूर्ण होते हुए भी बडा या मुश्किल नहीं है। सामूहिक सकल्प और सम्मिलित प्रयत्न से इस छोटे-से काम की सफलता भी मई के अत में जब हम सर्वोदय सम्मेलन के अवसर पर बगाल में एकत्र होंगे तो निश्चय ही आगे के लिए हमें बल देगी।

सिद्धराज ढड्ढा
अध्यक्ष, सर्व सेवा सघ

उपवासदान जनता के लिए कसौटी है

बाबा की स्वीकृति से उपवासदान की योजना बनायी गयी है इसे ध्यान से पढकर इसके अनुसार आज से ही काम मे लग जाना चाहिए। कल्पना ऐसी है कि सर्वोदय सम्मेलन तक पूरी ताकत लगाकर एक चौथाई कोटा याने दस हजार उपवासदानी कर लिये जायं। इसी आधार पर सम्मेलन मे आगामी योजना बना सकेंगे। शुरू से पूरी ताकत हमारे परिवार की याने हमारी रचनात्मक सस्थाओ के लोगो को सदस्य बनाने मे लगानी चाहिए। धर्म कार्य घर से शुरू होता है। हमारा घर याने सस्थाओ के सचालक मडल के सदस्य, साधारण सदस्य, कार्यकर्ता, कर्मचारी, पूरा समय काम करने वाले कारीगर जैसे बुनकर आदि और सबके परिवार की बहनें इतने लोग आते हैं। सस्थाओं मे खादी सस्थाएं सबसे अधिक हैं। सर्वाधिक कार्यकर्ता भी उन्ही के पास हैं। हमारी सबसे बड़ी शक्ति ही खादी कार्यकर्ता हैं। भूदान-ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य आन्दोलन का मुख्य भार खादी सस्थाओ ने उठाया है। इस बार भी मुख्य भार उन्हें ही उठाना है।

सस्थाओ को चाहिए कि सबको सपरिवार इकट्ठा करके उपवासदान का विचार समझाया जाय। व्यक्तिगत रूप से भी लोगो को समझाना होगा। समझने के बाद तो उपवासदान करने मे शारीरिक, मानसिक दोनो लाभ होगे।

साधारणतया दो रुपया रोज की बचत मानी जाय तो साल के २५ रु० होते हैं। कम से कम खर्च एक रुपया रोज माना जाय तो सालाना बारह रुपया मान सकते हैं और अधिकतम १०० रुपया मान सकते हैं। कुछ लोग उपवास किए बिना ही पैसा दे देने को कहते हैं उन्हें हाथ जोड़कर कहना चाहिए कि उपवास करके उससे बचाई रकम ही हम ले सकते हैं। उपवास के रूप मे जनता जनार्दन का जो आशीर्वाद मिलना रहेगा वह पैसो के मुकाबले बहुत अधिक काम करेगा। महीने में एक पूरे दिन का उपवास करना है। एक साथ पूरे दिन का उपवास करने मे कठिनाई हो तो हर सप्ताह एक समय का खाना छोड़कर या अन्य जो भी तरीका जिसे अनुकूल पडे अपना सकता है। इतना ही देखें कि महीने भर मे एक पूरा उपवास हो जाये एवं खाना कम करने से एक दिन की बचत भी हो जाय।

सस्थाओं के कार्यकर्ता, कर्मचारीगण अपनी बचत संस्था के मार्फत भेजें ताकि रकम भेजने का खर्च उन्हे न उठाना पडे। भेजने का खर्च व हिसाब की तफसील बार-बार न हो इस दृष्टि से सालभर की बचत अग्रिम भेजने की बात है। कार्यकर्ताओ को सालभर की रकम एक साथ भेजने मे कठिनाई हो तो उनकी मांग पर सस्था अपनी ओर से पूरी रकम अग्रिम भेज सकती है एव कार्यकर्ताओ की सहूलियत के अनुसार काट सकती है। यह प्रश्न सस्था और कार्यकर्ताओ को तय करना है। सर्व सेवा सघ को एक साथ अग्रिम भेजने का ही रखना चाहिए। उपवासदान के लिए सर्वोदय के विचार से सहानुभूति रखने वाले हर भाई से कह सकते हैं। मागने मे सकोच का सवाल नही। प्रेमाग्रह भी कर सकते हैं। कार्यकर्ता आपस मे मिलकर समूहरूप मे सदस्य बनाने के लिए तय कर सकते हैं। फिर भी इतना देखना चाहिए कि जिसके दिल मे अनिच्छा या विरोध हो उसे छोड देना चाहिए। प्रेमाग्रह की यह मर्यादा माननी चाहिए।

उपवासदान पर बाबा से चर्चा चल रही थी तो बाबा ने कहा कि ज्यो-ज्यों विचार करता ▮ त्यो-त्यो इसका अधिकाधिक महत्व मेरे ध्यान मे आता जा रहा है। अब तो ऐसा लगने लगा है कि इतनी उत्तम बात मुझे इससे पहले क्यों नही सूझी।

आज तक बाबा ने अनेक कार्यक्रम हमे बताये और हमने उन पर यथाशक्ति चलने का प्रयत्न किया। कुछ लोग कहते हैं कि क्या हुआ एक भी सफल नहीं हुआ। वही हालत इसकी भी होगी। इस विचारधारा मे नैराश्य वृत्ति है। वास्तव मे देखेंगे तो ध्यान मे आयेगा कि भूदान मे करीब १५ लाख एकड जमीन ५ लाख आदाताओ में बटी है। ऐसी घटना दुनिया के हजारो वर्षों के इतिहास मे आज तक नही घटी है। भूमि की समस्या हल करने के लिए सीलिंग आदि जो कानून बनाये जा रहे हैं वह भी उसी आन्दोलन का परिणाम है और आज समाज मे अधिक भूमि रखने वालो के प्रति सम्मान की जगह असम्मान व्याप्त हो रहा है। यह समाज के विचार परिवर्तन का नमूना है।

ग्रामदान की बात करेंगे तो उसका परिणाम भी नजर आयेगा। भारत का सविधान जिस पर खड़ा हो उसकी बुनियाद ग्रामसभा बनेगी। ग्रामसभाएं मिलकर जिले का सगठन करें। जिले प्रांत का व सेन्टर का सगठन करें तो आज के चुनावों मे जो बेहद खर्च और भ्रष्टाचार व्याप्त हो रहा है वह समाप्त हो सकता है इसके साथ सर्वसम्मति का विचार भी जड़ पकड़ता जा रहा है। सर्वसम्मति के विचार मे वह ताकत है जो नब्बे प्रतिशत झगडो को मिटा देगा, देश को जोडेगा।

सर्वोदयपात्र, सूतांजलि, सर्वोदय मित्र आदि योजनाएं भी पिछले दिनो निकली

(शेष पृष्ठ १३ पर)

सर्व सेवा सघ द्वारा किये गए निर्णयो के अनुसार आपको 'सर्वोदय' साप्ताहिक का २९ अप्रैल का अक भेजा जा रहा है। इसके साथ ४ उपवासदान फार्म भी हैं। हम आशा करते हैं कि आप स्वयं और अपने घर मे तथा मित्रो मे मिलकर सारे फार्म भर कर रकम सीधी गोपुरी वर्धा भिजवा देंगे। फार्म कम पड़ें तो सर्वोदय मण्डल से मगा सकते हैं या इसी का नमूना हाथ से लिख कर या टाईप करा कर भरा सकते हैं। छपे फार्म के लिए रुकने की जरूरत नही जैसा भी मौका हो कीजियेगा। सर्वोदय सम्मेलन ३० मई से कलकत्ते के पास हो रहा है। उसके पूर्व १० हजार उपवास दानी हो सकें इस दृष्टि से तुरन्त प्रयत्न मे लगियेगा। फार्म पर पता स्पष्ट हो ताकि हर माह का अन्तिम अंक सदस्यो को बराबर पहुचाता रहे।

ठाकुरदास बंग

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

उपवास-दान संकल्प

(तप एवं त्याग का संकल्प)

पूज्य विनोबाजी की सेवा में,

आपने स्वयं अपने से आरम्भ करके सर्वोदय-कार्यकर्ता, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय प्रेमी लोगों का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रकम, सर्व सेवा संघ को दान दें।

आपने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा : प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान। यह पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा।

अत: आपके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रति माह एक या अधिक बार में एक पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा संघ को देने का संकल्प करता हूं/करती हूं। मैं यह रकम प्रतिवर्ष, सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूंगा/भेजती रहूंगी।

नाम ______________________ हस्ताक्षर

पता ______________________

______________________ दिनांक

उपवास-आरम्भ तिथि ______________________

बचत की वार्षिक रकम ______________________

भेजने का जरिया ______________________

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रकम पहुंच ता० सदस्य बनाने वाला ______________________

रसीद नं पता ______________________

____

रजिस्टर न०

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा और एक दिन भगवान् के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे आध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का अर्थ ही है भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से आध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, शारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उपचारवालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। सो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह से होगा। गलत खर्च होने की संभावना कम होगी।

गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी अनेक प्रकार की संस्थाएँ थीं—चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम, गो सेवा संघ, भूदान-ग्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक संघ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा संघ। हमने उपवास करके जो बचाया वह दान दे दिया सर्व सेवा संघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेकों की मदद ली। समुद्र में अनेक नदियाँ आती हैं। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे—जिससे जो भी आया और जितना भी आया, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नहीं मानता। वह हमने 'सर्वब्रह्म' की उपासना की। अब निर्मल, स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है: एक है 'सर्व' भगवान्, भला, बुरा सब भगवान्; दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्; स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी, ले ली। अब बाबा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय को माननेवाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे और उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। एक दिन की बचत साधारणतया दो रुपया मानी जाय तो साल के २५) होते हैं। ऐसे ४० हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा संघ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा संघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है सर्व सेवा संघ। हम लोग जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें।

पवनार (वर्धा)
११ सितम्बर, १९७१

विनोबा

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

उपवास-दान संकल्प

(तप एवं त्याग का संकल्प)

पूज्य विनोबाजी की सेवा में,

आपने स्वयं अपने से प्रारम्भ करके सर्वोदय-कार्यकर्ता, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय-प्रेमी लोगों का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रकम, सर्व सेवा संघ को दान दें।

आपने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा : प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान। यह पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा।

अतः आपके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रति माह एक या अधिक बार में एक पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा संघ को देने का संकल्प करता हूं/करती हूं। मैं यह रकम प्रतिवर्ष, सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूंगा/भेजती रहूंगी।

नाम ____________________ हस्ताक्षर

पता ____________________

____________________ दिनांक

उपवास प्रारम्भ तिथि ____________________

बचत की वार्षिक रकम ____________________

भेजने का जरिया ____________________

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रकम पहुंच ता० सदस्य बनाने वाला ____________________

रसीद नं० पता ____________________

रजिस्टर नं० ____________________

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा और एक दिन भगवान के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे आध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का अर्थ ही है भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोडने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से आध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, शारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उपचारवालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। तो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह से होगा। गलत खर्च होने की संभावना कम होगी।

गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी अनेक प्रकार की संस्थाएं थीं—चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम, गो सेवा संघ, भूदान-ग्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक संघ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा संघ। हमने उपवास करके जो बचाया वह दान दे दिया सर्व सेवा संघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेकों की मदद ली। समुद्र में अनेक नदियां आती हैं। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे—जिससे जो भी आया और जितना भी आया, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नहीं मानता। वह हमने 'सर्वब्रह्म' की उपासना की। अब निर्मल, स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है : एक है 'सर्व' भगवान्, भला-बुरा सब भगवान्, दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्, स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी, ले ली। अब बाबा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय को माननेवाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे और उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। एक दिन की बचत साधारणतया दो रुपया मानी जाय तो साल के २५) होते है। ऐसे ४० हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा संघ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा संघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है-सर्व सेवा संघ। हम लोग जो काम कर रहे है, सबके सब उपवास करके दान दें।

पवनार (वर्धा)
११ सितम्बर, १९७१

विनोबा

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

उपवास-दान संकल्प

(तप एव त्याग का सकल्प)

पूज्य विनोवाजी की सेवा में,

आपने स्वय अपने से आरम्भ करके सर्वोदय-कार्यकर्ता, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार मे श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय-प्रेमी लोगो का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रकम, सर्व सेवा सघ को दान दें।

आपने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान। यह पवित्र दान सर्व सेवा सघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा।

अत: आपके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रतिमाह एक या अधिक बार एव पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा सघ को देने का सकल्प करता हूं/करती हूँ। मैं यह रकम प्रतिवर्ष, सर्व सेवा सघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूँगा भेजती रहूँगी।

नाम ______________________ हस्ताक्षर

पता ______________________

______________________ दिनाक

उपवास-प्रारम्भ-तिथि ______________________

बचत की वार्षिक रकम ______________________

भेजने का जरिया ______________________

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रकम पहुँच ता० सदस्य बनानेवाला ______________________

रसीद नं० पता ______________________

रजिस्टर नं० ______________________

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे ग्राध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा ग्रौर एक दिन भगवान् के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे ग्राध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का ग्रर्थ ही है भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से ग्राध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, शारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उपचार वालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। तो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी ग्रच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी ग्रच्छी तरह होगा। गलत खर्च होने की सभावना कम होगी।

गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी ग्रनेक प्रकार की संस्थाएँ थीं—चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम, गो सेवा संघ, भूदान-ग्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक संघ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा सघ। हमने उपवास करके जो बचाया वह दान दे दिया सर्व सेवा संघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। ग्राज तक हमने ग्रनेकों की मदद ली। समुद्र में ग्रनेक नदियाँ ग्राती हैं। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे—जिससे जो भी ग्राया ग्रौर जितना भी ग्राया, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नही मानता। वह हमने 'सर्वब्रह्म' की उपासना की। ग्रब निर्मल स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है: एक है 'सर्व' भगवान्, भला, बुरा सब भगवान्; दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्; स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने ग्राज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी, ले ली। ग्रब बाबा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। ग्रब सर्वोदय को मानने वाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे ग्रौर उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। एक दिन की बचत साधारणतया दो रुपया मानी जाय तो साल के २५) होते हैं। ऐसे ४० हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा संघ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा संघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है सर्व सेवा सघ। हम लोग जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें।

पवनार (वर्धा)
११ सितम्बर, १६७३

विनोबा

सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा

उपवास-दान संकल्प

(तप एवं त्याग का संकल्प)

पूज्य विनोबाजी की सेवा में,

आपने स्वयं अपने से आरम्भ करके सर्वोदय-कार्यकर्ता, सहयोगी तथा सर्वोदय-विचार में श्रद्धा रखनेवाले सर्वोदय-प्रेमी लोगों का आवाहन किया है कि वे हर महीने में एक दिन का उपवास करके उस दिन के भोजन के बचत की रकम, सर्व सेवा संघ को दान दें।

आपने बताया है कि इससे तिहरा लाभ होगा : प्रथम आध्यात्मिक, दूसरा शारीरिक तथा तीसरा पवित्र दान। यह पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी सोच-सोचकर होगा।

अतः आपके इस आवाहन के अनुसार मैं प्रति माह एक या अधिक बार में एक पूरे दिन का उपवास करके नीचे लिखे अनुसार बचत सर्व सेवा संघ को देने का संकल्प करता हूं/करती हूं। मैं यह रकम प्रतिवर्ष, सर्व सेवा संघ, गोपुरी, वर्धा (महाराष्ट्र) को भेजता रहूंगा/भेजती रहूंगी।

नाम ________________________ हस्ताक्षर

पता ________________________

________________________ दिनांक

उपवास-प्रारम्भ-तिथि ________________________

बचत की वार्षिक रकम ________________________

भेजने का जरिया ________________________

सर्व सेवा संघ कार्यालय

रकम पहुंच ता० सदस्य बनाने वाला ________________________

रसीद नं० पता ________________________

रजिस्टर नं०

उपवास-दान के लाभ

यह जो दान मिलेगा, उसके तीन फायदे होंगे। जो उपवास करेगा, उसे आध्यात्मिक लाभ होगा। क्योंकि वह उस दिन चिन्तन-मनन करेगा और एक दिन भगवान् के नजदीक रहेगा, इस वास्ते उसे आध्यात्मिक लाभ होगा; उपवास का अर्थ ही है, भगवान् के नजदीक रहना। केवल खाना छोड़ने को उपवास नहीं कहते। इसलिए उपवास से आध्यात्मिक लाभ होता है। दूसरा, शारीरिक लाभ होता है। प्राकृतिक उपचारवालों का कहना है कि महीने में कुछ-न-कुछ उपवास जरूर किया जाय। तो महीने में एक उपवास से प्राकृतिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। तीसरा लाभ यह है कि इसके जरिये जो दान दिया जायगा वह पवित्र दान होगा। ऐसा पवित्र दान सर्व सेवा संघ को मिलेगा, तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह से होगा। गलत खर्च होने की संभावना कम होगी।

गांधीजी के जाने के बाद, जितनी भी अनेक प्रकार की संस्थाएं थीं—चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ, नयी तालीम, गो सेवा संघ, भूदान-ग्रामदान का काम करनेवाले कार्यकर्ता, सबका एक संघ बने—समूह बने, वह समूह हमने बनाया, सर्व सेवा संघ। हमने उपवास करके जो बचाया वह दान दे दिया सर्व सेवा संघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेकों की मदद ली। समुद्र में अनेक नदियां आती हैं। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे—जिसमें जो भी आया और जितना भी आया, हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा मैं नहीं मानता। वह हमने 'सर्वब्रह्म' की उपासना की। अब निर्मल, स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है।

भगवान् दो प्रकार का है एक है 'सर्व' भगवान्, भला, बुरा सब भगवान्, दूसरा है 'शुद्ध' भगवान्; स्वच्छ, शुद्ध, निर्मल। उसमें से पहला रूप लेकर हमने आज तक काम किया। सबकी सम्पत्ति जो दान में मिलती थी, ले ली। अब बाबा ने तय किया है कि 'शुद्ध' भगवान् की सेवा करेंगे। अब सर्वोदय को माननेवाला हर मनुष्य हर महीने एक पूर्ण उपवास करे और उससे जो खर्चा बचेगा वह सर्व सेवा संघ को दान दे। एक दिन की बचत साधारणतया दो रुपया मानी जाय तो साल के २४) होते हैं। ऐसे चालीस हजार दाता मिलें तो सर्व सेवा संघ का खर्च चल सकता है।

इस प्रक्रिया से सर्व सेवा संघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहों को मिलकर हमने नाम दिया है-सर्व सेवा संघ। हम लोग जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें।

पवनार (वर्धा) विनोबा

११ सितम्बर, १९७२

उपवासदानी सदस्य

१५ अप्रैल '७४ तक

३३२	महाराष्ट्र	३२	पंजाब
२५६	उत्तरप्रदेश	३०	कर्नाटक
२२५	गुजरात	२२	आन्ध्र प्रदेश
११९	मध्यप्रदेश	२१	उत्कल
९७	बंगाल	१६	दिल्ली
७१	राजस्थान	११	असम
५८	हरियाणा	७	केरल
५१	बिहार	४	नागालैण्ड
१८	तामिलनाडु	३	महिला प्रवासी
		२	हिमाचल प्रदेश
		२	विदेश

१,३९९ कुल

(पृष्ठ ३ का शेष)

जिनको सर्व सेवा संघ अपना नहीं सका। उनके कार्य के लिए भी पैसे की जरूरत होगी। लेकिन यह सारा मामूली व्यवहार का सवाल है। उसका इलाज आसानी से हो सकता है। मुख्य बात है समाज का दैन्य दूर करने के लिए केवल पवित्र दान लेने की। इससे दान देने वाले और लेने वाले दोनों का निश्चित रूप से उद्धार होगा।

विनोबा लिखते हैं, 'आज तक हमने अनेकों से मदद ली। समुद्र में अनेक नदियाँ आती हैं। इन नदियों में गन्दा जल भी आता है। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे, जिससे जो भी आया और जितना भी आया हमने लिया। उसमें हमने कोई गलती की ऐसा हम नहीं मानते। वह हमने सर्व ब्रह्म की उपासना की। अब विमल स्वच्छ, शुद्ध ब्रह्म की उपासना करनी है। पवित्र दान सर्व-सेवा संघ को मिलेगा तो उसका उपयोग भी अच्छी तरह से होगा। गलत ढंग से खर्च होना कम सम्भव होगा।' इस उपवास दान से जो तीन फायदे होंगे वे उन्होंने अच्छी तरह से समझाये हैं। हमें विश्वास है यह योजना सफल होगी ही।

सर्व सेवा संघ का छमाही अधिवेशन कलकत्ता के निकट २२वें अखिल भारतीय सर्वोदय समाज सम्मेलन के स्थान रहरा पर २८ मई, '७४ को सुबह ८.३० से शुरू होगा और ३० मई की दोपहर तक चलेगा। संघ अधिवेशन में पिछली बैठक की कार्यवाही की पुष्टि व मन्त्री के निवेदन के अतिरिक्त संगठन, राष्ट्रीय परिस्थिति, ग्रामस्वराज्य आंदोलन, उपवासदान तथा नगरों में का[र्य] ट्रस्टीशिप आदि पर विचार किया जायेगा।

संघ अधिवेशन के बाद ३० की शाम से १ जून तक २२वाँ अखिल भारतीय सर्वोदय समाज सम्मेलन होगा। सम्मेलन में शामिल होने के लिए रेलवे कन्सेशन फार्म समन्वय आश्रम बोधगया, (बिहार) तथा अपने-अपने प्रदेश सर्वोदय मंडलों से मिल सकते हैं।

रहरा स्थान कलकत्ता से १७ किलोमीटर दूर है। कलकत्ता के दो स्टेशन हैं। हावड़ा तथा सियालदा। केवल सियालदा से रहरा के लिए लोकल रेल मिलती है।

उपवासदान जनता के लिए कसौटी है (पृष्ठ ४ का शेष)

लेकिन वे ठीक से कामयाब नहीं हो सकीं क्योंकि उनके पीछे आवश्यक शक्ति नहीं लग पायी। पिछली नाकामयाबी से सबक लेकर हमें उपवासदान के कार्यक्रम पर पूरा जोर लगाना चाहिए। इसमें जरा भी ढिलाई नहीं रखने दी जानी चाहिये, तो सफलता अवश्य मिलेगी। यह काम किसी एक संयोजक का नहीं है। प्रबंध समिति एवं संघ के कुल सदस्यों को आगामी ११ सितंबर तक उसमें पूरी शक्ति लगानी चाहिए। बाबा को हमने १ साल में कार्य पूरा करने का वचन दिया था। ८ माह बीतने आये हैं। ११ सितम्बर तक ४ माह में यह काम पूरा करना है याने हर महीने १० हजार सदस्य बनाने होंगे।

बाबा के आदेश का हम सबको श्रद्धा के साथ पालन करना चाहिए। इस काम पर पूरी शक्ति लगा देंगे तो उस सफलता से हमारे भावी काम भी आसान हो जायेंगे।

आज एक अनुकूलता और भी सर्वोदय के लिए है। लोग महंगाई से त्रस्त हैं। सरकार की नित्य बदलती नीतियों के कारण जीवन में कहीं स्थिरता नजर नहीं आती। सत्ता पार्टी या विरोधी पार्टी सभी सत्ताकांक्षी हैं ऐसा पिछले वर्षों का अनुभव देखकर जनता का पार्टी पद्धति पर से विश्वास उठता जा रहा है। ऐसे समय में जनता की नजर सर्वोदय की ओर लगी है। जनता के कष्ट देखकर जयप्रकाश जी की आत्मा से एक गहरी वेदना प्रकट हुई और वे प्रत्यक्ष मैदान में कूद पड़े हैं। उन्हें बल पहुँचाने के लिए भी आवश्यक है कि सर्वोदय की शक्ति दृढ़ हो। उपवासदान एक ऐसा पवित्र कार्यक्रम है जिससे सर्व सेवा संघ की शक्ति दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ेगी और जनता की बड़ी से बड़ी सेवा करने के लिए तैयार हो सकता है।

अब जनता को देखना है कि अपने सेवक को बलवान बनाना है या कमजोर ही रखना है? श्री साहनी जी की भाषा में कहना हो तो सेनापति अपने सेवकों की कसौटी कर रहा है। मासिक दो रुपया देना बड़ी बात नहीं है लेकिन वह टेस्ट है। कम से कम एक लाख सैनिकों की खड़ी सेना हो तभी सेना-पति आगे बढ़ सकता है।

राधाकृष्ण बजाज

● खास तौर पर बिहार की और आम तौर पर देश की स्थिति पर विचार करने के लिए सर्व सेवा संघ ने पटना में १९ और २० अप्रैल को एक समिति बुलाई जिसमें देश भर के कुछ प्रमुख सर्वोदय सेवकों ने भाग लिया। संगीति में शुरू में जयप्रकाश नारायण ने विनोबा और इन्दिरा जी से अपने संबंधों पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि बिहार के जन आन्दोलन में उतरने पर वे क्यों मजबूर हुए। संगीति में प्रायः सभी लोगों ने स्वीकार किया कि व्यवस्थागत दोष इतने अधिक उभर गये हैं कि लोग अब इ[स] व्यवस्था को ही बदलना चाहते हैं। य[ह] समय है कि अब सर्वोदय बिहार और देश के सामने अपना विकल्प प्रस्तुत कर सकता है। आज जो चारों तरफ लोकशक्ति जागृत दिखाई दे रही है अगर उसे विधायक मोड़ नहीं दिया गया तो देश में खूनी क्रांति भी नहीं होगी। जो होगा वह अराजकता से भी बदतर होगा। इतिहास ने हमें चुनौती दी है और अगर जन आन्दोलन को हम अहिंसक शांतिपूर्ण मोड़ नहीं दे पाये तो हम अपनी जिम्मेदारी से चूक जायेंगे। यह जरूरी है कि इस जन आन्दोलन को ग्रामस्वराज्य से जोड़ा जाये। और नीचे से इसके लिए गाँवों में ग्राम-सभाओं और शहरों में पड़ोस सभाओं के जरिये लोक संगठन खड़े किये जायें। (संगीति की रपट अगले सप्ताह)।

६ अप्रैल को शहीद पार्क (पटना) के बाहर छात्रों की गिरफ्तारी के समय लिए गए चित्र

हर नागरिक जिम्मेदार है

—श्रवण कुमार गर्ग

गुजरात के आंदोलन के औचित्य और उसकी सफलता को लेकर इस देश के उन बुद्धिजीवियों के मन में भारी दुविधा है जो गोलियों से रोज मरने वाले लोगों की खबरों को चाय की चुस्कियों के साथ पीते रहे या आकाशवाणी से समाचार सुनने के बाद गायन वादन सुनकर मौत के आंकड़ों को भुलाते रहे।

गुलामी के दिनों का हमें नहीं मालूम, पर पिछले सत्ताईस वर्षों के आजादी के इतिहास में यह पहली बार हुआ कि केन्द्र सरकार ने संसद में बहुमत के जोर से संविधान में ३१ संशोधन किये और गुजरात के विद्यार्थियों ने एक ही आंदोलन में इन संशोधनों को ताक पर धर दिया। गुजरात के आंदोलन से इतना ही संतोष काफी है कि हमारा संविधान अगर निर्वाचित प्रतिनिधि के भ्रष्ट हो जाने पर कार्यकाल समाप्त होने के पूर्व ही उसे वापस बुलाने की इजाजत नहीं देता तो संविधान के मौन को तोड़ कर गुजरात ने यह परम्परा स्थापित की है कि जनता चाहे तो यह भी कर सकती है।

बिहार के आंदोलन के भविष्य को लेकर भी इन्हीं बुद्धिजीवियों के मन में चिन्ता है कि जयप्रकाश नारायण जैसा आदमी जो (इन लोगों के शब्दों में) अब तक सरकार से समझौता करता रहा और सरकार के विरोध में पिछले २७ वर्षों में कभी तेज जबान से नहीं बोला, अब क्या कर पायेगा ? इन बुद्धिजीवियों और सुविधावादियों के गले यह बात कभी नहीं उतरेगी कि जब-जब भी विक्रमार्क की तरह जयप्रकाश नारायण ने यात्रा शुरू की, राजनीति का बेताल उनकी पीठ पर सवार होकर हर बार सवाल पूछता रहा है कि 'क्या तुम यह सब सत्ता में आने के लिए कर रहे हो, कि जय प्रकाश नारायण पिछले २७ वर्षों से कभी सत्ता में नहीं गये, और कि आजादी के बाद से नपुंसकता की जिन्दगी जी रही नौजवान पीढ़ी अगर जे० पी० के आवाहन पर कुछ करने पर उतारू हो जाये तो भी जे० पी० का काम पूरा हुआ माना जाना चाहिए।

प्रधानमन्त्री और उनके साथियों ने बहुत जल्दी ही यह गलती महसूस कर ली कि उन्होंने एक बहुत ही गलत समय और गलत जगह हाथ डाल दिया। इसलिए प्रधानमन्त्री के भुवनेश्वर में दिये गये भाषण पर जिस ढंग से केन्द्र सरकार लीपापोती कर एक ओर जयप्रकाश जी को आश्वस्त करना चाहती है वहीं दूसरी ओर उसने राज्य सरकार को पूरी छूट दे दी है कि वह गया में गोली चलाये, मन्त्रिमण्डल में चाहे जैसा फेरबदल कर स्थिति को काबू में करे और बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति के सारे छात्र नेताओं को अनिश्चित काल के लिए आंतरिक सुरक्षा कानून के तहत सीकचों के पीछे कर दे। बिहार के आंदोलन को तोड़ने की कोशिश दोनों सिरों से जारी है। जब जे० पी० दिल्ली आते हैं तो प्रधानमन्त्री के 'लोग' उन्हें घेर लेते हैं और जब वे पटना जाते हैं तो गफूर साहब प्रदेश की 'ताजा स्थिति' पर उनसे नब्बे मिनट चर्चा करते हैं। जे० पी० को सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि २६ अप्रैल को होने वाले अपने प्रोस्टेट ग्लैंड के ऑपरेशन के सिलसिले में जब उन्हें बिहार से लगभग तीन सप्ताह बाहर रहना पड़ेगा तो बिहार के आंदोलन का क्या होगा ? हाल ही की अपनी दिल्ली यात्रा के दौरान प्रधानमन्त्री ने अपने एक प्रमुख चिकित्सक को जे० पी० के स्वास्थ्य की जानकारी लेने अवश्य भेजा, पर उस चिकित्सक ने जे० पी० से यह तो निश्चित ही नहीं कहा होगा कि बिहार के आंदोलन की इस घड़ी में जबकि आपकी उपस्थिति अनिवार्य है अगर आप तीन से गायब हो जायेंगे तो न सिर्फ आंदोलन के स्वास्थ्य पर उसका असर पड़ेगा, आपके स्वास्थ्य पर भी खराब असर पड़ेगा, इसलिए मेरी सलाह से आप कुछ महीने और रुक जाइये।

कुछ लोगों के मन में यह सवाल है कि बिहार से पहले ही जब गुजरात में आंदोलन उठा और वहां के छात्रों ने जयप्रकाश जी का नेतृत्व मांगा तो उन्होंने क्यों नहीं दिया। दिल्ली की तिहाड़ जेल से अपने दो सौ साथियों के साथ सोलह मार्च को छूटने के बाद नवनिर्माण समिति के अध्यक्ष मनीषी जानी ने मुझ से कहा, 'हमें और हमारे आंदोलन →

को जयप्रकाश जी से बहुत प्रेरणा मिली। जय प्रकाश जी ने जब कहा कि एक वर्ष के लिए छात्रों को अपनी पढाई बन्द कर देनी चाहिए और देश के कामो मे लग जाना चाहिए तो नवनिर्माण समिति ने जे० पी० की बात को कबूल किया। पर जब हमने जे० पी० से कहा कि आप हमारे आंदोलन का नेतृत्व कीजिये तो उन्होंने कहा नेतृत्व युवकों को ही करना चाहिए।'

पटना में जे० पी० के कदम कुंआं स्थित मकान मे बिहार भर से सैकडो नौजवान जब रोज आते हैं और उनसे नेतृत्व की माग करते हैं तो वे उनसे भी यही कहते हैं। पर यह बात सत्य की तरह स्थापित हो गया है कि बिहार के वर्तमान आंदोलन का नेतृत्व जे० पी० ही कर रहे हैं।

आन्दोलन के दिनो मे गुजरात के लोग दिल्ली आये और जे० पी० को उनके खराब स्वास्थ्य के बावजूद प्रेमपूर्वक मना कर ले गये। जे० पी० वहा गये और चार दिन रहे भी। नव निर्माण समिति के युवको से जे० पी० ने पूछा कि—आप लोगो ने अपनी संस्था का नाम नव निर्माण युवक समिति रखा है, पर क्या नव निर्माण का कोई कार्यक्रम भी बनाया है? लडको ने कहा कि हम एक साल तक गाव गाव जा कर जन-शिक्षण का काम करेंगे ताकि अगली विधान सभा म अच्छे लोग चुन कर जाये। रविशंकर महाराज ने जे० पी० से कहा कि वे भी गाव-गाव जाकर लोगों को समझायेंगे कि वोट किस प्रकार के उम्मीदवार को देना है। जे० पी० ने कहा कि यह ठीक है कि आप लोग एक विधानसभा मे अच्छे लोग पहुचा देंगे, पर पाच साल बाद (या पहले भी) फिर चुनाव होंगे और चुनाव की पद्धति वही रहेगी जो आज है तो जनता को हर बार कौन समझाने आयेगा? जे० पी० ने कहा कि होना यह चाहिए कि जनता के स्तर पर एक ऐसा सशक्त संगठन खडा हो जो बिना किसी बाहरी सहायता के टिका रहे, जो स्थायी हो और जो प्रधानमंत्री से लेकर साधारण कर्मचारी तक के काम की निगरानी रख सके। जे० पी० की बात अगर आन्दोलन के नेते पूरी उतरती तो गुजरात ने अपने आन्दोलन को जहां लाकर समाप्त कर दिया वह सिर्फ वहीं नहीं रुक जाता उससे कहीं और आगे बढ़ता और बिहार के पहले जे० पी० को गुजरात का नेतृत्व करना पड़ता।

गुजरात के आन्दोलन के दौरान जे० पी० की इस बात मे ज्यादा रुचि नही थी कि चिमन भाई पटेल हटते हैं या नही। और इसी प्रकार बिहार के आन्दोलन मे भी उन्होंने बखूबी इस आवाज को जोर नही पकडने दिया कि गफूर हटाये जायें। जे० पी० की रुचि इस बात मे है कि चिमन भाई और गफूर के हट जाने के बाद कोई नई व्यवस्था आ सकती है क्या? अगर नही तो एक के हटने और दूसरे के आने से कुछ बनता बिगडता नहीं। 'नाग नाथ की जगह साप नाथ' या 'फिर वेताल झाड पर'।

भागल पुर मे जो कुछ हुआ उसकी जानकारी देते हुए प्रो० रामजी सिंह ने बताया कि १८ मार्च की दोपहर भागलपुर मे यह खबर फैल गई कि पटना मे हुए गोली काण्ड मे बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति के अध्यक्ष लल्लू प्रसाद यादव और भागलपुर छात्र संघर्ष समिति के संयोजक निर्मल मारे गये। इस अफवाह से वातावरण मे उत्तेजना फैल गई और स्थानीय टॉवर के पास एक भीड जमा होकर आगजनी पर आमादा हो गई। गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के एक विद्यार्थी भारती ने जान पर खेलकर भीड को अशांति फैलाने से रोकने का प्रयास किया। भारती के साथ ही सोम नाम के तरुण को भीड मे मार भी खानी पडी। किसी ने उन्हें छुरा भी दिखाया। जब जिलाधीश को फोन पर घटना की खबर की गई तो उन्होंने प्रभारी दण्डाधिकारी को और थानेदार को कोतवाली फोन करने को कहा। कोतवाली मे फोन किया ही जा रहा था कि एकाएक पुलिस के १० जवान प्रतिष्ठान के कार्यालय का दरवाजा तोडकर घुस आये और अन्दर बैठे १०-१२ छात्रो को बेरहमी से पीटा, प्रतिष्ठान की अलमारी तोड दी और जो लडका फोन कर रहा था उसके हाथ पर लाठी मारी जिससे रिसीवर टूट गया। इतना होने पर भी पुलिस ने प्रहार बन्द नही किये। इसी प्रकार १९ मार्च को प्रतिष्ठान के आगे की सडक के दूसरी ओर एक होटल से पुलिस की मोटर पर बम फेंके गये और इसके बदले गांधी शान्ति प्रतिष्ठान की छानबीन की गई। पुलिस के एक अधिकारी ने प्रो० रामजी सिंह को जो कुछ कहा उसके अनुसार—न तो १८ मार्च को और न १९ मार्च को ही गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के कार्यालय मे कोई आपत्ति जनक चीज मिली। बम फेंकने की योजना एक दल द्वारा एक होटल के कमरे से बनाई गई थी जिसके बारे मे उसमे से पकडे गये एक अभियुक्त ने पुलिस को बताया।

आठ और नौ अप्रैल को जयप्रकाश जी के नेतृत्व मे जो शान्ति जुलूस निकला और ऐतिहासिक आम सभा हुई उसने जनता के सामने स्पष्ट कर दिया कि बिहार मे हुई हिंसक घटनाओ के पीछे किन लोगो का हाथ था।

१८ मार्च को विधानसभा के घेराव से प्रदेश मे जिस आन्दोलन की शुरुआत हुई और ८ अप्रैल तक जो कुछ होता रहा उसके बारे मे हालाकि बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति के द्वारा यही कहा जाता रहा कि जो कुछ भी किया जा रहा है वह जय प्रकाश जी के नेतृत्व मे और उन्हीं के नैतिक समर्थन से किया जा रहा है पर पूरे आन्दोलन की निष्पक्ष समीक्षा करने के ख्याल से यह जान लेना चाहिए कि संघर्ष समिति की संचालन समिति ने अपने द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमो को लेकर जे० पी० से कभी ज्यादा चर्चा नही की। इसलिए एक तरफ जे० पी० अपने ढग से आन्दोलन को चलाने के लिए बिहार प्रदेश तरुण शान्ति सेना, प्रदेश सर्वोदय मण्डल और अपने अन्य मित्रो से जुडे रहे और दूसरी तरफ छात्र संघर्ष समिति अपने ढग से कार्यक्रम चलाया।

संघर्ष समिति ने यह तय किया था कि ८ अप्रैल तक उपवास और शान्तिपूर्ण प्रदर्शनो का सिलसिला चलेगा और ९ अप्रैल से सरकार ठप्प करने का आन्दोलन प्रारम्भ होगा। सरकार ठप्प करने के सिलसिले मे नियमित गिरफ्तारियां भी देंगे। आठ अप्रैल के अभूतपूर्व जुलूस ने छात्र संघर्ष समिति के लोगो को सोचने पर मजबूर किया कि सिर्फ इतना कहने से काम नही चलेगा कि आन्दोलन को जे० पी० का समर्थन प्राप्त है, जे० पी० का प्रत्यक्ष नेतृत्व भी लेना पडेगा। छात्र संघर्ष समिति से जुडे राजनैतिक दलों के छात्रो को यह भी लगा कि अगर जे० पी० के नेतृत्व →

मे कार्यक्रम चलाना है तो उन्हे अपने अपने दलो से भी इस्तीफा भी देना होगा।

८ अप्रैल को संघर्ष समिति ने यह तय किया कि ९ अप्रैल को सुबह १० बजे दस छात्र सचिवालय तक जायें और धरना देते हुए गिरफ्तारिया दें। ९ अप्रैल को दस बजे संघर्ष समिति के चालीस पचास लोग शहीद पार्क मे इकट्ठा हुए और दस लोगो को भेजने की तैयारी करने लगे। इसी समय सौ-डेढ़ सौ पुलिस के जवानो ने पार्क को घेर लिया। पहले सबको बिखर जाने को कहा और जब सब छात्र पार्क के बाहर निकल गये तो कुछ छात्र नेताओं को गिरफ्तार करने का हुक्म दे दिया गया। छात्र जब भागने लगे तो सी० आर० पी० तथा बी० एस० एफ० के जवानों ने दूर तक उनका पीछा किया, उन पर लाठिया चलाई और दस-बारह छात्रो को पकड़ कर बस मे भर दिया। मैंने और पत्रकार ओमप्रकाश दीपक ने पूरे घटनाक्रम के दौरान जब चित्र लेने के प्रयास किये तो हमें टोका गया और सी० आर० पी० द्वारा लाठी भी उठाई गई। दीपक जी के कैमरे पर लाठी से प्रहार भी किया गया। अगर उस समय संयोग से भूतपूर्व मन्त्री और समाजवादी पार्टी के नेता रामानन्द तिवारी नही आ जाते और सक्रिय विरोध नही जाहिर करते तो पुलिस छात्रो के साथ क्या बर्ताव करती नही कहा जा सकता। यहा उल्लेखनीय यह है कि छात्रो ने अपनी गिरफ्तारियाँ देते हुए पुलिस से कहा कि ८ अप्रैल को जयप्रकाश जी के नेतृत्व मे निकले जुलूस से जो शान्ति का वातावरण बना है उसे सरकार ही खराब कर रही है और हिंसा को भड़का रही है। जितने भी लोग गिरफ्तारी से बच पाये थे वे सीधे जे० पी० के पास आये और उनके नेतृत्व मे पूरा विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि वे जो भी कार्यक्रम देंगे सबको मंजूर होगा।

बिहार के पूरे आन्दोलन का खतरनाक मोड़ यह है कि गफूर साहब मुसलमान हैं इसलिए इस बात का पूरा ख्याल रखना है कि आन्दोलन के दौरान साम्प्रदायिकता का जहर नही फैलाया जाये। पटना के ५०-६० हजार मुसलमानो और बिहार के लाखो मुसलमानो मे इस बात के प्रचार की कोशिशें

उपवासदानियो का जयप्रकाश शिविर
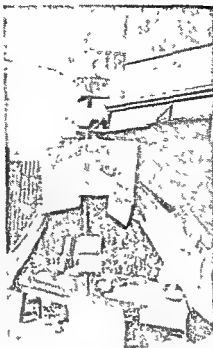
जारी हैं कि जे० पी० एक ऐसे आन्दोलन का समर्थन कर रहे हैं जिसमे अ० भा० विद्यार्थी परिषद भी है और विद्यार्थी परिषद का जनसंघ व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से संबंध है। कुछ तत्व मुसलमानो मे यह प्रचार कर रहे हैं कि चूकि गफूर साहब एक मुसलमान है इसलिए उन्हे हटाया जा रहा है। यही कारण है कि बहुत कम तादाद मे मुसलमान प्रदेश के आन्दोलन से जुड़ पाये हैं। प्रदेश मे जितनी भी जगह मोहल्ला समितिया बनी हैं उनमे मुस्लिम शामिल नही हो पाये है। आठ अप्रैल के मौन शान्ति जलूस के लिए सर्वोदय कार्यकर्ताओ ने इस बात का काफी प्रयास किया कि एक बड़ी सख्या मे मुसलमान मित्र जलूस मे भाग लें पर ज्यादा कामयाबी नही मिली।

९ अप्रैल की आम सभा मे जे० पी० ने इस बात की सफाई की कि बिहार का वर्तमान आन्दोलन गफूर साहब को हटाने का नही है, पूरी व्यवस्था बदलने का है। जे०पी० ने एक ईमानदार व्यक्ति के रूप मे गफूर साहब की तारीफ भी की। जे०पी० ने साफ शब्दो मे यह कहा कि देश और प्रदेश के मुसलमानो मे फैलाए जा रहे गलत प्रचार को दूर किया जाना चाहिए और उनका भी सहयोग इस आन्दोलन के लिए प्राप्त करना चाहिए।

इतने बड़े आन्दोलन का यह दुर्भाग्य ही होगा कि हिन्दू-मुसलमानो के बीच लड़ाई करवा कर इस आन्दोलन को बाट देने की कुछ लोगो की कोशिशें कामयाब हो जाये।

९ अप्रैल को हुई पटना की विशाल आम सभा मे जे० पी० ने कहा कि पिछले सत्ताईस वर्षो से मैं सब कुछ चुपचाप देखता रहा, पर अब नही देख सकता। उसके बाद दिल्ली मे १३ अप्रैल को जे० पी० ने कहा कि हमको एक बार फिर जेल जाने की तैयारी करनी होगी।

आजादी के बाद पहली बार बिहार मे और जे० पी० के नेतृत्व मे एक नागरिक आन्दोलन की संभावनाए प्रकट हुईं। आजादी के सत्ताईस वर्षो बाद एक आन्दोलन प्रकट हुआ है इसलिए इस खतरे को बराबर ध्यान मे रखना चाहिए कि किसी भी कमी से अगर यह आन्दोलन खत्म होता है तो आगे आनेवाले सत्ताईस वर्षों के लिए भी किसी जन आन्दोलन की संभावनाएँ निरस्त हो जायेंगी। इस आन्दोलन को विफल करने मे अगर राजनीति की मथरा कामयाब हो गई तो वह बिना किसी अड़ग के अधिनायकवाद का राजतिलक करवाएगी और तब देश अराजकता की जिस स्थिति मे पहुचेगा उसका एहसास भी आज नही किया जा सकता। इस आन्दोलन के विफल होने पर जे० पी० की मनस्थिति पर क्या असर होगा इसकी कल्पना नहीं की जाये, पर देश का क्या होगा इस पर पूरी तरह चिन्ता की जानी चाहिए। देश के हर एक ऐसे आदमी को जो केवल जयप्रकाश नारायण के जिम्मे ही क्रान्ति का भार छोड़कर बेईमानी से निश्चिन्त नही हो जाना चाहता, सक्रिय रूप से अपने को बिहार के आन्दोलन से जोड़ना चाहिए। ■

२९ अप्रैल को वेल्लूर मे होने जा रहे आपरेशन के लिए २३ अप्रैल को पटना छोड़ने से पहले जे० पी० ने बिहार के आन्दोलन के लिए पाच सप्ताह का कार्यक्रम दिया है। कार्यक्रम विद्यार्थियों ने स्वीकार कर लिया है। सर्वश्री राममूर्ति, नारायण देसाई, मनमोहन चौधरी व त्रिपुरारि शरण जे० पी० की अनुपस्थिति मे विद्यार्थियो को सलाह व मदद देंगे।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३२ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

सम्पादक
रामपूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० ६ मई, '७४ अंक ३२

१९ राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

न सबको ईमान की रोटी मिल सकती है, न इज्जत की जिन्दगी

बिहार तरुण शांति सेना ने वहां चल रहे आन्दोलन को एक सूत्रता देने, और जगह-जगह चल रहे स्वयं स्फूर्त कार्यक्रमों की सूचना देने के लिए पटना से 'तरुण क्रांति' नामक एक बुलेटिन छापना शुरू किया है। सम्पादक है—कुमार प्रशांत। १६ अप्रैल को हिन्दी साहित्य सम्मेलन भवन, पटना में दादा धर्माधिकारी ने 'तरुण क्रांति' के पहले अंक का विमोचन किया। इस अवसर पर दिये गये उनके भाषण का संक्षिप्त रूप प्रस्तुत है।

हमारा आंदोलन शांतिपूर्ण है। हमें शांति की शक्ति में विश्वास है। ८ अप्रैल को हमने पटना में जो जुलूस निकाला उसमें शरीक होने वालों के मुंह पर पट्टी थी और उनके हाथ बगल में न होकर पीठ के पीछे थे। ऐसा क्यों था? मुंह की पट्टी और पीठ पर हाथ हमारे इस संकल्प के संकेत थे कि हमें कितनी भी गाली मिले हम उसका जवाब देने के लिए मुंह नहीं खोलेंगे और सिर पर पुलिस के कितने भी डंडे पड़ें या सीने में गोली लगे हम किसी पर हाथ नहीं उठायेंगे। हाथ हमें किस पर उठाना है? हमारी किसी व्यक्ति, जाति, संप्रदाय या दल से लड़ाई नहीं है। हमारी लड़ाई आज की सम्पूर्ण व्यवस्था से है। हम इस नतीजे पर पहुंच गये हैं कि आज की व्यवस्था में न सबको ईमान की रोटी मिल सकती है, न इज्जत की जिन्दगी। हमें इस व्यवस्था को बदलना है और इसकी जगह एक ऐसी व्यवस्था कायम करनी है जिसमें हर इंसान, इंसान की जिन्दगी जी सके। व्यवस्था गाली देने, या दुकान लूटने से कैसे बदलेगी? ये काम तो गलत हैं ही, शान्ति विरोधी भी हैं।

हमने पटना में शान्तिपूर्ण जलूस निकाला तो वह पूरे शहर पर छा गया। हमारी सभा में लाखों लोग आये। आज बिहार भर में लोग आंदोलन के कार्यक्रमों में शरीक हो रहे हैं—बच्चे, जवान, बूढ़े, पुरुष स्त्री। लाठी चलती है, गोली चलती है किन्तु आतंक नहीं है। जनता निर्भय होती जा रही है। ऐसा
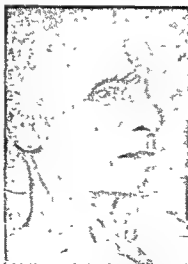
कौतुक है शांति का। इसलिए हमें ऐसा कोई काम नहीं करना है, ऐसी कोई बात नहीं कहनी है, जिससे शान्ति की शक्ति कमजोर पड़े। शान्ति ही जनता की शक्ति है। उसकी कुछ मर्यादाएं हैं जो किसी भी हालत में भंग नहीं होनी चाहिए। वे मर्यादाएं ये हैं :

(१) हमारी लड़ाई कुशासन से है, भ्रष्टाचार से है, स्पष्ट है कि स्वयं भ्रष्ट होकर हम भ्रष्टाचार को नहीं मिटा सकते। इसी तरह पुलिस के अत्याचार की नकल करके हम गैर-सरकारी अत्याचार का समर्थन नहीं कर सकते। गाली, गंदे नारे, ढेले-पत्थर किसी को अपमानित करने की कोशिश, मिथ्या लांछन आदि के लिए हमारे आंदोलन में स्थान नहीं है।

(२) हमारा आन्दोलन कितना भी व्यापक हो ऐसे लोग होंगे ही जो अलग रहेंगे। हमारी बातें कितनी भी उचित हो कुछ ऐसे होंगे जिनका ईमानदारी के साथ हमसे मतभेद होगा। क्या ऐसे लोगों को हम 'दुश्मन' मानेंगे? नहीं। हम उन्हें समझायेंगे, उनका समर्थन प्राप्त करने की पूरी कोशिश करेंगे, जरूरत पड़ने पर उनके कामों का विरोध भी करेंगे, लेकिन यह हमेशा मानेंगे कि हर व्यक्ति अपने विचारों में स्वतंत्र है और उसकी इस स्वतंत्रता की कद्र और रक्षा होनी चाहिए।

(३) हम यह जान लें कि अब यह आन्दोलन केवल छात्रों या तरुणों का नहीं रह गया है, अगुआई भले ही उनकी हो। अब यह जन आन्दोलन बन गया है जिसमें पूरा बिहार शामिल है। ऐसे व्यापक और शक्तिशाली आन्दोलन को तोड़ने, खरीदने और हड़पने की कोशिश होगी। पैसे वाला खरीदने की कोशिश करेगा और डंडे वाला हड़पने की। हमें दोनों से बचना है।

(४) हमारे आन्दोलन के मूल्य मानवीय हैं, इसमें जातिवाद सम्प्रदायवाद आदि के लिए स्थान नहीं है, इसके किसी काम में भेदभाव नहीं झलकना चाहिए—न धनी-गरीब का, न ऊंच-नीच का, न स्त्री-पुरुष का।

(५) हमारा आन्दोलन समस्त नागरिकों का है इसमें सबके लिए स्थान है, जो भी समय और शक्ति दे उसके लिए काम है—वास्तव में नागरिक ही हमारी क्रांति की विभूति है। उसकी ही शक्ति को प्रतिष्ठित करना हमारी क्रांति का लक्ष्य है, न कि नेता की, दल या शासन की शक्ति को।

तूफान के बीच संगीति में विचार

पटना की संगीति बिहार के जन-आन्दोलन के बीचो-बीच हुई इसलिए बाल की खाल निकालने वाला तत्व चिन्तन इसमें नहीं हुआ। देश भर के कोई एक सौ सर्वोदय सेवकों ने दो दिन के इस विचार विमर्श में भाग लिया और प्राय: सभी के पास कहने के लिए कुछ था। लेकिन अपनी तटस्थता के लिए प्रतिष्ठित दादा धर्माधिकारी तक प्रस्तुत परिस्थिति में सर्वोदय के मूक दर्शक बने रहने के पक्ष में नहीं थे। तरुण शान्ति सेना की मन्दाकिनी दवे से लेकर ग्रामस्वराज्य के वयोवृद्ध योद्धा वैद्यनाथ बाबू तक की एक यही राय थी कि देश में वह लोकशक्ति जागृत हो रही है जिसकी बीस वर्षों से हमें तलाश थी। इतिहास ने हमें एक अवसर दिया है जब हम अपनी मान्यताओं को समाज में स्थापित कर सकते हैं। पाला पड़ चुका है और दाव लग चुका है। अब भी अगर हम किनारे पर बैठ कर बाढ़ के पानी का रौद्र रूप देखते रहे तो देश में वह अराजकता तो आ कर रहेगी जिस का भय समझदार लोगों को है। हम कोशिश करें तो इस जनशक्ति को विधायक मोड़ दे सकते हैं। जे० पी० ने बिहार में यह कर के दिखा दिया है। जे० पी० के कृतत्व को हम उनकी समाधि की कीमत पर ही नजरअन्दाज कर सकते हैं। कहना अनावश्यक है कि संगीति ने आने तूफान के सामने शुतुरमुर्ग की तरह रेत में गर्दन नहीं छुपायी। परिस्थिति की चुनौती स्वीकार की गयी और सर्वसम्मति उभर कर आयी कि बैठे नहीं रहना है। जिसमें जो बन पड़े, जहां भी बन पड़े और जैसा भी बन पड़े लोकशक्ति को विधायक मोड़ उसे देना है। इस जनआन्दोलन को ग्राम स्वराज्य या लोकस्वराज्य से जोड़ना है।

लेकिन लोकशक्ति की बाढ़ में कूदने का फैसला सिर्फ जोश में नहीं लिया गया। बाढ़ को मोड़ सकने की अपनी शक्ति को आकी भी गया। शंकाए प्रकट की गयी और चेतावनियां भी दी गयीं। जैसे नरेन्द्र दुबे कहते थे

और यह अगर हमारे मूल्यों से मेल खाता हो तो ही इसका समर्थन करें। उनके विश्लेषण के अनुसार यह आन्दोलन और राज्यों में फैलता है तो इसका असर केन्द्र पर निश्चित होगा। अराजकता फैलेगी तो सैनिक शासन हो सकता है, गृहयुद्ध भी हो सकता है। हमें अपनी न्यूनतम मांगें और मर्यादाएं तय कर लेना चाहिए और इस संघर्ष में कहीं समझौता सम्भव हो तो उसकी प्रक्रिया भी तय करनी चाहिए। किसी भी हालत में ग्रामस्वराज्य से हमें दूर नहीं छिटकना चाहिए। देवेन्द्र भाई ने कहा कि विद्यार्थियों ने आम लोगों की प्रश्नों को मुखरित किया है और आन्दोलन किसी वर्ग का नहीं है तो हम इसका समर्थन करना चाहिए। लेकिन हमारा रोल विधायक ही हो सकता है। हमारा विरोध व्यवस्था से है और इसे बदलने में हम उनका भी सहयोग लेना चाहिए जो आज इस व्यवस्था के अंग हैं। सरकार से भी सहयोग लेना चाहिए, वह न दे यह बात अलग है। भीष्मपितामह से भी हमें पूछना चाहिए कि वे कैसे मरेंगे। सबके साथ हमारे सम्बन्ध प्रेम के होने चाहिए और हमारे दृष्टिकोण में सातत्य होना चाहिए। ग्रामस्वराज्य और सेवा के जो काम हमने उठा रखें हैं उन पर इस आन्दोलन का विपरीत असर नहीं होना चाहिए।

नरेन्द्र दुबे और देवेन्द्र भाई की बातें बहरे कानों पर नहीं पड़ीं। दरअसल संगीति देश की परिस्थिति और उसमें अपने रोल को समझने के लिए ही बुलायी गयी थी। पिछले साल अक्तूबर में सेवाग्राम में हुई राष्ट्रीय परिषद ने लोकशक्ति को ग्रामसभा और मोहल्ला सभा के स्तर पर गठित करके आम लोगों की ज्वलन्त समस्याओं के हल का कार्यक्रम दिया था और सर्व सेवा संघ ने उसे स्वीकार किया था। जलगांव में हुई प्रबन्ध समिति की बैठक में इस कार्यक्रम की समीक्षा होनी थी। लेकिन समिति के सामने विनोबा का वह सन्देश भी था जिसमें उन्होंने अहिंसक

और सर्वसम्मति नहीं हो सकी न कोई प्रस्ताव पारित हो सका। तय किया गया कि प्रबन्ध समिति के कुछ लोग विनोबा के पास पवनार में बैठ कर समझें कि उनकी सलाह का क्या मतलब है। चूंकि जे० पी० लोकशक्ति के जरिये भ्रष्टाचार, महगाई और अभाव के हल का कार्यक्रम उठा चुके थे इसलिए यह भी तय किया गया था कि पटना में जे० पी० के साथ बैठ कर भी विचार किया जाये। यह पृष्ठभूमि ठाकुरदास बंग संगीति के सामने रखने वाले थे लेकिन उनका गला खराब था इसलिए उनकी ओर से बोले नारायण देसाई।

नारायण भाई ने कहा कि देश की आज जो परिस्थिति है उसने गत्यवरोध को समाप्त किया है और अगर हम इसे समझें तो आन्दोलन एक नयी दिशा ले सकता है। यह परिवर्तन स्वागतयोग्य है। इस नयी दिशा के अग्रदूत तरुण हैं। वर्तमान प्रजातान्त्रिक पद्धति में परिवर्तन की बात हम लगातार करते आये हैं अब स्थिति ऐसी आई है कि यह परिवर्तन हो सकता है। व्यवस्था परिवर्तन के लिए हमारा जो अनुभव है उसे हमें देश को देना चाहिए। इस आन्दोलन को अन्तिम आदमी और भूमि की समस्या से जोड़ना चाहिए। ऐसा हम करेंगे तो यह सही मानों में जन आन्दोलन हो सकेगा।

नारायण भाई ने कहा कि एक तरफ तो हम कहते हैं कि हिंसा से कुछ नहीं होगा लेकिन लोगों को लगता है कि हिंसा होगी तभी सुनवाई होगी। गुजरात में विधानसभा के विसर्जन की सर्वमान्य मांग का जन आन्दोलन चल रहा था और सरकार कहती थी कि इस पर तभी विचार करेंगे जब हालत सामान्य हो जायेगी। हालत सामान्य नहीं हुई और अशान्ति की चरमसीमा पर विधानसभा का विसर्जन हुआ। हिंसा ही सफल होगी ऐसा आभास पैदा करने में कुछ लोगों का निहित स्वार्थ है। हमें अहिंसा को परिणामदायी बनाना है। रचनात्मक कार्यों में अहिंसा

शांति ही जन आन्दोलन की शक्ति है

बिहार के लिए जे पी का कार्यक्रम

वैलूर जाने के लिए मजबूर हूं लेकिन दिल बहुत भारी है और दिमाग परेशान है। अपने जाने को मैं जितना भी मुमकिन होता रोके रखना चाहता था। पर नई दिल्ली में हाल ही में मेरी जांच करने वाले पटना, लखनऊ, और वैलूर के सब डाक्टरों की सलाह है कि पुरुष ग्रंथि का जल्दी से जल्दी आपरेशन करवा लूं। तो अब जाने के अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं है।

बिहार में विद्यार्थियों और जनता के आंदोलन की मौजूदा हालत की अहमियत मैं अच्छी तरह समझता हूं। विद्यार्थियों, जवानों और लोगों ने मुझ से जो उम्मीदें की हैं और मुझ में जो विश्वास रखा है उसे समझता हुआ तो आंदोलन के प्रति मेरी जिम्मेदारी और भी बढ़ गई है। प्रदेश छात्र संघर्ष समिति के कई प्रमुख नेता जेल में हैं और दूसरों की पुलिस को तलाश है। इसलिए ये लोग इस आंदोलन में कोई योगदान नहीं दे पायेंगे, जिसका पहला चरण समाप्त हुआ है और जिसे नयी धार की जरूरत है।

मैं यह तो जानता हूं कि बिहार से कितने समय तक मुझे बाहर रहना होगा। लेकिन मई अन्त के पहले लौट पाना नामुमकिन ही लगता है। इसलिए जरूरी समझता हूं कि मैं अपनी गैर मौजूदगी के पांच सप्ताहों के लिए अपने उन भरोसेमन्द साथियों को छोड़ जाऊं जो जितना भी सम्भव हो आंदोलन का मार्ग-दर्शन करें और उसमें सहायता दें। यह भी जरूरी है कि इस समय के लिए मैं एक तफसीलवार कार्यक्रम दे जाऊं। इन दोनों बातों पर काफी विचार करने और अपने मित्रों, छात्र संघर्ष समिति और आंदोलन में लगी युवक संस्थाओं के लोगों से सलाह करने के बाद अपनी अनुपस्थिति के समय के लिए कुछ विचार और योजनाएं आपके सामने रख रहा हूं।

वैलूर के क्रिश्चियन मेडिकल अस्पताल में २९ अप्रैल को जे० पी० का पुरुष ग्रंथि का ऑपरेशन सफल हुआ। उत्तर प्रदेश के राज्यपाल अकबर अली खान वहां उपस्थित थे। ३० अप्रैल को बिहार बन्द रहा और लोगों ने जे० पी० के स्वास्थ्य के लिए उपवास किये। अस्पताल से उनका स्वास्थ्य सुधर रहा है।

लेकिन ऐसा करने के पहले, विद्यार्थियों युवकों और बिहार के लोगों ने मुझ में जो भरोसा किया है उसके लिए मैं उनके प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हूं। भगवान मुझे इस भरोसे के योग्य बनाये। समर्थन और सहयोग के लिए मैं सबको धन्यवाद देता हूं। खासकर महिलाओं, शिक्षकों, वकीलों, डाक्टरों और पटना तथा दूसरे कई शहरों के बुद्धिजीवियों का आभारी हूं जिन्होंने जुलूस, धरनों, उपवासों और अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया।

विरोधी दलों का भी मैं आभारी हूं कि उन्होंने इस आंदोलन का समर्थन किया और इसमें सक्रिय भाग लिया। उनके कई नेता जेल जा चुके हैं और कई अभी भी सीकचों के भीतर हैं। विधानसभा में भी इस जनसंघर्ष के समर्थन में वे बोले हैं और जोरदार ढंग से कार्यवाही की है। निजी तौर पर मैं उन्हें

विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि विद्यार्थी, युवक और लोग इस समर्थन और सहयोग के लिए उनके आभारी हैं और आशा करते हैं कि भविष्य में भी उन्हें यह मिलता रहेगा। राजनीतिक दलों और उनके विद्यार्थी संगठनों से मैं एक ही बात कहना चाहता हूं कि आंदोलन में उनकी भागीदारी पक्षहीनता की भावना से होनी चाहिए और किसी को भी आंदोलन पर कब्जा करने अथवा उसका राजनीतिक उपयोग करने की कोशिश नहीं करना चाहिए। मुझे खुशी है कि सबंधित पार्टियों के नेताओं ने मुझे आश्वासन दिया है कि वे ऐसा ही करेंगे। मैं उनका आभारी हूं।

आंदोलन अब सिर्फ शहरों तक सीमित नहीं रह गया है वह देहात में भी फैल गया है। इस मामले में पहल करने के लिए गांवों के जवानों, किसानों और मजदूरों का मैं आभारी हूं। मुझे आशा है कि आगे आने वाले सप्ताह में पूरा देहाती बिहार जागेगा और आगे बढ़ चलेगा।

इस अन्तरिम अवधि के लिए मेरे सुझाव और व्यवस्था इस प्रकार है। देश के तीन प्रमुख नेताओं से मैंने निवेदन किया है कि वे अपना कार्यक्रम इस तरह बनायें कि उनमें से कम से कम दो पटना या बिहार में जरूर उपस्थित रहें—ये नेता हैं आचार्य राममूर्ति, नारायण देसाई और मनमोहन चौधरी। ये और त्रिपुरारिशरण इस बीच मेरी ओर से कामकाज करेंगे और बिहार के लोगों और विद्यार्थियों की सेवा में रहेंगे। दूसरे नेताओं के अलावा, बिहार सर्वोदय मंडल, गांधी शांति प्रतिष्ठान, बिहार शांति सेना और तरुण शांति सेना भी उनकी सहायता करेंगे।

आंदोलन में भाग लेने या सहानुभूति रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति बोली और कर्म में किसी भी हालत में हिंसा न करे। सन्तोष की बात है कि आंदोलन मोटे तौर पर शांतिपूर्ण रहा है। यही इसकी शक्ति रही है। भगवान जानता है कि उत्तेजना कोई कम नहीं रही है और जवानों के लिए उत्तेजित और क्रोधित हो उठना स्वाभाविक है। फिर भी छोटी-मोटी चूकों के अलावा उन्होंने अपने को संयमित और शांतिपूर्ण रखा है। दुर्भाग्य से हिंसा के मामले में चूकें अधिक हुई हैं। गाली-गलौज की भाषा का इस्तेमाल किया गया है और 'मिनिस्टरों की क्या दवाई, लातें, जूते और पिटाई' जैसे नारों का अभी भी उपयोग हो रहा है। ये बन्द होने चाहिए। नारे ऐसे होने चाहिए कि वे जनता को अपील करें, संघर्ष के उद्देश्य समझायें और गरिमामय भाषा में सरकार या कालाबाजारियों, जमाखोरों आदि के गलत कामों की भर्त्सना करें।

किसी को भी उसकी मर्जी के खिलाफ कुछ भी करने पर मजबूर न किया जाये। घेराव, धरना, और उपवास दबाऊ न हों। अगर होंगे तो उनका असर घट जायेगा। मन्त्रियों, विधायकों, अफसरों, व्यापारियों या या दूसरे लोगों के परिवारों को किसी भी हालत में तंग न किया जाये और न उनके साथ दुर्व्यवहार हो। जूतों के हार, गधों या सुअरों के जुलूस बिलकुल नहीं निकाले जायें क्योंकि ये संघर्ष के लिए अपमानजनक हैं।

पांचों सप्ताह तक प्रदर्शन, प्रचार और जनशिक्षण के कार्यक्रम तो चलते रहेंगे लेकिन प्रत्येक सप्ताह का एक विशेष कार्यक्रम भी होगा जिस पर खास जोर और ध्यान दिया जायेगा। मेरी अनुपस्थिति में जिस तरह प्रदर्शनकारी और दूसरे कार्यक्रम चलते रहेंगे उसी तरह कीमतों को बांधने और नियन्त्रित तथा स्वीकृत दामों पर जरूरी चीजों के वितरण का काम भी चलता रहेगा। कालाबाजारी, मुनाफाखोरी और जमाखोरी के खिलाफ भी संघर्ष चलता रहेगा। घटनाओं को ध्यान में रख कर कार्यक्रम के विशेष मुद्दों पर जोर देने के लिए विशेष दिवस मनाये जा सकते हैं।

पटना में एक समिति मैंने गठित की है जो सम्बन्धित अधिकारियों से समस्या के विभिन्न पहलुओं पर विचार करेगी। इसके बाद थोक और खुदरा व्यापारियों के संघों के प्रतिनिधियों के साथ बैठकें होंगी। वनस्पति घी जैसी जरूरत की चीजों वाले उद्योगों के प्रतिनिधियों से भी बातचीत होगी।

छात्र और जनसंघर्ष समितियों के प्रतिनिधियों और सरकारी अधिकारियों के संयुक्त दल बनाये जायेंगे जो सस्ते अनाज की दुकानों द्वारा चलाये जा रहे नकली राशनकार्डों को ढूंढ़ निकालेंगे। छात्र और जन संघर्ष समितियों के स्वयंसेवकों के दस्ते बनाये जायेंगे। ये दस्ते देखेंगे कि चीजें निर्धारित दामों पर बिकें और कमी की जो चीजें सरकार से दुकानदारों को मिलती हैं वे कालाबाजार में न पहुंचें। अगर जरूरत पड़े तो कीमतों के निर्धारण और आम जनता की जरूरत की चीजों को सुलभ करने के लिए शांतिपूर्ण सत्याग्रह किये जा सकते हैं।

२४ से ३० अप्रैल का सप्ताह जन जागरण सप्ताह के रूप में मनाया जायेगा। इस सप्ताह में आन्दोलन के लक्ष्यों, बिहार मन्त्रीमण्डल के त्यागपत्र और विधानसभा के विसर्जन जैसी मूल बारह मांगों को समझाने और उनके प्रचार के विशेष प्रयत्न किये जायेंगे।

पहली मई चूंकि अन्तर्राष्ट्रीय श्रम दिवस है इसलिए उस दिन ग्रामीण और शहरी इलाकों के मजदूरों का समर्थन प्राप्त करने के विशेष प्रयत्न किये जायेंगे। २ से ८ मई तक का समय राज्यभर में संघर्ष के साधन खड़े करने और उन्हें शक्तिशाली बनाने में लगाया जायेगा। ९ से १५ मई के सप्ताह में मन्त्रीमण्डल के त्यागपत्र और विधानसभा के विसर्जन के जुड़वा लक्ष्यों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। दूसरे कार्यक्रमों के अलावा इस सप्ताह में प्रत्येक चुनाव क्षेत्र में मतदाताओं की बैठकें होंगी जो अपने विधायक से इस्तीफे की मांग करेंगी। १६ से २२ मई तक का सप्ताह सदाचार सप्ताह के रूप में मनाया जायेगा। पिछले कुछ सप्ताहों से मैं लगातार इस बात पर जोर देता रहा हूं कि 'भ्रष्टाचार मिटाओ' आन्दोलन अगर मन्त्रियों, अफसरों कालाबाजारियों और जमाखोरों तक सीमित रहेगा तो उसकी उपलब्धि सीमित और शायद अस्थायी किस्म की होगी। अगर इस आन्दोलन को सफल होना है तो इसकी परिणति राज्य में नैतिक क्रांति की दिशा में होनी चाहिए। मेरा कहना यह नहीं है कि ऐसी क्रांति लाने के लिए एक सप्ताह पर्याप्त होगा। इरादा यह है कि इस सप्ताह में प्रत्येक व्यक्ति को समझाया जाये कि भ्रष्टाचार सर्वव्यापी है और उसे समाप्त करने के लिए सम्पूर्ण प्रयत्न करने होंगे। इस सप्ताह का एक नया कार्यक्रम यह होगा कि मन्त्रियों, अफसरों, व्यापारियों और बड़े जमाखोर किसानों के पुत्र-पुत्री अपने पालकों को यह समझाने के लिए कि वे भ्रष्टाचारी और समाज विरोधी तरीकों का उपयोग बन्द करें,

(बाकी पेज १० पर)

जन असन्तोष को सही दिशा देना है

—सिद्धराज ढड्ढा

प्रधानमन्त्री इन्दिराजी अपने भाषणों और बयानों में कहती रही हैं कि आज विषमता और गरीबी आदि जो समस्याएं हैं उनकी जिम्मेदारी मौजूदा व्यवस्था पर है और वे उसे बदलने की कोशिश कर रही हैं जिसमें लोगों को साथ देना चाहिए। समाज परिवर्तन के लिए 'कमिटमेंट' (निष्ठा) को उन्होंने एक सिद्धान्त ही बना लिया था, यहां तक कि इस 'कमिटमेंट' की उम्मीद उन्होंने सिर्फ अपनी पार्टी के लोगों से ही नहीं रखी बल्कि सरकारी नौकरों और न्यायाधीशों तक से भी इसकी मांग की है।

पर पिछले दिनों उन्होंने एक से अधिक बार कुछ ऐसी बातें कही हैं जिनका मेल पहले वाली बात से कम बैठता है। आज देश में जगह जगह मौजूदा व्यवस्था के खिलाफ आवाजें उठने लगी हैं। अब तक तो लोग एक चीज से ऊबे तो दूसरी की तलाश करते थे, एक पार्टी से असन्तुष्ट हुए तो दूसरी की तरफ [illegible]ते थे, सरकार की एक नीति से परेशान हुए तो समझते थे कि दूसरी नीति से समस्या हल हो जायेगी। पर अब लोगों की समझ में आ गया है कि सवाल इस सरकार या उस सरकार का, इस पार्टी या उस पार्टी का या इस नीति और उस नीति का नहीं है, बल्कि दोष आज की व्यवस्था का है। वह सड़ गई है और उसे बदलना होगा। वैकल्पिक व्यवस्था क्या होगी इस बारे में लोगों के सामने कोई स्पष्ट चित्र नहीं है पर इतना उनकी समझ में आता जा रहा है कि आज की परिस्थिति के निराकरण के लिए बुनियादें बदलना जरूरी है। गुजरात में जो हुआ और बिहार में अब जो हो रहा है उसमें इस बात के संकेत मिल रहे हैं। जनता को आशा थी कि आजादी मिल जाने पर उसकी तकलीफें दूर हो जायेंगी, पर हुआ इससे उल्टा ही। अब लोगों के धीरज का बांध टूट रहा है।

जो लोग सचमुच गरीबों की गरीबी और शोषण से दुखी हैं और उनके दुख-दर्द को दूर करना चाहते हैं उन्हें तो इस परिस्थिति का स्वागत करना चाहिए, क्योंकि परिवर्तन की आकांक्षा अब लोक हृदय में जागृत हुई है। पर आश्चर्य की बात है कि प्रगतिशील कहे जाने वाले भी उल्टे चिन्ता प्रकट करने लगे हैं कि इन जन आन्दोलनों से देश में अव्यवस्था फैलेगी, सभ्य (?) समाज की बुनियाद हिल जायगी, कानून और जनतंत्र में जनता की श्रद्धा ही खतम हो जायगी आदि। स्वयं इन्दिराजी के मुंह से भी इस प्रकार की ध्वनि निकली है। कानून और व्यवस्था कायम रहे यह इच्छा हर शासनकर्ता की होना स्वाभाविक है, पर इन्दिराजी की बातों से तो लोगों पर यही छाप है कि वे परिवर्तन चाहती हैं। इतने दिनों के अनुभव से यह स्पष्ट होता जा रहा है कि आज की व्यवस्था और आज के कानून कुल मिलाकर गरीबों के हितों के रक्षक और पोषक नहीं हैं बल्कि उन चन्द ऊंचे तबकों के लोगों के जो जनता के शोषण पर जीते हैं। यही तो हम चाहते रहे हैं कि यह व्यवस्था बदले। फिर इसके थोड़ा सा हिल जाने या टूटने का इतना डर क्यों? क्या समाज-परिवर्तन के लिए 'कमिटमेंट' की बातें केवल ऊपरी रही हैं या सिर्फ वोट हासिल करने के नारे।

हां जनता की इन भावनाओं का उफान हिंसा में या अस्तव्यस्तता में परिणत न हो जाय इस बात की चिन्ता हर एक को होनी चाहिए। इसके लिए आवश्यकता है जनता की आकांक्षाओं के साथ घुलमिलकर, उनके साथ कन्धे से कन्धा लगा कर उनके 'प्रोटेस्ट' को, उनके असन्तोष को, सही दिशा देने की, जैसा जयप्रकाशजी ने अपनी सेहत की परवाह न करके भी बिहार में किया, न कि जनता को सशंकित या निरुत्साहित करने की। हिंसा, मारकाट, तोड़फोड़ आदि किसी के हित में नहीं है, सबसे कम वह गरीबों के हित में है... यह सही है, पर साथ ही यह भी समझना अत्यन्त आवश्यक है कि आज की समाज व्यवस्था में हिंसा कूट-कूट कर भरी हुई है चाहे वह ऊपर से दीखती न हो। शांति का मतलब आज की स्थिति को ज्यों का त्यों बनाये रखने का हरगिज नहीं हो सकता। अशान्ति, हिंसा और अव्यवस्था तो वास्तव में आज की स्थिति में ही है। इस यथास्थिति को स्टेटस-क्वो को बदलना ही समाज में शांति कायम करने का एकमात्र उपाय है।

बरसों तक जनता सरकार का और नेताओं का भरोसा करती रही है। वे भी बराबर दिलासे देते और वादे करते रहे हैं। जनता शायद और भी धीरज रखती अगर राज्यकर्ताओं की ईमानदारी पर उसका भरोसा कायम रहता। लेकिन वह देख रही है कि उनकी कथनी और करनी में अन्तर है, उनकी बातों में ईमानदारी नहीं है। दिल्ली में नेताओं, शासकों और ऊंचे अफसरों द्वारा कीमती जमीनों को हथियाने की जो कार्यवाई अभी प्रकाश में आई है वह पिछले बरसों की लम्बी शृंखला की सबसे ताजा कड़ी मात्र है। अभी कुछ ही दिन पहले पंजाब में भी स्वयं सरकार की एक कमिटी ने इसी प्रकार के एक कांड का रहस्योद्घाटन किया था। एक बार तो लगा कि जैसे इस घटना से पंजाब की राजनीति में छोटा मोटा भूकम्प आ गया, विधानसभा के अध्यक्ष को इस्तीफा देना पड़ा, पर जो असली बात थी—गरीबों के हक की हजारों बीघा जमीन समाजवाद के नारे लगाने वाले नेताओं और उनके हमजोली बड़े अफसरों द्वारा हड़प लिये जाने की—उस बारे में कुछ नहीं हुआ। बात दब गई या दबाली गई। कोई ताज्जुब नहीं कि दिल्ली का कांड भी 'नई बात नौ दिन' होकर रह जाय। इस तरह आम जनता जब आये दिन स्वयं कानून बनाने वालों और उसकी रक्षा की दुहाई देने वालों द्वारा न्याय का गला घोंटा जाते देखती है, और इस परिस्थिति को बदलने में वह अपने को असहाय पाती है तो उससे शान्त रहने की, सब कुछ चुपचाप सहते रहने की, आशा कब तक की जा सकती है? और क्या ऐसी आशा रखना न्याय-संगत या व्यावहारिक है?

प्रायश्चित का स्थान

मुझे लगता है कि किसी भी देश का कानून तभी सार्थक होता है जब वह राष्ट्र की आवश्यकताओं पर आधारित हो। ऐसा भी कहा जा सकता है कि राष्ट्र की आवश्यकताएं कानून के विकास का कारण हुआ करती हैं। इस संदर्भ में मुझे इस सदन का ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना है कि हमारे देश में पिछले साल एक गंभीर परिस्थिति उत्पन्न हुई थी जबकि एक घटना ऐसी घटी जिसके निराकरण हेतु हमारे कानूनों में कोई विधान नहीं था।

मैं उस घटना की चर्चा कर रहा हूं जब ४०० से अधिक डाकुओं ने स्वेच्छा से अधिकारियों के आगे आत्म समर्पण किया था। मुझे लगता है कि यह परिस्थिति इस कारण उत्पन्न हुई कि हमारे कानूनों में अपने एक प्राचीन ऋषि द्वारा प्रतिपादित उस सूत्र को कोई स्थान प्राप्त नहीं है जिस में उन्होंने कहा था कि अभियुक्त और न्यायाधीश के ऊपर सत्य की खोज का बराबर उत्तरदायित्व रहता है। लेकिन आज हमारे न्यायालयों में तात्कालिक कानून के कारण अभियुक्त को वास्तविकता को तोड़मरोड़ कर के ही कानून की कठोरता से बचने का विकल्प प्राप्त है।

मनुस्मृति में प्रतिपादित एक अन्य सूत्र को भी हमारी वर्तमान न्याय संहिता में कोई स्थान नहीं है। इस सूत्र में मनु ने प्रायश्चित और पश्चाताप को प्रतिपादित किया है। मेरा विनम्र निवेदन है कि इन कमियों को दूर करने के लिए शीघ्रता करनी चाहिए। इन सूत्रों को हमारी न्याय संहिता का आवश्यक अंग बनाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। यदि ऐसा किया जाये तो हमें निम्न लाभ मिलेंगे :

प्रायश्चित और पश्चाताप को हमारी न्याय संहिता में स्थान दिया जाता है तो न्याय प्रक्रिया में सचाई से अमल होने लगेगा और शिनाख्तगी आदि की न्यायिक आपत्तियां समाप्त हो जायेंगी। साथ ही अभियुक्त को इस कारण जो न्यायिक कठोरता से छूट मिलती है और इस छूट के कारण एक भेद-पूर्ण परिस्थिति निर्माण होती है, वह भी समाप्त हो जायेगी। किसी भी अभियोग के

जांच की इस सूत्र के कारण एक वैकल्पिक प्रक्रिया स्थापित हो जायेगी जिसके कारण बरामदगी ठीक ढंग से हुआ करेगी तथा पुलिस के प्रति जो सही अथवा गलत व्यापक अविश्वास जनसाधारण में निर्माण हो चला है वह कुछ अंशों में कम हो जायेगा। यह सूत्र न्यायालयों में सत्य के प्रति निष्ठा को बढ़ावा देगा और नैतिक अधिवक्ताओं को अभियुक्त से सत्य का सहारा लेने की सलाह देने को प्रोत्साहन देगा। वास्तविकता तो यही है कि अभियुक्त से अधिक उपयुक्त दूसरा गवाह होता ही नहीं। भारतीय समाज में सत्य के प्रति निष्ठा की जो सनातन प्रतिष्ठा रही है और जो अभी प्रशासनिक उपेक्षा तथा विदेशी प्रभाव से क्षीण हो चली थी पुनः जाग्रत हो उठेगी।

ये प्रावधान न केवल अभियुक्त के आचरण में मुकदमे के दौरान अच्छा प्रभाव डालेंगे साथ ही साथ सजा हो जाने के बाद भी *इनका असर रहेगा। धारा ४०१ तथा ४०२* जो मौजूदा हालतों में कुछ अनर्कित प्रतीत होती हैं उनके संशोधन हेतु पृष्ठभूमि निर्माण करने में सहायता होगी। आधुनिक अपराध मनोविज्ञान के इस सत्य को कि अभियोग करते समय मनुष्य एक हतप्रभ रोगी सा हो जाता है, न्याय संहिता में स्थान मिल जायेगा। अभियुक्तों को भी सत्य का सहारा लेने का अवसर मिलने लगेगा जबकि अभी वह केवल झूठ बोल कर ही छुटकारा पा सकते हैं। यह सब लाभ हमारी न्यायपालिका में निहित हो इसके लिये मेरे सुझाव ये हैं:—

धारा ४ में एक और धारा जोड़ी जाय जिसमें अभियोगी यदि पश्चाताप करने को तैयार हो तो उसकी परिभाषा हो। परिभाषा में कहा जा सकता है कि यदि अभियोगी पश्चाताप या अन्य कारण से अपने अभियोग को स्वीकार करे और प्रायश्चित में दण्ड को स्वीकार करने को सहमत हो तो उसे पाश्चातापिक अभियुक्त की संज्ञा दी जाय।

धारा २५१ अ के बाद एक और उपधारा जोड़ी जाय कि यदि कोई पाश्चातापिक अभियुक्त के ऊपर ऐसा अभियोग हो जिसमें उसे आजन्म कारावास अथवा मृत्यु दण्ड अथवा सात वर्ष से अधिक का कारावास हो सकता है और वह अपना अभियोग स्वीकार करता है तो वह किसी प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट के पास आकर अपने अभियोग को स्वीकार करे। मजिस्ट्रेट अभियुक्त को न्यायिक कारावास में भेज कर अभियोग की जांच उसी प्रक्रिया से करेगा जैसे पुलिस करती है। जांच के बाद यदि मजिस्ट्रेट को विश्वास हो कि अभियुक्त का प्रायश्चित सही है तो वह अपने प्रतिवेदन के साथ अभियुक्त को सेशन जज के पास भेजेगा। यदि जांच में यह सत्य नहीं पाया जाता तो मुकदमा चलाने की सिफारिश की जायगी।

सेशन जज अभियुक्त के बयान लेने के बाद ऐसा दण्ड देगा जो न्यायसंगत हो, पर यह दण्ड मृत्यु का कदापि नहीं होगा। वह शासन को दूसरे दण्डों की माफी के बारे में सिफारिश कर सकता है। जो धारा ४०२ के अन्तर्गत शासन दे सकता है।

धारा ४०१ तथा ४०२ में यह जोड़ा जाय कि शासन अभियुक्त के आचरण को देखते हुए माफी दे सकता है। यही प्रावधान धारा २६२ में प्रथम अभियोग अधिनियम में भी जोड़ा जाय। अभी यह छूट तात्कालिक नियमों के अनुसार आचरण पर निर्भर नहीं करती।

मेरा इन तथ्यों को सामने रखने का केवल यही अभिप्राय है कि शासन इन तथ्यों पर पिछले साल की घटना के परिप्रेक्ष्य में विचार करे। साथ ही यह भी मेरी इच्छा है कि हमारी न्याय प्रक्रिया जो अभी केवल विदेशी सूत्रों पर आधारित है हमारी राष्ट्रीय संस्कृति की मौलिकता से प्रभावित हो जाय।

(लोकसभा में रणबहादुर सिंह)

सर्वोदय और राजनीति

डॉ० लक्ष्मी नारायण भारतीय

सत्ता एव दल की राजनीति से सर्वोदय कार्यकर्ता सतत अलिप्त रहे हैं, क्योंकि 'सत्ता काक्षा' एव 'पक्षहित' समाज की एकता भग करते हैं एव साधन-शुद्धि की बात तो हवा मे ही उड जाती है। इसलिए बार-बार जनता की ओर से माँग आने के बावजूद सर्वोदय इस प्रकार की राजनीति से दूर रहता आया है। जनता की माग इसलिए है कि वह समझती है, 'सर्वोदय वाले बहुत अच्छे लोग हैं एव राजनीति की गदगी से अपने को सदा दूर रखेंगे।' प्रत्यक्ष राजनीति मे उतरने के बाद सर्वोदय वाले भी इस अपेक्षा को कितना पूरा कर सकेंगे, भगवान ही जाने।

फिर सर्वोदय वाले एक ऐसे काम मे लगे हैं जो बुनियादी है एव समाज की एक व्यापक समस्या को वे हल करने मे व्यस्त हैं। यह काम राजनीति से सर्वथा अलिप्त नहीं है, क्योंकि भूमि समस्या व्यापक राजनीति से सबधित ही है। इस काम से यदि वे हट जायें तो 'माया मिली न राम' जैसी अवस्था हो जायेगी। जो थोडी-बहुत शक्ति गाधीजी के पश्चात गाधी वालो मे आयी है, वह भी बिखर जायेगी। अतः नित नयी उठने वाली समस्याओं मे रममाण होकर बुनियादी कार्य की ओर दुर्लक्ष्य करना सर्वोदय के हित मे नही है।

फिर भी लोगो को ऐसे काम मे एव ऐसी राजनीति मे लगे रहना है, जो उनके मूल काम मे बाधक न हो। उदाहरण दिया जा सकता है, गाधीजी के जमाने का जब रचनात्मक कार्यकर्ता अपने काम मे लगे रहते थे एव गाधीजी के आवाहन पर ही सत्याग्रह मे कूद पडते थे। इसी प्रकार आज सर्वोदय वालो को अपने काम मे तो लगे रहना है, पर जनता की स्थिति एव जिम्मेदारी से मुह भी नही मोडना है। आज जनता गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार, सत्ता का केन्द्रीकरण आदि से त्रस्त है। वह चाहती है कि उसके दैनदिन जीवन से सबधित समस्या भी हल हो। विभिन्न पार्टी वालो ने उसका बहुत शोषण किया है। सत्ताधारियो ने एव सत्ताकाक्षा रखने वालो ने उसका पूरा उपयोग लिया है, पर पल्ले कुछ नही पडा है। अत: वह चाहती है कि सत्ता वालो से दूर, पक्षाधता रखने वालो से अलिप्त कोई सगठन हो, जो मौजूदा बुराइयों का मुकाबला करे, सज्जनो की शक्ति को एकत्रित करे एव गाधीजी के जमाने की तेजस्विता प्रकट करे। ऐसा लगता है, जयप्रकाशजी वह अवसर ले आये हैं। सर्वोदय को राजनीति मे आने के लिए कहा तो जाता है, परन्तु उसकी अगर कोई राजनीति हो सकती है तो वह सत्तानिरपेक्ष एव दल-विहीन राजनीति ही हो सकती है।

जयप्रकाशजी ने जो नया मच कायम किया है, वह इस कसौटी पर सही उतरता है। यदि वे कोई राजनीतिक पक्ष खडा करते, तो वह सत्ताकाक्षी ही बन जाता। उन्होंने पक्ष-विहीन मच की स्थापना करके उस राजनीति मे प्रवेश किया है, जो सत्ताभिमुख राजनीति की विरोधी है। सर्वोदय वालो को यदि इससे कोई एतराज हो सकता है, तो इतना ही कि उनके अगीकृत कार्य, ग्रामदान से यह भिन्न है। परन्तु साथ ही 'ग्राम स्वराज्य' का भी लक्ष्य सर्वोदय ने अपनाया है। भ्रष्टाचारादि से मुक्ति का प्रयास निश्चय ही ग्रामस्वराज्य की स्थापना की प्रक्रिया का ही एक अग है।

यह मच सही मानो मे सर्वोदयी राजनीति का मच बन सकता है, क्योंकि इस मच का कार्यक्रम ऐसा नही है, जो सर्वोदय का विरोधी हो। हम जनता की ज्वलत समस्याओं के सक्रिय हल के लिए यदि प्रयत्न नही करते हैं, तो स्पष्ट है कि ग्रामदान का काम भी आगे नही बढ सकता। ग्रामदान तो क्रांति की एक प्रक्रिया है। वह समाज का सहयोग पग पग पर चाहती है। सहयोग तभी मिल सकता है, जब समाज के सुख-दुख के हम हिस्सेदार बनें। आज जनता भूख एव बेकारी से जितनी त्रस्त है, उससे कहीं अधिक भ्रष्टाचार से पीडित है। स्वभावत उसकी त्रस्तता, पीडा आदि का उपाय यदि नही किया जाता है तो उसका सहयोग मिलना कठिन है, साथ ही, अपनी कठिनाइयो के निवारणार्थ वह फिर किसी न किसी पक्ष के ही अधीन हो जा सकती है। राष्ट्रीय मच ने जनता को अपनी राह पर लाने का मार्ग खोल दिया है। यह मार्ग तब कटक रहित बन जाता है, जब जनता के सुख दुख मे हम शामिल हो जाते है। यदि हम गहराई से सोचें, तो स्पष्ट हो जायगा कि गाधीजी ने जैसे स्वराज्य के काम के साथ रचनात्मक कामो को जोडा एव रचनात्मक काम को तेजस्वी बनाया, उसी प्रकार जयप्रकाशजी ने राष्ट्रीय मच के साथ ग्रामदानादि कार्यों को जोडकर एक नई राह खोल दी है, जिससे हम ग्रामस्वराज्य का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। 'भूदान ग्रामदान कार्य की ओर इस कारण लापरवाही आ जायेगी, हमारी तटस्थता समाप्त हो जायेगी एव हम सरकार के विरोध मे खडे होंगे' ऐसा आक्षेप इस सिलसिले मे किया जा सकता है। वस्तुतः भूदान-ग्रामदान का कार्य विस्मृत न होने देना तो हमारे अपने हाथो मे है। वह करते हुए भी जनता का काम यदि हम करते हैं, तो जनता भूदान-ग्रामदान का काम उठा लेगी। यानी सर्वोदयी कार्यकर्ता तो अपना काम करते रहेंगे ही, इस मच पर जनता को भी अपने साथ रखने का जरिया ढू ढ निकालेंगे सारी जनता भूदान-ग्रामदान मे प्रत्यक्षतः भले ही न लगे, उसके सहयोग से निश्चित ही ग्रामदान को बल मिलेगा।

तटस्थता भी इससे भग नही होती, क्योंकि किसी भी पक्ष से हम बधते नही हैं। तटस्थता तो रहेगी ही, क्योंकि मच पक्षविहीन है। अत: हमारी तटस्थता तो और भी उभर आयेगी,-जब हम उन सभी को ताडना करेंगे, जो भ्रष्टाचारादि मे लिप्त रहेंगे। इस मे सत्ताधारी एव सत्ताकाक्षी, सब आ सकते हैं, अत सत्ताधारी एव सत्ताकाक्षी पक्षो की ओर से विरोध भी होगा। पर जनता जब देखेगी कि हमारा लक्ष्य सही है, पक्षो की राजनीति से हम ग्रस्त नही हैं, सत्ताकाक्षा भी हममे नहीं है, तो वह हमारी तटस्थता को चीन्ह लेगी। दर असल आज उसके अन्तर मे तटस्थता की ही चाह है जो यह मच पूरा करने जा रहा है। अत मच के प्रति सहयोग सर्वोदय के लिए जरूरी है।

यह सही है कि तात्कालिक रूप मे सरकार का विरोध इसमे से उभर आयेगा। परन्तु सरकार किसी भी पक्ष की हो, यह मच उस के गलत कदमो का विरोधी रहेगा। वस्तुत: जनता के सम्मुख यह मच सरकार के विरोधी मच के रूप मे नही, अपितु एक सक्रिय पर

तटस्थ कार्यकर्ता-दल के रूप में काम करेगा। प्रसंगानुसार वह सरकार का विरोध भी करेगा और समर्थन भी। यानी यह विरोधी दल नहीं अपितु बुराई का विरोध करने वाला तटस्थ मंच रहेगा, इसलिए सरकार को उससे भय रखने की जरूरत नहीं। मंच क्या चाहता है एवं क्या करता है, यह स्पष्ट हो जाने पर हो सकता है, सरकार भी उससे सहायता ले, क्योंकि सरकार भी तो भ्रष्टाचार का निर्मूलन करना चाहती है। सरकार का ही काम यह मंच करेगा, अतः यह सरकार-विरोधी नहीं माना जा सकता है।

हां, अबतक सरकार की गलत नीतियों का सक्रिय विरोध सर्वोदय ने कम ही किया है। सर्वोदय से संबंधित रचनात्मक संस्थाओं ने सरकार से मदद भी ली है। खादी ग्रामोद्योग सरकारी सहायता पर अवलंबित है। इन सब कारणों से सरकार एवं गांधी वाले, सरकार एवं सर्वोदयी, सरकार एवं खादी वाले, ये मानो एक ही सिक्के के दो पहलू समझे जाने लगे थे। यह भ्रम इस मंच के कारण टूट जायेगा। एवं सर्वोदय वाले अपना स्वतंत्र अस्तित्व प्रकट कर सकेंगे। सर्वोदय वालों की ओर सरकार सहानुभूति से देखती है एवं उन्हें मदद करती है। पर अब ऐसी सहानुभूति एवं मदद उसकी ओर से नहीं मिलेगी, क्योंकि वह समझ जायेगी कि ये लोग हमारी गलत नीतियों का समर्थन करने वाले नहीं हैं इसे एक 'इष्टापत्ति' ही माननी चाहिए एवं इस कदम का स्वागत इसलिए करना चाहिए कि सरकार पर हमारी निर्भरता अब कम हो जायेगी व जनता पर निर्भरता बढ़ेगी। यही गांधीजी चाहते थे एवं विनोबा की 'लोकनीति' भी यही चाहती है। कभी न कभी यह भ्रम टूटना ही था कि सरकार एवं सर्वोदय वाले एक हैं। किसी भी कीमत पर सरकारी दुर्नीतियों का विरोध न हो, ऐसा चाहने वाला जो वर्ग सर्वोदय से संबंधित है, उसको इससे जरूर निराशा होगी। पर इसका कोई उपाय नहीं है, क्योंकि रचनात्मक काम एवं सर्वोदय के काम ऐसे हैं कि कहीं न कहीं प्रस्थापित स्वार्थों से टकराव होना ही था। फिर भी इसे हम 'सरकार-विरोधी मंच' न मानकर यों मानें कि जहां भी भ्रष्टाचारादि होंगे, यह मंच उनका विरोध करेगा। फिर विरोध में चाहे सरकार हो, या अन्य कोई ऐसा भी मौका आ सकता है कि यह मंच सरकार का भी समर्थन करे। यह समर्थन तटस्थता से होगा। हो सकता है इस मंच को अन्य लोगों का भी रोष सहना पड़े। दर असल इस मंच का काम बहुत ही कठिनाइयों से भरा है, क्योंकि भ्रष्टाचार केवल एक ही पक्ष से संबंधित नहीं है। व्यापारी, विरोधी पक्ष, सरकारें, सरकारी अधिकारी सभी से वह संबंधित है। अतः जहां ये सब देखेंगे कि हमारे स्वार्थ पर आघात हो रहा है, तो वे मंच का विरोध करने लग जायेंगे। इस प्रकार यह मंच किसी एक का नहीं रह पायेगा। फिर भी उसकी शक्ति इसी में है कि वह तटस्थता से उन बुराइयों का विरोध करेगा, जो समाज में व्याप्त हैं। तब जनता तो उसका साथ देगी ही।

सर्वोदय के कार्य में, उसके प्रवाह में यह एक नया मोड़ आया है। इससे गांधी वाले, सर्वोदय वाले, खादी वाले घबरा भी सकते हैं कि जयप्रकाशजी ने यह कहां से नयी आफत खड़ी कर दी है? अब तक के अविरोधी जीवन में अच्छा काम चल रहा था और सबकी सहानुभूति मिलती थी। अब जिनकी बुराइयों से प्रतिकार होगा, वे विरोध में खड़े होंगे। यह सही है कि विरोध के कारण कठिनाइयां खड़ी होंगी, परन्तु गांधीजी का रास्ता भी तो बुराइयों से असहकार का रहा है। विनोबाजी का रास्ता तो सज्जनशक्ति को सक्रिय बनाने का है ही। हमारा मानना है कि इस मंच को यदि हमने ठीक समझा है एवं इस मंच के नेता के कदम को यदि हमने विश्वास के साथ देखा है, तो हमें भयभीत होने की जरूरत नहीं है। इसे हम सज्जन-शक्ति के संगठन के रूप में ही देखें। यह मंच सर्वोदय के कार्यकर्ताओं का मंच नहीं है पर हम यह भी समझ लें कि सर्वोदय यदि अपने को इससे अलिप्त एवं अलग समझेगा, तो उसका काम निस्तेज हो जायेगा एवं वह जनता से टूट जायेगा। आखिर हम सज्जन-शक्ति इसीलिए तो चाहते हैं कि बुराई का प्रभाव कम हो इसे करने का ही रास्ता जयप्रकाशजी ने बताया है। इससे विनोबाजी के मूलभूत लक्ष्य का विरोध नहीं है। सावधानी इतनी ही बरतनी है कि एक ओर सर्वोदय वाले जयप्रकाशजी के पीछे पूरी ताकत तो खड़ी करें, पर अपने काम से छुट्टी न लें। दूसरी ओर, जयप्रकाशजी भी सत्ता एवं दलनिष्ठ राजनीति पर आंच न आने दें एवं मंच को सदा तटस्थ बनाये रखें। वस्तुतः जयप्रकाशजी का मंच गांधी-विनोबा के समन्वय का मंच है। गांधीजी बुराई का प्रतिकार सत्याग्रह से भी करते थे। विनोबाजी सज्जन-शक्ति को ही प्रभावित करके बुराई रूपी अन्धकार को दूर करना चाहते हैं। जयप्रकाशजी ने किया यह कि मौके पर जरूरत पड़ने पर, बुराई के प्रतिकार की राह हो खुली रखी है, पर प्रयत्न यही है कि सभी तटस्थ (सज्जन) शक्तियां अधिकाधिक रूप में सक्रिय हों एवं देश की जड़ें खोदने वाली, जनता से 'त्राहिमाम्' कराने वाली समस्याएं दूर हों।

(पृष्ठ ६ का शेष)

अपने घरों में बाहर घण्टों का उपवास करेंगे। एक दिन विद्यार्थी शपथ लेंगे कि वे भ्रष्टाचारी तरीके नहीं अपनायेंगे कि जिनके कारण राज्य के विद्यार्थी इतने बदनाम हो गये हैं और एकेडेमिक जीवन का इतना पतन हो गया है।

२३ से २९ मई तक के सप्ताह में शिक्षा में आमूल परिवर्तन की जरूरत पर जोर दिया जायेगा। पालकों और माता-पिताओं को यह समझाने का विशेष प्रयत्न किया जायेगा कि बाबू पैदा करने वाली मौजूदा शिक्षा प्रणाली उनके बच्चों, स्वयं उनके और देश के लिए हानिकारक है। इसलिए उन्हें जागृत होकर ऐसी शिक्षा की मांग करनी चाहिए जो पढ़ाई-लिखाई के साथ, खेतों, कारखानों और दफ्तरों में शारीरिक श्रम और रोजगारों में प्रशिक्षण की व्यवस्था करती हो। इस सप्ताह पूरे राज्य में गोष्ठियों, भाषण और विचार विमर्श भी होना चाहिए। सप्ताह का प्रत्येक दिन शिक्षा में क्रांति के एक विशेष पहलू पर जोर देने में लगाया जाये-जैसे परीक्षाओं की उपयोगिता, नौकरी के लिए डिग्रियों की आवश्यकता, आर्थिक नियोजन के साथ शैक्षणिक नियोजन की आवश्यकता ताकि जिन कामों के लिए विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जाये वे उन्हें सचमुच मिल सकें।

मई के आखिरी दो दिन इस कार्यक्रम की समीक्षा करने और आन्दोलन के अगले चरण के लिए योजना बनाने में लगाये जायें। यह संभव है कि तब तक मैं पटना लौट आऊंगा।

शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल दान-उपवासदान

—विनोबा

मैंने कई दफा कहा है और आज फिर से दोहराता हू, यह देह जो प्राप्त हुई है, वह परमात्म-दर्शन के लिए है। वह एक ट्रस्ट है। इस ट्रस्ट का उद्देश्य भगवद् दर्शन है। भागवत मे स्पष्ट शब्दो मे वर्णन आया है—परमात्मा ने अनेक प्राणी निर्माण किये, लेकिन सतोष हुआ नही। आखिर मनुष्य निर्माण किया, तो मुदमाप देव, भगवान को सतोप हुआ, आनन्द हुआ। क्यो सतोप हुआ? ब्रह्मावलोकधियणम्—ब्रह्म-साक्षात्कार की-आत्मसाक्षात्कार की शक्ति जिसमे पडी है ऐसी मानवमूर्ति भगवान ने पैदा की, तब भगवान को सतोप हुआ—मुदमाप देव।

यह एक ही प्रश्न बाबा अपने को पूछता है। ७८ साल हो गये। २२ साल की उम्र मे ज्ञानेश्वर महाराज मुक्त हो गए। ४२ मे तुकाराम महाराज गये। ६६ मे एकनाथस्वामी गये। ७३ मे रामदासस्वामी गये। भगवान महावीर ७२ मे गये। स्वामी विवेकानन्द ३६ मे गये। ईसा-मसीह ३३ मे गये। शंकराचार्य ३२ मे गये। ऐसा सारा दृश्य बाबा अपने सामने देखता है। फिर अपने को पूछता है, तेरे ७८ साल हो गये, तेरे ट्रस्ट का जो उद्देश्य है, उसके नजदीक जा रहे हो या नहीं जा रहे हो? ट्रस्टडीड (ट्रस्ट का विलेख) मे ट्रस्ट का उद्देश्य लिखा रहता है कि फलाने-फलाने काम की सिद्धि के लिए ट्रस्ट है। उसके साथ यह काम, वह काम ऐसे दूसरे काम भी लिखे रहते हैं, वे मूल उद्देश्य की पूर्ति के लिए होते है। हमने कितने भी काम किये हो, ट्रस्ट के मूल उद्देश्य के नजदीक न जाते हो, तो सारे प्रयास बेकार गये, ऐसा होगा। मेरे भाइयो, यही एक सवाल अपने को पूछिये—अपने को खुद को पूछिए और अपने साथियो को भी यही पूछिए। सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। हम सामूहिक साधना करना चाहते है। भक्त प्रह्लाद का वाक्य है—

प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्तिकामा-

देव, मुनि इत्यादि प्राय अपनी मुक्ति की चिन्ता करते हैं।

मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः

जगलो मे जाकर, मौन रह कर साधना करते हैं। लेकिन मैं इस प्रकार मुक्त होना नही चाहता—

नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एक

मैं अकेला मुक्त होना नही चाहता। सबके साथ मुक्ति चाहता हू। हम जो अपने लिए मुक्ति चाहते है रागद्वेप का क्षय हो चाहते है, आत्मदर्शन के नजदीक जाना चाहते हैं, हमारे जो साथी हैं, उनके साथ, सबके साथ मुक्त होना चाहते है। परस्पर भावयन्त। एक दूसरे को मदद देते हुए एक साथ जाना चाहते हैं। हम पूछे अपने साथियो को कि हम कहा तक आगे बढ रहे हैं। मुख्य यह बात है।

दूसरी बात। बाबा ने अपने जन्मदिन पर जाहिर किया कि बाबा हर महीने मे दो दिन, आधे-आधे दिन का उपवास करेगा और वह दान सर्व सेवा सघ को देगा—और साल भर के १२ उपवास के ३६ रुपये बाबा ने सर्व सेवा सघ को दे दिये।

हमको समझना चाहिए कि गाधीजी के जाने के बाद, जितनी भी सस्थाएं हमने अनेक प्रकार की बनायी थी—चरखा सघ, हरिजन सेवक सघ, नई तालीमी सघ, भूदान-ग्रामदान का काम करने वाले कार्यकर्ता, सबका एक सघ बने—समूह बने यह समूह हमने बनाया सर्व सेवा सघ। हमने उपवास कर के जो बचा वह दान दे दिया सर्व सेवा सघ को, तो वह पवित्र दान हो जाता है। आज तक हमने अनेको की मदद ली। समुद्र मे अनेक नदिया आती है। कोई भी मनुष्य कैसा भी पैसा दे—जिससे जो भी आया और जितना भी आया, हमने लिया। उसमे हमने कोई गलती की ऐसा मैं नही मानता। वह हमने 'सर्वब्रह्म' की उपासना की। अब विमल, स्वच्छ, 'शुद्ध ब्रह्म' की उपासना करनी है। उसी प्रक्रिया से सर्व सेवा सघ सामूहिक समाधि प्राप्त कर सकता है। हमारे सब समूहो को मिल कर हमने नाम दिया सर्व सेवा सघ। हम लोग, जो काम कर रहे हैं, सबके सब उपवास करके दान दें। उससे चित्तशुद्धि होगी, आरोग्य प्राप्ति होगी। हमारे बालूभाई (मेहता) हर महीने की कृष्णपक्ष की एकादशी को उपवास करते हैं, तो उनका अनुभव है कि उससे उन का आरोग्य अच्छा रहता है, मानसिक शांति और समाधान रहता है। हम सब महीने मे एक दिन का उपवास करें और बचा हुआ पैसा सर्व सेवा संघ को दे दें।

सर्व सेवा सघ को अपने काम के लिए हर साल १० लाख रुपये लगते हैं। अगर ४० हजार लोग महीने मे एक दिन का उपवास करते हैं और एक व्यक्ति के साल भर के १२ उपवास के २५ रु० मिलते हैं तो १० लाख रुपये होंगे। मैं अपेक्षा करता था कि वर्धा की अनेक सस्थाएं है—महिला आश्रम, मगनवाडी, बजाजवाडी इत्यादि और वहा छोटे-बड़े कार्यकर्ता हैं, तो १००० उपवास-दान तो वर्धा से ही मिले होंगे। बाबा ने जाहिर किया ११ सितम्बर को, आज २३ अक्तूबर है लगभग छः हफ्ते हो गये। लेकिन मुझे अभी रिपोर्ट मिली कि अभी तक कुल भारत से लगभग १०० ही दान आये हैं। मतलब २५०० रुपया हुआ। इसमें हमारी परीक्षा है। इसमे क्या होगा? कोई करोडपति है मान लीजिए, और वह दान देना चाहता है, तो उसको १२ उपवास करने होंगे। उसका भोजन का खर्च ज्यादा हो सकता है। बाबा का तीन रुपये होता है, उसका पाच, [illegible] या सात हो सकता है। तो मान लें, उसके १२ उपवास [illegible] १०० रुपये होंगे, उतना दान वह देगा। है करोडपति, लेकिन उससे उतना ही प्राप्त करेंगे। यह है शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल दान। यह बात मैं आज दुबारा रख रहा हूं। मेरी अपेक्षा है कि अकेला एक वर्धा शहर १००० उपवास-दान तो दे ही सकता है—देना चाहिये।

आगे दो जिले हैं

उत्तर प्रदेश मे आगरा शहर और नैनीताल जिले के रुद्रपुर मे उपवासदानियो की संख्या सबसे ज्यादा है। आगरा गाधी शांति-प्रतिष्ठान केन्द्र के मुख्य कार्यकर्ता कृष्णचन्द्र सहाय तथा नैनीताल जिला सर्वोदय मण्डल के दीपनारायण साही से की गई बातचीत वहाँ की सफलता के कारण बताती है। →

आगरे की अगुआई

कृष्णचंद सहाय : आगरा में उपवास-दान के लिए दाने-लोग तैयार हुए, इसके कुछ कारण तो बिलकुल साफ हैं। विनोबा पदयात्रा के दौरान आगरा से गुजरे थे। यहां के पढ़े-लिखे, सोचने-समझने वाले लोग उनको जानते हैं, आदर देते हैं। फिर यहां बाबूलाल मीतलजी हैं, उनका बहुत सम्मान है। स्वामी कृष्णानन्द हैं, उनका भी अपना दायरा है। जब विनोबा ने उपवासदान का विचार रखा तो शहर के हम सब साथियों ने एक आपसी बैठक बुलाकर इस पर बातचीत की। एक योजना बनाई जिसके अनुसार हर सम्भव माध्यम से लोगों के सामने इस विचार को रखना तय किया गया। उत्तर-प्रदेश के हम कुछ साथी आन्दोलन के संगठन पर पिछले कुछ सालों से सोच भी रहे थे, प्रदेश स्तर पर पांचवाली मुट्ठी में हमने ढांचा बदलने का प्रयास भी किया था। अतः जब विनोबा ने सर्व सेवा संघ के खर्च को उपवास दान पर चलाने का नया विचार दिया तो हमें भी काफी उत्साह आया। संगठन के आर्थिक आधार के बदलने में उसके समूचे ढांचे के बदल जाने की भावना छिपी है।

उत्साह से आगरा में काम शुरू हुआ। बाबूलाल मीतल व स्वामी कृष्णानन्द जगह-जगह सभा बुला कर उपवासदान के बारे में लोगों को समझाते। स्थानीय अखबारों में भी उपवास दान का महत्व समझा कर इस काम में मदद देने की अपील की गई। आगरा में वैसे भी दान की महिमा है, फिर यहां के पैसे वाले लोगों में दूसरे शहरों के मुकाबले सामाजिक जिम्मेदारी की भावना अधिक है। एक महिला ने अखबार में छपी अपील देख कर उपवास दान का पैसा भेजते हुए आश्चर्य व्यक्त किया कि मुझे मालूम नहीं था दुनिया में कोई ऐसा आन्दोलन भी होगा जिसका खर्च लोग उपवास कर उठायेंगे। उन्होंने सर्वोदय आन्दोलन कहां—क्या काम कर रहा है इसकी जानकारी भी मांगी।

बाबूलाल मीतल जी की सभाओं में काफी नए लोग आते। सारी बात उनके सामने रखने के बाद कुछ को ऐसा लगता कि आगरा में होने वाले काम का तो उनसे कोई ताल्लुक है, लेकिन दूर-दूर गांव और शहरों में चलने वाले काम में वे क्यों पैसा दें? कुछ शंका करते कि ग्रामस्वराज्य आन्दोलन में हमारी रुचि नहीं है लेकिन यहां के काम में वे मदद दे सकते हैं अतः उनका उपवासदान स्थानीय कार्यकर्ताओं के ही काम में आये। ऐसे लोगों को धीरज के साथ समझाया जाता : कन्या-कुमारी में किए गये उपवास का भी आगरा से सम्बन्ध जुड़ेगा और आगरा में किए गये उपवासों का कन्याकुमारी से।

२५ रुपये औसत उपवासदान में दो अपवाद भी सामने आये। एक परिवार में पिता ने उपवास दान किया। उस हफ्ते उनका पहला उपवास आया। खाने की मेज पर जब पिता की थाली नहीं लगाई गई तो उनकी बारह साल की बेटी ने कारण पूछा। पिता ने बताया कि सर्वोदय आन्दोलन का खर्च लोगों के उपवास से चलेगा। वे आज खाना नहीं खायेंगे। बेटी पर असर पड़ा। उसने कहा वह भी महीने में एक दिन का पूरा उपवास रखेगी। मधु ने एक बार के खाने का आठ आना खर्च माना। दूसरे दिन मधु का दस रुपया सर्व सेवा संघ गोपुरी चला गया। दूसरा उदाहरण आगरा के एक प्रसिद्ध होटल के मालिक का है। उन्होंने उपवास दान का पर्चा भरते हुए कहा कि उनके एक बार के खाने का खर्च करीब दस रुपया है। इस तरह महीने में एक उपवास से वे बीस रुपया बचा कर साल भर के २५१ रुपये सर्व सेवा संघ को भेज रहे हैं।

श्री सहाय का कहना है कि हमने स्थानीय उपवासदानियों से सम्पर्क रखने की भी एक योजना तैयार की है। हम हर महीने उपवासदानियों की एक बैठक बुला कर उन्हें देश तथा शहर में चल रहे काम की थोड़ी बहुत जानकारी देते रहना चाहते हैं। इससे उन्हें अपने उपवास से देश भर को मिल रही शक्ति का अंदाज लगेगा।

इस तरह आगरा में काम जारी है।

नैनीताल में सौ

नैनीताल : जिला मंडल के मंत्री दीपनारायण साही रुद्रपुर के प्रसिद्ध आढ़ती हैं। सर्वोदय आन्दोलन में व्यापार से समय निकाल कर मदद करते हैं। सुन्दरलाल बहुगुणा उत्तराखण्ड की १२० दिन की पदयात्रा पर थे। दीपनारायण उनसे मिलने गत फरवरी को नैनीताल जिले के एक घने जंगल में गये। उन्होंने सुन्दरलाल जी को रुद्रपुर आने का निमंत्रण दिया। पदयात्री ने निमंत्रण स्वीकार किया लेकिन एक शर्त रखी, "रुद्रपुर-नैनीताल से कम से कम सौ उपवासदान मिलने चाहिए तो मैं इस इलाके को पदयात्रा में शामिल कर सकूंगा।"

२० फरवरी से सम्पर्क शुरू हुआ। चूंकि ग्रामीण क्षेत्र है इसलिए काम का तरीका सभाओं का न हो कर व्यक्तिगत सम्पर्क का था। दीपनारायण जी के गांव प्रतापपुर के २५ परिवारों में से २२ परिवार के एक-एक सदस्य ने उपवासदान दिया।

पहाड़ों में गरीबी बहुत है। १०० उपवासदान का लक्ष्य रख कर नैनीताल जिले में घूम रहे सुन्दरलाल ने लिखा कि, "विनोबा का अनुमान था कि एक व्यक्ति एक बार में एक रुपए का खाना खाता ही होगा परन्तु पहाड़ी गांवों में मुश्किल से एक बार का आठ आना बैठ रहा था।" फिर एक दिक्कत और भी थी। गरीबी के बावजूद भी कई लोग उपवासदान के विचार को पसंद करते थे, लेकिन उनके पास पूरे साल भर की रकम एक बार में जमा कर देने लायक पैसे नहीं थे। एक छोटे से पहाड़ी गांव में २० औरतों ने उपवासदान किया लेकिन साल भर की रकम वे जमा नहीं कर सकीं। अब यहां के कार्यकर्ता सोच रहे हैं कि उनके उस दिन की बचत का राशन बेच कर जो रकम प्राप्त हो वह सर्व सेवा संघ को भेजी जाए। नैनीताल के कार्यकर्ता इस सोच में हैं कि किस तरह उपवासदान में गरीब से गरीब लोग भी शामिल हो सकें।

उपवासदान करने वालों में एक साम्यवादी कार्यकर्ता जमुनासिंह भी हैं। उन्होंने पदयात्रियों से कहा, "सर्वोदय की मुझे आज तक जानकारी नहीं मिली थी। आप लोग सोये थे। अब जागे हैं तो आपके आन्दोलन को चलाने के लिए मेरा उपवासदान भी शामिल कीजिये।"

●

आतंक की राजनीति के जनक कौन

त्रिलोकचन्द

आजकल प्रधानमन्त्री रात दिन भारतीय जनता को यह चेतावनी देती रहती हैं कि उसे आतंक एवं हिंसा की राजनीति की चुनौतियों का मुकाबला करना है और फासिस्ट षड्यन्त्रकारियों से लड़ना है क्योंकि इनके इरादे साफ नहीं हैं। प्रश्न है कि यह आतंकवादी और फासिस्ट मनोवृत्ति कहां से अपना पोषण प्राप्त कर रही है? इसका यदि ठीक तरह से नहीं समझा गया तो उन परिस्थितियों का निराकरण कठिन होगा।

अभी २ मार्च को राजस्थान के वामपंथी दलों ने महंगाई के खिलाफ राजस्थान बन्द का आवाहन किया था। इसके लिए राजस्थान सरकार ने १ की शाम को जयपुर नगर की सड़कों पर सौ-सवा सौ ट्रकों में बन्दूकधारी सिपाहियों को भर कर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया और सारे नगर में बन्दूक की नोक का भय और आतंक फैलाने का योजनाबद्ध प्रचार किया। बहुत गौर से देखने पर भी उन ट्रकों में न तो कांग्रेसजन थे और न कांग्रेस सेवा दल का कोई स्वयं सेवक ही। विशुद्ध रूप से हिंसा और आतंक को बढ़ावा देने वाली राज्य पुलिस का यह प्रदर्शन था। उसी शाम को राज्य गृहमन्त्री की घोषणा यह थी कि हर स्थिति का मुकाबला करने के लिए शासन ने तैयारी कर रखी है। यह एक सूचक घटना है कि कांग्रेस शासन का अपने दल, अपने कांग्रेसजन व अपने मतदाता नागरिकों की शक्ति की अपेक्षा पुलिस और उसकी बन्दूक पर अधिक भरोसा है। पुलिस की लाठी और बन्दूक से न शांति के कबूतर उड़ते हैं और न फूलों की वर्षा होती है। क्या यह प्रदर्शन हजारों कांग्रेसजनों का अथवा शांतिप्रिय नागरिकों का नहीं हो सकता था जो जनता के आत्मबल को जागृत करता और उनसे अपील करता कि उन्हें हर स्थिति का मुकाबला शांति से करना है?

आज सरकार की गलत नीतियों के हर लोकतांत्रिक विरोध को आतंककारी और फासिस्ट मनोवृत्ति की संज्ञा दे दी जाती है। जनता आर्थिक कठिनाईयों की विषम परिस्थितियों में दबकर कराह रही है। जनता द्वारा अपनी कठिनाईयों की अभिव्यक्ति को जो कि जनतन्त्र का गृहीत दस्तूर है, सदा पुलिस और फौज की लाठी और गोली से ही दबाया जाना क्या अपने आप में फासिस्ट तरीका नहीं है? यदि कांग्रेस स्वयं प्रतिशोध फासिस्ट और हिंसक मनोवृत्ति का शिकार नहीं होती और सत्ता स्थित राजपुरुषों का अनुगामी मात्र नहीं होती, तो जब गुजरात जन-विद्रोह की आग में जल रहा था तब वहां के जन-आक्रोश को शान्त करने के लिए मन्त्री कृष्णचन्द्र पन्त के बजाय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष शंकरदयाल शर्मा गुजरात गये होते और वहां के कांग्रेसजनों को संगठित किया होता। केवल पुलिस और सेना की बन्दूक की गोलियों के बजाय, कांग्रेस की नागरिक शक्ति से ही वहां की समस्या के निराकरण की मुहिम चलायी होती। जब दल के नेता अपनी जय जयकार कराने के लिए दिल्ली की सड़कों पर ६-७ लाख की भीड़ इकट्ठी कर सकते हैं तो क्या उन भक्तजनों की भीड़ में ऐसे भी दो पांच हजार कांग्रेसजन सामने नहीं आ सकते थे, जो गुजरात में अपने दल की सरकार को बचाने, अपनी संस्था की कीर्ति को उजागर करने के लिए शांति प्रिय व सत्याग्रह का मार्ग अपनाते और कांग्रेस अध्यक्ष उनका नेतृत्व करते?

जनता के मन में यह बात गहरी बैठ गई है कि सरकार हिंसा के सामने ही झुकती है और शांतिप्रिय आंदोलन को सदा उपहास व उपेक्षा की दृष्टि से देखती है। शांत आंदोलन सरकार के विचार और निर्णयों को बदलने में असमर्थ रहते हैं। सरकार का पिछली दो दशाब्दी का व्यवहार यह सिद्ध करता है। इसलिए वह हिंसा व दबाव की शक्ति का ही आश्रय लेती है। जनता के बजाय सरकार के पास ही हिंसा के अधुनातन शस्त्रास्त्र प्रचुर मात्रा में होते हैं। आज तक कांग्रेस दल ने किसी भी आंदोलन का मुकाबला अपने दल के स्तर पर अहिंसात्मक ढंग व सत्याग्रह की भावना से नहीं किया।

जब शासनकर्त्ताओं में नैतिक शक्ति क्षीण हो जाती है और सच्चाई जुगनू की चमक मात्र ही रह जाती है, मानस जन-आक्रोश से आतंकित रहता है, तब वे हिंसा का आश्रय ग्रहण करते हैं। यही कारण है कि गुजरात और बिहार के हिंसात्मक उपद्रव हुए तो कांग्रेस के मन्त्री चन्द्रजीत यादव वायुयान से अहमदाबाद और पटना जाते रहे और सम्य सुरक्षात्मक पहरों में राज भवन पहुंचते रहे। वहीं से बैठे-बैठे सबसे मुलाकात कर अफसरों से परिस्थिति की जानकारी कर वापस दिल्ली आकर अपने बनाये फारमूले के अनुसार उग्रवामपंथी और दक्षिणपंथी दलों पर उपद्रवों का दोषारोपण कर आत्मतुष्टि प्राप्त करते रहे हैं। इस प्रकार बुर्जुआ तरीके से जन भावना का मूल्यांकन होता रहा है। वे भी परम्पराओं से मुक्त होकर जन-भावना को समझने का साहस नहीं कर सके। यही कारण था कि जो भी वे घोषणा करते, दो तीन दिन बाद ही केन्द्रीय सरकार उसके विपरीत निर्णय की घोषणा कर देती। एक ऐसे संगठन का महामन्त्री, जिसका लगभग सारे देश में शासन है, यदि जनता के मानस को सही ढंग से न समझ सके और स्थिति का सही आकलन न कर सके तो इससे बढ़कर उस संगठन की चिन्तनीय अवस्था क्या हो सकती है?

स्वयंसेवक, मुस्लिमलीग व मुस्लिम मजलिस इत्यादि साम्प्रदायिक संगठनों के बारे में हमेशा सरकार बुरा भला कहती रही है। पं० नेहरू से लेकर इंदिरा गांधी तक इन संगठनों की कटु आलोचना करते रहते हैं। लेकिन वल्लभभाई पटेल से लेकर उमा शंकर दीक्षित तक के गृह मन्त्री न इन संगठनों पर प्रतिबन्ध लगा सके हैं और न इनको गैर कानूनी करार दे सके। अब यह माना जाता है कि इन संगठनों के क्रिया कलाप फासिस्टी हैं और राष्ट्रीय जीवन में जहर घोल रहे हैं, इनके कार्यक्रम आतंकवादी एवं उपद्रवकारी हैं, तो फिर इन्हें कानून की आड़ लेकर अब तक क्यों जीवित रखा जा रहा है? निश्चित ही कांग्रेस सरकार यह समझती है कि इनका भी उसके लिए कोई उपयोग है। अपने शासन की गलत नीतियों के कारण जब जनता में अशांति पैदा होती है तो वह सारा दोष इन संगठनों पर डाल देती है। →

आज भी पश्चिम बंगाल की जेलों में लगभग ३२ हजार लोग बिना मुकदमा चलाए बन्द हैं। आतंकवादी नक्सलवादियों का सफाया किया गया क्योंकि उनके लिए इनका उपयोग नहीं होना था। चुनावों में जब साम्प्रदायिक एवं पराजयतावादी तत्वों से गठबंधन हो सकता है, उनके संगठनों को वैधानिक मान्यता हो, संसद और विधान सभाओं में उनको प्रतिनिधित्व मिले, इसके लिए सत्तादल का प्रयत्न हो, तो फिर उनको जीवित रखने में अवश्य ही सत्ता दल का निहितस्वार्थ है। अन्यथा इन्हें भी निर्मूल किया जा सकता था।

जनता वस्तुओं की महगाई, जीवनोपयोगी चीजों की अलभ्यता, कालाबाजारी और भ्रष्टाचार से तंग आ गई है। उसके धैर्य का बांध टूट गया और वह दुखी हो विद्रोही हो उठी। ऐसे अवसर पर देश की युवा पीढ़ी जो निरुपयोगी शिक्षा में दीक्षित है, अपने नैराश्यपूर्ण भविष्य की कुंठा से उद्वेलित हो उठे, परिस्थितियों के निराकरण के लिए जन-विद्रोह का नेतृत्व संभाल ले तो, इसमें कोई अस्वाभाविकता नहीं है।

राष्ट्र विषम आर्थिक संकट का सामना कर रहा है। प्रधान मंत्री इसे विश्वव्यापी परिस्थिति कह कर उसकी भीषणता को कम नहीं कर सकती। वस्तुओं की कीमतों में गगनस्पर्शी वृद्धि हो गई है। उनका बाजार में मिलना दुश्वर हो गया है। खाद्य निगम के गोदामों में अनाज की किस्म ही बदल जाती है और बोरियों में मिलावट हो जाती है।

इस जनपीड़ा से उपजे आन्दोलन को आतंकवादियों का सत्ता हथियाने का षडयंत्र कह कर टाल देना, वस्तु स्थिति से आंख मींच लेना होगा। जिन लोगों ने सन् ७१ में गरीबी हटाओ का नारा बुलंद कर, विषमता के निराकरण का मधुर स्वर छेड़ कर जिस स्तर पर जन भावना को मोहित किया और प्रबल समर्थन प्राप्त किया, यदि कालान्तर में उनकी आशा पल्लवित होती नहीं दिखाई दे और ये आंकड़े यदि जनता का मोह भंग कर दें और उसकी क्रोधाग्नि भड़क जाय तो इसमें किसका दोष? चुनावों के बाद की अर्थ नीतियां और उसके परिणाम यह स्पष्ट साबित कर रहे हैं कि गरीबी हटाओ का नारा केवल मृग-माया थी। बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया। किन्तु इससे क्या गरीबों को लाभ हुआ? गरीबों के सामने तो वही समस्या रही कि बैंकों से ऋण प्राप्त करने के लिए जमानत के तौर पर क्या रखें? बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद बड़े उद्योगपतियों को ३२३ करोड़ रुपयों का ऋण दिया गया। जब कि छोटे उद्योगों को केवल लगभग १०२ करोड़ मिल पाया। अहमदाबाद की ५३ मिलों का सकल लाभ १८ करोड़ (१९७१) से २१.८३ (१९७२) का बढ़ गया और आज भी ४८ बड़े उद्योग घराने जो ५७ उद्योगों का संचालन करते हैं, उनके पास ३६३७ करोड़ रुपयों की पूंजी उपलब्ध है। यही नहीं समाजवादी सरकार आज भी लगभग ५६ करोड़ रुपयों का वास्तविक लाभ विदेशी कम्पनियों को विदेशों में ले जाने की मुक्त छूट देती है। क्या आज तक भूमि सुधार सम्बन्धी कानून लागू हो सके? आज भी बड़े-बड़े जमींदार जिनके पास सीलिंग कानून से बहुत अधिक भूमि है, वे सत्तादल के सदस्य हैं। इसलिए भूमि सुधार के कानून शीतगृह में पड़े हुए हैं। बेरोजगारी मुंह बाये खड़ी हुई है

(अगले पेज पर जारी)

R.N. 2091/57 BHOODAN YAGYA 6 MAY 1974 Regd. No. D. (C) 266

सर्वोदय सम्मेलन की तैयारियाँ जोरों पर

× २२ वें सर्वोदय सम्मेलन की तैयारी में बंगाल के कार्यकर्ता पूरी तरह से जुटे हैं। प्रतिनिधियों के निवास के लिए श्री रामकृष्ण मिशन का रमणीय स्थान तय हुआ है।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने विनोबा का निमंत्रण स्वीकार कर सम्मेलन में आने का आश्वासन दिया है।

सम्मेलन स्थान कलकत्ता से १५ मील दूर है। रहरा के पास लोकल रेल गाड़ियां खड़दा स्टेशन पर हर पन्द्रह मिनट में सियालदा से आती रहती है। सियाल्दा पर उतरने वाले प्रतिनिधि खड़दा होकर रहरा आये, हावड़ा पर उतरने वालों के लिए स्वागत समिति की ओर से बस का इन्तजाम होगा।

इस इलाके में मच्छर है, मच्छरदानी साथ लाना चाहिए।

शांति सेना की रैली

× २२ वें सर्वोदय सम्मेलन रहरा (कलकत्ता) के अवसर पर ११ मई की सुबह शांति सेना की अखिल भारतीय रैली होगी, जिसमें शांति सैनिक, शांति सेवक, ग्राम शांति सैनिक, तरुण शांति सैनिक और उनके सहयोगी भाग लेंगे।

× नवगठित उ० प्र० सर्वोदय मंडल का नया पता इस प्रकार है : उ० प्र० सर्वोदय मंडल, सतसंग आश्रम, शाहजहां पार्क, ताजगंज आगरा-१

परीक्षा में शांति

× खड़वा (म० प्र०) आचार्यकुल ने छात्रों शिक्षकों, पालकों व प्रशासन से परीक्षा के दौरान शांति बनाये रखने में एक दूसरे को पूरा-पूरा सहयोग देने की अपील की। ग्राम स्वराज्य समिति ने ६ अप्रैल से १३ तक राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जिसमें जगह-जगह सभाओं आदि के माध्यम से ग्राम स्वराज्य नगर स्वराज्य, स्त्री शक्ति जागरण, छुआछूत निवारण, शराबबन्दी आदि के कार्यक्रम लोगों तक पहुंचाये गये।

× मुजफ्फरनगर के गांव दूधली में गठित शांति समिति ने मार्च में एक साल पूरा किया। इस अवसर पर एक समारोह में जिलाधीश योगेन्द्रनाथ ने समिति के कामों की प्रशंसा करते हुए अपने पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। सर्वोदय विचार से प्रभावित हुए एक वकील जयप्रकाश ने पिछले साल इस समिति की स्थापना की थी। दूधली गांव अब तक मुकदमे बाजी के लिए प्रसिद्ध था। समिति ने वर्षों से अदालतों में चल रहे मुकदमों को गांव में ही बैठ कर निपटाना शुरू किया है।

× सामयोग पदयात्री सोहनलाल 'भूमिक्ष,' ने महाराष्ट्र यात्रा समाप्त कर अब कर्नाटक में प्रवेश किया है। १३ मार्च को सोहनलाल जी एक ट्रक की चपेट में आकर बुरी तरह घायल व बेहोश हो गये थे होश में आने के बाद उन्होंने पदयात्रा जारी रखी। पढाव इचलकरंजी के नागरिकों ने ब्लॉक कांग्रेस कमेटी की ओर से यात्रा का माध्यम होने के लिए उन्हें एक साईकिल की भेंट की। महाराष्ट्र में उन्होंने ६३३ मील की यात्रा की। पत्रिकाओं के ३७ ग्राहक व १६ उपवासदानी बनाये।

मथुरा में विचार प्रचार

× मथुरा में मुहल्ला सभाओं के जरिये लोगों को संगठित किया जा रहा है। शिक्षण संस्थाओं को विचार-प्रचार का अच्छा केन्द्र बनाने की कोशिश भी जारी है। श्री राधेवल्लभ चुन्नीलाल अग्रवाल कन्या विद्यालय की ओर से सौ सर्वोदय पात्र चलाये जा रहे हैं।

कानपुर के स्टॉल की प्रगति

× कानपुर गांधी शांति प्रतिष्ठान द्वारा संचालित 'सर्वोदय साहित्य स्टॉल' ने ३१ मार्च को तीसरे वर्ष में प्रवेश किया। पिछले वर्ष लगभग ३३ हजार रुपये का साहित्य बेचा गया। प्रहलाद राय मुरारीलाल की आर्थिक मदद से बनाये गये इस स्टॉल का का संचालन शांति प्रतिष्ठान की एक विशेष समिति करती है।

रामकृपालु का सम्पर्क

× बलिया जिले के नगरा प्रखण्ड में पिछले एक साल से रामकृपालु सघन काम कर रहे हैं। इस दौरान ६५ गांवों, व २८ शिक्षण संस्थाओं से सम्पर्क किया गया। तीन प्रखण्ड स्तरीय पदयात्राएं हुई। ३ ग्राम सभाएं बनी जिनने अपने गांव में भूमिहीनता मिटायी, गांव विकास योजना तैयार की।

भूदान किसानों को कब्जा मिला

× मध्य प्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड श्योपुर कला तहसील में भूदान की भूमि हद बनाना व उस पर कब्जा दिलाने का काम कर रहा है। मार्च से शुरू हुआ यह अभियान जून अन्त तक चलेगा। इस से पहले बोर्ड ने सर्वोदय पक्ष के दौरान इस तहसील में जगह-जगह भूदान किसान-सम्मेलनों का आयोजन किया था। इन्हीं सम्मेलनों में बेदखली आदि की व्यापक घटनाएं सामने आने पर इस अभियान को चलाना तय किया गया था। शिवपुरी व मुरैना जिलों की ग्रामस्वराज्य समितियों व भूदान बोर्ड के इने-गिने साथियों ने तेज गर्मी को एक तरफ रखकर केवल जमीन की मर-माहट पहचान कर अब तक १०२८ किसानों को कब्जा दिलाया है।

× जाले प्रखण्ड (दरभंगा) के कमतौल शांति केन्द्र पर २१ अप्रैल को भूदान-किसान सम्मेलन हुआ। इसमें भूदान किसान संघ का गठन हुआ। यह संघ प्रखंड में बेदखली की घटनाओं पर नजर-रखने के अलावा अन्य विकास कार्यों को भी चलायेगा। वशिष्ठ नारायण पाण्डेय व मदन ठाकुर क्रमशः संघ के अध्यक्ष व मंत्री चुने गये।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

भूदान यज्ञ

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली, सोमवार, २० मई, '७४

... ? विशेष लेख पृष्ठ नौ पर। पृष्ठ २२ पर पढ़िये जयप्रकाश जी के

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० २० मई, '७४ अंक ३३-३४

१९ राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१
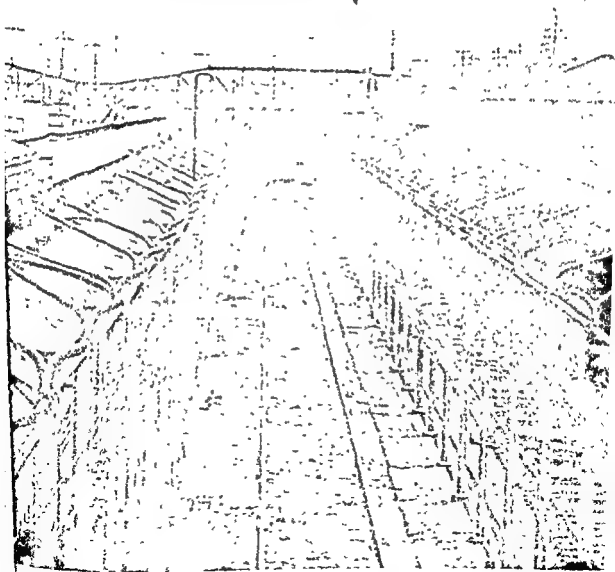
हड़ताल टूटेगी और विश्वास भी

'भूदान' का पिछला अंक आपको नहीं मिला तो इसका कारण था रेल हड़ताल और यह अंक देर-अबेर ही सही मिल जायेगा क्योंकि हड़ताल टूट रही है। लेकिन जैसा कि जयप्रकाश नारायण ने अपने तार में प्रधानमन्त्री से कहा है—'यह संभव है कि सरकार अपनी सारी शक्ति के बल पर हड़ताल तुड़वाने में सफल हो जाये। पर इतिहास बताता है कि इससे कटुता और क्रोध की एक ऐसी लकीर निश्चित ही बनी रह जायेगी जो देश की सबसे महत्वपूर्ण जन-सुविधा के चलते रहने पर असर डालेगी'। हड़ताल की तारीख से आठ दिन पहले ही जिस तरह सरकार ने अधिकांश रेलगाड़ियां रद्द की, जिस तेजी और दुर्भावना के साथ इतनी बड़ी संख्या में रेल कर्मचारियों के नेताओं और कर्मचारियों को गिरफ्तार किया और बदले की जिस भावना के साथ रेलवे कालोनियों में दमन किया गया उससे पराजित और चोट खाये हुए कर्मचारियों का हार्दिक सहयोग सरकार प्राप्त नहीं कर सकेगी। हड़ताल से देश की अर्थ व्यवस्था को जबर्दस्त हानि और जनता को परेशानी हुई है और यह बहुत बुरा हुआ है। लेकिन जिस तरह सरकार ने चर्चा के दरवाजे बन्द कर के बल प्रयोग किया है और संघर्ष समिति के नेताओं को अपमानित किया है उससे देश के औद्योगिक क्षेत्र में शान्ति और सद्भावना का वातावरण नहीं बनेगा।

हड़ताल खत्म होनी चाहिए थी लेकिन इस वातावरण का बनना भी जरूरी था। संघर्ष समिति के नेताओं और हड़ताल की धमकी के सामने सरकार का सख्त खड़े रहना जरूरी था लेकिन इस सख्ती का उपयोग अंततः चर्चा की टेबल पर समझौते में होना चाहिए था। सरकार ने अब किसी सम्मानजनक समझौते का अवसर नहीं छोड़ा है। यह सही है कि रेल कर्मचारियों की मांगों को पूरी करना वर्तमान आर्थिक स्थिति में घातक सिद्ध होगा लेकिन सरकारी कारखानों के साथ वेतन में समानता और बोनस की मांगें कोई गैरवाजिब नहीं थी। आखिर सरकार ने खुद घाटे में चलते कारखानों में बोनस देना अनिवार्य किया है और अन्यत्र वेतन की समानताएं भी लागू की है। यह बात अलग है कि अब अगर वह रेल कर्मचारियों की मांग भी पूरी करती तो अर्थ-व्यवस्था चरमरा कर बैठ जाती। अर्थ व्यवस्था को ठीक करने का सबसे रचनात्मक तरीका यही हो सकता था कि हड़ताल नहीं होती और उत्पादन बढ़ाने में रेल कर्मचारियों का सहयोग मिलता। लेकिन दुर्भाग्य से सरकार और कर्मचारियों ने एक दूसरे की तकलीफों को समझ कर समझौते का रास्ता अपनाने के बजाय निरर्थक संघर्ष किया।

अब विरोधी नेताओं के आग्रह पर राष्ट्रपति इस स्थिति को सम्हालने की पहल कर रहे हैं तो आशा की जानी चाहिए कि भौतिक और मानसिक स्तर पर देश की अर्थ व्यवस्था को और ज्यादा नुकसान नहीं होगा।

(रेल व्यवस्था पर एक विशेष लेख पेज नौ पर देखिये।)

सीटों से चिपके हुए लोग

बिहार का जन आन्दोलन जे० पी० के कार्यक्रम के अनुसार चौथे सप्ताह में है। पिछले सप्ताह मंत्रीमण्डल के त्यागपत्र और विधानसभा भंग किये जाने की मांग पर जोर दिया गया। जनसंघ के ग्यारह, संयुक्त समाजवादी पार्टी के छः और एक निर्दलीय विधायक ने विधानसभा से इस्तीफा दे दिया। इस्तीफे स्वीकार कर लिये गये। जो पद रिक्त हुए उनके लिए जुलाई में नये चुनाव करवाने की अधिकृत घोषणा की गई। विधानसभा को भंग करने की लोकप्रिय मांग के इस सरकारी उत्तर ने हालत और बिगाड़ दी है। वैसे विरोधी दलों में भी विधानसभा से इस्तीफा देने की मांग पर मतभेद हो गये हैं। कुछ स्थानों पर जोर जबर्दस्ती की घटनाएं भी प्रकाश में आयी और जे० पी० की अनुपस्थिति में आन्दोलन का मार्गदर्शन कर रहे आचार्य राममूर्ति ने इसे गलत बताया। विधायक जो भी जनता से कट गये थे अब विधानसभा से चिपके रहने के उनके निर्णय ने उन्हें अपने आदेशकर्त्ताओं से और भी अलग कर दिया है। आन्दोलन बिहार के गांव-गांव में फैल गया है। भ्रष्टाचार के खिलाफ सदाचार सप्ताह शुरू हो गया है।

वेलूर से जे० पी० ने बिहार के विधायकों के नाम एक अपील की है। उन्होंने कांग्रेस और विरोधी विधायकों से कहा कि वे अपने और एक अच्छी, स्वच्छ और सक्षम सरकार के हितों में इस्तीफा दे कर मतदाताओं से नया आदेश प्राप्त करें। यह अपील खासकर उन विरोधी दलों के विधायकों के लिए थी जिन्होंने विधानसभा को भंग करने की लोकप्रिय मांग का समर्थन किया था। इन विधायकों को जे० पी० ने चेतावनी दी कि अगर वे अपनी सीटों से चिपके रहे तो वे न केवल पहले दिये गये अपने समर्थन को खोखला सिद्ध करेंगे बल्कि बिहार सरकार द्वारा की गयी सभी गलतियों के हिस्सेदार भी होंगे।

जे०पी० ने कहा कि सरकार ने जो दमनचक्र चलाया है और भ्रष्टाचार, मंहगाई तथा सत्तारूढ़ पार्टी की दलबन्दी को समाप्त करने में जिस बुरी तरह से वह विफल हुई है, उससे सन् '७२ में जनता से विधायकों को मिला आदेश समाप्त हो गया है। मौजूदा हालत का

जनता के क्रोध से रक्षा के लिए शिरस्त्राण

पहले लोकसभा ने और फिर राज्यसभा ने देखते-देखते वह विधेयक पास कर दिया जो जोर-जबर्दस्ती और दबाव से इस्तीफा देने के खिलाफ विधायको और संसद सदस्यो की रक्षा करेगा। तीन मई को यह विधेयक विपक्ष के विरोध के बावजूद लोकसभा मे रखा गया। यह मूलतः संविधान का पैंतीसवा संशोधन था। इसके पहले के दल-बदल और भूमि सीमा निर्धारण-सम्बन्धी दो संशोधन विधेयक संसद के सामने थे। एक और विधेयक अधूरा पड़ा गया संसद के सामने था जो कोयला खानो के बारे मे था। लेकिन दोनो संशोधन विधेयको और अधपढ़े विधेयक को पीछे हटा कर आठ मई को पैंतीसवें संशोधन विधेयक को तैंतीसवा बनाकर अशोभनीय शीघ्रता के साथ पारित करवा लिया गया। लोकसभा मे इसके पक्ष मे तीन सौ दस मत आये और विरोध मे सिर्फ एक मत गुजरात के स्वतत्र उम्मीदवार मावलकर का। बाकी विरोधी बहिर्गमन कर गये थे। छः दिन बाद चौदह मई को राज्य सभा ने भी इसे पारित कर दिया। अब यह विधेयक राष्ट्रपति की स्वीकृति के बाद संविधान मे संशोधन कर देगा।

संशोधन यह होगा कि किसी भी विधायक और संसद सदस्य द्वारा दिये गये इस्तीफे की स्वीकृति के पहले स्पीकर अथवा अध्यक्ष जांच करेंगे। जब वे सन्तुष्ट हो जायेंगे कि विधायक अथवा संसद सदस्य ने इस्तीफा जोरजबर्दस्ती अथवा दबाव में आ कर नहीं दिया है और वह पूरी तरह स्वैच्छिक है तभी वे उसे स्वीकार करेंगे। इस संशोधन का उद्देश्य कानून मंत्री गोखले के अनुसार यह है कि जोर-जबर्दस्ती से इस्तीफे दिलवाने की घटनाएं जो पिछले दिनों एक राज्य मे हुई हैं उन्हें दुहराये जाने से रोका जाये।

इस संशोधन से विधान सभा, लोकसभा और राज्यसभा के अध्यक्षो का पद सार्वजनिक विवाद और न्यायिक समीक्षा के अन्तर्गत आ जायेगा—इस एक बात को तो विरोधी सदस्यो और अखबारो ने भी बताया है। लेकिन इस संभावना से परे भी बहुत कुछ है। अध्यक्ष के पद को सार्वजनिक विवाद और न्यायिक समीक्षा से दूर रखना एक प्रजातांत्रिक रस्म हो सकता है और इसे निभाया भी जाना चाहिए। लेकिन मूल प्रश्न यह है कि संविधान ने जनता के आदेश और विश्वास का उल्लंघन करने वाले विधायको और संसद सदस्यो के खिलाफ जनता को क्यो अधिकार दिया है? संविधान मतदाताओ को यह अधिकार नही देता कि उनके विश्वास का उल्लंघन करने वाले प्रतिनिधि को वे वापस बुला सकें। संसद ने दल-बदल के रोग के खिलाफ भी अब तक कोई दवा नही निकाली है। तो संसद क्या संविधान में वही संशोधन करेगी जो उसके और विधानसभा के सदस्यो को जनता के खिलाफ रक्षा कर सके? क्या ऐसा करके संसद सदस्य अपने हितो की रक्षा मे संविधान का दुरुपयोग नही कर रहे हैं? क्या संसद स्वयं एक वर्गगत हित नही बन रही है?

जन-विरोधी और प्रजातंत्र की आत्मा पर प्रहार करने वाला यह संशोधन विधेयक जनता की राय और पूरी बहस के बिना ताबड़तोड़ पारित क्यो किया गया? क्योंकि गुजरात और अब बिहार हमारे राजनीतिज्ञों के मानस पर कच्चे धागे से बंधी तलवार की तरह लटक रहे हैं। वे चाहे सत्ता मे हों, चाहे विरोध में—सब के सब आतंकित और भयभीत हैं। इस तलवार से रक्षा करने के लिए संसद सदस्यो ने संविधान की मदद से इस संशोधन का शिरस्त्राण बनाया है। उन्हें यह मुबारक हो। लेकिन अगर वे यह याद रख सकें तो उनका बहुत भला होगा कि जनता के क्रोध और आक्रोश के सामने कोई भी शिरस्त्राण काम नही दे सकता। प्र०जो०

हल यह है कि विधानसभा भंग की जाये, कुछ समय के लिए राष्ट्रपति शासन लागू किया जाये और नये चुनाव करवाये जायें। जे० पी० की राय मे अगस्त मे होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के पहले बिहार मे चुनाव करवाना असंभव नही है। अगर सुप्रीम कोर्ट की सलाह हो कि एक या अधिक विधानसभाएं भंग हो तो राष्ट्रपति चुनाव रद्द माना जायेगा तो हमारे राष्ट्रपति गिरि तब तक राष्ट्रपति बने रह सकते हैं जब तक आवश्यक शर्तें पूरी न हो जायें। इसके लिए अगर जरूरी हो तो संविधान मे संशोधन किया जा सकता है और राष्ट्रपति के कार्यकाल की अवधि बढ़ायी जा सकती है।

जे० पी० ने विद्यार्थियो और गैर राजनीतिक प्रजातांत्रिक संगठनो से कहा कि नये चुनाव जब भी हों इसकी गारंटी की जानी चाहिए कि शुद्ध और निष्पक्ष हों। मतदाताओ को शिक्षण किया जाये।

इस बीच मंत्रीमण्डल के इस्तीफे विधानसभा भंग करने के लिए बिहार से एक करोड़ हस्ताक्षर करवाने का अभियान चलाया गया है। इन हस्ताक्षरों को लेकर ३० मई तक एक लाख लोग पटना आयेंगे और राज्यपाल को देंगे।

(बिहार के जन आन्दोलन पर एक लेख पढ़िये पेज १५ पर और अगले सप्ताह एक विशेष परिशिष्ट)

अगले अंक में पढ़िये—
बिहार के वर्तमान
आन्दोलन पर
ताजा रपट।
पटना, मुंगेर, रांची,
चाईबासा, धनबाद
और देवघर में
चल रहे आन्दोलन
का सचित्र विवरण

बिहार में सर्वोदय जिन्दाबाद हो रहा है

रामपूर्ति जी ने बताया कि बाबा की तीसरी चिन्ता यह थी कि इस समय केन्द्रीय सरकार को किसी दिक्कत में न डाला जाये। बाबा इस समय भारत के लिए खतरा देखते हैं। उनकी यह भी भावना है कि इन्दिराजी के नेतृत्व में भारत, पाकिस्तान और बांगला देश नजदीक आ रहे हैं। इस समय ऐसा कोई भी काम न किया जाये जिससे उपमहाद्वीप में पनप रही जोड़ की प्रवृत्तियों के काम में बाधा पड़े। राज्यों में सरकारों के खिलाफ आन्दोलन हो रहे हैं, मुख्य मंत्रियों को हटाये जाने और विधान सभा को भंग किये जाने की मांग होती है। यह आन्दोलन कहीं केन्द्र में न पहुंच जाये।

बाबा से पूछा गया कि सरकार की तरफ से इतनी अनीति होती है तो हम क्या करें? बाबा ने कहा, कि स्थानीय परिस्थितियों में अन्याय और कुशासन के प्रतिकार की छूट पूरी है। बाबूराव चोवटकर वहीं बैठे थे। उनकी ओर इशारा कर के बाबा ने कहा—राज्य स्तर पर नाइक (मुख्यमंत्री) को हटाने में लगोगे तो मैं कहूंगा करो पर दिल्ली के खिलाफ नहीं। फिर बाबा ने भारत और एशिया की स्थिति पर अपने विचार बताये। यह भी कहा कि भारत में पृथकतावादी आन्दोलन भी सर उठा सकते हैं।

बाबा से दो अप्रैल की मुलाकात का सार बताते हुए राममूर्तिजी ने कहा—तब भुवनेश्वर में इन्दिरा जी का भाषण छप चुका था। हमने महसूस किया कि विनोबा की झाडू ले कर इन्दिराजी हमको पीट रही हैं। जब जे. पी. पिट रहे हैं तो हमारी क्या वकत? हमने बाबा से पूछा कि क्या यह सब आपको ठीक लगता है। बाबा ने कहा कि इन्दिराजी जब उनसे मिलने आयी थी तो उन्होंने शिकायत की थी कि हमारे कुछ लोग राजनीति में दखल दे रहे हैं। इस शिकायत पर बाबा ने दुख प्रकट किया। हमें लगा कि बाबा को दुख है, इन्दिरा जी को इसका सूत्र वहीं से मिला। हमने बाबा से कहा कि जब इन्दिराजी ने आपसे शिकायत की तो आप सर्व सेवा संघ से पूछते। उससे कहते कि इसकी छानबीन करो। अगर आपको ऐसा लगता है कि हमारे कुछ साथी राजनीति में दखल देते हैं तो आप सर्व सेवा संघ को और उन्हें कह सकते हैं। फिर बाबा ने दण्डशक्ति और हिंसा का भेद बताया। इन्दिराजी से हुई अपनी चर्चा का भी संकेत दिया। दोपहर को फिर बातचीत हुई। गुजरात और बिहार की घटनाओं के बारे में बाबा के मन में संकोच है। उनका मानना है कि दोनों जगहों पर विरोध का पक्ष ज्यादा है-विधायक कम है।

रात हम लोगों के लिए बहुत खराब गयी। या तो हम बाबा की बातों को समझ नहीं पा रहे हैं या हमारे और उनके बीच अन्तर बढ़ गया है। बहुत बिकलता रही। हम लोगों ने तय किया कि तीन अप्रैल को बातें साफ-साफ कर लेना चाहिए। बाबा से कहना चाहिए कि हम लोग चिन्तित भी हैं और क्षुब्ध भी हैं। तीन अप्रैल को बाबा ने समय से पहले ही हमें बुलाया। उन्होंने कहा कि देश में अपने काम के लिए बड़ी अनुकूलता है और हमें विश्वासवृत्ति से काम लेना चाहिए भूमि की समस्या, लोकशक्ति का जागरण, शिक्षा में क्रांति, दलमुक्त लोकतंत्र आदि के लिए हमें अपना पूरा जोर लगाना चाहिए।

हम अपने साथ एक वक्तव्य लिख कर ले गये थे। आपका नाम ले कर इन्दिराजी ने यह सब कहा है आपकी तरफ से इसका खण्डन होना चाहिए। बाबा ने कहा कि मैं तो वक्तव्य देता नहीं हूं। दत्त साहब देते हैं तो वे दें। वक्तव्य हमने बाबा के सामने रख दिया। उसमें जे. पी. का उल्लेख था वहां बाबा ने एक पंक्ति और जोड़ी-'जेपी अहिंसा में विश्वास करते हैं' फिर वह वक्तव्य दत्त साहब ने प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया को दिया। हम लोगों ने बाबा से यह भी कहा कि महत्व के प्रश्नों पर आपकी राय अलग-अलग व्यक्ति लोगों तक पहुंचाते हैं। और वे सब अपने अपने ढंग से उसकी व्याख्या करते हैं। आप प्रबन्ध समिति को बुला सकते हैं, संघ के अध्यक्ष-मंत्री को बुला कर बात कर सकते हैं और फिर अपनी राय जाहिर करें तो कम से कम गलत फहमियां नहीं होंगी। तो बाबा ने कहा कि मैं तो आजकल विश्वचिन्तन ही करते हैं और उसी के बारे में बोलेंगे। हमने उनसे दो खिलौने मांगे थे, दोनों हमें मिल गये। बाबा ने पूछा कि आप लोगों का सन्तोष हुआ तो दत्त साहब ने कहा—साढ़े सोलह आना।

प्रबन्ध समिति और पवनार में हुई चर्चाओं का सार देने के बाद राममूर्ति जी ने अपने मुद्दे रखे। उन्होंने कहा—छः अप्रैल को मैं यहां (पटना) पहुंचा। मेरे मन में यह बात जम गयी थी कि तरुणों ने ही नहीं पूरे देश ने ही करवट ली है। कुछ भटकाव जरूर है पहले के चरण में लेकिन इसमें कोई सन्देह नहीं कि देश ने नयी दिशा ली है। मैंने जे पी से कहा कि मेरी सेवाएं आपके पास हैं। जेपी ने कहा कि ऐसी शब्दावली का उपयोग आप तो मत कीजिये। बस लग जाइये। सन् ४२ में ऐसे जन आन्दोलन में मैंने भाग लिया था। लेकिन उसके बाद से तो दूसरा काम कर रहा हूं। पका अपना हाथ और छूटा हुआ अभ्यास। फिर भी कोशिश कर रहा हूं तरुणों के बीच काम करने की, उन्हें समझाने की। इस आन्दोलन के बारे में मेरी चिन्ता के बिन्दु

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आवश्यक सूचना

सर्व सेवा संघ से प्राप्त जानकारी के अनुसार मई के अंतिम सप्ताह में कलकत्ता के निकट होने वाला २२वां सर्वोदय सम्मेलन रेल हड़ताल के कारण फिलहाल स्थगित कर दिया गया है।

क्या विधानसभा भंग की मांग उचित है ?

प्रश्न—आज की बिहार विधानसभा के सदस्य (एम० एल० ए०) जनता द्वारा चुने गये हैं। वहां पांच वर्ष तक बने रहने का उन्हें हक है। तब फिर इस असेम्बली को भंग करने की मांग क्यों की जा रही है? क्या यह मांग जनतन्त्र विरोधी नहीं है ?

उत्तर—नहीं, यह मांग जनतंत्र विरोधी नहीं है, बल्कि जनतांत्रिक है। यह ठीक है कि आज जो लोग एम० एल० ए० हैं, वे सिर्फ दो वर्ष पहले चुने गये हैं। इन लोगों को चुने जाने का टिकट उनके क्षेत्र के मतदाताओं ने नहीं दिया था, बल्कि उनकी अपनी पार्टी ने पटना और दिल्ली से दिया था। इसलिये ये एम० एल० ए० जनतन्त्र के प्रतिनिधि नहीं पार्टीतन्त्र के प्रतिनिधि हैं। भारतीय संविधान में पार्टी का उल्लेख कहीं नहीं है। इसलिए जाहिर है कि वर्तमान संविधान के मुताबिक भी इस देश का शासन चलाने के लिए एम० एल० ए० को किसी राजनैतिक दल का होना जरूरी नहीं है।

ये राजनैतिक दल वाले जनता और संविधान के बीच, जनता और जन-तन्त्र के बीच, निरर्थक दलाल हैं, जो अपनी दलाली का पेशा चलाये रखने के लिए जनतंत्र का नाम लेकर पार्टीतन्त्र चलाते हैं। इनकी वफादारी इनकी पार्टी के प्रति पहले है, देशहित के प्रति पीछे। वर्तमान विधान सभा को भंग करने की मांग का एक मुख्य कारण यह है।

दूसरा यह है कि सभी दल वालों ने जनता को ऊंचे-ऊंचे आश्वासन दिये, एक से बढ़कर एक वादे किये। परन्तु चुने जाकर विधान-सभा में जाने पर जनता को दिये गये आश्वासनों को वे भूल गये। वहां बैठ कर अपनी पार्टी को मजबूत करने का और अपना घर भरने का काम ये लोग करने लगे। स्वराज्य के पिछले सत्ताईस वर्षों में बिहार की जनता ने भी सभी दलवालों के मंत्री-मंडल के कामों को देख लिया है और उन्हें आजमा लिया है। जनता का दृढ़ विश्वास हो गया है कि इन पार्टीवालों के द्वारा जनता के हित की बात कतई नहीं सोची जा सकती। आज भी जब सारा बिहार महंगाई, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, बेकारी और कु-शिक्षा की आग में धू-धू जल रहा है तब ये पार्टीवाले इस आग पर अपनी अपनी रोटियां सेंकने में लगे हुए हैं। हम चाहते हैं कि इनके एम० एल० ए० की जगह चुनाव-क्षेत्र के मतदाताओं द्वारा नामजद उम्मीदवार, जिनकी लगाम चुनाव-क्षेत्र की मतदाता-प्रतिनिधि-सभा(वोटर्स-काउन्सिल) के हाथ में रहे। यह तभी सम्भव है जब वर्तमान विधान सभा भंग हो।

तीसरा कारण यह है कि वर्तमान कांग्रेसी मंत्रि-मंडल, वह चाहे केदार पांडेयजी का रहा हो चाहे अब्दुल गफूर साहब का रहा हो जनता की समस्याओं को सुलझाने में एकदम अक्षम साबित हुआ। इसलिए इनका यह दावा कि पांच वर्ष तक गद्दी पर बैठकर इस भ्रष्टाचार को चलाये रखने के वे अधिकारी हैं, सिर्फ निरर्थक ही नहीं जनता के प्रति अपमान जनक भी है।

फिर विरोधी दलों के एम० एल० ए० भी सरकार के काम पर जो मुहर लगाते रहते हैं तो सरकार वाले यह दावा करते हैं कि पूरे राज्य का विश्वास उसे प्राप्त है, और उसको पांच वर्षों तक बने रहने का हक है। हम नहीं चाहते कि कि विरोधी दलवालों की मोहर जनता का प्रतिनिधि होने के नाते सरकार के काम पर हो। उन्हें यदि जनता का प्रतिनिधि होने का भरोसा है तो वे स्वयं इस्तीफा दें और असेम्बली भंग करने की मांग करें। परन्तु वे तो मात्र इसी बात से सन्तुष्ट हैं कि चुनाव का खर्च वसूलने के लिए एम० एल० ए० बने रहकर, वर्तमान भ्रष्ट तंत्र का साथ देकर, अपने दल को मजबूत बनाये रखें, जनता चाहे चूल्हे में जायें।

हम नहीं चाहते कि हमारा प्रतिनिधि हमारी स्वीकृति के नाम पर विधान-सभा में बना रहे और वर्तमान तंत्र चलाता रहे। इसलिए हम चाहते हैं कि आज की असेम्बली का हर सदस्य इस्तीफा करे और विधानसभा भंग हो।

प्रश्न—क्या आपलोग राष्ट्रपति-शासन की ताईद करते हैं ? जिन सरकारी कर्मचारियों के भ्रष्टाचार और घूसखोरी से हम लोगों में से हर एक ऊबा हुआ है, राष्ट्रपति-शासन में तो वे ही शासन के सर्व सर्वा हो जायेंगे तब तो उनकी चोटी और भी लाल होगी।

उत्तर—जब हम मात्र वर्तमान मंत्रि-मंडल को ही नहीं, विधान-सभा को भी भंग करने की मांग करते हैं तो जाहिर है कि हम जलते हुए तवे से कूद कर चूल्हे में गिरने की योजना नहीं बना रहे हैं। आज भी हम देखते हैं कि मंत्रियों के हाथ में अफसरों की लगाम नहीं है, वरन अफसरों के हाथ में मंत्रियों की लगाम है। आज की जनता को लूटने खसोटने में ये मंत्री और इनके गुर्गे इन अफसरों का ही सहारा लेते हैं। यदा कदा अखबारों में तो आप पढ़ते रहते हैं कि मुख्य फाइलें मालमारियों से ही गायब हो जाती हैं, अफसर मंत्री को फाइल देते ही नहीं वगैरह।

तो हमारी योजना राष्ट्रपति शासन लाने की नहीं है, वरन गांव-गांव में गांववालों की, और शहर-शहर में शहरवालों की शासन व्यवस्था—ग्राम स्वराज्य, असली स्वराज्य—लाने की है वर्तमान चुनाव पद्धति के रहते ग्रामस्वराज्य नहीं आ सकता है, यह बात विनोबाजी जयप्रकाश आदि चिन्तकों ने वर्षों पहले कही थी। उन लोगों ने जो कुछ कहा था, वह समाज में कैसे लाया जा सकता है, उसका रास्ता भी वे लोग वर्षों से बताते आ रहे हैं। परन्तु, सम्भवत: दो कारणों से लोगों ने उस पर बहुत ध्यान नहीं दिया था। एक तो यह कि उन्होंने अपेक्षा रखी थी कि उनके लिए कोई दूसरा आदमी कुछ कर देगा। यह सोच

→

सोच कर वे अलसाये रहे। दूसरा यह कि भिन्न-भिन्न राजनैतिक दलवालों ने उनको समझाया कि वे दलवाले जनता के लिए सब कुछ कर देंगे, लोगों को खुद कुछ करने की जरूरत नहीं। लोग सिर्फ उनके दल द्वारा खड़े किये गये उम्मीदवारों को विधान-सभा और लोक-सभा के लिए वोट दे दें।

उनके इस बहकावे में सिर्फ साधारण लोग ही नहीं पड़े, युवक और विद्यार्थी भी पड़ गये। इसलिए ये शक्तिशाली नवजवान विभिन्न राजनैतिक दलों के लठैत बन गये थे। वे आपस में बहुत टकराये और जनता को भी बहुत बरगलाया।

पिछले सताईस वर्षों के अनुभव से चाहिए तो यह था कि सबकी आँखें एक साथ खुल जायें। पर सौभाग्य से छात्रों की आँखें पहले खुलीं। उन्होंने समझ लिया है कि ये राजनैतिक दलवाले अपनी अपनी पालकी इनसे ढुलवाते रहे हैं और इन्हें 'हीरो' बनाकर अपना उल्लू सीधा करते रहे हैं। ऐसे समझते ही वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था को बदलने का इन्होंने निश्चय कर लिया।

उधर गणतन्त्र की आड़ लेकर जो लोग गुंडा-तन्त्र के बल पर टिके हुए हैं, वे इन छात्रों को गण-तन्त्र विरोधी लोगों के हाथों में नाचने वाली कठपुतली साबित करने की कोशिश कर रहे हैं। ऐसा नहीं है कि वे देश का भला-बुरा नहीं समझते। समझते वे सब कुछ हैं। पर जिन लोगों की नकेल बाहर वालों के इशारे पर घूमती है वे लोग तथा निहितस्वार्थ वाले लोग इन विद्यार्थियों को गलत दिशा में जाने वाले साबित कर रहे हैं।

जनता अपना हित-अहित समझती है। ज्यों-ज्यों सच्ची बातें उसकी समझ में आती जा रही हैं, त्यों-त्यों वर्तमान असेम्बली को भंग करने की माग का वह समर्थन कर रही है। इस पृष्ठभूमि में विद्यार्थियों की मांग की प्रतिष्ठा बढ़ रही है और वर्तमान भ्रष्टाचारी व्यवस्था को बनाये रखने की कोशिश करने वाले बे-नकाब हो रहे हैं।

प्रश्नः—वर्तमान विधान-सभा के भंग होने पर नये एम० एल० ए० तो फिर इन्हीं पार्टियों के होंगे न?

उत्तरः—यदि ऐसी ही दुर्भाग्यपूर्ण बात फिर से दुहरायी जाय तो विद्यार्थियों और नवजवानों की सारी शहादत, सारी तपस्या बेकार गयी, ऐसा मानना चाहिए। परन्तु मनुष्य विचारशील प्राणी है। वह अपनी पुरानी भूलों से सीखता है और आगे उससे बचने की कोशिश करता है। भारत की जनता ने १६४७ में आजादी प्राप्त करने पर, गाफिल पड़ जाने की जो भूल की, उससे वह सबक सीख रही है। राजनैतिक दलों पर उसका भरोसा अब यों भी अब टूट चुका है। इसलिए वह अपनी बुद्धि पर भरोसा करेगी।

जनता की बुद्धिमता से नयी असेम्बली का चुनाव और मन्त्रि-मण्डल का गठन मोटे तौर से ऐसा होगा :

प्रत्येक गाँव या टोले में ग्रामसभा का गठन और शहर के लगभग प्रत्येक एक डेढ़सौ परिवार को लेकर 'पड़ोस-सभा' का गठन होगा। इस ग्राम-सभा (पड़ोस-सभा) में सभी बालिग, मतदाता, सदस्य होंगे। यह चिर-स्थायी सभा होगी। इसे भंग करने का अधिकार किसी को नहीं होगा। हर मतदाता, जब तक वह वहाँ रहता है, तब तक उस सभा का सदस्य रहेगा। वहां रहने वाले नवजवान (एवं नवयुवती) बालिग होते ही इसके सदस्य हो जायेंगे। गांव या शहर के उस मकान में रहने एवं बालिग होने के अलावा ग्राम-सभा एवं पड़ोस-सभा की सदस्यता की अन्य कोई शर्त नहीं होगी। इसका कोई सदस्यता-शुल्क भी नहीं होगा।

यह ग्राम-सभा एवं पड़ोस-सभा अपनी आंतरिक व्यवस्था संभालने के लिए अपना मन्त्रि-मण्डल बनायेगी। इस मन्त्रि-मण्डल का गठन सर्व-सम्मति (अथवा सर्वानुमति) से होगा। गाँव एवं शहर के जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान ढूंढने की चेष्टा ग्राम-सभा एवं पड़ोस-सभा निरन्तर करती रहेगी। यहाँ किसी राजनैतिक दल का प्रवेश नहीं होगा क्योंकि उसकी कोई आवश्यकता ही नहीं रहेगी।

गाव एवं शहर के सामने आने वाले अन्य प्रश्नों की तरह विधान सभा के लिए उम्मीदवार खड़ा करने का भी प्रश्न है। पूरे चुनाव क्षेत्र की ग्राम-सभाओं एवं पड़ोस-सभाओं से एक-एक या दो-दो (बड़ी जनसंख्या वाले गांवों से दो) प्रतिनिधि चुनकर एक जगह इकट्ठे होंगे। यह मतदाता संघ (वोटर्स काउन्सिल) कहलायेगा। मतदातासंघ के लोग विधान-सभा के लिए उम्मीदवार का चुनाव सर्व-सम्मति से करेंगे। सर्व-सम्मति पर पहुंचने के पहले विभिन्न व्यक्तियों की योग्यता की चर्चा वे आपस में करेंगे। योग्यता का मापदण्ड होगा उम्मीदवार द्वारा उस चुनाव क्षेत्र में की गयी पूर्व-सेवा, जात-पांत एवं साम्प्रदायिकता की भावना से मुक्त होकर सोच-समझ सकने की उसकी शक्ति, निर्भयता, स्पष्टवादिता आदि। चिट्ठी डालकर एक नाम तय करने, क्यूम्यूलेटिव वोटिंग पद्धति (जिस तरह राष्ट्रपति का चुनाव होता है) आदि में जिस तरह से उनका समाधान हो उस तरह से वे एक उम्मीदवार का नाम तय करेंगे। कोई उम्मीदवार स्वयं अपना नाम मतदातासंघ के सामने नहीं रखेगा।

सम्भव है कि मतदातासंघ की उपेक्षा कर कोई व्यक्ति अपनी तबियत से चुनाव लड़ने खड़ा हो जाये, जैसा आज भी होता है। मतदाता संघ द्वारा खड़े किये गये उम्मीदवार से अपनी तुलना कर वह भी अपने को निर्दलीय साबित करने की कोशिश कर सकता है। उसी प्रकार विभिन्न राजनैतिक दलवाले आज ही की तरह जात-पात अथवा सम्प्रदाय के मतदाताओं के आसरे पर अपना-अपना उम्मीदवार भी खड़ा कर सकते हैं। उन्हें खड़ा होने देने में मतदातासंघ कोई बाधा नहीं देगा, कारण वोट मांगने के लिए उम्मीदवार खड़ा होने का अधिकार संविधान द्वारा निर्धारित उम्रवाले हर बालिग नागरिक को है।

मतदाता संघ के लोगों का यह काम होगा कि हर मतदाता को समझायें कि संघ द्वारा खड़े किये गये उम्मीदवार को वे मत क्यों दें। दूसरों को मत नहीं देने के कारण भी वे बतायें। इस तरह हर मतदाता को सभी बातें समझाकर उनके मतदान के द्वारा, जो वे स्वयं बूथ पर जाकर देंगे, एम० एल० ए० के चुने जाने तक मतदाता संघ सक्रिय रहेगा। खूब-सूरती तो इस बात में रहेगी कि मतदाता संघ द्वारा खड़े किये गये उम्मीदवार के लिए जमानत का रुपया भी ग्राम-सभाओं पड़ोस सभाओं के चन्दे से जमा किया जाये

→

→

और चुनाव में जीतने के लिए उस उम्मीदवार को अपना एक पैसा भी खर्च करना न पड़े।

दूसरी ओर चुनाव के बाद मतदातासघ भंग नहीं होगा। चुनाव-क्षेत्र में उसका एक कार्यालय होगा। हर तीन महीने पर एक बार उसकी बैठक होगी जिसमें एम० एल० ए० भी उपस्थित रहा करेगा। चुनाव-क्षेत्र की समस्याओं पर सघ की सभाओं में ब्योरेवार चर्चा होगी और उसमें यह भी तय किया जायेगा कि राज्य सरकार को उस क्षेत्र के लिए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, सघ अपनी राय निर्धारित कर एम० एल० ए० को बता देगा। एम० एल० ए० मतदाता सघ और सरकार के बीच कड़ी का काम करेगा। पाँच वर्ष की अवधि में जिस निर्वाचन क्षेत्र का मतदाता सघ अपने एम० एल० ए० को जिस समय अपना विश्वास खोता हुआ पायेगा, उस समय उसे वापस बुलाने के लिए मतदाताओं को तैयार करेगा आज के सविधान में वापस बुलाने—रिकॉल की व्यवस्था यद्यपि नहीं है तथापि देश-व्यापी जनता को जब यह बात पसन्द आ जायेगी तब सविधान में इस पद्धति को दाखिल करना कठिन नहीं होगा।

मतदाता सघ निर्वाचन क्षेत्र की कायमी सस्था होगी। ग्राम-सभा पड़ोस-सभा को अधिकार होगा कि जब वह चाहे मतदाता सघ में बैठने वाले अपने प्रतिनिधि को बदल दे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि ग्राम-सभा पड़ोस-सभा अपना निर्णय सर्व-सम्मति अथवा सर्वानुमति से करेगी।

इस तरह आज के सविधान में भी गणतंत्र को अधिक व्यापक और सहयोगी (पार्टिसिपेटिंग) बनाया जा सकता है। आज दलवाले गण-तन्त्र की आड़ में गुंडा-तन्त्र चलाने की हिम्मत किया करते हैं। मतदाता सघ गण-तंत्र विकसित करेगा।

विधान सभा में कोई विरोधी दल नहीं होगा। मन्त्रि-मण्डल का गठन पूरे विधान सभा के सदस्यों के बीच से होगा। हर समस्या पर हर सदस्य को सरकार के पक्ष-विपक्ष में अपने विवेक के आधार पर मत देने की छूट रहेगी।

आज के दलतन्त्र के ह्विप (सचेतक) का स्थान सदस्यों का विवेक लेगा।

इस नयी पद्धति में लोकतन्त्र अधिक सुदृढ़ होगा स्वराज्य का आधार व्यापक होगा। गाँव और शहर के लोग 'ग्राम-स्वराज्य' लोक राज्य' चलाने में हिस्सा लेंगे। इस तरह शासन चलाने का प्रशिक्षण व्यापक होगा। इस व्यवस्था में 'लोक-कल्याण' के नाम से लादे गये अफसरों का समूह और तन्त्र काफी कम होगा, पर लोक का कल्याण काफी अधिक होगा।

प्रस्तुतकर्ता : हेमनाथसिंह

(पृष्ठ ४ का शेष)

है—बाबा ने कहा था-आक्रमक अहिंसक आन्दोलन का मेरी ओर से निषेध है। लेकिन तरुणों और समाज के क्षोभ का निशाना तो बिहार का मन्त्रीमण्डल और विधानसभा बन गयी है। अब बिहार में कुछ होता है तो दिल्ली तो उसमें इनवाल्व होती ही है उस पर असर पड़ता ही है। ये शकाएं मैंने जे.पी के सामने रखीं जे.पी. ने कहा-लोकप्रिय आन्दोलन की लोकप्रिय मांगें होती हैं। वैसे ही नारे बनते हैं। इस लोकशक्ति को हम इसलिए तो नजरअन्दाज नहीं कर सकते कि इसकी लोकप्रिय मांगें हैं सरकार इस लोकशक्ति को कुचलने के लिए क्या नहीं कर रही है। विरोध प्रकट करने का प्रजातान्त्रिक नागरिक अधिकार तक तो छिना हुआ है। हम क्या करें। क्या सरकार को माफ कर दें? आखिर तय किया कि मौन जुलूस निकाला जाये। अब यह मौन जुलूस कैसा निकला यह सब आप जानते ही हैं। रेणु जैसे प्रसिद्ध लेखक ने कहा कि वह अद्भुत था। पूरे शहर पर छा गया था। बिहार का वातावरण बदलने में उस मौन शान्त जुलूस का स्थान कम नहीं है। दूसरे दिन सभा हुई इतनी बड़ी। उसमें बोलने वाले तरुणों की भाषा जरा तीखी थी। उन्होंने कहा कि यह आन्दोलन राजनीतिक पक्षों का नहीं है और वे भाग लेते हैं तो इसमें बाधा पड़ती है।

इस सभा के पाँच दिन बाद चार विरोधी दलों की सम्मिलित सभा हुई। उनकी शिकायत थी कि तरुणों ने सत्तारूढ़ पार्टी के साथ हमें क्यों घसीटा? हम तो अपने को इनका रिश्तेदार मानते थे, इन्होंने हमें अपना पड़ोसी भी नहीं माना। आन्दोलन को दलों से अलग रखने के अपने आग्रह की भी उन्हें शिकायत थी। उन्होंने कहा कि हम तो छोटे लोग हैं, पार्टी के हैं। पार्टियाँ छोड़ देंगे तो कहाँ जायेंगे, विरोधी दलों ने १८-१९ मार्च को हुई हिंसा को भी माफ करने की कोशिश की। कुछ इस तरह का उनका भाव था कि ऐसे आन्दोलनों में यह सब तो होता ही है। सर्वोदय वाले ही इस आन्दोलन को कमजोर करेंगे। इस सभा के बाद विद्यार्थियों के कुछ दलों में भी अहिंसक तरीकों पर पुनर्विचार होने लगा उनका प्रश्न था कि जब स्थिति ऐसी हो और सरकार इस तरह पिल पड़ी हो तो सत्याग्रह क्या जरूरी है? क्या आन्दोलन को पटना तक ही सीमित रखना है? फिर विद्यार्थियों की जे पी. से बातचीत हुई और उन्होंने वचन दिया कि वे दलमुक्त रहेंगे। जब तक कोई ठोस कार्यवाही का कार्यक्रम सामने नहीं होगा विद्यार्थियों में बिखराव आयेगा। (बाद में विद्यार्थियों ने विरोधी दलों से दल निरपेक्ष सहयोग भी मांगा और जे पी. ने एक कार्यक्रम भी उन्हें दिया)।

तो बिहार में सहज लोकस्फूर्ति प्रकट हुई है। यह विरोध की आवाज है। और इस आवाज और लोकस्फूर्ति के प्रतीक हैं जे. पी। यह प्रतीक ही आन्दोलन को दिशा दे रहा है। सयमित भी रख रहा है और सही मानों में इसे लोक आन्दोलन बना रहा है, फिर भी मुख्यत यह विरोध की ही आवाज है। अगर यह आवाज क्रांति की दिशा नहीं पकड़ेगी तो इसमें से सिर्फ सुधार ही निकलेगा। शिक्षा में क्रांति की बात विद्यार्थी करते हैं लेकिन उनके पास कोई विकल्प नहीं है। सर्वोदय के पास विकल्प है तो हमें देना चाहिये। आज बिहार में सर्वोदय जिन्दाबाद हो रहा है। मुझे लड़कों का अनशन छुड़वाने के लिए ले जाया गया। अब वे लड़के और वहाँ उपस्थित तीन-सौ चार सौ लोग मुझे जानते नहीं थे न उन्होंने मेरा नाम सुना था। जब मेरे हाथ से रस लेकर अनशनकारियों ने अनशन तोड़ा तो जय बोलने में उन्हें बड़ी दिक्कत हुई और उन्हें कुछ नहीं सूझा तो उन्होंने नारा लगाया—सर्वोदय जिन्दाबाद! तो बिहार में सर्वोदय जिन्दाबाद हो रहा है। लेकिन चिन्तन के भी कई मुद्दे हैं। चिन्तन की जरूरत है।

—प्रभाष जोशी

क्या उड़ीसा सर्वोदय की प्रयोगशाला बन सकता है ?

। नन्दिनी सतपथी के प्रस्ताव पर रा. कृ. पाटील ।।

उड़ीसा की मुख्यमन्त्री श्रीमती नन्दिनी सतपथी गये माह विनोबा से मिलने पवनार आयी। बाबा से बातें करने के बाद नौ अप्रैल को उन्होंने कहा कि सर्वोदय के सिद्धान्तों पर अमल करने के लिए उड़ीसा एक उपयुक्त प्रयोगशाला हो सकती है। श्रीमती सतपथी की यह घोषणा हमारे प्रजातान्त्रिक संविधान के भावी कार्यरूप के बारे में कई बुनियादी सवाल खड़े करती है।

आठ अप्रैल को मुख्यमन्त्री बाबा से मिली थीं तब प्रदेश कांग्रेस के मन्त्री और उड़ीसा के भूमिसुधार आयुक्त दास भी उनके साथ थे। चर्चा का मुख्य विषय उड़ीसा में भूमि-वितरण का वर्तमान कार्यक्रम था। पुरी, कटक, और बलसोर जैसे तटवर्तीय और उनके जैसे कुछ जिलों को छोड़कर उड़ीसा के अधिकाश जिले जंगलों से ढके हैं और उनमें ऐसी बहुत सी सरकारी जमीन है जो फाजिल पड़ी हुई है और भूमिहीनों और छोटे किसानों को दी जा सकती है। उड़ीसा की सरकार ने हदबन्दी लागू की है जिससे लगभग एक लाख एकड़ अतिरिक्त जमीन बांटने के लिए निकल सकती है।

लेकिन उड़ीसा सरकार का अनुभव है कि जमीन के वितरण का काम करने वाली मशनरी इस काम को करने की क्षमता नहीं रखती। इससे भूमि के वितरण में भ्रष्ट तरीके अपनाये जाते हैं और भूमि उन्हीं लोगों को मिलती है जिनके पास पहले से काफी जमीन है। हालांकि पिछले वर्षों में हालत काफी हद तक सुधरी है फिर भी यह जरूरी है कि भूमि वितरण के कार्य में सामाजिक कार्यकर्ताओं की मदद ली जाये और हरिजनों, आदिवासियों तथा पिछड़ी जाति के लोगों को ये कानून समझा कर उन्हें इनका लाभ दिलाया जाये। ये कार्यकर्ता सरकारी मशनरी के सुधारक का काम कर सकते हैं।

इसलिए तय किया गया कि उड़ीसा में भूमि वितरण की पूरी जिम्मेदारी सर्व सेवा संघ को दी जाये। सरकारी मशनरी इसमें संघ की मदद करे। इस निर्णय पर अमल अभी किया जाता है। सर्व सेवा संघ को भूदान और ग्रामदान में मिली जमीन के वितरण का अच्छा खासा अनुभव है। भूमि वितरण की जरूरत समझाने और भूमि के मामले में न्याय करवाने की शुरुआत ही दर असल सर्व सेवा संघ ने की है और सरकार की भूसुधार नीति को उसने प्रभावित और प्रेरित किया है।

लेकिन सर्वोदय के कार्यक्रम को अमल में लाने के लिए उड़ीसा को प्रयोगशाला बनाना निश्चित ही एक बहुत व्यापक और महत्वाकांक्षी लक्ष्य है और सवाल यहीं से पैदा होते हैं।

उड़ीसा की मुख्यमन्त्री की राय में सर्वोदय कार्यक्रम क्या है जिस पर तत्काल अमल किया जा सकता है? और क्या सर्वोदय के पूरे कार्यक्रम को लोगों की वह आम सम्मति मिली है जो उसके भूमि वितरण के कार्यक्रम को प्राप्त है?

जब तक इन सवालों का सन्तोषदायी उत्तर नहीं मिलता तब तक उड़ीसा को सर्वोदय की प्रयोगशाला बनाने का श्रीमती सतपथी का इरादा कोरा सपना ही रहेगा। यों तो दरअसल वे बधाई की पात्र हैं कि उन्होंने खुले आम सरकारी मशनरी की अपर्याप्तता को स्वीकार किया और यह जरूरत महसूस की कि उसकी सहायता के लिए समर्पित सामाजिक कार्यकर्ताओं की एक स्वतन्त्र संस्था होनी चाहिए। अगर दूसरी राज्य सरकारें भी इसी तरह खुले दिल से विचार और निर्णय करें तो विधानसभाओं और सरकारों के इस इरादे को पूरा करने की दिशा में एक बहुत बड़ा कदम उठ सकता है कि भूमि उन्हीं लोगों को मिले जो भूमिहीन और सचमुच जरूरतमन्द हैं।

महाराष्ट्र की सरकार, भण्डारा जिले के तेरह चुनिन्दा गांवों में भूमि वितरण का सर्वेक्षण करने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि सभी गांवों में भूमि वितरण के कानूनों का पूरी तरह उल्लंघन हुआ है। जिन्हें जमीन मिलनी चाहिए थी उन्हें तो नहीं मिली और ऐसे लोगों को मिल गई जो पहले से भूमिवान थे और इसलिए कानून की राय में जमीन पाने के हकदार नहीं थे। इन सभी तेरह गांवों में यह सम्भव है कि पहले के आदेश रद्द कर दिये जायें। छः या सात गांवों में तो रद्द कर ही दिये गये हैं और बाकी का फैसला होना है। लेकिन हमारे वर्तमान प्रशासन की हालत और कानून के राज की यह बड़ी दयनीय दशा है कि भण्डारा के जिलाधीश भूमि के पुनर्वितरण के आदेश नहीं दे सकते क्यों कि इससे विधि और व्यवस्था की समस्याएं खड़ी हो जायेंगी।

लेकिन कहानी इतनी ही नहीं है। महाराष्ट्र सरकार के सचिवालय द्वारा बनाये गये नियमों में परिवर्तन की जरूरत है। उदाहरण के लिए भूमि देने के मामले में वे उस भूमिहीन को प्राथमिकता देते हैं जो गांव से आठ किलोमीटर दूर के गांव का रहने वाला हो। उसी गांव के भूमिहीन का नम्बर बाद में लगता है। यह मुद्दा सरकार को बता दिया गया है। लेकिन ऐसी साफ बात भी अभी तक सरकार ने स्वीकार नहीं की है।

इन बातों को छोड़ दें तो भी सवाल उठता है कि सर्वोदय कार्यक्रम क्या है जिसे उड़ीसा की मुख्यमन्त्री अपनाना चाहती हैं?

सर्वोदय कार्यक्रम का सार तत्व है कि लोगों को स्वयं अपना राज्य चलाने के लिए तैयार किया जाये। कल्याणकारी राज्य के बहाने मन्त्रिमण्डल के कुछ चुनिन्दा लोगों द्वारा उन पर राज किये जाने से यह बिलकुल अलग है। यह व्यवस्था अब टूटती दिख रही है। गुजरात में ऐसा हो चुका है और बिहार में होना दिखाई दे रहा है। उत्तरप्रदेश की नयी विधानसभा के पहले दिन विरोधी दलों ने जो व्यवहार किया वह भी इसी दिशा का संकेत है।

केन्द्रीकृत पार्टी व्यवस्था, खर्चीले चुनाव विधानसभा के भीतर और बाहर निर्वाचित

(शेष पृष्ठ १८ पर)

अगर विदेशी रेलो से मुकाबला किया जाये तो भारत की स्थिति सराहनीय ही मानी जायेगी आँकड़े इस प्रकार हैं:—

क्रम	रेलवे का नाम	वर्ष	व्यवस्था पर कुल व्यय का प्रतिशत
१	ब्रिटिश रेलवे	१६६८	६२.००
२	कनेडियन पेसिफिक रेलवे	१६६६	६०.००
३	कनेडियन नेशनल रेलवे	१६६६	६३.८
४	फ्रेन्च नेशनल रेलवे	१६६६	६६.०
५	जर्मन फेडरल रेलवे	१६६६	७०.३
६	इटेलियन स्टेट रेलवे	१६६६	६५.६
७	जापानी राष्ट्रीय रेलवे	१६६६-७०	४६.७
८	अमरीकी प्रथम वर्ग रेल-रोड	१६६६	५७.४
६	भारतीय रेलवे	१६६६-७०	५४.१७

दूसरी ओर, प्रति कर्मचारी यातायात में भी वृद्धि हुई है :

क्रम	वर्ष	यातायात यूनिट (हजार मे)
१	१६६५-६६	१६४
२	१६६६-६७	१६७
३	१६६७-६८	१७२
४	१६६८-६६	१७८
५	१६६६-७०	१८५
६	१६७०-७१	१८६
७	१६७१-७२	१६३

इस उन्नति के लिए हमारे रेलवे कर्मचारी अभिनन्दन के पात्र हैं। जाड़ा, गर्मी बरसात, हर मौसम मे, खुले मे उन्हे जिन मुसीबतो का सामना करना पड़ता है, वह कौन नहीं जानता ? उनका साहस से डटे रहना और निष्ठापूर्वक काम करना उनकी ईमानदारी, लगन व देश भक्ति का सबूत है। इसके लिए रेलवे बोर्ड को कितना श्रेय दिया जाये हम नहीं कह सकते। क्योकि, देखा यह जाता है कि कही कोई गड़बड़, माल की चोरी या नुकसान या जन-हानि हो, तो रेलवे के ऊंचे अधिकारियो पर आँच नही आती और सारा

रेलवे बोर्ड अकुशलता का शिकार

खमयाजा भुगतना पडता है नीचे के कर्मचारियो को। जानकार लोगो का कहना है कि अगर किसी क्षण भारत की सभी रेलें एक साथ रुक जायें या दुर्घटना-ग्रस्त हो जायें तब भी रेलवे बोर्ड के किसी सदस्य या अधिकारी पर कोई आपत्ति नही आ सकती। ऐसा परिस्थिति-निरपेक्ष है यह बोर्ड।

रेलवे बोर्ड की असावधानी—हाल ही मे ससद की जन लेखा समिति ने बोर्ड के कई कार्यों की बहुत तीव्र आलोचना की है और कहा है कि वह सावधानी से अपने दायित्व का पालन नही कर रहा है। अपनी १०६ वीं रिपोर्ट मे (जो लोकसभा मे ११ अप्रैल को पेश की गई) समिति ने कहा कि आमदनी बढाने के साधनो मे समिति के पिछले प्रस्तावो की जो अवेहलना बोर्ड ने की है, उससे पता चलता है कि वह 'निपट अकुशलता और लापरवाही' का शिकार हो गया है। समिति ने विशेष तौर से 'कन्टेनर सर्विस' के मामले मे बोर्ड की असावधानी का दु खपूर्वक उल्लेख किया है।

रेलो को चलाने के रोजाना खर्च पर भी समिति ने अपनी १०६ वी रिपोर्ट मे बोर्ड के कार्य पर खेद प्रकट किया है। समिति का कहना है कि इस खर्च के दो हिस्से करने चाहिए—अस्थायी और स्थायी, और दोनों का अलग-अलग ब्यौरा बना कर यह देखना चाहिए कि किस-किस मद मे बचत की जा सकती है। पारसाल समिति के कहने पर भी बोर्ड ने १६७३-७४ मे इस प्रकार का ब्यौरा नही तैयार किया।

कोयले के सम्बन्ध में २६ अप्रैल को पेश की गयी अपनी रिपोर्ट में समिति ने इस बात की शिकायत की है कि सस्पेन्सखाते मे नाम पड़े लापता कोयले की कीमत रु० २६.५७ करोड है और जमा पडे असम्बन्धित कोयले का दाम रु० २६.०७ करोड है। विशेष चिंता की बात यह है कि लापता कोयले का कुल कोयले के प्रति अनुपात जहां १६६५-६६ मे ४.२ था, वह १६६६-६७ मे ७.७ हो गया और १६७०-७१ में ८.८ पर पहुंच गया, यानी बारहवां हिस्सा कोयला गायब होने लग गया।

भारत के महालेखाकार, कम्पट्रोलर और आडीटर-जनरल ने भी १६७२-७३ की अपनी रिपोर्ट मे रेलवे बोर्ड के कारनामो पर अपना दु ख जाहिर किया है। यह रिपोर्ट १५ मार्च १६७४ को ही लोकसभा मे पेश की गयी। उसमे कहा गया है कि रेलवे बोर्ड विदेशों से जो राजीनामे करता है वे असन्तोषजनक और हानिप्रद साबित हुए है और इन्जिन तथा स्लीपर बनाने के जो डिजाइन हैं वे भी गलत पाये गये हैं। स्पष्ट उल्लेख किया है काशी के पास महुवाडीह मे डीजल कारखाने का और बिहार—बंगाल की सीमा पर चितरंजन कारखाने का। १६६३-६४ से १६७१-७२ तक डीजल कारखाने मे ६४१ बड़ी लाइन के इन्जिन बनने चाहिए थे, मगर बने आधे से भी कम, केवल ४२७ और अस्सी बने छोटी लाइन वाले। इसी प्रकार से एक विदेशी कम्पनी की मदद से चितरंजन मे १६६२ मे बिजली के इन्जिन बनना शुरू हुए। दिसम्बर १६६३ से दिसम्बर १६६७ के बीच ८२ इन्जिन वहां बने, लेकिन उनको काम मे लाते ही दोष पूर्ण पाया गया जिसके कारण उन्हें लौटाना पड़ा और नवम्बर १६७२ तक उनकी मरम्मत मे रु० १.४१करोड से ज्यादा खर्च बैठा था,जो उनकी मूल लागत का दस प्रतिशत है।

हमें नहीं मालूम कि इन दोषों और असावधानियो के लिये बोर्ड का कौन सदस्य किस हद तक जिम्मेदार है, लेकिन इतना तो स्पष्ट है कि बोर्ड अपने दायित्व को सूझबूझ और एहतियात के साथ नहीं निभा रहा है। वह जानता है कि उसका कुछ भी बिगाड़ कोई नही कर सकता।

रेलवे की दुःखद आर्थिक स्थिति, बोर्ड की जब यह कार्यविधि होगी तो रेलवे संचालन में लगातार घाटा होना स्वभाविक है। गत २६ फरवरी को ससद में रेलवे मंत्री, ललित नारायण मिश्र ने जो बजट पेश किया, उसमें अपनी लाचारी कबूल की। उन्होंने यात्री-

रेल मंत्री काम से न्याय नहीं करते

किराये और माल-ढुलाई-भाड़े में वृद्धि की घोषणा की और कहा कि इस तरह से रु० १३६.३८ करोड़ की बेसी आमदनी होगी, लेकिन तिस पर भी लगभग ५३ करोड़ रुपये का घाटा रहेगा। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि रेलवे की आर्थिक स्थिति बहुत दुःखद दौर से गुजर रही है, आमदनी कम होती जा रही है और खर्च बढ़ रहे हैं।

यह स्वभाविक है। इसके दो कारण हैं। पहला यह कि रेलवे बोर्ड सजग नहीं है और दूसरा है रेलवे कर्मचारियों में असन्तोष होने के कारण आये दिन हड़तालें या नियमानुसार काम आदि। दूर की बात जाने दीजिये, १९७३ की अप्रैल मई में आन्दोलनों के कारण रेलवे की आमदनी में सवा दो करोड़ रुपये की कमी आई, अगस्त में ड्राइवरों की हड़ताल से साढ़े चौदह करोड़ की सितम्बर में २६ आन्दोलन हुए, अक्तूबर में ३०, नवम्बर ३१ और दिसम्बर के पहले हफ्ते में ही पन्द्रह हुए। इन सब में कई करोड़ रुपये की हानि हो गई। ऐसी हालत में रेलवे की आर्थिक स्थिति कैसे सुधर सकती है?

कर्मचारियों की मांगें "पिछले बारह-पन्द्रह वर्ष में देश में दो बड़ी चीजें हुई हैं जिनका असर, रेलवे पर पड़ना लाजिमी है। एक तो यह कि केन्द्रीय वित्त मंत्री के शब्दों में, हमारा जो रुपया १९६० में सौ पैसे के बराबर था, दिसम्बर १९६४ में उसका मूल्य गिर कर ४७.६ पैसे पर आ गया और दिसम्बर १९७३ में केवल ३८.५ पैसे के बराबर रह गया। इन चार महीनों में तो कुछ और भी गिरा होगा। दिन-दिन जो महगाई बढ़ रही है और चीजों के दाम विशेषकर खाने व पहनने की चीजों के, आसमान पर चढ़ते जा रहे हैं—उससे मुट्ठी भर, पचास-साठ लाख लोगों को छोड़कर सारा देश परेशान और बेहाल हो रहा है। दूसरे यह कि सरकार ने लोहा, कोयला और कई अन्य उद्योग अपने हाथ में लिये हैं जिनमें नीचे के कर्मचारी से ऊपर के अधिकारी को जो तनखाएं मिल रही हैं, वे रेलवे में वैसा ही और उतना ही काम करने वालों को मिलने वाली तनखा से कहीं ज्यादा है। रेलवे में न्यूनतम वेतन रु० १९६ है, जब कि कुछ कारखानों में ढाई सौ से ऊपर हैं। इन कारखानों में सरकार साल में एक महीने की तनखा भी ऊपर से बोनस के रूप में दे रही है।

ऐसी हालत में रेलवे कर्मचारियों में असन्तोष होना अनिवार्य है। इसी आधार पर जार्ज फर्नाण्डीज ने आठ मई से हड़ताल का ऐलान किया है। रेलवे में काम करने वाले बन्धुओं की मुख्य मांगें यह हैं—

(१) सार्वजनिक क्षेत्र के कारखानों में काम करने वालों के समान वेतन व भत्ते रेलवे वालों को भी मिलने चाहिये।

(२) साल में एक महीने का वेतन बोनस की शक्ल में मिले।

(३) आवश्यकता के अनुसार न्यूनतम मजदूरी दी जाये।

(४) कर्मचारियों को जो सताया गया है, उसकी जांच होकर वाजिब मुआवजा दिया जाये।

(५) गल्ला और अन्य आवश्यक वस्तुओं के लिए रेलवे द्वारा विशेष दुकानें खुलवाई जायें।

रेलवे मंत्री न्याय करें इसमें सबसे ज्यादा आग्रह नवम्बर एक व दो पर है। और इनके जवाब में रेलवे मंत्री कह चुके हैं कि कुछ नहीं किया जा सकता, क्योंकि इनको मंजूर करने से कम से कम चार सौ करोड़ रुपया साल का बोझ रेलवे पर पड़ेगा जिसे पूरा करना नामुमकिन है। दुःख इस बात का है कि मंत्री महोदय ने परिस्थिति की गम्भीरता को नहीं समझा और यूनियन के नेताओं से ठीक से बात नहीं की। बजाय इसके कि वह उन्हें स्वयं बुलाते, उन्होंने कहा कि जिसे मिलना हो वह समय ले और आ जाये। फिर, कुछ बातचीत उपमंत्री शफी अहमद कुरैशी ने शुरू भी तो कि अचानक उनके पिता के देहान्त के कारण स्थगित हो गई। आश्चर्य है कि रेलवे मंत्री ने बातचीत खुद जारी रखना उचित नहीं महसूस किया।

हमें डर है कि रेलवे मंत्री अपने काम के साथ न्याय नहीं कर पा रहे हैं। शायद यह कहना ज्यादती न होगी कि उन्हें रेलवे की हड़ताल से ज्यादा चिन्ता इस बात की है कि उनके अपने गृह-प्रदेश, बिहार में मुख्य मंत्री कौन होता है और वह किन-किन को अपने मंत्री-मण्डल में लेता है। बिहार की दल-बन्दी को अपने इशारे पर चलाने के लिए उनके पास जितना समय है उतना बोर्ड को अपने काबू में रखने के लिए नहीं है। लेकिन केवल यही नहीं, हमारे अन्य मंत्रीगण भी इस पदलोलुप राजनीति की दलदल में ज्यादा समय गवाते हैं और अपने विभागों की तरफ आवश्यक ध्यान नहीं देते। देश का दुर्भाग्य है कि कांग्रेस पार्टी का संसद में जबरदस्त बहुमत होते हुए भी, उसके मंत्रियों का अधिकांश समय कुर्सी सभालने की चिन्ता में व्यर्थ चला जाता है। यही कारण है कि हमारी अर्थनीति का संतुलन बिगड़ गया है। रेलवे भी इसकी शिकार हो तो उसका असर सब तरफ पड़ने से व्याधि और भी बढ़ जाती है। और रेलवे मंत्री के पास अपने विभाग के लिये समय का अभाव हो तो रेलवे बोर्ड को अपनी मनमानी करने से कौन रोक सकता है?

सवाल है कि अब क्या किया जाये? इसका समुचित और पर्याप्त उत्तर शायद ही कोई दे सके। लेकिन इतना तो जाहिर है कि रेलवे मंत्री को अपने कार्यकलापों में रेलवे को प्रधानता देनी होगी और उसी में अपने को रमाना होगा। अगर किसी कारण वश वह ऐसा नहीं कर सकते तो उन्हें कम काम वाला और फुरसत में चला सकने वाला विभाग लेने और रेलवे जैसा व्यस्त और जटिल विभाग किसी दूसरे के हवाले करने की प्रार्थना प्रधान मंत्री से करनी चाहिए। साथ ही रेलवे बोर्ड का पूरा काया-कल्प होना चाहिए। ब्रिटिश राज से विरासत में मिले इस बोर्ड की उपयोगिता पर भी संसद में सन्देह किया गया है। जब तक उसका वर्तमान कर्मचारी—विमुख स्वरूप रहता है, तब तक न तो रेलवे की हड़तालें रुकेंगी, न चोरियां बन्द होंगी और न यात्रियों का कष्ट दूर होगा, चाहे उनके डिब्बे को तीसरे की बजाय दूसरा, या फिर दूसरे के बजाये पहला ही दर्जा क्यों न दे दिया जाये।

मांगें न्याय-संगत हैं, रहा यूनियनों की वर्तमान मांगों का प्रश्न। आज जो ढांचा भारत सरकार ने खड़ा कर रखा है और जिन मान्यताओं को प्रश्रय दे रही है, उनको देखते हुए, यह मांगें अपनी जगह बहुत न्याय-संगत।

(शेष पृष्ठ १४ पर)

……केन्द्रीयकरण बढ़ता है और जनता की अभिक्रम शून्यता भी। स्थानीय नागरिकों का कोई दबाव उनके लिए की जाने वाली व्यवस्था पर नहीं रहने से व्यवस्था निरंकुश बनती है और उसमें भ्रष्टाचार पनपता है……

इस भ्रष्टाचार को दूर करने के चार कदम

—देवेन्द्र कुमार

ग्राम स्वराज्य, नगर स्वराज्य या लोकस्वराज्य की ओर बढ़ने के लिए आज की स्थिति में से अगले कदम कैसे उठाये जायें यह समझने के लिए थोड़ी गहराई में जाना जरूरी है। आज जो स्थिति है उसमें शासन-तंत्र स्वयं एक स्थापित हित बन गया है जिस का रूप अंग्रेज के शासनकाल से बहुत भिन्न नहीं है। अर्थात लोकतंत्र का जो रूप उसके साथ जुड़ा है उसके कारण शासन-तंत्र के स्वरूप में कोई परिवर्तन नहीं आया है और वह उसी पुराने ढर्रे पर चलता जा रहा है। सचमुच तो उस शासन के पुराने तंत्र ने लोकतंत्र को विकसित होने में एक ओर तो स्पष्ट बाधा खड़ी की है दूसरी ओर लोकतंत्र द्वारा दलगत राजनीति का जो ढांचा हमने पश्चिम से प्राप्त किया है वह भी दोषपूर्ण है। किसी हद तक एक बोली, एक जाति, एक धर्म वाले देशों में दलगत प्रजातंत्र कारगर होता भी हो पर भारत जैसे बहुविध देश में इस पद्धति को लागू करने से समाज के अलगाव वाले तत्वों को बढ़ावा मिला है। साथ ही बहुमत के आधार पर चुनाव और निर्णय की पद्धति में जो मूलभूत सीमाएं हैं वे और स्पष्ट होती जा रही हैं। इस सब के कारण संवैधानिक प्रजातंत्र की मूल भावना प्रकट नहीं हो पाती बल्कि विकृत होती जा रही है और फलस्वरूप लोग उत्तरोत्तर क्षुब्ध होते जाते हैं इस क्षुब्धता की मिसाल हमें गुजरात और बिहार में विशेष रूप से और सभी स्थानों पर सामान्य रूप से नजर आ रही है।

उत्तरोत्तर स्थिति ऐसी बनी है कि जनता को दिखाई देने लगा है कि उसके अपने हाथों में न कोई निर्णय रह गया है और न व्यवस्था में कोई हाथ। राज्य-शक्ति अर्थात शासन व्यवस्था अधिकाधिक शक्तिशाली और व्यापक होती जाती है चाहे वह व्यवस्था प्रजातंत्र के नाम पर हो या समाजवाद के। प्रजातंत्र में कल्याणकारी राज्य के नाम पर विभागीय सरकारी कामों का व्याप और बोलवाला बढ़ता जाता है। आज हमारे जैसे गरीब देश की ३०% से अधिक आबादी सरकारी क्षेत्र पर आधारित है। साथ-साथ समाजवाद के नाम पर जब उद्योग-धन्धों का राष्ट्रीयकरण होता है तो उद्योग-धन्धे सरकारी नौकरी के आधार पर चलाये जाते हैं—केन्द्रीकरण बढ़ता है और जनता की अभिक्रम शून्यता भी। स्थानीय नागरिकों का कोई दबाव उनके लिये किये जाने वाली व्यवस्था पर नहीं रहने से वह व्यवस्था निरंकुश बनती है और उसमें भ्रष्टाचार पनपता है।

इसलिए इसका निराकरण करने के लिए रास्ता यह सोचा गया है कि आबादी की जो एक इकाई निकट पड़ोसपन अनुभव करती है उसके हाथों में उससे संबंधित व्यवस्था सौंपी जाये। पहले यह सम्बन्ध नकारात्मक भी हो तो दिशा मिलेगी। अर्थात पड़ोस-सभा, मोहल्ला-सभा या ग्राम-सभा जो भी जाने पहचाने लोगों की इकाई है वह अपना संगठन सर्व-प्रतिनिधित्व के आधार पर करके सर्वानुमति से काम में जुटे।

पहला कदम होगा उन बातों में लगें जो सामान्य जीवन में आवश्यक व्यवहार शुद्धि का अनुशासन दिलायें—स्थानीय कामों में सरकारी कर्मचारी, राजनैतिक प्रतिनिधि अथवा अन्य राजनैतिक व्यवस्था में जहां भी ऐसा कार्य होता हो जहां जनहित का विरोध दिखाई दे तो उसे रोकने की ताकत अपने में पैदा करें। गलत काम के खिलाफ आवाज उठायें और जो ठीक रास्ता है उस पर चलने के लिए शासन-तंत्र पर असर डालें। इस कदम में जनता को आगे बढ़ाने में राजनैतिक विचारक और दूरगामी दृष्टि से सोच सकने वाले व्यवस्था में रहते हुए नेतागण भी सहायक हो सकते हैं। यदि इस पहले कदम में कुछ भी सफलता मिल सकेगी तो लोगों का आत्मविश्वास खुलेगा और सदियों की सरकार परस्ती की गिरफ्त कुछ ढीली पड़ेगी।

दूसरा कदम होगा ग्रामसभा की इकाई को (नगरों में पड़ोस सभा) अपने बहुत से कामों को स्वयं कर लेने की ऐसी ताकत पैदा करनी होगी जिससे शासन तन्त्र का भार कम हो। इसमें आपसी झगड़े निपटाना पूरे समाज के हित के काम करना और आवश्यकताओं की पूर्ति में लगने वाली वस्तुओं के वितरण की व्यवस्था करना आदि कार्यक्रम आयेंगे जो आज की स्थिति में समाज की जरूरत हैं और जिनके लिए ग्रामपरिवार बाहर की ताकतों पर निर्भर करता है।

तीसरा कदम है समाज रचना में परिवर्तन का (अभी ग्रामदान आंदोलन में ग्रामसभा समाज परिवर्तन का माध्यम मानी जाती है) इस तीसरे कदम में सामाजिक न्याय, गरीब से गरीब को बराबरी की ओर बढ़ने का कदम आदि बातें आयेंगी जो ग्रामदान के चार सूत्री कार्यक्रम में निहित है।

चौथा कदम इन तीनों कदमों—१-विरोध, २-व्यवस्था, ३-नवनिर्माण के बाद आयेगा या साथ-साथ भी लागू किया जा सकता है क्योंकि इन कदमों में पहला कौन, दूसरा कौन यह परिस्थिति पर निर्भर करेगा। इसमें आज के संविधान को कायम रखते हुए भी 'लोकनीति की दिशा' लागू की जा सकेगी उसके लिए आज के चुनावों में लोकप्रतिनिधि लाने की बात रखी जाये। इसके प्रथम इकाई में सब मिल कर सीधे अपने प्रतिनिधि चुनेंगे और वे प्रतिनिधि सहमति से लोक प्रतिनिधित्व की ओर बढ़ेंगे और विधानसभा या लोकसभा में पार्टी के उम्मीदवार की जगह लोक उम्मीदवार खड़े किये जायेंगे। यह लोकप्रतिनिधित्व का कदम होगा। नतीजा यह होगा कि सारी राजनीति को लोकनीति के साथ-साथ बहुमत के बजाय सर्वानुमति की ओर ले जाने का अवसर मिलेगा। यह एकदम गुणात्मक परिवर्तन होगा जिसमें बहुमत की जबरदस्ती की जगह सभी का प्रेम या 'सर्वोदय' पनपेगा।

चिपको आन्दोलन का एक वर्ष

सुन्दरलाल बहुगुणा

तेईस अप्रैल ७३ को चमोली जिले के मुख्यालय के पास एक जुलूस ढोल-नगाड़े और तुरही बजाते हुए मण्डल के जंगल की ओर जा रहा था। उत्तराखण्ड में ऐसे जुलूस देवी देवताओं की यात्रा के लिए प्राय निकलते हैं परन्तु इस जुलूस से तो एक नई यात्रा प्रारम्भ हो रही थी—उत्तराखण्ड की वन-सम्पदा की सुरक्षा की तीर्थयात्रा। खेलकूद का सामान बनाने वाली एक कम्पनी लखनऊ की सरकार से अंगू के पेड़ों को काटने का परवाना लेकर आई थी। इस लकड़ी से लोग बैलों के कंधे पर रखने का जुआ बनाते हैं। उन्हें कहा गया था कि वन-विज्ञान की दृष्टि से यह लकड़ी नहीं दी जा सकती। परन्तु विदेशी-मुद्रा कमाने का लालच देने वाली खेल-कूद कम्पनी ने वन-विज्ञान ही बदल दिया था।

इससे पहले १२ दिसम्बर को उत्तरकाशी में और १५ दिसम्बर ७२ को गोपेश्वर में चीड़ से तारपीन व बिरोजा बनाने वाली छोटी ग्रामोद्योग इकाइयों को बरेली स्थित बड़ी फैक्टरी के समान भाव पर कच्चा माल देने की माग को लेकर प्रदर्शन हुए थे। गांव-गांव में इनकी चर्चा हुई वन नीति में आमूल परिवर्तन करने के लिए आवाज उठी।

मण्डल के प्रदर्शन का तात्कालिक परिणाम यह हुआ कि खेल-कूद कम्पनी को वहां के बजाय फाटा (केदार घाटी) में अंगू के पेड़ काटने का परवाना दिया गया, गोपेश्वर स्थित ग्राम स्वराज्य संघ को संतुष्ट करने के लिए ५ पेड़ काष्ठ उद्योग के लिए दिये गये, परन्तु आन्दोलन की बुनियादें बहुत गहरी थी। १, २, मई को गोपेश्वर में चमोली जिला विकास गोष्ठी और उसके बाद मांगों के समर्थन में एक प्रदर्शन हुआ। अगले दिन कुछ ग्राम नेताओं और सर्वोदय-सेवकों की एक पदयात्रा टोली जनजागरण के लिए नैल-नौनी के वन-प्रधान क्षेत्र से होती हुई उखीमठ के लिए निकल पड़ी। इस टोली में एक १२ वर्षीय बालक भी था। इन दूरस्थ गांवों में आदेशों और आश्वासनों को लेकर केवल दो ही प्रकार के लोग कभी-कभी पहुंच जाते थे—अफसर और नेता। पहली बार उन्होंने अपने जैसे लोगों से श्रम और प्रलोभन के बजाय गांव को संगठित कर अपनी समृद्धि के आधार वनों की रक्षा के लिए उठ खड़े होने का नया मन्त्र सुना था। उखीमठ में केदारनाथ प्रखण्ड की बैठक हो रही थी। वहां के सभापतियों ने एक स्वर से वनों की सुरक्षा के कार्यक्रम को दोहराया और प्रतिज्ञा की—"हम फाटा में अंगू के पेड़ नहीं कटने देंगे"।

रामपुर के युवा ग्राम सभापति केदार सिंह के नेतृत्व में केदार घाटी संगठित हुई। गाव-गांव से स्त्री पुरुषों और यहां तक कि तीर्थयात्रियों का बोझा ढोने वाले नेपाली श्रमिकों ने प्रदर्शन कर 'चिपको' आन्दोलन का नारा बुलन्द किया।

लोगों ने वन बचाने के लिए चौकसी समितियां बनाई। कुछ दिनों के लिए अंगू के पेड़ों का काटना पुन: रुक गया।

उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन के दौरान प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी गढ़वाल आयी। वन-सम्बन्धी कठिनाइयों को लेकर जन प्रतिनिधि उनसे मिले। ५ नवम्बर को उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन समाप्त हुआ और १४ दिसम्बर को प्रदेश के मुख्यमन्त्री हेमवती नन्दन बहुगुणा ने लखनऊ के पर्वतीय क्षेत्र के विधायकों, मंत्रियों और वन विभाग के अधिकारियों की एक बैठक बुलाई। इस में जिसको आन्दोलन के चण्डी प्रसाद भट्ट ने विस्तार से सब समस्यायें रखीं। कुछ निर्णय भी हुए पर उनका कार्यान्वयन लखनऊ के सचिवालय में बन्द रहा।

इधर वन-विभाग के विशेषज्ञों द्वारा बनाई गयी योजना के अनुसार वनों की कटाई जारी है। चीड़ के पेड़ों से अधिकाधिक लीसा निकालने के लालच से इसका एकाधिकार ठेकेदारों को दे दिया गया है। अकेले यमुना वन प्रभाग में पिछले तीन वर्षों में १५ हजार पेड़ हवा के झोंके से टूट गये। एक समय अपने सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध यमुना टौंस क्षेत्र के चीड़ वन अब पेड़ों के कब्रिस्तान बन गये हैं।

तिब्बत से लगे जोशीमठ से तपोवन की ओर मोटर सड़क के ऊपर के वन सड़क निर्माण संगठन के लोगों ने धीरे-धीरे तबाह कर दिये। परन्तु इस वर्ष तो वन-विभाग ने ही रैणी के जंगल के २४१५ पेड़ों को कटवाने के लिए नीलामी कर दी। रैणी के ऊपर का ग्लेशियर भी २१ जुलाई ७० को टूटा था और उसके साथ जंगल के पेड़ और पहाड़ टूटने पर बाढ़ और भी अधिक भीषण हो गई थी। रैणी के लोग उस दृश्य को नहीं भूले। इस वर्ष जंगल की कटाई से बाढ़ की आशंका से वे घबरा उठे। सारे विकास क्षेत्र के सभापतियों ने मिलकर प्रस्ताव किये। राज्य के भूतपूर्व पर्वतीय विकास मन्त्री से जो इस क्षेत्र के विधायक भी हैं, मिले, ज्ञापन भेजे, और अन्त में १५ मार्च को जोशीमठ में प्रदर्शन किया। परन्तु जंगल काटने का सरकारी निर्णय तो विशेषज्ञों की योजना के अनुसार हुआ था। इन अनपढ़ लोगों की बात कौन सुनता? इस क्षेत्र के गोपेश्वर महाविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी चिन्तित हुए। जिलाधिकारी के पास ज्ञापन लेकर गये, प्रदर्शन किया। कोई सुनवाई नहीं हुई।

२७ मार्च को कुल्हाड़ियां और आरी लेकर जंगल कटवाने के लिए ठेकेदार के आदमी शराब के नशे में धुत कारिन्दे और वनाधिकारी ने गुफा में डेरा जमाया। गांव के सभी लोग सेना द्वारा ली गई जमीन का मुआवजा लेने दूर गोपेश्वर गये थे। गायें चराती हुई एक महिला ने इस दल को देख लिया। सीटियां बजा कर सब स्त्रियों को इकट्ठा किया और देखते ही देखते सपति, कुल्हाड़ी, और आरों से लैस वन काटने वालों के दल ने अपने वन को बचाने के लिए दृढ़ संकल्प महिलाओं से घिरा हुआ पाया। "यह हमारा मायका है, अन्न संकट के मौके पर हम यहां से चन्दा घास और कपासी, सूखे मेवे बटोर कर बच्चों को पालती हैं। जड़ी बूटियां खोदकर और गुच्छियां इकट्ठी कर रोजी कमाती हैं। इस जंगल को

मत काटो नहीं तो हम पेड़ों से चिपक कर उनकी रक्षा करेंगी"।

इसके बाद रेणी गांव 'वन बचाओ' अभियान का केन्द्र बन गया। ५० वर्षीय गौरा देवी और ५२ वर्षीय मूगा देवी ने अपनी सहयोगिनियों—रुपसा, मसी, मुसी, हरकी, मालती, गैणी, बाली देवी के साथ महिला चौरसी टुकड़ियां बना ली है। उन्होंने जंगल में प्रवेश करने का सब रास्ता तोड़ डाला है। एक ओर ठेकेदार के मजदूर सड़क के किनारे ठेकेदार के अन्न गोदाम में रुके पड़े हुए हैं। दूसरी ओर महिलाएं हैं, दोनों आमने सामने। आन्दोलन का नेतृत्व इस क्षेत्र के जन नेता, विकास क्षेत्र प्रमुख गोविन्द सिंह रावत कर रहे हैं। कपड़ो को बेच कर परिवार का भरण पोषण करने वाले गोविन्दसिंह दिल से बहुत अमीर हैं और जनता के लिए अपना सब कुछ होम कर देने वाले युवक हैं।

एक ओर आन्दोलन चल रहा है, दूसरी ओर सरकार से बातचीत भी। सारी परिस्थिति की जानकारी देने के लिए हम लोग लखनऊ में मुख्यमंत्री हेमवती नन्दन बहुगुणा से २३ अप्रैल, ७४ को मिले। जोशीमठ में भूगर्भीय परिवर्तनों और वनों की कटाई के कारण होने वाले भूस्खलन की जानकारी उन्हें दिल्ली में वनस्पति विज्ञान के किसी विद्वान ने पहले ही दे दी थी। एक दिन वन सचिव का इस आशय का वक्तव्य प्रकाशित हुआ था कि "चिपको आन्दोलन अनुचित है"। वन विभाग का कहना था कि जंगल का ठेका अब रद्द करने पर ठेकेदार को भारी मुआवजा देना पड़ेगा और उसमें सरकार को बहुत हानि होगी लेकिन मुख्यमन्त्री ने कहा "जो कुछ ये लोग कह रहे हैं यह तो उस भयंकर तबाही के सामने कुछ नहीं है जो बाढ़ों के कारण होती है। जंगलों की रक्षा तो होनी ही चाहिए"।

उन्हीं के निवास पर विशेष वन सचिव नरोत्तम त्रिपाठी जो वन विशेषज्ञ भी हैं, के साथ एक-एक प्रश्न को लेकर हमारी वार्ता प्रारम्भ हुई जो अगले दिन भी जारी रही। वार्ता के निष्कर्षों को अन्तिम रूप २४ अप्रैल को मुख्यमंत्री के कार्यालय में दिया गया वे इस प्रकार हैं :—

(१) रेणी के जंगल का निरीक्षण करने के लिए तत्काल वनस्पति वन, भूगर्भ और सिंचाई विभाग के विशेषज्ञों, दो विधायकों व आन्दोलन के दो नेताओं की कमेटी वहां भेजी जायेगी। उसकी रिपोर्ट के आधार पर कटाई रोकी जायेगी, इसके अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान के एक प्रोफेसर होंगे। (२) वन सपदा के दोहन में स्थानीय जनता को अवसर देने और ठेकेदारों को हटाने के लिए भविष्य में ५० प्रतिशत कूप २० हजार रुपये तक के २५ प्रतिशत ५० हजार रुपये तक के और केवल २५ प्रतिशत ५० हजार रुपये से ऊपर के होंगे। अगले वर्ष कम से कम दो सहकारी समितियों को जंगल काटने के ठेके दिये जायेंगे और ग्रामस्वराज्य संघों द्वारा प्रेरित वन सहकारी समितियों को लीसा निकालने के ठेके बिना होड़ के दिये जायेंगे। सरकार उन्हें पूंजी निर्माण के लिए भी सहायता देगी। (३) वन क्षेत्रों से बाहर के प्रभागीय कार्यालय वन क्षेत्रों में स्थानांतरित किये जायेंगे। (४) वन सपदा पर आधारित ग्रामोद्योग इकाइयों को वन विभाग लीसा, लकड़ी आदि उदारता पूर्वक देगा। जड़ी बूटियों की नीलामी समाप्त कर दी गई है और चटाई व टोकरी बनाने के लिए रिंगाल निकालने पर लगी पाबन्दी भी हटा दी गई है। (५) वन विभाग के रेंज अधिकारी अनिवार्य ३० जुलाई तक गांव के लोगों को उनके हक हकूक की लकड़ी दे देंगे और अगस्त में क्षेत्र विकास समिति के सामने नये वन लगाने व वनों की नीलामी की योजना रखेंगे। कुछ समाज सेवकों को वन विभाग के कार्यालयों में जनता की सुविधाओं, वनों की सुरक्षा की दृष्टि से वनों की देखभाल करने के लिए अवैतनिक निरीक्षक नियुक्त किया है। (६) टिहरी और उत्तरकाशी जिलों की वन समस्याओं पर तीन माह में रिपोर्ट देने के लिए जन प्रतिनिधियों की एक समिति नियुक्त की गई।

लीसा निकालने की हिमाचली पद्धति, जिसके कारण चीड़ के वन बड़ी तेजी से नष्ट हो रहे हैं अगले साल से समाप्त की जायेगी।

"चिपको आन्दोलन" की शुरुआत वन और वन वासियों के मधुर सम्बन्धों को दृढ़ बना कर जनता में वनों की सुरक्षा के लिए चेतना पैदा करने से हुई। यह एक शैक्षणिक प्रक्रिया है, जिसमें वनवासी अधिकारियों और सरकार—सभी पक्षों को शामिल होना है।

भारतीय रेलवे : सरकार बोर्ड और कर्मचारियों के बीच समन्वय का अभाव

(पृष्ठ ११ का शेष)

और उचित है। सरकार एक उद्योग में एक रीति अपनाये और दूसरे में दूसरी, यह चलने वाला नहीं। दुर्गापुर के इस्पात कारखाने में काम करने वाले को एक तनखा मिले और वहीं पर रेलवे में काम करने वाले को उससे कम मिले, यह कोई सहन नहीं कर सकता। और न बोनस से ही सरकार इन्कार कर सकती है। सच तो यह है कि जब हमारे विधायक (हमारी संसद और विधान सभा के सदस्य) अपने वेतन भत्ते बढ़ायेंगे और एक से एक बढ़कर सुविधाएं लेने में (इस मामले में सारे पक्ष एकमत हो जाते हैं) संकोच नहीं करते तो किस नैतिक बल से वे रेलवे या अन्य संस्थानों में काम करने वालों को मना कर सकते हैं। रुपया न होने की दलील कोई नहीं मानेगा। उल्टे इससे वह जल-भुन जायेगा और गलत काम पर उतर पड़ेगा। सबसे पहले लोक सभा के हमारे सम्मानित संसद सदस्य आगे आयें और कुछ कटौती का ऐलान करें। कुल मिलाकर वह रकम शायद दो-चार लाख ही होगी, लेकिन इससे देश का नैतिक वातावरण उन्नत होगा और उनमें तथा मंत्रियों में ताकत आयेगी जिससे वे परिस्थिति का सामना साहस के साथ कर सकेंगे। वे क्यों न कहें कि हम केवल वेतन लेंगे और मकान, टेलीफोन, डाक-तार आदि का खर्च अपने पास से बर्दाश्त करेंगे? जब तक हमारे विधायक मार्गदर्शन करने से इन्कार करेंगे, तब तक कोई भी कर्मचारी-वर्ग ज्यादा मांगें रखने से बाज नहीं आयेगा। इसके अलावा जमाने की पुकार यह है कि हर कर्मचारी को बराबर का साथी समझा जाये और ऊंची से ऊंची कमेटियां या बोर्ड में उसको प्रतिनिधित्व दिया जाये ताकि सचालन में उसका पूरा सहयोग मिले और वह अपनी जिम्मेदारी को महसूस करे।

बिहार का आँखों देखा जन आन्दोलन

डॉ० हीरालाल

अठारह अप्रैल को पटना जंक्शन पहुंचा, मुगलसराय के बाद ही ट्रेन में यात्रियों की चर्चा का प्रधान विषय बिहार की छात्र संघर्ष समिति का आन्दोलन था। सभी वर्ग के लोगों में इस आन्दोलन के प्रति उत्साह, उमंग एवं सहानुभूति की भावना मैंने देखी।

अभी तक तो मैंने केवल जुबानी ही आन्दोलन की बात लोगों से सुनी थी पर पटना में देखता क्या हूं कि जगह २ विद्यार्थी तख्त या अन्य कोई चीज बिछा कर साफ-सुथरे कपड़ों तथा फूल-मालाओं से सुशोभित अनशन कर रहे थे। उस दृश्य को देख कर महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये व्यक्तिगत सत्याग्रह की बात मुझे एकाएक याद आ गई कि किस उमंग और जोश से सत्याग्रह में लोग शरीक होते थे और जनता फूल मालाओं से उनका स्वागत करती थी। ५-६ बरस के बच्चे भी अनशन पर प्रसन्नता पूर्वक बैठे हुए थे। कहीं देखा कि सरकारी नौकर और कहीं अधिवक्ता और प्रोफेसर आदि भी अनशन पर हैं। यह देख कर अच्छा लगा कि लोगों में एक अच्छे कार्य के लिए लड़ने की भावना है।

पटना से बस द्वारा बख्तियारपुर पहुंचा वहां भी इसी तरह का माहौल मिला और जनता एक स्वर में कहती थी कि यह आन्दोलन कामयाब हो कर ही रहेगा। वहां से बिहारशरीफ, जहां कि नालन्दा यूनिवर्सिटी है। बस से पहुंचा। बस में भी लोगों की चर्चा का विषय यही आन्दोलन था। लोग कहते थे कि जय प्रकाश बाबू जैसे बागियों के समर्पण कार्य में कामयाब हुए उसी प्रकार इस आन्दोलन में भी निश्चित ही सफल होंगे वहां से शाम को राजगीर पहुंचा। शाम को तो कहीं अनशनकारियों को नहीं देखा। दूसरे दिन १६ अप्रैल को बिहार के राजकीय जन प्रपात तथा जापानी शान्ति स्तूप को देखने गया। कई अनशनकारी छात्र-नेताओं तथा अन्य सहानुभूति रखने वाले व्यक्तियों से बात हुई। यहां तक कि ऐसे कांग्रेसी भी मिले जो कि ऊपर से तो सरकार के साथ है लेकिन दिल ही दिल से इस आन्दोलन के साथ है।

राजगीर से १६ अप्रैल को जंसडीह के लिए बस से रवाना हुआ। किन्तु बिहारशरीफ जा कर जब बस का कनेक्शन नहीं मिला तो बख्तियारपुर रेलवे-स्टेशन पर रुक गया और रात को गाड़ी लेट होने के कारण ११-३० बजे ट्रेन मिली। इस बीच मुसाफिरों से आन्दोलन के बारे में बातचीत हुई और सभी की सहानुभूति इस आन्दोलन के साथ दिखाई दी और लोगों ने कहा कि प्रधानमंत्री ने जय प्रकाश बाबू के चरित्र पर दोषारोपण करके बहुत बड़ी गलती की। २० अप्रैल को सुबह जंसडीह पहुंचा वहां के प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र पर गया और वहां से दोपहर को देवघर के लिए रिक्शा से रवाना हुआ। बीच में एक जगह संथाल पहाड़िया सेवा सघ में रुक कर कुछ लोगों से बात करने का मौका मिला। हर जगह छात्र संघर्ष समिति का मोर्चा लगा हुआ है और लोग अपने काम में डटे हुए हैं। वहां से भागलपुर के लिए रवाना हुआ। रास्ते में कई जगह सड़क के किनारे अनशनकारी अपना मोर्चा लगाये हुए थे और बस रुकने पर विद्यार्थी बस के अन्दर आ कर एक डिब्बे में चन्दा मांगते और लोग खुशी-खुशी चन्दा देते। रात को ८ बजे भागलपुर पहुंचा। वहां प्रो० रामजी सिंह के पास यूनीवर्सिटी कैम्पस में ठहरा। वे इस आन्दोलन में काफी दिलचस्पी ले रहे थे और स्वयं भी अनशन कर चुके थे। इस संबंध में उनसे काफी चर्चा हुई और उन्होंने बताया कि शिक्षक वर्ग इस आन्दोलन के साथ पूर्ण रूप से है। दूसरे दिन २१ अप्रैल को मैं उनके साथ शहर में घूमने निकला तो हर जगह देखता हूं कि विद्यार्थी, प्रोफेसर, वकील आदि अनशन का मोर्चा जगह-जगह लगाये हुए हैं और विद्यार्थी दामों को नियन्त्रित कराने में काफी जी-जान से कोशिश कर रहे हैं। वहां से लौट कर जब सुबह प्रोफेसर साहब के घर आया तो देखता हूं कि कई व्यापारी प्रोफेसर साहब की प्रतीक्षा में बैठे हुए हैं। आते ही उन लोगों ने प्रोफेसर साहब से कहा कि आप विद्यार्थियों को एक सलाह दे दें कि वे हमारी भी सुविधा को ध्यान में रख कर तेल वितरण करा दें। प्रोफेसर साहब ने उन्हें आश्वासन दिया और कहा कि छात्र संघर्ष समिति से बात करूंगा कि तेल का वितरण इस तरह किया जाय कि जनता को अधिक से अधिक लाभ हो सके और महंगाई रुक सके। २१ अप्रैल को मैं मुंगेर के लिए चला। जमालपुर स्टेशन पर उतरने के बाद टैक्सी से मुंगेर आया। टैक्सी से उतर कर रिक्शे पर प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के लिए चल पड़ा। रास्ते में देखता क्या हूं कि कुछ लोग फूल मालाओं से सुशोभित एक छोटे से शामियाने के नीचे अनशन कर रहे हैं। पता लगाने पर मालूम हुआ कि इनमें केवल विद्यार्थी ही नहीं व्यापारी आदि भी शामिल हैं। इस प्रकार का दृश्य शहर में कई जगहों पर देखने को मिला। दूसरे दिन सुबह मुजफ्फरपुर के लिए रवाना हुआ और मुंगेरघाट जहाज से पार किया। जहाज पर जितने यात्री थे सब से एक ही आवाज आती थी कि जब हमारे लड़के, सबकी इस आन्दोलन में जेल जायेंगे तो हम लोगों को भी उनका साथ देना पड़ेगा और उनकी मांग भी सही है। वहां से खगड़िया के प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र पर आया तो पता चला कि वहां की संचालिका और पालिका आयुक्त श्रीमती सुशीलादेवी अनशनकारियों को संगठित करने तथा जनआन्दोलन को तीव्र करने के लिए शहर में प्रचार कार्य के लिए गई हैं। वहां से बरौनी आया। रास्ते में देहातों से देहाती भी इस आन्दोलन की सराहना कर रहे थे और कह रहे थे कि अब यह भ्रष्ट सरकार अधिक दिन तक नहीं टिक पायेगी। बरौनी में थोड़ी देर प्लेटफार्म पर भी लोगों से बातचीत करने का मौका मिला। वहां भी एक-आध लोगों को छोड़कर बाकी सब लोग इस आन्दोलन के पक्ष में ही बात करते मिले। विशेष कर स्त्रियों में काफी उत्साह मिला। रात को मुजफ्फरपुर पहुंचा। दूसरे दिन लोगों से बातचीत की जिनमें उच्च कोटि के अधिकारी भी थे। शहर में होने वाले अनशन के बारे में जानकारी प्राप्त की तो वहां भी उत्साह का वातावरण बहुत जोर-शोर पर →

था। उसके पहले यहां १८ अप्रैल को एक बहुत बड़ा मौन जुलूस सर्वोदय कार्यकर्ता ध्वजा प्रसाद साहू के नेतृत्व में निकाला जिस में वकील, प्रोफेसर, व्यापारी, विद्यार्थी आदि सभी प्रकार के लोग शामिल थे। दो दिन बाद हाजीपुर के लिए रवाना हुआ। हाजीपुर में भी यही वातावरण दिखाई दिया। वहां से महनार के लिए बस पर रवाना हुआ बस में काफी लोग इस आन्दोलन का जय-जयकार करते थे साथ ही जयप्रकाश बाबू के व्यक्तित्व की भी लोग एकस्वर से सराहना करते थे। महनार रात भर रुकने के बाद २५ ता० को सुबह बेगूसराय पहुंचा वहां पहुंचने पर भी जगह-जगह यही अनशन का दृश्य दिखाई दिया। वहां से मैं टैक्सी टैम्पो द्वारा रोसड़ा के लिए रवाना हुआ। रास्ते में कई जगह विद्यार्थी अनशन करते और चन्दा एकत्रित करते दिखाई दिये। किन्तु एक जगह की घटना मुझे अच्छी नहीं लगी विद्यार्थी रास्ते में बेंच और तख्त आदि डाल कर बस को रोक कर चन्दा वसूल करते थे। मैंने उन्हें समझाया कि चन्दा मांगने का यह तरीका ठीक नहीं है। और उन्हें मैंने चन्दा भी नहीं दिया। जब उन लोगों ने तख्त हटा दिये तो हम लोग चले गये। रोसड़ा पहुंचा और इत्तफाक से कस्बे में घूमने का मौका मिला। और उसके बाद स्टेशन पर करीब एक घंटे तक रुकना पड़ा। इस बीच सवर्त्र अनशन का उत्साह और जोश-खरोश का वातावरण दिखाई दिया। इस के बाद शाम को मैं खगड़िया में एक मीटिंग में शरीक हुआ। वहां पता चला कि चिकित्सालय की संचालिका श्रीमती सुशीलादेवी ने एक हजार स्त्रियों का एक बहुत बड़ा जुलूस इस आन्दोलन के पक्ष में निकाला था जिस से कि कांग्रेस ने उनसे जवाबतलब किया। खगड़िया से रवाना हो कर पूर्णिया होते हुए रानी पतरा पहुंचा। पूर्णिया में भी जगह-जगह विद्यार्थी और अन्य लोग भी अनशन तथा आन्दोलन के कार्य में लगे हुए दिखाई दिये। सबकी जबान पर एक ही नारा था कि भ्रष्टाचार मिटाओ। फिर किशनगंज तथा गांगीहाट पहुंचा। किशनगंज के अधिवक्ता आदि से भी बातचीत करने का अवसर मिला। वे लोग भी इस आन्दोलन के पक्ष में दिखाई दिये यद्यपि वे महसूस करते थे कि आन्दोलन के चलने से उनकी आर्थिक क्षति जरूर है फिर भी इस आन्दोलन की सफलता चाहते हैं। अनशनकारी शान्तिमय ढंग से अनशन चला रहे थे। २६ ता० को मैं कटिहार आया और वहां भी लोगों से बातचीत करने का तथा देखने का मौका मिला। आन्दोलन का वातावरण जोर पकड़ रहा था। वहां से बरौनी पहुंचा। यहां भ्रष्टाचार का एक बहुत बड़ा मसला हमारे सामने आया जब कि रिजर्वेशन के लिए हम से १५ रु० रिश्वत की मांगी गई।

पूरे दौरे के बाद इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि आन्दोलन में सभी वर्ग के लोग शामिल हैं और सहानुभूति रखते हैं। लोगों का यह मत है कि यह मिनिस्टरी शीघ्र ही समाप्त होगी और उसका सबसे बड़ा संकेत यह है कि जगजीवनराम ने अपने लड़के को मिनिस्टरी में जाने से रोक लिया है। लोगों को यह प्रतीत हो रहा है कि यदि मिनिस्टरी स्थायी होने वाली होती तो अपने लड़के को मिनिस्टरी में शामिल होने के लिए जरूर इजाजत देते। वेलूर जाने के पूर्व जयप्रकाश जी ने जो वक्तव्य कार्य संचालन के लिए दिया उसका लोगों पर बहुत ही अच्छा असर पड़ा और लोग अपनी जिम्मेदारी निभाने के प्रयत्न में हैं।

श्रीलंका में सर्वोदय कार्य की सम्भावनाएं

—विनयभाई

श्रीलंका के हवाई अड्डे के कस्टम अधिकारी भी "सर्वोदय" के नाम से परिचित और प्रभावित थे और उन्होंने हमारे सामान की विधिवत् जांच करना भी जरूरी नहीं समझा। सवा करोड़ की आबादीके इस छोटे से देश की सर्वोदय संस्था श्रीलंका जातिक सर्वोदय श्रमदान संगम के राष्ट्रीय रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा तथा वैदेशिक संबंधों के कारण ही इसकी ऐसी प्रतिष्ठा बनी है।

श्रीलंका में सर्वोदय-कार्य कोलम्बो स्थित नालन्दा कालेज के तत्कालीन प्रिन्सिपल एस० डब्लू० कुलरत्नानन्द के प्रोत्साहन में संस्था के प्रचार सेवा के प्रसार सेवा योजना के प्रभारी शिक्षक श्री ए० टी० आर्य रत्ने द्वारा श्रमदान शिविरों के आयोजन से प्रारम्भ हुआ। श्रमदान शिविरों के क्रम से ज्यों-ज्यों आर्यरत्ने अपने देश के गांवों के सम्पर्क में आने गये त्यों त्यों उनकी सेवा भावना उत्कटता प्राप्त करती गई और उन्होंने अपने प्रभावी व्यक्तित्व एवं कुशल नेतृत्व से अधिकाधिक छात्रों को ग्राम सेवा की ओर प्रेरित कर लिया। आर्यरत्ने के उत्साह और लोकप्रियता के कारण उन्हें जिन बाधाओं का सामना करना पड़ा उससे उनकी प्रतिष्ठा और बढ़ी। १९५८ में श्रीलंका की संसद ने एक्ट द्वारा "श्रीलंका जातिक श्रमदान संगम" को मान्यता प्रदान की और इसके माध्यम से श्रमदान आंदोलन देश व्यापी रूप में चलने लगा। तत्कालीन शासन द्वारा भी इसे अच्छा प्रोत्साहन मिला और यह देश के विकास में जनता को आकृष्ट एवं प्रवृत्त करने की दिशा में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करने लगा।

बौद्ध धर्म का आधार श्रीलंका की ७१ प्रतिशत जनता बौद्ध धर्म अनुयायी है। इस धर्म को संरक्षण एवं प्राथमिकता प्राप्त है। जनता और शासन में भी इसका प्रभाव है। देश में लगभग ७ हजार बौद्ध मंदिर और मठ तथा उनसे सम्बद्ध २० हजार बौद्ध भिक्षु हैं। श्रीलंका की सर्वोदय संस्था ने इस धार्मिक भावना का उपयोग करने के लिए सर्वोदय सिद्धान्त और बौद्ध-दर्शन का ऐसा समन्वय किया है जिससे उन्हें शासन, बौद्ध धार्मिक संस्थानों तथा धर्मप्राण जनता का अच्छा सहयोग प्राप्त होता है। इसके कारण उन्होंने सर्वोदय के शासनमुक्त तथा शोषणमुक्त समाज रचना के आदर्श से अधिक बल करुणा मैत्री, मुदिता आदि तत्वों पर दिया है। सर्वोदय का अर्थ सबका उदय या कल्याण यहां कल्याणवाद का रूप ले रहा है। परिणाम स्वरूप सर्वोदय एक ग्राम-विकास तथा समाज-कल्याण का कार्यक्रम बन रहा है। बौद्ध भिक्षुओं का आधार लेने के कारण जहां उन्हें जनता में प्रवेश पाने तथा कार्य करने की अनुकूलता हो जाती है, वहां उन्हें ऐसे श्रमदान प्रोजेक्ट भी उठाने पड़ते हैं जिनसे साधारण जनता को प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिलता, भले ही उनकी धर्म-भावना को पोषण और संतोष मिले। श्रमदान द्वारा गांव में बौद्ध-मंदिरों का निर्माण होने से तो वहां धार्मिक भावना के आधार पर सामुदायिक विकास में सहायता मिलती है पर कभी-कभी जैसे पूरेनिला गांव में अन्तर्राष्ट्रीय श्रमदान द्वारा बौद्ध भिक्षुओं के स्नान के लिए तीन पक्के जलाशयों का निर्माण किये जाने में बहुत औचित्य नहीं लगता। पहले श्रीलंका में भी बौद्ध-धर्म के अनुयायी अपने परिवार के एक सदस्य को धर्म प्रचार के लिए भिक्षु बनाते थे। आज यद्यपि इतना नहीं होता फिर भी इस परम्परा का कुछ प्रभाव सर्वोदय संस्था के अन्तर्गत समाज सेवा के धार्मिक कार्य के लिए घर के तरुण को भेजने में अवश्य सहयोगी होता होगा।

स्थानीय अनुकूलताएं-सवा करोड़ की जनसंख्यावाले छोटे देश का होना अपने आप में एक प्रमुख अनुकूलता है। इसके अतिरिक्त गरीबी और विषमता की कमी, जातिवाद और सम्प्रदाय वाद का लगभग अभाव व आर्थिक, सामाजिक भावना के विकास में सहायक तत्व हैं। साक्षरता का ऊंचा प्रतिशत तथा अच्छा सांस्कृतिक स्तर भी यहां की अन्य प्रमुख अनुकूलताएं हैं। पर्दा-प्रथा के न होने से स्त्री-पुरुषों का साथ काम करना सहज स्वाभाविक है।

कार्य का स्वरूप राहत सुधार तथा विकास और निर्माण की प्रवृत्तियां जन-सामान्य को अधिक पसन्द आती है। प्रचलित समाज-व्यवस्था के आधार पर केन्द्रित आर्थिक-राजनैतिक तथा धार्मिक सत्ता के विरुद्ध मूल्य परिवर्तन का लोकशिक्षण कार्य जनता को उतना अपील नहीं करता। प्रत्यक्ष रचनात्मक कामों के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त करना भी अपेक्षाकृत सरल होता है।

केन्द्रित संगठनात्मक स्वरूप. श्रीलंका का सारा सर्वोदय कार्य केवल एक संस्था द्वारा संपादित होता है। तत्वतः सारा कार्य एक व्यक्ति पर आधारित है। आर्यरत्ने हृदय तथा बुद्धि के अनेक गुणों से सम्पन्न व्यक्तित्व द्वारा कर्मठता एवं कुशलता से सारा कार्य संचालित करते हैं। संस्था का मुख्य केन्द्र स्थल "मेठ मदुरा" का सूचना केन्द्र तथा केन्द्रीय कार्यालय अत्यन्त व्यवस्थित और दर्शकों को प्रभावित करता है।

संस्था परिवार में शामिल लगभग १५० सदस्य प्रात ५ से १० तक मुस्कराते हुए स्वानुशासन की भावना से अपने-अपने कार्य में लगे दिखाई पड़ते हैं।

संस्था का वार्षिक बजट करीब ८ लाख रुपयों का है जिसके करीब ५० प्रतिशत की पूर्ति स्थानीय दानदाताओं द्वारा तथा शेष की पूर्ति विदेशी संस्थाओं के अनुदान आदि होती है अपने उत्पादन से इस बजट की पूर्ति के लिए अब कुछ सर्वोदय फार्मेंस खोले जा रहे हैं। संस्था के पास ७-८ मोटर गाड़ियां हैं। अपने वैदेशिक सम्पर्क के आधार पर आर्यरत्ने ने इस संस्था को सर्वोदय के अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र का रूप दिया है और अनेक देशों में इस की शाखाएं स्थापित हो रही हैं।

एक समाज सेवी संस्था के रूप में इस संस्था के पास अनाथ बच्चे, प्रोबेशन अवधि के लोग तथा जातिक मुक्ति आन्दोलन (चेगुवारा समर्थक विद्रोह) के क्षमा याचना प्राप्त सदस्यों को भी सुधार हेतु आश्रम में रखा जाता है।

(शेष अगले पेज पर)

सीलिंग से बची जमीन बिकी और सरकार देखती रही

—जगदीश शाह

'गरीबी हटाओ' का नारा देने वाली सरकार ने जमीन की उच्चतम सीमा निर्धारण (लैण्ड सीलिंग) का जो ढीला-ढाला कानून बनाया उसको भी अमल में लाने में अखाड़ेबाजी चलती है और खेत-मजदूरों के हक डुबो कर जमींदार जमीन के सौदे कर रहे हैं।

भलोन्द्रा, ते० सावली, जि० बड़ोदरा के निवासी एक अग्रगण्य धनिक करीब ४३० एकड़ धरती के मालिक थे। अलबत्ता यह जमीन उनके सुपुत्र और नाबालिग पौत्र के नामों से चलती थी। पुराने कानून के तहत यह जमींदार, हर किसी उपाय से अपनी जमीन सुरक्षित रख पाये थे, पर उच्चतम सीमा के नये कानून के तहत एक ही परिवार के तीन व्यक्तियों के नाम से चलती यह जमीन वे बचा नहीं सकते थे।

सच तो यह है कि इस जमीन में से कानून के अनुसार अतिरिक्त जमीन, खेत मजदूर और किसानों के लिए ही अलग होनी चाहिए। फिर भी इस जमीन की बिक्री हो गई है। कहा जाता है कि कच्छी किसानों के एक दल को बारह लाख रुपये की कीमत से यह जमीन बेच दी गई है। आधी रकम तो दी भी जा चुकी है। अक्षय तृतीया से पूरी जमीन का कब्जा भी सौंप दिया जाने वाला है।

इस संबंध में स्थानीय कार्यकर्ता की आतरिक वेदना बड़ोदरा के एक दैनिक अखबार में प्रकाशित हुई। लामडापुरा ग्राम में हुए किसान सम्मेलन के समक्ष भी इस हकीकत का एलान किया गया था। सम्मेलन के मुख्य अतिथि के रूप में तत्कालीन माननीय मुख्यमंत्री के संसदीय सचिव मणिभाई शाह उपस्थित थे। फिर भी जमींदार टस से मस नहीं हुआ। गुजरात सर्वोदय मण्डल के मंत्री ने राज्यपाल के सलाहकार को पत्र लिख कर इस हकीकत की जानकारी दी थी। साथ ही जिला कलेक्टर तथा तहसीलदार को भी उस पत्र की प्रतिलिपियां भेजी गई।

इन सारे प्रयत्नों के बावजूद इस जमीन की बेरोकटोक बिक्री हो चुकी है। नये मालिक को कब्जा सौंप दिया गया है। इससे भलोन्द्रा और समीपवर्ती गावों में किसानों और मजदूरों में धनिकों के सामने सरकार की यह बेबसी देख कर भारी निराशा और तिरस्कार के भाव दिखाई देते हैं।

बड़ोदरा नगर से बीस किलोमीटर दूर स्थित इतनी बड़ी जमीन एक ही परिवार के नाम से पुरानी उच्चतम सीमा-मर्यादा के कानून से कैसे बच गई यह सवाल तो अनुत्तरित है ही है पर नये समाजवादी कानून का भी जाहिरा तौर पर उपहास हो रहा है। बेचने वाले भूमिमालिक अब बड़ोदरा में अग्रगण्य नागरिक हैं। अभी तक अपने मुनीम और हरिजन तथा आदिवासी मजदूरों के जरिये उन्होंने अपनी खेती करवाई और जमीन का उपभोग किया है।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध गुजरात के प्रसिद्ध लोक आन्दोलन के बाद भी गरीब के हित में बनाये ऐसे कानून को एक ओर रख कर पूंजीवादी और सरकारी तंत्र, गरीब और शासक पक्ष की नीति की घोर उपेक्षा कर सकते हैं।

क्या उड़ीसा........(पेज ८ से जारी)

प्रतिनिधियों को दुर्व्यवहार, राज्य-प्रशासन की विभिन्न विफलताओं ने राज्य सरकारों के प्रजाआश्रित यन्त्र को भर्त्सना के योग्य और हास्यास्पद बना दिया है। अगर हमने घर को व्यवस्थित नहीं किया तो केन्द्रीय प्रशासन के भी यही हाल होने वाले हैं।

सर्वोदय जगत के लिए उड़ीसा की मुख्यमन्त्री द्वारा दी गई चुनौती स्वीकार करना जरूरी है। सर्वोदय ने विकेन्द्रीकरण का ऐसा व्यावहारिक कार्यक्रम भी बताना चाहिए जो पुराने ग्रामीण समुदायों की तरह लोगों को अपना राज खुद चलाने के लायक बनाये। गाँवों को इस नयी व्यवस्था के लिए पुनर्गठित तो करना ही होगा। लेकिन यह एक ऐसा कार्य है जिसमें देश के सभी शुभचिन्तकों को ध्यान लगाना चाहिए। सर्वोदय के विचार को मानने वालों का तो खैर यह कार्य है ही। ❖

(पृष्ठ १७ का शेष)

भावी सम्भावनाएं : यद्यपि आर्यरत्ने को दृढ विश्वास है कि ग्रामोदय, देशोदय और विश्वोदय के अपने ध्येय अगले तीन वर्ष में ही प्राप्त कर लेंगे किन्तु हमें लगता है कि या तो उनकी सर्वोदय की कल्पना ही दूसरी है या उनका उत्साह उन्हें अतिआशावादी बनाये हुए है। हमें लगता है कि अभी उनके गाँव के काम में श्रमदान के अतिरिक्त गाव वालों को कुछ देना नहीं होता। इस संस्था के माध्यम से वे विकास की योजनाएं और उनके कार्यान्व- के लिए साधन, कार्यकर्ता और निर्देशन आदि सब कुछ प्राप्त ही कर रहे हैं जब उन्हें कुछ त्याग के लिए कहा जाएगा तब कठिनाई पड़ेगी। अत उन्हें 'देइज्म' की भावना से मुक्ति दिलाकर स्वावलम्बन की भावना अपनाने के लिए भी प्रक्रिया में कुछ बदल आवश्यक लगता है। साथ ही अब उन्हें यह भी बताना होगा कि राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक और आर्थिक सत्ता का जो केन्द्रीकरण है उसके कारण ग्रामस्वराज का सपना साकार होने में बुनियादी कठिनाई पड रही है और इसके लिए उन्हें विकेन्द्रित अर्थतंत्र तथा योगदानात्मक लोकतंत्र के विचार को समझना, अपनाना होगा।

कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि श्रीलंका में सर्वोदय आंदोलन अपनी प्रारम्भिक भूमिका में है और इसने सैकड़ों गाँवों में जो प्रवेश पाया है, देश-विदेश में अपनी निष्पक्षता रचनात्मक क्रियाशीलता एवं सेवा भावना से लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा अर्जित की है और डेढ़-दो सौ समर्पित कार्यकर्ताओं की जो सेना संगठित की है, उसके बल पर यह अपने देश की जनता को सर्वोदय समाज रचना अपनाने के लिए प्रेरित करने समर्थ हो सकेगा। के० डी० विश्वविद्यालय केम्पस में होने वाली वरिष्ठजनों की परिषद् में प्रो० हेगवे सरीखे विद्वान तथा संस्था के तरुण कार्यकर्ता वर्ग में हमें समाज सेवा से समाज परिवर्तन की दिशा में बढ़ने की जो तीव्रता के दर्शन हुए। हम आशा करें कि यह पूरी संस्था को एक नयी क्रांतिकारी दिशा देने में सहायक होगी और श्रीलंका की सर्वोदय संस्था एक संस्था या संगठन न रहकर एक व्यापक आंदोलन का स्वरूप ग्रहण करेगा। ●

बिना टिप्पणी के

सर्वोदय आन्दोलन एक निस्तेज सुधारवादी राहत कार्य !

पिछले कुछ वर्षों से सर्वोदय समाज के सभी स्तरों, मुख्यतया जन-सम्पर्क रखने वाले कार्यकर्त्ताओं में, अत्यंत तीव्रता से यह अनुभव किया जा रहा था कि सर्वोदय आन्दोलन एक निस्तेज सुधारवादी सामाजिक राहत कार्य से अधिक नहीं रह गया है और बापू के बाद उनके हिन्द स्वराज्य आन्दोलन का सृजनात्मक विकास नहीं हुआ है। फलस्वरूप उन जैसा एक समग्र व्यक्तित्व उभर नहीं पाया है।

बापू की रण-नीति तथा दाव पेंच का यदि गहराई से अध्ययन करें तो यह तथ्य हाथ लगता है कि उनके समस्त कार्यकलाप का लक्ष्य था स्वराज्य-व्यक्ति का और समाज का, जिसमें जीवन का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह पाता था। किन्तु सर्वोदय समाज की गतिविधियां केवल लक्ष्यहीन ही नहीं रहीं, शनै-शनै. रचनात्मक कार्यों के बदले सामाजिक सुधार एवं राहत कार्यों तक ही सीमित रह गयी। अहिंसा के नाम पर प्रतिष्ठित व्यवस्था को किसी प्रकार की परेशानी में न डालने की नीति, सत्याग्रह की भावना का विचार पूर्वक विरोध तथा "राजनीति के दिन लद गये" जैसे उद्योग सर्वोदय आन्दोलन के लिए स्वाभाविक हो गये।

इन नीतियों के प्रति असन्तोष उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा था। तभी सर्व सेवा संघ ने स्थिति का यथार्थ मूल्यांकन करते हुए गत वर्ष सेवा ग्राम में ही राष्ट्रीय परिषद आयोजित की। आशा बंधने लगी थी कि सर्वोदय आन्दोलन राजनीति (*सत्ता की राजनीति नहीं*) से ही सन्यास की अपनी नीति में सुधार लाने पर विचार कर रहा है। परन्तु सर्वोदय में एक प्रबल आध्यात्मिक अल्पमत ने सारा पासा ही पलट दिया और संघ के मंत्री जय साहब ■ कार्यक्रम के 'राजनीतिकरण' के शब्द वापस लेने पर मजबूर कर दिया गया। इस तरह संघ की नयी पहल को विफल कर दिया गया।

इधर देश में सर्वोपरि राजनीतिक भ्रष्टाचार सदाचार के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा। राजनीति अवसरवादियों की दासी बन गयी। जनता द्वारा इसके विरोध का श्रीगणेश गुजरात में हुआ। वहां के सर्वोदयी नेताओं ने जनता की उचित मांगों का साथ दिया। देश के सर्वोदय आन्दोलन के संवेदनशील नेतृत्व को अपने सामाजिक दायित्व की प्रतीति होने लगी। तीव्र आत्मालोचन का दौर शुरू हुआ। गुजरात के वयोवृद्ध सर्वोदय नेता रविशंकर महाराज तथा जयप्रकाश नारायण ने गुजरात जन-आन्दोलन से सबक सीखा। उसी भावना से जयप्रकाश बाबू अपने निष्काम भावी सर्वोदयी नेताओं के साथ बिहार में आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं। देश के प्राय समूचे सर्वोदय समाज का समर्थन उन्हें प्राप्त है।

इसी बीच राष्ट्रीय स्तर पर भ्रष्टाचार, तानाशाही तथा जनविरोधी सरकारी नीतियों के विरुद्ध दलगत राजनीति से मुक्त एक राष्ट्रीय मंच की आवश्यकता की पूर्ति के लिए १३-१४ अप्रैल को गांधी शान्ति प्रतिष्ठान नयी दिल्ली में जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में जनतंत्र समाज (सिटीजन फॉर डेमोक्रेसी) का उद्घाटन हुआ। इसके उद्देश्यों में *कहा गया कि यह समाज उन सभी व्यक्तियों को* एकत्र करने का प्रयास करेगा जो जीवन के सभी क्षेत्रों—सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक—में जनतांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा चाहते हैं और जो जनतंत्र को सुरक्षित तथा सुदृढ़ करने के लिए सक्रिय कदम उठाना चाहते हैं। यह समाज कोई राजनीतिक दल नहीं होगा और और न ही वह किसी राजनीतिक दल का समर्थन अथवा विरोध ही करेगा। वह जनता को जनतंत्र के सिद्धान्तों का प्रशिक्षण देगा आदि।

इसी में संविधान के अनुसार ५ मई को *गांधी शान्ति-प्रतिष्ठान में समाज की दिल्ली* शाखा का गठन हुआ। कोई १०० सदस्य एवं प्रत्याशी सदस्य उपस्थित थे। २१ व्यक्तियों की कार्यकारी समिति का निर्वाचन हुआ। समिति के अध्यक्ष पद के लिए वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी भीमसेन सच्चर चुने गये। उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए अखिल भारतीय लोक सेवक मण्डल (सर्वेन्ट्स आफ पीपुल्स सोसाइटी) के मंत्री सेवक राम। एस० डी० शर्मा महामंत्री तथा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के श्री रूपनारायण जो अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद के मंत्री भी हैं, मंत्री चुने गये। युवा वर्ग के प्रतिनिधि विनोद कुमार निर्वाचित हुए। छात्रों तथा युवकों को सगठित करने के लिए एक उपसमिति भी बनाई गई। समाज का मुख्य कार्यालय लाजपत नगर में रहेगा और उसकी क्षेत्र का कार्यालय गांधी शान्ति प्रतिष्ठान में रखा जायेगा।

इस बैठक में एक प्रस्ताव पारित हुआ जिसमें भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए कुछेक ठोस सुझाव दिये गये हैं और समाज की ओर से कारगर उपायों के लिए एक कार्यक्रम तैयार किया गया है। इसके अतिरिक्त वस्तुओं की मूल्यवृद्धि की रोकथाम तथा शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन की मांग की गई है। अन्याय के विरुद्ध अहिंसात्मक प्रतिरोध का संकल्प भी लिया गया।

इस उद्घाटन सभा के तुरन्त बाद कार्यकारी समिति की बैठक हुई जिसमें कार्यक्रम के क्रियान्वयन पर चर्चा के बाद पाया गया कि १९ मई को समाज की दिल्ली शाखा के तत्वावधान में एक सार्वजनिक सभा की जायेगी जिसमें जनता को आम शिकायतों के निराकरण के उपाय सुझाये जायेंगे और जनता को अहिंसात्मक संघर्ष के लिए प्रशिक्षित एवं संगठित किया जायेगा।

नई दिल्ली —जगतराम साहनी

सूचना

रेल हड़ताल के कारण 'भूदान-यज्ञ' साप्ताहिक का १३ मई का अंक प्रकाशित नहीं हो सका इसके लिये हमें खेद है। कृपया एजेन्ट अपने हिसाब में नोट करेंगे। पाठकों को सुविधा के लिये इस अंक में हम आठ पृष्ठ अतिरिक्त दे रहे हैं। —व्यवस्थापक

जनता का लोकतंत्र पर से ही विश्वास न उठ जाए

२७, २८ और २९ अप्रैल को इन्दौर में हुई लोक स्वराज्य संगोष्ठी बिना कोई ठोस कार्यक्रम तय किये समाप्त हो गई। अन्तिम दिन संगोष्ठी की ओर से एक निवेदन अवश्य जारी किया गया। पहले यह गोष्ठी २०, २१ और २२ अप्रैल को भोपाल में होने वाली थी और इसमें भाग लेने के लिए श्री जयप्रकाश जी भी आने वाले थे। जे० पी० अस्वस्थता के कारण नहीं आ पाये और बाद में तारीखें बदल कर गोष्ठी इन्दौर में की गई। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा गोष्ठी में तीनों दिन मौजूद रहे।

गोष्ठी के आयोजन की रूप रेखा काफी पहले से बन चुकी थी और जब रूपरेखा बनी थी तब तक बिहार आदि स्थानों पर जो कुछ हुआ उसकी कोई भनक भी नहीं थी। इस लिए संगोष्ठी में लोकस्वराज्य से सम्बन्धित सामान्य विषयों के अतिरिक्त नगर पालिकाओं तथा नगर-निगमों के चुनाव में पक्षमुक्त लोक प्रतिनिधित्व पर ही विशेष रूप से विचार करने और कार्यक्रम विकसित करने का निश्चय किया गया था? हालांकि गोष्ठी की सामान्य बहसों में बिहार के आन्दोलन और उसमें जे० पी० तथा अन्य सर्वोदय मित्रों के सक्रिय रूप से जुड़ने की चर्चा पुरजोर शब्दों में की गई, पर अपने निवेदन और निर्णयों में संगोष्ठी के आयोजकों ने गोष्ठी के पूर्व घोषित उद्देश्यों की मर्यादा का पूरी तरह से पालन किया। गोष्ठी का आयोजन सर्व सेवा संघ और गांधी शान्ति प्रतिष्ठान की ओर से किया गया था और नरेन्द्र दुबे प्रमुख आयोजक थे। गोष्ठी में मध्यप्रदेश के सर्वोदय साथियों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली व राजस्थान के भी कुछ लोगों ने भाग लिया। सर्वोदय कार्य से सहानुभूति रखने वाले इन्दौर नगर के कुछ सामान्य नागरिक भी गोष्ठी में समय-समय पर उपस्थित रहे।

गोष्ठी की बैठकों में औसत लगभग चालीस लोग मौजूद रहे।

गोष्ठी के निवेदन में व्यक्त किया गया कि विश्व में आज दलों पर आधारित संसदीय प्रजातन्त्र और एक दलीय राजतन्त्र की पद्धतियाँ चल रही हैं। इनकी बुराइयों से परेशान होने के बावजूद लोग मजबूरी में दलीय प्रजातन्त्र को बेहतर प्रणाली मान कर चला रहे हैं। परन्तु वास्तविकता यह है कि गांधी, विनोबा, जयप्रकाश और एम० एन० राय जैसों ने सच्चे लोक-स्वराज्य की जो रूपरेखा प्रस्तुत की है, वह अभी तक के विकसित दलीय प्रजातन्त्र से अधिक उन्नत और व्यावहारिक है। विशेषकर हमारे देश के लिए तो निश्चित रूप से वह बहुत उपयुक्त है। अतः अब समय आ गया है कि दलीय प्रजातन्त्र के विकल्प के रूप में लोक स्वराज्य की स्थापना के कार्य में अग्रसर हुआ जाए जिससे जनता का लोकतन्त्र पर से ही विश्वास न उठ जाए।

सिफारिशों के अनुसार देश के विभिन्न प्रदेशों में जन-आक्रोश द्वारा संकट पूर्ण स्थिति का जो निर्माण हो रहा है, उसके प्रति सरकारों, विभिन्न दलों, संस्थाओं, नागरिकों और सर्वोदय कार्यकर्ताओं की क्या भूमिका होनी चाहिए, इस पर गोष्ठी में चर्चा हुई। संगोष्ठी में प्रादेशिक सरकारों के सम्बन्ध में आम राय रही कि वे आज की स्थिति में प्रदेशों में भी सर्वदलीय सरकारों की शक्ति से समस्याओं का रचनात्मक समाधान कर सकती हैं। अतः उन्हें भी इस दिशा में खोज करनी चाहिए। उद्योग-व्यापार की संस्थायें भी समस्याओं के समाधान में तत्परतापूर्वक सक्रिय हों।

प्रकाशित सिफारिशों के अनुसार संगोष्ठी में सहमति रही कि लोकस्वराज्य की प्रक्रिया के साथ चुनाव की प्रक्रिया में बुनियादी परिवर्तन की आवश्यकता है और राजनीतिक दलों की कार्य विधियों में परिवर्तन की जरूरत है। जब तक हमारा लोकस्वराज्य का बुनियादी काम पूरा नहीं हो जाता, तब तक वर्तमान ढांचे में परिवर्तन का कार्य चलाना है। लोकतान्त्रिक संस्थाओं में प्रतिनिधियों का प्रत्यक्ष दायित्व मतदाता से हो, जनता निर्वाचक मण्डलों द्वारा अपने प्रतिनिधि खड़े करे। जन प्रतिनिधित्व का विचार व्यावहारिक है। चुनावों की अनावश्यक और अवैधानिक व्यय की विशालता ने भ्रष्ट कर दिया है, अतः चुनाव-व्यय पर प्रभावशाली अंकुश लगाया जाए। इसके लिए चुनाव-आयोग से भी चर्चा कर कारगर पद्धति का विचार किया जाए। लोकतान्त्रिक संस्थाओं की स्थापना मात्र से लोकतन्त्र प्रकट नहीं हो सकता, बल्कि यथार्थ लोकतन्त्र जनसामान्य की सहकारात्मक प्रवृत्ति से ही सजीव, संवेदनशील और सक्रिय रूप ग्रहण कर सकता है।

जन प्रतिनिधित्व की प्रक्रिया के सम्बन्ध में गोष्ठी की सिफारिशों में कहा गया कि ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में जन अभिक्रम और पुरुषार्थ द्वारा निर्वाचक मण्डल बनें और उनके द्वारा जनप्रतिनिधि चुने जायें। स्वायत्त निकायों को भंग करने और उनका कार्यभार प्रशासनिक अफसरों के जिम्मे कर देने के कदम को अनुचित ठहराते हुए जनमत को अपने हितों की रक्षा तथा स्वायत्त निकायों में प्रभावशाली दखल करने के लिए समुचित भूमिका निभाने के अवसरों की खोज की जाए। मोहल्ला सभाओं, वार्ड सभाओं के सम्बन्ध में स्वायत्त निकायों के कानून में परिवर्तन कर उन्हें कार्य संचालन के लिए समुचित साधन प्रदान किये जाएं। नगर-स्वराज्य के मुख्य आधार के रूप में मोहल्ला सभाओं को विकसित किया जाए। मोहल्ला स्वराज्य सभायें अपने सदस्यों के लिए दैनिक उपयोग की सामग्री उपलब्ध कराएगी और स्वच्छ

(शेष पृष्ठ २४ पर)

भूदान यज्ञ : सोमवार, २० मई '७४

परिस्थितियां हम में से हर एक को सत्याग्रही बना देंगी : जे० पी०

(जयप्रकाश नारायण से श्रवणकुमार गर्ग और ओमप्रकाश दीपक की बातचीत)

प्रश्न—इन दिनों तो आप पर असाधारण बोझ पड़ रहा है। आपका स्वास्थ्य कैसा है ?

उत्तर : स्वास्थ्य तो आप लोग देख ही रहे हैं कितना खराब है। कई बार तो रोना आता है अपनी बेबसी पर, कितना कुछ करना चाहता हू, कर नही पाता स्वास्थ्य के कारण। बच्चनजी की एक कविता याद आती है—तीर पर कैसे रुकूं मैं, आज लहरों मे निमन्त्रण। दिसम्बर में 'यूथ फार डेमोक्रेसी' कार्यक्रम के लिए मैंने युवकों का आवाहन किया था। पटना विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच भी गया। फिर कानपुर, लखनऊ और आगरा हो कर दिल्ली पहुचा तो गुजरात की नव-निर्माण समिति के लोग आ गये। आग्रह किया कि गुजरात चल कर हमारा मार्ग-दर्शन कीजिए। उन्होंने तो यहा तक कहा कि हम आपको हाइजेक करने आये हैं। उनके आग्रह को मैं टाल नही सका। चारो दिन गुजरात मे बहुत व्यस्त कार्यक्रम रहा। इतनी व्यस्तता रही कि दिल्ली लौट कर बीमार पड़ गया। कुछ ठीक होने पर पटना लौटा तो यहा के डाक्टरों ने कहा कि 'प्रोस्टेट ग्लैंड' (पुरुष ग्रन्थि) का आपरेशन करना होगा। पुराना हृदय रोग भी बीच-बीच मे तग करता है।

प्रश्न—गुजरात के आन्दोलन की उपलब्धि और संभावनाओं के बारे मे आप क्या सोचते हैं ?

उत्तर—नव निर्माण समिति के लोगों से गुजरात मे जो बात मैंने कही थी, वही दोहराना चाहता हूं। उन लोगों से और उनके नेता मनीषी जानी से भी मैंने कहा था कि यह ठीक है आपने-अपने संगठन का नाम नव-निर्माण समिति रखा है, पर निर्माण की कोई रूप-रेखा आपने बनाई है क्या ? अगर नही बनाई है तो उसे कुछ शक्ल देनी चाहिए। आप लोगों ने आन्दोलन किया, चिमनभाई पटेल ने इस्तीफा दे दिया और आप लोगों की एक फतह हो गयी। चिमनभाई गये, आप लोगों ने विधान सभा के विघटन की माग उठाई। लेकिन उसके बाद क्या ? जो अगली विधान सभा चुनी जायेगी। उसके लिए भी चुनाव तो पुरानी प्रणाली से ही होंगे न ! रविशंकर महाराज का गुजरात में सभी सम्मान करते हैं। नव-निर्माण समिति के लोग भी उनका कहा मानते हैं। छात्रों के आन्दोलन को उनका समर्थन भी प्राप्त है। उनसे भी मैंने यही कहा। दादा (रविशंकर महाराज) ने कहा कि एक साल बाद नये चुनाव हों, ऐसी हमने माग की है। इस एक साल में हम गाव-गाव जा कर लोगों को समझायेंगे कि किसे वोट देना चाहिए। यह ठीक है कि दादा एक चुनाव के लिए लोगों को समझा देंगे इससे संभव है कुछ अच्छे लोग चुन लिये जाय। पर चुनाव तो हर पाच साल बाद, या विधान सभाएं इसी तरह भग होती रही तो बीच-बीच मे भी होंगे हर बार कौन जा कर समझायेगा ?

यह जो ढाचा कायम है आज, जिस का चुनाव भी एक अंग है, जब तक नही बदलता कुछ नया नही निकलेगा। और उसके लिए जरूरी है कि एक सशक्त संगठन पूरे आन्दोलन मे से खड़ा हो। लेकिन यह तो आगे की बात है। इस समय भी लोकतंत्र का जो ढाचा है, उसके अन्तर्गत चुनाव की पद्धति मे परिवर्तन करना जरूरी है। अभी तो जैसा उत्तरप्रदेश में हुआ, ३२ प्रतिशत मत जिस दल को मिले, उसे बहुमत मिल गया और ६८ प्रतिशत मत बेकार हो गये। यह पद्धति अत्यन्त दोषपूर्ण है, इसे बदलना जरूरी है। लेकिन जनता लोकतन्त्र की प्रहरी बन सके, इसके लिए नयी संस्थाओं का निर्माण और विकास करना होगा जिनके पीछे संगठित जनशक्ति हो। तभी समस्याओं का स्थायी हल निकल सकेगा।

प्रश्न—बिहार मे तो आपने गफूर साहब से इस्तीफे की माग की थी।

उत्तर—गफूर साहब के इस्तीफे के बारे मे मैंने जो पहला बयान दिया था, उसका एक खास सन्दर्भ था। इस बारे मे पटना से प्रकाशित 'इण्डियन नेशन' के २६ मार्च के अंक मे सम्पादक के नाम अपने पत्र मे मैंने अपना आशय स्पष्ट भी कर दिया था कि अठारह मार्च को पटना मे शासन की जो विफलता उजागर हुई, जिसको स्वयं गफूर साहब ने भी स्वीकारा है, उसे देखते हुए गफूर साहब अगर उस समय तुरन्त इस्तीफा दे देते तो जनता मे उनका जो स्थान आज है, वह कहीं अधिक बढ़ जाता।

अपनी बात मैं पहले भी स्पष्ट कर चुका हूं कि मुझे इसमे कोई दिलचस्पी नही है कि कौन सा मंत्रिमण्डल टूटता है या बनता है विधान सभा भंग होती है या पुनर्निर्वाचन होता है। चाहे जो मंत्रिमण्डल बने या जो भी सरकार आये वह भ्रष्टाचार महंगाई, बेरोजगारी दूर करेगी या शिक्षा की पद्धति मे कोई क्रांतिकारी परिवर्तन करेगी, इसमे मेरा कतई विश्वास नहीं है। इसलिए मैं तो बीमारी की जड़ पर प्रहार करना चाहता हूं और उसके लिए कार्यक्रम सोच रहा हू। कार्यक्रम अब केवल आन्दोलनात्मक नही रह →

सकता, उसे तो संघर्ष का रूप देना पड़ेगा। मेरे सामने प्रश्न है कि नीचे से ऊपर तक भ्रष्टाचार व्याप गया है, मंहगाई सारी हदें नाप गयी है, इसके विरुद्ध किस प्रकार से शान्तिमय संघर्ष या सत्याग्रह किया जाये? इतना मुझे लगता है कि परिस्थितियां हममे से हर एक को सत्याग्रही बना देंगी।

प्रश्न : बिहार के वर्तमान आन्दोलन के बारे में आप क्या सोचते हैं और इसे किस ढंग से चलाना चाहते हैं?

उत्तर—बिहार छात्र-संघर्ष-समिति की संचालन समिति के कुछ सदस्यो के साथ जब मेरी बातचीत हुई थी तब एक सदस्य ने बहुत जोर देकर कहा था कि—जय प्रकाशजी केवल मार्गदर्शन से ही काम नहीं चलेगा आपको हम लोगो का नेतृत्व भी करना पड़ेगा। मुझे लगा था कि अन्य उपस्थित सदस्य भी इस बात से सहमत थे। मैंने तब उनसे कहा था कि मैं हृदय से उनके साथ हूं और उनका समर्थन भी करूंगा, पर मेरी कुछ शर्तें हैं। पहली यह है कि आन्दोलन पूर्णतया शान्तिमय हो तथा अश्रु गैस, लाठी, गोली के सामने भी आन्दोलनकारी शान्त रहें और सम्भव हो तो उन सब का डटकर मुकाबला करें। दूसरे यह कि छात्रो का कोई आन्दोलन हो तो उसे निर्दलीय ही रहना चाहिए और उसका नेतृत्व भी छात्रों के ही हाथ मे रहना चाहिए ऐसा मैं मानता हूं और भी ऐसा ही मानना चाहिए।

मुझे लगा कि आंदोलन को अगर व्यापक बनाना है तो उसे नये सिरे से गठित करना होगा। छात्र संघर्ष समिति की संचालन समिति मे अधिकांश लोग विद्यार्थी परिषद, समाजवादी युवजन सभा, छात्र युवा समाज तथा कांग्रेस के सदस्य रहे हैं। मेरे कहने पर उन लोगो ने अपने-अपने दलो से इस्तीफे दे दिये हैं, पर इस्तीफा तो ऊपरी बात है। असली प्रश्न है कि वे आगे भी अपने-अपने दलों से निर्देश प्राप्त करके काम करते हैं या नहीं। इसकी सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि राजनीतिक दल अपने निहित स्वार्थों के लिए स्थिति का दुरुपयोग करने की चेष्टा करें। मुझे राजनैतिक दलो से कोई चिढ़ नहीं है, उन सबका वर्तमान लोकतन्त्र में अपना स्थान है। परन्तु आज जो राजनीतिक दल सत्ता मे हैं वे सत्ता मे ही बने रहने मे और जो नहीं है वे सत्ता प्राप्त करने के ही आकांक्षी हैं। मुझे नहीं मालूम कि देश मे ऐसा भी कोई दल है जो पक्षपात और भ्रष्टाचार की बुराइयो से दूर हो। बिहार मे लगभग सभी राजनीतिक दलो के मन्त्रिमण्डलो को आज-माया जा चुका है और उसका सबक अभी ताजा ही है।

छात्रो से मैंने यह भी पूछा था कि वे आंदोलन कितने दिन चलायेंगे तो तब उन्होने कहा था कि डेढ़ महीने चला सकते हैं। और उसके बाद? तो कहा कि उसके बाद परीक्षाएं आ जायेंगी। अगर पूरी व्यवस्था को नीचे से बदलना है तो डेढ़-दो महीने के आंदोलन से नहीं होगा। आंदोलन लम्बा चले तो इसमे ऐसे निष्ठावान लोग ही चाहिए जो पूरे समय तक साथ रह सकें। तरुण शांति सेना इसमे सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है अगर निर्दलीय छात्र जो बड़ी संख्या मे आंदोलन मे सक्रिय हुए हैं उसमे आयें।

प्रश्न —क्या आपने आंदोलन के लिए कोई कार्यक्रम भी तय किया है?

उत्तर —बिहार देश का सबसे गरीब प्रांत है और बिहार मे ही सबसे अधिक भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार सिर्फ सरकार और व्यापार मे ही नहीं है, पूरी समाज रचना मे है। मेरे लिए भ्रष्टाचार केवल एक नैतिक सवाल ही नहीं है, जनता के पेट से इसका सीधा संबंध है। बिहार का आंदोलन युवा छात्रो का आंदोलन है। बड़ी संख्या मे निर्दलीय और शांति मे विश्वास करने वाले छात्र इस आंदोलन से जुड़े है। मैंने उनसे कहा कि यह आपके लिए स्वर्ण अवसर है और यह आपका आंदोलन है। इसको चलाना आप की जिम्मेदारी है। आंख बन्द किये कब तक रहोगे। आपको संकल्प करना होगा कि हम भ्रष्टाचार चलने नहीं देंगे। आज का यह जो तन्त्र है, टूट रहा है, इसलिए पूरी व्यवस्था पर ही चोट करनी पड़ेगी। गफूर साहब हट जायें, और कोई आ जाये, इससे यही होगा कि फिर बेताल पीपल के झाड़ पर या नागनाथ की जगह सांपनाथ।

जरूरत इस बात की है कि गांवों में ग्राम सभा की तरह शहरों मे सौ-दो सौ घरो को लेकर पड़ोस सभाएं बनें, कई पड़ोस सभाओ को मिला कर मोहल्ला परिषदें बने। मोहल्ले के युवा लोग इन सभाओ, परिषदो का नेतृत्व करें। अपने ही घरो से भ्रष्टाचार मिटाने की शुरुआत करें। सारा आंदोलन महंगाई के साथ भ्रष्टाचार को लेकर चला है, इसलिए इसमे भाग लेने वाले छात्रो को अपने आचरण को भी कसौटी पर रखना होगा। तभी उन का असर आम जनता पर हो सकेगा। आये दिन की बात है विद्यार्थी परीक्षा मे नकल करते है, पकड़े जाते हैं तो शिक्षक पर छुरा निकाल लेते हैं। परीक्षा में नापास होने पर या कम अंक मिलने पर गलत तरीको से नम्बर बढ़वाते हैं और उच्च श्रेणी प्राप्त करने की चेष्टा करते है। जरा-जरा सी बात पर ये ही विद्यार्थी आग लगा देते हैं और जनता की सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाते हैं। इस प्रकार की और भी बातें हैं जो सदाचार मे तो नहीं ही आती, इनकी गिनती भ्रष्टाचार मे ही होगी। अगर ऐसे ही विद्यार्थी भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन चलायेंगे तो उसका असर नहीं होगा। मेरे कहने का यह मतलब कदापि नहीं कि सारे विद्यार्थी सन्त हो जायें। पर एक साधारण सदाचरण की जो अपेक्षा एक विद्यार्थी से की जा सकती है, उसे आंदोलन मे भाग लेने वाला हर एक विद्यार्थी पूरा करे यह मैं जरूर चाहता हूं।

छात्रो की बनाई हुई मोहल्ला सभाएं अगर सक्रिय रूप से व्यवस्था परिवर्तन का काम करेंगी तो उनके आंदोलन मे आम आदमी भी जुड़ेगा तब जनता अपने उम्मीदवार खड़े करेगी जिस पर उसका काबू होगा आज तो हालत यह है कि उम्मीदवार चुने जाते है जनता के वोट से लेकिन उनकी शिखा रहती है राजनीतिक दलों के आला कमान के हाथो मे।

प्रश्न —ये तो व्यापक कार्यक्रम हैं। आप कहते रहे हैं कि छात्रों को अपना आंदोलन मांगो से सीधे जोड़ कर चलाना चाहिए। उस बारे मे आपके क्या सुझाव हैं?

उत्तर —मेरे ध्यान मे छात्रों की चार मुख्य मांगे ऐसी है जो जनता की भी मांगे हैं। इनके आगे कुछ मांगे छात्रो की हैसियत से की गई हैं। भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोज-

→
गारी और शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन ये जनता की भी मांगे है। महंगाई के बारे में तो मैं कहता रहा हूं कि मुख्य रूप से सरकार की अर्थनीति के कारण ऐसी भयकर स्थिति उत्पन्न हुई है। सारी दुनिया में ही मुद्रास्फीति है, यह बात केवल आंशिक सत्य है, क्यों कि भारत में बाकी दुनिया की अपेक्षा कई गुना अधिक महंगाई बढी है। शासन की अयोग्यता और गलत नीति इसके लिए जिम्मेदार है यह पूरे देश का मामला है। लेकिन आज जो चौखटा बना है उसके अन्दर बिहार में संघर्ष समितियां या ग्राम-सभा पड़ोस-सभा आदि कुछ कर सकती हैं। एक इलाके में देख लें कितना राशन चाहिए, और प्रशासन को सूचित कर दें कि हमें कोई बिचौलिया नहीं चाहिए। गेहूं, चावल, चीनी, जो भी हो, प्रशासन हमें दे दे। हम स्वयं ही उसे बांट देंगे।

इसी तरह थोक व्यापारियों, खुदरा व्यापारियों से दाम के बारे में बात करें। लागत पर उचित मुनाफा आप ले लीजिये, लेकिन मुनाफाखोरी, जमाखोरी हम नहीं करने देंगे। आवश्यक वस्तुएं बाजार से गायब हो जाती है, लेकिन चोरबाजार में महंगे दामों पर जितनी चाहे मिल जाती है। जन-संगठनों में इतनी शक्ति हो, इतनी छात्र शक्ति हो कि वे इन चीजों को न चलने दें, तभी इनको रोका जा सकता है। जनता, शासन, व्यापारी छात्र, सब मिल कर तय करें। जनता और छात्र प्रहरी बनें, होशियार रहें कि कोई गलत काम न होने पाये। तो शासन और व्यापार पर अंकुश रखा जा सकता है छात्र-संघ के माध्यम से जनशक्ति इस काम के लिए संगठित हो सकती है।

भ्रष्टाचार के मामले में तो मैं सोचता हूं कि छात्रों की एक समिति बनाऊं जो भ्रष्टाचार के तथ्यों की जांच करें। मन्त्रियों और बड़े अफसरों के बारे में पता लगायें कि उनमें कौन भ्रष्ट लोग हैं। सभी भ्रष्ट हैं, ऐसा कह देने से कुछ करने का आधार नहीं बनता। तथ्यों का पता लगाना होगा फिर उसके आधार पर कार्यवाही हो।

शिक्षा में परिवर्तन के दो पक्ष हैं। पूरी शिक्षा व्यवस्था में आमूल परिवर्तन तो दूरगामी लक्ष्य है। लेकिन अभी कुछ तात्कालिक सुधार करना भी जरूरी है। मैं शिक्षा शास्त्री नहीं हूं। लेकिन जो कुछ भी मेरे विचार है, उन्हें समय मिलते ही सामने रखूं गा। बेरोजगारी का सवाल शिक्षा की पद्धति और अर्थनीति से जुड़ा है।

प्रश्नः—चन्द्रशेखर का एक वक्तव्य अखबारों में आया था कि आपके और प्रधान मन्त्री के बीच विवाद समाप्त हो जाना चाहिए। उस पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?

उत्तरः—प्रधानमन्त्री के साथ मैंने तो कोई विवाद शुरू नहीं किया उन्होंने मेरे निजी जीवन पर जिस तरह आक्षेप लगाया है, उस स्तर पर उतर कर मैं तो उन्हें कोई जवाब दे नहीं सकता। जहां तक राजनीतिक दलों की बात है, मैं बराबर कहता रहा हूं, बल्कि मैंने इसके लिए आग्रह किया है कि छात्र आंदोलन निर्दलीय रहे। दलीय राजनीति में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। लेकिन देश की जो हालत हो गयी है उसे अब चुपचाप सहना असंभव है। महंगाई की मार ऐसी है कि लोग अपने बच्चे बेच रहे है, भूखों मरने से बचने के लिए जहर खा कर जान दे रहे है। लोगों की ऐसी यातना और अन्याय के विरुद्ध मैं लगातार आवाज उठाऊंगा, यह मेरा संकल्प और प्रण है। महंगाई और भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनता के शान्तिमय संघर्ष और सत्याग्रह के लिए जो कुछ भी मुझ से बन पड़ेगा, वह मैं करूंगा। ●

(पृष्ठ २१ का शेष)

पानी, रोशनी, सफाई तथा आरोग्य इत्यादि की व्यवस्था करेगी। आवश्यकतानुसार ये सभायें युवक मण्डल, महिला मण्डल तथा सफाई सेना इत्यादि का गठन भी कर सकती है। मोहल्ला सभाओं तथा नगर पालिका, नगर निगम के बीच की मुख्य कड़ी होगी वार्ड स्वराज्य सभा, जिसके जिम्मे मुख्यतः समन्वय का काम होगा।

गोष्ठी की अन्य सिफारिशों में कहा गया कि जनमानस निर्माण के लिए प्रत्यक्ष रूप से देश के प्रत्येक नागरिक का दरवाजा खटखटाया जाये। सिफारिशों में राजनीति वालों से यह अपेक्षा की गई कि वे देश में विचार-शिक्षण द्वारा लोक सेवा करते रहें। रचनात्मक संस्थाओं तथा सर्वोदय कार्यकर्ताओं से अपेक्षा की गई कि वे अपने वर्तमान कार्यक्रम को चलाते हुए लोक स्वराज्य के कार्यक्रमों में सामंजस्य की भूमिका बनाये रखें। इसी प्रकार सिफारिशों में सरकार से अपेक्षा की गई कि वे स्थिति के समाधान के लिए देश की विभिन्न शक्तियों से समझदारी के धरातल पर तत्काल संवाद (विचार-विमर्श) करें।

आम आदमी की समझ में आने वाली भाषा की बहस में न पड़ कर गोष्ठी के निवेदन की समीक्षा की जाए तो भी काफी कुछ अच्छी सिफारिशें गोष्ठी ने की हैं। गोष्ठी की चार बैठकों में जो चर्चायें हुईं वे और भी तेज थी और अन्यान्य कारणों से उन चर्चाओं को निवेदन में उछाला नहीं गया. होगा। इस सबके बाद जो सवाल परेशान करता है वह यह है कि 'जनमानस निर्माण के लिए प्रत्यक्ष रूप से देश के प्रत्येक नागरिक का दरवाजा खटखटाये जाने' की जो बात सिफारिशों में की गई है वह कब और कैसे शुरू होगी? देश के कई दुर्भाग्यों में एक यह भी रहा कि देश की सरकार को आजादी के बाद से इस बात के लिए लगातार गालियां दी जाती रहीं कि देश के आम आदमी के हित में जो योजनायें उसने बनाई उनका क्रियान्वय कभी नहीं हो सका, पर पिछले २५ वर्षों में देश के तटस्थ चिन्तकों, बुद्धिजीवियों, राजनीतिक दलों के लोगों और अन्य सभ्य कहे जाने वाले लोगों ने भी 'गरीब' की भलाई के लिए जितने प्रस्ताव 'पास' किये वे भी कागजों के बण्डलों में जमा हो कर रह गये। इसलिए इस बात की एक वाजिब चिन्ता अब की जानी चाहिए कि लोग गोष्ठियों और सम्मेलनों में उनकी निरर्थकता के कारण जाना छोड़ दें उसके पहले ही उनकी सार्थकता को स्थापित किया जा सके।

श्रवणकुमार गर्ग

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २७ मई, '७४
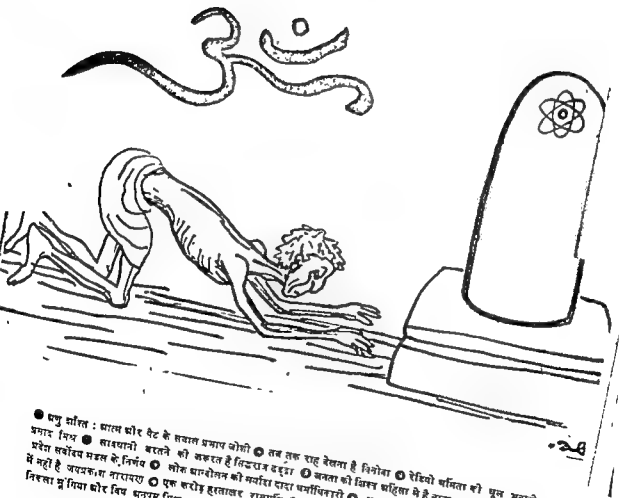
● अणु शक्ति : आत्म और पेट के सवाल प्रभाष जोशी ● तब तक राह देखना है विनोबा ● रेडियो धर्मिता की धूल भवानी प्रसाद मिश्र ● सावधानी बरतने की जरूरत है सिद्धराज ढड्ढा ● जनता की शक्ति अहिंसा में है नारायण देसाई ● उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल के निर्णय ● लोक आन्दोलन की मर्यादा दादा धर्माधिकारी ● भ्रष्टाचार सिर्फ प्रशासन और सरकार में नहीं है जयप्रकाश नारायण ● एक करोड़ हस्ताक्षर राममूर्ति ● कुष्ठ सेवक-सुन्दरलाल डॉ० रविशंकर शर्मा ● मुंगेर में निरसा मुंगिया और विष अनुपम मिश्र

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० | २७ मई, '७४ | अंक ३५

१९, राजघाट कॉलोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

अणुशक्ति : आत्मा और पेट के सवाल

अणु विस्फोट करने के बाद भारत सरकार ने घोषणा की है कि इस शक्ति का उपयोग वह सिर्फ शान्ति और निर्माण के लिए करेगी और उसके इस इरादे में अधिकांश देशों ने अविश्वास प्रकट किया है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का यह स्वभाव नहीं है कि वह किसी देश के पवित्र इरादों में विश्वास करे। जब किसी देश के पास ऐसी कोई शक्ति आ जाये जो भयंकर संहार कर सकती है तो असुरक्षा के भय से त्रस्त यह संसार शंकाशील हो उठता है। दस साल पहले जब चीन ने विस्फोट किया था तो यह जानते हुए भी कि उसकी मारक शक्ति कितनी कम है हम कितने अधिक चिन्तित और परेशान हुए थे। पाकिस्तान का हथियारों से लैस होना हमारे लिए हमेशा बौखलाहट की हद तक पहुंचने वाली चिन्ता का कारण रहा है जब कि सब जानते हैं कि शक्ति के मामले में पाकिस्तान से हमारी कोई बराबरी नहीं है। दियगो गार्सिया में सामरिक अड्डा बनाने के अमरीकी प्रस्ताव का हमने कितना विरोध किया है। क्या हम जानते नहीं कि दक्षिण पूर्व एशिया पर असर जमाने के लिए अमरीका ऐसे अड्डों के बिना भी काम चला सकता है? अगर पड़ोसियों के हथियारों से हमें अपनी सुरक्षा को खतरा महसूस होने लगता है और महाशक्तियों के इरादों को हम शंका की दृष्टि से देखते हैं तो हमारे हथियारों से पड़ोसियों का चिन्तित होना और महाशक्तियों का शंकाशील होना स्वभाविक है। दूसरों की अणुशक्ति अगर हमारे लिए संकट का कारण है तो हमारी अणुशक्ति दूसरों के लिए शिवशक्ति नहीं हो सकती। इसलिए भारत का अगर सचमुच यह इरादा है कि उसकी अणुशक्ति पूरे संसार के लिए शिवशक्ति सिद्ध हो तो उसे पहले दूसरों से भयभीत होना छोड़ना पड़ेगा और मन वचन तथा कर्म से स्थापित करना होगा कि उसके लक्ष्य पवित्र हैं।

इस देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो कहेंगे कि यह जिम्मेदारी हमारी ही क्यों हो? क्या पहली अणुशक्ति, अमरीका का दुनिया और मनुष्यता के प्रति कोई उत्तरदायित्व नहीं है? उसी ने तो हिरोशिमा पर पहला अणुबम गिरा कर एक लाख बीस हजार लोगों की जान ली थी। मनुष्यता पर इतना बड़ा अत्याचार करने के बाद भी वह कहाँ रुका? हाइड्रोजन बम तक उसने बनाया है। उससे भय खा कर रूस ने फिर ब्रिटेन ने और उससे भय खा कर फ्रांस ने, और फिर इन महाशक्तियों की ठेकेदारी तोड़ने के लिए चीन ने बम बनाये। इन देशों की अणुशक्ति कोई शांति और निर्माण के कार्यों में ही नहीं लगी है। अणुशक्ति का ज्यादातर महत्व और उपयोग संहारशक्ति के लिए ही है। दुनिया में अगर अभी तक तीसरा महायुद्ध नहीं हुआ तो इसका कारण अणुबम है क्योंकि उसने युद्धों को बेमतलब कर दिया है। तो जो शक्ति दूसरे देश को हम पर हमला करने से रोक सकती है और अनुपयोग में भी हमारी सुरक्षा की गारंटी दे सकती है उसका विस्फोट करने में क्या खराबी है? इससे तो बल्कि शांति ही बनी रहेगी। और फिर हमारा विस्फोट तो भूमिगत था। वातावरण के सदूषण का सबसे कम खतरा हमारी इस कार्यवाही से है और यह तो हमारा शुरू से वचन है कि हम शक्ति का उपयोग शान्ति के लिए करेंगे। जब अमरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे अपनी अणुशक्ति को शान्ति और निर्माण के कार्यों में लगा कर उसे शिवशक्ति सिद्ध करें तो दुनिया भर की नैतिक और मानवीय ठेकेदारी भारत पर ही क्यों लादी जाये? आखिर हमें भी एक राष्ट्र के नाते जीवित रहना है और अपनी लम्बाई-चौड़ाई और जनसंख्या के अनुरूप दुनिया के देशों में अपना स्थान स्थापित करना है।

ये सब दलीलें ओछी राष्ट्रीयता की कोख से नहीं अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की सच्चाई से जन्मी हैं। हमने देखा है कि पाकिस्तान से दो अनिर्णित युद्ध लड़ने और चीन से लड़ कर अपमानित होने के बाद दुनिया ने हमारा कोई सम्मान नहीं किया जब कि शान्ति और सह-अस्तित्व के पंचशीली सिद्धान्तों के हम जनक थे और शीतयुद्ध का तनाव कम करने में हमने बहुत महत्वपूर्ण रोल अदा किया था। दुनिया में हमारा रुतबा दिसम्बर ७१ में बढ़ा जब हमारी सेनाओं ने बांगला देश के मुक्ति युद्ध में पाकिस्तान को पराजित किया। दुर्भाग्य से आज के सभ्य और विकसित संसार में भी उसी को प्रतिष्ठा मिलती है जिसके पास कारगर अणुशक्ति है। वास्तविकता से आंखें मूंदना रेतीले तूफान के सामने शुतुरमुर्ग बनना है। भारत अब एक यथार्थवादी और अणुशक्ति सम्पन्न देश है और इससे हमारा गौरव बढ़ा ही है। दुनिया के छोटे-बड़े देश अगर हमारे विस्फोट की भर्त्सना करते हैं तो इसका कारण यह है कि हमने महाशक्तियों के संतुलन को अपने पक्ष में हिलाया है और छोटे देश भयभीत हैं तो उन्हें अभयदान हम दे सकते हैं।

और फिर अणुशक्ति का उपयोग कर सकने की तकनीकी क्षमता प्राप्त करना तो एक वैज्ञानिक उपलब्धि है। जिस तरह बिजली के आविष्कार और उपयोग ने क्रांति कर दी उसी तरह अणुशक्ति का उपयोग नये विश्व की क्रान्ति कर सकता है। हमें गर्व होना चाहिए कि हमारे वैज्ञानिकों ने यह कर दिखाया और सबसे कठिन तकनीकी शास्त्र पर अपना प्रभुत्व सिद्ध किया। विज्ञान और तकनीक में हम अब किसी से पीछे नहीं हैं। अणुशक्ति का उपयोग अब हम गरीबी हटाने और सामाजिक न्याय दिलाने

→

मे कर सकते हैं। अणु विस्फोट करके भारत ने कोई पाप नहीं किया है।

इन सब दलीलो के वजन को स्वीकार करने के बाद भी १८ मई का विस्फोट इस देश की आत्मा के गले नहीं उतरता। अभी हालाकि प्रधान मंत्री से ले कर साधारण पढ़ा लिखा आदमी तक गर्व से गर्दन ऊंची उठाये हुए है और आर्थिक संकट के इन त्रास-दायी दिनो मे भी उसे अपना मनोबल ऊंचा रखने का एक साधन मिल गया है। लेकिन कीर्ति की यह धूल विस्फोट से चढ़ी रेडियो धर्मी धूल से भी जल्दी बैठने वाली है। विस्फोट से थार के रेगिस्तान मे बनी सुन्दर पहाड़ी हमारी आंखो को ज्यादा दिन लुभा नही पायेगी। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और विकसित तकनीक के यथार्थ से ज्यादा बड़ा यथार्थ इस देश की आत्मा और पेट का है। विनोबा ने सच कहा है कि इस विस्फोट से शांति भी हो सकती है और भ्रांति भी। इससे शांति होगी इस बात पर तो इस देश के कई महत्वपूर्ण लोगों ने जोर दिया है लेकिन इस से भ्रांति क्या होगी इसे बताने का नैतिक साहस दुर्भाग्य है कि किसी ने नही दिखाया। आश्चर्य है कि यही वह राष्ट्र है जिसके पिता ने अणु की शक्ति के प्रकटन के बाद कहा था कि एक हजार अणुबमो से ज्यादा शक्ति सत्य और अहिंसा मे है और भारत अगर अपनी आत्मा के इस रास्ते पर चला तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे मिटा नहीं सकती। उनके जाने के छब्बीस साल बाद हमने हिरोशिमा पर गिरे बम की ताकत का विस्फोट किया और यह याद दिलाने वाला कोई नहीं है कि यह अवसर गर्व का नहीं आत्म परीक्षण का है। कोई नहीं कहता कि हम अपने सारे इतिहास मे हिंसा की निरर्थकता और अहिंसा की आवश्यकता पर जोर देते रहे हैं और आजादी के बाद संसार मे स्थायी शांति की स्थापना हमारी आस्था का एक प्रमुख स्तंभ रहा है। इस शक्ति के दुरुपयोग के खतरो से हम सारे संसार को चेतावनी देते रहे हैं और इसकी कोई ग्यारंटी हमने नही की है कि हमारी अणु शक्ति का उपयोग सिर्फ शांति और निर्माण के कार्यों मे होगा। आखिर सरकार को अणुबम बनाने से आगरूक जनमत ही तो रोक सकता है। लेकिन है कोई विरोध अथवा

(बाकी पेज १६ पर)

तब तक राह देखना है : विनोबा

भारत जब मंगल यात्रा करके आयेगा तब बाबा अभिनन्दन करेगा। त[illegible] तक राह देखना है। मंगल को संस्कृत में भौम यानी भूमिपुत्र कहते हैं। य[illegible] प्रयोग का आरम्भ है।

शान्ति के लिए ही यह किया है, इसका उपयोग शान्ति के लिए भी ह[illegible] सकता है और भ्रान्ति के लिए भी हो सकता है। मंगल पर से अभी को[illegible] लौटा नही है। वहाँ पानी मिलेगा। प्राणी मिलेंगे। तो वे यात्रा कर[illegible] आयेंगे तब अभिनन्दन करेंगे। तब तक ठहरना।

रेडियोधर्मिता की धूल

अब खिलेंगे भारत मे अब तक की—
अनजानी समृद्धि के फूल
क्योंकि आज उड़ाई गयी है यहाँ भी
रेडियो धर्मिता की धूल और
पीछा करके हेलीकॉप्टर से चालीस
किलोमीटर तक उस धूल को देख लिया गया है
कि उसमे विष का कुछ नही है
तो फिर जो कुछ होगा अमृत का होगा
अनृत का कुछ नही होगा इस कथन मे
जो कुछ होगा बेशक ऋत का होगा
एक तो इस कारण से कि हमने अपनी
प्रधानमंत्री को आज तक न कोई
गलत काम करते देखा है, न कोई
झूठ बात कहते सुना है, बल्कि
हमने तो उन्हे, देखा भले न हो,
गरीबों के लिए दिन-रात
चौबीसो घंटे आठो पहर मरते सुना है
इसलिए हम जो बीस पच्चीस बरसो से
प्रतिवर्ष करोड़ो रुपये खर्च करके
अणु-बम धारे हुए हैं तो मानना चाहिए
कि हम तब से अब तक गरीबों को
परेशानी की मार के मारे हुए हैं
यह ठीक है कि अणु-बम का पालन
खर्चीला है और उसमे जो खर्च
करना पड़ रहा है उसके कारण
मुद्रा स्फीति, महगाई और भुखमरी बढ़ गयी है
मगर अणु का जब हमने विस्फोट
कर ही लिया है तो मानना चाहिए
कि हमारी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा
रेडियोधर्मी धूल की तरह ऊपर चढ़ गई है
और अब हम अगर अणु-विस्फोट के प्रयोग
शान्ति अर्थात खनिज, तेल अन्न आदि
के उत्पादन की दिशा मे कर पाये तो
आये थे जो संकट इन सब के अभाव मे
वे छट जायेंगे और विकासशील
देश भी दो हिस्सों मे बट जायेंगे
एक वे जिनने अणु विस्फोट नही किया
और एक वे जिनने कर लिया है
जिनने कर लिया है उनमे होगा केवल
हमारा देश एक वचन मे
और तब बहुवचन मे हमारी प्रधानमंत्री
के केश संसार व्यापी व्योम मे बिखर कर
हमारी प्रतिष्ठा का केतन फहरायेंगे
कोटि-कोटि कंठ, भूख के मारे आवाज
नही निकलेगी, तो भी गायेंगे
'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा
हम बुलबुलें हैं उसकी वह गुलिस्ताँ हमारा'
क्योंकि गुलिस्ताँ तो वह अब बनेगा
अब खिलेंगे उसमे अभूतपूर्व समृद्धि के फूल
उड़ाई जो जा सकी है अब यहाँ
रेडियोधर्मिता की धूल।

—भवानी प्रसाद मिश्र

सावधानी बरतने की जरूरत है

अणु विस्फोट पर सिद्धराज ढड्ढा

मई १८ को सवेरे राजस्थान मे किसी जगह भारत ने अपने पहिले आणविक विस्फोट का परिक्षण किया। अभी तक दुनिया मे सिर्फ पाच देशो ने अणुशक्ति के परीक्षण किये हैं—अमेरिका, रूस, इंग्लैण्ड, फ्रास और चीन। इस प्रकार भारत ससार मे छठा देश है जिसने आणविक विस्फोट करके उस शक्ति-का उपयोग कर सकने की वैज्ञानिक क्षमता प्राप्त की है।

अणु शक्ति पैदा कर सकने की क्षमता भारत ने हासिल कर ली है, यह शुद्ध वैज्ञानिक दृष्टि से सतोष का विषय है। इस क्षमता का उपयोग सहार करने के शस्त्रास्त्र बनाने मे भी किया जा सकता है और पहाड़ तोड़ने, नहरें बनाने, बड़े पैमाने पर धरती को इधर-उधर हटाने जैसे जीवनोपयोगी कार्यों के लिए भी किया जा सकता है। भारत से पहिले जिन पाच राष्ट्रो ने अभी तक अणु विस्फोट की शक्ति हासिल की है वे सभी उसका उपयोग मुख्यतः सहार के शस्त्र बनाने मे कर रहे हैं, शातिमय कामो के लिए भी करते हैं। इन पाचो मे से सिर्फ चीन ने इस प्रकार का परीक्षण करने के साथ-साथ यह आश्वासन जरूर दिया था कि वह आणविक हथियार बनायेगा लेकिन स्वय अपनी ओर से उनका पहला उपयोग नहीं करेगा। यानी वह आणविक बम आदि शस्त्रों का उपयोग दूसरे किसी राष्ट्र द्वारा उसके खिलाफ उनका प्रयोग किये जाने के जवाब मे ही करेगा। केवल भारत ऐसा देश है जहा की सरकार ने पहले भी और अब इस समय फिर से, सार्वजनिक रूप से यह कहा है कि भारत अपनी अणु-शक्ति-योग्यता का उपयोग केवल शातिमय कार्यों के लिए करेगा। यह घोषणा भारत की परम्परा और इस देश की जनता की भावना के अनुरूप है। इससे पहिले भी स्व० पंडित जवाहरलाल नेहरू और लालबहादुर शास्त्री, देश के दोनों भूतपूर्व प्रधानमंत्रियो ने समय-समय पर यह आश्वासन दिया था। उस समय दिये हुए आश्वासनो की अपेक्षा इस समय श्रीमती इंदिरा गाधी द्वारा आश्वासन, जबकि भारत ने आणविक विस्फोट की क्षमता हासिल कर ली है, विशेष अर्थ और महत्व रखता है। इसके लिए इन्दिराजी अभिनन्दन की पात्र हैं। हम आशा करते हैं कि भविष्य मे उनकी सरकार या आगे आने वाली सरकारें और इस देश की जनता कभी भी इन्सानियत के प्रति निष्ठा से और मनुष्य के प्रति अपनी वफादारी से पीछे नहीं हटेंगी। पर कई लोगो को भय है कि अणुशक्ति का उपयोग केवल शातिमय कामो के लिए करने की बात एक आवरण है क्योकि केवल शातिमय उपायो के लिए अणुशक्ति के उपयोग के लिए इस प्रकार के विस्फोट की आवश्यकता नहीं थी। वह उपयोग मौजूदा अन्तर्राष्ट्रीय समझौतो के अन्तर्गत खुले तौर पर किया जा सकता है।

अणुशक्ति के विकास के सम्बन्ध मे दो और पहलुओं पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है। पहली बात तो यह है कि यह खेल बहुत महगा है, खास करके हिन्दुस्तान जैसे देश के लिए जहां अत्यधिक गरीबी और अभाव है और जहा आर्थिक साधनो का सबसे पहला उपयोग सीधे इन्हें दूर करने के कामो मे होना चाहिए। इस दृष्टि से भी आवश्यक है कि अणुशक्ति के उपयोग की क्षमता हासिल कर लेने पर भी हम उसका उपयोग शस्त्रो की होड़ मे पड़ने के लिए न करें। इस देश के लिए वह घातक होगा। इतना ही नहीं, अणुशक्ति के शातिमय उपयोग के क्षेत्र मे भी हमे बहुत सावधानी और संयम से काम लेना होगा। केवल देखादेखी या सिर्फ प्रतिष्ठा के लिए हमे अपनी क्षमता का उपयोग हरगिज नहीं करना है। आर्थिक साधनो के उपयोग मे हमेशा व्यक्ति और समाज दोनों को प्राथमिकता का ध्यान रखना पड़ता है। मिठाई खाना अच्छा लगता है लेकिन जहा बच्चो को दूध भी न मिलता हो तो मिठाई पर खर्च करना किसी गृहस्थ के लिए अकलमंदी की बात नहीं मानी जायगी।

इस प्रश्न का दूसरा पहलू सदूषण का, अर्थात् हवा, पानी इत्यादि के बिगाड़ का है। दुर्भाग्य से अणु शक्ति के विकास और उसके उपयोग मे ऐसी प्रक्रियाओ को काम मे लेना पड़ता है जिनसे हवा, पानी, जमीन आदि का बड़े पैमाने पर दूषित और जहरीले हो जाने का खतरा है। अणु विस्फोटो के बारे मे एक डर हमेशा यह रहा है कि इन विस्फोटो के जहरीले परमाणु हवा के जरिये हजारो मील दूर गिरकर वहा की धरती, अन्न, हवा-पानी आदि को जहरीला बना देते हैं और इस प्रकार मनुष्य और पशु दोनो के लिए घातक सिद्ध होते हैं। भारत के पहिले पाचो "आणविक" राष्ट्रो ने अपने शुरू के प्रयोग धरती के ऊपर किये थे जो ज्यादा खतरनाक थे। धरती के गर्भ मे किये जाने वाले परीक्षणो से यह खतरा कम होते हुए भी नीचे के पानी के स्रोतो के दूषित हो जाने का खतरा रहता है। इसलिए भारत ने यह भूगर्भ विस्फोट हिमालय जैसे निर्जन प्रदेश मे न करके राजस्थान के रेगिस्तानी प्रदेश मे किया है, पर यहां भी वायुमण्डल पर और भूमिगत पानी के स्रोतो आदि पर विस्फोट का क्या असर होगा, यह अभी देखने की बात है।

अत इस नई शक्ति के उपयोग के बारे मे बहुत सतर्कता और सावधानी बरतने की जरूरत है। पिछले वर्षों मे पचवर्षीय योजनाओं के सिलसिले मे हमने पश्चिम की देखा देखी या कुछ तात्कालिक उद्देश्यो की पूर्ति के लिए गलत नीतिया अपनाई और दीर्घ दृष्टि से काम नहीं लिया जिसका नतीजा आज भुगत रहे हैं। अत. इस अवसर पर हम प्रकार की सावधानी रखना और सन्तुलन न खोना आवश्यक है।

जनता की शक्ति अहिंसा में है

नारायण देसाई

(चौदह मई को मुंगेर के नागरिकों ने श्रीकृष्ण सदन में शांति सभा आयोजित की। सभा की सूचना लोगों को घर-घर जाकर दी गयी। इसमें सभी पक्षों के लोग शामिल हुए थे।)

आज मुंगेर के वातावरण में वेदना भरी है। जिन लोगों ने मार सही है और जिसे गोली लगी है, उन दोनों की वेदना के कुल योग में मैं अपने को जिम्मेदार मानता हूं। और इस वेदना को शेयर करने इस सभा में आया हूं। हम सब अपनी-अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं, इस भूमिका को कोई सही ढंग से निभा रहा है कोई गलत ढंग से—लेकिन हमारी भूमिका में जो गलतियां होती हैं, उन्हें अपने पड़ोसियों, अपने विरोधियों पर फेंकने, लादने के बदले उनमें अपनी गलतियां महसूस कर स्वीकार करना चाहिए। परसों जो दुखद घटना हुई उसमें किसने क्या किया, किसने पहल की—ऐसा सोचने के बदले घटना से ऊपर उठ कर उससे जुड़ी समस्याओं से अपने को जोड़ना महत्वपूर्ण होगा।

गुजरात और बिहार के तरुणों को इन आंदोलनों में यदि किसी प्रकार का श्रेय दिया जा सके तो वह उनके आंदोलन की प्रत्यक्ष सफलता पर निर्भर नहीं करता, उन्हें समाज के गत्यावरोध, मायूसी को तोड़ने में कितनी सफलता मिली इस बात से नापना होगा।

बिहार में चल रहे आंदोलन की तुलना समुद्र मन्थन से की जा सकती है, इस मंथन से विष भी निकल सकता है, अमृत भी। अब तक के आंदोलन से विष काफी निकल चुका है और मैं कहना चाहूंगा कि अमृत निकालना उनकी जिम्मेदारी है जो स्वयं को देवताओं के पक्ष का मानते हैं। आंदोलन के इस समुद्र मन्थन से कौन से मूल्य निकल सकते हैं? आतंक, द्वेष और तिरस्कार आदि मूल्यों के स्थान पर (हालांकि अभी यही मूल्य उभरते दिखते हैं) यदि नये मूल्य पैदा हुए तो हम सब को इस समुद्र मन्थन का लाभ मिल गया ऐसा मानना होगा।

आन्दोलन के पक्ष और विपक्ष दोनों ओर काम कर रहे लोगों को तीन बातों का आग्रह रखना होगा। इन तीन बातों का दोनों पक्षों की ओर से निषेध होना चाहिए। पहली बात है शक्ति प्रदर्शन। तुम जुलूस निकाल रहे हो, सभा कर रहे हो, तो उसी समय मेरा भी जुलूस निकलेगा, मेरी भी सभा होगी—ऐसा सोचना और करना दोनों पक्षों के हित में नहीं है। तुम जिसे कर रहे हो उसे मैं बुरा तो मानता हूं पर समय आने पर उससे भी सवाया करना चाहता हूं। एक निन्दनीय काम की निन्दा करने के लिए उससे सवाया निन्दनीय काम करना हमें कहीं भी नहीं ले जाता। दूसरी बात है घटनाक्रम में किसी घटना विशेष को बलात अपनी ओर मोड़ कर उससे लाभ उठाने का प्रयत्न करना। युद्ध को भी यदि धर्मनिष्ठ बनाना है तो कुछ सामान्य नियमों का दोनों पक्षों को पालन करना होता है। इसी तरह यदि इस आन्दोलन को एक राष्ट्रीय स्तर तक उठाना है एक नये समाज के निर्माण का माध्यम बनाना है तो सभी पक्षों को कुछ सर्वमान्य नियमों का पालन करना होगा। तीसरी बात हिंसा की है। मैं अखिल भारतीय शांति सेना मण्डल का संयोजक हूं। बचपन में गांधी की गोद में खेला हूं—मुझ से अहिंसा की बात सुनना आपको स्वाभाविक लगेगा। लेकिन मैं हिंसा-अहिंसा की बात इन कारणों से नहीं कहता हूं। आप जब समाज में हिंसा की बात करते हैं तो इस बहस में हमें अधिक गहरे उतरना होगा। समुद्र में बर्फ के पर्वत तैरते हैं। इन हिमखण्डों का केवल एक चौथाई भाग पानी के ऊपर दिखता है। तीन चौथाई भाग पानी के नीचे छिपा रहता है। इसी तरह समाज में हिंसा है। उसका थोड़ा सा भाग ऊपर उभर कर दिखता है, शेष नीचे ही छिपा रहता है। यह ऊपर का भाग कभी दंगों तो कभी गोलीकाण्डों के रूप में स्पष्ट दिख जाता है। लेकिन नीचे का बड़ा भाग छिपा ही रह जाता है। हमें समाज के नीचे छिपी हिंसा को दबाने के लिए अहिंसा का सहारा नहीं लेना है। यह नीचे छिपी सामाजिक हिंसा, सामाजिक भेदभाव, आर्थिक विषमता, राजनैतिक प्रभुत्ववाद आदि के कारण बराबर बनी रहती है। ऊपर की स्पष्ट दिख जाने वाली छोटी सी हिंसा से यह छिपी हिंसा कई गुना अधिक रहती है। सतह के नीचे की इस हिंसा का भी पूरा निषेध ऊपर की हिंसा के साथ हमें करना होगा, नहीं तो हमारी अहिंसा व्यावहारिक नहीं होगी।

मुंगेर में जो घटना घटी उससे मुक्त नहीं होना चाहता हूं। उसमें मैं स्वयं को भी दोषी पा रहा हूं अपना दाग मैं किसी पर डालना भी नहीं चाहता लेकिन आज आप सभी की उपस्थिति में मैं अहिंसा के प्रात्यक्षिक पहलू पर ध्यान देना चाहता हूं। अहिंसा की बात आप गांधी विनोबा, जयप्रकाश नारायण या और पीछे जायें तो बुद्ध, महावीर, आदि के नाम से जोड़ कर नहीं अपनायें, तर्कशुद्ध बुद्धि में यदि वह नहीं जंचे तो उसे फेंक दें। मेरा आप सब से निवेदन है कि जनता की, आंदोलनकारियों की शक्ति हिंसा में होना असंभव है। हम उतावली में सोचते हैं कि जिस विधायक ने जनता से मुंह मोड़ लिया उसे हटाने के लिए मतदाताओं से हस्ताक्षर करवाने से क्या होगा? यदि कुछ हुआ तो घेराव करने से होगा। रात भर विधायक के घर के सामने घंटियां-थालियां बजा कर उसे सोने नहीं देने से होगा। उसे जूता दिखाना होगा, उस पर पानी फेंकना होगा। कुछ भी करो हमें उसका इस्तीफा जल्दी चाहिए। हिंसा अपने लिए कोई न कोई कारण ढूंढकर चलती है। विधायक से जल्दी इस्तीफा लेना है, इस जल्दी का सहारा लेकर कोई भी साधन अपनाने का औचित्य बताना चाहते हैं। ऐसा सोचने वाले, अपने काम में हिंसा का सहारा लेने वाले थोड़ा धीरज से सोचें कि वे किस ताकत का मुकाबला कर रहे

हैं। एक ओर जनता या उसका कुछ भाग है। दूसरी ओर शासन है और उसके साथ एक राजनैतिक दल ! इन के पास हिंसा का संगठन, हिंसा के साधन और हिंसा के अनुभव आंदोलनकारियों से कहीं ज्यादा है सैद्धान्तिक बहस अभी छोड़ दें, व्यावहारिक रूप से भी देखें तो आंदोलनकारी यदि हिंसा करेंगे तो वे सफल नहीं होंगे। और अगर आप कहते हैं कि आन्दोलन के पास शासन के मुकाबले कहीं अधिक जनशक्ति है तो फिर तो हिंसा करने की वैसे भी आवश्यकता नहीं रह जाती।

ग्यारह अक्षौहिणी सेना सामने थी, अर्जुन के हाथ में उसका अपना शस्त्र गाण्डीव था। गाण्डीव उसकी शक्ति थी। अर्जुन उसी से लड़ सका। दुर्योधन की शक्ति गदा चलाने में थी वह उससे लड़ा। यदि अर्जुन सोचता कि मैं गदा से लड़ूं तो वह दुर्योधन की गदा से मारा जाता। और तो और यदि वह कृष्ण के सुदर्शन चक्र से लड़ने का प्रयास करता तो असफलता ही उसके हाथ आती। क्यों कि धनुष के अतिरिक्त अर्जुन की किसी अन्य शस्त्र में शक्ति नहीं थी।

इसी तरह हमें साफ समझ लेना चाहिए कि जनता की शक्ति हिंसा नहीं हो सकती। उसका अपना शस्त्र अहिंसा का ही है। उसके जन आन्दोलन में थोड़ी भी हिंसा की गुंजाइश नहीं है। क्या करें उन लोगों ने हमें भड़का दिया, उनकी काफी हिंसा के बदले हमने तो थोड़ी सी ही हिंसा की थी—ऐसे बहाने ढूंढने से आंदोलन सफल नहीं होगा। जो इस आंदोलन के लिए अपने आप को गम्भीर मानते हैं, जिम्मेदार अनुभव करते हैं, उन्हें अहिंसा के बारे में पर्याप्त सजग रहना चाहिए।

हिंसा-अहिंसा के इस प्रसंग में विनम्रतापूर्वक इतना और जोड़ना चाहता हूं कि अक्सर सुनने में आता है कि यह आन्दोलन अब जयप्रकाश नारायण जी के हाथ से निकल गया है। आप लोग कृपया इसे अहिंसा की ओर मोड़ने का प्रयास करें। ऐसा कहने वाले प्रायः इसे अहिंसक बनाने का आग्रह इसलिए करते हैं कि समाज की यथास्थिति बनी रहे। हमें अहिंसा का आग्रह जरूर रखना है लेकिन परिस्थिति को ज्यों का त्यों टिकाये रखने के लिए कतई नहीं।

तीन निषेधों का मैंने अभी आपसे उल्लेख किया। इन निषेधों के अलावा एक विष और है। जातिवाद का यह विष आंदोलन में किसी भी ओर हो सकता है। जातिवाद हमारे *टुकड़े कर रहा है। हमारी उत्पादकता को* दिन प्रतिदिन क्षीण कर रहा है। लगातार मायाकार कर रहा है। इस आन्दोलन में भी जातिवाद दोनों पक्षों को हानि नहीं पहुंचाये इसका दोनों पक्षों को ध्यान रखना है। यहां मैं जो कह रहा हूं वह समर्थकों और विरोधियों दोनों के फायदे ध्यान में रख कर कह रहा हूं।

यह आन्दोलन के मन्थन का सत्र चल रहा है। अब विष भी निकल सकता है अमृत भी। जो आन्दोलन के विरोधी हैं, (मुझे इस बात को खुशी है कि जो विरोध में हैं उन्होंने खुले रूप में *विरोध किया है, छिप कर नहीं*) और जो समर्थक हैं उन्हें विशेष ध्यान देना होगा कि उनके कामों से, उनके तरीकों से आगे समाज को बदलने वाले मूल्य बाहर निकलेंगे या नहीं। समुद्र मन्थन के ऐसे क्षण में हम सभी को एक नीलकण्ठ की आवश्यकता है, इससे निकले विष को यदि पूरा नहीं पी पायें तो कम से कम गले में तो अटका लें। कोई सहमत हो या नहीं, जयप्रकाश नारायण की ही यह जिम्मेदारी है बहुत हद तक। गुजरात में उनकी यह जिम्मेदारी थी नहीं, लेकिन यहां यह बन गई है। सारी जिम्मेदारी उनकी ही न हो जाये इसलिए इस आन्दोलन से जुड़े हरेक व्यक्ति को नीलकण्ठ की थोड़ी-थोड़ी भूमिका निभानी होगी। केवल एक जे० पी० नहीं, कई नीलकण्ठ बनेंगे तब इस आन्दोलन के मन्थन से अमृत निकलेगा।

आज सुबह तरुणों से खुल कर बात हुई। मेरी आधी उम्र गुलामी में गयी और बची हुई आधी आजादी में जा रही है। आजादी की लड़ाई के जो उदाहरण मैंने उनके सामने रखे उन्हें वे एक इतिहास से ज्यादा समझते नहीं। इधर पिछले २० वर्षों के दौरान उन्होंने वैसी घटनाएं देखी नहीं। उन्होंने यह भी देखा कि गांधी का ही नाम ले कर क्या-क्या नहीं किया गया। अभी गुजरात बिहार के संदर्भ में कहा कि 'गांधी का नाम लेने वाले हिंसा को भड़का रहे हैं'। मुझे लगा कि मैं इस उक्ति पर हस्ताक्षर कर दूं। गांधी के नाम का सबसे अधिक उपयोग किसने किया ? इन

लड़कों ने स्वराज्य का जीवन नहीं देखा, देखे स्वराज्य के बाद के तरह-तरह के आन्दोलन, अन्ट शन्ट चलने वाले आन्दोलन। वे उस अनुभव से इस आन्दोलन में आये हैं। कई बातें गलत कर रहे हैं, उनसे जब भी मिलता हूं—साफ-साफ उनकी गलतियां बताता हूं। लेकिन नागरिकों से भी मेरा एक निवेदन है। जिन लोगों ने स्वराज्य के पहले का वातावरण देखा था वे इस आन्दोलन में आ कर इन तरुणों के सामने उस समय के उदाहरण रखें। जे० पी० ने जन संघर्ष समितियों की बात इसीलिए की है। उद्देश्य एक हो, पद्धति एक हो, आशय एक हो—तब कहीं यह आन्दोलन कष्ट सहन कर एक तपस्या से बाहर निकल कर खरा बनेगा, सफल होगा। आन्दोलन बिना तपस्या के, बिना कष्ट सहे सफल हो जायेगा यह सोचना गलत है। केवल ऐसा कार्यक्रम दें जिसमें हम पर लाठी न चले, जेल नहीं जाना पड़े, जेल में बेड़ी नहीं लगायी जाये ऐसी मांग करने वाले तरुणों से इतना ही कहना चाहता हूं कि हम ऐसे मूल्यों के लिए संघर्ष करें जिनके पीछे गिरफ्तार होने पर बेड़ी, हथकड़ियां भी गहने बन जायें। कष्ट को जब हर्षपूर्वक स्वीकार किया जाता है तो वह तप बन जाता है। मुंगेर के नागरिक इस आन्दोलन की पद्धति के बारे में सजग रहें जिससे कष्ट से तप, और तप से नये मूल्यों की ओर हम बढ़ सकें।

विषमता और भ्रष्टाचार दूर करने के लिए सघन कार्य

नवगठित उत्तरप्रदेश सर्वोदय मण्डल के निर्णय

उत्तर प्रदेश सर्वोदय मण्डल ने तय किया है कि चम्बल घाटी क्षेत्र, बुन्देलखण्ड, तराई तथा पूर्वान्चल में आर्थिक विषमता को दूर करने के लिए सघन रूप से काम किया जाये और पन्च महानगरियों में भ्रष्टाचार विरोधी अभियान चलाया जाये। १८ और १९ जून को इलाहाबाद में हो रहे युवा सम्मेलन को इस प्रकार संयोजित किया जाये कि यह पूरे उत्तर प्रदेश की युवाशक्ति के जागरण और संचालन का सम्मेलन सिद्ध हो सके।

मण्डल की पिछले माह गांधी भवन लखनऊ में हुई बैठक में अध्यक्ष महावीर सिंह ने नये मण्डल और नयी कार्य समिति की भी घोषणा कर दी है।

बैठक में नरेन्द्र भाई ने कहा 'कार्यक्रम के लिए आठ कार्यकर्ताओं की आवश्यता होगी जो विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करेंगे तथा अर्थ का संचय भी करेंगे जिससे मण्डल की आर्थिक स्थिति एवं कार्यक्रम पर अच्छा प्रभाव पड़ेगा। उन्होंने भूदान में हुए भ्रष्टाचार के बारे में भी राय दी कि इसकी तुरन्त छानबीन होनी चाहिए और उसका स्पष्टीकरण समाज के सामने रखना चाहिए। विनय भाई ने कहा 'जे॰ पी॰ ने जिस अहिंसक शक्ति को जागृत किया है वह लोकस्वराज्य की दिशा में बढ़ता हुआ कदम है। उसका स्वागत करते हुए विभिन्न तरीकों से काम करने की एक योजना प्रस्तुत की। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि प्रतिकार की स्थिति आये तो उसके लिए भी तैयार रहना चाहिए। कानपुर क्षेत्र में व्यापक रूप से कार्य करने का सुझाव दिया। डा॰ बनवारी लाल शर्मा ने इलाहाबाद में १८-१९ जून को आयोजित युवा सम्मेलन की जानकारी दी। इकबाल बहादुर सिन्हा ने आगामी सितम्बर मास में पंचमहानगरियों में होने वाले चुनाव के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए सुझाव दिया कि अभी से पक्षमुक्त व्यक्तियों की तलाश प्रारम्भ करनी चाहिए जो मतदाताओं के सच्चे प्रतिनिधि हों। कानपुर नगर में इस सिलसिले में कार्य प्रारम्भ हुआ है। शिवशंकर शर्मा ने कहा आन्दोलन हृदय से उद्वेलित होता है प्रदर्शन से नहीं। अतः हम जो भी काम करें उसके बारे में पहले गहराई से विचार कर लेना चाहिए। अमरनाथ भाई ने कहा कि आज की परिस्थिति ऐसी है कि जनता की आवाज बन चुकी है किसी समुदाय की नहीं। अपनी शक्ति को जनमानस बनाने में लगायें और उसकी व्यापकता को बढ़ायें। परन्तु तात्कालिक समस्याओं में पड़कर अहिंसक शक्ति का विकास करना चाहिए। राधेश्याम योगी ने कहा—यूथ फार डेमोक्रेसी तथा सिटीजन्स फौर डेमोक्रेसी के संगठन को मजबूत करना चाहिए। विनोबा जयन्ती तक अभियान चलाना चाहिए। श्याम बहादुर नम्र : गुजरात में या बिहार में जो कुछ जो हुआ और कुछ जो हो रहा है उसकी अलग-अलग स्थिति है। वहाँ किसी सर्वोदयी ने आंदोलन आरम्भ नहीं किया। परिस्थिति बनी। उत्तर प्रदेश की अलग स्थिति है। अभी वातावरण नहीं बना है। इसलिए प्रदेश में सदाचारसप्ताह मनाना चाहिए अपनी संस्थाओं से एवं अपने स्वयं से शुरू करें। रामप्रवेश शास्त्री : शराब सभी भ्रष्टाचार की जननी है इसलिए व्यापक पैमाने पर इस समस्या को उठाना चाहिए।

अंत में महाकवि रामधारी सिंह दिनकर के आकस्मिक निधन पर दो मिनट मौन रख श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद दोपहर की बैठक समाप्त हुई।

दूसरी बैठक

इकबाल बहादुर वर्मा प्रत्येक लोकसेवक यदि अपनी आय का पाँच प्रतिशत सर्वोदय मण्डल को दे तो अर्थ में कमी नहीं पड़ेगी। इकबाल भाई : उपवास दान के साथ-साथ सहयोगी सदस्य भी बनाने चाहिए। सरजूप्रसाद बाजपेयी : यदि हमारे काम में दम होगा तो अर्थ का अभाव कभी नहीं आयेगा। नरेन्द्र भाई : हमारी मीटिंग एक्शन के लिए होनी चाहिए केवल मीटिंग के लिए नहीं। जहाँ भ्रष्टाचार हो रहा हो तुरन्त नागरिक चेतना जागृत करना चाहिए। सेवा संस्थाओं में भी सत्याग्रह करना चाहिए। मेवालाल गोस्वामी महावीर भाई ने कहा, वहाँ से कार्य प्रारम्भ होता है और जो नरेन्द्र भाई ने कहा वहाँ तक पहुँचाना हमारा कर्तव्य है। विनोबा जयन्ती से गांधी जयन्ती तक अर्थ अभियान चलाना चाहिए। प्रकाश भाई : हमारा काम जो सेवा और त्याग पर आधारित था और जो उसी के द्वारा जोड़ने वाला काम था कहीं ऐसा न हो जाये कि वह तोड़ने वाला काम बन जाये। इतना ध्यान रख कर भ्रष्टाचार विरोधी अभियान में पड़ना चाहिए। अलख भाई ने सहरसा अभियान की जानकारी दी और बताया कि सभी कार्यकर्ता जे॰ पी॰ के कार्यक्रम में लग गये हैं। सरजू भाई : जो अपने साथियों को विचार अच्छा लगता है वहीं करूंगा। जैसी अपनी दृष्टि होगी वैसी सृष्टि होगी। रामबचन सिंह : कार्यक्रम के आधार पर संगठन मजबूत होगा तो आर्थिक आधार स्वतः ही बनता चला जायेगा। हरिप्रसाद गुप्त : कार्यक्रमों के लिए एवं अर्थ संयोजन के लिए तीन या पाँच व्यक्तियों की उपसमिति गठित करनी चाहिए तथा जिला सर्वोदय मण्डलों को सक्षम बनाना चाहिए। ब्रह्मलोचन दुबे : लखनऊ में प्रदेश कार्यालय बने तथा अर्थ संयोजक के लिए एक उपसमिति बने। कृष्णचन्द्र सहाय : भ्रष्टाचार विरोधी अभियान चलाने वालों को स्वयं अपनी संस्था को तथा स्वयं अपने को देखना चाहिए क्योंकि जे0 पी0 की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। करण भाई ने विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं की समन्वयी भूमिका पर विचार प्रकट किये तथा समग्र चिन्तन की ओर ध्यान आकर्षित किया और कहा कि जे0 पी0 के आवाहन पर यदि हम लोग आगे नहीं रहेंगे तो पीछे भी नहीं रहेंगे। उनकी बगल में हमारी संस्थाएं दिखाई पड़ेंगी। स्वामी कृष्णानन्द ने आधे घन्टे के आशीर्वचन में सर्वोदय आन्दोलन की आध्यात्मिक भूमिका पर प्रकाश डाला तथा सुझाव दिया कि जे॰ पी॰ की ७२ वीं वर्षगांठ के अवसर पर अर्थ संग्रह करना चाहिए तथा वर्ष में चार शिविरों का आयोजन होना चाहिए।●

लोक आन्दोलन की मर्यादा

दादा धर्माधिकारी

एक बात हम अपने मन से निकाल दें कि हमें परिस्थिति पर म कुश करना है। नेता की सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि वह हर परिस्थिति का अपने लिए लाभ उठाना चाहता है। इसको मैं सार्वजनिक जीवन का भ्रष्टाचार मानता हूं। ऐसा कोई लालच रख कर काम करने की आवश्यकता नहीं है।

हमने कुछ मर्यादाएं, कुछ मूल्य अपने लिए स्वीकार किये हैं। उनकी प्रस्थापना एवं विकास के लिए जितनी गुंजाइश होगी उतना ही हमारा सक्रिय सहयोग रहेगा। ऐसा करते हुए हम असफल हो तो हमारी उस असफलता को भी कृष्णार्पण किया जाय अपनी असफलता को प्रामाणिकता से स्वीकार करने से शक्ति बढती है। आन्दोलन कभी पराजित नहीं होता है। पराजित तो व्यक्ति होता है, आन्दोलन करने वाले होते है।

अभी एक नौजवान ने यहां कहा कि आप लोग हमें कोई कार्यक्रम नहीं देते हैं। मुझे उन्हें सिर्फ यही कहना है कि यह सोचने का काम आप बूढों के सुपुर्द न करें। हमारे सोचने मे भी एक जीर्णता आ जाती है। और आपके मन मे भी हमारे बारे मे यही ख्याल है। अतः आपके विचार और आकांक्षाओं के अनुरूप समाज कैसा हो इसका नक्शा आपको स्वयं ही सोचना चाहिए। आन्दोलन और सघर्ष मे सोचना कम पडता है, और सघर्ष कोई सदा के लिए नहीं चलते हैं और बाद मे तो सोचना ही पडता है। बुजुर्ग और नेता लोग तरुणों को खुद सोचने का मौका ही नहीं देते हैं, उनका जीवन की वास्तविकता के साथ सामना नहीं होने देते हैं। इसलिए मैं बुजुर्गों से अनुरोध करता हू कि वे तरुणों को सोचने की स्वतंत्रता पर आक्रमण न करें। अन्यथा उनकी यह शिकायत कायम रहेगी कि दुनिया उनकी है जो बूढे हैं और उसमें जीना हमको पडता है। दुनिया बूढों के मरने के लिए और आपके जीने के लिए है।

इस क्षण का महत्वपूर्ण कार्यक्रम मैं यह मानता हू कि क्या जीवन की आवश्यक चीजें सुलभ व सस्ती मिल सकती हैं? इसके दो पक्ष हैं। एक तो समाज मे ऐसी चीज-वस्तु के उत्पादन की प्रेरणा बढे, और दूसरा उसका वितरण सुलभ हो। मेरा यह विचार है कि इस बारे मे विनोबाजी से बढकर कोई द्रष्टा पिछले पचास सालो मे पैदा नहीं हुआ है। तरुणों को वे पुराणपंथी लगते हों तो उनको वे छोड दें। पर मुख्य बात यह है कि ऐसा कोई कार्यक्रम बनाना चाहिए जिससे जीवन की मूलभूत आवश्यक चीजों का उत्पादन बढे और उसका वितरण सुलभ हो।

भ्रष्टाचार के संदर्भ म एक बात मैं कहना चाहता हू कि पैसा खाने के लिए कोई मत्री बनने की आवश्यकता नहीं है। मैं खादी भण्डार का मैनेजर बनू तो भी पैसा खा सकता हूं। सर्वोदय का सेक्रेटरी बनूं तब भी खा सकता हू। इस देश मे सरकार के तत्र एवं मशीनरी के ऊपर लोगों का जितना अविश्वास है उससे ज्यादा अविश्वास गैर-शासकीय सस्थाओं पर है। सरकार के ऊपर कम से कम अविश्वास है। इस परिस्थिति का मुकाबला करना ही होगा। यह ऐसा देश है जिसमें शिक्षक कहता है कि हमारा वेतन सीधा शासन ही दे। सब गैर-शासकीय सस्थाओं को सरकार अपने हाथ मे ले ले। ऐसी राष्ट्रीयकरण की नहीं, राज्यीकरण की मांग चारो ओर से आ रही है। ये सारी इस क्षण की हमारी बुनियादी कमजोरियां हैं जिनका मुकाबला तरुणों को करना ही पडेगा।

मान लीजिये कि इंदिराजी समेत सब का शासन एक बारगी धराशायी हो जाये तो उसका विकल्प क्या है? यह सोचने की आवश्यकता है। क्या करुणानिधि का विकल्प है? तरुण और विद्यार्थी मुझे क्षमा करें, पर करुणानिधि के पीछे तमिलनाडु के विद्यार्थी और नौजवान हैं। अलग राज्य की माग बूढे नहीं नौजवान करते हैं। बेलगांव के आन्दोलन मे भी तरुण हैं।

राष्ट्रपति शासन तो बहुत दिनो तक नहीं चलेगा। या फिर जिसकी लाठी उसकी भैंस वाला राज्य चलेगा। अथवा पडोस के किसी देश का वर्चस्व हमारे ऊपर स्थापित हो जायेगा ये सब अलग अलग विकल्प हैं। हां, आज की परिस्थिति से तो इनमें से कोई भी विकल्प अच्छा अथवा कम से कम बुरा तो नहीं ही है, ऐसा भी किसी को लग सकता है। पर उसकी प्रतीति भीतर से उठनी चाहिए।

निश्चय ही इसका एक जवाब यह हो सकता है जो जवाहरलालजी ने दिया था। जवाहरलालजी को कहा गया कि आप अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दीजिये। तब उन्होंने एकदम बुनियादी बात कही थी। उन्होंने जवाब दिया कि लोकतन्त्र मे ऐसी बात हो ही कैसे सकती है? जो अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करेगा वह तो राजा बन गया। और लोकतन्त्र मे राजा कैसे हो सकता है? तो फिर मैं अपना उत्तराधिकारी किस तरह नियुक्त कर सकता हू? मेरा उत्तराधिकारी तो जनता की कोख से निकलेगा। मैं किसी को बना नहीं सकता। न मुझे किसी को बनाना चाहिए। इसलिए इसका एक विकल्प जनता खुद भी हो सकती है। उस दिशा मे हम काम कर सकते हैं। फिर भले ही उसमें हमें असफलता ही मिले। भूदान, ग्रामदान, ग्राम स्वराज्य, सब असफल आन्दोलन हमने चलाये। और मुझे इस बात का गर्व है कि विनोबा के साथ रह कर असफल हुआ। यह दूसरे किसी के साथ रह कर सफल होने की अपेक्षा अधिक श्रेयस्कर है। क्यों कि विनोबा की दिशा सही दिशा है। उन्होंने इस लोकशक्ति को जागृत करने की बात देश के सामने रखी। उनके बिना अन्य सारे विकल्प औपचारिक ही रहेंगे। आप सबका ध्यान इस ओर अवश्य जाना चाहिए।

आखिर की एक चीज। लोकशाही अधिक मजबूत होनी चाहिए, क्षीण कदापि नहीं। गांधी विनोबा या हिंसा-अहिंसा का नाम छोड दीजिये। पर इतना देखियेगा कि आपके प्रतिकार से लोकतंत्र अधिक सुदृढ बने इतना आपको करना ही चाहिए। प्रतिकार तीव्र हो, सक्षम हो, शुद्ध भी हो, पर आखिर वह किसलिए? लोकशाही के विकास के लिए।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

→
कहने के लिए कि साब आप लोग तरुण शान्ति सेना और यह शान्ति और वह शान्ति कहते हो। यह तो नामर्दी की बात है। हमने कहा कि ठीक है आप मर्द हो तो आप करो क्रान्ति आप जिस दिन क्रान्ति करोगे मैं आपका हाथ रोकने नहीं आऊंगा। लेकिन कुर्सी पर बैठ कर बहस करते हो ? जाओ क्रान्ति करने के लिए।

जो दल-बदल करके आया उसको मन्त्री [illegible]ा देंगे यह भ्रष्टाचार नहीं है? भयंकर [illegible]ष्टाचार है। मुझे पार्टियों से कुछ मतलब [illegible]ी। मुझे जनता से मतलब है। जनता की [illegible] शक्ति से मतलब है जो चाहे किसी पार्टी [illegible] हुकूमत हो उसको ठीक रास्ते पर चलाने [illegible] शक्ति रखे।

इस लड़ाई में सबसे आगे रहने वाले हैं तरुण। यह जमाने की मांग है। मैंने देख [illegible]या है, समझ लिया है, तब इनका आवाहन किया है। मैं गांधी नहीं हूं लेकिन गांधी ने भी तरुणों का आवाहन किया था। 'यंग-इंडिया' के नाम से अपनी पत्रिका चलायी। उन्होंने देखा कि एक नयी शक्ति इसको जगाना चाहिए। मैंने आवाहन किया। आते हैं हमारे पास कि हमारा नेतृत्व कीजिये। मैं इनकार करता हूं नेतृत्व नहीं करूंगा, सलाह दूंगा। नेतृत्व आप करो। आत्म विश्वास पैदा हो, आपका दिमाग चले, आपस में बैठकर, किस तरह से मिलकर फैसला करना है,आपस में फूट न पैदा हो जाये, और जो निर्णय आप करो, उस निर्णय की पूरी जिम्मेदारी आप पर हो, नहीं तो आप कहेंगे कि जयप्रकाशजी ने तो कह दिया था, हमने कर दिया। उसका उल्टा परिणाम हो गया तो अब जयप्रकाशजी इसमें से रास्ता ? सबसे सलाह लो, निर्णय आप करो, ये सीखो, नया नेतृत्व इस देश में पैदा होना चाहिए और युवकों में से पैदा होना चाहिए। ऐसा नेतृत्व पैदा होना चाहिए कि जो अपने लिए कुछ नहीं चाहता हो। कुछ युवक हैं, नेता बन कर कुछ बन जाना चाहते हैं, कहीं पहुंच जाना चाहते हैं, कोई टिकट ले लेना चाहते हैं। इस तरुण आन्दोलन में, इस क्रान्तिकारी आन्दोलन में उनका कोई स्थान नहीं है। वे स्वार्थी लोग हैं उनसे कोई काम नहीं होने वाला है।

आप सब बेईमानी करोगे और दूसरों से कहोगे कि तुम सच्चे बनो तब तो नहीं चलेगा विद्यार्थी इम्तिहान में चोरी करेंगे, पैरवी करके नंबर बढ़वायेंगे तो क्या शक्ति होगी ? मैं तो इनकी शक्ति ऐसी बनाना चाहता हूं कि इम्तिहान हो रहा है तो छात्र संघर्ष समिति के लोग जा कर कहें कि निरीक्षक लोग हट जायें। किसी के निरीक्षण की जरूरत नहीं। छात्र निरीक्षण करेंगे। हम देखते हैं कि कौन चोरी करेगा। कौन छुरा लेकर यहां आया है। तब न भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई लड़ने का अधिकार मिलेगा। तब न आप उसके

(शेष अगले पृष्ठ पर)

विधानसभा भंग करने के लिए एक करोड़ हस्ताक्षर

—राममूर्ति

विधानसभा में कांग्रेस दल का बहुत है। उसका यह रुख है कि 'सरकार [illegible]मारी है, वह कुछ भी करे, हम उसका साथ [illegible]गे।' जो विरोधी दल है वह विरोध करता [illegible]ी है तो यह सोचकर कि उसका काम ही [illegible]रोध करना है इसलिए सरकार परवाह नहीं [illegible]रती। जनता असहाय कुत्ते की तरह भौंकती [illegible]हती है और सरकार का हाथी मदमस्त [illegible]लता चला जाता है। सरकार का दावा है [illegible] उसके पीछे विधानसभा है जिसमें जनता [illegible] प्रतिनिधि हैं। विधान सभा के कारण सर[illegible]ार को यह दावा करने का मौका मिल गया [illegible] कि उसके साथ पूरे बिहार की जनता है; [illegible]ो और मचाते हैं वे बस थोड़े से छात्र और [illegible]नके हिमायती हैं।

जनता की भावना इस सरकार के साथ [illegible] या नहीं, तथा आज की विधान सभा उसका [illegible]ही प्रतिनिधित्व कर रही है या नहीं, इसका [illegible]ैसला तो स्वयं जनता करेगी। इसलिए जय[illegible]काश नारायण ने कहा है कि बिहार विधान [illegible]भा के ३१८ निर्वाचन क्षेत्रों में से हर एक में [illegible]ाया जाये और वहां के बालिगों की, मत[illegible]ाताओं की राय जानी जाये। जो लोग [illegible]धान सभा भंग करने के पक्ष में हों, उनके [illegible]स्ताक्षर या अंगूठा-निशान लिये जायें। पूरे बिहार राज्य में एक करोड़ हस्ताक्षर लिये जायें इससे अधिक भले ही हो, कम नहीं। ३० मई को हर निर्वाचन-क्षेत्र से दो-दो तीन-तीन आदमी पटना जायें। पटना में पटना के तथा बाहर से आये हुए एक लाख लोगों का जुलूस निकले और हस्ताक्षरों के ढेर के ढेर राज्यपाल को दिये जायें। यह इस बात का प्रकाट्य प्रमाण होगा कि मन्त्रिपरिषद और विधान सभा मतदाताओं का विश्वास खो चुकी है। जिस सरकार में जनता का विश्वास नहीं है वह जनता की सरकार कैसे मानी जायेगी ? उसे भंग होना ही चाहिए।

मतदाताओं की सम्मति जानने का सरल उपाय है उन्हें अपनी बात समझना और हस्ताक्षर लेना। यह काम हर निर्वाचन क्षेत्र के हर गांव और हर शहर के हर मुहल्ले में होना चाहिए। इसके अलावा एक उपाय और है जिसे 'रेफरेन्डम' कहते हैं। उदाहरण के लिए कोई एक निर्वाचन क्षेत्र लीजिये। उसमें पूरी ऐसी व्यवस्था कीजिए जो चुनाव में की जाती है। निष्पक्ष चुनाव-अधिकारी तथा मतदाता केन्द्रों आदि सबकी व्यवस्था कीजिये। मतदाता के लिए दो रंग के कागज रखिये। एक-एक मतदान पेटी रखिये। एक कागज 'विधान सभा भंग करो' का होगा और दूसरा न भंग करने का—इन तैयारियों के साथ एक निश्चित दिन वोट लीजिये और देखिये कि इस प्रश्न पर कितने लोग पक्ष में है कितने विपक्ष में। सारा काम सौ फीसदी ईमानदारी का हो।

स्पष्ट है कि इस तरह की विशेष योजना अधिक क्षेत्रों में नहीं लागू की जा सकेगी। लेकिन कुछ क्षेत्रों में भी की जा सके तो अच्छा होगा। अगर पूरे एक निर्वाचन क्षेत्र को न लिया जा सके तो शहर के एक-दो मुहल्लों को लेकर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में कुछ पंचायतों को लेकर कीजिये।

'विधानसभा भंग करो' के लिए यह प्रयत्न जोरदार ढंग से होना चाहिए कि प्रत्येक बालिग के पास पहुंचा जाये और उसे समझा कर हस्ताक्षर प्राप्त किया जाये। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाये कि किसी व्यक्ति से दबाव डालकर हस्ताक्षर न कराया जाये। विधायकों से जबरदस्ती इस्तीफा कदापि न लिया जाये। घेराव आदि की तो बात ही नहीं सोची जा सकती है।

अगर यह काम पूरा कर लेते हैं तो कोई शक्ति नहीं है जो इतने प्रबल जनमत के मुकाबले में खड़ी हो सके। उसे लोक शक्ति के सामने झुकना ही पड़ेगा। ●

कुष्ठ सेवक—सुन्दरलाल मित्तल

कुष्ठ सेवा के क्षेत्र मे कम ही लोग आते हैं। जो आते हैं वे प्रेरणा और मानवीय सेवा की दृष्टि लेकर ही इस कार्य मे पड़ते हैं। वैसा ही एक कुष्ठ सेवक हम लोगों के देखते-देखते शहीद हो गया। गत् माह इन्दोर मे महावीर जयती के पवित्र दिन दो गुटो के झगडो के विवाद को लेकर किन्हीं क्रूर हाथो ने उनको छुरा भोक कर हत्या कर दी। वे तो विवाद मिटाने के प्रयत्नो मे लगे थे। उनका किसी से झगडा नही था। शान्ति कायम करने की एक शान्ति सैनिक की मनोभूमिका से ही वे काम करते थे। इन्दौर और मध्यप्रदेश के सर्वोदय परिवार के वे बहुत ही लोकप्रिय और सक्रिय नम्र सेवक थे। इस क्षेत्र मे चल रहे कुष्ठ कार्य के तो वे एक मात्र आधार और मुख्य स्तम्भ थे। नगर के लोगो ने ५१ हजार रुपये की रकम उनकी स्मृति मे एकत्रित कर कुष्ठ कार्य को आगे करते रहने का निर्णय बहुत ही उपयुक्त किया है। अखिल भारतीय कुष्ठ निवारण सघ दिल्ली की वार्षिक बैठक में मित्तल जी को भाव विभोर हो कर श्रद्धाजलि अर्पित की। राष्ट्रीय कुष्ठ सघ और हिन्दी कुष्ठ निवारण सघ दोनो ही सस्थाओ के कार्यों मे मित्तलजी ने बड़ा बुनियादी काम किया था। गाधी—परचुरे शास्त्री की तस्वीर की सील बनाना और कैलेण्डर की कल्पना को भी उन्होंने ही सबसे पहले आकार दिया। उनकी सूझबूझ बडी उपयोगी, व्यावहारिक और तर्क सगत रहती थी। सेवाग्राम के अखिल भारत कुष्ठ सम्मेलन के समय भी उन्होंने मौलिक विचार-रखे थे कि हम सबको समग्र दृष्टि से काम करने की जरूरत है। इसी दृष्टि से उन्होने अनेक अड़चनों के बीच कन्ट्रोल यूनिट और पुनर्वसन दोनों का काम शुरू किया था। सरकार की ओर से समय पर आर्थिक मदद न मिलना और स्वत के साधन भी अपर्याप्त होते हुए उन्होंने हिम्मत नही हारी और मित्रो के सहयोग से काम बनाते रहे। आज अनेक कुष्ठ-रोगी और कार्यकर्ता उनका अभाव महसूस करते हैं और उनका एक बडा आधार ही समाप्त हो गया है। हम सबका यही प्रयास होना चाहिए कि उनके शुरू किये कुष्ठ कार्यों को हम आगे बढ़ायें और जो जवाबदारिया उनकी थीं उन्हे हम उठा लें। इसी से उनकी आत्मा को शान्ति मिलेगी और हमारा भी कर्तव्य हम पूरा करेंगे और यही हमारी सही श्रद्धाजलि होगी। उनके मित्रो का बडा परिवार है इसलिए उनके स्वयं के परिवार को भी ढाढस बाधना है और उनके सुख-दुख मे भी शामिल होकर उन्हे हर प्रकार की सहायता करना कर्तव्य प्राप्त धर्म होगा। जिन अखिल भारतीय कुष्ठ सस्थाओं का ऊपर जिक्र किया गया है वे भी हर सभव मदद करने को प्रस्तुत रहेंगी लेकिन मुख्य जवाबदेही इन्दौर और मध्यप्रदेश सर्वोदय सेवक परिवार को ही उठानी होगी। हम मित्तलजी की स्मृति की प्रेरणा ज्योति और अधिक प्रज्वलित कर सकें तो निश्चय ही दूसरे कामों मे भी प्रकाश और बल मिलेगा। परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह वैसी शक्ति हमे प्रदान करे और हमारे हाथो और भी उत्तम कुष्ठ सेवा का आयोजन हो।

डॉ० रविशंकर शर्मा

भ्रष्टाचार सिर्फ.........

(पिछले पृष्ठ से जारी)

योग्य बनोगे ?

मैं अहमदाबाद गया था तो नव-निर्माण समिति के युवको से हमने दो बातें कहीं। आपने नवनिर्माण नाम रखा है तो नव-निर्माण क्या चाहते हैं? कैसा समाज चाहते हैं? कोई तस्वीर है आपके पास ? यदि नही, तो नव-निर्माण के क्या मानी? कोई जवाब नही चुनाव मे क्या होगा? जवाब दिया कि हम अच्छे लोगो को भेजेंगे, हमने कहा कि बस इतना ही, इतने ही से काम चल जायेगा? उसी से नव-निर्माण हो जायेगा? उसी से समाज बन जायेगा? दूर तक सोचो। जैसे-जैसे उनका अनुभव आयेगा, वैसे-वैसे वे सीखेंगे।

यहा भी मैंने कह दिया है कि तुम लोग फैसला करते हो तो मैं तुम्हारे साथ हू। अगर गलत फैसला होगा तो नही साथ हूँ। अगर फैसला करोगे कि लोकसभा का विघटन हो और इन्दिराजी की हुकूमत का इस्तीफा हो तो मैं कभी तुम्हारा साथ नहीं दूंगा। यह गलत इसलिए है कि तुम्हारी शक्ति नही है। शेखी बघारते हो। गुजरात मे हो गया तो अब सब लडके चले गये। कुछ कालेज में पढ़ रहे हैं कुछ परीक्षाओं की तैयारी कर रहे है। आन्दोलन बन्द है, ठप्प है वहा बिहार मे कुछ चला है तुम्हारे बूते की बात जो है वही करो बहकी बात करोगे कि आसमान के सितारे हम तोड लायेंगे तो तुम्हारा साथ हम नही देंगे। भ्रम मे मत रहो, अपनी शक्ति तोल कर चलो. अपने को ठीक करो।

लोक आन्दोलन की मर्यादा

(पृष्ठ ८ का शेष)

अब लोकशाही का विकास हुआ है या नहीं, इसकी कसौटी क्या ? उस प्रतिकार से सामान्य नागरिक न भयभीत होना चाहिए न आतंकित, उस प्रतिकार से व्यक्ति की शक्ति बढ़नी चाहिए। हमारे प्रतिकार से सामान्य मनुष्य परेशान नही होना चाहिए। अन्यथा वह जिस प्रकार पुलिस से परेशान है वैसे ही यदि सत्याग्रही से परेशान होता होगा तो ऐसे प्रतिकार से लोकतन्त्र कभी भी सुदृढ़ नहीं हो सकेगा। प्रतिकार के लिए यह एक कसौटी है। अन्यथा बहुत सारे अहिंसक दीखने वाले आन्दोलन भी अत्यधिक हिंसक सिद्ध होंगे। एक बार मेरे पडोसी की पत्नी कुए मे गिरने की धमकी दे कर कुंए की जगत पर बैठ गई। पडोसी मेरे पास आकर कहने लगा यह तो कैसी भयकर स्त्री है। आप कुछ उन्हें समझाइये। मैं गया तो वह स्त्री मुझे कहने लगी कि मैं कहा उन्हे गाली देती हू या अन्य किसी प्रकार से परेशान करती हूं? मैं तो कुए मे गिर कर के खुद अपने ऊपर कष्ट झेल रही हू। कुछ शान्तिमय कहलाने वाले आन्दोलन इस तरीके से खून करने की अपेक्षा अधिक हिंसक बन सकते हैं। यदि आपके आन्दोलन से सामान्य नागरिक भयभीत होता है तो वह आन्दोलन जबर्दस्ती का आन्दोलन है।

होना तो ऐसा चाहिए कि जिस अन्यायी का प्रतिकार हो रहा है वह खुद भी इससे डरे नही। परन्तु वह थोडी आगे की चीज है। फिर भी प्रत्येक आन्दोलन मे इतना तो ख्याल रहना ही चाहिए कि जिनका अन्याय के साथ कोई प्रत्यक्ष संबन्ध नही है वे तो कम से कम हमारे प्रतिकार से भयभीत न हो। लोक आन्दोलन की यह मर्यादा होनी चाहिए।

बिना टिप्पणी के

हिमाचल को न भूलें

६ मई के 'सर्वोदय' मे पटना में हुई संगीति की रिपोर्ट पढ़कर बड़ा ताज्जुब हुआ। उसमे लिखा था देश भर के सौ सर्वोदय सेवक इकट्ठे हुए थे लेकिन इस संगीति की न तो हिमाचल के किसी सर्वोदय सेवक को सूचना ही दी गई थी और न निमन्त्रण ही यहा किसी को मिला। इसी तरह पवनार में हुई संगीति मे भी हिमाचल से किसी व्यक्ति को आमन्त्रित नही किया गया था। मै नहीं जानता इसका क्या कारण है? हिमाचल के हम सभी साथी आंदोलन की मुख्य धारा मे रहने की भरसक कोशिश करते है। फिर भी एक प्रदेश को इस तरह से नजरअन्दाज करना क्यो आवश्यक लगता है यह मेरी समझ म नही आया। मैं जानना चाहता हू कि इस तरह की संगीतियो मे किस योग्यता वाले सर्वोदय सेवकों को बुलाया जाता है ताकि हिमाचल के हमारे मित्र भी उसके योग्य बनने की कोशिश कर सकें या यू माना जाये कि संगीति बुलाने वालो के नक्शे मे हिमाचल का नाम ही नही है।

लक्ष्मी भाई धर्मशाला कांगड़ा

भले आदमी बनाम क्रांति

गया मे हुए गोलीकाण्ड की जाच के लिए जयप्रकाशजी ने जनसमिति नियुक्त करने की घोषणा की। *यह एक क्रान्तिकारी कदम है।* क्रांतिकारी दृष्टिकोण है और इसका जितना स्वागत होना चाहिए, जितना प्रचार होना चाहिए, उतना नही हुआ। अन्य क्षेत्रो के पत्रोको छोडिये स्वय सर्वोदय समाज (सर्व सेवा सघ) व सर्वोदय प्रेस ने भी उसका स्वागत व प्रचार उतना नही किया जितना कि होना चाहिए। वैसे यह स्वाभाविक है। राहत परोपकार, सुधार व सरकार सापेक्ष नीति अपनाने वाले संगठन से यह अपेक्षा करना उसके साथ ज्यादतीहोगी। ग्रामदान की स्वीकृति सरकार दे, लगान इकट्ठा कर सरकार को दिया जाये, चुनाव पद्धति मे सुधार सरकार करे, अनाज इकट्ठा कर वितरण सरकार करे, यह उस संगठन की नीति है जो शासन मुक्त समाज चाहता है, लोगो के दिल मे से 'दे-इज्म' निकालना चाहता है।

हम अहिंसक क्रांति करना चाहते है परन्तु कर रहे हैं काम राहत, परोपकार और सुधार के। धोधा-कट्ठा, ग्रामकोष, तरुण शांति सेना, आचार्यकुल, सर्वोदय पात्र, उपवासदान आदि ऐसे ही कार्य है।

हमें अब यह अहसास होने लगा है। यह शुभ सकेत है। तभी भूदान यज्ञ (१५ अप्रैल ४/७४) मे कुमार शुभमूर्ति लिखते है कि आखिर दूसरो का काम हमें क्यो करना चाहिए। हम 'दे-इज्म' मिटाने निकले हैं तो हमारा पहला नारा होना चाहिए—'नेवर डू देयर वर्क'। हमारा काम तो सिर्फ यही है कि हम लोगो के दिल में अपना काम आप करने की चाह पैदा कर दें। अपने अधिकार अपनी मुट्ठी मे रखने की चेतना पैदा कर दें। उनका यह कहना सही है कि तीन वर्षों के मथन से सहरसा से यह जो आंदोलन का अमृत निकला है उसे यदि इस आंन्दोलन को जीना है तो पीना पडेगा।'

हम सरकार निरपेक्षनीतिया अपनायें और वे नीतिया राहत, परोपकार सुधार की न हो कर लोगों मे ग्रामस्वराज्य की आकांक्षा पैदा करने वाली हो तभी हमारा आन्दोलन *जन-आन्दोलन बनेगा—हम क्रांति के वाहक* बनेंगे। अन्यथा हमारा नाम इतिहास मे सिर्फ इस रूप मे लिया जायेगा कि कुछ भले लोग थे जो भला काम करके चले गये। अब हमें यह सोचना है कि हमें क्रान्तिकारी बनना है या भले आदमी।

मदनमोहन व्यास
रतलाम

सर्व सेवा सघ के मन्त्री को एक पत्र मे कानपुर से विनय भाई ने लिखा है:

अहिंसक कार्यवाही की व्यूह रचना

श्रद्धेय जयप्रकाश बाबू के ऐतिहासिक कदम से हम सभी सर्वोदय कार्यकर्ता समाज मे व्याप्त अन्याय, शोषण और भ्रष्टाचार के विरुद्ध अहिंसक प्रतिकार के लिए लोकशक्ति विशेष कर युवाशक्ति के जागरण, सगठन एवं प्रशिक्षण में सहायक बनने में एक नये उत्साह के अनुप्राणित हुए हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि सर्व सेवा सघ के आगामी अधिवेशन में हम अपनी चर्चाएं अहिंसक प्रत्यक्ष कार्यवाही की व्यूह रचना के बिन्दु पर ही केन्द्रित करें। साथ ही हमें 'सर्वोदय समाज सम्मेलन का वह पुराना स्वरूप जिसमें सत्ता के शीर्षस्थ व्यक्ति भी विभिन्न रचनात्मक एव कल्याणकारी प्रवृत्तियो मे लगी सस्थाओ के कार्यकर्ताओ को उपदेश और सहयोग का आश्वासन देने के लिए पधारते रहते है, अब एकदम असगत लगता है। *विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि प्रधान* मन्त्री जी सम्मेलन मे पधार रही हैं और श्री जयप्रकाश बाबू नही पहुंच पा रहे है। आज की विशेष स्थिति मे यह कहा तक उचित और संगत बैठता है?

हमारा आपसे अनुरोध है कि आप अपने आंदोलन के ऐसे नाजुक मोड और मनोवैज्ञानिक अवसर पर सम्मेलन के पुराने रुढिगत स्वरूप मे परिवर्तन करें और सर्वोदय आन्दोलन मे संलग्न हम कार्यकर्ताओ को सत्तारूढ विभूतियो की मायावी छाया से दूर लोकनायक जयप्रकाश नारायण के प्रत्यक्ष आवाहन से प्रेरित होने का अवसर प्रदान करें।

अमरनाथ भाई फिर से गिरफ्तार कर लिए गये हैं। वे छपरा मे १३ मई को एक छोटी सी गोष्ठी को सम्बोधित कर रहे थे। गोष्ठी मे कुछ नागरिक, व्यापारी, छात्र, दो प्रादेशिक अखबारो के सवाददाता तथा भूदान समिति के एक कार्यकर्ता उपस्थित थे। पुलिस ने गोष्ठी के कमरे को घेर कर वक्ता अमरनाथ भाई के साथ साथ श्रोताओ को भी गिरफ्तार कर छपरा से भागलपुर जेल रवाना कर दिया है।

मुंगेर में निकला मूंगिया और विष भी

दक्षिण बिहार से अनुपम मिश्र की पहली रपट
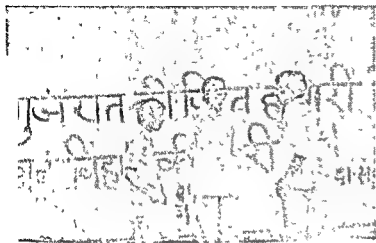
बिहार की धारों में गुजरात की गलतियां सुधारनी होंगी

आदर्श और निषिद्ध इन दो छोरों के बीच जितने भी छोर हो सकते हैं, इन सबको कहीं न कहीं ज्यादा छूने वाला बिहार का आन्दोलन अब शहरों से कस्बों में और कस्बों से गांव में पहुंच रहा है। आज से एक महीने पहले जो नारे केवल शहरों की सीमेंट वाली दीवारों पर मिलते थे वे अब गोबर से लिपी दीवारों पर भी चमक रहे हैं। जगह-जगह छात्र संघर्ष समितियों के साथ जनसंघर्ष समितियां बनती जा रही हैं। आन्दोलन की सही ताकत जे० पी० द्वारा सुझाये गये पांच सप्ताह के कार्यक्रम के अनुसार चलने में है। लेकिन कहीं-कहीं परिस्थितियां ऐसी बनती गयी हैं कि छात्रों या नागरिकों ने अपने इस कार्यक्रम को छोड़ कर दूसरों द्वारा लादे गये कार्यक्रम को उठाने में अपनी ताकत लगा दी है। ध्यान बांटने की इस योजनाबद्ध कोशिश का नतीजा यही होगा जो इस आन्दोलन के विरोधी चाह रहे हैं—जनआन्दोलन कमजोर होगा, लम्बे मकसद की उपलब्धि के प्रयत्न से हटकर यह छोटी-मोटी निरर्थक बातों के विरोध में फंस कर टूट जायेगा।

विधान सभा भंग करने के तीसरे सप्ताह के दौरान आन्दोलन के समर्थकों और विरोधियों के बीच बिहार के कई क्षेत्रों में संघर्ष होने की खबरें आयी हैं। कांग्रेस के कार्यकर्ताओं और नागरिकों व छात्रों के बीच हुए इस संघर्ष में मुंगेर की घटना एक साथ कई तथ्यों को खोलती है। ढेलेबाजी और गोली चलने के बाद लगे कर्फ्यू के उठने पर भूदान-यज्ञ के संवाददाता ने घटना का विवरण इस प्रकार दिया है: तेरह मई को मुंगेर की ओर जैसे-जैसे हम बढ़ते गये, मरने वालों की संख्या लगातार कम होती गयी। देवघर में बताया था कि कल के संघर्ष में आठ लोग मरे हैं, बरियारपुर (मुंगेर से १२ मील पीछे) तक यह संख्या एक तक उतर गयी। कहा गया कि आज शाम आठ बजे से पुन: कर्फ्यू लगेगा, सात बज चुके थे इसलिए हम तेजी से रवाना हुए, जिससे कर्फ्यू से पहले शहर में प्रवेश कर सकें। रास्ते भर हमारे मन में एक तनाव और आतंक से भरे सुनसान शहर का चित्र उभर रहा था। मुंगेर की सीमा कब शुरू हुई हमें मालूम ही नहीं पड़ा, देहाती अंधेरी सड़क पर शहरी बिजली के खंबे शुरू हो गये थे, हम सोच रहे थे कि अब कर्फ्यू का इलाका आयेगा पुलिस रोकेगी……।

लेकिन रिक्शे वाले, औरतें-बच्चे फिर पान की खुली दुकानें, रेडियो सीलोन से आते फिल्मी गानों के बीच से होते हुए हम लोगों की टैक्सी बाजार के चौक तक जब बिना किसी रोक टोक के आ गयी तो हमें खुद उतर कर पूछना पड़ा कि यहां कर्फ्यू नहीं है क्या? पान की पीक थूक कर जवाब मिला, शाम लगा था सुबह उठा लिया गया। कल याने १२ मई को कांग्रेस का जुलूस निकला था, उस पर हुए हमले में ६७ लोग घायल हुए, एक छात्र गोली से घायल हुआ फिर भी केवल २४ घंटे बाद शहर की इतनी सामान्य हालत का कारण जान सकना बहुत कठिन दिख रहा था। लेकिन इस सामान्य हालत के कारण पूरी घटना में मौजूद ही थे।

थोड़ा पीछे लौटें। १७ अप्रैल को केन्द्रीय उपमंत्री डी० पी० यादव ने तय किया कि वे अपने चुनाव क्षेत्र मुंगेर में आयेंगे। उनका यह हक था ही, इस हक से उन्हें कोई रोक नहीं सकता था, रोकना भी नहीं चाहिए था। मुंगेर के छात्रों और नागरिकों को यादव की प्रस्तावित यात्रा की खबर लगी। उन्होंने सरकार की दमन नीतियों के विरोध में यादव की यात्रा का बहिष्कार तय किया। पूरे मुंगेर में काले झंडे छा गये। तय हुआ कि जब मन्त्री शहर में प्रवेश करें तो उन्हें एक भी आदमी सड़कों पर न दिखे। ऐसे स्वागत की तैयारी की खबर यादव को पटना में ही लग गयी, उन्होंने मुंगेर यात्रा रद्द कर दी।

इधर मई █ पहले हफ्ते में प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने तय किया कि अपनी 'जनवादी' नीतियों के प्रचार में, 'प्रतिक्रियावादी' शक्तियों के विरुद्ध जनमत जगाने के लिए जगह-जगह कांग्रेस रैलियों का आयोजन

→

किया जाना चाहिए। मुंगेर में जिला स्तरीय रैली की तारीख तय हुई १२ मई।
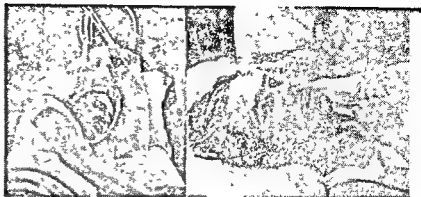
ग्यारह मई की रात को केन्द्रीय शिक्षा उपमंत्री यादव व बिहार के उद्योग मंत्री चन्द्रशेखर मुंगेर आये। कहा जाता है कि मुंगेर के आसपास के गांव में घूमे, यादव जाति के लोगों से आग्रह किया गया कि वे दल के जुलूस में आयें। बिहार में कहा जाता है कि कोई आदमी नहीं होता, आदमी का आदमी होता है। जनता को राजनैतिक दलों में बांटा जाता है फिर उन दलों को कुछ आदमियों में। इस तरह कहीं आपको जगजीवन राम के आदमी मिलेंगे, कहीं ललित बाबू के तो कहीं यादवजी के तो कहीं कर्पूरी ठाकुर के, सब आदमी के आदमी माने जाते हैं। इसी सिद्धान्त से मुंगेर में आन्दोलन को तीन जातियों—भूमिहार, राजपूत, और मुसलमान के नेताओं के आधार बना तोड़ने की कोशिश चली। लोगों ने इसे बढ़ती महंगाई, भ्रष्टाचार और उससे भी ऊपर हाल में ही हुए गोलीकाण्ड के कारण अस्वीकार किया ऐसा बताया गया। फिर भी जुलूस की तैयारी की गयी। जिले के अधिकांश विधायक, दो मंत्री व कुछ स्थानों के सक्रिय कार्यकर्ता मुंगेर आ चुके थे लेकिन लोगों का कहना है कि जुलूस में शामिल होने बहुत से 'गैर कांग्रेसी' भी आये थे।

छात्र संघर्ष समिति ने तय किया कि वह टाउनहॉल का घेराव करेगी। और जुलूस के बाद उसमें होने वाली सभा में विधायकों से इस्तीफे मांगेगी। उसका निर्णय था कि वह कांग्रेस जुलूस में कहीं भी अड़चन नहीं पैदा करेगी। लेकिन १२ मई की सुबह तड़के ही समिति के कार्यालय में आग लग गयी। आग से वैसे कोई खास नुकसान नहीं हुआ फिर भी छात्रों में इस घटना से काफी असन्तोष फैल गया। आन्दोलन के समर्थन और विरोध में काम कर रहे गुटों के बीच परस्पर उत्तेजना फैलाने का घटनाक्रम शुरू हो गया।

दफ्तर जलने के बाद छात्रों ने शहर में एक ट्रक पर घूम कर शहर में आये मंत्रियों, विधायकों के खिलाफ नारे लगाये। दोपहर को तिलक मैदान में जहां से जुलूस शुरू होने वाला था, गुण्डों को भोजन कराने और पैसा बांटने की खबर शहर में फैल गयी।

चार बजे जुलूस तिलक मैदान से रवाना हुआ। छात्र वहां नहीं थे, उन लोगों ने अपनी पूरी ताकत जुलूस की मंजिल याने टाउनहॉल पर लगा दी थी। हॉल के गेट पर विधायकों का प्रवेश रोकने बच्चे लेटे हुए थे, या फिर दूसरों के शब्दों में किराये पर लिये गये बच्चे लिटाये गये थे। इधर कांग्रेस का जुलूस या फिर दूसरों के शब्दों में 'खरीदे गये गुण्डों' का जुलूस शहर की ओर बढ़ रहा था। 'प्रतिक्रियावादियों' के विरुद्ध जनमत जगाने वाले उस जुलूस में कितने लोग शामिल थे? प्रदेश मंत्री चन्द्रशेखर के अनुसार जुलूस में ५००० लोग थे, एक अन्य कांग्रेस विधायक राजेन्द्र प्रसाद सिंह के अनुसार 'हम लोग हजार से कम थे।' नागरिकों का कहना है कि जब जुलूस चला तब उसमें कोई ५०० लोग रहे होंगे लेकिन शहर की ओर आते-आते उस की संख्या घटकर करीब २०० रह गयी। इसी क्रम में विरोध करने वालों की संख्या कांग्रेस के लोगों के अनुसार २००/३०० से अधिक नहीं थी जब कि लोग भावावेश में कह जाते हैं कि 'पूरा मुंगेर जुलूस का विरोध कर रहा था'।

जुलूस तिलक मैदान से निकल कर शाह जुबैर रोड पर मुड़ा। इधर ८-१० बरस के छोटे-छोटे बच्चों का एक झुण्ड खड़ा था। उसने जुलूस को हुर्रे हुर्रे कह कर चिढ़ाया। आगे जीप में मंत्री थे उनके पीछे पुलिस की जीप फिर केन्द्रीय मंत्री पैदल थे। फिर कार्यकर्ता। अंत में एक ट्रक था जिस पर बहुत से लोग बैठे थे। कहा जाता है कि इस ट्रक में लाठी और पत्थर भरे हुए थे जिनका 'उचित समय' पर इस्तेमाल किया जा सकता था। वह 'उचित समय' आया भी लेकिन जुलूस के विरोधियों के पक्ष में।

कोल्ड स्टोरेज के पास पहला पटाखा, चला, दोनों पक्ष एक दूसरे को उसका श्रेय देते हैं। जुलूस मेन बाजार में आ गया था। उसके समर्थन में शाम चार बजे हर दुकान पर पोस्टर्स चिपकाये गये थे। केवल एक ही घंटे में वे सब गायब थे। उनके बदले 'यादव वापस जाओ', की पर्चियां जगह-जगह दीवारों पर, नीचे पिघली डामर की सड़क तक पर चिपकी हुई थी।

पटाखे की आवाज बम की अफवाह बनी। टाउनहाल तक पहुंची। कहा जाता है कि छात्र संघर्ष समिति ने किसी भी परिस्थिति में जुलूस से नहीं उलझना तय किया था लेकिन समिति का एक हिस्सा किसी मौके की तलाश में था। बम की अफवाह ने उन्हें वह मौका दे डाला। कुछ छात्र टाउनहाल से जुलूस की ओर चल दिये। जुलूस जिस जगह जितना ऊंचा काला झण्डा देखता उतनी जोर से 'इन्दिरा की सरदारी में देश को आगे बढ़ना है' नारा लगाता।

जुलूस मुख्य बाजार में खादी भण्डार के सामने आ गया था। भण्डार के कार्यकर्ता भण्डार से खरीदे गये खादी के झंडों से सजे जुलूस को छत से देख रहे थे। (पूरा बाजार

घायल कांग्रेसी विधायक तथा छात्र : हिंसा के शिकार

जुलूस के विरोध में बन्द था) झंडे धीरे-धीरे खिसक रहे थे, अगले चौराहे पर पहुंच कर रुक गये। सुना कि आगे छात्र आ गये हैं। दोनों ओर फुटपाथ पर भी दर्शकों की भीड़ जमा थी। नोकझोंक हुई। कहा गया कि ट्रक से कुछ लाठियां निकाल कर भीड़ से एक दो लोगों को जुलूस में खींच कर मारा गया। फुटपाथ पर लोगों में भगदड़ हुई। अगल बगल के लोग जुलूस के पीछे आ गये। जुलूस घिर गया। सामने छात्र, पीछे, दायें-बायें भीड़ बगल के घरों से ईंट और ढेलों की बरसात शुरू हो गयी। आगे चल रहे मंत्रियों को पुलिस की जीप ने एक अन्य जीप में बिठा कर घटना स्थल से तेजी से निकाल कर बचा लिया। खादी भण्डार से भीड़ में दिख रहे कांग्रेस के झंडे एकाएक गायब हो गये, जुलूस के लोग आसपास की गलियों में भागे, ऊपर घरों से चलने वाले ढेलों से बचने। कहते हैं हर गली में एक एक को पकड़ कर लोगों ने मारा। घरों के ऊपर से ढेले फेंकने में 'स्त्री शक्ति' का काफी बड़ा हाथ था। इसे मारने वालों से लेकर मार खाने वाले सभी लोगों ने स्वीकार किया। मारने वालों ने गर्व के साथ मार खाने वालों ने आश्चर्य मिश्रित शर्म के साथ।

शाम को मुंगेर अस्पताल में ६७ घायल भरती हुए। प्राय: सभी सिर पीठ, हाथों, पैरों पर लाठी और ढेलों की मार से घायल हुए थे। सुबह तक अस्पताल में कोई ३० लोग रह गये। लोगों का कहना है कि आस-पास से लाये गये योधित गुण्डों को 'कार्य सियों' की तरह तो अस्पताल में रखा नहीं जा सकता था। छात्रों की ओर से बेकसूर बलराम को गोली लगी और उसकी बायीं टांग को घुटने के नीचे से काटना पड़ा। बलराम आठवें बजे पहले पटना से आये थे जुलूस देख रहे थे। छात्र संघर्ष समिति का कहना है कि हमारी ओर से भी कुछ छात्र घायल हुए हैं, लेकिन उन्हें गिरफ्तारी के भय से अस्पताल में भरती नहीं किया गया। लेकिन इसमें शंका की गुंजाइश है, नागरिकों में से भी कोई घायल नहीं हुआ। तो इस तरह मोटे तौर पर जुलूस के कांग्रेसी सदस्य व गैर कांग्रेसी सदस्यों से ही घायलों के आंकड़े भर जाते हैं।

स्थानीय कांग्रेस विधायक राजेन्द्रप्रसाद

महिला संघर्ष समिति की सदस्याएं

सिंह ने, जिनका पूरा परिवार सर्वोदय से संबंधित रहा है, संयोजन समिति के सदस्य नारायण देसाई को बताया कि दूसरी ओर से काफी तैयारी थी, फिर भी हम लोगों को अपना जुलूस निकालने का लोभ था। फिर जब से जे० पी० ने इस आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकारा था तब से हम निश्चिन्त हो गये थे। छात्रों ने भी हमें न आते समय छेड़ा (मुंगेर में प्रवेश करते समय) न जाते समय। छात्र संघर्ष समिति के दफ्तर जलाये जाने की घटना से हम परिचित नहीं थे। लेकिन जुलूस पर हमला छात्रों ने नहीं किया, उनकी आड़ में मुहल्ला समितियों के लोगों ने किया। हैरत है कि औरतें और छोटे-छोटे बच्चे भी घरों की छत से ढेले चला रहे थे। कांग्रेस में रहते हुए भी हम सर्वोदय के साथ चलते रहे हैं। आज हमारा आमना-सामना हो गया है। मैंने तो आचार्य राममूर्ति से भी आग्रह किया है कि आज की परिस्थिति के हल के लिए हम सबको साथ बैठ कर कुछ करना चाहिए। चारों ओर फैले एक भ्रष्ट जीवन को मिटाने
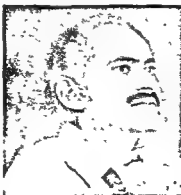
प्रो० जाबिर हुसैन : विश्वास खो दिया

के लिए जो आन्दोलन चला है वही भ्रष्ट हो रहा है, मैं भयभीत अनुभव कर रहा हूं। उस दिन पुलिस प्रभावहीन थी, उस दिन यदि वह काफी पहले गोली चलाती तो गया गोली कांड से भी चौगुना संहार हो जाता। हम कांग्रेस के लोग इस बात से खुश ही हैं कि पुलिस ने हस्तक्षेप नहीं किया।'

उस मुहल्ले की महिलाओं का कहना कि 'यह घटना नहीं होनी चाहिए थी फिर भी सारी घटना की जिम्मेदारी यादव की है। चाहे कांग्रेसी घायल हुए हों चाहे छात्र, सब यादव के कारण हुआ। वे जुलूस ही निकालना चाहते थे तो अपने कार्यकर्ताओं का निकालते। गुन्डों को बुला कर अपनी ताकत दिखाने का यह नतीजा निकला।' आवेश में बोल रही इन औरतों ने नारायण देसाई के समझाने पर बहुत देर बाद यह स्वीकार किया कि स्त्रियों की शक्ति हिंसा नहीं है और उन्हें इस घटना पर खेद है। नारायण भाई ने उनसे साफ कहा कि आप लोगों ने प्रतिज्ञा की थी, वह गुस्से के कारण भंग हो गयी। कारण कितना भी ठीक दिखे, सत्य और अहिंसा पर आधारित ताकत तो खो गयी है।

जनाब मौलाना मिन्नतुल्लाह रहमानी ने, जो मुंगेर के एक मुस्लिम संगठन के धार्मिक नेता हैं और हाल में ही कांग्रेस की ओर से बिहार विधान परिषद के सदस्य नामजद किये गये हैं, कहा कि आन्दोलन आम लोगों के हाथ से निकल कर उनके हाथ में आ गया है जो हिंसा में भरोसा रखते हैं।

आन्दोलन के समर्थक, 'बिहार आचार्य-कुल के सक्रिय सदस्य अंग्रेजी के प्रो० जाबिर हुसैन का बयान आम लोगों में व्याप्त न सिर्फ विरोध बल्कि घृणा तक को सूचित करता है। प्रो० जाबिर जुलूस देखने चौराहे पर गये थे। जब ढेलों की बरसात होने लगी तो वे गली में चले गये। वहां उन्होंने एक बहुत तंदुरुस्त आदमी को लगभग मरणासन्न हालत में सड़क पर गिरा पाया। वह पानी-पानी चिल्ला रहा था। प्रो० जाबिर ने आसपास के घरों से पानी मांगा, "लोगों ने जिनमें कई औरतें भी शामिल थीं, मुझे उसे पिलाने को पानी नहीं दिया एक ने तो कहा कि इस गुण्डे से बहुत ही सहानुभूति है तो गंगाजल से आओ और पिला

→

अणुशक्ति : आत्मा और...

(पृष्ठ ३ का शेष)

सावधानी की आवाज जो कहे कि अपनी अणुभट्टियों का उपयोग पहले आइसोटोप्स बनाने और बिजली पैदा करने मे तो लगाओ। बिजली की कमी के कारण हमारे उद्योग और खेती की उत्पादकता मारी जा रही है। क्या हमारी अणुभट्टिया अपनी पूरी शक्ति से बिजली पैदा कर रही हैं ? क्या वे उर्जा संकट का सामना करने मे मदद कर रही हैं? शाति के लिए अणुशक्ति का कौनसा उपयोग हमने कर दिखाया है अभी तक ? और हमी क्यो ससार के किस देश ने इस शक्ति का कारगर उपयोग शाति और नवनिर्माण में किया है ? अणुशक्ति से होने वाला संहार हमने देखा है और उससे होने वाली शाति को हम भुगत रहे हैं। फिर भी उससे सायक नही लेते और जो सिद्ध नही हुआ है उस पर अपनी आस्था लगाये हुए हैं।

तकनीक संसार के विकासशील देशो की होड़ मे आने के लिए जरूरी है या इस देश की आवश्यकताओं के साथ अनुरूपता स्थापित करने के लिए है ? छब्बीस वर्षो से हम विकसित तकनीक शास्त्र की दुहाई दे रहे हैं और विदेशो से भारी कीमत पर आयात कर-कर के उसका उपयोग कर रहे हैं लेकिन उससे इस देश के गरीब आदमी की कौन सी समस्या हल हुई है ? घनी आबादी वाला यह गरीब देश है हमारा। इसमे पूंजी आधारित और केन्द्रीय कृत विशाल तकनीक की नही श्रम आधारित, विकेन्द्रित और मानवीय तकनीक की जरूरत है। लेकिन खाली हाथो को काम और भूखे पेटो को रोटी देने के बजाय हम पश्चिम के बहुलतावादी तकनीक के पीछे पडे हैं। हमें पश्चिम के साथ शोषण पर आधारित समृद्धि की दौड में बराबरी पर आना है या इस देश की विषमता मिटाना है? पिछले दो तीन वर्ष से इस देश मे उठ रही उपयुक्त और देशी तकनीक की माग को अणु विस्फोट दबा देगा क्योकि वे लोग जो पश्चिम के अमानवीय केन्द्रीकृत तकनीक के उपयोग मे माहिर हैं और उसके जरिये अपने हित स्वार्थ पूरे करते हैं, अब शान से कह सकेंगे कि देखो हमने कितनी बडी उपलब्धि कर ली ! यह पूछने वालो की ताकत अब कम हो जायेगी कि अणु शक्ति पर आम आदमी का क्या नियंत्रण होगा और इससे अपना वह कौनसा काम कर सकेगा ? ये सवाल इस देश की आत्मा के भी हैं और पेट के भी। लेकिन अभी ये गौरव की रेडियोधर्मी धूल मे डूब गये हैं। मध्यकाल मे भक्ति का इतना जोर होते हुए भी एक कबीर था जिसने कहा-[illegible] भजन न होई गोपाला। लेकिन आर्थिक संकट के इन भूख-भरे दिनो मे कोई कबीर नही है जो कह सके कि मुझे अणु विस्फोट नही भूख और अभाव का शमन चाहिए।

(पृष्ठ १५ का शेष)

दो। मैं वहां से भाग कर खादी भण्डार आया जहां से पुलिस को फोन कर सूचित किया कि पजाब नेशनल बैंक के पीछे ऐसी हालत में एक आदमी पड़ा है। उसे तुरन्त अस्पताल पहुंचाइये।

यह घृणा हमे कहां ले जायेगी यह सवाल तो है ही लेकिन इसके साथ एक और सवाल आता है। जिन लोगो ने आज से दो साल पहले प्रचण्ड बहुमत प्राप्त कर व्यवस्था संभाली थी इतने कम समय में जनता ने उनके प्रति विश्वास क्यो खो दिया, वह अविश्वास इस घृणा मे क्यो बदल गया ? क्या लोगो की इस घृणा और हिंसा के पीछे शासन और समाज मे एक बड़े पैमाने पर छिपी घृणा और हिंसा नहीं है ?

जिला सर्वोदय मण्डल मुंगेर के अध्यक्ष निर्मल चन्द्र का कहना है कि मुंगेर के इस काण्ड मे हम असफल हुए हैं। बिहार आचार्य कुल के अध्यक्ष आचार्य कपिल ने कहा कि असामाजिक तत्व शब्द अब भाववाचक संज्ञा बनता जा रहा है।

घटना की रात को उद्योगमंत्री चन्द्रशेखर ने सरकिट हाउस मे नारायण देसाई से कहा कि वे अनिश्चित काल के लिए अनशन पर बैठ रहे हैं, नारायण भाई ने कहा कि यदि उनकी जगह होते तो वे भी अनशन ही करते, अपनी वेदना व्यक्त करने के लिए। नारायण भाई ने अनुरोध किया कि वे अनिश्चित के बदले निश्चित समय का अनशन करें। उधर केन्द्रीय उपमंत्री यादव ने संकेत किया है कि वे मुंगेर मे अगले माह एक जुलूस फिर निकालेंगे।

घायल लोग धीरे-धीरे अपने घर रवाना हो रहे हैं। उनके घाव भर जायेंगे। लेकिन मन मे हमला करने वालो के प्रति जो घृणा के घाव होंगे वे आसानी से भरेंगे नही और उन हमलावरो के मन मे जो घृणा है उसके घाव भरेंगे ? १२ मई के बाद मुंगेर फिर बिलकुल स्वाभाविक हो गया है, लोग पान खा रहे हैं, पीक-थूक रहे हैं, रेडियो पर गाने बज रहे हैं, लेकिन मुंगेर का मन ???

संघ अधिवेशन पवनार में

सर्व सेवा सघ का अर्धवार्षिक अधिवेशन ५, ६ और ७ जुलाई '७४ को ब्रह्म विद्या मन्दिर पवनार मे होगा। सघ के मंत्री ठाकुर दास बग के अनुसार इस अधिवेशन मे गये साल सेवाग्राम मे हुए अधिवेशन द्वारा अनुमोदित कार्यक्रम के अमल की समीक्षा और देश की वर्तमान परिस्थिति मे सर्वोदय की भूमिका पर विचार होगा।

इन्दिराजी से बातचीत

सर्व सेवा सघ का आठ सदस्यीय प्रतिनिधिमण्डल २७ मई को प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से मिला। बातचीत करीब चालीस मिनट चली। इन्दिरा जी को सर्वोदय के विभिन्न कार्यक्रमो से अवगत कराया गया। प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा ने किया और ठाकुरदास बग, जगन्नाथन, निर्मला देशपाण्डे, प्रभाकर, राधाकृष्ण, आर० रामचन्द्रन और देवेन्द्र भाई उसमें शामिल थे।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार ३ जून, '७४

क्या नई पीढ़ी सड़-गुजरी व्यवस्था की गोद में पल सकेगी ? लेख पृष्ठ ५ पर

● अणु शक्ति और आत्म शक्ति के बीच विकल्प : प्रभाष जोशी ● सत्य, अहिंसा और अनुशासन : महात्मा गांधी की नजर में ● अणु विस्फोट से आकाश में बनते हुए सवाल : नारायण देसाई ● परिणाम कब तक आयेगा ? अनुपम मिश्र ● जे० पी० का काम [illegible] का दूसरा पहलू : धीरेन दा ● गया में गोलियां बेमतलब चलाई गईं : जे० पी० द्वारा नियुक्त समिति की रपट ● लोक सेवकों के साथ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० ३ जून, '७४ अंक ३६

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

पशु शक्ति और आत्म शक्ति के बीच त्रिशंकु

प्रधान मंत्री ने अपने सभी पड़ौसियों और दूसरे देशों को फिर विश्वास दिलाया है कि वे भारत की अणुशक्ति से कतई नहीं डरें क्योंकि वह पूरी तरह शांति के कामों के लिए है। इन्दिराजी का बार-बार यह आश्वासन देना ही इस बात का सबूत है कि पड़ोस के देश हमारे अणुविस्फोट से शंकित हैं और बड़े देशों ने सहायता को लेकर ऐसी कार्यवाहियाँ शुरू कर दी हैं जो भारत को सजा देने की उनकी इच्छा की परिचायक हैं।

हम लाख कहें कि हमारी अणुशक्ति शांति के लिए है लेकिन यह तो हमें मानकर ही चलना चाहिए कि हमारी इन बातों पर अब किसी को विश्वास नहीं होगा। अणु-विस्फोट इस सदी का एक ऐसा पाप है जिसे कर गुजरने के बाद वह देश अविश्वास के लिए अभिशप्त हो जाता है। हिरोशिमा पर गिराया गया पहला अणुबम आतंकित मनुष्यता की चेतना पर भय का इतना गहरा गड्ढा खोद गया है कि अणुशक्ति से अब चाहे जितना निर्माण हो जाये यह गड्ढा पूरा नहीं जा सकेगा। अमरीका में वह पाप मित्र राष्ट्रों की ओर से किया था इसलिए पूरा पश्चिम अणुबम को लेकर एक गहरे अपराध भाव से ग्रस्त है और जापान तो खैर उसके परिणाम अब तक भुगत रहा है। इस अपराध को दबाने, पाप को छुपाने और भय से मुक्ति पाने के लिए पश्चिम में अणु बमों की होड़ चली और अब उनके पास इतने बम हैं जो देखते-देखते पूरी दुनिया को नष्ट कर सकते हैं। सर्वनाश की देहरी पर पहुंच कर ही पश्चिम अपने अपराध और भय को दबा पा रहा है। अमरीका, रूस, ब्रिटेन और फ्रांस में सब जानते हैं कि बमों की उनकी अमूल्य निधि निरर्थक है क्योंकि उसके उपयोग का मतलब आत्मघात और सर्वनाश है। जब किसी देश के गर्व की चीजें उसमें निरर्थकता पैदा करें तो उसका पूरा जीवन ही निरर्थक हो जाता है। पश्चिम इस निरर्थकता से ग्रस्त है। महात्मा गांधी की एक और भविष्यवाणी सही साबित हुई है। हिरोशिमा के विनाश के बाद उन्होंने कहा था—'विनाश करने वाले राष्ट्र की आत्मा का क्या हुआ है यह अभी कहा नहीं जा सकता। प्रकृति की शक्तियां बड़े रहस्यमय ढंग से काम करती हैं।''' गुलाम बनाने वाला खुद को या अपने सहायक को कैद में डाले बिना गुलाम को कैद में नहीं रख सकता।' पश्चिम अपने अणुबमों से संसार के मन में जो भय और आतंक पैदा करना चाहता था आज वह खुद उसका शिकार है।

तो पश्चिम तो हिरोशिमा का पाप ढो रहा है लेकिन भारत के मन में कौन सी ग्रंथि थी जो उसने अणुविस्फोट किया और अपराधियों के गैंग में शामिल हो गया? यह कह कर कि हमने तो शांति के लिए विस्फोट किया है हम अपनी उस ग्रंथि को दबा नहीं सकते जो विदेशी आक्रमणकारियों से लगातार हारने, अपमानित होने और आजाद हो कर राष्ट्र बनने के बाद लड़े गये तीन अनिर्णित युद्धों के कारण हमारे मानस में बनी थी। यह तथ्य कम महत्वपूर्ण नहीं है कि अणु विस्फोट करने का निर्णय हमने तीन साल पहले लिया था जब अपने इतिहास की पहली लड़ाई हम बांगला देश में जीते थे। एक बार यह सिद्ध करने के बाद कि इस उपमहाद्वीप की सबसे बड़ी ताकत हमीं हैं, हमारी ग्रंथि ने हमें सिखाया कि अब हमारी चीन से बराबरी होनी चाहिए क्योंकि नेफा की शर्म धोना है। अणु विस्फोट करके हमने चीन को बताया है कि एशिया की जागीरदारी पर उसका एकाधिकार नहीं है। जो हमने हिमालय की बर्फीली चोटियों पर खोया था उसे हम थार के रेगिस्तान में प्राप्त करना चाहते थे। यानी शक्ति की पूजा में मानसिक स्तर पर हम अमरीका, रूस और चीन से अलग नहीं है हम भी मुख में शांति और बगल में अणुबम रखना चाहते हैं।

हमारी दिक्कत यह है कि अणुविस्फोट हमने ऐसे समय किया जब उसे शुद्ध और खुले रूप से अपनी गर्वीली शक्ति के नाते हम विज्ञापित नहीं कर सकते। न हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी है कि हम कह सकें कि दुनिया की आलोचना दो कौड़ी की है न हमारा मन साफ है कि कह सकें, 'ठीक है, हमें खाने और पहनने को नहीं मिलता लेकिन हम राष्ट्रीय गौरव को गिरने नहीं देंगे। आदमी सिर्फ रोटी से नहीं जीता उसे गौरव भी चाहिए।' ऐसा हम कह नहीं सकते क्योंकि महाभारत और कलिंग के युद्धों ने हिंसक शक्ति को हमारे मन में निरर्थक कर दिया है। हमारा राष्ट्रीय गौरव हमारी सैन्य शक्ति और विध्वंसक क्षमता में हमने कभी नहीं माना। बुद्ध से लेकर महात्मा गांधी तक हमारे सारे महापुरुषों ने शांति, अहिंसा, प्रेम करुणा और सहअस्तित्व को हमारी शक्ति माना और बताया। नेहरू यह कहते कभी नहीं थके कि पंचशील भारत के इतिहास की उपलब्धियों का निचोड़ है। जिन तत्वों को हम अपनी आत्मा की शक्ति मान कर चले उन्हें हम आज चाहें भी तो छोड़ नहीं सकते। इसलिए हमारे अणु विस्फोट ने हमें पशुशक्ति की धरती और आत्मशक्ति के आसमान के बीच में त्रिशंकु की तरह लटका दिया है। इसलिए इन्दिरा जी ने बड़ी झुंझलाहट और तल्खी के साथ कहा कि इसका क्या मतलब है कि अमीर देश विनाश के लिए अणुशक्ति का प्रयोग करें तो कोई हरकत नहीं लेकिन एक गरीब देश शांति के लिए उसका उपयोग करने का उपयोग करे तो यह गलत है। अमीर देश पूछें या न पूछें, हम जरूर पूछना चाहते हैं कि क्या भारत जैसे गरीब देश ने शांति और विकास के सस्ते और उपलब्ध साधनों का उपयोग कर लिया है?

—प्रभाष जोशी

सत्य, अहिंसा और अणुशक्ति महात्मा गांधी की नजर में

विश्व मे उथल-पुथल मचाने वाले परिवर्तन हुए हैं। सत्य और अहिंसा की अपनी निष्ठा पर क्या मैं आज भी कायम हू परमाणुबम ने क्या मेरी इस निष्ठा के धुरें उडा दिये है? धुरें तो खैर उडे ही नही हैं, उसने यह बात भी मेरे सामने बिलकुल स्पष्ट कर दी है कि सत्य और अहिंसा की जुडवा शक्तिया ससार की सबसे बडी शक्ति है। इस शक्ति के सामने अणुबम की कुछ भी नही चल सकती। अणुबम तथा सत्य अहिंसा दो बिलकुल विपरीत प्रकार की शक्तिया हैं, एक नैतिक और आध्यात्मिक दूसरी शारीरिक और भौतिक। पहली शक्ति दूसरी से अनन्त गुनी बडी हुई है क्यो कि दूसरी का सहज रूप में ही कहीं न कही अन्त है। आत्मा की शक्ति सदा विकसित होती रहती है और वह असीम है—अन्तहीन है। अपने परिपूर्ण विकास मे वह ससार मे अजेय है। जब मैं ऐसा कहता हू तब इतना जानकर कहता हू कि मैं कोई नई बात नही कह रहा हू मैं यहा केवल एक तथ्य का साक्षी हू। इस शक्ति का प्रत्येक स्त्री पुरुष बालक के अन्तर मे निवास है-चाहे किसी भी वर्ण या धर्म के क्यो न हो। इतना ही है कि यह तत्व ज्यादातर लोगो मे गुप्त है किन्तु विवेकपूर्ण शिक्षा से उसे जागृत किया जा सकता है। यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि सत्य को समझें बिना और इसे उपलब्ध करने के लिए आवश्यक प्रयत्न किये बिना आत्मनाश से बचा ही नही जा सकता। उपाय हरेक व्यक्ति के पास है। आसपास के लोग साथ देते हैं या नही इसे सोचे बिना प्रत्येक व्यक्ति को आत्माभिव्यक्ति करना सीखना चाहिए।

क्या अणुबम से हिंसा मात्र की व्यर्थता सिद्ध नहीं हो गयी है?

अहिंसा एकमात्र उपाय :

हमारे अमरीकी मित्रो का कहना है कि अणुबम ऐसी अहिंसा लायेगा जैसी और कोई नही ला सकता। यदि उनके कहने का यह अर्थ हो कि इसकी विनाश शक्ति फिलहाल संसार के मन में हिंसा के प्रति घृणा उत्पन्न कर देगी तो उनका कहना ठीक नहीं है। यह तो कुछ इसी तरह की बात हुई कि कोई आदमी इतने ज्यादा पकवान खा ले कि उसका जी मचलाने लगे और वह उनसे अघा जाये लेकिन जैसे ही मितली का असर दूर हो वह दुगने उत्साह से उन पर टूट पडे। ठीक इसी तरह घृणा का असर समाप्त होने के बाद क्या ससार नये उत्साह से हिंसा पर नही लौट आयेगा?

कई बार बुराई मे से भलाई निकल आती है। लेकिन ऐसा तब होता है जब वह ईश्वर के हाथ की बात हो। मनुष्य के हाथ की नही। मनुष्य तो यही जानता है कि जैसे भलाई का परिणाम भला होता है उसी तरह बुराई का बुरा। यह सम्भव हो सकता है कि अणुशक्ति का—जिसका उपयोग अमरीकी वैज्ञानिको ने विनाश के लिए किया है—दूसरे वैज्ञानिक लोकोपकारी कार्यों मे उसका उपयोग करें। लेकिन अमरीकी मित्र यह नही कह रहे थे। एक स्पष्ट सत्य को छुपाने की कोशिश करने की हद तक वे भोले नहीं हैं। लडाई झगडे भडकाने वाला आग का उपयोग तबाही के लिए करता है जब कि गृहणी उसी आग का उपयोग पौष्टिक आहार बनाने मे करती है।

मुझे ऐसा लगता है कि अणुबम ने, युगो युगो से चली आ रही मनुष्यता की पोषक ऊची-ऊची भावनाओ को खत्म कर दिया है। पुराने जमाने मे लडाई के कुछ ऐसे नियम होते थे जिनसे उसे सहन करने मे सहायता मिलती थी। लेकिन अब हम युद्ध की नग्न वास्तविकता देख रहे हैं। आज शक्ति के सिवाय युद्ध का कोई दूसरा नियम नहीं है। अणुबम ने मित्र राज्यो को एक खोखली जीत दी है। थोडी देर के लिए उसने जापान की आत्मा को भी खत्म कर डाला है। नष्ट होने वाले राष्ट्र की आत्मा को कितना धक्का लगा है यह आज कहना कठिन है। प्रकृति बडे रहस्यमय ढग से अपना काम करती है।

ऐटमबम की इस त्रासदी से हमे एक सच्ची शिक्षा यह मिल सकती है कि जिस तरह हिंसा को हिंसा से नहीं मिटाया जा सकता, उसी तरह एक अणुबम दूसरे अणुबम को नही मिटा सकता। सिर्फ अहिंसा के बल पर ही हिंसा से बचा जा सकता है। घृणा को प्यार से जीता जा सकता है। घृणा के बदले घृणा से वह और गहरी हो जाती है। मैं जानता हू कि जो बात मैं पहले कई बार कह चुका हू और जिसका मैं अनुसरण करने का भरसक प्रयत्न करता हू, वही आज फिर दोहरा रहा हू। सच तो यह है कि पहले भी मैंने कोई नयी बात नहीं कही थी। यह तो एक सनातन सत्य है। यह जरूर है कि मैंने कोई किताबी बात नहीं कही थी। जो मेरी रग-रग मे समाया हुआ है उसी को मैंने जोर दे कर कहा। साठ साल तक मैंने इसे जीवन के हर क्षेत्र मे परखा है और मेरी आस्था और दृढ हो गयी है। मित्रोंके अनुभव ने मेरी आस्था को और बल दिया है, यह एक ऐसी शक्ति है, जिसके सहारे आदमी अकेला हो तो भी बेझिझक खडा रह सकता है। मैक्समूलर की बरसो पहले कही गयी इस बात को मैं मानता हू कि जब तक सत्य पर अविश्वास करने वाले मौजूद रहेंगे, सत्य को दोहराना ही पडेगा।

"अणुबम की भयानकता ससार पर अहिंसा नही थोप सकती। यदि सारे राष्ट्रो के पास अणुबम हो तो वे उसका उपयोग करने मे डरेंगे, क्योंकि ऐसी हालत में अणुबम के उपयोग का मतलब होगा सभी सम्बन्धित शक्तियों का अन्त"—मैं ऐसा नही मानता।

अणुबम का उत्तर

अणुबम का प्रतिकार क्या है? क्या इसने अहिंसा को गयी-गुजरी बना दिया है? नहीं, इसके विपरीत अब केवल अहिंसा का ही

(शेष पृष्ठ १६ पर)

---

२ जून को जे० पी० पटना मे

वेलूर अस्पताल मे सफल आपरेशन के बाद पूरी तरह स्वस्थ होकर जे० पी० मद्रास आ गये हैं। वे दो जून को पटना पहुंच रहे हैं।

अणु विस्फोट से आकाश में जलते कुछ सवाल

पूछे हैं शांति सेना मण्डल के संयोजक नारायण देसाई ने

भारत में अणुशक्ति के विस्फोट के कारण जगह-जगह जो बधाइयाँ दी जा रही हैं और विजयोत्सव मनाया जा रहा है, उसके बीच हम कुछ प्रश्न पूछना चाहते हैं डा० होमी सेठना से, विनोबा भावे से, इन्दिरा गांधी से।

डाक्टर सेठना, आप शायद भूल गये होंगे, अनेक वर्ष पहले टाटा इन्स्टिट्यूट आफ फण्डामेंटल रिसर्च के एक हाल में आपने यह विचार व्यक्त किये थे कि 'भारत भले शांति की नीति अख्तियार करता रहे, लेकिन उसके लिए अणुबम बनाकर अपने स्टॉक में रख लेना उचित है।' तब आपके स्थान पर एक शांतिवादी मनुष्य भारत के अणु आयोग की अध्यक्षता कर रहा था। अब आप स्वयं अध्यक्ष हैं। आपकी सलाह का वजन भारत सरकार की नीति पर जरूर पड़ता होगा। अभी जो आपने राजस्थान की सीमा पर अणुविस्फोट किया है, वह आपकी उसी नीति का इशारा देने वाला तो नहीं है? बधाइयों को स्वीकार करते हुए आपने यह भी कह दिया है कि आवश्यकता होगी तो और भी विस्फोट किये जायेंगे। आप देश भर में इस विषय के सबसे बड़े ज्ञाता हैं। क्या आप हमें यह बतायेंगे कि 'शांति के लिए अणु विस्फोट' और 'युद्ध के लिए अणु विस्फोट' में वैज्ञानिक दृष्टि से क्या अन्तर होता है? क्या इस प्रकार के साधन से परमाणु बम नहीं बन सकते? क्या इन विस्फोटों से विकिरण नहीं होता? इस विस्फोट के बाद हवा दक्षिण पश्चिम की ओर याने पाकिस्तान की ओर बही, उसके बदले में यदि उत्तर पूर्व की याने भारत की ओर बही होती, तो उसे रोकने के लिए आपने उपाय सोच रखे थे?

आचार्य विनोबाजी आप सन्त हैं, तत्वदर्शी हैं, सूक्ष्म प्रवेशी हैं। शांति के लिए नोबेल पारितोषिक आपको मिलना चाहिए यह मानने वालों में इस टिप्पणी का लेखक भी था, जब तक डा० किसिंजर को यह पारितोषिक नहीं मिला था। ज्ञात हुआ कि आपने कहा है कि इस विस्फोट से भारतीय उपमहाद्वीप में शांति बने रहने में सहायता होगी। इस विस्फोट से शान्तिमय प्रयोग आगे बढ़ेंगे ऐसा आपने कहा होता तो हम आपको वैज्ञानिक मानते, जैसे कि आप हैं ही। 'बड़ी हिंसा से मुझे भय नहीं, छोटी हिंसा ही से भय है' ऐसा आप कहते तो हम आपको वेदांती मानते जैसे कि आप हैं ही। किन्तु आपने तो शायद यह कहा है कि 'इससे उपमहाद्वीप में शांति बनी रहेगी।' श्रीमती गांधी के मुख से तो यह बात हमारी समझ में आती, किन्तु आपके मुख से यह बात कुछ अटपटी लगी। हमारी तरह ही शायद यह बात जनाब जुल्फिकार अली भुट्टो को अटपटी मालूम होगी, क्योंकि वे तो इस विस्फोट से भयभीत हुए मालूम होते हैं। तो क्या आप संत तुलसीदासजी की तरह यही कहना चाहते हैं कि 'भय बिन होन न प्रीति?'

श्रीमती गांधी, आपकी रणनीति के हम वास्तव में प्रशंसक हैं। कहते हैं कि आपके पूज्य पिताजी जो काम नहीं कर पाते थे वे आप कर पाती हैं। वे निश्चय नहीं कर पाते थे, आप तड़ाक से निश्चय कर लेती हैं। वे राजनीति में भी आदर्शवाद को घुसेड़ने का प्रयत्न किया करते थे, आप इन दोनों को नीरक्षीर की तरह अलग रखती हैं। सुना है कि उन्होंने बांडुंग परिषद में पंचशील का घोष किया तब भी आपने अपना विरोध दर्ज करवा दिया था? विस्फोट की घटना के विषय में हमें एक बात समझ में नहीं आती कि यह इतनी देर से क्यों किया गया? क्या अब तक हमारे पास इतनी वैज्ञानिक उपलब्धि नहीं थी, क्या हमारे पास उसके लिए आवश्यक युरेनियम नहीं था? लेकिन हम तो जब से चीन ने विस्फोट किया (उसने भी उसके लिए दावा तो यही किया था न कि वह शांतिमय कामों के लिए है?) तभी से यह सुनते आये हैं कि हमारी यह वैज्ञानिक उपलब्धि है। और कुछ समय पहले यह भी सुना था कि हमारे यहां से युरेनियम को तस्कर विदेश से बाहर जाते हुए पकड़ लिया गया। यानी उसकी भी कोई खास कमी अपने देश में हो ऐसा तो नहीं जान पड़ता। तब फिर इस विस्फोट का समय यही क्यों, यह पूरी तरह समझ में नहीं आया। क्या इन्द्र का सिंहासन डोलता है, तभी वज्र छूटता है?

आपने कहा है कि यह विस्फोट शांतिमय कामों के लिए ही था। अमरीका हिरोशिमा और नागासाकी के लिए राक्षसी देश था यह मानने को हम तैयार हैं। दलील के लिए तो आपके कुछ मित्रों के साथ हम उसे आज तक राक्षसों का देश मानने को तैयार हैं। उस अमरीका को छोड़कर और किस देश ने अपने विस्फोट को अशांतिमय बतलाया है? आखिर सभी अणुशस्त्र बनते तो हैं शांति के लिए ही। अगर शस्त्र भी बनते हैं तो वे औरों के आक्रमण से बचने के लिए होते हैं। हम यह तो जानते हैं कि रूस के ब्रेजनेव, चीन के माओ और इंगलैंड, केनेडा तथा फ्रांस के नेताओं से आपकी सत्यनिष्ठा कहीं अधिक है। आप उस देश की नेता हैं, जिसके मुद्रालेख में ही 'सत्यमेव जयते' मन्त्र अंकित है। लेकिन हमारी समझ में यह नहीं आता कि अगर पाकिस्तान के नाचीज जीव आपके शांति के अभिवचन को न मानें, अगर पूर्वी एशिया का जापान इससे कंपित हो, यदि जिसकी सहायता से हमारे देश में अणुशक्ति यात्रा का प्रारम्भ किया वह केनेडा ही इस विस्फोट से शंकित हो तो उन्हें आपकी सत्यनिष्ठा पर भरोसा कैसे बैठायें? केनेडा ने आपको शान्तिमय कामों के लिए ही अणु साधन दिये थे। क्या अमरीका इसी प्रकार पाकिस्तान या ईरान को वैसे साधन नहीं दे सकेगा? भारत सागर में अमरीकन अणु अड्डे होने के, आपकी तरह, हम भी विरोधी हैं। प्रश्न हमारा इतना ही है कि क्या पाकिस्तान, क्या अफगानिस्तान, क्या नेपाल, क्या ब्रह्मदेश, क्या श्रीलंका भी उसी प्रकार आशंकित नहीं होंगे जैसे आप डियेगा गार्सिया से हुई थीं। ●

परिणाम कब तक आयेगा ?

(दक्षिण बिहार से अनुपम मिश्र की दूसरी रपट)

औरंगाबाद : पूरब में सूरज वैसे ही कुछ जल्दी डूब जाता है, फिर यहां शाम से बादल छा गये थे, अब धूल भरी आंधी चल रही है। कुल मिला कर घना अन्धेरा छाया है। कस्बे के सुनसान क्लब के आंगन में छात्र संघर्ष व जन संघर्ष समितियों के सदस्यों के साथ नारायण देसाई की गोष्ठी चल रही है। कुछ जवान लड़के हैं, बड़े-बड़े बाल हैं, कुछ अधेड़ हैं, मटमैली धोती बनियान में, दो ठेठ खोटी वाले हैं, कुछ पक्के नेता की पोशाक में हैं। गोष्ठी में शामिल कुछ लोग आन्दोलन को लेकर बहुत अधीर हैं, 'कब तक परिणाम आयेगा?'

आन्दोलन कस्बों से अनुमंडलों, अंचलों से होता हुआ अब गांवों तक पहुंचने लगा है, ६० दिनों की एक लम्बी यात्रा कर चुका है। अब यह छात्रों का ही नहीं लोगों का आन्दोलन बनता जा रहा है। आजादी के पहले के अनुभवों को छोड़ दें तो इस आन्दोलन में शामिल हो रहे नये-नये लोगों ने कभी भी इतनी लम्बी लड़ाई नहीं लड़ी है। लेकिन परिणाम जानने की अधीरता थकावट से नहीं रुकावट से उपजी है। रुकावट से पहले इसी औरंगाबाद में भरी दोपहर में लड़कियों तक के जलूस निकलते थे, सुबह ६ से रात तक चलने वाली लू के दौरान भी जगह-जगह तंबुओं में लोग अनशन पर बैठे थे। २२ हजार जाली राशन कार्डों में से ४ हजार जाली कार्ड छात्रों ने पकड़वाये थे—इनमें कुछ छात्रों के कुछ घरों के कार्ड थे। अपने कस्बे के बाजार का अध्ययन किया गया था और १२ प्रखण्डों में जनसंघर्ष समितियां बनायी जा चुकी थीं।

यहां एक दो जगह छात्रों ने मूल्य निर्धारण के लिए दुकानों पर छापे मार कर अवैध माल बरामद किया—प्रतिक्रिया में कुछ चीजें बाजार से गायब हो चलीं—छात्र उदास हो गये और आगे किसी कार्यक्रम के अभाव में बैठ गये, परिणाम की चिन्ता करने लगे। नारायण भाई ने इस विषय को सविस्तार समझाया, 'नगर स्तर पर कार्यवाही, चीजों का अभाव पैदा कर सकती है, जे० पी० ने वेलूर जाने से पहले प्रदेश स्तरीय एक खाद्य समिति तैयार की है जो अलग-अलग व्यापारियों से मिल कर अधिकारियों के साथ बैठ कर मूल्य निर्धारण का काम करेगी। तब तक नगर स्तर पर उपभोक्ता व्यापारी और प्रशासन की मिली जुली बैठक करवा कर समस्या को हल करने की कोशिश की जाये।' औरंगाबाद के निकट गोह में छात्रों, अधिकारियों और पुलिस में पूरा तालमेल है। छात्रों के अनशन को वहां के दरोगा ने ही रस पिला कर तोड़ा था। इसी जिले के दाउदनगर में कमीज की बांह पर काली-पट्टी बांधे छात्र और नागरिक विधान सभा भंग करने की मांग पर हस्ताक्षर करवा रहे हैं।

आरा (भोजपुर) के चौराहे पर आन्दोलन के समर्थन में बैंक कर्मचारियों का एक पोस्टर लगा है। शहर में घूमते हुए कई जगह आप पायेंगे कि गरीबी हटाने की जिम्मेदारी इन्दिरागांधी से हटा कर जयप्रकाश

क्रांति का तिलक : आरा में छात्रों को कसम लेते नारायण देसाई

नारायण के कंधे पर डाल दी गयी है। नगर में जन तथा छात्र संघर्ष समितियां बन चुकी हैं। १८ मार्च के बाद आरा अशान्त था, जे०पी० के समर्थन के बाद काम करने के रास्ते बदले। औरतों तो बहुत आगे आयीं १२५ औरतें रोज धरना देती थीं, २०० तक के जुलूस निकलते थे। जन जागरण सप्ताह बहुत अच्छा चला। अब यहां नुक्कड़ सभाएं चल रही हैं। कामकाजी दिन में दस बजे सुबह भी जनसभा आयोजित करने पर सफल हो जाती है। संघर्ष समिति ने ६ उपसमितियां नियुक्त की हैं, महंगाई निवारण उपसमिति की सक्रियता के कारण शहर में गेहूं, चावल और साबुन के दाम गिरे हैं।

आरा के छात्रों में सामाजिक चेतना जागी है। संघर्ष समिति में छात्र अपने राजनैतिक दल छोड़ कर आये हैं। नारायण भाई के शब्दों में, 'छात्रों ने तो राजनीति छोड़ दी है लेकिन अभी उनमें से कुछ को राजनीति नहीं छोड़ पाई है।'

हजारी बाग के इर्दगिर्द ४० गांवों में जनसंघर्ष समितियां बन चुकी हैं। अनशन का कार्यक्रम यहां बिलकुल सरस्वती पूजा जैसा चला था। कोने पर, बीच चौराहे पर, हर कहीं हर कोई अनशन पर बैठा था। छात्र-संघर्ष समिति को तब मालूम ही नहीं पड़ा कि कितने स्थानों पर अनशन चला है। ५-६ बरस के बच्चे, छात्र, वकील, उनके मुंशी भी, रिक्शेवाले, शिक्षक, प्राध्यापक, मोटर मालिक यूनियन के सदस्य, अराजपत्रित कर्मचारी, पत्रकार और दामोदर घाटी योजना के कर्मचारी-काफी लम्बी सूची है अनशन पर बैठने वालों की। १५० वकीलों ने विधानसभा भंग करने की मांग की, केवल ४ ने इस के बने रहने पर जोर दिया।

६ मई को हजारी बाग में एक प्रतिष्ठित सम्पन्न नागरिक की कन्या का विवाह था। करीब डेढ़ लाख के दहेज, समेत विवाह का कुल खर्च चार लाख माना गया। छात्र संघर्ष समिति के सदस्यों में इस पर क्या किया जाये, बहस हुई। तय किया कि यदि विवाह के घर को बहुत पहले यह खबर की गयी होती कि आज के जमाने में ऐसा विवाह नहीं होना चाहिए, हम इसका विरोध करेंगे →

रांची की सूनी सड़क पर झूलता काला झंडा
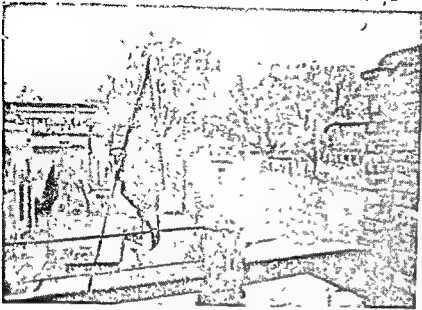
तब तो ठीक रहता। लेकिन अब अचानक जा कर विवाह कार्य में बाधा नहीं पहुंचानी चाहिए। फिर भी अपनी असहमति दर्ज कर-वाने के लिए छात्र हाथों में इस फिजूल खर्च के विरोध में पट्टी लिए बिलकुल चुपचाप उस घर तक गये कुछ देर रुके फिर बरात आने के पहले ही वहां से लौट आये।

हजारी बाग के नजदीक ही फिल्मी गानों की फरमाइश के लिए प्रसिद्ध झुमरी तलैया के १८ सक्रिय छात्र गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

रांची में छात्रों ने संघर्ष समिति के बदले नवनिर्माण समिति बनायी है। वे मानते हैं कि इस संघर्ष के दौरान उन्हें चीजों को तोड़ने के बदले बनाना है। यहां नये निर्माण में लगे इन छात्रों ने व्यापारियों, अधिकारियों के साथ मिल कर चीजों के दाम बांधे हैं—इस प्रयास में बाजार से चीजें गायब नहीं हुई हैं। जाली राशन कार्डों के पकड़वाने में छात्रों ने अधिकारियों के साथ-साथ काम किया है।

ठेठ आदिवासी क्षेत्र में चाईबासा है। यहां एक छात्र २२ दिन का अनशन कर चुका है। अनशन में कस्बे के २०० रिक्शेवाले भी शामिल हुए थे। यहां छात्रों पर राजनैतिक शब्दावली हावी है लेकिन वे स्वयं निर्दलीय हैं। वे सभी व्यापारियों अधिकारियों और पुलिस को अपने विरुद्ध मान कर चल रहे थे। नारायण देसाई ने यहां के दौरे में एक दूसरे से संबंध बढ़ाने, मदद देने, परस्पर विश्वास करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि हमें अपनी शक्ति को गुणा करना है भाग नहीं।

इस्पातनगरी जमशेदपुर में आन्दोलन की दिशा शुरू में कुछ दूसरी रही। छात्रों ने अपना मुख्य कार्यक्रम कांग्रेस या साम्यवादी-पार्टी का विरोध ही मान लिया। इसमें कुछ तो सैद्धान्तिक भटकाव था और कुछ परिस्थितियों का असर भी। यहां बड़ी-बड़ी फैक्टरियों से ही पूरा शहर बसा है। हरेक नागरिक कर्मचारी है—यूनियन का सदस्य है। सबसे प्रमुख मजदूर यूनियन साम्यवादियों की है। जब दो माह पहले जमशेदपुर में आन्दोलन शुरू हुआ तो उसे संगठित साम्यवादियों का विरोध सहना पड़ा फिर कुछ समय तक इन छात्रों ने उनका प्रभाव समाप्त करने में ही अपनी ताकत बरबाद कर दी। अब वे समझ गये हैं कि यह उनका काम नहीं है। उनका अपना एक कार्यक्रम है अपनी एक पद्धति है। उसे छोड़ने से वे लोगों का साथ छोड़ बैठेंगे।

जमशेदपुर से धनबाद जाते हुए बंगाल का एक हिस्सा पड़ता है। टैक्सियों के पास अक्सर पूरे बिहार में घूमने का अनुमति पत्र होता है। बिहार से बिहार ही जा रहे हैं, लेकिन बंगाल पार करना पड़ता है। इस क्षेत्र से निकलने का परमिट पटना से बनवाना पड़ता है। लेकिन जरा रुकिए एक आसान तरीका भी है: बंगाल की चौकी पर दस रुपया दो और पार चले जाओ। केवल बिहार बंगाल की सीमा पर ही नहीं जीवन में हर क्षेत्र में आज ऐसी चौकियों की भरमार है, उनको पार करने के दो रास्ते हैं—कठिन कानूनी कार्यवाही को पूरा करो या चौकी पर रिश्वत दो।

बिहार बंगाल की इस चौकी पर छात्र संघर्ष समिति की ओर से काम कर रहे रघुवंश तथा जे० पी० द्वारा नियुक्त सलाहकार नारायण देसाई को ले जा रही कार को रोका गया। कार के पास पूरे बिहार का परमिट था, बंगाल का नहीं। बंगाल परमिट के अभाव में चौकी के कर्मचारियों ने दस रुपये घूस मांगी। गाड़ी सड़क से हटा कर किनारे पर लगा दी। भ्रष्टाचार मिटाने निकले लोग एक चौकी पार करने की उतावली में भ्रष्टाचार को अपनाते! थोड़ी देर बाद एक और टैक्सी आयी ड्राईवर नीचे उतरा, चौकी तक गया और तुरन्त लौट आया—चौकी का डंडा ऊपर कर टैक्सी को गुजरने की अनुमति मिल गयी। उसने टैक्सी चालू करते हुए रुकी हुई इस गाड़ी की ओर देखा और कारण पूछा, बताया परमिट नहीं है, वह हंसा, कहने लगा 'अरे यार दस रुपया दो और जाओ ना।' उसकी हंसी में 'कैसे मूर्ख लोग हैं' का भाव था। उस टैक्सी के बाद इसी तरह कुछ और गाड़ियां निकल गयीं। यह गाड़ी उसी तरह चुपचाप किनारे पर खड़ी रही। आखिर इस चुप्पी से चौकी के लोग घबराये, बांस ऊपर कर कहने लगे—'जाइये-जाईये, आप लोग क्यों रुक गये हैं?'

धनबाद कोयले का शहर है। धूल के बदले भी कोयला ही उड़ता है। लेकिन यहां गुजरात से बरसों पहले आ कर बसे ईंट-भट्टे के एक व्यापारी ने अब अपना व्यापार समेट लिया है—कोयले के शहर में उसे कोयला नहीं मिल रहा। अब यहां काले पैसे से ही काला कोयला मिल पाता है।

धनबाद के छात्र काफी सक्रिय हैं, पहले संघर्ष समिति जनता कर्फ्यू लगाती थी, युवा कांग्रेस उसे तुड़ाती थी। दुकानदारों की मुसीबत थी। एक बार दुकान बन्द करते →

→

दूसरी बार खोलते। दोनों बार भय का आधार होना। छात्रो ने इसे समझा है कि भय का आधार जनता को उनसे दूर ही करेगा। यह काम बन्द कर दिया गया है। छात्रो ने एक शिकायत बूथ स्थापित किया है जिसमे सभी तरह की शिकायत दर्ज करा सकते हैं। समिति के सदस्य शिकायतो को लेकर उनसे संबंधित विभागो के अधिकारियो से मिल बैठ कर उनका हल निकालते हैं।

बारह ज्योतिर्लिंगो में से एक वैद्यनाथ धाम, देवघर मे प्रवेश करते हुए जगह-जगह शिव भक्त गले मे फूल की मालाए डाले घूमते दिख जाते हैं। लेकिन माला धारी भक्त छात्र भी इस समय विधायको को वापस बुलाने पर जनमत संग्रह कर रहे हैं, हस्ताक्षर अभियान मे जुटे हैं। हस्ताक्षर मतदाता सूची के अनुसार ही करवाये जा रहे हैं। यहां पहले विधायक का घेराव किया गया था उस गलती का अहसास होने के बाद अब छात्रो ने घेराव के बदले 'पहुचाव' शब्द निकाला है . पहुचाव मे विधायक तक अपनी बात भर पहुचा दी जायेगी वह भी पहले से सूचित कर—मानना न मानना विधायक के विवेक पर छोडा गया है। देवघर में छात्र एक सस्ती रोटी की दुकान भी चला रहे हैं।

मुंगेर प्रदर्शनी का एक चित्र
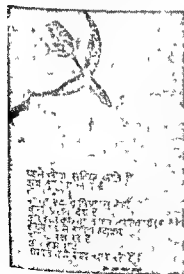
मुंगेर मे वकील, व्यापारी, छात्र, शिक्षक कलाकार औरतें सब अपने घरो से निकल कर आन्दोलन मे आ रहे हैं। प्रखंड स्तरीय काम मे मजदूरो को गल्ले मे मजदूरी दिलाने पर जोर दिया जा रहा है। जमुई अनुमण्डल मे विधायक से विश्वास उठ जाने के कारण बताते हुए मतदाता अपने प्रतिनिधि को पोस्ट-कार्ड रवाना कर रहे हैं। भ्रष्टाचार निवारण के साथ सदाचार का भी पाठ हम सीख सकें इसकी कोशिश चली है। छात्र बसो मे यात्रियों को बिना टिकट न चलने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। यहा छात्र, नागरिको, और रचनात्मक कार्यकर्ताओ मे एक दूसरे के प्रति काफी समझ है। मुंगेर के माधोपुर और भोगन बाजार की छात्र व छात्रा संघर्ष समितियो ने मिल कर एक चित्र प्रदर्शनी लगायी है। बहुत गम्भीर चित्रों से लेकर हल्के फुल्के मजाक, व्यंग कविताओ तक के इन चित्रो से आज की सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थिति दर्शायी गयी है।

यहा हस्ताक्षर अभियान में महिलाए घूम रही हैं। उनका कहना है कि हमे इस काम मे कहीं भी विरोध नही मिला। कांग्रेस और साम्यवादी विचार के घरो मे भी हमारी बात-चीत मजे मे होती है। विधानसभा भंग के पक्ष और विपक्ष मे इन महिलाओ को मिले हस्ताक्षरो का अनुपात ३० और ३ है।

इस तरह बिहार मे आन्दोलन चल रहा है। कही लगेगा कि आन्दोलन ने सरकार को ठप्प कर दिया है, कही लगेगा कि आन्दोलन ही ठप्प पडा है। कही के कामो से गर्व मे सिर ऊचा हो जायेगा तो कही शर्म से नीचा भी हो सकता है। आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ताओ सहानुभूति रखने वाले लोगो और अपने को केवल दर्शको की भूमिका तक ही सीमित रखने वाले लोगों के सिर इन दोनो स्थितियो मे आ सकते हैं। आन्दोलन मे काम कर रहे लोगो की, छात्रो की अपनी-अपनी सीढ़िया हैं, किसी एक सीढ़ी पर खडे छात्र पत्थर मारना, पुलिस को कुत्ता कहना, दुकानें जबरन बन्द करवाना, अपने विरोधियो को गालिया बकना, विधायक को जूता पहनाना, ही क्रान्ति मानते हैं। उनसे भिन्न सीढी पर खडे लोगों उन्हें समझा रहे हैं, सीढी बदल रहे हैं उनकी। जो छात्र अपनी ही समस्याओ पर कभी सोच नहीं पाये वे एक आन्दोलन मे पड़ कर समाज की, देश की समस्याओ पर सोचने लगे हैं, आज अकेले सोच रहे हैं कल अपने विरोधी को भी साथ लेकर सोच सकते हैं।

साधन शुद्धि का मामला उनका आदर्श तो है लेकिन कहीं-कही वह उनकी पकड़ मे नही है। तुरन्त असर हो इसका मोह थोड़ा झूठ, थोडी हिंसा की ओर झुका देता है। लेकिन एक तरफ कुछ छात्र क्रान्ति के अपने ही सपने मे शहीद भगतसिंह को सामने रख लेते हैं तो दूसरी ओर वे ही छात्र 'पुलिस आतंक फैला रही है' ऐसा कह घबरा कर भूमिगत हो जाते हैं। भूमिगत होकर वे जन आन्दोलन नहीं चला सकेंगे यह उन्हें अपने अनुभव से सीखना बाकी है।

केन्द्रीयकरण की परम्परा को बिहार के इस दौर ने तोडा है। स्वयं छात्र संघर्ष समिति के प्रदेश कार्यालय पर लोगो की, छात्रो की नजर उतनी नहीं ठहरती। सब अपने-अपने
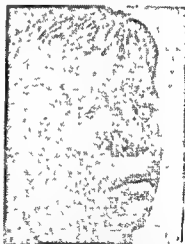
बंध छात्र संघर्ष समिति के नवल किशोर

साधनो से जैसा बनता है, जैसा सूझता है आन्दोलन चलाते हैं। इसमें कहीं-कही ढील भी आती है, लेकिन समन्वय बना रहना तो जरूरी है।

आन्दोलन अपने फैलाव पर है। इस मौके पर इसका विरोध करने वाले इसे तोडने की पूरी कोशिश कर सकते हैं। वैसे भी आदमी जुड नहीं पाता—जाति, सम्प्रदाय और राज-

(शेष अगले पृष्ठ पर)

जे० पी० का काम ग्रामस्वराज का दूसरा पहलू

प्रश्न : आपने जे० पी० की गतिविधि पर अपना जो वक्तव्य जाहिर किया है इससे हम सर्वोदय कार्यकर्तामो की गलतफहमी दूर होने मे काफी राहत मिली है। लेकिन उसमे एक दूसरी बात साफ नही हुई है। गांधीजी ने स्वराज्य की जो परिभाषा की है उसके संदर्भ मे आपने जे० पी० के काम को देखा है। लेकिन तब से आज के सर्वोदय के विचार मे और देश की परिस्थिति मे काफी अन्तर आ गया है और ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रम ने स्वतंत्र लोकशक्ति के लिए एक स्पष्ट दिशा दी है। 'जे० पी० का काम अपनी जगह पर सही होते हुए भी वह ग्रामस्वराज्य का ही दूसरा पहलू है' इस चीज को आप थोड़ा और समझायें तो अच्छा होगा। इसी बारे मे सफाई न होने के कारण हम मे से कुछ लोगो की राय है कि विनोबाजी के विचार से जे० पी० का विचार विरोध में है, यह सही है क्या ?

धीरेन दा : यह सही है कि सर्वोदय का विचार आगे बढा है लेकिन गांधीजी के बुनियादी विचार से भिन्न नही बन गया। वह विचार और दृष्टि अपने स्थान पर कायम है। विनोबा ने इसी विचार और दृष्टि को ही अधिक व्यापक पैमाने पर विकसित किया है और उसे नयी भाषा मे समझाया है। वह भाषा उनकी १९५३ की चाडील सर्वोदय सम्मेलन की भाषा है। उन्होने कहा था कि 'सर्वोदय का लक्ष्य दंडशक्ति से भिन्न हिंसा शक्ति की विरोधी स्वतंत्र लोक शक्ति के अधिष्ठान का है' इसी लक्ष्य की पूर्ति मे विनोबाजी ने धीरे-धीरे ग्रामस्वराज्य का कार्यक्रम देश के सामने प्रस्तुत किया है। सरकार मुक्त गाव के अधिष्ठान की तस्वीर तो सामने आ जाती है लेकिन वह शक्ति हिंसा शक्ति की विरोधी कैसे बन सकती है या बनायी जायेगी इसका दर्शन अभी तक नही हुआ है और न विनोबाजी ने इसका स्पष्ट दर्शन ही हमे कराया है।

जयप्रकाशजी ने मौन जुलूस के छोटे से कार्यक्रम मे स्पष्ट रूप से हिंसा के उभार को रोककर दंड शक्ति से भिन्न स्वतन्त्र लोकशक्ति द्वारा हिंसा शक्ति का विरोध करने का स्पष्ट मार्गदर्शन किया है, जो सर्वोदय के विचार मे सम्पूर्ण नवीन खोज है। जयप्रकाश बाबू ने पटना का काम करके विनोबा जी के चाडील के विचार को एक कदम और आगे बढाया है। इसका मतलब यह है कि बुनियादी तौर पर विनोबा और जयप्रकाश बाबू की दृष्टि मे कोई अन्तर नही है।

जयप्रकाश बाबू ने बिहार में जो काम किया है उससे विनोबाजी के एक दूसरे बडे सिद्धान्त का प्रतिपादन होता है। विनोबा हम सब को समझाते रहते हैं कि अहिंसा मे रेजिस्टेन्स नही होता है, असिसटेंस होता है। जयप्रकाश बाबू ने सरकार के विरोध में कोई आन्दोलन नही छेड़ा है। बल्कि वह तो उनको असिस्टेंस करने का काम है। सरकार ने भ्रष्टाचार और महगाई रोकने के लिए जो सकल्प किया है और जिसके अमल के प्रयास मे वह असफल हो रही है इस चीज के सकल्प पूर्ति के लिए जयप्रकाश बाबू मदद ही कर रहे हैं। लोकशक्ति विकसित करके उसके द्वारा सरकारी सकल्प पूर्ति मे पूरी मदद कर रहे हैं। समझना यह चाहिए कि लोकतांत्रिक सरकार की शक्ति सैनिक शक्ति नही, नौकरशाही की शक्ति भी नही, बल्कि लोकशक्ति ही होती है। दुर्भाग्य से इस शक्ति को हमारे नेताओ ने प्रारंभ से ही उपेक्षा करके कुंठित कर रखा था। उसी शक्ति को जयप्रकाश बाबू लोकतन्त्र की सफलता के लिए पुनर्जीवित कर रहे हैं। इस प्रकार से यही काम ग्रामस्वराज्य का दूसरा पहलू बनता है।

आज देश की नौकरशाही, पूंजीवाद और सामन्तवाद के साथ मिलकर सरकारी प्रयास को विफल कर रही है और इसी कारण वे जयप्रकाश बाबू के आन्दोलन को दबाने की कोशिश करते है। इसलिए ऊपर से देखने मे लगता है कि जयप्रकाश नारायण सरकार का विरोध कर रहे हैं जो कि वस्तुस्थिति नही है। अभी हाल मे ही बिहार के एक महत्व के मंत्री ने आम वक्तव्य द्वारा यह स्वीकार किया है कि जे० पी० का कार्य मदद का कार्य है।

इसीलिए जे० पी० और विनोबा मे मतभेद है—यह गलतफहमी आपको छोड देनी चाहिए। इसी सिलसिले मे मैं आप लोगो से एक निवेदन करना चाहता हू कि विनोबा और जे० पी0 के बीच मे क्या मतभेद है, क्या अन्तर है या धीरेन्द्र मजूमदार और दादा धर्माधिकारी के बीच क्या अन्तर है इसकी चर्चा कर बेकार का बुद्धिभेद पैदा न कीजिये। उसे विनोबा और जे0 पी0 पर या दादा और धीरेन्द्रदा पर ही छोड़िये। हम लोग इसको समझने के लिए काफी योग्य हैं। इसका भाष्य करते न फिरें। आप लोगो मे हमारी किसी बात से मतभेद है तो सीधे हमसे चर्चा करें। हम आपको काफी समय देंगे और समझाने की कोशिश करेंगे। ऐसा करने से आप लोग आपस मे बुद्धिभेद पैदा करते हैं और सर्वोदय विचार क्रान्ति को कमजोर करते हैं, क्योकि इसी छोर से प्रतिक्रान्तिकारी शक्ति हमारे जैसा ही नारा लगाकर हमारे अन्दर घुसती है और हमको तोड़ने का काम करती है।

(धीरेन्द्र मजूमदार से बातचीत)

(पिछले पृष्ठ का शेष)

नीति उसे अलग रखती है। एक जन आन्दोलन ने इतने अलग-अलग पेशो और विचारो के लोगों को एक जगह कर दिया है। इस एकता के तोते मे आन्दोलन के प्राण हैं, इस तोते को मारने की कोशिश हो भी रही है। कुछ कस्बो मे एक ही छात्र सघर्ष समिति मे दो गुट बनने लगे हैं, यह विभाजन प्राय सभी जगह सिद्धात के नाम पर ही है, लेकिन इससे तोड़ने की ताकत और ताकतवर होगी, इतना ध्यान रखना चाहिए।

नेत्रहीन उच्च विद्यालय पटना मे दसवी दर्जे मे पढ रहे नवलकिशोर का कहना है कि 'बाहर से हम अन्धे हैं, लेकिन अब भीतर से हमे दिखने लगा है। जे0 पी0 के मौन जुलूस मे शामिल होने के बाद हमारा रास्ता बदल गया है। हमने इस व्यवस्था का चित्र अपनी अन्धी आखो से भी देख लिया है। एक बेहतर व्यवस्था लाने मे हमारी भी उगली लग सके, इस उम्मीद से हम इसमे आये हैं।' नवलकिशोर और उसके अन्धे साथियो के मन मे जो ज्योति जगी है उसे कायम रखना बिहार के तरुणो की जिम्मेदारी है।

जे. पी. द्वारा नियुक्त समिति की रपट

गया में गोलियां बेमतलब चलाई गयीं

गया मे गोली काड होने के समय तक छात्रों के कार्यक्रम पूर्णतया शान्तिपूर्ण रहे और सरकारी कार्यालयो के काम को ठप्प करने के लक्ष्य तक वे पहुच गये थे। छात्रों की इस महती सफलता से स्थानीय प्रशासन की परेशानी बहुत बढ गयी थी, क्योंकि छात्रो के धरने के चलते गया के सभी सरकारी कार्यालयो का काम-धाम बन्द हो चुका था। प्रशासन के अधिकारी जी तोड कोशिश करके किसी ऐसे उपाय की खोज कर रहे थे जिससे स्थिति को बदलने की कोई राह मिल जाय।

पहले दिन से ही गया का डाकघर और टेलीफोन एक्सचेंज धरना देने वालो के सघन-क्षेत्र बने [illegible] थे। सरकारी अधिकारी इसी क्षेत्र में स्थिति-परिवर्तन लाने के लिए सचेष्ट थे।

११ अप्रैल १९७४ को उन्होने जोरदार कोशिश की कि सेना की सहायता से टेलीफोन एक्सचेंज तक पहुचने का मार्ग धरना देने वालो से मुक्त कर सकें, लेकिन उन्हें इसमे सफलता नहीं मिली। अपनी विफलता को उन्होने अपने लिए बहुत अपमानजनक माना।

प्रशासन के कठोर रूप की शुरुआत

१२ अप्रैल को प्रात काल से ही प्रशासन के अधिकारियों का रुख बदला हुआ था। सीमा सुरक्षावाहिनी के जवानो से भरी फौजी गाडियो की गश्त और सरगर्मी बढ गयी। फौजी गाडियों की गश्त और प्रशासनिक अधिकारियो की वाह्य मुद्रा से आम लोगो को इस बात का पूर्वाभास मिल गया था कि अधिकारियों और छात्रो के बीच निर्णायक आमना सामना होने वाला है।

ढाई बजे दिन मे छात्र मनोज कुमार बोस को गिरफ्तार कर लिया गया और छात्रों ने उन्हें छोड देने की माग की। दो दिनों से अनेक छात्र और महिलाएं गिरफ्तारी के बाद छात्रो के अनुरोध पर रिहा कर दिये गये थे। अपनी पिछले दिनों की सफलता से उत्साहित होकर छात्रो ने उस दिन भी मनोज कुमार बोस को रिहा करने की माग प्रस्तुत करते हुए उस जीप के आगे पीछे धरना दिया जिसमे वे बैठाये गये थे। अपने परिवर्तित रुख के कारण इस बार अधिकारी मनोज कुमार की रिहाई के लिए राजी नहीं हुए। उन्होने होशियारी से एक दूसरी जीप मगा कर उसके द्वारा मनोज कुमार को ले भागने मे सफलता प्राप्त कर ली। इसके बाद वहा जो लोग धरना देने के लिए उपस्थित थे, एस डी ओ सदर ने उन पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज करने का आदेश दिया। धरना देने वालो मे छात्रो के साथ-साथ महिलाए और बालक भी अच्छी सख्या मे थे। धरना देने वालों मे से किसी ने ढेला या पत्थरबाजी नही की। हा, डाकखाने के अहाते मे से दो ढेले अवश्य फेंके गये थे, पर वह अहाता पूरी तरह पुलिस के नियत्रण मे था। उसके लिए धरना देने वाले किसी प्रकार उत्तरदायी नही थे।

लाठी-चार्ज होने के बाद पास-पडोस के क्षेत्र मे खलबली मच गयी। जी. बी रोड के समीप पुलिस और स्थानीय जनता के बीच रोडेबाजी हुई और अनेक लोगो को चोटे आयी। भीड को तितर-बितर करने के लिए अधिकारियो ने पुन. लाठी चार्ज करने और अश्रुगैस छोडने का आदेश दिया। सडक की दोनो दिशाओ से पुलिस के दो दलों ने लोगो को घेर लिया और आगे बढने लगे तो भीड मे से अलग होकर लोग इधर-उधर की बगल की सडको की ओर भागे। इस प्रकार जी. बी रोड की मुख्य भीड़ अश्रु गैस तथा लाठी चार्ज के द्वारा तितर-बितर कर दी गयी। गोली चलाने की उस समय आवश्यकता नहीं पडी।

पहला गोली काड

भागने वाली भीड के कुछ लोग बारी रोड की ओर बढे। पुलिस ने उनका पीछा जारी रखा। ऐसा क्यो किया गया था यह अधिकारी ही जानते होंगे। कार्यपालक दण्डाधिकारी श्री ए के. सिन्हा के साथ सीमा सुरक्षा वाहिनी का एक दस्ता सहायक कमांडेंट पी बी. राय के नेतृत्व मे भीड का पीछा करते हुए वजीर अली रोड तक पहुच गया। उस स्थान पर न तो किसी का बडा मकान था और न तो कोई निजी सम्पत्ति ही थी। वहा पहुचकर सहायक दण्डाधिकारी ए. के. सिन्हा ने सहायक पी. बी. राय को गोली चलाने का आदेश दिया।

सीमा सुरक्षावाहिनी के कानून और बिहार पुलिस नियमावली दोनो के अनुसार यह कार्य सहायक कमाडेंट पी. बी. राय के अधिकार क्षेत्र के बाहर का कार्य था।

पी बी. राय और उनके दस्ते के जवानों ने वजीर अली रोड और के पी. रोड की भीड पर धुआधार गोलियां चलायी जिसके कारण अनेक लोग घायल हुए और कईयो की मृत्यु हुई।

जहा गोली चलायी गयी उसके आस-पास न तो कहीं आगजनी की घटना हुई, न लूट-पाट और न कोई अन्य खतरनाक घटना घटी।

अधिकारियो का यह कथन कि दण्डाधिकारी तथा उनके दल के लोगो का जीवन खतरे मे था इसलिए उनकी रक्षा के लिए गोली चलानी पडी थी, सही नहीं है, क्योंकि गोली चलाने के स्थान से घायल होकर गिरने वालो की दूरी ४५० से ५०० फीट तक थी।

जो लोग आस-पास छोटे-छोटे समूह मे खडे थे, न तो उन्हे गैर कानूनी घोषित किया गया था और न तो गोली चलाने के पूर्व किसी प्रकार की चेतावनी दी गई थी। आम तौर पर गोली चलाने के पूर्व अश्रु-गैस छोडी जाती है अथवा लाठी चार्ज किया जाता है। वहां एकाएक ही गोली चलाने का आदेश दिया गया। जाहिर है कि इस प्रकार का गोली काड स्पष्टतः अनावश्यक था। यह इसलिए किया गया प्रतीत होता है कि लोग आतंकित हो और उपस्थित भीड पर सेना का रौब जम सके। गया गोलीकाड के पहले मुकाम का विवरण यहा समाप्त होता है। →

एक सैनिक के काले कारनामे

गया में गोली-कांड का दूसरा मुकाम के. पी. रोड, नदी के किनारे की सड़क, जैन-मन्दिर तथा लहेरिया टोला रोड के समीप था। इस क्षेत्र में जो कुछ घटित हुआ वह अत्यधिक अमानुषिक और हृदय-विदारक था। यहाँ की घटना इतनी अनौचित्यपूर्ण और दर्दनाक थी कि अधिकारियों ने इस क्षेत्र के सम्बन्ध में एकदम चुप्पी साध ली।

हमें इस बात का स्पष्ट सबूत मिला कि सीमा सुरक्षा-वाहिनी का एक सैनिक तीन होमगार्डों को साथ लेकर राजेन्द्रनगर के पूरब की ओर गया। सुरक्षा वाहिनी के सैनिक ने के. पी. रोड के पूरब की ओर गोली चलायी जिसके कारण कुछ लोग जो सड़क पर थे गोली लगने से घायल हो गये और नीचे गिर गये। इसके बाद उस सैनिक ने राजाराम की दूकान को जबर्दस्ती खुलवाया और बन्दूक तानकर दो गोलियाँ चलायीं। गोली से रामखेलावन साव और उमेश सिंह घायल हो गये। उन्हें दुकान से घसीटकर बाहर सड़क पर छोड़ दिया गया। वहाँ उमेश सिंह की उस सैनिक ने तलाशी लेकर उसकी जेब से १६०० रु० और उसकी कलाई की घड़ी छीन लिये।

वे सैनिक और तीनों होमगार्ड उसके बाद और पूरब की ओर बढ़े। जैन-मन्दिर के करीब पहुँचने पर उसने फिर बन्दूक चलायी। दो गोलियाँ जैन-मन्दिर की दीवार से टकरायीं। उनमें से एक गोली गया नगर कांग्रेस कमेटी के सभापति श्री जयकुमार पालित को मिली थी। उसे उन्होंने श्री भारद्वाज, अतिरिक्त आयुक्त पटना को दे दिया।

सैनिक और होमगार्ड और कुछ आगे बढ़े और उस स्थान पर पहुँचे जहाँ जैन-मंदिर रोड और नदी किनारे की सड़क की दो मुहानी है। वहाँ उस सैनिक ने पुनः गोली चलाकर रघुनन्दन पांडेय और सज्जन कुमार को अपना निशाना बनाया। जब सैनिक ने रघुनन्दन पांडेय की ओर बन्दूक तानी तो उन्होंने अपने प्राण की रक्षा के लिए दोनों हाथ जोड़ लिये थे और कहा था मैं 'यहाँ का आदमी नहीं हूं, मैं निर्दोष हूं। मुझ पर दया कीजिए।' श्रीरघुनन्दन पांडेय की प्रार्थना का कोई असर नहीं हुआ और उन पर गोली चला दी गयी। घायल होकर वे अपनी जान बचाने के लिए भागना चाहते थे पर कुछ दूर जाकर जमीन पर गिर पड़े। दो होमगार्डों ने उन पर लाठी चलायी और फिर एक ने उनकी टांग पकड़कर उन्हें घसीटना शुरू किया और बहुत दूर तक इसी प्रकार घसीटते हुए ले गये। रघुनन्दन पांडेय के जख्मी शरीर से खून बह रहा था। खून के चिन्ह कई दिनों तक रास्ते पर दिखाई देते रहे।

कुछ और आगे ले जाने के बाद रघुनन्दन पांडेय को दो लाठी के बल पर बड़ी निर्दयता के साथ लटकाया गया और दोनों होमगार्ड उन्हें ढो रहे थे। रघुनन्दन पांडे रास्ते भर पानी-पानी चिल्लाते रहे। कुछ लोग उन्हें पानी पिलाना चाहते थे तो उस सैनिक ने धमकाया कि अगर कोई पानी लेकर समीप आया तो उसका भी वही हाल होगा जो रघुनन्दन पांडेय का। इस घटना को अनेक लोगों ने अपने मकान की छत और खिड़की से देखा।

कुल मृतकों की संख्या

१२ अप्रैल के गोली कांड में कुल मृतकों की संख्या कितनी थी यह ठीक ठीक नहीं ज्ञात हो सका। गोलीकांड की छानबीन करने वाले सदस्यों को कुल मिलाकर ८ मरने वालों का नाम मालूम हो सका। ठीक संख्या न ज्ञात हो सकने का मुख्य कारण यह था कि स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी मृतकों सम्बन्धी सभी सबूत यथाशक्ति नष्ट कर देना चाहते थे। उदाहरण के लिए दूकानदार राजाराम की बात बतायी जा सकती है। उनकी लड़की और लड़के को कोतवाली में जमानत के रूप में बन्द करके उन्हें कहा गया कि उनकी दूकान का खून का धब्बा साफ हो जाने के बाद ही उनकी लड़की और लड़के को कोतवाली से बाहर किया जायेगा।

मृतकों का दाह-संस्कार एक ही स्थान पर नहीं किया गया। अधिकारियों ने कुछेक नये स्थानों पर भी यह कार्य सम्पन्न किया और वहाँ किसी और को नहीं जाने दिया। इस तरह की पर्दापोशी के कारण मृतकों की सही संख्या नहीं मालूम की जा सकी। कुल मिलाकर मृतकों की संख्या तेरह से अधिक होने का प्रमाण मिल सका। गोलीकांड के होने के कुछ दिनों के भीतर कई लोगों की ऐसी लाशें मिलीं जिनका कोई निश्चित विवरण नहीं मिल पाया था। आम लोगों की धारणा थी कि ये गोलीकांड से सम्बन्धित लोगों की ही लाश थी।

कर्फ्यू

१२ अप्रैल के गोलीकांड के बाद ही ३६ घन्टों के लिए नगर में कर्फ्यू लागू कर दिया गया। कर्फ्यू के बारे में ठीक से प्रचार या पूर्व सूचना का प्रबन्ध नहीं था। बहुत से लोगों को कर्फ्यू लागू होने की जानकारी पटना द्वारा प्रसारित रेडियो प्रसारण से मालूम हो सकी। इस प्रकार के कर्फ्यू की आड़ में गया के अनेक भागों के नागरिकों को सताया और अपमानित किया गया। कर्फ्यू लागू होने के दूसरे दिन बड़ी कड़ी आवाज में घोषित किया गया—जिसे बाहर देखा जायेगा उसे देखते ही गोली मारदी जाएगी किसी को घर से बाहर नहीं निकलना है।

आमतौर से लगातार दिन और रात में कर्फ्यू नहीं लगाया जाता। बीच में कम से कम घन्टे दो घन्टे की छूट दी जाती है ताकि लोग अपनी अत्यंत जरूरी आवश्यकताओं जैसे पानी, दवा, तथा खाने पीने के जरूरी सामान का प्रबन्ध कर सकें। लेकिन गया के अधिकारियों ने एकदम अदूरदर्शी और कठोर कर्फ्यू लागू किया था। १४ अप्रैल के बाद ही प्रशासन ने कर्फ्यू की अवधि में कुछ कुछ परिवर्तन किया।

देखते ही गोली मारने का आदेश

१२ अप्रैल के गोलीकांड के बाद जब लगातार ३६ घंटों का कर्फ्यू लागू किया गया तो उसके साथ ही गोली मार देने की भी घोषणा की गयी। घोषणा के शब्द इस प्रकार थे—खबरदार! कर्फ्यू लागू हुआ है। जो घर से बाहर निकलेगा उसे गोली से मार दिया जायेगा।

पुलिस के अत्याचार

कर्फ्यू की अवधि में गया के नागरिकों में से सैकड़ों निरपराध और निरीह नागरिकों और विशेष रूप से परिवार की महिलाओं को अनेक प्रकार से सताया और अपमानित किया गया। अस्सी वर्ष के वृद्ध और छोटे छोटे बच्चे भी गाली-गलौज मारपीट और दुर्व्यवहार के शिकार बनाये गये। घरों के

लोक सेवकों के नाम एक अपील

प्रिय बन्धु,

लोकसेवक और सर्वोदय मित्र के नाते हम सब का कुछ अनुभव है। हम साधारण कार्यकर्ता ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य आन्दोलन मे अपने से अधिक पढ़े-लिखे तथा राजनीतिक लोगो से मिलने थे और उन्हें सेवा और त्याग के विचार से प्रेरित करते थे। सभी राजनैतिक दलो के लोग जो परस्पर टकराते थे, हमसे एक मत होकर भूदान ग्रामदान करते थे। हमारे बीच कौन-सी शक्ति काम करती थी, इसे सोचें। वह है विचार की शक्ति जो नैतिक एवं आध्यात्मिक बुनियाद पर खडी है, जिसके पीछे इस देश की संस्कृति एव परम्परा पर आधारित गाधी-विनोबा की साधना रही है।

इस विचार के विशेष गुण हैं—सत्य, अहिंसा, प्रेम, करुणा, त्याग और सेवा, जो दिलो को जोडते हैं। विचार की यह विशेषता यहां हम जैसे तुच्छ कार्यकर्ताओ को जनमानस में कुछ स्थान देती है वहां सर्वोदय के नेतृस्थानीय लोगो को इस विचार ने जनमानस मे ऊचा स्थान दिया है। हमे मानना पड़ेगा कि विभिन्न राजनैतिक दलो में चरित्रवान और विचारवान व्यक्ति हैं, लेकिन उनका जनमानस पर उस तरह का असर नही होता। इसका कारण यह है कि राजनीति दण्डशक्ति एव हिंसा के साथ जुडी हुई है।

जब हम कोई राजनैतिक कदम उठाते हैं, तब यह स्पष्ट है कि जिस आध्यात्मिक और नैतिक भूमिका पर अभी तक हम खडे रहे हैं, उसे हमने खोया। विचार-परिवर्तन और हृदय-परिवर्तन का घोष वर्षो से हम जनता के बीच करते आ रहे हैं। भ्रष्टाचार हटाने की बात सभी राजनीतिक दल कहते हैं। भ्रष्टाचार का ही नारा लगाकर पडोसी देश पाकिस्तान में तानाशाही कायम हुई थी, हम जानते हैं कि जब तक सामाजिक, मान्यताएं तथा आर्थिक ढाचा नही बदलता है तब तक समाज मे व्याप्त गरीबी, बेरोजगारी, विषमता और भ्रष्टाचार जैसी समस्याओ का हल नही हो सकता है। यह जानते हुए भी उस भूमिका को छोडकर भ्रष्टाचार हटाने की बात कहना भ्रमात्मक है।

भाइयो! जरा सोचिए!! जिस विधायक से हम या हमसे प्रेरित छात्र त्यागपत्र दिलाते हैं, क्या वह हृदय परिवर्तन के फलस्वरूप है? क्या हमारा विवेक यह मानता है? क्या हम इस पर विश्वास करते हैं? क्या हृदय परिवर्तन द्वारा विधानसभा का भंग और सरकार का ठप्प होना सभव है? जिस क्षण से हम भ्रष्टाचार हटाने का राजनैतिक नारा देते हैं और उसके लिए युवको को प्रेरित करते हैं, हमे समझ लेना चाहिए कि उस क्षण हम अहिंसक आवरण के नीचे, जाने-अनजाने हिंसा को प्रोत्साहित करते हैं हमारा यह कदम विभिन्नताओ के समष्टिरूप इस देश की भावनात्मक एकता, स्वाधीनता व सार्वभौमिकता को खतरे मे डालता है। इसलिए आज अपनी मूल भूमिका को छोडकर दूसरा मोड लेने के पहले हमे गभीरता से सोचना होगा।

हमे इस बात की खुशी है कि हमारे बीच बाबा मौजूद हैं और उनका मार्गदर्शन हमे मिल रहा है।

आपके दयानिधि पटनायक, लक्ष्मीदास (हिमाचल प्रदेश), प्रकाश भाई, (उत्तर प्रदेश) हरमोहन पटनायक (उडीसा)

→

बद दरवाजे तोड़-तोड कर पुलिस के लोग घर में घुसे और गृहस्थी के अनेक सामान को नुकसान पहुंचाया। सैकडो परिवारो को कर्फ्यू की अवधि में जो कुछ भुगतना पड़ा उसकी जो कुछ जानकारी नागरिक छानबीन समिति को मिल सकी वह दिल दहला देने वाली है।

कर्फ्यू की आड मे प्रशासन के अधिकारियों ने मरने वालों की असली सख्या को छिपाने के लिए अन्त्येष्टी क्रिया को अपने नियत्रण में सम्पन्न किया। अनेक सीधे सादे और साधारण नागरिको को बिना कारण पीटा गया ताकि लोगो में भय और दहशत की भावना भरी जा सके।

ऊचे पदाधिकारियो की साठगांठ

नागरिक छानबीन समिति को इस बात के निश्चित प्रमाण मिले कि गोली कांड के समय और उसके कई दिन बाद तक गया के सर्किट हाउस में पटना के अतिरिक्त आयुक्त प्रशासन स्वय उपस्थित थे। स्थानीय अधिकारियो के १२ अप्रैल के बदले हुए रुख का राज शायद यही रहा है कि ऊचे अधिकारी वहा मौजूद थे।

निष्कर्ष

गया में ९ से १२ अप्रैल तक और उसके बाद जो कुछ घटित हुआ उससे दो तथ्य एक दम सफाई के साथ सामने आये हैं—

एक गया के छात्र आन्दोलनकारी अपने शांतिपूर्ण धरना और सत्याग्रह द्वारा स्थानीय जनता का सहयोग प्राप्त करने और उसके बलपर सरकारी कार्यालयो का काम-काज ठप्प करने में सफल रहे। उस अवधिमे उनकी या आम जनता की ओर से लूट-पाट, आगजनी या तोड-फोड की कोई उल्लेखनीय घटना नही घटी। छात्रों का यह कार्यक्रम १३ अप्रैल तक चलने वाला था। यदि स्थानीय प्रशासन शुरू के तीन दिनो की तरह १-२ दिन और सतर्कता और जागरूकता का परिचय देता तो वह कार्यक्रम शातिपूर्ण ढग से समाप्त हो गया होता।

दो : सीमा सुरक्षावाहिनी का गठन सीमा की सुरक्षा के लिए हुआ है। जब उसका उपयोग नागरिक समस्याओं के क्षेत्र में किया जाता है तो उनसे नागरिको के प्रति दर्दनाक व्यवहार होते हैं। जाहिर है कि उनकी योग्यता और ट्रेनिंग नागरिक समस्याओ को हल करने के लिए नाकाफी है।

बिहार विधानसभा ने गया गोलीकांड को उचित ठहराया था। गया की घटना के बाद ही जे. पी. ने विधान सभा भंग की मांग को अपना समर्थन दिया।

समिति के सदस्य

१. रामनन्दन प्रसाद सिंह २ द्वारको सुन्दरानी ३. हरगोविन्द सिंह ४. रामचन्द्र प्रसाद ५. गीता प्रसाद सिंह।

असफलता की स्वीकृति आत्मविश्वास बढ़ाती है

दादा धर्माधिकारी

गुजरात और बिहार में पिछले महीनों में जो जन-आन्दोलन का स्फोट हुआ उसका समर्थन सर्वोदय के लोगो ने किया है। बिहार के आन्दोलन का तो जयप्रकाशजी स्वयं नेतृत्व ही कर रहे हैं। गुजरात और बिहार दोनों प्रदेशो के सर्वोदय मडलो ने इन आन्दोलनो का समर्थन किया है।

कुछ मित्रों का कहना है कि भूदान-ग्रामदान आन्दोलन असफल हो गया इसलिए सर्वोदय कार्यकर्ता दूसरी प्रवृत्ति की खोज मे इन आन्दोलनो की ओर मुड रहे हैं। कुछ दिन पहले समाचार-पत्रो मे दादा धर्माधिकारी के अहमदाबाद के एक व्याख्यान की रिपोर्ट छपी थी। रिपोर्ट से ऐसा लगता था कि दादा ने यह कहा कि भूदान-ग्रामदान का कार्यक्रम फेल हो गया है। इस रिपोर्ट से भी उपरोक्त दलील को पुष्टि मिली।

चूंकि समाचार पत्रो में भाषणों की रिपोर्ट अक्सर सदर्भ से कटी छपती है और इसलिए उनका मतलब कहने वाले के आशय से विपरीत या भिन्न निकलता। इसलिए मैंने दादा को पत्र लिख कर अहमदाबाद के उनके भाषण का आशय जानना चाहा था। उसका नीचे लिखा उत्तर दादा की ओर से मिला जो अपने-आप मे स्पष्ट है।

—सिद्धराज ढड्ढा

प्रिय सिद्धराज भाई,

आपका १५ मई का पत्र मुझे कल यहां मिला।

अहमदाबाद के भाषण की रिपोर्ट अखबारो मे निकली, उसके आधार पर 'टाइम्स आफ इ'डिया' मे एक टिप्पणी निकली थी। मराठी 'महाराष्ट्र टाइम्स' ने तो एक अग्रलेख ही लिखा था। मैं प्राय: सफाई नहीं देता हू

मैं जो कहना चाहता [illegible] उसका आशय यह है :

गुजरात और बिहार के आन्दोलन को हमे 'सर्वोदय' की प्रतिष्ठा पुन. स्थापित करने का अवसर नही मानना चाहिए। हम मे से जो लोग यह मानते हो कि भूदान और ग्रामदान आन्दोलन की असफलता के कारण हम हताश और हतप्रभ हो गये हैं, वे गुजरात और बिहार के आन्दोलनो को कोई शक्ति नहीं दे सकेंगे। यदि हम मानते हो कि हमारा आन्दोलन असफल हो गया, तो हमे नम्रता से और प्रांजलता से अपनी असफलता को स्वीकार करना चाहिए। असफलता की स्वीकृति से आत्म विश्वास और शक्ति बढती है, असफलता पराजय नही है। यदि आन्दोलन की दिशा सही हो तो वह कभी पराजित नहीं होता। हर असफलता मे से नयी प्रेरणा-शक्ति मिलती है। स्वराज्य प्राप्ति के सभी आन्दोलन १९४७ तक असफल रहे। लेकिन उन आन्दोलनो मे जिन लोगो ने भाग लिया वे कभी पराजित नही हुए। जो असफलता को ही अपना लक्ष्य बनाते हैं, वे सफल नहीं होते। जो असफलता के लिए तैयार रहते हैं, सफलता उन्हीं को प्राप्त होती है। गाधी का आन्दोलन १९४७ तक असफल ही रहा। गाधी विनोबा के साथ असफल होने मे भी, दूसरो के साथ सफल होने की अपेक्षा, अधिक लोक-कल्याण और प्रगति है।

ग्रामदान और भूदान अगर सफल हो जाते तो इस देश में भूमि की मालकियत के विसर्जन की और भूमि वितरण की समस्या शेष ही नहीं रह जाती। इस दृष्टि से वह आन्दोलन असफल अवश्य रहा। लेकिन भूमि की समस्या के संबंध मे अब तक जितने दूसरे आन्दोलन हुए उनकी बनिस्बत विनोबा का आन्दोलन अधिक सफल रहा—या यह लीजिए कि कम से कम असफल रहा। इसलिए उस आन्दोलन को अधिक उत्साह, अध्यवसाय और निश्चय के साथ चलाना आवश्यक है।

भूदान-ग्रामदान सफल नही हुआ इसलिए वह रास्ता ही गलत है, यह जो कहते हैं, क्या उन्होंने सही कोई रास्ता अपनाया था और अगर अपनाया था तो उन्हे सफलता मिली ? अगर वे यह कहना चाहते हैं कि उनका रास्ता हम अपनाते तो जरूर कामयाब होते, तो हम भी गुजारिश कर सकते हैं कि वे हमारा रास्ता अपनाते तो बेशक कामयाब होते। क्योकि उनके रास्ते की नाकामयाबी से हमारे रास्ते की नाकामयाबी फिर भी कम ही है।

गुजरात मे जो हुआ उसका हम अभिनंदन करें। वह लोकक्षोभ और लोकव्यापी असन्तोष का सहज-स्फूर्त स्फोट था। हम उसका स्वागत और अभिनदन करें। तरुणों की उमग और स्फूर्ति को कोई शक्ति यदि बल प्रयोग से दबाना चाहे, तो हम उस शक्ति का विरोध शांतिमय और शिष्ट उपायो से करें। तरुणो पर अपना सहयोग या सहायता हरगिज न थोपें। वे जितना सहयोग चाहे उतना अपनी मर्यादाओं को सम्भालकर मुक्त-हस्त से दें।

जे० पी० को मैं भारतीय लोकात्मा का अनिर्वाचित स्वयं-सिद्ध प्रतिनिधि मानता हू। उनकी अंत: प्रेरणा प्राय: शुद्ध और शुभ होती है। बिहार के तरुणो ने उनका नेतृत्व स्वीकार किया मैं इसे एक शुभ चिन्ह मानता [illegible]। लोकनिष्ठा, राष्ट्रीय एकता और लोकसत्ता मे जे० पी० की जीवत और अटल श्रद्धा है। उन के नेतृत्व मे लोकहित को कम से कम खतरा है।

आप जानते हैं कि मेरी भूमिका एक एक नागरिक की है। मैं सर्वोदय की, या अन्य किसी विचार प्रणाली की किसी भी सस्था का सदस्य नही हू। न लोकसेवक ही हू। मैं जो कुछ कहता [illegible] एक व्यक्ति के नाते कहता हूं। सर्वोदय का रास्ता मुझे अन्य मार्गों की अपेक्षा कहीं अधिक लोकोपकारक प्रतीत होता है।

आपके पत्र का उत्तर न देने मे अविनय का दोषी होता। अत: इतना स्पष्टीकरण किया है। आप चाहें तो इसे प्रकाशित करा सकते है।

गांव को बाजार से छुटकारा दिला सकते हैं क्या ?

विनोबा

रा० कु० पाटील द्वारा लिखित एक लेख को पढ़ने के बाद विनोबा ने उनसे बातचीत की :

विनोबा: इस विषय के आप अधिकारी हैं। क्योंकि आप 'पचानन' हैं। एक पहले आप सिविल सर्विस मे थे दो. सर्विस छोड़ कर सत्याग्रह में भाग लिया, तीन. योजना आयोग के सदस्य रहे, चार. मन्त्री भी थे, पांच सर्वोदय आन्दोलन मे आ गये। (हंसी)

आपने जो लिखा है उस से एक बात ध्यान मे आयी कि केवल आज की सरकार हटा दी और राष्ट्रपति शासन आयेगा तो महंगाई घटेगी ऐसा नहीं । गुजरात मे इतना बड़ा आन्दोलन हुआ लेकिन वहां महगाई डेढ़ गुना बढ़ी । इसलिए चिंतन करना चाहिए कि किस प्रकार मंहगाई का यह प्रश्न हल किया जाये। यह आन्दोलन का विषय नहीं है। चिन्तन का विषय है ।

दूसरी बात आपने लिखी है कि यह सरकार हटाओ ऐसा करते जायेंगे तो जिसे हम लोकतन्त्र कहते हैं उसका विरोध होगा । यह ठीक है। अभी ये जो हलचल चली है उसमे मुख्य चार मांगें दिखती हैं । भ्रष्टाचार, महगाई, बेरोजगारी और शिक्षा मे सुधार। इन चारो को इकट्ठा करके आन्दोलन करना लाभदायी होगा क्या ?

शिक्षा में सुधार होना चाहिए। यह बात तो बहुत लोग करते हैं। परन्तु आज कल एक शब्द निकला है जॉब ओरिएन्टेड, शिक्षा चाहिए। जिनको आप शिक्षा देंगे, वे शिक्षा पा कर परीक्षा पास करेंगे । उनको नौकरी देने की जिम्मेवारी सरकार की हो । क्या लोकतन्त्र के लिए यह ठीक है ? शिक्षा के विषय मे मैंने त्रिसूत्री शिक्षा कहा ही है। यदि ये हाफ-हाफ स्कूल चलते हैं, वहां तीन घण्टे काम और तीन घण्टे तालीम । तमाम लड़को को एक ही शिक्षा, चाहे बड़ा हो चाहे छोटा, छोटा यानी गरीब का लड़का हो, खेती की तालीम दे दी है । सो काम करना हो तो जाओ गांव में खेती करो।

आपको नौकरी देने की जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिए क्या ? यह एक सवाल है।

दूसरी बात सरकार को नौकरो की जरूरत होती है। मैंने सुझाव दिया है कि रेलवे विभाग है उसमे जिनको काम करना है वे अर्जी दें, उसके साथ १०० रुपया फीस दें। मान लीजिए १०,००० ने अर्जी दी तो १० लाख रुपया आपको मिला। उस आधार से आप उनकी परीक्षा ले सकते हैं। उस परीक्षा मे बैठने वालो को बी० ए०, एम० ए० होने की जरूरत नहीं। अपने घर मे तालीम प्राप्त की तो भी अर्जी दे सकते हैं। पास हुआ तो लिया जायेगा इस प्रकार अलग-अलग विभागो की अलग-अलग परीक्षा हो और बी० ए०, एम० ए० होने की आवश्यकता न हो तो बहुत कुछ सुधार हो सकता है। लेकिन शिक्षा में सुधार यह एक स्वतन्त्र विषय है। वह ऐसे आन्दोलनो के द्वारा हो सकता है क्या ? यह सवाल है।

आज शिक्षा मे सुधार आवश्यक है यह कौन नहीं कहता है । इन्दिरा ने भी जाहिर तौर कहा कि स्वराज्य के बाद हमने एक जो बड़ी गलती की वह यह की हमने अपनी पुरानी तालीम मे कुछ भी परिवर्तन नहीं किया। दो-दो कमीशन इसलिए बिठाये थे। लेकिन कुछ नही हुआ।

एक मेरी मांग है कि शिक्षा सरकार के हाथ में न रहे, वह विद्वानों के हाथ में होनी चाहिए। ये विद्वान विश्वविद्यालय के मुख्य लोग हों, उनके साथ दूसरे भी हो। विश्वविद्यालय पर भी सरकार का अंकुश नहीं रहेगा। इस वास्ते आचार्य-कुल की स्थापना की। आचार्य किसी पार्टी का नही, स्वतन्त्र रहेगा। पार्टी से मुक्त स्वतन्त्र चिन्तन करेगा, स्वतन्त्र निर्णय देगा।

तो यह सारा स्वतन्त्र चिन्तन का विषय है। आज विद्यार्थियो को करना है तालीम मे सुधार, सुधार के लिए तो सादी सी बात है। तमाम विद्यार्थी छोड़ दें स्कूल, कालेज, गांव-गांव मे काम के लिए चले जायें। वहां काम करें, कमायें। सब स्कूल कालेज खाली हो जायेंगे तो शिक्षा-विभाग खतम होगा। फिर सरकार को सोचना पड़ेगा कि शिक्षा मे कौन सा क्या बदल करना है। तो यह सोचने की बात है कि तालीम मे सुधार के लिए ऐसे आन्दोलनो का लाभ है नही।

दूसरी बात है महगाई। गुजरात मे तो महगाई बढ़ी। उसका कौन विरोध कर रहा है ? यह सारा अर्थव्यवस्था का सवाल है, उससे मुक्ति मिले। आज हमने पढ़ा, एक रुपये की कीमत अब ३० पैसे हो गयी है। अगर रुपये की कीमत ३० हो जाये और कुल लोगो का जीवन पैसे पर चले तो देश को खतरा है। इस लिए बाजार मुक्ति चाहिए। गांव-गांव बाजार से मुक्त हो जाये। और अनाज के आधार पर ही सारा काम हो। जैसे मैंने कहा गांव का गोकुल बनाओ। गांव की चीज गांव मे ही खाओ। मक्खन खाओ, कपड़ा बनाओ। आज तो मक्खन, काजू, आम सब बाहर जाता है। कहते हैं, पैसा मिलता है। खाने की उत्तम उत्तम चीजें बाहर जाती हैं और उनको पैसा मिला है। पैसे को क्या खायेंगे ? इसलिए खाने की चीजें प्रथम खानी चाहिए। और बची हुई चीज गांव के लिए रखनी चाहिए और फिर बची तो बाहर भेजें।

नासिक के प्रेस पर कन्ट्रोल होना चाहिए, (जहां नोट छापे जाते हैं।) आपने पढ़ा होगा अप्पासाहब पटवर्धन सिकुड़ते नोटो की बात करते थे। १०० रुपये के नोट की कीमत हर साल १० रुपये कम हो जाती है। तो दस साल मे पुराने नोट खतम होंगे। तब देश बचेगा ऐसा उनका आग्रह था। वह एक स्वतन्त्र विषय है चिन्ता का, परन्तु अधिकांश लोग बाजार से मुक्त हो। उनके पास खाने की चीजें उपयुक्त हो और पैसा कम हो।

महगाई का जो सवाल है उसमें सरकार यह एक ही फैक्टर नही है। किसान, मजदूर,

→

→
व्यापारी, सरकार, दुनिया और भगवान। भगवान बारिश कभी ज्यादा भेजता है कभी कम।

बांगला देश मे अनाज कम पड़ रहा है। भुखमरी होगी। कुल दुनिया को इस काम के लिए इकट्ठा होकर सोचना चाहिए। जहां अन्न समस्या है, उसके लिए केवल सरकार जिम्मेदार है ऐसा मानकर समस्या हल होगी नही। कुल दुनिया जिम्मेदार है।

बेकारी की समस्या है। इस बारे मे मैंने कहा है कि सरकार जिनको नौकरी देना चाहती है उनकी विभागीय परीक्षा लें। उसके लिए बी० ए०, एम० ए० की जरुरत न हो।

भ्रष्टाचार तो अनेक प्रकार का है। मुख्य भ्रष्टाचार चुनाव मे न हो ऐसा इन लोगो का मुख्य उद्देश्य है। उस के लिए चुनाव प्रणाली में क्या फर्क करना पड़ेगा। नंबर दो संविधान मे फर्क करना पड़ेगा क्या ये दो बातें सोचनी होगी। उसमे तो कार्यक्रम मुकर्रर हो सकता है। यह कमेटी तय करे कि चुनाव पद्धति फलानी हो। यह तो कोई आन्दोलन का विषय नहीं हो सकता। अब मैं यह नही जानता कि चुनाव मे भ्रष्टाचार न हो इस के लिए चुनाव पद्धति मे फर्क करना पड़ेगा कि कुछ अंकुश की जरुरत है। यानी ज्यादा सावधानी रखनी होगी? कुछ लोगो ने कहा कि चुनाव आयोग को भी कायम होना है। इलेक्शन के लिए एक है चुनाव आयोग दूसरा है न्यायाधीश, तीसरा है लोकनियुक्त अधिकारी। ऐसे तीन होते है।

इसके अलावा गाव का राज हो इस लिए गाव-गांव मे लोग खड़े हों इत्यादी हमने यह जो कहा वह हमारा स्वतंत्र विचार है ही।

आपका क्या विचार है? चुनाव की प्रणाली मे फर्क हो या चुनाव पर ज्यादा अंकुश रखना होगा। सावधानी रखनी होगी कि संविधान मे फर्क करना पड़ेगा?

पाटील : तीनो करना पड़ेगा।

विनोबा : चुनाव के अन्य क्षेत्रो मे जो भ्रष्टाचार है वह आन्दोलन से कैसे दूर होगा उसके लिए हमने कहा व्यापारियो की समिति बनायी है। व्यापार के क्षेत्र मे जो भ्रष्टाचार होता है, उसके लिए एक दफा एक भाई ने मुझ से कहा मे किसी से रिश्वत न लूं यह हो सकता है लेकिन किसी को रिश्वत न दूं यह नही बन सकता। उसने मुझे मिसाल दी मेरी मां सख्त बीमार है। मुझे उससे मिलने स्टेशन जाना है। मैं स्टेशन पर आता हूं। वैसे ४ रुपये का टिकट है लेकिन वह एक रुपया ज्यादा मांगता है जिसको 'मामूल' कहते हैं, 'मेंपे' कहते है, दस्तूर भी कहते हैं। यह एक रुपया मैं न दूं तो मेरी मां से भेंट नही होगी इसलिए एक मैं दूंगा। मां का दर्शन करूंगा प्रेत यात्रा मे शामिल होऊंगा। वह एक रुपया मैं नहीं दूंगा तो मुझे मां का दर्शन नही होगा।

पाटील : जन व्यवहार की दृष्टि से ठीक है। ऐसा ही हम लोग करेंगे।

विनोबा : उसे भ्रष्टाचार गिनेंगे क्या आप? इस वास्ते मैंने कहा था भ्रष्टाचार तो शिष्टाचार है और जो भ्रष्टाचार नहीं करते वे विशिष्टाचारी हैं।

आप तो व्यवहार जानते हैं। बाबा तो व्यवहार शून्य है। एक दफा एक सभा मे मे लोगो ने कहा—बाबा व्यवहार शून्य है" काका साहब उस सभा मे थे। उन्होने कहा 'ठीक है' बाबा व्यवहार शून्य है। लेकिन क्यों है? क्यो कि वह व्यवहार को ही शून्य मानता है।' मैंने एक बात सुझायी है, बाजार मुक्ति। मैं लोगो से पूछता हूं प्रत्येक गांव या दो-चार गाव इकट्ठा हो कर बुनियादी चीजें जैसे अन्न, वस्त्र आदि खरीदेंगे नही—ऐसा निश्चय कर सकते हैं कि नहीं? मैंने तो गाव के लिए मंत्र दिया है 'मक्खन खाओ कपड़ा बनाओ' फिर व्यापारी को गाव के व्यक्ति के पास आना पड़ेगा है। गाव वाले कहेंगे 'आओ ग्राम सभा के पास, ग्रामसभा कहेगी, "जब से मक्खन खाना शुरू किया है तब से हमारे लडके मजबूत बने हैं।' व्यापारी कहेंगे 'यह तो ठीक है मगर हमारे भी बच्चे हैं उनको भी मक्खन मिलना चाहिए।' ग्रामसभा कहेगी 'ठीक है शहर मे बच्चे हैं तो हम १।६ मक्खन देंगे। भाव क्या है?' व्यापारी तो हुसार है उसके पास नासिक के छापेखाने से छपे नोट होते हैं। वह कहेगा हम १०० रुपया किलो देंगे, लेकिन ग्रामसभा कहेगी कि हम बेवकूफ नही हैं, आप एक किलो के लिए १००० रुपये देंगे तो भी हम आपको १।६ से ज्यादा मक्खन देंगे नही।'

इस प्रकार बाजार मुक्ति का शिक्षण हम गांव वालो को दे सकते हैं क्या? यह अव्यवहार की बात है क्या? ग्रामसभाएं इकट्ठा हो गाव वाले मिलकर तय करें हमे कितना दूध, कितना अनाज चाहिए उतना उत्पादन करें। ये सब सोचने की बात है।

मुशहरी में रचना व आन्दोलन दोनों

धीरेन्द्र मजूमदार ने अपने एक बयान में जे० पी० के काम को ग्रामस्वराज्य का दूसरा पहलू घोषित करते हुए कहा था कि "मेरे कहने का यह मतलब नहीं कि जो लोग ग्रामस्वराज्य के प्रत्यक्ष कार्य में लगे हैं उसे वे छोड़ कर इस हलचल में शामिल हो जायें, वे इसे सम्पूर्ण रूप से अपना काम समझते हुए भी इसे आन्दोलनात्मक विंग पर छोड़ कर अपने काम में जमे रहें।" मुजफ्फरपुर के मुशहरी प्रखण्ड में इसी तरह काम चल रहा है। एक ओर आन्दोलन है, दूसरी ओर ग्रामसभाओं का गठन है। दो पहलू एक दूसरे के पूरक बन रहे हैं।

मुशहरी प्रखण्ड ग्रामस्वराज्य सभा की जन जागरण समिति ने छात्र आन्दोलन के समर्थन में २८ अप्रैल को मौन जुलूस निकाला। उस दिन केवल पटना में ही मौन जुलूस निकालना तय था लेकिन मुशहरी व जे०पी० के सम्बन्धों के कारण यहां भी वैसे ही जुलूस की अनुमति मिल गयी। फिर मुशहरी महिला जागरण समिति ने महिलाओं के जुलूस आयोजित किए। जत्थेवार अनशन चले, शिक्षा में क्रांति के लिए शिक्षकों ने चौराहों पर खुली कक्षाएं लीं। प्रभात फेरियों का क्रम अब भी जारी है।

इधर ग्रामस्वराज्य का छूटा हुआ काम भी पूरा किया जा रहा है। रघुनाथपुर प्रह्लादपुर और सभापुर में ग्रामस्वराज्य सभाएं गठित कर ली गयी हैं। रघुनाथपुर छपरामेघ पंचायत का छोटा सा गांव है। पढ़े लिखे सम्पन्न किसानों और अनपढ़ मजदूर परिवारों की लगभग बराबर संख्या है। ग्रामस्वराज्य-विचार को रघुनाथपुर काफी पहले स्वीकार कर चुका था, ग्रामसभा के गठन की भी मिली जुली इच्छाएं सामने आती रहीं, लेकिन एक दिक्कत थी—गांव के तरुण बहुत जागृत थे, उत्साही थे वे ग्राम सभा में आगे बढ़ कर काम करना चाहते थे। गांव के बुजुर्ग उन पर पूरा भरोसा नहीं करते थे। सर्वोदय कार्यकर्ता उन्हें अपने निर्णय लेने का मौका देने कुछ दिनों के लिए अलग हट गये। इस बीच गांव में बैठकें होती रहीं। लम्बी बहसों के बाद वे एक सर्वसम्मत हल तक आये। फिर मुशहरी अभियान के साथी अविनाश की उपस्थिति में ग्रामसभा गठित हो गयी।

ग्रामसभा बनने से पहले यहां के भूमिवान ने एक विधवा को बेदखल कर दिया था। मालिक और मजदूर-दोनों की ओर से मुकदमेबाजी हुई। लेकिन अब गांव द्वारा निर्धारित एक समिति ने उनका फैसला कर विधवा को जमीन वापस दिलादी, मुकदमे वापस ले लिये गये हैं।

प्रहलादपुर पंचायत के तीन गांवों-भटौलिया, बरौरा गोपालपुर और गंगापुर में बहुत पहले ही ग्रामसभाएं बन चुकी थीं। लेकिन प्रहलादपुर में, जो नक्सली गतिविधियों का केन्द्र रह चुका है, पंचायत के मुखिया की असहमति के कारण ग्रामसभा बन नहीं पायी थी। अब उनकी सहमति के बाद सर्वसम्मति से ग्रामसभा गठित कर ली गयी है।

सभापुर में दो सम्पन्न भूमिवानों के परिवारों को छोड़कर सभी ने ग्रामदान को स्वीकारा था। उनके लिए उत्सुक ग्रामीणों ने एक लम्बे समय तक इंतजार किया, अब हार कर इन लोगों ने एक ग्रामसभा बना ली है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

अस्तित्व बचा है। यही एक मात्र ऐसी चीज है जिसे अणुबम नष्ट नहीं कर सकता।

मुझे इस बात में कोई सन्देह नहीं दिखाई देता कि जब तक बड़े राष्ट्र छोटे राष्ट्रों का शोषण बन्द नहीं करते और सहज ही युद्ध की ओर ले जाने वाली हिंसा की भावना से मुक्त नहीं होते, तब तक दुनिया में शान्ति स्थापना की आशा करना व्यर्थ है।

पूर्व का सन्देश

पूर्व के समझदार व्यक्तियों में पहला नाम जरथस्त का है। इसके बाद बुद्ध हुए। वे भी पूर्व-भारत के थे। बुद्ध के बाद कौन आया? पूर्व से ही ईसा मसीह। ईसा से पहले फिलिस्तीन के निवासी मोजेज का नाम आता है। इनका जन्म मिस्र में हुआ। ईसा के बाद मोहम्मद। मैं राम कृष्ण और दूसरे महान पुरुषों का उल्लेख यहां नहीं करूंगा। ऐसा नहीं है कि मैं उन्हें कम महान मानता हूं, मगर पढ़ा-लिखा संसार उनसे अपरिचित है। जो हो, मैं दुनिया के ऐसे एक भी व्यक्ति को नहीं जानता जो एशिया के इन महानपुरुषों की बराबरी कर सके। लेकिन फिर क्या हुआ? पश्चिम पहुंचकर ईसाई धर्म का स्वरूप बिगड़ गया। मुझे ऐसा कहने का दुख है। इस विषय में और कुछ नहीं कहूंगा......।

जो बात मैं आपको बताना चाहता हूं वह है एशिया का सन्देश। उसे पश्चिम के चकित करने वाले तौर तरीकों और अणुबम की नकल करके नहीं सीखा जा सकता है। अगर आप पश्चिम को कोई सन्देश देना चाहते हैं तो वह प्रेम और सत्य का सन्देश होना चाहिए। प्रजातंत्र के इस जमाने में, गरीब से गरीब की जागृति के इस युग में, आप ज्यादा से ज्यादा जोर देकर इस सन्देश का दुनिया में प्रचार कर सकते हैं। चूंकि आपका शोषण किया गया है इसलिए शोषण का बदला शोषण से चुका कर नहीं, बल्कि सच्ची समझदारी के बल पर आप पश्चिम पर विजय पा सकते हैं। अगर हम सिर्फ दिमाग से नहीं बल्कि दिल से पूर्व के समझदारों के इस सन्देश के मर्म को समझने का प्रयत्न करें और अगर हम सचमुच उस महान सन्देश के योग्य बन जायें तो मुझे विश्वास है कि हम पश्चिम को पूरी तरह जीत लेंगे। हमारी इस जीत को पश्चिम भी सराहेगा।

हिंसा का हथियार, वह चाहे अणुबम ही क्यों न हो, सच्ची अहिंसा के समक्ष व्यर्थ सिद्ध होता है।

(द' माइण्ड ऑफ महात्मा गांधी से नन्दिता मिश्र द्वारा अनूदित)

पहले घोषित जुलाई की तारीखों के बदले अब सर्व सेवा संघ का छमाही अधिवेशन १८ जून से २० जून तक पवनार में होगा। प्रबन्ध समिति की बैठक १७ जून को रखी गयी है।

R.N. 2091/57 BHOODAN YAGYA 3 JUNE 1974 Regd. No. D. (C) 266

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य १० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १० जून, '७४

बिहार विधानसभा का एक हिस्सा : जिसे बचाने और भंग कराने की मुहिम [illegible]

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० १० जून, '७४ अंक ३७

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

बिहार : एक नया व निर्णायक मोड़

पांच जून को पटना में निकले अब तक के सबसे बड़े जुलूस और गांधी मैदान में हुई विशाल आमसभा के बाद बिहार का जन-आन्दोलन एक नये और निर्णायक मोड़ पर पहुंच गया है। एक माह पहले जयप्रकाश नारायण ने कहा था—विधानसभा भंग करो। लेकिन अब उन्होंने जो नया कार्यक्रम दिया है उसका नारा है विधानसभा भंग करवायेंगे। नये कार्यक्रम के अनुसार विधानसभा के सभी दरवाजों पर शनिवार से शांतिपूर्ण सत्याग्रह शुरू हो गया है। सत्याग्रही इन दरवाजों में मंत्रियों और विधायकों को विधानसभा जाने से रोकेंगे और गिरफ्तार होंगे। यह कार्यक्रम रोज चलेगा। सत्याग्रह विद्यार्थी, किसान और मजदूर करेंगे और कोशिश की जायेगी कि बिहार के प्रत्येक जिले से बीस सत्याग्रही रोज पटना पहुंचें। विधायकों को चेतावनी दी गयी है कि वे बाहर जून तक इस्तीफा दे दें नहीं तो उनसे असहयोग किया जायेगा और विधानसभा से चिपके रहने के उनके निर्णय के खिलाफ धरना दिया जायेगा।

साथ ही पूरे बिहार में एक व्यापक असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया है। इसमें लगान, तकावी और कर न चुका कर जनता सरकार से असहयोग करेगी। छात्र संघर्ष समितियां और जन संघर्ष समितियां इस बात की पूरी कोशिश करेंगी कि शहरों, कस्बों और गावों में चीजों के भाव न बढ़ पायें और आवश्यक वस्तुओं का वितरण ठीक होता रहे। कुल मिलाकर बिहार में जन विश्वास खो देने वाली सरकार और चुक गये जन आदेश के बावजूद विधानसभा से चिपके रहने वाले विधायकों के खिलाफ गांधी के जमाने जैसा व्यापक असहयोग आन्दोलन छिड़ चुका है। राज्य और केन्द्र सरकार तथा कांग्रेस और उसकी सहायक भारतीय साम्यवादी पार्टी ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी है। एक तरफ भ्रष्ट व्यवस्था, कुशासन और राजनीतिक तिकड़म और जोड़-तोड़ है और दूसरी तरफ इन सबसे निराश और क्रोधित जनशक्ति। संघर्ष ऐसी स्थिति में पहुंच गया है जहां से उसे रोका नहीं जा सकता। बिहार एक भ्रष्ट गलित और अनुपयुक्त व्यवस्था और जनता के बीच सीधे संघर्ष का समरक्षेत्र हो गया है। बिहार भारत में संसदीय लोकतंत्र के भविष्य को रूप दे सकता है।

पांच जून का जुलूस आठ अप्रैल के जुलूस से चरित्र और स्वभाव में भिन्न था। आठ अप्रैल का मौन जुलूस अगर घुटन को तोड़ने के लिए निकला था तो पांच जून का जुलूस आक्रोश और जन निश्चय की अभिव्यक्ति था। जे. पी. ने वैलूर के अस्पताल से ही आवाहन किया था कि यह सिद्ध करना पड़ेगा कि मतदाताओं ने जिन लोगों को दो साल पहले आदेश दिया था अब वे उसे वापस लेना चाहते हैं और निर्वाचित प्रतिनिधियों में उनका विश्वास नहीं है। यह सिद्ध करने के लिए जे. पी. ने कहा था कि बिहार के ३१८ चुनाव क्षेत्रों से एक करोड़ हस्ताक्षर विधानसभा भंग करने के लिए इकट्ठे किये जायें और एक लाख लोगों का जुलूस उन हस्ताक्षरों को राज्यपाल के हवाले करे। तब से जगह-जगह हस्ताक्षर करवाये गये और चार दिन पहले तक ६३ लाख लोग विधानसभा को भंग करने के लिए अपना मत दे चुके थे।

पहले से तय था कि पांच जून को यह जुलूस निकलेगा इसलिए इसके पहले शक्ति प्रदर्शन के लिए भारतीय साम्यवादी पार्टी ने तीन जून को विधान सभा भंग न करने के लिए जुलूस निकालने की घोषणा की। जे. पी. ने जब अप्रैल में आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार कर के उसे जन आन्दोलन बनाने की कार्यवाही शुरू की थी और ऑपरेशन के लिए वैलूर जाने के पहले पांच सप्ताह का कार्यक्रम दिया तब से ही कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी आन्दोलन का उत्तर आन्दोलन से देने की कोशिश कर रही हैं। यह समझ के बाहर है कि जो पार्टियां सत्ता में हैं और बार-बार दावा करती हैं कि उन्हें लोकप्रिय समर्थन प्राप्त है और जिनके पास पूरी सत्ता है वे उन समस्याओं को हल करने के बजाय जन आन्दोलन के खिलाफ किराये का आन्दोलन कर रही हैं। जे. पी. की अनुपस्थिति का लाभ ले कर इन पार्टियों ने पर्याप्त कोशिश की कि आन्दोलन से किसी प्रकार जनसमर्थन हटाया जाये। पिछले माह जो शक्ति इन लोगों ने इकट्ठी की थी उसे वे पटना में प्रदर्शित करना चाहते थे। कोई पचास-साठ हजार लोगों का जुलूस तीन जून को उसी तरह निकला जैसा कि पांच जून को निकलने वाला था। विधानसभा भंग न करने और प्रजातंत्र की रक्षा करने के लिए निकाले गये इस साम्यवादी जुलूस ने जयप्रकाश मुर्दाबाद और अमरीकी एजेन्ट बिहार छोड़ो आदि नारों पर ज्यादा जोर दिया। इसे भारतीय साम्यवादी पार्टी का दुर्भाग्य ही मानना चाहिए कि जब भी देश में कोई जन आन्दोलन खड़ा होता है वह बिचारी अपने को जनता के खिलाफ पाती है। सन् ४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय भी उसे वही करना पड़ा था जो आज ७४ में नहीं छोड़ो आन्दोलन के खिलाफ करना पड़ रहा है।

तो जे० पी० ने चाहा हो या न चाहा हो पांच जून का जुलूस कम्युनिस्ट पार्टी की नीति के कारण अन्ततः शक्ति प्रदर्शन में परिवर्तित हो गया। लेकिन जुलूस के बाद बिहार की सरकार और साम्यवादी पार्टी के सामने यह स्पष्ट हो गया होगा कि लोग किस की तरफ हैं और क्या चाहते हैं। प्रशासन →

छात्र नये समाज के लिए एक वर्ष कॉलेज छोड़ें

द्वारा खड़ी की गयी समस्त रुकावटों के बावजूद यह जुलूस विशाल सिद्ध हुआ। अनुमान है कि उसमें दो से ले कर पाँच लाख तक लोग शामिल थे। इसमे गांधी मैदान से ले कर राजनिवास तक की सड़कों के दोनो तरफ रहने वाले लोग शामिल नहीं हैं जो छतो गैलरियों, मुंडेरो, गलियो और सडको पर खड़े हुए जुलूस का मौन समर्थन और जे० पी० का अभिवादन कर रहे थे। जुलूस इतना बड़ा था कि उसका एक सिरा जब राजभवन पहुंच चुका था तब पिछला सिरा गांधी मैदान से शुरू नहीं हुआ था और गांधी मैदान और राजभवन की दूरी लगभग छः किलोमीटर है। यह दूरी तय करने मे जुलूस को डेढ़ घंटा लगा।

जुलूस के आगे एक सुसज्जित ट्रक था जिसके ऊपर १२ अप्रैल को गया में हुए गोलीबार पर एक विशाल तैल चित्र था। ट्रक मे भिन्न चुनाव क्षेत्रो के हस्ताक्षरो के कागज अलग अलग बस्तों मे बंधे रखे थे। ट्रक के पीछे एक लक दक की नीली टट्टियों से ढकी लैण्डरोवर थी जिसमें जे० पी० मनमोहन चौधरी के साथ बैठे हुए थे उनके पीछे आचार्य राममूर्ति, नारायण देसाई और त्रिपुरारिशरण थे। साथ में विभिन्न विरोधी दलो के नेता, त्यागपत्र देने वाले विधायक और छात्र संघर्ष समिति के नेता थे। उन लोगों की बांहों पर केसरिया पट्टी बंधी हुई थी जिस पर छात्र संघर्ष समिति का नाम लिखा था। इनके पीछे थे विद्यार्थी, नागरिक, महिलाएं बच्चियां और बच्चे। तीन बजे चला जुलूस लगभग पौने पांच बजे राजभवन पहुंचा। हस्ताक्षरो वाला ट्रक और जे० पी० की लैण्डरोवर राजभवन में आने दी गयी। जे० पी० छात्र नेताओं और अन्य कार्यकर्ताओं के साथ राज्यपाल से मिले। राज्यपाल भण्डारे ने नमस्कार कर के जे० पी० का स्वागत किया और उन्हें शरबत पिलाया। जे० पी० ने राज्यपाल को कहा कि संसार की कोई भी प्रजातांत्रिक सरकार एक जन-आन्दोलन मे इस तरह की तोड़-फोड़ और रुकावटें पैदा नहीं करती जिस तरह कि इस सरकार ने किया है। राज्यपाल भण्डारे ने मजाक में कहा "यह बात है? लेकिन शायद ऐसा इस लिए हो कि आपको प्रजातन्त्र-विरोधी माना जाता है।" जे० पी० ने मुस्कराकर कहा—"यह उनकी परिभाषा हो सकती है।" राज्यपाल ने कहा—"लेकिन क्या हम जन प्रदर्शनों के जरिये विधानसभाओं को भंग करने की मांग कर सकते हैं?" जे० पी० ने उत्तर दिया—"जब हमारे संविधान मे विधायक को वापस बुलाने का कोई प्रावधान नहीं है तो जनता इसके अलावा क्या कर सकती है?" बाद मे राज्यपाल भण्डारे ने अखबार वालो से कहा—"मुझे हस्ताक्षर मिल गये हैं और मैं संवैधानिक तरीका अपनाऊंगा।"

हस्ताक्षरो के साथ राज्यपाल को दिये गये मांग पत्र में कहा गया है कि सरकार संकीर्ण पार्टीगत हित-स्वार्थों से ऊपर उठने मे विफल हुई है। विद्यार्थियो ने जब भ्रष्टाचार महंगाई, और बेकारी को दूर करने के खिलाफ तत्काल कार्यवाही के लिए शांतिपूर्ण जन आन्दोलन शुरू किया तो विधानसभा मे अपने बहुमत और पुलिस तथा सेना की शक्ति से सरकार ने इस आन्दोलन को कुचलने की कोशिश की। मांग पत्र मे विधानसभा के विसर्जन की मांग की गयी क्यों कि वह सरकार के गलत कामो और अत्याचारों को रोकने मे विफल हुई है।"

जुलूस जब लौट रहा था तो बेली रोड पर एक मकान से गोलियां चलाई गयी। कहा जाता है कि इस मकान मे इन्दिरा ब्रिगेड नामक एक संस्था के कार्यकर्ता रहते हैं। इस मकान से हुए गोलीबार से कम से कम २१ व्यक्ति घायल हुए। संभाग आयुक्त कोहली ने बताया कि पुलिस तत्काल घटना स्थल पर पहुंची और उसने सत्रह व्यक्तियो को गिरफ्तार किया। एक दुनाली बन्दूक, छः चली हुई गोलियां और दस कारतूस मिले। कोहली ने यह भी कहा कि प्रदर्शनकारियों की तरफ से भड़काने की कोई कार्यवाही नहीं की गयी। वे शांतिपूर्ण रहे।

शाम को गांधी मैदान मे विशाल सभा जुड़ी। जे० पी० ने अपने नब्बे मिनट के भाषण मे आंदोलन का आगे का कार्यक्रम लोगो के सामने रखा। विधान सभा के दरवाजों पर सत्याग्रह, विधायको को त्यागपत्र देने के लिए १२ जून तक की मोहलत और लगान, तकावी, कर आदि न चुका कर सरकार के साथ असहयोग करने की घोषणा की। जे० पी० ने कहा कि यह जानने के लिए कि मतदाता अपने विधायक से इस्तीफा दिलवाना चाहते हैं या नहीं प्रत्येक चुनाव क्षेत्र में निष्पक्ष लोगों की देखरेख मे मतदान करवाया जाये। एक मतपेटी पर हां और दूसरी पर 'नहीं' लिखा जाये और प्रत्येक मतदाता से कहा जाये कि वह अपनी स्वतन्त्र राय के अनुसार मत दे। जिन क्षेत्रों मे इस तरह का मतदान संभव नहीं हो वहां हस्ताक्षर करवाये जायें। विधानसभा भंग करने और विधायकों से इस्तीफा लेने की मांग को ले कर जिला अधिकारियों का घेराव करने और कार्यालयों पर धरना देने का भी कार्यक्रम है जिसकी तिथियां तय की जा रही हैं।

जे० पी० ने विद्यार्थियों से कहा कि एक वर्ष के लिए वे कॉलेज की पढाई छोड़ दें और और एक नयी समाज व्यवस्था के लिए क्रांति करने मे जुट जायें। जे० पी० ने यह भी कहा कि इसके बाद वे लोगो से मिल पायेंगे या नहीं, कहा नहीं जा सकता। उनके इस कथन से अफवाह उड़ी कि उन्हें गिरफ्तार किया जा सकता है। रात को मुख्यमन्त्री अब्दुल गफूर ने इस अफवाह को निराधार बताया और कहा कि जब तक वे मुख्यमन्त्री हैं सरकार ऐसा सोच भी नहीं सकती।

जे० पी० ने पुलिस वालो से कहा कि आंदोलन को कुचलने के लिए उन्हें अपने वरिष्ठ अधिकारियों से जो आदेश मिलें उनका वे पालन न करें।

अमरीका मे उनके विद्यार्थी जीवन पर श्रीमती गांधी के प्रकाशित बयानों को जे० पी० ने एक गन्दी हरकत बताया।

जयप्रकाश नारायण ने कहा कि उनसे हाल ही मिले कांग्रेस के संसद सदस्यो ने आग्रह किया था कि वे गृहमन्त्री उमाशंकर दीक्षित से मिलें और अपने आंदोलन को दो महीने के लिए स्थगित कर दें। लेकिन चूंकि उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है इसलिए वे

(शेष पेज १३ पर)

पुनर्जागरण हमारे आन्दोलन की प्रतीक्षा में है

कान्तिशाह का सिद्धराज ढड्ढा के नाम पत्र

प्रिय सिद्धराजजी,

न जाने क्यों, आजकल मैं बहुत ही खुश हूं। हमारे आंदोलन में अेक नया तूफान तेजी से आ रहा है। चन्द दिन पहले जे. पी. को अेक तार भेजा था अुसमे भी कहा—'आपके स्वास्थ्य और मनोबल के लिए प्रार्थना करता हूं। पुनर्जागरण हमारे आंदोलन की प्रतीक्षा में है। यह मैं सचमुच मानता हूं। और जिस अुफान के निमित जे पी. बनेंगे। आज की परिस्थिति की चुनौती मुख्यतया राजनैतिक है। तेलंगाना में चुनौती थी—'क्या आर्थिक परिवर्तन के लिअे कतल का ही रास्ता है? अुसका जवाब भूदान से मिला। बाद में चुनौती आयी चीन के आक्रमण से। हमने कहा, वीर बनो, महावीर बनो। और साथ-साथ सुलभ ग्रामदान का कार्यक्रम रखा। ग्राम दान की सुरक्षा उपाय तो हमने कह दिया था, १९५७ में ही। लेकिन उसे वर्क आउट करना बाकी था। वह हुआ १९७२-७३ में। गाव-गांव को एक गढ़ बनायेंगे। गाव का एक परिवार। गाव का आयोजन। चूंकि चीन की चुनौती सिर्फ सीमा पर नही थी। वह सामाजिक चुनौती भी थी। क्या साम्यवादी कम्यून का कोई विकल्प है? हा, है। हमारी ग्रामसभा। यह दूसरी चुनौती का हमारा जवाब हुआ। तूफान ग्रामदान में कोई नयी बात हमने नही की। सिर्फ सख्या के कारण गुणात्मक परिवर्तन आया।

मैं जानता हूं कि ये दोनो जवाब भी अभी तक मुख्यतया कागज पर ही है। प्रत्यक्ष बहुत कुछ तो हम नही दिखा सके हैं। फिर भी विचार में अेक बात आ गयी। और क्रांतियो में अैसा ही होता है। पहले विचार में क्रांति हो जाती है। पीछे धीरे धीरे आचार में उतरती है।

आज अेक तीसरी चुनौती है, हमारे सामने। क्या यह लोकतंत्र किसी ढग से चलेगा? अैसा ही भ्रष्टाचार, और अैसी ही पक्षीय और राजनैतिक जोड तोड और तिकड़मबाजी चलती रहेगी? जिसे हम तीसरी शक्ति कहते हैं, वह क्या मूक प्रेक्षक बनी रहेगी? ग्रामदान मे इसका कुछ जवाब अवश्य है। लेकिन आज की परिस्थिति ग्रामदान धन कुछ की माग कर रही है। जिस चुनौती का स्वरूप मुख्यतया राजनैतिक होगा। अुसका साथ हमारे आदोलन को देना ही होगा। आखिर अैसे आदोलन कोअी शून्य मे तो काम नही करते। प्रस्तुत समस्याओ के सदर्भ मे ही उसे काम करना होता है। इस लिए आज के सदर्भ में जो एक चुनौती देश के और हमारे सामने खडी हुई है उसका जवाब देना ही होगा। अब उसे राजनीतिकरण कहे, या और कुछ कहें। मैं तो उसे सक्रिय लोकनीति ही कहूंगा। जागरुक लोकशक्ति द्वारा राजनीति पर अकुश। बापू का लोकसेवक सघ का जो सपना है, वह कभी धरती पर उतरेगा या नही? सर्वसेवा सघ को यदि लोकसेवक सघ बनाना हो, तो इस ओर ध्यान देना ही होगा।

इसलिए आजकल जो मंथन चल रहा है, उस से मैं बडा खुश हू। इस मे से थोडा जरूर निकलेगा। लेकिन अन्ततोगत्वा यह मथन समाज को अमृत की प्राप्ति कराने के लिए ही है। अक्षोभ चिंतन की रट तो हम लोगों ने बहुत लगायी है। अब उसे प्रत्यक्ष आचार मे प्रगट कर दिखाने की वेला आयी है। क्या हम सब के बीच तटस्थ-वस्तुपरक विचार-मथन चलेगा?

अभी तो मथन का आरभ ही हुआ है। कोई सत्य हाथ मे नही आया। हम लोग बरसो से कहते आये हैं कि आज की बहुत सारी समस्याएं बुनियादी क्राति के बिना हल नही हो सकती। क्या इस मे तथ्य नही है? मैं मानता हूं कि यह भूमिका आज भी उतनी ही सही है जितनी पहले थी। फिर भी आज हम लोग सोचने के लिए इसलिये मजबूर हैं कि इसी बुनियादी क्राति के पुरुषार्थ मे कुछ चीजें बाधा रूप बन रही हैं। लोकशक्ति भी आज कुंठित हो गयी है। इसलिए कुछ मार्ग ढूंढना ही होगा। ग्रामदान ही एक मात्र उपाय है, ऐसा कहते रहने से कोई फायदा नही। ग्रामस्वराज्य के बुनियादी काम के पूर्ति रूप कुछ और कार्यक्रम, व्यूह रचना वगैरह क्या हो सकती है, यह सोचे बिना कोई चारा नही। ऐसा करने से हम पथभ्रष्ट हो जायेंगे, य हमारी नैतिक-आध्यात्मिक भूमिका हि जायेगी, ऐसा चिंतन तो हीन-ग्रंथि मे से हूं निकला है। उस मे आत्म-विश्वास का औ अपने बुनियादी लक्ष्यो एवं मूल्यो के बारे मे आत्म-प्रतीति का अभाव ही दिखता है।

दूसरी ओर गुजरात-बिहार मे जो चला उस से कोई बुनियादी हल हाथ मे आ गया है ऐसा भी नही है। वस्तुत: तो अभी तक कोई नया बुनियादी तत्व या कार्यक्रम हाथ मे नहीं आया। लेकिन यह खोज है, और सही दिशा की खोज है। आज की राजनैतिक चुनौती का जवाब हमे ढूढना है और लोकशक्ति को जाग्रत-सगठित करने के तरीके हमे ढूढने हैं। हम कोई द्रष्टा या ऋषि तो है नहीं। इसलिए गलती और सुधार से ही आगे बढ़ सकते हैं। और जे० पी० आज वही कर रहे हैं। उन्हें हम सब का समर्थन ही नहीं, पूरा का पूरा साथ मिलना चाहिए। वे जो कर रहे हैं, वह आदोलन के बुनियादी सिद्धातो के खिलाफ कतई नहीं है।

मुझ पर एक ऐसा भी असर है कि अभी उन के कर्म मे कुछ प्रतिक्रिया का तत्व है। खोज मे इतनी कमजोरी रहेगी। लेकिन वह धीरे धीरे निकल जायेगी। जे० पी० का विकास हमेशा ही ऐसा रहा है। आज कोई सब से सराहनीय बात है तो वह है—वर्तमान चुनौती को उनका उत्तर। इसी उत्तर के कारण कुछ हल हाथ मे आयेगा। दादा ने ठीक ही कहा है—जे० पी० की अत:प्रेरणा मे हमे पूरा विश्वास है। उस अत: प्रेरणा मे से कोई चीज निकले, तब तक कुछ लोगो को मर्यादित करने का रोल अदा करना पड़ेगा। दादा बहुत ही हार्दिकता एवं विवेकबुद्धि से यह कह रहे हैं। मनमोहन का वर्किंग पेपर—

(शेष पृष्ठ १४ पर)

खनिज सपदा का दोहन

सकलाना की ग्राम सभाएं जूझ रही हैं

योगेश चन्द्र बहुगुणा

पिछले कुछ वर्षों से गढ़वाल मण्डल के गाव जन आन्दोलन की उर्वरा भूमि बन गये हैं। देशी शराब की दुकानो को बन्द करवाने से लेकर गढ़वाल विश्वविद्यालय, प्राथमिक शिक्षक, टिहरी बाघ और वन समस्याओ को लेकर एक के बाद एक जन आन्दोलन सगठित हुए हैं और सफलता की मजिलें तय कर रहे हैं। अब यहा के आर्थिक विकास से जुडे एक अहम सवाल को लेकर जनता ने जग प्रारम्भ किया है, जो क्रमिक अनशन से प्रारम्भ होकर कार रोको की सीधी कार्यवाही तक पहुच गया है।

पर्वतीय क्षेत्र के आर्थिक विकास की दृष्टि से तीन प्राकृतिक साधनो का बहुत महत्व है—जल, वन और खनिज सपदा। यहा का आर्थिक विकास इस बात पर निर्भर करेगा कि इन तीनों प्राकृतिक साधनो का दोहन और प्रशोधन किस पद्धति से होता है, दुर्भाग्यवश इस अमूल्य सम्पदा का दोहन अब तक पू जीवादी पद्धति से होता रहा है। वन-सपदा की खुली लूट ने तो यहा की जनता के सामने जीवन मरण का प्रश्न उपस्थित कर दिया है क्योंकि जगलो की तबाही का सम्बन्ध सीधे-सीधे यहा के जीवन नाश से जुडा हुआ है। यहा से बहने वाली नदियो से पैदा होने वाली विद्युत शक्ति की सम्भावनाओ का तो अभी पता तक नहीं लगाया गया है और टिहरी बाध से पैदा होने वाली बिजली व सिचाई की सुविधाओ का लाभ यहा की जनता को कितना मिल पायेगा यह सदिग्ध है। खनिज सम्पदा में अभी तक चूने के पत्थरो की खदानों पर ही काम प्रारम्भ हुआ है। परन्तु इसका लाभ स्थानीय जनता के बजाय एकाधिकारवादी पू जीपतियो को मिला है।

वन समस्याओ को लेकर चमोली जिले मे जो जन आन्दोलन प्रारम्भ हुआ है उस ओर पूरे देश का ध्यान आकृष्ट हुआ और आन्दोलन परिपक्व अवस्था मे पहुच गया है परन्तु खनिज सम्पदा को लेकर टिहरी जिले के सकलाना क्षेत्र मे जो जन आक्रोश उमडा है आन्दोलन के चरणो की दृष्टि से वह अभी शैशवावस्था में भले ही हो परन्तु उसके व्यापक व और अधिक सगठित होने की सम्भावनाए प्रकट हो गयी हैं। इस क्षेत्र के समद सदस्य श्री परिपूर्णानन्द पैन्यूली ने इस विषय को लें संसद में जो चुनौती दी है उससे यह स्पष्ट हो गया है।

सकलाना टिहरी जिले का ऐतिहासिक क्षेत्र है। यहा के लोगो ने बोलादा बदरीशाह के सामन्ती शासन से जूझते हुए अपनी आजाद पचायतें कायम कर ली थी। सकलाना के जन आन्दोलन को दबाने के लिए राजशाही की फौज और पुलिस ने जो अत्याचार ढाये थे उनकी कहानिया रोगटे खडे कर देती हैं। शारीरिक पीडाए देने के साथ खडी फसल को घोडे खच्चरो द्वारा रौंदा डालना, मवेशियो की लूट, अनाज व बर्तनो की लूट उस समय की आम घटनाए रही हैं। यहा तक कि तम्बाखू पीने के हुक्के और चिमटे तक भी इस लूटपाट मे नहीं छूट पाये थे। अमर शहीद साथी नागेन्द्रदत्त सकलानी ने सीने मे गोली खा कर सकलाना की क्रान्ति को सींचा था। जुल्म के आगे यहाँ की जनता नही झुकी।

अब खनिज सम्पदा के दोहन को लेकर यहा के आर्थिक विकास से जुडे प्रश्न पर जनता ने सगठित होना प्रारम्भ किया है। १५ मई से चूने के पत्थरो को मैदान की ओर लाने वाली गाडियो के पहिये जाम करने का कार्यक्रम प्रारम्भ हो गया है। २०० सत्याग्रहियो ने देहरादून से १० मील दूर कुमाल्डा मे जहाँ से चूना मालिको के ट्रक-खदानो की ओर प्रवेश करते हैं, ट्रको की रोक देने का कार्यक्रम बनाया है। इस तरह गावसभाओ की सोयम भूमि पर एकाधिकारवादी पूंजीपतियो को विगत कई वर्षों से चूना-पत्थरो की लम्बी लीज दिये जाने के विरुद्ध जनता ने क्रमिक अनशन द्वारा जो शान्तिपूर्ण आन्दोलन प्रारम्भ किया था अब उसकी दिशा बदल गई है।

जौनपुर विकास क्षेत्र के ब्लाक प्रमुख और तरुण साहित्यकार सोम्बारीलाल उनियाल की अध्यक्षता मे गठित सघर्ष समिति के आवाहन पर २५ अप्रेल को लगभग ४०० सत्याग्रहियो ने शान्तिपूर्ण धरना देकर खनिज मालिको की गाडियो के पहियो को जाम कर था और एक विशाल सार्वजनिक सभा मे सकल्प व्यक्त किया था कि यह जन आन्दोलन तब तक जारी रहेगा जब तक पू जीपतियो द्वारा किया जाने वाला शोषण बन्द नही होता और शासन गाव सभाओ की जमीन पर स्थित लाइम स्टोन की लीजो को रद्द नही करता। सघर्ष समिति ने अपने निश्चय के अनुसार २५ अप्रेल को गाडियो के सांकेतिक बन्द सफल होने के बाद उसी दिन घोषणा की कि यदि शासन १५ दिन के अन्दर जनता की मागो पर गौर नही करता है तो फिर यहा के मजदूर-किसान एक जुट हो कर लाइम स्टोन की खानो के मालिको की गाडियो को इस क्षेत्र मे घुसने ही नही देंगे। नोटिस की सुनवाई न होने पर १२ मई को एक विशाल सार्वजनिक सभा मे स्थानीय नागरिको ने अपने सकल्प को दुहराते हुए १५ मई से सीधी कार्यवाही प्रारम्भ कर दी है।

सकलाना के क्षेत्र मे यातायात और सचार व्यवस्था १६वी सदी की याद दिला देती है और गाव दूर-दूर विकट स्थानो पर बसे है फिर भी सघर्ष समिति के आवाहन पर हजारो लोग एकत्र हो जाते हैं।

स्थानीय जनता की शासन से 2 मागे हैं। एक गाँव सभाओ की भूमि में स्थित समस्त व्यक्तिगत लीजो को रद्द कर दिया जाय क्योंकि इनसे ग्रामवासियो के चरान, चुगान और पनघट आदि को क्षति पहुच रही है। गाव सभाओ की भूमि पर चूना पत्थर की लीज चन्द लोगो को दिये जाने से वे मालामाल अवश्य हुए हैं किन्तु आम लोगो के हितों को ठेस ही नही पहुची अपितु उनका सम्पूर्ण जीवन खतरे मे पड गया है। दो० यदि राष्ट्रीय हित में इस क्षेत्र मे चूना पत्थर निकालना आवश्यक हो तो शासन यह काम स्थानीय पचायतो व सहकारी समितियो को सौंप दे।

ये मागें पहाडो के आर्थिक विकास से घनिष्ट सम्बन्ध रखती हैं। स्थानीय आधार पर उपलब्ध कच्चे माल के दोहन और प्रशोधन का अवसर यदि वहीं के लोगो को दिया जाय तो बेरोजगारी की समस्या हल हो सकती है

(शेष पृष्ठ १० पर)

एक सफर—एक खबर

देवेन्द्र कुमार

रेलगाड़ियां बंद हैं, बंगलौर में होने वाले आगामी सम्मेलन की एक बैठक में जाने को हवाईजहाज से सफर कर रहा हूं। रास्ते में नाश्ता आता है, उसमें डबलरोटी के सैंडविच हैं, जिसमें आटा मैदा बनाकर इस्तेमाल किया गया है, बिस्कुट हैं जिनमें चोकर होने की शंका भी नहीं की जा सकती है और मिठाइयां हैं। साथ में आज के अखबार। पी०टी०आई० की यह खबर है, 13 मई के 'पैट्रियट' में-ब्रिटिश मेडिकल एसोसिएशन के डाक्टर डेनिस पी० बर्किट ने काफी शोध के पश्चात यह सिद्ध किया है कि मोटापा, मधुमेह, पथरी, हृदय रोग, कब्ज- एपेंडिसाइटिस, और आंतों के कैंसर का कारण है हमारे भोजन में फुजला या तंतु पदार्थों की कमी विशेषतया गेहूं वाले क्षेत्रों के भोजन में चोकर का अभाव। उनके प्रयोगों ने यह सिद्ध किया है कि तंतु पदार्थ तथा अनाजों के चोकर का उपयोग इन बीमारियों से हमें बचा सकता है। उनका स्पष्ट मत है कि इसके लिए जरूरी है कि सफेद आटे की रोटी के स्थान पर बिना छने आटे का उपयोग हो। चीनी, मिठाइयों और मीठी वस्तुओं के इस्तेमाल में भारी कमी की जाये और अपने दैनिक भोजन में चोकर का अधिकाधिक उपयोग हो।

डा० बर्किट का कथन है कि "अब तक पोषण-शास्त्रीय यह मानते रहे हैं कि तंतु पदार्थ हमारे भोजन में व्यर्थ वस्तु है किन्तु मानव स्वास्थ्य के लिए चोकर में बसे इस पदार्थ का कितना बड़ा हाथ है इसकी ओर उन्होंने ध्यान ही नहीं दिया।"

"आज यह स्पष्ट होता जा रहा है कि पाश्चात्य देश जहां अनाज को सर्वथा चोकर मुक्त करके उपयोग में लाने का रिवाज है उनमें उपरोक्त रोग जोर पकड़ते जा रहे हैं जबकि अफ्रीका के ग्रामीण इलाकों में जहां अनाजों और दालों का उपयोग उनके सम्पूर्ण रूप में किया जाता है इस प्रकार के रोगों की मात्रा नगण्य है।

"शर्करा पदार्थों (कार्बोहाइड्रेट) के प्राकृतिक छिलके को जब अलग कर दिया जाता है तो उनमें कैलोरी की मात्रा बढ़ जाती है और उसके खाने से मोटापा बढ़ता है।"

"प्रायोगिक आधार पर यह सिद्ध हुआ है कि शरीर में कोलेस्टेरोल की मात्रा का बढ़ना और गैलस्टोन का बनना भोजन में फुजला-पदार्थों की कमी के कारण होता है। यही कारण आंतों की खुश्की और कब्ज का भी है। एपेंडिसाइटिस का भी तंतु पदार्थ की खाद्य में कमी के साथ सीधा संबन्ध पाया गया है।"

अतएव डा० बर्किट का स्पष्ट मत है कि पोषण शास्त्र के आधार पर यह आवश्यक है कि पश्चिम की खाद्य पद्धति का अनुसरण करने से दूसरे देशों को रोका जाये और जहां खाद्य पदार्थों को चोकर मुक्त करके उपयोग करने का रिवाज है उसे बदला जाये और भोजन में अधिकाधिक पूरे अनाज और दालों का उपयोग कराकर पाचन यंत्र के सामान्य रोगों की रोक थाम की जाये।

इस प्रकार का स्पष्ट वैज्ञानिक मत होने पर भी वैज्ञानिक माने जाने वाले समाज में अप्राकृतिक और अवैज्ञानिक भोजन पद्धति क्यों विकसित हो रही है इसके कारणों में हम जायें तो पता चलता है कि खाद्य उद्योग में लगे व्यवसायी और औद्योगिक हित केंद्रित ढंग पर जब काम करते हैं तो खाद्य पदार्थों से वे सारे पोषण तत्व निकालना, उन वस्तुओं का टिकाऊपन बढ़ाने के लिए जरूरी होता है। जितना अधिक खाद्य वस्तुओं का टिकाऊपन होगा उतनी ही उनमें पैसा कमाने की ताकत होगी। सब्जियां, आम आदि बेचने वाला शाम तक ही आम बेचने पर मजबूर होता है क्योंकि उसकी चीजें शाम तक खराब हो जायेंगी पर उसी आम का टिकाऊपन शर्बत या सब्जी कंपनियों में सालों तक रोक कर रख सकते हैं और स्थल और काल में ऊंचा भाव पाने की क्षमता बढ़ा लेते हैं अर्थात जहां और जब ऊंचा भाव मिले रोक रख सकने की उनकी ताकत रहती है। यही कारण है कि गुड़ की जगह चीनी, पूर्ण चावल के बजाय पालिश किया चावल, पूरे आटे के बजाय मैदा, तेलों की जगह वनस्पति जैसे उद्योगों में कितने व्यवसायी मालामाल हो गये और उद्योगपति कहलाये। सचमुच अवैज्ञानिक व्यवसाय को उद्योग कहना एक बड़ी प्रवचना है और तथाकथित वैज्ञानिक इस सारे फरेब में मौन या खुले रूप से पैसा कमाने वालों का साथ देते हैं। 'यह तो बाड़ ही खेत खा गई' कहावत सिद्ध करने वाली बात हुई।

उद्योग शब्द उत् (अर्थात् ऊंचा) और योग अर्थात् प्रक्रिया शब्दों से बना है जिसका मतलब है वह प्रक्रिया जो वस्तु को ऊंचाई प्रदान करे अर्थात् उसे अधिक लोकोपयोगी बनाये। आज के अधिकांश खाद्य उद्योग (और भारत के व्यावसायिक) तो प्रमुखतः चीनी मिलों, तेल वनस्पति मिलों आदि से ही बने, हैं वे प्रारम्भिक रूप में पोषण पदार्थों को हल्लोपक परन्तु अधिक सफाई वाला बनाने में लगे हैं। डेनिस बर्किट की घोषणा केवल हमको, आपको ही अपने जीवन भोजन को बदलने की बात सोचने को नहीं बाध्य करती है वरन् सारे खाद्य उद्योग की राष्ट्रनीति को भी बदलने के लिए मजबूर करती है।

और अब, जब मैं यह लेख समाप्त कर कर रहा हूं, तो बोतल में बंद खूब चीनी वाली नारंगी का शरबत परिचारिका सबको परोस रही है और विमान यात्री समझ रहे हैं कि हम बड़े वैज्ञानिक पद्धति से जीवन यापन करने वाले हैं।

केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि द्वारा इस वर्ष रचनात्मक कार्यकर्ताओं के परिचय पुस्तक का द्वितीय भाग तथा रचनात्मक संस्थाओं की परिचय पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। संस्थाएं जिन्होंने विस्तार से अपना परिचय अभी तक नहीं भेजा है वे संस्था का नाम पता स्थापना तिथि, कार्यक्षेत्र, प्रमुख कार्यकर्ताओं के नाम व पद, उद्देश्य, क्रियाकलाप अन्य केन्द्र, स्थायी एवं अस्थायी कार्यकर्ताओं तथा श्रमिकों की संख्या, आदि के बारे में जानकारी भेज सकती है।

कार्यकर्ताओं को निम्नानुसार जानकारी भेजनी चाहिए : नाम व पता, जन्म तिथि, मातृभाषा, कार्य, संक्षिप्त जीवन परिचय, विगत और वर्तमान कार्य। (पासपोर्ट साइज का फोटो भेजना न भूलें।) जिन व्यक्तियों के नाम प्रथम भाग में हैं उनको यह जानकारी भेजने की आवश्यकता नहीं है।

मई माह तक दो हजार पूरे हुए

प्रदेश	संख्या	रकम
असम	१२	३१०-००
आंध्र	२६	७५६-००
उत्कल	३४	५०१-३२
उत्तरप्रदेश	३८६	१०, २१०-५०
केरल	१३	३०८-००
कर्नाटक	३४	७६२-००
गुजरात	२३६	६, २३२-००
तमिलनाडु	५२	८८६-००
पंजाब	३४	७५१-००
पं० बंगाल	१४०	४, ४५१-००
बिहार	७२	१, ६३५-६५
मध्यप्रदेश	२०८	५, २६५-००
महाराष्ट्र	४८४	१०, ७५२-००
राजस्थान	१४४	३,२२६-००
हरियाणा	५६	१, ४४८-००
हिमाचल	३	८०-००
दिल्ली	२०	७३१-००
विदेश	२	१७२-००
योग	१, ९९९	४८, ५७४,७७

उत्तर प्रदेश

बांदा : अर्जुन भाई। गोंडा : सुशीला देवी, पूर्णदेवी, राधिकाप्रसाद, मन्करराज सुन्दरी देवी, संता देवी, श्रीचाल्लरजी, तिन्नी देवी, महेश्वरदत्त सिंह। बदायूं टीकाराम आर्य। मुजफ्फरनगर : महेन्द्र सिंह, किरणमाला, कुसुम त्यागी, रामशिवकर अग्रवाल। देवरिया : शालिग्राम। फर्रुखाबाद · हीरालाल, छोटेलाल, भैरवसिंह भारतीय। फिरोजाबाद : ओमप्रकाश। सहारनपुर : चन्द्रशेखर, शारदा देवी, रामरतिदेवी, श्यामदासजी महन्त, डा० रामप्रसाद श्रीनिवास, गोपीचन्दजी माहेश्वरी। बरेली . ओमप्रकाश। वाराणसी : शिवशंकर शर्मा, डी० कुटुम्बराव, पीलीभीत : स्वामी शिवदानन्द। एटा · कालीराम, गोरखपुर . नवीन भाई, सूर्यनारायण मिश्र। आगरा - गोपालनारायण शिरोमणि, सीताराम, रामबाबू, शकुन्तला, शिवदत्त वैद, स्वामी निर्मलानन्द, शम्भुनाथ चतुर्वेदी, रोशन सिंह, रामबाबू गुप्ता, भगवानदास बगन, श्रीमती राजेन्द्र कौर, दीपक मोहन, श्रीमती शिमला मोहन, भूपदेव, बालचन्द शर्मा, गंगाप्रसाद सिंघल, मथुरा प्रसाद अग्रवाल, शीतलप्रसाद गुप्त, श्रीकृष्ण प्रसाद भार्गव, छीतीलाल अग्रवाल, पुजारी दास मोहन, बाबूलाल वर्मा गोपालराय बहुगुणा। मेरठ डालचन्द गुप्त, जैपालसिंह, रामभज, ब्रह्मदीन गिरी, सुन्दरलाल, तेज सिंह, अम्बाप्रसाद, चरण सिंह, हरिश्चन्द्र, अमरवती देवी जगदीश नारायण मिश्र। मिर्जापुर श्रीकान्त मिश्र, प्रेमचन्द्र, शिवमूरतसिंह, रुद्रनाथ, रामपुजन सिंह बहादुर भाई, रमाशंकर भाई, लक्ष्मणदत्त मिश्र, माणिकचन्द, बिहारीलाल, हरनन्दसिंह त्यागी भैयालाल यादव, पुरुषोत्तम भाई पनभोकर, लक्ष्मीचन्द त्यागी, सुदर्शन प्रसाद, रामगोपाल मिश्र। नैनीताल : मुनालाल शर्मा, सरजन प्रसाद, प्रदीप कुमार, पुरुषोत्तम, बलदेव तिवारी, रमा पाण्डेय, भानोनाथसिंह, श्रीमती लालमति देवी, नैनसिंह, श्रीमती रामप्यारी, मुस्सनराम। कानपुर : विनय भाई, डा० चन्द्रकान्ता देहलवी, डा० सोमनाथ शुक्ल। मथुरा : आनन्दीलाल, लक्ष्मी नारायण शर्मा, सरदार सिंह विशारद, निरंजनलाल वार्ष्णेय, दाऊदयाल सर्राफ, प्रभुदयाल कुलश्रेष्ठ, लाखाराम जी लवानियां, रामस्वरूप बजाज, छीतरमल अग्रवाल, श्रीनिवास अग्रवाल, रामबाबू जैन, ज्वालाप्रसाद कुलश्रेष्ठ, कान्ता प्रसाद, सूरज बली, डा० रघुवीर प्रसाद शर्मा, कुमरसिंह, नन्दलाल वर्मा, करतार सिंह, जुगन्दर सिंह, हरिश्चन्द्र, राजेन्द्र पाराशर, मोती रामजी, बाबाराम, हेतसिंह, स्नेहीलाल, कालीचरण, बनीसिंह, हरचरणलाल वर्मा सर्राफ, श्रीमती देवी। मुरादाबाद : लखमीचन्द। झांसी : डा० मानकराम सुंदरानी। हमीरपुर : सुखलाल।

मध्य प्रदेश

रायपुर: प्रेमजी रघुभाई टांक, प्रो०बाल चन्द्रसिंह बघवाहा, भंवरीबाई, राधीबाई मूथा, दुर्गितराम शर्मा, श्रीमती विजयाबहन सुराना श्रीमती लाभकुंवर बडालिया, श्रीमती रसालबाई सुराना, *श्रीमती मतियाबाई बेद*, बनवर लाल अग्रवाल, रूपराराम यादव, फिरतूराम वर्मा, सुखमललाल वर्मा, इतवारीराम कृपक, वामनगोपाल चन्द्रवंशी, रामदयाल अग्रवाल, मजाधर प्रसाद वर्मा, फिरतूराम वर्मा, छोटेलाल वर्मा, सुखराम वर्मा, जयलाल प्रसाद वर्मा, हरिप्रसाद अग्रवाल, गुन्दरलाल साहू, बेधूराम साहू, श्रीमती पार्वतीबाई, विद्याधर राव घेरकर, प्रो० चांद बीबी, चतुर्भुज मूंछिया, श्रीधरलाल अग्रवाल, भिखारीराम जी वर्मा, गोकुलदासजी बारमालंडे, विशाल रावजी चन्द्राकर, शम्भूदयालजी, श्रीमती पुष्पा अग्रवाल, चन्द्रभान सिंह सिरमोर, तुलसी प्रसाद शुक्ला, श्रीमती पंजनीबाई दानी, माधवर त्रिपाठी विरथ, बालाबानू, धानुराम वर्मा,

धार : मांगीलाल जोशी, प्रभाकर मांडलिक, रामचन्द्र जैन, सतीशचन्द्र दुबे, काशी प्रसाद दास, राधेश्याम पंडित, घनश्याम जोशी, नरहरि जोशी, श्रीकृष्ण पुरोहित, मोहन सिंह यादव, श्रीमती कंकुबहन चौधरी गुना : भागीनाथ महीर, भुवनेश्वर शर्मा, रामसिंह, मांगीलाल, श्री प्रभा, शशिप्रभा जैन, रतनलाल साहोटी, केशवचन्द जैन, रमेशचन्द्र पाटनी, राजाराम, पूरजमल मढेस वान, पुरुषोत्तम भाई, अम्बाराम, रामरतन, मीना, कान्हूराम, गोकुलप्रसाद, बद्रीलाल,

→

समाल पटेल, फूलसिंह, गुरता, सीतारामजी ताटके, नारायण राव चितामरे, दयाराम, श्री व श्रीमती विमलचन्द जैन, मांगीलाल महीर, भुवनेश्वर शर्मा। रतलाम: विमलाबाई। छतरपुर : शिवनाथ शर्मा, हरिश्चन्द्र। उज्जैन : बद्रीप्रसाद आर्य। इन्दौर : रघुराज सिंह पटेल, श्रीमती विमला पटेल। बालाघाट सीताराम मुघान, फागूलाल धामने, गोपाल रावजी लांगीकर, धरमराज बिसेन, नूरलाल डोंगरे। पिपरिया : ज० प्र० सिंघल। होशंगाबाद : सुरेश दीवान, हरिदास मंजुल सत्येन्द्र त्रिपाठी।

बैतूल : केशवराम लिखितकर, दौलत राम देशमुख, यादवराम घोटे।

दुर्ग : पंचमलाल जी, पंचरामजी, ईश्वर दास जी।

बिहार

मधुबनी: भवानन्द झा। सन्थालपरगना लक्ष्मीनारायण राय। बेगूसराय : श्रीमती जानकी देवी। सहरसा : रामजी पोद्दार। चम्पारण : ललितेश्वरी प्रसाद सिंह, ललितेश्वरी चरण सिन्हा। समस्तीपुर : डा० रामलखनलाल, आचार्य सीताराम लाल, सरस्वती, जगदीशप्रसाद लाल। पटना : सर्वनारायण दास, बद्रीनारायण सिंह, उमेश चन्द्र त्रिवेदी, राजकुमार प्रसाद, चन्द्रेश्वर महता।

पश्चिम बंगाल

कलकत्ता : गोपीराम अग्रवाल, ओमप्रकाश गुप्ता, रामप्रताप गोयल, राजाराम गुप्ता, जीवनमल दुगड़, दुगमलजी, गजानन्द, अग्रवाल, सोहन लाल भंवर, प्रयाग लाल जालान, कमलसिंह फुगलिया, रामकिशन गुप्ता, सम्पतलाल सेठिया, शांतीराम दारुका, रंजीत सिंह माडिया, केसरीमल सेठ, शान्ति लाल बरडिया, कल्याण चन्द जैन, श्रीमती नन्दिनी भाटिया, श्रीमतीनीला भाटिया, गीता पोद्दार, केशवदेव सिंहानिया, गिरधारीलाल हरिलाल देसाई, हरिलाल सी० शाह तेजूमल दयाराम, वंजनाथ मोदी, भीकमचन्द जैन, केशवचन्द बागडी, श्रीमती कुसुमलता मोरे, श्रीमती सीतादेवी बागडी, श्रीमती सूरजदेवी बागडी, श्रीमती शान्ति देवी बागड़ी, श्रीमती लक्ष्मी देवी पुगलिया, ओमप्रकाश, सुबल सेन, पुरुषोत्तम सर्राफ हुगली : पं दिनेशचन्द मुखर्जी, मणिन्द्रनाथसिंह राय, राजनारायण कुन्डू, चौबीस परगना : निकुंज चक्रवर्ती ठाकुर, उजाला करमाकर। मिदनापुर : ईश्वरचन्द्र प्रमाणिक।

उत्कल

कालाहाण्डी : घ्रुवचरण महन्ति। कटक : कृष्णसिंह, लम्बोदर सरा, प्रेमानन्द, एलिमा जरवाघ, हरि टर्वरिया, पुरिया विलु, करागुर विश्वनाथ, नालुंगुठा, रत्नदास, श्रीमती शान्ति देवी, रामचन्द्र नायक।

आन्ध्र प्रदेश

सिकन्दराबाद .हरिओम, श्रीमती रुकमणी उत्तमचन्द, उत्तमचन्द चन्दराम पश्चिम गोदावरी : म० वे० नु० अप्पाराव। वारंगल शिवानन्द मेघजी पटेल। विजयनगरम् : श्रीमती डा० सत्यवती। हैदराबाद : विष्णुशंकर पलसीकर, मगनचन्द्र वेदी।

महाराष्ट्र

वर्धा : गंगाधर गणतराव पोढरे, तुलसी दास मोतीलाल चांडक, जानराव राऊत, भगवतराव सीतारामजी चोरे, रामचन्द्र ठाकरे, रामचन्द्र प्रतापे, भीमराव जोशी, आशाराम महाजन, शान्ताराम कुलकर्णी, श्रीमती आशा तारे, रामचन्द्र बाजीराव, लक्ष्मण बुधाजी शिमरे, मधुकर लक्ष्मण कोठे विश्वनाथ गुणवंत देशपाण्डे, गुलाब गोमा कुलमेथे, उमराव मोतीराम, बाजीराव पंक, दत्तु मिका लोखडे, जगन तोताराम, डोणु सखाराम जगुनाथे, गिरधर तुकाराम, रामचिन्त्वा, चन्द्रभागा सुखदेव, जयवन्ती जयराम सरस्वती गणपत विलवणकर, कृष्णाबाई नारायण उभग, वेराजबाई भावचन्द कातर, राधाबाई वेपा पराते, सखाबाई केशव देशमुख पार्वतीबाई निनावे, पंचफुलाबालाजी भोमर, मैनाबाई अर्जुन, सुभद्रा बाई यशवंत लिमजे,

---

महाराष्ट्र राज्य के अर्थमन्त्री म० श० चौधरी लिखते हैं : पू० विनोबाजी की उपवासदान कल्पना क्रांतिकारी ही है। उस योजना में मैं भी शामिल हो रहा हूं। मेरे अन्य साथी भी इसमें शामिल हो सकें ऐसी कोशिश कर रहा हूं। शुद्धदान पर चलने वाला आंदोलन जनता में सच्ची शांति का निर्माण कर सकेगा।

पीलीभीत (उ० प्र०) के स्वामी विपदानन्द को लगा कि वे अधिक से अधिक ग्यारह साल और जीवित रहेंगे, तब क्यों न ग्यारह साल के उपवास दान का पैसा जमा करा दिया जाये? पीलीभीत सर्वोदय मंडल को वे एक साल का पैसा दे चुके थे। अगले दस सालों का २१० रुपया सर्व सेवा संघ को भेजते हुए वे लिखते हैं कि यदि शुद्धदान से मिला पैसा योग्य रीति से खर्च किया जाता रहा तो सर्व सेवा संघ को पैसे की कोई कमी पड़ेगी नहीं।

कर्नाटक

धारवाड: सुनियप्पा लक्ष्मप्पा। बेलगांव गुलप्पा गुरु सिद्ध्पा। उत्तर कनारा : नागेश एन० रायस। हुबली : डा० ए० बी० हुइलगोल।

केरल

कालीकट : श्यामजी सुन्दरदास, श्रीमती निर्मला मेनन, श्री के० राघवकृष्ण मेनन,।

तमिलनाडु

रामनाथपुरम: जी० नटराजन, ई०एम० वीरकाली थेवार मदुरई : देवी रजिवानी निर्मल वेद, लक्ष्मी बहन, सो० अन्ना कामी, मद्रास : धिन्दमुलाल शर्मा।

दिल्ली

नटवरलालजी गोयनका, रामगोपाल गाटोदिया, र० रा० दिवाकर, डी० आत्मा राम।

गिरजाबाई केशवराव, पुनाबाई काशीराम, बैनाबाई गणपत चौधरी, श्रीमती तानाबाई सदाशिव कोठाले, श्रीमती कौतकीबाई मारोत राव नरडे, श्रीमती सीताबाई सखाराम, श्रीमती गोराबाई जयराम भाटे, श्रीमती सिंगाबाई गोमा गवली, श्रीमती ध्रुवताबाई आनन्दसिंह ठाकुर, श्रीमती लक्ष्मीबाई गणपत करवुले, श्रीमती व्यवरम्मा देवन्ना, श्रीमती जनाबाई चपत कडू, श्रीमती जुलमाबाई वावरे, श्रीमती यमुनाबाई सीताबाई गवली, श्रीमती सालूबाई सदाशिव, श्रीमती लक्ष्मीनारायण मालपाणी, नारायण जाजू, श्रीमती डा० सुशीला नैयर, अशोकचंग, सत्यनारायण बजाज, कुमारी लीला वाघमारे, बेबी धुगरे, रामलाल ठाकुर, सुभद्रा रघटटे, चन्द्रकला भट्ट, कु० प्रभा कडू, कु० शकुन्तला भुल्लरे, कु० कुसुम वाघमारे, कु० बेबी भट्ट, कु० कान्ता भुजबेले, कु०

उपवास दान उद्धार में उधारी-प्रथा समाप्त करता है

शिवनारायण शास्त्री

उपवासदान का आधार पुराना है किन्तु विनियोग मे वैज्ञानिक/समाज क्रान्ति है, अध्यात्म चेतना है। उपनिषद काल मे मूल्यो को अर्वाचीन युग मे विकसित करने की इस दान ने नई दृष्टि भी प्रदान की है। शक्ति संकल्प जनित होती है, संकल्पित उपवास दिवस मे भूख की स्वाभाविक व्यग्रता नही होती जैसी कि अनायास भोजन न मिलने पर होती है। भगवर्तचिंतन का आधार ही स्वत बल प्रदान करता है। फिर भी एक दिन के उपवास का भी विभाजन दो दिन मे अपनी ओर से करके जो सर्वथा सर्व सुलभ हो सकता है, लोगो की स्वेच्छा पर भी कोई अंकुश नही लगाया है। जो विनोबा-जीवन की विशिष्ट तिथियो (११ और २५) को स्वीकार करेंगे वे विनोबा के जीवन से समरस हुए बिना नहीं रह सकते। विनोबा ने भक्त प्रह्लाद की उक्ति को बार-बार अपने प्रवचनो मे दुहराया है कि मैं इतने को छोड़कर अकेला मुक्त होना नहीं चाहता, फिर ऐसा आत्म प्रवचक कौन होगा जो ऐसे अपूर्व लाभ से अपने को वंचित रखे? दूसरे विनोबा अपने आश्रम मे रहते हुए भी लोगों के चौके तक पहुच कर, झांककर यह देख रहे हैं कि वह क्या और कितना खा रहा है। 'तेनत्यक्तेन भुंजीथा' का यथावत आचरण कर रहा है? उपवास दिन के दूसरे समय मे दैनिक भोजन के अतिरिक्त फलाहार या दुग्धाहार जैसे विशिष्ट वैकल्पिक आहार का आग्रह न रखने ने सर्व सामान्य जन को सुलभता ही प्रदान की है।

सर्व सेवा सघ सर्व के लिए है लेकिन अब तक इसका प्रत्यक्ष परिचय बौद्धिक या चेतन नागरिक तक ही सीमित रहा है, किन्तु उपवास दान से उसकी सर्वव्यापकता की संभावना प्रकट हुई है। उपवासदान वह माप है जो अतीत और वर्तमान का आकलन करके भविष्य की अनेक विध संभावनाओ से परिपूर्ण है। यहां परोपदेश पांडित्यम् वाली बात नही चल सकती। भूदान-ग्रामदान की गतिशीलता मे जो अंतराल रहा उसकी क्षति को यह पावन दान पूरी तरह भरने मे समर्थ है।

एक वर्ष का एक साथ त्याग अनपढ से विद्वान तक और संपन्न से गरीब तक के बीच कठिनाई अवश्य उपस्थित करता है। कुछ लोगो को एक साल के उपवासो की अग्रिम राशि देने मे कष्ट होता है लेकिन साथ ही यह उद्धार मे उधारी की प्रथा समाप्त करता है। धर्मस्य त्वरिता गति की जानकारी कराता है।

यन्तुला पेठकर, कु० कुसुम हजारे, श्रीगणपत सोनटक्के, बखाराम जोगे, सोनबा हजारे, श्रीमती सिन्धु ठाकरे, कु० मीरा हजारे, कु० कमला बाई, कु० पचफुला भुस्लरे, श्रीमती धनुबाई माहुरे, कु० देवी महादेव डफरे, श्रीमती हीरासाटोने, दुर्गाप्रसाद शर्मा, भागवत रामाराम कडू, दिनकर हरिभाऊ बाले, मारोतराव जम्बुजी डहारे, दादा भोयर, माधव गोपालराव मलेजे, रामसूरत प्रसाद, *मदनलाल पवार, रामभाऊ लाखसाड़े, चिन्ता-*मण ढोभाजी येवले, श्रीराम वासुदेव सालोडकर, धनराज रामकृष्ण चादुरकर, सन्तोष सावजी राउल, पुरुषोत्तम गुणवन्तराव सडालकर, दादाजी बापुराव डफने, पुरुषोत्तम देवराजजी ठाकरे, सुदाम गणपत ताकसाडे, भाऊराव ढोगरडले, मारोतराव श्रावण उईके महादेव बलीराम गिरडे, महादेव शामरावजी पाडुरंग, रामकृष्ण मारोतराव चादुरकर, अम्बादास माधवराव वाढरे, सदाशिव बापूजी भरालकर।

यवतमाल श्रीमती अंजनी अप्पाजी साठवणे, कृष्णराव केशवराव गौड, श्रीमती सुमति रामकृष्ण पतनागलकर, रामचन्द्र सूरजमल राठी। **बम्बई** पुष्पा बोहोल, नरेन्द्र जी दाने, ज्ञानचन्द पी० मुथीचन्द, श्रीमती कला ज्ञानचन्द, जयराम ना विश्वकर्मा *सतारा कु० व्य० सवनीस, दे० ए० देशपांडे* **भंडारा** . दिनकर ढोले, लक्ष्मण झाडकूजी शेंडे, हरिभाउ भारोतीराव तिडके, महादेव रघु कुभारे, दत्तात्रेय मुकुन्दराव, रामदयाल धनपाल पटेल, **अमरावती** : दे०स० पोतदार, बालकृष्ण श्रावण बोवडे, रामकृष्ण आत्माराम वेलसरे, राजेन्द्र मालपाणी, श्रीमती सरोज मालपाणी, रामेश्वर बद्री नारायण पाण्डेय। **बीड** : मुखलाल जी गणेशलाल बजाज **धूलिया** : सुरेश गर्ग, रामदास सम्पत भीवरे, श्रीमती कौशल्या अग्रवाल, घनश्यामदास सुरजमल अग्रवाल। **कोल्हापुर** : माधव रामचन्द्र दलवी, श्रीमती रा० दलवी।

जलगांव : अनिलकुमार जाजू, श्रीमती पुष्पा जाजू, नन्दलाल रामनारायण बाहेति, सदानन्द भाई खानचन्द, डा० ललिता राठी, श्रीमती मानकुवर बाई, श्रीमती सरोजाबाई भुरमा, नन्दलाल रघुनाथ काबरा, राजकुवर *नन्दलाल काबरा, सुमतिबाई श्यामसुन्दर,* कस्तूरबा बाई श्रीकृष्ण लढ़े, गीतादेवी, रा० ज० मंत्री, शान्ताबाई श्यामसुन्दर मूंदड़ा। **अकोला** श्रीमती राधादेवी गोयनका। **बुलढाणा** . त्र्यबक शिवराम सावजी **नागपुर**: प्र० गो० शेदुर्णीकर। **सांगली** : त्रि० धों० गोरे दत्तात्रेय, गणेश शिरालकर **परभणी** · रंगनाथराव विश्वनाथराव।

बम्बई : चन्द्रकान्त हीरालाल शाह, शकुन्तला बहन अडवाणी, प्रभाकर बलवंत राय मेहता, मार्कण्डेय बी० मेहता।

गुजरात

अहमदाबाद रामजीभाई धरमसीभाई सोनीजी, गगोत्री रामजीभाई शाह, इन्दुबहन रामजीभाई सोमैया, सुराभाई पुनाभाई भरवाड मनुभाई रतिलाल, कमाभाई दुधाभाई मुंधवा मूलजीभाई नारायण भाई, प्रवीण एस० वढवाणा, मखुमा चुडासमा, भीमजीभाई बेचरभाई बजारमा, रमीलाबहन अजीत भाई, मृदुला बहन चिमनलाल शाह, **बड़ौदा** : राजेन्द्र महत, मूलजीभाई लक्ष्मीदास, डा० नवनीत भाई फौजदार, कमला बहन चतुर्भुज शाह, **जूनागढ** · सत्यप्रेमी सरस्वती, मोहनलाल छगनलाल मारडिया, कस्तूरी बहन च० नेवघाणी, देवी बहन मछाजी, लीलाधर भाई मो० दावडा, प्रीतमदास वाटुमल, उत्तमा *बहन प्रीतमदास जेठवाणी, भगवती बहन* धुदराज, तेजरामजी, खीमजी डाह्याभाई कजसागरा, मनसुया बहन बालाभाई नानावटी, कौशल्या बहन एम० नानावटी, मोरी वल्लभ भीमजी, दादन बहन किसचन्द, महेशचन्द जयाशंकरजी कार, लक्ष्मण भागचन्द मछाणी, मोजाभाई वीरमभाई राठोड, बालकृष्ण, देवराम जोशी, जगजीवन मवेर

उपवासदानियों की सूची

चन्द शाह, वापजीभाई भागजीभाई चुडासमा **सूरत :** नारायण नाथूभाई पटेल, विमला बहन रमणीकलाल शाह, मालती बहन ज्योति भाई देसाई, ज्योतिभाई देसाई, कंचन बहन प्रवीण भाई शाह, तरला बहन बाबूभाई शाह **साबरकांठा :** वल्लभदास ए० दोशी, वहेचर भाई जगाभाई पगी । **अमरेली :** शालजी केशवजी चागलाणी, देवायत मोर, चन्द्रकान्त विधाराम त्रिवेदी । **भरूच :** पद्मा बहन प्राणलाल चोक्सी, नानूभाई मजूदार, सोम भाई पटेल सीमरया, कान्तिभाई मणिलाल रावल, मीनाक्षी बहन बद्री शंकर जोशी, मृदुला बहन बद्रीशंकर जोशी, कु० रक्षाबहन बद्रीशंकर जोशी, रत्नसिंह भीमसिंह डोडिया, शविता बहन रत्नसिंह, डोडिया, महेन्द्रप्रसाद धीरजराम जोशी, मानसिंह का० भाई बाबा महाशंकर पुरुषोत्तमदास भट्ट, कान्तिलाल नरभराम व्यास, घनश्यामदास दलपतराम जोशी, मगनलाल गणपतराम व्यास, दीनू-भाई अम्बालाल पटेल, कुमुद बहन दीनुभाई पटेल, सतकुमार हरिशंकर जोशी, रमेशचन्द्र मणिशंकर जोशी, कल्याण सिंह भारतसिंह, वजेसिंह भीमसिंह डोडिया, दौलतसिंह रणछोड बाबा, खुमान सिंह मोहनसिंह, गुलबहन दस्तूर । **पोरबन्दर :** सुशील का० पंडित । **मांडवी** डा० मनहरलाल मगनलाल जानी । **खेडा :** मणिभाई वहेचर भाई सोलंकी जादवजी ओधवजी सोलंकी, चिमनभाई रणछोड़ भाई । **महेसाणा :** मालजी भाई जीवाभाई, रामभाई मनोहरदास पटेल, शाह कान्तिलाल मथुरदास, रामभाई श्री पटेल । **भावनगर :** भारती बाबूभाई रावल, मंजुला बाबूभाई रावल, मनुभाई शनाभाई बचीरिया मानूभाई मोहनलाल शिरोया, मुकदराय प्रतापराय मेहता, केशवभाई भीखाभाई वाला गोपालभाई कानजीभाई काडडिया, ललित चन्द्र भानुशंकर राज्यगुरु, भीमजी भाई ही० जसाणी, उकाभाई मोहनभाई पटेल, केमुभाई भगवानदास भावसार, लवजीभाई नथूभाई डोगा, वल्लभभाई राजाभाई खूंट, मंजुला शांतिलाल त्रिवेदी, नर्मदा शांतिलाल त्रिवेदी, सुषमा शान्तिलाल त्रिवेदी, भारती शांतिलाल त्रिवेदी, आशुतोश शांतिलाल त्रिवेदी, घुसा-भाई गोविन्दजी, मंछा बहन अ० खिमाणी, अमुलख भाई खिमाणी, कानजी भाई हर-गोविन्द सोनी, मोहनभाई जेठाभाई शिरोया । **कच्छ :** कर्मसिंह भा० टोक, ढुंढराज दुसायल, कु०कृष्णा के भभाणी, अमृतसिंह लक्ष्मीदास नानावटी, पार्वतीदेवी इन्द्रराज, परसराम पतूराम लखाणी, कु0 लाजवन्ति परसराम लखाणी, श्रीमती हरिआई परसराम लखाणी परमेश्वरी बहन एम0 वासनाणी, देवजीभाई खीमजीभाई पटेल, गंगाराम भागिमा, शांति-लाल भूरालाल शाह, जयराम ध0 ठक्कर मोरलिया धारसी राघवजी, पोचा भारमल शाह, नायाभाई वणवीर, शाह जवाहर मगनलाल, भीमजी दामजी कुलडीया, बाबूभाई भूराभाई शाह, पेथावीरा वेरा, नरसीभाई गाला, शांतिलाल माणजी दोशी, रतिलाल वीरचन्द दोशी, जगसी जीवराज दोशी भीमसी गागजी सावला, चिमन भाई के0 सुथार, वसंतभाई देसाई भाई पटेल, मणिलाल बालचन्द सघवी, रामचन्द्र जोशी, चन्द्र जोशी ।

राजस्थान

बीकानेर : देवीदत्त पंत, बलवन्त सिंह रावत, मामराज शर्मा, लक्ष्मी चन्द तिवारी, बंशीधर शर्मा, पूनमचन्द चड्ढा, गजानचन्द मिश्र, ताराचन्द्र तिवारी, शुभकरण शर्मा, सुशील कुमार शर्मा, किशन गोपाल वासदेव, हीरालाल छगणी, पानसिंह मेहरा, आलम सिंह नेगी, ललितचन्द्र पंत, नारायण अग्रवाल फूलराज गर्ग, आनन्द सिंह मेहरा, मालाराम बारपाल, किशनाराम, बाक्पाल, मोडाराम, फूलचन्द वर्मा, रामस्वरूप शर्मा, शान्तिसिंह, खेताराम चौधरी, मुहम्मद हुसैन, राम बाबू शर्मा, असकरण नाहटा, मखाराम, धोकल राम, रघुनाथ सोनी, हनुमान, बेचनराम, प्रेमचन्द बिस्सा, रेखाराम, द्वारिका प्रसाद, गफूरखान, भंवर व्यास, रामजीलाल, चम्पा लाल पटवा, जीतसिंह राठौर प्रकाश चन्द जैन, श्रीमती मनोरमा आचलिया । **जयपुर :** दानमलजी मुनीम, बसन्तलाल मुनीम, श्रीमती विमला कुमारी मुनीम, हीराचन्दजी सबाड, उमरावमल चोरडिया, छीतरमल गोयल, लक्ष्मीचन्द भंडारी, कल्याण चन्द्र माहेश्वरी **चुरू :** चन्दनमलजी पींचा, सूरजमल दुग्गड जौहरी, मोहनलाल जैन । **उदयपुर :** देवेन्द्र कुमार कनावंट । **भीलवाड़ा :** केसरपुरी गोस्वामी । **जैसलमेर:** इस्माइलजग, इस्माइल टेलर, श्रीमती बानो, श्रीमती मीराबाई कुम्हार, श्री गफूर मोहम्मद, मघाराम, बलीमोहम्मद खान, कमरुद्दीन, टिकूराम, दयारामदास, भगवानदास भाटिया, मदनलाल पुरोहित, भवरलालसूदा, गोपालकृष्ण भाटिया, राधेश्याम चड्ढा, मदनलाल भूतड़ा. बद्री-नारायणजोशी, नन्दकिशोर भाटिया, भगवान दास माहेश्वरी, प्रेमशंकर व्यास, शिवनाथजी छागणी, लक्ष्मणदासजी खत्री, गंगासिंह जी मोहता, योगेन्द्र प्रसाद शर्मा, तोलाराम जी केवलिया, भवरलाल खुशहालचन्द **श्रीगंगा-नगर :** रामस्वरूप सिंह अटल । **सिरोही :** गोकुल भाई दो० भट्ट । **अजमेर :** बालकृष्ण गर्ग । **भरतपुर :** जगदीशप्रसाद गर्ग, सोहन लाल अग्रवाल, दुर्गाप्रसाद, **टोंक :** रामेश्वर प्रसाद सोमानी । **सवाई माधोपुर :** बिरजी लाल शर्मा ।

(पृष्ठ ५ का शेष)

और यहां के तरुणों को रोजगार की तलाश में मैदानी क्षेत्रों की ओर पलायन रुक सकता है, लोगों को वर्तमान आर्थिक दुरावस्था से छुटकारा मिल सकता है और यहां के लोगों में व्यावसायिक व व्यवस्थापकीय क्षमता का विकास भी हो सकता है।

उपरोक्त दो मांगों के अलावा पत्थर खदानों पर काम करने वाले मजदूरों को नियमानुकूल मजदूरी, बोनस व अन्य सुवि-धाएं देने की मांग भी की गई।

अभी तक क्वेरी के मालिकों को जनता की शक्ति का ज्ञान नहीं हुआ था परन्तु सीधी कार्यवाही प्रारम्भ होने पर उन्होंने करवट बदली है और लाइम स्टोन क्वेरी ओनर्स एसोसियेशन के एजेंट वकीलों और अदालतों का चक्कर लगाने लगे हैं ताकि कानून और प्रशासन को खरीदने का षडयंत्र रचा जा सके। यदि गिरफ्तारियां व दमन चक्र प्रारम्भ होता है तो शान्ति पूर्ण आन्दोलन उग्र रूप भी ले सकता है और टिहरी-देहरादून जिले का विद्यार्थी वर्ग, जिसका नैतिक समर्थन आन्दो-लन को मिल रहा है भी इसमें कूद सकता है। सकलाना के आन्दोलन का प्रभाव टिहरी जिले के ही राणीचोरी के पास की चूना खदान पर भी पड़ सकता है।

अस्कोट से आराकोट तक पदयात्रा

भारत-तिब्बत नेपाल सीमा पर स्थित पिठौरागढ़ जिले के अस्कोट गांव से २५ मई को उत्तराखण्ड के युवकों की ६० दिवसीय पदयात्रा प्रारंभ हो गई है। सीमांत पर्वतीय जिलों के दूरस्थ गावों की यात्रा करते हुए इस यात्रा का समापन २५ जुलाई, ७४ को अमर शहीद श्री देव 'सुमन' के बलिदान दिवस के दिन उ०प्र० हिमाचल सीमा पर बसे हुए आराकोट गाव में होगा। पदयात्रा टोली के संयोजक चन्द्रशेखर पाठक ने बताया कि इस यात्रा का उद्देश्य पर्वतीय युवकों में गावों के कठोर जीवन के साथ समरस होने का अवसर प्रदान करना है, जिससे उनमे पर्वतीय क्षेत्र के विकास एवं नव-निर्माण के प्रति दिलचस्पी पैदा हो। पदयात्रा टोली में सर्वश्री कुवर प्रसून, प्रतापसिंह 'शिखर' और विजय जड़धारी के अलावा सुन्दरलाल बहुगुणा भी हैं। उ० प्र० के मुख्यमंत्री हेमवती नदन बहुगुणा ने पदयात्रा की सफलता के लिए शुभकामना व्यक्त की है।

●महाराष्ट्र छात्र आन्दोलन आये दिन बढ़ता जा रहा है। सत्ताईस मार्च को पुलिस ने नौकरी मागने वाले दो सुशिक्षित युवकों की हत्या की। उसकी न्यायिक जाच की माग के लिए महाविद्यालय के छात्रों ने दो अप्रैल को शुरू होने वाले परीक्षा का बहिष्कार किया। चार अप्रैल को महाराष्ट्र शासन ने न्यायिक जाच स्वीकार की। आन्दोलन जारी ही रहा।

○अब भ्रष्टाचार निर्मूलन, पिछड़े हुए क्षेत्र के विकास का सवाल आदि प्रश्न उठाये गये हैं। इस समय बडी संख्या में नागरिक तथा सत्तारूढ़ और विरोधी दलों ने आन्दोलन का सक्रिय समर्थन किया। परिणाम स्वरूप महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री को नागरिक तथा छात्रों के दो प्रतिनिधि मडलों को बात चीत के लिए बुलाने पर मजबूर होना पडा। एक सप्ताह तक यह बातचीत चली। विकास के प्रश्न पर कुछ आश्वासन दिये गये, दल के नेता तथा कुछ सामाजिक कार्यकर्ता आंदोलन से अलग पड गये, कुछ छात्रों को भी आदोलन से अलग करने का प्रयास हो रहा है। यूनिवर्सिटी ने परीक्षा की नयी तिथियो का एलान कर दिया है।

छात्र आंदोलन अपनी ताकत पर आगे बढ़ता जा रहा है। छात्रों की विशाल रैली मे परीक्षा बहिष्कार का कार्यक्रम चलाना तय हुआ। छात्र संघर्ष समिति की पुनर्रचना की गयी है। तरुण शांति सेना आंदोलन को पाच जिलो तक सीमित रखने के बजाय व्यापक करने का प्रयास कर रही है। महाराष्ट्र सर्वोदय मडल खास इस विषय पर चर्चा करने के लिए बैठक बुला रहा है।

यह आंदोलन भारतीय स्तर के आंदोलन से जुड जाये तथा गाव-गाव मे पहुच जाय इस तरह के प्रयत्न जारी हैं।

○होशगाबाद के निकट रोहणा ग्राम मे गत २८,२९ मई को तरुण शांति सेना का दो-दिवसीय शिविर सपन्न हुआ। ग्रामीण युवक गावों की समस्याएं हल करने की दिशा में क्या पहल कर सकते हैं इस बारे में शिविर में विचार-विनिमय हुआ। वर्तमान समाज के ढाचे में परिवर्तन की आकाक्षा युवकों में अधिक तीव्रतर होती जा रही है अत. नगर और ग्रामस्वराज के काम के लिए ग्रामीण और शहरी युवकों का सम्मिलित कार्यक्रम प्रारभ करने की पहल शुरू करने का भी निश्चय किया गया। शिविर में आसपास के देहातों के ५० नवयुवकों ने भाग लिया। सचालन श्री सुरेश दीवान ने तथा मार्गदर्शन म० प्र० सेवक सघ के मत्री श्री बनवारीलाल चौधरी ने किया। शिविर में भाग लेने हेतु छिन्दवाडा के गीतकार रामकुमार शर्मा, होशगाबाद के प्रसिद्ध साहित्यकार माहेश्वर तिवारी एव गाधी शाति प्रतिष्ठान, इन्दौर से अशोक वराले गये थे।

फुलिया भगत की पदयात्रा अप्रैल महीने मे उत्तर प्रदेश के चार जिलो-सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, मेरठ तथा बुलन्दशहर में चली। १३३ मील की पदयात्रा मे ३०६ रुपये की साहित्य बिक्री की तथा २० गावों के ३००० बच्चों में सर्वोदय-विचारप्रचार किया।

○हरिद्वार कुम्भ मेले मे सर्वोदय कार्यकर्ताओं का एक दल मेले मे आये सतो से मिला। इस दल के सुश्री निर्मला बहन ऊषा बहन मानवमुनि तथा कृष्णराज मेहता की चर्चा स्वामी सत्यानन्द, स्वामी सत्कृपाल सिंह, स्वामी मुक्तानन्द, स्वामी माधवानन्द, स्वामी पुरुषोत्तम दास एव अवधूत परमहंसो से हुई। सतो की आध्यात्मिक-शक्ति तथा सेवकों की सेवा-शक्ति दोनों की सामूहिक शक्ति देश के काम मे लग सके, ऐसी विनोबाजी की भावना है। समाज पर सतो का आज भी प्रभाव है, यह बात सभी सतो ने स्वीकार की और विनोबाजी का विचार मान्य किया और कहा कि विनोबा आज के युग के महान सत हैं।

○कानपुर में 'यूथ फार डेमोक्रेसी' के सदस्य तथा नगर के नौजवानों ने वनस्पति तेल के थोक व्यापारियों के यहा छापा डलवा कर उन्हें गिरफ्तार करवाया। अप्रैल में हुई युवकों की बैठक के निर्णयानुसार जिलाधिकारी से भेंट करके राशन की दुकानों पर निगरानी रखने का कार्यक्रम तय हुआ। तरुण शांति सेना तथा 'यूथ फार डेमोक्रेसी' ने पिछले माह नगर की २७ राशन की दुकानों का निरीक्षण किया और दुकानदारों तथा उपभोक्ताओं की कठिनाइयों की जानकारी ली।

○श्री घेलूभाई नायक ने डाग में २० दिन की पदयात्रा के दौरान ३१ गावों में २१२ भाई तथा १९ बहनों से नशा-मुक्ति का सकल्प कराया। पदयात्रा की अवधि में आश्रमशालाओं, आदिवासी छात्रालयों तथा गांव के युवक-युवतियों से पढ़ाई-लिखाई तथा सर्वोदय विचार के बारे में बातचीत हुई।

डाग की सभी पचायतों और शिक्षणशालाओं के द्वारा नशाबन्दी पदयात्रा, सर्वोदय विचार-पदयात्रा, स्त्री जागृति-पदयात्रा आदि के बारे में चर्चा हो रही है।

○अप्रैल ७४ में गाधी अध्ययन केन्द्र, हिसार में पाच रविवारीय गोष्ठिया की गयीं। चर्चा के विषय थे. पुलिस और कानून सरक्षण प्राकृतिक चिकित्सा और हम, भारत में न्यायपालिका और उसका अस्तित्व, शराबबन्दी आवश्यक क्यों ? तथा हम दुखी क्यो ?

इन विषयो पर विभिन्न विद्वानों ने अपने अपने विचार व्यक्त किये। इन बैठको में मैत्री, भूदान यज्ञ, सत्याग्रह तथा विनोबा विचार से भी लेख पढ़ जाते है।

आपने अपने हस्ताक्षर दबाव में आकर तो नहीं किये ?

—बाबू

"आइये, आइये अच्छा हुआ, आप आ गये, हम आपका इन्तजार ही कर रहे थे।" मुझे देखकर मेरे मित्र ने कहा।

वहां कोई बीस-पच्चीस आदमी बैठे थे और सभी चिन्तित नजर आते थे।

"आज तो आपके यहाँ बड़ा जमाव है, कहिये क्या बात है ?" मैंने पूछा।

"ये सारे मुसीबत के मारे हैं।"

"खैरियत तो है ?"

"आप बैठिये तो सही, मैं सब बताता हूं।"

तब वह एक-एक मित्र का परिचय देने लगे।

"आप हैं एक कालेज के प्रिंसीपल साहब। इनके कॉलेज का मासिक वेतन बिल जिला विद्यालय निरीक्षक के यहां से वापिस आ गया क्योंकि उनके दफ्तर ने एतराज किया कि क्या पता कि इन्होंने हस्ताक्षर किसी दबाव या मजबूरी से किये हों।"

"यह तो अजीब बात है।" मैंने खेद पूर्वक कहा।

"आप हैं पी० डब्लू० डी० के ठेकेदार साहब। इनका कागज खजाने से लौटा दिया गया क्योंकि सवाल यह खड़ा हो गया कि इन्जीनियर साहब ने हस्ताक्षर अपनी इच्छा से किये हैं या नहीं।"

"पहले भी कभी इस तरह लौटा था ?—उन ठेकेदार साहब से मैंने पूछा।

"नहीं, इसी दफा ऐसा हुआ। बाबू ने बताया कि कोई नया कानून ऐसा बना है जिसके कारण यह रोक लग रही है।"

"आप हैं एक लेखक जिन्होंने एक मोटा उपन्यास लिखा है। उसकी पाण्डुलिपि प्रकाशक को भेजी थी। उसके साथ एक चिट्ठी रखी थी कि यह किताब भेज रहा हूं, पैसा भेजिये। उसने इस नोट के साथ चिट्ठी वापिस कर दी कि लेखक साबित करे कि पांडुलिपि उसने खुद और खुशी से तैयार की है।"

"और पाण्डुलिपि क्या हुई ?"

"वह उसने रख ली।" लेखक महोदय ने दुःखी होकर कहा।

"प्रकाशक बहुत चालाक मालूम पड़ता है।"

"यह देखिये, यह मेरे पड़ोसी का भतीजा है। इसको शादी पर तिलक में ससुराल से पांच हजार का चेक मिला था। वह चेक बैंक वालों ने आनर नहीं किया और कह दिया कि क्या पता कि इसने हस्ताक्षर जोर-जबरदस्ती से करा लिये हों।"

"अरे तो हस्ताक्षर मिला लेते।"

"यही तो मैंने भी कहा—लेकिन वे नहीं माने।" बहुत गुस्से से उस तरुण ने कहा।

"आप हैं एक लोकर थियेटर के मैनेजर, सैकड़ों फिल्में बम्बई से, दिल्ली से मंगा कर दिखा चुके हैं। लेकिन कल गये स्टेशन तो पारसल बाबू ने बिल्टी का माल नहीं दिया और कह दिया कि हमें क्या पता कि हस्ताक्षर किस हालत में किये हैं।"

"उसने रील का बक्सा दिया या नहीं दिया ?" मैंने पूछा।

"नहीं दिया साहब मैंने धमकी भी दी है कि कम्पन्सेशन वसूल कर लूंगा लेकिन उस ने एक नहीं सुनी और मेरी दिक्कत यह है कि उस फिल्म का आज से दिखाने का विज्ञापन मैं अखबार में दे चुका हूं।"

"आप फोटोग्राफर हैं, इनकी पुरानी फर्म है। इन्होंने फोटो सामान कलकत्ता से मंगाया था, एजेन्ट खुद आर्डर ले गया। लेकिन माल नहीं आ रहा है।"

"क्यों क्या हुआ ?"

"वह पूछते हैं कि क्या पता कि आर्डर पर हमारे हस्ताक्षर सच्चे हैं या झूटे।'

'रुपया तो आपने पेशगी नहीं दिया था।' मैंने उनसे पूछा।

'दस हजार का माल है, बानगी से पांच सौ दे दिया था।'

'चलिये खैरियत मनाइये कि पांच सौ की चपत पड़ी, बाकी बच गये।'

'अच्छा, यह बूढ़े दादा देहात से हैं, इनको कई साल पहले भूदान में जमीन मिली थी। वही जोतते हैं।'

'कहो, दादा, गांव में सब कुशल है।' मैंने पूछा।

'कुशल कहां है ? हमारी जमीन का पट्टा गांव के सभापति ने छीन लिया।'

'क्यों ?'

'यह कहा कि कौन जाने इस पट्टे पर भूदान वालों के जो दस्तखत हैं वह हमने रुपया देकर या डरा-धमका कर बनवा लिये हों। नये कानून से यह पट्टा नहीं चलेगा। पहले तसदीक होगी और फिर पट्टा मिलेगा।'

'तसदीक कौन करेगा ?'

'सरकार, हमें कुछ पता नहीं। हमारे सामने तो सवाल यह है कि क्या जोतेंगे-बोयेंगे और बच्चों को क्या खिलायेंगे ?,

इस तरह एक के बाद एक, सारे सज्जनों का मित्रों ने परिचय कराया और उन्होंने अपनी-अपनी दर्द भरी गाथायें सुनायीं।

सब एक साथ पूछने लगे कि हम अब करें तो क्या करें, इस तरह तो सारा कारोबार चौपट हो जायेगा।

मैं सोच में पड़ गया कि इस मसले का क्या हल हो सकता है।

फिर मेरे मित्र ने कहा, 'एक रास्ता है।'

'वह क्या ?'

'आप इन लोगों के कागजात पर प्रमाणित कर दें कि सारे हस्ताक्षर स्वेच्छा से हैं और कहीं कोई झूठ या दबाव नहीं है।

'मैं कहां तक प्रमाणित कर गा और फिर बैंक वाले, खजाने वाले या दूसरे लोग मेरी बात क्यों मानने लगे ?'

'आपका कहा तो कोई टाल नहीं सकता,' उनमें से कई ने कहा।

'अच्छा, एक इलाज हो सकता है'—उस तरुण ने कहा जिसे शादी में चेक मिला था।

'हां बेटा, बताओ, वह क्या ?, मैंने पूछा।

'मेरे ख्याल से यह जो कानून संसद में बना है वह तो केवल विधायकों के हस्ताक्षर की पुष्टि के लिए है।'

'यह तुम सही कह रहे हो।' मैंने कहा।

(बाकी पेज १५ पर)

● पूर्णिया (बिहार) में जिला मजिस्ट्रेट के चैम्बर में एक बैठक, रूपौली प्रखण्ड की लघु सिंचाई योजना के लिए बिहार रिलीफ कमेटी के रूपौली केन्द्र द्वारा किसानों को बैंक से कर्ज दिलाने तथा छोटे किसानों को अनुदान की व्यवस्था के सम्बन्ध में आयोजित की गयी। चीजों के दाम बढ़ जाने के कारण पूर्व निर्णय में सुधार की दृष्टि से यह बैठक आवश्यक थी। रूपौली रिलीफ केन्द्र के प्रभारी सीताराम बाबू, बिहार रिलीफ कमिटी के मंत्री मथुरा बाबू एवं बैंकों के प्रतिनिधि बैठक में सम्मिलित थे। बैंक से खास वारिस के भी कर्ज मिले यह तय हुआ और परिवर्तित रेट पर ऋण एवं अनुदान की स्वीकृति तथा विभागीय स्वीकृति प्राप्त करने के लिए सम्बन्धित अधिकारी लिखा-पढ़ी करेंगे।

● कांग्रेस द्वारा दल के विधान में से खादी की अनिवार्यता हटायी जाने पर टिप्पणी करते हुए मुंगेर जिला सर्वोदय मण्डल के अध्यक्ष निर्मल चन्द्र ने इसे ईमानदारी का निर्णय बताया। बरियारपुर (मुंगेर) के खादी ग्रामोद्योग कार्यालय में खादी कार्यकर्ताओं बुनकरों और कत्तिनों के बीच बोलते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस-सदस्यता के लिए खादी का आग्रह हट जाने से हमें चिंतित नहीं होना चाहिए, खादी की खरीददार तो आम जनता है। कांग्रेस को खादी का भार बहुत दिनों से महसूस हो रहा था उसे फेंक उसने ईमानदारी का परिचय ही दिया है। खादी और गांधी को अभिन्न बताते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने खादी और गांधी को अस्वीकार कर अपना वास्तविक रूप जनता के सामने रखा है। बैठक के बाद कई छात्रों ने खादी पहनने का संकल्प लिया।

उपचुनावों का बहिष्कार करें

(पृष्ठ ३ से जारी)

दिल्ली नहीं आ सकते। लेकिन गृहमन्त्री को उन्होंने बातचीत के लिए पटना बुलाया है। "मैं उनसे बात करने को तैयार हूं। लेकिन आंदोलन स्थगित करना तो सम्भव नहीं है। यह कोई जयप्रकाश नारायण का आंदोलन नहीं है। यह आन्दोलन जनता का है और वही इसे वापस ले सकती है।"

गृहमन्त्री दीक्षित की उनसे मिल कर भ्रष्टाचार मिटाने के मामले पर चर्चा करने की इच्छा के संदर्भ में जे पी ने कहा कि उन्होंने भ्रष्टाचार निवारण के लिए ८ सूत्री योजना गृहमन्त्री के पास भेजी है। लेकिन वह योजना भारत सरकार की रद्दी की टोकरी में पड़ी हुई है"—जे पी ने कहा। विधानसभा को तो विसर्जित करना ही होगा। "अब से हमारी मांग विधान सभा भंग करो नहीं होगी। अब हमारा नारा होगा "विधान सभा भंग करेंगे—" जे पी. ने घोषणा की।

जयप्रकाश नारायण ने कहा कि बिहार में हर गांव में छात्र युवा संघर्ष समितियां और जन संघर्ष समितियां गठित की जायेंगी और ये समितियां मिल कर लोक सभा और विधान सभा के लिए उम्मीदवार चुनेंगी। आंदोलन के समर्थन में विधायकों द्वारा खाली की गयी सीटों के लिए उप चुनाव करवाने के सरकारी निर्णय के बारे में जे पी. ने कहा "इस ये उपचुनाव नहीं होने देंगे।" जो इस्तीफा दे चुके हैं वे चुनाव नहीं लड़ेंगे। जे. पी ने लोगों से कहा कि वे इन उपचुनावों का बहिष्कार करें।

प्लूटोनियम २३९ के खतरे

१८ मई को भारत ने भूमि के नीचे जो विस्फोट किया उसमें प्लूटोनियम-२३९ का प्रयोग किया था। इस तत्व के बारे में लन्दन के 'पीस न्यूज' में कुछ जानकारी एक सन्दर्भ में दी गयी है। अणु ऊर्जा का उत्पादन कई पश्चिमी देशों में बड़े बड़े कारखानों के लिए किया जा रहा है। 'पीस न्यूज' का कहना है कि यह बड़े खतरे की बात है। संयुक्त राष्ट्र प्राकृतिक संसाधन सुरक्षा परिषद के डाक्टर टेम्पलिन और कोकरन ने इस तत्व के बारे में जो शोध की है, और जो हाल में ही प्रकाशित हुई है, उससे पता लगा है कि प्लूटोनियम-२३९ जितना खतरनाक माना जाता था उससे वह एक लाख पन्द्रह हजार गुना ज्यादा खतरनाक है और उसके कण से यह खतरा २८००० साल तक बना रह सकता है। अमरीका के ही एक वैज्ञानिक का अनुमान है कि यदि योजनानुसार अणु रिएक्टर अमरीका में बनाये जाते हैं तो २० वर्षों में एक लाख व्यक्तियों की मृत्यु फेफड़ों के कैंसर से होगी। प्लूटोनियम २३९ का इतना छोटा कण, जिसका व्यास एक मिलीमीटर का हजारवां है तथा जिसका भार एक ग्राम का दस लाखवां है, फेफड़ों में कैंसर उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त है।

'पीस न्यूज' का कहना है कि कुछ वैज्ञानिक इन तथ्यों से सहमत नहीं हैं, किन्तु ब्रिटेन की सरकार जिस प्रकार उनको दबाने का प्रयास कर रही है उससे यही लगता है कि उनमें सच्चाई है। ब्रिटेन में इस सम्बन्ध में 'गार्डियन' में, दो लेख तथा 'न्यू साइन्टिस्ट' में एक लेख निकल चुका है और वहां के टेलीविजन पर इसका कार्यक्रम भी हो चुका है।

यहां यह भी स्पष्ट कर दिया जाये कि यद्यपि यह कहा जाता है कि भारतीय विस्फोट में अणु धूलि नहीं उड़ी है, किन्तु कुछ वैज्ञानिकों ने इस पर शंका व्यक्त की है कि उनको लगता है कि जब रेत उड़ी और टीला बना तो यह असम्भव है कि धूलि न उड़ी हो। सम्भव है अधिक जांच-पड़ताल के बाद सही बात का पता लगे। इसमें भी आश्चर्य न होगा यदि ब्रिटिश सरकार की भांति यहां की सरकार भी सही तथ्यों को जनता तक न पहुंचने दे। लेकिन नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुनेगा।

सर्व सेवा संघ अधिवेशन १८ से २० जून के बजाय अब जुलाई के दूसरे हफ्ते में होगा। निश्चित तारीखें अभी तय नहीं हुई हैं। अधिवेशन स्थल पवनार ही रहेगा।

यह लम्बी लड़ाई की शुरूआत है

—रामचन्द्र राही

पिछले ३० मार्च की बात है। मुजफ्फरपुर कचहरी के पास एक मैदान मे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के एक नेताजी जोर-जोर से गरज रहे थे: 'गांधी का नाम लेने वाले सर्वोदयी गद्दार हो गये हैं...बम बनाने लगे है...देश में तोड़-फोड़ करने लगे हैं,हिंसा की आग भड़का रहे हैं...लोकतंत्र को समाप्त कर देना चाहते हैं विदेशी प्रतिक्रियावादी शक्तियो के दलाल बन गये हैं...।' मैदान मे करीब ४ हजार लोगो की भीड़ थी। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की 'लालसेना' खाकी हाफपैंट और लाल कमीज पहने हाथ मे कोई-न-कोई हथियार लिए सैकड़ो की तादाद मे चारो तरफ 'ड्यूटी' पर तैनात थी। सरकारी पुलिस मैदान मे कही दिखायी नही दे रही थी। इधर-उधर ढूंढने पर एक चहारदीवारी की ओट मे कुछ सिपाही बैठे बीडी पीते दिखायी पड़े। भला लोकतन्त्र की रक्षा करने वाली, अहिंसा की पुजारी, 'देशभक्ति' का ठेका ले रखी कम्युनिस्ट पार्टी की सभा से शांति-सुव्यवस्था को क्या खतरा था कि पुलिस के जत्थे, वहभी बिहार-पुलिस के नही, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के, राइफलें लिये, ट्रकों मे लदे, गश्त करते दिखायी देते? उनकी जरूरत तो तब पडती, जब कोई शिक्षको, छात्रो, नागरिको का मौन जुलूस निकलने वाला होता, उनकी कोई सभा होनेवाली होती जिसमे वे तरुण शांति-सैनिक होते, जिन्हे लाठी-गोली तो क्या, शायद पत्थर फेंकना भी नही आता, या वे छात्र होते, जो अपने असंतोष को, अपने विरोध को शांतिपूर्ण ढंग से व्यक्त करने का संकल्प लिये होते?

कुछ लोग कह रहे थे: "ऐसा अन्याय, ऐसा झूठफरेब तो अंग्रेजीराज से लड़ाई के समय भी नही देखा गया। जिनका इतिहास ही गद्दारी का है, जिनका विश्वास ही हिंसा पर है, जो अपनी 'लालसेना' को एक संगठित हिंसक शक्ति के रूप मे विकसित करने की कोशिश मे हैं, जो स्वयं दूसरे देश के इशारे पर नाचते रहे है, वे बेचारे सर्वोदयवालो पर ऐसा आरोप लगाते हैं, जिसकी कोई बुनियाद नही। झूठ की भी कोई हद होती है!"

चाय पीते-पीते जहां मैंने लोगो की ये बातें सुनी, वही एक सज्जन ने कुछ बातचीत करने पर कहा कि 'मुजफ्फरपुर मे ३१ मार्च तक धारा १४४ लागू थी, लेकिन आज सबेरे ही १४४ हटा लिया गया, क्योकि इन लोगो को सभा करनी थी। और कल ही यानी २६ को यहा के शिक्षको ने मौन जुलूस निकालने की इजाजत मांगी तो नही मिली। इतना ही नही, इजाजत मांगने के लिये गये हुए आदमी को ३ घटे रोक रखा गया।'

कानून के रखवाले

मैं कचहरी मे दो विद्यार्थियो की जमानत कराने के सिलसिले मे गया था। उनमे से एक दुबले-पतले शरीरवाले लडके को पुलिस ने बेरहमी से पीट-पीटकर अधमरा कर दिया था, सिर्फ इसलिए, कि पिछली १६ तारीख को पहले से घोषित आमसभा के आयोजन पर रोक लगा दिये जाने के बाद भी सभा की जगह पर जुट आयी भीड़ मे उसने एक पर्चा पढकर सुनाने की कोशिश की थी। पर्चे मे कहा गया था कि सभा पर रोक लगा दी गयी है, इसलिए आप लोग वापस जायें। उसके पहले से ही मुजफ्फरपुर में दैनिक जरूरत की चीजो के भाव तय करने का शांतिपूर्ण आन्दोलन चलाया जा रहा था, उसमे व्यापारियों, समाज-सेवको से मिलकर तरुण शांति-सैनिक तथा अन्य छात्र एक भाव तय करके उसी भाव पर लोगों को चीजें मिलें, इसकी कोशिश कर रहे थे। इसी कोशिश में कुछ चीजो के भाव तय करके इस सभा मे लोगो को जानकारी दे देनी थी। उस पर्चे मे, जिसे उस लडके ने पढकर सुनाने की कोशिश की थी, चीजो के भाव भी लिखे हुए थे। उस लड़के को इसी अपराध (?) पर मार-मारकर बेदम कर देने के बाद 'आतरिक सुरक्षा कानून' के अन्तर्गत उसे जेल में बंद कर दिया गया था। करीब १०-११ दिन बाद, जब राज्य-सरकार ने इस कानून के अतर्गत गिरफ्तार किये गये लोगो को छोडने का आदेश दे दिया तो उस लडके को दो-तीन दूसरे कानूनो की मदद से जेल मे ही बद रखा गया। कानून और शांति-सुव्यवस्था के रखवालो ने उस पर यह आरोप लगाया कि उसने पुलिस पर आक्रमण किया था, मारने का प्रयास किया था। ऐसा है कानून, और ऐसे हैं उसके रखवाले।

कैसे पायेगा न्याय इस देश का साधारण नागरिक, अपने ही चुने हुए प्रतिनिधियो द्वारा बनाये गये कानून के बल पर? क्या कानून से साधारण आदमी को न्याय मिल पायेगा कभी?

तब से अब तक के दरमियान बिहार मे जनता का आन्दोलन बहुत आगे बढ़ चुका है। इस घटना का जिक्र सिर्फ इसलिए किया ताकि कैसी-कैसी दलीलें और कार्रवाइयां सरकार और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से हो रही हैं, उसकी एक झलक मिले।

इस समय यह सवाल जोर-शोर से उठाया जा रहा है कि इस तरह के आन्दोलनों से लोकतंत्र पर खतरा है। क्या सचमुच ऐसी बात है?

→

पुनर्जागरण प्रतीक्षा में है

(पृष्ठ ४ का शेष)

जलगाव की बैठक के समय सर्वोदय का राजनैतिक दृष्टिकोण के बारे मे—भी उपयोगी हो सकता है।

खैर, मेरी मनोभूमिका इस प्रकार की है। इसलिए मैं आज कोई संकट नहीं देख रहा हूं। बल्कि आंदोलन के नये तूफान के लिए अनिवार्य ऐसा एक विचार-मंथन आरम्भ हुआ है, यह बहुत बड़ा शुभ चिन्ह है। यदि यह चरण विनोबाजी के द्वारा नही गणसेवकत्व के द्वारा सामने आनेवाला हो, तो ऐसा विचार मंथन टाल नही सकते। इस मथन के क्षणो मे हम लोग अपने दिमाग साबूत रख सकें, दिल उदार रख सकें, भिन्न विचार वाले आंदोलन के साथी के प्रति हार्दिकता न खोयें, सत्य का एकाधिकार किसी एक का नहीं है ऐसा मानें, सिर्फ शब्दो के जाल मे और नारेबाजी मे न फसे रहें,—तो जब अमृत की प्राप्ति होगी तब हम सब एक साथ उससे हमारे आंदोलन को पुष्ट एवं अधिक तेजस्वी बना सकेंगे।

पिछले २६-२७ सालों से लोकतंत्र चल रहा है। क्या इस लम्बे अर्से में लोकतंत्र मजबूत हुआ है? हम बराबर यह कहते आये हैं कि लोकतंत्र में दो शक्तियाँ हैं—'लोक' की व 'तंत्र' की। 'लोक' की शक्ति यानी जनता की शक्ति और 'तंत्र' की शक्ति यानी प्रशासन की शक्ति। पिछले २६-२७ सालों में किसकी शक्ति बढ़ी है 'लोक' की या 'तंत्र' की? साधारण बुद्धिवाला भी आसानी से समझ सकता है कि 'लोक' की शक्ति घटी है, और 'तंत्र' की बढ़ी है। सिर्फ ऐसे लोगों को, जो अपनी 'पार्टी' को ही देश मानते हैं, ऐसा लग सकता है कि हमारी पार्टी की चाहे जैसे भी शासन करने की ताकत बढ़ी है, इसलिए लोकतंत्र मजबूत हुआ है। लेकिन हकीकत अगर यह होती तो देश की यह दुर्दशा न होती जो आज हो रही है। अगर आम जनता मजबूत होती, शासन करनेवाली पार्टियों के साथ होती, तो उनकी सभी नीतियाँ, उनके कारोबार सफल होते। लेकिन क्या ऐसा हो रहा है? नहीं, ऐसी हालत में 'लोक' को कमजोर करनेवाला कोई भी काम लोकतंत्र के खिलाफ होगा।

परस्पर अविश्वास

अपने देश में 'लोक' दो बुनियादी मामलों में कमजोर किया जा रहा है, आज के तंत्र द्वारा। एक तो लोकजीवन संकट में पड़ता जा रहा है, जीना दूभर हो रहा है, ऐसी अर्थ-व्यवस्था खड़ी हो रही है। दूसरे, नेताओं का विश्वास लोगों पर से और लोगों का विश्वास नेताओं पर से हटता जा रहा है। जनता नेताओं के वादों का खोखलापन देख चुकी है, इसलिए उनके 'वादों' पर उसे कोई भरोसा नहीं रह गया है। उधर नेता अपनी शासन की गद्दी बचाये रखने के लिए अधिक से-अधिक थैली और डण्डे की शक्ति पर भरोसा करने लगे हैं, चाहे वह थैली देशी सेठों की हो, विदेशी सेठों की हो, चाहे सरकारी खजाने की हो; उसी तरह डण्डा चाहे सिपाही का हो, गुण्डों का हो या कानून का हो। क्या इससे 'लोक' की शक्ति कमजोर नहीं पड़ रही है? क्या यही सिलसिला चलता रहेगा तो लोकतंत्र मजबूत होगा?

इसलिए लोकशक्ति अगर किसी आन्दोलन से जगती है और संगठित होकर तंत्र चलानेवाले हाकिमों और नेताओं पर अपनी नैतिक शक्ति से, शांतिपूर्ण सामूहिक शक्ति से अंकुश लगाने की कोशिश करती है और इस प्रकार सरकार-शक्ति ▪ समाज-शक्ति अधिक मजबूत बनती है, तो इससे आज के 'तंत्रलोक' की जगह 'लोकतंत्र' की बुनियादी ही मजबूत होती है, लोकतंत्र खतरे में नहीं पड़ता। हाँ, आज की परिस्थिति का नाजायज लाभ उठा रहे लोगों को अपने क्षुद्र स्वार्थों पर अवश्य खतरा दिखायी दे सकता है।

आज के लोकतंत्र का तो बस यही एक अर्थ रह गया है कि जनता चुनाव में इनको या उनको वोट दे और उसके बाद कुछ न करे। बस, चुपचाप इनकी चलायी चक्की में पिसती रहे। लेकिन यह सिलसिला आखिर कब तक चलता रहेगा? जनता कब तक सहती रहेगी? क्यों सहती रहेगी? क्या जनता को यह सहन करना चाहिए भी?

जड़ से इलाज

गुजरात के बाद अब बिहार में जो आन्दोलन शुरू हुआ है, वह 'नागनाथ' की जगह 'साँपनाथ' का यानी एक पार्टी की जगह दूसरी पार्टी का राज कायम करने के लिए नहीं है, बल्कि इस पूरे ढाँचे में बदल करने की बात उसमें से प्रकट होने लगी है। लोगों को साफ समझ में आने लगा है कि जो रोग है उसका इलाज जड़ से ही होना चाहिए।

पूरी दुनिया का रोग

आज सबसे बड़ा रोग, केवल अपने देश में ही नहीं, पूरी दुनिया में एक ही है कि 'राजसत्ता' और 'अर्थसत्ता' ऊपर के केन्द्रों में सिमटती जा रही है और नीचे कुछ बचता ही नहीं। ऊपरवालों की मर्जी से जो कुछ भी मिल जाय, उसीसे जनता को सन्तोष करना चाहिए—यह दुनिया की सब सरकारों की मंशा रहती है। अपने को प्रगतिशील कहलाने के लिये ये सरकारें एक ओर तो लोकतंत्र और समाजवाद यानी समानता और समता के नारे लगाती हैं, तथा दूसरी ओर अपनी शक्ति मजबूत बनाने के लिए समाज में भेदभाव और विषमता को बढ़ानेवाले काम करती रहती है। कोई भी सरकार यह नहीं चाहती कि सामान्य जनता की शक्ति सरकार के साथ समानता और समता के आधार पर खड़ी हो। ऊपर के केन्द्रों पर सिमटी हुई राज्यसत्ता और अर्थसत्ता के लिए जो लड़ाइयाँ होती रहती हैं, उनमें भी जनता के के लिए समानता और समता की बात नहीं होती, सिर्फ जनता को उभाड़कर उसका लाभ उठाया जाता है 'उसी के सीने पर जमे रहने के लिए।

लम्बी लड़ाई की शुरुआत

लेकिन अब धीरे-धीरे परिस्थिति बदल रही है। सारी दुनिया की जनता अब यह बात समझने लगी है कि राज्य और अर्थ की सत्ता को जब तक साधारण जनता के छोटे-छोटे संगठनों के कब्जे में नहीं रखा जायगा तब तक जनता का राज कायम नहीं होगा। इसीलिए अब ऐसा लगता है कि पूरी दुनिया में जनता की स्वराज्य की आकांक्षा और उसके 'स्वराज्य' को छीननेवाले 'तंत्रों' ▪ बीच लड़ाई शुरू हो गयी है! आये दिन दुनिया के देशों में जनता के विद्रोह की खबरें सुनायी पड़ने लगी हैं। भारत में भी गुजरात से जो शुरुआत हुई है, वह शायद उसी बड़ी लड़ाई की शुरुआत है।

(पेज १२ का शेष)

"तो आप एक वक्तव्य देकर उसमें सारी जनता व तमाम दफ्तरों को इतमिनान दिला' दीजिये कि नया कानून केवल विधायकों या राजनैतिक नेताओं को दृष्टि में रखकर खास तौर से उनके लिये बना है, आम आदमी पर उसमें कोई शक नहीं किया गया है और इसलिए समाज की जितनी गति विधि है वह बदस्तूर चलती रहनी चाहिये।"—उस तरुण ने कहा।

"ठीक है, ठीक है।" सब तरफ से आवाज आई।

"आप एक वक्तव्य तैयार कर लीजिये, मैं प्रेस वालों को फोन करके यहीं बुलाये लेता हूँ।"—मेरे मित्र ने मुझसे कहा। और जो आये हुए थे उनको एक-एक कुल्हड़ गन्ने का रस पिला कर खुशी-खुशी विदा किया।

जाते-जाते उनमें से एक ने कहा—

"वाह रे इन्सान। क्या तेरा ईमान।"

राष्ट्रव्यापी समस्याओं पर उ. प्र. युवा सम्मेलन

● उ० प्र० तरुण शांति सेना और इलाहाबाद युवा मंच के संयुक्त तत्वावधान में १८-१६ जून को इलाहाबाद में युवा सम्मेलन हो रहा है। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय प्रश्नों पर युवकों को खुल कर बहस करने, विधायक संघर्ष की दिशा तय करने का अवसर देना है। सम्मेलन में जयप्रकाश नारायण भी उपस्थित होंगे। वर्तमान शिक्षा का विकल्प, लोक तंत्र-विकल्प की खोज, भ्रष्टाचार जो अब शिष्टाचार ही बन गया है, महगाई, बेरोजगारी, अहिंसक युवा आंदोलन की तकनीकी- इन विषयों पर सम्मेलन में छोटे-छोटे समूहों में चर्चा की जायेगी। सम्मेलन को आचार्यों साहित्यकारों तथा नागरिकों का समर्थन मिल रहा है।

● दिल्ली नशाबन्दी समिति ने दिल्ली प्रशासन की शराबन्दी के प्रति उदासीन नीति का विरोध करने ६ जून को शाम से रात तक शराब की कुछ दुकानों पर सौम्य प्रदर्शन करना तय किया है। इसमें शराब विरोधी पर्चे व साहित्य वितरण प्रमुख होगा। इधर जहरीली शराब से हुई कुछ मौतों के बाद स्वयं प्रशासन जनता को 'साफ सुथरी' शराब बना कर पिलाने की योजना बना रहा है।

○ मुज्जफरनगर (उ० प्र०) में उपवासदानियों की संख्या सौ से ऊपर चली गयी है। शहर के कालेज में काम कर रही दस महिलाए अपने अतिरिक्त समय में शहर में घूम-घूम कर उपवासदान संकल्प पत्र भरवा रही हैं। आर्य कन्या पाठशाला इन्टर कालेज की प्रधानाचार्य कृष्णा कुमारी इस अभियान में विशेष रुचि ले रही हैं।

○ केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि द्वारा गत जनवरी, १६७४ में आयोजित सर्वोदय विचार परीक्षाओं के परिणाम घोषित हो गये हैं। गुजरात, बंगाल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में १८ केन्द्रों के अन्तर्गत १४५ परीक्षार्थी सर्वोदय विचार प्रारंभिक परीक्षा में सम्मिलित हुए। जिनमें से १०८ उत्तीर्ण हुए और ५० ने विशेष योग्यता हासिल की। परीक्षा फल ७५.५% रहा। परीक्षा में उत्तीर्ण प्रथम पांच के नाम इस प्रकार हैं : सर्वश्री नरेन्द्र कुमार दुबे (इन्दौर) कु० किरण गमराडे (खण्डवा), कु० विजया जैन (दमोह), नटवर गोपाल जालोरा (जोधपुर) और कु० पुष्पा गोन्नाडे, (कस्तूरबा ग्राम)।

इसी प्रकार सर्वोदय विचार प्रारंभिक परीक्षा में गुजरात, दिल्ली, बिहार, मध्य-प्रदेश, राजस्थान महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश से २३ केन्द्रों के अन्तर्गत १४३ परीक्षार्थी शामिल हुए। उनमें ११८ सफल रहे। ४० ने विशेष योग्यता प्राप्त की। परीक्षाफल ८२.५०% रहा। प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण प्रथम पांच में सर्वश्री अखिलचन्द्र, गणेशभाई पटेल, नाथा लाल पटेल, सच्चिदानंद तिवारी, कमल किशोर लुकड, कृष्णसहाय पारीख व युसुफ अली कुरैशी सम्मिलित हैं। अंतिम दोनों परीक्षार्थियों ने समान अंक प्राप्त किये हैं।

अब ये परीक्षाए आगामी अगस्त, ७४ में आयोजित होंगी।

○ अमरनाथ भाई २८ मई को जमानत पर रिहा कर दिये गये हैं। वे मई के दूसरे हफ्ते में छपरा में गिरफ्तार कर लिये गये थे।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली, सोमवार, १७ जून, '७४

● बिहार में देश की नियति का महाभारत : प्रभाष जोशी ● बिहार में एक तरफ जनता है, एक तरफ सत्ता : श्रवण कुमार गर्ग ● आम लोगों की मुक्ति से लोकशक्ति खड़ी होगी : राममूर्ति ● जे० पी० राजनीति को लोकनीति की तरफ ले जा रहे हैं : धीरेन दा ● बिहार का जन आंदोलन एक खास दौर : नारायण देसाई ● गोंडा में नयी जमींदारी : नरेन्द्र ● लोग पूरी जिम्मेदारी सरकार पर न डालें : इन्दिरा गांधी ● मुंभावली में काल नहीं पड़ता : अनन्त कुमार

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० १७ जून, '७४ अंक ३८

१९ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

बिहार में देश की नियति का महाभारत

जयप्रकाश नारायण अगर बिहार के छात्र आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार नहीं करते तो गफूर साहब का बदनाम और जनविरोधी मंत्रीमंडल कभी का त्यागपत्र दे चुका होता और विश्वासहीन विधायकों की विधानसभा बिना किसी के छाती पीटे विसर्जित हो गई होती। अगर बिहार में गुजरात दोहराया नहीं जा रहा है तो इसके कारण भी जयप्रकाश नारायण हैं। जे. पी. ने मंत्रीमण्डल के त्यागपत्र और विधानसभा के विसर्जन जैसी लोकप्रिय लेकिन मामूली मांगों को उनके साधारण राजनीतिक धरातल से उठा कर राष्ट्रीय जीवन की मुख्य समस्याओं से जोड़ दिया है। केन्द्रीय सरकार और कांग्रेस संगठन साम-दाम-दण्ड-भेद की पूरी शक्ति लगा कर बिहार की सरकार और विधानसभा को बचाने पर कटिबद्ध हो गये हैं क्योंकि वे जानते हैं कि जे. पी. जो लोक आन्दोलन बिहार में चला रहे हैं उससे भ्रष्टाचार और *तिकड़म की* राजनीति को चलाने वाली व्यवस्था ही भंग हो जायेगी। दिल्ली से लेकर पटना तक अगर यथास्थितिवादियों ने खन्दकें खोद कर मोर्चे सम्हाल लिये हैं और अपने अस्तित्व की लड़ाई की पूरी तैयारी कर ली है तो इसका कारण यह है कि जे. पी. ने बिहार में एक ऐसा जन आन्दोलन खड़ा कर लिया है जो लम्बे समय तक चलेगा, अहिंसक होगा उसमें इस देश की नियति तय होगी। सरकार बहुत अच्छी तरह जानती है कि *दांव पर क्या है* इसलिए वह ऐसा एक भी करतब बाकी नहीं रखना चाहती जो इस जनआन्दोलन को तोड़ने में *काम आ सकता हो*। पिछले दिनों सरकारी और कांग्रेसी लोगों ने विनोबा जी के बयानों तक का जो बचाने उपयोग गलतफहमी फैलाने के लिए किया है उससे साबित होता है कि *ये लोग किस स्तर तक उतर सकते हैं।*

केन्द्रीय सरकार, बिहार सरकार, कांग्रेस संगठन और उसकी पिछलग्गू कम्युनिस्ट पार्टी अगर यह सब करती है तो उनके भय समझ में आ सकते हैं। लेकिन इस देश के बुद्धिजीवियों को क्या हुआ है? क्यों वे एक ऐसी आयातित और आरोपित व्यवस्था की सुरक्षा में भ्रष्टाचारियों का साथ दे रहे हैं जिसके खिलाफ लिखते और बोलते हुए वे कभी थकते नहीं थे। क्या उनके भी वर्गगत हित-स्वार्थ उन्हीं लोगों के हैं जो यथास्थिति से लाभ उठा कर जनता के नाम पर अपनी जनविरोधी सत्ता को बनाये रखना चाहते हैं। क्यों *जयप्रकाश नारायण को बार-बार यह* चेतावनी दी जा रही है कि अगर वे मौजूदा व्यवस्था को भंग करेंगे तो इस देश में अराजकता आ जायेगी। ऐसा कौन-सा क्षेत्र हमारे सार्वजनिक जीवन में बचा है जहां अराजकता नहीं है और जहां सत्ता और धन के हाथ में लाठी नहीं है? बाढ़ की तरह सर्वव्यापी भ्रष्टाचार इस देश की आत्मा में कैंसर की तरह फैलता जा रहा है और कौन है इस देश में जिसे मालूम न हो कि वह क्यों फैल रहा है? सार्वजनिक जीवन में मूल्यों के इस पतन और व्यवस्था को खोखला करने वाले भ्रष्टाचार के खिलाफ क्या इन्हीं लोगों ने कम बोला और *लिखा है?* फिर आज जब कि एक बहत्तर वर्ष के समर्पित व्यक्ति ने गरीब लोगों की रोटी छीनने वाले भ्रष्टाचार और सत्तावादियों की सत्ता को बनाये रखने वाली व्यवस्था के खिलाफ अपनी जान की बाजी लगा कर शंख फूंका है तो क्यों ये लोग अपनी खोल में लौट कर भयभीत राजनीतिज्ञों की तरह 'हुआ-हुआ' कर रहे हैं? अगर बिहार जैसे जन-आन्दोलन भ्रष्टाचार और खोखली व्यवस्था के खिलाफ नहीं चलेंगे तो क्या वे *विधानसभाएं और संसद इस देश में* शां कर देंगी जो तिकड़म से बहुमत प्राप्त कर वाली पार्टियों के दादाओं के हुक्म पर कानू बनाती जाती है? आखिर इस देश के बुद्धि जीवियों को क्या चाहिए? जब कुछ नहीं होता तो वे ऊंचे और हताश स्वर में मिमि याते हैं कि हाय, कुछ नहीं हो रहा है औ देश गड्ढे में जा रहा है। लेकिन जैसे ही को ऐसा जन-आन्दोलन खड़ा होता है जिसमें इ व्यवस्था को ध्वस्त करने की संभावनाएं होतं हैं ये लोग भयभीत हो कर यथास्थितिवादियों की ओर से वकालात करने लग जाते हैं। यह वकालात इन्हें रोटी और सुख-सुविधाएं तं दे देंगी लेकिन उन निष्ठाओं को गिरवी रख देगी जो एक देश को उसका चरित्र देती है। बिहार का जनआन्दोलन सत्ताधारियों के *अन्दरूनी संकट को तो उजागर करता ही* है वह इस देश के तमाम सोचने-समझने वालो से भी पूछ रहा है कि उन्हें अपनी आस्थाओं के अनुसार जीने की सार्थक स्वतन्त्रता चाहिए या एक भ्रष्ट व्यवस्था के द्वारा फेंके गये रोटी के टुकड़े?

बिहार का जन आन्दोलन इन बुद्धिजीवियों की दुविधा अथवा विषाद के मिटने तक नहीं रुकेगा। वह राज्यशक्ति और राजनीति के तमाम पैंतरों के बावजूद चल निकला है और उसके पांवों में इस देश के करोड़ों पांवों की गति और उसकी तनी हुई मुट्ठियों में करोड़ों हाथों की शक्ति है। गफूर मंत्रीमण्डल का त्यागपत्र और विधानसभा का विसर्जन इस आन्दोलन की सफलता का मापदण्ड नहीं है। इसके कारण रातों रात महंगाई दूर नहीं होगी न *देखते-देखते भ्रष्टाचार आंधी* में दुर्गन्ध की तरह उड़ेगा। यह होगा, लेकिन आन्दोलन अगर अपने लक्ष्यों और साधनों की एकता बनाये रख कर चलता रहा तो इससे पूरे देश का नक्शा बदलेगा। यह व्यवस्था बदलेगी जो जनता के नाम पर इसकी रोटी छीन कर और उसे भ्रष्ट बना कर

(शेष पृष्ठ १६ पर)

एक बार फिर ऐतिहासिक क्षण। ५ जून को जुलूस में जाने के लिए सीढ़ियों से उतरते जे० पी०
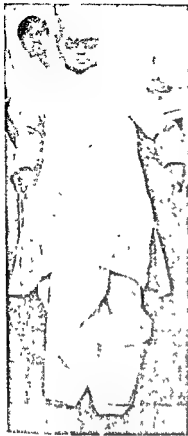
बिहार में एक तरफ जनता है, एक तरफ सत्ता

और जे० पी० हैं प्रतीक जनता की ताकत के

श्रवण कुमार गर्ग की पटना से रपट

जयप्रकाश मुर्दाबाद, 'अमेरिका को दे दो तार—जयप्रकाश की हो गई हार,' 'जयप्रकाश की गुण्डागर्दी नहीं चलेगी—नहीं चलेगी,' 'जयप्रकाश पर हमला बोल—हमला बोल—हमला बोल।' पटना की जनता को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ कि उनके नगर की सड़कों पर ये नारे लगाये जा रहे हैं। कुछ लोगों ने अपने दरवाजे और खिड़कियों से झांक कर देखा और पाया कि जो कुछ वे सुन रहे हैं एक सच्चाई है।

पटना के लोगों ने ३ जून को पहली बार महसूस किया कि बिहार में भी अगर कोई चाहे तो 'जयप्रकाश मुर्दाबाद' के नारे लगाये जा सकते हैं। अपने हाथों में लाल झण्डे के साथ-साथ तीर-कमान, बल्लम, फरसा और अन्य घातक हथियार लिये लगभग तीस हजार लोगों का जुलूस साम्यवादी दल ने पटना में निकाला और एक आतंक का वातावरण बनाने की और यह बताने की कोशिश की कि जयप्रकाश नारायण लोकतंत्र को समाप्त कर रहे हैं और विधान सभा को भंग करवा कर प्रतिक्रियावादी ताकतों को बढ़ावा दे रहे हैं। बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ने पटना और बिहार के नागरिकों से अपील की थी कि वे इस जुलूस का पूर्ण बहिष्कार करें, पटना के नागरिकों ने इस अपील को पूरी तरह माना। सड़क के दोनों तरफ केवल सीमा सुरक्षा दल और सी० आर० पी० के जवान थे। गांधी मैदान जहां से जुलूस चला और राजभवन, जहां जुलूस खत्म हुआ, दोनों के बीच के चार-पांच किलोमीटर के रास्ते पर कहीं भी सौ आदमियों का झुण्ड नहीं मिला जिसकी जुलूस को देखने में दिलचस्पी हो।

साम्यवादी दल ने जुलूस इसलिए निकाला था कि देश को वह बता सके कि बिहार की जनता उसके साथ है और बिहार की जनता नहीं चाहती कि विधान सभा भंग हो। पर जुलूस में भाग लेने वाले अधिकांश गरीबों को यह नहीं मालूम था कि उन्हें पटना क्यों लाया गया है। जुलूस में हालांकि ऐसे भी लोग थे जो जुलूस के राजनीतिक महत्व को समझते थे, पर ज्यादा लोगों का ताल्लुक 'जयप्रकाश-मुर्दाबाद' के नारे लगाने से था, सरपर सामान की पोटली उठाये, फटे हाल, नंगे पैर चिलचिलाती धूप में पांच किलोमीटर का सफर, इन गरीब प्रदर्शनकारियों के लिए मजबूरी थी जो इन्हें विधानसभा भंग न होने देने के लिए झेलनी थी। जुलूस के समाप्त हो जाने के बाद पटना के नागरिकों ने आपस में बातचीत की कि जुलूस में भाग लेने वाले अधिकांश लोग दक्षिण बिहार के थे और ट्रेड यूनियनों के सदस्य थे। और कि हर जिले के कम्युनिस्ट 'वर्कर' को अपने जिले से लोगों को लाने का कोटा दे दिया गया था, जिसे उसे 'पूरा' करना था। प्रदर्शन में भाग लेने वालों के आने-जाने का पूरा प्रबन्ध ऊपर से किया गया था। और कि जुलूस में इन लोगों को भाग लेने में कोई शासकीय बाधा नहीं डाली गई।

डांगे साहब पटना में मौजूद थे पर जुलूस का नेतृत्व उन्होंने नहीं किया। न ही वे राज्यपाल को ज्ञापन देने आये। इसलिए जुलूस का नेतृत्व राज्य स्तरीय नेताओं ने ही किया। कुछ पत्रकारों से पटना में यह अफवाह सुनने को मिली कि धूप चूंकि बहुत तेज थी इसलिए लू लग जाने के डर से डांगे साहब ने जुलूस
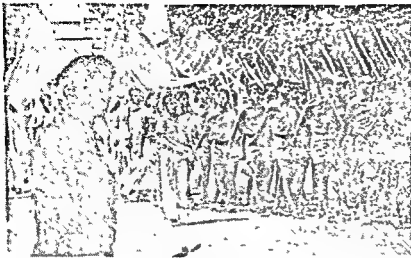
जयप्रकाश पर हमला बोल, हमला बोल, हमला बोल । ३ जून को निकले साम्यवादियों के जुलूस का दृश्य

जगन्नाथ सरकार के नेतृत्व में चन्द्रशेखरसिंह चतुरानन मिश्र, इन्द्रदीप सिंह, तेजनारायण झा और रामावतार शास्त्री का एक प्रतिनिधिमण्डल साढ़े ग्यारह बजते-बजते राज्यपाल के स्वागतकक्ष में पहुंच गया। शेष प्रदर्शनकारी राजभवन के दरवाजे पर नारा लगाते रहे—'अमेरिका को दे दो तार, जय प्रकाश की हो गई हार।'

३ जून की रात गांधी मैदान में डांगे साहब की आमसभा। उपस्थिति पन्द्रह-बीस हजार। सभा में पटना के नागरिक, शासन के 'आदमी' और सबेरे जुलूस में भाग लेने आये 'किसान' और 'मजदूर' भी।

सभा में कम्युनिस्ट विधायक चन्द्रशेखर सिंह भाषण कर रहे हैं। 'विधानसभा भंग का नारा भविष्य को अन्धकार में डालने की कोशिश है', 'जो विधान सभा भंग करने की मांग करेगा उसे बिहार की जनता पैरों से मसलकर खत्म कर देगी।' 'पूंजीपतियों का साथ देने वाली सरकार को भी कुचल दिया जायेगा' 'हमने राज्यपाल से कहा कि जमाखोर सेठों के लड़के जे० पी० के तम्बू में बैठते हैं, 'भ्रष्ट मंत्रियों, नौकरशाहों और मिलावट करने वाले व्यापारियों—तीनों की लाशें इसी मैदान में भूलनी चाहिए।'

(शेष पृष्ठ १३ पर)

में भाग नहीं लिया। कार्यक्रम के अनुसार वे जुलूस का नेतृत्व करने वाले थे।

सब कुछ विलक्षण था इस जलूस में-नारे भी, नारे लगाने वाले भी और मांगपत्र भी। जनता के नाम अपील में कहा गया 'भाईयो और बहनो? हमारे राज्य पर एक बार फिर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। प्रतिक्रियावादियों ने धमकी दी है कि वे ५ जून से विधानसभा की बैठक नहीं होने देंगे। वे जबर्दस्ती विधानसभा को भंग करने पर तुले हुए हैं और विधायकों के साथ जोर जबर्दस्ती कर रहे हैं। वे बिहार विधानसभा को ही नहीं बल्कि दूसरे राज्यों की विधान-सभाओं और आखिर में लोकसभा को भी जबर्दस्ती भंग करना चाहते हैं। वे अगस्त में होने वाले राष्ट्रपति के चुनाव को रोकने का कुचक्र रच रहे हैं। उनका असली इरादा यह है कि बड़ी-बड़ी कुर्बानियों के बाद जनता ने जो संसदीय जनतंत्र कायम किया है, उसे नष्ट कर दें और एक खूंख्वार, दमनकारी तानाशाही कायम करें। पहचानिये वे कौन है, जो निर्वाचित विधानसभा को भंग करने के लिए हल्ला मचा रहे हैं। वे जनसंघ, संगठन कांग्रेस, संसोपा आदि दल हैं। ये वही दल है, जिन्होंने तीन साल पहले एकजुट होकर प्रतिक्रियावादी महागठबंधन बना कर दिल्ली की गद्दी पर कब्जा करना चाहा था। जनता ने उस महागठबन्धन को ठोकर मार दी और वह छिन्न-भिन्न हो गया। अब सर्वोदय का दम भरने वाले श्री जयप्रकाश नारायण संसदीय जनतंत्र को नष्ट करने के लिए 'महागठबन्धन' के बिखरे हुए टुकड़ों को जोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।'

जे. पी. का जुलूस निकला तो लाखों की भीड़ पटना की सड़कों पर उमड़ पड़ी। सचिवालय के पास जमा भीड़ का एक दृश्य

राजभवन के दरवाजे पर पहुंच कर दस बजे तक जलूस बैठ गया। धूप में मंदे 'मजदूर और 'किसान' पेड़ों की छांह में पसर गये। प्यासे प्रदर्शनकारी मंत्रियों के घरों में पानी के लिए घुस गये।

बिहार प्रदेश कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव

आम लोगों की मुक्ति से लोकशक्ति खड़ी होगी

(आचार्य राममूर्ति से श्रवण कुमार गर्ग की बातचीत)

प्रश्न—आप तो खादीग्राम में रहते हुए भी बेदखली रोकने और भूमिहीनों को जमीन दिलाने के काम में लगे हुए थे, बिहार के वर्तमान आन्दोलन में लगने की प्रेरणा आपको कैसे हुई ?

राममूर्ति : मुंगेर में भूदानपुरी का जो मामला हमने उठाया उसके भी पहले से मेरे मन में यह बात चल रही थी कि भूदानमूलक ग्रामदान का जो कार्य चल रहा है उससे हम एक चक्कर में ही घूम रहे हैं। जनता हमें स्वीकार नहीं कर रही है, यह चिन्ता मेरे मन में थी। पिछले साल १५ जून को भूदानपुरी की घटना हुई और मैं १८ जून को वहां पहुंचा तो पहली बार लगा कि हम जिस अन्तिम व्यक्ति की बात करते हैं उसकी स्थिति ही नहीं समझते। खादीग्राम में मैं रहता था पर लगा कि हम उसके ही आसपास के गावों को नहीं जानते और लोकहृदय को स्पर्श नहीं कर रहे हैं। आठ महीने तक मैं एक छोटी सी समस्या में पड़ा रहा। समस्या छोटी थी पर उससे शिक्षण बहुत बड़ा हुआ। १९५४ में मैं खादीग्राम आया था धीरेनभाई के पास और २० साल रहा, लेकिन यह तब नहीं जान पाया कि करीब का गांव ही राजस्व विभाग को सत्तर-अस्सी साल से घूस दे रहा है। भूदानपुरी का काम उठाया तो वास्तविकता सामने आई।

मन में एक खोज चल ही रही थी। इसी समय बिहार का आंदोलन चला और २२ मार्च को जे०पी० का वक्तव्य देखा। इसके पूर्व गुजरात में आंदोलन चला था। ऐसी प्रतीति हुई कि एक नया रास्ता खुला है और लोक चेतना ने पहली बार 'एसर्ट' किया है, जिसकी खोज इतने वर्षों से हम कर रहे थे। बिहार की स्थिति से देश के अन्दर छुपे हुए ज्वालामुखी का भान हुआ।

मार्च के अन्त में जलगांव में सर्वसेवा संघ की प्रबन्ध समिति की बैठक होने वाली थी उसके पहले मैं जे० पी० से मिला और पूछा कि क्या ग्रामदान के लिए ग्राम स्वराज्य रुका रहेगा? जे०पी० ने कहा कि क्यों रुका रहेगा, ग्राम-दान नहीं हो तो भी लोगों को सगठित किया जा सकता है। जे० पी० से बात करके प्रबन्ध समिति में गया तो साथियों से कहा कि बिहार के आंदोलन में लोकशक्ति फूट रही है और हमको इससे भागना नहीं चाहिए। जलगांव में लौटकर ६ अप्रैल को पटना आया और जे० पी० से कह दिया कि 'मैं अब आपके 'डिस्पोजल पर हूं'।

प्रश्न : १९५१ से आप सर्वोदय आंदोलन के जरिये मिलकियत खत्म करने के ग्राम-स्वराज्य के बुनियादी काम में लगे हुए थे, आपको इस नये जन आंदोलन और १९५१ से चल रहे सर्वोदय आंदोलन में क्या कोई फर्क नजर आया ?

राममूर्ति : सर्वोदय आंदोलन में हम कुछ मूल्यों को जनता के सामने रखते थे और जनता को 'परसुएड' करते थे कि उनको वह स्वीकार करे। इस आंदोलन में हम जनता से कह रहे हैं कि आज की व्यवस्था खराब है, इसलिए इसे अस्वीकार करो। एक में स्वीकृति का मानस बनाने की बात थी, दूसरी में अस्वीकृति का मानस बनाने की। इस आंदोलन से यह बात प्रकट हुई कि जिस देश की जनता में आज के कुशासन को अस्वीकार करने की शक्ति नहीं होगी वह नये मूल्यों को स्वीकार नहीं करती। गांधी के असहयोग आंदोलन की सबसे बड़ी देन यह है कि उसने पहली बार जनता को 'ना' कहना सिखाया। यह आंदोलन भी जनता को 'ना' कहना सिखा रहा है।

सर्वोदय आंदोलन ने भविष्य को अपना प्रस्थान का बिन्दु बनाया, इस आंदोलन ने वर्तमान को। जितने भी ऐतिहासिक आंदोलन होते हैं उनमें लड़ाई की शुरुआत प्रचलित व्यवस्था में अधिकारों की मांग से होती है। इस आंदोलन में भी ऐसा ही है कि जनता अपने अधिकारों की मांग के लिए लड़ रही है। मैं यह स्वीकार करता हूं कि हमें इस बात की देर से अनुभूति हुई कि हम वर्तमान को नजर अन्दाज करके भविष्य में जाना चाहते थे। इसलिए ऐसा हुआ कि हमने जिन कामों को बुनियादी माना उन्हें जनता ने स्वीकार नहीं किया और हम जनता को साथ नहीं ले सके।

प्रश्न : सर्वोदय आंदोलन भूमि की समस्या के समाधान में लगा हुआ है। क्या आप इसे बुनियादी काम नहीं मानते ?

राममूर्ति : जमीन का मसला बुनियादी है, पर पद्धति में 'दान' की प्रक्रिया को हम डायनेमिक नहीं बना पाये। हमारा काम क्रिया बनकर रह गया, प्रक्रिया नहीं बन पाया। भूदानपुरी के काम के बाद हमने बनामी और सरकारी जमीन के वितरण का काम हाथ में लिया था। बार-बार हमें उच्चाधिकारियों के पास दौड़-धूप कर जाना पड़ता था, क्योंकि जनता की शक्ति हमारे पास नहीं थी। हमें ही राजस्व विभाग को चिट्ठी लिखनी पड़ती थी। अब स्थिति दूसरी है। इस आंदोलन में जो जगह-जगह जन संघर्ष समितियां बनी हैं वे अब रेवेन्यू आफिस को चिट्ठी लिखेंगी, तारीख देकर कि अमुक दिन तक काम हो जाना चाहिए। हम लोगों के ऐसे जितने भी काम हैं जिन्हें जनता समझती जा रही है, जनता को सौंपने चाहिए।

प्रश्न : आपको इस नये प्रकार के आंदोलन से संवाद स्थापित करने में क्या कठिनाई हुई ?

राममूर्ति : चूंकि हमने स्वराज्य के आंदोलन देखे थे इसलिए इस आंदोलन से जुड़ने में कोई मुश्किल नहीं आई। इस आंदोलन में हम आश्रम से निकल कर नहीं आये हैं कि कठिनाई आये।

सामाजिक शक्तियां कैसे काम करती हैं, इसका काफी प्रशिक्षण हमको मार्क्सवाद के जरिये हो चुका था। इसी प्रकार देश की गतिविधियां कैसे संचालित होती हैं इसकी शिक्षा स्वराज्य आंदोलन से मिल चुकी थी। इसलिए जब इस आंदोलन में कूदे तो जनता से जुड़ने में कोई तकलीफ नहीं हुई। हां, पूर्व अनुभव नहीं होता तो खो जाते। यह

(शेष पृष्ठ ७ पर)

जे० पी० राजनीति को लोकनीति की तरफ ले जा रहे हैं

रामचन्द्र राही से कहा धीरेन्द्र भाई ने

राही : आपने बिहार के आन्दोलन में जे० पी० की भूमिका से सम्बन्धित जो वक्तव्य दिया है, उससे कुछ सफाई हुई है, फिर भी मुझे लगता है इसपर और अधिक मंथन होना चाहिए। क्योंकि हमारे कुछ साथियों को तो ऐसा लगता है कि इस आन्दोलन के कारण हमारी भूमिका अहिंसक और राजनीति निरपेक्ष या तटस्थ नहीं रह जाती है इसलिए वे इसका विरोध करते हैं। कुछ साथियों को ऐसा लगता है कि इस आन्दोलन से लोक स्वराज्य की जो भूमिका बन रही है, वह ग्राम स्वराज्य का विकल्प है, और इस तरह का आन्दोलन हर प्रदेश में खड़ा किया जाना चाहिए। कुछ साथी ऐसे भी हैं, जो इन दोनों से कुछ भिन्न मत रखते हैं, वे आपके वक्तव्य के अधिक निकट है, भले ही वे बिहार के आन्दोलन में लगे हों या उसमें न लगे हों। उनका मानना है कि परिस्थितिजन्य जन-जागरण को 'सुराज' नहीं 'स्वराज्य' की ओर मोड़ना चाहिए, उसकी चेतना पैदा करनी चाहिए, लेकिन साथ-साथ ग्रामस्वराज्य की बुनियाद पर लोक विद्रोह की तैयारी का काम भी गांवों में अधिक तेजी से करना चाहिए। ये तीन मुख्य प्रतिक्रियाएं अपने साथियों की बातचीत में व्यक्त हुई हैं। आपका दृष्टिकोण क्या है?

धीरेनभाई : वस्तुत: मैंने जो वक्तव्य प्रसारित किया था, वह इसी चीज की सफाई के लिए था। मैंने स्पष्ट कहा था कि पटना में जयप्रकाश बाबू के नेतृत्व में जो कुछ चल रहा है, वह निश्चित रूप से राजनीति को लोकनीति की तरफ ले जाने का प्रयास है। मैं मानता हूं कि जब तक यह नहीं होगा, और हम गांव में या कहीं बैठकर केवल लोकनीति-निर्माण का प्रयास करेंगे, राजनीति के प्रति उदासीन रहेंगे, और भिन्न-भिन्न राजनैतिक पार्टियों द्वारा खुले मैदान में राजनीति विस्तारित और प्रसारित होती रहेगी, तो हम अहिंसा की समग्र शक्ति का विकास नहीं करेंगे, बल्कि एकांगी वृद्धि के कारण उसको हानि ही पहुंचायेंगे। मुझे भय है कि समाज-परिवर्तन की परम्परागत पद्धति के संस्कार के कारण हमारी दृष्टि कहीं धूमिल न हो जाय। गांधीजी से पहले समाज के संचालन तथा परिवर्तन की शक्ति हिंसा है, ऐसा माना गया था। बड़े-बड़े विचारक भी यही मानते रहे हैं, धर्मयुद्ध, जेहाद और क्रुसेड शब्द धर्मगुरुओं तथा विचारकों द्वारा ही प्रतिपादित किए गये हैं। धर्मयुद्ध में वीरगति की प्राप्ति शौर्य-वीर्य वाले मनुष्य के लिए सर्वोत्तम आकांक्षा रही है।

गांधीजी से हमने अहिंसा को सामाजिक शक्ति के रूप में अधिष्ठित करने की दीक्षा ली है, और आज विनोबा की प्रेरणा से इसी अधिष्ठान के प्रयास में क्रियाशील हैं। ऐसे समय में अत्यन्त गहराई और सूक्ष्मता के साथ हिंसा-शक्ति की अभिव्यक्ति और अहिंसा-शक्ति की अभिव्यक्ति में मूलभूत फर्क समझ लेना चाहिए।

हिंसात्मक परिवर्तन यानी क्रांति का लक्ष्य समाज के अवांछनीय तत्वों को अलग करने का होता है, उसके विपरीत अहिंसक क्रांति का लक्ष्य समाज के अवांछनीय तत्वों को अपने में मिलाकर उसे वांछनीय तत्व में बदलने का होता है। अर्थात् हिंसा समाप्त करने की पद्धति है और अहिंसा मिलाने की पद्धति है। दोनों में ही एक बात समानरूप से दिखाई देती है। हिंसक क्रांतिकारी अवांछनीय तत्व से अपने को उदासीन नहीं रख सकता है, बल्कि उसको समाप्त करना चाहता है। अगर वह उदासीन रहता है तो वांछनीय तत्व के अधिष्ठान के प्रति ही रहता है। वह सोचता है कि अवांछनीय तत्व को सम्पूर्णरूप से खत्म किये बिना दूसरी सकारात्मक चीज का अधिष्ठान सम्भव नहीं है। इसीलिए उसका ध्यान सम्पूर्णरूप से समाप्त करने पर ही केन्द्रित हो जाता है। और इस प्रकार क्रांति का मूल लक्ष्य पीछे छूट जाता है। इसी तरह चूंकि अहिंसक क्रांति आज प्राथमिक चरण में है, इसलिए आज के अहिंसक क्रांतिकारी पूर्व संस्कार के अनुसार एक पहलू पर अपना ध्यान केन्द्रित करते रहते हैं अर्थात् वे भी केवल सकारात्मक पर ही ध्यान देते हैं नकारात्मक की ओर ध्यान नहीं देते। यह अहिंसा की पद्धति नहीं है।

हर क्रांति में दो प्रकार के सोचनेवाले होते हैं। कुछ लोग आगामी कदम की बात सोच कर बढ़ना चाहते हैं, दूसरे, जो कुछ हुआ है, उसको जमा कर अगला कदम बढ़ाना चाहते हैं। इसी प्रकार के चिंतन को वाम और दक्षिण की संज्ञा दी गयी है। वामपंथ वाले यह सोचकर कि दक्षिणपंथी क्रांतिविरोधी हैं, उनका विरोध करते हैं, इसी तरह दक्षिणपंथी सोचते हैं कि वामपंथी जल्दबाजी में क्रांति को हानि पहुंचायेंगे, इसलिए वे वामपंथियों का विरोध करते हैं। ऐसे परस्पर विरोध के अवसर पर प्रतिक्रांतिकारी शक्तियां क्रांति के मैदान में प्रवेश कर जाती हैं, वे क्रांतिकारी से अधिक बुलंद आवाज में क्रांति का नारा लगा कर दोनों की खाई को बढ़ाती रहती है, और इसी अवसर का लाभ उठाकर अपने को बीच में ही अधिष्ठित कर लेती हैं। इसी प्रक्रिया में से प्रतिक्रांति का जन्म होता है। इसी के फलस्वरूप हमने इतिहास में देखा है कि करीब-करीब हर हिंसात्मक क्रांति के बाद प्रतिक्रांति सिर उठाती रही है। मैं मानता हूं कि हिंसा शक्ति के इस्तेमाल का यह एक अनिवार्य फलित है।

अहिंसक क्रांति का मार्ग इससे सम्पूर्ण विपरीत है। उसका लक्ष्य अवांछनीय तत्व को शामिल करके, बदल कर समाजजीवन से उसका निराकरण करना है ताकि पूरा समाज वांछनीय तत्व के प्रभाव से शुद्धता की ओर अग्रसर हो सके। और पूरा समाज परिवर्तित होकर सम्पूर्ण क्रांति में परिणित हो जाय। अत: अहिंसक क्रांतिकारी केवल वांछनीय तत्व के अधिष्ठान में ही अपने को केन्द्रित करके अवांछनीय तत्व के प्रति उदासीन नहीं रह सकता। उनके लिए अहिंसक शक्ति का →

अधिष्ठान जितना महत्वपूर्ण है, उतना ही महत्वपूर्ण है हिंसा शक्ति का मुकाबला। हम स्पष्टरूप से यह मानते हैं कि राजनीति के उभाड़ से हिंसा का उभाड़ होता है, जिसका दर्शन सारी दुनिया में हो रहा है इसलिए अहिंसक क्रान्तिकारियों को सावधान रहना है। जहाँ उन्हें हिंसा की शक्ति का उभाड दीखे, तो अहिंसक शक्ति के अधिष्ठान के साथ हिंसा के उभाड का मुकाबला करना ही है, यह उसका स्वधर्म है। इस चीज के कार्यान्वय के लिए व्यावहारिक पद्धति यही है कि अहिंसक क्रांतिकारी की जमात में अपनी-अपनी रुचि, संस्कार और प्रवृत्ति के अनुसार दो क्षेत्रों का संगठन हो। दोनों का काम अलग रहे, और दोनों क्षेत्र दोनों को अपना काम माने, क्योंकि दोनों में शक्ति केन्द्रित करने की आवश्यकता है। गांधीजी ने जीवन भर अपने आन्दोलन में यही नीति रखी थी।

सकता। एक पैर आगे बढ़ेगा, और जब तक वह पैर मजबूती से जम नहीं जाता तब तक पिछला पैर अपनी जगह जमा रहेगा। अगले पैर के जमाने के बाद ही पिछला आगे बढ़ेगा।

सर्वोदय विचार के समस्त साथियों से मेरा निवेदन है कि अहिंसा की उपरोक्त पद्धति के अनुसार आज जो वामपथ और दक्षिणपथ का दर्शन हो रहा है, उसके परस्पर सहकार से अपनी शक्ति को मजबूत बनायें, न कि परस्पर का विरोध खड़ा करके अपने को कमजोर बनायें। जिसका अन्देशा मुझे हो रहा है।

राही आपके उत्तर से कई महत्वपूर्ण बुनियादी मुद्दे सामने आये हैं, जिन पर हम सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को विचार करना चाहिए। लेकिन एक बात कुछ अधिक स्पष्टता के लिए—क्या जन-जीवन में जो महंगाई, भ्रष्टाचार, असुरक्षा आदि व्याप्त है, और को उभाड़कर हम काम करने जायेंगे, तभी वास्तव में हम राजनीति में घसीटे जायेंगे और हमारे छेड़ने का लाभ उठाकर हिंसा को मानने वाले परिस्थिति को अपनी ओर मोड़ लेंगे। अतएव हमको इस फ्रंट में तभी आना चाहिए जब उक्त विषम परिस्थिति के कारण सहज जन-अभिव्यक्ति हिंसक रूप धारण कर लेने लगी है।

लोगों को······(पेज ५ का शेष)

सच है कि युवकों की दुनिया जितनी बदल गई है उसका भान आम सर्वोदयी को नहीं है। इस काम में अगर उन्हें अपने को डालना है तो खुद को पूरा बदलना पड़ेगा।

प्रश्न आपको इस आंदोलन से भविष्य के लिए क्या सम्भावनाएं नजर आती हैं?

राममूर्ति एक सम्भावना यही दिख रही है कि युवक यह महसूस कर रहे हैं कि वे भी इस व्यापक जन-जीवन के अंग हैं। अभी तक यह नहीं था। जे० पी० के कारण अस्वीकार करने और 'ना' कहने का जो अभ्यास युवकों को हुआ है उससे उनकी चेतना जागृत होगी, वह सभी प्रकार के शो— को अस्वीकार कर देगी।

मैं लोकशक्ति के तीन तत्व मुख्य मानत हूं—युवक, स्त्री और श्रमिक। चीनियों भी अपनी क्रान्ति के लिए इन्हीं तीनों क संचालित किया और सत्ता में आने के बा इन्हीं तीनों वर्गों की मुक्ति के लिए का किया। बिहार के वर्तमान आंदोलन से युव वर्ग मुक्त हो रहा है। स्त्रियों को भी मुक्ति की हवा छू रही है। यह आंदोलन श्रमिकों को अभी नहीं छू पाया है, पर उन्हें भी साथ में लेंगे। इन तीनों वर्गों की मुक्ति से ही हमारी लोकशक्ति खड़ी होगी। जे० पी० का अभी युवकों पर ही जोर है, क्योंकि युव अपेक्षाकृत ज्यादा चेतन तत्व हैं, पर आगे चलकर शेष दोनों वर्गों को भी हम पूरी तरह शामिल करेंगे।

प्रश्न : इस आंदोलन में जे० पी० को इतना व्यापक समर्थन उनकी किस विशेषता के कारण मिला?

राममूर्ति : जे० पी० में एक ऐसी विशेषता है जो बहुत कम लोगों में है। नयी चीजें सुनने के लिए जे० पी० हमेशा तैयार रहते हैं।

अहिंसक क्रान्ति की अनिवार्यता

हमारी क्रान्ति में जयप्रकाश बाबू के नेतृत्व में जो काम हो रहा है, वह हिंसा शक्ति का मुकाबला करने का काम है। हम लोग जो ग्रामस्वराज्य के काम में लगे हैं, वह अहिंसक शक्ति के अधिष्ठान का काम है। दोनों मिलकर ही काम पूरा हो सकेगा। इसलिए राजनैतिक कारणों से हिंसा के उभाड़ की परिस्थिति जब बन गयी है, तो जयप्रकाशबाबू ने जो काम शुरू किया है, वह अहिंसक क्रान्ति की एक अनिवार्यता बन गयी है। वे उसके मुकाबले में अपनी ध्यान लगा रहे हैं। और मुकाबला करना है, तो उससे अलग रहकर नहीं हो सकता है, उससे मुठभेड़ होगी ही। उसमें से परिस्थिति का जो तत्व अहिंसक शक्ति से विकल्प की ओर लोगों का ध्यान खींच सकता है उसका इस्तेमाल आवश्यक है। इसका मतलब यह नहीं समझना चाहिए कि इसको करने में हम अनजाने राजनीति की ओर खिसककर हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं।

अहिंसक क्रान्ति कोई घटना नहीं होती है। वह सतत आरोहण की प्रक्रिया होती है। [illegible] क्रान्ति [illegible] लोग निरन्तर आगे बढ़ते हैं, इसलिए उनका चलना एक पैर से नहीं हो

तद्जनित असन्तोष और क्षोभ है, उसको आधार बनाकर हर प्रदेश में बिहार जैसा ही आंदोलन हमें अपनी ओर से खड़ा करना चाहिए?

धीरेन्द्र भाई मैं मानता हूं कि यह सब राजनीति का फलित है। इसलिए उस फ्रंट पर हमको वैधानिक और प्रशासनिक क्षेत्र में ही राजनीति के क्षय और लोकनीति के उदय के काम में लगे रहना चाहिए। हम अब तक जो जनता के उम्मीदवार आदि की बात करते रहे हैं उसी का अमल किस तरह उपरोक्त असन्तोष और क्षोभ के कारणों का निराकरण कर सकता है, उसको ही अधिक से अधिक स्पष्ट करने और समझाने की जरूरत है ताकि जनता का ध्यान उस ओर आकृष्ट हो और वह उस दिशा में सक्रिय हो जाय। साथ ही ग्रामस्वराज्य के काम में ग्रामसभाओं को मजबूत बनाकर नीचे के स्तर पर भ्रष्टाचारी, दमनकारी आदि तत्वों को इन्कार करने की शक्ति पैदा करनी चाहिए। जिसे गांधीजी ने सत्ता का दुरुपयोग होता हो, तब सब लोगों के द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करना कहा है। अपनी पहल से जनता

बिहार का जन आन्दोलन : एक खास दौर

समीक्षा की है आन्दोलन के एक मुखिया नारायण देसाई ने

बिहार का आंदोलन एक निर्णायक काल से गुजर रहा है। एक ओर उसका नेतृत्व है, दूसरी ओर उनके विरोधी तत्व हैं, तीसरी ओर बिहार की अपनी राजनैतिक अवस्था है। तीनों मिला कर यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि यह आंदोलन का निर्णयात्मक काल है।

यह मानना होगा कि मौन जुलूस का नेतृत्व लेते ही जयप्रकाश जी पर "नैतिक क्रांति" का नैतिक नेतृत्व लेने की जिम्मेवारी आ गयी थी। यद्यपि उन्होंने हर निर्णय छात्रों द्वारा ही करवाने के लिए आग्रह रखा, फिर भी लोग उनकी ओर नेतृत्व के लिए देखने लग गये। बिहार के बाहर भी हजारों लोगों ने इस बात से आश्वासन पाया कि क्रांतिकारी जयप्रकाश एक क्रांति की अगुवाई करने फिर आगे आये हैं।

परिस्थिति कठिन जरूर है, पर इतनी कठिन नहीं, जितनी बाहर से दीख पड़ती है। इस आंदोलन के वेग ने ही एक नया नेतृत्व निर्माण किया है। यह नेतृत्व उन छात्रों का है, जो आज तक राजनीति में नहीं थे और आज भी जो जय प्रकाश जी द्वारा प्रशस्त मार्ग पर ही चलना चाहते हैं। बिहार के सैकड़ों स्थानों पर यह नया नेतृत्व अपने ढंग से आंदोलन को जयप्रकाशजी द्वारा दिखलाये कार्यक्रम पर चलाने का जो प्रयत्न कर रहा है वह सचमुच में आश्चर्यकारक है।

छात्रों के अलावा किसी और वर्ग ने इस आंदोलन में सबसे अधिक रुचि ली हो तो वह है महिला वर्ग। शायद ही ऐसा कोई स्थान आप बिहार में पायेंगे जहां महिलाओं ने बिना किसी की प्रेरणा के अपने आप ही जुलूस न निकाले हों, या अनशन न किये हों। वकीलों, साहित्यिकों, अध्यापकों का समर्थन भी इस आंदोलन को काफी मिल रहा है। इस तरह अब जगह-जगह जन संघर्ष समितियां बनने लग गयी हैं। विख्यात साहित्यकार फणीश्वर नाथ "रेणु" के संयोजकत्व में पटना नगर तदर्थ जन संघर्ष समिति की स्थापना हो चुकी है। इसमें प्रेरणा पाकर अब सैकड़ों स्थानों पर और भी जन संघर्ष समितियाँ बनेंगी। इन जन संघर्ष समितियों का काम एक तरह से छात्रों द्वारा आरम्भ किये आंदोलन को सुदृढ़ करने का होगा। वे इस आंदोलन को योग्य दिशा तथा आवश्यक अनुशासन व परिपक्वता देंगी। यह बात तो तय है कि इससे पहले बिहार का कोई भी छात्र आंदोलन इतने दिन नहीं टिका था। जयप्रकाश जी के प्रवेश ने इस आंदोलन को इतना लम्बा जीवन दिया, जन संघर्ष समितियों की स्थापना आंदोलन को दीर्घ काल तक टिकाये रखने में भी सहायता करेगी।

आंदोलन के विरोधियों को भी शायद इस बात का अंदाज नहीं होगा कि आंदोलन इतने दिनों तक चलेगा। पिछले माह विरोधियों की चाल थी जगह-जगह शक्ति प्रदर्शन करके आंदोलन को अपने मुख्य रास्ते से गुमराह कर प्रति-प्रदर्शनों में उलझा देना। यह भी देखा गया कि जहां कहीं संभव था आंदोलन को हिंसक बनाने के लिए भी पूरी उत्तेजना दी गयी। शक्ति प्रदर्शन में तीन-चार तत्व हर जगह प्रायः समान थे (एक) जुलूसों में कार्यकर्ताओं से कहीं अधिक किराये के लोग थे, जिनमें से कई उन क्षेत्रों के जाने-माने असामाजिक तत्व थे, (दो) जुलूस जुटाने में जातिवाद का भरसक उपयोग किया गया, (तीन) जनता की जबर्दस्त भीड़ के सामने मुकाबला होने पर जुलूस में से भाग खड़े होने वालों में अक्सर जुलूस के नेता पहले थे (चार) मारपीट दोनों ओर से हुई, लेकिन अधिक मार जुलूस निकालने वालों को ही खानी पड़ी। प्रायः हर स्थान पर मंत्रियों को मार पड़ने के समाचार अवश्य आये लेकिन दूसरे दिन उन समाचारों के गलत होने के संवाद भी छप जाते थे। इस प्रकार मंत्रियों को बिना मार खाये ही मार खाने की प्रतिष्ठा मिल जाती थी।

यह सही है कि एक दृष्टि से विरोधियों के जुलूस का इच्छित परिणाम निकला। जुलूस में हिंसा हुई। उसके बाद बड़े प्रमाण में गिरफ्तारियाँ हुईं और कई जगह छात्र आतंकित हो गये। जिन लोगों ने पिछले २५ वर्षों में कोई सत्याग्रह देखा ही नहीं था, उन लोगों के मन में जेल या बड़े-बड़े अभियोगों का डर होना अस्वाभाविक तो नहीं मानना होगा। लेकिन जिस प्रमाण में इन शक्ति प्रदर्शनों से छात्रों को प्रति-प्रदर्शन करने की प्रेरणा हुई है, जिस प्रमाण में हिंसा हुई है, जिस प्रमाण में छात्रों में आतंक छाया है, उस प्रमाण में विरोधियों का दांव सफल हुआ है यह मानना होगा। सद्भाग्य से जुलूसों को जाति के आधार पर जुटाने का प्रयत्न उतना सफल नहीं हुआ। सुना है कि मुंगेर के प्रदर्शन में शरीक होने वाले एक मंत्री महोदय ने रात-रात घूमकर अपनी जाति के लोगों को जुलूस में शरीक करने का प्रयत्न किया था, लेकिन उसमें उन्हें सफलता नहीं मिली। इन्हीं मन्त्री महोदय ने इस लेखक के साथ बातचीत में यह भी इशारा किया था कि आगे की "बगावत" दूसरी एक जाति के लोगों की होगी। "सर्चलाइट" अखबार में यह समाचार छपा था कि एक सर्वोच्च नेता की अध्यक्षता में प्रदेश के एक सम्प्रदाय के धर्मान्ध लोग इकट्ठा हुए थे और उन्होंने यह तय किया कि आवश्यकता होगी तो साम्प्रदायिक दंगे भी करवाये जा सकते हैं। हम आशा रखते हैं कि यह समाचार झूठ सिद्ध होंगे, नहीं तो यह घटना इस बात का प्रमाण होगी कि सत्ताध आदमी सत्ता को टिकाये रखने के लिए किस हद तक नीचे गिर सकता है।

किन्तु जान पड़ता है कि विरोध प्रदर्शनों का सिलसिला लम्बा चलेगा नहीं। आखिर किराये का आंदोलन कितना चल सकता है?

यहां एक बात और भी ध्यान में रखनी

होगी कि बिहार में हिंसा को रोकने का सबसे बड़ा कारण कोई है तो वह जयप्रकाश जी हैं। उनकी अगुवाई के कारण आंदोलन आम तौर पर शान्तिपूर्ण रहा है। उनके प्रतिनिधियों ने भी हर प्रकार से हिंसा को रोकने का प्रयत्न किया है।

बिहार की अपनी राजनैतिक अवस्था कितनी डावाडोल है, यह तो अब प्रकट कहानी है। सत्तारूढ़ दल के सभी गुट इस बात में शायद एक हो गये हैं कि गफूर साहब को मुख्यमंत्री नहीं रहना चाहिए, अब प्रश्न है तो इतना ही है कि आला कमान का विरोध करने तक ये लोग जायेंगे या नहीं? जान पड़ता है कि गफूर साहब की नाव अपने ही बोझ से डूबेगी।

गुजरात और बिहार के आंदोलन को लेकर विद्वानों ने कुछ प्रश्न उठाने शुरू किये हैं। किसी भी क्रान्तिकारी आंदोलन के समय विद्वानों का चालू व्यवस्था के साथ होना स्वाभाविक ही है।

कुछ विद्वान यह कहते हैं कि आजीवन गरीबों के लिए जूझने वाले क्रान्तिकारी जयप्रकाश अचानक प्रतिक्रान्तिवादियों के साथ कैसे जुड़ गये? क्या गरीबी हटाओ के नारे लगाने भर से सत्तारूढ़ दल प्रगतिवादी और उसका विरोध करने वाले प्रतिगामी बन गये? 'प्रतिगामी' साम्यवादी शब्दकोष की ऐसी गाली है, जो हर उस विरोधी के लिए इस्तेमाल की जा सकती है, जिसके बारे में और कुछ कहना मुश्किल हो। अगर जनसंघ या संगठन कांग्रेस के समर्थन के कारण ही यह आंदोलन प्रतिगामी बन जाता हो तो मार्क्सवादी साम्यवादी दल, समाजवादी दल या संयुक्त समाजवादी दल के समर्थन से वह कैसा बनेगा? अगर यह कहा जायेगा कि यह आंदोलन धनवालों के बेटों का है तो प्रश्न यह उठता है कि इस आंदोलन में जिन हजारों रिक्शावालों, भूदान किसानों तथा लाखों ग्रामीणों ने समर्थन किया है वे किस वर्ग के माने जायेंगे? एक जिले के डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट जिनकी सहानुभूति आंदोलन से नहीं थी, उन्होंने इस लेखक से कहा था: "हां, इतना तो मानना होगा कि इस आंदोलन को व्यापक जनता का समर्थन है। बिना उसके समर्थन के आंदोलन इतने दिन टिकता ही नहीं"

विद्वानों का और एक आक्षेप यह है कि इससे भले ही विधानसभा का विघटन हो जाय, लेकिन इससे मूल्यवृद्धि नहीं रुकेगी। अपनी दलील के समर्थन में वे गुजरात का उदाहरण देते हैं कि वहां विधानसभा भंग के बाद मूल्यवृद्धि रुकी नहीं है। प्रश्न यह कि विधानसभा भंग के बाद शासन व्यवस्था की जिम्मेदारी क्या गुजरात की नवनिर्माण समिति के सदस्यों ने ले ली है, जो मूल्यवृद्धि के लिये उन्हें दोषी करार दिया जाता है? गुजरात में इस समय राष्ट्रपति शासन है। वहां अगर मूल्यवृद्धि नहीं रुकी है, तो उसकी जिम्मेदारी केन्द्रीय सरकार की है।

दिल्ली के उच्चासनस्थ लोगों ने तो यह भी इल्जाम लगा दिया कि गांधी का नाम इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति और संस्था ही हिंसा को बढ़ावा दे रहे हैं। एक तरह से इन की बात सही है। आप जरा इतिहास देख लीजिए। स्वराज के बाद गांधी का नाम किन लोगों ने तथा किस संस्था ने सबसे अधिक इस्तेमाल किया है? आप पायेंगे कि वह काम सबसे अधिक कांग्रेस तथा कांग्रेसियों ने ही किया है। चुनाव जीतने के लिये गांधी का नाम, रेल चक्का चलाने के लिये गांधी का नाम, कपड़ों की मिलों का उद्घाटन करने में गांधी का नाम, भैंस की डेरी खोलने में गांधी का नाम, यहां तक कि परिवार नियोजन के प्रचार के लिए भी गांधी का नाम इस्तेमाल करने में उन्हें संकोच नहीं होता। इन्हीं ने आज की परिस्थिति में स्पष्ट हिंसा को बढ़ावा दिया है, यह कहने में कौन आपत्ति कर सकता है? लेकिन दिल्लीवालों का मतलब यदि जयप्रकाशजी या गांधी शांतिप्रतिष्ठानों ■ हो तो मानना होगा कि झूठा प्रचार करने में वे गोबेल्स से भी बाज नहीं आयेंगे। यह बात बिहार में सर्वमान्य है कि इस आंदोलन को यदि किसी एक व्यक्तित्व ने हिंसा की ओर बढ़ने से रोका है तो वह जयप्रकाश ने और गांधी शांति प्रतिष्ठान के बिहार के चारों केन्द्र में भी किसी भी स्थान पर तनिक भी हिंसा नहीं हुई। हां, भागलपुर के शांति प्रतिष्ठान में कुछ गुण्डों ने घुसकर दो तरुण शांति सैनिकों पर छुरा जरूर चलाया था। लेकिन इस गुण्डागर्दी का जवाब भी उस केन्द्र ने शांतिमय विरोध प्रदर्शन से दिया था।

गोंडा में नयी जमींदारी

गोंडा (उ० प्र०) के गांधी पार्क में मई छब्बीस को एक बैठक हुई। इसमें जिले के कई हिस्सों से आये ढाई सौ लोगों ने भाग लिया। जिला सर्वोदय मंडल द्वारा आयोजित इस बैठक का उद्देश्य गोंडा जिले की परिस्थिति पर विचार करना था।

उत्तर प्रदेश की पूर्वोत्तर सीमा पर नेपाल से जुड़े, अब तक हलचल से दूर इस जिले में पिछले दिनों कुछ ऐसी घटनाएं घटी हैं, नयी परिस्थितियां सामने आयी हैं कि जिला सर्वोदय मंडल को कुछ सोच समझ कर करने के लिए यह बैठक बुलानी पड़ी। कुछ महीनों पहले भूमिहीनों के दो गांव सभ्य, समझदार और प्रभावशाली कहे जाने वाले सम्मानित व्यक्तियों ने जला दिये थे। जांच कमेटी भी बैठी एवं संसद सदस्य ने बाकायदा प्रमाणित कर दिया कि गलती भूमिहीनों की ही थी।

जमींदारी प्रथा समाप्त हो चुकी है लेकिन इधर गोंडा जिले में एक नयी जमींदारी प्रथा शुरू हो गयी है। नये जमींदारों की इस बड़ी बिरादरी में ग्रामसभा के प्रधान से लेकर ब्लाक प्रमुख, विधायक संसद सदस्य, जिले के बड़े अधिकारी, बैंक व सहकारी समिति के निदेशक—सभी लोग शामिल हैं। त्रस्त है जिले का भूमिहीन खेतिहर मजदूर, छोटा किसान। यहां की मजदूरी की दरें आपको चकित कर देंगी २० रुपया प्रतिमाह। भ्रष्टाचार की लपेट में भूदान की जमीन का वितरण ग्रामस्वराज्य कोष और खादी संस्थाएं तक नहीं बच सकीं।

इस परिस्थिति में क्या किया जाये यह तय करने के लिए ही यह बैठक थी। बैठक की राय में समाज में भ्रष्टाचार अन्याय, अनैतिकता, अराजकता और राजनैतिक दमन बड़ी तेजी से बढ़ रहा है। इसकी प्रतिक्रिया में हड़ताल, घेराव, तोड़फोड़ तथा राजनैतिक विस्फोट जगह-जगह हो रहा है। यह सब अनुचित है, लेकिन इसको केवल अनुचित कह देने भर से काम चलेगा नहीं।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

लोग पूरी जिम्मेदारी सरकार पर न डालें : इन्दिरा

सर्व सेवा संघ की प्रधान मन्त्री से चर्चा : रपट : ठाकुरदास बंग

बाईस मई को सवेरे साढ़े ग्यारह बजे सर्व सेवा संघ की ओर से सर्वश्री सिद्धराज ढड्ढा, निर्मला देशपांडे, जगन्नाथन, वी० रामचन्द्रन, ठाकुरदास बंग, राधाकृष्ण, देवेन्द्र कुमार और प्रभाकरजी, प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से उनके कार्यालय में मिले। करीब ४० मिनट तक बातचीत हुई।

सिद्धराज ढड्ढा ने प्रारम्भ करते हुए कहा कि हमारा काम मुख्य तौर पर लोक-शक्ति को जगाने का है, ताकि लोग अपनी समस्याओं का हल खुद कर सकें। इस काम में हमारी दृष्टि 'लास्टमैन' की स्थिति को सुधारने की रहती है। सर्व सेवा संघ की भूमिका पक्ष-मुक्ति की है किसी राजनैतिक दल के साथ संबद्ध न होते हुए उन सबका तथा शासन का सहयोग लेकर काम करने की है। सरकार की लोकोपयोगी नीतियों का समर्थन या अन्य प्रकार की नीतियों की कभी आलोचना करनी पड़ती है तो वह तटस्थता की भावना से करते हैं, पक्ष या व्यक्ति-विशेष की दृष्टि से नहीं। सरकार के साथ मिलजुलकर कई क्षेत्रों में हमने काम किया है तथा कर रहे हैं, जैसे खादी-ग्रामोद्योग, नागालैण्ड में शांति कार्य, नेफा का सेवा-कार्य आदि। पाकिस्तान बांगला देश और भारत के संबंध सुधारने का अच्छा काम आप कर रही हैं, उसकी हमारे क्षेत्र में सभी ने प्रशंसा की है।

भूमि समस्या : किन-किन क्षेत्रों में सरकार का और सर्वोदय आन्दोलन का सहयोग हो सकता है, इसकी चर्चा करते हुए हमने बताया कि जमीन का प्रश्न इसमें मुख्य है। भूदान-ग्रामदान के द्वारा स्वेच्छा से भूमि समस्या का हल करने की कोशिश की गई। करीब १५ लाख एकड़ जमीन अब तक बांटी गयी है। सीलिंग के द्वारा जमीन के वितरण का जो प्रयास शासन की ओर से किया जा रहा है, उसमें भी बंटवारे का काम ग्रामसभा के सामने और उसके द्वारा हो, ऐसी हम लोगों की राय है। ग्रामसभा का अर्थ गांव के कुल निवासियों की सभा से है, जिसका निर्णय सर्वसम्मति के आधार पर हो, ऐसा इन्दिरा जी के प्रश्न के उत्तर में उन्हें बताया गया। यह ग्राम-सभा ग्राम-पंचायत और उसकी राजनीति से भिन्न है, इन्दिराजी को इस उत्तर से समाधान हुआ। इन्दिराजी के सामने यह बात भी रखी गयी कि सीलिंग के जो कानून अलग-अलग राज्यों में बने हैं, उनमें कई बातों में परस्पर-अन्तर है। कानून की मुख्य-मुख्य बातों में तो कम-से कम एकरूपता होनी चाहिए।

इन्दिराजी ने कहा कि यह विषय राज्य शासनों का है। केन्द्र की ओर से सूचनाएं जाती हैं। समृद्ध किसानों से कानून के क्रियान्वयन में रोड़े आने के कारण लोगों के अभिक्रम को जगाना आवश्यक है। हम लोगों ने बताया कि ग्रामदान का काम हम इसी दृष्टि से कर रहे हैं। सरकार की भूमि वितरण की नीतियों से भी इसका मेल है। अतः इस काम में शासन का सहयोग मिले ऐसा हम चाहते हैं। ग्रामदान का काम कई प्रान्तों में विशेष रूप से हुआ है, बड़ी तादाद में ग्रामदान हुए हैं, उनके अमल के लिए कानून भी बने हैं, पर उनको लागू करने में कई कठिनाइयां आती हैं। देर बहुत लगती है। इन्दिराजी के पूछने पर बताया गया कि बिहार तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश आदि प्रदेशों में ग्राम दान का अच्छा काम हुआ है। यदि सरकार सीलिंग से मिलने वाली जमीन, सरकारी पड़त जमीन और भूदान ग्रामदान में मिलने वाली जमीन, इन सभी का वितरण करने की मिली जुली कोशिश हो और उसके लिए कुछ चुने हुए क्षेत्रों में सरकार, जनता और सर्वोदयवाले, सब मिलकर एक मुहीम के रूप में एक अवधि तय करके योजनाबद्ध काम करें तो जमीन वास्तव में जिसके पास पहुंचनी चाहिए उसके पास पहुंचेगी और लोगों में भी आत्मविश्वास बढ़ेगा। इन्दिराजी को यह ठीक लगा।

इन्दिराजी ने कहा कि मुझे सबसे जरूरी यह लगता है कि स्थानीय लोग अपनी जिम्मेदारी पर काम उठायें। सब बातों में सरकार पर निर्भर रहेंगे तो सरकार का बोझा ही बढ़ेगा। लोग उसकी कीमत देने को भी तैयार नहीं होते। कीमत, यानी फिर सरकार के अधिकार और शक्ति बढ़ानी पड़ती है। शिक्षण-संस्थाओं को भी सरकार अपने हाथ में ले ले, यह मांग आजकल होती रहती है। चर्चा के दौरान सर्वोदय-सेवकों ने कहा कि हमारा यह निवेदन है कि जिन प्रान्तों में ग्राम दान का काम कुछ अधिक हुआ है, उन प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों को आप इस बारे में लिखती रहें एवं उन प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों तथा राजस्व मंत्रियों को आप एक बार बुलायें भी, उस सभा में हम लोग भी आयें और आप ग्रामदान के काम में सहयोग देने के बारे में कहें। ग्रामदान-कानून कई प्रान्तों में बने हैं, लेकिन उनके अमल में बहुत देरी होती है, ग्रामदान-किसानों को सामान्य किसानों की अपेक्षा कर्ज आदि मिलने में भी दिक्कत होती है।

खादी ग्रामोद्योग : दूसरा विषय हमने खादी-ग्रामोद्योग का रखा। खादी के लिए परिस्थिति अनुकूल हो रही है, यानी मिलों के मुकाबले खादी की कीमत इन दिनों खपत और मांग के अनुकूल है, लेकिन खादी के विकास में पूंजी, कच्चे माल की सप्लाई आदि की कई कठिनाईयां हैं, इस विषय को लेकर एक बार फिर हम आपसे मिलना चाहेंगे ताकि तफसील से बातचीत हो सके। इन्दिरा जी के पूछने पर बताया गया कि खादी आयोग के क्षेत्र में करीब ३० उद्योग आज आते हैं उनकी लोगों में मांग भी है। पर इनमें क्षेत्रों का रिजर्वेशन हो यह आवश्यक है। कच्चे माल की आपूर्ति भी नहीं हो पाती। आज गोबर गैस की मांग काफी है। पर उसमें लोहा आदि की आवश्यकता पूरी नहीं हो पाती इस पर इन्दिराजी ने कहा कि गोबर गैस का

काम कर रहा है यह अच्छा है, पर लोहे के अलावा दूसरी किसी चीज से यह काम कैसे हो सके, इसका हमारे वैज्ञानिक कोई रास्ता निकालें तो अच्छा हो।

खादी का आधार अन्त्योदय है, पर इसे यदि शासन का पूरा सहारा मिले तो आज जो भूमिहीन मजदूर या दूसरा गरीब काम न मिलने पर भूखा रहता है, (क्योंकि खेतो मे हमेशा काम मिलता नहीं) उसे खादी से सहारा दिया जा सकता है। जैसे दूसरे देशो मे मजदूर को काम न मिलने पर डोल के रूप मे सहायता दिये जाने की व्यवस्था होती है, वैसा अपने देश मे खादी के द्वारा किया जा सकता है। जब दूसरा काम न मिले तो चरखे की हर जगह वैसी ही व्यवस्था हो। फिर देश मे कोई भूखा नही सोयेगा। इस बारे मे योजना बनानी चाहिए।

लगान की अनाज में वसूली : बाबा ने आपके सामने जो सुझाव रखा है वह अनाज के रूप मे लगान वसूल करने का है। इन्दिरा जी ने कहा कि बात तो यह ठीक है, पर हमारे लोग कहते हैं कि इससे अनाज बहुत कम मिलेगा। तब हमने बताया कि लगान के अतिरिक्त किसान से कर्ज की वसूली मे या उसे उत्पादन में दी जाने वाली सहायता के बदले अनाज लिया जाये तो काफी अनाज मिलेगा और किसान को अपना अनाज बेचकर पैसे मे चुकाने की नौबत नही आयेगी। इसी का दूसरा पहलू यह है कि सरकारी कर्मचारियो को उनके वेतन का कुछ अंश अनाज मे दिया जाये। देश के कई हिस्सों मे आज भी सालभर काम करने वाले खेतीहर मजदूरो को जो मजदूरी दी जाती है उसका एक निश्चित अंश अनाज मे दिया जाता है। पिछले १०-१२ वर्षों मे पैसे के रूप मे दी जानेवाली मजदूरी बढ़ी है, लेकिन अनाज वाला अंश जो १० वर्ष पहले था उतना ही आज भी है : इसमें लेने वाले और देने वाले दोनो को समाधान है। यह अनाज गरीब के लिए 'कुशन' का काम करता है। इन्दिराजी ने कहा कि उन्होंने दो राज्यो के मुख्यमंत्रियो से कहा है कि वे इस दिशा मे कुछ प्रयोग करें, प्रयोग के बाद ही हमे कुछ दिशा मिलेगी।

शराबबंदी : यह विषय आपकी भी दिलचस्पी का है और हमारी भी। राजस्थान के मामले में तो आपने समिति बनाई ही है। गोकुल भाई उससे आस लगाये हुए हैं। खास कर गरीबो की दृष्टि से शराबबंदी बहुत आवश्यक है। सरकार आमदनी का प्रश्न उठाती है। यह इन्दिराजी के कहने पर हमने कहा कि शराब की आय को आम राजस्व का हिस्सा नही मानना चाहिए। आमदनी वाली दलील मे ज्यादा तथ्य भी नही है। राजस्थान का ही उदाहरण लीजिये। दो अरब से ऊपर का राज्य सरकार का बजट है, उसमे शराब की आमदनी १०-१२ करोड अर्थात् मुश्किल से ५ प्रतिशत है। फिर हमने तो कई उपाय भी सुझाये हैं जिनसे यह घाटा कम भी हो जाता है। इसलिए आमदनी कम होने की दलील बेबुनियाद है। तमिलनाडु एव गुजरात मे इस आमदनी के बिना भी काम चल रहा है। इन्दिराजी ने हसकर कहा कि यह बात राज्य सरकार वालो को भी समझायें।

चुने हुए क्षेत्रों में सम्मिलित काम हमने कहा कि सर्वोदय सभी समस्याओ का अहिंसक हल ढूंढता है और उसके अनुरूप लोक-शिक्षण द्वारा वातावरण बनानें का काम करता है। इन क्षेत्रो में निश्चित योजना लेकर शासन का सहयोग मिलेगा तो उससे ठोस नतीजे आ सकेंगे। जनता में आत्मविश्वास बढ़ेगा और शासन की नीतियों और योजनाओ पर अमल भी आसानी से हो सकेगा। कुछ निश्चित क्षेत्रो में सर्वोदय का काम विशेष रूप से चल रहा है इस प्रकार सहयोग से काम करने की योजना बनाई जा सकती है।

हमने जब निवेदन किया कि हम आपसे अब कुछ सुनना चाहेंगे तब इन्दिराजी ने कहा कि आप लोग तो अच्छा काम कर ही रहे है। मुझे तो विशेष कुछ नही कहना है। एक ही बात लगती है कि लोग सब बातो की जिम्मेदारी सरकार पर न डाल कर अपनी जिम्मेदारी भी समझें। शासन पर आधारित रहने की मनोवृत्ति बदलें। हमने कहा कि हमारा भी यही उद्देश्य है। हम इसी उद्देश्य से काम कर रहे हैं। यह खुशी की बात है कि आप भी यह चाहती हैं।

अंत में सिद्धराजजी ने इन्दिराजी को उपवासदान वाला फार्म दिया। फार्म को उन्होने रख लिया और हसकर कहा कि मैं तो वैसे भी एक ही समय भोजन करती हू।

मुंगावली में काल नहीं कटता

यशवन्त कुमार सिन्धू

चौदह नवम्बर ७३ से ही मध्यप्रदेश गांधी स्मारक निधि के हम दो भाई, उत्तम चन्द जी चौबे और मैं खुली जेल मुंगावली मे आत्म समर्पित बागी भाइयो के संस्कार और योग्य सेवा का काम चम्बल घाटी शांति मिशन की ओर से देख रहे हैं।

पंचायत प्रारम्भ से अब तक ७० और ६० के बीच बागी इस नवजीवन शिविर मे रहने आये हैं। खुली जेल का आन्तरिक प्रशासन कौन देखे ? और सुख सुविधा का ध्यान रखते हुए दैनिक जीवन मे आने वाली व्यक्तिगत समस्याओ एव कठिनाइयो का निराकरण कौन करे ? इन प्रश्नों के समाधान हेतु आत्म समर्पित भाइयो की एक आम सभा मे सर्वसम्मत ६ सदस्यो की पंचायत गठित की गई है जो समय-समय पर बैठकर एक राय से काम करती है। इस पंचायत के फैसले को मिशन, जेल प्रशासन और सभी बागी आदर पूर्वक मानते हैं। पंचायत के प्रभावशील होने के कारण किसी भी बागी भाई को अपनी व्यक्तिगत समस्या के लिए शासन अथवा मिशन से अधिक सम्पर्क नही करना पड़ता।

सामूहिक रसोड़ा : समर्पण से खुली जेल के प्रारम्भ तक सभी लोग पुराने ढंग से वर्ण और धर्म का विचार रखते हुए अलग-अलग अपनी-अपनी भोजन व्यवस्था करते थे किन्तु १५ नवम्बर ७३ को जयप्रकाश जी के संकेत से व्यवस्था परिवर्तन मे बड़ी मदद मिली है और अब सामूहिक रसोडा चल रहा है। एक रसोड़े को दो भागो मे बांट देने से उत्तमोत्तम पद्धति से काम चल रहा है।

व्रत, उपवास और उपचार परहेज वालो को छोड़कर सब एक ही रसोड़े मे भोजन करते हैं। ऊंच नीच, छूत-अछूत, तथा जाति-पांति के विचारो से बागी भाई ऊपर उठ रहे

है, किन्तु अभी एक साथ विधिवत बैठ कर सामूहिक रूप से भोजन करने की आदत नहीं बन पाई है। इस दिशा में प्रयत्न चल रहा है।

पारिवारिक मिलन : किसी बागी भाई के परिवार से कोई मिलने आता है तो उसके लिए दस दिन तक मिलाई भवन में रहने की व्यवस्था है और शिविरार्थी अपने परिवार में रह सकते हैं। वैसे भी दिन में किसी भी वक्त कोई भी व्यक्ति बन्दी भाइयों से मिल सकता है।

६: बागी भाइयों के परिवार भी मुंगावली आ चुके हैं। जो नवजीवन शिविर क्षेत्र के समीप अपनी झोपड़ी बना कर रह रहे हैं। इसमें एक विशेष छूट जेल प्रशासन से उन्हें मिली है कि वे अपने परिवार में जाकर नित्य भोजन कर सकते हैं।

पैरोल अवकाश : नव जीवन शिविर से अब तक सभी भाई पैरोल अवकाश का लाभ लेकर वापस आ गये हैं। अपने-अपने गृह-क्षेत्र में उन्हें जाने आने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई। अब दूसरी बार भी आधे से अधिक आत्म समर्पित भाई पैरोल का लाभ उठाकर शादी विवाहों में शरीक हो रहे हैं। समाज उन्हें स्नेह-पूर्वक स्वीकार कर रहा है। यह बात लौटने पर उनके चर्चा प्रसंगो से झलकती है।

सर्वोदय विचार परीक्षा : खुली जेल से इस वर्ष फरवरी सन् १९७३ वाले सत्र में २६ आत्म समर्पित बागी भाइयों ने प्रारम्भिक परीक्षा के फार्म भरे, जिनमें से २ भाई बीमारी के कारण अन्य अस्पतालों में चले गये। २४ परीक्षा में बैठे। साथ ही खुली जेल के अधीक्षक इसरारअहमद, उनकी धर्म पत्नी, जेलर तथा स्टॉफ के आठ भाई बहन, इस प्रकार बत्तीस परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए हैं।

नियमित कार्यक्रम : वैसे तो सुबह ५ बजे से रात ९ बजे तक कार्यक्रम बना हुआ है, किन्तु कार्यक्रम में वर्णित उद्योग-शिक्षा, कृषि, डेरी, मुर्गीपालन और सुतारी-लुहारी-सिलाई आदि के लिए शासन की ओर से अब तक न कोई साधन है और न शिक्षक, इस लिए शांति मिशन की ओर से केवल संस्कारों के लिए प्रातः प्रभात फेरी, प्रातः प्रार्थना सफाई वर्ग, रामायण-गीता और सर्वोदय साहित्य का पठन-पाठन व सायंकालीन सामूहिक प्रार्थना के कार्यक्रम चलाये जाते हैं। कभी-कभी भजन नाटक, प्रहसनों के भी आयोजन होते रहते हैं, जिनमें मुंगावली नगर तथा पास पड़ोस के ग्रामों की आम जनता भाग लेती और सम्मिलित होती है।

साक्षरता : नवजीवन शिविर में आने के पूर्व अन्य जेलों में आत्म समर्पित भाइयों को साक्षर बनाने का कार्यक्रम था और शासन की ओर से शिक्षक नियुक्त थे किन्तु यहां नवजीवन शिविर में बार-बार निवेदन के बावजूद भी शिक्षा का काम नहीं हुआ, इसलिए साक्षरता प्रसार की दिशा में उदासीनता है।

काल नहीं कटता : मिशन के साथी प्रातः प्रभात फेरी, प्रार्थना, दोपहर वर्ग सायंकालीन प्रार्थना पठन पाठन में अधिक से अधिक कुल मिला कर सामूहिक ढाई घंटे का समय ले पाते हैं, शेष समय व्यक्तिगत सम्पर्क के रूप में जाता है। इससे शिविरार्थियों के पूरे समय का उपयोग नहीं हो पाता, क्योंकि शासन की ओर से इन ६ महीनों में एक भी धंधा, उद्योग तथा कार्यक्रम ऐसे नहीं चलाये गये जिनमें शिविरार्थियों को लगाया जा सके तथा उनका मन लग सके। इसलिए वे स्वयं कहते हैं कि कि दादा काल नहीं कटता। एक दिन एक महीने के बराबर है।

पारिवारिक चिन्ताएं : काम काज के अभाव में स्वाभाविक रूप से मन भटकता रहता है, परिवारों की याद आती रहती है, उनकी समस्याएं याद आती है फिर सबके सब परिवार की व्यक्तिगत समस्याओं को सुलझाने की ओर अपने आप को लगा देते हैं। शांति मिशन के साथियों तथा जेल स्टॉफ और पंचायत के पास अनन्त समस्याएं पहुंचती रहती हैं। २० प्रतिशत ऐसे हैं, जिनके परिवारों को सुरक्षा की आवश्यकता है। वे पुलिस और पड़ोसियों से पीड़ित हैं।

भूमि तथा सहायता : जिलाध्यक्ष गुना ने शांति मिशन के सहयोग से इन ६ महीनों में इस शिविर में रहने वाले ३५ भाइयों को जमीन और सहायता की धन राशि दी है। ५ परिवारों को छात्रवृत्तियां दी गई है। बागी पीड़ितों की सहायता इसके अतिरिक्त है। २ भाइयों को छोड़कर सबको कब्जा दिलाया जा चुका है।

दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं : इस अवधि में दुर्भाग्य पूर्ण घटनाएं भी अनपेक्षित रूप से घटित हुई है। मदन किरार नाम के आत्म समर्पित भाई पैरोल के अवकाश में गये थे, फिर वे लौट कर नहीं आये। पता चला कि वे मारे गये। परन्तु सभी शिविरार्थियों का कहना है कि मदन फरार नहीं हुए उनके साथ छल किया गया है। सभी के मन में इस घटना से भय और चिन्ता बढ़ी है।

जेल स्टॉफ और नागरिकों के बीच मन मुटाव बढ़ा, जिसका प्रभाव शिविरार्थियों पर भी पड़ा। इन घटनाओं से उत्पन्न समस्याओं का शांति मिशन के साथियों ने बड़ी सावधानी से समाधान किया है, अब वातावरण शांत और उत्तम हैं। होली के अवसर पर कुछ शिविरार्थियों का पड़ोस में बसे कंजरों के साथ झगड़ा हुआ जिसमें एक ग्रामीण के पांव में अधिक चोट आ गई। इस घटना से पास पड़ोस के ग्रामीणों में जो आत्मीयता उत्पन्न हुई थी, उसमें रुकावट आई है।

मन भटक गया : शिविर प्रारम्भ होने के बाद नाते रिश्तेदार और मित्रों के मिलन का तांता लगा। परिवारों से लोग भी आने जाने लगे। मुंगावली में स्टेशन भी है तथा शराब की दुकानें भी। पास पड़ोस में बसे ग्रामीण, पुराने अपराधी समाज के कंजर, सांसी मोगिया और बागड़ी लोग हैं, खुली जेल से लगी जिनकी बस्तियां हैं, वे स्वयं शराब बनाते हैं और परिवारों में स्त्रियों तथा बच्चे सभी को पिलाते हैं। फिर बागी सरदारों के पुराने जीवन के दोस्त यार भी आते और वहां ठहरते हैं। इन तथ्यों का प्रभाव हमारे शिविरार्थियों पर पड़े बिना कैसे रहता? इनमें से कुछ लोग गतवर्ष किये गये मद्य निषेध संकल्प से गिरे। पता चलने पर इस प्रवृति को बदलने और इस गंदे वातावरण से बचाने के उपाय किये गये। आज शिविर में मांस मदिरा त्याज्य है। केवल दो भाई मांसाहारी हैं। आज से ३ मास पूर्व एक भाई के मेहमान ने आग्रह से शराब पिलादी। उसके दो चार दिन बाद फिर पुराने दोस्त आये और उन्होंने दो तीन भाइयों को उनकी पुरानी पद्धति से खान पान करा डाला। यह बात मालूम होने पर मिशन के भाइयों ने तत्परता पूर्वक बन्द कराया, (प्रतिज्ञाएं कराईं) अनशन किया गलती कबूल कराई।

(पेज ४ से जारी)

सभा में थोड़ी सी खलबली हुई। एक नौजवान ने धीरे से कह दिया कि यह क्या कहा जा रहा है और मारो साले को कह कर कुछ लोग उस पर टूट पड़े और उसे पीट दिया।

कम्युनिस्ट विधायक विधानसभा का विघटन क्यों नहीं चाहते हैं ? क्या इसलिए कि इससे लोकतन्त्र खतरे में पड़ जायेगा ? ३ जून की सभा में चन्द्र शेखर सिंह ने जब कहा कि अगर गफूर मंत्रिमण्डल ने प्रगतिशील शक्तियों के काम में सहयोग नहीं दिया तो उसे हटा दिया जायेगा तो विधानसभा भंग न करने के पीछे छुपे कम्युनिस्ट इरादों की असलियत खुल गई। लोगों के सामने साफ हो गया कि कम्युनिस्ट विधायक दरअसल ललित नारायण मिश्र की शह पर गफूर साहब को हटाना चाहते हैं और उनकी जगह जगन्नाथ मिश्र को मुख्यमंत्री बनाना चाहते हैं जिससे 'प्रगतिशील' नीतियों को लागू करने लिए उन्हें खुला हाथ मिल सके। अगर विधानसभा का विघटन हो जाता है तो न सिर्फ ललित-नारायण मिश्र का बिहार में राजनीतिक भविष्य दुर्घटनाग्रस्त हो जायेगा, उनकी अपनी स्थिति भी खराब हो जायेगी।

चार जून की सुबह जब पटना ने आंख खोली तो पाया कि पूरा का पूरा शहर जैसे किले में कैद हो गया है। पुलिस का जैसे जाल बिछ गया हो। हर दो मिनट में सड़कों पर पुलिस की गाड़ियां गुजर जाती हैं। रिक्शेवाला कहता है कि कल के जुलूस में गोली नहीं चली पर कल जरूर चलेगी। पूरा का पूरा शहर जैसे आतंक की गिरफ्त में कैद होता जा रहा हो। किसी अनहोनी के प्रति लोग भयभीत हैं।

जैसे जैसे दिन बीतता है न जाने कहां से झुंड का झुंड विद्यार्थियों का आता है और शहर की रगों में समा जाता है। पांच जून की सुबह जे० पी० के नेतृत्व में निकलने वाले जुलूस के लिए हजारों लोग एकत्र हो रहे हैं। कोई आकर बताता है कि बिहार राज्य पथ परिवहन निगम के अध्यक्ष ने गोपनीय आदेश बस डिपो को भेजा है कि ४ जून की दोपहर से ५ जून तक बिहार के किसी भी स्थान से निगम की कोई बस पटना नहीं आएगी। पटना से किसी को जाने वाली बस चलती रहेगी। कोई आकर बताता है कि भागलपुर होकर पटना की तरफ आने वाली 'अपर इण्डिया' ट्रेन को क्यूल जंक्शन से ही गया की तरफ घुमाने की कोशिश की गयी पर भागलपुर आदि स्थानों से जुलूस में भाग लेने आये सैंकड़ों विद्यार्थियों ने रेल चालकों को मजबूर कर दिया कि वे ट्रेन पटना लायें। कोई खबर लाता है कि विद्यार्थियों को लाने के लिए जिन ट्रकों को तय किया गया था उन्हें शासन के अधिकारियों द्वारा रास्ते में ही रोक लिया गया है। कहीं से हस्ताक्षरों को छीन लेने के समाचार आते हैं कहीं से जुलूस में भाग लेने आ रहे विद्यार्थियों के साथ मार पीट के। शासन की ओर से सुझाव आया कि जुलूस के लिए जो रास्ता पहले निर्धारित किया गया था उसमें एक दो स्थल ऐसे हैं जहां से जुलूस निकलने के समय किसी प्रकार की अप्रिय घटना हो सकती है, इसलिए चार जून को जुलूस का पूर्व निर्धारित मार्ग शासन द्वारा बदल दिया गया।

जैसे-जैसे समय बीतता जाता शहर में डर में बढ़ता जाता। इसी समय शासन की ओर से पुलिस की लगभग सौ गाड़ियों का एक 'फ्लैग मार्च' शहर के प्रमुख मार्गों से निकाला गया। इन गाड़ियों में सीमा सुरक्षा दल, केन्द्रिय रिजर्व पुलिस और बिहार पुलिस के सशस्त्र दस्ते थे। कहा है कि पांच जून को निकलने वाले जुलूस के समय शान्ति बनाये रखने और असामाजिक तत्वों से निपटने के लिए यह 'फ्लैग मार्च' निकाला गया था। पर शाम होते होते पटना में काफी डर भर गया कि ५ जून को कुछ भी हो सकता है। जून ४ की शाम बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति की एक उच्च स्तरीय बैठक में तय किया गया कि चूंकि जुलूस में भाग लेने वालों को रोका व पीटा जा रहा है और उनसे हस्ताक्षरों को छीनकर जलाया जा रहा है इसलिए प्रातः सात बजे निकलने वाले जुलूस का समय तीन बजे कर दिया जाये जिससे जुलूस और सभा में अधिक से अधिक से लोग पहुंच सकें और जुलूस समाप्त होने के तत्काल बाद ही गांधी मैदान में आमसभा आयोजित हो। रात होते-होते पूरे बिहार में समय परिवर्तन की सूचना फैल गई।

दिन : पांच अप्रैल, समय : पौने तीन बजे, स्थान : कदम कुआं स्थित महिला चर्खा समिति। बहत्तर साल की उम्र का नवयुवकों का नेता अपनी छड़ी के सहारे सीढ़ियों से उतर रहा है। चेहरे पर निश्चिन्तता का भाव, कोई थकान नहीं। आठ अप्रैल के बाद एक बार फिर आज ऐतिहासिक क्षण। जयप्रकाश जी जुलूस का नेतृत्व करने गांधी मैदान जा रहे हैं। महिला चर्खा समिति से निकलकर जीप शहर में आती है। कोई हलचल नहीं, अधिकांश दुकानें बन्द। जैसे ही कोई जे० पी० को देखता है हाथ जोड़ता है। जे० पी० शहर की उदासीनता से थोड़े परेशान नजर आते हैं, पर यह उदासीनता ज्यादा देर टिकती नहीं। जीप जैसे ही गांधी मैदान पहुंचती है 'लोक नायक जयप्रकाश की जय' से आकाश गूंज उठता है। गांधी मैदान पर लाखों की भीड़ जे० पी० का इन्तजार कर रही है। लगता है बिहार की जनता ने आठ अप्रैल को जे० पी० को अपनी जिन पलकों पर बैठाया था वे पलकें अभी तक झपकी नहीं हैं। जे० पी० बिहार का प्रेम देखकर खो गये हैं।

साढ़े तीन बजते-बजते जुलूस गांधी मैदान छोड़ देता है। सबसे आगे हस्ताक्षरों के बण्डल लिये ट्रक, फिर जे० पी० की जीप, फिर जे० पी० का बिहार। आजादी के बाद पटना में सबसे लम्बा, आकर्षक और प्रभावशाली जुलूस।

जुलूस में भाग लेने वालों में देश के लब्ध-प्रतिष्ठित साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु (चश्मा लगाये) भी थे।

आठ अप्रैल के जुलूस में प्रतिज्ञापत्र भर कर शरीक होने वाले केवल हजार लोग थे इस बार प्रतिज्ञा करके शरीक होने वाले सौ हजार। रास्ते के दोनों ओर लाखों लोगों की वैसी ही कतारें थी जो आठ अप्रैल को थीं। ऐसा

लगता था कि लोग आठ अप्रैल से ही इसी तरह जे० पी० के इन्तजार में खड़े हैं। लोगों की आंखें वैसे ही नम जैसी आठ तारीख को थी आंसू सूखे नहीं थे। अट्टालिकाओं के छज्जे वैसे ही भरे हुए और फूलों की मालाओं का भार उतना ही। सब कुछ अलौकिक। पूरा का पूरा पटना जे० पी० की आंखों में था और जे० पी० पूरे पटना की आंखों में।

'विधान सभा भंग करो' 'हर बार विद्यार्थी जीता है इस बार विद्यार्थी जीतेगा, 'दम है कितना दमन में तेरे देख लिया है, देखेंगे,' 'हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई—सबके घर में है मह्ंगाई' 'दे न सके जो सस्ता राशन—वह भी क्या जनता का शासन', 'मां की गोद सूनी है—यह सरकार खूनी है, 'हमला चाहे जैसा होगा—हाथ हमारा नहीं उठेगा', 'जयप्रकाश—जिन्दाबाद'—पटना की सड़कों पर नारे गूंज रहे हैं। जुलूस का सबसे अगला सिरा राजभवन के नजदीक है और सबसे पिछला गांधी मैदान पर।

साढे पांच बजते-बजते जे. पी. की जीप राजभवन के बन्द दरवाजे तक पहुंच गई। पहले सिर्फ जे. पी. राज्यपाल भण्डारे साहब से मिलने गये बाद में संघर्ष समिति के लोग भी चर्चा में शामिल हो गये। कमरे में घुसते ही राज्यपाल ने स्वागत किया और स्वास्थ्य के बारे में पूछा। जे. पी. और राज्यपाल ने दस मिनट एकांत कमरे में चर्चा की। जे पी ने राज्यपाल से कहा कि मंहगाई और भ्रष्टाचार से जनता ऊब चुकी है और विधानसभा का विघटन चाहती है। राज्यपाल हंसते हुए मित्रता पूर्ण भाव से कहते हैं प्रदर्शन से तो विधानसभा विघटित नहीं होती। जवाब में जे. पी. कहते हैं कि जनता का इस विधानसभा में विश्वास उठ गया है और चूंकि संविधान में समय से पहले विधायकों को हटा देने का कोई प्रावधान नहीं है इसलिए जनता यहां आई है। चर्चा के बाद राज्यपाल से कहा गया कि विधानसभा को भंग के समर्थन में लाखों लोगों ने हस्ताक्षर फार्म भरे हैं और उसे साथ लाये हैं। लाल कपड़ों में बंधे हस्ताक्षरों से लदी ट्रक को राज भवन में पहुंचा दिया गया। हस्ताक्षर फार्म पर लिखा था—'हम बिहार राज्य के नागरिक और⋯निर्वाचन
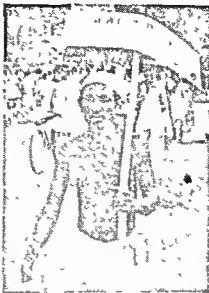
शासन, सत्ता, शोषणकारी सेवा से हो मुक्ति हमारी। राजभवन पर जे पी. के जुलूस का का एक सत्याग्रही

क्षेत्र के मतदाता हैं। हमें इस बात का दुख है कि आज सरकार भ्रष्टाचार, महंगाई बेरोजगारी जैसे जन-जीवन के सवालों को हल करने में सर्वथा असफल रही है। उसने एक भी ऐसा ठोस कदम नहीं उठाया है जिससे यह विश्वास हो कि वह निजी और दल के स्वार्थों से ऊपर उठकर हमारी समस्याओं का हल करने की नियत भी रखती है। इससे विपरीत हम देखते हैं जो छात्र इन बुराइयों के खिलाफ आवाज उठा रहा है तथा हमारे बच्चों का जीवन बनाने-बिगाड़ने वाली शिक्षा में बुनियादी परिवर्तन की मांग कर रहा है उसे सरकार अपनी पुलिस और सेना की शक्ति से कुचलने की कोशिश कर रही है। अनेक स्थानों पर निर्दोष लोग यहां तक कि बच्चे भी गोली के शिकार हुए हैं। एक और सरकार अनीति और अन्याय पर उतारू है, दूसरी ओर हमारी विधान सभा उसके कारनामों पर मुहर लगाती चल रही है। दल के बहुमत का इस्तेमाल जनता के विरुद्ध किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में हम यह घोषणा करने को विवश हैं कि आज की मंत्रि परिषद में हमारा विश्वास नहीं रह गया है तथा यह विधान सभा न हमारी भावनाओं का प्रतिनिधित्व कर रही है न हमारे हितों का। इसलिए राज्यपाल महोदय से हमारा अनुरोध है कि वह विधान सभा को अविलम्ब भंग करें और मंत्रि परिषद के हाथों से प्रशासन निकाल लें। ये दोनों हमारा विश्वास खो चुके हैं। अपने अविश्वास को प्रकट करने के लिए हम नीचे अपना। हस्ताक्षर अंगूठे का निशान दे रहे हैं।'

सात बजे जब गांधी मैदान में लाखों की भीड़ जमा हुई तो बिजली की तरह खबर फैल गई कि राजभवन से लौटते हुए लोगों पर बेली रोड स्थित इंदिरा ब्रिगेड के दफ्तर से गोलियां चलाई गई और २१ लोग घायल हो गये। पूरी सभा में रोष फैल गया। कुछ नौजवान खड़े होकर नारे लगाने लगे कि खून का बदला खून से लेंगे। बड़ी मुश्किल से लोगों को शांत किया गया कि पहले वे जे० पी० का भाषण सुन लें। एक बार फिर जे० पी० ने बिहार को जलने से बचा लिया।

जे० पी० के पूर्व राममूर्ति बोले। एक-एक शब्द तुला हुआ। 'आठ अप्रैल का दिन संकल्प का था आज का दिन समर्पण का है,' 'इतिहास का उत्तरार्ध लिखा जा रहा है उसे युवक व छात्र ही लिखेंगे,' 'एक आदमी आया और उसने बिहार की जनता के सिरहाने एक आंदोलन रख दिया,' 'यह देश न जाने कितने साल तक जे० पी० के प्रति कृतज्ञ रहेगा,' 'जे० पी० ने इस अधमरे देश को प्राण दिये हैं' सारी सभा मंत्रमुग्ध होकर सर्वोदय आंदोलन के तेजस्वी वक्ता को सुनती रही।

लाखों की सभा शांत है। जे० पी० ने बोलना शुरू किया है—भाइयो, बहनों...। एक-एक शब्द लोगों को बेधने लगा—'किसी को अधिकार नहीं कि जय प्रकाश को लोकतंत्र की शिक्षा दे', जनता का देश है कि पुलिस वालों का देश है,' 'मेरा किसी से व्यक्तिगत झगड़ा नहीं है। सिद्धांतों का झगड़ा है। गलत नीतियों का विरोध करूंगा,' एक साल तक युनिवर्सीटी और कॉलेज बन्द रहेंगे एक वर्ष में जनता का सच्चा राज्य होगा,' 'लज्जा नहीं आती उनको जो कुर्सियों पर बैठे हैं,' 'इस गवर्नमेंट ने जितने पाप किये उनका आधार यह असेम्बली है,' 'सात जून से असेम्बली के फाटकों पर सत्याग्रह और पिकेटिंग हो विधायकों से कहा जाए कि जाना है तो हमारी
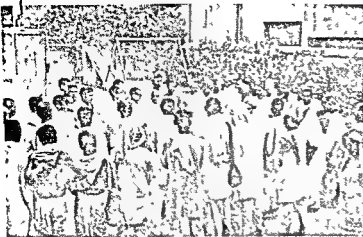
'जेल में ही स्वराज्य पैदा हुआ है। जेल से ही तुम्हारे अधिकार प्राप्त होंगे।' ७ जून को रामनन्दन बाबू के नेतृत्व में विधान सभा पर धरना दे जा रही सत्याग्रहियों की पहली टोली को विदा देते हुए जे पी।

पीठ पर से जाओ,' 'जेलो को भर देंगे,' 'अब विधान सभा भग करो नही विधान सभा भग करेंगे,' 'आवश्यकता पडी तो और भी तीव्रतर कार्यक्रम देंगे,' 'यह आदोलन अब जयप्रकाश के रोकने से भी नही रुकेगा।

पर सरकार ने जयप्रकाश नारायण से निपटने का तय कर लिया है। पहाड से आराम करके लौटते वक्त चण्डीगढ हवाई अड्डे पर पत्रकारो ने जब प्रधान मत्री से जयप्रकाश नारायण के नये दल पर टिप्पणी करने को कहा तो उन्होने कह दिया कि यह निर्णय करना जनता के हाथ मे है कि आदोलन देश के हित मे है या नही, पर दिल्ली लौट कर उन्होंने उमाशकर दीक्षित को कह दिया कि यह अब उनकी जिम्मेदारी है कि वे बिहार को सभालें। देश के सुविधावादियों, बुद्धिजीवियों और कतिपय बड़े अखबारो के सम्पादकों ने भी जयप्रकाश के आदोलन के खिलाफ कमर कस ली है। बड़े-बड़े अखबार जो किसी समय जे॰ पी॰ की तारीफो के पुल बांधते थे, अब लिख रहे हैं कि सरकार को जे॰ पी॰ की चेतावनी का जवाब देना चाहिए। पाच जून को जे॰ पी॰ के ऐतिहासिक भाषण के बाद ६ जून को कांग्रेस ससदीय बोर्ड की एक अनौपचारिक बैठक हुई और उसमें जे॰ पी॰ के नये कार्यक्रमों के सदर्भ मे बिहार के आदोलन की समीक्षा की गई। बैठक के बाद पारित प्रस्ताव मे बिहार के काग्रेसी विधायको के नाम निर्देश दिया गया कि वे धरने और घेराव की धमकियो के बावजूद निश्चित रूप से राज्य विधान सभा के अधिवेशन मे भाग लें। विधान सभा के विघटन की माग के आगे घुटने टेकने का प्रश्न ही नही है। डा॰ शकर दयाल शर्मा की अध्यक्षता मे हुई इस बैठक मे जगजीवन राम, फखरुद्दीन अली अहमद, यशवन्तराव चव्हाण और सी॰ सुब्रह्मण्यम ने भाग लिया।

जे॰ पी॰ के कहे अनुसार सात जून को पुलिस के भारी पहरे मे जुडी विधान सभा के दरवाजो पर ६२ सत्याग्रहियो ने गिरफ्तारिया दीं। इनमे लगभग बीस सर्वोदयी कार्यकर्त्ता थे और बाकी विद्यार्थी थे। दस जून को पुन. साठ विद्यार्थियो ने अपनी गिरफ्तारियां दी। गिरफ्तार लोगो को पटना से दूर जेलो मे भेजा जा रहा है। जेलो मे जगह बनाई जा रही है कि हजारो की तादाद मे गिरफ्तार होने वाले विद्यार्थियों को उनमे भरा जा सके। काग्रेसी विधायक काग्रेस संसदीय बोर्ड के निर्देशो का ईमानदारी से पालन करते हुए विधान सभा में भाग ले रहे हैं। और अखबारो मे कहा जा रहा है कि जयप्रकाश नारायण व उनके समर्थको तथा बिहार सरकार, जिसे केन्द्र का पूर्ण समर्थन प्राप्त है, के बीच पूर्ण शक्ति परीक्षा होनी अनिवार्य है और अब इनमे समझौते की आशा नहीं है।

सवाल यह है कि क्या यह आदोलन थाम दिया जायेगा? क्या बी॰ एस॰ एफ॰, सी॰ आर॰ पी॰ और प्रदेश पुलिस के हजारो ज्वान बन्दूको के दम पर विधान सभा को बचा लेंगे और लोगो से कर वसूल कर लेंगे? सवाल यह भी है कि अगर विधान सभा भग हो गई तो क्या होगा और नही हुई तो क्या होगा? बिहार मे वे लोग जो आदोलन में लगे हुए हैं कहते हैं कि विधान सभा भग हो जाएगी तो उसके बाद के लिये भी नया रास्ता अवश्य निकलेगा, पर अगर सरकारी शक्ति आदोलन को विफल करने मे कामयाब हो गई तो आगे आने वाले बीसियो वर्षों के लिए किसी भी जन आदोलन की सम्भावनाए निरस्त हो जाएगी।

दिल्ली जैसे पूरा देश नही है, पटना पूरा बिहार नही है। बिहार में आदोलन गावों तक पहुच गया है। आदोलन अब जनता का हो गया है और वह राजनीतिक दलो और विद्यार्थियो का भी इन्तजार नही करेगा। बिहार मे सरकार का शक्ति परीक्षण जयप्रकाश नारायण के साथ नहीं जनता के साथ हो रहा है।

लडाई अब सत्ता और जनता के बीच है। लोगो के मन मे शका है कि यह आन्दोलन ज्यादा समय चलेगा या रास्ते ही मे बिखर जाएगा। ऐसी शकाए उठना सहज भी है। पर बिहार के युवको को पूरा विश्वास है कि जीत जनता की ही होनी है। सवाल केवल समय का है।

अगले अंक में पढ़िये
पटना के गांधी मैदान में पांच जून को दिया गया जयप्रकाश जी का ऐतिहासिक भाषण।

दादा धर्माधिकारी १८ जून को अपने जीवन के ७५ वर्ष पूरे करके ७६ वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। कबीर ने कहा था कि साधु की जाति मत पूछो। अगर वे दादा से मिले होते तो निश्चित ही कहते कि उनकी उम्र मत पूछो। गांधीजी के असहयोग आन्दोलन में कॉलेज छोड़कर आने के बाद से अब तक दादा तूफानों और ज्वार-भाटों के बीच एक विचारशील दीप स्तम्भ की तरह रहे हैं। पारदर्शी और मुक्त चिन्तन करने वाला व्यक्ति कभी बूढ़ा नहीं होता। सच पूछिये तो दादा जैसे विचारक के सम्बन्ध में उम्र एक अप्रासंगिक अनिवार्यता है। विचार शरीर, काल और शून्य के भी परे जा सकता है।

पूरा सर्वोदय आन्दोलन दादा की हीरक जयन्ती मनाते हुए स्वयं गौरवान्वित हो रहा है और कामना करता है कि दादा अपने चिन्तन की तरह कालजयी भी कर जीते रहें।

विनोबा जी ने सर्व-सेवा-संघ के मंत्री प्रो० ठाकुरदास बंग को पवनार में कहा कि जब तक वे जयप्रकाश नारायण से चर्चा नहीं कर लेंगे, बिहार के जन-आन्दोलन के बारे में कोई राय नहीं बनायेंगे।

प्रो० बंग ने संसद सदस्य वसन्त साठे का अखबारों में प्रकाशित एक वक्तव्य विनोबा जी को दिखाया था जिसमें श्री साठे ने कहा था कि विनोबाजी बिहार विधानसभा के विसर्जन की मांग को 'एक गलत कदम' मानते हैं।

'बिहार के आन्दोलन को एक गलत कदम बताने के ठीक विपरीत विनोबा जी ने बार-बार कहा है कि जे० पी० ने जो दिशा ली है वह सही है'—प्रो० बंग ने सर्वोदय प्रेस सर्विस को भेजे एक तार में कहा।

अहमदाबाद में २२ और २३ जून को होने वाला अखिल भारतीय युवा सम्मेलन अब इन्हीं तिथियों पर इलाहाबाद में हो रहा है। उत्तर प्रदेश युवा सम्मेलन जो पहले १८-१९ को होने वाला था इसी सम्मेलन में शामिल कर दिया है। यह व्यवस्था जयप्रकाश नारायण के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर की गयी है।

हिमालय सेवा संघ का सम्मेलन

हिमालय सेवा संघ का सम्मेलन धरमसाला (हिमाचल प्रदेश) में १७ से २० जून तक हो रहा है। सम्मेलन में सीमा क्षेत्र की जनसेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के अलावा सरकारी अधिकारी और विद्वानगण भाग लेंगे।

(पृष्ठ २ का शेष)

अपना वर्चस्व कायम रखना चाहती है। कोई भी इस भ्रम में न रहे कि बिहार में जयप्रकाश नारायण गफूर और इन्दिरा गांधी के खिलाफ लड़ रहे हैं। बिहार में जनता एक ऐसी व्यवस्था और सत्ता के खिलाफ लड़ रही है जो अपने बने रहने का औचित्य लाठी और बन्दूक से भी सिद्ध नहीं कर सकती। शंख फुंक गया है और संघर्ष जारी है। फैसला कगार पर बैठे हुए लोग नहीं, जनता का का खून और आक्रोश देगा।

—प्रभाष जोशी

(पृष्ठ ६ का शेष)

इस परिस्थिति में से रास्ता तो निकालना ही होगा। चूंकि इस परिस्थिति को बनाने में, बनाये रखने में हम सब किसी न किसी रूप में जिम्मेदार हैं अतः हर नागरिक में परिस्थिति बदलने की आकांक्षा पैदा होना जरूरी है।

स्थानीय व्यापारी प्रभावशील व बड़े कहे जाने वाले व्यक्ति, समाज सेवी संस्थाएं धार्मिक और सुधारवादी संगठनों ने असामाजिक तत्वों का इन दिनों बहुत सहारा लिया है, वे इनको प्रोत्साहन व प्रतिष्ठा न दें ऐसी इसकी कोशिश करनी होगी।

सरकार के कानूनों का पालन करवाने और उसकी योजनाओं को अमल में लाने के लिए जो नौकरशाही का ढांचा है, यदि यह किसी भी तरह की अनियमितता बरतता है तो हर नागरिक को मालिक की हैसियत से उसे ठीक करने का हक है। जनता को यह होश दिलाना होगा।

जनता के चुने हुए प्रतिनिधि यदि निरंकुश हो जायें, जनविरोधी कानून बनायें तो उनके साथ असहयोग कर उन्हें वापस बुलाने का भी अधिकार जनता का है।

गोंडा के नागरिक इस दिशा में कार्यक्रम तैयार कर रहे हैं, तहसील से गांव तक लोक शिक्षण की योजना बन रही है। बैठक के बाद जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष ने कई इलाकों में नव चेतना व संगठन के लिए दौरा शुरू कर दिया है।

—नरेन्द्र

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३६ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, २४ जून, '७४

पटना गोलीकाण्ड की जांच के लिये नियुक्त समिति के सदस्य जे० पी० को अपनी रपट [illegible] हुए (विवरण पृष्ठ ४ पर)

यह क्रांति है मित्रो ! सम्पूर्ण क्रांति : पांच जून को गांधी मैदान में युवकों से जयप्रकाश नारायण का आवाहन

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० २४ जून, '७४ अंक ३९

१९, राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

सन्त का "सदुपयोग"

बिहार का जन आन्दोलन जैसे-जैसे शक्ति और गति प्राप्त करता चल रहा है और लोग जयप्रकाश नारायण नाम के प्रतीक के आस-पास जुड़ने लगे हैं वैसे-वैसे सरकार और सत्तारूढ़ दल यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि विनोबा इसके खिलाफ हैं और सरकार का समर्थन कर रहे हैं। जानबूझ कर किये जा रहे इस गलत प्रचार का सबसे ताजा उदाहरण कांग्रेसी संसद सदस्य वसन्त साठे का बयान है। साठे साहब इस मास की शुरूआत में कभी विनोबा से उनके आश्रम में मिले। काफी देर उनकी बातचीत हुई। सरकारी क्षेत्रों में यह मान लिया गया है कि विनोबा सरकार का साथ दे रहे हैं इसलिए वे सारे लोग जो सत्ता की सीढ़ियों पर चढ़ने को उत्सुक हैं, पवनार आश्रम की तीर्थयात्रा कर आते हैं। श्रीमती गांधी, राष्ट्रपति गिरि, केन्द्रीय राज्यमंत्री विद्याचरणशुक्ल, श्यामाचरण शुक्ल आदि कई राजनेता पिछले छः महीनों में विनोबा की सलाह का लाभ ले चुके हैं। साठे साहब की यात्रा भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी थी।

विनोबा ने अपने विश्व परिप्रेक्ष्य और संत की तटस्थ भूमिका से जो कुछ कहा उस का मतलब साठे साहब ने यह निकाला कि वे बिहार के आन्दोलन को एक गलत कदम मानते हैं। उनका बयान अखबारों में सुर्खियों में छपा और फिर आकाशवाणी ने उन्हें अपने महत्वपूर्ण कार्यक्रम 'स्पॉट लाइट' में भी बुलाया। सर्व सेवा संघ के मंत्री ठाकुरदास बंग साठे साहब का बयान ले कर १२ जून को विनोबा से मिले और विनोबा ने उनसे कहा कि बिहार के आन्दोलन के बारे में अब तक उन्होंने कोई राय नहीं बनायी है और जब तक वे जयप्रकाश नारायण से चर्चा नहीं कर लेंगे कोई राय नहीं बनायेंगे। श्री बंग तो साठे साहब के बयान का खण्डन कर ही चुके हैं लेकिन साठे-विनोबा वार्ता का जो विवरण छपा है उससे भी कहीं यह संकेत तक नहीं मिलता कि विनोबा बिहार के आन्दोलन को एक गलत कदम मानते हैं।

अगर विनोबा की इतनी पक्की राय होती तो वे उसे अब तक निश्चित ही जे० पी० तक पहुंचा चुके होते।

आजकल विनोबा अपना अधिकांश समय ब्रह्मविद्या पर चिन्तन में लगाते हैं और उनकी एक ही मनोकामना है कि इस देश की सभी भाषायें देवनागरी को दूसरी लिपि के नाते स्वीकार कर लें। विनोबा का विश्वास है कि देवनागरी लिपि जिस तरह इस देश को जोड़ सकती है उस तरह कोई भी राजनीतिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक शक्ति नहीं जोड़ सकती। वे तो अपने भूदान-ग्रामदान कार्य को भी देवनागरी की स्वीकृति के सामने कुछ नहीं मानते क्योंकि उनकी राय में यह शक्ति हजारों साल चल सकती है। आज के सवालों पर टिप्पणी करने से वे हमेशा इन्कार करते हैं और सब समस्याओं को एक लम्बे ऐतिहासिक और विश्व परिप्रेक्ष्य में देखने पर जोर देते हैं। हाल ही में विनोबा ने कहा—"मसलों की बात ऐसी है कि रामजी आये, उन्होंने कुछ मसले हल किये फिर रामजी मर गये। फिर से नये मसले खड़े हो गये। फिर कृष्ण आये राम ने धनुष लिया था कृष्ण ने मुरली बजाई, कुछ मसले हल किये, वे भी चले गये। दूसरे नये मसले खड़े हो गये। फिर बुद्ध आये। उन्होंने मौन धारण किया। कुछ मसले हल किये। अब फिर से मसले खड़े हैं। दुनिया के मसले तो चलते ही रहेंगे।"

उनकी राय में आज सबसे ज्यादा जरूरत विश्वास की है। "आप और हम साथ काम करते हैं तो आपके लिए मेरे मन में विश्वास होना चाहिए। बड़े-बड़े नेता सब पक्षों के बाबा के पास आते हैं और अपनी बात कहते हैं तो बाबा उन पर विश्वास रखता है। आप कहते हैं कि बाबा के विश्वास और आशीर्वाद को लोग एक्सप्लाइट (शोषण) करते हैं। तो एक्सप्लाइटेशन तो उनका काम है। लेकिन वे जितना एक्प्लाइट करेंगे उतना बाबा और विश्वास रखता जायेगा। हम कहते हैं न कि हिंसा को अहिंसा से, असत्य को सत्य से जीतेंगे। इसलिए सामने जितना अविश्वास होगा उतना हम विश्वास रखेंगे। अविश्वास का वातावरण हो तो हम विश्वास से जीतेंगे यह बाबा की शक्ति है।"

सरकार के समर्थन और विरोध के बारे में उनका कहना है—"सरकार के गलत काम होंगे उनका निषेध नहीं करना चाहिए, ऐसा हम नहीं कहते। बल्कि इस बार स्त्री शक्ति सम्मेलन (पवनार, ९ मार्च) में हमारा जो व्याख्यान हुआ उसमें इन्दिराजी की काफी बातें तोड़ी गयी, उन्हीं के सामने। इसलिए मैं सिर्फ मीठी-मीठी बातें करूंगा ऐसा नहीं

प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

है। लेकिन प्रेम रखूंगा। प्रेम छोड़ कर कुछ नहीं कहूंगा।" इन्दिराजी ने जब इस जनवरी में उनसे अपनी मिनट बात की तो विनोबा ने विदेश नीति पर उनकी बहुत सराहना की लेकिन साफ कहा कि घरेलू नीतियों में काफी सुधार की जरूरत है। विदेशी मामलों में इन्दिराजी की मदद करने के लिए मार्च में उन्होंने सर्व सेवा संघ को सलाह दी-"अंग्रेजों ने इस देश को तोड़ा। यह जो देश के टुकड़े हो गये हैं उनको जोड़ने की प्रक्रिया अभी इन्दिराजी कर रही हैं। सत्ताइस साल के बाद पहला मौका आया है भारत, पाकिस्तान और बंगला देश के मेलजोल का। अभी सरकार के खिलाफ अहिंसक आन्दोलन भी नहीं होना चाहिए। इससे देश कमजोर होगा।" लेकिन जब संघ की प्रबंध समिति के सदस्यों ने उनसे आन्तरिक परिस्थिति पर चर्चा की तो राज्यों में अहिंसक आंदोलन की छूट विनोबा ने दी।

इसी लक्ष्मि सम्मेलन में उन्होंने इन्दिरा जी से कहा था कि खाद्य समस्या, महंगाई और मुद्रास्फीति की समस्या को हल करने के लिए लगान अनाज में लिया जाये और सरकारी कर्मचारियों के वेतन का कुछ भाग भी अनाज में दिया जाये। उन्होंने पूर्ण नशाबन्दी, अश्लील फिल्मों पर पाबन्दी और परिवार नियोजन के लिए ब्रह्मचर्य के पालन का सुझाव दिया था।

तो इस तरह विनोबा की आस्था के स्तंभ हैं—विश्वास प्रेम, सबका सहयोग, अविरोध, सर्वसम्मति पर चलने वाला दलहीन प्रजातंत्र और गांव को प्रशासनिक, आर्थिक और राजनीतिक मामलों में बुनियादी इकाई के रूप में स्वीकृति। गांधी के बाद लोकशक्ति के आधार पर रचनात्मक आंदोलन विनोबा ने ही चलाया और दो बार पूरे देश की परिक्रमा की। वे गांधी के जमाने में भी 'आन्दोलनकारी' नहीं रहे। लेकिन रचनात्मकता पर इतना जोर देने के बावजूद शराब, सिनेमा के गन्दे पोस्टरों, तमिलनाडु में मठों द्वारा किये जा रहे अन्याय आदि के खिलाफ आन्दोलन करने की अनुमति उन्होंने दी।

अब सरकार और सत्तारूढ़ दल को पूरा अधिकार है कि वे अपने पक्ष में विनोबा का समर्थन प्राप्त करें। लेकिन उनके प्रयत्नों में कम से कम कुछ ईमानदारी और निष्ठा तो होनी चाहिए। क्या यह विनोबा के साथ अन्याय नहीं है कि उनके वाक्यों को संदर्भ से तोड़ कर प्रचार की सामग्री की तरह उनका उपयोग किया जाये? अगर सरकार और सत्तारूढ़ दल उनके बुनियादी सिद्धान्तों को स्वीकार नहीं करते, और तो और पवनार में दिये गये उनके सुझावों की जांच तक नहीं करते तो फिर उन्हें क्या नैतिक अधिकार है कि जे॰ पी॰ और बिहार के आंदोलन के खिलाफ वे विनोबा का उपयोग करें? विनोबा आस्थावान सन्त हैं, लेकिन सरकार और कांग्रेस की एकमात्र आस्था तिकड़म और जोड़तोड़ के अलावा क्या है?

जयप्रकाश नारायण बीस वर्षों से सर्वोदय आन्दोलन को समर्पित हैं और पूरा देश उन्हें सर्वोदय नेता कहता है। लेकिन जे॰पी॰ ने तो बिहार का आन्दोलन चलाने के लिए विनोबा का नाम कभी नहीं लिया। सर्वोदय के प्रमुख कार्यकर्ता इस अप्रैल में जब पटना में उनसे मिले तो उन्होंने साफ कहा कि आप लोगों को अगर कोई भी शंका हो तो आप जाकर पहले विनोबा जी से मिल लीजिये। सर्व सेवा संघ से उन्होंने नहीं कहा कि वह उनके आन्दोलन का समर्थन करे और उसने अब तक किया भी नहीं है। जे॰ पी॰ ने कहा—"मैं तो जा कर विनोबा जी से नहीं पूछूंगा कि बिहार में क्या करूं? यह उनके साथ अन्याय होगा क्योंकि वे यहां नहीं हैं और उन्होंने स्वयं देखा नहीं है कि यहां क्या हुआ है। मैं तो सलाह मांग कर उन्हें शर्मिन्दा नहीं करूंगा।

तो जिन्हें विनोबा और सर्वोदय आन्दोलन का समर्थन प्राप्त करने का पूरा अधिकार है वे जयप्रकाश नारायण, तो सन्त का उपयोग नहीं कर रहे हैं लेकिन सरकार और कांग्रेस कर रही है क्योंकि वे जयप्रकाश नारायण की राष्ट्रीय नैतिक हैसियत को एक तटस्थ सन्त के नैतिक अधिकार से निरस्त कर देना चाहती है।

और जो लोग अभी भी समझते हैं कि विनोबा जयप्रकाश नारायण और बिहार के आन्दोलन के खिलाफ हैं उनके लिए विनोबा की ये बातें उद्धृत कर रहा हूं जो उन्होंने सर्व सेवा संघ के मंत्री और अध्यक्ष को १० और ११ मई को कहीं:—

"जे॰ पी॰ जो भी काम करेंगे वह बाबा को मान्य है क्योंकि एक॰ जे॰ पी॰ सज्जन हैं दो॰ निःस्वार्थ और अच्छा ही काम करेंगे तीन॰ गलती दिखाई देने पर दुरुस्त करेंगे चार॰ इससे होने जाने वाला कुछ नहीं है। मसले उठते रहते हैं। चलते रहेंगे। मौन के बन एंड मौन में गा।"

(शेष पृष्ठ १६ पर)

नागरिकों के साथ दुश्मनों सा व्यवहार

सरकार द्वारा गया मे किये गये गोली-काण्ड की जाँच के लिये जयप्रकाशजी द्वारा नियुक्त की गई जाँच समिति ने अपनी रपट मे कहा था कि गया मे गोलियां बेमतलब चलाई गई। १८ और १६ मार्च को पटना मे जो कुछ हुआ उसकी जाच के लिए जयप्रकाशजी द्वारा नियुक्त की गई जाच समिति ने अपनी रपट मे कहा कि १८ मार्च को पटना मे हुई घटना मे नागरिको के साथ दुश्मनो-सा व्यवहार किया गया। १७ जून को एक पत्रकार परिषद मे पटना गोलीकाण्ड जाँच समिति की रपट प्रसारित करते हुए जयप्रकाशजी ने कहा कि अपेक्षित गवाहो की संख्या मे कमी रहने के कारण मरने वालो की संख्या का ठीक-ठीक पता नहीं चल सका। जाँच के क्रम मे केवल बीस व्यक्तियो की गवाही प्राप्त हो सकी। जाँच समिति के सदस्य थे—श्री रेवती रमण शरण, श्री राम पारसराय, श्री रासबिहारी सिंह, गोरखनाथ सिंह और श्री अंगद ओझा।

जाच समिति ने अपनी रपट मे कहा कि १८ मार्च को पटना मे जो कुछ घटित हुआ वह सन् १९४२ के बाद देखने मे नहीं आया। प्रशासन तन्त्र के लोग उस दिन इतने घबरा गये थे कि उन्हे विधान सभा को छोड कर और कहीं भी कानून और व्यवस्था की स्थिति से कोई मतलब नहीं रह गया था। ऐसा लगता था कि सार्वजनिक तथा निजी सम्पत्ति को पूर्णतया असामाजिक तत्वों की मर्जी पर छोड़ दिया गया हो। नागरिक प्रशासन, कार्यालयो तथा न्यायालयों मे कामकाज ठप्प सा हो गया था।

१८ मार्च को गड़बड़ कैसे प्रारंभ हुई इसका उल्लेख करते हुए जाच समिति ने बताया है कि उस दिन बढ़ती हुई कीमतों, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि नागरिक जीवन की समस्याओ की ओर राज्यपाल एवं विधायको का ध्यान आकर्षित करने के लिए छात्रो और युवको का दल विधान सभा और सचिवालय के पास पहुचा। वहा पहुचने पर उन लोगो ने राजभवन और सचिवालय के बीच के मार्ग पर धरना दिया। छात्रो मे पटना विश्व-विद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष और महासचिव भी धरना दे रहे थे। उस समय पुलिस ने धरना देने वाले छात्रो और सामान्य जनता पर बड़ी निर्दयतापूर्वक लाठी चार्ज किया। छात्र-नेताओ पर पुलिस ने विशेष बेरहमी से लाठी चार्ज किया। इसके बाद ही उपस्थित समूह ने पथराव प्रारंभ कर दिया। कई बार के लाठी-चार्ज और अश्रुगैस के प्रयोग के बाद अधिकारियो द्वारा गोली चलाने का आदेश दिया गया। स्थिति काबू के बाहर होती गई और अन्त मे नागरिक प्रशासन सेना के अधिकारियो को सौप दिया गया। सेना ने कर्फ्यू लागू किया और उसके बाद पटना की जनता को दर्दनाक यातनायें भुगतनी पड़ी।

सीमा सुरक्षा दल तथा केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस के जवानो के व्यवहार के बारे मे प्रतिवेदन मे कहा गया है कि वे अपना मानसिक सतुलन खो बैठे थे तथा अपने ही देश की जनता से ऐसा व्यवहार कर रहे थे जैसे वे दुश्मन की चौकियो पर पहुच गये हो। लगता था जैसे जगल के कानून को अमल मे लाया जा रहा था। जाच-समिति का कहना है कि यह समझ मे नही आता कि जब विधान सभा अहाते मे आग बुझाने वाले दस्ते तैनात थे तो विधान सभा के सचिव श्री विश्वनाथ मिश्र के निवास मे लगी आग को बुझाने के लिए उनका इस्तेमाल क्यो नही किया गया, जब कि विधान सभा के दक्षिणी फाटक से वह मुश्किल से सौ कदम की दूरी पर होगा।

'सर्च लाइट' और 'प्रदीप' जैसे अखबारो के दफ्तर को जलने से बचाने के सवाल पर समिति ने अपनी रपट मे कहा है कि कोतवाली थाने मे डेढ सौ से दो सौ तक सशस्त्र सिपाही थे, पर थाने मे उपस्थित अधिकारियो ने सर्चलाइट प्रेस को बचाने के लिए पुलिस भेजने से इन्कार कर दिया। जिला दण्डाधिकारी ने प्रभारी दण्डाधिकारी को आदेश दिया कि वह सर्चलाइट प्रेस जायें और इसे किसी भी कीमत पर जलने से बचायें, पर कोई नहीं गया और जिलादण्डाधिकारी के आदेशों की अवहेलना की गई। तब जिलादण्डाधिकारी स्वय वहा पहुंचे (लेकिन वे अकेले क्या कर सकते थे) आग बुझाने वाला पहला दस्ता ४ बजे शाम को वहाँ पहुंचा। पर इसके पास पानी नही था। इसके बाद रात १२ बजे आग बुझाने वाले तीन दस्ते वहाँ पहुचे, लेकिन इनमे से भी एक दस्ता पानी लाने के लिए लौट गया।

मुसल्लहपुर की शिक्षिका श्रीमती सुशीला लाल को प्रातः स्कूल से लौटते गोली लगी। उसी मोहल्ले के रामचन्द्र साहू को उसी शिक्षिका को घर पहुंचाने की कोशिश करने के दौरान गोली लगी। बारह वर्षीय बालक रामजी को भी दाहिने पैर मे घुटने के नीचे गोली लगी। अशोक को हथेली में गोली लगी और उसने एक अंगुली सदा के लिए खो दी। यह सब तब हुआ जब कि उस स्थल पर न तो कोई पथराव हो रहा था न ही आगजनी की घटना।

नागरिक जाँच समिति के समक्ष दो गवाहों ने बयान दिया कि १८ मार्च को नये सचिवालय के निकट दो व्यक्तियो को गोली लगी और उन्हे तुरन्त ही पास मे जलते हुए भवन की आग की लपटो में फेंक दिया गया।

सर्व सेवा संघ का अधिवेशन अब ८ से ११ जुलाई तक पवनार मे होगा। अधिवेशन की नयी तिथियो की सूचना देते हुए संघ के मंत्री ठाकुरदास बंग ने कहा है कि अधिवेशन मे विनोबाजी और जयप्रकाश नारायण दोनों भाग लेंगे। पूर्व निर्धारित विषयो के अलावा अधिवेशन मे जे० पी० के नेतृत्व मे चल रहे बिहार के जन आन्दोलन पर चर्चा होगी। विनोबा और जे० पी० की भेंट भी इन्ही तारीखो मे होगी और पूरी संभावना है कि वे दोनो मिलकर सर्वोदय आन्दोलन को एक नयी दिशा देंगे।

प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

यह क्रांति है मित्रो ! सम्पूर्ण क्रांति

पांच जून, गांधी मैदान पटना में युवकों से जयप्रकाश नारायण का आवाहन

अब मेरे मुंह से आप हुंकार नहीं सुनेंगे। लेकिन जो कुछ विचार मैं आपसे कहूंगा वे विचार हुंकारों से भरे होंगे। क्रांतिकारी के विचार होंगे। उन पर अमल करना आसान नहीं होगा। अमल करने के लिए बलिदान करना होगा, कष्ट सहना होगा, गोली और लाठियों का सामना करना होगा, जेलों को भरना होगा। जमीनों की कुर्कियां होंगी। यह सब होगा। यह क्रांति है मित्रों, और सम्पूर्ण क्रांति है। यह कोई विधान सभा के विघटन का ही आन्दोलन नहीं है। वह तो एक मंजिल है जो रास्ते में है। दूर जाना है। जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में अभी न जाने कितने मील इस देश की जनता को जाना है उस स्वराज्य को प्राप्त करने के लिए, जिसके लिए देश के हजारों-लाखों जवानों ने कुर्बानियां की हैं। जिसके लिए सरदार भगत सिंह, उनके साथी, बंगाल के सारे क्रांतिकारी साथी, महाराष्ट्र के साथी, देश भर के क्रांतिकारी साथी गोली के निशाना बने, फांसियों पर लटकाये गये। जिस स्वराज्य के लिए देश की जनता लाखों में बार-बार जेलों को भरती रही लेकिन आज सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष के बाद भी वह स्वराज्य नहीं आया है और जनता कराह रही है। भूख है, महंगाई है, भ्रष्टाचार है कोई काम नहीं जनता का निकलता है बगैर रिश्वत दिये। सरकारी दफ्तरों में, बैंकों में हर जगह। रेल का टिकट लेना है उसमें भी। हर प्रकार के अन्याय से जनता दब रही है। शिक्षा-संस्थाएं भ्रष्ट हो रही हैं। हजारों नौजवानों का भविष्य अन्धेरे में पड़ा हुआ है। उनका जीवन नष्ट हो रहा है। गुलामी की शिक्षा, कलम घिसने की शिक्षा दी जाती है। फिर शिक्षा पाकर दर-दर की ठोकरें खाना नौकरी के लिए। नौकरियां मिलती नहीं, दिन-पर-दिन बेरोजगारी बढ़ती जाती है। 'गरीबी हटाओ' के नारे जरूर लगते हैं, लेकिन गरीबी बढ़ी है पिछले वर्षों में। भूमिहीनता मिटाने के लिए सीलिंग के कानून, दूसरे कानून बने हैं, लेकिन पहले के मुकाबले में आज ज्यादा भूमिहीन हैं। जमीनें छिन गयी हैं छोटे-छोटे गरीब किसानों की।

मुझे आपसे कुछ बातें कहनी हैं। अपेक्षा लेकर आप आये हैं। हमारे छात्र बन्धुओं की अपेक्षा है, प्रदेश की जनता की अपेक्षा है कि आज के इस मंच से मैं कोई नया कार्यक्रम आगे के लिए दूं। तो मित्रो, यह कोई मेरा कार्यक्रम नहीं है। मैंने अपने छात्र बन्धुओं से चर्चा की। संचालन समिति में इसकी चर्चा हुई। उनमें से कई लोगों ने लिखके अपने सुझाव भेजे। बुद्धिजीवियों से चर्चा हुई। सभी चर्चाओं का निचोड़ हमने निकाला है, वह आपके सामने रखूंगा। आठ बातें मैं कहना चाहता हूं।

आज बड़ी भारी जिम्मेदारी हमारे कन्धों पर आयी है और मैंने जिम्मेदारी अपनी तरफ से मांगकर के नहीं ली है। तरुणों से, छात्रों से बराबर कहता रहा हूं। जब पहला हमने आह्वान किया था 'यूथ फार डेमोक्रेसी' लोकतंत्र में युवकों का क्या रोल हो, उसमें लिखा था, और उसके बाद बराबर कहता रहा हूं, संचालन समिति में बहस करता रहा हूं—हम बूढ़े हो गये, हमारी सलाह लीजिए, हम दूसरी पीढ़ी के हो गये। आप नई पीढ़ी के लोग हैं, देश का भविष्य आपके हाथों में है। उत्साह है आपके अन्दर, शक्ति है आपके अन्दर, जवानी है आपके अन्दर आप नेता बनिये। मैं आपको सलाह दूंगा। तो मित्रों ने कहा—जयप्रकाशजी, मार्गदर्शन से काम नहीं चलेगा। आपको नेतृत्व स्वीकार करना होगा। मैं टालता रहा, टालता रहा। लेकिन अन्त में जाते समय मैंने उनके आग्रह को स्वीकार किया। स्वीकार करते समय मैंने अनुभव किया अपनी अयोग्यता का और नम्रतापूर्वक यह स्वीकार किया। परन्तु छात्रों से भी, आप सबसे भी यह अनुरोध है कि नाम के लिए नेता मुझे नहीं बनना है। मुझे सामने खड़ा कर के, और कोई हमें डिक्टेट करे पीछे से कि यह करना है जयप्रकाश नारायण तुम्हें, तो नेतृत्व को काल मैं छोड़ देना चाहूंगा। मैं सबकी सलाह लूंगा (तालियां नहीं, बात सुनिये, बात समझिये) सबकी बात सुनूंगा, छात्रों की बात, जितना भी ज्यादा होगा, जितना भी समय मेरे पास होगा, उनसे बहस करूंगा, समझूंगा और अधिक-से-अधिक उनकी बात मैं स्वीकार करूंगा। आपकी बात, जन-संघर्ष समितियों की बात स्वीकार करूंगा, लेकिन फैसला मेरा होगा। इस फैसले को इन्हें मानना होगा, और आपको मानना होगा। तब तो इस नेतृत्व का कोई मतलब है, तब तो यह क्रांति सफल हो सकती है। और नहीं तो आपस के झगड़ों में, बहसों में, पता नहीं कि हम किधर बिखर जायेंगे और क्या नतीजा निकलेगा।

तो मित्रो, कुछ तो टिप्पणियां मैं करूंगा और कुछ कार्यक्रम आपके →

सामने रखूंगा। बहुत दिनों से सार्वजनिक जीवन में हूं। १६२१ मे जनवरी के महीने मे, इसी पटना कालेज में आय. एस सी. का विद्यार्थी था। हमारे साथ, हमारे निकट के साथी, वे सब छात्रवृत्ति पाने वाले थे। मुझे भी छात्रवृत्ति मिलती थी। सब फर्स्ट दर्जे के 'क्रीम' थे, उस समय के विद्यार्थियों में। और हम सब ने एक साथ गांधीजी के आह्वान पर असहयोग किया। असहयोग के बाद करीब डेढ़ वर्ष यों ही मेरा जीवन बीता, क्योंकि मैं साइंस का विद्यार्थी था। तो राजेन्द्र बाबू के सचिव या मन्त्री या मित्र या जो कहिये—मथुरा बाबू ने, उनके जामाता, बाबू फुलदेव सहाय वर्मा थे, उनके पास भेज दिया गया कि फुलदेव बाबू के साथ रहो और उनकी प्रयोगशाला मे कुछ प्रयोग करो और उनसे कुछ सीखो। महामना मदनमोहन मालवीयजी के लिए मेरे हृदय मे पूजा का भाव है, परन्तु हिन्दू विश्वविद्यालय मे भी दाखिल होने के लिए मैं तैयार नहीं था, क्योंकि सरकारी रुपया-सरकारी मदद विश्वविद्यालय को मिलती थी। स्वतंत्र नहीं था वह। पूर्णरूप से राष्ट्रीय विद्यालय नहीं था। तो मैं किसी विद्यालय में नहीं गया। बिहार विद्यापीठ में मैंने परीक्षा दी आय० एस सी० की। पास तो करना ही था, पास कर गया। उसके बाद बचपन में मैंने हाईस्कूल में स्वामी सत्यदेव के भाषण सुने, अमेरिका के बारे मे। मैं कोई धनी घर का नहीं हूं। थोड़ी सी खेती और पिताजी नहर विभाग मे जिलादार थे। बाद मे रेवेन्यू असिस्टेंट हुए। नान-गेजेटेड अफसर थे। उनकी हैसियत नहीं थी कि वह मुझे इंग्लैंड भेजें। तो मैंने सुना था कि अमेरिका मे खुद मजदूरी कर के लड़के पढ़ सकते हैं। मेरी इच्छा यह थी, आगे पढ़ना है मुझे। आंदोलन तो गिराव पर आ गया है—चढ़ाव पर था, उतर चुका है। इस बीच मैं अमरीका से कुछ शिक्षा प्राप्त करके आ जाऊं इसीलिए अमेरिका गया। कुछ लोग हैं पता नहीं कि उन्हें किस नाम से मैं पुकारूं, मुझे आज बरसों से गालियां देते रहे हैं। उस दिन तीन जून को कितनी गालियां मुझे दी गयी हैं। चूंकि अमेरिका मे मैं पढ़ा इसलिए मैं अमेरिका का दलाल बना हूं। 'निक्सन को दे दो तार जयप्रकाश की हो गयी हार' ये नारे लगाये बेशरम लोगों ने।

मित्रों, अमेरिका में खदानों मे काम किया, कारखानों मे काम किया, लोहे के कारखानों में, जहां जानवर मारे जाते हैं उन कारखानों मे काम किया। जब युनिवर्सिटी मे पढ़ता था, छुट्टियों मे काम कर के इतना कमा लेता था कि कुछ खाना हम तीन-चार विद्यार्थी मिलकर पकाते थे, और सस्ते में हम लोग खा-पी लेते थे। एक कोठरी मे कई आदमी मिल के रह लेते थे। रुपया बचा लेते थे। कुछ कपड़े खरीदने के लिए कुछ फीस के लिए। और बाकी हर दिन, रविवार को भी छुट्टी नहीं। दिन का खाना, एक घंटा रेस्त्रां मे, होटल मे—या तो बर्तन धोये या वेटर का काम किया, तो शाम को रात का खाना मिल गया, दिन का खाना मिल गया। किराया कहां से मकान का हमको आया? बराबर दो-तीन लड़के कितने वर्षों तक—दो चारपाई नहीं थी कमरेमें, एक चारपाई पर मैं और कोई-न-कोई साथ हमारा अमेरिकन लड़का रहता था। हम दोनो साथ सोते थे। एक रजाई हमारी होती थी। इस गरीबी मे मैं पढ़ा हूं। इतवार के दिन या कुछ ऑड टाइम मे, यह जो होटल का काम है, उसको छोड़कर के जूते साफ करने का काम किया शू शाइन पार्लर में। उससे लेकर के कमोड साफ करने का काम होटलों में। वहां जब बी०ए० पास कर लिया, स्कॉलरशिप मिल गयी—तीन महीने के बाद असिस्टेंट हो गया डिपार्टमेंट का, 'ट्यूटोरियल क्लास' लेने लगा तो कुछ आराम से रहा। इन लोगों से पूछिये, मेरा इतिहास ये जानते हैं, और जानकर भी मुझे गालियां देते हैं। अमेरिका मे विसकांसिन मे, मेडिजन मे, मैं घोर कम्युनिस्ट था। घोर मार्क्सवादी बना। स्टॉलिनवादी नहीं, वह लेनिन का जमाना था, वह ट्रॉटस्की का जमाना था। १६२४ में लेनिन मरे थे, और १६२४ में मैं मार्क्सिस्ट बना था। और दावे के साथ कह सकता हूं कि उस समय तक जो भी मार्क्सवाद के ग्रंथ छपे थे अंग्रेजी मे, हम लोगों ने पढ डाले थे। एक रूसी दर्जी था, रात को रोज उसके यहां हमारे क्ल[illegible] लगते थे। और वहां से जब भारत लौटा तो घोर कम्युनिस्ट बन [illegible] लौटा था। लेकिन मैं कांग्रेस मे दाखिल हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी मे [illegible] नहीं दाखिल हुआ? ये कहते थे—महात्मा गांधी देश के भाड़वलशा[illegible] का, भाड़वलदारों का, पूंजीपतियों का दलाल है। चौपाटी मे, बम्बई [illegible] भाषण हुआ जोगलेकर का कि गांधी दलाल है पूंजीपतियों का। [illegible] कांग्रेस पूंजीपतियों की संस्था है। मैंने जो लेनिन से सीखा था वह [illegible] सीखा था कि जो गुलाम देश हैं, वहां के जो कम्युनिस्ट हैं उनको हरगि[illegible] वहां की आजादी की लड़ाई से अपने को अलग नहीं रखना चाहिए। भ[illegible] ही उस लड़ाई के नेतृत्व, जिसको मार्क्सिस्ट भाषा मे 'बुर्जुआ क्लॉस' कह[illegible] हैं, उस क्लास के हाथ मे हो। पूंजीपतियों के हाथ मे उसका नेतृत्व हं[illegible] फिर भी कम्युनिस्टों को अलग नहीं रहना चाहिए, 'आइसोलेट' न[illegible] रहना चाहिए। उस समय मेरठ कान्स्पीरैसी चल रही थी। बड़े लो[illegible] जेल मे थे, लेकिन खोज-खोज कर मैंने उनको ढूंढा। घाटे को ढूंढ[illegible] मिरजकर को ढूंढा, पी० सी० जोशी को ढूंढा, बहस की इन लोगों [illegible] लन्दन में। क्लेमेंसदत्त, पामदत्त के भाई, पामदत्त बेल्जियम गये थे, [illegible] लिए उनसे तो मुलाकात नहीं हुई—लेबर मंथली के सम्पादक और विद्वा[illegible] वहां की कम्युनिस्ट पार्टी के क्लेमेंस दत्त से कितनी बात की। गल[illegible] रास्ता बना रहे हो आप, स्टॉलिन के गुलाम हो, रूस के गुलाम हो लेनि[illegible] को भूल गये। इसलिए इनके साथ नहीं गया—आजादी की लड़ाई [illegible] गद्दारी की इन्होंने। डांगे साहब ने सी० आई० डी० का काम किया [illegible] क्योंकि रूस मित्र था, अमेरिका। कहते इंग्लैंण्ड का 'पीपुल्स वार' था—हम लड़ रहे थे अपनी आजादी के लिए। गांधीजी जेल मे थे। नेहरू जे[illegible] मे थे, और यह लोग गद्दारी किये हुए थे, उस जमाने में और हमें कहते [illegible] यह लोग!

तो मित्रो, यह तो कहनेवाला नहीं था। यह भाड मे से एक पाइन्[illegible] नहीं था। लेकिन निकल गया, क्योंकि दिल भरा हुआ है। ऐसा दुखी है हृदय हमारा, नारे लगाते हैं—'पूंजीपतियों का कौन दलाल-जयप्रकाश जयप्रकाश।' अमेरिका का कौन दलाल-जयप्रकाश, जयप्रकाश।' किस दुनिया मे ये रहते हैं, पता नहीं।

पहली बात जो मैंने नोट की है आपसे कहने के लिए वह इस सरकार के बारे में है। आज से तीन दिन हुए, गफूर साहब मिलने आये थे। बहुत प्रेम से मिले। इसके दो दिन बाद चन्द्रशेखर बाबू मिलने आये—बहुत प्रेम [illegible] मिले। लेकिन प्रधानमंत्री से लेकर के, दीक्षितजी से नीचे तक के सब लोग मुझे डेमाक्रेसी का सबक सिखाते हैं। इनमे से किसी को कोई अधिकार नहीं है कि जयप्रकाश नारायण को लोकतंत्र की शिक्षा

प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

→

हैं। लेकिन वे जयप्रकाश नारायण को शिक्षा देने की हिम्मत करते हैं—और इनकी (नहीं, तालियां नहीं) और इनकी हरकत देखिये—शांतिमय प्रदर्शन, शांतिमय जुलूस, हजारों लोग आ रहे हैं, 'प्रदेश के कोने-कोने से छात्र आ रहे हैं, किसान आ रहा है, मध्यम वर्ग के लोग आ रहे हैं, कहीं रेलों से आ रहे हैं कोई ट्रक भाड़े पर लेकर के, डीजल अपना खरीद कर के, लेकर के आ रहे हैं। जहां-तहां रोका है इनको, लड़कों को पीटा है, गिरफ्तारी की है। अनायास, कोई कारण नहीं है और यहां हमसे आकर के सब मीठी-मीठी बात आई०जी० साहब, कोहली साहब और कमिश्नर और सब अफसर लोग करते हैं। जिद की कि इस रास्ते से जुलूस नहीं जायेगा, इसमें खतरा है। मुझे कोई खतरा दिखाई नहीं दिया, लेकिन जब उन्होंने कहा कि शायद जेल तोड़ने की कोशिश हो, और शायद उन्हें गोली चलानी पड़े तो मैंने कहा इसकी जिम्मेदारी मैं नहीं लेता हूं। आन्दोलन हमारा किसी दूसरे उद्देश्य से हो रहा है, बीच में यह 'डाइवर्जन' अटकाव हो जाये, रास्ता ही भटक जायें हमलोग, तो कहिये जो आप कहते हैं, वही मैं मान लेता हूं। कुछ बिगड़े भी होंगे छात्र लोग उधर से जाना था इधर से क्यों आये। हालांकि उन लड़कों को ले आये और एक दूसरी बिल्डिंग में खड़ा कर दे, जो लड़के हमारी छात्र संघर्ष समिति के यहां जेल में हैं—उनको दिखाने के लिए। मैं नहीं जानता हूं कि अंग्रेजी सरकार के जमाने में भी इस प्रकार का व्यवहार कभी हुआ हो। रेलों से उतार दिये गये, बसों से उतार दिये गये, टिकट था उनके पास। बेटिकट लोग हैं उनको उतार दिया अलग? यह मुजफ्फरपुर की रिपोर्ट अखबार में पढ़ी होगी। सारे डिविजन में क्या-क्या नहीं हुआ है। शर्म नहीं आती इन लोगों को। डेमोक्रेसी की बात करते हैं? लोकतंत्र में जनता को अधिकार नहीं है? जहां भी चाहें वे शान्तिपूर्ण सभा करें सकती? जहां भी चाहें शान्तिपूर्वक प्रदर्शन करेंगे? राज्यपाल के यहां जाना हुआ तो लाखों की तादाद में जायें विधान सभा के सामने जायें? उनको पूरा अधिकार है। हिंसा करें कोई तो दूसरी बात है। सब कहते हैं—हमसे मिलने आये पुलिस के उच्च अधिकारी ने कहा—बड़े उच्चाधिकारी ने कहा—नाम लेना यहां ठीक नहीं होगा कि मैंने दीक्षित जी के मुंह से सुना है कि जयप्रकाश नारायण नहीं होते तो बिहार जल गया होता। जयप्रकाश नारायण के बारे में ऐसा आप सोचते हैं, तो जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में यह प्रदर्शन और यह सभा होनेवाली है—क्यों लोगों को रोकते हैं आप? जनता से घबराते हैं आप? जनता के आप प्रतिनिधि हैं? किस की तरफ से शासन करने बैठे हैं आप? आपकी यह हिम्मत कि लोगों को पटना आने से रोकें? उनकी राजधानी है। आपकी राजधानी है? यह पुलिसवालों का देश है? यह जनता का देश है (तालियां) डूब जाना चाहिए इन लोगों को। ऐसी नीचता का व्यवहार मैं बहुत कठोर शब्दों का प्रयोग कर रहा हूं, मैं कठोर शब्द का प्रयोग नहीं करता। लेकिन यह नीचता का व्यवहार है। अगर कोई डेमोक्रेसी के दुश्मन हैं—तो ये लोग दुश्मन हैं, जो जनता के शांतिमय कार्यक्रमों में बाधा डालते हैं। उनकी गिरफ्तारियां करते हैं, उन पर लाठी चलाते हैं, गोलियां चलाते हैं। इस सरकार ने, इस विधान सभा की सम्मति से यह किया है क्योंकि विधान सभा की सम्मति से यह सरकार चल रही है अगर सम्मति नहीं है—तो कांग्रेस पार्टी बैठक कर के तय करे कि जितने काम १८ मार्च [illegible] इस मिनिस्ट्री ने किये हैं, उन सबकी हम निन्दा करते हैं, अमान्य करते हैं, हम दूसरी मिनिस्ट्री बनायेंगे। तो ठीक है—हमारी राय बदल जायेगी। कोई बोलता है? इनके आपस में झगड़े होते हैं, दिल्ली जाते हैं, यह काहे [illegible] लिए? इस बात के लिए नहीं कि मिनिस्ट्री गलत काम कर रही है। इस बात के लिए कि हमको मिनिस्टर बनाओ (हंसी) यह डेमोक्रेसी है? चुनाव में प्रचार हुआ कि कांग्रेस स्थायित्व लायेगी, स्थिरता लायेगी। संविद सरकारों ने जो किया वह सब आपने देखा है, बार-बार हुकूमत। अरे तुम्हारी 'मेजारिटी' है, और ये हालत है! दस महीने इस मिनिस्ट्री को हुए होंगे। कितने महीने इन्होंने काम किया है? कोई काम हो रहा है? जो हुकुम देते हैं मिनिस्टर लोग—चीफ मिनिस्टर हुकुम देते हैं, उस पर अमल नहीं होता। कागज पर वह रहता है। ठप्प है सारा एडमिनिस्ट्रेशन। कौन करेगा काम? सब आपस में झगड़ा है, दिन रात का। यह डेमोक्रेसी है!' इसको बदलना चाहती है जनता जयप्रकाश नारायण छात्र, युवक, क्योंकि जो भी आन्दोलन इस देश में आज उठेगा उसका नेता युवक रहेगा, छात्र रहेगा इसमें कोई सन्देह नहीं है हमको। जो बदलना चाहता है, तो वह प्रजातंत्र विरोधी है! वह दुश्मन हो गया! और ये लोग इसको डेमोक्रेसी कहते हैं। दिन-रात बैठकर के जो साजिशें करते हैं। जितने ये एम०एल० ए० हैं कांग्रेस के, जब टिकट बटा था, तो किसने टिकट बांटा था यह छिपा हुआ है बिहार से? किसने टिकट बांटा था? एक व्यक्ति ने बांटा था। उसके बारे में बिहार की जनता की राय मालूम है। मैं नाम नहीं लूंगा। आप सब जानते हैं वह व्यक्ति कौन है यहीं के, एक व्यक्ति के अधिकांश एम०एल०ए० हैं और उनमें से सबको करीब-करीब माहवार, महीना बंधा हुआ है। अगर कांग्रेस चाहती है कि अपनी शक्ति जनता के सामने अच्छी बनाकर रखे, अपना भला चाहती है तो उसको खुद चाहिए, इन्दिराजी को चाहिए कि इस विधानसभा को भंग कर दें। वह उनकी पार्टी नहीं है। वह एक व्यक्ति की पार्टी है जो रुपये के बल पर खड़ी हुई है।

अभी हाल में जब मैं वेल्लोर में था, तो हमारे परम स्नेही मित्र उमाशंकर जी दीक्षित पटना आये थे। उन्होंने मेरे सम्बन्ध में कुछ अच्छी बातें कहीं। साथ-साथ कई प्रश्न उठाये। मेरा उनका बहुत पुराना संबंध है। ४२-४३ का आंदोलन जो चला था उसमें वे अंडरग्राउंड थे बंबई में। बंबई में वे रहते ही थे, बंबई [illegible] अंडरग्राउंड नेता थे। और सदानंदजी ने, जो कि प्रेस के मालिक भी थे, उसकी स्थापना की थी उन्होंने, उनको 'ब्रेन आफ बाम्बे' कहा था। मुझे भी कोई बड़ी पदवी दी थी शायद, पर मैं अपनी प्रशंसा नहीं करूंगा। उस समय दीक्षितजी से हमारा परिचय और हमारी घनिष्ठता, मित्रता हुई। और अंडरग्राउंड जमाने की जो मित्रता होती है, ठोस होती है। चाहे वह कहीं रहें हम कहीं रहें, उसके बाद हम एक दूसरे के मित्र आज तक बने हुए हैं। इस मित्रता [illegible] चलते मैंने उचित नहीं समझा कि प्रेस के जरिये मैं दीक्षित जी का जवाब दूं। उनके साथ किसी विवाद में पड़ूं। इसलिए मैं चुप रहा हूं। आज भी मैं उनका जवाब देना नहीं चाहता। कार्यक्रम स्पष्टता करने के लिए जो कुछ उन्होंने बात कही है, प्रसंगवश उसकी कुछ चर्चा मैं करूंगा। उनको जवाब दूंगा, बात करूंगा जब उनसे मुलाकात होगी। उन्होंने मुझ से मिलने की बात कही है। अगर मेरा स्वास्थ्य साथ देता, तो मैं कल ही उड़के चला जाता दिल्ली। लेकिन मेरे लिए यह असम्भव है।

→

जून का पूरा महीना यहीं रहूंगा। स्वास्थ्य लाभ करता है। डाक्टर मुझे आने के लिए, मुझे यहां आने देना नहीं चाहते थे। उन्होंने मुझ से पूछा अलग कि जयप्रकाशजी अगर आप पांच तारीख के पहले नहीं पहुंचे तो क्या आपके दिल पर उसका बड़ा बोझ पड़ेगा? हमने कहा—बहुत बोझ पड़ेगा। यह सारा कार्यक्रम मुझे सामने रखके किया गया है। तब उन्होंने कहा—जरूर जाइये आप। क्योंकि मन का शरीर पर बहुत असर पड़ता है। इस प्रकार से उनकी अनुमति मिली। नहीं तो वे चाहते थे कि यह जो घाव है वह सूख जाय, अभी नहीं सूखा है, मैं समझता था सूखा है। लेकिन आज फिर डा० सिन्हा ने देखा तो एक दो बूंद फिर निकल आयी बहरहाल भरा हुआ है—मैं चला जाता, लेकिन जा नहीं सकता हूं। वह आयें तो खुशी से उनसे बातें करूंगा। लेकिन कुछ ऐसे मित्र हैं जिनके भाव अच्छे हैं। हमारे पुराने मित्र जो सोशलिस्ट पार्टी में थे या जो नहीं भी थे वह चाहते हैं कि जयप्रकाश नारायण में और इन्दिराजी में कुछ मेल-मिलाप हो।

तो मित्रो, मेरा किसी व्यक्ति से झगड़ा नहीं है। चाहे वे इन्दिराजी हों या कोई हों। हमारा तो नीतियों से झगड़ा है, सिद्धान्तों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है। जो काम गलत होंगे, जो नीति गलत होगी, जो सिद्धान्त गलत होंगे, जो पॉलिसी गलत होगी, चाहे किसी की भी हो मैं विरोध करूंगा, अपनी अकल के मुताबिक। हम लोग इनकी तरह नौजवान थे उस जमाने में लेकिन ये जुर्रत होती थी हम लोगों की कि बापू के सामने हम कहते थे कि हम नहीं मानते हैं बापू यह बात, और बापू में इतनी महत्ता थी, इतनी महानता थी कि बुरा नहीं मानते थे। फिर भी बुलाकर हमें प्रेम से समझाना चाहते थे, समझाते थे। तो उनकी भी आलोचना की है। उस जमाने में तो मैं घोर मार्क्सवादी था। बाद में लोकतांत्रिक समाजवादी था। बापू की मृत्यु के बाद, कई वर्षों के बाद १९५४ में मैं सर्वोदय में आया, गया में। जवाहरलालजी थे। एक बड़े भाई थे। मैं उनको भाई कहता ही था। उनका बड़ा स्नेह था हमारे ऊपर। पता नहीं क्यों मानते थे। मैं उनका बड़ा आदर और प्रेम करता था। लेकिन उनकी कटु आलोचना करता था। उनमें भी बड़प्पन था। अक्सर तो उन्होंने हमारी आलोचनाओं का बुरा नहीं माना, लेकिन पटना गोली-काण्ड पर जो मैंने बयान दिया था—मैं मानता हूं कि बहुत सख्त भाषा का मैंने प्रयोग किया था, उस पर बहुत नाराज हुए। लाल बहादुर जी ने काश्मीर के मामले में कुछ किया, मैंने उनकी भी आलोचना की। उनको तार भी दिया कि यह बहुत गलत काम आपने किया है। इससे काश्मीर के सवाल को हल करने में आपको दिक्कत होगी। थोड़े ही दिनों में, महीनों में वे चल बसे। देश का दुर्भाग्य है। इन्दिराजी से जो मेरे मतभेद हैं, वह जवाहरलालजी के साथ जो मतभेद थे उससे कहीं ज्यादा गंभीर हैं। जवाहरलालजी से परराष्ट्र के सम्बन्ध में थे, स्वराष्ट्र के सम्बन्ध में अधिक हमारा मतभेद नहीं था, तिब्बत के मामले में था, चीन के मामले में था, हंगरी के मामले में था और मैं कोई शर्म नहीं करता हूं मैंने उस समय आलोचना की, हंगरी के मामले में जो कुछ कहा, जवाहरलालजी को बाद में मानना पड़ा। तिब्बत के बारे में मेरी बात तो नहीं मानी उन्होंने, लेकिन जब चीन ने उनको धोखा दिया, जिस धोखे के कारण उनके हृदय को ऐसी चोट लगी कि दो बरस में चले गये, सभल नहीं सके, ऐसा घाव लगा। चीन ने आक्रमण कर दिया, कभी उम्मीद नहीं करते थे आशा नहीं करते थे। थोड़ी इनकी भी गलती है कोई परराष्ट्र नीतियों के संबंध में मतभेद था उनसे घरेलू प्रश्नों में नहीं था उतना मतभेद। लेकिन इन्दिराजी से तो घरेलू मामलों में है। जब दीक्षित जी ने कहा कि मैं जयप्रकाश नारायण के साथ बैठकर के भ्रष्टाचार के बारे में बात करना चाहता हूं मैं सहयोग करने को तैयार हूं। तो बाबा आपसे इस आन्दोलन के शुरू होने के पहले से, वर्षों से मैं भ्रष्टाचार के सवाल पर लिख रहा हूं, बोल रहा हूं, इंदिरा जी से मेरी बातचीत हुई, संसद के सभी सदस्यों से, लोकसभा और राज्य सभा दोनों के—हमने छपी हुई चिट्ठी भेजी जिसमें एक तो सुप्रीम कोर्ट और बुनियादी अधिकारों के बारे में जनता के मूल अधिकारों के बारे में और दूसरे हमने सुझाव दिये थे भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए और मेरे सुझाव नहीं थे वे, एक-दो थे बाकी संथानम् समिति की रिपोर्ट से लिया, प्रशासनिक सुधार समिति की रिपोर्ट से लिया, किसी और लेख से लिया, और जोड़कर के उनको रखा उनके सामने। दीक्षितजी को कुछ करना था, इन्दिराजी को कुछ करना था तो क्यों नहीं किया? दल बदल रोकने का विधेयक क्यों पड़ा सड़ रहा है छः वर्ष से? लोकपाल बिल क्यों दस वर्ष से लटका हुआ है? किसी के कुछ कहने की जरूरत है—जो बिल उन्हें पास करना होता है, जो उनके मतलब का होता है स्टीम रोलर कर के न सिलेक्ट कमिटी बनेगी, न पब्लिक ओपिनियन ली जायेगी, फर्स्ट रीडिंग बातों बातों में हो गई पहली रीडिंग दूसरी और तीसरी-बस पास हो गया बिल-एक्ट बन गया। चूंकि दो-तिहाई बहुमत है।

भ्रष्टाचार को रोकना, मैं नहीं कहता कि वे छः जो हमारे सुझाव हैं, मंजूर हो जाय तो भ्रष्टाचार रुक जायेगा। लेकिन बहुत उस पर अंकुश पड़ जायेगा। क्यों नहीं मानते? दीक्षितजी चाहते हैं तो उन पर अमल करायें। उसमें किसी पर मतभेद हो तो वह करें—और मैं ही अकेला हूं? कितने लोगों ने लिखा है, कहा है, सुझाव दिये हैं, कुछ कम हैं वे। किसी बात पर कुछ किया है? अब एक बात ले लीजिये। जिसके चलते बहुत ज्यादा भ्रष्टाचार राजनीति में है। वह क्या है? चुनाव का खर्चा। चुनाव का खर्चा—करोड़ों रुपया वे चुनाव पर खर्चा करेंगे। एक तरफ 'गरीबी हटाओ' का नारा लगायेंगे, समाजवाद का नारा लगायेंगे, और यह सब रुपया काले बाजारियों से आप इकट्ठा करेंगे। बिना हिसाब का धन करोड़ों रुपया, कोई हिसाब नहीं, कोई किताब नहीं। कांग्रेस की किताब में, हिसाब-किताब की किताबों में कहीं वह दाखिल नहीं, कैसे वह खर्च हुआ, किसने वह खर्च किया, कुछ मालूम नहीं। इस भ्रष्टाचार की जड़ खोदो। तो आज से नहीं वर्षों से मैं पुकार रहा हूं कि भई इस चुनाव की पद्धति में आमूल परिवर्तन होना चाहिए। चुनाव का खर्चा कम करना चाहिए। अगर चाहते हैं आप का गरीब उम्मीदवार खड़ा हो सके, मजदूर उम्मीदवार खड़ा हो सके, किसान उम्मीदवार खड़ा हो सके, गरीब पार्टी जो, गरीबों की पार्टी है वह अपने उम्मीदवार लड़े कर सके—सुनता है कोई? अब सुन रहे हैं कोई कमेटी-वमेटी बनायी है उन्होंने। वह भी जल्दी-जल्दी कुछ कर लेंगे, और ऐसे सुधार कर लेंगे जिनसे उनका ही और फायदा हो जाये। खुशी की बात है, आयें दीक्षितजी, बात करूंगा। लेकिन ये बातें तो सब के सामने है। आज से नहीं, बरसों से हैं।

एक मित्र कल मिले थे मुझे। दोनों के बीच-बचाव करना चाहते हैं। हम

→

प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

ने समझाया लोगों को कि बाबा उम्र में हमारी और इंदिराजी की बहुत फर्क नहीं है। लेकिन मैं और हमारी पत्नी प्रभावती—हम दोनों—उनको बेटी की तरह मानते हैं, क्योंकि जवाहरलालजी की वह बेटी हैं। छोटेपन से देखा है—हम जानते हैं, स्नेह है उनके लिए हृदय में। हमारा उनसे झगड़ा क्या है व्यक्तिगत? लेकिन जब उन्होंने भुवनेश्वर में भाषण दिया तो उसमें—मैं बस इतना ही कहूंगा—कोई राजनीतिक मतभेद की बात नहीं कही उन्होंने—राजनीतिक मतभेद अनेक हैं। जो मदद मांगी हमसे उन्होंने, मतभेदों के बावजूद वह मदद दी है हमने, उनको वे भी जानती हैं। १५ फरवरी को मेरी बात हुई, जब मैं अहमदाबाद से लौटा था। उन्होंने मदद मांगी थी कि पार्टियों का सहयोग दिलाने में हमें आप मदद कीजिए। बीमार पड़ा था मैं। बीमारी से थोड़ा सा अच्छा हुआ, अटलबिहारी वाजपेयीजी को बुलाया। इस ख्याल से कि जनसंघ घोर विरोधी है कांग्रेस का तो पहले इनसे साथ मिलें। मैं आपसे कहूं कि अटलजी की जो प्रतिक्रिया हुई वह सुनकर इतनी प्रसन्नता मुझे हुई। अटलजी ने कहा—जयप्रकाशजी, पार्टी एक चीज है, देश दूसरी चीज है। देश की स्थिति बहुत ही नाजुक है। और आप मार्गदर्शन करें आप हमें रास्ता दिखायें, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इंदिराजी की सरकार को हर संभव सहयोग देने को हम तैयार हैं। हमारा संघ देने को तैयार है। मैंने इंदिरा जी को चिट्ठी लिखकर भेज दी। उसके बाद फिर इलाज के लिए गया। फिर बीमार पड़ा। फिर अच्छा हुआ तो सोशलिस्टों को बुलाया। सुरेन्द्रमोहनभाईजी को।

बावजूद इसके कि उनके साथ हमारे राजनीतिक मतभेद हैं लेकिन भुवनेश्वर में कहा—जो आदमी अमीर लोगों से रुपया लेता हो उसको भ्रष्टाचार के खिलाफ कहने का क्या अधिकार है? मेरा नाम नहीं लिया। दिल्ली में आकर बिहार █ संसद सदस्यों के सामने कहा—जो बड़े लोगों के 'पॉश गेस्ट हाउस' यानी अमीरों के अतिथि घरों में रहता है वो आदमी, और जो उनके पैसों से सफर करता है उसको क्या अख्तियार है? तो मैं गांधीजी के चरणों की धूल के बराबर नहीं हूं। उनको भूल गये हो? दिल्ली आते थे तो कहां रहते थे? कभी भंगी कॉलोनी में तो कभी बिरला हाउस में। कभी किसी ने गांधीजी को कहा कि बिरला के रुपये पर बिक गये हैं? भ्रष्ट हो गये हैं? उसके बाद हमने एक ही बार जवाब दिया है। बस फिर नहीं। दोहराया नहीं है। वे दोहराती रही हैं। राजनीतिक मतभेद के हमारे मित्र करीब-करीब सब पार्टी में हैं—इस कांग्रेस पार्टी में भी, कम्युनिस्ट पार्टी में भी, जिसने हमें इतनी गाली दी। हमारे नजदीक जितने किशोरी भाई हैं—उतना हमारा छोटा भाई भी नहीं होगा। किशोरीप्रसन्न सिन्हा की बात कर रहा हूं जब हमारी पार्टी में थे तो हम थे दो निकटतम—लेकिन आज भी उनसे हमारा जो स्नेह है, वह किसी भाई से कम नहीं है। अब यह कहते हैं हमारे मित्र नाम नहीं लूंगा, कांग्रेसी संसद सदस्य हैं जो मेल मिलाप की बात, कि जयप्रकाशजी, दीक्षितजी मिलना चाहते हैं। मैंने कहा जरूर मिलूंगा। मैं नहीं जा सकता। वह जब आयें मिलूंगा, बात करूंगा। फिर कहा उन्होंने—जब तक बात आपकी न हो जाये दो महीने के लिए आन्दोलन स्थगित कर दीजिये। स्थगित कर दीजिए? सुनकर मैं स्तंभित रह गया। यह पढ़ा लिखा आदमी, समझदार आदमी, संसद का सदस्य ऐसी बात करता है। मुझे ऐसा मूर्ख समझता है? इस आन्दोलन को समझा ही नहीं है। क्यों यह शुरू हुआ, कैसे यह आन्दोलन शुरू हुआ, यह जयप्रकाश नारायण की जेब का आन्दोलन है, जब चाहे इसको निकालकर झण्डा सामने दिखा दें। आन्दोलन हो रहा है, जब चाहे झण्डा लपेट लें (तालियां) सिर्फ उमाशंकर दीक्षितजी से मेरी बात होगी, इसके लिए दो महीने आन्दोलन स्थगित कर दूं, ऐसी नासमझी की बात है। मैं तो सुनके हैरान हो गया। इस बातचीत से क्या निकलेगा, यह तो भगवान जानें, लेकिन बातचीत हुई नहीं। बातचीत करने वाले हैं। अरे बाबा बातचीत तो उस दिन करना चाहिए था जिस दिन मैंने घोषणा की यहां अपने बयान के जरिये, कि अब भ्रष्टाचार का मामला व्यक्तिगत रूप से मेरे सहन के बाहर है, इसलिए मैं स्वयं भ्रष्टाचार की लड़ाई लड़ने के लिए मैदान █ आया हूं। मैं समझता था कि इंदिराजी का तार मुझे मिलेगा या चिट्ठी मिलेगी कि आपके जैसा व्यक्ति जब 'करप्शन' के खिलाफ लड़ने को तैयार हो, तो मेरा पूरा सहयोग है। बजाय उस पूरे सहयोग के उन्होंने गाली दी है मुझे। तुम तो रुपया लेते हो अमीरों से, तुम करप्शन मिटाने की बात क्या करते हो? मेरा नाम नहीं लिया यह ठीक बात है, लेकिन प्रेसवालों ने लिखा "इन एन आबवियस रेफरेंस टु जयप्रकाश नारायण"। पी० टी० आई० के डिस्पैच में इन एन आबवियस रेफरेन्स टु जयप्रकाश नारायण' स्पष्ट है कि इशारा जयप्रकाश नारायण की तरफ था।

तो मित्रो, ये आन्दोलन किसी के रोकने से जयप्रकाश नारायण के रोकने से नहीं रुकनेवाला है। यह आन्दोलन क्यों हुआ है? छात्रों में जो खलबली है, उनकी जो छात्र की हैसियत से समस्याएं हैं जैसे शिक्षा है, शिक्षा के बाद डिग्री के बाद जो अन्धकार उनके सामने खड़ा है, जिस प्रकार कालेजों में इम्तहान होते हैं, सारा कुछ होता है—इस दोषपूर्ण शिक्षा के चलते। उसके अलावा—छात्रों का भी, आम लोगों का भी—महंगाई की चक्की में पिस रहे हैं, दिन रात महंगाई बढ़ती जाती है, यह भ्रष्टाचार है, रिश्वत देना पड़ता है। रिश्वतखोरी है, बेकारी बढ़ती चली जा रही है, अन्य लोगों की भी, पढ़े-लिखे लोगों की भी। अगर यह सब बातें न होतीं यह सब परेशानियां न होतीं तो हजार जयप्रकाश नारायण भी चाहते तो यह आन्दोलन खड़ा होता? हजार छात्र-संघर्ष समिति चाहती तो आन्दोलन खड़ा होता? जमाने की पुकार है यह। एक ललकार पर लोग इकट्ठे हो गये हैं, इतने लोग। जैसा राममूर्ति भाई ने कहा—कोने-कोने में यह फैल गया है। यह पढ़नेवाले समझते हैं ये थोड़े-से लोग हैं। एक आग है जो दिल में आग लगी हुई है। न जाने बिहार के कितने बच्चे बिलखते-बिलखते रात को सो जाते हैं कि उनके पेट में एक दाना नहीं। कितने लोगों को मैं देखता हूं कि दिन पर दिन शरीर कृश होता है। हमारे गांव का एक नाई है यहाँ बैठता है बेचारा। आया था तो उसको देखकर हैरान हो गया। "भई क्यों दुबले हो रहे हो रामसुभग ठाकुर?" 'सरकार खाने को नहीं मिलता है।' आश्चर्य होता है, कैसे लोग गुजारा करते हैं इस महंगाई में? क्या खाते हैं? कैसे खाते हैं? हमें हिसाब रखना पड़ता है। प्रभावती चली गयी, हिसाब रखना पड़ता है। मैं हैरान हो जाता हूं, एक दिन के खाने में इतना खर्च हो जाता है। मित्र आते ही रहते हैं। उनको चाय पिलाना, चाय के साथ नाश्ता देना-उसका कितना खर्च हो जाता है। अगर मित्रों की मदद न होती, 'मैगसेसे अवार्ड' का जो

→

सूद आता है साढे चार सौ रुपया महीना, वह नही होता, दो-तीन मित्र हैं-कोई बहुत बडे करोड़पति नहीं हैं-अगर इनकी मदद नहीं होती तो पता नही मैं भी, मुझे भी फाका करना पड़ता। महिला चर्खा समिति मे रहता हूं। खैर अपने बारे मे क्या कहूं।

तो मैं उन मित्रो से यह कह देना चाहता हूं कि यह आन्दोलन तो रुकनेवाला नही है। बात मैं करूंगा, लेकिन रुकनेवाला नहीं है। यह आन्दोलन तो अपनी गति से जायेगा।

एक बात मैं और कहूंगा—यह भी एक टिप्पणी है। प्रोग्राम-कार्य-क्रम तो बाद मे दूंगा। समय लग रहा है। इतना कष्ट कर के इतनी धूप मे आप लोग आये हैं, तो यहा तो जरा वातावरण अच्छा है इस समय, तो आराम से बैठ के बात सुन लीजिये। क्योंकि मैं नहीं जानता हूं जिस तरह से इनका व्यवहार हुआ है आज असफल बनाने के लिए इस सारे आयोजन को-उस पर से लगता है कि कितने पागल हो गये हैं ये लोग। मुझे भी गिरफ्तार कर के ले जा सकते हैं। 'हाउस अरेस्ट' मे रख सकते हैं। राजनारायणजी को यहा से निकाल दिया। फर्नाण्डीज को निकाल दिया। मैं तो बिहार का हूं मुझे कहा निकाल देंगे? कुछ-न कुछ करेंगे। जब आदमी पागल हो जाता है, समझता है कि बस वही एक आदमी है जो आग लगा रहा है। आग तो लगी हुई है, तुमको नजर नही आ रही है। घर मे तुम्हारे आग लगी है। हुकूमत करते हो, कुर्सियो पर बैठते हो, तो तुम्हारी कुर्सियों के नीचे आग सुलग रही है। (हसी।)

इन्दिराजी, दीक्षितजी, इन लोगों से लेकर के गफूर साहब और दूसरी कांग्रेस विरोधी पार्टियों ने इस आन्दोलन को लक्ष्य किया है! इन पार्टियो का षड्यंत्र है-इसका राजनीतिक उद्देश्य है, ये पार्टिया कांग्रेस को बदनाम कर के, *निकाल कर के जितनी जल्द हो, जीतना* चाहती है-नये चुनाव मे! अब आपने देख लिया सब पार्टियो का भण्डा-फोड़ हो गया। इन लोगो ने (यानि कुछ छात्र नेताओ ने) कहा था उस पिछली मीटिंग में पार्टियो के बारे में-तो मैंने इनको कहा था भाई तुम लोग बहुत ज्यादा बोल गये। जो पार्टियां तुम्हारी मदद कर रही हैं उनको और जिस पार्टी से तुम्हारी लड़ाई है, याने कांग्रेस से सबको एक तराजू पर रख दिया है। लेकिन मैं आज देखता हूं कि ये लड़के बहुत गलत नहीं कह रहे थे। इन पार्टियो के समर्थन का क्या मतलब है? जब बलिदान का मौका आया, जब विधानसभा के विघटन का मौका आया जब इन विधायकों के इस्तीफे का मौका आया तो कौन इस्तीफा देने को तैयार है? मैं समझता हूं कि जनसघ मे अधिक-से-अधिक लोग इस्तीफा देंगे। सोशलिस्ट पार्टी के थोडे आधे से भी कम ही लोग मालूम पड़ते हैं। ससोपा का भी ऐसा ही मालूम पड़ता है। संगठन कांग्रेस का तो अभी तक एक भी नही आया है। तार-केश्वरी सिन्हाजी हमे बता रही है क्या होगा भंग करने के बाद, पढ़ना चाहिए क्या होगा? इसका जवाब मैंने एक लेख मे लिखा है जो अंग्रेजी के अखबार इण्डियन एक्स-प्रेस' में छपा है, 'एक्सप्रेस' मे छपा है। यह आगे मैं कहनेवाला हूं, यहा मैं इस सदर्भ मे इतना ही कह देना चाहता हूं-यह सवाल मैंने ही उठाया और गुजरात के लड़कों से कहा कि विसर्जन! विसर्जन! विसर्जन! लेकिन विसर्जन के बाद क्या? डिजोल्युशन, डिजोल्युशन, डिजोल्युशन! व्हाट आफ्टर डिजोल्युशन? विघटन के बाद क्या होगा? फिर वैसा ही चुनाव होगा न? फिर वही लोग उम्मीदवार खड़े करेंगे न? तो फिर? यही चीज दोहराई जायेंगी न? इतिहास अपने आपको दोहरायेगा तो फायदा क्या होगा इससे? तो हमने रास्ता बताया उनको। लड़को को हमने कहा, भाई इस रास्ते को पुष्ट करने के लिए, एक विकल्प देने के लिए कि चुनाव का नतीजा अच्छा हो कम-से-कम आपको कालेज छोड़ के एक वर्ष तक आदोलन मे लग जाना चाहिए। और मैं इन छात्रो से और बाकी जो विद्यार्थी यहा बैठे हैं उनसे कहना चाहता हूं कि गम्भीरता से और पूरी ईमानदारी और बहादुरी से काम करना चाहते हो तो हाई स्कूलों की बात नहीं कहता, यूनिवर्सिटी-कालेज एक वर्ष तक बन्द रहेंगे एक बरस मे (तालियां) एक बरस में परीक्षाएं नही होंगी। एक बरस सिर्फ मैं कहता हूं। गाधीजी ने एक बरस में स्वराज्य कहा था। मैं आज कहता हूं कि एक बरस मे जनता का सच्चा राज्य होगा (तालियां)। एक बरस मे शिक्षा का सच्चा स्वरूप निकलेगा। ज्यादा तो मैं नहीं मागता हूं। गाधीजी ने तो सारा जीवन मागा था। जब हमने असहयोग किया था। मैं यह नही कह रहा हूं कि बराबर के लिए आप करो। एक बरस दो, नया देश बनाने के लिए नया बिहार बनाने के लिए।

देखो मित्रो, एक हजार बरस तक भारत का इतिहास बिहार का इतिहास था या बिहार का इतिहास भारत का इतिहास था। मौर्यों के जमाने से लेकर के अंतिम गुप्त सम्राट के जमाने तक। एक हजार बरस तक यह पाटलीपुत्र दुनिया का बड़ा-से-बड़ा एक शहर माना जाता था, संस्कृति का केन्द्र माना जाता था। ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र माना जाता था। आज यहा का यह हाल है! बिहार की ऐसी जरखेज जमीन, सोना उगलने वाली जमीन। बिहार मे गंगा जैसी नदी, कोसी जैसी नदी, गडक जैसी नदी, सदासलिला नदिया है, मिट्टी अच्छी है और हम भूखों मर रहे हैं। *क्यों? जनता का दोष है? नेतृत्व का दोष है। जिनके हाथो मे राज्य* रहा, उनका दोष है। बिहार मे खनिज पदार्थ जितना है इस देश के किसी अन्य प्रदेश मे नहीं है। बिहार सब से गरीब प्रदेश है सब से पिछड़ा हुआ प्रदेश है। शर्म नही आती है, लज्जा नहीं आती है इन लोगो को जो हुकूमत की कुर्सियो पर बैठे हैं? क्या किया है इन्होंने? खेती के विकास के लिए? अपने विकास के लिए बहुत कुछ किया है और लोगो के बगले बन गये हैं और जमीनें खरीदी गयी हैं और क्या-क्या किया है इन लोगों ने?

हा मित्रो, एक तो यह भ्रम फैलाया था इन्दिराजी से लेकर सब ने कि समूचे देश मे जो होता है वह सब विरोधी पार्टिया कराती हैं। *अब विरोधी पार्टिया एक आगे बढ़ नहीं रही हैं उनमे फूट हो गयी है,* अधिकाश लोग पीछे रह गये हैं। ये पार्टिया आदोलन चलायेंगी? क्रान्तिकारी आदोलन चलायेंगी? तो मैं कहना चाहता हूं इन्दिराजी से, दीक्षितजी से; गफूर साहब से उनके साथियो से पूरी जिम्मेदारी के साथ कि युवको का, छात्रों का, जनता का, साधारण सामान्य जनता का आदोलन है जयप्रकाश नारायण का नहीं, किसी पार्टी का नही है। यह वह समझ लेंगे तो शायद उनका भी भला होगा और बिहार का भी भला होगा, जनता का भी भला होगा नहीं तो धोखे मे अपने को रखेंगे जनता तो धोखे मे है नहीं, लोग तो कोई धोखे मे है नहीं।

→

प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

अब कार्यक्रम के बारे में बात आपसे करूंगा। इस समय हमारी पुरानी मांगें अपनी जगह पर हैं। भ्रष्टाचार, महंगाई, बेरोजगारी, शिक्षा में आमूल परिवर्तन ये चार बड़ी बातें और बाकी छोटी-छोटी बातें। ये सब अपनी जगह पर हैं। लेकिन १८ मार्च को जब आंदोलन शुरू हुआ, आप देख लीजिए विद्यार्थियों के 'छात्र संघर्ष समिति' के पुराने जो उद्देश्य थे उनमें मन्त्रीमण्डल का इस्तीफा नहीं है—उनमें विघटन नहीं है। यह क्यों आया? क्यों जुड़ा? १८ मार्च को, १९ मार्च को जो नालायकी साबित हुई। जगजीवन बाबू और दीक्षितजी मुझसे मिलने आये १९ की रात को और दोनों ने कहा 'जयप्रकाशजी, आपने जो कहा है वही हमने पार्टी में सुना है, वही हमने दूसरों से सुना है—उन्होंने कहा कि डेढ़ घन्टे तक पटने में कोई प्रशासन नहीं था। कोई राज्य नहीं था पटना गुंडों की कृपा पर था। मैंने कहा, इतना ही फर्क है कि डेढ़ घन्टा नहीं ढाई घन्टे का वह समय था।' पटना जांच समिति की रिपोर्ट मुझे कल रात को मिली है। कल या परसों पत्रकार परिषद कर के वह सबके सामने रख दूंगा। दो आदमियों ने—दो बड़े वकीलों ने खुद जाकर के विधानसभा से लेकर के वहां तक जो विश्वनाथ मिश्रजी का—विधानसभा के सचिव का—जो एक न्यायाधीश की इज्जत और हैसियत के व्यक्ति हैं—उनका जो भवन है, मापा कि कितनी दूरी है। कुल सौ गज है, सौ गज। वह जल रहा था और उसको वह सरकार बचा नहीं सकी। फायर ब्रिगेड वहां था, पुलिस घेरे हुई थी। न जाने हजारों की तादाद में विधानसभा को, लेकिन सौ गज पर जो उनका मकान था उसको नहीं। बाल-बच्चे उनके मर रहे हैं, वे चिल्लाते रहे। गेट तो कम-से-कम खुलवा दीजिए। वह भी नहीं हुआ। तो विधानसभा के कर्मचारी लोग नाराज होकर के कि हमारे सचिव के साथ ऐसा दुर्व्यवहार हो रहा है तो पिटाई की इन लोगों की। (हंसी) मन्त्री लोग भाग कर के इधर-उधर छिपे। ऐसी नालायकी कि 'सर्चलाइट' जैसा संगठन, जिसका बिहार की आजादी की लड़ाई [illegible] इतिहास से बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है, वह घन्टों जलता रहा। फायर ब्रिगेड पहुंचा, तो पानी नहीं उसके पास। कोई अधिकार है ऐसे मन्त्रीमण्डल को जिन्दा रहने का? कायर। तो जवानों ने कहा कि बस, अब तक यह हमारी मांग नहीं थी। यह मन्त्रीमण्डल जाना चाहिए। हमने स्वीकार किया, ठीक है। मैं भी मानता हूं कि जाना चाहिए। उसके बाद एक-एक कर के घटनाएं घटती गयीं। एक तो इस मन्त्रीमण्डल में आन्तरिक झगड़ा है। बिहार जल रहा है—बिहार भूखों मर रहा है—और इन लोगों को बस दिल्ली और पटना, दिल्ली और पटना कि हमें मिनिस्टर बनाओ, हमें मिनिस्टर बनाओ, यही झगड़ा चल रहा है। उलट-फेर, उलट-फेर। रुपये का बाजार गरम। एक के बाद एक इनके ऐसे-ऐसे कृत्य होते गये। जो लोग अहिंसा का काम करने वाले हैं, गांधी शांति प्रतिष्ठान के मंत्रियों को गिरफ्तार किया। बनारस से अमरनाथ भाई आये, उनको गिरफ्तार किया। तरुण शांति सेना के हमारे इन छात्रों को गिरफ्तार किया उन्होंने, यह कह कर के कि ये हिंसा करनेवाले हैं। किसी ने हिंसा-विंसा की नहीं थी। ये जो शांति-अहिंसा के नाम पर जो काम कर रहे हैं—भागलपुर के लिए अखबारों में छप गया कि गांधी शांति प्रतिष्ठान के दफ्तर में घातक हथियार थे, माने ऐसे हथियार थे जिनमें लोगों को मारा जा सकता है जान से। ऐसी झूठी खबरें छपवाईं। गिरफ्तारियां हुईं। दिल जलता रहा है। जांच समिति हमने वहां के लिए बनाई—मुजफ्फरपुर के लिए। भागलपुर की भी रिपोर्ट आयी है।

मैं पैदा हुआ छपरे जिले में। हमारे दो घर हैं—पितामह का और पिताजी का बनाया हुआ। वह गिर गया सरयू नदी की बाढ़ में। हम दियारे में हैं। हमारे एक तरफ गंगा बहती है, एक तरफ सरयू। ठीक बीचो-बीच में है। दोआबा कहलाता है। जमीन बलिया में बाप-दादों ने ले रखी थी। वहां मैं बस गया। बलिया का रहने वाला हूं, बलिया का निवासी हूं। लेकिन मेरा राजनीतिक जीवन गया में बीता है। सन् ३७ में श्री बाबू थे यहां मुख्य मन्त्री तो मैं वहां जिला कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष था—'राजेन्द्र भवन' या क्या नाम है, वहीं रहता था। स्वामी सहजानन्दजी सरस्वती के नेतृत्व में वहीं हम लोगों ने जमींदारी प्रथा का नाश हो' का नारा उठाया। वहीं रामेश्वर बाबू के साले थे। बाबू साहब के खिलाफ सत्याग्रह हुआ…जेल गये लोग। वहीं जब विनोबाजी ने भूदान आन्दोलन शुरू किया तो सन् ५४ में मैंने पार्टी छोड़ी और वहीं हमने अपना आश्रम बनाया। तो गया [illegible] इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है। गया में गोलीबारी हुई मैं सुन चुका था कि अब छात्रों ने, मेरे कहने से नहीं, अपनी मर्जी से, 'सरकार को ठप्प करेंगे' आन्दोलन चलाया—बड़ी अच्छी सूझ थी इनकी…और गया में तीन या चार दिन ऐसा ठप्प किया इन्होंने कि न एक दफ्तर चला, न पोस्ट ऑफिस चला और न एक बैंक चला। अधिकारी घबरा गये कि क्या करना चाहिए। तो साजिश की गयी और ऐसी परिस्थिति पैदा की गयी कि ख्वामख्वाह इन्होंने फायरिंग की। मैं एकदम से गया पहुंचा। बीमार था उस वक्त। वेल्लोर जाने की तैयारी थी। गया पहुंचा और गया में हर तरह के नागरिक, वकील लोग आये, शिक्षक लोग आये, डाक्टर लोग आये। विद्यार्थी तो और आये ही थे। नागरिक लोग आये, व्यापारी लोग आये। एक स्वर से सबने कहा कि जितनी आदर्श रीति से विद्यार्थियों में 'सरकार को ठप्प करेंगे आन्दोलन' चलाया गया में, उतना सबल और शांतिमय कहीं नहीं हुआ होगा। और यहां जो गोली चली है, जानबूझ कर चलायी गयी है। अब मैं वहां [illegible] लौटता हूं और थोड़े दिन के बाद यह अब्राहम साहब, हमारे पुराने मित्र हैं, बोर्ड आफ रेवेन्यू के सदस्य हैं, इनको भेजा गया जांच करने के लिए। ये इतने ऊंचे अफसर, मैं निष्पक्ष ही उनको समझता रहा हूं। लेकिन मैं हैरान हो गया कि आज शाम को गये और कल लौट के आये जांच कर के। अखबारों में रिपोर्ट आयी कि तीन जगह जो फायरिंग हुई थी, तीनों जगह उचित थी। मेरे बदन में आग लग गयी। यह सरकार झूठ पर उतारू हो गयी है। स्वराज्य की लड़ाई सत्य और अहिंसा के आधार पर गांधीजी ने लड़ी और जितना बन पाया जनता से, उस रास्ते पर जनता चली। आज जो सरकार चल रही है, वह झूठ और हिंसा पर चल रही है। सत्य और अहिंसा पर नहीं, असत्य और हिंसा पर चल रही है। इसके हाथ में एक ही ताकत है, जनता को दबाने की। पुलिस लाओ, हथियार लाओ और यह भी कहा गया कि जरूरत होगी तो टैंक भी। जनता के खिलाफ टैंक भी इस्तेमाल किया जायेगा, बताइये। तो बदन में आग लग गयी। लड़कों को मैं कहता रहा, जब विसर्जन की उन्होंने बात कही, हमने कहा—"किसी कारण से अच्छा हो या बुरा हो—हमारी किस्मत तुम्हारे हाथों, [illegible] सौंप दी है। मैं तुम्हारे साथ हूं। तुम जो फैसला करोगे, मैं उसका समर्थन करूंगा। लेकिन यह सोच लो बेटे कि तुम तैयार हो, तुम्हारे अन्दर यह ताकत है [illegible] विधानसभा का विघटन हो।" फैसला किया इन्होंने, माना हमने। लेकिन उस वक्त

→

बेदिल से माना। लेकिन 'अब्राहम कमिटी' के बाद—यह अंग्रेजों की कहावत—लास्ट स्ट्रा ब्रोन दी कॅमल्स बॅक—उसके बाद मेरा बिल्कुल इरादा पक्का हो गया कि इनको एक दिन यहां रहने की जरूरत नहीं। यह जनता के प्रतिनिधि नहीं है (तालियां) वोट लेकर आये होंगे। दीक्षित जी कहते हैं पांच वर्ष इनको रहने का हक है—हरगिज नहीं रहने का हक है, जब यह जनता के प्रतिनिधि नहीं रह गये-(तालियां)-अब जनता के दुश्मन बन गये, जनता के विरोधी बन गये हैं तो एक दिन रहने का इनको अधिकार नहीं है। कोई, नैतिक अधिकार नहीं है। कोई संवैधानिक प्रजातांत्रिक अधिकार नहीं है। इनको चाहिए कि फिर जाकर के जनता से पूछें, उनका फिर से वोट लें। इसलिए मैंने कहा, इनको जाना चाहिए। आप लोग पूछते हैं—हमारे लोग जाते हैं गांवों में पूछते हैं…यह महगाई, भ्रष्टाचार के लिए हुआ था, यह विधान सभा का विघटन क्यों? यह इसलिए कि इस सरकार ने जितने पाप किये हैं, उस पाप का आधार यह विधानसभा है। इसलिए कि उसका समर्थन है। उस पार्टी की सरकार है जिस पार्टी ने इन सब बातों को मान्यता दी है। नहीं तो मैंने पहले कहा कि अगर मान्य नहीं है तो वह कहे कि गया में गोलीबार ठीक नहीं हुआ था। पटना में गोलीबार ठीक नहीं हुआ था, विश्वनाथ मिश्रजी का मकान नहीं जलना चाहिए था, या इसको सजा दो। इनको निकालें, उसको निकालें। कहा है इन्होंने कभी? हिम्मत हुई है? हां में हां मिलाने वाले, जी-हुजूरी करने वाले, और राज के लिए दौड़ लगाने वाले…इसके बदले हमको मंत्री बनाने दो, उसको निकालो और हमको मंत्री मंडल दो…यही करते हैं। और यह बार-बार मंत्री-मण्डल बदलने के बाद भी जो नामी—जनता के अन्दर जिनका नाम है…ये लोग पक्के रिश्वतखोर हैं, पक्के भ्रष्ट लोग हैं, ज्यों-के-त्यों वहां पड़े हुए हैं। कुछ लोग निकाले गये, लेकिन जिनकी ताकत है, जिनको गफूर साहब निकालने की हिम्मत नहीं कर सकते, वे मौजूद हैं। इसलिए अब देर करने से क्या फायदा होगा? इस मंत्री मण्डल को जाना है, विधानसभा को जाना है। क्या करना होगा?

आज मैं आपके सामने दो-तीन बातें इसलिए रखता हूं। मैं यहीं हूं। अगर मैं गिरफ्तार नहीं हुआ तो उसमें जोड़ता जाऊंगा आपकी राय। देखता हूं किस तरह यह आन्दोलन चलता है। गांधीजी एक बार में देश के लिए एक कदम काफी है…(वन स्टेपएट ए टाइम इज इनफ फार नेशन) कहते थे। एक कदम हमारे लिए काफी है। मैं गांधीजी तो नहीं हूं, लेकिन मैं भी बहुत दूर तक सोच कर के सारी चीज सामने रख दूंगा, ऐसा भी मैं पसंद नहीं करता। परिस्थितियां बदलती हैं। आज जो मैं कहूंगा यह करना चाहिए, उसकी कल जरूरत नहीं पड़ेगी। मैं समझता हूं…तीन प्रकार के काम होंगे। एक तो यह काम हो—पटना में—कि विधानसभा में चार फाटक हैं—तो आज पांच तारीख है, छः तारीख को छुट्टी मनायें। कुछ विश्राम कर लें। बहुत मेहनत हुई, इतनी धूप में लोग घूमे। ७ तारीख से असेंबली के चारों गेटों पर सत्याग्रह हो। सत्याग्रह का रूप क्या हो—पिकेटिंग। पच्चीस हों, पचास हों-(तालियां)-हम सब गेटों पर खड़े हो जायें। विधायक साहब आयें, मंत्री साहब आयें—उनको रोकें कि आप नहीं जाइए। जाना है, हमारी पीठ पर से जाइए। हम आपको जाने नहीं देंगे, विधानसभा नहीं चलने देंगे-(तालियां)-गिरफ्तारियां हों, हम जेलों को भर देंगे। कई लड़के जेल जाने से डरते हैं, ये मैं लड़कों के सामने कहना चाहता हूं। जेल जाने से डरोगे, कभी तो तुम्हारी सफलता नहीं होगी। जेल से ही स्वराज्य पैदा हुआ है। जेल से ही तुम्हारे अधिकार प्राप्त होंगे, जनता के अधिकार प्राप्त होंगे, और सच्चा स्वराज्य मिलेगा। लाठी भी तुम पर चलायी जायेगी, बर्दाश्त करोगे। हर दिन दो सौ आदमी-पचास-पचास लोग हर गेट पर पर रहें। हर जिले से लोग आयें—हर जिले से टोली बांध के, पैदल यात्रा करते हुए। कम से कम २० हर जिले से लोग आते ही रहें—रोज आते रहें। पटना नगर के छात्र, पटना नगर के नागरिक। एक पार्टी की तरफ से मेरे पास संवाद आया है कि हर दिन के लिए डेढ़ सौ स्वयंसेवक हम लोग देंगे—(तालियां)—। बड़ा धन्यवाद है उस पार्टी को। नाम नहीं लेना चाहता चूंकि दूसरी पार्टी को ठीक नहीं लगेगा। अगर यह सत्याग्रह आगे चला, सत्याग्रहियों की संख्या अगर बढ़ी, तो इसको एक कदम और आगे हम ले जायेंगे और विधायकों का निवास-स्थान पर घेराव करेंगे। घर से उन्हें नहीं निकलने देंगे। उनके बाल-बच्चों को नहीं, उनकी बीवियों को नहीं। उनको नहीं निकलने देंगे।—(तालियां)—। विधानसभा का चलना असंभव कर देंगे। अब नारा यह नहीं रहेगा कि 'विधान सभा भंग करो'। नारा रहेगा 'विधान सभा भंग करेंगे'।—(तालियां)—। जो विधानसभा पर पलते हैं, जिनकी कमाई विधान सभा से है, वे भंग करेंगे विधान सभा? भंग करना होगा। 'भंग करेंगे'—भंग करायेंगे,—'भंग करेंगे'। यह नारा रहेगा। यह लोग चुनकर आयें हैं—जनता के वोट से। इनके हर चुनाव क्षेत्र में अगर सम्भव हो तो वोट लिया जाय। दो बक्से रखे जायं। हर मतदान केन्द्र पर दो बक्से। एक बक्सा यह हो जिसमें वह कागज डाला जाय जिसमें वोटर कहता हो कि 'हमारे प्रतिनिधि, हमारे यहां के विधायक पर हमारा विश्वास नहीं, वह इस्तीफा दे दे' और एक बक्सा वह जो कहता हो कि 'वह इस्तीफा नहीं दें'। 'हां' और 'ना', ये दो बक्से रहें और मतदाता आयें। और निष्पक्ष लोगों को हम वहां नियुक्त करेंगे कि देखो कोई गड़बड़ी नहीं हो, ठीक गिनती हो। एक दिन के अन्दर पूरे चुनाव क्षेत्र में चुनाव हो। जनता का मत लिया जाये इसका संगठन करना होगा। इसमें समय लगेगा जहां यह न हो सके, हस्ताक्षर लिये जायें। जो लोग चाहते हैं कि 'इस्तीफा दें' उनका हस्ताक्षर हो। जो लोग चाहते हैं कि नहीं इस्तीफा दें, वे हस्ताक्षर नहीं करें। बिहार की कुछ जगहों में यह काम हुआ है और देखा गया है कि पचपच्चे फीसदी वोट आया है इस्तीफे के पक्ष में। लेकिन व्यापक रूप से नहीं हुआ, यह व्यापक रूप से करना होगा। सभा करनी है, जनता को समझाना है और साथ-साथ यह करना है। इसके साथ-साथ तीसरी बात यह कि यह ऐलान कर देना है कि जो इस्तीफा नहीं देता है एक सप्ताह उनको समय और दे देता हूं आज से लेकर बारह तारीख तक दे देता हूं। बारह तारीख तक, जो इस्तीफा नहीं देंगे चुनाव में वह जहां से भी खड़े होंगे, जनता को हमारा आह्वान है जनता को अगर मैं आदेश देने के स्थान पर हूं तो मेरा आदेश है जनता उनको एक वोट न दे (तालियां) इन गद्दारों को (तालियां) उनको मालूम हो जाये कि जनता का विश्वास हमने खो दिया है। बैठे रहे वह विधानसभा में, अपनी महावारी बनाते रहें और मंत्री मैं बनूंगा और उसको निकालो, मुझे बनाओ, यह करते रहें और बिहार जलता रहे और बिहार मरता रहे और वह सड़ता रहे, वहगूमता →

प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

जे० पी०

रहे। एक वोट नहीं देना है और अब बिहार की सरकार ने यह घोषणा की यह भी इसीका एक अंग है कि जिन लोगों ने इस्तीफा दे दिया है वहां उप-चुनाव करायेंगे, कराइ लो, आप यहां से यह बात लेकर जाइये छात्रसंघर्ष समिति की तरफ से, जयप्रकाश नारायण की तरफ से कि एक-एक बूथ उपचुनाव का बीस हों कि तीस हों जितने भी हो बहिष्कार होगा। एक वोट भी कोई देने नहीं जायेगा (तालियां)। जिन लोगों ने इस्तीफा दिया है, वह लोग फिर चुनाव नहीं लड़ेंगे। जिस विधानसभा से इस्तीफा दिया उसी के फिर उम्मीदवार होंगे? जनता क्या कहेगी उनको? विधानसभा से इस्तीफा देकर आये हो फिर लड़ रहे हो? ढाई वर्ष तक तपस्या करो, तप करो, जनता की सेवा करो। यहां बैठकर क्या करते हो? किसी न किसी की पैरवी करते हो और क्या हो सकता है आपसे? एक वोट 'एलेक्शन' 'बाई एलेक्शन' में नहीं पड़े इसकी कोशिश होनी चाहिए और एक कांग्रेस ओ० के संसद सदस्य हैं जो बिल्कुल सोलह आना पक्ष में हैं इन्हीं के संगठन कांग्रेस के नाम ही ले लेता हूं श्याम बाबू श्यामनन्दन मिश्र जो रात कह रहे थे, आज वे करायें। उपचुनाव कर में एक वोट नहीं पड़ेगा। यह यहां से आप अपने-अपने इलाकों के लिए लेकर जाइये गफूर साहब उपचुनाव करा के देखें। देखा जाये उपचुनाव में किसको वोट पड़ता है। अगर यह जन आन्दोलन है, जनता की यह आवाज है तो कौन वोट देने आयेगा? किसकी हिम्मत होगी जनता के साथ द्रोह करने की?

यह विधानसभा के विघटन की बात हुई। आवश्यकता पड़ेगी तो इसमें और तीव्रतर कार्यक्रम जोड़ा जायेगा।

यह अगर संघर्ष है तो फिर यह पुलिस के जवानों को पुलिस में जो कम तनख्वाह तीन चार सौ, पांच सौ मिलनेवाला है, क्या हुआ, उसकी हैसियत सौ रुपये की है अब! उसको पांचसौ रुपया मिलता है पांचवा हिस्सा है सौ रुपया है पुराने रुपये के बराबर, परिवार है, बेटे को पढ़ाना है, बेटी की शादी करनी है तुम नहीं समझते हो। नासमझ हो, हुकूम पालन करो। जो तोड़फोड़ करता हो उसको पकड़ो कि हर जगह गोली चलाओ? यह तो खुशी की बात है बी०एस० एफ बिहार की बार्डर सिक्यूरिटी फोर्स के वे डायरेक्टर जनरल थे वे रुस्तमजी जैसे एक व्यक्ति थे जिन्होंने एक सुझाव दिया उसका मैंने समर्थन भी किया कि यह राइफलें नहीं चलनी चाहिए हमारे देश के लोगों के ऊपर। यह तो लड़ाई लड़ने की चीज है। नयी राइफल बनी है, नई गोलियां बनी हैं। रुस्तमजी को जितना भी धन्यवाद दिया जाये, अच्छा है। बड़े मानवीय व्यक्ति हैं और उन्हीं के नीचे यह जवान हैं, जो इस तरह से व्यवहार करते हैं। और हमारे मित्र ही हैं अब कल बोल दिये कि टैंक की जरूरत होगी तो टैंक भी हम निकाल देंगे। अरे बाबा, टैंक तो आप सीमा पर ले जाओ न, दुश्मनों के खिलाफ। अपने ही घर के लोगों के खिलाफ टैंक निकाल कर दिखाओगे? किसको डराते हो राजदेव बाबू को कह रहा हूं जो हमारे मित्र हैं जिनके लिए हमारे हृदय में आदर है जो आय०जी०, बी०एस०

एफ० हैं और यह मानते है कि हमको हटा दिया जाये। हमारे जवानों को तो सीमा पर लड़ाई की शिक्षा है। वहा तो हम शिक्षा ही देते हैं कि ढेला भी गिरे तो एकदम से गोली चला दो। वहां दुश्मन का मुकाबला करना है। यहां हमारे अपने घर के लोगों का मुकाबला करने के लिए भेज दिया गया है। हमे यह काम नहीं लेना चाहिए, लेकिन क्या किया जाये ? इस बिहार सरकार को बिहार की अपनी पुलिस पर कोई भरोसा नही है। लेकिन आप लोगो को बाहर से बुलाया गया है। हमारे देश की सेना है, देश की जितनी भी इज्जत, उन्होंने बुलन्द की है हमारी सेना ने, और हमारे इन बहादुर सिपाहियों का अपने देश के लोगो पर गोली चलाने के लिए इस्तेमाल किया जाय! इससे कोई शर्मनाक बात हो सकती है? क्या गोली और लाठी और जेल के सिवा और कोई तरीका नही है जनता के आन्दोलन से निपटने के लिए और समझने के लिए? क्या यह मांगे ऐसी नही हैं जिनको ये मान्य कर सकते हैं ?

तो मित्रो, जो कुछ मैंने आपसे कहा, अगर उसे समझा आपने तो ध्यान मे आया होगा कि यह सम्पूर्ण क्रान्ति का आन्दोलन है। इसके कई पहलू हमने छोड़ दिये हैं नैतिक क्रांति का पहलू, शिक्षा मे क्रान्ति का पहलू। लेकिन यह सम्पूर्ण क्रान्ति हमारी पहले रह चुकी है रस्म, रिवाज तिलक दहेज यह सारा जो नौजवान लोगों के बेटो, इनके बाप लोग बेचते हैं जैसे घोड़े बेचे जाते हैं, तो ये सारे नैतिक सुधार क्या क्रान्ति नहीं हैं ? जीवन हमारा बदल जाये, फिर बिहार उस जगह पहुंच जाये जिस जगह सम्राट अशोक के जमाने मे था (तालिया)

मित्रो, अभी-अभी आचार्य राममूर्तिजी एक बहुत दुखदायी समाचार आपको देने वाले हैं। मैं स्वयं देता, लेकिन उनका देना और मेरा देना एक ही आप समझियेगा। मैं कुछ टाल नही रहा हू। बैठिये आप।

आचार्य राममूर्ति : आप बैठे रहिये दो मिनट की बात है। आप मे से शायद कुछ लोगो ने सुना होगा कि जब हम लोगो का जुलूस राजभवन से वापिस आ रहा था तो 'इन्दिरा ब्रिगेड' के दफ्तर के सामने जब भीड़ पहुची, तो वहा कुछ घटना घटी और उस घटना मे जो हमारे कुछ नवयुवक साथी घायल हुए, उनमे से एक यहाँ खड़ा है-और भी हैं-कुछ और युवक हैं जिनको चोट लगी। उसके बारे मे जिला न्यायाधीश साहब ने जो चिट्ठी लिखी है वह चिट्ठी मैं पढ रहा हू। बैठ जाइये, सुन लीजिये यह चिट्ठी। जिला न्यायाधीश साहब की लिखी हुई चिट्ठी है-अंग्रेजी मे पहले पढ रहा हूं, फिर हिन्दी मे आपको समझा दूंगा। जयप्रकाशजी के नाम यह पत्र है :

आदरणीय श्री जयप्रकाशजी : आज शाम को जुलूस मे चलने वाले लोगो पर कुछ गलत गोली चलाई, उसको सुनकर आप और सबको, *पटना के सभी निवासियो* को बहुत सदमा पहुंचा होगा।

जब यह घटना घटी, इन्दिरा ब्रिगेड के कार्यालय मे जिन लोगो ने, इन सरकार के अधिकारियो ने जा कर के और तलाशी ली तो क्या पाया वहां ? छः लोगों को मय हथियारो के साथ रेड हैंडड माने रगे हाथों पकड़ा। एक बन्दूक मिली और बारह कारतूसें, और छः खोलें मिली (कारतूसों की जो चल चुकी थीं, लेकिन खोले पड़ी थी।)

दो आदमी, जिनको ज्यादा चोटें लगीं उनकी मरहम-पट्टी हो रही है, उनमे एक पुलिस का ड्राइवर भी है।

जयप्रकाश नारायण : आचार्य राममूर्ति ने कलक्टर साहब श्री दुबे का पत्र पढकर सुनाया। एक दुर्घटना हुई थी, कुछ समय पहले-डाक बगले मे-एक कमरे मे बम फूटा था। दो दिन उसकी खबर छपी-अखबारो मे। उसके बाद अंग्रेजी मे जो शब्द हैं उसे हशअप कर दिया गया। क्यो हुशअप कर दिया, पता नही।

पटने शहर मे एक अफवाह है जो लोग इस मकान मे थे, वह इन्दिरा ब्रिगेड के लोग थे। अब जानता नही मैं, लेकिन अफवाह है-यह बात तो सही है-अफवाह नहीं है। फिर दो दिन के बाद सुना नही गया कि उस पर क्या कार्रवाई हुई है। अब यहां जिस स्थान से यह गोली चली वह एक विधायक साहब हैं-फुलैना राय साहब, उनका फ्लैट है और उसी फ्लैट में इन्दिरा *ब्रिगेड का दफ्तर है। सरकार कहती है, मैं* कुछ नही जानता हू-बोर्ड लगा है ऐसा ये मित्र हमारे कहते हैं-इन्दिरा ब्रिगेड का दफ्तर है वहाँ और कांग्रेस के एक विधायक साहब हैं। पुलिस ने रेड किया तो रगे हाथों पकड़े गये, कुछ लोग भाग गये। क्या-क्या वहा से बरामद हुआ, यह सब सुना आपने। हम, ह कांग्रेस के मित्र लोकतंत्र की शिक्षा दे चाहते हैं, मैं दुबेजी से कहूंगा, भाई० जी साहब से कहूगा, कोहलीजी से कहूंगा-कि को शिक्षा देनी चाहिए? जयप्रकाश नाराय को, छात्र संघर्ष समिति को, बिहार क जनता को, बिहार के युवको को और छात्र को देनी चाहिए ?

एक बात मुझे कहनी थी। दूसरी या कहनी थी कि इस खबर को सुनकर के आ उत्तेजित नही हो-खासकर छात्र उत्तेजि नहीं हो ऐसा नही कि आप धारा मे बह जायें उस स्थान पर और वहा जाकर आग लगादें। अगर ऐसा आप करेंगे, तो इस आन्दोलन को आप धक्का देंगे, इसको नुकसान पहुंचायेंगे। उससे कुछ नहीं होगा। जो कुछ सरकारी कारवाई होगी, सरकार करेगी। कितनी करेगी, मैं नही जानता। अगर वास्तव मे वह इन्दिरा ब्रिगेड के लोग हैं, जिसको भाई राममूर्तिजी 'मलिका ब्रिगेड' के लोग कहते हैं, उनके लिए क्या कहा जा सकता है ? उनको सात खून माफ होंगे शायद। कलक्टर साहब की या गफूर साहब की हिम्मत न होगी कोई कारवाई करें भगवान जाने।

लेकिन मित्रो, यह सब पाप का घड़ा भरता जा रहा है। भरने दीजिये-टूट जायेगा आपसे आप, फूट जायेगा। (-तालियां-) आपसमे एकता होगी। ठीक है हमे आप वचन देते हैं ? (-हां, हां-।) अच्छी बात है। आपका बहुत धन्यवाद।

अगले अंक में पढ़िये

इलाहाबाद में २२ व २३ जून को आयोजित हो रहे अ० भा० युवा सम्मेलन की रपट।

प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

क्रांति की भूमिका सुरक्षित है

बाबूराव चन्दावार

सहरसा का अन्तिम अभियान अब समाप्त हो चुका है। ग्रामस्वराज्य की दिशा में सहरसा से तथा सहरसा मे नई व्यूह रचना करने के लिए नया मोड मिले ऐसी अपेक्षा देशभर के साथियो की थी, लेकिन गुजरात तथा बिहार मे राजनैतिक स्तर पर जो परिवर्तन होने लगे, उनकी तरफ साथियो का ध्यान आकृष्ट होना अत्यंत स्वाभाविक था। विशेषकर जयप्रकाशजी की इस दिशा मे एक भूमिका बन जाने के बाद हमारे मे से कोई भी साथी उसमे प्रभावित हुए बिना रह नहीं सकता था। जयप्रकाशजी के कारण भारत के राजनैतिक स्तर पर एक नये मन्थन का आरम्भ हो चुका है। लेकिन इसके साथ साथ कुछ लोगों मे मूल भूमिका मे परिवर्तन आने की आशका भी उठने लगी है। क्योंकि परिवर्तन के लिए जो रैडिकल प्रतिमा हमारी आजतक बनी थी उसे विकृत करने की नई परिस्थिति हमारे भूमिका-परिवर्तन से हमने बनायी है यह दबी आवाज मे कुछ साथी आपस मे बोलने लगे हैं। कई सदर्भों मे विनोबाजी के किये गये निवेदनो का सहारा लेकर कुछ साथियो ने विनोबाजी तथा जयप्रकाशजी की भूमिका मे विभेद देखना शुरू कर दिया है। इससे सर्वोदय जगत में दो भिन्न धाराओं का आभास पैदा हो सकता है। क्रान्तिगामी परिवर्तन लाने की दिशा मे बढ़ने वाले किसी भी आदोलन मे ऐसी स्थिति कभी ना कभी आती है। इससे आदोलन के भविष्य पर कोई बुरा असर पडेगा यह कहना मेरी दृष्टि से ठीक नही है। आंदोलन तभी आगे बढ़ सकता है जब उसमे मुक्त विचार मन्थन करने की गुजाइश होती है। कितना भी महत्वपूर्ण आंदोलन क्यो न हो उसमें यदि मुक्त विचार-मन्थन नही होता है तो वह आगे जा कर मृतप्राय हो जाता है। इसलिए किसी भय को मन में रखकर सोचने की आवश्यकता नहीं है।

जब हम विचार मन्थन के स्तर पर आ जाते हैं तब पूर्वाग्रह से हटकर सोचना जरूरी हो जाता है। इसलिए किसी के बारे मे अनावश्यक विनय के प्रदर्शन को रोकना भी चाहिए। क्योकि आदोलन को गति दिलाने मे यह विनय बाधक हो सकता है। इस विनय मे श्रेष्ठ व्यक्तित्व का दबाव अधिक काम करता है। और श्रेष्ठ व्यक्तित्व हर समय आदोलन को सही दिशा देता ही है ऐसी बात नही है। कभी यह व्यक्तित्व गलत दिशा भी देता है या दे सकता है। इसका आधार इतिहास मे मिलता है। व्यक्तित्व के दबाव से सोचने की मुक्तता मे रुकावट आती हो तो उसका आदोलन के भविष्य पर अनुचित असर पडता है। इसे स्पष्टता से कहने की आवश्यकता इसलिए है कि हमारे निर्णयो मे आजकल सर्वसम्मति का अभाव दिखने लगा है। इससे निर्णय के कार्यान्वय मे बाधा पैदा होने लगती है। यह स्थिति किसी भी दृष्टि से स्वस्थ नही कही जा सकती।

सहरसा अभियान के बाद ग्रामस्वराज्य की वास्तविकता को लेकर साथियो को एक साथ बैठ कर सोचना चाहिए था। ऐसा किये बिना ग्रामस्वराज्य की उपयुक्तता के बारे मे शकाए पैदा करना उचित नही था। लेकिन परोक्ष या अपरोक्ष तरीके से कुछ साथियो ने शकाएं खडी की हैं। और जयप्रकाशजी की लोकस्वराज्यवाली बात इसी सदर्भ मे कुछ मित्रो ने महत्वपूर्ण मान रखी है। लोकस्वराज्य अपनी जगह पर महत्वपूर्ण है। लेकिन ग्रामस्वराज्य के बारे मे शका पैदा करके उसे महत्वपूर्ण न कहना किसी भी दृष्टि से उचित नही माना जा सकता। इसमे ग्रामस्वराज्य तथा लोकस्वराज्य दोनो के साथ न्याय करना संभव नहीं हो सकता और एक भ्रम पैदा होता है। इस भ्रम को फैलाने मे गुजरात तथा बिहार की राजनैतिक परिस्थिति ने सहायता की है जिसका विश्लेषण अभी ठीक ढंग से किया जाना किसी के लिए भी सम्भव हुआ नहीं है। इस देश मे जो परिस्थिति बनी है, वह लोकतत्र को शक्तिशाली नही बना सकती है, इससे किसी का मतभेद हो नही सकता। लेकिन लोकतन्त्र की शक्ति कैसे बनेगी? यह प्रश्न अपनी जगह पर से हटा नही है। ग्रामस्वराज्य की बुनियाद पर लोकतन्त्र को खडे करने से लोकतन्त्र को शक्ति मिलेगी और लोकतत्र के उचित परिणाम निकलेंगे यह हम मानते है। इसलिए मानते हैं ससदीय पद्धति से लोकतंत्र की बुनियाद बनी नहीं है यही वजह है कि इस पद्धति से लोकतत्र को शक्ति नही मिल रही है। गुजरात तथा बिहार की नई राजनैतिक परिस्थिति लोकतत्र की बुनियाद बनाने के लिए कहा तक सहायता दे सकती है इसे सोचना जरूरी है। क्योंकि बुनियादी सवालो से हट कर किसी सुधारवादी कार्यक्रमो मे जुट जाने से हमारी रैडिकल प्रतिमा भग होने से हमारा आदोलन बुनियाद से उखड सकता है।

दड शक्ति से भिन्न हिंसा विरोधी तीसरी शक्ति के निर्माण में सर्वोदय समाज के साथियो ने जो योगदान दिया है उसका महत्व कभी भी कम नहीं हो सकता। बुनियादी परिवर्तन की दिशा इससे मिली है। किये गये प्रयासो का उदारता तथा तटस्थता से मूल्याकन करना आवश्यक है। तीसरी शक्ति के निर्माण की ग्रामदान एक पद्धति रही है। इस पद्धति को बदलना आवश्यक लगता हो तो नई पद्धति क्या होगी? विशिष्ट राजनैतिक परिस्थिति से प्रभावित न होकर हम तीसरी शक्ति के निर्माण की प्रक्रिया को छोड नही सकते। गुजरात तथा बिहार के आदोलनो से तीसरी शक्ति के निर्माण मे सहायता हो सकती है इसे मैं मानता हू। लेकिन राजनीति के सामान्य परिवर्तन से जो बुनियाद को छूता न हो महत्व देना उचित नही है। व्यवस्था के अन्तर द्वद्व प्रखर होने लगते हैं तब स्वाभाविक तरीके से व्यवस्था टूटने लगती है। इस स्थिति के सम्पूर्ण रूप से प्रकट होने की आवश्यकता इसलिए है कि इसके बिना कुल व्यवस्था बिना बुनियाद के तथा मानसिक विकृतियो से बनी है—यह किसी की समझ मे नहीं आता। तो अन्तर द्वंद्वो के प्रकट होने से

व्यवस्था टूटेगी। लेकिन आगे जाकर विश्वास के आधार पर नये सम्बन्ध बनाने से तथा विकसित करने से एक अच्छा सुसंस्कृत समाज बन सकता है। यह आशा आज की व्यवस्था टूटने से बनती है। इसलिए जिस राह को पकड़ने से सुसंस्कृत समाज बनाने की सम्भावना है उस तरफ चलने की प्रक्रिया हमें चलानी चाहिए। ग्रामदान की पद्धति से ग्रामस्वराज्य को स्थापित करने का कार्यक्रम ऐसी ही एक प्रक्रिया है। इस पर हमारे साथियों को दृढ़ रहना चाहिए। अर्थात राजनैतिक परिवर्तन का लाभ हम [illegible]। लेकिन राजनीति में परिवर्तन [illegible] समाजपरिवर्तन होगा नहीं यह हमारे [illegible] स्पष्ट हो जाना चाहिए। राजनैतिक परिवर्तन से प्रभावित होते रहने की मर्यादा हमें बांध लेनी चाहिए।

जयप्रकाशजी की 'रिकन्स्ट्रक्शन आफ इण्डियन पॉलिटी' नाम से सालों पहले लिखी गयी थीसिस में 'लोकस्वराज्य' की कल्पना सामने आयी है। इसमें राजनैतिक परिवर्तन की तथा राज्यव्यवस्था की नई बात कही गई है। तो भी लोकतंत्र के लिए जिस लोकशक्ति की अपेक्षा है उसके निर्माण के लिए अवसर मिले इसका ध्यान भी पर्याप्त रखा गया है। इसलिए ग्रामस्वराज्य की प्रेरणा से 'लोकस्वराज्य' अलग पड़ने वाला नहीं है। लेकिन दंडशक्ति से भिन्न हिंसा विरोधी स्वतंत्र लोकशक्ति की प्रेरणा से 'लोकस्वराज्य' की धारा अलग पड़ती है इसे नम्रता से स्वीकार कर लेना चाहिए। इसे स्वीकार कर लेने से 'लोकस्वराज्य' का महत्व कम होगा ऐसा नहीं मानना चाहिए। अर्थात ग्रामस्वराज्य की बुनियाद पर 'लोकस्वराज्य' की रचना करना कैसे सम्भव होगा इसे हमें सोचना चाहिए। लेकिन इन दोनों का समन्वय करना ठीक नहीं है। क्योंकि समन्वय हो नहीं सकता। समन्वय करने की कोशिश से स्वतंत्र लोकशक्ति के निर्माण में बाधा आ सकती है। लेकिन 'लोकस्वराज्य' को विशिष्ट क्रम में बिठाया जाना आवश्यक है और यह क्रम ग्रामस्वराज्य की बुनियाद डालने के बाद की स्थिति में ही बन सकता है।

ग्रामस्वराज्य की बुनियाद संबंधों में विश्वास लाने के लिए है। मनुष्यों के संबंध जो अभी राज्य के कानून से बनाये जा रहे हैं, उसमें विश्वास का अभाव है इसीलिए एक दूसरे के हितों में विरोध आता रहता है। इस से मनुष्य की परेशानी बढ़ रही है इस परेशानी को हटाना है। इसी वजह से विश्वास को आधार बना कर संबंध बनाने का तरीका ग्रामस्वराज्य को माध्यम बना कर हमें ढूंढना है। यह किसी भी राजनैतिक परिवर्तन से या नई राजनैतिक व्यवस्था करने से संभव होने वाला नहीं है। 'लोकस्वराज्य' राजनैतिक व्यवस्था से स्वभावतः अधिक प्रभावित है। अर्थात इसमें लोकनीति का आधार लिया गया है। लेकिन राजनैतिक व्यवस्था के लिए सीधे उपयोग में लाये जाने के कारण लोकनीति की शक्ति समाप्त हो जायेगी। राजनीति लोकनीति को अपने पेट में समेट लेगी। अर्थात लोकनीति ग्रामस्वराज्य की प्रक्रिया चलाने से ही अपना अस्तित्व टिका सकती है। इसे हम नहीं भूल सकते। अतः लोकनीति को ग्रामस्वराज्य की बुनियाद पर ही अपनी शक्ति प्रकट करना चाहिए। ग्रामस्वराज्य के बिना 'लोकस्वराज्य' स्वतंत्र लोकशक्ति के निर्माण में सहयोगी नहीं बन सकता। इसका मतलब यह हुआ कि पहले ग्रामस्वराज्य की बुनियाद चाहिए बाद में स्वतंत्र लोकशक्ति के निर्माण की नई स्थिति बना सकते हैं। इसमें 'लोकस्वराज्य' महत्वपूर्ण योगदान करेगा। 'लोकस्वराज्य' ग्रामस्वराज्य की बुनियाद को छोड़ेगा तो संबंधों में विश्वास का आधार नहीं बना पायेगा। और इसलिए 'लोकस्वराज्य' की एक राजनैतिक प्रक्रिया बन कर रह जायेगी जो अभी तक हित-विरोध को पैदा करके मानव को परेशान करती आयी है।

जयप्रकाशजी के दिल में हाल की परिस्थिति से एक दर्द पैदा हुआ है जो हम सब साथियों के दिल में ध्वनित हो चुका है। समग्र क्रांति को प्रकट कराने में यह दर्द आज की परिस्थिति पर निश्चित रूप से असर करेगा इसमें मुझे शंका नहीं है। फिर भी हम क्रांति के बुनियादी सिद्धांतों को छोड़कर बढ़ने की कोशिश करेंगे तो गलती कर बैठेंगे। इसलिए विनोबा ने कई बार संकेत दिया है कि दिल में दर्द हो लेकिन दिमाग ठंडा रहे। दिमाग ठन्डा करके दिल में दर्द यानी गरमी रखना अनिवार्य है। अक्सर यह होता है कि दिमाग गरम होता है और दिल ठन्डा पड़ जाता है। लेकिन इससे दिल को गति नहीं मिलती। दिमाग को गति मिलती है। और सिर्फ दिमाग की गति से क्रांति या परिवर्तन सम्भव होता नहीं। दिमाग का साथ न छोड़ते हुए दिल को गति मिलने से क्रांति या परिवर्तन सम्भव होता है। दिलों को गति देने से दिल जुड़ते हैं। समग्र क्रांति के लिए दिलों को जोड़ने वाली प्रक्रिया हम छोड़ेंगे नहीं। जयप्रकाशजी के तथा विनोबाजी के दिलों को गति मिलने से दिलों को जोड़ने वाला आंदोलन इस देश में खड़ा है। इस अवस्था में किसी भी बाहरी परिवर्तन के प्रभाव से भिन्न धाराओं का आभास हमारे साथियों के दिमाग में न घुसे इसकी सूझबूझ हमें रखनी चाहिए। बिना दिल के साथ रहे दिमाग दिलों को जोड़ता नहीं तोड़ता है। और राजनीति से तो तोड़ने की ही प्रक्रिया चलाई जाती है। इसे खूब अच्छी तरह हम सब जानते हैं।

गुजरात तथा बिहार की राजनैतिक परिस्थिति के कारण जयप्रकाश जी की जो भूमिका बनी है वह राजनैतिक भूमिका नहीं है। इसलिए वह दिलों को जोड़ने वाली है। उनकी इस भूमिका से सर्वोदय आंदोलन की बुनियादी भूमिका में परिवर्तन आने की स्थिति पैदा नहीं होगी। क्रान्तिकी भूमिका सुरक्षित है।

(पेज ३ का शेष)

"जे० पी० ने जो लाइन ली है वह ठीक है, दो-तीन बातों का ध्यान में लेते हुए। एक, बाबा ने चिन्तन छोड़ दिया है। दो, बाबा एक जगह बैठा है। आप हिंदुस्तान में घूमते रहते हैं। इसलिए बाबा को जो दीखता नहीं वह आपको दीखता है। बीरबल को पूछा था सत्य और झूठ में कितना अन्तर है? उसने कहा चार उंगलियों का। आंख और कान में चार उंगलियों का अन्तर है। इस लिए सत्य और झूठ में उतना ही अन्तर है। इसलिए आपको जो दीखता है, जो जानकारी है, तदनुसार आप जो निर्णय करते हैं वह पक्का है। इसके साथ बाबा सम्मत है। यह आपको मान लेना चाहिए। तीन, बाबा नेतृत्व चाहता नहीं। गणसेवकत्व चाहता है। इसलिए बाबा हमेशा आपको सलाह देता रहेगा, आपकी राय के खिलाफ, तो नेता बन जायेगा।

इन तीन कारणों से वह (जे० पी० की लाइन) ठीक है। —प्रभाष जोशी

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १ जुलाई, '७४

एतबार लाओ ! इन्कलाब आयेगा !

इलाहाबाद में क्रांति के लिए उत्साहित नवयुवक

अभियान को तोड या दम तोड : भवानी प्रसाद मिश्र ● एतबार लाओ तो इन्कलाब आयेगा : प्रताप जोशी ● युवा सम्मेलन के प्रस्ताव
प्राचीनतम अध्यात्म और नवीनतम विज्ञान की जोडी बनानी होगी : विनोबा ● कानपुर के कचहरी वाले लड़कों का कमाल : देवप्रिय ●
बिहार : देश की चढ़ती हुई जवानी : रामचन्द्र राही ।

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० | १ जुलाई, '७४ | अंक ४०

१६ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

अभियान 'जी तोड़' या 'दम तोड़'

खाद्यान्न के उत्पादन और वितरण की लगातार बिगड़ती हुई परिस्थिति कदाचित देश का सबसे चिन्तनीय विषय है। सरकार पिछले अनेक वर्षों से विभिन्न उपाय-योजनाओं का सहारा ले रही है, किन्तु कम से कम इस मामले में पांसा हर बार उलटा पड़ता है। गेहूं के वितरण का जब राष्ट्रीयकरण किया तो सारे देश ने सरकार से कहा कि इसमें अनेक खतरे है और सम्भावना यही है कि सरकारी तंत्र के हाथ में आने के बाद वितरण व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जायेगी। शासन ने इस बात को कोई महत्व नहीं दिया किन्तु जो फल प्रकट हुए उन्होंने इस वर्ष गेहूं की वितरण व्यवस्था में सरकार को परिवर्तन के लिए बाध्य कर दिया। तथापि इस बीच बात कुछ ऐसी बिगड़ चुकी थी कि बदली हुई वितरण व्यवस्था भी जनता के लिए केवल दुखदायी सिद्ध हो कर रह गई। जिस प्रकार पिछली बार सरकारी हाथों में आकर वितरण व्यवस्था के कारण भ्रष्टाचारी-तन्त्र और कालाबाजार करने वाले व्यापारियों को लाभ हुआ था, उसी प्रकार इस बार बड़े-बड़े किसानों, जमाखोरों और भ्रष्टाचारी-तन्त्र को लाभ हुआ। छोटे किसान और उपभोक्ता पहले से भी अधिक परेशानी में पड़ गये। अर्थात छुरी चाहे खरबूजे पर गिरे, चाहे खरबूजा छुरी पर—घाव तो बेचारे खरबूजे के भाग्य में ही बदा है।

अब सरकार ने खरीफ की फसल की तरफ मुंह मोड़ा है। लगता है रबी की फसल की छेड़-छाड़ का विचार सरकार छोड़ चुकी है या इसे वह फिर उस समय करेगी जब सिवाय विचार के कुछ भी करना सम्भव नहीं बचेगा। खरीफ की फसल के मामले में सरकार ने सोचा है कि युद्ध पैमाने पर 'जी तोड़ अभियान' (क्रैश प्रोग्राम) लागू किया जाय और समय पर बड़े-बड़े किसानों को धान, ज्वार, मक्का और बाजरा आदि के उत्तम बीज देकर खाद इत्यादि का भी श्रेष्ठ प्रबन्ध किया जाय और खरीफ की फसल को इस हरित क्रांति के दायरे में लाकर दिखाया जाय।

यह विचार १७ जून को तय हुआ, जब कि आसमान में बादल आ ही नहीं गये हैं, बरसने लगे हैं, और किसान अपने खेत तैयार करके बोने के लिए कटिबद्ध हैं। १७ जून को हमारे जईफ खाद्यमंत्री फखरुद्दीन अली अहमद ने तय किया कि खरीफ फसल बढ़ाने के लिए राज्यों के मुख्यमंत्रियों से अलग-अलग बात की जायेगी और उत्पादन की नई योजना दस दिन में तैयार करके उस पर अमल शुरु हो जायेगा। अर्थात खाद्य-मंत्री और योजना आयोग, पैट्रोल रसायन, सिंचाई-बिजली मंत्रालयों के प्रतिनिधि तथा राज्यों के मुख्य मंत्री मिलेंगे तथा बातचीत करके यह योजना तैयार करेंगे कि सिंचाई साधनों का अधिकतम उपयोग किस प्रकार किया जाय। लघु सिंचाई साधनों से किस प्रकार लाभ उठाया जाय। इस तरह अच्छे बीज, उर्वरक, बिजली, डीजल, कीटनाशक दवाइयों को किस प्रकार जल्दी से जल्दी किसानों को मुहैया करके मनचाहे फल प्राप्त करना मंत्री महोदय को आसान दीख रहा है।

दस दिन में इतनी बड़ी योजना इस प्रकार सम्पूर्ण रूप से लागू कर देने की आशा दुराशा है या भोलापन, क्या कहें? शासन समझता है कि नीतियां तो सदा से नीरोग हैं; उनमें कभी कोई कसर रही ही नहीं। कसर केवल शासन-तन्त्र की चुस्ती में थी, यह अब तक बिलकुल ठीक हो गयी है या इन दस दिनों में ठीक हो जायेगी।

हमारा कहना है कि यह फिर गलत ढंग से सोचना है, गलत ढंग से चलना है। इसके अनुसार अगर समय पर मदद पहुंची भी तो वह केवल बड़े-बड़े किसानों तक पहुंचेगी, छोटे-छोटे किसान फिर कोरे के कोरे रह जायेंगे। सन साठ और सत्तर के बीच में हरित क्रांति के जो प्रयोग किये गये थे, वे भी इसी प्रकार के थे. किन्तु उनसे राष्ट्रीय खाद्य स्थिति नहीं सुधरी। अन्न का उत्पादन भले बढ़ गया हो, उपभोक्ता तक खाद्यान्न न समय पर पहुंचा न ठीक कीमत पर। वर्तमान योजना भी कुछ उसी तरह के विचार का फल है। चटपट बड़ी-बड़ी योजनाएं बनाकर उन्हें झट-पट लागू करने की सरकारी जहनियत हर बार मुंह के बल पर गिरी है, किन्तु उससे उसने कुछ सीखा नहीं है। ध्यान रखना चाहिए कि जब तक नीति का समूचा ढांचा ही नहीं बदला जाता और धीरज के साथ नित्य जाग्रत रहकर उस पर अमल नहीं किया जाता, तब तक चाहे जितनी अच्छी नीयत से बनाई गई खाद्य योजनाएं विफल होती रहेंगी। इस अभियान का फल भी वही होगा जो पिछले अभियानों का हुआ है, अर्थात फिर भ्रष्टाचारी-तन्त्र, जमाखोर, बड़े-बड़े किसान और काला बाजार करने वाले व्यापारियों की बन आयेगी। छोटा किसान और उपभोक्ता वैसा ही परेशान रहेगा जैसा वह पिछले दो दशकों से है और रोज-रोज अधिक परेशान होता चला जा रहा है। खरीफ की इस नीति को जईफ नीति कहने में कोई हर्ज नहीं है। यह न नई है और न इसमें कोई दम है। 'जी तोड़' खरीफ का यह अभियान 'दमतोड़ अभियान' सिद्ध हो कर न रह जाय।

बिहार में उपचुनाव ?

बिहार में विपक्षी दलों के विधायकों द्वारा जो इस्तीफे दिये गये थे और इस कारण रिक्त हुए १६ स्थानों पर सरकार ने जो उपचुनाव करने का निर्णय लिया था, वह रद्द कर दिया गया है।

चुनाव आयोग ने इन उप-चुनावों को कराने की दिशा में जो जल्दबाजी दिखाई थी

(शेष पृष्ठ १५ पर)

बात-बात पर ये इतनी बहस, हो-हल्ला और हंगामा करते हैं। उत्तेजना में मुट्ठियां तानते हैं और सभा में बैठे लोगों का लिहाज नहीं करते हैं। लम्बे बाल रखते हैं और चौड़ी गोल मोरी के पैन्ट पहनते हैं। क्या ये लड़के वह सम्पूर्ण क्रांति कर सकते हैं जो जे०पी० कहते हैं कि इन्हीं से होगी?

अलाहाबाद में २२ और २३ जून को हुए अखिल भारतीय युवा सम्मेलन को पुरानी पीढ़ी के जिन लोगों ने अपनी आंखों देखा उनके मन में यह सवाल बार-बार उठा है। मेरे मन में भी उठा है। हालांकि मैं पुरानी पीढ़ी का नहीं हूं। देश के सार्वजनिक जीवन में एक विस्फोट की तरह आयी युवाशक्ति के प्रति मेरे मन में सहानुभूति और अपेक्षा का भाव है। फिर भी यह सवाल बार-बार सूर्य की तरह कुफकारता
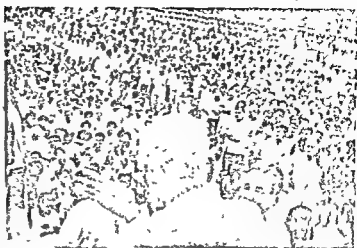
ग्रामसभा को जे० पी० का सम्बोधन

एतबार लाओ, इन्कलाब आयेगा

अखिल भारतीय युवा सम्मेलन, अलाहाबाद की रपट

है: 'क्या ये हम नैतिक सांस्कृतिक क्रांति के वाहक हो सकते हैं जिसकी अनिवार्यता विनोबा, जे. पी. दादा धर्माधिकारी और धीरेन्द्र दा इतने वर्षों से प्रतिपादित करते आ रहे हैं?

यह सवाल २७ जून की भी सुबह मुझे तंग कर रहा था जब हावड़ा से दिल्ली लौट रही तूफान एक्सप्रेस को अलाहाबाद में बड़ी मुश्किलों के बाद मैं पकड़ पाया। गाड़ी खुली तो चर्चा चली। विषय वही था—बिहार का आन्दोलन और देश की हालत। मैंने चर्चा में भाग नहीं लिया और चुपचाप सुनता रहा। मुझे लगा कि रेलगाड़ी के तीसरे (क्षमा कीजिये, अब दूसरे) दर्जे के डब्बे में इस देश का आम आदमी जितना खुलता है उतना कहीं नहीं खुलता। यात्रा आदमी को उसके परिवेश और सामाजिक दबावों के खूंटा से उखाड़े रहती है और अपने मन की वे सारी बातें वह बेहिचक कह देता है जिन्हें आम तौर पर वह नहीं पाता। सामने की सीटों पर बैठे आठ आदमियों में चार व्यापारी, एक सरकारी नौकर, तीन विद्यार्थी और एक सद्गृहस्थ नौकरीपेशा व्यक्ति थे। एक

अध्यक्ष—कुमार प्रशान्त
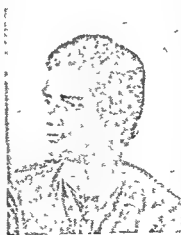
व्यापारी बिहार का था, बाकी सब उत्तरप्रदेश और दिल्ली के। बिहार के व्यापारी की आन्दोलन-सम्बन्धी जानकारी किसी भी अखबारिये से ज्यादा थी और ज्यादातर वही बोल रहा था। सब मानते थे कि महंगाई, भ्रष्टाचार और अभाव अब बर्दाश्त के बाहर है लेकिन किसी को विश्वास नहीं था कि जे. पी और ये लड़के हालत को सुधार सकते हैं। इस देश में न खूनी क्रांति हो सकती है न शांति से सुधार। लोग कितना सहते हैं! कोई और मुल्क होता तो अब तक कई के तख्ते पलट गये होते, आगरा के व्यापारी ने कहा। बिहार का व्यापारी कह रहा था कि बस थोड़ी सी कसर और देर है। लोग अब और नहीं सह सकते! फिर उसने अपने एक कारीगर की भुखमरी का किस्सा सुनाया जो पहले सेर भर चावल खाता था और अब पाव भर भी नहीं खा पाता। 'बच्चों को क्या खिलाऊं, खुद खा लूं तो?' कारीगर कहता है और पहले की

तुलना मे चार आना भी काम नही कर पाता। हालत का रोना सबने रोया, सबने अपने अपने व्यवसायों की वकालत की। सबने कहा कि हालत बदलनी चाहिए लेकिन किसी को भरोसा नही था कि आन्दोलन से वह बदल जायेगी।

भरोसा नही आता। दिल्ली मे बैठे बुद्धिजीवियों से लेकर देश भर मे बिखरे और आधी-टूटी जानकारी या गलत जानकारी पर राय बनाने वाले आम लोगों की राय मे परिवर्तन अनिवार्य और अवश्यम्भावी है। लेकिन वे मान नही पाते कि यह इच्छित परिवर्तन बिहार जैसे शान्तिपूर्ण आन्दोलन से हो सकता है। जिस तरह इलाहाबाद का युवा सम्मेलन चला उससे मुझे भी भरोसा नही आ रहा है कि क्रांति ये युवक कर देंगे। क्रांति के लिए हम जिस तैयारी को जरूरी मानते हैं और उसके वाहकों मे बलिदान की जो तत्परता हम देखना चाहते हैं वह दीखती नही। आन्दोलन चलाने, नारे लगाने और आग उगलता भाषण देने से तो क्रांति नहीं होती। क्या जे० पी० को सही माध्यम मिल गया है? सम्मेलन मे तय था कि महगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, वर्तमान शिक्षा का विकल्प और अहिंसक युवा आन्दोलन की तकनीक-इन छः विषयों पर उद्घाटन के बाद अलग-अलग समूहों मे चर्चा होगी और फिर इन समूहों की चर्चा के निष्कर्ष पूरे अधिवेशन के सामने रखे जायेंगे। विषयों मे से तीन पर ही प्रवेश भाषण हुए थे कि सम्मेलन के अध्यक्ष कुमार प्रशान्त को इस विरोध का सामना करना पड़ा कि वे प्रतिनिधियों का सम्मान नही कर रहे हैं। सम्मेलन की कार्यविधि प्रतिनिधियों के साथ बैठकर तय करनी चाहिए थी, पहले से नहीं।

उनका आग्रह था कि सम्मेलन में विचार-विनिमय कैसे हो इसका निर्णय सब प्रतिनिधियों को मिल कर करना चाहिए था। यह बहस काफी देर तक चली और आखिर कार्यवाही पन्द्रह मिनट के लिए स्थगित करनी पड़ी। फिर जे. पी. ने आ कर सम्मेलन की सर्वसम्मति ली और तय हुआ कि खुला अधिवेशन शाम को साढ़े सात बजे तक चलेगा। फिर जे. पी. चले गये। एक पर एक भाषण हुए, जोश और आग से भरे हुए। रात को भोजन के बाद महिला विद्यापीठ के आगने मे जिसे जहाँ जगह मिली प्रतिनिधिमण्डल बैठे और बड़े जोश खरोश के साथ आन्दोलन की तकनीक पर बहस हुई। दो मत थे-बिहार के आन्दोलन की मदद करना है और अपने प्रान्त मे आन्दोलन छेड़ना है। बिहार का प्रतिनिधि मण्डल कहता था कि हमें सत्याग्रहियों की जरूरत नही है। आप जहा हैं वहीं से समर्थन और सहयोग दीजिये। जब जरूरत होगी हम आपसे मदद मांगेंगे।

सम्मेलन ने एक समिति नियुक्त की थी जिसने देर तक बैठ कर दो प्रस्ताव तैयार किये। एक राष्ट्रीय परिस्थिति पर और एक कार्यक्रम पर। २३ जून को सुबह के अधिवेशन मे वे पढ़े गये और वक्ताओं ने उसी जोश के साथ उनका समर्थन किया और संशोधन प्रस्तुत किये। संशोधन प्रस्तावों में शामिल कर लिये गये। दोपहर के अधिवेशन मे प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए। जे पी बहुत थक जाने के कारण समापन भाषण देने नही आ सके। अध्यक्ष कुमार प्रशान्त ने समापन मे कहा और बिलकुल सही कहा कि हम लोग यहां देश के कोने-कोने से आये हैं। (लगभग सात सौ प्रतिनिधि) हमारी पृष्ठभूमिया और भूमिकाएं भिन्न रही हैं। लेकिन हमें एक करने वाली कोई आकांक्षा है तो वह है परिवर्तन की आकांक्षा। लेकिन मेरी समझ मे नही आता कि हम एक दूसरे को समझने और एक दूसरे की शक्ति बढ़ाने के बजाय एक दूसरे को काटने क्यों लग जाते हैं? हमे सबकी शक्ति मिला कर काम करना है। एक ऐसा मंच बनाना चाहिए जहां देश भर की युवा शक्ति संगठित हो सके और क्रांति के लिए काम कर सके।' फिर कुमार प्रशान्त ने जे. पी. की बात दोहरायी कि वे इस आन्दोलन का असर मानेंगे अगर इसमे से निस्वार्थ युवा शक्ति निकल सके। प्रशान्त ने अपनी बात भी जोड़ी कि वे इस सम्मेलन को सफल मानेंगे अगर इसमे देश भर के युवकों की ऐसी विरादरी और उनकी शक्ति संगठित हो सके। पिछले स्वाधीन वर्षों मे कई आन्दोलन हुए हैं। लेकिन जनता ने विश्वास नही दिया है कि ऐसा कोई आन्दोलन होगा जो जनता की हालत बदल सके। कुमार प्रशान्त ने तात्मनाथ का वाक्य उद्धृत किया चेतावनी के रूप मे कि क्रांतिकारियो ने सब कुछ किया पर वे जनता की पीठ से नही उतरे। समापन का सबसे प्रभावशाली और प्रेरक भाषण दिया बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के अध्यक्ष आनन्द ने।

तो युवकों मे परिवर्तन की आकांक्षा और उनकी क्रान्तिकारी शक्ति मे जनता के विश्वास के अभाव को प्रकट करने वाला यह दो दिवसीय सम्मेलन-आयोजकों-तरुण शान्ति सेना और युवा मंच के लिए कुछ सबक कुछ चुनौतियां और उन्हें सीखने और हल करने की शक्ति देकर समाप्त हुआ। तरुण शांति सेना को अब एक जन आन्दोलन की अगुआई करना है और एक सम्पूर्ण क्रांति का वाहक बनना है। उसे सबको साथ लेकर चलने की क्षमता अपने मे पैदा करनी होगी और तैयारी की अपनी अब तक की भूमिका को छोड़कर सीधे मैदान मे आना होगा। जैसा कि एक युवा वक्ता ने कार्यक्रम वाले प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा था 'इनकलाब आये न आये इनकलाब आयेगा दोस्त! लेकिन इनकलाब तभी आयेगा जब जनता को एतबार आयेगा।'

जे०पी० ने इस महत्वपूर्ण मुद्दे को २३ जून की शाम को टण्डन पार्क की बारिश मे भीगती सभा के सामने बड़ी स्पष्टता से रखा। जे०पी० ने कहा कि कांग्रेस के हमारे मित्र समझते हैं कि श्रीमती इंदिरा गांधी से मेरा कोई वैयक्तिक संघर्ष है। ऐसी कोई बात नही है। युवा छात्र देशभर को का आवाहन तो मैं दिसम्बर '७१ मे ही किया था क्योंकि उत्तर प्रदेश मे चुनाव होने वाले थे। और बिहार युवकों के ऊपर कोई भी विशेष और स्वतन्त्र रूप से आन्दोलन कराने की जिम्मेदारी नहीं डाल सकता था। फिर गुजरात मे छात्रों ने महगाई और भ्रष्टाचार के खिलाफ आन्दोलन किया। मैंने आन्दोलन का उन्होंने उत्कर्ष किया था। बाद मे उनसे मैं मिला भी। उन्हें कहा आप लोगों ने किसी भी तोड़फोड़, विधान सभा और विधायकों का विघटन हुआ। फिर बिहार मे छात्रों ने वैसा ही आन्दोलन छेड़ा। मुझे तो अपनी पहले से यह दिख रहा था कि देश के विभिन्न

(शेष पृष्ठ १६ पर)

इलाहाबाद में

अखिल भारतीय युवा सम्मेलन

दो प्रस्ताव

अखिल भारतीय युवा सम्मेलन यह मानता है कि श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहा बिहार का वर्तमान छात्र जन संघर्ष देश में लोकतंत्र और मानव मूल्यों की रक्षा तथा गांधी युग के अवरुद्ध नव जागरण की पुन मुक्ति की संपूर्ण और सर्वांगीण क्रांति का पहला बड़ा चरण है। छात्रों और युवकों की अगुवाई में बिहार की जनता के संघर्ष के साथ अपनी एकात्मता प्रकट करते हुए सम्मेलन यह भी अनुभव करता है कि बिहार का जन-संघर्ष एक आखरी लड़ाई है जिसकी सफलता जहां पूरे देश में सर्वांगीण क्रांति के द्वार खोलेगी वहीं उसकी असफलता से देशमें एक अरसे के लिए शायद, काफी लंबे अरसे के लिए फिर अंधकार छा जायगा और संभव है कि लोकतंत्र के बचे-खुचे अवशेष भी नष्ट हो जायें।

देश के युवजनों का आवाहन करता है कि इस संघर्ष को यथाशक्ति बल देने और उसे सहायता पहुंचाने का संकल्प लें। इस संकल्प को कार्यरूप देने के लिए सम्मेलन नीचे लिखे कार्यक्रम प्रस्तावित करता है ---

(१) बिहार के जन संघर्ष की सहायता के लिए धन,स्वयं सेवक और संगठन, आंदोलन तथा सत्याग्रह के प्रशिक्षक यथा संभव अधिक से-अधिक बिहार भेजे जायें। सूचना और प्रचार के स्थानीय माध्यमों के द्वारा जन संघर्ष की वास्तविक जानकारी अधिक-से-अधिक लोगों तक पहुंचाकर उसका समर्थन और सहायता प्राप्त की जाये। आवश्यकता पड़ने पर अर्थात श्री जयप्रकाश नारायण, बिहार छात्र संघर्ष समिति और जन संघर्ष समिति के निमंत्रण पर संघर्ष में भाग लेने के लिये सत्याग्रहियों की टुकड़ियां भी भेजी जायें।

(२) हर प्रदेश में सुविधानुसार तिथियां निश्चित करके बिहार-सप्ताह मनायें जिसमे मुख्य रूप से जन जागरण का काम हो, गाव से लेकर जिला स्तर तक जहां भी हो सके सभा, प्रदर्शन जुलूस, प्रतीकात्मक (मिसाल के लिए १२ घंटे का) अनशन या धरना आदि कार्यक्रम चलाये जायें और उपयुक्त साहित्य के माध्यम से बिहार के जन-संघर्ष के उद्देश्यों,स्वरूप और उपलब्धियों से लोगों को परिचित कराया जाय।

सप्ताह के अंत में प्रादेशिक युवा सम्मेलन आयोजित किये जायें जो शक्ति, संगठन और परिस्थिति संबंधी अपने मूल्यांकन के आधार पर अपने प्रदेश के लिए कार्यक्रम तय करें।

सम्मेलन बिहार के तरुणों और बिहार की जनता का अभिनन्दन करता है जिन्होंने असीम धैर्य और साहस के साथ, बड़ी से बड़ी कुर्बानी देते हुए पिछले सौ दिनों से महगाई बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और जन-विरोधी शासन-तंत्र के विरुद्ध तथा शोषणविहीन, शुद्ध लोकतंत्र की स्थापना के लिए अपने शांतिपूर्ण संघर्ष को अधिकाधिक गति देते हुए चलाया है। संघर्ष में बिहार की छात्राओं और महिलाओं के अभूतपूर्व निर्भीक और साहसपूर्ण योगदान ने केवल बिहार और भारत की नारियों का ही नहीं संपूर्ण भारत का गौरव बढ़ाया है। स्वतंत्र, स्वच्छ और आत्म-सम्मानपूर्ण जीवन के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले शहीदों की स्मृति में सम्मेलन श्रद्धानत है।

बिहार की वर्तमान जनद्रोही सरकार और विधान सभा को भंग करने का संघर्ष उस वास्तविक लोकतंत्र की उपलब्धि के संघर्ष का ही एक अंग है जिसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक सत्ता पर वास्तविक नियंत्रण जनता का ही हो। बिहार के जन संघर्ष के निर्णायक महत्व को देखते हुए सम्मेलन

अ० भा० युवा सम्मेलन मानता है कि राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष के दौरान गांधी जी के नेतृत्व में समता और स्वतंत्रता की धारणाओं से जुड़े जिन नैतिक और मानवीय मूल्यों और मर्यादाओं की प्रतिष्ठा हुई थी, पिछले सत्ताईस वर्षों में वे सभी धीरे-धीरे →

भ्रष्ट होते गये हैं, यहां तक कि लगभग अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसमें कहीं कोई मर्यादा नहीं बची है और शासक वर्ग ने असत्य, भ्रष्टाचार और विलासिता को वांछनीय कार्य, बल्कि बड़ी हद तक वांछनीय मूल्यों के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है। बलिदानों के बाद देश की जनता को बालिग वोट का जो अधिकार आजादी की लड़ाई के फलस्वरूप मिला था, चुनाव में व्याप्त भ्रष्टाचार ने उसे भी बड़ी हद तक झूठा और खोखला बना दिया है।

यह सच है कि शोषण और विषमता इस अन्यायी व्यवस्था की ही देन है जिसको बदल कर समता और संपन्नता के आधार पर देश का नवनिर्माण आजादी की लड़ाई का व्यापक लक्ष्य था लेकिन व्यवस्था की अन्यायी क्रूरता पिछली चौथाई शताब्दी में लगातार बढ़ती ही गयी है और सामान्य भारतीय नागरिक आज अपने को हर समय, हर स्थिति में पीड़ित, प्रताड़ित, अपमानित और सर्वथा असुरक्षित पाता है। ऐसा कुछ भी नहीं जो हर भारतीय नागरिक को उपलब्ध हो। पीने का पानी भी नहीं, जबकि कुछ लोगों के लिए दुनिया की कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं। ऐसी भयंकर विषमता ने मानवीय सबन्धों को लगभग असम्भव बना दिया है।

देश में अकाल स्थायी हो गया है। हर साल न जाने कितने लोग, कितने बच्चे, भोजन न मिलने या पर्याप्त मात्रा में न मिलने के कारण मरते हैं। इस वर्ष भी देश का बहुत बड़ा हिस्सा अकाल की चपेट में है। दाम आकाश छू रहे हैं। और निरंतर बढ़ते जाते हैं; ऐसी गति से कि असंख्य गृहस्थियां टूट रही हैं। आवश्यक जीवनोपयोगी वस्तुओं के दाम का लागत से कोई रिश्ता नहीं रहा, बल्कि अक्सर ये दाम साधारण व्यक्ति की पहुंच के बाहर हो गये हैं। कल क्या होगा यह सवाल करोड़ों के लिए व्याधि बन गया है, जिसमें कुछ सूझता नहीं, लोग या तो जड़ और निर्जीव हो जाते हैं या विक्षिप्त। मां-बाप अपने बच्चों को बेच रहे हैं या भूख की पीड़ा से बचने के लिए पूरे के पूरे परिवार आत्म हत्या कर लेते हैं। तस्करी, मुनाफाखोरी, रिश्वत या अन्य भ्रष्टाचार की कमाई खाने वालों के अलावा कोई घर ऐसा नहीं जिसमें महंगाई घुन के आयू न रुला रही हो।

भ्रष्टाचार तो जैसे सर्वव्यापी हो गया है। शासनतंत्र में कोई छोटे से छोटा काम भी रिश्वत के बिना नहीं होता। व्यापार में तस्करी, मुनाफाखोरी और सट्टेबाजी का आधिपत्य इतना जबर्दस्त है कि काला धन या दो नंबर के पैसे की अेक समानान्तर अर्थ-व्यवस्था ही बन गयी है। भ्रष्टाचार की असंख्य बाहें न जाने कहां-कहां से जकड़ कर जनता का रक्त चूसती हैं। उससे लड़ना तो क्या उससे अपने को अलग रखना भी प्राण-क्षयी संघर्ष बन जाता है। विकास कार्यों के लिए नियत खर्चों का मुश्किल से अेक चौथाई या अेक तिहाई ही निश्चित कामों में लग पाता है। शेष भ्रष्टाचार के पेट में समा जाता है। दाम बेतहाशा बढ़ रहे हैं, लेकिन उत्पादन नहीं बढ़ रहा या अधिक से अधिक रेंग रहा है। हरित क्रांति अेक मरीचिका सिद्ध हुई है। छोटे किसानों की जमीनें निकल कर महाजनों और बड़े किसानों के हाथ में जा रही हैं। जमीन की हदबंदी के कानून बनते हैं लेकिन गांवों के विकास की समस्या की जड़ में न जाकर केवल उनके साथ छेड़-छाड़ करने से भ्रष्टाचार के नये रूप ही निकलते हैं, हालत बराबर बिगड़ती जाती है। भूमिहीनों की संख्या बढ़ती जाती है। खेत मजदूरों की वास्तविक आय घटती है और वे पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ते हुए कर्ज में डूबते जाते हैं।

व्यापार के किसी क्षेत्र के सरकारीकरण से अेक ओर तो नौकरशाही के भ्रष्टाचार के कारण उद्योग चौपट होते हैं, दूसरी ओर मजदूर उन सुविधाओं से भी वंचित हो जाते हैं जो निजी क्षेत्र में उन्हें कानून द्वारा मिली होती हैं और जिनके हाथ में सत्ता है, न्याय की किसी भी मांग का उनके पास अेक ही उत्तर है—दमन।

बेरोजगारी बराबर बढ़ती ही चली जाती है। देश में पहले से ही विशाल श्रम शक्ति अैसी है जिसका कोई उपयोग नहीं हो पाता इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष श्रम शक्ति में जो वृद्धि होती है उसमें से आधे लोगों को भी काम नहीं मिल पाता। फलस्वरूप देश के चालीस प्रतिशत घरों में सामान्य स्थिति में भी दो जून खाना नसीब नहीं होता। गरीब मां-बाप पेट काटकर जमीन जायदाद रेहन रख कर भी बच्चों को न जाने कैसी-कैसी आशायें संजोकर पढ़ाते हैं। शिक्षा व्यवस्था इतनी निकम्मी है कि पढ़ाई करने के बाद भविष्य अंधेरा नजर आता है, कहीं कोअी काम नहीं मिलता। शिक्षण संस्थायें भी भ्रष्ट हो चुकी हैं। हजारों नौजवानों के दिल टूटते हैं, जिंदगियां बर्बाद होती हैं।

पूरी शिक्षा व्यवस्था में गरीब बच्चों के खिलाफ अेक साजिश काम करती है, जिसकी शुरुआत यहीं से हो जाती है कि हर वर्ग के लिए अलग-अलग किस्म के स्कूल होते हैं। शिक्षण की सुविधाओं से लेकर शिक्षा और परीक्षाओं के माध्यम तक यह साजिश अंग्रेजी-अभिमुख शासक वर्ग के हित में और गरीब बच्चों के खिलाफ काम करती है।

इन सब के अूपर प्रतिष्ठित हो गयी है राजनीति की निरंकुशता, स्वेच्छाचारिता और असीमित भ्रष्टाचार। जनता के प्रतिनिधि कहलाने वाले महंगाई पर रोक न लगाकर स्वयं अपने वेतन-भत्ते और सुविधाएं बढ़ा लेते हैं। संसद और विधानसभाओं में शासन के प्रवक्ताओं का असत्य भाषण आम बात हो गयी है। निजी स्वार्थ के लिए सत्ता का दुरुपयोग अब अपवाद नहीं नियम बन गया है। नागरिकों के निजी जीवन में राज्य का अनुचित हस्तक्षेप निरंतर बढ़ता जाता है। संविधान द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों में अब नागरिक स्वतंत्रता की कोअी सुरक्षा नहीं रह गयी है। स्वयं मौलिक अधिकारों की प्रतिष्ठा ही खतम कर दी गयी है। राजनेताओं की भौंहें टेढ़ी होने पर सरकारें गिरती हैं, बनती हैं, विधानसभाएं स्थगित होती हैं, पुनर्जीवित होती हैं, भंग होती हैं। लेकिन जनता का न अपने प्रतिनिधियों पर कोअी अंकुश या नियंत्रण है न सरकारों पर, चुनाव पैसे और लाठी के बल पर जीते जाते हैं।

अैसी हालत में सरकारी नीतियों के नतीजों का सीधा सामना महंगाई, भ्रष्टाचार और बेरोजगारी की विकराल समस्याओं के रूप में देश के लोगों को हर समय करना पड़ता है, ये हर तन को तोड़ रही हैं, हर मन को बींध रही हैं। इनके विरुद्ध जनता के

→

गहनतम असंतोष का फूटना अनिवार्य है। सवाल है इन विस्फोटों को दिशा देने का, उनको किसी सार्थक परिणति तक ले जाने का। यह सिर्फ किसी संपूर्ण, सर्वांगीण क्रांति से ही हो सकता है।

इस क्रांति की अगुवाई केवल तरुण और युवक ही कर सकते हैं, क्योंकि लड़ने का साहस, जोखिम उठाने की क्षमता और सर्जनात्मक शक्ति, ये तीनों ही गुण सबसे अधिक युवकों में होते हैं।

राजनीतिक दलों की अलग-अलग और मिलकर भी बल्कि पूरी संगठित राजनीति की इस सदर्भ में अपर्याप्तता सिद्ध हो चुकी है। लगभग तीस करोड़ मतदाताओं में से किसी भी दल के सदस्यों की संख्या कुछ लाख से अधिक नहीं है और सदस्यता भी राजनीतिक जागरूकता या प्रशिक्षण की दृष्टि से विशेष महत्व नहीं रखती। दूसरे, आज जिस क्रांति की आवश्यकता है, उसके सर्व प्रथम लक्ष्यों में यह भी है कि राजनीति पर जनता का नियंत्रण स्थापित हो, अंकुश में, राजनीति मर्यादित हो। फिर भी, जो दल कम से कम सिद्धांत रूप में जनाभिमुख और लोकतांत्रिक हैं, उनकी इस क्रांति में अनेक महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है—सुधरने या टूटने की। बिहार के जन-संघर्ष में यह प्रक्रिया चली भी है।

बिहार का जन-संघर्ष वास्तव में इस संपूर्ण क्रांति का एक चरण है। क्रांति का लक्ष्य स्पष्ट है, जैसे शोषणविहीन समाज की स्थापना जो वास्तव में लोकतांत्रिक हो लेकिन क्रांति का एक-एक छोटा चरण भी अपने आप में क्रांतिकारी हो, संघर्ष की यह रणनीति न क्रांति के मार्ग से एक इंच हटने की है, न हवाई आदर्शवादिता। क्रांति जनता के द्वारा होती, जनता ही करती है, इस कारण हर कदम अनिवार्य ही जनशक्ति के निर्माण और संगठन से जुड़ा होगा। लेकिन संगठन के लिये संघर्ष स्थगित नहीं रहेगा, बल्कि आज जितना हो सकता है उतना तो हो ही यही इस क्रांति की रणनीति है। इसमें संघर्ष के हर चरण के साथ नये-नये उद्देश्य जुड़ेंगे, और उद्देश्यों के अधिक व्यापक होने के साथ-साथ संघर्ष के नये रूप विकसित होंगे। इसमें न कमजोरी के लिए जगह है न बचकाने उतावलेपन की।

संघर्ष के कुछ चरण हमारे सामने हैं, और कुछ नये-नये उद्देश्य भी। कोई प्रतिनिधि संस्था अगर जनद्रोही बन जाती है तो उसे चुनने वालों को अधिकार है कि अपने फैसले से उसे भंग कर दें। यह उद्देश्य, मिसाल के लिए बिहार के जनसंघर्ष में जुड़ा है। ऐसा फैसला होने पर, जनता के फैसले का आदर करते हुए इस्तीफा देने वाले प्रतिनिधियों के रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए उप-चुनाव न होने दिये जायें, यह उसमें जुड़ा संघर्ष का नया रूप है। हरिजनों के साथ समान व्यवहार और सामाजिक विषमताओं का अंत मुनाफाखोरी, जमाखोरी, और जनता के दैनंदिन जीवन में नौकरशाही के हस्तक्षेप को समाप्त करने के लिए गांव या पड़ोस सभाओं जैसी प्रत्यक्ष लोकतंत्र की छोटी इकाइयों में जनशक्ति का सीधा इस्तेमाल उद्देश्य और संघर्ष में ये नये रूप अगले कदम में जुड़ सकते हैं।

इसी में निहित है कि यह क्रांति मात्र राजनीतिक क्रांति नहीं, मात्र सामाजिक और आर्थिक क्रांति भी नहीं बल्कि संपूर्ण जीवन को बदलने की क्रांति है जिसके नैतिक और शैक्षिक पहलू भी हैं। नैतिक क्रांति का अर्थ या उद्देश्य यह नहीं कि हर आदमी संत बन जायेगा लेकिन जीवन में सत्य की प्रतिष्ठा, और सदाचरण के सामान्य मूल्यों का पालन इसके बिना किसी भी प्रकार का संस्थात्मक परिवर्तन अन्तत व्यर्थ सिद्ध होगा, संस्थायें फिर भ्रष्ट हो जायेंगी। शिक्षा इस तरह की बनानी होगी कि उससे ज्ञान और हुनर का विकास हो कि विद्यार्थी की जिज्ञासा बढ़ती जाये। शिक्षा न केवल विद्यार्थी को अधिक कुशल और कार्यक्षम बनाये बल्कि उसे एक बेहतर मनुष्य बनाने में भी सहायक हो।

क्रांति की यह प्रक्रिया हर हालत में, आरंभ से अंत तक शांतिपूर्ण ही रहेगी, क्रांति पूर्ण ही हो सकती है। इस प्रक्रिया में हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है, कमजोर हिंसा के लिए तो बिल्कुल ही नहीं। क्रांति की प्रक्रिया के विकास में स्वाभाविक ही एक नयी राजनीतिक शक्ति का उदय होगा। इस शक्ति का दोहरा रूप होगा, दोहरी भूमिका होगी। सत्ता परिवर्तन भी होगा। राज्य और समाज का स्वरूप भी बदलेगा। लेकिन यह भी मूलतः क्रांति की प्रक्रिया में एक चरण ही होगा। यह प्रक्रिया आगे और भी चलेगी। इस में व्यवस्था भी बदलेगी और लोग भी। लेकिन इस क्रांति की मुख्य और स्थायी उपलब्धि होगी हर प्रकार की सत्ता पर जनता का प्रभावकारी ■ कुश और नियंत्रण। इस नियंत्रण के उपकरण आगे और भी विकसित होते रहेंगे।

सम्मेलन सारे देश की जनता का व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की इस क्रांति में सक्रिय हिस्सेदारी के लिए आवाहन करता है। सम्मेलन देश के तरुणों और युवावर्ग से खास तौर पर कहना चाहता है कि इस क्रांति में योगदान के लिए तत्पर होकर इसकी अगुवाई करें। सम्मेलन को निश्चित विश्वास है कि देश के युवक अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभायेंगे।

हिसार में नागरिक परिषद का गठन

हिसार में हरियाणा भूदान बोर्ड के सचिव श्री जयनारायण वर्मा के संयोजकत्व में एक नागरिक परिषद् का गठन किया गया है। परिषद के संयोजक मंडल में हरियाणा-सन्देश के सम्पादक सेठ महेशचन्द्र, युवक एडवोकेट प० जगतस्वरूप, लायन्स क्लब के सचिव श्री एम० एन० चौधरी, नवजीवन प्रेस के श्री एम० आर० जौहर एवं डा० इन्द्रजीत सदस्य मनोनीत किये गये हैं। परिषद कार्यालय सर्वोदय-भवन में रखा है।

नागरिक परिषद की ओर से आम जरूरत की वस्तुओं की जमाखोरी के विरुद्ध प्रयास किये जा रहे हैं। साथ ही जनशक्ति को संगठित कर, वितरण-व्यवस्था जो भ्रष्ट हो चुकी है, उसे अपने हाथ में लेने का आवाहन किया जा रहा है। सार्वजनिक सभाएं व प्रदर्शन हो रहे हैं। परिषद की ओर से आगामी २६ जुलाई को हिसार नगर के कटला रामलीला मैदान से एक विराट जुलूस आयोजित है जो जन-समस्याओं पर उपायुक्त को ज्ञापन प्रस्तुत करेगा।

प्राचीनतम अध्यात्म और नवीनतम विज्ञान की जोड़ी बनानी होगी

विनोबा

नागपुर टाईम्स के श्री देशपाण्डे से बातचीत

प्रश्न : अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय हो ऐसा आप कहते है । भारत की आध्यात्मिक परम्परा का गुणगान आज तक हमने किया पर विज्ञान के विषय में हमारा कोई अधिकार न होने से हमारी आध्यात्मिक परम्परा का कोई खास असर नही हो पाया । अब अणु शक्ति पर हमारा अधिकार हो गया है । अतः अब अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का समय आया है तो समन्वय यानी क्या? इस समन्वय के कारण समाज कैसा होगा? आज का समाज और समन्वित समाज को श्रृंखलाबद्ध जोडने के लिए हमें क्या करना होगा? संक्रांति की अवस्था मे इसे कौन करेगा ?

विनोबा : विज्ञान की खोज प्राचीनकाल मे भारत मे हुई थी । भारतीय विज्ञान से ही अग्नि की खोज हुई । अति प्राचीनकाल मे इसी खोज के कारण अपके चूल्हे आदि बने । उसके पहले अन्न पकाने की विधि ज्ञात न थी । अग्नि की खोज के पश्चात ही अन्न पकाना प्रारंभ हुआ । 'अग्निमीडे पुरोहितम्' ऐसी ऋग्वेद मे अग्नि की प्रार्थना है । इससे स्पष्ट है कि भारत मे प्राचीन काल मे विज्ञान था । बीच के कालखंड मे उसमे कमी आयी । अब फिर विज्ञान का उदय हुआ है यह खुशी की बात है । हमारी सरकार ने यह स्पष्ट घोषित कर ही दिया है कि इस अणु शक्ति का उपयोग शान्ति के लिए किया जायेगा । उससे शस्त्र निर्माण नही होगा, यह अच्छी बात है । इसलिए अब शका के लिए गुंजाइश नही, किसी को भयभीत होने का कोई कारण नही ।

ये छपी किताबें (खटिया पर रखी किताबों की ओर अंगुली करते हुए) क्या पहले थीं ? वेद पूर्णरूप से कठाग्र किया जाता था । लिखा नही जाता था । उसके रक्षण के लिए निर्णय लिया गया कि उसे ब्राह्मण ही संभाले । अन्य लोगो की वाणी से उसके अशुद्ध होने की संभावना थी । फिर उसका ठीक अर्थ नही हो पाता । केवल वेद संरक्षण के लिए यह सावधानी बरती गयी । किताबें लिखने की प्रथा होती तो कोई भी लिखे या कोई भी पढे, हर्ज न होता ।

बाबा अभी आपसे चर्चा कर रहा है । लोग पटापट लिख ले रहे हैं । यह सब छापा जाएगा । बाबा ने आजतक जितने व्याख्यान दिये उन्हे ग्रंथरूप मे छापा जायेगा तो कितना बडा ग्रंथ संग्रह होगा ? शंकराचार्य के कितने व्याख्यान छापे गये ? उनके क्या ग्रंथ बनाये गये ? अब तो किताबो का भार हो चला है । इसलिए किताबो को आग लगा रहे हैं । पहले कोई वेदाभ्यासी विद्वान, ज्ञानी ब्राह्मण सन्यासी हो तो 'वेदानपि सन्यसति' यानी वेद का भी सन्यास करता था । कोई वेद की रक्षा करने वाला उत्तम शिष्य हो तो उसे वेद सौप दिये जाते थे वरना उन्हे गंगार्पण किया जाता था । इस प्रकार हम समन्वय करते ही आये हैं । गांधीजी के लेख, पत्र, तार सारा का सारा छपकर तैयार है । बडे-बडे ४०-४५ ग्रंथ हो गये । और भी होंगे । एक बार संग्रहकर्त्तागण मेरे पास आये और पूछा कि क्या मैने इन ग्रन्थो को देखा है, कोई राय है इस संबन्ध मे? मैंने उन्हे कहा कि मैंने उन्हे थोडा-थोडा देख लिया है । मेरी एक सूचना है । वे आउभाव से मेरी ओर देखने लगे कि मैं क्या कहूंगा ? मैने कहा, मोहनदास करम चन्द गांधी तक जो कुछ भी लिखा गया वह सब आपने छाप लिया है । अब उनके पिछले जन्म की कुछ सामग्री मिले तो उसे भी छपवा दीजिए । सब हसने लगे ।

प्रश्न : यह समन्वय कैसा किया जाय ?

विनोबा : समन्वय पहले जैसा ही किया जाय । छोडते, जलाते, नदी मे डुबोते हुए चलें । भूदानयात्रा मे लोगो ने मुझे अनेक मानपत्र दिये । मैं उन्हें कहता था कि दरअसल मानपत्र तो मैं आपको दूं क्योंकि आपने दानपत्र भरे हैं । मैंने तो केवल विचार रखा । इसलिए मुझे जो करना चाहिए वह आप कर रहे हैं । यह उलटा है । एक बार मार्ग मे जब गोदावरी का पुल आया तो मैंने सारे मानपत्र नदी मे छोड दिये ।

अणु ऊर्जा हाथ मे आने पर ये सारी छोटी-छोटी बातें हैं, उन्हे तजना चाहिए । लोग अणु विस्फोट वार्ता कहने आये तब मैंने कहा जब आप "मंगल" ग्रह पर पहुंचेंगे तो मैं अभिनन्दन करूंगा । तब तक राह देखूंगा, मंगल को संस्कृत मे भौम कहते हैं । भौम यानी भूमिपुत्र । पूर्वजो की कल्पना के अनुसार मंगल का वातावरण भूमि के जैसा ही होगा यदि वहा पानी होगा तो प्राणी भी होंगे । उनकी आपसे पहचान होगी । वहा हो आने पर आपका ज्ञान प्रकट होगा । तब बाबा आपका अभिनन्दन करेगा ।

कुछ दिन पहले रेलवे हडताल हुई तो कुछ लोग मेरे पास आये और पूछा कि इस हडताल के क्या परिणाम होंगे ? मैने कहा, 'भारत की प्रजा आगामी ३० वर्षों में दूनी होगी । तो खेती के लिए अधिक भूमि की आवश्यकता रहेगी । फी व्यक्ति जमीन कम रहेगी । इसलिए सारी जमीन खेती के लिए देनी होगी । तब खेती के लिए रेल मार्ग उखाडने, मोटर मार्ग खोदने होंगे । इसलिए दो ही तरीके रहेंगे : बाबा की पैदल यात्रा और किसीजर की हवाई जहाज यात्रा! क्योंकि ये खेती में रुकावट नही डालते । वैज्ञानिक युग मे ये ही प्रकार यात्रा के रहेंगे ।

अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय प्राचीन काल से ही चला आ रहा हैं । अग्नि का उपयोग रसोई के लिए था, आग लगाने के लिए भी किया जा सकता है । तब उसका उपयोग रसोई के लिए ही हो, आग लगाने मे न हो यह समन्वय है आत्मज्ञान विज्ञान का । अब भी वैसा ही समन्वय करें । मोटर में, रेल मे नहीं बैठेंगे । हां, हवाई जहाज रहेगा । बाकी सारी जमीन खेती बाडी मे लगायी जायेगी । उत्तम ब्रह्मचर्य पालन हो जिससे संतति कम हो । जनसख्या नियंत्रित रखने मे संयम की

शहर खत्म होंगे, देहात में आना होगा

की दृष्टि विज्ञान के साथ जोड़ें। आजकल विज्ञान के कारण छोटे बच्चे मरते नहीं। पहले क्या होता था ? बालक ने जन्म लिया कि चौथे पांचवे दिन मर जायगा यह संभावना। न मरा तो पांचवी छठी का कार्यक्रम। बारह दिन जिन्दा रहना तो नामकरण। उसके पहले रखने से क्या लाभ ? क्योंकि तब तक मर जाने की ही आशंका। विज्ञान के कारण बालमृत्यु कम है। इसलिए संख्या बढ़ रही है। विज्ञान के कारण ही वृद्ध लोग अधिक दिन तक जीते हैं इसलिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक हो गया है। उस समय ब्रह्मचर्य को आध्यात्मिक मूल्य था। क्योंकि उस समय जनसंख्या कम थी। तब ब्रह्मचर्य का सामाजिक मूल्य नहीं था। अब ब्रह्मचर्य का आध्यात्मिक मूल्य के साथ सामाजिक मूल्य भी है। इसलिए विज्ञान युग में ब्रह्मचर्य की विशेष आवश्यकता है। विज्ञान युग में खेती बढ़ाने की ज्यादा जरूरत है। इसलिए जमीन का उपयोग अन्यत्र जो किया जाता है उसे कम करना होगा। समभो ऐसी शक्यता है कि मकान के छत पर खेती की जा सकेगी। सब्जी उगायी जा सकेगी तो वैसा करना चाहिए। तब बड़े-बड़े शहर खत्म करने होंगे। आपकी सभ्यता पुरंदर संस्कृति है। वेद में इन्द्र को पुरंदर कहा है। इन्द्र ने सौ नगरों का नाश किया इसलिए उसे पुरंदर कहा गया।

तब आपका नागपुर नगर खत्म होगा। आपको देहात में आना होगा। आपका अखबार बंद हो जाय तो हर्ज नहीं। क्योंकि छापने के लिए कागज उपयोग आज के जैसा ■ होगा। वृत्तपत्र न रहे तो भी ज्ञान तो मिलता ही जायेगा। विज्ञान के कारण आकाश से ज्ञान मिलेगा। यहां आप हम बातें कर रहे हैं। इस समय यह अमेरिका में दिखाई सुनाई देगा। दुनिया के चाहे जिस स्थान पर जाने के लिए रेलगाड़ी आवश्यक न होगी। विज्ञान युग में यह भी संभव है कि सीधे नाक द्वारा हवा से पोषण मिलेगा। (दीर्घश्वासन करते हुए बाबा ने यह कहा) भोजन की आवश्यकता न रहेगी। वृक्ष ऐसा करते ही हैं वे आकाश से पोषण लेते हैं। हम भी वैसा ही करें। हम भी आकाश से पोषण लें। नाक को नली लगायी और प्राणायाम किया कि पोषण प्राप्त हुआ। भोजन की जरूरत न होगी। इस प्रकार के शोध भी होंगे।

प्रश्न : समन्वय यानी क्या ? उसे कैसे किया जाय ?

विनोबा : समन्वय यानी दो का मेल। पहले से ही ऐसा चला आ रहा है। मैं कहता हूं वैसा आज करें। नागपुर से आने की आवश्यकता नहीं। वहां बैठे-बैठे बाबा से बातचीत की जाय। यह हुआ समन्वय। आज आपको नाहक यहां आना पड़ा। यहां पुंडलीकजी बैठे हैं। उनकी हमारी बातचीत ५०० मील दूरी पर एक कमरे में बैठकर हुई। उन्होंने वहां से प्रश्न पूछे। मैं ने यहां से जवाब दिया। विज्ञान के युग की यह बात है मानसिक संदेश भी भेजे जा सकेंगे।

प्रश्न यह कुछ विज्ञान की बात नहीं है।

विनोबा ठीक है अध्यात्म में भी संदेश देते-लेते बनेगा। आज गुरु उपदेश देते हैं। लम्बे-लम्बे व्याख्यान देते हैं। उपनिषदों में क्या है ? गुरु के पास शिष्य आये। देव, दानव और मानव। गुरु ने उन्हें उपदेश दिया 'द' यह एक अक्षर ही बताया। द द द एक अक्षर में ही वे बोल गये। कितने आगे बढ़े हुए थे वे आज हमें फालतू अधिक बोलना पड़ता है। विज्ञान के विकास के कारण हम अधिक न बोलना होगा। थोड़ा कहकर काम चल जायेगा।

प्रश्न संक्रान्ति की अवस्था में यह कौन करेगा ?

विनोबा : संक्रान्ति की अवस्था सतत् चल रही है। प्राचीन काल से आज तक चालू है। छापखाना नहीं था वह आया। मोटर रेल हवाई जहाज आये। उसमें नवीनता खास है नहीं। जवान का वृद्ध बना। क्या एक दिन में बना ? प्रत्येक क्षण वृद्धावस्था आती ही रहती है। यह क्रिया सतत् चलती ही है।

प्रश्न : भौतिक सम्पन्नता के शिखर पर पहुंचने पर दिशाहीन बने पश्चिमी राष्ट्र अध्यात्म के लिए भारत की ओर देख रहे हैं। अब भारत ने अणुविस्फोट किया। इस लिए कुछ राष्ट्रों की भारत पर की श्रद्धा डगमगाने लगी है। उन्हें स्थिर करने के लिए भारत क्या करे ?

विनोबा : श्रद्धा डिगने का कोई कारण नहीं। भौतिक संपदा की सीमा तक अमेरिका भी नहीं पहुंच पाया है। अमेरिका में आज भी लाखों लोग बेकार भूखे हैं। आपका वह रूस, उसे आहार के लिए गेहूं की पूर्ति बाहर से करनी पड़ती है।

अब तक दुनिया के मानव समाजों में हार्दिक एकात्मता नहीं है। शंकाकुल वातावरण है। सदा-सर्वदा शंकित ही रहते हैं। आगे विश्व राज्य होगा तो भारत उसका एक प्रान्त होगा। चीन, रूस, अमेरिका ये सारे उस विश्व राज्य के एक-एक प्रान्त होंगे। विश्व राज्य का स्प्रायकोर्ट होगा। विश्वराज्य की सेना रहेगी। यह सब आगे चलकर होने वाला है ही। अभी जैसा तय हुआ है कि भारत के किसी प्रान्त से दूसरे किसी प्रान्त में अनाज जा सकता है, उसी तरह दुनिया निर्णय लेगी कि पृथ्वी पर विश्व राज्य के किसी प्रान्त से (आज के देश राष्ट्र से) अनाज अन्यत्र जा सकेगा। और वैसा भेजा भी जाये। विज्ञान के कारण अनाज आसानी से कहीं भी भेजा जा सकेगा। विज्ञान अब छोटे-छोटे देश बरदाश्त न करेगा। देश प्रान्त की दृष्टि से स्वीकार किये जायेंगे।

आज ही कर्नाटक के पुंडलीकजी को मैंने महाराष्ट्र-कर्नाटक सीमा प्रश्न पर एक उपाय सुझाया। कर्नाटक और महाराष्ट्र को मिला दें, स्कूलों में मराठी और कन्नड दोनों भाषा सिखायी जायें। दोनों राज्यभाषाएं रहेंगी। प्रत्येक पत्रक दोनों भाषाओं में निकाला जायेगा। आठ करोड़ आबादी का बड़ा मजबूत प्रदेश बनेगा। ■ सद में भी आपकी आवाज बुलंद होगी क्योंकि वह आठ करोड़ की आवाज होगी। भाषावार प्रान्त रचना का गुरु गोलवलकरजी ने विरोध किया था। वे कहते थे इससे भारत खंडित होगा। मेरा भी यही मत है। यदि राष्ट्रीय एकता कायम रखनी हो तो एक प्रान्त में बहुत सारे अन्य प्रांतों में भी रहने चाहिए। एक भाषावाले पूरे के पूरे एक ओर-यह ठीक नहीं। कर्नाटक महाराष्ट्र एक हो जाय तो उत्तम होगा। संत ज्ञानदेव ने काव्य में 'विट्ठल ही कानडा कर्नाटक' कहा। पंढरपुर का विट्ठल दोनों प्रान्तों की सीमा पर खड़ा है। यह मेरा विचार है। अब आप जोरदार लिखिए कि कर्नाटक

(बाकी पेज १२ पर)

कानपुर के 'कचहरी वाले लड़कों' का कमाल

· देवप्रिय

गुजरात और बिहार की तरह उ० प्र० का युवक भी वर्तमान दलगत राजनीति से असन्तुष्ट व समाज व्यवस्था बदलने के लिए आगे आने को तत्पर हो रहा है। तरुणों के अनेक छोटे-छोटे संगठन स्थान-स्थान पर संगठित होकर समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार से संघर्ष के लिए आगे आ रहे हैं। कानपुर में 'तरुण शान्ति सेना' तथा 'लोकतंत्र के लिए नवजवान' संगठनों के सदस्यों ने इसी दृष्टि को ध्यान मे रखते हुए गत ६ मई से 'सदाचार-अभियान' प्रारंभ किया है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य एक ऐसी नागरिक चेतना जाग्रत करना है, जिससे कि वह अपनी वास्तविक शक्ति व अधिकार का आभास कर सके और स्वयं भी अन्याय व भ्रष्टाचार के विरोध मे सक्रिय भूमिका निभाने के लिए आगे आये। अभियान में न्यायालय, चुंगी चौकियाँ महापालिका के कर वसूल बाजार, आदि विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त खुले भ्रष्टाचार को रोकने तथा उसके माध्यम से व्यापक जन सम्पर्क करने का कार्यक्रम उठाया है।

कानपुर मे कालाबाजारी रोकने के लिए उपभोक्ताओं और व्यापारियों में संवाद शुरू हो गया है। सदाचार अभियान के कार्यकर्ता एक दुकानदार से दाम बांधने लिए से बातचीत करते हुए।

कानपुर कचहरी मे कार्य प्रारंभ सदाचार-अभियान' का पहला लक्ष्य न्यायालयों मे चलने वाली खुली रिश्वत को रोकने का था। प्रारंभ के दिनों में युवकों की कई टुकड़ियों ने कानपुर की विभिन्न अदालतों के प्रेसाइडिंग अफसरों को एक ज्ञापन देकर अपने अभियान का उद्देश्य बताया और उनसे अपनी अदालत व अधीनस्थ कर्मचारियों में व्याप्त अनियमितताओं को रोकने का निवेदन किया। किन्तु इन ज्ञापनों पर कोई कार्यवाही नहीं की गयी। तरुण शान्ति सेना को सीधी कार्यवाही करने का निश्चय करना पड़ा। अदालत चलते समय जब भी तरुण शान्ति सैनिक रिश्वत का आदान-प्रदान होते हुए देखते... स्वयं बीच में जाकर सम्बन्धित व्यक्तियों का हाथ पकड़ लेते और उनके इस काम को अदालत में उपस्थित जनता को दिखलाते तथा उन्हें जनता के सामने माफी मंगवाकर भविष्य मे रिश्वत न लेने का निश्चय करने को कहते और रिश्वत का पैसा भी तुरन्त वापस करा देते। इस प्रकार की कम से कम सौ घटनाएं इन पन्द्रह दिनों के प्रयासों मे पाई गयीं।

अधिकारियों का असहयोग जैसे-जैसे अभियान जोर पकड़ता गया कचहरी के भ्रष्ट रिश्वतखोर कर्मचारियों मे युवकों का एक नैतिक आतंक छा गया और किसी भी युवक की उपस्थिति मे, चाहे वह अभियान से सम्बन्धित हो या नहीं, वे शंकित रहने लगे। वे नैतिक आतंक की इस स्थिति से निपटने के लिए रिश्वतखोरी के नये तरीके निकालने और अभियान के विरोध मे अपने उच्च अधिकारियों को भड़काने का प्रयास करने लगे। प्रयास मे वे बहुत कुछ सफल रहे। पहले १० मई को अतिरिक्त जिलाधिकारी (शहर) ने हमारे साथियों को चेतावनी दी कि यदि वे अपने अभियान के द्वारा कर्मचारियों की रिश्वतखोरी रोकने का प्रयास जारी रखेंगे तो वे सादी वर्दी मे पुलिस लगाकर अभियान के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लेंगे। रिश्वतखोरों को न पकड़कर उसे रोकने का प्रयास करने वालों को पकड़ने की यह धमकी हास्यास्पद और औचित्यहीन थी। इसी दिन एक कोर्ट इन्सपेक्टर की अदालत के अन्दर ३५ रुपये की रिश्वत का सौदा करते और लेते हुए टोकने पर एक कार्यकर्ता को वहाँके प्रेसाइडिंग अफसर ने अदालत के अपमान के आरोप में अदालती कार्यवाही करके हिरासत मे रोक लिया। बाद मे अभियान के सहयोगी वकीलों के प्रयास से उन्हें छोड़ दिया गया। प्रारंभ मे ही ऐसी घटना के विरोध मे कोई गम्भीर कदम उठाना उचित न मानकर अभियान को पूर्ववत जारी रखा गया। अधिकारियों के इस असहयोगात्मक रुख के विरोध मे 'तीन दिन का क्रमिक मौन प्रदर्शन जिलाधिकारी कार्यालय के सामने किया गया जिससे कि अभियान के उद्देश्य को ढंग से अधिकाधिक व्यक्तियों तक पहुँचाया जा सके। इस प्रदर्शन के दौरान जिलाधिकारी ने तरुण शान्ति सेना के साथियों को १५ मई को धमकी दी कि यदि आप लोग कल मे कचहरी के कम्पाउण्ड के अन्दर आकर अपना अभियान जारी रखेंगे तो आप लोगोंको गिर-

→

पतार कर लिया जायेगा। जवाब में अभियान के संचालक शिवसहाय मिश्र ने कहा कि हमारा अभियान शान्तिपूर्ण व अहिंसक पद्धति से जिस प्रकार चल रहा है, उसी प्रकार चलता रहेगा। यदि हम कोई गलत कार्य कर रहे हों तो आपको अधिकार है कि आप कानूनी कार्यवाही करें। हम अभियान बन्द नहीं कर सकते। इस पर जिलाधिकारी महोदय ने अपनी धमकी पुनः दुहरायी। इस घटना के बाद हुई तरुणों की एक आकस्मिक बैठक में जिलाधिकारी की इस धमकी पर विचार किया गया और सर्वसम्मति से अभियान को जारी रखने का निश्चय किया गया। कई साथियों ने रिश्वतखोरी रोकने के लिए जेल जाने की तैयारी व्यक्त की। किन्तु संयोगवश इस धमकी के बाद स्वयं जिलाधिकारी एक सप्ताह तक अपने कार्यालय नहीं आये। बाद में उनका तबादला हो गया।

इस बीच जिला न्यायाधीश ने एक आदेश जारी करके सभी प्रेसाइडिंग अफसरों को निर्देश दिया कि यदि कोई युवक किसी अदालत से एक चेतावनी के बाद बाहर नहीं निकलता तो उसे अदालत के अपमान के आरोप में गिरफ्तार कर लिया जाये। किन्तु भ्रष्टाचार के विरोध में अहिंसक प्रतिकार व जन जागरण का कार्य करने वाले युवकों पर इन धमकियों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा तथा रिश्वतखोरी को रोकने का कार्य पूर्ववत जारी रहा।

वकीलों व नागरिकों का समर्थन : अभियान के माध्यम से हमारा अधिकाधिक प्रयास भ्रष्टाचार विरोधी वातावरण बनाने का था। इसमें हमें पर्याप्त सफलता भी मिली। १८ मई को 'लायर्स असोसियेशन' तथा २२ मई को 'बार असोसियेशन' ने अभियान को अपना पूर्ण समर्थन देने सम्बन्धी प्रस्ताव पारित किये अनेक वकीलों ने स्वयं कार्यालय आकर अभियान के कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहन दिया। २३ मई को नगर के वरिष्ठ नागरिकों की ओर से प्रसारित एक अपील में अभियान का समर्थन किया गया।

कार्यकर्ता की पिटाई व न्यायालयों का बहिष्कार : अधिकारियों के असहयोगपूर्ण रुख से रिश्वतखोरों को अप्रत्यक्ष प्रश्रय मिला वे संगठित होकर कार्यकर्ताओं के साथ अभद्र व्यवहार करने लगे। २२ व २३ मई को दो अलग-अलग न्यायालयों में वहां के कर्मचारियों ने दो कार्यकर्ताओं के साथ रिश्वतखोरी के समय रोकने पर हाथापाई की। इन घटनाओं की लिखित सूचना जिला न्यायाधीश को दी उन्होंने यह कहकर कि इस पर टिकट नहीं लगा है, सूचना वापस कर दी। २४ मई को उस समय अभियान ने एकाएक गम्भीर मोड़ लिया जब कि अभियान के संचालक व प्रदेश तरुण शान्ति सेना के प्रमुख सदस्य शिवसहाय मिश्र को जिला न्यायाधीश कार्यालय में बन्द करके वहां के कर्मचारियों ने सामूहिक रूप से उनपर हमला किया। प्रत्यक्षदर्शी लोगों के अनुसार इस अभियान टोली के कार्यकर्ता एक रिश्वत के मामले को रोकने के बाद वापस आ रहे थे तो वहां के कर्मचारियों ने इन कार्यकर्ताओं को अपशब्द कहे। इस पर वहां पर उपस्थित एक नागरिक शिव शंकर लाल ने उन्हें इस प्रकार के अपशब्दों का प्रयोग करने से मना किया। उन कर्मचारियों शिवशंकर लाल को बुरा भला कहते हुए अदालत के एक कमरे में पकड़कर बन्द कर लिया। अभियान के कार्यकर्ताओं जब देखा कि उनके कारण एक निरपराध नागरिक को परेशान किया जा रहा है तो वे इसका प्रतिरोध करने के लिए कार्यालय में घुस गये। इस पर कुछ चपरासी शिवसहाय जी को पकड़कर जिला न्यायाधीश के कार्यालय में खींच ले गये और अन्दर से बन्द कर लिया कार्यालय के हेडक्लर्क ने अपने अधीनस्त कर्मचारियों को शिवसहाय जी को मारने को कहा अनेक चपरासियों व लिपिकों ने मिलकर सामूहिक रूप से मिश्र जी को बुरी तरह से मारा। यह देखकर कार्यालय के बाहर काफी जनता व वकील एकत्र हो गये और उनमें से कुछ लोगों ने दरवाजों के कांच आदि तोड़ डाले। वहां के एकत्रित वकीलों ने शिवसहाय जी को कार्यालय से बाहर निकाला और जिला न्यायालय में आकर न्यायाधीश महोदय का ध्यान उक्त घटना की ओर खींचा। न्यायाधीश महोदय ने दैनिक कार्य निपटाने के बाद उक्त घटना पर विचार करने का आश्वासन दिया। इस बीच बार असोसियेशन के अध्यक्ष प्रेमनारायण शुक्ल के नेतृत्व में लगभग दो—ढाईसौ वकील जिला न्यायाधीश महोदय के पास उक्त घटना का लिखित विवरण लेकर पहुंचे और उनसे निवेदन किया कि अपराधी व्यक्तियों को तुरन्त उचित दंड दें ताकि इस प्रकार की घटना पुनः न दुहराई जा सके। किन्तु न्यायाधीश महोदय ने तुरन्त कोई निर्णय न लेकर पूरी जांच करके ही कोई निर्णय लेने की बात कही। निर्णय को टालने की प्रवृत्ति के विरोध में सारे वकील न्यायालय का बहिष्कार करके चले गये बाद में बार असोसियेशन की एक असाधारण बैठक में सर्व सम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर सोमवार २७ मई को सभी न्यायालयों के सामूहिक बहिष्कार का निर्णय लिया। नगर के सभी प्रमुख राजनैतिक दलों व अनेक सामाजिक सदस्यों ने उक्त घटना पर निन्दा प्रस्ताव पारित करते हुए सदाचार अभियान का समर्थन किया। बार असोसियेशन द्वारा न्यायालयों के सामूहिक बहिष्कार के निर्णय की सूचना पाकर इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्यन्यायाधीश श्री डी० एस० माथुर अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम को छोड़कर कानपुर दौड़े आये। उन्होंने बार असोसियेशन द्वारा आयोजित विरोध सभा में भाग लिया और घटना की पूरी जांच करने का आश्वासन दिया। उन्होंने तरुण शांति सेना 'तथा लोकतंत्र के लिए नवजवान' प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि न्याय प्रशासन में रुचि रखने वाले सभी लोगों के सहयोग से हम इस प्रकार के परिवर्तन लागू कर सकते हैं जो न्यायपालिका को वही गौरव प्रदान करें जैसा कि इसे अतीत में प्राप्त रहा है

वकीलों द्वारा किया गया न्यायालयों का बहिष्कार पूर्णतया सफल रहा।

वकीलों द्वारा 'सदाचार अभियान के इस प्रकार के सक्रिय समर्थन से अभियान के कार्यकर्ताओं का मनोबल तो बहुत ऊंचा उठा ही साथ ही न्यायालयों में चलने वाली खुली रिश्वत लगभग समाप्त प्राय हो गयी। किन्तु रिश्वत की कमाई करने वाले कर्मचारियों ने नियमानुकूल कार्य करने की जो पद्धति अपनाई उससे वकीलों के सामने अनेक नयी कठिनाइयां आने लगी। फिर भी वे अपने निर्णय का पालन करने व कठिनाइयों से संघर्ष करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अन्य कार्यक्रम : न्यायालय में उक्त कार्य के अतिरिक्त सदाचार अभियान के अन्तर्गत चुंगी चौकियो, व नगर महापालिका के अन्य कार्यालयो मे चलने वाली अनियमितताओ तथा उपभोक्ता वस्तुओ (राशन, वेनस्पति घी, साबुन आदि) की चोरबाजारी को रोकने के सक्रिय प्रयास भी किये गये।

प्रायोगिक रूप मे जिन चुंगी चौकियो पर अभियान के कार्यकर्ताओ ने निगरानी का कार्य किया वहा पर अनियमितरूप [से रसीद दिये बिना वसूल की जाने वाली रकम अभियान के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति मे बिलकुल बन्द रही। महापालिका के एक विभागीय अधिकारी के अनुसार हमारे द्वारा जिन चुंगी चौकियो पर निगरानी का कार्य किया गया गया वहा पर निगरानी के दिनो मे सामान्य दिनो की अपेक्षा लगभग तीन गुना अधिक कर जमा हुआ। समय-समय पर विभिन्न चुंगी चौकियो पर छापामार कार्यवाही करके वहा के कर्मचारियो को अनियमित राशि वसूलने से मना किया गया।

कानपुर नगर महापालिका के लाइसेन्स कार्यालय मे जहा रिक्शो, ठेलो आदि के लाइसेन्स बनते हैं, प्रति लाइसेन्स एक रुपया से पाँच रुपये तक की अतिरिक्त वसूली की जाती थी, इसे रोकने का प्रयास किया गया। कार्यालय मे जब दूसरे दिन हमारे साथी पहुँचे तो वहां के कर्मचारियो मे से एक ने 'चाय पानी बन्द' कहकर अभियान टोली की उपस्थिति की सूचना अपने साथियो को कर दी।

नहाने व कपड़े, धोने के कुछ प्रसिद्ध साबुनो की कमी के कारण चोरबाजारी मे उनकी कीमत दो गुना तक पहुच गयी। अभियान की विभिन्न टोलियो ने कई स्थान पर साबुन की थोक व फुटकर दुकानो पर चोरबाजारी से बिकने वाले साबुनो के स्टाक की जाच की और अपनी उपस्थिति मे दुकानदारो को निर्धारित कीमत पर साबुन बिक्री के लिए बाध्य किया।

सहयोगी सस्था फुटकर विक्रेता संघ के सदस्यो ने वनस्पति के अवैध स्टाक का पता लगाकर उसकी सील कराया। एक अन्य युवा सस्था 'बेकार नवयुवक सघ' ने ५० क्विटल गेहू—जो कि एक थोक व्यापारी नियमो का उल्लघन करके ले जा रहा था, अपने कब्जे में लेकर १-४० प्रति किलो की दर से बिकवाया।

प्राचीनतम अध्यात्म व नवीनतम विज्ञान की जोड़ी

(पृष्ठ ६ का शेष)

और महाराष्ट्र एक बन जांय। यह अगर आपको सूचना मान्य हो तो सीमा प्रश्न सहज होगा।

यहां चेकोस्लोवाकिया का युवक बैठा है। उसे देश छोड़ना पडा। वह फ्रास मे गया। वहा से उसे यहा आने को प्रेरणा मिली। पाच छ महीनो से वह यहा है। इतने दूर-दूर के लोग यहा एकत्र हो रहे हैं।

प्रश्न : समन्वय करना यानी "छोड़ते जाना, जलाते जाना ऐसा जो आपने कहा उसे अधिक स्पष्ट कीजिए।

विनोबा : पहले विवाह समय (मुहूर्त) के लिए घटिका आवश्यक थी। घटिका पात्र रखा जाना था। अब उसकी जरूरत नही। घडी के कारण मिनट सेंकड सब ज्ञान हो जाता है। घटिका छोड़ी, घड़ी ली। पुराना छोड़ा नया लिया।

प्रश्न अणुशक्ति हाथ में आने पर छोटी-छोटी बातें छोड़ देने का मतलब क्या ?

विनोबा : आपके पास बड़ी शक्ति आने पर छोटी शक्ति की जरूरत नही। उसे छोड़ देना चाहिए। स्कूटर सबको उपलब्ध होने पर साइकिल के आग्रह का कारण नही। पुराना छोड़ने का यह दूसरा उदाहरण दिया।

आप मान रहे हैं कि भारत मे अणु-शक्ति प्रकट हुई यह बड़ी बात है। पर अणु शक्ति की कल्पना प्राचीन ऋषियों को थी। एक वैदिक दर्शन है। उसे 'वैशेषिक' कहते हैं। उसका दर्शनकार कणाद था। वह मरते समय पीलवःपीलव ऐसा कहते गया। पीलवः यानी परमाणु। मरते समय परमात्मा का नाम लेना चाहिए। पर परमात्मा कहा से आया ? परमाणुओं से ही यह जगत निर्माण हुआ है ऐसी उसकी मान्यता थी। इसलिए वह परमाणु-परमाणु कहते कहते मरा। तो परमाणु शक्ति की कल्पना प्राचीन काल के लोगो को थी। उसमे इतनी ताकत भरी होगी इसकी कल्पना न होगी। वह कल्पना अब है। अणुशक्ति हाथ मे आने पर छोटी-छोटी शक्ति को छोड़ देना चाहिए। इंजीनियरिंग मे नयी कल्पना रूढ होने पर पुरानी छोड़ दी जाती है। नदी को मोड़ देना है। नहरें निकालनी हैं, उसके लिए अणुशक्ति का उपयोग हो तो पुरानी पद्धति से काम करने की आवश्यकता नहीं। इसी तरह नयी चीज हाथ मे आने पर पुरानी छोड़ दें।

प्रश्न विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की दृष्टि से भारत की योजना मे क्या मूलभूत, फर्क करने होंगे ?

विनोबा : भारत की योजना मे मुख्य बात यह होगी अति प्राचीन समय से भारत मे अध्यात्म विद्या चली आयी है। अध्यात्म मे जो अति प्राचीन हो वही प्रमाण माना जाता है विज्ञान मे जो अद्यतन, सबसे ताजा हो वही प्रमाण होगा। अध्यात्म विद्या के अनेक ग्रंथ यहा हैं। ज्ञानेश्वरी लीजिए या आधुनिक समय का अध्यात्म विद्या का ग्रंथ लें। लोग किसे पढ़ेंगे ? आधुनिक ग्रंथ नही पढ़ेंगे। ज्ञानेश्वरी ही पढ़ेंगे। क्योंकि वह सात सौ वर्ष पुरानी है इसलिए अत्यत प्राचीन अध्यात्म विद्या और अति अर्वाचीन विज्ञान की जोड़ी बनानी होगी। विज्ञान में पीछे जाना नही, अति अद्यतन, अर्वाचीन सिद्धांत लेना होगा और अध्यात्म में जितना पीछे जा सकेंगे उतना जाना होगा।

प्रश्न : अणु-विस्फोट भारत के जीवन का एक नया अध्याय है ऐसी स्थिति मे भारत सर्वप्रथम क्या करे ?

विनोबा : भारत सारी दुनिया को शांति का आश्वासन दे। उसने वैसा आश्वासन दे भी दिया है। लोग एकदम विश्वास न करें। वे क्यों करें ? दस-पाँच बरस देखेंगे। परीक्षा लेंगे। फिर दुनिया अनुभव करेगी कि भारत अणुशक्ति का उपयोग शांति तथा वैज्ञानिक खोज के लिए ही कर रहा है। तब सारी दुनिया में भारत के लिए आदर बढ़ेगा। आज जो थोड़ा अविश्वास है वह दूर होगा।

कचहरी में मिली सफलता से उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी नगरी कानपुर मे तरुण शान्ति सेना के नाम और काम दोनों ही स्थान-स्थान पर चर्चा के विषय बन गये हैं। कार्यकर्ता जब शहर के विभिन्न मुहल्लों मे पहुचते हैं तो स्थानीय लोग 'कचहरी वाले लड़को' के रूप मे उनका स्वागत करते हैं। नियमितरुप से होनेवाली नुक्कड सभाओ के द्वारा जन-जागरण का प्रयास व्यापक किया जा रहा है और निर्दलीय व सामाजिक युवा सगठनो के साथ सम्पर्क करके उन्हें अभियान के कार्यक्रम मे सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

बिहार : देश की चढ़ती हुई जवानी

रामचन्द्र राही

चार जून को पटना मे जिन्होंने, स्टेनगनो, मशीनगनो, और तनी हुई बन्दूको से लैस करीब १०० ट्रको और पुलिस-गाड़ियो मे लदे जवानो का प्रदर्शन देखा, उनके मन मे सहज ही यह सवाल पैदा हुआ कि हमारे देश मे लोकतंत्र है या तानाशाही ? ३ जून को भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का जुलूस निकला, जिसमें लोग लाठी-भाला तलवार आदि लिये हुए थे, लेकिन उस जुलूस से पहले सेना और पुलिस की शक्ति का प्रदर्शन करना सरकार ने जरूरी नही समझा, जबकि वह अच्छी तरह जानती है कि कम्युनिस्टो का जुलूस अक्सर हथियारो से लैस निकलता है। लेकिन ५ जून को श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व म निकलने वाले जुलूस के पहले सरकार को यह जरूरी लगा कि अपनी पुलिस और सेना का प्रदर्शन किया जाय, जब कि हर आदमी जानता था कि जयप्रकाश जी के नेतृत्व मे निकलने वाला जुलूस हिंसा-विरोधी होगा, उसमे कोई हथियार लेकर नही शामिल होगा। फिर भी इस जुलूस के पहले राज्य की सगठित हिंसक शक्ति का प्रदर्शन, इस ऐतिहासिक तथ्य की ओर सकेत करता है कि राज्य हमेशा लोक की समठित शक्ति से, अन्याय को सहने से इन्कार करने की आत्मशक्ति से भय खाता है। क्योंकि राज्य इसका मुकाबला नही कर पाता। लाठी-भाला तलवार की शक्ति का मुकाबला वह आसानी से अपनी सगठित सैनिक शक्ति द्वारा कर लेता है। और इसी सिलसिले म यह बात भी साफ हो जाती है कि नाम चाहे जो दिया जाय, सरकारो का चरित्र एक होता है—सरकारें लोक स्वातन्त्र्य की विरोधी होती हैं। जो राज्य शक्ति जितनी शक्तिशाली होगी, होना चाहेगी, वह उतनी ही लोक स्वातन्त्र्य को दबाने की कोशिश करेगी, करती रहेगी। मौजूदा भारतीय लोकतंत्र का चरित्र इसका अपवाद नही। वरना, ८ अप्रैल ७४ को जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व मे जो मौन-जुलूस निकला था, जिसके बाद पूरे बिहार राज्य मे हिंसा का आतंक समाप्त हो गया था, उस अनुभव के बाद भी सरकार ने शांतिपूर्ण जुलूस का सामना करने के लिए पटना मे सेना की ऐसी किलेबंदी नही की होती।

जयप्रकाश नारायण और बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति ने पहले से ही यह घोषणा कर दी थी कि '५ जून को एक लाख से अधिक लोगो का शान्तिपूर्ण जुलूस निकलेगा, जो प्रदेश के १ करोड मतदाताओ के हस्ताक्षर ले जाकर राज्यपाल को देगा। इन हस्ताक्षरो द्वारा राज्यपाल को यह बताया जायगा कि मौजूदा विधायको के प्रति हम मतदाताओं का विश्वास नही रहा, इसलिए वर्तमान विधान सभा भंग की जाय।' क्या 'लोक-भावना' का यह इजहार 'लोकतंत्र' को समाप्त करने वाला था, और सेना द्वारा लोक की इस भावना को दबाकर लोकतंत्र की रक्षा हो जाती ? शायद लोक जीवन से कटे हुए, समाज के दुखदर्द से बेफिक्र अपनी सत्ता की कुर्सी से चिपके रहने वाले कुर्सी प्रेमी नेताओ को यह बात समझ मे अभी नही आ रही है, क्योंकि उनकी दृष्टि म वे और उनकी कुर्सी दोनों की सेना द्वारा रक्षा ही लोकतंत्र की रक्षा है, और उन पर खतरा ही लोकतंत्र पर खतरा है।

लेकिन इतिहास गवाह है कि लोकशक्ति को दुनिया की कोई भी ताकत आज तक स्थायी रूप से दबा नही सकी है और न भविष्य मे दबा सकेगी। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण बन गया ५ जून का विशाल प्रदर्शन। क्या-क्या कोशिशें नही की गयी सरकार की ओर से, कि प्रदर्शन कमजोर पड जाय। लेकिन बावजूद उसके पटना मे ५ जून को जो प्रदर्शन हुआ, जो सभा हुई, उसे देखकर स्वराज्य की लडाई को अपनी आंखो देखने वालो ने भी कहा कि पिछले २७ वर्षों म ऐसा जन-प्रदर्शन हमने नही देखा। –

पटना गांधी मैदान से राजभवन तक लगभग ६ किलोमीटर का रास्ता लोगो से पट गया था, सडक के किनारे के मकानो की छतो पर, पेडो, चहार दिवारियो पर आदमी ही आदमी दिखाई दे रहे थे। सेना की कडी सुरक्षा तथा काम-तार की घेरेबन्दी मे शरण लिये अपने को जनता का प्रतिनिधि कहने वाले विधायक और मंत्री लोगो ने पता नही यह दृश्य देखा या नहीं, देखकर क्या सोचा, क्या नही, लेकिन यह तो मालूम हो ही गया, बिहार की करीब ५ लाख से भी अधिक प्रत्यक्षदर्शी जनता को और खबरो को पढ़-सुनकर पूरे बिहार की जनता को, कि उनके प्रतिनिधियो मे बहुत थोड़े ही लोग ऐसे हैं जो उनकी (लोगो की) भावनाओ की कद्र करते है, उनके साथ उनके बीच रहने मे गौरव महसूस करते हैं, अधिक लोग ऐसे हैं जो 'कुर्मी', मात्र कुर्सी की कद्र करना जानते हैं और घेरे मे, सेना के सरक्षण मे रहकर अपने को सुरक्षित महसूस करते हैं। उन्हे अपने मतदाताओ से ही भय हो गया है। क्या ऐसे प्रतिनिधियो से लोकतंत्र मजबूत होगा ?

इन जनता का विश्वास खोये, कुर्सी से चिपके नेताओं को इतनी हिम्मत तो नही ही हुई कि बिहार के कोने-कोने से आये हुए, किसी प्रकार की हिंसा न करने के लिए वचनबद्ध, लोगो का सामना करें, उनकी बात सुनें, अपनी सुनायें, उल्टे राजभवन से लौट रहे लोगो पर एक कांग्रेस विधायक के सरकारी मकान से गोलिया चलायी गयी, जिसमे २१ आदमी घायल हो गये।

यह है लोकतंत्र के रखवालो की करतूत। इसके बावजूद जुलूस मे शामिल लोगो ने धैर्य नही खोया और जब आमसभा मे घटना की जानकारी दी गयी तथा जयप्रकाश नारायण ने लोगो से यह वचन मांगा कि गोली चली इसके बदले की कार्रवाई जनता ओर से, छात्रो की ओर से नही होगी, तो सबने एक स्वर से यह बात मंजूर की।

आमसभा के शुरू होते-होते काफी अंधेरा हो गया था, विशाल जनसमूह मंच से फैल रही धुंधली रोशनी म जयप्रकाश नारायण को सुन रहा था और सुनते-सुनते सन् ४२ के क्रांतिकारी तरुण जयप्रकाशजी की याद कर रहा था। उम्र की परवाह किये बिना प्रगट हो रही जयप्रकाश की तरुणाई म सन् ४२ से ७४ के बीच की अवधि की अनुभवसिद्ध परिपक्वता ने निखार ला दिया है, यह भी उन दिनो के साथी अनुभव कर रहे थे।

५ जून ७४ का जयप्रकाशजी वह भाषण, (पिछला अंक देखें) लोकनायक के वे आदेश, →

स्वराज्य के बाद के इतिहास में नये अध्याय की शुरुआत कर चुके हैं। गांधी जी ने अपनी आखिरी वसीयत में लिखा था, 'लोकतंत्र के ध्येय की तरफ हिंदुस्तान की प्रगति के दरमियान फौजी सत्ता पर लोकसत्ता को प्रधानता देने की लड़ाई अनिवार्य है।' (मो० क० गांधी, नयी दिल्ली, २९-१-४८) ऐसा लगता है कि वर्तमान फौजी शक्ति आधारित शासन तंत्र पर लोकसत्ता की प्रधानता दिलानेवाली उक्त लड़ाई का बिगुल बज उठा है, और एक बार फिर भारत में उपनिवेशिक गुलामी से मुक्ति के बाद 'स्वराज्य' के निर्माण की महायात्रा शुरू हो गयी है, जो शायद पूरी दुनिया को एक नयी दिशा दे सकेगी। इस महायात्रा की मांग है बलिदान के लिए तैयार दीवानों की, जिसकी कमी नहीं पड़ेगी, यह बिहार सिद्धकर रहा है, करेगा, पूरी दृढ़ता के साथ। किसी समय राष्ट्र कवि दिनकर ने गाया था : 'जयप्रकाश है नाम देश की चढ़ती हुई जवानी का' आज बिहार के जन-जन के हृदय में साकार हो उठे लोकनायक जयप्रकाश की निखरी हुई जवानी को देखकर ऐसा लगता है कि पूरा बिहार ही देश की चढ़ती जवानी का प्रतीक बन चुका है। ●

बिना टिप्पणी के

३ जून के सर्वोदय में डा० दयानिधि पटनायक के साथ अन्य तीन साथियों की अपील पढ़ी। अपील में साथियों ने यह इंगित किया है कि गुजरात और बिहार के जन आन्दोलन के कारण सर्वोदय आंदोलन के मूल कार्यक्रमों से ध्यान हट गया है और अहिंसा से भी आस्था डिगी है क्योंकि वर्तमान आन्दोलनों में हिंसा और जोर जबरदस्ती के कई प्रभाव प्रकट हुए हैं। इस सम्बन्ध में मेरा निवेदन इतना ही है कि जो साथी गुजरात के आन्दोलन में पड़े और जो बिहार के आन्दोलन में लगे हैं उन्होंने कोई हिंसा को अपना लिया या सर्वोदय आन्दोलन के मूल कार्यक्रमों को छोड़ दिया ऐसी बात नहीं है। बिहार जन आन्दोलन के नेता जयबाबू तो बार बार कह चुके हैं कि विधान सभा भंग करना, सरकार गिराना हमारा लक्ष्य नहीं है। किन्तु जिस सरकार में थोड़ी भी नैतिकता शेष न रह गई हो, जो निरीह निरपराध लोगों पर अंधाधुंध गोलियाँ बरसाती हो, ऐसी सरकार को जबरदस्ती टिके रहने का क्या अधिकार है। बार बार यह दुहाई दी जाती है कि इस प्रकार के आन्दोलनों से जैसा भी लोकतंत्र आज है, टूटेगा। बिहार के लोक आन्दोलन की तो मांग ही यह है कि स्वस्थ चुनाव परम्परा कायम हो। चुनाव का तरीका बदला जाये। चुनावी भ्रष्टाचार खत्म किया जाये आदि। ये बातें सरकारों को करना चाहिए। विनोबाजी की यही मांग है कि कम से कम मंत्री स्तर पर भ्रष्टाचार न हो। किन्तु वर्तमान सरकारें तो भ्रष्टाचार की केन्द्र बनी हुई हैं। इसलिए देश भर में शांतिपूर्ण और अहिंसक आन्दोलन की आवश्यकता है। इस समय तो बिहार के जन आन्दोलन का पूर्ण समर्थन करना चाहिए और अपनी अपनी जगह जिससे जो बन सके बिहार के आन्दोलन के समर्थन में कुछ न कुछ अवश्य करना चाहिए। क्योंकि बिहार का आन्दोलन वास्तविक लोकतंत्र के लिए लड़ा जाने वाला आन्दोलन है। इससे सर्वोदय आन्दोलन के मूल कार्यक्रमों को भी बहुत कुछ मदद मिलेगी।

इन्द्रलाल मिश्र, लोकसेवक, इन्दौर

इंदौर में चीखती मंहगाई के विरुद्ध मौन जुलूस

मंहगाई, भ्रष्टाचार, अन्याय और कुशिक्षा के विरोध में १६ जून को इन्दौर में तरुण शांति सेना के तत्वावधान में एक मौन जुलूस निकाला गया। सुभाष चौक से मौन जुलूस प्रारम्भ होकर नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ गांधी हाल प्रांगण में पहुंच कर एक सभा में परिणित हो गया।

जुलूस में रचनात्मक कार्यकर्ता, तरुण शांति सैनिक, व्यक्तिगत हैसियत से राजनीतिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता एवं अन्य नागरिक शामिल थे। जुलूस में स्वयं सेवक प्ले-कार्डस लिये थे जिन पर "हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,—सबके घर में है महंगाई' "महंगाई-भ्रष्टाचार मिटाने के लिये युवाक्रांति' 'लोकतंत्र में जनता सर्वोपरि है' 'नया जमाना नई जवानी देंगे हम अपनी कुर्बानी' आदि नारे लिखे हुए थे। युवाक्रांति के लिए जयप्रकाशजी और विनोबाजी के अपीलनुमा पत्रक भी हजारों की संख्या में वितरित किये गए। जुलूस का उद्देश्य महंगाई भ्रष्टाचार के विरोध में जनता की आवाज बुलन्द करना था। जुलूस में लगभग २०० लोगों ने भाग लिया।

गांधी हाल प्रांगण में आयोजित सभा में सुधीर जोशी ने तरुण शांति सेना की गतिविधियों का परिचय दिया। इस अवसर पर दादाभाई नाईक ने कहा कि जनतंत्र नहीं, दलतंत्र या प्रतिनिधि तंत्र है। लोक तंत्र में तंत्र गौण और लोक प्रमुख होना चाहिए। उन्होंने संविधान में जनता के चाहने पर निर्वाचित प्रतिनिधियों के "रि-काल" की व्यवस्था की जाने की भी मांग की।

नरेन्द्र दुबे ने कहा कि महंगाई न केवल हमारे देश में है बल्कि विश्व व्यापी है। मुद्रास्फीति और महंगाई के कारण यूरोप के कई देशों में सरकारें बदल गई हैं। यदि भारत में भी महंगाई और भ्रष्टाचार बढ़ता रहा तो सरकारें यहां भी टिकी नहीं रह सकती। अत: सरकार की जिम्मेदारी है कि वह महंगाई-भ्रष्टाचार की समस्या का निराकरण करे।

दत्तात्रय सरमंडल ने कहा कि लोकशाही की रक्षा के लिए हर नागरिक को सक्रिय होना होगा। नगर सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष बाबूभाई देसाई ने कहा कि हमारे देश में संसदीय लोकतंत्र है। चुनाव पद्धति में दोष हैं। चुनाव-खर्च का कोई भी सही हिसाब पेश नहीं करता। भ्रष्टाचार की शुरुआत यहीं से होती है। सभा में श्रीमती हीराबाई बोडिया और गिरीश शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। गांधी शांति प्रतिष्ठान के तरुण साथी अशोक बैराले ने सभा की अध्यक्षता की।

अंत में विजय भोंसले ने मध्यप्रदेश सरकार को दिया जाने वाला ज्ञापन पढ़कर सुनाया। तरुण शांति सेना के संयोजक महेश भंडारी ने आभार प्रदर्शन किया।

■ ८ जुलाई को ब्रह्मविद्या मंदिर, पवनार में बिहार में सहरसा अभियान से जुड़े मित्रों का मित्र मिलन तथा लोकगंगा यात्रियों का विदाई समारोह आयोजित किया गया है। इस अवसर पर सहरसा के ग्रामदान-पुष्टि एवं ग्रामस्वराज्य के राष्ट्रीय मोर्चे पर साढ़े तीन वर्षों में हुए कार्य पद्धति और परिणाम का लेखाजोखा प्रस्तुत किया जायेगा। सहरसा में राष्ट्रीय मोर्चे की सफलता के लिए उत्साहपूर्वक काम करने वाले देश भर से आये सर्वोदय-सेवक उक्त आयोजन में सम्मिलित होंगे।

● बम्बई सर्वोदय मंडल का कार्यालय आज तक मणिभवन, १६, लेबरनम रोड पर स्थित रहा। अब बम्बई सर्वोदय मंडल ने मुख्य कार्यालय के लिये एक नयी जगह ली है। मंडल का मुख्य कार्यालय इस पते पर होगा बम्बई सर्वोदय मंडल, शांताश्रम, २६६, जावजी दादाजी रोड, (पुराना तारदेव रोड) नाना चौक के पास, बम्बई ७।

(पृष्ठ २ से जारी)

इसके पीछे सत्तारूढ़ दल का इशारा था, इसे मानने में कोई हर्ज नहीं है। विचार शायद यह था कि इस प्रकार जो अन्य विधायक त्याग-पत्र देने की बात सोच रहे हैं, वे सोच में पड़ जायेंगे और जिसे आज लोकतंत्र कहा जा रहा है, वह जैसे-तैसे चलता रहेगा। चुनाव आयोग की इस घोषणा का इसी तरह का असर हुआ भी। किन्तु जनसंघ, सोशलिस्ट पार्टी और संसोपा तथा संगठन कांग्रेस ने ही नहीं सत्तारूढ़ दल के साथ जिसका गठबन्धन है उस भारतीय कम्युनिस्ट दल ने भी चुनाव आयोग के आयुक्त श्री स्वामीनाथन को लिखा कि इस समय जबकि वर्षा शुरु हो गई है और गांवों में आने-जाने के साधन लगभग समाप्त हैं, उपचुनाव करना न उचित है और न सम्भव। जनसंघ और संसोपा ने तो यदि चुनाव होता है तो उसके बहिष्कार का एलान भी कर दिया था, फिरस्वयं सत्तारूढ़ दल के लोग सामने आए और उन्होंने कहा कि प्रान्त में जो परिस्थिति है और जयप्रकाश नारायण जी तथा छात्रों का जो राज्यव्यापी आन्दोलन तथा प्रभाव है, उसे देखते हुए चुनाव के लिए खड़े हो जाने का साहस करना, दुस्साहस कहलायेगा। कांग्रेस विरोधी लहर बहुत ऊंची उठ रही है और इस बात का प्रयास भी शुरु हो गया है कि कोई चुनाव-पत्र न भरने पाय। रोहतास जिले के भभुआ नगर में इस प्रकार का सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया और चैनपुर तथा रामगढ़ चुनाव क्षेत्रों में चुनाव पत्र भरने के इच्छुक कांग्रेसी प्रत्याशियों ने बुद्धिपूर्वक चुनाव-पत्र दाखिल करने का विचार छोड़ दिया। सत्तारूढ़ दल के प्रत्याशी चुनाव में लोगों के सामने जाने से डर रहे थे। विधान सभा में भले ही सत्तारूढ़ दल जयप्रकाशजी को लोक-तन्त्र विरोधी अभियान चलाने वाला व्यक्ति कहकर संतोष कर ले, किन्तु यह चीज जनता में जाकर कहना आसान नहीं था। इसलिए मानसून का आना, बादलों का छाना और मूसलाधार पानी का बरसना, उनके लिए इस अर्थ में वरदान ही सिद्ध हो गया। वे इसकी आड़ में यह कह सके कि चूंकि ऐसे मौसम में मतदाताओं तक पहुंचना सम्भव नहीं है, चुनाव की तिथि आगे बढ़ा दी जाय।

चुनाव आयोग और उससे भी ज्यादा केन्द्रीय शासन ने इस बारे में समझदारी से काम लिया और मैदान में गिर देने प्रक्रिया का खतरा टालकर अक्ल का काम किया।

बधाई!

—भ० प्र० मिश्र

७२ वर्ष के युवा जयप्रकाश : भोगती सभा में भोगते वक्ता का अग्नि आवाहन।

(पेज ४ से जारी)

पर सन् ४२ आ रहा है। एक क्रांतिकारी परिस्थिति बन रही है और अगर लोगो की निराशा और घुटन को रचनात्मक अभिव्यक्ति नही मिली तो इस परिस्थिति मे से सिवाय तानाशाही के कुछ निकलेगा नही। मैं सब पार्टियो को जानता हूं। सबमे मेरे मित्र हैं। लेकिन ऐसी एक शक्ति नही है देश मे जो खूनी क्रांति कर सके। छिटपुट हिंसा होगी सब तरफ और उससे अराजकता होगी और तानाशाही आयेगी। इस निराशा, असन्तोष और घुटन मे से युवको ने एक रास्ता निकाला, इस मे से रचनात्मक मार्ग निकलेगा। इस मे से सम्पूर्ण क्रांति निकलेगी। लेकिन मच से लम्बी बातें करने से नही। इसीलिए मैं इन युवको से कहता हूं आओ निकल के। गाधी जी ने कहा था असहयोग करो। मैं तो कहता हूं कि सिर्फ एक वर्ष दो। एक वर्ष के लिए जीवन नही दोगे तो कुछ नही होगा। (इस पर सभा ने तालियां बजायी और जे०पी० ने पहली बार कहा कि बजाइये ताली। ये ताली ठीक बज रही है क्योंकि समर्थन की ताली है।) जबसे देश भर में संघर्ष शुरू होगा, हजारो की तादाद में क्रांतिकारी विद्यार्थी निकलें। एक वर्ष मे समाज का रूप बदल जायेगा।

स्वराज्य की लड़ाई बापू चला रहे थे। उनके अन्दर इतनी शक्तियां मिली हुई थीं। अवतारी पुरुष थे। मै तो उनके चरणो की धूल के भी बराबर नही हूं। लेकिन उनका भी आन्दोलन सारे देश मे एक दिन मे नही फैला। चम्पारण मे सत्याग्रह किया शुरू उन्होंने, बारडोली मे सरदार पटेल ने किया। धीरे-धीरे जनता को अहिंसक शक्ति मे विश्वास आया। इसके पहले बहादुर लोगो ने बम फेंके, संवैधानिक तरीको मे विश्वास करने वालो ने प्रस्ताव पास किये। लेकिन क्रांति नहीं हुई। जब जनता को अहिंसक शक्ति मे विश्वास हुआ तो गाधीजी ने इसे अमोघ हथियार कहा। अहिंसा की शक्ति का कोई काट नही है। इन सत्याग्रहो से हवा बनी। जब बापू नमक कानून तोडने चले तो दिल्ली मे सरकार ने कहा कि ठीक है जाने दो। *क्या होगा इससे, गिरफ्तार भी नही किया।* इन्होने नमक सत्याग्रह किया और वह आग की तरह फैल गया पूरे देश मे।

तो मित्रो, बिहार देशव्यापी आन्दोलन की तैयारी है। उसका भार बिहार पर है, विद्यार्थियो पर है। बच्चों तक मे सत्याग्रह करने और जेल जाने का उत्साह है। मैं तो बहुत आशा देखता हूं। अभी हमे सत्याग्रही नही चाहिए। लेकिन एक दिन ऐसा आ सकता है जब हम कहे कि सत्याग्रही भेजिये तो आप आये अच्छे नारे लगाते हुए। यह नैतिक सांस्कृतिक क्रांति है। हमे खुद भ्रष्टाचारी *नही होना है। सर्वत्र सदाचार से* चलाना है। सम्पूर्ण क्रांति की बात है। बिहार को मैं बारडोली समझ रहा हूं। इसमे से विधायक शक्ति निकलेगी तभी परिवर्तन *होगा। बिहार मे आन्दोलन सफल होगा तो* नया भारत बनेगा। सपना साकार होगा। लोकशक्ति पैदा होगी। डॉ० रघुवंश ने सभा की अध्यक्षता करते हुए शुरू मे कहा था कि *हमने जयप्रकाश जी को युवको के नेता के रूप* मे देखा था। आज बत्तीस बरस बाद उन्होंने युवको को अपना नेता माना है। युवक सचमुच नेता हैं लेकिन उन्हें क्रांति मे जनता *का विश्वास पैदा करना है।* —प्रभाष जोशी

महबूब नगर सर्वोदय सम्मेलन

सात और आठ जून को महबूब नगर जिला सम्मेलन मनमकोंडा (मुनीकोंडा) मे आठ सौ साल के पुरातन व्यंकटेश्वर मंदिर मे संपन्न हुआ। सम्मेलन मे आये १२० लोगो के निवास और भोजन का प्रबंध मंदिर की ओर से किया गया। २५ मुसलिम भाई *भी इस सम्मेलन मे शरीक हुए।* आंध्र प्रदेश सर्वोदय मंडल के मंत्री सुरभी शर्मा ने अध्यक्षता की। ठाकुर दास बंग मुख्य अतिथि थे।

सम्मेलन मे पारित निवेदन मे कहा गया कि लोगो की दिक्कतें दिन-दिन बढ़ती जा रही हैं। भ्रष्टाचार, महगाई, बेरोजगारी से लोग संत्रस्त है। इन बातो के खिलाफ श्री जयप्रकाश जी द्वारा छेड़े गये धर्मयुद्ध का यह सम्मेलन स्वागत करता है। गुजरात, बिहार *और मराठवाड़ा के विद्यार्थियो ने इस संबंध* मे उल्लेखनीय कार्य किया है। उनका यह सम्मेलन अभिनंदन करता है। वहाँ की गलतियां टाल कर, हमारे यहाँ की परिस्थिति को ख्याल मे रख कर शांतिमय, नैतिक और आध्यात्मिक बुनियाद पर युवा आंदोलन हमारे यहाँ भी चालू हो, लोग भी उसमे हाथ बटायें लोगो से हमारा यह आवाहन है। ऐसे आंदोलन को हमारा सक्रिय सहयोग रहेगा। ग्रामदान ग्रामस्वराज्य के बिना ये समस्याएं स्थायी रूप से हल नही हो सकतीं ऐसा हमारा विश्वास है।

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

भूदान-यज्ञ

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली, सोमवार, ८ जुलाई, '७४

"·······बाबा को दीखता नहीं वह आपको दीखता है।"

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० | ८ जुलाई, '७४ | अंक ४१

१९, राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

विनोबा और जयप्रकाश नारायण

देवेन्द्रकुमार

आठ जुलाई को श्री जयप्रकाश जी विनोबा से करीब ८ महीने बाद मिल रहे हैं और इन आठ महीनों मे कई बार यह महसूस हुआ है कि दोनो की परस्पर बातचीत और अधिक जल्दी-जल्दी हो पाती तो अच्छा होता। जब कि विनोबा जी स्वयं अपनी ओर से कोई विशेष अभिक्रम किसी कार्य के लिए नही ले रहे हैं और अपनी भूमिका अभिध्यान की ही रखी है परन्तु उनकी सलाह से इस बीच जो विशेष घटनाए हुई, उन्हे समझना उचित होगा।

बाबा के विचार : ५ साल से चल रहे सहरसा के सघन ग्रामदान कार्य को आखिरी जोर लगाने के बाद स्थानीय आधार पर ही विकसित होने के लिए छोड़ दिया गया।

स्त्री शक्ति जागरण की दृष्टि से ब्रह्म-विद्या मन्दिर के जिस चिन्तन को विनोबा जी ने मूर्त रूप दिया है उस हेतु ७-८-९ मार्च को एक सम्मेलन महिलाओ का हुआ, उसमे प्रधानमंत्री इन्दिरा गाधी पधारी। उसके पूर्व जनवरी के प्रथम सप्ताह मे भी उन्होने विनोबा जी से भेंट की थी और एक पारस्परिक निकटता प्रकट हुई। सरकार की नीतियो और कार्य के सम्बन्ध मे एक सहानुभूति की दृष्टि रखने की वृत्ति विनोबा जी की रही है और जब कभी इस संबध मे आवश्यक टीका करने की अनिवार्यता आई है उन्हो ने स्पष्ट परन्तु सहानुभूति के स्वरो में ही उसका निर्देश दिया है। इन दोनो मुलाकातो मे यह परिलक्षित हुआ।

वे कहते रहे हैं कि विश्व संदर्भ मे ही देश की समस्याओ का आकलन किया जाना चाहिए और इसलिए उन्होने भारत की अन्दरूनी खबरो को कम और विश्व की जागतिक प्रभाव वाली खबरो की ओर अधिक ध्यान दिया। इस बीच बगला देश, पाकिस्तान और भारत के बीच परस्पर वार्ताए हुई, फलस्वरूप पाकिस्तानी फौजी कैदी करीब एक लाख की तादाद मे भारत से वापस स्वदेश लौटे। इन तीनो देशो के बीच और भी निकटता हो इस दृष्टि से इनकी वार्ताओ के समय भारत के आन्तरिक मामलो को लेकर कोई आन्दोलन न खड़ा किया जाय ऐसी भी एक राय उन्होने दी।

१८ मई को आणविक विस्फोट राजस्थान मे भारत की ओर से किया गया। उस समय भी उन्होने भारत सरकार की इस घोषणा का समर्थन किया कि किसी भी परिस्थिति में भारत अणु का उपयोग युद्ध के लिए नहीं करेगा और यह प्रयोग अणु के शान्तिमय उपयोग की दृष्टि से ही किया जा रहा है। यद्यपि यह चेतावनी भी उन्होंने दी कि इस प्रकार का प्रयोग शान्ति भी पैदा कर सकता है और भ्रान्ति भी। और वैसा हुआ भी है।

उत्तर प्रदेश और उड़ीसा के हाल में हुए चुनाव मे कोई दिलचस्पी लेने की बात तो थी ही नहीं परन्तु चुनाव के पश्चात उड़ीसा की मुख्यमंत्री जब बाबा से मिलने आईं तो उन्होने श्रीमती सत्पथी से सर्वोदय के कार्य को पूरा सहयोग देने को कहा जिसे मुख्यमंत्री ने स्वीकार किया। कुछ साथियो के मन मे यह बात आई कि जब तक किसी राज्य व्यवस्था की नीति और दिशा सर्वोदय के अनुकूल न हो तो उसके किसी क्षेत्र विशेष मे इस प्रकार सहकार करने से क्या बन पायेगा।

गुजरात और बिहार मे क्रमश. विद्यार्थी-असतोष ने आन्दोलन का स्वरूप पकड़ा, जिसके फलस्वरूप गुजरात मे सरकार भग कर देनी पडी और बिहार मे उसी उद्देश्य से आन्दोलन जारी है। इस संबध मे विनोबा जी के विचार आन्दोलन के बहुत अनुकूल हैं ऐसा नही दिखाई दिया। यद्यपि बिहार के सबध मे उन्होने बराबर यह कहा है कि स्थानीय परिस्थिति का जितना आकलन श्री जयप्रकाश जी को है और उसके अनुसार अपनी अहिंसक दृष्टि से जो कार्यक्रम वे लोगो को सुझा रहे हैं उसके प्रति अपने विचार तब तक वे नही बना सकते जब तक जे० पी० से स्वय बात करके पूरी तरह समझ नही लेते। अतएव वहा के पूरे कार्य रूप का उन्होने अपनी ओर से भगवान समर्पित माना है। लेकिन कुल मिला कर आन्दोलनात्मक कामो की विशिष्ट सीमा मानते हुए वे रचनात्मक दृष्टि का ही प्रतिपादन करते रहे हैं।

जे०पी० की भूमिका : श्रद्धेय जयप्रकाश नारायण अपने हृदय की सारी वेदना को समेटे हुए और स्वास्थ्य की विकट स्थिति मे रहते हुए भी देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिस्थिति के प्रति अपनी सवेदनशीलता को तीव्र से तीव्रतर बनाये रहे। जब वे पिछली नवम्बर मे बाबा से मिले थे तब ही उन्होंने राज्यो मे होने वाले चुनावो के सबध मे तरुणो के कर्तव्य के प्रति बाबत एक नोट तैयार किया था और उन्हें दिखाया था। उसमें भावना यह थी कि देश मे जो भी अनैतिकता फैली हुई है, उसमे सरकार की जिम्मेदारी बहुत बडी है और क्योंकि सरकारें चुनाव से बनती हैं, यदि चुनाव ही भ्रष्ट आधार पर सम्भव हो पाते हैं तो उसमें से निकलने वाला फल भी दूषित होता है। इसलिए भ्रष्टाचार दूर करने में चुनाव की शुद्धि का एक बहुत बड़ा कदम है; यह मान कर विद्यार्थी और तरुणों को आवाहन किया कि अपना समय दें और लोगो को समझायें कि जो नियम चुनाव आयोग द्वारा तय किये हैं उन पर पूरा-पूरा पालन हो। लोग सामाजिक प्रहरी के रूप मे इसे देखें। इस दिशा

(शेष पृष्ठ ४ पर)

जे० पी० ने बिहार की जनता के प्रचंड क्रोध को शांतिमय व रचनात्मक मोड़ दिया है

धीरेन्द्र मजूमदार

जयप्रकाश बाबू के आन्दोलन को लेकर अपने शिविर मे जो बुद्धिभेद पैदा हो रहा है, वह बहुत दुख की बात है। इस प्रश्न को लेकर 'राही' के प्रश्न के उत्तर मे (देखें भूदान-यज्ञ १७.६ ७४ : पृष्ठ ६.७.) मैंने अहिंसक व हिंसक क्रांति मे क्या फर्क है, उसका विवेचन किया है। एक ही क्रांति के लिए भिन्न मार्ग अपनाने वाले पक्षो मे जो तनाव पैदा होता है, वह हिंसक क्रांति की अभिव्यक्ति है। अहिंसक में उसका स्थान नहीं है। अहिंसक क्रांति चूंकि, ऐसीमिलेशन व कनवर्सन की प्रक्रिया है इसलिये मन व मार्ग की दूरी जितनी अधिक होगी, उतनी ही उसके लिए परस्पर आकर्षण बढ़ाने की आवश्यकता होगी। इसका अभाव अपने शिविर में देखकर दुख होता है।

गंभीरता से सोचें

मैं अपने समस्त साथियों से निवेदन करना चाहता हू कि सर्वोदय विचार और प्रक्रिया के बारे मे गम्भीरता से सोचें और गलतफहमी के कारण आपस मे बुद्धिभेद न पैदा करें। आखिर सर्वोदय विचार और प्रक्रिया क्या है ? काशिल सम्मेलन के ऐतिहासिक भाषण मे विनोबा जी ने कहा था कि सर्वोदय का लक्ष्य दंडशक्ति से भिन्न व हिंसक शक्ति की विरोधी स्वतंत्र लोकशक्ति का अधिष्ठान है। तब से आजतक उनके साथ जुड़कर हम सब उसीके प्रयास मे लगे रहे।

भूदान से आगे बढ़कर ग्रामस्वराज्य के कार्यक्रम में हम को दंडशक्ति से भिन्न स्वतंत्र लोकशक्ति के मार्ग के अधिष्ठान की दिशा का दर्शन हुआ। लेकिन अब तक हिंसा शक्ति की विरोधी स्वतन्त्र लोकशक्ति के मार्ग की कोई स्पष्ट कल्पना हमारे सामने नही रही। बिहार में जयप्रकाश बाबू ने छात्र-आन्दोलन के माध्यम से जो काम शुरू किया, उसमें हिंसा शक्ति की विरोधी लोकशक्ति का मार्ग खोजना था, और है। उन्होंने उस आन्दोलन की शुरुआत उसी समय, की जिस समय बिहार की परिस्थिति विस्फोटक थी और तेजी से प्रदेश के तरुण हिंसा के पुजारियो की ओर झुकते जा रहे थे। ऐसे अवसर पर अहिंसा के पुजारी का स्वधर्म हो जाता है कि वह उसके मुकाबिले का मार्ग खोजे। शुरू मे जयप्रकाश जी के मन मे वह चीज नहीं थी, जिससे आज हमारे साथियो को राजनीतिक की गंध मिल रही है। उन्होंने उस समय स्पष्टरूप से कह दिया था कि वही उनके साथ रहे जो किसी भी राजनीतिक दल के सदस्य न हो और हो तो दल से त्यागपत्र देकर आयें। और आज भी वे सब लोगो को समझाते हैं कि सरकार बदलने से परिस्थिति नहीं बदलेगी बल्कि परिस्थिति बदलने के लिए पद्धति बदलने की आवश्यकता है'। वे राजनीति के आमूल परिवर्तन की बात करते हैं और साथ-साथ लोकनीति का विकल्प भी पेश करते हैं।

आन्दोलन के दरम्यान जब उन्हे लोक में प्रवेश करने मौका मिला तब उन्होंने देखा कि कुछ निहित स्वार्थ वालों को छोड़कर शेष सर्वजन मे भ्रष्टाचार आदि के कारण सरकार विरोधी मन स्थिति तीव्रता से उभड़ रही है और उसका साकार रूप विधान सभा भंग करने की माग है। स्पष्ट है आज देश की मनःस्थिति मे इस उभाड़ का लाजिमी परिणाम हिंसात्मक विस्फोट था। ऐसे अवसर पर कोई भी अहिंसा का पुजारी तथा विवेकशील जिम्मेदार नागरिक, यह माग राजनैतिक है, कहकर उससे उदासीन नही रह सकता है। उसको इस परिस्थिति के मुकाबिले के लिए जान की बाजी लगानी पड़ती है। जयप्रकाश बाबू ने अपने जीर्ण स्वास्थ्य को लेकर उसमे कूदकर वह बाजी लगा दी है

गांधी ने भी यही किया था

गाधीजी ने भी ऐसी परिस्थिति में ऐसा ही किया था। खिलाफत का प्रश्न भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए कोई प्रश्न नहीं था। लेकिन उस प्रश्न को लेकर इस देश का पूरा मुसलिम समुदाय अत्यन्त उत्तेजित हो उठा था जिसके परिणामस्वरूप व्यापक हिंसात्मक विस्फोट अवश्यम्भावी था। गांधी जैसे अहिंसावादी के लिए 'यह स्वतन्त्रता का प्रश्न नहीं है' कहकर उससे उदासीन रहना सम्भव नहीं था। बल्कि मानवता के प्रहरी के नाते उसको अपनाना स्वधर्म था और उन्होंने यह किया भी। मुसलिम समुदाय की भावना को शान्तिमय विकल्प की ओर मोड़कर तथा स्वराज्य से ही इन प्रश्नो का हल हो सकता है, यह समझाकर, उसके लिए रचनात्मक दिशा का निर्देश कर, हिंसा के प्रचंड विस्फोट से उन्होंने समाज को बचाया। जयप्रकाशजी भी वही कर रहे हैं।

आज बिहार में आग लगी होती

अगर वे तरुणों की भावना की अभिव्यक्ति के लिए शांतिमय व रचनात्मक विकल्प नहीं प्रस्तुत करते तो आज बिहार की जनता चारो ओर आग लगा देती और सरकार उसके जवाब मे महाशक्ति की वृष्टि करती होती। जयप्रकाशजी ने अपने शांतिमय आन्दोलन से उस भयंकर परिस्थिति का मुकाबिला किया। बिहार सरकार के अनेक मंत्रियों ने इस बात को स्वीकार भी किया।

हमारे मित्र कहते हैं, कि 'जयप्रकाश बाबू ने विधान सभा भंग करने की माग करके अपने को राजनीति में घसीट लिया है।' यह समझना गलत है। उन्होंने जब देखा कि जनता की सार्वजनिक माग यही है, तब यह सरकार जनता की विश्वासपात्र नही रह गई है। अगर संविधान में इसका विधान होता कि अविश्वास की परिस्थिति में जनता सदस्यों को वापिस बुला सकती है तो आज की मन स्थिति में प्रबल बहुमत से वापिसी की मांग सफल होती। जयप्रकाश बाबू जैसे व्यक्ति वैधानिकता नहीं देखते, वास्तविकता देखते हैं। इसलिए उनकी दृष्टि से यह मांग जायज है और ऐसी मांग करना राजनीति में प्रवेश करना नहीं है बल्कि यह लोकतन्त्र के सिद्धान्त को स्वीकार करना तथा उसके लिए लोकशिक्षण करना है।

यह सही है कि हमारे समाज मे कई ऐसे साथी हैं जो इस प्रश्न को लेकर जयप्रकाश बाबू के खिलाफ हो गये हैं। किसी भी काम मे नया मार्ग प्रस्तुत करने वालों के लिये

यह स्वाभाविक है। परम्परागत आतंकवाद तथा विधानवाद से भिन्न असहयोग का मार्ग प्रस्तुत करने वाले गांधी का भी यही हाल था। अधिकांश राष्ट्रवादी, जिनमें गुरुदेव, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय, सुरेन्द्र बनर्जी, विपिनचन्द्र पाल, सी० आर० दास आदि नेता शामिल थे, असहयोग के प्रश्न पर गांधीजी के खिलाफ थे। खिलाफत के प्रश्न को लेकर लोग केवल खिलाफ ही नहीं थे, बल्कि नाराज भी थे। देश के बहुसंख्यक राष्ट्रवादी इस प्रश्न को स्वतन्त्रता संग्राम के लिए निश्चित रूप से हानिकारक मानते थे। इस लिए हमारे साथियों में पैदा हो रही लेकर परस्पर बुद्धिभेद नहीं होना चाहिए।

आशा है मेरे साथी मेरे इस विचार व दृष्टि को ठीक से समझेंगे। और अधिक सफाई की आवश्यकता हो तो मुझसे प्रश्न करके और सफाई कर लेंगे।

मेरा स्वास्थ्य काफी गिर गया था। बेट्टूके पौधे के सेवन से काफी सुधर रहा है। विश्वास होता है, इस साल लोकगंगा यात्रा से पूर्व पूरा स्वस्थ हो जाऊंगा। चिकित्सा के कारण मैं सर्व सेवा संघ अधिवेशन में नहीं आ सकूंगा, अपने विचार लिखकर भेज रहा हूं। (ठाकुरदास बंग, मंत्री, सर्व सेवा संघ को लिखे गये एक पत्र से।)

अगला सप्ताह इसी की समझ और समन्वय का है

(पेज २ से जारी)

में कुछ काम भी हुआ। गुजरात के विद्यार्थियों पर भी इस आवाहन का प्रभाव पड़ा। वहां उन्होंने भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाई। एक आन्दोलन खड़ा किया। जे०पी० अपनी ओर से वहां जाने के उत्सुक नहीं थे परन्तु सर्वोदय के मित्रों ने यह आवश्यक समझा कि इस विद्यार्थी शक्ति को यदि अहिंसक मोड़ दिया जा सके तो लोकजीवन शुद्ध करने में बहुत सहायता मिलेगी। अतएव वहां दो दिन के लिए वे गये। गुजरात के आन्दोलन के बाद बिहार में विद्यार्थियों का असंतोष बढ़ता गया और उसने भी धीरे-धीरे विधान सभा भंग करने का रूप पकड़ा। बिहार के ही निवासी होने के नाते और विद्यार्थी समुदाय के इस आश्वासन पर कि उनके नेतृत्व में वे अहिंसक तथा शांतिपूर्ण आन्दोलन के लिए अपने को उत्सर्ग करने को तैयार हैं, बिहार की हलचल में जयप्रकाश जी ने सक्रिय भाग लिया। यद्यपि उनको इस बीच प्रोस्टेट के ऑपरेशन के लिए महीने-सवा महीने के लिए बाहर रहना पड़ा और उनकी अनुपस्थिति में अन्य सर्वोदय साथियों ने आन्दोलन का मार्गदर्शन किया। आन्दोलन बहुत बड़ी हद तक अराजनैतिक और शांतिपूर्ण आधार पर ही आगे बढ़ता जा रहा है। आने के बाद उन्होंने उत्तरोत्तर तीव्र कार्यक्रम का ऐसा सिलसिला रखा जिसमें अधिकाधिक जनशक्ति हिस्सा ले सके।

स्वाभाविक ही शासन से संबंधित संस्थाएं और नेतागण इस रुख से चिन्तित और परेशान हुए। उनका मानना है कि राजनैतिक दृष्टि से इन कामों को सरकार के सहयोग से भी किया जा सकता था और जब शासन का विरोध करके इन चीजों को लादा जायेगा तब जो वातावरण बनेगा उसमें कोई मिठास नहीं रह पायेगी तथा सर्वोदय की जो एक वृत्ति 'सर्वेषाम्—अविरोधेन' है वह नहीं बन पायेगी। इससे जिन क्षेत्रों में जनता की शक्ति को शासन की शक्ति के साथ जोड़ कर नई समाज रचना के नाम सर्वोदय के द्वारा किये जाने के प्रयोग हो रहे हैं, उन पर इसका बुरा असर पड़ेगा। दूसरी ओर यह भी पुष्ट विचार बना कि जो सरकार-परस्ती सैकड़ों-हजारों वर्षों से भारत की जनता में व्याप्त है और जिससे उभर कर अपने पैरों खड़े होने की शक्ति दिलाने की बहुत बड़ी जरूरत है, उस दृष्टि से जनता की ऐसी जागृति जिसमें वे गलत कामों का विरोध करें और जिसमें जनता का अधिक संवेदनशील तत्व तरुण अगुआई करने वाले बनें—यह प्रसन्नता और स्वागत की बात है।

श्री जयप्रकाश जी के साथ कठिनाई यह रही कि उनके बदलते हुए विकासवान विचारों को न समझ कर पुराने राजनैतिक दर्शन के (पावर पोलिटिक्स) के आधार पर ही उनको आंकने की कोशिश की जाती है। भूदानमूलक, ग्रामोद्योग-प्रधान अहिंसक क्रान्ति लिए जिनका जीवन समर्पित है ऐसे जयप्रकाश अथवा निकटगामी फल के मोह से साधन और साध्य के बीच कोई समझौता करेंगे यह असंभव बात है। किसी भी परिस्थिति में आम जनता असहाय न बने। जो अन्याय, अत्याचार अथवा अनीति होती हो उसका वह शान्तिपूर्ण मुकाबला कर सके—यह शक्ति तो हर मुमकिन परिस्थिति में उभरनी ही चाहिए। यह अवश्य संभव है कि जो लोग आज की परिस्थिति के ऐसे आन्दोलन के माध्यम बनते हैं, उनकी अपनी कमजोरियों को देखते हुए कुछ सहूलियतें उनके लिए की जाएं।

अभी जिन बातों का आवाहन जे० पी० ने किया है वे हैं: (क) बिहार में सरकार अक्षम सिद्ध हुई है इसलिए वह पुनः जनता से वोट हासिल करे। (ख) सरकारें और उनके होने वाले चुनाव सही और शुद्ध हों इसकी जिम्मेदारी ऐसे तरुणों को उठानी चाहिए जो न किसी दलगत राजनीति में हैं और न जिनका अपना कोई निजी स्वार्थ है। ऐसे उत्साही निर्मल-मन के नवयुवक जनहित की दृष्टि से कष्ट उठाने की तैयारी रख कर लोक जीवन शुद्धि के लिए लगें और इसके लिए साल भर का समय अपनी पढ़ाई में से निकालें। (ग) चुनाव की पद्धति और शासन की व्यवस्था में सुधार के लिए समय-समय पर विभिन्न जानकार लोगों और कमेटियों के द्वारा जो सुझाव दिये गये हैं उन पर शीघ्रातिशीघ्र अमल किया जाय अन्यथा देश की स्थिति उत्तरोत्तर अधिक भ्रष्टाचार की ओर बढ़ती जायेगी।

इस प्रकार जयप्रकाश जी आज की जो देशव्यापी परिस्थिति है, उसमें लोक-आन्दोलन का मार्ग ढूंढ रहे हैं और पू० विनोबा दूरगामी दृष्टि से सभी का साथ लेते हुए कैसे लोकशक्ति कारगर हो इसका चिन्तन और ध्यान कर रहे हैं। सर्वोदय जगत में और उससे सहानुभूति रखने वाले समाज में तथा बाकी सभी लोगों में इस बीच काफी मनोमन्थन हुआ है कि इन दो महान विभूतियों के नाम से जुड़े आन्दोलन और विचार परस्पर पूरक हैं या नहीं। अगला सप्ताह इसी के अभाव के लिए, इसी की समझ के लिए और इसी के समन्वय के लिए वर्धा में होने वाली बैठकों का है।

खजाना सार्वजनिक है या निजी

सिद्धराज ढड्ढा

बिहार राज्य के वित्तमंत्री दरोगाप्रसाद राय ने २० जून को बिहार विधान सभा में यह जाहिर किया कि बिहार सरकार ने फिलहाल उन संस्थाओं को जिनसे श्री जयप्रकाश नारायण का संबंध है, अनुदान या सहायता देना बंद कर दिया है। उन्होंने यह भी बताया कि, इन संस्थाओं को मिलने वाले अनुदान तब तक बंद रहेंगे जब तक इनके हिसाबों की जांच नहीं हो जायगी और रकमों के उचित उपयोग का भरोसा नहीं हो जायगा।

बिहार सरकार का यह कदम आश्चर्य में डालने वाला है। किन्हीं संस्थाओं को सरकारी अनुदान मिले या न मिले यह प्रश्न अपने-आप में गौण है, पर बिहार सरकार ने जिस संदर्भ में और जो कारण बताकर यह कदम उठाया है उस पर से कई ऐसे प्रश्न खड़े होते हैं जो सार्वजनिक जीवन की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व के हैं। वर्षों से जिन कामों के लिए सरकारी सहायता दी जा रही थी वे जयप्रकाशजी के कोई निजी काम थे या सार्वजनिक काम ? अगर वे सार्वजनिक काम हैं तो सिर्फ इसलिए कि जयप्रकाशजी का उन संस्थाओं के साथ संबंध है, अनुदान बंद कर देने का बिहार सरकार को क्या अधिकार है ? क्या सरकारी खजाना वित्तमंत्री का या उनकी पार्टी का निजी खजाना है ? हम कहना चाहते हैं कि यह खजाना इस माने में सरकार का भी नहीं है कि जब जो सरकार चाहे अपने मन की मौज के मुताबिक उसका उपयोग करे। यह खजाना सारे समाज का खजाना है और सार्वजनिक है। सरकार के हाथ में तो सिर्फ उसका नियंत्रण है। सरकारें आती हैं और जाती हैं, उनके मन की तरंग के अनुसार उस खजाने का उपयोग नहीं हो सकता। अगर आज के कोई नियम ऐसे हों जो सरकार को इस तरह मनमाने ढंग से अनुदान बंद करने या चालू रखने का अधिकार देते हैं तो वे नियम भी गलत हैं, और ऐसे नियमों को तत्काल बदलना चाहिए। सरकार और नागरिक का संबंध आज रोजमर्रा बीसों बातों में आता है और यह सामान्य अनुभव है कि इन संबंधों का नियंत्रण करने वाले नियम, जो सरकार ही बनाती है, अक्सर एकतरफा और सरकार के पक्ष में झुके हुए होते हैं। लोकतंत्र की दृष्टि से यह प्रश्न अपने-आपमें एक स्वतंत्र और महत्वपूर्ण विषय है जिस पर विचार होने की आवश्यकता है।

अगर जयप्रकाशजी ने या इन संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने सरकार के पैसे का सही उपयोग नहीं किया है तो उनके खिलाफ कार्यवाही की जा सकती है। पर सिर्फ इसलिए कि जयप्रकाशजी की कुछ प्रवृत्तियां-और वे भी कोई निजी नहीं बल्कि सार्वजनिक प्रवृत्तियां सरकार को पसंद नहीं हैं, इसलिए दूसरे सार्वजनिक कामों के लिए, दी जाने वाली सहायता बंद कर देना तानाशाही नहीं तो और क्या है ?

कल से इन कामों का क्या होगा ? क्या सिर्फ इसलिए कि सरकार की नजरों में जयप्रकाशजी के कुछ काम गलत हैं इन दूसरे सार्वजनिक कामों को जिनके साथ जयप्रकाशजी का कुछ न कुछ संबंध आता है, नुकसान पहुंचाने का सरकार को अधिकार है ? बिहार भूदानयज्ञ कमिटी उन संस्थाओं में से एक है जिसकी सहायता बिहार सरकार ने तत्काल बंद की है। इस समिति के मंत्री का जो बयान अखबारों में प्रकाशित हुआ है उस पर से जाहिर है कि इस समिति के जरिये पिछले वर्षों में बिहार के करीब पौने तीन लाख भूमिहीन परिवारों में करीब साढ़े चार लाख एकड़ जमीन बिना किसी मुआवजे या कीमत के वितरित की गई। सरकार की भूमिसुधार कानूनों, सालाना प्रशासनिक कामों पर होने वाले करोड़ों-अरबों रुपये के खर्च और सरकार के बड़े-बड़े वादों और करारों के बावजूद इतनी जमीन भी सरकार नहीं बांट सकी है। जो जमीन प्रशासन के मारफत बंटी भी है वह भी अधिकतर मंत्रियों, विधान-सभासदों के या अफसरों के रिश्तेदारों और दोस्तों में बंटी है। इसी तरह बिहार रिलीफ कमिटी के द्वारा सन् ६६-६७ के भयंकर अकाल के समय तथा बाद में कितनी सेवा जनता की हुई है वह छिपी हुई नहीं है। इन सब [illegible] को अचानक अपनी किसी तरंग के का[illegible] किसी सरकार को या उसके वित्तमंत्री [illegible] बंद करने का या नुकसान पहुंचाने का [illegible] अधिकार है ? अगर न्यायालय में सरकार [illegible] इस कदम को चुनौती दी जाय तो शायद [illegible] इसे रद्द कर दे। जयप्रकाशजी के इस आरो[illegible] का, जो उन्होंने सार्वजनिक रूप से एक [illegible] अधिक बार लगाया है, कि बिहार की विधा[न] सभा ने जनता का विश्वास खो दिया है और वह न्यायपूर्ण शासन चलाने में असमर्थ है, यह ज्वलंत सबूत बिहार सरकार ने खु[द] अपने इस काम से दे दिया है। देश की प्रधानमंत्री और कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष [से] लगाकर उनके अदना साथी कार्यकर्ता पिछ[ले] दिनों में एक ही राग अलापते रहे हैं कि विधा[न] सभा को भंग करने की मांग खड़ी करके जयप्रकाशजी 'जनतंत्र' की नींव खोद रहे हैं। जनतंत्र का मतलब शायद उनकी निगाहों में इतना ही है कि उनकी पार्टी की सत्ता किसी भी प्रकार से बनी रहे, चाहे उनका आचरण कितना भी निरंकुश हो ?

संस्थाओं के हिसाब की जांच और उनके फंड के उचित उपयोग की बात भी केवल बहाना है और यह बहाना भी इतना लचर और निकम्मा है कि वह किसी को धोखे में नहीं डाल सकता। बिहार भूदान कमिटी के मंत्री ने साफ कहा कि संस्था का आडिट बराबर होता रहा है बल्कि उल्टे सरकार को उसके लिए बारबार याद दिलानी पड़ती है। और जांच होनी थी तो इतने दिन तक सरकार क्या सो रही थी ?

बिहार सरकार और जयप्रकाशजी के बीच का यह मामला किसी का घरेलू मामला नहीं है। न सार्वजनिक खजाना किसी की निजी संपत्ति है! बिहार सरकार ने जे० पी० से संबंधित संस्थाओं के अनुदान बंद करने का जो मूर्खतापूर्ण कदम उठाया है उसके संदर्भ में उपरोक्त सारे सार्वजनिक महत्व के प्रश्न उठते हैं। बिहार सरकार अगर अपने-आपको जनतांत्रिक सरकार मानती है तो उसे अपना कदम वापस लेकर जे० पी० से और उन सब संस्थाओं से माफी तो मांगनी ही चाहिए, साथ-साथ ऊपर उठाये गये प्रश्नों का सार्वजनिक उत्तर भी देना चाहिए।

मशीनों ने आदमी को गुलाम बना दिया है

इवान द० इलिच

कोई एक शताब्दी से हमने यह कोशिश की है कि मशीनें आदमी के लिए काम करें और आदमी को अपने जीवन में उनका उपयोग करना सिखायें। परिणाम यह हुआ है कि मशीनें काम नहीं करती और लोग इस तरह की जिन्दगी जीना सीख-सीख कर ऊबने लगे हैं जिसमें उन्हें मशीनों से सेवा लेने के बजाए मशीनों की सेवा करनी पड़ती है। यह प्रयोग जिस आधार पर किया गया था वह आधार छोड़ने का समय आ गया है। माना गया था कि मशीनें आ जायेगी तो आदमी को गुलामी नहीं करनी पड़ेगी। जो काम पहले गुलामों से लिया जाता था, मशीनें उस काम को करेंगी। अब प्रत्यक्ष हो गया कि मशीनों ने गुलामों की जगह नहीं ली, आदमियों को गुलाम बनाया है। उद्योगों की प्रगति के साथ जो उपकरण और औजार बढ़ते चले जा रहे हैं उनके आधिपत्य से अधिनायकवाद के अन्तर्गत काम करने वाला सर्वहारा मजदूर, पूंजीवादी पद्धतियों में पलने वाली भीड़, कोई भी अपने को बचा नहीं पाता।

इस समस्या का एक ही हल है और वह यह है कि हम आदमी को औजारों से जोड़ने के बदले, आदमी को ऐसे औजार दे दें जिनकी मदद से वह अपने आप अपनी रुचि के कामों को खूबी से अंजाम देने में समर्थ हो जाय। इस तरह औजार और आदमी के बीच गुलाम और मालिक का संबंध खत्म हो जायेगा और हर व्यक्ति को व्यक्तिगत स्वतंत्रता बरतने का ठीक दायरा मिल जायेगा। आज आदमी को जरूरत इस बात की है कि उसे ऐसे नये औजार मिलें जिनसे वह खुद काम ले, ऐसे औजार न मिलें जो उससे काम लें। इसके लिए कल्पनाशीलता का तकनीकी ज्ञान में खासा समावेश करना पड़ेगा। तब हम देखेंगे कि हर काम करने वाले में कल्पनाशीलता और कार्यकुशलता जागेगी, और तब वे गुलामों की तरह काम में जुटे रहने वाले एक दूसरे प्रकार के यंत्र बनकर नहीं रहेंगे।

मेरी मान्यता है कि समाज की संघटना नये सिरे से ही की जानी चाहिए और इस नवसंगठना का उद्देश्य होना चाहिए ऐसे स्वतंत्र व्यक्ति और स्वतंत्र व्यक्ति समूहों का निर्माण जो मनुष्य की उन आवश्यकताओं की पूर्ति करें, जिन को उसने स्वयं सोच समझ कर आवश्यकता माना है। फिर यह पूर्ति भी उत्पादन के एक ऐसे ढंग से हो जो हमारी आज की रूढ़ि पद्धति से अलग और नयी हो। आज का औद्योगिक समाज और उसकी संस्थाएं इससे बिलकुल विपरीत दिशा में उत्पादन कर रही हैं। यंत्रों की शक्ति जैसे-जैसे बढ़ती जाती है, समाज में व्यक्ति का स्थान गौण होता चला जाता है और वह एक ओर स्वयं मशीन और दूसरी ओर मशीन से बनी हुई अनचाही वस्तु का उपभोक्ता बनने का विवश हो जाता है। व्यक्ति को चलने फिरने, रहने, एक-दूसरे से व्यवहार करने और कभी-कभी अपने को स्वस्थ रखने के लिए औजारों की जरूरत पड़ती है। प्रत्येक व्यक्ति इन सारी बातों को नहीं कर सकता अर्थात् अलग-अलग सभ्यताओं में वह अलग-ढंग से एक-दूसरे की सेवा पर, कम या ज्यादा, निर्भर करता है। जैसे कुछ लोग अन्न में आत्मनिर्भर नहीं होते। उन्हें दूसरे का पैदा किया हुआ अन्न लेना जरूरी हो जाता है और कुछ लोगों को अपने औजार के लिए दूसरे से नेल या बालबेयरिंग लेने की जरूरत पड़ सकती है। किन्तु याद रखना चाहिए कि ऐसा कोई तबका समाज में नहीं होना चाहिए जो केवल लेता ही रहे। उसे जिन चीजों की जरूरत पड़ती है, उनमें से किसी न किसी चीज का उत्पादक हर व्यक्ति या व्यक्ति-समूह के लिए होना आवश्यक है। इन चीजों का उत्पादन भी उन्हें अपनी रुचि के अनुसार करना चाहिए और इस तरह करना चाहिए कि उनकी रुचि दूसरों को भी सुरुचिपूर्ण मालूम पड़े और वे लोग भी उन वस्तुओं का उपयोग करते समय आनन्द का अनुभव करें। अर्थात् जो उत्पादन किया जाय, वह आनन्द देने वाला हो और जो उपभोग किया जाय उसमें भी उपभोक्ता को सहज आनन्द का अनुभव हो। कई धनवान देशों में कैदियों को भी ऐसी अनेक चीजें मुहैया होती हैं जो उन्हीं के परिवार के स्वतंत्र व्यक्तियों को मुहैया नहीं होती! किन्तु ये कैदी चीजें किस प्रकार बननी चाहिए या किस प्रकार की बनी हुई चीजें इनके मन की हैं, यह व्यक्त नहीं कर सकते। इसलिए आवश्यक चीजें और सेवायें प्राप्त होते हुए भी वे एक सजा भोग रहे होते हैं, जिसे मैं आनन्द-विहीनता की सजा कहना चाहूंगा। वे अपनी रुचि से उदासीन, कोरे उपभोक्ता हैं।

मैंने ऊपर यह सूचित करना चाहा है कि उत्पादन आनन्दपूर्ण होना चाहिए और उसका उपभोग भी। ये दोनों वस्तु एक-दूसरे पर आधारित हैं। अगर उत्पादन आनन्द-विहीन होगा तो उपभोग भी वैसा ही आनन्द विहीन होगा। उपभोक्ता अपनी ओर से उसमें आनन्द के तत्व नहीं डाल सकता। जबकि मैं यह चाहता हूं कि उत्पादन इस प्रकार का हो कि वह व्यक्ति-व्यक्ति में सर्जनात्मक-सहयोग पैदा करे और सहयोग के बावजूद व्यक्ति अपने को स्वतंत्र महसूस करे। सहयोग केवल व्यक्तियों से नहीं सारे वातावरण में से लिपटा हुआ-सा महसूस किया जाना चाहिए आज ऐसा नहीं होता। आज तो हुक्म के मुताबिक मशीन के छन्द पर व्यक्ति को काम करना पड़ता है, और जिस वातावरण में काम करना पड़ता है, वह वातावरण न घरेलू होता है, न आत्मीय, न प्राकृतिक। आनन्द का स्रोत व्यक्तिगत स्वतंत्रता में और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का आनन्दमय स्रोत जब तक किसी प्रकार की अन्य छोटी-बड़ी व्यक्तिगत धाराओं से नहीं मिलता, तब तक समाज में किसी वास्तविक नैतिक शक्ति की उद्भावना नहीं होगी। मेरा निश्चित मत है कि यदि किसी समाज के उत्पादन क्षेत्र में आनन्द का परिणाम धीरे धीरे कम होता चला गया तो औद्योगिक उत्पादन के बल पर वस्तुएं चाहे जितनी बढ़ जाय, वे समाज के आनन्द को नहीं बढ़ा सकतीं, उसे कोई गौरवपूर्ण संस्कृति और सभ्यता की धारा में जोड़कर

शान्ति और स्वच्छन्दता नहीं दे सकतीं।

आज का समाज जिस निरर्थकता और भोलेपन के बीच में दिन काट रहा है, वे औद्योगिक उत्पादन पद्धति की देन हैं। आज जिस समाज के पास जितनी ज्यादा चीजें होती हैं, वह उतना अधिक प्रगतिशील माना जाता है। इसीलिए जिस समाज में चीजें कम हैं वह अपने को पिछड़ा महसूस करता है और औद्योगिक उत्पादन के द्वारा 'प्रगतिशीलों की पंक्ति' में खड़े होने की महत्वाकांक्षा करने लगता है। मैं कहना चाहता हूं कि आधुनिक विज्ञान और तकनीकों का उपयोग बड़ी खूबी के साथ वर्तमान प्रवाह को उलट देने के लिए किया जा सकता है। यदि इस दृष्टि को गम्भीरतापूर्वक अपना लिया जाय तो जीवन की एक बड़ी ही सुखद पद्धति का विकास प्रारम्भ हो जायेगा और एक ऐसी राजनीतिक व्यवस्था अपने आप रूप लेने लगेगी, जिसमें व्यक्ति की इच्छा की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाने लगेगी और इस स्वतन्त्र इच्छा का उपयोग ऐसे विकेन्द्रित ढंग से फैलकर और खुल कर होगा कि व्यक्ति समूह एक दूसरे की शक्तियों का पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए भी एक दूसरे का आधिपत्य या दबाव-महसूस नहीं करेंगे। यह ठीक है कि औजार और संस्थाओं का उपयोग समाज के हाथ में रहना चाहिए, किन्तु इनका विनियोग इस तरह किया जाय कि न व्यक्ति की स्वतन्त्रता का हनन हो, न उसकी सर्जनात्मक शक्ति का। इसके लिए कुछ नयी पद्धतियों का निर्माण करना पड़ेगा जिसमें सामाजिक हित-बुद्धि काम करेगी, विशेषज्ञों की सनक नहीं।

जब तक उद्योगप्रधान औजारों की जगह आनन्दप्रधान औजारों का चलन नहीं होता तब तक जिसे समाजवाद कहा जाता है, उसके दर्शन असम्भव हैं। समाजवाद के आदर्श और न्याय को दृढ़ किये बिना औजारों का यह परिवर्तन भी संभव नहीं है, इसलिए औजार परिवर्तन के पहले विचार को समझाने की दिशा में काम किया जाना चाहिए। हमारे बड़े-बड़े उद्योग धन्धे आज असफलता के कगार पर खड़े हुए हैं, लगता है अथाह में अब गिरे तब गिरे। यह हम सब लोगों की खुशी का कारण होना चाहिए, हम कोशिश करें कि इसका परिणाम एक क्रान्तिकारी बन्धन-मुक्ति में फलित हो। हमारे आज के औद्योगिक संस्थान लोगों को चीजें बना-बना कर देने की धुन में मनुष्य की आधारभूत स्वतन्त्रता को निगले चले जा रहे हैं। उद्योग धंधे नगर, प्रान्त या देश के स्तर पर न रह कर सार्वभौम स्तर अपनाने चले जा रहे हैं। इसलिए औजारों के मामले में एक सार्वजनिक और सार्वभौम विवेक जागता दिख रहा है। अगर लोगों की हित-बुद्धि से मशीनों का उपयोग नहीं किया गया तो विशेषज्ञों की नींद किसी बहुत ही गयी-गुजरी अवस्था में टूटेगी और तब तक स्वतन्त्रता और व्यक्ति के व्यक्तिगत सम्मान की भावना विलीन होते-होते पूरी तरह मशीनों की तरह जड़ रूप धारण कर चुकेगी। आधुनिक तकनीकी के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली इस सम्भावना को मैं इस आनन्दमय समाज का विकल्प सुझाना चाहता हूं। इस आनन्दमय समाज की स्थापना, सामाजिक सहयोग और इस पारस्परिक सदिच्छा के आधार पर होगी कि समाज के पास जो उपयोगी और वैज्ञानिक ढंग से बने हुए औजार हैं वे अपनी-अपनी रुचि, बुद्धि और क्षमता के अनुरूप व्यक्ति-व्यक्ति के लिए आसानी से मुहैया किये जा दिये जा सकते हैं या नहीं, और स्वतंत्र रूप से औजारों का उपयोग करने से एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर किसी प्रकार की आंच तो नहीं आती? आज जो हो रहा है वह यह है कि लोगों ने भविष्य का क्या स्वरूप होगा, यह निश्चय करने की जिम्मेदारी कुछ वैज्ञानिकों पर छोड़ दी है। वे अपनी सारी शक्ति और सामर्थ्य उन राजनीतिज्ञों को समर्पित कर देते हैं, जो उनके हाथों में कोई बना-बनाया भविष्य लाकर दे देने का वचन देता है। अधिक उत्पादन के लिए असामान्य शक्ति-सम्पन्न लोगों के विभिन्न स्तर आवश्यक हो उठते हैं; इसलिए जनता इस प्रकार के शक्ति—स्तरों को चुपचाप स्वीकार करती चली जाती है। फिर राजनीतिक संस्थाएं लोगों को किस अवधि में कितना उत्पादन करना है, इसका उपकरण बनने पर बाध्य कर देती हैं। जो उचित हैं उनकी जगह, व्यवस्था जिन्हें उचित समझती है, वे तत्व ले लेते हैं। सामाजिक न्याय का अर्थ चीजों के समान वितरण के प्रयत्न से अधिक कुछ नहीं बच रहता। जो समाज अधिक से अधिक औद्योगिक वस्तुओं के अधिक से अधिक लोगों द्वारा उपभोग को ही अधिक से अधिक सन्तोष की चीज मानता है, वहां व्यक्ति नाम की वस्तु समाप्त हो जाती है। मगर हम जिस नई राजनीतिक पद्धति की तस्वीर मन में रखे हुए हैं, वह एक ऐसी पद्धति होगी जिसमें हर व्यक्ति अपना भविष्य द्रष्टा होगा। यह नयी नैतिक या राजनैतिक व्यवस्था व्यक्तिगत स्वतंत्रता को दायरों में बांधने वाले सारे नियमों और उत्पादन के तरीकों को एकदम रद्द कर देती है। इस पद्धति में औजारों के केवल तीन उपयोग माने जायेंगे। बल्कि कहना चाहिए कि केवल तीन मूल्यों की रक्षा करना उनका काम होगा; और ये मूल्य हैं, अस्तित्व, न्याय और अपने मन से चुना हुआ काम। इन तीनों मूल्यों की रक्षा करने वाली सामाजिक पद्धतियां अलग-अलग संस्कृति और परम्पराओं के अनुसार अलग-अलग ढंग से विकसित हो सकती हैं, किन्तु मेरा ख्याल है कि ये सभी समाज पद्धतियां आनन्द आधारित होंगी।

ऊपर सूचित किये गये तीनों मूल्य औजारों को अपने आप सीमित कर [illegible] हैं। अस्तित्व बना रहे, ऐसी परिस्थिति आवश्यक होगी। किन्तु केवल इतने से ही न्याय नहीं मिल सकता, क्योंकि अस्तित्व तो कारावास में भी बना रह सकता है। जो वस्तुएं पैदा की गई, उनका न्यायपूर्ण वितरण भी आवश्यक है, किन्तु केवल इतनी ही बात आनन्दमय उत्पादन के विकास में समर्थ नहीं है। जिस तरह मशीनें आदमी को गुलाम बना लेती हैं, उसी तरह साधारण औजारों में भी [illegible] शक्ति है। आनन्दमय उत्पादन तो तभी हो सकता है जब हम अपनी व्यवस्था में ऐसे परिवर्तन करें जिनके जरिये आज तक की वैज्ञानिक जानकारी का बहुत ही न्यायोचित ढंग से सुलभ उपयोग करना सम्भव हो सके। औद्योगिक समाज के बाद का समाज कुछ इस तरह का बनना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति को अपने को काम के जरिये अभिव्यक्त करने की योग्यता किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती

से पूरित न हो और न उसे ऐसी जबर-दस्ती करना सिखाया जाय और न वह अनिच्छापूर्वक किसी के लिए चीजें बनाने के लिए बाध्य किया जाय।

वैज्ञानिक तकनीकों का जब इतना विकास हो चुका है तो औजारों के उपयोग को आनन्दमय बनाया जा सकता है। इसे समाज अब एक अनिवार्यता माने। न्यायपूर्ण जीने, वस्तुओं को वितरित करने और सहयोग की भावना को बढ़ाने के लिये विज्ञान ने अनेक नई ऊर्जा शक्तियों के स्रोत खोल दिये हैं। यदि हम इस समय पारस्परिक स्पर्धा में पड़ जायेंगे तो वह हमें विनाश की ओर ले जायेगा। यदि केन्द्रीय सत्ताएं उनकी मालिक हो गईं तो समान अधिकार की बलि चढ़ जायेगी और उत्पादन चाहे जितना क्यों न हो जाय, समान वितरण एक सपना बन कर रह जायेगा। तर्क-संगत आनन्दपूर्ण निर्माण करने वाले औजार सहयोग पर आधारित सामाजिक न्याय व्यवस्था के लिए एकदम जरूरी हो गए हैं। तथापि इसका यह मत-लब नहीं समझना चाहिए कि जब हम आज की व्यवस्था से दूसरी व्यवस्था में पदार्पण करेंगे तो इससे किसी वर्ग या वर्गों के अस्तित्व पर आघात नहीं लगेगा। आज लोगों और उनके औजारों के बीच का सम्बन्ध आत्मघाती रूप से विकसित हो चुका है। पाकिस्तानियों का जीवन कनाडा के गेहूं का मुहताज है और न्यूयार्क के निवासियों का अस्तित्व दुनिया भर के नैसर्गिक साधनों के शोषण पर अवलम्बित है। हम जिस समाज की कल्पना कर रहे हैं, जब वह जन्म लेगा तो आज की सार्वभौमि-कता को देखते हुए उसका भूखे पाकिस्तानियों या भारतियों पर और इसी प्रकार न्यूयार्क के निवासियों पर बुरा असर पड़ेगा। यह बहुत संभव है कि आज की अति उद्योगशील उत्पादन पद्धति से आनन्दपूर्ण उत्पादन पद्धति वाली व्यवस्था में मनुष्य जाति अल्प-काल में ही प्रवेश कर जाय। वैज्ञानिक प्रगति को देखते हुए इस बात की आवश्यकता है कि उत्पादन पद्धति का यह परिवर्तन एकाएक न हो। इसमें सन्देह नहीं कि व्यक्ति, वर्ग और समुदायों को सारी दुनिया में वस्तुओं के असी-मित उपभोग पर बन्धन लगाना पड़ेगा।

वर्तमान व्यवस्थाएं इस परिस्थिति को एका-एक स्वीकार नहीं करेंगी। इसे तो केवल साधारण व्यक्ति ही स्वीकार करेगा और तब स्वीकार करेगा, जब वह आनन्द, शान्ति, मुक्ति देने वाले त्याग और एक दूसरे के सह-योग को मशीन की गुलामी और कोरे उप-भोक्तावाद पर तरजीह देना सीखने लगेगा। आज के उद्योगाभिमुख मन को विकेन्द्रिकरण की दिशा में ले जाना है। और यह किसी प्रकार के विधि निषेधों से सम्भव नहीं होगा, साधनों को धीरे-धीरे सीमित करने से होगा।

(इवान इ० इलिच की पुस्तक 'द टूल्स फार् कन्विवियालिटी' के एक लेख के अंश का स्वतंत्र रूप प्र० प्र०मि० द्वारा)

पश्चिम हिमालय सेवा संघ के कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन

सुरेश ठाकरान

पश्चिम हिमालय सेवा संघ कार्यकर्त्ता सम्मेलन धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में १७ जून से १६ जून तक हुआ। उद्घाटन प्रदेश राजस्व मंत्री देशराज महाजन ने और समापन मुख्यमंत्री डा० परमार ने किया। सम्मेलन में आये ७५ कार्यकर्त्ताओं ने तीन दिन की तीन बैठकों में पिछले साल के काम का मूल्यांकन व अगले साल की योजनाएं बनायीं।

उद्घाटन भाषण में देशराज महाजन ने हिमालय सेवा संघ के आमंत्रण पर आभार-प्रकट करते हुए कहा कि संघ को कुछ रचनात्मक काम करने चाहिए जिससे कुशासन को समाप्त किया जा सके। भाषण के एक छोटे से हिस्से में उन्होंने छोटे उद्योगों, सामाजिक व रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं आदि का उल्लेख किया, शेष अधिकांश भाग उन्होंने राजनीति को दे दिया, जिसका हिमालय सेवा संघ से कोई सम्बन्ध नहीं था।

अध्यक्षीय भाषण में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने हिमालय सेवा संघ के साथ विश्व विद्यालय का सम्बन्ध दृढ़ करने पर जोर दिया।

सम्मेलन में पिछले वर्ष जो १५ सिफा-रिशें की गयी थीं, उन पर सम्बन्धित कार्य-कर्त्ताओं ने रपट पेश की। सुश्री राधा भट्ट चंडी प्रसाद, सुरेन्द्र बजाज, श्री मैथानी, पंडित भारद्वाज, घनश्याम रतूड़ी, योगेश बहुगुणा, डा० भट्ट और सुशीला जैन ने अपने-अपने कामों की जानकारी दी।

दूसरे दिन की बैठक में अगले वर्ष की रूपरेखा तैयार की जाने वाली थी। पहाड़ों में आगामी स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह की तैयारियां भी इस कार्यक्रम में थी। अंतिम इसे लेकर कार्यकर्त्ताओं में काफी बहस हुई जिसमें व्यक्तिगत आक्षेप तक बात जा पहुंची। कुछ कार्यकर्त्ता 'स्त्री शक्ति जागरण' नाम को 'लोक शक्ति जागरण' में बदलना चाहते थे। दूर-दूर पहाड़ी गावों में काम कर कार्य-कर्त्ताओं को ग्राम विकास आदि कार्यों में बैंक से कर्ज आदि की सुविधाएं लेने में कई बार बहुत दिक्कत आती है। उनको इस सिलसिले में जानकारी देने के लिए आमंत्रित किये गये थी भगवान ने बैंकिंग ऋण प्रणाली को सविस्तार समझाया।

अंतिम बैठक में कुछ कार्यकर्त्ताओं ने समय की कमी महसूस की। कुछ ने 'जानबूझ कर अवसर नहीं दिया गया, ऐसा भी माना। समापन समारोह में चूंकि मुख्यमंत्री परमार उपस्थित थे, इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों में काम कर रहे कार्यकर्त्ताओं को एक बार फिर अपने कामों की जानकारी उनके ख्याल से रखनी पड़ी। इसमें डा० अरम (नागालैण्ड) देवेन्द्र कुमार (दिल्ली) लक्ष्मी माई (हि० प्र०) रूपनारायण (नशाबंदी) राधाबहन (स्त्री शक्ति) श्री दुबे (खादी ग्रामोद्योग) आदि ने हिस्सा लिया।

मुख्य मंत्री परमार ने समापन करते हुए हिमालय सेवा संघ के कार्य पर खुशी जाहिर की और संस्था की प्रगति की कामना की।

समापन से पहले सभी प्रतिनिधियों ने वहीं निवास कर रहे तिब्बती धर्मनेता दलाई-लामा से भेंट की और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

ग्रामस्वराज्य से लोकस्वराज्य की ओर

बद्री प्रसाद स्वामी

बिहार में श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे प्रदेश व्यापी जन आन्दोलन ने सरकार, समाज तथा सर्वोदय के सामने कई बुनियादी प्रश्न खड़े कर दिये हैं। इन प्रश्नों पर देश भर में चिन्तन शुरू हुआ है, यह समाज परिवर्तन के लिए शुभ चिन्ह है। आन्दोलन को सब अपनी दृष्टि से आंक रहे हैं। सरकार मानती है कि यह आन्दोलन लोकतंत्र को ही समाप्त कर देगा और प्रतिक्रियावादी शक्तियों को बल पहुंचायेगा। आम समाज में इस आन्दोलन के प्रति अदम्य उत्साह है। उसे इसमें आशा की नई किरण नजर आ रही है। सर्वोदय कार्यकर्ता इस आन्दोलन को हर पहलू से हिंसा अहिंसा की कसौटी पर कस रहे हैं। कुछ इसे ग्राम स्वराज्य की दिशा में व्यापक व व्यावहारिक कदम मान रहे हैं और कुछ नहीं। कुछ लोग तटस्थ बुद्धि से सर्व सेवा संघ के निर्णय का इन्तजार कर रहे हैं, कुछ बाबा इस सम्बन्ध में क्या कहते हैं इस पर ध्यान केन्द्रित किये हुए हैं।

। देश भर में करोड़ों परिवारों के हस्ताक्षर व सामूहिक संकल्प से लाखों गांवों ने ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य के विचार को मान्य किया है। सरकार व करीब-करीब सभी राजनैतिक दलों ने इस विचार का स्वागत व समर्थन किया। अनेक प्रदेशों की सरकारों ने ग्रामदान कानून भी बनाया, जिसके अनुसार देश में हजारों गांव ग्रामदान एक्ट के अन्तर्गत कार्यरत हैं। इन गांवों में ग्राम स्वराज्य के रूप में लोक स्वराज्य की शुरूआत हो चुकी है। यह लोक तंत्र की वास्तविक बुनियाद है। लोक स्वराज्य के इस बुनियादी कार्यक्रम को बिहार व देश के अन्य प्रदेशों में विकास खंड स्तर व जिला स्तर तक साकार करने के सघन प्रयोग पिछले दो वर्षों से चल रहे हैं। लोक संस्कार व शक्ति द्वारा नीचे से ऊपर तक 'लोग आज की व्यवस्था से मुक्त होते चले जायें तथा पक्षमुक्त वास्तविक लोकतंत्र को लोक स्वराज्य के रूप में विकसित करना ▪ प्रयोगों का स्पष्ट उद्देश्य है, ताकि वास्तविक विकेन्द्रित' लोकतांत्रिक समाजवाद कायम हो सके। इन बुनियादी प्रयोगों के साथ-साथ सरकार ने गरीबी व बेकारी दूर करने का नारा दिया तथा शीघ्र शोषण समाप्त कर समाजवाद को साकार करने के कई महत्वपूर्ण कदम उठाये। इन कदमों के पीछे न लोक समर्थन था न लोक संकल्प। शासन करने वाली पार्टी ने समझा कि वे बिना जन समर्थन व सहयोग के, सरकारी कर्मचारियों के सहयोग से ही इन उठाये गये कदमों को सफल कर लेंगे। इसलिए एक के बाद एक ये नये-नये कदम उठाते ही चले गये। परन्तु भूमि से लेकर अनाज के राष्ट्रीयकरण तक के कोई कदम सफल नहीं हो पाये। गरीबी व बेकारी हटना तो दूर रहा, जीवनोपयोगी वस्तुओं का अभाव हो गया। बेईमानी व भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुंच गया। सरकार ने ज्यों-ज्यों इलाज करने का प्रयत्न किया, त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता ही गया। इस सारी परिस्थिति ने जनता के लिए जीना दुर्लभ कर दिया। अन्दर ही अन्दर जनता में में अत्यधिक असंतोष की आग जल रही थी। यह आग सर्व प्रथम गुजरात में प्रकट हुई, जहां सरकार की शक्ति पर जनता की शक्ति की पहली जीत हुई। गुजरात के बाद बिहार में भी जनता के असंतोष ने उग्ररूप धारण किया। तोड़फोड़ व आगजनी का ताण्डवनृत्य आरम्भ हुआ। परन्तु जे० पी० ने तत्काल अपने सर्वोदय साथियों के सहयोग से बिहार के आन्दोलन को अहिंसक मोड़ देकर बिहार को भस्म होने से बचा लिया। बिहार की आम जनता व छात्रों के आग्रह पर जे० पी० ने जो वहां के जन आन्दोलन को नेतृत्व देना स्वीकार किया है उसका हमें ही नहीं बल्कि सरकार व सभी राजनैतिक दलों को हार्दिक स्वागत करना चाहिए था। क्योंकि आज की शासन व्यवस्था का अल्पमत पर आधारित विधान सभा का अलोकतांत्रिक ढांचा तोड़ना आन्दोलन का कोई मुख्य उद्देश्य नहीं है। बल्कि यह तो वास्तविकता लोक आधारित पक्षमुक्त लोकतंत्र की स्थापना है। लेकिन यथास्थिति को कायम रखने वाले इसकी कल्पना ही नहीं कर सकते। इसलिये वे जे० पी० पर प्रतिक्रियावादी व लोकतंत्र को समाप्त करने का आरोप लगा रहे हैं। जे० पी० का यह प्रयोग इस देश को ही नहीं बल्कि दुनिया को पार्टीतंत्र से निकाल कर लोकतंत्र की ओर बढ़ने की नई दिशा देगा।

हमें समझ में नहीं आता कि सरकार विधान सभा भंग करवाने के कार्यक्रम से इतनी भयभीत क्यों है। जब भी उनका दल कमजोर पड़ता है सरकार तत्काल विधान सभा भंग कर राष्ट्रपति शासन कायम कर देती है तो फिर जिस सरकार को समाज अपने मतदान से बनाता है, उसे अपने प्रतिनिधि को वापिस बुलाने का अधिकार क्यों नहीं? हर मतदाता को अपने प्रतिनिधि से जवाब तलब करने व उसे अपने पद से हट जाने का आदेश देने का पूर्ण अधिकार है चाहे वह आज के संविधान में हो या नहीं। जनता ने इस अधिकार का अब प्रयोग करना शुरू किया है। मतदाता इस अधिकार का प्रयोग अहिंसक ढंग से कैसे करें यही तो जे० पी० व सर्वोदय कार्यकर्ता बिहार की जनता को समझा रहे हैं और वह भी जनता के आग्रह व मांग पर।

जहां कहीं नई व्यवस्था कायम करनी हो, वहां पुरानी व्यवस्था से तो मुक्त होना ही पड़ेगा। यह सही है कि पक्ष मुक्त लोकतांत्रिक व्यवस्था अभी तक कहीं भी है नहीं इसलिये सरकार व समाज को वह काल्पनिक व अव्यावहारिक लगती है। इसके लिए व्यापक लोक शिक्षण का अवसर है। इस समय बिहार के जन आन्दोलन को दो काम साथ-साथ करने होंगे—आज की शासन व्यवस्था को लोकशक्ति द्वारा समाप्त करना तथा लोक शिक्षण द्वारा नई पक्षमुक्त समाज व्यवस्था कायम करना। इस प्रयोग से वास्तविक लोकतंत्र का विकास होगा, शासन व शोषण ▪ समाज मुक्त होगा। गांधी का ग्रामस्वराज्य नीचे से ऊपर तक लोक स्वराज्य के रूप में विकसित होगा। ऐसे प्रयोग को लोकतंत्र की समाप्ति, अधिनायकवाद की स्थापना व प्रतिक्रियावादी शक्तियों को प्रोत्साहन देना मानना वास्तव में मतिभ्रम नहीं तो क्या है?

ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य की सफलता

→

→ के लिए जिन सरकारों ने ग्रामदान कानून बनाये वे ही सरकारें आज ग्रामस्वराज्य के इस व्यापक रूप लोक स्वराज्य का समर्थन व सहयोग करने के बजाय विरोध कर रही हैं। इससे स्पष्ट है कि ग्रामदान ग्राम स्वराज्य को वे एक सुधारवादी कार्यक्रम ही मानते हुई थीं। वे परिस्थिति परिवर्तन वास्तव में नहीं चाहतीं। अगर सरकार गांधीजी के विचार में कुछ भी आस्था रखती है तथा राजनैतिक दल वास्तव में अपने देश में लोकतंत्र को बचाना चाहते हैं तो उन्हें विनोबा के सर्वोदय समाज रचना के पूरे विचार को एवं बिहार में जनशक्ति के आधार पर जे० पी० के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन को समझना ही नहीं होगा, बल्कि सक्रिय सहयोग देकर सफल भी बनाना होगा।

हम सभी सर्वोदय कार्यकर्ता पिछले १-४ वर्षों से बराबर इस खोज में लगे हुए थे कि सर्वोदय समाज रचना का आन्दोलन जनआन्दोलन का रूप कैसे ले। इसके लिये देश भर में व्यापक लोक शिक्षण के साथ-साथ कुछ सघन क्षेत्रों में ग्रामस्वराज्य को साकार करने के प्रयोग भी प्रारम्भ किये। परन्तु आज की दोषपूर्ण समाज-व्यवस्था के कारण उसमें हम कोई खास प्रगति नहीं कर पाये।

परन्तु दूसरी तरफ दोषपूर्ण समाज व्यवस्था से पीड़ित जनता स्वयं अपने ढंग से ही उठ खड़ी हुई। गुजरात में छात्र व शिक्षक अगुवा बने तथा बिहार में छात्रों के साथ पूरा समाज ही उठ खड़ा हुआ। उन्होंने जे० पी० से नेतृत्व की व सर्वोदय वालों से सक्रिय सहयोग की मांग की। मेरे विचार से उनके मांग न करने पर भी हमारा शांति सैनिक व लोक सेवक के नाते फर्ज था कि हम तत्काल सारी परिस्थिति को हिंसा से अहिंसा की ओर मोड़ते तथा हमारे ग्रामस्वराज्य के विचार को लोकस्वराज्य के साथ जोड़ते। जे० पी० व वहां के सर्वोदय कार्यकर्ता आज यही कर रहे हैं। ऐसी सूरत में मुझे नहीं लगता कि हम हमारे बुनियादी कार्यक्रम से हटे हों या कोई तात्विक भूल कर रहे हों। सभी सर्वोदय कार्यकर्ताओं, रचनात्मक कार्यकर्ताओं और हमारे संगठनों को बिहार के जन आन्दोलन का हार्दिक समर्थन ही नहीं बल्कि सक्रिय सहयोग कर इसे सफल बनाना चाहिए। जो साथी मोर्चे पर जाना चाहें उन्हें जाने के लिये तैयार रहना चाहिए। शेष साथी अपने-अपने क्षेत्र में बिहार के जनआन्दोलन की पूरी जानकारी देते हुए ग्रामस्वराज्य से लोकस्वराज्य का पूरा विचार व्यापक लोक शिक्षण द्वारा समझाएं और जहाँ-जहाँ जनआन्दोलन प्रारम्भ हो उसे अहिंसक लोक शक्ति से सफल बनाने में सक्रिय सहयोग दें।

स्त्री शक्ति जागरण सप्ताह

हर घर तक पहुँचने की व्यापक तैयारी

निर्मला देशपाण्डे

पिछले साल मार्च में पवनार में आयोजित स्त्री-शक्ति संमेलन में यह तय हुआ था कि हर साल गांधी-जयंति सप्ताह, स्त्री-शक्ति जागरण सप्ताह के रूप में मनाया जाये। उसके अनुसार इस साल दो से आठ अक्तूबर तक महिला-पदयात्राओं का व्यापक आयोजन किया जा रहा। गत वर्ष देशभर में ३०० पदयात्राओं का लक्ष्यांक रखा था। महिलाओं के अद्भुत उत्साह के कारण ५०० टोलियां निकली, जिसमें ५००० बहनों ने हिस्सा लिया। इस साल देश के ६००० प्रखंडों में ६,००० टोलियां पदयात्रा करेंगी। इसके लिए अभी से सुव्यवस्थित योजना और प्रदेशीय स्तर का संगठन बनाने के लिए निर्मला बहन ने ये सुझाव दिये हैं:

एक: प्रदेश-स्तर का दो-तीन दिन का महिला शिविर या संमेलन पंद्रह जुलाई तक अवश्य आयोजित किया जाये, जिसमें प्रदेश-स्तर की व्यापक योजना बने। शिविर में प्रदेश के सर्वोदय तथा रचनात्मक कार्य करने वाली कस्तूरबा ट्रस्ट, समस्त महिला संगठनों की प्रतिनिधि, स्त्री-शक्ति कार्य में दिलचस्पी लेनेवाली अध्यापिकाओं शिक्षिकाओं प्रखंड समाज सेवा बोर्ड आदि में काम करनेवाली बहनों आदि को बुलाया जाये। वीमेन्स कान्फरन्स, ग्रामीण संघ, युनिवर्सिटी वीमेन्स फेडरेशन तथा नगरों-ग्रामों के महिला-मंडलों के द्वारा काम करनेवाली सभी बहनों से संपर्क किया जाये।

इस शिविर में प्रदेशीय स्तर की समिति तथा प्रदेश के विभिन्न भागों के स्तर पर अलग-अलग समितियां बनाई जाएं।

दो: विभागीय स्तर पर भी दो दिनों के शिविरों का आयोजन किया जायें, जिसमें हर जिले की प्रतिनिधि बहनों को बुलाया जाये। हर जिले में संगठन का दायित्व दो-एक बहनों को सोंपा जाय। यह काम पंद्रह अगस्त तक पूरा हो।

तीन: हर जिले में जिला-स्तर-पर एक शिविर का आयोजन किया जाये, जिसमें हर ब्लाक से प्रतिनिधि बहनें आयें। ग्रामदानी गांवों की महिलाओं को जरूर बुलाया जाये। हर ब्लाक में पदयात्रा-टोली में शामिल होनेवाली बहनों की समिति बनाई जाये। ऐसी बहनों के प्रशिक्षण-शिविर सितम्बर १५ तक चलाये जायें।

चार: स्त्री-शक्ति जागरण के विचार का व्यापक प्रचार किया जाये। पद-यात्री बहनों के लिए मार्गदर्शक-पुस्तिकाएं जुलाई में ही प्रकाशित की जायें। स्थानीय पत्र-पत्रिकाओं में तथा रेडियो पर स्त्री-शक्ति जागरण आयें, तथा पदयात्राओं के बारे में समय-समय पर लेख निकलें। ११ सितम्बर विनोबा-जयंति के दिन, या दो अक्तूबर के दिन 'स्त्री-शक्ति-जागरण' विशेषांक निकालने के लिए समस्त पत्रिकाओं के संपादकों से निवेदन किया जाये।

पांच. दो अक्तूबर को महिला-पदयात्रा का प्रारंभ बड़े समारोह के साथ हो। उसके लिए प्रचार आदि की अच्छी योजना बने। पदयात्राओं के लिए परचे, पोस्टर आदि तैयार किये जायें।

छ. पदयात्राओं के अंतिम दिन याने आठ अक्तूबर को हर जगह विशाल महिला संमेलन आयोजित किये जायें, जिसमें स्थायी संगठन तथा स्थायी कार्य योजना बने।

व्यवस्था की कुछ कठिनाइयों के कारण आगामी १५ जुलाई का अंक प्रकाशित नहीं हो पायेगा।

—संपादक
व्यवस्थापक भूदान-यज्ञ

अब अवैध ठेकों पर भी गिरफ्तारियां

वैध शराब के ठेकों और कारखानों पर तो शराबबंदी सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया ही जाता है, लेकिन अब अवैध ठेकों पर भी भजन कीर्तन करते सत्याग्रही पकड़े जा रहे हैं। राजस्थान नशाबंदी समिति के कार्यालय मंत्री पूर्णचन्द्र पाटनी द्वारा प्रदेश मुख्यमंत्री को लिखे एक पत्र के ये अंश शराब और सरकार के बीच पनप रहे नये सम्बन्धों की ओर इशारा करते हैं।

जयपुर शहर में शराब के अनेक अवैध ठेके सरकार की घोषित नीति के विपरीत चलाये जा रहे हैं। उनमें से एक ठेका गणगोरी बाजार में शार्दूलसिंह की नाल का है, जो मंदिर से सटा हुआ है और मसजिद के भी नजदीक है। यह ठेका नगर परिषद की जमीन पर आम सड़क पर चलता है। इससे मोहल्ले के लोग बहुत परेशान हैं। जिलाधीश महोदय, जयपुर तथा आप स्वयं की सेवा में मोहल्ले के लोग उपस्थित हो चुके हैं। उन्हें आश्वासन भी ठेके को शीघ्र हटाने के बारे में मिले हैं। स्वयं ठेकेदार ने भी मोहल्ले की आम सभा में १ जून तक वहां से ठेका हटाने की मोहलत मांगी थी। किन्तु अत्यंत खेद की बात है कि सारे आश्वासनों के बावजूद वह ठेका नहीं हटाया गया। अतः बस्ती के लोगों को वहां शराब की बिक्री पर रोक लगाने के लिए धरने एवं सत्संग का कार्यक्रम चालू करना पड़ा। आशा थी कि बस्ती के कल्याण के इस प्रयास का राज्य सरकार स्वागत ही करेगी। पर हुई कुछ उल्टी बात। वहां रविवार २ जून, '७४ को शांति पूर्वक धरने पर बैठे [illegible] कीर्तन कर रहे भाई बहनों को डराने के लिए पुलिस द्वारा बड़ा शक्ति प्रदर्शन किया गया।

आधी रात के समय जब पुलिस व आम जनता के चले जाने के बाद वहां सत्संग करने वाले लोग ही बच गये तो करीब ढाई बजे आर० ए० सी० के जवान बड़ी संख्या में आये और ४० लोगों को गिरफ्तार करके ले गये। इनमें राजस्थान नशाबंदी समिति के उपाध्यक्ष श्री रामवल्लभ जी अग्रवाल एवं पांच सत्याग्रही कार्यकर्ता भी शामिल थे। यह अत्यंत खेद की बात है कि गिरफ्तार किये गये लोगों के साथ ठोकर मारना, बाल खींचना, और धक्का मुक्की आदि जैसा दुर्व्यवहार किया गया। पुलिस के जवान सत्याग्रहियों के शामियाने, बिछायत, लाउडस्पीकर, मोटर साइकिल आदि सब सामान ले गये। तोड़ फोड़ भी की गई। अवैध ठेके की रक्षा के लिए पुलिस द्वारा रात्रि के समय जब न शराब का ठेका चलता है और न अशांति की स्थिति बनी थी, शांतिपूर्वक कीर्तन कर रहे लोगों की गिरफ्तारियों का कार्य सरासर अन्यायपूर्ण एवं अनुचित है।

पुलिस की इस अनुचित कार्यवाही से जनता में क्षोभ होना स्वाभाविक है। अतः आपसे अनुरोध है कि राज्य सरकार को अवैध ठेकों की रक्षा करने संबंधी अपनी नीति पर पुनः विचार करना चाहिए। जनतंत्र में जनभावना के हामी होने के नाते हम आशा करते हैं कि आप ऐसी कार्यवाहियां तुरंत रोकेंगे, जिससे राजस्थान की बदनामी होगी तथा जनमानस में रोष ही बढ़ना निश्चित है।

जब शराब अभिशाप है तो कारखाने का उद्घाटन क्यों !

देव कुमार जैन

हरियाणा के राज्यपाल बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती ने सोनीपत से ५ किलोमीटर दूर मुरथल गांव में शराब के एक कारखाने का उद्घाटन करते हुए कहा कि शराब एक अभिशाप है, इससे छुटकारा पाने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए।

जिस कारखाने का उद्घाटन राज्यपाल महोदय ने किया है उस कारखाने में प्रतिवर्ष ७५ लाख बोतल बीयर का उत्पादन होगा। क्या यह माना जाये कि बीयर शराब नहीं है या राज्यपाल महोदय जनता के लिए इसे वरदान समझते हैं? क्या बीयर को हम शराब न कहें या बीयर पीने वाला किसी भी प्रकार की शराब से परहेज कर सकने वाला होगा? क्या बीयर पिलाने की आदत डालना लोगों को तेज शराब तक पहुंचाने के लिए, पहला कदम नहीं है? यदि राज्यपाल महोदय वास्तव में अपने हृदय से शराब को अभिशाप समझते हैं तो इस प्रकार के कारखाने का उद्घाटन उन्हें नहीं करना चाहिए था। उन्हें हरियाणा सरकार को कारखाने खोलने की इजाजत ही नहीं देनी चाहिए थी।

यह ठीक है कि इस प्रकार के कारखानों से सरकार को भारी आय होगी परन्तु जनता की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति का कितना पतन होगा इसकी सरकार को कोई कल्पना नहीं है।

जहां हरियाणा सरकार अपने निर्माण कार्यों द्वारा जनता के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने में एक ओर लगी हुई है क्या वहां सरकार का यह कर्तव्य नहीं है कि लोगों का नैतिक स्तर भी ऊंचा किया जावे ताकि सामाजिक जीवन में भी खुशहाली आ सके? इस प्रदेश में लोगों की आमदनी बढ़ी है लेकिन सरकार द्वारा गांव-गांव में तथा नगर नगर में शराब के ठेके खोल कर उनकी आय तथा चरित्र को समाप्त करने के साधन भी जुटा दिये गये हैं।

इसलिए देश की मजबूती के लिए, प्रदेश की खुशहाली के लिए यह जरूरी है कि सरकार उन साधनों को बन्द करे जिनसे व्यक्ति की आय तथा चरित्र का नाश होता है।

क्या हम उम्मीद करें कि हमारी सरकार शराब को अभिशाप मानकर इससे छुटकारा पाने के लिए राज्यपाल महोदय ने जो सलाह दी है उस पर अमल करेगी? और क्या यह भी उम्मीद करें कि 'राज्यपाल महोदय 'अभिशाप' उत्पन्न करने वाले ऐसे कारखानों का उद्घाटन नहीं करेंगे'?

ईसा के प्रथम बारह शिष्यों में से एक संट थामस ने भारत में प्रवेश पाने के लिए केरल मे ही पहली बार चरण रखे। केरल वही प्रदेश है जहा अरबस्तान आदि मुस्लिम राष्ट्रो से गत अनेक शताब्दियों से लोग इस्लाम का संदेश लेकर सीधे आते रहे हैं। यहा जगह जगह सपत्नीक हज कर के आये हुए 'हाजी' लोग पाये जाते हैं। हिंदू धर्म की विजय-पताका सारे भारत मे फहराने वाले आद्य शंकराचार्य भी इसी केरल की अप्रतिम देन हैं। इस तरह सदियों से केरल दुनिया के तीन प्रमुख धर्मों का संगम स्थान बना हुआ है। परमेश्वर की असीम कृपा केवल यही तक सीमित नही रही। केरल तो मानो सृष्टि-सौंदर्य की खदान है। हमारे सरीखे रूक्ष प्रदेश में रहने वाले महाराष्ट्रीयनों के लिए तो मई माह मे भी इतना हराभरा रहने वाला प्रदेश नंदनवन ही था। केला, नारियल, अनानास, काजू, आम, कटहल आदि फलो का मानो केरल बगीचा है।

कालिकत जिले का सुलतान बतेरी एक प्रखंड है। कभी टीपू सुलतान का तोपखाना वहा रहा होगा अत इस प्रखंड का नाम 'सुलतान बतेरी' (बैटरी का अपभ्रंश) पड़ा है। तीन हजार फीट की ऊंचाई पर बसा होने से गरमी का तो सवाल ही नही था। १ से १० मई तक की पदयात्रा की पूर्व-तैयारी के लिए नंदलाल कावरा, ठाकुरदास बंग, बसंतराव बोबटकर आदि हम कुछ लोग २५ अप्रैल को ही वहा पहुंच गये थे। कालिकत जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष राधाकृष्ण मेनन, गांधी शांति प्रतिष्ठान के बालकृष्ण जी आदि लोग इसके पहले प्रखंड मे घूम चुके थे। बतेरी प्रखंड के इतिहास में यह पहली ही पदयात्रा होने जा रही थी। विनोबा जी की पदयात्रा भी यहा से गुजरी नहीं थी न कभी जयप्रकाश जी का दौरा ही इस क्षेत्र मे हुआ था। विनोबा जी की पदयात्रा तथा जयप्रकाशजी के केरल के दौरे के समय केलप्पन जी के प्रयत्न से यहा के कई दाताओं ने अपनी काफी भूमि भूदान में दी थी, जिसमे से बहुतांश भूमि का बंटवारा होना अभी भी शेष है। हमारी इस पदयात्रा मे हम उन दाताओं से फिर से मिले। करीब-करीब सबको पुराना दान मंजूर था। जमाना बीत चुका था।

केरल की सुरम्य भूमि में

काफी व रबर के बगीचे में ग्रामदान की बेल

सुमन बंग

गोदी मे खेलने वाले बच्चे जवान होकर कारोबार संभालने लगे हैं, कानून बदल चुके है, परिस्थिति बदल चुकी है। अत व्यावहारिक और कानूनी दृष्टि से ये जवान अपने पिता के वचन का पालन कई जगह करने मे असमर्थ सिद्ध हुए। उसका उन्हें रंज भी होता था। संपूर्ण बतेरी प्रखंड कॉफी व रबर का बगीचा है। कहीं-कहीं चाय के बगीचे भी हैं पर बहुत कम। टेपियोको, नारियल, कालीमिर्च, कॉफी और रबर यहा की मुख्य पैदावार है जो यहा से बाहर जाती है। धान की खेती अपवाद स्वरूप दिखायी दी। अन्य किसी भी प्रकार के गेहूं, चना, अरहर, मक्का आदि अनाज की खेती अपवाद के लिए भी नही है। मतलब बतेरी प्रखंड और शायद पूरा केरल ही इस दृष्टि से अनाज में परावलंबी है। बतेरी में सबसे अब "मनी क्रॉप्स" पैदा की जाती हैं। असम की तरह पान, सुपारी आदि चीजें पैदा करते हैं पर खुद उनका उपयोग नही के बराबर करते हैं। इसमे वे निर्व्यसनी हैं लेकिन शराब काफी चलती है। शिक्षण का प्रमाण भारत मे सबसे ज्यादा केरल मे है। पर यहा का आदिवासी अभी भी अन्यत्र की तरह अनपढ़, पिछड़ा हुआ और शोषित है।

पूर्व तैयारी में केरल प्रदेश सर्वोदय मंडल के मंत्री रामचन्द्र कोट्टी, राधाकृष्ण मेनन, बालकृष्ण आदि केरल के प्रमुख कार्यकर्ता तथा हम चारो साथ घूमे। संपूर्ण केरल याने एक गाव। पचीस-तीस हजार बस्ती का एक-एक गाव। पहला गांव कहां खत्म होता है और दूसरा कहा शुरू होता है पता ही नही चलता। सड़क के किनारे-किनारे दोनो ओर मकान बसे हुए होते हैं। पाच दस घर भी एक साथ कहीं बसे हुए नही मिलेंगे। पांच-पांच, दस-दस एकड़ के टुकड़े पर अकेला घर। और यह पांच दस एकड़ का टुकड़ा याने दो चार सौ फीट ऊंची टेकड़ी। किसी एक से दूसरे घर जाना याने पन्द्रह बीस मिनट, पांच सौ फीट का चढ़ना उतरना। यह सारा देख कर समझ मे नही आ रहा था कि ऐसी स्थिति में सात दिन की पदयात्रा में कैसे और कितने ग्रामदान होंगे, कैसी ग्रामसभाएं बनेंगी। चर्चा करने से पता चला कि विनोबा जी ने अपनी केरल पदयात्रा के समय बीस घरो का मिलकर एक गाव माना जाय ऐसा बताया था। हमने भी २५ से १०० घरों तक का मिलकर एक गाव मानने का तय किया।

सरकार की किसी भी प्रकार की मदद के बिना २ और ३ मई को संपूर्णतः लोकाधारित शिविर हुआ। केरल सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष मन्ममथन जी का सार्वजनिक सभा मे जोरदार भाषण हुआ और जगन्नाथन् जी ने शिविर में मार्गदर्शन किया। मलयालम 'मनोरमा' दैनिक अखबार के सम्पादक पोथा रेड्डी, केरल गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष माधवन नायर, मंत्री जनार्दन पिल्ले उपस्थित थे। उड़ीसा से विनोद महंती, तमिलनाडु से नटराजन् तथा अर्धन, वाराणसी से स्वामी सत्यानंद आदि कार्यकर्ता बाहर से आये थे। और कुछ आने वाले थे लेकिन रेल हड़ताल के कारण नही आ पाये। केरल से गोपीनाथन्, बालकृष्णन्, वपन आदि करीब चालीस कार्यकर्त्ता थे। सुब्बाराव जी को भी रेल की गड़बड़ियों के कारण शिविर अधूरा छोड़कर जाना पड़ा। नौ टोलियां बनायी गयी।

फैला हुआ गाव और टेकड़ियों पर बसे हुए मकान होने के कारण काम करने में काफी कठिनाई हुई। पच्चीस तीस साल पहले केरल के अन्य भागों से लोग यहां आकर बसे और आज कॉफी और रबर स्टेट के राजा बने हैं। सरकार ने सेवानिवृत्त फौजियों को भी यहीं पर भूमि देकर पुनर्वासित किया है। केरल के लोग शिक्षित होने से और अनेक राजकीय पक्षो का प्रभाव होने से जागृत हैं। हम महाराष्ट्र से आये हैं ऐसा परिचय हमारा दिया जाता था। उसके बाद शायद ही कोई सभा होगी, जिसमें शिवसेना के बारे में प्रश्न न पूछा गया हो।

१९५७ में कालडी में सर्वोदय समेलन हुआ था। उसके बाद यहां कोई खास काम →

केरल की सुरम्य भूमि में

नहीं हो पाया। कार्यकर्ताओं में तंद्रा सी थी कुछ निराशा भी। ग्रामदान पत्र पर लोग हस्ताक्षर करेंगे और बीसवां हिस्सा भूमि देंगे इस पर कार्यकर्ताओं को विश्वास नहीं होता था। अतः वे हस्ताक्षर व भूमि मांगने में संकोच करते थे। लेकिन कहीं भी अनुभव ऐसा नहीं आया जहां मांगने पर लोगों ने बीसवां हिस्सा भूदान न दिया हो। फिर भी कार्यकर्ताओं में आखिर तक यह आत्मविश्वास नहीं आ पाया कि हिम्मत के साथ वे मांगते। अतः परिस्थिति अनुकूल होने पर भी कई कार्यकर्ताओं ने न ग्रामदान पत्र पर हस्ताक्षर लिये, न जमीन मांगी, और न ग्रामसभाएं ही बनायीं। पदयात्रा शुरू होने के पहले ही केरल के प्रमुख कार्यकर्ताओं से इस पदयात्रा की फलश्रुति के बारे में उनकी क्या अपेक्षा है पूछा गया था। दस ग्रामदान और पन्द्रह-बीस एकड़ भूदान मिला तो यह अभियान सफल हुआ ऐसा हम मानेंगे। १० मई के समाप्ति शिविर में जोड़ लगाने पर पाया गया कि दस ग्रामदान तथा बाईस एकड़ भूदान मिला है। पुरानी भूदान की भूमि का भी कहीं कहीं वितरण किया गया। फलश्रुति के बारे में सबको संतोष था। परिणामतः कार्यकर्ताओं में कुछ उत्साह दिखायी देने लगा। नागरिकों से इस काम के लिए समयदान की मांग की गयी तो समारोप के समय करीब २०-२५ लोगों ने मासिक समय देने की घोषणा की। आगे के काम के लिए प्रमुखतः उन्हीं लोगों की एक 'ग्रामस्वराज्य समिति' बनायी गयी। सभा में भूतपूर्व बिशप डा० के० चेमडकेरी को बोलने की प्रेरणा हुई। ईसाई धर्म की सर्वोच्च पदवी हासिल कर के वे बिशप बने थे। परन्तु गांधीजी ईसा मसीह का काम कर रहे हैं यह उनकी भूमिका कार्डिनल आदि को पसन्द न होने से उन्हें इस्तीफा देना पड़ा। उन्होंने समारोप की सभा में फिर दोहराया, "आप गांधी विनोबा वाले ये ईसा का ही काम कर रहे हैं ऐसा मेरा विश्वास है। मैं इस काम में अवश्य मदद करूंगा। आपके नियम के मुताबिक बीसवें हिस्से के तौर पर मेरी एक एकड़ भूमि आप लिख लीजिये।"

ग्रामदान के बाद ग्रामदानी गांवों को क्या करना चाहिए, और आगे काम कैसे बढ़ाया जाय इस विषय में ठाकुरदास बंग ने कहा, "हमें बताया गया था कि केरल की भूमि, यहां की जनता और उसके प्रश्न भारत के अन्य प्रदेशों से भिन्न हैं। खुला दिमाग रख कर हम लोग यहां आये। यहां जो अनुभव आये उस पर से मूलतः भारत से भिन्न कुछ है, ऐसा हमें लगा नहीं। जो भाग मैंने देखा यदि वैसा ही बचा हुआ केरल होगा तो मैं कहूंगा कि ग्रामस्वराज्य के लिए यह उत्तम भूमि है। सरकार व राजनीय पक्षों की तुलना में हमारा कार्य अत्यन्त उज्ज्वल है। फिर भी अफसोस है कि हमारे कार्यकर्ता जनता के पास जाने में संकोच महसूस करते हैं। राजनीय पक्ष खास कुछ काम न करते हुए जनता के पास धड़ल्ले से जाते हैं। यह हमें उनसे सीखना चाहिए व हिम्मत के साथ जनता के पास जाना चाहिए। हमारे कार्यकर्ता पता नहीं क्यों इतनी आत्मग्लानि महसूस करते हैं। ऐसी स्थिति होते हुए भी दस ग्रामदान होना, सात ग्रामसभाएं बनना, बीस एकड़ भूदान प्राप्त होना, सैकड़ों रुपयों की साहित्य बिक्री होना क्या दर्शाता है? पदयात्रा में जो कार्यकर्ता थे उनमें जरा आत्मविश्वास होता तो चित्र भिन्न प्रकट होता, वह बड़ा ही उत्साहवर्धक बन सकता था।

ग्रामदानी गांवों का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने कहा, "विनोबा जी ने ग्रामदानी गांवों के लिए पंचविध कार्यक्रम सुझाया है—

ग्रामदानी शर्तों का पालन, व्यसनमुक्ति, कोर्ट-वर्जन, सफाई व प्रार्थना। हम इस पर जोर दें।"

केरल की बहनें काफी प्रगतिशील होंगी ऐसी हमारी कल्पना थी। लेकिन बतेरी प्रखंड का अनुभव निराशाजनक रहा। हमारी अपेक्षाएं पूरी नहीं हो पायीं इसका हम सब बाहर के लोगों के मन में बड़ा ही रंज रहा। असम की तरह (शिक्षण का प्रसार ज्यादा होने से असम से भी बहुत ज्यादा) यहां की बहनें आगे बढ़ी हुई होंगी ऐसा हमने माना था। परन्तु वैसा दिखायी नहीं दिया। सभा में, शिविर में या साथ में कभी-कभी कोई बहन कहीं आयी हो ऐसा याद नहीं आता। नौकरी करने वाली, खादीधारी, शिक्षित बहनें भी सभा तक में नहीं आती थीं तो सक्रिय सहकार्य की तो बात ही दूर रही। हो सकता है यह सिर्फ बतेरी प्रखंड की ही बहनों के बारे में सही हो। क्योंकि यहां मुसलमानों की जनसंख्या काफी है। जो भी हो लेकिन यहां की स्त्रियों की बात मन में आज भी खटकती है। दूसरी बात केरल सर्वोदय मंडल की कोई पत्रिका मलयालम या किसी भाषा में नहीं है जिसके द्वारा लोगों तक सर्वोदय विचार पहुंचाया जा सके। सर्वोदय के विचार को लोग सुनना व पढ़ना पसंद करते हैं ऐसा हमारा अनुभव है और इस पदयात्रा में करीब पांच सौ रुपयों की साहित्य बिक्री ने यह और भी सिद्ध कर दिखाया है। बंग साहब ने अपने समारोप भाषण में सर्वोदय की पत्रिका मलयालम भाषा में शीघ्र शुरू करने का आवाहन किया।

● इलाहाबाद में २२-२३ जून को हुई उत्तर प्रदेश सर्वोदय मंडल की कार्यकारिणी समिति की बैठक में सर्व सम्मति से लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन का पूर्ण समर्थन किया गया। कार्यकारिणी के १५ सदस्यों सहित मण्डल के अध्यक्ष महावीर सिंह ने जयप्रकाशजी से चर्चा की और बिहार के आन्दोलन में आवश्यकतानुसार हर प्रकार की मदद के लिए तैयार रहने के कार्यकारिणी के निर्णय की जानकारी उनको दी।

बैठक में सर्व सेवा संघ के वर्तमान संगठनात्मक स्वरूप को जन-आन्दोलन के अनुकूल बनाने के लिए संघ के संविधान में आवश्यक संशोधनों पर भी चर्चा की गयी।

कार्यकारिणी ने यह महसूस किया कि यथास्थिति को बदलने वाला जन आन्दोलन, जिसकी शुरुआत जे० पी० के नेतृत्व में चल रहे आन्दोलन से हुई है, ग्रामस्वराज्य के बुनियादी विधायक, नयी समाज रचना के कार्यक्रम का पूरक और अनिवार्य अंग है। उस विधायक और इस जन आन्दोलन को, जिसका स्वरूप निषेधात्मक भी है, परस्पर पूरक रूप में चलाने के लिए कार्यकारिणी ने यह भी तय किया है कि जुलाई के अन्त में धीरेन्द्र मजूमदार के साथ एक प्रदेश स्तरीय ग्रामस्वराज्य सम्मेलन पूर्वांचल में किया जाय। सम्मेलन की पूर्व तैयारी मेवालाल गोस्वामी कर रहे हैं।
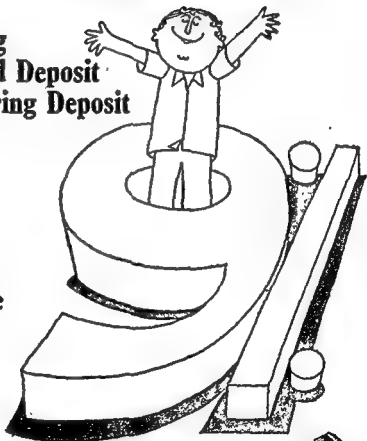
मंडलों द्वारा समर्थन

● बिहार सर्वोदय मंडल ने तीन दिन तक चली बैठक के बाद बिहार आन्दोलन पर एक प्रस्ताव पास किया। प्रस्ताव के कुछ अंश इस प्रकार हैं :

'आजादी के बाद, राष्ट्र के जीवन में प्रथम बार जन असंतोष ने छात्र आन्दोलन का रूप लिया है। यह एक शुभ लक्षण है कि छात्रों ने छोटी छोटी संकुचित क्षेत्रीय मांगों को छोड़कर राष्ट्रीय समस्याओं के साथ अपनी मांगों को जोड़ा है।

सर्वोदय आन्दोलन मूल रूप में मूल्य परिवर्तन, समाज परिवर्तन और नैतिक जागरण का आन्दोलन है। अभी कुछ दिन पहले सर्वसेवा संघ ने राष्ट्रीय परिषद के अष्ट सूत्री कार्यक्रमों को स्वीकार कर राष्ट्र का आह्वान किया है। उक्त आह्वान के संदर्भ में ही आज की राष्ट्रीय परिस्थिति से व्यथित और प्रतिचिन्तन होकर लोकतन्त्र के मौलिक अधिकारों की रक्षा हेतु जयप्रकाश नारायण ने अन्तिम अपील के रूप में छात्रों का आह्वान यूथ फार डेमोक्रेसी के उद्घोष से किया है।

यह खुशी की बात है कि गुजरात के छात्रों ने सर्वप्रथम इस आह्वान पर आदोलन शुरू किया। अब बिहार के छात्रों ने अपनी गौरवमयी क्रांतिकारी परम्परा के अनुसार अहिंसक क्रांति की शुरूआत की है।

बिहार सर्वोदय मंडल इस अहिंसक छात्र-आदोलन की भूरि-भूरि सराहना करता है है और जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे इस छात्र आदोलन को अपना आंदोलन स्वीकार करता है।

यह अत्यन्त ही खेदजनक परिस्थिति है कि छात्रों के शांतिपूर्ण, न्यायोचित एवं नैतिक आदोलन को बिहार सरकार की ओर से कुचलने का प्रयास जारी है। यहां तक कि छोटे-छोटे छात्रों को भी निर्दयतापूर्वक गोली और संगीनों का शिकार बनाया गया है और बनाया जा रहा है। जेलों में भी अमानुषिक रूप से मार-पीट का तरीका अपनाया गया है। सरकार की ओर से ऐसे अवसरों पर संगठित हिंसा का प्रदर्शन जिस रूप में हुआ है, वह असामाजिक तत्वों के द्वारा की गयी हिंसा से कम निन्दनीय नहीं है।

● हरियाणा सर्वोदय मण्डल की बैठक सोमदत्त वेदालंकार की अध्यक्षता में खादी आश्रम, पानीपत में हुई। पं. ओम प्रकाश त्रिखा, दादा गणेशीलाल, मांगेराम शीतल, जयनारायण वर्मा, खुशीराम लोकसेवक, महावीर त्यागी, राजेन्द्र जोशी इत्यादि लगभग तीस सेवकों ने जयप्रकाश नारायण के मार्ग दर्शन में बिहार में चल रहे आन्दोलन के समर्थन में अपने विचार प्रस्तुत किये।

निश्चय किया गया कि सर्व सेवा संघ अधिवेशन के बाद २१ जुलाई को सर्वोदय भवन, हिसार में एक बैठक बुलाकर हरियाणा प्रान्त के लिये कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाय।

● अस्कोट से आराकोट की ओर २६१ किलोमीटर की पदयात्रा के पश्चात यहां पर पहुंची विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की टोली के दो सदस्यों प्रतापसिंह शिखर और कुंवर प्रसून ने एक भेंट में बताया कि उत्तराखण्ड के दूरस्थ गांवों के लोग जानवरों जैसा जीवन बिता रहे हैं। अल्मोड़ा जिले के दानपुर परगने में न पैदल सड़कें हैं और न पिण्डर और उसकी सहायक नदियों पर कोई पुल। बरसात के तीन महीने तक यहां के लोगों का शेष दुनिया से कोई सम्बन्ध नहीं रहता। ४७ किलोमीटर दूर निकटतम मोटर पड़ाव कफकोट से वे जाड़े के दिनों में भेड़-बकरियों की पीठ पर

(शेष अगले पेज पर)

आचार्य अपनी जिम्मेदारी निभायें

मध्यप्रदेश आचार्यकुल का तृतीय वार्षिक सम्मेलन जबलपुर में दिनांक १४ और १५ जून को हुआ। उद्घाटन केन्द्रीय आचार्यकुल के संयोजक वंशीधर श्रीवास्तव ने और मुख्य अतिथि के रूप में ठाकुरदास बंग ने उद्बोधित किया। उद्घाटन कार्यक्रम में विभिन्न जिलों से आये प्रतिनिधियों के अलावा जबलपुर के शिक्षकों, साहित्यकारों, पत्रकारों और समाज सेवियों ने भाग लिया। कार्यकारी स्वागताध्यक्ष ब्योहार राजेन्द्रसिंह ने स्वागत किया। स्वागत मंत्री डा० सुशीलचन्द्र दिवाकर और प्रदेशीय संयोजक प्रो० गुरुशरण ने प्रतिवेदन एवं कार्यविवरण प्रस्तुत किये। जिला संयोजक राजकुमार सुमित्र और नगर संयोजक श्री कोदूलाल पटेल ने आभार व्यक्त किया।

१४ और १५ को प्रातः व सायं तीन विचार गोष्ठियां आयोजित हुई जिनमें पारस्परिक विचार विमर्श के उपरान्त तीन प्रस्ताव पारित हुए। प्रो० महेशदत्त मिश्र, गणेशप्रसाद नायक, महावीर डा० के० एन० दुबे, डा० सोहनलाल नन्दन दुबे, डा० विमलप्रकाश जैन, प्रो० बी० पी० नामदेव, रामकुमार शर्मा और डा० सुशीलचन्द्र दिवाकर ने चर्चाओं में भाग लिया।

आगामी वर्ष की प्रादेशिक कार्यकारिणी समिति में नूतनकुमार तैलंग भोपाल, डा० शिवानन्द झा रीवा, जे० पी० सिंघल पिपरिया (होशंगाबाद) और राजकुमार सुमित्र जबलपुर को सदस्य के रूप में शामिल किया गया जिससे समिति की सदस्य संख्या अब १६ हो गई। कार्यकारिणी के सदस्यों को सभागीय जिम्मेदारियां सौंपी गई। हर सभाग में सभागीय स्तर के सम्मेलन आयोजित होंगे। प्रदेश के पिछड़े हुए १० जिलों के सर्वेक्षण करने का भी निश्चय किया गया। सेवा निवृत्त शिक्षकों की एक सूची तैयार कर उनका योगदान प्राप्त करने की योजना बनाई गई।

इस बार सम्मेलन में [illegible] ने भी भाग लिया। उन्होंने अपने विचार भी रखे और अपना कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया। हरिकृष्ण द्विवेदी और [illegible] चौधरी के रचनात्मक विचारों [illegible] की सराहना हुई। जबलपुर आचार्यकुल ने उन छात्रों की योजनाओं को अपना पूरा समर्थन दिया।

प्रस्ताव जो पास हुए

मध्यप्रदेश का यह तृतीय वार्षिक सम्मेलन देश के विभिन्न प्रदेशों यथा गुजरात, बिहार और असम आदि में फूट रहे युवा आक्रोश को आचार्यकुल बड़ी गम्भीरता से लेता है। ये आन्दोलन सकारण हैं। महंगाई बेकारी, दोषपूर्ण शिक्षापद्धति और सभी प्रकार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध किया जाने वाला हर अहिंसक आंदोलन आचार्यकुल की दृष्टि से स्तुत्य है। अतः युवावर्ग के आन्दोलनों को समर्थन और सही नेतृत्व देने का कार्य आचार्यकुल को करना चाहिए और अपनी अहिंसात्मक नीति के अनुसार संघर्ष को सफल बनाने के लिए दिशा-निर्देश प्रदान करना चाहिए।

युवा आन्दोलन असामाजिक तत्वों और स्वार्थी राजनीतिज्ञों के हाथों का खिलौना न बन जायें इसलिए आचार्यकुल के प्रत्येक सदस्य को तप और त्याग की दृढ़ आधार भूमि पर निरंतर सचेष्ट और सतर्क रहकर अपने महान उत्तरदायित्व का निर्वाह करना होगा।

युवा-आक्रोश का विश्लेषण करने पर प्रतीत होता है कि हमारी दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति बहुत अंशों में इस निराशाजनक प्रवृत्ति के लिए उत्तरदायी है। अत यह आवश्यक हो गया है कि शीघ्रातिशीघ्र एक ऐसी राष्ट्रीय शिक्षा नीति व्यवहार में लाई जाय जो हमारी संस्कृति की पृष्ठभूमि में निर्मित हो और हमारे सर्वांगीण जीवन से सुसबद्ध हो। अत. आचार्यकुल का यह सम्मेलन प्रस्तावित करता है कि केन्द्रीय आचार्यकुल समिति द्वारा पारित शिक्षा नीति को तुरत ही कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कदम उठाया जाय।

अस्कोट से आराकोट

राशन और दूसरी आवश्यकताओं की वस्तुएं लाते हैं। वे इन बाजारों में आलू, रामदाना, जंगली जड़ी-बूटियां और रिंगाल की चटाइयां बेचकर गुजारा करते हैं। वन-विभाग के अधिकारी चटाइयां बेचने पर इनका पीछा करते हैं। यहां मीलों तक कोई अस्पताल नहीं और लोग बेमौत मरते हैं।

स्वराज्य के बाद यहां जिलाधिकारी तो दूर रहे कोई परगना अधिकारी भी नहीं गया। कोई विधायक भी उन्होंने अभी तक नहीं देखा है।

यात्रा टोली गोपेश्वर से केदारघाटी और पंवालीकांठा पार करती हुई २५ जून को सिल्यारा आश्रम में पहुंची, जहां से वह अब उत्तरकाशी की ओर [illegible] रही है।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली, सोमवार, २२ जुलाई, '७४

परमधाम पवनार में खुले अधिवेशन को विनोबा का सम्बोधन

भूदान-यज्ञ

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २०　　२२ जुलाई, '७४　　अंक ४२

१९ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

वह अनिर्णय ऐतिहासिक निर्णय था

नौ से बारह जुलाई तक सर्व सेवा सघ का जो अधिवेशन वर्धा में हुआ, वह कई दृष्टियो से अपूर्व कहा जा सकता है। पूज्य विनोबा ने पहली बार इस बात का आग्रह रखा कि अधिवेशन मे उपस्थित सदस्य ही आपस मे चर्चा करके किसी सर्वसम्मत या सर्वानुमत परिणाम पर पहुचें। उन्होने कोई सलाह या परामर्श देने से भी इन्कार किया। बहुत विनय-अनुनय करने के बाद भी वे अपनी इस भूमिका से नही डिगे।

इस बहाने हमारे नेता ने क्रांति की प्रक्रिया के आधुनिकतम आयाम का सकेत दिया। आधुनिकतम क्रान्ति की यह आकांक्षा है कि अब कोई मार्गदर्शक या नेता न हो। केवल ऐसे साथी हो जो लोगो मे नेतृत्व जागृत कर सकें। अर्थात नेता नही नेतृत्व के प्रेरक साथी चाहिए। विनोबा 'गण-सेवकत्व' के प्रवर्तक और प्रवक्ता रहे हैं। उन्होने अब की बार इस विषय मे अपने साथियो की कसौटी कर रखा।

मर्यादा का पालन हुआ

साथी भी खरे उतरे। अधिवेशन मे बहुत चर्चा हुई। उसमे हार्दिकता और उत्कटता थी। बीच-बीच मे चर्चा उग्र भी होती थी। परन्तु अपनी मर्यादा का पालन करने में सघ नही चूका। ११ की रात को जब सर्वसम्मति या सर्वानुमति के सारे उपाय हार गये तब भी सदस्यो मे पराजय की भावना नही थी। जब तक एक भी सदस्य का विरोध है तब तक कोई निर्णय संभव नही, यह सघ की निष्ठा है। इस पर सारे सदस्य अडिग रहे।

११ की रात का वह 'अनिर्णय' एक ऐतिहासिक निर्णय था। उस अनिर्णयात्मक निर्णय के द्वारा सर्व सेवा सघ ने यह सिद्ध किया कि वोट या मत की अपेक्षा सौहार्द और पारस्परिकता का मूल्य कई गुना अधिक है। उस अवसर पर प्रचण्ड बहुमत ने अति अल्प मत के लिए अपना समादर व्यक्त किया। यह

घटना सर्व सेवा संघ के सदस्यो की सहयोग और परस्पर विश्वास की भावना को बढ़ावा देने वाली होगी।

विनोबा का नेतृत्व भी विरोधाभासात्मक, अतएव अद्भुत है। उनके साथियो ने जब अपने अनिर्णय की सूचना उन्हे दी तो उनके हृदय से जो स्वाभाविक प्रतिध्वनि निकली वह अपने मे उनके महान व्यक्तित्व के अनुरूप ही है। उन्होने केवल इतना ही नही कहा कि जे० पी० के आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने की अनुमति सर्व सेवा संघ के साधारण सदस्यों, प्रबध समिति के सदस्यो तथा पदाधिकारियो को है, अपितु ग्रामदान और पटना के आंदोलन की उपमा गंगा और ब्रह्मपुत्र की धाराओ से देकर और दोनो को पवित्र कह कर गौरवान्वित किया। इस प्रकार अपने हृदय की उदारता का परिचय दिया। वह उदात्त परस्पर-समर्पण का अनूठा दृश्य था। विनोबा विनोद प्रिय हैं। उन्होने तुरन्त एक श्लोक भी रच दिया।

इस सारे प्रकरण मे जे० पी० की महानता तथा अपार सज्जनता और भी निखर उठी। सर्वानुमति के लिए वे अपनी तरफ से जितना आगे बढ सकते थे उतना आगे बढे और वह भी बडी तत्परता और सहृदयता से। जे० पी० के सौजन्य की कोई सीमा नही। इसीलिये जब विनोबा ने 'अनुशासूत्र' की सूचना अधिवेशन को दी तो जे० पी० ने उसी क्षण कहा, 'मेरा सोलन आने समाधान हो गया है' जब कि उनका ८५ प्रतिशत बहुमत था।

पदाधिकारियों का धर्म संकट

सघ के अध्यक्ष मंत्री तथा प्रबध समिति के सदस्य बडे नाजुक धर्म सकट मे थे। उनमे से अधिकांश 'पटनाक्षेत्रे' जाने को उत्कण्ठित थे। परन्तु वे जानते थे कि विनोबा का मन भिन्न है। ऐसी स्थिति मे उनके लिए संघ की प्रबध समिति मे या पदाधिकारियो के रूप में रहना कैसे उचित होता? इसीलिए उन्होने बडी नम्रतापूर्वक भारी दिल से अपने त्याग-पत्र प्रस्तुत किये थे।

संविधान से मानवीय मूल्य श्रेष्ठ हैं।

ये सारी घटनायें अपने मे सांकेतिक और सूचक हैं। सर्व सेवा सघ की यह निष्ठा कि किसी संविधान और सगठन से मानवीय मूल्य कही श्रेष्ठ हैं—इस अधिवेशन मे बडे उज्ज्वल रूप मे प्रकट हुई। अबाधित मानव निष्ठा की इस भावना में भविष्य के सगठनो के स्वरूप के विषय मे एक संकेत निहित है। लोकनिष्ठ सगठनों के लिए यह पारस्परिक सौहार्द प्राणवायु के समान है।

दादा धर्माधिकारी

पवनार में विनोबा–जे० पी० वार्त्ता

बाबा की कुटिया में वार्त्ता का दूसरा दौर

विनोबा, जे० पी० वार्ता का पहला दौर नौ जुलाई को सुबह साढ़े नौ बजे शुरू होना था। जे० पी० आठ जुलाई की रात ही नागपुर से कार में आये और वहां विद्या मन्दिर के अतिथिगृह में ठहरे। अपने भाषणों और वक्तव्यों की प्रतियां जे० पी० ने पहले ही बग साहब के जरिये पटना से भिजवा दी थीं। लेकिन वार्ता सुबह साढ़े नौ बजे शुरू नहीं हुई। महिलाश्रम वर्धा से सिद्धराजजी, बग साहब, नारायण देसाई आदि सवेरे आये और जे० पी० से निवेदन किया कि वे पहले अधिवेशन को सम्बोधित करें तो अच्छा रहेगा। जे० पी० ने इसे मजूर किया। बाबा को सदेश पहुँचा दिया गया कि जे० पी० नौ बजे मिलने आयेंगे। लेकिन उठते-उठते नौ बज कर दस मिनट हो गये। जे० पी० जब बाबा से मिलने निकले तो बाबा खुद आश्रम के फाटक तक आ चुके थे। जे० पी० ने बाबा के चरण छुए। बाबा ने पूछा कि बातें कब होंगी? लिख कर दिया गया कि साढ़े ग्यारह बजे। बाबा ने कहा "ठीक है। जब तक करना चाहें कर सकते हैं। सारा समय आपका।" दोपहर साढ़े तीन बजे का समय तय हुआ तो बाबा ने फिर कहा—'उसके बाद जब तक बात करें सारा समय आपका।"

जे० पी० सवा नौ बजे गये लेकिन साढ़े बारह बजे के करीब लौट कर आये। बाबा अतिथि गृह की छत पर कुसुम बहन और बाल भाई के साथ प्रतीक्षा में टहल रहे थे। जे०पी० को आया देख कर वे नीचे उतरे। अतिथि गृह में जे० पी० के कमरे में बातचीत शुरू हुई। बाबा ने स्वास्थ्य के बारे में और नींद के बारे में पूछा। फिर कहा—'प्रभावती जो पारायण करती थी वह आप करते हैं न?" जे० पी० ने सिर हिला कर 'हां' कहा और चश्मा निकाल कर आंसू पोंछे। फिर बाबा गंगा, कुम्भ मेला आदि की बात करते रहे। आखिर में उन्होंने कहा—"आपके कागज मैंने सरसरी तौर पर पढ़ लिये हैं। आप भी मैत्री में मेरे विचार पढ़ लीजिए।" सवा बजे चर्चा

(बाकी पेज १६ पर)

सुलभ सर्व सेवा संघ : बाबा की नयी युक्ति

१२ जुलाई को परमधाम पवनार में विनोबा का प्रवचन

ग्रामदान के बाद सुलभ ग्रामदान की बात मैंने निकाली थी। उसी प्रकार आज मैं आप लोगों के सामने सुलभ सर्व सेवा संघ पेश कर रहा हूं। मैंने उसकी युक्ति ढूंढ़ निकाली है। कल जे० पी० मुझसे मिले। काफी बातें हुईं। आध्यात्मिक चर्चा भी हुई। काम के बारे में भी हुई। उन्होंने मुझसे यह प्रश्न किया था कि आपने कहा था कि मतभेद भले ही रहें, हृदय एक होना चाहिए। तो हृदय की एकता मजबूत कैसे हो? उनके इस प्रश्न का उत्तर आज मैं दे रहा हूं।

यह महावीर स्वामी की पच्चीससौवीं निर्वाण संवत्सरी का वर्ष है। महावीर स्वामी ने कभी तोड़ने का काम नहीं किया था। अगर उनके पास कोई उपनिषद का अभिमानी आता तो वे उसका उपनिषद के आधार पर समाधान करवाते थे, गीता वाला आता तो गीता के आधार पर, वेदवाला आता तो वेद के आधार पर, बौद्ध विचारों का बौद्ध विचारों के आधार पर—किसी पर उन्होंने अपना विचार नहीं लादा। निर्वाण शताब्दी के इस वर्ष में भी जैन विचार सार एकत्रित करने के काम में लगा हूं। तो हमको यह निश्चय करना चाहिए कि तोड़ना हो तो भी निर्वाण शताब्दी के वर्ष में न तोड़ें।

बहां तक किस युक्ति से काम करना चाहिए। यह बात मैं आपको बताता हूं : संघ का कोई सदस्य, प्रतिनिधि, लोकसेवक इत्यादि, जिसे जो कोई काम करने की रुचि हो—कोई ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का काम करता है, कुछ क्रांतिकारी समझकर बिहार के काम में गया है—सब अपनी-अपनी रुचि के अनुसार काम करें। केवल तीन शर्तों को ध्यान में रखें—सत्य, अहिंसा और संयम। जहां तक मैं समझा हूं, दो ही पक्ष है—तीन पक्ष नहीं हैं। संस्कृत में तीन को ही बहुवचन कहते हैं, दो को अलग स्थान है—माता पितरौ जैसा। तो यहां भी तीन पक्ष नहीं हैं, दो ही हैं—तो उनके लिए मैंने यह युक्ति सुझा दी। अभी 'धर्मक्षेत्रे पटनाक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। जयका गफूरकाश्चैव किम कुर्वत संजयः॥' (हंसी के बीच जे० पी० ने पूछा कि संजय कौन बनेगा! बाबा ने कहा-कृष्णराज शायद संजय हो सकता है। जे० पी० ने फिर कहा कि वो तो युयुत्सु है। बाबा बोले कि वह साहित्य प्रचार का काम कर रहा है, तो संजय हो सकता है।)

अगर इतना होता है तो त्यागपत्र की जरूरत नहीं रहती। अगर कोई एक से पूछेगा कि तुम ग्रामदान का काम करने के बदले इस आन्दोलन में क्यों हो तो वह उत्तर देगा कि हमारा हृदय एक ही है, काम अलग-अलग हैं। इसी प्रकार अगर कोई यह पूछेगा कि तुम आन्दोलन में क्यों नहीं लगते तो वह भी यही उत्तर देगा। क्यों इससे समाधान है?

जे० पी० : सोलह आना।

दादा धर्माधिकारी : विनायक का विनायक ही रहा।

विनोबा : हां ठीक है। वानर नहीं बना। पटना वालों का कार्यक्रम अगर खूब चला तो ये दूसरे लोग भी उनके साथ हो जायेंगे और अगर इसमें से कुछ नहीं निकला तो ये लोग इसे छोड़ वहां आ सकते हैं।

जे० पी० : यह ठीक है। यदि संघ अधिवेशन में इस विषय पर सर्वसम्मति हो जायेगी तो ये लोग अपने त्यागपत्र वापस लेंगे और बाबा की सूचना के अनुसार अपनी-अपनी रुचि से काम करेंगे। संघ लचीला बने, आज है, उससे भी अधिक लचीला बने, उसके एक संयोजक रहें। प्रबन्ध समिति की आवश्यकता नहीं। संघ साल में दो बार मिले। एक बार बाबा के पास, दो, कोई प्रस्ताव न करे। यह तो एकता संघ गयी होती तो भी करने लायक निर्णय था।

विनोबा : महावीर स्वामी की जय!!

सर्व सेवा संघ मंत्री का निवेदन

१५ सितम्बर, ७३ से ३० जून ७४ तक के काम का विवरण

ग्रामदान असम मे गोगाव जिले मे भूरबंध एवं करपिली प्रखडो मे, लखीमपुर जिले में नारायण पुर प्रखड मे, मध्य प्रदेश मे सीधी जिले के सीधी एव सोहावल प्रखडो में, महाराष्ट्र मे पूना जिले मे जुन्नर प्रखड मे, केरल में कालीकत जिले मे सुलतान बतेरी प्रखड मे ग्रामदान पदयात्राएं हुईं। सहरसा मे २६ जनवरी से २८ फरवरी तक अन्तिम अभियान चलाया गया, जिसमे २५८ कार्यकर्ताओ ने हिस्सा लिया।

इन यात्राओ की निष्पत्ति आकडो मे निम्न है —

प्रखड का नाम	ग्रामदान प्राप्ति	ग्रामसभा गठन	भूदान-प्राप्ति	वितरण	साहित्य-बिक्री
भूरबंध	१०	१०	३४ एकड	६४ एकड	१२१
करपिलि	२६	५	१६ ,,	...	३००
नारायणपुर	...	...	२६ ,,	१३ एकड	...
सीधी	१३	६	...	...	...
जुन्नर	१०	४	४ ,,	...	३००
सुलतान बतेरी	१०	५	२२ ,,	१५ एकड	४००
सहरसा जिले के १२ प्रखड	...	५८५	१२४४ बीघा	१०४४ बीघा	...

कई प्रदेशो के विभिन्न क्षेत्रो मे पुष्टि-कार्य चल रहा है। बिहार के पूर्णिया जिले मे मंनमा ग्रामदानी गाव की पचवर्षीय ग्राम-निर्माण योजना ग्रामसभा की सहायता से बनाई गई।

शांति-सेना पत्रल के कामियो के लिए मध्य प्रदेश के गुना जिले मे मुगावली मे सुनी जैन का उद्घाटन १४ नवम्बर को किया गया। यह एक नया प्रयोग है और इससे अच्छे नतीजे आ रहे हैं। बेलगाव मे कन्नड एव मराठी भाषी नागरिकों को साथ बिठाकर आपसी कटुता कम करके शान्ति-स्थापना का एव सर्वसम्मत हल खोजने का प्रारंभिक प्रयास किया जा रहा है। गुजरात मे कराडी मे तत्पर एव ग्राम शांति-सैनिको के प्रशिक्षण के लिए सितम्बर से दिसम्बर तक दो प्रशिक्षण-वर्ग चलाए गए। अरुणाचल प्रदेश मे शांति-सेना के काम ने एक नया मोड लिया है। वहा शांति-केन्द्र, तरुण शांति-सेना केन्द्र एव नागरिक विद्यालय खोले गए हैं। शांति-केन्द्रो के आसपास की बस्तियो के लिए आरोग्य-ज्ञान प्रशिक्षण की योजना हाथ मे ली गयी। गुजरात मे मोडासा मे साम्प्रदायिक दगो मे शान्ति-स्थापना का प्रयत्न हुआ। सुदूर सायप्रस देश मे ग्रीक एव तुर्की बोलने वाले लोगो के बीच अमरिका, इग्लैंड, दक्षिण अफ्रीका के कार्यकर्ताओ के साथ भारत के ५ शांति-सैनिको ने शांति एव पुनर्वास के लिए गृह-निर्माण का कार्य किया। भारत के शान्ति-सैनिको को आन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र मे काम करने का यह एक नया अनुभव था। सघ के अध्यक्ष एव मत्री ने नवम्बर मे नागाभूमि एव मणिपुर की यात्रा की एव नागाभूमि मे डा० आरम द्वारा चल रहे स्तुत्य शांतिकार्य का अध्ययन किया।

समीति एवं गोष्ठियां १ से ६ दिसम्बर तक परधाम मे समीति हुई जिसमें लोकनीति, सगठन आदि विषयो पर मुक्त चर्चाएं हुईं। बिहार मे चल रहे आन्दोलन पर विचार करने के लिए जयप्रकाश जी के साथ अप्रैल १९ एव २० को देश भर के ५० कार्यकर्ता मिले। पू० बाबा के साथ प्रबध समिति के कुछ सदस्य अप्रैल मे तीन दिन एव मई मे अध्यक्ष एव मत्री दो दिन मिले एव राष्ट्रीय परिस्थिति एव जन-आदोलन के बारे मे बाबा से वार्तालाप हुआ।

खादी खादी समिति को सक्षम बनाने का प्रयास चल रहा है। बुनाई उपदान को छोड़ने के बारे मे खादी-जगत् मे विचार-मथन शुरू हुआ है। खादी-जगत् मे कई महत्वपूर्ण प्रश्न, जैसे—सस्था-कर्मचारी सबध, आय कर से मुक्ति इत्यादि निर्माण हुए हैं, जिसका अध्ययन एव प्रश्नो को हल करने का प्रयास जारी है।

मतदाता-शिक्षण जयप्रकाश जी ने दिसबर मे 'लोकतत्र के लिए तरुण' नाम की अपील निकाली एव आगामी चुनाव स्वच्छ हो इस विषय मे सक्रिय होने का आवाहन किया। उत्तर प्रदेश मे एव उत्कल मे विधानसभा के चुनावो के समय मतदाता-शिक्षण का काम किया गया। जयप्रकाश जी के इस विषय में कई प्रेरक प्रवचन उत्तर प्रदेश मे हुए।

शराबबदी—शराबबदी का आन्दोलन राजस्थान मे जारी है। रेंगरो की बस्ती के ठेके को हटाने के लिए ८५ दिनो के सत्याग्रह के बाद यह दुकान बद हुई। जयपुर, अजमेर, टोंक आदि जिलों में कई शराब की दुकानें बंद की गईं। इस प्रश्न पर विचार करने के लिए केन्द्र सरकार ने समिति बनाई है जिसकी बैठकें चल रही हैं।

उपवासदान—११ सितम्बर, ७३ को विनोबा ने स्वय उपवास कर उपवासदान का प्रारभ किया। इस विचार का प्रसार जारी है। इसके प्रसार के लिए मई मे एक पखवाडा मनाया गया। आज उपवासदानियों की सख्या ३ हजार के करीब पहुची है। इस बारे मे सब साथियों को अधिक तत्परता से प्रयत्न करने की आवश्यकता है।

गुजरात एव बिहार मे जन आंदोलन—गुजरात एव बिहार मे छात्रो की अगुवाई मे महगाई, बेरोजगारी एव भ्रष्टाचार की जन-समस्याओ को लेकर आदोलन शुरू हुए। बिहार मे शिक्षा मे क्रांति यह उद्देश्य भी अन्य तीन उद्देश्यो के साथ आंदोलन का प्रमुख उद्देश्य बन गया। श्री जयप्रकाश जी ने इस आदोलन का गुजरात मे समर्थन किया एव आज बिहार मे विद्यार्थियो की माग पर जयप्रकाश जी के नेतृत्व मे यह आदोलन चल

→

आगामी सर्वोदय सम्मेलन तक पन्द्रह हजार उपवासदान

सर्व सेवा संघ का सदय सत्य और अहिंसा पर आधारित शोषण-रहित और शासन-मुक्त समाज की स्थापना करने का है। इस लक्ष्य की प्राप्ति समग्र क्रांति की अपेक्षा रखती है। साधन-शुद्धि इस समग्र क्रांति का एक महत्वपूर्ण अंग है। सत्य और अहिंसा पर आधारित समाज की रचना के साधन भी उद्देश्य के अनुरूप होने चाहिए, यह आवश्यक है।

सर्व सेवा संघ की शुरू से ही यह कोशिश रही कि संगठन और अर्थ-शुद्धि के मामले में भी परंपरागत पद्धतियों और तरीकों से हटकर उत्तरोत्तर आदर्श के अनुरूप दिशा में बढ़ा जाय। इस दृष्टि से समय-समय पर पूज्य विनोबाजी का मार्ग दर्शन भी बराबर मिलता रहा है। निधि-मुक्ति और तन्त्र-मुक्ति की ऐतिहासिक कल्पना इस शृंखला की एक महत्वपूर्ण कड़ी थी। सूताजलि, सर्वोदय-पात्र संपत्तिदान आदि जो कार्यक्रम भी जो समय-समय पर विनोबाजी ने हमारे सामने रखे तथा संघ ने स्वीकार किये वे आन्दोलन को आगे बढ़ाने वाले कार्यक्रम होने के साथ ही आंदोलन के लिए लगने वाला खर्च अधिक से अधिक जनाधारित तरीकों से और स्वेच्छा से किये गये त्याग के आधार पर प्राप्त हो सके, यह संभावना भी इन कार्यक्रमों के पीछे थी और है। हम इन कार्यक्रमों का पूरा उपयोग अभी तक नहीं कर पाये हैं। इसमें शायद हमारे अपने सातत्य की कमी ही कारण है।

पिछले ११ सितम्बर को अपने जन्म-दिवस के अवसर पर पूज्य विनोबाजी ने उपवासदान का नया कार्यक्रम हमारे सामने रखा। उन्होंने यह अपेक्षा भी जाहिर की कि सर्व सेवा संघ का खर्च उपवासदान पर ही चले। स्वेच्छा से, बिना मांगे कोई दान भेज दे तो वह स्वीकार किया जा सकता है लेकिन अपनी ओर से संघ के खर्च के लिए चंदा नहीं किया जाय। उन्होंने स्वयं महीने में एक दिन का भोजन छोड़कर उस बचत का दान सर्व सेवा संघ को दिया, और इस कार्यक्रम की शुरुआत की। जब आन्दोलन के लिए यह आर्थिक स्रोत उपादेय है, तो केवल सर्व सेवा संघ का खर्च ही नहीं, बल्कि प्रदेश, जिला तथा स्थानीय सभी स्तर पर सर्वोदय मंडलों का, और आन्दोलन का खर्च अन्ततोगत्वा इस दायरे में आना चाहिए। आगे जा कर देश भर के सारे आन्दोलन का खर्च उपवासदान से चल सके, यह वाञ्छनीय है लेकिन व्यवहार की दृष्टि से ऐसा सुझाव है कि पहले सर्व सेवा संघ के काम के लिए उपवासदान का आधार पक्का कर लिया जाय। सूताजलि, सर्वोदय-पात्र, संपत्ति दान आदि का उपयोग पूरा का-पूरा प्रांतीय स्तर तक के काम के लिए हो और इन स्रोतों को बढ़ाने की भी कोशिश की जाय।

इस सारे संदर्भ को ध्यान में रखते हुए तथा उपवासदान से ही संघ का खर्च चले, इसके विविध पहलुओं पर चर्चा के बाद प्रबंध समिति सर्वानुमति से नीचे लिखा निर्णय करती है—

एक. सर्व सेवा संघ के केन्द्रीय काम का खर्च उपवासदान के आधार पर चले, यह भावना सबको मान्य है।

दो. चालू वर्ष के खर्च का कम-से-कम ५० प्रतिशत उपवासदान से प्राप्त किया जाय तथा बाकी के लिए चन्दा आदि का आधार जारी रहे।

तीन. अभी तक उपवासदानियों की संख्या करीब ३ हजार तक पहुंची है। आगामी सर्वोदय सम्मेलन तक यह संख्या १५ हजार तक पहुंच जाय, यह देश भर के सर्वोदय में सहानुभूति रखने वालों की कोशिश होनी चाहिए। प्रबंध समिति के सदस्य तथा निमंत्रित स्वयं इस बारे में पहल करें और आगामी सम्मेलन तक इनमें से हर व्यक्ति कम से कम एक सौ उपवासदान प्राप्त करे, ऐसी अपेक्षा है। इसी प्रकार सभी प्रदेश सर्वोदय मंडलों के अध्यक्ष व मंत्री कम से कम ५०-५०, संघ सदस्य व जिला प्रतिनिधि २५-२५ तथा लोक सेवक १०-१० उपवासदान प्राप्त करें।

चार. जैसा जलगांव की प्रबंध समिति में तय हुआ था, उपवासदान का उपयोग सर्व सेवा संघ के खर्च के लिए ही हो। सर्वोदय-पात्र, सूताजलि, संपत्तिदान आदि का जो अंश अब तक सर्व सेवा संघ को देने की बात थी वह न होकर अब इन स्रोतों से प्राप्त होने वाली संपूर्ण आय का उपयोग प्रदेश स्तर तक हो। इन कार्यक्रमों को बढ़ाने की ओर भी हम सब पूरा ध्यान दें। इन स्रोतों के अलावा प्रदेश स्तर तक फिलहाल चंदे का उपयोग भी मान्य होगा।

(पृष्ठ ५ का शेष)

रहा है। गुजरात एवं बिहार सर्वोदय मंडल ने इस आंदोलन का समर्थन किया है और इस आंदोलन में साथी हिस्सा भी ले रहे हैं। आंध्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों के सर्वोदय मंडलों ने इस आंदोलन का समर्थन किया है। उत्तर प्रदेश में उत्तराखंड में 'चिपको' आंदोलन चल रहा है और उसे सफलता मिल रही है। आंध्र में महबूब नगर जिले में २५ हजार व्यक्तियों ने प्रशासनिक लालफीताशाही, भ्रष्टाचार आदि के बारे में आंदोलन किया और २५ हजार नागरिकों ने तहसील कार्यालय पर उपवास किया।

पदयात्राएं—बहनों की लोकयात्रा अबाध गति से चल रही है। स्त्री-शक्ति-जागरण सप्ताह में करीब ५ सौ पदयात्राएं निकाली गईं, जिनमें हजारों बहनों ने भाग लिया। कुट्टी जी की पदयात्रा प्रदेशों में जागरण करती हुई चल रही है। सोहनलाल जी भूमिपुत्र ने दिसम्बर से यात्रा की एवं महाराष्ट्र की यात्रा पूरी कर आज कर्नाटक में यात्रा कर रहे हैं। श्री भवानी भाई की पदयात्रा शुरू हुई है। श्री दादा भाई नाईक की पदयात्रा ने मध्यप्रदेश भर जागरण किया और दिसम्बर में वह पूरी हुई। महाराष्ट्र में ग्राम-स्वराज्य-पदयात्रा शुरू हुई है। गीताई प्रचार पदयात्रा श्री वसंत राव गाडे के नेतृत्व में महाराष्ट्र में चल रही है।

विशिष्ट व्यक्तियों से संपर्क—प्रधान मंत्री से संघ के अध्यक्ष एवं प्रबंध समिति के सात सदस्य मिले। संघ के काम की उन्हें जानकारी दी गई। सर्वोदय कार्यकर्ता एवं शासन मिलकर कुछ क्षेत्रों में भूमि-वितरण का काम करें यह उन्हें सुझाया गया। उत्कल की मुख्यमंत्री श्रीमती नंदिनी सत्पथी से इस बारे में वार्तालाप जारी है। महाराष्ट्र के वारकरी समाज के प्रमुख श्री मेऊरगावकर, असम के श्री हलाराम दास, दिल्ली के संत-सेवक समागम एवं हरद्वार में कुंभ मेला में आए हुए सन्तों से अच्छा संपर्क बना है।

ऐतिहासिक अधिवेशन : तकरीर दर तकरीर

अनुपम मिश्र की रपट

[संघ अधिवेशन, महिलाश्रम वर्धा में ९ से ११ जुलाई तक होना था लेकिन १२ जुलाई तक हुआ। ऐसा ऐतिहासिक अधिवेशन संघ के इतिहास में पहले कभी हुआ नहीं था। संघ विसर्जन की कगार तक पहुंच गया था। अधिवेशन सही मानों में संघ की अग्नि परीक्षा थी। ११ जुलाई की रात तक लग रहा था कि अग्नि संघ को जला देगी। लेकिन १२ जुलाई की सुबह विनोबा ने उसे कुन्दन की तरह निकाल लिया। अधिवेशन के विवरण की पहली किश्त आपके हाथ में है।]

मंत्री के निवेदन के बाद सिद्धराजजी ने अधिवेशन को जे० पी० की उपस्थिति से सूचित किया। जे० पी० पवनार से उसी समय अधिवेशन को सम्बोधित करने आये। उन्होंने बिहार आन्दोलन के सन्दर्भ में अधिवेशन के दौरान उठाये जाने वाले और पहले ही उठ चुके प्रश्नों के उत्तर देने के बदले अपनी बात को केवल सफाई के लिए रखना चाहा जिससे सदस्यों को उन्हें समझने में मदद मिले। उनके इस विस्तृत भाषण के मुख्य मुद्दे ये थे : मैंने इसे अपनी जिम्मेदारी पर उठाया है। आप-का समर्थन पाने दबाव नहीं डाला। ● इससे पहले बिहार तथा केन्द्र सरकार से जितना सहयोग मैंने किया शायद ही किसी ने किया हो। उधर सब दलों को मिलाने के लिए राष्ट्रीय-सहमति में भी मैंने दो वर्ष गवाये। ● भ्रष्टाचार केवल शासन या कांग्रेस में ही नहीं है, लेकिन इनका असर हमारे जैसे देश पर सबसे ज्यादा पड़ता है। भ्रष्टाचार की नींव कालेधन पर आधारित चुनाव-फंड है इसके बारे में एक लेख भी लिखा, उसे लेकर प्रधानमंत्री से भी मिला, सुझाव दिये। यह सब करके थक गया मैं। ● देखा कि हमारे नागरिक के एकमात्र वोट का अधिकार भी उससे छिनता जा रहा है। हम इससे अच्छा ही लोकतंत्र बनाना चाहते हैं लेकिन जब तक वह न बने तब तक कम से कम इसे तो बचा लें। ● गुजरात और बिहार आन्दोलन १६ आना शान्तिमय नहीं रहा। लेकिन यदि इस परि-स्थिति से निकलने का कोई शान्तिमय तरीका

जनता के हाथ नही लगता तो फिर निश्चित है कि देश मे अशान्ति फैलेगी। इस आन्दोलन को लेकर कई प्रश्न उठे हैं, उठेंगे, लेकिन यदि आप मूल बात से सहमत नहीं हों तो उसे छोड़ दें। मैं कोई आग्रह लेकर वकालत करने आया नही। जे० पी० के भाषण का अंतिम वाक्य था, "स्वभाव परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं, मेरी और आपकी। अब आप इसका समर्थन करें तो ठीक नही करें तो ठीक। अब मैं आपके सामने आऊंगा नही। वहस मे पड़ना नही चाहता।" इस तरह जे० पी० फिर अधिवेशन मे अंतिम दिन तक नहीं आये।

सिद्धराजजी बीमार थे, वे मंच पर पीछे लेटे रहे इस बैठक में। प्रकाश भाई: गुजरात के आन्दोलन मे कई साथियो ने हिस्सा लिया। तब वह हमारी नीति मे फिट था। उस आन्दोलन के पहले या बाद मे तो संघ अधिवेशन होना ही चाहिए था। वह नहीं हुआ। कई लोगो ने हमसे पूछा कि क्या यही सर्वोदय है? कुछ ने यह भी कहा कि देखो अब सर्वोदय अपने असली रूप मे आया है। आज जे० पी० ने कहा कि 'सर्व सेवा संघ ने निश्चय कर उसका समर्थन किया हो, ऐसी बात नही है।' तब हम विचार करें। मुक्त चिंतन करें। इसके आधार पर *गणसेवकत्व की ओर बढ़ सकेंगे?* बिहार आन्दोलन के पक्ष मे ये बातें जाती हैं—(१) भ्रष्टाचार (२) चुनाव मे काले धन का आधार, (३) महंगाई, (४) युवा आक्रोश को गांधी मार्ग पर अहिंसक मोड़ देना। यह भी ठीक है कि ३४% की सरकार है लेकिन विधानसभा के भंग होने के बाद ये समस्याएं हल नही हो पायेंगी, दल-विहीन तंत्र नही आ पायेगा।

इसके पहले के सब अधिवेशन में 'प्रतिनिधि को वापस बुलाने के अधिकार पर चर्चा कभी नही हुई थी। आज वह हो रही है। इसी से स्पष्ट होता है कि यह आन्दोलन वैचारिक नही राजनैतिक आन्दोलन है। चार साल पहले वाराणसी मे हमने संविधान मे परिवर्तन की बात को गलत बताया था। उसकी पवित्रता की बात थी। आज हम उसी मे परिवर्तन की माग कर रहे हैं।

कोई इंकार नही कर सकता कि भ्रष्टाचार, महगाई, बेरोजगारी, अन्याय आदि कई प्रश्न मूर्तरूप से सामने हैं। लेकिन इनकी जड़ें हमारी सामाजिक मान्यताओं मे गहरे पैठी हुई हैं। *इन समस्याओं को दूर करने के लिए* ७५ दल काम कर रहे हैं, लेकिन वह उनसे हुआ नही। इसीलिए इस देश मे ग्रामस्वराज्य का विचार आया। यह गाँव तक ही सीमित रह जाने वाला विचार नही है। ग्राम स्तर के चिंतन से देश भर मे नवनिर्माण की नीव डलेगी। कोई भी स्तर परिवर्तन से अछूता बच नही रह सकता।

एक सामाजिक विचार होता है। इसके आधार पर राजनीति चलती है। आर्थिक ढाचा उसके अनुरूप बनता है। वह ढांचा बना रहे और उसके परिणाम बदल जायें ऐसा होता नही। यह दुराशा मात्र है। हमारी नजर जब ऊपर की ओर, सरकार की ओर रहेगी तो वह राजनीति होगी और जब नीचे की ओर, जनता की ओर रहेगी तो लोकनीति होगी। *आज ऐसा लगता है कि हम इस* राजनीति के मार्ग की ओर चल पड़े हैं।

आन्दोलन करने से पहले हमे इन बातो पर गौर करना चाहिए (१) स्वराज्य से पहले और बाद की स्थिति (२) देश मे विदेशी ताकतो द्वारा किया जा रहा प्रचार। यदि उनके कारण हमारे टुकड़े हुए तो हम कमजोर होंगे और गृहयुद्ध की संभावना है। (३) वेल्लाल मे सभी दलो ने हमारी तटस्थ भूमिका को स्वीकार किया था। अब लगता है कि हम उसे तोड़ रहे हैं। (४) इस समय अपने आन्दोलन मे एक ऐसी धारा है जो दोनो तरह के कामो को चलने देना चाहती है, वह 'ड्यूअल टॉक' चलेगी नहीं। (प्रकाश भाई का इशारा धीरेनदा आदि की ओर रहा होगा जो ग्रामस्वराज्य के साथ-साथ इसे आन्दोलन *का दूसरा किनारा मानते हैं—जो जहां है अपना-*अपना काम करें। विनोबा ने खुद अंतिम दिन जिसे स्वीकार, सबको स्वीकृति दी।) (५) गांधी स्वयं सत्ता मे गये नहीं। सत्ता विकास भर कर सकती है परिवर्तन नहीं। अब तक हम यह विचार देते थे कि मनुष्य का निर्माण विचार-चिंतन करता है। अब उससे हम हट रहे हैं। (६) शान्तिमय शब्द का बिहार आन्दोलन के साथ बहुत इस्तेमाल किया गया। इसके बारे मे केवल एक ही वाक्य कहूंगा 'लोकसेवक के निष्ठापत्र' मे केवल अहिंसा शब्द है।

आगरा के शीतल प्रसाद ने कहा कि वे किसी के—*गांधी, विनोबा, जे० पी० के* पीछे हैं नही। लेकिन आज जो हालत बनी है उसे देख कर उन्हे तो लगता है कि गुजरात और बिहार मे जो हुआ वह २२ वर्ष पहले ही होना चाहिये था। अब ऐसी हालत मे क्या करें, उन्होंने चन्द विकल्प सुझाये—(१) शुतुर्मुर्ग की तरह रेत मे सिर छुपाये (२) हिंसक शक्ति का मुकाबला करे। (३) अहिंसक शक्ति से *मुकाबला करें (४) आत्महत्या कर लें।*

चारु बाबू—व्यक्ति जब जन्म लेता है तो वह पूर्व जन्म के संस्कार लेकर आता है उसी तरह जब देश जन्म लेता है तो पूर्व संस्कार उसके साथ आता है। सैकड़ो वर्षों की गुलामी ने पुनर्जन्म के समय (१९४७) दो संस्कार हमें दिए, सत्ता की लालसा और आलस्य।

आजादी के बाद ये दोनो बातें बढ़ती गयी। चुनाव पद्धति ने भी यह किया। सत्ता की लालसा मे उम्मीदवारो ने चाहे जो तरीके अपनाये और जनता ने 'वोट देने भर का काम चल जायेगा, सब फिर सरकार ही करेगी' ऐसा सोच कर अपना आलस्य बढ़ाया।

बहुमत ही मंगलकारी है। *अल्पमत अमंगलकारी है यह माना। इस तरह ५१=१००* हुआ है, और ४९=० मान लिया: तो वर्तमान संसदीय गणतंत्र जब तक ऐसा रहेगा तब तक ये सब दोष सरकार मे रहेंगे।

इसीलिए हमे उस महापुरुष का बहुत उपकार मानना चाहिए जिसने हमे 'ग्राम स्वराज्य विचार' दिया, सर्वसम्मति का *सिद्धान्त दिया।* इससे लालच और आलस्य समाप्त होगा। लेकिन यह लम्बा काम है प्रेम *से करने से होगा। ऊपर-ऊपर सुधार या* संशोधन करने से यह होगा नहीं।

जे० पी० ने जो किया ठीक है, नही तो हिंसा भड़कती, लेकिन उसका हमें नेतृत्व नही लेना चाहिए था। आग बुझाना तो हमारा काम है लेकिन बुझाते-बुझाते उसमें भीतर घुस जाना नही है। हम वहां केवल सलाह दें, नेतृत्व नही। ग्राम स्वराज्य हमारी क्रान्ति है उसे छोड़ कर इस आन्दोलन में आना नहीं चाहिए। दोनो काम साथ चलना भी ठीक नही क्योंकि ग्राम स्वराज्य तो *हमारा* असली सिक्का है। कुछ समय मे नकली

सिक्का असली सिक्के को ही बाजार से बाहर कर देगा। हमारी पद्धति दबाव की नहीं है मनाव की है। वहां जो चल रहा है वह दबाव है।

यदि हम एक-एक पहलू को लेकर आन्दोलन करते हैं तो ठीक है। सब मिल कर शिक्षा का कार्यक्रम दें और नोटिस दें। वह पूरा नहीं होता तो फिर घोषित करें कि छात्र स्कूल छोड़ दें। बिहार में हम जो कर रहे हैं यदि वह सब करते रहे तो अपना बुनियादी कार्यक्रम खो बैठेंगे।

वैद्यनाथ बाबू—एक बात की ओर ध्यान दें। हम खुद कोई आन्दोलन शुरू कर रहे हैं या कोई अनिवार्य धर्म सामने आ जाता है तो उसमें पड़ रहे हैं? हमने दूसरा काम किया। बिहार गये होते ये भाई, तो बिहार के हम लोग जो कर रहे हैं उसमें बुद्धिभेद नहीं करते।

हम ध्यान पर बैठे हैं, लेकिन बगल के घर में आग लग गई। तो क्या हम ध्यान पर से उठेंगे भी नहीं? इतने सालों से हमने बुनियादी काम किये। कहा गया कि बहुत आजादी है, कम से कम बोलने की तो है ही। छात्रों ने आन्दोलन शुरू किया। ठीक था या नहीं यह बहस अभी छोड़ दें। उन्हें गोलियों से चुप करने की कोशिश की गई। जे० पी० ने बीच में खड़े होकर कह दिया कि इस देश में तुम गोली से किसी को चुप नहीं करा सकते। फिर मौन जुलूस निकला, सभा हुई, उनके बयान छपे, धीरे-धीरे वहां की फिजा बदली।

कहते हैं कि वोट का अधिकार है, उससे सरकार बदल सकते हो। लेकिन सब जानते हैं कि वह कितना खोखला हो चुका है। बिहार के मुख्यमंत्री के चुनाव में गांजे के एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मगलर को चुनाव क्षेत्र में बाकायदा घुमाया गया आतंक बिठाने के लिये। अब ये ही नारे लगा रहे हैं, कि जे० पी० जनतन्त्र विरोधी हैं। ऐसे नारे लगाने वाले इस देश में उठने वाली आवाजों को गोली से चुप कराना चाहते हैं।

बाबा ने कहा कि ये पूर्वांचल वाले भावनाप्रधान लोग होते हैं। बिहार में कृष्ण बाबू के राज में, एक बार गोली चली, अगली बार वह न मुख्यमंत्री बन सके और न उनकी पार्टी की सरकार बन पाई। लेकिन अब वहां इतना जुल्म हुआ और हम अपने मूलगामी काम में ही लगे रहे। आज वहां इस आन्दोलन में गरीब से अमीर, नीचे से ऊपर तक हर स्तर तक के लोग लगे हैं। क्या हम सर्वोदय वाले इससे अपने को मुक्त मान सकते हैं? जिस पीड़ा ने इन सबको स्पर्श किया, उससे हम अपने को अछूता रख सकते हैं? उसी स्पर्श के कारण ही तो हमने अपना मूलगामी काम शुरू किया था ना। आप सब खूब समझ लें कि बिहार सर्वोदय-मण्डल ने यह आन्दोलन शुरू नहीं किया था, लेकिन उस घटना के स्पर्श ने उसे इसमें शामिल होने को मजबूर किया। आखिर हम ग्राम सभाएँ बना कर क्या कर रहे थे? ग्राम स्वराज्य में हम लोगों को उनके कर्तव्य और अधिकारों का भान कराना चाहते थे। लेकिन इधर वोट ने लोगों को लगातार गुलाम बनाना शुरू किया था। इस बार इस आन्दोलन के कारण उनका परावलम्बन टूटना शुरू हुआ है। वे अपने अधिकार और कर्तव्य दोनों जानने की कोशिश कर रहे हैं—यह हुआ एक भिन्न निमित्त से।

लोक शक्ति पैदा करने के लिये तो हम काम करेंगे, लेकिन जब वह पैदा हो जाय तो जो उसे कुचल रहा है उसकी निन्दा भी नहीं करेंगे क्या? बिहार में यही किया गया है बस। बुनियादि काम की बात होती है, अहिंसक समाज के निर्माण की। हम भी एक क्षेत्र को लेकर (रूपौली में) जूझ रहे हैं। बाबा ने कहा था कि आप किसी एक छोटी सी जगह को एयरकण्डीशन्ड नहीं बना सकते—पूरे देश में हिंसा की फिजा होगी तो तुम छोटे-छोटे क्षेत्रों में एयरकण्डीशन्ड स्थिति नहीं पैदा कर पायेंगे। अब यह अनुभव आने भी लगा है। तजावुर, मुसहरी, रूपौली कई ऐसे क्षेत्र हैं जहां हम काम करते रहे—कुछ खास नहीं बना उनमें।

लोग कहते हैं कि इस आन्दोलन में कई तरह के लोग हैं हम उसे अपने तरीके से नहीं चला पायेंगे। लेकिन क्या गांधी के आंदोलन में सब तरह के लोग नहीं आए थे? वहां लोगों को गांधी की जरूरत थी तो उन्होंने उसे चरखे की घूस दी। चरखा चला लिया और गांधी की मदद ली। जहां जे० पी० को लोग 'शान्तिमय तरीकों' की घूस दे रहे हैं उन्हें अपने साथ करने के लिए।

एक परम्परा रही है सर्वोदय में। यहां लोक सेवकों ने क्या नहीं किया? सत्याग्रह हुए, प्रबन्ध समिति के लोग चुनावों में प्रचार तक करने गए। लेकिन आज जे० पी० ने गोली से चुप करने वालों की निन्दा भर की तो हम उनके खिलाफ हो रहे हैं।

कहा जाता है कि ऐसे आन्दोलनों में खतरा है। ठीक है खतरा तो जीवन में भी छिपा हुआ है। कृष्ण को भी गीता ठीक महाभारत के बीच सुनानी पड़ी, उसने भी उतना खतरा तो मोल लिया ही। जे० पी० इन बातों को, लोगों की लोकशक्ति, अहिंसा, स्वावलम्बन आदि सिद्धान्त उनके कालेजों, घरों में सुनाते तो कोई सुनता भी नहीं, अमल की बात तो छोड़ दें। लेकिन आज जे० पी० वह गीता मैदान में सुना रहे हैं लोगों, को वे सुन रहे हैं बड़े ध्यान से, अमल भी करने की कोशिश कर रहे हैं।

हमने सोच रखा है कि हमारी पद्धति पर दुनिया एक-एक चलने लगेगी, लेकिन आज जो चल रहा है हम उससे अपने को बिलकुल अलग रख सकेंगे क्या? दूसरे ढंग से वही काम शुरू किया जा सकता है। उस पहले ढंग में 'संघर्ष' भर जुड़ गया है। जनता ने पार्टी वालों को बता दिया है कि आपका युग समाप्त हो गया है। आज बिहार की जनता में पक्षमुक्तता की आकांक्षा जागी है। बिहार के लोग तो सभी दलों का राज देख चुके थे, अब वे उनसे उदासीन हो गए हैं। बिहार कांग्रेस, पार्टी की भाषा नहीं सत्ता की भाषा बोल रही है। और पटना और केन्द्र की भाषा में भी फर्क हो जाता है। पटना वाले साथ भी दे देते हैं लेकिन दिल्ली का तानाशाह इसे देखना नहीं चाहता। इस सरकार ने हिंसा को सबसे ज्यादा प्रोत्साहन दिया है, आन्दोलन ने नहीं—यह फर्क साफ है।

मैं आपसे फिर कहना चाहूँगा कि इस आंदोलन से हमारे मूलकाम में बाधा नहीं पड़ेगी। उसके लिए एक अनुकूलता ही बढ़ेगी।

सुरेशराम भाई ने सुबह जे० पी० और वैद्यनाथ बाबू के भाषणों को क्रमशः मार्मिक हृदयस्पर्शी बताते हुए कहा कि इन भाषणों में

बाद मेरे जैसे आदमी के लिए जो पिछले ४।५ महीने से बिहार नहीं गया हो, कुछ कहने को रह नहीं जाता। उन्होंने आन्दोलन के पक्ष या विपक्ष को न छूकर एक नया सवाल सदन के सामने रखा—"केन्द्र और राज्य सरकारों के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण हो? गांधी एक जमाने में अंग्रेजों के प्रति नरम थे फिर एक समय आया जब उन्होंने अंग्रेज सरकार को शैतान की सरकार कह दिया। आज जे०पी० भी इस सरकार को शैतान की सरकार कहने को तैयार लगते हैं। लेकिन क्या हम लोग कहने को तैयार हैं, ऐसा कहने के लिए? यदि नहीं तो फिर हमारी नीति उसके प्रति सहयोग और आलोचना की होगी। हमें बाबा का फैसला मान्य होगा। बाकी की चीजें हम तय करेंगे—मत बाबा दें···।

'जे० पी० को अब मेरे आपके जवाब की जरूरत नहीं है। इस प्रसंग में राजनैतिक पार्टियों की तरह आप में भी फूट पड़ सकती है। वह फूट न पड़े यह मेरी अपील है। यह हमारे धीरज की परीक्षा की घड़ी है। यदि हम उस आन्दोलन से सहमत न भी हों तो उसे स्वयं समझ लेने का एक मौका दें। जे० पी० ने इसे बारडोली, चम्पारण की तरह कहा है। ठीक है उन्हें करने दें।'

जयनारायण वर्मा ने पूछा कि आन्दोलन पर चिंतन करने वाले हमारी तस्वीर बिगाड़ने की बात करते हैं। क्या हमारी कोई तस्वीर है भी लोगों के सामने? हम लोग इतने बरसों से यह कहते आ रहे हैं कि जब जन शक्ति खड़ी होगी तो यह होगा-वह होगा सब समस्याएं अपने आप हल होने लगेंगी। लेकिन अब जब वह जनशक्ति खड़ी हो गई है बिहार में तो हम भाग रहे हैं वहां से, कगार पर खड़े चिंतन कर रहे हैं। आज जो बिहार आन्दोलन से सहमत नहीं हैं उन्हें वहां की परिस्थिति को पूरी तरह समझ कर ही अपनी राय बनानी थी, वे बिहार जाते, जे० पी० से मिलते, तब उनसे असहमति की बात करते तो ठीक रहता'।

लक्ष्मीदास ने सदन को बताया कि हिमाचल प्रदेश के लोग सोचते हैं, महसूस करते हैं कि बिहार का आन्दोलन सर्वोदय वाले चला रहे हैं। जब हम गावों में जाते हैं तब लोग हमसे पूछते हैं कि बाबा का एक मत एक और जे० पी० का मत है। आपका क्या मत है?,

भ्रष्टाचार महगाई के विरुद्ध यह आन्दोलन है, नौजवान लोग चला रहे हैं। मुझ में भी जवानी का जोश है लेकिन यह सब हल कैसे होगा यह सवाल तो मेरे मन में उठता ही है। भ्रष्टाचार के कारण मंत्रियों को त्याग पत्र देना पड़ेगा क्या? मंत्रियों अधिकारियों के कारण संस्थाओं में भ्रष्टाचार नहीं होता? यदि इन संस्थाओं में भ्रष्टाचार है तो उसके लिए हम उसके मंत्री अध्यक्ष को जिम्मेदार नहीं मानते, वह क्या त्यागपत्र देता है?'

"हमारे देश में अखबार आजाद है, प्रेस को आजादी है। लेकिन हमारी संस्थाओं की तरफ भी तो हम देखें। वहां चाहे जो कोई किसी को भी निकाल सकता है। क्या हमारी संस्था की तानाशाही स्वस्थ मानी जा सकती है'?

हमारी पद्धति विचार फैला कर उसके लिए एक ऐसा वातावरण बनाने की है जिस में विधान को विचार के पीछे चलना ही पड़ेगा। हम धीरज और मनाव से विचार फैलाते थे अब तक। हमारी संस्था में हम सुनते थे कि राजनीति में जाना नहीं चाहिए, समस्यायें नीचे से ही हल की जा सकती है। लेकिन आज हम विधान सभा को ही समस्याओं का केन्द्र मान रहे हैं। जो यह समझते हैं वे उसके भीतर जायें और वहां बैठ कर समस्याओं से लड़ें। और भीतर नहीं जाना चाहते तो जो भीतर हैं उन्हें वापस बुलाने की मांग क्यों करते हैं?' 'और फिर उन्हें वापस बुलाने के आन्दोलन में हमारा साथ भी कौन दे रहे हैं—" यह सवाल सदन से पूछते हुए लक्ष्मीभाई ने बहुत ही व्यंग से खुद जवाब दिया—"महान पवित्र बीजू पटनायक और महासमाजवादी जनसंघ।" अंत में उन्होंने किसी को ठेस लगी हो तो उसकी क्षमा मांगी।

कुमार प्रशांत: लोकसेवक के निष्ठापत्र में अहिंसा शब्द है, शान्तिमय नहीं और अहिंसा ही हमारी टेक रही है। बिहार के आन्दोलन के सिलसिले में शान्तिमय शब्द की ही चर्चा हुई है। ये दोनों शब्द जितने महत्व के साथ अन्तर के लिए रखे गये हैं उतने मुझे लगते नहीं है। बिहार की परिस्थिति घोर हिंसा से शान्ति की ओर आई है। शान्ति से अहिंसा की ओर भी जा सकती है। आजादी के बाद की पीढ़ी का शान्ति पर कितना आग्रह रहा है यह हम सब जानते हैं। फिर भी बिहार में शान्ति की कितनी घटनाएं घटी हैं। फुलवारी शरीफ जेल में सत्याग्रही पीटे गये। कहीं कोई प्रतिकार नहीं किया उन्होंने। जेलर तक ने आश्चर्य व्यक्त किया। कहा कि 'जब इन सत्याग्रहियों को पीटा जा रहा था तब वे केवल इतना ही कह रहे थे हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा। ये सब सत्याग्रही अहिंसक हो गये हैं ऐसा तो मैं नहीं कहता। फिर भी घोर हिंसा के वातावरण से शान्ति की तरफ आये हैं।

जोड़ने वाली ताकत हम लोग है तोड़ने वाली नहीं ऐसा कहा गया है क्योंकि दो बड़ी पार्टियों को हमारे इस आन्दोलन ने हम से अलग किया है। फिर भी एक उदाहरण मैं आपके सामने रखता हूं। बिहार के ३ हजार डाक्टरों ने एक साथ इस्तीफा दे दिया था। उनके बीच का विवाद सुलझाने के लिए स्वास्थ्य मंत्री और डाक्टरों के प्रतिनिधि जे. पी के ही कमरे में लगातार मिलते रहे हैं और अन्त में जे० पी० ने ही मध्यस्थता करके डाक्टरों की हड़ताल को तुड़वाया। जोड़ने और तोड़ने के सन्दर्भ में हमें यह भी सोचना चाहिए कि हमें किसे जोड़ना है। हम राजनैतिक दलों को जोड़ने वाली ताकत बनें या ६६% गैरराजनैतिक जनता को जोड़ने की क्या जनता को छोड़कर केवल दलों को ही जोड़ने का काम करें? बिहार के इस आन्दोलन में ६६% गैरराजनैतिक जनता को जोड़ने पर ज्यादा जोर दिया है और साथ ही साथ दलों को भी।

यह भी कहा गया कि आन्दोलन से व्यवस्था में ऊपरी लेप ही होगा। समस्याओं को पूरी तरह से हल करने के लिए व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करना होगा। यह भी कहा गया कि ऊपर की बुराइयों को मिटाने के लिए पहले से ही ५० राजनैतिक दल काम कर रहे हैं। मैं कहना चाहूंगा कि इन ५० राजनैतिक दलों ने अपनी ताकत इन ऊपरी समस्याओं को बढ़ाने में लगायी है मिटाने में नहीं। हम बुनियादी काम में ध्यान दें और ५० राजनैतिक दलों पर ऊपर की बुराई को हटाने का काम

(शेष पेज १६ पर)

पसंदगी साफ है : क्रांति या चालू व्यवस्था का पांडित्यपूर्ण समर्थन ?

नारायण देसाई

अटकलें लगायी जाती हैं कि आखिर जयप्रकाशजी ने बिहार के छात्र आंदोलन में योग क्यों दिया। क्या उनके पास कामों की कमी थी ? या वे सस्ती प्रसिद्धि चाहते थे ? या वे राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बनने की अपनी महत्वाकांक्षा पूरी करने का यही रास्ता देखते हैं ?

हमें कुछ बातें समझ लेनी चाहिए। सबसे पहले तो यह बात ध्यान में रहे कि जयप्रकाशजी ने अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि बरबस इस आंदोलन का नेतृत्व सम्हाला है।

यह बात सही है कि विश्व भर में पिछले कुछ वर्षों से तरुणों द्वारा जिस क्रांति की अगुवाई हो रही है उसका महत्व समझने वाले इनेगिने भारतीय नेताओं में से एक जयप्रकाशजी हैं। इसीलिए कुछ महीने पहले पवनार संगीति के समय, विनोबाजी से सलाह करने के बाद जब राष्ट्र के युवकों से गणतंत्र के लिए आगे आने का आह्वान दिया तब भी उन्होंने यही आशा व्यक्त की थी कि एक राष्ट्र व्यापी रचनात्मक क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व तरुण करें। नेतृत्व तरुणों के करने की बात थी, जयप्रकाशजी के नहीं।

बिहार के इस आंदोलन के सिलसिले में भी छात्र कई बार उनसे आंदोलन का नेतृत्व करने का आग्रह कर चुके थे। पर जयप्रकाश जी बराबर यही कहते रहे कि आंदोलन का नेतृत्व आपका है।

आखिर जब १८ मार्च को पटना में पुलिस का बेतहाशा दमन देखा, और घंटों तक पुलिस की नजरों के सामने आगजनी होते हुए भी सरकार को कोई कारवाई करते न पाया तब त्रस्त होकर जयप्रकाशजी ने कहा कि 'अब मैं चुप नहीं बैठ सकूंगा। जय-प्रकाशजी के इस आंदोलन में पड़ने से क्षुब्ध हुए लोग क्या कभी यह भी सोचेंगे कि इन घटनाओं ने उन्हें खुद को क्यों क्षुब्ध नहीं किया ?

दूसरा प्रश्न यह आता है कि आखिर जयप्रकाशजी गये तो गये, लेकिन सदलबल क्यों गये? यानी इस आंदोलन में आचार्य राममूर्तिजी, मनमोहन, त्रिपुरारिशरण आदि को घसीटने की क्या जरूरत थी? २०-२१ अप्रेल को पटना में मिली संगीति ने इस आंदोलन में श्री जयप्रकाशजी के काम का समर्थन किया था। संगीति ने यह भी माना था कि सर्व सेवा संघ के सेवाग्राम अधिवेशन में बने अष्टसूत्री कार्यक्रम के अनुरूप ही यह कार्यक्रम था पर यह प्रश्न केवल संविधान का नहीं था। आचार्यजी, मनमोहन आदि इस आंदोलन में आये उसके पीछे एक कारण तो स्पष्टरूप से यह था कि जयप्रकाशजी बीमारी के कारण वेलोर जा रहे थे और उनकी अनुपस्थिति में अधिक समय बिहार में देने के लिए उन्होंने इन मित्रों से आग्रह किया था। जयप्रकाश के प्रति व्यक्तिगत प्रेम व श्रद्धा, उनके स्वास्थ्य के बारे में चिंता तथा उनका बोझ कुछ हल्का करने की वृत्ति तो इन लोगों के काम करने के कारण थे ही, लेकिन साथ वे सभी यह भी देख रहे थे कि जयप्रकाशजी के इस आंदोलन द्वारा गांधीजी के आदर्श समाज में चरितार्थ हो रहे हैं। वरना भूदान यज्ञ के प्रारंभ से आज तक अनेक प्रकार के 'सत्याग्रहों' के मौकों से अलिप्त रहे ये लोग इस आंदोलन में क्यों आते? उन्होंने देखा था कि समाज को जो कष्ट हैं वे इस समय इतने अधिक बढ़ गये हैं कि आकारात्मक परिवर्तनों ने ही गुणात्मक परिवर्तन कर दिया है। उन्होंने यह भी देखा कि चारों ओर ऐसा वातावरण बना हुआ जिससे हिंसा को ही उत्तेजना मिल रही है। इसे रोकने के लिए इन शक्तियों से अधिक प्रबल अहिंसक आंदोलन छिड़ने की जरूरत थी जो बिहार के आंदोलन द्वारा पूरी हो रही थी। इन मित्रों ने यह भी महसूस किया था कि हमारी लाख कोशिश करने पर भी हमारा आंदोलन एक अंधी गली में आकर फंस गया था, वह सेवकों का ही आंदोलन रह गया था : सारे अभियानों और मोरचों के बावजूद भी और इधर यह जन आंदोलन हमारे सामने उपस्थित था, हमारे मोड़ने के अनुसार मुड़ने के लिए।

कुछ लोग जयप्रकाशजी तथा उनके साथियों को बिहार के आंदोलन में जो कुछ भी थोड़ी बहुत छिटपुट हिंसा, दबाव या अभद्रता होती है उसके लिये जिम्मेदार ठहराते हैं। एक तरह से यह ठीक भी है। जिम्मेवार लोग अपने आंदोलन के सारे पापों की जिम्मेवारी अपने ऊपर लेते ही हैं इसीलिये तो विधान सभा के सामने सत्याग्रह करते समय अगर दर्शकों द्वारा कुछ जबर्दस्ती या अभद्रता होती है, तो भी जयप्रकाशजी उसके लिए क्षमा याचना करते हैं। वास्तव में तो इस आंदोलन में जयप्रकाशजी का काम कुछ-कुछ समुद्र मंथन के समय नीलकंठ-सा है। अनेक विचारकों ने यह स्वीकार किया है कि गांधी के बाद अपने पक्ष में होने वाली भूलों को स्वीकार करने वाला तथा उसके लिए जाहिर में माफी मांगने वाला यह पहला लोक नायक है।

जयप्रकाशजी ने इस आंदोलन में प्रवेश कर इसे तीन प्रकार से पुष्ट किया है। उनके आने के कारण आंदोलन को अहिंसक मोड़ मिला। यह तो अब आंदोलन के विरोधी भी स्वीकार करने लगे हैं कि जयप्रकाशजी इस आंदोलन में नहीं आये होते तो पूरा बिहार आग में जल उठता। १८ मार्च की घटनाओं में इसी प्रकार का मोड़ लिया था। जय प्रकाशजी की दूसरी देन आंदोलन को एक संयमित रूप देने की थी। पांच जून को जलूस में लौटने वाले छात्रों पर जब इन्दिरा ब्रिगेड के लोगों ने गोली चलाई तब छात्रों का उत्तेजित होना स्वाभाविक था। लेकिन उसके बदले में उनके मुंह से निकला यह सूत्र कि 'हमला चाहे जैसा होगा, हाथ हमारा नहीं उठेगा', इस सामाजिक संयम का सूचक था। ये छात्र कोई प्रशिक्षित सत्याग्रही नहीं थे। ये अपने अपने गांवों की छात्र संघर्ष समितियों के साधारण सदस्य थे। साधारण छात्रों द्वारा दिखाया गया यह अनुशासन जयप्रकाशजी द्वारा इस आंदोलन में दाखिल किये गये सामाजिक संयम का सबूत था। जयप्रकाशजी ने इस आंदोलन को जो तीसरा आयाम दिया वह है एक सम्पूर्ण क्रांति के लिए दीर्घकाल तक चलने वाले संघर्ष की तैयारी। बिहार के किसी आंदोलन के पीछे, या यों कहिये कि इससे पूर्व हुए भारत के

→

→
किसी छात्र आंदोलन के पास यह सम्पूर्ण क्रांति की दृष्टि कहा थी जो जयप्रकाशजी ने इसे दी है ? आंदोलन का यह पक्ष उसे गुजरात के आंदोलन से विशिष्ट बनाता है। गुजरात के आंदोलन में उत्साह था, इस आंदोलन मे धृति-उत्साह-समन्वय है । गुजरात के आंदोलन मे वर्तमान शासन को बदलने का जोश था, इस आंदोलन में समूची व्यवस्था को बदलने का होश है ।

इसी कारण से इसे 'टापलिंग गेम' नहीं कहा जा सकता। टापलिंग गेम वह होता है जिसमे एक शासक को बदलकर दूसरे को उसके स्थान पर बैठाने भर का प्रयोजन होता है। किन्तु यहां तो जयप्रकाशजी ने प्रारम्भ ही से कहा था कि 'सापनाथ को बदलकर नागनाथ लाने मे मुझे कोई रुचि नही है'।

क्या इस आंदोलन से महगाई और भ्रष्टाचार दूर होंगे, जो इसके उद्देश्यो मे से दो प्रमुख उद्देश्य है ? यह सच है कि महगाई एक जटिल प्रश्न है कि जिसका संबन्ध अधिकांश मे राष्ट्र की धनराशि तथा कुछ अंश मे अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति से भी है, तथा भ्रष्टाचार राजनीति, प्रशासन, व्यापार, उद्योग, शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रो मे व्याप्त है। इस आंदोलन से जो हो रहा है, वह वातावरण तैयार हो रहा है। स्वराज आंदोलन मे शामिल होने वालो से अक्सर पूछा जाता था कि नमक का कानून तोड़ने से स्वराज कैसे आयेगा और भूदान आंदोलन मे शामिल होने वालो से यह पूछा जाता था कि भूमि के टुकड़े करने से बेरोजगारी की समस्या कैसे हल होगी। लेकिन हर क्रांतिकारी यह जानता है कि क्रांति के लिए वातावरण निर्माण करना यह प्रथम शर्त होनी है। महगाई और भ्रष्टाचार के बारे मे लोग एक दूसरे से शिकायत तो अवश्य करते रहते थे, कोई मिलने के लिए आ जाय तो उसके सामने दुखड़े रोना भी होता था। पर महंगाई और भ्रष्टाचार के खिलाफ सिर उठाने का काम इस आंदोलन ने ही किया है, यह मानना होगा।

आंदोलन के बारे में एक आक्षेप यह किया जाता है कि विधानसभा के विघटन की माग अजनतांत्रिक है। साथ ही यह भी कहा जाता है कि इस आंदोलन से ऐसे तत्व निकलेंगे जो इस देश मे फासिज्म लायेंगे कोयला खदानो मजदूरो की हड़ताल के प्रश्न पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री ने त्यागपत्र दिया, नये चुनाव हुए, नयी सरकार आयी क्या इससे ब्रिटेन का गणतंत्र कमजोर हो गया ? बल्कि इस प्रकार की परम्पराएं तो ब्रिटेन के गणतंत्र को मजबूत करती है। प्रश्न यह है कि गणतंत्र मे कौन सर्वोपरि है जनता या किसी भी पार्टी का आलाकमान ? विधानसभा भंग की माग जनतंत्र मे जनता को सर्वोपरि स्थान देने के लिए है। यह सर्वोपरि स्थान माने अपने उम्मीदवारो को खुद पसंद करने का अधिकार, उनको चुनने का अधिकार, उनकी नीतियो का निर्धारण करने का अधिकार, तथा आवश्यकता हो तो अपने प्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार। रही बात फासिज्म की। इतिहास ही इस बात की साक्षी देगा कि बिहार के इस आंदोलन मे फासिज्म किस ओर है—हजारो स्थानो पर गठित होने वाली छात्र संघर्ष समितियां, जन संघर्ष समितियां, महिला मडल आदि की कार्रवाई मे या लोगो की सभा या जुलूस के लिए इकट्ठा न होने देने के लिये जहाज, बस और ट्रको को रोकनेवाले, ट्रेनो को मोड़ने वाले, रेडियो तथा अखबारो मे बेतहाशा झूठा प्रचार करनेवाले, संग्रहखोरो को पकड़ने के बदले उन्हे पकड़ानेवालो को ही आंतरिक सुरक्षा कानून की आड लेकर गिरफ्तार करने वाले, निःशस्त्र और शांत जनता के बीच शस्त्रो का रोबदार प्रदर्शन करनेवाले, बेतहाशा गोली चलाकर उसकी न्याय जाच करवाने तक की परवाह न करनेवाले पक्ष की कार्रवाई मे है ?

एक इल्जाम यह भी लगाया जाता है कि यह आंदोलन धनवानो के बेटो का आंदोलन है। यह समझ मे नही आता कि इस इल्जाम लगानेवालो पर हसना अधिक उचित है या इनकी बुद्धि पर रोना। किसी भी तटस्थ निरीक्षक को प्रथम ही दृष्टिपात मे यह समझ मे आ जायगा कि आंदोलन में धनवान पक्ष किधर है और सामान्यजन किधर है। जून मास मे हुए कम्युनिस्टो के जुलूस के लिये जो खर्च हुआ और जयप्रकाशजी के जुलूस के खर्च का अनुपात शायद सौ और एक का निकलेगा, आंदोलन के विरोध में अखबारो मे छपनेवाले एक-एक विज्ञापन के खर्च और आंदोलन के पक्ष मे निकलनेवाली पत्रिकाओ के बिलों की तुलना कीजिये प्रचार के खर्च को देखिये तो यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि कुबेरजी की कृपा गरीब आंदोलनकारियो की ओर नही, लेकिन शासन की पूरी शक्ति से समर्थित कांग्रेस या विदेशी फंडो से समर्थित कम्युनिस्ट पक्ष के साथ है।

रह गया प्रश्न प्रगतिविरोधी पक्षो के समर्थन का। यह आक्षेप करनेवालो की प्रगतिवाद की परिभाषा क्या यही है कि जो चालू व्यवस्था को टिकाये रखना चाहता है, वह प्रगतिवादी है और जो उसमे आमूल परिवर्तन लाना चाहता है वह प्रतिगामी है ? अगर यही उनकी परिभाषा हो तो वह परिभाषा उन्ही को मुबारक।

असल मे जयप्रकाशजी पर जो जगह-जगह से वाग्बाण बरस रहे है उसका प्रमुख कारण यही है कि जयप्रकाशजी एक जैसी क्रांति करना चाहते हैं जिसके कारण चालू व्यवस्था के महतो के आसन डोल रहे है। पिछले बीस वर्षो मे भूदान-ग्रामदान-ग्राम स्वराज, लोकस्वराज आंदोलन ने जो आमूलाग्र क्रांति करने के लिए पुरुषार्थ किया उसी को श्री जयप्रकाशजी ने एक व्यापक जनआंदोलन के साथ जोड़ दिया है। इसीलिए लोग उनसे घबराकर पूछते हैं कि क्या आप अपनी लोकनीति का विचार लाना चाहते हैं, क्या निष्पक्ष लोकतंत्र की बातें करेंगे, क्या ये बातें व्यवहार्य हैं, आदि प्रश्नो की इस झड़ी मे ही भय की एक ध्वनि है, भय इस बात का है कि कहीं तुम्हारा लोक हमारे पक्ष को गौण तो नहीं बना देगा, तुम्हारा देव हमारे पुजारी को अप्रतिष्ठित तो नहीं कर देगा ? कहीं तुम्हारा यह आंदोलन हमारी यह राजनैतिक, अर्थनैतिक, शैक्षिक, सामरिक व्यवस्था को ही नहीं हिला देगा ? मूलगामी क्रांति के सारे चाहनेवालों के लिए बिहार के आंदोलन ने एक संदर्भ खड़ा कर दिया है। पसंदगी बड़ी साफ है : क्रांतिकारी कार्यक्रम को जनता तक पहुचाने के लिए आंदोलन मे अपनी सारी ताकत लगाओ या फिर पांडित्यपूर्ण दलीलें करके चालू व्यवस्था को टिकाने के लिए डटे रहो।

उपवासदान : प्रगति और आंकड़े

विनोबा जी द्वारा उपवासदान की शुरुआत किये जाने के बाद उसी रोज यानी ११ सितम्बर ७३ को सघ के अध्यक्ष सिद्धराज ढड्ढा, कुष्ठधाम, दत्तपुर के डा० रविशंकर शर्मा तथा पूर्णचन्द्र जैन ने अपना उपवासदान का सकल्प कर इस विचार की पुष्टि की। दिसम्बर तक इसकी गति धीमी रही, लेकिन ज्यों-ज्यों इस विचार को मान्यता मिलने लगी त्यो-त्यो इसकी सख्या मे वृद्धि होती आयी है। पर अब तक की जो गति रही है और हमारा जो लक्ष्यांक है उसको देखते हुए पिछले दिनों के आकड़े सन्तोषप्रद नहीं कहे जा सकते। अब तक विभिन्न प्रदेशो से प्राप्त उपवासदानियो की कुल सख्या २७८६ तथा उनसे प्राप्त रकम ६९,०३८-३३ है। उत्तरप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश, बगाल तथा राजस्थान के साथियो ने उपवास प्राप्त करने मे अपनी शक्ति लगाकर सख्या बढ़ाने की कोशिश की है। अन्य प्रदेशों मे भी भले ही सख्या कम है, पर साथियो का प्रयास अधिक से अधिक उपवासदान प्राप्त करने मे रहा है। १ जुलाई, ७४ तक विभिन्न प्रदेशों से प्राप्त आंकड़े इस प्रकार है

प्रदेश	सख्या	रकम
असम	२०	५१०-००
आंध्र	७३	१८३३-००
उत्कल	५०	६३६ ८८
उत्तरप्रदेश	५६५	१५,३५७-५०
केरल	१३	३०८-००
कर्नाटक	४१	६६६ ००
गुजरात	५५४	१३,३६१-००
जम्मू-कश्मीर	१	४८-००
तमिलनाडु	६७	१,२३६ ००
पजाब	४१	६३६-००
प० बगाल	१५८	५,११७-००
बिहार	८१	१,८०६-३५
मध्यप्रदेश	२९४	७७८४ ५०
महाराष्ट्र	५३०	१२,१५० ००
मणिपुर	६	२७१ ००
राजस्थान	१६३	३,६१४-६०
हरियाणा	६०	१४७३-००
हिमाचल प्रदेश	४	१०५-००
दिल्ली	३३	१,०८३-००
विदेशी	२	१७२ ००
योग	२,७८६	६९,०३८-३३

विनोबा के इस प्रेरणादायी आवाहन पर सर्वोदय आन्दोलन मे आस्था रखनेवाले देश-विदेश के साथियो ने उपवासदान सकल्प कर आन्दोलन के प्रति अपनी सम्मति जाहिर की है पर कुछ ऐसे भी साथी है जिन्होने इस विचार को गहराई से समझा है। अब तक जितने सकल्प-पत्र भरे जा चुके है वे १२ रुपये से १२० रुपये तक वार्षिक रकम की दर से भरे गये हैं। लेकिन कुछ मित्रो ने इस सीमा से एक कदम आगे जाकर अपनी निष्ठा दिखाई है पीली भीत (उ० प्र०) के बलराम कृष्ण उर्फ स्वामी शिवानन्द का अन्दाज है कि वे ज्यादा-से ज्यादा ग्यारह वर्ष तक जीवित रहेगे। एक साल का २५ रुपया उन्होने पीलीभीत सर्वोदय मडल को दिया जो हमे प्राप्त हो गया है। शेष १० साल के २५० रुपये सर्वसेवा सघ को देते हुए अपने सकल्प पत्र मे कहा है 'यह दस साल का मेरा उपवासदान का पैसा है अगर इस अवधि मे ईश्वर ने मुझे अपनी शरण मे बुला लिया तो उपवास का शेष पैसा सर्वोदय के शुद्धकाम मे खर्च किया जाय।' इन्दौर के जसवन्त राय ने एक साथ दो साल का सकल्प कर ५० रुपये सघ को अग्रिम भेज दिये हैं। उत्तरप्रदेश के एक निष्ठावान साथी जिन्होने १२० रुपये वार्षिक उपवासदान का सकल्प-पत्र पर बिना नाम व पता दिये लिखा है कि 'यह १२० रुपये उपवासदान हेतु हमारा गुप्तदान है, इसे स्वीकार किया जाय।'

विनोबा के इस क्रान्तिकारी कदम मे देश के जिन साथियो तथा सस्थाओं का सक्रिय तथा सामूहिक सहयोग प्राप्त हो सका है उनके हम विशेष आभारी हैं। वे सस्थाए जिन्होने सामूहिक रूप से सकल्प किया है उनसे भी अन्य सगठनों को नयी प्रेरणा तथा दिशा मिली है। जिन सस्थाओ से हमे सामूहिक उपवासदान प्राप्त हुआ है, वे हैं—उत्तर प्रदेश बनवासी सेवा आश्रम गोविंदपुर, मिर्जापुर। आर्यकन्या पाठशाला इन्टर कालेज मुजफ्फरनगर। नगरपालिका इन्टर कालेज मुजफ्फरनगर। सर्व सेवा सघ प्रकाशन राजघाट, वाराणसी। चम्बलघाटी शांति समिति, बाह, जिला—आगरा तथा अ० भा० शांति सेना मडल, राजघाट, वाराणसी। महाराष्ट्र ब्रह्म विद्या मन्दिर, पवनार, वर्धा। ग्रामसेवा मडल, गोपुरी, वर्धा। परमधाम प्रकाशन, पवनार, वर्धा। शांति सेवा मडल, तलवाड़ा, वापा—कासा, जिला ठाणे। निसर्गोपचार आश्रम, उरूली कांचन, पुणे। सर्व सेवा सघ-प्रधान कार्यालय। मध्यप्रदेश—कस्तूरबा गांधी स्मारक ट्रस्ट, सिविल लाइन्स, रायपुर। विसर्जन आश्रम, मौरगा, इन्दौर। ग्राम-भारती आश्रम टवलाई जिला-धार। मध्यप्रदेश भूदान यज्ञ बोर्ड, भोपाल। राजस्थान जैसलमेर जिला खादी ग्रामोद्योग परिषद, जैसलमेर। खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान, खादी सदन, रानी बाजार, बीकानेर। मेवाड़ ग्रामोद्योग सघ, गावर, जिला-अजमेर। बिहार विनोबा आश्रम, सहरसा। श्री गांधी आश्रम, पानीपत, हरियाणा। सर्वोदय सघ, तमिलनाडु।

सस्थाओ के अलावा जिन भाई-बहनों ने पूर्ण सक्रिय होकर उपवासदान प्राप्त

करने में मदद की है उनकी सेवा भी सराहनीय है। अपनी शक्ति भर जितना संभव हो सकता है इन्होंने लक्ष्यांक प्राप्त करने का भरसक प्रयास किया है। ऐसे सक्रिय साथी हैं-सर्वश्री कृष्णसिंह, कटक। लोचन प्रसाद माहेश्वरी, आगरा। दीपनारायण साही, रूद्रपुर। सुन्दरलाल बहुगुणा, टिहरी। जयती प्रसाद, सादाबाद। कृष्णा कुमारी, मुजफ्फर नगर। मेवालाल, मीरपुर, मथुरा। कांति शाह, बड़ौदा। भाईलाल भीखा भाई, बोरी आवी। दाताराम मक्कड़, कलकत्ता। कपिल देव कुमार, पटना। किशोरलाल गुप्ता, काशीनाथ त्रिवेदी तथा महेन्द्रकुमार, इन्दौर मोतीलाल त्रिपाठी, रायपुर। श्रीमती शिवकुमारी शर्मा, ग्वालियर। कल्याणचन्द्र त्रिपाठी, गुना। महावीर सिंह, लश्कर। श्रीमती इन्दुमति जोशी, रायपुर। डा० रविशंकर शर्मा, दसपुर। होशियारी बहन, उत्तरकाशी। शोभना रानडे, सासवड़। सुश्री तारा भागवत, पुणे। नन्दलाल कावरा, एरंडोल। जगन्नाथ मसारा, परतापुर। देवीदत्त पंत, बीकानेर। भगवानदास माहेश्वरी, जैसलमेर। महेन्द्र कुमार जैन, जयपुर। टीकाराम आर्य आसफपुर। सुरभि शर्मा, आंध्र। शकुन्तला चौधरी, गोहाटी। घेरलाल टाटिया, हरियाणा।

उपवासदान की धीमी गति को देखते हुए मार्च, ७४ के अंतिम सप्ताह में जलगाव में हुई प्रबंध समिति की बैठक में इस विषय पर गहराई से चर्चा हुई। निर्णय लिया गया कि अगर सातत्यपूर्वक इस काम को किया जाय तो उपवासदान के लक्ष्यांक को प्राप्त करना कोई कठिन काम नहीं है। अत एक निश्चित अवधि तय कर देश भर के निष्ठावान साथी इसके लिए जोर लगायें। इस हेतु संघ की ओर से १ से १५ मई तक पूरे देश में उपवासदान पक्ष मनाने की अपील की गयी। इस दरम्यान जिन साथियों तथा संस्थाओं द्वारा उपवासदान पक्ष मनाया गया तथा जो फलनिष्पत्ति हुई वह इस प्रकार है गुजरात सर्वोदय मंडल, १७५ उपवासदान। कृष्णाकुमारी, मुजफ्फरनगर ११० उपवासदान सुरभि शर्मा, आंध्र ४३ उपवासदान। महेन्द्र कुमार, सर्वोदय प्रेस सर्विस, इन्दौर १५ उपवासदान। जयती प्रसाद, सादाबाद, मथुरा ३० उपवासदान। श्रीमती चन्द्रकान्ता बहन, कानपुर २४ उपवासदान। प्रभाकर शर्मा, सरगांव, वर्धा २४।

सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर होते हुए भी जिनका प्रत्यक्ष सहयोग सर्वोदय आंदोलन में नहीं है, पर उनकी सहानुभूति एवं निष्ठा हमारे आंदोलन के प्रति है। सर्वोदय आंदोलन इनके प्रति कृतज्ञ है जिन्होंने स्वयं तो उपवासदान का संकल्प किया ही है और उनके कारण औरों को भी इसकी प्रेरणा मिली है। ऐसे सर्वोदय-प्रेमियों में भीमसेन सच्चर, भूतपूर्व मुख्यमंत्री, पंजाब, मधुकर राव चौधरी, राजस्व मंत्री, महाराष्ट्र सरकार, सहदेव चौधरी, तत्कालीन राजस्व मंत्री, बिहार सरकार तथा श्रीमती मधु बहन शाह, धर्मपत्नी, राज्यपाल मद्रास का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

—बद्रीनाथ सहाय

निवृत्ति का अर्थ निष्क्रियता नहीं है

धीरेन्द्र मजूमदार

१० सितम्बर, ७४ को मैं अपने जीवन के ७५वें साल में प्रवेश कर रहा हूं। १० सितम्बर, ५९ के दिन, जिस दिन अपने जीवन के ६०वें साल में प्रवेश किया था, मैंने अपने को सभी संस्थाओं से मुक्त कर लिया था और अपने मिशन के अनुसार केवल प्रयोग-केन्द्रों के साथ अपने को जोड़ रखा था। उस दिन मैं संस्थाओं से निवृत्त हुआ था, लेकिन सर्वोदय के मुख्य आंदोलन से नहीं। आंदोलन में सबके साथ रहा, मार्गदर्शन तथा मार्ग-योजन करता रहा तथा विनोबा की प्रेरणा से और सर्व सेवा संघ की व्यवस्था से आंदोलन की जो मुख्यधारा थी, उसमें शामिल था। जब विनोबा जी ने सहरसा में लगने की प्रेरणा दी तब मैंने अपने निजी प्रयोग को भी स्थगित करके अपने को पूरा-पूरा सहरसा के काम में शामिल कर दिया था। अब आंदोलन की मुख्य धारा सहरसा से निकल कर व्यापक रूप से विचार-प्रचार की ओर झुक रही है और सेनापति के संकेत के अनुसार विचार के बीज-वपन के बाद बाहरी शक्ति को सहरसा से हटने का निर्णय हो गया है। साथ ही साथ, मेरे जीवन के ७५वें साल में प्रवेश करने का समय नजदीक आ गया है। पूर्वनिश्चय के अनुसार वानप्रस्थ की भूमिका में संस्था-निवृत्ति के बाद ७५वें साल में संन्यास की भूमिका में पूरे आंदोलन से निवृत्ति का निर्णय कर लिया है। १० सितम्बर से पहले ही उत्तर प्रदेश के एक निभृत कोने में, जहां अपने जीवन का सबसे महत्त्व का भाग बीता है, छोटा-सा धाम बनाकर बैठ गया हूं। विचार यह है कि इस बीच की अवधि में सहरसा की प्रतिकूल जलवायु और ३ वर्ष की लगातार यात्रा के 'स्ट्रेन' के कारण स्वास्थ्य में जो कमी आयी है, उसे पूरा करके ही अगला कदम बढ़ाया जाय। तदनुसार इस समय मैंने आजमगढ़ जिले के मधुबन नामक स्थान पर, जहां सर्व सेवा संघ की निजी दो एकड़ के करीब जमीन है, वहां लोक-गंगा धाम के नाम से अपना निवृत्ति-निवास बना लेने का निर्णय किया है। अब मेरा आगे का पता लोक-गंगा धाम, पोस्ट-मधुबन, जिला-आजमगढ़ रहेगा।

निवृत्ति का अर्थ निष्क्रियता नहीं है। संन्यास के बाद संन्यासी भी निष्क्रिय नहीं होते, बल्कि उनकी क्रियाशीलता पहले से अधिक जागृत तथा गतिमान होती है। केवल क्रियाशीलता का स्वरूप और प्रकार बदल जाता है। तो स्पष्ट है कि मैं निवृत्ति के बाद निष्क्रिय नहीं रहूंगा और हो सकता है कि ईश्वर मेरी क्रियाशीलता को अधिक गतिशील और व्यापक बना दें। यह क्रियाशीलता मेरे विचार और मिशन के अनुसार मेरी अपनी होगी। सर्वोदय और ग्रामस्वराज्य आंदोलन का हिस्सा नहीं होगा। इसकी दिशा सर्वोदय तथा अहिंसक क्रांति के लिए मार्ग-खोजन की होगी, जिसमें क्रांति के अगले कदम की खोज मुख्य रहेगी।

समग्र ग्रामसेवा की ओर लोक-गंगा यात्रा पूर्ववत् चलती रहेगी। लेकिन हो सकता है कि चातुर मास के अलावा भी बैसाख और जेठ के महीनों में, यानि उत्तर प्रदेश की गर्मी और लू के दिनों में मैं यात्रा के लिये असमर्थ रहूं। तब यात्रा ४ महीने के बजाय ६ महीने स्थगित रहेगी। इन ६ महीनों में मैं लोक-गंगा धाम पर अपने विशिष्ट विषय के मार्ग-खोजन के काम पर ध्यान केन्द्रित करूंगा। इन दिनों में देश के सर्वोदय समाज के लोग मुझसे गोष्ठियों, तथा तरुणों के प्रशिक्षण का काम इस धाम पर उसी तरह से ले सकते हैं जिस तरह खादीग्राम में लिया जाता था लेकिन गोष्ठी और प्रशिक्षण का काम उसी तरह शरीर-श्रमप्रधान रहेगा जिस तरह खादीग्राम में था।

अहिंसा के पुजारी के नाते मेरी मान्यता यह है कि जिस तरह गांधीजी ने माना था कि आधुनिक केन्द्रीकृत उद्योगीकरण के कारण मानव पर हिंसा, शोषण और दमन का प्रहार हो रहा है, उसी तरह आधुनिक अध्यात्म-विरोधी जड़ विज्ञान के परिणाम से जो भूमि, पानी, हवा, खाद्य-सामग्री तथा मनुष्य के स्वास्थ्य का व्यापक दूषण हो रहा है और उस कारण मानव पर भयंकर सहस्र हिंसा का प्रहार हो रहा है, वह हिंसा संसार के युद्ध और दूसरे प्रकार के शोषण, दमन और अत्याचारजनित टोटल हिंसा से कई गुना अधिक है। अतएव जिस तरह गांधीजी की प्रेरणा से हम चरखा-केन्द्रित तथा श्रममूलक ग्रामोद्योगों से उस उद्योगीकरण की हिंसा का मुकाबला करते रहे हैं, उसी तरह अपने धाम में बैठकर साधनमूलक तथा जड़ वैज्ञानिक कृषि-शास्त्र के स्थान पर श्रममूलक तथा चेतन मानवीय कृषि-शास्त्र की खोज करूंगा। यह काम गिलहरी के बालू-कण जैसा अत्यंत सूक्ष्म होगा, लेकिन चूंकि मैं इस काम को आज की दुनिया के लिए सर्वाधिक महत्त्व का मानता हूं, इसलिए अति सूक्ष्म होने पर भी मुझको सम्पूर्ण रूप में इससे संतोष होगा।

सर्वोदय तथा अहिंसक क्रांति के अगले कदम का मार्ग-खोजन करना तथा उसके लिए चिंतन-प्रवाह का व्यापक प्रकाशन करना मेरा यह काम व्यक्तिगत ही रहेगा, संस्थागत नहीं। इसके लिए अनावर्तक तथा आवर्तक साधन देश भर के मेरे मित्रों के आधार पर चलेंगे। मित्र-समाज मुझे जिस अनुपात में आधार देंगे, उसी अनुपात में काम चलाता रहूंगा।

क्रान्तिकारी आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी और स्वाधारित हो ताकि किसी संस्था या केन्द्रित कोष या निधि के मातहती के कारण उसका स्वतंत्र विचार-प्रवाह तथा अभिक्रम कुंठित न हो, मेरे इस विचार का मार्ग खोजना है।

स्पष्ट है कि देश की तमाम संस्थाओं से मेरा कोई संबंध नहीं रहेगा। लेकिन सर्वोदय समाज के मित्रों से भरपूर संबंध कायम रहेगा। जहां तक संस्थाओं की बात है, मेरा संबंध दो संस्थाओं से रहेगा। एक: मेरी जन्म-संस्था तथा गुलाम भारत की सेवा-संस्था उत्तर प्रदेश का श्री गांधी आश्रम, जो मेरे लिए घर ही रहा है। दो: आजाद भारत की सेवा-संस्था सर्व सेवा संघ। इनके अलावा मेरे सघन क्षेत्र में जो संस्थाएं होंगी, उनसे लोकशक्ति-निर्माण की दृष्टि से संबंध रखता रहूंगा। इन दो संस्थाओं के कार्यक्रमों से संबंध नहीं रहेगा, बल्कि वह संबंध बिरादरी के विचार की भूमिका में पारिवारिक संबंध होगा तथा कुछ सांकेतिक, आर्थिक संबंध भी कायम रहेगा।

मुझे आशा और विश्वास है कि मेरे जीवन की यह आखिरी भूमिका अंतिम घड़ी तक कायम रहे, इसके लिए देश भर के मित्रों की शुभकामना और आशीर्वाद मिलता रहेगा। ईश्वर मुझे आखिरी दिन तक के लिए शक्ति दें।

संघ अधिवेशन का पहला दिन

(पेज १० से जारी)

सौंप कर निश्चित हो जायें यह ठीक नहीं। हम बुनियादी काम तो करें ही और एक बार ऊपर की सफाई करने का भी मौका आये तो उसे छोड़ें नहीं।

विधानसभा में अच्छा आदमी जाये यह बात नहीं है। जो भी जाय, जैसा भी जाय उस पर जनता का नियंत्रण रहे यही मुख्य प्रश्न है। इस सिलसिले में जे० पी० से एक पत्रकार ने पूछा था कि आपने कहा है कि जनसंघर्ष समितियाँ अपने उम्मीदवार ऊपर चुनकर भेजेंगी। मान लीजिए किसी जनसंघर्ष समिति ने कांग्रेस या साम्यवादी उम्मीदवार चुना तो? इस पर जे० पी० ने कहा कि यह ठीक है, मेरा तो आग्रह केवल इतना ही है कि उस उम्मीदवार पर वहां की जनता का पूरा नियंत्रण हो।

ग्रामस्वराज्य में शासन और शोषण से मुक्ति की बात थी लोकशक्ति के माध्यम से। उसे जगाने के लिए एक तार्किक शृंखला है—भूदान से ग्रामदान। लेकिन वह जग नहीं सकी कोशिश करते रहे। कोई एक बिन्दु हम ऐसा खोजना चाहते है जिस पर जनता इस आन्दोलन को उठा ले। उस बिन्दु पर पहुचने तक हमें लोगों के सामने विचार भर रखना पड़ेगा। धीरेनदा ने भी इसे जीरो आवर कहा था। हम इसी ग्रामस्वराज्य के चुम्बक को लेकर लोहे को खोज रहे हैं कि कब सही लोहा मिले जो सट जाये। वे इज्म विहार में टूट रहा है। बिहार में तीन-तीन दिन की सरकारें भी लोगों ने देखी और इस आन्दोलन से तो अब इन राजनैतिक दलों की पोल ही खुल गयी है। आन्दोलन के साथ जनसंघ है, लेकिन उसके एम० एल० ए० कुर्सी छोड़ते नहीं। तो कुर्सी वो नहीं है जिस पर मुख्यमंत्री बैठा है। वहाँ जो भी गया है वह चिपक गया है। बिहार में सिद्धि हो जायेगी ऐसी बात नहीं है। यह प्रयोग है। हर कदम सोच-समझकर उठाया जा रहा है। एक आरोहण है, एक सीढ़ी के बाद एक मंजिल है, मंजिल के बाद फिर एक सीढ़ी है। आन्दोलन से सरकार परस्ती नहीं बढ़ रही है। हम तो लोगों से वहां कह रहे हैं कि यह करें, वह करें। हम खुद नहीं कर रहे। इतना जरूरी हुआ है कि राजनीति और लोकनीति की समानान्तर रेखाओं की दूरी जरूर कम हो गई है वहां। जिस तलवार पर पहले हम चलते थे वह बोथरी थी अब जिस पर हम चल रहे हैं उसकी धार तेज है। लेकिन वह तेजी परिवर्तन की है। उसे पार करना है। सावधानी रखना ठीक है लेकिन धार की चुभन से डर कर उससे नीचे उतर आना मैं ठीक नहीं समझता। आन्दोलन के प्रति शका रखने वाले इसे सम्पूर्ण क्रान्ति की कसौटी पर रखकर देखें। सघन कार्यक्षेत्र छोड़कर इसमें नहीं आये लेकिन जो जहां हैं वहां अपना काम तेज कर दें।

जे० पी० परिस्थिति के साथ इस आन्दोलन में ग्रामस्वराज्य के बिन्दु जोड़ने की गुंजाइश देख रहे हैं। इसलिए ऐसा मानना कि हम पुरानी भूमिका छोड़कर किसी नई भूमिका में जा रहे है ठीक नहीं है। केवल कसौटी बदल रही है। (क्रमशः)

विनोबा-जे० पी० वार्ता

(पेज ३ से जारी)

तीसरे पहर के लिए समाप्त हुई।

साढ़े तीन बजे जे० पी० आश्रम में बाबा की कुटिया में वार्ता के लिए गए। उनके साथ नारायण देसाई थे। चर्चा में महादेवी ताई, कुसुम बहन, बाल और जयदेव और कृष्णराज मेहता भी उपस्थित रहे। जे.पी. जो बात कहते *उसे कुसुम बहन लिखकर बाबा को देतीं। यह* दौर सवा-पाँच बजे तक चलता रहा। जे०पी० ने बाहर आकर अखबार वालों से कोई भी बात कहने से इनकार कर दिया। जे० पी० बात चीत में कुछ अवरोध महसूस कर रहे थे क्योंकि बाबा को लिख कर देना पड़ता था। कुसुम बहन बहुत सावधानी से लिख रही थीं लेकिन कुछ बातें छूट ही जाती थीं और इस कारण सम्वाद बराबर हो नहीं पाता था। बाबा विधान सभा विसर्जन के मुद्दे से आन्दोलन चलाना पसन्द नहीं करते हैं और जे० पी० का भी यह लक्ष्य नहीं है लेकिन संचार की रुकावट के कारण यह मुद्दा साफ होने से रह गया। फिर प्रजातन्त्र की रक्षा के मुद्दे पर भी दोनों का दृष्टिकोण समान था लेकिन सम्वाद हो नहीं पाया। जे० पी० ने तय किया कि अपनी सारी बातें वे रात को कृष्णराजजी से लिखवा कर सुबह बाबा को दे देंगे।

दस जुलाई की सुबह साढ़े नौ बजे के पहले ही कृष्णराजजी जे० पी० के लिखवाये कागज लेकर बाबा के पास पहुंच गए। साढ़े नौ बजे बातचीत शुरू हो गयी। ग्यारह बजे तक चली। फिर महिलाश्रम से संघ की प्रबंध समिति के सदस्यों को बुलाया गया। साढ़े ग्यारह बजे दादा धर्माधिकारी ने सब लोगों की ओर से बाबा से बात शुरू की। जे० पी० इस चर्चा में उपस्थित थे लेकिन चर्चा दादा ने ही की। दादा ने जे० पी० के मसविदे के आधार पर प्रस्ताव बनाने और उस पर बाबा की राय जानने की कोशिश की। बाबा ने उस पर अपनी कोई राय नहीं दी और कहा कि पहले प्रस्ताव को अधिवेशन में सर्वसम्मति से पास करवाओ। सर्वसम्मति न हो तो सर्वानुमति कर लीजिए। आपका जो भी फैसला होगा मुझे मंजूर होगा।

ग्यारह जुलाई को सुबह फिर जे० पी० की और विनोबा की चर्चा हुई। उसके बारे में स्वयं बाबा ने बारह जुलाई को सवेरे कहा- "कल जे० पी० मुझसे मिले, काफी बातें हुयीं। आध्यात्मिक चर्चा भी हुई, काम के बारे में भी हुई। उन्होंने मुझसे प्रश्न किया—आपने कल कहा था कि मतभेद भले ही रहे, हृदय *एक होना चाहिये। तो यह हृदय की एकता* कैसे मजबूत हो? जे० पी० के इस प्रश्न का समाधानकारी उत्तर बाबा ने दिया। यह उत्तर ही दरअसल विनोबा जे० पी० वार्ता का नतीजा है।

जे० पी० बारह जुलाई की शाम जब रेल से बम्बई के लिए रवाना हुए तो इतने प्रसन्न थे जितने हाल ही के वर्षों में शायद ही कभी देखे गये हों।

—प्रभाष जोशी

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक प्रति का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र

नई दिल्ली, सोमवार, २९ जुलाई, '७४

कांग्रेस

भूमि सुधार

भ्रष्टाचार कालाधन

गरीबी हटाओ

शिक्षा में सुधार

[illegible]

[illegible]

सम्पादक
राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र
कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० · २९ जुलाई, '७४ · अंक ४३-४४

१९ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

कुर्सीवाले बीमारों का तमाशा

कांग्रेस महासमिति का अधिवेशन अब एक तमाशा हो गया है। एक ऐसा तमाशा जिसमें न देखने वालों को मजा आता है न करने वालों को। मदारी पापी पेट के लिए जमूरे को नचाता है, तार पर चलाता है, छुरी मार कर झूठमूठ खून निकालता है और तमाशबीनों के पैसे बटोर कर फिर एक तमाशा दिखाने के लिए चला जाता है। कांग्रेस तमाशा पापी सत्ता के लिए करती है। उसके जमूरे कभी गैरहाजिर शैतान पर कोड़े चलाते हैं और कभी अपने आप पर। लेकिन कांग्रेस के कोड़े चाहे किसी को शैतान बना कर चलाये जाते हों, चाहे अपनी ही मोटी खाल की पीठ पर, उन्हें सुन कर न तमाशबीनों के मन में क्रोध आता है न करुणा। उसके तमाशे से लोग उदासीन हैं। लोगों को मजा आये, इसमें कांग्रेस की भी रुचि नहीं है क्योंकि पैसा उसे तमाशा दिखाने के बाद नहीं मिलता। वह तमाशा दिखाने का पैसा पहले ही ले लेती है। परम्परा है कि वही तमाशा दिखा सकती है। जनता की इस उदासीनता को कांग्रेस वाले अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए तमाशा वे लोगों के लिए नहीं करते। अपने उन विरोधी तमाशगीरों के लिए करते हैं जो उनसे सत्ता छीन सकने की धमकी रखते हैं। यह धमकी भी अब तक कभी पूरी तरह असल नहीं हुई है न होती दिख रही है। धमकी की असलियत के इस अभाव के कारण ही कांग्रेस महासमिति और सरकारी नेताओं में यह विश्वास है कि वे जहां हैं, बने रहेंगे और उन्हें हटाने वाला कोई नहीं है। जनता, वे जानते हैं कि अपने आप उन्हें हटा नहीं सकती। इसलिए उसके दुख दर्दों से बेखबर वे ऐसी तिकड़में करते रहते हैं जो उन्हें कुर्सी पर बनाये रखे।

उन्नीस से इक्कीस जुलाई तक दिल्ली में चले महासमिति के तमाशे में हर बोलकार ने जयप्रकाश नारायण पर शब्दों के कोड़े बरसाये और फिर उन्हीं कोड़ों को अपनी और अपने नेताओं की पीठ पर मारा। जे० पी० से कांग्रेस को खतरा है क्योंकि यह आदमी आम लोगों को अपने हकों की ऐसी लड़ाई के लिए तैयार कर रहा है जो ज्यादा दिन चली और लोगों की मुट्ठियां तन गयीं तो उसकी राजगद्दी छिन जाएगी। खतरा है और उससे कांग्रेस के कुर्सीधारी घबराये हुए हैं फिर भी सबके सब मानते हैं कि जे०पी० के पीछे जनता नहीं है इसलिए वह सफल नहीं हो सकते। इन बीमार और अंधे कोड़ेमारों से किसी ने पूछा नहीं है कि जब जनता जे पी के साथ नहीं है तो भाई तुम इतने घबराए हुए क्यों हो? ये घबराए हुए हैं क्योंकि चोर की दाढ़ी में तिनका है। भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी के लिए ये जानते हैं कि ये जिम्मेदार हैं। ये इस कीचड़ में गले-गले उतरे हुए हैं और चाहे तो भी इनमें इतनी ताकत नहीं है कि उससे निकल सकें। इसलिए जब कोई इन्हें कहता है कि कीचड़ से निकलो नहीं तो जनता तुम्हें निकाल बाहर करेगी तो अपनी ताकत की कमी पर ये बौखलाते हैं और कोड़े फटकारने लगते हैं। फिर जब कोड़े बरसाने की बौखलाहट भी छूट जाती है तो उनकी आंखें अपने अन्दर देखती हैं और ये कोड़े अपनी ही पीठ पर मारने लगते हैं। जिन लोगों ने महासमिति के तमाशे में जे० पी० को प्रतिक्रियावादी, जनविरोधी, अराजकता और विध्वंस फैलाने वाला बताया वे ही लोग उन सारी बुराइयों के लिए अपने नेताओं और नीतियों पर पिल पड़े, जिन्हें ठीक करने के लिए जे०पी० आंदोलन चला रहे हैं।

एक बूढ़े नेता ने कहा कि जनता को यह अधिकार दिया जाना चाहिए कि वह अपने उन संसद सदस्यों और विधायकों को वापस बुला सके जिन्हें उसने चुना है। जे. पी. जब विधानसभा के विसर्जन की मांग करते हैं तो इसके अलावा और क्या चाहते हैं? एक जवान नेता ने कहा कि कांग्रेसियों को 'सक्रिय सदस्य' बन कर पार्टी को लगातार पैसा देना चाहिए ताकि बड़े-बड़े पूंजीपतियों की पकड़ से वह छूट सके। जे पी. और क्या कहते हैं? यही कि चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस धनी परिवारों से काला धन लेकर भ्रष्टाचार महंगाई और मुद्रास्फीति को बढ़ावा देती है। वे खुद प्रधानमन्त्री से कहने गये थे कि चुनाव में इतना खर्च मत कीजिए और चुनाव फण्ड के लिए आम लोगों से पैसा लीजिये। कहा गया कि कांग्रेस को अपना हिसाब साफ रखना चाहिए और एक-एक पैसे की आय और खर्च किताब में दर्ज होना चाहिए। मन्त्रियों से ले कर साधारण सक्रिय सदस्यों तक को पार्टी को अपना हिसाब देना चाहिए। "प्रजातंत्र के लिए नागरिक' मंच बना कर जे. पी. ने और क्या मांग की थी? यही न कि सभी पार्टियों को अपने कोष के लिए जनता के सामने जिम्मेदार होना चाहिए और हिसाब खुली जांच के लिए सामने रखना चाहिए। जमाखोरों और कालाबाजारियों के खिलाफ सीधी कार्यवाही की मांग की गयी और कहा गया कि इसमें नौकरशाही आड़े आती है इसलिए कांग्रेसियों को कार्यवाही करनी चाहिए। जे. पी. और किस नतीजे पर पहुंचे हैं? वे भी हर जगह जनता की समितियां बना कर जनता की ताकत से ही जमाखोरी और कालाबाजारी को समाप्त करना चाहते हैं।

तो जब कांग्रेसी भी वही चाहते हैं जो जे. पी. चाहते हैं तो फिर जे. पी. का इतना विरोध क्यों किया जा रहा है? क्योंकि कांग्रेसवाले यह सब करने की बात कहते हैं, लेकिन कुर्सी पर बैठे रहने के लिए इन्हीं सब करतूतों को करते हैं। उनकी नजर कुर्सी पर है, इन बुराइयों पर नहीं। और जे. पी. की नजर कुर्सी पर नहीं इन बुराइयों को मिटाने वाली लोकशक्ति पर है। कांग्रेसवाले जे. पी. का विरोध इसलिए करते हैं कि सवाल कुर्सी का है। जे. पी. का आंदोलन अगर सफल हो गया तो कुर्सी जनता के पास चली जायेगी और तब कांग्रेस क्या करेगी? उस दिन को दूर करने के लिए कांग्रेसवाले कहते हैं कि जे. पी. सफल नहीं होंगे। —प्रभाष जोशी

समय हम सामान्य जनों से बड़ा काम करवाना चाहता है

जयप्रकाश नारायण

पांच जून को पटना की जनसभा मे मैंने जनता के सामने जन-संघर्ष के कई कार्यक्रम रखे मे और यह कहा था कि अगर मैं गिरफ्तार न हुआ तो समय-समय पर आवश्यकतानुसार जोड़-घटाव करता रहूंगा। अभी मैं ऐसी स्थिति नहीं देख रहा हूं कि पांच जून को बताये कार्यक्रम मे किसी विशेष परिवर्तन की जरूरत हो। हां जरूरत इस बात की है कि जो कार्य बताये गये थे, उन्हें पूरी शक्ति से चलाने के लिये जल्द से जल्द संगठन बनाने का काम पूरा किया जाये और अगले कुछ हफ्तों के लिये कार्यो का क्रम नये ढंग से स्थिर कर लिया जाये। संगठन के बिना शक्ति नहीं प्रकट होगी, संगठन ही हमारी कसौटी है।

सात जून को पटना में विधान सभा के फाटकों पर सत्याग्रह शुरू हुआ और १२ जुलाई तक चला। नागा एक भी दिन नही हुआ, बिहार का एक जिला भी नहीं छूटा जिसके सत्याग्रही न आये हुए हो। यह सब तब हुआ जब हमारा संगठन अभी उतना ठोस और सक्षम नही है, जितना होना चाहिये। ऐसी स्थिति मे तात्पर्यपूर्वक सत्याग्रहियों का अपनी निश्चित तिथि पर आना और लगभग एक महीने तक सत्याग्रह को शान्तिपूर्ण ढंग से जारी रखना इस बात का प्रमाण है कि हमारे छात्र और स्वयं जनता दोनों समझने लगे है कि क्रांति के ऊंचे लक्ष्य कष्ट सहे बिना नहीं प्राप्त होते। यह शुभ लक्षण है। कष्ट हमें सहना है और कष्ट के लिए हमें हर वक्त तैयार रहना है।

हमारी सबसे पहली चिन्ता होनी चाहिए संगठन मजबूत करने की। छिटपुट, असंगठित काम चाहे जितना भावनापूर्ण हो टिकाऊ नहीं होता। सुदृढ संगठन के अभाव मे प्रतिकूल परिस्थिति के पैदा होने पर कार्य और कर्ता दोनों टूट जाते है। अभी तक हमने जो जन संघर्ष समितियां और छात्र संघर्ष समितियां बनाई हैं व काम चलाऊ हैं, 'एडहॉक' हैं, यद्यपि पिछले दिनो में कई जगहो से स्थाई समितियो के बनाने की सूचना आई है। अब पंचायत, ब्लॉक और जिला स्तर पर स्थाई जन और छात्र संघर्ष समितियों को बनाने मे देर नहीं होनी चाहिए। इस सम्बन्ध मे उन दो मर्यादाओ को ध्यान में रखना आवश्यक है। संघर्ष समिति के सदस्य वे ही माने जायें जो सक्रिय हो और संयोजक वे ही बनाये जायें जो निर्दलीय हो। निर्दलीयता की शर्त अनिवार्य है। इस विषय मे ढिलाई होने से आन्दोलन का अहित होगा। यह बातें जन और छात्र दोनो संघर्ष समितियो पर लागू हैं।

एक अगस्त से सरकार ठप्प, कर बन्द व कार्यालय बन्द (का कार्यक्रम शुरू होगा) सरकार ठप्प करने के दो मुख्य उपाय होंगे। एक उपाय होगा सरकारी कार्यालयो को न चलने देना, तथा दूसरा सरकार को कर न देना। एक अगस्त से दोनो काम जोरो से करने हैं। पांच जून के अपने भाषण मे मैंने कहा था कि कर बन्दी इस आन्दोलन का सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। जन और छात्र संघर्ष समितियों को देखना है कि गांव से सरकार को भूमि का लगान, तकावी, सेती-टैक्स और सिंचाई-रेट का एक पैसा भी न मिले। अगर सरकार बिहार मे कहीं भी (इस बरसात में भी) लगान या तकावी वसूल करने की कोशिश करती हो तो किसानों को चाहिये कि वे पूरे तौर पर असहयोग करें, और वसूली बिलकुल न होने दें।

शहरों मे सबसे पहले हमारा ध्यान शराब की दुकानो की ओर जाना चाहिए, क्योंकि सरकार को उनसे बहुत बडी आमदनी होती है। शराब की दुकानो पर सत्याग्रह भी शुरू करना चाहिए। हमारे सत्याग्रही शराब पीने और खरीदने वालो को समझायें कि वे अपने आपको और समाज को सर्वनाश से बचायें और शराब के निकट न जायें। दुकानो पर शान्तिपूर्वक धरना दिया जा सकता है।

इसी प्रकार कई दूसरे व्यवसाय भी हैं जिनमे सरकार लाइसेन्स फीस लेकर कमाई करती है। हमे सरकार की यह कमाई भी बन्द करनी है। इसके लिये सत्याग्रह करना हो तो करना चाहिए।

करो की बन्दी के साथ-साथ सरकारी कार्यालय भी बन्द होने चाहिए। प्रखन्ड से लेकर जिले तक प्रशासन के किसी कार्यालय को चलने नही देना है। सरकार ठप्प करने के काम मे सरकारी कर्मचारियो का भी सहयोग लेना चाहिये। उन्हें यह बताना चाहिए कि यह आंदोलन जनता का तो है ही उनका भी है, क्यो कि वे भी इस देश के नागरिक हैं और गृहस्थ होने के नाते उनके भी बाल बच्चे हैं। आज की सड़ी-गली व्यवस्था के स्थान पर जो नयी व्यवस्था आयेगी वह सबके लिए होगी।

लेकिन तीन तरह के कार्यालय हैं, जिन्हें अभी नहीं बन्द करना है: एक, अदालतें जहां न्याय का काम चलता है, दो, ऐसे कार्यालय जिनका सम्बन्ध जनता के दैन दिन जीवन से हो, जैसे बैंक, रेल, तार, डाक, राशन, सप्लाई, आदि। हमे इस बात का सदा ध्यान रखना चाहिये कि ऐसा कोई कार्य न हो जिसके कारण जनता को अनावश्यक कष्ट या असुविधा हो। इसके विपरीत हमे सेवा द्वारा जनता का हृदय जीतने का प्रयत्न करना है। हमारी संघर्ष समितियो को विशेष रूप से अपनी यह जिम्मेदारी माननी चाहिये कि आपसी झगडे, आपसी तौर पर तय किये जायें और उनके क्षेत्र मे गरीब, कमजोर और अल्पसंख्यक पर किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती न हो। उन्हें हर आवश्यक संरक्षण मिले ताकि वे आशा और विश्वास के साथ इस आन्दोलन मे शरीक हो सकें, तीन—पटना का सचिवालय अभी कुछ दिनों तक ठप्प करने का कार्यक्रम हाथ मे नहीं लेना है। बाद को परिस्थिति देखकर मैं निर्णय करूंगा।

बिहार में कई जगहो पर मुनाफाखोरी, जमाखोरी, कालाबाजारी इन तीन सामाजिक पापों के विरुद्ध समय-समय पर अच्छी कार्यवाही हुई है, लेकिन इनसे मुक्ति पाने के लिये कहीं अधिक संगठित संघर्ष करने की

सकता है। शहरों में, मुहल्लों में तथा ग्रामीण क्षेत्रों में—गाँव और पंचायत तक की संघर्ष समितियों को तत्काल इन प्रश्नों की ओर ध्यान देना चाहिये। ये प्रश्न ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध हमारी, आपकी, सारी जनता की रोज की जिन्दगी से है—पाने, पकाने से है। सरकारी दूकानों से चीजों का सही बंटवारा हो, दूकान के सामने दाम लिख कर टाँग दिये जायें, झूठे राशन कार्ड रद्द किये जायें, आदि काम ऐसे हैं जिनमें महिलायें बहुत सफल हो सकती हैं। उन्हें डट कर इन कामों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेनी चाहिये। जन संघर्ष समितियाँ क्षेत्र की सहायता से हर प्रकार की मुनाफाखोरी, जमाखोरी, कालाबाजारी और घूसखोरी के विरुद्ध बड़े पैमाने पर कार्यवाही कर सकती है। कोई कारण नहीं कि साबुन, डालडा, और दियासलाई जैसी चीजों के लिये लोग तकलीफ उठायें और उनका खजाना चोर गोदामों में पड़ा रहे। यह होता इसलिए है कि जनता अपने हितों और अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है। जनता की सुस्ती और लापरवाही का अनुचित लाभ अधिकारी और व्यापारी दोनों ही उठाते हैं।

कई जगहों पर सरकार के अधिकारी राशन की दूकानों में भ्रष्टाचार को रोकने के लिये हमारी संघर्ष समितियों का सहयोग लेने और उनके साथ सहयोग करने को तैयार हैं। जहाँ ऐसी स्थिति हो वहाँ परस्पर सहयोग से काम लेना चाहिये। लेकिन सहयोग के लिये रुकने की जरूरत नहीं है। सहयोग न हो तो भी हमें अपना काम करना है।

विधान सभा विघटन का अभियान जोरों से चलता रहेगा, किन्तु अब पटना में न चलकर बिहार के उन सारे निर्वाचन क्षेत्रों में चलेगा जिनके विधायकों ने त्यागपत्र नहीं दिया है। मेरा सुझाव है कि हर निर्वाचन क्षेत्र में कम से कम पन्द्रह सभायें की जायें। सभाओं के अलावा जुलूस निकाले जायें, प्रदर्शन किये जायें। सभाओं में क्षेत्र के विधायक से त्यागपत्र देने के प्रस्ताव पारित किये जायें और प्रस्तावों की प्रतियां विधायक के पास, राज्यपाल महोदय को, जिले के संघर्ष कार्यालय को तथा संघर्ष कार्यालय, पटना भेजी जायें। जिन क्षेत्रों में पहले हस्ताक्षर अभियान पूरा न हुआ हो उनमें हस्ताक्षर पूरे किये जायें। जो क्षेत्र आवश्यक तैयारी कर सकें वे 'मतदान' भी करावें। (दो बक्से रख कर विधायक द्वारा त्यागपत्र देने के पक्ष और विपक्ष में मत लिये जा सकते हैं।)

मुख्य बात यह है कि इन कार्यक्रमों द्वारा हमें क्षेत्र में इतना प्रबल लोकमत तैयार कर देना है कि विधायक के लिये त्यागपत्र देने के सिवाय दूसरा कोई रास्ता न रहेगा। सभाओं में विधायक को सम्बोधित करते हुए यह कहा जाये '१९७२ के चुनाव में वोट लेने के लिये आपने बहुत से वादे किये थे। उन्हीं वादों को सुनकर और आपको एक ईमानदार व्यक्ति समझकर हमने आपको वोट दिया था। आपका आधे से अधिक समय पूरा हो गया है। आपने अब तक अपने वादे पूरे नहीं किये हैं इसलिये आपको विधान सभा से हट जाना चाहिए। हट जाना इसलिए भी जाना चाहिए कि जब से यह आन्दोलन शुरू हुआ है सरकार के जितने भी काले कारनामें हुए हैं उन सबका आपने समर्थन किया है। इतने गलत काम करके भी मंत्रिमण्डल इसलिये बना हुआ है, क्योंकि उसे आपका समर्थन प्राप्त है। जो विधायक अनीति और अन्याय करने वाली, निरपराध लोगों पर गोली चलाने वाली, मँहगाई, चोरबाजारी, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार को न रोक सकने वाली अपितु बढ़ाने वाली, सरकार का समर्थन करे उसे हम अपना प्रतिनिधि कैसे मान सकते हैं? आप अब हमारे प्रतिनिधि नहीं रह गये, इसलिये कृपा करके इस्तीफा दे दीजिये।'

सभा में विधायक के दल का घोषणापत्र भी पढ़ा जा सकता है और उन लोगों को बताया जा सकता है कि उन्होंने अपने ही दल के वचनों का पालन नहीं किया है। ऐसे सभी विधायकों को हट जाना चाहिये ताकि नये चुनाव में नये प्रतिनिधि चुने जायें और नई विधान सभा बनायी जा सके।

त्यागपत्र की मांग सभाओं और हस्ताक्षर अभियान या 'मतदान' द्वारा तो की ही जाये, इसके अलावा जब विधायक विधानसभा भंग होने पर अपने घरों पर जायें तो वहाँ उनका शान्तिपूर्ण 'घेराव' भी किया जाये। घेराव केवल विधायक का हो, उनके परिवार के किसी भी दूसरे व्यक्ति का नहीं। घेराव में किसी प्रकार की जोर-जबरदस्ती न हो, वाणी और कर्म में कोई अशोभनीय बात न होने पाये। घेराव या प्रदर्शन में इस बात का पूरा ध्यान रखा जाये कि जाति और सम्प्रदाय को लेकर द्वेष की भावना न पैदा होने पाये, बल्कि इन कार्यक्रमों में विधायक की अपनी जाति और सम्प्रदाय के लोग भी बड़ी संख्या में शामिल हों ताकि यह स्पष्ट हो जाये कि त्यागपत्र देने की मांग समस्त जनता की है।

यों तो प्रदर्शन, जुलूस और सभाओं के द्वारा जनता की भावना बनाने, अपनी आवाज बुलन्द करने और जन-मानस को इस आन्दोलन, इस 'सम्पूर्ण क्रान्ति' के साथ जोड़ने का क्रम हमेशा चलता रहना चाहिये, फिर भी कुछ दिन ऐसे हैं जिनका विशेष महत्व हो जाता है। एक अगस्त लोकमान्य तिलक का जन्म दिवस है। नौ अगस्त, ४२ को 'भारत छोड़ो' क्रान्ति शुरू हुई थी। पन्द्रह अगस्त को भारत में अंगरेजी राज्य का अन्त हुआ था और हम स्वतन्त्र हुए थे।

तो एक अगस्त को बिहार भर में दिन भर का उपवास रखा जाये। शाम को प्रदर्शन हो और आम सभा की जाये। सभा में सब लोग शुद्ध हृदय से संकल्प लें कि हम स्वयं भ्रष्टाचार से बचेंगे और जहाँ कहीं भी भ्रष्टाचार होता हुआ देखेंगे उसके विरुद्ध आवाज उठायेंगे। इसी दिन से सरकार ठप्प करो और कर बंदी अभियान भी शुरू हो।

नौ अगस्त 'क्रान्ति दिवस' के रूप में मनाया जाये। सुबह गाँव-गाँव, शहर-शहर में प्रभातफेरी निकाली जाये और शाम को जुलूस के साथ सभा की जाये। जनता को 'सम्पूर्ण क्रान्ति' के लक्ष्य समझाये जायें, उसकी शान्तिपूर्ण पद्धति बताई जाये और कहा जाये कि यह जनता की क्रान्ति है जिसमें उसे आगे बढ़ना है।

पन्द्रह अगस्त यह सोचने और समझने का दिन है कि २७ साल पहले जो स्वतन्त्रता मिली थी वह अभी तक जनता तक नहीं पहुँची है, उसे जन जन के जीवन में उतारने का काम बाकी है। स्वराज्य का पूर्वार्द्ध पूरा हुआ था अंगरेजी राज के अन्त से, उत्तरार्द्ध पूरा होगा समता और समृद्धि से, शोषण और दमन की मुक्ति से। यह आन्दोलन इसी के

(बाकी पेज १२ पर)

सत्य, अहिंसा और संयम

विनोबा

सघ अधिवेशन वर्धा में अंतिम दिन बिहार आन्दोलन के सम्बन्ध में दिया गया निर्णायक भाषण

लोकसेवक की मर्यादा

'मुनि प्रसन्न गम्भीरः' जो प्रसन्न भी है और गम्भीर भी है वह मुनि। हम सब मुनि तो हैं नहीं, मुनि होने की हम सब की तैयारी जरूर होनी चाहिए। प्रसन्नता चित्त की कभी खोना नहीं; गाम्भीर्य कायम रखना—यह सर्वोदय-समाज के लिए आदर्श है। आप सब लोगों ने देखा, अखबारों में भी चर्चा चली कि सर्वोदय-अधिवेशन में सर्वसम्मत प्रस्ताव नहीं हो सका। यह सर्वोदय-अधिवेशन के लिए गौरव की बात है। अगर बहुमत से प्रस्ताव पास करने की बात हम लोग करते, तो एक पक्ष में बहुत बड़ा बहुमत था, इस वास्ते प्रस्ताव हो सकता था, परन्तु हमने यह निर्णय लिया है कि जो भी प्रस्ताव करेंगे सर्व-सम्मति से करेंगे। इसलिए प्रस्ताव न हुआ, यह भी बड़ी गौरव की बात है। लेकिन ऐसी हालत में क्या किया जाए? यह प्रश्न आया। इसका उत्तर बहुत आसान था। कभी-कभी जो अत्यन्त आसान होता है वह एकदम दिखता नहीं, कठिन मालूम होता है। परन्तु उस दिन मैंने सुनाया था, हमारा सबका हृदय एक है यह बात पक्की होनी चाहिए। एक हृदय है तो फिर जो अनेक सिर हैं, अनेक दिमाग, उनको आजादी है। हमारे दिमागों में, बुद्धि में कितनी भी विविधता हो, विरोध नहीं होगा, अगर हृदय की एकता है। यह मैंने उस दिन समझाया था। विश्वरूप दर्शन-भगवान ने गीता के एकादश अध्याय में किया है। उसको समझाते हुए मैंने कहा था कि उसमें सिर अनेक हैं, हाथ अनेक हैं, लेकिन हृदय एक है। हृदय एक कैसे रखना—यही सवाल होता है, उसका उत्तर एक ही है कि पूरी आजादी हो। हरेक को अपने-अपने विचारों के अनुसार करने की। कुछ उसमें लक्ष्मण-रेखा हो यानी कुछ मर्यादाएँ हों। उन मर्यादाओं में जिसको जो करना अच्छा मालूम होता है, वह अवश्य किया जाए क्योंकि सबका हृदय एक है। मर्यादा रखनी होती है तो मैंने तीन मर्यादाएँ बताईं: अहिंसा, सत्य और संयम। ये तीन मर्यादाएँ रखकर हमारे जो लोकसेवक हैं, उनके प्रतिनिधि हैं और सर्व-सेवा-संघ की प्रबन्ध-समिति के लोग इत्यादि जिनको जो करना है, वैसा करें। ऐसी अगर हम आजादी देते हैं और ये तीन मर्यादाएँ रखते हैं और ये एक हैं यह भूलते नहीं तो फिर कुछ भी नुकसान नहीं होगा, बल्कि प्रयोग होंगे। और अनुभव तो प्रयोग से ही आता है।

कुछ लोग जाना चाहते हैं पटना में। मैंने उस पर श्लोक भी बनाया है— 'धर्मक्षेत्रे पटना-क्षेत्रे समवेता युयुत्सव जयका शफूर-काश्च '। (हँसी) यह जब सुना जयप्रकाश जी ने तो उन्होंने एक सवाल पेश किया कि संजय कौन होगा? तो हमने नाम लिया था संजय का—वो खड़ा हो जाए (कृष्णराजभाई खड़े हुए)। कृष्णराज अच्छा आदमी है। (हँसी)

दो विचारधाराएँ हैं। एक है गंगा की एक है ब्रह्मपुत्र की। दोनों आखिर में मिल जाती हैं। समुद्र में तो जाती ही हैं। दोनों पवित्र धाराएँ हैं। इस वास्ते प्रयोग किए जाएँ। अपने-अपने ढंग से दोनों प्रयोग करें। यह हमने आज कह दिया तो सब प्रसन्न हो गए। सब लोगों ने बाबा को पास कर दिया। जयप्रकाशजी ने कहा कि 'हम लोग तो अपने सम्मत हैं और सबके सबह आनेवाला (संघ के मंत्री ठाकुरदास बंग की ओर इशारा करते हुए कहा) तो यहाँ पास बैठा ही है। तो तात्पर्य यह है कि हृदय एक होकर जो तीन मर्यादाएँ बनाईं उन तीन मर्यादाओं के अन्दर रहकर के अपनी-अपनी विचारधारा के अनुसार अगर व्यवहार करते हैं, तो कुछ भी नुकसान नहीं होगा। अनुभव आएगा। अगर अनुभव आया वह पटना-क्षेत्र में विजयी होता है और काफी अच्छी जनशक्ति बनती है, तो जो उससे प्रभावित नहीं थे, वे भी प्रभावित होंगे और उसके साथ हो जाएँगे। इसमें उलटा अगर अनुभव आया कि उसका लाभ खास मिलता नहीं है और चीज निखरती नहीं है, तो वे उसे छोड़ देंगे और दूसरा जो कार्यक्रम है पहले से चला हुआ है, उसे बन्द रखने की बात है नहीं, वह भी चलाने की बात है, तो उसमें फिर से दुबारा जोर लगाएँगे, इस वास्ते नुकसान कुछ भी नहीं होगा। तो यह मैंने आज कह दिया महावीर स्वामी को याद करके। महावीर स्वामी ने हमेशा जोड़ने का काम किया—कभी तोड़ने नहीं दिया। क्योंकि उन्होंने समझाया कि जितने सज्जन होते हैं, उन सज्जनों में कुछ न-कुछ सत्यांश होता ही है, इस वास्ते वह सत्यांश ग्रहण करना चाहिए न कि अपने सत्य पर अड़ा रहे और दूसरे के सत्य को ग्रहण ही न करे और सत्य के साथ सत्य की लड़ाई जारी रखे। तो सारे सत्य इकट्ठा होकर के असत्य पर प्रहार करने के बजाय सत्य ही एक-दूसरों पर अगर प्रहार करने में लग जाए, तो बेचारे सत्य की ताकत टूट जाएगी। जे पी ने कहा कि ये सभी काम करनेवाले लोग हैं, दूसरा भी काम करनेवाले हैं ये दोनों काम चलेंगे ही। कुछ लोग दोनों काम करेंगे। मैंने उन्हें 'उभयान्वयी' नाम दिया है। व्याकरण का विषय है। आप लोग संस्कृत व्याकरण जानते हैं कि नहीं, मालूम नहीं। 'उभयान्वयी' कहते हैं उसको। तो अन्वय के नाते वे काम करेंगे। उनकी शक्ति कभी क्षीण होगी नहीं। क्योंकि दोनों बाजू का लाभ उनको मिलेगा और उनका लाभ दोनों बाजू को मिलेगा। इस वास्ते उनकी अक्षुण्ण शक्ति रहेगी। इसलिए उनको अन्वय कहते हैं। इस प्रकार से आज कह दिया है उसमें सब लोगों को प्रसन्नता हो गई और मेरा विचार है कि इससे भारत में बहुत बड़ी ताकत खड़ी होगी।

स्वतंत्र लोकशक्ति का निर्माण ग्रामस्वराज्य का एक आवश्यक पहलू

बिहार आन्दोलन पर रामचंद्र राही की धीरेन्द्र मजूमदार से बात-चीत

राही : पिछले कई वर्षों से हम जनता में ग्रामस्वराज्य का विचार-शिक्षण करते रहे हैं, लेकिन जनता की ओर से उसे वैसी व्यापक स्वीकृति नहीं मिली, जैसी जयप्रकाशजी की प्रेरणा से चल रहे वर्तमान आंदोलन को मिल रही है। कई मित्रों के मन में यह बात पैदा होती है, और वे उसे प्रकट भी करते हैं कि आंदोलन का सूत्र, जनता को जागृत करने की पद्धति अब हाथ लगी है। शायद पिछला प्रयत्न उन्हें व्यर्थ भी लगता है और वे मानते हैं कि उससे निकलने का रास्ता इस आंदोलन से मिला है। कभी-कभी उन्हें ऐसा भी लगता है कि शायद ग्रामस्वराज्य की प्रक्रिया में कोई भारी कमी रही है, जिसके कारण वह जन-आंदोलन नहीं बन पाया। तो क्या वर्तमान आंदोलन ग्रामस्वराज्य का विकल्प माना जा सकता है? कुछ लोग इसे विरोधी मानते हैं, कुछ विकल्प मानते हैं?

जब तक जनता में उस नये विचार के अनुसार नये लक्ष्य की प्राप्ति की चाह नहीं पैदा होती यही कारण है कि जब कभी आप लोग मुझसे पूछते हैं कि ग्रामस्वराज्य के लिए बुनियादी कार्यक्रम क्या होना चाहिए, तो हमेशा मैं कहा करता हूं कि ग्रामीण जनता में ग्राम-स्वराज्य की आकांक्षा का निर्माण करना ही ग्रामस्वराज्य का बुनियादी काम है। खादी, घोषणा-पत्र, समर्पण-पत्र भरवाना आदि काम प्रासंगिक मात्र हैं, क्योंकि जिसके लिए आकांक्षा निर्माण करना है उसके कुछ व्यावहारिक पहलू के भी दर्शन होने चाहिए।

आज जयप्रकाशजी जिस आन्दोलन का आह्वान कर रहे हैं उसके लिए उसी तरह से सार्वजनिक चाह मौजूद है, जिस तरह गांधीयुग में आजादी के लिए थी। जिस तरह गांधीजी ने [illegible] की राह पर की, उसी तरह आज जयप्रकाशजी [illegible] भारी उस शक्ति को समझना है, उसके लिए धैर्य रखना है। जिनमें यह धैर्य नहीं है, वे हिम्मती वीर पुरुष, विद्रोही, योद्धा तो हो सकते हैं, लेकिन क्रांतिकारी नहीं। चूंकि क्रांति में भी विरोध और विद्रोह के तत्व निहित हैं इसलिए योद्धा विद्रोही तथा हिम्मती लोग भी उसमें शामिल हो जाते हैं और शामिल होने के बाद जब क्रांति के उतार-चढ़ाव देखते हैं तो उनके मन में कई प्रकार की शंकाएं पैदा हो जाती हैं। ग्राम-स्वराज्य की क्रांति में उतार-चढ़ाव के अवसरों पर हमेशा हमारे मित्रों के मन में ऐसी शंकाएं पैदा होती रही हैं। पहले इसकी शंका गांधीयुग के स्वराज्य आंदोलन के साथ तुलना करके प्रकट होती थी, आज यह शंका जयप्रकाशजी के भ्रष्टाचार-विरोधी आंदोलन से तुलना करके प्रकट हो रही है लेकिन दोनों में मानसिक भूमिका समान है।

प्रति मैं हमेशा उदासीन रहा हूं।

दूसरी बात कि जयप्रकाशजी दण्डशक्ति भिन्न और हिंसा शक्ति की विरोधी स्वतन्त्र लोकशक्ति के अधिष्ठान के विचार को यानी अपने क्रांतिकारी विचार को, समाज के मानस में प्रवेश कराने के लिए, वर्तमान सार्वजनिक चाह को अवसर के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं, जिस तरह आजादी की सार्वजनिक चाह को अहिंसा तथा स्वराज्य की कल्पना को लोकमानस में प्रवेश कराने के लिए गांधीजी ने अवसर बनाया था।

अपने समाज के सभी मित्रों से मेरा निवेदन है कि वे इन तमाम प्रश्नों पर गहराई से विचार करें। वे समझें कि जयप्रकाशजी का आंदोलन न ग्रामस्वराज्य की क्रांति का विरोधी है और न विकल्प है, वह एक तात्कालिक और सहायक आंदोलन है। इसलिए यद्यपि सातत्य के साथ जो लोग ग्रामस्वराज्य की क्रांति में लगे हुए हैं, वे अपना काम छोड़कर इसमें शामिल न हों तो भी अपना सहायक कार्यक्रम मानकर, अपना काम करते हुए, इस आंदोलन के सहायक बनने का प्रयास करें। पिछले साल सितंबर में सेवाग्राम की राष्ट्रीय परिषद के अवसर पर सर्व सेवा संघ ने अपने प्रस्ताव में कहा था कि संघ ग्रामस्वराज्य के अनुरूप में परिषद के सुझावों का अमल करे। हमारे मित्र आपस में गलतफहमी और बुद्धि-भेद पैदा न करें इस मामले में भी उस प्रस्ताव की स्पिरिट से अपना काम करें, यह मेरा विनम्र निवेदन है।

राही : वर्तमान आंदोलन का स्वरूप सरकार विरोधी भी है, जो आंदोलन के अपने सहज क्रम में स्वाभाविक रूप से बन गया है। हमारे कुछ साथी मानते हैं कि इस विरोधी स्वरूप [illegible] और हमारी सर्वोदय की अविरोधी भूमिका का कोई मेल नहीं है। वे सरकार विरोध को खतरनाक मानते हैं। क्या यह चित्र वर्तमान आंदोलन के साथ और हमारी अविरोधी भूमिका के साथ सही न्याय करता है?

धीरेनभाई : सर्वोदय की अविरोधी भूमिका को स्पष्ट रूप से समझने की जरूरत है। जिन संस्थाओं और पद्धतियों के कारण समाज में संकट पैदा होते हैं, या समाज के नैतिक और आध्यात्मिक विकास में रुकावट पैदा होती है, उसको बदलने के लिए उस संस्था और पद्धति का विरोध तो सर्वोदय की प्रक्रिया है, वह अहिंसा का स्वधर्म है। अहिंसा में विरोध का निषेध संस्थाओं और पद्धतियों के लिए नहीं है, बल्कि उसके संचालन-कर्ता व्यक्तियों के लिए है। संस्था और पद्धति से विरोध और व्यक्ति से प्रेम, यह अहिंसा का स्वभाव और स्वधर्म है पाप से घृणा और पापी से प्यार। इसीलिए गांधीजी हमेशा कहते थे कि अंग्रेजी राज्य शैतानी है, उसे हटाना है, और अंग्रेज हमारे मित्र हैं, मैं उनसे प्यार करता हूं। उसी तरह जयप्रकाश जी आज कहते हैं कि वे वर्तमान पद्धति और ढांचे का विरोध करते हैं न कि उसे चलाने वाले व्यक्तियों का। उदाहरणस्वरूप उन्होंने इन्दिराजी के साथ अपना और प्रभावती बहन का हार्दिक स्नेह और पारिवारिक आत्मीयता के सम्बन्ध का बयान बार-बार किया है, और कहते [illegible] कि इन्दिराजी और उनके साथियों से उनका कोई विरोध नहीं है, बल्कि वे उन्हें अपना मित्र मानते हैं। इसलिए वर्तमान आंदोलन द्वारा सर्वोदय की अविरोधी भूमिका खण्डित नहीं होती।

राही : हमारे कुछ साथी कहते हैं कि बिहार के आंदोलन में छात्रों ने जयप्रकाश जी का नेतृत्व स्वीकार है और वे नेतृत्व कर भी रहे हैं। यह अपनी जगह पर ठीक है और हमारी दृष्टि से चल सकता है। लेकिन पूरे सर्वोदय आंदोलन का उसमें जुड़ जाना, उसमें दिलचस्पी लेना और कुछ हद तक उसे सर्वोदय का ही दूसरा पहलू मानना गलत है। क्योंकि उससे हमारी प्रतिमा खण्डित होती है, जो इतने वर्षों के प्रयत्न से बनी है। हमारी एक आचार-मर्यादा है, शुद्धता है, जिससे हम समाज में प्रेरणा देते हैं। इस आंदोलन में सब तरह के लोग शामिल हैं, उनमें कोई आचार-मर्यादा नहीं है, इससे हमारी प्रतिमा बिगड़ती है, 'इमेज' खराब होती है।

धीरेनभाई : ऐसी शंका उन लोगों को होती है जिन्होंने समाज में आचार-मर्यादा के विकास के इतिहास का अध्ययन नहीं किया है। यह सही है कि कुछ लोग व्यक्तिगत साधना से, अपनी आचार-मर्यादा से अपने को शुद्ध और मुक्त बना लेते हैं, और एक हद तक समाज को प्रेरणा भी दे देते हैं, लेकिन इस प्रक्रिया से सामाजिक आचार मर्यादा और शुद्धता का विकास होना सम्भव नहीं है, जो सामाजिक प्रगति के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। संस्थागत और व्यक्तिगत शिक्षण-प्रक्रिया से कुछ व्यक्ति भले ही बनें, समाज नहीं बनेगा। इस तरह कुछ व्यक्तियों के बनने से अपने आप समाज बन जाएगा, यह विचार अत्यन्त पुराना है। समाज-विकास के इतिहास का अनुभव इससे पूर्णत: भिन्न है। हजारों वर्षों से उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा अनेक सज्जन, सन्त और महात्मा होते चले गये, लेकिन व्यापक चारित्रिक पतन के अवसर पर समाज उनके कारण ऊपर नहीं उठ सका है। समाज, सामाजिक भूमिका में, तब प्रगति करता है जब कोई सुधार या क्रांतिकारी आंदोलन चलता है। चूंकि क्रांति जमाने की मांग होती है अत: उस जमाने के अधिकांश लोग उसमें शामिल हो जाते हैं जो हर प्रकार के, हर स्तर के चरित्रवाले होते हैं। फिर आंदोलन के प्रभाव के कारण उनमें [illegible] बड़ी संख्या में उच्च चरित्र के मनुष्य बनकर निकल आते हैं। साथ ही चूंकि पूरा आंदोलन सुधारवादी होता है, इसलिए पूरी आंदोलनकारी जमात को सुधार का वातावरण बनाये रखना पड़ता है। उस वातावरण के प्रभाव से सामान्य लोगों के चरित्र में कुछ-न-कुछ सुधार आ जाता है। दुनिया के इतिहास में ऐसा ही हुआ है। गांधीजी की प्रेरणा से १९२१ में देशव्यापी आन्दोलन हुआ जिसके आलोड़न के कारण इस मुल्क के समस्त राष्ट्रजन उसमें शामिल हुए क्योंकि आजादी की राष्ट्रीय चाह थी। फिर गांधीजी ने उसमें सत्य अहिंसा के मूल्य जोड़े, जिसके कारण पूरे आंदोलन पर आचार मर्यादा और शुद्धता का रंग चढ़ता रहा और उसी प्रक्रिया से हम लोग अनगिनत मनुष्य, आचार मर्यादा की ओर स्थायी रूप से आगे बढ़ चले और ऐसे लोगों की एक अच्छी जमात बन गयी जो देश को प्रेरणा देती रही।

उसी तरह १९५२-५३ में विनोबा की प्रेरणा से देश में व्यापक रूप से भूदान यज्ञ आंदोलन [illegible] लिए आलोड़न पैदा हुआ और उसमें भी हजारों की संख्या में सब प्रकार के लोग शामिल हुए। उसी में से आज जो लोग

(शेष पृष्ठ १९ पर)

'एक कदम पीछे और दो कदम आगे'

(संघ अधिवेशन का दूसरा दिन, दूसरी किश्त)

पवनार में लोकसेवक विनोबा का इन्तजार करते हुए

सत्र अण्णा साहब सहस्रबुद्धे की अध्यक्षता मे शुरू हुआ। वग साहब ने बिहार सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष त्रिपुरारि शरण का एक पत्र सुनाया जिसमें उन्होंने जन आन्दोलन का ब्यौरा देते हुए वर्धा न आ पाने की माफी मांगी थी। अण्णा साहब ने कहा कि कोई नयी पीढ़ी का अध्यक्ष बनाते। इस सत्र मे ३५ लोक सेवको ने अपने नाम की पर्चियां भेजी थी। अण्णा साहब ने कहा कि "इन ३५ मे रा० कृ० पाटील का नाम नही है। फिर भी चूंकि वे हमारे आन्दोलन के 'कानूनी सलाहकार' रहे हैं इसलिए वे तथा उनके बाद वग साहब बोलें। वग साहब सर्व सेवा संघ के मत्री के नाते नहीं एक लोक सेवक के नाते विचार रखें। इन दो वक्ताओं को अमर्यादित समय दिया जायेगा। शेष ३५ की मर्यादा आप सब तय करें।" सीधी कार्रवाई के नरेन्द्र ने मौका नही चूका, खड़े हो कर कहने लगे कि ये दोनो वक्ता बुद्धिमान है वे कम समय मे भी अपनी बात ठीक से रख सकते है, अन्य वक्ताओ को जिनका अनुभव कम है, ज्यादा समय मिलना चाहिए। दादा धर्माधिकारी ने खड़े हो कर कहा कि बहुत ज्यादा अक्ल वाले तो मौन रख कर भी अपनी बात समझा देंगे।

रा० कृ० पाटिल: मैं मौन रहना पसद करता लेकिन दिल की बात प्रकट करने की भी इच्छा थी। आज की समस्या से बिलकुल अनजाने ही मेरा सम्बन्ध जुड़ा है। यदि सर्वोदय के जनक विनोबा है तो जे० पी० उसको पुष्टि देने वाले व्यक्ति है, आज वे उस आन्दोलन मे जो जान से कूद पड़े हैं। हम जैसे आदमी क्या करें? पटना संगोष्ठि मे गया, जे० पी० से प्रश्न पूछे, लेख भी लिखा, 'क्या बिहार गुजरात के रास्ते पर जायेगा?' बाबा को भी दिया, उन्होने उस लेख को अपने कुछ साथियो में वितरित करने को कहा। मैत्री मे भी छपा और इस तरह बिहार से मेरा नाम भी जुड़ गया।

"हमारा काम विचार समझाना और उसके अमल के लिए प्रेरित करना है, यह काम उससे भिन्न है।" भिन्नता के कारण बताते हुए उन्होने आन्दोलन की उत्पत्ति (१८ मार्च की घटनायें) को लोकतत्र के खिलाफ कहा। विशाल जनशक्ति उभरी, ठीक है, लेकिन उस शक्ति मे कोई विचार नही है। तरीके चाहे जो हो किसी भी स्वरूप मे हैं, उसमें सरकार व्यवस्था का तो विरोध है ही। गया फायरिंग के बाद क्या हुआ मैं नही कहूंगा लेकिन उससे पहले वहां तीन दिन तक 'सरकार ठप्प करो' आन्दोलन चला। यह अलोकतांत्रिक है। अब यह देहात मे जायेगा। नाम क्या है—जन संघर्ष समिति, संघर्ष किससे? सरकार से ही प्रतीत होता है, आन्दोलन का इतिहास देखने पर भी यही लगता है। जे० पी० ने पहले कहा कि विधानसभा भग से कुछ नही होगा, फिर वे धीरे-धीरे इस तरफ आये। और अभी कलकत्ते मे उन्होंने जो कहा वह सबसे आगे है। जे० पी० ने कहा कि उनका विश्वास हिंसा मे नही है, जिन्हें है वे उससे भी काम करें। यानि वे आज की परिस्थिति को इतनी गभीरता से ले रहे हैं।" आन्दोलन के स्वरूप पर बोलते हुए पाटील साहब ने कहा कि "सत्तान्तरण की अपेक्षा है—राजनीति। और इसमे यह अपेक्षा है ही। जब तक यह सत्ता कायम रहेगी तब तक कुछ होगा नहीं ऐसा वे मानते हैं। यानि आज की व्यवस्था मे सुधार की गुंजाइश नहीं, अब उसका पूरा मुकाबला करना है—ऐसा इस आंदोलन का स्वरूप है।" आज की समस्या को रखते हुए उन्होने कहा कि कारण कुछ भी हो, आज का लोकतत्र हिल रहा है। शासन, पार्टीबाजी, इसके कारण है। उसे कई तरह से ठीक करना होगा। जन-प्रतिनिधियों को वापस बुलाने की मांग ठीक है लेकिन महगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आन्दोलन से दूर नही होगी। उसके लिए योजनाएं बनानी होगी, वे कदम उठायें, आन्दोलन से मदद जरूर मिलेगी योजना बनाने मे। योजना बनेगी जनशक्ति के सहयोग से, याने राष्ट्र मे उपलब्ध सभी ताकतों को जाग्रत कर उनका पूरा सहयोग लेकर।"

यह आन्दोलन बिहार भर तक सीमित रहे तो मुझे कुछ कहना नहीं है। जे० पी० गया के हैं, वहा जो कुछ हुआ उससे उनकी सवेदना पर चोट लगी। लेकिन क्या ऐसे आन्दोलन हम देश भर मे चलायेंगे? यदि जनता की हालत सुधारने के लिए सत्ता की मदद लेनी है तो फिर इस आन्दोलन का रूप दूसरा ही होगा। और यदि जे० पी० की तरह सत्ता से हमारा भी पूरा विश्वास उठ चुका है तो फिर इस आन्दोलन का स्वरूप और भी भिन्न होगा। मुझे नहीं लगता कि आज की सत्ता के ढाचे से हम इतने निराश हो गये है, कि उससे बोलचाल ही बन्द हो जाये।

जनशक्ति जगाने की कोशिश की गई। सहरसा मे हम काफी असफल हुए। अब हमारे सामने यह है कि जनशक्ति जगे कैसे, उसका स्वरूप क्या हो कि उसमे दबाव नहीं हो क्योंकि दबाव के साथ हिंसा जुड़ी ही है। शान्तिपूर्ण घेराव की भी बात आयी तो हमारी मर्यादा क्या है यह साफ होना चाहिए।

इस आन्दोलन से ग्रामस्वराज्य के मूल आन्दोलन को क्या लाभ मिलेगा? नये लोग आयेंगे, जन संघर्ष समितियो से हमारे काम को भी व्यापकता मिलेगी—यह सब ठीक है लेकिन सोचना होगा कि नीचे से ऊपर उठने की असली कल्पना मे सघर्ष की क्या भूमिका होगी?

हम आगे क्या करें? देश की आर्थिक हालत नाजुक है। अन्यायों का प्रतिकार तो होना ही चाहिए, नही तो हम शक्ति खो →

→
बैठेंगे। गद्दी तो आज की बदलना ही है। सत्ता के प्रति तटस्थता रखते हुए भी जनता के अभिक्रम से उसे बदलना है। लेकिन हमारे आन्दोलनों और राजनीतिक दलों के आन्दोलनों में एक फर्क होगा—हमारे आन्दोलनों में विपक्षी का मन भी तारीफ से भर जायेगा। उत्तराखण्ड के चिपको आन्दोलन की तारीफ स्वयं मुख्यमंत्री ने की है जब कि वह उनकी सरकार की वननीतियों के खिलाफ ही चल रहा है।

क्या जे० पी० के प्रति मेरे मन में आदर कम है? लेकिन सोचना होगा कि क्या हम विचार से सत्ता को प्रकाश नहीं बांट सकते? क्या सत्ता को प्रकाश बांटने की हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश कर ली है?

ठाकुरदास बंग: महंगाई, बेरोजगारी आदि मिटाना मामूली सुधार के काम हैं, उनकी तुलना ग्रामस्वराज्य के काम से करना ठीक नहीं—ऐसा मानने वालों में मैं खुद भी हूं। उस बुनियादी काम को छोड़कर इसमें हम सब पड़ें यह मैं नहीं कहूंगा। २३ साल से भूदान ग्रामदान के बाद भी हम सिद्धि कर पाये क्या? इस पर पलट कर देखें। मैं ग्रामदान के सिलसिले में पदयात्रा करता रहता हूँ। अभी पिछले महीने एक नये प्रदेश केरल में भी पदयात्रा चली। तो उसे छोड़ कर इसमें आने की बात है नहीं।

मैं पाटील साहब से सौ फीसदी सहमत हूं कि विचार से क्रान्ति होगी, हमने २३ साल तक यह प्रचार किया भी है, अब भी कर रहे हैं। लेकिन छात्रों ने पहले अपनी मांगों और फिर उनमें राष्ट्रीय प्रश्नों को जोड़कर आन्दोलन शुरू किया। तब क्या गुजरात और बिहार के सर्वोदय वाले अब्राह्मण-अब्राह्मण ऐसा कहकर शाप दें? क्या यह कहें कि इससे क्रान्ति नहीं होगी केवल सुधार में फंस जाओगे? आज बिहार और गुजरात के साथियों के सामने यही प्रश्न है। बाकी बातें गौण हैं। आज बिहार में लोग पूछने लगे हैं कि सर्वोदय क्या है, लोकनीति कैसे आयेगी? अब इन प्रश्नों के पीछे जो इच्छा है, उत्कंठा है, उसका लाभ लेने की हम कोशिश करनी चाहिए या इस आन्दोलन को जे० पी० की प्रवंचना समझकर उससे घृणा करनी चाहिए? या उससे प्यार करना चाहिए? हां प्यार में कभी-कभी डांटना और कान पकड़ना पड़ सकता है।

जे० पी० को बिहार की जनता ने लोकनायक कहा। उन्होंने बिहार को भयंकर आग से बचा लिया। उसके बदले तो उन्हें भारतरत्न की उपाधि दी जानी चाहिए थी। लेकिन उन्हें बदले में गालियां मिलीं। उनका कसूर क्या था? क्योंकि उन्होंने इस वातावरण के खिलाफ आवाज उठाई थी, 'अलोकतांत्रिक निर्णय' लिया था एक। क्या यह उनकी गलती थी? अनैतिक और अवैध की कीचड़ निकालना उनकी गलती थी? अब उनका घर उन्हें क्या तोहफा देगा? प्रणाम करेगा या अलोकतांत्रिक कहेगा? यह आपको तय करना है।

कल चाल्र्स ने कहा कि खोटा सिक्का बाजार के खरे सिक्के को निकाल बाहर करता है। क्या हम मान लें कि महंगाई, बेरोजगारी शिक्षा में क्रान्ति को लेकर किया गया आन्दोलन खोटा सिक्का है और ग्रामदान ही खरा सिक्का है? २० साल तक जनता उस खरे सिक्के की तरफ आयी नहीं। आज वह आयी है—एक राह खुली है तो क्या इससे ग्रामदान की राह बन्द हो जायेगी या उसके भी कई रास्ते खुलेंगे?

लेनिन को सन् २३ में कहना पड़ा कि अब हमें एक कदम पीछे और दो कदम आगे बढ़ाने की नीति अपनानी होगी। विनोबा ने भी ग्रामदान से सुलभ ग्रामदान का विचार सामने रखा। और अब जे० पी० भी थोड़ा पीछे हटकर ग्रामदान की ओर ही बढ़ रहे हैं।

ग्रामदान से ग्रामस्वराज्य १०० वर्ष में पूरा होगा तो क्या तब तक लोग ऐसे ही रहेंगे? हम सब को दिन में तीन बार खाना मिलता है भरपेट, जिन्हें नहीं मिलता दिन में भी या दो तीन दिन, उनके बारे में क्या हम सोचेंगे नहीं? मैं कहूंगा कि हमें तो इसमें थोड़ी देर ही हो चुकी है। सरकार और हमने गरीबी हटाने के लिए, २० साल तक काम किया। कुछ कर नहीं पाये, अब छात्रों ने शुरू किया है।

विधानसभा भंग की मांग मुख्य नहीं है, वह एक प्रतीक है। यदि वह आन्दोलन सफल हुआ तो शिक्षा, अर्थ, समाज, राजनीति की एक नयी बुनियाद बनेगी। आन्दोलन के खिलाफ गृहयुद्ध के खतरे की बात कही जाती है। मैं पूछना चाहूंगा कि क्या इस देश में एक अघोषित गृहयुद्ध नहीं चल रहा है? क्या घोषित युद्ध ही युद्ध होता है। इस ध्रुवीकरण को अहिंसक मोड़ देने के प्रयास में ही यह आन्दोलन है। अब तक मैं चार बार बिहार गया हूं। अब एक वर्ष के लिये जाने वाला हूं। कहा जाता है कि जे०पी० राजनीति में प्रवेश कर रहे हैं और उधर वास्तविकता यह है कि इस आंदोलन से राजनैतिक दल ही टूट रहे हैं। कई जगह खुद कांग्रेस में आंदोलन को लेकर टूट हुई है। कुछ कांग्रेसी भी सत्याग्रह में आये हैं। इस आंदोलन पर हमें आपको, कुछ अन्य लोगों को विश्वास भले ही न हो, जनता को उस पर विश्वास जम रहा है।

यह कहा गया कि समस्याएं आन्दोलन से हल नहीं होंगी, चिन्तन करें, योजना बनायें। लेकिन क्या अब तक चिन्तन नहीं किया गया, योजनायें नहीं बनाई गई थी? इधर वर्धा में ही श्रीमन्नारायण जी ने शिक्षा सम्मेलन बुलाया था। एक योजना बनायी लेकिन क्या हुआ उसका? जब तक योजनाएं आंदोलन के वातावरण में नहीं बनती तब तक वे अमल में नहीं आ पाती।

मैंने अब तक किसी भी संघ अधिवेशन में इतना कठिन सवाल उठते देखा नहीं जितना आज इस अधिवेशन में उठा है। क्या हम उस आंदोलन को बल पहुंचायें? क्या हम उसकी उपेक्षा करें? क्या हम उसे कमजोर करें?

जे०पी० ७२ वर्ष के हो गये हैं। यह मैं भावुकतावश नहीं कह रहा हूं। उन्होंने सोच समझ कर एक गतिरोध को तोड़ा है।

निर्मला बहन: अपने आंदोलन में विचार मंथन देखकर बहुत खुशी हो रही है, इससे नवनीत निकलेगा। पहले विष भी निकल सकता है पर अंत में अमृत ही निकलेगा। हम शांति से अक्षोभ चिंतन करें। जे०पी० के लिए जो आदर है वह व्यक्त करने की जरूरत नहीं है, लेकिन हमें सोचना होगा कि हम जा कहां रहे हैं। पहली बात तो यह कि हम अहिंसक क्रांति के लिए समर्पित हैं और उसका अधिष्ठान आध्यात्मिक होगा। विचार सम-

झाना हमारी पद्धति है। और अब घेराव की बात है। हमारे प्रतिकार के आंदोलनों मे भी सामने वाले के हृदय मे प्रेम जगना चाहिए। उत्तराखंड का चिपको आंदोलन सामने है हमारे। मुख्यमंत्री ने भी कहा कि आप लोग अच्छा काम कर रहे है।

हम सुशासन भी नहीं, स्वशासन चाहते है। उसे आज की व्यवस्था के बदले लाना है लेकिन कठिन काम है, समय लगेगा, धीरज रखना होगा। स्वशासन तक जाने वालों के लिए कुशासन और सुशासन दोनों ही जंजीर हैं, जंजीर चाहे सोने की हो या लोहे की—जंजीर तो बांधती ही है।

विधानसभा भंग की मांग पहले थी नहीं यह भी कहा गया कि शुरू मे घेराव वगैर भी रखा नहीं था। यह सब गया गोलीकाण्ड मे बाद जोड़ना पडा। लेकिन यह ऐसा है नहीं वह रास्ता ही ऐसा था जो हमे यहां तक पहुंचना ही।

अब तक हम कहा करते थे कि शक्ति का अधिष्ठान पटना या दिल्ली में नहीं जनता मे है, देहात मे है। लेकिन आज हम देहात से पटना आ गये हैं। आज हम मानने लगे हैं कि विधानसभा भंग करवाने से सुधार हो जायेगा। कृपालानी और बादशाह खान के प्रति हमारे मन मे बहुत आदर है, लेकिन वे मानते हैं कि सरकार पर अंकुश रखना जरूरी है नहीं तो वह तुम्हारे कई साल के अच्छे काम को एक क्षण मे चौपट कर देगी। आज तक हम नीचे से ऊपर का ढांचा बना रहे थे, अब लगता है कि हम ऊपर से नीचे जाना चाहते हैं।

हम सब गावों मे घूमते हैं। क्या हमे वहां महंगाई भ्रष्टाचार आदि नहीं दिखता। वह सब है लेकिन कैसे दूर होगा? गांव २ को बाजार से मुक्त करना पडेगा, पैसे की ही जरूरत कम करते जाना होगी ये सब समस्याएं आंतरिक हैं। तो कुछ उपलब्ध शक्तियों से ही ये काबू में आयेंगी। देश की गरीबी मिटाने के लिए उपलब्ध शक्तियों को एक जुट करना होगा।

२३ साल मे हमने कुछ खास किया नहीं ऐसा सोचना पराभूत मन है। एक क्रांतिकारी को धीरज की आवश्यकता होती है। मंजिल आगे जरूर है, वह आयेगी भी जरूर। क्रांतिकारी के नाते हमें लोक क्षोभ और लोक शक्ति मे फर्क करना होगा। फ्रांस में छात्रों के क्षोभ से एक बहुत बड़ा आंदोलन खड़ा हुआ, वहां के राष्ट्रपति दगाल को त्यागपत्र देना पडा। फिर से चुनाव करवाये गये और फिर दगाल ही सत्ता मे आया। हम वहां की गलतियां न दुहरायें। भ्रष्टाचार हम कैसे दूर करेंगे? सबमे कहीं न कहीं कोई अच्छाई जरूर होती है। उसे उससे लेकर हम परिवर्तन करेंगे। लेकिन आज हम इसे भ्रष्ट, उसे भ्रष्ट कह रहे हैं। जरा हम अपनी संस्थाओं की ओर भी तो देखें।

आदर की बात नहीं केवल जो रास्ता हमने अपनाया है उसकी ही बात है। जनशक्ति तो लोगों को एक दूसरे से जोड़ने से उभरेगी, हम तो गांव-गांव मे जनसंघर्ष समितियां बनाने जा रहे हैं अब। ऐसी समितियां से क्या देंगे हम संघर्ष के सिवाय तो मेरा नम्रतापूर्वक इतना ही निवेदन है कि बिहार आंदोलन के भी जो उद्देश्य हैं, वे उसके द्वारा अपनायी गयी पद्धति से पूर्ण होंगे नहीं। अंत मे इतना भर कहूंगी कि ग्रामदान की पद्धति का भविष्य है।

निर्मला बहन के भाषण के बाद लोक सेवक दादा से बोलने का अनुरोध करते रहे लेकिन दादा ने सत्र के शुरू मे हुई बहस के आधार पर मौन रहना ठीक समझा।

दस जुलाई को दोपहर का खुला अधिवेशन पवनार मे हुआ। इसे बाबा ने बडे अतिथि गृह की दालान से सम्बोधित किया। आसमान खुला हुआ था इसलिए जो लोकसेवक धूप को बर्दाश्त कर सकते थे वे सामने मैदान में बैठे और बाकी के पेडों के नीचे और छोटे अतिथि गृह की दालान मे।

महिलाश्रम से पवनार की दूरी तय करने के लिए संघ की ओर से बसों का इन्तजाम किया गया था। पहली बस ढाई बजे निकल जाने वाली थी। उसमे जाने वाले लोकसेवक दो बजे से ही बाहर सडक पर इकट्ठे हो गये थे। लेकिन ऐसे जिज्ञासुओं की कमी नहीं थी जो जानना चाहते थे कि पवनार मे विनोबा-जे पी. वार्ता मे क्या निकला। सुबह प्रबन्ध समिति के सदस्यों को पवनार जाने की सूचना खुले आम दी गयी थी। दोपहर के भोजन तक ये लोग वहां से लौट भी आये थे। निश्चित ही वार्ता नाजुक दौर मे है लेकिन हुआ क्या? जानकारी मिलना मुश्किल था। आधी-टूटी सूचनाओं और अनुमानों के बल पर लोग वह सब समझने की कोशिश कर रहे थे जो उन्हें सन्तोषदायी ढंग से मिल नहीं सकता था। ढाई बजे पहली बस गयी लेकिन बाकी की तीन बसें साढे तीन के बाद ही रवाना हो सकी। चार बजे तक सब लोग पवनार पहुंच सके। अधिवेशन शुरू हुआ। मंच पर बाबा, जे. पी. और सिद्धराजजी बैठे।

सिद्धराजजी ने कहा कि पिछली अक्टूबर मे सेवाग्राम मे संघ अधिवेशन हुआ था। दस महीने मे दूसरी बार हम यहां मिल रहे हैं। आज की परिस्थिति पर हमने विचार किया है। गुजरात मे एक जन आन्दोलन हो चुका और बिहार में चल रहा है। देश आज जिस परिस्थिति में है, उसमे हमे क्या करना चाहिए इस पर विचार मंथन हमारा चल रहा है और अब हम पूज्य बाबा का आशीर्वाद लेने आये हैं। कल तीसरे पहर फिर आयेंगे।

विनोबा ने लोकसेवकों को देखकर कहा-आजकल दर्शन ही मेरा मुख्य आनन्द है। परमात्मा ही अनेक रूप लेकर सामने बैठा, और खड़ा हुआ है। हमारा यह शरीर ब्रह्म साक्षात्कार के लायक है। शंकराचार्य ने बार-बार समझाया है आत्म साक्षात्कार कर के ही मरना चाहिए। आत्म साक्षात्कार करना और प्रेम से रहना। कृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि लड़ना भी तो निर्वैर होकर लड़ना चाहिए।

भगवान बाबा के पास आकर खड़ा हो जाये और कहे कि गौतम बुद्ध और तेरी उम्र मे एक ही साल का फर्क है। मगर वे तो बुद्ध हो गये थे और तु बुड्ढ ही रह गया। यह नर देह एक ट्रस्ट है। इसका अहंकार रखना ट्रस्ट के विरुद्ध है। बाबा लगातार कोशिश करता रहा है कि वह अहंकार शून्य हो जाये। अहंकार शून्य हो रहा है। कहने को ज्यादा कुछ है नहीं। लेकिन भक्ति का एक प्रकार है आत्म निवेदन। इसलिए थोड़ा कुछ आत्म निवेदन आपके सामने कर दूंगा। बाबा दस घंटे रात को सोता है। दो-तीन घंटे चिन्तन मनन करता है। विष्णु सहस्त्रनाम पढ़ता है। अखबार ज्यादा देखता नहीं। झमेला अखबारों को नाम दिया है। रामकृष्ण परमहंस अखबार को छूते नहीं थे। आपका भी (जे. पी. का) अखबार निकलता है एवरीमेन्स! मैं उसे एवरीमेन्स वट नाट बाबाज कहता पत्र वगैर आता नहीं है। मा फलेषु कदाचन्-भगवान का आदेश है। महावीर स्वामी की

(शेष अन्तिम पेज पर)

आन्दोलन फिर लौटकर नहीं आयेगा

श्रवणकुमार गर्ग

पांच जून को पटना के गांधी मैदान में अपने ऐतिहासिक भाषण में जयप्रकाश जी ने कहा कि सात जून से विधानसभा के सभी प्रवेशद्वारों पर सत्याग्रह हो। सत्याग्रह का रूप पिकेटिंग हो। "पच्चीस हों, पचास हों, हम सब गेटों पर खड़े हो जाए। एम० एल० ए० साहब आयें, मंत्री साहब आयें, उनको रोकें कि आप न जाइये। जाना है तो हमारी पीठ पर से जाइये। हम आपको जाने नहीं देंगे। गिरफ्तारियां हों, हम जेलों को भर देंगे।"

"जयप्रकाश बाबू ने कहा है कि जाना है तो हमारी पीठ पर से जाओ।"

बिहार विधानसभा को गफूर सरकार ने एक मजबूत किला बना दिया था, सैकड़ों की तादाद में पुलिस के जवान किले की रक्षा में तैनात कर दिये गये और जयप्रकाश जी के आवाहन पर सैकड़ों की संख्या में सत्याग्रही बेशर्म विधानसभा के दरवाजों पर दस्तक दे रहे थे, पुलिस का घेरा तोड़ रहे थे, रिक्शे और कारों में बैठ कर विधानसभा की बैठक में भाग लेने आ रहे लोकतन्त्र के 'प्रहरियों' का रास्ता रोक रहे थे, और गिरफ्तारियां दे रहे थे। पांच जून की ही सभा में जे० पी० ने इन सत्याग्रहियों से कहा था 'जेल से डरेंगे (तो) कभी तुम्हारी सफलता नहीं होगी। जेल से ही स्वराज्य पैदा हुआ है। जेल से ही तुम्हारे अधिकार प्राप्त होंगे, जनता के अधिकार प्राप्त होंगे और सच्चा स्वराज्य मिलेगा।" बिहार के लोगों ने अपने नेता की कोई बात अब तक नहीं टाली। वे जेलों को भर रहे थे।

सात जून से बारह जुलाई तक विधानसभा के पांच दरवाजों पर सैकड़ों छात्रों की नियमित गिरफ्तारी से एक बात साफ हो गई है कि 'संवैधानिक' रूप से बिहार का शासन चाहे गफूर साहब चला रहे हों, विधानसभा के इर्द-गिर्द एक ही पूरा चक्कर काट लेने के बाद यह स्वीकार करने के लिए पर्याप्त कारण मिल जायेंगे कि विधानसभा का अधिवेशन जनता की सम्मति से नहीं, पुलिस की शक्ति से चल रहा था।

बिहार के छात्र और नागरिक 'भ्रष्टाचार मिटायेंगे, नया बिहार बनायेंगे' का नारा लगाते हुए बिहार विधानसभा के दरवाजों को खटखटा रहे थे। जिन लोगों ने गांधीयुग के सत्याग्रह नहीं देखे थे वे देख रहे थे कि किस प्रकार चिलचिलाती धूप में चौदह साल के बच्चों से लेकर सत्तर साल के बूढ़े अपने बहत्तर वर्ष के नेता के इशारे पर जान देने के लिए चले आ रहे हैं, सैकड़ों मील दूर से।

पांच जून की सभा में जे० पी० ने कहा था, "तो आज पांच तारीख है। छः तारीख को छुट्टी मनायें, कुछ विश्राम कर लें। बहुत मेहनत हुई, इतनी धूप में लोग घूमे। ७ तारीख से असेम्बली के दरवाजों पर सत्याग्रह हो।" सात जून के बाद से कोई दिन ऐसा खाली नहीं गया जिस दिन विधानसभा के दरवाजों में दरार नहीं की गई हो। सत्याग्रहियों का एक सिलसिला बना हुआ था, जेल जाने के लिए होड़ लगी हुई थी। हर रोज सत्याग्रहियों की तादाद बढ़ती जाती। जो सक्षम थे वे भी और जो अपंग थे वे भी अपनी आहुति समर्पित करने आ रहे थे।

२४ जून को विधानसभा के दरवाजों पर १४८ सत्याग्रहियों ने अपनी गिरफ्तारी दी। १ जुलाई को ४०६ लोगों ने। इनमें ११४ महिलायें थीं। २८ जून को हुई गिरफ्तारियों में भागलपुर के एक सूरदास दिनेश मण्डल भी थे, एक पैर से अपंग जोगेन्द्र भी थे और चौदह साल का छात्र विजय कुमार विद्यार्थी भी था। भागलपुर के अन्य छात्र सत्याग्रही विजय को छोड़कर पटना पहुंच गए तो अपने गांव बीहपुर से वह अकेला ही चल पड़ा और बरौनी पहुंच गया, बरौनी से मोकामा आया और मोकामा से पटना स्टेशन और वहां से पैदल चलता हुआ संघर्ष कार्यालय। विजय ने कहा कि उसके और साथी जेल जाएं और वह नहीं जायेगा तो अच्छा नहीं होगा इसलिए अकेला ही चला आया, रात भर सफर करके।

कदमकुआं स्थित संघर्ष कार्यालय से कड़ी धूप में चार किलोमीटर पैदल चल कर अंधे सूरदास दिनेश मण्डल भी आते थे, लगड़े जोगेन्द्र भी और पन्द्रह वर्ष के छात्र विजय भी। रिक्शों और मोटरों पर बैठकर जैसे ही

(शेष पेज १५ पर) →

क्या ज्वालामुखी कभी फटेगा नहीं

सिद्धराज ढड्ढा

दीये के नीचे अंधेरा होता है ऐसी पुरानी कहावत है। दिल्ली समाजवादी भारत का शिखर है। इन्द्रपुरी जैसी उसकी जगमगाहट है, उसका वैभव है। पर भारत के पांच लाख गांवों में हमारे समाजवादी और 'गरीबी हटाओ' आयोजन के बावजूद या उसीके कारण कैसी हालत है इसका अन्दाज हम पढ़े-लिखे कहे जाने वाले कितने प्रबुद्ध नागरिकों को है यह कहना कठिन है।

भूदान-ग्रामदान आन्दोलन में काम करने के कारण देश के अनेक प्रदेशों में गांव-गांव जाने का मौका मिलता रहता है। परिस्थिति अधिकांश क्षेत्रों में करीब-करीब समान है। कुछ समय पहले उत्तरी बिहार के सहरसा और दरभंगा जिलों में हम लोग पदयात्रा कर रहे थे। हिमालय की तराई में स्थित, अनेक नदियों से सिंचित, यह इलाका देश के अत्यन्त उपजाऊ क्षेत्रों में से एक है। पर यह हमारी आर्थिक व्यवस्था के स्वरूप का द्योतक है कि जो इलाका जितना ज्यादा उपजाऊ, वहां उतनी ही ज्यादा गरीबी, विषमता और शोषण!

उत्तरी बिहार के इस क्षेत्र में हमने देखा कि किसी-किसी गांव में विशेष स्थानीय परिस्थिति और समस्याएं भले ही हों लेकिन सामान्यतौर पर सब गांवों में गरीबी और बेकारी की स्थिति समान है। हर गांव में इन समस्याओं के वीभत्स रूप का दर्शन होता है। गरीबों की स्थिति पुश्तैनी गुलामों से भी बदतर है। 'गुलामों' के लिए तो मालिक लोग शायद कुछ जिम्मेदारी भी महसूस करते रहे होंगे, पर यहां शोषण तो बाबू लोग पूरा करते हैं लेकिन जिम्मेदारी उनकी कुछ भी नहीं है। जब तक गरीब के बदन में खून है या ताकत है और वह 'मालिक' को 'कमाकर' दे सकता है तब तक मालिक उसे काम देता है (और कर्ज भी), हालांकि वह भी गरीब की आवश्यकता के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी मर्जी और सहूलियत के अनुसार! काम के लिए मजदूरी भी उतनी ही दी जाती है जितनी जिन्दा रहने के लिए न्यूनतम आवश्यक हो। जहां गरीबी ज्यादा और गरीबों की संख्या ज्यादा, वहां 'डिमान्ड एण्ड सप्लाई'—मांग और आपूर्ति—वाला अर्थशास्त्र का सामान्य नियम लागू होता है और मजदूरी की दर उत्तरोत्तर कसी जाती है। इस सारे शोषण के फलस्वरूप ज्यों-ज्यों मजदूर का शरीर क्षीण होता जाता है त्यों-त्यों काम और कम मिलने लगता है और कर्ज के लिए सूद की दर भी ऊंची होती जाती है। शोषण के दुष्चक्र की इस चक्की में पिसते हुए जब मजदूर की शक्ति क्षीण होने लगती है तब 'मालिक' शिकायत करता है कि मजदूर आलसी हो गया है, काम नहीं करता, इत्यादि। जब मजदूर बिल्कुल काम करने लायक नहीं रहता या बूढ़ा हो जाता है तब 'मालिक' पूरा हाथ खींच लेता है और 'मजदूर' भगवान भरोसे छोड़ दिया जाता है।

ऐसे ही एक पड़ाव पर सवेरे भुम्मन जुलाहा आ पहुंचा। ६०-६५ वर्ष की उम्र, बदन सारा सूखा हुआ, कपड़े के नाम पर तन पर फटे हुए चिथड़े! भुम्मन ने बताया कि उसकी झोंपड़ी जिस जमीन पर बनी हुई है उसका 'परचा' (बिहार के कानून के अनुसार उस जमीन पर बसे रहने के उसके हक का प्रमाण-पत्र) उसे नहीं मिला है, परचा उसे दिलवाने की कृपा की जाय। परचा दिलाने में मदद करने की बात अपने स्थानीय साथियों से कहकर मैंने भुम्मन से बातचीत जारी रखी। घर में ७ प्राणी हैं, खुद, बीबी, लड़की, और लड़की के ४ बच्चे। दामाद अभी कुछ दिन पहले ही क्षयरोग से (शोषण के शिकार का एक और नमूना!) मर गया इसलिए लड़की और नातियों की जिम्मेदारी भी भुम्मन पर ही आ गई है। यह पूछने पर की काम किस तरह चलता है, भुम्मन कातर नजरों से मेरी ओर देखने लगा। बोला, "सरकार, जिस दिन मजदूरी मिल जाती है उस दिन एक वक्त खा लेते हैं, कभी कभी दो दिन में एक वक्त!" भुम्मन के पास पुराने दिनों की यादगार—एक बैल है जिसे वह मजदूरी पर लगाता है। खुद की तो कोई जमीन है नहीं। बैल को जिस दिन काम मिलता है उस दिन मजदूरी में 'तीन सेर' दाना (सामान्य तौर पर कोई भी मोटा अन्न) मिलता है उससे कुछ काम चल जाता है। बैल को इधर-उधर चराकर या घास छीलकर खिला देते हैं, बैल की मजदूरी में मिले अन्न को घर के लोग खा लेते हैं। मजदूरी की इस दर में भी कितना सूक्ष्म शोषण है यह तब पता चला जब सहज ही आगे पूछताछ के सिलसिले में भुम्मन मियां ने बतलाया कि मजदूरी के लिए सेर भी 'कच्चा' चलता है, यानी ४० सेर के मन वाला नहीं, मन के ६४ सेर वाला सेर! कहने में मजदूरी तीन सेर होती है लेकिन वास्तव में उसका मतलब दो सेर से भी कुछ कम ही होता है। इस प्रकार मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मजदूर को और जब तक कि वे आगे पूछताछ न करें सुनने वालों को भी, ऐसा लगता है कि मजदूर को वास्तव में जितना मिल रहा है उससे अधिक मिलता है।

दो बाबू लोगों से मिलाकर भुम्मन अभी तक चार-पांच सौ रुपया कर्ज ले चुका है। साल में १० रुपये पर ४ रुपया, यानी चालीस प्रतिशत ब्याज देना पड़ता है। साल के अन्त में जो बाकी रह जाता है—और बाकी तो रहता ही है, क्योंकि जब खाने भर को भी नहीं मिलता तो ब्याज कहां से दिया जा सकता है?—वह सूद भी मूल में जोड़ दिया जाता है और फिर कुल रकम पर उसी हिसाब से सूद चलता है। चालीस प्रतिशत जितने 'कम' ब्याज पर भी कर्ज इसलिए मिल जाता है क्योंकि अभी तक भुम्मन के पास बैल के रूप में कुछ पूंजी है जिससे अन्ततोगत्वा कर्ज वसूल हो सकता है। लेकिन अब उसकी भी सीमा आ चुकी है और कर्ज की अदायगी में बैल के छिन जाने का अंदेशा है। तब भुम्मन के परिवार का क्या होगा इसकी कल्पना आप कर सकें तो कीजिये! अब तक लिया हुआ कर्ज या सूद चुकाना तो भुम्मन की परिस्थिति में उसके लिए संभव है ही नहीं यह साफ जाहिर है। इसलिए सूद-दर-सूद कर्ज बढ़ता ही जाता है। जिन बाबू लोगों का कर्ज उस पर है वे जरूरत पड़ने पर उसका बैल भी बेगार में काम पर ले जाते हैं, क्योंकि उनका कर्ज जो भुम्मन पर है! डाटडपट करके उस दिन की बैल की मजदूरी

(अगले पेज पर जारी)

समय हम सामान्य जनों से बड़ा काम करवाना चाहता है

(शेष पृष्ठ ४ से)

लिये है। मन्त्रिमण्डल का जाना या विधान सभा का भंग होना इस आन्दोलन के अन्तिम लक्ष्य नहीं हैं। हम इन पर जोर इसलिये दे रहे हैं, क्योंकि यह प्रगति और परिवर्तन के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है और यह जनता की नयी आशा और आकांक्षा का प्रतिनिधित्व नहीं करती।

मैंने महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, मेडिकल और इंजीनियरिंग कालेजों तथा तकनीकी संस्थानों के छात्रों से अपील की है कि वे एक साल का समय अपनी इस क्रान्ति को दे दें ताकि एक साल के बाद वे बदले हुए विद्यालयों और बदली हुई शिक्षा में वापिस जा सकें और अपने जीवन के क्षितिज पर आशा की नई किरणें देख सकें। यदि उन्होंने यह न किया और घर पर बैठकर आलस्य भरे दिन बिताये तो विद्यालयों के बन्द होने का क्या अर्थ होगा, और वे अपने, अपने अभिभावकों और अपनी इस क्रान्ति के प्रति वफादार नहीं सिद्ध होंगे। अच्छा तो यह होगा कि छात्र और छात्रायें स्वयं कक्षाओं और परीक्षाओं से अलग हो जायें, लेकिन सरकार अपनी जिद से विद्यालयों को खोलना चाहती है। इस जबरदस्ती का क्या उत्तर है? उत्तर है सामूहिक बहिष्कार, उपवास, शान्तिपूर्ण धरना, प्रदर्शन आदि।

छात्रों के सामने काम ही काम पड़े हैं। जहां भी वे रहें अपने क्षेत्र की संघर्ष समिति में शरीक होकर अपनी रुचि के अनुसार किसी भी काम में जी जान से लग सकते हैं। प्रदर्शन, जुलूस, सभा, संगठन शुद्ध और निष्पक्ष चुनाव, 'सरकार ठप करो', करबंदी, 'इस्तीफा दो' अभियान, भ्रष्टाचार, मुनाफाखोरी, चोर व जारी का प्रतिकार आदि अनेक कार्य हैं जिनमें से वे कोई एक या दो अपने लिए चुन सकते हैं। इनके अलावा सेवा का व्यापक क्षेत्र खुला पड़ा है। भूमिहीन को भूमि, बेघर को वास, निरक्षर को ज्ञान, बीमार को दवा, असहाय को सहारा आदि सेवा के कितने ही काम हैं जिनमें कोई भावनाशील, सेवाभावी युवक लग सकता है। काम सबके लिए है और सबको काम में तुरन्त लग जाना चाहिए।

हम शान्तिपूर्ण जन क्रान्ति की एक नयी राह पर निकल पड़े हैं। सात जून से एक महीना मैंने हर आयु के, हर जाति और धर्म के, शिक्षित और अशिक्षित धनी और गरीब सत्याग्रहियों को आगे और नारे लगाते हुए जेल जाते देखा है। मैं दंग रह गया हूं यह देखकर कि इन हजारों लोगों के हृदयों में वह कौन सी शक्ति है जो इन्हें त्याग और कष्ट के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर रही है। जनता की शक्ति से बड़ी दूसरी कोई शक्ति नहीं है। उसे ही प्रकट करना हमारा काम है। इसी में हमें भरोसा है। बिहार और भारत का भविष्य सामान्य जन की संगठित शक्ति में है। हम सब सामान्य जन हैं। समय हमसे, सामान्य जन से बड़ा काम कराना चाहता है हम धैर्य के साथ एक-एक कदम बढ़ते चलें।

समाचार

पिथौरागढ़ जिले में नेपाल की सीमा पर अस्कोट से २५ मई को प्रारम्भ हुई उत्तराखंड के छात्रों की पदयात्रा ८ जुलाई को उत्तरकाशी जिले में हिमाचल प्रदेश की सीमा पर आराकोट में समाप्त हुई।

पदयात्रा में लगभग उत्तराखंड के सभी जिलों के छात्रों का प्रतिनिधित्व था। इसमें अन्य बहुत से छात्र जुड़ने वाले थे, किन्तु विश्वविद्यालय की परीक्षाएं देर तक होने के कारण वे शामिल नहीं हो पाये। फिर भी आंशिक या पूर्ण समय देने वाले लगभग ४० छात्र शामिल हुए। १०० गांवों और कस्बों से सम्पर्क हुआ तथा ४५ दिन इस यात्रा ने लिये।

यात्रा का मुख्य उद्देश्य था छात्र अपने गर्मियों के अवकाश को उत्तराखंड के उन गांवों में बितायें, जहां न कोई नेता जाता है न अधिकारी और न ही कोई कर्मचारी, वहां के लोगों के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आकर उनके सुख-दुख में एक रात शामिल होना। शराब बंदी, जंगलों की सुरक्षा, स्त्रीशक्ति जागरण तथा युवा-शक्ति का रचनात्मक उपयोग जन-सम्पर्क के प्रमुख विषय थे। शुरू से अंत तक पदयात्रा में शामिल कुंवर प्रसून चन्द्रशेखर पाठक, शमशेर सिंह बिष्ट तथा प्रताप शिखर ने यात्रा समाप्ति पर बताया कि, 'अस्कोट से आराकोट के बीच का जीवन अभाव, गरीबी और पीड़ाओं में पल रहा है। यह दर्शन उन्हीं के बीच जा कर हो सकता है। मोटर सड़कों तक तो सब ठीक दीखता है। उत्तराखंड के बारे में पहले हम युवकों के मन में दूसरी ही कल्पना थी। इस यात्रा के बाद वह मिट गयी और एक नये दृष्टिकोण ने जन्म लिया है।

७५० किलोमीटर लम्बी इस यात्रा में छात्रों को १२ बड़ी-बड़ी नदियां पार करनी पड़ीं। कालामुनि पहाड़, माणातोली बुग्याल और पवालीकाण्ठा जैसे पहाड़ चढ़ने पड़े।

क्या ज्वालामुखी कभी फटेगा नहीं

(शेष पृष्ठ १२ से)

भी नहीं देते। सांस छोड़ते हुए भुम्मन ने कहा, "अब तो भगवान ही एक सहारा है, सरकार।" अल्लाह और भगवान में भेद भी हम पढ़े-लिखे लोगों के मन में ही है, गरीब के नहीं।

एक अन्य गांव में ४०-४५ वर्ष के एक मजदूर ने अपने सूखे हुए बदन की ओर इशारा करते हुए कहा, "देख रहे हैं सरकार, भूख के मारे बदन की क्या हालत है।" मैंने पूछा कुछ जमीन-वमीन है, तो बताया कि ३ कट्ठा है। इतनी सी जमीन से पूरा पड़ना तो असंभव है और मजदूरी भी हमेशा नहीं मिलती, इसलिए कई दिन भूखा रहना पड़ता है। करीब सवा कट्ठा जमीन २-३ वर्ष हुए खाने के लिए ६० रुपये में 'भरना' दे दी थी। भरना, यानी जब तक पूरी रकम एक साथ न लौटाई जाय तब तक जमीन का उपयोग साहूकार करे। वही उसे जोतता-बोता है और सूद के बदले में सारी उपज भी उसीकी ही होती है। न रामधनी मण्डल के पास कभी ६० रुपये देने को होंगे न अब वह जमीन वापस छुड़ा सकेगा। यह पूछने पर कि मजदूरी कितनी मिलती है, रामधनी ने कहा कि अव्वल तो कमजोर आदमी को लोग जल्दी से काम देते नहीं, काम मिलता भी है तो मजदूरी पूरी नहीं मिलती। पहले तो मजदूरी में धान मिलता था लेकिन आजकल मालिक लोग कहते हैं कि हमारे पास धान नहीं है, अलुआ (शकरकंद) देंगे, हालांकि मालिक के घर में अनाज भरा हुआ है। रामधनी ने कहा, "अभी ४५ रुपये मन के हिसाब से हमारी खरीदने की तैयारी हो तो जितना चाहें उतना धान मालिक के घर से निकल आयगा।" लेकिन मालिक बाजार से खरीदकर भी मजदूरी में अलुआ देता है, क्योंकि वह सस्ता पड़ता है, और अलुआ खा-खाकर मजदूर और भी कमजोर होता जाता है।

ऐसे भुम्मन और रामधनी इस समाजवादी भारत के हर गांव में जहां हम गये हमें मिले हैं। 'गरीबी हटाओ' और समाजवाद के नारों से हम वोट भले ही हासिल कर लें, पर वस्तुस्थिति को कब तक झुठलायेंगे और उसके अवश्यम्भावी परिणाम से कब तक बचेंगे?

एक सत्याग्रही का सत्याग्रह पर निवेदन

अवसर मत खोयें, लेकिन आदर्श की बलि भी न चढ़ायें

—हरिवल्लभ परीख

प्रवाह के खिलाफ चलना मुश्किल है, किन्तु यही कार्य मेरे जैसे छोटे आदमी के सिर पिछले २५ साल से आया है। समाज में स्थिर हिंसा के खिलाफ मैं लड़ता रहा। यह हिंसा मुझे ऊपर की मारपीट वाली हिंसा से ज्यादा अखरती रही। लोगों का खून पीकर जीने वाले सेठ, साहूकार, अफसर और जमींदार मेरे निशान रहे, सच सच कहूं तो मैं उनका निशाना रहा। इनकी पहुंच सर्वोदय के दरवाजे तक भी थी और इसीलिए कई बार सर्वोदय साथियों ने भी मुझे ज्यादा दौड़ करने से रोकना चाहा। मैं डटा रहा। संघर्ष, सत्याग्रह, अन्याय का प्रतिकार, यही हमारे शस्त्र रहे। आज तक यही सिलसिला चला आ रहा है। आंदोलन में सदा मस्त रहने वाला आदमी आंदोलन के बारे में कुछ कहे तो आप सबको कुछ समय के लिए सोचना होगा। जो रोज संघर्ष करता रहा है वह आज के संघर्ष के बारे में 'रुक जाओ' जैसी प्रवाह विरुद्ध बात कर रहा है, इसका कुछ कारण है।

गुजरात के आंदोलन को खूब निकट से देखा। विद्यार्थी अगुवाओं से बातें होती रहीं। यह जानकर मित्रों को खुशी होगी कि,नवनिर्माण समिति के करीब १०० मुख्य लोग १७ से २७ जून तक रंगपुर आश्रम में रहे, उन्हें यह पता था कि मैंने उस आंदोलन का एक हद तक विरोध किया था। लेकिन वे नवनिर्माण कार्य का प्रत्यक्ष स्पर्श लेते आ रहे थे। उन्हें प्रेरणा, प्रोत्साहन देने वालों से और दूसरी ओर आंदोलन तोड़ने वालों से भी मिला। जयप्रकाश बाबू गुजरात आये तो चार दिन लगातार मैं भी अहमदाबाद रहा। वहां हमारे सर्वोदय के साथी विधान सभा विसर्जन का नारा लगा रहे थे। हमने उस वक्त सम्मेलन में भी और बाद में सर्वोदय मंडल की कार्यकारिणी में भी कहा, जयप्रकाश बाबू से भी विनती की कि आज गुजरात की फिजा के कारण जनता और राजनीति वाले सब हमारी बात सुनेंगे। आप और रविशंकर महाराज गुजरात को आदेश दें कि आने वाले चुनाव में राजनैतिक दल अपने उम्मीदवार खड़े नहीं करेंगे और गुजरात को लोकनीति का प्रयोग करने देंगे, तभी हम विधान सभा विसर्जन का समर्थन करेंगे। हमारी ये बातें जे० पी० व सर्वोदय साथियों ने नहीं मानी। इसी कारण आंदोलन करने वाले व्यक्ति को आंदोलन से दूर रहना पड़ा। आज नतीजा सबके सामने है।

पारडी में प्रजासमाजवादियों के भूमि सत्याग्रह का समर्थन गुजरात भूदान समिति ने किया था, पारडी के किसानों को अपने हक मिले थे,जागृति आई थी। किन्तु इस विद्यार्थी आन्दोलन की आड़ में वह किसान आंदोलन कुचला गया। इसके सिवाय गुजरात में जो तबाही हुई, जो हिंसा हुई, जो अमानवीय व्यवहार हुए, विधायकों के साथ उससे कौन से नये मूल्यों का आविर्भाव हुआ? रविशंकर महाराज के इन्कार मना करने पर भी हिंसा नहीं रुकी। विधायकों को पेशाब पिलाना, नंगा करना, बाल काटना, बीमारी के बिस्तर पर से उठा के मरीज विधायक को घंटे भर घुमाना,मारना, पिटना, यह सब कुछ हुआ। क्या इसमें से अहिंसा प्रकट हुई? लोक नीति के लिए कोई आधार मिला? कीमतें गिरीं? भ्रष्टाचार रुका? जवाब 'नहीं' ही देना पड़ता है और तो और विद्यार्थी संगठन जो नवनिर्माण के नाम से बना वह भी टूटा। सर्वोदय वालों ने इसे लोक आंदोलन माना। कूद पड़े इसमें। इस युवा आंदोलन पर सर्वोदय का कोई प्रभाव नहीं था। हां आत्मसंतोष के लिए लोकस्वराज्य आंदोलन के नाम से हमारे साथी कुछ इधर-उधर करते रहे।

अब यह चित्र हमारी आंखों के सामने है, तब वही नाटक बिहार में हम फिर से खेलना चाहते हैं? क्या यह उस जुआरी की तरह नहीं है, जो हारने पर नये-नये दाव खेलता है? बिहार से मैं दूर हूं किन्तु कल्पना करना आसान है। जो समाचार दूसरे अखबारों में छपते हैं, वे स्पष्ट बता रहे हैं कि बिहार में भी रही-सही लोकशाही का अंत करने की ओर हम आगे बढ़ रहे हैं। सर्वोदय के २७ मई के अंक में मुंगेर का लेख पढ़ा। साफ है कि जहां हमने आंदोलन शुरू किया है, वहां भी आंदोलन पर हमारा असर नहीं के बराबर है। क्या इस प्रकार के हिंसास्फोटक आंदोलन में से कोई नये तत्व निखरेंगे? मान लो कि बिहार विधान सभा का विसर्जन होगा भी, तो क्या वहां लोक नीति के लिए भूमिका तैयार है? हां, हमारी सारी शक्ति जैसा कि धीरेन बाबू ने कहा है और मेरी भी यह स्पष्ट राय है कि जो आंदोलन हमारा चल रहा है उसे ही ज्यादा लोकाभिमुख बना कर, लोगों की समस्याओं से जोड़कर तेज बनाना चाहिये अगर ग्राम भूमिका से हम नये मूल्य खड़े कर सकेंगे तो राजनीति को लोकनीति में पलटाने का प्रारंभ करने के हम निमित्त भर बनेंगे। स्वधर्म को छोड़कर इधर उधर दौड़ने में हमारी शक्ति नष्ट होगी। भूमि-समस्या भारत की मूलभूत समस्या है। हमारी सक्रिय ग्राम सभा ही भ्रष्टाचार और रिश्वत खोरी को सफलता-पूर्वक रोक सकती है।

यह सच है कि राज्यकर्ता वर्ग अपनी घोषित नीतियों पर अमल करने में अभी तक निष्फल रहा है। मिलावट, रिश्वत, भ्रष्टाचार राजकीय व आर्थिक सब मिला कर काफी बढ़ा है। कीमतें बढ़ी हैं। चीजें मिलती नहीं। विधायकों की खरीद-फरोख्त भी आम चीज बनी है ये सब ऐसे कारण हैं जो जनता को आज की राजनीति से नयी राह की ओर जाने में धक्का दे सकते हैं। किन्तु नया रास्ता हमने बनाया है क्या? अगर हमने नहीं बनाया तो दूसरे कहां हमारी कल्पना के रास्ते जायेंगे? हमारे पास नये मार्ग के लिए एक लाख से अधिक गांव हैं घोषित या संकल्पित ग्रामदान, क्या अपनी सारी शक्ति लगा कर हम उन गांवों में भ्रष्टाचार, रिश्वत, मिलावट आदि को रोक सकेंगे? हां रोक सकते हैं, अगर पूरी ताकत लगे-इस कार्यक्रम में युवाशक्ति का आह्वान कीजिये, उनकी तरुणाई को मौका दीजिये। गत वर्ष अकाल में तरुणों ने कमाल किया वैसा ही आंदोलन और आह्वान लोक स्वराज्य के लिए देना

(शेष पृष्ठ १[illegible] पर)

स्वतंत्र लोकशक्ति का निर्माण ग्रामस्वराज्य का एक आवश्यक पहलू

(पृष्ठ ७ का शेष)

शका उठाते हैं, और अपने को आचार मर्यादा वाले और शुद्ध मानते हैं, वे भी निखर कर आये। अब जयप्रकाशजी के इस आदोलन मे भी इसी प्रकार बहुसख्यक तरुण देश को प्रेरणा देने लायक बन जायेंगे, इसमे कोई सदेह नही, क्योंकि यह आदोलन आम छात्र आदोलन से भिन्न, अनुशासन और शाति का रास्ता पकडे हुए है। अब तक तरुण आदोलनो मे हमेशा हिसक और विस्फोटक तरीके अपनाये जाते थे। यह आदोलन उससे पूर्णत भिन्न है। यह सही है कि कहीं-कहीं छुटपुट वारदातें हुई हैं लेकिन कुल आदोलन के अनुपात में यह नगण्य है। सन् ४२ की क्राति मे भी कहीं-कहीं हिंसा फूट पडी थी, लेकिन कुल आदोलन अहिंसात्मक ही रहा। वैसी ही बात इसमें भी है।

इसी सिलसिले मे आप लोगों का यह वहम भी तोड देना चाहता हू कि इतने वर्षों के प्रयत्न से आपकी अपनी एक प्रतिमा बनी है, आपकी आचार-मर्यादा और शुद्धता बनी है, जिससे आप समाज को प्रेरणा दे पाते हैं। मित्रजन मुझे माफ करेंगे, जब मैं कहना चाहूगा कि इतने दिन के प्रयत्न से जहा कुछ लोगो की प्रेरणादायी 'इमेज' बनी है, वहा हजारो की तायदाद मे हमारे लोगों मे भ्रष्टाचार फैला है, जिसके फलस्वरूप आज देश मे हमारी 'इमेज' अच्छी नही है। मैं घूमता रहता हू, मेरे जो अनुभव आते हैं, वे इसी बात की साक्षी देते हैं। इसलिए हमारी 'इमेज' के बारे में हमे कोई अहकार नही रखना चाहिए। बल्कि मेरा विश्वास तो यही है कि यह आदोलन हमारी 'इमेज' को ऊपर उठायेगा। बिहार मे जनसपर्क करने वाले व्यक्तियो को पता चलेगा कि कुछ निहित स्वार्थ वालो को छोडकर जो निश्चितरूप से इस आदोलन को बदनाम करते हैं, करीब-करीब सभी पत्रकारो तथा प्रमुख लोगो ने स्वीकार किया है कि इस आदोलन के चलते, इसकी पद्धति और जय प्रकाशजी के प्रभाव के कारण बिहार के तरुणो में आमतौर पर महत्वपूर्ण चारित्रिक परिवर्तन आया है। उनका छिछोरापन न जाने कहा चला गया है। वे आज समाज के जिम्मेदार नागरिक लगने लगे हैं। आम जनता मे यह भावना है। इतना ही नही, राज्य और केन्द्र सरकार के कई महत्त्वपूर्ण व्यक्तियो ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि जयप्रकाशजी का नेतृत्व इस आदोलन को नहीं मिला होता तो बिहार आज जल चुका होता। इससे स्पष्ट है कि सर्वोदय-आदोलन को इसके साथ जुडे रहने मे अपनी प्रतिमा के सदर्भ मे कुछ हानि नहीं होगी, बल्कि कुछ लाभ ही होगा।

अवसर मत खोयें, लेकिन आदर्श की बलि भी न चढ़ायें

(पृष्ठ १४ का शेष)

ही अपनी शक्ति का सही इस्तेमाल करना है। वरना जो आज गुजरात मे हुआ है वही कल बिहार मे होगा। विधानसभा का विसर्जन हुआ, लेकिन जनता का कोई प्रश्न हल न हुआ, न नई लोकनीति का ही जन्म। आज गवर्नर के नाम पर अफसरो का राज्य है। कोई भी गतिशील कदम राज्य की ओर से नहीं उठ रहा। अब आयेंगे चुनाव, उसकी तैयारी वही राजनैतिक दल कर रहे हैं।

हम वर्षों से साथ काम करते आये हैं। हमारी क्राति की कल्पना साफ रही है। आज जरा सोचो और अवसर हाथ से चूक न जाये, इसके लिए तैयार रहो। अवसर को खोना तो नहीं है, किन्तु आदर्शों की बलि चढ़ा कर नही, आज समय है जब हम जनता को ज्यादा से ज्यादा लोकनीति की ओर मोड़ सकेंगे। सिर्फ दो चार दस विधायक जनता की ओर से खडे करना ही लोकनीति की समाप्ति नहीं है। गाव-गाव लोकसभा-ग्रामसभा को सक्रिय बनाना-सिर्फ भूमि बाटने तक ही नही, पूरे गाव की हर समस्या के लिए। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी शक्ति अगर लोकसमितिया बनाने में लग जाये तो इसी से लोकनीति का जन्म होगा। लोक-स्वराज्य के इस यज्ञ में स्कूल-कालेज छोडकर, व्यापार-रोजगार छोडकर, किसान, विद्यार्थी, कारीगर और कर्मचारी सब हमारे साथ आयें तो लोकशक्ति का विस्फोट हो सकता है, जो एटमबम के विस्फोट से भी ज्यादा प्रभावकारी साबित होगा।

कुछ साथियो को यह भ्रम हो गया है कि उनके कुछ साथियों को प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाधी के राज्य से आसक्ति हो चली है, इसीलिए वे इंदिराजी के राज्य के खिलाफ चलने वाले आदोलन को बढ़ावा नही देते। ऐसी ही बात वे पूज्य विनोबाजी के बारे में भी कहा करते थे कि बाबा को जवाहरलालजी से इतनी आसक्ति है कि वो हमें सरकार के खिलाफ सत्याग्रह की इजाजत नही देते। हम सब जानते हैं कि पू० विनोबाजी ने जितना बडा आदोलन स्व० जवाहरलालजी के युग में छेडा -भू-भूमि का उतना और किसी ने कभी नहीं छेडा होगा, और खुद जवाहरलालजी भी इस बात को मानते थे कि देशव्यापी आदोलन के प्रणेता विनोबाजी हैं। जवाहरलालजी की प्रथम पचवर्षीय योजना की आलोचना बाबा ने यह कहकर की, "इसमे सब कुछ है, सबके बारे मे सोचा गया है, सिर्फ भूल गये हैं, आयोजन वाले भारत के अदने इन्सान को!"

ऐसी आलोचना करने पर भी दोनो मे परस्पर भाव था। आज का हमारा आदोलन इस सत्याग्रही सज्जनता की झलक फिर से दिखायेगा क्या?

आन्दोलन फिर लौटता नहीं

(पृष्ठ ११ का शेष)

विधायक आते थे उनके सामने लेट जाते हैं—'जयप्रकाश बाबू ने कहा है कि हमारी पीठ पर से जाओ।' पुलिस के जवान कहते हैं—'उठ जाओ', पर सत्याग्रही नही उठते। नारे लगाते हैं—लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद, 'विधानसभा भंग करेंगे, भग करेंगे, 'मतदाताओं की मांग है इस्तीफा दो, इस्तीफा दो।' जलती हुई सडक पर ये सत्याग्रही तब तक लेटे रहते जब तक पुलिस के जवान उठा कर बसो मे नही डाल देते। इस तरह १२ जुलाई को जब विधानसभा सत्र समाप्त हुआ तब तक लगभग ३ हजार सत्याग्रही दरवाजों पर गिरफ्तार किये जा चुके थे।

केन्द्र सरकार के लिए बिहार का आदोलन समाप्त हो चुका है, समाचारपत्रो के लिए वह धीमा पड गया है, बुद्धिजीवियों के लिए यह एक 'शगल' बन गया है, पर बिहार के लिए आंदोलन रोज नयी आग और रोज नया जीवन ला रहा है। बिहार के लोग कहते हैं कि वे इस आदोलन को हर कीमत पर चलायेंगे, क्योंकि अगर यह आदोलन चला गया तो बिहार चला जायेगा, लोगों के रहते हुए।

(पेज १० का शेष)

२५०० वी पुण्यतिथि इस साल है। उनके वचनो की ओर मेरा ध्यान ज्यादा जाता है। लोगो ने विद्वानों की समिति बना कर जैनो का मान्यग्रंथ बनाने का तय किया है। एक जमाने मे जैन ही गुरु थे। लेकिन वे पहले दूसरो को आगे रखते थे। पहले श्री गणेशाय नम लिखते थे और फिर ओम नम सिद्धम्। तो महावीर स्वामी के वचनों का सार तैयार हो जाये तो ठीक रहेगा।

आपके कुल आन्दोलन इतिहास मे रह जायेंगे। हिन्दुस्तान के लोग जानते हैं कि किसे याद रखना किसे नही। एक बार पद यात्रा करते हुए दिल्ली के पास मसजिद मे मुसलमानो की सभा मे मैंने पूछा, उन्हे अकबर बादशाह का नाम याद नही था, लेकिन कबीर का नाम याद था। नेहरू का इतिहास हमने पढा। उसमे लिखा है तुलसीदास अकबर के जमाने मे हुए लेकिन मुसलमान तक अकबर बादशाह को नही जानते और रामायण घर-घर पढी जाती है। तो हमने नेहरूजी से पूछा कि अकबर के जमाने मे तुलसी हुए कि तुलसी के जमाने मे अकबर? वे बोले-इतिहास में ऐसा ही लिखा जाता है। तो हिन्दुस्तान के लोग बादशाहो को याद नही रखते। वे जानते हैं किसे याद रखना चाहिए। अंग्रेजी मे कम एण्ड राज्यकर्त्ता मे गो बट कुम्भ मेला गोज ऑन फौर एवर : (राज्यकर्त्ता तो आते और जाते हैं पर कुंभ मेला हमेशा चलता रहता है।) आप लोग जितना भी काम कर रहे हैं उसे लोग भूल जायेंगे। लेकिन अगर इस देश की सभी भाषाओ मे आपने नागरी का उपयोग शुरु करवा दिया तो एक देवनागरी ही देश को याद रहेगी। देवनागरी चली तो उपकार होगा। इससे देश एक बना रहेगा।

जयप्रकाश जी हमारे उधम मचाने वाले हैं। गुजरात मे मचाया फिर बिहार मे मचाया क्या वे यूरोप मे ऐसा कर सकते थे? वहां तो एक देश से दूसरे देश मे (जो हमारे राज्यो के बराबर हैं) जाने के लिए पासपोर्ट की जरूरत पडेगी। इस देश को जोडने वाली कई चीजें रही हैं। रेल मोटर के जमाने से पहले लोग देश की यात्रा करते थे। कावड मे पानी ले जाते थे। गंगा का पानी रामेश्वरम् मे चढाते थे और वहां का समुद्र का पानी काशी के विश्वनाथ पर। लेकिन अब जुडा हुआ हिन्दुस्तान टूट रहा है। भारतमाता के पेट से कहीं उत्कल माता निकल रही है। एक हुआ भारत टूट रहा है। नागरी लिपि ही देश को जोड सकती है। देवनागरी जोड़ने वाली चीज है।

शकराचार्य ने कहा—आपके मेरे सबध द्वैत रहित और अद्वैत रहित हैं। आप हम एक हैं इस लिए बोलना नही होता। आप हम एक नही हैं इसलिए बोलने का सवाल नही उठता। इसलिए हमारे सम्बन्धो मे न द्वैत हो, न अद्वैत-समरस भाव रहे। आप जो भी चर्चा करे उसमे मतभेद भले ही अनेक हो पर हृदय एक रखें। हमारा सर्वोदय है। इस पर पूरे भारत की आशा टिकी हुई है। हम चाहे जितनी बातें करें पर हृदय एक होना चाहिए। मेरा तो विश्वास सब पर है —जय प्रकाशजी पर है इन्दिराजी पर है, हेमगुणा (बहुगुणा) पर है, एस एम. जोशी पर है नाइक पर है। अब ये सब एक दूसरे से अलग लेकिन मेरा इन सब पर विश्वास। ऐसी मेरी विलक्षण हालत है। विश्वास से बाबा अविश्वास को जीतेगा। हृदय हमारा एक रहे, समरस रहे और विश्वास दुश्मनो पर भी रहे।

सर्व सेवा सघ मे सर्वसम्मति से जो भी निर्णय होगा वह बाबा को मान्य होगा। आप लाग मिल कर चर्चा करें। आप लोगो मे जो कॉमन ग्राउण्ड हो-सहमति हो-उस पर प्रस्ताव करें। जिस मुद्दे पर सहमति न हो उसे चर्चा के लिए छोड़ दें। मेरा तो विश्वचिन्तन चलता है।

फिर बाबा ने प्रश्नो के उत्तर दिये। उत्तरो मे बाबा ने कहा—सहमत, न हो पाये तो विवेकपूर्वक असहमत होना चाहिए।··· गणसेवकत्व की अवहेलना होती है तो सबको समझाना चाहिए। जो भी बोलना चाहे, उसे बोलने देना चाहिए। जोरदार तरीका दिखना हो तो दिखाना चाहिए, नही तो समर्थन करना चाहिए। बिहार के आंदोलन पर पूछे गये सवाल के जवाब मे बाबा ने कहा—मेरी राय मालूम हो जाये तो लोग अपना दिमाग समेट कर मेरी राय मान लेंगे। इसी लिए मैं राय नही देता। जयप्रकाश जी के काम का मैं विरोध नही करता क्योकि वे सज्जन है निस्वार्थी हैं—कोई कदम उन्हे बुरा लगेगा तो वापस ले लेंगे—और इससे कुछ होना जाना नही है। जे.पी. के लोकनीति से राजनीति की ओर जाने के उत्तर में बाबा ने कहा-यह आपको तय करना चाहिए। अगर भगवान यही चाहता कि सब बातें मैं ही तय करू तो वह बाबा को सिर देता आपको देता ही नही। अप्प दीपो अप्प भवो अपने को टटलो और निर्णय करो। फिर पूछा गया कि बिहार के आंदोलन पर आपकी व्यक्तिगत राय क्या है? बाबा ने कहा—आपके दिमाग को तकलीफ न रहे इसलिए आप पूछते है। बिहार के आदोलन को आशीर्वाद देने को कहा गया तो बाबा ने कहा—अगर वह सफल होने लायक हो तो सफल हो। निष्फल होने लायक हो तो निष्फल हो। (क्रमश:)

□ केन्द्रीय आचार्यकुल ने तदर्थ समिति भग कर अब विधानानुसार राज्य प्रतिनिधियो और सदस्यों को लेकर समिति गठित कर ली है। समिति सदस्यो के नाम इस प्रकार हैं शीतलप्रसाद (उ० प्र०), डा० रामजी सिंह (बिहार), दि० हा० सहस्रबुद्धे (महाराष्ट्र), रामकुमार शर्मा (म० प्र०), पूर्णचन्द जैन (राज०), ईश्वरचन्द प्रामाणिक (बंगाल), सी० ए० मेनन (दिल्ली), रघुनाथ महापात्र (उत्कल) गोविन्द रावल (गुजरात), के एस० आचार्लु (कर्नाटक) एस. जगन्नाथन् (तमिलनाडु), ओमप्रकाश त्रिखा (हरियाणा) यशपाल मित्तल (पजाब), राधाकृष्ण मेनन (केरल) चेरला जनार्दन स्वामी (आंध्र), सिद्धराज ढड्ढा व ठाकुरदास बंग (सर्वसेवा सघ)। वंशीधर श्रीवास्तव सयोजक तथा गुरुशरण सह सयोजक होंगे। सहयोजित सदस्यों में रोहित मेहता, मामा क्षीरसागर, श्रीमन्नारायण, मानवमुनि तथा श्रीमती सुभाषिनी देवी हैं। स्थायी निमंत्रितो के नाम अभी तय नहीं हुए हैं, श्रीमती महादेवी वर्मा, जैनेन्द्रकुमार, मनन गोपाल शेवड़े, हजारी प्रसाद द्विवेदी, भवानी प्रसाद मिश्र आदि साहित्यकारो, वृद्ध समाज सेवियो व प्रबुद्ध नागरिको से स्वीकृति मागी गयी है।

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए प्रकाशित एव ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ मे मुद्रित।

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २०   ५ अगस्त, '७४   अंक ४५

१९ राजघाट कालोनी, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

कर बन्दी आंदोलन

जयप्रकाश जीने पहली अगस्त से कर बन्दी आदोलन प्रारम्भ करने का नारा दिया था। वह नारा कार्यान्वित हो गया है। इधर भारत सरकार ने कर बढ़ाये, उधर कर-बन्दी आंदोलन शुरू हुआ। कर बन्दी के साथ भ्रष्ट और महगे सरकारी तन्त्र को सुधारने और सस्ता करने के विचार से जगह-जगह सरकारी कार्यालयो और अफसरो का घेराव भी शुरू हो गया है। दोनो ही कदम अपने उद्देश्य मे सत्ता को ठप्प कर देने की बात समाहित किये हुए है।

पाच महीनो से जे० पी० बिहार मे जिस आंदोलन का नेतृत्व कर रहे है, वह इन दोनो बातो पर ठीक से अमल हो गया तो देश के सामने सिद्ध होकर व्यापक बन जायेगा।

छात्र सघर्ष समिति के स्वय सेवको ने अभी धरना देने के लिए मुख्य रूप से शराब की दुकान को चुना है। उन सारे स्थानो पर धरना देने की बात है जहा से सरकार को पैसा प्राप्त होता है—याने जिन-जिन चीजो पर लाइसेंस और परमिट दिये जाते है उन सब चीजो की बिक्री के स्थान 'धरना-स्थान' बन जायेंगे।

इसमे सन्देह नहीं है कि आदोलन का यह स्वरूप बड़ा कठिन और निर्णायक कदम उठाने का पर्याय है। राज्य के मुख्यमन्त्री श्री गफूर ने कहा है 'दक्षिण पंथियो और फासिस्टो ने यह जो चुनौती दी है इसे बढ कर स्वीकार किया जायेगा।' उनके इस कथन को जे० पी० और बिहार आंदोलन में अपने को खपाकर चल रहे विद्यार्थियों, लोक सेवकों और जनता ने भी एक चुनौती की तरह स्वीकार किया है। पचायत से जिले स्तर तक जनसमितिया और जनसघर्ष समितिया बन गई हैं। वे इस परिणाम को सफल बनाने के लिये कटिबद्ध हैं कि सरकार को भूमिकर मिले।

सघर्ष मे लगे हुए लोग अनिवार्य सवाओ को अव्याहत चलने देंगे। याने डाकघर, अस्पताल, अदालत, रेलें, बैंक और अनाज की दुकानो के साथ किसी प्रकार की छेड-छाड नही की जायेगी। महाविद्यालय अनिवार्य नहीं हैं—यह तो घोषित ही है। परीक्षाए जितनी और जैसा चल रही हैं वह भी अब तक सारा देश जान चुका है। छात्र सघर्ष समिति का कहना है, 'वे सगीनो की नोको पर चल रही हैं।'

सरकार ने भ्रष्टाचार और महगाई विरोधी तमाम तत्वो को 'भ्रष्टाचारी और कालाबाजारी करने वालो से साठ गाठ है,' यह बिना किसी झिझक के एक अरसे से इसी लिये कहना शुरू कर दिया है कि यह अवसर आने पर लोक सघर्ष को क्रूरता के साथ कुचलने का समर्थन आसानी से करने की स्थिति मे रहे। किन्तु याद रखना चाहिये कि 'पुरनो का खून,' कभी छिपाये नही छुपा है।

बिगरियो यशवंत है

विरोधी दल के सदस्यो के 'लज्जाजनक लज्जाजनक' नारो के बीच ३१ जुलाई १९७४ को वित्तमन्त्री श्री यशवन्त चौहान ने वह पूरक बजट पढ सुनाया जो मुख्य बजट से भी ज्यादा रकम लोगो से वसूल करेगा। इस बजट के फलस्वरूप कपड़ा, किताबें, वस्त्र, सीमेंट, इस्पात, तांबे और जस्ते से बना सामान और सिगरेटें पहले से अधिक महगी हो जायेंगी। किस चीज के दाम कितने बढेंगे, यह पूछने का कोई अर्थ नही है, क्योकि सरकार एक प्रतिशत की वृद्धि करती है तो व्यापारी जिन चीजों पर कर वृद्धि हुई है, केवल उन्ही चीजो पर नहीं, सारी चीजो पर दस-बारह प्रतिशत दाम बढा देता है।

चीजो पर कर-वृद्धि नई बात नहीं है—किन्तु इस बार जो दुनिया मे इसके पहले

बैंको को अपने द्वारा प्राप्त कुल ब्याज पर एक प्रतिशत कर देना पडेगा।

करों मे इस अप्रत्यक्ष वृद्धि से वर्ष भर मे केन्द्र को २१० करोड़ और राज्यो को २२ करोड रुपये की अतिरिक्त आय होगी। इस वर्ष की बची अवधि मे होने वाली केन्द्रीय आय १२३ करोड और राज्यो की आय १३ करोड होगी। इसे वित्तमन्त्री ने वित्तविधेयक न० २ कहा है—'पूरक बजट' नही कहा।

जब पूरक बजट की बात उठी थी तब हवा मे पिछले तीन अध्यादेशो का यह मशा, झडे की तरह फहराया जा रहा था कि इनसे कालेधन और मुद्रा स्फीति पर काबू पाने मे मदद मिलेगी और इसलिए लोग उम्मीद कुछ इस प्रकार के 'पूरक बजट' की कर रहे थे जो मुद्रास्फीति को रोकेगा। यह बजट मुद्रास्फीति को नही रोकेगा और कीमतो के चारो तरफ बढने पर भी इससे कोई अकुश नही लगेगा—इसे सत्तारूढ दल के ससद सदस्यो तक ने स्वीकार किया है।

इसमे कोई सदेह नही कि किसी भी घाटे के बजट को 'पूरक बजट' पेश करके पूरा किये जाने की इच्छा एव शुभेच्छा ही है। किन्तु सवाल यह है कि क्या उससे मुद्रास्फीति कम होकर उत्पादन बढ़ता है और कीमतें गिरती हैं। इस सवाल का जवाब देने के लिए किसी विशेषज्ञ की जरूरत नही है। यो कबाब विशेषज्ञो ने भी दिये हैं। हमारे भूतपूर्व उपप्रधानमन्त्री और वित्तमन्त्री मोरारजी देसाई ने कहा है, यह औषधि तो रोग से भी अकल्याणकारी है। उद्योगपति कृष्णकुमार बिड़ला ने कहा—यह कर वृद्धि, जो उत्पादन चल रहा है उसे भी कम करेगी। उत्पादन बढ़े बिना मुद्रास्फीति की सुरसा पराजित नही होगी। काग्रेस के श्री भगवत झा आजाद ने कहा, पैसा मिल जायेगा किन्तु कीमतों का बढ़ना नहीं रुक पायेगा। कांग्रेस के ही श्री राजा कुलकर्णी ने तो यहा तक कहा कि सरकार घाटे की जितनी पूर्ति सोच रही है ऐसा नही लगता कि वह भी सम्भव होगी।

घाटे के बजट की पूर्ति का सबसे सीधा उपाय तो खर्च को घटाना है। हमारा शासन महगा और फाजिल है, प्रधानमन्त्री सबको मितव्ययिता की बात सुभाती हैं—क्या 'वित्त विधेयक न० २' बनाने के पहले वित्तमन्त्री ने उनसे विचार-विमर्श नही किया? क्या पद्माकर के शब्दों को थोडा-सा बदल कर कहा जा सकता है, 'बनन मे बागन मे

अग्नि परीक्षा से खरा निकला संघ

संघ अधिवेशन रपट की अन्तिम व समापन किस्त

दस जुलाई को आधी रात तक प्रबन्ध समिति में एक प्रस्ताव पर बहस होती रही थी। जागरूक लोकसेवक जानते थे कि बाबा ने मसविदा प्रस्ताव की गेंद को प्रबन्ध समिति और खुले अधिवेशन के मैदान में वापस ठेल दिया है। कुछ लोग यह भी जानते थे कि प्रस्ताव पर सर्वानुमति नहीं हो पा रही है। फिर भी जब ग्यारह जुलाई को सुबह खुला अधिवेशन शुरू हुआ तो ऐसा नहीं लगा कि प्रबन्ध समिति के अनिर्णय की छाया उस पर मडरा रही हो। सिद्धराजजी अध्यक्षता कर रहे थे और दादा धर्माधिकारी भी मंच पर उपस्थित थे। सम्भावना थी कि आज दादा बोलेंगे।

खुले अधिवेशन में बिहार के आंदोलन पर बोलना रामकुमारजी ने शुरू किया। उन्होंने कहा कि आने वाला इतिहास हमें नपुंसक न कहे, कायर न कहे। आज पूरे देश में और खासकर बिहार में जो परिस्थिति बन रही है उसमें हमें अपना सार्थक रोल ढूंढना चाहिए। हममें बहुत से लोग निष्ठा वाले लोग हैं। हम लोकविरुद्ध न हों। हमारी निष्ठा लोकशिक्षा के साथ हमारे तादात्म्य में आड़े न आये।

बिहार के मयूख खान का भाषण जोशीला था। उन्होंने कहा—जे० पी० और वैद्यनाथ बाबू का भाषण सुनने के बाद मैं सोच रहा था कि बिहार में जो लोकशक्ति प्रकट हुई है उसे ग्रामस्वराज्य के काम में लगाने के बारे में हम यहाँ विचार करेंगे और कोई कार्यक्रम बनायेंगे। लेकिन हमारे हाल कुन्ती की तरह हो रहे हैं। वह बार-बार सूर्य का आह्वान करती रही लेकिन जब सूर्य आया तो आँखें मूँद कर भाग गयी। हम भी लगातार लोकशक्ति का आवाहन कर रहे थे लेकिन अब बिहार में जब लोकशक्ति जागृत हुई है तो उससे दूर भाग रहे हैं। हम बैठे-बैठे शास्त्र की बातें करते रहते हैं। लेकिन नदी में तैरने का शास्त्र समझा दिया जाय तो आदमी तैरना नहीं सीखेगा। वह डूब जायेगा। आदमी जब नदी में कूदता है तभी तैरना सीखता है।

बिहार में हमने अपनी आँखों शोषण देखा है। पूर्णिया शोषण का उदाहरण है। बिहार बुद्ध और महावीर का प्रदेश है। लेकिन अब वहाँ शोषण और अत्याचार की हद हो गयी है। आग सुलग रही है चारों तरफ। आप सोच नहीं सकते कि जे० पी० नहीं होते तो बिहार में क्या होता? जे० पी० ने जनता के असन्तोष और आक्रोश को कितने शांतिपूर्ण प्रकटन का अवसर दिया है, इसका उदाहरण है पाँच जून का जुलूस। कितने लाख लोग उसमें थे। इन्दिरा ब्रिगेड के लोगों ने उस पर गोली चलायी। लेकिन जुलूस के लोगों ने उसका कोई जवाब नहीं दिया। पूरा कार्यक्रम इतना अहिंसक हुआ। यहाँ बैठ कर जो चर्चा करते हैं वे अगर बिहार में होते तो उन्हें दिखाना और समझ में आता। अगर हम इसी तरह बैठ कर सोचते रहे तो जनता हमें अपना आदमी नहीं समझेगी। ऐसे लोग हिमालय में क्यों नहीं चले जाते?

जो लोग समझते हैं कि बिहार का आंदोलन जे० पी० के हाथ से निकल जायेगा उनके लिए मयूख खान ने कहा—बिहार में घोड़े पर बैठे हुए हैं। उसकी लगाम हमारे हाथों में है। घोड़ा उधर ही जायेगा जिधर हमारी मर्जी होगी। अन्त में उन्होंने चेतावनी दी—अगर सर्वोदय वाले बैठ कर विचार ही करते रहे तो जमाना माफ नहीं करेगा। देश ने और सर्वोदय आंदोलन ने एक दिशा ली है। इसकी दिशा मत बदलो। एकमत होकर इस आंदोलन के समर्थन का प्रस्ताव करो।

त्यागपत्रों के बाद उदास लोकसेवक

मयूख खान के भाषणों में बार-बार तालियां बजीं। एक लोकसेवक ने कहा पहले ऐसा नहीं होता था। लेकिन यहाँ वातावरण ही वाद-विवाद का बन गया है।

सोमभाई का भाषण उत्तेजनाहीन लेकिन तत्वपूर्ण था। उन्होंने कहा कि हरियाणा सर्वोदय मंडल ने करीब करीब सर्वसम्मति से बिहार आंदोलन के समर्थन में प्रस्ताव पारित किया है। एक लोक सेवक ने उठ कर कहा कि उनकी सम्मति नहीं थी। सोमभाई ने कहा कि इसलिए उन्होंने करीब करीब सर्वसम्मति शब्द का उपयोग किया है और आपने भी वहाँ विरोध नहीं किया था। अनुमति दी थी। फिर उन्होंने कहा 'मुझे खुशी है कि यहाँ भी विधानसभा विसर्जन के अलावा सब बातों पर सहमति है। लेकिन मुझे समझ में नहीं आता कि विसर्जन की माँग में अनैतिक क्या है? प्रजातन्त्र में प्रजा की सम्मति की बात कह जाती है। अगर मतदाता किसी को अपनी सम्मति देता है, वोट दे कर और चुन कर भेजता है तो वह अपनी सम्मति को वापस क्यों नहीं ले सकता? चुनाव किस तरह होते हैं यह हम सब जानते हैं। अगर हमारे जन-प्रतिनिधित्व का यही चरित्र है तो विधानसभा के विसर्जन की माँग में असंगति कहाँ? सन् ४२ में बड़ी बहस होती थी। वायसराय ने

● सर्व सेवा संघ के रूप-स्वरूप और भावी संगठन के बारे में विचार के लिए मसविदा पेश करने के लिए संघ के सहमंत्री नरेन्द्र दुबे के संयोजकत्व में एक उपसमिति गठित हुई है। समिति के अन्य सदस्यों में सर्वश्री बद्रीप्रसाद स्वामी, बद्रीनारायणसिंह, द्वारको सुन्दरानी तथा रामचन्द्र राही मनोनीत किये गए हैं। उपसमिति की पहली बैठक ३१ अगस्त को पटना में होगी।

पिछले दिनों वर्धा में हुए सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में जयप्रकाश नारायण ने यह सुझाव दिया था कि भविष्य में संघ का केवल एक संयोजक ही रहे जो सर्वसम्मति से चुना जाय। संघ के पदाधिकारी-प्रबंध समिति आदि के मनोनयन एवं गठन की प्रणाली समाप्त कर दी जाए।

गाधी से पूछा था कि आप हिंसा-अहिंसा की इतनी बातें करते हैं। अहिंसा की दुहाई देते रहते हैं तो यह हिंसा क्यों हुई? तब गाधीजी ने कहा था बिल्ली चूहे को पकड़ ले और चूहे के दांत की खरोंच अगर बिल्ली को लग जाय तो यह चूहे की हिंसा नहीं है।

जनता को आपकी शास्त्रीय विवेचना की जरूरत नहीं है। अमासी बहुत अध्यात्म और भगवत भक्ति में लगे रहते थे। उन्हें गाधी ने कहा सत्य प्रेम करुणा क्या डिबिया में रखने की चीज है? अगर हम शास्त्रीय विवेचना में लगे रहे तो क्या हम पलायन नहीं कर रहे होंगे? सोमभाई ने एक कहानी सुना कर अपना भाषण समाप्त किया। कहानी इस प्रकार थी—दो डाक्टर थे। एक महानास्तिक और एक महाआस्तिक। दोनों के घर आस-पास थे। आस्तिक अपना ज्यादा समय पूजा पाठ में लगाया करते थे और नास्तिक मरीजों को देखने और दवा-दारू देने में। एक बार एक बूढ़ी अपने बीमार बच्चे को लेकर आस्तिक डाक्टर के पास आयी। वे बच्चे को देख रहे थे कि उनके पूजा पाठ का समय हो गया। वे बीमार बच्चे को छोड़ कर चले गये। बच्चे की हालत बिगड़ती गयी और मां उसे मरता देख कर रोने लगी। इतने में महानास्तिक डाक्टर उधर से गुजरे। उन्होंने बूढ़ी को रोते देखा तो पूछा कि क्या हुआ? बूढ़ी ने सब बताया और नास्तिक डाक्टर ने तत्काल दवा दे कर बच्चे को ठीक किया। सोम भाई ने कहानी सुना कर कहा अब आप सोच लीजिये कि आस्तिकता यहां काम आयी या नास्तिकता।

बद्रीप्रसाद स्वामी ने कहा कि पिछले दिनों दो बड़ी घटनायें हुई हैं। राजस्थान में अणुशक्ति का विस्फोट हुआ और पटना में अहिंसक शक्ति का। इन दो घटनाओं के बाद हम यहां बैठ कर सोच रहे हैं। अणु-विस्फोट पर पहले तरह-तरह की प्रतिक्रियायें आयी थीं, अब उस पर भी विचार बदल रहा है। बिहार आन्दोलन पर भी इस समय सारा देश गहरायी से सोच रहा है। बिहार का वर्तमान आन्दोलन वहां हमारे भूदान-ग्रामदान के कार्य का नतीजा है। हमने अक्सर कहा है कि हमारा ग्रामस्वराज्य जन आन्दोलन नहीं बन रहा है। बिहार में कोई कम शक्ति नहीं लगायी गयी लेकिन इसके बावजूद कुछ हुआ नहीं। तरुणों ने लोगों की समस्यायें उठा कर कार्य शुरू किया और देखते-देखते एक जन आन्दोलन खड़ा हो गया। उन्होंने जे०पी० का नेतृत्व मांगा होता तो भी यह नेतृत्व दिया जाना लाजमी था।

बिहार में आंदोलन लोकनीति आधारित है। यह सामाजिक आर्थिक आन्दोलन है जो राजनीति के लिए नहीं लोकनीति के लिए चल रहा है। हमें कोई सन्देह नहीं है कि जो लोग आज इस आन्दोलन को शंका की दृष्टि से देख रहे हैं वे ही इसकी तारीफ करेंगे। राजस्थान सर्वोदय मण्डल ने तो सर्वसम्मति से इसके समर्थन में प्रस्ताव पारित कर ही दिया है।

कपिलदेव कुमार ने सर्वेषाम् अवि-रोधेन की दृष्टि में रख कर सामूहिक चिन्तन के लिए चार मुद्दे रखे (१) अशांति शमन के लिए जे० पी० को सम्मान पदक दिया जाना चाहिए। (२) बिहार आंदोलन में बाबा द्वारा प्रतिपादित चार सूत्री कार्यक्रम जोड़ा जाना चाहिए ताकि सबका सहयोग मिल सके। (३) पवनार आश्रम से चार प्रचारक दूत भेजे जा रहे हैं उन्हें सहयोग देना चाहिए (४) उपवासदान कार्यक्रम।

हरविलास उपाध्याय ने कहा कि हम गांव-गांव जा कर ग्रामस्वराज्य के लिए लोकशक्ति की बात करते थे। और अब हमने सरकार के खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया है। इससे सरकार पर जनता की निर्भरता बढ़ेगी या घटेगी? गाधीजी का समय संघर्ष का समय था अब निर्माण का समय है। तरुणों को सरकार के खिलाफ आंदोलन चलाने के बजाय गांव-गांव जा कर लोकशक्ति जागृत करना चाहिए। कांग्रेस ने भी गरीबी हटाओ का नारा दिया था और जनता उसके साथ हो गयी थी लेकिन उससे क्या गरीबी हट गयी? हम आज भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन चला रहे हैं तो क्या उससे भ्रष्टा-चार घट जायेगा। इससे 'ईइज्म' और बढ़ेगा ही। जनता की शक्ति क्षीण होगी। महंगाई और भ्रष्टाचार के लिए क्या कोई एक व्यक्ति जिम्मेदार है? हर आदमी इसके लिए जिम्मेदार है और इसे अगर दूर करना है तो हम सब को हर एक आदमी को इसमें लगना होगा। सबका सहयोग लेना होगा।

फूलचन्द भाई ने कहा कि ग्रामस्वराज्य ही एक हल हमने बताया है। सर्वसम्मति और आत्मनिर्भरता नहीं आयगी तो काम चलेगा नहीं। अब तक तो हम लोगों को कहते थे कि हमारी क्रांति में सबके सहयोग की जरूरत है और सरकार पर निर्भर नहीं रहना है। क्या अब उन्हें सरकार हटाने को कहेंगे? और क्या इस तरह के नारे लगाने से हमारी हालत वही नहीं होगी जो इंदिराजी की हुई। ग्रामस्वराज्य को हमें छोड़ना नहीं चाहिए। विवेक पर निर्भर रह कर विचार करना चाहिए। आग्रह छोड़ना चाहिए।

वेंकटरामाराव हिन्दी में कठिनाई महसूस कर रहे थे फिर भी अन्दर से इतने भरे हुए थे कि बोलने ही गये। उन्होंने कहा 'यहां भी महाभारत के समय का अर्जुन विषाद योग नजर आ रहा है। जयप्रकाश हमें कृष्ण की तरह जगा रहे हैं। और हम सोच में पड़े हुए हैं। हमें खुल कर उनका समर्थन करना चाहिए। अगर हम यह मौका खो देंगे तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा। आन्ध्र के लोग तो बिहार आन्दोलन का समर्थन कर ही रहे हैं। पूरा दक्षिण भारत जे०पी० के साथ है।

डा० दयानिधि पटनायक विशेष आम-न्त्रित थे इसलिए उन्हें पन्द्रह मिनट दिये गये थे। उन्होंने कहा-सात दिसम्बर ७३ को मैं पवनार में जे०पी० से मिला था। मैंने कहा था आपका गाधी से मतभेद था। लेकिन श्रद्धा आदर और प्रेम कम नहीं था उनके प्रति। आपके बारे में भी मेरा ऐसा रवैया है। मैं विज्ञान छोड़ कर सर्वोदय में आया हूं लेकिन उसके गुण अपने साथ लाया हूं। सत्य का मैं शोधक हूं। हमारे आन्दोलन की क्या उपलब्धि है? करीब-करीब सब मानते हैं कि कोई खास नहीं है। हमारा आंदोलन लोक आंदोलन नहीं बना। लेकिन जब बिहार में लोगों ने एक आंदोलन शुरू किया तो सर्वोदय में जे०पी० के नेतृत्व की जरूरत क्यों पड़ी?

(शेष पृष्ठ ११ पर)

दुर्ग जिले के लोकसेवकों की रपट

गांववालों और प्रशासन के बीच चातक और वर्षा जैसे सम्बन्ध

(बाईस मार्च ७४ से म० प्र० के दुर्ग जिले के बालोद विकास खंड में सर्वोदय सघन क्षेत्र पदयात्रा चल रही है। तत्पश्चात वे लोगों ने सर्वोदय आन्दोलन में काफी उत्साह से भाग लिया है, आज यहाँ तीन प्राथमिक सर्वोदय मण्डल, डौंडीलोहारा, लाटाबोड और गुरुर कार्यरत हैं। दुर्ग जिला सर्वोदय मण्डल ने यहां आर्थिक पिछड़ेपन और आदिवासी बहुल आबादी को देखते हुए इसे अपने कार्य का सघन क्षेत्र बनाया है। लोकसेवक चन्द्रिका प्रसाद पाण्डेय, पथराम वर्मा, पचमलाल साहू, लोकनाथ वर्मा, विश्वनाथ साहू, गौतम साहू रतन लाल भर्माली तथा ईश्वरदास अरण्यांचल उपखंड के २६ गांवों की यात्रा समाप्त कर चुके हैं। इस टोली में नगेन्द्र निगम और जुड़ गये हैं, अब ये लोकसेवक मध्यांचल उपखंड के २७ गांवों में घूम रहे हैं इन गावों में ग्रामीण जनता और शासन के सम्बन्ध चातक और वर्षा जैसे हो गये हैं। लोग मुंह खोले ऊपर की ओर ताक रहे हैं, कब मदद आयेगी। इन्तजार कर रहे ऐसे लोगों की इन्तजारी को मोड़ कर उन्हें ग्रामस्वराज्य का विचार समझा रही इस टोली की रपट प्रस्तुत है। सं०)

बालोद विकास खंड पूर्व पश्चिम में जितना लम्बा है, उतना ही उत्तर दक्षिण में चौड़ा है। दक्षिण का हिस्सा पहाड़ी और जंगलों से आच्छादित है। प्रसिद्ध आदमाबाद बांध जलाशय यहीं पर है। अरण्यांचल के दक्षिण में कुसुमकसा बालोद-धमतरी सड़क दौड़ती है, पूर्व में गुरूर विकास खंड की सीमा लगी है, उत्तर में गुण्डरदेही विकास खंड तथा पश्चिम में तेम्हारिया नदी सीमा बनती है।

इस उपखंड की यात्रा के प्रारंभ में ग्रामीण अंचल की जानकारी जनता और शासकीय कर्मचारियों-दोनों के आधार से प्राप्त करने की कोशिश की थी। इसमें थोड़ी कठिनाई महसूस हुई। जनता शासकीय कर्मचारियों के बीच खुल कर सत्य बात कहने में हिचकती थी तथा कर्मचारी भी सत्य को छिपाने के लिए झूठ बोलते थे। इसलिए हम शासकीय कर्मचारियों की उपस्थिति का आग्रह कम रखने लगे। यद्यपि उनके आने पर हमें प्रसन्नता ही होती थी और यदि ग्राम में उपस्थित रहते तो हम आग्रहपूर्वक उन्हें आमंत्रित भी करते। लेकिन देखने में ज्यादा यह आता था कि या तो वे हमारे ग्राम प्रवेश के पूर्व ही भाग जाते थे या फिर आने के बाद कोई बहाना बनाकर खिसक जाते।

इस तरह अधिकांश जानकारी जनता के आधार पर ही प्राप्त होती। टोली स्पष्ट उनसे कहती है कि स्वराज्य मिला लेकिन इन २५ सालों में भी हम अपने गांव की सम्पदा के विषय में जान न सके, परिवारों के बीच स्नेहिल संबंध स्थापित कर न सके।

हर पड़ाव पर टोली सुबह ७ बजे पहुंच जाती। एक दिन पूर्व टोली के एक साथी अगले पड़ाव पर पहुंचकर पदयात्री टोली के आगमन की सूचना दे दिया करता। कोटवार भी टोली के आने की सूचना रात को हांक दे कर दे दिया करता। जनता द्वारा प्राप्त जानकारी की एक प्रति जिलाध्यक्ष, अनुविभागीय अधिकारी अध्यक्ष म० प्र० सर्वोदय मण्डल इंदौर संयोजक दुर्ग तथा एक प्रति उस ग्राम में निर्माणाधीन सर्वोदय मित्र मण्डल के लिए सुरक्षित रख देते।

रात को ग्रामसभा होती। इस परिचय सभा में टोली के सदस्य व्यक्तिगत और सामूहिक प्रार्थना, रामकोठी निर्माण, वस्त्र स्वावलंबन और नये मानव के निर्माण हेतु सर्वोदय पात्र स्थापना के विषय में बोलते। जो व्यक्ति सर्वोदय पात्र रखने के लिए स्वीकृति देते उनका नाम नोट कर लिया जाता। इस पैदल यात्रा के बाद दो लोकसेवक कम से कम एक उपखंड के प्रत्येक गांव में एक बार मास में अवश्य पहुंचेंगे। इससे सर्वोदय पात्र संग्रह का काम सुविधा से हो सकेगा।

इस क्षेत्र के विधायक हीरालाल सोनबोईर हैं। कुछ लोगों का कहना है कि विधायक महोदय केवल सड़क पर स्थित गावों में दर्शन देते हैं और बड़े व्यापारियों और बड़े किसानों के निवासों की शोभा बढ़ाते हैं। इस क्षेत्र के 'बरहीभद' ग्राम को ही इतना सौभाग्य मिला है कि वे कई बार इस ग्राम में पधार चुके हैं। बोड़की, भटिया, बारेतरा, मेगारी तथा चारवाही ग्राम में केवल एक बार आये हैं। चिचबोड, परसोदा, परोटा, आदि गावों में लोगों ने कभी उन्हें देखा नहीं है।

यहाँ जीवनयापन का मुख्य धंधा कृषि है, किंतु साल भर गर्मी, धूप और वर्षा में परिश्रम करने के बाद भी लोग बारह मास के लिए पेट भरने तथा जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पूरा अनाज नहीं जुटा सकते। साल के कुछ भागों में अनाज बाड़ी में सभी गांव में कुछ न कुछ लोगों को लेना पड़ता है। इससे कमर टूट जाती है। कभी-कभी अति आवश्यकता पर दुगनी बाड़ी भी देनी पड़ती है।

रासायनिक खाद के उपयोग ने काश्तकारों की कमर ही तोड़ दी है। जो कर्ज से हिचकते थे उन्हें भी इसके चंगुल में आना पड़ा है। स्वावलंबी खेती अब परावलंबी साबित हो रही है। पहले स्थानीय खाद की व्यवस्था की ओर थोड़ा बहुत ध्यान जाता था, पर अब रासायनिक खाद के अव्यवस्थित और संगठित प्रचार ने ग्रामीणों का ध्यान उधर से बिलकुल ही हटा दिया है। गांव में एक दो ही व्यक्ति ऐसे हैं जो कम्पोस्ट खाद की ओर ध्यान देते हैं। रासायनिक खाद यदि बैंक से, या एजेंटों से किसी भी शर्त पर नहीं मिलती तो उनकी खेती चौपट हो जाती है। गांव के खेत भी इन रासायनिक खादों के इतने आदी हो चुके हैं कि इन खादों के अनुपस्थिति में फसल देने से इन्कार करते हैं।

रासायनिक खाद की बढ़ती हुई मांग के कारण शासकीय और व्यापारिक दोनों संस्थाओं ने उसका कृत्रिम अभाव दिखाना शुरू कर दिया है। [illegible]

पाठशालाएं घुड़साल बन जाती हैं।

देकर जहा भी खाद मिले काश्तकार उसे पाने को परेशान रहता है।

कर्ज अधिकतर बैंक से उठाने का प्रयास करते हैं, पर कुछ दक्षिणा देनी ही पडती है। यहा कई हिस्सो में ग्रामीणो को आज तक अधकार में रखा गया है कि जो समिति सेवक हैं वे उनकी सहकारी सेवा समिति के कर्मचारी हैं और वेतन उन्हें ग्रामीणो के एकत्रित हिस्से के लाभाश से मिलता है। फलत. अपने ही कर्मचारी को घूस देकर कर्ज बढाने-घटाने, मिलने-मिलाने का व्यापार चलता है। कही-कही तो कर्ज की रकम लेते वक्त और कर्ज अदायगी पर भी नजराना देना पड़ता है।

बैंक रिश्वत व तरह-तरह के कानूनों के कारण ग्रामीण साहूकारो ने अपनी शर्तें थोड़ी कड़ी कर दी हैं। बिना रहन के रकम ब्याज पर देते ही नही। कही-कही साल भर का ब्याज काट कर राशि दी जाती है और कहीं-कहीं जमीन का विक्रय करा लिया जाता है। रकम पटाने पर फिर उस जमीन की विक्रय नामा की लिखापढी की जाती है।

मिट्टी तेल, शक्कर और गेहूँ को शासन ने एक समस्या ही बना दी है। गेहूँ को ग्रामीणो के लिए अनुपयोगी वस्तु, नगरवासियो के हित के लिए साबित करने की कोशिश की है और अब वह देहाती क्षेत्र मे दुर्लभ हो गया है। यदि कभी यदाकदा देहातो मे आता भी है तो ऐसा जो जानवरो के उपयोग भी न आवे। काड़े मे मनिहार के घर टोली ठहरी थी। उस समय भाग्यवश गेहूँ पचायत के पास आया। आधा किलो प्रति परिवार दिया जा रहा था। देखने से पता चला कि इसे चक्की मे पीस जाय तो चोकर के सिवाय आटा निकालना कठिन होगा। मैंने पूछा कि आप क्यो खरीद रहे हैं इसे तो उत्तर मिला कि इसलिए खरीद लिया कि गाय बछड़े को तो कम से कम यह मिल सकेगा।

शक्कर तो शहरी क्षेत्र के लिए पैसे कमाने का जरिया हो गया है। चूकि खुले बाजार के लिए शक्कर मिलती है तो राशन की भी शक्कर उसमे बेच दी जाती है। शहर मे प्रतिव्यक्ति एक किलो शक्कर मिलती है देहात वालो को १२५ ग्राम। मेहनत करने वाली, उत्पादन करने वाली ८० प्रतिशत जनता देहात मे रहती है। सचमुच मे सतुलित आहार उन्हें चाहिए जो उत्पादक श्रम करते हैं, पर उल्टी रीति-नीति नजर आती है। कुर्सी पर बैठे व्यवस्था करने वाले नगरनिवासियो की सुविधा के लिए राष्ट्रीयकरण करके समस्त कर्मचारियों और अफसरों को उनकी सेवा मे व्यस्त करा देना एक मात्र सरकार की नीति है। दाना-पानी और पौष्टिक आहार तो उन बैलों को दिया जाता है जो प्रदर्शन हेतु रखे गये हैं। खेती मे काम आने वाले पशुओ को केवल 'पुआल' पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

मिट्टी का तेल तो गोरखधधा है। ग्रामीणो को केवल मास मे प्रति परिवार एक ढिबरी तेल प्राप्त होता है। पर काला बाजार से आप जितना चाहिए ले सकते हैं।

शिक्षण संस्था एक मजाक का स्थान हो गया है। २५ साल के बाद भी वही गुलामी की शिक्षा प्रचलित है। राष्ट्रपति से लेकर प्राथमिक शाला के शिक्षक तक यह महसूस करते हैं कि इस शिक्षा ने एक राष्ट्रीय सकट खड़ा कर दिया है। लेकिन बिल्ली के गले घटी कौन बाधे अभी तक तय नही कर पाये हैं।

शिक्षक हैं शासकीय, शाला की इमारत है सार्वजनिक। शिक्षक की कोई जिम्मेदारी नही कि शाला भवन की देखरेख करे। शाला भवन घुड़साल होता जाता है। जनपद के के ओव्हरसियरो को इसकी चिन्ता कम है, चूकि बड़ी मरम्मत पर ही बड़ा कमीशन मिलता है। बहुत से भवन शासकीय अनुदान और स्थानीय श्रमदान से बने हैं। पर तकनीकी अज्ञानता ने उन इमारतो को अधिक काल तक जीवित रखने मे असमर्थ बना दिया है।

हथोद गाव वालो ने बताया कि उनकी शाला के लिए ३००० रुपये का अनुदान स्वीकृत हुआ है, पर अधिकारी उसमे से ४०० रुपये अपना हिस्सा काट कर देना चाहते हैं। ग्रामीणो ने इस तरह वह राशि उठाना ठीक नहीं समझा है। यह रीति नीति प्रत्येक स्वीकृत राशि के साथ होती है, ऐसी जानकारी कई जगह से मिली। बेमेतरा मे यात्रा करते वक्त किरीतपुर ग्राम के सरपच ने तमाम ग्रामीणो के समक्ष स्वीकार किया कि कुंआ के लिए प्राप्त ३००० रुपये मे तथा शाला भवन के निमित शासकीय अनुदान ५००० रुपये मे ५००-५०० रुपये अभी तक प्राप्त नही हुए यद्यपि उनसे हस्ताक्षर पूरी रकम पावती के लिए गये हैं। यह छूत की बीमारी सर्वत्र व्याप्त है।

नागाडबरी तथा चरोटा मे शाला है ही नहीं। लोग उत्सुकता से शासन की ओर चातक की तरह देख रहे हैं, तपस्या कर रहे

पिपरछेड़ी की आदर्श राम कोठी

में विधायक भी इन अफसरों के साथ घूम फिर कर अपनी रोटी सेंकने में पीछे नहीं रहते। दूसरी फसल खरीफ से ज्यादा निश्चितता से होती है और होनी भी अधिक है। अत. प्रारंभ में सिंचाई विभाग पानी देने की रकबा कम प्रदर्शित कर ग्रामीणों से मनमानी भेंट लेता है। प्रत्येक गांव में दूसरी फसल के लिए जितने एकड़ जमीन में पानी देने की योजना बनी थी, वह अब कम से कम दुगनी तो है ही।

इस क्षेत्र में मुर्गी पालन तथा मत्स्य पालन योजनाओं को आर्थिक दृष्टि से कितनी सफलता मिली यह कहना कठिन है। पर इतना जरूर हुआ कि लोगों का मांस और शराब की ओर झुकाव अधिक बढ़ा है और गांवों के अंतर्गत प्रस्थापित ये केन्द्र शासकीय कर्मचारियों में पड़ाव के रूप में परिवर्तित हो गये हैं। नवयुवकों को अब मांस और शराब से अलग रखने का संस्कार धीरे-धीरे कम से कम होता जा रहा है। घरों में अभी भी इन दोनों चीजों का निषेध होने के कारण उधर होटलों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

आवागमन के साधन बढ़े तो हैं, लेकिन इसके कारण भ्रष्टाचार को भी प्रोत्साहन मिला है, नेताओं के गांवों को अधिक से अधिक सुविधायें मिली हैं। करहीभेदर से निपानी सड़क निर्माण में काम आई जमीन का मुआवजा बहुतों को मिला नहीं है। खेत तो चले गये पर पैसे न मिलने के कारण वे दूसरी जमीन खरीद न सके। इस तरह दोनों तरफ मार किसानों को पड़ रही है।

निपानी के लोगों की शिकायत है कि सड़क निर्माण में उनकी जमीन के विषय में ठीक निर्णय नहीं लिया गया कई खेतों में जमीन बचाई जा सकती थी। केवल भूतपूर्व मालगुजारों, अन्य प्रतिष्ठित लोगों को अपनी जमीन बचाने की सुविधायें दी गयी। सामान्य लोगों की जमीनें कट गयी।

सोहतरा तथा उनके आसपास के ग्रामीणों का कहना है कि उनके गांव को आवागमन की सुविधा प्रदान हेतु एक बड़ी राशि स्वीकृत हुई थी। लेकिन चूंकि वे वर्तमान विधायक के विरोधी हैं, उस रकम की राशि का उपयोग झलमला, सेह ररौना, बालोद मेडकी तथा घोरामाटा ग्राम में किया जा रहा है क्योंकि ये उन विधायक के समर्थकों के गांव हैं।

इस क्षेत्र में पिपरछेड़ी ग्राम है, जहां पर रामकोठी की स्थापना पूज्य विनोबा के आगमन के वर्ष में हुई थी तब का १६ खंडी अनाज अब लगभग ६०० खंडी अनाज हो गया है। अभी यह पंजीकृत नहीं है। कुछ कर्जदार पटाने में हीला हवाला करते हैं, नहीं तो एक आदर्श कोठी इस क्षेत्र में थी।

हरित क्रान्ति और दूसरी फसल की योजना यद्यपि प्रशंसनीय है, पर आर्थिक दृष्टि से दो वर्गों की विषमता को बढ़ाने में यह अधिक योगदान दे रही है। कहीं आगे चल कर यह समस्या अशान्ति व संघर्ष का कारण न बन जाये। आर्थिक विकास की योजनाओं में सत्र तक उसकी पहुंच व उसके उचित वितरण का ध्यान रखना ही होगा।

दुर्ग जिला के विधायक दिन-प्रति-दिन के शासकीय कार्य में हस्तक्षेप करने के लिए बहुत बदनाम हैं। इससे दोनों की नैतिकता पर प्रहार होता है। शासकीय कर्मचारी तो चाहते हैं उनके लिए एक कवच तैयार हो, किन्तु इस तरह कर्मचारियों को नैतिक स्तर से गिरा कर पालने वाले नेताओं से क्या अपेक्षा की जा सकती है? ●

अम्बाला में

नागरिक समस्याओं पर नागरिक सहयोग

बाबूलाल शर्मा

अम्बाला गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र जिला अधिकारियों व दुकानदारों के सहयोग से अम्बाला छावनी क्षेत्र में वनस्पति घी व मोटे कपड़े का वितरण कर रहा है। नागरिक सभा और केन्द्र के इस मिले जुले प्रयास से आम आदमी को बहुत राहत मिली है। केन्द्र ने लोगों की समस्याओं से सीधे जुड़ने और उन्हीं को आगे रख कर उन्हें हल करने के लिए यह काम उठाया था। इन दुर्लभ वस्तुओं के सुचारु वितरण के दौरान ही केन्द्र ने इस विषय पर पिछले दिनों गोष्ठी भी की। 'वर्तमान नागरिक समस्याओं पर नागरिक सहयोग' गोष्ठी का उद्घाटन करते हुए भवानीप्रसाद मिश्र ने कहा कि समस्याएं इतनी जटिल हो गयी हैं कि अब आदमी के पास संघर्ष के अतिरिक्त कोई चारा नहीं है; यह संघर्ष भी किसान से लेकर भगवान तक की शक्तियों को करना है।

दो दिवसीय इस गोष्ठी के अन्य विषय थे आवश्यक वस्तुओं का वितरण, भ्रष्टाचार नगरपालिका की समस्यायें। पहले सत्र में आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी और अभाव की चर्चा करते हुए वेदप्रकाश ने कहा कि खुदरा दुकानदार, वितरकों व उत्पादकों की मिली भगत से कालाबाजार गरम है, सामान्य लोगों को परिस्थिति से समझौता करना पड़ रहा है। उन्होंने वितरण प्रणाली को सुधारने के सुझाव देते हुए केन्द्र द्वारा की गई पहल को सराहा। चर्चा के दौरान जाली राशन कार्डों के बारे में कहा गया कि ऐसे कार्डों की नागरिक स्तर पर जांच होनी चाहिए, वक्ताओं को शक था कि इन जाली कार्डों के अस्तित्व में जिला प्रशासन व उनसे मिले दुकानदारों के निहित स्वार्थ हैं।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

"सारे देश में सूखी लकड़ी पड़ी है"

कुमार प्रशांत

जयप्रकाश जी 'लोकतंत्र समाज' की बैठक में हिस्सा लेने और अपने स्वास्थ्य की जांच करवाने बम्बई आए थे, किन्तु वहा के *विद्यार्थियों और सर्वोदय मण्डल* ने दो सभाओं का आयोजन किया—एक विद्यार्थियों की, और दूसरी आमसभा।

वर्षा में डूबती-भीगती बम्बई में सभा करने की जगह खोजना काफी कठिन सिद्ध हुआ और यह कठिनाई तब और बढ़ गयी जब 'वे लोग' वक्ता को गीली लकड़ियों में भी आग लगाने वाला मानने लगे। छात्रों की स्वागत समिति के संयोजक निकोश देसाई ने बताया कि विश्वविद्यालय का हॉल हमें सभा के लिए क्यों नहीं मिल सकता है। इसे लेकर कोई लड़ाई हमने इसलिए नहीं शुरू की क्योंकि स्वागत में हम विछड़ना नहीं चाहते थे। उसमें फस जाते तो स्वागत नहीं हो पाता (विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर ने कहा कि हम हॉल इस मीटिंग के लिए नहीं दे सकते और कारण भी नहीं बता सकेंगे)।

विद्यार्थियों की सभा में भी नागरिक ज्यादा थे, किन्तु आयोजन करने वाले मित्रों की मेहनत प्रशंसनीय थी। बम्बई को जो सामान्यतः जानते हैं उनके लिए भी युवकों की उपस्थिति सुखद थी।

'इफ नाट यू, देन हू' नारा के ब्राह्मण समाज का वह हॉल सादगी से सजाया गया था और युवकों ने शालीनता बनाये रखने का पूरा प्रयास किया था। सुब्बारावजी के गीत तब शुरू हुए जब जयप्रकाश जी के आने में कुछ विलम्ब हो रहा था। काफी देर तक सुब्बाराव गाने में साथ देने वाले किसी मित्र की तलाश करते रहे और फिर लाचार हो कर अकेले ही गाने लगे। शान्ति सेना के 'भजनों' गीतों को उपस्थित भीड़ ने जिस तरह दुहराया उससे समां बंध गया।

जयप्रकाशजी काफी देर तक विस्तार से बोलते रहे। बिहार आन्दोलन की पूरी पृष्ठभूमि और उसके कदमों की तार्किक व्याख्या करते रहे। लम्बा व्याख्यान जिस धीरज से लोगों ने सुना उससे लगा कि लोग अब भी तर्क की भाषा सुनते और समझते हैं।

मंच के एक ओर लड़कों ने बड़े अक्षरों में लिख रखा था—"इफ नाट यू, देन हू?" मैंने एक युवक नेता से कहा "इस 'यू' की जगह यदि 'वी' करें तो आन्दोलन की शुरूआत हो सकती है। बात उसने समझी कहने लगा, "नहीं यह सवाल जे० पी० ने हमसे पूछा है।"

आमसभा चौपाटी के विद्याभवन के बड़े हाल में आम सभा रखी गयी थी, जहा हॉल से ज्यादा बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गई थी। एक छोटे गलियारे में माइक लगा दिया था, जिससे वह गलियारा भी भर गया था। जयप्रकाश जी का उस दिन का भाषण सुन कर एक व्यक्ति ने बहुत भरे मन से कहा "यह तो साक्षात ईमानदारी ही बैठ कर बोल रही थी।"

जयप्रकाश ने बड़े प्रवाह के साथ अपना भाषण दिया जिसमें वही सारे मुद्दे थे जो बिहार आन्दोलन के सन्दर्भ में वे बराबर कहते रहे हैं, "बहुत से सवाल हैं जिनके उत्तर आप मुझसे सुनना चाहते होंगे, मेरे पास नहीं है कोई जवाब। कोई दार्शनिक हो, फिलासफर हो, तो वह बैठकर सारे सवालों का जवाब निकाल कर रख दे। पर जिसे काम करना है उसके लिए असम्भव है कि सारे सवालों के वह जवाब दे सके। गांधी कहते थे, मेरे लिए एक कदम काफी है तो हम कहते थे कि इस बुड्ढे को पूरा रास्ता *दीखता नहीं है। इसे तो एक-एक कदम* हमारे सामने रख देना चाहिए। अब यही बात असम्भव देखता हूं। लक्ष्य, तरीका और साधन साफ और स्पष्ट हो बस इतने की मांग हम कर सकते हैं। हमारे लिए एक कदम से क्या परिस्थिति बनेगी और उस वक्त हमें क्या करना पड़ेगा कोई कह नहीं सकता है।"

"काफी देर पहले एक पत्रकार ने कई तरह के सवाल पूछे, बाद में लिखा कि जयप्रकाश भी अन्धेरे में ही अटकल लगा रहे हैं। मैंने उसे लिखा कि आज की विषम परिस्थिति में सारे सवालों का जिसके पास जवाब हो वह या तो सर्वशक्तिमान भगवान होगा या निपट मूर्ख। (माइट ओर ए माइटी गॉड ऑर ए डैमफूल)। मैं तो करता [illegible] और उसमें से सीखता हूं यही स्वभाव रहा है मेरा।"

लोकतन्त्र की वर्तमान परिस्थिति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 'पूरे इस माहौल में असहमति व्यक्त करने का साहस कम से कम होता जा रहा है ……आज पूरे देश की जो स्थिति है उसमें जनता के हित की कोई सबसे बड़ी आईडियालोजी है तो वह है ईमानदारी। बाकी किसी का कोई अर्थ नहीं है। सारे देश में जैसे सूखी लकड़ी पड़ी हुई है, कहीं से एक चिनगारी आए और आग भभक उठेगी। ऐसी परिस्थिति में मैं लोकतन्त्र को प्रखर, प्रबल बनाना चाहता हूं ताकि इस खतरे से जनता स्वयं को बचा सके। चूंकि संविधान में नहीं लिखा है इसलिए जनता को 'रिकाल' का, अपने अयोग्य प्रतिनिधि को वापस बुलाने का अधिकार नहीं है। इसकी माग करना, आन्दोलन करना 'अन-डेमोक्रेटिक' हो गया? और कई देशों के संविधान में लिखा हुआ है 'रिकाल का अधिकार' वहाँ क्या होगा? यह तो जनता का जन्मसिद्ध अधिकार है। सिर्फ लिखा नहीं है इसलिए जनता चुप रहे?

"और अन्त में, गांधी की बात करते हैं वे लोग। गांधी से कितना घबराते थे अंत में। दिल्ली पहुंचते थे गांधी तो कहते थे लोग, 'फिर आ गया बुड्ढा।' प्रार्थना सभा में बोलते थे तो इन लोगों को दुख होता था, मैं कहता हूं कि बापू होते आज तो जयप्रकाश नारायण की क्या बात, असम्भव कर देते इन लोगों का रहना। क्या करते मैं कह नहीं सकता [illegible]?

मैं इस आन्दोलन को सम्पूर्ण क्रान्ति की ओर मोड़ने की कोशिश कर रहा हूं। सफल हो पाऊंगा या नहीं, कह नहीं सकता हूं। इस आन्दोलन के द्वारा बिहार में कोई नैतिक

दल, सरकार और राष्ट्र पर्यायवाची नहीं

सिद्धराज ढड्ढा

शासक कांग्रेस के अध्यक्ष डा० शंकरदयाल शर्मा सोच-समझ कर बोलने या शब्दों का उनके सही अर्थ में इस्तेमाल करने के लिए विख्यात नहीं हैं, इसलिए उनके कथन को कितनी गम्भीरता से लेना, यह सब समझते हैं। फिर भी वे जिस पद पर हैं उसके कारण उनकी सब बातों को दरगुजर करना संभव नहीं है।

दिल्ली में अखिल भारतीय कांग्रेस (शासक पक्ष) कमिटी के अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि जो लोग वस्तुस्थिति का पता लगाये बिना भ्रष्टाचार के आरोपों का प्रचार करके देश में जहरीला वातावरण पैदा करते हैं वे 'देशद्रोह' कर रहे हैं। किसी भी नागरिक के खिलाफ देशद्रोह का आरोप लगाना कितनी गम्भीर बात है इसका अगर डा० शर्मा को भान नहीं है तो वे एक जिम्मेदार राजनैतिक दल के अध्यक्ष पद पर बने रहने के योग्य हैं—यह शंका का विषय है। डा० शंकरदयाल ही नहीं, उनकी पार्टी के छोटे से लगा कर स्वयं प्रधानमन्त्री जैसे जिम्मेदार लोग भी जिस तरह उनके शासन की या पार्टी की नीतियों से सहमत नहीं होने वाले लोगों को 'जनतन्त्र विरोधी' 'फासिस्ट' 'प्रतिक्रियावादी', 'पूंजीपतियों के समर्थक' तथा और न जाने किन-किन अलंकारों से विभूषित करते रहे हैं वह जाहिर करता है कि या तो इन लोगों के लिए शब्दों का कोई अर्थ नहीं रह गया है या ये लोग प्रजातन्त्र, प्रगतिशीलता आदि का कांग्रेस (शासक पक्ष) और सरकार का पर्यायवाची मानते हैं। और अब देशद्रोह जैसे गम्भीर विशेषण का उपयोग करके डा० शर्मा अपनी पार्टी और सरकार को राष्ट्र का पर्यायवाची भी मानने लगे हैं।

आज भ्रष्टाचार इतना व्यापक हो गया है कि विनोबाजी के शब्दों में वह शिष्टाचार ही बन गया है। जो भ्रष्टाचार नहीं कर रहे हैं वे विशिष्ट आचरण कर रहे हैं ऐसा मानना चाहिए और इस व्यापक भ्रष्टाचार की जड़ देश के राजनैतिक नेताओं के आचरण में है। क्योंकि जब नेता भ्रष्ट होता है तो दूसरों को प्रोत्साहन मिलता है और उन्हें रोकना भी सम्भव नहीं होता। अक्सर यह दलील दी जाती है कि भ्रष्टाचार कोई नई चीज नहीं है, वह समाज में सदा से रहा है। अच्छाई और बुराई समाज में हमेशा रही है और रहने वाली है यह कौन नहीं जानता, पर जब कोई बुराई अपनी सीमा को पार कर जाती है तब उसके खिलाफ आवाज उठाना और उसका प्रतिकार करना समाज के हित में आवश्यक हो जाता है। आज भ्रष्टाचार केवल नैतिक अपराध नहीं रहा, बल्कि वह एक सामाजिक अपराध बन गया है, क्योंकि देश-विदेश से कर्ज लिया हुआ जो करोड़ों रुपया देश के विकास पर खर्च होता वह अधिकतर भ्रष्ट नेताओं, अफसरों और ठेकेदारों की जेब में चला गया। इतना ही नहीं भ्रष्टाचार के कारण गरीब लोगों की रोटी भी सीधे उनके मुंह तक नहीं पहुंचती। ऐसी हालत में 'देशद्रोह' का अपराध भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाने वालों पर नहीं बल्कि भ्रष्टाचार करने वालों पर और उसकी ओर आंख मूंदने वालों पर लगाना ज्यादा सही होगा। लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष शायद यह समझते हैं कि उनकी पार्टी या उनकी पार्टी की सरकारें जो आज के व्यापक भ्रष्टाचार के लिए या कम से कम उसे न रोकने के लिए जिम्मेदार हैं, वही 'देश' है, इसलिए भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाना 'देशद्रोह' है। डा० शर्मा को समझना चाहिए वे अभी तक एक जनतन्त्री देश में रह रहे हैं जहां शासक या शासक पार्टी ही 'देश' नहीं माने जा सकते। पिछले दो वर्ष से अमेरिका में राष्ट्रपति निक्सन और उनके सहयोगियों के भ्रष्टाचार के खिलाफ जो खुला अभियान चल रहा है उससे देश-विदेश में अमेरिकन समाज की प्रतिष्ठा घटी है या बढ़ी है? यह डा० शर्मा सोचें। निक्सन की पार्टी वालों ने भी उसे देशद्रोह कहने की हिम्मत नहीं की है।

उत्तर प्रदेश की विधान सभा में इसी सप्ताह एक आश्चर्यजनक और गंभीर घटना सामने आई। अनाज की 'लेवी' वसूल करने के सिलसिले में उस प्रदेश के सरकारी अधिकारी गांव-गांव में किसानों से जो प्रश्नावली भरा रहे हैं उसमें खेती का क्षेत्रफल, कुल उपज आदि की जानकारी चाहने के साथ ही एक जानकारी यह भी चाही जा रही है कि किसान किस राजनैतिक पार्टी से सम्बन्धित है। हालांकि प्रतिपक्ष की सतर्कता और कड़े विरोध के कारण उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री बहुगुणा को यह आश्वासन देना पड़ा कि सरकार उस प्रश्नावली को वापस ले लेगी। पर इस तरह का प्रश्न उसमें दाखिल क्यों किया गया यह अपने आप में इस बात का स्पष्ट सबूत है कि शासक दल जब तब जनतन्त्र की जो दुहाई देता है वह केवल अपने मतलब से। वास्तव में तो उसका उद्देश्य जिस तरह से भी हो अपनी पार्टी का वर्चस्व कायम रखने का है। जनतन्त्र की पहली और बुनियादी शर्त यह है कि हर नागरिक को बिना किसी दबाव, डर या लालच के अपना राजनैतिक विचार रखने की और किसी भी पार्टी में शामिल होने की आजादी होनी चाहिए। लेवी में अनाज की वसूली और किसान की राजनैतिक पसन्दगी का परस्पर क्या सम्बन्ध है, सिवाय इसके कि शासक दल लेवी की वसूली में अपने समर्थकों को सहूलियत और विपक्षियों को परेशान करना चाहता है? आज की व्यवस्था कायम रहने में जिनका निहित स्वार्थ है उनकी बात छोड़ दें, पर आम जनता को इस प्रकार की घटनाओं से यह समझ में आ जाना चाहिए कि जयप्रकाशजी ने जो आवाज उठाई है वह जनतन्त्र के खिलाफ नहीं बल्कि जनतन्त्र के नाम पर और उसकी नकाब के पीछे जो तानाशाही प्रवृत्ति मुल्क में पनपती जा रही है उसके खिलाफ है। जनतन्त्र को बचाना हो और जनता की सच्ची आजादी कायम करना हो तो इस प्रवृत्ति का पर्दाफाश करना ही होगा और उसका मुकाबला भी करना होगा।

(शेष पृष्ठ १६ पर)

उत्तर प्रदेश के कोल मजूर

कृष्ण स्वरूप 'आनन्दो'

'नाहीं कहित तौ हक मारि जात है, औ कहे पै पीठ।'

एक कोल मजूर ने टोंस और बेलन नदियों के संगम के निकट स्थित उत्तरप्रदेश के सीमान्त गावों छापर, कौंदी, मोजरा, गरगटा व ऊचमाव में भूस्वामियों द्वारा कोल मजूरों पर ढाये जा रहे दर्दनाक जोर जुल्मों को रो-रोकर बताया।

सर्वोदय विचार-प्रचार समिति, इलाहाबाद के मन्त्री प्रो० बनवारीलाल शर्मा की लगातार कोशिश से इन पांच गावों के आठों पहर सूली पर रहने वाले कोल मजूरों ने *'जन जागरण मण्डल' की स्थापना की है।* मण्डल की रोज शाम को बैठक होती है, जिसमें प्रायः सभी कोल मजदूर उपस्थित रहा करते हैं। मण्डल के मन्त्री हैं उत्साही व प्रबुद्ध कृषक व भूस्वामी पं० मुन्द्रिका प्रसाद और अध्यक्ष हैं कोल मजूर सुखलाल।

इन आदिवासी मजदूरों को दिन भर भूस्वामियों के खेतखलिहानों में जीतोड़ परिश्रम करने के बावजूद पौन पाव अनाज 'बनी' (मजदूरी) के रूप में मिलता है। इन आदिवासियों की जोरदार शिकायत है कि पूरा पाव पाव अनाज भी उन्हें नहीं मिलता है। कारण, उन्हें मजदूरी लोहे के बाटों से नहीं पत्थर के घिसे पिटे पुराने बाटों से दी जाती है। मजदूरी में इस प्रकार मिला अनाज तौल में चार पाव ही ठहरता है। नियमानुसार डेढ़ बीघे खेत उन्हें हलवाही में खाने कमाने के लिए 'माफी' मिलना चाहिए। लेकिन, जो खेत उन्हें मिलते हैं, वे मुश्किल से बीघे सवा बीघे ही ठहरते हैं। कर्ज में कोल ने यदि किसी भूस्वामी से दस रुपये कभी लिये थे तो सूद सवाई होते-होते वह दस सौ *हो गया है। इस प्रकार, पीढ़ी दर पीढ़ी* सीमाहीन शोषण व गुलामी में वे जिन्दा लाशें ढोने चले आ रहे हैं। सच कहा जाय तो गरीबी व लाचारी इन कोलों की जीवन पद्धति बन गयी है।

२१ जुलाई को प्रो० बनवारी लाल शर्मा व प्रो० उदय प्रकाश अरोड़ा की उपस्थिति में 'जन जागरण मण्डल' की कार्यसमिति की बैठक हुई थी। कार्यसमिति में छापर, कौंदी, मोजरा, गरगटा और ऊचमाव के तीन तीन कोल मजूर हैं। उक्त बैठक में कार्यसमिति ने यह निर्णय लिया है कि कोल मजूरों की 'बनी' आठ पाव होनी चाहिए और उन्हें हलवाही में डेढ़ बीघे खेत की 'माफी' मिलनी चाहिए। बाद में कोल मजूर मेवालाल के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल जिसमें हर गांव से एक-एक मजूर के अलावा बनवारी लाल शर्मा व प्रो० उदयप्रकाश अरोड़ा भी थे, स्थानीय मुख्य मुख्य भूस्वामियों से मिला, उन्हें अपनी कठिनाइयों व मांगों से अवगत कराया तथा उन्हें इन पर सहृदयतापूर्वक विचार करने की जरूरत पर विशेष बल देने को कहा। मजूर मालिकों की इस पहली मुलाकात के बाद अब चार अगस्त को कोलमजूरों व भूस्वामियों की मिली जुली एक बड़ी सभा होगी। यदि भूस्वामियों ने कोल मजूरों की इन मांगों को नहीं माना तो ये कोल-*मजूर उनके खेत खलिहानों में काम करने से* साफ इन्कार करेंगे तथा अपनी मांगों के लिए शान्तिपूर्ण ढंग से सीधी कार्यवाही व जोरदार सत्याग्रह करेंगे।

जब ये मांगे पूरी हो जायेंगी, तब 'जन जागरण मण्डल' 'कर्ज मुक्ति अभियान' चलायेगा, जिसके अन्तर्गत ये कोल मजूर बाप दादों के कर्जों को भरने अथवा पूर्वजों की ऋणग्रस्तता के कुफल—जीवनपर्यन्त गुलामी करने से मुक्ति पाने के लिये भूस्वामियों को विवश करेंगे। कोल मजूरों ने चार संकल्प किये हैं—सन्तानों को पढ़ाना, उन पर कर्ज का बोझ न छोड़कर मरना, ईमानदारी की रोटी व इज्जत की जिन्दगी।

कोल मजूरों ने यह भी निश्चय किया है कि वे बांस की टोकरियां व झौवा बनाने तथा बाध बुनने के लघु कुटीरोद्योग की शुरुआत शीघ्र ही करेंगे। उनका यह भी दृढ़ संकल्प *है कि सभी लोग भूस्वामियों का काम पूरी* मुस्तैदी व ईमानदारी से करेंगे। यदि कोई कामचोरी करता हुआ पाया जायेगा, तो उसका सामाजिक बहिष्कार किया जायेगा। ये कोल मजूर यह मानने लगे हैं कि उनकी समस्यायें सिर्फ आर्थिक कार्यक्रम से नहीं हल होंगी। आर्थिक कार्यक्रम जरूरी है, लेकिन काफी नहीं। प्रो० बनवारी लाल शर्मा ने उन्हें अहसास कराया है कि उनका कार्यक्रम समग्र होना चाहिए, जो एक साथ पेट भर सके, सम्बन्ध सुधार सके, उनकी आखें अतीत से हटाकर भविष्य की ओर ला सके, दिमाग *बदल सके और जीवन का सम्पूर्ण सन्दर्भ* बदल सके।

सर्वोदय विचार-प्रचार समिति द्वारा संगठित यह जन जागरण मंडल सामान्य मजदूर संगठनों से बिलकुल अलग है। इसमें जिनके अत्याचारों और शोषण का मुकाबला मजूरों को करना है, वे लोग स्वयं मजूरों की मदद में आगे आ रहे हैं। संगठन के मंत्री स्वयं एक भूस्वामी हैं। संगठित होने वाले मजूरों में अपने अधिकारों से पहले कर्त्तव्य भावना भी जाग रही है। ●

वाणी : जोड़ने वाली या तोड़ने वाली

सरला बहन

आजकल सारी दुनिया की मुख्य समस्या यह है कि दुनिया के लोग कैसे जुड़ें ? क्योंकि अब विश्व के सामने सर्वनाश या सर्वोदय चुनने की चुनौती स्पष्ट से दिखाई दे रही है। सम्बंध सुधरेंगे तब मानव आगे बढ़ सकेगा, बिगड़ेंगे तो सर्वनाश निश्चित है।

लेकिन एक दूसरे की गहराई को हम कैसे समझ सकें ? कभी-कभी लगता है कि एक ही विचार के प्रति समर्पित लोग भी एक दूसरे की वाणी की गहराई को नहीं समझते हैं। एक प्रकार से सबको में खाई पैदा होती है।

अपनी ही बुनियाद से विनोबाजी सूत्र रूप में अपनी बातों को प्रकट करते हैं। बगैर उस गहराई को समझते हुए, हम उनकी बातों को सही अर्थ में नहीं समझ पाते। सीधी कार्यवाही का सवाल जब कभी उठता है, बाबा कहते हैं कि रचनात्मक काम ही करो। लोग उत्तेजित हो उठते हैं कि तात्कालिक समस्याओं को उठाना चाहिए। लेकिन रचनात्मक कार्यक्रम को उठाने का अर्थ क्या है ? उसी के द्वारा हमारा जन सम्पर्क इतना गहरा हो जाये

(शेष अगले पेज पर)

(पिछले पेज से जारी)

कि फूटने वाली जनशक्ति मे हम शामिल होकर उसे सही मोड़ दे सकें। तब, अंग्रेजी कहावत के अनुसार हम कह सकेंगे कि 'कुत्ता अपनी पूंछ हिला रहा है'। नहीं तो होता ऐसा है कि स्फुरित होती हुए जन शक्ति मे हम उसी प्रकार साथ नहीं दे पाते, बाद मे बाहर से आकर उसे मोड देने की कोशिश करते है तब 'पूंछ कुत्ते को हिलाने लगती है'। ऐसी परिस्थिति मे साधनो और लक्ष्य मे कुछ समझौता करना पड़ता है। इसलिए जब बाबा 'रचनात्मक कार्यक्रम करो' कहते हैं तो उसका अर्थ होता है कि ज्यादा तीव्रता से और ज्यादा सौम्यता से सीधी कार्यवाई हो सकेगी। उसका यह अर्थ नही होता कि सीधी कार्यवाई करना ही नही है। उसकी सही बुनियाद डालकर उसे ज्यादा सफल बनाना है, जिस प्रकार दूध में जामन डालने पर जामन लुप्त हो जाता है लेकिन सारे दूध का दही बनना है, इसी प्रकार समाज मे लुप्त होकर समाज की दिशा को मोड़ना है।

भारत में हम सब अलग-अलग मातृ भाषा वाले मिलकर काम करते हैं। एक दूसरे के विचारो को गहराई से समझने की आवश्यकता होती है। लेकिन एक भाषा से दूसरी भाषा मे अनुवाद करने मे अकसर शब्दो का सूक्ष्म अर्थ प्रकट नही हो पाता है। विशेष करके जब उसके लिए हमे एक विलायती भाषा का उपयोग करना पड़ता है। यह हिन्दी को अपनी सम्पर्क भाषा बनाने का एक और मर्म है, कि कम से कम हम एक दूसरे के शब्दो का सूक्ष्म विचार ज्यादा अच्छी तरह समझ सकें।

एक बार एक श्रद्धालु सज्जन मुझ से कहने लगे, 'जेन्टल जेन्टलर, जेन्टलेस्ट'; 'सोफ्ट, सॉफ्टर, सोफ्टेस्ट' यह कैसे हो सकता है? तब तो सत्याग्रह मे कोई तथ्य नही रहेगा। कोई शक्ति नही रहेगी। मैं चकित हुई कि बाबा ने ऐसा कब कहा? फिर ख्याल आया, यह "सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतम का अनुवाद करने मे लापरवाही हुई है, जिससे उस शब्द के गर्भ मे जो ध्वनि है, यह नष्ट हुई है। एक भाषा के शब्द उस देश की सस्कृति से, परम्पराओं से, तत्वज्ञान से निकलते हैं। इसलिए एक दूसरी भाषा मे अनुवाद करने पर उसका पूरा अर्थ समझ मे नही आता है। सौम्य सत्याग्रह अवश्य 'जेन्टल' होगा ही, 'सोफ्ट' होगा ही लेकिन उसके साथ-साथ सत्याग्रह करने वाले की आत्मा मे एक ऐसा *प्रेम और शक्ति स्फुरित होगी जो सामने वाले* के हृदय मे प्रवेश करके तीव्र सत्याग्रह के बनिस्बत, ज्यादा गहरा प्रभाव डालेगी।

इसी प्रकार, एक दूसरे के शब्दो का सूक्ष्म अर्थ समझने मे, एक और तथ्य की आवश्यक होती है, वह है—विश्वास। बाबा कहते है, दुनिया को जोड़ने के लिए वेदान्त विज्ञान और विश्वास की आवश्यकता है। इधर पश्चिम के लोग, यदि गहराई से पूरा अर्थ न समझें तो वे भी उत्तेजित हो सकते हैं। लेकिन इस प्रयोग मे 'वेदान्त' शब्द का अर्थ अध्यात्म है, न कि हिन्दू धर्म का शास्त्र। बाबा पर हमारा विश्वास हो, तब हम गहराई मे जाकर उनका अर्थ समझेंगे। विश्वास किस पर? एक दूसरे पर, एक दूसरे की सच्चाई और प्रेरणा पर, विचार पर, उसकी शक्ति पर, परमात्मा के शुद्ध हेतुओं पर, दुनिया हितकारी है, प्रकृति शुभ है, इस पर।

मुझे लगता है कि सर्वोदय परिवार मे यदि इस प्रकार की दृष्टि हो, तो बहुत सारी व्यक्तिगत और सार्वजनिक गलतफहमिया दूर हो सकेंगी और हमे सर्व सम्मति से एक बड़े समाज की ओर बढने मे सफलता मिल सकेगी।

इधर, मैने बाबा का उदाहरण दे कर लिखा है, क्योंकि ये सब के सामने स्पष्ट है। यह बाबा की सफाई करने के दुराग्रह से नही। लेकिन सिर्फ एक स्पष्ट उदाहरण देने की दृष्टि से। हम साधारण कार्यकर्ताओ मे रोज कुछ ऐसी गलतफहमियाँ उठती रहती होंगी जो कुछ सावधानी और गहराई से सोचने पर फौरन दूर हो सकती हैं।

अखिल भारतीय गोसंवर्धन गोष्ठी

एक अखिल भारतीय गोसवर्धन सगोष्ठी विशेषकर गाय के सदर्भ मे, १३ और १४ जुलाई को वर्धा मे हुई। अखिल भारत कृषि-गोसेवा सघ की ओर से आयोजित इस गोष्ठी का उद्घाटन पवनार आश्रम मे आचार्य विनोबा भावे ने किया। भारत सरकार कई राज्य सरकारो और समाज सेवा सस्थाओ के लगभग ६० प्रतिनिधियो ने भाग लिया। महाराष्ट्र और राजस्थान के सबधित मंत्री भी शरीक हुए।

नस्ल-सकरण, (क्रास ब्रीडिंग) नीति द्वि-प्रयोजन नस्लो का विकास, गाय तथा भैंस दूध सबधी मूल्य-नीति, तथा पशु-खाद्य व चारे की समस्याए मुख्य विचारणीय विषय थे। दो दिन की विस्तृत चर्चा के बाद नीचे लिखी सिफारिशें सर्वानुमति से की गयी

भारत के आर्थिक सयोजन की रीढ कृषि है, और कृषि-विकास की रीढ की हड्डी गोसवर्धन है। इसलिए भारत की राष्ट्रीय योजनाओ मे गाय को प्रमुख स्थान देना आवश्यक है।

भारत की प्रजनन-नीति का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार की सर्वांगी (ड्यूयल परपज) नस्ल का विकास होना चाहिए जिसके द्वारा दूध का विपुल मात्रा मे उत्पादन हो सके और हमारी कृषि के लिए अच्छे बैल भी तैयार हो। साथ ही साथ, हमे छोटे किसानो की आवश्यकताओ पर निरन्तर ध्यान देना चाहिए जो भारतीय ग्रामीण समाज मे महत्वपूर्ण स्थान रखते है।

इस प्रकार की प्रजनन-नीति के अन्तर्गत *विदेशी नस्लो से सकरण (क्रास ब्रीडिंग)* के कार्यक्रम, ऐसे इलाको मे ही सचालित करने चाहिए जहा दुधारू गायों के पालन-पोषण और देखरेख की समुचित व्यवस्था हो सके। यह भी जरूरी है कि नस्ल-सकरण की योजनाए नियन्त्रित हो और निश्चित मर्यादाओ के अन्तर्गत चलाई जाय।

यह भी जरूरी है कि दूध की कीमत *घृताश (फैट) और फैट के अलावा अन्य तत्वो* (एस-एन-एफ) के आधार पर निर्धारित करनी चाहिए। गाय के दूध के विशेष गुणो का अध्ययन और अन्वेषण करना उपयोगी होगा ताकि उसी प्रकार जनमत को शिक्षित किया जा सके।

गोसवर्धन के लिए देश मे दाना और चारे की पर्याप्त व्यवस्था होना नितान्त आवश्यक है। इस सदर्भ मे, पशु-खाद्य का निर्यात तुरन्त बन्द होना चाहिए। इसके अलावा मिश्रित-खेती की व्यापक ढग से योजना बनाई जाय। पाचवी पचवर्षीय योजना मे काफी सख्या मे चारे के बीजो के फार्म, चारो के बैंक और चारा-सरक्षण के कार्यक्रमों को प्राथमिकता देना जरूरी है।

संघ अग्नि परीक्षा में खरा उतरा

(पृष्ठ ४ से जारी)

सर्वोदय को यह ताकत कहां से मिली? दलमुक्तता सर्वोदय आंदोलन की विशेषता है। सब मानते हैं कि सर्वोदय वाले किसी एक पक्ष के नहीं हैं। जनता की श्रद्धा हमें मिली है वह सर्वोदय के कारण है। सरकार के जितने भी प्रकार हैं उनकी कमियां सब जानते ही हैं। कौन सा दल ऐसा है जिसमें ये कमियां नहीं हैं। लेकिन इस मोर्चेबंदी को हमने तानाशाही से ज्यादा गन्दा है। महगाई, काला धन, चुनाव में भ्रष्टाचार रिश्वत, परिवार, भ्रष्टाचार की ओर बहुतों ने ध्यान दिलाया। लेकिन सोचना होगा कि विषमता भ्रष्टाचार की जननी है। और यह विषमता आर्थिक सामाजिक कई प्रकार की है, उसे हटाना है। विनोबा ने उसे हटाने का रास्ता भी दिया है—गांव गांव जाओ, जनमानस बनाओ। हम भूदान से जीवनदान तक आये, यही हमारी बुनियाद है। आज जब हम कहते हैं कि भ्रष्टाचार हटाओ तो लाखों लोग हमारे साथ आते हैं, लेकिन यह ऊपरी काम होगा, हमारी बुनियाद वह है नहीं। यह कुछ समय के लिये तो ठीक है लेकिन स्थायी रूप से इससे कुछ होगा नहीं, गुजरात है ही हमारे सामने।

युवाशक्ति-का मैं स्वागत करता हूं लेकिन इस जोश को होश कैसे दें हम? विधान सभा का भंग का नारा दिया, मैं जिम्मेदारी से कहता हूं कि वह नारा उन्हें देना नहीं था। जो विधायक इस्तीफा नहीं देता, जाने अनजाने हम उस पर दबाव डालते हैं, घेराव की बात आई तो इससे हिंसा होगी ही। मानलें यह आज सर्वोदय का न होकर किसी पार्टी का नारा होता तो क्या दल के स्वार्थ की बात नहीं आती? केवल सर्वोदय के स्पर्श से वह दलगत राजनीति से कैसे छूट गया? हम कहां जन संघर्ष समितियां बना रहे हैं, सम्भव है कि वह ग्राम सभा तक बने लेकिन सोचें कि संघर्ष से शान्ति समिति कैसे बनेगी? आज हम राज-नीति में आए हैं। विरोध में हैं। हमारा साथ कुछ राजनीतिक दल दे रहे हैं, कुछ हमारे विरुद्ध काम कर रहे हैं। भले ही उनमें से कुछ दलों का विश्वास हिंसा में हो, उनके साथ समझौता करना पड़ा है। तो हम बिना दल के भी दलगत राजनीति कर रहे हैं। सर्वोदय की बुनियाद राजनीति नहीं आध्यात्मिकता है गान्धी विचार भी उसी पर खड़ा है। हम उस बुनियाद को छोड़ नहीं सकते। वही शक्ति है हमारी। आज दलगत राज-नीति में जा कर हम जनसंघ आदि को नकारते देकर उन्हें बदल भी नहीं सकते। इसलिए हम अपनी बुनियाद पर आंच न आने दें। त्याग से सेवा, सेवा से प्रेम, प्रेम से शान्ति, शान्ति से अहिंसा, अहिंसा से सत्य यही रास्ता है हमारा।

रामसागर मिश्र ने कहा कि जे० पी० का आन्दोलन ग्राम स्वराज्य और लोकनीति का ही है।

रामचन्द्र राही ने महसूस किया कि अधिवेशन होता है लेकिन हम लोगों के बीच खुला और हार्दिक सम्वाद नहीं होता। सब अपनी ही कहते चले जाते हैं दूसरों की नहीं सुनते। हमें दूसरों की बात सुननी चाहिए। फिर उन्होंने सवाल किया—"अब तक हमारे आन्दोलन से क्या यह (बिहार का) आन्दोलन नया है?" इसे समझने के लिए हमें अब तक के और इस आन्दोलन के मुद्दे स्पष्ट करना चाहिए। हमारा भी संकट विश्वास का है। हम अक्सर व्यक्तियों को केन्द्र में रख कर विचार करते हैं। लेकिन मैं आपके सामने जे० पी०—बाबा केन्द्रित विचार नहीं रख रहा हूं। हम लोगों में विरोध मतभिन्नता के कारण ही है। मत-भिन्नता है तो क्या हम वोटों का उपयोग करेंगे? या सीधे भिड़ेंगे? या पर्चे बाटेंगे? यह प्रक्रिया राजनीति की है, अहिंसक नहीं है।

वर्तमान प्रजातन्त्र औद्योगिक क्रांति की उपज है। अभी यह विकसित हो रहा है। लेकिन हम देखते हैं कि इसका ढांचा लोक आकांक्षा के विरुद्ध होता जा रहा है। व्यवस्था वह चाहे जैसी भी हो उसका ढांचा संवेदनशील नहीं होता। ढांचे को तोड़ना ही पड़ेगा। व्यवस्था के खिलाफ दुनिया में आज जो विद्रोह हो रहा है उससे भारत में भिन्न नहीं है। लेकिन भारत में जो युवा विद्रोह हो रहा है, उसकी एक विशे-षता है, उसके पास एक विकल्प है। यह स्वराज्य आन्दोलन की देन है। यूरोप की तरह हिन्दुस्तान का समाज अभी टूटा नहीं है। यहां "फेस टू फेस" सोसायटी मौजूद है इसलिए समाज खड़ा हुआ है। लेकिन सत्ता के ढांचे के अन्तर्विरोध अपने आखिरी बिन्दु तक पहुंच गये हैं। यह अपने अन्तर्विरोधों से टूटने ही वाला है, हम चाहे या न चाहें।

गांधीजी ने कहा था कि सच्ची लोक-शाही की स्थापना के लिए नागरिक शक्ति और सैनिक शक्ति का संघर्ष अनिवार्य है। सैनिक शक्ति आधारित राज्य से संघर्ष आजादी के बाद पहले ही चलता तो आज जो हालत है यह नहीं होती। हम लोक शिक्षण पर बहुत जोर देते हैं लेकिन लोक शिक्षण जन निरपेक्ष नहीं हो सकता।

बिहार आंदोलन ग्रामस्वराज्य आंदोलन का ही सहज परिणाम है। हमारा शिक्षण लोकशक्ति से होगा और राजनीतिक दलों का शिक्षण हमसे होगा। बिहार आंदोलन इस सत्य का उदाहरण है कि सरकारें जो निर्णय जनता से निरपेक्ष हो कर करती हैं उनमें अब जनता ने दखल देना शुरू कर दिया है। और जन आंदोलन अब पूरे देश में अपने आप छिड़ेगा। सवाल यह है कि जनता की मनो-भूमिका से आंदोलन शुरू होगा या हमारी सैद्धान्तिक मनोभूमिका से? जनआकांक्षा के विरुद्ध कोई जन आन्दोलन नहीं चल सकता। हमारी साधना चल सकती है।

कृष्णचन्द्र सहाय ने कहा—सर्वसम्मति का रहस्य, हमने सुना है कि बिहार आंदोलन के समर्थन के लिए रखा गया है। जो लोग सर्वसम्मति होने की राह में रोड़े अटकायेंगे जो प्रस्ताव का विरोध करेंगे, इतिहास उन्हें माफ नहीं करेगा। बिहार के आंदोलन को लेकर पर्चेबाजी की गयी। हम लोग जो मानते हैं कि यह आंदोलन सही है उन्होंने तो इसके जवाब में कोई पर्चेबाजी नहीं की। अब कसौटी का समय आ गया है। कुछ ही लोग ऐसे हैं जो चाहें और समझदारी से काम लें तो यहां का वातावरण बदल सकता है। सर्वसम्मति हो सकती है।

(शेष पेज १५ पर)

→

मनमोहन चौधरी ने कहा—"बिहार आंदोलन से कुछ बुनियादी मुद्दे सामने आये हैं। आंदोलन का बुनियादी काम और हाइवर शन ? राजनीति या लोकनीति ? अहिंसक आंदोलन की प्रक्रिया क्या हो ? सरकार से हमारा सम्बन्ध कैसा रहे ? आदि सवाल यहां उठाये गये हैं।

मैं मानता हूं कि क्रांति के अलावा काम नहीं चलेगा। अभी लोग विषय बने हुए हैं, वे लक्ष्य होने चाहिए। ग्रामस्वराज्य के लक्ष्य को मैं मानता हूं। जयप्रकाशजी का आंदोलन क्रांति का सहायक हो सकता है। मानस परिवर्तन के लिए हमने लोकशिक्षण किया। भूदान आंदोलन शुरू हुआ। भूमि इस देश के तीन चौथाई लोगों की समस्या थी। उसे हमने भूदान के जरिये उठाया। फिर ग्रामदान आया। महंगाई, भ्रष्टाचार की समस्या आयी तो अब उसके निवारण में भी हम लगे हैं। ग्रामदान असफल हुआ ऐसा मैं नहीं मानता। ग्रामदान के अलावा भी जो छोर मिलें उन्हें लेना चाहिए।

हमारी प्रक्रिया क्या हो ? सत्याग्रह की या सत्याग्रह की ? निगेटिव सत्याग्रह का उद्देश्य भी गांधी जी के जमाने में था। विश्वास बहुत आवश्यक चीज है उसके बिना सत्याग्रह हो नहीं सकता। हमें सरकार में किसी से अविश्वास नहीं है। लेकिन जब नीतियों की बात आती है तो व्यक्ति और नीति में फर्क करना चाहिए। विनोबा जिसे निगेटिव सत्याग्रह कहते हैं उनमें भी पोजीटिव तत्व है। सत्याग्रह दबे हुए आदमी को खड़े होने की ताकत देता है। लोकनीति बनाम राजनीति की बात चलती है। राजनीति क्या है। सत्ता और साधनों पर नियंत्रण। लोकनीति क्या है ? जिसमें जनता अपनी कर्ता बनती है। तत्व यही है—सत्ता और साधनों पर नियंत्रण। लोकनीति में यह नियंत्रण जनता के हाथों में होता है, राजनीति में सत्तारूढ़ पार्टी के हाथों में।

विधानसभा विसर्जन की मांग को अप्रजातांत्रिक कहा जाता है। इसमें अप्रजातांत्रिक क्या है ? प्रधानमंत्री की इच्छा से, मुख्यमंत्री की इच्छा से यह हो सकता है तो जनता की इच्छा से क्यों नहीं हो सकता ? सरकार से सम्बन्ध के बारे में मनमोहन भाई ने कहा कि सरकारें ऐसी होती हैं कि सब कुछ अपने पास रखना चाहती हैं। आज भी सरकार की अखिल भारतीय इच्छा यही है कि सब कुछ हमारे हाथ में रहे। जे.पी. ने विरोध के अपने अधिकार की रक्षा की है। जनता के ऊपर तन्त्र हावी हो-जाना चाहता है। उदाहरण में हैं—पटना में नन्दनी सतपथी के चुनाव में तीस लाख नहीं सत्तर पिचहत्तर लाख रुपया खर्च हुआ है। रेल हड़ताल किस तरह तोड़ी गयी यह सब आप जानते हैं। सरकार ने जो कुछ किया क्या वह कानूनी था ? पश्चिम बंगाल में लगभग सात सौ राजनैतिक विरोधियों को [illegible] मारा गया। विनोबाजी जिस पंच-शक्ति के सहयोग की बात करते हैं वह समान धरातल पर आये बिना नहीं हो सकता।

जे.पी. के पास जब विद्यार्थी आये तो उनके सामने दो विकल्प थे। बुनियादी काम में लगा हूं—वे कह सकते थे। आपके साथ संघर्ष में हूं यह भी कह सकते थे। उन्होंने दूसरा विकल्प चुना। कटघरे बन कर बैठे रहेंगे तो जन आंदोलन नहीं होगा।

इसके बाद दादा धर्माधिकारी का प्रभावशाली भाषण हुआ जिसमें उन्होंने लोकसेवकों से कहा कि वे अपने स्वतन्त्र बुद्धि विवेक का उपयोग करके निर्णय करें। (दादा का पूरा भाषण अगले अंक में पढ़िये।) दादा के भाषण के साथ ही अधिवेशन की सुबह की बैठक समाप्त हुई।

अधिवेशन की आखिरी बैठक पवनार में विनोबा के सान्निध्य में होनी थी। लेकिन चूंकि कोई सर्वसम्मत प्रस्ताव हो नहीं रहा था और प्रबन्ध समिति की बैठक चल रही थी इसलिए पवनार का कार्यक्रम रद्द हुआ। तय था कि अन्तिम बैठक तीन बजे से महिलाश्रम के हाल में ही शुरू होगी। लेकिन पांच बजे तक प्रबन्ध समिति की बैठक तनावपूर्ण वातावरण में चलती रही फिर भी बिहार आंदोलन के समर्थन में किसी प्रस्ताव पर सर्वसम्मति नहीं हो सकी। आखिर प्रबन्ध समिति के सदस्य और अध्यक्ष मंत्री अधिवेशन में आये और सिद्धराज जी ने दादा धर्माधिकारी द्वारा बनाया गया प्रस्ताव मय संशोधनों के लोकसेवकों के सामने रख दिया। उन्होंने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यह प्रबन्ध समिति का प्रस्ताव नहीं है क्योंकि वहां कोई सर्वसम्मति नहीं हो सकी। लोकसेवकों ने मांग की कि प्रस्ताव की प्रतियां और संशोधन वितरित कर दिये जायें ताकि उस पर चर्चा हो सके। यह भी सुझाव आया कि समूहों में बंट कर चर्चा कर ली जाये। प्रस्ताव की प्रतियां तैयार करने और उत्तेजित वातावरण को शांत करने के लिए बैठक रात आठ बजे के लिए स्थगित कर दी गयी।

इस बीच रामचन्द्र राही, बाबूराव चन्दावार, नरेन्द्र भाई कुमार प्रशांत आदि ने एक और प्रयास प्रस्ताव का विरोध करने वालों को मनाने का किया। लेकिन आठ बजे जब बैठक शुरू हुई तो राही ने सूचना दी कि उनका प्रयास सफल नहीं हुआ है और सवाल मतभेद का नहीं है दिल की दूरियां बढ़ गयी है। सिद्धराज जी ने जैसे-तैसे बैठक चलाने की कोशिश की लेकिन मनमोहन भाई ने भरे गले से सूचना दी कि उन्होंने प्रबन्ध समिति से त्यागपत्र दे दिया है। सर्वसम्मति न कर पाने को उन्होंने अपनी अयोग्यता बताया। दादा धर्माधिकारी ने कहा कि यह अयोग्यता नहीं है गौरव का विषय है और सर्वसम्मति न हो पाने की सर्वसम्मति हमें अपने नेता के श्रीचरणों में रख देना चाहिए। फिर ठाकुरदास बंग ने भी घोषणा की कि इस स्थिति में वे संघ के मंत्री पद से कार्य नहीं कर सकते इसलिए इस्तीफा दे रहे हैं और एक साल के लिए बिहार जायेंगे। सिद्धराज जी ने घोषित किया कि उनके पास प्रबन्ध समिति के तेरह सदस्यों के त्यागपत्र आ गये हैं। लेकिन वे स्वयं भी अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे रहे हैं इसलिए प्रबन्ध समिति अपने आप ही भंग हो जायगी।

आखिर तय हुआ कि १२ जुलाई को सुबह सर्वसम्मति न हो पाने की सर्वसम्मति और सबके त्यागपत्र बाबा के पास पहुंचा दिये जायेंगे और वहीं अधिवेशन की आखिरी बैठक होगी। १२ जुलाई को विनोबा ने किस तरह संघ और सर्वोदय आंदोलन को विघटन से बचाया, कैसे हार्दिक और जोड़ने वाले वातावरण में आखिरी बैठक हुई यह सब आप पिछले दो अंकों में पढ़ ही चुके हैं।

रविशंकर महाराज का जे० पी० को पत्र

भाई श्री जयप्रकाशजी,

आपने जो प्रवृत्ति हाथ में ली है, उससे मैं खुश हुआ हूं। अभी-अभी विनोबाजी के साथ आपकी चर्चा हुई, सर्व सेवा संघ के अधिवेशन में भी चर्चा हुई वह मैंने अखबारों में पढ़ी। 'भूमिपुत्र' के द्वारा तफसील से जान सकूंगा। यहां कान्ता हरविलास बहन आई है उनसे भी यहां की बातें सुनीं। पूरे देश में यह प्रवृत्ति (आन्दोलन) उठाया जाय तो भी कोई हरकत नहीं है। जो भ्रष्टाचार आया है वह ऊपर से ही आया है। मंत्रियों में आया है। छोटे से लेकर बड़ों तक सब भ्रष्टाचार में फंसे हुए हैं। इससे अच्छे प्रामाणिक पीड़ित हैं, दुखी हैं।

आपकी प्रवृत्ति मुझे बहुत पसन्द है। परमेश्वर सफल करेगा ही। आपकी तबीयत अच्छी नहीं है फिर भी इतना बड़ा पुरुषार्थ आप करते हैं, इससे मुझे आश्चर्य और आनन्द होता है। परमेश्वर आपको सफल करें ऐसी मेरी हार्दिक शुभेच्छायें आपके साथ हैं ही।

(रविशंकर महाराज द्वारा १८ जुलाई को लिखा गया पत्र)

नागरिक समस्याओं पर नागरिक

(पृष्ठ ८ से जारी)

भ्रष्टाचार के अनेक पहलुओं पर चर्चा करते हुए डा० वियोगी ने कहा कि इसकी व्यापकता ने वर्तमान व्यवस्था से ही विश्वास उठा दिया है। डा० जनक जुनेजा का कहना था कि भ्रष्टाचार का प्रश्न केवल नैतिक नहीं है, इसका लोगों की रोटी से भी सम्बन्ध है।

नागरिक समस्याओं पर बोलते हुए केन्द्रीय गांधी शांति प्रतिष्ठान के जन-मामलों से सम्बन्धित विभाग के निदेशक रूपनारायण ने राजनीति रहित मुहल्ला सभाओं की उपयोगिता, उनके संगठन आदि की चर्चा की। उन्होंने कहा कि नागरिक समस्याओं के निदान का काम केवल राजनीतिज्ञों के सुपुर्द नहीं किया सकता, उनकी दृष्टि पक्षपात पूर्ण होती होती है। गैर राजनीतिक आधार पर गठित ये मुहल्ला सभायें नागरिक और प्रशासन के बीच लगातार गहरी होती हुई खाई को पाटने का काम कर दोनों के बीच एक मजबूत पुल बन सकती है।

गोष्ठी ने एक सात सूत्री कार्यक्रम स्वीकार किया है: (१) नागरिक सतर्कता दलों का गठन। (२) उच्च स्तरीय एक्शन कमेटी (३) मुहल्ला सभा का गठन। (४) जन-शिक्षण। (५) जनता को स्वायत्त शासन के अधिकार दिलाने की दिशा में जन आन्दोलन का निर्माण। (६) वितरण व्यवस्था में सहयोग के लिए स्वयं सेवक टुकड़ियों का गठन तथा (७) नागरिक शिकायतों को निपटाने के लिए नागरिक समिति का गठन।

गोष्ठी के बाद छात्र छात्राओं को उनकी समस्याओं से ऊपर उठा कर अन्य लोगों से जोड़ने के प्रयास में केन्द्र के युवा कार्यकर्ता देवीशरण देवेश ने 'गन्दगी के विरुद्ध युवा' अभियान शुरू किया। आर्य कन्या महाविद्यालय की ६० छात्राओं ने गन्दी बस्तियों की सफाई की, वहां की तकलीफों को समझने की कोशिश की।

बिहार के सहरसा जिले में पिछले साढ़े तीन सालों में चलाये गये ग्रामदान पुष्टि अभियान की जानकारी देते हुए अभियान के एक मुख्यप्रवक्ता विद्यासागर भाई ने बताया कि सहरसा जिले में अब तक ८७८ ग्रामसभाएं गठन की जा चुकी हैं। कानूनी पुष्टि के लिए ३६ ग्रामसभाओं के कागजात प्रस्तुत किये गए जिसमें १० की कानूनी पुष्टि हो चुकी है। ६ गावों में गजेटेड ग्रामसभाएं बन चुकी हैं। ग्रामदान की एकशर्त बीघा में कट्ठा के भूमिवानों से १८१३ बीघा जमीन मिली जो अनुसार ४२५५ भूमिहीनों में वितरित कर दी गई। इसके अलावा भूदान में प्राप्त २०५७ एकड़ भूमि भी ३०७० आदाताओं में बांटी गई। यह वितरण जिले के २६ प्रखण्डों के लगभग १००० गांवों में सम्पन्न हुआ।

बम्बई में जे० पी० (पृष्ठ ६ का शेष)

जागृति नहीं हुई तो मैं इस अपना सा ही समझूंगा।"

बम्बई में इसका अनुभव हुआ कि सारे देश को एक आवाज एक नेतृत्व की तलाश है जिस पर वह भरोसा कर सके जिसकी आवाज पर वह कुछ निश्चय कर सके। सारी जगह दोयम दर्जे के लोगों ने हड़प रखी है। 'लिलीपुट' के लोगों का कद क्या था पता नहीं, लेकिन इनके छोटा नहीं होगा।

ढलती उम्र, गिरते स्वास्थ्य के बावजूद देश अपना 'गुलिवर' जयप्रकाश में ही खोज रहा है। परिस्थिति एक देशव्यापी आन्दोलन के अनुकूल है। पर जयप्रकाश जी कहते हैं और एकदम सही कहते हैं कि "बिहार का प्रयोग सफल हुआ तो देश को राह मिलेगी। मैं बिहार को चम्पारन या बारडोली की तरह देख रहा हूं।"

देख सभी रहे हैं—कापुरुष भी और त्रस्त, सामान्य लोग भी—बिहार से क्या निकलता है?

चिन्तन प्रवाह (१० पेज से जारी)

कांग्रेस के विधान में सदस्यों के लिए "हाथ-कती, हाथ-बुनी" खादी पहनना अब तक लाजमी रहा है। अब भारत कांग्रेस ने जो नया विधान बनाया है उसमें 'हाथ-कती' शब्द छोड़ दिया गया है। खादी के समर्थकों ने जब अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में इसका कड़ा विरोध किया क्योंकि खादी का मतलब वही है जो हाथ कती हो, तो स्वयं श्रीमती इंदिरा गांधी ने यह उत्तर दिया कि 'हाथ-कती' शब्द इसलिए छोड़ा गया है क्योंकि अम्बर चर्खे से कते हुए सूत को उसमें भी समावेश करना था। यह दलील कितनी हास्यास्पद और खादी के बारे में कितन अज्ञान से भरी हुई है यह इस बात से जाहिर है कि अम्बर चर्खे की कताई हाथ कताई में ही शामिल है और वह खादी आज भी खादी कमीशन द्वारा प्रमाणित है। खादी की ऐसी प्रारम्भिक बात का जिस जमात में इतना अज्ञान हो कि ऐसी दलील दी जा सके और वह ग्रहण भी हो जाय उस जमात के लिए खादी का पाखण्ड छोड़ देना ही ठीक है। उससे खादी की प्रतिष्ठा कम नहीं होगी, बढ़ेगी ही।

वार्षिक शुल्क—१५ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, एक अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय
सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १९ अगस्त, '७४

विषय-सूची

युवा शक्ति विशेषांक

प्रकाशकीय

अखबारी कागज के अकाल के इन दिनों में 'भूदान यज्ञ' जैसे पत्र का विशेषांक निकालना अपने पांवों पर कुल्हाड़ी मारना है। कुल्हाड़ी इसलिए कि विशेषांक जिस कागज पर छपता है वह साधारण अंकों का होता है। यानी विशेषांक के भोज के लिए रोज की रोटी छोड़नी पड़ती है। सेहत के लिए यह ठीक नहीं है लेकिन पन्द्रह अगस्त स्वयं एक ऐसा अवसर है जब कुछ विशेष किया जाना चाहिए। युवा शक्ति [illegible] अवतरण का लेखा जोखा इस अवसर पर जरूरी है क्योंकि आजादी का भविष्य उसे ही बनाना है।

इसलिए बावजूद कमी के यह विशेषांक आपके हाथों में है। हमारी योजना और इच्छा का यह प्रतिरूप नहीं है। हमारा इरादा सौ पेज का विशेषांक निकालने का था। हम युवाशक्ति के अवतरण के सभी पहलुओं पर सामग्री देना चाहते थे। उसकी आकांक्षाओं का नक्शा खींचना चाहते थे। और उसकी दिशा का संकेत भी देना चाहते थे। यह भी बताना चाहते थे कि उसके सामने कितने खतरे और कितनी चुनौतियां हैं। सर्वोदय आन्दोलन और युवा शक्ति के सपनों का मेल भी आपके सामने रखना चाहते थे। लेकिन कागज की कमी के कारण यह संभव नहीं हो सका। आपसे क्षमा चाहते हुए अपेक्षा करते हैं कि यह विशेषांक जैसा भी बन पड़ा है आपकी सहानुभूति और रुचि के योग्य होगा।

वैसे तो देश के विश्वविद्यालयों में कई वर्षों से छात्र असन्तोष पनप रहा था। वह प्रकट भी होता था लेकिन बिखरे संकीर्ण आन्दोलनों और छुटपुट हिंसक घटनाओं से ऊपर कभी उठ नहीं पाता था। असन्तुष्ट युवाशक्ति के निरर्थक धाने और उसके सामने कोई व्यापक लक्ष्य न होने से घुटन बढ़ती जा रही थी।

इस घुटन को तोड़ा गुजरात की घटना ने। महगाई से परेशान अपनी मेस के बढ़े हुए बिल के खिलाफ आन्दोलन कर रहे छात्रों को नागरिकों ने कहा कि महगाई तो हमें भी तोड़ रही है, हमारे लिए कौन लड़ेगा। छात्रों को एक व्यापक सामाजिक प्रयोजन मिला और उनका आन्दोलन जन-आन्दोलन बन गया। अगर जन असन्तोष को रचनात्मक दिशा देने की क्षमता विद्यार्थियों में होती तो गुजरात महज एक घटना बन कर नहीं रह जाता। बिहार में भी शुरूआत छात्रों ने ही की थी और अगर जयप्रकाश नारायण का नेतृत्व प्राप्त करने में वे सफल नहीं होते तो बिहार भी गुजरात के रास्ते हो जाता। अब वहां युवकों को पूरे समाज के साथ मिल कर व्यवस्था परिवर्तन करने का अवसर मिला है।

बिहार आन्दोलन का परिणाम चाहे जो हो उसकी सबसे बड़ी सफलता यही है कि युवा शक्ति को नया समाज बनाने की दिशा और लक्ष्य मिल गया है। पूरे देश के लिए यह स्वस्थ लक्षण है कि उसकी सबसे बड़ी शक्ति नये समाज के निर्माण में लगी है।

हम इस दिशा को स्पष्ट करना चाहते थे। हमने प्रयास किया भी है शायद आपको रुचे। यह विशेषांक तीन अंकों का कागज मिला कर बनाया है इसलिए अगला साधारण अंक यानी २६ अगस्त का अंक नहीं निकलेगा। आशा है इस असुविधा को आप आप हमारे साथ सहन करेंगे।

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी-प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० १९ अगस्त, '७४ अंक ४६-४७

१९ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

तरुणाई का सनातन रूप

अरस्तू ने २३०० वर्ष पहले ही तरुणों के विषय में इस तरह कहा था,

जवानों की प्रवृत्ति मनसूबे बांधने और फिर उन बांधे हुए मनसूबों को साकार करने की होती है। शरीर से सम्बन्धित मनसूबों में युवती का युवक और युवक का युवती के प्रति आकर्षण इन्हें बहुत जल्दी आपा भूलने पर लाचार कर देता है। इस इच्छा के जागने पर उन्हें याद ही नहीं रहता कि संयम किस चिड़िया का नाम है।

वे अपने इरादों को बड़ी आसानी से बदल भी देते हैं, वे जितनी जोर से किसी बात की तरफ बढ़ते हैं, उसे उतने ही झटके से वे पीठ भी दे देते हैं। इस का कारण यह है कि उनकी इच्छाएं बीमार आदमी की भूख या प्यास की तरह एकाएक महसूस होने वाली चीजें हैं, उनमें तीव्रता होती है, स्थैर्य नहीं। वे क्रोधशील और जल्दी ही आवेश में आ जाने वाले होते हैं और भावनाएं उन्हें आसानी से बहाकर ले जाती हैं। वे अपनी उत्तेजना के बन्धनों से ही आगे बढ़ते या पीछे हटते हैं। उनकी महत्वाकांक्षा ऐसी जबरदस्त होती है कि उस पर आंच आने का ख्याल भी उन्हें उन्मत्त कर देता है और वे आंच पहुंचाने के लिए तत्पर शक्तियों के प्रति जरा भी सहनशील नहीं रह पाते। वे मान-सम्मान और गौरव के इच्छुक तो होते ही हैं, किन्तु इससे भी अधिक प्यार उन्हें जीत से है। क्योंकि तरुणों की इच्छा का उद्देश्य मुकाबले की शक्ति से ऊपर उठाना है। जीत इसी प्रकार के बड़प्पन या ऊपर उठने का एक प्रकार ही है। पैसे के प्रति गौरव और विजय का उन्हें मोह नहीं होता और हो सकता है कि इसका कारण यह हो कि उन्हें अपनी तरुणाई तक धन के अभाव का ठीक अनुभव नहीं हो पाता। इसलिए वे उदार होते हैं, संकीर्ण नहीं होते। वे भोले भी होते हैं, क्योंकि तब तक धूर्तों से उन्हें काम नहीं पड़ता है। इसलिए वे आसानी से विश्वास कर लेते हैं। वे केवल आशावादी ही नहीं अति-आशावादी तक होते हैं। क्योंकि प्रकृति उन्हें अपने हाथों से मानो शराब पिला देती है। इस अतिआशावाद की झोंक में वे असफलताओं को भी कुछ नहीं गिनते। इस तरह वे जीवन के दिन आंख में आशा भरकर बिताते हैं। आशा भविष्य का रूप है और भूतकाल की स्मृति। तरुण व्यक्ति के सामने जो भविष्य होता है वह अल्पकालीन नहीं होता। दीर्घ काल तक उसकी आशा टिकी रह सकती है और भूतकाल की स्मृति तो क्षणिक है ही। हम जिस दिन पैदा होते हैं, उस दिन का हमें क्या याद रहता है। इस लिए जीवन तो आशा और भविष्य में ही है। सहज आशाशील होने के कारण उन्हें बार-बार धोखा भी खाना पड़ता है। क्योंकि उनके प्राणों में उत्साह का ज्वार रहता है, वे निर्भय होते हैं, वीर होते हैं, उनमें आत्म-विश्वास की प्रेरणा आसानी से जगाई जा सकती है और वे कल्याणकारी कामों के प्रति उन्मुक्त किये जा सकते हैं। उनके मन में एक झिझक भी होती है। परम्परागत पद्धतियों की गोद में पले, बड़े होने के कारण वे एका-एक कोई काम हाथ में उठाते हुए हिच-कते हैं। यद्यपि उनकी महत्वाकांक्षाएं बड़ी होती हैं, किन्तु वे यह नहीं जानते कि उनकी ओर वे कैसे बढ़ें। अवसर-वादिता से गौरवपूर्ण कार्य उन्हें अधिक आकर्षित करते हैं। वे हिसाब-किताब नहीं करते, सहज स्वभाव उनके जीवन वादिता का हामी है और हृदय के गुण महत्वाकांक्षा के, सम्मान के, गौरव के।

तरुणाई एक ऐसी उम्र है जिसमें व्यक्ति अपने साथियों, सम्बन्धियों और मित्रों के प्रति अपने कर्तव्य का तीव्रता से अनुभव करता है। जवान आदमी जो गलती करता है, फिर वह चाहे प्रेम के क्षेत्र में हो, चाहे घृणा के क्षेत्र में अतिशयता की ओर झुकी रहती है। वे अपने को लगभग सर्वज्ञ समझते हैं और इसलिए उन्हें अपनी बातों का जबरदस्त आग्रह होता है। यही वह कारण है जो उन्हें किसी भी क्षेत्र में आसानी से अति की ओर ले जाता है। वे जो अपराध करते हैं उनमें संकीर्णता नहीं होती, आग्रह हो सकता है। उनका हृदय प्रेम, करुणा और ममता से भरा हुआ होता है, वे मानते हैं कि सब लोग भले हैं, कम से कम ऊपर से जितने बुरे दिखते हैं, उतने बुरे नहीं हैं। वे अपने निश्छल स्वभाव से अपने आसपास को निश्छल मानते हैं। यदि उनके सिर पर अभाग्य टूटता है तो वे निश्चय ही अपने को उसका पात्र नहीं समझते। अन्त में तरुण के बारे में यह याद रखना चाहिए कि उसे हंसी-खुशी पसन्द है और इसीलिए कभी-कभी मजाक उड़ाना भी उन्हें अच्छा लगता है। मजाक उड़ाना आखिरकार एक अनुशासित आग्रह है।

अरस्तू ने जवानों के बारे में ऊपर जो कुछ कहा है वह लगभग परिपूर्ण विवरण है। अरस्तू द्वारा जवान के खींचे गये इस चित्र में कुछ जोड़ना या घटाना कठिन है। आज के मानवशास्त्री ऊपर के विवरण में गिनाये गए गुणों या अवगुणों को विरोधी स्वभाव संयुक्त (एमबीवैलेन्स), भावनात्मक परिवर्तनशीलता (इमोशनल लेबिलिटी), अधिक ज्ञान-भ्रम (आइडेन्टिटी कन्फ्यूशन) आदि शब्दों द्वारा वर्णित करते हैं। किन्तु कुल मिलाकर अरस्तू ने तरुणों के स्वभाव का जो वर्णन किया है वह यथार्थ में आज की परि-भाषा से भिन्न नहीं है। भिन्नता अगर है तो शब्द रूपों की ही है।

तरुणाई मनुष्य जीवनचक्र की एक स्पष्ट अवधि है। इस अवधि में शरीर भी बदलता है, मन भी बदलता है। किशोर से तरुण होने तक यदि ठीक मार्गदर्शक मिल जाये तो तरुण दुनिया को कल्याण की दिशा में बदलने की बड़ी से बड़ी शक्ति बन जाता है। इतिहास के किसी भी काल में जब-जब तरुणों को ठीक मार्गदर्शन मिले हैं, संसार ने बहुमुखी विकास किया है। तरुणों के अवगुण भी अगर बारीकी से देखें तो गुण ही हैं और यदि इन्हें उच्च उद्देश्यों के तटबन्धों में प्रवाहित किया जाये तो ये बड़े से बड़े बंजर को भी हरा-

—भवानी प्रसाद मिश्र

युवाओं के एक–एक कदम से सपनों का भारत वास्तविक बन सकेगा

जयप्रकाश नारायण

(२३ जून '७४ को इलाहाबाद की आम सभा मे दिये गये भाषण से)

मेरा राजनैतिक जीवन इलाहाबाद से ही शुरू हुआ। यों तो सन् २१ के जनवरी मे पटना कालिज से असहयोग किया तो उसे राजनीतिक जीवन का प्रारम्भ कहा जा सकता है, परन्तु असहयोग का आंदोलन गिरावट पर था और डेढ़ वर्ष चुपचाप बैठे रहने के बाद मैं पढ़ने के लिए अमेरिका गया, सन् २९ मे मैं लौटा, ७ वर्ष के बाद और सन् ३० मे फिर से राजनीतिक जीवन मे प्रवेश किया। यहीं पर पण्डित जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के अध्यक्ष थे। उनकी अध्यक्षता मे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मजदूर विभाग का मैंने भार सम्भाला था। इस प्रकार से मेरा जीवन यहा शुरू हुआ था।

(इसी मैदान में नमक सत्याग्रह के दौरान) एक चूल्हा बना था, उस पर कड़ायी रखी थी। नमक का पानी कड़ायी मे रखा था। लकड़िया उसके नीचे थी। पण्डित मोतीलालजी आये एक लकड़ी सुलगती हुई बाहर रखी थी वह चूल्हे के अन्दर डाल दी उन्होंने। (इस तरह) नमक कानून तोड़ा गया। इलाहबाद शहर मे वह एक संकेत था कि आजादी की लड़ाई छिड़ गयी। उस लड़ाई मे इलाहाबाद के लोगो ने कितना पार्ट अदा किया वह आप जानते हैं। कमला भाभी, हमारी स्व० पत्नी प्रभावती बड़े पण्डितजी की डाट फटकार के बावजूद पीछे के दरवाजे से निकल करके कपड़े की दुकान पर, शराब की दूकान पर पिकेटिंग करने उस गर्मी मे चली जाती थी।

मैं बहुत चाहता था कि इन तीन दिनो मे यहा के कुछ पुराने स्थान देख आऊं, जिनमे हमारे जवानी के बहुत से अनुभव जुड़े हुए थे। लेकिन समय ही नहीं मिला। भाव से भर गया है हृदय यह सब कहते हुए।

बहरहाल आज मैं आपके सामने कोई कार्यक्रम देने नही आया हू। यह मेरा कोई अधिकार नही है। वैसे उत्तरप्रदेश का ही निवासी हूं अब तो।

लेकिन मेरा कोई अधिकार नही है कि उत्तरप्रदेश की जनता को, छात्रो को मैं कोई कार्यक्रम देकर चला जाऊ। जो भी उत्तरप्रदेश मे होगा वह उत्तरप्रदेश के छात्र, जनता और यहा के युवा करेंगे। उनको करना है। मुझसे परामर्श करें, मुझे जो ठीक लगेगा मैं उनको उचित परामर्श दूंगा। यह उनकी जिम्मेदारी है। मैं नही समझता कि आज वह स्थिति आयी है उत्तरप्रदेश म जो बिहार मे ५ जून को या १८ मार्च को आ गयी थी। इसलिए एक बहुत बड़ा महत्व का काम करना है सारे देश मे, मैं यह नहीं कहता हू कि जो बिहार मे हो रहा है वह बिहार तक ही सीमित रहना चाहिए। वह कोई बिहार की समस्यायें है? उत्तरप्रदेश की ये समस्याए नही हैं? या और प्रदेशो की नही हैं? देशव्यापी समस्यायें हैं और सारे देश मे उनके लिए कुछ न कुछ होना चाहिए। मैं यह नही कह रहा हू कि यह जो आंदोलन बिहार मे चल रहा है उसको बिहार तक ही सीमित रखना है। यह तो देशव्यापी होना ही है। लेकिन हर प्रदेश की अपनी अपनी परिस्थिति है।

एक बात मैं आपसे और निवेदन कर देना चाहता हू। चूंकि आप इलाहबाद के निवासी हैं और इन्दिराजी इलाहाबाद की हैं, बहुगुणाजी इलाहाबाद के हैं, हैं तो मूल मे पहाड़ो के, लेकिन हैं इलाहाबाद के ही। मेरा भी सम्बंध जो इलाहाबाद से रहा है वह मैंने आपके सामने रखा है। इसलिए एक बात मै कहना चाहता हू। बहुत से लोगो को और खास करके काग्रेसजनों को ऐसा लगता है कि जयप्रकाश नारायण ने जो यह आंदोलन बिहार में छेड़ा है वह इन्दिराजी के साथ उनकी कोई लड़ाई है उसका एक वह रूप है। इन्दिराजी के साथ जयप्रकाश नारायण का कोई मुकाबला है। तो मैं आपको पूरी ईमानदारी और सच्चाई से कहना चाहता हू कि हमारा उनके साथ किसी प्रकार का झगड़ा नही है। मतभेद उनके साथ अनेक हैं और रहेंगे। अगर वे दूर हो जाय तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। लेकिन मतभेद हैं और उनमे से बहुत से विषयो पर गम्भीर हैं। अपनी जगह पर वह है। लेकिन यह आंदोलन जो चल रहा है वह कोई हमारा उनका व्यक्तिगत झगड़ा है जिस कारण से चल रहा है ऐसी बात नही है। वे जवाहरलालजी की लड़की हैं कमलाजी की लड़की हैं। प्रभावती ने और हमने उनको उसी रूप मे स्नेह से देखा। उनका भी स्नेह मिला है तो हमारा उनके साथ कोई सम्बंध

किसी भी विचारधारा के अनुयायी यह दावा नहीं कर सकते कि उनके ही निर्णय हमेशा सही होते हैं। हम सबसे गलतियां हो सकती हैं और हमें अक्सर ही अपने निर्णय बाद में बदलने पड़ते हैं। हमारे इस विशाल देश में सब ईमानदार विचारधाराओं के लिये गुंजाइश होनी चाहिये। और इसलिये अपने प्रति और दूसरों के प्रति हमारा कम से कम यह कर्त्तव्य तो है ही कि हम अपने विरोधी का दृष्टिकोण समझने की कोशिश करें; और यदि हम उसे स्वीकार न कर सकते हों तो उसका इतना आदर अवश्य करें जितना हम चाहेंगे कि वह हमारे दृष्टिकोण का करे। यह चीज स्वस्थ सार्वजनिक जीवन का और इसलिये स्वराज्य की योग्यता का एक अनिवार्य प्रमाण है।

—महात्मा गांधी

नहीं है। और इलाहाबाद नगर के निवासियों को प्रेम और स्नेह जरूर अपनी बेटी के लिए होना चाहिये क्योंकि इन्दिराजी यहीं की बेटी हैं। इलाहाबाद की, सारे देश की हैं वह ठीक है। देश की नेता हैं। लेकिन आपको खासतौर पर समझ लेना चाहिए कि जयप्रकाश नारायण का कोई व्यक्तिगत झगड़ा नहीं है। उनकी नीतियों से झगड़ा है, उनकी कृतियों से झगड़ा है। उनकी हुकूमत का जो ढंग है, जिस तरह से चल रहा है उससे झगड़ा है, और वह झगड़ा रहेगा। जब तक कि इस देश में जनता को आजादी है, जनता को अधिकार है, नागरिकों को अधिकार है अपनी बात जनता के सामने रखने का

अब इस आंदोलन का क्या महत्व है यह संक्षेप में आपको समझाऊं। यह कहा जाता है, दीक्षितजी ने भी यहां आकर कहा, इंदिरा जी ने भी कहा, कांग्रेस के नेताओं ने बार-बार कहा कि यह जो आंदोलन बिहार में चल रहा है और उसके ढंग का आंदोलन और जगह चले, जो गुजरात में चल चुका था, ऐसे सारे आंदोलन लोकतंत्र के विरुद्ध हैं। इस बात को मैं नहीं कबूल करता हूं। यह आपको समझाना चाहता हूं। यह गलत बात है। यह चिन्तन गलत है। यह सत्य के ऊपर पर्दा डालना है। अब आज जनता मुसीबत में है, तकलीफ में है, अन्याय को सहन कर रही है, भ्रष्टाचार का शिकार बनी हुई है। आम नागरिकों का कोई काम ही नहीं हो सकता है सरकारी दफ्तर में, बैंक में जहां राष्ट्रीयकरण हुआ, बगैर पैसा खर्च किये हुए बिना रिश्वत दिये हुए। भ्रष्टाचार का यह हाल है कि कोई नैतिक प्रश्न नहीं रहा है वह। अरबों रुपया जो गरीब की भलाई के लिए पंचवार्षिक योजनाओं में या उनके बाहर भी उनके हित में खर्च करने का था, उनमें से न जाने कितना रुपया दूसरों की जेबों में चला गया। गरीब तक पहुंचा नहीं। वह सारा गरीबों तक पहुंचा होता तो आज देश की गरीबी मिट तो नहीं गयी होती, लेकिन बड़ा अन्तर हुआ होता। इसलिए भ्रष्टाचार कोई नैतिक प्रश्न नहीं है देश की जनता का, सारा करके गरीबों की रोटी का सवाल उसके साथ जुड़ा हुआ है।

अब यह जनता दुःख सह रही है। चुनाव होने वाला है बिहार में सन् ७७ में। आपके यहां चुनाव होने वाला है ७६ में। विधान सभा का चुनाव होगा। मैं नहीं जानता हूं कि आपको कितना संतोष है शासन से वह आप जानें। लेकिन मान लीजिये कि आपको जो आज का शासन है, प्रशासन है, उससे आपको सन्तोष नहीं है, तो पांच वर्ष चुपचाप आपको बैठना है? यही लोकतंत्र का तकाजा है? दुनिया के कई संविधानों में, जनता को अधिकार रहता है कि जिन लोगों ने चुनकर भेजा है, उनसे असंतुष्ट हो जाय तो उनको वापस बुला ले। अब हमारे संविधान में यह अधिकार नहीं है जनता को इसलिए यह असंवैधानिक है? यह लोकतंत्र के खिलाफ है? जनता दुःखी है और पांच वर्ष तक चुपचाप गूंगे की तरह, असहाय की तरह तकलीफ सहती रहे? आह भी नहीं करे? चूं भी नहीं करे? उसके सामने क्या दूसरा रास्ता नहीं है? रास्ता अवश्य है।

लेकिन जिस प्रकार से चुनाव आज हो रहे हैं, जितना चुनावों पर रुपयों का असर है, जितना बल प्रयोग होता है गरीब लोगों को वोट नहीं देने देते हैं, रोक लेते हैं गांवों में लोगों को, जितना मिथ्याचार होता है, बोगस वोट पड़ता है। यह सब रहते हुए पांच साल बाद भी क्या होगा? एक दिन में सारा चुनाव हो गया बिहार में। तीन दिन में उत्तरप्रदेश में सारा चुनाव हो गया। अब जो प्रिसाइडिंग आफिसर हैं, पोलिंग आफिसर हैं वे किस हैसियत के लोग हैं? वहां के जो नेता हैं उनके मुकाबले में वो खड़ा हो सकता है? उसकी हिम्मत होती है? उसे डरा दिया जाता है, धमका दिया जाता है, लाठी के जोर से। तुम कैसे रहोगे। आफिस में हम देख लेंगे तुमको हमारी बात मानना है। अपने लगा करके उसी के हाथों से ठप्पा लगवा के मतपत्र डाल दिये जाते हैं। कई जगह तो रिश्वत दी जाती है उन लोगों को, अब एक तरफ तो इस प्रकार का स्वरूप होता जाता है चुनाव का, उसमें से जनता जो चाहती है वह तो नहीं हो पाता है। कुछ का कुछ हो जाता है।

उत्तर प्रदेश में ही चुनाव में कांग्रेस का शासन बना। जो लोग वोट नहीं देने गये उनकी तो बात छोड़ दीजिए। कुछ ५० फीसदी से कम लोग वोट देने नहीं गये। लेकिन जो वोट देने गये उनमें से लगभग ३२ फीसदी लोगों ने कांग्रेस को वोट दिया और ६८ फीसदी लोगों ने कांग्रेस के विरुद्ध वोट दिया। ३२ फीसदी वोट पाकर उनकी हुकूमत बन गयी। ६८ फीसदी के वोट गायब हैं। बेकार, जाया हो गये। जनता तो कहेगी, मतदाता तो कहेगा कि क्या है ये चुनाव? ये विपक्षी दलों का दोष होगा। चुनाव की पद्धति का दोष होगा। जिसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा, यही होगा। हमारी राय ली जाती है तो १०० में से ६८ फीसदी की राय तो खराब थी। उसका कोई परिणाम निकला नहीं तो लोकतंत्र जिस प्रकार का अपने देश में चल रहा उससे भी हम आशा नहीं कर सकते हैं कि वह स्वस्थ रीति से काम करेगा। जनता का प्रतिनिधित्व हो सकेगा और न ये ही सम्भव है कि जनता जब तक फिर आम चुनाव हो दुःख सहती रहे, कष्ट सहती रहे, रोती रहे कि जब चुनाव होगा तो हम शासन बदलेंगे। फिर वही शासन आ गया। वही सब बातें हो गयी।

लोकतन्त्र की यह विफलता हो रही है। अगर लोकतन्त्र को कायम रखना है, उसको मजबूत रखना है तो लोकतन्त्र के आधार लोक हैं, जनता है। जनता अगर चाहती है आज तो एक-एक चुनाव क्षेत्र के जो मतदाता हैं, सभायें करके वो कहें कि जो आप हमारे प्रतिनिधि यहां से गये हैं उन पर हमारा विश्वास नहीं रह गया तो वापस आइये। हम दूसरे को भेजेंगे। ये लोकतन्त्र नहीं हुआ? लोकतन्त्र के विरुद्ध हुआ ये। जिसको चाहती नहीं है जनता वह वहां कुर्सी पर बैठा रहे, वो लोकतन्त्र है? तन्त्र ही तन्त्र है, लोक का कहीं पता ही नहीं लगता है। तन्त्र तो बहुत है। इतना जाल है शासन का कि उसमें से समझ में ही नहीं आता कैसे निकला जाए। गांधीजी ने कहा कि वो शासन सबसे अच्छा शासन है, जो कम से कम शासन करता है। अब तो शासन चाहे समाजवाद के नाम पर हो या किसी भी वाद के नाम पर, ऐसा शासन बनता जाता है जिसमें सब कुछ शासन ही करे। रूस को शायद शादी ब्याह भी लड़के-लड़कियों के शासन की ओर से तय

होंगे, ऐसी परिस्थिति आ जायेगी कि हमारे घरेलू मामलों में भी शासन हस्तक्षेप करेगा।

एक दिशा हमारी गलत होती जा रही है, इस दिशा को बदलना है। स्वस्थ रीति से, शांतिमय तरीके से जनता की शक्ति से, हुल्लडबाजी और गुंडेबाजी से नहीं। जनता के मन का प्रदर्शन करके जनता की शक्ति का प्रदर्शन करके संगठित रूप से। लेकिन उस शक्ति का प्रदर्शन तभी सम्भव होगा जब वह रहेगा शांतिमय। अगर ये नहीं होगा तो मुझे स्पष्ट दीख रहा है आपको दिखे या न दिखे कि आज की जो स्थिति है उसमें से तानाशाही का निर्माण होगा। कोई रास्ता मिलता नहीं है, जनता को, असंतोष प्रकट नहीं होता है, कोई विधायक रास्ता हम लोग नहीं देते हैं, चैनल नहीं देते—जैसा गांधीजी ने स्वराज की पिपासा को, स्वराज की भूख को, प्यास को एक विधायक दिशा दी और ऐसी दिशा दी कि करोड़ों लोग उस दिशा में चल पड़े, मगर आज यह नहीं किया जाता है तो क्या होगा? कहीं रेल की पटरी उखाड़ी जायेगी, कहीं रेलवे स्टेशन में आग लगा दी जायेगी। कहीं थाने पर, थाने पर तो शायद मुश्किल हो, पुलिस चौकियों पर लोग हमला करेंगे। कहीं स्कूल में आग लगा देंगे, कहीं कालेज में हो जाये, कहीं ब्लाक के आफिस में आग लग जाये। जनता का असंतोष है यह प्रकट होगा, हिंसा होगी। क्रांतिकारी हिंसा नहीं, अराजकता फैलेगी उससे।

मैंने कहा है और फिर दोहराता हूं कि देश की सभी क्रांतिकारी पार्टियों से मेरा सम्बन्ध है, केवल सबन्ध ही नहीं है मित्रता है। नक्सलपंथियों से, मार्क्सवादी कम्युनिस्टों से है। ये जो दक्षिणपंथी हैं उनसे कम है। क्यों है भगवान जाने। मगर वो मुझे बराबर गालियां देते रहते हैं। कांग्रेस में भी अनेक मित्र हैं। विपक्षी दलों में भी अनेक मित्र हैं। मैं कोई ऐसी संगठित शक्ति देखता नहीं हूं देश में जो हिंसा की शक्तियों का संग्रह करके हिंसक क्रांति-रक्त क्रांति को सफल बना सके। उससे अराजकता फैलेगी और फिर कोई भी शासक हो इन्दिराजी हो और कोई हो, सेना हो सकती है, वो कहेगी अब तो देश बिगड़ रहा है। मिट जायेगा देश में आग लगी हुई है, तानाशाही के सिवा रास्ता नहीं है। देश के बुद्धिजीवी लोग कह रहे हैं लोकतंत्र से कुछ होने जाने वाला नहीं है। तानाशाही चाहिए, डिक्टेटरशिप चाहिए, तो इसमें से तानाशाही निकलेगी।

इसलिए मेरा दावा है कि मैंने और मेरे साथियों ने, युवक साथियों ने, छात्र साथियों ने जनता में आज फैले हुए घोर असंतोष को एक हमने रास्ता दिया है। ऐसा रास्ता दिया है जिससे समाज का परिवर्तन होगा। पटना की सभा में मैंने कहा कि ये मंत्रिमंडल के इस्तीफे के लिए और विधानसभा के विघटन के लिए संघर्ष नहीं है—यह तो पूर्ण क्रांति के लिए संघर्ष है। सम्पूर्ण क्रांति सारे जीवन की क्रांति है। उस तरफ हमें कदम बढ़ाना है।

मगर छात्र सैकड़ों की तादाद में नहीं हजारों की तादाद में कम से कम एक वर्ष के लिए पढ़ाई छोड़ कर संघर्ष के लिए अपना जीवन समर्पित नहीं करेंगे तो कुछ नहीं होगा, हजारों की तादाद में क्रांतिकारी विद्यार्थी जो क्रांति के नारे लगाते हैं क्रांति का सपना देखते हैं और सच्चे भाव से करते हैं वे कालेज छोड़ करके एक वर्ष के लिए आयें—गांधीजी ने तो एक वर्ष में स्वराज कहा था, मैं तो उनके चरणों की धूल के बराबर हूं, मैं क्या कहूं—लेकिन अगर युवकों की ऐसी शक्ति मिल जाए, तो एक वर्ष में सारे समाज का रूप बदल जाएगा।

अब मैं लड़ाई के मैदान में आ गया हूं आज अपने देश में यह नई क्रांति हो रही है, लोकतांत्रिक क्रांति, जनक्रांति, शांतिमय क्रांति नये समाज के निर्माण के लिए। भ्रष्टाचार उन्मूलन, महंगाई पर रोक, शिक्षा में आमूल परिवर्तन, बेरोजगारी, के इन सवाल का कोई एक दिन में हल नहीं होने वाला है। युवकों, छात्रों, जनता के और भी प्रश्न हों स्थानीय, वे सब शामिल होंगे। इनके लिए देश भर में देशव्यापी क्रांति होने वाली है, एक वर्ष में हो, दो वर्ष में हो, वह पक रही है। उसके लिए गुजरात पहला और बिहार दूसरा। गुजरात में एक माने में विफलता हुई लेकिन उस बात को बार-बार दोहराने की जरूरत नहीं है। इस माने में बहुत बड़ी सफलता भी हुई है कि युवकों, छात्रों ने अपनी शक्ति से, जनता के समर्थन से और वहां की सज्जन शक्ति के, रविशंकर महाराज जैसे पूज्य नेताओं के समर्थन से जो उन्होंने विजय प्राप्त की वह कोई छोटी बात नहीं है, विफलता इस माने में हुई कि इतनी बड़ी जीत के बाद आगे का काम नहीं हुआ। लेकिन मुझे विश्वास है कि वह आगे का काम होनेवाला है।

गांधीजी स्वराज्य की लड़ाई की तैयारी कर रहे थे; उनके अन्दर तो अजीब एक मिलन था शक्तियों का। ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है लेकिन बापू के अन्दर भी इतनी शक्तियां मिली हुई थी कि वे ईश्वरीय अवतारी पुरुष थे ऐसा मानना पड़ेगा। उन्होंने ऐसा नहीं कहा था कि एकाएक सारे देश में आंदोलन शुरू हो जाय। वह उन्होंने करके देख लिया था १९२०-२१ में। एक वर्ष में स्वराज्य का नारा दिया था, उससे सबक लिया उन्होंने कि यह गलत हो गया। आगे जो देशव्यापी लड़ाई लड़ने वाले थे वे सिविलनाफरमानी की, सत्याग्रह की, उसके लिए जहां-तहां तैयारियां हुई। चंपारण में उन्होंने स्वयं जाकर सत्याग्रह किया। बारडोली में किया सरदार वल्लभभाई पटेल ने, वहीं उनको सरदार की पदवी मिली। इस प्रकार से देश के कई स्थानों में प्रादेशिक या स्थानीय संघर्ष हुए जिनसे जनता को अहिंसा की शक्ति का परिचय हुआ। एक विकल्प मिला। एक तरफ तो ये बम फेंकने वाले लोग थे जिनकी संख्या थोड़ी थी, बहादुर लोग थे, फांसी पर लटक गये, कालापानी उनको भेज दिया गया, लेकिन क्रांति नहीं हुई दूसरी तरफ ये लोग हैं जो सिर्फ प्रस्ताव पास करते हैं, गरम-गरम बात जरूर करते हैं। गरम दल और नरम दल का भेद मैं आपके सामने नहीं रख रहा हूं। लोकमान्य तिलक ने भी ऐसा कोई क्रांतिकारी कार्यक्रम जनता के सामने नहीं रखा जिसमें देश में क्रांति पैदा हो जाय।

गांधीजी इस बात को देख रहे थे, एक नया हथियार उन्होंने इजाद किया था, जिसको उन्होंने अमोघ बताया था। अमोघ हमारे पास हथियार है यह अहिंसा का असहयोग का, अहिंसक प्रतिकार का, जिसका कोई उत्तर नहीं है, कोई भी जवाब इसका नहीं दे सकता ऐसा उनका दावा था। उसकी तैयारी भी इसी प्रकार से हुई। चंपारण हुआ, बारडोली आदि हुआ, झंडा सत्याग्रह नागपुर आदि का हुआ और धीरे-धीरे इस तरह देश में। वायसराय की कौंसिल में चर्चा होती थी कि युद्ध

→

क्या कह रहा है ? कुछ लोगों की राय थी कि चले हैं ये साबरमती आश्रम से तो इनको क्यों नहीं गिरफ्तार कर लिया जाता। कुछ लोगों ने कहा कि बेकार बात है। उनको हीरो क्यों बनाया जाय। यह नमक कानून तोड़ने से क्या होने वाला है। लेकिन देश के मानस को उन्होंने तैयार कर दिया था। सारा देश इन्तजार कर रहा था उनके इशारे का और दांडी में पहुंचकर जब उन्होंने नमक उठाया तो अब मैंने आपको पुरुषोत्तम दास टंडन पार्क की घटना का जिक्र किया, उसकी तस्वीर आज भी हमारी आंखों के सामने है और देश भर में यह नमक सत्याग्रह फिर आग की तरह फैल गया। और अंग्रेज को मजबूर होकर उनके साथ समझौता करना पड़ा स्वराज्य नहीं मिला लेकिन इरविन गांधी पैक्ट हुआ। एक कदम आगे बढ़े गांधीजी।

आज बिहार के आंदोलन को मैं उसी रूप में देखता हूं कि देशव्यापी आंदोलन की यह तैयारी है। उसकी जिम्मेदारी हम पर है, बिहार के छात्रों पर है, युवकों पर है, जनता पर है। यह भार आप पर नहीं लादता हूं। लेकिन मैं आपकी सहानुभूति जरूर चाहता हूं उसको आप समझें। मुझे बड़ा दुख है कि जिनके हाथों में सत्ता है वे हर चीज को ऐसा ही समझते हैं कि उनके विरुद्ध हो रहा है। ऐसा लगता है कि इनका सिंहासन इतना डोल रहा है, इतना कमजोर है कि कहीं कुछ होता है तो लगता है कि बस अपने को बचाना चाहिए और बचाने के लिए क्या उपाय रहता है इनके पास ? अब पटना आप चले जायें जहां मंत्रियों के निवास, सेक्रेटेरियेट विधानसभा भवन आदि हैं वहां आप देखेंगे कि सारा किलाबंदी करके रखा है, लकड़ी के मोटे-मोटे बल्ले चारों तरफ से घेरे हुए हैं। अगर आप किसी विधायक के क्वार्टर में भी जाना चाहें, किसी विधायक से मिलने के लिए तो बगैर परमिट के जा नहीं सकते। अब परदानशीन होकर के ये बैठ गये हैं। जनता के प्रतिनिधि हैं और जनता से इतनी दूर अलग होकर किलाबंदी करके वहां परदे में बैठे हैं। पहले जब कभी बिहार में शादियां होती थीं तो जैसे गिना जाता था कि फलाने बाबूसाहब की शादी में पांच हाथी आये, दस हाथी आये। हमारे बिहार में शादी की शान को हाथियों की संख्या से गिना जाता था। फिर इधर मजाक चलता था कि उसकी शादी में कितने मंत्री आये थे, जितने ज्यादा मंत्री उतना ज्यादा महत्व उस शादी का हुआ अब ये मंत्रीगण शादियों में भी जाने से डरते हैं।

अब वे निर्भर करते हैं बन्दूकधारी उनकी पुलिस पर। पुलिस चाहे वह बार्डर सेक्योरिटी की हो, चाहे सी. आर. पी. या सेंट्रल रिजर्व पुलिस हो अन्ततोगत्वा सेना का कभी भी आन्तरिक मामलों में इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। यह खतरनाक बात है अच्छी बात नहीं है देश के नागरिकों को इसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए, सेना को अगर बार-बार आन्तरिक मामलों में इस्तेमाल किया तो लोकतंत्र के लिए भयानक खतरा है। किसी न किसी सेनापति के दिमाग में यह बात आ जायगी कि अगर हम देश की रक्षा हम ही कर सकते हैं अन्ततोगत्वा हमारी ही आवश्यकता होती है इस सिविल गवर्नमेंट का तो हम अपने हाथ में क्यों गवर्नमेंट न ले लें ? यह नहीं होना चाहिए, यह गलत है।

लेकिन क्या करें कहते हैं जनता ने हम को चुनकर भेजा है और जयप्रकाश नारायण और उनके सब लोग जनविरोधी हैं लोक विरोधी हैं, तो *बाबा जनता ने चुनकर भेजा* है तो जनता का समर्थन लीजिए' सिर्फ पुलिस का क्यों समर्थन लेते हैं ? संगीन और बन्दूकों के घेरे में अपने अपने आपको क्यों रखा है ? और जिस आंदोलन को दबाना चाहते हैं आप बस यही एक बन्दूक की ताकत है, इसी से आप दबाते हैं ? आप आइये मैदान में, आपकी सभायें हों, हमारी सभायें हों हमारे छात्रों की सभायें हों, आपके छात्र आ जायें, बहस करें, विचारों का संघर्ष होना है तो अच्छी बात है।

आज हम आपकी मदद चाहते हैं। आंदोलन अब केवल छात्र संघर्ष नहीं रहा, युवा संघर्ष नहीं रहा, जन संघर्ष बन गया है गांव-गांव में जहां हम गये नहीं, कोई और गया नहीं, जन संघर्ष समितियां अपने आप बन गई हैं। छात्र संघर्ष समितियां बन गई हैं। हालांकि हमने कहा कि हाई स्कूल के बच्चों को छोड़ दिया जाए, फिर भी उन्होंने भी छात्र संघर्ष समितियां बना ली हैं। पटना में, जहां मैं रहता हूं, महिला चरखा समिति में, हमारी पत्नी ने उसकी स्थापना की, ११-१२ साल के दो लड़के आये। कहने लगे हम भी सत्याग्रह करेंगे, हम भी जेल जायेंगे। हमने कहा बच्चो तुम्हारा अभी जेल जाने का काम नहीं है। तुम्हारे बड़े भाई गए हैं ? तो पता चला कि उनके बड़े भाई गए हैं। उस परिवार से तीन जेल गये हैं। हमने कहा कि तुम लोग वानर सेना बनाओ। स्वराज की लड़ाई के जमाने में वानर सेना ने बहुत काम किया था। बच्चों में उत्साह ही ऐसा है कि छोटे-छोटे बच्चे आ रहे हैं।

मैं तो इसमें बहुत आशा देखता हूं और आप सबका समर्थन मिलेगा। हमें बहुत सत्याग्रही नहीं चाहिए। लेकिन एक समय आ सकता है कि उत्तर प्रदेश से भी संगठित होकर जो नारे हैं आंदोलन के उन्हीं नारों को लगाते हुए (आप वहां आयें)। उसमें आप अशोभनीय नारे लगायेंगे किसी को गाली देंगे तो हम आपका सत्याग्रह स्वीकार नहीं करेंगे, लौटा देंगे। हमारे नारे हैं सम्पूर्ण क्रांति के। सम्पूर्ण क्रांति का जो सबसे महत्वपूर्ण अंग होगा वह सांस्कृतिक क्रांति होगी, वह नैतिक क्रांति होगी। हम अपना नैतिक उत्थान करना चाहते हैं। भ्रष्टाचार के विरुद्ध हम लड़ाई लड़ना चाहते हैं तो हम छात्र बैठकर वहां लड़कियों के साथ छेड़खानी करेंगे ? परीक्षा भवन में बैठ कर हम नकल करेंगे ? और हम कहेंगे कि भ्रष्टाचार के खिलाफ हम आंदोलन लड़ रहे हैं ? अपना सुधार हमें करना चाहिए तब तो हमें अधिकार होगा दूसरों से कहने के लिए। और हम खुद भ्रष्ट हैं, अपनी आय का हम हिसाब नहीं रख रहे हैं, अपनी यूनियन के पैसे हम खा गये हैं जो हिसाब मांगता है उसको पिटवा देते हैं। ऐसे छात्रों को कोई अधिकार मिला हुआ है कि बहुगुणा जी के खिलाफ आंदोलन करें कि यहां बड़ा भ्रष्टाचार फैला हुआ है ?

महिलाओं का हमें बड़ा बल मिला है। आज बिहार में नारी शक्ति पैदा हो रही है। मैं अधिक से अधिक समय देना चाहता हूं बिहार को, क्योंकि उसको बारडोली समझ रहा हूं। उसकी सफलता पर आगे की सफलता निर्भर करती है। अगर विफल हो गया, वह अगर टूट गया, उसको अगर दबा

→

दिया गया तो फिर जनता के लिए कोई आशा नहीं है। जनता के सामने कोई दूसरा रास्ता ही नहीं रहेगा सिवा इसके कि अपने क्षोभ के कारण कोई पुरुषोत्तमदास पार्क में आकर के आत्माहुति कर लेगा। और किसी ने आकर थाने में आग लगा दी, किसी ने और कुछ कर दिया। मैं बार-बार दोहराऊंगा नहीं, कह चुका हूं उसमें से देश के निर्माण की विधायक शक्ति नहीं बनने वाली है।

स्वराज की लड़ाई के बाद आज सब से महत्व का कार्य हो रहा है। चूंकि मैं उस कार्य में लगा हूं, इसलिए नहीं कह रहा हूं। इसका सारा श्रेय छात्रों को है। थोड़ा बहुत आह्वान के रूप में मुझे श्रेय दिया जाता है। काम तो उनका किया हुआ है। यह सबसे महत्व का काम है और सफल होना है तो नया भारत बनता है। इसमें हमें कोई शक नहीं है। आजादी की लड़ाई के हम सिपाहियों ने जो सपना देखा था वह २८ वर्ष के बाद नजर नहीं आ रहा है, वह भारत लोकशक्ति से पैदा होगा इसमें हमें कोई सन्देह नहीं।

□ उ० प्र० के ८ सर्वोदय कार्यकर्ता बिहार पहुंच गये हैं। कार्यकर्ता १६ जुलाई को पटना पहुंचने पर जे० पी० से मिले, अगले कामों की चर्चा कर बिहार के विभिन्न भागों में काम के लिए फैल गये हैं। उ० प्र० सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष महावीर सिंह ने जे० पी० को आश्वासन दिया है कि उ० प्र० के कार्यकर्ता बिहार पर भार नहीं बनेंगे। उ० प्र० सर्वोदय मंडल का कैम्प कार्यालय फिलहाल कदम कुआं पटना में रहेगा।

सर्व सेवा संघ का कैम्प कार्यालय पटना में खुला है। पता इस प्रकार है: सर्व सेवा संघ, ७० रोड नं० २ राजेन्द्र नगर, पटना—१६।

संघ मंत्री ठाकुरदास बंग का भी अब यही पता रहेगा। सर्व सेवा संघ का मुख्यालय गोपुरी में ही रहेगा।

सेनानी निकल पड़ा है

श्रीधर महादेव जोशी

अब तक मन भर चर्चा और कण भर काम का रिश्ता था, आज पर्याप्त काम और कम से कम चर्चा का सूत्र अपना कर तरुणों को अपना पुरुषार्थ प्रकट करना होगा।

करीब दो वर्ष पूर्व सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण ने 'इण्डियन एक्सप्रेस' में एक लेख द्वारा भारतीय लोकशाही के भवितव्य के बारे में अपनी व्यथा व्यक्त की थी। उसी के बाद विनोबा-जयन्ती के निमित्त मणिभवन बम्बई में आयोजित एक सभा में वे और मैं सभामंच पर पास-पास बैठे थे। तब उन्होंने उक्त लेख के सबंध में मेरी प्रतिक्रिया जाननी चाही। मैंने कहा आपके लेख पर राजनीति का गहरा रंग चढ़ा हुआ है। (इट इज फुल ऑफ पोलिटिकल ओव्हरटोन्स) भारतीय राजनीति की गाड़ी कीचड़ में फंसी है, यह आपकी धारणा मुझे मान्य है। पर क्या इस संबंध में आपको अपनी जिम्मेवारी महसूस नहीं होती ? क्या लोकनीति के उपासक का राजनीति की तरफ लापरवाही बरतते रहना ठीक है। क्या राजनीति और लोकनीति में कोई परस्पर सम्बन्ध नहीं है ? विनोबा तो अब वृद्ध हो गये हैं और उनका पिण्ड तो पूरा न अध्यात्म का है। इस अवस्था में उनसे हमारी कोई अपेक्षा नहीं है। उनका आशीर्वाद ही हमारे लिए पर्याप्त है। पर आप राजनीति के बारे में निष्क्रिय नहीं रह सकते। मैं यह नहीं कहता कि आप चुनाव में खड़े हों मन्त्री बनें या समाजवादी दल का नेतृत्व करें। वह ठीक भी नहीं है पर जब जनता में तीव्र असंताप फैल जाए और लोकक्षोभ प्रकट होने लगे, तब जनता का नेतृत्व कर उसका मार्ग दर्शन करने की जिम्मेवारी आप उठायें, हमारी अपेक्षा ऐसी क्या गलत मानी जायेगी ? लोकशाही का भविष्य खतरे में है, केवल आक्रोश व्यक्त करने से काम नहीं चलेगा।

अब हमारा क्या कर्त्तव्य है ?

लगा, मेरी प्रतिक्रिया सुनकर जे० पी० का मन व्यथित हुआ। मैंने सोचा, व्यर्थ ही मैं इतना कठोर बोल गया। अब जयप्रकाशजी द्वारा बिहार-आंदोलन का नेतृत्व ग्रहण करने और उनके खिलाफ शासकीय दल द्वारा उठाये गये बवंडर से मुझे दो साल पूर्व के उस प्रसंग की बार बार याद आती रहती है। जयप्रकाश जी ने अपनी जिम्मेवारी सम्हाल ली है। तब फिर हमारा क्या कर्त्तव्य हो जाता है ? हम अपनी जिम्मेदारी स्वीकार करेंगे या नहीं ? जयप्रकाश नारायण और

आचार्य विनोबा भावे के भूदान ग्रामदान आंदोलन में मेरी आस्था है। देहातों में पदयात्रा कर ग्रामीण जनता को जागृत करने का जो अहर्निश प्रयत्न किया जा रहा है कोई भी इसके महत्व को अमान्य नहीं कर सकता इसलिए जयप्रकाशजी के आवाहन पर हजपसर सेवा दल की रैली में मैंने राष्ट्र सेवा दल की ओर से भूदान आंदोलन के लिए एक वर्ष देने का आश्वासन दिया था और उसे अधिकांश पूर्ण भी किया। उस आश्वासन के कारण ही नाना साहब गोरे द्वारा प्रवर्तित गोवा-मुक्ति सत्याग्रह में मैं सक्रिय भाग नहीं ले सका। उस समय सेवादल के भूदान पथक के साथ मैं खानदेश में घूम रहा था। एक सभा में किसी ध्येयवादी व्यक्ति ने चिल्लाकर कहा "जोशी जी, आपका स्थान इस समय गोवा के कारागृह में है। यहां खानदेश में नहीं।" परन्तु मैं लाचार था। मुझे सेवा दल की ओर से दिए गए वचन की पूर्ति करनी थी।

सर्वोदय में क्यों ?

भूदान आंदोलन में निहित सुप्त शक्तियों का मुझे अनजाने भान हो गया था। आगे चलकर आंदोलन व्यापक होता गया। भूदान का रूपांतर ग्रामदान में किया गया पर सर्वोदयी कार्यकर्ताओं की नितांत श्रद्धा के बावजूद ग्रामदानी आंदोलन जनता के मानस को नहीं पकड़ सका। भूदान आंदोलन की मुख्य प्रेरणा नैतिकता की थी, शैक्षणिक थी और मुझे उसकी आवश्यकता महसूस हो रही थी। भारत में यदि सच्ची क्रांति होनी है तो उसका प्रारंभ ग्रामीण जनता के जीवन से ही होना चाहिए, यह मेरी भावना थी। जयप्रकाशजी की भी इस सम्बन्ध में पूरी श्रद्धा थी। रंगून में हुई एशियाई समाजवादी परिषद में उन्होंने कहा था कि एशिया की समाजवादी क्रांति की नींव कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों द्वारा नहीं, बल्कि खेतों में काम करने वाले खेतिहर मजदूरों व छोटे किसानों द्वारा डाली जायेगी। इसके लिए वे भूदान-ग्रामदान ग्राम स्वराज्य आंदोलन में सतत कार्यरत रहे। उन्होंने उसके लिए 'जीवनदान' दिया, इसके लिए उन्होंने अपने दल से दूर होना भी स्वीकार किया और वे आचार्य विनोबा के शिष्य बने क्योंकि उन्हें अपना क्रांति का स्वप्न साकार करना था।

यह तो कर्त्तव्य ही था

उस दिन वर्धा के एक भाषण में जयप्रकाशजी ने कहा कि ग्रामदान-ग्राम राज्य की कल्पना जनता के मन में रूढ़ करने के लिए मैं गत पन्द्रह बीस वर्षों से सतत् प्रयत्नशील हूं। इसके लिए बिहार के मुसहरी ब्लाक में जाकर मैं बैठा भी। वहां रचनात्मक कार्य द्वारा गरीब-पीड़ित जनता की सेवा की जा रही है, पर केवल इतने से काम नहीं चलेगा शासन की गलत नीति राजनैतिक लोगों की सत्ता-लोलुपता, देश की कुल परिस्थिति आदि के कारण गरीब जनता का दुःख घटने की बजाय बढ़ता ही जा रहा है। भ्रष्टाचार की परिसीमा हो गई है। सामाजिक जीवन में सर्वत्र त्रास है। गुजरात में कालेज के छात्रों के लिए सहनशीलता जब असह्य हो गयी तब उन्होंने शासन के विरुद्ध विद्रोह का झंडा उठाया। उन्होंने मंत्रिमण्डल को त्याग पत्र देने के लिए विवश किया और अन्ततः सत्ता दल को विधानसभा बरखास्त करने पर मजबूर किया। इसके पश्चात नया कदम उठाने में वे सफल नहीं हुए परन्तु जो पराक्रम उन्होंने जनमत के जोर पर किया, कम कीमती नहीं है। गुजरात के बाद बिहार में विस्फोट हुआ। विद्यार्थियों ने अपनी बारह मांगें पेश की जिनमें आठ उनकी अपनी दैनन्दिन कठिनाइयों के सम्बन्ध में हैं और शेष चार व्यापक स्वरूप की हैं। भ्रष्टाचार का निर्मूलन करो, बेकारी दूर करो, महंगाई एवं भाववृद्धि पर नियन्त्रण करो और शिक्षा पद्धति में आमूलचूल परिवर्तन करो, इस प्रकार की उनकी मांगें हैं। इसके लिए उन्होंने जब आंदोलन आरम्भ किया तब शासन की

शिक्षा के मोर्चे पर पंजाब के बढ़ते चरण

पंजाब ने विगत दो वर्षों के दौरान शिक्षा के मोर्चे पर सराहनीय प्रगति की है

- ६ से ११ वर्ष की आयु वर्ग के ९३ प्रतिशत बच्चे प्राथमिक शालाओं में दाखिल किये गये है, जबकि राष्ट्रीय लक्ष्य ९० प्रतिशत है।
- विगत दो वर्षों मे प्राथमिक स्तर पर ५ लाख से भी अधिक अतिरिक्त दाखिले हुए है।
- वर्ष १९७३ के दौरान एक हजार नयी प्राथमिक शालाएं खोली गयी है जिससे प्रत्येक ग्राम से एक किलोमीटर की दूरी के भीतर एक शाला हो गई है।
- सरकार ने प्राथमिक शिक्षा के लिए निदेशालय स्थापित करने का निर्णय किया है।
- राज्य में १९७४-७५ मे शिक्षा के विस्तार के लिए ५२ करोड़ ४३ लाख रुपये की राशि निर्धारित की गई है जबकि १९७३-७४ में निर्धारित राशि ४५ करोड़ ४६ लाख थी।
- शाला स्तर पर विज्ञान और खेलकूद के विषय अनिवार्य कर दिये गये है।
- पंजाब में शिक्षा की रोजगारोन्मुख प्रणाली लागू करने के लिए कुलपतियों की एक समिति गठित की गयी है।

पांचवीं पंचवर्षीय योजना में पंजाब में शिक्षा का विस्तार नयी ऊँचाइयों का स्पर्श करेगा।

ज० स० वि०/७४,३२२

ओर से उन पर अमानुषी अत्याचार हुए। उस समय जयप्रकाशजी पटना में रुग्ण शय्या पर पड़े थे। उन्हें कैसे चैन पड़ती? युवकों के इस आंदोलन का नेतृत्व लेना उनके लिये अनिवार्य हो गया। सर्वोदयी नेता के नाते भी उनका यह कर्तव्य ही था।

प्रच्छन्न आरोप

जयप्रकाशजी अब देहातों में काम करने से ऊब गये हैं। *अब वे आंदोलनवादी बन गये हैं*, सर्वोदय की उदात्त भूमिका छोड़कर अब वे पुनः राजनीति में कूद पड़े हैं, इस प्रकार के *प्रच्छन्न आरोप उन पर इन्दिरा गांधी से* लेकर छोटे-बड़े सभी कांग्रेस नेताओं की ओर से किये जाने लगे। परन्तु वर्धा के सर्वसेवा संघ सम्मेलन में भी जब इस प्रकार का प्रतिपादन कुछ सर्वोदयी नेताओं द्वारा किया गया तब मुझे बड़ा क्षोभ हुआ। उस समय मुझे महाभारत के उस प्रसंग की याद पुनः एक बार अनायास ही आ गयी।

कल्पना दृढ़ हुई

जयप्रकाशजी ने सर्वोदयी भूमिका को लेकर ही छात्र-आंदोलन का समर्थन किया है। उन्होंने विद्यार्थियों का नेतृत्व कुछ शर्तों के साथ ही मान्य किया है। इसके लिए वे विनोबाजी की सम्मति लेने हेतु रुके नहीं। उन्होंने लोकनिन्दा की भी परवाह नहीं की। विनोबाजी के कुछ निकटवर्ती अनुयायियों को लगा कि उनको विनोबाजी से विचार-विनिमय करने के पश्चात् *ही यह जिम्मेदारी* उठानी चाहिए थी। ऐसा न करने के कारण कुछ लोग उनसे नाराज हैं। जयप्रकाशजी ने विधानसभा भंग करने की मांग का जो समर्थन किया है, वह विनोबा जी को पसन्द नहीं है, यह स्पष्ट है। फिर भी जयप्रकाश जी अपनी प्रतिभा के अनुसार ही चलें, ऐसा उन्हें लगता होगा, यह मेरी कल्पना थी। वर्धा के सर्वसेवा संघ के सम्मेलन में उपस्थित रहने के पश्चात् मेरी यह धारणा दृढ़ हुई है। विनोबाजी जयप्रकाश में प्रकट हुए प्रकाश को मिटा कर वहां अन्धकार करना नहीं चाहते थे वेदान्ती हैं, उन्हें अन्ध श्रद्धा से नफरत है। फिलहाल 'जयप्रकाश विरुद्ध जय अन्धकार' का सामना हो रहा है। ऐसे मौके पर जयप्रकाश जी के हाथ कमजोर करने का पाप विनोबा कैसे करते? इसीलिए उन्होंने अपने ढंग से समझौता करा दिया। उनकी यह धारणा है कि सर्वसेवा संघ में विभिन्न मतभेदों के बावजूद सबका हृदय एक है। मानवी अच्छाई के बारे में आस्तिक बुद्धि होने पर मतभेदों के रहते हुए भी सर्वसेवा संघ को सक्रिय रहना चाहिए और वह सक्रिय रहेगा, विनोबा जी को मन ही मन ऐसा विश्वास है और इसीलिए उन्होंने बड़ी युक्ति से उस समय के गत्यावरोध को दूर कर दिया। विनोबाजी से विचार विनिमय किये *बिना बिहार आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार* कर लेने के कारण और खासकर विधानसभा *भंग करने की मांग को बढ़ावा देने के कारण* सर्वसेवा संघ के जीवन में यह अत्यन्त नाजुक प्रसंग उपस्थित हुआ था। ऐसे समय मेरे जैसे संघ बाह्य कार्यकर्ता को सर्वसेवा संघ के मंत्री की ओर से सम्मेलन का निमन्त्रण मिला। तब मुझे अच्छा ही लगा क्योंकि इस बहाने मुझे परिस्थिति के प्रत्यक्ष अवलोकन, विचार-विनिमय का अवसर और विनोबाजी से भेंट का त्रिविध लाभ मिल रहा था।

सर्वसेवा संघ के अधिवेशन में उपस्थित रहने का मेरा यह प्रथम ही अवसर होने के कारण मुझे इसके बारे में विशेष उत्सुकता और जिज्ञासा थी। अधिवेशन के लिए सभी राज्यों के प्रतिनिधि और लोकसेवक आये हुए थे। दो-चार युरोपियन युवक युवतियां भी *आयी हुई थीं। सम्मेलन की विविधता और विचित्रता मेरी कल्पना से भी अधिक मनोहारी थी।* गेरुए वस्त्र धारण किये हुए संन्यासी मुनि भी वहां थे और छोटे बच्चों के साथ गृहस्थाश्रमी दम्पत्ति भी। वहां तरुण भी थे और वृद्ध भी। आधुनिक पद्धति के बाल बढ़ाये हुए संन्यासी वृत्ति के तरुण भी वहां दिखाई दिये। भिन्न भेष, भिन्न भाषा, भिन्न जाति, भिन्न धर्म के इन पांच-छह सौ लोक सेवकों को एकत्र पिरोने वाला धागा था, महात्मा गांधी और विनोबा की सिखावन। सत्य, अहिंसा और संयम का पालन करते हुए लोकसेवा करने और उसी में जीवन साफल्य अनुभव करने की हमारे राष्ट्रपिता की सीख है। सर्वसेवा संघ के माध्यम से लोग उसे अमल में लाने का प्रयत्न कर रहे हैं। गांधीजी के पश्चात् विनोबाजी द्वारा उन्हें भूदान, ग्रामदान एवं ग्राम राज्य की प्रेरणा मिली है। अधिवेशन का यह दृश्य देखकर मन में हमारी पुरानी कांग्रेस की स्मृति-जागृत हुए बिना नहीं रही। सारे भारत का चित्र मुझे वहां दिखाई दिया। विविधता में एकता का दर्शन हुआ।

आशा पल्लवित हुई।

सब दल टूट रहे हैं, फूट रहे हैं। क्या *सर्वसेवा संघ में भी फूट पड़ेगी? बिहार में* उठे हुए तूफान से सर्वसेवा संघ की नाव तो नहीं डूब जायेगी? इस आशंका से मन व्यथित हो रहा था। ऐसा न हो यह मनोगत *था। इन सबकी इतने वर्षों की साधना तपस्या* व्यर्थ चली जाय, ऐसा कौन सोचता होगा। *सर्व सेवा संघ के इस हथियार का यदि* जयप्रकाशजी ने कुशलता से प्रयोग किया, तो वह मौलिक क्रांति का साधन बन सकेगा ऐसी आशा भी मेरे मन में पल्लवित हुई। सुना है, गांधीजी ने एक बार कहा था कि विनोबा, जवाहरलाल और जयप्रकाश मेरी विरासत आगे चलायेंगे। अधिवेशन में समाचारपत्रों के संवाददाताओं से, वर्धा के दरमियान एक प्रतिनिधि ने पूछा कि यहां का वाद-विवाद और आपसी टंटे बखेड़े देखकर क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि विनोबा का भूदान-ग्रामदान आंदोलन असफल सिद्ध हो गया है। मैंने कहा—यहां के वाद-विवाद का स्वरूप झगड़े-झासे का नहीं है। राजनैतिक दलों के अधिवेशनों में जैसा बवंडर आया करता है, यहां वैसा कुछ भी नहीं है। भूदान-ग्रामदान आंदोलन सफल हुआ या नहीं, इस का निर्णय ऐसे लड़े-लड़े *नहीं किया जा* सकता। फिर भी मैं एक प्रश्न पूछना चाहता *हूं कि बिहार-आंदोलन के लिए एक सर्वमान्य* नेता क्या इसी आंदोलन से नहीं मिला? *इसी सर्वोदय आंदोलन में जयप्रकाश जी ने* करीब बीस साल तक कठोर तपस्या और कठिन कर्मयोग की साधना की है और इसी लिए उनके चारित्र्य, सरलता और सद्हेतु के के बारे में संदेह प्रकट करने की हिम्मत उनके किसी विरोधी को भी नहीं हो सकी, क्या यह सत्य नहीं है? उनकी क्रेडिबिलिटी (विश्वसनीयता) यों ही सर्वमान्य नहीं हो गई है।

जयप्रकाशजी की कल्पना

भूदान-ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य की कल्पना

को यदि सत्याग्रह की प्रेरणा से अनुप्राणित किया गया तो यह भारत की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति का साधन बन जाएगी, ऐसी मुझे आशा है। चीन में कम्युनिस्ट पार्टी ने माओ-त्से-तुंग के नेतृत्व में किसानों के द्वारा क्रांति कर दिखाई। वहां की परिस्थिति बेशक भिन्न थी। वहां उन्हें स्थापित राज्य एवं समाज व्यवस्था के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष करना पड़ा। एक के बाद एक गांव और प्रांतों पर कब्जा किया गया। अधिकृत प्रदेश पर वे नये समाज की रचना करते गये। कृषि और किसान, यही उस नई व्यवस्था का मूलाधार था। भारत की परिस्थिति कुछ और है। यहां बंदूकों के बल पर ग्रामराज्य की स्थापना नहीं की जा सकती। यहां जन-जागृति के बल पर ही, सत्याग्रही संघर्ष समितियों के जरिये ही ग्रामसभा की सत्ता प्रस्थापित की जा सकती है। जो कार्यकर्ता ग्रामसभा के माध्यम से भूमि प्राप्ति और वितरण का कार्य करते हुए ग्रामीण जनता की सेवा कर रहे हैं, उनके प्रयत्नों को पर्याप्त सफलता नहीं मिल पाई है, यह स्पष्ट है, पर इससे ग्रामराज्य की कल्पना ही गलत है यह सिद्ध नहीं होता। उसके लिए वे आवश्यक लोकशक्ति निर्माण नहीं कर सके और उसके अनुकूल लोकाभिमुख शासन भी उपलब्ध नहीं हो सका। आज देश में जो क्रांतिकारी वातावरण निर्माण हुआ है, उसकी उपेक्षा न करके जनता के असंतोष को उचित दिशा देकर लोकशक्ति निर्माण की जाए, यह जयप्रकाशजी की कल्पना है। देश की अर्थव्यवस्था सरकार के काबू से बाहर हो रही है। सत्ताधारी दल की अवस्था प्रवाह पतित व्यक्ति जैसी हो गई है। बिहार में तो सत्ताधारी दल बिलकुल सड़ ही गया है। फलस्वरूप गरीब जनता का जीवन असह्य हो गया है। जीवन की दृष्टि से वर्तमान शिक्षा सर्वथा निरुपयोगी सिद्ध होने के कारण विद्यार्थी समुदाय प्रचलित शिक्षा-पद्धति में आमूल-चूल परिवर्तन की मांग कर रहा है। भ्रष्टाचार और महगाई के खिलाफ उसने रणभेरी बजा दी है। सरकार दमन द्वारा उनकी आवाज दबाने का भरसक प्रयत्न कर रही है। जयप्रकाशजी कह रहे हैं कि इन समस्याओं के निराकरण के लिए विद्यार्थियों को कम से कम एक साल तक कालेज का मोह छोड़ कर देहातों में जाकर रहना चाहिए और वहां ग्रामीण जनता को उनके मताधिकार के बारे में जागरूक बनाना चाहिए। वे अन्याय के खिलाफ सत्याग्रह आंदोलन खड़ा करें, जगह-जगह संघर्ष समितियां स्थापित करें और समय आने पर असहयोग का प्रयोग कर ग्रामसभा की सत्ता गांव-गांव में स्थापित करें। ऐसा होगा तभी हम आज के संदर्भ में किसान और कृषि मजदूर क्रांति के वाहक बन कर समाज व्यवस्था का कायापलट कर सकेंगे। भारतीय समाज-जीवन को भ्रष्टाचार, महंगाई और बेरोजगारी का त्रिदोष हो गया है। उस पर सत्याग्रही ग्रामदानी ग्रामराज्य की 'मात्रा' लागू हो सकेगी, ऐसा जयप्रकाशजी का विश्वास है। बिहार आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार करके उन्होंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है। अब युवकों को अपनी जिम्मेवारी संभालनी चाहिए। एक दो साल यदि वे कालेज की पढ़ाई बन्द रखेंगे तो उससे कुछ बड़ा नुकसान नहीं होगा। स्वतन्त्रता-संग्राम में हजारों विद्यार्थियों ने वर्षों तक कारावास का कष्ट सहन किया था, इस बात को वे न भूलें। उसकी तुलना में एक दो साल तक कालेज का मोह छोड़ना बड़ी बात नहीं है। कम से कम बिहार के कालेज विद्यार्थियों को मैदान में उतरना ही चाहिए। उन्हें देहातों में जाकर ग्रामीण जनता से समरस होने का प्रयत्न करना चाहिए। प्रस्थापितों के जाल में फंसी हुई प्रचलित शिक्षा-पद्धति को मुक्त करने का भी यही मार्ग है। अब तक मन भर चर्चा और कण भर काम का शिरस्ता था आज भविष्य में पर्याप्त काम और कम से कम चर्चा का सूत्र अपना कर तरुणों को अपना पुरुषार्थ प्रकट करना होगा। उन्हें अपने बल और अपनी हिम्मत पर अपने जीवन में और समाज में क्रांति कर दिखानी होगी।

अभाव और गरीबी के पहाड़ों पर छात्रों की यात्रा

पदयात्री प्रताप शिखर की डायरी के कुछ पन्ने

युवा छात्रो द्वारा उत्तराखड के एक कोने से दूसरे कोने तक की गयी पदयात्रा के समाचार आप पढते ही रहे है। पदयात्रा मे कम-ज्यादा समय तक ४० छात्रों ने हिस्सा लिया। युवाओं के इस साहसिक अभियान मे कुवर प्रसून चन्द्रशेखर, शमशेर तथा प्रताप शिखर शुरु से आखिर तक रहे। पदयात्रा के दौरान प्रताप शिखर द्वारा लिखी गयी डायरी के ये अश (२५ मई से ६ जून) कहीं आपको कीमतो की तरह ऊची चढ रही पहाडी चढाई पर चढायेंगे तो कही निराशा की घाटी मे जी रहे लोगो तक नीचे उतार जायेंगे। जैसा कि इन अशों से मालूम होगा यह युवा अभियान समस्याओ के उत्तर खोजने या बने बनाये उत्तर थोपने के लिए नही था, वह तो समस्याओ को समझने ही निकला था, सब को समस्याओ में एक-एक दिन शामिल होने।

अस्कोट के विश्राम भवन मे डेरा डाला दिया है। हम लोग बाजार की ओर बढे, सारा बाजार छान डाला पर कही चाय के साथ पकोडी तक नहीं मिली। कैमरा को डी. ओ. के पास दे दिया, क्योंकि वर्जित क्षेत्र मे ले जाने की अनुमति नही है। काली नदी के उस पार नेपाल व इस पार भारत सीमान्त के लोगो मे खूब रिश्तेदारियां होती है। व्यापार भी चलता है। वैवाहिक सबधो मे नेपाल की लडकियां यहां अधिक आती हैं, भारत की कम।

बलमरा पर काली-गोरी के सगम जौल जीवी में कार्तिक सक्राति से एक हफ्ते का दोनों देशो का सम्मलिन मेला होता है।

लुम्ती मे त्रिलोक चन्द्र जोशी साथ मे है, उनसे पता चला कि वनरौत पास ही वही रहते है। कहते है कि अस्कोट के राजा पहले यही थे। आज भी मनुष्यो से दूर भागते है। काष्ठ का अच्छा काम करते हैं। जोशी जी के घर पर उनका बनाया हुआ एक खूबसूरत काष्ठ का बरतन देखा था, वे जगली मानवो का जीवन जीते हैं। आसमान रुठ गया, वर्षा आ गयी, चामी गाव के एक होटल मे टिके। यहा पर रामबास के रेशे निकाल कर रस्सी बनायी जा रही थी, खडगसिह के घर पर रुके हुए हैं। यह भोटिया बस्ती है, इस डिब्बे जैसे छोटे से मकान की छत पर चटाई, केवल चटाई डाल रखी है। इन लोगो का तिब्बत के साथ व्यापार चलता था, लेकिन चीन आक्रमण से टूट गया, अब भी कालीन आदि बनाते रहते हैं। पचाचोली पर सफेद चोटी गोरी नदी के दोनो ओर की घाटियो के विपरीत खडी है, लगता है किसी ने आगे का दरवाजा बदकर दिया हो। रास्ते मे अनेक प्रकार के झरने मिलते हैं।

मुनस्यारी ६,५०० फीट की ऊचाई पर स्थित है, सामने बर्फ से ढकी हुई सफेद चोटियां हैं, उस पार तिब्बत है। गाधी पार्क मे महिलाओ की सभा की गई। लगभग ५० महिलायें थी। बर्फ होने के कारण कार्यक्रम जल्दी समाप्त करना पडा। गुड सत्तू मिल गया। भोजन की कमी होने के कारण पानी मे सत्तू घोलकर खाया।

कालामुनि पहाड की चढाई और गिरगाव का ढाल! इस पर्वत का असली नाम कालमैनी कहते हैं। बाजार मे सभी चीजो का अभाव है। सीमान्त कहना भुलावे मे डालना है। जनता के लिये सीमान्त नही है। अब ८६०० फीट की ऊचाई पर आ गये हैं। झरने के ऊपर से मुन्याल एक खूबसूरत पक्षी चहकता हुआ उड गया, यहां कस्तूरी मृग तो समाप्त हो रहा है। कुछ लोग अपने भैसो को बुग्यालो (पहाड की चोटी पर मखमली घास के मैदान, जहां बर्फ पिघल जाती है) मे ले जा रहे हैं। जगतसिह भोत्रा कई घरो से रोटियां, सब्जी व दाल इकट्ठी करके ले आया। हमने बडे चाव से खाया। लुम्ती मे भी अनेक प्रकार की सब्जियां थी, पर रोटी खडगसिह ने ही बनाई थी। ये सब लोग तिब्बत व्यापार से टूटे हुए आदमी हैं। भोटिया चाय जो घी और नमक से बनायी जाती है, हमे पिलायी।
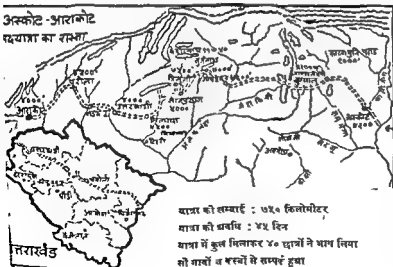
यात्रा की लम्बाई : ७५० किलोमीटर
यात्रा की अवधि : ४५ दिन
यात्रा में कुल मिलाकर ४० छात्रों ने भाग लिया
सौ गावों व कस्बों से सम्पर्क हुआ

हरियाणा की प्रगति को कहानी तथ्यों एवं आंकड़ों की जबानी

हरियाणा ने भारतीय संघ के एक अलग राज्य के रूप मे अस्तित्व मे आने के बाद विकास के विभिन्न क्षेत्रो मे असाधारण प्रगति की है। विकास के क्षेत्र मे तेजी से हुई तरक्की एवं सफलता का श्रेय राज्य सरकार द्वारा बनाई गई सभी नीतियो तथा योजनाओं को है। यद्यपि हमने अभी विकास का एक लम्बा सफर तय करना है तथापि जनसाधारण को पेश आने वाली प्रमुख समस्याओं को हल करने मे वायु की सी तेज गति से कदम उठाये गये हैं। हरियाणा की इस शानदार सफलता की कहानी आगे दिये तथ्यो एव आंकडो की जबानी सुनिए—

अनाज की पैदावार

आज हरियाणा अपनी जरूरत का अनाज पैदा करने मे न सिर्फ आत्म निर्भर हो गया है बल्कि अब यह अपनी जरूरत से भी अधिक अनाज पैदा करने लगा है जबकि वर्ष 1966 मे यह अनाज की कमी वाला राज्य था।

सिंचाई सहूलियतें

हरियाणा मे वर्ष 1972-73 के दौरान 37·16 लाख एकड़ भूमि (15.04 लाख हैक्टेयर) को नहरो से सिंचाई की सहूलियतें मिलने लगी जबकि वर्ष 1967-68 के दौरान 33 57 लाख लाख एकड़ (13·59 लाख हैक्टेयर) भूमि को ही नहरो से सिंचाई की सहूलियतें उपलब्ध थी।

मई, 1968 मे हरियाणा मे 29,000 नलकूप थे लेकिन आज राज्य मे नलकूपो की सख्या बढ कर 1,27,639 हो गई है।

गांव-गांव में बिजली

मई, 1968 मे हरियाणा के हर पाच गावो मे से सिर्फ एक गाव मे बिजली पहुची थी लेकिन नवम्बर, 1970 के अन्त तक राज्य का गांव-गाव बिजली के प्रकाश से जगमगा उठा। हरियाणा देश का पहला राज्य है जिसने शत-प्रतिशत ग्राम-विद्युतीकरण का कीर्तिमान स्थापित किया है।

उद्योगों का प्रसार

राज्य मे छोटे पैमाने की औद्योगिक इकाइयो की सख्या वर्ष 1973-74 के अत मे 13,418 थी जबकि मई, 1968 मे राज्य मे 4598 छोटे पैमाने के उद्योग थे।

पीने का शुद्ध पानी

छः वर्ष पहले राज्य के केवल 203 गावो मे ही पीने के शुद्ध पानी की सप्लाई की सहूलियतें जुटाई गई थीं लेकिन आज राज्य के अनुमानतः 700 गाव इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं और इस तरह पिछली स्थिति मे 250 प्रतिशत सुधार हुआ है।

परिवहन

हरियाणा मे यात्री परिवहन के राष्ट्रीयकरण का कार्य नवम्बर 1972 मे पूरा कर लिया गया था। इस समय हरियाणा राज्य परिवहन की 1,571 बसें हैं जब कि मई, 1968 मे सिर्फ 567 बसें थी। आज हरियाणा परिवहन सेवा देश भर मे सबसे अधिक कार्य-कुशल मानी जाती है।

कमजोर वर्गों का कल्याण

सामाजिक एव शारीरिक रूप से अशक्त व्यक्तियो को राहत देने के उद्देश्य से अनेक योजनायें चालू की गई हैं। वृद्ध तथा अशक्त व्यक्तियो को हर सम्भव सहायता दी जा रही है। अनुसूचित जातियो एव पिछड़े वर्गों के लोगो के उत्थान के कार्य को प्राथमिकता दी गई है।

सड़कें

राज्य के 60 प्रतिशत गावो को पक्की सडको से मिला दिया गया है। पक्की सड़को से मिलाये गए गाँवों की सख्या अब 4210 हो गई है जब कि मई, 1968 मे राज्य में केवल 1500 गाव ही पक्की सड़को से मिले हुए थे।

निदेशक, लोक सम्पर्क, हरियाणा द्वारा प्रचारित।

डी० पी० आर०—हरियाणा 96-डी० (74)

के साथ भेड़ पालकों के दर्शन होते हैं। बुग्यालो पर नयी घास और फूल उग रहे हैं। बर्फीली हवा चल रही है, हमारे बेहद गरम कोट भी उसके आगे ठंडे पड़ जाते हैं। सामने त्रिशूल की हिमाच्छादित चोटी है गाँव बहुत ही दूर है। घाटी की गहराई नीचे को धँसती ही जा रही है। यहां के लोग दूर ज्वालदय से बकरियो की पीठ पर सामान लाते हैं, ३५ रु० कम्बल भाड़ा पड़ता है। आलू भी ज्वालदय तक बकरी की पीठ पर जाते है। कुमाऊ के लोग धान देकर आलू ले जाते थे लेकिन अब दो जिलो के धान के व्यापार पर प्रतिबंध लग गया है। बुग्याल मे चलते हुए ऐसे लग रहा था जैसे मखमल के गद्दो पर चल रहे हों।

इस सारे इलाके के अधिकांश जवान फौज मे नौकरी करते हैं। सुकताल बुग्याल मे बिजली गिर जाने से—११० भेड बकरिया मर गयी। फिर एक बार भेड़ की बीमारी फैली थी। तब से यहा के लोग भेड़ ही नही पालते। इस सारे क्षेत्र मे महिलाओ के वस्त्र काले रंग के होते हैं। एक भी घर मे मिट्टी का तेल नही हैं, सूरज आता है उजाला लाता है, सूरज जाता है उजाला भी चला जाता है।

आज हमारे साथ अमरसिंह हैं, आजाद हिन्द फौज मे रहे हैं ६४ साल की उम्र मे भी गजब का उत्साह है। लम्बी और खड़ी मूछ। श्री अमरसिंह ने बताया कि एक बार पेनाग मे जब वे पत्थर के ऊपर भोजन कर रहे थे तो नेता जी ने पूछा पत्थर पर क्यो खा रहे हो। उत्तर दिया, "भारत आजाद होने पर सोने की थाली मे खाऊंगा। २५ साल बाद उन्हे २५ रु० पेन्शन मिल रही है।

कन्नोज गाव मे स्व0 हवलदार खीमसिंह की विधवा बहुली देवी ने पेंशन का प्रार्थना पत्र भेजा हैं उनके छोटे से दो बच्चे हैं। गरीबी ने इनके घर को अपना घर ही मान लिया हैं। यही के स्व0 शिवसिंह अमरसिंह जी के साथ रहे हैं। पत्नी भी मर गयी हैं। ७ बच्चे हैं। पहला १२ साल का। आजादी के लिए जान दे देने वाले मा बाप के बाद इन सात बच्चो को मानो गरीबी ने ही गोद ले लिया। पूरा गाव मे हमारी टोली पहुँचने पर कुछ बच्चे और लोग ऐलान करते हैं, हम लोग गीत गाते हैं, सभा के लिए लोग जुट जाते हैं। एक शराबी व्यक्ति भी वहा पहुँच कर बक-झक करने लगता है। वह यहा का प्रतिष्ठित व्यक्ति है। हवलदार व दुकानदार बालसिंह रावत है। नशे मे झूमता हुआ वह सभा की ओर मुंह कर पूछता है,'ये लोग इस इलाके मे घुस कैसे गये? इनके पास कोई परमिट है यहा आने का? मेरे पास तो इनके सम्बन्ध मे कोई कागज नही आया? इनको कैद करलो। ये चीन के जासूस हैं। इनको कत्ल करदो। गाव के लोग हसते रहे, कुछ ने उसे सभा से थोडा अलग लेजाकर हमारे बारे मे बताया। उसने समझा कि हम सरकारी लोग हैं, तेजी से डगमगाते कदमो से सभा तक आया, गाली बकते हुए कहने लगा, "अब तक क्या किया है किसी ने हमारे लिये ये, हैं खा पी कर चले जाते है। हमारा इलाका पिछडा हुआ है। हमारे लिए कुछ नही करता कोई। तुम नीचे जाना, हमारे सब अनुदान काट देना व मागे रद्द कर देना। पानी के लिए दरख्वास्त दी थी अभी तक कुछ नही हुआ। कुछ ने फिर समझाया कि हम सरकारी विभाग से नही हैं, घूम रहे हैं लोगों के दुःख सुख मे हिस्सा बटाने आये हैं। वह फिर चिल्लाने लगा ये नेता क्या कर रहे हैं। वोट लेने आ जाते हैं, बाहर करो इनको।

छात्र संगठनों की राजनीति और भारतीय संदर्भ

"छात्र आंदोलनों ने राष्ट्रवादी नेताओं की एक पूरी पीढ़ी को प्रशिक्षित किया था और उन अनेकों को सिद्धांतों की दीक्षा दी थी, जो बाद में राजनीति तथा रचनात्मक कामों में लगे थे। अब छात्र आंदोलन इस प्रकार की कोई भूमिका नहीं निभा पा रहे है। यद्यपि सक्रियता की परम्परा अभी पूरी तरह विलीन नहीं हुई है, समाज में अनुकूल परिस्थितियां दीख पड़ने पर वह पुनर्जीवित हो सकती है। फिलहाल तो जो छात्र अनुशासनहीनता सामने आ रही है वह गहरी निराशा और शिक्षा-संस्थाओं की बदतर होती जा रही हालत का ही प्रतिबिम्ब है।" बिहार आंदोलन से काफी पहले लिखे गये इस लेख में जिस अनुकूल परिस्थिति का संकेत किया था, वह आज सामने है।

छात्र संगठन अनेक प्रकार के होते हैं। इनमें एक छोर पर सुदृढ़ सैद्धांतिक आधारों पर संगठित जुझारू छात्रों के राजनीतिक गुट है तो दूसरे पर सीमित सदस्य वाले विशुद्ध सामाजिक अथवा सांस्कृतिक ऐसे संगठन, जिनका प्रभाव समाज अथवा छात्र समुदाय पर नाम मात्र का ही होता है। इन दोनों छोरों के बीच कई तरह के अन्य संगठन आते हैं। छात्रों के आंदोलन के स्वरूप से परिचित होने के लिए राजनीतिक संगठनों में से कुछ का संक्षिप्त विवेचन आवश्यक है, जिनका छात्र समुदाय में महत्वपूर्ण स्थान है।

छात्रों के सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलन में से कई को विशेष रूप से तदर्थ समूहों द्वारा संगठित किया जाता है। जब आंदोलन से संबंधित विशेष मामले पर जो शिक्षण शुल्क में वृद्धि से लेकर सरकारी नीतियों के प्रति विरोध के प्रदर्शन तक कुछ भी हो सकता है, समझौता हो जाता है तो ये संगठन प्रायः निष्क्रिय होकर समाप्त हो जाते हैं और आंदोलनकारी छात्र कक्षाओं में चले जाते हैं। लेकिन कभी-कभी किसी एक मामले को लेकर बना आंदोलनकारी संगठन उस मामले के हल हो जाने पर भी स्थायी छात्र संगठन का रूप ले लेता है और उसके सैद्धांतिक आधार निश्चित हो जाते है।

छात्रों के कुछ अति प्रभावशाली संगठन भले ही उनकी अपनी प्रेरणा की उपज हो लेकिन उनके राजनीतिक संगठन हमेशा स्व-प्रेरणा से ही नहीं बनते हैं। कई देशों में, विशेष रूप से विकासरत देशों में, वयस्कों के राजनीतिक दल छात्रों के बीच सक्रिय रहते हैं, छात्रों को महत्वपूर्ण साथी मानते हैं तथा छात्रों का समर्थन पाने के लिए काफी प्रयास करते है। फलस्वरूप विश्वविद्यालय अथवा महाविद्यालय में प्रायः राजनीतिक संघर्ष के अखाड़े बन जाते है। विकसित और विकासरत दोनों ही प्रकार के देशों में राजनीतिक दलों से सम्बद्ध छात्र संगठन भी होते हैं। इन संगठनों से प्रायः आंदोलनों और विचारधारा के प्रचार का काम लिया जाता है। ये संगठन छात्रों के बीच दल विशेष के सिद्धांतों का प्रसार करने के प्रति सचेष्ट रहते हैं और छात्रों में उस दल के अनुयायी बनाने अथवा तलाश करने में लगे रहते हैं।

राजनीति से सीधे सम्बद्ध छात्र संगठनों के अलावा कई देशों में विविध प्रकार के पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों का संचालन करने वाले संगठन भी होते हैं। ये संगठन आंशिक रूप से राजनीतिक हो सकते है जैसे कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलों अथवा ऐसे ही किसी विषय का संगठन। दूसरी ओर वे पूरे तौर पर सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक या मैत्री संगठन हो सकते हैं जैसे नाट्य संघ, धार्मिक समाज अथवा साहित्य समिति। कुछ संगठन ऐसे भी होते हैं जो विभिन्न अवसरों पर राजनीतिक तथा मैत्री संगठन दोनों ही होते हैं जैसे कि जर्मनी का 'कारपारेशन'। अधिकांश देशों में ये गैर-राजनीतिक संगठन प्रकट रूप से राजनीतिक संगठनों की अपेक्षा छात्रों को अधिक आकर्षित करते हैं। ये संगठन प्रायः शैक्षणिक कार्यक्रम में बड़े सहायक होते हैं और छात्रों को कई प्रमुख क्षेत्रों में उपयोगी प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए कुछ देशों में वाद-विवाद समितियां राजनीतिज्ञों की प्रशिक्षण शालाएं हैं क्योंकि उन में सार्वजनिक भाषण करना और संसदीय तौर-तरीकों का प्राथमिक अनुभव मिल जाता है।

पाठ्यक्रमेतर संगठन अनेक प्रकार से बनाये जा सकते हैं। कुछ देशों में सरकार अथवा विश्वविद्यालय के अधिकारी इस प्रकार की गतिविधियों को संगठित करने तथा उनके लिए वित्तीय साधन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सोवियत गुट के अधिकांश देशों और मिस्र, ताईवान तथा अन्य विकासरत देशों सहित कुछ देशों में वयस्क अधिकारी इन पाठ्यक्रमेतर संगठनों पर पर्याप्त कड़ा नियंत्रण रखते हैं। अन्य देशों में छात्र संगठनों के गठन का कार्य स्थानीय छात्रों की पहल पर छोड़ दिया जाता है और उन्हें कोई सहायता भी नहीं दी जाती। कई देशों में जिनमें ब्रिटेन के अधिकांश भूतपूर्व उपनिवेश शामिल हैं, छात्रों के सामाजिक या सांस्कृतिक संगठनों को शिक्षा विभाग अथवा सरकार के अधिकारियों से कभी पर्याप्त समर्थन या सहयोग नहीं मिला और न उन पर ध्यान दिया गया। यह हालत अब बदल रही है। अमेरिका जैसे कुछ अन्य देशों में स्थानीय विश्वविद्यालयों के अधिकारी तथा सरकारी तन्त्र अनेक प्रकार की पाठ्यक्रमेतर गतिविधियों को सहायता देते हैं। इस बात का सामान्यीकरण इतना कहने से अधिक नहीं किया जा सकता कि अधिकांश देशों में गैर-राजनीतिक कार्यों में संलग्न छात्र संगठनों का अस्तित्व है और ये संगठन छात्र समुदाय के लिए पर्याप्त महत्व के हैं।

आधुनिक समाज में युवापीढ़ी को अनेक

→

प्रकार के दबावों के बीच रहना पड़ता है। ये दबाव विश्वविद्यालय प्रांगण में स्थित राजनीतिक संगठनों के स्वरूप, छात्र की अपने समुदाय के बीच उभरने वाली छवि और युवक के राजनीतिक तथा अन्य प्रकार से सामाजीकरण के ढंग को प्रभावित करते हैं। छात्रों को अपने शिक्षण काल में कई दबावों और तनावों को सहन करना होता है। इनमें से कुछ सीधे विश्वविद्यालय से ही संबंधित होते हैं जबकि अन्य कुछ का सम्बन्ध सामान्य रूप से युवा वर्ग से होता है। किशोरावस्था और प्रारंभिक युवावस्था के साथ आने वाले शारीरिक तथा मानसिक तनावों का सामना सभी युवजनों को करना पड़ता है और उनके आचरण पर विचार के समय यह एक महत्वपूर्ण तथ्य होता है। युवजनों को अपने शरीर में होने वाले परिवर्तनों, नई तथा तीव्र आकांक्षाओं और बदलती हुई अपनी छवि के अनुकूल अपने आपको ढाल लेना चाहिए। युवाओं की यौनेच्छा तथा स्वतन्त्र व्यक्तित्व के एहसास की समस्या युवा वर्ग में बहुत महत्वपूर्ण है। विभिन्न समाज इस मामले को अपने-अपने तरीके से निपटाते हैं। उच्च शिक्षा का अनुभव इस समस्या को और गहरा कर सकता है क्योंकि इस स्तर पर दोनों ही लिंगों के युवा व्यक्तित्व प्रायः एक दूसरे के निकट आते हैं, नर-नारी संबंधों के मामले में पश्चिमी प्रभावों से ग्रसित भी होते हैं और उसी समय वे परम्परागत आचारों का पालन करने को भी विवश होते हैं। विकासरत देशों में परम्परागत एवं आधुनिक यौनाचार के बीच संघर्ष का मामला एक प्रमुख मुद्दा है। विकसित देशों में भी नर-नारी सम्बन्ध एक शाश्वत समस्या बने हुए हैं और छात्रों में भारी मात्रा में व्याप्त निराशा तथा उथल-पुथल के कारण है। विश्वविद्यालय इन समस्याओं से अपने-अपने ढंग से निपटते हैं। इनमें एक ओर तो स्कैंडेनेविया के विश्वविद्यालय हैं जो अपने छात्रों को इस मामले में पूरी छूट दिए हैं तो दूसरी ओर विकासरत देशों तथा अमेरिका के भी कुछ महाविद्यालय हैं जिनमें इस संबंध में बहुत कठोर नियम हैं।

उच्च शिक्षा के छात्रों की वय अलग-अलग देशों में अलग-अलग है। भारत में यह १६ वर्ष है तो स्वीडन में २१ वर्ष। इस अन्तर के बावजूद उच्च शिक्षा का समय सभी जगह एक जैसा ही तालमेल बैठाने, भविष्य की योजना तैयार करने तथा आत्माभिव्यक्ति के विकास का काल होता है। विशेष रूप से कला-संकाय अथवा मानविकी में 'सत्य' तथा 'न्याय' का अन्वेषण होता है और यह प्रायः उस सैद्धांतिक चेतना की ओर अग्रसर करता है जिसकी चर्चा छात्रों की राजनीतिक सक्रियता के लिए आवश्यक तत्व के रूप में की जा चुकी है। अतः यह स्पष्ट है कि युवाओं के स्वभावगत मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक पहलुओं का प्रभाव महाविद्यालयीन अनुभव, राजनीतिक सक्रियता के विकास तथा छात्र उप-संस्कृति पर पड़ता है। छात्रों की राजनीतिक सक्रियता से सम्बद्ध की जाने वाली पीढ़ियों के संघर्ष की समूची धारणा अनेक समाजों में इस बात से जुड़ी है कि महाविद्यालय में बिताया गया समय परिवार से स्वतन्त्र रहने का काल है। अभिभावकों और बच्चों के बीच प्रायः बढ़ने वाले तनाव का प्रतिबिम्ब अनेक मामलों में सभी प्रकार के अधिकार जताने वालों के प्रति बगावत की प्रतिक्रिया के रूप में सामने आता है। अमेरिका में महाविद्यालय ने छात्रों के सामाजिक और बौद्धिक विकास के मामले में 'अभिभावक के समान' भूमिका निभाने की चेष्टा परम्परागत रूप से की है और अमेरिकी छात्र समुदाय के स्पष्टवादी तत्वों ने इस चेष्टा का उत्तरोत्तर अधिक प्रतिरोध किया है।

आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में युवाओं का अनिश्चित स्तर अनेक देशों में महाविद्यालय की अवधि को कठिन बना देता है। यह राजनीतिक सक्रियता के लिए उत्प्रेरक का काम करता है क्योंकि राजनीति में आने के फलस्वरूप छात्र को जो कुछ भी गवाना पड़ता है वह जनता के अन्य किसी भी वर्ग की तुलना में बहुत कम होता है। अधिकांश मामलों में छात्र को न तो परिवार का पालन पोषण करना होता है और न किसी व्यवसाय की जिम्मेदारी,—यह तथ्य उसकी राजनीतिक तथा अन्य क्षेत्रों में जोखिम उठा सकने की क्षमता को प्रबल रूप से बढ़ा देता है। अनेक देशों में युवा वर्ग के लिए आर्थिक अवसर अनुकूल नहीं आ सकने की तुलना में बहुत कम हैं और इसका प्रभाव राजनीतिक सक्रियता में वृद्धि के रूप में सामने आ सकता है जबकि साथ ही साथ यह स्थिति छात्रों को अपने कार्यकलापों के प्रति अधिक सतर्क रुख अपनाने की ओर भी ले जा सकती है। भारत में जहाँ कि शिक्षित बेरोजगारी की समस्या बहुत विकराल है, यही अनुभव हुआ है कि उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण छात्रों में व्यापक निराशा है और इस स्थिति के परिणाम छात्रों की असंगठित रूप से अब तक यत्र तत्र भड़क उठने वाली हिंसा के रूप में आते हैं किन्तु इसका रूपांतर शक्तिशाली राजनीतिक आंदोलन के रूप में सामान्यतः नहीं हो पाता।

हमारे देश का उदाहरण इस सिलसिले में विशेष मनोरंजक है। यहां स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद की अवधि में उच्च शिक्षा का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है। बहुसंख्यक छात्र जिन स्थितियों में अध्ययन करते हैं वे दुनिया में सर्वाधिक बुरी कही जा सकती हैं। उनको मिलने वाली पुस्तकालय की सुविधाएं नाममात्र की हैं, शिक्षक अपर्याप्त हैं और उनमें भी बहुत से अयोग्य हैं, छात्रों की आवास स्थिति दयनीय है और इन सबसे बढ़-चढ़कर है, लगभग सभी क्षेत्रों में रोजगार की सम्भावनाओं का अभाव।

केवल तकनीकी और प्राकृतिक विज्ञानों में रोजगार की कुछ आशा होती है। चूं कि बहुसंख्यक छात्र कला संकाय अथवा मानविकी में प्रवेश लेते हैं, इसलिये स्थिति विशेष रूप से गंभीर है। यहां छात्रों की सक्रियता की परम्परा भी सुदीर्घ है। छात्रों ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और हजारों को अपने राष्ट्रवादी कार्यकलापों के लिए कारावास भुगतना पड़ा। अधिकांश विश्वविद्यालय प्रांगणों में शक्तिशाली राजनीतिक छात्र संगठन थे जिनमें न केवल गांधी के नेतृत्व में कार्यरत राष्ट्रवादी ही शामिल थे वरन समाजवादी, साम्यवादी तथा साम्प्रदायिक तत्वों का भी प्रतिनिधित्व था। छात्र समुदाय की सैद्धान्तिक चेतना ऊंची थी। उस समय की अपेक्षाकृत छोटी छात्र संख्या का एक बड़ा भाग सम्पन्न शहरी परिवारों से जुड़ा होने के कारण छात्रों के पास राजनीतिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त समय होता था। सन् १९४७ में स्वाधीनता प्राप्त

होने के बाद छात्रों के राजनीतिक जीवन में बड़ी सीमा तक परिवर्तन आ गया। स्वाधीनता के पूर्व छात्र आन्दोलन के समक्ष भारत की स्वतन्त्रता का एक सुस्पष्ट और निश्चित लक्ष्य था, जिसके आधार पर बड़ी संख्या में छात्रों को संगठित किया जा सकता था। छात्र आन्दोलन को प्रमुख राष्ट्रीय नेताओं का समर्थन भी प्राप्त था। स्वाधीनता का लक्ष्य पूरा हो जाने के बाद छात्र संगठनों में से अनेक ने सैद्धान्तिक राजनीति पर वाद विवाद आरम्भ कर दिया। इसके साथ ही वे राष्ट्रीय नेता जो छात्रों की गतिविधियों को बढ़ावा देते रहे थे, सरकारी नेता बनकर अपना रुख बदलने लगे और छात्रों को समर्थन देने से हाथ खींचने लगे। स्वाधीनता से पूर्व तटस्थ रहने वाले शिक्षा अधिकारियों ने भी नकारात्मक रुख अपना लिया और शिक्षा संस्थाओं के प्रांगण से राजनीतिक संगठनों को दूर रखने का प्रयास करने लगे। इन दबावों के अलावा कालेजों में प्रवेश संख्या में तीव्र गति से विस्तार तथा परिणाम स्वरूप छात्रों में समुदाय भावना की शिथिलता से स्वाधीनता पूर्व के छात्र आंदोलन का दम उखड़ गया।

भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों के प्रांगणों में अब जुझारू तथा सुसंगठित छात्र आन्दोलनों के स्थान पर उन उपद्रवों का उभार सामने आता है जिन्हें छात्र अनुशासन हीनता कहा जाता है। इनका आधार छात्रों में बढ़ती जा रही निराशा से संबंधित स्थानीय मामले होते हैं। छात्रों ने जहाँ अपने अनेक मुद्दों पर जिनमें भाषा की समस्या तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार प्रमुख है, प्रभावी रूप से संगठित करने में सफलता प्राप्त की है वहीं दूसरी ओर कोई प्रभावशाली छात्र आन्दोलन भी अस्तित्व में नहीं रह गया है। भारतीय विश्वविद्यालयों के प्रांगण में यद्यपि पाठ्यक्रमेतर गैर-राजनीतिक संगठन बड़ी संख्या में हैं किन्तु वे महत्वपूर्ण नहीं हैं। इसका एक मार्मिक कारण यह है कि अनेक भारतीय छात्रों के सामने काम करके कमाने की विवशता भी है और इसीलिए उनके पास इन गतिविधियों के लिए समय नहीं बच पाता। आंशिक रूप से इसके लिए सुदृढ़ परम्परा का अभाव भी जिम्मेदार है। स्रोतों के अभाव का सामना कर रहे तथा छात्रों को अधिक स्वतन्त्रता दिये जाने के प्रति सशंकित शिक्षा प्रशासकों ने सभी इलाकों में इन संगठनों के निर्माण की आवश्यकता की ओर से आँख मूँदकर उपेक्षा का रुख ही प्रदर्शित किया है।

छात्र आन्दोलन ने भारत के राजनीतिक जीवन तथा शिक्षा संस्थाओं के प्रांगणों में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। इन आंदोलनों ने राष्ट्रवादी नेताओं की एक पूरी पीढ़ी को प्रशिक्षित किया तथा उन अनेकों को सिद्धांतों की दीक्षा दी जो बाद में राजनीति में आये। अब ये आन्दोलन इस प्रकार की कोई भूमिका नहीं निभा रहे हैं, यद्यपि सक्रियता की परम्परा अभी पूरी तरह विलीन नहीं हुई है समाज में अनुकूल परिस्थितियाँ दीख पड़ने पर वह पुनर्जीवित हो सकती है। फिलहाल तो जो छात्र अनुशासनहीनता सामने आ रही है वह गहरी निराशा और शिक्षा संस्थाओं की बदतर होती जा रही हालत का ही प्रतिबिम्ब है।

तरुण शांति सेना : नयी सांस्कृतिक क्रांति के लिए

—कुमार प्रशांत

तरुण शान्ति सेना न तो कोई राजनैतिक सगठन है और न छात्र सगठन है। इन अर्थों मे देश के तमाम युवा सगठनो से एक अलग चरित्र है इसका। यह उन युवकों का भाई-चारा है, जिन्होंने विचार-पूर्वक अपने आगे 'युवक' के अतिरिक्त और किसी विशेषण को मानने से इनकार कर दिया है। लोकतन्त्र मे उस नागरिक की निर्णायक भूमिका है और होनी चाहिए जो किसी राजनीतिक दल के सदस्य नहीं हैं, प्रत्येक परिस्थिति का विवेचन अपनी तटस्थ बुद्धि से करते हैं। तरुण शान्ति सेना इस उपाधिहीन नागरिक की प्रतिष्ठा का सकेत देती है और इसलिए तरुणो का आवाहन करती है।

१९६७ मे बिहार मे भयकर सूखा और अकाल पड़ा था। एक तरफ लाखो लोग मौत की ओर बेबस घिसटते जा रहे थे और दूसरी तरफ जारी थे हिन्दी विरोधी या अंग्रेजी विरोधी आन्दोलन, दगे और तोड-फोड। भाषा का प्रश्न देश के लिए बडे महत्व का प्रश्न है, लेकिन मनुष्य के जिन्दा रहने के बाद। पर लाखो मौतो की सुध न लेकर जो आन्दोलन चल रहा था वह जनाकाक्षा कम राजनीतिक धकमपेल, अधिक थी (या आज जनाकाक्षा के प्रगटीकरण, का अवसर इतना कम रह गया है कि वह प्रायः राजनीतिक धकमपेल मे हिस्सेदार हो जाती है) उस वक्त जयप्रकाश नारायण ने युवको के नाम एक अपील निकाली थी और यह पूछा था कि युवक देश के लिए नयी विपदायें खडी करेंगे या इस और इन जैसी अनेक विपदाओ से लड़ेंगे ? बिहार के अकाल मे आकर काम करने का उनका आवाहन कई युवको को खींच लाया। देश विदेश से आये युवको ने उन दिनों जो काम किये उसने तरुण शान्ति सेना की कल्पना में मदद की। युवा-शक्ति के नाम पर आज जो कुछ चलता उससे अलग भी युवको की एक अच्छी संख्या है जिनके लिए कोई मच नही है। तरुण शान्ति सेना का जन्म अकाल की विभीषिका और उसके लड़ने के सकल्प के बीच से हुआ।

तरुण, शान्ति, सेना—ये तीन शब्द इस भाई-चारे की विशेषताओ के द्योतक हैं। उम्र तरुणाई की कसौटी नही है, एक विशेषता है। जीवन से जो आशा रखता हो और उसके लिए पिल पड़ने का सकल्प करता हो वह तरुण है। तरुणाई की एक विशेषता—उम्र—का इसी कारण सदस्यता के लिए आग्रह है पर तरुण की परिधि मे अस्सी साल का गांधी भी आता है। शान्ति शब्द इतना ज्यादा अवमूल्यित हुआ है कि शान्ति को कायरता का पर्याय मानते है। गतिशील शान्ति जो क्रान्ति के मूल्यो पर खडी होगी, हमारी आकाक्षा है। सैनिक की तत्परता और आत्मानुशासन तरुण शान्ति सैनिक के गुण हैं। फौज और सेना मे इस दृष्टि से गुणात्मक अतर है। किसी विशेष लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्ध, सगठित जमात सेना है। तरुण शान्ति सेना, युवको की वैसी ही सेना है।

तरुण शान्ति सेना के कार्यक्रमो के तीन लक्ष्य हैं—श्रम, सेवा और स्वाध्याय। तरुण शान्ति सेना की यह निष्ठा भी है और अनुशासन भी। आज व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन से इन तीन मूल्यों का लोप हो गया है। इन तीन निष्ठाओ के अभाव ने समाज को पगु और परमुखापेक्षी, कठोर और पलायनवादी तथा मूढ और अविवेकी बनाया है। श्रमिक की प्रतिष्ठा उसके श्रम मे भागीदार होकर ही की जा सकती है। सारा का सारा छात्र समुदाय, अपने जीवन के बेहतरीन वर्ष इस समाज की अनुत्पादक इकाई बन कर गुजार दे चूँकि उसने 'पढ रहा हूँ' की तख्ती लगा रखी है, यह तरुणाई की अपमानजनक अवस्था है। श्रम की प्रतिष्ठा सेवा का मूल है और किसी भी सामाजिक व्यक्ति के लिए प्रमाणपत्र है। संकट की अवस्था मे यह प्रमाणपत्र काम देता है। स्वाध्याय और आज की पढाई मे अतर है। जो दूसरो का बनाया इतिहास पढते भर है वे बराबर पूछते हैं कि जो आज तक नहीं हुआ वह होगा कैसे ? स्वाध्याय समस्याओ के बीच से नये इतिहास के सृजन का नाम है। श्रम, सेवा और स्वाध्याय की कमी ने समाज मे पहचान का सकट—पैदा कर दिया है। एक बडा युवक समुदाय यह पहचान नही पा रहा कि वह किस बिन्दु पर आ कर समाज से जुड सकता है। पहचान बोध का यह सकट इन तीन निष्ठाओ को जीवन मे उतारे बगैर मिटने वाला नही है, तरुण शान्ति सेना इन मूल्यो पर व्यक्तिगत और सामूहिक आचरण कर इन्हें इस देश के अंतिम व्यक्ति की लड़ाई का हथियार बनाना चाहती है।

राष्ट्रीय एकता, स्वधर्म, समभाव, लोक-तन्त्र सामाजिक समता, आर्थिक न्याय तथा विश्वशान्ति मे विश्वास रखने वाली तरुण-शान्ति सेना के नियम कायदे बहुत ढीले हैं। कोई भी युवक जो इनमे आस्था रखता है फार्म भर कर इसका सदस्य बन सकता है। देश के लगभग प्रत्येक प्रान्त मे तरुण शान्ति सेना का संगठन है। प्रत्येक केन्द्र अपने में स्वतन्त्र है और अपने कार्यक्रमो का निर्धारण वहा के साथी स्वय करते है, न कोई आदेश देता है और न कोई वैधानिक नियत्रण माना जाता है। साल भर मे दो-चार कार्यक्रम अखिल भारतीय स्तर पर उठाये जाते हैं। साल मे एक या दो बार राष्ट्रीय शिविर सम्मेलन होता है और इसी क्रम मे नीचे की इकाइया अपना शिविर सम्मेलन करती रहती हैं।

शिक्षा मे क्राति का एक समग्र विचार लेकर तरुण शान्ति सेना ने १९७० से युवकों के बीच सतत काम प्रारम्भ किया। तरुण शान्ति सेना के इन्दौर सम्मेलन मे कई युवको ने पढाई छोड कर एक वर्ष इसके लिए देना तय किया। उसी वर्ष ९ अगस्त को कई प्रान्तीय राजधानियो मे शिक्षा मे क्रान्ति के लिए युवको के जुलूस निकले। ९ अगस्त को शिक्षा मे क्रान्ति दिवस मान कर, तरुण शांति सेना का प्रत्येक केन्द्र विशेष कार्यक्रमो का आयोजन करता है, जिसमे सेमिनार, गोष्ठिया, सनातकोत्तर महाविद्यालय, समस्याओं के मध्य लडको को ले जाना आदि काम प्रमुख रहते हैं। शिक्षा बदलनी चाहिए यह सभी कहते हैं किन्तु इसे छोडने को तैयार नहीं होते हैं। यह मोह नहीं टूटेगा तो शिक्षा मे बुनियादी परिवर्तन विद्यार्थी, शिक्षक और

अभिभावक स्वीकार करेंगे नहीं। विनोबा बार-बार कहते हैं कि प्राइमरी स्कूलों से लेकर विश्वविद्यालयों तक के तमाम लड़के यह घोषणा करके निकल आयें कि ऐसी शिक्षा हमें स्वीकार नहीं है तो शिक्षा-पद्धति में तुरन्त परिवर्तन हो सकता है। यह बगैर भावना-निर्माण के सम्भव नहीं है। समाज में दोष के अनगिनत बिन्दु हैं। उनका सम्मिलित परिणाम है कि आज समाज मनुष्य को मनुष्य के नाते न पहचानता है और न सम्मान देता है। आज मनुष्य से ज्यादा कीमत उसकी उपाधि की मानी जाती है। मनुष्य बिल्लों द्वारा पहचाना जाता है, झण्डों द्वारा सम्मान पाता है। मनुष्य के इस घोर अपमान को आज की शिक्षा-पद्धति पाल रही है। समाज में गैर-बराबरी कायम करने का एक प्रमुख हथियार आज की शिक्षा पद्धति है। तरुण शान्ति सेना इसे जड़ से बदलना चाहती है। शिक्षा में क्रान्ति का आन्दोलन तरुण शान्ति सेना ने आमूल परिवर्तन की दृष्टि से छेड़ा है।

तरुण शान्ति सेना अपनी नीचे की इकाइयों द्वारा बुनियादी महत्त्व के कार्यक्रम चला रही है। शान्ति की शक्ति ही नागरिक की शक्ति हो सकती है यह मानते हुए तरुण शान्ति सेना ने भिवण्डी-जलगाव और अहमदाबाद में हुए दंगों के अवसर पर, बंगला देश के शरणार्थियों के सवाल पर, पिछले वर्ष देशव्यापी सूखे और अकाल के अवसर पर "दुर्भिक्ष बनाम तरुण" का कार्यक्रम लेकर कार्य किया है। यह उसकी सेवा का पक्ष है।

समस्याओं की जड़ तक ले जाने का तरुण शान्ति सेना का प्रयास प्राय: कम असरकारक लगता है। पहले गुजरात और अब बिहार के आन्दोलन में इन दिनों तरुण शान्ति सेना सक्रिय रूप से जुड़ी है तो इसका कारण यह नहीं है कि वह इसे अवसर मानती है। अपना प्रभाव बढ़ाने की निर्दलीय युवकों की सामाजिक भूमिका की दिशा में तरुण शान्ति सेना शुरू से प्रयास रत रही है। आज ज्यादा स्पष्टता के साथ समाज की पकड़ में आ रहा है कि आज की व्यवस्था में यह दल चुनकर आये या वह दल, कोई अन्तर नहीं पड़ता है। दलीय लोकतन्त्र से आगे की खोज समाज को करनी चाहिये और यही उसकी समस्याओं का जवाब हो सकता है। आज तक तरुण शान्ति सेना जो करती आई है, अब उसकी ग्रहणशीलता बढ़ गई है। परिस्थिति ने समाज को खुद इसकी प्रतीती करा दी है, इसलिए तरुण शान्ति सेना ने इस आन्दोलन की व्याप बढ़ाने की चेष्टा की है। सरकारों को उलटने या विधानसभाओं को भंग करवाने का कार्यक्रम चलाने में तरुण शान्ति सेना की रुचि नहीं है, चूंकि समस्याओं का यह समाधान नहीं है, मुहल्ला और गांव स्तर पर नागरिकों की ऐसी समितियां बनें जो सरकार की पहुंच सीमित करें। और इस प्रकार क्रमश. समाज चले और 'सरकार' मदद करे—इसकी विस्तृत रूपरेखा चर्चा का विषय हो सकती है।

तरुण शान्ति सेना के लक्ष्य और कार्यक्रमों में उत्तरोत्तर नये विचार जुड़े हैं। कोई वाद, कोई ग्रन्थ, कोई व्यक्ति तरुण शान्ति सेना के लिए प्रमाण नहीं है। समस्याओं का विवेचन और उनका हल खोजना—सारे पूर्व अनुभवों की सहायता लेकर—तरुण शान्ति सेना की निष्ठा है। एक जीवंत संगठन के विकास के लिए यह सर्वथा आवश्यक है। तरुण शान्ति सेना का लक्ष्य सामाजिक कुण्ठाओं, बुराइयों और सांस्कृतिक रूढ़ियों से संघर्ष करना और एक नई सांस्कृतिक क्रान्ति का सूत्रपात करना है।

गांधी को पुनर्जीवित करो

दत्तात्रेय सरमंडल

दत्तात्रेय सरमण्डल उन अनुभवसिद्ध व्यक्तियो मे से हैं जो विचार यात्रा के दौरान कई पड़ावो से गुजरे हैं। भूदान-ग्रामदान आन्दोलन मे भी रहे और रचनात्मक कार्य भी किया हालाकि इसके पहले वे मार्क्सवादी थे। उनका यह लेख हम एक नजरिये के नाते प्रकाशित कर रहे हैं और कतई जरूरी नही है कि उनके विश्लेषण से सहमत हो। सम्पादक

ईसा को सूली पर चढ़ाने के पश्चात् गाधीजी की हत्या एक युगातरकारी घटना थी। विश्व इतिहास मे राजनीतिक हत्यायें कई हुई हैं, लेकिन गाधीजी की हत्या सही अर्थ मे राजनीतिक नही कही जा सकती। गाधीजी किसी राजनयीक या शासकीय पद पर आसीन नही थे। और उनकी हत्या कर गोडसे भी किसी राजनीतिक लाभ का अभिलाषी नही था। मुस्लिम-द्वेष पर आधारित अपनी विचार प्रणाली के लिए शहीद होने, तथाकथित आदर्शवाद से प्रेरित हो उसने यह जघन्य कार्य किया। अपनी कृति के परिणाम को वह अच्छी तरह जानता था। और उसका फल भोगने को भी वह तैयार था। परम्परागत हत्यारो की तरह उसने यह हत्या छिप कर नही की। दिन के उजाले मे हजारो की उपस्थिति मे उसने यह हत्या की। शायद उसकी यह धारणा रही हो कि गाधीजी का शरीर नष्ट कर वह उनका नैतिक तथा आध्यात्मिक साम्राज्य भी नष्ट कर देगा। लेकिन जैसा कि इन हत्याओ मे अक्सर होता आया है हत्यारो द्वारा हनन किये गये महान् व्यक्ति अनोखी अमरता प्राप्त कर लेते है।

स्वतत्रता प्राप्ति के बाद छः माह के अन्दर उनका चल बसना भारत के लिए एक कठोर अभिशाप था। नई-नई प्राप्त सत्ता की चकाचौंध ने हमे अंधा बना दिया। और हमने हमारी धरोहर को भुला दिया। शासकीय उलझनो तथा तात्कालीन समस्याओ ने गाधी जी के वरिष्ठ शिष्यो को व्यावहारिक यथार्थ में उलझा दिया। जिन आदर्शों के लिये गाधी जी लड़े और जीवित रहे उसको उन्होने तुरन्त भुला दिया। गाधीजी की स्थिति एक पवित्र पूर्वज की बन गई। वे एक सरकारी देवता बना दिये गये जिसकी महा पूजा का ध्यान तो उठाया जायेगा। पर वे एक मूक और मृत प्रतिमा मात्र बनके रहेगे।

गाधीजी के निकटवर्ती शिष्यो के लिए जो देश की राजनीति या शासन मे नही थे और उनके द्वारा निर्देशित रचनात्मक कार्य मे संलग्न थे गाधी को भुला देना इतना आसान नही था। गांधीजी से बिछुड़ने के बाद वे एक ऐसे व्यक्ति की खोज मे थे जो गाधीजी की नैतिक प्रतिमा बन सके और उनकी रचनात्मक प्रणाली से प्रतिबद्ध हो। इसीलिए गाधीजी की सभी रचनात्मक सस्थाओ का एकीकरण कर सर्वसेवा सघ बना दिया गया। विनोबाजी को गाधीजी का एक मत से उत्तराधिकारी मान लिया गया।

भूदान के बारे मे विनोबाजी की अतरध्वनि जिसे वे भगवान का आदेश कहते हैं एक सामयिक तथा सही कदम था। उनके हाथ में धुरा आते ही सभी रचनात्मक कार्यो को दूसरा या तीसरा स्थान देकर भूदान को ही प्राथमिकता दी गई। सर्वोदयी कार्यकर्ताओ के लिए भूदान कार्य ही सर्वोपरि माना गया, उसे उत्साह और समर्पण भाव से करने का निश्चय हुआ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारतीय जनता की मूलभूत आकाक्षा को पहचान भूदान को बुनियादी कार्यक्रम बनाने के लिए विनोबाजी अभिनन्दन के पात्र है। उन्होने यह बराबर महसूस किया कि भारत मे यदि कृषि की ओर दुर्लक्ष्य किया तो कितना ही औद्योगीकरण क्यो न हो भारत का विकास असभव है और कृषि मे उन्नति तभी सभव है जब भारत की जमीन सामती बधनो से मुक्त की जाय। विनोबाजी कहते हैं कि उन्हे भूदान का आदेश प्राप्त होने तक लगातार तीन दिन नीद नही आई। बीमारी की ठीक-ठीक चिकित्सा करने के बाद विनोबाजी ने स्वय को भूदान कार्य मे प्राणपन से समर्पित कर डाला। क्षेत्र सन्यास लेने तक वे लगातार २० वर्ष उसमें जुटे रहे।

भूदान की कल्पना के आविष्कार का थोड़ा बहुत श्रेय तेलगना मे पोचमपल्ली के उन रामचन्द्रन को भी देना होगा जिन्होंने विनोबाजी द्वारा भूदान आदोलन की शुरुआत होने के पहले अपने मृत्यु पत्र मे भूमिहीनो के लिए १०० बीघा जमीन दान देने की इच्छा लिख रखी थी। वैसे कुछ श्रेय तेलगना के उन साम्यवादियो को भी देना होगा जिन्होंने विनोबाजी द्वारा तेलगाना मे प्रवेश करने के पहले हजारो एकड़ जमीन देशमुखो से छीन भूमिहीनो मे वितरित कर दी थी। इसी कल्याणकारी लेकिन हिंसामय वातावरण मे विनोबाजी भूमिहीनो के लिए भूमि प्राप्त करने का अहिंसक मार्ग खोज रहे थे। सैनिक तथा साम्यवादी हिंसा से धूमिल वातावरण ने विनोबाजी को भूदान आदोलन की प्रेरणा दी। और वही से शुरुआत कर अपने हजारो अनुयायियो के साथ पन्द्रह वर्ष तक उन्होने भारत की समूची भूमि पादाक्रान्त की।

विनोबाजी की पदयात्रा स्वय मे एक महान उपलब्धि रही है। गाधीजी भी इतना साहस भरा कार्य कर पाते या नही इसमे शका है। हो सकता है कि गाधीजी के दाडी मार्च से ही विनोबाजी ने यह प्रेरणा प्राप्त की हो। भारत भर मे गाव से गाव तक सर्वोदयी कार्यकर्ताओ द्वारा भूदान का सदेश पहुचाया गया लेकिन विनोबाजी के इन भगीरथ प्रयासों के बावजूद यह मानना पड़ेगा कि भूदान कभी भी और कही भी जन-आदोलन नही बन पाया। यह सही है कि धनिकों ने अपनी भूमि का थोड़ा अश भूदान मे दिया। उस दान के पीछे समाज परिवर्तन या गरीबो के प्रति करुणा की भावना नही थी। दान देने के मूल मे था तो समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त करने की लालसा रही या फिर पुण्य प्राप्ति की।

जैसे ही आदोलन आगे बढ़ा प्रारभिक सफलता के साथ कार्यकर्ताओ मे उत्साह के साथ एक रूमानी मनोवृत्ति निर्माण हो गई। समूचे भारत मे भूक्रान्ति के आसार वे देखने लगे। सही या गलत हस्ताक्षरो के बडलों मे भूदान से ग्रामदान और ग्रामदान से प्रखडदान, प्रखडदान से जिला दान और जिला दान से

→

गांधीजी की अहिंसा जनसाधारण के दुखों की मूक दर्शक नहीं थी

भाव से उत्पादन तथा सहजीवन मे संलग्न हैं। चीन मे न केवल वर्ग और उससे उत्पन्न वरिष्ठता को नष्ट किया जा रहा है, अपितु विद्या, प्रतिष्ठा आदि पर आधारित वरिष्ठता को भी नष्ट किया जा रहा है। इससे जनता में सचमुच समता का प्रादुर्भाव हो रहा है। धन प्रलोभन द्वारा अधिक काम की प्रथा, जो दूसरे समाजवादी देशो मे अभी प्रचलित है, चीन मे खत्म कर दी गई है। हरेक को स्वयं और अपने कुटुम्ब के लिए ही नही, जन सेवा के लिए भी रहना है, काम करना है—यह शिक्षा भी दी जाती है। स्त्रियां पुरुषो के साथ हर क्षेत्र मे निर्माण कार्य मे जुटी हुई हैं। स्त्रियां और युवकों की पूजनीय देवता फैशन तथा चकाचौंध का वहां सामाजिक बहिष्कार है। सादगी और श्रमप्रतिष्ठा वहां पूजनीय माने जाते हैं। गांधीजी की प्रिय बुनियादी शिक्षा वहां परिष्कृत हो लम्बे लम्बे डग भर रही है। शिक्षा अब धनिकों का विलास न रह कर हर क्षेत्र मे जीवन तथा उत्पादन से जोड दी गई है। जनता का स्वावलम्बन तथा अभिक्रम वहां की सर्वाधिक विशेषता है। ये कुछ पहलू हैं जहां गांधीजी के सपने, दूसरे देश मे क्यो न हो, साकार होते दिख रहे हैं। हमे उनका नम्रता पूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

गांधी जी की अहिंसा को जिसने केवल सूत्र रूप मे रट डाला और गांधी विचारो को जिसने औपचारिक रूप से ग्रहण किया, ऐसे कट्टर गांधीवादी को चीन मे इन सब कामो की बुनियाद मे हिंसा ही हिंसा नजर आयेगी और वह नाक सिकोडेगा। लेकिन ये सब प्राप्त करने के लिए हमे जन युद्ध अनिवार्यत करना है ऐसा तो नही है। उस जन युद्ध की जगह हम जन सत्याग्रह अपना सकते हैं। गांधी जी की अहिंसा अन्याय तथा जन साधारण के दुःखो की असहाय और मूक दर्शक तो कभी नही रही थी।

वृद्धावस्था और बीमारी के बावजूद जयप्रकाश नारायण ने अपने अहिंसक तथा दृढ़ एक मात्र सकेत से देश मे हो रहे पतन को ललकारा है। क्या यह सकेत केवल शासन के लिए था? या गांधी के भक्तों के लिए भी। अब गांधी पूजकों को सोचना है कि वह जे० पी० के आवाहन को स्वीकार करें या अपनी सत्प्रवृत्ति मे ही लीन रहें।

बसों में आग लगाई जायेगी, तभी ये चोर के बच्चे चेतेंगे। किन्तु राजन और शेपन ने हार नहीं मानी। उन्होंने एड़ी-चोटी का जोर लगा कर छात्रों को शान्त किया और इस बात पर राजी किया हम सब एक बार फिर शिक्षा-मन्त्री से मिलें। कोई ठीक नतीजा निकलेगा, इस पर अन्य छात्र नेताओं को भरोसा नहीं था, किन्तु फिर भी उन्होंने राजन की बात मान ली। राजन ने कहा—

"मान लीजिये हम लोग सफल नहीं होते। मन्त्री महोदय हमारी बात नहीं सुनते। उस हालत में हम लोग हड़ताल करेंगे और सारे कालेजों को बन्द करवा देंगे, मगर लूट-खराबी के पिछले तरीके बिलकुल नहीं अपनायेंगे। आप सब लोग वचन दीजिए कि हड़ताल का मौका आया तो आप सब लोग शान्तिपूर्वक हड़ताल करेंगे, किसी तरह की मारपीट में भाग नहीं लेंगे और अगर राज्य के किसी भी हिस्से के छात्र हिंसक हो उठें तो हम लोग अपना आन्दोलन वापस ले लेंगे।

सब छात्रों ने इस शर्त को माना और एक प्रतिनिधि मण्डल फिर शिक्षा मन्त्री से मिलने के लिए रवाना हुआ। जाने के पहले विद्यार्थियों ने समाचार पत्रों में खबर भी छपवाई और वह इसलिए कि कहीं मन्त्री महोदय विधान सभा में यह बयान न दे बैठें कि हड़ताल करने के पहले विद्यार्थियों ने हमसे बातचीत करना भी जरूरी नहीं समझा। राजन का कहना है कि सफेद झूठ बोलने में आज के नेताओं का सानी नहीं है। शिक्षा-मन्त्री महोदय के साथ विद्यार्थियों की औपचारिक सी बैठक हुई। राज्य के शिक्षा सचिव भी उपस्थित थे। उन्होंने दूसरे राज्यों में वसूल की जाने वाली फीस के आंकड़े पढ़कर सुनाये और कहा कि हमारे यहाँ का प्रस्तावित शुल्क ज्यादा नहीं है। विद्यार्थियों ने उत्तर में कहा कि हमारे प्रान्त की औसत आमदनी इन दूसरे प्रान्तों की औसत आमदनी से कम है और हमारे प्रान्त में कुटुम्ब ज्यादा बड़े हैं। शुल्क वृद्धि का असर लड़कों की शिक्षा पर भी पड़ेगा, किन्तु माता-पिता लड़कियों को पढ़ाने का विचार ही छोड़ देंगे। मन्त्री महोदय के रुख में कोई परिवर्तन नहीं हुआ, वे केवल मधुर वचन बोलते रहे और फीस कम करने में अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। उन्होंने कहा कि इस पर पुनर्विचार हो ही नहीं सकता। विद्यार्थियों ने मन्त्री महोदय को बताया कि इस परिस्थिति में वे हड़ताल करने के लिए बाध्य हो जायेंगे।

प्रान्त की राजधानी में आकर आन्दोलन की बागडोर राजन, शेपन और उनके एक अधिक समझदार साथी कृष्ण ने संभाल ली। हड़ताल का नोटिस दिया गया और विद्यार्थियों की एक बड़ी सभा बुलाई गई। मगर सभा में विद्यार्थी इकट्ठे नहीं हुए, बड़ी निराशा हुई। कोई डेढ़-सौ छात्र ही सभा में आये। इनमें से अधिकांश को तो यह भी नहीं मालूम था कि सभा किस लिए बुलाई गई थी? कालेज दस दिन पहले खुल चुके थे, अधिकांश छात्रों ने फीस अभी तक नहीं दी थी। इसलिए उन्हें मालूम भी न था कि फीस बढ़ गई है। सभा बुलाने वालों को निराशा हुई, किन्तु उन्होंने सोचा कि अगर हम हड़ताल शुरू कर दें तो हजारों विद्यार्थी साथ हो जायेंगे। इन तीनों छात्र नेताओं ने हड़ताल को सफल करने के लिए रात-दिन एक कर दिया। उनके पास न पैसा था, न जाने के लिए कोई वाहन। तीनों के बीच में एक साइकिल थी। अवश्य ही इन तीनों की हर कालेज के विद्यार्थियों में पैठ थी, सब उन्हें अच्छी तरह जानते थे और सबको उनकी ईमानदारी पर भरोसा था।

राजन, शेपन और कृष्णन—तीनों ने डण्डों में चिथड़े लपेट कर ब्रुश बनाये, बाल्टियों में रंग घोला और सारे शहर को हड़ताल के नारों से रंग डाला। एक मित्र का छोटा-सा प्रेस भी था, उससे मदद लेकर हड़ताल की जरूरत के कारणों से सम्बन्धित एक पर्चा छपवाया और कुछ साथियों से मदद लेकर उन्हें शहर के सब कालेजों में बंटवा दिया। राजन और शेपन इसके बाद सबसे पहले लॉ कालेज पहुंचे। लॉ-कालेज छात्र आन्दोलन में सबसे आगे रहने के लिए मशहूर था। वहां के सारे छात्रों ने राजन और शेपन को सुना और क्लासों से बाहर आ गये। छात्रों ने जुलूस की शक्ल में विभिन्न कालेजों के सामने नारे लगाना शुरू कर दिया। इसके बारे में राजन ने लिखा है—

"हमने हर जगह बिलकुल एक-सा तरीका अख्तियार किया। जुलूस कालेज के फाटक से बाहर थोड़ी दूर पर रुक जाता था, फिर हम में से एक कालेज के प्रिंसीपल के पास जाता और उनसे विद्यार्थियों के सामने भाषण की इजाजत मांगता। ज्यादातर प्रिन्सिपल तो ऐसे थे जो फीस का बढ़ाया जाना स्वयं अनुचित मानते थे। हम लोगों के सौजन्यपूर्ण व्यवहार से हमें बिना बहस किये प्रायः छात्रों से बातचीत करने की इजाजत मिल गई। कुछ लोग शायद भीड़ देख कर डर गए हों। विद्यार्थियों को तो हमारी बात मानने में देर ही नहीं लगी। हम जिस कालेज में गये उसी कालेज के विद्यार्थी नारे लगाते हुए हमारे साथ हो लिये।

लड़कियों के एक कालेज में जरूर थोड़ी दिक्कत का सामना करना पड़ा। वहां की प्रिन्सिपल सख्त थीं। लड़कियां बाहर तो आना चाहती थीं, लेकिन फाटक पर प्रिन्सिपल खड़ी थीं और वे बाहर जाने की हिम्मत नहीं कर पा रही थीं। हड़ताल में लड़कियों का शामिल होना जरूरी था। राजन का कहना है कि जब तक किसी आन्दोलन में स्त्रियों का साथ भी नहीं मिल पाता, तब तक उस आंदोलन में न तो सच्चा शौर्य आ पाता, न शक्ति और न पवित्रता। इसलिए मैंने सोचा कि लड़कियों को तो किसी न किसी तरह जुलूस में शामिल करना ही चाहिए। अगर वे जुलूस में आयेंगी तो लड़के अपने आप सयत हो जायेंगे और सारी जनता की सहानुभूति हर हालत में हमारी होगी। राजन का कहना है कि लड़कियों को साथ लेने के लिए मैं एक झूठ तक बोल गया। मैंने कहा कि आप जानती हैं कि मुख्य मन्त्री ने क्या कहा है? जब हमने मुख्य-मन्त्री से कहा कि अगर फीस कम नहीं की गई तो माता-पिता पहले लड़कों को ही पढ़ायेंगे, लड़कियां घर की चारदीवारी में बन्द कर रह जायेंगी तो मुख्य-मन्त्री ने जवाब दिया कि यह तो अच्छा ही है, वे शादी करें और अपना-अपना घर बसायें। अब आप ही तय कीजिए कि आप को शादी करना है या पढ़-लिख कर काबिल बनना है। इतना सुनते ही लड़कियां प्रिन्सिपल की परवाह किए बिना ही फाटक के बाहर निकल गईं और इन्क़लाब जिन्दाबाद के नारों से वातावरण गूंज उठा।

दोपहर तक सारे राज्यों में समाचार फैल

गया कि विद्यार्थियो की हड़ताल पूरी तरह सफल हुई है। बीस हजार विद्यार्थी जुलूस बनाकर विधानसभा पर गए। और फिर शाम को एक छात्रालय के कमरे मे जो अब विद्यार्थियो का कार्यालय हो गया था आन्दोलन को तरतीब देने के लिए कुछ विद्यार्थी बैठे। राजन, शेषन और कृष्णन सब जाति से ब्राह्मण थे राज्य मे ब्राह्मण विरोधी वातावरण था। इसलिए उन्होने तय किया कि छात्र सघर्ष समिति ऐसी बनायी जाय जिसमे अब्राह्मणों का प्रतिनिधित्व हो और जिसका अध्यक्ष भी अब्राह्मण ही हो। ऐसा करने से आन्दोलन पर साम्प्रदायिक होने का जो धब्बा लगाया जा सकता था, उसकी सभावना खतम हो गई। बराबर चार दिन तक सारे कालेज बद रहे और विद्यार्थी शान्तिपूर्वक सडको पर जुलूस निकाल कर अपनी मागें दुहराते रहे। नागरिक समिति और कुछ राजनैतिक दलों ने भी हमारा साथ देने की इच्छा प्रकट की, *किन्तु हम लोगो ने सहानुभूति के अतिरिक्त* किसी को साथ लेना अनुचित माना।

राजन का कहना है कि इन दलो मे से कुछ विरोधी दल थे और खुद कांग्रेस के ही कुछ ऐसे लोग जो भीतर ही भीतर पद पाने की इच्छा से सत्तारूढ व्यक्तियो को नीचा दिखाना चाहते थे। कम्युनिस्ट और जनसघ *ने भी सहयोग का हाथ बढाया।* हमने हाथ मिलाने से इंकार कर दिया। हमने सोचा कि हमारे आन्दोलन मे अभी जिस सौजन्य की सुगन्ध है, वह इस प्रकार का सहयोग लेने से नष्ट हो जायेगी। इसके बावजूद मत्री महोदय ने वक्तव्य दिया कि हम विरोधी दलो के हाथ मे खेल रहे हैं। किन्तु इस तरह के दोष लगाना तो एक आम रवैया है, इसलिए हम विद्यार्थी और नागरिको को आसानी से समझा सके कि छात्र अपना आन्दोलन स्वयं चला रहे हैं, वे न किसी से मदद ले रहे हैं और न किसी के इशारे पर नाच रहे हैं।

चार दिन के बाद एक नगर से खबर आई कि वहा विद्यार्थियों ने उग्र रूप धारण कर लिया है और पथराव किया है। वे *विद्यार्थी थे या किसी राजनैतिक दल के सदस्य*-यह कहना कठिन है, किन्तु पुलिस विद्यार्थियों पर टूट पडी और अनेक विद्यार्थी गिरफ्तार कर लिए गये। राजन को लगा कि आन्दोलन हाथ से बाहर जा रहा है। सारे प्रान्त मे आन्दोलन पर काबू रखना कठिन है, इसलिए उसे अधिक से अधिक दो शहरो तक सीमित रखना चाहिए। *उसका विश्वास था कि जिला* स्तर के नगर भी इन दोनो बडे शहरो के ढग से आन्दोलन करेंगे, किन्तु पैसे की कमी थी, व्यक्तिगत रूप से शहर-शहर मे जाकर विद्यार्थियों को समझाना कठिन था, इसलिए छात्र आन्दोलन के नेताओ के मन पर यह डर छा गया कि सारे आन्दोलन को हिंसक कहकर कही कुचल न दिया जाय। इसके सिवाय ऐसा भी लगा कि अवसर का लाभ उठाकर विरोधी राजनीतिक दल जहां-तहां घुसपैठ करने की कोशिश कर रहे हैं। राजन का कहना है कि इन सारी आशकाओं के रहते हुए भी हम लोगो ने मुख्य दो बड़े नगरों में अपना आन्दोलन शान्तिपूर्वक जारी रखा और भगवान् की दया से दो दिन के बाद राज्य के मुख्यमत्री ने घोषणा की कि फीस वृद्धि के *मामले पर पुनर्विचार किया जा रहा है।* हड़ताल गौरव के साथ चली और गौरव के साथ समाप्त हुई। ◌

शिक्षा को कमरे की चारदीवारी से बाहर निकालना होगा

—वंशीधर श्रीवास्तव

"मैं जवाहर लाल की हैसियत से कहता हूं, मेरे दिमाग में कोई शक नहीं है कि बुनियादी तालीम के रास्ते पर ही हमें चलना है—सात वर्ष की बुनियादी तालीम, इसके पहले पूर्व बुनियादी और इसके बाद भी।"

बुनियादी तालीम का यह रास्ता है—किसी समाजोपयोगी उत्पादक उद्योग के माध्यम से छात्रों के व्यक्तित्व का सस्कार और विकास-एक ऐसे व्यक्तित्व का विकास, जो समाजवादी समाज के लिए, जिसमें कोई दूसरे के शोषण पर न पले, आवश्यक है। लोकतंत्रीय समाजवाद का यह तकाजा है कि समाज का प्रत्येक नागरिक समाज की उत्पादक इकाई हो और यह तभी सम्भव है जब विद्यार्थी शिक्षा काल के प्रारम्भ से ही कोई समाजोपयोगी उत्पादक काम सीखे जैसा बेसिक शिक्षा में है। "सब लड़के हाथ से काम करें—सब लड़के पढ़ें—आधे वक्त काम करें, आधे वक्त पढ़ें—सब लड़कों की समान शिक्षा हो, चाहे लड़का अमीर का हो या गरीब का, ऐसी बेसिक शिक्षा की मान्यता है। समाजवादी समाज बनाना है तो सामान्य शिक्षा सबके लिए समान होनी चाहिए। सामान्य शिक्षा की यह अवधि हाई स्कूल स्तर तक की यानी ढाई-तीन वर्ष से लेकर पन्द्रह-सोलह वर्ष तक की होनी चाहिए।

सामान्य शिक्षा की इस अवधि में शिक्षा की कोई दूसरी समानान्तर प्रणाली नहीं चलेगी, जैसी आज नर्सरी शिक्षा, कान्वेन्ट शिक्षा अथवा पब्लिक स्कूल शिक्षा के रूप में देश में चल रही है, जहां पाठ्यक्रम, माध्यम और शुल्क का ढांचा भिन्न है। कोठारी कमीशन के इस सुझाव को दृढ़ता पूर्वक तत्काल मान्य करना चाहिए कि देश में लोक शिक्षा की एक समान प्रणाली चलनी चाहिए। इसके लिए यदि संविधान में सुधार करना हो तो करना चाहिए, आवश्यक हो तो आंदोलन भी चलाना चाहिए।

लोक शिक्षा की यह सामान्य प्रणाली बेसिक शिक्षा ही हो सकती है जिसकी शुरुआत गांधीजी ने शोषण-मुक्त, वर्ग-विहीन समाज की रचना के लिए की थी। प्रारम्भिक शिक्षा से उच्च स्तर तक के लिए बेसिक शिक्षा ही आज की वर्तमान शिक्षा का विकल्प है। आज की नर्सरी शिक्षा का विकल्प है पूर्व बुनियादी, आज की प्रारम्भिक शिक्षा का विकल्प है बेसिक शिक्षा, आज की माध्यमिक शिक्षा का विकल्प है उत्तर बुनियादी और आज की उच्च शिक्षा का विकल्प होना चाहिए उत्तर बुनियादी का प्रसार।

ऐसा इसलिए कि बेसिक शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त अर्थात् (१) समाजोपयोगी उत्पादक कार्य कलाप (२) पाठ्य विषयों का उत्पादक कार्यकलापों और प्राकृतिक और सामाजिक वातावरण से सह-सम्बन्ध और (३) विद्यालय का स्थानीय समुदाय से निकट का सम्पर्क शिक्षा के, ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं जो समाजवादी शिक्षा नीति के शाश्वत सत्य हैं और जिनसे राष्ट्र की सभी स्तरों की शिक्षा प्रणाली का मार्ग-दर्शन होना चाहिए।

परन्तु बेसिक शिक्षा का कार्यान्वयन करते समय नीचे लिखी बातों का ध्यान रखना होगा

पूर्व प्रारम्भिक शिक्षा (पूर्व बुनियादी स्तर)—हमारे संविधान में शिशु शिक्षा सरकार का उत्तरदायित्व नहीं है। परन्तु इस स्तर की शिक्षा (ढाई से पांच वर्ष तक) का अत्यन्त महत्व है। अतः जहां भी सभव हो बेसिक शिक्षा की पूर्व तैयारी के रूप में दो तीन घंटे की बालवाड़ियां चलाई जायें। इन बालवाड़ियों में शिक्षा का माध्यम अनिवार्य रूप से बच्चों की मातृभाषा हो और पाठ्यक्रम स्थानीय समुदाय के जीवन से सम्बन्धित हो। गुजरात के तालीम संघ ने बालवाड़ी की एक बहुत ही अच्छी प्रणाली का विकास किया है जो अपनी संस्कृति और बेसिक शिक्षा के सिद्धान्तों के अनुरूप है। इसका उपयोग करना चाहिए। पूर्व प्रारम्भिक स्तर पर आज देश में जो नर्सरी या मान्टेसरी स्कूल चल रहे हैं वे वास्तव में देश में चलने वाले कान्वेन्ट और पब्लिक स्कूलों में फीडर मात्र हैं। इनमें शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है और इनके पाठ्यक्रम भी प्रायः विदेशी हैं, जिससे ये स्कूल प्रारम्भ से ही अलगाव की प्रवृत्ति को जन्म देते हैं। इनका बहिष्कार होना चाहिए और गुजरात के ढंग की बालवाड़ियां चलनी चाहिए। यह लोकतंत्रीय समाजवाद के हित में होगा।

प्रारम्भिक शिक्षा (बेसिक शिक्षा)—वह केवल खेती-बागवानी, कताई, बुनाई, गत्ते का काम, सिलाई-बुनाई आदि कुछ परम्परागत दस्तकारियों तक ही सीमित न रहे। इन उद्योगों के अतिरिक्त सड़क और बांध बनाने के काम, गृह विज्ञान, प्राथमिक वैद्युती, सामान्य रेडियो यांत्रिकी, आदि-आदि जो आज सामान्य जीवन के अंग होते जा रहे हैं, बेसिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल किये जायें जिससे शिक्षा का यथार्थ जीवन से सम्बन्ध बना रहे। बेसिक शिक्षा में उत्पादक उद्योग शिक्षा का माध्यम है। अतः अगर समाज के →

→

सभी विद्यार्थियों को किसी समाजोपयोगी उत्पादक हुनर की शिक्षा देनी है तो बेसिक स्कूलों को पर्याप्त साधन (कच्चा माल और उपस्कर) देने होंगे जो किसी भी सरकार के लिए सम्भव नहीं है। अत यह अनिवार्य हो जाता है कि उद्योग शिक्षण के लिए हम छात्रों को समुदाय के खेतों—खलिहानों, कृषि-फार्मों, दुकानों, कारखानों पर ले जाएं। दुनिया में शिक्षा का नया विचार अब यह नहीं मानता कि शिक्षा विद्यालय में बधकर आज के युग के सार्वजनिक शिक्षण के लक्ष्य को पूरा कर सकती है। इसीलिए यूनेस्को का का अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग खुले विश्व-विद्यालयों की संस्तुति करता है। अविद्यालयी-करण आज की शैक्षिक विचारधारा का अंग हो रहा है।

अत. अगर बेसिक शिक्षा को सार्वजनिक बनाना है तो शिक्षा को संस्था की चहार दीवारी से बाहर निकाल कर उसका नियोजन उन स्थानों पर करना होगा जो समुदाय के उत्पादक केन्द्र हैं अथवा जहा समुदाय के लिए विकास का काम हो रहा है। यदि सामान्य विषयो के शिक्षण का पूरा शैक्षिक मूल्य प्राप्त करना है तो बौद्धिक शिक्षा और हाथ के काम की शिक्षा का समन्वय होना चाहिए और अध्ययन और श्रम को निरन्तर अनुबंधित करने की चेष्टा होनी चाहिए। यह सिफारिश यूनेस्को के शिक्षा-आयोग की है, मात्र गाधीजी की नहीं। सामुदायिक जीवन की सामान्य प्रवृत्तिया जैसे खेल कूद, नाच-गाने, मेले-ठेले, पर्व-त्योहार आदि बेसिक शिक्षा के अभिन्न अंग हो, जिससे छात्र में इस भावना का विकास हो कि वह समाज का अंग है और उसका समाज के प्रति रचनात्मक उत्तरदायित्व है। पाठ्यक्रम के इस अंग की प्रयोगशाला भी समाज होगा।

इस स्तर की शिक्षा का पाठ्यक्रम माध्यमिक शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश मात्र की तैयारी न होकर जीवन की तैयारी हो। इस दृष्टि से यह पाठ्यक्रम अपने में पूर्ण हो और इससे उन छात्रों का, जो तात्कालिक परिस्थितियों के कारण आगे नहीं बढ़ सकते हैं इतना बौद्धिक विकास भी हो जाय कि अवसर मिलने पर वे उच्च स्तर की माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने योग्य बन जाए।

शिक्षा का माध्यमिक स्तर—(उत्तर बुनियादी शिक्षा) शिक्षा का माध्यमिक स्तर सही माने में उत्तर बुनियाद शिक्षा होनी चाहिए। अर्थात माध्यमिक शिक्षा को नीचे की बुनियादी शिक्षा का प्रसार होना चाहिए। सही माने में माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण, जो आज का तकाजा है, तभी होगा। आज की माध्यमिक स्तर की शिक्षा में एक औद्योगिक अथवा व्यावसायिक वर्ग जोडने मात्र से और उस वर्ग की शिक्षा को सबके लिए अनिवार्य बना देने से भी माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण नहीं हो जाएगा। आज की माध्यमिक शिक्षा बहुवर्गीय है। जिसमें साहित्यिक, वैज्ञानिक, कृषि, टेकनिकल, वाणिज्य आदि वर्ग हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इन वर्गों के भेद को मिटाकर सामान्य शिक्षा की संकल्पना को ही इतना व्यापक बना दिया जाए कि उसमें साहित्यिक, वैज्ञानिक, टेकनिकल, व्यावसायिक आदि शिक्षा भी आ जाए। पोस्ट बेसिक शिक्षा इस प्रकार की शिक्षा है, अत माध्यमिक स्तर पर उसको अपनाना चाहिए। किन्तु इसके कार्यान्वयन के समय नीचे लिखी बातों को ध्यान में रखना चाहिए

बेसिक शिक्षा की भांति जब हम उत्तर बुनियादी शिक्षा को सर्व साधारण तक उपलब्ध कराने की कोशिश करेंगे तो विद्यालय का प्रागण बहुत छोटा साबित होगा और हम को समुदाय में स्थित कृषि फार्मों और औद्योगिक कारखानों का व्यापक शैक्षिक उपयोग करना होगा। चूकि किसी व्यवसाय की ट्रेनिंग इस स्तर की शिक्षा का अनिवार्य अंग होगी अत व्यावसायिक और टेकनिकल ट्रेनिंग का उत्तरदायित्व केवल विद्यालयी प्रणाली का नहीं होना चाहिए। विद्यालय के शिक्षकों, उद्योगों के मालिकों या प्रबन्धकों श्रमिकों और सरकार के सहयोग के बिना और उत्पादन और वितरण से संबंधित राज्य के विभिन्न विभागों में समन्वय स्थापित किये बिना, बुनियादी शिक्षा का ठीक कार्यान्वयन यानि माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण नहीं हो सकता है।

उत्तर बुनियादी शिक्षा के बाद प्रत्येक विद्यार्थी को कम से कम एक वर्ष के लिए अपनी रुचि और व्यवसाय के अनुसार समुदाय के उत्पादन केन्द्रों में काम करना चाहिए। इस काम के लिए सरकार को छात्रवृत्ति देनी चाहिए। चूकि वे छात्र किसी न किसी समाजोपयोगी उत्पादक धन्धे में समुदाय की सहायता कर रहे होंगे, अत यह राष्ट्र को महगा नहीं पड़ेगा। इस काम का दोहरा लाभ होगा—समुदाय में काम करने से सामाजिक व्यक्तित्व का विकास होगा, जो समाजवादी समाज का प्रमुख लक्ष्य है और श्रम-प्रतिष्ठा की भावना मजबूत होगी।

पोस्ट बेसिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम मातृभाषा अथवा क्षेत्रीय भाषा होगी।

पोस्ट बेसिक स्तर पर शिक्षा का व्यावसायीकरण तभी सफल होगा जब शिक्षा विभाग और योजना विभाग का घनिष्ठ समन्वय हो। ऐसा होगा तभी समुदाय की उत्पादक प्रक्रिया में व्यवसाय सीखे हुए विद्यार्थियों को खपाया जा सकेगा और शिक्षित बेरोजगारी कम होगी। इस स्तर की शिक्षा का लक्ष्य विश्वविद्यालयों में प्रवेश उतना नहीं होना चाहिए जितना कि क्रियाशील जीवन की तैयारी। फिर भी पाठ्यक्रम इस तरह का हो जिससे छात्रों में ऐसी क्षमता का विकास हो कि वे अवसर मिलने पर उच्च शिक्षा अथवा उच्चतर व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने के योग्य हो सकें।

उच्च शिक्षा (शिक्षा का विश्वविद्यालयी स्तर) उच्च शिक्षा ऐसी हो जिससे व्यक्ति और समुदाय की अधिकाधिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो। इसलिए उच्च शिक्षा के स्तर पर भी व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा को सामान्य शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाए। इसका अर्थ यह हुआ कि आज के परम्परागत डिग्री कालेजों के स्थान पर, जो किसी हुनर की शिक्षा न देने के कारण बेरोजगारी के कारखाने बन रहे हैं, छोटे-छोटे व्यावसायिक कालेजों और तकनीकी संस्थानों की स्थापना की जाय और इस प्रकार जीवन-केन्द्रित व्यवसाय मूलक उत्तर बुनियादी शिक्षा को आगे बढ़ाया जाए। भारत गांवों में बसा है। अत. इन कालेजों और संस्थानों के अध्ययन का क्षेत्र इतना व्यापक हो जितना व्यापक

→

→

उन्नत ग्राम-जीवन और औद्योगिक विकासशील भारत की आवश्यकताएं हैं । देश में उन्नत कृषि—विधियों और आधुनिक लघु उद्योगों के संचालन के लिए, सिंचाई योजनाओं के प्रबन्ध के लिए, नलकूपों के चलाने के लिए, बिजली की मरम्मत के लिए, यातायात क्रय-विक्रय, प्रशासन आदि विविध सेवा के क्रियाकलापों के लिए और इनके अतिरिक्त राष्ट्र के विकास के लिए जो व्यवसाय चलेंगे ये कालेज उन व्यवसायों की प्रायोगिक शिक्षा के केन्द्र होंगे । इनमें जो शिक्षा दी जायेगी उसका जीवन की और बाजार की आवश्यकताओं से मेल होगा। शिक्षा के क्षेत्र में ये कालेज बुनियादी और बुनियादी स्तर की संस्थाओं के लिए शिक्षक और व्यवस्थापक तैयार करेंगे और उद्योगों के क्षेत्र में ये उत्पादन और वितरण की पद्धतियों में सुधार के लिए अध्ययन और अन्वेषण करेंगे।

विश्वविद्यालय स्तर पर बेसिक शिक्षा का रूप क्या हो- अभ्यास-क्रम क्या हो, इस का भरपूर चित्र राधाकृष्णन विश्वविद्यालय आयोग के एक सदस्य डाक्टर आर्थर ई० मार्गन ने 'हायर एजूकेशन इन रिलेशन टू रूरल इण्डिया' नाम की पुस्तिका में दिया है । इस पुस्तिका में दिये गये सुझावों को आधार मान कर उच्च शिक्षा का नया ढांचा तैयार करना चाहिए । वर्तमान शहरी विश्वविद्यालयों में सुधार से काम नहीं चलेगा । आज जब देश का व्यावसायिक और आर्थिक ढांचा बदल रहा है तो उच्च शिक्षा को बदलना होगा, जिससे उच्च शिक्षा युग की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके—उन्हीं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं जो किसी कारखाने कार्यालय या आधुनिक फार्मों पर काम करेंगे वरन् उनकी भी जो किसी कारखाने या फार्म पर काम नहीं करेंगे परन्तु जिन्हें आज के औद्योगिक समाज में पग पग पर टेक्निकल ज्ञान की आवश्यकता पड़ेगी ।

इस परिवर्तन की रूपरेखा कुछ इस प्रकार होनी चाहिए—उच्च शिक्षा की इन संस्थाओं में प्रवेश पाने की कसौटी अनौपचारिक और उदार हो और यह विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनकी क्षमता, अभिरुचि और ज्ञान पर निर्भर करे और कालेज में प्राप्त डिग्रियों और डिप्लोमाओं का परिणाम न हो । उच्च शिक्षा की संस्थाओं में प्रवेश के लिए यह सिफारिश यूनेस्को के अंतरराष्ट्रीय शिक्षा आयोग की भी है ।

शिक्षा की इन संस्थाओं में ऐसे साधनों का आयोजन हो जो व्यक्ति को स्वयं सीखने में सहायता दें, जैसे नाना प्रकार की प्रयोगशालाएं (भाषा, समाज विज्ञान, सामान्य विज्ञान और तकनीकी आदि की), पुस्तकालय, सूचना केन्द्र, शब्द दृश्य उपकरण, प्रोग्राम्ड शिक्षण के साधन आदि ।

समुदाय को उच्च शिक्षा के इन संस्थानों की प्रयोगशाला होना चाहिए । संस्था के भीतर प्राप्त ज्ञान, तकनीकी ज्ञान को तब तक पर्याप्त और लाभप्रद नहीं माना जा सकता जब तक कि समुदाय में उनको लागू न कर लिया जाये । जो लोग संस्था के बाहर उत्पादन और समाज के विकास की अन्य क्रियाओं में लगे हैं, उनके साथ काम किये बिना उत्पादन और विकास की प्रक्रियाओं के रहस्यों को समझा नहीं जा सकता । अतः इन संस्थाओं का टाइमटेबुल इस प्रकार बनाया जाय कि विद्यार्थियों को समुदाय के उत्पादन और विकास केन्द्रों पर काम और प्रयोग करने का मौका मिले । इसके बिना पढ़ाई अधूरी मानी जाय ।

उच्च शिक्षा भी विश्वविद्यालय की चहार दीवारी में बंधकर सार्वजनिक शिक्षा का लक्ष्य पूरा नहीं कर सकती । अतः यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय आयोग ने जहां एक ओर खुले विश्वविद्यालयों की सिफारिश की है वहीं दूसरी ओर संस्थागत शिक्षा को अपर्याप्त मानकर यह भी कहा की है कि उच्च शिक्षा को कालेजों की चहार दीवारी से निकाल कर उसका नियोजन उन स्थानों पर किया जाय जहां समुदाय के उत्पादन केन्द्र हैं अथवा जहां समुदाय के लिए विकास के काम हो रहे हैं । इतना ही नहीं, जहां विकास के लिए उपयुक्त विधान मौजूद हो वहां विकास और उत्पादन के लिए शिक्षा संस्थाएं पहल करें । इससे उच्च शिक्षा लोक जीवन के साथ एक रस हो सकेगी ।

विनोबा कहते हैं कि नौकरियों के लिए कालेज की डिग्रियों को अनावश्यक करार दे दिया जाय । नौकरियों के लिए नौकरी देने वाले विभाग अपनी-अपनी परीक्षायें लें । डिग्री का नौकरी से संबंध विच्छेद हो । अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग सिफारिश करता है : 'विद्यार्थी परम्परित अनिवार्य शिक्षा को पूर्ण किये बिना ही उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए स्वतंत्र हों और उसे शिक्षा की एक
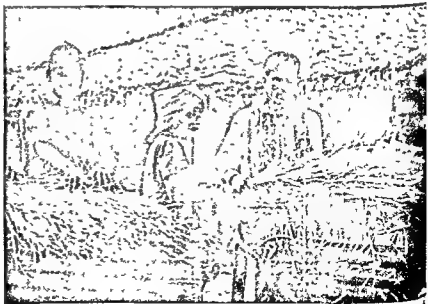
शिक्षा कमरे से खलिहान तक : छात्र और शिक्षक एक साथ काम करते हुए ।

शाखा से दूसरी शाखा में जाने की पूरी स्वतंत्रता हो।' अतः हमारा सुझाव है कि डिग्रियों और प्रमाण-पत्रों को किसी अध्ययन के कोर्सों को पूरा करने के लिए अथवा नौकरी पाने के लिए आवश्यक न माना जाय।

ऐसा मानना ठीक नहीं होगा कि उच्च शिक्षा के इन नये संस्थानों में सुकरात-सूर या शेक्सपीयर-मिल्टन अथवा सूक्ष्म गणित और विज्ञान के सिद्धान्तों का अध्ययन नहीं होगा या शंकराचार्य और कान्ट के दर्शन छूट जायेंगे। ये तो मानव संस्कृति की महान उपलब्धियां हैं। इनसे वंचित होकर मानव सभ्यता पंगु और संकीर्ण हो जायेगी। अतः इन संस्थानों में छात्र अपनी श्रेष्ठतम मानव विरासत का पूरा अध्ययन और मनन करेंगे।

शैक्षिक प्रशासन : शैक्षिक प्रशासन स्वायत्त शैक्षिक निगमों के हाथ में हो। शिक्षा संस्थाओं पर सरकार का नियंत्रण नहीं हो। धन सरकार दे परन्तु पाठ्यक्रम क्या हो, परीक्षा पद्धति क्या हो, इनका संचालन कैसे हो इस विषय में सरकार दखल न दे। विगत कुछ वर्षों से निजी प्रबन्ध प्रणाली के भ्रष्टाचारों से ऊब कर स्वयं शिक्षा जगत से ही शिक्षा के सरकारीकरण की मांग उठती रही है। यह स्वायत्तता छीनने के साथ समाज की स्थाई दासता का कारण होगी। शिक्षा सरकार के हाथ में गई तो वह लोक मानस को अपने अनुकूल एक ढांचे में ढालने की कोशिश करेगी, जिसका परिणाम लोकतन्त्र के लिए घातक होगा।

शैक्षिक प्रशासन का दूसरा निर्देशक सिद्धान्त होगा-विकेन्द्रीकरण। स्कूल स्तर से राष्ट्रीय स्तर तक शैक्षिक निगमों की प्रशासन नीतियां इसी सिद्धान्त से निर्देशित होंगी।

वयस्क शिक्षण : शिक्षित वयस्क लोकतन्त्र की रीढ़ है। अतः लोकतन्त्र को सशक्त बनाने के लिए वयस्क शिक्षण को प्राथमिकता देनी चाहिए। साक्षरता वयस्क शिक्षण का एक अनिवार्य किन्तु बहुत छोटा अंग है। अतः वयस्क शिक्षण का लक्ष्य व्यावहारिक साक्षरता ही होनी चाहिए। गांधीजी ने वयस्क शिक्षण के लिए भी बेसिक शिक्षा को हितकर बताया था। उनका कहना था कि माता-पिता के व्यक्तित्व का संस्कार जब बेसिक शिक्षा से होगा तभी उनकी सन्तान भी बेसिक शिक्षा में निष्ठावान छात्र बन सकेंगी।

अनिवार्य ग्रीष्म और शरद अवकाश में महीने डेढ़ महीने के लिए कालेज के विद्यार्थी गांवों में वयस्क शिक्षण का काम करें। यह कोरी साक्षरता न होकर व्यावहारिक साक्षरता हो। बेसिक शिक्षा के छात्रों के लिए यह काम आसान होगा। जहां भी बेसिक स्कूल हों वहां शाम को एक डेढ़ घन्टे के लिए वयस्क शिक्षा का प्रबन्ध हो। इस काम को बेसिक अथवा उत्तर बुनियादी स्कूल के अध्यापकों की सेवा का एक अंग बना दिया जाय।

परीक्षा-पद्धति आज की शिक्षा परीक्षा मूलक है। शिक्षा की एक शाखा से दूसरी शाखा में जाने के लिए अथवा नौकरियों के लिए अगर डिग्री और प्रमाण-पत्र अनावश्यक हो जायें तो परीक्षा का महत्व घट जायेगा और आज की शिक्षा में जो भ्रष्टाचार है वह बहुत अंश तक समाप्त हो जायेगा। बेसिक शिक्षा में छात्र के व्यक्तित्व का दिन प्रतिदिन मूल्यांकन होना चाहिए नहीं तो उस के साथ न्याय नहीं होगा। आन्तरिक मूल्यांकन अधिक से अधिक और बाह्य परीक्षा कम से कम और वह भी आज के ढंग की नहीं एकदम ताजी, यह आज की परीक्षा पद्धति का विकल्प होगा। प्रमाण-पत्र केवल वर्णनात्मक होगा, उसमें पास फेल या डिवीजन नहीं लिखा जायेगा।

शिष्टाचार के मुखौटे में भ्रष्टाचार

मुनिश्री महेन्द्र कुमार प्रथम

प्रतिदिन भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। इसके साथ मार्खमिचौनी नहीं की जा सकती। पर प्रश्न यह है कि भ्रष्टाचार क्या है? एक ग्वाला दूध में पानी मिलाता है, एक दूकानदार निर्धारित मूल्य से अधिक पैसे लेकर वस्तु बेचता है, कभी-कभी वह मूल्य सूची दुकान पर लटकाना भूल जाता है, या एक सिपाही किसी से दो-चार रुपये रिश्वत ले लेता है—क्या यही भ्रष्टाचार है? चोर-बाजारी, जमाखोरी, मिलावट तथा रिश्वत को भ्रष्टाचार के बड़े रूपों में गिना जाता है। इन्हें मिटाने के लिये सार्वजनिक क्षेत्र से कई आन्दोलन चलाये गये, सरकार ने भी अपने कई प्रतिष्ठान स्थापित किये मगर, भ्रष्टाचार-रूपी सुरसा का मुख अब तक भी बन्द नहीं हो पाया है। वह क्रमश फैलता जा रहा है। अन्ततः इसका कारण क्या है? सार्वजनिक क्षेत्र के आन्दोलनों और सरकारी उपक्रमों के विफल हो जाने का परिणाम भी तो भयंकर आ सकता है।

लगता है, भ्रष्टाचार के मूल तक अब भी पहुंचा नहीं जा रहा है। वर्तमान में भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए हल्ला अधिक मचाया जा रहा है पर सतह पर उतर कर प्रयत्न कुछ भी नहीं किया जा रहा है। यदि वैसा प्रयत्न होता; तो भ्रष्टाचार को मिटाने में आज पच्चीस वर्ष नहीं लगते, वह क्रमश बढ़ता हुआ भी नजर नहीं आता। ऐसा लगता है, भ्रष्टाचार के विरुद्ध बोलना आजकल फैशन बन गया है। धर्माचार्य भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध बोलते हैं, रिश्वत और सिफारिशों के बीच घिरे रहने वाले मन्त्री भी भ्रष्टाचार को कोसते हैं, अनट्ट शोषण कर के पैसा कमाने वाले उद्योगपति भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध भण्डा उठा कर अगुआ हो रहे हैं, सार्वजनिक कार्यकर्ता भी भ्रष्टाचार के विरुद्ध अनशन तक कर बैठते हैं, पत्रकारों की कलम आए दिन होने वाले भ्रष्टाचार की मलई खोलने में पीछे नहीं है, अधिकारियों को तो भ्रष्टाचार का नाम [illegible] लगता और यहां तक कि जन-जन के मुख पर भ्रष्टाचार की खुली निन्दा है। ऐसी परिस्थिति में शायद भ्रष्टाचार को भला-बुरा कह कर सभी उसके फलने-फूलने में परोक्ष सहयोग दे रहे हैं।

बुरा बता देने मात्र से उसकी जड़ें हिलने वाली नहीं हैं। उसके लिए तो व्यवस्था-परिवर्तन के कुछ ठोस आधार खोजने होंगे। भ्रष्टाचार ने अपने पैर इतनी मजबूती से जमा लिए हैं कि मात्र निन्दा करने से पलायन करने वाला नहीं है। इस रोग के प्रतिकार के लिए गहराई से चिन्तन और तदनुकूल प्रयत्न अपेक्षित है। ऊपरी उपचार से यह भयंकर रोग समाप्त होने वाला नहीं है।

भारत में बहुत सारी विदेशी एजेन्सियां प्रच्छन्न काम कर रही हैं। चुनावों तथा अन्य अवसरों पर यहां कुछ संगठनों को करोड़ों रुपये देती हैं और उनके माध्यम से अपने-अपने देश के प्रति सद्भावना बनाये रखने के साथ-साथ भारतीय व्यवस्था को अस्त-व्यस्त भी करती रहती हैं। कुछ देश नहीं चाहते कि भारत अपने पैरों पर खड़ा हो जाए। उनका प्रयत्न है कि वह सैनिक दृष्टि से कमजोर रहे, आर्थिक व्यवस्था लड़खड़ाती रहे, उत्पादन बढ़ने न पाये, महगाई बढ़ती रहे। खाद्य की दृष्टि से भी आत्म-निर्भर न बने, वैज्ञानिक तथा तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में भी पिछड़ा हुआ रहे, जनता में असन्तोष चरम छोर पर पहुंच जाए, जिससे राजनैतिक अस्थिरता बनी रहे। यह एक ज्वलन्त प्रश्न बन जाता है कि क्या उन संगठनों के द्वारा अर्थ के लोभ में भारत की स्वतन्त्रता को उन देशों को गिरवी रखने का यह अनधिकृत प्रयत्न नहीं है? इतने बड़े भ्रष्टाचार की ओर कभी किसी ने अंगुली उठाने का साहस भी किया?

भारत ने जनतन्त्र पद्धति को अपनाया है। तानाशाही यहां के नागरिकों को अभिप्रेत नहीं है। जनतन्त्र पद्धति भी स्वतन्त्र चिन्तन के साथ विकसित हो सकती है। जब उसकी डोर किसी देश के छोर के साथ बांध दी जाती है, तो स्वतन्त्र विकास की संभावना समाप्त हो जाती है। मतदाता दस-बीस रुपये लेकर मतदान करता है, उसे अत्यन्त बुरा कहा जाता है और राजनैतिक दल विदेशी एजेन्सियों से करोड़ों रुपये लेकर दूध के नहाये रह जाते हैं, यह चिन्तन का अत्यन्त आवश्यक पहलू है।

राजनैतिक दल भी अपनी विफलता सामने आने पर शासक दल पर अनेक आरोप लगाने लगते हैं। वहां वे दर्पण में अपना मुंह नहीं देखते। साथ ही अन्य दलों के द्वारा होने वाली अनैतिकता भी उन्हें नहीं कचोटती। यह एकांगी दृष्टिकोण जनतन्त्र को स्वस्थ नहीं रहने देता। मतदाताओं में जातीय तथा साम्प्रदायिक भावना भरना, अनेक प्रकार के प्रलोभन तथा दबाव देना, शराब आदि वितरित करना आदि जो बुराइयां हैं, उनसे बढ़कर बुराई है, विदेशी एजेन्सियों से धन लेना और उनके संकेत पर भारत की व्यवस्था को अस्त-व्यस्त करने का प्रयत्न करना। यही कारण है, पच्चीस वर्षों की लम्बी अवधि में भी देश न तो जनतन्त्र को ही प्रशस्त बना पाया है और न किसी दिशा में गतिशील व आत्मनिर्भर ही हो पाया है।

जनतन्त्र में प्रशासन का सम्बन्ध मतदाता से लेकर मन्त्री तथा मुख्य मन्त्री तक जुड़ जाता है। मुख्य मन्त्री वह रह सकता है, जो बहुसंख्यक विधायकों का विश्वास प्राप्त किए रहे। विधायक वह रह सकता है, जो मतदाताओं में अपनी लोकप्रियता कम नहीं होने दे। ऐसी स्थिति में बहुत कुछ मतदाता के हाथ में केन्द्रित हो जाता है। वह विधायक पर उचित-अनुचित दबाव डालता है। विधायक को विवश हो कर उसे मानना पड़ता है। यदि वह नहीं मानता है तो अगले चुनावों में उसे हरी भण्डी दिखाई जा सकती है। मतदाता के प्रस्ताव को क्रियान्वित करने के लिए विधायक सम्बन्धित अधिकारी तथा मन्त्री पर दबाव डालता है। मुख्य मन्त्री भी विधायकों के प्रस्ताव में इतना उलझ जाता है कि प्रान्त की प्रगति की योजनाएं एक ओर रह जाती →

है और उसे अपने दल के विधायकों के प्रस्तावों को मूर्त रूप देने के लिए यत्न करना होता है। फिर सम्बन्धित अधिकारियों पर दबाव पड़ता है। वे यदि उस प्रस्ताव को क्रियान्वित कर देते हैं, तो उन्हें स्थानान्तरण के समय अच्छे कार्यालय में भेज दिया जाता है, अन्यथा ऐसे कार्यालय में भेजा जाता है, जहां कि वह स्वतः अकेला पड़ जाता है। कुछ कार्यालय अधिकारियों के लिए कारावास की यन्त्रणा जैसे होते हैं। ऐसी परिस्थिति में नैतिकता से बंधे रहने वालों के लिए चारों ओर अन्धेरे के अतिरिक्त कुछ नहीं रहता।

कुछ अधिकारी पहले से ही सावधान होते हैं। वे समझते हैं, विधायक, मन्त्री या मुख्यमन्त्री की सिफारिश पर काम करना होगा, तो क्यों न उस काम को पहले से ही सम्पन्न कर पांचों अंगुलियां घी में ही डाल दी जाएं। सम्बद्ध व्यक्ति उपकार भी मानेगा और रिश्वत से होने वाली आय में भी कमी न होगी। यह भी देखा जाता है कि शासक पक्ष के विधायक द्वारा सुझाया गया काम सुगमता से होता है। विरोधी पक्ष के विधायक के कार्य बहुत समय तक टलते ही रहते हैं। अधिकारियों की पदोन्नति में भी शासक पक्ष के विधायक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बहुत बार तो शासक पक्ष के विधायक अपने प्रभाव को व्यापक बनाने के लिए अपने अनुकूल अधिकारियों का सम्बद्ध मन्त्रियों पर दबाव डाल कर अपने चुनाव क्षेत्र में स्थानान्तरण भी करवा लेते हैं। फिर वे उनके माध्यम से जो चाहें, करवाते हैं। क्या कभी इस प्रकार के भ्रष्टाचार के विरुद्ध भी किसी ने आन्दोलन छेड़ा ?

अधिकारियों से सम्बद्ध एक अन्य प्रकार का भ्रष्टाचार भी है। पद-यात्रा मेरा जीवन व्रत है, अतः अनेक प्रदेशों के छोटे-बड़े नगरों, देहातों, जिला-मुख्यालयों तथा प्रांतीय राजधानियों में जाने का अवसर मिला है। सैकड़ों उच्चाधिकारियों एवं अधिकारियों से मुक्त चर्चाएं हुई हैं। उन सब के आधार पर निष्कर्ष यह है—पटवारी को उप-तहसीलदार, उप-तहसीलदार को तहसीलदार, तहसीलदार को उप-जिलाधीश और उप-जिलाधीश को जिलाधीश के घर पर अनाज, फल, शाक सब्जी, दूध, घी आदि दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं बिना मूल्य पहुंचानी होती हैं। यहां तक कि किसी को गाय, भैंस रखने का शौक होता है, तो उनके घर बिना मूल्य लिए गाय-भैंस तथा घास-चारे आदि की व्यवस्था भी उन्हें ही करनी होती है। सहज ही निष्कर्ष निकलता है कि अधीनस्थ अधिकारी उसकी पूर्ति किस प्रकार करते हैं ? रिश्वत का यह खुला प्रबन्ध उन जिलाधीश से भी अज्ञात नहीं रहता।

मन्त्रियों को जो वेतन मिलता है, कहा जाता है, वह उनके लिए अपर्याप्त होता है। उनका घरेलू खर्च भी उससे पूरा नहीं चल पाता, जब कि कोठी, कार, कर्मचारी, बिजली-पानी आदि का व्यय सरकारी होता है। कुछ केन्द्रीय तथा प्रान्तीय मन्त्रियों ने बतलाया कि चुनाव क्षेत्र से बहुत बार सैकड़ों व्यक्ति अपने-अपने काम लेकर आते हैं। उनका यदि आतिथ्य नहीं किया जाता है, तो वे बुरा मानते हैं। आतिथ्य करने पर उस खर्च की पूर्ति की समस्या खड़ी हो जाती है। समय-समय पर सांसद, विधायक तथा अन्य मित्र भी काफी संख्या में आते रहते हैं। उनका आतिथ्य तो अनिवार्य होता ही है। इस खर्च का सहज अनुमान ही नहीं किया जा सकता। मन्त्रियों की इस दुर्बलता का लाभ सुगमता से पूंजीपति उठा लेते हैं। मन्त्रियों की सहानुभूति प्राप्त करने तथा उसे स्थायी बनाये रखने के लिए बहुत सारे पूंजीपति प्रतिमास हजार दो हजार रुपये मन्त्रियों के घर पहुंचाते रहते हैं। पूंजीपति मन्त्रियों के लिए प्रतिदिन काम आते हैं और सकटापन्न स्थिति से फिर मन्त्री पूंजीपतियों को उबारते हैं। जो पूंजीपति मन्त्रियों के काम में सहयोगी नहीं होते, वे समय पर बुरी तरह फंस भी जाते हैं और जो सहयोगी होते हैं वे बुरी तरह फंसे हुए भी कुशल क्षेम से रह जाते हैं। वे पूंजीपति इस आशंका से कि न मालूम किस समय किस दल की सरकार बन जाए। इसलिए विरोधी दलों के नेताओं को भी प्रतिमास गांठते रहते हैं। इनकी मित्रता का पहला स्थान वित्तमन्त्री तथा वित्त सचिव होते हैं। ये दोस्ती गांठने में कुशल होते ही हैं। बारह महीने प्रतीक्षा में निकाल देते हैं। जिस समय बजट प्रस्तुत होने वाला होता है, वित्त मन्त्रियों एवं वित्त सचिवों के सहायकों को अपने साथ मिला लेते हैं और सम्पूर्ण बजट का कोई रहस्य प्राप्त कर लेते हैं। एक-दो दिन करोड़ों रुपये बटोर लेते हैं और अपने अनन्य मित्रों को भी एक दिन में करोड़पति बना देते हैं। क्या भ्रष्टाचार की जड़-पोषी प्रवृत्तियों को नष्ट करने के लिए तथा कभी किसी धर्माचार्य, सार्वजनिक कार्यकर्ता या अन्य किसी ने आवाज उठाई ?

कुछ मन्त्रालय ऐसे हैं, जिन्हें एक प्रकार से टकसाल कहा जा सकता है। जिन मन्त्रियों के अधीन वे मन्त्रालय हो गए, या उन मन्त्रालयों में जो अधिकारी नियुक्त हो गये कुछ ही दिनों में बिना किसी प्रयत्न के वे लाखों-करोड़ों रुपये अर्जित करने में सुगमता से सफल हो जाते हैं। ऐसा लगता है उनके लिए धन छप्पर फाड़ कर बरसता है। लाइसेंस और परमिट प्राप्त करने के लिए उद्योगपतियों को उनके द्वार पर ही पहुंचना होता है। खाली हाथ पहुंचने वालों के लिए वहां प्रवेश निषिद्ध है। लाखों रुपयों की गन्ध ज्यों ही नाक में पड़ती है, अधिकारी और मन्त्री तत्काल तत्पर हो जाते हैं और बिना किसी व्यवधान के उनका वह काम हो जाता है। कुछ लाख रुपये देकर करोड़ों की अनिवार्य आय का लाइसेंस प्राप्त कर लेना क्या घाटे का सौदा है ?

लाइसेंस देने में किस प्रकार का न्याय बरता जाता है यह भी छुपा हुआ नहीं है। सरकार को चाहे जितनी हानि उठानी पड़े, मन्त्रियों और अधिकारियों को कोई पीड़ा नहीं होती, यदि कुछ लाख रुपये सम्बन्धित मन्त्री या अधिकारी के घर पहुंच जाते हैं। पूंजीपति दस लाख रुपये यदि इस प्रकार देते हैं तो एक करोड़ अपने लिए पहले से ही सुरक्षित रख लेते हैं। उनका सिद्धान्त होता है, तुम भी खाओ, हम भी खाएं। सरकारी योजनाएं पूरी हो पायें या नहीं, इसकी चिन्ता किसे है ?

सरकार के प्रति व्याप्त असंतोष तथा क्षोभ को व्यक्त करने के लिए विरोधी दल समय-समय पर हड़ताल, व धीमे काम करो का अभियान चलाते रहते हैं। ऐसे अवसरों पर छात्रों तथा बेकार युवकों को विशेषतः औजार बनाया जाता है। छात्र तथा युवक

दिल्ली

विकास तथा चुनौतियों का नगर

प्रगति के पथ पर

विगत दो वर्षों के विकास की झाँकी

उद्योग

नरेला में नई विशाल औद्योगिक वस्ती का निर्माण हो रहा है। एक हजार बेरोजगार इंजीनियरों के लिए ८६२ औद्योगिक शेडों का निर्माण।

पांच लाख बेरोजगारों के लिए कारोबार

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत लगभग १६,००० शिक्षित बेरोजगारों को कारोबार देने के लिए ५६ नई योजनाएं प्रस्तावित और कार्यान्वित की गई हैं। ग्रामीण बेरोजगारों के लिए सघन कार्यक्रम चालू किये गये है। इस वर्ष २० लाख रुपये की लागत से विशेष रोजगार योजनाए चालू की गई है।

शिक्षा

दिल्ली में शिक्षा को कार्य-अनुभव व विज्ञान सम्पन्न बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये हैं।

हरिजन कल्याण

हरिजन तथा पिछड़ी जातियो के कल्याण की कई नई योजनाएं चलाई है जिन पर चौथी योजना मे मूल परिव्यय-से दुगुना धन खर्च किया जा रहा है।

चिकित्सा सुविधाएं

सन् १९७३-७४ के दौरान पिछडे तथा झुग्गी-झोंपड़ी क्षेत्रो में १० नये औषधालय खोले गये। इस प्रकार अब तक ५० औषधालय खुल चुके हैं। ५००-५०० बिस्तरों वाले दो अस्पताल निर्माणाधीन है।

किसानों को सुविधाएं

छोटे तथा भूमिहीन किसानों को अनुदान तथा सस्ती दर पर कर्ज देने के लिए 'मार्जिनल फार्मर्स एग्रीकल्चरल लैण्डलैस लेबरर्स एजेंसी' स्थापित की गई है।

पशु संवर्धन के लिए 'वीर्य बैंक' तथा बहुत दूध देने वाली आस्ट्रेलिया की गायों के फार्म की स्थापना की गई है।

दिल्ली की पांचवी पंचवर्षीय योजना में अधिकाधिक नागरिक सुविधाए जुटाने, गृह-निर्माण तथा गन्दी बस्तियों की सफाई, बेरोजगारी को समाप्त करने तथा कमजोर वर्गों के कल्याण आदि कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी गई है।

दिल्ली को आदर्श राजधानी बनाने में अपना भरसक योगदान करें।

—सूचना एवं प्रचार निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित

कुछ ही समय मे क्रुद्ध हो जाते हैं। वे अपना रोष बसो, डाकघरो, व स्टेशनो को जलाने, दुकानें लूटने, रेल को क्षति पहुंचाने, फैक्टरियो को स्वाहा करने आदि मे व्यक्त करते हैं। पुलिस उन पर नियन्त्रण करने के लिए लाठी, अश्रुगैस तथा गोली आदि का प्रयोग भी कर लेती है। प्रश्न यह है कि असन्तोष और क्षोभ व्यक्त करने के लिए क्या राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट करना चाहिए? बुराई के विरुद्ध क्रांति अपेक्षित हो तो उससे कोई भी मुकर नही सकता, पर क्रांति के नाम पर राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट कर देना कहां तक उचित कहा जा सकता है। जो देश गरीब है। जिसे विदेशो से माग-माग कर अपनी बहुत सारी आवश्यकताओ की पूर्ति करनी पडती हो, वहां के नागरिक आदोलन के नाम पर एक ही दिन मे करोडो-अरबो की सम्पत्ति नष्ट कर देते हो, क्या यह एक प्रकार का स्वेराचार नही? मान लीजिए, आदोलन के फलस्वरूप वर्तमान सरकार अपदस्थ हो जाती है और आदोलन कर्ता दल पदारूढ हो जाता है, तो उसी दल को उस क्षति को पूर्ण करने मे कितना समय, श्रम और साधन जुटाने आवश्यक हो जायेंगे और उसमे कितनी शक्ति का व्यय होगा? विरोधी दल सोचें। उनके विरोध में रचनात्मक रुख होना चाहिए। देश की सम्पत्ति का विनाश नही होना चाहिए और उत्पादनक्षमता पर भी कोई प्रतिकूल परिणाम नहीं आना चाहिए।

काला धन बहुत बढ गया है। वह उद्योगपतियो के पास भी है और जनता के पास भी, मात्रा की न्यूनाधिकता अवश्य है। आम तौर मे देखा जा सकता है, जिसके पास काला धन जितनी अधिक मात्रा में है, वह उतना ही समाज पर अपना प्रभाव अधिक मानता है। सार्वजनिक सस्थाओ के चलाने के लिए धन चाहिए। चाहे विद्यालय, पुस्तकालय, चिकित्सालय आदि कुछ भी हो। राजनैतिक दलो का काम भी बिना धन के नहीं चलता। धर्माचार्यो के गुरुडम को पोषण भी धन से ही मिलता है। उनके चारो ओर भी धनिकजन वाले मडराते रहते हैं। धर्माचार्यो की योजनाए भी अधूरी रह जाती है, यदि काले धन वाले पूंजीपति हाथ खींच लें। इसलिए, सार्वजनिक सस्थाओ, राजनैतिक दलो के कामो तथा धर्माचार्यो की योजनाओ को आगे बढाने मे काले धन वाले सहयोग करते हैं और उसके विनिमय मे वे सम्मान, पद तथा बडी-बडी उपाधिया पाते हैं। एक दूसरे की यह साठ-गाठ भ्रष्टाचार को बढावा देने मे निमित बनती है। काला धन देने वाले उन्हीं के माध्यम से शोषण कर फिर काला धन बटोरते हैं और सम्मान पाकर बगुले की तरह उजले भी रह जाते हैं। उनके अह का पोषण होता रहता है और उनकी शोषण मूलक जहरीली जड ज्यो की त्यों हरी रह जाती है। यदि भ्रष्टाचार को समाप्त करना है, तो सार्वजनिक कार्यकर्ताओ, राजनयिको तथा धर्माचार्यो को काला धन बटोरने वालो से अपनी साठ गाठ समाप्त करनी होगी और आम जनता के साथ घुलना मिलना होगा। वे ही योजनाए और कार्यक्रम सफल हो सकेंगे जिनका सीधा सम्बन्ध समाज की बहुसंख्यक जनता के साथ जुडता हो, कुछ व्यापारियो के साथ नहीं।

आजकल धर्माचार्य, राजनेता तथा सार्वजनिक कार्यकर्ता जनता से कटे हुए नजर आ रहे हैं। जनता के हृदय में उनके लिए जो स्थान होना चाहिए, वह नहीं है। इसका एक मुख्य कारण है, काले धन के साथ उनका संबन्ध। समाज को नई करवट देने के लिए यह आवश्यक है कि काले धन वाले व्यक्तियो का समाज मे कोई महत्वपूर्ण स्थान न हो। बल्कि उन्हें समाज के कोढ के रूप मे आंका जाए। समाज के सर्वसाधारण को उभरने न देने में कालेधन वालो ने अपनी अनेक कलाबाजिया काम में ली है और उन मे वे सफल भी हुए हैं। पर, वर्तमान का समाज अब उसे सहन नहीं कर सकेगा। उसमे चेतना के स्वर मुखर हो चुके हैं। भ्रष्टाचार को समाज से नहीं मिटने देने में जो सबसे बडी बाधा है, उसे समाप्त करने की ओर समाज को जागरूक होना होगा।

भ्रष्टाचार के बढने मे एक मुख्य कारण नागरिकों मे राष्ट्रीयता की कमी भी है। व्यक्ति अपने स्वार्थ को प्रधानता देता है और उसके स्थान पर राष्ट्र को चाहे जितनी हानि उठानी पडे, उसे कोई पीडा नही होती। यदि राष्ट्रीयता को प्रधानता होती तो एक अधिकारी रिश्वत लेते हुए सकुचाता, एक व्यापारी अनहद लाभ से कतराता तथा एक श्रमिक काम से जी चुराने से अपने को बचाता। पर स्थिति उल्टी है। प्रत्येक व्यक्ति अपने घर को भरने मे अधिक व्यग्र है, चाहे पडोसी को कितनी भी हानि क्यो न उठानी पडे। यदि राष्ट्रीयता होती, तो भाषा, जाति, सम्प्रदाय तथा प्रात के प्रश्न उभर कर सामने न आते। एक सैनिक देश की इच-इच भूमि की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान दे सकता है पर एक व्यापारी या अधिकारी ऐसे अवसर पर भी अपने घर को भरने की ही सोचता है।

व्यक्ति के स्वार्थ को धर्म ने परमार्थ मे बदला था। धर्म ने व्यक्ति को सिखाया था कि वह स्वय ही अतिम इकाई नहीं है। उसके परिपार्श्व मे भी और कुछ है और उसका विस्तार अनन्त तक है। उसकी दृष्टि स्व के छोटे से घेरे मे ही, सिमट कर न रह पाए। उसका अनन्त विस्तार हो। वह हुआ भी। व्यक्ति बहुत लम्बे समय तक स्वार्थ से विमुख रहता रहा। किन्तु जब से धर्म ने सम्प्रदाय का मुखौटा लगा लिया, उसकी परमार्थता समाप्त हो गई और जिस दोष से वह समाज को बचाता था, उसी दोष का शिकार वह स्वयं हो गया। उसकी तेजस्विता समाप्त हो गई। आज उसे विकार मुक्त करने मे बहुत अधिक प्रयत्न अपेक्षित हो गया है, जो सम्भवता से परे की कल्पना लगती है।

भ्रष्टाचार के छोटे प्रकारो की ओर अंगुली उठाने के बनिस्बत यदि इन बडे प्रकारों को समाप्त करने के लिए प्रयत्न किया जाए, तो रोग के उपचार में सुगमता हो सकती है। छोटा व्यापारी या छोटा अधिकारी तो विवश होकर ही भ्रष्ट बन सकता है। किन्तु बडे व्यक्तियो के समक्ष तो विवशता का कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता। यथार्थ यह है कि बडे व्यक्तियो से भ्रष्टाचार की कलई न खुल जाए इसके लिए वे भ्रष्टाचार के छोटे-छोटे प्रकारो को भी बढा-चढा कर समाज के समक्ष प्रस्तुत करते रहते हैं। समाज इस वास्तविकता को समझे। यदि बडे भ्रष्टाचारी सुधर गये तो छोटे व्यक्ति का सुधार तो स्वतः हो जाएगा। उनके भ्रष्ट बनने के कारण ही समाप्त हो जायेंगे।

आप इतना तो कर सकते हैं

— जरूरत से ज्यादा
चीजें न खरीदें।
जिनके पास फालतू पैसा है,
वे किसी भी कीमत पर चीजें खरीद सकते हैं।
लेकिन क्या इन्हीं के भरोसे
दुकानदार दाम बढ़ा सकता है?
ऐसे लोग कितने हैं?

उसे आपकी खरीदारी की जरूरत है।
मुनाफाखोर व्यापारी की चाल
नाकाम कीजिए।
खामख्वाह की 'शापिंग' मत कीजिए।
केवल जरूरत की चीजें खरीदिए।
जब कीमतें बढ़ने लगें तो
घबराहट में कल के लिए भण्डार मत बनाइए।
अगर आप बनाएंगे तो
दाम जरूर बढ़ेंगे।

केवल जरूरत की चीजें खरीदें

एक चुनौती

अशोक कुमार ढड्ढा

जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में बिहार का जन-आन्दोलन ज्यों-ज्यों जोर पकड़ता जा रहा है, त्यों-त्यों न मालूम क्यों, देश की सत्तारूढ़ पार्टी के एड़ी से लेकर चोटी तक के नेताओं में एक अजीब सी बौखलाहट पैदा होती जा रही है। देश भर में जहां कहीं भी इन नेताओं के भाषण, शिविर, सम्मेलन आदि होते हैं उनमें पूरा नहीं तो आधा समय तो अवश्य ही जयप्रकाशजी के ऊपर गुस्सा उतारने अथवा उस जन आन्दोलन से लोहा लेने के उपाय सोचने में चला जाता है। शायद पड़ोसी देशों के समय-समय पर हुए हमलों में भी ये लोग उतने चिंतित नहीं हुए होंगे जितने आज हैं। यही नहीं वे लोग किसी भी मूल्य पर जयप्रकाश के द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन को कुचल देना चाहते हैं। इन्दिरा ब्रिगेड का तो इस समय यह एक मूलभूत उद्देश्य हो गया है।

जयप्रकाश जी ने साफ तौर से जाहिर किया है कि वे अपना पूरा समय और शक्ति बिहार शासन में व्यापक रूप से फैले भ्रष्टाचार रूपी गंदगी की सफाई में ही देंगे, अन्य प्रान्तों के शासकों विधायकों में न जाने क्यों यह भय घर करता जा रहा है कि कहीं जे.पी. इधर न चले आयें। अतः जे.पी. को गिरफ्तार करने एवं प्रान्त में प्रवेश पर रोक लगाने की अप्रजातांत्रिक मांग करने लग गये हैं अथवा विभिन्न संगठनों व लोगों के माध्यम से करवा रहे हैं। क्या जे.पी. का भ्रष्टाचार आदि को मिटाने का संकल्प इतना 'प्रतिक्रान्तिकारी' है कि वे जे.पी. को नम्बर एक का 'दुश्मन' भी समझने लग गये हैं? आजादी के बाद सत्तामोह को त्याग कर जे.पी. ने समय समय पर जो भी संकल्प एवं कदम उठाये हैं, वे इस देश की संस्कृति के अनुरूप और देश की अखण्डता को बनाये रखने के लिये ही थे और उनके परिणाम शत प्रतिशत देश के गौरव को बढ़ाने वाले ही साबित हुए हैं।

जो काम हमारे 'इन' शासनकर्ताओं अथवा इनके पूर्वजों को गांधी जी के कहे अनुसार आजादी के साथ ही कर लेना चाहिए था वह क्यों नहीं किया? गांधी के नाम पर दुहाई दे देकर वोट प्राप्त करके राज्य चलाने और 'घर भरने' तक ही क्यों सीमित रखा? और आज जबकि 'स्वतंत्रता संग्राम' के अग्रणी जयप्रकाश जी तथा उनके निकट तम सहयोगियों का एक संगठन, देर से ही क्यों नहीं, पर एक छोटा सा काम बड़ी निष्पक्षता एवं बिना किसी प्रकार की लालसा के सत्य, अहिंसा और संयम के साथ करने जा रहा है तो वे प्रजातंत्र विरोधी, क्रांति विरोधी प्रतिक्रियावादी आदि नामों से देश में बदनाम किये जा रहे हैं? क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि देश के मन में कहीं चोर घुसा हुआ है। और अब जब जे.पी. असली जनतंत्र रक्षक के रूप में सामने आये हैं तो अपनी कलई खुल जाने के भय से ये बुरी तरह घबरा गये हैं। लेकिन यदि इन शासकों के मन में जरा भी खोट नहीं है तो फिर गांधी जी के बताये 'रामराज्य' को लाने में जे.पी. के साथ कंधे से कंधा भिड़ाकर काम करने से क्यों हिचकिचा रहे हैं? ×

"बीकानेर के खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान में लगी एक हजार की पूंजी एक परिवार को रोजगार देती है, जबकि भारत सरकार के अन्य किसी भी उद्योग में १५ से ५० हजार तक की पूंजी लगाने पर भी एक व्यक्ति को काम मिलता है।"

श्री जगजीवन राम
केन्द्रीय रक्षामंत्री

खादी ग्रामोद्योग प्रतिष्ठान बीकानेर (राजस्थान)

अंतर्ध्वनि

हे नम्रता के सम्राट !
दीन भंगी की हीन कुटिया के निवासी !
गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित
इस सुन्दर देश में
तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे ;
हिन्दुस्तान की जनता से
एकरूप होने की शक्ति और उत्कठा दे।
हे भगवन् !
तू तभी मदद के लिये आता है,
जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।
हमें वरदान दे,
कि सेवक और मित्र के नाते
जिस जनता की हम सेवा करना चाहते है,
उससे कभी अलग न पड जाये।
हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना,
ताकि इस देश को हम ज्यादा समझें
और ज्यादा चाहें !

महात्मा गांधी

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३२ शिलिंग या ५ डालर, इस अंक का मूल्य ६० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं एन० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सम्पादक

रामभूति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक . प्रभाष जोशी

वर्ष २० | २ सितम्बर, '७४ | अंक ४८-४९

१९ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

लोकसेवकों से

आज लोकसेवक को हर जगह हाजिर रहना है—फिर चाहे वह खेत हो चाहे कारखाना, चाहे मदरसा कालेज, सभा का मन्च श्रोता समाज या दंगे-फसाद अथवा संघर्ष का कोई क्षेत्र। उसे हर जगह कहकर और करके लोगों के बीच फैली हुई लाचारी की भावना हटानी चाहिए। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्थाएं आम आदमी को चक्की में डाल कर पीस रही हैं। हर लोकसेवक को आज बिना चैन लिए गांधी-विनोबा जयप्रकाश के विचारों और कार्यक्रमों का प्रचारक होना है। इन विचारों और कार्यक्रमों का परचम उसे उड़ाना है और ऐसे विचारों और कार्यक्रमों के आड़े आना है जो पारस्परिक द्वेष बढ़ाते हैं, वर्ग संघर्ष को जन्म देते हैं और क्रांति के नाम पर दासता का हार हमारे देश के गले में डालना चाहते हैं। हर लोकसेवक को चाहिए कि वह फासिज्म साम्यवाद, समाजवाद और सच्चे 'जनतन्त्र को स्वयं समझे और घूम घूम कर या घनिष्ठ भाव से एक ही जगह रहकर अपने आसपास के लोगों को इनका अन्तर समझाये—बताये कि सच्चा स्वराज्य किसे कहते हैं और वह कैसे मिलता है। प्रेम के इस काम को करते हुए अगर वह विद्रोही या विरोधी या प्रतिक्रियावादी कहा जाता है तो इन विशेषणों को नासमझ लोगों द्वारा दिया गया तमगा समझें। लोकसेवक ने बहुत दिनों तक यत्किंचित सेवा में संतोष माना। अब वह समग्र सेवा में जुटे।

याद रखना चाहिए कि प्रेम और धीरज से किये जानेवाले काम असफल कभी नहीं होते। हमने इन दिनों कुछ नये काम हाथ में लिए हैं। उन कामों को तरह-तरह के नाम दिये जा रहे हैं। मुट्ठी भर शोषक या जिन्हें शोषण के बढ़ने से अन्त में अपने मन की क्रांति करने में आसानी जायेगी, उसे प्रतिक्रियावादी और फासिज्म कह रहे हैं। वे बेचारे आज तक चली आ रही पद्धति से जो लाभ उठा रहे थे, उन्हें मुट्ठी से घटता दीख रहा है। उनका इसलिए सभी तरह के उपाय करना स्वाभाविक है वे यह दिखाने के लिए कि जनता उनके साथ है, मजदूर उनके साथ है, जवान उनके साथ है, हास्यास्पद नाटक रच रहे हैं। पिछले महीने ६ अगस्त की कुख्यात युवक-रैली उसका एक नमूना था। उसे अब तो याद करके आयोजक तक अपने को शर्मिंदा महसूस कर रहे हैं। मगर हम उसको क्षण दो क्षण की शर्म पर न जायें। शर्म ऐसे तन्त्रों का कोई अंग ही नहीं है। वे अब इससे भी बड़ा कोई खेल करेंगे। मिसा और डी० आई० आर० का काफी उपयोग सर्वथा अहिंसक आंदोलन को दबाने के लिए किया जा रहा है। इनके उपयोग में और-और तेजी आयेगी। मगर लोकसेवक ऐसे नीतिहीन कानूनों, निर्मम दमनचक्र या खुद उसे उभाड़कर गलत काम कर लेने की चाल को इस तरह समझे और व्यक्त करेगा जैसा आजादी के दीवानों ने गांधीजी के नेतृत्व में किया था।

याद रखें सेवा कुचली नहीं जा सकती इसलिए लोकसेवक किसान मजदूर और अभावग्रस्त की पीड़ा और परेशानी की चलती फिरती अभिव्यक्ति है। और हो उसकी पीड़ा तथा परेशानी को दूर करने की कसम और मरहम और सो भी रामबाण वह सेवा के लिये निकला ही इसलिए है कि उसे दूसरों का दर्द है और अपने दूसरों के लिए उठाये जाने वाले दर्द को वह गनीमत मानता है, जरूरी मानता है, वरदान मानता है। भारत भ[र में]
हर जगह लोकसेवक है। उसे इस घड़ी
सदा से भी अधिक सावधान रहना है
सबके प्रति द्वेषरहित भावना से प्रेम
सहयोग की शक्ति के प्रति लोगों का खो
हुआ विश्वास जगाना है।

लोगों में प्रेम और सहयोग के प्र
विश्वास कैसे जागेगा? इसकी एक पू
प्रक्रिया है और वह प्रक्रिया फैल कर सब
करने से भी अधिक घनिष्ठ रूप से और जु
कर रचनात्मक काम करने में अधिक
लोकसेवक इस समय एक दोहरे पर ख
है। इतना ही नहीं एक दुविधा में पड़ा
एक विचार उसे ग्राम स्वराज्य में लगे र
को कहता है, दूसरा ख्याल उसे बिहार
तरह के संघर्ष के लिए पुकारता है। दि
एक मारक चीज है। संशयात्मा विनश्यति
जिस लोक सेवक को स्वधर्म गांव में ढूंढ
में दिखे, वह वही करे और जिसे बिहार
तरह का संघर्ष पुकारे, वह अपने प्राप्त धर्म
लगा हुआ, चुपचाप जब तक ऐसा संघर्ष स्व
चलकर उसके पास नहीं आ जाता संघर्ष
दिशा में स्वयं न जाये।

बिहार की स्थिति जो लोक सेवक ज
है, वहां पैदा नहीं है। जब पैदा होगा त
उसमें भाग लेना और वह भी अपने जाने म
प्रेम आत्मसंयम और अहिंसा के तरीके
उसका धर्म हो जायेगा। जब तक उसके ग
में ऐसी परिस्थिति उद्भूत नहीं होती त
तक तो वह अगर खादी के काम में लगा
तो उसमें लगा रहे, शराब बन्दी के काम
लगा है तो उसमें। कार्य की इसी पद्धति
विनोबा ने सेवा व्यक्ति की और भक्ति समा
की कहा है। कार्य की यह प्रक्रिया अ
प्रक्रिया है।

बिहार के ग्राम पंचायत स्तर से लेक
जिला स्तरों तक पर्याप्त संघर्ष समितियां
जन-संघर्ष समितियां गठित हो चुकी हैं।
मदद लेने के लिए देश के विभिन्न प्रान्तों
अनुभवी कार्यकर्ता भी पहुंचते हैं। वहां हुई
बैठक का विस्तृत विवरण हम दे रहे हैं।
पाठकों को इस बात का अनुमान हो जाये
कि आन्दोलन शान्तिमय तरीकों से चल र
है और फिर भी दमनचक्र जारी है।
अगले अंक से यथासम्भव हर बार बिहार
किसी न किसी प्रखण्ड के कार्य का वि
विवरण देने का प्रयत्न कर रहे हैं।
पाठकों को कभी-कभी आन्दोलन के विषय
होनेवाली अपनी शंकाओं का समाधान
रहेगा। (सम्पादक)

सब मिलकर एक महाशंख बजायें

आपके छोटे-छोटे शख बजते हैं—एक ख इन्दौर मे बजता है, एक दिल्ली मे बजता , एक शायद जयपुर मे, एक पटना मे दि। और किसी के हजार ग्राहक हैं, किसी पाँच सौ। कुल मिला कर बहुत हुआ तो च हजार। उसके बदले एक महाशंख बजा- ये। आपकी एक सम्मिलित पत्रिका हो। समे आपके काम की जानकारी हो, आत्मा- मक चर्चा हो, जैसे आजकल तुलसीपर्व चल हा है, महावीर पर्व चल रहा है, उसकी नकारी हो। और दुनिया मे जो कुछ चल हा है उसका भी थोडा अंश उसमे आ जाय पकी पत्रिका ऐसी हो कि वह पढने के बाद सरी पत्रिका पढने की जरूरत न रहे। सी एक सम्मिलित पत्रिका आप निकालें। मनजी का सुझाव है कि उसके ५०,००० हक होने चाहिए—मैं तो एक लाख से कम नता नही। ऐसी सम्मिलित पत्रिका आप कालते हैं तो उसके द्वारा ठीक जानकारी व-गाव मे लोगो को मिल सकती है। आज या होता है? आप जो कुछ करते हैं उसकी रस्त कुछ न कुछ जानकारी अखबारो मे आ ती है और वह जो होती है, उनके अपने- पने रंगो मे रंगी होती है। गलत असर लोगो र पडता है। ठीक जानकारी उनको मिलती ही। इस वास्ते आपका विचार खण्डित ता है। यह समझने की बात है।

लोकमान्य तिलक आखिर तक पत्रिका लिखते रहे। जेल गये तो लिखना बन्द हो या। जेल से बाहर आते तो लिखना शुरू र दिया—'पुनश्च हरि ओम्'। जेल से हर आते ही 'पुनश्च हरि ओम्' नाम का ग्रलेख लिखा। महात्मा गाधी आखिर तक लिखते रहे। आखिर में तो अपना लेख हरि- जन को हवाई जहाज से भेजते थे, क्योंकि ल्द से जल्द छप जाना चाहिए। राजाजी आखिर तक लिखते रहे। बिलकुल, मरने के हिले एक-दो सप्ताह तक लिखते रहे। इस रह, हमारे जमाने के जो मुख्य-मुख्य नेता थे वे अन्त तक निरन्तर प्रचार के लिए प्रयत्न करते रहे। वैसा प्रचार आपको भी करना चाहिए।

एक भाई ने मुझे पूछा कि दैनिक अख- बार निकालना चाहिए क्या? अगर आप निकाल सकते हो तो मेरी सम्मति है, लेकिन उसके लिए काफी झमेला होता है। तरह- तरह की खबरें देनी पड़ती हैं, वे गलत भी हो सकती हैं, इत्यादि इत्यादि। इसवास्ते मैं साप्ताहिक पर प्रसन्न हूँ। आपकी पत्रिका द्वारा आपकी ठीक जानकारी सात दिन मे लोगो के पास ठीक ढग से पहुँच जाये तो बहुत कार्य होगा। नही तो गलत इमेज (प्रतिमा) आपकी खडी हो जाती है। बाद में आप दुरुस्त होते नही। लोगो के चित्त पर जो असर दुरुस्त करने की कोशिश करते हैं तो भी होना था, वह तो हो ही चुका।

गये साल इग्लैंड का बाइबिल सोसायटी ने भारत की लगभग ८० भाषाओ मे ६० लाख बाइबिल बाटी। कुछ पूरे दाम पर बेचते हैं, कुछ आधे दाम पर, कुछ मुफ्त देते हैं। ६० लाख प्रतियाँ उनकी गयीं। आपके साहित्य की कितनी प्रतियाँ जाती हैं? कुल मिलाकर मेरा ख्याल है, पाच-एक लाख रुपये की जाती होगी इसवास्ते साहित्य प्रचार मे अनेक लोगो को लगना चाहिए। इसकी पूरी योजना करनी चाहिए। हरएक प्रखण्ड म अपनी दुकान होनी चाहिए। अगर हर प्रखड मे न हो सके तो दस लाख व्यक्ति जहा हो, वहा कम से कम एक दुकान होनी चाहिए। इसकी योजना पूरे भारत भर मे होनी चाहिए। इसका आदोलन भी योजना कर के करना चाहिए। आज जो थोडा ध्यान उधर दिया जा रहा है, वह नाकाफी है।

—विनोबा

बिहार संघर्ष समिति की बैठक

आन्दोलन में छात्रों को आगे रहना है

पटना में अगस्त २० और २१ को जयप्रकाशजी ने पूरे बिहार प्रदेश के काम का जायजा लेने और सलाह मशविरा करने के ख्याल से राज्य-भर की छात्र संघर्ष समितियों को बुलाया था। यह बैठक जरा जल्दी में बुलाई गई थी। लोगों को एक-एक दो-दो दिन पहले ही खबर लग पाई। मगर १९ की शाम तक काफी लोग और २० की सुबह तक तो बिहार के ३१ जिलों में से २५ जिलों के संयोजक और प्रतिनिधि आ गए थे। उत्तर बिहार के जिलों से कम ही लोग आ पाये, वहां इन दिनों बाढ़ का प्रकोप है।

२ दिनों की यह बैठक चार हिस्सों में हुई। १९ को साढ़े ९ बजे से १ बजे तक और फिर तीसरे पहर ३ से ७ बजे तक। इसी प्रकार २० तारीख को जरा जल्दी साढ़े आठ से १ बजे तक और फिर दोपहर ढाई से ६ बजे तक। पहले दिन बैठक का उद्घाटन हुआ, निस्संदेह जयप्रकाशजी द्वारा। जयप्रकाशजी ने पहले तो प्रश्न किया कि प्रदेश-छात्र संघर्ष समिति के कोई प्रतिनिधि आए हैं या नहीं? फिर वे इसी तरह विभिन्न जिलों और प्रखंडों के नाम लेकर थोड़ी देर तक यह पूछते रहे कि अमुक-अमुक स्थानों से कितने-कितने लोग आये हैं। इसके बाद उन्होंने कहा, छात्र-संघर्ष-समिति और जन-संघर्ष समिति की ओर से आए हुए संयोजक प्रतिनिधिगण, सर्वोदय कार्यकर्ता और उत्तर-प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा पंजाब तथा गुजरात से आए हुए हमारे सहायक मेरे साथी हितैषी और शुभेच्छुगण। मैं पहले तो आपसे यह कहना चाहता हूं कि यह आंदोलन छात्रों का है। छात्र अगुआ है और बाकी के हम सब लोगों का इनके पीछे चलना है। वे हमसे पूछेंगे तो हम सलाह देंगे, बतायेंगे, फिर यह उन्हें देखना है कि हमारी सलाह का स्वीकार्य किया नहीं। हर परिस्थिति में क्या करना है, यह फैसला उनका होगा, मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूं कि प्रदेश-संघर्ष समिति ने आग्रह-पूर्वक मुझे नेता के पद पर बैठाया और उसके बाद भी उन्होंने मुझे कदम-कदम पर गौरव दिया। मेरी कोशिश रही कि मैं इस बात को भूलूं नहीं कि आंदोलन कैसे शुरू हुआ, इसे किसने शुरू किया और उन्होंने क्या-क्या किया। इसी तरह हम सभी को यह नहीं भूलना चाहिए कि इस आंदोलन में आगे छात्रों को रहना है। अगर हम भूल गये कि छात्र ही इस संघर्ष के नेता हैं तो यह संघर्ष के साथ अन्याय होगा।

जयप्रकाशजी ने जब यह जाना कि ३१ जिलों में से २५ जिलों के ही प्रतिनिधि आए हैं और उनमें से भी संयोजकों की संख्या कम है, अन्य प्रतिनिधियों की संख्या ज्यादा है तो उन्होंने इसका सबब जानना चाहा और मालूम हुआ कि कुछ संयोजक जेलों में हैं और कुछ प्रतिनिधि भी। सूचना भी उन्हें समय पर नहीं मिल पाई थी क्योंकि बैठक का निर्णय जरा जल्दी लिया गया था। तब कहा गया कि प्रखंड स्तर से लेकर जिला और राज्य स्तर के जो प्रतिनिधि आए हैं, वे अपने अपने काम का विवरण पेश करें और इसके बाद सितम्बर में एक बैठक फिर बुलाई जाये, जिसमें आगे के कार्यक्रम पर विचार हो। पहले यह देख लें कि हमने क्या बनाया है, क्या बना है। तब उस सबको सामने रख कर आगे की बात सोचें। बैठक को जल्दी में बुलाया गया जयप्रकाशजी ने इस बारे में खेद प्रकट किया। यह भी कहा गया कि विद्यार्थी-संगठन में दलों के आधार पर ग्रुप बन गए हैं और कई बार मेरे सामने भी छात्र एक-दूसरे पर प्रहार करते हैं। अगर इसमें आश्चर्य की बात नहीं हैं, यह है कि वे अभी तक किसी भी तरह हों, काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि अगर किसी कारण से कुछ विद्यार्थीगण इस बैठक में नहीं आए हैं तो वे ३ बजे से बैठक में शामिल हों क्योंकि मिलकर बैठने, साथ-साथ बातचीत करने और परस्पर विचार करके कार्यक्रम निश्चित करने से किसी भी संघर्ष की ताकत बढ़ती है। उन्होंने विद्यार्थियों के बीच परस्पर फैली हुई गलतफहमी को दूर करने पर जोर दिया और कहा कि मैं तो यह चाहता हूं कि आप एक होकर अपना नेतृत्व खुद करें और नेतृत्व का जो सेहरा आपने मुझे सौंपा है, वह आप ही को वापस कर दूं। आप भी आंदोलन में हैं और मैं भी आंदोलन में हूं। हमारे रिश्ते सहयोगियों के हैं। अगर आप लोग आपस में मिलकर काम न करें या उसमें से हटने की बातें अपनायेंगे, तो आंदोलन चलता नहीं रह सकेगा हमने जिन बुराइयों से लड़ने की ठानी है वे बुराइयां दूर करनी हैं।

मझधार में तो छोड़कर तो नहीं जायेंगे ऐसा भी किसी विद्यार्थी ने जयप्रकाशजी से पूछा। उत्तर देते हुए जे० पी० बोले कि छोड़ने की कोई बात नहीं है। क्योंकि मझधार में तो आप भी हैं और मैं भी हूं। दिल्ली से पटना तक रोज मुझ पर प्रहार होते हैं। अब क्या हो, कहा नहीं जा सकता। कहा जाता है कि हमारे साथ नैक्सलाइट हैं। और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, जनसंघ, विद्यार्थी परिषद आदि का नाम लिया जाता है। तो क्या सब 'फासिस्ट' नहीं इन्हें फासिस्ट कहा जा रहा है और इसके साथ-साथ मुझे भी। क्या ये लोग देशभक्त नहीं हैं? उनके अपने कुछ ढंग जरूर हैं। और उनसे मुझे कभी-कभी परेशानियां होती हैं। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि समस्या उलट करके या विकृत करके पेश नहीं करना चाहिए। विद्यार्थी परिषद और फिर छात्र-संघर्ष समिति ने इस लड़ाई का श्रीगणेश किया और मैंने कहा कि वे ही अगुआ हैं और वे ही आगे रहेंगे और यह सच भी है। विद्यार्थियों को आत्मशक्ति का एहसास भी। उन्हें दूसरों पर भी विश्वास होना चाहिये। अगर कोई महसूस करता है कि हमें दबाया जा रहा है तो यह परस्पर विश्वास की कमी है। आपने आगे कहा कि आंदोलन जितना चाहिए उतना तेज नहीं चल रहा है, क्योंकि अभी पूरी जनता इसमें नहीं आई है। मुख्य तो जनता ही है, हम सब तो उसके भाग ही हैं। एक छोटा हिस्सा

....आदिवासी हमारे खिलाफ नहीं हैं

ए। जनता से बड़ा कोई नहीं हो सकता। न आप हो सकते है, न मैं हो सकता हूं।

जे० पी० ने फिर करबन्दी की बात की और पूछा कि हमारा जो आनेवाला बड़ा आन्दोलन है वह करबन्दी आन्दोलन होगा, हममें, आपमें कितने लोग है, जो कर देते हैं ? आप विद्यार्थियों में से तो कोई कर नहीं देता। इसलिये उनमें जाकर काम करना पड़ेगा जो कर देते हैं और उनमें सबसे प्रधान वर्ग है किसानों का। कर-बन्दी के मार्फत की जो क्रांति होगी उसके मूल में आप रहेंगे। यो, 'मूल' कहने में अहंकार आता है। *तो मूल में तो किसान ही है।* आप इस मूल को सींचेंगे और संचालन करेंगे। मैं श्रीगणेश कर दूंगा। आप जानते हैं कि मेरा शरीर कमजोर है। फूंक-फूंक कर चलता हूं। संचालन तो छात्र-संघर्ष समिति या जन-संघर्ष समिति के लोग करेंगे चाहे वे प्रदेश के हो, चाहे जिलो के हो, चाहे प्रखंड स्तर के हों। आप एक साथ बैठकर जो हो तयकरें। सर्वोदयवालो को आपने क्रांति में आगे बढ़ने का आश्वासन दिया तो हम सब लोग आपके साथ आ गये। अब कुछ लोग संदेह करते हैं और सोचते हैं कि हमें नेतृत्व चाहिए। मेरा भरोसा है कि ये संदेह धीरे-धीरे समाप्त हो जायेगा, कब दूर हो जायेगा नहीं कहा जा सकता।

अपने दौरों का संक्षिप्त विवरण श्री जे० पी० ने दिया और बताया कि मैं रांची गया था, जमशेदपुर भी गया था। रांची दुबारा गया। झारखण्ड में भी समितियों को गठित किया। *कई अन्य स्थानों पर भी जिला* स्तर और प्रखंड स्तर पर समितियों के गठन किये मगर अब मुझे बन्द करना चाहिए, हम फिर कल मिलेंगे और आपकी रिपोर्टों को सुनने के बाद क्या हुआ है यह जानकर क्या होना है सो तय करेंगे। हम सब चाहते हैं कि आप अपना काम सुव्यवस्थित और सुचारु रूप से करें। काम से मतलब रखें। मैं कई जगह गया। उत्साह सब जगह था लेकिन जैसी व्यवस्था खादी ग्राम कार्यालय के कार्यक्रम में दिखाई दी वैसी दूसरी जगह नहीं दी। सामने आचार्य राममूर्ति बैठे हैं, तो भी मुझे यह कहने में संकोच नहीं होता। लोग दर्जा-ब-दर्जा बैठे थे। आप भी इसी तरह से व्यवस्थित काम कीजिये। प्रश्नों को ठीक ढंग से सोचें और विचार करने के बाद ही उनका उत्तर ढूंढें। मेरा निवेदन है कि मिलकर ही काम का स्वरूप तय करना चाहिये। *मुझे तो काम से ही काम है। जहाँ जाता हूं,* लाखो लोग जमा हो जाते हैं। बेगूसराय में गया था तो २ लाख इकट्ठा हो गये थे। जबरदस्त बारिश में भी बैठे रहे। वे सारे लोग क्या-क्या अपेक्षाएं लेकर गये होंगे। हमें ये अपेक्षाएं पूरी करनी हैं। अपने प्रारंभिक इस वक्तव्य को कहां खत्म करें, यह जे० पी० सोच नहीं पा रहे थे। बातें बहुत कहनी थी और बैठक आये थे हाथ में कई काम छोड़कर। व बोले, ९९ प्रतिशत बिहार की जनता हमारे साथ है। मुसलिम जनता भी हमारे साथ है। रईसों को छोड़ दें। हो सकता है वे भी हमारे साथ हो जायें। मैं मधुबनी भी गया था। उसके बारे में मैंने सोचा था कि वहा के लोग आन्दोलन के साथ नहीं है अर्थात आदिवासी हमारे साथ नहीं है। मगर मैंने देखा, वे हमारे खिलाफ भी नहीं हैं। मेरी रांची में उनसे बातचीत हुई। उन्होंने कहा कि लोग सरकार के खिलाफ है। मगर अभी आपके भी साथ नहीं हैं। क्या करें ? सब तरफ से हमारी उपेक्षा की गई है। उनका विचार था कि वे आन्दोलन हाथ में नहीं लेंगे, जरूरत पड़ी तो हाथ बटायेंगे। पूर्ण समर्थन उनके बस की बात नहीं है। जितना बनेगा, करेंगे। उनकी कुछ *मांगें है। जैसे— झारखण्ड प्रदेश अलग हो।* मुझे उसमें दिक्कत नहीं। क्योंकि मैं तो छोटे राज्यों में विश्वास करता हूं। मगर यह मेरी व्यक्तिगत राय है। मुख्य बात यह याद रखनी चाहिए कि जनता सब एक है। आदिवासी और अनादिवासी ऐसे वाटर टाइट कम्पार्टमेंट नहीं हैं। उन्हें कहा कि हम सब मिले जुलें, मिलकर बहने वाली धारा बनें। जे० पी० ने आगे चलकर यह भी कहा कि इस वक्त पानी बहुत बरस रहा है। सब भीग गया है, डूब गया है, कम से कम नम तो हो ही गया है। हमारा आन्दोलन भी इसवक्त नम है, ठण्डा है। तो जहाँ जहाँ बारिश है, वहाँ वहाँ राहत का काम करें। हम कर भी रहे हैं। जहां नहीं हो रहा वहाँ भी, जहा बाढ़ न हो वहां भी। जो भी काम करें, सुचारु रूप से करें। यह सरकार ठप्प करने का काम तो चलता ही रहेगा। सिनेमा बन्द, सेल्स टैक्स 'बन्द, वगैरा, वगैरा। *यदि सेल्स टैक्स नहीं देंगे तो* सरकार को ६ करोड़ रुपये साल की हानि होगी। ३०/४० लाख रुपये महीने की तो होगी ही। मगर वे इस तरह के घाटे की परवाह नहीं करते। ओवरड्राफ्ट निकालते चले जायेंगे। दिवाला निकला हुआ है इस सरकार का तो।

अपना वक्तव्य समाप्त करते हुए जे० पी० ने कहा कि हमारा संगठन कमजोर न होने पाये। सरकार का संगठन तो है ही खराब। हम जगह जगह प्रस्ताव करें। विधान सभा के विघटन का प्रस्ताव। विधान सभा के विघटन का प्रस्ताव जब आयेगा, आन्दोलन तीव्र गति पकड़ेगा। नरपतगंज के गाव गाव में स्वयस्फूर्त बनाई गई संघर्ष समितियों से प्रेरणा लें और गाव गाव संघर्ष समितियो का निर्माण करें। विभिन्न स्थानों में सभी तरह के लोगो की मदद लें।

इसके बाद जे० पी० सभा का संचालन भार श्री कर्पूरी ठाकुर को सौंपकर चले गये। उन्होंने जाते जाते कहा, 'ये इस बीच दो बार जेल होकर आये हैं।

कर्पूरी ठाकुर के संचालन में पच्चीस जिलोंसे आये हुए प्रतिनिधियों ने अपने अपने जिलो की रिपोर्ट पढ़ी। रिपोर्टें सुनकर लगा, बहुत काम हुआ है और इस आन्दोलन में सन ४२ से भी ज्यादा दमन हो रहा है। सारी रिपोर्टों के सुनने के बाद आचार्य राममूर्ति बोले। उन्होंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि हमने कल सुबह से रात तक लगभग २५ रिपोर्ट सुनी। उन्हें सुनकर लगा कि हमारा आन्दोलन कितने व्यापक पैमाने पर चल रहा है। दमन भी उसी के अनुपात में व्यापक है। मुद्दे भी सुलझाने के लिए सामने आये। हमारा आन्दोलन और उनका दमन चक्र ये दोनों व्यापक बन गये हैं। इतने बड़े दमन चक्र के लिये अधिक संगठन की आवश्यकता होगी। और अधिक संगठित

....हर सत्याग्रही का दिमाग साफ चाहिए

होना पड़ेगा। एक ढग का काम, एक ढग का संगठन और मिलजुलकर बैठें तो ठीक होगा। एक दूसरे के काम की खबरें मिलनी चाहिए। इसी विचार से २६ और ३० अगस्त को राजनैतिक दलो की बैठकें के बुलाये जाने की बात भी उन्होने बताई। उन्होने कहा कि ४/६ दलो का समर्थन है ही। बैठक मे जे० पी० भी रहेंगे। वे आन्दोलन के नये आयाम सामने रखेंगे। कठिनाइयो को भी वहा स्पष्ट किया जा सकेगा।

अलगाव, तनाव, टकराव सब हमारे सामने हैं, इस समय। मगर तड़प तो सब के मन मे है। सब मिलकर रास्ता निकालेंगे।

उसके बाद आचार्य राममूर्ति ने सगठन की समस्याओ पर विचार पेश करते हुए कहा कि एडहाक समितियाँ सितम्बर के अन्त तक बनी रहें। तब तक नये चुनावो द्वारा नयी छात्र सघर्ष समितिया, जनसघर्ष समितियाँ, युवक समितियाँ, राजनैतिक सगठन बनायें जायें। अक्टूबर मे एडहाक समितियाँ समाप्त हो जाये। निचली इकाई मे गाव और पचायत होनी चाहिए। वहाँ भी सयोजक सक्रिय व्यक्ति हो। किसी दल का ही हो तो सदस्य हो सकता है। मगर वह सयोजक न हो। दलीय व्यक्ति संयोजक नही हो सकता। ऊपर तो संयोजक ही सदस्य होगे। इसलिए वहा व्यक्ति नही होंगे। उन्होने कहा, सभव है समिति के गठन मे कम सख्या के कारण गाव और किसी किसी पंचायत मे भी कठिनाई हो तो १०।१० पचायतो को क्षेत्रो मे बाटकर समितियाँ बना लें। छात्र सघर्ष समितियो की तरह अन्य, समितियाँ भी बन जायेंगी। याने जनता के समान्तर संगठन भी बनें। इनमें सामजस्य की भावना होनी चाहिए। ऐसा न होने पर परस्पर शिकायतें शुरू हो जाएंगी। महीने मे कम से कम एक बार सम्मिलित बैठकें हो और काम कैसे चलें, आगे क्या कार्यक्रम बने, सब बातो पर उन बैठको मे विचार विमर्श हो। एक दूसरे के कार्यक्रम की भी जानकारी परस्पर आवश्यक हैं। छात्र संघर्ष समिति की आम शिकायत है कि शिक्षित सक्रिय जन आपस मे नहीं मिलते। ऐसा न हो।

हम अपने दिमागो को भी साफ रखें। सक्रिय किसको मानें? वकीलो को, किसानो को, न्यायाधीशो को, हम तो सबको सक्रिय मानतें हैं, मानना चाहते है। सबसे हमे कुछ लेना है। सघर्ष मे पड़ना ही सक्रिय होना नही है। यदि कोई जेल जाने की परिस्थिति मे न हो तो उसे हम अपने से अलग न मानें, उसकी निष्ठा के प्रति आदर रखें। 'गद्दार' आदि शब्दो को छोड दें, सबको साथी बनाए नही तो इतने बडे आदोलन मे हम अकेले ही 'शहीद' बन जायेंगे। आचार्य राममूर्ति ने यह भी कहा कि सत्याग्रही शान्ति का वाहक है। उसकी शक्ति बढने और उसके प्रशिक्षित होने पर ही काम आगे बढ सकता है। उन्होंने गुवली के सत्याग्रह का उदाहरण देते हुए कहा कि वहा के सत्याग्रह मे ८ साल से ६२ साल तक के लोग भी कार्यरत है। और कुल तीन हजार चार सौ अठाइस लोग वहा जेल गये।

हम अपना सघर्ष सतत जारी रखें। नही तो जो सघर्ष मे आये है, वे भी धीरे धीरे बाहर चले जायेंगे।

अभी किसान खेतो मे लगे हुए है, यह धान रोपने का समय है। कल जब ये खाली हो जायेंगे तो जेल भरे जा सकते हैं। किन्तु जेल भरने से हमारा हित नही हैं। हमारा कार्य अशिक्षित को शिक्षित करना भी है। क्रान्ति के लिए लोगो को प्रशिक्षित करें और क्रान्तिकारियों का निर्माण करें। इसका ख्याल रहे कि परिवार के कमानेवाले जेल न जायें क्योंकि इससे अहित होगा। सामने लोगो की रोजी की समस्या खड़ी हो जायेगी। जो क्रान्ति मे असमर्थ हैं उन्हे क्रान्ति मे न घसीटें तो ठीक होगा।

उन्होने स्पष्ट किया कि हर सत्याग्रही को मे ज्ञान होना चाहिए कि वह क्रांति क्यो चाहता है, हर सत्याग्रही को जानना चाहिए कि विधान-सभा का विघटन क्यो होना चाहिए। अगर दिमाग मे बातें साफ नही होगी तो क्रांति कमजोर पड जायेगी। सत्याग्रही के सामने यह भी साफ होना चाहिए कि उसकी निष्ठा कहा है? वह स्वय कहाँ है? ऐसा न जानने पर लोकनायक और जनता के बीच की कड़ी कमजोर हो जाएगी। सत्याग्रही ही तो वह बीच की कड़ी है। मालूम होना चाहिए कि निष्ठा जाति के प्रति, प्रदेश के प्रति, परिवार के प्रति, राज्य के प्रति, विचार के प्रति कहा है? पहली निष्ठा लोक के प्रति होनी चाहिए। इसके लिए १०/१० दिन के प्रशिक्षण शिविर होने चाहिए। यह जरूरी है। लडाई लम्बी होगी तो प्रशिक्षण भी सुन्दर होना चाहिए। उडीसा आदि मे ३-३ दिन के शिविर लगायें गये हैं। जो शक्तियाँ पडी हैं उनका उपयोग करना चाहिए। हमे पार्ट टाईम वर्करो की भी जरूरत होगी। 'लीगल एडकमिटियो' की मिसाल सामने है।

चूंकि जे पी ने अभी तक सम्पूर्ण बहिष्कार का नारा नही दिया है इसलिए आचार्य जी ने कहा, हम व्यापारी वकील, सरकारी कर्मचारी सबका, पैसो का सहयोग ले सकते है। सभी अधिक समय देकर सहयोग दे सकते है।

इसके बाद दूसरे दिन की कार्यवाही मे एकत्रित सयोजको और प्रतिनिधियो की ओर से कई सुझाव आए। इस दिन करीब ४४ आदमी बोले, सभी के सुझाव किसी न किसी दृष्टि से उपयोगी थे। कोई भी बोलने वाला व्याख्यान की दृष्टि से नही काम की दृष्टि से ही बोला।

सर्वोदय समाज की ओर से यह बात साफ की गई कि हमे नेतृत्व नही करना है, हम केवल सहयोग देनेवालो मे हैं और जहा-जहा आप जायेंगे, वहा हम साथ होगे। कई प्रतिनिधियो ने अपनी तरफ से इस बात पर जोर दिया कि सर्वोदय का नेतृत्व चाहिए। प्रचार सबधी समस्या को भी उठाया गया और कहा गया कि रेडियो और अखबार आन्दोलन सबधी समाचार नहीं देते। प्रचार के लिए जुलूस आदि निकालना भी मुश्किल हो गया है। निरीह बच्चो तक पर लाठी चार्ज किया जाता है। ऐसी हालत मे छोटे-छोटे पर्चे छाप कर बटवाए जायें। छापने पर इन्हें बडी संख्या मे पढा जा सकेगा। पटना सघर्ष समिति के युवक सगठनो की मनःस्थिति अलग किस्म की दिखाई दी। ऐसा लगा कि उनके मन मे नेतृत्व को लेकर कुछ चल रहा है। मगर बात

गुलाम भारत के जेल

श्री चरणेषु,

जयप्रकाशजी,

मैं पिछले ७ जुलाई से गाव मे था और आंदोलन के पहले चरण की तैयारी कर रहा था। १ अगस्त को सामूहिक उपवास के बाद शाम को फारबिसगंज जनसघर्ष समिति के अध्यक्ष श्री दयानन्द साह की अध्यक्षता मे सभा हुई जिसके माध्यम से आदोलन के सदेश और सकल्प को दुहराया गया। इसी बीच सारे इलाके मे अभूतपूर्व बाढ़ आ गयी। इस प्राकृतिक प्रकोप से पीड़ितो को राहत दिलाने के उद्देश्य से 'लायस क्लब फारबिसगज के सहयोग से करीब पच्चीस हजार रुपये इकट्ठे किये गये। यह योजना बनी कि छात्र एव जनसघर्ष समिति के सदस्य सघर्ष के साथ साथ राहत का भी कार्य करें। इस सिलसिले मे मैं स्वयं छात्रों की एक टोली के साथ नरपतगज, फारबिसगज के सकटग्रस्त क्षेत्र को देख आया, और किस प्रकार राहत का कार्य किया जाये, इस सम्बन्ध मे आपस मे बैठकर फैसला किया। छात्र और जनसघर्ष समिति ने 'बाढ़पीड़ित सहायता टोली' बना कर राहत कार्य शुरू कर दिया। हमने जोगबनी, कुसमाहा, अमहारा, रमई आदि क्षेत्रों मे पुराने तथा नये कपडे, घाव की दवाइया, चूडा, चना, किरासन, तेल, दियासलाई के डब्बे आदि सामग्रियो का वितरण किया और करवाया। जेल मे जैसी सूचना मिली है उसके अनुसार राहत का कार्य चल रहा है। किन्तु अधिकारी तथा पुलिस-वाले हमारे छात्र स्वयं सेवको के पीछे पडे हुए हैं, जिसके कारण राहत कार्य में भी बाधा पड रही है।

आदोलन के कार्यक्रम के अनुसार हमने एक विशाल जुलूस, जिसमे करीब दो-ढाई हजार प्रदर्शनकारी सम्मिलित हुए, निकाला। हम जुलूस लेकर जब प्रखड विकास कार्यालय की ओर जा रहे थे 'सीतापट्ट पुल' (रानीगज रोड) पर स्थानीय पुलिस दरोगा और इस्पेक्टर सी० आर० पी०, बी० एस० एफ० की टुकडी के साथ-साथ इस तरह खडे थे मानो हम पुल को तोड़ने या उड़ाने जा रहे हो। पुल के पास पहुचने ही जुलूस की अगली पंक्ति पर लाठी से प्रहार हुआ और रिक्शा गाड़ियों को इस तरह धकेल दिया गया कि रिक्शा पुल के नीचे अथाह जल मे गिरते-गिरते किसी प्रकार बच सका। रिक्शा-चालक जहूरी यादव और लाऊडस्पीकर से नारे लगानेवाले साथी रामाशंकर गुप्त को लाठी से चोट लगी। हमने आगे बढ़कर पुलिसवालो को रोका और कहा, 'आप यह क्या कर रहे है? लाठी चार्ज क्यो करवा रहे हैं?'

दारोगा ने मुझसे कहा 'जुलूस यहा से आगे नही बढ़ेगा।'

क्यो? आप हमे बी० डी० ओ० से मिलने नहीं देंगे? आप नहीं देख रहे हैं कि जुलूस मे दर्जनों बच्चे है, बूढ़िया हैं। इनसे आपको क्या खतरा है? ये सभी बाढ़पीड़ित है और इन्हे बी० डी० ओ० से फरियाद करनी है।'

पुलिस दरोगा ने कहा, 'आपको नहीं मालूम है कि धारा १४४ लागू है?'

'मालूम है। और आपको यह नहीं मालूम है कि सारा इलाका बाढ़ से पीड़ित है? हम तो जुलूस लेकर आगे बढ़ेंगे 'आप लाठी चलायें या गोली।'

इसके बाद हम आगे बढ़े। करीब ३०-४० मिनट तक गुत्थम-गुत्थी और पेल-धार होता रहा। अन्ततः वे हमे रोकने मे असमर्थ रहे।

हम जब ब्लॉक ऑफिस पहुंचे तो वहा पहले से ही मुख्य द्वार पर सी० आर० पी० और बी० एस० एफ० के जवान तैनात थे। फिर वही रस्साकशी शुरू हुई। अन्त मे अन्य छह साथियो (श्री लालचन्द साहू, सत्यनारायणप्रसाद दास, शिवकुमार नेता, जयनन्दन ठाकुर, रत्नेश्वरलाल एव रामदेवसिंह) के साथ अन्दर बी० डी० ओ० के दफ्तर मे पहुचा। हमारे साथियो ने कार्यालय मे जनता का ताला लटकाया और हमने बी० डी० ओ० से कहा कि बाढ़ से सारा इलाका तबाह है और आप सिर्फ 'ला एण्ड आर्डर' मेंटेन कर

श्री फणीश्वरनाथ 'रेणु' का एक पत्र पूर्णिया जेल से मुझे मिला है जहा वे इस समय बन्दी हैं। यह पत्र स्वय उन जुल्मो-सितम की कहानी कह रहा है जो वर्तमान शासन द्वारा शांतिपूर्ण सत्याग्रही छात्रो और युवको पर ढाये जा रहे हैं।

अभी हाल मे मुंगेर और भागलपुर जिलों का दौरा करके मैं लौटा हू। जहा भी मैं गया, बडी-बडी सभाए हुई। भागलपुर नगर की सभा (१० अगस्त) मे तो कम से कम तीन लाख लोग इकट्ठे थे। सब जगह लोगो मे, छात्राओ मे, युवको मे अपार उत्साह देखा गया। जनता ने सर्वत्र एक स्वर से वर्तमान शासन के प्रति अविश्वास प्रकट किया। जनता वर्तमान शासन को, अपने वर्तमान प्रतिनिधियों को अमान्य कर चुकी है। इसमें अब भी अगर किसी को कोई सदेह रहा हो तो वह मिट जाना चाहिए।

सम्भव है, रेणु को मुझे इस प्रकार का पत्र लिखने के कारण और अधिक कष्टों का सामना करना पड़े। परन्तु मैंने सोचा कि उनकी आवाज को मैं जनता तक पहुँचाऊ। जनता ने तो वर्तमान शासकों को अपने दिल से निकाल ही दिया है। अगर वह सगठित होगी तो अपना समानान्तर शासन बना लेगी।

रेणु जी के पत्र से जाहिर है कि किस प्रकार फारबिसगज मे छात्रों और युवको ने बाढ़-पीड़ितो के लिए लायस क्लब के सहयोग से राहत का काम शुरू किया है। मैं उन्हें इस अभिक्रम के लिए बधाई देता हू और आशा करता हूँ कि अन्य क्षेत्रो मे भी बाढ़-पीड़ितो की सहायता के लिए छात्र सघर्ष समिति तथा जन सघर्ष समिति के स्वयसेवको द्वारा ऐसे कार्यक्रम उठाये जायेंगे, और शासन की ओर से सारी बाधाओं के बावजूद हमारे छात्र और युवक अपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग रहेंगे।

पटना,
१४-८-७४

—जय प्रकाश नारायण

आज के जेल से अच्छे थे

रहे हैं ? हमने अपनी मांगें उनके सामने रखी तो वे बोले कि आप लोग मिलकर खाली कांग्रेस को बदनाम करने का काम कर रहे हैं। आप यह जान लें कि महगाई और भ्रष्टाचार को कोई भी पार्टी और कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना भी बड़ा क्यों न हो, नहीं मिटा सकता। हमने उनसे बातें करना फिजूल समझा। हमने ऐलान किया कि हम आपका कोई भी काम नहीं चलने देंगे और हम अपने साथियों सहित धरना पर बैठ गये। पुलिस दरोगा ने आगे बढ़कर कहा, 'हमने आप लोगों को गिरफ्तार किया।'

हम गिरफ्तार हो गये। किन्तु बाहर प्रदर्शनकारी प्रखंड के मुख्य द्वार को घेरकर खड़े रहे जिसमें सात साल के बच्चे और पचहत्तर साल की बूढ़ी औरत भी थी। प्रदर्शनकारी नारे लगा रहे थे। हमारे नेताओं को रिहा करो या हमें भी गिरफ्तार करो।

पुलिस ने उन्हें खदेड़ने की बहुत चेष्टा की किन्तु वे अडिग रहे। अन्ततः पुलिस ने २०५ प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया जिसमें अठाईस औरतें भी (गोद में बच्चे लेकर) थीं।

एक ट्रक, एक बस और एक जीप में भरकर हमें फारबिसगंज थाना में ले गये जहां छात्र संघर्ष समिति की ओर से जलपान की व्यवस्था थी। मेरे बहुत कहने के बाद पुलिसवालों ने छात्रों को खिलाने की अनुमति दी। वहां से हमें सीधे अररिया भेजा गया। हमें दिन में करीब ढाई बजे गिरफ्तार किया गया था।

अररिया हम करीब ■ बजे रात को पहुंचे। वहां अररिया जेल के जेलर ने हमें लेने से इन्कार किया क्योंकि उनके पास इतनी जगह नहीं थी। हमें पूरी रात खुले में पुलिस क्लब के बीच मैदान में घेरकर रखा गया। पुलिस के द्वारा हमारे खाने-पीने की कोई व्यवस्था नहीं थी और वे हमें सी० आर० पी० और बी० एस० एफ० के घेरे में छोड़ कर न जाने कहां चले गये।

तब हमारे साथियों ने फैसला किया कि हम एस० डी० ओ० के घर पर पहुंचकर उनका घेराव करें। रात के करीब डेढ़ बज रहे थे। हम नारे लगाकर आगे बढ़े। सी० आर० पी०, बी० एस० एफ०, पुलिस दरोगा के जत्थे ने हमें फिर घेरा। हमने भोजन तथा पानी की मांग की। मगर उन्होंने एक बूंद पानी भी हमें नहीं दिया।

उन्होंने हमारे बच्चों को पानी पिलाया। हमने अपने कान से बिहार पुलिस के जवानों को आपस में बातें करते सुना, यह तो जुल्म है। हमें तीन सौ, ढाई सौ महीना देंगे, ये चावल तीन रुपया किलो है। ये लड़के ठीक ही तो कर रहे हैं। अफसर लोग चलावें इन पर लाठी। हमसे तो अब यह पाप नहीं होगा।'

तीन बजे रात में अररिया के एस० डी० ओ०, डी० एस० पी० दलबल सहित पहुंचे और आते ही १४ व्यक्तियों की (टार्च की रोशनी से चेहरे देखकर) गिनती की। बाकी लोगों को जबरदस्ती पकड़-पकड़ कर बस में धकेलना और लादना शुरू किया। उनके विरोध करने पर उन्हें गालियां दी गयीं और तुरन्त बस को न जाने कहां खाली कर दिया। पूछने पर वे बोले कि उन्हें फारबिसगंज भेज दिया गया।

इसके बाद फिर वे (अधिकारीगण) न जाने कहां गायब हो गये। हम रात भर वहीं बैठे रहे।

सुबह हमने नारे लगाने शुरू किये तो एक पुलिस दारोगा आकर बोला कि आप लोगों को तुरन्त पूर्णिया भेजा जा रहा है। हमने जब खाने-पीने की बात की तो वे बोले कि व्यवस्था हो रही है।

(शेष पृष्ठ १२ पर)

पटना
१४-८-७४

प्रिय रेणु जी

आपके पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। पत्र पढ़ कर बड़ा उत्साहित और भविष्य के लिए आशान्वित हुआ।

आपके पत्र से जहां एक बार यह प्रकट होता है कि यह शासन कितना नीचे उतर सकता है, वहां दूसरी ओर यह भी सिद्ध होता ■ कि जहां भी जनता को सही नेतृत्व मिलता है वहां वह कितना ऊंचा उठ सकती है और तब वह क्या नहीं कर सकती है।

आपके पत्र से एक और बात प्रकट होती है कि यदि शासन के कुछ अधिकारी, फारबिसगंज के बी० डी० ओ०, शासन की भ्रष्ट नीतियों के कट्टर समर्थक बने हुए हैं तो दूसरी तरफ पुलिस के सिपाही तथा अन्य गरीब तबके के अधिकारी हृदय ■ इस क्रांतिकारी संघर्ष के साथ हैं क्योंकि वे इसमें अपनी भी मुक्ति देखते हैं। इनमें से कुछ लोग ऐसे हो सकते हैं जो मारपीट और बर्बरता के अन्य काम कर डालते हों। परन्तु मेरा विश्वास है कि सरकारी सेवकों का एक वर्ग दिल से हम लोगों के साथ है, चाहे भले ही उन्हें अपने पेट के लिए गुलामी करनी पड़ती हो।

आप मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता करते हैं परन्तु मुझे तो आपके स्वास्थ्य की अधिक चिन्ता है। पूर्णिया मंडल कारा का जो हाल आपने लिखा है, उस पर से भय होता है कि वहां आपका स्वास्थ्य अधिक बिगड़ न जाए। यथासम्भव स्वास्थ्य पर ध्यान रखियेगा। मैं अभी अच्छी तरह हूं लेकिन कुछ दिनों से हाथ की उंगलियों के जोड़ों में कुछ दर्द होने लगा है। अभी जांच वगैरह चल रही है।

आपका सस्नेह
जयप्रकाश नारायण

श्री फणीश्वरनाथ रेणु,
पूर्णिया मंडल कारा,
पूर्णिया।

खेती–गोपालन के पीछे पागल

उ० उ० पाटणकर

मैं खेती-गोपालन के पीछे पागल बन गया हूं। ३॥-४ बजे जागता हूं। विनोबा 'व्यक्तित्व और विचार' में से पढ़ रहा हूं। 'खुराक की कमी और खेती', गोसेवा पढ़ रहा हूं इनको पढ़ने पर लगता है कि मैं ठीक राह पर हूं। आरोग्य के लिए ७-८ आसन चाय और १॥-२ घन्टा सफाई व १२-१ बजे तक खेती में विभिन्न काम। २॥-३ से ६-७ बजे तक फिर काम। इस प्रकार एक गवार किसान ही बन गया हूं। साथ में मामाजी, ५॥ साल का अवनीश, बहरे गूंगे किष्या भाई, भुवनेश भाई (कोरद) और उनके पाविन इलियया, पशु सम्हालने वाला मजूर (को०), बूढ़े ससुर-इस जुलाई में इतने ही लोग जयप्रकाश सर्वोदय विद्यालय के विद्यार्थी हैं। गांव के लोग नहीं चाहते कि उनके बच्चे श्रम, सफाई, खेती आदि सीखें-करें। सो उन्होंने धीरे-धीरे अपने बड़े बच्चों को रोज भेजना शुरू कर दिया था। गायियों के लिए वेतन भी विद्यालय के पास नहीं बचा तो 'मर मूर्ख पड़ी उहे'...एक साथी यादवराव छोटे का द्वारको भाई के साथ काम करने को कहेंगे। उनका बहुत आग्रह था। अगर छोटे का वहां मन लग गया तो द्वारको जी को अच्छी मदद हो जायेगी। १०-१२ दिन लगातार रोरे की घास लगायी। समतो बारिश के साथ मक्का-मूंगफली, उड़द, मूंग, साग-भाजी आदि खरीफ की फसलें, लगायी थोड़ी हाथ से कृषि खेती काफी करते हैं, एक साथ दो-तीन फसलें लेने के प्रयोग करता हूँ। मेड़-दार क्यारियों में मक्का के साथ मूंगफली, अमरूद-रपता के साथ मक्का-मूंगफली। इस साल नपी-तुली बारिस अभी तक हुई तो सब फसलें बहुत सुन्दर हैं। सब फसलें रोग मुक्त हैं। कंपोस्ट व मल-मूत्र के खाद का सुपरिणाम साफ दिखाई देता है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि सारा भारत गोबर खाद बनाना नहीं जानता और ठीक से देना तो और भी दूर की बात है। इसलिए आटे के समान खाद बना-बनाकर जहां बीज वहां खाद, यह एक नई चीज मिली है। गरीब किसान के लिए ये काम किये जा सकते हैं। अन्ना साहब ने गांधी सेवक समाज से गोबर गैस प्लान्ट के लिए अनुदान दिया था सो बैतूल में उसी की बदौलत गैस प्लान्ट का खूब प्रचार हो गया। नल-पानी भी चाहिए जिससे गायों का पानी दी जा सके और किसान का श्रम (पानी तो १०-१२ मास तक चलती रही थी)।

अगर मनुष्य-मवेशी को सात्विक आहार दिया जा सके तो अनेक अमानवीय समस्याओं व रोगों से वह मुक्त हो सकेगा। लाड़ साहब भी बचारे इसी चिन्ता में लगे हुए हैं।

१२-१५ प्रकार की फसलों के बुक्स लगे हैं और आपको यह देखकर खुशी होगी कि सब सुन्दर व स्वस्थ हैं। कोई बीमारी-कीड़े आदि फसलों पर नजर नहीं आते, ए० हूवर्ड के अनुसार फसलों में रोगप्रतिकारक शक्ति है और जमीन में भी। यहां के मवेशी भी काफी स्वस्थ हैं। इस प्रयोग आधार पर हम सर्वोदय के लोग जिले-जिले में फैलकर यह विश्वास दिला सकें कि यह व्यवहार्य है तो इन्दिराजी को बहुत सहायता मिलेगी। अनजाने ही खेती की अनेक नयी पद्धतियां हाथ लगी हैं जो भारत में सब जगह लागू हो सकती हैं। आदिवासी भाई-बहनों ने इन १-१॥ माह में ये रीतियां सीख ली।

नयागांव सहास, गोबर-गैस-प्लांट और पेशाब की खाद से सब फसलों को सन्तुलित खाद-तत्व मिल जाते हैं। गोबर-गैस-प्लांट के साथ और शोधकार्य किया जाय और सब प्रकार के ईंधन-जलावन का यदि बुरादा-आटा मिलाकर इसमें डाला जाय तो भोजन पकाने की समस्या हल होने के साथ-साथ जमीन की उर्वराशक्ति उत्तरोत्तर बढ़ सकती है। फिर भी मरे जानवरों की हड्डी, मनुष्य का मल-मूत्र बरबाद न जाने दें तो किसी को रासायनिक खाद की याद नहीं आयेगी। बंग-डायजेस्टर में भी हड्डियों का बारीक खाद

(हम यहां लोकसेवक उमराव पाटणकर का, गांधी स्मारक निधि के मंत्री देवेन्द्रभाई के नाम लिखे हुए एक पत्र का अंश लेख-रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। इसका व्यक्तिगत अंश छोड़ दिया गया है। इस पत्र से इस बात का एक अन्दाज होगा कि लोकसेवक का काम कितना कठिन, कितना दिलचस्प और गौरव से भरा हुआ है। इसमें जिस विद्यालय का उल्लेख है, वे उसे नयी तालीम की पद्धति अपना कर बरसों से चला रहे थे और साथ ही अपने विद्यार्थियों को सरकार मान्य परीक्षाओं में भी बड़ी सफलता के साथ कसौटी पर ला पाते थे। उन्होंने अपनी इस पाठशाला के विद्यार्थियों में से हरएक का छोटा बड़ा लोकसेवक बना दिया था और फलस्वरूप आसपास के कई गांवों से शराब साफ उठ गयी थी। गांव उनका 'नरजगाव' 'नरजगाव' बन गया था। इस दृष्टि से वह अभी अपना कर्तव्य निबाह रहा है। किन्तु चाहे जिस तरह लोगों का पैसा खजाने में जमा करके निकम्मों के आदि अधिकारी फर्ज पालने वाले इस बात को आफत का स्थान मानने लगे और फल ही एक बहुत दर्दनाक सुनवा दिया कि लोगों को [illegible]। फलतः जो हुआ, उसे लोकसेवक पाटणकर ने बड़े नपे-तुले मगर प्रभावकारी शब्दों में सूचित किया है। वे इस परिस्थिति में भी काफी दिनों तक जूझे और अब देखा कि पाठशाला बंद किये बिना चारा नहीं है तो वे 'गोशाला' का निर्माण करने चल पड़े हैं। अब उनके [illegible] और घर, सेवा और शिक्षण के स्थान बने यह उनकी महत्त्वाकांक्षा है। इस महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए उन्होंने काम चुना है 'खेती और गोपालन' का और लिखा है कि वे उसे किस प्रकार अंजाम देने की कोशिश कर रहे हैं। -स)

एक आन्दोलनभरा सफर

—कुमार प्रशांत

पटना जंक्शन। गया का टिकट लेनेवालों की कतार में खड़ा हूं। रेल हड़ताल के कारण एक भी गाड़ी, किसी भी दिशा के लिए खुलती है तो जानमारू भीड़ हो जाती है। लम्बी कतार के प्रायः अंतिम सिरे पर खड़ा हूं, तभी खिड़की के निकट शोर होता है। एक आदमी चिल्ला चिल्ला कर कह रहा है, अब नहीं चलेगा यह सब। निकालो चार पैसा। शोर होता है। कतार टूट जाती है। खिड़की पर भीड़ है। गया का टिकट है तीन रुपये सोलह पैसे, लिया जाता है तीन रुपया बीस पैसा। चार पैसे का घपला अब नहीं चलेगा। यह 'अब' क्या है? आंदोलन का सूचक है।

देख रहा हूं लोगों को चार-चार पैसे वापस मिल रहे हैं या तीन रुपये सोलह पैसे ही लिये जा रहे हैं। पर कब तक यह 'अब' बना रहेगा? इसका उत्तर भी इस आंदोलन में खोजना होगा।

दौड़कर डिब्बे के पायदान पर खड़ा हो जाता हूं। हाथ में 'तरुण क्रांति' (आंदोलन की बुलेटिन) है, कंधे पर झोला। अन्दर एक नौजवान भाषण दे रहा है, जयप्रकाश बाबू तो अपने साथियों से कह गये हैं कि वान से एम० एल० ए० सब नहीं मानें तो लड़का को इशारा कर दो मारने के लिए, अरे जयप्रकाश बाबू इण्डियन पालिटिक्स के मोनियर मोस्ट आदमी हैं।' ठेलठाल कर मैं भीतर घुसता हूं, 'क्यों भाई साहब, आप जयप्रकाश जी के उन साथियों में हैं क्या, जिन्हें मारने का संदेश दिया है उन्होंने?' नौजवान थोड़ा चौकस है, शायद किसी नुक्कड़ सभा में मुझ को देख चुका है। चुप हो जाता है और मैं ट्रेन के डिब्बे में तरुण क्रांति के अंक बेचने लगता हूं। सब बड़े उत्साह से खरीदते हैं और कहते हैं कि जयप्रकाशजी के विचार सही-सही लोगों तक पहुंचने चाहिए।

एक सज्जन यही सूचना देते हैं कि 'मीसा' के अंतर्गत गिरफ्तार छात्र संघर्ष समिति के शिवानन्द तिवारी ने अंग्रेजी में लिखा आरोप पत्र लेने से इन्कार कर दिया और उनका आरोप-पत्र फिर से हिंदी में तैयार करवाया गया।

गया मैं जा रहा था तरुण शांति सेना के एक शिविर में भाग लेने करजरा स्टेशन से काफी दूर पैदल चलना पड़ता है। रास्ते भर शिवरांथिया में विधानसभा भंग के बाद क्या और जयप्रकाशजी के दलविहीन लोकतंत्र की चर्चा चलती है अपेक्षाएं भी है और आशंकाएं भी। युवकों को इस प्रकार सामाजिक समस्याओं की टोह लेते देखना काफी सुखद लगता है।

शिविर के क्रम में युवकों ने कई बातें बतायीं। युवकों का बड़ा वर्ग ऐसा है जो अब भी तमाशबीन है, या 'कैरियर' के मोह में फंसा है। दूसरी तरफ किसी का भाई, किसी का चाचा कालाबाजारी करता है। अपने घर के भ्रष्टाचार के विरुद्ध अनशन की जो बात जयप्रकाशजी ने कही है वह वह बड़ी भारी पड़ती है। रेणुजी ने बताया था कि पूर्णियां की तरफ किसी बड़े जमींदार परिवार परिवार का लड़का अपने घर की जमाखोरी के विरुद्ध घर छोड़ने की तैयारी में है, मैं बता देता हूं। एक लड़का नहीं रोक पाता है तो कह देता है, 'मैं उपवास करके आ रहा हूं अपने घर के भ्रष्टाचार के विरुद्ध।' उसके पिता ब्लाक आफिस में किसी छोटे-मोटे पद पर हैं।

गांव में किसानों की शिकायत है कि हर आंदोलन के बाद अनाज का बाजार भाव तो कुछ गिरता भी है, बाकी चीजों का दाम बढ़ जाता है। मारा जाता है किसान आंदोलन गांवों तक फैला है।

ठेठ गांव है सकरदास नवादा। यहां मजदूरों को खरीदने, बन्धक रखने की प्रथा अब भी चलती है। एक मालिक अपना मजदूर दूसरे के हाथ बेच देता है फिर सारी जिन्दगी उसको वहां मजदूरी करनी पड़ती है मजदूर बेंध खरकर साहूकार किस्म के लोग पैसा भी उगाते हैं। यह भी प्रथा चलती है कि गर्भवती महिला को खिलाने पिलाने की जिम्मेवारी 'मातबर' लोग उठा लेते हैं और बाद में उसकी सन्तान पर काबू रखते हैं।

जमींदारी खत्म होने के दावों से लेकर गुलामी खत्म होने तक के दावों की पोल यहां दिखाई देती है। भारत के गांव वो आइना हैं जिनमें कोई भी सरकार अपनी सही सूरत देख सकती है।

सकरदास नवादा से गया जाने के लिए वजीरगंज जाना पड़ता है। रास्ते में, बस अड्डे तक जाते हुए एक नदी मिलती है—शायद लिखा था—जकेरी नदपु—जिस पर बने पुल पर लिखा था, 'यह पुल अत्यधिक कमजोर हो गया है। ६ टन से अधिक का बोझ नहीं उठा सकता है। इस।' से आप अपनी जिम्मेवारी से जा रहे हैं

जकेरी नदी पार करने का और कोई रास्ता नहीं था। देखा सारी सवारियां उसी पुल से आ-जा रही हैं। पर इस पर हुई किसी दुर्घटना की जिम्मेवारी सरकार नहीं लेगी, उसने सूचना दे दी है।

तैयार नहीं हो पाता। फिर भी बोन-डायजेस्टर लगाने का विचार है। विद्यालय के मरे जानवरों की हड्डियां संग्रह करके रखी हैं।

गो-सेवा में चारा-पानी ही मुख्य है और भारत में उसकी भी व्यवस्था नहीं जैसी है। बेचारे मनुष्य की भी कहां है? केक वटर बिजलीवालिन मिल सके तो संतुलित चारे-दाने के प्रयोग आसानी से देश का हर नागरिक, जो भी भोजन करता है कर सकता है। देश की खेती-गोपालन को १-२ घन्टे दे तो अन्न-दूध की कमी नहीं पड़ेगी और सारा देश स्वस्थ और सुन्दर होगा।

जिले में नीचे लिखा कार्यक्रम लेकर कुछ गांवों में गांव के लोगों के साथ घूमने का सोचा है :

१ अदालत मुक्ति गांव-गांव समाधान समिति गठन, ग्राम-शक्ति-सेना।

२ व्यसन मुक्ति दूध-उत्पादन (गोसेवा) फल उत्पादन।

३ अन्तर-शुद्धि, बाह्य शुद्धि

(१) फेरी (२) सामूहिक प्रार्थना (३) ग्राम-स्वराज्य परिचय, ग्राम-भावना, परिवार-भावना का निर्माण, मल-मूत्र, गोबर गो-मूत्र-सड़ी गली चीजों का वैज्ञानिक महत्व, उनसे खाद आदि तैयार करना। रास्ते-गलियां समान करना। सड़ास, गोबर गैस प्लांट का महत्व समझना और (४) ग्राम-सभा का निर्माण। ग्राम-स्वराज्य के लिए इसमें पहला कदम दिखायी देता है।

(पृष्ठ ६ का शेष)

लेकिन ११ बजे तक वे फिर गायब रहे। १ बजे वे हमारा वारंट तैयार कराकर आये और हमें चलने को कहा। हमने एतराज किया। 'हमें मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर किये बिना वारंट पर दस्तखत कैसे और क्यों करवाया गया है? हमें मजिस्ट्रेट के सामने हाजिर होने दें।'

उन्होंने कुछ भी नहीं सुना और हमें पकड़-पकड़कर खुले ट्रक में चढ़ाया गया। हम ८ बजे (१० तारीख को) पूर्णिया जेल पहुँचे।

हमारे साथियों पर चार-चार वारंट और दस-दस दफायें लगायी गयी हैं। हमारे प्रचार करनेवालों को पीटा गया है, लाउड-स्पीकर छीना गया है। रिक्शा जप्त किया गया। रिक्शाचालक को गिरफ्तार किया गया।

उस दिन (दस तारीख को) फारबिसगंज बाजार पूरी तरह बन्द रहा। नरपतगंज प्रखंड आफिस में तालाबन्दी हुई। फारबिसगंज में मोहन यादव और अशोकदास (दोनों छात्र) को गिरफ्तार किया गया। इसके बावजूद हमारे बहादुर साथियों ने फैसला लिया है कि वे १३ तारीख को फारबिसगंज के ८ चौकी पर कम-से-कम १० व्यक्ति १२ घंटे के अनशन पर—पुलिस जुल्म के खिलाफ बैठेंगे। १५ तारीख को काला दिवस मनाने का फैसला किया गया है। इसी के साथ-साथ अगले चरण के कार्यक्रम के अनुसार छात्र एवं जन संघर्ष समिति के लोग आंदोलन के घोषित कार्यक्रम के अनुसार भी काम करेंगे।

मेरा स्वास्थ्य ठीक ही है। यों, पिछले एक सप्ताह से मेरा पेप्टिक के दर्द का दौरा शुरू हुआ है, फिर भी मानसिक रूप से पूर्ण स्वस्थ हूँ।

जेल की बात? कुछ दिन पहले '' ने मुझ से कहा था कि गुलाम भारत के जेल और स्वतन्त्र भारत के जेल में काफी अन्तर है? सचमुच, पूर्णिया जेल मौजूदा भारत का असली नमूना है जिसमें आदमी भी जानवर बन जाये। एक हजार एक सौ बासठ कैदियों में शायद एक भी व्यक्ति स्वस्थ नहीं है... शायद नरक ऐसा ही होगा...१९४२ और १९४७ में इतना अन्तर?

प्रणाम स्वीकार करें।

भाई ही, रेणु

ग्राम शान्तिसेना शिविरों की कड़ी

☐ हमीरपुर जिले के मोहाड विकास खंड के बीरा और इटैलिया गावों में दो-दो दिन के ग्राम शांति सेना शिविर लगे। दोनों जगहों पर ग्रामशांति सेना भी गठित की गयी। इस विकास खंड में ऐसे शिविरों की एक कड़ी चल रही है।

आंदोलन जनता का है

(पृष्ठ ७ का शेष)

कार्य सीखा। उन्होने कहा कि इस प्रकार से काम सीखे जा सकते है और इस प्रकार सार्वजनिक हित के लिए उनका उपयोग किया जा सकता है। तब सरकार इस प्रकार सोचने पर मजबूर हो जायेगी कि ये सब कैसे हो रहा है। हम एक साथ आगे बढ़ें। केवल बडी आवाज से काम नही चलनेवाला है, बडे काम की आवश्यकता होगी। उसी से हौसला बढ़ेगा। थोडा-बहुत क्रुद्ध होकर रह जाये, यह ठीक नही। इसलिए मैं कहता हू कि हमारे हौसले बुलन्द होने चाहिये।

जे॰ पी॰ ने इसके बाद कहा कि सरकार किस तरह सी॰ आर॰ पी॰ के लोगो से सहायता ले सकती है। वह हमारे आगे आडे आना चाहती है। सरकार कहती है कि बाढ़ का समय है और इस समय हमे अपने आंदोलन को बन्द कर देना चाहिए राहत का कार्य करना चाहिए। लेकिन मैं तो पहले ही राहत की अपील कर चुका हू। हर जगह हमारे कार्यकर्ता लोग राहत के कार्य में लगे भी हैं। जे० पी॰ ने कहा कि शुरू से आंदोलन बन्द करने को कहा जाता है लेकिन आंदोलन मेरा तो नही जो मुझ से आंदोलन बन्द करने को कहा जाता है। लेकिन आंदोलन जनता का है जनता से आंदोलन समाप्त करने की अपील की जा सकती है। और जब वे आंदोलन समाप्त करेंगे समझना चाहिए कि भ्रष्टाचार समाप्त हो गया है। मैं एक बात कह देना चाहता हू कि मैं जितना फूल सा कोमल हूं उतना ही पत्थर सा कठोर भी। शायद ये बात अपने लिए मुझे नहीं कहनी चाहिए। इसे गांधीजी भी मानते थे कि कठोर रहे और कोमल भी। सन ४६ मे जब सब छूट गये थे तब मैं और लोहियाजी जेल मे थे। गांधीजी हम लोगो की बात लेकर सेक्रेटरी श्री मेवन्स से मिलने गये थे। या शायद कोई और सेक्रेटरी था तब इसमे कोई बात नहीं है। विरोध हमारा व्यक्ति या व्यक्तियो से नहीं है, व्यवस्था से है।

दो दिन की यह बैठक बहुत महत्वपूर्ण रही। दोनो दिन सभी प्रकार से चर्चाएं हुई। ज्यादातर चर्चाएं राज्य की हुई। २३ मसले हल हुए, कई हल नही हुए, सभी सवालो पर विचार जरूर हुआ।

सारे सवालो का हल नही हो पाया, जैसा कि अक्सर होता है। आचार्य राममूर्ति कर्पूरी ठाकुर, रामजीसिंह श्री जयप्रकाशजी और अनेक व्यक्तियों ने समस्या के हल और उनके बारे मे कुछ इंगित दिये। मगर सबसे जरूरी बात जो हुई वह ठीक संगठन के विषय को लेकर हुई। सबने माना कि मजबूत संगठन की सख्त जरूरत है, हमे मिल बैठकर समस्याओ को सुलझाना होगा। पूरी बैठक से किये गये काम का और सरकारी दमन का जैसा अन्दाज हुआ, वह तो अभूतपूर्व था।

टिप्पणी • टिप्पणी

जांच से भी क्या होगा ?

६ अगस्त को राजधानी मे सत्तारूढ दल के समर्थन मे युवको की सख्या का प्रदर्शन करने के विचार से जो रैली हुई थी, उसमे शामिल होनेवाले युवको ने आते जाते स्टेशनो पर जो उत्पात किये उनका चरम-बिन्दु गुजरात के बलसाड स्टेशन पर हुआ। युवको को तितर-बितर करने के लिए पुलिस को गोली चलानी पडी। लोकसभा मे इस पर जांच की मांग की गयी। वह स्वीकार भी हुई किन्तु उसमे यह स्वीकार हुआ कि जांच सरकारी स्तर पर होगी और यह इसलिए कि न्यायिक जांच मे बडी देर लग जाती है।

गृहमन्त्री ने यो तो कह ही दिया है कि उपद्रव करनेवाले युवक कांग्रेस के नहीं थे। *अब इसके बाद जांच के नतीजे का कोई बड़ा अर्थ नही है।* क्या जाने यहा तक कह दिया जाय कि उपद्रवकारी युवक नही थे कांग्रेसी नही थे और कम से कम वे युवक तो नही ही थे जो दिल्ली की रैली मे शामिल होकर लौटे थे।

इन युवको ने जिन गाडियो मे आने-जाने यात्रा की, जरा उनके अन्य यात्रियो से भी पूछा जाये कि गाडी मे ये भारतरत्न क्या-क्या करते रहे। दिल्ली आते हुए आगरा स्टेशन के पेठेवालो से पूछा जाये—आंखो देखनेवालो ने बताया 'आगरा-स्टेशन पेठा-विहीन हो गया था।

युवक उपद्रव करते हैं और मारपीट भी होती है, गोली तो खैर हमारे स्वतन्त्र देश मे कहीं न कहीं रोज चल ही जाती है। कारण यहा तक सुना गया है कि आसूगैस से गोली सस्ती पडती है। इसलिए यह उतना विचारणीय नहीं है कि इन युवको को भय नही था, सत्ता के समर्थन का विश्वास था। सत्ता के समर्थन के विश्वास का बल, भगवान मे विश्वास के बल से ज्यादा तो होता ही है, इसलिए इस विश्वास को कमजोर बनाने के लिए सत्ता का जो असामाजिक तत्वो को समर्थन प्राप्त होता है, उसके विरोध मे आवाज उठायी जानी चाहिए। जांचें तो होती है और समाप्त हो जाती हैं, मगर विरोध की आवाजें गूंजती है और कई बार आसमान पर उठता है।

मोटरों के दाम-दो उदाहरण

हमारे यहा अभी-अभी हर तरह की मोटर गाडी के दाम बिना कोई पूर्व-सूचना दिये एकदम बढा दिये गये है। दाम इन गाडियो की कम्पनियो ने अपनी मर्जी से नही बढाये हैं—यह काम सरकार से सलाह मशविरा करके हुआ है।

सवाल किया जाता है, मोटर खरीदने वाला अपनी जेब से देगा या गरीब आदमी से चूसकर ही चुकायेगा? यह हम मन मे पूछ कर देखे, तो साफ हो जाता है कि दाम चाहे गेहूं के बढें, चाहे मोटर-गाडी के, किराया चाहे रेल का बढे चाहे हवाई जहाज का, कमी खाद की हो चाहे बिजली की, आखिरकार इन सब बातो का बोझ उसी पर आकर पडता है जो अरसे से बोझ उठाने की ताकत खो चुका है। फिर भी यह भगवान का करिश्मा है कि बोझ न उठा सकनेवाला यह मुर्दा जितना बोझ पीठ और सिर पर धर कर ढोकर दिखला देता है। उसे ऐसी बातो पर आश्चर्य होता जो नही आता, वह इन्हे अपने 'भाग' की बात समझता है।

हमारी सरकार ने मोटर-गाडियो के दाम बढाने मे हाथ बटाया और अमरीका जैसे अमीर देश के नये राष्ट्रपति ने मोटरो के दाम बढाने पर 'जनरल मोटर्स' कारपोरेशन' को काम संभालते ही आडे हाथो लिया है और इससे मुद्रास्फीति बढने के खतरे की बात की है। हमारी सरकार ऐसी चीजो को मुद्रास्फीति मे नही जनती।

आचार्यकुल सप्ताह

केन्द्रीय आचार्यकुल समिति ने आगामी ५ से ११ सितम्बर, तक देश में आचार्यकुल सप्ताह आयोजन करने का निश्चय किया है। इस अवधि में पुराने सदस्यों का नवीनीकरण तथा आचार्यकुल की भावना और उसके कार्यक्रम का व्यापक रूप से प्रचार-प्रसार किया जाएगा। केन्द्रीय आचार्यकुल कोष के लिए निधि-संग्रह अभियान भी चलाया जायेगा।

देश में कई राज्यों में प्रशासकीय विद्यालयों का सरकारीकरण किया जा रहा है। केन्द्रीय आचार्यकुल समिति ने इस पर अपना मत व्यक्त करते हुए कहा कि उसके बजाय शैक्षिक निगमों के हाथ में शिक्षा तथा प्रशासन हो। शिक्षा संस्थाओं पर सरकार का नियंत्रण न हो, धन सरकार दे परन्तु पाठ्यक्रम क्या हो, परीक्षा-पद्धति क्या हो, इनका संचालन कैसे हो, इस विषय में सरकार दखल न दे। यह शिक्षाविदों और शिक्षकों पर छोड़ देना चाहिए।

(पृष्ठ १५ का शेष)

रमक है। इसके अलावा लगभग ११०० वर्ष पहले (९वीं सदी के अंत में) श्रानेन् नामक एक जापानी पंडित (भिक्षु) ने जापानी वर्णमाला क्रम भारतीय संस्कृत वर्णमाला-क्रम की देखादेखी बनाया। इसकी वजह से है कि संस्कृत वर्णमाला-क्रम स्वर वैज्ञानिक है। मेरा ख्याल है कि जापानी भाषा को ठीक उच्चारण सीखने और जापानी पुस्तक पढ़ने के लिए हिन्दी लिखावट उपयोगी नहीं होगी, इसका तात्पर्य यह नहीं कि हिन्दी लिखावट जापानी भाषा सीखने में कभी उपयोगी नहीं सरल जापानी बातचीत हिन्दी लिखावट से थोड़ी मेहनत के बाद सीख सकेंगे। जाने दें लिखावट की बातों को, हिन्दी भाषा में लिखी गयी जापानी भाषा की व्याकरण पुस्तक होनी चाहिए, इसे कहने की जरूरत नहीं।

मैंने हिन्दी भाषा विज्ञान तथा साधारण भाषा-विज्ञान का विशेष अध्ययन नहीं कर लिया, इसलिए इन प्रश्नों के बारे ठीक धारणा कहने का मुझे पक्का विश्वास नहीं।

जापान   तावाशी एन्दो

बिहार-दिवस आयोजित

हिसार में नागरिक परिषद की ओर से ९ अगस्त को आयोजित 'बिहार-दिवस,' के अवसर पर सेठ महेशचन्द की अध्यक्षता में विशाल जनसभा हुई जिसमें नागरिक परिषद के संयोजक जयनारायण वर्मा, जगतस्वरूप शर्मा, संयुक्त समाजवादी दल के मनीराम बागड़ी, संगठन कांग्रेस के देवकुमार जैन, जनकवि भाई परमानन्द शर्मा, जनसंघ के विदवस्वरूप, समाजवादी दल के फूलसिंह, भारतीय क्रांतिदल के वीरेन्द्रसिंह एवं छात्र नेता राजेन्द्र भारती ने बिहार के आन्दोलन को हरियाणा तथा हिसार से पूर्ण समर्थन की घोषणा करते हुए जयप्रकाशजी के नेतृत्व में पूर्ण आस्था व्यक्त की।

इन्दौर में जिला तरुण शान्ति सेना द्वारा छात्र युवक संगठन तथा प्रबुद्ध नागरिकों के सहयोग से आयोजित मौन जुलूस ने राजवाड़ा के जनता चौक पहुंचकर जनसभा का रूप लिया जिसमें बिहार में कार्यरत कु० जानकी पाण्डे ने आन्दोलन की जानकारी दी। समाजवादी नेता लाडलीमोहन निगम ने जयप्रकाश जी के चरित्र हनन का प्रयास करनेवालों की भर्त्सना की और सभा के अध्यक्ष इन्द्रलाल मिश्र ने देश को भ्रष्टाचार से बचाने की अपील की। बिहार आन्दोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि दी गयी तथा आन्दोलन के समर्थन में प्रस्ताव पारित किया गया।

बुन्देलखण्ड के समर्पित बागियों के मुकदमे समाप्त

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के आत्मसमर्पित बागियों के जनवरी ७२, से सागर कारागार स्थित विशेष न्यायालय में चल रहे मुकदमे दि० १३ अगस्त ७४ को समाप्त हो गये। अन्तिम मुकदमा अमरसिंह और अन्य मान बागियों के खिलाफ था। इसे अभियोजन ने वापस ले लिया।

बुन्देलखण्ड के बागियों के विरुद्ध २२६ चालान पेश हुए थे, उनमें से १४ बागी निर्दोष बरी हुए. ७ को दस वर्ष से अधिक, १ को अठारह वर्ष, अन्य १ को तेईस वर्ष तथा ३४ को आजीवन कैद की सजाएं हुईं। शेष को दस वर्ष से कम की सजा हुई है।

दूनघाटी में पदयात्रा और हरिजन पूजा के आयोजन

विनोबा जयन्ती ११ सितम्बर से देहरादून जिले के १५ किसानों द्वारा आरम्भ २१ दिन की पदयात्रा गांधी जयन्ती २ अक्टूबर को शिवानन्द आश्रम, मुनी की रेती में समाप्त हो रही है। उसी दिन सन्त स्वामी चिदानन्द प्रधान साथी संन्यासियों सहित गतवर्षों की परम्परा के अनुसार हरिजन-पूजा का कार्यक्रम आयोजित करेंगे। इसमें वे आसपास के क्षेत्र के सैकड़ों हरिजनों को आमंत्रित कर उनकी विधिवत पूजा करेंगे।

कौआकोल में 'स्वतंत्रता' दिवस!

कौआकोल में लोगों ने १५ अगस्त का स्वाधीनता दिवस बड़े उत्साह से मनाया। एक बड़ा जुलूस जब थाने के सामने पहुंचा तो दो छात्र कृष्णवल्लभ प्रसाद तथा श्यामाकान्त वर्मा गिरफ्तार कर लिये गये। फिर जुलूस आगे बढ़कर दुर्गामंडल सभास्थल पर पहुंचा। सभा शुरू होनेवाली ही थी कि सर्वोदय कार्यकर्ता उदितनारायण चौधरी एवं छात्र मारकंडेय मिश्र तथा गोपालप्रसाद सिंह को भी सशस्त्र पुलिस ने गिरफ्तार किया तथा लाठी चलाकर और गोली का भय दिखाकर जनसमूह को तितर-बितर कर दिया। एक अन्य छात्र प्रमकुमार मिश्र को कौआकोल बाजार से पकड़ा और उसे घूंसे से मारा गया। छात्र कृष्णनन्दनसिंह को रात साढ़े दस बजे एक चाय-दुकान से हिरासत में लिया गया। इन सबको आधीरात तक कुछ खाने पीने को भी नहीं दिया गया। बाद में ये लोग छोड़ दिये गये।

□ परधाम, पवनार से तमिल की दो पुस्तकें, गुरुग्रन्थसारकी तथा तिरुक्कुरल (पहला भाग) नागरी लिपि में छपी हैं। तमिल नागरी प्रचारक डा० मदन्न लिखते हैं कि इस प्रकाशन के दो उद्देश्य हैं, एक तो तमिल भाषाभाषी अपनी भाषा को नागरी में लिखने पढ़ने का अभ्यास कर सकेंगे तथा दो, हिन्दी जाननेवालों को तमिल का थोड़ा सा परिचय मिलेगा। व्यवस्थापक परधाम से इन पुस्तकों की बिक्री कमीशन, प्रचार आदि के बारे में जानकारी ली जा सकती है।

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, इस अंक का मूल्य ६० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्वोदय

सर्व सेवा सघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, ६ सितम्बर '७४

ऋषि विनोबा

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २०　　९ सितम्बर, '७　　अंक ५०

१९ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

दुर्लभ समन्वय

पूज्य विनोबा इस ११ सितम्बर को जीवन के ७९ वर्ष पूरे करके ८०वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। इस अंक में इसी को ध्यान में रखकर हम उनके विषय में दो लेख और इस स्तम्भ में जयप्रकाशजी के शब्द उद्धृत कर रहे हैं। यह उद्धरण हमने जे. पी. की पुस्तक "मेरी विचार यात्रा" से लिया है। इन थोड़े से शब्दों में जे. पी. ने विनोबा के प्रति अपने हृदय के सारे भाव समो दिये हैं।

"विनोबा राजनीतिज्ञ नहीं हैं, न वे समाज-सुधारक हैं, न क्रांतिकारी। वे शुरू से आखिर तक भगवान के बन्दे हैं। मनुष्य की सेवा उनके लिए भगवान से साक्षात्कार के अलावा और कुछ नहीं हैं। वे प्रतिपल अपने को शून्य बना लेने, अपने आपको रिक्त कर देने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, ताकि भगवान उन्हें लबालब कर दे और उन्हें अपना साधन बना ले।

ईश्वरपरायण, गहरी अन्तर्दृष्टि सम्पन्न साधुपुरुष, उद्भट विद्वान तथा विचारक, तीक्ष्ण-बुद्धि व असाधारण स्मरणशक्ति-सम्पन्न भाषावेत्ता, उच्चकोटि के लेखक, जन्मजात शिक्षक और मौलिक शिक्षा-विचारक, मनुष्य के नेता और निर्माता, समग्र राष्ट्रस्तर पर दूसरों को क्रियाशील बनानेवाले तथा बाल-ब्रह्मचारी विनोबा का व्यक्तित्व सचमुच अनुपम है। अध्यात्म, विज्ञान, तत्वदर्शन, समाज-विज्ञान तथा समाज रचना के क्षेत्रों में उनकी देन यथार्थतः मौलिक तथा स्फूर्तिदायक है, जोकि ज्यों-ज्यों वर्तमान दकियानूसी विचारपद्धति के स्थान पर नयी जिज्ञासा और तर्क को स्थान मिलता जायेगा, त्यों-त्यों अधिकाधिक प्रशंसित होगी। परम्परागत भारतीय विचार के अनुसार कहा जा सकता है कि विनोबा में एक ही साथ ज्ञानयोगी, भक्तियोगी और कर्मयोगी का दुर्लभ समन्वय है।"

कांग्रेस का विकल्प

कहा जाता है कि श्री लोहिया कांग्रेस का विकल्प ढूंढने की दलदल में फंस गये थे। वे यदि इस प्रयत्न को ही अपना ध्रुवतारा न मानते और स्वस्थ दृष्टि रख कर कांग्रेस का हर बात पर विरोध न करके केवल विरोध करने लायक मुद्दों पर विरोध करते और सहयोग करने लायक मुद्दों पर हाथ बटाते तो भारतीय राजनीति का छकड़ा आज जिस तरह कीचड़ में फंसा है, वैसा न होता। श्री लोहियाजी के जाने के बाद और कांग्रेस के दो टुकड़े होने के बाद फिर इस बात के प्रयत्न हुए कि सब दल मिलजुलकर कांग्रेस यानी कांग्रेस का विकल्प बन जायें। मगर आम लोगों को यह बात भी शायद 'विरोध के लिए विरोध' जैसी लगी। चुनाव में क्या हुआ क्या नहीं हुआ, इसे छोड़ दें—परिणाम जो सामने आया उसने मिली-जुली विरोधी दलों की शक्ति को नगण्य करके दिखा दिया। पिछले कुछ बरसों से दक्षिण में द्रविड़मुनेत्र-कषगम ने तमिलनाडु में और केरल में एक हद तक भारतीय कम्युनिस्ट दल ने कांग्रेस का विकल्प दिया। अभी-अभी ऐसा लगने लगा था कि उत्तरप्रदेश में भी भारतीय क्रांति दल जो एक बार कांग्रेस के विकल्प में उभर कर ऊपर आ गया था, एक बार फिर उसकी शक्ति बढ़ती दिख रही थी। मगर विरोधी दलों के साथ गठबन्धन करते ही वह टूटने के लक्षण जाहिर कर रहा है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि दलों का इस प्रकार निर्बल होना सत्तारूढ़ दल को अधिकाधिक निरंकुश बनाता चला जा रहा है। जयप्रकाशजी ने जो आवाज उठायी है उसे भी कई लोग कांग्रेस का विकल्प प्रस्तुत करने की कोशिश कह रहे हैं। माना जा सकता है कि प्रारम्भ में परिणाम इसका ऐसा ही कुछ निकले, मगर वे पहले नहीं तो दूसरे चुनाव तक निर्दलीयों को एक करके दलहीन सत्ता का गठन करेंगे। जन-संघर्ष समितियों द्वारा खड़े किये गये कुछ उम्मीदवार पहले चुनाव में वर्तमान दलों के भी हो सकते हैं, यह जयप्रकाशजी ने कहा है। किन्तु दूसरे चुनाव के आने तक हम ग्राम स्वराज्य के लिए काफी काम कर चुकेंगे। तब जो सदस्य ग्राम सभा सामने रखेगी, वे अगर किसी राजनीतिक दल से सम्बद्ध हुए तो भी उनकी पहली जिम्मेदारी अपनी ग्राम-सभाएं और ग्राम-मंडल होंगे, केन्द्र से सचालन करने वाला कोई दल नहीं। लोकसेवकों के सामने यह तथ्य साफ रहना चाहिए और गांवों तथा कस्बों के सिवाय अन्य सभी स्तरों पर उन्हें चाहिए कि वे लोगों के सामने दलहीन शासन की संभावनाओं को स्पष्ट करें और बतायें कि 'नागनाथ की जगह सांपनाथ' जनता के सिर पर डालें यह उनका उद्देश्य नहीं है। सत्तारूढ़ दल की ओर से जो तरह-तरह के काम जयप्रकाशजी के आन्दोलन को विफल करने के लिए होंगे उनमें फासिस्ट प्रतिक्रियावाद और विदेशी सहायता की बात के सिवाय यह भी कहा जा रहा है कि अभी-अभी जयप्रकाशजी ने कहा था कि वे कांग्रेस का कोई ऐसा विकल्प उपस्थित करने नहीं जा रहे हैं जो राजनीति से सबंधित दल हो और अब उन्होंने यह कह दिया है कि जन संघर्ष समितियां दलों से संबधित कुछेक उम्मीदवार भी खड़े कर सकती है। पहले चुनाव में यह कहीं-कहीं आवश्यक हो सकता है। बड़े विचारों को चुटकी बजाते ही लागू नहीं किया जा सकता। मगर जनसंघर्ष समिति की कोशिश अन्ततोगत्वा दलविहीन सरकार बनाने की ही होगी।

● राजस्थान समग्रसेवा संघ की २२ अगस्त की सभा में सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव स्वीकार करके श्री जयप्रकाश नारायण के जन्म दिवस दशहरे पर उनका राजस्थान में सार्वजनिक अभिनन्दन एवं १ लाख रुपये की थैली भेंट करने का निश्चय किया गया है। इस हेतु श्री जयप्रकाश अभिनन्दन समिति का गठन राजस्थान के वयोवृद्ध सर्वोदय नेता श्री गोकुलभाई भट्ट के संयोजकत्व में किया गया है। प्रदेश की जनता से अपील भी की गयी है कि लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण का अभिनन्दन राजस्थान की शान के अनुरूप ही किया जाना चाहिए।
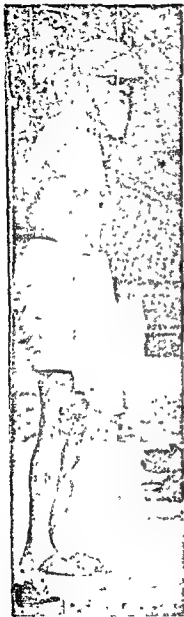
'जेथ प्रियाची परिसीमा
तेथ भेटे माउली आत्मा ।'

ऋषि विनोबा

—श्रीमन्नारायण

यह हम सभी के लिए आनन्द का विषय है कि अगले ११ सितम्बर को ऋषि विनोबा की अस्सीवीं वर्षगांठ है। इसलिए हमें इस दिन को बड़े उत्साहपूर्वक लेकिन रचनात्मक ढंग से सारे देश में मनाना चाहिए। अच्छा होगा यदि उस दिन सभी रचनात्मक केन्द्रों में उनके साहित्य का खासतौर पर प्रचार किया जाय ताकि उनका दिव्य सन्देश व्यापक ढंग से जनता में पहुंच सके।

पूज्य विनोबाजी में कर्म, ज्ञान और भक्ति की त्रिवेणी का अद्भुत संगम है। कर्म की दृष्टि से वे भूदान पदयात्रा में लगभग चालीस हजार मील देश के कोने-कोने के गांवों में चले हैं। 'भूदान' आन्दोलन में उन्हें करीब चवालीस लाख एकड़ जमीन प्राप्त हुई जिसमें १५ लाख एकड़ जमीन का बटवारा भी हो चुका है। अगले वर्ष १८ अप्रैल को भूदान आन्दोलन का २५ वां वर्ष प्रारम्भ होगा। बहुत अच्छा हो यदि तब तक भूदान में प्राप्त जमीन में से कम से कम पांच लाख एकड़ जमीन और बंट जाय तथा पांच लाख एकड़ और नयी जमीन प्राप्त हो और वह भी बंट जाय। ऐसा होने पर हम सन् १९७५ में भूदान यज्ञ की रजत जयन्ती मना सकेंगे और यह निश्चित रूप से कह सकेंगे कि २५ लाख एकड़ जमीन इस आन्दोलन द्वारा अहिंसक ढंग से बेजमीन लोगों में बांटी जा चुकी है। रजत जयन्ती मनाने का यही रचनात्मक ढंग अच्छा रहेगा। यदि देश के सभी सर्वोदय कार्यकर्ता इस काम में लगें तो सब दृष्टि से हितकर होगा। ऋषि विनोबा ने इन दिनों कई बार कहा है कि उनका भूदान आन्दोलन जितना सफल रहा है उतना ग्रामदान का नहीं। इसलिए नये ग्रामदान यदि प्राप्त न होते हों, तो कम से कम भूदान ही प्राप्त किये जायें।

कुछ महीनों से पूज्य विनोबाजी बार-बार कह रहे हैं कि इन दिनों उनका विशेष ध्यान दो विषयों की ओर लगा है। एक तो सामूहिक ब्रह्म विद्या की साधना और दूसरे, देवनागरी का सभी भारतीय भाषाओं के लिए एक अतिरिक्त लिपि के रूप में प्रचार। हमारे देश में व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना की परम्परा तो हजारों वर्षों से चली आ रही है, किन्तु अब यह जरूरी है कि यह साधना और तप सामूहिक हो। पवनार के ब्रह्म-विद्या मन्दिर में इसी प्रकार की सामूहिक साधना पूज्य विनोबाजी के मार्गदर्शन में निरंतर चल रही है। देवनागरी के लिए भी कुछ महीने पहले गांधी स्मारक निधि द्वारा एक संगोष्ठी आयोजित की गयी थी जिसमें राष्ट्र के विभिन्न भाषाओं के लगभग ६० साहित्यिक और विद्वत्जन शामिल हुए थे। यह सन्तोष का विषय है कि इस कार्य में सभी सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाओं का अच्छा सहयोग प्राप्त हो रहा है। हमें उम्मीद है कि इस ओर भी हमारे रचनात्मक कार्यकर्ता पूरी दिलचस्पी दिखायेंगे।

आजकल विनोबाजी मद्य-निषेध के बारे में भी बहुत बल देते हैं। उन्हें इस बात का बहुत दुख है कि हमारी राज्य-सरकारें दिन-प्रतिदिन शराब का पीना अधिक ढीला बनाती जा रही हैं। उन्होंने गत मार्च में पवनार में हुए स्त्री जागृति सम्मेलन में भी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की उपस्थिति में अपना गहरा दुख व्यक्त किया और कहा कि जब तक देश में शराबबन्दी नहीं होती तब तक स्त्री-जागृति भी नहीं हो सकेगी। कुछ वक्त पहले जब राजस्थान के कर्मठ सेवक श्री गोकुल भाई भट्ट उनसे मिले थे तब भी विनोबाजी ने उनसे कहा कि यदि राजस्थान सरकार अगले आम चुनाव के पहले पूर्ण नशाबन्दी लागू न करे तो फिर हमें शासन के विरुद्ध सत्याग्रह करना ही पड़ेगा और उसमें मैं भी शामिल हो सकता हूं। इस उद्गार से पूज्य बाबा के दिल की व्यथा साफ जाहिर हो जाती है।

विनोबाजी को देश की बढ़ती हुई जनसंख्या के बारे में भी बहुत फिक्र है। वे कहते हैं कि अगर भारत की आबादी इसी तरह

बढ़ती गयी तो भूदान आन्दोलन और जमीन के बटवारे की सभी योजनाएं बेकार साबित होंगी। जिन जमीन के टुकड़ों को हम बाटेंगे उनके और भी छोटे-छोटे कुछ वर्ष बाद हो जावेंगे क्योंकि इस बीच परिवारों की संख्या भी बढ़ जायेगी। अतः ऋषि विनोबा की हार्दिक इच्छा है कि कृत्रिम साधनों के स्थान पर देश में ब्रह्मचर्य का वातावरण पैदा किया जाय। उनका सुझाव है कि पच्चीस वर्ष के पहले विवाह न हो और चालीस वर्ष के बाद अधिक से अधिक लोग वानप्रस्थ आश्रम की विधिवत दीक्षा लें। इस प्रकार गृहस्थ आश्रम की सीमा केवल १५ वर्ष की रखी जाय ताकि परिवार की संख्या कम करने में मदद मिले। उनका यह भी सुझाव है कि यदि किसी परिवार में तीन भाई हैं तो उनमें एक भाई शादी न करे और अपना समय देश के विभिन्न रचनात्मक कार्यों में ही लगावे। दो भाई जो शादी करेंगे उनका यह कर्तव्य हो जाता है कि वे इस तीसरे अविवाहित भाई के भरण-पोषण की योग्य व्यवस्था कर दें। इस तरह विनोबाजी की दिली इच्छा है कि हम सभी का ध्यान सततिनियमन की ओर आकर्षित हो और भारत तथा अन्य विकासशील राष्ट्रों की आबादी पर प्राकृतिक ढंग से नियत्रण किया जाय। ब्रह्मचर्य का वातावरण बनाने के लिए गन्दी फिल्मों और पोस्टरों के प्रचार पर सख्ती से पाबन्दी लगायी जानी चाहिए।

२१ अगस्त को ऋषि विनोबा ने अपने जीवन का एक नया क्रम आरम्भ किया है और वह है 'अति-सूक्ष्म' में प्रवेश। उस दिन उन्होंने मुझसे अचानक कहा कि आज से मैंने कुछ नये निश्चय किये हैं :

एक तो अब मैं दैनिक समाचार-पत्र नहीं पढ़ूंगा। केवल रेडियो की खबरें मुझे लिखकर बतायी जाया करेंगी। हां, मैं साप्ताहिक और मासिक पत्र पढ़ूंगा। लेकिन वह भी नागरी लिपि में। दूसरे, अब मैं इण्डियन इगलिश का साहित्य नहीं पढ़ूंगा। विदेशी इंगलिश की किताबें और साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएं पढ़ सकूंगा। इन्हीं दिनों मैंने भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा हाल में ही छपी श्रद्धेय जमनालाल बजाज सम्बन्धी अपनी अग्रेजी की पुस्तक उन्हें पढ़ने को दी थी। विनोबाजी ने मुस्करा कर कहा, 'अग्रेजी में लिखी आपकी यह पुस्तक मैंने आखिरी-तौर पर पढ़ी है। अब भविष्य में भारतीयों द्वारा लिखित अंग्रेजी की कोई पुस्तक नहीं पढ़ूंगा।' जब मैंने उनसे पूछा कि आपने सूक्ष्म प्रवेश के लिए ये निश्चय क्यों किये हैं तो उन्होंने फौरन उत्तर दिया—'दैनिक समाचार-पत्रों को पढ़कर अपना समय क्यों बर्बाद करूं? उनमें दिन-प्रतिदिन यही खबरें पढ़ने को मिलती हैं कि कहीं बाढ़ आयी कहीं सूखा पड़ा, कहीं कोई दंगा हो गया और कहीं कोई आकस्मिक घटना में कुछ लोग मर गये। इस तरह के समाचारों को पढ़ने से क्या लाभ? मैं तो उस दिन की राह देखता हूं जिस दिन अखबारों में पढ़ने को मिलेगा कि अब दुनिया की एक सरकार बन गयी और वर्तमान राष्ट्र उसके प्रान्तों के रूप में काम करेंगे। तभी तो सच्ची और स्थायी विश्व-शांति हो सकेगी न? जब अखबारों में इस तरह की खबरें प्रकाशित होने लगेंगी तो शायद मैं फिर अखबारों को पढ़ने की सोचूं। दूसरे, मेरी हार्दिक इच्छा है कि भारतीय व एशिया की विभिन्न भाषाओं के लिए देवनागरी का एक अतिरिक्त लिपि के रूप में तेजी से प्रचार हो। इसलिए मैं भारतीय विद्वानों का वही साहित्य पढ़ना चाहूंगा जो नागरी लिपि में प्रकाशित हो। भारतीय लेखक यदि अंग्रेजी भाषा किन्तु नागरी लिपि में अपनी पुस्तकें छापें तो मैं उन्हें भी पढ़ने को तैयार हूं।'

ऋषि विनोबा इन दिनों यह भी कहने लगे हैं कि 'मैंने पूज्य बापू की उम्र भी पा ली है और अब अस्सीवें वर्ष में प्रवेश कर रहा हूं। भगवान बुद्ध भी इसी उम्र में चले गये थे। इसलिए यदि मैं भी ८० वें वर्ष में चला जाऊं तो भगवान बुद्ध का सत्सग सहज प्राप्त होगा। अत मेरा जिसको जो उपयोग लेना हो शीघ्र ले ले। भविष्य का कोई ठिकाना नहीं है।'

एक बार श्रद्धेय जमनालालजी ने पत्र-व्यवहार में ही मुझसे कहा था—मैं विनोबा को भारत के बड़े से बड़े ऋषियों के समान मानता हूं। आज भले ही हम उन्हें पूरी तरह से न समझें, किन्तु भविष्य में वे हमारे देश के बहुत उच्च कोटि के ऋषि के रूप में सम्मानित होंगे। मेरा भी पक्का विश्वास है कि पूज्य जमनालालजी के ऊपर दिये गये उद्गार बिलकुल सच हैं। ऋषि विनोबा का उपयोग केवल हमारे राष्ट्र के लिए ही नहीं, सारे ससार के लिए होना चाहिए।

पवित्र कार्य के लिए साधन भी पवित्र

दिव्य जीवन संघ, शिवानन्द आश्रम के परमाध्यक्ष स्वामी चिदानन्दजी ने पश्चिमी उ० प्र० और उत्तराखण्ड के खादी ग्रामोद्योग कार्यकर्ताओं को सबोधित करते हुए कहा कि उन्हें अपने में यह देखकर हीनता की भावना का प्रवेश नहीं होने देना चाहिए कि देश में चारों ओर बड़े-बड़े उद्योगों का बोलबाला है। भारतवर्ष में एक मौलिक अध्यापन है। जैसा पश्चिमी देश करते हैं वैसा हम करते हैं पर वे अपनी औद्योगिकता से अब तंग आ चुके हैं। इससे वहां के वायुमण्डल में, नदियों में इतना अधिक संदूषण हो गया है कि वहां के प्रबुद्ध विचारक कहने लगे हैं कि मानव जाति विश्वात्मक आत्मघात की ओर बढ़ रही है। वे इस की जकड़ से छुटकारा पाने का रास्ता ढूंढ रहे हैं। खादी ग्रामोद्योगों के द्वारा आप मानव जाति को इस दलदल से बाहर निकालने का रास्ता दिखा रहे हैं।

उन्होंने कहा "गांधी विचार की बुनियाद आध्यात्मिक है और उसका अंतिम लक्ष्य भी आध्यात्मिक है। कार्यकर्ताओं के लिए आत्म साक्षात्कार की साधना में यह आर्थिक और सामाजिक सेवा एक अंग है।"

सर्वोदय-कार्य की सहायता के लिए विनोबा द्वारा प्रारभ किए गए उपवास-दान के लिए अपील करते हुए उन्होंने कहा, पवित्र कार्य के लिए साधन भी पवित्र होने चाहिए। आज हम कहते हैं कि सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है, तो जहां से भी हम अर्थसग्रह करेंगे भ्रष्टाचार से मुक्त नहीं रह सकेंगे। अत. उपवास करके सर्वोदय के लिए पैसा बचायें। यह अत्यंत निष्कलंक और पवित्र होगा।

प्रारभ में उ० प्र० के खादी ग्रामोद्योग आयोग के क्षेत्रीय निर्देशक श्री शुक्ल ने बताया कि उ० प्र० खादी और ग्रामोद्योग के कार्य में सारे देश में अग्रणी हैं और यहां पर ३० करोड़ रुपये का वार्षिक उत्पादन होता है।

मेरा सारा काम मित्राधार से हो चलेगा

—धीरेन्द्र मजूमदार

मेरा सारा काम मित्राधार से चलेगा। अब कोई संस्था नहीं बनेगी। भारतीय संस्कृति की यह परम्परा रही है कि कोई आचार्य, ऋषि, मुनि, *संन्यासी कहीं बैठकर* अपनी साधना के साथ-साथ अपने विचार और पद्धति से पीठ, अखाड़ा, आश्रम आदि और किसी नाम से व्यापक लोक-शिक्षण का काम करते थे। उन दिनों का लोक-शिक्षण आध्यात्मिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक भूमिका में होता था। अब उसमें राजनैतिक भूमिका भी जुड़ गयी है। क्योंकि मनुष्य की बुद्धि के विकास के साथ सार्वजनिक लोक चेतना में भी वृद्धि हुई है और आज राजनीति किसी राजा के जिम्मे नहीं है। यानी वह आज राजनीति नहीं रह गई है। लोकतंत्र के विचार की बुनियाद पर लोकनीति बन गयी है। वह मानव-जीवन का एक मुख्य अंग भी बन गयी है। मेरा लोक-शिक्षण पहले के विषयों पर तो रहेगा ही लेकिन मुख्य रूप से लोकतंत्र के विचार की बुनियाद पर लोकनीति शास्त्र का होगा और यह मेरा उसी तरह निजी काम होगा जिस तरह आचार्यों का होता है।

ये आचार्य अपनी व्यक्तिगत साधना और सेवा के आधार पर लोगों की श्रद्धा के पात्र होते थे और उनके भक्तजन कोई एक चीज कोई दूसरी चीज श्रद्धा भक्ति से अर्पित करते थे। ये पीठ, आश्रम, धाम आदि इसी तरह चलते रहे हैं। पुराने जमाने में इसी तरह से असंख्य साधक स्थान-स्थान पर बैठकर देश-व्यापी लोकशिक्षण करते थे और साल में एक बार कुम्भ के अवसर पर मिलकर विचार मंथन करते थे।

इसीलिए मित्राधार का प्रकार मैंने इस तरह बनाया है। भारतीय संस्कृति के अनुसार इस देश में किसी केन्द्रित संस्था या केन्द्रित निधि के आधार पर, संचालित-पद्धति से लोक-शिक्षण का काम नहीं चलता था। असंख्य गुरुकुल, ऋषिकुल तथा संन्यासियों के अखाड़े जन-जन में गहराई से लोक-शिक्षण का काम करते रहे हैं, वे सब व्यक्तिगत ढंग से ही चलते रहे हैं। वे सर्व भी काफी करते रहे हैं, लेकिन उनका अधिकांश काम गुरु-दक्षिणा किस्म की चीजों से ही चलता रहा है। मुझको भी जो काम आगे लोकशिक्षण का करना है उसे व्यक्तिगत तौर पर ही करना है और *दक्षिणा के आधार पर करना है।*

इतना समझ लेना चाहिए कि दक्षिणा और चन्दे में फर्क है। कोई भी किसी फण्ड में चन्दा दे सकता है और चन्दा संग्रह करने वालों से देने वालों का कोई चेतन संबंध नहीं रहता है। उनमें विचार की कोई बिरादरी नहीं बनती है। दक्षिणा उन्हीं से ली जा सकती है जिनसे लेने का अधिकार लेने वालों का हो। यानी जिनके दिल में लेने वाले के प्रति आदर और श्रद्धा की भावना हो ताकि लेने वाले और देने वाले में हमेशा के लिए चेतन सम्बन्ध बना रहे। उस संबंध को केन्द्र मान कर एक बड़ा परिवार यानी बिरादरी बने और इस प्रकार देश में सैकड़ों हजारों धाम बनें, तभी स्वतंत्र लोक-शक्ति का उदय हो सकेगा ऐसी मेरी मान्यता है। अतएव मैंने यह सिद्धान्त रखा है कि हम गुरु-दक्षिणा *नहीं, मित्र-दक्षिणा लेंगे। प्राचीन काल की* परम्परागत साधना गुरु-शिष्य की थी। आज की साधना सख्य भावना की है इसलिए अब गुरु-दक्षिणा के जगह पर मित्र दक्षिणा की परिपाटी चलनी चाहिए। *देश में मैं उन मित्रों से निवेदन करना चाहता हूं, जिसके दिल में* मेरे लिए आदर है कि वे मुझे अपनी सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा दें। लेकिन दक्षिणा वे निर्धारित नियम के अनुसार ही दें। इसके लिए मैंने नीचे लिखे तीन नियम बनाये हैं

(१) मुख्य प्रकार यह होगा कि देश भर के ऐसे मित्र, जिनमें मेरे काम के प्रति रुचि, प्रेम और मेरे लिए आदर की भावना है, वे मुझे सौ रुपया वार्षिक के हिसाब से मित्र दक्षिणा दें। इस दक्षिणा को देने वाले के साथ मेरा स्नेह सम्बन्ध रहेगा। एक स्थान पर जहां पांच ऐसे दक्षिणा देने वाले होंगे वहां चौमासे में, जिस समय मेरी लोक यात्रा स्थगित रहती है एक दिन मित्र-मिलन के *लिए जाऊंगा।* वहां मित्रों से मिलकर अपने कार्यक्रम की चर्चा करूंगा। मेरी अपेक्षा होगी कि वे कभी-कभी क्षेत्र में आकर मेरा काम करें और अपने विचार से मेरे विचार को पोषण दें। जहां पांच से ज्यादा मित्र होंगे वहां प्रति पांच मित्र पर एक दिन का समय दे सकूंगा। उस समय का सफर खर्च वहां के मित्र आपस में मिल कर वहन करेंगे। लेकिन पांच दिन से अधिक एक स्थान पर समय नहीं दे सकूंगा।

(२) कुछ ऐसे मित्र होंगे जिनमें मेरे लिए श्रद्धा होगी, लेकिन वे एक सौ रुपया वार्षिक दक्षिणा नहीं दे सकते हैं। ऐसे मित्र अपने साथ और तीन-चार मित्रों को मिला कर एक मित्र-मंडली बनाए और मंडली की ओर से मुझे सौ रुपया दक्षिणा दे दें।

(३) मैंने जीवन भर श्रम की उपासना की है, इसलिए मैं श्रम की दक्षिणा पसंद करूंगा। उसका प्रकार होगा कि वे मुझे महीने में एक दिन यानी साल में १२ दिन के श्रम की दक्षिणा दें। लेकिन यह दक्षिणा १२ दिन एक साथ या ६-६ दिन की दो किस्तों में ही दी जा सकेगी, उससे कम दिन में नहीं। *और श्रम की यह दक्षिणा मेरे धाम पर आकर* ही दे सकते हैं, ताकि श्रम के अभ्यास के साथ-साथ प्रतिदिन विचारों का अध्ययन तथा उसकी चर्चा आपस में और मेरे साथ हो सके और दाताओं में परस्पर वैचारिक बिरादरी की भावना पैदा हो सके। इस ६ या १२ दिन की अवधि में वे अपने खर्चे से अपने भोजन की व्यवस्था करेंगे। वे अपने भोजन के लिए खर्च साथ लायेंगे, चाहे पैसे के रूप में या अनाज के रूप में, क्योंकि दक्षिणा शुद्ध होनी चाहिए। दक्षिणा देने वाले, लेने वाले से दक्षिणा के बदले में कुछ प्राप्ति की परिपाटी नहीं रखेंगे। उपरोक्त तीनों प्रकारों में से जिसे जो प्रकार सुविधाजनक या समाधानकारी लगे, उसे वे अपना सकते हैं।

मैं मानता हूं कि इस देश में लोक तंत्र की भूमिका में लोक नीति की संस्कृति-निर्माण के लिए जब तक भारत में ऐसी पद्धति की स्थापना नहीं होगी, तब तक पाश्चात्य जड़ संस्था जमात या पार्टी द्वारा लोकतंत्र की हत्या ही होती रहेगी।

दूसरों के भाष्य अपने-अपने हैं

—दादा धर्माधिकारी

अपने कथन का जो अर्थ पूज्य बाबा बतलावें वही सही मानना चाहिए। दूसरों के भाष्य उनके अपने-अपने हैं। दूसरों के लिए किये गये अर्थों का जब तक बाबा खण्डन नहीं करते, तब तक उन अर्थों को भी मूल अर्थ के लिए उपकारक ही समझना चाहिए। कई बार ये अर्थ परस्पर विरोधी भी हो सकते हैं। उस स्थिति में उन अर्थों को उन व्यक्तियों का अपना मत माना जाये। ऐसी मत-भिन्नता मूलभूत नीति के विषय में भी हो सकती है। भोपाल में जो प्रमेय रखा था, उससे धीरेनदा का मूलभूत मतभेद था। फिर भी उसे बाबा-मत के प्रतिकूल मैंने नहीं माना और किसी

दादा धर्माधिकारी

ने बुलन्द आवाज भी नहीं उठायी। चीन के आक्रमण के अवसर पर चि० निर्मला, बंग प्रभृति का मत विनोबा और सर्व-सेवा संघ के मत से भिन्न ही नहीं, प्रतिकूल था। फिर भी श्रद्धेय शंकररावजी और जे० पी० से लेकर निर्मला की सबने भूरि-भूरि प्रशंसा की। उस वक्त निर्मला या बंग ने यह प्रचार नहीं किया कि बाबा को सीमा पर अहिंसक मोर्चा ले जाने की बात पसन्द नहीं है। मैत्री-यात्रा की योजना के लिए भी बाबा की सम्मति नहीं थी। परन्तु सारे सर्वोदय मंडल और कार्यकर्ता भी मैत्री-यात्रा की सहायता में जुट गये थे। मतदाता शिक्षण, निर्दलीय सम्मेलनों के लिए भी शुरू-शुरू में बाबा की केवल अनुमति ही थी। तमिलनाडु के सत्याग्रह के लिए तो आरम्भ में अनुमति भी नहीं थी। फिर भी दूसरे किसी ने उसका विरोध नहीं किया। यह तो स्पष्ट ही है कि स्वयं बाबा किसी सत्याग्रह में भाग नहीं लेंगे। हिन्दी के मामले में उन्होंने अन्तःस्फूर्ति से उपवास किया। उसमें हम लोगों में से अनेक का मतभेद था। मेरा तो था ही। अंग्रेजी के बहिष्कार के विषय में मैं राजाजी का अनुयायी हूं। बिहार के अकाल के समय भी बाबा अकालग्रस्तों की सहायता का काम अपना काम नहीं मानते थे। परन्तु सर्वोदय संस्थाएं और कार्यकर्ता उसे अपना काम मानते थे।

मेरा मतलब यह है कि अब तक हमने सर्वोदय और सर्व सेवा संघ के नाम पर ऐसे कई विधायक और प्रतिकारात्मक आन्दोलन किये जिनके प्रति बाबा की अनुमति नहीं थी और कुछ मामलों में तो परोक्ष या प्रत्यक्ष प्रतिकूलता भी थी।

सर्व सेवा संघ का जो ग्रामदान का कार्यक्रम था उसमें परिवर्तन करके भी हरियाणा, पंजाब और उत्तरप्रदेश के कुछ हिस्सों में अपने ढंग के कार्यक्रम चलाये गये और वे सर्व सेवा संघ के नाम से ही चले।

फिर इसी वक्त इतनी तीव्रता क्यों? इसका कारण हमें समझना चाहिए। गांधीजी के जमाने में १९२२ में पार्लियामेंटरी प्रोग्राम का प्रश्न चित्तरंजनदास ने उठाया था। राजाजी ने उसका प्रखर विरोध किया। कांग्रेस में परिवर्तनवादी और अपरिवर्तनवादी ऐसे दो दल बन गये। परन्तु गांधीजी ने जेल काटने पर विधानसभा प्रवेश की अनुमति दे दी। कांग्रेस स्वराज्य पक्ष बना। कांग्रेस के नाम पर मोतीलालजी प्रभृति विधान सभाओं में गये। गांधीजी स्वयं नहीं गये। १९३४ में गांधी ने कांग्रेस छोड़ दी क्योंकि कांग्रेस ने अपने उद्देश्य में 'ट्रुथफुल और नानवायलेंट' शब्द डालने से इनकार किया। शांतिमय और उचित उपाय ही रखा। असल में यह मतभेद सैद्धांतिक और मूलगामी था। फिर भी गांधी ने कहा, "द पार्लियामेंटरी मेन्टेलिटी हैज कम टु स्टे", और अनुमति दी। जो मंत्रिमंडल बने उन्हें मार्गदर्शन दिया और उन पर नियंत्रण रखा। खरे प्रकरण इसका ज्वलंत उदाहरण है। गांधी का विश्वास खिलाफत में नहीं था। फिर भी उन्होंने असहयोग का प्रस्ताव पहले खिलाफत कमेटी में रखा। कांग्रेस ने तो बाद में स्वीकार किया।

गांधी और विनोबा की भूमिकाएं और विभूतियां भिन्न हैं। परन्तु तारीख १२ जुलाई की विनोबा की भूमिका में और गांधी की भूमिका में बहुत साम्य है। १२ जुलाई के अधिवेशन में उन्होंने यह स्पष्ट कहा कि संघ के अध्यक्ष, मंत्री और प्रबंध सदस्य भी बिहार के आन्दोलन में भाग ले सकते हैं। 'ग्रामदान आश्रम' की जगह 'जयप्रकाश आश्रम' कहा। इसमें यह ध्यान देने की बात है कि 'ग्रामदान' के स्थान पर 'जयप्रकाश' कहा, अर्थात् अपना हमारे हैं। इसके अलावा यह भी कहा कि आप चाहें तो इस आशय का एक प्रस्ताव बाद में लिखकर उसे अन्तिम समझें। उसमें सर्वसम्मति है ही। इसका स्पष्ट अर्थ है कि बिहार का आन्दोलन सर्व सेवा संघ और सर्वोदय के नाम पर हो सकता है। इसीलिए मैंने गांधीजी के समय के दृष्टान्त दिये। गांधी और विनोबा के विभूतिभेद को पूरी तरह समझते हुए भी मैं यह मानता हूं।

अब १२ जुलाई की भूमिका में बाबा परिवर्तन करना चाहें तो उन्हें कौन रोक सकता है? १० जुलाई की उनकी भूमिका में १२ जुलाई की भूमिका भिन्न तो थी ही। १० जुलाई को उन्होंने यह भी कहा था कि मेरी भूमिका जो 'मैत्री' में प्रकाशित हुई है, वही है। इसके बावजूद उन्होंने १२ जुलाई की व्यवस्था दी। अब उसकी व्याख्या वे स्वयं करें तो उसी को मानना पड़ेगा। उसके बाद भी हमारा मतभेद हो सकता है। उस स्थिति में जो लोग बिहार में गये हैं या बिहार का

समर्थन कर रहे हैं, उन्हें बाबा से पूछकर सर्व सेवा संघ के प्रति अपनी भूमिका का निर्णय करना होगा।

हम लोगों में से कुछ लोगों की यह प्रामाणिक धारणा है कि जे० पी० के आन्दोलन के फलस्वरूप यदि वर्तमान शासन दुर्बल या शिथिल हो जाता है तो अराजकता फैलेगी और हमारे हित-विरोधी राष्ट्र उससे लाभ उठायेंगे, इसलिए इस समय आंदोलन करने में खतरा है। कुछ तो उसे अहिंसा, सत्य, संयम और लोकनीति के प्रतिकूल भी मानते हैं। मैं इन मतभेदों को स्वस्थ और वांछनीय मानता हूं। उन्हें व्यक्त होने के लिए पूरा-अवसर देना चाहिए। हमारे पत्रों में भी उनका स्थान आवश्यक है। 'हजार दिमाग और एक दिल' के साम्य सूत्र को हम तभी चरितार्थ कर सकेंगे। मेरी यह धारणा है कि विनोबा का यह सूत्र सचमुच अपौरुषेय ही है।

मैं पचपन वर्षों से लगातार गांधी-निष्ठ आन्दोलनों में रहा हूं। मैं अपने अनुभव और अवलोकन के आधार पर यह बिना हिचक के कह सकता हूं कि अब तक इस देश में ऐसा एक भी आंदोलन नहीं हुआ जिसमें हिंसा और असत्य की मात्रा न रही हो। सन् ४२ के आंदोलन में तो गांधी के निकटवर्ती साथियों ने भी केवल मनुष्य पर प्रत्यक्ष अत्याचार को ही हिंसा माना था। बाद में उन्हें पश्चात्ताप भी हुआ। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है *कि हम हिंसा का प्रत्यक्ष या परोक्ष समर्थन करें।* हमें तो हिंसा का निषेध ही करना चाहिए। मैं तो यह भी कहूंगा कि शासन की दमन नीति के विरोध में जे० पी० ने जिस प्रकार प्रतीकात्मक सामुदायिक उपवास का आवाहन किया, उसी तरह गैर-सरकारी हिंसा के विरोध में प्रायश्चित्तात्मक उपवास का आवाहन करना चाहिए। चाहे वह हिंसा *कुछ दलों द्वारा आन्दोलन के नाम पूर्वक ही* क्यों न करायी जाती हो।

मैं उन लोगों में से हूं जो बेकार से बेकार जनतंत्र को अच्छी से अच्छी तानाशाही की अपेक्षा कई गुना श्रेयस्कर मानते हैं। तथापि मैं जे० पी० के नेतृत्व को लोकतंत्र और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए उपकारक और स्वागत-योग्य मानता हूं। जो लोग उस नेतृत्व को इस संदर्भ में हानिकारक और अवांछित

विश्व-धर्म परिवार के संत कृपालसिंह

—काका कालेलकर

सुबह नित्य की प्रार्थना पूरी करने के बाद अखबार में देखा कि संत कृपालसिंहजी का कल ही देहान्त हो गया। इतने बड़े संत पुरुष को हमने खोया, इसका बड़ा दुःख तो हुआ ही, साथ-साथ मन में हमारे जमाने के इस संत, सत्पुरुष के समग्र जीवन का चित्र भी खड़ा हुआ। उन्होंने संत-जीवन के बारे में काफी लिखा है, और संत-जीवन जीकर बताया भी। उन्होंने मृत्यु का भी गहरा चिन्तन करके इसके बारे में काफी लिखा है। अब ८१ वर्ष की पवित्र आयु पूरी करके वे इहलोक को छोड़ गये, तब उनकी मृत्यु का भी उन्हीं के शब्दों में चिन्तन करना स्वाभाविक हो गया।

हमारे जमाने के यह आधुनिक संत अपने *मन के जैसे परम-कृपालु थे। अपने गुरु संत* बाबा सावनसिंहजी के द्वारा ही भगवान का चिन्तन करने की उनकी साधना सचमुच उनके लिए फलदायी सिद्ध हुई थी।

उनके जीवन के प्रारम्भ के दिनों में एक बड़ा परिवर्तन हुआ एक के पीछे एक ऐसी तीन मृत्यु देखकर। तबसे उन्होंने जीवन का और मृत्यु का एक साथ चिन्तन किया। जीवन के साथ मृत्यु अपरिहार्य है, इतना तो निरपवाद अनुभव के कारण सब प्राणी जानते हैं। किन्तु मृत्यु के सच्चे स्वरूप को पहचाने बिना जीवन साधना शुद्ध और संपूर्ण हो नहीं सकती, इसका अनुभव तो संत कृपालसिंहजी *के जैसे विरले चिन्तक ही कर सकते हैं। मृत्यु* का रहस्य ध्यान में आने पर सब लोगों को

मृत्यु का रहस्य समझाना, यही एक सर्वोत्तम जीवन सेवा है ऐसे विश्वास से उन्होंने मृत्यु के रहस्य का प्रचार भी किया है।

फलतः कृपालसिंहजी की मृत्यु का (मेरा और उनका बहुत पुराना सम्बन्ध था) समाचार सुनते ही मृत्यु विषयक उनके विचार फिर से पढ़ने का मन हुआ।

अभी-अभी चन्द महीने के पहले हम यहीं दिल्ली में मिले थे। दुनिया के सब धर्मों में कौटुंबिक सम्बन्ध स्थापित करने का हम लोगों का मिशन है, यह समझने के कारण वे मेरे साथ एक हृदय होकर विचार-विनिमय करने लगे। उन्होंने अपनी आयु ८१ वर्ष पूरी की। मैं स्वयं नब्बे के करीब पहुँचा हूँ। इसलिए भी हम एक हृदय होकर सोच सकते थे। दुनिया के सब धर्मों का प्रधान रहस्य एक ही है। सम्पूर्ण जीवन की परिपूर्ण उन्नति यही रहस्य है। इसके लिए प्रथम हम सब धर्मों का यह रहस्य अपने जीवन में अपनाएँ। धर्मों-धर्मों के बीच (याने अपने-अपने धर्म के अभि-*मानियों के बीच) जो ईर्ष्या चलती है, उसकी* जगह, सब धर्मों में पारिवारिक कुटुम्बभाव पैदा करने लग जायें, यही सच्ची सेवा है। यह युग-धर्म पहचानते हुए कृपालसिंहजी का सेवाकार्य हमारा ही है।

संतजी ने अनेक देशों, यूरोप, अमेरिका आदि की अनेक बार यात्रा करके सर्वधर्म कुटुम्ब भावना का प्रचार किया था और सब धर्मों में आध्यात्मिक और मानवजाति के विकास में जो समानता है उसका भी पूरी आत्मीयता से प्रचार किया था। उनका यह काम बंद नहीं पड़ना चाहिए। विश्वधर्म परिवार की स्थापना द्वारा, विश्वात्मैक्य की *स्थापना करना ही मानवजाति का आज का* प्रधान युगधर्म है, इसे पहचानने वाले हम सब एक साथ काम करने के लिए एक हृदय बन जाएँ, यही हम सबों की प्रार्थना है।

मानते हैं उनके लिए मेरे मन में सद्भाव और सौहार्द है मैंने 'एक हृदय' का यही अर्थ समझा है। जो मतभेदों का सम्मानपूर्वक प्रकट होने का अवसर न दे वह सर्वोदय निकम्मा साबित होगा।

(गुजरात सर्वोदय मंडल के कार्ति गाड़ को २४ अगस्त, ७४ को लिखे पत्र से)

भागलपुर कारागार से तीन पत्र

विशेष केंद्रीय कारा
भागलपुर
४-८-७४

आदरणीय...

सादर प्रणाम !

मैं यहां कुशल से हूं। लेकिन आज सुबह ५-३० मिनट पर लाठीचार्ज किया गया। वह लगभग दो घंटा चलता रहा और कारा अधीक्षक ने स्वयं कुछ लड़कों की छाती पर चढ़कर बुरी तरह पीटा है जिसमें लगभग १०० सत्याग्रही जो निर्दोष थे बुरी तरह घायल हुए हैं जिसमें १५ की स्थिति चिंताजनक है और कुछ लड़कों को जेल में रखा गया है। साथ ही पैंतीस छात्रों की घड़ी, कपड़ा और रुपया जबरन छीन लिया गया है। यहां की स्थिति बहुत गम्भीर होती जा रही है।

अतः आपसे निवेदन है कि आप उचित कदम उठायें और न्यायिक जांच की मांग करें। यह सूचना पटना सर्वोदय कार्यालय में एवं छात्रों को टेलीग्राम द्वारा अवश्य दें।

आपका छात्र
छात्र संघर्ष समिति
तरुण शांति सेना
भागलपुर

विशेष केंद्रीय कारा
भागलपुर
४-८-७४

प्रिय साथियो

मुझे खेद के साथ लिखना पड़ता है कि अभी विशेष केंद्रीय कारा भागलपुर बहुत ही तनावपूर्ण स्थिति में है। सुबह साढ़े छह बजे के करीब यहां भयंकर लाठी चार्ज हो गया है। हमारे पंद्रह साथी लाठी की मार से घायल हैं। साथी शिवपूजनजी, रामेश्वर विद्यार्थी और गोपाललाल अंबेदकर की स्थिति खतरे से खाली नहीं है। दिनेश तिवारी जो आमरण अनशन पर हैं उसे सेल दे दिया गया है। किसी को भी उससे नहीं मिलने दिया जा रहा है। जेल अधिकारी और सुप्रिन्टेंडेन्ट भयंकर पाजी की तरह हम लोगों के साथ व्यवहार कर रहा है। घायल और अन्य साथियों को घसीट-घसीट कर नंगा करके मारा गया और 'नक्सलखंड' में भेज दिया गया। घायल साथियों में तीन की हालत चिन्ताजनक है। अतः आपसे अनुरोध है कि आप हम लोगों को आवश्यक सहायता पहुंचायें और इसकी सूचना अखबार आदि में अवश्य दे दें।

आपके
—सभी सत्याग्रही

आदरणीय ...

आज दिनांक ४-८-७४ को ५ बजे सुबह एकाएक प्रत्येक वार्ड में तलाशी का बहाना बनाकर छात्रों के सामानों को फेंकना और अपशब्द कहना शुरू किया। सहायक कारापाल श्री बृजनन्दनप्रसाद सिंह ने अपने सभी वार्डरों तथा पोषित कैदियों के साथ यह कार्य किया।

सुबह पांच बजे बहुत से छात्र अपने-अपने वार्ड में सोये ही थे, अकस्मात हल्ला हुआ। विभिन्न वार्ड से कुछ छात्र बाहर निकले, लेकिन थोड़ी ही देर बाद पगली घंटी बजा दी गयी। घंटी बजते ही लाठी पार्टी जवान तथा खूंखार कैदी लोहे के सीकचों, लाठियों, छोलनी से लैस होकर टूट पड़े।

इस प्रकार के बर्बर प्रहार को देखकर छात्र अपने-अपने वार्ड में घुस गये। तत्पश्चात् विभिन्न वार्डों में तालाबन्दी कर दी गयी।

थोड़ी देर बाद अधीक्षक महोदय अपने सहायक जेल अधिकारियों के साथ आये और बारी-बारी से एक-एक वार्ड को खुलवाकर लाठी, जूता और छोलना, लोहे की सीकचों से कुछ छात्रों पर प्रहार होने लगा। फलस्वरूप कुछ छात्र जख्मी होकर वार्ड में ही धराशायी हो गये और कुछ को वार्ड से निकालकर मारते-पीटते घसीटकर आफिस के तरफ ले गये। मारपीट के क्रम में कुछ छात्रों के सिर फट गये, कुछ के पांव टूट गये, कुछ की पीठ छलनी हो गयी थी। सैकड़ों सत्याग्रहियों ने अपनी आंखों से इस घटना को देखा। कुछ देर बाद काराधीक्षक की आज्ञा के अनुसार रामेश्वरनाथ तिवारी और सरदार रमेश कपूर को भद्दी-भद्दी गाली देते हुए थप्पड़-मुक्के से मारते हुए, दस लाठीधारी जवान ले गये।

स्वयं काराधीक्षक महोदय ने वार्ड नं. २ में रामप्रवेश विद्यार्थी को और गोपाल अम्बेदकर को लाठी से पिटवाकर धराशायी कर दिया तथा स्वयं जूते की ठोकर से मारने लगे और सीने पर चढ़ गये तथा यह कहने लगे कि साले को बाहर निकालकर जान से मार दो। आदेश पाकर उन के जवान और कैदी टांगपकड़ कर घसीटकर बाहर ले गये।

इन १५-२० सत्याग्रहियों के साथ कैसा अमानवीय व्यवहार हुआ है, कहा नहीं जा सकता। लेकिन विशेष सूत्र से पता चला है कि इन लोगों पर आफिस में और बर्बर अत्याचार हुआ है जिससे कुछ की हड्डियां टूट गयी हैं।

अशोक प्रियदर्शी जो वार्ड नं. ६ में था, उसके सम्बन्ध में सहायक कारापाल बृजनंदन प्रसाद सिंह ने अपनी लाठी पार्टी जवान से कहा कि यह साला छोटा है, लेकिन जहर की पुड़िया है, साले की टांग चीर दो। यह बालक १० वर्ष का है, इसके पैर में विशेष चोट है। और एक पैर का बहुत भाग फट गया है।

"शिवपूजनसिंह" को जो रोहतास जिले के सत्याग्रही हैं, नंगा करके इतना पीटा गया है कि मैदान में ही बेहोश हो गये थे। बेहोशी की अवस्था में उन्हें टांग-पकड़कर घसीटते हुए कार्यालय की तरफ ले गये। ये शरीर से बिलकुल दुबले-पतले हैं। इनकी हालत अत्यधिक चिंताजनक है।

महेशसिंह को जो सीतामढ़ी का सत्याग्रही है पटककर लाठी से घायल कर दिया गया और आग फोड़ने के प्रयास में आंख के नीचे का भाग काफी कट गया है।

गया और रांची के दौरे के बाद एक लम्बा समय जयप्रकाश जी ने पटना या राज्य से बाहर बिताया। अब जिलों में दौरे का उनका कार्यक्रम पुनः शुरू हुआ है। २५ जुलाई को वे आरा पहुंचे। स्वास्थ्य इस बात की अनुमति नहीं देता है अन्त शक्ति उन्हें यह सब बर्दाश्त करने की ताकत अब दे रही है सफर की थकान और सभाओं, गोष्ठियों में लगातार बोलना, समझाना इस उम्र में अच्छे स्वास्थ्य के बावजूद बहुत कठिन काम है पर इन दिनों जो समा दिखाई दे रहा है वह आजादी के बाद कभी देश में दिखायी दिया हो ऐसी जानकारी नहीं है। हजारों-हजार उत्साह में उफनते लोग रास्ते में जगह-जगह खड़े मिले, और इन लोगों की उम्र-परिधि में काले बाल से लेकर बर्फ से उजले बाल, सब शामिल थे।

आरा बिहार आंदोलन का वह क्षेत्र रहा है जहां सबसे पहले महिलाओं की गिरफ्तारी हुई थी और प्रो० श्रीमती दुर्गा देवी 'मीसा' के अन्तर्गत गिरफ्तार हुई थी। बिहार के संपूर्ण आंदोलन में अध्यापक वर्ग का सहकार आवश्यकता से बहुत कम है जिसकी ओर इशारा करते हुए आरा की आमसभा में जयप्रकाश जी ने कहा, 'आप शिक्षकों को इन लड़कों से सीखना होगा। आज ये आपसे आगे निकल गये हैं। अब इनके पीछे चलकर आप को सीखना है।"

विभिन्न वार्डों से बहुत से सत्याग्रहियों की घड़ी, रुपये आदि छीन लिये गये हैं।

शेष जितने सत्याग्रही कारा में हैं उनका भी जीवन असुरक्षित है और इस जुल्म को देखते हुए जैसा कि अधीक्षक बोल रहे थे कब क्या होगा, कहा नहीं जा सकता है।

यह घटना पूर्व नियोजित है।

आपको पता होगा कि जेल की अव्यवस्था तथा जेल पदाधिकारियों के अमानवीय व्यवहार के कारण कुछ दिन पूर्व छात्रों ने अनिश्चितकालीन अनशन किया था जो बाद में बच्चन शर्मा के आमरण अनशन में परिणत हो गया।

भवदीय

बंदी सत्याग्रही

विशेष केंद्रीय कारा, भागलपुर

आगे बढ़ता आन्दोलन

—कुमार प्रशान्त

आरा की जनसंघर्ष समिति और छात्र संघर्ष समिति का संयोजन बहुत व्यवस्थित नहीं है। और इनका संगठन बहुत नीचे तक हो भी नहीं सका है। आंदोलन शीघ्र ही उस दौर में पहुंच जाने वाला है जब संगठन के लिए अलग से समय नहीं मिलेगा। अब यह दौर है जब संगठन खड़ा करने में पूरी शक्ति से जुट जाना चाहिए। पहली अगस्त से 'सरकार ठप्प' का कार्यक्रम गावों में शुरू हो चुका है। आबकारी की आमदनी रोकने और एक नैतिक उत्थान की दृष्टि से शहरों में शराब की दूकानों पर पिकेटिंग कार्यक्रम का दुहरा महत्व है। पिकेटिंग का काम मुख्यतः महिलाओं को करना है। सरकार ने सत्याग्रह के क्रम में गिरफ्तार सत्याग्रहियों को बड़ी-बड़ी टोलियों में रिहा करना शुरू किया है ताकि आंदोलन का यह अगला दौर शुरू होने से पहले उनकी जेलें खाली हो जायें। १२ जुलाई तक विधान सभा के फाटकों पर चले सत्याग्रह की वजह से जेल की क्षमता से दूने कैदी भर देने पर भी जेलें भर गयी थीं। अन्तिम तीन दिन के सत्याग्रहियों को तो अधिकारियों ने शाम तक एक पार्क में रखा और फिर गाड़ी में बिठाकर जो जहां से आये थे वहां पहुंचा दिया। घोर अव्यवस्था के बीच घुल रही जेलों में इतने कैदियों का पहुंच जाना स्थिति को बदतर बनाये दे रहा है। एक जेल में तो सत्याग्रहियों को इतनी छूट थी कि वे दिन भर शहर में घूमने, खाना खाने, सिनेमा देखने और रात में आकर अपनी गिनती करवा देते थे!

राज्य के कोने-कोने से पुलिस की ज्यादती की खबर आ रही है जिसमें सीमा सुरक्षा बल के जवानों का हाथ सबसे ज्यादा है। गिरफ्तारी करना एक बात है, मारना-पीटना दूसरी बात है। उसे महसूस करते हुए जयप्रकाश जी बोले कि मैं पुलिस वालों को अपनी ड्यूटी करने से नहीं रोकता हूं। वे करें। मैंने पांच जून को पटना में भी कहा था कि मैं उनको बगावत नहीं सिखा रहा हूं। पर आज इतना अवश्य कर रहा हूं कि एक दिन आयेगा जब मैं पुलिस वालों से कहूंगा कि अब आप बगावत कर दीजिए। मत मानिये इस अन्यायी निकम्मी सरकार की बात। क्रांति का वह चरण आयेगा जब आपको एक निर्णय करना पड़ेगा। पर अभी मैं बगावत की बात नहीं कहता हूं जो आदेश गलत हो उसे मत मानिये।

आंदोलनकारियों को डकैती, खून से लेकर लूट, आगजनी सब तरह के मामलों में पुलिस फंसा रही है। मुकदमे चल रहे हैं। कानूनों के तहत काम करना आवश्यक है, कानूनों का कोई औचित्य है, दण्ड का दोष से कोई संबंध होता है और कुल मिला कर इस संपूर्ण व्यवस्था का सत्य से कोई नाता है यह निर्णय कर पाना किसी भी समझदार व्यक्ति के लिए कठिन है।

सर्वोदय प्रकाशनों पर विचार के लिए बैठक

सर्व सेवा-संघ, गांधी शान्ति प्रतिष्ठान और गांधी स्मारक निधि के संयुक्त तत्वावधान में पूज्य विनोबाजी के सान्निध्य में आगामी २७-२८ सितम्बर, ७४ को पवनार [वर्धा] में सर्वोदय सर्वोदय-साहित्य-प्रकाशन तथा सर्वोदय पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादकों एवं प्रकाशकों की एक आवश्यक बैठक आयोजित की जा रही है जिसमें सर्वोदय-प्रकाशनों तथा पत्रिकाओं की वर्तमान स्थिति, सर्वोदय साहित्य तथा सर्वोदय पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिए एक केन्द्रीय संगठन बनाने, 'भूदान-यज्ञ'—'सर्वोदय' (हिन्दी-साप्ताहिक) को व्यापक आधार देने, 'सर्वोदय' (अंग्रेजी) साप्ताहिक के प्रकाशन, 'गांधी-मार्ग' को रचनात्मक प्रवृत्तियों का मुखपत्र बनाने, प्रादेशिक भाषाओं में प्रकाशित सर्वोदय-पत्रिकाओं को राष्ट्रीय सर्वोदय साप्ताहिक से सम्बद्ध करने और विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं द्वारा प्रकाशित पत्रिकाओं के वर्तमान स्वरूप, प्रसार-संख्या, संभावनाओं एवं समस्याओं पर विशेष रूप से विचार किया जायेगा।

बिहार आन्दोलन जिला-ब-जिला

हम इस अंक से एक विशेष प्रारम्भ कर रहे हैं। यह यथा संभव हर अंक मे रखा जायेगा। इस अंक मे एक रपट प्रकाशित की जा रही है। इस बार हम जो रपट प्रकाशित कर रहे है वह चम्बलघाटी मे बागियों के आत्मसमर्पण के समय अपनी कर्मठता के लिए ख्याति प्राप्त श्री महावीरजी की रिपोर्ट है।

महावीरसिंहजी जिला भोजपुर, रोहतास मे ७ अगस्त से १६ अगस्त तक विभिन्न स्थानों मे घूमे। अकेले नही घूमे साथ सिमरी प्रखंड के स्थानीय छात्र-नेता श्री जनार्दन राय भी थे। वे भोजपुर जिला छात्र-समिति के अध्यक्ष हैं और इस समय भूमिगत अवस्था मे काम कर रहे है क्योंकि उनके नाम पर सिमरी के अन्तर्गत वारन्ट हैं। सिमरी ब्लाक मे आंदोलन को सक्रिय करने का श्रेय श्री जनार्दन राय को ही जाता है।

ये दोनो ७ से १६ अगस्त तक जिला भोजपुर, रोहतास के सिमरी गांव से सबंधित रहे। जिला भोजपुर के प्रखंड क्रान्तिकारी है। सिमरी गाव की आबादी लगभग १५००० है। ७ गाव मिलाकर यह एक गाव बना है। इसीलिए इसे सातसिमरी' कहते हैं। यह बहुत ही प्राचीन क्षेत्र है। स्वामी सहजानन्द सरस्वती का प्रमुख कार्यक्षेत्र रहने के कारण सन् ४२ मे भी यहा प्रशसनीय काम हुआ था। यहां के युवकों ने क्रांति के इस दौर मे आरमर पर कब्जा करके दिखाया था। १८ मील का कच्चा रास्ता पार करके यहां लोग पहुच सकते है अर्थात यातायात की सुविधा यहां नहीं है। क्रांति-काल मे लोग इसे वरदान मानते हैं, क्योंकि सरकारी 'कुमुक' यहां बमुश्किल ही पहुचती है और शांति काल मे यहां लोग इसलिए रहते हैं कि व्यापारी भी आसानी से लूट करने यहां तक नहीं आ पाते। सातसिमरी का इतिहास पुराणकाल से अभी तक क्रांतिकारी ही रहा है। राम ने ताड़का-वध यहीं किया था। इसे परशुराम का क्षेत्र भी माना जाता है। १८५७ मे प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कुंवरसेन ने इसे अपनी विशेष कार्यस्थली के रूप मे अपनाया था।

क्रान्तिकारियों की यह परम्परा अभी तक बन्द नही हुई है। बल्कि कहा जा सकता है कि अधिक जाग्रत हुई है। यहा के बूढे भी आंखों मे क्रांतिकारियों की सी चमक लिये हुए दिखाई देते हैं।

जातीय दृष्टि से इस क्षेत्र मे ब्राह्मणों का निवास माना जाता है।

सत्तारूढ कांग्रेस दल और सी० पी० आई० के लोगो ने इसी आधार पर यहा जो आंदोलन चल रहा है उसे एक जाति विशेष का आन्दोलन कहा है। इस आरोप को सुनकर यहा के एक निवासी, जो अपनी सोच-समझ और कार्यशीलता के लिए प्रसिद्ध हैं, तथा एक कालेज मे प्राध्यापक हैं हसने लगे। उन्होने कहा कि हम घोर जातिवादी ही सही कम्युनिस्ट और कांग्रेस वाले ये और जान लें कि दियरा गाव भी हमारे क्षेत्र मे ही आता है। जयप्रकाशजी दियरा के हैं। इसलिए अगर व लोग चाहे तो हमे कुनबापरस्त भी कह सकते हैं। हम इनका तमगा मानते हैं।

पाठकों को इन विशेष विवरणों से सभवत: इस झूठ को समझने मे सफलता मिलेगी कि जे० पी० का आन्दोलन ठप्प हो गया है। यह समय धान रोपाई का समय है। ज्यादातर किसान इस वक्त व्यस्त हैं। सितम्बर के अंत तक वे काम से मुक्त हो जायेंगे। और तब बिहार का आंदोलन क्या रूप लेता है, नहीं कहा जा सकता। बहरहाल, हम पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे हर सप्ताह प्रकाशित होनेवाले इन पृष्ठो को ध्यान से पढें और देखें कि जन-जागृति का क्या अर्थ होता है। स०

यहा १ अगस्त से सरकार ठप्प करने का कार्यक्रम पूरे वेग से चल रहा है। रोजाना प्रखण्ड कार्यालय को ठप्प करने मे गिरफ्तारियां हो रही हैं। सिमरी गाव के अलावा आस-पास के गावों से रोजाना सत्याग्रही आते हैं, उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाता है और सभा के बाद उन्हे कार्यालय पर पिकेटिंग के लिए भेजा जाता है। इसी क्रम मे दिनाक ५ अगस्त को पिकेटिंग के समय साथ मे आयी जनता और छोटे बच्चो के ऊपर लाठी चार्ज किया गया। लाठी चार्ज से जनता मे उत्तेजना आयी, उन्होंने सभी पुलिस अधिकारियों, बी० डी० ओ०, एस० डी० ओ० आदि को घेर लिया किन्तु युवक नेताओ ने जनता को शांत किया कि हमारे नेता का आदेश है कि हम मार खायेंगे लेकिन मारेंगे नही, और मानेंगे नहीं। यह हमारी पद्धति है। दूसरे दिन से और बडी सख्या मे सत्याग्रहियो के साथ जनता एकत्रित होने लगी। अधिकारियों ने अधिक फोर्स को इकट्ठा किया। लाठी चार्ज का जनता ने शांतिमय प्रतिकार, प्रशासन से सम्पूर्ण असहकार का किया। फलस्वरूप ७ अगस्त को प्रशासन के किसी अधिकारी व कर्मचारी को बाजार से किसी भी कीमत पर कोई भी सामान नही मिला, यहा तक कि चायवालो ने चाय नही दी, हजामत वालो ने हजामत नही बनाई। राशन का एक दाना भी नही मिला। सिमरी ग्राम जिसकी अपनी आबादी ही करीब १५ हजार है यहा से बडी तादाद मे सत्याग्रही आते हैं। इस गाव के अलावा मैं आस-पास के ५ गावो मे घूमा। मैंने देखा कि ठीक सिमरी की ही भांति उन गॉंवों में भी सगठन और शक्तिमत्ता है। सिमरी क्षेत्र की जनशक्ति को देखकर मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि इस क्षेत्र मे जन आंदोलन, जनविद्रोह के किनारे पर पहुच गया है। कार्यकर्ता और जनता की हुई सभाओं मे यह निर्णय किया गया कि अब प्रखड ठप्प करो मे रोजाना अधिक से अधिक ५ सत्याग्रही हिस्सा लें और शेष शक्ति का अन्य क्षेत्रों म भी उपयोग किया जाय। तरुण नेताओ ने २०, २५ छात्रों व तरुणों को छापामार दस्ते के रूप मे सगठित करने का काम शुरू कर दिया है। उनकी योजना है कि रोजाना किसी न किसी प्रखण्ड कार्यालय को या सरकारी कार्यालय को अचानक छापामार कर बन्द करेंगे और दूसरे दिन दूसरी तरफ दूसरे क्षेत्र मे निकल जायेंगे। इस प्रकार इस क्षेत्र मे छात्रों, तरुणों और नागरिकों का सयुक्त क्रान्तिकारी मोर्चा बन गया है। छोटे-छोटे बच्चे रोजाना ही गाव की गलियो

में इन्कलाब जिन्दाबाद, लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद के नारे लगा रहे हैं। मुझे सूचना मिली है कि इसी प्रकार की कुछ तैयारी राजपुर प्रखण्ड में चल रही है। किन्तु वहां जाने का मौका नहीं मिला। १४ तारीख को बक्सर में जन प्रदर्शन हुआ, १५ अगस्त को आंदोलन कारियों पर लाठी चार्ज हुआ। जिला कार्यालय अभी तक व्यवस्थित नहीं हो सका है। आरा के छात्र नेताओं की गिरफ्तारी व भूमिगत हो जाने के कारण दूसरे रैंक छात्रों की है जो आरा में शराब की दुकानों पर धरना देती है। जिले के सभी प्रखण्डों में अभी तक तदर्थ समितियों का सगठन नहीं हो सका। जनसंघर्ष समिति में अभी ऐसे कार्यकर्ताओं का अभाव है जो प्रखण्ड स्तर पर गावो में पूरा समय देकर सगठन और आंदोलन का काम आगे बढ़ा सकें। अभी तक शहरों में छात्रों का काम शराब की दुकानों पर धरना देना और प्रखण्डों में जहां तहां सरकारी काम ठप्प करने की ओर विशेष है। विधायकों से त्यागपत्र दिलाने के लिए आंदोलनकारियों का ध्यान नहीं है। जनसभाओं में त्यागपत्र की माग की जाती है। बक्सर छात्र संघर्ष समिति अभी तक बटी हुई थी, अब सर्वसम्मति से एक सयोजक चुना है। उम्मीद है कि आगे काम ठीक चलेगा। कुल मिलाकर भोजपुर जिले मे कहीं-कहीं काम बहुत अच्छा है, कहीं बिलकुल नहीं, व्यवस्थित कार्यालय और एक्शन प्रोग्राम की ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

जिला रोहतास:—दिनाक १४ से १८ तक इस जिले में घूमा। रोजाना जनसभा और कार्यकर्ता मीटिंग की। कुदरा प्रखण्ड मे जनसघर्ष समिति के माध्यम से एक राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन बुलाया गया जिसमे मुख्य चर्चा का विषय था कि अब समय आ गया है कि जनआंदोलन को सफल बनाने के लिए राजनैतिक पक्षो को समाप्त किया जाय क्योंकि इस आंदोलन से एक नयी राजनीति का जन्म हो रहा है। इस विचार के प्रेरक थे पुराने समाजवादी नेता श्री शिवपरीक्षासिंह, भभुआ और मुख्य प्रवक्ता थे विधान सभा से त्यागपत्र देने वाले समाजवादी श्री सच्चिदानन्दसिंह। २ दिन की बहस के बाद निर्णय लिया गया कि यह सम्मेलन राजनैतिक कार्यकर्ताओं से अपील करता है कि जिनको यह

महावीर सिंह
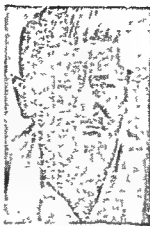
विचार पसन्द हो वे व्यक्तिगत रूप से दलों से मुक्त होने की घोषणा करें। चूंकि यह व्यक्तिगत अपील के रूप मे प्रस्ताव था इसलिए कुछ साथियों के विरोध के कारण प्रस्ताव के रूप में पारित नहीं किया गया लेकिन इस विचार के प्रेरक श्री शिवपरीक्षा सिंह ने समाजवादी दल से त्यागपत्र की सार्वजनिक रूप से घोषणा की। उनके साथ-साथ भभुआ अनुमडल के अनेक समाजवादी कार्यकर्ताओ ने अपनी दलबन्दी की घोषणा की। सगठन कांग्रेस के भूतपूर्व विधायक श्री रामअशीर्वादसिंह तथा श्री जगबहादुरसिंह जो उस अनुमण्डल में सगठन कांग्रेस के कर्णधार हैं, उन्होंने भी सार्वजनिक सभा में सगठन कांग्रेस से त्यागपत्र देने की घोषणा की। इस सम्मेलन की यह विशेष उपलब्धि हुई कि भभुआ अनुमडल मे दलविहीन राजनीति का व्यापक वातावरण बना है।

१५ अगस्त को गांधी मैदान कुदरा मे राष्ट्रीय ध्वज फहराने की यह परम्परा थी कि वहां बी० डी० ओ० राष्ट्रीय झण्डा फहराता था, मगर इस बार कार्यकर्ताओ के व जनता के प्रयास से बी. डी. ओ को झण्डा नहीं फहराने दिया गया। कदरा ग्राम के मुखिया ने जनता की राय से राष्ट्रीय ध्वज फहराया। झण्डा फहराने के समय बी. डी. ओ. साहब आ चुके थे, पुलिस गार्ड सलामी के लिए आयी थी, लेकिन वहां के जनसघर्ष समिति के प्रमुख कार्यकर्ता श्री कृष्णमोहन रस्तोगी ने आगे बढ़कर झण्डे की रस्सी पकड़ ली और बी. डी. ओ को झडा फहरा रोका। इस पर बी. डी. ओ ने गार्ड को आदेश दिया कि इन लोगों को गिरफ्तार किया जाय। गार्ड ने झडा स्थान पर एकत्रित लोगों को घेर लिया। बात आगे बढ़ी जनता में उत्तेजना बढ़ती देखी तो चकबन्दी अधिकारी ने बीच-बचाव किया और फलस्वरूप जनता की राय से गाव के मुखिया ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। इसके बाद हाई स्कूल के मैदान में लोकस्वराज्य दिवस मनाया गया इस कार्यक्रम के तुरन्त बाद मैं नासीरगज जो जे० पी० का जन्मस्थान बताया जाता है, लोकस्वराज्य दिवस सभा मे भाग लेने पहुंचा। चार घण्टे हजारों की तादाद मे लोगो ने सभा की कार्यवाही मे हिस्सा लिया। १६ अगस्त को बिक्रमगंज, शाम को डालमियानगर में छात्र एव जनसघर्ष समिति के साथियो से सगठन और आंदोलन के सबन्ध में चर्चा की। १७ को नोखा की जनसभा में शामिल हुआ। १८ को जिला सघर्ष समिति की बैठक सासाराम मे भाग लिया।

रोहतास जिले में सहयोगी राजनैतिक दलों विशेष कर समाजवादी कार्यकर्ताओं की बहुत बड़ी शक्ति है लेकिन यह शक्ति अभी तक सगठित रूप से सक्रिय नहीं हो सकी है, इसलिए कोई एक्शन प्रोग्राम सुचारू रूप से नहीं चल रहा। छिट पुट जैसे ६ अगस्त, १५ अगस्त इन दिनो में कहीं-कहीं सरकारी काम ठप्प करो कार्यक्रम लिये गये हैं। जिला कार्यालय की व्यवस्था अभी तक नहीं हो सकी है। जनसंघर्ष समिति की बैठकें नियमित होती हैं। जिले की शिथिलता पर १८ तारीख की बैठक मे साथियो ने गम्भीरतापूर्वक विचार किया और यथाशक्ति एक्शन प्रोग्राम लेने की योजना बनायी। पहली बैठक मे समिति ने शराब की दुकानों पर धरना और सिनेमा बन्द करने की योजना बनायी थी किन्तु श्री विपिनबिहारी सिन्हा के द्वारा पटना से मिली सूचना के अनुसार जानकारी मिली कि अभी सिनेमा पर धरना न देने का तय किया गया किन्तु शराब की दुकानो पर धरना दिया जायगा और जहां शक्ति होगी वहां प्रखण्ड कार्यालय आदि को ठप्प किया जायेगा। जिला समिति के पास अभी तक कोई केस नहीं इसलिए भी कार्यालय →

→
और काम में कुछ रुकावट है जबकि इस जिले में अभी पिछली किस्त में करीब ३५ हजार कूपन आये और इस बार फिर २५ हजार के कूपन दिये गये हैं। पिछले कूपन जो वितरित किये गये हैं उनका हिसाब-किताब कोषाध्यक्ष को नहीं मिला। संघर्ष कार्यालय से जिला सर्वोदय मण्डल को तकादा किया जाता है इस लिए जब वे हिसाब की मांग करते हैं तो आपसमें विवाद खड़ा होता है। केन्द्रीय समिति के निर्णय के अनुसार जिला समितियों को ही कूपन जाने चाहिए लेकिन अभी भी छात्र संघर्ष कार्यालय से सीधे कूपन जा रहे हैं इस लिए आपस में काफी विवाद है। जनसंघर्ष समिति की बैठक में जे. पी. के दौरे पर विचार किया गया जिसमें भभुआ, विक्रमगंज, सासाराम, डालमियानगर आदि में कार्यक्रम बनाने का सोचा गया। श्री विपिनबिहारीजी की सूचना के अनुसार बताया गया कि डालमिया नगरके समस्त मजदूरों से एकदिनकी मजदूरी देने की प्रार्थना की जाय। इसके लिए सभी राजनैतिक पक्षों के प्रमुख तथा श्री बसावन सिंह व संघर्ष कार्यालय की ओरसे श्री आचार्य राममूर्ति के साथ एक बैठक ३० तारीख से पहले की जाय। यदि ये योजना सफल होगी तो करीब एक लाख की थैली भेंट की जा सकती है। इसके अलावा जिले में भी जे. पी. जहां-जहां जायेंगे, थैली भेंट की जाय। जिले में सहयोगी राजनैतिक दलों की बहुत बड़ी ताकत होते हुए भी अभी तक प्रखण्ड स्तर पर कोई कार्यक्रम नहीं चल रहा। यहां जिला कार्यालय को व्यवस्थित करना है तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओं की शक्ति को संगठित करना व सक्रिय बनाना है। सर्वोदय कार्यकर्ताओं की शक्ति कम है व साधन भी नहीं। इस बार के दौरे में जगह-जगह साथियों से चर्चा करने पर ये फिर तय किया गया है कि प्रखण्ड स्तर पर लोक संगठन व आंदोलन का काम करेंगे। डालमियानगर के छात्र जो शुरू में करीब ३५ गिरफ्तार किये गये थे छूटकर आ गये है। उन्होंने अपना काम फिर शुरू किया है। कुछ छात्र कार्यकर्ताओं ने देहात में भी घूमने का कार्यक्रम बनाया है।

—महावीरसिंह

कस्तूरबाग्राम में कृषि परीक्षण

कस्तूरबा ट्रस्ट द्वारा संचालित कृषि-क्षेत्र के अन्तर्गत पिछली १ जुलाई से ग्रामीण किसान नवयुवकों के लिए कृषि प्रशिक्षण शुरू हुआ। प्रशिक्षण में देश भर के तरुण किसान भाग ले सकते हैं। फिलहाल ८ किसान युवक प्रशिक्षण ले रहे हैं जिसमें ४ मध्यप्रदेश २ बिहार १ महाराष्ट्र तथा १ पंजाब का सम्मिलित है। एक सत्र में कुल दस प्रशिक्षणार्थी लिए जाते हैं, प्रशिक्षण अवधि है छः मास की प्रशिक्षणार्थियों के लिए १०० रुपया मासिक छात्रवृत्ति भी दी जाती है।

इसके अलावा कस्तूरबाग्राम में छः माह की अवधि का प्रौढ़ साक्षरता शिक्षक प्रशिक्षण भी चल रहा है। इसमें २७ प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हैं। स्मरणीय है कि पश्चिम निमाड़ जिले की सेंधवा तहसील में निवासी आदिवासी क्षेत्र के १०० गांवों में कस्तूरबा ट्रस्ट द्वारा व्यावहारिक साक्षरता का कार्यक्रम उठाया गया है।

पुस्तकें

मानस मुक्तावली, श्री रामकिंकर उपाध्याय के रामचरितमानस सम्बन्धी प्रवचनों का संग्रह ■। यह एक लम्बी योजना है जिसके दो खण्ड छपकर सामने आ चुके हैं। पण्डित-प्रवर रामकिंकर ने मानस से कुछ मोती चुने हैं और उन्हें अपनी रसज्ञवाणी के सूत्र में पिरो दिया है। देश में इस समय श्री रामकिंकर से अधिक अधिकारपूर्ण वाणी में रामचरित मानस पर प्रवचन करनेवाले व्यक्तित्व दुर्लभ हैं, कदाचित हैं ही नहीं। मानस चतुःशताब्दी वर्ष के संदर्भ में प्रकाशित विपुल साहित्य के बीच ये दोनों खण्ड गौरीशंकर के शिखर के समान शोभायमान हैं। इनका जितना आरोहण किया जाय उतना कम है। आशा है प्रकाशक बिरला अकादमी आफ आर्ट एण्ड कल्चर, १०८। १०९ सदर्न एवेन्यू, कलकत्ता अन्य खण्डों को भी जिज्ञासु और पिपासुओं के लिए यथासम्भव शीघ्र पुस्तकाकार प्रस्तुत करके पुण्य और कृतज्ञता का लाभ करेगी। प्रत्येक खण्ड का मूल्य २५ रु० रखा गया है, जो पुस्तक के आकार और नयनाभिराम रूप को देखते हुए स्वल्प ही है।

प्रभा-स्मृति, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, —घाट वाराणसी द्वारा बहन प्रभावती की ति को अमर करने के विचार से प्रकाशित ता है। पुस्तक में प्रभावतीजी के संस्मरण, हैं दी गयी श्रद्धांजलियां, स्वयं उनके द्वारा लखी गयी डायरी के कतिपय पृष्ठ, उन्हें लखे गये कमला नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, राजेन्द्र प्रसादजी और स्वयं बापू और विनोबा के पत्रों के संकलन के साथ-साथ कुछ अन्य पत्र और दुर्लभ चित्र हैं। दीदी की जीवन-यात्रा खण्ड में निर्मला देशपाण्डे ने एक अनूठा स्मरणीय अध्याय जोड़ा है और सारी स्मृति के अन्त में सुशीला सिन्हा ने महिला चर्खा समिति के इतिहास और प्रगति को लेखबद्ध किया है।

दादा धर्माधिकारी के शब्दों में, गांधी युग में जो कल्याण इस देश में हुई उनमें पवित्रता, निर्भयता और समर्पणशीलता की, इस दृष्टि से मैं समझता हूं कि प्रभावतीजी का जीवन अप्रतिम था। उनमें श्रद्धा का समर्पण जितना होता गया, आत्मनिष्ठा उतनी ही प्रभावित होती गयी, उज्ज्वल होती गयी। इसमें सन्देह नहीं कि ग्रंथ प्रभा-स्मृति प्रभा-बहन के समूचे व्यक्तित्व को बड़े सुन्दर और पठनीय रूप में प्रस्तुत करता है। रायल साइज की ३०० पृष्ठ की इस सुन्दर पुस्तक के तीस रुपये दाम सर्वथा उचित है। इससे प्राप्त होनेवाली प्रेरणा को तो कूता नहीं जा सकता।

सप्त-सरिता, सस्ता साहित्य मंडल द्वारा काकासाहेब कालेलकर के उन निबन्धों का संग्रह है जो देश की वास्तविक लोकमाताओं अर्थात हमारी सुर सरिताओं के बारे में लिखे गये हैं।

यद्यपि पुस्तक में जिन सरिताओं का वर्णन है, वे संख्या में अनेक हैं किन्तु काकासाहेब ने पुस्तक का नाम सप्त-सरिता ही रखा है। सप्त-सिन्धु, सप्त-द्वीप, सप्त-सरिता सप्त-भुवन आदि हमारे यहां प्रचलित हैं। सूर्य के घोड़े भी सात ही कहे गये हैं। सप्त का हमारे धार्मिक साहित्य में बड़ा महत्व है। सप्त-श्लोकी गीता, सप्त-श्न की रामायण और सप्त-श्लोकी भागवत सर्वविदित ही है। यद्यपि गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिंधु और कावेरी ये सात सरिताएं ही पूजा के समय पुकारी जाती हैं, किन्तु काकासाहेब तो वास्तव में प्रकृति पुत्र हैं। उन्होंने ब्रह्मपुत्र, तुंगभद्रा, ताप्ती और यहां तक कि मार्कण्डी जैसी छोटी किन्तु अत्यन्त पवित्र मानी जानेवाली हमारी नदियों को भी बड़े स्नेह के साथ इस पुस्तक में स्थान दिया है। मार्कण्डी को उन्होंने सखी मार्कण्डी कहा है और उसके साथ अपने व्यक्तिगत सम्बन्ध का स्नेह से वर्णन किया ■। एक परिशिष्ट देकर काकासाहेब ने हिमालय, अरावली, विन्ध्याचल, सह्याद्रि, मलय, महेन्द्र और शुक्तिमान पर्वत में से उद्गम पानेवाली नदियों के नाम लेकर पुस्तक को और भी परिपूर्ण बना दिया है। ये सारे नाम उन्होंने भारतीय शब्दकोष से लिये हैं। साहित्यधारा को काकासाहेब कालेलकर द्वारा अर्पित अनन्त पुष्पों में यह पुष्प कल्दम कमल की तरह तैरता हुआ दिखायी देगा। इस पुस्तिका का मूल्य तीन रुपये है।

स्वतंत्र भारत की झलक भी मण्डल से प्रकाशित श्रीमती ज्ञानवती दरबार के नाम लिखे गये भारत ■ प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र-प्रसाद के पत्रों के अंश हैं। श्रीमती दरबार ने पत्रों में से उन्हीं अंशों को छांटा है जो स्वराज्य के बाद के भारत की राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक झांकी विशद रूप से प्रस्तुत करते थे। इन पत्रों को पढ़कर इस बात की प्रतीति होती है कि राजेन्द्रबाबू देश की छोटी-बड़ी हर बात के प्रति जागरूक थे और इसके साथ ही साथ यह बात भी स्पष्ट होती है कि पत्रों के माध्यम से हल्की से हल्की बातें कितनी सरलता के साथ कही जा सकती हैं। देश की आज की परिस्थिति समझने के लिए भी ये पत्र बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं, क्योंकि आजाद होने के बाद से अब तक देश ने अगर किसी दिशा में तरक्की की है तो वह दिशा अमीर की अमीरी और गरीब की गरीबी है। राजेन्द्र बाबू का हरेक पत्र किसी न किसी रूप में इस परिस्थिति को चित्रित करता जान पड़ता है। पुस्तक की पृष्ठ संख्या ३३८ और मूल्य अजिल्द के आठ रुपये और सजिल्द के दस रुपये हैं।

जीवन भाष्य, पुस्तक में जे० कृष्णमूर्ति के ८८ प्रवचनों का सरल और प्रवाहमय भाषा में अनुवाद है। अनुवादक हैं श्री जमनालाल सेठ

जे० कृष्णमूर्ति के विचार आज सारे संसार में निकट विचारणीय बने हुए हैं। उनके प्रवचनों का कोई भी रूपान्तर अभी तक हिंदी में अप्राप्य था। जमनालालजी जैन ने यह अनुवाद सीधे अंग्रेजी से प्रस्तुत न करके मराठी अनुवाद जीवन-भाष्य के आधार पर किया है। श्रीमती विमला देशपाण्डे और भाई जमनालाल दोनों ही इस अभ्यावादक काम को पूरा करने के लिए समस्त हिंदी जगत के निरन्तर कृतज्ञता के पात्र हैं। आशा है कि इस पुस्तक का सर्वसाधारण पुस्तकों के मुकाबले में बहुत अधिक प्रचार होगा। डिमाई साइज की ८०० पृष्ठों का आठ रुपया मूल्य नहीं के बराबर माना जाना चाहिए।

समाचार

वन बचाओ अभियान

वन-विनाश से उत्पन्न परिस्थिति पर विचार करके २० और २१ को गरुड़, जिला अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड के रचनात्मक कार्यकर्ताओं और सर्वोदय सेवकों ने यह निश्चित किया कि सारे हिमालय क्षेत्र की और मुख्यतः उत्तराखण्ड की मुख्य सपदा वन हैं, इसलिए इस क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए यहा के विकास का कार्यक्रम वन-केन्द्रित होना चाहिए। इसके लिए कम से कम अगले पाच वर्षों के लिए उत्तराखण्ड में वन-सपदा के दोहन का कार्यक्रम—वनों की कटाई आदि को तुरत रोक दिया जाये और इस बीच वन-सपदा व वनों के रोपण की नई व्यवस्था के लिए कार्य किया जाये। ठेकेदारी प्रथा अविलम्ब समाप्त की जाये और जहां वन-सपदा का दोहन अत्यावश्यक हो, जगलों की कटाई व अन्य कार्य सीधे श्रमिकों के द्वारा कराये जाय। वन-श्रमिकों को न्यूनतम मजदूरी की गारण्टी दी जाये, जैसे चिरान के लिए १०, रु. प्रति स्लीपर, ढुलान के लिए ६० पैसा प्रति चौकी और लीसा गढान के लिए ४५ रु. प्रति क्विटल।

इस बात पर भी जोर दिया गया कि वन-सपदा का वास्तविक सरक्षण तो तब ही हो सकता है कि जब वनों का प्रबन्ध ग्राम, विकास-क्षेत्र और जिला स्तर की जन-प्रतिनिधि-पचायतराज संस्थाओं को सौंपा जाये और वनाधारित छोटे उद्योग माल के स्रोतों के निकट हों। वनों की सुरक्षा के लिए जन-जागृति हेतु लोकशिक्षण आवश्यक है। इसके लिए वनप्रधान क्षेत्रों में पदयात्राएं और यदि आवश्यक हो तो 'चिपको' आन्दोलन चलना चाहिए। यह निर्विवाद है कि इस प्रकार के आन्दोलन पक्षमुक्त और सत्य, अहिंसा व संयम पर आधारित होगे।

कौआकोल में स्वागत सभा

दुर्गामडप, कौआकोल में २० अगस्त ७४ ३ बजे अपरान्ह पाच सौ व्यक्तियों का एक मौन जुलूस सरकारी कार्यालयों एवं बाजार की सड़क से घूमता हुआ दुर्गा स्थान पर पहुंचा और सभा के रूप में परिणत हो गया जिसमे पाच हजार व्यक्ति उपस्थित थे। अध्यक्षता श्री सीताराम साव ने की। विधानसभा के सामने सत्याग्रह करके जेल से लौटे हुए सत्याग्रहियों का स्वागत किया गया एवं लोक-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, इस संकल्प को श्री उदितनारायण चौधरी ने सभा के सामने रखा जिसे सभी लोगों ने दुहराया। इसके बाद दो भूतपूर्व विधायकों सर्वश्री गौरीशकर केसरी एव शिवनन्दन झा ने अपने भाषण में श्री जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में चल रहे आंदोलन को सफल बनाने के लिए करबन्दी, शराबबन्दी के कार्यक्रम को गांवों में प्रसारित करने की आवश्यकता बताई तदुपरात श्री उदित नारायण चौधरी ने गोविन्दपुर निर्वाचन क्षेत्र के विधायक द्वारा जनता का विश्वास खोने के कारण इस क्षेत्र में चुनाव कराने की मांग सम्बन्धी प्रस्ताव रखा जो सर्वसम्मति से पारित हुआ। छात्र नेता श्री आदित्य कश्यप ने कौआकोल में गत १५ अगस्त को स्थानीय प्रखड विकास अधिकारी द्वारा सशस्त्र पुलिस की मदद से सभा के पूर्व श्री उदित नारायण चौधरी एव छ छात्रों को गिरफ्तार करने, गिरफ्तारी के समय उनमें से तीन छात्रों को थप्पड़ों एवं कुन्दे से बर्बरतापूर्वक मारने की भर्त्सना एव इस दुर्व्यवहार पर न्याय की माग सम्बन्धी प्रस्ताव उपस्थित किया जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

कानपुर का तरुण पटना में गिरफ्तार

कानपुर तरुण शान्ति सेना के सदस्य ओमप्रकाश पाण्डे २८ अगस्त को पटना में शराबबन्दी सत्याग्रह में गिरफ्तार कर लिये गये हैं। पाण्डे तथा जगदीश नारायण कानपुर तरुण शान्ति सेना के दो ऐसे सदस्य हैं जो बिहार आन्दोलन में काम करने गये हैं और जिन्होंने अपनी लगन और निष्ठा से सबको प्रभावित किया है, जगदीश भाई गया जिले में अच्छा काम कर रहे हैं। उन्होंने पटना आते समय उन्हें दिये गये सर्व के पचास रुपये साहित्य बिक्री की छूट में एकत्र करके वापस भेज दिये हैं और वहां इसी आधार पर स्वावलम्बी रहकर-कार्यरत हैं।

सर्वोदय पर्व मनायें

सर्वोदय पर्व के सबंध में सर्व सेवा सघ के अध्यक्ष श्री सिद्धराज ढड्ढा ने सभी प्रदेशों तथा जिला सर्वोदय मण्डलों से अपील की है कि हर वर्ष ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक, अर्थात विनोबा जयन्ती से गाधी जयन्ती तक की अवधि में देश भर में 'सर्वोदय पर्व' का आयोजन किया जाता है। इस पर्व की शुरुआत सन् १९६१ में साहित्य प्रसार के काम से हुई थी जिसे विनोबा ने 'शरदारम्भे-शारदोपासना' की संज्ञा दी थी। १९६३ से इस अवधि को समग्र दृष्टि से सर्वोदय आंदोलन के एक विशेष अभियान के तौर पर मनाने का तय किया गया था। हमारी कोशिश होनी चाहिए कि साहित्य बिक्री के अलावा सर्वोदय विचार के प्रचार का सार्वत्रिक वातावरण इस अवधि में बने। हर वर्ष यह पर्व उत्तरोत्तर अधिक उत्साह से मनाया जाय ताकि विनोबा जयन्ती से गांधी जयन्ती तक का यह काल एक राष्ट्रीय पर्व बन जाय।

पर्व के दौरान चलाये जानेवाले कार्यक्रमों की रूपरेखा इस प्रकार है :—घर-घर पहुंचकर सर्वोदय-साहित्य की बिक्री तथा प्रसार सर्वोदय-विचार की पत्र-पत्रिकाओं तथा प्रकाशन विभाग की 'नमूना-योजना' के ग्राहक बनाना, इन उद्देश्यों की दृष्टि से गांवों और नगरों में पदयात्राओं का आयोजन, स्कूल, कालेजों में साहित्य-बिक्री, खादी भंडारों पर भी साहित्य बिक्री का विशेष प्रबन्ध, विनोबाजी की 'गीताई', 'तीसरी शक्ति' और जयप्रकाशजी की 'मेरी विचार-यात्रा' का विशेष प्रचार, साहित्य प्रदर्शनियों का आयोजन, रेल और बस-स्टेशनों, कारखानों, व्यवसायी फर्मों आदि में साहित्य-प्रसार।

उपवासदान

सर्वोदय पर्व में
उपवासदान का
संकल्प करें
आज ही फार्म भरें।

टिप्पणी

जरा ऊपर भी देखिए

खबर है कि बंगलूर में बैंक के एक चपरासी के घर आयकर अधिकारियों ने छापा मारा। चपरासी के घर छापा मारना, लोगों को एक विचित्र बात लगी। मगर विचित्रता का यह भाव एक आश्चर्य में बदल गया—आश्चर्य इसलिए कि उस चपरासी के घर एक लाख सोलह हजार रुपयों के नोट निकले।

चपरासी के पास यह बहुत-सा पैसा कहां से आया, इसका कोई जवाब चपरासी नहीं दे सका। पैसा खासतौर से छिपाकर रखा गया था। रसोईघर का धुआं निकलने के लिए बन चोंगे में यह जगह बनायी गयी थी। इस राशि में दस-दस और पांच-पांच के बारह बंडल थे। आयकर विभाग का कहना है कि चपरासी की आय के अन्य स्रोत भी थे और विभाग को आयकर और सम्पत्तिकर देनेवालों की सूची में उसका नाम भी है।

ख्याल है कि बैंक से रुपया उधार दिलाने █ मुआवजे में जो 'ऊपरी कमाई' होती थी, उसे वह इस प्रकार छुपा कर रखता था। अफवाह है कि यह 'ऊपरी' आमदनी उन ऊपरी आमदनी का एक नगण्य अंश ही है जो इस सिलसिले में उसके अन्य उच्च पदों पर पर बैठे हुए सहयोगियों के हिस्से में आती है। अब सवाल इतना ही है कि उन पर छापे डाले जायेंगे या नहीं। अफसरों के पास रसोईघर से बेहतर जगहें हैं। छापा डालने वाले आयकर अधिकारी पहले उन जगहों का सुराग लगा लें, तब आगे बढ़ें। छापा डालकर छोटी मछलियों को पकड़ने की पर्याप्त खबरें आती हैं। 'बड़ी मछलियां' जाल डालनेवालों और जाल की पहुंच आदि तमाम चीजों की काट जानती हैं।

करुणानिधि की नयी विधि

तमिलनाडु ने गांधी शताब्दी नहीं मनायी थी किन्तु अब वहां दो ऐसे काम किये गये हैं जिन्हें हर विचारशील आदमी सराहेगा। एक तो वहां शराबबंदी का निर्णय लिया गया है और दूसरे तय किया गया है कि नवंबर से तमिलनाडु में घुड़दौड़ एकदम निषिद्ध हो जायेगी।

शराबबंदी के खिलाफ जो तर्क दिया जाता है, वही अब घुड़दौड़ को बंद करने के खिलाफ भी दिया जा रहा है। हर अच्छे बुरे संगठन के अध्यक्ष आदि तो होते ही हैं। तमिलनाडु के घुड़दौड़ संगठन के अध्यक्ष कोई चिदम्बरम् हैं। उन्होंने अनेक आपत्तियां उठायी हैं जिनमें सबसे जोरदार यही है कि इससे तमिलनाडु की आय घटेगी और पड़ोसी राज्य जैसे आंध्र आदि की आमदनी बढ़ेगी। घुड़दौड़ के संगठनकर्ता अब अपना पैसा वहां लगायेंगे, कमायेंगे और उसका लाभ अन्य राज्यों को मिलेगा।

शराबबंदी के बारे में भी सदा ऐसी ही कुछ बातें कही जाती हैं कि लोग बाहर जाकर पीकर आयेंगे, गैरकानूनी शराब बनायेंगे और उससे जनता का स्वास्थ्य खराब होगा। हर चीज के लाभ और हानि की बातें शासनकर्ताओं को जनतंत्र में जनता का नाम लेकर ही करनी पड़ती हैं। खासकर तब, जब जनता की हानि बताकर कोई काम करने से अपना लाभ लिया जा सकता हो। देश की सारी राज्य-सरकारों ने 'जनता के स्वास्थ्य' आदि की आड़ में ही शराबबंदी खत्म की है। अब घुड़दौड़ में भी जनता आड़े ली जा रही है।

करुणानिधि अब तक कई बार गलत बातों को उठाकर उन पर अड़े रहे हैं। अबके बार वे शराब और घुड़दौड़ पर सही रुख अपना कर मजबूत बने रहेंगे।

खाने का तेल, दिखाने का तेल

अभी-अभी सिर्फ दो महीने हुए, सरकार ने कहा था कि खाने के तेल को बाहर से मंगाने की कोई जरूरत नहीं बची है। और अब खबर है कि सरकार ने २६,००० टन खाने के तेल के साथ-साथ १०,००० टन तिलहन भी बाहर से मंगाना तय किया है।

अभी तक बाहर से जो खाने का तेल मंगाया जाता है, 'वनस्पति' बनाने के विचार से खरीद की कीमत से कम कीमत पर वनस्पति घी बनानेवाली कंपनियों को दिया जाता था। वे वनस्पति घी के दाम बावजूद सस्ता तेल पाने के बढ़ाती चली जा रही हैं। अवश्य ही सरकारी स्वीकृति की मोहर तो उस पर होती ही है। कहा जा रहा है कि बाहर सोयाबीन और खजूर के तेल के दाम पिछले दिनों काफी गिरे हैं। नीति का यह परिवर्तन उन घटे हुए दामों को ही देख कर लिया गया है। 'वनस्पति-घी' बनानेवालों को अब पहले से भी कम दाम पर तेल दिया जा सकेगा और संभव ही क्या पक्का है कि वे हमें आज से भी बड़े दामों पर 'वनस्पति-घी' दें और सो भी, रुला-रुलाकर। यह बाहर से आनेवाला खाने का तेल भी कम-जर्फों की हद तक तो दिखाने का तेल ही साबित होगा।

राजनीतिक अर्थ और सिद्धार्थ

पश्चिम बंगाल के विश्वविद्यालय से सम्बंधित छात्रावासों में एक ऐसी समस्या है जो कदाचित देश के किन्हीं छात्रावासों में नहीं है। अनेक छात्रावासों में बरसों से ऐसे लोग जमे बैठे हैं जो 'बाहरी' हैं। ये 'बाहरी' तत्व जैसा कि भांपा जा सकता है, प्रायः असामाजिक हैं। छात्रावास में इनके बने रहने से जो वास्तविक छात्र वहां होते हैं, एक भयभीत जिंदगी बिताते हैं एक ओर 'विचित्र' तथा स्वाभाविक परिणाम इन महाशयों के यहां मुकाम फरमाने का यह हुआ है कि अनेक छात्रावासों में कोई शिक्षक 'सुपरइन्टेन्डेंट' होने को तैयार नहीं होते। अनेक छात्रावास लावारिस और बिना किसी देख रेख के किसी तरह चले जा रहे हैं।

इस परिस्थिति को समाप्त करना विश्वविद्यालय के अधिकारियों के बस की बात नहीं बच रही है। कारण इसका यह बताया जाता है कि ये 'बाहरी' लोग ऐसे राजनीतिक दल या दलों के व्यक्ति हैं, जिन्हें हाथ लगाना आसान बात नहीं है। दो बरस पहले 'गरीब-बन्द छात्रावास' तो इसी समस्या से निपटने के ख्याल से बन्द ही कर दिया गया था। मगर इस मामले में कलकत्ता विश्वविद्यालय का हार्डिंज हास्टेल सबसे भयानक है। वहां तो फिलहाल दंगे भी हुए और कोई एक हफ्ता पढ़ाई लिखाई बन्द रही।

अलग-अलग छात्र-संगठन इन 'बाहरी' लोगों से सम्बद्ध हैं। कुलपति ने सिंडिकेट के सख्त प्रस्ताव के बाद अब राज्य के मुख्यमंत्री सिद्धार्थशंकर राय से इस पर चर्चा करने का निश्चय किया है। आशा है कम से कम इस मामले में सिद्धार्थशंकरजी राजनैतिक अर्थों और संदर्भों में नहीं अटके रहेंगे।

समाचार

भूमि वापसी सत्याग्रह

जहांगीराबाद, जिला कानपुर, तहसील घाटमपुर में कानपुर नगर की किराना व्यवसायी फर्म जगन्नाथ मन्नीलाल के मालिकों ने कई वर्ष पूर्व अनुचित ढंग से भूदान की करीब ७२ बीघा भूमि के पट्टे अपने परिवार के कई सदस्यों के नाम, जिनमें परिवार की महिलाएं भी सम्मिलित हैं, करा लिये हैं। जब स्थानीय भूमिहीनों, गरीबों, खेतिहर मजदूरों, हरिजनों को इसका पता चला तो उन्होंने ग्राम प्रधान तथा मुख्य व्यक्तियों द्वारा तत्कालीन अधिकारियों से इस अनुचित काण्ड की शिकायत की। जांच सरकारी स्तर से भली प्रकार की जा चुकी है। उत्तरप्रदेश व जिला भूदान यज्ञ समिति के अधिकारियों ने भी मौके पर जांच की और शिकायतों को सही पाया।

परिणामस्वरूप उत्तरप्रदेश भूदान यज्ञ समिति ने निश्चय किया कि इस भूमि को वापस लेकर गरीब भूमिहीन, साधनहीनों में वितरित किया जाय। प्रदेशीय भूदान यज्ञ समिति की ओर से सेठजी से निवेदन किया गया कि जिस ७२ बीघे भूमि के उन्होंने पट्टे करा लिये हैं वह भूदान समिति को वापस देकर गरीबों में उस भूमि को बटवाने में मदद करें।

सारे प्रयासों का परिणाम सेठजी की ओर से शून्य ही रहा है। भूदान यज्ञ समिति के पास अब उक्त भूमि को वापस करने हेतु सत्याग्रह का सहारा लेने के अतिरिक्त कोई चारा नहीं रहा है। अतः कानपुर जिला भूदान यज्ञ समिति उस भूमि को प्राप्त करने के लिए ७ सितम्बर १९७४ से सर्वोदय क्षेत्र में जन जागरण तथा ११ सितम्बर १९७४ से सत्याग्रह का कार्यक्रम प्रारम्भ कर रही है। उत्तरप्रदेश भूदान यज्ञ समिति के सदस्य तथा सर्वोदय कार्यकर्ता एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री ओमप्रकाश गौड सत्याग्रह का संचालन करेंगे।

दिल्ली में जन जागरण

राजघाट अहिंसा विद्यालय में २५ अगस्त को प्रातः साढ़े नौ बजे दिल्ली विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की एक बैठक बुलाई गयी जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के अतिरिक्त जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और अनेक स्थानीय कालेजों के विद्यार्थियों ने भाग लिया। निश्चय किया गया कि मंहगाई, जमाखोरी, रिश्वतखोरी आदि की समस्या दिल्ली में दूसरी जगहों की तरह ही व्यापक रूप से विद्यमान है और प्रमुख रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए भी आदमी को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ऐसी दिक्कतों से लड़ने का कोई न कोई विकल्प निकाला जाना चाहिए। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कालेजों और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों की ११ सदस्यीय समिति का चुनाव हुआ। निश्चय हुआ कि यह समिति कालेजों आदि में प्रशिक्षण शिविरों द्वारा युवकों में जागृति लाने और लोगों को संगठित करने का काम करेगी। यह भी निश्चय हुआ कि यह समिति नगरों में राहत का काम भी करेगी। इसी दिन दोपहर को दिल्ली प्रदेश गांधी स्मारक निधि द्वारा भी एक बैठक का आयोजन किया गया। अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखक श्री जैनेन्द्र कुमार ने और बैठक में बिहार आन्दोलन से उत्पन्न स्थिति पर विचार किया गया। मुख्य वक्ता आचार्य कृपलानी थे। बैठक में जनसंघ के श्री कवरलाल गुप्ता, श्रीमती सुन्दर, सेवाराम आर्य (स्वतंत्र पार्टी), कांग्रेस के श्री सी के नायर और लगभग अन्य ४० लोगों ने भाग लिया।

इसी संदर्भ में एक सितम्बर को एक बैठक पुनः आयोजित की गयी जिसमें आचार्य कृपलानी, श्री जैनेन्द्रकुमार एवं रूपनारायणजी की तीन सदस्यीय संयुक्त समिति (नवनिर्माण समिति) गठित की गयी और रूपनारायणजी से प्रार्थना की गयी कि वे विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों एवं संस्थाओं और दलों से सम्पर्क स्थापित करके जनसंघर्ष समितियों का गठन करें। बैठक में दिल्ली विश्वविद्यालय छात्रसंघ के सचिव हेमन्त बिश्नोई और जनतंत्र समाज के सचिव एस. डी. शर्मा भी थे। उल्लेखनीय है कि छात्रसंघ चुनाव में विजयी विद्यार्थी परिषद के उम्मीदवारों ने जयप्रकाशजी के आन्दोलन को समर्थन की घोषणा करके चुनाव लड़ा था और अब नागरिकों के सहयोग से राजधानी में जनजागृति का प्रयास किया जा रहा है।

नशाबन्दी

अखिल भारतीय नशाबंदी परिषद की कार्यकारिणी समिति तथा सामान्य समिति की दो दिवसीय बैठक २६ अगस्त १९७४ से सम्पन्न हुई। इस बैठक की अध्यक्षता परिषद की अध्यक्षा डा. सुशील नैयर ने की। विभिन्न प्रदेशों से आये हुए कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने एक प्रस्ताव पास करके १ सितम्बर १९७४ से तमिलनाडु में पूर्ण मद्यनिषेध को पुनः लागू करने के अवसर पर सामान्यतः तमिलनाडु की जनता और विशेषतः महिलाओं एवं नशाबन्दी कार्यकर्ताओं को बधाई दी और उक्त राज्य की उन महिलाओं की प्रशंसा की जिन्होंने राज्य में पुनः मद्यनिषेध लागू कराने के लिये संघर्ष किया है।

दूसरे प्रस्ताव में देश भर के 'स्वतंत्रता सेनानियों का आवाहन' किया गया कि वे अपने अपने क्षेत्रों में यथाशीघ्र पूर्ण मद्यनिषेध लागू किये जाने के पक्ष में प्रभावी जनमत जागृत करने की दृष्टि से अपना दायित्व निभायें।

एक अन्य प्रस्ताव में राज्य की जनता के जीवन स्तर को सम्पन्न बनाने की दृष्टि से राज्य में पूर्ण मद्यनिषेध की मांग के समर्थन में व्यापक स्तर पर शराब की दुकानों पर धरना देने के लिए बिहार की जनता और विशेषतः छात्रों तथा कार्यकर्ताओं को बधाई दी गयी और जिन स्वयंसेवकों ने शराब की दूकानों पर धरना देकर स्वयं को बंदी बनवाया और शांतिपूर्ण तरीकों को अपनाया उनकी विशेषरूप से प्रशंसा की गयी।

अन्त में अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद ने बिहार राज्य सरकार से अनुरोध किया कि वह समय न गवांते हुए बिहार में पूर्ण मद्यनिषेध की घोषणा करे जनता की मांग को स्वीकार करें। राज्य सरकार द्वारा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस व सीमा सुरक्षा दल का उपयोग कर मद्यनिषेध के पक्ष में शांतिपूर्ण और वैध आन्दोलन को हतोत्साहित करने के लिए अपनायी गयी दमन नीति का कड़ा विरोध भी किया गया। परिषद ने आशा प्रकट की कि बिहार के युवक सरकार द्वारा किये जा रहे दमन के बावजूद अपने आंदोलन को तब तक जारी रखेंगे जब तक कि राज्य में मद्यनिषेध लागू नहीं हो जाता और इस प्रकार वे देश के अन्य भागों के युवकों का भी मार्गदर्शन करेंगे।

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३२ शिलिंग या ५ डालर, इस अंक का मूल्य ६० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० जे० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार, १६ सितम्बर '७४
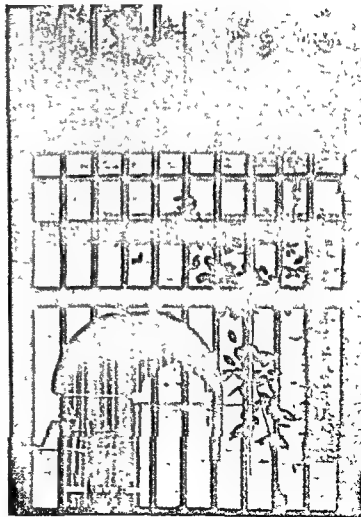
पगली घंटी, पागल लड़के,
पगलायी सरकार

भूदान-यज्ञ

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २०   १६ सितम्बर, '७४   अंक ५१

१९ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

भ्रष्टाचार बनाम शिष्टाचार

केवल गलत ढंग से पैसे कमाना ही भ्रष्टाचार नहीं है। ऐसा कोई भी काम, जो एक की कीमत पर दूसरा व्यक्ति अपना किसी न किसी प्रकार का लाभ करने की नीयत से करता है, भ्रष्टाचार है। जैसे हम किसी व्यक्ति को खुश करने के लिए उसे किसी जगह मुख्य अतिथि, अध्यक्ष की हैसियत से आमन्त्रित करते हैं, और खुश इसलिए करना चाहते हैं कि उसके हाथ में कई प्रकार की शक्ति है, वह चाहे तो हमारा भला कर सकता है और हमने अगर कुछ गलत काम कर लिया है तो उस पर इस प्रकार पोछा लगाना चाहते हैं। या समझिए किसी मंत्री या उसके समकक्ष व्यक्ति का धूम-धाम से जन्म दिवस मनाते हैं या उसके जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में अभिनन्दन ग्रन्थ निकालने में जुट जाते हैं। यह और अन्य इसी प्रकार के कामों को लोग भ्रष्टाचार नहीं कहते, किन्तु ये अच्छे खासे भ्रष्टाचार हैं।

एक और इससे भी भयानक भ्रष्टाचार वह है जब हम समस्त शिष्टाचार को ताक पर रखकर ऐसे किसी ठीक आदमी की बुराई करने में जुट जाते हैं, जिसकी बुराई करने से शक्ति-सम्पन्न कोई व्यक्ति या संस्था हमसे खुश होकर किसी न किसी प्रकार के इनाम इकराम से से उसका बदला चुका सके। इस प्रकार का भ्रष्टाचार जब किसी ऐसी संस्था के मुखपत्र के द्वारा हो जो किसी देश की लगभग सब से शक्ति-सम्पन्न संस्था हो तो इस प्रकार के भ्रष्टाचार की घनिष्ठता और उससे होनेवाले लाभ या नुकसान को मापना मुश्किल हो जाता है। हम उत्तरप्रदेश कांग्रेस के मुखपत्र 'नया भारत' का महीनों से जो रवैया देख रहे हैं, वह इसी दरजे का है। उसकी सम्पादकीय टिप्पणियां और उसमें छपनेवाली साधारण से साधारण बातों में भी इस बात का ख्याल रखा जाता है कि जयप्रकाश नारायण का जितनी तरह से बने चरित्र हनन किया जाये। उसके ८ जुलाई के अंक से कुछ अंश हमारे पास एक मित्र ने भेजे थे। हम सोच रहे थे कि कीचड़ में पत्थर फेंकने की प्रक्रिया में न पड़ें। इसीलिए चुप थे। मगर इस बीच नया-भारत के सम्पादक ने कुछ कवि भी जुटा लिये हैं और जो व्यंग के नाम पर जयप्रकाश को खुली गालियां दे रहे हैं और लोग परेशान हैं कि कांग्रेस जैसी किसी काल की शालीन संस्था कहां तक उतर सकती है।

उत्तरप्रदेश के लब्ध-प्रतिष्ठ और समस्त हिन्दी जगत के जानेमाने श्रीनारायण चतुर्वेदी ने इस पत्र के अशिष्ट लेखन पर दिल्ली के सहयोगी 'लोकराज' में एक लम्बी और अत्यंत संयत टिप्पणी लिखी है, 'एक आधुनिक भजन' *जो उसके उन्तीस जुलाई के अंक में* प्रकाशित हुई है। हम 'लोकराज' को भी बधाई देते हैं कि जो बात किसी की दृष्टि में 'कांग्रेस का विरोध' तक हो सकती है अर्थात् कांग्रेस के मुखपत्र की अशिष्टता पर टिप्पणी प्रकाशित करना, उसने छापी। ज्यादातर समाचार-पत्र खतरा उठाने की जरा-सी गंध हो तो या तो साफ टाल जाते हैं या फिर उसे बहुत बचाकर छापते हैं। 'आधुनिक भजन' का शीर्षक है 'जय सर्वनाश नारायण'। हम, वहां तो पूरा छपा है, यहां केवल पहला पद दे रहे हैं :

"दुखीजनों के दुख से कमाया धन जि
हरबार।
जिसके मुंह पर थूक रहा है देखो सब
संसार।
जनम-जनम का चोर बना बैठा है साहूकार।
परम धर्म है जिस पापी का अनर्थ अत्याचार।
ढूंढ लिया है आज फिर उसने एक नया
अवतार।
सर्वोदय से सर्वनाश बन जाने को तैयार।
जय सर्वनाश नारायण,
जय जय सर्वनाश नारायण।"

आगे के पदों को तो उद्धृत भी नहीं किया जा सकता। चतुर्वेदीजी ने पाठकों को नीचे गिरने की सीमा का पूरा अनुमान करा देने के विचार से पूरा पद दिया है और पद के पहले और फिर बाद में भी बड़ी व्याकुलता से इस पतन पर दुख प्रकट करते हुए अंत में अपील की है :

'हम प्रधान मंत्री, डा० शंकर दयाल शर्मा, अन्य केन्द्रीय नेताओं और विशेषकर पंडित कमलापति त्रिपाठी से (जो अभिजात्य शिष्टता की मूर्ति हैं, अनुभवी पत्रकार हैं और इस प्रांतीय कांग्रेस समिति के अत्यन्त प्रभावशाली सदस्य हैं) यह पूछना चाहते हैं कि क्या इस कविता के छापने से कांग्रेस की प्रतिष्ठा बढ़ी है? क्या यही उसकी शिष्टता का नमूना और मानदंड है? पाश्चात्य देशों में ऐसी चीजें छापनेवाले पत्र 'यलो प्रेस' (कुत्सित पत्र) कहे जाते हैं। क्या भारत [illegible] कांग्रेसी पत्र इस स्तर पर उतरने में अपनी शोभा समझते हैं?'

हम इसमें अब और क्या जोड़ें। चतुर्वेदी जी को धन्यवाद देते हैं और उनसे प्रार्थना करते हैं कि वे इस पर यदि किसी उचित *प्रतिक्रिया की आशा करते हैं, तो निश्चय ही* ऐसा आशान करें। सत्ता के नशे में भ्रष्टाचार ही अब शिष्टाचार बन चुका है, और तो और विनोबा ने इसे अलग संदर्भ में सही, किन्तु कहा है।

'भूदान-यज्ञ' के ८ और ९ सितम्बर के अंकों में पृष्ठ १६ पर 'इस अंक का मूल्य ६० पैसे' छप गया है। उसे कृपया ३० पैसे पढ़ें।

'चिपको आंदोलन' में नया अध्याय

सुन्दरलाल बहुगुणा

हर साल की तरह इस साल भी सितम्बर के प्रथम सप्ताह में उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से उत्तराखंड के पर्वतीय वनों की बिक्री कोटे की ओर से देहरादून और नैनीताल में नीलामी द्वारा हुई है। इस नीलामी में बड़ी संख्या में जंगलों का कारोबार करनेवाले देहरादून, हरिद्वार, यमुनानगर और इमारती लकड़ियों का व्यापार करनेवाले दूसरे नगरों के बड़े वनाधिकारियों का जमघट लगा। वन-संपदा से करोड़ों की कमाई करनेवालों के लिए यह महापर्व था जिसमें देहरादून और नैनीताल की विलास नगरिया ठेकेदारों द्वारा अधिकारियों की दावतों में डूब गयी थीं परन्तु पर्वतीय क्षेत्रों के जनसाधारण के लिए ये नीलाम केवल चीड़ के पेड़ों के ही नहीं सारे क्षेत्र की सुख और समृद्धि के नीलाम होते हैं। एक लोकनेता ने भरे हुए हृदय से मुझसे कहा, 'यह उत्तराखंड की नीलामी है, जिसमें सरकार और ठेकेदारों की हिस्सेदारी है।" परन्तु पिछले डेढ़ वर्षों से वन-संपदा की सुरक्षा के लिए उत्तराखण्ड में चलने वाले "चिपको आंदोलन" के आविष्कारक और प्रणेता सर्वोदय और रचनात्मक कार्यकर्ताओं का कहना है, "यह केवल उत्तराखण्ड ही नहीं सारे देश की सुख और समृद्धि की नीलामी है।" उत्तराखंड के वनों के साथ सारे देश का और खास तौर से गंगा और यमुना के उपजाऊ मैदान का भाग्य जुड़ा हुआ है। बाढ़ों से होनेवाली अरबों रुपयों की क्षति के एक साल के घाव भरने भी नहीं पाते कि अगले वर्ष पुनः दुगने वेग से बाढ़ आ जाती है। उत्तरप्रदेश और बिहार की बाढ़ों से इस वर्ष १ अरब २० करोड़ रुपये की फसल की क्षति हुई है।

वन-विभाग का तर्क है कि उसके द्वारा कटाये जानेवाले पेड़ वन विभाग के नियमों के आधार पर एक कार्ययोजना के अनुसार काटे जाते हैं और इसलिए उनसे बाढ़ का कोई खतरा है ही नहीं। परन्तु जबसे चमोली जिले में बेनाकूची की विनाशलीला हुई तो उसके आसपास के ग्रामीणों ने कहा कि, "हमारा अनपढ़ों विज्ञान यह कहता है कि इसी वर्ष पातालगंगा के आसपास के जंगल वन-विज्ञान के अनुसार कटे और हमारे लिए सर्वनाश का पैगाम लेकर यह बाढ़ आयी।" इसकी पुनरावृत्ति प्रायः सब पर्वतीय जिलों में हुई है। इस वर्ष "चिपको आंदोलन" के फलस्वरूप हुई जन-जागृति के कारण पर्वतीय जनता में वनों की सुरक्षा के प्रति जो उत्तरदायित्व की भावना पैदा हुई है उसका एक शुभ-परिणाम हुआ है। लोगों ने ठेकेदारों द्वारा काटे जानेवाले वनों की जाँच पड़ताल करनी प्रारम्भ कर दी है।

यमुना और टौंस की घाटियां भारत के सर्वोत्तम चीड़ के वनों के लिए प्रसिद्ध हैं। यमुना घाटी के पुरोला रेंज में डकाड़ा जंगल के लगभग ४ हजार चीड़ के सूखे व गिरे हुए पेड़ों की पिछले वर्ष नीलामी की गयी थी। जब जंगल में वास्तविक कटाई शुरू हुई तो खड़े पेड़ भी कटने प्रारम्भ हुए। रतेड़ी के जागरूक प्रधान कृपालसिंह ने इसका विरोध किया। सरकारको प्रार्थनापत्र भेजे, वनाधिकारियों से मिले, परन्तु कोई परिणाम न निकला। जून में जब अवैध कटाई चरम सीमा पर पहुंच गयी तो इसकी जाँच प्रारम्भ हुई और इस जाँच के अनुसार २६४५ पेड़ स्वीकृति से अतिरिक्त काटे पाये गये। वनों की सुरक्षा के लिए नियुक्त उच्चाधिकारियों का कार्यालय इस वन से केवल ६ किलोमीटर दूर है। अवैध ढंग से काटी गयी लकड़ियां वन-राजि कार्यालय के सामने से गुजरनेवाली सड़कों से ढोयी जाती रहीं। इससे यह स्पष्ट हो गया कि ठेकेदारी प्रथा के अन्तर्गत स्वीकृत संख्या से अधिक पेड़ काटना एक आम नियम हो गया है। और यह कार्य वनों की सुरक्षा के लिए नियुक्त अधिकारियों के सक्रिय सहयोग से और कहीं-कहीं तो साझेदारी से होता है।

यही कहानी चीड़ के पेड़ों से लीसा निकालने के लिए गहरे घाव करने के कारण होनेवाली तबाही की है। टौंस वन प्रभाग के देवता रेंज में १३ हजार गहरे घाव पाये गये। इनके कारण पेड़ या तो सूख जाते हैं या तेज हवा चलने पर टूट जाते हैं। इस प्रकार टूटनेवाले पेड़ों की संख्या प्रतिवर्ष हजारों तक होती है।

प्रत्यक्ष देखने से नीलामी की बोली, लीसा निकालने व गिरे हुए पेड़ों की बिक्री से सरकार को अच्छी आमदनी होती है, परन्तु यह आमदनी सोने का अण्डा देनेवाली मुर्गी का एक ही बार पेट चीरकर सब अण्डे प्राप्त करने के समान है। तटस्थ वन-विशेषज्ञों का कहना है कि उत्तराखण्ड के कीमती वन और खासतौर से यमुना और टौंस प्रभाग के चीड़ के वन, जिनका वर्णन करते हुए एक सदी पूर्व कर्नल पियर्सन ने लिखा था, 'इन नदियों के किनारों पर फैले हुए वृक्षों का विशाल समुद्र वर्णनातीत है। इनकी गणना हजारों में नहीं करोड़ों में की जा सकती है, कुछ वर्षों में लुप्त हो जायेंगे।

इस प्रकार यह प्रश्न केवल उत्तराखण्ड और उत्तरप्रदेश ही नहीं सारे देश के लिए विचारणीय है। ठेकेदारी प्रथा को तुरन्त समाप्त कर पांच वर्षों के लिए नयी व्यवस्था होने तक वनों की कटाई रोकने की मांग का औचित्य समझते हुए भी उत्तराखण्ड के वनों से होनेवाली १० करोड़ की आय का मोह छोड़ने के लिए उत्तरप्रदेश की सरकार तैयार नहीं है। इसलिए इस वर्ष वनों की नीलामी के साथ ही ठेकेदारों व सरकार को व्यापक पैमाने पर चलनेवाले "चिपको आंदोलन" की संभावनाओं से सतर्क किया जायेगा। अब तक आंदोलन केवल चमोली और उत्तरकाशी जिलों तक ही सीमित रहा है, अब यह सभी पर्वतीय जिलों में फैल सकता है। कुमायूं मण्डल में, जहां पिछले वर्ष उत्तराखण्ड सर्वोदय पदयात्रा और युवकों की 'अस्कोट-आराकोट' यात्रा के दौरान "चिपको आंदोलन" का संदेश फैला, यह नयी घटना होगी।

अब तक "चिपको-आंदोलन" की चार मांगें रही हैं : (१) वन-सम्पदा के दोहन की

ठेकेदारी पद्धति समाप्त हो और उसके स्थान पर वन-श्रमिकों की सहकारी समितियों द्वारा वन-सम्पदा का दोहन हो। (२) वन-श्रमिकों को रोजगार देने के लिए वनों के निकट वन-सम्पदा पर आधारित छोटे उद्योगों की स्थापना की जाये। (३) वनों का नया बन्दोबस्त हो और (४) वनों की व्यवस्था और प्रशासन में वन-श्रमिकों को शामिल किया जाये।

चीड़ के पेड़ों से लीसा निकालने के लिए किये जानेवाले गहरे घावों से होनेवाली क्षति को रोकने के लिए पांचवीं माग यह जोड़ी गयी कि लीसा निकालने की हिंसात्मक पद्धति तत्काल खत्म होनी चाहिए।

अब यह छठी माग जुड़ी है कि वन-श्रमिकों को मौजूदा पशुतुल्य जीवन से मुक्त करने के लिए उन्हें न्यूनतम मजदूरी की गारण्टी दी जाये। कठोर चट्टानों पर पीठ पर एक-एक कुन्टल के ढोने की मजदूरी सन १९५० से अब तक २५ पैसे प्रति चौरी है। आरे से लकड़ी चीरने का काम अत्यधिक थकाने और शक्ति का ह्रास करनेवाला होता है। परन्तु इसकी मजदूरी की दरें भी प्रति स्लीपर पर सन् १९५० में डेढ़ रुपये थी, अब तीन रुपया हुई है। इसके साथ ठेकेदार सस्ते दामों पर राशन देते हैं जो दूसरों को फसाने का प्रलोभन है। प्राय यह राशन पशुओं के खाने के योग्य भी नहीं होता। इसमें शरीर को पोषण देनेवाले पौष्टिक तत्व तो होते ही नहीं। इन कठोर परिस्थितियों में श्रमिक आज भी काम करते हैं इसका मुख्य कारण है उनका अपने ही गांव के छोटे ठेकेदारों की जो प्राय ग्राम नेता भी होते हैं, कर्जदारी के नीचे दबा रहना।' उनको दी गयी पेशगी कभी समाप्त नहीं होती। बीच में काम छोड़ने पर झूठे मुकदमों में फंसने का डर रहता है। ये श्रमिक कश्मीर से लेकर नेपाल तक के दूरस्थ गांवों के रहनेवाले होते हैं और कश्मीर व हिमाचल के श्रमिक उत्तराखंड में तथा उत्तराखण्ड के हिमाचल के जंगलों में काम पर देखे जा सकते हैं। कभी-कभी तो स्त्रियां भी दूध पीते बच्चों को पीठ पर बांधकर चिरान करती हैं। 'चिपको-आंदोलन' ने ढुलानियों के लिए ६० पैसे प्रति चौरी और चिरानियों को १० रुपये प्रति स्लीपर देने की मांग की है। यह लकड़ी के व्यापारियों को आज प्रति स्लीपर होनेवाले लगभग १०० प्रतिशत मुनाफे को देखते हुए अधिक नहीं है। इस वर्ष आंदोलन में श्रमिकों के शामिल होने से वनों की सुरक्षा के इस महायज्ञ में, जो वास्तव में पूरे देश की रक्षा का कार्यक्रम है, सफलता निश्चित है।

'हिंसा की कोई चर्चा नहीं'

कुछ समाचार पत्रों में श्री जयप्रकाश नारायण के एक भाषण का समाचार इस प्रकार प्रकाशित हुआ है जिससे ध्वनित होता है कि वे हिंसा के विरोधी नहीं रह गये हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने एक स्पष्टीकरण में कहा है कि, "छात्र और जनता के संघर्ष में सहयोग देनेवाले कुछ राजनीतिक कार्यकर्ताओं के सामने ३० अगस्त को मैंने एक भाषण दिया था। समाचार देनेवाली एकाध संस्था ने जो खबर अखबारों को भेजी है, उसके कारण मेरी समझ में जबर्दस्त गलतफहमी हुई या हो सकती है।

मैंने उस भाषण में कहा था कि अनिश्चित अवधि या मरणपर्यन्त अनशन का आधार अन्तःप्रेरणा ही होती है। यदि किसी समय ऐसी अन्तःप्रेरणा हुई तो मैं उसके अनुसार चलने में आगा-पीछा नहीं करूंगा। मैंने यह भी कहा था कि अगर संघर्ष को समर्थन देनेवालों को कभी ऐसा लगा कि विधानसभा का विघटन जल्दी हो सकने के विचार से मुझे अपने प्राणों को संकट में डालकर अनशन शुरू कर देना चाहिए, तो मैं उनकी इच्छा का आदर करूंगा। इस संदर्भ में मैंने हिंसा का कोई चर्चा नहीं किया। हिंसा के बारे में मेरे जो विचार हैं, उन्हें दोहराने की मैं कोई जरूरत नहीं मानता। मैं उसके पूरी तरह विरोध में हूं—और जब तक बिहार के आन्दोलन से मेरा ताल्लुक है वह शान्तिमय संघर्ष ही रहेगा।

वास्तव में मनमाने ढंग से पशुतापूर्ण हिंसात्मक कार्रवाई तो छात्रों और जनता के प्रति सरकार के चट्टे-बट्टे ही कर रहे हैं। जनता और छात्र एकाध घटनाओं को छोड़ दें तो सदा शान्त और अहिंसक ही रहे हैं।"

पत्र और पत्रांश

धर्मक्षेत्र

पूज्य बाबा ने 'धर्मक्षेत्र' कहा। क्या इसमें कोई संकेत नहीं है? 'साम्यसूत्रों' का सूत्रकार एक मात्रा भी क्या व्यर्थ लिख सकता है-या कह सकता है? सूत्र की परिभाषा है।

'स्वल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवद्विश्वतोमुखम्।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥'

स्वल्पाक्षर, असंदिग्ध (स्पष्ट) सारवत् (सारगर्भित) विश्वतोमुखम (चौमुख) अस्तोभ (अप्रतिरुद्ध) अनवद्य (सुन्दर, निर्दोष)। विनोबा के शब्द नपे-तुले, अचूक और अर्थगंभीर तथा लालित्यपूर्ण होते हैं न? उन्होंने पटना क्षेत्र को धर्मक्षेत्र कहा है। यों ही?

जबलपुर —दादा धर्माधिकारी

बौद्धिक ब्लैकआउट

प्रकाशन-जगत पर आया संकट वास्तव में साहित्य-संसार का संकट है। आज कागज की दरें एकाएक इतनी ऊंची हो गयी हैं कि इन पर खरीदा गया कागज पुस्तकों के मुद्रण के उपयोग में नहीं आ सकता। पुस्तकें इतनी महंगी हो जायेंगी कि उनके लिए कोई खरीदार नहीं होगा।

फेडरेशन आफ इंडियन पब्लिशर्स कागज की अनाप-शनाप बढ़ी हुई दरों से सरकार को सचेत करने में सचेष्ट है, लेकिन जैसा कि गुजरात के सुप्रसिद्ध विचारक और साहित्यकार श्री उमाशंकर जोशी का कहना है, इसके अवश्यंभावी परिणाम 'बौद्धिक ब्लैकआउट' के प्रति सरकार को सचेत करना लेखक-वर्ग का भी अभीष्ट और कर्तव्य है।

हमारा अनुरोध है कि आप एक पत्र प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को अविलम्ब लिखें। फेडरेशन का विश्वास है कि भारत की विभिन्न भाषाओं में ऐसे पत्र यह प्रधान मंत्री तक पहुंचा सकने में सफल होगी। आपके उत्तर, या हस्ताक्षरित पत्र की उत्सुकता से प्रतीक्षा रहेगी।

सी-९८ ए, —ओमप्रकाश
साउथ एक्सटेंशन (२) संयोजक पेपर कमेटी
नई दिल्ली-४९ दि. फेडरेशन आफ
इंडियन पब्लिशर्स

धर्ममूर्ति विनोबा

विनोबा ११ सितम्बर को अपने जीवन के ७६ वर्ष पूरे करके ८० वें वर्ष में पदार्पण कर चुके हैं। अनेक दृष्टियों से उनका जीवन अद्वितीय जीवन रहा है। सबसे बड़ी बात जो हमें उनके बारे में आकर्षित करती है, वह है उनका खालिस व्यक्तित्व। हर व्यक्ति पर प्रायः किसी दूसरे की छाप होती है। वह किसी और के पदचिन्हों का अनुगमन करके अपना विकास करता है, किन्तु गहरे अर्थों में देखें, समझें तो स्पष्ट हो जायेगा कि विनोबा का व्यक्तित्व स्वतन्त्र व्यक्तित्व है। वे किसी की प्रतिच्छाया नहीं हैं और इसीलिए वे आज तक की सम्पूर्ण मानवता को अपने भीतर समाये हुए हैं। उन्होंने सतत जाग्रत रहकर अपने जीवन को स्वयं गढ़ा है। आदमी आसमान से नहीं उतरता। वह धरती पर पैदा होता है और अगर उसकी बुद्धि जाग्रत और तेजस्वी हो तो धरती के सारे महिमामय तत्त्व उसे सहज ही विरासत में मिल जाते हैं। और फिर वह एक कोई अकेली 'व्यक्तिसत्ता' न रह, विराट-सत्ता का प्रतीक बन जाता है, विनोबा ऐसी ही विराटसत्ता के प्रतीक हैं।

यह ठीक है कि विनोबा के विकास के सोपान हैं, उन्हीं के शब्दों में वे 'संतों के पथ पर अपने पांवों' चले हैं। किन्तु उन्होंने इस पथ को जितना संतों का पथ माना है, उतना ही अपना भी माना है। मुझे याद है कि उन्होंने बापू के निधन के बाद सेवाग्राम में सर्व सेवा संघ की जो पहली सभा हुई, उसमें बिलकुल प्रारंभ में यह कहा था कि 'मैं जो कह रहा हूं वे बापू के वचन नहीं हैं।' इसके बाद उन्होंने जो वाक्य कहा उसे सुनकर तो हम सब चौंक ही गये थे। दूसरा जो वाक्य उन्होंने कहा कि 'जो विचार मैं व्यक्त कर रहा हूं, वे बापू के नहीं हैं बापू के बाप के नहीं हैं।' सब साथियों को बड़ा विचित्र मालूम हुआ, किन्तु तत्काल उन्होंने स्वर में एक तीव्रता लाकर कहा कि 'मकान मेरा, कारखाना मेरा बैंक में रखा रुपया मेरा लड़का मेरा, पत्नी मेरी और विचार बापू के? अगर विचार बापू के हैं तो वे मेरे किसी काम के नहीं हैं, जिस तरह बैंक में रखा किसी और का रुपया मेरे किसी काम का नहीं। अगर हमने बापू के विचारों को अपना नहीं बना लिया, अगर वे विचार हमारे जीवन की सांस नहीं बन गये और अगर हम उनके अनुसार जीने और मरने के लिए तैयार नहीं तो हम बापू का नाम तक लेने का अधिकार नहीं है।' जो व्यक्ति शाश्वत सत्यों को इस प्रकार अपना बना लेता है वह स्वयं सत्यमूर्ति और धर्ममूर्ति बन जाता है। विनोबा एक ऐसी ही धर्ममूर्ति हैं।

विनोबा का जन्म कोलाबा जिले के गागोदा में सन् १८९५ में हुआ। विनोबा उनके वास्तविक नाम विनायक का रूपान्तर है। मराठी में आदर व्यक्त करने के लिए 'बा' लगा दिया जाता है जैसे ज्ञानबा, तुकोबा। हमारी सहज संवेदनशील जनता ने जिस प्रकार गांधीजी को बिना किसी के सुझाये 'महात्मा' कह दिया और आज तक जिसे लेकर बहस चलती है कि पहले पहले उन्हें महात्मा किसने कहा, उसी प्रकार अपने बीच भगवान की भेजी हुई आदरास्पद इस मूर्ति के लिए 'बा' शब्द का उपयोग कब शुरू किया, कोई नहीं जानता। बचपन में विनोबा को उनकी मां 'विन्या' कह कर पुकारती थी। कहा जाता है कि गांधीजी ने विनोबा नाम के साथ आगे पीछे कभी कोई उपसर्ग या प्रत्यय नहीं लगाया, संतों की श्रेणी में गुम्फित इस व्यक्तित्व के आगे-पीछे कुछ लगाना उन्हें शायद अटपटा लगता रहा हो। किन्तु हम जो साधारण व्यक्ति हैं, जिन्हें अल्प से संतोष नहीं होता, जो अपनी कृति में अपने महान् पुरुषों के प्रति भक्ति का समावेश किये बिना एक प्रकार की न्यूनता का अनुभव करते हैं उन्हें कभी आचार्य विनोबा तो कभी श्रीविनोबाजी कहते रहे और अब तो उनका सार्वभौम नाम 'बाबा' हो गया है। कह नहीं सकते भारत के राजनैतिक, नैतिक या आध्यात्मिक इतिहास में बाबा का कौनसा नाम अधिक चलेगा तथापि आभास तो ऐसा है कि देश की धार्मिक प्रतिष्ठा और परम्परा महात्मा गांधी द्वारा लिया जानेवाला उनका विनोबा नाम ही सम्भालकर रखेगी।

बालक विनायक के मन में धर्म की भावना का बीज मां के हाथों रोपा गया था। इसके प्रभूत प्रमाण स्वयं विनोबा के मुख से चाहे जब सुनने को मिल जाते हैं। मां की बात करते हुए बल्कि उनके उल्लेख मात्र से विनोबा की वाणी रुक जाती है और आंसू बहने लगते हैं। वे सदा कहा करते हैं कि 'माई और गीताई, मेरे ये दो सबल मुझे अपने आपको कभी निर्बल महसूस नहीं करने देते।' परिवार की ओर से जब विनोबा के सामने गृहस्थी का भार उठाने का प्रश्न उपस्थित किया गया तो वे 'निर्बल के बल राम' अपनी माता की शरण में गये। माता ने कहा विन्या, यदि तू विवाह करता है तो तू केवल अपने माता पिता और परिवार की सेवा करेगा और अगर तू ब्रह्मचारी रहता है तो तेरी ४२ पीढ़ियां तर जायेंगी।' आत्मज्ञान की उपलब्धि की धुंधली सी आवश्यकता तो विनोबा के मन में तभी अंकुरित हो गयी थी, जब वे केवल १० वर्ष के थे। धीरे-धीरे यह अंकुर बढ़ता गया और पनपता चला गया। कह सकते हैं कि मां ही वह माली थी, जिसने इसे सींचा और शक्ति दी।

विनोबा को आत्मदर्शन हुआ या नहीं? उन्होंने प्रभु का साक्षात्कार किया है या नहीं? कई जगह लोग ऐसे प्रश्न करते हैं। सन् १९४२ में विनोबा नागपुर जेल में प्रवचन किया करते थे और सुननेवाले लोगों में कभी-कभी कोई प्रश्न भी कर उठता था। एकबार एक सज्जन

ने ईश्वर के अस्तित्व की मीमांसा करते हुए विनोबा को टोका और पूछा, 'क्या आपने ईश्वर देखा है?' विनोबा सहज प्रसन्न मुद्रा में कुछ गंभीर हो गये और उन्होंने सामने रखी लालटेन की तरफ इशारा करते हुए कहा, "मैं इस क्षण इस लालटेन को देखने मे संदेह कर सकता हूं किन्तु मेरे मन मे ईश्वर के दर्शन को लेकर संदेह नही है।" याद रखना चाहिए कि विनोबा भगवान के सगुण रूप के पुजारी हैं और वे उसे देखते हैं अपने आस-पास की हर वस्तु मे, विशेषतः पीड़ित और दलित मानव के रूप में। वे कहा करते हैं, 'सेवा व्यक्ति की और भक्ति समाज की' अर्थात् सारे संसार के प्रति पूज्य बुद्धि रखकर प्राप्त-सेवा में लीन हो जाना ही भगवान के सान्निध्य मे बने रहना है। विनोबा ने इस अर्थ मे भगवान को पाया है, इसमे कोई संदेह नही है। किन्तु भगवान को पाने के जो रूढ़ अर्थ है उनमें भी उन्होंने भगवान को नहीं पाया, ऐसा कौन कह सकता है?

गांधी और विनोबा के मिलन की कहानी सभी जानते हैं। गांधीजी ने एक बार विनोबा के पिता को पत्र लिखते हुए कहा कि आपके पुत्र ने अल्पायु मे ही जो कुछ पा लिया है उसे पाने मे मैने कितना दीर्घकाल व्यतीत कर दिया। गांधीजी विनोबा को ऋषि मानते थे। और विनोबा उन्हें अपना गुरू। पहले विनोबा स्वभाव के तीव्र थे और अप्रिय सत्य बोलतेहुए तनिकभी आगा-पीछा नही करते थे। विनोबा का कहना है कि नम्रता तो मैंने गांधीजी के चरणों में बैठकर सीखी। शब्दों को सहज भाव से तोल कर कह सकने की शक्ति, नित्य प्रार्थना और दुखियो की सेवा—ये सारी बातें विनोबा मे गांधी के पारस-स्पर्श से अनायास ही साकार हो गयी।

बापू के चले जाने के बाद जाने-अनजाने विनोबा के मन मे यह मंथन चलने लगा कि बापू की सौंपी हुई विरासत को कैसे निभाऊं? परम-धाम में बापू के अस्थिविसर्जन के समय हजारों की भीड़ ने अस्थिविसर्जन करते हुए विनोबा को आपा भूलकर ईशावास्योपनिषद् का उच्च स्वर से पाठ करते देखा, वे उसी क्षण समझ गये थे कि विनोबा को बापू के कण-कण मे व्याप्त हो चुकने की प्रतीति हो गयी है और वे दिवगत बापू को संसार में बहुविध साकार करेंगे। 'जयहिन्द' की जगह उनका 'जयजगत' का नारा मानो उनके इसी संकल्प का प्रतीक है। बापू के जाने के बाद विनोबा ने अपने 'सेवा व्यक्ति की और भक्ति समाज की' इस सिद्धान्त वाक्य का एक नये अर्थ मे विकास किया। समूचे मानव समाज को उन्होंने व्यक्ति-सत्ता मे समेट-सा लिया और अब तक की जीवन पद्धति के अनुसार एकान्त-साधना का घनिष्ठ क्षेत्र छोड़ कर लोक-सेवा के व्यापक क्षेत्र मे आ गये। 'वन स्टेप इज इनफ' का जैसा सार्थक विनियोग विनोबा ने अपने जीवन मे किया वैसा उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ ही नही अलभ्य है। कांचन-मुक्ति, ऋषि खेती, भूदान, ग्रामदान आदि के एक के बाद एक जो महान् आंदोलन-विचार सामने आये, वे आये तो गम्भीर चिंतन प्रक्रिया में से किन्तु आये एक के बाद एक स्वाभाविक रूप से। दिल्ली के शरणार्थियो के बीच काम प्रारम्भ करने से विनोबा के कार्य-क्षेत्र की व्यापकता की शुरूआत हुई थी। तब से सर्व-सेवा संघ के तपे हुए कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त देश के राजनैतिक नेताओ के सम्पर्क मे भी आये और फिर यह सम्पर्क अन्त तक अधिकाधिक घना होता गया। पंडितजी ने विनोबा के सम्पर्क मे आने के बाद जो लिखा वह विनोबा के मूल्यांकन को उजागर करनेवाला शिलालेख ही है। उन्होंने कहा, "मैं थोडा बहुत दुनिया के अन्य देशों से भी परिचित हूं। मैं उन तमाम लोगों से मिला हूं जो बड़े कहलाते हैं ...लेकिन जब कभी सोचता हूं कि किसी और देश मे विनोबा—जैसा आदमी है या नही तो मुझे वैसा कोई आदमी नजर नहीं आता।... ऐसे आदमी के काम का अन्दाज करना तो बहुत मुश्किल है। ...इसीलिए मैं कहता हूं कि अगर कभी किसी सच्चे इतिहास की सृष्टि हुई तो उसमे विनोबाजी की बड़ी जगह होगी। भूदान आन्दोलन एक अद्वितीय काम है। इस आन्दोलन को बड़ी सफलता मिली है।...लेकिन उसमें भी महत्वपूर्ण परिणाम जो इस आन्दोलन का मिला है वह तो उसके द्वारा निर्मित वातावरण है।"...

प्रायः लोग कहते हैं—गांधीजी का मुख्य विचार सफल नही हुआ और विनोबा का भूदान आन्दोलन भी सफल नही हुआ। इस बात के अनेक अकाट्य उत्तर है। किन्तु सर्वाधिक अकाट्य उत्तर तो यह है कि जो जहनियत इस सवाल के पीछे है, उस जहनियत से देखा जाये तो कोई चीज सफल नही हुई। केवल व्यक्ति नही धर्म, दर्शन, इतिहास, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और सबसे अचूक माने जानेवाला विज्ञान सभी असफल हुए हैं। प्रभु ईसा का क्या हुआ? मोहम्मद साहब के अनुयायियों का क्या हुआ? मार्क्स के माननेवालों का क्या हाल है? स्टालिन को जो कभी सफलता की मूर्ति कहा जा रहा था, कब्र तक मे बर्दाश्त नहीं किया गया। और बाद मे जिस ख्रुश्चेव की तूती बोलती थी, उसके अन्तिम दिन कैसे कटे? सारे श्रेष्ठ लक्ष्य, सपने बने हुए हैं। क्या इसीलिए उन लक्ष्यों को लाने मे जुट जानेवाले और उनको लाने में सच्चे पथ का प्रदर्शन करनेवालों को छोड़ा जा सकता है? गांधी तो भले ही अपने द्वारा लाये हुए स्वराज्य के आते ही चले गये, लेकिन लेनिन तो क्रान्ति के सात बरस बाद तक टिके रहे थे। फिर भी उनकी लायी हुई क्रान्ति का चेहरा उनके सामने से लगाकर आज तक कितनी बार कितना भयानक और विद्रूप होकर हमारे सामने आता है। गांधी सात बरस और रहते तो वे देश को और कितना क्या देते यह भी कौन कह सकता है। किन्तु उन्होंने साध्य और साधन की एकता की जो बात सिखायी और विनोबा ने जो उसे अपने ढंग से विकसित किया वह सारे संसार मे दुर्बलों को सहारा दे रही है और भारत मे परिवर्तन की गति तेज है। अंग्रेजी मे जिसे 'राउण्ड मैन' कहते हैं, विनोबा कर्म और ज्ञान की अजस्र धारा मे घिसे हुए शालिग्राम हैं—जिनका हर बिन्दु आरम्भ है, हर बिन्दु अन्त है, जो कुछ शुरू नही करते, कुछ समाप्त नहीं करते। इसीलिए वे शून्य भी उतनी ही आसानी से हैं, जितनी आसानी से पूर्ण। वे क्या नही हैं? वे किसान हैं, मजदूर हैं, भंगी हैं, बढ़ई हैं, जुलाहे हैं, गायक हैं, चिन्तक हैं, साधक हैं, शिक्षाशास्त्री हैं, अनेक भाषाओं के ज्ञाता ही नहीं मर्मज्ञ हैं—कहा जा सकता है कि उनके बुद्धि और हृदय के गुणों का पार नहीं है। विनोबा में ज्ञानदेव और तुलसीदास, कबीर और शंकराचार्य, पूर्णिन्द और गांधी और मार्क्स सबकी प्रभा के दर्शन होते हैं।

आन्दोलन तीव्र करने की तैयारी

बिहार के वर्तमान संघर्ष को तीव्र से तीव्रतर बनाने के लिए २ अक्टूबर गांधी-जयन्ती से प्रदेश भर में हड़ताल, बन्द, बहिष्कार और धरने आदि के कार्यक्रम किये जायेंगे और उसके अन्तर्गत सभी सरकारी, अर्ध सरकारी संस्थान ठप्प किये जायेंगे। यह निर्णय आन्दोलन के समर्थित राजनीतिक दलों की राज्य स्तरीय तदर्थ समन्वय समिति और प्रदेश छात्र संघर्ष समिति की संचालन समिति के सदस्यों की जयप्रकाशजी के साथ हुई संयुक्त बैठक में लिया गया। बैठक में जो लगभग डेढ़ घण्टा तक चली, २७ और ३० अगस्त को पटना में हुए राजनीतिक कार्यकर्ताओं के सम्मेलन के समर्थित चारों राजनीतिक दलों, जनसंघ, संयुक्त समाजवादी पार्टी, सोशलिस्ट पार्टी, व संगठन कांग्रेस द्वारा आन्दोलन को तीव्र बनाने के सम्बन्ध में रखे गये विभिन्न सुझावों पर चर्चा की गयी और जयप्रकाशजी की सहमति से एक संयुक्त प्रस्ताव तैयार किया गया।

प्रस्ताव में कहा गया कि आन्दोलन के सम्पूर्ण तत्वों की प्राप्ति के लिए भूमिहीनता निवारण, खेतिहर मजदूरी (जिसका एक योग्य हिस्सा अनाज में हो ताकि वे पेट भरने की चिन्ता से मुक्त हो सकें), किसानों के लिए नहर रेट, मालगुजारी रेट आदि में वृद्धि के निराकरण, सूदखोरी से मुक्ति, आदिवासियों की तात्कालिक समस्याओं तथा ऐसे सभी कामों को जिनका सीधा सम्बन्ध प्रदेश की गरीब जनता से है, कार्यक्रमों में जोड़ा जायेगा।

प्रस्ताव में कहा गया है कि सितम्बर मास में २ अक्टूबर से चलाये जानेवाले तीव्रतर कार्यक्रम की प्रदेश भर में व्यापक तैयारी की जायेगी। इस सम्बन्ध में पंचायत से लेकर जिला स्तर तक नियमानुसार जन संघर्ष और छात्र संघर्ष समितियां गठित की जायेंगी। सत्याग्रहियों की भर्ती का काम भी बड़े पैमाने पर चलाया जायेगा। सितम्बर के दूसरे पखवाड़े में किसी एक दिन जिले और अनुमण्डलों के मुख्यालयों पर प्रदर्शन का आयोजन किया जायेगा जिनमें किसान, खेतिहर मजदूर, छात्र, युवक व महिलाओं को भी बड़ी संख्या में शामिल किया जायेगा। इसी प्रकार औद्योगिक क्षेत्रों में भी मजदूरों के जुलूस निकाले जायेंगे और सभाओं का आयोजन होगा। बैठक के बाद आन्दोलन ■ एक प्रवक्ता ने बताया कि २ अक्टूबर से चलाये जानेवाले कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा भी शीघ्र ही तैयार की जायेगी।

जनार्दन की परिभाषा में कहा गया है, 'साकर दिसे परि गोडी न दिसे, त्या परि जनार्दन', मगर यहां तो साकर भी दिखती है और उसकी मधुरिमा भी।

विनोबा ने वेद, उपनिषद्, गीता, बाइबिल, कुरान, धम्मपद, विनय पत्रिका, विष्णु-सहस्रनाम आदि कितनी ही ग्रन्थ—अब्धियों का मन्थन करके उनके रत्न हमारे सामने रख दिये और १४ वर्ष देश में घूम-घूम कर समूची फिजा बदल दी और फिर एक दिन अपने इस सारे काम का बिना कोई बोझ माने परधाम में वापस जाकर बैठ गये और सड़कें साफ करने लगे, सड़कें बनाने लगे। इस अवधि में उनका चिन्तन चलता रहता है और विष्णु-सहस्रनाम के उच्चार के साथ स्थूल शरीर-श्रम—में से सूक्ष्म में प्रवेश की प्रक्रिया तीव्रतम होती जा रही है। परधाम में जो सड़कें बनी हैं, उन्हें वे 'मुक्ति-पथ' कहते हैं, 'दिव्य-पथ' कहते हैं। अब वे प्रायः कुछ नहीं पढ़ते, कुछ नहीं लिखते। देवनागरी में छपनेवाले अखबार उलट लेते हैं और साफ अक्षरों में लिखकर भेजे गये पत्र पढ़ लेते हैं। लोग उनके पास लिखकर पूछते हैं तो वे बोलकर उत्तर दे देते हैं और परधाम में जिज्ञासुओं को कभी कभी विभिन्न विषयों पर प्रवचन भी देते हैं। अब वे क्षेत्र सन्यास ले चुके हैं किन्तु उन्हीं के शब्दों में उनकी क्रिया कम हुई है, कर्म तो सतत चल रहा है।

दादा धर्माधिकारी ने एक बार विनोबा का ही हवाला देते हुए कहा था कि, "वे शरीर में हैं, इसलिए 'काय स्थ' हैं—देश में हैं इसलिए 'देश-स्थ' हैं और सबसे पहले और सबसे अधिक अपने हैं, इसलिए 'स्व-स्थ' हैं। इसी 'स्वस्थ' किन्तु अत्यन्त दुर्बल शरीरशाली विनोबा से एक दिन बापू ने पूछा, "तुम इतने दुर्बल होकर भी इतना काम कैसे कर लेते हो?" तो विनोबा ने कहा, "काम करने की इच्छा शक्ति से।" विनोबा की यही सक्षम और प्रबल इच्छा शक्ति देश ही नहीं अनेक अचलों को विचलित किये है। उन्होंने सूक्ष्म से अति सूक्ष्म में प्रवेश करने के बाद भी स्थूल जगत पर विचार करना बंद नहीं किया है। उन्होंने कहा है कि जनता को आत्मनिर्भर बनाया जाय; जिससे देश दलों की नीति से मुक्त रह सके और गांववालों को राज्य के अनावश्यक हस्तक्षेप से बचे रहकर सच्ची स्वतन्त्रता का उपभोग करने का अवसर मिलता रहे। संक्षेप में कहें तो अर्थ यह हुआ कि वे देश में ग्राम-स्वराज्य को आवश्यक मानते हैं और इसीलिए एकनिष्ठा और एकाग्रता के साथ ग्राम-स्वराज्य आन्दोलन पर वे इन दिनों जीवन के चरम बिंदु मरण का भी चिन्तन कर रहे हैं और अपने क्षण-क्षण को उपयोगी बनाने के लिए सदा से भी अधिक जाग्रत हैं। प्रभु इस महाप्राण विराट व्यक्तित्व को संसार के लिए शतायु करें।

—भवानीप्रसाद मिश्र

उपवासदान

सर्वोदय पर्व में
उपवासदान का
संकल्प करें
आज ही फार्म भरें।

पगली घंटी, पागल लड़के, पगलायी सरकार

आठ अगस्त समाप्त हो गया है। रात के दो बजे हैं। पटना से भागलपुर आनेवाली गाडी से बिहार प्रदेश सर्वोदय मण्डल के मंत्री देवानन्द मिश्र के साथ भागलपुर स्टेशन पर उतरता हूं। स्टेशन के बाहर एक खास किस्म का तौलिया सरो पर लपेटे तरुण शांति सेना का स्कार्फ गले में लगाये सैकड़ो युवक इधर-उधर घूम रहे हैं—उनमें से रामवृक्षसिंह मुझे पहचान लेता है। आज ८८२ छात्र भागलपुर जेल से मुक्त हुए हैं। अधिकांश स्टेशन पर नारे लगाते हुए अपने घरो को जा रहे हैं।

चार अगस्त को भागलपुर कैंप जेल में साढ़े पांच बजे सवेरे लाठीचार्ज हुआ था। कुछ घायल युवको से मिलना चाहता था किन्तु नौ अगस्त को छः बजे तक किसी ऐसे छात्र को न खोज पाया। शाम को देवानन्द भाई सूचना देते हैं कि गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र भागलपुर के मंत्री केदारप्रसाद चौरसिया 'मीसा' के अन्तर्गत जेल में हैं और उनका कार्यालय ही छात्र संघर्ष समिति का कार्यालय है, वहीं चलें।

गांधी शांति प्रतिष्ठान का कार्यालय पटल बाबू रोड पर है—छात्रों की भीड़ है—सहसा केन्द्र के अन्दरवाले कमरे में प्रवेश कर जाता हूं तो एक दृश्य देखकर दुःख मिश्रित आश्चर्य होता है। पहली दृष्टि पड़ती है विनोदकुमार नामक २५ वर्षीय बी. एस. सी. अन्तिम वर्ष के एक छात्र पर। विनोद अधनंगे से लुंगी लपेटे जेल में मिले कंबल पर अधलेटे हैं, हाथो में पट्टियां बंधी हैं, खड़े नहीं हो सकते, दोनों पैरों में लाठियों की तीव्र चोटें हैं। दुबले-पतले हड्डियों के ढांचेमात्र, बढ़ी हुई दाढ़ी, विवाह हुए कुल १५ दिन हुए हैं। नवविवाहिता पत्नी से मुस्कराकर दूर से नमस्ते की। कृषक पिता को बिना बताये पटना सत्याग्रह में भाग गये थे। पिताजी पड़ोस में उदास बैठे हैं। विनोद अभी भी महीनों चल नहीं पायेंगे। इनका अपराध था कि इन्होंने जेल में भ्रष्टाचार के विरुद्ध आमरण अनशन किया था। बरौनी प्रखंड छात्र संघर्ष समिति के संयोजक हैं। अच्छा बोलते हैं। बड़ी-बड़ी काली आंखो से मर-मिटने की इच्छा झांकती है—जे. पी. उनके आदर्श हैं।

दूसरा पागल

"जी, मेरा नाम रामप्रवेश विद्यार्थी है। आयु २१ वर्ष है। गया जिले के गाजीपुर का रहनेवाला हूं। राजा शिवप्रसाद कालेज, झरिया में इण्टर साइंस का छात्र हूं। १८ दिन पहले विवाह हुआ था—पिता की बड़ी संतान हूं। चार अगस्त को जब मैं सो रहा था, नुरुलहमन आजम नामक सहायक जेलर महोदय मेरे वार्ड में १० सिपाहियों के साथ आये। 'कहां है साला विद्यार्थी? साला छूरा रखता है, फेंक दो साले का सामान' कहकर मेरा सामान फेंका जाने लगा, बूटो की ठोकरें पड़ने लगी। लम्बी-लम्बी सीटियां बजी। पगली घंटी बजी, बाहर लाकर पीटा गया फिर घसीटकर नीम के तले पीटा गया और बेहोश हो गया—तीस घण्टे पत्थरों पर पड़ा रहा, बिना दवा, बिना पानी, बिना भोजन के। सहायक जेलर रमेशचन्द्र सिन्हा ने पटक-पटक कर मारा, सहायक जेलर नन्दलाल झा ने बूटो से रौंदा, ठोकर मारी, ४६ लाठियों की चोटें हाथो-पैरों, जंघाओं, टखनो व पीठ पर। मेरा कसूर यह था कि मैं स्वस्थ हूं, जरा तगड़ा हूं। बढ़ी हुई दाढ़ी है, अन्याय को सहन नहीं कर पाता हूं। मैंने 'लाठी गोली हिंसा लूट, नहीं किसी को इसकी छूट' के नारे लगाए थे। मैं आज भी लगाता हूं, लगाता रहूंगा—जब तक जीवित हूं अन्याय का विरोध करता रहूंगा। एक दिन ऐसा आयेगा—जब इस देश से भ्रष्टाचार दूर हो जायेगा—मुझे पद नहीं चाहिए। मैं भारत माता का सेवक ही रहना चाहता हूं। और कुछ सुनेंगे?" मैंने पीठ ठोकी—और कुछ डबडबायी आंखें नीचे को झुक गयी।

तीसरा पागल

"सर, सर, सुनिये"—मैं मुड़कर देखता हूं। छः फुट लम्बा, लम्बी दाढ़ीवाला कल्याण कुमार सिनहा उदास चेहरा लिये मेरी ओर बढ़ रहा है। स्टेशन के पासवाले होटल में आठ बजे रात मेरी उससे यह दूसरी भेंट है। अभी एक घंटे पहले संघर्ष कार्यालय में पूरे जोश-खरोश से जेल की यातनाओं को मुस्कराकर सुना रहा था। समीप ही टूटा हाथ गले में लटकाये रामप्रवेश विद्यार्थी खड़ा है—वह भी उदास है। पूछने पर पता चला कि उसके पिता जो सीनियर मार्केटिंग अफसर हैं उसे लेने आये हैं। उसकी मां ने अखबार में पढ़ लिया है कि जेल से सारे विद्यार्थियों को छोड़ दिया गया है। कल्याण जेल से छूट कर अपने माता-पिता के पास न जाकर, संघर्ष कार्यालय में छिप गया था। वह १० अगस्त को जयप्रकाश से मिल लेना चाहता था। उधर उसकी मां ने अन्नजल छोड़ दिया है। पिता बिना खाये पिये आये हैं। कल्याण को सीने से लगाकर ही उन्होंने जल पिया है। स्टेशन पर उसके पिता श्री सिनहा उसका हाथ पकड़ कर खींच रहे थे। वह मेरी ओर डबडबायी आंखों से देखता है, मैं आज्ञा दे देता हूं। कल्याण भाग कर पैर पकड़ लेता है। फूट-फूट कर रो पड़ता है।

उसके पिता उसका हाथ घसीटे जा रहे हैं। मैं, देवानन्द भाई, केदार पाडेय, मंत्री, भागलपुर जिला सर्वोदय मंडल एवं देवचन्द्र मिश्र आंसूभरी आंखों से उस लम्बे-चौड़े, स्वस्थ एवं सफ्फूर्ती छात्र को जाते हुए देखते रह जाते हैं।

चौथा पागल

दाहिने हाथ की हड्डी टूट गयी है। उंगलियां सूजी हुई हैं। चौड़ा सीना, ऊपर को ऐंठी गयी मूछें, स्वस्थ बलवान काया। हाथो, पैरों, टखनो, जांघो आदि में अनगिनत लाठियों के निशान, एक घाव सर पर भी। जांघकी बालिश्त भर जगह काली पड़ गयी है। मुस्कराते हुए नन्दन ठाकुर मेरे सामने लुंगी समेटते हुए बैठ जाते हैं—मैं पूछता हूं—'आप तो बाबू साहब जान पड़ते हैं, आप कैसे पिट गये?' नन्दन बाबू की उम्र २८ वर्ष है, काफी समय सेना में सैकेंड लेफ्टिनेंट रहे हैं, एक बेटा, एक बेटी के पिता हैं। इनका एक भाई

बूढ़ा हो गया है। इनके पिता लीलानन्द ठाकुर ६० वर्ष के वृद्ध हैं। घर की सारी जिम्मेदारी नन्दन भाई की ही है। खून से लथपथ फटी लुंगी दिखाते हुए बातचीत करते हैं (ये मधुबनी जिले के निवासी बी. ए., बी. टी. हैं) : 'योगी भाई, असल में लोगों की पिटाई पूर्व नियोजित ढंग से हुई है। जिस दिन पगली सरकार की पगली घंटी जेल में बजती थी हम सब भाग कर अपने कमरों में चले जाते थे। उस दिन तो हमारे साथी सोकर भी नहीं उठे थे कि सर्च होने लगी। वार्ड नं० ३१,३२,३५,३६,३७,३८,३९ में चैकिंग हुई। वे लोग नाम ले लेकर हम लोगों को खोज रहे थे। सर्च के नाम पर हमारे सामान की उठा पटक हो रही थी। हमारे पैसे व घड़ियां बटोरी जा रही थी, सिपाहियों के साथ कैदी भी डंडे लेकर आये थे। जेल के मेट भी डंडे लिये हुए थे। एकाएक सीटी बजने लगी। थोड़ी ही देर में पगली घंटी बजी। हम सबने भागना शुरू ही किया था कि हवालदार चौबे मेरे पास आया और बोला कि, 'आपको एस पी साहब बुला रहे हैं।' मैं किताब लिये खड़ा था, वैसे ही चल दिया। विशेष केंद्रीय कारा, भागलपुर के पूरब के द्वार पर पहुंचा ही था कि चौबे ने पूछा कि 'तेरे लीडर का क्या नाम है?' मैं किसे लीडर बता देता? हम सब लीडर ही थे। अन्याय का विरोध करते थे। मेरी चुप्पी से चौबे को क्रोध आ गया। पलक झपकते ही १०-१५ सिपाही और आ गये और मुझे जानवर की तरह मारा। मैं नंगा हो गया था। वे मारते रहे बूटों से, लाठियों से। मैं अर्धचेतन था। तभी चौबे बोला 'यार मर गया लगता है। साला अस्पताल में मर जायेगा। लपेट दो तौलिया, पहना दो चड्डी साले को।' भाईजी मैं दो दिन तक टट्टी पेशाब नहीं कर पाया— इतनी ठोकरें मेरे गुप्तांगों में मारी गयी हैं। बाद में यानी पीटने के ३० घंटे बाद एस पी आया और बोला, 'जेलर का खून करने गये थे। मजा चखा?' और चला गया। भैया, उस हत्यारे रमेशचन्द्र सिन्हा से पूछें। वह बालबच्चेवाला है, उसे किसी ने अपशब्द भी कहा हो। खून तो बहुत दूर की बात है। यहां देर है पर, अन्धेर नहीं है—एक न एक दिन इस अन्याय का अन्त होगा ही।" तब तक कोई बुलाने आ गया और ठाकुर भाई क्षमा मांग कर चले गए।

संघर्ष व सहयोग साथ-साथ

बाढ़पीड़ित क्षेत्रों में जे० पी० का दौरा

श्री जयप्रकाश नारायण ने ५ सितम्बर से प्रदेश के बाढ़पीड़ित क्षेत्रों का भ्रमण आरम्भ किया है। कार्यक्रम इस प्रकार रहा—

५ सितम्बर को जयन्ती जनता एक्सप्रेस से समस्तीपुर के लिए प्रस्थान, वहां से कार द्वारा तुरन्त ही दरभंगा से लहेरिया सराय पहुंच कर सार्वजनिक सभा का सम्बोधन, ६ सितम्बर की सुबह कार द्वारा मधुबनी के लिए प्रस्थान, यहां दोपहर में कार्यकर्त्ताओं के समक्ष और शाम को सार्वजनिक सभा में भाषण, ६ सितम्बर की रात्रि को जानकी एक्सप्रेस से

पूर्णिया के लिए प्रस्थान, ७ सितम्बर की दोपहर पूर्णिया में कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक को सम्बोधित करने के तुरन्त बाद कटिहार, यहां शाम को पांच बजे आमसभा में भाषण, ७ सितम्बर की रात्रि को ही वापस पटना के लिए प्रस्थान करके ८ सितम्बर की सुबह समस्तीपुर—रानापुर एक्सप्रेस से पटना पहुंच गये।

श्री जयप्रकाश नारायण ने समस्तीपुर से आगे बाढ़पीड़ित लोगों से बातचीत की व सरकारी राहत कार्यों की जानकारी ली। सड़क की सतह को छूता हुआ बागमती का पानी कई जगह सड़कों पर से बह रहा था व किनारे की मिट्टी तेजी से कट रही थी। लहेरियासराय की आमसभा में कोई सवा-लाख लोग उपस्थित थे। वहां जयप्रकाशजी ने कहा, 'यहां मुख्य प्रश्न बाढ़ से उत्पन्न समस्या है, जिससे जनता को बचाने में छात्र एवं जन-संघर्ष समितियों को जुट जाना है। आज यह सोचने का समय नहीं है कि इस सरकार ने हम पर गोलियां चलायी हैं लाठियां चलायी हैं तो उसके साथ सहयोग क्यों करें। यह दूसरी बात है। सरकार जो करे हम तो अपनी नागरिक जिम्मेदारी निबाहते जाना है।" उन्होंने आगे कहा कि हम संघर्ष का चरित्र ही ऐसा है कि संघर्ष व सहयोग साथ-साथ चल सकता है।
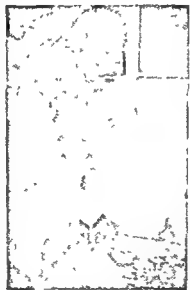
दरभंगा में उन्होंने कहा कि वर्तमान संघर्ष लम्बा चलनेवाला है। विधानसभा के विघटन के बाद भी आगामी चुनाव की तैयारी में लगना होगा। छात्र व जनसंघर्ष समितियां चुनाव पूर्व का लोक-शिक्षण का कार्य करेंगी ताकि इस समय त्यागपत्र न देने वाले विधायकों को एक भी वोट न मिले। कांग्रेस सदा की तरह वोट हासिल करने के लिए करोड़ों खर्च करेगी, हथकंडे चलेंगे। अतएव जनता का संगठन आवश्यक है। कांग्रेसजन भी अपने नेताओं को स्पष्ट कहें कि विधान सभा विघटन न होने से कांग्रेस की हानि है।

समस्तीपुर में अपने सार्वजनिक भाषण में जे० पी० ने विशेषकर पुलिस अधिकारियों व मैजिस्ट्रेटों से आग्रह किया कि वे शांत व अहिंसक प्रदर्शनकारियों के प्रति अभद्र भाषा का प्रयोग न करें, न उन्हें निर्दयतापूर्वक पीटें। यह न्याय व कानून के सभी मान्य सिद्धान्तों के विरुद्ध है।

गोड्डा में एक आन्दोलन भरा दिन

गांधीग्राम, गोड्डा के भाई महावीर भा मुझे भागलपुर से गोड्डा ले जाने के लिए रुके थे। दोपहर को बहनों की सभा सम्बोधित करने के पश्चात् गोड्डा प्रस्थान किया और ७ बजे शाम पहुँच गया। भागलपुर के छात्रों की अश्रुपूरित विदाई, उनके संघर्षरत जीवन की झांकियां, बहनों, बच्चों एवं वृद्धाओं की अनेक सुखद स्मृतियां रास्ते भर झकझोरती रहीं। लगता था, वहां के युवक एवं युवतियां चन्द दिनों में भागलपुर का भाग्य बदल कर रख देंगे। किन्तु गोड्डा पहुँचने पर जिस अद्भुत संगठन शक्ति, जनसहयोग एवं सशक्त मार्गनिर्देशन का दर्शन हुआ, वह न केवल बिहार अपितु देश के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान का पात्र है।

गोड्डा संघर्ष कार्यालय के बाहर जब रिक्शा रुका तो उसके आस-पास असंख्य युवा साथी घूम रहे थे। कार्यालय कक्ष में क्रान्तिकारियों के चित्र, पोस्टर, लिखे हुए पट्ट आदि रखे थे। दीवारों पर लोकनायक जयप्रकाश का नाम मोटे अक्षरों में गरिमा बढ़ा रहा था। कुछ मिनटों में ही उस कक्ष में कुछ प्रोफेसर, वकील, नागरिक, एवं युवा भाई-बहनें इकट्ठे हो गये। १५ अगस्त का कार्यक्रम बनना आरम्भ हो गया। इस आंदोलन के प्रेरक एवं संथाल परगना के युवक नेता रत्नेश्वर भा के आते ही कार्यक्रम पर तत्काल विचार होने लगा। 'हम अपना भण्डारोहण अलग और सरकारी भण्डारोहण स्थलों के समीप ही करेंगे। हमारे झंडे का आरोहण रत्नेश्वर भा ही करेंगे। हम एक प्रभात फेरी निकालेंगे।' एकमत होकर निर्णय लिया गया। संघर्ष करने के लिए, रत्नेश्वर भा, वीणा रानी, माधव चौधरी और मेरा नाम रखा गया। रात्रि में मशाल जुलूस एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया और 9 बजे समिति विसर्जित हो हो गयी। खचाखच भरे संघर्ष कार्यालय के कक्ष में अनेक बार बिजली गयी और आयी किन्तु सारा कार्य निर्बाध, खामोशी के साथ अनुशासित ढंग से सम्पन्न हो गया।

गांधीग्राम से चलकर जब हम गोड्डा संघर्ष कार्यालय पहुंचे तो विद्यार्थियों की अपार भीड़ विभिन्न कार्यों में लगी थी। कुछ ही देर में प्रभात फेरी के लिए युवक चल पड़े। 'लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद' के नारों से गोड्डा का वायुमण्डल गूंज उठा। जुलूस आगे बढ़ता गया। छात्रों-छात्राओं, एवं नागरिकों की टोलियां जलूस से जुड़ती चली गयी। नगर के विभिन्न भागों से घूमता हुआ जुलूस जब शहीद स्तम्भ पर पहुंचा, तो वहां का दृश्य देखकर मन कुछ देर निराशा में डूबा रहा। अपार जनसमूह ने सरकारी परेड व झण्डारोहण देखने के लिए आयताकार गांधी मैदान को घेर रखा था। किन्तु, जुलूस के शहीद स्तम्भ के समीप पहुंचते ही हवा बदलने लगी। युवा एडवोकेट पंकज कुमारसिंह की बुलन्द आवाज माईक पर गूंजने लगी। टोलियां बना-बना कर छात्र-छात्राएं शहीद स्तम्भ के समीप आने लगे। बहनों की एक टोली को पुलिस ने सरकारी झण्डारोहण के लिए रोकना चाहा किन्तु उन्होंने दो फर्लांग का चक्कर लगाया और समूची टोली छात्र-जन संघर्ष समिति द्वारा आयोजित उत्सव में शरीक हो गयी। ६ बजे अगल बगल में दो भण्डारोहण होने लगे। एक ओर कुर्सियों पर बैठे अफसर, उनकी बीबियां और बच्चे, कुछ उनके अपने लोग और सामने राइफलें लिये पुलिस के जवान। भूतपूर्व वित्तमन्त्री हेमन्त कुमार भा भण्डारोहण करनेवाले थे। किन्तु जनआक्रोश की खबर उन तक पहुंच गयी थी। उन्होंने डाक बंगले में पड़े रह कर आराम करते हुए १५ अगस्त मनाना ही उचित समझा। तब झण्डारोहण गोड्डा के एस० डी० ओ० को करना पड़ा। ६ बजने ही गोली दागी गयी। सरकारी झण्डारोहण केवल पुलिस के जवानों के लिए हो रहा था। दूसरी ओर जनता के प्रिय नेता रत्नेश्वर भा भण्डारोहण कर रहे थे जिसमें लगभग १५ हजार छात्र-छात्राएं एवं नगर के लोग भाग ले रहे थे। 'लोकनायक जयप्रकाश जिन्दाबाद' के गगनभेदी नारों ने सरकारी उत्सव को और भी फीका बना दिया। बेचारे अफसर उपचार हुए कर चले गये। दूसरे स्थल पर रत्नेश्वर भा, पंकजकुमारसिंह, माधव प्रसाद चौधरी (महेश्वर छात्र संघर्ष समिति), वीणा रानी एवं प्रबुद्ध नागरिकों ने संकल्पों की भाषा में वास्तविक आजादी के महत्व पर प्रकाश डाला। लोग शहीद-स्मारक छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। 'छात्र एकता जिन्दाबाद', 'भारतमाता की जय', 'महात्मा गांधी की जय,' 'लोकनायक की जय' के नारों के साथ ग्यारह बजे कार्यक्रम समाप्त हुआ। 'हम नया सवेरा लायेंगे, मंजिल आयेगी-आयेगी' गाता हुआ जनसमूह नगर की ओर चल पड़ा।

दोपहर के बारह बज चुके थे। बिना खाये-पिये युवक सड़कों पर यात्रा कर रहे थे। कचिजी से मिलते हुए जुलूस जेल एवं थाने की ओर मुड़ा। कुछ बसों में भरे लगभग दो हजार विद्यार्थी आसपास से आ मिले और 'जेल का फाटक टूटेगा, भाई हमारा छूटेगा', लोकनायक जिन्दाबाद', के नारे लगाते हुए थाने की ओर बढ़े और उसको तीन ओर से घेर लिया। मैं थाने के अधिकारी से बातचीत करने अन्दर की ओर बढ़ा तो देखा कि आन्दोलन के तीन महारथी पंकज, जहीर और देवेन्द्र पाण्डे, तीनों वकील, पहले से ही थानाधिकारियों से भिड़े हुए हैं। "ये तुम्हारे दामाद हैं, उन्हें रखना नहीं जानते तो मुक्त कर दें", पंकज भाई कहे जा रहे थे। सड़क पर खड़े ४ हजार विद्यार्थी 'जेल का फाटक टूटेगा, भाई हमारा छूटेगा' का गगनभेदी नारा लगा रहे थे और जेल का फाटक सचमुच टूट गया। ४ विद्यार्थी मुक्त कर दिये गये। छात्र इन्हें कंधों पर उठाये हुए शहर की ओर बढ़ चले।

शहीद स्मारक पर 'शराबबन्दी', 'परीक्षाबन्दी' और 'सिनेमाबन्दी' की घोषणा हजारों हाथ उठाकर की गयी थी। पंकज का विद्रोही स्वर बार-बार गूंजा था। शहीद स्मारक से युवा जुलूस रत्नेश्वर भाई एवं पंकज भाई के साथ शराब-खानों की ओर बढ़ा। किन्तु शराबखानों के मालिक स्वयं आकर जुलूस में शामिल हो गये? उन्होंने घोषणा कर दी कि वे कोई और धंधा कर लेंगे। शराबखाने बन्द, अंग्रेजी शराब की दुकान पर तालाबन्दी। गांजे में युवकों ने 'मायावर्त' के

एक आन्दोलन भरा दिन...

गफूर, हेमन्त कुमार झा, इन्दिरा गांधी सारे नगर में (नकली) अत्याचार मचाते, लोगों को गिरफ्तार करते, गोलियां चलाने का हुक्म देते भ्रमण करते हैं। हजारों आबाल-वृद्ध इनके पीछे पीछे चलते हैं। हर मोड़ पर असंख्य बहनें इनका स्वागत करती हैं, बधाई देती हैं और अन्त में जुलूस विसर्जित हो जाता है। वास्तविक अधिकारी मैच खेलने आये ही नहीं थे।

मशाल जुलूस निकल चुका था। असंख्य युवकों एवं नागरिकों ने बिहार विधानसभा की अर्थी जला दी थी। गांधी मैदान के एक किनारे पर माइकिलों के पुराने टायर (उन्हीं से बनी मशालें लेकर युवक निकले थे।) एवं बांसों की कपच्चियों के ढेर धू-धूकर जल रहे थे। जुलूस लौटकर सड़क पर आ गया था। मेरे कुछ एडवोकेट साथी धीरे-धीरे पीछे चल रहे थे। कुछ छात्र भी साथ थे। 'दाढ़ीवाले (यानी मैं), रत्नेश्वर और पंकज को पकड़ लो सब ठीक हो जायगा—पकड़ लो सालों को मारो हरामखोरों को' की आवाजें गूंजीं। मुड़कर देखा ही था कि घुप अन्धकार हो गया। सारे शहर की बिजली ने गुल होकर सरकारी हिमको के गिरोह बनाम पुलिस को अन्धेर मचाने की छूट दे दी। अन्धेरे का लाभ उठा कर मैं कचहरी की एक दीवाल के पीछे छिप गया। भागती हुई सशस्त्र पुलिस ने कुछ छात्रों को अन्धकार में पकड़ लिया। धीरे-धीरे पुलिस का घेरा बढ़ता गया। आगे-आगे दण्डधारी, पीछे राइफलधारी, उनके पीछे जीप पर सवार पुलिस अफसर आगे बढ़ने लगे। पंकज भाई के निर्देश पर छात्र पीछे हटते गये। पुलिस आगे बढ़ती गयी गालियां देती गयी और संघर्ष कार्यालय कोर्वर लिया। प्रमुख छात्रनेता जहीर भाई, पंकज भाई सच्चिदानन्द मण्डल, महावीर झा आदि संघर्ष कार्यालय में इकट्ठे हो गये। संघर्ष कार्यालय खचाखच भर गया। बाहर सशस्त्र पुलिस राईफलें लेकर बैठ गयी। अंदर कविताएं हुईं भाषण हुए, क्रांतिकारी निर्णय हुए और गोष्ठी विसर्जित हुई। १६ अगस्त का परीक्षा बहिष्कार का कार्यक्रम बनाकर हम लोग गांधीग्राम आ गये।

स्थान-स्थान पर आंदोलन में सक्रियता :

धनबाद में १ सितम्बर से विद्यार्थियों का शराब की दुकानों पर धरना चल रहा है। धनबाद व झरिया की लगभग सभी शराब की दुकानें बंद हैं। इस सिलसिले में ६ गिरफ्तारियां हुई हैं।

हजारीबाग में भारत सुरक्षा नियम को भंग कर छात्रों ने जुलूस निकाला। नगर में कई भागों में पुलिस के कड़े प्रबंध थे। ६ गिरफ्तारियां हुईं।

पटना में आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत बंदी श्री अर्जुनसिंह भदौरिया व श्री अख्तर हुसैन पिछले कुछ दिनों से बांकीपुर जेल में अनशन पर हैं। उन्हें जेल के नियमानुसार दी जानेवाली सुविधाएं प्राप्त नहीं हो रही है।

अगले अंक में...

मंझोल गोलीकाँड का एक नन्हा शहीद

असहयोगी छात्रों के लिए कार्यक्रम

—जयप्रकाश नारायण

कक्षाओं और परीक्षाओं का बहिष्कार करनेवाले छात्र मुझसे पूछते रहे हैं कि वे क्या करें। इनमें मेडिकल कालेज, पटना के छात्र भी थे। जो लोग स्वेच्छा से स्वयंसेवक के रूप में, काम करना चाहते हैं उनके लिए काम की कोई कमी नहीं है। जनता की सेवा हो, लोगों को कुछ लाभ पहुँचे और आंदोलन को बल मिले, काम अनुशासित और संगठित रीति से हो, बस यही कसौटियाँ हैं। समय के सदुपयोग का प्रश्न शिक्षकों के लिए भी है, विशेषतः उनके लिए जो आंदोलन को सक्रिय सहयोग दे रहे हैं। कुछ कामों में शिक्षकों का योगदान विशेष महत्त्व का हो सकता है। *शिक्षक और छात्र शहरों में कस्बों और गाँवों* में जाकर भी काम कर सकते हैं। ये रचनात्मक काम सीधे आंदोलन के उद्देश्यों से जुड़े हैं।

कुछ स्वयंसेवक, सम्भव हो तो पारी बाँध कर जिला केन्द्रों में सरकारी दफ्तरों और अदालतों में जायँ और निगरानी रखें। रिश्वतखोरी और अन्य गैरकानूनी तथा अनियमित कामों की रोकथाम करें। इसमें पूरी सद्भावना के साथ कलक्टर और अन्य अधिकारियों का सहयोग माँगा जाय। जो अधिकारी अपने अधीन कार्यालयों और कर्मचारियों में भ्रष्टाचार रोकने के इच्छुक हैं, उनसे अपेक्षा रखनी चाहिए कि वे तत्परता से इसमें सहयोग देंगे।

शराब, गाँजा-भाँग और अफीम की दुकानों पर पिकेटिंग का पहला उद्देश्य सरकार की आबकारी से होनेवाली आय को रोकना है। दूसरा सामाजिक उद्देश्य इसके साथ अपने आप जुड़ा है कि इससे नशाखोरी की सामाजिक बुराई भी घटेगी। इस समय केवल अनुरोध किया जाय। ग्राहकों से प्रार्थना की जाय कि वे शराब, गाँजा-भाँग और अफीम न खरीदें। किन्तु धरना न दिया जाय, न कोई शारीरिक बाधा डाली जाय।

स्वयंसेवक आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धि और दामों के बारे में जानकारी हासिल करें। एक प्रयत्न किया जाय कि व्यापारियों और अधिकारियों के सहयोग से उचित दाम पर उचित रीति से बिक्री की *व्यवस्था* हो। ऐसा सहयोग मिले, तो स्वयंसेवक चौकसी करें कि जो फैसले होते हैं उन पर ठीक-ठीक अमल हो। सहयोग न मिले तो स्वयंसेवक अपना चौकसी दल बनाकर जमाखोरी और मुनाफाखोरी के मामलों का पता लगायें। हिसाबहीन वस्तुएँ, यथासम्भव स्थानीय प्रशासन के सहयोग से लोगों को उचित दाम पर बेची जायँ। बिक्री का ठीक-ठीक हिसाब रखा जाय, और जो मूल्य प्राप्त हो वह सम्बन्धित कार्यालय में जमा कर दिया जाय। *जनसहयोग के जरिये व्यापारियों की मुनाफा*खोरी और चोरबाजारी से रोकने की कोशिश की जाय और इसमें विफलता मिलने पर मुनाफाखोरी और चोरबाजारी करनेवाले व्यापारियों को पुलिस या अन्य सम्बन्धित अधिकारियों के हवाले कर दिया जाय। अगर कोई अधिकारी ऐसे मामलों में आवश्यक कार्रवाई न करें तो इसकी सूचना उच्च अधिकारियों के साथ-साथ स्थानीय छात्र और जन संघर्ष समितियों को दी जाय। जन-सहयोग से ऐसे मामले में आगे धरना या सामाजिक बहिष्कार जैसी कार्रवाई की जाय।

राशन की दुकानों में अनियमित कार्यों की रोकथाम की जाय। जाली राशन कार्डों का पता लगाना इसमें एक काम है। बहुधा दुकानदार *गरीब नागरिकों को निर्धारित* मात्रा के बजाय कम मात्रा में सामान देते हैं। कुछ दुकानदार मूल्य-सूची भी नहीं लगाते। यहाँ भी जरूरत पड़े तो पारी बाँधकर स्वयंसेवकों को राशन की दुकानों पर बैठकर देखना होगा कि कोई धाँधली न हो।

राशनकार्ड बनाने के बारे में कुछ पाबंदी है। कार्ड उन्हीं का बनता है जिनका शहर में कोई स्थायी पता हो, कोई निज स्थान हो। लेकिन हमारा देश तो ऐसा है कि शहरों में सबसे गरीब लोग होते हैं, उनका कोई घर नहीं होता। रिक्शावाले, बोझा ढोनेवाले मजदूर, काम की तलाश में गाँव से आनेवाले दूसरे मजदूर, हर शहर में हजारों की संख्या में होते हैं जो *फुटपाथ पर सोते हैं या रिक्शे* पर ही रहते हैं, उसी पर सो जाते हैं, वही उनका घर है। सस्ते दर पर अनाज मिले, इसकी जरूरत इन्हीं को सबसे ज्यादा है, और इन्हीं को राशन कार्ड नहीं मिलता। अधिकारियों से मिलकर, दबाव डालकर इन लोगों का राशन कार्ड दिलाना एक जरूरी काम है। मुख्य रूप से यह काम जन-संघर्ष समितियों का है।

मतदाता सूची में सुधार और मतदाता प्रशिक्षण विधानसभा का विघटन होने के *बाद जल्दी या देर से फिर चुनाव होंगे।* ये चुनाव स्वतन्त्र और निष्पक्ष हों, इसके लिए दो बड़ी आवश्यकताएँ हैं: मतदाता सूची ठीक हो और मतदाताओं को अपने अधिकारों का ज्ञान हो। इसके लिए शहरों के मुहल्लों और गाँव-गाँव में स्वयंसेवकों को मतदाता सूचियों की जाँच करके उन्हें चुनाव कार्यालयों के द्वारा ठीक कराना होगा। इससे कार्यकर्ताओं का घर-घर सम्पर्क भी होगा। इसी सम्पर्क के दौरान मतदाताओं को उनके अधिकारों की जानकारी देनी चाहिए।

हरिजनों को बासगीत के पर्चे दिलाने के बारे सरकारी फैसला बहुत पहले हो चुका है। लेकिन प्रशासन और समाज की कुव्यवस्था के कारण इस पर अभी तक नहीं के बराबर अमल हुआ है। *यह काम भी गाँव*-गाँव में करने का है। अभी जो बासगीत का कानून है उसके मुताबिक पर्चे मिल जाने पर हरिजनों का बासगीत की जमीन पर मालकियत का अधिकार प्राप्त हो जायेगा। आम तौर पर हरिजनों को जमीन मिल गयी है, *कब्जा भी मिल गया है*, लेकिन पर्चे अभी तक नहीं मिले हैं। स्वयंसेवकों को इसकी जाँच करके जिनको पर्चे नहीं मिले हैं उनको पर्चे दिलाने होंगे। अन्य बेघर लोगों को बसाने का काम भी हाथ में लेना होगा।

भूमि सुधार के कई कानून हैं जिन पर

मेडिकल छात्र चेचक के टीके लगाने का काम हाथ में लें

अभी तक अमल नहीं हुआ, या इस प्रकार हुआ कि बटाईदारों को उससे लाभ के बजाय हानि ही हुई। आंदोलन की गहराई में जाने पर कार्यकर्त्ताओं को यह काम भी उठाना पड़ेगा।

जमीन की हदबन्दी का कानून भी बना है। लेकिन जमीन मालिकों ने फर्जी या बेनामी बन्दोबस्ती कराके इसके उद्देश्य को आमतौर पर विफल कर दिया है। फिलहाल इन फर्जी या बेनामी बन्दोबस्तियों का पता लगाकर इसकी सूची तैयार करना ही एक बड़ा काम है। बाद में इन बन्दोबस्तियों को ठीक कराने और हदबन्दी से अधिक जमीन का भूमिहीन खेतिहरों में बटवारा कराने का काम भी हाथ में लेना होगा।

कृषि विज्ञान के विद्यार्थी और थोड़े प्रशिक्षण के बाद अन्य लोग भी किसानों को कम्पोस्ट खाद बनाना, या मामूली खर्च से गोबर गैस बनाना आदि काम सिखा सकते हैं। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद और अन्य विद्वान लोग भी यह स्वीकार करने लगे हैं कि इसी तरह खेती का विकास हो सकता है और भारत का इसी में निस्तार है कि स्थानीय साधनों के अधिकतम इस्तेमाल से खेती की उपज बढ़ायी जाय।

शहरों और गावों में हरिजनों, खेत मजदूरों और अन्य मजदूरों को न्याय मिले, यह जन-संघर्ष का एक व्यापक उद्देश्य है। लेकिन संघर्ष तो एक एक चरण करके आगे बढ़ता है। समस्या का हल खोजने के पहले उसकी पूरी जानकारी हासिल करना जरूरी है। स्वयंसेवक समस्या का विस्तृत और गहन अध्ययन करें। प्राप्त जानकारी की रिपोर्ट जन-संघर्ष समिति के स्थानीय कार्यालय में दें।

मेडिकल कालेजों के ऐसे छात्र हैं जो कक्षाओं का बहिष्कार कर रहे हैं और जिनकी बड़ी संख्या स्वयंसेवकों के रूप में काम करने को तैयार है। उनके लिए एक जरूरी और तात्कालिक काम है। लगभग सारे बिहार में चेचक का प्रकोप है। प्रदेश सरकार इस मामले में इतनी अक्षम सिद्ध हुई है कि हैरानी होती है। चेचक से सरकारी सूत्रों के अनुसार लगभग २० हजार व्यक्तियों की मृत्यु हो चुकी है, कुछ प्रमुख डाक्टरों के अनुसार पचास हजार से अधिक व्यक्ति मर चुके हैं। मेडिकल कालेजों के छात्र दो-दो, तीन-तीन के दल बनाकर चेचक का टीका लगाने का काम अपने हाथ में लें। इसकी कोशिश की जा रही है कि इसमें सरकार के स्वास्थ्य विभाग और विश्व स्वास्थ्य संगठन का सहयोग मिले। कुछ न होने पर संघर्ष कार्यालय स्वयं आवश्यक सामान जुटाने की व्यवस्था करेगा।

बाद में मेडिकल कालेज के छात्रों की सेवाओं की आवश्यकता हैजे के टीके लगाने और स्वास्थ्य रक्षा सम्बन्धी अन्य कामों के लिए भी होगी। शहरों और गावों में सफाई और शारीरिक स्वच्छता सम्बन्धी ऐसे काम हैं जिनका जनता के जीवन से सीधा सम्बन्ध है। लोगों को पीने लायक पानी मिले, और समुचित भोजन सम्बन्धी साधारण जानकारी लोगों को दी जाय, इसकी भी व्यवस्था होनी चाहिए। स्वास्थ्य रक्षा और मामूली इलाज सम्बन्धी काम तो बहुत अधिक हैं। इसमें गांव में पाखाने, कम्पोस्ट के गड्ढे और सोक पिट आदि बनें जिनसे खाद तो मिलेगी ही, वातावरण अधिक स्वच्छ होगा और आस-पास की सफाई भी होगी।

छात्राओं और महिलाओं के लिए अलग से कोई कार्यक्रम नहीं है। लेकिन कुछ काम ऐसे हैं जिनमें छात्राएं और गृहणियां भी महत्वपूर्ण योग दे सकती हैं, जैसे शराब अफीम, और गांजा-भांग की दुकानों पर पिकेटिंग। गृहणियां अगर कुछ समय निकालें तो राशन की दुकानों पर होनेवाली धांधली को रोकने में कुछ समय दें। जेलों में महिला सत्याग्रहियों की संख्या अधिक नहीं है। अधिकांश महिला सत्याग्रहियों को गिरफ्तारी के बाद शीघ्र ही रिहा कर दिया गया। लेकिन कुछ महिलाएं अभी भी जेल में हैं। महिलाएं जेल में जाकर इनसे मिलें। ये काम पुरुष स्वयंसेवकों के साथ मिलकर करें।

सरकार ठप करने का कार्यक्रम शांतिमय रहे और पुलिस का आचरण सभ्य हो, तो उसमें भी महिलाओं का भाग लेना संभव होगा। महिलाएं एक विशेष काम कर सकती हैं—जहां कहीं लाठी और गोली चलती है, आंदोलनकारी या नागरिक घायल होते हैं महिलाएं उनको देखने के लिए अस्पतालों में जायं। वहां ऐसे भी गरीब अथवा ऐसे असमर्थ लोग रहते हैं जिन्हें फल, दूध, दवा आदि की जरूरत होती है जिसका खर्च वे स्वयं नहीं उठा सकते। अस्पताल में महिलाओं के जाकर मिलने से घायल या बीमार लोगों को यूं भी सांत्वना मिलेगी। उनकी जरूरतों का पता लगाकर महिलाएं संयुक्त रूप से प्रयास करें कि जरूरी सामान बीमारों को मिले।

जनसंघर्ष समितियों का गठन कम से कम पंचायत स्तर तक, हो सके तो गांव-गांव में करना है। समितियों के सदस्य कार्यक्रमों को ठीक-ठीक समझें और समितियां ठीक ढंग से काम कर, इसके लिए आवश्यक है कि जन-जन तक आंदोलन का साहित्य पहुंचे। लेकिन अनपढ़ नागरिक भी आंदोलन के उद्देश्य और चरित्र को समझकर उसमें भाग ले सकें, इसके लिए आवश्यक है कि बड़े पैमाने पर मौखिक चर्चा हो। यह काम सभाओं और गोष्ठियों के द्वारा ही हो सकता है। कुछ स्वयंसेवक अपने ऊपर यही भार लें, आंदोलन का साहित्य बांटकर या बेचकर घर-घर पहुंचायें। कुछ स्वयंसेवक गोष्ठी-केन्द्र चलायें जहां आंदोलन का साहित्य पढ़ा जाय और उसकी चर्चा की जाय।

प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम भी चलाया जाय। पुराने ढर्रे की प्रौढ़ शिक्षा नहीं, बल्कि ऐसी जो भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल हो। मैं और मेरे सहयोगी, शिक्षकों और अन्य शिक्षाविदों की सहायता से मुक्त शिक्षा के कुछ प्रयोग भी करना चाहते हैं। एक खुला विश्वविद्यालय आरम्भ करने की योजना कुछ मित्र बना रहे हैं। विनोबाजी का यह विचार भी हमारे सामने है कि एक घंटा पढ़ाई और दो घंटा काम। यह विचार भी है कि छात्र और शिक्षक मिलकर कोई किताब लेकर बैठें, उसे पढ़ें और उस पर मिलकर चर्चा करें। जो लड़के-लड़कियां कोई हुनर सीखना चाहते हों वे किसी कुशल शिल्पी या अन्य कारीगर के शिष्य बनकर काम सीखें। इन सभी पर विचार-विमर्श हो रहा है और मुझे आशा है कि इनमें से कुछ पर शीघ्र ही काम शुरू हो

कुछ-न-कुछ बलिदान तो सभी को करना होगा

सकेगा। इससे शिक्षा मे क्रांति की शुरुआत होगी। इन कामो के लिए अकेले पटना नगर मे ही एक हजार से अधिक स्वयसेवकों की जरूरत पड़ेगी।

इन कामों का बहुत अधिक शैक्षणिक मूल्य है। छात्र जिन्दगी को जीना सीखेंगे, और सीखेंगे कि लोग किस हाल मे रहते हैं, कैसी उनकी पीड़ा है, कौन-से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण हैं जिनके फलस्वरूप यह अवस्था है। लेकिन स्वयसेवको के जीवनयापन के खर्च का भार उठाना सघर्ष कार्यालय के लिए सभव नही। इसका प्रबन्ध स्वयसेवकों को अपने आप करना होगा। सवारी के और ऐसे अन्य खर्चों की व्यवस्था की जा सकेगी। कम से कम पटना मे राशन की दुकानो की देख-रेख करनेवाले स्वयसेवको को सरकारी अधिकार पत्र भी मिल जायेंगे। आशा है अन्य स्थानो मे भी ऐसा संभव होगा।

आदोलन के कार्यक्रम के चार मुख्य अग है—सगठन, प्रचार, सघर्ष और रचनात्मक कार्य। असहयोगी विद्यार्थियो के लिए भावी कार्यक्रम की जो रूपरेखा पहले प्रस्तुत की गयी है वह मुख्यत रचनात्मक है, यद्यपि कार्यक्रम के सभी अग अभिन्न रूप मे एक दूसरे से जुड़े होते हैं। अब खेती का काम शुरू हो गया है और सभवत किसानों के लिए खेती छोड़ कर प्रदर्शन के लिए आना बहुत कठिन होगा। लेकिन जब भी यह सभव हो, जितनी जल्दी हो सके विभिन्न स्तरो पर प्रदर्शनो तथा सभाओ का आयोजन होना चाहिए।

संगठन के बिना कोई काम नही हो सकता। आदोलन का जो साहित्य प्रकाशित हो रहा है उसे लोगो तक पहुंचाने के लिए भी सगठन जरूरी है। हर कालेज और हाईस्कूल मे छात्र सघर्ष समिति बने, हर पचायत मे जनसघर्ष समिति बने, इसके बिना हमारा शांतिमय लेकिन क्रांतिकारी सघर्ष नहीं चल सकता। जरूरत को देखते हुए सगठन की गति बहुत ही धीमी है। जिलो में जो आदोलन के नेता हैं उनको इस ओर पहले से कहीं अधिक ध्यान देना होगा।

आदोलन के दौरान जो विशाल जनशक्ति युवाशक्ति, छात्रशक्ति उभरी है, वह सारे सगठन मे आये और सक्रिय हो। यह तभी हो सकता है जब आदोलन के साथ-साथ सगठन भी गहराई में जाय। प्रत्येक पचायत मे सघर्ष समितियों का गठन हो जाये, अभी यह लक्ष्य है। लेकिन इस समय तक प्रखड स्तर तक भी संगठन हर जगह नही पहुंचा है। पचायत स्तर तक तो जाय ही, यथाशक्ति और भी गहराई मे जाय, और गाँव-गाँव मे फैले। सक्रिय, निष्ठावान व्यक्ति हर स्तर पर नेतृत्व करें। नेतृत्व मौजूदा सगठनो या समाज में पहले से प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्तियों तक सीमित न रहे। अन्यथा सगठन के फैलाव मे कठिनाई होगी। जनशक्ति की विशाल बहुसख्या किसी सगठन से जुड़ी हुई नही है। आमूल सामाजिक परिवर्तन का सघर्ष उनकी सक्रिय हिस्सेदारी से ही चल सकता है।

आदिवासी अब आंदोलन मे और अधिक सख्या मे शामिल हो रहे हैं। इसी तरह हरिजन, खेत मजदूर, छोटे किसान, इनकी अधिक से अधिक हिस्सेदारी होगी तभी सघर्ष का व्यापक और विराट रूप प्रकट होगा। सम्पूर्ण समाज परिवर्तन के आदोलन मे सभी वर्गों की सक्रिय हिस्सेदारी स्वाभाविक, आवश्यक और वांछनीय है। लेकिन जो गरीब हैं, महगाई और भ्रष्टाचार से जो सबसे अधिक पीड़ित हैं उन के जुड़े बिना आदोलन का आवश्यक फैलाव सभव नही।

छात्र संघर्ष समितियो और जन सघर्ष समितियो के बीच हर स्तर पर पूरा सहयोग और समन्वय रहे। छात्र शक्ति और जनशक्ति एक दूसरे से जुड़ें। सारे कार्यक्रम—प्रचार के, रचनात्मक कार्य के, सघर्ष के, छात्र और जन सघर्ष समितियां मिल कर एक दूसरे के सहयोग से चलायें।

आदोलन का वर्तमान चरण सघर्ष का है। सघर्ष की सफलता के लिए कार्यक्रम के सभी अगो को चलाना आवश्यक है। लेकिन सघर्ष किस प्रकार चलाना है, किन-किन मुद्दों पर चलाना है? सघर्ष का स्वरूप क्या रहे?

अन्धा-धुन्ध दमन मे बहुतेरे लोग अचानक ही सरकारी हिंसा या ज्यादती के शिकार हो जाते हैं, निर्दोष व्यक्तियो की जान भी चली जाती है। लेकिन समझ बूझ कर, स्वेच्छा से जो बलिदान किया जाता है उसी से सघर्ष को सफलता मिलती है। सब लोग एक जैसा बलिदान नही कर सकते। प्राणों की बाजी लगाने का सर्वोच्च बलिदान कुछ ही लोग कर सकते हैं। लेकिन जेल जाना, लाठियो के सामने दृढ़ होकर डटे रहना, ऐसा बलिदान लाखो को करना होगा। कुछ-न-कुछ बलिदान तो सभी को करना होगा, चाहे छात्र हो, युवा हो, या किसी भी वर्ग के नागरिक हो। तभी सम्पूर्ण क्रांति का यह सघर्ष सफल होगा।

यह आदोलन मूलत छात्रो का है, छात्रो को ही इसे आरम्भ करने का श्रेय प्राप्त है और इसमें जनता की हिस्सेदारी तेजी से बढ़ जरूर रही है, लेकिन इसका अधिकाश बोझ अब भी छात्रों के कन्धे पर है। हजारो छात्रो ने लाठिया खायी हैं, हजारो छात्र और नागरिक अब भी जेलो में हैं। कालेजबन्दी और परीक्षाबन्दी उनके सघर्ष का ही एक हिस्सा है—सरकार और उसकी शिक्षा-व्यवस्था से असहयोग, शिक्षा मे क्रांति के लक्ष्य से जिसका सीधा सम्बन्ध है। अन्य उद्देश्यो से भी है क्योंकि सघर्ष केवल किसी सामयिक माग को लेकर नही, सम्पूर्ण क्रांति के लिए है। धरना और पिकेटिंग तो सामान्यत. सभ्य और लोकतांत्रिक समाज मे नागरिको का अधिकार होता है, इस रूप मे मान्य होता है। लेकिन इस समय सरकार से लोकतांत्रिक मर्यादाओ के सम्मान की अपेक्षा करना व्यर्थ लगता है। इस कारण धरना और पिकेटिंग भी सघर्ष का एक रूप बन गया है। सरकारी आचरण जैसा भी हो, यह तो करना ही है। कालेजबन्दी का एक और शायद सबसे महत्वपूर्ण पहलू है कि छात्र निकम्मी पढ़ाई को छोड़ कर समाज परिवर्तन के सघर्ष मे लगें। देश और समाज को बदलने और नये ढग से बनाने के सघर्ष का नेतृत्व छात्र और तरुण ही कर सकते हैं। उन्हीं मे इसके लिए आवश्यक साहस, जोखिम उठाने की क्षमता और सर्जनात्मक शक्ति

छोटे किसानों को न्याय संघर्ष का महत्वपूर्ण उद्देश्य

होती है। छात्रों में यह *विश्वास* होना चाहिए कि समाज परिवर्तन के लिए जो संघर्ष चल रहा है, वही उच्चतम शिक्षा है और यह शिक्षा कालेजों में व्याप्त वर्तमान शिक्षा से बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण है क्योंकि सच्ची शिक्षा जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर ही हो सकती है।

प्रदेश की मौजूदा सरकार जाय, विधान सभा का विघटन हो, यह मांग आंदोलन में सरकार के आचरण और विधान सभा के जन-द्रोही रवैये के कारण जुड़ी। इसी कारण यह आंदोलन की तात्कालिक मांग भी बन गयी है। विधान सभा की बैठक स्थगित होने के बाद आंदोलन के इस पक्ष का कार्यक्षेत्र गांवों में चला गया है।

इस तात्कालिक लक्ष्य के साथ-साथ व्यापक उद्देश्यों के लिए भी संघर्ष के दो अन्य कार्यक्रम हैं—करबन्दी और कार्यालय बन्दी। पहले चरण में सरकारी काम ठप करना है, प्रखंड से लेकर जिले तक प्रशासन के किसी कार्यालय को चलने नहीं देना है।

दूसरा पक्ष है करबन्दी। जनता सरकार को टैक्स देना बन्द करे। सरकार को पैसा देना बन्द हो जाय। बड़ी हद तक यह काम सरकार ठप करो अभियान के द्वारा भी होगा। सरकारी खजानों का काम बन्द हो, बिक्री कर कार्यालय बन्द हो। प्रशासनिक कार्यालयों का काम भी ठप करने में शामिल है। लेकिन करबन्दी का काम सीधे भी हाथ में लेना होगा। शराब, गांजा, भांग अफीम आदि की बिक्री बन्द हो, सरकार को इनसे होनेवाली आबकारी की आमदनी बन्द हो। लाइसेन्स फीस से होनेवाली अन्य आमदनी बन्द हो।

करबन्दी का विशेष सम्बन्ध किसानों से है। लगान-मालगुजारी, तकावी और अन्य सरकारी कर्ज, पटवन, लेवी, सब बन्द हो। सरकार ने मालगुजारी बढ़ा दी है, पटवन की दर ड्योढ़ी और दुगुनी कर दी है। लेकिन न बीज मिलता है, न खाद मिलती है, न वक्त पर पानी मिलता है, न बिजली मिलती है। किसानों को मिलनेवाली खाद व्यापारियों को मिल जाती है जो उसकी चोरबाजारी करते हैं। लेवी की वसूली में बे-हिसाब धांधली होती है। छोटे किसानों के पास अनाज नहीं होता तो भी जबर्दस्ती वसूली होती है। *प्रशासन और बड़े आढ़तियों* की मिलीभगत से किसानों को पूरा दाम नहीं मिलता लेकिन खरीदकर खानेवालों को तीन-गुना, चार गुना दाम देना पड़ता है।

किसानों को, खासतौर पर छोटे किसानों को न्याय मिले, यह संघर्ष का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है। इसके लिए किसानों को स्वयं भी संघर्ष के मैदान में उतरना होगा। सरकारी मालगुजारी, तकावी, पटवन, सेस आदि का एक पैसा वसूल न हो। पटवन की बढ़ी दर के विरोध में किसान खेत के लिए पानी लेते रहें लेकिन *टैक्स न दें*। वसूली के लिए जानेवाले कर्मचारियों-अधिकारियों के सामने गांव के लोग दीवार बनकर खड़े हो जायें और गांव में घुसने न दें। कुर्की जब्ती की कार्रवाई का शांतिपूर्ण, सामूहिक प्रतिरोध हो, सत्याग्रह हो। गांव की पूरी जनशक्ति अगर विरोध में खड़ी हो जाय तो न वसूली होगी, न कुर्की जप्ती हो सकेगी।

संघर्ष के वर्तमान चरण में औद्योगिक मजदूरों की भूमिका सीमित ही है लेकिन उनका महत्व कम नहीं। आह्वान होने पर औद्योगिक मजदूर एक दिन की लाक्षणिक हड़ताल आंदोलन के समर्थन में करें। मजदूर संगठन संघर्ष कोष के कूपनों के जरिये धन संग्रह करायें। यह भी आंदोलन की काफी बड़ी सहायता होगी।

छात्र संघर्ष समितियों और जनसंघर्ष समितियों का स्थायी संगठन बने, इसका उद्देश्य यह भी है कि इनके जरिये लोकतंत्र की *छोटी-छोटी इकाइयों का विकास* हो। सरकार से असहयोग का, दूरगामी दृष्टि से यह सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। थाना रहेगा, अदालत रहेगी, इनको बंद कराने का अभी कोई कार्यक्रम नहीं है। जरूरत पड़ने पर लोग इनका उपयोग भी करेंगे। लेकिन जनता के दैनंदिन जीवन में सरकार का अनुचित और अवांछनीय हस्तक्षेप बंद हो, लोग अपने आर्थिक-सामाजिक जीवन से संबंधित प्रश्नों का निर्णय यथासम्भव स्वयं आपसी सहमति से कर लें, इसके लिए ग्राम और जनसंघर्ष समितियों को प्रयत्न करना होगा। गांव में अन्याय के जो प्रत्यक्ष, अधिकांश गैर-कानूनी रूप हैं, उनकी समाप्ति के लिए संघर्ष, सरकार से असहयोग और लोकतंत्र की छोटी इकाइयों का विकास, तीनों काम एक दूसरे के सन्दर्भ में ही सार्थक होंगे। हरिजनों के साथ समानता का व्यवहार हो, खेत मजदूरों को पूरी मजदूरी अनाज के रूप में मिले, बटाईदारों को उनके कानूनी अधिकार प्राप्त हों, फर्जी और बेनामी बन्दोबस्तियां खत्म हों और जमीनें भूमिहीन खेतिहरों में बांटी जायें, इनके बारे में सिद्धान्त के स्तर पर विवाद नहीं के बराबर है। लेकिन व्यवहार में इन पर अमल हो, *यह काम बहुत कठिन* है। इस आन्दोलन में जो जनशक्ति उमड़ी है, उससे ये कठिन काम भी आसान हो गये हैं। फिर भी बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। गुण्डों और पुलिस की लाठियां इन कामों में भी लाठी पड़ सकती है। अगर प्रशासन अच्छा होता, सरकार सच्ची ईमानदार होती तो स्वयं इन कामों को कराती या आन्दोलन की सहायता करती। लेकिन ये सारे गैर-कानूनी काम भ्रष्टाचारी व्यवस्था के समर्थन से चलते हैं। इसीलिए सुधार के जो कानून बने हैं, उनको लागू कराना भी संघर्ष का एक हिस्सा बन गया है।

कोशिश करनी चाहिए कि बिना कटुता के, आपसी समझ से ये अन्याय दूर हो जाय। लेकिन आवश्यक हो तो इसके लिए सत्याग्रह करना होगा।

संगठन, रचनात्मक कार्य, और संघर्ष के इस त्रिविध कार्यक्रम से शांतिमय क्रांति की, व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की, एक नये बिहार और आगे चलकर नये देश के निर्माण की शुरुआत होगी।

वार्षिक शुल्क—१२ रु० विदेश ३० रु० या ३५ शिलिंग या ५ डालर, प्रति अंक का मूल्य ३० पैसे।
प्रभाष जोशी द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं ए० के० प्रिंटर्स, नई दिल्ली-१ में मुद्रित।

भूदान-यज्ञ

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २० | २३ सितम्बर, '७४ | अंक ५२

१६ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

पहरे पर चोर बैठे हैं

हिन्दी में एक कहावत है 'चोर है तो उसे रे पर बैठाल दो।' पहरे पर बैठा हुआ र चोरी नहीं कर पायेगा, बुरे आदमी को ा कहने लगो, उसे शब्द की शर्म माने ी। जिस तरह ज़िद करनेवाले बच्चे को ो कई बार 'राजा भैया' वगैरा कहकर बात र लेते है, ऐसे ही बद और बदनाम को तिष्ठा दे दो तो उनके बदफैल कम होते-ोते समाप्त हो जाते हैं। मगर एक दूसरा ही हलू इस कहावत का हमारे देश मे निरय-तित, समझा जन है, रात दिन आखो के ामने नाचता रहता है। कौन से हैं : कत्थक, ोजपुरी, गरबा, भागड़ा और यहा तक कि ारतनाट्य के ये कलाकार जो विभिन्न चोर-ाओ मे सिद्ध-हस्त और पटु-चरण देश की च-रच माटी मे वास्तव मे ताण्डव ही उप-स्थित करने पर तुले हैं।

केन्द्र के राज्य वित्तमंत्री गणेश ने अभी क भेंट मे कहा, 'सरकार जब तक काले पैसे ा जमाव और समानान्तर चलन पूरी तरह ख़्त्म नहीं करती, तब तक मुद्रास्फीति और महगाई पर काबू नहीं पाया जा सकता।' उन्होने कहा, 'काले धन पर टूटना चाहिए और लगातार इस काम मे लगे रहना चाहिए। समाज के हित-अहित को सोचे बिना व्यापार करने का चलन रूढ हो गया है, संस्कृति सत्य सलमनसाहत वगैरा का सूरज डूब गया है और झूठ, बेईमानी, स्वार्थ आदि का बाजार गर्म है।'

ऐसा कुछ उन्होने कहा, बेशक अंग्रेजी में। हिन्दी वे बेचारे किससे बोलने जायें और कौन उनको हिन्दी बोलने पर विवश करे। यह अभी हिन्दी दिवस गुजरा है न 14 सितम्बर को इसलिए इतना कह आया, नहीं तो सरकार के किसी भी छोटे-बड़े व्यक्ति, विभाग या क्षेत्र से हिन्दी-अंग्रेजी की बात करने का कोई अर्थ ही नही बचा। हजारों अच्छी बातो की तरह हिन्दी भी तब आयेगी जब जड़ से ऊपर से ऊपर की फुनगी पर लगे किसी पत्ते की तरह विधायक यह सरकार कहिये, सत्ता कहिये, प्रशासन कहिये, जायेगा।

तो गणेशजी ने काले धन की समाप्ति देश की सबसे बड़ी आवश्यकता मानी। आम आदमी भी मानता है कि जब तक काला-धन कमाया जा सकता है और किसी न किसी रूप मे फिर बाजार मे लाया जा सकता है, साधारण से लगाकर ऊंचे दर्जे तक के मध्यम-वर्गीय आदमी की जान सांसत मे पड़ी रहेगी। काले धन से, आम आदमी का ख्याल है कि सबसे ज्यादा निस्बत सत्तारूढ दल को है, हर चुनाव मे पिछले चुनाव से कई गुना पैसा खर्च होता चला जा रहा है, यह वह देखता आ रहा है। अब ये जो १९७६ मे चुनाव आयेंगे, इनमे फिर पैसा लगेगा, इतना पैसा कि जिसकी गिनती कोई उसी तरह नहीं लगा सकता जिस तरह कोई समुद्र के किनारे की रेत के कणो या आसमान मे फैले तारों की गिनती नहीं कर सकता। ललित नारायण मिश्र और नंदिनी सतपथी के नाम चुनाव खर्च के सिल-सिले मे ज्यादा लिये गये, मगर इस सिलसिले मे अग्रणी, एक से एक महारथी खोजे जा सकते हैं। 'गुन न हिरानो, गुन 'खोजक' हिरानो है।' हम ज्यादातर लोग इस तथ्य को भगवान् की मर्जी मानकर जैसे-तैसे दिन काट रहे हैं। मन मे कभी एकाध बार ऐसा भी सोच लेते हैं कि शायद जयप्रकाशजी का आंदोलन जोर पकड़ेगा और हमारे भी दिन पलटेंगे। नहीं तो सही तो यही है कि जो कालाबाजार और कालेधन के खिलाफ बड़े-बड़े वक्तव्य देते रहते हैं, उन्हें इससे प्रेम है, वे ही इसके पोषक, रक्षक और इसलिए उस कमाई के भी खास बड़े हिस्सेदार हैं। एक तरह से साह ने चोर को पहरे पर नहीं बैठाया है। जिसने बैठाया है उसकी भी सफेद पैसे मे श्रद्धा नहीं है और मंशा भी उसकी साफ है कि कालाधन कमाने की सुविधा देंगे तो दल के काम बखूबी चलेंगे और 'वाटरगेट' कांडो की तरह के हम अपने सैकड़ों कांडो के बावजूद फिर विरोधियो को चारो खाने चुनाव मे चित पछाड़ेंगे और जब तक चुनाव आता नहीं है तब तक इस काले पैसे का उपयोग करके अच्छे से अच्छे इरादो और उत्तम से उत्तम कामो को असामाजिक तत्व घोषित कराते रहेंगे, अखबारो से, मंचो से, रैलियां भरवाकर, जुलूस निकालकर। और जो बिलकुल पक्की तरह सत्ता के आन्तरिक तौर-तरीकों को नहीं जानते, तब तक उनके मन में तो भय, सन्देह बना के रख सकते हैं। इस पर और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है मगर हम श्री गणेश का ही एक वाक्य अन्त मे कहेंगे, 'इस कालाधन जमा करनेवालो ने समाज मे ही नहीं राजनीति मे भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है और सब जगह इनका प्रभाव देखा जा सकता है।'

अब एक प्रश्न करना भी ठीक ही रहेगा, कालेधन को राजनीति मे किसने प्रतिष्ठित होने दिया है? चोर को पहरे पर किसने बैठाया है और किस नीयत से?

इस अंक के साथ 'भूदान-यज्ञ' के प्रकाशन के बीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अगला अंक इक्कीसवें वर्ष का प्रवेशांक होगा और गांधी जयन्ती के अवसर पर दो अक्टूबर को विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

—सम्पादक

सर्वोदय

सर्व सेवा संघ का साप्ताहिक मुख पत्र
नई दिल्ली, सोमवार २३ सितम्बर '७४

मंमोल गोली कांड

भूदान-यज्ञ

सम्पादक

राममूर्ति : भवानी प्रसाद मिश्र

कार्यकारी सम्पादक : प्रभाष जोशी

वर्ष २०   २३ सितम्बर, '७४   अंक ५२

१६ राजघाट, गांधी स्मारक निधि, नई दिल्ली-११०००१

पहरे पर चोर बैठे हैं

हिन्दी मे एक कहावत है 'चोर है तो उसे पहरे पर बैठाल दो।' पहरे पर बैठा हुआ और चोरी नही कर पायेगा, बुरे आदमी को भला कहने लगो, उसे शब्द की शर्म माने लगी। जिस तरह जिद करनेवाले बच्चे को रोग कई बार 'राजा भैया' वगैरा कहकर शांत कर लेते हैं, ऐसे ही बद और बदनाम को प्रतिष्ठा दे दो ता उसके बदफैल कम होते-होते समाप्त हो जाते हैं। मगर एक दूसरा ही पहलू इस कहावत का हमारे देश मे नित्य-नर्तित, गमजा जन है, रात दिन आंखों के सामने नाचता रहता है। कौन से हैं : कत्थक, मणीपुरी, गरबा, भांगड़ा और यहा तक कि भारतनाट्य के ये कलाकार जो विभिन्न चोर-मुद्राओं मे सिद्ध-हस्त और पटु-चरण देश की रच-रच माटी में वास्तव में ताण्डव ही उपस्थित करने पर तुले है।

केन्द्र के राज्य वित्तमन्त्री गणेश ने अभी एक भेंट मे कहा, 'सरकार जब तक काले पैसे का अभाव और समानान्तर चलन पूरी तरह खत्म नही करती, तब तक मुद्रास्फीति और महगाई पर काबू नही पाया जा सकता।' उन्होने कहा, 'काले धन पर टूटना चाहिए और लगातार इस काम मे लगे रहना चाहिए। समाज के हित-अहित का सोचे बिना व्यापार करने का चलन रूढ हो गया है, सस्कृति सत्य भलमनसाहत वगैरा का सूरज डूब गया है और झूठ, बेईमानी, स्वार्थ आदि का बाजार गर्म है।'

ऐसा कुछ उन्होंने कहा, बेशक अंग्रेजी मे। हिन्दी वे बेचारे किससे बोलने जायँ और कौन उनको हिन्दी बोलने पर विवश करे। यह अभी हिन्दी दिवस गुजरा है न 14 सितम्बर को इसलिए इतना कह आया, नही तो सरकार के किसी भी छोटे-बड़े व्यक्ति, विभाग या ओहदे से हिन्दी-अंग्रेजी की बात करने का कोई अर्थ ही नही बचा। हजारों अच्छी बातों की तरह हिन्दी भी तब आयेगी जब जड़ से ऊपर से ऊपर की फुनगी पर लगे किसी पत्ते की तरह विधायक यह सरकार कहिये, सत्ता कहिये, प्रशासन कहिये, जायेगा।

तो गणेशजी ने काले धन की समाप्ति देश की सबसे बड़ी आवश्यकता मानी। आम आदमी भी मानता है कि जब तक काला-धन कमाया जा सकता है और किसी न किसी रूप मे फिर बाजार में लाया जा सकता है, साधारण से लगाकर ऊंचे दर्जे तक के मध्यम-वर्गीय आदमी की जान सांसत मे पड़ी रहेगी। काले धन से, आम आदमी का ख्याल है कि सबसे ज्यादा निर्भर सत्तारूढ दल को है, हर चुनाव में पिछले चुनाव से कई गुना पैसा खर्च होता चला जा रहा है, यह वह देखता आ रहा है। अब ये जो १९७६ मे चुनाव आयेंगे, इनमे फिर पैसा लगेगा, इतना पैसा कि जिसकी गिनती कोई उसी तरह नही लगा सकता जिस तरह कोई समुद्र के किनारे की रेत के कणों या आसमान में फैले तारों की गिनती नही कर सकता। ललित नारायण मिश्र और नंदिनी सत्पथी के नाम चुनाव खर्च के सिल-सिले मे ज्यादा लिये गये, मगर इस सिलसिले मे अग्रणी, एक से एक महारथी खोजे जा सकते हैं। 'गुन न हिरानो, गुन 'खोजक' हिरानो है।' हम ज्यादातर लोग इस तथ्य को भगवान् की मर्जी मानकर जैसे-तैसे दिन काट रहे हैं। मन मे कभी एकाध बार ऐसा भी सोच लेते हैं कि शायद जयप्रकाशजी का आंदोलन जोर पकड़ेगा और हमारे भी दिन पलटेंगे। नही तो सही तो यही है कि जो कालाबाजार और कालेधन के खिलाफ बड़े-बड़े वक्तव्य देते रहते हैं, जिन्हे इससे प्रेम है, वे ही इसके पोषक, रक्षक और इसलिए उस कमाई के भी खास बड़े हिस्सेदार हैं। एक तरह से साहु ने चोर को पहरे पर नही बैठाया है। जिसने बैठाया है उसकी भी सफेद पैसे मे श्रद्धा नही है और मंशा भी उसकी साफ है कि कालाधन कमाने की सुविधा देंगे तो दल के काम बखूबी चलेंगे और 'वाटरगेट' कांडों की तरह के हम अपने सैकड़ों कांडों के बावजूद फिर विरोधियों को चारों खाने चुनाव मे चित पछाड़ेंगे और जब तक चुनाव आता नही है तब तक इस काले पैसे का उपयोग करके अच्छे से अच्छे इरादों और उत्तम से उत्तम कामों को असामाजिक तत्व घोषित कराते रहेंगे, अखबारों से, मचो से, रैलिया भरवाकर, जुलूस निकालकर। और जो बिलकुल पक्की तरह सत्ता के आन्तरिक तौर-तरीकों को नही जानते, उन तक उनके मन में तो भय, सन्देह थक बनाये रख सकते हैं। इस पर और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है मगर हम श्री गणेश का ही एक वाक्य अन्त मे कहेंगे, 'इस कालाधन जमा करनेवालों ने समाज मे ही नही राजनीति मे भी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली है और सब जगह इनका प्रभाव देखा जा सकता है।'

अब एक प्रश्न करना भी ठीक ही रहेगा, कालेपन को राजनीति मे किसने प्रतिष्ठित होने दिया है? चोर को पहरे पर किसने बैठाया है और किस नीयत से?

इस अंक के साथ 'भूदान-यज्ञ' के प्रकाशन के बीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अगला अंक इक्कीसवें वर्ष का प्रवेशांक होगा और गांधी जयन्ती के अवसर पर दो अक्टूबर को विशेषांक के रूप में प्रकाशित होगा।

—स०

ने स्पष्ट लिख दिया कि उनके पास जंगल, पहाड़ आदि का अलग-अलग विवरण नहीं है, इस कारण पूरी जमीन का दान कर रहे हैं। इसमें से काबिल काश्त जमीन गरीबों में खेती के लिए बाँटी जा सकेगी। ऐसी दान की पूरी जमीन का सरकार से मुआवजा नहीं लेंगे।

जमींदारों के कागज बड़े अधूरे थे। इसके बावजूद भूदान समिति को सन्तोषप्रद विवरण प्राप्त हुआ। दूसरी ओर बेतिया राज की जमीन प्रायः पचास वर्षों से सरकार के राजस्व परिषद की व्यवस्था में थी, फिर भी बेतिया राज के सरकारी कार्यालय ने कलक्टर को अत्यन्त त्रुटिपूर्ण अभिलेख दिया है। इस त्रुटि के कारण आज तक वहां गैरमजरूआ मालिक जमीन की बेतरह लूट हो रही है। वहां का राजस्व अभिलेख अब भी एकदम अधूरा है।

भूदान के दाताओं में से अनेक की कथा कर्ण और दधीचि का स्मरण कराती है। फतेहा (बेगूसराय) के डा० देवनारायण को जानने का कौन कष्ट करेगा? अपनी सारी जमीन

भूदान की जमीन पर बिहार में उनतीस नये गांव बसाये गये हैं। सैकड़ों गाँव की भूमिहीनता का निवारण हुआ। यह सत्य है कि इन गांवों में कोई स्वर्ग नहीं उतर आया है। कई लोग जब इन गांवों में जाते हैं तो 'गोकुल' देखने की अपेक्षा में कुछ निराश होकर लौटते हैं। ऐसे लोग यदि चम्पारण के चौतरवा का हरिजन सेटलमेंट देखे होते तो उन्हें भूदान का पुरुषार्थ अवश्य दीख पड़ता। चौतरवा में गंडक की सदा-सलिला नहर व्यवस्था, कटोरे सी धरती, मक्खन जैसी मिट्टी। गया के भूदानी गांव की कड़ी कंकरीली मिट्टी से इसकी क्या तुलना? चौतरवा हरिजन ग्राम में सरकार की ओर से निःशुल्क आवासीय शिक्षण व्यवस्था, अन्न भण्डार, बेरोजगारी निवारण के लिए उद्योग भवन, अस्पताल, डाक्टर, परिचारिका सब सुपास, पर सारी सुविधा के बावजूद गांव का एक-एक घर अब उजड़ गया है। सारी जमीन पर बड़े लोगों का ट्रैक्टर चलता है। यही दशा बंगाल के शरणार्थियों के गांवों की है। सरकारी आंकड़ों

में दर्ज नहीं होने के कारण एक ओर वे किसान अधर में लटक रहे हैं, दूसरी ओर प्रतिवर्ष लाखों रुपयों का राजस्व बिहार जैसी कंगाल सरकार खोती जा रही है।

कानून और कृपाण वाले करुणा को कमजोर मानते हैं। विनोबा ने क्रांति रोक दी, यह बात तो कही ही जाती है, कुछ लोगों को यह भी भ्रम है कि भूदान में नाहक समय गया, कानून से आनन-फानन में काम पूरा हो जाता। सभी पंथों की सरकार को बिहार ने देखा। अपवाद के रूप में भी बटाईदारी कानून का अमल नहीं हो रहा है। सीमाबन्दी से कितनी जमीन बांटी गयी? दस कट्ठा बारी-बारी का हक खोकर जहां एक दो डिसमल झोपड़ी मात्र का बासगीत का पर्चा भी मिला तो कितने लोगों की रसीद उतनी भूमि की भी कटने लगी। १९६१ में विधायकों ने विनोबा से कहा कि आपको बिहार की चिन्ता नहीं करनी होगी, हम भूदान पूरा कर लेंगे। सीमाबन्दी कानून में भूदान के बदले भूमिकर की व्यवस्था की गयी। इसकी

'किस कारण अधिकार स्वयं बन भिखमंगा आया है ?'

गरीबों में बांटकर एक गांव में होमियोपैथी प्रैक्टिस कर अपना जीवन-यापन करते हैं। साथ ही भूदान किसानों के बाल-बच्चों के अध्ययन और भरण-पोषण पर अपनी गाढ़ी कमाई में से आज भी खर्च करते हैं।

एक-एक भूदान के दान-पत्रों को बाजाप्ता नोटिस देकर राजस्व विभाग के अनुमंडलीय कार्यालय में जांच कर संपुष्ट किया गया। डेढ़ लाख दान-पत्रों की जांच के प्राप्त विवरण से मात्र सवा चार सौ दान-पत्र आपत्ति के कारण खारिज हुए। पूरा एक प्रतिशत भी नहीं। एक प्रतिशत का भी तीसरा भाग। दाता ने स्वयं इनकार किया हो, यह तो अपवाद स्वरूप ही देखने मिला।

यह भी कहा जाता है कि भूदान किसान बड़े पैमाने पर बेदखल हो गये। मुशहरी प्रखंड (मुजफ्फरपुर) में, जहां की जमीन बहुत कीमती है, एक-एक गांव का भूदान का सर्वेक्षण स्वयं जयप्रकाश बाबू का देखरेख में हुआ। वहां भी ७५ प्रतिशत भूदान किसान का जमीन पर कब्जा पाया गया।

के अनुसार ७० प्रतिशत लोग अपनी जमीन से बेदखल हैं। बड़े-बड़े फार्म खरीदकर ये गांव सरकार की ओर से बसाये गये थे। दूसरी ओर भुईंया भूदान की जमीन लेकर अब इज्जत की रोटी पाने लगे हैं। भूदानपुरी, भूपनगर, गांधीग्राम, बापूग्राम, विनोबा नगर, राजेन्द्र नगर, श्याम नगर, बिछनी, बारेनटोला आदि बिहार के भूदान के २९ गांव चौतरवा डोम सेट्लमेंट, तथा शरणार्थी गांवों की तुलना में अवश्य स्वर्ग हैं।

सरकार की व्यवस्था और भूदान के लोक पुरुषार्थ में कितना अन्तर है, यह दोनों के तुलनात्मक अध्ययन से प्रकट होगा। प्रशासनिक कठिनाईयों की चर्चा की जाय तो एक स्वतंत्र विषय खड़ा हो जायगा। 'गरीबी मिटाओ' के वातावरण में गत वर्ष भूमि सुधार अभियान चला। इस मौके पर कम से कम सारे भूदान किसानों की जमीन का कानूनी उपबंध के अनुसार लगान निर्धारण हो जाता तो इनकी बेदखली नहीं होती। दुःख है कि ऐसे लाखों किसानों का हक कानूनी कागज

धारा आजतक कानून की किताब में अंकित मात्र है, कार्यान्वय शीतागार में पड़ा है। विनोबा कानून के कार्यान्वय के विलम्ब को गलत मानते हैं। इससे भय निर्माण होता है"। 'कानून बनानेवाले नहीं सोचते हैं कि जो कुछ करना है उसे शीघ्र करना चाहिए। देर में करते हैं तो सारा बेकार जाता है।' क्यों देर होती है कानून के अमल में? एक बड़े राजस्व अधिकारी ने जयप्रकाश नारायण के साथ व्यक्तिगत चर्चा में बड़ी दबी जबान से कहा था—'इट इज लैक आफ पोलिटिकल इंटेन्शन, सर' (यह राजनैतिक नीयत की खामी है)।

विनोबा जब बिहार में घूम रहे थे तो श्री दिनकर ने कहा था, कृष्ण दूत बनकर आया है, इसकी शरण गहो—

'पहचानो यह कौन द्वार पर अधनंगा आया है?'

किस कारण अधिकार स्वयं बन भिखमंगा आया है?

आगे फिर उन्होंने कहा कि यदि शुतुर्मुर्ग की तरह अपनी चोंच दबाकर हवा नहीं

पहचानेंगे तो '

'बांध तोड़ जिस रोज फौज हल्ला बोलेगी,
तुम दोगे क्या चीज अगर वह चाहेगी सो लेगी।'

आज भी विनोबा को बिहार से प्रेम है। ग्रामदान का मन्त्र दिया। सहरसा को राष्ट्रीय अभियान का मुख्य मोर्चा बनाया। सभी राजनैतिक पक्षों ने ग्रामदान के समर्थन का आश्वासन दिया था, पर कुर्सी की छीना-झपटी से समय निकाल कर सहरसा जाने का कष्ट कौन लेता है? विनोबा तो द्रष्टा हैं। बिहार को समाज में मान्य करवाने के लिए न तो वे शस्त्र ग्रहण कर सकते हैं और न सत्ता स्वीकार कर सकते हैं। वे मन हैं, शास्त्रकार हैं, समय की शिला पर एक सत्य अंकित कर जानेवाले हैं। कौरव और पांडव दोनों कृष्ण के अपने थे। कृष्ण ने कुरुक्षेत्र के पहले प्रयत्न किया, विनोबा अब अपनी आयु के अस्सीवें वर्ष में भी अपने सूक्ष्म अभिध्यान के द्वारा बिहार की मंगलकामना करते रहते हैं। विनोबा को निस्वप्न नींद आती है, स्थूल की चिन्ता से वह परे हैं। बंगला देश के युद्ध के समय तो उन्होंने कहा था—'सिर काटना बराबर घास काटना। घास फेंकना बराबर लाश फेंकना।' इतना कठोर मन्त्र है जिसका वह अध्यात्मलीन विनोबा भी बिहार की घटना से चिंतित होता है, उसकी भी नींद हराम होती है। शायद जीवन में एक दो बार ही समस्याओं के जाल में विनोबा की नींद हराम हुई हो।

विचार करना होगा बिहारवासियों को, राजनेता को, अधिकारियों को, बुद्धिजीवी और विद्यार्थियों को। शब्द जो भी इस्तेमाल करना हो, करें। भूदान-ग्रामदान आदि शब्द छोड़ भी दें, पर यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि गांव-गांव जाना होगा, लोक-शक्ति जागृत करनी होगी।' तभी गांव गोकुल होगा, बिहार नया बनेगा।

विनोबा जयन्ती सम्पन्न

अकोढ़ी, मिरजापुर में सर्वोदय ग्राम-स्वराज्य समिति द्वारा आयोजित विनोबा जयन्ती में भजन तथा सूत्रांजलि के कार्यक्रम हुए और बिनोदशंकर पाण्डेय, जियाउल्लाह अन्सारी, काशीप्रसाद श्रीवास्तव, शीतला प्रसाद गुप्ता, मेघराजसिंह बटोहा, रमेश बहादुरसिंह, अयोध्याप्रसाद तथा मोहनलालशुक्ल ने अपने विचार व्यक्त किये। श्री पाण्डेय ने समिति को १०१ रुपये दान दिया।

जयपुर में गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र में विनोबा जयन्ती मनायी गयी जिसमें राज्य के खादी ग्रामोद्योग मंडल के अध्यक्ष भोगीलाल पंड्या तथा डा० सुंदरमदास के भाषण हुए। अध्यक्षता विष्णुदत्त शर्मा ने की। केन्द्र के सचिव रामेश्वर विद्यार्थी ने सर्वोदय पक्ष के कार्यक्रमों की जानकारी दी।

जोधपुर में गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र और अन्तर्राष्ट्रीय कुमार साहित्य परिषद ने विनोबा जयन्ती तरुण शान्ति सेना के संयोजक कृष्णकुमार देव की अध्यक्षता में मनायी। सामूहिक प्रार्थना की गयी।

कड़वड़, जोधपुर में गांधीशान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र, जोधपुर के सचिव नेमचन्द्र जैन 'भावुक' की अध्यक्षता में आयोजित विनोबा जयन्ती में मोतीलाल वोहरा, हरकलाल, कन्हैयालाल, तुलछाराम, सरजाराम एवं सोमप्रकाश ने विचार व्यक्त किये।

शहडोल में श्री रामदयाल अग्रवाल के निवास स्थान पर आयोजित विनोबा जयन्ती में मध्यप्रदेश के विधि एवं जेल मंत्री श्री कृष्णपालसिंह की उपस्थिति उल्लेखनीय रही। उन्होंने चंबल के आत्मसमर्पण से लेकर नवजीवन शिविर में रहने तक के प्रकरण पर विस्तार से प्रकाश डाला। रामकृष्णधर्मी दीनदयाल गुप्ता और रामदास गुप्ता के भाषण तथा प्रार्थना, भजन एवं कीर्तन के कार्यक्रम हुए।

रिवाड़ी में गांधी अध्ययन केन्द्र में प्रभात फेरी, सर्वोदय साहित्य बिक्री और सार्वजनिक सभा के आयोजन विनोबा जयन्ती पर किये गये। गणेशीलाल एडवोकेट, आनन्द शर्मा और खुशीराम लोकसेवक ने विचार व्यक्त किये। सभा की अध्यक्षता रामजीलाल जैन ने की। नगर के विद्यालयों में भी सभाएं आयोजित हुईं।

एस० एम० जोशी बिहार में

प्रसिद्ध समाजवादी नेता और बिहार आन्दोलन के समर्थक श्रीधर महादेव जोशी पटना पहुंच गये हैं। जयप्रकाशजी के नाम लिखे अपने एक पत्र में उन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि वे एक लम्बे समय तक बिहार में रहने की तैयारी के साथ आ रहे हैं और बिहार के वर्तमान जन संघर्ष में एक सक्रिय कार्यकर्ता की हैसियत से कार्य करेंगे। श्री जोशी इसके पूर्व भी बिहार आये थे और प्रदेश के विभिन्न जिलों में घूमकर आन्दोलन की स्थिति का अध्ययन कर चुके हैं।

माधोसिंह अब "निर्दलीय" के संरक्षक नहीं

मुंगावली स्थित खुली जेल में आजीवन कारावास भुगत रहे आत्मसमर्पणकारी बागी मास्टर माधोसिंह ने भोपाल से प्रकाशित पत्र 'निर्दलीय' का संरक्षक रहने से इन्कार कर दिया है। उन्होंने लिखा है कि एक कैदी की हैसियत से वे किसी भी अखबार के संरक्षक रहते हैं तो वह कानूनी तौर पर जुर्म है। अब 'निर्दलीय' पाक्षिक से उनका कोई वास्ता नहीं रहा है।

एक वर्ष में ३३६८ उपवासदान प्राप्त

गत वर्ष अपने जन्म दिवस पर ११ सितम्बर, १९७३ को पूज्य विनोबा ने उपवासदान का श्रीगणेश किया था। इस वर्ष १० सितम्बर को उपवासदान अभियान का एक वर्ष पूरा हो गया। इस एक वर्ष में कुल ३३६८ उपवासदान मिले हैं जिनमें २ विदेशों से भी मिले हैं। इन उपवासदानों से १ लाख ६ हजार १४६ रुपये ८५ पैसे की राशि प्राप्त हुई है। भारत के विभिन्न राज्यों से प्राप्त उपवासदानों की संख्या इस प्रकार रही :

असम २६, आंध्र २५४, उत्कल ७३, उत्तरप्रदेश ६६१, केरल १४, कर्नाटक ४६, गुजरात ३३५, तमिलनाडु ७४, पंजाब ४७, पश्चिमी बंगाल १८६, बिहार ८८, मध्यप्रदेश ३६०, महाराष्ट्र ६२६, मणीपुर ७, राजस्थान १८३, हरियाणा ६७, हिमाचल प्रदेश ६, कश्मीर १ और दिल्ली ६।

लोकयात्री दल श्रीलंका प्रवास

श्रीमती भंडारनायके को इन्दिराजी का पत्र

न्यू देलही, जुलाई १८, १६७४
डियर प्राइम मिनिस्टर,

यू हैव नो डाउट हर्ड आफ आचार्य विनोबा भावे, ए क्लोज कलीग आफ महात्मा गांधी हू हैज डिवोटेड हिज लाइफ टु इम्प्रूविंग वैरियस आस्पेक्ट्स आफ अवर रूरल इकानामी। फार ईयर्स ही मूव्ड आन फुट फ्राम स्टेट टु स्टेट कैरीयिंग दि मैसेज आफ 'सर्वोदय' आर दि अपलिफ्ट आफ दि वीकेस्ट थ्रू ट्रुथ एंड कम्पैशन। ही नाउ लिव्ज इन हिज आश्रम इन सेन्ट्रल इण्डिया। अन्डर हिज गाइडेन्स, ए ग्रुप आफ वीमैन वर्कर्स आफ दि सर्वोदय मूवमेन्ट हैव अन्डरटेकन ए वाकिंग टूर फार ट्वैल्व ईयर्स सिन्स १६६६ टु प्रोपेगेट दि प्रिन्सिपल्स आफ दि मूवमेन्ट। दे काल देमसेल्वज 'लोकयात्रा' ग्रुप एंड कन्सिस्ट आफ मिस हेमा मराली, मिस देवी रिजवानी, मिस निर्मल वैद्य एंड मिस लक्ष्मी फूकन। दे हैव नाउ रीच्ड साउथ इण्डिया एंड प्रपोज टु ट्रैवल टु श्रीलंका फ्राम दि सिक्स्टीथ अगस्त। दीज आर नान-पोलिटिकल पीपुल हू विल बी एबल टु एस्टैब्लिश फ्रैन्डली कन्टैक्ट्स विथ दि वीमेन आफ श्रीलंका एबाउट आचार्य विनोबा भावेज वर्क एंड आइडियल्स।

आई होप दैट दि पीपुल आफ श्रीलंका विल रिसीव देम विथ ट्रेडीशनल गुडविल।

विथ वार्म पर्सनल रिगार्ड्स,

योर्स सिनसियरली
साइंड—
(इन्दिरा गांधी)

दि आनरेबुल मिसेज सिरिमावो आर० डायस भंडारनायके, एम० पी०
प्राइम मिनिस्टर आफ दि रिपब्लिक आफ श्रीलंका,
कोलम्बो (श्रीलंका)

नयी दिल्ली, जुलाई १८, १६७४
प्रिय प्रधानमंत्रीजी,

आपने आचार्य विनोबा भावे के बारे में तो सुना ही होगा, वे महात्मा गांधी के घनिष्ठ सहयोगी रहे हैं और उन्होंने अपना सारा जीवन हमारे गांवों की आर्थिक व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं की उन्नति करने में लगाया है। बरसों तक वे एक राज्य से दूसरे राज्य में सर्वोदय का संदेश लेकर पदयात्रा करते रहे हैं। सर्वोदय का अर्थ है समाज के कमजोर से कमजोर अंग को सत्य और करुणा के आधार पर उन्नत बनाना। इन दिनों वे भारत के मध्य में अपने आश्रम में रहते हैं। उनके मार्गदर्शन में सर्वोदय आन्दोलन से सम्बन्धित महिला कार्यकर्ताओं का एक दल बारह वर्ष अर्थात् १६६६ से इस आन्दोलन के सिद्धान्तों का प्रचार करने के विचार से पद यात्रा कर रहा है। उन्होंने अपने समुदाय का नाम 'लोकयात्रा' समुदाय रखा है और इसमें कुमारी हेमा मराली, कुमारी देवी रिजवानी, कु० निर्मल वैद्य और कु० लक्ष्मी फूकन हैं। यह दल इस समय दक्षिण भारत तक जा पहुंचा है और १६ अगस्त को उनकी इच्छा श्रीलंका की पदयात्रा करने की है। ये महिलाएं राजनीति से नितांत असम्बन्धित हैं और उनका उद्देश्य आचार्य विनोबा भावे के काम और आदर्शों के अनुसार श्रीलंका की महिलाओं से भाईचारे का सम्बन्ध स्थापित करना होगा। वे इसी की कोशिश करेंगी।

मुझे आशा है कि श्रीलंका की सरकार उन्हें अपनी परम्परागत सद्भावना देगी और उनका स्वागत करेगी।

हार्दिक समादर सहित,
विनीत
ह० (इन्दिरा गांधी)

महिमामंडिता श्रीमती सिरिमावो
आर० डायस भंडारनायके, एम० पी०
प्रधानमंत्री-गणतंत्र श्रीलंका, कोलम्बो (श्रीलंका)

इंदिराजी से मिलो

इंदिराजी से मिलो
गेहूं पांच रुपया किलो।
बड़े खाद्यमंत्री तो राष्ट्रपति हो लिए
झंझटों से उन्होंने हाथ ही धो लिए
तो शायद छोटे खाद्यमन्त्री कुछ करेंगे
मगर व्यापारी उनकी क्यों सुनेंगे, उनसे क्यों डरेंगे
तो फिर खायें हम सब सड़ा गला 'मिलो'।
गेहूं पांच रुपया किलो।
इस 'सब' शब्द में कौन कौन आते हैं
वे सब जो कम कमाते हैं और घूस नहीं खाते हैं
मगर इनकी संख्या तो बहुत ज्यादा है
इनके एक जुट हो जाने में क्या बाधा है
इंदिराजी ने कहा है जमाखोरों को हिलाओ
यानी हलचल करो थोड़े खुद भी हिलो।
गेहूं पांच रुपया किलो।
तो क्या हम आन्दोलन करें जुलूस निकालें
हाथों में प्लैकार्ड और पोस्टर सभालें
यह तो बिहार में चल ही रहा है
मगर वहां तो इसे प्रतिक्रियावाद कहा है
तो फिर होठों को सी लो या सुर
कपड़े की तरह सिलो।
गेहूं पांच रुपया किलो।

—भवानीप्रसाद मिश्र

पर : दो प्रधान मंत्रियों के पत्र

श्रीमती भंडारनायके का इन्दिराजी को उत्तर

प्राइम मिनिस्टर
श्रीलंका
कोलम्बो, २६ जुलाई, १९७४

माई डियर प्राइम मिनिस्टर,

आई थैंक यू फार युवर लेटर आफ १८ जुलाई, १९७४ इन्टिमेटिंग टु मी दि अराइवल इन श्रीलंका आफ ए ग्रुप आफ वीमेन वर्कर्स आफ दि सर्वोदय मूवमेन्ट। आई हैव नोटेड विथ सम सरप्राइज, दैट दिस ग्रुप हैव अण्डरटेकन ए वाकिंग टूर फार टवेल्व ईयर्स सिन्स १९६६, टु प्रोपेगेट दि प्रिन्सिपल्स आफ दि मूवमेंट। दिस काइन्ड आफ डेडिकेशन टु ए काज, परटीकुलरली, टु ए वर्दी काज लाइक सर्वोदय, इज आल टू रेयर इन दि वर्ल्ड टुडे, एन्ड, वी शैल सरटेनली डू अवर बेस्ट टु इनस्योर दैट दे हैव ए यूसफुल एंड इन्ट्रेस्टिंग टाइम इन श्रीलंका।

आचार्य विनोबा भावे इज वेलनोन टु दि पीपुल आफ श्रीलंका, एंड, वी अवरसेल्वज हैव एन एक्टिव सर्वोदय मूवमेंट हियर। देयरफोर इट विल बी ए ग्रेट प्लेजर टु हैव दीज फोर लेडीज कम ओवर टु श्रीलंका

विथ वार्म पर्सनल रिगार्डस,

योर्स सिनसियरली,
साइन्ड/— सिरिमावो भंडारनायके
प्राइम मिनिस्टर

हर एक्सलेन्सी मिसेज इन्दिरा गांधी
प्राइम मिनिस्टर आफ इंडिया
न्यू देलही।

प्रधान मंत्री
श्रीलंका
कोलम्बो, २६ जुलाई, १९७४

मेरी प्रिय प्रधानमंत्रीजी,

आपके १८ जुलाई, १९७४ के पत्र, जिसमें आपने सर्वोदय आन्दोलन की महिला कार्यकर्ताओं की एक टोली के श्रीलंका आने की मुझे सूचना दी है के लिए धन्यवाद। मुझे यह जानकर किंचित आश्चर्य हुआ कि आन्दोलन के सिद्धान्तों के प्रचार के लिए इस टोली ने १९६६ से बारह साल की पदयात्रा प्रारंभ की है। किसी उद्देश्य के लिए और विशेष रूप से सर्वोदय जैसे उपयुक्त उद्देश्य के लिए इस प्रकार की लगन आज की दुनिया में बहुत दुर्लभ है और हम श्रीलंका में इनका समय उपयोगी तथा दिलचस्प बनाने में, निश्चय ही, कुछ न उठा रखेंगे।

आचार्य विनोबा भावे से श्रीलंका की जनता सुपरिचित है और हमारे यहां भी एक सक्रिय सर्वोदय आन्दोलन है। इसलिए, इन चार महिलाओं का श्रीलंका आगमन बड़े आनन्द की बात होगी।

हार्दिक समादर सहित,

विनीत,
ह० (सिरिमावो भंडारनायके)
प्रधान मंत्री

महिमामण्डिता श्रीमती इन्दिरा गांधी
प्रधानमंत्री भारत,
नयी दिल्ली।

(दोनों मूल पत्र अंग्रेजी में हैं जो देवनागरी लिप्यान्तर और हिन्दी अनुवाद सहित दिये जा रहे हैं। अगले अंक में लोकयात्री दल से श्रीलंका प्रवेश के सम्बन्ध में प्राप्त पत्र)

"गीता प्रवचन" और "गीताई" याद रखें, बाबा को भूल जायं

आचार्य विनोबा भावे की ८० वीं जयन्ती गत ११ सितम्बर को सारे देश भर में मनायी गयी। इस निमित्त वर्धा के एक पत्रकार श्री उमाकर शुक्ल ने विनोबाजी से पवनार के उनके आश्रम में भेंट की और उनसे पूछा कि उक्त अवसर के लिए आपका क्या संदेश है? उन्होंने (बाबा ने) कहा कि "गीता-प्रवचन" और "गीताई" को लोग याद रखें और बाबा को सब भूल जाय।

यह स्मरणीय है कि 'गीता प्रवचन' विनोबाजी द्वारा धूलिया-जेल में गीता पर दिये गये उनके प्रवचनों का संग्रह है जिसका अनुवाद देश-विदेश की कई प्रमुख भाषाओं में हो चुका है और 'गीताई' सरल एवं सुबोध मराठी भाषा में पद्यानुवाद है। दोनों पुस्तकें विनोबाजी की आध्यात्मिक मौलिक कृतियां हैं।

संखोल गोलीकांड का एक नन्हा शहीद

बेगूसराय जिले में, बेगूसराय नगर से १७ किलोमीटर उत्तर, लगभग २२ हजार जनसंख्या का कस्बा मंझोल अनेक सरकारी कार्यालयों, चिकित्सालय, मवेशी अस्पताल, डाक-तार एवं दूरभाष केन्द्र तथा छोटे से बाजार जैसी शहरी सुविधाओं के साथ ही ग्रामीण सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों में लिपटा हुआ अपने नाम को सार्थक करता है।

मझौल में छात्र तथा छात्राओं के अलग अलग माध्यमिक विद्यालय हैं और स्वर्गीय सिंचाई मन्त्री रामचरित्र सिंह की स्मृति में स्थापित तथा भागलपुर विश्वविद्यालय से स्नातक स्तर तक सम्बद्ध महाविद्यालय। इस वर्ष महाविद्यालय के इन्टर मीडिएट के ७७ छात्रों को परीक्षा गणेशदत्त महाविद्यालय, बेगूसराय केन्द्र से देनी थी किन्तु १८ जुलाई से होनेवाली इस परीक्षा का अधिकांश छात्रों ने बहिष्कार किया। तब सरकार ने परीक्षा की नयी तिथि १६ अगस्त घोषित की।

इस बीच सी. पी. आई के सक्रिय समर्थक प्रभारी प्राध्यापक ने (इस महाविद्यालय में प्राचार्य की नियुक्ति अभी तक न हो पाने से वे ही काम देखते हैं) छात्रों को अवैध एवं अनैतिक सुविधाओं के सब्जबाग दिखलाकर १० छात्रों से मझौल में ही परीक्षाकेन्द्र खोले जाने की माग उठवायी और सी. पी. आई. तथा कांग्रेसी नेताओं से कुलपति पर दबाव डलवाकर केन्द्र खुलवाने और इस केन्द्र के अधीक्षक स्वयं बन जाने में सफलता प्राप्त करली। गणेशदत्त महाविद्यालय, बेगूसराय के एक व्याख्याता को उन्होंने 'इनविजिलेटर' बनाया। व्याख्याता महोदय मझौल के महाविद्यालय में कभी शासी निकाय के सदस्य रहे थे और प्रभारी प्राध्यापक के 'यसमैन' माने जाते थे।

परीक्षा केन्द्र खुलवाकर प्रभारी प्राध्यापक ने केन्द्र अधीक्षक बनने और सरकार के आगे वफादारी दिखाने की अपनी महत्वाकांक्षा तो पूरी की, धनिकों के उन साहबजादों को अवैध और अनैतिक सुविधाएं देकर उत्तीर्ण कराने का मार्ग भी प्रशस्त कर लिया जो पिछले कई वर्षों से असफल हो रहे थे। महाविद्यालय शासी निकाय के सचिव ससोपा विधायक श्री रामजीवनसिंह विधानसभा से त्यागपत्र देकर बेगूसराय जिला जनसंघर्ष समिति के मंत्री बन चुके थे तथा परीक्षा के विरोधी थे। उनके घर में ही उनको नीचा दिखाने का सपना भी प्रभारी प्राध्यापक ने परीक्षा केन्द्र खुलवाकर पूरा कर लिया। अनुमंडल अधिकारी ने परीक्षा केन्द्र बनाये जाने का कड़ा विरोध किया लेकिन न तो उनकी ओर न ही जिलाधिकारी की मंजूरी ली गयी और न शासी निकाय की सहमति। निजी भवन और नियमित प्राचार्य की अनिवार्य शर्तें पूरी किये बगैर ही महाविद्यालय परीक्षा केन्द्र बन गया।

अब केन्द्र अधीक्षक तथा 'इनविजिलेटर' ने छात्रों को बुला-बुलाकर तथा उनके घर पर जाकर फुसलाना चालू किया, "परीक्षा दो, जैसे चाहो वैसे दो, कापी-किताब रखकर लिखो, चाहो तो उत्तर पुस्तिका घर ले जाओ, चाहो तो पर्चे एक दिन पहले आउट कर दिये जायेंगे। इतने सुभीतों के साथ भी यदि इस साल परीक्षा न दोगे तो फिर जिन्दगी में कभी पास न होगे। लीडरी तो बाद में भी कर सकते हो।" अधिकांश छात्रों पर तो इन प्रलोभनों का कोई असर नहीं हुआ, लेकिन छात्र आखिर लड़के ही थे, कुछ तो इन आश्वासनों के जाल में फंसकर परीक्षा देने को तैयार हो ही गये। केन्द्र अधीक्षक ने १४ अगस्त को अभिभावकों की बैठक भी बुलायी लेकिन अभिभावकों ने भी उसका बहिष्कार किया।

स्वतंत्रता दिवस १५ अगस्त को छात्र-संघर्ष समिति के आह्वान पर स्थानीय छात्र-छात्राओं ने सुबह एक जोरदार जुलूस निकाल कर उसमें परीक्षा तथा केन्द्र अधीक्षक विरोधी नारे लगाये। उसी दिन शाम को जिला जनसंघर्ष समिति तथा छात्रसंघर्ष समिति के तत्वावधान में आयोजित विशालसभा में छात्रों, अभिभावकों तथा नागरिकों ने इस प्रकार की अनैतिक परीक्षा की निन्दा का घोर विरोध किया, किन्तु शांतिपूर्वक सत्याग्रह करने का निर्णय किया।

दूसरे दिन परीक्षा प्रातः १० बजे से थी लेकिन ७॥ बजे ही कोई ५० छात्राएं पहुंच गयीं और परीक्षार्थी छात्रों से परीक्षा के बहिष्कार का अनुरोध करने लगीं। घंटे भर बाद ही सी आर पी के जवानों को लेकर डी एस पी. आ पहुंचे और छात्राओं को हट जाने को कहा। तत्पश्चात छात्राओं ने निर्भयतापूर्वक आगे बढ़कर जवानों को चन्दन रोली के टीके लगा दिये और नारे लगाये, "पुलिस हमारा भाई है, उससे नहीं लड़ाई है।" बहनों के इस स्नेह के आगे पुलिस के जवान भाई पीछे हट गये। छात्राएं सत्याग्रही बनकर दीवार की भांति परीक्षा भवन के द्वार पर अड़ गयीं और परीक्षा देने आनेवालों के पैरों से लिपटकर वापस जाने का अनुरोध करने लगीं। सम्पूर्ण दृश्य अत्यधिक मार्मिक हो उठा।

साढ़े नौ बजे के लगभग कुछ छात्रों को दो जीपों पर नाटकीय ढंग से लाया गया और वे छात्राओं को ढकेलते हुए दौड़कर परीक्षा भवन में घुस गये। ऐसा लगा कि उन्हें इसके लिए पूर्व प्रशिक्षण दिया गया था। इस घटना से उपस्थित छात्रों और नागरिकों में रोष फैल गया लेकिन वे शान्त बने रहे।

सवा दस बजे परीक्षा चालू होने की घंटी बजी और परीक्षा केन्द्र के सामने की सड़क पर हजारों की संख्या में एकत्र छात्र तथा नागरिक इस अनैतिक परीक्षा का तमाशा देखने लगे। साढ़े दस बजे के कुछ मिनट बाद देखा गया कि परीक्षार्थी कापी-किताबें रख लिख रहे हैं और केन्द्र अधीक्षक दौड़-दौड़कर उनको किताबें पहुंचा रहे हैं। बन्दूक के बल पर की जा रही इस सीनाजोरी को अहिंसात्मक तरीके से रोकने के लिए विचार करने करीब दो सौ छात्र समीप ही स्थित जय मंगला माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में चले गये। वे चर्चा कर ही रहे

मौन की आवाज गोलियों से कहीं अधिक प्रखर थी

कि हाथ समेट कर परीक्षाभवन मे जायें, अनैतिक कार्यरोकें और अपने आपको गिरफ्तार करायें कि इसी बीच पुलिस आ गयी और लाठियों से छात्रों को खदेड़ने लगी। देखते देखते भगदड़ मच गयी। इसी दौर में एक पुलिस अधिकारी ने परीक्षाभवन के द्वार पर सत्याग्रह कर रही छात्राओं में से एक का हाथ पकड़कर खींचना चालू किया और बाकी सबको वहां से हट जाने को कहा। इस पर उपस्थित सभी लोगों को क्रोध आ गया। कुछ छात्रों ने इस पुलिस अधिकारी को समझाना चालू किया ही था कि कहीं से दो चार ढेले आकर अचानक वहीं गिरे। इस पर पुलिस ने एकदम से लाठी चार्ज कर दिया। शांति भंग होने देख छात्राएं वहां से हट गयीं और छात्रों तथा पुलिस की लड़ाई होने लगी। छात्र ईंट-पत्थर फेंक रहे थे और उनका उत्तर पुलिस अश्रुगैस तथा गोलियों से देने लगी थी। यही नहीं, पुलिस ने आसपास स्थित गरीबों तथा मजदूरों के घर में घुसकर औरत या मर्द जो भी सामने पड़ा उसकी भरपूर पिटाई की। हवाई-फायरों के बीच ईंटों का चलना बन्द हो ही रहा था कि पौने बारह बजे के आसपास डिप्टी कलेक्टर एक जीप में आये और परीक्षा केन्द्र की तरफ जाने लगे। छात्र उन्हें तो पहचान नहीं पाये, जीप में बैठी पुलिस को देखकर पथराव करने लगे जिससे जीप का शीशा टूट गया। तथापि पथराव बन्द हो गया और कुछ देर में शांति हो गयी। जीप आगे बढ़कर महाविद्यालय में प्रविष्ट हो गयी।

डिप्टी कलेक्टर साहब भीतर परीक्षाकेन्द्र में पहुंचे और वहां न जाने क्या हुआ कि अचानक ही बाहर खड़े पुलिस जवानों को गोली चलाने का आदेश आ गया। शान्त और निस्तब्ध वातावरण में बारह बजे के कुछ मिनट पूर्व ही बन्दूकों की 'धांय'-'धांय' गूंज उठी और उसकी प्रतिध्वनि समाप्त होने के पूर्व ही महिलाओं के चीत्कार की दिल हिला देने-वाली तेज आवाज आने लगी। महाविद्यालय के फाटक से तीस-चालीस गज दूर स्थित घर में रहनेवाले विज्ञान के आठवीं कक्षा के १४ वर्षीय छात्र नित्यानन्द साहू को सीने में गोली लगी थी। नन्हा सा नित्यानन्द गोली लगते ही तड़फकर जमीन पर गिरा और फिर नहीं उठ सका। पलक झपकते ही उसने दम तोड़ दिया। उसकी मां और बहन अपने घर के दरवाजे पर खड़ी यह सारी हलचल देख रही थीं। नित्यानन्द को गिरते देखा तो उसकी ओर दौड़ीं लेकिन 'बहादुर' पुलिस-वालों ने लाठियां मारकर उन्हें दूर रहने को विवश कर दिया। अब इस सारी करतूत पर परदा डालने के लिए पुलिस ने अश्रुगैस का गोला छोड़ा जिससे कि लोग वहां से हट जायें। बाद में नित्यानन्द की मां ने बताया कि पुलिस के पांच जवान उस अभागे मासूम छात्र की लाश को घेरकर खड़े हो गये थे और उनमें से एक ने तो शायद नित्यानन्द को जीवित समझकर उसके गले को अपने भारी भरकम बूटोंवाले पैर से भरपूर जोर लगाकर दबोच दिया था।

पन्द्रह मिनट बाद पुलिस नित्यानन्द की लाश को जीप में रखकर परीक्षाकेन्द्र के भीतर ले गयी और वहां लापरवाही से जीप से उतारकर जमीन पर पटक दी। वहां परीक्षाकेन्द्र अधीक्षक बने प्रभारी प्राध्यापक से लाश की शिनाख्त कराने का नाटक किया गया। केन्द्र अधीक्षक महोदय ने लातों की ठोकर से लाश को उलटा-पलटा और कह दिया कि वे मृतक को नहीं पहचानते।

नित्यानन्द की इस दर्दनाक मौत ने नाग-रिकों के सीने में आग लगा दी। वे सैकड़ों की संख्या में कुछ भी कर गुजरने और मरने-मारने पर उतारू हो गये थे। तथापि शांति और अहिंसा के संकल्प पर दृढ़ आंदोलनकारी छात्रों ने अपने इन पिताओं, दादाओं और भाइयों को किसी प्रकार समझाया और एक संघर्ष टल गया। इस काण्ड के बाद एक ओर तो जिले के प्रशासनिक अधिकारी मामले पर पोछा लगाने की दृष्टि से घटनास्थल देखने पहुंचने लगे और दूसरी ओर छात्रों का विशाल समूह हाथ समेटे तथा मुंह बन्द किये मौन जुलूस बनाकर सड़क पर आ गया— पुलिसवाले फटीफटी आंखों से देख रहे थे और मौन जुलूस आगे बढ़ता जा रहा था। जुलूस के मौन की आवाज पुलिस की गोलियों से कहीं अधिक प्रखर और हृदय द्रावक थी।

महाविद्यालय द्वार पर पुलिस ने १६ अगस्त की उस खूनी दोपहर को १२ चक्र अश्रुगैस के गोले छोड़े, तीन चक्र गोलियां चलायीं तथा लाठी चार्ज तो न जाने कितनी बार किया। नन्हे छात्र नित्यानन्द की मौत तो घटनास्थल पर हो ही गयी थी, एक और बालक की चमड़ी छीलते हुए गोली निकल गयी थी, जिन्दगी और मौत के बीच फासला शायद एकाध मिलीमीटर रहा था। लाठियों से घायल होनेवालों की संख्या तो दर्जनों में थी।

शाम चार बजे, जब नित्यानन्द की मौत को चार घंटे बीत चुके थे, खबर मिली कि लाश लावारिस की भांति बिना कफन के पड़ी है। इतना सुनते ही जिला जनसंघर्ष समिति के अध्यक्ष ब्रह्मदेव प्रसादसिंह, नित्यानन्द के दो शिक्षक शिवशंकर प्रसाद और रघुनाथ प्रसाद तथा नागरिकों के प्रतिनिधि रघुनन्दन प्रसादसिंह शहीद छात्र के अभिभावक शांति साहू और उनके सहयोगी विपिन बिहारीसिंह लाश को कफन देने के लिए चल पड़े और परीक्षा केन्द्र पहुंचे जहां लाश के पास सिर-फिरा पुलिस अधीक्षक खड़ा था। ब्रह्मदेवजी को देखते ही वह बरस पड़ा, भद्दी से भद्दी गालियों की बौछार आरंभ कर दी और पुलिस जवानों को तानाशाही लहजे में आदेश दिया कि, "इस बूढ़े को उल्टा रस्सा लगाकर ट्रक के पीछे बांध दो और बेगूसराय तक घसीटते ले चलो।" ब्रह्मदेवजी ने अपनी जवानी आजादी की लड़ाई के बहादुर सिपाही बनकर देश के लिए होमी। अंग्रेजों ने उनके खिलाफ 'शूटिंग वारन्ट' निकाला था और उनके ऊपर इनाम घोषित किया था, लेकिन जब उन्हें गिरफ्तार किया गया था तो बड़े सम्मानपूर्वक जेल ले जाया गया था। दोनों हाथ पीठ के पीछे कर रस्सी से बांध दिये जाने का जो अनुभव उन्हें सात समुद्र पार से आये अंग्रेजों की सरकार ने नहीं कराया था वह उनको और उन्हीं जैसे अन्य की कुर्बानियों

दिल्ली में सत्याग्रही जुलूस की तैयारी

गांधी जयंती, 2 अक्तूबर के दिन दिल्ली में राजघाट समाधि से सत्याग्रहियों का एक जुलूस निकलेगा जो खास खास सड़कों पर होता हुआ प्रधानमन्त्री के निवासी, सफदरजंग रोड पहुंचेगा। प्रधानमंत्री अगर उस दिन दिल्ली में ही हुई तो उन्हे या फिर उनके कार्यालय को स्मरण पत्र दिया जायेगा। यह स्मरण पत्र बिहार आन्दोलन के बारे में होगा और बिहार के सत्याग्रही ही उसे लेकर आवेंगे।

देश भर के सत्याग्रहियों से उस दिन दिल्ली पहुंचने का आग्रह जयप्रकाश नारायण ने किया है। जे० पी० से कई राज्यों के लोगों ने पिछले महीनों में कहा है कि वे उनके यहां आकर बिहार जैसे आंदोलन की शुरुआत करें। लेकिन वे ऐसे सभी निमंत्रणों को यह कह कर टालते रहे हैं, "बिहार को मैं बारडोली सत्याग्रह मानता हूं। बिहार आंदोलन सफल होगा तो उसका असर पूरे देश पर पड़ेगा और अभी जो आंदोलन शुरू करने के लिए मुझे बुला रहे हैं खुद अपना आंदोलन शुरू करेंगे।"

दिल्ली में सत्याग्रहियों का मौन जुलूस यहां बिहार जैसा आंदोलन शुरू करने के लिए नहीं होगा। यह जुलूस बिहार आंदोलन के देश व्यापी समर्थन में होगा और दिल्ली में इसलिए निकलेगा कि जयप्रकाश ही नहीं, देश की हालत पर सोच-विचार करनेवाले कई लोग इसके लिए भारत सरकार को जिम्मेदार मानते हैं। इस जुलूस का नेतृत्व आचार्य कृपलानी करेंगे।

जुलूस में दिल्ली के अलावा हरियाणा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, राजस्थान मध्यप्रदेश, बिहार आदि के सत्याग्रही भाग लेंगे। वैसे जे पी.ने आवाहन तो पूरे देश के सत्याग्रहियों से किया है लेकिन आयोजक इसे मुख्य रूप से उत्तर भारत के सत्याग्रहियों का जुलूस मानते हैं। जुलूस में उन्हीं लोगों को शामिल किया जायेगा जो सामाजिक परिवर्तन के लिए अहिंसा की शक्ति में विश्वास करते हैं और मानते हैं कि सत्याग्रह से भ्रष्टाचार, महगाई, बेरोजगारी और कुशासन जैसी बीमारियां दूर की जा सकती हैं। दिल्ली में राजघाट भवन में जनतंत्र समाज की ओर से सत्याग्रहियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

पिछले दिनों दिल्ली में बिहार आंदोलन के समर्थन के लिए नागरिक संघर्ष समिति गठित की गयी है जिसमें विद्यार्थियों, युवकों, मजदूरों, राजनीतिक कार्यकर्ताओं, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों, अल्पसंख्यक समुदायों और ग्रामीणों के प्रतिनिधि हैं।

सर्वोदय सम्मेलन मार्च तक स्थगित

कलकत्ता में नवम्बर, १९७४ के प्रथम सप्ताह में आयोजित किया जा रहा २२वां सर्वोदय सम्मेलन पश्चिमी बंगाल में खाद्यान्न के भीषण अभाव की स्थिति को देखते हुए अगले मार्च तक टाल देने का निर्णय सम्मेलन की स्वागत समिति ने सर्वसम्मति से किया है। मार्च में होने वाले सम्मेलन की तिथियां बाद में घोषित होंगी।

देश की तरुणाई को आह्वान

जयप्रकाश नारायण

देश में उत्तरोत्तर बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, घूसखोरी और सत्तालोलुपता से उत्पन्न लोकतंत्र के खतरों की ओर जनमानस का एवम् सत्तारूढ़ व्यक्तियों का ध्यान आकृष्ट करने हेतु गुजरात में युवकों को सम्बोधित करके दिये गये तीन ऐतिहासिक भाषणों का हिन्दी रूपान्तरण। पृष्ठ संख्या ४८ मूल्य १ रु० मात्र।

दादा के शब्दों में दादा

दादाधर्माधिकारी

यह कृति कु० विमला ठकार को अत्यन्त स्नेहयुक्त भावना से लिखे गये गये दादा के पत्रों की मंजूषा है। आन्दोलन के जल में डूबे हुए फिर भी कमल के समान उससे परे स्नेहशील दादा के निराले व्यक्तित्व की झांकी पुस्तक में मिलती है। पृष्ठ ७६ मूल्य रु० ६/ मात्र।

प्रभा स्मृति

सर्वोदय में बड़े ही आदर के साथ 'दीदी' शब्द से सबोधित प्रभावती बहन की पुण्य स्मृति में प्रकाशित ग्रंथ जो दुर्लभ चित्रों के ३२ पृष्ठों से युक्त है जिससे हमें अकालपुरुष गांधी की प्रेरणा, इतिहास पुरुष जे० पी० का जीवन संघर्ष और मौन साधिका प्रभावती बहन की पुण्य स्मृति मिलती है जो कभी भुलायी नहीं जा सकेगी। पृष्ठ ३०८ मूल्य ३० रुपये।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट, वाराणसी-१ (उ. प्र.)

अमरीका में 'पड़ोसी सभा' आन्दोलन

अमरीका में पिछले दस सालों में तरह-तरह के प्रयोग और आंदोलन हुए हैं। अब वहां कुछ जगहों में लोग पड़ोसी-सभा सरकार स्थापित करने की कोशिश में हैं। 'सर्वोदय' के पाठकों को ग्राम-सभा, मुहल्ला सभा या पड़ोसी सभा का परिचय देना तो 'उल्टे बांस बरेली' भेजना ही है। अमरीकी पड़ोसी सभाएं अभी गावों के बदले शहरों में ही शुरू हो रही हैं। लोग नीचे से सभा बना रहे हैं, और राजनीति में उनके एक समर्थक उसे ऊपर से कानूनी मान्यता भी दिलाने की कोशिश में लगे हैं। लेकिन यह शुरुआत भर है, एक ऐसे काम की जिसे वे लोग वाकई काम मान रहे हैं, जिसे बीच में छोड़ा नहीं जा सकता। लोगों को उम्मीद है कि 'एक ऐसे समय में जब घर-परिवार टूट रहा है, नैतिकता में लगातार गिरावट आ रही है, पड़ोसी सभा टूटे हुए घरों को एक-दूसरे से जोड़ कर एक सुखद भागीदारी के भविष्य तक ले जा सकती है।'

अमरीका के कुछ बड़े शहरों में उपभोक्ता और वातावरण-दूषण जैसे आंदोलनों के साथ 'पड़ोसी सभाओं' का आंदोलन भी जोर पकड़ता जा रहा है। न्यूयार्क में कुछ पड़ोसी सभाओं के गठन ने अखबारों में भी जगह पा ली है। कुछ राजनीतिज्ञों ने भी पड़ोसी सभाओं की हवा को पहचाना है, वे 'व्यवस्था के विकेन्द्रीकरण' 'नागरिक सेवाओं के ज्यादा बेहतर बटवारे' के नारे उछालने लगे हैं। लेकिन जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों में से केवल एक ने ही पड़ोसी सभाओं की आत्मा को पहचाना है। ओरेगान के सीनेटर मार्क हैटफील्ड ने पिछले दिनों 'पड़ोसी सभा सरकार' विधेयक पेश करने की योजना बनायी है। इस विधेयक में उन्होंने सही अर्थों में राजनैतिक और आर्थिक विकेन्द्रीकरण का ढांचा रखते हुए पड़ोसी सभा सरकार की आत्मा और सिद्धान्त को पकड़ने की कोशिश की है। उनकी यह कोशिश उन्हें उन अन्य नेताओं से अलग करती है जो इसे केवल प्रशासकीय विकेन्द्रीकरण की तरह ही देख रहे थे।

पड़ोसी सभा सरकार के विचार को इन शहरों के उदारवादी और उच्च मध्यम वर्ग के लोग कुछ घबड़ाहट और डर के साथ ले रहे हैं। उनके डर के कुछ कारण तो साफ ही हैं। ये लोग अब तक राजनैतिक सत्ता के बदले आर्थिक सत्ता को ज्यादा महत्व देते रहे हैं। उनकी इस कोशिश ने उन्हें अन्धा बना दिया है। दरअसल वे राजनैतिक सत्ता के मामले में लगभग उतने ही पिछड़े हैं, जितने कि अमरीका के गरीब और अल्पमतवाले लोग हैं। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि राजनैतिक सत्ता का लाभ इन बड़े लोगों को मिलता नहीं है। ये अपने पैसे, प्रतिष्ठा, सिफारिश, ऊंचे पदों पर बैठे दोस्तों के जरिये जरूरत पड़ने पर राजनीतिक सत्ता से फायदा पा लेते हैं। लेकिन पड़ोसी सभा आंदोलन में छिपी यह बात कि किसी हिस्से पर लागू की जानेवाली योजना, बिना उस हिस्से के लोगों की सहमति के, ऊपर से लादी नहीं जानी चाहिए, इन सम्पन्न लोगों को असहय क्रांतिकारी लगती है। स्थानीय नेताओं को भी खटका लगने लगा है कि क्या वाकई ऐसी परिस्थिति आ जायेगी, जब केवल उनका फैसला ही सब कुछ नहीं माना जायेगा?

उदारवादी नेताओं के भय की बुनियाद इस बात पर टिकी है कि क्या लोग मिल बैठ कर अपने और अपने भविष्य के बारे में सही फैसला लेने लायक हैं? इन प्रश्नों का उत्तर पड़ोसी सभा आन्दोलन के लोग अमरीकी संविधान को बनानेवाले थामस जैफरसन के शब्दों में देते हैं, 'जब आप अपनी व्यवस्था खुद नहीं संभाल सकते, तो दूसरों की व्यवस्था चलाने की अपनी क्षमता पर कैसे भरोसा कर लेते हैं?'

अमरीका में पिछले दशकों में सत्ता तेजी से राजधानी वाशिंगटन की ओर सिकुड़ती गयी है। राजधानी में विराजमान लोगों का विचार है कि 'देश का भला होना चाहिए,' और जाहिर है, वे मानते हैं कि 'देश का भला' उन्हीं के फैसलों से हो सकता है। इस तरह बिलकुल नीचे तक के बारे में फैसले बिलकुल ऊपर से ही लिये जाते हैं (यह बात प्रायः सभी देशों की व्यवस्था पर लागू होती है।)

पड़ोसी सभा आंदोलन अपनी शुरुआत पर ही है, फिर भी उसका जोरदार विरोध भी होने लगा है। उदारवादी नेताओं का कहना है कि इसके जोर पकड़ने से वर्तमान राजनैतिक पद्धति को काफी धक्का लगेगा। वे यह तो कबूल करते हैं कि व्यवस्था खराब हो गयी है, लेकिन उसका हल वे यही मानते हैं कि व्यवस्था में आज बैठे खराब लोगों के बदले अच्छे लोगों को भेजना चाहिए। इसके विपरीत पड़ोसी सभा आन्दोलन वाले 'अच्छे बुरे' की बात बेमतलब मानते हैं, वे उस व्यवस्था को पलटना चाहते हैं जहां फैसले ऊपर से नीचे की ओर आते हैं,—चाहे वे 'अच्छे आदमियों' ने लिए हों, चाहे बुरे आदमियों ने।

इस आन्दोलन का विकास अमरीका में सन् ६० से ७० तक चले कई किस्म के आंदोलनों से हुआ था। सन् ६९ में यह अपनी ठोस शक्ल में आया। उस साल लोर्नो सालुजमैन नामक एक शांतिवादी लेखक ने 'ब्रुकलिन हाईट्स् नागरिक स्थानीय लोकतंत्र' की स्थापना की। इस संगठन ने 'ट्राउनशिप' पत्रिका शुरू की, उसके माध्यम से पड़ोसी सभा विचार को फैलाया। सन् ७१ तक संगठन ने कई लोगों को अपनी ओर खींच लिया, इसमें शहर के महापौर लिंडसे भी शामिल थे। फिर उत्साही महापौर की ओर से ही एक सम्मेलन बुलाया गया, विषय था 'पड़ोसी सभा कैसे चलेगी?' सम्मेलन में पड़ोसी सभा के अधिकारों पर भी विस्तृत चर्चा हुई। इसी बीच वाशिंगटन में मिल्टन कोट्लर नामक एक लेखक ने पड़ोसी सरकार पर एक किताब भी लिख डाली, जो काफी लोकप्रिय साबित हुई। कोट्लर ने बाद में वाशिंगटन में 'पड़ोसी सभा अध्ययन संस्थान' भी स्थापित किया। संस्थान की ओर से देश

टिप्पणी टिप्पणी

ठीक कदम

इसी सितम्बर आठ को अमरीका के नये राष्ट्रपति फोर्ड ने पुराने राष्ट्रपति पर वाटरगेट कांड के अपराधों की माफी दे दी। उन्होंने जो कारण दिये हैं वे पूरी तरह मानवीय हैं और इसलिए स्वागत के योग्य हैं।

उन्होंने जो कहा उसका आशय है कि जनवरी २०, १९६७ से ९ अगस्त १९७४ तक निक्सन से जो गलतियां अमरीका के संयुक्त राज्य के प्रति हुई, उन्हें क्षमा इसलिए किया जा रहा है कि अगर इस मामले को लेकर निक्सन अदालत में घसीटे गये तो बरसों तक फिर उनको उसी मानसिक कष्ट में से गुजरना पड़ेगा, जिसमें से उन्हें काफी अरसे से गुजरना पड़ रहा था। उन्होंने यह भी कहा कि निक्सन के अलावा उनके सारे परिवार को भी भयकर मानसिक पीड़ा में अपने दिन काटने पड़ेंगे।

इसमें संदेह नहीं कि कुछ लोगों को शिकार करने या देखने में जो मजा आता है, उन्हें इससे निराशा ही नहीं झुंझलाहट तक हुई होगी। मगर हम याद इतना ही दिलाना चाहते हैं कि यह वाटरगेट खुल गया था और अमरीका के स्वतंत्र वातावरण में इसकी हर सतह खोली जा सकी, लगभग सभी देशों के शासक कम ज्यादा अपने प्रतिद्वन्द्वियों से निपटने के लिए वैसे ही दांवपेंच काम में लाते हैं, जैसे निक्सन ने अपनाये थे। उनके देश में समाचार-पत्र, रेडियो, लेखक और आम आदमी को जैसा होता है वैसा कहने की आजादी है, अन्य देशों के बारे में इतने ही असंदिग्ध भाव से यह नहीं कहा जा सकता।

क्षमा समर्थ का भूषण है। श्री फोर्ड ने मानवीय मूल्य की रक्षा के साथ इस काम से अपनी निर्भय वृत्ति का परिचय भी दिया है। इस घड़ी में दूसरे देश छींटाकशी करने के बजाय अपने-अपने गरेबां में मुंह डालकर देखें।

मामला आयात के लाइसेंस का

कथित बाइस संसद-सदस्यों के हस्ताक्षर युक्त सिफारिश के बल पर निषिद्धसूची में टंकी हुई व्यापारिक पेढ़ियों को कुछ आयात लाइसेंस दिये गये। उन पर समाचार पत्रों और विशेषत संसद में विपक्ष ने जो कठोर और हर हालत में सही रुख अपनाया है, उसे सत्तारूढ़ दल पहले के बीसियों मामलों की तरह सहज टाल पायेगा या नहीं इसमें लोग शंका कर रहे हैं।

हमारी समझ में ऐसी शंका निराधार है। पिछले कुछ बरसों में भ्रष्टाचार, गबन, गोलीकांड, पक्षपात, मनमाने चुनाव, मनमाने ढंग से बहुमत और अध्यादेशों के बल पर संविधान में परिवर्तन आदि एक से बढ़कर एक ऐसी घटनाएं होती रही हैं जिनको यदि बारीकी से छाना-बीना जाता तो एक-एक छोटा बड़ा वाटरगेट कांड सिद्ध होता। मगर हमारी कुशाग्रबुद्धि सरकार या उसके सूत्र-संचालन करनेवाली शक्ति ने उन्हें यों पेश किया कि जनता के मन में से वे सब बातें दो-चार बार घूमकर गायब हो गयीं। इस बार भी ऐसा ही कुछ होगा—अन्यथा कुछ अभी होनेवाला नहीं है। यों तो जिन्होंने इस घट का भंडाफोड़ किया है या करना चाहते हैं, हमारी सहानुभूति उनके साथ है।

सरकार खुश है

भारत सरकार खुश है कि पिछले चार महीनों में इसी अवधि के मुकाबले में भारत ने २९४ करोड़ रुपये मूल्य की वस्तुओं का अधिक निर्यात किया है। किसी को खुश देखकर हमें भी खुश होना चाहिए, हम होना चाह रहे थे कि दो बातों की ओर हमारा ध्यान गया। एक तो यह कि पिछले चार महीनों में अगर २९४ करोड़ रुपये का निर्यात बढ़ा है तो आयात भी बढ़ा है और उसका मूल्य है ३७० करोड़। यानी आयात ४४ ५ प्रतिशत बढ़ा है और निर्यात ५३ प्रतिशत। इस प्रकार व्यापारिक सन्तुलन में ७६ करोड़ का जो अन्तर घाटे की तरफ पड़ा है, इससे हम भारत सरकार की प्रसन्न वृत्ति पर दृढ़ नहीं रह सके। दूसरी बात जिसकी ओर हमारा ध्यान गया कि सबसे अधिक निर्यात की कमाई उस चीनी के बल पर हुई है जो हमारे देखते-देखते डेढ़ रुपये किलो से इसी अवधि में देश के गरीब आदमी को साढ़े छ रुपये किलो मिल रही है। बोलचाल में इसे 'घर-फूंक तमाशा' कहते हैं।

क्या आशा करें

५ सितंबर को गया जिले के कुर्था स्थान में महंगाई के विरोध में जुलूस निकाला गया। जुलूस का नेतृत्व शोषित दल के श्री जगदेव प्रसाद कर रहे थे। जुलूस शांत था। मगर शायद अशांत था क्योंकि पुलिस ने गोली चलायी और सो भी सीधे जुलूस के नेता जगदेव प्रसाद पर और उनकी मृत्यु हो गयी।

शोर मचा। शोर को दबाने का एक तरीका सोचा गया कि भारतीय कम्युनिस्ट दल दिवगत नेता के प्रति श्रद्धांजलियां देने के लिए शोक सभा करे। स्पष्ट है कि जनता को इस बेशर्मी पर क्रोध आता। लोगों ने उस श्रद्धांजलि सभा को होने नहीं दिया—वहां सुनने कोई नहीं गया, सभा न होने देने के लिए गया और यह तय किया गया कि १५ सितंबर को छात्र संघर्ष समिति जगदेवप्रसाद दिवस मनायेगी। हम आशा करते हैं कि 'उपद्रवी' छात्रों को और किसी शहीद का दिवस मनाने पर बाध्य नहीं किया जायेगा।

के कई हिस्सों में लोगों ने घूम-घूमकर मुहल्लों में लोगों को पड़ोसी सभा बनाने के लिए प्रेरित किया। हाईस्ट् की पड़ोसी सभा के काम करने के तरीके से इस बात का अन्दाज लगाया जा सकता है कि वहां क्या हो रहा है, क्या-क्या आगे हो सकता है मुहल्ले के सोलह साल से बड़े हर निवासी के लिए सदस्यता के दरवाजे खुले हैं। ये सदस्य सभा में बहस कर सकते हैं, वोट भी दे सकते हैं। इन्हीं के हाथ में फैसले लेने का अधिकार है। मुख्य सभा की एक योजना समिति भी है जो महीने में एक बार मिलती है। मुख्य सभा में पड़ोसी मोहल्ले की पड़ोसी सभा के सदस्य भी विशेष आमंत्रित की तरह भाग ले सकते हैं। पड़ोसी सभा की सबसे बड़ी दिक्कत उसकी आर्थिक स्थिति है क्योंकि अभी कर वगैरह तो सब ऊपर जाता है। फिर भी उसके सदस्यों को उम्मीद है कि एक ऐसे समय में जब घर परिवार टूट रहा है, नैतिकता में लगातार गिरावट आ रही है, पड़ोसी सभा टूटे हुए घरों को एक दूसरे से जोड़कर एक सुखद भागीदारी के भविष्य तक ले जा सकती है।